पृष्ठ ३२५१ से ३९७० (भ - म) शब्द सख्या १५३३५

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी बृहत् कोश]

[तृतीय खण्ड]

(तृतीय जिल्द)

सपादक

(सपादन, परिवर्द्धन एव सशोधनकर्ता)

सीताराम लाळस

व्युत्पत्ति आदि द्वारा परिष्कारक

स्व० प० नित्यानन्द शास्त्री दाधीच

[आशुकवि, कवि भूषण, व्याकरण, साहित्य, कोशादि तीर्थ श्रीरामचरिताब्धिरत्नम् महाकाव्य आदि के प्रणेता]

कर्ता

सीताराम लाळस

स्व० उदयराज उजळ

प्रकाशक

चौपासनी शिक्षा समिति द्वारा गठित

उप समिति राजस्थानी सबद कोस

जोधपुर

प्रकाशक
चौपासनी शिक्षासमिति द्वारा गठित
उपसमिति, राजस्थानी सबद कोस
जोधपुर

भारत सरकार के शिक्षामन्त्रालय
द्वारा सचालित प्रादेशिक भाषाओ के
विकास सम्बन्धी योजना से सहायता प्राप्त

प्रथम सस्करण

मुद्रक
हरिदत्त यानवी
श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस,
जोधपुर

भलो भलाइ हि लहइ, लहइ निचाइहि नीचु ।
सुधा सरा हिग्र ग्रमरता, गरल सराहिग्र मीचु ॥

तुलसी जसि भवतवयता, तैसी मिलइ सहाइ ।
ग्रापु न ग्रावै ताहि पै, ताहि तहा ले जाइ ॥

—तुलसीदास

अपनी बात

प्रस्तुत शब्द कोश के तृतीय खड की यह तीसरी जिल्द हमारे सामने है। मैं पूर्ण आश्वस्त हूँ कि कोश का काय पूर्ण सन्तोष प्रद ढग से चल रहा है। कार्य-प्रगति को देखते हुए मैं विश्वास के साथ कह सकना हू कि यदि कोई विशेप रुकावट सन्मुख न आई तो आगामी चतुथ खड की जिल्दो के प्रकाशन मे भी अनावश्यक समय नही लगेगा।

प्रताप जयन्ती
ज्येष्ठ शुक्ला चतुदशी
सम्वत् २०२६ वि
विजय विहार
जोधपुर

रणधीरसिंह
अध्यक्ष - उपसमिति
राजस्थानी सबद कोस
जोधपुर

प्रकाशकीय

पाठको के सन्मुख यह निवेदन करते हुए हमे प्रसन्नता होती है कि हमने 'राजस्थानी सबद कोस' की प्रगति के अनुक्रम मे एक मजिल और तय करली है। इस जिल्द के साथ 'म' अक्षर के समस्त उपलब्ध शब्दो को लेकर तृतीय खड को पूर्ण कर दिया है।

इससे पूर्व की इस खड की द्वितीय जिल्द जनवरी सन् १९७१ मे प्रकाशित हुई थी। प्रस्तुत जिल्द जून सन् १९७१ से प्रारभ होकर १ वर्ष व ५ मास मे पूर्ण हुई है। इस जिल्द मे शब्द सख्या १५३३५ है जो द्वितीय जिल्द से बहुत अधिक नही है परन्तु शब्दो का अर्थ विस्तार इतना हो गया कि पृष्ठ सख्या उस से काफी अधिक अर्थात करीब ७०० हो गई है। यही कारण है कि पूर्व जिल्द के मुकाबिले मे समय अधिक लगा है। वैसे कार्य की प्रगति मे कोई रुकावट नही आई और न किसी प्रकार का विलम्ब हुआ।

अनुस्वार तथा 'क' से लेकर 'म' तक पाचो व्यजन वर्गों की समाप्ति तक कोश की पूर्ण पृष्ठ सख्या ३९५० तक और कुल शब्द सख्या १०२४२८ तक पहुच चुकी है। अब अन्तस्थ व उष्म वर्णों की चौथे खड की चार जिल्दे और शेष रही है जो, यदि परिस्थिति हमारे अनुकूल रही और कोई विशेष रुकावट सन्मुख न आई तो, भविष्य के अल्प काल मे ही प्रकाशित कर देगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

कागज की महाघता और पृष्ठ सख्या की अधिकता के कारण इस जिल्द का मूल्य हमे द्वितीय व तृतीय खड की पूर्व जिल्दो की अपेक्षा विवश हो कर अधिक अर्थात् ७५) रु० रखना पड रहा है।

हम केन्द्रीय सरकार व राजस्थान राज्य की कृतज्ञता प्रकट करते हुए, कि जिनकी नियमित आर्थिक सहायता ने हमारे कार्य को गतिमान रखा, राजस्थान राज्य के शिक्षा राज्य - मत्री श्री भुभारसिहजी, भूतपूर्व शिक्षा - सचिव श्री जगन्नाथसिहजी मेहता व श्री रामसिहजी चौहान को हम हार्दिक धन्यवाद देना नही भूलेगे कि जिन्होने कोश को आर्थिक सहायता प्रदान कराने तथा प्रकाशन की दिशा मे सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस के सचालक व व्यवस्थापक महानुभावो को धन्यवाद देते हैं, जिन्होने कोश की छपाई की दिशा मे हमारी सहृदयता - पूर्वक सहायता की है।

अन्त मे सरकार, पाठक, सहृदय विद्वज्जन एव साहित्य - सेवियो के अभिन्न सहयोग एव सहानुभूति से हम पूर्ण आश्वस्त है कि जिसके बल पर हम शीघ्र ही इस पुनीत कार्य को पूर्ण करने मे सफल होगे।

रोडला भवन
रिसाला रोड, जोधपुर

२५ जून, १९७२

चंदनसिंह राठौड
सचिव
उप-समिति राजस्थानी सबद कोस
जोधपुर

॥ श्री ॥

* निवेदन *

– दूहा सोरठा –

नारायण भूले नहीं, अपणी माया ईश । रोग पैंल गोखद रच, जगवाळा जगदीश ।१।।
साच न बूढो होय, साच अमर ससार मे । कतो धोबो कोय गो सेवट प्रकट उदय' ।२।।
सेवा देश समाज, धरती मे साचो धरम । इण सू पूर आस सकल मनोरथ सांवरो ।३।
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह ईश्वर कीरपा सू उदय ।।४।
सत ऊजळा सदेश, उदयराज ऊजल अख । दीप वारा देश ज्यारा साहित जगमग ।५।।

भारत ससद मे सन् १९५० रे करीब देशरी दूसरी सगला प्रान्ता री भासावा मानी गई उणा रे सामन राजस्थानी भाषा ने नही मानी तो कुदरती तौर सू राजस्थान मे अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन अठो मे शुरू हुवो

राजस्थानी रै विरोध मे अकसर आ बात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नही हो। ओ घाटो मिटावण सारु म्है श्री सीतारामजी लालस ने कयो क्योकि हूँ जाणतो हो के डिंगल रा सग्रह रो उणा ने काफी अनुभव है। श्री सीतारामजी इण काम सारु तैयार हो गया ने म्हे दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सू मैनत सू कोश रो काम शुरु कियो ने इण मे खर्च री मदत री जरूरत हुई तो उण बाबत म्हे स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिहजी साहब बार एटला पोकरण ने अरज करी। इणा कृपा करने मजूर करी ने तारीख १-५-५१ सू रुपीया री मदद देणी चालू कर दीवी। सीतारामजी मथाणिया मे लेखक राख ने काम शब्द सग्रह री स्लिप कोपिया लिखावण रो चालू कर दीवो और म्हे दोनू तारीख १ ५-५१ सू सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कोम कियो जिण सू कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपिया मे लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सू श्री पोकरण ठाकुर साहब री सहायता बद हो गई। इण सू सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम बद रेयो।

इण कोश ने पूरो करण री म्हा दोनू री लगन ही। म्हे करनल श्री स्यामसिंहजी रोडला ने जून सन् १९५६ मे कोश मे सहायता देण सारु कागद लिखियो उण रो जबाब उणा तारीख २९-६-५६ रा कागद मे म्हने लिखियो के कोश सारु मावार रु० ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूला। परन्तु उणारा पिता करनल श्री अनोपसिहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे मे देरी हुई। उणा रे स्वगवास होणे रे बाद मे मास नवम्बर रा अन्त मे ने दिसम्बर रा शुरू मे जोधपुर मे ही जद कर्नल श्री सामसिंहजी कोश री मदत बाबत बातचीत करणने दोयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी।

कोश रो काम उणा री सहायता सू सन् १९५७ री जनवरी रू सीतारामजी जोधपुर मे चालू कर दियो क्योकि जद उणाँ रो तबादलो जोधपुर मे हो गयो हो। जो एक लाख तेरह हजार शब्दो री स्लिप कोपिया पैली बणी हुई ही। इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय न उणा अक्षरवार रजिस्टर मे लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो। म्हे पैली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोष करनल श्री सामसिहजी री रपीया री सहायता सू पूरो हुवो।

इणरे बाद प्रेस कापी बणावण रो काम चालू हुवो। उणारे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरधनसिंहजी मेडतिया खानपुर वाला श्री झालावाड दरबार सू श्री नीबाँज ठाकुर साहब सू रुपिया री सहायता लेने करायो ने करे छपण रो प्रबन्ध राजस्थानी सोध सस्थान चोपासणी जोधपुर सू हुवो ने तारीख ११-३-१९५६ ने सीतारामजी ने इण सोध सस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सू वे इण सस्थान मे काम करण लागा।

इण कोश ने तैयार करावण मे व्युत्पत्ति विभाग पूरो करावण मे स्वर्गीय प० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मदत ही इण वास्ते बैकूठवासी विदवान ने घणा धन्यवाद देवा हा। तारीख, २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजब हो —

चांद बावड़ी
ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यन्त्र श्री उदयराजजी उज्जवल यँत्री (मेकेनिकल) के बल सचालित हुवा है। मेने इसे देखा, इन्होने प्रत्येक शब्द और धातु को जाचकर उनके प्रयोज्य सब प्रकार के प्रयोगो को प्रदर्शित किया है क्योकि इन्होने सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श विविध भाषाओ के बल पर यह कार्य भार उठाया है। बीच बीच मे हर समय मेरे साथ विचार विमश करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन काय को पार करने मे श्री सीतारामजी की ही पूरा कृपा ने सहायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ती से पूरा सतुष्ट होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान काय की प्रशसा करगे। फकत नित्यानन्द शास्त्री।

इण तरे ननण विश्वविद्यालय सू डा० डब्लू० एस० एलन जो ससार री करीब चालिस भाषाओ रो जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भापा रे ध्वनी विज्ञान सम्बधी जाच वो शोध रो काम सारु सन् १९५२ मे राजस्थान आया हा ने जोधपुर मे दोय मास ठहरिया हा ने भापा रे सिलसिले मे म्हारे कने घणा आता उणाने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणा म्हारो उत्साह बधाओ उणा री सम्मति नीचे मुजब है —

Thinity College Cambridge **26 Feb , 1960**

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is now to be published Rajasthani has long pressented a serious gap in the comparative Study of the voca bulary of the Indo Aryan Languages and now at last it is filled by the evoted work of two Rajasthani Scholars and the support of their distinguished Sponsors I know well and difficulties that have beset the under taking of this task and its Completion is therefore all the more a menument to the courage of those who conceived the project and brought it to fruition With this work added to the grammer by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthani language can no Longer be denied

Sd W S Allen M A P H D
Professor of Comprative Philology
in the University of Cambridge

कोश दोय दातार राजपूत सरदारो री रुपया री मदत सू शुरु होय ने पूरो बणियो इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफक महे ता० २६ ६-५७ ने इण बाबत काव्य गीत, कविता, रचियो ने सीतारामजी कने भेजीया वो अठे दिया जावे है इणा मे दोनू सरदारा रो धन्यवाद रे तौर पर वरणन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रो मे तारीफ की है।

"गीत" राजस्थानी मे

कोम मरू बाणरो सुणे बण्यो नह किण सू, लाख शब्दो तणे बडो लेखो गया भूपात कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा खजाना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा। सेव साहित्य री वणी न किणी सू, लागता पंथ धन छोड लाडा ॥२॥
सेव साहित्य ही रहे संसार में, सुजसफल लगावे धणी सरसे। मिले सुखलाध हितकर चित समाजां, दिनो दिन किता सममान वरसै ॥३॥
पोण मरू बांन है प्रांत रो परंपर, वेण परताप राजस्थान ऊचो। रखी नह पढण मे भावखा प्रांत री, निरखतां जाय है प्रांत नीचो ॥४॥
वणई चारणो व्याकरण विभोविन्न बणेगो कोश ही लाख सबदो। सीत रो परिश्रम प्रथग फलियो सिरे, रेटियो 'उदय' मिल सकल सबदो ॥५॥
पोकरण भवानीसीह चापे प्रथम कोश रे हेत धन खर्च कीयो। पडता लाच इण समेरा फेर सू स्यामसी रोडले काम सीधो ॥६॥
रोडले स्यामसो सपूतो सिरोमण, कमधज आज अखियाज कीधी। वार विपरीति मे हजारो खरचवे, वाद उजल 'उदे' देस दीधी ॥७॥
चारणा दोय मिल व्याकगणकोश रचि, बण्या नह बडो कवराज मिलियो। कमधा दोय मिल कियो सुभ काम जो, मह्यीयो कियो नह बीस मिलियो ॥८॥

कवित

सूयमल मिशण से बनाया वंस भास्कर बूंदी नपगम ने खजाना खोल करके।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योही उदियापुर रान के कोष बल धरके।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराज उज्जवल के योग शक्ति भरके।
पोकरण भवानीसिह स्यामसिह रोडला के कोष हित कोष बने दानी धन धर के।
प्रांत की प्रबल भाषा प्रतिष्ठित परपरा विबुधन दीनमाल वीरपद थाला है।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूं मे रखी नही होय कोटि जनता को दास गति डाला है।
डूबत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दर्शित बिदाजा है।
जीवित उठेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके बनगे जिशाला है।

Compared by
Sd Bhawar Singh
Sd लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd ह० उदयराज उज्वल
Sd Nami chand Jain
Civil Judge Jodhpur

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

संक्षिप्त नाम	पूर्ण नाम	रचयिता का नाम
अनेक० अनेका०	अनेकार्थी कोश	उदयराम बारहठ
अमरत	अमरत सागर	महा० प्रतापसिंह जयपुर
अ० मा०	अवधान माळा	उदयराम बारहठ
अ० वचनिका	अचलदास खीची री वचनिका	सिवदास गाडण
ऊ० का०	ऊमर काव्य	ऊमरदान लाळस
उ० र०	उक्ति रत्नाकर	साधु सुन्दरगणि
एका०	एकाक्षरी नाम माळा	वीरभाण रतनू उदयराम बारहठ
ऐ० जै० का० स०	ऐतिहासिक जैन काव्य सग्रह	सपा० अगरचन्द नाहटा
क० कु० बो०	कविकुळ बोध	उदयराम बारहठ
का० दे० प्र०	कान्हडदे प्रबंध	पद्मनाभ
गी० रा०	गीत रामायण	अमृतलाल माथुर
गु० रू० बं०	गुण रूपक बंध	केसोदास गाडण
गो० रू०	गोगादे रूपक	पहाडखा आढौ
डिं० को०	डिंगळ कोश	कविराजा मुरारीदान बूंदी
डिं० ना० मा०	डिंगळ नाम माळा	हररराज कवि
ढो० मा०	ढोला मारू	सम्पादकत्रय रामसिंह तँवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी
द० दा०	दयाळदास री ख्यात	दयाळदास सिढायच
द० वि०	दळपत विलास	सम्पादक रावत सारस्वत
देवि०	देवियाण	ईसरदास बारहठ
ध० व० ग्र०	धर्म वर्द्धन ग्रन्थावलि	सपा० अगरचन्द नाहटा
ना० मा०	नाम माळा	अज्ञात
ना० डिं० को०	नागराज डिंगळ कोश	नागराज पिंगळ
ना० द०	नागदमण	साइया झूला
नी० प्र०	नीती प्रकास	सगरामसिंह मुहणोत
नैणसी	नैणसी री ख्यात	मुहता नैणसी
पं० पं० च०	पंच पडव चरित्र	सालिभद्र सूरि
प० च० चौ०	पद्मिनी चरित्र चौपाई	कवि लब्धोदय
पा० प्र०	पाबू प्रकास	मोडजी आसियौ
पिं० प्र०	पिंगळ प्रकास	हमीरदान रतनू
पी० ग्रं०	पीरदान ग्रन्थावळि	पीरदान लाळस
पे० रू०	पेमसिंह रूपक	प्रतापदान गाडण
बां० दा०	बाकीदास ग्रन्थावळी	बाकीदास
बां० दा० ख्या०	बांकीदास री ख्यात	बाकीदास
बी० दे०	बीसलदे रासौ	कवि नाल्ह
भ० मा०	भक्तमाळ	ब्रह्मदास
भिक्खु०	भिक्खु द्दष्टान्त	भीखणजी
भि० द्र०	"	"
मा० कां० प्र०.	माधवानल काम कदला प्रबंध	कवि गणपति

संकेत और चिन्ह

साकेतिक रूप	पूरा नाम	साकेतिक रूप	पूरा नाम
अं०	अंग्रेजी भाषा	भू०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकमक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकमक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मराठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	मह० महत्व	महत्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इरा०	इरानी भाषा	यौ०	यौगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभय लिंग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म वा० रू०	कर्मवाच्य रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमान काल
क्रि० अ०	क्रिया अकमक	व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकमक	शक०	शकन्ध्वादि
गु०	गुजराती भाषा	सं०	संस्कृत
गो० र०	गोरादि	सं० उ०	संज्ञा उभय लिंग
ची०	चीनी भाषा	सं० पु०	संज्ञा पुल्लिंग
जा०	जापानी भाषा	सं० स्त्री०	संज्ञा स्त्रीलिंग
डिं०	डिंगळ	स०	सकमक
तु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकमक रूप
पं०	पंजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्री लिंग
पु०	पुल्लिंग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुर्त्त०	पुर्त्तगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृष०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	क्व० प्र०	क्वचित प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० खि०	जगती खिड़ियौ
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बंधी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखो
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
फ्रा०	फ्रांसीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाओ
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भाव वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण

— —

मा० म०-	मारवाड़ मर्दुमशुमारी रिपोर्ट	मुन्शी देवीप्रसाद
मा० वचनिका	माताजी री वचनिका	जती जयचन्द
मीरां	मीरा बाई	
मेघ०	मेघदूत	नारायणसिंह भाटी
मे० म०	मेहाईमहिमा	हिंगलाजदान कवियो
र० ज० प्र०	रघुवरजस प्रकास	किसनो ग्राढो
र० रू०	रघुनाथ रूपक	मछाराम
र० वचनिका	रतनसिंह महेसदासोत री वचनिका	जग्गो खिडियो
र० हमीर	रतना हमीर री वारता	महा० मानसिह जोधपुर
रा० जै० रासौ	राउ जैतसी रौ रासौ	अज्ञात
रा० जै छंद	राउ जैतसी रौ छंद	बीठू सूजौ नगराजोत
रां० रा०	रामरासौ	माधोदास दधवाड़ियो
रा० रू०	राज रूपक	वीरभाण रतनू
रा० व० वि०	राठौड़ वंस री विगत	अज्ञात
रा० सा० सं०	राजस्थानी साहित्य संग्रह	संग्रह, सम्पादन स्वामि नरोत्तमदास
ल० पिं०	लखपत पिंगळ	हमीरदान रतनू
ला० रा०	लावा रासौ	गोपाळदान कवियो
लो० गी०	राजस्थानी लोकगीत	संग्रह सम्पादन
वं० भा०	वंश भास्कर	सूयमल मीसण
व० स०	वरणक समुच्चय	सम्पादक भोगीलाल सांडेसरा
वि० कु०	विनयकुमार कृति कुसुमांजलि	कविवर विनयचंद्र
वि० सिं०	विडदसिणगार	कविराज करणीदान कवियो
वी० मा०	वीरमायण	बहादर ढाढी
वी० स०	वीर सतसई	सूयमल मीसण
वी० स० टी	वीर सतसई री टीका	किसारदान बारहठ
वेलि०	वेलि क्रिसन रुकमणीरी	अज्ञात
वेलि टी०	वेलिक्रिसन रुकमणी री टीका	अज्ञात
शा० हो०	शालि होत्र	अज्ञात
शि० वं०	शिखर वंशोत्पत्ति	गोपाळदान कवियो
शि० सु० रू०	शिवदान सुजस रूपक	लालदान बारहठ
स० कु०	समय सुंदर कृति कुसुमांजलि	महाकवि समयसुन्दर
सू० प्र०	सूरज प्रकाश	कविराजा करणीदान
ह० नां० मा०	हमीर नाम माळा	हमीरदान रतनू
ह० पु० वा०	श्रीहरीपुरुषजी की वाणी	श्री हरीपुरुषजी
ह० र०	हरिरस	ईसरदास बारहठ
हा० भा०	हाला झाला रा कुंडळिया	

चिन्ह

चिन्ह का स्वरूप	स्थान	प्रयोजन
	शब्द के आगे	यह शब्द कविता में ही प्रयोग होता है।
	बीच के अक्षरों के बीच सिर पर	यह ध्वनि-लोपिक चिन्ह है, जहां 'ह' की ध्वनी लोप होती है वहां आता है।
	शब्द के नीचे	उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
	शब्द के दोनो ओर सिरो पर	व्यक्ति याचक संज्ञा का सूचक

राजस्थांनी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[तृतीय खण्ड]

(तृतीय जिल्द)

भ—देवनागरी लिपि का चौबीसवा व प वर्ग का चौथा वर्ण जो भाषा विज्ञान व व्याकरण की दृष्टि से द्वयोष्ठ्य अघोष, महाप्राण तथा स्पर्श व्यंजन है। पर अंत्य भ गशत अघोष रहता है। इसका अल्प प्राण ब है।

भइस—देखो 'भैंस' (रू भे)

भइसौ—देखो 'भैंसौ' (रू भे)
(स्त्री० भइस)

भकारी—स० स्त्री० [स० भकार+ङीप] १ भुनगा।
२ एक प्रकार का छोटा मच्छर जो चौपायों को काटता है।

भख—वि०—१ निधन, कंगाल, भूखा।
उ०—मन नक पक कुमारग मार्थे, एवड खक पवित्र इसौ। दिल वड भख 'गभीर' न दूजौ, जाता सरा 'गभीर' जिसौ।
—ठाकर गभीरसिंघ री गीत

भग—स० पु० [स० भङ्ग] १ टूटने की क्रिया या भाव, टूट।
२ दरार।
३ घाव, क्षत।
उ०—गुण बाण सीघणि गाढ, वाहति तारणक वाढ। बदूक बाण मार, भालोड भग सभार।—गु रू ब
४ पथकता, अलहदगी।
५ अश, हिस्सा, टुकडा, टूक।
६ निश्चय प्रतीति, नियम आदि म पडने वाला अ तर।
७ किसी काय को स्थगित करने की क्रिया।
८ बाधा, विघ्न, रुकावट, गडबडी।
उ०—ताहरा राजा लीलानु बोलाई। बोलाइ नै वात पूछी। थारी तपस्या मे भग क्यु हुवौ। मोनु साच कहि।
—देवजी बगडावता री वात
९ प्रतिबध, मुअत्तली।
१० भाग जाने की क्रिया।
११ पराजय।
१२ असफलता।
१३ नाश, बरबादी।
उ०—सगळ हुवा कपडा स ळळ, भमळ हुवौ घट भग। कमळ बदन कुम्हलायगौ, अमल खायगौ अग।—ऊ का
१४ कत्तव्य व्यवस्था आदि का बीच म कुछ समय के लिए रुकना और ठीक तरह से न चल सकना।
१५ घबराहट, भय आदि के कारण जन समूह मे होने वाली हल चल, खलबली भगदड।
उ०—१ जडामूल उपाडि, भाजि खिडकीगढ दखरण। हबसी-वळ हेडव मारि लग अभगी पट्टण। खान देस मरहट्ट बराड मुलक वस कीधा वका, सेतबध रामेस भग पडियौ गढ लका।
—गु रू ब

उ०—२ नमै जैसाण', 'खूमाण' धीरै नही, भग उतराध, गुज-रात भीता। हठि चढै पूठि गसि पूठि ' जोवाहरै, जुनै गढ सनढ अणजीत जीता।—महाराजा रायसिंघ रौ गीत
१६ व्यस।
उ०—ताखूटानी पोळ घोडा १८० ००० अनै हाथी १४,००० एतलौ दळ ताखोटानी पोळ थौ। चीत्रोड भग हुवौ। तठै राणा राणी करमेती नू जुहर कियौ।—नैणसी
१७ फेर, मोड।
१८ तह, तहरिया।
१९ सिकुडन।
२० जल माग, नहर।
२१ माग, रास्ता।
उ०—चौसरै थरा नर कागुरै चाढ़िया, ऊगरा भुजा डडा अडीया, भणी रा माथ नाती दुरग पताग्ता, प्रथी रा गिरवरा भग पडीया।
—गु रू ब
२२ छल, धोखा।
२३ अदितवात रोग।
२४ एक देश का नाम।
उ०—मगधमडल अग वग कलिंग कासी [कोसल कुरू] कुसट्ट पचाल जागल [सुराष्ट] विदेह सडिल्ल मलय वत्स मत्स [वरणा] दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भग [वट्टा] कुणाल लाट केकय मडला-रद्ध इत्यरद्धपचविसति जनपदा आरया।—व स
२५ हानि, क्षति।
उ०—पछ पोहकर री पूजा करण लागा तरै श्री रीसाई तीस-रियौ। कह्यौ माहरौ मान भग कीयौ।—नणसी
२६ देखो 'वग' (रू भे)
उ०—चडस माय बैठ्यौ मिनख ऊचौ मूडौ करनै कह्यौ—म्है नी भूत हू गर नी कोई पलीत। थार सरीसौ ई मिनख हू। रात रा पाज माथा सू सूतौ सूतौ नीद रे माय थरकीजगौ। इण चडस रा भग देखनै माय बठग्यौ।—फुलवाडी
२७ देखो भाग' (रू भे)
उ०—चालाक तौ चड्ड पिए, भोळा पीए भग। अफीण सू आगा रहे, रजपूता नै रग।—ऊ का

भगअहारी—वि० पौ० [स० भगा+आहार+रा० प्र० ई] भग पीने वाला।
स० पु०—१ शिव, महादेव। (डि को)
२ भाग पीने वाला व्यक्ति।

भगड—देखो 'भगेडी' (मह, रू भे)

भगण—वि०—१ तोडने फोडने वाला।
२ देखो 'भगी' (स्त्री०)

भंगणौ, भंगबौ–क्रि० अ०/स०[सं० भञ्ज्+घञ्] १ टूटना, भग्न होना, खण्डित होना ।

२ किसी से हार जाना, दबना ।

३ मिटना, नष्ट होना ।

उ०—पकवाने पाने फळै सुपुहपै, सुरंगै वसत्रै दरब सब । पूजियै कसटि **भंगि** वनसपति, प्रसूतिका होळिका प्रब—वेलि

४ भग्न करना, तोड़ना ।

५ किसी को हराना, दबाना ।

६ मिटाना, नष्ट करना ।

भंगणहार, हारौ (हारी), भंगणियौ—वि० ।

भंगाड़णौ, भंगाड़बौ, भंगाणौ, भंगाबौ, भंगावणौ, भंगावबौ प्रे० रू० ।

भंगिओड़ौ, भंगियोड़ौ, भंग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भंगीजणौ, भंगीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।

भंगबिहारी–सं० पु० यौ० [सं० भंगा+विहारिन्] शिव, महादेव ।

भंगराज–सं० पु० [सं० भृंगराज] १ कोयल के आकार की काले रंग की एक चिड़िया ।

२ देखो 'भांगरौ' (रू. भे.)

भंगरौ—देखो 'भांगरौ' (रू. भे.)

भंगवट, भंगवट्ट, भंगवाट—१ देखो 'भगवट' (रू. भे.)

उ०—१ पड़ियौ नेजाळ विढ़े पाटरियै, **भंगवट** वाट न क्रम भरिया । 'अजमल' तणौ खड़ग रै ओळै, अधिपति मोटा ऊबरिया ।
—अजा राजधरौत री गीत

उ०—२ मिटियै निज दळै मिटत जौ 'मधकर', सूर खत्री **भंगवाट** सहि । मेर डिगत सायर क्रम लोपत, अरक मिटत इळ तजत अहि ।—महेसदास कल्यांणमलोत सांखला री गीत

उ०—३ घण असि दुरिज्जण घड़िय घाइ, रइणाइर बाधउ जोधि राइ । जोधि मेवाड़ काढिय जड़ांह, **भंगवट्ट** दीध मोटां भडांह ।—रा. ज. सी.

भंगांण–सं० स्त्री०—१ भागने की क्रिया या भाव, भगदड़ ।

उ०—देवरावर अत घड़ दीठी, भाटियै **भंगांण** । उळट ढाहण वडा अनडां, मिळी छडै मांण ।—हरखौ बारठ

उ०—२ पलांण्यउ अलावदीन, जळ थळ अकुळांणा । राय रांणा खलभळ्या, पड्या दह दिसि **भंगांणा** ।—प. च. चौ.

२ धाक, भय, रौब ।

उ०—१ माल ल्यावै खावै अर वांसै आवै तैनूं मा'र नांखै । तै सुं इयै रौ वडौ नांम अर देपाळ रा बडा **भंगांणा** पड़ै ।
—देपाल धंध री वात

रू० भे०—भगांणा ।

भंगार—देखो 'बघार' (रू. भे.)

भंगारणौ, भंगारबौ—देखो 'बघारणौ, बघारबौ' (रू. भे.)

भंगारियोड़ौ—देखो 'बघारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भंगारियोड़ी)

भंगि–सं० स्त्री० [सं०] १ तरीका, ढंग ।

उ०—१ आकुळी कुळवट ओपिग गोपिग रमइ रंगि, कांस केसि चांणूर ए चूरण जे बहु **भंगि** । —अज्ञात सूरि

उ०—२ गुरि बीनविउ अवसरि राउ 'सबिहुं बेठां करउ पसाउ । तुम्हि मंडावउ नवउ अखाडउ नव नव **भंगि** पुत्र रमाडउ' ।
—पं. पं. च.

२ शरीर के अंगों की ऐसी विशिष्ट मुद्रा या संचालन जो किसी प्रकार के मनोभाव का सूचक होती है ।

३ टूटन, फूटन ।

४ टेढ़ा, सकुड़न, घुमाव ।

५ फरेब, जाल ।

६ विन्यास, विच्छेद ।

७ व्यंग्योक्ति ।

८ रसिकतापूर्ण उत्तर ।

भंगी–सं० पु० [स्त्री० भंगण] १ एक अस्पृश्य जाति या इस जाति का व्यक्ति, हरिजन ।

उ०—जापा में खावण वाळी, गैलां में पोढ़ण वाली । **भंगण** कोनी जकौ थारी फूरा बुवार दूं । —लो. गी.

अल्पा०—भंगीड़ौ ।

स० पु० [सं० भंग+ङीप] १ रेखाओं के झुकाव से खींचा गया कोई चित्र या बेल-बूंट ।

[सं० भंगिन्] २ शिव, महादेव ।

३ देखो 'भंगि' (रू. भे.)

भंगीड़ौ—देखो 'भंगी' (अल्पा., रू. भे.)

भंगीवाड़ौ–सं० पु० यौ० [राज० भंगी+सं० पाटक+रा० प्र० औ]

१ भंगियों का मोहल्ला ।

२ गंदा स्थान ।

३ गंदगी ।

भंगुर–वि० [सं० भंज्+घुरच्] १ टूट-फूट कर विघटित होने वाला ।

२ नदी का मोड़ ।

३ नाश होने वाला ।

यौ०—क्षण-भंगुर ।

भंगेड़ी–वि० [सं० भंगा] बहुत अधिक भांग पीने वाला ।

रू० भे०—'भांगेड़ी' ।

अल्पा०—भंगेड़ौ, भंगेरौ ।

भंगेड़ौ, भंगेरौ—देखो 'भंगेड़ी' (अल्पा., रू. भे.)

भंगेळ, भंगेळियौ–वि० [सं० भंग:+रा० प्र० एल, एलियौ] भागने वाला ।

उ०—१ लूटवा वधै फौजां लगस, धमस तुरां भाजै धरा । मिळ चली प्रजा भंगेळ मग, लग दिल्ली लग आगरा ।—रा. रू.

उ०—२ जोड़ै दूंद अनेक यां, दोड़ै तहूंवरखांन । मुरधर प्रजा भंगेळियां, किया गिरंदे थांन ।—रा. रू.

भंज—सं० स्त्री०—१ लंब, दूरी ।

उ०—आई घटा उतराद री, भंज सौ कोसां बीच । मेड़ां मांडिया मांचणा, किल भरमाया कीच ।—अज्ञात

२ तोड़ने या भंजन करने की क्रिया या भाव ।

३ वह फसल जो किसी कारणवश खराब हो गई हो एवं उस पर दुबारा फसल बोई जाय ।

४ विघ्न, बाधा, अड़चन, रुकावट ।

उ०—अै अेकला ई इण धर रा ठेकेदार कीकर बणै । म्हारै मरियां तौ ईण गवाड़ी री सुख-सांयत में किणी बात री भंज नीं पड़ैला ।—फुलवाड़ी

भंजक—वि० [सं० भंज्+ण्वुल्—अक] १ तोड़ने-फोड़ने वाला, भंजन करने वाला ।

२ विघ्न या बाधा डालने वाला ।

भंजगी—सं० स्त्री० [सं० भञ्ज्] विघ्न, बाधा ।

भंजण—सं० पु० [सं० भंज+ल्युट्—अन्] १ तोड़ने या भंग करने की क्रिया ।

२ ध्वंस, नाश ।

३ खंडन, भंग ।

४ संहार ।

५ पराजय, हार ।

क्रि० प्र०—करणौ, होणौ ।

वि० (समस्त पदों के अन्त में) १ मिटाने वाला, नाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।

उ०—१ आखी मुख राजा 'अजन', साखी तिण संसार । अवतरियौ म्हारै 'अभौ', भौ भंजण अवतार ।—रा. रू.

उ०—२ दीनदयाळ पाळ कर गौ दुज, निज प्रिया सिया मनरंजण । जाप 'किसन' मां बाप रांम जस, भव त्रय ताप पाप दळ भंजण ।—र. ज. प्र.

२ मारने वाला, संहार करने वाला ।

उ०—१ कीया कटकां 'केहरी', आगळ आपाणां । दो मझ 'रासा' दूसरा, भंजण सुरताणां ।—द. दा.

उ०—२ उठियौ तिणवार वडौ उतळीबळ, सूरजसिंघ सह (स) बळं । कोपनळ काळ भुजाळ कमंधज दोमजि भंजण सत्रु दळं ।

—गु. रू. बं.

३ पराजित करने वाला, हराने वाला ।

उ०—पाटप्पबै उद्धरण दुजड, भंजण दळ लाखां । जुरासिंध सारिखां, दळण दाणवां असंखां ।—गु. रू. बं.

भंजणौ—वि० [सं० भंज] १ मिटाने वाला, नाश करने वाला ।

उ०—'भारांणी' दुख भंजणौ, गुण रंजणौ गहीर । जास खजांनै जात री, साहिब कीधौ सीर ।—बां. दा.

२ पराजित करने वाला ।

उ०—१ वार निरधार आधार, आधार आलम वणौ, सरण साधार जिण विरद सोहै, भिड़ै दळ भंजणा ।—र. ज. प्र.

उ०—२ गढां अगंजा गंजणा, भिड़ भंजणा अभंग । हैमर उरि धर हक्किया, बेऊं थाट बरंग ।—महाराजा करणसिंह रौ गीत

३ संहार करने वाला ।

उ०—१ सिर-जोर खग दत संजणा, पह रोर आंमय पंजणा । भड़ जुध असंतां भंजणा, रघुराज संतां रंजणा ।—र. ज. प्र.

४ तोड़ने वाला, टुकड़े करने वाला ।

५ भागने वाला, डरपोक ।

उ०—१ राठोड़ां री कुळत्रिया, गीळा अभ न भरंत । ज्यां भरतार न भंजणा, से भंजणा न जणंत ।

—कहवाट सरवहिया री वात

उ०—२ जे जाया रण भंजणा इण सूं भली अहूत । जिणज्यौ रजपूतांणियां, 'पातल' जिसा सपूत ।—जैतदांन बारहठ

भंजणौ, भंजबौ—क्रि० अ० [सं० भंज्] १ मिटना, नाश होना ।

२ पराजित होना ।

३ संहार होना ।

४ टूटना ।

उ०—अवज्झड़ त्रिज्झड़ भट्ट असंध, कटै कर कोपर काळिज कंध । भड़ां धड़ भंजि हुअै बि बि भग्ग, खड़क्खड़ ढल्ल झड़ज्झड़ खग्ग ।

—र. वचनिका

५ डरकर भागना ।

६ रुपये का छोटे सिक्कों में परिवर्त्तन होना ।

७ देखो 'भांजणौ, भांजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ देवी रूप अंधेर रै सूर गंजै, देवी सूरजं रूप अंधेर भंजै ।

—देवि.

उ०—२ सेन अकब्बर तापड़े, आप गयौ खहमग्ग । ज्यों कस भंजै तन गळै, घण गोळक तन लग्ग ।—रा. रू.

उ०—३ गहीय पभावइ रिउ हणिउ भंजिउ मारग कूडु । धरि पहुत्तउ वेउ मित्त लेउ हेमगडु मणिचूडु ।—पं. पं. च.

उ०—४ भिड़तै दोइ पतिसाह तणा दळ भंजिया । तैं छेळि साहजहान अगंजी गंजिया ।—महाराज करणसिंह बीकानेर रौ गीत

उ०—महाराजा वीर विक्रमादित्य, पर-दुख भंजणहार उज्जेण मांही राज करै ।—सिंघासण बत्तीसी

भंजणहार, हारौ (हारी), **भंजणियौ**—वि० ।

भंजिओड़ौ, भंजियोड़ौ, भंज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भंजीजणौ, भंजीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।

भजणौ, भजबौ—रू० भे० ।

भंजाड़णौ, भंजाड़बौ—देखो 'भंजाणौ, भंजाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जननी धिन जे जन्मिया, 'भीमाजण' कुल भांण । 'माल' **भंजाड़** मेड़तै, अरणभंग फेरी आंण ।—द. दा.

उ०—२ नूरअली जखमी हुय नाठौ, दूजां तणां किया सिर दूर । देह **भंजाड़** विरोळ दिली दळ, हूं आयौ रावळी हजूर ।

—सबलसिंह भाटी रौ गीत

भंजाड़णहार, हारौ (हारी), भंजाड़णियौ—वि० ।

भंजाड़िओड़ौ, भंजाड़ियोड़ौ, भंजाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भंजाड़ीजणौ, भंजाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भंजाड़ियोड़ौ—१ देखो 'भंजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भंजाड़ियोड़ी)

भंजाणौ, भंजाबौ—क्रि० स० [राज० भंजणौ क्रि० का प्रे०रू०] १ मिटवाना, नाश करवाना ।

२ पराजित करवाना ।

३ संहार करवाना ।

४ तुड़वाना, टुकड़े करवाना ।

उ०—तरै कांन्ह माहावत नूं कह्यौ—'हूं बीच आऊं छूं मोनूं बीच देनै हाथी कनां किवाड़ **भंजाय** नाख ।—नैणसी

५ भगवाना ।

६ रुपयों को छोटे सिक्कों में परिवर्त्तन करवाना ।

७ मुड़वाना ।

८ तह करवाना ।

९ खर्च करवाना ।

१० नियम से विचलित करवाना, प्रण तुड़वाना ।

उ०—सूयावडि दूखण घणा, वलि गरभ गलाया । जीवांणी ढोल्या घड़ा, सील वरत **भंजाया** ।—स. कु.

भंजायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मिटवाया हुआ, नाश कराया हुआ. २ पराजित कराया हुआ. ३ संहार कराया हुआ. ४ तुड़वाया हुआ. ५ डरवाकर भगवाया हुआ. ६ रुपये का छोटे सिक्कों में परिवर्त्तन करवाया हुआ. ७ मुड़वाया हुआ. ८ तह करवाया हुआ. ९ खर्च करवाया हुआ. १० नियम से विचलित करवाया हुआ, प्रण तुड़वाया हुआ.

भंजाणहार, हारौ (हारी), भंजाणियौ—वि० ।

भंजायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भंजाईजणौ, भंजाईजबौ—कर्म वा० ।

भंजाड़णौ, भंजाड़बौ, भंजावणौ, भंजावबौ, भजाड़णौ, भजाड़बौ, भजाणौ, भजाबौ—रू० भे० ।

भंजावणौ, भंजावबौ—देखो 'भंजाणौ, भंजाबौ' (रू. भे.)

भंजावणहार, हारौ (हारी), भंजावणियौ—वि० ।

भंजाविओड़ौ, भंजावियोड़ौ, भंजाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भंजावीजणौ, भंजावीजबौ—कर्म वा० ।

भंजाविओड़ौ—देखो 'भंजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भंजावियोड़ी)

भंड—सं० पु० [सं० भण्ड] १ एक देश का नाम ।

२ देखो 'भांडौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ सप्त धात री रोगोकुलोजी, कान्ही माही तणी **भंड** । एहवी देह मांनव तणी जी, ते पिण जावणी थंड ।—जयवांणी

३ देखो 'भांड' (रू. भे.)

उ०—२ वेस्यानइं वाली कहिउ, राजि न आविसि रंड । विरति परिही विहिन्वी दीउं, भला भवाईया **भंड** ।—मा. कां. प्र.

भंडग—सं० पु० [सं० भाण्डक] १ मिट्टी का बर्तन ।

२ संन्यासियों का एक उपकरण ।

भंडण—सं० पु० [सं० भंड] १ क्षति, हानि ।

२ कवच ।

३ निन्दा ।

भंडणौ, भंडबौ—देखो 'भांडणौ, भांडबौ' (रू. भे.)

भंडणहार, हारौ (हारी), भंडणियौ—वि० ।

भंडिओड़ौ, भंडियोड़ौ, भंड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भंडीजणौ, भंडीजबौ—कर्म वा० ।

भंडफोड़—देखो 'भंडाफोड़' (रू. भे.)

भंडवाडौ—सं० पु०—भांडने की क्रिया, निंदा, अपकीर्ति ।

भंडाइ, भंडाई—देखो 'भांडाई' (रू. भे.)

उ०—साजन को यौ गुंडालाल, अड़ियौ झटपट नेग चुकाय । भांड **भंडाई** मांग रह्या, इन भांडां को नेग चुकाय ।—लो. गी.

भंडाणौ, भंडाबौ [भांडणौ क्रि० का० प्रे० रू०] १ निन्दा कराना, अपकीर्ति कराना ।

२ बिगाड़ना, दूषित करना ।

उ०—माधव साधन अरठ मंडायौ, खारौ मुख ले घणौ खिडायौ । छाक पियौ जिण पेट छुड़ायौ, भारी पांणी जन्म **भंडायौ** ।

—ऊ. का.

भंडाणहार, हारौ (हारी), भंडाणियौ—वि० ।

भंडायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भंडाईजणौ, भंडाईजबौ—कर्म वा० ।

भंडावणौ, भंडावबौ—रू० भे० ।

भंडाफोड़—सं० पु० [सं– भाण्ड+स्फोट] किसी गुप्त बात का रहस्योद्घाटन ।

क्रि० प्र०—करणौ, कराणौ, होणौ ।

रू० भे०—भंडफोड़ ।

भंडार, भंडारउं, भंडारउ–सं० पु० [सं० भाण्डागारम्] १ खजाना, धनागार, कोष ।

उ०—१ परिवार पूत पोत्रे पड़पोत्रे, अरु साहण भंडार इम । जण रूखमिणि हरि वेलि जपंतां, जग पुड़ि वाधै वेलि जिम ।—वेलि

उ०—२ दादू करता करै निमख में, ठाली भरै भंडार । भरिया गह ठाली करै, ऐसा सिरजनहार ।—दादूबांणी

२ भोजन, रसोई ।

उ०—१ नारद हेरउं करइ, नवखंडि फिरइ, धनद यज्ञ भंडारउं करइं इसिउ रावण नरेस्वर ।—व. स.

उ०—२ हा ! सुन्दर सुख सागरू, हा ! मोटिम भंडारउ रे हा ! रीहड़ कुल सेहरउ, हा ! गिरूवा गणधारउ रे ।

—कवि समय प्रमोद

३ किसी वस्तु या बात का बहुत बड़ा आधान या आश्रय स्थान ।

उ०—जड़ाव मासी गीत, ओखांणा अर बातां रौ अखूट भंडार ।

—फुलवाड़ी

३ वह कमरा या कोठरी जिसमें भोजन सामग्री, बर्त्तन आदि रखे जाते हैं ।

४ मालगोदाम ।

५ देखो 'भंडारौ' (मह., रू. भे.)

रू० भे०—भंडाहर, भांडार ।

अल्पा०—भंडारियौ ।

भंडारणौ, भंडारबौ–क्रि० स० [सं० भाण्डारणम्] गर्भ की जरा को भूमि में गाड़ना ।

भंडारियोड़ौ–भू० का० कृ०—भूमि में गाड़ी हुई गर्भ की जरा ।

भंडारियौ–सं० पु० [सं० भाण्डागार] १ दीवार में बना हुआ खानेदार छोटा ताखा या अल्मारी ।

२ बैलगाड़ी या तांगे आदि वाहनों में औजार आदि रखने का छोटा संदूकनुमा स्थान ।

३ एक प्रकार का सर्प विशेष ।

उ०—कांम कटारउ वांधइं, धनुरि बांण सांधइ, अनंत वासिग अम्रत झरइ, तक्षक करकोंट भंडारिया, कुलिक उपकुलिक पाय चांपइ ।—व. स.

४ देखो 'भंडार' (अल्पा., रू. भे.)

५ देखो 'भंडारी' (अल्पा., रू. भे.)

भंडारी–सं० पु० [सं० भाण्डागारिक] १ भंडार का अध्यक्ष ।

२ रसोईया ।

३ चौहान वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

सं० स्त्री०—४ पृथ्वी, धरती । (डिं. को.)

५ छोटी कोठरी, खजाना ।

अल्पा०—भंडारियौ ।

भंडारौ–सं० पु० [सं० भाण्डाहार] १ संन्यासियों या साधुओं को खिलाया जाने वाला भोज ।

२ दशनांमी एवं राधास्वामी साधुओं में मृत्यु के पश्चात् किया जाने वाला बड़ा भोज ।

उ०—कोटै उत्तमगिरजी रा विसगुगिरजी, बखतगिर, दोयां चेलां भंडारौ आछौ कियौ आं लारै ।—बां. दा. ख्यात

३ देखो 'भंडार' (मह., रू. भे.)

उ०—मरण तणौ डर कोई नहिं, मरणा है इक बारा रे । बहुत निवाज वडा करूं, द्युं बहु देस भंडारौ रे ।—प. च. चौ.

भंडावणौ, भंडावबौ—देखो 'भंडाणौ, भंडाबौ' (रू. भे.)

भंडाहर—देखो 'भंडार' (रू. भे.)

भंडियोड़ौ—देखो भांडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भंडियोड़ी)

भंडीस–वि० – विध्वंश करने वाला ।

सं० पु०—दक्ष प्रजापति ।

उ०—जोमंगी भंडीस ज्याग आयौ ज्युं नंडीस जायौ, राजपुत्री आयौ ज्युं थंडीस वाळै रेस । ओ डंडीस कसीसतौ लांगड़ौ कपीस आयौ, कोडंडीस कसीसतौ आयौ गुड़ाकेस ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

भंडेळ–सं० पु० [सं० भाण्ड+रा० प्र० एल] बर्त्तनों की ऊपर नीचे के क्रम से जमी हुई कतार ।

भंडेलौ–सं० पु०—मुसलमान जाति का भांड । (मा. म.)

भंडोपकरण–सं० पु० [सं० भण्डा+उपकरण] गृहस्थ संबंधी सामान ।

उ०—अंतेउर परिवार ले, भंडोपकरण संभाय । 'वीतभय' सेती निकली, 'चंपा' नगरी जाय ।—जयवांणी

भंडौ—देखो 'भांडौ' (रू. भे.)

भंणकणौ, भंणकबौ—देखो 'भणकणौ भणकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रत्ता पी गणंक्के, कै भंणक्के ये बीमांण रंभा, लोयणां भणाक डंड मणंक्का लेवांण । हुवै पखां भड़क्का ग्रीधांण बीर है हणक्के, कौमरां संणक्के बाजै खड़क्का केवांण ।

—बहादरसिंह मेड़तिया रौ गीत

भंणकणहार, हारौ (हारी), भंणकणियौ–वि० ।

भंणकिओड़ौ, भंणकियोड़ौ, भंणक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भंणकीजणौ, भंणकीजबौ—कर्म वा० ।

भंणकियोड़ौ—देखो 'भणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भंणकियोड़ी)

भंणक्कणौ, भंणक्कबौ—देखो 'भणकणौ, भणकबौ' (रू. भे.)

भंणक्कणहार, हारौ (हारी), भंणक्कणियौ—वि० ।

भंणक्किओड़ौ, भंणक्कियोड़ौ, भंणक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भंणक्कीजणौ, भंणक्कीजबौ—भाव वा० ।

भंणक्कियोड़ौ—देखो 'भणक्कियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भणक्कियोड़ी)

भंणणौ, भंणबौ—देखो 'भणणौ, भणबौ' (रू. भे.)
भंणणहार, हारौ (हारी), भंणणियौ—वि० ।
भंणिओड़ौ, भंणियोड़ौ, भंण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भंणीजणौ, भंणीजबौ—कर्म वा० ।

भंणियोड़ौ—देखो 'भणियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भंणियोड़ी)

भंत, भंति, भंती—१ देखो 'भांत' (रू. भे.)
२ देखो 'भांति' (रू. भे.)
उ०—१ ज्यूं कांमण पोसाग कर, पाछा नूं पेखंत । भागळ पाछे भाळ ही, भाजंतौ इण **भंत** ।—बां. दा.
उ०—२ सउदागर राजा कन्है, अरज करइ एकंति । साल्हकुंवर सूं वीनती, कहि कुण दाखूं **भंति** ।—ढो. मा.
उ०—३ राजा झूलरि रांणिया, सोहै ईहीं **भंति** । किरि वेधांणै किरतियां, चंदौ पूनम रति ।—गु. रू. बं.
उ०—४ दास पंच अग्र रहै दुरंती, भारत पांच पांडवां **भंती** । भटकै क्रोध झाळ धुबि भूमौ (भौ), अरक उठै थांमै रथ ऊभौ ।
—सू. प्र.

भंदोळी—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)
भंदोळौ—देखो 'बदोळौ' (रू. भे.)

भंदौ—देखो 'बांध' (रू. भे.)
उ०—जद चंबळ का **भंदा** पर ही पीळी माटी पोती जावै, कोई पूछै 'या कांई छै ?' तो वेलदार तक झल्लावै । 'नेरू', 'नंदा', 'देसाई' नै ही जद ईं की चिंता कोनै, चावै जद ही **भंदौ** टूट'र भारत की जनता बै जावै ।—तिरसा

भंफोड़—देखो 'भूफोड़' (रू. भे.)
उ०—**भंफोड़-स्रं**गी तूंबा तुंबी, ऊंची केल त्रिसूळ है । सैल-घोरिया, वैल-मुरड़ा, मुरधर संकर मूळ है ।—दसदेव

भंभ-सं० पु०—१ धूंआ ।
२ अधिक बालों का समूह ।

भंभर-वि० [सं० विह्वल] १ घबराया हुआ, व्याकुल ।
उ०—भड खळिया **भंभर**, वेहक वज्जर, वढ़िया पक्खर, विहंड वपै । पळ खंडिया पंजर पड़ै पंचाहर, जे जै संकर सकति जपै ।
—गु. रू. बं.
२ भयभीत, भयातुर ।

भंभरभोळौ, भंभलभोलौ-वि० [सं० विह्वल+भ्रमुल्लक प्रा० भिब्भल-भिंभल+भोल्लअ—भोलअ] (स्त्री० भंभरभोळी) १ भोला, सरल, सीधा ।
उ०—१ **भंभरभोळी** पहिर चोळी, अवर दक्षण चीर । चालतां गजहंस गयणी, बोलतीय गंभीर ।—रुक्मणि मंगळ
उ०—२ **भंभरभोली** नेमि जिण वीवाह सुणेई, नेह गहिल्ली गोरडी हियडइ विहसेई ।—नेमिनाथ फागु
उ०—३ **भंभलभोलिय** वाल रंगि नव फागु रमंते, दुक्खिय विरहिणी नयण नीरू नीझरण झरंते । नेमिनाथ फागु
रू० भे०— भमरभोळिउ, भमरभोलिय, भांमरभोळय, भांमरभोळवौ, भांमरभोळी, भांभळभोळी ।

भंभा-सं० पु०—एक प्रकार का वाद्य ।
उ०—**भंभा** गडंग मद्दल कडंब झल्लरि हुडुक्क कंसाला । काहुल तिलिमा वंसो संखो पणवो य बारसमौ ।—व. स.

भंभार-वि०—१ बहुत बड़ा ।
उ० छुरूं खजरूं के विहार सूर संबरूं असे दरसाए सुपेत लाल **भंभार** घाट मानूं नारनौळ की लूट खूटै । - सू. प्र.
२ देखो बंबार' (रू. भे.)
उ०—१ घण घाइ मुगुल्लां घड़िग घट्ट, रड़ियंयां भट्ट हुई आहरट्ट । सेलार सहइ सारीर सार, भाजै **भंभार** पट्टे पहार । रा. ज. सी.
उ०—२ वार विकरार सिरदार विभ वाहियो, सगर भर भार धर भार सूरै । सार सेलार ऊभार **भंभार** सार, पार चौधार कर पार पूरै ।—महाराजा जसवंतसिंह री गीत
उ०—३ कोमंड गरज हुए हलकार, भडां भालोड करंत **भंभार** ।
—गु. रू. बं.

भंभारौ-सं० पु०—१ जैसलमेर का एक प्रदेश जहां पहले अड़कमल भाटियों का राज्य था ।
उ०—माड में बारह गांव जड़ां भाटियां रा जंडे कहावे । माड में अड़कमलां भाटियां रा गांव बारह **भंभारौ** कहावै ।
—बा. दा. ख्यात
२ देखो 'बंबार' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—**भंभारा** भभक्कै, चौरंगां उचक्कै, करै वीर हक्कां, छके जांगि छक्कां ।—सू. प्र.
३ देखो 'बंबारौ' (रू. भे.)

भंभीर-वि०—भयानक, भयजनक ।
उ०—खौटवै सांकळां सिंघ बाज रै किलपक्कां खुलै, भीम तैण गजां भूलै गाज रै **भंभीर** ।—गंभीरसिंघ सोलंकी री गीत

भंभूळियौ—देखो 'बभूळौ' (अल्पा., रू. भे.) (शेखावाटी)
भंभूळौ—देखो 'बभूळौ' (रू. भे.)

भंभेड़ी-सं० पु०—एक वृक्ष विशेष ।
उ०—भीलामां नइ भालकी, भरडु बरिंगि भांगि **भंभेड़ी** ब्रह्मांड घण, भोजपत्र भड चंगि ।—मा. कां. प्र.

भंभेरणौ, भंभेरबौ-क्रि० स०—कुपित करना, क्रोधित करना ।
उ०—नांन्हा ते मत जाणि नांन्हा, छिद्र पराया राखे छांना । अधिकारी म करे अदिखाइ, **भंभेरे** मत भूप भखाइ ।—ध. व. ग्रं.
भंभेरणहार, हारौ (हारी), भंभेरणियौ—वि० ।

भंभेरिश्रोड़ौ, भंभेरियोड़ौ, भंभेरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भंभेरीजणौ, भंभेरीजबौ—कर्म वा० ।

भंभेरियोड़ौ–भू० का० कृ०—कुपित किया हुआ, क्रोधित किया हुआ. (स्त्री० भंभेरियोड़ी)

भंभेरी–सं० स्त्री०—एक देश का नाम ।
उ०—उडीसा रौ नइं नाइलो, चीरण भोट चंदेरी । गवड देस वइ-रागर सागर, जाळंधर **भंभेरी** ।—रुकमरिण मंगळ

भंभौ–सं० पु०—१ एक वाद्य विशेष ।
उ०—रास मधु माधवइ देति रंभा, सुगुरू गायंति वायंति **भंभा** । तेजपुज जिमसे भेइरवी, जुग प्रधान गुरु पेखउ भवि ।
—ऐ. जै. का. सं.

भंभौ–सं० पु० [सं० वैभव] १ धन्धा, कार्य ।
उ०—करमाणंद' आणंद कहै, **भंभौ** करत म लज्ज । ईंधण माथै श्रांणियै चूल्हे बाळण कज्ज ।—करमाणंद
२ देखो 'वैभव' (रू. भे.)

भंमर—१ देखो 'भंवर' (रू. भे.)
उ०—१ जिण बहु वार मुगळ दळ जीता, प्रजळे तेणि दिलेस्वर पंजर । असपति सोच पड़े पीळा अंगि, मिळ बहु सोच पड़ै मुख **भंमर** ।—सू. प्र.
उ०—२ को लाहै लोभियां, मौत चाहै अणखूटी । कमण पांण पाकड़ै, बीज असमांण विछूटी । मग सागर तजि सुद्ध, **भंमर** कुण बेड़ौ घल्लै । अहि कमण ओटवै, कमण रसणा कर झल्लै ।
—रा. रू.
२ देखो 'भ्रमर' (रू. भे.)
उ०—सार रौ **भंमर** 'रतनेस' 'भानां' सुतन, भूपति 'मांन' रै मनै भायो । धवंस ढूंढ़ाड़ जळ चाढ़ मारूधरा, इसै छक आपरै दुरंग आयो ।—ठाकर रतनसिंघ चांपावत रौ गीत

भंमरकड़ी—देखो 'भंवरकड़ी' (रू. भे.)
उ०—उदावत केहरसिंघ जी रै गळा में **भंमरकड़ी** रहती, नित्य सेर पक्की खीचड़ी खातौ ।—बां. दा. ख्यात

भंमरगुंजार—देखो 'भंवरगुंजार' (रू. भे.)

भंमरगुफा—देखो 'भंवरगुफा' (रू. भे.)

भंमरछैल—देखो 'छैलभंवर' (रू. भे.)

भंमरजाळ—देखो 'भंवरजाळ' (रू. भे.)

भंमरभीख—देखो 'भंवरभीख' (रू. भे.)

भंमराई—देखो 'भंवराई' (रू. भे.)

भंमरामाटी—देखो 'भंवरामाटी' (रू. भे.)

भंमराळ—१ देखो 'भंवराळौ' (मह., रू. भे.)
२ देखो 'भ्रमर' (मह., रू. भे.)

भंमराळौ—देखो 'भंवराळौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भंमराळी)

भंमरौ—१ देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'भंवर' (अल्पा., रू. भे.)
(स्त्री० भंमरी)

भंमळ—देखो 'भंवळ' (रू. भे.)

भंयांण—देखो 'भयांनक' (रू. भे.)

भंवण—१ देखो 'भंवळ' (रू. भे.)
२ देखो 'भूंण' (रू. भे.)

भंवणौ, भंवबौ–क्रि० अ० [सं० भ्रमणम्] १ घूमना, फिरना ।
उ०—बोदा रै आडा बहै, सोदा मिळनै सैंग । भूकोड़ा **भंवता** फिरै, लाडू खावै लैंग ।—ऊ. का.
२ चक्कर खाना, भटकना ।
उ०—परदार प्यार हुयगी प्रमत, बिन सींगां री बेलियां । भोग रे मांय **भंवतौ** भंवर, गयौ जनम सब गेलियां ।—ऊ. का.
मुहा०—अकल भंवणी--बुद्धि भ्रष्ट होना ।
३ उड़ना ।
उ०—तितरै एक सांवळी **भंवती भंवती** पातसाह बैठो थौ तठै ऊपर आई ।—नैणसी
४ मुड़ना, वक्राकार हो जाना ।
५ भ्रम में पड़ना, भ्रमित होना ।
भंवणहार, हारौ (हारी), **भंवणियौ**—वि० ।
भंवाड़णौ, भंवाड़बौ, भंवांणौ, भंवाबौ, भंवावणौ, भंवावबौ
—प्रे० रू० ।
भंविश्रोड़ौ, भंवियोड़ौ, भंव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भंवीजणौ, भंवीजबौ—भाव वा० ।
भमणौ, भमबौ, भम्मणौ, भम्मबौ, भवणौ, भवबौ—रू० भे० ।

भंवर–सं० पु० [सं० भ्रमरं=चक्कर, गोल] १ नाक का आभूषण विशेष ।
उ०—१ वनां रे, सौनौ लंका देस रौ स रे घर आंणा, थारी रै वनड़ी रे **भंवर** घड़ाय, वनी तो लागै प्यारी रे, पुसबन की सुगंध सवाश्री रे ।—लो. गी.
उ०—२ सोनो थे भल ल्यावौ, जी वना म्हारा, रूपो थे भल ल्याय । मोती समंदां पार का,जी वना म्हारा, चून्यां **भंवर** जड़ाय ।
—लो. गी.
२ पानी के बहाव में रुकावट आने अथवा अन्य किसी कारण-वश लहरों द्वारा बना हुआ आवर्त्त या चक्कर ।
उ०—१ चित बिपदा बारिधि पार करन के चाही । अद विच में आती नाव **भंवर** में आई ।—ऊ. का.
उ०—२ इउ वहत **भंवर** मज पड़ीयै आय । तांहां नाव थरर डिगमिगत ताय ।—रामदांन लाळस
[सं० भ्रमरः=भौरा=श्याम] ३ श्याम रंग ।
उ०—मेटिया केइक पीळा पमंग, सोनरे कइक धूसर सुरंग । अण थाग बेग केई **भंवर** अंग, रेसमी पोत किरमची रंग ।—पे. रू.

४ मकान का गंदा पानी जाने के लिए जमीन में बना हुआ गड्ढा ।
५ गेहूं की फसल का एक रोग ।
६ एक केन्द्र पर घूमे हुए बालों या रोओं का स्थान, जो स्थान-विशेष पर होने के कारण शुभ या अशुभ माना जाता है ।
अल्पा०—भंवरी ।
७ घास का गोलाकार ढेर ।
[सं० भ्रमरः=मस्त] (स्त्री० भंवरी) ८ वह लड़का जिसका पितामह जीवित हो। (पौता)
[सं० भ्रमरः=रसिक] ९ पति, खाविंद ।
उ०—किम कटै पाप दुख सुख कियां, साधे ज्यूं हिज सधाय लूं । इण भंवर हूंत अब दे अलख, बिधवा-पणूं बधाय लूं ।—ऊ. का.
१० श्याम रंग का घोड़ा ।
उ०—नेह निज रीझ री वात चित ना धरी, प्रेम गवरी तणौ नाहिं पायौ । राजकंवरी जिका चढ़ी चंवरी रही, आप भंवरी तणी पीठ आयौ ।—गिरवरदांन सांदू
वि०—१ श्याम रंग का, काले रंग का ।
२ रसिक. शौकीन, छैल-छबीला ।
उ०—दारू मांस दपट्ट अमल अणमाप अरोगै । चमड़पोस रै चीठ भंवर मादक सुख भोगै ।—ऊ. का.
३ मस्त. उन्मत्त ।
उ०—१ सो कुंवरसी बड़ौ दातार जुंझार भंवर छै ।
—कुं. सांखला री वारता
उ०—२ चवरी ऊपर बींद जाय जिण भांत बिहसतौ बिळकुळतौ अलवलियौ भंवर हुवौ थकौ ताखड़ौ कंवरां रा साथ नूं लेनै तुरी तोरिया ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
४ देखो 'भ्रमर' (रू. भे.)
उ०—१ जलज प्रभूपद जांण, दै सुगंध निरवांण पद । मो मन भंवर प्रमांण, रात दिवस बिलम्यौ रहै ।—र. रू.
उ०—२ सखी भरोसौ नाह रौ, सूनौ सदन म जांण । फूल सुगंधी फौज में, आसी भंवर उडांण ।—वी. स.
(स्त्री० भंवरी)
रू० भे०—भंमर, भउंर, भमर, भवंर, भवर ।
अल्पा०—भंमरौ, भंवरियौ, भंवरौ, भंवरचौ, भउंरो, भमरड़ौ, भमरडौ, भमरलउ, भमरलु, भमरलौ, भमरियौ, भमरौ, भमरचौ, भवरियौ ।
मह०—भमरांण ।

भंवरकड़ी-सं० स्त्री० यौ० [सं० भ्रमर+कटक] १ पशुओं के गले की सिकड़ी या पट्टे में लगी हुई लोहे या पीतल की कड़ी, जो कील में इस प्रकार से जड़ी रहती है कि पशु चाहे जिधर चक्कर लगाए उसकी सिकड़ी में बल नहीं पड़ता । घूमने वाली कुण्डी या कड़ी ।
उ०—१ जिकां री मूडहय मोहनाळ, हाथ भर नस, वड़रै पांन जिसा कांन, ताजणासेद पूंछ, नाहर सा पंजा, बाघसी आंख, पातळी लीकजाडै आंठूं । इण भांतरा कुत्ता । बनाती पटा, रूपैरी भंवरकड़ी, रेसमी डोर, कानां में रूपै सोनैरा बेढ़ळा, गळै में निजर रा ताइत । इण भांत सूं आंगण हाजर हुवा छै ।—रा. सा. सं.
उ०—२ ऊदावत केसरीसिंघजी रा गळा में भंमरकड़ी रहती । पालखीखांना में कैद रहता । सेर पक्का री नित खीचड़ी खाता । संवत् १८१८ रै रामसरण हुवा ।—बां. दा. ख्यात
रू० भे०—भंमरकड़ी, भमरकड़ी, भम्मरकड़ी ।

भंवरगुंजार-सं० पु० यौ० [सं०] १ राजस्थानी (डिंगल) का एक अष्ट-पदी छंद विशेष ।
वि० वि०—प्रथम प्रकार के भंवर गुंजार में पूर्वार्द्ध के प्रथम पद में १६ मात्राएं, द्वितीय व तृतीय पद में दो लघु सहित १४-१४ मात्राएं, चौथे पद के अंत में दो गुरु सहित ६ मात्राएं रहती हैं । इसी प्रकार उत्तरार्द्ध की रचना भी की जाती है । द्वितीय प्रकार के भंवरगुंजार के पूर्वार्द्ध में प्रथम व द्वितीय पद में क्रमशः १४-१४ मात्राएं, तृतीय पद में १६ और चतुर्थ पद में अंत गुरु वर्ण सहित ६ मात्राएं होती हैं । इसी प्रकार से उत्तरार्द्ध भी बनाया जाता है ।
२ भौंरे का गुंजन या आवाज ।
रू० भे०—भंमरगुंजार, भमरगुंजार, भम्मरगुंजार, भवरगुंजार ।

भंवरगुफा-सं० स्त्री० यौ० [सं० भ्रमर+गुहा] १ योग के अनुसार ब्रह्म रंध्र के नीचे स्थित ६ चक्रों में से एक चक्र, जिसका स्थान भोहों के बीच माना जाता है ।
२ अंधेरी कोठरी ।
उ०—रमणी वरहीनां निरख नवीनां, रांम रांम रणकन्दा है । कन्द्रप रा कीटा फबतन फीटा, भंवरगुफा भणकन्दा है ।—ऊ. का.
रू० भे०—भंमरगुफा, भमरगुफा, भम्मरगुफा ।

भंवरछैल—देखो 'छैलभंवर' (रू. भे.)
उ०—चाह करीर कली चप चटके, भंवरछैल वेश्या घर भटकै । पत महुआ सम दांनी पटकै, क्षत्रिय वंस बांस मिळ खटकै ।
--ऊ. का.

भंवरजाळ-सं० पु० यौ० [सं० भ्रम+जाल] १ सांसारिक झगड़ा, बखेड़ा या सामाजिक बंधन ।
२ उलझन ।
उ०—तपसी तौ भूंडा भंवरजाळ में फंसियौ । आपरा मन री बात वौ खुद हाल तक सावळ नीं समझियौ तौ आंने कीकर सुभट समझावै । वौ तौ फगत आ बात जांणै के आज उणरा मन री गत भूंडी बदळी ।—फुलवाड़ी
३ छल, कपट ।
उ०—मिनखां रै भंवरजाळ में लुगायां इण भांत अळूझियोड़ी रै'वै के वै हजार बरस साथै रै'वै तौ ई आपरा धणी नै सावळ पिछांण नीं सकै । धणी रा साचैला रूप री ठौड़ लुगाई सगळी ऊमर

धणी रा भरम नै पूजै।—फुलवाड़ी
४ अशुभ रंग का घोड़ा।
रू० भे०—भंमरजाळ, भमरजाळ, भम्मरजाळ, भवरजाळ।

भंवरतिलक-सं० पु० सीस पर बांधने का एक आभूषण।
रू० भे०—भवरतिलक।

भंवरभीख-सं० स्त्री० [सं० भ्रमर+भिक्षा] भौंरे के समान घूम-घूम कर मांगी जाने वाली भिक्षा।
रू० भे०—भंमरभीख, भमरभीख, भम्मरभीख, भवरभीख।

भंवराई-सं० स्त्री० [राज० भंवर+आई] शौकीनपन, छैलछबीलापन।
रू० भे०—भंमराई, भंवैराई, भमराई, भवराई।

भंवरामाटी-सं० स्त्री० यौ० [सं० भ्रमर+मृत्तिका] १ भौंरी द्वारा अपने प्रसवकाल में अण्डों की सुरक्षा हेतु दीवारों व अंधेरी जगहों पर बनाया जाने वाला मिट्टी का घर।
२ उक्त घर की मिट्टी, जो औषधियों के काम भी आती है।
वि० वि०—प्राचीन धारणा के अनुसार भौंरी द्वारा इस मिट्टी के घर में रखे गये कीट को अपना अंडा मानकर प्रेम से सेने के कारण वह कीट भौंरे में परिवर्तित हो जाता है। किन्तु नवीन खोज से यह स्पष्ट हो गया है कि यह कीट भौंरी अण्डों के साथ अपने बच्चों के भोजन निमित्त रखती है। जिससे खुराक पाकर बड़े होने पर बच्चे उस मिट्टी के घर को फोड़कर बाहर निकल जाते हैं।
रू० भे०—भंमरामाटी, भौंरामाटी, भमरामाटी, भम्मरामाटी, भवरामाटी।

भंवराळ—देखो 'भंवराळौ' (मह., रू. भे.)
उ०—तूं गहलो तूं सांनियौ, तूं भोळौ **भंवराळ**। मूळ मघा में तूं हुग्रौ, तातै सरस लबाळ।—गजउद्धार

भंवराळौ-वि० [सं० भ्रमः+आलुच्] (स्त्री० भंवराळी) १ गोलाकार, या चक्करदार।
उ०—चूड़ौ चमकीलौ कचबीड़ौ चमकै, दांमण दमकीलो दांमणी सी दमकै। भंवरचौ फुरणी में **भंवराळौ** भळकै, पाधर बहती रा पसवाड़ा पळकै।—ऊ. का.
[सं० भ्रमर+आलुच] २ श्याम वर्ण वाला, काला।
रू० भे०—भंमराळौ, भमराळौ, भवराळौ।
मह०—भंमराळ, भंवराळ, भमराळ।

भंवरियौ, भंवरचौ—१ ढूंढ़ाड़ प्रान्त में लड़की को विदा करते समय गाया जाने वाला लोक गीत।
२ देखो 'भंवर' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ चूड़ो चमकीलो कच बीड़ी चमकै, दांमण दमकीली दांमणी सी दमकै। **भंवरचौ** फुरणी में भंवरालो भळकै, पाधर बहती रा पसवाड़ा पळकै।—ऊ. का.
उ०—२ हूं थांने पूछां बात, हंस हंस पूछां बात हंगांमी ढोला रे। **भंवरियौ** छैलो मारे झफीखेह धणी हो राज।—लो. गी.
उ०—३ **भंवरिया** रै जलमियां अबै गांव में ईं कमाई करणा सूं पूग नीं आवै। दिसावर जाणौ पड़ैला।—फुलवाड़ी
३ देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू. भे.)

भंवरी-सं० स्त्री०—१ टिटहरी पक्षी, टींटोड़ी।
उ०—भारत में **भंवरी** का इंडा ता पर गज का घंट धरै रे।
—अज्ञात
२ देखो 'भवंर' (स्त्री०) (रू. भे.)
३ देखो 'भंवर' (अल्पा., रू. भे.)
४ देखो 'भ्रमर' (स्त्री०)
रू० भे०—भमरी।

भंवरौ—१ देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ फूलै व्रछ हमेस भणकता **भंवरा** छाजै। पोयण बारौ मास सारसां पंगत राजै। नस नांखै असमांन मोरिया इमरत घोळै। मन री मूंगी रैण चांनणी धौळ उझोळै।—मेघ
उ०—२ मछली रस जिव्हा के लालच, कंटक पास मरीजिये। **भंवरा** घ्राणवसी दुख पावै, फूलां मांये कमलीजिये।
—श्री सुखरामजी महाराज

भंवळ-सं० स्त्री० [सं० भ्रमः] १ चक्कर लगाने की क्रिया या ढंग।
२ चक्कर।
उ०—लिलाड़ सूं धग-धग लोई री राती धार छूटी। **भंवळ** खाय नै उण रौ धणी तड़ाच देती रौ जमीं आय पड़्यौ।—फुलवाड़ी
रू० भे०—भंमळ, भंवण, भमळ, भवण।

भंवहारौ—१ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)
उ०—उपर जियां धनूंख उणिहारै, भमर वांक पंकति **भंवहारै**। मौसर भमर अहर पर वाळक, बिहुंवै जुलफ जांण अहि बाळक।
—सू. प्र.
२ देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

भंवाड़णौ, भंवाड़बौ—देखो 'भंवाणौ, भंवाबौ' (रू. भे.)
भंवाड़णहार, हारौ (हारी), भंवाड़णियौ—वि०।
भंवाड़िओड़ौ, भंवाड़ियोड़ौ, भंवाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भंवाड़ीजणौ, भंवाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भंवाड़ियोड़ौ—देखो 'भंवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भंवाड़ियोड़ी)

भंवाणौ, भंवाबौ-क्रि० स० [भंवणौ क्रि० का प्रे० रू०] १ घुमाना, फिराना।
उ०—कागला रै **भंवाय** नै कांमड़ी री मैली जको कागलो तौ उठै ई ठाय रैं'गौ।—फुलवाड़ी
२ चक्कर खिलाना।
भंवाणहार, हारौ (हारी), भंवाणियौ—वि०।
भंवायोड़ौ—भू० का० कृ०।
भंवाईजणौ, भंवाईजबौ—कर्म वा०।

भंवाड़णौ, भंवाड़बौ, भंवावणौ, भंवावबौ, भभाड़णौ, भभाड़बौ, भमाणौ, भमाबौ, भमावणौ, भमावबौ, भवाणौ, भवाबौ, भवावणौ, भवावबौ—रू० भे० ।

भंवायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ घुमाया हुआ, फिराया हुआ। २ चक्कर खिलाया हुआ।

(स्त्री० भंवायोड़ी)

भंवारौ-सं० पु०—१ भूमि में नीचे बनाया हुआ कमरा या कोठरी, तहखाना।

उ०—राजमैं'लां में जायनैं वौ तौ रिसांणौ करनै ऊंडा **भंवारा** में जायनै सूयग्यौ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—भंवहारौ, भुंइरौ, भुंवारौ, भुंहरौ, भुंहारौ, भुअरौ, भुआरौ, भूंइरौ, भूं'रौ, भूंवारौ, भूंहरौ, भूंहारौ, भौंहरौ, भौआरौ, भौहारौ। २ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—१ डील माथै कठैई रूंगता रौ लवलेस नीं। भोपणा अर **भंवारा** में ई बाळां री कोताई—फुलवाड़ी

भंवावणौ, भंवावबौ—देखो 'भंवाणौ, भंवाबो' (रू. भे.)

भंवावणहार, हारौ (हारी), भंवावणियौ—वि०।

भंवाविओड़ौ, भंवावियोड़ौ, भंवाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भंवावीजणौ, भंवावीजबौ—कर्म वा०।

भंवावियोड़ौ—देखो 'भंवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भंवावियोड़ी)

भंवियोड़ौ-भू० का० कृ० [सं० भ्रमित] १ घूमा हुआ, फिरा हुआ, भटका हुआ. २ चक्कर खाया हुआ. ३ मुड़ा हुआ, वक्रित हुवा हुआ. (स्त्री० भंवियोड़ी)

भंवैराई—देखो 'भंवराई' (रू. भे.)

उ०—**भंवैराई** का पेच मगेज भ्रमाडिया। बिध ऊतरियौ आय सहैली बाडियां।—बगसीरांमजी प्रोहित री बात

भंस—देखो 'विध्वंस' (रू. भे.) (जैन)

भंसम—देखो 'भसम' (रू. भे.)

भंसा-सं० पु०—चौरासी प्रकार के चौहटे में से एक प्रकार का चौहटा।

भ-सं० पु० [सं० भम्] १ ऋषि। २ गृह। ३ जल। ४ दीप्ति। ५ नक्षत्र। ६ नभ। ७ पर्वत, पहाड़। ८ भय। ९ भानू। १० भूप, राजा। ११ भ्रमर। १२ राशि। १३ समि। १४ सेवा। १५ सताइस की संख्या। * (एका०)

[सं० भः] १ भारगव। २ भ्रम। ३ माया। ४ शुक्रग्रह। ५ शुक्राचार्य। ६ छन्द शास्त्रानुसार 'भगण' नामक गण का संक्षिप्त रूप। (एका०)

भइंस, भइंसि—देखो 'भैंस' (रू. भे.)

उ०—**भइंसि** दूझइ अह्य घरि काली, नारि आंखि अतिहिं अणीयाली। आज रांड रगणी मुझ होसिइ, आज वंश कौरव मुझ खोसिइं।—सालिसूरि

भइंसौ—देखो 'भैंसौ' (रू. भे.)

उ०—जमराउ **भइंसा** रूपि पांणी वहइ, सातइ समुद्र स्नांन करावइं—व. स.

(स्त्री० भइंस, भइंसि)

भइ—१ देखो 'भय' (रू. भे.)

उ०—**भइ** बहुतरि ऊमरां खांन सतरि थरहरियां।—गु. रू. बं.

२ देखो 'भाई' (रू. भे.)

भइण, भइणि, भइणी—देखो 'बहन' (रू. भे.)

उ०—भाइ मुंकी **भइण**, भइणि पिण मूक्या भाइ, अधिकौ व्हालौ अन्न, गइ सहु कुटुंब सगाइ।—स. कु.

भइयौ—देखो 'भाई' (अल्पा., रू. भे.)

भइरव—१ देखो 'भैरव' (रू. भे.)

उ०—१ कतास अतलस खासु कमसू **भइरव**, मिस्रु भइरव, रेसमी **भइरव** लाहि महीमुंदीसाही मलमलसाही प्रमुख नाना विध भातिनां नाना विध देसनां वस्त्र आंणी समस्त परिवार नगर लोक पहराधी नांमस्थापना कीधी।—व. स.

उ०—२ तोही आंगू **भइरव** चांपा का फूल, चोवा चंदन अंग कपूर। पाका पान घउंट हुली, जाई सेवती, नीर वाली का फूल।
—बी. दे.

२ देखो 'भैरवी' (रू. भे.)

उ०—जिमणी **भइरव** कलकलइ, डावी दुरगा होइ। गौ वत्स साहमी मिलइ, सुहवि जाती सोइ।—मा. कां. प्र.

भइरवी—देखो 'भैरवी' (रू. भे.)

भइसाइत-सं०पु० [सं० महिष+रा० प्र० आइत, प्रा० महिस] भैंसा रखने वाला।

उ०—माली कंदोई कुंभार, गांछा मरदनाआ सूत्रधार। **भइसाइत** तंबोलि जांणि, नुमु सोनार तूं हुईइ आणि।—नळदवदंती रास

रू० भे०—भाइसाइत।

भइसि—देखो 'भैंस' (रू. भे.)

भई—देखो 'भाई' (रू. भे.)

उ०—करि कल्पना अनेके परि पूरण सर ते जोई। सूं **भई**, अमरि भरूं छि अम्रत पूरण ससी निचोई।—नळाख्यान

भईया-सं० स्त्री०—गाने बजाने वाली जाति विशेष।

भउंर—देखो 'भंवर' (रू. भे.)

भउंरी-सं० स्त्री०—घोड़े का नथुना।

उ०—कागरि कन्न कुरूगुह कंध, वइंगणा वेस लुहमणी वंध। वीरमदे चडियउ **भउंरि** वग्गि, लङ्घावि आसि असमांणि लग्ग।
—र. ज. सी.

भउंरौ—१ देखो 'भंवर' (रू. भे.)
२ देखो 'भ्रमर' (रू. भे.)
३ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

भउ—१ देखो 'भय' (रू. भे.)
उ०—जिहां गरूग्रा तिहां गाजणउं, कुलीन तिहां लांछण, भांणइ **भउ**, भूंफि क्षयु, चोरी तु दोरी, चडण तु पडण ।—व. स.
२ देखो 'बहू' (रू. भे.)

भउजाई—देखो 'भौजाई' (रू. भे.)
उ०—एक दिवस सुन्दर रूप देखी, राजा चित्त विचारयउ । भोगवुं जिम तिम करी **भउजाई**, राज करई तिहां राजियउ ।
—स. कु.

भऊ—देखो 'बहू' (रू. भे.)
उ०—मत बोलो ए **भऊ** वडा सा बोल म्हारै जायोड़ौ थांनै ल्याया छै, मोल म्हारा नवल बना सरदार वना मुखड़ा रौ मांडण नथ ल्याज्यौ ।—लो. गी.

भक–स० स्त्री० [ग्रनु०] १ सहसा या रह-रह कर तंग मुंह के बरतन से द्रव पदार्थ निकलने या भरा जाने पर ग्रथवा जलने या वेग से धूग्रां निकलने से उत्पन्न ध्वनि ।
२ बकवाद ।
क्रि० वि०—३ शीघ्र, तत्काल ।
रू० भे०—भक्ख, भख ।
४ देखो 'भक्ष' (रू. भे.)

भकक्षा–सं० स्त्री०—नक्षत्र कक्षा ।
मि० भग (१)

भकज–वि० [सं० भक्षक] भक्षण करने वाला ।

भकणौ, भकबौ—१ देखो 'भक्षणौ, भक्षबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भाखणौ, भाखबौ' (रू. भे.)
भकणहार, हारौ (हारी), **भकणियौ**—वि० ।
भकिग्रोड़ौ, भकियोड़ौ, भक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भकीजणौ, भकीजबौ—कर्म वा० ।

भकियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ देखो 'भक्षियोड़ौ' (रू. भे.) २ देखो 'भाखियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भकियोड़ी)

भकत—देखो 'भक्त' (रू. भे.)

भकतदास—देखो 'भक्तदास' (रू. भे.)

भकतबछळ—देखो 'भक्तवत्सळ' (रू. भे.)

भकती—देखो 'भक्ति' (रू. भे.)
उ०—तिका यण बार ग्रवतार सकती तणा, भाव **भकती** तणा घणा-मूका । फ्रजर ग्रहरांण तप तेज मुख फाबियां, ढाबियां सूळ 'बीकांण' ढूका ।—मे. म.

भकतीकर—देखो 'भक्तिकर' (रू. भे.)

भकतीसूतर—देखो 'भक्तिसूत्र' (रू. भे.)

भकभकणौ, भकभकबौ–क्रि० ग्र० [ग्रनु०] किसी तंग मुंह के बरतन से पानी निकालते या डालते समय ग्रथवा ग्रग्नि वेग से जलते ग्रथवा बुझाते समय धूंए से भक-भक की ध्वनि होना ।
उ०—धूपिया धकै चिटकां घिरत धकधकै, बारुणी डकडकै तरफ बांमी । बकबकै बीर जोगण छकै दो बखत, **भकभकै** हुतासण हेत भांमी । —मे. म.
भकभकणहार, हारौ (हारी), **भकभकणियौ**—वि० ।
भकभकिग्रोड़ौ, भकभकियोड़ौ, भकभक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भकभकीजणौ, भकभकीजबौ—भाव वा० ।
भकभक्कणौ, भकभक्कबौ—रू० भे० ।

भकभक—देखो 'भक (१)' (रू. भे.)
उ०—हव पंड लड़क्क थड़क्क हलै, खग भल्ल कड़क तड़क्क खुलै । **भकभक्क** रुधक्क खलक्क भलं, दक दक्क बकै जब थक्क दलं ।—पा. प्र.

भकभक्कणौ, भकभक्कबौ—देखो 'भकभकणौ, भकभकबौ' (रू. भे.)
भकभक्कण हार हारौ (हारी), **भकभक्कणियौ**—वि० ।
भकभक्किग्रोड़ौ, भकभक्कियोड़ौ, भकभक्कयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भकभक्कीजणौ, भकभक्कीजबौ—भाव वा० ।

भकभूक–सं० पु० [ग्रनु०] महीन चूर्ण, चूरा ।

भकभूर–सं० पु०—१ नाश ।
उ०—१ धव के धवि वे धन धूर धरे, कव के भव के भ्रम दूर करे । भव-बंधन कां **भकभूर** करै, चय संसय का चकचूर करै ।—ऊ. का.
उ०—२ हुं गजुं हय गय सुभट, भांजि करूं **भकभूर** । सतावीस लख दल सहित, साहि करूं चकचूर ।—प. च. चौ.
२ ऐसा चूर्ण जिसमें कोई-कोई मोटे कण भी हों ।
वि०—१ कायर, डरपोक ।
उ०—भयचक हुग्रो ग्रनेक महाभड, दिख री भाज गई **भकभूर** । ग्रयौ (ग्रायौ) दिख रइ घट ऊपर, केवा मांगण वडउ करूर ।
—महादेव पारवती री वेलि
२ धूल पड़ने के कारण जिसका रंग धूसरित या मटमैला हो गया हो, धूसरित ।
रू० भे०—भखभूर ।
ग्रल्पा०—भकभूरौ भखभूरौ ।

भकभूरौ—देखो 'भखभूरौ' (रू. भे.)

भकभूरौ–सं० पु०—१ धूल से मिलता-जुलता रंग ।
२ देखो 'भकभूर' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—१ ऊंचा नींचा में ग्रागळ नह ईखै, भागळ भकभूरा भेळा भड़ भीखै । मंगण मंगण सूं पद पद रद पीसै, डूमां दैसोतां दळ ग्रोसळ दीसै ।—ऊ. का.

(स्त्री० भकभूरी)

उ०—२ टोळे से सिर पर पगड़ी का बंध, लकड़ी की खूंटी पर मकड़ी का फंद। भकभूरा भूरा सा जूड़ा सा केस, न कीका मुंछा कै भांडु का भेस।—दुरगादत्त बारहठ

रू० भे०—भखभूरौ।

भकल, भकळ–क्रि० वि० [अनु०] १ अपशब्द।

क्रि० प्र०—कहणौ, बोलणौ।

२ देखो 'भक'।

भकाऊ–सं० पु०—एक प्रकार का कल्पित और भीषण या विकराल जन्तु या प्राणी, जिसके नाम का उपयोग किसी को बहुत अधिक भयभीत करने के लिये किया जाता है। हौवा।

भकाणौ, भकाबौ—१ देखो 'भखाणौ, भखाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बहकाणौ, बहकाबौ' (रू. भे.)

भकाणहार, हारौ (हारी), भकाणियौ—वि०।

भकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भकाईजणौ, भकाईजबौ—कर्म वा०।

भकायोड़ौ—१ देखो 'भखायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बहकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भकायोड़ी)

भकार–सं० पु०—१ 'भ' नामक अक्षर।

२ छन्द-शास्त्र में 'भगण' के लिये प्रयुक्त होने वाला शब्द।

भकारणौ, भकारबौ—देखो 'वाकारणौ, वाकारबौ' (रू. भे.)

भकारणहार, हारौ (हारी), भकारणियौ—वि०।

भकारिओड़ौ, भकारियोड़ौ, भकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भकारीजणौ, भकारीजबौ—कर्म वा०।

भकारियोड़ौ—देखो 'वाकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भकारियोड़ी)

भकारी—देखो 'भखारी' (रू. भे.)

भकावटौ—देखो 'भखावटौ' (रू. भे.)

भकुंड—देखो 'भखूंड' (रू. भे.)

उ०—कोई ऐसा कूंजरा, अति प्रचंड अद्भूत। रहै भकुंडे पैहनै, जांण वर्ण अवधूत।—गज उद्धार

भकूट–सं० पु० [सं०] विवाह की गणना में शुभ माने जाने वाली राशियों का समूह।

(फलित ज्योतिष)

भकूड़ौ–सं० पु०—तोप आदि में बत्ती ठूंसने का एक मोटा गज।

भक्कणौ, भक्कबौ—देखो 'भक्षणौ, भक्षबौ' (रू. भे)

२ देखो 'भाखणौ, भाखबौ' (रू. भे.)

भक्कणहार, हारौ (हारी), भक्कणियौ—वि०।

भक्किओड़ौ, भक्कियोड़ौ, भक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भक्कीजणौ, भक्कीजबौ—कर्म वा०।

भक्कियोड़ौ—१ देखो 'भक्षियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भाखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भक्कियोड़ी)

भक्ख—देखो 'भक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ जग जाळ असराळ छळे इन भक्ख सदा भव सिंधु मही। नभ नाळ तंताळ पराळ मिळे, अगलोक सुरप्पति विद्धि सही।

—करुणा सागर

उ०—२ मथे तैं बार किता महरांण, सुरां ले दीध अम्रत सुजांण। हुणे नख बार किता हरणाक्ख, भवानी भैरव दीधा भक्ख।—ह. र.

उ०—३ वैताळ वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि गहा सद्द। मिळ समळ ग्रीध आंमंख भक्ख, जंबक्क रींछ बाराह जक्ख।

—गु. रू. बं.

भक्खणौ, भक्खबौ–क्रि० सं०—१ देखो 'भक्षणौ, भक्षबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कमंध 'रांग' 'केहरी', 'रूप' बोलै रज रव्वाण। भाण सिंध 'दळसाह', 'अजग' 'सुन्दर' अरि भक्खण।—रा. रू.

उ०—२ भोळै परत्र जम भूप रै, पिंड जांणै अहि पांखिया। विण सुरमबंध भक्खी विसम, अंध कंध अणआंखियां।—सू. प्र.

२ देखो 'भाखणौ, भाखबौ' (रू. भे.)

उ०—पुणै कमण तर पत्र ब्रहम माया कुण भक्खै। मह उत्तर पथ माप आप लहरां कुण अक्खै।—र. ज. प्र.

भक्खणहार, हारौ (हारी), भक्खणियौ—वि०।

भक्खिओड़ौ, भक्खियोड़ौ, भक्ख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भक्खीजणौ, भक्खीजबौ—कर्म वा०।

भक्खर, भक्खरचं—१ देखो 'भाखर' (रू. भे.)

उ०—१ सपेत दंत अग्ग ऐ, घटाक पंथ बग्ग ऐ। धजा घैघंगरां सिरै, भमै क पंख भक्खरे।—गु. रू. बं.

उ०—२ फांबतं गजं, फररंत धजं। गुडि गैमरयं, किरि भक्खरयं।

—गु. रू. बं.

२ देखो 'भाखरोत' (रू. भे.)

उ०—रिणमल इक जोधा अवै अखैरज एक एक लख पक्खर ए। चांपा चत्रबाह अनड चलता, 'परबत' 'डूंगर' 'गर' 'भक्खर ए'

—गु. रू. बं.

३ देखो 'भास्कर' (रू. भे.)

भक्खरी–सं० स्त्री०—१ एक प्रकार की रोटी विशेष।

रू० भे०—भखरी।

२ देखो 'भाखर' (अल्पा., रू. भे.)

भक्खियोड़ौ—१ देखो 'भाखियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भक्षियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भक्खियोड़ी)

भक्खी—देखो 'भक्षी' (रू. भे.)

भक्त–वि० [सं० भक्तः] १ किसी पर भक्ति एवं श्रद्धा रखने वाला। २ किसी का अनुसरण करने वाला, अनुयायी। ३ किसी का पक्ष लेने वाला, पक्षपाती।

सं० पु०—१ भोजन। २ वह जो श्रद्धा से किसी की उपासना करता हो या पूरी निष्ठा रखता हो।

उ०—आए आए जी महाराज आए, निज **भक्तन** के काज बनाए। तज बैंकुंठ तज्यौ गरूड़ासन, पवन बेग उठ धाए।—मीरां

३ वह जो धार्मिक वृति रखता हो तथा मांस-मदिरा का उपयोग हेय समझता हो।

रू० भे०—भकत, भगत, भत्त।

भक्तता–सं० स्त्री० [सं० भक्ति] भक्ति करने की क्रिया या भाव।

भक्ततारणतरण–वि० यौ० [सं०] भक्तों का उद्धार करने वाला।

सं० पु०—१ ईश्वर। २ गरुड़। (डि. को. ३०)

रू० भे०—भक्तांतारणतरण।

भक्तदास–सं० पु० [सं०] वह भक्त जिसे अपने सेव्य या स्वामी से भोजन-कपड़ा मिलता हो।

रू० भे०—भकतदास, भगतदास।

भक्तपरायण–सं० पु०—भक्तों का पालन करने वाला, ईश्वर।

रू० भे०—भगतपरायण।

भक्तवच्छल, भक्तवछळ—देखो 'भक्तवत्सल' (रू. भे.)

उ०—क्षुद्र घंटिका कटि तट सोभित, नूपुर सब्द रसाळ। मीरां के प्रभू संतन सुखदाई, **भक्तबछळ** गोपाळ।—मीरां

भक्तराक्षस–सं०पु० [सं०] रावण का भाई विभीषण जो श्री रामचन्द्रजी का भक्त था।

रू० भे०—भगतराकस।

भक्तवछल, भक्तवत्सल–वि० [सं० भक्तवत्सल] भक्तों पर दया करने वाला, भक्तों पर स्नेह रखने वाला।

रू० भे०—भकतबछळ, भक्कबच्छळ, भक्तबछळ, भक्तवछळ, भगतबच्छळ, भगतबछळ, भगतवच्छळ, भगतवछळ, भगतविछळ, भगतांबछळ, भगतांवछळ, भगतिबछळ।

भक्तांतारणतरण—देखो 'भक्ततारणतरण' (रू. भे.)

भक्ति–सं० स्त्री० [सं० भक्त] १ बंटवारा, बांट। २ भिन्नता, पृथकता। ३ हिस्सा, विभाग, अंश। ४ अनुराग, श्रद्धा। ५ सम्मान, सत्कार, सेवा। ६ मान-प्रदर्शन। ७ सजावट। ८ भोजन।

उ०—१ फूलजी **भक्ति** जीमिनै चढ़ि पधारिया छै।

—लाखै फूलांणी री वात।

उ०—२ ताहरां उठा रा चढिया पूरणमल नूं लेहीज आया। ढूंढाड़ मांहै आय नै उठै पूरणमल नूं **भक्ति** कर घोड़ो दे अर विदा कियौ।—नैणसी

९ भात। १० उबाला हुआ कोई भी भोज्य पदार्थ।

सं० स्त्री० [सं० भक्तिः] ११ किसी के प्रति होने वाली श्रद्धा, विश्वास या निष्ठा। १२ उक्त के फल स्वरूप होने वाला स्नेह, अनुराग या की जाने वाली सेवा-सुश्रुषा। १३ धार्मिक क्षेत्र में भगवान के गुण महिमा आदि श्रवण करके सत्त्व गुण के उद्रेकवश मन द्रवीभूत होकर भगवान के प्रति अविछिन्न तैलधारा के समान चिन्तन धारा में लीन होने की अवस्था।

उ०—**भक्ति** तो प्रहळाद की सी, सांच उर में धरै। **भक्ति** के बस स्यांम सुंदर, सिंह को बपु धरै।—मीरां

वि० वि०—देवर्षि नारद ने भगवान के प्रति एकनिष्ठ प्रेम को भक्ति की संज्ञा दी है। शाण्डिल्य के अनुसार ईश्वर के प्रति ऐकान्तिक अनुराग ही भक्ति है। उन्होंने अपने भक्ति-सूत्र में तीन प्रकार की भक्ति कही है-सात्विकी, राजसी, एवं तामसी। श्री रूप गोस्वामी ने भक्ति के स्वरूप या लक्षण का निर्णय करते हुए भक्ति को चार भागों में विभक्त किया है—सामान्य-भक्ति, साधन-भक्ति, भाव-भक्ति एवं प्रेम-भक्ति। यह भक्ति का सूक्ष्म विभाग है। स्थूलतः भक्ति दो प्रकार की होती है—साधन या वैधी भक्ति,और परा या प्रेम भक्ति। शास्त्र विधि के अनुसार श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्म निवेदन, ये नौ प्रकार की भक्ति कही गई है जिसे नवधा भक्ति भी कहते हैं।

१४ साहित्य में ध्वनि, जिसे कुछ लोग गौण और लक्षणा-गम्य मानते हैं। १५ छन्द-शास्त्र में एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण, भगण और अन्त में गुरु होता है। १६ जैन मतानुसार वह वमन जिसमें निरतिशय आनन्द हो और जो सर्वप्रिय, प्रयोजन विशिष्ट तथा वितृष्णा का उदय कारक हो। १७ नौ की संख्या। * (डि. को.)

रू० भे०—भकती, भगत, भगति, भगती, भत्ति।

भक्तिकर–वि० [सं०] भक्ति के योग्य, जिससे भक्ति उत्पन्न हो।

रू० भे०—भकतीकर, भगतीकर।

भक्तिमारग–सं० पु० [सं० भक्ति+मार्ग] भक्ति का पथ, भक्ति का अनुकरण।

उ०—सदा साधु सेवा करती हूं, सुमरण ध्यांन चित करती हूं। **भक्तिमारग** दासी को दिखाउं, मीरां को प्रभु सांची दासी बनाओ।

—मीरां

रू० भे०—भगतिमारग।

भक्तिसूतर, **भक्तिसूत्र**–सं० पु० [सं० भक्तिसूत्र] शाण्डिल्य मुनि कृत वैष्णव संप्रदाय का एक सूत्र ग्रन्थ ।

रू० भे०—भकतीसूतर, भगतीसूतर ।

भक्ष–सं० पु० [सं०] १ भोजन, आहार ।

२ भोज्य पदार्थ ।

वि०—आहार करने वाला, खाने वाला ।

रू० भे०—भक, भक्ख, भख, भख्ख, भच्छ ।

भक्षक–वि० [सं०] खाने वाला, आहारी ।

भक्षण–सं० पु० [सं०] १ आहार, भोजन ।

उ०—सु रांणी जी महासती दौढ बरस लगै आपरी देही गाळी । अंन **भक्षण** न कियौ ।—द. वि.

२ आहार या भोजन करने वाला ।

रू० भे०—भखण, भच्छन ।

भक्षणी–सं० स्त्री० [सं० भक्षिणी] भक्षण करने वाली ।

रू० भे०—भखणी, भख्खणी, भच्छणी, भच्छनी ।

भक्षणौ, **भक्षबौ**–क्रि० स० [सं० भक्षणं] १ भोजन करना, आहार करना ।

२ दंशना, काटना । (सर्प आदि)

उ०—प्रीउडा, आवु रे; मुह्नि **भक्षि** करि छि व्यालः नल मूंकावु रे, द्रुपद ब्रह्म हत्या गोहत्या कीधी ते फल मुझनि लागूं ।

—नळाख्यांन

भक्षणहार, **हारौ (हारी)**, **भक्षणियौ**—वि० ।

भक्षिप्रोड़ौ, **भक्षियोड़ौ**, **भक्ष्योड़ौ**—भू० का० कृ० ।

भक्षीजणौ, **भक्षीजबौ**—कर्म वा० ।

भकणौ, **भकबौ**, **भक्कणौ**, **भक्कबौ**, **भक्खणौ**, **भक्खबौ**, **भखणौ**, **भखबौ**, **भख्खणौ**, **भख्खबौ**, **भच्छणौ**, **भच्छबौ**—रू० भे० ।

भक्षाणौ, **भक्षाबौ**–क्रि० स० [भक्षणौ क्रि० का० प्रे० रू०] १ भक्षण करवाना, भोजन कराना ।

२ दंशन करवाना, कटवाना ।

भखाड़णौ, भखाड़बौ, भखाणौ, भखाबौ, भखावणौ, भखावबौ—रू० भे० ।

भक्षायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ भोजन कराया हुआ, आहार कराया हुआ, २ दंशन कराया हुआ, कटवाया हुआ ।

(स्त्री० भक्षायोड़ी)

भक्षियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ भोजन किया हुआ, आहार किया हुआ ।

२ दंश किया हुआ, काटा हुआ ।

(स्त्री० भक्षियोड़ी)

भक्षी–वि० [सं० भक्ष+इनि] (स्त्री० भक्षिणी) समस्त पदों के अन्त में ।

ज्यूं-मांस-भक्षी, फळ-भक्षी, खानेवाला ।

रू० भे०—भखी, भख्खू ।

भक्षु—देखो 'भिक्षु' (रू. भे.)

उ०—स्वरग रहित ए रांवणु, लंकारहित रांवण, सरम रहित पायक, त्याग रहित नायक, फल रहित वृक्ष, तपोरहित **भक्षु**, वेग रहित तुरंगम, प्रेमरहित संगम । —व० स०

भखंड–सं० पु०—देखो 'भुखंड' (रू. भे.)

भख–सं० पु०—१ पानी । (डि. को.)

[सं० भक्ष्] २ किसी देवता, प्रेतादि को प्रसन्न करने के लिए दी जाने वाली बलि ।

उ०—पछै राजकंवर रा पगां में जोर-जोर सूं लिलाड़ रगड़ नै कैवण लागौ—जे भख री बारियां साजण री ओ पाप म्हं नीं करतौ तौ आप री संजोग कीकर राजतौ ।—फुलवाड़ी

३ किसी प्रेतादि द्वारा जबरदस्ती नियमित रूप से ली जाने वाली बलि ।

वि० वि०—किसी तालाब कूए आदि में जब कोई व्यक्ति, बालक या पशु डूबकर मर जाता है और आगे चलकर इसी प्रकार डूबने की घटना की कई बार आवृत्ति होने पर जन साधारण में यह प्रचलित हो जाता है कि अमुक तालाब या कूआ 'भख' (बलि) लेने वाला है ।

४ देखो 'भक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ **भख** पुंहचावै भूधरी, अजगर रै अनव्याग । किम भूलै संतां 'किसन', संमरतां सुख रास ।—र. ज. प्र.

उ०—२ जे टूंच तीखी कर लूं तौ म्हारौ कांई बिगड़ै । बापड़ा मींडका री बात रह जासी अर म्हारौ ही **भख** हो जासी ।

फुलवाड़ी

भखग्रास–सं० पु० [सं० आशु+भक्षी] मकड़ी । (अ. मा.)

भखण—देखो 'भक्षण' (रू. भे.)

उ०—ऊभी कुंत उलाळ, भूखी तूं भैंसा **भखण** । पग सातवैं पताळ । ब्रमंहड माथो बीसहथ ।— नाळकराय री गीत

भखणी—देखो 'भक्षणी' (रू. भे.)

उ०—माळिणी, मोहीणी माहेसरी, चकरी कुंडळा बाळिका । **भखणी** जमदूतां भजां, नांम संतां प्रति पाळिका ।—मा. वचनिका

भखणौ, **भखबौ**–क्रि० स० [सं० भक्षणम्] १ आहार करना, खाना ।

उ०—१ बोर जगत अखिया रघुबीरा, साचै दिल **भखिया** सबरी रा । दुल्लभ देव रिखां बिरदाळौ, बल्लभ जनां दासरथ वाळौ ।

—र. ज. प्र.

उ०—२ लोभ मोह-बंधणी, गयौ गळ बंधण बध्धौ । जिह् **भखतौ** आंमख, तेह दंतै त्रिण खध्धौ ।—गु. रू. बं.

२ दंश करना, काटना ।

उ०—१ सदा तौ नाव लिये स्रीरंग, **भखै** नहं तांह संसार भुयंग । मुरार जिकांह बसै तु मुक्ख, संसार समंद तिरै तै सुक्ख ।—ह. र.

३ देखो 'भाखणौ, भाखबौ' (रू. भे.)

उ०—सौ चार ही वेद भखै । जद सौ मोहरां देनैं सिवलाल रांमबगस नै लीधौ ।—नैणसी

भखणहार, हारौ (हारी), भखणियौ—वि० ।

भखिग्रोड़ौ, भखियोड़ौ, भख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भखीजणौ, भखीजबौ—कर्म वा० ।

भखपनंग—सं० पु० [सं० पन्नगः+भक्षक] मयूर, मोर । (ग्र. मा.)

भखभूर—देखो 'भकभूर' (रू. भे.)

उ०—बाप-बेटौ दोनूं रंजी सूं **भखभूर** व्हियोड़ा हा ।—फुलवाड़ी

भखभूरी—सं० स्त्री० यौ० [दे०] भोजन की चिन्ता ।

उ०—भक्ति हेतु कोई भक्त पठाया, ग्राप ग्रगाध यहां नहिं ग्राया। पहरचा भेख मिटी **भखभूरी**, नैंड़ा रांम बतावै दूरी ।—ह. पु. वा.

रू० भे०—भकभूरी ।

भखभूरौ—१ देखो 'भकभूरौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भकभूर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

(स्त्री० भखभूरी)

भखमंजार—सं० पु० [सं० मार्जार+भक्ष्य] चूहा । (ग्र. मा.)

भखरी—१ देखो 'भाखर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—ताहरां सारा चड तयार हुवा ग्रौर हालिया । घड़ी दोय दिन थकां उण **भखरी** तळे जा ऊभा रहिया ।

—गोपालदास गौड री वारता

२ देखो 'भक्खरी' (रू. भे.)

भखाड़णौ, भखाड़बौ—१ देखो 'भक्षाणौ, भक्षाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बहकाणौ, बहकाबौ' (रू. भे.)

भखाड़णहार, हारौ (हारी), भखाड़णियौ—वि० ।

भखाड़िग्रोड़ौ, भखाड़ियोड़ौ, भखाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भखाड़ीजणौ, भखाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भखाड़ियोड़ौ—१ देखो 'भक्षायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बहकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भखाड़ियोड़ी)

भखाणौ, भखाबौ—१ देखो 'भक्षाणौ, भक्षाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बहकाणौ, बहकाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां त्रिभुवण सी री भाई पदमसी हुतौ, तियै नूं **भखायौ**—'तूं त्रिभुवण सी नूं मारै तौ तोनूं टीकौ देवां ।'—नैणसी

उ०—तठा पछै बरस २ नबाब महाबतखांन दिखण परवेज रै मुंहडा ग्रागै थौ सु पातसाह जांहांगीर नुं खुरासांणीये **भखाई** नै उठा सुं उरौ तेड़ायौ ।—नैणसी

भखाणहार, हारौ (हारी), भखाणियौ—वि० ।

भखायोड़ौ—भू० का कृ० ।

भखाईजणौ, भखाईजबौ—कर्म वा० ।

भकाणौ, भकाबौ, भखाड़णौ, भखाड़बौ, भखावणौ, भखावबौ —रू० भे० ।

भखायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कहा हुग्रा, बुलाया हुग्रा ।

२ देखो 'भक्षायोड़ौ' (रू. भे.)

३ देखो 'बहकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भखायोड़ी)

भखार—सं० पु०—देखो 'भखारी' (मह., रू. भे.)

उ०—१ किंदणा री भभक सूं उण री माथौ फाटण लागग्यौ। ग्रांख्यां ग्राडी ग्रंधारी ग्रायगी । वौ भंवळ खाय नै **भखार** रै मांय गुड़ग्यौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ ग्रन-धन भरचा ग्रे भखार सदा ग्रे सुरंगो घर बाप रो जी म्हांरा राज ।—लो. गी.

भखारणौ, भखारबौ—देखो 'वाकारणौ, वाकारबौ' (रू. भे.)

भखारणहार, हारौ (हारी), भखारणियौ—वि० ।

भखारिग्रोड़ौ, भखारियोड़ौ, भखारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भखारीजणौ, भखारीजबौ—कर्म वा० ।

भखारियोड़ौ—देखो 'वाकारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भखारियोड़ी)

भखारी—सं० स्त्री० [सं० भक्षागार] ग्रनाज ईधन ग्रादि रखने का ग्रंधेरा कोठा या एक प्रकार का छोटा कमरा ।

उ०—१ रोड़ा पत्थर ईंट, चिपावै माटी गारै, कोकर खोरा खड़ी, वाटड़ी संचै सारै । मुलक वसावण हार, चिणावै चेजा भारी, ढूंढ़ा पड़वा साळ, **भखारी** भींत तिबारी ।—दसदेव

उ०—२ लागतै चैत **भखारियां** भरणी सरू व्ही जकौ वैसाख उतरतां तांई भरीजती गी ।

रू० भे०—बखारी, भकारी, भाखारी ।

मह०—बखर, बखार, बखारौ, बाखार, बाखारौ, भखार, भखारौ, वखर ।

भखारौ—देखो 'भखारी' (मह., रू. भे.)

भखावटौ—सं० पु०—ब्रह्ममुहूर्त, उपाकाल ।

उ०—हाथ मूंडा धोयां पछै ग्राज राजी राजी कलेवौ करियौ । पछ हळ जोत नै **भखावटै-भखावटै** ई वहीर व्हेगौ ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—भकावटौ, भगावटौ, भखांवटौ, भाखोटौ, भागोटौ ।

भखावणौ, भखावबौ—१ देखो 'भक्षाणौ, भक्षाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बहकाणौ, बहकाबौ' (रू. भे.)

उ०—कोई राज री खबर ल्यौ नहीं । परधांन वीकमसी तिकौ सूंक-भाड़ा लै ग्राप रौ काम करै । उपजै सु सोह खाय जाय, थांनूं क्यूं दै नहीं ।' इण भांत कंवरां नूं **भखावै** छै ।—नैणसी

भखावणहार, हारौ (हारी), भखावणियौ—वि० ।

भखाविग्रोड़ौ, भखावियोड़ौ, भखाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भखावीजणौ, भखावीजबौ—कर्म वा०।

भखावियोड़ौ—१ देखो 'भक्षायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बहकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भखावियोड़ी)

भखी-सं० स्त्री०—१ दल-दल स्थानों में पैदा होने वाली घास विशेष। (जयसलमेर)

२ देखो 'भक्षी' (रू. भे.)

भखुंड—देखो 'भखूंड' (रू. भे.)

भखूंड—वि० [सं० भू+खंड=कण]राख या धूल में सना हुआ, धूसरित।

रू० भे०—भकुंड, भखुंड।

भखौ-सं० पु०—पसलियां व चूतड़ की हड्डियों के बीच का पेट की बाजू में आया हुआ माँसल भाग।

भख्खणी—देखो 'भक्षणी' (रू. भे.)

उ०—देवी जख्खणी **भख्खणी** देव जोगी, देवी त्रम्मळा भोज भोगी निरोगी। देवी मात जानेसुरी व्रन्न मेहा, देवी देव चांमुंड संख्याति देहा।—देवि.

भख्खणौ, भख्खबौ—१ देखो 'भक्षणौ, भक्षबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भाखणौ, भाखबौ' (रू. भे)

भख्खणहार, हारौ (हारी), भख्खणियौ—वि०।

भख्खिप्रोड़ौ, भख्खियोड़ौ, भख्ख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भक्खीजणौ, भख्खीजबौ—कर्म वा०।

भख्खियोड़ौ—१ देखो 'भक्षियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भाखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भख्खियोड़ी)

भख्खु—देखो 'भक्षी' (रू. भे.)

भगंदर-सं० पु० [सं०] गुदावर्त के किनारे होने वाला एक प्रकार का फोड़ा जो फूटने पर नासूर बन जाता है और अधिक बढ़ने पर इसमें से मल-मूत्र निकलने लगता है।

उ०—कंडू कमल कास स्वास दाघ ज्वर **भगंदर** जलोदर गुदकीलक कुक्षि सूल द्रस्टि सूल सिर सूल करण सूल दंत वेदना अजीरण अरोचक कुस्ट रोग प्रमुख रोगाः।—व. स.

भगंवती—देखो 'भगवती' (रू. भे.)

भग-सं० पु०—१ बारह आदित्यों में से एक। (ना. मा.)

२ सूर्य। (अ. मा.)

३ शिव का एक रूप विशेष, शिव।

४ योनि।

उ०—१ दादू निंदा किये नरक है, कीट पड़ै मुख मांहि। रांम विमुख जामैं मरैं, **भग** मुख आवें जांहि।—दादू बांणी

उ०—२ गरधब-वत गावै उर उमगावै, हरखावै हूकंदा है। बिन तप व्रत बसिया कंद्रप कसिया, **भग** रसिया भूकंदा है।—ऊ. का.

५ एक देवता का नाम।

६ शोभा, कांति।

भगड़-सं० स्त्री० [अनु०] भागने की क्रिया या भाव, भगदड़।

भगण-सं० पु०—१ छन्द शास्त्र में एक तीन वर्ण का गण विशेष जिसमें आदि का वर्ण गुरु तथा शेष दो वर्ण लघु होते हैं।

२ खगोल में ग्रहों का चक्कर।

भगणौ, भगबौ—देखो 'भागणौ, भगबौ' (रू. भे.)

उ०- आदि तणौ जोतां अरथ, **भगौ** न सूझ भरम्म। पहली जीव परट्ठिया, किया क पहली क्रम्म।—ह. र.

भगत-सं० पु० [सं०] (स्त्री० भगतण भगतणी) १ भक्त एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति।

उ०—पातर **भगतण** पेस, परम मन में सुख पाई। मिळियां मच्छी-मार, करै ज्यूं मोद कसाई।—ऊ. का.

वि० वि०—यह रामावत साधुओं में से निकली हुई एक जाति है जो प्रायः जोधपुर में ही पाई जाती है। रामावत साधु इनको निम्न श्रेणी में गिनते हैं। महाराजा विजयसिंह जी के राज्य काल में कई रामावत साधुओं की लड़कियों ने गाना-बजाना सीखकर रण्डी का पेशा अपना लिया और वे भगतनें कहलाने लगी। इनमें शादी भी होती है परन्तु यह पहले ही दोनों के बीच तय हो जाता है कि पति को पत्नी पर कोई अधिकार नहीं होगा। इस प्रकार यह नाम-मात्र की शादी होती है जिसे कंवारपना (कौमार्य) उतारना कहते हैं। कभी कभी कोई वर न मिलने पर गणेश जी की प्रतिमा से ही शादी करवा कर कवांरपना (कौमार्य) उतार देते हैं क्योंकि कंवारी कन्या से ऐसा पेशा करवाना पाप समझा जाता है। विवाहित होकर आने वाली बेटे की बहुएं ऐसा पेशा नही करती।

२ देखो 'भक्त' (रू. भे,) (म. सु.)

उ०—१ भेख लिया सूं **भगत** नहं, ह्वै नहं गहणां हूर। पोथी सूं पंडित नहीं, ससतर सूं नहं सूर।—बां. दा.

उ०—२ कविजन व्रंद कंवळ कुमळाया, गीत कुकवि जगू स्याळां-गाया। मूरख **भगतां** सोर मचाया, काळी रात जरख कुरळाया।—ऊ. का.

३ देखो 'भक्ति' (रू. भे.)

उ०—१ राजा ब्रहदभांण पण सुभ लगन जोवाय, बडे हरख सूं आपरी कुंवरी परणाई। **भगतां** पांच तथा सात भली तरह सूं करी।—पलक दरियाव री बात

उ०—२ थे रांम-रांम करि आवौ। अर जै पधारौ तौ **भगत** रौ कह्या, अर म्हांनूं खबर मेलिया।—नैणसी

उ०—३ तांहरा **भगत** तयार हुई। ताहारां कह्यौ—कूंवर जी! थे पधारौ, भगत आरोगो।—नैणसी

उ०—४ नैड़ौ आयौ थौ सू जांणियौ-'लाखे सूं मिळता जावां।' सू उठै आयौ। लाखै घणी आगता सागता कीवी। भगत कीवी।
—नैणसी

उ०—५ मोटौ पह आराध करे महि, मोटौ गढ़ लीजतां मुऔ। जोय हरि भगत तुआळी 'जैमल,' हरि सारीख प्रताप हुऔ।
—जयमल मेड़तिया रौ गीत

उ०—६ भगत-बछळ मोदै भगत, भांज परा सह भ्रम्म। मूझ तणा क्रम मेटवा, कथूं तुहाळा क्रम्म।—ह. र.

भगतणौ, भगतबौ—देखो 'भुगतणौ, भुगतबौ' (रू. भे.)

भगतणहार, हारौ (हारी), भगतणियौ—वि०।

भगतिओड़ौ, भगतियोड़ौ, भगत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भगतीजणौ, भगतीजबौ—भाव वा०।

भगतदास—देखो 'भक्तदास' (रू. भे.)

भगतपरायण—देखो 'भक्तपरायण' (रू. भे.)

भगतबच्छळ, भगतबछळ—देखो 'भक्तवत्सल' (रू. भे.)

उ०—भगतबछळ मो दै भगत, भांज परा सह भ्रम्म। मूझ तणा क्रम मेटबा, कथूं तुहाळा क्रम्म।—ह. र.

भगतमाळ—सं० स्त्री० [सं० भक्तमाला] वह पुस्तक जिसमें वैष्णव भक्तों का चरित्र वर्णित हो।

भगतराकस—देखो 'भक्तराक्षक' (रू. भे.)

उ०—भगतराकस भेद भाले, चक्रधरवां वयण चाले। दनुज सुत देवी दवाले, जंग संभाळे जोध।—र. रू.

भगतवच्छळ, भगतवछळ, भगतविछळ—देखो 'भक्तवत्सळ' (रू. भे.)

उ०—१ भव पाप भव दुख भरम भंजण भगतवच्छळ भूधरं। देवकीनंदन मुगतिदायक, देवरूप दमोदरं।—पि. प्र.

उ०—२ जगत कहै सहि दसरथ जायौ, अविगत धारौ नांम अजायौ। जगपति तूं सिगळां रौ जांमी, भगतवछळ सहजां नां भांमी।—पी. ग्रं.

उ०—३ भगतविछळ नयण कमळ, जगत जनक धरण धनक। सिर नमि नमि चरण पदम, 'किसन' रसण रघुवर भण।
—र. ज. प्र.

भगतांपत, भगतांपति—सं० पु० [स० भक्त+पति] १ भक्तों का स्वामी, ईश्वर।

उ०—रामचंद्र करसी रूड़ा, सगळी विध स्रीरंग। भगतांपत भूधर-धणी, चाढ़ण रूप सुचंग।—ह. र.

२ श्रीराम।

३ श्री विष्णु।

४ श्री कृष्ण।

भगतांबछल, भगतांवछल—देखो 'भक्तवत्सल' (रू. भे.)

उ०—निस दीह सीस ऊपर रहौ, महाराजा 'अजमाल' रै। भांमण तूझ भगतांबछल, कर प्रणांम डंडवत करै।—गजउद्धार

भगताणौ, भगताबौ—क्रि० स०—१ कहना।

२ भोजन कराना, खिलाना।

३ उपभोग कराना।

४ देखो 'भुगताणौ, भुगताबौ' (रू. भे.)

भगताणहार, हारौ (हारी), भगताणियौ—वि०।

भगतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भगताईजणौ, भगताईजबौ—कर्म वा०।

भगतायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कहा हुआ. २ भोजन कराया हुआ, खिलाया हुआ. ३ उपभोग कराया हुआ. ४ देखो 'भुगतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भगतायोड़ी)

भगतावणौ, भगतावबौ—१ देखो 'भगताणौ, भगताबौ' (रू. भे.)

उ०—आव्यां बीड़ां पांनह तणां, आव्यां लूगड़ थोड़ा घणा। इणि परि राजा भगताविउ, हरख धरंतु धरिआविउ।—हीराणंद सूरि

२ देखो 'भुगताणौ, भुगताबौ' (रू. भे.)

उ०—मारुवणी भगताविया, मारू राग निपाइ। दूहा संदेसां-तणां, दीया तियां सिखाइ।—ढो. मा.

भगतावणहार, हारौ (हारी), भगतावणियौ—वि०।

भगताविओड़ौ, भगतावियोड़ौ, भगताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भगतावीजणौ, भगतावीजबौ—कर्म वा०।

भगतावियोड़ौ—देखो 'भगतायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भुगतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भगतावियोड़ी)

भगति—देखो 'भक्ति' (रू. भे.)

उ०—घरे ले जाइनै वडी भगति कीधी। हाथी तौ रांणै उदैसिंघ नूं मेल्हि दिया बारै' ही।—नांन्है वाघेलै री बात

उ०—२ ओथि पणि भगति जीमि अर देवराजसर नूं खड़िया कैबासर थी आधा अर देवराजसर विचालै तेथ एक धाराळौ मेह रौ आयौ।—द. वि.

उ०—३ स्रीपति भगति सकाजं, सिध रिध सुवर नमौ संकर सुत सुर अगिवांण समाजं, स्रेस्ठ बुधि दीजिये गणेस्वर।—सू. प्र.

उ०—४ पत्र अक्खर दळ द्वाळा जस परिमळ, नव रस तंतु त्रिधि अहोनिसि। मधुकर रसिक सु भगति मंजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि।—वेलि

भगतिबछल—देखो 'भक्तवत्सल' (रू. भे.)

भगतिमारग—देखो 'भक्तिमारग' (रू. भे.)

भगतियोड़ौ—देखो 'भुगतियोड़ौ' (रू. भे.)

भगतियौ—देखो 'भगत' (अल्पा., रू. भे.)

भगती—देखो 'भक्ति' (रू. भे.)

उ०—१ जितरै भगती जीमण म्हे पण आयां छां । आ बात कहि सीख दीवी ।—पलक दरियाव री बात

उ०—२ तवै भूम अम्मर हुय ताता, मुरझाई भगती पितु माता । बागी झाट पिछम दिस बाता, बंक हुवौ सब देस विधाता ।

—ऊ. का.

उ०—३ कांमी अरु क्रोधी बेद बिरोधी, परगट नरक पड़ंदा है । भगती नहिं भोगा जुगत न जोगा, अद बिच संत अड़ंदा है ।

—ऊ. का.

उ०—४ इत्ता दिन औ कांई खिलकौ व्हियौ । घरवाळां री सगळी भगती निरफळ गी ।—फुलवाड़ी

भगतीकर—देखो 'भक्तिकर' (रू. भे.)

भगतीसूतर—देखो 'भक्तिसूत्र' (रू. भे.)

भगदड़-सं० स्त्री०—किसी संभाव्य संकट के कारण अचानक बहुत से लोगों के अस्त-व्यस्त होने की क्रिया, खलबली, हलचल ।

उ०—१ ज्यूं-ज्यूं चांनणौ नेड़ौ आतौ गयौ, फौज में भगदड़ मचण लागी ।—वरसगांठ

उ०—२ भूलरा में भगदड़ माची पण माची । चार पांचेक साथणियां घोड़ा री फेट में आयगी ।—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—मचणी, माचणी ।

रू० भे०—भगड़ ।

भगदत्त, भगदत्तु-सं० पु० [सं० भगदत्त] प्राचीन काल का एक राजा जिसका राज्य प्राग्ज्योतिषपुर में था ।

उ०—कवरव नइ दळि गुरू गंगेउ क्रपु दुरयोधन सल्यु मिलेउ । सकुनि दुसासण जयद्रथु पुत्रु गरूड भूरिस्रवा भगदत्तु ।

—सालिभद्र सूरि

रू० भे०—भगदंत ।

भगदसू-सं० पु० [सं० दिवस+भग] सूर्य । (नां. मा.)

भगनपाद—देखो 'भग्नपाद' (रू. भे.)

भगनाळ-सं० स्त्री० यौ० [सं० भग+नालिका] चौड़ी या बड़ी नाली ।

उ०—हाथ छड़ी पग दोरडी, वावइ कोटि विसाल । पयोधर पेट्ट जइ अडइ, भग थाइ भगनाळ ।—मा. कां. प्र.

भगनी—देखो 'भगिनि' (रू. भे.)

उ०—भूवा भगनीं रा थळवट भिखियारी, धन्यां कन्या रा गळकट हठधारी । राफां भरणावैं गिरणावैं रोता, गंता निरणावै करमां रा गोता ।—ऊ. का.

भगमौं—देखो 'भगवौं' (रू. भे.)

भगयुग-सं० पु० यौ०—बृहस्पति के बारह युगों में से अन्तिम युग ।

भगळ-सं० पु० [देशज] १ आडंबर, ढोंग ।

उ०—भगळ भागवत पेट भरण री कुटिल कहांणी रे । सत्यारथ सुणियां बिन सांप्रत होसी हांणी रे ।—ऊ. का.

२ ऐंद्रजालिक खेल ।

उ०—मसतक हाथ पग जड़ मुगळ, तेग अरण भक बोळ तिम । 'विलंद रा जोध दगंगळ विनै, जुड़ै करूं नट भगळ जिम ।

—सू. प्र.

३ कुप्रबन्ध, अव्यवस्था ।

उ०—रावळै गरक प्रेतण रमै, होळी जिसा हंगाम रे । 'भोंकमा' कमंध मोटा मिनख, गरक भगळ गं गांग रे । —अरजुणजी बारहठ

४ फूहड़ ।

५ पानी में एक दम झपटकर मछली पकड़ने वाला एक जानवर विशेष ।

६ छल, कपट, धोखा ।

भगळखांनौ-सं० पु० यौ०—१ अव्यवस्था, कुप्रबन्ध ।

२ ऐंद्रजालिक खेल ।

भगळखेल-सं० पु० यौ०—ऐंद्रजालिक खेल ।

उ०—कर कर पर-उपकार पुन, तन प्रांनत कपणा । संसारी दा भगळखेल, जांणौ जिम सपणा ।—र. ज. प्र.

रू० भे०—भागळखेल ।

भगळविद्या-सं० स्त्री० यौ०—इंद्रजाल, मायाजाल ।

उ०—संसार सकळ भगळविद्या सकळ, खोट साच दीसै खरौ । जाए न किणी लखियौ 'जगा', ऐसौ खेल अलयखरौ ।—ज. खि.

भगवंत—देखो 'भगवत' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—अलख अजोनी आतमा, अचळ अनूप अनंत । तूं मारै तारै तुहीं, भिले-भिले भगवंत ।—ऊ. का.

भगवंती—देखो 'भगवती' (रू. भे.)

उ०—सुरसती तुं ही भगवंती सार ।—रांमदान लाळस

भगवंतीभरता-सं० पु० [सं० भगवत्+ङीप+भर्तृ] शिव, शंकर । (डिं. को.)

भगवई—देखो 'भगवती' (रू. भे.)

उ०—चारण स्रमण नमइ सदा, जिन प्रतिमा सरनेह अग्यांनी । ते छइ भगवई अंग मां, किम मन आंणइ रेह अग्यांनी ।—वि. कु.

भगवउ—देखो 'भगवौं' (रू. भे.)

उ०—सिर डाढ़ी मूंडी करी, भगवउ लीधउ वेस । पग अणूहाण पंकज जिसे' पंथि पलिउ परदेसि ।—मा. कां. प्र.

भगवट, भगवट्ट-सं० स्त्री०—१ भागने की क्रिया या भाव ।

उ०—बहा राव रावळ बाद बिवरजत, जोधकळह क्रत जिका जुई । वैरायतां तुहारां भगवट, हव जांणै कुळवाट हुई ।

—महमदजी बारहठ

२ युद्ध में पीठ दिखाने का भाव, पराजय, हार ।

३ भागने का रास्ता, या मार्ग ।

रू० भे०—भंगवट, भंगवट्ट, भंगवाट, भगवाट ।

भगवत–सं० पु० [सं० भगवत्+मतुप्] १ विष्णु ।
२ ईश्वर, परमेश्वर ।
उ०—जोगी जग में जोवत जती, साध सेवड़े सोधत सती । ग्यांनी गिणत ईसी कूं गती, **भगवत** यही यही भगवती ।—ऊ. का.
३ शिव, शंकर ।
४ सूर्य ।
५ जैनियों के देवता, जिन देव ।
रू० भे०—भगवंत ।

भगवतगीता—देखो 'भगवद्गीता' (रू. भे.)
उ०—**स्रीबगवतगीता** हित सधार, स्रीक्रस्ण 'ग्रजन' हूं कहै सार । नह देह तणौ मझ हूं नरिंद, ग्रौ 'ग्रभौ' जिकौ जोधांण इंद ।—सू. प्र.

भगवति, भगवती, भगवत्ती–सं० स्त्री० [सं० भगवत्+ङीप्] १ देवी ।
उ०—१ जळ थळ खेचर जीव जगि, सारो मंझ सगत्ति । तो विण ध्रमं क्रमं न कियै भगवति देह भगत्ति ।—मा. वचनिका
उ०—२ जोगी जग में जोवत जती, साध सेवड़े सोधत सती । ग्यांनी गिणत ईसी कूं गती, भगवत यही यही **भगवती** ।—ऊ. का.
२ गौरी, पार्वती ।
३ सरस्वती ।
४ दुर्गा ।
उ०—बळ दै दै बांकरा, भणै जय जय **भगवत्ती** । धारि रूधिर मद धार, छाक दीधी छत्रपत्ती ।—मे. म.
५ गंगा ।
रू० भे०—भगवंती, भगवई, भगवत्ति, भगवत्ती ।

भगवतीसूत्र—एक सूत्र का नाम जिसे विवाह पन्नत्ती भी कहते हैं । (जैन)
उ०—पंचम **भगवतीसूत्र** सुधन्न, पनर सहस सतसै बावन्न । ग्याता धरभ कथा ग्रंग छट्ठ, हिंवणां पंच हजारे दिट्ठ ।—ध. व. ग्रं.

भगवत्ति, भगवत्ती—देखो 'भगवती' (रू. भे.)
उ०—भगवत्ति ग्रावौ भांई, मूझ मदत स्री महामाई ।
—मा. बचनिका

भगवत्पदी–सं० स्त्री० [सं० भगवत्+पदी] गंगा ।

भगवदगीता–सं० स्त्री० [सं० भगवद्+गीता] महाभारत के भीष्मपर्व के ग्रठारह ग्रध्यायों का एक प्रकरण जिसमें ग्रर्जुन का मोह दूर करने के लिये युद्ध-स्थल में किए गए प्रश्नोत्तरों का वर्णन है ।
रू० भे०—भगवतगीता, भागवतगीता ।

भगवन, भगवन्न–सं० पु० [सं० भगवत्] १ लाक्षणिक ग्रर्थ में पूजनीय व्यक्ति के लिए प्रयुक्त ग्रादर सूचक शब्द ।
२ देखो 'भगवांन' (रू. भे.)
उ०—१ भल **भगवन** रा भोग, भीलणी रै घर पाया । सरस सलूणा स्वादैं, जकां री किसी वडायां ।—दसदेव
उ०—२ जेणि मारग बखांणीइ, छडवि गइ ते तन्न । तुझ मिलइ मुख जेहवूं, ते जांणइ **भगवन्न** ।—मा. का. प्र.

भगवांण—१ देखो 'भंगांण' (रू. भे.)
२ देखो 'भगवांन' (रू. भे.) (डिं. को.)

भगवांन–वि० [सं० भगवान] (वत्) ऐश्वर्ययुक्त ।
स० पु०—१ ईश्वर, परमात्मा । (नां. मा.)
उ०—जीहा जप जगदीसवर, धर धीरज भन ध्यांन । करमबंध-निकरम-करण, भव-भंजण **भगवांन** ।—ह. र.
२ शिव, शंकर ।
३ विष्णु ।
४ जिन ।
५ कार्तिकेय ।
६ सूर्य । (ग्र. मा.)
७ कोई पूज्य ग्रौर ग्रादरणीय व्यक्ति ।
रू० भे०—भगवांण, भगव्वांन, भग्गवांन ।
ग्रल्पा०—भगवांनड़ौ ।

भगवांनड़ौ—देखो 'भगवांन' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—मौज चैत वैसाख व्यावां, भरग्यौ घर **भगवांनड़ौ** । ग्राठ पौ'र चौसट घड़ी में, धोरौ पूरै धांनड़ौ ।—दसदेव

भगवाट—देखो 'भगवट' (रू. भे.)
उ०—१ वाघ सुणावै वाहरां, घण ज्यूं ही घरराट । धावै भागां लार नह, नह जावै **भगवाट** ।—बां. दा.
उ०—२ पिंड, छड़, धड़ तूटै पांचावत, थह लूंबिया बिया गज-थाट । चाळि 'कसन' कहै ग्रणियां चढ़, बेस कहै निकळि **भगवाट** ।
—करमसेन कल्यांणोत कछवाहा री गीत
उ०—३ हैमरां गैमरां हुवैं हींसा-रवण, चासटू ऊपरा 'माल'-चडियौ । गौड़ बंगाळ खुरसांणदळ गंजणौ, पालटै कोट **भगवाट** पड़ियौ ।—राव मालदेव री गीत
उ०—४ एक गया **भगवाट,** सांमि छळ मेल्हे कुळ छळ । हेक मुगति साजोत, गया भेदे रवि मंडळ ।—गु. रू. वं.

भगवौ–वि०—गेरूए रंग का ।
उ०—दुख सुख के कागज लिखूं, मांहे बोत सनेस । थे तो मन मांनी नहीं, करसूं **भगवौ** भेस ।—श्री हरिरांमजी महाराज
सं० पु०—गेरूग्रा रंग ।
मुहा०—भगवौ पै'रणौ=संन्यास लेना ।
रू० भे०—भगमौ, भगवउ, भगुवौ ।

भगवौ-भेस–सं० पु० यौ०—संन्यासी का बेश ।
उ०—पकी सेर बै गेरूं गाळी, करियौ **भगवौभेस** । कर गुजरो बौ चल्यौ ग्रागरै, रांम राखसी टेक ।—डूंगजी जवारजी री छावली

भगव्वांन—देखो 'भगवांन' (रू. भे)

भगसास्त्र–सं० पु० [सं० भग+शास्त्र] कामशास्त्र, कोकशास्त्र ।

भगांकुर–सं० पु० [सं० भग+अंकुर] बवासीर नामक रोग ।

भगांण—देखो 'भंगांण' (रू. भे.)

उ०—१ सहर उग्राहे सार बळ, मार सहे असुरांण । डरे दिली डर खाग रै, पुर आगरे **भगांण** ।—रा. रू.

उ०—२ जळनिध सहळ जुआंण, सांमा तू बेड़ा सजै । भैचकि पड़ै **भगांण**, मिसर अरब ऐराक मझ ।—बां. दा.

उ०—३ आया राठौड़ है खडे, प्रजा चढंत अन्नडै । **भगांण** भोमिया डरै, गया अलंग ऊतरै ।—गु. रू. बं.

भगा–क्रि० वि०—लिए, वास्ते, निमित्त ।

भगाणौ, भगाबौ—देखो 'भंजाणौ, भंजाबौ' (रू. भे.)

उ०—पछै मोकळ रै माथै बिस्वासघात, बिचारियौ जांणि चूंडै चीतोड़ माथै चढ़ि राव रणमाल नूं मारि कुमार जोधा नूं **भगायौ** ।—वं. भा.

भगाणहार, हारौ (हारी), भगाणियौ—वि० ।

भगायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भगाईजणौ, भगाईजबौ—कर्म वा० ।

भगायोड़ौ—देखो 'भंजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भगायोड़ी)

भगारणौ, भगारबौ—देखो 'बघारणौ, बघारबौ' (रू. भे.)

भगाळ–सं० स्त्री० [सं० भगालं] आदमी की खोपड़ी ।

भगाळी–सं० पु० [सं० भगालिन्] खोपड़ी धारण करने वाला, शिव, महादेव ।

भगावटौ—देखो 'भखावटौ' (रू. भे.)

भगावणौ, भगावबौ—देखो 'भंजाणौ, भंजाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लूआं रोग **भगाविया**, मुरधर मिनखां जेह । ऊपर दीसै स्याम रंग, भीतर कंचन देह ।—लू

उ०—२ अर बूंदी रै एवज कुमार भोज बीजी ठांम दिवाइ दो ही भाइयां रै बधियौ बिरोध **भगावां** ।—वं. भा.

भगावणहार, हारौ (हारी), भगावणियौ—वि० ।

भगाविओड़ौ, भगावियोड़ौ, भगाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भगावीजणौ, भगावीजबौ—कर्म वा० ।

भगावियोड़ौ—देखो 'भंजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भगावियोड़ी)

भगिनी–सं० स्त्री० [सं०] बहन ।

रू० भे०—भगनी, भग्नी ।

भगिर, भगिरथ, भगिरथ्थ—देखो 'भगीरथ' (रू. भे.)

उ०—१ हेक हिमेर-गिर हुवै, सौ **भगिर** वंस सिगाळौ । विध जिण सह रघुवंस, एक रघुनाथ उजाळौ ।—र. ज. प्र.

उ०—२ देवी मंगळा बींजळा रूप गभ्भे, देवी अब्बळा सब्बळा वोम अभ्भे । देवी सग्ग सूं उतरी गिंग गाथे, देवी सगर सुत हेम **भगिरथ्थ** साथे ।—देवि.

भगी–सं० स्त्री०—भागने की क्रिया या भाव, भगदड़, खलबली ।

उ०—१ तिण सूं उदैकरण रायमल सूं जाय मिळियौ । अग्न धरम करम देय कयौ—म्हें रावजी री फौज में मांगल छां, पण झगड़े री वखत **भगी** घातणां ।'—द. दा.

उ०—२ चखां आूह लगी जगी है गजां नाचरां चढी, नलैं संगी दळां **भगी** पड़तां अचूक । चंगी घड़ा सतारा रै जंगी हौदां बीच 'चांपै,' रंगी' सिवै' सुरंगी बरंगी वार रूक ।—प्रभुदांन मोतीसर

रू० भे०—भग्गी ।

२ फूट ।

उ०—सु ईयां आपस मांहै बात कर फौज में **भग्गी** घाती ।

—नैणसी

भगीरथ–सं० पु० [सं०] सूर्यवंशी अयोध्या नरेश दिलीप के पुत्र जिन्होंने घोर तपस्या करके स्वर्ग से गंगा नदी की अवतारणा की थी ।

उ०—कहि जिण गुताण धीर नृप केहो, जग जस प्रगट **भगीरथ** जेहो । जे सुत अहदस्व भूप करण जग, ते सुत भानुमांनु तेजो-मय ।

—सू. प्र.

रू० भे०—भगिर, भगिरथ, भगिरथ्थ, भागीरथ ।

भगुवौ—देखो 'भगवौ' (रू. भे.)

उ०—उघडे जिरह कंथां सिघां आवधां, भेख **भगुवौ** हुवै रुहिर भांति । जिसौ जोधा-हरौ सोहियौ महाजुध, जिसा जोधार बणिया जमाती ।—राव महेसदास राठौड़ रौ गीत

भगू–वि०—१ भागने वाला ।

२ भागा हुआ, डरपोक ।

रू० भे०—भग्गू ।

अल्पा०—भगेड़ौ, भगोड़ौ ।

भगेड़ौ, भगोड़ौ—देखो 'भगू' (अल्पा., रू. भे.)

भगोळ—देखो 'भूगोळ' (रू. भे.)

भगोलौ–सं० पु०—ऊंची दीवारों का गहरा व गोलाकार किनारदार एक बर्त्तन विशेष ।

भग्गणौ, भग्गबौ—देखो 'भागणौ, भागबौ' (रू. भे.)

उ०—१ एक महूरत सार झड़, मातौ ताती बांण । लग्गा हत्थी **भग्गणौ**, यां वग्गा आरांण ।—रा. रू.

उ०—२ 'चांपै' जेसौ चरड, अनड माझी अडसाळौ । भांगेसर दांणवां, जेण **भग्गौ** भालाळौ ।—गु. रू. बं.

उ०—३ गज तजतां पुळिया गिणै, स्वांमी कासिम संग । दळ भग्गौ दिल्लीस रौ, जांणै परबळ जंग ।—वं भा.

भग्गणहार, हारौ (हारी), भग्गणियौ—वि० ।

भग्गिग्रोड़ौ, भग्गियोड़ौ, भग्ग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भग्गीजणौ, भग्गीजबौ— भाव वा० ।

भग्गदंत—देखो 'भगदत्त' (रू. भे.)
उ०—वालहुउ ससोफउ रग्ग वग्ग, पइनउ पवंग दइ त्रिरौ पग्ग । काळासि चड़िय डूंगरउ कुंत, भ्रिग्गवा हुग्रउ किरि **भग्गदंत** ।
—रा. ज. सी.

भग्गर-सं० पु०—१ कहूर ।
२ मोंठ, ग्वार ग्रादि के फूल । (शेखावाटी)

भग्गवांन—देखो 'भगवांन' (रू. भे.)
उ०—**भग्गवांन** गोविंद गोपाळ भेळा, वडा वित्त फूले दुजां तेरा वेळां । वागे भालियौ ब्रज्जसेरी विचाळे, वळे फेरिग्रो ग्रांगरो नंदवाळे ।—ना. द.

भग्गी—देखो 'भगी' (रू. भे.)

भग्गू—देखो 'भगू' (रू. भे.)

भग्न-वि० [सं०] १ टूटा हुग्रा, खंडित ।
२ पराजित, हारा हुग्रा ।

भग्नदूत—प्राचीन काल में हारी हुई सेना की वह टुकड़ी जो राजा का पराजित होने का समाचार देती थी ।

भग्नपाद-सं० पु०—निम्नलिखित छः नक्षत्र । १ पुनर्वसु । २ उत्तराषाढ । ३ कृत्तिका । ४ उत्तरा फाल्गुनी । ५ पूर्वभाद्रपद, एवं ६ विशाखा ।
रू० भे०—भगनपाद ।

भग्नावसेस-सं० पु० [सं० भग्न + ग्रवशेष] टूटे फूटे मकान का बचा हुग्रा ग्रंश, खंडहर ।

भग्नी—देखो 'भगिनी' (रू. भे.)
उ०—वाचा सांची ग्रापस्यूं रै, ग्रायुं ग्रति सनेह । ग्ररध राज भंडार नो रै, **भग्नी** पती हुइ जेह रै ।—प. च. चौ.

भडंगांण-सं० पु० [देशज] घोड़ा ।
रू० भे०—भडगांम ।

भड़ंद—१ देखो 'भड़िंद' (रू. भे.)
२ देखो 'भड़' (रू. भे.)
उ०—रैत थळो री रात दिन, मन वें धड़कंदे । कोटड़ियां ध्रमका करै, चौवीस भड़ंदे ।—पा. प्र.

भड़-सं० पु०—१ वट वृक्ष की शाखा ।
उ०—**भड़** कटियां सुखत भव, पिरा **भड़** कट सग पाय । जिरा सूं खग भड़ भंपवा, जग उधारा जाय ।—रेवतसिंह भाटी
२ देखो 'भट' (रू. भे.)
उ०—**भड़** भिड़ज्ज गज भार, धार विहरे पाड़े धड़ । ढ़हियां सिर पौढ़ियौ, बौळ भक **बौळ** बहादर ।—सू. प्र.

भड़कंवाड़—देखो 'भड़किंवाड़' (रू. भे.)

भड़क-सं० स्त्री० [ग्रनु०] १ भड़कने की ग्रवस्था या भाव ।
२ जोश, उत्तेजना ।
३ चमक-दमक ।
४ ग्रावाज या ध्वनि विशेष ।
क्रि० वि०—एकदम, शीघ्र ।
उ०—कुहक बांरा छूटरा रै कडकै, ग्ररीयां सांम्हा ग्रडकै । भड़ कायर भाजै तिहां भड़कै, त्रैह त्रसै जिम तड़कै हो ।—वि. कु.
रू० भे०—भड़क्क, भडिक । ग्रल्पा०—भड़कौ ।

भड़कणौ, भड़कबौ-क्रि० ग्र० [ग्रनु०] १ किसी विस्फोटक पदार्थ का ग्राग से संयोग होने पर तीव्र ग्रावाज के साथ जल उठना ।
२ किसी प्रकार के मनोवेग का तीव्र या प्रबल हो जाना ।
उ०—कहियै एम कपूत, भूत जिम बोले **भड़की** । सखरी देतां सीख, तुरत कहै पाछौ तड़की ।—ध. व. ग्रं.
३ किसी व्यक्ति का दूसरों की बातों में ग्राकर विपरीत कार्य करने लगना ।
४ चमकना ।
उ०—ग्ररड़ बाज गोळा उरड़ थळेचां ऊपरां, भड़ाभड़ वळोवळ खाग **भड़की** । ग्ररि घड़ ऊपरां 'दलै' ग्रस ग्रोरियौ, कड़ड़ियौ ग्राभ काय बीज कड़की ।—वीरमियौ मूळौ
५ पहले की ग्रपेक्षा ग्रधिक तीव्र हो जाना, बढ़ जाना ।
६ देखो 'भिड़कणौ, भिड़कबौ' (रू. भे.)
उ०—जोमंगी मलार गैल जोड़रां प्राजळै जोस । प्रळे जादवेस समुड़े मालवेस पांरा । गाढ़ चकै खीची जोड़ **भड़कै** भदोड़ गौड़ । ग्रोभके ऊजीरा सोबा संकै चाहुवांरा ।—हुक्मीचंद खिड़ियौ
भड़कणहार, हारौ (हारी), भड़कणियौ—वि० ।
भड़काड़णौ, भड़काड़बौ, भड़काणौ, भड़काबौ, भड़कावणौ, भड़कावबौ—प्रे० रू० ।
भड़किग्रोड़ौ, भड़कियोड़ौ, भड़क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भड़कीजणौ, भड़कीजबौ—भाव वा० ।
भड़क्कणौ, भड़क्कबौ, भड़खणौ, भड़खबौ, भडकणौ, भडकबौ, भिड़कणौ, भिड़कबौ—रू० भे० ।

भड़कमाड़—देखो 'भड़किंवाड़' (रू. भे.)

भड़काड़णौ, भड़काड़बौ—१ देखो 'भड़कारणौ, भड़काबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़काणौ, भिड़काबौ' (रू. भे.)
भड़काड़णहार, हारौ (हारी), भड़काड़णियौ—वि० ।
भड़काड़िग्रोड़ौ, भड़काड़ियोड़ौ, भड़काड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भड़काड़ीजणौ, भड़काड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भड़काड़ियोड़ौ—१ देखो 'भड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री०.भड़काड़ियोड़ी)

भड़काणौ, भड़काबौ-क्रि० स० [ग्रनु०] १ किसी विस्फोटकीय पदार्थ

को आग के संयोग से तेज ध्वनी के साथ जलाना, प्रज्वलित करना।
२ किसी प्रकार के मनोवेग को तेज या प्रबल करना।
३ किसी व्यक्ति को बातों के भुलावे में डालकर विपरीत कार्य करने में प्रवृत्त करना।
४ पहले की अपेक्षा अधिक तीव्र करना, बढ़ा देना।
५ देखो 'भिड़काणौ, भिड़काबौ' (रू. भे.)

भड़काणहार, हारौ (हारी), भड़काणियौ—वि०।
भड़कायोड़ौ—भू० का० कृ०।
भड़काईजणौ, भड़काईजबौ—कर्म वा०।
भड़काड़णौ, भड़काडबौ, भड़कावणौ, भड़कावबौ, भड़क्काणौ, भड़क्काबौ, भड़खाड़णौ, भड़खाड़बौ, भड़खाणौ, भड़खाबौ, भड़खावणौ, भड़खावबौ, भिड़काणौ, भिड़काबौ—रू० भे०।

भड़कायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ कोई विस्फोटकीय पदार्थ आग के सयोग से तेज ध्वनि के साथ जलाया हुआ। २ किसी प्रकार का मनोवेग तेज या प्रबल किया हुआ। ३ पहले की अपेक्षा अधिक तीव्र किया हुआ, बढ़ाया हुआ। ४ देखो 'भिड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भड़कायोड़ी)

भड़कावणौ, भड़कावबौ—१ देखो 'भड़काणौ, भड़काबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़काणौ, भिड़काबौ' (रू. भे.)

भड़कावणहार, हारौ (हारी), भड़कावणियौ—वि०।
भड़काविअोड़ौ, भड़कावियोड़ौ, भड़काव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भड़कावीजणौ, भड़कावीजबौ—कर्म वा०।

भड़कावियोड़ौ—१ देखो 'भड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भड़कावियोड़ी)

भड़किमाड़, भड़किवाड़–सं० पु० यौ० [सं० भट+कपाट] १ योद्धा।
उ०—१ मनमोट गाहडि कोट माझी, चाल पह कलि चाल। सपरवाळ विरद विसाळ मांलिम, **भड़किमाड़** भुजाळ।—ल. पिं.
२ रक्षक, पहरेदार।

उ०—१ बागड़ रै कांठे चहुवांणा **भड़किवाड़** रजपूत वेधीला छै। सु धणिवां रै नै चहुवांणां रै रस थोड़ा दिन हुवै छै।—नैणसी
उ०—२ आंपै वांसहवाळा रा धणी कदै नहीं। आंपै वांसहवाळा रा **भड़किवाड़** छां।—नैणसी

रू० भे०—**भड़कंवाड़, भड़कमाड़, भड़किमाड़, भड़ांकिमाड़, भड़ांकिवाड़, भडकंवाड़, भडकिमाड, भड़किवाड़, भडकिवाड़, भडांकिमाड़, भिड़कंमाड़, भिड़कंवाड़, भिड़किमाड़, भिड़किवाड़, भिडकमाड़, भिडकवाड़, भिडकिमाड़, भिडकिवाड़**।

भड़कियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ कोई विस्फोटकीय पदार्थ आग के संयोग से तेज ध्वनि के साथ जला हुआ। २ किसी प्रकार का मनोवेग तेज या प्रबल हुवा हुआ। ३ कोई व्यक्ति बातों के भुलावे में पड़कर विपरीत कार्य करने में प्रवृत्त हुवा हुआ। ४ पहले की अपेक्षा अधिक तीव्र हुवा हुआ, बढ़ा हुआ.
५ देखो 'भिड़कियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भड़कियोड़ी)

भड़कीलौ–वि० [अनु] (स्त्री० भड़कीली) १ चमक-दमक वाला।
२ बहुत जल्दी आवेश में आने वाला, उत्तेजित होने वाला।
३ विस्फोट होने योग्य।
४ चौंकने वाला।

भड़कौ–सं० पु० [अनु०] १ चमक-दमक, तड़क-भड़क।
२ ध्वनि विशेष।

भड़क्क· देखो 'भड़क' (रू. भे.)
उ०—१ रत्ता पी गणांक्के कै भंगक्के गे बीमांण रंभा, लोयणां भंगाक्क डंड मणाक्का लेवाण। हुवै पंखा **भड़क्का** श्रीयांण बीर है हणाक्के, कैगरां संगाक्के बाजै खग्गां केवांण।
—बहादरसिंह गेहलिया री गीत
उ०—२ फीलै धोमरंगा धड़ा धू धड़ा धड़क्का फूटै, बीर अंगां तूटै कड़ां जरद्दां बड़क्क। जोम रूपी गोम हूंता बीजरी कड़क्क जेम, भूरा बाध भूप कटी खीजरी **भड़क्क**।—हुकमीचंद खिड़ियो

भड़क्कणौ, भड़क्कबौ—१ देखो 'भड़कणौ' भड़कबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़कणौ, भिड़कबौ' (रू. भे.)
उ०—देखतां एहवौ जंग धड़क्के आगरी दिल्ली बंबी जैत भागरा रड़क्कै बारंबार। भड़क्कै खाग रा बाढ़ **भड़क्कै** कायरां झुंड। हुगल्लां नाग रा माथा रड़क्कै हजार।—सूरजमल मिसण

भड़क्काणौ, भड़क्काबौ—देखो 'भड़काणौ, भड़काबौ' (रू. भे.)
भड़क्कायोड़ौ—१ देखो 'भड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

भड़क्कियोड़ौ—१ देखो 'भड़कियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़कियोड़ौ' (रू. भे.)

भड़खणौ, भड़खबौ—१ देखो 'भड़कणौ, भड़कबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़कणौ, भिड़कबौ' (रू. भे.)
भड़खणहार, हारौ (हारी), भड़खणियौ—वि०।
भड़खाड़णौ, भड़खाड़बौ, भड़खाणौ, भड़खाबौ, भड़खावणौ, भड़खावबौ—प्रे० रू०।
भड़खिअोड़ौ, भड़खियोड़ौ, भड़ख्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भड़खीजणौ, भड़खीजबौ—भाव वा०।

भड़खाड़णौ, भड़खाड़बौ—देखो 'भड़काणौ, भड़काबौ' (रू. भे.)
भड़खाड़णहार, हारौ (हारी), भड़खाड़णियौ—वि०।
भड़खाड़िअोड़ौ, भड़खाड़ियोड़ौ, भड़खाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भड़खाड़ीजणौ, भड़खाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भड़खाड़ियोड़ौ—देखो 'भड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भड़खाड़ियोड़ी)

भड़खाणौ–वि० (स्त्री० भड़खाणी) योद्धाओं का भक्षण करने वाला।
उ०—सत्तसई दोहामयी, मीसण सूरजमाल। जंपै **भड़खाणी** जठै, सुणै कायरां साल।—वी. स.

भड़खाणौ, भड़खाबौ—देखो 'भड़काणौ, भड़काबौ' (रू. भे.)
भड़खाणहार, हारौ (हारी), भड़खांणियौ—वि०।
भड़खायोड़ौ—भू० का० कृ०।
भड़खाईजणौ, भड़खाईजबौ—कर्म वा०।

भड़खायोड़ौ—देखो 'भड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भड़खायोड़ी)

भड़खावणौ, भड़खावबौ—देखो 'भड़काणौ' भड़काबौ' (रू. भे.)
भड़खावणहार, हारौ (हारी), भड़खावणियौ—वि०।
भड़खाविओड़ौ, भड़खावियोड़ौ, भड़खाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भड़खावीजणौ, भड़खावीजबौ—कर्म वा०।

भड़खावियोड़ौ—देखो 'भड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भड़खावियोड़ी)

भड़ड़ाट–सं० स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष।

भड़च्छणौ, भड़च्छबौ–क्रि० स०—१ दांतों से काटना।
२ जल्दी-जल्दी खाना।
भड़च्छणहार, हारौ (हारी), भड़च्छणियौ—वि०।
भड़च्छिओड़ौ, भड़च्छियोड़ौ, भड़च्छ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भड़च्छीजणौ, भड़च्छीजबौ—कर्म वा०।

भड़च्छियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ दांतों से काटा हुआ। २ जल्दी-जल्दी खाया हुआ।
(स्त्री० भड़च्छियोड़ी)

भड़ज–सं० पु०—१ घोड़ा, अश्व।
उ०—रहै लोक अणपार, हुवै घूमरां मुहल्लां। आवै रहै अनेक, **भड़ज** भड़ भल्ला भल्लां।—सू. प्र.
रू० भे०—भडज, भिड़ज्ज, भिड़ग, भिड़ज, भिड़जाळ, भिड़ज्ज, भिडज, भिडज्ज।

भड़णौ, भड़बौ—देखो 'भिड़णौ, भिड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ बिहुंवां नह सूधौ बाहुड़बौ, भारथ हुवौ ग्राह गज **भड़बौ**। कर प्रब सहंस बरस भारथ कौ, जोर टूट बीछड़बौ जुथ कौ।
—र. ज. प्र.
भड़णहार, हारौ (हारी), भड़णियौ—वि०।
भड़िओड़ौ, भड़ियोड़ौ, भड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भड़ीजणौ, भड़ीजबौ—कर्म वा०।

भड़ताळ–सं० स्त्री० [दे०] १ आग, अग्नि।
उ०—वेहु कांबड़ा सार तड़ियाल वाळा बणै, प्रळै जळ पांण **भड़ताळ** पीधी। जमी रछपाळ भुपाळ बांधै जका, काळ ऊसताज करमाळ कीधी।—जवांनजी आढौ
२ अति उष्ण, बहुत गर्म।
रू० भे०—भडताळ।

भड़तौ—देखो 'भड़ीतौ' (रू. भे.)

भड़त्थणौ, भड़त्थबौ–क्रि० स० [सं० भृष्ट] भुनना।
भड़त्थणहार, हारौ (हारी), भड़त्थणियौ—वि०।
भड़त्थिओड़ौ, भड़त्थियोड़ौ, भड़त्थ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भड़त्थीजणौ, भड़त्थीजबौ—कर्म वा०।
रू० भे०—भड़थणौ, भड़थबौ, भडत्थणौ, भडत्थबौ, भडथणौ, भडथबौ।

भड़त्थियोड़ौ–भू० का० कृ० [सं० भृष्ट] भुना हुआ।
(स्त्री० भड़त्थियोड़ी)

भड़थणौ, भड़थबौ—देखो 'भड़त्थणौ, भड़त्थबौ' (रू. भे.)
भड़थणहार, हारौ (हारी), भड़थणियौ—वि०।
भड़थिओड़ौ, भड़थियोड़ौ, भड़थ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भड़थीजणौ, भड़थीजबौ—कर्म वा०।

भड़थियोड़ौ—देखो 'भड़त्थियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भड़थियोड़ी)

भड़पाळक–सं० पु० [सं० भटः+पालक] सेनापति।
रू० भे०—भडपाळक।

भड़बोलियौ—देखो 'भड़भोलियौ' (रू. भे.)

भड़भड़णौ, भड़भड़बौ–क्रि० अ० [अनु०] भड़-भड़ की ध्वनि होना।
भड़भड़णहार, हारौ (हारी), भड़भड़णियौ—वि०।
भड़भड़िओड़ौ, भड़भड़ियोड़ौ भड़भड़्योड़ौ—भू० का कृ०।
भड़भड़ीजणौ, भड़भड़ीजबौ—भाव वा०।
भड़भड़ाणौ—रू० भे०।

भड़भड़ाट–सं० स्त्री० [अनु०] भड़-भड़ की ध्वनि।

भड़भड़ाणौ, भड़भड़ाबौ—क्रि० स० १ भड़-भड़ की ध्वनि करना।
२ देखो 'भड़भड़णौ, भड़भड़बौ' (रू. भे.)
भड़भड़ाणहार, हारौ (हारी), भड़भड़ाणियौ—वि०।
भड़भड़ायोड़ौ—भू० का कृ०।
भड़भड़ाईजणौ, भड़भड़ाईजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

भड़भड़ायोड़ौ–भू० का० कृ० [अनु०] १ भड़-भड़ की ध्वनि किया हुआ.
२ देखो 'भड़भड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भड़भड़ायोड़ी)

भड़भड़ियोड़ौ–भू० का० कृ०—भड़-भड़ की ध्वनि हुवा हुआ।
(स्त्री० भड़भड़ियोड़ी)

भड़भड़ियौ–वि० [अनु०] १ व्यर्थ की बातें करने वाला, गप्पी।
सं० पु० [अनु०] मोटर-साइकिल।

भड़भड़ी–सं० स्त्री०—१ ध्वनि विशेष।
२ महामारी रोग, प्लेग।
रू० भे०—भडाभड़ी।

भड़भूंजौ–सं० पु० [सं० भ्राष्ट्र+भर्जनम्] भाड़ झोंकने व अन्न भुनने का कार्य करने वाला। (मा. म.)

भड़भोलियौ, भड़भोलौ, भड़भोल्यौ–सं० पु० [देशज] होलिकोत्सव पर गोबर की बनाई जाने वाली वह छोटी टिकियाएं जिन्हें एक माला के रूप में पिरोकर होलिका-दहन में जला देते हैं।

वि० वि०—प्राय: छोटे बच्चे होली के चार-पांच दिन पहले गोबर की छेददार टिकियाएं बना लेते हैं और वैसे ही पान और नारियल भी बनाते हैं। इनके सूखने पर इनकी एक माला बनाकर होलिका-दहन के समय उसमें डाल देते हैं।

उ०—कांनां में दोय **भड़भोल्या** घाल्या। गळा में मींगणा री माळा पं'री। जोगी रौ रूप धारण कर नै वो उण धूमाळा माथै पालथी मार ने बैठग्यौ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—भड़बोलियौ, भरभोलियौ।

भड़यैत–वि० [सं० भट+रा०प्र०यैत] युद्ध करने वाला, भिड़ने वाला।

उ०—एकौ भड़ जोड़ फबै **भड़यैत**, जुड़ै 'महक्रन' समोभ्रम 'जैत'। बरच्छिय वेधत घाट बराळ, मदां छकि जांणि पड़ै मतवाळ।

—सू. प्र.

भड़वाई–सं० स्त्री० [सं० भट्+रा० प्र० वाई] १ भड़ुओं का कार्य। २ वेश्याओं की दलाली।

रू० भे०—भडवापण, भडवापणौ।

भड़वाणौ, भड़वाबौ–क्रि० स०—भगा दिए, पराजित कर दिए।

उ०—केता रुंड मुंड काटिया, रिण जंग रचाया। उसर गया रिण ओछड़ै, 'माले' **भड़वाया**।—वी. मा.

भड़वाणहार, हारौ (हारी), भड़वाणियौ—वि०।

भड़वायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भड़वाईजणौ, भड़वाईजबौ—कर्म वा०।

भड़वापणौ—देखो 'भड़वाई'।

उ०—भड़वा **भड़वापणूं** चुगलिया चुगली चासी। ठग-ठग लेसी ठोठ, कुलतिया करम करासी।—ऊ. का.

भड़वौ–सं० पु० [सं० भाटिक] (स्त्री० भड़वी) १ वैश्याओं की दलाली करने वाला।

२ वैश्याओं के साथ तबला-सारंगी बजाने वाला।

भड़हक्क–सं० पु० [सं० भट+राज०हक्क] योद्धाओं का प्रबल शब्द।

उ०—झड़ मातौ सर गोळियां, हुय बड़बड़ **भड़हक्क**। रीस जिवारी आसुरां, झड़िया तीस तुरक्क।—रा. रू.

रू० भे०—भडहक्क।

भड़ांकिमाड़, भड़ांकिवाड़—देखो 'भड़किमाड़' (रू. भे.)

उ०—**भड़ांकिमाड़** ओनाड अभंग, अवे अपार दातार विडंग। पखां उजाळ भूपाळ प्रवीत, रखै विचा आचार सुरीत।—ल. पिं.

भड़ांठेक–वि०—पूर्ण स्वस्थ।

रू० भे०—भडांठेक।

भड़ांबळी· छिनकिनाहट।

रू० भे०—भडांबळी।

भड़ांभड़-- [illegible]।

उ० --[illegible] तुझ सरीखो प्रांण, आंधै रा आंधा पूत अजांण। आवै तू आप लियौ अवतार, **भड़ांभड़** भोमि उतारण भार।

—पी. ग्रं.

भड़ाक–क्रि० वि० [अनु०] तुरन्त, शीघ्र।

उ०—१ गौहरै चढ़ियां मरंद रै, भैंगक जाय **भड़ाक**। गैंवर भूलै गाळबौ, चीसै चढ़ चित चाक।—बां. दा.

उ०—२ इतनी सुण गोपाळदास **भड़ाक** से ऊठ जमी सूं हाथ लगाय जाय सलांम कीवी। गोपाळदास गौड़ री वारता

२ देखो 'भड़ाकौ' (मह., रू. भे.)

भड़ाकौ–सं० पु० [अनु०] बन्दूक या किसी प्रकार के विस्फोट से उत्पन्न होने वाली ध्वनि।

उ०—बंदूकां रा **भड़ाका** अर माछैतियां री खबर सुणनै गांव में खळबळाट माचगी।—रातवासौ

मह०—भड़ाक।

भड़ाझड़–सं० स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष।

उ०—अठै सफीलां उपरा निपट अमांमी तरवारियां री **भड़ाझड़** बागी।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

भड़ाभड़–सं० स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष।

उ०—पडे वेध कूरमदे रांण छळ 'पीथलौ'। सलां सर बीज जिम बहै रवतौ। जागरण **भड़ाभड़** छूट गोळां जठै। रूक भड़ डहेडड़ रमै रवतौ।—वसराम रावळ

उ०—२ गड़ा पड़ बीगड़ै नहीं हरगिज गहूं, चड़ाभड़ न आवै रोग चाळौ। न फैलै घड़ाघड़ लाय गहमदनगर, **भड़ाभड़** भवांनी बोल भाळौ।—खेतसी बारहठ

क्रि० वि०—शीघ्रता से, तेजी से।

उ०—अड़ड़ बाज गोळा उरड़ थळेचां ऊपरां, **भड़ाभड़** बळोवळ खाग भड़की। अरि घड़ ऊपरां 'दलै' अस ओरियौ, कड़डियौ आभ काय बीज कड़की।—वीरमियौ मूळौ

रू० भे०—भडाभड।

भड़ाभड़ी–सं० स्त्री० [अनु०] १ ध्वनि विशेष।

उ०—**भड़ाभड़ि** भड़ाभड़ि नाळ छूटै भली, कड़ाकड़ि कूट बाजै कुठारां। तड़ातड़ि तड़ातड़ि सबद गढ ठावतां, बड़ाबड़ि बांण लागै ऊठारां।—प. प. चौ.

२ देखो 'भड़भड़ी' (रू. भे.)

भड़ाल—देखो 'भट' (मह., रू. भे.)

उ०—भड़े सनाहां भड़ाळां भांण, उगां ह्वे भळां का भाला, तसां बीजूं जळांका साळांका बीज तेम । मूंछां दे बळाका मदां आया नाग सोबा माथै, जाया गोकळां का तू खिजाया वाघ जेम ।
—हिम्मतसिंह सक्तावत री गीत

भड़ालौ—देखो 'भट' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—थांभियां छड़ालां खळां खेर रा **भड़ालां** थोकां धातियां पैनाळां सीस सेलरा धुजाव । हैजमां त्रमाळां गाज गणेस रा रूप हाती, सुरेस रा ढाळा 'प्रबतेस' रा सुजाव ।—रोडजी भादौ

भड़ाव—१ समूह, झुण्ड ।
उ०—कोलू वाळा कांगरां, तिण दिन पडसी ताव । उण दिन आडा आवसी, भीलां तणां **भड़ाव** ।—पा. प्र.
रू० भे०—भडाव ।

भड़िंद–सं० पु०—भारी पदार्थ के ऊपर से वेग पूर्वक गिरने से होने वाली ध्वनि ।
उ०—मौत रा आंटा में झिलियोड़ी सिवाय टसकणा रै वा समूळी वांणी भूलगी ही । बोलणौ पांतरगी ही । उण नै लखायौ के पेट रै मांय भड़िंद **भड़िंद** करता कोई भाखर भिड़ै ।—फुलवाड़ी
रू० भे०—भड़ंद, भडींद ।

भड़िक—देखो 'भड़क' (रू. भे.)
उ०—सज्जण दुज्जण के कहे, **भड़िक** न दीजइ गाळि । हळिवइ हळिवइ छंडियइ, जिम जळ छंडइ पाळि ।—ढो. मा.

भड़ियाल–वि०—टक्कर लेने वाला ।
उ०—बजर पड़ियाळ बागां बजर बेढ़ री, भवांनी चकर **भड़ियाळ** भालौ । फोड़ कड़ियाळ पैली तरफ फरहरै, असौ छड़ियाळ 'भीमेण' आळौ ।—महाराणा भीमसिंह रा भाला री गीत

भड़िल—देखो 'भडिल' (रू. भे.)

भड़ियोड़ौ—देखो 'भिड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भड़ियोड़ी)

भड़ींद—देखो 'भड़िंद' (रू. भे.)

भड़ीड़–सं० पु० [अनु०] १ प्रहार, चोट ।
२ प्रहार या चोट से उत्पन्न ध्वनि विशेष ।

भड़ीतौ–सं० पु० [सं० भटित्र] १ सींखचौं पर भुना हुआं ।
२ आलू, बैंगन इत्यादि सब्जी को आग में भुनने के बाद छौंक कर बनाया जाने वाला एग चटपटा सालन ।
३ वह पदार्थ जो दब जाने अथवा कुचला जाने से विकृत एवं कुरूपावस्था को प्राप्त हो गया हो ।
मुहा०—भड़तौ करणौ, भड़ीतौ बणाणौ=कुचल कर कुरूप या विकृत कर देना।
रू० भे०—भड़तौ, भडत्थ, भडिय, भडीतौ, भुड़तौ, भुडतौ ।

भड़ीहार–सं० पु०—भटिहारा । (नैणसी)

भड़ूस–सं० पु०—बिना पानी के सफेद बादल ।
रू० भे०—भड्डूस ।

भड़ेच–क्रि० वि०—शीघ्र ।

भड़ोची–वि०—भड़ौंच से संबधित, भड़ौंचका ।
सं० पु०—भड़ोच देश का घोड़ा।

भड़ोलियौ–सं० पु० [देशज] वट वृक्ष का फल ।
उ०—राई जिसा ईण छोटा सा बीज में बड़ला री औ जंगी रूप कठै लुकयोड़ौ ही । औ जड़ियां, औ गोड, औ डाळा, औ अणगिण **भड़ोलिया** अर औ झूलती साखां ।—फुलवाड़ी
रू० भे०—भरूअच्छ, भरूअछपुर, भरूयच्छि, भरूअच ।

भच–सं० पु० [अनु०] १ सिर में होने वाली पीड़ा विशेष जिससे स्नायु-जाल में स्फुरण होता है ।
२ किसी कोमल वस्तु या प्राणी के एक झटके से कटने से उत्पन्न ध्वनि विशेष ।
ज्यूं—बकरिया री माथौ भच देणी कटग्यौ । म्हैं उठै बैठो भच-भच मूळा खावती हो ।
क्रि० वि०—१ एकदम, अचानक ।
उ०—जे औ नींद री मिस करतौ भच दैणी ऊठ नै म्हनै बेरा में थरकाय देवै तौ पछै म्हां में कैड़ी भूंडी बीतै ।—फुलवाड़ी
२ शीघ्र, तुरन्त ।
उ०—अर आ बात विचारतां ईं वौ अणजेज कमर सूं बंधियोड़ी कटार काढी । **भच** दैणी आपरी पींडी री मांस तोड़ नै काळिंदर रै सांमी वगाय दियौ ।—फुलवाड़ी
रू० भे०—भच्च, भच्छ ।

भचक–सं० स्त्री० [अनु०] १ भय, आतंक ।
उ०—चमै दळ घटा सम वीज साबळ चमक, **भचक** द्रगपाळ रज अंबर ढक भांण नु । जटाधर उमंग गण हलै जंग जांण नु, इसौ कुण अभंग लग उदै आथांण नुं ।—रांमलाल बारहठ
२ प्रहार से उत्पन्न ध्वनि ।
उ०—रौद्रांण **भचक** भालां गरीठ, धारक्क बहै गजबाज धीठ । धड़ हड़ै धोमां-रव चरख धोम,बणि धोम अंधारव गोम बोम ।—सू. प्र.
३ टक्कर, भिड़न्त ।
उ०—१ कमरां कस आयौ रण काळौ, बांधण माथै मोड़ बिलालौ । भुजडंड पकड़ ऊठियौ भालो, लेबा **भचक** रूठियौ 'लालौ' ।—बरजूबाई
उ०—२ ताकड़ा 'अजण' 'भीमेण' ताय, खांगडा उरस थी **भचक** खाय । 'अभपती' जती गोरक्ख एम, तंरै' सख बारह पंथ तेम ।
—वि, स.
रू० भे०—भचक्क ।
अल्पा०—भचकौ, भचक्कौ ।

भचकणौ, भचकबौ–क्रि० अ०—१ आश्चर्य निमग्न होना, **भौंचक्का** होना ।
क्रि० स०—२ प्रहार करना।
उ०—**भचके** 'बखतेस' गुसै भरियौ, ब्रजराज उपासक वीफरियौ

जुध जांगिक क्रोध मतै अजरै, करि दांमणि धार संग्रांम करै ।

—सू. प्र.

३ काटना ।

४ देखो 'भिचकणौ, भिचकबौ' (रू. भे.)

भचकणहार, हारौ (हारी), भचकणियौ—वि० ।

भचकिअोड़ौ, भचकियोड़ौ, भचक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भचकीजणौ, भचकीजबौ—भाव वा० ।

भचक्कणौ, भचक्कबौ—रू० भे० ।

भचकियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ आश्चर्य निमग्न हुवा हुआ, भौंचक्का हुवा हुआ. २ प्रहार किया हुआ. ३ काटा हुआ. ४ चौंका हुआ.

५ देखो 'भिचकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भचकियोड़ी)

भचकै–क्रि० वि० [अनु०] १ शीघ्रता से, जल्दी ।

उ०—१ खुद की पचायती नीं करै, पण म्हारै हेला रै समचै ई **भचकै** तूट तूट नै पड़ै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ नित बिगाड़ सूं खेत रौ धणी काठौ कायौ ह्वियोड़ौ हौ । गधा री हूंकणी सुणनै वौ **भचकै** ऊभौ ह्वियौ ।—फुलवाड़ी

२ एक दम, अचानक ।

उ०—महारांणी **भचकै** मूंडौ फेर नै बोली—जे आ मिसखरी री बात है तौ म्हनै कीं जबाब नीं देवणौ ।—फुलवाड़ी

भचकौ—देखो 'भचक' (अल्पा., रू. भे.)

भचक्क—देखो 'भचक' (रू. भे.)

उ०—खेंगक्क उचक्क खाटक्क खगक्क, काटक्क झाटक्क झटक्क बिजक्क बळक्क जुरक्क जरक्क, सेलक्क धमक्क **भचक्क** सहक्क ।—सू. प्र.

भचक्कणौ, भचक्कबौ—देखो 'भचकणौ, भचकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हिंदवांण तुरक्कांण हिचै, रिण ढांण वीरांण नूतांण रचै । करड़क्क हुवै सिलहक्क कड़ां, धमचक्क **भचक्कत** सेल धड़ां ।

—सू. प्र.

उ०—२ मेक मास बारूद, हिंदु तुरकान हुचक्किय । हल्लौ करि फिरि हल्लि, देख भुवलोक भचक्किय ।—ला. रा.

भचक्कणहार, हारौ (हारी), भचक्कणियो—वि० ।

भचक्किअोड़ौ, भचक्कियोड़ौ, भचक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भचक्कीजणौ, भचक्कीजबौ—भाव वा० ।

भचक्कियोड़ौ—देखो 'भचकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भचक्कियोड़ी)

भचक्कौ–सं० पु०—देखो 'भचक' (अल्पा., रू. भे.)

भचक्र–सं० पु० [सं०] १ नक्षत्रों का समूह ।

२ ग्रहों के चलने का कक्ष या मार्ग ।

भचड़–सं० स्त्री० [अनु०] १ घास या अन्य वनस्पति को उखाड़ने या काटने से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—जूं जूं सिध जावै अे ! डीरा मूंटण नै । कीकर खूंटै अे ! भचड़-भचड़ ।—फुलवाड़ी

२ किसी वस्तु को चबाकर खाने से उत्पन्न ध्वनि ।

उ०—१ माठ माथै वा दोनूं कुत्तां नै खारी मीचै जाब्ता सूं ढक दिया । अर खुदौ-खुद निरांत होय नै **भचड़ भचड़** मोठ चरण लागी ।—फुलवाड़ो

उ०—२ कुमार रोटी देख नै घणौ राजी हुवौ । **भचड़ भचड़** सगळी रोटी खायग्यौ ।—फुलवाड़ी

३ देखो 'भचीड़' (रू. भे.)

भचड़णौ, भचड़बौ–क्रि० अ० [अनु०] १ टक्कर खाना ।

उ०—वढ़ पड़ बिहर शाटां 'विलंद', भुजलग झट सेलां **भचड़ि** । खग वसूं कहे 'हटमल' सुतन, 'अमीन' जिम खाडे अनाड़ ।

—सू. प्र.

२ शीघ्रता से मोटे ग्रास भरते हुए कोई वस्तु खाना ।

ज्यूं—रोट्यां भचड़णी, मूळा भचड़णा ।

भचड़णहार, हारौ (हारी), भचड़णियौ—वि० ।

भचड़िअोड़ौ, भचड़ियोड़ौ, भचड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भचड़ीजणौ, भचड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भचड़ियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ टक्कर खाया हुआ. २ शीघ्रता से मोटे ग्रास भरते हुए कोई वस्तु खाया हुआ ।

(स्त्री० भचड़ियोड़ी)

भचभचाणौ, भचभचाबौ–क्रि० स० [अनु०] १ शीघ्रता करना ।

उ०—ताहरां राजा रो लोक ऊभौ थौ तिकै **भच-भचाय** अर कुंवर नूं अर रजपूतां नूं मार लिया ।—नैणसी

२ खटखटाना ।

३ देखो 'भचड़णौ, भचड़बौ' (रू. भे.)

ज्यूं—गाजरां भचभचाणी, मूळा भचभचाणा ।

भचभचाणहार, हारौ (हारी), भचभचाणियौ—वि० ।

भचभचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भचभचाईजणौ, भचभचाईजबौ—कर्म वा० ।

भचभचायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ शीघ्रता किया हुआ. २ खटखटाया हुआ ।

(स्त्री० भचभचायोड़ी)

भचभेड़ौ—देखो 'भचीड़ौ' ।

उ०—लाखां जन डोलै **भचभेड़ा** लेता, दारू खोरां री घोरां दव देता । भाजो भाजो कर भोजन कज भीखै, दुख में दरवाजो दांतां रौ दीखै ।—ऊ. का.

भचाक–सं० स्त्री० [देशज] १ प्रहार, आघात ।

उ०—भाला री **भचाकां** चलाइ केही पटेतांनूं पाडि कुमार आपरै देस री दिसा आडै पग आवण नूं मरतै मारतै प्रयांण कीधौ ।

—वं. भा.

उ०—सालौ सीमाड़ां स्रोयणां ग्रालौ मांग रौ कणेठी सोहे, दकालौ काळ रौ भैरवांग रौ डचाक । बिलाला पांग रौ दूत नाथ री हाक वाळौ, भालौ स्त्री रांग रौ भूतनाथ रौ **भचाक** ।
—कविराजा सूरजमल्ल मीसण

भचाभच–सं० स्त्री० [ग्रनु०] १ दो वस्तुग्रों के ग्रापस में टकराने से उत्पन्न ध्वनि ।
उ०—साळ रै मांय सड़िदा बाजता हा ग्रर बारै मासी **भचाभच** ग्राडौ भचेड़ती ही ।—फुलवाड़ी
२ शीघ्रता, सत्वरता ।

भचीड़–सं० पु० [ग्रनु०] १ ग्राघात, प्रहार ।
उ०—१ ग्रा कैय वा बीजळी री गळाई सळावा भरती भच उठा सूं ताचकी सौ मोगरी हाथ में ग्रावतां ई ग्रावेस पूरा जोर सूं ग्रागळ रै दोनू कांनी **भचीड़** मैल दिया ।—फुलवाड़ी
उ०—२ सरमा सरम दुख सांसै, पिंड सुजाग सहावै पीड़ । खागां जंग **भचीड़** न खावै, भोग तणै वस खाय **भचीड़** ।
—कविराजा बांकीदास
क्रि० प्र०—उडणौ, मेलणौ ।
२ ग्राघात, प्रहार या टक्कर की ध्वनि ।
३ टक्कर, धक्का ।
४ दुःख, कष्ट ।
उ०—सरमा सरम मरै दुख सांसै, पिंड सुजाग सहावै पीड़ । खागां जंग भचीड़ न खावै, भोग तणै वस खाय **भचीड़** ।—बां. दा.
५ दर्द, चीस, टीस ।
६ भटकने की क्रिया या भाव ।
७ हांनि, नुकसान ।
क्रि० प्र०—खाणौ ।
ग्रल्पा०—भचीड़ौ ।
रू० भे०—भचड़, भचेड़, भचेड़ण ।

भचीड़णौ, भचीड़बौ–क्रि० स०—१ खटखटाना ।
उ०—चार दाड़्यां रा ग्राडा **भचीड़**, वानै जगाई, रोय रोय पग भाल्या, घणा ई नेवरा करचा, पण ग्रेक ई हुंकारौ नीं भरयौ ।
—फुलवाड़ी
२ किसी एक चीज को किसी दूसरी चीज से जोर से टकराना ।
भचीड़णहार, हारौ (हारी), भचीड़णियौ—वि० ।
भचीड़िग्रोड़ौ, भचीड़ियोड़ौ, भचीड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भचीड़ीजणौ, भचीड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भचीड़ियोड़ौ—१ खटखटाया हुग्रा ।
२ किसी एक चीज को दूसरी चीज से जोर से टकराया हुग्रा ।
(स्त्री० भचीड़ियोड़ी)

भचीड़ौ—देखो 'भचीड़' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—१ चभीका मेलता माथा मांय सूं ठणकिया ग्रर ग्रांख्यां में जावता **भचीड़ा** ऊळ्या ।—फुलवाड़ी
उ०—२ लूट, डकैती, खून, चोरियां, लाय लगी तौ भाळौ भाळ । भूख **भचीड़ा** फिरै खावती, नाचै भूमै सौ-सौ ताळ ।—चेतमांनखा

भचेड़णौ, भचेड़बौ—देखो 'भचीड़णौ, भचीड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ कोतवाळ मजा में कोड सूं पगथळी चाटतौ हौ के ग्राडौ **भचेड़ण** री ग्रावाज सुणीजी ।—फुलवाड़ी
उ०—२ मासी घणी ई ग्राडौ भचेड़ियौ, हाका करचा, पण भटियांणी कीं गिनत करी नीं ।—फुलवाड़ी
भचेड़णहार हारौ (हारी), भचेड़णियौ—वि० ।
भचेड़िग्रोड़ौ, भचेड़ियोड़ौ, भचेड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भचेड़ीजणौ, भचेड़ीजबौ—कर्म वा० ।
भचाड़णौ, भचाड़बौ, भचीड़णौ, भचीड़बौ—रू० भे० ।

भच्च—देखो 'भच' (रू. भे.)
उ०—माथौ **भच्च-भच्च** करण लागौ । ग्रांखियां वळण लागी । सरीर भारी हुयग्यौ ।—वरसगांठ

भच्छ—१ देखो 'भक्ष' (रू. भे.)
उ०—ग्रकाबर मैंगळ ग्रच्छ, मांभळ दळ धूमें मसत । पंचानन पळ **भच्छ**, पटकै छड़ा प्रतापसी ।—दुरसौ ग्राढ़ौ
२ देखो 'भच' (रू. भे.)

भच्छणी—देखो 'भक्षणी' (रू. भे.)

भच्छणौ, भच्छबौ—देखो 'भक्षणौ, भक्षबौ' (रू. भे.)
भच्छणहार, हारौ (हारी), भच्छणियौ—वि० ।
भच्छिग्रोड़ौ, भच्छियोड़ौ, भच्छ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भच्छीजणौ, भच्छीजबौ—कर्म वा० ।

भच्छनी—देखो 'भक्षणी' (रू. भे.)
उ०—रही प्रतच्छ रच्छसी, दुगच्छ गच्छ दच्छ बनी । लगें विपच्छ लच्छ पें, भुजाग वच्छ **भच्छनी** ।—ऊ. का.

भच्छियोड़ौ—देखो 'भक्षियोड़ौ' (रू. भे.)

भजणौ, भजबौ–क्रि. ग्र. [सं० भज्] १ ग्रनुरक्त होना, लीन होना ।
उ०—तसहु नासुरुद्दीन तिम, यह दूजौ ग्रभिधांनं । सोहु सम्हारिन घर सक्यौ, **भजि** प्रमाद मितभांन ।—वं. भा.
२ ग्राश्रित होना ।
क्रि० स०—३ सहारा पकड़ना, ग्राश्रय लेना ।
४ ईश्वर देवता ग्रादि का स्मरण करना, भजन करना ।
उ०—नारायण **भजियौ** नहीं, भजिया ग्रवर भजन्न । ज्यां तजियां मांनव जनम, सभिया तन्न ग्रसन्न ।—ह. र.
५ बार २ किसी का नाम लेते हुए जप करना ।
६ ग्रभ्यास करना ।
७ ग्रधिकार में करना, कब्जे में करना ।
८ कहलवाना ।
उ०—पावन धांम सिरोही पत्तन, धारै छत्र ग्रजै कीरति धन । तपै कटक ग्रब्बू गिरि रै तिम, ग्रब्बू पति उपटंक **भजै** इम ।—वं. भा.

९ बंटवारा करना।

१० उपभोग करना।

११ सम्मान करना।

१२ परिचर्या, सेवा सुश्रुषा करना।

१३ पसंद करना, चाहना।

उ०—विजमल, तुझ दीठैं वीसरिया, सयल तणा भूपति सिगळेय। दूजा तीह भजै किम डूंगर, निरख्यौ ज्यां सुरगिरि नयणेय।
—वाढ़ेल सिवा री गीत

१४ स्वीकार करना, अंगीकार करना।

उ०—गणिका घर सौ सठ गयौ, कीधौ उण सतकार। भजि मोनूं इसड़ी भणी, तिण सकार तिण वार।—वं. भा.

१५ संभोग करना, मैथुन करना, भोगना।

उ०—नित नेम हियै भूलै नहीं, चाले सदा सचेत नैं। भोगना फूट परत्रिय भजे, हाय तजे इण हेत नैं।—ऊ. का.

१६ धारण करना, वहन करना।

उ०—म करि रे म करि निंदा निगुण पार की। नारकी तणी गति कांइ बंधइ। मारकी प्रकृति तजि सहज संतोस भजि। लागी सुति सांभळी धरम धंधइ।—वि. कु.

१७ देखो 'भंजणौ, भंजबौ' (रू. भे.)

उ०—सुरलोक में सुरियंद के दिये सांसण सुणबे में न आए। इससैं 'अभमाळ' का प्रताप देखि इंद्र का गरब भजै।—सू. प्र.

१८ देखो 'भाजणौ, भाजबौ' (रू. भे.)

भजणहार, हारौ (हारी), भजणियौ—वि०।

भजवाड़णौ, भजवाड़बौ, भजवाणौ, भजवाबौ, भजवावणौ, भजवावबौ, भजाड़णौ, भजाड़बौ, भजाणौ, भजाबौ, भजावणौ, भजावबौ—प्रे० रू०।

भजिओड़ौ, भजियोड़ौ, भज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भजीजणौ, भजीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

भजणौ, भजबौ—रू० भे०।

भजन-सं० पु० [सं० भज्] (सेवा करना) १ पूजा, उपासना, सेवा।

२ ईश्वर व देवता आदि के गुणों का कीर्तन करने का कोई गीत।

क्रि० प्र०—गाणौ।

३ किसी का नाम बार-बार जपते हुए स्मरण करने की क्रिया।

उ०—भजन कियां सूं तेज बधैलो, जैसे (ऊग्यौ) सूरज मांण। मीरां के प्रभु गिरधर नागर, अबूं तू थारी जांण।—मीरां

क्रि० प्र०—करणौ।

यौ०—भजन-भाव।

रू० भे०—भजन्न, भुजन।

भजनानंद-सं० पु० [भजन+आनंद] परमेश्वर के नाम स्मरण से प्राप्त होने वाला आनंद।

भजनानंदी-वि० [सं० भजन+आनन्द+ई] सदैव ईश भजन गान कर प्रसन्न रहने वाला।

भजनी, भजनीक-वि० [सं० भजन+रा० प्र० ईक] स्वयं एवं लोगों के लिए भजन गाने वाला।

उ०—प्रेम चा भजनीक वडा पह बेबे, सूर धीर खग मंत्र सनौ। समंद सिवा तणा दळ सारे, अगसत जिम जीरवै 'अनौं'।
—गोयंददास सांदू

भजनेर-सं० पु०—भटनेर ?

उ०—देवी उत्तरा जोगणी पर उजेणी, देवी भाल भरूअच्छ भजनेर भेणी। देवी देव जालंधरी सप्त दीपें, देवी कंदरे सख्खरे वाव कूपे।
—देवि.

भजनोपदेसक-सं० पु० [सं० भजन-उपदेशक] वह व्यक्ति जो भजन के माध्यम से उपदेश देता हो।

भजन्न—देखो 'भजन' (रू. भे.)

उ०—नारायण भजियौ नहीं, भजिया अवर भजन्न। ज्यां तजियां मांनव जनम, सभिया तन्न असन्न।—ह. र.

भजाड़णौ, भजाड़बौ—१ देखो 'भंजाणौ, भंजाबौ' (रू. भे.)

उ०—सो हे धण-बेटा री बहु-ईठ देख वौ कीकर नहीं मरै। म्हनैं म्हारा दूध री भरोसौ है, जहर जहरनें ही भजाड़ै भगावै।
—बी. स. टी.

२ देखो 'भजाणौ, भजाबौ' (रू. भे.)

उ०—ले मुनसब पहली पडण, आयौ सिंह अबीह। भांजि कुठार भजाडियौ, सो 'लक्कड़' रणसीह।—वं. भा.

भजाड़णहार, हारौ (हारी), भजाड़णियौ—वि०।

भजाड़िओड़ौ, भजाड़ियोड़ौ, भजाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भजाड़ीजणौ, भजाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भजाड़ियोड़ौ—१ देखो 'भंजायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भजाड़ियोड़ी)

भजाणौ, भजाबौ—क्रि० स०—१ भजन करने में प्रवृत्त करना।

२ अनुरक्त करना, लीन करना।

३ आश्रित करना।

४ ईश्वर देवता आदि का स्मरण कराना, भजन कराना।

५ बार २ किसी का नाम जप कराना।

६ अभ्यास कराना।

७ अधिकार में कराना।

८ कहलवाना।

९ उपभोग करवाना।

१० परिचर्या करवाना, सेवा करवाना।

११ पसंद करवाना।

१२ स्वीकार करवाना, अंगीकार करवाना।

१३ धारण करवाना, वहन करवाना।

१४ भगवा देना, पलायन कराना।

उ०—१ सूतापर जुद्ध में म्हारा कंत सूं दस दस वीसां आदमी आय नैं लड़रा वासतै लूंबिया तिकां नैं ऊठ तै ही कंत भजाय दीधा।—वी. स. टी.

उ०—२ इरा रीति ग्रांम बोरखंडी रा घमसांण मैं दिल्ली रा दळ नूं भजाइ दूजै दिन दूदौ हाथ बांधि जैतगढ़ रा डेरां जाइ पिता रा पगां पड़ियौ।—वं. भा.

भजाणहार, हारौ (हारी), भजाणियौ—वि०।

भजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भजाईजणौ, भजाईजबौ—कर्म वा०।

भजाड़णौ, भजाड़बौ, भजावणौ, भजावबौ—रू० भे०।

भजायोड़ौ—१ भजन करने में प्रवृत्त किया हुआ. २ अनुरक्त किया हुआ, लीन किया हुआ. ३ आश्रित किया हुआ. ४ ईश्वर, देवता आदि का स्मरण कराया हुआ. भजन करवाया हुआ. ५ बार २ किसी का नाम जप कराया हुआ. ६ अभ्यास कराया हुआ. ७ अधिकार में कराया हुआ. ८ कहलवाया हुआ. ९ उपभोग करवाया हुआ. १० परिचर्या करवाया हुआ, सेवा करवाया हुआ. ११ पसंद करवाया हुआ. १२ स्वीकार करवाया हुआ, अंगीकार करवाया हुआ. १३ धारण करवाया हुआ, वहन करवाया हुआं. १४ भगवाया हुआ, पलायन करवाया हुआ। देखो 'भंजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भजायोड़ी)

भजावणौ, भजावबौ—१ देखो 'भंजाणौ, भंजाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भजाणौ, भजाबौ' (रू. भे.)

भजावणहार, हारौ (हारी), भजावणियौ—वि०।

भजाविओड़ौ, भजावियोड़ौ, भजाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भजावीजणौ, भजावीजबौ—कर्म वा०।

भजावियोड़ौ—१ देखो 'भंजायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भजाय ड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भजावियोड़ी)

भजियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ भजन करने में प्रवृत्त हुवा हुआ. २ अनुरक्त हुवा हुआ, लीन हुवा हुआ. ३ आश्रित हुवा हुआ. ४ सहारा पकड़ा हुआ, आश्रय लिया हुआ. ५ ईश्वर, देवता आदि का स्मरण किया हुआ, भजन किया हुआ. ६ बार २ किसी का नाम लेते हुए जप किया हुआ. ७ अभ्यास किया हुआ. ८ अधिकार में किया हुआ, कब्जे में किया हुआ. ९ कहलवाया हुआ. १० बंटवारा किया हुआ. ११ उपभोग किया हुआ. १२ सम्मान किया हुआ. १३ परिचर्या, सेवा सुश्रुषा किया हुआ. १४ पसंद किया हुआ, चाहा हुआ. १५ स्वीकार किया हुआ, अंगीकार किया हुआ. १६ संभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ, भोगा हुआ. १७ धारण किया हुआ, वहन किया हुआ.

१८ देखो 'भंजियोड़ौ' (रू. भे.)

१९ देखो 'भांजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भजियोड़ी)

भज्जणौ—देखो 'भजणौ' (रू. भे.)

उ०—कमंध स्यांम कांमयं, जुटे अरद्ध जामयं। मुड़ै घड़ा मळेछणी विचार धार **भज्जणी**।—रा. रू.

(स्त्री० भज्जणी)

भज्जणौ, भज्जबौ—देखो 'भजणौ, भजबौ' (रू. भे.)

उ०—१ नारद जुध निरसता, तिको पिण हांसो तज्जै। भयण अंभ भोजन, भूख जीमिया न **भज्जै**।—चौथ बीठू

उ०—२ आप तणा खग तेज अप्रबळ, दहळ वगा वाजींद तणा दळ। राव ताव खग देखि धोम रवि, **भज्ज** गयौ इंद्रसिंघ मनव भवि।—सू. प्र.

उ०—३ कमण स हींदू कुण तुरक, कमण कहैवा पीड। तौ पाखै राउ राठवड, बियै न **भज्जै** भीड।—गु. रू. बं.

भज्जणहार, हारौ (हारी), भज्जणियौ—वि०।

भज्जिओड़ौ, भज्जियोड़ौ, भज्ज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भज्जीजणौ, भज्जीजबौ—कर्म वा०।

भज्जा—सं० स्त्री०—भार्या।

उ०—भंडारिउ तहि वसए 'नेमिचंदु' गुण रयण सायरु। तस **भज्जा** 'लखमिणि', पवर सील (वंत) लावन्न मणहर।

—कवि सोममूर्त्ति

भज्य—वि० [सं० भज्] १ सेवा करने योग्य।

२ विभाग करने योग्य।

भट—सं० पु० [सं० भटः] १ योद्धा, वीर।

उ०—१ निज दल छोड़ उजीर नीसरचौ, कायर पर दल कांनी। अरी **भट** हाथ अपार अचांनक, घर की फौज घिरांनी।—ऊ. का.

२ सिपाही, सैनिक।

३ पहलवान, मल्ल।

४ नौकर। (हा. नां. मा.)

५ देखो 'भाट' (रू. भे.)

६ देखो 'भट्टौ' (मह., रू. भे.)

७ देखो 'भट्टी' (मह., रू. भे.)

उ०—**भट** नाखूं राज भिभो भारं, भूंडी भण ऊठें अत भारं। धक पापण तोनैं तोनैं, पापण पापण तोनैं धिक्कारं।—र. रू.

मुहा०—भट भोखणौ=बेकार फिरना।

रू० भे०—भड़, भड़ज, भट्ट, भठ, भड, भडि, भडी, भड्डु, भिड़, भिड़ज।

अल्पा०—भड़ालौ।

मह०—भड़ाल, भडाल, भिड़ाल, भिड़ियाल, भिड़ीयाल, भिडियाल भिडीयाल।

भटकटैया–सं० पु०—भूमि पर छितराने वाला कांटेदार एक छोटा क्षुप जो बहुधा औषध के काम आता है।

भटकणिया–सं० पु०—'कुम्भट' के बीज जिनका शाक बनाया जाता है।

भटकणौ, भटकबौ–क्रि० अ०—१ निरुद्देश्य इधर-उधर घूमना, आवारा फिरना।

उ०—१ थोड़ी ताळ में एक राईकौ सांमी धकियौ। वौ उण छुट्टा ओठारू नै इण विध **भटकतौ** देख उण रै मोहरी घाल दी।
—फुलवाड़ी

२ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये इधर-उधर घूमना।

उ०—१ भारांणी भटकेह, आवै कवि पाळा अठै। ऊतरिया अट-केह, अस पावै अैराक रा।—बां. दा.

उ०—२ अेकर अैड़ौं जोग बणियौ के अेक सिकारी रै सगळै दिन **भटकतां** कीं सिकार हाथ नीं आयौ तौ वौ नींबड़ा माथै बैठी कबूड़ा सांमी तीर सांध्यौ।—फुलवाडी

उ०—३ 'बांका' धीरज धरण सूं, ह्वै नहिं कुंजर हांण। की घर घर **भटका** करै, कूकर अधिक कमांण।—बां. दा.

उ०—४ धन री खातर तौ दिसावरां में **भटकता** फिरौ अर औ अमोलक हार यूं खींपड़ा माथै पांतरग्या।—फुलवाड़ी

३ विचरण करना।

उ०—साधां रै संग बन-बन **भटकी**, लाज गुमाई सारी। बडां घरां थे जनम लियौ छै, नाचौ दे दे तारी।—मीरां

४ भ्रम या धोखे में पड़ने के कारण किसी निर्णय पर न पहुंचना।

उ०—पाणी में मीन प्यासी, मोहे सुण सुण आवै हांसी। आतम-ग्यांन बिन नर **भटकत** है, कहां मथुरा कहां कासी।—मीरां

५ चित या मन स्थिर न रहना।

उ०—१ पण म्हारै सिवाय सगळी दुनियां दिन रा अंधारा में सगळा कांम करै। अर रात रा चांनणा में सगळी दुनिया सोवै। उण वगत म्हैं अेकलौ जागतौ **भटकूं**।—फुलवाड़ी

उ०—२ नव तत्व सुपन मनोरथ **भटके**, संकल्प करत वेहाल। कबहूं राव कबूं होय मंगता, दुख सुख मांन्या साल।
—श्री सुखरामजी महाराज

६ पथ विचलित होना, मर्यादा छोड़ना।

उ०—रमित भई हौं सांवरै के संग, लोग कहै **भटकी**। छुटी लाज कुळकानि लोग डर, रह्यौ न घर हटकी।—मीरां

७ भड़कना, प्रज्वलित होना।

उ०—१ दास पंच अग्र रहै दुरंती, भारथ पांड पांडवां भंती। **भटके** क्रोध झाळ धुबि भूमौ (भौ), अरक उठै थांभै रथ ऊभौ।
—सू: प्र.

उ०—२ आहवि 'मंघौ' अगाहि, पड़िआलग वागै प्रवंग। जांणि खंडीवन जाळिवा, **भटकी** कटकां भाहि।—वचनिका

८ क्रोधित होना, कुपित होना।

उ०—१ सो भरत डंड अरू करत सेव, **भटकियौ** बबर इम सुणै भेव। गुणियौ खिज दै फुरमांण मुझ, तूं नौकर न दिगू हाथ तुझ।
—सू. प्र.

उ०—२ आगे बळती आग, भालाळौ सुण **भटकियौ**, झीची ऊपर खाग, तद तोली 'भांथल' तणै।—पा. प्र.

९ लालायित होना, इच्छुक होना।

उ०—अै मोडा तो कपटी कोनी, नांय कपट की घात। आं साधां को जिवड़ो भटकै, मेळो थ्यो करवाय।—डूंगजी जंवारजी री छावळी

१० गमन करना, जाना।

उ०—१ चाह करीर कळी नृप चटकै, भंवर छैल वैस्या घर **भटकै**। पत महुआ सम दांनी पटकै, क्षत्रिय वंश बांस मिल खटकै।
—ऊ. का.

११ वज्रपात होना, बिजली गिरना।

उ०—अठठ पड डंडाळां चलगिया धाण अग, खाग भट विकट थट खलां सिर खीज। 'तेजसी' विथै कर रठठ भेळै मुरी, व्योम पुड़ कठठ, काय **भटकती** बीज।—भाटी दौलतसिंघ मुरारदांन री गीत

भटकणहार, हारौ (हारी), भटकणियौ—वि०।

भटकवाड़णौ, भटकवाड़बौ, भटकवाणौ, भटकवाबौ, भटकवावणौ, भटकवावबौ, भटकाड़णौ, भटकाड़बौ, भटकाणौ, भटकाबौ, भटकावणौ, भटकावबौ—प्रे० रू०।

भटकिओड़ौ, भटकियोड़ौ, भटक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भटकीजणौ, भटकीजबौ—भाव वा०।

बटकणौ, बटकबौ, भटक्कणौ, भटक्कबौ, भुटकणौ, भुटकबौ, भुट-क्कणौ, भुटक्कबौ—रू० भे०।

भटक–सं० पु०—कोप ?

उ०—कोटां कटकां **भटक** करोड़ां, ओडां आवें नहीं अति। बियौ हमीर ओभकै वर तनि, परति न जकै हमीरपति।
—महाराजा राजसिंघ जगतसिंघोत रौ गीत

भटकळ–सं० पु० यौ [सं० भट] १ युद्ध, लड़ाई।

उ०—करतौ ऊगै दीह **भटकळ**, भूचर मोद हुतौ मन भांमण। धीरज-सींग अगंजी घूहड़, ऊसर थांन हुओ रढ़ राऊण।—गुम्पजी खड़ियौ

२ संहार, ध्वंस।

उ०—राठौड जतै कीयौ रिणह, गहण भुजाई **भटकळह**। पळ धाप कियौ पळहारियां, कळळ, बिंद कोळाहळह।—गु. रू. बं.

३ भीड़।

भटका–सं० पु० [देशज] (व. व.) १ किसी वस्तु के अभ्यास या व्यसन के बाद उस वस्तु के अभाव में होने वाली चाहना या इच्छा।

उ०—१ भूरी कीटी रा आसी भव **भटका**, गुडळी छाछां रा सुपनै में गटका। प्यारा टोघड़िया पाडा कद पेखां, दूधां दहियां रा चाडा कद देखां।—ऊ. का.

उ०—२ अेक ही मिन्नी, वा ऊंदरा खावती खावती बूढ़ी **हेण** व्हैगी।

अबै ऊंदरा मारण री सरघा नीं री । घणा ई भटका आवता, पण जोर कांई करै ।—फुलवाड़ी

[सं० भ्रमः] (ब. व.) घूमने या भटकने की क्रिया या भाव ।

उ०—दावा-पूली करतां तथा कचेड़ियां में भटका मारतां-मारतां सेठां रा बाळ सफेद व्हैग्या हा, इण वास्ते आस-पास गांवां रा महाजन ई कांम पड्यां सेठां सूं ईज सलाह लेवता ।—रातवासौ

उ०—२ अटका तू ठाकुर अबै, बटका भरणा बोल । भला मिनख भटका लिये, गटका खावै गोल ।—ऊ. का.

भटकाड़णौ, भटकाड़बौ—देखो 'भटकाणौ, भटकाबौ' (रू. भे.)

भटकाड़णहार, हारौ (हारी), भटकाड़णियौ—वि० ।

भटकाड़िओड़ौ, भटकाड़ियोड़ौ, भटकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भटकाड़ीजणौ, भटकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भटकाड़ियोड़ौ—देखो 'भटकायोड़ो' (रू. भे.)

भटकाणौ, भटकाबौ—१ निरूद्देश्य इधर-उधर घूमाना, आवारा फिराना ।

२ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये इधर-उधर घुमाना ।

३ विचरण कराना ।

४ भ्रम या धोखे में डालकर किसी निर्णय पर न पहुंचाना ।

५ चित्त या मन स्थिर न रहने की अवस्था में करना ।

६ पथ से विचलित करना, मर्यादा छुड़ाना ।

७ भड़काना, प्रज्वलित करना ।

८ क्रोधित करना, कुपित करना ।

९ लालायित करना, इच्छुक बनाना ।

भटकाणहार, हारौ (हारी), भटकाणियौ—वि० ।

भटकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भटकाईजणौ, भटकाईजबौ—कर्म वा० ।

भटकाड़णौ, भटकाड़बौ, भटकावणौ, भटकावबौ, भटक्काणौ, भटक्काबौ—रू० भे० ।

भटकायोड़ौ—भू० का० कृ० [सं० भ्रमः] १ निरूद्देश्य इधर उधर फिराया हुआ. २ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये इधर उधर घुमाया हुआ. ३ विचरण कराया हुआ. ४ भ्रम या धोखे में डालकर किसी निर्णय पर न पहुंचने दिया हुआ. ५ चित्त या मन स्थिर न रहने की अवस्था में किया हुआ. ६ पथ से विचलित किया हुआ, मर्यादा छुड़ाया हुआ. ७ भड़काया हुआ, प्रज्वलित किया हुआ. ८ क्रोधित किया हुआ, कुपित किया हुआ. ९ लालायित किया हुआ, इच्छुक बनाया हुआ. १० गमन करवाया हुआ. (स्त्री० भटकायोड़ी)

भटकावणौ, भटकावबौ—देखो 'भटकाणौ, भटकाबौ' (रू. भे.)

उ०—चौर गुरू बिच्छू चटकावै, ग्यांन राब बिरळा गटकावै । भेक छाछ कारण भटकावै, लुच्चा बागळ ज्यूं लटकावै ।—ऊ. का.

भटकावणहार, हारौ (हारी), भटकावणियौ—वि० ।

भटकाविओड़ौ, भटकावियोड़ौ, भटकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भटकावीजणौ, भटकावीजबौ—कर्म वा० ।

भटकावियोड़ौ—देखो 'भटकायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० भटकावियोड़ी)

भटकियोड़ौ—भू० का० कृ० [सं० भ्रमः] १ निरुद्देश्य इधर-उधर घूमा हुआ, आवारा फिरा हुआ. २ किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये इधर-उधर घूमा हुआ. ३ विचरण किया हुआ. ४ भ्रम या धोखे में पड़कर किसी निर्णय पर पहुंचने में असमर्थ रहा हुआ. ५ चित्त या मन अस्थिर हुवा हुआ. ६ पथ से विचलित हुवा हुआ, मर्यादा छोड़ा हुआ. ७ भड़का हुआ, प्रज्वलित हुवा हुआ. ८ क्रोधित या कुपित हुवा हुआ. ९ लालायित हुवा हुआ, इच्छुक हुवा हुआ. १० गमन किया हुआ, गया हुआ.

(स्त्री० भटकियोड़ी)

भटकी—सं० स्त्री०—भ्रम, अज्ञान ।

उ०—आछ रांमदे पीवण अटकी, भांडू 'नाभे' घाली भटकी । मीरां फोड़ गई जळ मटकी, पापी अेड़ बोबदे पटकी ।—ऊ. का.

भटकूडौ—वि० (स्त्री० भटकूड़ी) बच्चों के लिये प्रयोग किया जाने वाला प्यार सूचक शब्द ।

उ०—भूरी भटकूड़ी उरजणियां भावै, गोरी गटकूडी कुरजणियां गावै । छपनूं गावै गळ नैंणां जळ छावै, अपणीं उणमुखता सनमुख दरसावै ।—ऊ. का.

भटक्कणौ, भटक्कबौ—देखो 'भटकणौ, भटकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ससक्कै नगार बध लटक्कै नागरा सीस, आग रा अंगार तोपां भटक्कै अवाज । राखियौ संगार दूजा खाग रां पाण सूं रिधू, रांण वाळो वाघरा संगार जेम राज ।—भीमसिंघ चूंडावत रौ गीत

उ०—२ नवहत्थौ मत्थौ बडो, रौस भटक्कै रार । औ कूंभाथळ ऊपरा, हाथळ वाहणहार ।—बां. दा.

उ०—३ झटक्कै धोम भटक्कै झाळ, छडां बिहुं घूम मचै घमचाळ । निदस्सै जोध जुआंण नित्रीठ, रूकां महिमात्तौ आकारीठ ।

—गु. रू. बं.

भटक्कणहार, हारौ (हारी), भटक्कणियौ—वि० ।

भटक्किओड़ौ, भटक्कियोड़ौ, भटक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भटक्कीजणौ, भटक्कीजबौ—भाव वा० ।

भटक्कियोड़ौ—देखो 'भटकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भटक्कियोड़ी)

भटतीतर—सं० पु०—प्रायः उत्तर पश्चिमी भारत में पाया जाने वाला एक फुट लम्बा तीतर की शक्ल का एक प्रकार का पक्षी जिसका मांस के लिए शिकार किया जाता है ।

भटनागर—सं० पु०—१ कायस्थों की १२ शाखाओं में से एक शाखा । (मा. मा.)

२ इस जाति का व्यक्ति ।

भटनेर—देखो 'भाडंगनेर' (रू. भे.)

उ०—इण ही बंस में भटनेरपुर रै अधीस जसराज सोनगिरै के ही जवनां रो जोरदार कटक भांजियौ ।—वं. भा.

वि० वि०—देखो 'भाडंगनेर'।

भटनेरौ-सं० पु०—भटनेर नगर का निवासी ।

भटयारौ—देखो 'भटियारौ' (रू. भे.)

भटांण-वि०—पूर्ण परिपक्व । (वर्षा ऋतु के फल)

भटाळि, भटाळी-सं० स्त्री० यौ० [सं० भट+अवलि] १ वीरों की पंक्ति, सेना ।

उ०—१ नटाळि दे **भटाळि** की जटाळि ऐंचते अभैं, अरीन मुच्छ मुच्छ दें स्वमुच्छ खेंचते अभैं । चलाक रूठ पूठ के अगूंठ चांपते चलें, हरांमखोर सुंडमुंड भुंड कांपते चलें ।—ऊ. का.

उ०—२ चिरे वहित्थ हत्थि के चिकार चूर चूर ह्वं, भिरे **भटाळि** भाल में भिखार भूर भूर ह्वं ।—ऊ. का.

भटियळ—देखो 'भटियांणी' (रू. भे.)

उ०—**भटियळ** ऊभी छाजइये री छांह,हो जी म्हारा 'रतन' रांणा, भटियळ ऊभी छाजइये री छांह हो जी हो, आंसूड़ा ढळकावै कायर मोर ज्यूं रे ।—लो. गी.

भटियांण—देखो 'भटियांणी' (मह., रू. भे.)

भटियांणी-सं० स्त्री०—भाटी वंश की कन्या ।

उ०—१ कूंरमि पमारि कमधज्ज सूं, **भटियांणी** कुळ छळ भळै । जोधपुर हुई जादवि सती, पावक च्यारै प्रज्जळै ।—गु. रू. बं.

उ०—२ डंसण-बीज-दाडंम, वेणि-वासंग-भुयंगम । **भटियांणी** वर कमध, समद गंगा नदि संगम ।—गु. रू. बं.

रू० भे०—भटियळ, भाटियांणी ।

मह०—भटियांण ।

भटियारौ-सं० पु० [सं० भ्राष्टमिन्ध] (स्त्री० भटियारण, भटियारणी, भठियारण, भटियारी) १ भड़भूंजा ।

उ०—रांधण **भटियारा** कठियारा रे, भरावा कंसारा ठंठारा । मढिया ने बिणजारा रे, वले नायक भार लदारा ।—जयवांणी

२ सराय में ठहरने एवं भोजन की व्यवस्था करने वाला व्यक्ति ।

रू० भे०—भटयारौ, भठयारौ, भठियारौ, भठीयारौ ।

भटी—१ देखो 'भट्टी' (रू. भे.)

उ०—एक **भटी** रै ऊपरै, लागै रुपीया लाख । जकण भटी रौ म्यारजी ! छैल दुबारौ चाख ।—मयारांम दरजी री बात

२ देखो 'भाटी' (रू. भे.)

भटु-सं० स्त्री०—१ बहिन । (ह. नां. मा.)

२ सखी, सहेली ।

रू० भे०—भटटु ।

भटेवरा-सं० स्त्री०—सिसोदिया वंश की एक शाखा ।

भटेस-सं० पु० [सं० भट+ईश] योद्धा, शूरवीर ।

भटौ-सं० पु०—१ बैंगन ।

२ देखो 'भट्टी' (रू. भे.)

भट्ट-सं० पु० [सं० भट्टः] १ प्रभु, स्वामि ।

२ उपाधि विशेष जो ब्राह्मणों के नामों के साथ लगाई जाती है ।

उ०—वियास **भट्ट** के महंत जात गी ब्रह्मणां । कथा पुरांण भागवंत भारथं रांमायणां ।—गु. रू. बं.

३ दक्षिण भारत व मालवे के ब्राह्मणों की एक उपाधि ।

४ एक वर्ण-शंकर जाति विशेष ।

उ०—कर्पूर पट्टिक कोष्टाकारिक पारिग्रहिक प्रतिहार, चतुद्धरिक काष्टिक राज द्वारिक संधि विग्रहिक भांडपति श्रेष्टि महाजनिक दूत दालिउह्ह कटुक भट्टपुत्र नट विट **भट्ट** ।—व. स.

५ देखो 'भाट' (रू. भे.)

उ०—नारद तुंबर गीत गावई, विप्र दान अभट्ट । मंगळीक अनेक वरत्या, बिड़द बोलई **भट्ट** ।—रुकमणी मंगळ

६ देखो 'भट' (रू. भे.)

७ देखो 'भट्टी' (मह., रू. भे.)

उ०—आज पैं'ली बार सहर नहीं आऊं हूं । बारै महीना **भट्ट** भोख्योड़ी है ।—रातवासो

८ 'भट्टौ' (मह., रू. भे.)

रू० भे०—भट्ठ, भठ ।

भट्टाउरि-सं० पु०—भटनेर (आधुनिक हनुमानगढ) नगर का नाम ।

उ०—फूलभरि अंबर शेष, शेप अहिदर सीसाउरि । पुष्फदीन मूलताणि, शेप जक्खा **भट्टाउरि** ।—व. स.

भट्टार, भट्टारक-वि० [सं०] (स्त्री० भट्टारिका) मान्य, पूज्य ।

भट्टारिका-भुवन-सं० पु०—राजमहिषी भवन ।

उ०—सत्रागार, मार्गिजल, **भट्टारिका-भुवन** गुरुजनोपदेशश्रावण आदित्यकरनिकर, चद्रचंद्रिका प्रसर मेघजल वनस्पतिफल दीपालिकाउत्सव सत्पुरुषविभव, सर्वसाधारण ।—व. स.

भट्टी-सं० स्त्री० [सं० भ्राष्ट्र] १ विवाह आदि के बड़े भोज के लिए जमीन में खोद कर या जमीन पर ईंट या पत्थर से चुनकर बनाया जाने वाला एक प्रकार का चुल्हा ।

क्रि० प्र०—धुकाणी, लगाणी, सुलगाणी ।

२ रसायन, शराब आदि के लिए जमीन पर चुनकर या जमीन में खोदकर बनाया जाने वाला एक विशिष्ट प्रकार का चूल्हा ।

क्रि० प्र०—काढणी, निकाळणी, बणाणी ।

३ उस स्थान का नाम जहां शराब बनाई जाती है ।

४ देखो 'भाटी' (रू. भे.)

उ०—फेर बसाई **भट्टियां** अंत करे पियारी । मारै ईसर मांणजी गिरभां गहकारी ।—द. दा.

रू० भे०—भटी, भठी, भट्ठी, भठ्ठी, भाड़, भाटी, भाठी ।

मह०—भट, भट्ट, भट्ठ, भठ ।

भट्टु–सं० पु०—१ भानजा। (जोधपुर)
२ देखो 'भटु' (रू. भे.)
३ देखो 'भट्ट' (रू. भे.)
उ०—कंक भट्टु बल्लवु सूग्रारु, ग्ररजुनु हुउ कीवाचारु। चउथउ नकुलु ग्रसंधउ थाइ, सहदे वारइ नरवइ गाइ।—सालिभद्र सूरि

भट्टौ–स० पु० [सं० भ्राष्ट्र] १ चूना पकाने का वृहद् ग्राकार का ग्रग्नि कुण्ड।
क्रि० प्र०—निकाळणौ, पकाणौ।
२ वह स्थान जहां कूड़ा, कोयला ग्रादि डालकर ईंटे पकाई जाती हैं।
रू० भे०—भटौ, भट्ठौ।
मह०—भट, भट्ट, भट्ठ, भठ।

भट्ठ—देखो 'भट्टौ' (मह., रू. भे.)
उ०—बारै दिन बाद रांमलो स्वयं सेवकां सूं घिरियोड़ौ घरै ग्रायौ। देखै क्या है, भट्ठ खुदिया खुदाया त्यार है।—वरसगांठ
२ देखो 'भट्ट' (रू. भे.)
३ देखो 'भट्टौ' (मह., रू. भे.)

भट्ठी—देखो 'भट्टी' (रू. भे.)

भट्ठौ—देखो 'भट्टौ' (रू. भे.)

भठ—१ देखो 'भट' (रू. भे.)
२ देखो 'भट्ट' (रू. भे.)
३ देखो 'भट्टी' (मह., रू. भे.)
४ देखो 'भट्टौ' (मह., रू. भे.)

भठयारौ—देखो 'भटियारौ' (रू. भे.)

भठियारपण, भठियारपणौ–सं० पु० [सं० भ्राष्ट्र+त्व, त्वन] भटियारे का काम।
रू० भे०—भटियारपण, भटियारपणौ।

भठियारौ—देखो 'भटियारौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भठियारी)

भठी—देखो 'भट्टी' (रू. भे.)
उ०—रीझाय हूर सुण राग रंग, जम हूत करै खीजाय जंग। पीजाय भठी एक सुरापांन, भख जाय ग्ररध भैसा भयांन।—वि. सं.

भठीयारौ—देखो 'भटियारौ' (रू. भे.)
उ०—बगनीघडा कावडि चालइ, भाठी वहइ खमार। पांच सहस चालइ भठीयारा, घाटघडा लोहार।— कां. दे. प्र.
(स्त्री० भठीयारण)

भट्ठी—देखो 'भट्टी' (रू. भे.)

भडंग–सं० पु० [ग्रनु०] १ मूर्ख व्यक्ति।
उ०—थोडुं जमइ तो भुडउं ऊणाटउ, भलां वस्त्र पहरइ तोई तखारू, सामान्य वस्त्र पहरइ तो दरिद्री, गोरो ग्रामवातीउ, कालो तो कबाडि, कां वेचि तो खात्रपाडउं, न वेचइ तो भडंग, विसइ तो सद्धरमबहिस्कृत, विसइहीन तो नपुसंक:।—व. स.

भडंगरा–सं० स्त्री० सोलंकी वंश की एक शाखा।

भडंगरौ–सं० पु०—सोलंकी वंश की भडंगरा शाखा का व्यक्ति।

भडंगी–वि०—ग्राडंबर रचने वाला, दिखावा करने वाला।

भडंजर–सं० पु० [सं० भट्+पंजर] योद्धा का ग्रस्थि-पंजर।
उ०—ग्रागइ पत्र जोगणियां तणा पूरिया, ग्रीभंण गूद गिलई ग्रड-गाढ। बीजा गिरवर किया बहादर, चुणिया सुरज भडंजर चाढ।
—महादेव पारवती री वेलि
रू० भे०—भडजर।

भड–सं० पु०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष।
उ०—भीलामां नइ मालकी, भरड़ भारिंगि भांगि। भंभेडी ब्रह्मांड घणा, भोजपत्र भड चंगि।—मा. कां. प्र.
२ देखो 'भट' (रू. भे.)
उ०—दरि हैगै धरि राइधी, भड वंका दीवांण। की इंद्रापुर ग्रग्गळौ, धटि कीं सूं जोधांण।—गु. रू. बं.
उ०—२ सन्नाहे भड सुहड, जिके ग्रसवार ग्रचग्गळ। परि ग्रध्घर पाइक्क, सेत बांबळ पाए दळ।—गु. रू. बं.

भडकंवाड़—देखो 'भड़किवाड़' (रू. भे.)

भडकणौ, भडकबौ—१ देखो 'भिड़कणौ, भिड़कबौ' (रू. भे.)
उ०—रूख कडकइ, बटाऊ भडकइ। ताड खडखडई, पंखी भड हुडइ।—सभा.
२ देखो 'भड़कणौ, भड़कबौ' (रू. भे.)
भडकणहार, हारौ (हारी), भडकणियौ—वि०।
भडकावणौ, भडकाडबौ, भडकाणौ, भडकाबौ, भडकावणौ, भड-कावबौ—प्रे० रू०।
भडकिग्रोड़ौ, भडकियोड़ौ, भडक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भडकीजणौ, भडकीजबौ—भाव वा०।

भडकाडणौ, भडकाडबौ—१ देखो 'भड़काणौ, भड़काबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़काणौ, भिड़काबौ' (रू. भे.)
भडकाणहार, हारौ (हारी), भडकाणियौ—वि०।
भडकाडिग्रोड़ौ, भडकाडियोड़ौ, भडकाड्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भडकाडीजणौ, भडकाडीजबौ—कर्म वा०।

भडकाडियोड़ौ—१ देखो 'भड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भडकाडियोड़ी)

भडकाणौ, भडकाबौ—१ देखो 'भड़काणौ, भड़काबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिडकाणौ, भिड़काबौ' (रू. भे.)
भडकाणहार, हारौ (हारी), भडकाणियौ—वि०।
भडकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भडकाईजणौ, भडकाईजबौ—कर्म वा० ।

भडकायोड़ौ—१ देखो 'भड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़कायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भडकायोड़ी)

भर्डकिमाड, भर्डकिवाड, भडकिमाड—देखो 'भड़किंवाड़' (रू. भे.)
उ०—अचळेसर तउ किसउ ? उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम कउ **भर्डकिवाड** आइत्यां अजइपाळ ।—अचळदास खीची री वात
उ०—२ विज्जयानग्गर छिंडे विद्दुर दुरति खप्फर दूठ ए । मरहट बराडं **भडकिमाडं** गिड पहाडं ग्रीठ ए ।—गु. रू. बं.

भडकियोड़ौ—१ देखो 'भड़कियोडौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़कियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भडकियोड़ी)

भडग–सं० पु० [सं० भद्रांग] १ शिव, महादेव ।
२ बलराम ।

भडणौ, भडबौ—देखो 'भिड़णौ, भिड़बौ' (रू. भे.)
उ०—चहवांण 'नरौ' 'हुल' 'पातल' चौरंगी भूप कलावत रूप **भडै** । बालाउत 'तोगो' 'केसव' बँवै लोह 'गोइंद' रांणोत लडै ।
—गु. रू. बं.

भडताळ—देखो 'भड़ताळ' (रू. भे.)

भडत्थ—देखो 'भड़ीतो' (रू. भे.)
उ०—ऊधमुखि ऊकलंबइं पागि करइं **भडत्थ** ते बालइं आगि । कहु रे परधन खातेउ कीम सांडसे औडी पचारइं ईम ।—वस्तिग

भडळीपुरांण—देखो 'भडुळीपुरांण' (रू. भे.)

भडवाउ, भडवाय–सं० पु० [सं० भटवाद] १ पराक्रम की कीर्त्ति ।
उ०—१ अह सांमल कोमल केशपाश किरि मोरकलाउ, अद्धचंद समु भालु मयणु पोसइ **भडवाउ** ।—राजसेखर सूरि
उ०—२ जीतउ रतिपति राय, भागु तसु **भडवाय** । पेखी पराभवए, दास थ्यु आ भव ए ।—आगम मांणिक्य
२ सामर्थ्य और बल ।
उ०—सब नगर सश्रीक करी, सरवांग भूसण धरी, हस्ति राजाधिरूढ, प्रतापि पीढ, पालि लाख खांडा तणउ **भडवाउ**, मंडलीक तणउ समवाउ ।—व. स.
३ योद्धत्व, योद्धापन ।
रू० भे०—भडिवाओ ।

भडहक्क—देखो 'भड़हक्क' (रू. भे.)

भडांकिमाड़—देखो 'भड़किंवाड़' (रू. भे.)

भडांठेक—देखो 'भड़ांठेक' (रू. भे.)

भडांप–सं० स्त्री०—एक प्रकार की बन्दूक ।

भडांबली–सं० स्त्री०—द्विविधा, सन्देह ।
उ०—आकुली सुरहि नाद सांभली, जीह नइं मनि हूई **भडांबली** ।
—सालिसूरि

भडाभड—देखो 'भड़ाभड़' (रू. भे.)
उ०—पडै उर बह्य गडोथळ पिंड । **भडाभड** लग्ग जुआ भुजदंड ।
—गु. रू. बं.

भडाळ—देखो 'भट' (मह., रू. भे.)
उ०—बडाळां भाजतां गाजतां अगाळा । **भडाळां** जगत कहियो धनो भाग ।—गिरधारसिंघ हाडा री गीत

भडि—देखो 'भट' (रू. भे.)
उ०—थरहरिया भुवण तिण्है विथका **भडि**, धरजइ ग्रस सोई नहीं धर । ईसर तो सरणइ ऊबरिजइ हरिसंकर समरीयो हर ।
—महादेव पारवति री वेलि

भडिथ—देखो 'भडीतो' (रू. भे.)

भडियोडौ—देखो 'भिडियोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भडियोडी)

भडिवाओ—देखो 'भडवाउ' (रू. भे.)
उ०—तिणि कुलि गुणोद संतणु राओ, भुयबलि गंजइ रिउ **भडिवाओ** ।—माणिभद्र सूरि

भडी—देखो 'भट' (रू. भे.)

भडीतौ—देखो 'भडीतौ' (रू. भे.) (अगरत)

भडीयड—देखो 'भट' (रू. भे.)
उ०—**भडीयड** भांजि मरग्गड़ गूंड । रउव्वड रैण करंडक रुंड ।
—गु. रू. बं.

भडूस—देखो 'भड़ूस' (रू. भे.)

भडौळ–वि०—फूहड़ ।

भडोळखांनौ–सं० पु० यौ०—अव्यवस्था ।

भड्ड—देखो 'भट' (रू. भे.)
उ०—जुड़िए जूंगरा धरै धीहं धरा । जांणिजै जम्मरा **भड्ड** रोसं भरा ।—सू. प्र.

भड्डळीपुरांण, भड्डुळीपुरांण–सं० पु० यौ०—अपनी स्त्री भड्डुली को सम्बोधित करके डंक नामक ज्योतिषी के रचे हुए वर्षा विज्ञान सम्बंधी पद्यों का एक संग्रह ।
रू० भे०—भडळीपुरांण ।

भणंक—देखो 'भणक' (रू. भे.)

भणंकणौ, भणंकबौ—देखो 'भणकणौ, भणकबौ' (रू. भे.)
उ०—१ गाजै अंबाळां निहाव घाव पिनाकां **भणंकै** गांण । धारियां उनाग खाग खत्री ध्रंम धोड़ । दूठ 'जसौ' हुओ हेक आविया दक्खणी दळां । रांणा दळां आडौ कोट सारमैं राठौड़ ।
—**दांनोजी बोगसौ**
उ०—२ **भणंकै** चलौ, कोमंडां तूर भेरी । फबै संख सहनाय, अनेक फेरी । बिखम्मी सुरां, सिद्धवां डाक वागी । ब्रहंगंड दक्की-समै हाक वागी ।—सू. प्र.

भणंकणहार, हारौ (हारी), भणंकणियौ—वि० ।
भणंकिओड़ौ, भणंकियोड़ौ, भणंक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भणंकीजणौ, भणंकीजबौ—भाव वा० ।

भणंकार—देखो 'भणक' (रू. भे)

भणंकियोड़ौ—देखो 'भणकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भणंकियोड़ी)

भणंकौ—देखो 'भणक' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—आखती सांवळी रूप देवळा ऊताळ आई, चाही काळी हींस ईसी सुणांई अचीत । पाठ-वेद साखी पाल फेरां में **भणंकौ** पायौ, नांखै गांठ-जोड़ आयौ पीठ पैं नचीत ।—बादरदांन दधवाड़ियौ

भणंक्क—देखो 'भणक' (रू. भे.)
उ०—रत्ता पी गणंक्कै कै भणंक्के ये बीमांण रंभा, लोयणां **भणंक्क** डंड मणंक्का लेवांण । हुवैं पंखां झडप्फां ग्रीधांण वीर है हणक्कै, कैमरां खणक्कै बाजै खड़क्का केवांण ।
—प्रभूदांन मोतीसर

भणंक्कणौ, भणंक्कबौ—देखो 'भणकणौ, भणकबौ' (रू. भे.)
उ०—रत्ता पी गणंक्कै कै **भणंक्कै** ये बीमांण रंभा, लोयणा भण-डंड मणंक्का लेवांण ।—प्रभूदान मोतीसर
भणंक्कणहार, हारौ (हारी), भणंक्कणियौ—वि० ।
भणंक्किओड़ौ, भणंक्कियोड़ौ, भणंक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भणंक्कीजणौ, भणंक्कीजबौ—भाव वा० ।

भणंक्कियोड़ौ—देखो 'भणकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भणंक्कियोड़ी)

भण—सं० पु०—ताड़ का वृक्ष । (डिं.)

भणक—सं० स्त्री० (सं० भण, भणनं) १ ध्वनि, आवाज ।
उ०—तनक **भणक** हरि रस तणी, कढत प्रांण सुण कांन । महा-पाप सह मोचवै, आवै जनम न आंन ।—ह. र.
२ उड़ती हुई खबर, अफवाह ।
उ०—लोगां नै थोड़ी घणी ई **भणक** पड़गी तौ पछै वै किणी गरीब दुख्यारा माथै कदैई भरोसो नीं करैला ।—फुलवाड़ी
रू० भे०—भणंक, भणंकार, भणकार, भणणंक, भनंक, भनक ।
अल्पा०—भणंकौ, भणकारौ, भणकौ ।

भणकणौ, भणकबौ—क्रि० अ०—१ भन-भन शब्द होना ।
२ मंडराना ।
उ०—ढोलउ मन आणंदियउ, चतुर तणे वचनेह । मारू-मुख सौरंभियउ, आवि भमर **भणकेह** ।—ढो. मा.
३ आना ।
४ जांना ।
उ०—रमणीं बरहीनं निरख नबीनां, रांम रांम रणकंदा है । कंद्रप रा कीटा फबत न फीटा, भंवरगुफा **भणकंदा** है ।—ऊ का.
क्रि० स०—५ भन-भन शब्द करना ।
भणकणहार, हारौ (हारी), भणकणियौ—वि० ।
भणकिओड़ौ, भणकियोड़ौ, भणक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भणकीजणौ, भणकीजबौ—भाव वा० ।
भंणकणौ, भंणकबौ, भंणक्कणौ, भंणक्कबौ, भणंकणौ, भणंकबौ, भणंक्कणौ, भणंक्कबौ, भणक्कणौ, भणक्कबौ, भणणंकणौ, भण-णंकबौ, भणणणौ, भणणबौ, भणणौ, भणबौ, भणभणाणौ, भण-भणाबौ, भणहणणौ, भणहणबौ, भिणहणणौ, भिणहणबौ, भिणकणौ भिणकबौ, भिणभिणाणौ, भिणभिणाबौ—रू० भे० ।

भणकार—देखो 'भणक' (रू. भे.)
उ०—'थूं पी थूं पी' हो रही, कोइ करै घणी मनवार, रांणी बायर नीसरी, जद कान पड़ी **भणकार** ।—डूंगजी जवारजी रौ छावली

भणकारौ—देखो 'भणक' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ आजे मींत अमल्ल, खग्ग-बग्गां खणकारां । पिड़ सींधू सुर पड़ै, भड़ां कानां **भणकारां** ।—ऊ. का.
उ०—अत अछड़ां करण माखियां मारण, कटकां अटक केविया काळ । भागां तूझ तणौं **भणकारौ**, 'गोपाळा' न करै गोपाळ ।
—बां. दा.

भणकियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ भन-भन शब्द हुवा हुआ. २ मंड-राया हुआ. ३ आया हुआ. ४ गया हुआ. ५ भन-भन शब्द किया हुआ.
(स्त्री० भणकियोड़ी)

भणकौ—देखो 'भणक' (अल्पा., रू. भे.)

भणणंक—देखो 'भणक' (रू. भे.)

भणणंकणौ, भणणंकबौ—देखो 'भणकणौ, भणकबौ' (रू. भे.)
उ०—सणणंकै खुरसांण खागधारां खणणंकै, रणणंकै रणराग झलम पाखर झणणंकै । चणणंकै भड़ चिहुर छीजि कातर छण-णंकै । टणणंकै टामक, भ्रमर फीलां **भणणंकै** । ठणणंक घंट गदळां ठहे, गणणंकै पळचर गयण । ठणणंक हीस हैगांम हय, जय कण-णंकै बंदियण ।—वं. भा.
भणणंकणहार, हारौ (हारी), भणणंकणियौ—वि० :
भणणंकिओड़ौ, भणणंकियोड़ौ, भणणंक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भणणंकीजणौ, भणणंकीजबौ—भाव वा० ।

भणणंकियोड़ौ—देखो 'भणकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भणणंकियोड़ी)

भणण—सं० स्त्री० [अनु०] १ भौंरे आदि के उड़ने से उत्पन्न ध्वनि, भनभनाहट ।
उ०—ठमकती पाय घूघर ठणण, **भणण** संग करता भमर । चमकती बीज आवै चली, समर हूंत करवा समर ।—र. हमीर
२ चक्कर ।
उ०—१ अेक वेजा गाळ काढनै राजाजी राती चोळ आंख्यां नैं

भणण-भणण घुमावता कह्यौ—बोल नाईड़ा राजा थूं है के म्हैं ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ भाईड़ा, इण टाट आगै तो म्हैं ई काठा काया व्हैगा । घणा ई ग्रौखद कराया, कीं कारी नीं लागी । ग्रस्टपौ'र पोरगा राखां । माथा साव काचा पड़ग्या, **भणण-भणण** करै ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—भणणांट, भणणाट, भणणाहट, भणभणाट, भणभणा-हट, भणहण, भिणभिण, भिणभिणाट, भिणभिणाहट ।

ग्रल्पा०—भणणाटौ, भणभणाटौ, भिणभिणाटौ ।

भणणणौ, भणणबौ—देखो 'भणकणौ, भणकबौ' (रू. भे.)

उ०—**भणणै** भमर वास रस भूला, सबरत फळ दळ फूल समाज । वलसौ रस बस जाय बगीछां, राधा जनक तणा व्रजराज ।
—बां. दा.

भणणणहार, हारौ (हारी), भणणणियौ—वि० ।

भणणणिग्रोड़ौ, भणणणियोड़ौ, भणणण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भणणीजणौ, भणणीजबौ—भाव वा० ।

भणणणियोड़ौ—देखो 'भणकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भणणणियोड़ी)

भणणांट, भणणाट—देखो 'भणण' (रू. भे.)

उ०—१ भमरां री **भणणांट**, डीलां री दौळी, दीपमाळा रा दौर, भाखर होळी ।—मयाराम दरजी री बात

उ०—२ ए जु भमर बोलिबा नै **भणणाट** करै छै । सु मांनु गर-भवती व्याकुळता जणावै छै ।—वेलि. टी.

भणणाटौ—देखो 'भणण' (ग्रल्पा., रू. भे.)

भणणाणौ, भणणाबौ—क्रि० ग्र०—चकराना, चक्कर में पड़ना ।

उ०— हा उण इच्छा पर भिच्छा गत हांणी, जग में दैविच्छा किण हीं नह जांणीं । बादळ बीजळियां नभ में नहिं नैड़ी । भेजी **भणणायौ** भळकी पुळ भैड़ी ।—ऊ. का.

'भणणावणौ, भणणावबौ' (रू. भे.)

भणणाणहार, हारौ (हारी), भणणाणियौ—वि० ।

भणणायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भणणाईजणौ, भणणाईजबौ—भाव वा० ।

भणणायोड़ौ—भू० का० कृ०—चकराया हुग्रा, चक्कर में पड़ा हुग्रा.
(स्त्री० भणणायोड़ी)

भणणावणौ, भणणावबौ—देखो 'भणणाणौ, भणणाबौ' (रू. भे.)

उ०—पड़ियो सेडौ पेखि, भवन भेडौ **भणणावै** । भींतांहि सेडै भरी, गरट मांख्यां गणणावै ।—ऊ. का.

भणणावणहार, हारौ (हारी), भणणावणियौ—वि० ।

भणणाविग्रोड़ौ, भणणावियोड़ौ, भणणाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भणणावीजणौ, भणणावीजबौ—भाव वा० ।

भणणावियोड़ौ—देखो 'भणणायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भणणावियोड़ी)

भणणाहट—देखो 'भणण' (रू. भे.)

उ०—केहर तणी कळाइयां, **भणणाहट** भभरांह । भीजी गज सिर भांजतां, मद सोरंभ उमरांह ।—बां. दा.

भणणौ, भणबौ—१ पढ़ना, ग्रध्ययन करना ।

उ०—**भणंत** एक व्याकरण, बीर इस्ट के करै । सत्रक नीति सास्त्रांणि, एक मुख उच्चरै ।—गु. रू. बं.

२ पाठ करना, मंत्रोच्चार करना ।

उ०—राजा पूजै सिवसकति, मांडै धुप नैवेद, कुंकम-तिलक निलाट दे, विप्र **भणंदा** वेद ।—गु. रू. बं.

३ रटना ।

उ०—रण सालै रूक केवियां रांणा, साभ्रण लड़त न सुणिया । जइयौ रांम रुद्रायण जीहा, भण तण पागल भणिया ।
श्री महारांणा कुंभा री गीत

४ जपना ।

उ०—भगत-विछळ, नगण नागळ । जगत जनक, [illegible] । सिर नमि नमि, चरण पदम । 'किसन' रसण रघुवर **भण** ।
—र. ज. प्र.

६ कहना, कथना ।

उ०—१ जठै गजारूढ चालुक्य राज सांमुहौ धकाय, ग्रळाव धकतौ लोयणां मिळाय ग्राप रा पखरैतां नूं प्रेरणा रै काज ग्रनैक प्रसंसा रा प्रपंच **भणिया** ।—वं. भा.

उ०—२ ग्रवंती रा ग्रधीस प्रमाररराज भरथिहरि रै रांणी पिंगळा जिकण रौ दूजौ नांम ग्रनंगसेना कहीजै सो ग्रद्वितीय प्रीति रौ ग्रास्पद बणी ग्रर जिण ग्रागै तो बिना प्राण न रहसी ग्रसी दुर-लभ बातां ग्रनेक बार माळव रै महीप **भणी** ।—वं. भा.

उ०—३ सूरत धन जैमिघ सारधू, भली भली थिहुं भुवण **भणी** । मा कैरवां तणी न कियो ग्रत, तो जेही पांडवां तणी ।
बोगसी गोरधन कहै

क्रि० ग्र०—५ होना ।

उ०—रण साले रूक केवियां रांणा, साभ्रण लडत न सुणिया । जइयौ रांम रुद्रायण जीहा, भण तण पागल **भणिया** ।
—श्री महारांणा कुंभा री गीत

भणणहार, हारौ (हारी), भणणियौ—वि० ।

भणाड़णौ, भणाड़बौ, भणाणौ, भणाबौ, भणावणौ, भणावबौ
—प्रे० रू० ।

भणिग्रोड़ौ, भणियोड़ौ, भण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भणीजणौ, भणीजबौ—कर्म वा० ।

भंणणौ, भंणबौ, भिणणौ, भिणबौ—रू० भे० ।

भणत—१ कृषि कार्य करते समय सामूहिक रूप से किसानों द्वारा गाया जाने वाला लोक-गीत ।

वि० वि०—यह रामध्वनि या 'राम भणणा' लोक-गीत अधिक श्रम के कार्य, जैसे—कड़बी काटना, मोठ उखाड़ना आदि के समय गाई जाती है। इससे कार्य में गति आती है व थकान का आभास कम होता है।

भणभणाट, भणभणाहट—देखो 'भणण' (रू. भे.)

उ०—छिड़ियोड़ा छत्ता रा टांटिया भणण भणण करता भंवै ज्यूं लोगां रै मूंडा री बातां **भणभणाट** करती अेक कांन सूं दूजा कांन तांई भरणाटा मारण लागी।—फुलवाड़ी

भणभणाटौ—देखो 'भणण' (अल्पा., रू. भे.)

भणभणाणौ, भणभणाबौ—देखो 'भणकणौ, भणकबौ' (रू. भे.)

भणभणाणहार, हारौ (हारी), **भणभणाणियौ**—वि०।

भणभणायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भणभणाईजणौ, भणभणाईजबौ—भाव वा०।

भणसाल, भणसालइं—सं० स्त्री०—कोषागार, खजाना।

उ०—नेव त्रत्रडडइं, खोलड खडहडइं, बीज झलहलइं, परनाल खलहलइं, पाणी तणी भूणि भूणइं, **भणसाल** भीजइं।—व. स.

उ०—२ कुपाह तणउं धन उपारजिउं जलि उपतिष्टइ, कुपात तणउं धन उपारजिउं **भणसालइं** त्रूटइ, कुपाह तणउं धन उपारजिउं ऊभ भट्ट जाइ।—व. स.

भणहण—देखो 'भणण' (रू. भे.)

उ०—फब हार धार घण फरहरंत, वागीचां चादर जळ वहंत। भर फूल फळित अढ़ारभार, जुथ करत भ्रमर **भणहण** गुंजार।

—सू. प्र.

भणहणणौ, भणहणबौ—१ हवा का चलना।

२ देखो 'भणकणौ, भणकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ एक साथ अन्नेक, फबै धरहरै फुहारां। विमळ पुहुप विसतरे, भमर **भणहणे** गुंजारां।—सू. प्र.

उ०—२ भूंखर वाइ भणहणिउ, तनि तनि छूटइ धूजि। मज्जन करती मांननी, गौरीसंकर पूजि।—मा. कां. प्र.

भणहणणहार, हारौ (हारी), **भणहणियौ**—वि०।

भणहणिओड़ौ, भणहणियोड़ौ, भणहण्योड़ौ—भू० का०।

भणहणीजणौ, भणहणीजबौ—भाव वा०।

भणहणियोड़ौ—देखो 'भणकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भणहणियोड़ी)

भणाड़णौ, भणाड़बौ—देखो 'भणाणौ, भणाबौ' (रू. भे.)

उ०—देवां दरसि फरसि जाइ द्वारे, पूजा करि डेरै पाधारै। होम कराड़ि **भणाड़ि** विप्रां हृद, जपि आवाहन सूर इसट पद।

—वचनिका

भणाड़णहार, हारौ (हारी), भणाड़णियौ—वि०।

भणाड़िओड़ौ, भणाड़ियोड़ौ, भणाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भणाड़ीजणौ, भणाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भणाड़ियोड़ौ—देखो 'भणायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भणाड़ियोड़ी)

भणाणौ, भणाबौ ['भणणौ' क्रि० का प्रे० रू०] १ कहलाना, बुलवाना।

२ पढ़ाना, अध्ययन कराना।

उ०—गिणती नीं आती व्है तौ म्हारा कना सूं सीख लीजै, म्हैं थनै **भणाय** देवूंला।—फुलवाड़ी

३ पाठ कराना, मन्त्रोच्चार कराना।

४ रटाना।

भणाणहार, हारौ (हारी), भणाणियौ—वि०।

भणायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भणाईजणौ, भणाईजबौ—कर्म वा०।

भणायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कहलाया हुआ, बुलाया हुआ. २ पढ़ाया हुआ, अध्ययन कराया हुआ, ३ पाठ कराया हुआ, मन्त्रोच्चार कराया हुआ. ४ रटाया हुआ.

(स्त्री० भणायोड़ी)

भणावणौ, भणावबौ—देखो 'भणाणौ, भणाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दाई, धाय **भणावण** वाळा गुरू वीजा सारा ई अठैहीज छै। पूछ देखौ, कदेई कोस बाहर पण निकाळियौ कोयनी।

--पलक दरियाव री बात

उ०—२ विनयवंत ते देखी पंडित, अहनिसि तेह **भणावइ**। मंत्रीसर नंदन मन ऊलटि, भोजन वस्त्र अपावइ।—हीराणंद सूरि

भणावणहार, हारौ (हारी), **भणावणियौ**—वि०।

भणाविओड़ौ, भणावियोड़ौ, भणाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भणावीजणौ, भणावीजबौ—कर्म वा०।

भणित—कही हुई बात या कथा।

भणियण—वि०—पठित, पढ़ा हुआ, विद्वान।

सं० पु०—चारण कवि।

उ०—भोपत चाढ़ चाढ़ ब्रन **भणियण**, जुग भण लाहर तूझ जिम। उवह न को जळ पैसै आवै, उवह न को नीसरै इम।'

—लाहर गौयल रौ गीत

भणियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कहा हुआ. २ पढा हुआ, अध्ययन किया हुआ. ३ पाठ किया हुआ, मन्त्रोच्चार किया हुआ. ४ रटा हुआ. ५ जाप किया हुआ.

(स्त्री० भणियोड़ी)

भणी [अव्यय] एक प्रकार का प्रत्यय जो कई कारक प्रत्ययों का काम देता है।

ज्यूं—जिम पहुंचा अलवरगढ़ भणी। (को-कर्म कारक)

उ०—१ इणि परि ऊमा देवड़ी, जांणी मारूवत्त। सु प्रभाति कहिबा **भणी**, पिंगळ पासि पहुत्त।—ढो. मा.

उ०—२ अस्व रथ गज चढी भूपति नगरथी सहु नीकल्या । कुंडिन-पुर भणी सांचरि, पदाति बहु आवी म्यल्या ।—नळाख्यांन

भरणैज—देखो 'भांणैज' (रू. भे.)

उ०—हुसी कलपंत म राखव हेज, भरणै गत मांमोय दक्ख भरणैज ।
—पा. प्र.

भण्यागरौ—वि०—साथ रहने वाला, सहचर ।

उ०—काल ना किंकर, यम ना सहोदर, प्रेतनां पेटां, कालरात्रिना कुंअर, भूत ना **भण्यागरा**, स्मसानि ना सहवासि ।—व. स.

भत—१ देखो 'भांत' (रू. भे.)

उ०—१—भूपाळ विया सेवाळ तणी भत, कळिया सह संमार कहै । माया जाळ कळू चै मांहि, राजा कमळ सरूप रहै ।
—जगन्नाथ सांदू

उ०—२ गहमत गत असत अवर तत परगत, अग्रत दुनित रत भरथ अत । जगपत हित मुखदुति इण भत जिम, प्रभुत हवत दिन रयणपत ।—र. रू.

२ देखो 'भात' (रू. भे.)

भतई—१ देखो 'भातवी' (रू. भे.)

उ०—१ सींप भर रोळी, थाळी भर मोती मेरा **भतई** नूंतण मैं गई जी बेगौ सो आंई मेरी मां का रे जाया, हम घर बिड़द उतावली ।—लो. गी.

उ०—२ गंगा के धोरै रै बीरा जमना के धोरै, बांडी के पार बसे मेरा **भतई** । बेगौ सो आइ मेरी मांका रै जाया, जांमरण का रै जाया हम घर विडद उतावळी ।—लो. गी.

२ देखो 'भात' (रू. भे.)

भतलाणौ, भतलाबौ—देखो 'बतलाणौ, बतलाबौ' (रू. भे.)

भतलाणहार, हारौ (हारी), भतलाणियौ—वि० ।

भतलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भतलाईजणौ, भतळाईजबौ—कर्म वा० ।

भतलायोड़ौ—देखो 'बतलायोड़ौ' (रू, भे.)

(स्त्री० भतलायोड़ी)

भतवार, भतवारण, भतवारी—सं० स्त्री० [सं० भक्तहारिणि] खेत पर भोजन ले जाने वाली स्त्री ।

उ०—१ काळ बरस रै पड़ी बीजळी, गैं'री इंदर गाजै । भातौ ले **भतवार** खेत में, मझ दोफारां आजै ।—चेतमांनखां

उ०—२ वगत वटाऊ राह, बांह दे टुकड़ा टाळै । **भतवारण** छिण पळक, ओकळी छांय उनाळै ।—दसदेव

भतवारौ—सं० पु० [भक्तम् वेला] खेत में भोजन ले जाने का समय 'भाता वक्त' ।

उ०—विकसी भाता ले **भतवारां** वाळी, चंगी चौधरण्यां सतवारां माळी ।—ऊ. का.

भतार, भतारौ—देखो 'भरतार' (रू. भे.)

उ०—१ नीलजु निगिणु गई अजाणु कांइ मारइ मारी, ऐसि जनमि गमइ पंडुकुमर विणु नहीं य **भतारौ** । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ कोइ न जिह्वु जाग हुईय नारि, तिन पवि कोइ न होइसि ए । एक महेलीय पंच **भतार**, मतीग मिरोमणि गाइं ए ।
—सालिभद्र सूरि

भति—देखो 'भांत' (रू. भे.)

उ०—गाम मनाह बियां लिग सुगतां, भड़ भागती अंग **भति** ।
क्रमियूं नीर न पमियूं कांहां, मिरां नरां अे का ज मति ।
—मोहा निरबांण री गीत

भती—सं० स्त्री० —१ पृथ्वी, भूमि ।

२ देखो 'भात' (रू. भे.)

उ०—'बखतेस', 'सुजान' गोविंद' र 'पातल' 'गोवरधन' र लदांनपती । करनेस' के पुत्र 'रीभग दे' नर सगस सगराज **भती** । —ला. रा.

भतीज, भतीजौ—सं० पु० [सं० भ्रातृज] (स्त्री० भतीजी) भाई का लड़का, भतीजा ।

उ०—१ भाथै भाटी मुरगा, 'मबळै' जिगा गहाम । 'मबळै' और **भतीज** सक, 'तेजौ' नारणदाम ।—रा. रू.

उ०—२ समर पतीजा बीज बरसाळ रा सार सौ, भाळ रा मतीजा अगी भाळी । तेज पुंज भाळ रा नगग तीजा तसौ, **भतीजा** काळ रा जसौ भाळौ ।—महाराणा भीमसिंघ री गीत

रू० भे०—भत्तीजौ, भत्रीज, भत्रीजउ, भात्रीजौ, भात्रीज, भात्रीजौ ।

भतूळियौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा., रू. भे.)

भतूळौ—देखो 'बथूळौ' (रू. भे.)

उ०—अरु अेक दिन जेठ रै महीनं मे बाघर ठाकुरजी जी चौबारै में विराजिया है । नैं राजपूत सर्व बैठा है । अरु जैसळमेरी जी भीतर संपाड़ै विराजिया जिसै **भतूळौ** आयौ सू कपड़ा रेत सू मारा भरीजिया ।—द. दा.

भतूल्यौ—देखो 'बथूळौ' (रू. भे.)

भत्त—१ देखो 'भांत' (रू. भे.)

उ०—भूप जड़ावै मुगट मझ, रोहण गिर उतपत्त । निम दीपग प्रतिनिधि रतन, प्रभा अपूरब **भत्त** ।—बां. दा.

२ देखो 'भक्त' (रू. भे.)

भत्ति—१ देखो 'भक्ति' (रू. भे.)

उ०—जिनवर **भत्ति** समुल्लसिय, रोमांचिय निय अंग । नांना विधि करि वरणवुं, आंगी मन उछरंग ।—स., कु.

२ देखो 'भांत' (रू. भे.)

उ०—असुरांण अरणड्डुर बांह बळत्तर गात गिरव्वर गत्ति । गति राख समव्वर उड़ै अंबर भुजां डारण भत्ति ।—मा. वचनिका

भत्ती—१ देखो 'भांत' (रू. भे.)

उ०—वीराविवीरं मिळै मीरं, सूर धीरं सत्थ ए। आरेण मत्ती भीम **भत्ती**, बांण पत्ती पत्थ ए।—गु. रू. बं.

२ देखो 'भतई' (रू. भे.)

भत्तीजौ—देखो 'भतीजौ' (रू. भे.)

उ०—मांमौ भाणेजौ हिळमिळ मुख मोडौ, फोड़ौ किंचित नह, फलकां रौ फोड़ौ। काकौ **भत्तीजौ** सारै दिन काटौ, घर में घाटौ नहं, आटै रौ घाटौ।—ऊ. का.

भत्तौ-सं० पु० [सं० भक्तम्] १ वेतन के अतिरिक्त किसी कारण विशेष से मिलने वाला धन या दैनिक व्यय।

२ देखो 'भांत' (रू. भे.)

उ०—पौतरा 'सेवा' रा जांगी घुरावै सतारा वार, धावै खळां खता रा भूडंडा धाड़-धाड़। अबीह **भत्ता** रा डंका आवै सदा अठवारां, कंपनी जड़ावै किलकत्ता रा किंवाड़।—संकरदांन सांमोर

भत्रीज, भत्रीजउ—देखो 'भतीजौ' (रू. भे.)

उ०—१ बीजा ही साथै दळ सब्बळ, भाई बंध **भत्रीज** भुजागळ। महि लहडौ खुरसांण मंडोवर, अडिग्रौ वडां सरस ग्रहि असिमर।

—र. वचनिका

उ०—२ रीसाविउ राउल **भत्रीजउ**, तहीं लगइ छत थांणइ। सांतल भीह तणी परि गाजइ, सबळ वीर समीयांणइ।

—कां. दे. प्र.

भथरट्ट—जाति विशेष।

उ०—ब्राह्मण सेवइ वेसनइं, अेता नहीं कुलवट्ट। भ्रमि भूलि मिउं भांमिनी, को भरडउ **भथरट्ट**।—मा. कां. प्र.

भथाइत, भथाइति, भथाइतु, भथाउ, भथाउत, भथाउतिइं-सं० पु० [सं० भस्त्रा+रा० प्र० आइत, आइति, आउतु] १ तरकसधारी।

उ०—१ कंठाल कणी, भंडार भर भरा भरिया, रथ जूता, राउत पायक **भथाइति** गंगादकि स्नान कीधां गोत्र देव पूज्या।—व. स.

उ०—२ एवं विध आयुध विसेसि ढांचां भरिया, पत्तियुद्ध प्रवर्त्तिउं, हाथिउ हाथिइ, अगवार असवारि, पायक पायकि, **भथाइतु**, भथाइति, सरासरि।—व. स.

उ०—३ हाथिउ हाथिइ, घोडो घोडइ, रथ रथइ, पायक पायकइं, **भथाउत, भताउतिइं**, खड्गायुध खड्गायुधि।—व. स.

२ तरकश बनाने वाली एक जाति या उस जाति का व्यक्ति।

रू० भे०—भाथाइत।

भथारौ—१ देखो 'भाथौ' (रू. भे.)

उ०—सिर वांमी बंधियौ, वणै सिरपाव वखांणां। जड जमदढ जीमणै, कमर जड़कै केवांणां। कियौ पूर कैमरां, भीड़ ऊपरा **भथारौ** धनकै वाह धारियां,कूंत तोलियौ करारौ।—बखतौ खिड़ियौ

२ देखो 'भातौ' (रू. भे.)

भथूळियौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा, रू. भे.)

भथूळौ—देखो 'बथूळौ' (रू. भे.)

भथूल्यौ—देखो 'बथूळौ' (अल्पा., रू. भे.)

भदणौ, भदबौ—१ देखो 'भिदणौ, भिदबौ' (रू. भे.)

उ०—रवदां खग बाहतौ 'रामावुत', रेणा पुड **भदियौ** रतंग। भुजंग सुपेद लाल रंग **भदियौ**, भूली तिण आंटै भुयंग।

—रामावत राठौड़ रौ गीत

२ देखो 'बधणौ, बधबौ' (रू. भे.)

भदणहार, हारौ (हारी), भदणियौ—वि०।

भदिग्रोड़ौ, भदियोड़ौ, भदयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भदीजणौ, भदीजबौ—भाव वा०।

भदर—१ देखो 'भद्दर' (रू. भे.)

उ०—नाई बारी बारी सूं च्यारूं जणां रै माथै हाथ फेरयो। दुख अर इचरज सूं पूछयो—अंदाता **भदर** क्यूं व्हिया, कांई बात व्ही।

—फुलवाड़ी

२ देखो 'भद्र' (रू. भे.)

३ देखो 'भादवौ' (मह., रू. भे.)

भदरक-सं० पु० [सं० भद्रक] १ सार, तत्व।

उ०—रांमचंदजी आया धणा-ई धरम री धजा। हजारां रुपिया पाठसाला रै नांव सूं चंदो कर'र गिटग्या अर डकार-ई को लीनी। 'हूं तो कैवूं हूं आपां-नै हालणौ जोयीजै अर जोर लगावणौ जोयीजै।' अबै हालौ भलां-ई कुंई **भदरक** को रैं'यो नी।

—बरसगांठ

२ मनोहर, सुंदर।

भदरकाळी—देखो 'भद्रकाळी' (रू. भे.)

भदरजात, भदरजाति, भदरजाती—देखो 'भद्रजात' (रू. भे.)

भदरा—देखो 'भद्रा' (रू. भे.)

भदाउ—देखो 'बधाऊ' (रू. भे.)

भदाउड़ौ—देखो **'बधाऊ'** (अल्पा., रू. भे.)

भदाऊ—देखो 'बधाऊ' (रू. भे.)

भदावुड़ौ—देखो 'बधाउड़ौ' (रू. भे.)

उ०—पहलौ पख सांवण हो लाग्यौ, तौ लाग्यां **भदावुड़ौ** उडवा नैं। मेरौ मन मारूजी मिळबा नैं।—लो. गी.

भदावत-सं० स्त्री०—राठोड़ वंश की एक उप-शाखा।

उ०—सुजड़ा हथौ भदावत सांमळ, 'भीम' हरौ, छळ धणी भुजा-गळ। सांमळ जोड़ जोध सादावत, रिण पड़िहार सजूंझौ रावत।

—रा. रू.

भदाह-सं० स्त्री०—अग्नि। (अ. मा.)

भदियोड़ौ—देखो 'भिदियोड़ौ' (रू. भे.)

भदोड़िया-सं० स्त्री०—चोहान वंश की एक उप-शाखा।

रू० भे०—भदोरिया ।

भदोड़ियौ–सं० पु०—उक्त शाखा का व्यक्ति ।

रू० भे०—भदोरियौ ।

भदोराराय–सं० स्त्री०—आवड़ देवी का एक नाम ।

भदोरिया—देखो 'भदौड़िया' (रू. भे.) (बां. दा. ख्यात)

भदोरियौ—देखो 'भदोड़ियौ' (रू. भे.)

भद्द—१ देखो 'भादवौ' (रू. भे.)

उ०—रजा ब्रह्म री रूप अन्नेक रम्मै, धणां बाजणां घूघरा घम्म घम्मै । घटा भद्द ज्यों नद्द आंनद्द घोरै, धुबै तास कंसाळ सांगीत धोरै ।—मे. म.

२ देखो 'भद्र' (रू. भे.)

भद्दता—देखो 'भद्रता' (रू. भे.)

भद्दर–सं० पु० [सं० भद्राकरण] १ कुटुम्ब में माता पिता या निकटतम वृद्ध पुरुष की मृत्यु के समय सिर, दाढी, मूंछ के बाल मुंडवाने की क्रिया ।

उ०—चाकर-चरवादार नैं, स कोई भद्दर दिया कराय । गाजा-बाजा बंद करया, कोई लियौ सोग को नांव ।

—डूंगजी जवारजी री छावली

क्रि० प्र०—करणौ, होणौ ।

वि० वि०—प्राचीन काल में राजाओं की मृत्यु के समय भी प्रजा वर्ग में मुंडित (भद्दर) होने की प्रथा थी ।

२ देखो 'भद्र' (रू. भे.)

३ देखो 'भादवौ' (रू. भे.)

रू० भे०—भदर, भद्र ।

भद्दव—देखो 'भादवौ' (रू. भे.)

उ०—हय मज्जहि धरखूर, सेन चतुरंगनि सज्जहि । बज्जहि नद्द निहाव, मनहु भद्दव घन गज्जहि ।—ला. रा.

भद्दा—देखो 'भद्रा' (रू. भे.)

भद्दापणौ–सं० पु० [फा० बद] भद्दा होने का भाव ।

भद्दौ–वि० [फा० बद] (स्त्री० भद्दी) १ जिसकी बनावट में असामान्यता, वक्रतना अथवा अपूर्णता हो, बेढंगा, बेडोल, कुरूप ।

२ शिष्टता, व सभ्यता के प्रतिकूल, अश्लील, फूहड़ ।

३ कलात्मक दृष्टि से शून्य एवं अरुचिकर ।

भद्र, भद्र्–सं० पु० [सं० भद्र] १ सफेद रंग का हाथी ।

उ०—ठणै भद्र मंद अगां बंस ठावा, छटा फैल हालै किनां सैल छावा ।—वं. भा.

२ उतर दिशा का एक दिग्गज ।

३ स्वर-साधन की एक प्रणाली ।

४ वृषम, बैल । (ह. नां. मा.)

५ शिव, महादेव ।

६ सफेद रंग । (ह. नां. मा.)

७ खंजन, पक्षी ।

८ शिवजी के एक प्रसिद्ध गण का नाम जिसकी उत्पत्ति शिवजी की जटा से हुई थी, वीर-भद्र ।

उ०—भद्र तेणिया अपूठउ भारथ, धरिया वळै ईसवर ध्यांन । वाजयउ पछडउ संसार वदीतउ, गति अवगति सहु जांणइ ग्यांन ।

—महादेव पारवती री वेलि

९ जैनियों का एक व्रत ।

उ०—निक्रमगतप, महीमानतप, इंद्रियजय, कसायजय, जोगसिद्ध, भद्र, महाभद्र, भद्रोत्तर, सर्वतोभद्र, रत्नावलि ।—व. स.

१० श्री भद्रकर - भविष्य [काल के चौबीसवें तीर्थंकर ।

उ०—तेवीसमो अमरजीव अंतवीरज नमो । स्वातिबुन जीवते भद्र चौबीसमो ।—वृहत् स्तो०

वि०—१ श्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—भीमि भीडिउ भद्र पाडीयउ, बांधीउ पालिउ नीरि । जागिउं चोडइ वंस बलि, नवि दूमिइ सरीरि । मानिभद्र सूरि

२ कल्याणकारी, मंगलकारी ।

उ०—परम्म निवास निवारण पाप, जोगेसर भद्र अजप्पा जाप । दातार-मुकति दिनंकर देव, सारूप सालोक सामीप सामेव ।

—ह. र.

३ सभ्य, शिष्ट, शिक्षित ।

४ कृपालु । ५ भला, साधु ।

देखो 'भद्दर' (रू. भे.)

उ०—अकबर हुक्म कियौ उमरावां, चकवत किणी न दाख्यौ चोज । बळा धणी न मांन्यौ बिसटाळौ, भद्र न हुवौ गवाई भोज ।

—राव भोज हाडा रौ गीत

रू० भे०—भदर, भद्द, भद्दर ।

भद्रक–सं० पु०—१ एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में SII SIS III SIS III S S III S (भ र न र न र न ग) और ४, ६, ६, पर यति होती है ।

भद्रकाळी–सं० स्त्री० [सं० भद्रकाली] १ दुर्गा देवी की १६ भुजाओं वाली मूर्ति ।

उ०—देवी काळिका मा नमौ भद्रकाळी, देवी दुरगा लाघवं चारिताळी, देवी दांनवां काळ सुरपाळ देवी, देवी साधकं चारणं सिध सेवी ।—देवि.

२ कात्यायनी ।

२ कार्तिकेय की एक मातृका ।

रू० भे०—भदरकाळी ।

भद्रखेमा–सं० स्त्री० (सं० भद्रक्षेमा) दुर्गादेवी, भगवती ।

उ०—देवी खेचरी भूचरी भद्रखेमा, देवी पद्मणि सोमणी कळह प्रेमा, देवी जम्मणी मख्ख आहूति ज्वाळा, देवी वाहनी मंत्र लीला विसाळा ।—देवि.

भद्रग—देखो 'भडग' (रू. भे.)

भद्रजात, भद्रजाति, भद्रजाती, भद्रजातीउ, भद्रजातीनाग—१ हाथी, गज। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ काळी घड पावस कंवळयं, बग पंकति दीप दंतूसळयं। हिलिया भद्रजातिय हींडुळता, परबत्त क पंखिय संजुगता।
—गु. रू. बं.

उ०—२ फबि तेल सिंदूर तिलक्क फटा। भद्रजात भंयकर स्यांम भटा। निलवट्ट किरीट भिलंत निलै। चपळा घरा मंभ चमंक चलै।—मा. वचनिका

२ सफेद रंग का हाथी।

उ०—१ रचे रिरा वार खग मार देतौ रिमां, ज्यार भद्रजात कि कसै पोहप जेम। कपोळ भ्रमर सूं क्रमै कोडीक करण, तिमर गिर हूंत उडियण लसै तेम।—कविराज करणीदांन

उ०—२ सादूळा तैं 'जसहड़ संभ्रम, भिड़ भद्रजाती असुर भगा। दीसै रायहरै 'दुजणमल', मोती महिळां मवड़ लगा।—नैणसी

उ०—३ दस हस्त परिधि परिकरित, सप्तांगिहिं, भूमि स्परसतउ, चत्वारिंसदधिक गजलक्षण चतुःसती दरसतउ, किल ऐरावणा-द्वितीय, इसउ हस्ति भद्रजातिउ।—व. स.

रू० भे०—भदरजात, भदरजाति, भदरजाती।

भद्रणौ, भद्रबौ—क्रि० स० [सं० भद्रं] अच्छा करना।

उ०—पांचे पाटे भद्रिउं भीमि भिडी ऊपाडी रीस। नवि मारिउ छइ माडी वयणि, जिम नवि दीसइ रांडी भयणि।
—सालिभद्र सूरि

भद्रणहार, हारौ (हारी), भद्रणियौ—वि०।

भद्रिओड़ौ, भद्रियोड़ौ, भद्र्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भद्रीजणौ, भद्रीजबौ—कर्म वा०।

भद्रतरणी—सं० पु० [सं०] एक प्रकार का गुलाब का फूल।

भद्रता—सं० स्त्री० [सं० भद्र] १ श्रेष्ठता, अच्छाई।

२ शिष्टता, सभ्यता।

३ भलमानसता, साधुता।

रू० भे०—भद्रता।

भद्रपीठ—सं० स्त्री० यौ० [सं० भद्र+पीठ] राजा या देवता आदि के अभिषेक होने का सिंहासन।

भद्रबल्लभ—सं० पु०—बलराम का एक नाम।

भद्रबाहुस्वांमि—सं० पु० [सं० भद्र+बाहुस्वामी] यशोभद्र के शिष्य, कल्पसूत्र के रचनाकार, भद्रबाहुस्वांमि।

उ०—प्रतिबोध जंबूस्वामि तणउ, तप तउ दृढ प्रहार तणउं, महा-प्राणध्यान भद्रबाहुस्वामि तणउं, अल्पदेसना चिलातीपुत्र तणी।
—व. स.

भद्रसेन—सं० पु०—१ कंस द्वारा मारा डाला जाने वाला देवकी का एक पुत्र।

२ कुंती का एक पुत्र। (भागवत)

भद्रखेव—सं० पु० [सं० भद्र+क्षेम] कुशलता क्षेम। (अ. मा.)

भद्रा—सं० स्त्री० [सं०] १ द्वितिया, सप्तमी और द्वादशी तिथि की संज्ञा।

उ०—चंद्रई ग्यारमौ देव है, तीसरौ चंद्र छइ खोडीला-जोगि। काळ जोगण भद्रा नहीं, पुख नछत्र नई कातिक मास।—बी. दे.

२ दुर्गा देवी।

३ पृथ्वी, अवनि।

४ सुमेरु पर्वत से विभाजित होने वाली गंगा की चार धाराओं में से उत्तर की ओर जाने वाली एक धारा।

उ०—भद्रा उत्तर कूं चली, अपनै सहज सुभाय। दक्खन कूं तब ऊतरी, अलकसनंदा आय।—गजउद्धार

५ अर्जुन की स्त्री सुभद्रा का एक नाम।

६ कैकय राज्य की कन्या जो श्रीकृष्ण को व्याही गई थी।

उ०—कालिंद्री विदा भद्रा कुंअरि, कहि लखमणा क्रिपाळ रै। रींछड़ी नाग जीती निमौ, पटरांणी प्रतिपाळ रै।—पी. ग्रं.

७ कल्याणकारिणि शक्ति।

८ आकाश-गंगा।

९ गौ, गाय।

१० हल्दी।

११ दूब, दूर्वा।

१२ छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य की एक कन्या।

१३ गौतम बुद्ध की एक शक्ति।

१४ फलित ज्योतिष के अनुसार एक अशुभ योग जो कृष्ण पक्ष की तृतिया और दशमी के शेषार्द्ध में तथा अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वार्द्ध में रहता है।

उ०—सांचरे मेल सिसपालनां सामटां, अपसकुन अनें अवजोग थया एकटा। दसासूल भद्रा वितीपात महूरत दीयौ, क्रमीयौ काळ चंद्र काळ सनमुख कीयौ।—रुकमणी हरण

१५ आर्या गीति या 'खंधाण' का एक भेद विशेष। (पि. प्र.)

१६ फूहड़ स्त्री। (व्यंग)

उ०—१ ईयै भांत छोकरी महुर रोज ले आवै नै वांणीयै नुं ले जाइ देवै। चवळा सेर ४, तेल सेर १, रोज ले जाइ नै भद्रा नुं रांधि नै देवै। भद्रा खाइ नै त्रिपति हुवै।—स्याम सुंदर री बात

उ०—२ सु मोनुं ऊंठ भेकि नै उतारै। ज्युं हुं कपड़ौ लूगड़ौ संबाहुं, काजळ टीकौ करूं। जे युं हुं जासुं तौ लोगायां कहिसी, भद्रा छै।—कांवळौ जोईयो नै तीडी खरळ री बात

रू० भे०—भदरा, भद्दा, भद्रा, भद्रिका।

भद्राकरण—सं० स्त्री० [सं०] सिर, दाढी एवं मूंछ मुंडवाने की क्रिया, हजामत। (डिं. को.)

भद्रातिथ, भद्रातिथि—देखो 'भद्रा' (१)।

भद्रानंद—सं० पु०—संगीत में स्वर-साधन की एक प्रणाली।

भद्रासण—सं० पु० [सं०] राज सिंहासन जिसपर राजाओं का अभिषेक किया जाता है।

उ०—अर आगे देवराज रौ रचियौ आठ हाथ उच्छ्रित, आठ हाथ लंबायत, बत्तीस पूतळी सहित चन्द्रकांतमणि मय एक सिंघासण कोई प्रसाद री पीठ-भू खोदतां कढियौ तिकौ ही आप रै भद्रासण बणायौ ।—वं. भा.

भद्रिका–सं० स्त्री० [सं० भद्रा] १ फलित ज्योतिष के अनुसार योगिनि दशा के अन्तर्गत पांचवी कक्षा ।

२ देखो 'भद्रा' (रू. भे.)

भद्रियोड़ौ–भू० का० कृ०—अच्छा किया हुआ.

(स्त्री० भद्रियोड़ी)

भद्रोत्तर–सं० पु०—जैनियों के एक व्रत का नाम ।

उ०—कनकावलि, रत्नावलि, मुक्तावलि सिंहविक्रीडित महासिंह-विक्रीडित गुणरत्नसंवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोत्तर सरवतोभद्र यव-मध्यचद्रायण ।—व. स.

भनंक, भनक—देखो 'भणक' (रू भे.)

उ०—१ प्रयाति चोल-गोल की भनंक पोल में परें, धपे प्रसूर पूर लें, वियांन थांन में धरें ।—ऊ. का.

उ०—२ माया माया फेर दी, तनक भनक गइ कांन । लगी चट-पट तुरत ही, जाग उठे भगवांन ।—गजउद्धार

भननेटिय–सं० पु०—चक्कर ।

उ०—कथ कौन करे कटकी कटके, पग अंक धरें पटकी पटके । बननेटिय ले पितु बैटन में, भननेटिय ले धन भेटन में ।—ऊ. का.

भपको—देखो 'भभको' (रू. भे.)

भपत–सं० पु०—चन्द्रमा, शशि । (डिं. को.)

भपौभप [देशज] अनुरूप, तुल्य, समान ।

उ०—सेवळा री सूळां रै उनमांन माथा रा केस, जटा बिखरियोडी, भैंसा जेड़ौ माथौ, आंगळ डोढ़ेक री लिलाड़ी, सांमा आंवळिया खाता भंवरा, रींछ रै भपौभप रूंवाळी, गौ रै जिसी खाल, घोर खोदणिया जिनावर री गळाई तीखा नख, सीपनियां, जिमा लांठा ।—फुलवाड़ी

भबकणौ, भबकबौ—देखो 'भभकणौ, भभकबौ' (रू. भे.)

भबकणहार, हारौ, (हारी), भबकणियौ—वि० ।

भबकाड़णौ, भबकाड़बौ, भबकाणौ, भबकाबौ, भबकावणौ, भबका-वबौ—प्रे० रू० ।

भबकिओड़ौ, भबकियोड़ौ, भबक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भबकीजणौ, भबकीजबौ—भाव० वा० ।

भबकाड़णौ, भबकाड़बौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ' (रू. भे.)

भबकाड़णहार, हारौ (हारी), भबकाड़णियौ—वि० ।

भबकाड़िओड़ौ, भबकाड़ियोड़ौ, भबकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भबकाड़ीजणौ, भबकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भबकाड़ियोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री० भबकाड़ियोड़ी)

भबकाणौ, भबकाबौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ' (रू. भे.)

भबकाणहार, हारौ (हारी), भबकाणियौ—वि० ।

भबकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भबकाईजणौ, भबकाईजबौ—कर्म० वा० ।

भबकायोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भबकायोड़ी)

भबकावणौ, भबकावबौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ' (रू. भे.)

भबकावणहार, हारौ (हारी), भबकावणियौ—वि० ।

भबकाविओड़ौ, भबकावियोड़ौ, भबकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भबकावीजणौ, भबकावीजबौ—कर्म० वा० ।

भबकावियोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भबकावियोड़ी)

भबकियोड़ौ—देखो 'भभकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भबकियोड़ी)

भबकी—देखो 'भभकी' (रू. भे.)

भबको—देखो 'भभको' (रू. भे.)

भबक्कणौ, भबक्कबौ—देखो 'भभकणौ, भभकबौ' (रू. भे.)

उ०—बराळा धोम जग रीस भाळा बिहूण. तमका छीनी तणौ सांभळै तेम । 'जमावत' तणा खग तेज मांहि जळै, जवन गाळ छीट आतस भबक्कै जेम ।—महाराजा अजीतसिंह री गीत ।

भबक्कणहार, हारौ (हारी), भबक्कणियौ—वि० ।

भबक्काड़णौ, भबक्काड़बौ, भबक्काणौ, भबक्काबौ, भबक्कावणौ, भबक्कावबौ—प्रे० रू० ।

भबक्किओड़ौ, भबक्कियोड़ौ, भबक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भबक्कीजणौ, भबक्कीजबौ—भाव० वा० ।

भबक्काड़णौ, भबक्काड़बौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ' (रू. भे.)

भबक्काड़णहार, हारौ (हारी), भबक्काड़णियौ—वि० ।

भबक्काड़िओड़ौ, भबक्काड़ियोड़ौ, भबक्काड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भबक्काड़ीजणौ, भबक्काड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भबक्काड़ियोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री० भबक्काड़ियोड़ी)

भबक्काणौ, भबक्काबौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ' (रू. भे.)

भबक्काणहार, हारौ (हरी), भबक्काणियौ—वि० ।

भबक्कायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भबक्काईजणौ, भबक्काईजबौ—कर्म वा० ।

भबक्कायोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ'(रू. भे.)

(स्त्री० भबक्कायोड़ी)

भबक्कावणौ, भबक्कावबौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ' (रू. भे.)

भबक्कावणहार, हारौ (हारी), भबक्कावणियौ—वि० ।

भबक्काविओड़ौ, भबक्कावियोड़ौ, भबक्काव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भबक्कावीजणौ, भबक्कावीजबौ—कर्म वा०।

भबक्कावियोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री० भबक्कावियोड़ी)

भबक्कियोड़ौ—देखो 'भभकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भबक्कियोड़ी)

भबण—देखो 'भवन' (रू. भे.)
उ०—उठा हूं नागणेच्यां **भबण** आविया, लाविया सरब रणवास लारै। गती गजराज हंसा गवण गांमणी, 'इंद्र' पर कांमणी लवण वारै।—मे. म.

भबुतासिद्ध, भबुतासिध—देखो 'विभूतासिध'।
उ०—कोठै तो बाजा बाजिया भभूत्तासिध कोठै घुरा छै निसांण भबुतासिध बागां में।—लो गी.

भबूत, भबूती—देखो 'विभूति' (मह., रू. भे.)

भब्भकणौ, भब्भकबौ—देखो भभकणौ, भभकबौ' (रू. भे.)
उ०—पिंड नाळप्परा, **भब्भकै** भंभरा। रत्र पत्रब्भरा चौसटी चंड रा।—सू. प्र.
भब्भकणहार, हारौ (हारी), भब्भकणियौ—वि०।
भब्भकिओड़ौ, भब्भकियोड़ौ, भब्भक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भब्भकीजणौ, भब्भकीजबौ—भाव वा०।

भब्भकियोड़ौ—देखो 'भभकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भब्भकियोड़ी)

भभक–सं० स्त्री० [अनु०] १ भभकने की अवस्था, क्रिया या भाव।
२ जल्दी, शीघ्र।
उ०—तज गया गहबळ खाय तापां, **भभक** ओसुर भागिया। उण ठोड जिण रा रिखा आस्रम, जाग धूमर जागिया।—र. रू.
३ गंध, बदबू।
४ अग्नि, आग।
उ०—स्रंगां पाहड़ री घातां कवलां झाड़ री संका, भुसंडां फाड री कना भाड़ री **भभक**। हदणां पाड़ री धाड़ धाड़ री 'बलूत' हातां, ताड़ आंनाड़ री बजै राड री तुपक।
—महाराजा बळवतसिंघ री गीत
रू० भे०—वभक।

भभकणौ, भभकबौ–क्रि० अ० [अनु०] १ वेग से जल उठना, भड़कना।
उ०—१ थोड़ा में ई घणी समझण री चेस्टा करज्यौ के औ अंधारौ खुद ई इत्तौ गोटी जग्यौ है के वौ मतै ई सिळग नै भभकैला।—फुलवाड़ी
उ०—२ फौजां झंडा फरहरे, **भभकी** तोफां भाळ। चित ओछकियौ 'चिमन'रौ भैंचकियौ भुरजाळ।—लिछमीदांन बारहठ
२ क्रुद्ध होना, उत्तेजित होना।
उ०—सो हरीसींघ रौ नांव सुणतां ही भाई म्हौकर्मसिंघ बैठौ थौ सो ईसौ **भभकियौ** जांणै दारू रा गंज मांहे आग री चिणगी पड़ी।
—प्रतापसिंघ म्हौकमसिंघ री वात
३ तेज दुर्गन्ध आना, बदबू फूटना।
उ०—अति खूंणा ऊंडा थूडम थूंडा, कूंडापंथ करंदा है। मूंछां बिन मूंडा भासत भूंडा, भस्सूंडा **भभकंदा** है।—ऊ. का.
४ मन ही मन में कुढ़ना, संतप्त होना, सुलगना। (लाक्षणिक)
उ०—मांसी अेक सूंटी तणौ ऊंडौ निस्कारौ न्हाक नै बोली—बेटी! जुगां जुगां सूं हर लुगाई रै मूंडै औ सवाल **भभकै** है, पण आज दिन तांई कुण इण रौ जबाब दे सक्यौ?—फुलवाड़ी
५ द्रव पदार्थ का उमड़ना, तेज प्रवाह से निकलना।
उ०—१ खळ दस सहंस अड़े दळ खूटा, तीन सहस कमधज भड़ तूटा। **भभकै** घाव तड़फड़े भूमैं, घायल हुवा किता भड़ घूमैं।
—सू. प्र.
उ०—२ तुछ जळ ज्यांही माछळा तडफड़ तिण विध भाराथ। **भभकइ** रुधिर भडंजर भागा, एकण कहर लाविया हाथ।
—महादेव पारवती री वेलि
६ वाद्यों की ध्वनि होना।
उ०—नोबत रा टकोरा लागै छै। नौबति झींगड़ि पड़ी नैं रही छै। भेर, नफेर, करनाळ **भभक** नैं रह्यौ छै।—रा. सा. सं.
७ गरमी पाकर उबाल आना, उबलना।
८ आवेश में होना या आना।
भभकणहार, हारौ (हारी), भभकणियौ—वि०।
भभकाड़णौ, भभकाड़बौ, भभकाणौ, भभकाबौ, भभकावणौ, भभकावबौ—प्रे० रू०।
भभकिओड़ौ, भभकियोड़ौ, भभक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भभकीजणौ, भभकीजबौ—भाव वा०।
बबकणौ, बबकबौ, बबक्कणौ, बबक्कबौ, बभकणौ, बभकबौ, बभक्कणौ, बभक्कबौ, भबकणौ, भबकबौ, भबक्कणौ, भबक्कबौ, भब्भकणौ, भब्भकबौ, वभकणौ, वभकबौ, वभक्कणौ, वभक्कबौ, ववकणौ, ववकबौ—रू० भे०।

भभकभक–सं० पु० [अनु०] ध्वनि विशेष।
उ०—सिर तड़क तूटत भड़ कसक, धड़ गरक सम हर धधक धक। जस किलक वक वक मुख जपिक, भुव खलक रुधरक **भभकभक**।
—र. रू.

भभकाड़णौ, भभकाड़बौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ' (रू. भे.)
भभकाड़णहार, हारौ (हारी), भभकाड़णियौ—वि०।
भभकाड़िओड़ौ, भभकाड़ियोड़ौ, भभकाड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।
भभकाड़ीजणौ, भभकाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भभकाड़ियोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भभकाड़ियोड़ी)

भभकाणौ, भभकाबौ ['भभकणौ' क्रि० का० प्रे० रू०] १ वेग से जलाना, भड़काना ।
२ क्रोधित करना, उत्तेजित करना ।
३ तेज दुर्गन्ध फैलाना, बदबू फैलाना ।
४ रक्त प्रवाहित करना, खून बहाना ।
५ वाद्यों का बजाया जाना ।
६ गरमी देकर उबालना ।
भभकाणहार, हारौ (हारी), भभकाणियौ—वि० ।
भभकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भभकाईजणौ, भभकाईजबौ—कर्म वा० ।
बबकाणौ, बबकाबौ, बबक्काणौ, बबक्काबौ, बभकाणौ, बभकावौ, बभकावणौ, बभकावबौ, बभक्काणौ, बभक्काबौ, भबकाड़णौ, भबकाड़बौ भबकाणौ, भबकाबौ, भबकावणौ, भबकावबौ, भभकाड़णौ, भभकाड़बौ, भभकावणौ, भभकावबौ, वभकाणौ, वभकाबौ, वमक्काणौ वमक्काबौ—रू० भे० ।

भभकायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ वेग से जलाया हुआ, भड़काया हुआ. २ क्रोधित किया हुआ, उत्तेजित किया हुआ. ३ तेज दुर्गंध फैलाया हुआ, बदबू फैलाया हुआ. ४ द्रव पदार्थ प्रवाहित किया हुआ, खून बहाया हुआ. ५ गरमी देकर उबाला हुआ.
(स्त्री० भभकायोड़ी)

भभकार—सं० स्त्री० [अनु०] १ भभक कर बाहर निकलने या फूटने की क्रिया या भाव ।
उ०—घट सेल पार बंबार घाव, **भभकार** रुधिर पिचकार भाव । जलधार पेसकबजां जड़ंत, पौटलां मार गुरजां पड़ंत ।—वि. सं.
२ घोर गर्जना ।
वि०—गहरा ।
उ०—गुपती कटार **भभकार** घाव, नन परत भूमि पर ठाह पाव । गिर जात भूमि तन झांफ धारि फिर उठत मार मारहु बकारि
—ला. रा.
रू० भे०—वभकार ।
२ देखो 'भभक' (रू. भे.)

भभकारणौ, भभकारबौ—क्रि० स० [अनु०] १ सिंह, बाघ आदि का दहाड़ना, गर्जन करना ।
उ०—१ तहां सोनहरी-पटैत विकराळ रूप बाघ **भभकार** ऊठे ।
—सू. प्र.
उ०—२ डाचकियौ सबळ लियां दळ डारें, **भभकारे** नौहथ कर भूक । धीठ कुरीठ सकै नह धारै, चारै खेत खड़ौ अणचूक ।
—नवलसिंघ सेखावत रौ गीत
उ०—३ एकण दिसि रावल अनम्म, आलिमपति दिसि एक, **भभकारे** बेहुं सुभट, राखण रजवट टेक —प. च. चौ.
भभकारणहार, हारौ (हारी), भभकारणियौ—वि०
भभकारिश्रोड़ौ, भभकारियोड़ौ, भभकारयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भभकारीजणौ, भभकारीजबौ—कर्म वा० ।

भभकारियोड़ौ—भू० का० कृ०—सिंह, बाघ आदि दहाड़ा हुआ, गर्जन किया हुआ ।
(स्त्री० भभकारियोड़ी)

भभकावणौ, भभकावबौ—देखो 'भभकाणौ, भभकाबौ' (रू. भे.)
भभकावणहार, हारौ (हारी) भभकावणियौ—वि० ।
भभकाविश्रोड़ौ, भभकावियोड़ौ, भभकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भभकावीजणौ, भभकावीजबौ—कर्म वा० ।

भभकावियोड़ौ—देखो 'भभकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भभकावियोड़ी)

भभकियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ वेग से जला हुआ, भड़का हुआ. २ क्रोधित हुवा हुआ, उत्तेजित हुवा हुआ. ३ तेज दुर्गंध युक्त हुवा हुआ, बदबू से सना हुआ. ४ तेज गति से द्रव पदार्थ उमड़ा हुआ, तेज प्रवाह से निकला हुआ. ५ ध्वनिमान हुवा हुआ. (वाद्य) ६ गरमी पाकर उबला हुआ.
(स्त्री० भभकियोड़ी)

भभकी—सं० स्त्री०—१ झूंठी धमकी, घुड़की ।
२ गहरी प्यास ।
३ जलन, दाह ।
रू० भे०—भबकी, वभकी ।

भभकौ—सं० पु०—१ आसवन यन्त्र । नलिका यन्त्र ।
वि० वि०—किसी वस्तु का अर्क या शराब निकालने का वह यंत्र जिसमें एक मिट्टी की डेगची या हांडी पर एक तांबे की वालटी जैसा बरतन जिसकी किनारी ४ अंगुल डेगची के भीतर रहे, ऊपर लगा कर संधि लगा दी जाती है । एक कटोरा, कढ़ाई के आकार का, वालटी के पैंदे में लगा दिया जाता है । वालटी में कटोरे के नीचे के भाग में एक नली लगा दी जाती है । डेगची के नीचे आग लगाने पर उस पदार्थ की भाप बनकर अर्क उस नलकी द्वारा बाहर निकलता रहता है । इसके अतिरिक्त एक दूसरी नली होती है जिसमें से जल उष्ण होने पर बार २ निकलता रहता है और उसमें ठंडा जल डालते रहते हैं ।
२ शीघ्र उत्पन्न होकर समाप्त होने वाली चमक । (ज्वाला, लपट)
उ०—पवन का परवाह, गुलाब की मूठ, सधराज को गोटको, तारे की तूट । आतस को **भभकौ**, चक्री की चाल, चपला को चमको छाती की ढाल ।—मयाराम दरजी री वात
३ रोष, क्रोध ।
४ उत्तेजना, उग्रता ।
उ०—हाकालिया केहरी'गुमांन' वाळा बगा हाका, रारियां **भभका** क्रोध डंका बंबी रोड़ । गजां काळा मोड़ वाळा रखे तू दूसरा 'गजा', मोड़वाळा पोहां री मरोड़ जाडी जोड़ ।—गोपाळदास दधवाड़ियौ

५ आवेश, जोश ।

६ चमक, दमक. दीप्ति, कांति, आभा ।

रू० भे० भपकौ, भवकौ, भभक्कौ ।

भभक्कणौ, भभक्कबौ—देखो 'भभकणौ, भभकबौ' (रू. भे)

उ०—हर हिंदुनि हक्किय बीर किलक्किय, सोर **भभक्किय** और दहूं । सिर सेस लचक्किय भूमि भचक्किय, कील मचक्किय दंत कहूं । —ला. रा.

उ०—२ 'अभैमल' आगळ जोध अपार, वधै वध खाग वहै जिण-वार । कटै सिलहक्क कड़ा कसणक्क, **भभक्क** डबक्क स्रोणक्क भभक्क । —सू. प्र.

उ०—३ पड़ियौ घरत्ति मांझी सुपेख, भयंकर **भभक्कै** रुद्र भेख । —मा. वचनिका

भभक्कणहार, हारौ (हारी), भभक्कणियौ—वि० ।

भभक्किओड़ौ, भभक्कियोड़ौ, भभक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भभक्कीजणौ, भभक्कीजबौ—भाव वा० ।

भभक्कियोड़ौ—देखो 'भभकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भभक्कियोड़ी)

भभक्कौ—देखो 'भभकौ' (रू. भे.)

उ०—थयां हाथ में त्रमागौ कूंत ताखा क्रोध थंडी को सौ, हेम अद्रां चौमासै उमंडी को सो हूळ । खीजियै पाराथ रौ **भभक्कौ** बांण खंडी को सौ, सेल बैरीसाल वाळौ चंडी कौ सो फूल ।—महादांन महड्ड ।

भभरणौ, भभरबौ–क्रि० अ०—१ घबराना ।

२ भ्रम में पड़ना ।

भभरणहार, हारौ (हारी), भभरणियौ—वि० ।

भभरिओड़ौ, भभरियोड़ौ, भभरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भभरीजणो, भभरीजबौ—भाव वा० ।

भभरियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ घबराया हुआ. २ भ्रम में पड़ा हुआ ।

(स्त्री० भभरियोड़ी)

भभरूक–सं० पु० [दे०] राजस्थानी लोक कथाओं में प्रसिद्ध एक भूत भामरौ ।

उ०—धड़ धार अपार लुहा धर रै, **भभरूक** भयंकर पत्र भरै । परिवार सहेत हुवै त्रपती, जुगणी चवसठ सगति जिती ।—सू. प्र.

भभरूत—१ विकराल रूप ।

उ०—१ **भभरूत** रजी धोसर भसम काळदूत चख झाळ किध । बनि बसै भूतकाळा वयंड, वनखंडी अबधूत विध ।—सू. प्र.

उ०—२ वहि बांण वजर हूंका वहै, मतवाळा ओधा मजां । ज्वाळ में हुवै **भभरूत** जंग धूत पठांणां कमधजां ।—सू. प्र.

उ०—३ बकै छकै बीफरै, हुवा **भभरूत** गहकै । चोख तीख नह चकै, थहै रिणहूत न थकै ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

भभूत—देखो 'विभूति' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारै घर रमतौ ही आई रे, तू जोगिया । कांनां **बिच** कुंडल गळै बिच सेली, अंग **भभूत** रमाई रे ।—मीरां

उ०—२ जे सिंदूरें ओ भैरव सिंदूरें ओ अंग **भभूत** । खांदे **ओ** भैंरव खांदे ओ कावड़ मद भरी ।—लो. गी.

भभूतासिद्ध, भभूतासिध—देखो 'विभूतासिध' (रू. भे.)

उ०—बागां में रे बगीचा में थारै धूप रही गरणाय **भभूतासिध** बागां में ।—लो. गी.

भभूतौ—देखो 'विभूती' (रू. भे.)

२ देखो विभूतासिद्ध ।

भभूति, भभूती—देखो 'विभूति' (रू. भे.)

भभौ—देखो 'भ' वर्ण ।

भम्भीखण, भम्भीसण—देखो 'विभीसण' (रू. भे.)

उ०—परालबध का पावणा, देख दई का खेल । **भम्भीखण** ने लंक अर, हड़मान ने तेल । – अज्ञात

भमंग–वि० [सं० भ्रमर+अंग] काला, कृष्ण ।

उ०—रांमदास हररांम गुरांरी, गुरू महिमा सब गाई । प्रकट **भमंग** भुजंग डस्यो पर, प्रबळ चली परवाई ।—ऊ. का.

२ भौंरा ।

३ देखो 'भुजंग' (रू. भे.)

उ०—१ बह वायक सिंघजिम बोलंता, तायक भुजां गयण तोलंता । भेख तखिक खीजिया **भमंगा**, दुरत रोस चख झड़ै दमंगा ।—सू. प्र.

उ०—२ लीलाट तौ पूनम रो चंद जांण, अलंका जी के सोभाती सोथी । बेंणी जांणें कंचन री रेख में भमंगण सूती ।—पनां०

उ०—३ जग तोप झाल असमांन जाय । उडता **भमंग** घर पड़ै आय ।—वि. स.

उ०—४ रिण जंग वागां रोस, अण भंग रौ दीठौ इसौ । जिण रंग इसड़ौ जोस, जांणें, **भमंग** जगावियौ ।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—५ भार गज टलां फौजां **भमंग** भोयणां, जुध अड़ग ओपणां रुपै जाझा । क्रोध भर अतर भरवै अगन कोयणां, कंवर घर दोयणां लियण काजा ।—रामलाल आढौ ।

उ०—६ भोम उरड़ां भड़ां भार पड़सी **भमंग**, दवा सु लोयणां लाय झड़सी दमंग ।—महाराजा मानसिंह जोधपुर रो गीत

(स्त्री० भमंगण)

भमंगर–सं० पु०—काला सर्प, कृष्ण नाग ।

भमंणौ, भमंबौ—देखो 'भंवणौ, भंवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पही, **भमंता** जइ मिळइ, तउ प्री आखे भाय । जोबन बंधन तोड़सइ, बंधण घातउ आय —ढो. मा. ।

उ०—२ हसंती खेलंती **खूब** झेलंती अकासै हाथै, रमंती **भमंती**

माय करै सुरां राज —मा. वचनिका

भमणहार, हारौ (हारी), भमणियौ—वि०।

भमिश्रोड़ौ, भमियोड़ौ, भम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भमीजणौ, भमीजबौ—भाव वा०।

भमियोड़ौ—देखो 'भंवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भमियोड़ी)

भमडी-सं० स्त्री० [सं० भ्रमरः] घूम, घुमाव, चक्कर।

उ०—दुराबिध घमडी दै सणकारी साजी, भारी **भमडी** लै घर में भूवाजी। चिलमीं अमली के जुलमीं चितचावा, दासी बैस्यां रा मदवां रै दावा।—ऊ. का.

भमण—१ देखो 'भूंण' (रू. भे.)

२ देखो 'भवन' (रू. भे.)

३ देखो 'भ्रमण' (रू. भे.)

४ देखो 'भ्रमर' (रू. भे.)

उ०—ऊहू साहू बिहुं दिखण धरा ऊफणां, **भमण** दळ आलमां जळा भव का। 'पाळ' रा बिहुं बळ डूबता पैरिया, 'नाथ' रा तणी बांणास नवका।—राव सत्रसाल हाडा रौ गीत

भमणि—देखो 'भवन' (रू. भे.)

उ०—इणि छलि रति पमणइ, वर गरभु म आंणसि चीति। पारस **भमणि** जोय लोपइ, कोपइ तू सवि रीति।—मेरुनन्दन

भमणौ, भमबौ—देखो 'भंवणौ, भंवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सपत दंत अग्ग ऐ, घटाक पंथ बग्ग ऐ। धजा धैधंगरा सिरै, **भमै** क पंख भक्खरै।—गु. रू. बं.

उ०—२ **भमिया** अत्युलोक भुमण पिण भमियउ, साठ हजार लिजइ भड़ साथि। राजा सगर तणउ ताइ रैंवत, बहु सबदई कुण बाधइ घाति।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ सुण समझे कोइ सुघड़ सयांणा, भोदू सुण **भम** जावै। आयां साध न देवे उत्तर, वांछित वस्तु बतावै।—ऊ. का.

उ०—४ म्हूं थनै अर धापू नै अठै छोडनै जोधपुर मजूरी करण नै गयौ जरूर पण मन तौ म्हारौ अठै ईज **भमतौ**।—रातवासौ

भमणहार, हारौ (हारी), भमणियौ—वि०।

भमाड़णौ, भमाड़बौ, भमाणौ, भमाबौ, भमावणौ, भमावबौ —प्रे० रू०।

भमिश्रोड़ौ, भमियोड़ौ, भम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भमीजणौ, भमीजबौ—भाव वा०।

भमर—१ देखो 'भंवर' (रू. भे.)

उ०—१ आलीजा अलबेलिया, हो हंजा हुसनाक। भीनोड़ा रसिया **भमर**, छैल पियौ मद छाक।—बां. दा.

उ०—२ अच्छरां बींद बणिया अछा, भड़ां तिलक अणियां-**भमर**। जमहूंत समर मांडै जिका, 'कमरा' पर बांधी कमर।—मे. म.

उ०—३ उपर जियां धनूंख उणिहारै, **भमर** वंक पंकति भंवहारै। मौसर भमर अहर परवाळक, बिहुंवै जुलफ जांण अहिबालक।—सू. प्र.

उ०—४ सफर चक्र **भमर** गाबळ भजर तेग मज, पमंग जुध मेळ धर उमंग पसरां। अभनमो 'गजण' खळ खूहण घण ऊभळै, 'अजण' तण महण रण वहण असुरां।

—महाराजा अभैसिंघ राठौड़ री गीत

उ०—५ अणतांध कूंत असमर **भमर** कच्छ मच्छ कूरम सबळ। 'गजबंध' मंडांणौ मेर गिर, सपतसिंघ दखणाध दळ।

—गु. रू. बं.

उ०—६ सरसत मात पसाव कर, दे मो अविरल मत्ति। भोगी **भमर** भुवाळ जे, गुण गाऊं तसु भत्ति।—ढो. मा.

उ०—७ करला के कबूतर, भूरला स्याह **भमर**। नंगला मोनड़ा जंग, पयला तेजी पवंग।—गु. रू. बं.

२ एक प्रकार का छंद।

उ०—त्रिणि लघु वि गुर गह प्रसतार, वरण नरणि आवै चत्र बार। होइ बिलाख छत्रीस हजार, पणि सो सात छहोतरि पार। खरा रूप कहिया खांति, **भमर** छंद सुणिजो इणि भांति।

—ल. पि.

३ देखो 'भ्रमर' (रू. भे.)

उ०—एक साथ अन्नेक, फबै घरहरै फुहारां। विमळ पुहप विसतरै, **भमर** भणहणै गुंजारा।—सू. प्र.

४ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—पहिली ही सीह वळे पाखरियउ, वणता वर आभरण वखांण। **भमरां** विचइ बांधियउ भांमण, भवर तिलक ताइ ऊगउ भांण।—महादेव पारवती री वेलि

भमरकड़ी—देखो 'भंवरकड़ी' (रू. भे.)

भमरगुंजार—देखो 'भंवरगुंजार' (रू. भे.)

भमरगुफा—देखो 'भंवरगुफा' (रू. भे.)

उ०—**भमरगुफा** मझि रमै तजै भ्रम, जीतै निंद्रा त्रिकुटी संजम। मन मोहणी नागणी मारै, स्रवै तांम अम्रत तत सारै।—सू. प्र.

भमरड़ौ—१ देखो 'भंवर' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू. भे.)

भमरछैल—देखो 'छैलभंवर' (रू. भे.)

भमरजाळ—देखो 'भंवरजाळ' (रू. भे.)

भमरडउ—१ देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—**भमरडउ** मरिवा अणबीहतउ, पसरि पइसइ केतकिई हतउ। कठिन कंटक कोडि कुटीरडइ, पडिउ वेधि पछइ पुणि आरडइ।

—सालिसूरि

भमरडौ—२ देखो 'भंवर' (अल्पा., रू. भे.)

भमणियौ—१ चरखे का गोल चक्र।

२ देखो 'भूंण' (अल्पा., रू. भे.)

भमरभार–सं० स्त्री०—एक प्रकार की भांग।

भमरभीख—देखो 'भंवरभीख' (रू. भे.)

भमरलउ, भमरलु, भमरलौ—१ देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ मेरु महीधर परि अविचल रहउ, मुझ मन ए हिज रे देव सलूणा। ग्यांनतिलक गुरु पद कंज भमरलउ, 'विनयचंद्र' करइ सेव सलूणा।—वि. कु.

उ०—२ हूं पद्मिनी तूं भमरलु, तूं तरुग्रर हूं वेलि। माधव महा-यौवन मांहिं, हूं खेलूं तूं खेलि।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'भंवर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ प्रीतम मारा भमरलां जी, कांइक कीजै संक। फुल्या दीसै फुटरां जी, आफु आडे अंक।—वि. कु.

भमरांण—१ देखो 'भ्रमर' (मह., रू. भे.)

उ०—भ्रू आवल बेहुं भडी, भमरांण गुंजारां। भोयण (लोयण ?) कीजै भांमणां, कोयण कुरगां रा।—मयाराम दरजी री बात

२ देखो 'भंवर' (मह., रू. भे.)

भमराई—देखो 'भंवराई' (रू. भे.)

भमरामाखी—देखो 'भौंरामाखी' (रू. भे.)

भमरामाटी—देखो 'भंवरामाटी' (रू. भे.)

भमराळ—देखो 'भंवराळौ' (मह., रू. भे.)

भमराळौ—देखो 'भंवराळौ' (रू. भे.)

उ०—रंग केइक रातड़ा, भसम धूंहर भमराळा। जटा जूट ऊजळा, केइक भूरा केइ काळा।—सू. प्र.

भमरावळि, भमरावळी—देखो 'भ्रमरावळि' (रू. भे.)

उ०—सोहै नीलांबर सहत, प्रमुदा प्रीत प्रमांण। चंपकमाळा हरत चित, जुत भमरावळि जांण।—बां. दा.

भमरियौ—१ देखो 'भंवरियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भंवर' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू. भे.)

भमरी—देखो 'भंवरी' (रू. भे.)

भमरेचा–सं० स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा।

भमरौ, भमरचौ—देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ हर समरौ होसी हरी, जीते जम रौ जंग। कर उदिम रोलंब करै, भमरौ कीटी भ्रंग।—र. ज. प्र.

उ०—२ पड़ै मचकूर लंधन खबर पाडियां, 'जोध' खग झाड़ियां धकौ जमरौ। राव बिन फिरंग झेले कवण राड़ियां, भमै नव नाडियां बीच भमरौ।—कमजी दधवाड़ियौ

२ देखो 'भंवर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बैठा ते दरीया बिचै, जेहवै आघो जाय। आय पड़्या भमरघा बिचइ, बाजै सबलो वाय।—प. च. चौ.

भमळ–सं० पु० [सं० भ्रमरः] १ काला, श्याम।

उ०—समळ हुवा कपड़ा सकल, भमळ हुवो घट भंग। कमळ बदन कुम्हलायगो, अमल खायगो अंग।—ऊ. का.

२ देखो 'भंवळ' (रू. भे.)

भमलि—देखो 'भंवळ' (अल्पा., रू. भे.)

भमहडी, भमहि–सं० स्त्री० (सं० भ्रू) भौंह।

उ०—१ नासा सा शुक चंचडी, भमहडी दीसइं बेऊ वांकुडी। बोलुं किं बहुना, कुमार जमलुं कांई अ ओपइ नहीं।—प्रा. फा. सं.

उ०—२ चंचल चपल तोरी आंखडी, जैसी कमला दलची पांखडी। तोरी भमहि अछइ अणीआलडी, एहवइ नल जीइ हूं छडी।

—नळदवदंती रास

भमाड़णौ, भमाड़बौ—देखो 'भंवाणौ, भंवाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वधि खळ थटां करूं झळ वेगां, तखां भुजंग ज्यूं हीं झल तेगां। झळहळ गदा जेम खग झाडूं, भीम पंडव जिम गजां भमाडूं।

—सू. प्र.

उ०—२ भीम बिना कुण गजां भमाड़ै, जारै हर बिन कमण जहर। बीजा 'वाघ' बिना बीलाड़े, अबडा कुण मारै असुर।

—तेजसी खिड़ियौ

भमाड़णहार, हारौ (हारी), भमाड़णियौ—वि०।

भवाड़िग्रोड़ो, भमाड़ियोड़ौ, भमाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भमाड़ीजणौ, भमाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भमाड़ियोड़ौ—देखो 'भंवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भमाड़ियोड़ी)

भमाडणौ, भमाडबौ—देखो 'भंवाणौ, भंवाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भुजाडंड उलाळि भालो भमाडै, आजको इसौ मेर बाथां उपाडै। गरज्जै भलो बोलियौ भीम ग्राही, पतीसाह भलो बोलियौ पातसाही।—गु. रू. बं.

उ०—२ छोडि महावत खंभूठाणां, मद-तळ जोड वहंतां दांणां। घूघर घंट कसे अंबाडी, गय चीधां गयणाग भमाडी।—गु. रू. बं.

भमाणौ, भमाबौ—देखो 'भंवाणौ, भंवाबौ' (रू. भे.)

उ०—पेखे खलु आवतो संभाय चाप चंडपांणां, माथौ भुजा भमाये मयंक वाणां मोक। जूझ जाडौ करै रामचंद रै सायकां झडे, लंक आडौ पड़ै ज्यूं गिरंद लोकालोक।—र. रू.

भमाणहार, हारौ (हारी), भमाणियौ—वि०।

भमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भमाईजणौ, भमाईजबौ—कर्म वा०।

भमायोड़ौ—देखो 'भंवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भमायोड़ी)

भमावणकुंजर–सं० पु० यौ० [सं० कुंजर + भ्रामक] भीम। (ह. ना.)

भमावणौ, भमावबौ—देखो 'भंवाणौ, भंवाबौ' (रू. भे.)

उ०—सत्रां गहि कंध उडावत सीम, भमावत जांणि गजां वड

भीम। हिचै भड़ 'माल' वहै खग हाथ, निजोड़त रोद समोभ्रम 'नाथ'।—सू. प्र.

भमावणहार, हारौ (हारी), भमावणियौ—वि०।

भमाविओड़ौ, भमावियोड़ौ, भमाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भमावीजणौ, भमावीजबौ—कर्म वा०।

भमावियोड़ौ—देखो 'भंवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भमावियोड़ी)

भमियाळ—वि०—जानकार, ज्ञाता।

उ०—दियण विढण **भमियाळ** 'दूदउत', साच सील भमियाळ सही। भाजेवा भमियाळ न भारथि, नाकारै भमियाळ नहीं।

—ईसरदास बारहठ

भमियोड़ौ—देखो 'भंवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भमियोड़ी)

भमुह—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—**भमुहां** ऊपरि सोहलो, परिठिउ जांणि क चंग। ढोला, एही मारुवी, नव नेही, नव रंग।—ढो. मा.

भम्मणौ, भम्मबौ—देखो **'भंवणौ, भंवबौ'** (रू. भे.)

उ०—तम्मे रम्मे मत्थे तेग तावां पब्बै वज्र तुट्टै, कोण घावां बम्मे बौम **भम्मे** काळ क्रोध। 'चंद' वाळो डांणै लागौ नेजां धम्मे मेछां चंमू, ज्वाळ खंडी रम्मे जांणै इंद्र वाळो जोध।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

भम्मणहार, हारौ (हारी) भम्मणियौ—वि०।

भम्मिओड़ौ, भम्मियोड़ौ, भम्म्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भम्मीजणौ, भम्मीजबौ—भाव वा०।

भम्मरकड़ी—देखो 'भंवरकड़ी' (रू. भे.)

भम्मरगुंजार—देखो 'भंवरगुंजार' (रू. भे.)

भम्मरगुफा—देखो 'भंवरगुफा' (रू. भे.)

भम्मरजाळ—देखो 'भंवरजाळ' (रू. भे.)

भम्मरभीख—देखो 'भंवरभीख' (रू. भे.)

भम्मरामाटी—देखो 'भंवरामाटी' (रू. भे.)

भम्मियोड़ौ—देखो 'भंवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भम्मियोड़ी)

भयंकर—वि० [सं०] १ डरावना, विकराल, भयावह।

उ०—१ सूनी थाहर सिंघ री, जाय सके नहिं कोय। सिंघ खड़ां थह सिंघ री, क्यों न **भयंकर** होय।—बां. दा.

उ०—२ भरिया चा सूर **भयंकर** भारथ, करता पुरुस प्रणांम कहइ। उर ईसवर तणइ ताइ ऊपर, रंडमाळ झिलती रहइ।

—महादेव पारवती री बेलि

२ अत्यधिक।

उ०—धरमराज री बेटी **कह्यौ**—राजकंवर! दुनियां मैं घणकरी बातां तौ अैड़ी व्है के वांनै जांणणां सूं सुख उपजै अर घणकरी बातां अैड़ी व्है के वांनै जाणणा सूं **भयंकर** दुख उपजै।

—फुलवाड़ी

३ प्रबल, जबरदस्त।

उ०—भाटी 'रूपसी' साथ **भयंकर**, संग कायथ 'केहर' मतासद्धर। पातसाह अजमेर परस्से, पून कियौ तड़भड़ गढ़ करसै।—रा. रू.

रू० भे०—भयंकार, भयंकारी, भयंगर, भयंद, भयकर, भयकार, भयागर।

भयंकरता—सं० स्त्री० [सं० भयंकर+तल्+टाप्] १ भयानकता, विकरालता।

२ अधिकता।

३ प्रबलता।

भयंकरपीठ—सं० पु० [सं० भयंकर+पीठ+पृष्ठ] हाथी, कुंजर।

भयंकरी—सं० स्त्री०—देवी के रूप विशेष का नाम।

उ०—विसरूपा **भयंकरी** मुंड धारणा वाराही। नजरणी भैरवी, दीरघ लंबी प्रेतवाही।—मा. वचनिका

भयंकार, भयंकारी—देखो 'भयंकर' (रू. भे.)

उ०—१ **भयंकार** 'भानु' खलां एम भायौ, अगै लाय लागी परै वाय आयौ। करे खाग झाळं रामो वाद केहौ, जिणी धार अौ वज्र री आग जेहौ।—पा. प्र.

उ०—२ मिळे गनीमां अकारी फौज **भयंकारी** माथै, ढळकै नगारी भारी सूंडां डंड ढाल। धीबतौ दुधारी साळां अहंकारी दीह धोळै, खारी वार 'रासा' वेल आवियौ 'कुमाळ'।—प. [illegible] आढ़ौ

भयंग—सं० स्त्री० [सं० भू०] १ पृथ्वी, भूमि।

उ०—मांडिया सरोज **भयंग** चढ़ माथइ, हरखाणी नित लावन हरि। अतिरगता विराजइ ऊपर, पगथळियां मीमलइ परि।

—महादेव पारवती री बेलि

२ देखो 'भुजंग' (रू. भे.)

उ०—रोस **भयंग** पलंग संगोभित, बारह मेघ सु आर बराबरि। मेल्हि अचेत सचेत करै मन, वेद समत 'हमीर' भजै हरि।

—पिं. प्र.

भयंगचर—सं० पु० [सं० भुजंगचर] गरुड़। (नां. मा.)

भयंगर—देखो 'भयंकर' (रू. भे.)

भयंद—देखो 'भयंकर' (रू. भे.)

उ०—भव दरियाव **भयंद**, लहरां ऊठै लोभो री। मांहै ज्यां मत मंद मनख घणा डूबै मरै।—बां. दा.

भय—सं० पु० [सं०] किसी संभाव्य विपत्ति या अनिष्ट की आशंका से उत्पन्न वह मानसिक स्थिति जिससे प्राणी के मन में क्षोभ एवं चिन्ता व्याप्त हो जाती है। डर, खौफ।

उ०—१ दिन ऊगै नित देखणौ, दाता रौ दीदार। भागै भूख कळैस भय, 'बंक' न लागै वार।—बां. दा.

उ०—२ रांणां रूस्यां भय मोरे नाहीं, चित साहब से लागा। मीरांबाई तो सरणे आया, लोक लाज भय त्यागा।—मीरां

क्रि० प्र०—आणौ, खाणौ, होणौ।

२ अधर्म के द्वारा उत्पन्न तीन राक्षसों में से एक।

३ अभिमति नामक स्त्री के गर्भ से उत्पन्न द्रोण का एक पुत्र।

रू० भे०—भइ, भव, भवि, भै, भौ।

भयकर, भयकार—देखो 'भयंकर' (रू. भे.)

उ०—हुय हक्क किलवक समुक्क हलां, भयकार घड़ी वण वार भलां। सिर ढ़ाल कड़क्कड़ रूक सदै, जिम वाग डंडेहड़ फाग जदै। —रा. रू.

भयकारमुखी—सं० स्त्री० [सं० भय+मुख] १ तोप।

२ डराने मुंह वाली।

भयचक—देखो 'भैचक' (रू. भे.)

उ०—भयचक हुआं अनेक महाभड, दिख री भाज गई भकभूर। अयो (आयो) दिख रई घट ऊपर, केवा मांगण वडउ करूर। —महादेव पारवती री वेलि

भयट्ठांण—सं० पु० [सं० भय+स्थान] भय का स्थान। (जैन)

भयडि—सं० स्त्री० [सं० भ्रकुटि] भौंह।

उ०—भयडिहि भुयणु भमाडइ, भाभरभोली तोइ। नयणि अमीसरू बींधइ, छूटइ तरुणु न कोइ।—प्रा. फा. सं.

भयणि, भयणी—देखो 'बहन' (रू. भे.)

उ०—अट्ठावयपमुह सवि नमीय तित्थ जां घरि पहुच्चई। मणीचूडह मित्तह भयणि राउ, एकु परिहरीउ वच्चई।—सालिभद्र सूरि

भयद—सं० पु० [सं०] १ सूअर। (अ. मा.)

२ देखो 'भयदाई' (रू. भे.)

भयदाई—वि० यौ० [सं० भय+दायक] (स्त्री० भयदा, भयदाणी) भय देने वाला, भयावना, डरावना।

उ०—लंगर लज्जा रा तरभंगर लाटा, गोरख गायां रा गाहिड़ रा गाडा। भाई भयदाई लागत है भारी, रींगा लज्जा है मींगाळां सारी।—ऊ. का.

रू० भे०—भयद।

भयनासण—वि० यौ० [सं० भय+नाशन] (स्त्री० भयनासणी) १ भय का नाश करने वाला।

सं० पु०—२ ईश्वर।

भयपद, भयप्रद—वि० यौ० [सं० भय+प्रद] भय उत्पन्न करने वाला, भयानक।

भयभंजण—वि० यौ० [सं० भय+भंजन] १ भय को मिटाने वाला।

सं० पु०—२ ईश्वर, भगवान्।

भयभीत, भयभूत—भू० का० कृ० [सं० भय+भीत] डरा हुआ.

उ०—१ दादू झूठ दिखावैं सांच को, भयानक भयभीत। सांचा राता सांच सौ, झूठ न आंनै चीत।—दादूबांणी

उ०—२ मुंहडै भरि बोलियउ महीपति, तेडइ कुण इसडउ अवभूत। गहपत तितरई दाखतउ गाहड, भड अणजांण हुयउ भयभूत।—महादेव पारवती री वेलि

भयमोचण—वि० यौ० [सं० भय+मोचन] १ भय को मिटाने वाला, डर दूर करने वाला।

सं० पु०—२ ईश्वर।

भयरव—देखो 'भैरव' (रू. भे.)

उ०—भालइ भयरव आवती, ऊतारइ वड-डालि। बालइ राख लगाडवा, चाचरि चाचरि चालि।—मा. कां. प्र.

भयरवी—१ देखो 'भैरवी' (रू. भे.)

उ०—जिण वार पाल जम रूप जांण, भळकंत जेठ मध्यांन भांण। जूंझार वीर तोले जबान, भयरवी सबद बोले भयांन।—पा. प्र.

भयहर, भयहरण, भयहरता, भयहारी—वि० [सं० भय+हरण] (स्त्री० भयहरणी) १ भय को हरण करने वाला, भय दूर करने वाला।

सं० पु० २ ईश्वर, प्रभू। (नां. मा.)

भयहुअ—भू० का० कृ० [सं० भयभीत] अति भयभीत। (जैन)

भयांणंक, भयांणंख—देखो 'भयानक' (रू. भे.)

उ०—१ जगरूप भयांणंक जमाति जांणै डाकदारू नै डाक के हुन्नर से आंणै। अंगूं के अवनाड़, चालते पहाड़।—सू. प्र.

उ०—२ सूरत के भयांणंक, जमरांणू के जोस। जंगूं के जालम, तीरमदाजूं के गिरपोस।—सू. प्र.

उ०—३ भयांणंख गाडा किता जूंग भारू, दळां गोळियां पूर सांमांन दारू। जळाबोळ हीलोळ हालंत जाडा, अणी आरबां पूरबां थाट आडा।—सू. प्र.

भयांगर—देखो 'भयंकर' (रू. भे.)

भयांण—सं० पु०—१ एक विशिष्ट जाति का घोड़ा।

उ०—तेजी उरंडा गह्लरा तोरणा खुरसाणा भयांणा हयाणा रोहवाला रुंडवाला तोरका मंदकोरा पीलूआ।—व. स.

२ देखो 'भयांनक' (रू. भे.)

भयांणउ—सं० पु०—१ एक प्रदेश का नाम।

उ०—अवध्या वणारसी चंदेरी मल्लीवाल महबर महोब हरियांणउ भयांणउ रत्नपुर कांमरू ओडियांण जालंधर सिंधु आरब वंगाळ त्रिहुण भोट।—व. स.

२ देखो 'भयांनक' (रू. भे.)

भयांणक, भयांणख, भयांणग—देखो 'भयांनक' (रू. भे.)

उ०—जुध-दुंद राघव अनै इंद्रजित भयांणक पड़ि भार। उण वार रत नद ऊभळै, हुय हाक धर गिर हलहलै।—सू. प्र.

उ०—२ अणी सर साबळ फूटत ऊक, रुद्रायण वाह करै घण

रूक । भयांणख भेख सरां छड़ भार, दुर्दंवळ नार रगत दुगार ।
—सू. प्र

भयांणौ—देखो 'भयावणौ' (रू. भे.)

भयांन—देखो 'भयानक' (रू भे.)

उ०—१ करि गगन अरत रवि संधि काळ, कुळ काक स्वान कूके कराळ । समसांन समुख कीनौ पयांन, वेताळ भूत भूंके भयांन ।
—ला. रा.

उ०—२ रीझाय हूर सुण राग रंग,, जम हूंत करै खीजाय जंग । पी जाय भठी इक सुरापांन, भख जाय अरध भैंरा भयांन ।
—वि. स.

भयानक-वि० [सं० भय+आनक] १ वह जिसकी [illegible] आकृति या उग्रतापूर्ण आचरण से डर लगता हो । डरावना, भीषण ।

२ प्रबल, जबरदस्त ।

सं० पु०—१ साहित्य के नौ रसों में से एक रस जिसका स्थाई भाव भय है । शत्रु, हिंसक जीव, निर्जन प्रदेश आदि इसके आलंबन हैं । शत्रु की चेष्टाएं, असहायता उद्दीपन हैं । विवर्णता, गद्गद् भाषण, प्रलय स्वेद, रोमांच, कंप आदि अनुभाव हैं । त्रास, मोह, जुगुप्सा दैन्य, संकट, अपस्मार, सम्भ्रम, चिन्ता, आवेग आदि व्यभिचारी भाव हैं ।

२ बाघ । * (डिं. को.)

३ राहु । * (डिं. को.)

रू० भे०—भंयांण, भयांगर, भयांणंक, भयांणख, भयांग, भयांणक, भयांणख, भयांणग, भयांन ।

भयागर—देखो 'भयंकर' (रू. भे.)

भयातिसार-सं० पु० [सं० भय+अतिसार] भय के कारण दस्तें लगने का एक प्रकार का रोग ।

भयातुर-वि० [सं० भय+आतुर] भय से व्याकुल ।

भयावणौ, भयावनौ-वि० [सं० भय+रा० प्र० आवणौ, आवनौ] डरावना, खौफनाक ।

रू० भे०—भयांणौ, भयावणो ।

भयावह-वि० [सं०] भयजनक, डरावना ।

भयी—देखो 'भाई' (रू. भे.)

भरंग-वि०—अत्यन्त काला ।

उ०—ठिकांणा रौ मकांन बडौ लंबौ-चौड़ौ अर बाबा आदम रै जमांना रौ बण्योड़ौ हौ । बरसात में साळोसाळ नील जम जमनै घवळा माळिया काळा **भरंग** पड़ग्या हा ।—रातवासौ

भर-सं० पु०—१ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी ।

उ०—१ रचे एम मचकूर, फुजा आपणां दिली **भर** । जिसौईज करि जबत, करां सोवा सर पद्धर ।—सू. प्र.

उ०—२ देवराज गोगा दया, पातां रूपां पांण । जूंभ तणा **भर** झलिया, उर सूरां ध्रम आंण ।—रा. रू.

२ किसी वस्तु के संग्रह हेतु [illegible] को [illegible] का कार्य ।

३ भरने की अवस्था या भाव, भराव ।

उ० [illegible] गौ [illegible] पड़ी [illegible] पाण । [illegible] सूं [illegible], [illegible] रस रंग [illegible] ।—गु. रू. बं.

४ भार, बोझ, वजन ।

उ०—१ [illegible] **भर** [illegible] भिड़ । बळभद्र [illegible] भारी [illegible] ।
—वेलि

उ०—२ भरिया [illegible] **भर**, [illegible] करणि । [illegible] रितुराइ [illegible], [illegible] ।
—वेलि

५ भरे हुए होने की अवस्था या भाव, पूर्णता, [illegible] ।

उ०— [illegible] **भर** [illegible] भर [illegible] ।—रा. रू.

६ तौल ।

सं० स्त्री०—७ [illegible] के [illegible] करने की क्रिया ।

८ मिट्टी या बालू रेत का बहुत ऊंचा और लंबायमान टीला ।

वि०—१ कुल, सब, तमाम ।

२ पूर्णता प्राप्त, पूर्ण । ज्यूं— [illegible] भर जवानी ।

उ०—**भरजोबण** ज्यूं ही [illegible] भरिया, जोत [illegible] जुड़ै । बारैं दीहे बरस बारा री, हिमाचळ री कुंवरि हुई ।
—महादेव पारवती री वेलि

वि०—३ [illegible] करने वाला ।

अव्य०—१ तक, पर्यन्त ।

ज्यूं—कोस भर चाल्या हा ।

उ०— [illegible] लंगाळ [illegible] जड़िया [illegible] वाड़ै । [illegible] भिड़, [illegible] **भर** घरण तांई ।—गु. रू. बं.

२ वय, अवकाश, परिणाम आदि की संपूर्णता या पूर्णता किसी इकाई के रूप में सूचित करते हुए ।

ज्यूं—गजभर, दिनभर, जीवनभर ।

उ०—रुद्र-धरणी जंपै, सांभळि रुद्र, आज लगै तैं लिया अनेक । जैसिंघ धुय तणौ धू जोतां, उमर **भर** मो जुड़ियौ अेक ।

३ अच्छी तरह से, भली प्रकार से ।

उ०—छोरां नै एक बार आंख **भर** देख लेती तो ठीक रै'तो ।

४ के, द्वारा या सहायता से ।

भरकुट, भरकूट—देखो 'भ्रकुट' (रू. भे.) (डिं. को.)

भरखमौ, भरखमूं, भरखवू, भरखिवौ, भरखीमौ-वि० (स्त्री० भरखमी)

सहनशील, सहिष्णु ।

उ०—१ धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि । मज्जीठां जिम रच्चणां, दई सु सज्जण मेळि ।—ढो. मा.

उ०—२ ऊंट भरखिबौ हौ । स्याळ रै कुबदी सुभाव री घणी परवा कौ करता नीं ।—फुलवाड़ी

उ०—३ आ बात कैय'नै बांमणी आपरौ अेक हाथ गोद में सूता बाळक रै माथै अर दूजौ हाथ आपरा धणी रै माथा माथै फेरण लागी अर उठै ई माथौ निवायां गुमचांम व्हियोड़ी बैठी री' इण लांठी दुनियां में भरखिबा फगत दो जणा इज है—अेक तौ धरती अर दूजी नार ।—फुलवाड़ी

उ०—४ आयां गयां क्या होय रे, कर लीजौ कोई । धरती जैसा भरखीमा रे, पांणी जैसा न पाक । अन जैसा ओखद नहीं, जरणां जिसा न जाप ।—स्री हरिरामजी महाराज

रू० भे०—भारखमौ, भारीखमूं, भारीखमौ, भारीखम्मौ ।

भरग, भरगु—देखो 'भ्रगु' (रू. भे.)

उ०—१ राखण मिथळेसराज लाखवात अघट लाज, करि अमाप सबल करग भरग चाप भंजणं ।—र. ज. प्र.

भरगुलता—देखो 'भ्रिगुलता' (रू. भे.)

भरड़—सं० स्त्री०—१ ध्वनि विशेष ।

भरड़कोट—सं० पु०—एक किले का नाम जो राठौड़ राव मल्लिनाथजी के अधिकार में था ।

उ०—**भरड़कोट** आया भळै, कूकाऊ कर कूक । 'माला' रावळ माहरा, ऊपर करौ अचूक ।—वी. मा.

भरड़णौ, भरड़बौ—क्रि० स० [अनु०] १ मारना, संहार करना ।

उ०—'कीट' कटारी चालवी, खटकी 'खूमांणा'ह । 'मोटै' ईसर भारियौ, डाकी भरड़ांणाह ।—बां. दा. ख्या.

२ कुचलना, रौंदना ।

३ दांतों से चबाना ।

भरड़णहार, हारौ (हारी), भरड़णियौ—वि० ।

भरड़िओड़ौ, भरड़ियोड़ौ, भरड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भरड़ीजणौ, भरड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भरडणौ, भरडबौ—रू० भे० ।

भरड़ियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मारा हुआ, संहार किया हुआ. २ कुचला हुआ, रौंदा हुआ. ३ दांतों से चबाया हुआ.

(स्त्री० भरड़ियोड़ी)

भरड़ा—सं० स्त्री०—एक जाति का नाम ।

भरड़ौ—सं० पु०—१ वह घोड़ा जिसका रंग न तो पूरा सफेद हो न पूरा काला हो ।

२ भरड़ा जाति का व्यक्ति । (सभा.)

रू० भे०—भरडउ, भरड्ड, भरडौ ।

भरडउ—देखो 'भरड़ौ' (रू. भे.)

उ०—ब्राह्मण मेवट वेरानई, अेतां नहीं कुळवट्ट । भमि भूलि सिउं भांमिनी ! को भरडउ भथरट्ट ।—मा. कां. प्र.

भरडणौ, भरडबौ—देखो 'भरड़णौ, भरड़बौ' (रू. भे.)

उ०—कालि भरडचा कोदिग, आज विणाविसि थोर । हाकी काढ़िसि इम यथा, सींमि सुनुं ढोर ।—मा. कां प्र.

भरडणहार, हारौ (हारी), भरडणियौ—वि० ।

भरडिओड़ौ, भरडियोड़ौ, भरड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भरडीजणौ, भरडीजबौ—कर्म वा० ।

भरडियोड़ौ—देखो 'भरड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भरडियोड़ी)

भरड्डु—देखो 'भरड़ौ' (रू. भे.)

भरण—वि० [सं० 'भृ'] (स्त्री० भरणी) भरण-पोषण करने वाला, पालण-पोषण करने वाला ।

सं० पु० [सं० 'भृ'] १ किसी वस्तु को भरने की क्रिया या भाव ।

२ पालन-पोषण ।

३ खिला पिलाकर जीवित रखने की क्रिया या भाव ।

४ किसी पदार्थ के न होने या नष्ट होने में की जाने वाली पूर्ति ।

५ बांस की खपच्चियों से बना खाल से मढ़ा हुआ अनाज आदि नापने का एक टोकरा ।

६ मेघ, बादल । (ना. डि. को.)

७ 'रघुवर जस प्रकाश' के अनुसार प्रथम गुरु के 'सगण' का नाम ।

८ कूंडा, तगारी ।

अल्पा०—भरणकौ, भरणियौ ।

९ देखो 'भरणी' (रू. भे.)

भरणकौ—देखो 'भरण' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—जठै चूंतौ उण टाया पर कठैई **भरणकौ** कठैई थाळी नै कठैई कूंडियौ मांड दियौ. घर ही माथै गूदड़ा नांख दिया अर सब रा मांचा ओरी में ले लिया ।—रातवासौ

भरणनद—सं० पु०—बादल । (अ. मा.)

भरणनिवांण—सं० पु०—मेघ, बादल । (ह. नां. मा.)

भरणाटी—सं० स्त्री०—देखो 'भरणाटौ' (अल्पा., रू. भे.)

भरणाटै—क्रि० वि०—वेग से, तेजी से ।

उ०—सांप नै वा आपरी गाडी माथै सावळ बैठांण लियौ नै टिचकारी दी, नै टिचकारी रै समचै ई ऊंदरा तौ **भरणाटै** उडिया ।

—फुलवाड़ी

भरणाटौ—सं० पु०—चक्कर ।

अल्पा०—भरणाटी ।

भरणाणौ, भरणाबौ—क्रि० स०—भ्रमित करना, घुमाना ।

उ०—भीठकिया भरणाय, घणेरी उंचार घालै । तीजै दिन भड़-काय, लादड़ी भर ले हालै ।—द. दे.

भरणाणहार, हारौ (हारी), भरणाणियौ—वि० ।

भरणायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भरणाईजणौ, भरणाईजबौ—कर्म वा० ।

भरणायोड़ौ—भ्रमित किया हुआ, घुमाया हुआ ।
(स्त्री० भरणायोड़ी)

भरणियौ—१ भरने वाला ।
२ देखो 'भरण' (अल्पा., रू. भे.)

भरणी—सं०स्त्री० [सं०] १ सत्ताईस नक्षत्रों में से एक नक्षत्र । (नां. मा.)
२ भूमि खोदने के लिए अच्छा माना जाने वाला एक लग्न ।
३ सांप को फाड़ डालने वाला एक कीड़ा विशेष ।
४ कांच, चीनी या धातु का बना एक बर्तन विशेष जो गोलाकार एवं गहरा होता है ।
५ करघे में की ढरकी ।
६ बुनाई में बाने का सूत ।
रू० भे०—बरणी, भरनी ।

भरणीजळ—सं० स्त्री०—उत्तर और ईशान के मध्य की दिशा जिस ओर सप्तऋषि उदय होते हैं ।

भरणौ—सं० पु० [सं० भरणं] १ किसी को सन्तुष्ट करने के लिए उसकी सेवाओं के बदले में दिया जाने वाला द्रव्य या पदार्थ, एवज, मुआवजा ।
उ०—आखर बखत उचारै, जीहवा धन रांम नांम रट भट जौ । पोखणतौ भर पायौ, भोजन अढार भांत चौ भरणौ ।—र. ज. प्र.
२ कमी-पूर्ति के रूप में दिया जाने वाला पदार्थ या वस्तु ।
उ०—२ मूळी रै धणी सोढै रतन ऊंगा-आंथवियां तांई मीसण परवत नूं कोड़पसाव दियौ । पचास साख नगद, पचास लाख रौ भरणौ नै लाख रुपियां रौ माल नवैनगर बाई सोढी नूं मेलियौ ।
—बां. दा. ख्यात
३ किसी हानि या ऋण की समान मूल्य वाली अन्य वस्तु द्वारा की जाने वाली क्षति-पूर्ति ।
उ०—१ पाखती आवता दीस्या तौ डोकरी वळै हेलौ मारचौ । राजा जी वळै दौड़ता आया । उठीनै हाथ री सांनी करी उठीनै वळै घोड़ौ बड़गड़ायौ । लारै दौड़-दौड़ थाकेलौ चढ़ग्यौ पण कुच-मादी तौ निगै ई नीं आयौ । घड़ी घड़ी लारौ करण सूं राजाजी री हीमत बधी पण बधी । घूम घुमाय पाधरा डोकरी रै पाखती आया । अबकी डोकरी हाकौ नीं करचौ । रोवती रोवती बोली—बापजी, म्हारी सगळी दाळ लेयग्यौ, सित्यानास जावे इण रौ । दिनूंगा कोटवाळजी नै कांई जवाब देवूंला । म्हैं गरीबणी इत्तौ भरणौ कीकर भरूला । म्हारै तो पेट भरण रा ई जांदा पड़ै ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ सेठ रै मूंडै भाग आयग्या, मूंछ उछाळता आफळ-आफळ बोलण लागा—आ लाली न्यांव करिया । भाळै मराव करीला । पांच हजार री भरणौ, भरणी पड़िया [illegible]

भरणौ, भरबौ—क्रि० अ० [सं० 'भृ'] १ किसी रिक्त स्थान, पात्र, आधार या अवकाश का किसी पदार्थ के योग से पूर्ण या युक्त होना ।
उ०—१ भाळा भरियोड़ा नैणा निजराता, गाल गुलाबी पैणा रुड़पाता । लागै फूलांगी भीणां सूर नेता, जीणा गाळीणां छब-छब धुनि देता ।—ऊ. का.
उ०—२ भादवै नीर निवांण भरियै गिर पहाड़ पराळिगै । मिळि छप्पन कोड़ी मेघमाळा नदी पूरि हिलाळिगै ।—[illegible] बारहठ
२ यौवन या स्वस्थता के कारण शरीर हृष्ट-पुष्ट होना ।
उ०—बारह बरस री उमर में ई जद उण री डील पूरी भरी-जग्यौ हौ तौ आज सोळै बरसां री नै बात पूछणी ? —[illegible]
मुहा०—भरियौ डील, हृष्ट-पुष्ट ।
३ किसी रिक्त पद या आसन की नियुक्ति द्वारा पूर्ति होना ।
ज्यूं—स्कूल में एक मास्टर री जगा खाली ही सो भरीजगी है ।
४ मन का क्रोध, सन्ताप, असन्तोष आदि से युक्त होना ।
ज्यूं०—कई सा कनै गयौ तौ भरियोड़ी बैठी ही, देखतां ही बरस पड़ी ।
५ आवेश, करुणा, स्नेह आदि से अभिभूत होने के कारण कुछ कहने में असमर्थ होना ।
ज्यूं०—उणां री आ हालत देखनै म्हारी आंख्यां भरीजगी ।
उ०—नौजवान रै मांय वहता ई बांगणी एक पीनजोन रै सांमी मूंडो करनै ऊभगी । दिवळा री भळ रै उनमांन ई वा थर-थर कांपती ही । अणछक वा डुसकियां भरनै रोवण लागी । नौजवान रौ काळजौ ई भरीजग्यौ अर उण री आंख्यां जळजळी व्हैगी ।
—फुलवाड़ी
६ ऊबना ।
ज्यूं०—ऐड़ी बातां सुण-सुण नै म्हारौ तौ मन भरीजगौ ।
७ पशुओं, यानों आदि पर बोझ लदा जाना ।
८ किसी दरार, छिद्र या विवर का स्वतः बन्द होना ।
९ किसी वस्तु के संयोग से ओत-प्रोत या युक्त होना ।
ज्यूं०—स्याही सूं हाथ भरीजगा, कादा में पग भरीजगौ ।
उ०—मूंछां सेडे मांय भरी चिपके भीनोड़ी । अगली कोई उघड़ी कठण कमज्या कीनोड़ी ।—ऊ. का.
१० जोशपूर्ण होना, जोश में होना ।
उ०—दखिण धरा रस दिहौ, असह नह करै इरादौ । दिली लियण जिण दीह, जोम भरियौ साहिजादौ ।—सू. प्र.
११ घोड़ी का गर्भवती होना ।
क्रि० स०—१२ किसी रिक्त स्थान या बर्तन में कोई वस्तु डालना, उंडेलना या गिराना कि जिससे वह पूरा भर जाय ।

उ०—१ च्यार संप्रदा जिण हित चाली, प्रगट हुई ज्यूं मांभी पाली । महिला नीर **भरण** नें माल्ही । खरी जळ ऊंडौ तळ खाली ।—ऊ. का.

उ०—२ फळ अंब, नारंग दाख पाचै मालणी छाबां भरै, राजिंद पातां जांम रावळ सांमि तिण रुत संभरै ।—ईसरदास बारहठ

१३ किसी पात्र, वस्तु या रेखांकन में अपेक्षित, आवश्यक या उपयुक्त वस्तु को रखना या लगाना ।

ज्यूं—तसवीर में रंग भरणौ ।

१४ टेक्स देना या दण्ड में धन रुपयादि देना ।

उ०—१ अनमी कंध नमाविया, नांणां **भरै** नरेस । जीतौ तूं 'जैसिंघदे', दिखण तणा सौ देस ।—बां. दा.

उ०—२ पहु सांभर लगि सांमद पाजा, रहसी दास होय अनि राजा । कुळ पैंतीस सेव स्रब करसी, भूपति रैंत जैम दंड **भरसी** ।
—सू. प्र.

उ०—३ पीछै अै पूलौ वगैरै साराई नरसिंघ सूं मिळिया, अरु कयौ, 'म्हारौ बदळौ घेरावौ थांनूं बारै महीनां में इतरौ मासूल **भरसां** ।'—द. दा.

१५ किसी रिक्त पद या आसन की नियुक्ति द्वारा पूर्ति करना ।

ज्यूं—चपड़ासी री जगां भरणी ।

१६ निर्वाह करना, निबाहना ।

१७ कहना ।

उ०—भरइ, पळट्टइ, भी **भरइ** भी भरि, भी पळटेहि । ढाढी-हाथ संदेसड़ा, धण विलळंती देहि ।—ढो. मा.

१८ किसी के मन में तुष्टि, सन्तोष या पूर्णता की भावना पैदा करना ।

ज्यूं—म्हैं उणांनै आ बात कही जद उणांरौ मन भरीजियौ ।

१९ किसी के मन में किसी के प्रति विरोधी भावनाओं को अंकुरित करना ।

ज्यूं०—उणै रांम नै मोहन रै विरुद्ध भर दियौ है ।

२० किसी यन्त्र या मशीन की चाबी या कुंजी को घुमाकर या ऐसी क्रिया करना कि वह यन्त्र संचालित हो जाय ।

ज्यूं—घडी में चाबी भरणी ।

२१ पशुओं, यानों आदि पर बोझ लादना ।

उ०—अब ए दूदा रा साथी भी पचास साथ है जिण थी समस्त राही सीस बढ़ि सलीतौ **भरी** दिल्ली पुगावो ।—वं. भा.

२२ किसी वस्तु का संग्रह करना ।

ज्यूं—व्योपारियां अनाज खरीदर कोठा भर लिया ।

२३ किसी छिद्र, सन्धि, मुंह आदि को बन्द करने के लिए किसी वस्तु को ठूंसना, जड़ना, बैठाना या लगाना ।

ज्यूं—मोरी बूंद करण सारू वीं में कपड़ा आदि भरणा ।

२४ लेखन द्वारा आवश्यक पूर्तियां अंकित करना ।

ज्यूं०—फारम भरणौ ।

२५ अपेक्षित समर्थन, सहमति, स्वीकृति आदि की सूचक पूर्ति करना ।

ज्यूं—बात री हां भरणी, साख भरणी ।

उ०—कमेड़ी बापड़ी कांई करती, उणनै हुंकारौ **भरणौ** पड़ियौ ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ बिणजारौ सोळै आंना हामळ **भरी** तौ उठै ई सायजादी सूं इस्दूखां री सगाई पक्की व्हैगी ।—फुलवाड़ी

२६ किसी मान या पैमाने में भरकर द्रव चूरण या अन्नादि पदार्थों का मापना ।

भरणहार, हारौ (हारी), **भरणियौ**—वि० ।

भराड़णौ, भराड़बौ, भराणौ, भराबौ, भरावणौ, भरावबौ
—प्रे० रू० ।

भरिओड़ौ, भरियोड़ौ, भरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भरीजणौ, भरीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।

भरत—सं० पु०—१ कैकयी के गर्भ से उत्पन्न अयोध्या के राजा दशरथ का पुत्र ।

२ एक सुविख्यात पुरुवंशीय सम्राट जो शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न राजा दुष्यन्त का पुत्र था ।

३ एक महायोगी राजर्षि जो ऋषभ राजा के पुत्र थे जिनका दूसरा नाम जडभरत भी है ।

४ नाट्यशास्त्र का प्रणयन करने वाला सुविख्यात आचार्य भरतमुनि ।

५ लवा पक्षी का एक भेद जो लम्बा होता है तथा झुण्डों में रहता है ।

६ जैनों के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभ के ज्येष्ठ पुत्र का नाम ।

७ तांबा और रांगा मिश्रित धातु विशेष ।

उ०—१ कुरळा कीजै छै सिझ्या वांदण रो वखत हुवौ छै, वनाती आसण बिछै छै । पीतल रा **भरत** रा धूपिया आगै आंण मेलजै छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ आबू रै धणी पाल्हण परमार सरभ धातु मांहै **भरत रौ** भरियौ थीतंकर रौ बीख हुतौ सू मलाय अचळेसर है ।
—बां. दा. ख्या.

८ वह खेत जिसमें वर्षा का पानी एकत्र हो जाता है । ऐसे स्थान पर मूंग बढिया होते हैं ।

उ०—सू मूंग किण भांत रा छै ? मगरै रा नीपना, **भरत** रै खेत रा, हरियै रंग रा, चुंवळां जेवड़ा, इण भांत रा मूंग हाथां सूं रळकायजै छै ।—रा. सा. सं.

९ देखो 'भरतक्षेत्र' (रू. भे.)

१० देखो 'भरती' (रू. भे.)

११ देखो 'वरत' (रू. भे.)

उ०—फगत डील रा आपा माथै कांई कांई करतब दिखावै। कीकर तौ डील नै लुळावै, कीकर इत्ता ऊंचा कूदै, पोत्या माथै अधर दौडै, कैड़ा कैड़ा तरवारां रा हाथ बतावै। भरत माथै कैड़ा निरांत सूं चालै —फुलवाड़ी

रू० भे०—भरथ, भरह।

भरतक्षेत्र–सं० पु० [सं०] भारतवर्ष।

रू० भे०—भरतखेतर, भरतखेत्र।

भरतखंड–सं० पु० [सं०] पुराणों के अनुसार जम्बू द्वीप के नौ खण्डों में एक, भारतवर्ष।

रू० भे०—भरहखंड, भारतखंड।

भरतखेतर, भरतखेत्र—देखो 'भरतक्षेत्र' (रू. भे.)

भरतपुरिया–सं० स्त्री०—रामावत साधुओं की एक शाखा।

भरतपुरीलोटौ–सं० पु०—१ भरत धातु निर्मित पानी पीने का गोलाकार पात्र।

२ अनिश्चित विचारों वाला व्यक्ति।

भरतर, भरतरि–सं० पु० [सं० भर्तृ] १ उज्जैन के राजा इन्द्रसेन के पोते जो अपनी स्त्री अनंगसेना (जिसका दूसरा नाम पिंगला भी था) की दुश्चरित्रता से दुखी होकर विरक्त हो गए थे। इन्होंने शृंगार, नीति एवं वैराग्य नामक 'शतकत्रयी' ग्रन्थ की रचना की थी।

उ०—राज पाट तज **भरतरी**, किया आंपणां काज। जोग ध्यांन राजा लहै, तौ वै क्यूं छाडै राज।—ह. पु. वा.

सं० स्त्री०—२ पृथ्वी। (डिं. को.)

रू० भे०—भरथरी।

भरतवरस—देखो 'भारतवरस' (रू. भे.)

भरतवीणा–सं० स्त्री०—कच्छपि वीणा से मिलती-जुलती एक प्रकार की वीणा।

भरतांन–सं० पु०—युधिष्ठिर। (अ. मा.)

भरता–सं० पु०—१ युधिष्ठिर। (ह. ना. मा.)

२ राजा। (ह. नां. मा.)

वि०—१ भरण-पोषण करने वाला, पालक।

उ०—बिद्या बेदां में वैदिक बिधि बरणीं, अपणी करणी सूं जग पार उतरणीं। निरभय नियंता यंता नर नारी। करता विस्वंभर **भरता** सुखकारी।—ऊ. का.

२ देखो 'भरतार' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—ईख रूप मनि इम ठहराई, **भरता** एह अवरपित भाई। उडतौ कांकण खोल चलाए, औ पड़ियौ अप आगळ आए।—सू. प्र.

भरताचारज, भरताचारय–सं० पु० (सं० भरताचार्य) एक ऋषि का नाम।

उ०—विबुधजन अवरटंभमेरु, गिरी माथी गुरु आग्या प्रतिपालक सट्दरसन [illegible] अभिनवउ उदारपुरुसोराग, **भरताचारय** कविराभारांगार [illegible] ।—व. स.

भरतार–सं० पु० [सं० भर्तृ] १ पति।

उ०—१ बनचर गया सीधां बळे, भागीरथ रै राह। सीगीना **भरतार** राम, भागीरिथी प्रवाह।—बां. दा.

२ मालिक, स्वामी।

३ ईश्वर, भगवान।

रू० भे०—भतार, भरता, भरतार, भरथार।

अल्पा०—भतारी।

भरतियौ–सं० पु० [सं० भृत्य] १ नौकर, सेवक, अनुचर।

उ०—दास अहा भळी नह दासी, माग्व कळू बुरी मत मांन। 'तीलोके' घर रमौ भरतियौ, स्त्रीणा लागी स्वाई स्थांन।

[illegible]

२ कमी पूर्ति करने का भाव या क्रिया।

३ भरत नामक धातु का बना हुआ गोलाकार पात्र जो शाक-भात बनाने के काम आता है।

वि०—४ जादू-टोना करने वाला, यति।

रू० भे०—बरतियौ, वरतियौ।

भरती–सं० स्त्री०—१ किसी चीज में कोई दूसरी वस्तु भरने की क्रिया या भाव।

२ चित्रकारी या नक्काशी में सुन्दरता के लिए खाली स्थानों को भरने का कार्य।

३ दाखिल या प्रविष्ट होने का भाव, प्रवेश।

४ क्षति-पूर्ति के सम्बन्ध में दिया गया धन या पदार्थ।

रू० भे०—भरत, भरोती।

भरतेसर, भरतेसरु, भरतेस्वर–सं० पु० [सं० भरत+ईश्वर] एक राजा का नाम।

उ०—१ असंख्यात मुनि सेत्रुंज सीधा, **भरतेसर** नइ पाट रे। राम अनै भरतादिक सीधा, मुगति तणी ए वाट रे।—स. कु.

उ०—२ संघपति **भरतेसरू**, जात्रा करू रे। थाप्या प्रथम प्रासाद, जय जय गिरनार गिरे।—स. कु.

उ०—३ **भरतेस्वर** बाहुबलि आपमाहिं संग्रांम करइं, वासुदेव बलदेव द्वारिकांनउ दाघ ऊवेसइ।—व. स.

भरथ—देखो 'भरत' (रू. भे.)

उ०—तप ज्यां कीध **भरथ** समतूलै, देखे तेज इंद्रासण डूलै। दुति ज्यां विघन करण तप दांमा, विदा कीध सुरपति सुरवांमा।

—सू. प्र.

भरथनेर—देखो 'भाडंगनेर' (रू. भे.)

भरथरी—देखो 'भरतरी' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ जगतणी मोह माया तजूं, जिम गोपीचंद भरथरी। चढि रथां अमरपुर मझि चढूं, अमर क्रीत करि आपरी।—सू. प्र.

उ०—२ दादू कहं था गोरख भरथरी, अनंत सिधों का मंत। परकट गोपीचंद है, दत्त कहैं सब संत।—दादूबांणी

भरथाग्रज-सं० पु० यौ० [सं० भरत + अग्रज] दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र। (अ. मा.)

भरथार—देखो 'भरतार' (रू. भे.)

उ०—थे तो म्हांरा बहूजी भोळा घणा, भोळा बहूजी ए लो। बै तौ है थारा हो भरथार, म्हारा बालाजी ओ।—लो. गी.

भरदाज, भरद्वाज-सं० पु० [सं० भरद्वाज] १ अंगिरसवंशीय एक सुविख्यात ऋषि जिनका जन्म बृहस्पति के भाई उचथ्य ऋषि की पत्नी ममता के गर्भ से एवं बृहस्पति के वीर्य से हुआ था।

२ एक सुविख्यात ऋषि जो पुरुसम्राट भरत को पुत्र के रूप में प्रदान किया गया था।

३ अंगिरा कुलोत्पन्न एक ऋषि जो विश्वामित्र के पुत्र रैम्य ऋषि का मित्र था। इसके पुत्र का नाम यवक्रीत था।

४ पूर्व मन्वंतर का एक ब्रह्मर्षि।

५ अंगिराकुलोत्पन्न एक ऋषि जिसका आश्रम गंगा द्वारा में था।

६ वाल्मीकि ऋषि का शिष्य जो प्रयाग में रहता था।

७ एक अग्नि जो शंयु नामक अग्नि का ज्येष्ठ पुत्र था।

८ एक ऋषि जो शरशय्या पर पड़े भीष्म से मिलने गया था।

९ एक धर्मशास्त्रकार जिसके द्वारा श्रौतसूत्र और धर्मसूत्र की रचना की गई है।

१० एक राजा जो वायु के अनुसार अमित्रजित् राजा का पुत्र था।

११ भरत नामक पक्षी।

भरनी—देखो 'भरणी' (रू. भे.)

भरपाई-सं० स्त्री०—१ वह अवस्था जिसमें कोई वस्तु पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाय, भरपाने का भाव।

२ वह आलेख जिससे किसी वस्तु की पूर्ण वसूली सूचित होती हो।

क्रि० वि०—१ पूर्ण रूप से, पूरी तरह से।

भरपूर-वि०—१ पूरा भरा हुआ, परिपूर्ण।

उ०—कठठं जूट रहकळां, जूट नाळियां जंबूरां। रथ वहलां रैवत्त, भार पडतल भरपूरां।—सू. प्र.

२ सब प्रकार से परि-पूरित जिसमें किसी प्रकार की त्रुटि न हो।

३ यथेष्ट, पर्याप्त।

४ प्रसन्न।

उ०—'सेन' लागो संत सेवा, भाव धर उर भूर। रूप धर कर 'सैन' को हरि, करी दुविधा दूर। तौ भरपूर जी भरपूर, भगवत भाव सूं भरपूर।—भगतमाळ

क्रि० वि०—१ पूर्ण रूप से, अच्छी तरह से।

उ०—दादू पूरण ब्रह्म विचार ले, द्वैत भाव कर दूर। सब घट साहिब देखिये, रांम रह्या भरपूर।—दादूबांणी

रू० भे०—वरपूर।

भरभंड-वि०—धूलि धूसरित।

भरभार-सं० पु०—उत्तरदायित्व।

उ०—१ आदीत अमूंभी छीक ज्यूं, जांणीजै जोधहपुरा। भरभार आज थारै भुजै, सह काज सुरतांण रा।—गु. रू. बं.

उ०—२ साह दरगाह बूझिये, भळे सकळ भरभार। 'केहर' ज्यूं पत छळ करै, समरै तिकां संसार।—रा. रू.

उ०—३ विविध सब्द वाजि त्रीया, विविधपरि परिवार। राव करेवा रणि चडचा, भूप-सदनि भरभार।—मा. कां. प्र.

भरभोलियौ—देखो 'भड़भोलियौ' (रू. भे.)

उ०—धुड़की तो चुपकी ऊभी रयी पण बीजां अर तीजां भरभोलियै दाई मूंडो कर'र कैयौ म्हे-ई भाई रै बराबर पांती लेसां।
—वरसगांठ

भरम-सं० पु० [सं० भ्रम] १ संशय, सन्देह, शंका, अविश्वास।

उ०—१ कितरा दिन लगइ चाकरी कीधी, एकण ध्यांन रह्यौ एकांत। दीठउ साच तरइ वर दीन्हउ, भरम दिखायउ उभ्रत भ्रांत।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सतगुर भेद बताइया, खोली भरम किवारी हो। सब घट दीसै आतमा, सब हीं सूं न्यारी हो।—मीरां

उ०—३ उर भरम छेह लेणी अगम, असकत उद्यम उक्ती। कर भाव पार गुण सर करण, साची नांम सरस्वती।—रा. रू.

उ०—४ तिण सूं आ रीत छै—माइत मूंहडो देखै नहीं नै तांहरै मन में कोई भरम हुवै तौ थे देख आवौ।—रिसालू री वात

क्रि० प्र०—उठणौ, मिटणौ।

२ भेद, रहस्य।

उ०—वणियाणी जाया तणौ, भरम न गमणौ भूल। नटियौ कोडी ही न दे, मरणौ करै कबूल।—बां. दा.

क्रि० प्र०—खोलणौ, काढणौ।

मुहा०—भरम काढणौ=रहस्योद्घाटन करना।

३ मिथ्या-ज्ञान।

उ०—भवसागर का भरम भगाया, जगत छोड दीया। गुरु चरण संतन की सेवा, यह रस्ता कहीया।—स्री हरिरांमजी की वाणी

[सं० भर्म्मन] ४ सोना, स्वर्ण। (डिं. को., ह. नां. मा.)

५ अवतार।

उ०—साची कथां सुणावतां, मति को मानै रीस। अलख निरंजन छाडिकै, भजै भरम चौईस।—ह. पु. वा.

६ सार, तत्त्व।

७ गुंजाइश।

उ०—सेस कूरम जितै समरम, इळा सुर ध्रम निगम आगम। मुखि तपो अण भरम प्रम सम, मरम निध जिम माल।—रा. रू.

८ वेतन, मजदूरी।

९ विश्वास, प्रतीति।

उ०—भांबी कीं मोळौ पड़नै कह्यौ—सेठां कीं बतावौ तौ जाण पड़ै। आपरी बात सुणियां पछै म्हनै अैड़ी लखावै के जांणै म्हारा माथा में अणगिण टांटिया भणण भणण करै है। आप कीं बतायनै तूमार तौ जोवौ। जे अैड़ी-वैड़ी कीं बात व्है तौ रांड नै टूंपी देय मार न्हाकूं। आपरै पगां में पोत्यौ मेलूं, म्हनै व्है जकी बात बतावौ। सेठां रा तीर दोनां रै ई ठांणै लागा। अबै बाकी कांम तौ हांकरतां पट जावैला। सेठ कड़ियां माथै हाथ देय ऊभा व्हिया। उबासी खायनै कै'वण लागा—इत्ता बरस भरम बणियौ रह्यौ तौ अबै एक दो दिनां में कीं परळै नीं व्है। थनै सावचेत करणौ, म्हारो फरज हो। म्हैं तौ आ बात चावूं के दूजां री बातां माथै भरोसौ नीं करनै खुद रै हाथां साच री छांण-बीण करणी वत्ती है। भांबी कह्यौ—रांम, रांम! आपनै औ वेम कीकर व्हियौ के म्हैं आपरी बात माथै अभरोसौ करूंला। आपनै लिछमीजी री आंण, व्है जकी बात तुरत बतावौ, आप फरमावोला जकी बात माथै सोळै आंना भरोसौ करूंला। सेठ उठा सूं वहीर व्हैती वगत एक डंक भळै मारियौ—थारी सीता सतवंती रै सत रौ भरम जित्ता दिन बणियौ रै'वै उत्तौ ई सावळ है।—फुलवाड़ी

मुहा०—भरम काढणौ=रहस्योद्घाटन करना। भरम गमाणौ=विश्वास खो देना। भरम निकळणौ=विश्वास हटना। भरम निकाळणौ=विश्वास हटाना। भरम मिटणौ=सन्देह मिटना। भरम रहणौ=विश्वास रहना।

रू० भे०—भरम्म।

भरमकारी—देखो 'भ्रमकारी' (रू. भे.)

भरमजाळ—देखो 'भंवरजाळ' (रू. भे.)

उ०—सेठ तौ आपरा परमेसर रै मूंडा सूं बगसीस री जाचना सुणनै चितबंगियौ व्हैगौ। इत्ता दिन औ कांई खिलकौ व्हियौ। घरवाळां री सगळी भगती निरफळ गी। चतर भांड कै'ड़ा भरमजाळ में फंसाया।—फुलवाड़ी

भरमण—देखो 'भ्रमण' (रू. भे.)

भरमणा—सं० स्त्री० [सं० भ्रम] १ भ्रम, सन्देह।

उ०—जळ-थळ मांही भरमणां, बिना निरंजन राव। जोनी संकट आवणा, फिरणा ठांऊ ठांव।—ह. पु. वा.

२ विश्वास, भरोसा।

३ धोखा।

४ भूल, गलती।

६ मन में होने वाला अनिश्चय।

भरमणौ, भरमबौ—१ देखो 'भ्रमणौ, भ्रमबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कुरणी बातां तौ कीं मीठी-मीठी करै, पण गांम रा गांम बाप नै गारण रा करतब रची। अजै म्हैं इण मीठी बोली सूं भरमीजूं कोनीं।—फुलवाड़ी

उ०—२ दादू मन कस्तूरी आग कै, भरमत फिरै उदास। अंतरगत जांणै नहीं, तासै सूंघै घास।—दादूबांणी

उ०—३ चेतन छोड करै जड़ पूजा, ज्यांकूं धांम फिरेलौ। अगम आपा खोजत नाहीं, धारा देख भरमेलौ।

—श्री सुखरांमजी महाराज री वांणी

उ० ४ सहज लखाई सांपरत, प्रीतम प्यारी पाग। निरखै भरमै नायणी, जावक दे मिळि जाय।—बां. दा.

भरमणहार, हारौ (हारी), भरमणियौ—वि०।

भरमाड़णौ, भरमाड़बौ, भरमाणौ, भरमाबौ, भरमावणौ, भरमावबौ—प्रे० रू०।

भरमिओड़ौ, भरमियोड़ौ, भरम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भरमीजणौ, भरमीजबौ—भाव वा०।

भरमपुरी—देखो 'ब्रह्मपुरी' (रू. भे.)

भरमर—देखो 'भ्रमर' (रू. भे.)

भरमरी—देखो 'भ्रमरी' (रू. भे.)

भरमवरधन—सं० पु० [सं० भस्मन् + वर्द्धन] ताम्र, तांबा।

(ह. नां. मा.)

भरमाणौ, भरमाबौ—देखो 'भ्रमाणौ, भ्रमाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ अवधू अठ मारग नगद निराग, नीसाणै निरफंदा है। भांमण भरमाया गुरु गरभाया, सरमाया निरफंदा है।—ऊ. का.

उ०—२ फक्कार फरक चेतन चीन्या, केवळ माया मूळ मिटाई। है सुखरांम सोई निज ग्यांनी, और जगत भरमाई।

—श्री सुखरांमजी महाराज री वांणी

उ०—३ ऊंमर है जितरै जीतरै सुख सूं नरूं जीवौंगा नै आपरी रघी सूं क्यूं छेटी पड़ौ धण रै साथ क्यूं सूवौ नीं। अठै तौ रिण खेत में सूवणौ पड़सी अरै भोळा पाड़वी थनै किण भरमायौ है सो इण घर में लूटण री उमंग करनै आया।—वी. स. टी.

उ०—४ कोई मिनख इण गधा लखणा व्है। छोटी मोटी अटकळां सूं आपरौ मन भरमावै।—फुलवाड़ी

भरमाणहार, हारौ (हारी), भरमाणियौ—वि०।

भरमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भरमाईजणौ, भरमाईजबौ—कर्म वा०।

भरमाभरमी—सं० स्त्री० [अनु०] १ सन्देहस्पद होने की अवस्था या भाव।

उ०—स्यांम धरम कुळ धरम न साजै, कांम धरम अभ्यास करै। भरमाभरमी पीड़ भोगवै, मांचै गरमी हूंत मरै।

—कविराजा बांकीदास

२ भुलावा।

३ भरोसा ।

भरमायोड़ौ—देखो '**भ्रमायोड़ौ**' (रू. भे.)
(स्त्री० भरमायोड़ी)

भरमार—सं० स्त्री० यौ० [सं० भर+मार] अधिकता, बाहुल्य ।

भरमावणौ, भरमावबौ—देखो 'भ्रमाणौ, भ्रमाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ राजा री रीस में भळै छमकौ लागौ । कह्यौ—म्हनैं अबै मीठी बातां सूं **भरमावण** री चालां मत करौ ।—फुलवाड़ी
भरमावणहार, हारौ (हारी), भरमावणियौ—वि० ।
भरमाविओड़ौ, भरमावियोडौ, भरमाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भरमावीजणौ, भरमावीजबौ—कर्म वा० ।

भरमावियोड़ौ—देखो 'भ्रमायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भरमावियोड़ी)

भरमासतक—सं० पु०—सिकलीगर । (डिं. को.)

भरम्म—देखो 'भरम' (रू. भे.)
उ०—आदि तणौ जोतां अरथ, भगौ न मूझ **भरम्म** । पहली जीव परट्ठिया, किया क पहली क्रम्म ।—ह. र.

भरयोड़ौ—देखो 'भरियोड़ौ' (रू. भे.)

भरराट—सं० पु० [अनु०] ध्वनि विशेष ।

भरराणौ, भरराबौ—क्रि० अ०—१ भर-भर की ध्वनि होना ।
२ चक्कर आना ।
३ उड़ना ।
भरराणहार, हारौ (हारी), भरराणियौ—वि० ।
भररायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भरराईजणौ, भरराईजबौ—भाव वा० ।
भररावणौ, भररावबौ, भहराणौ, भहराबौ—रू० भे० ।

भररायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ भर-भर की ध्वनि हुवा हुआ. २ चक्कर आया हुआ. ३ उड़ा हुआ.
(स्त्री० भररायोड़ी)

भररावणौ, भररावबौ—देखो 'भरराणौ, भरराबौ' (रू. भे.)
उ०—सासा सगणकावै नासां निरतावै, जीता मरिया जुग भिभरी **भररावै** । पल पल पलकां सूं पड़ता परनाळा, मोटा मूंगा री होठां में माळा ।—ऊ. का.
भररावणहार, हारौ (हारी), भररावणियौ—वि० ।
भरराविओड़ौ, भररावियोड़ौ, भरराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भररावीजणौ, भररावीजबौ—भाव वा० ।

भररावियोड़ौ—देखो 'भररायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भररावियोड़ी)

भरळ—सं० स्त्री० [अनु०] १ अंट-संट बकने की क्रिया या ढंग ।
वि०—२ अति चमकयुक्त ।
उ०—**भरळ** तेज उडगांण अणी बिकटां भळक, पांण बांण बांण अत जहर पायौ । बहै दइवांण रौ धांस जवना बिचै, अरचां सिर जांण बीजांण आयौ ।—राव अजीतसिंघ कानौड़ रा भाला रौ गीत
क्रि० वि०—३ एकाएक, अकस्मात ।

भरळकणौ, भरळकबौ—क्रि० अ० [अनु०] १ चमकना, दमकना ।
उ०—१ अंग काढै आरसी, पोत **भरळकै** पसम्मां । दरियाई कस दीध, राळ लूंबै रेसम्मां ।—सू. प्र.
उ०—२ चसळकै तोप चरखा चलंत, **भरळकै** सेल ओधण भ्रमंत । फरहरै झंड नीसांण फाब, असुरांण फौज इम लगय आब ।—पे. रू.
२ आग प्रज्वलित होना ।
उ०—दावानल **भरळकै**, तौप आठ सैं विचाळै तूजी । कसीस चढियां तुरंग, पूर चकारौ पेरीयां । 'आभा'रा भड़ां दोळा असुर, फजर वजंती फेरीयां ।—बखतौ खिड़ियौ
३ कोप करना, क्रोध करना ।
४ अण्ट-सण्ट बकना ।
भरळकणहार, हारौ (हारी), भरळकणियौ—वि० ।
भरळकिओड़ौ, भरळकियोड़ौ, भरळक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भरळकीजणौ, भरळकीजबौ—भाव वा० ।
भरळक्कणौ, भरळक्कबौ—रू० भे० ।

भरळकियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कोप किया हुआ.
(स्त्री० भरळकियोड़ी)

भरळक्कणौ, भरळक्कबौ—देखो 'भरळकणौ, भरळकबौ' (रू. भे.)
भरळक्कणहार, हारौ (हारी), भरळक्कणियौ—वि० ।
भरळक्किओड़ौ, भरळक्कियोड़ौ, भरळक्क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भरळक्कीजणौ, भरळक्कीजबौ—भाव वा० ।

भरळक्कियोड़ौ—देखो 'भरळकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भरळक्कियोड़ी)

भरळकौ—सं० पु० [अनु०] १ अकस्मात आने वाले क्रोध का भाव ।
२ चमक, दमक ।
३ आग की लपट, ज्वाला ।

भरळाट—देखो 'भरळाटौ' (मह., रू. भे.)
उ०—रजपूतां री आथ जकांरै, कूंता री **भरळाट** करां । सकळ कहै जाबै सूतां री, धूतां री किम जाय धरा ।
—उम्मेदसिंघ भारतसिंघ शाहपुरा रौ गीत

भरळाटतन—सं० पु० [राज० भरळाट+सं० तनु] सूर्य । (डिं. को.)

भरळाटौ—सं० पु० [अनु०] १ चमक, दमक ।
२ आग की लपट, ज्वाला ।
३ क्रोध, गुस्सा ।

भरवा—देखो 'भराव' (रू. भे.)

भरवाई—सं० स्त्री० [सं० भरण] १ भरवाने की क्रिया या भाव ।
[सं० भरण्यं] २ उक्त के फलस्वरूप दिया जाने वाला पारिश्रमिक ।

रू० भे०—भराई।

भरवाड़—सं० पु०—पशुपालक एक जाति विशेष। (नैंणसी)
उ०—रूखमइयौ बळ बोलइ छद ताडी रे, कांई भागा रे **भरवाड़ा** गोकळ तणां रे।—रुकमणी मंगळ
रू० भे०—भरुग्राड, भरुग्राडी, भरूवड।

भरवाणौ, भरवाबौ—देखो 'भराणौ, भराबौ' (रू. भे.)
उ०—काछबा सूं पखाळां ढोवाय ढोवायनै वौ आपरै वास्तै मीठा पांणी री एक लांठी झील **भरवाय** न्हाकी।—फुलवाड़ी
भरवाणहार, हारौ (हारी), **भरवाणियौ**—वि०।
भरवायोड़ौ—भू० का० कृ०।
भरवाईजणौ, भरवाईजबौ—कर्म वा०।

भरवायोड़ौ—देखो 'भरायोडौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भरवायोड़ी)

भरसक—क्रि० वि० [भर+सकना] पूर्ण शक्ति के साथ।

भरसूंडौ—सं० पु०—मुंह, मुख।
उ०—अति खूंणा ऊंडा थूंडम-थूंडा, कूंडापंथ करंदा है। मूंछां बिन मूंडा भासत भूंडा, **भरसूंडा** भभकंदा है।—ऊ. का.

भरस्ट—देखो 'भ्रस्ट' (रू. भे.)

भरस्टा—देखो 'भ्रस्टा' (रू. भे.)

भरह—१ देखो 'भरत' (रू. भे.)
उ०—वेणा यंत्र करइ आलि विणि, करइ गांनि ते सवि सुररमणी। म्रदंग सरमंडल वाजंत, **भरह** भाव करी रमइ वसंत।
—अज्ञात

भरहखंड—देखो 'भरतखंड' (रू. भे.)
उ०—पहिलुं जंबुदीव वखांणउ जोग्रण लाख प्रमांण। **भरहखंड** तसु भीतरि जांणउं नांनाविह गुण ठांण।—हीराणंद सूरि

भरहपुरांण—सं० पु० [सं० भरतपुराण] भरतमुनि रचित नाट्यशास्त्र का नामान्तर।
उ०—पिंगळ **भरहपुरांण** पराक्रत, विध विध जांणण सयळ विमेक।
—ईसरदास बारहठ

भरहभंभ—सं० पु०—एक वाद्य विशेष।
उ०—पटुपटह मृदंग करडि महल वेणु तलिमताल कंसाल झल्लरि भेरि मदनभेरि जयभेरि **भरहभंभ** हडुक्क ढक्क बुक्क त्रबक काहल काहली बरगां प्रभृति वादित्र।—व. स.

भरहर—सं० पु०—१ मादल, भेरी आदि वाद्यों की ध्वनि।
उ०—१ सिव मग सन्मुख थाज्यौ, धप मप दों दों, **भरहर** भों भों मादल भेर वजाज्यो।—ध. व. ग्रं.
उ०—२ भेर प्रक करनाळ **भरहर**, सरग धर जैनगर सुंदर। भेद इंद नरिंद सरभर, पाट पती परमांण।
—महाराव हणुतसिंघ सेखावत रौ गीत

२ ईसान ग्रौर उत्तर के मध्य [illegible] भाग। पिंगों के [illegible]-स्थान वाली दिसा का नाम।
उ०—सोभत सा कोस ४ **भरहर** कूणा में। गांम २ जाट बोहरा रजपूत बांभीगा बसै।—नैणसी
रू० भे०—भरहेर, भरिहरि भरिहरि, भरेहर।

भरहरउ—वि० [illegible]।
उ०—कुंदरसगि घोडउ, हिरइं कर गही बेइं पग देउनइ उसासिउ, उन्हउ लीन्हउ; सरहरउ **भरहरउ** आंहासिउ नीलसिउ अणीआलउ सूंआलु सरसु सकोमल पीसरिउ बीणिउ ऊजलउ जिसउ केवडउ।—व. स.

भरहरणौ, भरहरबौ—क्रि० अ०—मादल, भेरि आदि वाद्यों की ध्वनि होना।
उ०—जीतउ कान्ह नाद घण घुमी, नगरलोक सह [illegible]। मदनभेरि भूंगल **भरहरइ**, वरगा [illegible] जय जय करइ।
—कां. दे. प्र.
भरहरणहार, हारौ (हारी), **भरहरणियौ**—वि०।
भरहरिग्रोड़ौ, भरहरियोड़ौ, भरहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
भरहरीजणौ, भरहरीजबौ—भाव वा०।

भरहरौ—देखो 'भररौ' (रू. भे.)

भरहवास—देखो 'भारतवरस' (रू. भे.)

भरहसंगीत—सं० पु० [सं० भरत+संगीत] भरत मुनि द्वारा रचित संगीत।
उ०—मंडपि मृदल दीइ भूपाल, नाचइ पात्र ऊगटइ ताल। जाणइ जेह **भरहसंगीत**, पाडप्रबंध ते गाइ गीत।—कां. दे. प्र.

भरहेर—देखो 'भरहर' (रू. भे.)
उ०—कोस ५ उतराध **भरहेर** रै गांमै। जाट बसै, निवाणग सारी सींव हुवै।—नैणसी

भरहैरवय—सं० पु० [सं० भरत+ऐरावत] भरत और ऐरावत क्षेत्र का नाम।
उ०—चार अनइ अठ बार जिन, दस गुण दुगुणा सार। विमय चालीस नमूं सयल, **भरहैरवय** मझार।—स. कु.

भरांत—१ देखो 'भ्रांत' (रू. भे.)
२ देखो 'भराव' (रू. भे.)

भरांति—देखो 'भ्रांति (रू. भे.)
उ०—चोर अन्याई मसखरा, सब मिळ बैसैं पांति। दादू सेवक रांम का, तिनसौं करै **भरांति**।—दादूबांणी

भराई—देखो 'भरवाई' (रू. भे.)
उ०—हाथ अर माथा रै पांण वौ ज्यूं-त्यूं करनै आपरी पेट भराई कर लेतौ।—फुलवाड़ी

भराडणौ, भराडबौ—देखो 'भराणौ, भराबौ' (रू. भे.)

भराडणहार, हारौ (हारी), भराडणियौ—वि० ।
भराडिग्रोड़ौ, भराडियोड़ौ, भराड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भराडीजणौ, भराडीजबौ—कर्म वा० ।

भराडियोड़ौ—देखो 'भरायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भराडियोड़ी)

भराजक—देखो 'भ्राजक' (रू. भे.)

भराणौ, भराबौ—क्रि० स० [सं० भरण] १ किसी रिक्त स्थान, पात्र, आधार या अवकाश का किसी पदार्थ के योग से पूर्ण कराना ।
२ भुगतान कराना, चुकवाना, अदायगी कराना ।
३ किसी रिक्त पद या आसन की नियुक्ति द्वारा पूर्ति कराना ।
४ ऊबाना ।
ज्यूं—ऐड़ी बातां सुणां सुणां'नै म्हारौ मन भराय दियौ ।
५ पशुओं, यानों आदि पर बोझ लदाना ।
६ किसी दरार, छिद्र या विवर को बन्द कराना ।
७ किसी वस्तु के संयोग से ओत-प्रोत या युक्त कराना ।
ज्यूं—म्हारौ कादा में पग भराय दियौ ।
[भरणौ क्रि० का० प्रे० रू०] ८ किसी रिक्त स्थान या बर्तन में कोई वस्तु डलवाना, उडेलवाना या गिरवाना ।
उ०—थें कैवौ तौ थांरै वास्तै अठै ई सोना रा आठ मैं'ल चुणाय दूं, हीरा-मोत्यां सूं भंवरा भराय दूं, फगत म्हांरै ध्यांन करनै चींतण री जेज है ।—फुलवाड़ी
९ किसी पात्र, वस्तु या रेखांकन में अपेक्षित, आवश्यक या उपयुक्त वस्तु को रखाना या लगवाना ।
ज्यूं०—तसवीर में रंग भराणौ ।
१० निर्वाह करवाना ।
११ घोड़ी को गर्भवती कराना ।
१२ कहलवाना ।
१३ किसी के मन मे तुष्टि, संतोष या पूर्णता की भावना पैदा कराना ।
१४ किसी यंत्र या मशीन की चाबी या कुंजी को घुमवाना या ऐसी क्रिया करवाना कि वह यन्त्र संचालित हो जाय ।
ज्यूं—घड़ी में चाबी भराणी ।
१५ किसी वस्तु का संग्रह कराना ।
१६ लेखन द्वारा आवश्यक पूर्तियां अंकित करवाना ।
१७ अपेक्षित समर्थन, सहमति, स्वीकृति आदि की सूचक पूर्ति कराना ।
ज्यूं—वकील चोर नै ऐड़ा सवाल पूछिया के उण रै मूंडा सूं चोरी री हां भराय लीवी ।
भराणहार, हारौ (हारी), भराणियौ—वि० ।
भरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भराईजणौ, भराईजबौ—कर्म वा० ।
भराड़णौ, भराड़बौ, भरावणौ, भरावबौ—रू० भे० ।

भरात, भराथ—देखो 'भारत' (रू. भे.) (डि. को.)
उ०—भंज के खळां भराथ, गुणां वेद ब्रह्म गाथ । मुणै तौ नमाय माथ, नाथ नाथ नाथ ।—र. ज. प्र.
२ देखो 'बरात' (रू. भे.)

भरातियौ, भराथियौ—देखो 'बराती' (अल्पा., रू. भे.)

भराती, भराथी—देखो 'बराती' (रू. भे.)

भरायोड़ी—भू० का० कृ०—गर्भवती कराई हुई घोड़ी ।

भरायोड़ौ—भू० का० कृ० [सं० भरण] १ किसी रिक्त स्थान, पात्र, आधार या अवकाश को किसी पदार्थ के योग से पूर्ण कराया हुआ. २ भुगतान कराया हुआ, चुकवाया हुआ, अदायगी कराया हुआ. ३ किसी रिक्त पद या आसन की नियुक्ति द्वारा पूर्ति कराया हुआ. ४ ऊबाया हुआ. ५ पशुओं, यानों आदि पर बोझ लदाया हुआ. ६ किसी दरार, छिद्र या विवर को बन्द कराया हुआ. ७ किसी वस्तु के संयोग से ओत-प्रोत या युक्त कराया हुआ. ८ किसी रिक्त स्थान या बर्तन में किसी वस्तु को डलवा या गिरवाकर पूर्ण कर-करवाया हुआ. ९ किसी पात्र, वस्तु या रेखांकन में अपेक्षित, आवश्यक या उपयुक्त वस्तु को रखवाया हुआ या लगवाया हुआ. १० निर्वाह करवाया हुआ. ११ किसी घोड़ी पर घोड़ा भराया हुआ अर्थात् घोड़ी को गर्भवती कराया हुआ. १२ कहलवाया हुआ. १३ किसी के मन में तुष्टि, संतोष या पूर्णता की भावना पैदा कराया हुआ. १४ किसी यन्त्र या मशीन की चाबी या कुंजी को घुमवाया हुआ या ऐसी क्रिया करवाया हुआ कि वह यन्त्र संचालित हो जाय । १५ किसी वस्तु का संग्रह कराया हुआ. १६ लेखन द्वारा आवश्यक पूर्तियां अंकित करवाया हुआ. १७ अपेक्षित समर्थन, सहमति, स्वीकृति आदि की सूचक पूर्ति करवाया हुआ.
(स्त्री० भरायोड़ी)

भरारियौ—सं० पु० [दे०] गेहूं अथवा जौ के भूसे को एकत्रित कर सुरक्षित रखने के लिए घास के घेरे में बंधा हुआ ढेर ।

भरारौ—देखो 'भररौ' (रू. भे.)
उ०—नवहत्थी भोकरा, मसत फीफरा भरारा । बगलां उरळी बिहूं, बगलि नीकळै छिकारा ।—सू. प्र.

भराव—सं० पु० [सं० भरण+राज० आव] भरने की क्रिया या भाव ।
२ भरे हुए होने की अवस्था या भाव ।
३ वह वस्तु या रेखांकन जिससे किसी रिक्त स्थान या अवकाश की पूर्ति की गई हो या की जाती है ।
४ सिंचाई के खेत में वह स्थान या गड्ढा जहां पानी इकट्ठा हो जाता है ।
५ फोड़े फुन्सी में मवाद या पीप भर जाने की अवस्था ।
६ स्वीकारात्मक शब्द ।

७ इकट्ठा किया हुआ मलबा ।

८ देखो 'भरेत' (रू. भे.)

रू० भे०—भरवा ।

भरावणौ, भरावबौ—देखो 'भराणौ, भराबौ' (रू. भे.)

उ०—१ देखे (ताइ) चंच विहंगम दहलइ, रेखा संकति अनोपम रंग । **भरी** किणही (कइ) बिजित्र भरावी, संचउ करि नासिका सुचंग ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कहो तो मोतियन मांग **भरावां**, कहो छिटकावां केस । मीरां के प्रभू गिरधरनागर, सुणियो विरद के नरेस ।—मीरां

उ०—३ लक्खू बोली—म्हनै ग्रेड़ौ डंड **भरावणौ** ई कोनीं । पर-णीज्यां तौ आप म्हारा धणी व्हौला ।—फुलवाड़ी

उ०—४ ते गुरुना उपदेसथी, भराव्यौ सहसकूट । 'तेजसी' 'दोसीनै' घरे, रिद्धि सम्रद्धि अखूट ।—कवियण

उ०—५ राइहिं ए संति जिणंद नवउ प्रासादु करावीउ ए । कंचन ए मणिमय थंभ रयणमइ बिंब **भरावीया** ए ।—सालिभद्रसूरि

उ०—६ दूजड हथौ बडै दस देसां, नर नायक जळ चाढ़ै नेसां । प्रसण हूंत **भरावै** पेसां, ग्रेम करै 'जालण' घर ग्रेसां ।

—राव जालणसी री गीत

भरावणहार, हारौ (हारी), भरावणियौ—वि० ।

भराविओड़ौ, भरावियोड़ौ, भराव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भरावीजणौ, भरावीजबौ—कर्म वा० ।

भरावा—सं० स्त्री०—ठठेरा जाति के अन्तर्गत पीतल को ढालने का व्य-बसाय करने वाली एक शाखा । (मा. म.)

भरित—भू० का० कृ० [सं० भर] परिपूर्ण, भरा हुआ.

उ०—महाराजकुमार स्त्री दळपतिजी दिन दिन स्वेत पक्ष चंद्रमा री ज्यूं परिवधवंत होता पूरणिमा रै चत्रमा री परिसकळ कळा **भरित** विभूषित गात्र नीपना छै ।—द. वि.

भरिया—सं० पु०—छोटे बच्चे का मल या विष्टा ।

भरियावळि—सं०—गर्व-पूर्ण ।

उ०—वांका भीचि घणौं **भरियावळि**, इम बोलिया भुजाडंड ग्रांमळि । भिडता भांजै सबळ भुजां बळि, ग्रै मुह रावत तो मुंह आगळि ।—गु. रू. बं.

भरियेडील—देखो 'भरियौडील' (रू. भे.)

भरियौगवाड़—सं० पु० [भरियो+गवाड़] १ गायों की भीड़ भरा स्थान । २ वैभव-सम्पन्न घर ।

भरियौडील—सं० पु०—गठा हुआ बदन, हृष्ट-पुष्ट ।

रू० भे०—भरियेडील ।

भरियोड़ी-भू० का० कृ०—गर्भवती हुवी हुई घोड़ी ।

भरियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कोई रिक्त स्थान, पात्र, आधार या अवकाश किसी पदार्थ के योग से पूर्ण युक्त या भरा हुआ. २ यौवन या स्वास्थता के कारण हृष्ट-पुष्ट हुवा हुआ शरीर. ३ भुगतान हुवा हुआ, चुका हुआ, अदायगी हुवा हुआ. ४ कोई रिक्त पद या आसन नियुक्ति द्वारा पूरित हुवा हुआ. ५ मन क्रोध, सन्ताप, असन्तोष आदि से युक्त हुवा हुआ. ६ आवेश, करुणा, स्नेह आदि से अभिभूत होने के कारण कुछ कहने में अस-मर्थ हुवा हुआ. ७ ऊबा हुआ. ८ पशुओं, यानों आदि पर बोझ लदा हुआ. ९ कोई दरार, छिद्र या विवर स्वतः बन्द हुवा हुआ. १० किसी वस्तु के संयोग से ओत-प्रोत या युक्त हुवा हुआ. ११ कोई रिक्त स्थान या बर्तन किसी वस्तु के डालने, उड़ेलने या गिराने से परिपूरित हुवा हुआ. १२ किसी पात्र, वस्तु या रेखां-कन में अपेक्षित, आवश्यक या उपयुक्त पदार्थ रखा हुआ या लगा हुआ. १३ भुगतान किया हुआ, चुकाया हुआ, अदायगी किया हुआ. १४ कोई रिक्त पद या आसन नियुक्ति द्वारा पूरित किया हुआ. १५ निर्वाह किया हुआ, निभाया हुआ. १६ [illegible] हुआ. १७ किसी के मन में तृप्ति, सन्तोष या पूर्णता की भावना पैदा किया हुआ. १८ किसी के मन में किसी के प्रति विरोधी भाव-नाओं को अंकुरित किया हुआ. १९ किसी यन्त्र या मशीन को संचालित करने हेतु चाबी या कुंजी को घुमाकर वांछित क्रिया किया हुआ. २० पशुओं, यानों आदि पर बोझ लादा हुआ. २१ किसी वस्तु का संग्रह किया हुआ. २२ किसी छिद्र, संधि, मुंह आदि को भरने हेतु किसी वस्तु को ठूंसा हुआ, जड़ा हुआ, बैठाया हुआ या लगाया हुआ. २३ लेखन द्वारा आवश्यक पूर्तियां किया हुआ. २४ अपेक्षित समर्थन, सहमति स्वीकृति आदि की सूचक पूर्ति किया हुआ.

(स्त्री० भरियोड़ी)

भरियौतरियौ—वि० यौ० [सं० भरण+रा० प्र० तरियौ] (स्त्री० भरीतरी) १ वैभवपूर्ण, सम्पन्न ।

उ०—औ तीजौ म्हारौ घर-धणी है । भाग नै ई पुरखां के म्हांरै थकां इण री बारी कद आवै ! तौ ई नैणागत कीं के बारी मैं साजूंला । म्हैं बारी साजूं तौ सगळौ घर **भरियौ-तरियौ** रै'वै ।

—फुलवाड़ी

२ पूरा भरा हुआ, परिपूर्ण ।

उ०—हिंदुआं ग्रेक मुसळमान रईस री कोठी नै बाळ दी । कोठी रौ मालक भरी-तरी कोठी नै छोड़'र थूक मुठियां में नाठौ ।

—वरसगांठ

भरियौभरम—सं० पु० यौ० [सं० भर+भ्रम] १ विश्वास । २ सम्पन्नता ।

भरिहडि, भरिहढि—देखो 'भरहर' (रू. भे.)

भरी—१ देखो 'भर' (५) (रू. भे.)

२ देखो 'वरी' (रू. भे.)

भरीगवाड़ी–सं० स्त्री०—देखो 'भरियौगवाड़' (रू. भे.)

भरुआड—देखो 'भरवाड़' (रू. भे.)

उ०—भरडा भांड भवाइयां, भोई नइं **भरुआड**। भील भरठीया तेतला, भूय-तलि पाडइ खाड।—मा. कां. प्र.

भरुज–सं० पु० [सं०] गीदड़, शृगाल। (डिं. को.)

भरूंट—देखो 'भुरट' (रू. भे.)

भरूंटियौ—१ देखो 'भुरट' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'भरूंटौ' (अल्पा., रू. भे.)

भरूंटौ–सं० पु०—१ भारा, गट्ठर।

उ०—सांझ पड़ी दिन आथम्यौ जद मण भर खोद्यौ घास। बांध **भरूंटौ** सिर पर धरियौ सांम पड्यां घर आय, मारुणी वणी कमावणी। लाय **भरूंटौ** आंगण पटक्यौ दूखै म्हारी नाड़। ठांण मांय म्हारी भैंस्यां रिड़कै गोरचां मांय म्हारी गाय। मारुणी घणा कमामवणी।—लो. गी.

२ देखो 'भुरट' (रू. भे.)

भरूंसउ—देखो 'भरोसौ' (रू. भे.)

उ०—१ एक भणइ त हुंतउ **भरूंसउ**, जे छोडवसइ कान्ह। कीधउ मेल मिल्या दलि आवी, तेह तणा परवांन।—कां. दे. प्र.

भरूआडी—देखो 'भरवाड़' (रू. भे.)

उ०—**भरूआडी** अह्यौ भूर, चतुर नगर नी नारि। नाथ न जांणु रे वसि करी, परिहरि गिउ रे मुरारी।—प्रा. फा. सं.

भरूवड—देखो 'भरवाड़' (रू. भे.)

उ०—तरी आलि **भरूवड** तणउ, जासि ऊगतइ दीसि। ख्वंति खरानी कांकसी, सिंधु फाडसि सीसि।—मा. कां. प्र.

भरेत–सं० पु०—१ वह नीची भूमि जहां वर्षा काल में पानी इकट्ठा हो जाता है।

उ०—पांन कूंपळां काढिया रै, रंग सुरंगी रेत। ऊगौ अळियौ घास अगूतौ, आथूणै **भरेत**।—बेसवांनर।

२ वर्षाकालीन पानी को प्रचूषित करने वाली विशेष प्रकार की मिट्टी वाला खेत जिसमें बुवाई करने के उपरान्त सिंचाई की आवश्यकता नहीं रहती।

भरेहर—देखो 'भरहर' (रू. भे.)

उ०—सोझत था कोस ५ **भरेहर** कूंण मांहै, लोक कोई नहीं।
—नैणसी

भरै–वि० [दे०] १ कारगर, सफल।

उ०—१ नांनी-मां री अटकळां कूंण कीं **भरै** पड़ी नीं।
—फुलवाड़ी

उ०—२ बातां सुणतां ईं वा तौ प्रण कर लियौ के ब्याव करूंला तौ राजकंवरजी रै ई साथै, नींतर ताजिंदगी कंवारी ई रैवूंला। सेवट राजकंवरी रौ प्रण **भरै** पड़ियौ—फुलवाड़ी

उ०—उण री मीट उण अपछरा रै माथै पड़ी। मन में कह्यौ—आज रो औ सिकार तौ नांमी **भरै** पड़ियौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ फगत आ छोटी सी बात मिनख हमेसां ध्यांन में राखै तौ वौ कैंड़ौ ई लांठौ कांम **भरै** पटक सकै।—फुलवाड़ी

उ०—४ राजकंवर कह्यौ—म्हैं इण लोभ री खातर औ कांम थोड़ौ ई करियौ हौ। पण पिंडतजी वास्तै बात नांमी **भरै** पड़ी। आज तौ थैं म्हारी लाज राख दी।—फुलवाड़ी

भरोड़ौ—देखो 'बणोड़ौ' (रू. भे.) (शेखावाटी)

भरोटी—१ देखो 'भरूंटौ' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'भुरट' (रू. भे.)

भरोटौ–वि०—१ भारी वजन वाला।

२ देखो 'भरूंटौ' (रू. भे.)

३ देखो 'भुरट' (अल्पा., रू. भे.)

भरोडा–सं० पु० [दे०] आंख की पुतलियों पर होने वाला छोटी-छोटी फुंसियों का रोग। (शेखावाटी)

भरोती–सं० स्त्री०—१ एक प्रकार का कर। (नैणसी)

२ प्रमाण, सबूत।

उ०—कटारी जगत में प्रगट 'चांपै' करी, नंरीद वा कटारी नांय नांनी। 'सवाई' वात री **भरोती** दीद सह, महपती 'विजै' जद सांच मांनी।—महाराजा विजैसिंघ रौ गीत

३ पुष्टि, समर्थन।

४ प्राप्ति-रसीद।

५ देखो 'भरती' (रू. भे.)

भरोस—देखो 'भरोसौ' (रू. भे.)

उ०—भारी तुज्ज **भरोस**, रिण में थित बांधे रह्या। खीची लीनी खोस, सारी मोवाली सुरै।—पा. प्र.

भरोसादार–वि०—भरोसे वाला, विश्वासपात्र।

उ०—**भरोसादार** भला मनख जीव-जोग साथे लीजौ। इंद्र राजा की तरै का बींद राजा (हो) बीजौ।—मयाराम दरजी री बात

भरोसाबंद, **भरोसाबंध**–वि०—जिसपर भरोसा किया जा सके, विश्वसनीय।

उ०—डाढाळी सूअर राव सूं विकराळ होय लड़ियौ, भला **भरोसाबंध** राजपूतां रा घोड़ा रुळ रहिया छै।—डाढाळा सूर री वात

भरोसौ–सं० पु०—१ दृढ़ विश्वास।

उ०—१ सूर **भरोसै** आप रै, आप भरोसै सीह। भिड़ दहुं ऐ भाजै नहीं, नहीं मरण रौ बीह।—बां. दा.

उ०—२ अबै उणानै सोळै आंना **भरोसौ** व्हैगौ के कीं करियां ईं वा बचै नीं।—फुलवाड़ी

२ विश्वास।

उ०—अठी कुमार 'दूदे' विजय रा बंब घुराइ बूंदी आइ आपस में **भरोसौ** भागौ जणाइ कुमार 'रत्न' सहित अनुज भोज री बडी

कुमरांणी बालणोति रायकुमरी बूंदी हूं दिल्ली नरेस रै कनै मेजि दीधी ।—वं. भा.

३ आश्रय, सहारा, अवलंब ।

उ०—१ चिड़ी कह्यौ—जद आप ई भैंस छोड नै जावौ तौ पछै म्है किण रै भरोसै रै'वां ।—फुलवाड़ी

४ आशा, उम्मेद ।

उ०—मां, थारै कैणां नै लोप, म्हैं कोई मोटौ भरोसौ लेय थारी पाखती आई ।—फुलवाड़ी

भळ—१ देखो 'भळावण' (रू. भे.)

२ देखो 'वळै' (रू. भे.)

उ०—जलाजी मारू, रात्यूं धण री पेटड़लौ भळ दूख्यौ हो, गिरगानैणी रा जलाल, थैं तौ धण री खबर न लीवी हो जलाल ।

—लो. गी.

भळ, भल—वि०—१ बहुत, अधिक ।

२ देखो 'भलौ' (रू. भे.)

उ०—१ ऊड़ै लोहां बूर भळ, सूर न जाय सरक्क । चढ़ै गजां दांतू सळां, रण रीभवै अरक्क ।—बां. दा.

उ०—२ जीवण-दाता वादल्यां, थां सूं जीवण पाय । भल लूआं बाजो किती, मुरधर सहसी लाय ।—लू

उ०—३ पण राखण आया प्रभू, भल अबळा री भीर । दस हजार गजबळ घट्यौ, घट्यौ न दस गज चीर ।

—रामनाथजी कवियौ

३ देखो 'वळै' (रू. भे.)

उ०—१ भळ छोडै निज भ्रात, छैल कुळ घर छिटकावै । प्रभु नै छोडै परौ, जिकण दिस फेर न जावै ।—ऊ. का.

उ०—२ भल नूंती रै म्हारौ जळबळ जांमी बाप, रातादेश्री म्हारी माय नै जे । भल नूंती रे म्हारा कन्हकंवर सा वीर, सैणां भतीजां भावजां जे ।—लो. गी.

४ देखो 'भलौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ माता पितु बेटी बेटा भल मरिया, प्यारां प्यारां नैं मुसकल परहरिया । जंतर जर हरगूं अभ्यंतर जड़ियौ, पीतम प्यारी नैं परहरणूं पड़ियौ ।—ऊ. का.

उ०—३ भल भगवांन रा भोग, भीलणी रै घर पायां । सरस सलूणा स्वाद, जकांरी किसी वडायां । खाडा खाया खाय, कियौ खाली तबरौ । माथ चढ़ावण मोल, परम प्रसाद है जबरौ ।

—दसदेव

उ०—३ सभी अच्छे सांई, हमहिं भल नाहीं हरि सुणो । गुनैंगारी भारी बकस, हितकारी मम गुनो ।—ऊ. का.

उ०—४ कनक कटोरां राखजै, भल सूरत भरियौह । निबळौ क्यूं ह्वै केहरी, उण पय ऊछरियौह ।—बां. दा.

उ०—५ [illegible] भल [illegible] सूं [illegible] ।

[illegible]

उ०—६ [illegible] भल [illegible] ।—[illegible]

५ देखो 'भालौ' (मह., रू. भे.)

भलड़—देखो 'भलौ' (रू. भे.)

उ०—पितु आगे [illegible] सुनि [illegible] उतारी अंग ही, [illegible] भलड़ [illegible] गाइ जोवत जोवत माग के ।—ग. कु.

भलउ—देखो 'भलौ' (रू. भे.)

उ०—गज रथ रमणि तुरंगम रंग [illegible] भलउ [illegible] । [illegible] परिपालन [illegible] न पूजई आम ।—[illegible]

भळक—सं० स्त्री० [अनु०] चमक, कांति ।

उ०—१ [illegible] भळक [illegible] ।—सू. प्र.

उ०—२ [illegible] भळक [illegible] ।—[illegible]

भळकणौ—वि० [अनु०] (स्त्री० भळकणी) चमकने वाला, कांतियुक्त ।

उ०—[illegible] भळकणौ ।

—[illegible]

भळकणौ, भळकबौ—क्रि० अ० [अनु०] कांति प्रकट होना, चमकना ।

उ०—१ [illegible] प्रहार । भळक्भळ [illegible] भुजां भळकंत, [illegible] ।

—[illegible]

उ०—२ 'सेर' रा करार [illegible] 'कुमळेस' [illegible] 'पान' बिरदां उजाळो । [illegible] नागौर [illegible] भळकियौ 'हूरा' 'आळो' ।—पहाड़खां आढ़ौ

भळकणहार, हारौ (हारी), भळकणियौ—वि० ।

भळकिओड़ौ, भळकियोड़ौ, भळक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भळकीजणौ, भळकीजबौ—भाव वा० ।

भळक्कणौ, भळक्कबौ, भल्लकणौ, भल्लकबौ—रू० भे० ।

भळकाड़णौ, भळकाड़बौ—देखो 'भळकाणौ, भळकाबौ' (रू. भे.)

भळकाड़णहार, हारौ (हारी), भळकाड़णियौ—वि० ।

भळकाड़िओड़ौ, भळकाड़ियोड़ौ, भळकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भळकाड़ीजणौ, भळकाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भळकाड़ियोड़ौ—देखो 'भळकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भळकाड़ियोड़ी)

भळकाणौ, भळकाबौ [भळकणौ क्रि० का प्रे० रू०] चमकाना, कांतियुक्त करना ।

उ०—संक्रम शुभ स्रष्टि द्रष्टि लुभ देती, लंपुट संपुट लख घूंघट पट लेती। लुलकार लकुटी ले भ्रकुटी सळ लाती, भूखी बाघण सी भ्रकुटी झळकाती।—ऊ. का.

झळकाणहार, हारौ (हारी), झळकाणियौ—वि०।

झळकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

झळकाईजणौ, झळकाईजबौ—कर्म वा०।

झळकायोड़ौ—भू० का० कृ०—चमकाया हुआ, कांतियुक्त किया हुआ. (स्त्री० झळकायोड़ी)

झलकार—सं० पु०—तीर।

उ०—कलकार वीर बांगी कजाक, हलकार दुहूं बळ बाज हाक। धांनंक टंकार झलकार ग्रोह, ललकार मार अणपार लोह।

—वि. सं.

झळकारौ—वि० [अनु०] (स्त्री०झळकारी) चमकने वाला, कान्तियुक्त।

उ०—हो लाडीजी थुंख सोहे नथ झळकारी। बिंदली सोहै रतन जरी री, फूलां मांग संवारी।—रसीलेराज

झळकावणौ, झळकावबौ—देखो 'झळकाणौ, झळकाबौ' (रू. भे.)

झळकावणहार, हारौ (हारी), झळकावणियौ—वि०।

झळकाविओड़ौ, झळकावियोड़ौ, झळकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

झळकावीजणौ, झळकावीजबौ—कर्म वा०।

झळकावियोड़ौ—देखो 'झळकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० झळकावियोड़ी)

झळकौ—सं० पु०—१ चमक, कान्ति।

उ०—अणियाळा नयण आंजिया अंजण, काजळ रेख सुरेख कर। इंद्र तणइ दिन मूंठ अपूठी, झळका नांखइ वांम वर।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'टीडीझळकौ'।

झलकौ—१ तीर, बाण।

उ०—१ दादू झलका मारै भेद सौं साले मंझि पराण। मारणहारा जांणि है, कै जहिं लागै बांण।—दादूबांणी

उ०—२ शिणगारी भूखण सिलह, अति छबिधारी आज। प्यारी किण ऊपर प्रगट, गजै सिकारी साज। सजै सिकारी साज आज किण ऊपरै। मारण कारण अगा क रसिया रूप रै। चपळ चलाक चूटैत दियै दिलदार का, नैण झलका नेह, झलक्का सारका।

—सिवबगस पालावत

२ देखो 'भालौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ तरै रीस आई लाखां नूं, सुकनै झळकौ पड़ियौ थौ तिको झाल नै लाखै सोळंकी राज नूं चूंकलियौ।—नैणसी

उ०—२ झलकौ लीधौ भूखियौ, चाव करै चहुंवांण। 'सूजै' धनस संभाळियौ, अंत समै अवसांण।—बां. दा. ख्या.

झळक्कणौ, झळक्कबौ—देखो 'झळकणौ, झळकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सिरै जालिया रूप सोभा झळक्की, वणौ वीजळी जांण आभै पळक्की। मदोमत्त गौखां चढ़ी हंस मोहै, सची इंदरा मिंदरा जांण सोहै।—सू. प्र.

झळक्कणहार, हारौ (हारी), झळक्कणियौ—वि०।

झळक्किओड़ौ, झळक्कियोड़ौ, झळक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

झळक्कीजणौ, झळक्कीजबौ—भाव वा०।

झळक्कियोड़ौ—देखो 'झळकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० झळक्कियोडी)

झलक्कौ—देखो 'भालौ' (रू. भे.)

उ०—नैण झलक्का लागणा, बोहा बांण वणाय। मदन लगावै मारका जिके पार हो जाय।—पनां

झळण—देखो 'भोळावण' (रू. भे.)

झळणौ, झळबौ—क्रि० स०—१ उत्तरदायित्व लेना, सुपुर्दगी लेना।

उ०—१ मारू 'जोधां' रिणमलां, झळे गऱ्योधां भार। जांण हणू धावण मतै, द्रोण उठावण वार।—रा. रू.

उ०—२ जवनांण दळे वीजूझळे, देस झळे कुळ देस री। इंद्रभांण खग वळ ऊजळे, मिळे जोत 'मुकनेस' री।—रा. रू.

उ०—३ जोध वलै 'राजांन' रौ, झळे खवां कुळ बार। आभ भमाहै ऊंडळे, दीठे दळें करार।—रा. रू.

३ भिळणौ, भिळबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मन द्रढ़ रह धड़के मती, अह ग्रहिमां ग्रंबाल। सिर धड़ ऊपर झाबतौ, झळण न दूं भुरजाल।—लिखमीदांन बारहठ

उ०—२ मंडै मुरधर तणा थभ सौदा मुहै, चार जुग नांम राखण मचैला। मेट आवागमण चाढ जळ मेड़वै, झळैगा वेहू प्रभ जोत। भेळा।—पहाड़खां आढौ

उ०—३ निद्रवसि ते राघि दीठु, ग्रिहिवान मन चलिऊं अपूर व माटि भूपतिनूं मन पंखीमांहां झलिऊ।—नळाख्यांन

झळणहार, हारौ (हारी), झळणियौ—वि०।

झळवाड़णौ, झळवाड़बौ, झळवाणौ, झळवाबौ, झळवावणौ, झळवावबौ—प्रे० रू०।

झळाड़णौ, झळाड़बौ, झळाणौ, झळाबौ, झळावणौ, झळावबौ सक० रू०।

झळिओड़ौ, झळियोड़ौ, झल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

झळीजणौ, झळीजबौ—भाव वा०।

झलपण, झलपणौ—सं० पु० [झल+रा० प्र० पण] १ भलाई, अच्छापन।

उ०—१ जोय 'बंक' जळजात ज्यों, संजुत संत असंत। बड़वानळ कड़वा वचन, जळ झलपण जाणंत।—बां. दा.

उ०—२ मरणै परणै में गोडा खर गाळै, बनिता सुत जावो बै'ती रै बाळै। झलपण खांचें पण रांचे भूंडै में, मांचै सूतां रै हूकौ मूंढै में।

—ऊ. का.

२ यश, कीर्ति ।

उ०—भलपण भावै रे, नर गुरख समझै नहीं । अलबत आवै रे, किरतब री आणंद 'करन' ।—किसनजी बारहठ

भळभ—कुपित, क्रोधित ।

उ०—यूं बवेरा नै कांई गाळ काढ़ी जकौ वौ अबाकूं थारी सोच में भळभ व्हियोड़ौ आयौ ।—फुलवाड़ी

भळभट, भळभट्ट—वि०—आग बबूला ।

उ०—१ राजा रीस में भळभट व्हियोड़ौ बीच में ई बोल्यौ—अबै नीं तौ वांरा माथा ई रे'वैला अर नीं वां सगळां नै ऊंनी ई सूझैला ।—फुलवाड़ी ।

उ०—मुखियौ रीस में भळभट्ट होयनै कै'वण लागौ—थांरी म्हांरी कांई न्यारी बात है ।—फुलवाड़ी

भळभळ, भळभळाट—सं० स्त्री० [अनु०] देखो 'भळळ' (रू. भे.)

उ०—तिकां री भालोड़ आगले पासे सूं बाहर दीसै छै, भळभळाट करती ।—सूरे खींबे कांधळोत री बात

भळभळाणौ, भळभळाबौ—क्रि० अ० [अनु०] चमकना ।

उ०—१ थोड़ी देर में म्हारी सूंटी सूं एक भळभळाती जोत निकळी । जोत बा'रै आतां ई म्हारी चीसां ढबगी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ बोखी मुलक री इमरत बरसावती बोली—इण निरभागण रै बारणै भळभळातौ औ सूरज कठै सूं ऊगियौ ।—फुलवाड़ी

भळभळौ—वि०—कम कड़ुवे स्वाद वाला ।

उ०—अरट ३० पाच ५० पांणी खारो भळभळो छै ।—नैणसी

रू० भे०—बळबळौ ।

भम्लभळ—सं० स्त्री० [अनु०] चमक ।

उ०—अछै धमगज्ज अचांणक वार । पबै पर जांणक बज्र प्रहार । भळम्भळ सूळ भुजां भळकंत । खळक्खळ खून नदी खळकंत ।

—मे. म.

भलम—सं० पु०—१ अच्छापन, भलाई ।

उ०—१ प्रसध नांम इधकार जग जांरै मांटीपणौ, अतुळ दातार क्रीरत उजाळा । भलम वांता चिहुं वेस अणियां भमर, वाह रे कंवर अवधेस वाळा ।—र. रू.

२ यश, कीर्ति ।

उ०—'जेहल' वित दीधां बिना, नर ऊजळी न होय । 'भारांणी' लीधां भलम, जसहर सांम्हौ जोय ।—बां. दा.

३ सुन्दर, खूबसूरत ।

उ०—बीजइ बाजवट आइ नइ बइठी, देवांग वसत्र पहिराया देव । आगळि सखी आभरण आंणइ, भलम संगार लहइ जउ भेव ।—महादेव पारवती री वेलि

रू० भे०—भलिम, भलिमि, भालिम, भालिमि ।

भलमनसत, भलमनसात, भलमनसाहत, भलमनसाही, भलमनसी, भल-[illegible] स्त्री० —भला मनुष्य होने की अवस्था या भाव, [illegible] सज्जनता, शराफत ।

भळळ, भळळाट—सं० स्त्री० [अनु०] चमक, कांति ।

उ०—१ [illegible] कुंजरां, चंचळ [illegible] जाळी, 'आशा' [illegible] भळळ [illegible] ।—[illegible]

उ०—२ सूरतन तेज भळळाट [illegible] तेज न [illegible] ।—[illegible]

उ०—३ आरस अंगरा जो दुती, भळळाट [illegible] । [illegible] अनंग रा जी जोयां. हूवै रद छवि जेम ।—र. ज. प्र.

२ तेज ।

उ०—[illegible] भळळ [illegible] ।—[illegible]

रू० भे०—[illegible] ।

अल्पा०—[illegible] ।

भळळक—सं० स्त्री०—चमक ।

उ०—[illegible] ।

—[illegible]

भळळाटौ—देखो 'भळळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—[illegible] भळळाटौ तेज को अंबार, [illegible] या संसार को सार ।—[illegible] री बात

भळहळ—देखो 'भळळ' (रू. भे.)

उ०—१ तांनां [illegible] तरंग, सुंदर कोकिल नाद । भळहळ नैणी बाग में, आद कर उदमाद ।—[illegible]

उ०—२ [illegible] जळहर [illegible] । [illegible] सींग [illegible] पड़ै, भळहळ [illegible] ।—[illegible]

उ०—३ भळहळ राजा गज [illegible] । [illegible] वहल [illegible] ।—सू. प्र.

भळहळणौ, भळहळबौ—क्रि० अ० [अनु०] १ चमकना, दमकना ।

उ०—१ भूरा भुरजाळा अंबुद भळहळिया, [illegible] बाल्हा खळहळिया । अवनी आंदोलन ओळा ओसारिया, चिड़ि चिड़ि 'प्लासी' पै, गोळा जिम गिरिया ।—ऊ. का.

उ०—२ हय पाखर खळहळे, भुजां भळहळे अभागा । साथा घोड़ा खड़ग, लड़ण माथा नभ लागा ।—मे. म.

२ प्रज्वलित होना ।

उ०—सूर विरत सल्लळे, ज्वाळ भळहळे फुणांधर । कनां प्रळै क्रति करण, किरण परजळे दिणंकर ।—रा. रू.

भळहळणहार, हारौ (हारी), भळहळणियौ—वि० ।

भळहळिओड़ौ, भळहळियोड़ौ, भळहल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भळहळीजणौ, भळहळीजबौ—भाव वा० ।

भळहळाट—देखो 'भळळ' (रू. भे.)

भळहळियोड़ौ–भू० का० कृ०—चमका हुआ.
(स्त्री० भळहळियोड़ी)

भलहोडौ—देखो 'भलौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—साकुर खडे पाखर सेर, फौजां वहै जोजण फेर । भल अस-वार **भलहोडेह**, घमघम कैजमां घोडेह ।—गु. रू. बं.

भलां–वि०—१ ठीक, उचित ।
उ०—१ पता वैर 'कलिग्रांण' पख, धारा चड़ धारैत। भाई अहुं आया **भलां**, आभ लगा अखड़ैत ।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात
उ०—२ वांस पुर भांजतां सोच पड़ चहूंवळ, सकळ खळ मांण तज सेव साधै । दुरै डूंगरपरौ थरकियौ देवगरै, बाह बर **भलां** तूं खड़ग बांधै ।—मांनसिंघ आसियौ
उ०—३ ताहरां सेतरांमजी कही—'जु जो म्हारी पूठ राखौ तौ दरवाजै रा किंवाड़ छै सु हूं तोडूं । अर पछै भीतर थे वड़ज्यौ । ताहरां राजा कही—'बहोत **भलां** ।'—नैणसी
उ०—४ थे कहो छौ तौ हाथी अठा तांई ले आवौ, परमेस्वर **भलां** करसी ।—रावमालदे री बात
क्रि० वि०—शोक से, खुशी से, प्रसन्नता से ।
उ०—**भलां** पधारौ भीचड़ा, गरक सिले मैं गात । केहर वाळा कळह री, वळता कीजो वात ।—बां. दा.
अव्य०—१ जोर देने के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द ।
उ०—१ कें अणछक पुटियौ हेटै उतरतौ उतरतौ बोल्यौ—आ ई कदै व्है के म्हैं आवूं कोनीं । राजाजी नै खोटी करियां सरै **भलां** ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ यूं आपौ कांई खोवै । म्हैं तौ हाथी सूं ई सवायौ थारौ गाढ़ जांणती । ग्रैड़ी ठा'व्हैती तौ जावण देती **भलां** ।—फुलवाडी
उ०—३ भींटियौ बोल्यौ—मांमाजी आंख्यां व्हैती तौ औ दूजी वार थांरै कनै **भलां** आवतौ ।—फुलवाड़ी
२ चाहे ।
उ०—बन बैठौ **भलां** चढौ गिर बदरी, धरा भेस के धारौ । चित नंह लग्यौ रांम रै चरणां, नंह जब लग निसतारौ ।—र. रू.
रू० भे०—भल, भला ।

भलांई, भलाही–अव्य०—चाहे ।
उ०—१ जै औ संजोग सजणौ है तौ थें **भलांई** कित्ती ई आंटिया पजावौ, आ बात भवै ई टळै नीं ।—फुलवाड़ी
वि०—ठीक, उचित ।
उ०—१ थांरौ औ ओसांण कदेई नीं पांतरुं के थें म्हारौ मिनख-जमारौ सुफळ अर सारथक करियौ । भलांई आ बरसात व्हौ अर **भलांई** म्हैं इण आंमली रै हेटै आयौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ चास धव वरस चौईस में, राजा नांम विराजियौ । जग जेठ 'गजैसी' जनमियौ, थाळ **भलांई** वाजियौ ।—गु. रू. बं.
रू० भे०—भलेई, भलेही ।

भळांण, भळांमण, भळांवण, भळांवणी—देखो 'भोळावण' (रू. भे.)
उ०—१ नीर निवायौ बारौ आयौ, धोरा पाळी बांधजै । घणी **भलांवण** कांई देऊं, हेलौ म्हारौ सांमजै ।—चेतमांनखा
उ०—२ भूधर किसी **भळांवणी** नइ, विस्णु वाचा किम चलइ । गज गुडीय तुरीय पलांणि चाल्या, कुंअरि चालइं नइ माता मिळिई ए ।—रुकमणी मंगळ

भला—देखो 'भलां' (रू. भे.)

भलाई–सं० स्त्री०—१ भला होने का भाव या अवस्था, भलापन, अच्छापन ।
उ०—उण पछै भतीजा री **भलाई** रौ कांई पार है जकौ फगत चौथी पांती रौ ई सांनौ काढ़ियौ ।—फुलवाड़ी
२ उपकार ।
उ०—आप तौ म्हानै फगत औ आसीरवाद दौ के म्हे सुपंथ चालता नीं डिगां, नीं डरां, साच अर धरम माथै हमेसां डिढ़ रै'वां, कूड़, अधरम सूं मरियां ई पल्लौ नीं भेटां, लोभ अर मद रै गळाकर नीं नीसरां, कर सकां तौ किणी री **भलाई** इज करां ।—फुलवाड़ी
३ हित, लाभ ।
उ०—पण दरअसल आप रै सोचणा में जकी **भलाई** अर मंगळ री बात है, वा म्हांरै सोचणा में दुख अर कळेस री बात है ।
—फुलवाड़ी
रू० भे०—भलाही ।

भळाकौ–सं० पु० [अनु०] १ चमक-दमक ।
उ०—लोयणां पळाकां नग्गां साबळां **भळाका** लेती, सुढंगां ओयणां बाजां पाखरां सांनैत । चीर अंगां पीन अंगां नीसांण मेछ घड़ा चंगी, विधूसै पिलंगां चा अंगा 'चंद' रौ वांनैत ।
—राव देवीसिंघ सेखावत रौ गीत
२ देखो 'वळाकौ' (रू. भे.)
उ०—राजाजी इत्ती भुळावण देय धकै बधग्या । गळी गळी में **भळाका** देवता रह्या ।—फुलवाड़ी

भळाणौ, भळाबौ—देखो 'भोळाणौ, भोळाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ ताहरां वळै केसव जबाब कियौ रांमसिंघजी नूं, म्हें तो ढांढा नहीं जु आगै वै **भळाईजै** ।—द. वि.
उ०—२ आवै अंनदातार नूं, भारथ खळां भळाय । पितरेसुर जिण रा पड़ै, नरक बिचाळै न्याय ।—बां. दा.
उ०—३ 'गोयंद' यूं कहैं तरवार भुजा ग्रहि, अरि दळ मोड़ा आया । कोट तणी भुज लाज 'कला'रै, भाखर मूझ **भळाया** ।
—गोयंददास भायल रौ गीत

भळाणहार, हारौ (हारी), **भळाणियौ**—वि० ।

भळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भळाईजणौ, भळाईजबौ - कर्म वा० ।

भलापण, भलापणौ–सं० पु०—भलेमानस होने का भाव, सज्जनता, शराफत ।

भळाभळ–सं० पु० [अनु०] जगमगाहट, चमचमाहट ।

उ०—नग जड़ियोड़ा आभूषण **भळाभळ** करण लागा ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—भळाहळ, भाळाभळ, भाळाहळ ।

भळामण—देखो 'भोळावण' (रू. भे.)

उ०—१ सुसरौ सासु सवि मिळी, ढोला नै बहु प्रेम । निज पुत्री नी अति घणी, दै **भळामण** एम ।—ढो. मा.

भळायोड़ौ— देखो 'भोळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भळायोड़ी)

भळाव, भळावण—देखो 'भोळावण' (रू. भे.)

उ०—१ सचिव भणी निज राज्य **भळाव**, चाल्यौ चतुरंग सेन मिलाय । वांणारसी नगरी भणी नांम, न्यार प्रिया संयुक्त प्रकांम ।
— वि. कु.

उ०—२ एक कोई जोधार घावां पड़ियौ फौज नै **भळावण** देवै है ।—वी. स. टी.

भळावणौ, भळावबौ—देखो 'भोळाणौ, भोळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हाजरियौ रंभा नै बिना बारी ई टोळ'र लेजावतौ अर अबखा सूं अबखौ कांम **भळावतौ** ।—रातवासौ

उ०—२ दोनूं बोले 'देद' रा, 'सुंदर' वेस सकज्ज । सारां आयां दीससी, काज **भळावण** लज्ज ।—रा. रू.

उ०—३ भारथ ही कुरुखेत करन, गौ कत्थ रहावै । मेछा बांण **भळावि**, क्रीत कमधजां भळावै ।—गु. रू. बं.

भळावणहार, हारौ (हारी), भळावणियौ—वि० ।

भळावियोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भळावीजणौ, भळावीजबौ—कर्म वा० ।

भळावियोड़ौ—देखो 'भोळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भळावियोड़ी)

भळाहळ—देखो 'भळाभळ' (रू. भे.)

उ०—सांम्हे सिर खाग वही घमसांण, जिकौ अधचंद्र भळक्कत जांण । भवांनिय दीध सिंदूरज भाळ, **भळाहळ** जांणि त्रिती चख भाळ ।—सू. प्र.

भलाही—देखो 'भलाई' (रू. भे.)

भळियार–सं० पु०—हल के साथ बंधा हुआ खोखले बांस का उपकरण जो बीज बोने के काम आता है ।

भलिम, भलिमि–सं० स्त्री०—देखो 'भलम' ।

उ०—१ करण सुभ काज सुयण सिरताज, प्रवित चित लाज पहवि सिर पांण । **भलिम** भुजि भार अकलि अणपार, सगह सिरदार जुगिति गुण जांण ।— ल. पि.

उ०—२ निति प्रवीत [illegible] कीति [illegible], **भलिमि** नार सगिरि 'फांन' 'गोज' । [illegible] [illegible] [illegible], नर [illegible] कुंअर [illegible] ।— ल. पि.

भलीभांत, भलीभांति–क्रि० वि०—पूर्ण रूप से, अच्छी तरह से ।

उ०—बीली शूं **भलीभांत** जांणी कै आ [illegible] तो कहूं नींद रै मांय ई नी पांतरूं । [illegible]

भलु, भलूं—देखो 'भलौ' (रू. भे.)

उ०—१ भूप-तणा आगार भणी, [illegible] आनंदित [illegible] । 'रुलु-भलु' भाखी कहइ, निपुण न चूकु [illegible] ।— मा. कां. प्र.

उ०—२ 'माधव ! तुम्हे म [illegible],' [illegible] [illegible] । [illegible] करांविधि शुद्ध, [illegible] तुझ ।— मा. कां. प्र.

भळे—देखो 'भळै' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] जाय [illegible] लागा **भळे**, [illegible] [illegible] ।
परवाह [illegible] जासूं परी, [illegible] ।— [illegible]

उ०—२ रंग [illegible] दिन रात, [illegible] ।
भळे, डूबतां आर [illegible] । [illegible]

भले–अव्यय–प्रसंसा-सूचक शब्द ।

उ०—१ [illegible] ने [illegible] लागणी अथ गांगी, **भले** मात [illegible] [illegible] भांगी । गुणी म जिका आदि अनादि माई, [illegible] न गांमड़ा धांम आई ।— मे. म.

उ०—२ दया बिचार आंग रै दीधी, **भले** भले भाई भाई । बकरा कटत देख बगिणांगणी, उर में भिक्ष उपाई ।— मे. म.

भलेई—देखो 'भलाई' (रू. भे.)

उ०—नैणां न आवै नींद, भावै नहिं अन्न रै । **भलेई** [illegible], लाग गया मेरा मन रे ।—श्री हरिरामजी महाराज

भलेभले—देखो 'भिलेभिले' (रू. भे.)

भलेरउ, भलेरड़ौ, भलेरडौ, भलेरौ—देखो 'भलौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ पोलि कूटरी पाखण तणी, [illegible] मढ दीनी तणी । बारी पोलि **भलेरउ** भाव, कुंअर तणउ तलहटी [illegible] ।
—कां. दे. प्र.

उ०—२ वात इसी इम जि हुसि, मुनिवर ! गनि म हारि । भोगवि भोग **भलेरडा**, जे सरज्या संसारि ।—मा. कां. प्र.

उ०—३ कोड़े बारह काढमा, सात वरोड़े साध । निपट **भलेरा** पांच नव, यौ घटियौ अपराध ।—पी. ग्रं.

(स्त्री० भलेरी)

भळेवड़ौ–सं० पु०—बैल के सिर पर सींगों के इर्द-गिर्द बांधी जाने वाली रस्सी जिसमें नाथ की रस्सी जुड़ी रहती है ।

उ०—बळदां री सिणगार ई उण री अणूंतौ हौ । पिचरंगा सूत री नाथां अर पिचरंगा **भळेवड़ा**, रेसमी फूंदियां,-सूत री राहड़ियां,

मूंडा रै मोहरा अर माथै चांदी रा घूगरां वाळा छडा, गळा में रेसमी गळकोड़, नागौरी घूघरमाळ, सींगड़ा चौपड़ियोड़ा, अणियां माथै चांदी रा कळसिया, कटाव री झूलां, पगां रै गुळी रा डोरा, ढेरवाळ सुथराई सूं फूंदीपाड़ कतरियोड़ा ।—फुलवाडी

भलेही—देखो 'भलाई' (रू. भे.)

भळै—१ व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द जिसका उच्चारण आप से आप स्वतंत्रतापूर्वक होता है और जो किसी व्यंजन केउच्चारण में सहायक होता है।

२ देखो 'वळै' (रू. भे.)

उ०—१ खारी मीठे सूं सरस है, भळै वतेरा पांनड़ा। देस विदेस दुवायां वर्णं, खुसी डाकधर खांनड़ा ।—दसदेव

उ०—२ पछै हाथ जोड़तौ बोल्यौ—अबकी भळै माफ कर। कोई नवौ उपाव बता ।—फुलवाड़ी

भळैटिया-सं० पु० [ब. व.] अक्षरों का प्रारंभिक ज्ञान करते समय बच्चों द्वारा आडे-टेढ़े लिखे जाने वाले अक्षर।

भलोड़ौ—देखो 'भलौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—जादम आयौ जैत कर, जस खाट भलोड़ौ ।—वी. मा.

भलौ-सं० पु० [सं० भद्र, प्रा० भल्ल] (स्त्री० भली) १ भलाई, हित।

उ०—थें जिनावर वगत माथै जकौ भलौ कर सकौ, वौ मिनखां सूं कदेई बण नीं आवै ।—फुलवाड़ी

२ मंगल, कल्याण।

उ०—१ लक्खू एक ऊंडी सास खांचती बोली—चाटतां ई खाज हालणी बंद व्हेगी। भगवांन थांरौ भलौ करै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ परवार गयौ पिस्तावणौ, करूं न मूंवां कंथ रौ। म्हांरौ महादुःख मेट दै, भलौ हुवै भगवंत रौ ।—ऊ. का.

३ नफा, लाभ।

उ०—हूकै सूं निज हेत, भलौ भूंडी नह भाळै। मांहि वळै मां बाप, बारणै छांणा बाळै ।—ऊ. का.

वि०—१ अच्छा, बढ़िया, श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—१ बजियौ भलौ भरतपुर वालो,गाजै गजर धजर नभ गोम। पहिलां सिर साहब रौ पड़ियौ, भड़ ऊभै नंह दीधी भोम।

—बां. दा.

उ०—२ भलौ अदेबौ गाळ रा, सकळ अदेवां मांहि। दांम तणौ देबौ भलौ, देबा मैं दरसांहि ।—बां. दा.

उ०—३'जगड़' सुत'अमर' सुत नांम राखण जरु,सरू जस बोलिया सूर साखी। ढूक जाडा थंडां भूक खळ ढ़ाहि। रूक रजपूत वट भली राखी ।—जगौ सांदू

उ०—४ आपै ही जांणावसी, भलौ ज होसी वग्गि। कै मांगिण दरसावियां, कै ऊछजियां खग्गि। खागि ऊछाजियै खंडै, रिण अरि दळां। सूर प्रगटाहियै, सो सरां साबळां। अभंग 'जसवंत' जुध कांम कजि आवियौ। जुड़तां धवळ रौ भलौ जांणावियौ।

—हा. झा.

२ ठीक, उचित।

उ०—मन में फेर धणी री माळा, पकड़ै नंह जमदूत पलौ। मिळै नहीं बकणां सूं माया, भाया कम बोलणौ भलौ ।—बां. दा.

३ खूब, अधिक।

उ०—तेजसी रो भलौ बोलवाला रह्यौ तिण री साख।

—रावमालदे री बात

४ लाभदायक, श्रेयस्कर।

ज्यूं—कोई भली नौकरी मिळ जाय तौ आ छोड देवां।

५ परिस्थितियों आदि के विचार से उपयुक्त प.बने वाला।

६ रोग-रहित, निरोग।

ज्यूं—पैं'ला मैं बीमार थौ अबै हूं भलौ-चंगौ हूं।

७ शुद्ध हृदय और सात्विक प्रवृति वाला, सदाचारी, सज्जन।

८ महान्।

उ०—बडा तत तूझ लहै न विचार, पुरंदर दूझ न जांणै पार। भला मुनि आदि न जांणै भेद, बिरंचिय तूझ न जांणै वेद।

—ह. र.

क्रि० प्र०—कै'वाणौ, बणणौ, बाजणौ, होणौ।

९ आकार, रचना, प्रकार, रूप, गुण, स्वाद आदि के विचार से जो मन को भाता हो, रुचिकर।

ज्यूं—इणै मकान भलौ बणायौ।

उ०—अन धन जिण धर आसरौ, भला अरोगे भोग। पइसौ हुवै न पास में, लूलू करदे लोग ।—ऊ. का.

१० कल्याणकारी, मंगलकारी।

ज्यूं—भलौ लग्न, भलौ दिन।

उ०—राजि उठा हुंती भलै मुहरत खड़िया छै, पातिसाहजी सूं घणौ सुख हुयौ छै, भला सुकन हुया छै, राजि न पधारै।—द. वि.

११ प्रशंसनीय।

उ०—१ गुण जस गाजै सरग में, ऊनड़ लाखा भूप। मारांणी दाता भलौ, रांणी जायां रूप ।—बां. दा.

उ०—२ घणा मुंगल मारिया। सबळी वेढ़ हुई। वेढ़ जैसैजी जीती। साथ रावजी रौ घणौ कांम आयौ। रावळ हापौ निपट भलौ हुवौ ।—राव मालदे री बात

१२ प्रसन्न एवं संतुष्ट करने वाला, प्रिय या सन्तोषजनक।

ज्यूं—भलौ खेल, भली खबर।

उ०—प्रीतम रौ मुख पेखतां, हिवड़ौ होवै हेम। लूआं पण रोकै मिळण, भलौ निभावै नेम ।—लू

अव्यय—१ समर्थन या स्वीकृति प्राप्त करने हेतु जोर दिया जाने वाला शब्द। (बीकानेर)

ज्यूं—तूं उठै जाया भलौ।

रू० भे०—भल, भलइ, भलउ, भलु, भलूं, भले, भलेरौ, भलौस, भल्ल, भल्लौ।

अल्पा०—भलेरउ, भलेरड़ौ, भलोड़ौ, भल्लियौ, भलहेडौ।

भलौस—देखो 'भलौ' (रू. भे)

भल्ल—१ देखो 'भलौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ सेखो राव तिलोकसी, जोगाइत जगमल्ल । वैरागर रा दीकरा, एक-एक हूं भल्ल ।—नैणसी

उ०—२ ईंदा आहव आगळां, पड़िहारां पण-भल्ल । हरवल्लां आगे हुवा, चढ़े अलल्लां भल्ल ।—रा. रू.

उ०—३ गंगाजळ निरमळ जेम गंग, आइत्त धीर ओपित्त अंग । भारत्थि चडिय 'तेजसी' भल्ल, परवाडमल्ल परचक्कपल्ल ।
—र. ज. सी.

उ०—५ सेल घमेड़ांसल्ल पड़ै भल्लां प्रतिमल्लां । भल्लां भल्लां भणै ऊगतां भड़ां अमल्लां ।—ऊ. का.

उ०—६ रहै लोक अणपार, हुवै घूमरां मुहल्लां । आवै रहै अनेक, भड़ज भड़ भल्ला भल्लां ।—सू. प्र.

२ देखो 'भालौ' (रू. भे.)

उ०—खिन्ने बळ दक्खन को घन्ने घल घाय घेर, वन्ने गजसीह दळथंभन भुजांन सां । भल्ले'जसवंत' हिंद ढल्ल चल काबल पै, सल्ल कढि साह भिर भल्लन पठांन सां ।—जैतदांन बारहठ

भल्लक-सं० पु० [सं० भल्लकः] रीछ, भालू । (डि. को.)

भल्लकणौ, भल्लकबौ—देखो 'भळकणौ, भळबबौ' (रू. भे.)

भल्लकणहार, हारौ (हारी), भल्लकणियौ—वि० ।

भल्लकिओड़ौ, भल्लकियोड़ौ, भल्लक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भल्लकीजणौ, भल्लकीजबौ—भाव वा० ।

भल्लकियोड़ौ—देखो 'भळकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भल्लकियोड़ी)

भल्लियौ—देखो 'भलौ' (रू. भे.)

उ०—घोड़ा हींस न भल्लिया, पिय नींदड़ी निवारि । बैरी कै पांवणां, दळ-थंभ तूझ दुवारि ।—हा. झा.

भल्लौ—१ देखो 'भलौ' (रू. भे)

उ०—१ अै 'पाता' ताता अवसांणै, काज घणी वाजे कैवांणै । प्राभो 'भूपत' तणौ 'पिथल्लौ', भूप 'अजीत' तणौ व्रत भल्लौ ।
—रा. रू.

उ०—२ दुरजणसाल नांम ही ज्यां, दुरजण कूं सल्लै । भाटी वीर आखाड़े मैं, मुराड़े से भल्लै ।—रा. रू.
(स्त्री० भल्ली)

२ देखो 'भालौ' (रू. भे.)

उ०—निरुपम कुलबाली रूप नी चित्रसाली, अविकुल गुणवल्ली कांम भूपाल भल्ली । कइ हुइ सुररांणी मांनवी मइं न जांणी, अह व हुइ जि नारी तौ इ तु हुइ गंधारी ।—सालिसूरि

भवंग—देखो 'भुजंग' (रू. भे.)

उ०—१ पीव पीव मैं रटूं रात दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री । बिरह भवंग मेरी डसी है कळेजो, लहरि हळाहळ जागी री ।
—मीरां

उ०—२ जिनके मसतक मणि बसै, सो सकळ सिरोमणि अंग । जिनके मसतक मणि नहीं, ते विस भरे भवंग । —ह.पुं.वांणी

२ देखो 'भगंग' (रू. भे.)

भवंर—१ देखो 'भंवर' (रू. भे.)

२ देखो 'भ्रमर' (रू. भे.)

भव-सं० पु० [सं०] १ संसार, जगत ।

उ०—१ द्रुम सात बिभेदण क्रमगत छेदण, तै जग कह भव सिंधु तर । सुत स्रीकौसल्य तार अहिल्या, करुणानिध सो याद कर ।
—र. ज. प्र.

उ०—२ भव दरियाव अथंद, लहरां उठै लोभ री । मांहै ज्यां मतमंद, मनरा घणा डूबै मरै ।—बां. दा.

यौ०—भवचक्र, भवजळ, भवजळनिधि, भवभंजण, भवभय,भव भयहरण, भवमोचन ।

२ महादेव, शिव । (डि. को. ह नां. मा)

उ०—१ राघव रत-रत हरख कर, मट मट अघ दळ महत । जनम मरण भय हरख जन, कज भव हर रिख कहत ।—र. ज. प्र.

उ०—विहंगै भणी न चीनी विसनर । भव ही तणी न आभौ भागि । भड़ 'भमळोत' तणौ खग धारां, लिगि लिगि गयौ अंगा रै लागि ।—ईसरदास बारहठ

यौ०—भवभांमिनी ।

३ जन्म । (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ जोबन राखौ चोर ज्युं, पगी पगी स्वांमी लागुं हु पाय । ईणी भवि उलिगांणौ हुवौ, आवतद-भव होई काळो हो माग ।
—बी. दे.

उ०—२ मावळ नहि मांगै काबल कांगै, मावळ जेर भुगंदा है । जी फरक न जांणै अरक न आंणै, भव भव नरक भुगंदा है ।
—ऊ. का.

४ यमराज । (अ. म.)

५ स्वर्ग ।

६ ग्यारह, एकादश * ।

उ०—भव तेरह मत ओण, कोय उप दोहा भाखै । अख रौळा बधु ऊभै, त्रिविध आनंद बधु आखै । दस तेरहे मत्त रुद्र, रुद्र रुद्रह नव आवै । राय बिधु तिण नांम रुद्र दस अंन मत गावै ।—र. ज. प्र.

७ जीवन ।

उ०—१ कहितां कांम-कचोलडी, दुख-दाधा विरुथांय । भव माहरु आलिगयुः, स्वांमी ! सिरजी कांई ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ ताहरां लोकां जांइनै तीडी री मां नुं समझाई, 'हमकै दावड़ी मेल्हीयां ही ज वणै । बेटी रा भव बोह नां ।—भूमखो

९ कारण, हेतु ।

१० कामदेव ।
११ श्रीरामचन्द्र ।
१२ बादल, मेघ ।
१३ मांस ।
१४ कल्याण ।
१५ कुशल, क्षेम ।
क्रि० वि०—८ कभी ।

उ०—वह दर्गौ सूं खांन बहादर, आयौ गढ जोधांणौ ऊपर । खोले पंजौ कोल दिखायौ, भव न मिटै तुमारौ भायौ ।—रा. रू.

१६ देखो 'भय' (रू. भे.)

उ०—साह आपरणै घर री वांणियौ छै । ईयै नूं ले आवतां रौ भव कोई नहीं ।—झूमखौ

रू० भे०—भवि, भवी, भव्व, भह, भुव ।

अल्पा०—भवौ ।

भवक—देखो 'भविक' (रू. भे.)

भवकेतु—सं० पु० [यौ०] वृत्संहिता के अनुसार कभी २ पूर्व में दिखाई देने वाला एक पुच्छल तारा ।

वि० वि०—ऐसी मान्यता है कि यह तारा जितने मुहूर्त तक दिखाई देता है उतने समय तक काल या महामारी का प्रकोप रहता है ।

भवकौ—सं० पु० [अनु०] १ धड़कन ।

उ०—जंवाई—सासुड़ी में रुण झुण बैल जुताद्यूं येक तेरी लाडी ले चाल्यौ । सासू—जंवाईड़ा मेरी छाती भवका मारे रे क मेरी लाडौ ना चले ।—लो. गी.

२ देखो 'भभकौ' (रू. भे.)

भवड़—सं० स्त्री०—देखो 'बहू' (मह., रू. भे.)

उ०—अड़थड़ मिरड भिरड़ झड़ अवभड़, नवड़ भवड़ वड़ निवड़ नड़ । आवट कूटि तूटि कसरणांवटि, छूटि जड़ावटि फूटि छड़ ।
—कल्यांणदास राव

भवण—१ देखो 'भंवळ' (रू. भे.)

२ देखो 'भवन' (रू. भे.)

उ०—१ उण भवण वसण राजा 'अजन' आप सुखासण ऊतरी । लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी ।—रा. रू.

उ०—दसरथ त्रप भवण हुआ रघुनंदण, कवसल्या उर दुस्ट निकंदण । रूप चतुरभुज प्रकटत रीधौ, दरसण निज माता नैं दीधौ ।
—र. रू.

उ०—३ निज गउखे चढि चढि वाट निहाळइ, महुरत पिण आयौ तिल मात । तीजइ भवण वांधियउ तोरण, गिर मंडप छायउ वडगात ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ उतपती भवण इग्यारमै, आगम कंध अनम्मियौ । 'गज-बंध' इता बळिवंत ग्रह, ले जस राति जनम्मियौ ।—गु. रू. बं.

उ०—५ विभ्रम विमोह चित, सपत तुरंग तांणियं सविता । वासर विसाळ लहियं, चक-वांगौ मंगळ भवण ।—गु. रू. बं.

४ देखो 'भूंगण' (रू. भे.)

५ देखो 'भ्रमण' (रू. भे.)

उ०—कसम से घाट अहि कोम कंध, भोग पाट लगो भवण । चढ़ि रीस जांणि रांवण चढ़े, रांम हूंत घमचक करण ।—सू. प्र.

भवणपति, भवणवई, भवणवइदेव—देखो 'भवनपति' (रू. भे.)

उ०—१ तिण राव त्रिणेही भवणपति सिद्ध 'लल्ल' इम उच्चरै । इत्थ चवत्थौ राव हुवै तौ दिव जळतौ कर धरै ।—नैणसी

उ०—२ भवणवई 'व्यन्तर' 'जोतिखि' ले लाल, पहिलौ दूजौ देवलोक हो भविक जन । आगत कही दोनां तणी रे लाल, गत पांचां नौ थोक हो भविक जन ।—जयवांणी

उ०—३ भवणवइदेव असंख्यात देवी संख्या बहु, प्रथम नारकि असंखेय गुणीया सबहु । बोल बतीस में खेचर पचेंद्रिया, तिरिय असंख्यात गुणा संख्य एह नी त्रिया ।—ध. व. ग्रं.

भवणौ, भवबौ—क्रि० अ० [सं० भू] १ होना ।

उ०—वधे भक्ति स्रद्धा, भवत नर स्परधा अति वधै । बसे वौ जिग्यासा, अगम गम आसा व्रत्ति वधै ।—ऊ. का.

२ देखो 'भंवणौ, भंवबौ' (रू. भे.)

भवणहार, हारौ (हारी). भवणियौ—वि० ।

भवाड़णौ, भवाड़बौ, भवाणौ, भवाबौ, भवावणौ, भवावबौ
—प्रे० रू० ।

भविप्रोड़ौ, भवियोड़ौ, भव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भवीजणौ, भवीजबौ—भाव वा० ।

भवतव्यता—देखो 'भवितव्यता' (रू. भे.)

भवतव्य—देखो 'भवितव्य' (रू. भे.)

उ०—पांचूंपुत पंड के, पटकि बैठे हिम्मत कौ, चूकि गी छभा कौ, भवतव्य बस चेतोई । द्रोपदी की लाज, व्रजराज जौ न राखै तौ, गुलांम दुसासन तौ, कलांम छील लेतोई ।—र. ज. प्र.

उ०—२ थये सचेतन महुरत, बकै झकै विरहाकुळ । हा भवतव्य अतीठ, असुर सिर मौड़ झड़े तुळ ।—मा. वचनिका

भवतव्यता—सं० स्त्री०—देखो 'भवितव्यता' (रू. भे.)

उ०—१ वांनुल जिम भवतव्यता जी, जिण जिण दिसे नु जाय । परवस मन मांणस तणोजी, त्रण जिम पूठे धाय रे ।—वृ. हस्त

उ०—२ जे भावित भवतव्यता रे हां, न चलै तास उपाय । जेहवौ वावै रूंखड़ौ रे हां, तेहवा हीज फल थाय ।—वि. कु.

भवतात—सं० पु० [सं० भवतातः] सूर्य, आदित्य । (नां. मा.)

भवतारक, भवतारण, भवतारन—सं० पु० [सं० भवतारक, भवतारण]

१ ईश्वर, परमात्मा । (नां. मा., ह. नां. मा.)

२ श्रीकृष्ण । (अ. मा.)

भवती-सं० पु०—एक प्रकार का जहरीला बारग। (अ. ग.)

भवधरण-वि० यौ० [भव+धरण] संसार को धारण करने वाला,
सं० पु०—ईश्वर।

भवनंतर-स० पु० [भव+अनन्तर] जन्मान्तर।
रू० भे०—भवांतर।

भवन-सं० पु० [सं०] १ गृह, मकान। (ह. नां. मा.)
उ०—लालच री दौड़ै लहर, भवन बियां धन भाळ। बैठी थावर बारमौं, कांवै आंण कराळ।—बां. दा.
२ महल, प्रासाद।
उ०—किण संग खेलूं होली, पिया तज गये हैं अकेली। मांणिक मोती सब हम छोडे, गळ में पहनी सेली। भोजन भवन भलो नहिं लागै, पिया कारण भई गैली, मोहे दूरी क्यूं मेली।—मीरां
३ देवालय, मंदिर।
४ संसार, जगत।
५ खंड, टुकड़ा।
६ छप्पय छंद का एक भेद।
७ ज्योतिष के अनुसार जन्म कुण्डली के १२ लग्नों में से एक।
उ०—दसरथ 'अजन' घरे सुखदाई, रूप 'अभौ' प्रगट्यौ रघुराई। दाखै विप्र नवै ग्रह देखो, परम गुणां प्रत भवन संपेखौ।—रा. रू.
रू० भे०—भवरण, भमण, भमणि, भवण, भुवण, भौयण।
८ देखो 'भुवन' (रू. भे.)
उ०—१ तीन भवन मां ताहरौ रे, झलकइ निरमल तेज। सूरति देखी ताहरी वाल्हा, हसता आवै हेज।—वि. कु.
उ०—२ परब्रह्म सतगुरु प्रणम्य, पुन्य सब संत नमौ। हरिरांम सुर भवन में या पद समौ न को।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

भवनपति-सं० पु० [सं० भवन+पति] १ घर का मालिक, गृहपति।
२ राशि चक्र में किसी ग्रह का स्वामी।
३ जैनियों के दस देवताओं का एक वर्ग या समूह जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं:—१ असुरकुमार। २ नागकुमार। ३ सुवर्ण (सुपर्ण) कुमार। ४ विद्युतकुमार। ५ अग्निकुमार। ६ द्वीपकुमार। ७ उदधिकुमार। ८ दिशाकुमार। ९ वायुकुमार। १० स्तनितकुमार।
उ०—'भवनपति' 'व्यंतर' ने 'जोतसी' भेद विमांणिक पावे। सुर वर ते मिलने सगला, नांम 'निवांणू' आवे।—जयवांणी
४ ईश्वर।
रू० भे०—भवणपति, भवणवइ।

भवनार-सं० स्त्री० [सं० भव+नारि] १ पार्वति।
२ वैश्या।

भवनेस-सं० पु० [सं० भवन+ईश] भवन का स्वामी, मालिक।

भवपित-सं० पु० [सं० भवपिता] ब्रह्मा। (नां. मा)

भवपाळी-सं० स्त्री० [सं० भव+पाली] संसार का पालन करने वाली, शुभङ्करी देवी। (डिं.को.)

भवप्रांण-सं० पु० [सं० भवप्राण] पार्वती। (अ. मा.)

भवबंधन-सं० पु० [सं० भव+बन्धन] १ सांसारिक कष्ट एवं दुख।
२ जन्म-मरण का भय।

भवबुद्ध-वि० [सं० भव+बुद्ध] संसार को जाग्रत या प्रबोध करने वाला।
उ०—नमो श्रम-संत [illegible], नमो [illegible] दीनदयाळ। नमो भव-बुद्ध भए भगवांन, नमो [illegible] जीव दया उर म्यांन।
—ऊ. र.

भवभंजण, भवभंजन-वि० [सं० भव+भंजन] १ ईश्वर।
२ संसार का नाश करने वाला, काल, यमराज।

भव-भय-सं० पु० [सं० भव+भय] संसार में बार-बार जन्म लेने व मरने का भय।

भव-भय-हरण-सं० पु० [सं० भव+भय+हरण] १ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)
२ सांसारिक भय अर्थात् जन्म-मरण का भय मिटाने वाला, परमात्मा, ईश्वर।

भव-भामिनी-सं० स्त्री० [सं० भव+भामिनी] १ पार्वती।
२ वैश्या।

भवमोचक, भवमोचन-वि० [सं० भव+मोचक] सांसारिक दुखों से छुटकारा दिलाने वाला।
सं० पु०—परमात्मा, ईश्वर।

भवर—१ देखो 'भंवर' (रू. भे.)
उ०—२ म्हारै मन वसिगौ भवर, उर रसिगौ रजवार। मो मुगधी रो साहिबौ, नीला को असवार।—पनां.
२ देखो 'भ्रमर' (रू. भे.)
उ०—१ देखण नूं न्हवण ईस ताइ दीसइ, जाळानळ भण काढी ज्याग। मुख ताइ कंवळ गळत सर मांहि, लोचन भवर रह्या तसु लाग।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ मेटिया कइक पीळा पमंग, मोनैर कइक धूमर सुरंग। अणथाग वेग केई भवर अंग, रेसमी पोत निरमळी रंग।—पे. रू.

भवरगुंजार—देखो 'भंवरगुंजार' (रू. भे.)

भवरजाळ—देखो 'भंवरजाळ' (रू. भे.) (शा. हो.)

भवरतिलक—देखो 'भंवरतिलक' (रू. भे.)
उ०—पहिली ही सीह वळे पाखरियउ, वगता वर आभरण वखांण। भमरां विचइ बांधियउ भांमण, भवरतिलक ताइ ऊगउ भांण।—महादेव पारवती री वेलि

भवरभीख—देखो 'भंवरभीख' (रू. भे.)

भवराई—देखो 'भंवराई' (रू. भे.)

भवराभाटी—देखो 'भंवरामाटी' (रू. भे.)

भवराळौ—देखो 'भंवराळौ' (रू. भे.)

भवरियौ—१ देखो 'भंवर' (अल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू. भे.)

भवळ—देखो 'भंवळ' (रू. भे.)
उ०—ग्रीघ हळवळ संमळ गळळ पळडळ गरां, त्रिमळ सळ वळौ-वळ कळळ हूंकळ तुरां। कळ सवळ हुवै **भवळ** सांवळ करां, इळपति क्रोध झळ किसै दळ ऊपरां।—महादान मेहड़ू

भवलील–सं० पु०—शिव, महादेव।

भव-वांमा–सं० स्त्री० [भव + वामा] १ पार्वती।
२ वैश्या।

भवविलास–सं० पु० [भव+विलास] १ सांसारिक सुख।
२ मायाजाल।

भवस–सं० पु०—यवन, मुसलमान।
उ०—१ 'मुहकम' चाळा मंडिया, उर ज्वाळा अप्रमांण। बस 'अरजण' हूये **भवस**, अरि कर लग्गौ आंण।—रा. रू.
उ०—२ अर उग्गा आरांण कंठीरव कुंजरां, पूजै कुण पीठांण प्रपोतां पुंज रां। दरियावां दा दौर झिलै नह दूबळां, भग्गा **भवस** सभीत भिड़ता भूबळां।—किसोरदांन बारहठ
[सं० भविष्यत्] २ भावी, होनहार।
उ०—१ अस अप्रबल **भवस** कळप तरु आयस, जीवन गयौ समेत जड़। उडिया अनड़पंख जिम ईहग, वित कज सेवण बिया बड़।
—रिवदांन मेहड़ू
उ०—२ वडाई करै नर बोल में बोलियौ, **भवस** विण किणी सूं देह भागै। लेख री कटारी प्रांण झड़पै लियौ, लोह री कटारी पछै लागै।—ओपौ आढौ
३ देखो 'भविस्य' (रू. भे.)
रू० भे०—भवसि, भवस्स, भवेस।

भवसागर, भवसायर–सं० पु० [सं० भव+सागर] संसार रूपी समुद्र।
उ०—१ जळाबोळ कळजुग्ग, महा दुतर **भवसागर**। मोह लोभ जळ मांझि, हुवा गरकाब किता नर।—जगौ खिड़ियौ
उ०—२ यह **भवसागर** अगम भरौ है, काढ लेहु गहि बैंयां। मीरां के प्रभू गिरधरनागर, तुम ही मोरे सैंयां।—मीरां

भवसिंधु–सं० पु० [सं० भव + सिंधु] संसार रूपी समुद्र।
उ०—पूरण-पुनीत स्रीरांम पद, विघन हरण त्रैलोक्य बर। पर-णांम सुकवि ईसर पुर्णं, तंत नांम **भव-सिंधु** तर।—ह. र.

भवसि—१ देखो 'भवस' (रू. भे.)
उ०—**भवसि** घड़ा बळि भाळ, वांमण ज्यूं 'वीठल' वधै। उतवंग जाइ ब्रह्मंडि अड़ै, पग सातमै पयाळि।—र. वचनिका
२ देखो 'भविस्य' (रू. भे.)

भवसुखा–सं० स्त्री०—नदी। (अ. मा.)

भवस्त—देखो 'भविस्य' (रू. भे.)
उ०—अकालग्यांनदरसी निज अग कूं पहिचांनै। भूत **भवस्त** वरत-मांन जुगति सौं जांणै।—सू. प्र.

भवस्स—१ देखो 'भवस' (रू. भे.)
उ०—खीची डहियां खाग 'गुमन' अरि गंजणी। राव बहादुर रूप **भवस्सां** भंजणौ।—किसोरदांन बारहठ
२ देखो 'भविस्य' (रू. भे.)

भवांणी—देखो 'भवांनी' (रू. भे.)

भवांतर—देखो 'भवनंतर' (रू. भे.)

भवांन–सर्व [सं० भवत्] आप।
उ०—आभा जगत उदार, भारत वरख **भवांन** भुज। आतम सम आधार, प्रथवी रांण प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ

भवांनी–सं० स्त्री० [सं० भवानी] १ शिवजी की स्त्री पार्वती।
(ह. नां. मा.)
२ दुर्गा, शक्ति।
उ०—लखीजै असी भांति आकास लागौ, **भवांनी** खड़ा पांण लीधां अभागो। हमेसा रहे सत्रु रौ सीस हाथै, मुखे रत्त तासळे छत्र माथै।—मे. म.
३ एक प्रकार की सफेद किन्तु पंखों में कुछ २ श्यामता वाली चिड़िया जिसके शकुन लिये जाते हैं।
४ उल्लू जैसा किन्तु आकार में छोटा एक पक्षी जिसके रात्रि में शकुन लिये जाते हैं।
५ संगीत में बिलाबल ठाठ की एक रागिनी।
वि०—महान्।
उ०—कंवर रा मूंठा सूं तौ कीं बोल नीं निकळिया, जांणै वौ बोलणौ भूल ई गयौ व्है। आज तौ आ **भवांनी** सांन गमी पण गमी।
—फुलवाड़ी
रू० भे०—भवांणी।

भवांनीरथ–सं० पु० [सं० भवानी+रथ] दुर्गा देवी का वाहन, सिंह।

भवा–सं० स्त्री०—पार्वती। (अ. मा., डिं. को.)

भवाइया–सं० स्त्री०—एक जाति विशेष।

भवाईयौ–सं० पु०—भवाइया जाति का व्यक्ति।
उ०—इतर-सिउं आवी रहिउ,, भांड **भवाईया** संगि। धूरि धंतूरु सेवतु, खातु भूकी भ्रंगि।—मा. कां. प्र.

भवाड़णौ, भवाड़बौ—देखो 'भवाणौ, भवाबौ' (रू. भे.)
उ०—फरहरता कपि फाल, अस दै तैं असवारियां। भारांणी भुर-जाळ, भुज रौ भलौ **भवाड़ियौ**।—बां. दा.
भवाड़णहार, हारौ (हारी), भवाड़णियौ—वि०।
भवाड़िओड़ौ, भवाड़ियोड़ौ, भवाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भवाड़ीजणौ, भवाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भवाड़ियोड़ौ—देखो 'भवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भवाड़ियोड़ी)

भवाणौ, भवाबौ–क्रि० स० [सं० भव] १ करना।
२ देखो 'भंवाणौ, भंवाबौ' (रू. भे.)
भवाणहार, हारौ (हारी), **भवाणियौ**—वि०।
भवायोड़ौ—भू० का० कृ०।
भवाईजणौ, भवाईजबौ—कर्म वा०।
भवाड़णौ, भवाड़बौ, भवावणौ, भवावबौ—रू० भे०।

भावपत–सं० पु० [सं० भवा+पति] शिव, महादेव।

भवाब्धि–सं० पु० [स० भव+अब्धि] संसार रूपी सागर, जगत।
उ०—**भवाब्धि** नाथ भावना, बिभू नहीं बिकारसी। मदीय में न मूढता, त्वदीय है न तारसी।—ऊ. का.

भवायोड़ौ–भू० का० कृ० [सं० भव] १ किया हुआ.
२ देखो 'भंवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भवायोड़ी)

भवाळ–सं० पु० [सं० भूपाल] राजा।

भवावणौ—देखो 'भयावणौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भवावणी)

भवावणौ, भवावबौ—१ देखो 'भवाणौ, भवाबौ' (रू. भे.)
३ देखो 'भंवाणौ, भंवाबौ' (रू. भे.)
भवावणहार, हारौ (हारी), **भवाणणियौ**—वि०।
भवाविश्रोड़ौ, भवावियोड़ौ, भवाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भवावीजणौ, भवावीजबौ—कर्म वा०।

भवावियोड़ौ—१ देखो 'भवायोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भंवायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भवावियोड़ी)

भवि—१ भव्यजीव, मुक्तिगामी-प्राणी। (जैन)
क्रि० वि०—१ फिर, पुनः।
उ०—पूरण प्रसिध प्रघट प्रज-पाळण, दळपति दियण दोखियां दाव। **भवि** कोई पड़िस त भलौ भाखिस्यां, रावळ 'जांम' सरीखौ राव।—ईसरदास बारहठ
२ देखो 'भय' (रू. भे.)
उ०—त्रिय थकित महल चढ़तां तिकै, तिकै चढ़ै गिर तरवरां। **भवि** 'सूरतणै' मछरीक भड़, एम हुवा थरहर उरां।—सू. प्र.
३ देखो 'भव' (रू. भे.)
उ०—१ इणि **भवि** मारू कांमिणी, अन-पांणी इणि सथ्थ। पूगळ नूं सहु को वळउ, न करउ म्हांकी कथ्थ।—ढो. मा.
उ०—२ जो महि असह मेछ कुळ जागै, **भवि** भवि जिण कुळ सूं भय भागै। ततपर धरम सरम प्रज तारण, सुरां सिहायक असुर संघारण।—रा. रू.

३ देखो 'भावी' (रू. भे.)
रू० भे०—भवी।

भविअ—देखो 'भविक' (रू. भे.)

भविक–वि० [सं०] १ संसार संबंधी, संसार का।
२ सिद्धि प्राप्त होने के योग्य।
उ०—जलिद जांगलि जादवु सांभलउ। **भविक** केलिय आस भलउ वलउ।—जयसेखर सूरि
रू० भे०—भवक, भविअ, भविय, भवीक।

भविक-जन–सं० पु० [सं०] १ मोक्ष प्राप्त करने योग्य जीव।
उ०—साधु साध्वी स्रावक स्राविका, आगमि वइठा जिनगी शिक्षा। स्रीगुरु दीइ उपदेस ज सार, सांभलु तमो **भविक**! विचार।
नलदवदंती रास
२ सांसारिक प्राणी।
उ०—पहिलूं मगल भणि भय ए, सिद्धा अरिहंत के। **भविक** जीव प्रतिबोधता ए, केवल ग्यान अनंत के।—रा. कृ.
रू० भे०—भविअजण, भवियण।

भवितव्य–वि० [सं०] १ होने वाला, भावी, होनहार।
सं० पु० (न) [सं० भवितव्यं] २ जो पारब्धभावी है।
रू० भे०—भवतव्य, हुतब, होतब, होतव्य।

भवितव्यता–सं० स्त्री० [सं०] १ होनी, भावी, होनहार।
२ प्रारब्ध, भाग्य, किस्मत।
रू० भे०—भवतव्वता, भवतव्यता, भावत, हुतव्वता, होतव्वता, होतव्यता।

भविय [सं०] १ देखो 'भव्य' (रू. भे.)
[सं०] २ देखो 'भविक' (रू. भे.)
उ०—१ विरलउ पुण्यवंत कोइ साहु, वेटारिहिं तणउ समदाय। धरमवंत विनयवंत होइ, **भविय** कुटुंबउ भणीइं सोइ।—गरितग
उ०—२ पंचेंद्रिय भव मनुस्यह तणु, आरय देस उत्तम कुल गणु। साधु तणउ योग दोहिलु होइ, ग्यांन द्रसिट जोइ **भविया** लोइ।
नलदवदंती रास

भवियजण, भवियण—देखो 'भविकजन' (रू. भे.)
उ०—१ सिरिवंत साहि सुतन्न, माता सिरिया देवी नंदणो। वद्-राणि लहु वय लिद्ध संजम, **भवियजण** आणंदणो।—रा. कु.
उ०—२ हांरे मोरा लाल आगल चढ़तां, अतिभाली, नीली थयली पव। कुंडे कुंडे पादुका, वंदे भवियण सरव मोरा लाल।
—वि. कु.
२—देखो 'भव्य' (५) (रू. भे.)

भविस्य–वि० [सं० भविष्य] १ वर्तमान काल के उपरान्त आने वाला।
२ प्रत्यासन्न, निकट।
सं० पु० [सं० भविष्यं] आने वाला काल या समय।

भविस्यत–सं० पु०[सं० भविष्यत्] होने वाला या आने वाला समय।
उ०—नहिं बहुत बोलबौ सुभट नींत, प्रत्यूह **भविस्यत** ह्वै प्रतीत। यह दुरगदास अक्खत अडोळ, बळि विपद डिगहिं नहिं डगहिं बोल।
—ऊ. का.
रू० भे०—भवस, भवसि, भवस्त, भवस्स, भविस्स।

भविस्यवांणी–सं० स्त्री० [सं० भविष्यत्+वाणी] आगे के लिए की जाने वाली बात या घोषणा।

भवियोड़ौ–भू० का० कृ० हुवा हुआ.
२ देखो 'भंवियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भवियोड़ी)

भविस्स—देखो 'भविस्य' (रू. भे.)

भवी—१ देखो 'भव' (रू. भे.) (अ. मा.)
२ देखो 'भवि' (रू. भे.)

भवीक—१ देखो 'भविक' (रू. भे.)
२ देखो 'भव्य' (५) (रू. भे.)

भवेस–सं० पु० [सं० भव+ईश] १ संसार का स्वामी, विष्णु।
२ शिव, महादेव। (अ. मा.)
३ देखो 'भवस' (रू. भे.)
उ०—दुय चत्रमास बादियो दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस। पूगौ, नहीं चाकरी पकड़ी, दीधौ नहीं भड़ैठां देस।—बां. दा.

भवे–क्रि० वि० [सं० भव] कभी भी, हरगिज।
उ०—१ मुख सूं दाखै म्यारजी, हसनै असन हवेह। मे तौ तोनै मालकी, भूलां नहीं **भवेह**।—मयारांम दरजी री बात
उ०—२ गूजरी-मां बिचाळै ई आखती पड़नै जवाब दियौ—थनै किणी बात रौ **भवै** ई ओळबौ नीं आवैला।—फुलवाड़ी

भवोदधि–सं० पु० [सं० भव+उदधि] संसार-सागर।
उ०—जनम मरण रा जोड़ सूं, बिहनौ किरपानाथ। **भवोदधि** मोने तारनै, दीजै सिवपुर आथ।—जयवांणी

भवोभव–सं० पु० [सं० भव] जन्म-जन्मान्तर।

भवौ—देखो 'भव' (अल्पा. रू. भे.)

भव्य–सं० पु० [सं.] १ कुशल, क्षेम। (अ. मा., ह. नां. मा.)
२ शिव, महादेव।
३ रैवतमन्वतर का एक देवगण, जिसमें निम्न लिखित आठ देव शामिल थे:-परिमति, प्रयनिश्चय, मति, मन, विचेतस्, विजय सुजय एवं स्योद।
४ चाक्षुष् मन्वंतर का एक देव।
५ उत्तानपादवंशीय एक राजा, जो ध्रुव राजा का पुत्र था। इसकी माता का नाम भूमि था।
६ दक्षसावर्णि मन्वंतर के सप्तऋषियों में से एक।
वि०—१ सुन्दर, मनोहर।
उ०—धूंधा धोरां नांव, कठै लाका लामोड़ा। गाळा आडावळा, गगण चुंबी डीगोड़ा। टोकी **भव्य** सोपांन, सांतसम सीतळ टोळी। ढिस्सा दड़ा पड़ाळ, लुभांणी खितिज खोळी।—दसदेव
२ शुभ, मंगलकारी।
३ योग्य, लायक।
४ भविष्य में होने वाला, या आने वाला।
५ मोक्ष योग्य जीव।
उ०—नीली भुइ भली संपजइ, **भव्य** जीवना अभिग्रह पलइ। सरोवर तु राजहंस ऊमटइ पगि, पगि जल निरमल उमटइ।
—नळदमयंती रास
उ०—२ केवली थरम इस्यौ कह्यौ, आवे **भव्य** नै दाय। त्रिविध त्रिविध धरम करणौ, माहणौ जीव छ-काय।—जयवांणी

भव्यक—देखो 'भव्य' (१) (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

भव्या–सं० स्त्री० [सं०] उमा, पार्वति।

भव्व—देखो 'भव' (रू. भे.)
उ०—असमेध कोट कीधां इसा, **भव्व** जनम साफळ भया। जग कही कथा वेदे 'जगा', गया गयां प्र (प्रे) ता गया।
—जग्गौ खिड़ियौ

भसंधि–सं० स्त्री० [सं० भ+संधि] ज्योतिष में अश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्रों के चौथे चरण के बाद के नक्षत्रों की संधि।

भस–सं० स्त्री०—१ किसी पदार्थ की असह्य गंध।
२ देखो 'भस्म' (रू. भे.)

भसट—देखो 'भ्रस्ट' (रू. भे.)

भसण—देखो 'भुसण' (रू. भे.)

भसणउ—देखो 'भुसणौ' (रू. भे.)
उ०—समुद्र खारउ, बाउल कंटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ, जन बोलणउ, सुणह **भसणउ**, ससउ नासणउ, राणउ लेणउ, स्त्री स्वभाव लाडणउ।—व. स.

भसभ—देखो 'भस्म' (रू. भे.)
उ०—रंग केइक रातड़ा, **भसम** धूंहर भमराळा। जटाजूट ऊजळा, केइक भूरा केइ काळा।—सू. प्र.
उ०—२ जवन पेख सिर जोर, दियौ छत्रपती छिपाए। **भसम** जांण भारियौ, अगन कण जतन उपाए।—रा. रू.

भसम्म—देखो 'भस्म' (रू. भे.)
उ०—३ ढाढी, एक संदेसड़उ, प्रीतम कहिया जाइ। सा धण बळि कुइला भई, **भसम** ढंढोळिसि आइ।—ढो. मा.
उ०—सुत विनता तन सोय, जास तजै जणणी जतन। तू राखै मभ तोय, **भसम** हाड भागीरथी।—बां दा.

भसमागि–सं० स्त्री० [सं० भस्म+अगि] भस्म करने वाली अग्नि, तीव्र ज्वाला।

उ०—तड़ित बळागि अंबनागि **भसमागि** तिम, जागि प्रैलाग री आगि जहियौ । खंध री बहै पण कळस धी आगि सांति, कमध री खागि, बरजागि कहियौ ।—पदमसिंघ राठोड़ री गीत

भसमासुर—देखो 'भस्मासुर' (रू. भे)

उ०—**भसमासुर** रा विरोध मांहे इंद्रादिक देवता बाढ़ां । इतरा मांहे तौरण रा आखा । **गुमांन** रौ गाडौ । चवदै भवण मालिम । अंगजियां गंजण ।—मा. वचनिका

भसमी—देखो 'भस्म' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ उणी री माउ तौ जोगण हुई, अै समीचार वीरग गुण नै वैराग आयौ । जद घर-वार छोड **भसमी** पै'री ।

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ जंतु भखै अथवा जळै, कै पड़ियौ रह जाय । किज भिसटा **भसमी** क्रमी, इण नर तन सूं थाय ।—बां. दा.

भसमीय—वि० [सं० भस्म] १ भस्म या राख के रंग का ।

सं० पु०—भस्म के रंग का घोड़ा जो अशुभ माना जाना है ।

उ०—संदली भरड़ाज **भसमीय** चित्रस, नील पीला गुरड़ा नुकरी । मकड़ाज कील्यांणीयैपंच, समंदीयै चीन वड़ा कगड़ा चहीगै ।

—किसनौ धधवाड़ियौ

भसम्मी—देखो 'भस्म' (रू. भे.)

उ०—पिनाकी रीझियौ 'कूंपौ' सताबी विरोध पूजा, बगरसै निरभै धाम काटै पाप बंध । के'वांण **भसम्मी** कड़ा हूंत कीधा प्रळैकारां, कैळास ले गयौ सारां पूजारां कमंध । ऊमेद सांदू

भसर—सं० पु०—भौंरा ।

उ०—घरहरत मदभर धार, वप सघण जिम विसतार । बहु लंगर घर चख बोळ, क्रीडंत **भसर** कपोळ ।—सू प्र.

भसौड—सं० स्त्री० [दे०] कमल की नाल जिसकी तरकारी बनती है ।

भसुंड, भभूंड—सं० पु० [सं० भृश्+शुण्ड] हाथी, गज ।

वि० [दे०] राख या धूल से भरा हुआ ।

भसूंडरा—सं० [दे०] सोलंकी वंश की एक शाखा ।

भस्त—देखो 'बहिस्त' (रू. भे.)

उ०—दिइ दांन निमगइ करइं, साहिब्ब सेव सच्ची करइ । कुरांण न्याइं पेखि चल्लइ, सो मुसलमांन **भस्त** जि वरइ ।—व. स.

भस्म—सं० स्त्री०—१ लकड़ी, कोयला आदि के जलसे पर बची हुई राख ।

क्रि० प्र०—होणी, करणी ।

२ चिता की राख जो पुराणानुसार शिवजी अपने शरीर पर लगाते हैं तथा जो गंगा में बहाने हेतु ले जाई जाती है ।

क्रि० प्र०—रमाणी, लगाणी ।

३ धूपदान, यज्ञ, हवनादि की राख जिसे पवित्र मानकर भक्त लोग मस्तक तथा अन्य अंगों पर भी लगाते हैं, विभूति ।

४ साधु-संन्यासियों के अग्नि-कुंड (धूंणी) की राख जिसे वे अपने शरीर पर मलते हैं ।

५ वैद्यक में, किसी धातु को फूंक कर तैयार की गई राख, जो चिकित्सा में काम आती है ।

यथा-लोह-भस्म, स्वर्ण भस्म ।

वि०—१ जो जल कर पूरी तरह से राख हो गया हो, जला हुआ ।

रू० भे०—भसम, भसम, भसम्म ।

अल्पा०—भसमी, भसम्मी ।

भस्म-अंगी—सं० पु० [सं. भस्म+अंगी] भस्म या राख के रंग का घोड़ा जो अशुभ माना जाता है ।

वि०—१ वह जिसका शरीर भस्म के रंग का हो ।

२ धूलि-धूसरित ।

भस्मक—सं० पु० [सं०] १ भाव प्रकाश के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमें भोजन तुरन्त पच जाता है तथा भोजन बिल्कुल भी नहीं होता है ।

२ भस्मासुर का एक नाम ।

वि०—भस्म करने वाला ।

भस्मकारी—वि० [सं० भस्मकारिन्] भस्म करने वाला, जलाने वाला ।

भस्मांकर, भस्माकर—देखो 'भस्मासुर' ।

उ०—**भसमाकर** कीनौ भसम, हर रखवाळा रे, बालमियौ जळ डूबतां, प्रभु तोहि पुकारे ।—भगतमाळ

भस्मांगनी—सं० स्त्री० [सं० भस्म+अग्नि] शरीरस्थ पांच प्रकार की अग्नियों में से एक, जो खाए हुए पदार्थ के रसादि व समस्त धातुओं को भस्म कर देती है ।

भस्मासुर—सं० पु० [सं०] शिवोपासक एक प्रसिद्ध राक्षस जिसने शिवजी से यह वरदान प्राप्त किया था कि जिस किसी के मस्तक पर वह अपना हाथ रखेगा, वह भस्म हो जायेगा ।

वि० वि०—पुराणों में इस नाम का कोई उल्लेख नहीं मिलता है परन्तु उनमें प्राप्त कालपृष्ठ एवं वृक नामक राक्षसों से इसकी कथा काफी मिलती है । इसे शिवजी से इस प्रकार का वरदान प्राप्त था कि जिस किसी के मस्तक पर वह हाथ रखेगा वह वहीं भस्म हो जायेगा । एक बार वह भगवान शिव पर ही हाथ रखने को उतारू हो गया तो श्री विष्णु ने मोहिनी रूप धारण करके इसे स्वयं के मस्तक पर हाथ रखने से प्रवृत्त कर दिया जिससे उसका वहीं पर वध हो गया ।

रू० भे०—भसमासुर ।

भस्मीभूत—वि० [सं० भस्म+भूत] बिल्कुल जलकर राख बना हुआ ।

भउ, भऊ—देखो 'बहू' (रू. भे.)

भह—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—बणी नैण भ्रूहार भालं विचित्रं, पडै दीपको काजलं हेमपत्रं । विचित्रं बणी **भह** की रेख बंकं, धरयौ कांमदेवं कर (रां) मे धनंकं ।—बगसीरांम प्रौहित री बात

महराणौ, महराबौ—देखो 'भरराणौ, भरराबौ' (रू. भे.)
महराणहार, हारौ (हारी), महराणियौ—वि० ।
महरायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
महराइजणौ, महराइजबौ—भाव वा० ।

महरायोड़ौ—देखो 'भररायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० महरायोड़ी)

महरौ—१ देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)
उ०—भीतर जाय महरै रौ मुंह खोल कुंवरसी नूं दाखिल कियौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
२ देखो 'भारौ' (रू. भे.)

भहु—देखो 'बहू' (रू. भे.)

भां—देखो 'भांय' (रू. भे.)

भांकड़ी—देखो 'भांखड़ी' (रू. भे.)

भांकार, भांकारि—सं० स्त्री०—भेरी नामक वाद्य की ध्वनि ।
उ०—१ न तालाचर वाइ ताल, 'हारू हारू' भणी न हीचकइ बाली तिहां नही भेरी तणा भांकार, न वंस वाइ भला वंसकार ।
—नळदवदंती रास
उ०—२ रथ तणी रामति, मेघाडंबर छत्र तणउ आडंबर, सीकरी तणउ झमाल, अलंबा तणी उमाल, भेरि तणे भांकारि, झल्लरी तणे झात्कारि, संख तणे ओंकारइ ।—व. स.

भांख—सं० स्त्री०—तलहटी ।
उ०—ढीबड़ा ११ चांच २५ संवज चिणा छै । द्रहा १ हिंडोळ भाखर री भांख पीवै ।—नैणसी

भांखड़ी—सं० स्त्री० [दे०] भूमि पर छितरने वाली वनस्पति विशेष जो प्रायः वर्षा ऋतु मे होती है ।
रू० भे०—भांकड़ी ।

भांखणौ, भांखबौ—क्रि० स० [सं० भा+अंकनं] घी, तेल आदि से हलका चुपड़ना ।
भांखणहार, हारौ (हारौ), भांखणियौ—वि० ।
भांखिओड़ौ, भांखियोड़ौ, भांख्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भांखीजणौ, भांखीजबौ—कर्म वा० ।

भांखियोड़ौ—भू० का० कृ०—हलका चुपड़ा हुआ.

भांखौ—सं० पु०—घी, तेल आदि का हलका सा लेपन ।
उ०—लांबी नोकदार जूती, तीलां रै तेल रौ भांखौ दियोड़ी ।
—दसदोख

भांग—सं० स्त्री०—१ गांजे की जाति का मादक पत्तियों वाला पौधा जिसे नशे के लिए पीसकर पिया जाता है ।
२ उक्त पौधे की पत्तियों को पीसकर बनाया हुआ तरल पेय ।
उ०—सांवरियौ म्हांनै भांग पिलाई, मेरी अंखियां में लाली काहे री कूंडी (राधे) काहे रा घोटा; काहे री सुवाफी बणाई ।—मीरां
क्रि० प्र०—खाणी, पीणी
मुहा०—भांग खाणी, भांग पीणी=नासमझी या पागलपन की सी बातें करना । भांग ऊगणी, भांग चढणी=पूर्ण नशे में होना ।
रू० भे०—भंग, भागी ।
अल्पा०—भांगड़ली, भांगड़ी ।
मह०—भांगड़, भांगड़ौ ।

भांगड़—वि० [दे०] १ भांग का नशा करने वाला, भंगेडी ।
उ०—भांगड़ खारा खून कर, तूं आंण न डर तार । औ ऊभी अड़सी हरी, हांमू बगसणहार ।—बां. दा.
२ देखो 'भांग' (मह., रू. भे.)

भांगड़भुतड़, भागड़भूतड़—वि० [राज० भांग+भूत+ड़] १ भांग पीकर मस्ती में रहने वाला ।
२ मदमस्त, उन्मत ।
उ०—जोगी गरीबनाथ सिववाड़ी आयौ । भांगढ़भूतड़ थका रहै । कहै हमीर पतर पूरी जिणकूं सिव वाड़ी का राज है ।
—बां. दा. ख्या.
३ बेफिक्र, बेपरवाह ।

भांगड़ली, भांगड़ी—देखो 'भांग' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—बीजा तौ पुर का सायबा बीज मंगावौ जी मिरगानेण्यां री भांगड़ली, भुवाजी म्हारा राजन भांग पावौजी ।—लो. गी.

भांगड़ौ—देखो 'भांग' (मह., रू. भे.)
उ०—नचै सिव भांगड़ौ पीयां थाकै नहीं, कोपिया सांगड़ौ गढ़ां देसी कही । जूंजवा लांगडौ लंक जावै जुंही, खांगड़ौ न मावै आज खापां मही ।—सगतीदांन

भांगण—सं० स्त्री० [सं० भंग्] १ टुकड़े करने या तोड़ने का कार्य ।
२ वध्, हत्या ।

भांगणौ—वि० [सं० भंग्] १ निवारण करने वाला, मिटाने वाला ।
२ विध्वंस करने वाला, नाश करने वाला ।
३ मारने वाला, पीटने वाला ।
४ संहार करने वाला ।
५ टुकड़े-टुकड़े करने वाला, तोड़ने वाला ।

भांगणौ, भांगबौ—क्रि० स० [सं० भंग्] टुकड़े २ करना, तोड़ना ।
उ०—१ छोरा मोटा होय माथै गेडियां भांगै तौ आंरी अकल ठांणै आवै ।—फुलवाड़ी
२ खर्च करना ।
उ०—१ बतावौ, तिजोरियां रा इत्ता रिपिया क्यूं भांगिया । इण सूं वतौ कांई जाब्तौ व्है सकै ।—फुलवाड़ी
उ०—२ पती जुद्ध में दुसमणां री फौजां रा हाथी मारनै तौ मोतियां रा ढिगला दिया है जिणरा प्रोत वा पोत चीड़ां नै हाथियांरै दांतां रा चूड़ा मोल भांगण रौ कांम नहीं सो इसा वीर पती रा घर रा तोटा पर ही वारणै जाऊं छूं ।—वी. स. टी.

३ मारना, पीटना ।

उ०—कोई आध घड़ी रै उपरांत नाड़ देखतौ देखतौ वैदराज डोकरिया रा माथा में आवेस लिखरा री जतराई। फकै हाथ मांयला चिटियां सूं साणेड़ौ भांग्यौ ।—फुलवाड़ी

४ निवारन करना, दूर करना, मिटाना ।

उ०—सुंदर, गौरी, ओलूं थारी परी रै निवार, नेणग बरणी, बाबौसा री ओलूं सुसरौजी भांगसी ।—लो. गी.

५ विनाश करना, विध्वंस करना ।

६ पराजित करना, हराना ।

७ लूटना ।

उ०—धाड़ैती गांव भांग रह्या है–कोई गुड़कतौ-गुड़कतौ बोल्यौ। धाड़ैती गांव भांग रह्या है नै थे बाजरी में लुक रह्या हो ! फिट रे नादारां थांनै।—रातवासौ

८ मिटाना, नष्ट करना ।

उ०—हिंदूवांण री आंण देसांण हुणी, उणां री अलंकार प्रकार ऊणी। बुरज्जां चहूं जांण लोकेरा बाका, प्रथी आभ री बीच भागै पताका ।—मे. म.

९ संहार करना, मारना ।

१० नियम तोड़ना ।

ज्यूं—एकासणौ भांगणौ ।

११ रुपये को छोटे सिक्कों में परिवर्तित करना ।

१२ प्रकट करना ।

उ०—सु देवीदास आप तौ उठा थी पाळौ ही ज नीसरियौ, चाकर एक साथै हुतौ तिण नुं कह्यौ–तूं डेरै जाय राव रा आदमी आपणै डेरै तेडण नुं आवसी तिण आगै कोई भेद मत भांगै नै कहीजौ-देवीदास सीकर गयौ छै यूं करनै आघौ काढ़जौ ।—नैणसी

भांगणहार, हारौ (हारी), **भांगणियौ**—वि० ।

भांगिओड़ौ, भांगियोड़ौ, भांग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भांगीजणौ, भांगीजबौ—कर्म वा० ।

भंजणौ, भंजबौ, भांजणौ, भांजबौ, भांनणौ, भांनबौ, भाजणौ, भाजबौ, भाज्जणौ, भाज्जबौ—रू० भे० ।

भांगरी–सं० स्त्री०—एक प्रकार का घास ।

भांगरौ–सं० पु० [सं० भृंगराज] एक प्रकार का क्षुप जो प्राय: गीली भूमि में होता है तथा सफेद, पीले और काले इन तीन प्रकार के फूलों के भेद से यह तीन प्रकार का होता है ।

रू० भे० भंगरो, भंगराज ।

भांगा–सं० पु० [सं० भंग] बिगाड़, खराबी ।

उ०—हूं तौ कैवूं हूं भांगा करण वाळां री काळौ मूंडौ अर लीला पग हुवै ।'—बरसगांठ

भांगि—देखो 'भांग' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति करिनै राजांन सिलांमति तजारै री बाड़ी री सीपरी, नीली पगी पाळी, पुखराजी, पागे बगलांगी तिण भांति री भांति पगी पुलनी, मिरचा पान, आंग रै मेळ सूं पासांग री [illegible] पाणी तळाई मिसरी रै मेळ छकला बरणा सूं भारीजै छै। —रा. सा. सं.

भांगियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ तोड़ा हुआ. २ भग्न किया हुआ. ३ मारा हुआ, पीटा हुआ. ४ निवारण किया हुआ, दूर किया हुआ, मिटाया हुआ. ५ विनाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ. ६ पराजित किया हुआ, हराया हुआ. ७ लूटा हुआ. ८ मिटाया हुआ, नष्ट किया हुआ. ९ संहार किया हुआ, मारा हुआ. १० नियम तोड़ा हुआ. ११ रुपयों को छोटे सिक्कों में बदला हुआ, परिवर्तित किया हुआ. १२ प्रकट किया हुआ. १३ भंग किया हुआ.

(स्त्री० भांगियोड़ी)

भांगी—देखो 'भांग' (रू. भे.) ([illegible])

भांगेगुर—सं० पु० [भांग+[illegible]] भाव ।

उ०—१ इणी में **भांगेगुर** मंगायजै छै, सू [illegible] ? [illegible] री नगारी ढोलकी, [illegible] । —रा. सा. सं.

उ०—२ आप कांईं रो ! **भांगेगुर** री [illegible] तरै कहियौ **भांगेगुर** तइयार, साहिब ! [illegible] ?

—प्रतापमल देवड़ा री बात

भांगेड़ी—देखो 'भंगेड़ी' (रू. भे.)

भांगौ–सं० पु०—छोटा [illegible] टुकड़ा (टुकड़ा) ।

उ०—अमलां-रै बांटणहारै–नूं [illegible]—मागीयौ **भांगौ** करै, अर अमल नूं गाथौ मत कौ धुणी महादेवजी [illegible] मानणौ ।

—प्रतापमल देवड़ा री बात

भांज–सं० स्त्री०—१ किसी पदार्थ को घुमाने, मोड़ने या तह करने की क्रिया या भाव ।

२ विघ्न, बाधा ।

३ पंचायती ।

भांजक–सं० स्त्री० [सं० भंग] विघ्न, बाधा ।

उ०—अबकै जठै जावां बठै-ई **भांजक** लागै [illegible] हूं तौ कैवूं हूं भांगा करणवाळां री काळौ मूंडौ अर लीला पग हुवै । —बरसगांठ

भांजघड़–सं० स्त्री० [सं० भंग+घट्] १ वह सभा या समिति जो किसी विवाद या झगड़े सुलझाने के लिए बुलाई जाय ।

२ चिन्तन, विचार ।

उ०—रात तौ फिकर करतां, **भांज-घड़** करता करतां व्यतीत कीवी ।—डाढाळा सूर री वात

३ खटपट, तोड़-जोड़ ।

उ०—**भांजघड़ां** भाजी भिड़ां, औधां अमल अमाप । थापे उथप सटपट थकी, तिका पतै परताप ।

४ संकल्प ।

५ सलाह।

भांजणौ—देखो 'भांगणौ' (रू. भे.)

उ०—१ संत जण तरण चख क्रपा रुख साहरै, साहरै विरद भुजडंड सिघाळा। वीस भुज भांजणा समर हथवाह रे, वाह रे रांम अवधेस वाळा।—र. ज. प्र.

उ०—२ **भांजणौ** त्रिवेधी घड़ा मेळणौ भिड़ज भाळे, ढाहणौ गयंदां खेति ढंढोळणौं ढाल। आगळी दळां अभग जैतखभ हुवौ जुवे, 'जोधा' हरौ जगजेठ जोध जगमाल।—जगमाल रौ गीत

भांजणौ, भांजबौ—१ देखो 'भांगणौ, भांगबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वै वांरा भाला तौ ऊ गिड़-सूर वडोड़ौ आपरी डाढां प्रळा रूपी दिखाय **भांज** न्हांकसी।—वी. स. टी.

उ०—२ पाड़ै किता, खड़ौ जुधि न पड़ै, दुरित खवा असमांण दुहि। भरि-भरि वांम खाग अरि **भांजै**, केहरि का माथै कळहि।
—तीकमदास खिड़ियौ

उ०—३ रौदां **भांजि** ऊजळां रूकां, वैर वाळि, उजवाळि वट। पग निरलंग, निरलंग अंग पड़े, भुज निरलंग निरलंग भ्रकुट।
—राठौड़ पदमसिंघ रौ गीत

उ०—४ बैरुंड खंड धड बेहडांह, काली किरि **भांजै** कूलडांह। सेलां उभेळ फाटै सनाह, धरहरै स्रोण धारां प्रवाह।—गु. रू. बं.

उ०—५ दखै भाग ज्यारां जती वंस दीता, सकौ कंत त्रीलोक रौ नाथ सीता। ब्रह्मंड कोड़ेक **भांजै** वणावै, इसी रांम माता कठै कांमि आवै।—सू. प्र.

उ०—६ जुग भल स्रीरांम सुणायै जाये, माहरौ अेक संदेसौ मेह, दुख तूं तणौ **भांजिसै** तिण दिन, दिन जिण राख थाइसै देह।
—ईसरदास बारहट

उ०—७ सो सुणि दुरजणसाल, कोपि रणमस्त बकारे। कहियौ थां जिम कवण, मांन **भांजै** छळ मारे।—व भा.

उ०—८ पाटण 'सीह' अचळ परणिया, 'मूळा' तणौ मांढहै 'माल'। भाटी तणौ कमंध घट **भांजे**, सत्र तणी अरधंगी साल।
—गु. रू. बं.

उ०—९ सबळा गढ गंजण सदा, **भांजण** सबळा भूप। नरपत्ती वीकांण रा, राज नवैखंड रूप।—चतुरौ बारहट

उ०—१० पांचसै खेत दखणां पडे, रिण वंकै दिन पध्धरै। गज थटां **भांजि** जीते 'गजण', महाजुध्ध मंडोवरै।—गु. रू. बं.

उ०—११ हड्डाधिराज हूं छोटी रांणी दाहड़ी में जोड़ै ही जन्म लीधौ तिकांहीं पछै बुंदी पाइ चीतोड़ रा अधीस कूंभा रा **भांजिया** हुवा।—वं. भा.

उ०—१२ इण ही बंस में भठनैरपुररै अधीस जसराज सोनगिरै केही बार जवनां रौ जोरदार कटक **भांजियौ**।—वं. भा.

उ०—१३ वध छोह जितूं रिण वाही 'वीकै', सेन नमंता साख सुर। मिलक हिंदाळ **भांज** रूकां मुह, इणी विहर रिड़माल उर।
—राव बीका रौ गीत

उ०—१४ जठै कुमार लक्कड़खांन चौड़े खेत जाइ कुठारखांन **भांजियौ**।—वं. भा.

उ०—१५ केहर तणी कळाइयां, भणणाहट भमरांह। भीजी गज सिर **भांजतां**, मद सौरंभ डमरांह।—बां. दा.

उ०—१६ सांबळां तणी दे भीक आखाड़-सिध। दुरित तैं मेछ दळ **भांजि** दियौ।—कछवाहा वैरसल खंगारौत रौ गीत

उ०—१७ खाडुक-मल 'मानौ' 'खेम' नंद, चहवांण जेण **भांजियौ** 'चंद'। बिरदैत जोध घाटै-बराड, 'गोइंद करणौठ काळौ-पहाड।
—गु. रू. बं.

उ०—१८ इहां नूं मांही बड़णे नही दिया। राजूखां रीं बीबी बाहर आय कही—बाबा थांरौ वैर थां लेय ही लियौ। साबास छै, बडी रजपूती राखी। जसा पुरसां रा थें लड़का था किसी ही कीवी। जनांनी मरजाद मतां **भांजौ**—सूरे खींवे कांधळोत री बात

उ०—१९ रात रा आपरौ नांणौ **भांज**, आटौ, घी, सकर आंण चूरमौ कर खावै अर बाकी रौ परभात रै पगां ऊंचौ मेल्ह कर राखै।—सूरे खींवे कांधळोत री बात

भांजणहार, हारौ (हारी), भांजणिवौ—वि०।

भांजिओड़ौ, भांजियोड़ौ, भांज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भांजीजणौ, भांजीजबौ—कर्म वा०।

भंजणौ, भंजबौ—रू० भे०।

भांजियोड़ौ—देखो 'भांगियोडौ' (रू. भे)
(स्त्री० भांजियोड़ी)

भांड—सं० पु० [सं० भंड] १ एक जाति विशेष जिसका पेशा स्वांग बनाकर, नाच गाकर, हास्यपूर्ण तरीके से नकलें या परिहास करके लोगों को हंसाना होता है।

२ उक्त जाति का व्यक्ति।

वि०—निर्लज्ज, बेशर्म।

देखो 'भांडौ' (मह रू. भे.)

रू० भे०—भंड, भांडेरू।

भांडणौ, भांडबौ—क्रि० स०—१ बदनाम करना।

उ०—१ क्यों कांई? फजीतवाड़ौ हुवै है। बाई री नणद जागां-जागां **भांडती** फिरै है।—वरसगांठ

उ०—२ ताहरां 'ऊदै' अर 'काळै' कह्यौ-'म्हे सिख रै साथै नहीं जावां, **भांडसी**।—नैणसी

उ०—३ दांम री भांम भेनी दुकर, भव सारै नैं **भांडियौ**, छिता पर इता गुण छोड दै, रांड न छोडै रांडियौ।—ऊ. का.

२ निन्दा करना।

उ०—बिचाळै ई दांत पीसता बोल्या—ठाकुरजी रै सांमी ऊभौ थूं ठाकुरजी नैं ई **भांडै**, थनै सराप लागेला।—फुलवाड़ी

भांडणहार, हारौ (हारी), भांडजियौ—वि० ।
भांडिग्रोड़ौ, भांडियोड़ौ, भांड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भांडीजणौ, भांडीजबौ—कर्म वा० ।
भंडणौ, भंडबौ—रू० भे० ।

भांडत्री–सं० पु० मनुष्य की ऊंचाई के बराबर का एक पौधा जो औषधि में काम आता है ।

भांडपति–सं० पु० [सं० भंड=खजाना+पति] कोषाध्यक्ष ।
उ०—तंउभांडागारिक, करपूरपट्टिक कोस्टाकारिक पारिग्राहिक प्रतिहार चतुद्वरिक कास्टिक राजद्वारिक संधिविग्रहिक **भांडपति** महाजनिक दूत दालिउट्ट ।—व. स.

भांडाई–क्रि० वि० [सं० भंड+रा० प्र० आई] १ सर्वत्र निंदा करने की क्रिया ।
२ भांड द्वारा किया जाने वाला कार्य ।
उ०—सेवट चौमासा रै उपरांत अेक दिन साधू आप रै स्वांग री भेद परगट करनै भांड री गळाई बजायनै जाचना करी । सेठ रै सांमीं हाथ जोड़नै कह्यौ–गरीब री **भांडाई** माथै रीझ करनै बगसीस करौ अंदाता । म्हैं रावळौ भांड हूं ।—फुलवाड़ी
उ०—उक्त प्रकार का कार्य करने पर मिलने वाला पुरस्कार ।
रू० भे०—भंडाइ, भंडाई ।

भांडाकार, भांडागार–सं० पु० [सं० भण्ड+आगर] कोष, खजाना ।
उ०—१ आस्थान सभा, स्त्रीगरणसभा, व्ययकरणसभा, घरम्माधिकरणसभा, देवकरणसभा, पंडितसभा, लेहासभा **भांडाकार** कोस्टाकार, सत्रागार, मठविहार प्रजा मंडप ।—व. स.
उ०—२ करि तुरंग रथ पायकसेन **भांडागार** ५, कोस्टागार ६, गढ ७, सप्तांग राज्यलक्ष्मी ।—व. स.

भांडागारिक–सं० पु०—कोषाध्यक्ष ।
व्यायामसाल, टंकसाल, आस्थानसाला, स्त्रीकरणसभा, व्ययकरणसभा, घरम्माधिकरणसभा, देवकरणसभा, पंडित सभा, लेखणसभा, **भांडागारिक** कोस्टाकार, सत्राकार ।—व. स.

भांडियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ बदनाम किया हुआ. २ निन्दा किया हुआ. ३ दूषित किया हुआ.
(स्त्री० भांडियोड़ी)

भांडार—देखो 'भंडार' (रू. भे.)

भांडेरू–वि० [देश०] १ निन्दा करने वाला, अपकीर्ति करने वाला ।
२ देखो 'भांड' (रू. भे.)
रू० भे०—बांडेरू ।

भांडौ–सं० पु० [सं० भंड] १ बरतन ।
उ०—१ अरथ आया तब जांणियै, जब अनरथ छूटै । दादू **भांडा** भरम का, गिर चौड़े फूटे ।—दादूबांणी
उ०—यौ संसार कुबधि कौ **भांडौ**, साध संगत नहीं भावै । रांम भांग की निंदा [illegible], [illegible] नहीं भावै । —मीरां
२ शरीर ।
(स्त्री० भांडी)
रू० भे० [illegible] ।
मह० [illegible] ।

भांणंग–सं० पु० एक प्रकार का वाद्य । (व. स.)

भांण—१ देखो 'बांण' (रू. भे.)
२ देखो 'भांनु' (रू. भे.)
उ०—१ अवधेस राजा प्रभू [illegible], [illegible] रीत [illegible] सदा **भांण**-वंसी । लड़ै काळ [illegible] [illegible] [illegible], ऊभौ हाथ जोड़े गऊ विप्र आगै ।—सू. प्र.
उ०—२ जाळंधर [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] अधिक [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] **भांण** । [illegible] पारवती री [illegible]
३ देखो '[illegible]' (रू. भे.)
उ० आज म्हारां वीरोजी [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] जायौ **भांण**, ओढायी [illegible] [illegible] । [illegible]. गी.

भांणउगवरण, भांणउगांरण–सं० पु० [सं० भानु+उदय] सूर्योदय ।
भांणउगाळी–सं० स्त्री० [सं० भानु+उदय+काल] सूर्योदय का समय ।
भांणकुळ–सं० पु० [सं०+भानु+कुल] सूर्यवंश ।
भांणकुळजा–सं० पु० [सं० भानु+कुल+जा] सूर्यवंशी व्यक्ति ।

भांणक्यौ—देखो 'भांणेज' (अल्पा., रू. भे.)
(स्त्री० भांणकी)

भांणगोती–सं० स्त्री० [राज० भांण+गोती] १ सोलंकी राजपूत वंश की एक शाखा ।—बां. दा. ख्या.
२ इस शाखा का व्यक्ति ।

भांणजड़ौ—देखो 'भांणेज' (अल्पा०, रू. भे.)
उ०—जाळी बी निरखी श्री बीजा झरोखा बी निरख्या जी राज, फुलड़ांरी सेजां **भांणजड़ा** रौ मन रळ्यौ जी ।—लो. गी.
(स्त्री० भांणजड़ी)

भांणजौ—देखो 'भांणेज' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—आ कैय मासी जोर सूं हंसी । सागै **भांणजी** ई हंसण में उण री पूरी साथ दियौ ।—फुलवाड़ी
(स्त्री० भांणजी)

भांणनंद–सं० पु० [भानु+नंद] १ सूर्य का पुत्र दानवीर कर्ण ।
उ०—पाणां पांण मारुथ ज्यूं घांनंकी आवांण पती, सुरतांण राहांमांण द्रजोण सराह । छाजां मेर ऊछांण ज्यूं दावां **भांणनंद** छोळां, सोहै रांण दळा येम दूजो 'धारासाह' ।—हुकमीचंद खिड़ियौ
२ यमराज ।
३ राहु ।
४ सुग्रीव ।

५ शनि ।

भांणनंदा–सं० स्त्री० [भानु+नंदा] सूर्य की पुत्री यमुना ।

उ०—झूलां मखतूळ जमा जळ झाग, पगप्पग होत उद्योत प्रयाग । मंदाकरण **भांण-नंदा** बह मंद, बहै सरसुत्ति प्रवाह् बळंद ।—मे म.

भांणबंस–सं० पु० [भानु+वंश] सूर्य का वंश ।

भांणभांणकुळ–स० पु० [भानु+भानुकुल] १ सूर्यवंश का सूर्य श्री रामचन्द्र जी । (ना. मा.)

२ ईश्वर । (नां. मा)

भांणमती—देखो 'भांनुमती' (रू. भे.)

भांणरांणी–सं० स्त्री० [भानु+राज्ञी] देवी, दुर्गा ।

भांणव–सं० पु० [सं० भणति इति भाणवः] १ काव्यकार, कवि । (डिं को.)

२ उत्तम वक्ता ।

३ चारणों के लिये प्रयुक्त एक पर्यायवाची शब्द ।

भांणसुत, भांणसुतन–सं० पु० [सं० भानु+सुत] १ यमराज । (नां. मा.)

२ शनि ।

३ कर्ण ।

४ सुग्रीव ।

भांणसुता–सं० स्त्री० [सं० भानु+सुता] सूर्य की पुत्री यमुना ।

भांणिजौ—देखो 'भांणेज' (रू. भे.)

भांणुप्रताप—देखो 'भानुप्रताप' (रू. भे.)

भांणू—१ देखो 'भांणेज' (रू. भे.)

उ० अेक मांमी कह्यौ—म्हारा लाडेसर **भांणू** थूं म्हारै अठै ठैर, दूजी मांमी कह्यौ—म्हारा लाडेसर भांणू थूं म्हांरै अठै ठैर । —फुलवाड़ी

(स्त्री० भाणी)

२ देखो 'भांनु' (रू. भे.)

भांणेज, भांणेजौ–सं० पु० (स्त्री० भांणजी, भांणेजी) बहिन का पुत्र भानजा ।

उ०—१ तद कह्यौ–'**भांणेज** ! थ्रौर ठोडां रहौ । थे म्हांरां देस छाडौ ।' सु औ छाडै नहीं ।—नैणसी

उ०—२ थांरी बहनड़ कागद मेहलियौ । थांरी **भांणेजी** परणाजै, माहेरौ भरण घरे आवौ ओ जुंझार जी ।—जुंझार जी रौ गीत

रू० भे०—भांणजौ, भांणिजौ, भांणू ।

भांणोत–सं० पु०—राठौड़ वंश की एक उप शाखा ।

भांणौ–सं० पु०—१ भोजन करने का पात्र ।

उ०—साकर सिरसाळी थिर भर थाळी, अगलाकर ऊगंदा है । जग त्रण सम जांणौ मोजां मांणौ, **भांणौ** भोज भरंदा है ।—ऊ. का.

२ भोजन, आहार ।

उ०—यूं करतां जीमण तयार हुअो, तांहरां नाथ नूं **भांणौ** मेलियौ ।—नैणसी

३ देखो भांनु (अल्पा. रू. भे.)

उ०—रयणी भूखण चंदौ, आकास भूखणौ **भांणौ** । भूखण भूतळ इदौ, भूखण साह फौज 'गजसिंघौ' ।- गु. रू. बं.

भांत–सं० स्त्री०—१ किसी पदार्थ की बनावट या रचना का विशिष्ट ढंग या प्रकार, परिरूप ।

२ देखो 'भांति' (रू. भे.)

उ०—१ कूंभाथळ मोताहळां, भरिया वन गिर **भांत** । चंद्र वरण गज रतन में, बगड़ बणिया दांत ।—बां. दा.

उ०—२ पीवण नै इमरत व्है जेड़ौ ठाडौ निरमळ पांणी, खावण नै मीठा जामुन अर खिजूर री **भांत** राताचुट्ट पेमली बोर, पछै काई चीज री दरकार । बांदरा सारू तौ जाणै सातू सुरग अेकठ व्हिया ।—फुलवाड़ी

उ०—३ अनेक जाति जाति भांत भांत भेछ आरुहे । धुबे कि मेघमाळ गाप सीस कोप धारुहे ।—रा. रू.

उ० ४ ताहरां रावजी हुकम कियौ—'थिरत भूजाई में ईयै पळी सौं पुरसौ । आधी पुरसै तौ सुवार नूं सफा दीजै । भरियौ पुरसणौ रजपूत नूं । इयै **भांत** चूंडौजी राज करै ।—नैणसी

उ०—सु राजा तौ काहिण नूं मन हकरै, पण लोक देखै अर राजा री रांणी पण कही **भांत** देखै, सु औ हैरांन रहै अर विचारै—जु आज ईयै बराबर सांमंत कोई नहीं ।—नैणसी

रू० भे०—भंत, भंति, भती, भन, भति, भती, भत्त, भत्ति, भत्ती, भांतर, भांति ।

अल्पा०—भांतड़ली ।

भांतड़ली—१ देखो 'भांत' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'भांति' (अल्पा., रू. भे.)

भांतभंतीलौ–वि० (स्त्री० भांतभंतीली) बनावट, रचना, गुण-धर्म, आकार-प्रकार के विचार से भिन्न-भिन्न वस्तु या प्राणी ।

ज्यूं०—भांत-भतीला मिनख ।

उ०—अखसां डाली **भांतभंतीली,** फूल महक अणमींत री । ऊभ एक पग साजन सजै, जो'ड़ा स्वागत मींत री ।—दसदेव

२ भिन्न-भिन्न प्रकार का कसीदा या बुनाई का काम किया हुआ । (डिजाइन वाला)

भांतर—१ देखो 'भांत' (रू. भे.)

२ देखो 'भांति' (रू. भे.)

उ०—आइ नै रांणीजी री मुजरौ कियौ । सु इयै **भांतर** आया सूं रांणी रौ साथ छिप गयौ ।—देवजी बगड़ावत री बात

भांति—१ प्रकार, तरह ।

उ०—१ आगळै प्रिया प्री चौथे आरंभि, फेरा त्रिण्हि इण **भांति** फिरि । कर सांगुस्ट ग्रहण कर सूं करि, करी कमळ चपियौ किरी । —बेलि

उ०—२ इसी तरह लिछमीजी भांति-भांति करि अरज स्त्री भगवांन नै कीवी। अठै राजा अहदभांण हजार बीस ब्राह्मण नै भोजन, गायां हजार दोय, हाथी, घोड़ां री संकळप भरियौ।
—पलक दरियाव री बात

२ चाल-ढाल, रंग-ढंग।

३ आचार, व्यवहार की मर्यादा।

४ प्रथा, रीति।

रू० भे०—भंत, भंति, भंती, भत, भति, भती, भत्त, भत्ति, भत्ती, भांत, भांतर।

भांदू—देखो 'भोंदू' (रू. भे.)

भांदोळी—देखो 'बंदोळी' (रू. भे.)

भांदोळौ—देखो 'बंदोळौ' (रू. भे.)

भांन-सं० पु० [सं० भानं] १ प्रकाश, रोशनी।

२ ज्ञान, प्रतीति।

३ आभास, महसूस।

४ नाश, ध्वंस।

५ प्रकटन, प्रादुर्भाव, एवं दृष्टिगोचर होना।

६ देखो 'भांनु' (रू. भे.)

उ०—सुरतांन ग्रहन मोखन सुजांन, हिंदवांन भांन की करन हांन। गळ फेरि छुरी जैचंद गोत, अप्पनूं पौत करियें उदोत।—ऊ. का.

भांनणौ, भांनबौ—देखो 'भांगणौ, भांगबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दादू गुप्त गुण परकट करे, परकट गुप्त समाइ। पलक मांहि **भांनै** घड़ै, ताकी लखी न जाइ।—दादूबांणी

उ०—२ तन मन सौंज संवार सब, राखै विसवाबीस। सो साहिब सुमिरे नहीं, दादू **भांन** हदीस।—दादूबांणी

उ०—३ अप खग दांन लियां मुख नूर ज प्रसणां **भांन** खिवीवट पूरज। **बळबळ** प्रथी सुजस सद बोलत, सूरत तड़ दासरथी सूरज।
—र. ज. प्र.

उ०—४ हुरम कबीले के जतन साहिजादे जांनी, खेमसाह' देखत ही सब चिंता **भांनी**।—रा. रू.

भांनणहार, हारौ (हारी)भांनणियौ—वि०।

भांनिअोड़ो, भांनियोड़ौ, भांन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भांनीजणौ, भांनीजबौ—कर्म वा०।

भांनमती—देखो 'भांनुमती' (रू. भे.)

भांनवी-सं० स्त्री० [सं० भानवी] यमुना नदी। (डि. को.)

भांनियोड़ौ—१ देखो 'भांगियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भांनियोड़ी)

भांनु-सं० पु० [सं० भानु] १ सूर्य, भास्कर।

२ विष्णु।

३ किरण।

४ आक, मदार।

५ वर्तमान अवसर्पिणी के पन्द्रहवें अर्हत् के पिता का नाम। (जैन)

६ एक देव गन्धर्व जो कश्यप एवं प्राधा का पुत्र था।

७ सत्यभामा से उत्पन्न श्रीकृष्ण का महारथी पुत्र।

सं० स्त्री०—दक्ष की एक कन्या का नाम।

रू० भे०—भांण, भांणु, भांन, भांनू।

भांनुकंप-सं० पु० [सं० भानु+कंप] ज्योतिष के अनुसार सूर्य ग्रहण के समय कभी २ सूर्य में दिखाई देने वाला कंपन जो अशुभ माना जाता है।

भांनुकाअमावस-सं० स्त्री० [सं० भानुकामावस्या] ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या।

भांनुज-वि०—सूर्य से उत्पन्न।

सं० पु० [सं० भानु+जन] १ शनिश्चर। (२) यम। (३)कर्ण।

भांनुजा, भांनुतनया, भांनुतनूजा-सं० स्त्री० [सं० भानु+जा, तनया, तनूजा] १ यमुना नदी।

२ राधिका।

भांनुपाक-सं० पु० [सं० भानु+पाक] सूर्य की धूप में औषध आदि को पकाने की क्रिया।

भांनुप्रताप-सं० पु० [सं० भानुप्रताप] तुलसीकृत रामायण के अनुसार कैकय देश के राजा सत्यकेतु के पुत्र का नाम।

भानुमती-सं० स्त्री० [सं० भानुमती] १ अंगिरस् ऋषि की बड़ी पुत्री का नाम।

२ सगर राजा की पत्नी शैब्यकन्या केशिनी का नामान्तर।

३ धृतराष्ट्र-पुत्र दुर्योधन राजा की एक पत्नी।

४ विक्रमादित्य की रानी जो राजा भोज की कन्या थी।

५ नटों से मिलती-जुलती एक मुसलमान जाति या इस जाति की स्त्री जो गाना-बजाना करके अपना निर्वाह करती है।

रू० भे०—भांणमती, भांनमती।

भांनुमांनु-सं० पु० [सं० भानुमान] पुराणों के अनुसार बृहदश्व के पुत्र का नाम। इसका दूसरा नाम भानुरथ भी था।

उ०—कहि जिण सुतण वीर नृप केहौ, जग जस प्रगट भगीरथ जेहौ। जे सुत अहदस्व भूप करण जय, ते सुत **भांनुमांनु** तेजोमय।
—सू. प्र.

भांनुवार-सं० पु० [सं० भानु+वार] रविवार, इतवार।

भांनुसप्तमी-सं० स्त्री० [सं० भानु+सप्तमी] माघ शुक्ला सप्तमी, जिस दिन शाकद्वीपीय ब्राह्मण सूर्य की पूजा करते हैं।

२ रविवार के दिन होने वाली सप्तमी तिथि।

भांनुसुत-सं० पु० [सं० भानु+सुत] १ यमराज।

२ कर्ण।

३ शनिश्चर।

४ राहु।

५ सुग्रीव।

भांनू–सं० पु० [सं० भानु] १ अग्नि, आग।

२ देखो 'भांनु' (रू. भे.) (नां. मा.)

भांपटी–सं० स्त्री० [दे०] बांस की पतली लकड़ी।

भांपणियौ–वि०—१ भांपने वाला।

देखो 'भांपणौ' (अल्पा., रू. भे.)

भांपणी—देखो 'भांपणौ' (अल्पा., रू. भे.)

भांपणौ–सं० पु०—पलकों का बाल।

अल्पा० भांपणियौ, भांपणी।

भांपणौ, भांपबौ–क्रि० स०—परिस्थितियों, क्रियाओं, चेष्टाओं, लक्षणों आदि से वस्तु-स्थिति का सही अनुमान लगाना। ताड़ना।

उ०—रंभा नै बडौ अचूंभौ व्हियौ कै जिकौ आदमी हमेसा उणनै भांबणकी अर नकटी रांड सिवाय बतळावतौ नहीं हौ वौ आज इण दूजी राग में कोकर बोलण लाग्यौ। लुगाई री जात खतरा नै भांप लियौ।—रातवासौ

भांपणहार, हारौ (हारी), **भांपणियौ**—वि०।

भांपिओड़ौ, भांपियोड़ौ, भांप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भांपीजणौ, भांपीजबौ—कर्म वा०।

भांपियोड़ौ–भू० का० कृ०—परिस्थितियों, क्रियाओं, चेष्टाओं, लक्षणों आदि से वस्तु-स्थिति का सही अनुमान लगाया हुआ। ताड़ा हुआ।

(स्त्री० भांपियोड़ी)

भांब–सं० स्त्री०—१ शासक वर्ग की ओर से गांव भांभी को दी जाने वाली पदवी।

२ उक्त पदवी के उपलक्ष में दिया जाने वाला धन या वस्तुऐं। (पगड़ी, लाठी)

३ 'भांबियों' का काम, वेगार आदि।

रू० भे०—बांभ भांभ भांम वांभ

भांबटौ—देखो 'भांबी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ठाकर देखतां ईज गरज्या–कांई रै **भांबटा**, थारी आ पटरांणी कांई कै'वै कै किसा पेटिया पूरवौ हौ सो महीं पीसणौ पीसां।—रातवासौ

(स्त्री भांबटी)

भांबिड़ौ—देखो 'भांबी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—**भांबीड़ा** हाथाजोड़ी करण लाग्या–आप बडा हौ, आप मालक हौ, आप धणी हौ, आप रोटियां रा देवाळ हौ।

—रातवासौ

(स्त्री० भांबणकी)

भांबी–सं० पु० (स्त्री० भांबण) चमड़े का काम करने वाली जाति या इस जाति का व्यक्ति।

उ०—थर-थर धूजतौ बोल्यौ–बापजी औ तौ म्हैं रावळौ **भांबी** हूं।

—फुलवाड़ी

रू० भे०—बांभी, भांभी, वांभी।

अल्पा०—बांभीड़ौ, भांबटौ, भांबिड़ौ।

भांभ—देखो 'भांब' (रू. भे)

भांभर–सं० पु०—जोश, आवेश।

उ०—किरमाळ झड़े तनत्रांण कपे, भळके किर दामण मेघ वपे। सरके जुड़ भांभर मेछ सही, जुध मैं धुजरेण पलाल जही।

—रा. रू.

भांभरभोळव, भांभरभोळवौ, भांभरभोळौ—देखो 'भंभरभोळौ' (रू.भे.)

उ०—१ कोई रांमा निज कंतनउ, पालवि ऊभी सोहाय, भांमिनी **भांभरभोळवी**, प्रीवडउ तव उजाय।—प्राचीन फागु-संग्रह

(स्त्री० भांभरभोळवी भांभरभोळी)

भांभरहूली–सं० स्त्री०—एक प्रकार की सब्जी।

उ०—भेडागारी भांमटी, **भांभरहूली** भांति। भूसण भूली भारथी, भडहड भोली राति।—मा. कां. प्र.

भांभराभूत—देखो 'भाभरौभूत' (रू. भे.)

भांभळभळकौ, भांभळभोळौ–सं० पु०—सायंकाल का समय जब कुछ हल्का सा अंधेरा रहता है।

देखो 'भंभरभोळौ' (रू. भे.)

उ०—**भांभळभोळी** भांमणी, ए तौ गोरांगी चढी गोख हो राज। दरसन सतगुरु देखवा, ए तौ झांख रहीय झरोख हो राज।

—महेंद्रसूरी

(स्त्री० भांभळभोळी)

भांभराळौ, भांभरौ–वि०—उन्मत्त मस्त।

भांभळी–सं० स्त्री०—छोटे २ अग्नि-कण मिश्रित वह राख जिसमें किसी वस्तु को गाड़कर पकाया जा सकता है। (अमरत)

भांभाई–सं० स्त्री—बेगार का कार्य।

उ०—तद ओळुगवे कही, 'राज' म्हांहरौ सांवळ को भाई छै। सु औ भांडणी रै पेट रौ छै। सु म्हे काल्ह क्यौं मांगण गया हता, सु म्हांनै आघा घर मांही आवण ही दिया नहीं। हेगा **भांभाई** करम छै।—ठाकुरे साह री वात

भांभी—देखो 'भांबी' (रू. भे.)

(स्त्री० भांभण)

भांम–सं० पु० [सं० भाम] बहिन का पति, बहनोई।

उ०—मालवदेस रा पच्छिम प्रांत रौ पुहवीस रतळांम नगर रौ बसावणहार राठौड़ रत्नसिंह बिस्वासघात करि आपरौ **भांम** अमरेस रा चरणां रौ छेदणहार गौड़ नरेस अरजुनसिंह, रांणाउत राजा रायसिंह, नवाब कासिमखांन, करीमखांन प्रमुख आपरा मुख्य सांमंत सहायक करि बड़ा बरूथ रै साथ जूझण रा साहसी कुमार दारासाह नूं 'ओरंग' 'मुराद' रै सांम्हैं बिदा कीधौ।—वं. भा.

२ देखो भांमिनी' (रू. भे.)

उ०—१ कर कर बाड़ा कपट रा, धाड़ा पाड़ण भांम । दिल चोरण भाड़ा दिए, भाड़ा वाळी **भांम** ।—बां. दा.

उ०—२ दांम री **भांम** भेली दुकर, भव सारै नै भांडियौ । दिता पर इता गुण छोड दै, रांड नं छोडै रांडियौ—ऊ. का.

उ०—३ जिण जनक आरंभ रांम रै, कर रिखी मखण सकांम रे । भव सिला गौतम **भांम** रे, रज पाय तारी रांम रे ।—र. ज. प्र.

भांमटी—सं० स्त्री०—एक प्रकार की सब्जी ।

उ०—भेडागारी **भांमटी** भांमरहूली भाति । भूमण शूली भारथी, भडहड भोली राति ।—मा. कां. प्र.

भांमण—देखो 'भांमिनी' (रू. भे.)   (ह. नां. मा.)

उ०—१ जब लूं नित नांम तिलोचन बोल्यौ, **भांमण** भीयड़ छीम भिड़ै । करवा ग्रह काज इसौ न्याय आगळ, गांगण कोय लिलांग मिळै ।—भगतमाळ

उ०—२ अबधू अठ मासै नगद निकासे, चौमासै चिपकंदा है । **भांमण** भरमाया गुरु गरमाया, सरमाया सिरकंदा है ।—ऊ. का.

भांमणइ, भांमणउ, भांमणां, भांमणा—देखो 'भांमणौ' (रू. भे)

उ०—१ रति अनुकूल विलास घणां रळियामणां । भीगम दीसै इंद्र, लिवूं हूं **भांमणां** ।—बां. दा.

उ०—२ भुजां **भांमणां** कंकणां सज्ज कीधां । लरां सूळ डेरू खड़ग्खप्र लीधां । छऊं भैंन छोटी दहूं ओड़ छाजै । बिचै पाट-राजीव माजी बिराजै ।—मे. म.

उ०—३ भड़ घोड़ा महंगा थिया, एकण भाट उडंत । भड़ घोडां रा **भांमणा**, जेथ जुड़ीजै कंत ।—वी. ल.

भांमणि, भांमणी—देखो 'भांमिनी' (रू. भे.)

उ०—१ करे विचार एम सिव कांमणि, भेख सरीर धरे हरि **भांमणि** । सुता जनंक वप करि समताई, इम दखि सुता छळण कजि आई ।—सू. प्र.

उ०—२ भुंहारां तणी रेखा ताइ **भांमणि**, घणूं स कोमळ रूप घणइ । चाढी जांणि कबांण चाढंतइ, तजी कुंवरि बलोच तणइ ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ **भांमणि** स्नीव्रजराज घणौं हित सूं भजै । सिख नख वरणूं जास क बुद्धि समापजै ।—बां. दा.

उ०—४ भारथ मत कर **भांमणी**, मो भारथ नंह मेळ । वापी कूप बताव बिस, कै कर म्हां सूं केळ ।—बां दा.

उ०—५ बिडरी हिरणीं सी फिरणी बिजकाती, मुखड़ै मुसकाती जोरौ जतळाती । ओलै भक आटा कोलै जिम कुयिणी, हाबर **भांमणियां** सांमणियां हुयणी ।—ऊ. का.

भांमणौ—सं० स्त्री०—१ न्योछावर, उत्सर्ग ।

उ०—हूं तौ हत्थां **भांमणौ**, बडा समत्थां बेह । ज्यां 'जेहा' जादव जिसी, नर निरमियौ नरेह ।—बां. दा.

क्रि० प्र०—जाणौ, होणौ ।

२ बलैया ।

उ०—१ निस दीह सीस उपर रहौ, महाराजा 'अजमाल' रै । **भांमणौ** तुझ भगतांवछळ, कर प्रणांम छंमत करै । —गजउद्धार

उ०—२ तेही लंक सांगा गो जोअना गिणौ पुन्छरेल । मुन्छरेल आंटांगा अगारां मेल मीत । उरावणो रूप रा दुगांरा भांमा दुन्छरेल । **भांमणौ** रांम रा लांगा पूंछरेल मीत ।—र. ज. प्र.

उ०—३ भड़ां जिका हूं **भांमणौ**, केहा नाकू बखांण । पड़ियै सिर धड़ नह पड़ै, कर वाहै केवांण ।—बां. दा.

रू० भे०—भांमणइ, भांमणउ, भांमणां, भांमणा, भांमी ।

भांमनि, भांमिनी, भांमन—देखो 'भामिनी' (रू. भे.)

उ०—**भांमनि** निज छोड़ भोग, परदारा मन का प्रयोग । जांणता नहि जुगति जोग, जनम हार जाता ।—ऊ. का.

भांमरि—देखो 'भांवरि' (रू. भे.)

उ०—फिर **भांमरि** दे सात, करै हथलेव किताई । एक रूप अनमेख, पेख धारै प्रसनाई ।—रा. रू.

भांमरौ—देखो 'आंमर' (अल्पा., रू. भे.)   (डि. प्र.)

भांमा, भांमिण, भांमिणि, भांमिणी, भांमिनी, भांमीणि—सं० स्त्री० [सं० भामिनी] १ स्त्री, औरत ।

उ०—१ आयौ इळि वसंत वधावण आई, पोढ़ण पत्र जळ पुणि परि । आणंद वरण काच मै अगणि, **भांमिणि** मोतिए थाळ भरि ।
—वेलि

उ०—२ नीकी कमधंकी कसी कंचुकी, चंचल लोचन भळकइ बीजली । कंचन तनु गोरी हूं नहीं सांमली, **भांमिनी** मुझ थी नहि काइ भलि ।—स. कु.

उ०—३ जो तुझ सारीखौ जुड़ै, **भांमिण** तिणि भरतार । तो राही नै कांन्ह ज्यूं, कर मेळै करतार ।—ढो. मा.

उ०—४ **भांमिणि** भरतारह सरिसु, अहगति किम पडिहाइ । रयण जडी जडवांणही, तउ पहिरीजइ पाय ।—हीरांणंद सूरि

२ पत्नी, अर्द्धांगिनी ।

३ कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी ।

रू० भे०—भांम, भांमण, भांमणि, भांमणी, भांमनि, भांमनी ।

भांमी—देखो 'भांमणौ' (रू. भे.)

उ०—१ घणनांमी जी, घणनांमी, निज जोर परां घणनांमी । भुज लोक त्रिहूंपत **भांमी**, बिरदैत बहै धुर बांमी । जी घणनांमी ।
—र. ज. प्र.

उ०—२ गदा ले खड़ो लांगड़ौ अग्रगांमी, भलै मात हिंगोळ हिंगोळ **भांमी** । मुणीं मैं जिका आदि अनादि माई, अवतार लै मांमड़ा धांम आई ।—मे. म.

उ०—३ विध रा रछक दीन रा बंधव, सिव रा ध्यांन निगम रा सार। जस रा जळध अंतर रा जांमी, **भांभी** तो सिय रा भरतार।
—र. रू.

उ०—४ अण संख्या मेटे असुरांणी, रांवण कुंभ आद खळ रेस। निडर किया सुर नर नागां नै, आचां तो **भांमी** अवधेस।—र. रू.

भांय—सं० स्त्री० [सं० भूमि] दूरी, फासला।

उ०—१ ताहरां वळै जैतसीजी बोलिया, कहियौ—'खीमाजी! इतरी **भांय** नहीं लाभौ, जोधपुर नै समेळ विचै पावड़ी घणी छै।
—नैणसी

उ०—२ म्हैं घणी अळगी **भांय** सूं वांरा दरसणां वास्तै आई हां।
—फुलवाड़ी

रू० भे०—भां, भुं, भुंइ, भुंई, भुंय, भुइं, भुई, भुय, भूंय, भूय।

भांयको, भांयखौ—सं० पु० [सं० भूमि] १ दूरी, फासला। २ भूमि।

भांयदाग—देखो 'भूमिदाग' (रू. भे.)

भांरंड—सं० पु०—पक्षी विशेष।

भांव—क्रि० वि०—लिए निमित्त।

भांवइ—देखो 'भावै' (रू. भे.)

भांवण—देखो 'भावण' (रू. भे.)

भांवणौ, भांवबौ—देखो 'भावणौ, भावबौ' (रू. भे.)

भांवणहार, हारौ (हारी), **भांवणियौ**—वि०।

भांविश्रोड़ौ, भांवियोड़ौ, भांव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भांवीजणौ, भांवीजबौ—भाव वा०।

भांवर, भांवरि, भांवरी—सं० स्त्री [सं० भ्रमणं] १ परिक्रमा, फेरी। २ विवाह के समय वर-वधु द्वारा अग्नि के चारों ओर दिया जाने वाला चक्कर। फेरा।

उ०—१ **भांवरि भांवरि** भूप रौ, नरपति वदन निहार। रजत महामांणक रतन, आपै सीस उवारि।—रा. रू.

उ०—२ कांई करां और संग **भांवर**, म्हानै जग जंजाळ। मीरां प्रभू गिरधरलाल सूं, करी सगाई हाल।—मीरां

रू० भे०—भांमरि

भांवियोड़ौ—देखो 'भावियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भांवियोडी)

भांवै—देखो 'भावै' (रू. भे.)

उ०—माधौ बिना बसती उजार, मेरे **भांवै**। एक समय मोतियन के धोके, हंसा चुगत जुवार। सरवर छांड तलैया बैठे, पंख लपट रही गार।—मीरां

भांहरौ—देखो 'भ्रूह' (रू. भे.)

उ०—गजां प्राहार हाथळां सिंह छूटौ 'कुसळेस' गाज, कायरां पराजे बोल **भांहरै** करूप। अमांमौ जोधार खेत उछाह रै साजि आयौ, सूर रांमसिंघ सांमौ राह रै सरूप।
—कुशलसिंह चांपावत रौ गीत

भा—सं० पु०—१ आकाश।

२ प्रकाश।

३ मद। (एका. नां. मा.)

४ उज्जवल। (एका. नां. मा.)

सं० स्त्री०—५ लक्ष्मी, श्री। (एका. ह. नां.मा., नां. मा.)

६ यश, कीर्ति। (एका.)

७ रात, रात्रि। (एका.)

८ चमक, कान्ति, प्रभा। (नां. मा.)

उ०—सचोड़ा उरां सांकड़ा आसणोटां, मंडै पीठ मंचां जिसा गात मोटां। जिकां गोळ पींडा उभै चाक जोड़ै, तिकां चामरी लूम **भा** लूम तोड़ै।—वं. भा.

९ मर्यादा। (एका.)

१० किरण। (अ. मा., डिं. को. नां. मा.)

११ शोभा। (अ. मा., नां. मा. ह. नां. मा.,)

१२ बिजली।

सं० पु०—१३ कुटुम्ब में अपने से बड़े के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द।

भाअलोड़—१ देखो 'भालोड़' (रू. भे.)

उ०—छणकार खतंग निछंट छणै, रुग वज्जिय पंख धनंक रणै। फर फाटस नाह सवाह फड़ै, **भाअलोड़** वंभार करंत भड़ै।—पा. प्र.

२ देखो 'भालौ' (अल्पा., रू. भे.)

भाइ—सं० स्त्री० [सं० भ्राष्ट्र] १ भट्टी, भाड़।

उ०—हूं कुमलांणी कंत विण, जळह विहूणी वेल। विणजारा री **भाइ** जिउं, गया धुकंती मेल्ह।—ढो. मा.

२ देखो 'भाई' (रू. भे.)

उ०—कटक सजे कीधो क्रमण, सो इम अप समुभाइ। कांकड़ लग क्रमियौ कंवर, भूप पुगावण **भाइ**।—वं. भा.

भाइगु—देखो 'भाग्य' (रू. भे.)

उ०—वडउं वडेरउं **भाइगु** जांणि, स्रावक नइ घरि चडइ प्रमांणि। करम ना जोइ एवडा फेर, धरम आडा छइं काठिआ तेर।
—चिहुंगत चउपई

भइड़ौ—देखो 'भाई' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सांवण खेती ढोला थे करीजी भंवरजी **भाइड़े** करचौजी निनाण सिट्टां की रुत छाया भंवरजी परदेस में जी, ओ जी म्हारा घणा कमाऊ उमराव थारी प्यारी नै पलक न आवड़ै जी।
—लो. गी.

भाइप, भाइपौ—देखो 'भाईपौ' (रू. भे.)

उ०—पछै नौ महिनां में **भाइपौ** लेय बिट्ठलदास गयौ।
—गोपाळदास गौड़ री वारता

भाइसाइत—सं० पु०—१ एक चौहटे का नाम। (सभा)

२ देखो 'भइसाइत' (रू. भे.)

भाई-सं० पु० [सं० भ्रातृ] १ किसी जीवधारी के संबंध के विचार से वह नर प्राणी जो उसी के माता-पिता या पिता से उत्पन्न हुआ हो। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—अर मोकळ बंस रा अवतंस भाई माधौदास नूं बडै अंग खास रुक्को दे'र हजूर बुलायौ ।—वं. भा.

२ एक ही परिवार या वंश की पीढ़ी में उत्पन्न दूसरा पुरुष ।

उ०—१ अर चांचाउत्त धीरदेव नूं मारियां केड़े तिकण रा भाई बेटां नूं मंडणगढ़ रा सात ग्रांम देर बेघम बंबावदा सूधी चीतोड़ री थांणौ जमाइ दीधौ ।—वं. भा.

३ अपनी जाति या समाज का कोई व्यक्ति, बिरादरी ।

उ०—१ लोक चुगल कांने लगे, घू घू बोल्यौ गेह । भायां सूं भेळप नहीं, विपत लिखी त्यां वेह ।—बां. दा.

उ०—२ सोनग के भाई-बंध, भतीजे दळ आगळ । सूरां तैं सूरा, महापूरां से अदलू ।—रा. रू.

४ मित्र, दोस्त ।

उ०—डाफाचूक व्हियोड़ा दे'त री उण वगत रंगत देखनै राज-कंवर नै हंसी आयगी । हंसतौ ई वौ बोल्यौ—म्हारा भाई, इण वास्तै इत्तौ दुख अर अचूंभौ करण री किसी बात, वरी रा वेस में लड़ाभूम व्हियोड़ी वा मूंडकी तौ आ म्हारै पाखती ऊभी ।

—फुलवाड़ी

५ पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

६ नागाशाही साधुओं की एक शाखा जो प्रायः गुरुद्वारों में ग्रंथ साहिब के पुजारी होते हैं ।

७ बोल-चाल की भाषा में छोटे या समवयस्क व्यक्ति के लिए प्रयुक्त सम्बोधनवाचक शब्द ।

ज्यूं—अरे भाई ! थोड़ौ अठी आइजै ।

उ०—भवण कवण रौ हे रे भाई, जीव तिसां मरतां रौ जाई । पांणी तौ हूं देत पिलाई, ठांव ढेढ रौ हे ठकुराई ।—ऊ. का.

८ घरेलू पशुओं के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला प्यार-सूचक शब्द ।

उ०—खास ठगां रै बारणै आयनै बळदां री रासां ढीली करी । पुचकारतौ बोल्यौ—हौ, भाई हौ ।—फुलवाड़ी

अव्य०—१ प्रशंसा सूचक शब्द, धन्य, वाह ।

उ०—अकस्मात मिळियौ इंदोखै, नैण हीण इक नाई । दोनां हाथ जोड़ दुरगा नै, दुरबळ दसा दिखाई । दया विचार आंख दे दीनी, भले भले भाई भाई ।—मे. म.

२ आश्चर्य सूचक शब्द ।

३ घृणा द्योतक शब्द ।

रू० भे०—भइ, भई, भयी, भाइ, भाउ, भाऊ, भाय, भायर ।

अल्पा०—भइयौ, भाइड़उ, भाईड़ौ, भाईयौ, भैयौ, भायौ ।

भाईड़उ, भाईड़ौ—देखो 'भाई' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ तूं ही रावत्त गोरल्ल, तूं हीज दळ मांही वज्जड । तूं ही रावत्त गोरल्ल, तूं हीज गोरड भाईड़उ ।—प. च. चौ.

उ०—२ कड़ियां तुळोड़ा उण कुत्ता नै देखनैं तुळोड़ा रै आंसूं छळक आया । पूछ्यौ—भाईड़ा, थारी आ कांई दुरगति व्ही ।

—फुलवाड़ी

भाईचारौ-सं० पु० [सं० भ्रातृ-चारः] १ भाईपना, भ्रातृत्व, बन्धुत्व ।

उ०—१ पीछे मुहतैजी नूं कयौ आप म्हांसूं पाघ करौ तद मुहतै जी भाईचारौ कियौ ।—द. दा.

उ०—२ मिनख रा सुख-दुख, हरख-विखाद, उणरी वेदना, उणरी चिंता अर उणरा सपनां नै आपरी वांणी में बांधणा सूं ई मिनखी-चारौ बधै, भाईचारौ बधै । सगळी वसुधा एक कुटंब लागै ।

—फुलवाड़ी

२ मित्रता, दोस्ताना ।

भाईजी-सं० पु०—१ पिता, बाप ।

२ भाई, भ्राता ।

रू० भे०—भाऽजी, भायजी, भायोजी ।

भाईड़ौ—देखो 'भाई' (अल्पा., रू. भे.)

भाईदूज-सं० स्त्री० यौ० [सं० भ्रातृ + द्वितिया] कातिक शुक्ला द्वितीया को मनाया जाने वाला त्यौहार जिस दिन बहिनें अपने भाई को भोजन कराती हैं ।

रू० भे०—भाईबीज, भायूंबीज

भाईपांचम-सं० स्त्री० यौ० [सं० भ्रातृ + पंचमी] भाद्रपद शुक्ला पंचमी जिस दिन बहिनें भाई के राखी बांधती है ।

भाईपौ-सं०पु० [सं० भ्रातृ + रा० प्र० पौ] १ एक ही पुरुष के वंशजों का समूह ।

उ०—१ एक बाळक री वीर माता बाळक पूत री ओ पराक्रम देख मन में हरख लाय कह रही छै—देखौ सखी म्हारौ पती इण कंवर रौ बाप तौ माहेरौ लेनै गयौ छै, अनै इण रौ काकौ भाईपा में मिळण सारू गयौ छै ।—वी. स. टी.

उ०—२ भेळका करंता आ वात दोहूं कांनी देख भारी, सजै ना करारी सोभा भाइपै सुधार । गया वेहूं फौजां राजी-बाजी व्है विचार गाढ़ा, दिया डेरा सोढ़ां बागां अगंजी दातार ।

—बादरदांन दधवाड़ियौ

२ मित्रता, दोस्ती ।

रू० भे०—भाईयप, भायप, भायपौ ।

भाईबीज—देखो 'भाईदूज' (रू. भे.)

भाईयप—देखो 'भाईपौ' (रू. भे.)

उ०—अर रजपूत सूं भाईयप करै । जिकै रजपूत राजा रा भाई-बंध हवै, तीयां सूं प्रीति करै ।—नैणसी

भाईलौ—देखो 'भायलौ' (रू. भे.)

उ०—भाइलि भेद देखाडीउ, सरोवरि करिउ विणास। एह पांणी नवि पीजीइ, असुरां हवि पूगी आस।—कां. दे. प्र.
(स्त्री० भाईली)

भाईयौ—देखो 'भाई' (अल्पा., रू. भे.)

भाईयौ—देखो 'भासियौ' (रू. भे.)

भाईबंट, भाईबंटौ–सं० पु० [सं० भ्रातृ+वण्ट] १ पैतृक सम्पत्ति का भाईयों द्वारा किया जाने वाला हिस्सा।
२ उक्त हिस्से का वह भाग जो उत्तराधिकार में प्राप्त हुआ हो।
रू० भे०—भाईवंट।
अल्पा०—भाईबंटौ, भाईवंटौ।

भाईबंद, भाईबंध–सं० पु० [हिं० भाई+बंधु] १ भाई और मित्र-बंधु आदि।
२ अपनी जाति बिरादरी या नाते के ऐसे लोग जिनके साथ भाईयों का सा व्यवहार होता हो।

भाईवंट, भाईवंटौ—देखो 'भाईबंट' (रू. भे.)

भाउ, भाऊ—१ देखो 'भाई' (रू. भे.)
उ०—पंचाली नउ भाउ पांच पंच पंचाल लेउ गिउ। एतइं केसवु राउ कुंति मिलिवा आवीयउ।—सालिभद्र सूरि
२ देखो 'बहूजी' (रू. भे.)
उ०—म्हांरा काकोजी चरावै टोरड़िया, म्हांरा भाऊजी लावे छकियार। आज म्हांरी बादळी बरसेगी।—लो. गी.
३ देखो 'भाव' (रू. भे.)
उ०—१ वीत रौ दातार लखपति चीतजै सप्रवीत। राखणौ सरजीत कीरति दाखणौ हृद रीत। राज रौ सिरताज कांइम लाज रौ रंढरांण। भाउ रौ दरिआउ देमल राउ रौ कुळभांण।
—ल. पि.

उ०—२ जिहां सुद्ध आसय भूमि पटली, सोहियइ थिरवाय। तिहां ग्यांन दरसन थंभ अनुभव, दिव्य भाउ लसाय।—वि कु.

भाऊगड़दी, भाऊगरदी–सं० स्त्री०—लड़ाई झगड़ा।
उ०—भाऊगरदी हुई जद पटेल माधजी रौ पग कटांणौ। पठांण रांणीयां आपरै घोड़ै चढाय लै निसरियौ। पूनै गयां पछै पटेल बडौ भाग पायौ।—बां. दा. ख्या.

भाएलौ—देखो 'भायलौ' (रू. भे.)
उ०—कमालदी नैं मूळराज इण विखा मांहै भाएला हुवा था, पाघड़ी पलटी हुती।—नैणसी

भाक—देखो 'भाख' (रू. भे.)
उ०—१ है वुकठीआं कांकण हथौ, केवा काढ़ण काज कड़छै। भाक समूं भळकंता भालां, धण लै अरियां खाग धड़छै।
—मोहकमसिंघ राठौड़ रौ गीत
उ०—२ तरै तेजसी चाकरां नैं हुकम कीयौ, जावौ जोगेसर नै मेहेवै पोहचाय आवौ। कोस पचास रौ आंतरौ छै। चाकर मिनखां सूतां ही जोगेसर नै महेवा री हाटां मांहे मेल्हि आया। भाक फाटी। जोगेसर जागियौ।—जगमाल मालावत री वात

भाकणौ, भाकबौ—१ देखो 'भासणौ, भासबौ' (रू. भे.)
उ०—नखी जांणि झूलां जरीतास नांही, मिळी तांमसी राजसी व्रत्ति मांही। प्रकासै किता लंब दंडां पताका, भलै डूंगरा सीस ज्यूं ताळ भाका।—वं. भा.
२ देखो 'भाखणौ, भाखबौ' (रू. भे)
भाकणहार, हारौ (हारी), भाकणियौ—वि०।
भाकिओड़ौ, भाकियोड़ौ, भाक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भाकीजणौ, भाकीजबौ—भाव वा०।

भाकर—देखो 'भाखर' (रू. भे.)

भाकरड़ौ, भाकरड़ौ. भाकरियौ—देखो 'भाखर' (अल्पा., रू. भे.)

भाखरखड–सं० पु०—मूंज की तरह का एक प्रकार का घास, जिसकी रस्सी बनाकर चारपाई बुनने के काम में लिया जाता है।

भाकरी–सं० स्त्री०—देखो 'भक्खरी' (रू. भे)
२ देखो 'भाखर' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—लोवा-पोळ रै आगै पठो जै-पोळ रै ऊपर हा। ६५ भरो भरा गजगीरी ताळा-कूंची ऐ कांम ऐ करायौ, पथर सींधोरीये री भाकरी सूं मंगाय नै।—नैणसी

भाकल—देखो 'भाकलौ' (मह., रू. भे.)

भाकलियौ—देखो 'भाकलौ' (अल्पा., रू. भे)

भाकलौ–सं० पु० [दे०] ऊंट के बालों से बना बिछाने का वस्त्र विशेष।
मह०—भाकल, भाखल।
अल्पा०—भाकलियौ, भाखलियौ।
रू० भे०—भाखलौ।

भाकसी—देखो 'भाखसी' (रू. भे.)

भाकियोड़ौ—१ देखो 'भासियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भाखियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भाकियोड़ी)

भाख [भास्=किरण] १ ऊषा काल।
उ०—१ फोगल पछे धिटाळ, जंगळां झींट झिटाळी। सूरज ऊगण वेळ, फडमलां छबि निराळी। काटणनै किरसांण, बखत बळ भाखां लागै। बांथां नाखै बाळ, मिलै मोट्यारां सागै।—दसदेव
उ०—२ उण तौ घोडी लेनै आधाहीज खडीया। तितरै मे भाख पाटी साह नुं नींद आई सु जागै नहीं।—चौबोली
क्रि० प्र०—फाटणी।
मुहा०—भाख पला नांखणा=सूर्योदय होना, रात्रि मिटना, अंधकार दूर होना।
रू० भे०—भाक, भाखां, भाग।

२ राजस्थानी (डिंगळ) का एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण के अंत में एक गुरु लघु सहित चौदह मात्राएं होती हैं तथा जिसके चारों चरणों का तुकांत मिलाया जाता है।

रू० भे०—भाक।

सं० स्त्री० [संभाष्] ३ देखो 'भासा' (रू. भे.) (ह. ना. मा.) सरस्वती।

४ देखो 'भासण' (रू. भे.)

उ०—चिंता सागर झूलती, नजर धरणी पर राख। मुख बिलगे जोवे नहीं, किण ही सूं नहिं भाख।—जयवांणी

भाखड़ी–सं० स्त्री०—एक प्रकार का डिंगल गीत।

वि० वि०—यह एक मात्रिक छंद गीत है। इस (गीत) में प्रथम ऊपर चार और पांच मात्राओं की गति पर 'जी' शब्द रख कर आगे १४ मात्रा और अन्त में गुरु लघु रख कर आंकणी अर्थात् टेर रखी जाती है, जो गीत के हर द्वाले के उपरान्त बोली जाती है। इसी प्रकार इसके २५-२५ मात्रा के दो द्वाले बनाए जाते हैं। इसके उपरान्त २६-२६ मात्राओं के दो द्वालों वाला बैताल छन्द ऊपर के द्वालों के प्रसंग के सिंहावलोकन पर रखा जाता है। बैताल छन्द में अन्त मे गुरु लघु रहते हैं।

रू० भे०—भाखरी।

२ देखो भाखर (अल्पा. रू. भे.)

भाखण—देखो 'भासण' (रू. भे.)

उ०—'क्यों इयां थोथै अळूंजाड़ां में पड़े है? थारै बाप'र काकै थोड़ी मैं'नत करी ही। छापा काढ़िया, **भाखण** दिया। पण टंकार ई को सजी नी।'—वरसगांठ

भाखणौ–वि० [सं० भाष्] (स्त्री० भाखणी) बोलने वाला, कहने वाला।

भाखणौ, भाखबौ–क्रि० स० [सं० भाष्] १ कहना, बोलना।

उ०—१ भाखियौ तिकां ही बातां, निभायी बेहूंवै भड़ां, फाड़ेजी अनेंडां घड़ां गजां घड़ां फेर। लोहड़ां बजाय घड़ां 'कुसलै' जोधांण लियौ, सारी धरा राज कीधौ पड़ै पछै 'सेर'।

—सेरसिंह मेड़तिया री गीत

उ०—२ कोप करण नूं काळका, सरसत करण सलाह। पूरण अन अंनपूरणां, **भाखे** लोक भलाह।—बां. दा.

२ उच्चारण करना।

उ०—भागल भारथ भीड़ में, बांणी सह बिसरंत। मुख बापूड़ो मावड़ी, भाईड़ो **भाखंत**।—बां. दा.

३ वर्णन करना।

उ०—और अधम तारे बहुतेरे, **भाखत** संत सुजांन। कुबजा नीच भीलडी तारी, जांणै सकळ जहांन।—मीरां

४ प्रकट करना, प्रकाशित करना।

उ०—१ दाखियौ प्रभु कृपा नित देव, **भाखियौ** सुरां दुख रांण भेव। अइलोक कीध रांमण सत्रा स, साहाय करौ हरि जग निवास।

—सू. प्र.

उ०—२ देवी नारदं रूप तें प्रस्न नांख्या, देवी हंस रै रूप तत ग्यांन भाख्या।—देवि.

५ देखो 'भासणौ, भासबौ' (रू. भे.)

भाखणहार, हारौ (हारी) भाखणियौ—वि०।

भाखिओड़ौ, भाखियोड़ौ, भाख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भाखीजणौ, भाखीजबौ—कर्म वा०।

भकणौ, भकबौ, भक्खणौ, भक्खबौ, भखणौ, भखबौ, भक्खणौ, भक्खबौ, भाखवणौ, भाखवबौ—रू० भे०।

भाखर–सं० पु०—१ पहाड़, पर्वत। (ह. नां. मा. अ. मा., नां. मा.)

उ०—डाक डाक अंबक घमहगिया, **भाखर** मिळत असाद कुळ भगिया। कमधज दळ ढालणां कराळां, धमल पड़े धर्मी दळ पाळा।

—सू. प्र.

रू० भे०—भाकर।

अल्पा०—भाखरी, भखरी, भाखरड़ी, भाखरियौ, भाखरी, भाखरड़ी, भाखरि, भाखरियौ।

२ देखो 'भाखरोत' (रू. भे.)

उ०—१ जोधा 'नांपा' 'अमा', भला भगि' डूंगर, **भाखर** 'गांडण' 'गंडळा' 'करन' वरण फौजां वीरव्वर।—गु. रू. ब.

उ०—२ आखरि भार **भाखरां** आवै, गरि गोटो औ बिरद धार। राजां राव बागां रणतूंरा, सूरा' 'मदनां' तणौ गिर।

—मदनसिं सूरसिंह गौड़ री गीत

रू० भे०—भक्खर, भाकर।

अल्पा०—भाकरड़ौ, भाकरियौ।

भाखरकेर–सं० पु० [देशज] केर से मिलता जुलता एक वृक्ष जिसके पत्ते नींबू जैसे मुलायम, कांटा केर जैसा, फल केर जैसा किन्तु आकार में बड़ा होता है। (जालोरगढ़)

भाखरखड़–सं० पु० [देशज] अरावली पर्वत के पास पाया जाने वाला एक प्रकार का घास जिसके रेसे की पतली रस्सियां बनती है तथा जो खाट बुनने के काम आती है।

भाखरगूंदी–सं० स्त्री०—एक प्रकार का वृक्ष विशेष। (जालोरगढ़)

भाखरांनरेस–सं० पु० [दे० भाखर+सं० नरेश] सिंह, व्याघ्र।

(डि. को.)

भाखरि—१ देखो 'भाखर' (अल्पा. रू. भे.) (१)

२ देखो 'भक्खरी' (रू. भे.)

भाखरियौ—देखो 'भाखर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—**भाखरिया** हरिया हुआ, पोखर भरिया पास, तरवरिया प्रफुलित किया, नीर निखरिया खास।—अज्ञात

भाखरी-सं० पु०—१ देखो 'भक्खरी' (रू. भे.)
२ देखो 'भाखर' (अल्पा., रू. भे.)

भाखरोत-सं० पु०—१ गहलोत वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
२ राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति।
३ गोड़ वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

भाखळ—देखो 'बाखळ' (रू. भे.)

भाखल—देखो 'भाकलौ' (मह., रू. भे.)

भाखलियौ—देखो 'भाकलौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—खत्था खेसलिया **भाखलिया** खांधै, बेभड़ दांमोदर चांमोदर बांधै। मुखिया मनमोहण दोहण घर मेढी, गौढै ढेरी व्है खूंणी में गेढी।—ऊ. का.

भाखलौ—देखो 'भाकलौ' (रू. भे.)

भाखवणौ, भाखवबौ—देखो 'भाखणौ, भाखबौ' (रू. भे.)
उ०—कायथ त्याग विचारे काया, केसरिसिंघ रांम का जाया। इण विध अरज दई लिख आगै, **भाखवहूं** तिण थी भ्रम भागै।
—रा. रू.
भाखवणहार, हारौ (हारी), भाखवणियौ—वि०।
भाखविश्रोड़ौ, भाखवियोड़ौ, भाखव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भाखवीजणौ, भाखवीजबौ—कर्म वा०।

भाखवियोड़ौ - देखो 'भाखियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भाखवियोड़ी)

भाखसी—१ कैदियों को सजा देने हेतु भूमितल में बनाई हुई कोठरी। (प्राचीन)
२ कारागार, जेल।
उ०—१ कांमण खोडौ कील सुत, पौरायत परवार। जन 'तुरछी' ग्रह **भाखसी**, मोह के जड़े किमांड़।—तुरछीदास
उ०—२ नाई होय करै अंग मरदन, चाकर होय निवारै चींत। विरद निहार **भाखसी** बैठे, मूरत छिब पलटै मावीत।—भगतमाळ
रू०—भे०—भाकसी।

भाखां—देखो 'भाख' (रू. भे.) (शेखावाटी)

भाखा—देखो 'भासा' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—वरणास्रम ध्रम मरजाद वेद, **भाखा** खट नवरस अरथ भेद। आखरां समंद थागण अथाग, रूपगां चत्र छतीस राग।
—वि. सं.

भाखाखीणौ-वि०—अधभूखा।
उ०—लाडी लाखीणीं धारां धूंधाती, पीवर ऊधांरी पारां पय पाती। **भाखाखीणा** भड़ एवड़ ले आता, धाया धीणा रा गोधन रा धाता।—ऊ. का.

भाखारी—देखो 'भखारी' (रू. भे.)

भाखावटौ—देखो 'भखावटौ' (रू. भे.)

भाखियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ कहा हुआ, बोला हुआ. २ उच्चारण किया हुआ. ३ वर्णन किया हुआ. ४ प्रकट किया हुआ, प्रकाशित किया हुआ.
(स्त्री० भाखियोड़ी)

भाखी-सं० स्त्री० [सं० भाषणम्] वाणी, बोली।

भाखोटौ—देखो 'भखावटौ' (रू. भे.)

भाख्या—देखो 'भासा' (रू. भे.)
उ०—किम आया किसउ ताइ कारिज, कहउ नहीं मेल्हिया किण। मनुख्य तणी **भाख्या** बोलै मुख, जीव जिके वन रहइ जिण।
—महादेव पारबती री वेलि

भाग-सं० पु० [सं० भागः] १ किसी समूची वस्तु का प्रत्येक हिस्सा, खंड, टुकड़ा।
उ०—रच्यौ फेर प्रासाद बाहादरा रौ, घनौ **भाग भू-भाग** माठौ धरा रौ। हुवौ न इसौ थांन न आंन हूंणौं, दिपै इंदरां मंदिरां हूंत दूणौं।—मे. म.
२ किसी समग्र वस्तु का कोई अंश। (पोर्शन)
ज्यू—टांग का निचला भाग, मकान का अगला भाग इत्यादि।
३ गणित की एक क्रिया जिससे किसी वस्तु को बराबर कई खण्डों में बांटा जा सकता है।
४ देखो 'भाग्य' (रू. भे.)
उ०—१ मिळै कठै मनवार किनारौ झेलौ काठौ। औ तौ महा अभाग, भाग में लो मत भाठौ।—ऊ. का.
उ०—२ जाळ टळै मन क्रम गळै, निरमळ पावै देह। **भाग** हुवै तौ भागवत, सांभळजै स्रवणेह।—ह. र.
उ०—३ सेठ ऊपरला मन सूं जवाब दियौ—घणी सखरी बात। घर में सांतरी लोतरवाळी बीनणियां **भाग** सूं मिळै।—फुलवाड़ी
मुहा०—भाग फूटणौ=असफलता मिलना, हानि होना। २ भाग खुलणौ, भाग जागणौ=सफलता मिलना, लाभ होना।
५ देखो 'भाख' (१)।
उ०—दिनूंगा **भाग** फाट्यां पैं'ली पैं'ली जंगळ में लकड़ियां वाढ़ण सारू जावतौ, मथारै दिन चढ्यां सैंर में भारौ बेचने पाछौ वां इज पगां वळतौ।—फुलवाड़ी

भागणौ-वि० (स्त्री० भागणी) १ भागने वाला, पलायनवादी।
उ०—राज, रखै तो च्यार रख, मत राखी चाळीस। अै चाळीसूं **भागणा**, अै च्यारूं चाळीस।—अज्ञात
२ कायर, डरपोक।
रू० भे०—भाजणौ।

भागणौ, भागबौ-क्रि० अ०—१ दौड़ना, भागना।
उ०—कळेजे म्हारे बांसुरी री धुन लागी। हूं अपने ग्रह काज करत रही, स्रवण सुणत उठ **भागी**।—मीरां

२ युद्ध क्षेत्र से कायरता दिखाकर भाग आना, पीछे हट जाना।

उ०—१ सुणी खबर जवनांपत सारी, बळ धेरे जाळौर बिहारी। लड़वा चाव कमधजा लागौ, भूप रावाळत चौड़ै भागौ।—रा. रू.

उ०—२ धिन वे रावत धीरवै, भागा रावसिंगाह। धारा अणियां में धसै, चख मुख चौळ कियांह।—बां. दा.

उ०—३ मुंह न दियै पर मारियै, भागां न करै घाव। साचा गुणां, वेह कियौ वनराव।—बां. दा.

४ चुभना, धसना।

उ०—अेकर वौ घोड़ा री असवारी करण सारू उगारै लारै दौडियौ तौ उगारै डावा पग मैं कांटौ भागग्यौ।—फुलवाड़ी

५ मिटना, नाश होना।

उ०—१ दिन ऊगै नित देखणौ, दाता रौ दीदार। भागै भूख कळेस भय, 'बंक' न लागै बार।—बां. दा.

उ०—२ जो गहि असह मेल्ह कुळ जागै, भवि भवि जिण कुळ मं भय भागै। ततपर धरम सरम प्रज तारण, सुरां सिहायक असुर संघारण।—रा. रू.

उ०—३ कायथ त्याग विचारे काया, केसरिसिंघ रांम का जाया। इण विध अरज दई लिख आगै, भाखव हूं तिण शी भ्रम भागै।
—रा. रू.

मुहा०—भूख भागणी=सम्पन्न होना।

६ चल-विचल होना।

उ०—आडवळे आधीफरइ, एवड़ मांहे अग्गन्न। तिण अजांणा होलइ तणइ, मूरख भागइ मन्न।—ढो. मा.

७ विभक्त करना, हिस्से करना।

८ व्यतीत होना, खर्च होना।

उ०—वागौ थाळ जनम ची वेळा, भागौ दिन अमंगळ भेळा। वाजत्र ससुर बधावा वाजै, नरपत मंगण जणां निवाजै।—रा. रू.

९ नष्ट होना, विध्वंस होना।

भागणहार, हारौ (हारी), भागणियौ—वि०।

भागिओड़ौ, भागियोड़ौ, भाग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भागीजणौ, भागीजबौ—भाव वा०।

भगणौ, भगबौ, भग्गणौ, भग्गबौ, भजणौ, भजबौ, भाजणौ, भाजबौ, भाज्जणौ, भाज्जबौ, बग्गणौ, बग्गबौ, वागणौ, वागबौ—रू० भे०।

भागदौड़–सं० स्त्री० [भाग+दौड़] १ प्रयत्न, कोशिश।

२ जल्दबाजी।

रू० भे०—भागादौड़, भाजदौड़, भाजादौड़।

भागधांम–सं० पु०—ललाट, भाल। (अ. मा.)

भागधारी–वि०—१ हिस्सेदार, भागीदार।

२ देखो 'भाग्यधारी' (रू. भे.)

भागधेय–सं० पु०—धर्म। (ह. नां. मा.)

भागफळ–सं० पु० [सं० भागः+फलम्] १ गणित में भाज्य को भाजक से भाग देने पर प्राप्त होने वाली संख्या।

२ भाग्य का फल।

भागबळी देखो 'भाग्यबळी' (रू. भे.)

उ०—१ [illegible] भागबळी हुवौ।—[illegible]

उ०—२ भागबळी थी भाग [illegible] आपरी [illegible] पाणी [illegible] जाणगी री [illegible]

भागभंवरी–सं० स्त्री० [illegible] शुभ मानी जाती है।

उ०—[illegible] बिचाळै भागभंवरी [illegible] सूंटारोग। [illegible]

भागरा–सं० पु०—[illegible]

भागरीकोड़–वि० [सं० भाग्य+कोटि] [illegible]

उ०—[illegible] भागरीकोड़ [illegible] —[illegible]

भागळ, भागल–वि०—[illegible]

उ०—१ [illegible] !
आप भला भाग नैं [illegible], अबै म्हनै आ [illegible] जनम भेळ सूं।—बी. स. टी.

उ०—२ आसू [illegible] भागळ [illegible] नाखै भिड़ज, अगला सिर [illegible]—बां. दा.

२ व्रत का तोड़ने वाला।

उ०—सागी सतहीणा है अतहीणा, मत हींणा [illegible] पायल सिस पाया [illegible], भागल सिर भाग [illegible]

४ अर्गला, परिघ।

भागळखेल देखो 'भगळगेल' (रू. भे.)

उ०—[illegible] भागळखेल। [illegible]—सू. प्र.

भागवंत–वि० [सं० भाग्यवत्] (स्त्री० भागवंती) [illegible], खुश-किस्मत वाला।

उ०—१ गमस्थ सगलइ कांमइ रे, ताम आत रंगरली नांमइ रे। भागवंत सगलइ कांमइ रे, गम मोटइ लखमी कांत।—प. च. चौ.

उ०—२ अहं नांम सोभै प्रभा भांग एता, जिकै तात विस्वेकर्मा कीध जेता। हिमांनी गम्या मा हरै एक हूंती, अठाईस यो उद्धरी भागवंती।—सू. प्र.

२ देखो 'भागवत' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—उठै ईसफां आसफां नांम आखै, दुवै काळिका चंडिका ओह दाखै। कतेबां कलम्मां उचारै कुरांणां, पढ़ै भारथां भागवंतां पुरांणां।—सू. प्र.

भागवत–सं० पु० [सं० भागवतं] १ कृष्ण के प्रेम और भक्ति-रस की

कथाओं का एक पुराण जिसकी गणना अष्टादश पुराण में की जाती है।

उ०—१ तद पूतळी कही-**स्रीमद्भागवत** पुरांण मांहीं पंचम स्कंध मांहीं स्री महादेव रा पुत्र स्वांमी कारतिक भुवनेस्वरी देवी रौ आराधन कियौ।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ जाळ टळै मन क्रम गळै, निरमळ धारै देह। भाग हुवै तौ **भागवत**, सांभळजै स्ववरोह।—ह. र.

३ सम्पूर्ण कथा या वृत्तान्त।

उ०—सगळी री सगळी **भागवत** बांच्यां कांई मतळब ? वा बीच में ई ठमगी।—फुलवाड़ी

सं० वि० [सं० भगवत] ३ विष्णु भगवान संबंधी, विष्णु संबंधी। ४ तेरह की संख्या। (डिं. को.)

रू० भे०—भागवंत, भागोत, भागौत।

भागवतगीता—देखो 'भगवदगीता' (रू. भे.)

भागवती—सं० स्त्री० [सं० भागवती] गोल दानों की एक प्रकार की कंठी जिसे प्रायः वैष्णव लोग गले में पहनते हैं।

भागवांन—देखो 'भाग्यवान' (रू. भे.)

भागवांनी—सं स्त्री० [सं० भाग्यवत+ई] सम्पन्नता, धनाढ्यता।

उ०—कदेही म्हैं भी आं दाई **भागवांनी** मे टोरा अर टिल्ला लगावतौ।—दसदोख

भागसाळी—देखो 'भाग्यसाळी' (रू. भे.)

भागहार—देखो 'भाग' (७) (रू. भे.)

भागहींण—देखो भाग्यहीण।

उ० जिणथी दो ही बार लड़ाई में पराजय पाई भागै प्रसाद रै अधीन **भागहींण** जवनां रै अधिराज नासिरुद्दीन अपरनांम महमूद तीजी बार साम्हैं चलाई रण रौ रस चाखण रौ मनोरथ भी न जागियौ।—वं. भा.

रू० भे०—भाग्यहींण।

भागांणी—वि०—भागने वाला, कायर।

उ०—रामपी आधी सांडियां, 'धावल' सुतन मधीर। समभ गयौ जद सायरां, **भागाणी** हुथ भीर।—पा. प्र.

भागादौड़—देखो 'भागदौड़' (रू. भे.)

उ०—पावस हुयां व्यतीत, टिकै न टीब ठिकांणै। द्रुंत-गत **भागादौड़**, हेड़ रमबा हळमांणै।—दसदेव

भागि—देखो 'भाग्य' (रू. भे.)

उ०—नीपणां दे लाख 'लाखौ', राखि जांणै नांमौ। सात्रवां री पाढ़ कढ़ै, गाढ़धारी सांमौ। आपरौ औसाप मोटौ, **भागि मोटौ** एहो। जादवां रौ रूप भूपां, भूप जेहै जेहौ।—ल. पि.

भागियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ दौड़ा हुआ, भागा हुआ। २ युद्ध क्षेत्र से कायरता दिखाकर भागा हुआ, पीछे हटा हुआ। ३ खण्ड-खण्ड हुआ, टूटा हुआ. ४ चुभा हुआ, गड़ा हुआ. ५ क्षुधा शान्त हुवा हुआ. ६ चल-विचल हुवा हुआ.

७ देखो 'भांगियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भागियोड़ी)

भागिलौ—वि०—भागने वाला, डरपोक, कायर।

भागी—सं० पु० [सं० भागिन्] (स्त्री भागण, भागणि, भागणी, भागिण भागिणी) १ भाग्यशाली, खुश-किस्मत।

उ०—१ खस रा टाटां घेरिया, आंडां ओरा जाय। **भागी** मिनख न भेटिया, लूआं बिरथा लाय।—लू

उ०—२ कर नवल किसोरी संघर सोरी, मरियादा मेटंदा है, बिसफळ बैरागी त्रिभवन त्यागी, **भागी** भुज भेटंदा है।—ऊ. का.

उ०—४ मद **भागणि** मो सारसी, राज बैलै ली राय। कोइकपुर की कांमणी, रखेली बी समाय।—पनां

उ०—५ अराहे राराहे घणूं अव्वलोके, रुवौ नाग लोकां तणौ राजलोके। इसी **भागणी** कोण जे कूख जायौ, हिंडोरी घलायौ घरे हुल्लरायौ।—नागदमण

२ हिस्सेदार, भागीदार।

३ अधिकारी, हकदार।

उ०—बाप न्याव करै सो कबूल। बाप री कैणी लोपै वौ डंड रौ भागी।—फुलवाड़ी

भागीरथ—देखो 'भगीरथ' (रू. भे.)

उ०—बनचर गण लीधां बहे, **भागीरथ** रै राह। स्री सीता भरतार मम, भागीरथी प्रवाह।—वां. दा.

भागीरथी—सं० स्त्री० [सं०] गंगा नदी।

उ०—रटै **भागीरथी** सुणौ लहरीरवण, लाल रंग रुचिर चौ नीर लागौ। कळह तटि गवड़ है गै भड़ां कचरिया, भिड़ै पूरब तणौ साह भागौ।—राजा अनिरुद्धसिंह गौड़ रौ गीत

मुहा०—भागीरथी गंगा होणौ=कठिन कार्य, दुष्कर

भागू—वि० भागने वाला, डरपोक, कायर।

भागोड़ौ—देखो 'भागियोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—पग में कांटो **भागोड़ौ** है, इण सूं उठीजै तौ कोनीं।

—फुलवाड़ी

भागोटी—देखो 'भखावटी' (रू. भे.)

भागोत—देखो 'भागवत' (रू. भे.)

भागौ—वि० [सं० भग्न] १ टूटा हुआ, भग्न।

उ०—ठाकुरसिंह **भागै**-मन उदास थक्यो निसास गेरतौ जावै छै।

—डाढ़ाळा सूर री बात

मुहा०—भागौ मन=निराश, व्यथित।

भागौत—देखो 'भागवत' (रू. भे.)।

उ०—कहां रांम कहां लखण नांम रहिया रामायण। कहां क्रसण

बळदेव प्रगट भागौत पुरायण ।

—महाराणा राजसिंघ जगतसिंगोत री गीत

भाग्डिदि—क्रि० वि०—तत्काल ।

उ०—**भाग्डिदि** भुंइ लुटै खिण छुटै वलि अम्भटै । प्रगट भट ऊछलै जिम पतंगा । तिहां करै घाव देइ ओट बड वेग सूं, मरद न मुडै ज्जुडै जिम मतंगा ।—वि. कु.

भाग्य—सं० पु० [सं० भाग्यं] १ प्रारब्ध, किस्मत ।

२ सौभाग्य ।

३ हर्ष ।

४ समृद्ध ।

रू० भे०—भाग, भागि ।

भाग्यचक्र—सं० पु० [सं० भाग्यं+चक्रं] भाग्य, तकदीर ।

२ अदृष्ट ।

रू० भे०—भागचक्र ।

भाग्यबळ—सं० पु० [सं० भाग्यं+बलं] १ भाग्य, तकदीर ।

२ अदृष्ट ।

रू० भे०—भागबळ ।

भाग्यबळी—वि० [सं० भाग्यवल+ई] भाग्यशाली ।

रू० भे०—भागबळी ।

भाग्यभाव—सं० पु०—फलित ज्योतिष के अनुसार जन्मकुंडली में जन्म-लग्न से नवां स्थान जिससे मनुष्य के भाग्य के शुभाशुभ के बारे में विचार किया जाता है ।

भाग्यवांन—वि० [सं० भाग्यवत्] १ भाग्यवान्, खुशकिस्मत ।

२ समृद्धवान, हराभरा ।

३ अमीर, धनाढ्य ।

रू० भे०—भागवांन ।

भाग्यसाळी—वि० [सं० भाग्यशाली] १ (स्त्री० भागसाळण) भाग्यवान ।

२ संपन्न, धनाढ्य ।

३ खुशकिस्मत ।

भाग्यहींण—अभागा, हतभाग्य ।

रू० भे०—भागहीण ।

भाडंगनेर—सं० पु०—१ भटनेर शहर का नामान्तर जिसे आजकल हनुमानगढ़ कहते हैं । यह घग्घर (प्राचीन सरस्वती) नदी के किनारे पर स्थित है ।

उ०—दला साथ चडियौ दुभ्फल, रज गैण ढकांणी । देखण **भाडंगनेर** दिस, पंथ कीध पयांणी ।—वी. मा.

२ गंगानगर जिले के हनुमानगढ़ शहर में स्थित एक प्राचीन किला, जिसका पुराना नाम भटनेर है ।

२ चुरू जिले के अन्तर्गत तारानगर तहसील में एक प्राचीन नगर भाडंग जहां सोनगरे चौहानों का राज्य था ।

रू० भे०—भटनेर, भटभनेर ।

भा[illegible]णी [illegible] ।

उ०—अतरै अगी आग उभी रही [illegible] नाहरी नूं कहै, 'साबास, तैं भली सोभ कीवी ।' [illegible] नाहरी नूं कहै, मांगै सु देउ । तूं सांची हुई ।' नाहरां **भाग्याणी** कहै, '[illegible], तूं पाप जांणै अथवा धरम जांणै । [illegible] कीधी ।

—[illegible] री बात

भाड़ंग्या—सं० स्त्री०—सोलंकी वंश की एक शाखा ।

भाड़—सं० पु० [सं० भ्राष्ट्र] १ अन्न के दाने भूनने की भड़भूंजों की भट्टी या बड़ा चूल्हा ।

उ०—खंगां पाखड़ री धारां [illegible] री [illegible], [illegible] री कना **भाड़** री भभक । [illegible] पा[illegible] री [illegible] री '[illegible]' [illegible], [illegible] आंनाड़ री बजै [illegible] री [illegible] ।

[illegible] जी री गीत

२ लाक्षणिक अर्थ में वह स्थान जहां सब कुछ नष्ट हो जाता है ।

मुहा० [illegible] निकम्मा बैठ रहना । भा[illegible] व्यर्थ कार्य करना । भाड़ में जांणौ—व्यर्थ होना ।

देखो 'भट्टी' ।

भाड़ेती—सं० पु० [सं० भाट+वृत्ति] १ किराया देने वाला व्यक्ति, किरायेदार ।

२ भाड़े की वृत्ति करने वाला, किराया लेने वाला ।

भाड़ौ—सं० पु० [सं० भाटक] किसी दूसरे व्यक्ति की सेवाओं, वस्तु आदि के उपयोग के बदले में दिया जाने वाला धन ।

उ०—१ जग पड बचन कहै जोधपुरो, [illegible] ।

दहबारी कांकल हुवै तण दिन, **भाड़ौ** अग [illegible] ।—बां. दा.

उ०—२ म्हांरी कै'णी मांनौ, गंगाजी पाछा मत जावौ, नांमी बळदां री कोई गाडी **भाड़ै** करलौ । [illegible]

भाच—सं० स्त्री०—एक प्रकार की लाग (कर) जो जागीरदार द्वारा गाव वालों से वसूल किया जाता था ।

रू० भे०—भाछ ।

भाचक्र—सं० पु०—क्रांति-वृत्त ।

भाचर, भाचरियौ, भाचरौ—सं० पु०—१ सूअर का छोटा बच्चा ।

उ०—वे च्यारूं **भाचरिया** म्हनै कदास दणी सूवर रा दीसै ।

फुलवाड़ी

रू० भे०—भूचर । ठेठरा कांसी

२ एरण, जिस पर लोहार लोहा गर्म करके पीटता है ।

उ०—तणै भ्रम 'ऊद' असवार चेटक तणै, घणै मगरूर बहरार घटकी । आचरै जोर मिरजा तणैं आछटी, **भाचरै** चाचरै बीज भटकी ।—गोरधनजी चारण

भाछ—देखो 'भाच' (रू. भे.)

भाजक–सं० पु० [सं०] १ गणित में वह संख्या जिसका किसी संख्या में भाग दिया जाता है।
वि०—२ विभाजन करने वाला, बांटने वाला।

भाजकांस–सं० पु० [सं० भाजक+अंश] गणित में किसी राशि को भाग देने पर शेष बचने वाली संख्या।

भाजड–सं० पु०—१ भागने की क्रिया या भाव।
उ०—**भाजड** में भीत सकट रै हेठै सपत्नीक सूता जोइया दला नूं जाइ हणियौ।—वं. भा.

भाजण–सं० पु०—बर्तन, पात्र।
उ०—अमरित को **भाजण** निकट, भरयौ धरयो नहीं पीन। यूं देख्यां अमर न भया, परस्यां विना प्रवीण।—प्रवीण
२ भागने की क्रिया या भाव।
वि०—भागने वाला, कायर, डरपोक।

भाजणौ–वि०—देखो 'भागणौ' (रू. भे.)

भाजणौ, भाजबौ—१ देखो 'भागणौ, भागबौ' (रू. भे.)
उ०—१ बगतर सहित अछळइ बरंगा, धीब पडइ नेजाळ धड। भाजइ अगिट अरी चा भिडतां, धाय रमांडइ ति विघ धड।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ सूर भरोसै आपरै, आप भरोसै सीह। भिड़ दहूं ऐ भाजै नहीं, नहीं मरण री बीह।—बां. दा.
उ०—३ भयचक हुवौ, अनेक महाभड, दिख री भाज गई भकभूर। अयौ (आयौ) दिख रइ घट ऊपर, केवा मांगण वडउ करूर।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—४ जंबक सबद नचींत कर, डर कर तूं मत भाज। सादूळौ खीजै सुणै, जळहर हंदौ गाज।—बां दा.
उ०—५ साजी बाजी सुरग सिधायौ, मिळे दांन खग दुवा मद। भेट हुवौ नंह जको **भाजसी**, कूरम धोकौ सूफ कद।—बां. दा.
उ०—६ **भाज** गई चिंता भड़ां, घड़ां कटट्ठ जंग। नांमा रक्खण देख खळ, सांम्हा किया तुरंग।—रा. रू.
उ०—७ खुधा न **भाजै** पांणियां, त्रखा न भाजै अन्न। मुकत नहीं हरि नांव बिन, मांनव साचै मन्न।—ह. र.
भाजणहार, हारौ (हारी), भाजणियौ—वि०।
भाजाड़णौ, भाजाड़बौ, भाजाणौ, भाजाबौ, भाजावणौ, भाजाववौ
—प्रे० रू०।
भाजिओड़ौ, भाजियोड़ौ, भाज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भाजीजणौ, भाजीजबौ—भाव वा०।

भाजा-दौड़ी—देखो 'भागदौड़' (रू. भे.)
उ०—खेड़ै री लूंकड़ी बाघ नै डरावै, पण ठंठारां री बिल्ली खड़कै सूं कद डरै, अरजन रै बेलीड़ां घणी **भाजा-दौड़ी** करी, पण मांमलै री जीत तौ भुगानै री सांचोट में ही रै'यी।—दसदोख

भा'जी—देखो 'भाईजी' (रू. भे.)

भाजी–सं० स्त्री०—१ तरकारी, सब्जी।
उ०—आदर करै अपार, तौ भोजन **भाजी** भली। आंणै मन अहंकार, कड़वा घेवर 'किसनिया।—अज्ञात
२ मांस।

भाज्जणौ—देखो 'भागणौ' (रू. भे.)

भाज्जणौ, भाज्जबौ—देखो 'भागणौ, भागबौ' (रू. भे.)
भाज्जणहार, हारौ (हारी), भाज्जणियौ—वि०।
भाज्जिओड़ौ, भाज्जियोड़ौ, भाज्ज्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भाज्जीजणौ, भाज्जीजबौ—भाव वा०।

भाज्जियोड़ौ—देखो 'भागियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भाज्जियोड़ी)

भाज्य–सं० पु० [सं०] वह संख्या जिसमें किसी संख्या का भाग दिया जाय।

भाट–सं० पु० [सं० भट्ट] १ वंश-वृत्त लिखने वाली एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति। (मा. म.)
(स्त्री० भाटण, भाटणी)
रू० भे०—भट।

भाटक–सं० पु० [सं०] १ किराया, भाड़ा।
[अनु०] २ शस्त्र विशेष से प्रहार करते समय उत्पन्न ध्वनि।
उ०—खडग तणां खाटक, खेडा तणा **भाटक**। तरूयारि तणा झाटक। धुनुस तणा धोंकार, अणी तणा अंगार। बांण तणी व्रस्टि। इसी सूरा राउत तणीं सौरयव्रत्ति।—कां. दे. प्र.

भाटकणौ, भाटकबौ–क्रि० स०—क्रोध में आग-बबूला होना।
भाटकणहार, हारौ (हारी), भाटकणियौ—वि०।
भाटकिओड़ौ, भाटकियोड़ौ, भाटक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भाटकीजणौ, भाटकीजबौ—भाव वा०।

भाटकळ—देखो 'भटकळ' (रू. भे.)
उ०—दीपै भुजाई देव मै कळा, रांणी रांणि रावताळा। भडां हुवै **भाटकळा** आठौ पुहरं।—गु. रू. बं.

भाटकियोड़ौ–भू० का० कृ०—क्रोध में आग बबूला हुवा हुआ.
(स्त्री० भाटकियोड़ी)

भाटखळ–सं० पु०—भीड़, समूह, जमघट।

भाटभाखा, भाटभायखा–सं० स्त्री० [सं० भट्ट+भाषा] पिंगल भाषा।

भाटभोट–क्रि० वि० [अनु०] बहुत, लगातार, तड़ाभड़ी।
उ०—महताबां छीकादार अरु चोरमार। जिकां पर आदमी तईनात पयादा अर असवार। गोफणियांरी देणी च्यारूं तरफां सूं **भाटभोट** जिकांरै बीच-बीच फिरंगी हुकारी पण चोट।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
२ चुगलखोर।

भाटिय—देखो 'भाटी' (रू. भे.)

उ०—समोभ्रम 'दूद' 'विहारिय' सूर, 'गधावत' 'बखतसी' गगरूर। घटां खग लोह करै घमसांण, पटायत **भाटिय** एह प्रमांण।

—सू. प्र.

भाटिया—सं० पु०—गुजरात की एक जाति विशेष जो अपने आपको क्षत्रियों के अन्तर्गत मानती है।

भाटियांणी—देखो 'भटियांणी' (रू. भे.)

उ०—केसोदास भाणांवत मोटा राजा रो दोहितो। **भाटियांणी** सजना नांनी हुती। श्रै केसोदासजी घणा वरस नांनी कनै रह्या।

—बां. दा. ख्या.

भाटियौ—देखो 'भाटी' (अल्पा., रू. भे.)

भाटी—सं० पु०—१ क्षत्रियों के अन्तर्गत की एक शाखा या उप शाखा का व्यक्ति। (मा. म.)

२ देखो 'भट्टी' (रू. भे.)

उ०—इक **भाटी** आवखी, पियै दुब्बार सराबा। भैंगा आधा भखै, बोट नुकळमै कबाबां।—सू. प्र.

रू० भे०—भाटिय, भाटीय, भाठी।

भाटीपौ—सं० पु०—जयसलमेर राज्य नाम।

उ०—आसकरन्न 'पिराग' तण, पड़ियौ खाग बजाड़। सुतन सजीपै भोज सम, जळ **भाटीपै** चाड।—रा. रू.

भाटीय—वि०—१ भाटी वंश का।

उ०—**भाटीय** 'भांण' हरनाथ भाख, 'अमरेस' खांन रिणछोड़ आख। सूरजमल 'जीवण' खेतसीह, अनसूर लेखो 'अखेई' अबीह।

—रा. रू.

२ देखो 'भाटी' (रू. भे.)

भाटौ—सं० पु०—१ पत्थर।

उ०—मिळै कठे मनवार. किनारौ भेलो काठौ। औ तौ महा-अभाग, भाग में लौ मत **भाटौ**।—ऊ. का.

मुहा०—भाटा तिरणा=प्रभावशाली होना। भाटा नीचे हाथ दबणौ=संकट में फंसना। भाटा पड़णा=नष्ट होना, ईश्वर का कोप होना, दुखद समाचार सुनकर सहम जाना, विघ्न पड़ना। भाटा पिघळणा=असंभव कार्य संभव होना। भाटा भांगणा=अन्यान्य कार्य करना, जगह जगह भटकना। भाटा भिड़ावणा=लड़ाई करवाना। भाटा सूं माथौ फोड़णौ=व्यर्थ सिर खपाना (मि०भींत सूं भचेड़ा लेना)। भाटौ पटकणौ=विघ्न डालना।

२ समुद्र के जल की वह अवस्था जब वह ज्वार के पश्चात् वेग के साथ नीचे उतर कर पीछे हटने लगता है।

रू० भे०—**भाठौ**।

अल्पा०—भाटियौ, भाठियौ।

भाठभीठ—क्रि० वि० [अनु०] शस्त्र प्रहार की ध्वनि। (भगवान रतनू)

भाठियौ—देखो 'भाटौ' (१) (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मरीनां गीता मेंग, पूरी बह आमा नाळै। पाणी री गो दांत, **भाठियौ** भली दिखाळै।—[illegible]

भाठी—१ देखो 'भाटी' (रू. भे.)

२ देखो 'भट्टी' (रू. भे.)

उ०—**भाठी** मद [illegible] समार, [illegible] नालइ भमार। [illegible] रोकड़ा आपइ हाथि, उरति पूंगलां लीधां साथि।—कां. दे. प्र.

भाठील—सं० पु०—[illegible]

उ०—लोड़तां घूमतां असुर [illegible], [illegible] **भाठील** [illegible] भमरै। हुलां प्यालां [illegible] ठेलियौ [illegible], [illegible] रै [illegible], [illegible] कमरै।—राव जैतसी [illegible] री वात

भाठौ—देखो 'भाटौ' (रू. भे.)

उ०—सूंस मांग [illegible], [illegible]। [illegible] आथ जुं, [illegible] भाठौ [illegible]।—[illegible]

भाड—वि०—१ गरीब, [illegible]।

२ मूर्ख, [illegible]।

सं० पु०—१ स्वर्णकार द्वारा प्रयोग किया जाने वाला सोने तारों को खींचने का एक औजार।

२ बड़ा मेंढक।

भाडणौ, भाडबौ—क्रि० स०—१ छल करना, ठगना।

उ०—देवी नागणां रूप बळराव भाडे, देवी रूप बळराव मेरू उपाडे। देवी मेरगिर रूप सागर वरोळे, देवी सागरं रूप गिरमेर बोळे।—देवियांण

२ देखो 'बाढणौ, बाढबौ' (रू. भे.)

भाडणहार, हारौ (हारी), भाडणियौ—वि०।

भाडिओड़ौ, भाडियोड़ौ, भाड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भाडीजणौ, भाडीजबौ—कर्म वा०।

भाडलीआठम—सं० स्त्री०—[illegible] कृष्ण पक्ष की अष्टमी।

रू० भे०—भाडळी अष्टम।

भाडळीनम—सं० स्त्री०—आषाढ़ शुक्लपक्ष की नवमी तिथि।

रू० भे०—भड्लीनम।

भाडिज—देखो 'भाडेज' (रू. भे.)

उ०—ते किस्या घोडा—तेजी तुरंग गह्वरा [illegible] खुरसांणा भयणा हयांणा रोहवाल [illegible] मंदकीरा [illegible] **भाडिजा** उराहा सेराहा।—व. स.

भाडियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ छल किया हुआ, ठगा हुआ.

२ देखो 'बाढियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भाडियोड़ी)

भाडेज—सं० पु०—एक विशेष प्रकार का घोड़ा।

उ०—बणै लूमझूमां हुवा सज्ज बाजी, तुखारी खुरसांण **भाडेज**

ताजी। किता खेत कंबोज बाल्हीक कच्छी, उडै फाळ लै लै फिरै ढाळ अच्छी।—वं. भा.

रू० भे०—भाडिज, भादिज, भारिजा।

भाणौ–वि० (स्त्री० भाणी) रुचिकर, सुहावना।

उ०—मीठी रे लागइ वांणी जिन तणी, जागइ जेह थी रे ग्यांन। ए वांणी मन **भाणी** माहरइ, मांनु सुधा रै समांन।—वि. कु.

भाणौ, भावौ–क्रि० स० [सं० भा] १ रुचिकर लगना, अच्छा लगना, पसन्द आना।

उ०—कमुद-जन विकस सकुछै कमळ-कंस कुंभ, भावकां चकोरां नयण **भायौ**। सबळ तम तौम मथुरा गयंद तणै सिर, अकळ गोकळ तणौ चंद आयौ।—बां. दा.

२ शोभित होना, फबना, सुहावना लगना।

३ चाहना, इच्छा करना।

उ०—१ वह दग्गै सूं खांन बहादर, आयौ गढ़ जोधांणै ऊपर। खोलै पंजौ कोल दिखायौ, भव नह मिटै तुम्हारौ **भायौ**।—रा. रू.

उ०—२ आपनौ ई भायौ 'ऊमर' कांम नें कियौ। देव को सुहायौ जहां पांव नां दियौ।—ऊ. का.

४ स्वादिष्ट लगना।

भाणहार, हारौ (हारी), भाणियौ—वि०।

भायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भाईजणौ, भाईजबौ—कर्म वा०।

भात–सं० पु०—१ पकाए हुए चावल।

२ व्यंजन, भोजन।

उ०—चंडी भोग चत्रग्रसी, **भात** चत्रग्रसी पुहप भर। पुड़ी अस्ट परकार, अनै आचार अपंपर।—सू. प्र.

२ विवाह में कन्या पक्ष की ओर से दिया जाने वाला बड़ा भोज।

उ०—१ बडा **भात** रौ जीमण हौ। सेठ खुद घर घर जाय आखा गांव नै निवतियौ।—फुलवाडी

उ०—२ सारी जिनस कुमेर समोबड, खोल भंडारा खांत सूं। आछा भोग अनेक अचारां, **भात** दिया बहु भांत सूं।—रा. रू.

३ विवाह के समय वर-वधू के ननिहाल वालों की ओर से दिए जाने वाले वस्त्राभूषण आदि।

उ०—जरिया हूंदा पेचा मेरे सुसरै तांई ल्याई रे। लंपा झंपा री साड़ी मेरी सासू तांई ल्याई रे। बीरा, चूनड़ी उढ़ाई घरण देवा रै। **भात** लेकर आई जांमण जाया रे।—लो. गी.

४ विवाह में बड़े भोज के समय गाया जाने वाला लोक-गीत।

रू० भे०—भत, भाथ।

भातड़ियौ–सं० पु०—गांवों में फिर-फिर कर धंधा करने वाला सुनार।
—मा. म.

२ देखो 'भात' (अल्पा., रू. भे)

३ देखो 'भाथौ' (अल्पा., रू. भे.)

४ देखो 'भातौ' (अल्पा., रू. भे.)

भातड़ौ–सं० पु०—१ खाने का सामान आदि भरने का चमड़े का थैला।

उ०—वौ आपरे आटा रौ **भातड़ौ** ठाकर री बेटी ने सोगरा पोवण सारू मांय दियौ।—सू. प्र.

२ देखो 'भाथौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—भार सोर **भातड़ां**, सूत सिलहां सांमांनां। सरब भार सिरताज, भार पुरकार खजांनां।—सू. प्र.

भातवौ–सं० पु० [रा० भात+रा० प्र० वौ] भानजा या भानजी के विवाह में बहन के लिए वस्त्राभूषणादि लाने वाले भ्रातृगण।

उ०—उड वायसडा म्हारा पीयर जा, नूंत पियर रा **भातवी** जे। भल नूंती रै म्हारी जळबळ जांमी बाप, रातादेग्री म्हारी माय नै जे।—लो. गी.

रू० भे०—भतई, भत्ती, भाती।

भात्ति—देखो 'भांति' (रू. भे.)

उ०—हुई! हुई! देव किसूं करिउं, रत्न उदालिउ हत्थि। कालि किसूं कारण हतूं, आंन अनेरी **भात्ति**।—मा. कां प्र.

भाती–सं० पु०—१ खेत में किसान या मजदूर के लिए भोजन लेकर जाने वाला व्यक्ति।

उ०—हाल घरै हल डूंगरां, वळद गऊ रै पेट। हाळी हींडै पालणै, **भाती** पूंचौ खेत।—अज्ञात

२ देखो 'भातवौ' (रू. भे.)

उ०—म्हारै रिमक झिमक **भाती** आज्यौ, बीरा म्हारै कांनां नै पत्ता लाज्यौ, म्हारै कुंडल बैठ घड़ाज्यौ।—लो. गी.

भातीजौ—देखो 'भतीजौ' (रू. भे.)

उ०—ए ईयै भांत रहतां, एक दिन सांवळसाह अर सांवळसाह रौ बेटा-**भातीजै** बैठा वातां करता हूंता अर राजा विजैसाल रा घोड़ा दौड़ता हूंता।—बीजड़ बीजोगण री वात

भातौ–सं० पु० [सं० भक्त] १ घर से बाहर जाते समय साथ में लिया जाने वाला पकाया हुआ भोजन।

उ०—पखवाड़ौ बीत्यां चौधरण साथै तीन दिनां रौ **भातौ** बांधण लागी तौ चौधरी मुळकनै कह्यौ–बावळी, आ कांई गैलाई करै! हाल तांई धणी रा लखण सावळ ओळखिया कोनीं दीसै।
—फुलवाड़ी

२ किसी खेत में काम करने वाले व्यक्ति के खाने के लिये खेत में भेजा जाने वाला भोजन।

उ०—बिकसी **भाता** ले भतवारां वाळी, चंगी चौधरण्यां सतवारां चाली। जोवन रायजादी सादी सिणगारी, नखसिख संचै में ढळियोड़ी नारी।—ऊ. का.

३ पुट।

४ देखो 'भाथौ' (रू. भे.)

भात्रीज, भात्रीजौ—देखो 'भतीजौ' (रू. भे)

उ०—१ केसरियां पहर मौड़ माथै कस, हंसै बहसिया होडा-होड।

कीधा भला देहुरा कारण, काकै अनै भात्रीजै कौड ।

—सुजांणसिंघ भवानीसिंघ सेखावत री गीत

उ०—२ जाहरां गोगादेजी दलौ मारियौ, ताहरां दला री भात्रीजौ हांसू पड़ोहियो चढ़ि अर पूंगळ नूं दौड़ियौ ।—नैणसी

भाथ—देखो 'भात' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—असवारी तुं आज करि, सेन सबळ लेई साथि । मग म भरडे आपणा, तेह नूं काटे **भाथ** ।—मा. कां. प्र.

भाथड़ौ—१ देखो 'भाथौ' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'भातौ' (अल्पा., रू. भे.)

भाथळ—देखो 'भाथौ' (मह., रू. भे.)

उ०—हुव वेरन कीजिय वेग हकै, धुणियाळ मिळी भड़ 'पाल' धकै । विजड़ी जड़ **भाथल** बांध विनै, कड़ भीड़ कठठ्ठत 'पाल' कनै ।

—पा. प्र.

भाथाइत—देखो 'भथाइत' (रू. भे.)

उ०—लाख बिच्यारि वांणिजू चालइ, बार लाख उलगांणा । करकटीया हबसी **भाथाइत**, फरसीधर सपरांणा ।—कां. दे. प्र.

भाथाळ—सं० पु० [सं० भस्त्रा+रा० प्र० आळ] तरकसधारी ।

उ०—एहवुं आयस लहइ प्रधांन, ऊदलपुरि ऊतारउ खांन । सरिसा एक सहस **भाथाळ**, राजडीउ मेल्हिउ रखवाळ ।—कां. दे. प्र.

भाथी—सं० स्त्री० [सं० भस्त्रका] १ लौहार की भट्टी में आग सुलगाने की चमड़े की धौंकनी ।

२ पंवार वंश की शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

(बां. दा. ख्या.)

भाथौ—सं० पु० [सं० भस्त्रा] तरकस, तुणीर ।

उ०—१ **भाथां** कटि करगां झलि भालै, हेक लाख धांनंखर हालै । जंगी हवद जड़िया जमजाळा, पांच हजार गयंद पखराळा ।

— सू. प्र.

उ०—२ पाळा पार न पांमीइ, जिम तारा आकासि । भडि भीडिया **भाथा** कवच, सबळ सजाई पासि ।—मा. कां. प्र.

रू० भे०—भथारौ, भातौ, भुतांण, भुथांण भूथड़, भूथांण, भूथारण ।

अल्पा०—भातड़ियौ, भातड़ौ, भाथड़ियौ, भाथड़ौ ।

मह०—भाथळ ।

भादउ, भादरउ—देखो 'भादवौ' (रू. भे.)

उ०—**भादउ** कादउ मचि रह्यउ, कलिण कल्या बहु लोकोजी । देखी करुणा ऊपजै, चंद्रकांता जिम कोको जी ।—वि. कु.

भादरव—देखो 'भादवौ' (मह., रू. भे.)

उ०—हाथी पूछ्यो होय, (अेने) केम करी उठाडिये । जेठवा विचारी जोय, **भादरवो** जाय भांण ना ।—जेठवा

भादरवी—वि० [सं० भाद्र+रा० प्र० वी] देखो 'भादवी' (रू. भे.)

भादरवौ—देखो 'भादवौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ पुरियौ **भादरवौ** धुरियौ नह फीकौ, वीरम्दरज आगै लागै नह नीकौ । तिरिया संगारा भूपर नर तिरसै, बिरिया अंगारा ऊपर सूं बरसै ।—ऊ. का.

उ०—२ **भादरवै** ले धूड, मोकळां गोगा मांडां । गेनां पीळ साज, चढ़ावा खीर'र खांडां ।—दसदेव

भादव—देखो 'भादवौ' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—रीतै अपण वीयौ वड़ राजा, 'दूद' छिनौ तण दवाकर । **भादव** जनम दूसरै भरसी, सूखा ईसर तणौ सर ।

—राव दुरजणसाल हाडा री गीत

भादवड़ौ—देखो 'भादवौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—गमी अमीणौ साहिबौ, गिणै पराई देह । भर बरसै पग नाक सिर, ज्यूं **भादवड़ै** मेह ।—बां. दा.

भादवी—वि० [सं० भाद्रपदी] भादौ मास की ।

उ०—हुवै चम्मरां झाटका जोति हुवै, सदा उतारै आरती सांझ सूवै । तकै **भादवी** माह ऊणान्त तिथी, पड़ै मास रै पास प्रबीप प्रत्थी ।—मे. म.

सं० स्त्री०—भादौं मास की तिथि ।

रू० भे०—भादरवी, भाद्रवी ।

भादवौ—सं० पु० [सं० भाद्रपदः] भादौं नामक वर्षा काल के एक मास का नाम ।

उ०—१ रात पड़तांई **भादवा** री कांठळ रै ज्यूं चंग गूंजण लागता अर लूहर रै धम्मीड़ा सूं जमीन धूजण लागती ।—[illegible]

उ०—२ लागौ सर जठी भर **भादवौ** की रैन भळहळी बीज की । परिहां धणौ हर की आशा जाद हाडी तीज की ।—पनां

२ बृहस्पति के उस वर्ष का नाम जब वह पूर्व भाद्रपदा या उत्तरा भाद्रपदा में उदय होता है ।

रू० भे०—भद्द, भद्दर, भद्दव, भादउ, भादर, भादरउ, भादरव, भादरवौ, भादव, भादवौ, भाद्रु, भाद्रुर, भाद्रुवौ, भांद्रु, भाद्रू, भादैव, भादौ, भाद्रव, भाद्रवइ, भाद्रवउ, भाद्रवऊ, भाद्रवड़, भाद्रवौ, भाद्रव्व ।

अल्पा०—भादरवौ, भादवड़ौ, भादुड़ौ, भादूड़ौ, भाद्रवड़उ, भाद्रवड़ौ ।

भादावत—सं० पु०—राठौड़ वंश की एक उपशाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

भादिज—देखो 'भाडेज' (रू. भे.)

उ०—तेजी उरंडा गह्वरा तोरणा खुरसाणा भयांणा हयांणा रोहवाला रुंडवाला तोरका मंदकोरा पीलूआ **भादिजा** ओराहा केकांणा ।—व. स.

भादु—देखो 'भादवौ' (रू. भे.)

उ०—सखी री **भादु** मैं भर बरसाळा, खळकै परनाळ नै खाळा ।

बिजुरी चमकत विकराला, जादु विनु मोहि जंजाला हो लाल ।
—ध. व. ग्रं.

भादुड़ौ—देखो 'भादवौ' (रू. भे.)
उ०—सांवण खेती भंवरजी ! थे करी जे, हां जी ढोला ! **भादुड़े** करची जी नीनांण ।—लो. गी.

भादुर—१ देखो 'बहादुर' (रू. भे.)
उ०—जैंपुर में रिकाटि साहब, **भादुर** न्याय छांणी । सीकरि सापरा की, जालसाजि नैं पिछांणी ।—शि. वं.
२ देखो 'भादवौ' (रू. भे.)

भादुवौ, भादूं, भादू—देखो 'भादवौ' (रू. भे.)
उ०—१ संमत १६६१ पोस अकबर पातसाह राजा सूरजसिंघ नुं सारी जेतारण दीवी । सु राजा सूरजसिंघ संमत १६७६ **भादुवा** सुदी २ काळ कीयौ तठा सुधी रही ।—नैणसी
उ०—२ चम-चम चमकै बीजुरी, टप-टप बरसै मेह । भर **भादूं** बिलखत तजी, भलौ निभायौ नेह ।—अज्ञात
उ०—३ **भादू** बरखा झूक रही, घटा चढी नभ जोर । कोयल कूक सुणावती, बोले दादुर मोर ।—अज्ञात
उ०—४ मेह मातौ **भादूं** भलौ, सेहरे चमकै बीज । पिय प्यारी सेजां रमै, आज काजळी तीज ।—कुंवरसी सांखला री वारता

भादूड़ौ—देखो 'भादवौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—सींचै सींचै, ओ म्हारौ सांवणिया री लोर **भादूड़ै** री झड़ झेलैगी ।—लो. गी.

भादूनदी—सं० स्त्री०—केवल वर्षा ऋतु में उमड़ने वाली नदी, जो बाद में सूख जाती है ।

भादैव—देखो 'भादवौ' (मह., रू. भे.)
उ०—उण गिरवर पैं आयै कै, केहर तंडव कीन । घणहर गांनु इंद्रधन, **भादैव** जळधर मीन ।—बगसीरांम प्रोहित री बात

भादौ—देखो 'भादवौ' (रू. भे.)
उ०—अंत असाढ दयानंद आयौ, छोणी ग्यांन घुमंड घण छायौ । सांवण हरिकर सुख सरसायौ, **भादौ** अम्रत झड़ बरसायौ ।
—ऊ. का.

मुहा०—न सांवण सूखौ न भादवौ हरौ=यथावत् ।

भाद्र, भाद्रपद—सं० पु० [सं० भाद्रः, भाद्रपदः] वर्षा ऋतु में पड़ने वाला श्रावण और आश्विन के बीच का एक महीना । (डिं. को.)

भाद्रपदा—सं० पु० [सं०] एक नक्षत्र-पुंज का नाम ।

भाद्रव—देखो 'भादवौ' (रू. भे.)
उ०—उंच दिवस असटमी आद पख **भाद्रव** आयां, महाज्याग मधुपुरी हुवौ उच्छव मनभायां ।—रा. रू.

भाद्रव, भाद्रवउ, भाद्रवऊ, भाद्रवड, भाद्रवडउ, भाद्रवडौ—देखो 'भादवौ' (रू. भे.)
उ०—१ संवत सोल नव्यासीयइ रे मीर मोजा नुं राज रे । अकबरपुर मांहि रही रे, **भाद्रवइ** जोड़ी छइ मास रे ।—स. कु.
उ०—२ बाजरियां हरियाळियां, बिचि बिचि वेलां फूल । जउ भरि वूठउ **भाद्रवउ**, मारू देस अमूल ।—ढो. मा.
उ०—३ छोडि चली सहु राजवी रे, जिम **भाद्रवडे** छांण रे । थांभा पूतली ने मुखे रे, देवतणी थई वांण रे ।—श्रीपाल
उ०—४ **भाद्रवडइ** सरोवर भरियां, नीर निरंतर होय । रिदयां भींतरि हुं रडुं, नीर निवारि न कोइ ।—मा. कां. प्र.
उ०—५ **भाद्रवडा** ! आविउ भलइ मयण-तणा मुंहसाळ । कांम जगावइ तेहनइं, जेह-सिरि वूठा वाळ ।—मा. कां. प्र.

भाद्रवी—देखो 'भादवी' (रू. भे.)

भाद्रवौ—देखो 'भादवौ' (मह., रू. भे.)
उ०—वहै हैमरां सोख जांणै विवांणै, जुझाऊ घटा **भाद्रवा** जेम जांणै ।—सू. प्र.

भाद्रवौकड़ाव—सं० पु०—बड़ा कड़ाह ।

भाद्रव्व—देखो 'भादवौ' मह., रू. भे.)
उ०—१ इण विध नबाब गय चढ प्रयांण, गज घडा अग्र चाले घुणांण । जिण वार चालिया असुर जास, मिळ घटा जांण **भाद्रव्व** मास ।—शि. सु. रू.
उ०—२ वदन्न वणै कंध वांके विनांणै, जळै गारडू छेड़ियौ नाग जांणै । किता कंध धारां झरै मद्द काळा, वणै जांणि वारिद्द **भाद्रव्व** वाळा ।—रा. रू.

भाद्रायण—सं० पु०—पूर्व देश का एक खंड, भद्राल, भद्रक ।
(गजमोख)

भाप, भाफ—सं० स्त्री० [सं० वाष्प] १ किसी तरल पदार्थ, विशेषतः पानी, का उष्णता पाकर खौलने से प्राप्त वह वाष्पीय रूप, जिसका आजकल शक्ति के साधनों में उपयोग होता है ।
क्रि० प्र०—उठणी, निकळणी, बणणी ।
मुहा०—भाप लैणी=सेक करना ।
२ किसी द्रव की वह अवस्था जो उसके अधिक ताप से अथवा किसी रासायनिक प्रक्रिया द्वारा वायु में विलीन होने से प्राप्त होती है । (भौतिकशास्त्र)
३ मुंह से निकलने वाली हवा ।

भाबर—देखो 'भाभर' (रू. भे.)

भाबीजी, भाबीसा - देखो 'भाभीजी, भाभीसा' (रू. भे.)

भाबोसा—देखो 'भाभोसा' (रू. भे.)
उ०—रायजादौ लुळ लुळ पाछौ जोवै, जांणुं म्हारी जांन में **भाबोसा** पधारै नै हस्ती सिणगारै, रायजादौ लुळ लुळ पाछौ जोवै ।
—लो. गी.

भाभड़ाभूत - देखो 'भाभराभूत' (रू. भे.)

उ०—दादी नै ताव भाभड़ाभूत । वैद नै लावै तौ कुण ? आड़ोसी-पाड़ोसी कोई पल्लौ ई नहीं छींपै ।—वरसगांठ

भाभज—देखो 'भावज' (रू. भे.)

उ०—वधजौ कडवा नींब ज्यूं बीरा, वधज्यौ श्रो हरियाळी री दोब । भाभज जिणज्यौ दीकरा, भतीजा श्रो परणी घर श्राव ।
—लो. गी.

भाभर-सं० पु०—वर्षा ऋतु में होने वाला क्षुप विशेष ।

भाभराभूत-वि०—१ पूर्ण वेग से, वेगपूर्वक, तेज ।

२ अत्यन्त क्रोधित ।

उ०—जंग अथंगा जूटवै, धजवड़ बागां धूत । भिड़ण भाभराभूत व्है, रीझै सो रजपूत ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

३ लापरवाह, बेसुध ।

सं० पु०—एक ऐतिहासिक व्यक्ति का नाम ।

वि० वि०—गुजरात राज्य में मजेवड़ी नामक ग्रांम के एक कुम्हार की सुन्दर लड़की की सगाई पट्टण के राजा सिद्धराज जयसिंह के साथ निश्चित हुई थी । इसी बीच जूनागढ के राजा खंगार के भाणजे बीसल ने खंगार से इस लड़की की सुंदरता का बखान किया, तो खंगार ने इस लड़की का अपहरण कर लाने को कहा । लड़की को अपहृत करके जबरदस्ती खंगार ने उससे शादी करली । तदुपरांत सिद्धराज को इसका पता लगने पर राव खंगार पर, बाबरियावाड में रहने वाले लोगों के मालिक, जिसे बाबराभूत कहते थे, को साथ लेकर, चढाई कर दी और उसकी सहायता से विजय प्राप्त की । इसी बाबराभूत को भाभराभूत भी कहते हैं ।

रू० भे०—भाभड़ाभूत, वाभराभूत, भैभराभूत ।

भाभा-सं० स्त्री०—१ पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति । (बां. दा. ख्या.)

२ राजा के उप-पत्नी के पुत्रों से चलने वाली शाखा । (जोधपुर)

३ माता एवं पिता के बड़े भाई की स्त्री के लिए प्रयुक्त सम्बोधन-वाचक शब्द । (जोधपुर)

सं० पु० (ब. व.) ४ बड़े भाई, पिता या अपने से बड़े संबंधी के लिए प्रयुक्त सम्मानसूचक संबोधनवाचक शब्द ।

५ रईसों, जागीरदारों व राजाओं द्वारा चारण कवियों के लिए प्रयुक्त संबोधनवाचक शब्द ।

भाभी, भाभीजी, भाभीसा-सं० स्त्री०—१ बड़े भाई की पत्नी ।

उ०—१ रांणो रोस कियौ थां ऊपर, साधां में मत जा री । कुळ कै दाग लागै छै भाभी, निंदा हो रहि भारी ।—मीरां

उ०—२ साधां रौ संग निवारो राई, भाभीजी गोरल पूजो जी राज ।—मीरां

उ०—३ श्रौ मांय घालो जायफळ नै जावंतरी, श्रो तैल बनड़ा रै श्रंग चढसी श्रो । लेखौ वां रा भाभीसा कर लेसी, श्रो दमड़ा वां रा वीराजी भर देसी ।—लो. गी.

२ जेठ की पत्नी ।

रू०भे०—बाभीजी, बाभीसा, भाबीजी, भाबीसा, वाभीजी, वाभीसा ।

भाभौ-सं० पु० (ब. व. भाभा) १ पिता, बड़े भाई के लिए प्रयुक्त सम्मानसूचक शब्द ।

उ०—तरै किलांणदासजी फेर अरज कीवी के म्हारे घर में तो लगावण री तेह है नहीं, नै भाभाजी काकाजी दाम देवै नहीं ।
—नैणसी

२ राजा की उप-पत्नी का पुत्र । (जोधपुर)

३ पिता के लिए प्रयुक्त सम्मानसूचक शब्द ।

रू० भे०—भाभौजी, वाभौ, वाभौजी ।

भाभौजी—देखो 'भाभौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद बगतसिंहजी कहाई—जाळोर तो भाभैजी मोनूं दीन्हो छै ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ आप पाछौ आवतौ मोहनसिंहजी कही भाभाजी, हथ मारौ जावै, सो पहोंच साळै रै दीवी सो दोय बटका हुवा अर तर-वार मांही नीसर थांभै में लागी सो पत्थर रौ टुकड़ौ दूर जाय पड़ियौ ।—महाराजा स्रीपदमसिंघ री बात

२ देखो 'भाभौसा' (रू. भे.)

रू० भे०—वाभौजी ।

भाभौसा-सं० पु०—पिता एवं बड़े भाई के लिए प्रयुक्त सम्मानसूचक शब्द । (जोधपुर)

उ०—पोळियां में बैठोड़ा भाभौसा बरजिया, मत जावौ कंवर झगड़ा री लार (ए), भोमिया जी झगड़े जूंजिया ।—लो. गी.

रू० भे०—बाभौसा, भाबौसा, भाभौजी, वाभौसा ।

भामंडळ-सं० पु० [सं० भा+मंडल] सूर्य, रवि ।

उ०—पूठ भामंडळ तेज प्रकास ए । जोयण सहस धज ऊंच आकास ए ।—वृ. रत.

भाय-सं० स्त्री०—१ कृपा, दया ।

उ०—गजमुख गणपतरायं, भांमी तुझ करो मो भायं । गुण राबे बर गायं, पावुं बुधि रावळै पसायं ।—गजउद्धार

२ पसंद ।

उ०—यह लीला गोपाळ की, किण पै बरणी जाय । जो जो अख्खर दो कहत, अपनी मत के भाय ।—गजउद्धार

वि०—समान, सदृश्य, तुल्य ।

उ०—१ भळाहळ रूप भळांहळ भाय, जुड़ै खळ आय तिहा उडि जाय । छछोहक वाहत झाल छडाळ, दुसारक डाळ पड़ै रवदाळ ।
—सू. प्र.

उ०—२ भड़ भिड़े कमंध 'अरजन्न' भाय । इस दिसी भीम सीसोद आय । प्रति दिवस अकस कंदळ अपार, संसार सुणै मेछां संघार ।
—रा. रू.

उ०—३ अैसी पुरी विरंच की, का पै वरणी जाय। मत परवांण वखांणियै, अपणी अपणी **भाय**।—गजउद्धार

३ कृपा, मेहरबानी, दया।

उ०—दरसण दीजै स्यांमजी, भगतवछळ कर **भाय**। ज्यूं संकट मेरे सबै, तुरत-फुरत मिट जाय।—गजउद्धार

४ चाहना, इच्छा।

५ प्रकार, भांति, तरह।

उ०—१ हंसा बगला हाल सूं, जिम अंतरौ जणाय। कवत सुकवियां कुकवियां, भेद प्रगट इण **भाय**।—बां. दा.

उ०—२ नर विवने वा नंह रहै, जग में आ रहे जाय। कुळवंती सूं कीतरी, उलटी गति इण **भाय**।—बां. दा.

वि०—६ मन को भाने वाला, रुचिकर।

उ०—१ प्रस्नोत्तर चरचा मत पींगळ, भूसण सबद अरथ रस **भाय**। 'बांकै'दास जांणिया बिध बिध, राज अनुग्रह जंगळराय।
—बां. दा.

उ०—२ कुण बेटा कुण मायड़ी, कूण नारी प्रिय **भाय**। स्वारथ का सब ही सगा, परमारथ मुनिराय।—जयवांणी

७ देखो 'भाई' (रू. भे.)

उ०—१ पिंड प्रांण छूटसी, नाड़ तूटसी करग्गां, धरा सेभ धारसी, करे सुख सेभ अळग्गां। काहि **भाय** कूकसी, सयण सायण सुत नारी, काया हूसी अकज, सबै माया दुपियारी।—ज. खि.

उ०—२ आग न निकली लकडा मांय ए, तिण मो दुख पडियो **भाय** ए। हूं इण कारण दिलगीर ए, भाई! जिहां दुखे तिहां पीर ए।—जयवांणी

उ०—३ अठी साहरै समाधी हुवां केड़ै दारासाह नैं अधिकार रौ कांम भी छोडि दीधो तो भी तीन ही **भायां रौ** तखत माथै चलावणौ जांणि प्राची मैं पुत्र नूं भेजि अवाची कूं आवता दो ही पुत्रा नूं समुझावण सांम्हैं जावता पातसाह नूं पेलि।—वं. भा.

८ देखो 'भाव' (रू. भे.)

भायकी—सं० स्त्री०—हल्दी नींद, तंद्रा।

भायखा—देखो 'भासा' (रू. भे.)

भायग—वि०—प्रिय, प्यारा?

उ०—आभ जळइ, धरती जळइ, दिनि दिनि जळती धाख। **भायग** माहरइ भेट्यु, वारू भई वैसाख।—मा. कां. प्र.

भायजी—देखो 'भाईजी' (रू. भे.)

उ०—बेटा रै पारवती आयां कैवती—देख बेटा अबै थारा **भायजी** नै चेतौ व्हियौ है।—फुलवाड़ी

भायप—सं० स्त्री०—देखो 'भाईपौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां दांण मांहै विसवौ कर दियौ वडी **भायप** कीधी।
—नैणसी

उ०—मोटी **भायप** होय पिंडां हुवै पूजता। वडाराज रौ गांव लोग सोह बूझना। न कौ लोपै लीह क घरे घचोलणा। एता दे किरतार, फेर नह वोलणा—अज्ञात

उ०—३ तद नांपै सांखळैरी **भायप** में लालौ हुतौ तिणनूं दिखायौ।
—द. दा.

भायपौ—देखो 'भाईपौ' (रू. भे.)

उ०—सेखैं देखतांहीं राव घोडां मेलि दीनां, गोडां का समूंचा **भायपा** नैं मारि लीनां—शि. वं.

भायल—सं० पु० १ पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—दस पड़िया भड़ हिंदवां, रिण पैंतीस मुगल्ल। ऊपड़ियौ घायल हुवै, **भायल** 'देद' दुझल्ल।—रा. रू.

२ देखो 'भायेलौ' (मह., रू. भे)

भायलौ—देखो 'भायेलौ (रू. भे)

उ०—१ तारवडा, नत्रीठा ओडिया तायलां, घणा घायल किया आप घणा घायलां। भिडे जुध पछे भीडी वंटे **भायलां**, रीठ बागौ उभय ओड़ अजरायलां।—रा. रू.

उ०—२ **भायला** रै ऊखल खड़ी नार मिरगानयणी, ऊठ सवारा झगड़ौ वा करै जी म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—३ आज संवारी उठिया जी गई, गई कुंजा के पास। तूं छै धरम की **भायली** ये, एक संदेस पहुंचाय।—लो. गी.

(स्त्री० भायली)

भायसौ, भायहौ—देखो 'भासियौ' (रू. भे.)

उ०—देवराज अठै आइनै **भायसौ** एक भिजोय नांन्हौ चीरायनै जठै पांणि हुतौ तितरी धरती दोळी फेर आपणी कीनी।
—नैणसी

भायूंबीज—देखो 'भाईदूज' (रू. भे.)

उ०—**भायूंबीज** दहै मड़ां, पूतांरियौ पठांण। जलालियै सूं अेकलो, कूण सहै केवांण।—जलाल बूबना री बात

भाये—देखो 'भावै' (रू. भे.)

उ०—**भाये** भळहळिया भुरटां रा भारा, अध अंग ऊलळिया उरगा रा आंरा। बिरळा दांतां री पांतां बिरळाती, चौड़ै चाचर री चौड़े चिरळाती।—ऊ. का.

भायेलौ—सं० पु० [स्त्री० भायेली] १ मित्र, दोस्त, सखा।

उ०—**भायेलौ** कमालदी थौ, तिणनूं बीज उबारण नूं सूंपियौ थौ, सु कमालदी जीव ज्यां राखै छै।—नैणसी

२ प्रेमी, आशिक।

उ०—**भायेला** दिलगिरी क्यों लाया जी, ना चित आयौ म्हारौ देसड़ौ, ना चित आया माई बाप।—लो. गी.

रू० भे०—भाईलौ, भाएलौ, भायलौ, वायेलौ।

मह०—भायल।

भायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ रुचिकर लगा हुआ, अच्छा लगा हुआ, पसन्द आया हुआ. २ शोभित हुवा हुआ, फबा हुआ, सुहावना लगा हुआ. ३ चाहा हुआ, इच्छित. ४ स्वादिष्ट लगा हुआ. (स्त्री० भायोड़ी)

भायौ'—देखो 'भासियौ' (रू. भे.)

भायौ–सं० पु०—१ सन्तान, पुत्र। (जयपुर)

ज्यूं—औ कुण कौ भायौ छै।

२ देखो 'भाई' (७) (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ औ संसार मोहनी माया, देख रीभ मति **भाया** रे। अग जळ नीर निगे करनाई, परतक मिथ्या पाया रे।—सुखरांमदासजी

उ०—२ काया कोट काच सो काचौ, जतन करंता जावै। भग गुरु ग्यांन नफौ इक **भाया**, अरथ ओर के आवै।—ऊ. का.

उ०—३ तद सेठ केवण लागा—**भाया** अेक बात अळूझगी है, थूं चावै तौ सुळझा सकै।—फुलवाडी

भायौजी–सं० पु०—१ बोलचाल की भाषा में बड़ों के लिए प्रयुक्त शब्द। (जयपुर)

ज्यूं—भायाजी, इसी बांतां में कांई धर्‌यौ छै।

२ देखो 'भाईजी' (रू. भे.)

भारंग–सं० पु०—चन्द्रमा, चांद।

उ०—जहर विखम जारंग, भुजां धारंग भुजंगम। भाल तेज **भारंग**, जरा हारंग लसे जम।—सू. प्र.

भारंगी–सं० स्त्री०—एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियां महुए की पत्तियों से मिलती हुई, गुदादार और नरम होती हैं और जिनका साग बनाकर खाते हैं। इसकी ऊंचाई मनुष्य की ऊंचाई के बराबर होती है।

रू० भे०—भाडंगी, भारिंगि।

भारंड–सं० पु०—एक पक्षी विशेष।

उ०—**भारंड** पक्सी तणां ईडा कवण चित्रइ, सिहनइ कवण चारहडि सीखवइ, कुलीननइ विनय कुण सीखवइ।—व. स.

भार–सं० पु० [सं० भारः] १ बोझ, वजन।

उ०—१ आडौ अंवळौ क्यूं फिरै, धवळौ बापूकार। औ हिज पार उतारही, थळ सांमै औ **भार**।—बां. दा.

उ०—२ बणाधिप झंप भरी उण बार, भुजंग न झालि सक्यौ भुव **भार**। भेळी हिज आवड़ बाहर भूप, रु नाहर चक्र सूदस्सण रूप।
—मे. म

क्रि० प्र०—उखणणौ, उठाणौ, उठावणौ, ऊंचणौ, ऊचाणौ, उतरणौ, उतारणौ, रखणौ, लेजाणौ।

२ तराजू या तुला द्वारा किसी वस्तु या द्रव का जाना जाने वाला गुरुत्व, वजन (वेट)।

क्रि० प्र०—लागणौ।

३ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी, कार्यभार।

उ०—१ धरियौ भूप सुतन धुणारण, 'कूंपावत' 'हरभांण' सकारण। मेड़तियौ 'रांमो' दळ मांहै, सुतन 'कल्यांण' **भार** जुध साहै।
—रा. रू.

उ०—२ झालियां सार भोसर झले, झूझ **भार** भुज झालियौ। भूपाळ 'जैत' ऊणहीज भुज, हग कंध थापलि हालियौ।—मे. म.

उ०—३ लाखां हूंत वाजियौ लोहां, झाझा बगै बीजळां झालि। 'जोधै' **भार** मूंकियौ ज्यारां, 'चांपै' भार आवियौ चालि।
—विठळदास चांपावत रौ गीत

क्रि० प्र०—उठाणौ, उतराणौ, उतारणौ, ओढणौ, झेलणौ, देणौ, पड़णौ, लैणौ, सौंपणौ।

४ संभाळ, रक्षा।

उ०—१ इण टाबर रौ **भार** लगा भारौ आंख में काजळ जिसौ ई नीं व्हैला।—फुलवाड़ी

उ०—२ राव मंडळीक तौ गैहलो हुवौ। तरै 'सिंघौ' मंडळीक रौ लोहड़ो भाई, तिण सारी धरती रौ **भार** संभायौ।—नैणसी

उ०—३ नरपाळ काळ मांभी निडार, 'भांणोत' भुज नवकोट **भार**। जैसिंध हरौ जीपसि जंग, दक पमार लखग पमार अभंग।
—गु. रू. बं.

क्रि० प्र०—लैणौ, संभाळणौ।

५ आश्रय, सहारा।

६ समूह, झुण्ड, दल।

उ०—१ अणपारां वेढ हिंदवां असुरां, काळ वारां भेखतो गियौ। खग धारां वाहण खेड़ेचौ, गज **भारां** ऊपरां गयौ।
—कुंभळसिंघ रौ गीत

उ०—२ सींधुर दळबळ सबळ, पूर पैदल अणपारां। नदि गर हूटै निवांणां, भांण ढंकै रज **भारां**।—सू प्र.

उ०—३ नेजा खासा तोग नवब्बति, पोह दीधा गो तिणां दिलीपति। सो ऊजळा करूं कसि सारां, भिड़ज वधे ओरूं गज **भारां**।—सू. प्र.

७ सेना, फौज।

८ संकट, आपत्ति।

उ०—१ नाळां पड़ धमक त्रंबळां नीध्रस, रांणै 'जगो' कमधज सिर रूठ। **भार** पड़ंत पदम' नहं भागो, दयारांम खग बागो दूठ।
—दयारांम आसिया (चारण) रौ गीत

उ०—२ अक्रूर न जुजठळ भीम न अरजुण, खळ दळ लागो लोह खळै। पडतै **भार** प्रजा पीडंतां, स्रीरंग कहियौ सिवौ सिवौ।
—सिवा बाढेल रौ गीत

उ०—३ कहियौ नरपाळ आवियां कटकां, धूणि छड़ाळ धरा पै धोळि। पौळि बडा गज बाज पांमतौ, पड़तै **भार** न छांडू पौळि।
—नरू अमरावत बारहठ (सौदा) रौ गीत

९ कष्ट, तकलीफ।

उ०—राजकंवर कह्यौ—जंगळ में कंदमूळां री किसी कमी है मां, कुदरत रै अखूट भंडार सूं अलेखूं जीवां रौ पेट भरीजै, पछै म्हारा ब्याळू रौ उणनै कांई भार।—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—पड़णौ, लागणौ।

१० भूमि, पृथ्वी।

११ पाप, अत्याचार।

उ०—भार उतारै भोमि, अवधि संदेह उधारे। वसे रांम वैकुंठ, विमळ जग जस विसतारै।—सू. प्र.

क्रि० प्र०—उतरणौ, उतारणौ।

१२ गौरव।

उ०—भार अरथ कवि 'भारवी,' कायब कियौ 'किरात'। मल्य-नाथ टीका महीं, वळै लिखी आ वात।—सू. प्र.

१३ कठिन, दुष्कर।

उ०—थरके कोट सहत पुर थांणा. भार सताड़े पड़े भगांणा। 'ऊदा'हरा सकळ मिळ आया, आद 'जगड़' जुध वाद अछाया।

—रा. रू.

१४ सामान, सामग्री।

उ०—परठि जीण पाखरां, तुरंग सझिया अतुळीबळ। भार अराबां भरै, मोहर खड़कियां अमंगळ।—सू. प्र.

१५ दहेज। (रेबारी)

१६ एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र।

१७ बनस्पति की निश्चित संख्या का नाम।

वि० वि०—देखो 'भारअढ़ार'।

१८ बल, शक्ति।

उ०—आसथांन 'सोनंग' 'अज' ऊभा, भाई अहूं भुजाळा। गोयल खागां भार गाळिया, कमधज वड करनाळा।

—राव असथांन री गीत

१९ क्रोध, गुस्सा।

उ०—भट नाखूं राज भिभौ भारं, भूंडी भण ऊठें अत मारं। धक पापण तोनैं तोनैं, पापण पापण तोनैं धिक्कारं।—र. रू.

भारअट्ठार, भारअठार, भारअड्ढार, भारअडार, भारअढ़ार—सं० पु० यौ० [सं० अष्टादश+भार] १ अष्टादश वनस्पति का नाम।

उ०—१ वोम लागा वहै लोडता वारणूं, हल्लवै द्रोण ऊपाड़ जांणे हणूं। पाटमें झूल गै घातियां पाखरां। भारअट्ठार आबू किरै भाखरां।—गु. रू. बं.

उ०—२ सात समद नवसै नदी, अठ कुळ भारअढ़ार। चार वेद गुण चवत है, तउ न लाभै पार।—गजउद्धार

उ०—३ सघण नीर सीतळ सु, करत बिज्जण समीर-कर। उद-भिज भारअढ़ार, पुहप धर परिमळ ऊपर।—ह. र.

वि० वि०—राजस्थानी में अढारभार तथा भारअढार शब्द का व्यापक प्रयोग मिलता है जबकि हिन्दी में इनका रूपान्तरित प्रयोग केवल एक स्थान पर रामचरित मानस में निम्न प्रकार से मिलता है—'रोम' राजि अष्टादस भारा, अस्थि सैल सरिता नस जारा' अर्थात मंदोदरी अपने पति से कहती है कि १८ भार वनस्पति राम की रोमावलि हैं, पर्वत हड्डियां हैं और नदियां नसों का समूह है। वनस्पति शास्त्र में समस्त वनस्पति को १८ भार में विभक्त किया गया है। भार शब्द का एक अर्थ समूह या झुण्ड भी है। एक भार में १२ करोड़ ३० लाख एक हजार छः सौ आठ वृक्ष माने गए हैं—बारह कोटि बन वृक्ष, लाख तहं तीस सुनिज्जै। सोरह सत और आठ, भार एक ताहि गनिज्जै। इन १८ भारों का वर्गीकरण विभिन्न स्थानों पर विभिन्न रूप में पाया जाता है, परन्तु मुख्यतः इनका तीन प्रकार से वर्गीकरण किया गया है—१ पुष्पित, अपुष्पित आदि के आधार पर—अपुष्पा भार चत्वारि, अष्टौ च फल पुष्पिता। वल्ली च षट्भाराणि, वन भारस्य संख्यकः। अर्थात ४ भार पुष्प-रहित, ८ भार पुष्पों के, ६ भार वल्ली के, इस प्रकार १८ भार हैं। २ कटु, तिक्त, कषाय आदि के आधार पर—कटु-कस्या भारचत्वारि, द्वौ भारौ तिक्त कथ्यते। अम्ला भारा त्रय उक्ता, मधुरं भारकत्रयम्। क्षारं भारमेकं तु, कषाय भारकद्वयम्। सविषं भारमेकं द्वौ, भारौ निर्विषकौ तथा। अर्थात ४ भार कटु, २ भार तिक्त, ३ भार अम्ल, ३ भार मधुर, १ भार क्षार, २ भार कषाय, १ भार सविष, २ भार विष-रहित, इस प्रकार १८ भार हुए। ३ कंटक, सुगन्ध तथा निर्गन्ध के आधार पर—षट्भारा कंटका ज्ञेया, षड् भारश्च सुगंधदा। निर्गन्धकाश्च षट्भारा, भारा अष्टादशा स्मृताः। अर्थात ६ भार कंटक, ६ भार सुगंधियुक्त और ६ भार सुगंधिरहित, इस प्रकार १८ भार है।

२ आबू पर्वत का एक नाम।

उ०—भरि कोम कसकत भार, ढ़ह जात भार अढार। वढ़ि विखम पाहड़ वाट, घण हुवै अवघट घाट।—सू. प्र.

रू० भे०—अठारभार, अडारभार, अढारभार।

भारउतारभू—सं० पु० यौ० [सं० भारः+उतार+भू] श्री कृष्ण।

(अ. मा.)

भारखमौ—देखो 'भरखमौ' (रू. भे.)

उ०—पथपूर कटक्क हुव प्रघळा, जिदराव कजां मल हेमजळा। वहतै दळवाट धमी विखमी, खळ चाडत सेस न भारखमी।—पा. प्र.

(स्त्री० भारखमी)

भारगव—सं० पु० [सं० भार्गव] १ भृगुकुल में उत्पन्न व्यक्ति।

२ च्यवन ऋषि।

३ उशीनस्, शुक्र। (अ. मा.)

४ जमदग्नि।

५ परशुराम, जामदग्न्य।

६ वाल्मीकि ।
७ उत्तर भारत में पाई जाने वाली एक हिंदू जाति ।
वि०—१ भृगु के वंश में उत्पन्न ।
२ भृगु सम्बन्धी, भृगु का ।

भारगवी–सं० स्त्री० [भार्गवी] १ लक्ष्मी ।
२ पार्वती ।
३ दूब ।
४ उड़ीसा की एक नदी ।

भारगस्वरि–सं० पु०—भांगासुरि राजा का नामान्तर ।
उ०—परबत नदी पंथ बहु मेहिल्यु, पवन-वेगि ते जाय । **भारग-स्वरि** राजा मोहो पांम्यु, क्षणुइ वार न थाय ।—नळाख्यान

भारज, भारजा, भारज्या—देखो 'भारया' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
उ०—१ इतरी सुण कळावंत कही—महाराज ! थांनूं धन्य छै । हूं थांनूं सत्यधरमी जांण म्हारी **भारजा** छोडी । आप इसौ अधरम क्यूं करौ ।—सिंघासण बत्तीसी
उ०—२ पिता तौ प्रदिमन पोत्रौ अनिरुध । उखा कौ पति जें कै **भारज्या** उखा हुई ।—वेलि
उ०—३ सुणि परदेसी ताहरी **भारजा**, सूरिकंता नांमोजी । भोग-वतउ देखइ तुं तेह नइ, नर नइ स्युं करइ तामोजी ।—स. कु.

भारडिया–सं० स्त्री०—पड़िहार राजपूत वंश की एक शाखा ।

भारण–सं० पु० [सं० भारः+रा० प्र० ण] १ रहंट के मध्य स्तम्भ को स्थिर रखने वाले काष्ट डंडों के पीछे लटकाया हुआ पत्थर या बोझा ।
वि०—घातक ।
उ०—ताहरां कह्यौ विजाजी मुंइ **भारण** छै । कहीयो **भारण** छै ।
—चौबोली

भारणि—१ देखो 'भारण' (रू. भे.)
उ०—वलतां मुंइ **भारणि** हुवै रे हां, अंग तपइ अंगार । आंखड़ियइ आंसू पड़इ रे हां, जिम पावस जल धार ।—वि. कु.
२ देखो 'भारणी' (रू. भे.)

भारणियौ–सं० पु० [सं० भारः] मोट को पानी में भरे जाने के लिए डुबाने हेतु उसके मुंह पर बांधा जाने वाला वजनी पत्थर ।

भारणी–सं० स्त्री० [देशज] पीटने का भाव, दंड, सजा ।
उ०—१ सेवट आंती आयनै उण री धणी आछी तरै' **भारणी** उतारनै आपरा घर सूं तगड़ दियौ—फुलवाड़ी
उ०—२ कोई कह्यौ-भाई चिड़ैला अर कोई कह्यौ-धणी **भारणी** काढ़ैला ।—फुलवाड़ी ।
क्रि० प्र०—उतारणी, काढणी ।

भारणौ, भारबौ–क्रि० स०—१ किसी पदार्थ को अंगारों-युक्त राख में दबाना ।
उ०—१ दांन घणौ उत्तर दिये, हूंते बित सत हार । मुंहडौ लै उण मिनख री, भोभर भीतर **भार** ।—बां. दा.
उ०—२ जवन पेख सिर जोर, दियौ छत्रपति छिपाए । भसम जांण **भारियौ**, अगन कण जतन उपाए ।—रा. रू.
२ गाड़ना, दफनाना ।
३ देखो 'भरणौ, भरबौ' (रू. भे.)
उ०—१ अकबरसाह गाफल गुमांन सूं **भारचौ**, तहवरखांन हाथ सब राज बोझ धारचौ ।—रा. रू.
उ०—२ चुण्या संवारचा ढह पड़ै, ढहिया संवारै, **भरिया** सरवर रीतवै, रीता जळ **भारै** ।—केसोदास गाडण
उ०—३ रूप मरद्दां मीर सब,लंक करद्दां लूंण,दाढ़ गरद्दां **भारिया**, अंग जरद्दां दूण ।—रा. रू.
४ देखो 'बुहारणौ, बुहारबौ' (रू. भे.)
भारणहार, हारौ (हारी), भारणियौ—वि० ।
भारचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भारीजणौ, भारीजबौ ।—कर्म वा० ।

भारत–सं० पु० [सं०] १ घोर युद्ध, भयंकर लड़ाई ।
२ लंबी गाथा या वृत्तान्त ।
३ कसीदेदार कपड़ा ।
४ बढ़िया वस्त्र ।
उ० **भारत** रे वीरा, भावज ने ओढाय, म्हां ने घणमोलां री चूनड़ी जे ।—लो. गी.
५ वह जो भरत के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो ।
६ भारतवर्ष का निवासी ।
रू० भे०—भारत्थ, भारथ्थ, भारत्थि, भारात, भाराथ, भाराथि, भारिथ्थ ।
७ देखो 'भारतवरस' (रू. भे.)
८ देखो '**महाभारत**' (रू. भे.)
उ०—भिड़े भीम अरजुण कुरु **भारत**, गेहर-डांडिया रग कुळ गारत । मरचौ सुयोधन गौ भक भारत, आरयवरत्त नौ करणौ आरत ।—ऊ. का.

भारतखंड—देखो 'भरतखंड' (रू. भे.)

भारतनंद–सं० पु०—संगीत की एक मुख्य ताल ।

भारतवरस–सं० पु० यौ० [सं० भारत+वर्ष] हमारा देश, जो उत्तर में हिमालय, दक्षिण में भारतीय महासागर तक तथा पश्चिम में पश्चिमी पाकिस्तान तथा पूर्व में ब्रह्मा देश तक फैला हुआ है । हिन्दुस्तान, हिन्द ।
वि० वि०—पुराणानुसार यह जंबूद्वीप के अन्तर्गत ९ खंडों में से एक खंड है जो हिमालय के दक्षिण में गंगोतरी से कन्याकुमारी तक और सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है ।
रू० भे०—भरतवरस, भरहवास, भारत ।

भारति—देखो 'भारती' (रू. भे.)

भारतियौ-सं० पु०—'भारत' नामक बढ़िया वस्त्र का विक्रेता ।
उ०—गया छौ, ग्रे बाग्री **भारतिये** री हाट, थां ने भारत बाग्री मोलवा जे ।—लो. गी.
वि०—विवाह में 'माहेरा' ले जाने वाला ।

भारती-सं० पु० [सं०] १ दसनामी सन्यासियों की एक शाखा विशेष ।
सं० स्त्री० [सं०] २ साहित्य में एक वृत्ति का नाम, जिसका प्रयोग मुख्यतः रौद्र और वीभत्स रस मे होता था परन्तु ग्राजकल इसका सम्बन्ध नाट्य ग्रभिनय और रसाभिनय से जोड़ा गया है ।
३ सरस्वती । (ह नां. मा.)
उ०—नयणलां ग्रग नी उपमा किसी, हुईइ हारिउं वेडि जई वसी । चरणवारिहिं हंस हरावती, वचनि जीणइं जीती **भारती** ।
—सालिभद्र सूरि
४ कविता (वाणी) ।
भासा संस्कृत प्राकृत भणंता, मूझ **भारती** ए भरम । रस दायिनी सुंदरी रमतां, सेज ग्रंतरिख भूमि सम ।—वेलि
५ ब्राह्मी नाम की बूंटी ।
६ एक प्राचीन नदी का नाम ।
७ एक प्रकार का पक्षी ।
रू० भे०—भारति, भारत्थि, भारथी, भारथी ।

भारतीय-वि० [सं० भारत] भारत सम्बन्धी, भारत का ।

भारत्थ—१ देखो 'भारत' (रू. भे.)
उ०—'विजा' मनोहरदास का, महेवैचा समरत्थ । बांहां पांण निभाहणा, साहां सूं **भारत्थ** ।—रा. रू.
२ देखो 'महाभारत' (रू. भे.)

भारत्थि—१ देखो 'भारत' (रू. भे.)
उ०—गंगाजळ निरमळ जेम गंग, ग्राइत्त धीर ग्रोपित्त ग्रंग । **भारत्थि** चडिय तेजसी भल्ल, परवाड़मल्ल परचक्कपल्ल ।
—रा. ज. सी.
२ देखो 'भारती' (रू. भे.)

भारथ—१ देखो 'भारत' (रू. भे.)
उ०—१ 'अखा' हर वाहत खाग उनंग, जुड़ै जिम **भारथ** दारुण जंग । वळोवळ लूंबत रौद्र ग्रजाग, भिड़ै सुजि हुवै दुय भाग ।
—सू प्र.
उ०—१ नमसकार सूरा नरां, पूरा सतपुरसांह । **भारथ** गज थाटां भिड़ै, ग्रड़ै भुजां उरसांह ।—बां. दा.
उ०—३ मांण दुयोजण 'मालदे', जिण बाधौ जगहत्थ । **भारथ** भिड़िया जास भड़, साह हूंत समरत्थ ।—बां. दा.
२ देखो 'महाभारत' (मह., रू. भे.)
उ०—१ उठै ईसफां ग्रासफां नांम ग्राखै, दुवै काळिका चंडिका ग्रेह दाखै । कतेबां कलम्मां उचारै कुरांणां, पढ़ै **भारथां** भागवंतां पुरांणां ।—सू. प्र.
उ०—२ राजा मांन दियौ घणौ, **भारथ** वांचै ग्राय । राजलोक में रात दिन, महल महलें जाय ।—प. च. चौ.

भारथि—१ देखो 'भारत' (रू. भे.)
उ०—१ 'भाखर' हरा ऊजळै **भारथि**, 'मदनौ' सूर वकारि मूग्रा । सिवराजा हर हरवळ पतिसाही, हरवळां हरवळ हुग्रा ।
—मदनसिंघ नै सूरसिंघ गौड़ रौ गीत
उ०—२ दियण विढण भमियाळ 'दूद' उत, साच सीळ भमियाळ सही । भाजेवा भमियाळ न **भारथि**, नाकारै भमियाळ नहीं ।
—ईसरदास बारहठ
उ०—३ **भारथि** ग्रागि ग्रजागि महाभड़, जोध जडाग वडा छळ जागै । मेर ग्रजाद देस दस मालिय, मुगळां कन्है पेसकस मांगै ।
—ल. पि.
२ देखो 'भारती' (रू. भे.)

भारथ्थ—१ देखो 'भारत' (रू. भे.)
उ०—१ ढोलइ करहउ भालियउ, मारू ग्राई सथ्थ । प्रिउ, ए ऊंमर-सूंमरउ, करिस्यइ थां **भारथ्थ** । ढो. मा.
उ०—२ सोभीजै 'करणेस' सुत, 'सिवौ' ग्रभंग सिमरथ्थ । दाह दिलेसां उर दयण, भू-विजई **भारथ्थ** ।—द. दा.
२ देखो 'महाभारत' (रू. भे.)
उ०—रांमायण **भारथ्थ**, बिगत रण चारण बांचै । सांचै दिल सूरमां, खड़ग गहि मूंछां खांचै ।—मे. म.

भारदर—देखो 'भारवरदार' (रू. भे)
उ०—साठ रुकमां जड़त हीर तुकवां सलह, भूप हुकमां जळह राज भारां । **भारदर** बोलियौ भाग जुग भाळियो, धुबै उजवाळियौ खाग धारां ।—पहाड़ खां ग्राढौ

भारदवाज, भारद्वाज-सं० पु० [सं० भारद्वाज] १ ग्रंगरिस गोत्र का एक गोत्रकार एवं मंत्रकार ।
२ वैवस्वत मन्वन्तर के सप्त ऋषियों में से एक ।
३ एक श्रौतसूत्रकार, जिसके नाम पर कई ग्रन्थ उपलब्ध हैं ।
४ एक ऋषि, जिसने द्युमत्सेन राजा को ग्राश्वासन दिया था कि तुम्हारा पुत्र एवं सावित्री का पति सत्यवान् पुनः जीवित होगा ।
५ एक व्याकरणकार ।
६ द्रोणाचार्य ।
७ मंगलग्रह ।
८ बृहस्पति का एक पुत्र ।
९ भरद्वाज कुल में उत्पन्न व्यक्ति ।
१० एक चिड़िया, जिसका शकुन लिया करते हैं ।

भारपलांण, भारपिलांण-सं० पु० यौ०—बोझा ढोने का ऊंट का चारजामा ।

भारबंध-सं० पु०—रहट की माल के सिरे का बंध।

रू० भे०—भारावंद, भाराबंध।

भारबरदार—देखो 'भारवरदार' (रू भे.)

भारबरदारी—देखो 'भारवरदारी' (रू. भे.)

उ०—बहलां **भारबरदारी** री सांमांन ढोने वाली सगळी रथ रै पूठै लगाय दीवी।—कुंवरसी सांखला री वारता

भारभुज-सं० पु०—राजा, नृपति। (डि. को.)

भारभोर—देखो 'भार' (१६) (रू. भे.)

भारमलरा-सं० स्त्री०—कछवाहा वंश की एक उप-शाखा। (बां. दा ख्या.)

भारमलोत-सं० पु०—१ राठौड वंश की एक उप-शाखा। २ कछवाहा वंश की एक शाखा।

भारमाली-वि० [सं० भार+मालिन्] भार धारण करने वाला।

उ०—ब्रहन्नडा द्रुपदि न्रत्यकारी, ए उत्तरा नइ गुरु रूपि नारी। की जइ किमइ सारथि **भारमाली**, तउ वेगि आवइ सवि गाय वाली।—सालिसूरि

भारया-सं० स्त्री० [सं० भार्या] १ पत्नी।

उ०—सब अपणां धरम मांही चालै। स्त्रियां पति-सेवा करै। पति निज **भारया**-रत रहै।—सिंासण बत्तीसी

२ स्त्री, महिला।

रू० भे०—भारज, भारजा, भारज्या, भारिजा, भारिज्या, भारिया।

भारलदण-सं० पु० [सं० भार+लाध प्रा. लाद्ध रा. लाध] गधा, खर। (अ. मा.)

वि०—भार लदने वाला।

भारलदारौ-वि० [सं० भार+रा० लदारौ] भार लदने वाला।

उ०—मसांणिया नै कारटिया रे, वले जट वर्णं ते जटिया। कुंभार सिरावा सोंनारौ रे, हुवौ नायक **भारलदारौ**।—जयवांणी

भारव-सं० स्त्री० [सं०] धनुष की डोरी।

भारवदार-सं० पु० [फा० बारवरदार] बोझा ढोने वाला, भारवाहक।

उ०—कठठ तोप गाडियां, नाद नीधसै नगारां। गजां जूथ खोलजै, **भारवरदार** कतारां।—वखतौ खिड़ियौ

रू० भे०—भारदर, भारबरदार।

भाणवरदारी-सं० स्त्री० [फा० बारवरदारी] १ भार वहन करने वाला। (शकटादि)

उ०—म्यारांमजी मारवाड़ आवण रौ मतौ कीधौ, तबूं गुड़दावण रौ हुकम दीधौ। **भारवरदारी** आगै चलाइ छै, घोड़ां पर साकतां झलाई छै।—मयारांम दरजी री वात

२ भार वाहन करने की क्रिया।

रू० भे०—भारबरदारी।

भारवहगात्र-सं० पु०—रथ। (डि. को.)

भारवहण-सं० पु०—गधा, खर। (ह. नां. मा.)

भारवाहक-सं० पु० यौ० [सं० भार+वाहक] भार वहन करने वाला, वजन ले जाने वाला।

उ०—इहां वलि बीजउ द्रस्टांत दाखव्यउ, **भारवाहक** नउ विचारौ जी। भारवहइ तणउ कावड़ी भली, साज बिना नाकारौ जी। —रा. कु.

भारवाहीनांव-सं० स्त्री० यौ० [भारवाही+नाव] माल ढोने वाली नौका, डूंडौ। (डि. को.)

भारवि-सं० पु०—'किरातार्जुनीय' नामक महाकाव्य के रचयिता एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि।

भारसह-सं० पु०—बनिया, वैश्य, व्यापारी। (डि. को.)

वि०—सहनसील, सहिष्णु।

भारह—देखो 'भारत' (रू. भे)

भारहारी-सं० पु० [सं० भारहारिन्] पृथ्वी का भार उतारने वाला, विष्णु।

वि०—१ भार हरने वाला, २ भार उतारने वाला।

भारात, भाराथ—१ देखो 'भारत' (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ 'भारथ' सुत **भाराथ**, कर जैत 'केहर' हरां। समर पड़े इक साथ, भाई मड लीधां अभंग।—शि. सु. रू.

उ०—२ कमधजां वेहूं **भाराथ** सबळा किया, सबळ साका किया सूर साखी। अभंग 'ऊदा'हरे जिसी खेली अखड़, 'रांम'हर तिसी अखियात राखी।—किसनौ दुरसावत

उ०—३ तुछ जळ ज्यांही माछळा तडफइ, भड तडफइ तिण विध **भाराथ**। भभकइ रुधिर भडंजर भागा, एकण कहर लाबिया हाथ। —महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'महाभारत' (रू. भे.)

उ०—**भाराथ** रमायण भागवत, कथा पवित्र घरि घरि करां। घरि मरण नेम सिर परि धरां, तुररा तुळसी मंजरां।—सू. प्र.

भाराथि—देखो 'भारत' (रू. भे.)

उ०—**भाराथि** खळां दळ भांजणौ, गढ़ गांजणौ गहगीर। धरिति सिरिनांम वधारणौ, कुळ तारणौ लखधीर।—ल. पि.

भाराथियौ-सं० पु० [सं० भारत+रा० प्र० इयौ] युद्ध करने वाला, योद्धा।

उ०—भुज लगा जड़ै त्रण पोहर **भाराथियां**, बाथिया सुरग सर कीयां गळ बाथियां। सूर 'सुरतांण' रंग घणा गमराथियां, सुज घणा रंग 'सुरतांण' रा साथियां।—किसनौ आढ़ौ

भारांबंद, भारांबंध—देखो 'भारबंध' (रू. भे)

भारिंगि—देखो 'भारंगी' (रू. भे.)

उ०—भीलामां नइ भालकी, भरडु **भारिंगि** भांगि। भंभेडी ब्रह्मांड घण, भोजपत्र भड चंगि।—मा. कां. प्र.

भारिजा—१ देखो 'बाड़ेज' (रू. भे.)

उ०—१ छत्रीस वरण तणा घोडा । किस्या किस्या घोडा । उज्जरा, गल्लरा, कारा, तोरका, **भारिजा**, सीधूया ।—कां. दे. प्र.

२ देखो 'भारया' (रू. भे.)

उ०—राज करइ तिहां राजियउ, पुंडरीक नांम नरिंदौ जी । गुण-सुंदरी तसु **भारिजा**, पांमइ परमाणंदौ जी ।—स. कु.

भारिज्या—देखो 'भारया' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

भारिथ्थ—देखो 'भारत' (रू. भे.)

उ०—खंडहियां बांका भड़ां, प्रघटी हुवै प्रसिथ्थ । राठौड़ां ग्रर मुग्गळां, नहु चूकै **भारिथ्थ** ।—रा. ज. रासौ

भारियां—सं० स्त्री० (ब. व.) समूह ।

उ०—रोड़ बजि हैवरां ग्रागि धिक रारियां, धजर भाला खेवण त्रभागौ धारियां । भौमि गूगळी गयण चढै रज **भारियां**, तूटिसी घणा सिर ग्राजि तरवारियां ।—जालमसिंह मेड़तिया रौ गीत

२ देखो 'बोझ्यां' ।

भारिया—देखो 'भारया' (रू. भे.)

उ०—कीधी सगाई तेहसूं, 'सोमा' ग्रांई दाय । थापी तेह नी **भारिया**, मेली कुमारी-ग्रंतेउर मांय ।—जयवांणी

भारियौ—सं० पु०—१ वजन उठाने वाला, भार-वाहक ।

देखो 'भारी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—ग्रनेके फळे **भारिया** व्रक्ख ग्रोपै, लिये चाहि सेवा न को जाय लोपै । सुगंधाकरं सुंदरं फूल सोहै, महाथंभ सौरंभ सिभू विमोहै ।—रा. रू.

भारींगण—सं० पु०—वह बोझा या भार जो मोट खींचने के लिये लगाई जाने वाली दो लड़कियों को स्थिर रखने हेतु उन पर रखा जाता है ।

रू० भे०—भारीगण ।

भारी—सं० स्त्री०—घास लकड़ियों ग्रादि का छोटा गट्ठर ।

उ०—दलिया रांधै दळबळिया हलबांणौं, बेचण बींदणियां ईंध-णियां ग्रांणैं । लादी **भारी** नैं ग्रोळावौ लेती, दुरबख बारी नैं बोळावो देती ।—ऊ. का.

उ०—२ लकड़िकां री **भारी** बांधनै दोनूं सागै ई ग्राप ग्रापरै घरै ग्रावता ।—फुलवाड़ी

वि० [सं० भारं] १ जिसमें ग्रधिक बोझ हो तथा जिसे उठाने में पर्याप्त शक्ति व्यय होती हो, बोझिल, वजनी ।

उ०—१ कोई कहै हळको कोई कहै **भारी**, मैं तौ लियौ री ताख-ड़ियां तोल । कोई कहै छांनै कोई कहै चौड़े, मैं तौ लियौ री बाजंतां ढोल ।—मीरां

उ०—२ वौ **भारी** देखन ग्रेक घण उंचाय दियौ । मन में ग्रा कुटळाई विचारनै के **भारी** घण सूं मकोड़ा री कमर भाग जासी, जद घण पाछौ ले लेस्यूं ।—फुलवाड़ी

२ ग्रत्यन्त, बहुत, खूब ।

उ०—१ न्यात मेतरां मिळ निपुण, पांमर सांसी परखिया । ग्रम-लियां देख **भारी** ग्रधम, होका धारी हरखिया—ऊ. का.

उ०—२ लेता **भारी** लाल चोळरंग लागा चोखा । कोडी फेर किया ग्रजब, द्रग धमळ ग्रनोखा ।—ऊ. का.

उ०—३ गांवां रूड़ौ रूप, भूप घर रौ भल **भारी** । छायासयित हमेस, देस ग्रौखद सुखकारी ।—दसदेव

उ०—४ यह ग्रांमेर जयसिंहजी रै परणियौ थौ सो उवां रौ **भारी** मुलाहिजौ सो ग्रमरसिंघजी नूं बादसाह नीकी तरै राखै ।

—राजसिंहजी राठौड़ री बारता

३ भीषण, भयंकर ।

उ०—१ सारी स्रस्टी में कुंडळ छळ करियौ, **भारी** हा हा रव भूमंडळ भरियौ । बसुधा काळीं री ताळी तड़ बागी, भिड़ियां सोनां री चिड़ियां पड़ भागी ।—ऊ. का.

उ०—२ सांभळियउ तरइ विसंभर सउणै, सती दिपउ ग्रत वळियउ साथ । वांणी ताइ व्रहमंड वखांणइ, **भारी** एक हुयउ भाराथ ।—महादेव पारवति री वेलि

४ कठिन, मुश्किल ।

ज्यूं—ग्राज गुरुजी बहुत भारी हिसाब घालिया ।

उ०—म्हैं **बाबा** रै मूंडा सांमी जोयौ । देख्यां उण रै डील रौ गसकौ ग्रैंडौ लखावतौ के कदास उण रै सास लेवणौ ई **भारी** व्हैला ।—फुलवाड़ी

५ जोरदार ।

उ०—१ दमंगळ मंगळ उडिया चहुंदिस, छूटौ जिम ठाकुर जंगळ । खारी वार गयंद सु खहतौ, **भारी** भुज खेली भगळ ।

—लिखमीदास गाडण

उ०—२ **भारी** ग्रगै ग्रगै रे भारत, हेकण जीभ प्रताच हुवा । मन मिळियोड़ा जिकां माढ़वां, जीभ करै खिण मांह जुवा ।

—बां. दा.

५ विशाल, वृहत, बड़ा ।

उ०—६ भड़वा लोकां रै जागीरी **भारी**, ग्रावै ग्राटै नैं काटै उपकारी । परजापतियां नह परजा नैं पाळैं, टुकड़ै टुकड़ै नैं टीबै टंक टाळै ।—ऊ. का.

उ०—२ दांनयार दहलियौ, हुतौ सफि हफतहजारौ । तजि हरवळ तापह, भिळे चंदवळ दळ **भारी** ।—सू. प्र.

उ०—३ तरै वीरमदे चढ़ खड़िया रीयां श्री नैड़ा ग्राया तरै वीर-मदे हेरूं नूं कह्यौ—गांव तौ **भारी** लागै छै ।—द. दा.

६ हानि-प्रद, नुकसानकारी ।

उ०—१ तद पुटियौ जबाब देवतौ बोल्यौ—थांनै ग्रबारूं तौ कोगता सूझै है । बगत ग्रायां थांरै माथै पड़ता ग्राभा नै म्हैं ई थांमूला ।

टूंचां नै बस में राख्या करौ । कठै ई औ गचळका **भारी** नीं पड जावै ।
—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—पड़णौ ।

७ आसानी से न पचने वाला, गरिष्ठ ।

उ०—'माधव' साधन अरठ मंडायौ, खारौ मुख लै घणौ खिडायौ । छाक पियौ जिण पेट छुडायौ, **भारी** पांणी जनम भंडायौ ।
—ऊ. का.

८ ग्रहों के अनुसार अनिष्ट परिणाम वाला, बुरे शकुन का ।

ज्यूं—आज री रात उण नै बहुत भारी है ।

९ विकार या खराबी (शरीर के किसी अंग में) जिससे वह निकम्मा या सुस्त हो गया हो ।

उ०—बांमणी डुस्किया भरती ई **भारी** गळा सूं बोली-अेक वेस्या रा घर में दूजी फेर कुण व्है सकै ।—फुलवाड़ी

मुहा०—१ आंख भारी होणी=आंख दुखने आना । २ आवाज भारी होणी=जुखाम या अन्य कारण से आवाज भर्राई हुई सी होना । ३ कांन भारी होणौ=किसी विकारवश कान से अस्पष्ट सुनाई देना । ४ गळौ भारी होणौ=भावुकता में या रुदन या जुखाम के समय गले की आवाज भर्राई हुई होना । ५ तबीयत भारी होणी=रोग से अस्वस्थ होना । ६ पेट भारी होणौ=अधिक खाने से अपच की अवस्था होना । ७ माथौ भारी होणौ=सिरदर्द होना ।

१० किसी व्यक्ति के मन में व्याप्त अभिमान, घमंड या रोष जिस कारण वह किसी से सरलता से व्यवहार न करता हो ।

ज्यूं—आजकल वै बहुत भारी पड़े है ।

क्रि० प्र०—पड़णौ ।

११ सशक्त, बलवान ।

उ०—गोहिलां रौ वडौ धोम राज, अर डाभी पण डीलां घणा सिरीखा परधांन, सु रिसांणा थका छाड गया । जाहरां आसथांन जी रौ राज **भारी** पड़ियौ । तद डाभियां जांणियौ, गोहिल मरावां ।
—नैणसी

क्रि० प्र०—पड़णौ ।

१२ तुलनात्मक दृष्टि से अधिक भिज्ञ, निपुण, चतुर, महान, बड़ा ।

ज्यूं—औ बिजळी रौ बडौ **भारी** कारीगर है । आप गणित रा भारी विद्वान हौ ।

१३ उत्तम ।

उ०—भरत्थं विदा कीध दे सीख **भारी**, धरा चित्रकोठां बसै चापधारी ।—सू. प्र.

१४ सुन्दर, खूबसूरत ।

उ०—१ भुज च्यारे रूप विराजइ **भारी**, घरहरती घुळणी घण घाव । हेमाचळ गिरवर चा सेहर, वसंत तणी रुत हुई बणाव ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ भूरै मुखडै पर स्वदेश कण **भारी**, पहुंची पोळद्व में प्रीतम री प्यारी । नाचै मेलावण मेळावण मांही, जोवण जोगी वा वेळा जग मांही ।—ऊ. का.

उ०—३ **भारी** छजे गीतड़ां भुरजां, बिहद कवित कांगुरा बणै । ताकव कंठ गिरा बज तोपां, तैं रिप सूंमां सीस तणै ।
—कुसाळसिंघ स्यांमसिंघोत रो गीत

अव्य—बिल्कुल ।

उ०—आळा भोळा लोग । रोग सूं अणभिग **भारी** । सिर सिरवारी वेर, खेर पनड़ी खै खारी दूखणियां ज्यूं दगड, रगड़ झट नीम लगावै । पीड़ा सी पट ज्याय, काय क्रस आबी आवै ।—दसदेव

अल्पा०—भारयौ, भारियौ ।

मह०—भारौ ।

भारीकन्यका—सं० स्त्री०—जमीन, पृथ्वी । (अ. मा.)

भारीखमूं, भारीखमौ, भारीखम्मौ, भारीणवूं—देखो 'भरखमौ' (रू. भे.)
(डि. को.)

(स्त्री० भारीखमी)

भारीगण—देखो 'भारींगण' (रू. भे.)

भारीगरौ, भारीघरौ—सं० पु० यौ० [भारी+समूह, गृह=घर] गृह सदस्य समूह ।

उ०—तद बांमण कह्यौ—आज राखडी पूनूं है । घर में आखा लेवण जोग ई दांणा कोनी । छोटा मोटा दस मिनखां रौ **भारीगरौ** है ।— फुलवाड़ी

भारीपण भारीपणौ—सं० पु० यौ० [सं० भारी+रा० प्र० पण, पणौ] भारी होने का भाव, भारीपन ।

भारीबोल—सं० पु० यौ० [सं० भारी+बोल] गर्वीले शब्द, गर्वोक्ति ।

उ०—गुंजारव गैमरां, धुवै हव सांभळ ढोलां, जादम सूं कर जंग फवै थिर **भारीबोलां** ।—द. दा.

भारीलगनी—सं० स्त्री० [सं० भारी+लग्न] वह कन्या जिसके विवाह का लग्न ठीक न बैठता हो ।

भारुंडी, भारुडी—सं० स्त्री०—रहट की लाट को आगे खिसकने से रोकने के लिए उसके सिर के समीप रखा हुआ बोझ ।

भारौट, भारोठ—सं० पु०—छत के पत्थरों के नीचे लगा हुआ वह लम्बा पत्थर जिस पर छत की शिलाएं (पट्टियें) टिकी रहती हैं ।

वि० वि०—आजकल इन पत्थरों की जगह लोहे की शहतीरें लगाई जाती हैं ।

भारौ—देखो 'भारी' (मह., रू. भे.)

उ०—१ तूटै भारा अजड़, अंग ऊपरा अपारा । रत छूटै अणपार, घड़ां फूटै चवधारा ।—सू. प्र.

उ०—२ सीधै साहिबां सरारा करै करारा जुवाब स्वाल, उथाळा जोसैल चाळा धरा रा आखांण । भंजे सामराथां खळां बांनैत बिरदां भारां, बिलायतां घणां थारां 'केहरी' बाखांण ।—दौरादांन आसियौ

उ०—३ भडा मत्रियां जूथ **भारा**, सजै निज दरबार सारा। भलां पातां जूथ भेळा, वखांणै पह जेण वेळा।—सू प्र.

उ०—४ बत्तीस अंतेउर परिहरि, लीधउ संजम **भारौ**, तप जप कठिण क्रिया करइ, साथइ साधु हजारो।—स. कु.

उ०—५ भाये भळहळिया भुंरटां रा **भारा**, अध अंग उलळिया उरगां रा आरा। बिरळा दाता री पांतां बिरळाती, चौड़ै चाचर री चोड़ै चिरळाती।—ऊ. का.

उ०—६ वौ ऊंदरा री पूंछां री **भारौ** बांधनै बाजार में बेचण जावतौ हो।—फुलवाडी

मुहा०—करमां रो भारौ बांधणौ=पाप कर्म करना।

भाळ, भाल–सं० स्त्री० [सं०] १ ललाट, मस्तक। (अ. मा.)

उ०—१ भुज आजान विसाळ **भाळ**, कट संध प्रकार नयण भ्रूंह नासिक कमळ धनु सुक निरधार।—र. ज. प्र.

उ०—२ मधुकर भ्रमत सुबास मद **भाल** सुधाकर भास। मोदक कर मन मोदमय, नित जय ग्यांन निवास।—बां. दा.

रू० भे०—भाळयळ, भाळयळि, भाळहळ, भाळिअल्ल, भाळियळ, भाळीअळेय, भाळीयळ।

सं० स्त्री०—२ खोज तलाश।

उ०—नाई निरनै होयनै म्यांनो बतावण लागौ—म्हैं तौ खुद अेक चीता री **भाळ** में हो।—फुलवाड़ी

३ प्रतीक्षा।

उ०—वौ सुसिया नै पूछ्यौ—अै लाडू कीकर बणाया। म्हनै ई उपाव बता, म्हैं ई बणालू। खिरगोसियौ तौ इणी **भाळ** में ई हो। कह्यौ - इण में काई इदकाई।—फुलवाड़ी

४ निरीक्षण, जाच।

५ खबर, संदेश।

उ०—१ ईतराक समै चोमासा, री हूंस आई। रंग-रंग री पौसाखां नैं दारू री भटियां कढाई। एक समै कंवर वीरमदे कनै सूरां री **भाळ** आई। जिका सिकार सारां के मन भाई।—पनां

उ०—२ इम कहै, राजा आपरा रजपूत खांग उतार म्हैल, केता-अेक रजपूतां रा वांनैत साथ लिआं, **भाळ** आई थी, तठै जाअे सुअर मार पाछा पधारिया।—कल्याणसिंघ वाढ़ेल री बात

भाल–स० पु०—१ एहसान, उपकार।

२ देखो 'बहाल' (रू. भे.)

उ०—राजकंवर नीमरांणा की, बांधरबाड़े ब्याई। परतख होय पांगळी पांवां थावर संग्या थाई। देख हवाल **भाल** कर देवी, चाल मराळ चलाई।—मे. म.

३ देखो 'भालू' (रू. भे.)

उ०—उण दसा राखस आहुड़ै, भड़ **भाल** कपिगण दस भड़ै। लूथ-बथ अह घणसुर लड़ै, गज धरा नभ गड़ड़ै।—र. ज. प्र.

४ देखो 'भालौ' (मह., रू. भे.)

भाळक, भालक–वि० [दे०] १ देखभाल करने वाला।

उ०—पादाकांती पदाकांति बिन पावै, आरयावरती जन अंन बिन अकुळावै। वहतौ अखलेस्वर अवगति अंनदाता, तत सत जग पाळक जग **भाळक** त्राता।—ऊ का.

२ दर्शनीय।

३ खोज या तलाश करने वाला।

४ खबर या संदेश ले जाने वाला, संदेशवाहक।

५ जांच करने वाला, निरीक्षक।

६ प्रतीक्षा करने वाला।

७ देखो 'भालू' (रू. भे)

उ०—कळ वीछुड़ि एक वसै गिरि कंदरि, मंदिर **भाळक** एक मरै। अहि त्याग झुरै धन एक गमाय रु, के रिध आदरि संधि करै।
—रा रू.

भालकी–सं० स्त्री०—वृक्ष विशेष ?

उ०—भीलामां नइ **भालकी**, भरडु भारिंगी भांगि। भंभेडी ब्रह्मांड घण, भोजपत्र भड चंगि।—मा. कां. प्र.

भालकौ—१ देखो 'भालोड़' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—ज्यूं ही खींवै रा **भाळकां** री चमक दीठी त्यूं ही तुरत ऊठ उठै आय अजांणजख रौ होळै सी अेक तीर पकड़ खैंच्यो।
—सूरेखींवें कांधळोत री बात

२ देखो 'भालौ' (अल्पा., रू. भे.)

भालड़ियौ–सं० पु०—१ वह बैल जिसके सींग भाले के समान तीक्ष्ण हों।

२ देखो 'भालौ' (अल्पा, रू. भे.)

३ देखो 'भालोड़' (अल्पा., रू. भे)

रू० भे०—भालडियौ।

भालडी—१ देखो 'भालौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—रांम लखमण मही दुखि पाड्या, पांच पांडव विदेसि भमाड्या। डूंब नइं घरि जल वहिउं हरचंदिइं, **भालडी** मरण लाध मुकुंदिइं।—सालिसूरि

२ देखो 'भालोड़' (अल्पा., रू. भे.)

भालड़ौ—१ देखो 'भालौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—भवरजी कोई भलके तौ हाथां में जांणु **भालड़ा** हो म्हारा राज। आछा तौ चढिया भवरजी अलबलिया असवार ओ सांईना।
—लो. गी.

२ देखो 'भालोड़' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—पेलै पार बरे बींद झराये बेवाणां परी, सोक सरां वायकुंडां पुराये सादीह। फरां फाड़ै मत्रां तोड़ै चुराये **भालड़ां** फूटै, अेकै-राडै फतै जांगी घुराये अबीह।—गंभीरसिंघ सोलंकी रौ गीत

भालचंद्र–सं० पु० यौ [सं० भाल+चन्द्र] शिव, महादेव। (डिं. को.)

भालडियौ—१ देखो 'भालड़ियौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भालोड़' (अल्पा., रू. भे)

भाळणौ–वि०—देखने वाला।
उ०—वंस छतीस बरंम, गनीमां गाळणौ। आभाळौ अधपती, भली द्रढ **भाळणौ**। जारजपंचम जोध, ढिलीवै ढूकड़ौ, आठूं पहर अबीह खेड़ेचौ रहै खड़ौ।—प्र. प्र.
सं० पु०—देखने की इच्छा, मिलन।
उ०—म्हारी मां रा रे जाया, छिन-छिन आवं रे मांयरा रा भाळणा।—लो. गी.

भाळणौ, भाळबौ–क्रि० स०—१ देखना।
उ०—१ भणं पग सिद्ध सातूं मुनि भाळ, मेल्है पग मांणक मोतिय-माळ। बंदै पग रावत बंस बिसुद्ध, सेवै पग चारण किन्नर सिद्ध।
—ह. र.
२ तलाश करना, खोज करना, ढूंढना।
उ०—रांणी तौ कळिजुग री रूप एहा अभिरूप अवनीस रौ तिर-स्कार करि सुद्धांत रै आस्रित अनेक जन रहै जिकां मैं काई दो ही लोक रौ खोवणहार ठाळियौ, जिणरी संगति रै प्रभाव स्वरग लोक रौ मारग मुद्रित कराय कुंभीपाक रौ निवास **भाळियौ**।
—वं. भा.
३ समझना, जानना।
उ०—अर एक ही घर रौ जुद्ध जांणि अठी उठी दोही तरफ रा सरबही स्वकीया **भाळिया**।—वं. भा.
भाळणहार, हारौ (हारी), भाळणियौ—वि०।
भाळग्रोड़ौ, भाळियोड़ौ, भाल्योड़ौ—भू० का० कृ०
भाळीजणौ, भाळीजबौ—कर्म वा०।

भाळदार–वि० (स्त्री० भालदारण) १ ध्यानपूर्वक देखने वाला।
२ तलाश करने वाला।

भालनेत्र–सं० पु० यौ० [सं० भाल+नेत्र] जिसके मस्तक पर नेत्र हो, शिव।

भालपत, भालपति, भालपती–सं० पु० यौ० [सं० भालूकः+पति]
१ रींछों का स्वामी या मालिक।
२ जामवंत।
उ०—जोसेल गयावक नील जती, फिर तार दुयं दिसु **भालपती**। गंधमादन आद दवादस गाजिय, कीस समाजिय क्रीत रा।
—रा. रू.

भालम—देखो 'भलम' (रू. भे)
उ०—वावेची चहुवांण भरी तन गुण **भालम** री। सधु जगतसिंह री सुलज वधु 'सालम' री।—भगवांन जी रतनू

भालमकौ–सं० पु०—कीर्ति का रक्षक।

भाळयळ–सं० पु०—देखो 'भाळ' (१) (रू. भे.)
उ०—जुध कळळ बाजियां बयळ बारह जसौ, भळहळै **भाळयळ** सुजळ अदभूत। प्रगट रज बीज बीसह धींसा रसा पुड़, राज गा नीपजै अजे रजपूत।—महाराज रणसिंघ री गीत

भाळवी–वि०—१ तलाश करने वाला, ढूंढने वाला।
२ देखने वाला।

भाळहळ—१ देखो 'भळळ' (रू. भे.)
२ देखो 'भाळ' (१) (रू. भे.)

भालांक–सं० पु० यौ [सं० भाल+अंक] शिव, महादेव।

भालागीरी–सं० स्त्री० [सं० भल्ल+रा० प्र० गीरी] भाला या बरछा चलाने की विद्या।
उ०—**भालागीरी** भेद में बळ साह वखांणी, सेलहथां 'तगसेग' सूत हिंदू तुरकांणी। राजा रावळ राव रांण जग सारा जाणै, आज 'प्रताप' प्रताप छळ वडवार वखांणै।—मोडजी आसियौ

भालाबरदार–सं० पु० यौ० [सं० भल्ल+फा० बरदार] भाला या बरछा चलाने वाला।

भाळाभळ—देखो 'भळाभळ' (रू. भे.)

भालाळ, भालाळौ–वि० [सं० भल्ल+प्र० आलन्] १ भाला या बरछा धारण करने वाला।
२ पाबू राठौड़ के लिए प्रयुक्त शब्द।

भालासींगौ–सं० पु० यौ० [सं० भल्ल+शृङ्ग] वह पशु जिसके सींग भाले के समान तीक्ष्ण हों।
रू० भे०—भालोड़सींगौ।

भाला-हत्थौ—हाथ में भाला रखने वाला।
उ०—एक एक नमै खत्र आगळा, भाला-हत्था भड़ सिहर। नव समंद खांण नवसाहसा, राठौड़ां रिणमल्ल हर।—गु. रू. बं.

भाळाहळ–वि० [अनु०] १ भरा हुआ, पूरा भरा हुआ, पूर्ण।
उ०—खुटहड़ गज ज्यूं विखम, भरै पौरस **भाळाहळ**। पय रतैब धरि पभंग, हरख चढियौ भाळाहळ।—सू. प्र.
उ०—भड़ बोलै हरभांण, पौरस **भाळाहळ**। अगुर थाट आछूटूं, झाट बांणास झळाहळ।—सू. प्र.
२ देखो 'भळाभळ' (रू. भे.)

भालि—देखो 'भालोड़' (रू. भे.)
उ०—१ 'विरह **भालि** सुं मरि गई, हिवड़ै रही खटक। हरीया रांम सनेह कुं, जींवडौ रह्यौ अटक।'—स्रीहरिरांमदासजी महाराज
उ०—२ विरह **भालि** जाकै लगी, अंग अंग में एक। जन हरिया तन बीच मैं, करिगी छेक अनेक।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

भाळिअल्ल—देखो 'भाळ' (रू. भे.)

भालिम, भालिमि—देखो 'भलम' (रू. भे.)
उ०—१ विधि एणि वधावे वसंत वधाए, **भालिम** दिन दिन चढ़ि भरण। हुलरावणै फाग हुलरायौ, तरु गहवरिया थिय तरुण।
—वेलि

उ०—१ आभी नवखंडे प्रसिधि, माभी अंमणीमांण । भालिम खाटण निवड़ भड़, जालिम जोध जुआंण ।—ल. पि.

उ०—२ भालिमि कुळ भाण मन महिरांण, जस रस जांण जुआंण । तढ़मल तुड़िआंण विमळ बखांणि, सूरति नाण समांण ।—ल. पि.

भाळियळ, भालियल, भाळियळि, भालियलि–वि०—१ देखने वाला, दर्शक ।

२ देखो 'भाळ' (१) (रू. भे.)

उ०—१ प्रगट परताप जिनरतन रौ पाटवी, सकल सुख देण कवि कहै धरमसीह । भालियल तेज किरणाल जिम भालतां, दलित मेटै करैं दौलति दीह ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ भळहळ उज्जळ भाळियळ, कर तेज प्रभाकरा भुज परचंड खळां भखण है भाट फुणंधर । मन महराण गंभीर मत, गुरआत सूरांगुर, चौरासी रूपक समज, खट भाख बहोत्तर ।

—मोडजी आसिया

उ०—३ मुख सिख संधि तिलक रतनमै मंडित, गयौ जु हूंतौ पूठि गळि । आये किसन मांग मग आयौ, भाग कि जांणै भाळि-यळि ।—वेलि

भाळियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ देखा हुआ. २ तलाश किया हुआ, खोज किया हुआ. ३ समझा हुआ, जाना हुआ.

(स्त्री० भाळियोड़ी)

भाळीअळेय, भाळीयळ—देखो 'भाळ' (१) (रू. भे.)

उ०—१ कोमुंड खवै कडि कसै तूंण, भड पत्थक भीखम करन द्रोण । केसर तिलक्क भाळीअळेय, मुक्कता-माळ सोहै गळेय ।

—गु. रू. बं.

उ०—२ आदू मंजन करिघ पाट पेहरे देही दळ, तिलक कुंकम भाळीयळ । कणै कांन आटक वेण नासा मोतीहळ, हार उर चंदन विलेप रची कांकण कटि मेखळ ।—गु. रू. बं.

भाली—१ देखो 'भालौ' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'भालोड़' (रू. भे.)

भालु, भालुर—देखो 'भालू' (रू. भे.)

भालुनाथ–सं० पु० [सं० भाल्लुकः+नाथ] १ रीछों का स्वामी या मालिक ।

२ जामवंत ।

भाळू–सं० पु०—१ वह व्यक्ति जो शिकारी को शिकार की खबर देता है ।

उ०—इसै समइयै में भाळुवां आंण अरज कीवी छै । भाखरां रा खुडां वेहडां मांहां सूअर नीचा उतरिया छै ।—रा. सा. सं.

वि०—१ तलाश करने वाला, खोज करने वाला ।

२ देखने वाला ।

भालू, भालूक–सं० पु० [सं० भाल्लुकः] बड़े-बड़े कान वाला काले रंग का एक प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया, रीछ ।

रू० भे०—भाल, भालक, भालु, भालुक ।

भालैराव–सं० पु०—वह व्यक्ति जो भाला चलाने में कुशल हो ।

उ०—यूं करतां लूंकौ बारह बरस रौ हुवौ । भालैराव घोड़ै अस-वार हुवौ ।—नैणसी

भालोड़–सं० स्त्री०—१ किसी शस्त्र के आगे का नुकीला भाग ।

उ०—खींवै री कमर मांहीं सखरा चवदै तीर सौ केसरिया कमर-बध सूं बंधा छै । तिकां री भालोड़ आगले पासे सूं बाहर दीसै छै, भळभळाट करती ।—सूरेखींवै कांधळोत री बात

२ तीर, बांण ।

उ०—१ इये समचै मांहे च्यार सव जळंधर रा धणी अर मुळ-तांणी कमाण घणौ वाढ रा तोड़ियां भालोड़ जुवानां रै हाथौं हुंता ।—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ काळा भवरा कमंद रा, दौळी फिरिया दौड़ । खारा लाग खीचियां, भीलां रा भालोड़ ।—पा. प्र.

३ देखो 'भालौ' (अल्पा., रू. भे.)

अल्पा०—भालड़ियौ, भालड़ी, भालड़ौ, भालडियौ, भालि, भाली, भालोड़ी ।

भालोड़ी—१ देखो 'भालौ' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'भालोड़' (रू. भे.)

भालोड—१ देखो 'भालोड़' (रू. भे.)

उ०—१ गुण बांण सींवाणि गाढ़, वाहंति तांणक वाढ़ । बंदूक बांणै मार, भालोड भंग भंभार ।—गु. रू. बं.

उ०—कोमंड गरज्ज हुए हलकार, भडां भालोड करंत भंभार । एकू की मूठ विछुट्ट असंख, परै सर फूटै कोरी पंख ।—गु. रू. बं.

२ देखो 'भालौ' (अल्पा., रू. भे.)

भाळौ–वि०—१ देखने वाला, दर्शक ।

२ तलाश करने वाला, खोज करने वाला ।

भालौ–सं० पु० [सं० भल्ल] लम्बे डंडे पर नुकीला फल लगा हुआ एक वस्त्र विशेष, बरछा, नेजा ।

उ०—१ 'पबा' समत्थां आगळा, हत्थां 'चंद' सुजांव । भालां जैत निभाहणा, 'बालां'हंदा राव ।—रा. रू.

उ०—२ भालां री भचाकां चखाइ केही पटेतां नूं पाडि कुमार आपरै देस री दिसा आडै पग आवण नूं मरतै मारतै प्रयांण कीधौ ।

—वं. भा.

रू० भे०—भलक, भल्लौ, भाअलोड़, भालोड़ ।

अल्पा०—भालकौ, भालड़ियौ, भालड़ौ, भालि, भाली, भालोड़ी ।

मह०—भल, भल्ल, भाल ।

भालोड़सींगौ—देखो 'भालासींगौ' (रू. भे.)

भाव–सं० पु० [सं०] १ किसी वस्तु की स्थिति या होने की सत्ता, अस्तित्व, सत्ता।

उ०—१ जो कछु भाव बंदे सोई माया, यांकू नहिं परसंदा। **भाव** अभाव सूं परै परमानंद, सोई निजानद कंदा। सुछंदा ग्यांनी भरणीता।—सुखरांमजी महाराज

उ०—२ तिलाकारीं के पड़दे जोति के जहूर जरबफती चिगै का बणाव। गुलजारु' के क्यारे वसंतका **भाव**। ऐसी हवा के बीच ऐसे डंबर दरसाए।—सू. प्र.

विलो०—अभाव।

२ अवस्था, दशा, हालत।

उ०—१ वौ सोळै-सत्तरै सूं किणी **भाव** कम नीं लागतौ। नित रौ घड़ी दूध तौ हां करतां डकार जातौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पोहरा सूं तौ कदास हाथाजोड़ी करयां, पग भाल्यां, मूंडा में तिणकौ दाब्यां बचाव व्है सकै पण भरया दरबार में बीड़ौ उठायां पछै मूंडै मूंड ना दे दियौ कै किणी दूजा रै साथै ना रा समंचार भेज्या तौ राजाजी किणी **भाव** नीं छोडैला।
—फुलवाड़ी

३ श्रद्धा, हार्दिक भक्ति।

उ०—१ मांनै तीरथ मात नूं, विमळ **भाव** वणियांह। मात भलां सुख मांनियौ, ज्यां पूतां जणियांह।—बां. दा.

उ०—२ चिंतामण लधाया जांण दरसण चवूं, खळ किता दधाया दैत खाया। राव पगमंडां कर बधाया सुरांणी, अधाया **भाव**-रा आप आया।—खेतसी बारहठ

उ०—३ अरु कंवरजी स्त्रीवीकोजी स्त्रीकरनीजो रौ घणौ **भाव** राखै है।—द. दा.

यौ०—भावभगत, भावभगति।

४ दृढ़ प्रतीति, विश्वास।

उ०—भीतर घर दृढ़ **भाव**, तो मांभल डूबा तिके। दुस्तर भव हरियाव, नर तरिया निरभर नदी।—बां. दा.

५ कल्पना, भावना।

उ०—गुण सागर दुस्तर अगाध, अति बाध अपारण, वेळ निजर विद्वुसां, असह कवि भ्रमर अकारण। कळा तिमंगळ किता वग्ग गुण दोस विचारक। पबे सिखर इम गुपत, किता गुण औगुण कारक। उर भरम छेह लैणौ अगम, असकत उद्यम उक्तनी। कर **भाव** पार गुण सर करण, साचौ नांम सरस्वती।—रा. रू.

६ मन में उत्पन्न होने वाली कोई भावना, ख्याल, विचार।

उ०—१ गोप त्रिया गोपाळ, जांण्वां रंग भूमै जदन। कंस लख्यौ तिण काळ, **भाव** प्रमांणै 'भेरिया'।—महाराजा बळवंतसिंघ-रतलांम

उ०—२ इण रीति आपरा और भी बिमेस बीरां नूं बधाइ काका रा द्वार रौ कंवाड़ हौइ सेना समेत सलेम उठैही आडौ रहियौ। अर काकै भी पुळियार होइ प्राची रौ परिकर इकट्ठौ करि फेर भी दिल्ली पर चलावण दृढ **भाव** गहियौ।—वं. भा.

उ०—३ गाईंतां रा हुकम में ई म्हांरै वास्तै सरब आणंद बसै। इण हुकम नैं रांभी पटकण वाळा म्हांरै सारू दुखदाई है। म्हैं तौ म्हारा **भाव** दरसाया। समझदारां नै समझावता म्हे कोजा लागां।
—फुलवाड़ी

७ प्रकृति, मिजाज, स्वभाव। (ह. नां. मा.)

उ०—१ भ्राता कंठ लगाड़ै भाई, खीवर सुर कज बात सुणाई। त्रिलोकीराव नर **भाव** तन विमतारे।— र. ज. प्र

उ०—२ कंवर सरणाई साधार सुणतां ही सह्याद दे'र लार हुवौ जिकण आपरा अनादर रै आतै आबर जिगन्नु पातसाह थी तोडी तिणरी प्रतीकार दिखावण रै काज केवळ वीर-**भाव** रौ जस चाहियौ।—वं. भा.

उ०—३ 'दखिखण रै द्वारपाळ महामुख गजगारा पत सुणतां ही अरर उठाय मांहि लीधा। जठै भीम रा सिपाहां तोरण रै बाहिर आया जिके राजा सहित प्राकार मैं प्रविस्ट कीधा। या बात करणगोचर पड़तां ही गढ रा सिपाह प्राभार बौ अनी रा अंग रौ स्परस करतां अल रा चालवा मैं विलंब न होय तिण रीति सुणतां ही समीप आया। अर चक्री रा चक्र रै समांन मही रै मांथै प्रतिबिंब पाड़ता चतुरंग चक्र मेघमाळा मैं चंचळा रा चपळ **भाव** नैं चूक पाड़ता चंद्रहास चलाया।'—वं. भा.

८ ओहदा, पद।

उ०—पंद्रह दिन रहियां बावीसमां पातसाह तैमूर रै गयां केई प्रतिमा मात्र सोळह बरस रहियां एकवीसमां पातसाह महमूद रै मरियां पाछै बिक्रम रा ब्योम बाजी वेद बिधु १४७० मित साह रै समय मुलतांन रा सूबादार मगदमलिक सुलेमांन रै पुत्र खिजरख्यांन नांम तेवीसमैं पातसाह दिल्ली रौ अधिराज **भाव** गहियौ।—वं. भा.

९ आचरण।

उ०—विजयरा लोभीं रजपूत चाहै जिण समय आइ सम बिसम जुद्ध करै। अर जनकादिक गुरुजनां नूं टाळि तिकां रै सांम्है तौ अनुगत **भाव** धरै।—वं. भा.

१० चित्त, मन।

उ०—१ राजकंवरी तो इण निसंक **भाव** सूं मिळी जांणै वांरी जुगां जूनी प्रीत व्है। राजा रांणी दोनूं उणरा पगां में पलकां बिछाय दी। अर राजकंवर आपरा हाल में ई मस्त हो।
—फुलवाड़ी

उ०—२ राजकंवर निरमळ **भाव** सूं कह्यौ—म्हारी बाई म्हारी मां री सीख थारी समझ में सावळ बैठी कोनीं।—फुलवाड़ी

११ तरह, प्रकार।

उ०—१ पण उणारा पग भालणा अर रोवणा सूं किणी दाई री हीयौ नी पसीजियौ । अकरम अर पाप नै आपरै हाथां जलम देवण सारु वै किणीं भाव राजी नीं व्ही ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै औ भरम कांई तौ भूडौ अर कांई भलौ । थारै जीवण मे जकौ संजोग सजियौ उणनै गाजा-बाजां रै साथै बधाव। अपांनै तौ फगत अपारां पेंखड़ा तोड़णा है, जे इण में मिनख आडौ फिरै, जोरावरी जतावै तौ उणसूं किणी भाव पड़पणौ है ।
—फुलवाड़ी

१२ अनुराग, प्रेम, प्यार ।

उ०—प्रीति न उपजे विरह विन, प्रेम भक्ति क्यों होइ । सब भूठे दादू भाव बिन, कोटि करै जे कोइ ।—दादूबांणी

१३ चोचला, नखरा, नाज ।

उ०—दीठा भाव दिखावणा, हुरकणियां रा हाथ । हात नहीं मन किमि हिचे, भेळै अस भाराथ ।—बां. दा.

१४ हाव-भाव ।

१५ सम्मान, आदर, इज्जत ।

उ०—'सूर' रौ कुरब्ब साह, भांति भांति कीध भाव । देखतां स राह दोइ, रौद खांन भूप राव । मेलियौ तुजक्क मीर, दीध हाथ पांनदांन । आखियौ दिलेस एम, पांति हूंत फेरि पांन ।—सू. प्र.

१६ झुकाव, विचार ।

उ०—इण कारण यो ही अधरम अनुमत मैं जांणि उणांनूं मिळाइ छळ कीधां एक भी अधम जीवण न पावै । तिणसूं गंगदेव रौ आगम जांणि पहिली सूचना करि मोनूं बुलाइ गमारां नूं म्हारौ सहायक भाव दिखावणौ ।—वं. भा.

१७ मन में उत्पन्न होने वाली भावनाओं या विचारों का द्योतक आभास, छाया या संकेत जो किसी के चेहरे पर स्वयंमेव लक्षित होता है ।

१८ किसी के मन में उठने वाले विचारों का वह मूल एवं अपरिपक्व रूप जिसमें उसका उद्देश्य व आशय निहित होता है तथा बाद में वह विकसित होकर विचार में परिणित हो जाता है ।

१९ कार्य, कृत्य, क्रिया ।

२० ढंग, तरीका ।

उ०—जोगी ई जांण्यौ अेकर वळे गोता खायलूं । म्हारै डील रौ कांई घिसै । इण भाव ई सौ रुपिया मूंघा कोनीं ।—फुलवाड़ी

२१ आत्मा ।

उ०—१ बांमणी उणी भांत काठी छाती करियां अवचळ भाव सूं राजमै'ल रै बारै' निकळी । कुण ई रोक-टोक नीं करी ।—फुलवाड़ी

उ०—२ लक्खी री बातां सुणनै बांमणी रा जीव में थोड़ौ-घणौ थावस आयौ । वा निरांत भाव सूं बोली—काया नै राखण सारू म्हनै अधपायनी करणूंका चाहीजै अर लाज ढकण सारू व्है जैड़ौ ई गाभौ ।—फुलवाड़ी

२२ जन्म, पैदाइश ।

२३ भग, योनि ।

२४ रति-क्रीड़ा, संभोग ।

२५ किसी पदार्थ, काम या बात का वह गुणात्मक अथवा धर्मात्मक तत्व जो उसकी मूल प्रकृति का सूचक होता है और जिसकी सता से पृथक तथा स्वतंत्र मानी जाती है ।

ज्यूं—सीतळ रौ भाव सीतळता ।

२६ किसी कथन, लेख आदि का गूढ़ार्थ, आशय, अभिप्राय, तात्पर्य, मतलब ।

२७ किसी पद्य या गद्य अवतरण का सारांश ।

२८ सांख्य के अनुसार छः भावों से युक्त पदार्थ जो जन्म लेता हो, रहता हो, बढ़ता हो, क्षीण होता हो, परिणामशील हो और नष्ट होता हो ।

२९ सांख्य में बुद्धि तत्व का कार्य, धर्म या विकार जो वेदान्त के अनुसार 'कर्म' है ।

३० वैशेषिक में द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय ये छः पदार्थ जिनका अस्तित्व निश्चित तथा वास्तविक माना गया है ।

३१ किसी वस्तु का मूल्य, कीमत या दर ।

उ०—१ और भाव देतां करै, लेतां और हि भाव । धाव परायौ हरण धन, साहां जात सुभाव ।—बां. दा.

क्रि० प्र०—उतरणौ, गिरणौ, घटणौ, चढ़णौ, बढ़णौ ।

३२ साहित्य में मानसिक अवस्थाओं का व्यंजक प्रदर्शन जिससे रस की उत्पत्ति होती है । साहित्यकारों ने इसे स्थायी, व्यभिचारी एवं सात्विक तीन वर्गों में विभक्त किया है ।

३३ साहित्य में नायका के यौवनावस्था में उद्‌भूत २८ अलंकारों में से एक ।

३४ संगीत में पांचवा अंग जिसमें गाये जाने वाले गीत में वर्णित मनोभाव कोई शारिरिक चेष्टा से प्रत्यक्ष करके दिखाया जाता है ।

३५ जन्म कुंडली का विचार करते समय रक्खी जाने वाली ग्रहों की १२ स्थितियों में से एक । (फलित ज्योतिष)

३६ ज्योतिष में साठ संवत्सरों में से आठवे संवत्सर की संज्ञा ।

३७ ज्योतिष में जन्म समय का लग्न ।

३८ उद्देश्य, हेतु ।

३९ कामना, वासना ।

४० कर्मों के उदय, क्षय, क्षयोपशम या उपशम से होने वाले आत्मा के परिणामों के नाम । (जैन)

वि० वि०—ये छः होते हैं—१ औदयिक भाव । २ औपशमिक भाव । ३ क्षायिक भाव । ४ क्षायोपशमिक भाव । ५ पारिणामिक भाव । ६ सान्निपातिक भाव ।

४१ वस्तु का गुण या स्वभाव। (जैन)

४२ किसी देवता के चढ़ाया हुआ प्रसाद।

४३ विद्वान।

४४ आंतरिक ज्वर, मोतीझरा एवं चेचक नामक रोग का प्रकोप।

ज्यूं०—इण नै तौ माताजी रौ भाव है।

४५ आंतरिक ज्वर,मोतीझरा एवं चेचक नामक रोग का नामान्तर।

४६ शरीर में किसी देवता की उपस्थिति अनुभव होते हुए तद-नुसार अगों का संचालन होने एवं ध्वनि होने की क्रिया।

क्रि० प्र०—आणौ।

४७ एक गीत (छंद) विशेष जिसके प्रत्येक चरण में १४ मात्राऐं होती हैं तथा ४, ५, ५, पर यति होती है एवं अन्त में लघु गुरु होते हैं।

रू० भे०—भाउ, भाऊ, भाय।

भावइं, भावइ—देखो 'भावै' (रू. भे.)

उ०—१ तुंही ज सज्जण, मित्त तूं, प्रीतम तूं परिवांण। हिय-ड़इ भीतरि तूं वसइ, **भावइं** जांण म जांण।—ढो. मा.

उ०—२ सज्जण हूं तूझ तूं मुझइ, अवर म लेखी लेखि। मुझ तुझ हियड़ा अेक छइ, **भावइ** काढ़ी देख।—अज्ञात

भावक-सं० पु० [सं०] १ कुशल, मंगल। (अ. मा., ह. नां. मा.)

वि०—२ किंचित्, जरा।

३ भावना करने वाला, भक्त।

४ देखो 'भावुक' (रू. भे.)

उ०—कमुद-जन बिकस सकुछे कमळ-कंस कुंभ, **भावकां** चकोरां नयण भायौ। सबळ तम तौम मथुरा गयंद तणे सिर, अकळ गोकळ तणौ चंद आयौ।—बां. दा.

भावगम्य-वि० यौ० [सं० भाव+गम्य] भावों के द्वारा जाना जा सकने वाला।

भावड़, भावड़दा—देखो 'भावट' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारी तौ सगळी बातां ऊंधी। जीवण रा सगळा सरा-जांम सूं म्हनै अणूंती चिड़ है। लुगायां रै कूख री थैलियां अर हांचळां रै मांस री म्हनै अणुती **भावड़** है।—फुलवाड़ी

उ०—२ डावड़ी मोसा रौ डंक मारती बोली—साटां अरोगण री अैड़ी ई **भावड़** व्है तौ मांय पधारौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ भूरी सूभरभर **भावड़दा** मांगी, मोटी झोटी री आवड़दा मांगी। चारौ नांगूं व्है खारी भर चारै, अपणीं प्यारी पर प्राणां-तक वारै।—ऊ. का.

भावज-सं० स्त्री० यौ० [सं० भ्रातृ+जाया] १ बड़े भाई की स्त्री, भाभी।

उ०—उभी **भावज** दइ छइ सीख, रतन कचौळी राय सांपजै भीख। ते नांउं पग सूं ठेलीजै, इसी न रायां तणौ नहींच अबास।—बी.दे.

रू० भे०—भाभज, भाभज्या।

अल्पा०—भाभजड़ी, भावजडी।

वि० [सं० भाव+ज] २ भाव से उत्पन्न।

भावजड़ी—देखो 'भावज' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—थारौ वीरौ सा फिरै छै उदास, विलखत थारी **भावजड़ी**। वन खंड की अे कोयल, वन खंड छोड कठै चली।—लो. गी.

भावज्या—देखो 'भावज' (रू. भे.)

उ०—भाई माता **भावज्या**, नास गये भूपाळ। अब हूं राकस बस पड़ी, कदे न मिटै जंजाळ।—पंचदंडी री वारता

भावट, भावठ, भावठि, भावठी-सं० स्त्री० [सं० भावट] १ अभिलाषा, इच्छा।

उ०—१ पातां जीवन पाळगर, अनदाता आधार। 'जेहो' भारह-मल्ल रौ, **भावठ** भंजणहार।—बां. दा.

उ०—२ सोना रतीइं आधूई, लंक-मांहि लिउं आवि। **भावठि** छंडी भांमिनी! लक्ष्मी जमलि लिखावि।—मा. कां. प्र.

२ भूख।

उ०—थे तौ भूखां नी **भावठ** भंजउ, राजि निज सेवक तणां मन रंजउ राजि।—वि. कु.

३ दिल का भाव, भावना।

४ शौक, चाव।

५ कष्ट, दुख, तकलीफ।

उ०—१ कवि तौ राता 'घमळ' कळोधर, **भावठि** भंजण लील भुवाळ। लहुवे सरै वसंता लाजै, मांणसरोवर तणां मुणाळ।—ईसरदास बारहठ

उ०—२ मस्तक सुंदर तिलक विराजइ, दरसण दीठा **भावठि** भाजइ। पहिरइ नित नित नवा रंगाउ, तेगवार मांहे अधिकउ तागउ।—कविवर श्रीसार

६ धोखा, जाल, चालाकी।

उ०—अंगुलफरस कराविउ तांणि, राइ कूबड पाहिइं परांणि। रोमांचित दवदंती थई, **भावठि** सगली नाहसी गई।—नळदवदंती रास

वि०—मन को भाने वाली, अभिलाषित।

उ०—भरी अधोडी **भावठी**, बैठा पेट फुलाइ। दादू सूकर स्वांन ज्यों, ज्यों आवै त्यौं खाइ।—दादूबांणी

रू० भे०—भावड़, भावड़दा।

भावण-सं० स्त्री०—रुचि, इच्छा, चाह।

वि०—मन को अच्छा लगने वाला, लुभावना।

उ०—गांवां गांवां में गीतेरण गाती, चित्रण ग्रह भींतर चीतेरण चाती। गावड़ डावड़ का **भावण** गुण गाता, गायां गरभाती गोरी गरब्बाता।—ऊ. का.

रू० भे०—भांवरण ।

भावरणा—देखो 'भावना' (रू. भे.)

भावरणौ–वि०—१ सुन्दर, मनोहर ।
२ अच्छा, रुचिकर ।
३ प्रिय लगने वाला ।

भावरणौ, भाववौ–क्रि० स०—अच्छा लगना, रुचिकर लगना ।
उ०—१ क्रपणां जम भावै कठै, विधि विमुखां नूं वेद। 'बांका' भोजन नंह रुचै, ज्यांरै वप ज्वर खेद ।—बां. दा.
उ०—२ जीकारौ अम्रत ज्युंही, भावै जग नूं भाळ । हैरंकारौ आक पय, गरळ बराबर गाळ ।—बां दा.
२ प्रिय लगना, पसन्द आना ।
उ०—दादू जे साहिब को भावै नहीं, सो हम थैं जनि होइ । सद्-गुरु लाजै आपना, साध न मांनैं कोइ ।—दादूबांणी
३ सुन्दर लगना ।
भावणहार, हारौ (हारी), भावणियौ—वि० ।
भाविग्रोड़ौ, भावियोड़ौ, भाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भावीजणौ, भावीजबौ—कर्म वा० ।
भांवणौ, भांवबौ—रू० भे० ।

भावत–क्रि० वि०—१ अकस्मात्, अचानक ।
उ०—संत 'सेन' निपाप चले व्रप सेवन, भावत विच मिळाप भयौ । ग्रह लाये छाप जिकां सिर गाढी, पेम अमाप धणी पठियौ ।
—भगतमाळ
२ देखो 'भवतव्यता' (रू. भे.)

भावदया–सं० स्त्री० [सं० भाव+दया] किसी प्राणी की दुर्गति देखकर मन में दया भाव लाना । (जैन)

भावन–सं०स्त्री०—१ एक राजस्थानी लोक गीत ।
उ०—गवीजै लुहरां टपा भावन गहर, बिरह जन बिरह छीजै बरांगा । दुबारां छाक पीजै 'अरस' दूसरा, रैणवां दिरीजै दरस रांगा ।—चमनजी आढौ
२ एक राजस्थानी छंद ।
३ रुचि, पसन्द ।
उ०—कोई कहियौ रे प्रभु आवन की, आवन की मन भावन की । आप न आवै लिख नहिं भेजै, बांण पड़ी ललचावण की ।—मीरां
४ देखो 'भावना' (रू. भे.)
उ०—१ वलि त्रिकाल पूजा करी, भावन भावी सुद्ध । उन्नति कीधी अति घणी, घरम कीयौ अविरुद्ध ।—वि. कु.
उ०—२ स्रीजिनेस्वर नै मंदिर आवै भावन भावै, भवसायर लहु तरवा रे लो ।—वि. कु.

भावना–सं० स्त्री० [सं०] १ अनुभव और स्मृति से उत्पन्न चित्त का एक संस्कार, विचार, खयाल, कल्पना ।
उ०—१ सकळ स्रस्टि का चितही कारण, कारज बहुविध ठांणी । नांना रूप भावना नांना, चवदह तबक च्यारु खांणी ।
—श्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ जद इज तौ म्हैं घड़ी घडी कूकूं कै थां मिनखां बिचै तौ जिनावर ई चौखा जकौ मन री भावना नै लुकावै कोनीं ।
—फुलवाड़ी
उ०—३ पण बाप तौ दिखावटी अैड़ौ व्यवहार करणौ जांणै की अजोगती बात नीं व्ही । कै तौ डर अर लोभ रै कारण पेटा री बात होठां चढ़ै कोनीं अर कै मांयलौ अंतस ई अेक-मेक व्हैगौ । मिनखीचारा री सिरै भावनावां रौ विणास व्हैगौ ।—फुलवाड़ी
२ मन में उत्पन्न होने वाला किसी बात का चिंतन, ध्यान ।
उ०—पछै राजकंवर रै सांमी देखनै जळजळी आंख्यां कै'वण लागौ—कांटा काढ़ती वगत पंजा माथै आपरी आंगळियां रा परस सूं म्हनै म्हारी मां री याद आयगी । आपरा परस में म्हनै मां वाळी भावना लखाई ।—फुलवाड़ी
३ श्रद्धा, भक्ति, प्रेम ।
उ०—१ जगदंबा कहियौ चाहै जिसौ कस्ट करौ भावना सुद्ध न होय जरै ऊ कस्ट मातंग रा न्हांण जिम व्रथा फळ बतावै ।
—वं. भा.
उ०—२ अै तौ फगत भावना रा फूल है, म्हारी हस्ती ई कांई कै म्हैं आपरी कीं बंदगी कर सकूं ।—फुलवाड़ी
४ कामना, इच्छा ।
५ उत्पत्ति, प्रादुर्भाव ।
६ औषध आदि को किसी प्रकार के रस या तरल पदार्थ में बार-बार मिलाकर घोटना और सुखाना जिसमें उस औषध में रस या तरल पदार्थ के कुछ गुण आ जायं ।
७ शक्ति, बल ।
उ०—इण विडरूप जंगी खाका नै देख सास तौ पै'लाई ऊंचौ चढ़ जावै । मौत रौ रूप इण सूं तौ कीं ढाळै ई व्हैला । इमी रौ कूंपळी अजमावण री इण डील में किण ठौड़ अर कठै भावना व्है सकै ।
—फुलवाड़ी
रू० भे०—भावणा ।

भावनामयसरीर–सं० पु० यौ० [सं० भावनामय+शरीर] सांख्य के मतानुसार मृत्यु से पूर्व मनुष्य द्वारा धारण किया जाने वाला शरीर जो उसके जीवन में किए हुए कर्मों के अनुरूप होता है । ऐसा भी मत है कि आत्मा के उस शरीर में पहुंचने पर ही मृत्यु प्राप्त होती है ।

भावनी–सं० स्त्री०—पार्वती । (डिं. को.)

भावपरिग्रह–सं०पु० [सं०] जैन मतानुसार वह स्थिति जिसमें मनुष्य धन संग्रह नहीं करता या कर नहीं पाता, परन्तु धन-संग्रह की अभि-लाषा रखता है ।

भावप्रधांन–वि० यौ० [सं० भाव+प्रधान] वह जिसमें भावों की प्रधानता या तीव्रता हो।

भावभकति, भावभक्ति, भावभगत, भावभगति–सं० स्त्री० यौ० [सं० भाव+भक्ति] १ आदर, सत्कार।
२ ईश-प्रार्थना, ईश्वर-भक्ति।
उ०—**भावभगत** भूसण सजै, सील संतोस सिंगार। ओढ़ी चूनर प्रेम की, गिरधरजी भरतार।—मीरां

भावमन–सं० पु० यौ० [सं० भाव+मन] जैन मतानुसार पुद्‌गलों के संयोग से उत्पन्न ज्ञान।

भावमांण–सं० पु०—दान-द्रव्य लुटाना।

भावमैथुन–सं० पु० यौ० [सं० भाव+मैथुन] मन में मैथुन का विचार करना। (जैन)

भावर–सं० पु०—चौहान क्षत्रियों की एक शाखा।

भावरौ–सं० पु०—गेहूं के साथ पैदा होने वाली घास विशेष।

भावळी–सं० स्त्री०—चाही खेती का एक हिस्सा जो दो बैलों की एक जोड़ी का माना जाता है।

भावळीबाव–सं० पु०—एक प्रकार का सरकारी लगान।

भाववाचक–सं० पु० यौ० [सं० भाव+वाचक] व्याकरण में पदार्थ के धर्म, गुण या भाव को सूचित करने वाली संज्ञा।

भाववाच्य–सं० पु० यौ० [सं० भाव+वाच्य] व्याकरण में अकर्मक क्रिया का वह रूप जिसमें वह कर्ता के व्यापार को सूचित न करके क्रिया के व्यापार का ही बोध कराती है। इस अवस्था में कर्ता प्रथमा विभक्ति से युक्त न होकर तृतीया विभक्ति से युक्त होता है। ज्यूं—जाईजणौ, हसीजणौ, दौड़ीजणौ।

भावविकार–सं० पु० यौ० [सं० भाव+विकार] यास्क के अनुसार जन्म, अस्तित्व, परिणाम, वर्धन, क्षय और नाश नामक छः प्रकार के विकार जिनमें जीव तब तक रहता है जब तक उसे ज्ञान नहीं होता।

भावव्यंजक–वि० यौ० [सं० भाव+व्यंजक] भाव को व्यक्त या प्रकट करने वाला।

भावसंधि–सं० स्त्री० [सं० भाव+संधि] वह स्थिति या वर्णन जिसमें दो विरोधी भावों की संधि होती है।

भावसंवर–सं० पु०—जैन मतानुसार नवीन कर्मों के ग्रहण को रोकने वाला आत्मा का परिणाम या शक्ति।

भावसबळता–सं० पु० [सं० भाव+सबलता] कई भावों की संधि का एक प्रकार का अलंकार।

भावहिंसा–सं० स्त्री० यौ० [सं० भाव+हिंसा] केवल मन में हिंसा का भाव आना जिसमें वह वास्तविक रूप से कोई हिंसा नहीं करता।

भावांतर–सं० पु० [सं० भाव+अन्तर] हृदयस्थ विचारों में परिवर्तन हो जाना। (जैन)
उ०—करणी निरखि प्रकास, आकास भयौ निरास हौ। कहज्यौ मुख थी खास, ए **भावांतर** सुविलास हौ।—वि. कु.

भावाभाव–सं० पु० यौ० [सं० भाव+अभाव] १ भाव और अभाव, होना और न होना।
२ उत्पत्ति और लय या नाश।

भावाभास–सं० पु०—काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें कोई व्यभिचारी भाव किसी रस का पोषक न होकर स्वतन्त्र रूप से भाव अवस्था को प्राप्त होता हुआ दृष्टिगोचर होता है।

भावारथ–सं० पु० यौ० [सं० भाव+अर्थ] केवल भाव का अर्थ, अभिप्राय, तात्पर्य।

भावारस–सं० पु०—'रघुवरजस प्रकाश' के अनुसार तीन लघु मात्रा का नाम।

भावालंकार–सं० पु० यौ० [सं० भाव+अलंकार] एक प्रकार का अलंकार।

भावास्रित–सं० पु० [सं० भावाश्रित] संगीत में अंग-संचालन द्वारा भाव दर्शाने का एक नृत्य।
वि०—जो भावों पर आधारित हो।

भावि—देखो 'भावी' (रू. भे.)

भाविक–सं० पु०—१ भविष्य में होने वाला अनुमान।
२ साहित्य में एक अलंकार जिसमें भूत और भविष्यत् भावों का एक साथ वर्तमानवत् वर्णन किया जाता है।
वि०—१ भाव सम्बन्धी, भाव का।
२ भाव या आशय जानने वाला।
३ मर्मज्ञ।
४ असली, वास्तविक।
५ प्राकृतिक, नैसर्गिक।
६ भविष्य में होने वाला, भावी।
रू० भे०—भावीक।

भाविजोग, भाविजोगि—देखो 'भावीजोग' (रू. भे.)
उ०—दोनूं ओड **भाविजोगि** कोई कांमि आवै, सेखां का पठांणां वैर कोई भी न पावै।—शि. वं.

भावित–वि०—१ विचारा हुआ, सोचा हुआ।
२ मिलाया हुआ, मिश्रित।
३ शुद्ध किया हुआ।
४ किसी सुगंध से सुवासित किया हुआ हो।
५ जिसमें किसी रस की भावना दी गई हो।

भावियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ अच्छा लगा हुआ, रुचिकर लगा हुआ. २ प्रिय लगा हुआ, पसन्द आया हुआ. ३ सुन्दर लगा हुआ. (स्त्री० भावियोड़ी)

भावियौ–सं० पु०—जिसमें किसी रस आदि की भावना दी गई हो, मिला हुआ।

भावी-सं० स्त्री० [सं० भाविन्] १ होनहार, भवितव्यता।
उ०—वीर महाबळ धीर उर, सूरम सूरत धार। आवी आदर ऊठियौ, **भावी** सीस विचार।—रा. रू.
२ भविष्यकाल।
उ०—१ पति विग्रह तो ग्रह परठांणां, लेख मिटै नह वेह लिखांणां। इण दोखण त्रप नह आदरसी, **भावी** साखि मुनिंद तद भरसी।—सू. प्र.
उ०—२ **भावी** थित पूरण गरभ, दसमै मास उदार। जनमे कोसळ मात जदि, रांमचंद अवतार।—सू. प्र.
३ भाग्य, प्रारब्ध।
उ०—१ भगवत करता नैं करतब भुगतावै, पिछला पापां रा पांमर फळ पावै। **भावी** भूलोड़ा भूंको क्यूं भाया, पोचा करमां रा पोचा फळ पाया।—ऊ. का.
उ०—२ अत्यू सीमासी रावी बिसमासी, भीमा **भावी** सी भीमा निस भासी। तूहिन कंठीरब तन कुंजर तावै, डग-डगि चढ़ियोड़ा मरिया डुसकावै।—ऊ. का.
४ श्रद्धा, भक्ति।
रू० भे०—भवि, भावि, भावीस।

भावीक-वि० [सं० भाविन्] १ भक्ति या श्रद्धा भाव रखने वाला। (मा. म.)
२ देखो 'भावुक' (रू. भे.)
उ०—वेसवटौ हजूर आय ऊभौ रह्यौ नै आसीस भणी, 'राजन के राजा, साह गहण साह, मौखण आप **भावीक**, जो आरंभ जौ करै आली महिरांण पूरव के वाजा वाजै, पूरब कै जैतवार, दखण के जैतवार, पछम कै जैतवार, उत्तर के जैतवार।'
—सांगावत मूळवे री वात'
३ देखो 'भाविक' (रू. भे.)

भावीजोग-सं० पु०—१ होनहार भवितव्यता।
२ प्रारब्ध, भाग्य।

भावीस—देखो 'भावी' (रू. भे.)

भावुक-वि० [सं०] १ भावना करने वाला, सोचने समझने वाला।
२ वह कोमल हृदय जिसके मन में भावों का उद्वेग या संचार बहुत शीघ्र होता हो।
३ वह जो भावों के बहाव में कर्त्तव्य अकर्त्तव्य को भूल जाय।
४ अच्छी बातें सोचने वाला।
५ समृद्धशाली।
रू० भे०—भावक, भावीक।

भावै-क्रि० वि०—चाहे, भले ही।
उ०—१ सांईं सूं सांचा रहौ, बंदा सूं सतभाव। **भावै** लांबा केस रख, भावै घोट मुंडाव।—दादूबांणी
उ०—२ ताहरां इयै राजा कहाई-'जु **भावै** हजार असवार लियौ अर भावै एकलौ सेतरांम ल्यौ।'—नैणसी
२ अथवा, या।
उ०—मुंहता हुंता पिण बींहा सु म्हे न कहीं नुं काढां न किण ही भेळा हुवां। थांहरौ छै ज्यूं थां दाइ आवै त्यूं करौ। मारौ **भावै** राखौ।—द. वि.
३ स्वतः, अपने आप।
उ०—लूंकी रै हाथै नीं आया जिण सूं **भावै** ही अंगूर खाटा व्हैगा।—फुलवाड़ी
४ लिए वास्ते।
५ अकस्मात, अचानक।
रू० भे०—भांवइ, भांवे, भावइं, भावइ।

भावौ—देखो 'भाव' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ तीन से बरस घर में रह्या हो, रख्या रूड़ा **भावौ**। संजम पाल्यो सात से हो, सहस्र वरस नी आवौ।—जयवांणी
उ०—२ क्रस्ण नी मनियावट देखि करी, भद्रक नइ थयौ **भावौ** जी। सिंह केसरिया मोदक सूझता, पड़ि लाभ्या प्रस्तावौजी।
—स. कु.

भावोदय-सं० पु० [सं०] किसी भाव के उदय होने की अवस्था का वर्णन करने का एक प्रकार का अर्थालंकार।

भासंकर—देखो 'भास्कर' (रू. भे.) (डि. को., ह. नां. मा.)
उ०—भीम तणां ग्रीखम **भासंकर**, तेज भुजाडंड लागि तिस। कूरम तणौ सोखियौ कस करि, रसक न रहियौ तैण रस।
—राव दुरजणसाल हाडा रौ गीत

भास-सं० पु० [सं० भास्] १ प्रकाश, दीप्ति, प्रभा।
२ सूर्य, भास्कर।
३ किरण, मयूख। ४ गीध। ५ शकुंत पक्षी।
६ एक राजस्थानी छन्द विशेष।
७ कड़खा छन्द का नामान्तर। ८ पद्य खन्ड।

भासक-वि० [सं० भाषक] १ भाषण करने वाला।
२ बोलने वाला।

भासकर—देखो 'भास्कर' (रू. भे.)

भासकरण-सं० पु० [सं० भासकर्ण] १ रावण का एक सेना नायक।
२ सूर्य, भानु।

भासग्य-सं० पु० [सं भाषाज्ञ] भाषा जानने वाला, भाषा का ज्ञाता।

भासच्छन्ना-वि० यौ० [सं० भस्म+आच्छन्न] भस्म से आच्छादित।

भासण-सं० पु० [सं० भाषण] १ वार्तालाप, बातचीत।
क्रि० प्र०—करणौ।
२ बोली, आवाज।
उ०—**भासण** उपमां ओर मनोरथ भेळिया। मझ आंटी मखतूळ, क मोती मेळिया।—बां. दा.

३ किसी सभा, संस्था आदि में दिया जाने वाला व्याख्यान, उपदेश।

क्रि० प्र०—दैणौ, करणौ।

उ०—करस्यां बात कबूल भळी सू **भासरा** सुणस्यां। गुण री है नहिं गरज, चोज कर औगुण चुणस्यां।—ऊ. का.

रू० भे०—भाख, भाखरा।

भासणौ, भासबौ—क्रि० अ० [सं० भास्] १ प्रतीत होना, मालूम होना।

उ०—१ अत्यू सीमासी रावी बिसमासी, भीमा **भावीसी** भीमा निस भासी। तू हिन कंठीरब तन कुंजर तावै, डग डगि चढियोड़ा मरिया डुसकावै।—ऊ. का.

उ०—२ सुपने मन मांन्या बहु फंदा, भांत भांत रंग **भासी**। मिथ्या मन सांची कर मांने, आ चौगस चौरासी।

—स्रीसुखरांमदासजी महाराज

२ प्रकाशित होना।

३ देख पड़ना, दिखना।

उ०—अति खूंणा ऊंडा थूंडम-थूंडा, कूंडा-पंथ करंदा है। मूंछां बिन मूंडां **भासत** भूंडा, भरसूंडा भभकंदा है।—ऊ. का.

४ शोभायमान होना।

उ०—१ मधुकर भ्रमत सुबास मद, भाळ सुधाकर **भास**। मौदक कर मन मौदमय, नित जय ग्यांन निवास।—बां. दा.

उ०—२ करम कठिन दल चूरताजी, पूरता जगत नी आस। जिनवर देव इहां **भासता** जी, सासता अरथ सुविलास।—वि. कु.

५ देखो 'भाखणौ, भाखबौ' (रू. भे)

उ०—१ 'पांणि' पुस्तक सुवरण्ण जनोई, रूपवंत एह बंभण कोई। जां विराट त्रप चित्ति विमासइ, विप्ररूप त्रप तां इम **भासइ**।

—सालिसूरि

उ०—२ मंद मंद हांसै छै, प्यारौ प्यारौ **भासै** छै, निराळी इरा री निरखरा आनंदकारी, सियावर म्हांनै निरखरा दे सखि प्यारी।

—गी. रां.

भासणहार, हारौ (हारी), भासणियौ—वि०।

भासिओड़ौ, भासियोड़ौ, भास्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भासीजणौ, भासीजबौ—भाव वा०।

भाकणौ, भाकबौ, भाखणौ, भाखबौ—रू० भे०।

भासतीक—सं० पु०—सूर्य, रवि।

उ०—बक्रतुंड मेधा ओज भेळा **भासतीक** बोम, भैळा लोहां लंकां आसतीक कहु समीर। हेळा कांम रूपी 'अजो' ऊजैळा ऊह्यासतीक, बेळा नासतीक येळा आसतीक बीर।

—रावराजा अरजुनसिंघ रौ गीत

भासमंत—वि०—ज्योतिपूर्ण, चमकदार।

भासमांण—सं० पु० यौ० [सं० भास्+मान्] १ सूर्य, रवि।

उ०—ऊभौ राहां सीस **भासमांण** जौतै अंत ऊगो, अनोखा अंदरां गोखां पूगो आसमांन। भूरो जसा कांम जोगो हंतो बेढीगारो भूप, जसे कांम कांम आगो जांणियो जिहांन।—सार्वदांन महडू

२ दिखाई देता हुआ, जान पड़ता हुआ।

रू० भे०—भासवांन।

भासरु—वि० [सं० भास्वर] प्रकाशमान, तेजस्वी।

उ०—जंबु कुमरु तसु नंदन, नंदन तरु समु छाजु। कायकंति बहु **भासरु**, वासर नउ जिम राउ।—प्राचीन फागु-संग्रह

भासवांन—देखो 'भासमांन' (रू. भे.) (डिं. को)

भासांतर—सं० पु० यौ० [सं० भाषा+अन्तर] अनुवाद, उल्था।

भासांन—सं० पु०—सूर्य, रवि। (अ मा, नां मा.)

भासा—सं० स्त्री० [सं० भाषा] १ किसी जन-समुदाय द्वारा अपने भाव एवं विचारों को व्यक्त करने के लिए मुंह से उच्चारण किए जाने वाला शब्दों एवं वाक्यों का समूह। जबान, वाणी।

उ० आप म्हारै वास्तै कांई कांई फोड़ा भुगतिया उण नै दरसावण वास्तै म्हारा लोक में वैड़ी कीं **भासा** ई कोनीं।—फुलवाड़ी

२ पशु-पक्षियों द्वारा भाव या मनोविचार प्रकट करने का अव्यक्त नाद।

ज्यूं—तोता री भासा।

३ वर्त्तमान में किसी देश में प्रचलित बोली।

४ हिन्दी का एक नाम।

५ संगीत में एक प्रकार की ताल।

६ सरस्वती।

रू० भे०—भाक, भाख, भाखा, भाख्या, भायखा।

भासाबद्ध—भू० का० कृ० [सं० भाषाबद्ध] १ (भाव या विचार) जो शब्दों या वाक्यों में बोलकर अथवा लिखकर व्यक्त किया गया हो।

२ देश भाषा में लिखा हुआ।

भासासम—सं० पु० [सं० भाषासम] एक शब्दालंकार।

भासासमिति—सं० स्त्री० [सं० भाषा+समिति] जैन धर्म में एक प्रकार का आचार जिसके अन्तर्गत सब लोगों को प्रसन्न व सन्तुष्ट करने की बातचीत होती है।

भासिक—वि०—दिखाई पड़ने वाला, मालूम पड़ने वाला।

भासियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ प्रतीत हुवा हुआ, मालूम हुवा हुआ.

२ प्रकाशित हुवा हुआ. ३ दिखा हुआ.

४ देखो 'भाखियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भासियोड़ी)

भासियौ—सं० पु०—भैंस या भैंसे का पूरा चमड़ा।

रू० भे०—भाईयौ, भायसौ, भायहौ, भायौ', भाहियौ।

भासी—वि० [सं० भाषिन्] १ बोलने वाला, कहने वाला।

उ०—दया तणौ मारग सुद्ध दाखै, तिण सूं तूं न पतीजै रे। असत **भासी** नै हीण आचारी, ते गुरु आया रीझै रे।—जयवांणी

२ भाषण करने वाला।

भासुरह–वि० [सं० भासुर] चमकीला।

उ०—तव तलप्फ भीसराह घम्म धीरिमसुरिम सुविसालह। संजम लिर **भासुरह** दुमहद (व) य दाढ़ करालह।—कवि पल्ह

भासूंडा–सं० पु०—सोलंकी वंश की एक शाखा।

भासोलौ—देखो 'वसूलौ' (रू. भे.)

भास्कर–सं० पु० [सं०] १ सूर्य, आदित्य।

२ आक, मदार।

३ शिव, महादेव।

४ अग्नि, आग।

रू० भे०—भक्खर, भक्खरयं, भासंकर, भासकर।

भाह–क्रि० वि०—पसंद।

उ०—राग रंग दोनूं तरफ, होवै बहुत उछाह। हाडां केरी सरबरा, राठोड़ां मन **भाह**।—राजसिंह री वारता

भाहर—देखो 'भररौ' (मह., रू. भे.)

उ०—नाहर गोवरधन्न रौ, नाहर **भाहर** सद्द। घर बाहर भांजरण खळां, जाहर दळां विरद्द।—रा. रू.

भाहि–सं० स्त्री०—भट्टी।

उ०—इम कागद आवियौ, पेंखि वंचै 'गजपत्ती'। अंग पोरस ऊफणै, **भाहि** घ्रित जैम विभत्ती।—सू. प्र.

भाहरौ—भारी या मोटी आवाज।

उ०—बाकरा पकड़ीजै छै। सो किण भांति रा बाकरा जिकै कड़कती सांध रा, बड़कती नळी रा, **भाहरै** साद रा, मादळिए पेट रा, माडि बोर काचर रा, बरडणहार, घणौ कूंभट नैं वावळी री टीसीआं रा त्राड़णहार, सिखिरि रा मालणहार, फिरिणोंअै रा बैसणहार बाळखसी बोकड़ा, बिसैं बोकड़ा, खोरडै खीलहरी रा चारीओडा, सो ऊंठां बिसै बोकड़ा मसकां रीं भांति सों लिड़ाई नैं घातिआ छै।—रा. सा. सं.

भाहियौ—देखो 'भासियौ' (रू. भे.)

भिंगराज—देखो 'भ्रंगराज' (रू. भे)

भिंगाणौ, भिंगाबौ— देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)

भिंगाणहार, हारौ (हारी), **भिंगाणियौ**—वि०।

भिंगायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भिंगाईजणौ, भिंगाईजबौ—कर्म वा०।

भिंगायोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भिंगायोड़ी)

भिंगी—देखो 'भींगी' (रू. भे.)

भिंगौ—देखो 'भींगौ' (रू. भे.)

भिंगोणौ, भिंगोबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)

भिंगोणहार, हारौ (हारी), **भिंगोणियौ**—वि०।

भिंगोयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भिंगोईजणौ, भिंगोईजबौ—कर्म वा०।

भिंगोयोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री० भिंगोयोड़ी)

भिंगोवणौ, भिंगोवबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)

भिंगोवणहार, हारौ (हारी), **भिंगोवणियौ**—वि०।

भिंगोविओड़ौ, भिंगोवियोड़ौ, भिंगोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भिंगोवीजणौ, भिंगोवीजबौ—कर्म वा०।

भिंगोवियोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री० 'भिंगोवियोड़ी)

भिंजाणौ, भिंजाबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)

भिंजाणहार, हारौ (हारी), **भिंजाणियौ**—वि०।

भिंजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भिंजाइजणौ, भिंजाईजबौ—कर्म वा०।

भिंजायोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भिंजायोड़ी)

भिंजोणौ, भिंजोबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)

भिंजोणहार, हारौ (हारी), **भिंजोणियौ**—वि०।

भिंजोयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भिंजोईजणौ, भिंजोईजबौ—कर्म वा०।

भिंजोयोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भिंजोयोड़ी)

भिंजोवणौ, भिंजोवबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)

भिंजोवणहार, हारौ (हारी), **भिंजोवणियौ**—वि०।

भिंजोविओड़ौ, भिंजोवियोड़ौ, भिंजोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भिंजोवीजणौ, भिंजोवीजबौ—कर्म वा०।

भिंजोवियोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भिंजोवियोड़ी)

भिंटणौ, भिंटबौ–क्रि० अ०—अस्पर्श्य वस्तु से स्पर्श होना, छुआ जाना।

भिंटणहार, हारौ (हारी), **भिंटणियौ**—वि०।

भिंटिओड़ौ, भिंटियोड़ौ, भिंट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भिंटीजणौ, भिंटीजबौ—भाव वा०।

भींटणौ, भींटबौ—रू० भे०।

भिंटियोड़ौ–भू०का० कृ०—अस्पर्श्य वस्तु से स्पर्श हुआ हुवा, छूआ हुआ.

(स्त्री० भिंटियोड़ी)

भिंडज्ज—देखो 'भड़ज' (रू. भे.) (डिं. को.)

भिंडपाळ, भिंडरपाळ, भिंडवाळ, भिंडिपाळ—देखो 'भिंदपाळ' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—सिल विकट फरस 'सुखेण'रे, तिरसूल 'ग्वायख' तेण रे।
भिडपाळ गजगव विटप भड़, धिख गदा बभीसण उवर धर।
—र. रू.

भिडचौगवार—सं० पु०—भिंडी जैसी चिकनी फली वाला गवार।

भिंडी—सं० स्त्री० [सं० भिंड] १ एक प्रकार का पौधा व उसकी फली जिसकी तरकारी बनती है।
२ छोटे-छोटे सींग वाली गाय।
३ सीधी-साधी गाय।
४ छत के ऊपर चारों ओर बनाई जाने वाली छोटी दीवार।
५ कच्चे मकान के अहाते की दिवार को बरसात के पानी से बचाने के लिए उस पर जमाई हुई मिट्टी घास-फूस आदि का आवरण।
रू० भे०—बरंडी, बिंडी, बिरंडी, भींडी, वरंडी, विरंडी।
अल्पा०—भींडली।

भिंणत—देखो 'भणत' (रू. भे.)

भिंतर, भिंतरि—देखो 'भीतर' (रू. भे.)
उ०—विद्याविलास नरिंद पवाडउ हीयडा **भिंतरि** जांणी। अंतराय विण पुण्य करउ तुम्हि भाव घणेरउ आंणी।—हीराणंद सूरि

भिंदपाळ, भिंदिपाळ, भिंदीपाळ—सं० पु० [सं० भिंदपाल, भिंदिपाल] १ छत्तीस प्रकार के शस्त्रों में से एक प्रकार का शस्त्र विशेष जिसके सहारे से बड़े-बड़े पत्थर शत्रु दल पर फेंके जाते थे।
२ एक छोटा डंडा जो प्राचीन काल में फेंक कर मारा जाता था।
रू० भे०—भिंडपाळ, भिंडरपाळ, भिंडवाळ, भिंडिपाळ।

भिंभरणौ, भिंभरबौ—देखो 'भींभरणौ, भींभरबौ' (रू. भे.)
भिंभरणहार, हारौ (हारी), भिंभरणियौ—वि०।
भिंभरिओड़ौ, भिंभरियोड़ौ, भिंभरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
भिंभरीजणौ, भिंभरीजबौ—भाव वा०।

भिंभरियोड़ौ—देखो 'भींभरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भिंभरियोड़ी)

भिंभळ—१ देखो 'विभळ' (रू. भे.)
२ देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

भिंमरणौ, भिंमरबौ—देखो 'भींभरणौ, भींभरबौ' (रू. भे.)
भिंमरणहार, हारौ (हारी), भिंमरणियौ—वि०।
भिंमरिओड़ौ, भिंमरियोड़ौ, भिंमरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
भिंमरीजणौ, भिंमरीजबौ—भाव वा०।

भिंमरियोड़ौ—देखो 'भींभरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भिंमरियोड़ी)

भिंसट—देखो 'भ्रस्ट' (रू. भे.)
उ०—भई अकल मो **भिंसट** कह्या कूवचन आई नैं, सगत खिम्या रा समझ, विरद वडकी बाई नैं।—पा. प्र.

भि—सं० पु०—तीर। (ह. ना. मा.)
२ प्रेम।
३ भैरव।
४ सुमेरु पर्वत।
सं० स्त्री०—स्त्री, औरत। (एका.)

भिउड, भिउडि, भिउडी—देखो 'भ्रकुटी' (रू. भे.)
उ०—विउड **भिउड** ताडिउ तु चपेटा ऊपाडिउ। कूंयरि मनि विराडिउ बोल बोलइ सु ताडिउ।—सालिसूरि

भिक्खव्रति—देखो 'भिक्षाव्रति' (रू. भे.)

भिक्खा—देखो 'भिक्षा' (रू. भे.)

भिक्खाचरी, भिक्खायरिया, भिक्खायरी—सं० स्त्री० यौ० [सं० भिक्षा+चर्या] भिक्षाचर्या, भिक्षावृत्ति।
रू० भे०—भिक्षायरी।

भिक्खुधम्म—सं० पु० [सं० भिक्षु+धर्म] भिक्षु धर्म, यति धर्म।

भिक्खू—देखो 'भिक्षु' (रू. भे.)

भिक्षरोस—सं० पु०—सिंह, शेर। (अ. मा.)

भिक्षा—सं० स्त्री० [सं०] १ मांगने का कार्य, याचना।
उ०—ताहरां एक दिन सागमराव रै गांम री एक जोगी ईंदां रै गांव गयौ। जोगी, रांमचंद ईंदा रै घरै **भिक्षा** नूं गयौ।—नैणसी
२ मांगी हुई वस्तु, भीख।
रू० भे०—भिक्खा, भिखिया, भिख्या, भिच्छ, भिच्छा, भिछ, भीक, भीख, भीच्छा।

भिक्षाचर—सं० पु० यौ० [सं० भिक्षा+चर] १ भिक्षा खाने वाला, भिखारी।
उ०—किण ही पूछ्यो भीखण जी थे यूं कह्यो एक महाव्रत भागां पांचूं ई भागै सो यूं साथै पांच किम भागै? जद स्वामीजी बोल्या, पाप रो उदै हुवै जब संसार में ई जीव दुःख भोगवै। जिम एक **भिक्षाचर** नै सहर में फिरतां पाच रोटी री आटो मिल्यो।
—भि. द्र.
२ साधु।
उ०—आदि ही को तीरथंकर, आदि ही को **भिक्षाचर**, आदि राय आदि जिन च्यारों नांम आदि आदि।—ध. व. ग्रं.

भिक्षाचारी—सं० स्त्री० यौ० [सं० भिक्षा+चारी] शुद्ध आहार आदि लेने की क्रिया। (जैन)

भिक्षाटण, भिक्षाटन—सं० पु० यौ० [सं० भिक्ष+अटन] भिक्षा के लिए इधर-उधर घूमने की क्रिया।
रू० भे०—भिक्ष्याटण, भिक्ष्याटन।

भिक्षापात्र—सं० पु० यौ० [सं० भिक्षा+पात्र] भिक्षा मांगने का पात्र।

भिक्षायरी—देखो 'भिक्खाचरी' (रू. भे.)

भिक्षु, भिक्षुक—सं० पु०—१ भीख मांगने वाला, भिखारी।

२ संन्यासी, साधु ।

उ०—ब्राह्मण क्षत्री वैस्य न सूद्र, ग्रही भिक्षु न योई । वांनप्रस्थ ब्रह्मचारी मैं नाई, वरणास्रम न दोई । —स्री सुखरांमजी महाराज

३ रंक, निर्धन ।

रू० भे०—भक्षु, भिक्खू, भिखंग, भिखक, भिखग, भिखुक, भिच्छु भिच्छुक, भीकग, भीखक, भीखग, भेखख ।

भिक्षुरूप-सं० पु०—शिव महादेव ।

भिक्ष्याटण, भिक्ष्याटन—देखो 'भिक्षाटण' (रू भे)

भिखंग, भिखक, भिखग—देखो 'भिक्षुक' (रू. भे.)

(अ. मा, ह. नां. मा.)

उ०—१ नमौ बपु दीरघ बांमन बेख, भिखंग पुरदर भांजण भेख । नमौ नरसिंघ लिछम्मी-नाह, बिसंभर बिट्ठळ आदि बराह ।

—ह. र.

उ०—२ जाणंतां तूझ न जांण्यौ-जाय, काया तौ पाखै दाखै काय । मकोड़ी कीट पतंग मुणाळ, भिखंग तुंहीज तुंहीज भुआळ ।—ह. र.

भिखमंगौ-सं० पु० [सं० भिक्ष्+रा० प्र० मंगौ] (स्त्री० भिखमंगी) भीख मांगने वाला, भिखारी ।

भिखायत-सं० पु०—१ भिखारी, भिक्षुक ।

२ देखो 'विखायत' (रू. भे.)

भिखारी-सं० पु० [सं० भिक्ष्+चारी] (स्त्री० भिखारण, भिखारिण) भिक्षा मांगने वाला, याचक ।

उ०—मकरसंक्रायत बैठी मारी, क्षत्रिन हित लागी अति खारी । भू पर ब्राह्मण भये भिखारी, हे प्रवेस करगी हतियारी ।—ऊ. का.

रू० भे०—भिखियारी, भिख्यारी, भीखारी ।

भिखिया—देखो 'भिक्षा' (रू. भे.)

भिखियारी—देखो 'भिखारी' (रू. भे.)

उ०—भूवा भगनीं रा थळचट भिखियारी, धन्यां कन्या रा गळकट हठधारी । राफां भरणावै गिरणावै रोता, गंता निरणावै करमां रा गोता ।—ऊ. का.

भिखुक—देखो 'भिक्षुक' (रू. भे.)

भिख्या—देखो 'भिक्षा' रू. भे.)

उ०—जोगी चालें एसे भाय, सुनि सहर की भिख्या खाय । तन मन चोलि आकासां चढे, सो जोगी मरिवै नहि डरे ।—ह. पु वां.

भिख्यारी—देखो 'भिखारी' (रू. भे.)

उ०—एक कुत्तौ आयौ सो कठोती में एक रोटी रौ आटौ ते ले गयौ । जिण कुत्ता रै लारै भिख्यारी नाठौ, हेठै पड़ियौ सो हाथ मांहलौ लोयौ धूल में मिल गयौ ।—भि. द्र.

भिख्यासी—देखो 'भिखारी' ।

उ०—जनम मरण सो कासूं कहियै, कासूं है चौरासी । हरस सोक दुख सुख है कासूं, कैसे भया भिख्यासी ।—स्री सुखरांमजी महाराज

भिगोणौ, भिगोबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)

भिगोणहार, हारौ (हारी), भिगोणियौ—वि० ।

भिगोयोड़ौ—भू० का कृ० ।

भिगोईजणौ, भिगोईजबौ—कर्म वा० ।

भिगोवणौ, भिगोवबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)

भिगोवणहार, हारौ (हारी), भिगोवणियौ—वि० ।

भिगोविओड़ौ, भिगोवियोड़ौ, भिगोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भिगोवीजणौ, भिगोवीजबौ—कर्म वा० ।

भिगोवियोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भिगोवियोड़ी)

भिड़ंत—देखो 'भिड़त' (रू. भे.)

उ०—वौ उण नै फटकारतौ कैंवण लागौ—लांणत है थारी जात नै, पांणी रै मांय लुक्योड़ौ क्यूं बैठौ । बा'रै आय नै भिड़ंत कर ।

—फुलवाड़ी

भिग्गह-सं० पु० [सं० अभिग्रह] धार्मिक नियम, प्रतिज्ञा ।

भिड़-सं० पु०—१ वर्र नामक उड़ने वाला कीड़ा ।

क्रि० वि०—समीप, नजदीक ।

२ देखो 'भट' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ नभ धरां घूमरां भड़ निराट, घूमरां उडे भिड़ भिड़ज धाट । छूटिया प्रधारक अति छछोह. बावनां चन्नणां लियण बोह ।

—वि. सं.

उ०—२ भिड़ भिड़ झगड़ै कोई वीर पड़ै भुव, परमेसर सूं बांधी पलौ । मरणौ हाथ आप रा मांहै, बंस छतीसां कहै 'बळौ' ।

—बलू गोपाळदासोत चांपावत रौ गीत

भिड़क-सं० स्त्री०—१ चौंकने की क्रिया या भाव ।

२ गुफा ।

उ०—भिड़क में जायगा प्रो० जसकरण हस्ते हुई ।—नैणसी

भिड़कण, भिड़कणौ-वि० (स्त्री० भिड़कणी) चौंकने या चमकने वाला ।

भिड़कणौ, भिड़कबौ-क्रि० अ०—१ किसी आहट या किसी ऐसी वस्तु को देखकर पशुओं का उछल-कूद कर भाग जाना या भागने का प्रयास करना ।

उ०—पण जै म्हारी भैंस्यां वांरौ विराट रूप देखनै भिड़कगी तौ······ ! अर वांरौ अनोखौ रूप देखनै पांडू भुसतां नीं ढबिया तौ म्हारै सारै री बात नीं है, पैं'ला कै दूं ।—फुलवाड़ी

२ भयभीत होकर भाग जाना ।

३ देखो 'भड़कणौ, भड़कबौ (रू. भे.)

भिड़कणहार, हारौ (हारी), भिड़कणियौ—वि० ।

भिड़काड़णौ, भिड़काड़बौ, भिड़काणौ, भिड़काबौ, भिड़कावणौ, भिड़कावबौ—प्रे० रू० ।

भिड़किओड़ौ, भिड़कियोड़ौ, भिड़क्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भिड़कीजणौ, भिड़कीजबौ—भाव वा० ।

भड़कणौ, भड़कबौ, भडकणौ, भडकबौ—रू० भे० ।

भिड़कंमाड़, भिड़कंवाड़—देखो 'भड़किंमाड़' (रू. भे.)

भिड़काड़णौ, भिड़काड़बौ—देखो 'भिड़काणौ, भिडकाबौ' (रू. भे.)

भिड़काड़णहार, हारौ (हारी), भिड़काड़णियौ—वि० ।

भिड़काड़िग्रोड़ौ, भिड़काड़ियोड़ौ, भिड़काड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भिड़काड़ीजणौ, भिड़काड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भिड़काड़ियोड़ौ—देखो 'भिड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भिड़काड़ियोड़ी)

भिड़काणौ, भिड़काबौ–क्रि० स०—१ किसी ऐसी आहट या वस्तु दिखाकर पशु को भागने में प्रवृत्त करना ।

२ झूंठी बातों में विश्वास दिलाकर भुलावे में डालना, बहकाना ।

उ०—रांणी राजा रै कांन में होळै सूं कह्यौ—कंवरां रै **भिड़कायोड़ी** रैं'यत कं'तां पांण मांनगी ।—फुलवाड़ी

३ छुड़वानां, त्याग करवाना ।

उ०—हिंसा धरम प्रकास नै, साधां सुं **भिड़कासी** रै । वलि तीरथंकर ना साधु थी, निकली निन्हव थासी रै ।—जयवांणी

४ देखो 'भड़काणौ, भड़काबौ' (रू. भे.)

भिड़काणहार, हारौ (हारी), भिड़काणियौ—वि० ।

भिड़कायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भिड़काईजणौ, भिड़काईजबौ—कर्म वा० ।

भड़काड़णौ, भड़काड़बौ, भड़काणौ, भड़काबौ, भड़कावणौ, भड़कावबौ, भडकाड़णौ,भडकाड़बौ, भडकाणौ, भडकाबौ, भडकावणौ, भडकावबौ, भिड़काड़णौ, भिड़काड़बौ, भिड़कावणौ, भिड़कावबौ—रू० भे० ।

भिड़कायोड़ौ—१ किसी प्रकार की आहट पैदाकर या वस्तु दिखाकर पशु को भागने में प्रवृत्त किया हुआ ।

२ झूंठी बातों में विश्वास दिलाकर भुलावे में डाला हुआ, बहकाया हुआ ।

३ छुड़वाया हुआ, त्याग करवाया हुआ ।

४ देखो 'भड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भिड़कायोड़ी)

भिड़काव—भिड़काने की क्रिया या भाव ।

भिड़कावणौ, भिड़कावबौ—१ देखो 'भड़काणौ, भड़काबौ' (रू. भे.)

२ देखो भिड़कांणौ, भिड़काबौ' (रू. भे.)

उ०—थां लोगां रै **भिड़कावणा** सूं ई औ लोग अड़वड़िया है ।—फुलवाड़ी

भिड़कावणहार, हारौ (हारी), भिड़कावणियौ—वि० ।

भिड़काविग्रोड़ौ, भिड़कावियोड़ौ, भिड़काव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भिड़कावीजणौ, भिड़कावीजबौ—कर्म वा० ।

भिड़कावियोड़ौ—१ देखो 'भड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भिड़कायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भिड़कावियोड़ी)

भिड़किंमाड़, भिड़किंवाड़—देखो 'भड़किंमाड़' (रू. भे.)

भिड़कियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ किसी आहट या ऐसी वस्तु को देखकर पशु उछल-कूद कर भागा हुआ, या भागने का प्रयास किया हुआ.

२ बहकावे में आया हुआ.

३ देखो 'भड़कियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भिड़कियोड़ी)

भिड़ग, भिड़ज, भिड़जाळ, भिड़ज्ज—१ देखो 'भड़ज' (रू. भे.) (अ मा. ह. नां. मा.)

उ०—१ आंसू नाखै आंख सू, कर झूंता फिरमाळ । भागल नंह नाखै **भिड़ज**, असहां सिर आताळ ।—बां. दा.

उ०—२ खल काल गाथाळ ग्याथाळ गाड़ां, **भिड़जाळ** आताळ ताताळ भड़ां । चुड़खै घड़ ग्रीध भखै संवळी, हिग गांभल पैग उठी हवळी ।—पा प्र.

उ०—३ दींदा जैता भोजराज, चोज कमंधां काज । हीगा करगा हेवैं दळां, जीण **भिड़ज्जां** साज ।—रा. रू.

२ देखो 'भट' (रू. भे.)

उ०—**भिड़ज** जूथ बिजई भाराथै, सहंस अठार रहगळा साथै । धिख चख सुतर भार धारंदा, बह सामांन सकट बारुंदा ।—सू. प्र.

भिड़णौ, भिड़बौ–क्रि० अ०—१ संलग्न होना, सटना ।

उ०—पै'ला गिगन में तारा सूं तारौ **भिड़ियोड़ौ** हौ ।—फुलवाड़ी

२ दरवाजे के कपाटों का परस्पर इस प्रकार सटना कि रास्ता बन्द हो जाय ।

३ स्पर्श करना, छूना ।

उ०—१ सुणि इम वैण वीर रस साजा, रंग मजीठ कीध मुख राजा । अगन नयण धिखि नजर अंगारा, **भिड़ै** मूंछ अणियां भौंहारां ।—सू. प्र.

उ०—२ आणंद मोर सुसरि आवाजै, वीणां वंस मधुर सुर वाजै । भुरजे भुरज **भिड़ंतां** भाजै, गहड़ सीख दै अंबर गाजै ।—आसौ बारहट

४ परस्पर एक दूसरे के विरुद्ध दिशा में चलने वाले का टकराना, भिड़ना ।

५ एक दूसरे प्रांणी का परस्पर लड़ना, भिड़जाना ।

६ युद्ध करना, जूंझना ।

उ०—'अखा'हर वाहत खाग उनंग, जुड़ै जिम भारथ दारुण जंग । वळोवळ लूंबत रोद्र व्रजाग, **भिड़ै** सुजि सूर हुवै दुय भाग ।—सू. प्र.

उ०—२ नमसकार सूरां नरां, पूरा सतपुरसांह । भारथ गज थाटां भिड़ै, अड़ै भुजां उरसांह ।—बां. दा.

उ०—३ मांग 'दुयोजण' मालदे, जिण बाधौ जगहत्थ । भारथ भिड़िया जास भड़, साह हूंत समरत्थ ।—बां. दा.

७ किसी व्यक्ति का वाग्युद्ध या वाद-विवाद में दृढ़तापूर्वक जूंझना या सवाल-जवाब करना ।

८ मैथुन करना, संभोग करना ।

९ साक्षात्कार होना, आमना-सामना होना ।

उ०—कंवर नै आपरै सुभाव रै आचरण रौ भरम व्है सकै पर कंवरांणी नै धणी रै लखणां रौ कीं भरम नीं हौ । खेत री माठ माथै भिड़तां ई वा उणनै आछी तरै ओळख लियौ हौ ।

—फुलवाड़ी

१० सामना करना, मुकाबला करना ।

उ०—१ अकल सूं भिड़णां री हिम्मत पड़ै । वैड़ा टणकेल कुच-मादी रा ई धै छिलग्या ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछिम दिस भिडाणां बाप बेटा पछिम, भिड़ै पूरब दिसां बिन्है भाई । हेकलो 'बळा' रौ दिखण चढ़ियौ हठी, कठै बांटी नहीं कुळ कमांई ।—सुभरांम गौड बळिरामोत रौ गीत

भिड़णहार, हारौ, (हारी), भिड़णियौ—वि० ।

भिड़ाड़णौ, भिड़ाड़बौ, भिड़ाणौ, भिड़ाबौ, भिड़ावणौ, भिडावबौ—प्रे० रू० ।

भिड़िओड़ौ, भिड़ियोड़ौ, भिड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भिड़ीजणौ, भिड़ीजबौ—भाव वा० ।

भड़णौ, भड़बौ, भडणौ, भडबौ, भिडणौ, भिडबौ—रू० भे० ।

भिड़त—सं० स्त्री०—१ टक्कर, आघात ।

क्रि० प्र०—होणी ।

२ युद्ध, संघर्ष ।

क्रि० प्र०—होणी करणी ।

३ आमना-सामना, साक्षात्कार ।

क्रि० प्र०—होणी ।

४ मुकाबला ।

क्रि० प्र०—करणी ।

५ दो वस्तुओं को आपस में टकराने से उत्पन्न ध्वनि ।

६ वाद-विवाद, बहस ।

भिड़बच—सं० पु०—एक प्रकार का कपड़ा ।

उ०—बासता भिड़बच बंध, सूपेत माल सुबंध । कसबीस चीरा कौर, अंगरेज फिरंगी ओर ।—सू. प्र.

भिड़ाड़णौ, भिड़ाड़बौ—देखो 'भिड़ाणौ, भिड़ाबौ' (रू. भे.)

भिड़ाड़णहार, हारौ (हारी), भिड़ाड़णियौ—वि० ।

भिड़ाड़िओड़ौ, भिड़ाड़ियोड़ौ, भिड़ाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भिड़ाड़ीजणौ, भिड़ाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भिड़ाड़ियोडौ—देखो 'भिड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भिड़ाड़ियोड़ी)

भिड़ाणौ, भिड़ाबौ—क्रि० स०—१ किन्हीं दो वस्तुओं को आपस में टकराना ।

२ किन्हीं दो प्राणियों को लड़ने या युद्ध करने में प्रवृत्त करना ।

३ स्पर्श करना, छुवाना ।

४ किसी व्यक्ति को वाग्युद्ध या वाद-विवाद में दृढ़तापूर्वक जूझने या सवाल-जवाब करने हेतु प्रवृत्त करना ।

५ किन्हीं दो वस्तुओं को आपस मे सटाना, संलग्न करना ।

६ साक्षात्कार कराना, आमना-सामना कराना ।

७ मुकाबला कराना ।

८ लगाना, लेप करना, मलना ।

उ०—भसमी अंग भिड़ाय, हांण लाभ देखी हमें । नैणां नेह छिपाय, जाय बस्यौ जी जेठवो ।—जेठवा

९ किसी को किसी व्यक्ति के प्रति उल्टी-सीधी बातें कहकर गलत धारणा बनवाना ।

ज्यूं—वौ म्हारै वास्ते उणांनै झूठा-साचा भिड़ाया है ।

मुहा०—भाटा भिड़ाणा=झूंठी सच्ची बातें कहना ।

भिड़ाणहार, हारौ (हारी), भिड़ाणियौ—वि० ।

भिड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भिड़ाईजणौ' भिड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

भिड़ाड़णौ, भिड़ाड़बौ, भिड़ावणौ, भिड़ावबौ, भीड़ाणौ, भीड़ाबौ, भेडवणौ, भेडवबौ—रू० भे० ।

भिड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ किन्हीं दो प्राणियों को लड़ने या युद्ध करने में प्रवृत्त किया हुआ. २ स्पर्श कराया हुआ, छुवाया हुआ. ३ किसी व्यक्ति को वाग्युद्ध या वाद-विवाद में दृढ़तापूर्वक जूझने या जवाब-सवाल करने में प्रवृत्त किया हुआ. ४ किन्हीं दो पदार्थों को आपस में सटाया हुआ, संलग्न किया हुआ. ५ साक्षात्कार कराया हुआ, आमना-सामना कराया हुआ. ६ मुकाबला कराया हुआ. ७ लगाया हुआ, लेप किया हुआ, मला हुआ. ८ किसी को किसी व्यक्ति के प्रति उल्टी-सीधी बातें कहकर गलत धारणा बनवाया हुआ.

(स्त्री० भिड़ायोड़ी)

भिड़ाळ—देखो 'भट' (मह., रू. भे.)

उ०—भिड़ै अस तोळा लोह भिड़ाळ, गिळै रस ग्रीधण गूद गलाळ ।

—गो. रू.

भिड़ावणौ, भिड़ावबौ—देखो 'भिडाणौ, भिडाबौ' (रू. भे)

उ०—डोकरी री बात सुणनै नाई नीची धूण करियां जावण लागौ तौ डोकरी कह्यौ—रांम मारचा पूरी बात तौ सुण, थूं अठी री उठी भिड़ावण रै हैवा है, नीं व्है तौ राजाजी नै ई अठै भेज देजै । म्हैं वांरा सूं सगळी पूछ-ताछ कर लेवूंला ।—फुलवाड़ी

भिड़ावणहार, हारौ (हारी), भिड़ावणियौ—वि० ।
भिड़ाविश्रोड़ौ, भिड़ावियोड़ौ, भिड़ाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भिड़ावीजणौ, भिड़ावीजबौ—कर्म वा० ।

भिड़ावियोड़ौ—देखो 'भिड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भिड़ावियोड़ी)

भिड़ि–सं० पु०—युद्ध, लड़ाई ।
उ०—पांडव मरे न सकियौ **भिड़ि** भुइं, रुके चढ़े मुवौ राठौड़ । किसन तणी अंतेबरि कारणि, महिर धेन कारणि कुळ मौड़ ।
—रतनू भरमौ

भिड़ियाळ, भिड़ीयाळ—१ भिड़ने वाला, टक्कर लेने वाला ।
२ देखो 'भट' (मह., रू. भे)
उ०—काळ तणी पर कोपिया, **भिड़ियाळ** महाभड़ ।—वी. मा.
रू० भे०—भड़ियाळ, भिडियाळ, भिडीयाळ ।

भिड़ियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ स्पर्श हुवा हुआ, छूआ हुआ. २ किन्हीं दो प्राणियों में लडाई या संघर्ष हुवा हुआ. ३ कोई व्यक्ति वाग्युद्ध या वाद-विवाद में दृढ़तापूर्वक जूझा हुआ या सवाल-जवाब करने में प्रवृत्त हुवा हुआ. ४ कोई पदार्थ किसी दूसरे पदार्थ में सटा हुआ, संलग्न हुवा हुआ. ५ विषय-भोग में प्रवृत्त हुवा हुआ, मैथुन क्रिया में लगा हुआ. ६ साक्षात्कार हुवा हुआ, आमना-सामना हुवा हुआ, ७ सामना या मुकाबला किया हुआ.
(स्त्री० भिड़ियोड़ी)

भिचक–सं० स्त्री०—१ हिचकिचाहट, संकोच ।
२ बाधा, विघ्न ।
रू० भे०—भिचकी ।

भिचकणौ, भिचकबौ–क्रि० अ०—१ अनिच्छा, भय या संकोचवश किसी कार्य करने में प्रवृत्त न होना, हिचकिचाना ।
उ०—काळिंदर सूं डरै अर **भिचकै** ज्यूं गांव रा सगळा लोग मासी-भांणजी सूं डरता अर भिचकता ।—फुलवाडी
२ भयभीत होना, डरना ।
३ चौंकना ।
उ०—धमक धमक घण बाजै हथोड़ा, कमतरियां रा बाजा । काची नींद **भिचक** मत जाजै, अै सपनां रा राजा ।—चेतमानखा
भिचकणहार, हारौ (हारी), भिचकणियौ—वि० ।
भिचकिश्रोड़ौ, भिचकियोड़ौ, भिडक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भिचकीजणौ, भिचकीजबौ—भाव वा० ।
बिजकणौ, बिजकबौ, भचकणौ, भचकबौ, भुचकणौ, भुचकबौ
—रू० भे० ।

भिचकियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ अनिच्छा, भय या संकोचवश किसी कार्य में प्रवृत्त न हुवा हुआ, हिचकिचाया हुआ. २ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ. ३ चौकन्ना हुवा हुआ.
(स्त्री० भिचकियोड़ी)

भिचकी—देखो 'भिचक' (रू. भे.)

भिच्च–सं० पु० [सं० भृत्य] १ भृत्य, नौकर ।
२ सेना ।

भिच्छ, भिच्छा—देखो 'भिक्षा' (रू. भे.)
उ०—खिज खाज न भोजन खोजन की, गिजमांगिय **भिच्छ** न भोजन की । द्विब वंस उदंत दिगंत छबे, भल संत महंत अनंत भये ।—ऊ. का.

भिच्छुक—देखो 'भिक्षुक' (रू. भे.)

भिच्छु—१ देखो 'बिच्छु' (रू. भे.)
२ देखो 'भिक्षुक' (रू. भे.)
उ०—अगैं न **भिच्छु** भिच्छुणी गया न दांन गान की । न ओगणी चिकत्सशांन दोसधी निदांन की ।—ऊ. का.

भिछ, भिछा—देखो 'भिक्षा' (रू. भे)
उ०—प्रायस गुणति सूरि **भिछ**, जिम भांगा नांगा संतुठ्ठ मगा । जिणदत्त सूरि पहु सुर गुरवि, थुणवि न सक्कउं तुम्ह गुण ।
—ऐ. जै. का. सं.

भिजोणौ, भिजोबौ–क्रि० स०—१ पानी या किसी तरल पदार्थ से किसी वस्तु या प्राणी को गीला या आर्द्र करना ।
२ पानी में किसी वस्तु को इसलिए डालना कि वह भीगकर नरम हो जाय एवं फूल जाय ।
ज्यूं—दाळ भिजोणी ।
रू० भे०—भिगाणौ, भिगाबौ, भिगोणौ, भिगोबौ, भिगोवणौ, भिगोवबौ, भिजाणौ, भिजाबौ, भिजोणौ, भिजोबौ, भिजोवणौ, भिजोवबौ, भिगोणौ, भिगोबौ, भिगोवणौ, भिगोवबौ, भिंजोवणौ, भिंजोवबौ, भींगोणौ, भींगोबौ, भींगोवणौ, भींगोवबौ, भींजोणौ, भींजोबौ, भींजोवणौ, भींजोवबौ, भीगोणौ, भीगोबौ, भीगोवणौ, भीगोवबौ, भींजोणौ, भीजोबौ, भीजोवणौ, भीजोवबौ ।

भिजोवणौ, भिजोवबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)

भिडकमाड़, भिडकवाड़—देखो 'भड़किमाड़' (रू. भे.)

भिडज, भिडज्ज—देखो 'भड़ज' (रू. भे.)
उ०—१ 'भगवांन' लोह भेळै **भिडज**, 'सुरतांण' गुत्त छळ धांम निज्ज । 'नरपाळ' खाग पाडै खळांह, जळ चाढ़ै जोगां रावळांह ।
—गु. रू. बं.
उ०—२ पूठि **भिडज्जां** आरुहिया भड, तिस रूप लेय छतीसै त्रिज्जड । सत्तरि खांन बहुत्तरि ऊमर, सीस विराजित मेवाडंबर ।
—गु. रू. बं.

भिडणौ, भिडबौ—देखो 'भिड़णौ, भिड़बौ' (रू. भे.)
उ०—**भिडियौ** रुघनांथ 'भूपाळ' समोभ्रम, धार पहार विरुड घडै । पहला वरियांम इता पडिया, ता पाछै गोइंददास पडै ।—गु. रू. बं.

भिडत—देखो 'भिड़त' (रू.भे.)

भिडियाळ, भिडीयाळ—१ देखो 'भट' (रू. भे.)
२ देखो 'भिड़ियाळ' (रू. भे.)
उ०—खाथा सुर खडियाळ त्रिमंक खडीयांळ तवलां । चाकां अरि चडियाळ हाक भिडीयालह् मलां ।—पनां

भिणकरणौ-सं० पु०—१ भौंरे की गुंजार ।
२ मक्खियों की भिनभिनाहट ।

भिणकणौ, भिणकबौ—देखो 'भणकणौ, भणकबौ' (रू. भे.)
भिणकणहार, हारौ (हारी), **भिणकणियौ**—वि० ।
भिणकिग्रोड़ौ, भिणकियोड़ौ, भिणक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भिणकीजणौ, भिणकीजबौ—भाव वा० ।

भिणणौ, भिणबौ—देखो 'भणणौ, भणबौ' (रू. भे)
उ०—पीछे उण री लुगाई **भिणियोड़ी** थी सू खत एक मा'राज पदमसिंघजी रै नांमै रुपिया १४०) रौ लिख'र इण नूं दीनौ, जिण मैं मतू मा'राज पदमसिंघजी रौ अरु साख सूरज चंद्रमा री लिखी।
—द. दा.
भिणणहार, हारौ (हारी), **भिणणियौ**—वि० ।
भिणिग्रोड़ौ, भिणियोड़ौ, भिण्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भिणीजणौ, भिणीजबौ—कर्म वा० ।

भिणभिण, भिणभिणाट—१ देखो 'भणण' (रू. भे.)
२ देखो 'भिनभिन' (रू. भे)

भिणभिणाटौ—देखो 'भणण' (अल्पा., रू भे)
उ०—गांव में टांटियां वाळा छत्ता रौ **भिणभिणाटौ** उणी भांत चालू हौ ।—फुलवाड़ी

भिणभिणाहट—देखो 'भणण' (रू. भे.)

भिणभिणाणौ, भिणभिणाबौ—१ क्रोधित होना गुस्सा होना ।
२ देखो 'भिनभिनाणौ, भिनभिनाबौ' (रू. भे.)
उ०—नवी बात रौ तबोड़ौ लागतां ई मिनखां रूपी टांटिया भणण भणण करता **भिणभिणावै** अर थोड़ी ताळ भंवभंवायनै पाछा चूस्योड़ा छत्ता माथै आय चिपक जावै ।—फुलवाड़ी
भिणभिणाणहार, हारौ (हारी), **भिणभिणाणियौ**—वि० ।
भिणभिणायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भिणभिणाईजणौ, भिणभिणाईजबौ—कर्म वा० ।

भिणभिणायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ गुस्से में भरा हुआ, क्रोध-युक्त ।
२ देखो भिनभिनायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भिणभिणायोड़ी)

भित्त, भित्ति—देखो 'भीत' (रू. भे.)
उ०—भिरे अभित्ति **भित्ति** को सबुज्ज के भवावनी, बिनां प्रस्वेद वित्त कों कुरोर हां कमावनी ।—ऊ. का.

भिदणौ, भिदबौ-क्रि० अ०—१ छेदा जाना, फौड़ा जाना ।
उ०—काळ लंकाळ करठाळ जड़ियौ कमंध, वहै विकराळ रणताळ वांई । भेद छकडाळ चगताळ चूनाळ **भिद**, ताळ गौ भाळ भर धरण तांई ।—गु. रू. बं.
२ घायल होना ।
३ रिसना ।
४ छिद्रित होना ।
उ०—जड़क्कत सेल **भिदै** जरदाळ, कडक्कत कंध वहै किरमाळ । दादौ जिण 'गोवरधन्न' दुभाल, ढाहै 'गजसाह' अगै गजढाल ।
—सू. प्र.
भिदणहार, हारौ (हारी), **भिदणियौ**—वि० ।
भिदिग्रोड़ौ, भिदियोड़ौ, भिद्योड़ौ—भू० का कृ० ।
भिदीजणौ, भिदीजबौ—भाव वा० ।

भिदावणौ, भिदावबौ—क्रि० स० [भेदणौ क्रि० का प्रे० रू०] भेदन करवाना, भेदने का कार्य करवाना ।
उ०—उडंता अगां कंध कोदंड आंणौ, त्रिबरणी उरैं होइकै बैर तांणौ । नचैं थुंग थेई रचैं भेद न्यारा, **भिदावै** खळां है दळां बेग भारा ।—वं. भा.
भिदावणहार, हारौ (हारी), **भिदावणियौ**—वि० ।
भिदाविग्रोड़ौ, भिदावियोड़ौ, भिदाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भिदावीजणौ, भिदावीजबौ—भाव वा० ।

भिदावियोड़ौ—भेदन करवाया हुआ, भेदने का कार्य करवाया हुवा ।
(स्त्री० भिदावियोड़ी)

भिदि—देखो 'भेद' (रू. भे.)
उ०—दासी पूछि **भिदि** करी, तह्मो अण्य कुण कुहु वांणी खरी । बाहुक कहि नल' नु सारथि,वारस्णेय बीजु ते रथी ।—नळाख्यांन

भिदियोड़ौ—१ छेदा हुआ, फूटा हुआ ।
२ घायल हुवा हुआ ।
३ रिसा हुआ ।
४ छिद्रित हुवा हुआ ।
(स्त्री० भिदियोड़ी)

भिदियौ-वि०—छिद्रित, छिद्रपूर्ण ।
उ०—आखा ज्यूं सर बांण ऊछळै, **भिदियौ** स्रोण स कूंकूं भाळ । बीजै 'अखै' छेहड़ा बांधा, त्रिविध घड़ हूंता रणताळ ।
—भोजराज कवि

भिदुर-सं० पु० [सं० भिदिरं, भिदुरं] वज्र । (डि. को., नां. मा)

भिन—१ देखो 'भिन्न' (रू. भे.)
उ०—किड़की कारायण कनफड़ियां कूटी, तिड़गी तारायण सो पुरसां तूटी । प्रतिदिन मोलापड़ **भिन-भिन** पद पूजै, धोळा नीरण बिन जीरण जिम धूजै ।—ऊ. का.
२ देखो 'भणण' (रू. भे.)

भिनभिन-सं० स्त्री०—मक्खियों द्वारा उड़ते समय किया जाने वाला शब्द या ध्वनि।
रू० भे०—भिण भिण।

भिनभिनाट—देखो 'भिन भिन' (रू. भे.)
रू० भे०—भिणभिणाट।

भिनभिनाणौ, भिनभिनाबौ-क्रि० अ०—१ मक्खियों द्वारा उड़ते समय भिन भिन शब्द करना।
२ देखो 'भिणभिणाणौ, भिणभिणाबौ' (रू. भे.)
भिनभिनाणहार, हारौ (हारी), भिनभिनाणियौ—वि०।
भिनभिनायोड़ौ—भू० का० कृ०।
भिनभिनाईजणौ, भिनभिनाईजबौ—भाव वा०।

भिनभिनायोड़ौ-भू० का० कृ०—भिन भिन शब्द हुवा हुआ (मक्खी)
(स्त्री० भिनभिनायोड़ी)

भिन्न-स० पु० [सं० भिद्] १ किसी चीज का खण्ड या टुकड़ा।
२ गणित में, किसी इकाई का छोटा अंश या खंड जो बटे के रूप में व्यक्त किया जाता है।
ज्यूं—$\frac{1}{3}$, $\frac{1}{2}$ आदि।
३ नीलम का एक दोष जिसके कारण पहनने वाले को पति, पिता, पुत्रादि का शोक प्राप्त होना माना जाता है।
वि०—१ पृथक, अलग, जुदा। (डि. को.)
उ०—बळ बळ खळ डरै बाघ बन बन रा, घोर किन्नरां वासी गाढ़ाळ। भारी 'नवल' बिड़द **भिन्न-भिन्न** रा, दिन दिन रा कूरम दाढ़ाळ।—नवलसिंघ सेखावत रौ गीत
२ दूसरे प्रकार का, अलग तरह का।
३ काट या तोड़कर अलग किया हुआ छिन्न-भिन्न।
४ विभाजित।
५ अपने वर्ग के कुछ औरों से अलग और विशेष प्रकार का।
६ कोई अन्य, अपर, दूसरा।
रू० भे०—भिन।

भिन्नता-सं० स्त्री०—१ भिन्न होने की अवस्था या भाव, अलगाव।
२ भेद, अन्तर।

भिभचारी—देखो 'व्यभिचारी' (रू. भे.)

भिभरणौ, भिभरबौ—देखो 'भींभरणौ, भींभरबौ (रू. भे.)
भिभरणहार, हारौ (हारी), भिभरणियौ—वि०।
भिभरिओड़ौ, भिभरियोड़ौ, भिभरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
भिभरीजणौ, भिभरीजबौ—भाव वा०।

भिभरियोड़ौ—देखो 'भींभरियोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री० भिभरियोड़ी)

भिभरौ-सं० पु०—कपाल, खोपड़ी, ललाट।
उ०—सासा सणकावै नासां निरतावै, जीता मरिया जुग **भिभरौ** भररावै। पल पल पलकां सूं पड़ता परनाळा, मोटा मूंगां री होठां में माळां।—ऊ. का.

भिभळ-सं० पु०—देखो 'विभळ' (रू. भे.)

भिमरणौ, भिमरबौ—देखो 'भींभरणौ, भींभरबौ' (रू. भे.)
उ०—१ डूंडी रौ आदेस सुणतां ई सगळै लोगां में खलबळ माचगी। बात नै सावळ नीं केवटी तौ जांणै जैड़ौ उत्पात मच जावैला। अेकर **भिमरियां** पछै रया माथै आंकस राखणौ अणूंतौ दूभर है। —फुलवाड़ी
उ०—२ धणी ई **भिमरग्या** तौ पछै दूजां सूं कांई सांधौ लागै। —फुलवाड़ी
भिमरणहार, हारौ (हारी), भिमरणियौ—वि०।
भिमरिओड़ौ, भिमरियोड़ौ, भिमरयोड़ौ—भू० का० कृ०।
भिमरीजणौ, भिमरीजबौ—भाव वा०।

भिमरियोड़ौ—देखो 'भींभरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भिमरियोड़ी)

भिमरियां-सं० स्त्री०—क्रोधावेश।
उ०—बांदरा री बात सुणनै घणी ई जोस चढ़ै घणी ई **भिमरियां** खावै पण पग को हालै नीं।—फुलवाड़ी

भिरग—देखो 'भ्रगु' (रू. भे.)

भिरगसुत—देखो 'भ्रगुसुत' (रू. भे.)
उ०—'समंद-सुतन, सुत-पवण, भिरग-सुत, ओव्रिद भ्रित आपो ऊदार। ऊभौ करौ चियारै आवै, सुत विजमल खट वरन सधार। —ईसरदास बारहठ

भिरगु—देखो 'भ्रगु' (रू. भे.)

भिरगुलता—देखो 'भ्रिगुलता' (रू. भे.)

भिरड़-सं० पु०—ततैया, बर्र। (शेखावाटी)

भिरड़णौ, भिरड़बौ-क्रि० अ०—१ कुपित होना, नाराज होना।
उ०—आज तौ खुसी में बावळा होयनै औ निजरांणौ कबूल करूं, पण जे कदेई नवाब ईसटखां किणी कारण सूं **भिरड़** गयौ तौ औ निजरांणौ घणौ मूंघौ पड़ैला।—फुलवाड़ी
२ मसलना।
उ०—अड़थड़ भिरड़ **भिरड़** भड़ अंवभड़, नवड़ भवड़ वड़ निवड़ नड़। आवट कूटि तूटि कसणांवटि, छूटि जड़ावटि फूटि छड़।—कल्यांणदास राव
३ मारना।
उ०—भागा केई पकड़ि किता **भिरड़िया**, धरि सूरापण परां धंख। सत्रदळ गजां ऊपरै 'सगतौ', पड़ियौ जांणै जटा-पंख। —सगता गौड़ रौ गीत
भिरड़णहार, हारौ (हारी), भिरड़णियौ—वि०।

भिरड़िओड़ौ, भिरड़ियोड़ौ, भिरड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भिरड़ीजणौ, भिरड़ीजबौ - भाव वा० ।

भिरड़ियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कुपित हुवा हुआ, क्रोधित. २ मारा हुआ, ३ मसला हुआ.
२ देखो 'भिड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भिरड़ियोड़ी)

भिरड़ौ—सं० पु०—एक औजार विशेष जिससे वस्तु दोनों ओर से दबाई जाती है।

भिराडी—वि०—साहसी, बहादुर ।
उ०—कासमीर मुखमंडण माडी, तूं समी जगि न कोई **भिराडी** । गीतनादि जिम कोइल कूजइ, तूं पसांइं सवि कुतिग पूजइ ।
—सालिसूरि

भिरावौ—देखो 'बिरावणौ' (रू. भे.)
उ०—'बल्लभ' कूप खिणायौ बेड़ौ, भरियौ नीर **भिरावौ** भेड़ौ । 'नींबैं' तळौ निकाल्यौ नेड़ौ, जिण रौ आब नांव रै जेड़ौ ।
—ऊ. का.

भिलकि भूमि की दराड़ ।
उ०—वीरभ्रदंग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सांमह्या, त्रह-त्रहतै त्रंबक तणै त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउं भेरि भुंगल तणै भूभूयाटि भूकिइं **भिलकि** फाटी, काहल तणै कोलाहलि कांन कमकम्यां ।—व. स.

भिलणी—देखो 'भीलणी' (रू. भे.)
उ०—म्हांरी **भिलणी** हे ! भगतां रै बस हूं रहूं, म्हानै भगतां रौ भलौ भाव, **भिलणी** हे ।—गी. रां.

भिळणौ, भिळबौ—क्रि० अ०—१ किसी एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में इस प्रकार मिश्रित हो जाना कि वे दोनों एकाकार हो जायें तथा एक दूसरे से अलग न किये जा सकें ।
उ०—पहिली मूंकी फलहुल गली मूंकी साकर दूधइ **भिळी** । मूंक्यां सरस गविल पकवांन मूंक्यां आंणी ऊन्हां धांन ।—हीराणंद सूरि
२ पदार्थों का एक दूसरे के साथ इस प्रकार मिलना कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व बना रहे ।
३ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला या गढ़ या गांव शत्रु के अधिकार में चला जाना ।
उ०—१ घोड़ा तुरकीयां राहदार उपर नांख पाखर दोनां ही पाखतियां लगाय तरगस २ कूटा मारचा भडीया रौ भोलावट हाथ मांहे ले बरछी नै रांणी दहड़ चढ़ी, सकत रूप धार । मार हाक कहियौ, 'आज रा मोरचै मिळै ।' नै इम कहि नै लोह मेलीयौ । च्यार प्रहर लोह **भिळियौ** ।—राजा नरसिंघ री वात
उ०—२ मोनूं काय भूंठी कहो, हूं तौ थांहरौ चाकर छूं । तर बुरहांन ही चढ साथै हुवौ । चाटसू गया । फिळसौ **भिळै** नहीं ।
—राव मालदे री बात

उ०—३ पछै राव चंद्रसेन आसरळाई ऊपर आया, गांव बाळीयौ । गोपाळदास, कल्यांणदास, रांमौ तौ जैतारण था । नरहरदास अठै थौ सु गांव झालियौ । गांव **भिळियौ** नहीं ।
—रावचंद्रसेन री बात

उ०—४ झिलम टोप सूधौ सिर झड़ियौ, पटझर हूं चूडामणि पड़ियौ । करि जय धसे नगर मझि लसकर, अटके नह **भिळियौ** वरियावर ।—सू प्र.

उ०—५ चित्तौड़ **भिळियौ** जद साढ़ै तीन सै लुगायां रौ जंवर हुवौ ।—बां. दा. ख्या.

उ०—६ चाचौ मेरौ लड़ै, इण भांत मास १२ वितीत हुवा, पिण गढ़ **भिळण** री बात काई नहीं ।—राव रिणमल री बात

उ०—७ प्रगटां पंडवेस सुपह सांचरिया, वाजी हाक न कोई वळै । बाला चंद ऊठ अतुळी बळ, भोजराज गढ़ तूझ **भिळै** ।
—भोजराज रूपावत रौ गीत

४ किसी खेत में खड़ी फसल का पशुओं द्वारा चरा जाना ।
५ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि पशुओं द्वारा चरा जाना ।
६ शस्त्र प्रहार होना ।
उ०—१ सखी अमीणा कंथ रौ, अग ढीलौ आचंत । कड़ी ठहक्कै बगतरां, नड़ी नड़ी नाचंत । नड़ी नाचै भिड़ै, छोह लोहा **भिळै**, ऊससै सुबप मुख मूंछ भोहां मिळै । खगां उनगां पिसण पाड़ि ऊभौ खड़ौ, कहूं इण भांति ढीलौ सखी कंथड़ौ ।—हा. झा.
उ०—२ च्यार प्रहर लोह **भिळियौ** । वडी लड़ाई हुई ।
—राजानरसिंघ री वात

७ युद्ध करना, लड़ना ।
८ सम्मिलित होना, शामिल होना ।
उ०—१ हिळता हिळता हाय **भिळौ** मत दुख सुं भाई, मिळ मुरदां मनवार करौ मत बुरी कमाई ।—ऊ. का.
उ०—२ चमू अकब्बर लोक सचेळौ, **भिळियौ** खांन तहव्वर भेळौ । ओपै जांण प्रलै अहनांणै, एकठ महण थया दोय आणै ।—रा. रू.
उ०—३ भाग जिकै कूंड मझि **भिळिया**, रहे तिकै जुग चाढ़ै रूप । 'साह' सुतन 'सेवौ' वड सांवत, भांजै खग मुंह धोया भूप ।
—मोहकमसिंघ मेड़तियौ

९ टूटना ।
१० होना ।
उ०—भूपति टोटां में दीवाळा **भिळिया**, मोटां मोटां रा कुळ मुंगतां मिळिया । बांधै गांठड़ियां बड़ियां चण बाळै, राली गूदड़ लै कांधै पर राळै ।—ऊ. का.
११ पहुंचना ।
उ०—म्है अबै कांम आस्यां । रजपूती रा रीजवारां नै । जीलै चढावस्यां । सूरजमंडलै **भिळस्यां** ।—पनां

१२ अपना दल या पक्ष छोड़कर गुप्त अथवा प्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य दल या पक्ष की ओर होना।

ज्यूं—वौ कांग्रेस में भिळगौ है।

उ०—नगर-सेठ बोल्या—तौ थूं ईं आं कुचमादियां रै साथै भिळग्यौ।—फुलवाड़ी

१३ संसर्ग के कारण जूं आदि जन्तुओं का शरीर या कपड़ों में प्रवेश करना।

उ०—भिळ जाय जुंवां लाखां भळे, लेऊं कांई इण लाड में। परबात पीहर जास्यूं परी, खांवद पड़ज्यौ खाड में।—ऊ. का.

१४ नष्ट होना, नाश होना।

१५ ज्योति में विलीन होना।

भिळणहार, हारौ, (हारी), भिळणियौ—वि०।

भिळाड़णौ, भिळाड़बौ, भिळाणौ, भिळाबौ, भिळावणौ, भिळावबौ—प्रे. रू.

भिळिओड़ौ, भिळियोड़ौ, भिल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भिळीजणौ, भिळीजबौ,—भाव वा०।

मळणौ, मळबौ, भिलणौ, भिलबौ, भीळणौ, भीळबौ—रू० भे०

मेळणौ, मेळबौ—सक० रू०।

भिलणौ, भिलबौ—देखो 'भिळणौ, भिळबौ' (रू. भे.)

उ०—मांहोमांही ले लसकर मिलिया, सनद्ध संकलिया। टंकारव लागे नवि टलियां, भड सहु कोई भिलिया।—वि. कु.

भिलणहार, हारौ (हारी), भिलणियौ—वि०।

भिलिओड़ौ, भिलियोड़ौ, भिल्यौड़ौ—भू० का० कृ०।

भिलीजणौ, भिलीजबौ—भाव वा०।

भिळाड़णौ, भिळाड़बौ—देखो 'भिळाणौ, भिळाबौ' (रू. भे.)

भिळाड़णहार, हारौ (हारी), भिळाड़णियौ—वि०।

भिळाड़िओड़ौ, भिळाड़ियोड़ौ, भिळाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भिळाड़ीजणौ, भिळाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भिळाड़ियोड़ौ—देखो 'भिळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भिळाड़ियोड़ी)

भिळाणौ, भिळाबौ—क्रि० स० [भिळणौ क्रि० का प्रे० रू०] १ किसी एक पदार्थ को दूसरे पदार्थ में इस प्रकार मिश्रित कराना कि वे दोनों एकाकार हो जायें तथा एक दूसरे से अलग न किये जा सकें।

२ पदार्थों को एक दूसरे के साथ इस प्रकार मिश्रित करवाना कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व बना रहे।

३ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला, गढ़ या गांव शत्रु के अधिकार में करवाना।

४ किसी खेत में खड़ी फसल को पशुओं द्वारा चरवाना।

उ०—चेतौ तौ थांनै राखणौ चाहिजै के किणी रा ऊभा खेत नै कीकर भिळावां।—फुलवाड़ी

५ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस चारा आदि पशुओं द्वारा चरवाना।

६ शस्त्र प्रहार करवाना।

७ युद्ध कराना, लड़ाना।

८ सम्मिलित कराना, शामिल कराना।

९ तुड़वाना।

१० करवाना।

११ किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि के लिए किसी दल या गुट में शामिल होने को प्रवृत्त करना।

१२ पहुंचाना।

१३ किसी दल या पक्ष को छुड़ाकर गुप्त अथवा प्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य दल या पक्ष की ओर होने में प्रवृत्त करना।

१४ नष्ट कराना, नाश कराना।

उ०—खेत री रुखाळी तौ उण री जलम भिळाय दियौ।

—फुलवाड़ी

१५ संसर्ग के द्वारा जूं आदि जन्तुओं का शरीर या वस्त्रों में प्रवेश कराना।

१६ ज्योति में विलीन करना।

भिळाणहार, हारौ (हारी), भिळाणियौ—वि०।

भिळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भिळाईजणौ, भिळाईजबौ—कर्म वा०।

भिळाड़णौ, भिळाड़बौ, भिळावणौ, भिळावबौ, भीळाड़णौ, भीळाड़बौ, भीळाणौ, भीळाबौ भीळावणौ, भीळावबौ—रू० भे०।

भिळायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कोई एक दूसरे पदार्थ में इस प्रकार मिश्रित कराया हुआ कि वे दोनों एकाकार हो गए हों तथा एक दूसरे से अलग न किये जा सकते हों. २ पदार्थों को एक दूसरे के साथ इस प्रकार मिश्रित कराया हुआ कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व बना हुआ हो. ३ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला, गढ़ या गांव शत्रु के अधिकार में करवाया हुआ. ४ पशुओं द्वारा खड़ी फसल चरवाया हुआ (खेत). ५ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि चरवाया हुआ. ६ शस्त्र प्रहार करवाया हुआ, भिड़वाया हुआ. ७ युद्ध कराया हुआ, लड़ाया हुआ. ८ सम्मिलित कराया हुआ, शामिल कराया हुआ. ९ तुड़वाया हुआ. १० करवाया हुआ. ११ किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हेतु किसी दल या गुट में शामिल करवाया हुआ. १२ किसी दल या पक्ष को छुड़ाकर गुप्त या प्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य दल या पक्ष की ओर किया हुआ. १३ पहुंचाया हुआ. १४ नष्ट कराया हुआ, नाश कराया हुआ. १५ संसर्ग के द्वारा जूं आदि जन्तुओं का शरीर या वस्त्रों में प्रवेश कराया हुआ. १६ ज्योति में विलीन किया हुआ. (स्त्री० भिळायोड़ी)

भिलाळ—सं० पु०—भीलों का समूह।

उ०—धुरजाळ कुंदाळ अंगार घखै, नह ढाळ भिलाळ भालोड़ नखै।

वळिया दळ दोय वजै वगड़ौ, जिदराव सो 'पाल' सजै झगड़ौ ।
—पा. प्र.

भिलावौ–सं० पु० [सं० भल्लातकः] १ उत्तरी भारत के तराई क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक जंगली वृक्ष जिसके फल जामुन के आकार के लाल रंग के होते हैं तथा जो सूखने पर काले और चिपटे हो जाते हैं। (अमरत)
२ उक्त वृक्ष का फल जो औषध के काम आता है।
रू० भे०—भीलावौ।

भिळावणौ, भिळावबौ—देखो 'भिळाणौ, भिळाबौ' (रू. भे.)
भिळावणहार, हारौ (हारी), भिळावणियौ—वि०।
भिळाविओड़ौ, भिळावियोड़ौ. भिळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भिळावीजणौ, भिळावीजबौ—कर्म वा०।

भिळावियोड़ौ—देखो 'भिळायोड़ौ' रू. भे)
(स्त्री० भिळावियोड़ी)

भिळियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ कोई एक पदार्थ दूसरे पदार्थ में इस प्रकार मिश्रित हुवा हुआ कि वे दोनों एकाकार हो गए हों तथा एक-दूसरे से अलग न हो सकते हों। २ कोई पदार्थ एक-दूसरे के साथ इस प्रकार मिश्रित हुवा हुआ हो कि उनका स्वतन्त्र अस्तित्व बना हुआ हो. ३ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला, गढ़ या गांव शत्रु के अधिकार में हुवा हुआ. ४ पशुओं द्वारा चरा हुआ (खेत). ५ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस चारा आदि पशुओं द्वारा चरा हुआ (खेत). ६ शस्त्र प्रहार हुवा हुआ. ७ युद्ध हुवा हुआ, लड़ा हुआ। ८ सम्मिलित या शामिल हुवा हुआ, मिला हुआ. ९ टूटा हुआ. १० हुवा हुआ. ११ किसी लक्ष्य-प्राप्ति या स्वार्थ सिद्धि हेतु किसी दल या गुट में शामिल हुवा हुआ. १२ किसी दल या पक्ष को छोड़कर गुप्त या प्रत्यक्ष रूप से किसी अन्य दल या पक्ष की ओर हुवा हुआ. १३ नष्ट हुवा हुआ. नाश हुवा हुआ. १४ संसर्ग के द्वारा जूं आदि जन्तुओं का शरीर या वस्त्रों मे प्रवेश हुवा हुआ.
(स्त्री० भिळियोडी)

भिलियोड़ौ—देखो 'भिळियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री० भिलियोड़ी)

भिलियौ—देखो 'बिल्लौ' (अल्पा., रू. भे.)

भिले—देखो 'भले' (रू. भे.)
उ०—अलख अजोनी आतमा, अचळ अनूप अनंत। तूं मारै तारै तूं ही, भिले-भिले भगवंत।—ऊ. का.

भिल्ल—देखो 'भील' (रू. भे.)
उ०—१ राइं गाई चरती सवि वाली, भिल्ल ने दलि धुरा बलि भाली। ऊस ना वदनि सासु न मांइं, ग्वाल बाल पुर सांम्हां धाई।
—सालिसूरि

उ०—२ आंखि राति, हाथि काती, हाथि सुराही, बीजइ धराही, इसी भिल्ली।—व. स.
(स्त्री० भिल्ली)

भिल्लौ—देखो 'बिल्लौ' (रू. भे.)

भिस–अव्यय [स० भृशं] अत्यधिकता से, प्रचंडता से, बहुतायत से।

भिसक, भिसज–सं० पु० [सं० भिषज] १ वैद्य, हकीम, चिकित्सक।
(डिं. को.)

भिसट—देखो 'भ्रस्ट' (रू. भे.)
उ०—१ साह इंगलस थांन के रजवाट सराई, कवराजां मौजां करै लख पटा लटाई। हुइया भिसट हरांमखोर भ्रम सांम सवाई, जुजुठळ हरचद जेहबौ 'कन' भोज कहाई।—मोडजी आसियौ

भिसटौ—देखो 'विस्ठौ' (रू. भे.)
३ जंतु भखे अथवा जळै, कै पड़ियौ रह जाय। किल भिसटा भसमी कमी, इण नर तन सूं थाय।—बां दा.
उ०—२ अण भजिया भजिया तणी, दीखै प्रतख दुसाळ। भिसटा तौ वायस भखै, मोती भखै मराळ।—र. रू.

भिसत—देखो 'बहिस्त' (रू. भे.)
उ०—१ अेक सुरपति हसत अणादत भिसत हलका ब्रवत मदमत। बरणत घण दुति अस्त बरसत, दांन अप अवदात।
—महाराव हणूतसिंघ सेखावत रौ गीत
उ०—२ असुर तणौ दळ बळ ऊखेळूं, भिसत काय जमद्वारां भेळूं। औ कहि असुर न दिया अराबां, औ हिज दिये करां तजि आबां।
—सू. प्र.

भिसति, भिसती—१ देखो 'बहिस्त' (रू. भे.)
उ०—पायी बड़े फतै खेत लोहड़ै भिसति पायी, किलमां घपायी घड़ां बेहडां केवांण। आजमां उमाही ऊभां आलमां न घरे आयी, पछै आयी पातिसाही कुमायी प्रमांण।—साहिजादां री वेढ़ रौ गीत
२ देखो भिस्ती' (रू. भे.)

भिसम—देखो भीस्म' (रू. भे.)
उ०—बाहन थारै भिसम नांदियौ, गौरां के भरतारा। आक धतूरा को भोग लगत है, विस का करौ अहारा।—मीरां

भिसणी, भिसिणी—देखो 'व्यसनी' (रू. भे.)

भिस्ट—देखो 'भ्रस्ट' (रू. भे.)
उ०—१ वौ तिणकलौ तौ म्हारी मती ई भिस्ठ कर दी।
—फुलवाड़ी
उ०—२ छाती माथा कूटती कै'वण लागी—हे भगवांन, इत्ता दिन म्हैं किण री पूजा करी! म्हारौ तो धरम ई भिस्ट व्हैगौ।
—फुलवाड़ी
उ०—३ ऊमर में कदै ई माया रौ परस नीं करचौ जकौ थारै गियां पछै हाथ लगाय भिस्ट व्हैणौ पड़चौ।—फुलवाड़ी

भिस्टौ—देखो 'विस्ठौ' (रू. भे.)

भिस्त—देखो 'बहिस्त' (रू. भे.)

उ०—१ तिहां आवी बैठा तुरत, सबल साथ सुं साहि। चितइं मांनव लोक में, आंणी **भिस्त** अल्लाह।—प. च. चौ.

उ०—२ जळता है आरांम वदन का, फिर गिलारी सराह का। इतना जोर रसराज हैं सिर, **भिस्त** तो क्या था सिपाही।
—रसीलौराज

भिस्तनसीन-सं० पु० [फा० बहिश्त+नशीन] स्वर्गवास, देहावसान।

उ०—पीछै सं० १७१६ पातसाह साजिहांनजी **भिस्तनसीन** हुवा।
—द. दा.

भिस्ती-सं० पु० [फा० बिहिश्ति] १ मुसलमानों के अन्तर्गत एक जाति विशेष जो मसक के द्वारा पानी ढोने का कार्य करती है।

२ उक्त जाति का व्यक्ति, सक्का।

उ०—अेक दिन **भिस्ती** रै तौ कोई कांम थौ, अर भिस्ती री लुगाई पातसाह वास्तै खाणौ लेय आई।—सांई री पलक में खलक

रू० भे०—भिसती।

भिहांणी-सं० स्त्री०—किसान व खेतीहर मजदूरों के खेतों में रहने का मकान या झोंपड़ा।

उ०—एता कमांम लै अगोणी भूमि आया, जाटू की **भिहांणी** दाबलेणियां कहाया।—शि. वं.

भींग—१ देखो 'भींगी' (मह., रू. भे.)

२ देखो भींगौ' (मह., रू. भे.)

भींगणौ, भींगबौ—देखो 'भीजणौ, भीजबौ' (रू. भे.)

भींगणहार, हारौ (हारी), भींगणियौ—वि०।

भींगिओड़ौ, भींगियोड़ौ, भींग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भींगीजणौ, भींगीजबौ—भाव वा०।

भींगियोड़ौ—देखो 'भीजियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भींगियोड़ी)

भींगी-सं० स्त्री०—वर्षा ऋतु के बाद एवं शरद ऋतु के प्रारम्भ में पाया जाने वाला एक कीट विशेष जिसकी गर्दन पर हरे रंग का चमकदार ठोस आवरण (पदार्थ) होता है।

उ०—१ **भींगी** री गळाई उणरौ रीटौ नाक रातौ लाल व्हैगौ।
—फुलवाड़ी

रू० भे०—भिंगी।

मह०—भींग।

भींगोणौ, भींगोबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)

भींगोणहार, हारौ (हारी), भींगोणियौ—वि०।

भींगोयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भींगोईजणौ, भींगोईजबौ—कर्म वा०।

भींगोयोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भींगोयोड़ी)

भींगोवणौ, भींगोवबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)

भींगोवणहार, हारौ (हारी), भींगोवणियौ—वि०।

भींगोविओड़ौ, भींगोवियोड़ौ, भींगोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भींगोवीजणौ, भींगोवीजबौ—कर्म वा०।

भींगोवियोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भींगोवियोड़ी)

भींगौ-सं० पु०—भींगी नामक कीट के गर्दन पर का ठोस हरे रंग का चमकीला आवरण जिसे ग्रामीण स्त्रियां अपने आभूषणों एवं लड़कियां गुड़िया सजाने में काम में लेती हैं।

उ०—ईंढी कवडाळी माथै पर ओडी, छैली अलकावळ मुखड़ै पर छोडी। झणकै झालरियौ झूमरिया झटकै, लूंमीं **भींगां** री खूंणी तळ लटकै।—ऊ. का.

रू० भे०—भिंगौ। मह०—भींग।

भींच-सं० पु० [सं० अभ्यञ्च] १ योद्धा, सुभट।

उ०—१ कीयौ रामांयण लंक कुरखेत भारथ कीयौ, ओथ कोइ पेखियौ **भींच** ओहौ। त्रिनयण तरण नारद पूछै त्रिण्हे, कहौ भगवंत 'भगवंत' केहौ।—दुरसौ आढ़ौ

उ०—२ बड चांपावत 'बलू', कमध 'भाऊ' कूंपावत। अवर **भींच** उमराव, रोस भरिया बहु रावत।—सू. प्र.

रू० भे०—भींछ, भीच।

मह०—भींचरड़।

भींचणौ, भींचबौ—क्रि० स०—१ बलपूर्वक किसी प्राणी या वस्तु को दबाना, संकुचित करना।

ज्यूं—भीड़ में भींचीजणौ।

उ०—१ जोर सूं चिमटी **भींचतां** ई जूं रौ पिदड़कौ निकळग्यौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ वौ जोर सूं नखां नै **भींचिया**। लोई री तूंताड़ियां छूटण लागी।—फुलवाड़ी

२ सम्पुटावस्था में करना, बन्द करना।

उ०—१ मुड़ मुड़ पड़तोड़ी आंखड़ियां मींचै, भूखा मरतोड़ी मूंठड़ियां **भींचै**। सीधी सैणीं सी मैणी सुण माल्है, बैसक पुरबसणौ हसणौ तजि हालै।—ऊ. का.

उ०—२ रेसम री जात कंवळा केस, गुलाबी नख। बंध्योड़ी मूठ्यां में जांणै आखी दुनियां ई **भींच्योड़ी**।—फुलवाड़ी

उ०—३ डोकरी **भींचनै** मूंडौ बंद कर लियौ। नीचला होठ में उण रौ दांत गडग्यौ।—फुलवाड़ी

३ आवेश या क्रोध में दांतों को पीसना।

४ मूर्छावस्था में दांत जुड़ जाना।

५ कृपणता करना, कंजूसी करना।

भींचणहार, हारौ (हारी), भींचणियौ—वि०।

भींचिओड़ौ, भींचियोड़ौ, भींच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भींचीजणौ, भींचीजबौ—कर्म वा० ।
भीजणौ, भीचबौ—रू० भे० ।

भींचरड़–वि०—१ काटने वाला, संहार करने वाला ।
उ०—घुघर घणा कीरति घर घणा, रांम हेक गजबाग रत ।
भुजळक दंत सत्र तरां भींचरड़, 'मेघ' तणौ हसती मसत ।
—महाराज छत्तरसिंघ री गीत
२ देखो 'भींच' (मह., रू. भे.)

भींचियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ बलपूर्वक किसी प्राणी या वस्तु को दबाया हुआ. २ सम्पुटावस्था में किया हुआ, बन्द किया हुआ. ३ आवेश या क्रोध में दांतों को पीसने की अवस्था में हुआ हुवा. ४ मूर्छावस्था में दांतों का जबड़ा जुड़ा हुआ. ५ कृपणता या कंजूसी किया हुआ.
(स्त्री० भींचियोड़ी)

भींछ—देखो 'भींच' (रू. भे.)
उ०—असुरां पूठई एक भड धाया, एक पइठा मेल्हांणि । मारी म्लेछ भींछ बलवंता, बांन छोडाव्यां प्रांणि ।—कां. दे. प्र.

भींज—देखो 'भीज' (रू. भे.)
भींजण—देखो 'भीनण' (रू. भे.)
भींजणौ, भींजबौ—देखो 'भीजणौ, भीजबौ' (रू भे.)
भींजणहार, हारौ (हारी), भींजणियौ—वि० ।
भींजिओड़ौ, भींजियोड़ौ, भींज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भींजीजणौ, भींजीजबौ—भाव वा० ।

भींजिया–सं० पु०—छोटे बच्चों का मूत्र ।
भींजियोड़ौ—देखो 'भीजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भीजियोड़ी)

भींजोणौ, भींजोबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)
भींजोणहार, हारौ (हारी), भींजोणियौ—वि० ।
भींजोयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भींजोईजणौ, भींजोईजबौ—कर्म वा० ।

भींजोयोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भींजोयोड़ी)

भींजावणौ, भींजोवबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)
भींजोवणहार, हारौ (हारी), भींजोवणियौ—वि० ।
भींजोविओड़ौ, भींजोवियोड़ौ, भींजोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भींजोवीजणौ, भींजोवीजबौ—कर्म वा० ।

भींजोवियोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भींजोवियोड़ी)

भींट–सं० स्त्री०—१ छूआछूत का दोष ।
उ०—१ भळे न उतरे भींट, धीठ जद सीस धुणावै । प्रात भाट पादरी, साट पांवडा सुणावै ।—ऊ. का.
उ०—२ खेतर खुलौ रैवै, मिनख पंछी पसु पीवै । आखी जीया जूण, जगत री जळ सूं जीवै । भींट भावना अठै, पळींडौ काची कालर । बळायी अर बांमण भरै, संघट तट पालर ।—दसदेव
२ देखो 'भोट' (रू. भे.)

भींटकौ—देखो 'भीट' (अल्पा., रू. भे.)
भींटणौ, भींटबौ–क्रि० स०—१ अस्पर्श्य वस्तु को स्पर्श करना, छूना । २ पास नहीं फटकना, नितान्त अभाव होना ।
उ०—पालौ पड़तोड़ौ वरुणालय बींटै, भाळौ कड़तोड़ौ करुणा नहि भींटै । रातां मोटी व्है दिन छोटा रोवै, हाथां पावां रा खोटा दिन होवै ।—ऊ. का.
३ देखो 'भिटणौ, भिटबौ' (रू. भे.)
भींटणहार, हारौ (हारी), भींटणियौ—वि० ।
भींटिओड़ौ, भींटियोड़ौ, भींट्योड़ौ–भू० का० कृ० ।
भींटीजणौ, भींटीजबौ—भाव वा०/कर्म वा० ।
भीटणौ, भीटबौ, भेंटणौ, भेंटबौ—रू० भे० ।

भींटारौ—देखो 'भींटोरौ' (रू. भे.)
भींटियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ अस्पर्श्य वस्तु को स्पर्श किया हुआ, छूआ हुआ. २ पास नहीं फटका हुआ, नितान्त अभाव हुवा हुआ. ३ देखो 'भिटियोड़ौ' ।
(स्त्री० भींटियोड़ी)

भींटोरौ–सं० पु० [दे०] झड़बेरी के छोटे ढेरों (भींटों) को एकत्रित कर बनाया हुआ बड़ा ढेर ।
उ०—अेक दिन वौ जंगळियौ हरख सूं खाकां पिदावतौ राजकंवर नै बधाई दी के जैसांणै री सींव सूं पंद्रह कोस उरली बाजू अेक थेह में भींटोरा रै उनमांन माच्योड़ौ सूवर आपरी भूंडण अर चार रेढ़ां साथै मछरां करै है ।—फुलवाड़ी
रू० भे०—बींटोरौ, भींटारौ, भीटहरौ, भीठहरौ, वींटोरौ ।

भींडली—देखो 'भिंडी' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—भार का गधा, कुमार का नाय, विणजारा का वहल, भींडली गाय, चोदुवां का चायक, चुगलूं का मीत, कायरं का कळस, भागलूं की भींत ।—दुरगादत्तजी बारहठ

भींडियौ–वि०—छोटे २ सींगों वाला बैल ।
(स्त्री० भींडी)

भींडी—देखो 'भिंडी' (रू. भे.)
उ०—१ चौमासा रा दिन हा, तौ ई सेठ-सेठांणी साळ री आगळ जड़नै मांय सूवता । भींडी डाक नै चोरां रै आवण री सळवळ सुणी तौ दोनूं ई जांणै जित्ता डरिया ।—फुलवाड़ी
उ०—२ पण बुगला बिना उण रौ जीव को लाग्यौ नीं । वा उठै ई भींडी माथै बैठी री' ।—फुलवाड़ी

भींत—देखो 'भीत' (रू. भे.)

उ०—१ साधां जोड़ै साधड़ा, साधां तोड़ै संग। दरसण दे लेवे दिरब, ग्रांदा भींत अनंग।—ऊ. का.

उ०—२ कनक महल छाजा-कनक, कोट कांगरा भींत। सबहि के इकसारसे, ब्रह्मपुरी की रीत।—गजउद्धार

भींतड़ौ-सं० पु० (ब. व. भींतड़ा) १ गृह, मकान, भवन।

उ०—चेजा चाढ बंध चौरासी, धरिया ग्रहल कहुल गुण धोड़। जाग्रै नहीं दीहड़ै जातै, गीतां तणा भींतड़ा गोड़।

—ग्रनिरुद्धसिंघ गौड़ रौ गीत

२ देखो 'भीत' (मह., रू. भे.)

उ०—१ हुवै ध्रोह ग्राडंग नै मोत वादळ जुंही, सार जट लगो रावत समीमो। उरड़ पड़ियौ मुरड़ 'पातला' ऊपरै, भींतड़ा पुराण जैम 'भीमो'।—भीम गेहलोत रौ गीत

उ०—२ कळी सेत व्रन पाळटै पड़ै कळस, खसै खुंभी हुवै मंडप खांगो। भींतड़ा भाजि ढहि जाइ धरती भिळै, गीतड़ा नह जाय कहै 'गांगो'।—राव गांगो

रू० भे०—भीतड़ौ।

भींतर—देखो 'भीतर' (रू. भे.)

उ०—१ ऐसी पीर बिरह तन भींतर, जागत रैन बिहानी। ऐसा बैद मिलै कोई भेदी, देस बिदेस पिछांनी।—मीरां

उ०—२ इतर में ग्रै सरदार भींतर नूं गया। राजूखां ऊठ साम्हौ ग्राय नै मिल्यो।—सूरेखींवं कांधलोत री वात

उ०—३ गांवां गांवां में गीतेरण गाती, चित्रण ग्रह भींतर चीतेरण चाती। गावड़ डावड़का भावण गुण गाता, गायां गरभाती गोरी गरबाता।—ऊ. का.

भींतहर—देखो 'भीतिहर' (रू. भे.)

वि० [सं० भीत+हर]—भय को हरने वाला, भयहारी।

भींति—१ देखो 'भीत' (रू. भे.)

उ०—घरि घरि कै विसै भींति हींगुलु री गारि सों लीपै छै। फिटक की ईटां सों भांति चुणी छै।—वेलि

२ देखो 'भीतर' (रू. भे.)

भींतियौ-सं० पु०—१ मिट्टी की कच्ची दीवार पर बनी घास-फूस की छोटी झोंपड़ी।

२ खपरैल के मकान में नेव (छाजन) को सहारा देने वाला लकड़ी का डंडा।

रू० भे०—भीतियो।

भींदणौ, भींदबौ—देखो 'बींधणौ, बींधबौ' (रू. भे.)

भींदणहार, हारौ (हारी), भींदणियौ - वि०।

भींदिग्रोड़ौ, भींदियोड़ौ, भींदयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भींदीजणौ, भींदीजबौ—कर्म वा०।

भींदियोड़ौ—देखो 'बींधियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भींदियोड़ी)

भींनणौ, भींनबौ—१ देखो 'भीनणौ भीनबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भीजणौ, भीजबौ' (रू. भे.)

उ०—मूंछां सेडे मांय भरी, चिपके भींनोड़ी। ग्रगली कोई उघड़ी कठण, कमज्या कीनोड़ी।—ऊ. का.

भींनणहार, हारौ (हारी), भींनणियौ—वि०।

भींनिग्रोड़ौ, भींनियोड़ौ, भींन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भींनीजणौ, भींनीजबौ—कर्म वा०।

भींनियोड़ौ—१ देखो 'भीनियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भीजियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री० भींनियोड़ी)

भींनौ—देखो 'भीनौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भींनी)

भींभर-सं० पु०—१ सिर, मस्तक।

२ क्रोध, गुस्सा।

३ वर्षाकालीन एक जन्तु, झींगुर।

रू० भे०—बींभर, भींभरी।

भींभरी—देखो 'भींभर' (३) (रू. भे.)

उ०—भींभरि भमती लीहवइ, स्रावण नी चकचाल। उहां सिर तिठां ग्रमी यमइ, विरुद्धणी ग्रां मनि काल।—मा. कां. प्र.

भींभरणौ, भींभरबौ-क्रि० स०—१ क्रोध करना, गुस्से होना।

२ लाक्षणिक अर्थ में बिखरना।

भींभरणहार, हारौ (हारी), भींभरणियौ—वि०।

भींभरिग्रोड़ौ, भींभरियोड़ौ, भींभरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भींभरीजणौ, भींभरीजबौ—भाव वा०।

बींभरणौ, बींभरबौ, भिंभरणौ, भिंभरबौ, भिंमरणौ, भिंमरबौ, भिभरणौ, भिभरबौ, भिमरणौ, भिमरबौ—रू० भे०।

भींभळ, भींभल-सं० पु०—महोत्सव।

उ०—पथमादि ग्राग वसंत पांचिम राग फाग परीखिये। हित धांम धांम धमाळ सुख हुय उरध भींभळ ईखिये।—रा. रू.

१ देखो 'विभल' (रू. भे.)

२ वि० स्त्री०—मुग्धा।

उ०—मधर वांणि बोलि भींभली, करइ विलास ते प्रेम ग्राकुली। लाया बोल ते बोलइ वयणे, रतिपति रमीइ पूंनमरयणि।

—प्राचीन फागु-संग्रह

(स्त्री० भींभली)

भींमक—देखो 'भीमक' (रू. भे.)

भींमगरु-सं० पु०—भीम का पुत्र।

भींयाड़ौ-सं० पु०—भैंस का चमड़ा।

भींयौ-सं० पु०—१ वह बांस जिस पर जुलाहे लोग करछी की लम्बाई से बढ़ा हुग्रा ताने का सूत लपेट कर रखते हैं।

२ देखो 'भीम' (अल्पा., रू. भे.)

भींव—देखो 'भीम' (रू. भे.)

उ०—१ जरासिंध सिसुपाळ कहां, दूसासरण कहां **भींव**। कैरूंदळ पांडौ कहां, खगां जु पड़ती सीव।—ह. पु. वा.

उ०—२ घटि घटि नारद घटि २ रांम, आनंदरूप सकळ घटि आंन। घटि घटि ध्रू देखौ धरि ध्यांन, घटि घटि **भींव** भरथ उनमांन।—ह. पु. वा.

उ०—३ यौं वीरारस आगळा, भड़ नवकोट दुबाह। भेख 'अरज्जरण' **भींव** भड़, देख अकब्बर साह।—रा. रू.

भींवराज—देखो 'भीमराज' (रू. भे.)

भी—अव्यय [सं० अपि] १ निश्चय रूप से, अवश्य, जरूर।

ज्यूं—मैं भी गांव जाऊंला।

२ अधिक, ज्यादा।

ज्यूं—आ दवाई और भी अच्छी है।

३ औरों के अतिरिक्त, साथ या सिवाय।

उ०—वेद सास्त्र और पुरांण रौ विचार ओहीज है, सिद्ध और मुनि **भी** यूं कैवै है, और इण में संका भी नीं है कै जिण रै ऊपर रांम क्रपा करनै देखै उणनै विसुद्ध संत परा मिळै है।
—कर्नल ठा. श्री श्यामसिंघ राठौड़

४ फिर, पुनः।

उ०—भरइ, पलट्टइ, **भी** भरइ, भी भरि, भी पलटेहि। ढाढी हाथ संदेसड़ा, धरण विललंती देहि।—ढो. मा.

५ धिक्कारात्मक अर्थ में बुरा, निर्लज्ज या अनुपयुक्त।

उ०—ताहरां प्रथीराजजी कह्यौ—फिट रै भादैवाळा! **भी** हांडी चाटी।—नैणसी

६ तक या पर्यन्त।

७ कई स्थान पर केवल जोर देने के लिए विशेषतः किसी में अनुपयुक्तता दिखाई देने पर प्रयुक्त शब्द।

ज्यूं—आप भी कैड़ी बातां करो।

रू० भे०—**'बी'**।

भीअ—देखो 'बी' (रू. भे.)

भीउं—देखो 'भीम' (रू. भे)

भीक—देखो 'भिक्षा' (रू. भे.)

उ०—१ घर धारी घबरायनै, भणिया मांगे **भीक**। नांणौ ले प्रभु नांव रौ, ठरे काळजौ ठीक। ओ३म् हृदयम्।—ऊ. का.

उ०—२ गावै मुख हरजस गोपाळ, मुद्रा छाप तिलक गळ माळ। मांगै **भीक** फिरै दळ मांह, राति पड़ै नै लागै राह।—रा. रू.

भीकग—देखो 'भिक्षुक' (रू. भे.)

उ०—डीडवांण सांभ र सहेतां अजमेरा डंड, नाळनोळ डंडै खंडै उछंडै नीहार। दिली रा नायबां डंडै अडंडां लगावै डंड, **भीकगां** न डंडै भीक न मेली भंडार।—महाराजा अजीतसिंघ रौ गीत

भीकम—सं० पु०—१ वह पुरुष जिसका लिंग कटा हुआ हो। (मा. म.)

२ देखो 'भीस्म' (रू. भे.)

रू० भे०—भीखम, भीसम।

भीकमचांदी—सं० स्त्री०—पुरुष के लिंग को काटने की क्रिया। (म. मा.)

रू० भे०—भीखमचांदी, भीसमचांदी।

भीकमपंचक—देखो 'भीखमपंचक' (रू. भे.)

भीख—देखो 'भिक्षा' (रू. भे.)

उ०—१ सुसीख हेति सीखकै, तमांम तीख आत मै, भले सरीक ईख के, न **भीख** मांगते भमै।—ऊ. का.

उ०—२ नाहर जौ गाजिस नहीं, औ गज बहता ईख। सर सर कमळ सुगंध री, भमर न मांगिस **भीख**।—बां. दा.

उ०—३ मारग री मगती हूं, म्हनै राजा रा मैं'ला सूं कांई लैणौ-दैणौ नीं। **भीख** दैणी है तौ अठै ई दे दौ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'बीख' (रू. भे.)

उ०—इतरी सुण कुंवरसी खुस हाळ सूं लांबी लांबी **भीख** भरी।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ तद नीठ घोड़ौ पाछौ वाळ **भीखां** लगाईयौ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

भीखक, भीखग—देखो 'भिक्षुक' (रू. भे.)

उ०—१ रति अनुकूळ विलास घणां रळियामणां। **भीखग** दीसै इंद्र लिवूं हूं भांमणां।—बां. दा.

उ०—२ 'चंदण' चंदण वीटियौ, अन **भीखग** उरगांह। इण कारण आया नहीं, चारण पंखी तांह।—बां. दा.

भीखण—देखो 'भीसण' (रू. भे.)

उ०—अनमी आंटीला थळिया थळवाळा, विपदा बांटीला बळिया बळ वाळा। दुरजय दीखण में निरभय दिन दूल्हा, **भीखण** दुग्भिख में भुजबळ नह भूला।—ऊ का.

भीखणौ, भीखबौ—क्रि० स० [सं० भिक्ष्+रा० प्र० णौ] भीख मांगना, याचना करना।

उ०—१ पूज चढावि म पत्थरि, मूंकी संभू महेस। भीखारी **भीखण** गयु:, कौ जांणइ कुण देसि।—मा. कां. प्र.

उ०—२ ऊंचा नीचां में आगळ नह ईखै, भागल भकभूरां भेळा भड **भीखै**। मंगण मंगण सूं पद पद रद पीसै, डूमां दैसोतां दळ ओसळ दीसै।—ऊ. का.

भीखणहार, हारौ (हारी), भीखणियौ—वि०।

भीखिओड़ौ, भीखियोड़ौ, भीख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भीखीजणौ, भीखीजबौ—कर्म वा०।

भीखम—१ देखो 'भीस्म' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ अरजण बांण जिसौ आखाड़ै, गज खग भाड़ै गीत गवाड़ै। 'अखौ' 'रिदावत' रावत एहौ, जोखम विरियां भीखम जेहौ।
—रा. रू.

उ०—२ रुखमणीजी कउ भाई रुकमइयौ। सो राजा भीखम सों अरु माता सुं कहै छे। जु मुनै तौ इह अकल उपजै छै।—वेलि

२ देखो 'भीकम' (रू. भे.)

भीखमआठम-सं० स्त्री०यौ० [सं० भीष्म+अष्टमी] माघ शुक्ला अष्टमी।

भीखमक—देखो 'भीस्मक' (रू. भे)

उ०—दक्खिण दिसि देस विदरभति दीपति, पुर दीपति अति कुंदणपुर। राजति एक भीखमक राजा, सिरहर अहि नर असुर सूर।—वेलि

भीखमचांदी—देखो 'भीकमचांदी' (रू. भे.)

भीखमपंचक-सं० स्त्री० [सं० भीष्म+पंचक] कार्तिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा पर्यन्त पांच दिवस।

वि० वि०—वैष्णव सम्प्रदाय वाले इन पांच दिनों को बहुत पवित्र मानते हैं तथा इन दिनों में तीर्थाटन एवं व्रतादि करते हैं।

रू० भे०—पंचभीख, पंचभीखण, पंचभीखम, भीकमपंचक, भीसमपंचक।

भीखारी—देखो 'भिखारी' (रू. भे.)

उ०—भीखारी भमता फिरइ, ऊंन्हा-जिमा कहावि। थांन-विहूणउ तुं थयु, अलवेसर आहां आवि।—मा. कां. प्र.

भीखियोड़ौ-भू० का० कृ०—भीख मांगा हुआ.
(स्त्री० भीखियोड़ी)

भीगणौ. भीगबौ—देखो 'भीजणौ, भीजबौ' (रू. भे.)
भीगणहार, हारौ (हारी), भीगणियौ—वि०।
भीगिओड़ौ, भीगियोड़ौ, भीग्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भीगीजणौ, भीगीजबौ—भाव वा०।

भीगियोड़ौ—देखो 'भीजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भीगियोड़ी)

भीगोणौ, भीगोबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)
भीगोणहार, हारौ (हारी), भीगोणियौ—वि०।
भीगोयोड़ौ—भू० का० कृ०।
भीगोईजणौ, भीगोईजबौ—कर्म वा०।

भीगोयोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भीगोयोड़ी)

भीगोरारि-सं० पु०—हाथी, गज। (नां. मा.)

भीगोवणौ, भीगोवबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)
भीगोवणहार, हारौ (हारी), भीगोवणियौ—वि०।
भीगोविओड़ौ, भीगोवियोड़ौ, भीगोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भीगोवीजणौ, भीगोवीजबौ—कर्म वा०।

भीड़-सं० स्त्री०—समूह, जमघट।

उ०—१ ताहरां साह नूं लेनै ठाकुरां सौठाकुर द्वारै आयौ। उठै लोकां री भीड़, सौ ठाकुर द्वारै जाय सकीया नहीं भीतर।
—ठकुरै साह री वात

उ०—२ पाड़ै धजां चम्मरां सु पक्खरां थंडमां पाड़ै, नरां गिरां पाड़ै करां ऊधड़ां निराट। पाड़ै थूळ बंगाळां अड़ाळां दळां भूळ पाड़ै, साहां बेहूं सीस पाड़ै भीड़ फाड़ै बाट।
—राव सत्रसाळ रौ गीत

क्रि० प्र०—करणी, लागणी, होणी।

मुहा०—भीड़ छंटणी, भीड़ हटणी=समूह का तितर-बितर होना। भीड़ हटाणी=समूह को तितर-बितर करना।

२ संकट, आपत्ति, मुसीबत।

उ०—१ यूं करतां कितरै एकै दिनै एक साहूकार रै तोटौ आयौ, सबळी भीड़ पड़ी।—बांधी लिखमी री वात

उ०—२ जब जब भीड़ पड़ी भक्तन पर, आपहि फरण पधारै। मीरां कै प्रभु गिरधरनागर, हरि भक्तां नै त्यारै।—मीरां

क्रि० प्र०—पड़णी।

३ मदद, सहायता।

उ०—१ अनियै अर अंग्रेजन्ट आहुव, घुरवाया रव तोप घमीड़। पती नीमाज आहुवै पूगौ, भारत री खींचावण भीड़।
—मोहबत बारहठ

उ०—२ तरै जसोधर बांमण बोलियौ—महाराजा मांरा सांसण राजा महेसदास गोहल खोस लिया छै तिण सूं मे बोहत परेसान छां नै राज मोटा खत्री छौ, गऊ ब्रांमण रा प्रतपाळक छौ, सौ राज कनै पुकारु आया छां। तरै सीहोजी दिलासा कीधी नै कयौ, थांहरी भीड़ करसां।—रा. वं. वि.

उ०—३ चाप करां अप रांम चढ़े, मांझ रजी तद भांण मढ़ै। खोहण के असुरांण खपै, पंख सिवा पळ खाय ध्रपै। रे नित सौ जन भीड़ रहै, कूण जनां दुख देण कहै।—र. ज. प्र.

क्रि० प्र०—करणी, खींचणी, बोलणी, आणी।

४ किसी वस्तु का बाहुल्य या अधिकता।

ज्यूं—आजकल कांम री बौत भीड़ पड़ै है।

६ भिड़ने की क्रिया या भाव।

७ लोहार एवं बढ़ई का एक औजार विशेष जिससे वे किसी पदार्थ को मजबूती से पकड़ते हैं।

८ बैलगाड़ी में आगे की ओर छोटे व बड़े तख्ते के बीच का रिक्त स्थान।

रू० भे०—बीड़, भीयड़, भीर, भीरि, भीरी, भीड़ौ, भीरौ।

भीड़णी–सं० स्त्री०—घोड़ों के चार-जामा कसने की क्रिया या भाव।

उ०—पड़ै भगांण देस देस, अग्रवांण पीड़णी। सलाह पाछलै पुरै, मिटी तुरेस **भीड़णी**।—रा. रू.

भीड़णौ, भीड़बौ–क्रि० स०—१ कवच पहनना।

उ०—१ हुई मुरद्धर ऊपर हल्लां, महा अप्रबळ जोर मुगल्लां। पेखं खड़ा सभ लक्खां खूरां, **भीड़** बगत्तर अंगां भूरां।—रा. रू.

उ०—२ सजै ओपरा टोप सोभा सिवाळी. जिकै **भीड़ियां** दंस नागोद जाळी। सबाहुत्र ऊरुत्र जंघात्र संगी, चहै वंसचील्हा रहै एक रंगी।—वं. भा.

२ चिपकाना।

उ०—हिया सूं **भीड़** होको हमें, राज भलेंई राख लौ। आप सूं अरज इतरी अवस, चुपके पांणी चाख लौ।—ऊ. का.

३ कंजूसी करना।

४ शरीर के किन्हीं अंगों को परस्पर मिलाना।

५ बन्द करना।

उ०—१ जग थित झूठी जांणणी, मूठी **भीड़** म रक्ख। माया मेवौ माडुवां, चंगा चाखव चक्ख।—बां. दा.

६ बाहु-पाश में लेना, आलिंगन करना।

७ शस्त्र धारण करना, या सुसज्जित होना।

उ०—विसर रा नगारा नाद वाजिया। आ बात सुणतांई सादूळा सीह ज्यूं गाजिया सिलैह **भीड़िया**।—पनां

भीड़णहार, हारौ (हारी), **भीड़णियौ**—वि०।

भीड़िग्रोड़ौ, भीड़ियोड़ौ, भीड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

भीड़ीजणौ, भीड़ीजबौ—कर्म वा०।

भीड़वणौ, भीड़वबौ, भीडणौ, भीडबौ—रू० भे०।

भीड़वणौ, भीड़वबौ—देखो 'भीड़णौ, भीड़बौ' (रू. भे.)

उ०—पिछांण लियौ निज बंधव पूत, हळी भर प्रेम झरीखय हूंत। पड़ै चख नीर रिलै प्रथमीज, भूवा उर **भीड़व** लीन भतीज।—पा. प्र.

भीड़ाणौ, भीड़ाबौ—देखो 'भिड़ाणौ, भिड़ाबौ' (रू. भे.)

भीड़ाणहार, हारौ (हारी), **भीड़ाणियौ**—वि०।

भीड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०

भीड़ाईजणौ, भीड़ाईजबौ—कर्म वा०।

भीड़ायौड़ौ—देखो 'भिड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भीड़ायोड़ी)

भीड़ियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ कवच पहना हुआ. २ चिपकाया हुआ. ३ कंजूसी किया हुआ. ४ शरीर के अंगों को परस्पर मिलाया हुआ. ५ बन्द किया हुआ. ६ बाहुपाश में लिया हुआ. ७ शस्त्र धारण किया हुआ, सुसज्जित हुवा हुआ.

८ देखो 'भिड़ियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री० भीड़ियोड़ी)

भीड़ि, भीड़ी, भीड़ू–सं० पु०—सहायक, मददगार।

उ०—पीहर पतळां रा सैंणा रा प्यारा, तारक तूटां रा नैंणा रा तारा। सीरी सिटियांरा सूल्हां रा सारा, **भीड़ी** भूखां रा फूलां रा भारा।—ऊ. का.

२ मित्र, दोस्त।

उ०—१ जै औ कूख रौ सूरज उण रै अंतस रा **भीड़ू** रौ अंस व्हैतौ तौ काळजा में आ सूळ क्यूं खटकती?—फुलवाड़ी

३ खेल में अपने पक्ष का खिलाड़ी।

उ०—थोड़ी ताळ ढबनै मासी कैं'वण लागी—वेटी, ऐ तो संजोग रा खेल है पांती आया **भीड़ुवां** नै लेय कबड्डी रौ पाळौ जीतणौ है। **भीड़ी** बदळणा आपां रै सारै कठै! थनै जकौ भीड़ी मिळियौ है वौ अबै छुटेला कोनीं।—फुलवाड़ी

४ रक्षक।

उ०—लसै ओज पूरै तिकै फौज लाडां, गऊ बिप्र **भीड़ू** दया लाज गाडां।—वं. भा.

५ संग-साथी, (पति)

उ०—जैड़ौ-तैडौ ई **भीड़ू** थारै पांती आयौ, उण नै ई साचा मन सूं अंगेज। इण साची प्रीत रै आसरै ई थारै म्हारै भाग रौ बदळौ लिरीजैला।—फुलवाड़ी

[सं० भीरु] कायर, डरपोक।

रू० भे०—भीडी, भीड़ू, भीयड, भीर, भीरि, भीरी, भीरु, भीरू।

भीड़ौ–सं० पु०—१ बैंगन।

२ देखो 'भीड़' (मह., रू भे.)

भीच—देखो 'भींच' (रू. भे.)

उ०—१ घण अम्हसम्हा सिलहबंध घाटां,वजि साबळां धमक अवि-याटां। अंग भिदि पड़ै एण अहिनांणौं, जुड़ि जांमवंत **भीच** लंक जांणौं।—सू. प्र.

उ०—२ जीता **भीच** अजीत रा, 'ईंदै' पाई हार। त्रास परक्खै देस री, आस तजी तिण वार।—रा. रू.

भीचड़ौ—देखो 'भींच' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ भला पधारौ **भीचड़ा**, गरक सिलह मै गात। कैहर वाळा कळह री, वळता कीजौ वात।—बां. दा.

उ०—२ सांईं एहा **भीचड़ा**, मोलि महूंगे वासि, ज्यां आछन्नां दूरि भौ, दूरि थकां भौ पासि।—हा. झा.

भीचणौ, भीचबौ—देखो 'भींचणौ, भींचबौ' (रू. भे.)

भीचणहार, हारौ (हारी), **भीचणियौ**—वि०।

भीचिओड़ौ, भीचियोड़ौ, भीच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भीचीजणौ, भीचीजबौ—कर्म वा० ।

भीचियोड़ौ—देखो 'भींचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भीचियोड़ी)

भीचरड़–वि०—१ संहारक, विध्वस करने वाला।
उ०—घुघर घरण कीरति घर घण, रांम हेक गजबाग रत। भुजळक दंत सत्र तरां **भीचरड़**, मेघ तणों हसती मसत।
—महाराजा छत्रसिंघ री गीत

२ देखो 'भीच' (मह., रू. भे.)

भीच्छा—देखो 'भिक्षा' (रू. भे.)
उ०—स्वइच्छा दिच्छा तें इतर, नहिं इच्छा सद सुखी। अभै दिच्छा दीजै समुखमुख **भीच्छा** उन मुखी।—ऊ. का.

भीछ—देखो 'भीच' (रू. भे.)
उ०—आंवळा **भीछ** कड़छै प्रगट ऊससै, चाक चकरी फिरै नाक ठड़हड़ चिसै। आग धकि लोयणां रूप वणियौ असै, 'केहरी' तणौ किण सीस आवध कसै।—जालमसिंघ मेड़तिया री गीत

भीज–सं० स्त्री०—भीजने की क्रिया या भाव।
उ०—**भीज** रीझ झेली भली, पावस पांणी पै'ला। मतवाळा मनवार री, छाक म ठेलौ छैल।—बां. दा.
रू० भे०—भींज।

भीजण—देखो 'भीनण' (रू. भे.)

भीजणौ, भीजबौ–क्रि० अ० [सं० अभ्यंज] १ गीला या आर्द्र होना।
उ०—१ केहर तणी कळाइयां, भणणाहट भमरांह। **भीजी** गज सिर भांजता, मद सौरंभ डमरांह।—बां. दा.
उ०—२ जद हाडौ बोल्यौ—बा'रै पांणी में **भीजूं** म्हारी बाई, आघौ उघाड़, नातर थारौ वीरौ मर जासी।—फुलवाड़ी
उ०—३ लागी मोहि रांम खुमारी हो। रिमझिम बरसै मेहड़ा, **भीजै** तन सारी हो। चहुं दिस चमकै दांमणी, गरजै घन भारी हो।
—मीरां

उ०—४ पेच सुरंगी पाघ रा, ढांकै मत घर ढाल। काछी चढ आछी कहूं, हंजा **भीजण** हाल—बां. दा.
२ दयार्द्र होना, द्रवीभूत होना।
३ लाक्षणिक अर्थ में किसी तत्व का किसी के अन्दर पहुंच कर व्याप्त होना, एक रस होना।
उ०—१ रीझै सांभळ राग, **भीजै** रस नह भैचकै। नैड़ो आवै नाग, पकड़ीजै छाबड़ पड़ै।—बां दा.
४ किसी वस्तु का पानी या किसी तरल पदार्थ में भीग कर फूल जाना।
ज्यूं—चिणा भीजणा, मोठ भीजणा।
[सं० भिद्य] ५ भेदन करना, छेदना।
उ०—वेउ खेलइं सरसी तनि, सीतलि लाखारांमि। नीरंगु नेमि न भीजइ, खीजइ नारी नांमि।—जयसेखर सूरि
भीजणहार, हारौ (हारी), भीजणियौ—वि०।
भीजिओड़ौ, भीजियोड़ौ, भीज्यौड़ौ—भू० का० कृ०।
भीजीजणौ, भीजीजबौ—भाव वा०।
भींगणौ, भींगबौ, भींजणौ भींजबौ, भींनणौ, भींनबौ, भीगणौ, भीगबौ, भीवणौ भीवबौ—रू० भे०।

भीजियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ गीला या आर्द्र हुवा हुआ. २ दयार्द्र हुवा हुआ, द्रवीभूत हुवा हुआ. ३ लाक्षणिक अर्थ में किसी तत्व का किसी के अन्दर पहुंच कर व्याप्त हुवा हुआ, एक रस हुवा हुआ. ४ कोई पदार्थ पानी या किसी तरल पदार्थ में भीगकर फूला हुआ. ५ भेदा हुआ, छिद्रित।
६ देखो 'भीनियोड़ौ (रू. भे.)
(स्त्री० भीजियोड़ी)

भीजोड़ौ—देखो 'भीजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भीजोड़ी)

भीजोणौ, भीजोबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)
भीजोणहार, हारौ (हारी), भीजोणियौ—वि०।
भीजोयोड़ौ—भू० का० कृ०।
भीजोईजणौ, भीजोईजबौ—कर्म वा०।

भीजोवणौ, भीजोवबौ—देखो 'भिजोणौ, भिजोबौ' (रू. भे.)
भीजोवणहार, हारौ (हारी), भीजोवणियौ—वि०।
भीजोविओड़ौ, भीजोवियोड़ौ भीजोव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भीजोवीजणौ, भीजोवीजबौ—कर्म वा०।

भीजोवियोड़ौ—देखो 'भिजोयोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भीजोवियोड़ी)

भीट–स० स्त्री०—१ झड़-बेरी के पत्तों सहित कटे हुए सूखे डंठलों व कांटों का समूह।
२ छोटे २ केर वृक्ष।
उ०—कैरां री **भीटां** गांव दोळी घणी थी तिकांरो मोरचौ लियौ।
—सूरेखींवे कांधळोत री बात
३ देखो 'भींट' (रू. भे.)
रू० भे०—भींट, भीठ।
अल्पा०—भींटकियौ, भींटकौ, भीटकियौ, भीठकियौ, भीठकौ।
मह० भीटड़।

भीटकियौ—देखो 'भीट' (अल्पा., रू. भे.)

भीटड़—देखो 'भीट' (मह, रू. भे.)

भीटणौ, भीटबौ—देखो 'भींटणौ, भींटबौ' (रू. भे.)
उ०—दादू यहु मन तीनां लोक में, अरस परस सब होइ। देही की रक्षा करै, हम जनि **भीटे** कोइ।—दादूबांणी
भीटणहार, हारौ (हारी), भीटणियौ—वि०।

भीटिग्रोड़ौ, भीटियोड़ौ, भीटचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भीटीजणौ, **भीटीजबौ**—भाव वा० ।

भीटहरौ—देखो 'भींटोरो' (रू. भे.)
उ०—तरै कटक री पाखती **भीटहरा** चार ग्रांग राखिया था, भाटियां रौ साथ नेड़ौ ग्रायौ तरै **भीटहरा** लगाय दिया । रात रौ चांनणौ हुवौ ।—नैणसी

भीटियोड़ौ—देखो 'भींटियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भीटियोड़ी)

भीठ–सं० पु०—१ युद्ध, संग्राम, लडाई ।
उ०—कुरवंसी कर चाळां, रच रोसाळां, **भीठ** वडाळां भोपाळां । रिळिया रिणताळां, कट किरमाळां सीस भुजाळां सूंडाळां ।
—भगतमाळ
२ ग्रनेक तलवारों का एक साथ प्रहार होने की क्रिया, प्रहार ।
उ०—इम कहि नै ग्ररजन फौज मांहि लोह भेळियौ । ग्ररजन माथै तरवारियां **भीठ** पड़ै छै ।—ग्ररजन हमीर भीमोतरी वात
३ भीड़ ।
उ०—नळ-काय सिर भूण, खूड़िया भुज दौ भारी । पूठी-पेट सपीठ, नीमचक नाड़ां सारी । सूरत मूरत चोक, सदाव्रत सरस पावणौ । **भीड़ां** वाजै **भीठ**, नीर परसाद लावणौ ।—दसदेव
४ प्रहार, वार ।
उ०—मत धड़कौ भाखै 'मदू' से सायब सारै । राठोड़ां रिण रीठ-स्यां, देय भीठ ग्रफारै—वी. मा.
५ प्रहारों से उत्पन्न ध्वनि ।
६ देखो 'भीट' (रू. भे.)

भीठकियौ, भीठकौ—देखो 'भीट' (ग्रल्पा , रू. भे.)
उ०—सिर सेलां ज्यूं सूळ, ग्रमीरां दोरी डाढी । गरीबां रै ना गडै, पांव जूत्यां विन वाढी । **भीठकिया** भरणाय, घणेरी उंवार घालै । तीजै दिन झड़काय, लादड़ी भर ले हालै ।—दसदेव

भीठहरौ—देखो 'भींटोरौ' (रू. भे.)
उ०—इतरै बडा **भीठहरा** ग्रागै बळ रहीया छै, तिकांरी झळ ग्राकास लागी छै ।—मांडणसी कूंपावत री वात

भीठौ–सं० पु०—कपटी मित्र ।

भीड—देखो 'भीड़' (रू. भे)
उ०—१ सुरजन न्रप रण-मस्त सह, भोज कुमारक **भीड** । भांमी ग्रकबर भेजिया, नांमी प्रतिभट नीड ।—वं. भा.
उ०—२ सबळ **भीड** संभळी, झूंझ ग्रहियी झूंझारै । सांम कांम हणमंत, कमध कुळ मग संभारै ।—गु. रू. बं.

भीडणौ, भीडबौ—१ देखो 'भीड़णौ, भीड़बौ' (रू. भे.)
उ०—१ ग्रबला ग्रवलइ ग्रक्षरइ, पांमीजइ परतक्ष । बि कर **भीडी** बाथ दिइ, पणि ते बंधन लक्ष ।—मा. कां. प्र.
उ०—२ 'कांमकदला' ! कही कही, ऊठि ग्रालिंगन देय । सबल भुजा **भीडी** करी, पुढइ पच्छर लेय ।—मा. कां. प्र.
उ०—३ बाहुलता बिवडी वली, **भीडणि** भागु विप्र । कुबुधि ग्रे कायर थई, छांडी चालिउ क्षिप्र ।—मा. कां. प्र.
उ०—४ 'माधव' ! मुझ मांहि करी, खरी विधाता खोडि । ग्रालिंगन ग्रति **भीडती**, जउ कर सरजत कोडि ।—मा. कां. प्र.
उ०—५ प्रीतम रइ कारण पारवती, राखीयउ जांणे ग्रांम रस । **भीडीयउ** उर ऊपर कांचू भर, कसणा रेसम तणा कस ।
—महादेव पारबती री वेलि
उ०—६ रुदयां **भीडी** रीझवी, ग्रचलि ग्रांसू लूहि । बांह करी गाल गहि बरिउ, माधव तिजतु मोहि ।—मा. कां. प्र.

भीडी, भीडू—देखो 'भीड़ी' (रू. भे)
उ०—ग्रौ तौ ग्रलौकिक ग्रौर ही रूप हो मुनिवरजी । कांईं भगतां रौ **भीडू** ग्राप ही ग्रागयौ हो राज ।—गी. रां.

भीत–वि० [सं० भीत] भयभीत, डरा हुग्रा ।
उ०—ग्रठी बीरमदेव नूं जवनां रा मारिया जांणि ग्रांम सेत्रावा हूं चलाइ राठौड गोगै बीरमदेवोत ग्रापरा बाप रा बाढणहार नूं बिसारि बिनां ही ग्रपराध भाजड़ में **भीत** सकट रै हेठै सपत्नीक सूता जोइया दला नूं जाइ हणियौ ।—वं. भा.
सं० स्त्री० [सं० भीति] भय, डर, ग्रातंक ।
उ०—प्रगलभ कंठ पेल देत, कंठ कंठिराव कौ, दुहत्थ, हत्थ ठेल देत, हत्थलैं प्रदाव कौ । उन्हें न **भीत** ग्रौर ग्रभीत व्है न त्यां ग्रगै, भगै न वाह जांन दै, न बाह नाव रै भगै ।—ऊ. का.
सं० स्त्री० [सं० भित्ति] दीवार ।
उ०—१ ग्रासिफखां ग्रकबर कहैं, **भीतां** भुरजां जोय । बांकौ गढ़ भड़ बांकड़ा, हलौ कियां की होय ।—बां. दा.
उ०—२ चौरंग दंत गयंदा चडंत, पाखांण **भीत** ग्रांठू पडंत । धूनौ विसाळ चौडौ धडेय, ग्रांणां गुण घातै ग्रापडेय ।—गु. रू. बं.
रू० भे०—भींत, भींति, भीति ।
ग्रल्पा०—भींतड़ौ, भीतड़ौ ।

भीतड़ौ—१ देखो 'भींतड़ौ' (रू. भे.)
उ०—कोटड़ियौ 'वाघौ' कठै, 'ग्रासौ' डाभी ग्राज । गवरीजै जस गीतड़ा, गया **भीतड़ा** भाज ।—बां. दा.

भीतर–ग्रव्य० [सं० ग्रभ्यंतर] १ ग्रन्दर, में ।
उ०—१ डोढ़ौ पड़दौ देखियै, सूमां घरै सिवाय । **भीतर** जम किंकर बिना, जीव मात्र नहं जाय ।—बां. दा.
उ० – २ यळ ऊपर लोभी ग्रपत. नंह राखै निज नांम । यळ **भीतर** खाटे ग्रधम, दाटै राखै दांम ।—बां. दा.
उ०—३ दांन वणौ उत्तर दियै, हूं तै बित सत हार । मुंहडौ लै उण मिनख रौ, मोभर **भीतर** डार ।—बां. दा.

उ०—४ अई चीतगढ ओर सूं, तूं गांजियौ न जाय। **भीतर** ज्यां मन भावणी, बाहर जिका बलाय।—बां. दा.

२ गुप्त रूप से, चुपके।

उ०—जग में कहै जोगी **भीतर** भोगी, सोगी सम सीवंदा है। महिलानै मोगी गूंगी गोगी, रोगी जिम रोवंदा है।—ऊ. का.

सं० पु०—१ अन्तःपुर, रनिवास।

उ०—तद सेतरांम दरबार मांय आय बैठो। ताहरां दरबारी ईयां री पोसाख अर बळ देख अर **भीतर** जाय राजा सूं अरज गुदराई।
—नैणसी

२ अन्दर वाला भाग।

रू० भे०—भितर, भितरि, भींतर, भींति, भीतरि।

भीतरलौ—वि० [सं० अभ्यंतर+रा० प्र० लौ] (स्त्री० भीरतली)

१ भीतर का, अन्दर का।

उ०—१ पछै रांणी कूंभौ, रिणमलजी मांडवगढ ऊपर आया। ताहरां **भीतरलां** पण सांको राखियौ।—नैणसी

उ०—२ सो उवै भाग केई **भीतरली** खिड़की में बड़ गया।
—पदमसिंह री वात

२ आपस का, पारस्परिक।

उ०—**भीतरलां** फूटां भडां, कै खूंटा सांमांन। इण गढ़ में होसी अमल, खम तूं आसिफखांन।—बां. दा.

भीतरवाड़ियौ—सं० पु०—१ राजमहल के भीतर का नौकर।

उ०—राजारचां दास्यां सुं प्रीति न करै। राजा रा **भीतरवाड़ियां** सुं भाईयप मतां करै। टटपूंजीयै वांणीये सुं प्रीत न करे।
—बाप री सीख री वात

२ देखो 'भीतरियौ' (रू. भे.)

भीतरि—१ देखो 'भीतर' (रू. भे.)

उ०—तुंही ज सज्जण मित्त तूं, प्रीतम तूं परिवांण। हियड़इ **भीतरि** तूं वसइ, भावइं जांण म जांण।—ढो. मा.

२ देखो 'भीतरी' (रू. भे.)

उ०—पहिलुं जंबुदीव वखांणउं, जोअण लाख प्रमांण। भरहखंड तसु **भीतरि** जांणउं, नांनाविह गुण ठांण।—हीराणंदसूरि

भीतरियौ—सं० पु० [सं० अभ्यन्तर+रा० प्र० यौ] १ मंदिर के भीतर मूर्ति के पास रहने वाला वल्लभीय ठाकुर का प्रधान पुजारी।

२ देखो 'भीतरवाड़ियौ' (रू. भे.)

भीतरी—वि०—१ भीतर का, अन्दर का।

२ गुप्त, गोपनीय।

३ अभिन्न, घनिष्ठ।

४ सच्चा।

ज्यूं—मैं उणनै भीतरी मन सूं चावूं हूं।

२ देखो 'भीतरि' (रू. भे.)

भीतरीटांग—सं० स्त्री० यौ०—कुश्ती का एक पेंच जिसमें खिलाड़ी विपक्षी को, जब वह पीठ पर होता है, भीतर ही से टांग मारकर गिरा देता है।

भीति—सं० स्त्री० [सं०] १ भय, डर, आतंक।

उ०—चैंण दैंण जसु चरण, ईति अति **भीति** निवारण। लील लाछि लख गांन, विमलकीरति वधारण।—ध. व. ग्रं.

२ देखो 'भीत' (रू. भे.)

उ०—१ गहर भै **भीति** त्रसणा नदी तखि बहै, अनंत आगै बह्मा मित नांहीं। साध आकास में अटकि उलटा चढ्या, प्रांण मन सुरति आकास मांही।—ह. पु. वा.

उ०—२ जिसियां कुळ तीणइं मानि वचन, जिसी **भीति** तिसा चित्रांम, जिसी आक्रति तिसा गुण।—व. स.

३ देखो 'भांति' (रू. भे.)

रू० भे०—भीत, भैंत।

भीतिकर, **भीतिकारी**—वि० यौ० [सं० भीतिः+कर] भयानक, डरावना।

भीतियौ—देखो 'भींतियौ' (रू. भे.)

भीतिहर—सं० पु० यौ० [सं० भित्तिः+घर] दुर्ग, किला।

उ०—अेवडउ सांड सींघण-कउ घर, जिकइ गागुरणि सारीखउ **भीतिहर**। त्या अेक पुरुख का पछीपा बाहिरउ जांण्यइ वीण्यइ हुवइ छइ ताटीहर।—अ० वचनिका

रू० भे०—भींतहर।

भीनउ—देखो 'भीनौ' (रू. भे.)

उ०—१ तूं उपजइ न खपइ नहु आइस, कुळ न कहइ कहियइ उकळीण। **भीनउ** नादि विनोद महा भडि, व्रसभ चढइ तइ वावइ वीण।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वीनवी अपति न वीनउ **भीनउ** नेमि न जांमु, सत्यभांमा रीसारुण दारुण बोलइ तांमु।—जयसेखर सूरि

भीनण—सं० पु०—१ सूखी रोटियों को छाछ (मट्ठा) में भिगोने की क्रिया।

२ उक्त प्रकार से भीगा हुआ खाद्य पदार्थ।

रू० भे०—भींजण, भीजण।

भीनणौ भीनबौ—क्रि० अ०—१ लाक्षणिक अर्थ में किसी तत्व का किसी के भीतरी भागों में पहुंच कर अच्छी तरह व्याप्त होना, सम्मिलित होना।

२ परिपूर्ण होना, पूर्ण होना।

उ०—अपनी कबांन आलमसा हाथ दीनी, डाढी नोस हाथ दीनौ रार रोस **भीनी**।—रा. रू.

उ०—२ प्रथम नेह **भीनौ** महाक्रोध भीनौ पछै, लाभ चमरी समर झोक लागै। रायकंवरी बरी जेण बागै रसिक, बरी घड़ कंवारी तेण बागै।—बां. दा.

३ अनुरक्त होना।

४ युक्त होना।
५ देखो 'भीजणौ, भीजबौ' (रू. भे.)
उ०—आलीजा अलबेलिया, हो हुंजा हुसनांक। भीनोड़ा रसिया भमर, छैल पियौ मद छाक।—बां. दा.
भीनणहार, हारौ (हारी), भीनणियौ—वि०।
भीनिओड़ो, भीनियोड़ौ, भीन्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भीनीजणौ, भीनीजबौ—भाव वा०; कर्म वा०।

भीनरवाई–सं० स्त्री०—आर्द्र भूमि, भीगी पृथ्वी।

भीनरवाड़ौ–सं० पु०—भीगा भू-भाग।

भीनियोड़ौ, भीनोड़ौ–भू० का० कृ०—१ किसी तत्त्व का किसी के अंदर पहुंच कर अच्छी तरह व्याप्त हुआ, सम्मिलित हुवा हुआ. (लाक्षणिक अर्थ में) २ अनुरक्त हुवा हुआ. ३ युक्त हुवा हुआ, सहित.
४ देखो 'भीजियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भीनियोड़ी, भीनोड़ी)

भीनोटौ–सं० पु०—भीगा या आर्द्र स्थान।

भीनौ–वि० [सं० भीनी] १ अनुरक्त।
उ०—१ वर कन्यां बिन्है घातिया वांनइ, बेइ वारां वरसां रा बाळ। भमर ज्युंही केतकी भीना, भोळी चक्रवरती भूवाळ।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ ऊमा 'अचळो' मोहियौ, ज्यूं चंदण भूयंग। रात-दिवस भीनो रहै भमरो सुमनां रंग।—अज्ञात
उ०—३ भेख लिया जद दुख सुख त्यागा, रांम नांम रंग भीना। घट घट में साहब सत् जांण्या, दुरमत दूरी कीना।
—स्री सुखरांमजी महाराज
२ युक्त, सहित।
उ०—१ जोधपुर द्रुग्ग जोधपुरौ, कळा तप तेज कळकळै। भाद्रवै मास भीनै सिहरि, किरि भासंकर झळहळै।—गु. रू. बं.
उ०—२ सु जैत ताहरां ही ज सिकार रम नै लू रो झकोळियौ थको घणौ तावड़ै सौ बैमार थको आय नै खसखानै मांहै आय पोढियो। सु खसखांनै बाहरा घणी रो छड़काव कीयौ। चंदन रौ लेपन कर केसरियां भीनौ दुपटो ओढ नै पोढियौ छै।
—जेतमाल पुमार री वात
उ०—३ सज देखी सिरदार की, धज सूरत चित धार। मुळकी उण मोसर मही, रंग भीनी रिझवार।—पनां
३ परिपूर्ण, पूर्ण, भरा हुआ।
उ०—बाला रस भीना बचन, सज भीना तन साज। चंदा वदनी चतुर रा लोयण भीना लाज।—अज्ञात
४ भीगा हुआ, गीला, आर्द्र।
उ०—१ खेड़ा गांमां री गळती जे खावै, आधा दामां में बळती दे आवै। बिलखी अंजल बिन धावै बेराजी, भीनी बाफणियां आवै घर भाजी।—ऊ. का.
उ०—२ खोळा टंकियोड़ा गळ में खूंगाळी, जळ जुत ठोडी पर टिमकी जंघाळी। भीनै कांचळियै घम घम डग भरती, धसळां देतोडी धमधम पग धरती।—ऊ. का.
५ मंद, धीमा।
ज्यूं—भीनी-भीनी सुगंध।
६ लाक्षणिक अर्थ में, मस्त, मतवाला।
ज्यूं—नसा में भीनो है।
७ हल्के काले रंग का मनुष्य।
८ ओत-प्रोत, सना हुआ।
यौ०—मावौ-भीनौ।
रू० भे०—भींनौ, भीनउ।

भीफरणौ, भीफरबौ—देखो 'विफरणौ, विफरबौ' (रू. भे.)
उ०—खदां उरड़ तोड़तौ रूकां, चळ चळ घतिया लोवळ चाव। भीफर सरळ भांजिया खग-बळ, सींधुर फबियो 'करण' सुजाव।
—द. दा.

भीभळ—देखो 'विभळ' (रू. भे.)
उ०—१ नवसात् ससि वदन, अरक क्रांइतक ऊजळ। डसण हीर किर ललित, मुक्ख लोयणां भीभळ।—गु. रू. बं.
उ०—२ साहिब कछछ न जाइयइ, तिहां परेरउ द्रंग। भीभळ नयण सुवंक धण, भूलउ जाइसि संग।—ढो. मा.
२ देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

भीभलणौ, भीभलबौ–क्रि० अ०—गर्म होना, उष्ण होना।
उ०—अथ वरसा, आविउ आसाढ, अंतरंग संबाढ, काठईइ लोह, धाम तणउ निरोह, छासि खाटी, वीयाइं माटी, पांणी भीभलइं, गुडउ गूजरीवरण सांभलीइं।—व. स.
भीभलणहार, हारौ (हारी), भीभलणियौ—वि०।
भीभलिओड़ौ, भीभलियोड़ौ, भीभल्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भीभलीजणौ, भीभलीजबौ—भाव वा०।

भीभलियोड़ौ–भू० का० कृ०—गर्म हुवा हुआ, उष्णता प्राप्त।
(स्त्री० भीभलियोड़ी)

भीभू–सं० पु० [सं० भीम=भयंकर] सिंह, शेर।
उ०—भीभू लंक मुराळ गति, पिक सुर जेही बांण। ढोला मंदिर माळवी, जेहा हंस निवांण।—अज्ञात

भीम–सं० पु० [सं०] १ शिव, महादेव।
उ०—गन भूत-प्रेत पिसाच कौतुक अंत तंतु जटा जुटी। जय व्योम केस महेस त्रंबक भीम भूतप धूर्जटी।—ला. रा.
२ विष्णु
३ वायु के संयोग से कुन्ती के गर्भ से उत्पन्न कुरुवंशीय पांडु राजा का एक पुत्र। (अ. मा., ह. नां. मा.)

४ एक पुरुवंशीय राजा जो वायु पुराण के अनुसार महावीर्य राजा का पुत्र था।
५ एक राक्षस, जो लंका नरेश रावण का मित्र था।
६ एक कुरुवंशीय राजा, जो मत्स्य पुराण के अनुसार रुचिर राजा का पुत्र था।
७ एक देवगंधर्व जो कश्यप एवं मुनि का पुत्र था।
८ अग्नि जो पांचजन्य अथवा तप नामक अग्नि का पुत्र था।
९ तीसरे मरुद्गणों में से एक।
१० विकुंठ देवों में से एक।
११ एकादश रुद्रों में से एक।
१२ एक पुरुवंशीय राजा, जो इलिन एवं रथन्तरी का पुत्र था।
१३ एक राक्षस, जो देवताओं एवं हिरण्याक्ष के बीच हुए युद्ध में मारा गया था।
१४ आनर्त (गुजरात देश) का एक राजा, जो सत्वत राजा का पुत्र था।
१५ एक राक्षस, जो कश्यप एवं खशा के पुत्रों में से एक था।
१६ एक यादव राजा जो दाशार्ह (विदुरथ) राजा का पुत्र था।
१७ एक राजा जो भागवत के अनुसार विजय राजा का पुत्र था।
१८ हरिवंश एव ब्रह्म पुराण के अनुसार एक यादव राजा ज्यामध का पुत्र।
१९ विदर्भ देश की कौडिन्य नगरी का राजा, जो चित्रसेन राजा का पुत्र था।
२० विदर्भ देश का एक राजा जो दमयंती का पिता था।
२१ कुंभकरण का एक पुत्र।
२२ साहित्य में भयानक रस।
२३ एक नदी का नाम। (अ. मा.)
वि०—१ बहुत बड़ा, विशाल।
२ भीषण, भयानक, घोर।
उ०—१ प्रळै व्रज करेवा नीम दांमण पतन, गयण फूटै घटा **भीम** गरजै। उठावै अछलतौ जेम हळधर अनुज, बळ तकै यंद्रछीं भलां वरजै।—बां. दा.
उ०—२ सेसि वलइ जल उछलइ, सायर छडइं सीम। वाया विण वाजइ सबद, महा भयंकर **भीम**।—मा. कां. प्र.
रू० भे०—भींव, भीउं, भीमि, भीमूं, भीमेण, भीव।
अल्पा०—भींयौ, भीमड़ौ, भीमलौ, भीमियौ, भीमौ।

भीमएकादसी—सं०स्त्री० [सं० भीमएकाशी] १ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी।
२ कार्तिक शुक्ला एकादशी।
३ माघ शुक्ला एकादशी।

भीमक—देखो 'भीस्मक' (रू. भे.)
उ०—चूडा मंडण चूडामणीं जी, **भीमक** घरि अवतार। बंधव रुखमईयौ भलौ जी, मंत्रीसर मति सार।—रुकमणी मंगळ
रू० भे०—भींमक, भीमक।

भीमकुंड—सं० पु०—एक जलाशय जो तीर्थ माना जाता है।
उ०—हांरे मोरा लाल सूरयकुंड **भीमकुंड** नैं, पासैं पगला जान। ओलखाभूल आवियौ, फरसीजे जिन न्हांण मोरा लाल।—धि. कु.

भीमकुमार—सं० पु०—भीमसेन का पुत्र घटोत्कच।

भीमगज—सं० पु०—पांडुपुत्र भीम द्वारा आकाश में फेंके गए हाथी।
उ०—१ गोरा नह भेटै **भीमगजां**, धर लड़ै न कमधज खोल धजां। धर लड़सी कमधज खोल धजां, गोरा जद मिळसी भीमगजां।
—महाराजा मांनसिंघ जी रौ गीत
उ०—२ मोसूं ऊवेळीह, तुरत हुवो जिण रौ तवां। **भीमगजां** भेळीह, करतौ जे पाबू कमंध।—पा. प्र.

भीमड़ात, भीमड़ाथ—सं० पु०—रंग विशेष का घोड़ा।
उ०—सोवन रा तांजी च्यार साल, पंच दोक दिनां पोरस अपाल। धुर केक माळवी सरस धज्ज, **भीमड़ाथ** थळी वाळा भिड़ज्ज।
—सू. प्र.

भीमड़ौ—देखो 'भीम' (अल्पा., रू. भे)
उ०—तिण वार 'भगवंत' 'केहरी' तण वणै त्रिजड़ां वाहतौ। **'भीमड़ा'** पांडव जेम भारथ, गज घड़ा भड़ गाहतौ।—सू. प्र.

भीमचंडी—सं० स्त्री०—एक देवी का नाम।

भीमजी—सं० पु०—दामाद को गाये जाने वाला एक लोक गीत।

भीमतळाव—सं० पु०—बड़ा सरोवर।
उ०—माय, भर रे नाडा भर नाडियौ, माय, भरियौ, रे **भीमतळाव** पपत्रियौ बोल्यौ खाबड़ रै खेत में।—लो. गी.

भीमता—सं० स्त्री०—भयानक होने की अवस्था या भाव, भयानकता।

भीमतिथ, भीमतिथि—सं० स्त्री० यौ० [सं० भीम+तिथि] १ ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी।
२ कार्तिक शुक्ला एकादशी।
३ माघ शुक्ला एकादशी।

भीमथळी—सं० स्त्री०—जैसलमेर जिले का एक भू-भाग।

भीमनाद—सं० पु० यौ० [भीम+नादः] भीषण ध्वनि, भयंकर आवाज।
उ०—डाक काळ रूपी डाच उबेड़ै कटार डढ्ढां, **भीमनाद** भेड़ै रेड़ै गयंदा गंभीर। आहेड़ै तेड़ै पेड़ै वीर देवीसिंघ आळा, केड़ै लाग तूंहीं छेड़ै डांखियौ कंठीर।—दौलतसिंघ हाडा रौ गीत

भीमपळासी—सं० स्त्री०—संगीत में संपूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

भीमफळोदया—सं० स्त्री० यौ० [भीम+फलोदया] भयंकर फलों को देने वाली।

भीमबळ—सं० पु०—१ एक प्रकार की अग्नि।
२ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

भीममुख—सं० पु०—एक प्रकार का बाण।

भीमरथ—सं० पु०—१ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

२ युधिष्ठिर की सभा का एक नृपति ।

३ कौरव पक्ष का एक योद्धा, जो द्रौण निर्मित्त गरुडव्यूह में खड़ा हुआ था ।

४ भागवत, विष्णु एवं वायु पुराण के अनुसार विकृति राजा का पुत्र ।

५ एक राजा जो भागवत एवं वायु पुराण के अनुसार केतुमत् राजा का पुत्र था ।

भीमरथी-सं० स्त्री०—१ एक पौराणिक नदी ।

२ वैद्यक के अनुसार मनुष्य की ७७ वर्ष के ७ वें महीने की सातवीं रात के बाद होने वाली कठिन अवस्था ।

भीमल-सं० पु०—१ सिसोदिया वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

२ पंवार वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

भीमसंकरी-सं० स्त्री०—दक्षिण की एक बड़ी नदी ।

उ०—दिखण में भीम नदी **भीमसंकरी** कहावै ।—बां. दा. ख्या.

भीमसेण, भीमसेन [सं० भीमसेन] १ पांडु पुत्र भीम का नामान्तर ।

रू० भे०—भीमसेण, भीमसेनु, भीवसेन ।

भीमसेनी-वि०—भीमसेन सम्बन्धी ।

भीमसेनीएकादसी—देखो 'भींमएकादसी' ।

भीमसेनीकपूर-सं० पु०—एक विशेष प्रकार का कर्पूर जो सुमात्रा आदि द्वीपों में होने वाले वृक्षों के रस से तैयार किया जाता है ।

उ०—केसर-कस्तूरी, **भीमसेनीकपूर** रौ मरदन हुवै, तिण रौ कीच मचियौ रहै । सो इण भांत जलाल गहरो मौज आणंद सूं रहै ।

—जलालबूबना री बात

भीमसेनु—देखो 'भीमसेन' (रू. भे.)

उ०—सवां कमल नीं इच्छा करउ, **भीमसेनु** तउ वनि वनि फिरइ । असउण देखी बोलइ राउ, भीम पासि वछेदिइं जाउ ।

—सालिभद्र सूरि

भीमा-सं० स्त्री०—१ दक्षिण भारत की एक नदी जो पश्चिमी घाट से निकल कर कृष्णा नदी में मिलती है ।

उ०—**भीमा** धुनि पयवस्वनी, गोदावरी गहीर । ऊंनतभद्रा पूरणा, किसना निरमळ नीर ।—बां. दा.

२ दुर्गा, देवी ।

वि० स्त्री०—भयंकर, भीषण ।

उ०—अत्यू सीमासी रावी बिसमासी, भीमा भावीसी **भीमा** निस भासी । तूहिन कंठीरव तन कुंजर तावै, डगडगि चढियोड़ा मरिया डुसकावै ।—ऊ. का.

भीमि—देखो 'भीम' (रू. भे.)

उ०—साधीउ पच्छेवांणु **भीमि** पुरोहति लाखहरै । मेलहीउ दीधु पीयांणु, केडइ आवी पुणु मिलए ।—सालिभद्रसूरि

भीमी-सं० स्त्री०—१ भीम राजा की कन्या दमयंती ।

२ भीष्मक राजा की पुत्री रुक्मिनी ।

उ०—तांहांथी आवी नैसध आगलि **भीमी** ना गुण भाखि । प्रेम ऊपायु नल राजा नि सुणतां दीठा पाखि ।—नळाख्यान

रू० भे०—भैमी ।

भीमूं, भीमेण—देखो 'भीम' (३) (रू. भे.) (डि. को.)

उ०—१ ताकड़ा 'अजन' '**भीमेण**' ताय, खांगडा उरस थी भचक खाय । 'अभपती' जती गोरक्ख एम, तैरे' सख बारह पंथ तेम ।

—वि. सं.

उ०—२ अरजन हूतौ अनै, कियौ कोमंड करगै । महाजोध **भीमेण**, गदा आपडै उमगै ।—बखतौ खिड़ियौ

भीमोत-सं० पु०—राठोड़ वंश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

भीमोत्तर-सं० पु०- बड़े रोएंदार तथा गोल पत्तों वाली एक प्रसिद्ध बेल जिसके फल बड़े और गोल होते हैं, कुम्हड़ा ।

भीमोदरी-सं० स्त्री०—दुर्गा ।

भीमौ—देखो 'भीम' (अल्पा., रू. भे.)

भीय—देखो 'बी' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

भीयड़—१ देखो 'भीड़' (रू. भे.)

२ देखो 'भीड़ी' (रू. भे.)

उ०—जब लूं नित नांम तिलोचन बोल्यौ, भांमण **भीयड़** होय भिड़ै । करवा ग्रह काज इसौ मोय आगळ, मांणस कोय लिलांम मिळै ।—भगतमाळ

भीयौ-वि०—डरा हुआ, भयभीत ।

भीर—देखो 'भीड़' (रू. भे.)

उ०—१ पण राखण आया प्रभू, भल अबळा री **भीर** । दस हजार गज बळ घट्यो, घट्यौ न दस गज चीर ।—रांमनाथ कवियौ

उ०—२ **भीर** म्हे जकां भीरी विसंभर, गांज कुण सकै 'जसराज' रा गांव । राव एक थाप ऊथापिया रिडमलां, रिड़मलां पुडदड़ी राखिया राव ।—बां. दा.

उ०—३ बेली बापूकारिया, पूरे वेल सवाय । धीर वधारी भीरियां, **भीर** सकज्जां पाय ।—रा. रू.

उ०—४ दादू महाजोध मोटा बळी, सो सदा हमारी **भीर** । सब जग रूठा क्या करै, जहां तहां रणधीर ।—दादूबांणी

उ०—५ पछै वेगी ही रांणां जी ऊपर हाजीखां आयौ । राठौड़ देईदास जैतावत रावमालदे री फौज वडी साथ लै'नै हाजीखां री **भीर** आया था ।—रावमालदे री वात

२ देखो 'भीड़ी' (रू. भे.)

उ०—दुरजोधन वीर करै ग्रह द्रोपां, खांच सभा बिच चीर खड़ी । पचियौ पण **भीर** हुवौ परमेसर, चीर न खूटोय सोभ चढ़ी ।

—भगतमाल

भीरव—देखो 'भीड़ी' (रू. भे.)

उ०—असी सहस सेना अठी, सहंस उठी बासट्ठि। भडां ओपियां भीरवां, नीर गया मुख नट्ठि।—वं. भा.

भीरि, भीरी—देखो 'भीड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ भरथ न सत्रघण बळभद्र **भीरी**, बंधव लखण न पूगौ वेल। ओखामंडळ विटियौ असुरां, वीठल सादवियौ 'वाढेल'।
—सिवा वाढेल रौ गीत

उ०—२ वेली बापूकारिया, पूरे बेल सवाय। धीर वधारी **भीरियां**, भीर सकज्जां पाय।—रा. रू.

उ०—३ भीर म्हे जकां **भीरी** विसंभर, गांज कुण सकै जसराज रा गांव। राव एक थाप उथापिया रिडमलां, रिडमलां पुडदड़ी राखिया राव।—बां. दा.

२ देखो 'भीड़' (रू. भे.)

उ०—एहिज परि थई **भीरि** कजि आयां, धनंजय अनै सुयोधन। मासे मगसिर भलउ जु मिळियौ, जागिया मींट जनारजन।—वेलि

भीरु–वि० [सं० भीरु] १ कायर, डरपोक।
२ चांदी, रोप्य। (डिं. को.)
३ देखो 'भीड़ी' (रू. भे.)
रू० भे०—भीरू।

भीरुता–सं० स्त्री०—१ कायर या डरपोक होने की अवस्था या भाव।
२ डर, भय।

भीरू–सं० स्त्री० [सं० भीरु] १ स्त्री, औरत। (ह. नां. मा.)
२ देखो 'भीरु' (रू. भे.)

उ०—हलकार **भीरू** बडा हिंदू, ताहरा तुडतांण। समसेर झाले करौ सेहरा, सांभळै सुरतांण।—जसौ बारहठ

३ देखो 'भीड़' (रू. भे.)

उ०—भूधर तूंही हारियां **भीरू**, आपण तूं ही अनाथां नाथ।
—ओपौ आढ़ौ

भीरूक–सं० पु० [सं० भीरु+कन्] १ चांदी। (डिं को.)
२ वन, जंगल।
३ उल्लू।

भीरौ—देखो 'भीड़' (मह, रू. भे.)

उ०—चंपा बार उघाडीयां, वलि चालणि काढ्यु नीरो रे। सती सुभद्रा जस थयउ, त मइ तस कीधौ **भीरौ** रे।—स. कु.

भील–सं० पु० [सं० भिल्ल] (स्त्री० भीलण, भीलणी) १ प्राचीन काल में राजपूताना, सिंध और मध्य भारत के जगलों व पहाड़ों में पाई जाने वाली एक अनुसूचित जाति।
२ इस जाति का व्यक्ति।

उ०—१ मैंणौ पेंगू मेर बावरी बिळळा बैं'ता, भाळौ थोरी **भील** रात रा मांगै रैं'ता।—ऊ. का.

उ०—२ दोय आदमी साथ लेनै जिण मेवासा में **भील** रहतौ तठै ही आप जाय पहौंतौ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

रू० भे०—भिल्ल। अल्पा०—भीलड़ौ।
पर्याय—तांडी, कमठाळ, आहेडी, कांडी, सांवळौ, नायक।

भीलड़ौ—देखो 'भील' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ कठी छौ रावत हरीसिंघ रा घर मांहे ईसड़ौ रजपूत नहीं सौ उण **भीलड़ै** नूं मारै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—२ भीलां री बस्ती में कोई रै ब्याव हौ, **भीलड़ां** री राग ई छांनीं नहीं रै'वै।—रातवासौ
(स्त्री० भीलड़ी)

भीलड़ी, भीलण, भीलणी–सं० स्त्री०—१ भील जाति की स्त्री।
२ शिवरी, जिसने श्रीराम को बनवास में जूठे बेर खिलाए थे।

उ०—१ **भीलड़ी** चुग किया भेळा, बौ'त हित सूं बोर। प्रीत कर रघुनाथ पाया, कोय'क खांडो कोर।—भगतमाळ

उ०—२ बन में हुती स्योरी **भीलणी**, ज्यांका अरोग्या ठाकुर बोर। ऊंच नीच हरि ना गिणैं, ऐसी म्हारा हरिभगतां री कोर।
—मीरां

रू० भे०—भीलि, भीलि, भीली।

भीळणौ, भीळबौ—देखो 'भिळणौ, भिळबौ' (रू. भे.)

उ०—आज मोनुं मुवौ चाहोजै। तरै अखैराज आदमीयां १५ तथा २० कूदीया। सु अखैराज हेलै बरछी नव आंगळ मंडी, सु के लागी के टळी। अै लोह **भीळीया**। दोलतियौ भागौ।—नैणसी

भीळणहार, हारौ (हारी), भीळणियौ—वि०।
भीळाड़णौ, भीळाड़बौ, भीळाणौ, भीळाबौ, भीळावणौ, भीळावबौ
—प्रे० रू०।
भीळिओड़ौ, भीळियोड़ौ, भीळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भीळीजणौ, भीळीजबौ—भाव वा०।

भीलप–सं० पु०—१ विलाप।

उ०—कासूं मा **भीलप** करै, हूं वाजूं सुरतांण। सूरजमल री सारधू, मो पूठै अमरांण।—पा. प्र.

२ घबराहट।
३ कायरता।

भीलभूसण–सं० पु० [सं० भिल्लभूषण] गुंजा या घुंघची जिसकी मालाएं भील लोग पहनते हैं।

भीलवाड़ा–सं० पु०—भीलवाड़ा जिले की मिट्टी का बना एक प्राचीन सिक्का।

भीळाड़णौ, भीळाड़बौ—देखो 'भिळाणौ, भिळाबौ' (रू. भे.)
भीळाड़णहार, हारौ (हारी), भीळाड़णियौ—वि०।
भीळाड़िओड़ौ' भीळाड़ियोड़ौ, भीळाड़योड़ौ—भू० का० कृ०।
भीळाड़ीजणौ, भीळाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भीळाड़ियोड़ौ—देखो 'भिळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भीळायड़ोड़ी)

भीळाणौ, भीळाबौ—देखो 'भिळाणौ, भिळाबौ' (रू. भे.)

उ०—तरै रजपूत कंयो भीजल जाय नै वाला भोपत सुं मिळ नै कही—हूं किलौ भीळाय देसूं।—नैणसी

भीळाणहार, हारौ (हारी), भीळाणियौ—वि०।

भीळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भीळाईजणौ, भीळाईजबौ—कर्म वा०।

भीळायोड़ौ—देखो 'भिळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भीळायोड़ी)

भीलामौ—देखो 'भिलावौ' (रू. भे.)

उ०—भीलामां नइ भालकी, भरडु भारिंगि भांगि। भंभेडी ब्रह्मांड घणा, भोजपत्र भड चंगि।—मा. कां. प्र.

भीळावणौ, भीळावबौ—देखो 'भिळारणौ, भिळावबौ' (रू. भे.)

भीळावणहार, हारौ (हारी), भीळावणियौ—वि०।

भीळाविग्रोड़ौ, भीळावियोड़ौ, भीळ व्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भीळावीजणौ, भीळावीजबौ—कर्म वा०।

भीळावियोड़ौ—देखो 'भिळायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री० भीळावियोड़ी)

भीलावौ—देखो 'भिलावौ' (रू. भे.) (अमरत)

भीलि, भीलि, भीली—देखो 'भीलणी' (रू. भे.)

उ०—रघुवर भीली कर रे, बिलकुल सीता वर रे। रुचि कर-कंधु फळ रे, जमि हसि पीधौ जळ रे।—र. ज. प्र.

भीव—देखो 'भीम' (रू. भे.)

उ०—अकबर न जुजठळ, भीव न अरिजण, खळ-दळ लागा, लोह खिवौ। पड़तै भार प्रजा पीड़ंती, स्रीरग कहियौ—सिवौ 'सिवौ'।
—सिवा वाढेल रौ गीत

भीवणौ, भीवबौ—देखो 'भीजणौ, भीजबौ' (रू भे.) (अमरत)

भीवणहार, हारौ (हारी), भीवणियौ—वि०।

भीविग्रोड़ौ, भीवियोड़ौ, भीव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भीवीजणौ, भीवीजबौ—भाव वा०।

भीवसेन—देखो 'भीमसेन' (रू. भे.)

भीवियोड़ौ—देखो 'भीजियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री० भीवियोड़ी)

भीसट—देखो 'भ्रस्ट' (रू. भे)

भीसण—वि० [सं० भीषण] १ भयानक, डरावना।

२ दुष्ट, उग्र।

३ दुष्कर, विकट।

४ दुष्परिणाम के रूप में होने वाला, बहुत ही बुरा।

सं० पु०—१ साहित्य में एक रस।

२ ब्रह्मा।

३ शिव, शंकर।

४ एक राजा, जो मत्स्य के अनुसार हृदिक राजा का पुत्र था।

५ बय नामक असुर का पुत्र।

६ एक असुर, जिसे हनुमान ने परास्त किया था।

भीसणता—सं० स्त्री० [सं० भीषणता] १ भयंकरता, डरावनापन।

२ उष्णता, उग्रता

३ दुष्करता, विकटता।

भीसणी—सं० स्त्री० [सं० भीषणी] सीता की एक सखी।

भीसम—१ देखो 'भीस्म' (रू. भे.) (डि. को.)

२ देखो 'भीकम' (रू. भे.)

भीसमआयी—सं० स्त्री० [सं० भीष्म+आर्या=भीष्ममाता] गंगा, भागीरथी। (डिं. कौ.

भीसमचांदी—देखो 'भीकमचांदी' (रू. भे.)

भीसमपंचक—देखो 'भीखमपंचक'।

भीसमसू—देखो 'भीस्मसू' (रू. भे.)

भीसमास्टमी—देखो 'भीस्मास्टमी' (रू. भे.)

भीसुर—वि०—दीप्तिमान।

उ०—चंदवदण अगलोयणी, भीसुर ससदळ भाळ। नासिक दीप-सिखा जिसी, केळ-गरभसुकमाळ।—ढो. मा.

भीस्ट—देखो 'भ्रस्ट' (रू. भे.)

भीस्म—सं० पु० [सं० भीष्म] १ गंगा से उत्पन्न कुरु राजा शान्तनु का पुत्र, गांगेय (डिं. को.)

पर्याय०—गंगकाज, गांगेय, संतनुसुतन, कुरूईस, कुरुदेव, द्रढव्रती।

२ शिव, महादेव।

३ राक्षस, असुर।

३ साहित्य में एक रस।

वि०—१ भयंकर डरावना।

रू० भे०—भीकम, भीखम, भीसम।

भीस्मक—सं पु० [सं० भीष्मक] विदर्भ देश का भोजवंशीय नरेश, जो रुकमणी का पिता था।

रू० भे०—भीखमक, भींमक, भीमक।

भीस्मकसुता—सं० स्त्री० यौ० [सं० भीष्मकसुता] श्रीकृष्ण की पत्नी, रुकमणी।

भीस्मपितामाह—देखो 'भीस्म' (१)

भीस्ममणि—सं० स्त्री० [सं० भीष्ममणि] हिमालय के उत्तर में मिलने वाला एक सफेद रंग का पत्थर या मणि। (शुभ)

भीस्मसू—सं० स्त्री० [सं० भीष्मसू] गंगा, भागीरथी। (डिं. को.)

रू० भे०—भीसमसू।

भीस्मास्टमी—सं० स्त्री० [सं० भीष्माष्टमी] माघ शुक्ला अष्टमी, जिस दिन भीष्म ने प्राण त्यागे थे।

रू० भे०—भीसमास्टमी।

भुं—१ देखो 'भांय' (रू. भे.)

उ०—आगै वेहसूर बैठा छै। तठै पीठवै पागड़ौ छाडीयौ। पीठवै नूं पूछीयौ,-'कठा सूं वळीयौ ?' इयै वात कही, 'बाबाजी आधी भुं सूं वळीयौ। सिकार कियौ हुंतौ सो म्हैं समधड़ै नूं दीयौ।'

—पीठवै चारण री वात

२ देखो 'भूमि' (रू. भे.)

भुंग्र—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—**भुंग्र** सजोड़ै दीपै, वांकड़ी कबांण नै जीपै हौ। मांहो मांहि न छीपै तै भाल विसाल समीपै हो।—वि. कु.

भुंग्रारौ—देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

भुंइरु—देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

उ०—माधव ! तुम्हे म चालसिउ, गोरी जंपइ गुज्झ। भलूं करा-विसी **भुंइरु**, मांहि राखिसि तुज्झ।—मा. कां. प्र.

भुंइ—१ देखो 'भूमि' (रू. भे.)

उ०—१ रीति रहावणौ जी ऊंची आदरी कीरति कवि करैंजी। पर **भुंइ** पस्सरी प्रघट प्राक्रमीजी खत्रवट वपि खरी वासौ खग वसै जी।—ल. पि.

उ०—२ मेघ घणौ वूटौ। धरती अजै नीली नहीं हुइ छै। त्रिणि अंकुर नहीं हुआ छै। जहां कहीं ऊंठै ची **भुंइ** छै।—वेलि टी.

२ देखो 'भांय' (रू. भे.)

उ०—अठा सूं आगै खारौ सरू व्है जावै। खारौ लालांणा सूं लगाय नै राखी तक पांच कोस री **भुंइ** में फेल्योड़ौ है।—रातवासौ

भुंइण—१ देखो 'भूमि' (रू. भे.)

२ देखो 'भुवन' (रू. भे.)

भुंइदाग-सं० पु० [सं० भूमि+दग्ध] १ शव को भूमि में दफनाने की क्रिया।

२ वह दिन, जिस रोज किसी शव का दाह-संस्कार हुआ हो।

वि० वि०—इस दिन यात्रा करना अशुभ माना जाता है।

रू० भे०—भूमिदाग।

भुंइरौ—देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

भुंई—१ देखो 'भांय' (रू. भे.)

उ०—१ तांहरां दूदौ बोलियौ-रे ! औ कुण बोलै ? कह्यौ जी 'मेघो' बोले छै। कह्यौ-रे। इतरी **भुंई** सुणीजै छै।

—दूदै जोधावत री बात

२ देखो 'भूमि' (रू. भे.)

उ०—१ तिसडै बांसलौ चोरि कपड़ा नांखि झन-झन आइनै सूतौ। ताहरां कह्यौ विजाजी **भुंई** मारण छै।—चौबोली

उ०—२ सूरातन सुजळ सार करि साबू, धोवण लागौ सिवौ सधीर। पिंड **भुंई** सिला ऊपरै पटकै, मरै डरै घट काटै मीर।

—मोहकमसिंघ भेड़तियौ

भुंईबावळी-सं० स्त्री०—बबूल की जाति का एक वृक्ष जिसके मूल स्थान से ही बहुत सी छोटी छोटी एवं पतली टहनियां निकली होती है। जल बर्बुक।

रू० भे०—भुइबावळी, भूंईबावळी, भूबांवळी, भूबावळी।

भुंइरौ—देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

भुंकार-सं० पु०—वाद्य ध्वनि।

उ०—अथ राजप्रस्थान, पवनोद्धतिधुलिपट सहस्रांशु तरणि किरणि सुगट विपुक्त हक्का बुक्कार विसित कातरजन, भंभाअदंग भेरी **भुंकार** बधरिक्त दिगंतर।—व. स.

भुंगर-सं० पु०—एक प्रकार का विलाशय जंतु विशेष।

उ० प्रगत तणौ प्रताप नही पास्यौ नर देही, जग मैं बीजै जनम हुस्यौ **भुंगर** कन सेही।—अरजुनजी बारहठ

भुंगरौ-सं० पु०—रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—अनड़ कालुआ किहाडा किसोयरा गंगाजला हंसला नीलडा हरीअडा कछेला **भुंगरा** इरया तुरंगम।—व. स.

भुंगळ—देखो 'भूंगळ' (रू. भे.)

उ०—वीरअदंग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सांमह्या, महत्रहते त्रंबक तणे ग्रहत्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउं, भेरि **भुंगळ** तणे भूभू-याटि भूकिइं भिलकिं फाटि।—व. स.

भुंगारणौ, भुंगारबौ—देखो 'धुंगारणौ, धुंगारबौ' (रू. भे.)

भुंगारणहार, हारौ (हारी), भुंगारणियौ—वि०।

भुंगारिओड़ौ, भुंगारियोड़ौ, भुंगारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भुंगारीजणौ, भुंगारीजबौ—कर्म वा०।

भुंगारियोड़ौ—देखो 'धुंगारियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुंगारियोड़ी)

भुंच—देखो 'भूंच' (रू. भे.)

भुंजाइयौ-सं० पु०—अतिथियों को भोजन कराने वाला।

उ०- रांमसिंघ करमसेणोत वडौ दातार, वडौ **भुंजाइयौ** हुतौ।

—बां. दा. ख्या.

भुंजाई, भुंजायी-सं० स्त्री०—भोज विशेष।

उ०—पछै गुजरात नुं असवार हुवा, डेरौ सालावास हुवौ। दिन रहा पछै कूच हुवौ सथलांणो चैत सुद ७ पधारिया, उठे दसराहा री **भुंजाई** चैत सुद ६ हुई।—नैणसी

२ देवताओं को चढाये जाने वाला भोजन।

उ०—करि **भुंजाइ** चाढि कड़ाळा, विधि विधि सह भोजन्न वडाळा। पांति रचि चौसर प्रौंचाळै, कवि रजपूत पोखिया काळै।

—र. वचनिका

३ भूंजने की क्रिया।

४ रसोई।

रू० भे०—भुजाई, भूंजाई, भूजाई।

भुंजाड़णौ, भुंजाड़बौ—देखो 'भुंजाणौ, भुंजाबौ' (रू. भे.)

भुंजाड़णहार, हारौ (हारी), **भुंजाड़णियौ**—वि० ।
भुंजाड़िओड़ौ, भुंजाड़ियोड़ौ, भुंजाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भुंजाड़ीजणौ, भुंजाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भुंजाड़ियोड़ौ—देखो 'भुंजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भुंजाड़ियोड़ी)

भुंजाणौ, भुंजाबौ [भूंजणौ क्रि० का प्रे० रू०] १ भूंजने का काम किसी व्यक्ति से कराना ।
२ किसी को भूंजने में प्रवृत्त करना ।
भुंजाणहार, हारौ (हारी), **भुंजाणियौ**—वि० ।
भुंजायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भुंजाईजणौ, भुंजाईजबौ—कर्म वा० ।
भुंजाड़णौ, भुंजाड़बौ, भूंजावणौ, भुंजाववौ, भुंदाणौ, भुंदाबौ, भुनाड़णौ, भुनाड़णौ, भुनाणौ, भुनाबौ, भुनावणौ, भुनाववौ
—रू० भे० ।

भुंजायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ भूंजने का काम किसी व्यक्ति से कराया हुआ. २ किसी को भूंजने में प्रवृत किया हुआ.
(स्त्री० भुंजायोड़ी)

भुंजावणौ, भुंजाववौ—देखो 'भुंजाणौ, भुंजाववौ' (रू. भे.)
भुंजावणहार, हारौ (हारी), **भुंजावणियौ**—वि० ।
भुंजाविओड़ौ, भुंजावियोड़ौ, भुंजाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भुंजावीजणौ, भुंजावीजबौ—कर्म वा० ।

भुंजावियोड़ौ—देखो 'भुंजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भुंजावियोड़ी)

भुंडु, भुंडौ—देखो 'भूंडौ' (रू. भे.)
उ०—१ इण भांत हालतौ देखनै गोढवाड़ पाखती सोनगरां री ठुकराईसुं सोनगरा नूं अमावा हुआ जु ए पाखती **भुंडौ**, इण नैड़ा थकां म्हानुं बिगाड़, तरै राव रिणमलनुं परणाय नै बेसासिया। आवौ-जाव हुई ।—राव रिणमल री बात
उ०—२ दैव ! ब्रह्म-प्रति लोभीउ, बीजां लील भूयाळ। सुख संपत्ति सुहणइ नहीं, भवसिद्धि **भुंडइ** भाळि ।—मा. कां. प्र.
उ०—३ त्यांमे आगे थौ तिणनूं भंडारी रतनचंद कयौ स्रीजीरौ **भुंडौ** करौ छौ नै इंद्रसिंघजी रा वांछिया करौ छौ नै भाटी नै राठौड़ आंमांसामां मर जासी ने थांहरे भतीज रौ वैर लेणौ हुवै तौ मोनुं मारौ ।—रा. वं. वि.
उ०—३ हे व्रद्धा तुं माहरै, पासै वहिली आवि । स्युं **भुंडी** आलस करै, खिण एक बार म लाइ ।—वि. कु.
उ०—४ कुमरी विचारै रहिनै जीवती रे, स्युं करिस्युं निस दीस । मरण नथी का दे तौ पापिया रे, फिट **भुंडा** जगदीस ।—वि. कु.
(स्त्री० भुंडी)

भुंणगोता-सं० पु०—सोलंकी वंश की एक शाखा ।

भुंदाणौ, भुंदाबौ—देखो 'भुंजाणौ, भुंजाबौ' (रू. भे)
भुंदाणहार, हारौ (हारी), **भुंदाणियौ**—वि० ।
भुंदायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भुंदाईजणौ, भुंदाईजबौ—कर्म वा० ।

भुंदायोड़ौ—देखो 'भुंजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भुंदायोड़ी)

भुंय—१ देखो 'भूमि' (रू. भे)
उ०—१ परधांन फिरिया पण अै तौ न मांनै। कह्यौ—'जी, भात्रीजौ **भुंय** भोगवै काकै बैठै ? यौ तौ मोनूं नींद नहीं आवै ।'
—नैणसी
उ०—३ आहियौ आसाडाह, गाजै नै गुड़की कियौ । बूठौ भेदाळाह, निबळी **भुंय** पर नागजी ।—अज्ञात
उ०—४ तरै राव रै आदमियै पांणी रै मिस कर हाथी छोडिया तरै ऊपरठांई कह्यौ—हाथी कठी ले जावौ छौ ? तरै उणां कह्यौ—नाठा तौ **भुंय** अगली पांणी पाय ल्यावां छां ।—रावमालदे री बात
उ०—५ भुंय परक्खी, हैं नरां, कहा परक्खी वींद । **भुंय** विन भला न नीपजै, कण, त्रण, तुरी, नरींद ।—अज्ञात
२ देखो 'भांय' (रू. भे.)
उ०—१ ताहरां अरड़कमल बोलियौ—'वडा भाटी ! जाहै नां, हूं घणी **भुंय** थी आयौ हूं ।—नैणसी
उ०—२ ताहरां मेघौ माळियै चढियौ । कह्यौ—'रे घोड़यां ईयै तरफ मतां उछेरौ ! दूदो जोधावत आयौ छै, घोड़ां ले जासी, ताहरा दूदो बोलियौ । कह्यौ—'ओ कुण बोलै ? कह्यौ, 'जी' मेघौ बोले छै । ताहरां कह्यौ—'रे ! इतरी **भुंय** सुणीजै छै ?—नैणसी

भुंरट—देखो 'भुरट' (रू. भे.)

भुंरटियौ—देखो 'भुरट' (अल्पा., रू. भे.)

भुंवाणौ, भुंवाबौ—देखो 'भंवाणौ, भंवाबौ' (रू. भे.)
उ०—पछै विसमिल्ला कै: परा'र करणै रै गलै पाक रुह वण'र चादर हटाई । कनै पड़यौ तेज कानांळौ तासळौ (तगारी) संभायौ अर करणै रै गलै माथै आपरै दोनां हाथां रै जोर सूं **भुंवा'र** दे मार्‌यौ ।—दसदोख

भुंवणि—देखो 'भुवन' (रू. भे.)
उ०—अखिल रजरीत रा सिंध लागा अरसि, **भुंवणि** मेछांण रा मांण भांगा । निभै नरनाथ अहि हाथ निरवाहियौ, अहि 'सिवौ' दोइण दिलेस आगां ।—नरहरिदास बारहठ

भुंवरियौ—देखो 'भंवरं' (अल्पा., रू. भे.)

भुंवाळी—देखो 'भंवळ' (रू. भे.)
उ०—१ डागै आपरी बेटी बेई वर देखणनै काठी कमर बांध ली । आडसर, मूंमासर, रिणीसर राजगढ़ च्यारां कांनी **भुंवाळी** खावण नीसर्‌यौ ।—दसदोख

उ०—२ घर हाळा घणौ ही समझावै, पण सिर में गूंग चढायेड़ौ, भुंवाळी खांतौ फिरै ! मांनै कद ! माथै में राख घाल राखी है।
—दसदोख

भुंवारौ—१ देखो 'भंवारौ'।
२ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)
उ०—राधा तेरी बोली मांहीं, मुड़क घणी। तीखा तीखा नैण भुंवारा बांका, मांनौं कबांण तणी।—मीरां

भुंवास-सं० पु०—१ वह खूंटा जिससे घोड़े के पिछले पैरों की रस्सी बांधी जाती है।
२ देखो 'भूंयास' (रू. भे.)

भुंहरौ, भुंहारौ—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)
उ०—१ सूरज करै सलांम, भिड़ै मौसरां भुंहारै। काय लियूं ईनांम, काय जमधांम विचारै।—सू. प्र.
उ०—२ भुंहारां तणी रेखा ताइ भांमणि, घणूं स कोमळ रूप घणइ। चाढी जांणि कबांण चाढंतइ, तजी कूंवरि बलोच तणइ।
—महादेव पारवती री वेलि
२ देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)
उ०—माल सगळौ गढ नीचै भुंहारा छै तिणां मांहै घातियौ।
—नैणसी

भुंही—देखो 'भांय' (रू. भे.)
२ देखो 'भूमि' (रू. भे.)

भु-सं० पु०—१ कौआ।
२ सर्प।
३ हड्डी।
४ वेसक। (एका०)

भुअंग—देखो 'भुजंग' (रू. भे.)
उ०—गोधूळ गौम गहत्त ए, वरहास वेग वहत्त ए। पड़ताळ पाइ पवंग ए, भुअ भार कंपि भुअंग ए।—गु. रू. बं.

भुअंगम, भुअंगमि—१ देखो 'भुजंगम' (रू. भे.)
उ०—विरह- भुअंगमि हूं डसी, खिण-खिण दाझइ देह। माहरइ माधव-केरडी, आस अमी-रस अेह।—मा. कां. प्र.

भुअ—देखो 'भू' (रू. भे.)
उ०—गोधूळ गौम गहत्त ए, वरहास वेग वहत्त ए। पडताळ पाइ पवंग ए, भुअ भार कंपि भुअंग ए।—गु रू. बं.

भुअण—देखो 'भुवन' (रू. भे.)

भुअणपति—देखो 'भुवनपति' (रू. भे.)
उ०—गैंमर अरि गंजणौ, भगत दुख भंजणौ। भुअणपति खाटणौ, बिरदधारी कांन्ह कीरति करै।—पि. प्र.

भुअन—देखो 'भुवन' (रू. भे.)

भुअपत्तिअ—देखो 'भूपति' (रू. भे.)
उ०—गुरुदेव सुमत्ति समापि गुणं, भुअपत्तिअ जेम रतन्न भणं। पित जासु 'महेस' नरेस परं, गढ वेदि लिअौ जिणि देवगिर।
—र. वचनिका

भुअब्बळ-सं० पु० [सं० भू+बल] १ राजा, नृप।
२ वीर, योद्धा।
घ०—रिणमाल जोध उण वार रां, बळ अणमाप भुअब्बळां। वाधियौ प्रांण ब्रह्मंड नूं, जांण क बावन जूअळां।—रा. रू.

भुआ—देखो 'भूआ' (रू. भे.)
उ०—जा अंबा लीधौ जनम, सोयाप मुरद्धर। परवाड़ौ कीधौ पहल, 'करनल्ल' भुआ कर।—जूंझारसिंघ मेड़तियौ

भुआजी—देखो 'भूआजी' (रू. भे.)

भुआरौ—१ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)
२ देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

भुआळ-सं० पु०—१ केश, बाल।
उ०—जईनखांन, अर सेखफरीद पातिसाहजी रा हाथां कटारौ। झालियौ। ताहरां साह फतलह कहियौ जे पातिसाहजी भुआळ उतरावणा हीज तो भुआळ उतराडीजै।—द. वि.
२ आर्य गीति या खंधांण (स्कंध) छंद का भेद विशेष। (पि. प्र.)
२ देखो 'भूपाल' (रू. भे.)
उ०—'अजौ' रुघनाथ उभै दइवांण, 'जसावत' खाग हणै जवनांण। 'चुंडावत' जूटत यौ कळिचाळ, 'भदावत' जूटत अग्रज भुआळ।
—सू. प्र.
उ०—२ जाणंतां तूझ न जांण्यौ जाय, काया तो पाखै दाखै काय। मकोड़ी कीट पतंग मुणाळ, भिखंग तुं ही ज तुं ही ज भुआळ।
—ह. र.
उ०—३ कुंअर कुळोधर वीनमइंजी, सांभळि भीम भुआळ। पंच्यांणु क्षौहणि मीलैजी, जेह नइं श्रीजी ताळ।—रुकमणी मंगळ

भुआसासू-सं० स्त्री०—देखो 'भूआसासू' (रू. भे.)

भुइं—देखो 'भूमि' (रू. भे.)
उ०—१ धरापति आज लखधीर रज धणी, धणीं भुइं जास जस वास रिधि घणी। कवीं निति देखि मन मांहि विळकुळै, भली विधि तेज रवि जेम झळहळै।—ल. पि.
उ०—२ उत्तरादी भुइं जु उपड़इ, पाळउ, पवन घणांह। हरणाखी, हस नइ कहइ, सांम्हो सालै जाह।—ढो. मा.
२ देखो 'भांय' (रू. भे.)
उ०—आडा डूंगर, भुइं घणी, तियां मिळीजइ एम। मनिहूं खिणहि न मेल्हियइ, चकवी दिणीयर जेम।—ढो. मा.

भुइंआंवळौ-सं० स्त्री० [सं० भूम्यामलक:] बरसात में ठंडे स्थानों में प्राय: घरों के आस-पास होने वाला क्षुप विशेष।
रू० भे०—भुईं आंवळौ।

भुइ—१ देखो 'भूमि' (रू. भे.)

उ०—१ खडा-खड भाट भड़ा-भड़ खग्ग, पड़ै निरलंग नरां सिर पग्ग। भड़ां करि-माळ रिखग्ग भड़ंत, पड़ै भुइ घाउ निहाउ पडंत।—गु रू. बं.

उ०—२ दुस्सासण जिकै जिसा दुरजोधन, रिख असथांमा द्रोण रिखं। भारथ भुइ जिकै कदै नह भाजै, परदळ भंजण पांच-मुखं।—गु. रू. बं.

२ देखो 'भांय' (रू. भे)

उ०—आडा डूंगर, भुइ घणी, सज्जण रही विदेस। मांगी तांगी इ पंखुड़ी, केती वार लहेस।—ढो. मा.

भुइण—१ देखो 'भूमि' (रू. भे.)

उ०—विसन घण वरण क्रिसन जग करण, भुइण उत्तारण भारं। सुजि सारं सुर साधारं गमण असुर गह पर, अगम यह विघन मिटे बह बारं करतारं भजि स्रीकारं।—पि. प्र.

२ देखो 'भुवन' (रू. भे.)

भुई—१ देखो 'भूमि' (रू. भे.)

२ देखो 'भांय' (रू. भे.)

भुईआंवळौ—देखो 'भुइंआवळी' (रू. भे.)

भुईरींगणी-सं० स्त्री०—कंटकारी नामक एक प्रकार का छोटा क्षुप।

भुई—देखो 'भूमि' (रू. भे)

उ०—तणा देस रजपूत, देस गढ चाढि न मूआ। हुआ सरब भुई भूत, देव सिद्धांण न हूआ।—गु. रू. बं.

भुकणौ, भुकबौ—देखो 'भखणौ, भखबौ' (रू. भे,)

२ देखो 'भूंकणौ, भूंकबौ' (रू. भे)

भुकणहार, हारौ (हारी), **भुकणियौ**—वि०।

भुकिग्रोड़ौ, भुकियोड़ौ, भुक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भुकीजणौ, भुकीजबौ—कर्म वा०/भाव वा०।

भुकियोड़ौ—१ देखो 'भखियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भूकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुकियोड़ी)

भुकियौ—देखो 'भूखौ' (अल्पा., रू. भे.)

भुक्ख—देखो 'भूख' (रू. भे.)

उ०—चित निद्रा परिहरइ रे, चिंता ले जाई दुक्ख। चिंता अह-निसि तन दहइ, चिंता फेडइ भुक्ख।—प. च. चौ.

भुक्खड़—देखो 'भूखौ' (मह., रू. भे.)

भुक्त-भू० का० कृ० [सं०] १ जो खाया गया हो। (भक्षित)

२ जिसका भोग किया गया हो।

३ जिसे भुना लिया गया हो।

भुक्तकार-सं० पु० [सं०] रसोईदार, रसोईया। (डिं. को.)

भुक्तभोग-वि० [सं०] जिसने भोग किया हो।

रू० भे०—भुक्तभोग।

भुक्तयोगी—वि० [सं०] जिसे किसी कार्य का फल भोगना पड़ा हो।

रू० भे०—भुक्तभोगी।

भुक्ति-सं० स्त्री० [सं०] १ चार प्रकार के प्रमाणों में से एक। (धर्मशास्त्र)

२ ग्रहों का किसी राशि में एक एक अंश करके गमन।

३ वह अवस्था, जब कोई किसी पर अपना अधिकार करके उसका उपयोग करता है, दखल।

४ आहार, भोजन।

५ किसी पदार्थ का किया जाने वाला भोग।

भुखड़ी-सं० स्त्री०—एक प्रकार की बन्दूक।

भुखमरी-सं० स्त्री०—निर्धनता, कंगाली।

भुखमरौ-वि० (स्त्री० भुखमरी) १ जो भूखों मरता हो, भूखा।

२ जो खाने-पीने को बहुत लालायित रहता हो।

३ कंगाल, दरिद्री।

भुखारौ-सं० पु० [फा. बुखारा] रूसी तुर्किस्तान का एक प्रसिद्ध नगर, जो वहां की राजधानी भी है। यहां का सौन्दर्य प्रसिद्ध है, बुखारा।

उ०—सांचो रंग नांमदेव के लाग्यौ, छिन में छांन छवागोजी। मुलक भुखारा का बादसाह के लाग्यौ, राज मुलक को त्याग्यौजी।—मीरां

भुखाळु—देखो 'भूखौ' (मह., रू. भे.)

भुख्याळुवौ-सं० पु०—देखो 'भूखौ' (रू. भे.)

उ०—तेरा, रे वीरा, भुख्याळुवा, घणदेवां ने भात पसाव। तेरा, रे वीरा, तिसाळुवा, घणदेवां ने सरबत घोळ पिलाव।—लो. गी.

भुगटी—देखो 'भ्रकुटि' (रू. भे.)

उ०—पांच लाख पैजार, भुगटी जिकां रै 'भेरिया'।—महाराजा बळवंतसिंह

भुगत-सं० पु० [सं० भक्त] १ भोजन, आहार।

उ०—अख रतौ मदां करैवा अचड़ां, वैर वाराह कमंध वरियांम। आगै दळै सांमहौ आयौ, रूक भुगत करवा बळरांम।—बळरांम राठौड़ रौ गीत

३ धन, द्रव्य।

४ भुगतने की क्रिया या भाव।

भुगतणौ, भुगतबौ-क्रि० स०/अ० [सं० भुक्त] १ उपभोग करना, भोगना।

उ०—कर हुकम मूझ कबूल, इळ भुगत निज अणभूल। सुण वयण पति 'इंद्रसाह', लिख दीध हुकम सलाह।—रा. रू.

२ किसी बात या चीज का अच्छा या बुरा फल सहन करना।

उ०—१ जग मांझल चुगली जिसौ, हींण विसन अन है न। विण चुगली भुगतै विथा, चुगली कीधां चैन।—बां. दा.

उ०—२ कांणियो काचर पाछौ वळती वगत वांनै फेर सीख दीनी-नेकी री कमाई करौ, सुख पावौला, म्हारा चोखळा में हाथ घालियो तौ थें थांरी जांणौ, पछै म्हारै जैड़ो भूंडो नीं है। अबै करिया जैड़ा भुगतौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ तद वौ मुळकनै जबाब दियौ—म्हैं बैठो हूं जित्तै ई अै केसरिया कसूंबल ओढै, नींतर रंडापौ भुगतणौ पड़तौ।—फुलवाड़ी

उ०—४ म्हारै घर री हांण भुगतियां ई जै बडेरां री सीख साची व्है जावै तौ म्हैं लाख भरपाया।—फुलवाड़ी

३ भार उठाना, (कष्ट) झेलना।

उ०—१ गूजर बाबौ उणनै समझावतौ कैंवण लागौ—बेटी, थूं क्यूं फालतू रा फोड़ा भुगतै, क्यूं इता धइया करै।—फुलवाड़ी

उ०—४ वेटी बिचाळै ई जोर सूं खिलखिल हंसी, जाणै कोयल हंसी व्है। बोली—बा! म्हैं तौ जैड़ी कवरांणी, वैड़ी ई महारांणीं। आप बधाई सारू फालतू ई फोड़ा भुगतिया।—फुलवाड़ी

४ अनुभव करना, देखना।

उ०—उजास री पोल आयगी ही। भतीजी फेर आगै कैंवण लागीं—पण म्हैं तौ अेकर भुगतियोड़ी हूं।—फुलवाड़ी

५ ऋण, देन-दारी आदि का चुकना या पटना।

६ गुजरना, व्यतीत होना।

७ पूरा होना, निबटना।

८ खबर होना, संदेश प्राप्त होना।

भुगतणहार, हारौ (हारी), भुगतणियौ—वि०।

भुगताड़णौ, भुगताड़बौ, भुगताणौ, भुगताबौ, भुगतावणौ, भुगतावबौ—प्रे० रू०।

भुगतिओड़ौ, भुगतिओड़ौ, भुगतियोड़ौ, भूगत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भुगतीजणौ, भुगतीजबौ—कर्म वा०।

भगतणौ, भगतबौ—रू० भे०।

भुगतांण—सं० स्त्री०—१ किसी के ऋण, देनदारी मूल्य आदि चुकाने की क्रिया या भाव, परिशोध।

उ०—डोकरी मुळकनै मोसौ मारती जवाब दियौ—जै राजा रै आखै खजांनै सूं ई प्रीत रौ भुगतांण व्हैं तौ खजांनौ तौ थारै पाखती है ई, पछै प्रीत सारू भंवता क्यूं फिरौ।—फुलवाड़ी

२ निपटारा, फैसला।

३ किसी के बदले में कुछ देने की क्रिया या भाव।

उ०—म्हांरी मदद रौ वौ पाछौ इण रूप में भुगतांण करै'ला म्है आ बात सपना में ई नीं जांणी ही।—फुलवाड़ी

४ संदेश भेजने की क्रिया भाव।

५ प्राप्ति-रसीद।

ज्यूं—रुपया दे दिया नै भुगतांण ले आया।

भुगताड़णौ, भुगताड़बौ—देखो 'भुगताणौ, भुगताबौ' (रू. भे.)

भुगताड़णहार, हारौ (हारी), भुगताड़णियौ—वि०।

भुगताड़िओड़ौ, भुगताड़ियोड़ौ, भुगताड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भुगताड़ीजणौ, भुगताड़ीजबौ—कर्म वा०।

भुगताड़ियोड़ौ—देखो 'भुगतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुगताड़ियोड़ी)

भुगताणौ, भुगताबौ—क्रि० स०—१ उपभोग कराना, भोगवाना।

२ किसी बात या चीज का अच्छा या बुरा फल सहन कराना।

३ भार उठाना, कष्ट झेलाना।

४ अनुभव कराना, देखाना।

५ ऋण, देनदारी, मूल्य आदि चुकाना।

६ गुजराना, व्यतीत कराना।

७ पूरा करना, निबटाना।

८ खबर देना, संदेश देना।

भुगताणहार, हारौ (हारी), भुगताणियौ—वि०।

भुगतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भुगताईजणौ, भुगताईजबौ—कर्म वा०।

भगताड़णौ, भगताड़बौ, भगताणौ, भगताबौ, भगतावणौ, भगतावबौ, भुगताड़णौ, भुगताड़बौ, भुगतावणौ, भुगतावबौ—रू० भे०।

भुगतायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ उपभोग कराया हुआ, भोगाया हुआ. २ किसी बात या चीज का अच्छा या बुरा फल सहन कराया हुआ. ३ भार उठाया हुआ, (कष्ट) झेलाया हुआ. ४ अनुभव कराया हुआ, देखाया हुआ. ५ ऋण, देनदारी, मूल्य आदि चुकाया हुआ. ६ गुजराया हुआ, व्यतीत किया हुआ. ७ पूरा किया हुआ, निबटा हुआ. ८ खबर या संदेश दिया हुआ.

(स्त्री० भुगतायोड़ी)

भुगतावणौ, भुगतावबौ—देखो 'भुगताणौ, भुगताबौ' (रू. भे.)

उ०—१ किणी रा जीव नै नीं संतावणौ, मिनख रो काळजौ नीं बाळणौ, मिनख रौ आदर करणौ, खुद भुगत लेणौ पण आपरै स्वारथ री खातर दूजा नै नीं भुगतावणौ मिनख रौ धरम फगत ओ इज है।—फुलवाड़ी

उ०—२ फौज री कठी अणियां फिरै, निजर देख नै धावजो। सांभळो जिता कांनां सबद, जळद आय भुगतावजो।—पे. रू.

भुगतावणहार, हारौ (हारी), भुगतावणियौ—वि०।

भुगताविओड़ौ, भुगतावियोड़ौ, भुगताव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भुगतावीजणौ, भुगतावीजबौ—कर्म वा०।

भुगतावियोड़ौ—देखो 'भुगतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुगतावियोड़ी)

भुगति—सं० पु० [सं०] १ विषयोपभोग, सांसारिक सुख।

उ०—पत्र अक्खर दळ द्राळा जस परिमळ, नव रस तंतु विधि अहोनिसि। मधुकर रसिक सु भगति मंजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि।—वेलि

२ भोजन, आहार ।

उ०—सिध नाथ बळ उपजियौ संहस बळ, सरै रांम बासै सकति । उत्तमरांम पांवणौ आयौ, भूरै दी खागां भुगति ।
—महाराज अमरसिंघ हाडा रौ गीत

रू० भे०—भुगती ।

भुगोळ, भुगोल—देखो 'भूगोळ' (रू. भे.)

उ०—खित जासिय ऊमर पाय सही, नभ सूरज चंद भुगोळ नहीं । जिंदराव ले जासिय वित्त जठै, कह 'पाल' वतासिय मूंह कठै ।
—पा. प्र.

भुड़की—देखो 'बुगतीं' ।

भुड़कौ—सं० पु०—गोल नलीदार मुंह वाला पानी रखने का मिट्टी का जलपात्र, सुराही ।

भुड़तौ—देखो 'भड़ीतौ' (रू. भे.)

भुड़द—देखो 'बुरद' (रू. भे.)

उ०—गै-जूहां गनीमां थाट मेड़तै गजबां घेर, भूटकै नागौर फेर फौजां की भुड़द । लाखां बीच 'आपा'नु भोपाळ 'बीजै' मार लीधौ गोपाळ ज्यू कीधौ काळमेचनै गुड़द ।—हुकमीचद खिड़ियौ

भुचकणौ, भुचकबौ—क्रि० अ०—कम्पायमान होना ।

उ०—महा क्रोधंगी गनीमां हूंत हुचकै नरींद माधौ', भुचकै भूलोक बादौ चकै कोम भार । बोमंगी अराबां भाळ बैताळ ववक बकै बाजंद्रां 'बहादेरस' हकै जेण बार ।—हुकमीचद खिड़ियौ

भुचकणहार, हारौ (हारी), भुचकणियौ—वि० ।

भुचकिओड़ौ, भुचकियोड़ौ, भुचक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भुचकीजणौ, भुचकीजबौ—भाव वा० ।

भुचकियोड़ौ—भू० का० कृ०—कंपायमान हुवा हुआ ।

भुचरकौ—सं० पु०—१ टक्कर, भिड़न्त ।

२ प्रहार, चोट ।

३ चूर्ण, चूरा ।

भुजंग—सं० पु० [स० भुजंगः] (स्त्री० भुजंगण, भुजंगणी, भुजंगिनी) १ सर्प, सांप । (अ. मा , ह. नां. मा.)

उ०—अंध कूप संसार औ, भीतर काळ भुजंग । बांछे सुख नर ऐथ बस, सबळ अविद्या संग ।—बां दा.

२ शेषनाग ।

उ०—बणाधिप झंप भरी उण बार, भुजंग न झालि सक्यौ भुव भार । भेळी हिज 'आवड़' बाहर भूप, रु नाहर चक्र सुदस्सण रूप ।—मे. म.

३ पति ।

४ उपपति, यार ।

५ स्वामी, मालिक ।

६ राजा, नृप ।

उ०—इण कुळ ही देवट अभिधांनी, मही भुजंग हुवौ रणमांनी । कुळ जिण रा देवडा कहावै, दांन समर अनुपम दरसावै ।—वं भा.

७ हट योग में, कुंडलिनी रूपी नागिन का पति या स्वामी ।

८ प्राचीन भारत में राजा का एक प्रकार का नौकर ।

९ सीसा नामक धातु ।

१० चौबीस विहरमानों में से पन्द्रहवें विहरमान, श्रीभुंजंगस्वामी ।

उ०—भुजंग देव भावइ नमुं, भगति युगति मन आंणि । भुजंगनाथ वंदित सदा, सुरनर नायक जांणि ।—वि. कु.

रू० भे०—भमंग, भयंग, भवंग भुअंग, भुजग भुयंग, भुयग, भुयग्गि, भुवंग, भूमंग, भूयंग, भूवंग ।

भुजंगचर—सं० पु० [सं० भुजंगः+चर्] १ गरुड़ । (डि. को.)

२ मयूर, मोर ।

रू० भे०—भुयंगचर ।

भुजंगपत, भुजंगपति, भुजंगपती—सं०पु० [सं० भुजगपति] १ शेषनाग ।

२ वासुकी ।

रू० भे०—भुजगपति ।

भुजंगपास—सं० पु० यौ० [सं० भुजंगः+पाशः] नागपाश नामक एक प्राचीन अस्त्र ।

भुजंगप्रयात—सं० पु० बारह वर्णों के एक चरण का एक वर्णिक छन्द जिसमें पहला, चौथा, सातवां व दसवां लघु होते हैं । प्रत्येक चरण में चार यगण होते हैं ।

रू० भे०—भुजंगीप्रयात ।

भुजंगभुज, भुजंगभोजिन—सं० पु० [सं० भुजंगभोजिन्] १ गरुड़ ।

२ मोर मयूर ।

भुजंगम—सं० पु० [सं० भुजंगमः] १ सर्प, सांप, नाग ।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—जहर विखम जारंग, भुजां धारंग भुजंगम । भाळ तेज भारंग, जरा हारंग लसै जम ।—सू प्र.

२ शेषनाग ।

रू० भे०—भुअंगम, भुअंगमि, भुजंगम, भुयंगम, भूवंगम, भूयंगम, भूयंगमि ।

भुजंगमचर—देखो 'भुजंगचर' (रू. भे.) (ह. नां. मा)

भुजंगरसना—सं० स्त्री—दो की संख्या * (डि. को.)

भुजंगविजृंभित—सं० पु० [सं० भुजंगविजृंभित] २६ वर्णों का वर्णिक छन्द जिसमें दो मगण, एक तगण, तीन नगण एक रगण, एक सगण एवं अन्त में लघु गुरु होते हैं ।

भुजंगासन—सं० पु० [सं०] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें सर्व प्रथम उल्टा सोकर, जिससे पांव के अंगूठे से नाभि पर्यंत का भाग पृथ्वी का स्पर्श करता रहे । दोनों करतलों को नाभि की दोनों बाजू में पृथ्वी पर रखकर शिर की तरफ का

भाग ऊंचा रखना होता है इससे कुंडलिनी जागृत होती है व जठराग्नि की वृद्धि होती है।

भुजंगी–सं० पु० [सं० भुजंगः+ङीप्] १ प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण वाला एक वर्णिक छंद जिसमें पहले तीन यगण व अन्त में एक लघु व एक गुरु होता है।

२ बारह वर्ण वाला एक गीत जिसमें चार यगण व अन्त में गुरु होता है।—र. ज. प्र.

३ देखो 'भुजंग' (रू. भे.)

उ०—**भुजंगी** लचकै देत कोम धकै भोम भार, बकै बळोवळी खेळा किलक्कै वीरांण। छिलै घाव चळूळां सूरमा घावां लोह छकै, उभै-सेन हकै उचक्कै आरांण।—हुकमीचंद खिड़ियो

भुजंगीप्रयात—देखो 'भुजंगप्रयात' (रू. भे)

भुजंगेन्द्र–सं० पु० यौ० [सं० भुजंगः+इन्द्र] शेष नाग।

रू० भे० भुजगेंद्र।

भुजंगेस, भुजंगेसर–सं० पु० यौ० [सं० भुजंगः+ईश, भुजंगः+ईश्वर] १ शेषनाग।

उ०—मुनिंद्रेस जोगेस कव्वेस मेळां, **भुजंगेस** देवेस सब्बेस भेळा। विदेह प्रतंग्या कहै एम वाकं, पुत्री जौ वरै सो ज तांणै पिनाकं।—सू. प्र.

२ पतंजलि ऋषि का एक नाम।

रू० भे०—**भुजगीस, भुजगेस, भुजगेस्वर, भुयंगेस, भुयंगेसुर।**

भुज–सं० पु० [सं०] १ हाथ।

२ मकान के एक ओर की दीवार।

३ हाथी की सूंड।

४ वृक्ष की डाली, शाखा।

५ रेखागणित में कोई किनारा या सिरा या उस पर खींची हुई रेखा।

ज्यूं—त्रिभुज, चतुर्भुज।

६ रेखागणित में समकोणों का पूरक कोंण।

७ ज्योतिष में तीन राशियों के अन्तर्गत ग्रहों की स्थिति।

८ दो की संख्या। * (डिं. को.)

९ चार की संख्या। * (डिं. को)

१० देखो 'भुजा' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ नमसकार सूरां नरां, पूरा सतपुरसांह। भारथ गज थाटां भिड़ै, अड़ै भुजां उरसांह।—बां. दा.

उ०—२ धन्य कह्यौ सब ऊमरां, साहस देख प्रचंड। हुवा सुरंगा बांण सुण, भुज लागा ब्रह्मंड।—रा. रू.

यौ०—भुजअंतर, भुजआजांन, भुजतळ, भुजत्रांण, भुजदंड, भुजपास, भुजबंध, भुजबंधन, भुजबळ, भुजबाथ, भुजभूसण, भुजमूळ, भुजसीस।

मुहा०—भुज भर भेटणौ=गले लग कर मिलना। भुज में भरणौ=आलिंगन करना, गले लगाना। भुजभार=उत्तरदायित्व।

रू० भे०—भुज्ज, भुय।

भुजअंतर–सं० स्त्री० यौ० [सं० भुज+अन्तरं] छाती, वक्षस्थल। (डिं. को.)

भुजआजांन–वि० [सं० भुज+आजानु] जिसके हाथ घुटने तक लंबे हों, आजानुबाहु।

उ०—'सकत' सेर मन मेर, वेर दुम्भर भर भल्लण। **भुजआजांन** प्रमांण, पांण असहां खग पल्लण।—रा. रू.

रू० भे०—भुजाआजांन।

भुजकंट–सं० पु० यौ० [सं० भुज+कंटकः] नाखून। (अ. मा.)

रू० भे०—भुजकांटौ, भुजाकंट।

भुजक–सं० पु० [सं० भुजिष्यः] नौकर, अनुचर। (ह. नां. मा.)

रू० भे०—भुजख।

भुजकांटौ—देखो 'भुजकंट' (रू. भे.) (डिं को.)

भुजकोटर–सं० स्त्री० यौ० [सं० भुज+कोटरः] बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, कांख। (डिं. को.)

भुजख—देखो 'भुजक' (रू. भे.) (अ. मा.)

भुजग—देखो 'भुजंग' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना. मा.)

उ०—अर अल्प धन भुजग नायक रै समांन लज्जा पाय प्रांमार रौ समूह नाक रूप विदेस में थियौ जुवौ।—वं. भा.

भुजगपति—देखो 'भुजंगपति' (रू. भे.)

भुजगळ—देखो 'भुजळग' (रू. भे.)

उ०—दह गजर **भुजगळे** काळां दळां, समर दै दवा चौसठि संगाथै। डमर भर 'भगत' उत जिकां नाराज डहे, मंगळा सिंघ बहै जिम खलां माथै।—सुनमांनसिंघ हाडा रौ गीत

भुजगीस—देखो 'भुजगेस' (रू. भे.)

उ०—रारियां सुभट तूटै दमग रीस रा, त्रिलोचण जिसा खूटै नयण तीसरा। सिर करी ऊकसै लसै **भुजगीस** रा, जोय दससीस थट कीस जगदीस रा।—र. ज. प्र.

भुजगेंद्र—देखो 'भुजंगेंद्र' (रू. भे.)

भुजगेस, भुजगेस्वर—देखो 'भुजंगेस' (रू. भे)

उ०—**भुजगेस** महेस दुजेस रिखी, नित पै रज चाहत माधव रे। तजि आंन उपाय सबै 'किसना' भज राघव राघव राघव रे।—र. ज. प्र.

भुजड़–सं० पु०—वीर, योद्धा।

भुजठाळक—१ देखो 'भुजळग'।

उ०—ताजीम पाय कहियौ तिकां, बाह धिनोधिन बाहुजां। लाख हूं हेक हेकौ लड़ण, **भुजठाळक** भाली भुजां।—मे. म.

भुजडंड–वि० [सं० भुजदण्ड] १ बलवान, योद्धा।

२ प्रचंड, जबरदस्त।

३ समर्थ, शक्तिशाली ।

उ०—सारंगपांण जयरांम तिलोक स्वांमी । भूपाळ-भूप **भुजडंड** प्रचंड भांमी ।—र. ज. प्र.

४ आभूषण विशेष ।

५ देखो 'भुजा' ।

उ०—१ सखी अमीणौ साहिबौ, बोह जूंभो बळबंड । सौ थांभै **भुजडंड** सूं, खड़हड़तौ ब्रहमंड ।—बां. दा.

उ०—२ किसे कांम आवणरा कालौ, बांधे माथै मोड़ विलालौ । **भुजडंड** पकड रुठियौ भालौ, लेवा भचक ऊठियौ 'लालौ' । —व्रजुबाई

रू० भे०—भुजदंड, भुजयडंड, भुजाडंड, भुजादंड, भुज्जडंड, भुडंड, भुयडंड, भुवडंड, भूग्रडंड, भूडंड ।

भुजडांण—वि०—लम्बी भुजाओं वाला वक्षस्थल ।

२ भुजाओं को तोड़ने वाला, पराक्रमी ।

उ० – पड़सी जद काम दोड़सी पाळी, दाढचाळी असुरां **भुजडांण** । वा आवै ऊपर इकताळी, देसणोंक वाली दीवांण ।—अज्ञात

भुजतळ—सं० पु०—भुजाओं के मध्य का भाग ।

उ०—काचळ कातरिया बाजू में काठा, **भुजतळ** भेटै जां मेटै अघ माठा । कर मैं कांकणियां जसदा गळ काठी, अदभुत मौरां पर लुढतोड़ी आंटी ।—ऊ का.

भुजत्रांण—सं०पु० [सं०भुजत्रांण] युद्ध के समय पहनने के हाथ के दस्ताने ।

भुजदंड—१ देखो 'भुजडंड' (रू भे.)

उ०—दुजणसिंघ दईवांण, सूर बोलै 'सबळावत' । भूप भड़ां **भुजदंड**, पटा इण कजि पूजावत ।—सू. प्र.

भुजन—देखो 'भजन' (रू. भे) 	(अ. मा.)

भुजपरिनाग—सं० पु० [सं०] दक्ष प्रजापति राजा की पुत्री कद्रुनामा के गर्भ से उत्पन्न नवकुली नागों में से एक ।

भुजपाळ—सं० पु०—योद्धा, वीर । 	(नां. मा.)

भुजपास—सं० पु० यौ० [सं० भुज+पाशः] १ किसी के गले में हाथ डालने की क्रिया, गलबांही ।

भुजबंद, **भुजबंध**—सं० पु० [सं० भुज+बंध] १ भुजा पर धारण करने का एक आभूषण विशेष ।

उ०—भूली लाज काज सुनि सजनी, परचौ अधिक रस फंदन । मीरां के प्रभु गिरधरनागर, करि राखौ **भुजबंधन** ।—मीरां

रू० भे०—भुजवंद ।

भुजबंधन—सं० पु० [सं०] आलिंगन ।

भुजबळ—सं० पु०[सं० भुज+बल] १ भुजाओं की शक्ति, सामर्थ्य ।

उ०—अनमी आंटीला थळिया थळ वाळा, बिपदा बांटीला बळिया बळवाळा । दुरजय दीखण में निरभय दिन दूल्हा, भीखण दुरभिख में **भुजबळ** नह भूला ।—ऊ. का.

२ शालिहोत्र के अनुसार घोड़े के अगले पैर में ऊपर की ओर को होने वाली भौंरी ।

३ मुखिया, प्रधान ।

रू० भे०—भुजाबळ, भुजाबळि, भूयबळि ।

भुजबळी—वि०—बलिष्ट भुजाओं वाला, पराक्रमी ।

उ०—**भुजबळी** कांन भाराथ मंड, 'खीम'उत करै खळ विहंड खंड । 'राजधर' रूकि राखंति राज, 'सांमळ' सुतन्न 'सदौ' सकाज । —गु. रू. बं.

रू० भे०—भुजाबळि ।

भुजबाथ—सं० पु०—दोनों भुजाओं को गले में डालकर किया जाने वाला आलिंगन, गलबांही ।

भुजभूसण—सं० पु० यौ० [सं० भुज+आभूषण] भुजा पर बांधने का एक आभूषण । 	(डिं. को.)

भुजमूळ—सं० पु० यौ० [सं० भुजमूल] १ कांख ।

रू० भे०—भुजामूळ ।

भुजमोचक—सं० पु० [सं०] सर्प का विषउतारने की एक नीले रंग की रत्नमणि ।

रू० भे०—भुअमोअग, भुयमोअग, भुयमोयग ।

भुजयडंड—देखो 'भुजडंड' (रू. भे.)

उ०—ऊछळैय फैण मुख भाट लाग, भळकत जेम दरियाव भाग । पग सधर पूठ पींडा प्रचंड, देवळ तन थांभा **भुजयडंड** ।—पे. रू.

भुजळक, **भुजळग**—सं० स्त्री०—तलवार । 	(डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ घुघर घणा कीरति घर घण, रांम हेक गजबाग रत । **भुजळक** दंत सत्र भींचरड़, 'मेघ' तणौ हसती मसत । —महाराज छत्रसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—२ वढ पड़ विहर थाटां,'विलंद',**भुजळग** भट सेलां भचड़ि । स्रग वसूं कहे 'हटमल्ल' सुतन, अमूनि जिम खाटै अचड़ि ।—सू. प्र.

उ०—३ लंगस ऊपटां फौज गज थटां **भुजळग** लहर, सूरतन ठहर जळ गहर साजा । प्रथीपत 'अभौ' आयौ उलट छत्रपती, रौद सर विलंद पर समंद राजा ।—अभैसिंघ राठौड़ रौ गीत

रू० भे०—भुजगळ, भुजठाळक ।

भुजलठी—वि०—१ हाथ में लाठी रखने वाला ।

२ डंडे के बल काम करने वाला ।

भुजवंद—देखो 'भुजबंद' (रू. भे.)

भुजसंभू—सं० पु०—युद्ध का भार उठाने वाला, योद्धा ।

भुजसीस—सं० पु० यौ० [सं० भुज+सीस] भुजा का ऊपरी हिस्सा, कंधा । 	(डिं. को.)

भुजांण, **भुजांन**—देखो 'भुजा' (रू. भे.)

उ०—देवीदास 'विसन्न' तण, जांणे विसन **भुजांन** । भांजेवा तेढां भड़ां, वेढां तणौ 'विसन्न' ।—रा. रू.

भुजा—सं० स्त्री० [सं०] १ हाथ, हस्त । 	(डिं. को.)

उ०—जगनाथ अंतरतणौ जांमी, गाहणौ खळ गुरड़ गांमी। साच वायक सिया सांमी, भुजां भांमी **भुजां** भांमी।—र. ज. प्र.

२ बाहु, बांह।

रू० भे०—भुज, भुजांण, भुजांन, भुजाट, भुजि, भुज्ज, भुया, भूजा।

भुजाग्राजांन—देखो 'भुजग्राजांन' (रू. भे.)

उ०—तनु रा तांत सिधु भ्रणकता नरा, आय अपछर भुका मगां असमांन रा। औय लागै गजब **भुजाग्राजांन** रा, रैवतां चढाई कठी राजांन रा।—जवांनजी आढ़ौ

भुजाई—देखो 'भुंजाई' (रू. भे.)

उ०—१ राठौड ज तै कियौ रिणह, गहण **भुजाई** भटकळह। पळ धाप कियौ पळहारियां, कळळ, बिंद कोळाहळह।—गु. रू. बं.

उ०—सो सात सौ खासा यारां सूं **भुजाई** आरोगै और मंगतजन भाट सारा मुँहडा आगै बैठ जीमै और रांधियौ कौरौ लंगर बंटै।

—जलाल बूबना री बात

भुजाकंट—देखो 'भुजकंट' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

भुजाग-सं० स्त्री०—नागिन, सर्पिनी।

उ०—गनीम गड्ढ गव्वतीय गब्भ को गमावनी, जहांन आंन मांन जोर सोर तै जमावनी। रही प्रतच्छ रच्छसी दुगच्छ गच्छ दच्छ-बनी, लगैं विपच्छ लच्छ पैं **भुजाग** वच्छ भच्छनी।—ऊ. का.

रू० भे०—भुजाग्र।

भुजागळ-सं० पु०—१ रक्षक, पहरेदार।

उ०—'जैत' सुजाव पखां चाडण जळ, भाटी उदियाभांण **भुजागळ**। भुजळग हथ विजपाल भंडारी, मुहणौते 'सांगो' मिणधारी।

—रा. रू.

२ शक्तिशाली, बलवान।

उ०—बीजा ही साथै दळ सब्बळ, भाईबंध भत्रीज **भुजागळ**। महि लहड़ौ खुरसांण मंडोवर, अड़िम्रौ वडां सरस ग्रहि असिमर।

—वचनिका

३ विशाल, बड़ा।

सं० स्त्री०—४ अर्गला, बेंडा। (डिं. को.)

उ०—सुजड़ा हथौ 'भदावत', 'सांमळ','भीम' हरौ छळ धणी **भुजा-गळ**। 'सांभळ' जोड़ जोध 'सादावत' रिण पड़िहार सजूंभौ रावत।

—रा. रू.

वि०—५ लम्बी भुजा वाला।

भुजाग्र—देखो 'भुजाग' (रू. भे.)

भुजाट—१ भयंकर, जबरदस्त।

२ देखो 'भुजा' (रू. भे.)

उ०—१ उभै **भुजाटां** बरद रजवाट रा ओपिया, जवन द्रहवाट रा होय जावै। जुव समै अमीरळ रूप जजराट रा, खाट रा वाघ कुण फेट खावै।—गुलजी आढौ

उ०—२ अड़ौ थड़ी आग वूठां धकावै वीरांण आघा, महाबीर क्रोध चाळै लागा तौ महीप। किरीठी कराळौ रीस जैद्रथी मिटाबा कोप्यौ, सत्रवां **भुजाटां** करी भीम ज्यूं सहीप।

—बादरखांन धधवाड़ियौ

भुजाडंड, भुजाडंडि—देखो 'भुजडंड' (रू. भे.)

उ०—गात मेर कज भीम, महाजोधा ऊतळी-बळ। **भुजांडंड** पर-चंड, जेम गंगाजळ ऊजळ।—गु. रू. बं.

उ०—२ सांमंत सुहड दीवै सरब्ब, जीपंत जिकै जुध महा प्रब्ब। प्रीचाळ महा जोधा प्रचंड, डोलता डहै नभ **भुजाडंड**।—गु. रू. बं.

उ०—३ भीम तणा ग्रीखम भासंकर, तेज **भुजाडंड** लागि तिस। कूरम तणौ सोखियौ कस करि, रसक न रहियौ तेण रस।

—दुरजणसाल हाडा री गीत

उ०—४ **भुजाडंड** उलाळि भालौ भमाडै। आजोकौ इसौ मेर बाथां उपाड़ै। गरज्जै भलौ बोलियौ भीम ग्राही, पतीसाह सूं माहरी पातसाही।—गु. रू. बं.

उ०—५ आ बात सुणतां ईं सादूळा सीह ज्युं गाजिया सिलेह भीडीया। ढालडा खडवडिया। **भुजाडंड** जिके अहमंड अडिया सिंधुवा पांना वागा।—पनां.

उ०—६ 'कुसळावत' 'बीठल' रण कोडे, ऊभौ गयण **भुजाडंड** ओडै। 'वैणावत' 'चालौ' वरदाई, स्यांम धरम व्रत प्रीत सवाई।

—रा. रू.

भुजाडौ-सं० पु०—१ संहार करने वाला। २ पराक्रमी।

भुजादंड—देखो 'भुजडंड' (रू. भे.)

उ०—अर कंवर भी आरूढ होतां ही त्रिभागौ तोमर **भुजाडंड** थी भमाइ सत्रुवां रै सांम्है आपरौ बाह झोकियौ।—वं. भा.

भुजापत, भुजापति-सं० पु० [सं० भुज+पति] वीर, योद्धा।

भुजाबळ—देखो 'भुजबळ' (रू. भे.)

भुजाबळि—देखो 'भुजबळ' (रू. भे.)

उ०—दूत लक्षण कला सवि जांणूं, मूं हरइं हुसि राज पराणउं। ए युधिस्ठिर नरेंद्र सूयार, नांमि वल्लभ **भुजाबलि** सार।

—सालिसूरि

२ देखो 'भुजबळी' (रू. भे.)

भुजाबिच-सं० स्त्री०—कोंहनी। (डिं. को.)

भुजामूळ—देखो 'भुजमूळ' (रू. भे.)

भुजायत-सं० स्त्री०—लक्ष्मी, रमा। (अ. मा.)

भुजाळ-वि० [सं० भुज+रा० प्र० आळ] १ लम्बी भुजाओं वाला।

उ०—दुनी चा काळ **भुजाळ** दईत, जिकै दळ साफ उभै द्रह जीत। असंख्यां तूझ तणा अवतार, ब्रह्मा रुद्र लहै न बिचार।—ह. र.

२ भयंकर।

उ०—उठियौ तिणवार वडौ उतळीबळ, सूरजसिंघ सहस बळं। कोपनळ काळ **भुजाळ** कमंधज, दोमजि भंजण सत्रु दळं।—गु. रू. बं.

३ बहादुर, वीर।

उ०—१ भरै हिक स्रोणी पिंड भुजाळ, विढै हिक वीर हुग्रा विकराळ। करै हिक हाकां जोध कंठीर, धारां हिक झीक हुवै धर धीर।—गु. रू. बं.

उ०—२ झोकै झाझी झाळ, काळ चाळ झटकै 'कमो'। भटकै क्रोध भुजाळ, खटकै उर खूंदाळमो।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—३ भांजिया जिकै भुजाळ, ग्रभमाल' विरद उजाळ। मंडियौ न थकै मुगल्ल, इम जीपियौ 'ग्रभमल्ल'।—सू. प्र.

उ०—४ रुघनाथ 'भीम' भाटी भुजाळ, काळौ-पहाड चालतौ काळ। 'जोग-रज' पिता ग्रप छळि निभ्रंत, जमदाढ़ हणै गरज प्रांण ग्रंत।—गु रू. बं.

उ०—५ मध नायक 'मांडण' हरौ, 'राजो' भीम भुजाळ। सयळ छभा पंगति सुहड, जांणक मुगतामाळ।—गु. रू. बं.

४ समर्थ, शक्तिशाली।

उ०—१ भूपति लखप्पति भुजाळ, ग्रादि रीति जादवां उजाळ। सूर धीर सात्रवां संघार, खागि त्यागि दूसरौ खंगार।—ल. पिं.

उ०—२ क्रपाळ विसाळ सिंधाळ किसन्न, बडाळ भुजाळ उजाळ विसन्न। मुणाळ भुग्राळ छत्राळ महेस, ग्रादेस ग्रादेस ग्रादेस ग्रादेस।

—ह र.

५ देखो 'बुरजाळ' (रू. भे.)

रू० भे०—भुज्जाळ।

ग्रल्पा०—भुजाळौ, भूझाळौ, भूजाळौ।

भुजाळि—१ समर्थ, शक्तिशाली।

२ देखो 'बुरज' (रू. भे.)

उ०—तनू प्रबन्ध तोपकै तुरंग कंधनें तनै, भुजाळि ग्राळि भोलितें बहै विभा विभाव नें। बरिट्ठ मं बरिट्ठ जै बहेक तिन्न सालितें, गरिट्ठ में गरिट्ठ तै गुरै कती गजाळि तैं।—ऊ. का.

भुजाळौ—देखो 'भुजाळ' (ग्रल्पा., रू भे.)

उ०—१ भायल 'ग्रासौ' 'रतन' भुजाळा, 'ग्रजमल' जतन वंस उजवाळा। राजा निकट 'मुकन' तन रावत, क्रत गुण खीची 'सिवौ' 'कलावत'।—रा. रू.

उ०—२ वढहथ 'रासौ' 'सांमळ' वाळौ, 'भैरव' 'नाहर' तणौ भुजाळौ—रा. रू.

उ०—३ वरव्वीर 'खूमांण' वीराधवीरं, कळी-मूळ सादूळ बैवै कंठीरं। भलौ भीच 'कल्यांण-मल्लौ' भुजाळौ, 'मांनावत' वेढीमणौ मच्छराळौ।—गु. रू. बं.

उ०—४ रुंड मुंड रोळिया, 'भीम' पाडियौ भुजाळौ। भारथ कुरखेत रै, हुग्रौ जुध लंका वाळौ।—गु. रू. बं.

उ०—५ तेड़ै 'केहरि' वार तिण, भड़ थाट भुजाळा। ग्राया दरगह ऊबरा, बहसै बिरदाळा।—सू. प्र.

उ०—६ भाटी सुरतांणोत, 'रुधौ' बोलै बिरदाळौ। ग्रागै पड़ि ऊपड़ै, भिड़ै उज्जैण भुजाळौ।—सू. प्र.

उ०—७ ग्रड़ाभीड़ ग्राछटै, वाह सारसी भुजाळै। जुध 'पीळौ' मेलियौ, खळां मोकळां विचाळै।—बखतौ खिड़ियौ

भुजावेद—सं० पु० [सं० भुजा+वेद=चार] १ गरुड़। (डिं. को.)

२ विष्णु।

भुजि—देखो 'भुजा' (रू. भे.)

भुजिया—सं० पु० [ब. व. भुजिया] (ब. व.) १ बेसन के पकोड़े।

२ बारीक सेव। (बीकानेर)

उ०—बैंवतोड़ा मांय सूं ग्राखर ग्रेक जणै दया कर'र टाबरां नै दो पईसां रा भुजिया दिराया।—वरसगांठ

३ भूना हुग्रा खाद्य पदार्थ।

भुजीस—सं० पु० [सं० भुजंग] नाग, सर्प।

भुज्ज—१ देखो 'भुज' (रू. भे.)

उ०—परचंड पराक्रम दाखवै, पित्त वीवनै पंच दिन। 'गजसाह' वसुह राखी पगै, डहै भुज्ज डिगियौ गिगन।—गु. रू. बं.

उ०—१ पछिम पुरब उतराध, इळा दखणाधह ग्रागळ। हिंदूवांण खुरसांण, दुहूं भुज्जै दुन्है छळ।—गु. रू. बं.

२ देखो 'भुजा' (रू. भे.)

भुज्जडंड—देखो 'भुजडंड' (रू. भे.)

ई०—रुघव्व जुज्ज सांमवेद, ग्रांमना ग्रथव्वणं। त्रईस रांण वेदमंत्र, बोलियंत बंभणं। जुडित्त एक जोरदार, थोर भुज्जडंड ए। जेठी प्रचंड ग्रीठ पिंड, मल्ल जुध्ध मंड ए।—गु. रू. बं.

भुज्जन—१ देखो 'भोजन' (रू. भे.)

२ देखो 'भजन' (रू. भे.)

भुज्जाळ—१ देखो 'बुरजाळ' (रू. भे.)

उ०—१ तिसोता जिसौ नीर गंभीर टांकौ, बिलूंमै बिचै जाळ भुज्जाळ बाकौ। जिका कोट नूं देवता हाथ जोड़ै, चहूं कूंट रै बीच बैंकूट चोड़ै।—मे. म.

२ देखो 'भुजाळ' (रू. भे.)

उ०—धरियै ग्राभ लगै धाराळै, भीरी भीम लियै भुज्जाळै। दिल्ली फौजां मग्ग निहाळै, खुरम खडो मैदांन विचाळै।—गु. रू. बं.

भुटंत--देखो 'भूटांन' (रू. भे.)

उ०—जेथ बरफ बरसै जमै, परबत सिखरां पंत। 'बंक' सियाळै लोभबस, भाळै चीण भुटंत।—बां. दा.

भुटकणौ, भुटकबौ—क्रि० स०—१ भिड़ना, टक्कर खाना।

२ युद्ध करना।

३ देखो 'भटकणौ, भटकबौ' (रू. भे.)

भुटकणहार, हारौ (हारी), भुटकणियौ—वि०।

भुटकिग्रोड़ौ, भुटकियोड़ौ, भुटक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भुटकीजणौ, भुटकीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।
भुटक्कणौ, भुटक्कबौ—रू० भे०।

भुटकियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ भिड़ा हुआ, टक्कर खाया हुआ. २ युद्ध किया हुआ. ३ देखो 'भटकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भुटकियोड़ी)

भुटक्कणौ, भुटक्कबौ—१ देखो 'भुटकणौ, भुटकबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भटकणौ, भटकबौ' (रू. भे.)
भुटक्कणहार, हारौ (हारी), भुटक्कणियौ—वि०।
भुटक्किग्रोड़ौ, भुटक्कियोड़ौ, भुटक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भुटक्कीजणौ, भुटक्कीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

भुटक्कियोड़ौ—१ देखो 'भुटकियोड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'भटकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भुटक्कियोड़ी)

भुटणौ भुटबौ-क्रि० अ०—मन ही मन क्रोधित होना।
उ०—इत्ता बरस वै लोग कळजुग रौ नांव सुणता हा जकौ परतख आपरी आंख्यां देख्यौ। महारांणी रै माथै ठौर तौ किणी रौ नीं चालतौ, पण मांय रा मांय भुटता।—फुलवाड़ी
भुटणहार, हारौ (हारी), भुटणियौ—वि०।
भुटाड़णौ, भुटाड़बौ, भुटाणौ, भुटाबौ, भुटावणौ, भुटावबौ—प्रे० रू०।
भुटिग्रोड़ौ, भुटियोड़ौ, भुटचोड़ौ—भू० का० कृ०।
भुटीजणौ, भुटीजबौ—भाव वा०।
भुट्टणौ, भुट्टबौ—रू० भे०।

भुटाड़णौ, भुटाड़बौ—देखो 'भुटाणौ, भुटाबौ' (रू. भे.)
भुटाड़णहार, हारौ (हारी), भुटाड़णियौ—वि।
भुटाड़िग्रोड़ौ, भुटाड़ियोड़ौ, भुटाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भुटाड़ीजणौ, भुटाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भुटाड़ियोड़ौ—देखो 'भुटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भुटाड़ियोड़ी)

भुटाणौ, भुटाबौ-क्रि० स०—मन ही मन क्रोध दिलाना।
भुटाणहार, हारौ (हारी), भुटाणियौ—वि०।
भुटायोड़ौ—भू० का० कृ०।
भुटाईजणौ, भुटाईजबौ—कर्म वा०।
भुटाड़णौ, भुटाड़बौ, भुटावणौ, भुटावबौ—रू० भे०।

भुटायोड़ौ-भू० का० कृ०—मन ही मन क्रोधित किया हुआ।
(स्त्री भुटायोड़ी)

भुटावणौ, भुटावबौ—देखो 'भुटाणौ, भुटाबौ' (रू. भे.)
भुटावणहार, हारौ (हारी), भुटावणियौ—वि०।
भुटाविग्रोड़ौ, भुटावियोड़ौ, भुटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भुटावीजणौ, भुटावीजबौ—कर्म वा०।

भुटावियोड़ौ—देखो 'भुटायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भुटावियोड़ी)

भुटियोड़ौ-भू० का० कृ०—मन ही मन क्रोधित हुवा हुआ।
(स्त्री० भुटियोड़ी)

भुट्टणौ, भुट्टबौ—देखो 'भुटणौ, भुटबौ' (रू. भे.)
भुट्टणहार, हारौ (हारी), भुट्टणियौ—वि०।
भुट्टिग्रोड़ौ, भुट्टियोड़ौ, भुट्टचोड़ौ—भू० का० कृ०।
भुट्टीजणौ, भुट्टीजबौ—भाव वा०।

भुठार, भुठौर-सं० पु०—गुजरात एवं मरुस्थल प्रदेशों में पाई जाने वाली घोड़े की जाति विशेष।

भुडंड—१ देखो 'भुजडंड' (रू. भे.)
उ०—ग्रोडै वीरघंटा घोक मातंगां ताजांन वाळौ, रोडै वीजे विखमी वाजांन 'वाळौ' रीठ। ग्रोक ग्रंगां ग्रेराक'लै भुडंडां ग्राजांन वाळौ, नहगां 'राजांन' वाळौ हाकलै नग्रीठ।
—हुकमीचंद खिड़ियौ

भुणकमळौ—देखो 'भूंणकमळौ' (रू. भे.) (डि. को.)
भुतांण—देखो 'भाथौ' (रू. भे.)
भुतेस—देखो 'भूतेस' (रू. भे.)
भुत्तभोग—देखो 'भुक्तभोग' (रू. भे.) (जैन)
भुत्तभोगी—देखो 'भुक्तभोगी' (रू. भे.) (जैन)
भुत्तियौ—देखो 'भूतियौ' (रू. भे.)
उ०—घणी तनपट करी तौ इण रजवाड़ै रा ई भुत्तिया बिखेर देवूंला।—फुलवाड़ी

भुथांण—देखो 'भाथौ' (रू. भे.)
उ०—भुथांण कबाणं जुग्राणं समल्लं, मिळै मीरजादा इसा भुज्झ मल्लं। बिन्है फौज फौजां धणी चत्रबाहूं, सझै सार ग्रावद्ध लीधां सनाहूं।—वचनिका

भुदार—देखो 'भूदार' (रू. भे.)
भुधर—देखो 'भूधर' (रू भे.)
भुधरौ—देखो 'भूधर' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—कुलट उलटह उलट पालट, ग्ररट घट घट प्रगट ग्रणवट, छूट छट छम नीर छट छट, तीस खट रट जमण तट तट, भूधरौ वड भाग।—मुरारदास बारहठ

भुनगौ-सं० पु० [ग्रनु०] १ प्रायः शिशिर ऋतु में फूलों ग्रादि पर उड़ने वाला एक छोटा कीड़ा या पतंगा।
२ लाक्षणिक ग्रर्थ में बहुत ही छोटा या तुच्छ व्यक्ति ग्रथवा पदार्थ।

भुनणौ, भुनबौ-क्रि० अ०—ग्राग के ताप से भुना जाना।
२ बन्दूक, तोप ग्रादि से शरीर छिद्रित हो जाना।
३ रुपया, नोट ग्रादि का छोटे-छोटे सिक्कों में परिवर्त्तित होना।
भुनणहार, हारौ (हारी), भुनणियौ—वि०।

भुनिश्रोड़ौ, भुनियोड़ौ, भु-योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भुनीजणौ, भुनीजबौ—भाव वा० ।

भुनाड़णौ, भुनाड़बौ—देखो 'भुनाणौ, भुनाबौ' (रू. भे.)
भुनाड़णहार, हारौ, (हारी), भुनाड़णियौ—वि० ।
भुनाड़िश्रोड़ौ, भुनाड़ियोड़ौ, भुनाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भुनाड़ीजणौ, भुनाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भुनाड़ियोड़ौ—देखो 'भुनायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भुनाड़ियोड़ी)

भुनाणौ, भुनाबौ—क्रि० स० [भुनणौ क्रि० का० प्रे० रू०] १ भुनने का काम किसी दूसरे से करवाना ।
२ किसी को कुछ भुनने में प्रवृत्त करना ।
३ नोट, रुपये आदि को सिक्कों में परिवर्तित करना/कराना ।
भुनाणहार, हारौ (हारी), भुनाणियौ—वि० ।
भुनायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
भुनाईजणौ, भुनाईजबौ—कर्म वा० ।
भुनाड़णौ, भुनाड़बौ, भुनावणौ, भुनावबौ—रू० भे० ।

भुनायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ दूसरे से भुनने का काम कराया हुआ. २ किसी को कुछ भुनने में प्रवृत्त किया हुआ. ३ नोट, रुपये आदि को छोटे सिक्कों में परिवर्तित किया हुआ.
(स्त्री० भुनायोड़ी)

भुनावणौ, भुनावबौ—देखो 'भुनाणौ, भुनाबौ' (रू. भे.)
भुनावणहार, हारौ (हारी), भुनावणियौ—वि० ।
भुनाविश्रोड़ौ, भुनावियोड़ौ, भुनाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भुनावीजणौ, भुनावीजबौ—कर्म वा० ।

भुनावियोड़ौ—देखो 'भुनायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भुनावियोड़ी)

भुपति—देखो 'भूपति' (रू. भे.)

भुपाळ—देखो 'भूपाळ' (रू. भे.)

भुबि—देखो 'भूमि' (रू. भे.)

भुभारब—सं० पु०—शेर, सिंह । (डिं. को.)

भुभ्रत—देखो 'भूभ्रत' (रू. भे.)

भुमंड, भुमंडळ—देखो 'भूमंडळ' (रू भे.)
उ०—प्रचड बाहु दंड कै भये प्रचंड पिंड मैं, घमंड कौ घटाय दै मिळे न सौ भुमंड मैं । डरै न सिंध-डौल तौ स्व डोसतै डरावनै, करोळ टोळ टोळ कोल तैं करावनै ।—ऊ. का.

भुमण—देखो 'भुवन' (रू. भे.)
उ०—भमिया अत्य लोक भुमण पिण भमियउ, साठ हजार लिजइ भड़ साथि । राजा सगर तणउ ताइ रैंवत, बहु सबदइ कुण बाधइ घाति ।—महादेव पारवती री वेलि

भुम्मि, भुम्मी—देखो 'भूमि' (रू. भे.)

उ०—१ तिकां हिज हेत दगी नंह तोप, रही बजि रीठ बिहूं बळ रोप । जिका सणगांकि भणंयकिय जेह, सुवा भड़ भुम्मि हुवा धड़सेह ।—मे. म.
उ०—२ तुरां खुरां पुरांह भुम्मि सुर सोम तजयं । न होय ग्यांन सेन तैं अनेक रंग भेजियं ।—रा. रू.

भुयंग—देखो 'भुजंग' (रू. भे.)
उ०—१ सदा तौ नांव लियै स्रीरंग, भखै नंह तांह संसार भुयंग मुरार जिकां-ह बसै तू मुक्ख, संसार समंद तिरै तैं सुक्ख ।—ह. र.
उ०—२ खेध पर धांख कर वैरियां गम खरै, जहर करतौ जिकौ जगत जांणै । नरंदां 'नींबा' तणै छाबडै झाल नस, अेता में भुयंग विख कीध आंणै ।—दुरगादास राठौड़ रौ गीत
उ०—३ जिके धरती रा धणी पताळ वासी भुयंग नै धण रा धणी दौलतवंत औ बिन्है एकै वग हूंता सु धरती रौ पुड़ भेदनै विमरै पैठा, उठै रहण लागा ।—रा. सा. सं.

भुयंगचर—देखो 'भुजंगचर' (रू. भे) (नां. मा.)

भुयंगम—देखो 'भुजंगम' (रू. भे)
उ०—१ आज ज सूती निसह भरि, प्रीय जगाई आइ । विरह भुयंगम की डसी, लबथबतीं गळ लाइ ।—ढो. मा.
उ०—२ चपळ नेत्र सारंग, रेख भ्रूहां मकरंद । दीपक-नासा दिपंत, सरद-रैणी मुख-इंद्रह । डंसण-बीज-दाडंम, वेणि वासंग भुयंगम, भटियांणी वर कमध, समद गंगा नदि संगम ।—गु. रू. बं.
उ०—३ उंदर दर खण मरै, पैस भोगवै भुयंगह । हळ वरि मरै वहिल्ल, हरी जव चरै तुरंगह ।—नैणसी

भुयंगेस, भुयंगेसुर—देखो 'भुजंगेस' (रू. भे.) (अ मा.)

भुयंद—सं० पु० [सं० भू+इन्द्र] राजा, नृप ।
उ०—अग्राजै अनड घटा आरोहै, भुय 'मांन' मगवान भुयंद । आवै हाथ नहीं तिण आंटै, मसळै हातळ 'जगौ' मईंद ।
—महादांन महडू

भुय—१ देखो 'भूमि' (रू. भे.)
उ०—मीत अन उदत खग पत भमै कांत मग, मुड़ै नंद पछी खावत डर समोड़ । कमळ अह टळै भुय टळै पारथ कळह, रण अनड़ हलै तौ पलै राठौड़ ।—नाथौ बारहठ
२ देखो 'भांय' (रू. भे.)
उ०—१ नरसंघ ७वरस री उमर, तिकै नूं छाती कन्है लीयां थकां रांणी लड़ै छै । अर पठांण थोड़ा अर धणी भुय रा खडीया आया । लोहे तौ सगळां नूं पछांणा हेठै दीना ।—राजा नरसिंघ री बात
उ०—२ सुदारै गोठ में नवी सुनाई आय बपरावां सताबी करौ भुय अळगी छै ।—कूंवरसी सांखला री वारता
३ देखो 'भुज' (रू. भे)

भुयग, भुयगि—देखो 'भुजंग' (रू. भे.)
उ०—निसी भरी सूती सुंदरी, वालंभ कंठ विलगिग । मोहण-वेली

मारुई, पीधी नाग भुयगिग ।—ढो. मा.

भुयण, भुयणि, भुयणी—देखो 'भुवन' (रू. भे.)

उ०—१ गम-निसा तिस भुयण ताप दाळिद गमण, धूप जळ सरण समपण सुधा धन । दन-प्रियां मछ सुरां रज-प्रियां दुथियां, किरणघण महण गिर सोम सुत 'क्रन' ।

—महाराणा जगतसिंघ सीसोदिया रौ गीत

उ०—२ सभ सभ उमंग बारह सघण,बिसुध चित्त कायक बयण । तेरहा भांण पय रांम तो, भल सेवै चवदह भुयण ।—र. ज. प्र.

उ०—३ थर गंगाजळ धार, आंणी तपकर ऊजळी । औ मोटौ उपगार, भागीरथ कीधौ भुयण ।—बां. दा.

उ०—४ 'बाघ' उत उचरै, सुणौ खट-तीस वंस, जुरा आगळि रहै बदूं जाहीं । भोज वीकम तणौ सुजस सारै भुयण, नरां तिण वार रा मंडप नाहीं ।—राव गांगौ

उ०—५ दलौ कहै दईवांण, साच बचन भायां सुणौ । भुयण न उगै भांण, 'वीरम' सूं चूकां वचन ।—गो. रू.

उ०—६ अदपत नै दिया रौ अंजस, लोभी अंजस लिया रौ । भुयण सांच जणायौ 'भीमा', हाथां हेत हिया रौ ।—किसनजी आढौ

उ०—७ अंबिकि बेटउ धायराठु सौ नयणौ आंधउ, अंबाला नउ पुत्तु पंडु त्रिहु भुयणि प्रसिद्धउ ।—पं. पं. च.

उ०—८ भगिनि त्रिहूं भुयणह तणी, सूणी न बीजी सांन । तुं ऊगी ग्रह पाडवा, अंधकार अग्यांन ।—मा कां. प्र.

उ०—९ हले चले दुनी मालवि मनव हालिया, भुयण मुर डिगे आभ भिळगा । प्रिथी चौ नाथ कवि पात वेळा पड़ी, बडे तरवर कुंवर पलै विलगा ।

—अनूपसिंघ करणसिंघोत रौ गीत

२ देखो 'भवन' (रू. भे.)

भुयणपत, भुयणपति, भुयणपत्ती—सं० पु० [सं० भुवनपति] इन्द्र ।

उ०—रांण महरांण एहौ कियौ'राजसी',तेण जळ म्हांण दुनियांण तरियौ । नरां रै पती मोटौ इसौ निबंधियौ, भुयणपत सुरां रै नीठ भरियौ ।—महारांणा राजसिंह रौ गीत

२ देखो 'भवनपति' (रू. भे.)

भुयदंड—देखो 'भुजडंड' (रू. भे.)

उ०—बिहुं खवै दौ भाथा करयलि कोदंडो, बालीवेसह बालो भुयदंड पयंडौ ।—पं. पं. च.

भुयमोग्रग, भुयमोयग—देखो' भुजमोचक' (रू. भे.) (जैन)

भुया—देखो 'भुजा' (रू. भे.) (जैन)

भुयाळ—देखो 'भूपाळ' (रू. भे.)

भुरंगौ—वि०—बुझा हुआ । (कोयला)

उ०—काळा, निरजीव अर भुरंगा कोयला में वासदी रौ परस पातां ई जिण भांत जीवण सांचरै, नै जगमग करण लागै उणी भांत काली मासी इण बाळ-कन्हैया रै जलम पछै जगमग जगमग करण लागी ।—फुलवाड़ी

भुरंट—देखो 'भुरट' (रू. भे.)

उ०—मासी नै तौ अैड़ौ लखायौ जांणै कोई उण रा माथा में सूळां भुरंट अर कांटा चिगदै । नस नस बींधीजती व्है ज्यूं ।—फुलवाड़ी

भुरंटियौ—देखो 'भुरट' (अल्पा., रू. भे.)

भुरंड—सं० पु०—कवच बनाने वाला, लुहार । (बांकीदास)

भुरकणौ, भुरकबौ—देखो 'बुरकणौ, बुरकबौ' (रू. भे.)

भुरकणहार, हारौ (हारी), भुरकणियौ—वि० ।

भुरकिओड़ौ, भुरकियोड़ौ, भुरक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भुरकीजणौ, भुरकीजबौ—कर्म वा० ।

भुरकाणौ, भुरकाबौ—देखो 'बुरकाणौ, बुरकाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ लुटतां ई सगळा फाला फूटग्या । निणां री खार वाळै अैड़ौ चढ़ियौ, जांणै घाव माथै मिरचां अर लूंण भुरकाया ।

—फुलवाड़ी

उ०—खुदोखुद ई मन करै जणां भाड़ी देती, हळकी हाथ करती । दूध पाय मूंडा में चांनी री चिगटी भुरकाती ।—फुलवाड़ी

भुरकाणहार, हारौ (हारी), भुरकाणियौ—वि० ।

भुरकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भुरकाईजणौ, भुरकाईजबौ—कर्म वा० ।

भुरकायोड़ौ—देखो 'बुरकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुरकायोड़ी)

भुरकियोड़ौ—देखो 'बुरकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुरकियोड़ी)

भुरकि, भुरकी, भुरक्की—सं० स्त्री०—१ महीन चूर्ण ।

उ०—म्हैं हील रै दरद री नांमी ओखद जांणूं । अेक चिमटी भुरकी लेवतां ई दौड़ण लाग जावैला ।—फुलवाड़ी

२ वशीकरण मंत्र से मंत्रित भस्म या धूलि ।

उ०—१ बाजी मोहै जीव सब, हमको भुरकि बाहि । दादू कैसी कर गया, आपण रह्या छिपाइ ।—दादूबांणी

उ०—२ सुण्यौ रूप वेदै सुपेख्यौ सवेही, बडा भाग री नागरी नारि वेहि । महा मोद आणंद देखै मुरक्की, भुलाड़ी बळी नाथ नांखी भुरक्की ।—नां. दा.

उ०—२ दादू भुरकी रांम है, सब्द कहै गुरु ग्यांन । तिन सब्दों मन मोहिया, उनमन लागा ध्यांन ।—दादूबांणी

उ०—३ चारि बरण का मूल कहां, हरि परम सनेही पीव । हारि जीति भुरकी पड़ी, तहां अलूधा जीव ।—ह. पु. वा.

उ०—४ कोइक भुरखी नांखी इम कहै रे, बोलै ज्यूं मन री आवै दाय रे । ग्यांनी तौ जांणै गैला सारखा रे, ए खूत माखी ज्यूं खेल मांय रे ।—जयबांणी

भुरड़णौ, भुरड़बौ–क्रि० स० [अनु०] १ महीन चूर्ण करना ।
२ संहार करना, मारना ।
क्रि० अ०—३ ताप से झुलसना ।
उ०—१ भूरा रूं **भुरड़ीजियां**, लूग्रां बैरण लाय । चटका लागै चोगिरद, पड़ै डिडाय डिडाय ।—लू
उ०—२ भरिया तरु पुहप वहै छूटा भर, कांम बांण ग्रहिया करगि । वळि रितुराइ पसाइ वेसन्नर, जण **भुरड़ीतौ** रहै जगि ।
—वेलि
भुरड़णहार, हारौ (हारी), भुरड़णियौ—वि० ।
भुरड़िओड़ौ, भुरड़ियोड़ौ, भुरड़चोडौ—भू० का० कृ० ।
भुरड़ीजणौ, भुरड़ीजबौ—कर्म वा०/भाव वा० ।

भुरड़ियोड़ौ—१ महीन चूर्ण किया हुआ ।
२ संहार किया हुआ, मारा हुआ ।
३ ताप से झुलसा हुआ ।
(स्त्री० भुरड़ियोडी)

भुरज—१ शिखर ।
२ शिखरदार बादल, बादल ।
उ०—आणंद मोर सुमरि आवाजै, वीणा वंस मधुर सुर वाजै । भुरजे **भुरज** भिडंता भाजै, 'गहड' सीख दे अंबर गाजै ।
—आसौ बारहठ
३ देखो 'बुरज' (रू. भे.)
उ०—१ 'गजन' सुतण साह छळ गाढ़ौ, भांजै **भुरज** उरड़ भैभीत । पांण सुजड़ ऊपाड़ै पोगर, जोरवर एहौ रिणजीत ।
—महाराजा जसवंतसिंह रौ गीत
उ०—२ आसिफखां अकबर कहै, भीतां **भुरजां** जोय । बांको गढ़ भड़ बांकड़ा, हलौ कियां की होय ।—बां. दा.
उ०—३ कमधज भुज निमज सकज सुसुपह कज, राखै रज रिणतूर रुडै । दम्मामां गरज वहै व्रज दोमज, गज पाताडक **भुरज** गुडै ।
—गु. रू. बं.

भुरजाळ–सं० पु०—१ योद्धा, वीर ।
उ०—गुंजवै पर ठाल नखै गिरजां, **भुरजाळांय** आंण ग्रही भुरजां । ग्रह मोद करी वरणाव घणौ, तिण रौ सुत बाळक नाथ तणौ ।
—पा. प्र.
२ गढपति, राजा ।
रू० भे०—भुरज्जाळ । अल्पा०—भुरजाळी ।
३ देखो 'बुरजाळ' (रू. भे.)
उ०—१ ज्वाळा तै जम्मीकै थरहरतै थाळ, कमठ का कंध सेस का कपाळ । प्रळैकाळ का पावस आतसूं का उक **भुरजाळ** । सिखराळ दुरंगूं के भड़ भिड़ज भूक काळ ।—सू. प्र.
उ०—२ सब दिन गौ मुख कुंडसिर, पांणी सूं भरपूर । अन **भुरजाळां** भुरजसा, गढ़ चीतोड़ कंगूर ।—बां. दा.

भुरजाळौ–वि० (स्त्री० भुरजाळी) १ शिखर वाला ।
उ०—१ ऊंचा गिगन में **भुरजाळा** बादळ झबाझब बीजळियां पळकावता हा, हरियळ रूंख नै बधावण सारू ढोल नगारा घुरावता हा ।—फुलवाड़ी
उ०—२ भूरा **भुरजाळा** अंबुद भळहळिया, खाळा नंदनाळा बाल्हा खळहळिया । अवनीं आंदोळन ओळा ओसरिया, पिड़ि भिड़ि प्लासी पै गोळा जिम गिरिया ।—ऊ. का.
२ देखो 'भुरजाळ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ **भुरजाळौ** छै फौजां रौ सिरदार ।—पाबूजी रा पवाड़ा
उ०—२ सदा रुखाळौ **भुरजाळौ** पावू कमधां वंस रौ सूर, चारणां आसरौ थारौ सदा रहै नचीत । प्रवाड़ां अनेकां इळा नकौ कोई पार पावै, आवै यू ऊताळौ साय वस रौ अदीत ।—बादरदांन धधवड़ियौ
३ देखो 'बुरजाळ' (अल्पा., रू. भे.)

भुरजाळी–सं० स्त्री०—गोल सींग वाली भैंस ।

भुरजास—देखो 'बुरजाळ' (रू. भे.)
उ०—सुग्रीव सकाजा रच कपिराजा, भूपत निवाजा भ्रात भणै । **भुरजास** भभीखण क्रत दंत कंचण साख पुरांणण वेद सुणै ।
—र. रू.

भुरजी—देखो 'भुरजाळी' ।
उ०—साख रौ पछै कांई पूछणौ—बाजरी रा सिरटा हाथ-हाथ लांबा, दांणौ देखौ तौ परड़ा रा डोळा व्है जिसौ । मूंगां, चंवळां री फळियां भुरजी भैंस रा सींग व्है जिसी । एक एक फळी में मुट्ठी-मुट्ठी दांणा ।—रातवासौ

भुरज्जा—देखो 'बुरज' (रू. भे.)
उ०—'अवरंग' 'तहवर' ऊपरै, किर कोपै जगदीस । पवै **भुरज्जां** वज्र पर, पड़ो गुरज्जां सीस ।—रा. रू.

भुरज्जाळ—१ देखो 'भुरजाळ' (रू. भे.)
उ०—**भुरज्जाळ** आया स्रीगोपाळ कांमपाळ भीर, निराताळ चाळ बांधै जितौ 'सुजा'नंद । लेर बीड़ौ कंपनी सूं जमीदारां थांन लेवा, फौजां करै फिरंगी न नांखै फेर फंद ।—कविराजा बांकीदास
२ देखो 'बुरजाळ' (रू. भे.)

भुरट–सं० पु०—१ एक प्रकार का घास जिसका पौधा गेहूं के पौधे के समान होता है । गेहूं की तरह इस पर भी बालें आती हैं इसके बीज अत्यन्त छोटे होते हैं जो बालों पर लगने वाले कांटे के झूमखे के अन्दर रहते हैं । इसके बीजों की रोटी भी बनाते हैं ।
उ०—१ ताहरां राव गांगै रा परधांन सेखै कनै आया नै सेखै नूं कह्यौ—'सेखा ! जितरी धरती मांहै करड़, इतरी धरती थांरी नै जितरी धरती मांहै **भुरट**, उतरी म्हांरी ।'
—नैणसी
उ०—२ भाये भळहळिया **भुरटां** रा भारा, अध अंग ऊलळिया उरगां रा आरा बिरळा दांतां री पांता बिरळाती, चौड़ै चाचर री चौड़े चिरळाती ।—ऊ. का.

२ उक्त घास का बीज जो कांटे के झूमखे में रहता है।

३ सोलंकी वंश की एक शाखा।

रू० भे०—भरूंट, भरोटी, भुंरट, भुरंट, भुरत।

अल्पा०—भरूंटियौ, भुंरटियौ, भुरंटियौ, भुरटियौ।

भुरटियौ—देखो 'भुरट' (अल्पा., रू. भे.)

भुरड-सं० पु०—ज्वार का भुट्टा। (परबतसर, नावा)

भुरणाट—देखो 'भणणाट, (रू. भे.)

उ०—भंवरा रा **भुरणाट**, गूंजवै माख्यां गावै। चीट्यां डोलै चाव, महक मधुरामृत चावैं। हरिया स्वेत गुलाब, तीन रंग फोग फबीला, खेरूं खस रस खाय, कुलखणा पसु कबीला।—दसदेव

भुरणौ, भुरबौ-क्रि० अ०—किसी वस्तु या पदार्थ का, विकृतावस्था प्राप्त होने पर, धीरे २ नष्ट-प्राय या समाप्त होना।

उ०—झट झट आंख्यां देखतां, झड़-झड़ पड़ियां फूल। झुर झुर बेलां सूकियां, **भुर भुर** गई समूळ।—लू

भुरणहार, हारौ (हारी), **भुरणियौ**—वि०।

भुरिम्रोड़ौ, भुरियोड़ौ, भूर्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भुरीजणौ, भुरीजबौ—भाव वा०।

भुरियोड़ौ-भू० का० कृ०—कोई वस्तु या पदार्थ किकृतावस्था प्राप्त होकर नष्ट प्राय या समाप्त हुवा हुआ.

(स्त्री० भुरयोड़ी)

भुरत—देखो 'भुरट' (रू. भे.)

भुरभुर-सं० स्त्री०—ऊसर या रेतीली भूमि में उगने वाली एक प्रकार की घास।

भुरभुरौ-वि० (स्त्री० भुरभुरी) वह पदार्थ जिसके कण हल्के से दबाव से अलग-अलग हो जायं।

रू० भे०—बुरबुरौ।

भुररी-सं० स्त्री०—बाजरी की बालों पर दाना पड़ने के पूर्व उत्पन्न होने वाला एक फूसनुमा पदार्थ।

भुरस, भुरसी—१ देखो 'भूरसी' (रू. भे.)

उ०—**१** अण तरै का बींद राजा मयारांम आला-नीला बांस रोप नै परणीया नै पांच सै पांच सै मोहरां ब्राह्मणा नै **भुरसी** दीधी।
—मयारांम दरजी री वात

२ देखो 'बुरज' (रू. भे.)

उ०—२ केहरसिंघ ऊदावत रै गळा री तोख री कड़ी **भुरस** में दिवी हुती।—**बां. दा. ख्या.**

भुरीगार—देखो 'बुरीगार' (रू. भे.)

भुरियौ—देखो 'भूरौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तद उवां जांनियां री पण जिहाज उठै आय लागी अे कपड़ा पहिर स्रंगार करै छै, पण जांनी दिलगीर। जो बींद तिकौ **भुरियौ** कोझौ।—ठकुरै साह री वात

उ०—२ वंदे पग लच्छि सहेत विराज, समीप मुकत्ति ज 'देव' सुतन्न। अखै प्रथमी जस एम अथाग, 'भुरा' धनि तूझ तणौ अत भाग।
—सू. प्र.

२ देखो 'बुरौ' (रू. भे.)

उ०—राखै वेख न राग, भाखै नह जीहां **भुरौ**। दरसण करतां द्राग, मिटै जनम रा 'मोतिया'।—रायसिंह सांदू

भुळभुळ-सं० स्त्री०—धूप में तपी हुई गर्म मिट्टी।

उ०—धोरांधोरां घर धूधल धुरधाई, थळ थळ ऊथळती बळती बुरकाई। पड़ती पुळ पुळ पर **भुळभुळ** भरभूंजै, सरकर सर सोखत गिरवर दर गूंजै।—ऊ. का.

भुळसणौ, भुळसबौ-क्रि० अ० [अनु०] झुलसना, जलना।

उ०—हयकंप नरां तुरां गज हळवळ, तूटि अंगारां सार-तड़। आप 'धराज' बचांणौ ओलै, **भुळसांणौ** मेवाड़ भड़।

भुळसणहार, हारौ (हारी), भुळसणियौ—वि०।

भुळसाड़णौ, भुळसाड़बौ, भुळसाणौ, भुळसाबौ, भुळसावणौ, भुळसावबौ—प्रे० रू०।

भुळसिम्रोड़ौ, भुळसियोड़ौ, भुळस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भुळसीणौ, भुळसीजबौ—भाव वा०।

भुळसाड़णौ, भुळसाड़बौ—देखो 'भुळसाणौ, भुळसाबौ' (रू. भे.)

भुळसाड़णहार, हारौ (हारी), भुळसाड़णियौ—वि०।

भुळसाड़िम्रोड़ौ, भुळसाड़ियोड़ौ, भुळसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भुळसाड़ीजणौ, भुळसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भुळसाड़ियोड़ौ—देखो 'भुळसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुळसाड़ियोड़ी)

भुळसाणौ, भुळसाबौ-प्रे० रू०—झुलसाना, जलाना।
—बखतसिंघ रौ गीत

भुळसाणहार, हारौ (हारी), भुळसाणियौ—वि०।

भुळसायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भुळसाईजणौ, भुळसाईजबौ—कर्म वा०।

भुळसाड़णौ, भुळसाड़बौ, भुळसावणौ, भुळसावबौ—रू० भे०।

भुळसायोड़ौ-भू० का० कृ०—झुलसाया हुआ, जलाया हुआ.

(स्त्री० भुळसायोड़ी)

भुळसावणौ, भुळसावबौ—देखो 'भुळसाणौ, भुळसाबौ' (रू. भे.)

भुळसावणहार, हारौ (हारी), **भुळसावणियौ**—वि०।

भुळसाविम्रोड़ौ, भुळसावियोड़ौ, भुळसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भुळसावीजणौ, भुळसावीजबौ—कर्म वा०।

भुळसावियोड़ौ—देखो 'भुळसायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुळसावियोड़ी)

भुळसियोड़ौ-भू० का० कृ०—झुलसा हुआ, जला हुआ.

(स्त्री० भुळसियोड़ी)

भुलाड़णौ, भुलाड़बौ—देखो 'भुलाणौ, भुलाबौ' (रू. भे.)

उ०—सुण्यौ रूप वेदे सुपेख्यौ सवेही, बडा भाग री नाग री नारि वेही। महा मोद आणंद देखे मुरक्की, **भुलाड़ी** वळी नाथ नांखी भुरक्की।—बां. दा.

भुलाड़णहार, हारौ (हारी), भुलाड़णियौ—वि०।

भुलाड़िओड़ौ, भुलाड़ियोड़ौ, भुलाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भुलाड़ीजणौ, भुलाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भुलाड़ियोड़ौ—देखो 'भुलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुलाड़ियोड़ी)

भुलाचार-सं० पु०—भ्रम, भ्रांति। (गजमोख)

भुळाणौ, भुळाबौ—देखो 'भोळाणौ, भोळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ म्याळमिन्नी तौ पूरी बात भाखी ई कोनी अर उठा सूं फदाकां भरतौ न्हाट गियौ। कठै ई आ नीं व्है के स्याळ उणनै मरियोड़ौ हिरण **भुळाय** दै अर खुद उण सूं पैला गंगाजी दौड़ जावै।—फुलवाड़ी

उ०—२ पाछौ कोई नवौ कांम नीं **भुळावूं** जित्तै उठै ई बैठौ रैजे।
—फुलवाड़ी

उ०—३ तद रांणी जी कह्यौ—म्हारी सरण आयोड़ा नै किण रै भरोसै **भुळाय** नै जावूं।—फुलवाड़ी

भुळाणहार, हारौ (हारी), भुळाणियौ—वि।

भुळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भुळाईजणौ, भुळाईजबौ—कर्म वा०।

भुलाणौ, भुलाबौ-क्रि० स०—१ किसी बात या प्रसंग का मस्तिष्क से भुला दिया जाना, विस्मृत कर देना।

उ०—ऊठी जांगळू में कोई नांम तक नहीं काढै कुंवर नूं पण **भुलाय** दीन्हौ।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ किसी कण्ठस्थ किए हुए पाठ आदि को वाणी-विहीन कर देना।

३ गलती या त्रुटि करना या कराना।

४ भ्रम में डाल देना, धोखे में डालना/डलवाना।

५ अनुरक्त या आसक्त करना/कराना।

६ घमंड में इतराना।

७ अभ्यास छुड़ाना।

भुलाणहार, हारौ (हारी), भुलाणियौ—वि०।

भुलायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भुलाईजणौ, भुलाईजबौ—कर्म वा।

भुलाड़णौ, भुलाड़बौ, भुलावणौ, भुलावबौ—रू० भे०।

भुलापौ-सं० पु०—१ भूलने का भाव। २ विस्मृति। ३ भ्रम, धोखा।

भुळायोड़ौ—देखो 'भोळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुळायोड़ी)

भुलायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ किसी बात या प्रसंग को मस्तिष्क से उतारा हुआ, भुलाया हुआ, विस्मृत किया हुआ। २ किसी कण्ठस्थ किए हुए पाठादि को भुलाया हुआ। ३ भ्रम में डाला हुआ, धोखे में डाला हुआ। ४ गलती या त्रुटि कराया हुआ। ५ अनुरक्त या आसक्त कराया हुआ। ६ घमंड में इतराया हुआ। ७ अभ्यास छुड़ाया हुआ।

(स्त्री० भुलायोड़ी)

भुळावण, भुळावणी—देखो 'भोळावण' (रू. भे.)

उ०—१ नाडी में वड़ती वेळा नाई नै **भुळावण** दी के वौ जावै नीं घणा लांबा बाळ कोजा लागै। पटिया छांटनै पछै जावै।
—फुलवाड़ी

उ०—२ घड़ी अध-घड़ी रात ढळियां सेठ वहीर होवण लागा जणां सेठांणी **भुळावण** देवती बोली—ज्यूं त्यूं करनै पोहरा री गळी काढ़णी है। कोई मिळ जावै तौ ई कजिया किण वास्तै करौ।—फुलवाड़ी

भुलावण, भुलावणी—देखो 'भूल'।

भुळावणौ, भुळावबौ—देखो 'भोळाणौ, भोळाबौ' (रू. भे.)

भुळावणहार, हारौ (हारी), भुळावणियौ—वि०।

भुळाविओड़ौ, भुळावियोड़ौ, भुळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भुळावीजणौ, भुळावीजबौ—कर्म वा०।

भुलावणौ—देखो 'भुलावनौ' (रू. भे.)

भुलावणौ भुलावबौ—देखो 'भुलाणौ, भुलाबौ' (रू. भे.)

उ०—धुरां तू सुरांराय नौ नांमधेई, कहीजै पुनः रावळा रूप केई। तु ही भीळणी भेस संभू **भुलावै**, रजोमूरती लेख तूही रुळावै।
—मे. म.

उ०—२ डोकरी बात नै **भुलावण** सारू इण बाबत आगै पूछियौ ई कोनीं कै उणरी रीस रौ कांई कारण है।—फुलवाड़ी

भुलावणहार, हारौ (हारी), भुलावणियौ—वि०।

भुलाविओड़ौ, भुलावियोड़ौ, भुलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भुलावीजणौ, भुलावीजबौ—कर्म वा०।

भूलाणौ, भूलाबौ, भूलावणौ, भूलावबौ—रू० भे०।

भुळाविणी, भुळाविनी—देखो 'भोळावण (रू. भे.)

भुलावनौ-वि०—भुलाने वाला।

(स्त्री० भुलावनी)

उ०—नांना विध के रूप धर, सब बांधे भांमिनी। जग विटंब परलै किया, हरिनांम **भुलाविनी**।—दादूबांणी।

भुलाविणी—देखो 'भूल'।

भुलावियोड़ौ—देखो 'भोळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुळावियोड़ी)

भुलावियोड़ौ—देखो 'भुलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुलावियोड़ी)

भुलावौ–सं० पु०—१ धोखा, भ्रम ।

उ०—सूतां नै तज स्यांम सिधाया, हां हे ! वां तौ दियौ **भुलावौ** भांम है ।—मी. रां.

क्रि० प्र०—देणौ ।

२ विस्मृति ।

३ छल, कपट ।

भुल्लित–वि०—भूला हुआ ।

उ०—व्यथा विरहाग वियोग विहाय, सवागण भाग संयोग सुहाय । अनाग्रह **भुल्लित** आंन उपाय, प्रफुल्लित ज्यूं पतनी पति पाय ।
—ऊ. का.

भुवंग—देखो 'भुजंग' (रू. भे.)

उ०—मन **भुवंग** यहु विस भरा, निरविस क्यों ही न होइ । दादू मिल्या गुरु गारुड़ी, निरविस कीया सोइ ।—दादूबांणी

भुवंगम—देखो 'भुजंगम' (रू. भे.)

उ०— विना **भुवंगम** हम डसैं, बिन जळ डूबै जाइ । बिन ही पावक ज्यों जळै दादू कुछ न बसाइ ।—दादूबांणी

भुव—देखो 'भुमि' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ बणाधिप भंप भरी उण बार, भुजंग न भालि सक्यौ **भुव** भार । भेळी हिज आवड़ बाहर भूप, रु नाहर चक्र सुदस्सण रूप ।—मे. म.

उ०—२ बिथा **भुव** भार फणफ्फण ब्याळ, कणक्कण फौज जणज्जण काळ । प्रथीपति बाहर एण प्रकार, डकावत नाहर लेत डकार ।—मे. म.

भुवडंड—देखो 'भुजडंड' (रू. भे.)

उ०—दखिण खेत कुरुखेत, महा जुध भारथ मत्तै, भारि ओडि **भुवडंड**, बाथ भरतै निहसत्तै ।—गु. रू. बं.

भुवण, भुवणी—देखो 'भुवन' (रू. भे.)

उ०—१ भयभीत हुआ चौदह **भुवण**, स्रवै गरभ तिय दिस दसिय । रघुनाथ कहौ सभ डवर रिण, कमर आज किण पर कसिय ।
—र. रू.

उ०—२ थरहरिया **भुवण** त्रिण्हे विथका भडि, धरजइ त्रस सोई नहीं धर । ईसर तौ सरणइ ऊवरिजइ, हरिसंकर समरीयौ हर ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ कबाडउ रतन गारि कुंदण री, युगति सिलावट चुणी सुजांण । तेज खमइ कुण देख तियां रउ, **भुवण** जिहां ऊगइ भांण ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ अरक 'जसौ' जगि आथमैं, गौ चकवां गुणियांह । **भुवण** अंधारौ भांजिसी, त्रिभुवण पति कुणि त्यांह ।—हा. भा.

उ०—५ सूरत घन जैंसिघ सारधू, भली-भली त्रिहुं भुवण भणी । मा कैरवां तणी न कियौ अत, तौ जेहीं पांडवां तणी ।
—गोरधन बोगसौ

२ देखो 'भवन' (रू. भे.)

उ०—महाराजा 'अजमाल' सूं, अरज करै उमराव । **भुवण** तणै रहियौ विखै, त्रभवण हंदौ राव ।—रा. रू.

भुवणपत, भुवणपति—देखो 'भुवनपति' (रू. भे.)

भुवणेसवर—देखो 'भुवनेस्वर' (रू. भे.)

भुवणेसरी—देखो 'भुवनेस्वरी' (रू. भे.)

भुवणेस्वर—देखो भुवनेस्वर' (रू. भे.)

भुवणेस्वरी—देखो 'भुवनेस्वरी' (रू. भे.)

भुवन–सं० पु० [सं० भुवनं] १ संसार, जगत ।

२ जल, पानी (ह. नां. मा.)

३ पृथ्वी ।

४ स्वर्ग ।

५ मानव, मनुष्य जाति ।

६ तीन की संख्या *

७ चौदह की संख्या *

८ देखो 'लोक' (४), (५) ।

रू० भे०—भुंइण, भुंवणि, भुअण, भुअन भुइण भअन, भुयण, भुयणि, भुयणी, भुवण, भुवणि, भुवन, भूयण, भूवण, भूवणि भोण, भोन, भोयण, भोयणउ ।

९ देखो 'भवन' ।

उ०—चित सुद्धि रासि ग्रह इम चवेस, कहि ग्रह प्रताप वरणन कवेस । रवि छठै भुवन खळ हणै रूक, आरांण पतै पावै अचूक ।
—सू. प्र.

भुवनक्षोभिनी–सं० स्त्री० [सं०] महाविद्या ।

उ०—आकासगांमिनी सौदांमिनी कांमगांमिनी नागगांमिनी **भुवनक्षोभिनी** कांमरूपिणी मन-स्तंभिनी जलस्तभिनी आग्नेयी वायवी वरसणी कौमारी खग रूपिणी ।—व ग.

भुवनगुरु–सं० पु० यौ० [सं० भुवन + गुरु] जगद्गुरु ।

उ०—प्रथम नरेसर प्रथम भिक्षाचर, प्रथम केवल धर प्रथम जिणी री । प्रथम तीरथकर प्रथम **भुवनगुरु**, नाभिराय कुल कमल रांणी री ।—स. कु.

भुवनपत, भुवनपति–सं० पु० [सं० भुवनं + पति] १ ईश्वर ।

२ इंद्र ।

३ राजा, बादशाह ।

४ समुद्र ।

रू० भे०—भुअणपति, भुयणपत, भुयणपति, भुयणपत्ती, भुवणपत्त, भुवणपति, भुवनपत्त, भुवनपत्ति ।

भुवनेस–सं० पु० [सं० भुवनेश] १ शिव की एक मूर्ति ।

२ ईश्वर, परमात्मा ।

भुवनेसर—देखो 'भुवनेस्वर' (रू. भे.)

भुवनेसरी, भुवनेसी—देखो 'भुवनेस्वरी' (रू. भे.)

उ०—हींगोळ राय अठ दस हथी, अरखै मयंख **भुवनेसरी**। कवि जोड पांण ईसर कहै, उदौ उदौ आसापुरी।—देवि.

भुवनेस्वर-सं० पु० [सं० भुवनेश्वर] १ शिव की मूर्ति या रूप। २ उड़ीसा में पुरी के पास स्थित तीर्थस्थान जहां उक्त शिव की मूर्ति है।

रू० भे०—भुवणेसर, भुवणेस्वर।

भुवनेस्वरी-सं० स्त्री० [सं० भुवनेश्वरी] १ देवी।

उ०—१ देवांण विद्या दत्तावरी, देवी धनदातावरी। चहुवांण वंस रूपक चवां, सारसत्त **भुवनेस्वरी**।—नैणसी

उ०—२ राजा भोज पूछी—सिंहासण की उत्पत्ति कहौ। तद पूतळी कही—स्रीमद् भागवत पुरांण मांही पंचम स्कंध मांहीं स्री महादेव रा पुत्र स्वांमी कारतिक **भुवनेस्वरी** देवी रौ आराधन कियौ—सिंघासण बत्तीसी

२ दस महा-विद्याओं में से एक। (तांत्रिक)

रू० भे०—भुणेसरी, भुवणेस्वरी, भुवनेसरी, भुवनेसी।

भुवन्न—देखो 'भेखो 'भुवन' (रू. भे)

उ०—१ **भुवन्न** तणै नरदेव भुयंग, प्रमेसर तोरा कीट पतंग। प्रांमै कुण तोरा पार प्रचंड, वसै रोम रोम बिखै ब्रहमंड।—ह. र.

उ०—२ जगत्ते जाते आते जांण, प्रसन्न थयौ हरि दीठे प्रांण। दीठौ हिव सांति न आपौ दाख, **भुवन्न** नहीं सौ ठांम स भाख।—ह. र.

भुवपत, भुवपति, भुवपती, भुवपत्त, भुवपत्ती—देखो 'भूपति' (रू भे.)

उ०—१ अन अनेक **भुवपत्त**, वांग स्रवणां सुण रत्ते, नमि प्रणांम आधीन करै, सेवा बहु भत्ते।—महारांणा प्रताप रौ छप्पय

उ०—२ छक बढियौ अणछेह, पमंग चढियौ **भुवपत्ती**। जांण चढ्यौ जेठ रौ, सुरज सपतास सपत्ती —मे. म.

भुवपाळ—देखो 'भूपाळ' (रू. भे)

उ०—१ घडी नव चंद चढ्यां घटियाळ, प्रणांमत पाव लख्यौ **भुवपाळ**। भळे कर खांति लखी रण भूमि, घावां भरपूर रह्या भड़ घूमि।—मे. म.

उ०—२ सुणे जद बच्चन 'भैरव' सूर, नरांपत धोय चखां चढ नूर। भ्रगूटीय रेख चढै मुर भाळ, भिड़ै भ्रहु मूछ अड़ै **भुवपाळ**।—पे. रू.

भुवमंड—देखो 'भूमंड' (रू. भे.)

भुवरलोक-सं० पु० [सं० भुवर्लोक] अंतरिक्ष।

भुवरियौ-वि०—वह जिसमें कई घुमाव या घूंघर पड़े हुए हो, घुंघराला।

उ०—परघळां आसणां रा, कांगरै थूबरा, मोटै पूठै रा, छोटै पींडां रा, झांमरै पूंछ रा, **भुवरियै** रू'रा, चोळमै रंग रा, लांघियै सीह ज्यूं लकां चडिया थका, भागा गाडा ज्यूं बठठाठ करता थका, वेस्या ज्यूं झाला करता थका मातै हाथी ज्यूं हुकारा करता थका, इसा ऊंठ झेकजै छै।—रा. सा. सं.

भुवलोक—देखो 'भूलोक' (रू. भे.)

भुवा—देखो 'भूआ' (रू. भे.)

भुवाजी—देखो 'भूआजी' (रू. भे)

भुवाणौ, भुवाबौ—देखो 'बोवाणौ, बोवाबौ' (रू. भे.)

उ०—कोठै **भुवाऊ** डोडा इलायची रे म्हारा लोटण करवा, कोठै **भुवाऊ** नागर बेल, ऐं जी ओ मिरगा नैणी रा ढोला, मारूणी उडीकै घर आव।—लो. गी.

भुवाणहार, हारौ (हारी), भुवाणियौ—वि०।

भुवायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भुवाईजणौ, भुवाईजबौ—कर्म वा०।

भुवायोड़ौ—देखो 'बोवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भुवायोड़ी)

भुवाळ-सं० पु०—१ बाल, केश।

उ०—ताहरां हेकै रजपूत नूं **भुवाळां** हूं झालि झोकि करि नीचौ नांखियौ। उण नूं घाव किया। – द. वि.

२ देखो 'भूपाळ' (रू. भे.)

उ०—१ गांव दस सिर बांण गंजै, प्रगट खळ जन भूप भंजै। जनक पण रख चाप भंजै, भलै अवध **भुवाळ**।—र. ज. प्र.

उ०—२ सरसत मात पसाव कर, दे मो अविरळ मत्ति। भोगी भमर **भुवाळ** जै, गुण गाऊं तसु भत्ति।—ढो. मा.

भुवाळी—देखो 'भंवळ' (रू. भे.)

उ०—बूढी-भोळी डोकरयां नै आपरा बेटा वेगा सा छुडा ल्यावण रा वसंतौ घमंड दिखाळै है। **भुवाळी** खांवतौ फिरै। घर घर गेड़ा काटै।—दमदोख

भुवासासू—देखो 'भूआसासू' (रू. भे)

भुवासुसरौ—देखो 'भूआसुसरौ' (रू. भे.)

भुवि, भुवी—देखो 'भूमि' (रू. भे.)

भुस—देखो 'भूमौ' (मह., रू. भे.)

उ०—कह्यौ—'वीरम' वावड़ौ, नहीं तर उदै री खाल कढाऊं छूं, अर **भुस** भराउं छूं।—नैणसी

भुसण-सं० पु०—कुत्ता, स्वान। (अ. मा., ह. ना. मा.)

रू० भे०—भसण।

भुसणौ-वि०—१ भुसने वाला (कुत्ता)।

२ व्यर्थ बकवास करने वाला।

रू० भे०—भसणउ।

भुसणौ, भुसबौ-क्रि० अ० [अनु०] १ कुत्ते का भौं-भौं शब्द करना, भूंकनां।

उ०—१ गहवरियौ गजराज, मद छकियौ चालै मतै। कूकरिया बेकाज, रोय **भुसै** क्यूं राजिया।—किरपारांम

उ०—२ कुत्तां रै भुसणां रौ डर तौ पूरौ पूरौ मिटग्यौ हो, पण राजाजी री खीझ रौ डर तौ उणी भांत कायम हो।—फुलवाड़ी
२ व्यर्थ में किसी के लिए भला-बुरा कहना या बकना।
भुसणहार, हारौ (हारी), भुसणियौ—वि०।
भुसाड़णौ, भुसाड़बौ, भुसाणौ, भुसाबौ, भुसावणौ, भुसावबौ—प्रे० रू०।
भुसिओड़ौ, भुसियोड़ौ, भुस्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भुसीजणौ, भुसीजबौ—भाव वा०।
भूंसणौ, भूंसबौ—रू० भे०।

भुसाड़णौ, भुसाड़बौ—देखो 'भुसाणौ, भुसाबौ' (रू. भे.)
भुसाड़णहार, हारौ (हारी), भुसाड़णियौ—वि०।
भुसाड़िओड़ौ, भुसाड़ियोड़ौ, भुसाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भुसाड़ीजणौ, भुसाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भुसाड़ियोड़ौ—देखो 'भुसायोड़ौ' (रू भे.)
(स्त्री० भुसाड़ियोड़ी)

भुसाणौ, भुसाबौ—प्रे० रू०—१ कुत्ते को भौं-भौं शब्द करने या भौंकने में प्रवृत्त करना।
२ व्यर्थ में किसी के लिए भला-बुरा कहने को प्रवृत्त करना।
भुसाणहार, हारौ (हारी), भुसाणियौ—वि०।
भुसायोड़ौ—भू० का० कृ०।
भुसाईजणौ, भुसाईजबौ—कर्म वा०।
भुसाड़णौ, भुसाड़बौ, भुसावणौ, भुसावबौ—रू० भे०।

भुसायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कुत्ते को भौं-भौं शब्द करने या भौंकने में प्रवृत्त किया हुआ. २ व्यर्थ में किसी के लिए भला-बुरा कहने में प्रवृत्त किया हुआ.
(स्त्री० भुसायोड़ी)

भुसावणौ, भुसावबौ—देखो 'भुसाणौ, भुसाबौ' (रू. भे.)
भुसावणहार, हारौ (हारी), भुसावणियौ—वि०।
भुसाविओड़ौ, भुसावियोड़ौ, भुसाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भुसावीजणौ, भुसावीजबौ—कर्म वा०।

भुसावियोड़ौ—देखो 'भुसायोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री० भुसावियोड़ी)

भुसियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ भौं-भौं शब्द किया हुआ (कुत्ता). २ व्यर्थ में किसी के लिए भला-बुरा कहने में प्रवृत्त हुवा हुआ. ३ नाराज.
(स्त्री० भुसियोड़ी)

भुसी—१ देखो 'भूसी' (रू. भे.)
२ देखो 'भूसौ' (अल्पा., रू. भे.)

भुसुंडी—देखो 'काकभुसुंडी'।

भुह—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)
उ०—जुधि झाल् कराळ उठत जठै, असि हाकलिया 'बखतेस' अठै। चख चोळा झळाहळ रीस चडी, भुह ऊपर मोसर जाय भिड़ी।—सू. प्र.
उ०—२ चख चंचळ मन अचळ, कमळ चख भुहां अलीअळ। तन ऊजळ पति रत्त, रूप भरता रुचि मंझळ।—गु. रू. बं.

भुहर—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)
उ०—भिल चहुर मूछां भुहर भर, वज पखर गूघर भिडज वर। गज चीर फरहर खुल अगर, झुक अतुर लोयण अगन झर। अर आवियौ आरांण।—र रू.

भुहार, भुहारव—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)
उ०—१ मुछार भुहार मिळै मगरूर, सोभा मुख जांणक ग्रीखम सूर। भयंकर रूप वणी जिम भेस, महाभड़ 'केसर' रौ 'मुकंदेस'।—सू. प्र.
उ०—२ अंग रोम ऊल्हसै तेज, चख मुख रातंबर। मूंछ भुहारां मिळै पांव नह लगै धरा पर।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
उ०—३ डरै जुध बीच तुरी 'अजबेस' भुहारव ऊपर मूंछ भिड़ेस। मुखै चखं चोळ सरूप मजीठ, घबीड़त साबळ मूगळ धीठ।—सू. प्र.

भुहि—देखो 'भूमि' (रू. भे.)
उ०—मूझइ रडइ भुहि पडइ मनि कंप थाइ, देखी जतूं कटक उत्तर सून्य थाइ। 'पाछउं हवं वलि ग्रहल्लड मइं म मारि, खूटा पखइ कहिन भूलउ कां विचार।'—सालिसूरि

भूं—सं० पु० [अनु०] १ रुदन की आवाज, या ध्वनि।
उ०—आ कैयनै वौ फेर भूं-भूं करनै रोवण ढूकौ।—फुलवाड़ी
२ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)
उ०—१ थिरू मूरती सूर रै नूर थाई, तिका स्वप्न रै मांहि पिछां बताई। सिरोरुह कोसेय काळा सरीखा, तियौ आंक भूं बांकड़ा नेत तीखा।—मे. म.
उ०—२ दांता री पांगी,' कडीयां रौ केहरी, हाल री हंस, भूंआं री भमर, कुरज री नस।—मयाराम दरजी री बात

भूंइ—देखो 'भूमि' (रू. भे.)
उ०—साह बळ वडो विहबळ, हुवै त्रिखावंत जळ मोकळै। कळि मूळ आइ पैठौ, कमौ, भूंइ कंठै भाखर वळै।—गु. रू. बं.

भूंइरौ—देखो 'भंवारौ' (१) (रू. भे.)

भूंई—देखो 'भूमि' (रू. भे.)

भूंईबावळी—देखो 'भुंईबावळी' (रू. भे.)

भूंक—सं० स्त्री०—गधे के रेंकने से उत्पन्न ध्वनि।

भूंकण—सं० पु० [अनु०] १ गधा, खर। (ह. नां. मा.)
उ०—सठ मंडळ स्रोता हुवै, वक्ता कुकवि बणांत। भूंकण लागौ भूंकवा, जांण जमा दीपंत।—बां. दा.
२ कुत्ता, स्वान।

रू० भे०—भूकण ।

भूंकणौ, भूंकबौ—क्रि० अ०—१ गधे का रेंकना ।

उ०—१ पण गधा नैं तौ कुमत सूझियोडी ही । वौ तौ फेर चीभौं चीभौं करण लागौ । वौ जांण्यौ **भूंकणा** में ईं मीघाई है ।

—फुलवाड़ी

२ कुत्ते का भौं-भौं शब्द करना, भुमना ।

३ व्यर्थ बकवास करना ।

उ०—भगवत करतानै करतब भुगतावै, पिछला पापां रा पांमर फळ पावै । भावी भूलोड़ा **भूंकौ** क्यू भाया, पोचा करमां रा पोचा फळ पाया ।—ऊ. का.

भूंकणहार, हारौ (हारी), भूंकणियौ—वि० ।

भूंकिओड़ौ, भूंकियोड़ौ, भूंक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भूंकीजणौ, भूंकीजबौ—भाव वा० ।

भुकणौ, भुकबौ, भूकणौ, भूकबौ, भुखणौ, **भूखबौ**—रू० भे० ।

भूंकियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ व्यर्थ बकवास किया हुआ. २ रेंका हुआ. (गधा)

(स्त्री० भूंकियोडी)

भूंखर—वि०—अति शीतल ।

उ०—**भूंखर** वाइ भणहणिउ, तनि तनि छूटइ धूजि । मज्जन करती मांननी, गौरीसंकर पूजि ।—मा. कां प्र.

भूंगड़ौ—भाड़ में सेका हुआ चना ।

उ०—जंवाईड़ा, मेरी नौ मण कोरौ काचौ चाबै रे क, मेरी लाडो ना चलै । सासूड़ी, मैं दस मण का **भूंगड़ा** भुना दयूं ओ क, तेरी लाडौ ले चलूं ।—लो. गी.

ब० व०—भुंगड़ा ।

भूंगरी—सं० स्त्री०—लाल मुंह वाली भेड़ ।

भूंगळ—सं० स्त्री०—१ नरसिंघा नामक बाजा ।

उ०—जीतउ कांन्ह वात इम सुणी, नगरलोक व्इ वद्धांमणी । मदनभेरि **भूंगळ** भरहरइ, वरण अढारइ जय जय करइ ।

—कां दे. प्र.

२ सार्वजनिक स्थानों, कारखानों या मीलों में भारी स्वर में होने वाली समय सूचक ध्वनि या आवाज जो यन्त्र विशेष के द्वारा उत्पन्न की जाती है और निर्धारित समयों में होती रहती है, सीटी, विसल ।

वि०—१ मूर्ख, नासमझ ।

२ देखो 'भूंगळौ' (मह., रू. भे.)

उ०—बाजरी देखौ तौ पत्ता भूंगळ रा भूंगळ, सांवळा भंवर ।

—रातवासौ

रू० भे०—भुंगळ ।

भूंगळी—सं० स्त्री०—बांस या धातु निर्मित खोखली नली जिसके द्वारा फूंक मारकर अग्नि को प्रज्वलित किया जाता है ।

भूंगळौ—सं० पु०—धातु या लकड़ी का बना बड़ा नल ।

मह०—भूंगळ ।

भूंगौ—सं० पु० [दे०] १ वर्षा ऋतु में होने वाला सफेद रंग का उद्भिज पदार्थ विशेष जिसे 'फूंवी' भी कहते हैं एवं जिसका शाक भी बनता है । (शेखावाटी)

उ०—भादू महीने **भूंगा** होसी, तीवणियां री ताह । बाजरियां री रोटी खावां, वाह रै सांग्री वाह ।—लो. गी.

२ बांस का अंकुर ।

उ०—पीव-पीठ काढचौ पिसण, गांजौ उर बिच गाड । जांण बांस **भूंगौ** जबर, फूटचौ धरती फाड़ ।—रेवतसिंघ भाटी

३ एक कीट विशेष ।

उ०—फूकांरा बादियां घड़ फाड़ै, जंत्र न लागै भडां जग । **भूंगा** काळ तणी कळ भारथ, खत्री तूं झ हाडा खडग ।

—कंवर अमांनसिंघ हाडा रौ गीत

४ पशुओं की चराई का एक 'कर' जो भूतपूर्व देशी राज्यों व जागीरों में लिया जाता था । (बीकानेर)

भूंच—सं० पु०—१ रेगिस्तान, ऊसर भूमि ।

उ०—जै मोटा भाई छौ थें थांहरै ठिकाणै जावौ । इण **भूंच** धरती में कासूं करिस्यौ—ठाकुर जैतसी री वारता

२ अपठित, मूर्ख ।

रू० भे०—भुंच, भूंछ ।

भूंचक—सं० पु०—सूअर का बच्चा ।

भूंचणौ, भूंचबौ—क्रि० स०—१ उपभोग करना, भोगना ।

उ०—१ सगुरा संत संयम रहै, सन्मुख सिरजनहार । निगुरा लोभी लालची, **भूंचै** विसय विकार ।—दादूबांणी

उ०—२ दादू यों फूटे थैं सारा भया, संधे संधि मिळाइ । बाहुड़ विसय न **भूंचिये**, तौ कबहूं फूट न जाइ ।—दादूबांणी

२ मांगना, याचना करना ।

उ०—सह कांमी सेवा करैं, मांगै मुग्ध गंवार । दादू ऐसे बहुत हैं, फळ कै **भूंचणहार** ।—दादूबांणी

भूंचणहार, हारौ (हारी), भूंचणियौ—वि० ।

भूंचिओड़ौ, भूंचियोड़ौ, भूंच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भूंचीजणौ, भूंचीजबौ—कर्म वा० ।

भूंचाळ—देखो 'भूचाळ' (रू. भे.)

भूंचियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ भोगा हुआ. २ मांगा हुआ.

(स्त्री० भूंचियोड़ी)

भूंछ—वि०—१ कटा हुआ. २ भींचा हुआ.

३ देखो 'भूंच' (रू. भे.)

उ०—जंगळ रा वसणहार भूंछ लोक छां ।—नैणसी

भूंजणौ, भूंजबौ—क्रि० स०—१ किसी खाद्य पदार्थ को तेल या घी में पकाना ।

२ अग्नि या ताप से किसी वस्तु को बहुत गर्म या लाल कर देना ।

उ०—चांद किरण रात्यूं रमी, कोरां टीबड़ियां । भातै पैंली भूंजिया. लूग्रां कड़कड़ियां ।—लू

३ किसी वस्तु को अंगारों पर सेंक कर पकाना ।

४ ताप द्वारा किसी वस्तु को इस प्रकार जला डालना कि उसका जलांश शुष्क हो जाय ।

उ०—चूण लेग रै चाव में, चिड़ियां खोलै चांच । भीतर सारी भूंजवै, लूग्रां ग्रकरी ग्रांच ।—लू

५ मांस, मछली, ग्रादि पकाना ।

उ०—राजा नळ री बात तौ थैं सगळा जांणौ ई हौ के ठांव में भूंजियोड़ी मछळी पाछी पांणी में वड़गी ।—फुलवाड़ी

६ गरम बालू मिट्टी में दाने ग्रादि पकाना या भूनना ।

७ लाक्षणिक ग्रर्थ में सताना, दुख देना ।

८ लाक्षणिक ग्रर्थ में, क्रोध में झल्लाकर बोलना ।

उ०—तरै दासी ऊंची जाय किवाड़ां री छेकड़ मांहि मूढौ घालि नै कह्यौ—चावड़ीजी कुंवरजी नै जगाय उरा मेलौ । तरै चावड़ी भूंजती बोली, मालजादी रांडां, थारै बाप नै जरै ही मारि गांठड़ौ बांधि झरोखै रै मारग नाख दीधौ ।—जगदेव पंवार री वात

९ लाक्षणिक ग्रर्थ में, भ्रम की ग्राग में झुलसना ।

उ०—ग्रज भेक उजागर नर खर नागर, गुण सागर गूंजंदा है । नाभा क्रत नांमी कथा निकांमी, भ्रम गामी भूंजंदा है ।—ऊ. का.

१० बंदूक तोपादि की गोलियों से शरीर छिद्रित करना, मारना ।

भूंजणहार, हारौ (हारी), भूंजणियौ—वि० ।

भुंजाड़णौ, भुंजाड़बौ, भुंजाणौ, भुंजाबौ, भुंजावणौ, भुंजावबौ—प्रे० रू० ।

भूंजिग्रोड़ौ, भूंजियोड़ौ, भूंज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भूंजीजणौ, भूंजीजबौ—कर्म वा० ।

भूनणौ, भूनबौ—रू० भे० ।

भूंजबौ—सं० पु०—एक प्रकार का भुना हुग्रा मांस ।

भूंजाई—देखो 'भुंजाई' (रू. भे.)

उ०—१ भोजन विविध चाव भूंजाई, सदा नवनवी गोठ सवाई । चावा सबद कहै नित चावां, ग्रकसौ सिरै तणौ उमरावां ।—रा. रू.

उ०—२ ताहरां रावजी हुकम कियौ—'थिरत भूंजाई में ईयै पळी सौं पुरसो । ग्राधौ पुरसै तौ सवार नूं सझा दीजै ।—नैणसी

उ०—३ गौरस की उफेल जीमे परज्याद । सकरसै बीहै तरत-करका सवाद । ऐसी विध रस ग्राई । राजेसवरूं की भूंजाई ।—सू. प्र.

उ०—४ मदनौ कुंवरजी रा हुकम पखौ ही ज भूंजाई रा चरू, थाळी, भूंजाई री झिणकार, घोड़ौ चहुवांण रांमदास री पेस रौ, परणिया तदि पेसकस कियौ हुतौ, बीजौ ही भूंजाई रौ समदाव सहु मदनौ ले गयौ ।—द. वि.

भूंजियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कोई खाद्य पदार्थ तैल या घी में पकाया हुग्रा. २ ग्रग्नि या ताप से किसी वस्तु को गर्म या लाल किया हुग्रा. ३ किसी वस्तु को अंगारों पर सेंक कर पकाया हुग्रा. ४ ताप द्वारा किसी वस्तु को इस प्रकार जलाया हुग्रा कि उसका जलांश शुष्क हो गया हो. ५ मांस या मछली ग्रादि को पकाया हुग्रा ६ गर्म बालू मिट्टी में दाना पकाया या भुना हुग्रा. लाक्षणिक ग्रर्थ में, क्रोध में झल्लाया हुग्रा. ८ लाक्षणिक ग्रर्थ में, सताया हुग्रा, दुखित किया हुग्रा. ९ लाक्षणिक ग्रर्थ में, भ्रम की ग्राग में झुलसा हुग्रा.

(स्त्री० भूंजियोड़ी)

भूंड—सं० स्त्री०—बदनामी, ग्रपयश ।

उ०—पण ग्राप तौ दया रा ई रूप हौ, गरीब ग्रभ्यागत जांण उण रौ लिहाज राखियौ, पण ग्रंदाता ग्रां नीच गरीबां रा तौ लखण ई बोदा है । भलाई करतां भूंड हाथ लागै ।—फुलवाड़ी

२ कलंक ।

उ०—भूंड रौ ग्रौ ठीकरौ म्हांरै गळै बांधियौ जकौ तौ ठीक है, पण ग्रबै ग्रा चाकरी म्हारा सूं बण नीं ग्रावै ।—फुलवाड़ी

३ दोष, त्रुटि ।

उ०—घणी ई चांनणी रात है, ठाडा लैरका चालै, पण गांणौ सुणनै खेत रौ धणी सोटा जरकाया तौ ग्रांख्यां ग्राडी ग्रंधारी ग्राय जावैला, पछै म्हनै भूंड मत देजै ।—फुलवाड़ी

पु० [स्त्री० भूंडण] ४ सूग्रर ।

उ०—१ भूंडण तौ भूंडा जिणै, हिरणी जिणै सुगठ्ठ । पांन खड़क्कै उठ चलै, थागड़ चालै थट्ठ ।—ग्रज्ञात

उ०—२ सूवर सूतौ नींद में, भूंडण पहरा देत । उठौ सूवर नींदाळका, फौज हिलोळा लेत ।—लो. गी.

भूंडण—सं० स्त्री०—१ कलह-प्रिय स्त्री ।

२ देखो भूंड (४) (स्त्री)

भूंडसूरौ—सं० पु०—ग्राम्य-शूकर ।

उ०—जद स्वामीजी बोल्या—कोई भूंडसूरौ भिस्टौ खातौ हौ । साहूकार दिसा जातौ सो उणरी द्रस्टि पड़ी देखनै भूंडसूरौ बोल्यो: साहजी रौ पिण मन हुग्रौ दीसै है ।—भि. द्र.

भूंडाई—सं० स्त्री०—१ शिकायत ।

उ०—मासी फिळा माथै इज ऊभी मिळगी । जांणै जित्तो ग्रोळबौ दियौ । ग्रांमनौ जतायौ । बादळ री भूंडायां करी ।—फुलवाड़ी

२ निंदा, ग्रपकीर्ति ।

उ०—सुरग में ई रात-दिन ग्रत लोक री भूंडायां सुण सुणनै म्हारा तौ कांन पाकग्या, पण इत्ता दिन जकी बातां सुणी वै साव झूठी ग्रर बेपींदा ही ।—फुलवाड़ी

क्रि०—करणी, होणी ।

३ दोष, ग्रवगुण ।

उ०—थारी खुद री ई बात लै । थूं जलम सूं भूंडौ थोड़ौ ई हौ । ठगां रै सिखावण सूं थांमै भूंडायां सांचरी ।—फुलवाड़ी

४ खराबी ।

उ०—सास्तर रा सास्तर लुगायां री ताड़ना सूं भरया पड़या है, अैड़ी तौ ग्रां में कीं खांमी अर भूंडायां निजर नीं आवै ।
—फुलवाड़ी

५ कुरूपता ।
६ अभद्रता ।
७ बुरा होने का भाव या बुरापन ।
८ आलोचना ।

भूंडापण, भूंडापणौ—देखो 'भूंडाई' ।

भूंडोड़ौ—देखो 'भूंडौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हाथां हूकलिया लटकंता लोटा, रिण रिण रींकंता सुपनै में रोटा । कोडी कोडी लै कळियोडा कूंगा, ढाळा **भूंडोड़ा** ढळियोडा ढूंगा ।—ऊ. का.
(स्त्री० भूंडोड़ी)

भूंडोळ–सं० पु यौ०—भूकम्प भूचाल ।

भूंडौ–वि० [स्त्री० भूंडी] १ अनुचित, खराब ।

उ०—१ **भूंडां-भूंडी** बातड़ी, अैसी करियै काय । हूं प्यारी इण जोध की, तो घर मांहे नांय ।—गज उद्धार

उ०—२ अपां दो जीवां सारू तौ मोकळी.पण हाथां कमायौड़ौ धन सुक्यारथ लागै तौ कांई **भूंडी** बात ।—फुलवाड़ी

२ दुरवस्था या खराब अवस्था वाला, बेकार ।

उ०—पल पल मांही पियै, चूंपकर चिलम्या चाडै, घन री कर कर धूंवौ, कई इण मांही काडै । आंणै रोज उधार, करज कर टाट कुटावै, निज तन री कर नास, ओगणी सास उठावै । बुढापै संग्या होवै बुरी, जग में **भूंडौ** जीवणौ, हजारां मांय ओगण हुवै, पण बी होकौ पीवणौ ।—ऊ. का.

३ अशोभनीय, असुन्दर, कुरूप, भद्दा ।

उ०—१ क्रोधी कपटी पूर, **भूंडौ** दीसै नूर । धरम रौ द्वेसियौ ए, मच्छर विसेसियौ ए ।—जयवांणी

उ०—२ कैतां ई मोरिया रै सुरंगी पांखां रौ रुपाळौ छत्तर तण-ग्यौ । मोर खुसी में नाचण लागौ । पै'ला मोर बांडा व्हैता । घणा **भूंडा** लागता ।—फुलवाड़ी

उ०—३ मूंछां बिन मूंडा भासत **भूंडा**, भरसूंडा भभकंदा है । लड़थड़ गळ लंजा हतरस हंजा, मनमथ कांम मदंदा है ।—ऊ. का.

उ०—४ मोताहळ मुकताह, पहरयां मेळ ज नह पड़े । गज री भूल गधाह, **भूंडी** लागै भेरिया ।—महाराजा बलवंतसिंह रतलाम

४ अनिष्टकर, असुभ, अमांगलिक ।

उ०—म्हारी जीमणी आंख फरूकी तद सूं ई सोच्यौ के कीं **भूंडा** समाचार आवैला ।—फुलवाड़ी

मुहा०—**भूंडौ भलौ होणौ**=मौत हो जाना, मर जाना ।

५ जिसमें शालीनता व शिष्टता आदि का नितान्त अभाव हो । अश्लील, असभ्यतापूर्ण, भद्र ।

ज्यूं—वौ बौत **भूंडौ** बोलै है ।

मुहा०—**भूंडौ बोलणौ, भूंडौ बकणौ**=गालियां देना ।

६ दयनीय ।

उ०—सूवर अर भाचरियां सूं ई **भूंडी** हालत है इण री ।
—फुलवाड़ी

७ अलाभकारी, हानिकारक ।

उ०—१ अपणी जांण अभाग, गजब नहिं खाय गधेड़ौ । सूकर **भूंडी** समझ, निपट निकळै नहिं नेड़ौ ।—ऊ. का.

उ०—२ हूकै सूं निज हेत भलौ **भूंडौ** नह भाळै । मांहि बळै मां-बाप, बारणै छांणा बाळै ।—ऊ. का.

उ०—३ मरणै परणै में गोडा खर गाळै, बनिता सुत जावौ वैती रै बाळै । भलपण खांचै पण रांचै भूंडै में, मांचै सूतां रै हूकौ मूंडै में ।—ऊ. का.

मुहा०—**भूंडी करणी**=अहित करना, बुरा करना, कष्ट देना । २ **भूंडी बीतणी**=अहित होना, गड़बड़ होना, अव्यवस्था होना ।

८ जो सहन करने योग्य न हो, असह्य, कष्ट-प्रद ।

उ०—जाहर जस खुस बोहजुत, सुदता कुसम सुसोह । कांटां सूं **भूंडौ** क्रपण, वप अपजस बदबोह ।—बां. दा.

९ खतरनाक, क्रूर ।

उ०—आइंदा ध्यांन राखजै । जै अबै कदेइ केस गमाय दियौ तौ थूं थारी जांणै । पछै म्हारै जेड़ी **भूंडी** नीं है ।—फुलवाड़ी

१० क्रुद्ध, नाराज ।

उ०—ताहरां कुंवर रिसायनै कहियौ—जु हाथी तौ न द्यो छौ, पण म्हारौ नांम मालदे छै । मेड़तै री ठोड़ मूळा बुहाऊं तो मालदे । ····ताहरां राव गांगैजी कहाड़ियौ वीरमदेजी नूं—जु थे ओ कांसूं कियौ, जितरै हूं जीवूं तितरै तौ थे म्हारै परमेस्वर छौ, पण हूं पुहतौ न ! ताहारां मालदे थां सूं **भूंडौ** छै, थांनुं दुख देसी ।
—नैणसी

११ अकीर्तिकर, निंदनीय ।

उ०—जद स्वांमीजी बोल्या: रजपूत रौ बेटो संग्रांम करतां न्हांस जावै ते सूर किम कहीये । तिण ने राजा पटौ किम खावा दै । लोकीक में आबरू किम रहै । **भूंडौ** दीसै । ज्यूं भगवंत रा साधु बाजै नै कारण पड़ियां असूझतो दियां अल्प पाप बहुत निरजरा कहै असूझता री थाप करै ते इहलोक में भूंडा दीसै ।—भि. द्र.

१२ निम्न स्तर वाला ।

उ०—जै रुपियां द्यां तौ जाट गूजर कहावां । हाड़ोती में **भूंडा** दीसां । न द्यां तो मारीजां ।—नैणसी

क्रि० प्र०—दीखणौ, लागणौ।

मुहा०—भूंडौ दिखाणौ=नीचा दिखाना। भूंडौ लगाणौ=बदनाम करना। भूंडौ बाजणौ, भूंडौ लागणौ=बदनाम होना।

१३ जो घृणा करने योग्य हो, घृणित, गंदा, हेय।

सं० पु०—१ निंदायुक्त कविता।

उ०—भला हुता जद भूंडां कहता, भूंडां रा कांई भूंडा। भला भूंडां री बखत राखता, सरग गया वै मूंडा।

—सादूळ जी बोगसौ (सरवड़ी)

२ अहित कामना सूचक कविता।

रू० भे०—भांडौ, भुंडुं।

अल्पा०—भूंडोड़ौ।

मह०—भुंडौ।

भूंण-सं० पु० [सं० भ्रमण] काष्ठ या धातु निर्मित एक गोलाकार बड़ा चक्र जो कुए से पानी निकालते समय चडस की रस्सी के चलने में सहायक होता है।

रू० भे०—भंवण, भमण, भवण, भूण।

अल्पा०—भमणियौ. भूंणियौ, भूणियौ।

भूंणकमळौ, भूंणमथौ-सं० पु०—ऊंट। (डिं. को.)

रू० भे०—भुणकमळौ, भूणकमळौ।

भूंणियौ—देखो 'भूंण' (अल्पा., रू. भे.)

भूंथरा-सं० पु०—उलझे या बिखरे हुए सिर के बाल।

भूंबाड़ौ—देखो 'भूंभाड़ौ' (रू. भे)

भूंबावळी—देखो 'भुंईबावळी' (रू. भे.)

भूंभ-सं० स्त्री०—मस्ती।

उ०—भड खळां भडां ऊतरै भूंभ, कुंजर कडडंत गूंडंत कूंभ। तेगां तमच्छ तूटंति तोब, झबरक्क हुलां साबळां झोब।

· गु. रू. बं.

भूंभलिया-सं० पु०—पड़िहार वंश की एक शाखा।

भूंभाड़ौ-सं० पु० [अनु०] १ भूं-भूं रोने की तेज ध्वनि।

२ तेज आंधी।

उ०—करकर हूं भाड़ा सासण किचलावै, बाजै भूंभाड़ा बासण बिचलावै। चमकैला डागळ गोडा चिक चिकता, जंतू जळ रिकता सिकता में सिकता।—ऊ का.

रू० भे०—भूंबाड़ौ।

भूं-भूंकार-सं० स्त्री० [अनु०] भूंकार यानि गधे के रेंकने की आवाज।

भूंय—देखो 'भांय' (रू. भे.)

उ०—तरै देवराज कांमदार नूं कह्यौ—'ओ वडौ मुहंतौ वडै दरबार रौ परधांन इतरा राईतन छोड़नै मांनूं जांण नै इतरी भूंय आयौ, तौ इण रौ जरूर अरथ सारणौ।—नैंणसी

उ०—२ छळ करि दोन्यूं असवार कि, चाकर नें घणी रे। जातां नवि जांणै कोइ कि, गया तै भूंय घणी रै।—प. च. चौ.

भूंयास-सं० पु० [सं० भून्यास] १ किसी पदार्थ के एक छोर को भूमि में इस प्रकार दबाकर जमाना कि उसका कुछ अंश भूमि के अन्दर गड जाय।

२ किसी चीज का वह अंश जो इस प्रकार जमीन में गड़ा या धंसा हुआ हो।

३ देखो 'भुंवास (रू. भे.)

भूंरौ—१ देखो 'भंवारौ' (रू. भे.) (बरदा)

२ देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हरसा बीर मेरा रै, मारूंगी बादस्यानै गळ घोट। जांमण का रै जाया, भूंरा कटवावूं रै जां री चांमड़ी—लो गी.

भूंवणौ, भूंवबौ—देखो 'भंवणौ, भंवबौ' (रू. भे.)

उ०—सुणतां ही लोगां रा होठ सूक जावै अर मुड़तां ही माथौ भूंवण लाग जावै।—दसदोख

भूंवणहार, हारौ (हारी), भूंवणियौ—वि०।

भूंविओड़ौ, भूंवियोड़ौ भूंव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भूंवीजणौ, भूंवीजबौ—भाव वा०।

भूंवारौ—१ देखो 'भंवारौ' (रू. भे)

२ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

भूंवाळी—देखो 'भंवळ' (रू. भे.)

उ०—१ भूख-तिस तथा नींद भोगता थका चकडूंडियै दांई भूंवाळी खांवता रै'ता।—दसदोख

उ०—२ कंठ गाधां पड़ रै'या, माथौ भूंवाळी खा रै'यौ हो। ठाकरांनै देख'र जमी माथै हाथ दे'र बैठगी।—दसदोख

भूंविदेवता-सं० पु०—स्वर्ग।

भूंवियोड़ौ-भू० का० कृ०—देखो 'भंवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भूंवियोड़ी)

भूंसणौ, भूंसबौ—देखो 'भुसणौ, भुसबौ' (रू. भे.)

उ०—कुत्ती घणी भूंसै। घणौ इ कह्यौ हे कुत्ती। साधां ने मत भूंस।—भि. द्र.

भूंसणहार, हारौ (हारी), भूंसणियौ—वि०।

भूंसिओड़ौ, भूंसियोड़ौ, भूंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भूंसीजणौ, भूंसीजबौ—भाव वा०।

भूंह—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—१ चख चोळ मूंछ भूंह चढ़ी, तांमस उठी तमोगुणी। मेह री गाज जांणै मरद, सारदूळ कांनां सुणी।—मे. म.

उ०—२ रोस नयन मुख रक्त, मूछ भूंह नि मग चढ्ढिय। कर कढ्ढिय किरवांन, कुबत मुखतै खळ कढ्ढिय।—ला. रा.

भूंहर-सं० स्त्री०—आकाश में छाया हुआ धूम, कुहरा या रजकण जिससे आकाश स्पष्ट नहीं दिखाई देता।

भूंहरियौ—देखो 'भूंहरौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—धूड़ धमाखां से भरी, ज्यूं भूंहरियौ भांण। ओपै अंग आदीत सौ, उदयागिर परवांण।—जसमा ओडणी री बात

भूंहरौ-वि० (स्त्री० भूंहरी) १ धूलि से आच्छादित, धुमिल।

उ०—महरांण कमंध दूजौ 'गजण' कोपियौ, पिसण घड़ वरण पड़ घसण पासै। भेद रज गयण तन वरण थय भूंहरौ। भेद रत धरण अहि अरण भासै।—कविराजा करणीदांन

२ देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

उ०—प्रगटचउ खरउ भूंहरौ, तिण मांहि प्रतिमा अति भली। जेठ सुद इग्यारस सोल बासठ, बिंब प्रगटचउ मन रा बली।—स. कु.

३ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

भूंहार, भूंहारौ—१ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—१ मुख मूंछ अणी भूंहार मिळ, अरण वदन छक ऊफणै। व्रजराज उपासक जिण वखत, दीठां (हिज) आवै देखणै।—सू प्र.

उ०—२ सांम धरम कुळ वरम संभारै, आत्र 'गजैसी' खडग उभारै। ऊफणियौ असमांन अधारै, मिळिया मूंछ अणी भूंहारै।
—गु रू. बं.

२ देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

भू-सं० स्त्री० [सं० भूः] १ भूमि, पृथ्वी। (अ. मा., डिं. को.)

उ०—प्रब प्रब 'जोध' प्रसण पडियाळग, निहंसतां रण भड निवड। लगै जिकां बापीकी लाधी, भू भांजेवा प्रसण भड।
—महम्मदजी बारहठ

२ संसार, जगत।

उ०—बांना अंग धारण भू जाहरां करेगौ बातां, उधरेगौ हाथां दंत बांरणा उबाड़। उच्छाहां भरेगौ खाग धारंगां खरेगौ अंग, बारंगां बरेगौ 'चैन' लोहड़ा बजाड़।—सूरजमल मिसण

स० पु० [सं० भू] ३ विष्णु। ४ राजा, नृप। ५ भूपण। ६ साधु, महात्मा। (एका.)

७ पानी, जल। (ना. डिं. को.)

उ०—बाळक बरळावै आखा अभिलाखै, भू-भू बू-बू बिन भाखा नहिं भाखै। सूंपै सीरावण ब्याळू ले बांसै, बेळा ब्याळू री सीरावण सांसै।—ऊ. का.

८ एक की संख्या। ✱ (डिं. को.)

९ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

रू० भे०—भुअ, भुव, भूअ।

भूअ—देखो 'भू' (१), (५) (रू. भे.)

उ०—जुग जुग में जगदीस, धरे अवतार नरांयण। भूअ चौ भार उतार, फेर तप साध परायण।—गजउद्धार

भूअडंड—देखो 'भुजडंड' (रू. भे.)

उ०—१ खांडै-राव सिरै नव-खंडां, मारू तौ सिर भारथ मंडां। भारथ भळायौ तौ भूअडंडां, मांडे तूं थांभा व्रहमंडा।—गु. रू. बं.

उ०—२ भांगेसुर वासुं रहि जड़ण रिणवड़ ही जोड़ै। फतैखांन सारिखा म्लेछ भूअडंड मरोड़ै।—राव मालदे री बात

भूअणतरि-सं० पु० [सं० भवन+अन्तरं] आकाश।

उ०—मंत्रीसर वली मोकलिउ, 'मिलज्यौ देई मांन'। परधांनइ परखिउ असिउ, भूअणंतरि जिम भांनु।—मां का. प्र.

भूअपति, भूअपती, भूअपत्ती—देखो 'भूपति' (रू. भे.)

भूअबळां—देखो 'भुअब्बळ' (रू. भे.)

उ०—रिमराह तियार बंधै रणवट्टां, 'खेम' समोभ्रमि रोकि खळां। रूकै रिमराह बहादर राजै, भार ग्रहै निय भूअबळां।—गु. रू. बं.

भूआ-सं० स्त्री० [सं० पुप्पा, पुप्फा, पुबपा, भुआ, बुआ] पिता की बहिन।

उ०—ऊठ भूआ कर आरती आरतड़ी ए बाई थारोड़ौ नेग। कहीं देसौ आरती वीरा कहीं औ आरतड़ी रौ नेग।—लो. गी.

मुहा०—भूआजी फिरणौ, भूआजी बोलणौ=निर्धनता या टोटा होना।

रू० भे०—भुआ, भुवा, भूवा।

भूआऊ-सं० स्त्री०—पृथ्वीकाय।

उ०—बाबीस सात तीन दस वरस सहस्सें आय। भूआऊ वाऊ वणती दिन तेऊ काय।—वृ. हस्त

भूआड़ौ-सं० पु०—पिता की बहिन का पति।

रू० भे०—भूंड़ौ।

भूआळ—देखो 'भूपाल' (रू. भे.)

भूआसासू-सं० स्त्री०—ससुर की बहिन, पति या पत्नी के पिता की बहिन।

रू० भे०—भुआसासू, भूआरसासू, भुवासासू, भूवासासू।

भूआसुसरौ—पति या पत्नी के भूआ का पति।

रू० भे०—भूवासुसरौ।

भूइं—देखो 'भूमि' (रू. भे.)

उ०—जूनउ गढ गिरनार वुलीउ, काछ तणी भूइं चांपी। कांथगेहडी अनइ पारकर, ठट्ठू थरहर कांपी।—कां. दे. प्र.

भूइबावळी—देखो 'भुंईबावळी' (रू. भे.)

भूकंत, भूकंथ-सं० पु० यौ० [सं० भू+कंत] नृप, राजा। (डिं. को.)

भूकंप-सं० पु० [स०]किन्हीं प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी में होने वाला क्षणिक कंपन जिसके कारण कभी-कभी जमीन फट जाती है एवं जल की जगह स्थल तथा स्थल की जगह जल हो जाता है, भूचाल।

भूक-सं० पु०—१ नाश, संहार।

उ०—१ लसियौ सुत 'गजण 'पाल' सुत लड़ियौ, भारथि भड़ां घड़ां करि भूक। रूक सरिस बहतां गौ राजा, रावत रह्यौ बाहतौ रूक।—विठळदास चांपावत रौ गीत

उ०—२ भिड़ै बक्र उजळ मूछ भुहार, उभै ससि बीज तणी उणहार। भिड़ै खग 'रैण' करै खळ भूक, 'रैणायर' ऊपर बाजत रूक।—सू. प्र.

उ०—३ ग्रीव पड़ै सिर गुड़ै, भड़ां धड़ पड़ै भिड़ज्जां। कोट पड़ै कंगुरां, भूक हुय पड़ै भिड़ज्जां।—सू. प्र.

२ देखो 'भूकौ' (रू. भे.)

३ देखो 'भूख' (रू. भे.)

भूकण—१ देखो 'भूंकण' (रू. भे.) (अ. मा.)

२ देखो 'भूसण' (रू. भे.)

उ०—थावरां जंगमां माहा तीरत थयौ, ग्रह नरां सुरां सुजस गम आरो। प्रथी मेवडी भूकण वर्णं कैलपुर, थुरह थन दुख महण थारो।—महारांणा राजसिंघ री गीत

भूकणौ, भूकबौ—देखो 'भूंकणौ, भूंकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गरबब-वत गावै डर डमगावै, हरखावै हूकंदा है। बिन तप व्रत बसिया कंद्रप कसिया, भग रसिया भूकंदा है।—ऊ का.

उ०—२ दिली लखै दिगदाह, विगत हित साह विचारी। खर भूकै रव खैंग, स्वांन कूकै सुखहारी।—रा. रू.

भूकणहार, हारौ (हारी), भूकणियौ—वि०।

भूकिग्रोड़ौ, भूकियोड़ौ, भूक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भूकीजणौ, भुकीजबौ—भाव वा०।

भूकाक—सं० पु०—एक प्रकार छोटा बाज पक्षी।

भूकियोड़ौ—देखो 'भूंकियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री० भूकियोड़ी)

भूकि देखो 'भूको' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—पुळियौ निज पाए लुबुधि लगाए, जाय जु हारि घणी जगत्तं। अधिको धन आवै असुभ उथापै, भूकि किओ दाळिद भगत्तं।

—पि. प्र.

भूकियौ—देखो 'भूखौ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—भाग रौ धणी सोभाग री भूकियौ, खाग रौ खाटियौ बांट खावै। वेहूं राहां विचै तीन वांदै 'बलू', वींभरै खेत नीसांण वावै।—बलू चांपावत री गीत

भूकी—देखो 'भूकौ' (अल्पा., रू. भे.)

भूकोहली—एक कन्द विशेष।

उ०—भसम भराडी भमरिया, चोलहिरा चांडाळ। भूकोहली भूवंतरी, कंद मकंद विसाळ।—मा. कां. प्र.

भूकोड़ौ—१ देखो 'भूखौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बांदां रै आडा बहै, सौदा मिळनै सैंग। भूकोड़ा ममता फिरै, लाडू खावै लैंग।—ऊ. का.

भूकौ—सं० पु०—१ महीनतम-चूर्ण, चूर्ण।

२ सुक्ष्म टुकड़ों का ढेर।

३ नाश, संहार।

४ महीन पीसी हुई बुकनी।

५ देखो 'भूखौ' (रू. भे)

अल्पा०—भुकि, भूकी।

उ०—भूकां पोसणहार यूं, ज्यूं जग कमळाकंत। नागां ढांकणहार इम, जिम तरवरां बसंत।—बां. दा.

भूखंड—सं० पु० [सं०] १ पृथ्वी का एक भाग।

२ नौ की संख्या। ✱

भूखंडियौ—सं० पु०—छत्तीस प्रकार के शस्त्रों में से एक। (अ. मा.)

भूख—सं० स्त्री० [सं० बुभुक्षा] १ शरीर के स्वाभाविक वेगों में से एक वेग जिसमें खाने की प्रबल इच्छा होती है।

उ०—१ दिन ऊगै नित देखणौ, दाता रौ दीदार। भागै भूख कळेस भय, 'बंक' न लागै वार।—बां. दा.

उ०—२ राजा मन खटकै घणूं, ऊमा अहनिसि जेह। भूख गई तिस बीसरी, नवि दीठां रौ नेह।—ढो. मा.

मुहा०—१ भूख मरणी=वह अवस्था जब भूख लगकर बाद में कुछ भी खाने की इच्छा न हो। २ भूख लागणी=कुछ खाने की इच्छा होना। ३ भूखां मरणौ=भोजन के अभाव में व्याकुल होना।

२ कमी, टोटा।

उ०—तद इस्टूखां कै'वण लागौ इण धरती माथै म्हनै सबसे घणी भूख दिल्ली रा पातसाह रै दीखै। -फुलवाडी

मुहा०—भूखां मरणौ—अभाव ग्रस्त स्थिति होना।

३ अभिलाषा, कामना।

उ०—१ लाखूं मण धांन निपजाय नै ई उण रौ भूख नीं मिटी तौ म्हां भोळा जीवां नै मारयां उण रौ कांईं सांधौ लागैला।

—फुलवाड़ी

उ०—२ तद इस्टूखां कह्यौ—जैसलमेर दरबार रै खजांनै लूटा-खोसी री संपत अणूंती है, तौ ई वांरौ मन नीं भरयौ। अै सातूं सिंघासण वांनै म्हारा नांम सूं निजर कर दीजौ। भूख री अण-गिण माया रै भेळी आ माया ई पड़ी रै'वैला।—फुलवाड़ी

३ आवश्यकता, जरूरत।

४ दरिद्रता, कंगाली।

ज्यूं—उण रै लाइ रै भूख बापरगी।

रू० भे०—भुक्ख, भूक, भूखि।

भूखण—देखो 'भूसण' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ सौ थिर राखण काज, क भूखण साजिया। जड़िया रच्छया जंत्र, मनोज मुनी दिया।—बां. दा.

उ०—२ भड़ां-सोह-भूखण गोपि-भ्रतार, बिसन्न ब्रंदावन-लील-बिहार। नमौ ब्रह्मा-केवळ राखण व्रज्ज, नमौ अच्युतानंद गोविंद अज्ज।—ह. र.

उ०—३ राग खट तीस धुनि ब्यंग, भूखण सुरस पात पद। जिकै विण समझ चंडूळ पंखी जिही, जे न रघुनाथ चौ नांम जांणै।

—र. ज. प्र.

उ०—४ राजसभा के भूखण दिल के उदार। विरदूं के भारे समसेर बहादुरूं के समसेरूं के चितारे।—सू. प्र.

उ०—५ रयणी भूखण चंदी, आकास भूखणी भांणी। भूखण भूतळ इंदी, भूखण साह फौज 'गजसिंघी' ।—गु. रू. बं.

भूखणौ, भूखबौ—देखो 'भूंकणौ, भूंकबौ' (रू. भे)

भूखणहार, हारौ (हारी), भूखणियौ— वि०।

भूखिओड़ौ, भूखियोड़ौ, भूख्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भूखीजणौ, भूखीजबौ—भाव वा०।

भूखळमेर-सं० पु०—जैसलमेर का व्यंग्यात्मक नाम।

भूखांण—देखो 'भूसण' (रू भे.)

उ०—रांण दळ पलटतां सुथर 'झालो' रहे, भांण अस रोक आरांण भाळै। राज रै कंठ **भूखांण** उण चौसरां, रंभ चौसरन को सीस राळै।—कल्याणसिंह झालै रौ गीत

भूखाळ—देखो 'भूखौ' (मह., रू. भे.)

उ०—इक पड़ै रीठ गोळां अतर, देखि रुठा कमधज राड़िया। **भूखाळ** वधै जिम देखि भख, आया वागां उपाड़िया।—सू. प्र.

भूखाळुऔ, भूखाळुवौ, भूखाळू, भूखाळौ—देखो 'भूखौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—माझी मेर अभंग भड, मारू अमली-मांण। गिळण गढां **भूखाळुऔ**, ओबासै जमरांण।—गु. रू. बं.

भूखि—देखो 'भूख' (रू. भे.)

उ०—हंसवाणी रिदि आंणी प्रांणी परवसि थ्यु घणूं। **भूखि** भागि प्रीति लागी, जागी तु मन सणमणूं।—नळाख्यांन

भूखियोड़ौ—देखो 'भूंकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भूखियोड़ी)

भूखियौ—देखो 'भूखौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ परमेसर तूं त्रसतं पांणी, संत **भूखियां** साक रसाळ। गूंगा बांच तूं हीज गिरधारी, बेड़ौ तूं हीज अलख विसाळ।
—ओपौ आढौ

उ०—२ तेथ फिरे रडवडे थकित, हुऔ पंथ डूलो। लांघणियौ **भूखियौ**, सीह किरि डांणा हूलो।—गु. रू. बं.

उ०—३ तरै चारणां कह्यौ—'म्है **भूखिया** नै माहरै बेटी जरूर परणावणी; वे ठाकुर आज म्हांनुं निबळा देखै छै तौ म्है ओल पिण देस्यां।—नैणसी

भूखौ-वि० [सं० बुभुक्षित] (स्त्री० भूखी) भूख से पीड़ित, भूखा

उ०—१ मुंह न दियै पर मारियै, केहर कठण प्रबंध। **भूखौ** थाहर मैं सुऐ, कै गाहै गज गंध।—बां. दा.

उ०—२ संक्रम सुभ स्रस्टी द्रस्टी लुभ देती, लंपुट संपुट लख घूंघट पट लेती। लुळकर लकुटीले त्रकुटी सळ लाती, **भूखी** बाघण सी भ्रकुटी भळकाती।—ऊ. का.

२ दीन, गरीब।

उ०—पीहर पतळां रा सैणां रा प्यारा, तारक तूटां रा नैणां रा तारा। सीरी सिटियां रा सूल्हां रा सारा, भीड़ी **भूखां** रा फूलां रा भारा।—ऊ. का.

३ अभिलाषी, इच्छुक।

उ०—१ व्याव रौ **भूखौ** गधौ तौ ज्यूं भींटियौ कह्यौ—त्यूं ईं करियौ। आंख्यां आडी पाटी बांध नै उण रै लारै टुरग्यौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ जवांनी रौ **भूखौ** बकरौ सेवट आपरौ जीव गमायौ।
—फुलवाड़ी

४ कृपण, कंजूस।

५ निर्धन, कंगाल।

उ०—बै: आज धनवांन है, पीसै रा धणी है अर बांरै च्यांरा पासै अड़धू चालै है। म्हैं लें'णैं सूं कळीज्योड़ौ एक टोटैरो टूर, घाटायत अर **भूखौ** फकीर हूं।—दसदोख

रू० भे०—भुकौ, भुखौ, भूकौ।

अल्पा०—भुकियौ, भुखाळु, भुख्याळवौ, भूकियौ, भूखाळवौ, भूखाळुऔ, भूखाळौ, भूखियौ, भूख्याळवौ, भूख्याळौ।

मह०—भुक्खड़, भूखाळ।

भूख्याळवौ, भूख्याळौ—देखो 'भूखौ' (अल्पा., रू. भे.)

भूगणौ, भूगबौ-क्रि० अ०—१ भग्न होना, खंडित होना, टूटना।

उ०—आलम दक्खण गयौ उताळौ, बडौ सोच उर बंधव वाळौ। भोम गई सांभर सुण **भूगौ**, परहंस लीधां दक्खण पूगौ।—रा. रू.

२ दुखित होना।

भूगणहार, हारौ (हारी), भूगणियौ—वि०।

भूगिओड़ौ' भूगियोड़ौ, भूग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भूगीजणौ, भूगीजबौ—भाव वा०।

भूगरभ-सं० पु० यौ० [सं० भू+गर्भ] १ धरती का भीतरी भाग।

२ विष्णु।

३ सस्कृत के महान् कवि भवभूति का नामान्तर।

भूगरभसास्तर-सं० पु० [सं० भूगर्भशास्त्र] पृथ्वी के संघटन एवं उसके ऊपरी व भीतरी तत्त्वों के विवेचन का शास्त्र।

भूगळ—देखो 'भुंगळ' (रू. भे.)

उ०—चौरी चढीयौ भोज की, बाजइ बरगू **भूगळ** भेर। हुवउ खंधारउ रावळइ, धार कउ द्विज चाल्यौ अजमेर।—बी. दे.

भूगियोड़ौ-भू० का कृ०—भग्न, खंडित, टूटा हुआ.
(स्त्री० भूगियोड़ी)

भूगोळ, भूगोल-सं० पु०—१ पृथ्वी, धरती। (डिं. को.)

उ०—भंजण जाय **भूगोळ** मन उठा लग भमै नहं, नमै नहं जठा लग सास नाकी, छपी बड़वा अगन लाय सौ छोकरौ, डोकरौ बडौ आकाय डाकी।—फतैसिंघ बारहठ

२ वह शास्त्र या विद्या जिससे पृथ्वी के बाह्य एवं प्राकृतिक विभागों, जैसे पहाड़, नदियां, उद्योग, खनिज आदि बातों की जानकारी होती है।

रू० भे०—भुगोळ।

भूगोळक–सं० पु० [सं० भूगोल+क] भूमण्डल।

उ०—भमिया **भूगोळक** नभ गोळक भाई, कविजण करुणा रस अलमिति अधिकाई। सूका सरवरिया तरवरिया सूका, च्यारूं वरणास्रम भय भ्रम क्रम चूका।—ऊ. का.

भूंड़ौ—देखो 'भूंआड़ौ' (रू. भे.)

भूचकणौ, भूचकबौ–क्रि० अ०—१ डगमगाना, डांवाडोल होना।

उ०—महाक्रोधंगी गनीमां हुंता हुचके नरिंद्र 'माधौ', भूलोक **भूचकै** बाधौ लचके कोम भार। वोमंगी अराबां भाळ बेताळ वभकै बकै, बाजंद्रा 'बहादरेस' हुके तेण बार।—हुकमीचंद खिड़ियौ

२ कंपित होना, धड़कना।

उ०—सगा सेला खगां ऊभेलां सावळां, अरस गज **भूचका** धकां आया। खागहारी बिन्है रजवाट रा खटाऊ, थाट रा धणी मुंह मेज थाया।—रामसिंघ हाडा री गीत

भूचकणहार, हारौ (हारी), **भूचकणियौ**—वि०।

भूचकिप्रोड़ौ, भूचकियोड़ौ, भूचक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भूचकीजणौ, भूचकीजबौ—भाव वा०।

भूचकियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ डगमगाया हुआ, डोला हुआ. २ कंपित हुवा हुआ.

(स्त्री० भूचकियोड़ी)

भूचक्र–सं पु० [सं०] १ पृथ्वी की परिधि।

२ विषुवत् रेखा।

भूचर–सं० पु० [सं०] १ भूमि पर विचरण करने वाला।

उ०—१ पूर पियै भर जोगणी, भर पत्र उलट्टे। भिळिया खेचर **भूचरा**, मोटे मांसट्टे।—द. दा.

उ०—२ हर अपछर रिख हूर, चंड खेचर ग्रह **भूचर**। सिरवर कौतिग सुवर, रुधिर पळ व्रत मिळ डंबर।—सू. प्र.

[सं० भूचरः] २ शिव, महादेव।

३ भूत, पिशाच।

४ एक सिद्धि (तंत्र)।

रू० भे०—भूचराद, भूचरू, भूचार, भूचारी।

५ देखो 'भाचर' (रू. भे.)

उ०—अेस ईं काळ पड़ग्यौ तौ अे भाचरिया **भूचरिया** पाळणा दूभर व्है जावैला।—फुलवाड़ी

भूचराद—देखो 'भूचर' (रू. भे.)

उ०—पसु अजाद **भूचराद** होव घात प्रांणयं। असंख जात पंखि बांण वेवजे उडांणयं।—रा. रू.

भूचरी–सं० स्त्री० [सं०] योग शास्त्र के अनुसार समाधि अंग की एक मुद्रा जिसके द्वारा प्राण और अपान वायु दोनों एकत्र हो जाते हैं।

भूचरू—देखो 'भूचर' (रू. भे.)

उ०—जो अम्हारुं वयणु सुपोसिइ, निश्चिं सो वरु मइं परणेसिइ। खेचर **भूचरू** भूमिधरौ।—पं. पं. च.

भूचरोत–सं० पु०—गेहलोत वंश के क्षत्रियों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

उ०—२ चाचारा दिखण नूं भुंयसाजळ साहजी सिवौ। २ मेरो खातण रै पेट रा २, २ महिपौ, २ भवणसी, २ भूचर रा **भूचरोत**।—नैणसी

भूचार, भूचारी—देखो 'भूचर' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रह ग्रह ग्रीध गरूर, संग चाल मिळ दळ सूर। मिळ खेचर ये **भूचार**, रिण जांण चाले लार।—सि. सू. रू.

उ०—२ मछ कछ सुसुमार मगर गाहा जळ अंच। चौपय उरपरि भुजपरि साप **भूचारी** तेय।—अ. रतौ.

भूचाळ–सं० पु० [सं० भूचाल] किन्हीं प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी में होने वाला क्षणिक कंपन जिसके कारण कभी-कभी जमीन फट जाती है एवं जल की जगह थल तथा थल की जगह जल हो जाता है।

उ०—थडी करै जद आणौ चहीजै, धरती में **भूचाळ**। पालणै में में सोज्या पिरथीपाळ।—चेतमांनखा

रू० भे०—भूंचाळ।

भूछाय–सं० पु०—अंधेरा। (ह. नां मा.)

भूजणौ–सं० पु०—राग-द्वेष, मन-मुटाव।

उ०—जेइ ले जंगळ सूं लावै, फोगां सूं सुभ मूजणौ। निरच माथ सकर घी पावै, भूलै ब्यावां **भूजणौ**।—दसदेव

भूजणौ, भूजबौ—क्रोध करना, गुस्सा करना।

उ०—पेट नै भाठा मारतौ थकौ लोगां रा घर भरावै है। घर हाळी पर **भूजै** दांत भींचै। बापड़ी दांतां में लावण लियां रात दिन पांणी पीसणौ करै।—दसदोख

भूजणहार, हारौ (हारी), **भूजणियौ**—वि०।

भूजिप्रोड़ौ, भूजियोड़ौ, भूज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भूजीजणौ, भूजीजबौ—भाव वा०।

भूजा–सं० स्त्री० [सं०] १ सीता, जानकी। (अ. मा.)

२ देखो 'भुजा' (रू. भे.)

भूजाई—१ देखो 'भुंजाई' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरायंत भोइयां नै हुकम हुवौ छै। **भूजाई** रा वासण तयार कर राती नाडी चालज्यौ।—रा. सा. सं.

२ देखो 'भोजाई' (रू. भे.)

भूज्ज–अव्य०—फिर, पुनः।

भूझाळौ—देखो 'भुजाळ' (अल्पा., रू. भे.)

भूटकौ–सं० पु० [अनु०] बंदूक छूटने से उत्पन्न होने वाली ध्वनि।

उ०—पछै राजाजी जोस में हुकम दियो के इण बंधियोड़ नार नै अठै ई भून न्हाको। हुकम मिळण रै समचै अेकण सागै चाळीस बंदूकां रा भूटका व्हिया।—फुलवाड़ी

भूटांन—सं० पु०—नेपाल के पास का एक प्रदेश।

रू० भे०—भुटंत।

भूडंड, भूडंडह—देखो भुजडंड' (रू. भे.)

उ०—१ धमळौ बापूकारियौ, बाळी है बलिबंड। धुरि माथौ धूणै नहीं, भरि ओडै भूडंड।—गु. रू. बं.

उ०—२ दावै लागा जमीं घणा हिये दूखियां दोयणां दूठ, प्रवाड़ा अचूकिया ले भूडंडां पांडीस। 'जुंवारी' भोपाळ 'डूंगौ' दुहत्थां भूखिया जंगां, सेखा चाळै ढूकिया विरुत्थां गौरां सीस।

—संकरदांन सांमोर

उ०—३ छडाळां ऊपाड़ि चाड़ि जैंसिघ रा भडां छाती, भूडंडां बजाड़ि यूं धपाड़ि चंडा भाव। पाड़ि भंडां छाकियां धूमाड़ि जाडा थंडां पूर, राड़ि जीतौ भाड़ि खंडां धाड़ि मारू-राव।

—राजा बखतसिंघ रौ गीत

उ०—४ खिमै कूंत अदभूत, भडां वांकां भूडंडै। वादळ वादळ वळकि, वीज लत्ता ब्रहमंडै—गु रू. बं.

उ०—५ तांम 'भीम' ऊठियौ, खाग धूणै भूडंडह। जडै पाउ पायाळ, अडै मत्थौ ब्रहमंडह।—गु. रू. बं.

उ०—६ पडियाळग पडे प्रिसेण पीध, 'सुरजन्न' समोभ्रम मांनसिंध। ओडै भूडंड ब्रहमंड ओट, 'चांपावत' गुडै गयंद चोट।—गु. रू. बं.

भूडोल—देखो 'भूकंप'।

भूडौ—सं० पु०—बालू रेत का टीला।

भूण—स० पु०—१ जल भ्रमण, जल विहार।

[सं० भ्रूण] २ गर्भस्थ शिशु।

३ देखो 'भूंण' (रू. भे.)

उ०—१ खूंटा खड़ा, वळा डूंचिया, हालां सूं हळ ठाटिया। सिर-धर अर सैंतीर साळां, खूड़ भूण थम पाटिया।—दसदेव

उ०—बाचै बिड़द अरट री पनड़ी, भूण गिड़गिड़ी गाजै। गोफण रा सरणाटां आगै, तोप बंदूकां लाजै।—चेतमांनखा

भूणकमळौ—देखो 'भूंणकमळौ' (रू. भे)

भूणहत्या—सं० स्त्री० [सं० भ्रूणः+हत्या] गर्भस्थ शिशु को गर्भ-पात द्वारा गिरवा देना।

भूणियौ—देखो 'भूंण' (अल्पा., रू. भे.)

भूत—सं० पु० [सं०] १ दार्शनिक दृष्टि से वे मुख्य तत्व या उपकरण जिनसे सृष्टि की रचना हुई है। द्रव्य, महाभूत।

वि० वि०—दार्शनिकों ने पांच मूल भूत माने हैं जो इस प्रकार हैं—आकाश, पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि। परंतु आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार ये मूल भूत नहीं हैं क्योंकि ये भी कई मूल भूत द्रव्यों के संयोग से बने हैं।

२ जीव, प्राणी।

उ०—आपौ पै हूंता सो तूं आप, विसंभर भूत-सरब्ब बियाप। सबै कुछ जागां बैठौ साह, मिनक्खां देवां नागां मांह।—ह. र.

३ सृष्टि का कोई जड़ या चेतन पदार्थ।

४ वीर भद्र।

उ०—जाजुळी धाराळ नारसिंघ री सटा रौ जायौ, प्रळैकाळ घटा री छटा रौ जायौ पूत। रिमां धू उथाळी चंडी रीस री रटा रौ जायौ, भाळी किनां ईस री जटा रौ जायौ भूत।

—कविराजा सूरजमल्ल मीसण

५ भृगु ऋषि का पुत्र, एक महर्षि का नाम।

६ एक हैहयवंशीय राजा।

७ भागवत के अनुसार वसुदेव एवं पौरवी का पुत्र एक यादव राजा।

८ मृत शरीर, शव।

९ रुद्र द्वारा सती के उदर से उत्पन्न पिंगल, सनिषंग, कपर्दी तथा नील लोहित वर्ण वाले प्राणी, एक प्राचीन भारतीय मानव जाति का समूह।

वि० वि०—शिव को भूतनाथ इसी लिए कहा है।

उ०—कजाकणि डाकणि काढि कळेज, जिमावत साकणि जूह अजेज। चुडावळी नूंतत भूत पिसाच, अछै रण ताळ पखाळत आच।—मे. म.

(स्त्री० भूतण, भूतणी) १० लोक व्यवहार में किसी मृत शरीर की आत्मा जिसे मोक्ष प्राप्त नहीं हुई हो, प्रेत, शैतान, जिन।

उ०—१ नैणां रा सोगन करै, भै मांनै सुण भूत। रांमत ढूलां री रमै, रांडोली रा पूत।—बां. दा.

उ०—२ हाजी रा इण मकांन में उणरी मोव्यार बेटौ अर बहू जिणांरै हाथां री मेंदी ही को उतरी ही नी मर गया और दोनूं अगति जाय नै भूत व्हैग्या।—रातवासौ

उ०—३ पांणि मितरै, पावै, आकड़े में लोटौ ढुळावै, भूतणी काढै जमी मे बूरै जिंद जरू करै, खेजड़े में कीलै।—दसदोख

क्रि० प्र०—आणौ, उतरणौ, काढणौ, चढ़णौ, निकालणौ, लागणौ।

वि० वि०—लोक मान्यता के अनुसार जिस मृत व्यक्ति की मोक्ष नहीं होती वह भूत बन जाता है और उसका यह रूप कभी २ लोगों को दिखाई भी देता है और अनेक प्रकार के उपद्रव भी करता है। यह भी माना जाता है कि कभी २ यह किसी व्यक्ति विशेष के शरीर में अप्रत्यक्ष रूप से प्रवेश करके उसके मस्तिष्क पर पूर्ण अधिकार कर लेता है और उसके होशहवाश बिगाड़ देता है जिससे वह बकने लगता है और पागलों की सी हरकतें करने लग जाता है।

मुहा०—१ भूत उतरणौ=आवेश समाप्त होना। २ भूत चढणौ, भूतसवार होणौ=आवेश में आना, किसी धुन का सवार होना। ३ भूत मरै नै पलीत जागै=नया विघ्न उत्पन्न होना। ४ भूत

बरणौ=भस्मीभूत होना, शरीर मैल युक्त होना, किसी कार्य करने के लिए पागलों की तरह पीछे पड़ना, दत्तचित्त से किसी कार्य में लगना। ५ भूत जगाणौ=तांत्रिक साधना द्वारा श्मशानो में भूतों को बुलाना। ६ भूत लागणौ=किसी को भूतादि बाहरी माया का असर हो जाना।

१० बीता हुआ समय या जमाना।

उ०—त्रकाल ग्यांनदरसी निज व्रम कूं पहिचांनै। भूत, भवस्त, वरतमांन जुगति सौं जांणै।—सू. प्र.

११ व्याकरणों के अनुसार तीन कालों में से एक जो व्यतीत घटना का सूचक होता है।

ज्यूं—मैं उठै काले गयो हो।

१२ राक्षस, असुर।

१३ पांच की संख्या। *

वि०—१ जो घटित हो चुका हो, बीता हुआ।

२ जो किसी विशिष्ट अवस्था या रूप को प्राप्त हो चुका हो।

ज्यूं—भस्मीभूत।

३ जो अस्तित्व में आ चुका हो, बना हुआ।

४ समय के अनुसार व्यतीत हुवा हुआ, पुराना।

ज्यूं—भूतपूर्व मंत्री, भूतकाळ।

रू० भे०—भूतक।

अल्पा०—भूतड़ियौ, भूतड़ौ।

भूतअंतक–सं० पु० [सं०] यमराज, धर्मराज।

भूतआत्मक–वि० [सं०[पंच तत्वों का बना हुआ शरीर।

भूतआवास–सं० पु० [सं० भूतआवासः] शिव।

भूतक–सं० पु० [स०] १ पुराणानुसार सुमेरु पर के २१ लोकों में से एक।

२ देखो 'भूत' (रू भे.)

भूतकळा–सं० स्त्री० [सं० भूतकला] पंचभूतों को उत्पन्न करने वाली एक प्रकार की शक्ति।

भूतकाळ–सं० पु०—विता हुआ समय।

भूतकाळिक–वि० [सं० भूतकालिक] जो वीते हुए समय में हुआ हो या उससे संबंध रखता हो, भूतकाल संबंधी।

भूतकाळिककदंत सं० पु० [सं० भूतकालिक कृदंत] क्रिया से बना हुआ भूतकाल सूचक विशेषण रूप।

भूतकदंत–सं० पु० [सं० भूतकृदंत] क्रिया का वह रूप जिस से यह सूचित होता हो कि क्रिया भूतकाल में समाप्त या पूरी हो चुकी है (व्याकरण)

ज्यूं—आणौ क्रिया का भूत कृदंत 'आयो' है। पढ़णौ क्रिया का भूतकृदंत पढियो है।

भतखांनौ–सं० पु० [सं० भूत+फा० खाना=घर] बहुत मैला कुचैला या अंधेरे वाला स्थान जिसे देखने से भूतों के आवास का सा आभास होता है।

भूतगण–सं० पु० [सं०] शिव के अनुचरों का समूह।

भूतघ्न–सं० पु० [सं०] १ ऊंट।

२ भोजपत्र।

३ लहसुन।

रू० भे०—भूतहन।

भूतड़ियौ–सं० पु०—१ एक प्रकार का रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—हरणा मेघ बांगळ बोदळिया, भूतड़िया मलीया भलीया। अट आरीयै सम बांदलिया इम, मारवीया पटीया मलीय।

—किसनजी धधवाड़ियौ

२ देखो 'भूत' (अल्पा., रू. भे.)

भूतड़ौ—देखो 'भूत' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ डाकण साकण भूतड़ा ए, यक्ष राक्षस महाघोर के। दयावंत ऊपरे ए, केहनौ न चाले जोर ए।—जयवांणी

उ०—२ कुंमर चल्यौ सामौ जवे, काढी खड़ग मुख बोल बै। बल संभाय रे भूतड़ा, मांरु वाजत ढोल बै।—रिसालू री वारता

भूतचतुरदसी–सं० स्त्री० [सं० भूतचतुर्दशी] कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी।

भूतचारी–सं० पु० [सं०] शिव, महादेव।

भूतजग–सं० पु० यौ० [सं० भूतयज्ञ] १ वह यज्ञ जिसमें भूत व पिशाचों को बलि दी जाय।

२ गृहस्थ के लिए पंच यज्ञों में से एक यज्ञ जिसमें वह समस्त जीवों को आहुति देता है।

भूतजूंण, भूतजोणी–सं० स्त्री० [सं० भूतयोनि[१ प्रेतयोनि।

२ परमेश्वर।

भूतदमन–सं० पु०—पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक। (व. व.)

भूतधांम–सं० पु० यौ० [सं० भूत+धामन] १ श्मशान भूमि, मरघट।

२ पुराणानुसार इन्द्र का एक पुत्र।

भूतनाथ–सं० पु० [सं०] शिव, महादेव। (डि. को.)

उ०—सालौ सीमाड़ां स्रोयणां आलौ भांण री करोठी सोहै, दकालौ काळ रौ भैरवांण रौ डचाक। बिलाला पांण रौ दूत नाथ री हाक वाळौ, भालौ स्रीरांण रौ भूतनाथ रौ भचाक।

—सूरजमल्ल मीसण

भूतनायक–सं० पु० [सं०] महादेव, शिव।

भूतनायका, भूतनायिका–सं० स्त्री० [सं० भूततायिक] दुर्गा, देवी।

भूतप—देखो 'भूतपति' (रू. भे.)

उ०—पती-सीत भूतप परकासौ, वासी सिव उर वास विसेस। आपी तसां लंक आसत अत, नरां सत्र हण नमौ नरेस।—र. ज. प्र.

भूतपक्ष, भूतपख–सं० पु० [सं० भूतपक्ष] कृष्ण-पक्ष।

भूतपत, भूतपति–सं० पु० यौ० [सं० भूत+पति] १ शिव, महादेव। (डि. को.)

२ ईश्वर।

रू० भे०—भूतप, भूतांपति।

भूतपाळ–सं० पु० यौ० [सं० भूत+पालनम्] १ प्राणियों का पालन करने वाला, विष्णु।

२ शिव, महादेव।

भूतपूनम, भूतपून्यू–सं० स्त्री० [भूतपूर्णिमा] आश्विन मास की पूर्णिमा।

भूतपूरव–वि० [सं० भूत पूर्व] वर्तमान से पहले का।

भूतभायखा—देखो 'भूतभासा' (रू. भे.)

भूतभावन–सं० पु० [सं० भूतभावनः] १ परब्रह्म।

२ विष्णु।

भूतभासा–सं०स्त्री० यौ० [सं० भूतभाषा] एक प्रकार की प्राकृत भाषा, पैशाची भाषा।

रू० भे०—भूतभायखा।

भूतभिडंग–वि०—मस्त, उन्मत्त।

भूतभैरव–सं० पु० [सं०] भैरव की एक मूर्ति का नाम।

भूतम–सं० पु० [सं० भूतमम्] स्वर्ण, सुवर्ण, सोना। (डि. को.)

भूतमात्रा–सं० स्त्री० [सं०] सांख्य के अनुसार पंचभूत का आदि, अमिश्र एवं सूक्ष्म रूप। ये पांच हैं—शब्द, स्पर्श,रूप, रस और गंध।

भूतराज, भूतराट–सं० पु० यौ० [सं० भूत+राट्] शिव, महादेव।

उ०—चंडी छाक ले आंमखां गूद कोण चीलां रंजां चले। धू काज दाकले गणां **भूतराट** धींग। पैराक चमूरां केक ऐराक छाक ले पूरी। साकुरां हाकले उसी बेळा उदैसींग।
—उदैसिंघ चहुवांण रौ गीत

भूतळ, भूतळि, भूतलि–सं० पु० [सं० भूतल] १ पृथ्वी, धरातल।

उ०—१ मंदायण तौ माग, पग देतां पुरखां तणा **भूतळ**। जागै भाग, अध भागै खिण एक में।—बां. दा.

उ०—२ हेरै हरियाळी **भूतळ** हरखाती, गहरी ऊंचे गळ हरियाळी गाती। घिन घण छकि जाती छाती लख छाती, जांझर झण-काती जाती मदमाती।—ऊ. का.

उ०—३ ऊपरिथा पूंतार विछूटइ, **भूतळि** भाजइ पाउ। वाढी सूंढि ढोलीइ ढांचा, धरिण वलइ नीहाउ —कां. दे. प्र.

२ संसार, दुनिया।

३ भूमि तल, पाताल।

भूतळेस–सं० पु० [सं० भूतल+ईश] शिव, महादेव।

उ०—मैमंतां बिभाड़ रथ्थी प्राहां रंगा भाराथ में, मह्वा बंकी बार पांव अचल्लां मांडीस। बारुंबार **भूतळेस** लै रुंडहार भार बणै, प्रथीनाथ जंही बार झाटकै पांडीस।—भगतरांम हाडा रौ गीत

भूतवास–सं० पु० [सं० भूतवासः] १ शिव, महादेव।

२ विष्णु।

३ भूतों का निवास स्थान, श्मशान भूमि।

भूतवाहन–सं० पु० [सं०] शिव, महादेव।

वि०—भूतों पर सवारी करने वाला।

भूतविद्या–सं० स्त्री० [सं०] भूत-प्रेतों को बुलाने, बात करने एवं दूर करने की विद्या।

भूतहन—देखो 'भूतघ्न' (१) (रू. भे.) (डि. को.)

भूतांण–सं० पु०—१ देखो 'भाथौ' (रू. भे.)

उ०—जीण परवर असि जड़ै, जड़ै असुरां जरदाळा। कसि जमदढ़ खग कसै, कसै **भूतांण** कराळा।—सू. प्र.

२ देखो 'भूत' (मह, रू. भे.)

भूतांपति—देखो 'भूतपति' (रू. भे.) (डि. को.)

भूतात्मा–सं० पु० यौ० [सं० भूत+आत्मा] १ शरीर।

२ जीवात्मा।

२ शिव, महादेव।

४ परमेश्वर।

भूताधिपति–सं० पु० यौ० [सं० भूत+अधिपति] महादेव, शिव।

भूतापि–सं० पु०—परमेश्वर।

भूतायत–सं० पु०—शिव महादेव।

उ०—पाळंबा ज्वाळा तुं प्रकास, **भूतायत** भैरव तुंही भ्यास। सीको तरसो मया तू सधीर,वैतां मास पावी कटवीर।—रामदान लाळस

भूतार–सं० पु० [सं०] भूमि का उद्धार करने वाला, ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—सुरां रूप अमूंप संसार साधार, भुजां भांमणै तास दातार **भूतार**. गहगीर गोविंद गोपाळ गंभीर, हरी नांम''' विच्चारि उच्चारि 'हमीर'।—पिं. प्र.

भूतारण—देखो 'भाथौ' (मह., रू. भे.)

उ०—**भूतारण** भिडियां पूरजै ग्रीधण पक्खां। नड़ा भीड़ नायकां. दीध टंकार धनंखां।—पा. प्र.

२ भूत-प्रेत।

[सं० भू+तारण] भूमि का उद्धार करने वाल, परमेश्वर।

भूतावळ, भूतावळि,भूतावळी–सं० पु० यौ० [सं० भूत+अवलि] १ भूत-प्रेतों का समूह, प्रेत-मंडली।

उ०—जिण री वहै जोस में, **भूतावळ** भेटौ। कुण जांणै वावै कवण, पावै कुण पेटौ।—वी. मा.

२ कपोल कल्पित कथाएं, कुंडापंथियों की गोष्ठी।

उ०—भागवत कथा **भूतावळी**, हिरण दरस हींडोरचा। परवीण होय जांणै पुरुस, मालजादां रा मोरचा।—ऊ. का.

भूतावास–सं० पु०—१ संसार, जगत।

२ शरीर, देह।

३ विष्णु।

४ बहेड़ा। (डि. को.)

भूति–सं० पु० [सं०] १ शिव। २ विष्णु।

३ पितृगण।

४ बृहस्पति।

५ विश्वमित्र का एक पुत्र।

६ अंगिरस् ऋषि का एक पुत्र, जो अत्यन्त क्रूर एवं क्रोधी था।

७ एक यादव राजा जो वायु पुराण के अनुसार सात्यकि के पुत्रों में से एक था।

८ राजा का एक मंत्री।

९ ऐश्वर्य, वैभव।

१० धन सम्पत्ति।

११ सौभाग्य।

१२ जन्म, उत्पत्ति।

१३ घटित होने की दशा या भाव, अस्तित्व।

१४ गौरव, महिमा।

१५ वृद्धि।

१६ अधिकता, बाहुल्यता।

१७ वृद्धि नाम की औषधि।

१८ अणिमा, महिमा आदि आठ प्रकार की सिद्धियां।

१९ भूतृण।

२० सत्ता।

२१ लक्ष्मी।

२२ मुक्ति, मोक्ष।

२३ रंगों आदि से हाथी के मस्तक पर बनाए जाने वाले बेल-बूटे।

२४ पकाया हुआ मांस।

२५ रुसा नामक घास।

[सं० भू०] २६ सत्य। (ह. नां. मा.)

भूतियौ–सं० पु०—मदार (आक) के फल के अन्दर का रूई जैसा पदार्थ।

मुहा०—भूतिया विखेरणा=नाश करना, मिटा देना, नष्ट करना।

रू० भे०—भुत्तियौ।

भूती—देखो 'भूति' (रू. भे.)

उ०—चाल मजबूत ढंग ढाल मजबूत कीनें, भाल मजबूत मजबूत भयौ **भूती** में।—ऊ. का.

भूतेळियौ—देखो 'बयूळौ' (रू. भे.)

भूतेस, भूतेसर–सं० पु० [सं० भूत+ईश, ईश्वर] १ शिव, महादेव। (ना. डि. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ करे तैं (त्रण) टूक **भूतेस** को डंड, बेटौ दसरत्थ तणौ बळवंड। आयौ रिख कोप स्रवंत अंगार, तजै बळ चाप कियौ दुज तार।—ह. र.

उ०—२ रिखय मख कर रखवाळं, तारी रिख घरण चरण रज हूंता। राख जनक पण रघुबर, भागौ कोदंड **भूतेसं**।—र. ज प्र

उ०—३ दधि अजाद बळि सेस, नाग **भूतेस** भलणण। रूप कांम आरंभ रांम, सर विद्या अरजण।—गु. रू. बं.

उ०—४ भारत अरिहीण करां **भूतेसर**, हारां नहीं कर लै हर होड। आच्च कियौ उमापति आगै, कर में कर दीधौ कर कोड।

—मोहबत बारहठ

उ०—५ हाथ चलाय दिखणाद दळ हणिया, ऊफणिया खत्रवट अण पार। भणिया दे माथौ **भूतेसर**, 'दुरजणिण' मोटा दातार!

-- दुरजणसिंह भाटी री गीत

२ परमेश्वर, ब्रह्मा।

३ स्वामी कार्तिकेय।

रू० भे०—भुतेस।

भूतेसरी–सं० स्त्री० [सं० भूतेश्वरी] पार्वती।

२ दुर्गा देवी।

भूतेसुरय, भूतेस्वर–सं० पु० [सं० भूतेश्वर] शिव, महादेव।

उ०—**भूतेस्वर** भुयतलि रुद्र, हरिचंद्र हरिकेल। वद्वतरणी-विन्नि थई जतां, सरणि सघावद्र प्रेत।—मा. कां. प्र.

उ०—२ वडलू पहाड़ी री गुफा में **भूतेस्वर** बिराजै है, नंदवांणा ब्रामण सेवा करै है।—बां. दा. ख्या.

भूतौ–वि० [सं० भूत] हुवा हुआ।

उ०—एक यात्री दूसरे नूं कही—भाई! घणी-घणी जायगा देखी पण एक क्षणयाकर नांम परबत पर एक तपस्वी दीठौ। उसड़ौ कहीं न **भूतौ** न भविस्यति।—सिंघासण बत्तीसी

भूतोन्माद–सं० पु० यौ० [सं०] भूत-पिशाचों के आक्रमण के कारण होने वाला उन्माद रोग। (वैद्यक)

भूथड़, भूथांण, भूथारण—देखो 'भाथौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ तरै तरगस तीन **भूथड़** लीना, कबांण तीन अढारटकी लीवी, तरवार दोय, कटारी एक, सिलह साबत होय घोड़ै पाखर लगाय सिकारपुर साम्हा मांड्या।—बी. दे.

उ०—२ चित्रहकूट सूं भुज चंड, कस **भूथांण** गह कोमंड। गिरभू किता बासर पाय, अत्रय तणै आश्रम आय।—र. रू.

उ०—३ बुगलार भीड़ वाढ़ौ बहसि, जमदढ़ खग साजां जकड़ि। **भूथांण** कसै भुह मूंछ भिड़ि, पांण पांण सांकळ पकड़ि।—सू. प्र.

उ०—४ बीज बचां बांणिकां, भरै तीरा **भूथारण**। खर जमदढ़ खग खरा, दुगम बांधै भड़ दारण।—सू. प्र.

उ०—५ दुजल छतीसुंहि डाबियां, **भूथारण** भेड़ीह। धनुस भुजा डंड धारियां, आया आहेड़ीह।—पा. प्र.

उ०—६ सादी बाधी सम्मसेर, मच्छरियौ माभी मेर। तांण सींग निभै तण, भेडावियौ **भूथारण**।—गु. रू. बं.

भूदंड—देखो 'भुजडंड' (रू. भे.)

सं० पु०—वीर, योद्धा ।

भूदाग—देखो 'भुंईदाग' (रू. भे.)

भूदार, भूदारक-सं० पु० [सं० भूदारः] सूअर, वाराह ।
(अ. मा., डिं को, ह. नां. मा.)

रू० भे०—भुदार ।

भूदेव, भूदेवत-सं० पु० [सं० भूदेवः] १ ब्राह्मण ।

उ०—१ वैस्या किणि वाहालि करी, भूमंडली **भूदेव** । कोडि कोटिध्वज क्षय गया, करतां वैस्या-सेव ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ वली प्रभाति पधारिया, महादेव नी सेव । ततखिणि तै तेडाविउ, भेटि-भणी भूदेव ।—मा. कां. प्र.

२ राजा ।

भूधर-सं० पु० [सं० भूधरः] १ पहाड़, पर्वत ।
(अ. मा., ना. मा., ह. नां. मा.)

उ०—मुरधर रा **भूधर** कहीजै, ललवळिया लुळ लैरडां । जांणै किसड़ी वाय लागी, धोर धंसै सै सैरड़ां ।—दसदेव

२ परमेश्वर । (नां. मा , ह. नां. मा.)

उ०—**भूधर** तूहीं हारिया भीरू, आपण तूहीं अनाथां नाथ । केसव तूहीं साथ कुसाथां, सायब तूहीं न साथां साथ ।—ओपौ आढौ

३ विष्णु ।

उ०—राज तणी इच्छा रघुराया, अखिल चराचर जीव उपाया । राज अग्या म्हारे सिर राखिस, **भूधर** तूझ तणा गुण भाखिस ।
—ह. र.

४ श्रीकृष्ण ।

उ०—**भूधर** किसी भळांवणी नइ, विष्णु बाचा किम चलइ । गज गुडीय तुरीय पलांणि चाल्या, कुंअरि चालइं नइं माता मिळिइ ए ।
—रुक्मणी मंगळ

५ वाराह अवतार ।

६ शेप नाग ।

७ राजा, नृप ।

८ शिव ।

९ बैल, वृषभ । (डिं. को.)

१० किसी पात्र में पारा रखकर उसका मुंह मिट्टी से बन्द करके औषध तैयार करने का एक ढंग ।

११ सात की संख्या । *

रू० भे०—भूध्र ।

अल्पा०—भूधरौ ।

भूधरधणी-सं० पु० यौ० [सं० भू+धर+राज० धणी] विष्णु ।

उ०—रांमचंद्र करसी रुड़ा, सगळी विध स्रीरंग । भगतां-पत **भूधर-धणी**, चाढण रूप सुचंग ।—ह. र.

भूधरेस्वर-सं० पु० यौ० [सं० भू+धर+ईश्वर] १ पर्वतों का राजा, हिमालय ।

२ शिव ।

३ राजा ।

४ इंद्र ।

भूधरौ—देखो 'भूधर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—भख पुंहचावै **भूधरौ**, अजगर रै अनय्यास । किम भूलै संतां 'किसन', संभरतां सुख रास ।—र. ज. प्र.

भूधाता-सं० पु० [सं० भूधातृ] ब्रह्मा । (नां. मा.)

भूध्र—देखो 'भूधर' (रू भे.)

भूनणौ, भूनबौ—देखो 'भूंजणौ, भूंजबौ' (रू. भे.)

भूनणहार, हारौ (हारी), भूनणियौ—वि० ।

भूनिओड़ौ, भूनियोड़ौ, भून्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भूनीजणौ, भूनीजबौ—कर्म वा० ।

भूनेता-सं० पु० [सं० भूनेतृ] राजा, नृप ।

भूप-सं० पु० [सं० भूपः+ज] राजा, नृप ।
(अ. मा., डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—बणाधिप झंप भरी उण बार, भुजंग न झालि सक्यौ भुव भार । भेळी हिज आवड़ बाहर **भूप**, रु नाहर चक्र सुदस्सण रूप ।
—मे. म.

२ राजकुमार ।

रू० भे०—भुप, भूपम ।

भूपग—देखो 'भूप' (रू. भे.) (डिं. को.)

भूपज-सं० पु० [सं०] राजा, नृप ।

उ०—अवर अमीर **भूपजां** आगळि, करै सिलांम दहूं जोड़े कर । सयदां विदा किया गज सिक्का, धर अन लीध न लीध मुरद्धर ।
—सू. प्र.

भूपत, भूपति, भूपती-सं० पु० यौ० [सं० भू+पतिः] राजा, नृप ।
(डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ बाघ हूंत भाखै ईम बाघणी,अजका हुआ तजौ गिर अेण । भालां अवस चकासै **भूपत**, रात दीह न गिणै 'रांमेण' ।
—महाराव राजा रामसिंघ रौ गीत

उ०—२ बडे बडे **भूपत** सहत, आंन जुरत दरबार । बाहर ठाढै बाज गज, सोभत अधिक अपार ।—गजउद्धार

उ०—३ खमां भणि जोगणि खांचत खून, सुरां कर माचत मेह प्रसून । झखध्वज **भूपति** दोयण झूळ, त्रलोयण लोयण रूप त्रसूळ ।
—मे. म.

उ०—४ **भूपति** टोटां में दीवाळा भिळिया, मोटां मोटां रा कुळ मंगतां मिळिया । बांधै गांठड़ियां बड़ियां चग बाळै, राली गूदड़ लै कांधै पर राळै ।—ऊ. का.

२ मेघ राग का पुत्र एक राग । (संगीत)

३ ईश्वर ।

४ शिव, महादेव ।

५ इन्द्र ।

६ एक सनातन विश्व देव ।
७ मध्य गुरु की चार मात्रा का नाम ।
रू० भे०—भूग्रपत्तिग्र, भुपति, भुवपत, भुवपति, भुवपती, भुवपत्त, भुवपत्ती, भूग्रपति, भूग्रपती, भूग्रपत्ती, भौपति ।

भूपवन–सं० पु० यौ० [सं० भूप+वन] सिंह, शेर । (डिं को.)

भूपांण, भूपाळ, भूपालि–सं०पु० [सं०भू+पाल] राजा, नृप । (डिं. को)
उ०—१ खीच रा डला खावै खिसक, नींच तळा कुळ नाळ रा । नित मीच ग्रांख बैठे निलज, भिछ ग्रमल भूपाळ रा ।—ऊ. का.
उ०—२ तइ दिख राजा तणइ साठ ताय पुत्री, साठ हजार कुंवर सिरदार । नव खंड रा भूपाळ नमइं जिण, परग्रह लहइ तियण कुण पार ।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—३ ग्रसटम पुत्र पुंज ग्रप वाळौ, वासदेव भूपाळ वडाळौ । पाट भगत ग्रप ग्रंतर पाखै, राजा धरमवंभ हित राखै ।—सू. प्र.
उ०—४ निसुणी एह वात भूपालि, कालमुहुउ हुउ ततकाल । नयर माहि हूउ हाहाकार, कोई कांई न लहइ पार ।
—हीराणंद सूरि
रू० भे०—भुग्राळ, भुपाळ, भुयाळ, भुवपाळ, भुवाळ, भूग्राळ, भूवाळ, भोपाळ, भोवाळ, भौपाळ, भौवाळ ।

भूपाळी–सं० स्त्री० [सं० भूपाली] संगीत में एक रागिनि विशेष ।

भूपुत्र–सं० पु० [सं० भूपुत्रः] १ नरकासुर नामक राक्षस ।
२ मंगल-ग्रह ।

भूपुत्री–सं० स्त्री० [सं०] सीता, जानकी ।

भूफोड़–सं० पु०—वर्षा ऋतु में उगने वाली एक प्रकार की वनस्पति ।
रू० भे०—भंफोड़, भैंफोड़ ।

भूबळ, भूबळि–सं० पु० [सं० भू+बल] वीर, योद्धा ।
उ०—१ ग्रर डग्गा ग्रारांण कंठीरव कुंजरां, पूजै कुण पीठांण प्रपोतां पुंजरां । दरियावां दा दौर भिलै नह दूबळां, भग्गा भवस सभीत भिड़ंता भूबळां ।—किसोरदांन बारहठ
उ०—२ सत्रां गाहतौ गैंजूहां ढाहतौ वाहतौ सार, महाचंडी भूबळां साहतौ ग्रासमांण । चत्रबाहां ग्रारोहतौ चाहतौ ग्रचूंडा चौज, ऊ ग्रायो 'जवानीसिंघ' थाहतौ ग्रारांण ।
—जवानीसिंघ रौ गीत
उ०—३ बहै राह भाळै सुधा निसारा ग्राज री बेलां, धूकळां ग्राज री छटा भूबळां धारीक । बानां बंध जोरावर साज री बदेतां बोलै, तणा 'पदमेस' भूरा राज री तारीफ ।—गोरादांन ग्रासियो
उ०—४ ग्रारुहता भगदंत, ग्रसि रागां चाडंतौ । गै जूहां गोडतौ, खग्ग भूबळि भाड़तौ ।—गु. रू. बं.
२ राजा, नरेश ।

भूबांवळी, भूबावळी—देखो 'भुंईबांवळी' (रू. भे.)

भूभट–सं० पु० [सं०] १ वीर, योद्धा ।
२ राजा, नृप ।

भूभरता–सं० पु० [सं० भू+भर्तृ] राजा, नृप । (ग्र. मा.)

भूभळ–सं० स्त्री०—गर्म राख या धूल ।

भूभळिया–सं० पु०—पड़िहार वंश की एक शाखा ।

भूभळियौ—१ देखो 'भूभळौ' ।
उ०—भसै खसै निहसै रिसै, पौरस दाखै पांण । ग्राभ लगै जळ ऊछळै, तै भूभळियौ भांण ।—गजउद्धार
२ देखो 'विभळ' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—भूभळिया नैणां की, ग्रमरत सा वैणां की । मेह कौ ममोलौ, बादळा की बीज, होळी की भाळ, सांमण की तीज ।
—मयारांम दरजी री वात

भूभळौ–वि० [स्त्री० भूभळी] १ धुंधला ।
२ धूलिधूसर ।

भूभारधर–सं० पु० [सं०] शेष नाग । (ग्र. मा.)

भूभूग्राटि, भूभूयाटि–सं० स्त्री० [ग्रनु०] ध्वनि विशेष ।
उ०—१ भेरी भांकारि, भूंगल तणी भूभूग्राटि भूमि फाडी, नीमड्यां नीसांण नै नादि नदी निरभर प्रतिनाद नीपना ।—व. स.
उ०—२ वीर ग्रदंग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सांमह्या, ग्रहग्रहतै त्रंबक तणै ग्रहग्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउ, भेरी भुंगल तणै भूभूयाटि भूकिइं भिलकि फाटी, काहल तणै कोलाहलि कांन कमकम्या ।—व. स.

भूभौ–वि०—भयंकर, भयावह ।
उ०—भटकै क्रोध भाळ धुबि भूभौ । ग्ररक उठै थांभै रथ ऊभौ ।
—सू. प्र.

भूभ्रत–सं० पु० [सं० भूभृत] १ राजा, नृप । (ग्र. मा.)
२ इन्द्र का हाथी । (नां. मा.)
३ पहाड़, पर्वत ।
रू० भे०—भुभ्रत ।

भूमंग—देखो 'भुजंग' (१) (रू. भे.)

भूमंड, भूमंडळ–सं० पु०—१ पृथ्वी, धरती । (डिं. को.)
उ०—१ सारी स्रस्टि में कुंडल छळ करियो, भारी हाहा रव भूमंडळ भरियो । बसुधा काळी री ताळी तड़ बागी, भिड़ियां सोनां री चिड़ियां पड़ भागी ।—ऊ. का.
उ०—२ भूमंडळ ग्रसुर खळ कई कीधा भसम, विसम गति ग्रांणि केवांणि वागै । एकजि त्रिपुर जैसिंघ उवारिणै ऊबरै, ग्रकळ माहेस 'बखतेस' ग्रागै ।—कीरतदांन बारहठ
रू० भे०—भुमंड, भुमंडळ, भुवमंड ।

भूम—१ ज्ञान ।
२ भूमि, दिशा, जंगल ।

३ देखो 'भूमि' (रू. भे) (डिं. को.)

उ०—१ जितरै दलै चाकर नूं कह्यौ—'म्हारौ पेट कसमसै' । तरै कहियौ—'बाहिर भूम चालौ' ।—नैणसी

उ०—२ विखमी भूम रात री वासौ, पंथी राह न पायौ । अबखी ठौड़ ग्रांम पण अळगौ, अब किरणां दिन आयौ ।—भीखजी रतनू

उ०—३ तपै भूम अम्मर हुय ताता, मुरभाई भगती पितु माता । बाणी भाट पिछम दिस बाता, बंक हुवौ सब देस विधाता ।—ऊ. का.

उ०—४ साजै सार छत्रीस सिपाई, त्यार हुवा रण मंडण तांई । पाखर तुरां गयंदा पाखर, भूभ परां सम जांणं भाखर ।—रा. रू.

उ०—५ लछी रूप हरि भगति, धरम हिंदू धानतर । वेद चंद्र मिण किया, भूम रंभा बळ कुंजर । धेन पूज सुर धेन, विमधु चरणाम्रत वंदां । धनुख मांण त्रप कलप, संख जस मह विरदां ।—रा. रू.

उ०—६ भव ब्रहमा जिण भजे, भजे तिण नांम पाप भर । भर टाळण सह भूम, भूम-पतन कौ जेण मर ।—र. ज. प्र.

४ होश ।

५ अक्ल, बुद्धि ।

६ दक्षता, चतुराई ।

७ मौन ।

भूमणौ, भूमबौ–क्रि० अ०—भ्रमण करना, घूमना ।

भूमणहार, हारौ (हारी), भूमणियौ—वि० ।

भूमिग्रोड़ौ, भूमियोड़ौ, भूम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भूमीजणौ, भूमीजबौ—कर्म वा० ।

भूमधा–सं० पु० [सं० भू+मध्य] अंधेरा । (अ मा.)

भूमबाव–सं० पु०—छोटे राजपूत जागीरदारों व भू-स्वामियों से वसूल किया जाने वाला एक सरकारी कर ।

भूमय–सं० स्त्री० [सं० भूमयट्] सूर्य की पत्नी, छाया ।

वि०—मिट्टी से बना हुआ ।

भूमविहार–सं० स्त्री०—नदी, सरिता । (अ. मा.)

भूमि–सं० स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, अवनि । (ह. नां. मा.)

उ०—वाघ सीह गज द्रेठिं पडइ सतीय सयरि ते नवि आभिडइं । राति पडंती पंडव रडइं वलि वलि मूंछी भूमि पडइ ।—पं. पं. च.

२ स्थान, जगह ।

३ पृथ्वी का वह तल या पृष्ठ भाग जिस पर प्रकृति के जीव चराचर विचरते हैं ।

४ वह भू-भाग जिस पर किसी का सत्व हो ।

५ ऐसी जमीन जिस पर खेती-बाड़ी होती हो ।

६ प्रदेश या प्रान्त ।

७ आधार या जड़ ।

८ धन-सम्पत्ति या वैभव ।

९ जन्म स्थान ।

१० योग शास्त्र के अनुसार योगी को क्रमानुसार प्राप्त होने वाली अवस्थाएं ।

११ फासला, दूरी ।

रू० भे०—भुंइ, भुंइण, भुंई, भुंय, भुंही, भुइ, भुइ, भुइण, भुईं, भुई, भुवि, भुम्मि, भुम्मी, भुय, भुवि, भुवी, भुहि, भूंइ, भूइं भूम, भूमी, भूम्मी, भूही, भोम, भोमि, भोमी, भोय, भौम, भौमि, भौमी ।

भूमिकंत–सं० पु० यौ० [सं० भूमि+कंत] राजा, नृप ।

उ०—अति वधै कीत दीरग्घ आव, सुजि हुवै जोग दारण सभाव। उच्छाह सदा राखै अनंत, कांमणि जिम भुगतै भूमिकंत ।—सू. प्र.

भूमिका–सं० स्त्री० [सं०] १ वह वक्तव्य या आलेख जो किसी ग्रन्थ या रचना के पूर्व दिया जाता है ।

२ मकान की मंजिल ।

३ किसी महत्त्वपूर्ण बात का अभीष्ट परिणाम प्राप्त करने हेतु कही जाने वाली बात ।

मुहा०—भूमिका बांधणी=कुछ कहने से पहले प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ और बातें कहना ।

४ वेदान्त के अनुसार चित्त की पांच अवस्थाएं—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और विरुद्ध ।

५ नाटक आदि में किया जाने वाला अभिनय ।

६ श्मशान भूमि ।

७ देखो 'भूमि' ।

रू० भे०—भोमका ।

भूमिगम–सं० पु०—ऊंट ।

भूमिचंपौ–सं० पु०—सफेद फूलों का एक पौधा विशेष जिसकी छाल, पत्ते, जड़ आदि औषध के काम आते हैं ।

भूमिचर–वि० [सं०] भूमि पर विचरण करने वाला ।

उ०—जळचर खेचर भूमिचर, भोग करइ लयलीन । दैव दझाडइ देहडी, दुन्नि जणां अम्ह दीन ।—मा. कां. प्र.

भूमिज–सं० पु० [सं०] १ सोना, स्वर्ण ।

२ मंगल ग्रह ।

३ नरकासुर राक्षस ।

वि०—भूमि से उत्पन्न ।

भूमिजा–सं० स्त्री० [सं०] सीता, जानकी ।

भूमिजीवी–वि० [सं०] भूमि जोत कर अपना निर्वाह करने वाला, कृषक, खेतीहर ।

भूमिथंभ–सं० पु० यौ० [सं० भूमि+स्तम्भ] १ राजा, नृप ।

२ खंभा ।

भूमिदाग—देखो 'भुंइदाग' (रू. भे.)

भूमिदेव—देखो 'भूदेव' (रू. भे.)

भूमिपाळ–सं० पु० [सं० भूमिपाल] राजा, नृप ।

भूमिपुत्र-सं० पु० [सं०] १ नरकासुर राक्षस ।
२ मंगल ग्रह ।

भूमिपुत्री-सं० स्त्री० [सं०] सीता, जानकी ।

भूमियावंट—देखो 'भोमियावंट' (रू. भे.)

भूमियोड़ौ-भू० का० कृ०—घूमा हुग्रा, भ्रमण किया हुग्रा. (स्त्री० भूमियोड़ी)

भूमियौ—देखो 'भोमियौ' (रू. भे.)
उ०—१ इयै प्रस्तावि पातिसाह स्रीग्रकबर दिली राज करतां वरस १६ सोळह हुआ छै। **भूमिया** सकळ दस दिसि रा ग्राइ मिळिया छै।—द. वि.
उ०—२ तठा पछै कितरै हेक दिनै ग्रै सोरठ नूं गया। सेत्रूंजासूं कोस ४ सीहोर गांव छै, तठै जाय रह्या छै। रावळ कहाड़ै छै। भला रजपूत **भूमिया** छै।—नैणसी

भूमिसुत-सं० पु० [सं०] १ नरकासुर राक्षस ।
२ मंगल ग्रह ।

भूमिसुता-सं० स्त्री० [सं०] सीता, जानकी ।

भूमिसुर-सं० पु० [सं०] ब्राह्मण ।

भूमींद्र-सं० पु० [सं०] राजा, नृप ।

भूमी—देखो 'भूमि' (रू. भे.) (ग्र. मा., नां. मा.)

भूमीयाचारौ—देखो 'भोमियाचारौ' (रू. भे.)
उ०—सोजत रे देस मैं रिणमलां री ग्रागै तो जोर दखल **भूमियाचारौ** थौ, हिमैं ही छै।—सोजत रै मंडळ री बात

भूमीरूह-सं० पु० [स०] वृक्ष, पेड़ ।

भूमीलेप-सं० पु० [सं०] गोबर ।

भूम्मि—देखो 'भूमि' (रू. भे.)

भूयंग—देखो 'भुजंग' (रू. भे.)
उ०—१ कीयौ मरदन धन सघळइ ग्रंग, पंचजटा छइ सीरह **भूयंग**—बी. दे.
उ०—२ विरह **भूयंगमि** हुं डसि, चंदन-संगि भूयंगि। ग्रै मन लहइ ग्रसिद्धि तणी, तै तिम लाईइ ग्रंगि।—मा. कां. प्र.

भूयंगम, भूयंगमि—देखो 'भुजंगम' (रू. भे.)
उ०—माता तु प्रेमावती, पिता तु विदुरी विजोग। विरह **भूयंगम** ऊपनु, गरुड न मानंइ गोग।—मा. कां. प्र.

भूय-सं० पु०—१ सिंह, शेर। (ग्र. मा.)
[सं० भूयस्] २ बहुत, ग्रधिक ।
[ग्रव्य०] ३ फिर, पुनः।
उ०—घरा सुधेनु छूय छूय, दूय दूय धू धरै। क्रतू समांन राजसूय, **भूय-भूय** भू करै —ऊ. का.
४ देखो 'भांय' (रू. भे.)
उ०—जै ग्राज तौ किही बडै सगै मेहरबांनगी करी सौ ग्रळगी भूय री नारेळ म्हानुं ग्रठै सांम्ही ग्रायौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

भूयगांम-सं० पु० यौ० [सं० भूत+ग्राम] १ भूतों का समुदाय।
२ शरीर, देह।

भूयचढण-सं०—पवन, हवा।

भूयण-सं० स्त्री०—१ पृथ्वी, भूमि। (डि. को.)
२ देखो 'भुवन' (रू. भे.)
उ०—सजे सिणगार सवि कांमिनी, **भूयण** सिरि छज्जइं ठही, के स्यामां के गौर, केह गुण गाहा पढी।—प. च. चौ.

भूयणंतरि-क्रि० वि०—संसार में।
उ०—कौडि ग्रनंतइ ति रहिउ, **भूयणंतरि** भरपूर। रनि बनि रक्षा करइ, भ्रांति म ग्रांणिसि भूर।—मा. कां. प्र.

भूयणपति—देखो 'भवनपति' (रू. भे.)
उ०—ग्रवधि वली! ग्रम्रतलता, फोक थयां फल-फूल। सेलड ग्राविउ स्रिरिटनु, कइ **भूयणपति** भूल।—मा. कां. प्र.

भूयत्थ—भूतार्थ। (जैन)

भूयबलि—देखो 'भुजबळ' (रू. भे.)
उ०—तिणि कुलि मुणीइ संतणु राग्रौ, **भूयबलि** भंजइ रिउ भडिवाग्रौ। दांणि जगु ऊरिणु करए।—पं. पं. व.

भूयाल—देखो 'भूपाळ' (रू. भे.)
उ०—दैव! ग्रह्म-प्रति लौभीउ, बीजां लील **भूयाल**। सुख संपत्ति सुहणइ नहीं, भवसिद्धि भुंडइ भालि।—मा. कां. प्र.

भूर-सं० पु० [सं० भूरि] १ एक प्रकार का रोग विशेष जिसमें शरीर पर भूरी २ महीन चित्तियां पड़ जाती हैं।
२ भ्रम, संदेह।
३ देखो 'भूरि' (रू. भे.) (ग्र. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१ सेन लागौ संत सेवा, भाव धर उर **भूर**। रूप धर कर सैन कौ हरि, करी दुविधा दूर।—मगतमाळ
उ०—२ सांझ पडी ग्राथमियौ सूर, करइ साथ रा विछावणा **भूर**। ढोला पाखिली चडकी फिरइ, मारू स्त्री सुं निद्रा करइ।
—ढो. मा.
४ देखो 'भूरौ' (मह., रू. भे.)

भूरइ—धूलि, धूल।
उ०—इंद चंद पमुख देव बीहना, हथिया जिम निनादि सीहना। पुछदंड गउरी सवि वाली, **भूरइ** नगर ऊपरि चाली।—सालिसूरि

भूरची, भूरछी—देखो 'भूरसी' (रू. भे.)

भूरज-सं० स्त्री० यौ० [सं० भू+रज] १ पृथ्वी की धूलि. गर्द, मिट्टी।
२ देखो 'बुरज' (रू. भे.)

भूरजपत्र—देखो 'भोजपत्र' (रू. भे.) (डि. को)

भूरजाळ—देखो 'बुरजाळ' (रू. भे.)

उ०—दगै तोफां वहै गोळा रोहळा मोरछा दौळा, जो लार सकै मूता सेर नै जगाय। भूरजाळ वांकडौ बीटियौ दूजां गढां भौळै, लोहां जाळ धसै केहौ नसैणी लगाय।—बां. दा.

भूरटौ—देखो 'भूरौ' (अल्पा, रू. भे)

उ०—भैंस्यां चरावै, बौ तौ भूरटौ, बौ तौ ल्यावै-ल्यावै घरां अे चराय, भैंसा आरणा।—लो. गी.

(स्त्री० भूरटी)

भूरदक्षिणा—देखो 'भूरसी'।

भूरदाडौ—सं० पु०—यवन, मुसलमान।

उ०—ज्यांन मढ़ी बज्जरं, भूरदाढ़ा चव फेरां। भौंह चढ़ी मौसरां, हाथ कड्ढ़ी समसेरां।—सू. प्र.

भूरभूर—देखो 'भुरभुर' (रू. भे)

उ०—चिरे वहित्थ हत्थि कै चिकार चूर चूर ह्वै, भिरै भटाळि भाल में, भिखार भूरभूर ह्वै।—ऊ. का.

भूरसी—सं० स्त्री० [सं० भू+श्रि] १ किसी बड़े यज्ञ, दान, विवाहादि की समाप्ति पर उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाने वाली दक्षिणा।

२ किसी बड़े खर्च के बाद किया जाने वाला छोटा खर्च।

रू० भे०—भुरस, भुरसी, भूर, भूरची, भूरछी।

भूरह—सं० पु० [सं० भूमि+रुह] वृक्ष, पेड़।

भूरि—सं० पु० [सं०] १ ब्रह्मा।

२ विष्णु।

३ शिव।

४ भेंट, उपहार।

५ दान।

६ इन्द्र।

७ स्वर्ण, सोना।

८ बालू रेत।

वि०—बहुत, अधिक, प्रचुर।

उ०—जळ जाळ माळ विसाल नभ जुत, उरड़ झड अणपार ए। मिटि जळण धरणि विनोद मांनव, भूरि सर जळ भार ए।

—रा. रू

रू० भे०—भूर, भूरी।

भूरिक, भूरिज—सं० स्त्री० [सं०] पृथ्वी, अवनि।

भूरिमायु—सं० पु०—गीदड़, सियार। (डि. को.)

भूरियौ—देखो 'भूरौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ ईयां भंवर री जांन में म्हारौ भूरियौ न चरतौ चारौ रे। म्हारौ गोरबंद वळतौ कर।—लो. गी.

उ०—२ कंठीर काटकै छूटै सांकळां राटकै किनां, मेळे चमू थाट कै अरेहां सत्रां मीच। केवांण झाटकै बाढ झाडिया भूरियां केंधां, बिभाड़िया लाठ कै बूरिया धोरां बीच।—संकरदांन सांमोर

उ०—३ चाळै लागा यळा धंकी, वीचळा भटक्कै चखां, भूल पेखै आवळा चौवळा दखै झोक। काळ रूपी सेखा हकै बाजिंद्रा बरा रा कोट, भैचकै भूरिया सिंहां परा रा भूलोक।

—डूंगजी जवारजी री छावळी

(स्त्री० भूरी)

भूरिसरव—सं० पु० [सं० भूरिश्रवस्] १ कुरुवंशीय एक राजा, जिसका वध महाभारत युद्ध में सात्यकि द्वारा हुआ था।

२ अंगिरिस् ऋषि का एक शिष्य, जो अत्यन्त क्रोधी एवं क्रूर था।

३ एक यादव राजा, जो वायु पुराण के अनुसार सात्यकि के पुत्रों में से एक था।

४ मार्कंडेय पुराण में निर्दिष्ट पितरों का एक गण।

भूरी—सं० स्त्री०—भूरे रंग की भैंस।

वि०—१ भूरे रंग की।

उ०—एकली भूरी झोट दो गोविणया भरै।—फुलवाड़ी

२ देखो 'भूरि' (रू. भे.)

भूरीगार—देखो 'बुरीगार' (रू. भे.)

भूरेचा—सं० पु०—चौहान वंश के क्षत्रियों की एक शाखा।

भूरेस—सं० पु०—सिंह, शेर।

उ०—रिमांखेसे लागौ दीखे इंद्र ज्यूं जंभ पै रूठौ, आहूंसी भाराथां ऊठौ हणू ज्यूं ओपाळ। छूटा डांण लाठां मदां पांण हूं भूरेस छूटौ, गोरा गजां माथै रूठौ सींघळी 'गोपाळ'।—गुलाबसिंघ महडू

भूरौ—सं० पु० [सं० बभ्रु] १ मिट्टी के समान रंग।

२ सिंह, शेर।

३ ऊंट।

उ०—छेवट ठाकर मून तोडयौ अर बोल्यौ—मन चंगा तौ कठोती में गंगा। खड़ौ सेठां भूरा नै। अर भूरा नै खड़तां ईज वौ आगला पग सूं अ.खड़ग्यौ।—रातवासौ

४ यूरोप का निवासी, यूरोपियन।

५ एक कबूतर विशेष, जिसकी पीठ काली एवं पेट पर सफेद छीटे होते हैं।

६ महीन चूर्ण, बुकनी।

७ एक विशेष प्रकार का अमल।

उ०—कोटड़ी में भांत-भांत रै अमलां री गळणियां झरती ही—काळौ, मेवती, भूरौ, मरौड़ी, आगराई नै किसनागर अर मेड़ी ऊभा बाईसा रै हियै भांत भांत रै विचारां रा गोट ऊठता हा।

—फुलवाड़ी

८ भूरे रंग का भैंसा।

वि०—१ मिट्टी के समान रंग वाला, बभ्रु।

उ०—१ थळ भूरा वन झंखरा, नहीं सु चंपउ जाइ। गुणे सुगंधी म रवी, महकी सहु वणराइ।—ढो. मा.

उ०—२ **भूरा** भुरजाळा अंबुद भळहळिया, खाळा नद नाळा बाल्हा खळहळिया। अवनीं आंदोलन ओळा ओसरिया, पिड़ि भिड़ि प्लासी पै गोळा जिम गिरिया।—ऊ का.

उ०—३ पदमणि पुरखां रै पंगरण नह पूरा, भूखा सूतोड़ा संगरणवैं **भूरा**। रोजा निसवासर संठां में साजैं, बैंक्रति कंठां में अलगोजा बाजै।—ऊ. का.

२ गौर वर्ण वाला।

उ०—**भूरै** मुखड़ै पर स्वेदण कण भारी, पहुंची पोळछ में प्रीतम री प्यारी। नाचैं खेलावण मेलावण नांहीं, जोवण जोगी वा वेळा जग मांहीं।—ऊ. का.

३ वीर, योद्धा।

उ०—१ हुई मुरद्धर ऊपर हल्लां, महा अप्रबळ जोर मुगल्लां। पेख खड़ा सभ्र लक्खां खूरां, भीड़ बगत्तर अंगां **भूरां**।
—रा. रू.

उ०—२ बिजड़ां भ्राट त्रमाट बाजतां, स्यांमध्रम सूरातन साहि, सत छांडे टेभां अवछंडिया, गिड़ **भूरा** मडिया गज-गाहि।
—बैरीसाल हाडा रौ गीत

उ०—४ सिध नाथ बळ उपजियौ संहस बळ, सरै रांम बासै सकति। उत्तमरांम पांवणौ आयो, **भूरै** दी खागां भुगति।
—अमरसिंघ हाडा रौ गीत

४ उदार-हृदय, दानवीर।

५ यशस्वी।

उ०—१ मारू राव सोहता आगरै कियां दाभै मूंह, हाथळां ढोहता खळां खाग रै ही कोट। भरोसै भाग रै थोहता भ्राळियै तू **भूरै**, नोहत्था बाघ रै गळै हार ज्यूं नौकोट।
—महाराजा मानसिंघजी रौ गीत

उ०—२ रागरंग जड़ै ततकार सहलां रमण, जसकरां भड़ां सांमल जहुरा। ऊदैपुर महल गौखां पीयण आसबां, भूप जोखां करण आव **भूरा**।—चमनजी आढौ

६ देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

रू० भे०—भुरौ।

अल्पा०—भूरटौ, भूरियौ।

मह०—भूर।

भूरौबाघ-सं० पु०—वीर, बहादुर।

उ०—कीधौ हद विखौ धरा रै कारण, महावेध मंडांणौ। देसां चावौ कियौ देवड़ा, **भूराबाघ** भटांणौ—नाथूसिंघ देवड़ा रौ गीत

२ केसरी सिंह।

भूल-सं० स्त्री०—१ भूलने की क्रिया या भाव।

२ अज्ञानता या भ्रमवश किसी को कुछ का कुछ समझने का भाव, गलती।

उ०—वा **भूल** सूं थारै लाडुवां री संभाळ गटकायगी। इण नै तौ अठै ई पूरौ इनांम इकरार मिळग्यौ।—फुलवाड़ी

३ अशुद्धि, त्रुटि।

ज्यूं—हिसाब में भूल होणी।

४ अपराध, दोष, कसूर।

उ०—कमेड़ी छबरां छबरां आंसू ढुळकायनै उण रा पग पकड़ती अर उण सूं वीणती करती जद साप कै'वतौ—अबकी तौ **भूल** व्हैगी, अब कदै ई थारा बिचिया नै नीं खावूं।—फुलवाड़ी

५ पाखंड, आडम्बर।

उ०—मिंदर, तीरथ, मंत्र व्रत माळा, मोटी **भूल** मिटाई। पिंड नख दरसण धत निलजापण, फिर क्यों सिरड़ फंसाई।—ऊ. का.

६ चूक।

उ०—आप खुसी खुसी पधारौ, अबै म्हैं बरजण री **भूल** नीं करुं।
—फुलवाड़ी

७ कमी, अभाव।

ज्यूं—इण में कई भूलां रैयगी है।

८ विस्मृति।

भूलणौ, भूलबौ-क्रि० अ०—१ याद या स्मृति में न रहना, विस्मृत हो जाना।

उ०—१ बुरी चुगल मुख में बसै, आछी री नंह अंग। माखी बैसे स्वांनमुख,, **भूल** न बैसे भ्रंग।—बां दा.

उ०—२ **भूली** लाज काज सुनि सजनी, परची अधिक रस फंदन। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, करि राखो भुजबंधन।—मीरां

२ अनुरक्त या आसक्त होना, खोना।

३ घमंड में इतराना या फूलना।

४ गलती या त्रुटि करना।

ज्यूं – मैं काले हिसाब में पांच रुपिया जोड़णी भूल गयौ।

५ भ्रम या धोखे मे पड़ना।

उ०—खट् दस्सन **भूला** फिरै, लारैं वरगाज चार। ओ अवसर आवै नही, गीता खाय गंवार।—श्री हरिरांमजी महाराज

क्रि० स०—६ विस्मृत करना, भुला देना।

उ०—१ ऊनड़ रौ आचार, भांगांणी **भूलौ** नहीं। जेहा जग दातार, जीवै धर अंबर जितै।—बां. दा.

उ०—२ अंडज्ज, स्वेदज जरा उद्भिज्ज, माया सब तूझ म **भूल** व मुज्झ। म राख पड़द्दो आडो मूंह, जहां कुछ देखूं त्यां सब तूंह।
—ह. र.

७ गलती करना।

उ०—महुतउ वेग सभां आविउ राजा रंगिइं बोलावीउ। डाहा **भूलइं** केती वार तुम्ह सरिखा नु किसिउ विचार।—हीराणंद सूरि

८ अभ्यास छूटना।

उ०—कंवर रा मूंडा सूं तौ कीं बोल नीं निकळिया, जांणै वौ बोलणौ **भूल** ई गियौ व्है।—फुलवाड़ी

भूलणहार, हारौ (हारी), भूलणियौ—वि०।

भुलाड़णौ, भुलाड़बौ, भुलाणौ, भुलाबौ, भुलावणौ, भुलावबौ —प्रे० रू० ।

भूलिग्रोड़ौ, भूलियोड़ौ, भूल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भूलीजणौ, भूलीजबौ—कर्म वा० ।

भूलभुलैया—सं० स्त्री०—१ बहुत सी गलियां एवं दरवाजों वाली इमारत जिसमें प्रवेश करने पर पुनः निकलना दुर्लभ होता है ।
२ बहुत चक्करदार एवं पेचीली बात ।

भूलिंग—सं० पु०—एक प्रकार का छोटा पक्षी जो सिंह की दाढ़ों में से मांस निकाल कर खाता है ।

भूलियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ विस्मृत हुवा हुग्रा. २ अनुरक्त या आसक्त हुवा हुग्रा, खोया हुग्रा. ३ घमंड में इतरा हुग्रा फूला हुग्रा. ४ गलती या त्रुटि किया हुग्रा. ५ भ्रम या धोखे में पडा हुग्रा. ६ विस्मृत किया हुग्रा. ७ गलती किया हुग्रा. ८ अभ्यास छूटा हुग्रा.
(स्त्री० भूलियोड़ी)

भूलोक—सं० पु० [सं० भूर्लोक] १ संसार, जगत (मृत्य लोक)
उ०—महाक्रोधंगी गनीमां हुता हूचकै नरिंद 'माधौ', भूलोक भूचकै बाधौ चकै कोम भार । वोमंगी अराबां झाळ बेताळ वभकै बकै, वाजंद्रां 'बहादरेस' हकै तेगावार ।—हुकमीचंद खिड़ियौ
रू० भे०—भुवलोक ।

भूलोड़ौ—देखो 'भूलियोड़ौ' (रू. भे.)
उ०—भगवत करतानैं करतब भुगतावैं, पिछला पापां रा पांमर फळ पावै । भावी भूलोड़ा भूंको क्यूं भाया, पोचा करमां रा पोचा फळ पाया ।—ऊ. का.
(स्त्री० भूलोड़ी)

भूलौ—वि० [स्त्री० भूली] १ विस्मृत हुवा हुग्रा ।
२ भ्रम में पड़ा हुग्रा, भ्रमित ।
३ अनुरक्त या आसक्त हुवा हुग्रा, खोया हुग्रा ।
४ गलती या त्रुटि किया हुग्रा ।
५ घमंड में इतरा हुग्रा, फूला हुग्रा ।
सं० पु०—६ विस्मृति ।
क्रि० प्र०—पड़णौ, होणौ ।

भूवंग—देखो भुजंग' (रू. भे.)
उ०—छाकिया गज घिकिया भूवंग छेड़, तैं लिखिया कर कर लीध तेड़ । छेड़िया चाक जुध पहल चाय, सूरांण हूंत केवांण साय ।
—वि. सं.

भूवंतरी—एक कन्द विशेष ।
उ०—भसम मराडी भमरीया, चोलहिरा चांडाल । भू-कोहली भूवंतरी, कंद विकंद विसाल ।—मा. कां. प्र.

भूवण, भूवणि—१ देखो 'भुवन' (रू भे)
२ देखो 'भवन' (रू. भे.)

भूवर—स० पु०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष ।

भूवरियौ—वि०—१ गोलाकार, गोल आकृति का ।
उ०—इण भांत रौ तिजारौ सू गोरौ भूवरिया पूंहचां सूं दुजण साह्यां कटोरां में भला जुवांन मचकावै छै ।—रा सा. सं.
२ देखो 'भुवरियौ' (रू. भे.)

भूवळ, भूवल—सं० पु० [सं० भू+वलयं] भूगोल ।
उ०—१ नाग कुमार नरनाह सुरनाहा जेण तिहुयणि जिन्ना, तिहुयण सल्लविरुद्धौ विव खाउ एस भूवलए - अभययतिक
उ०—२ अहह रूप असंभम भूवलइ, कवण कामिणि एह सम तुलइ । हिव हठिउ मझ मन्मथ मारिवा, एह जि ऊडण अंग ऊगारिवा ।—सालिसूरि

भूवल्लभ—सं० पु० यौ० [सं० भू+वल्लभः] राजा, नृप ।

भूवा—देखो 'भूग्रा' (रू. भे.)
उ०—१ भूवा भगनीं रा थळचट भिखियारी, धन्यां कन्यां रा गळकट हठधारी । राफां झरणावै गिरणावै रोता, गंता निरणावै करमां रा गोता ।—ऊ. का.
उ०—२ सांवळियौ बहनोई मांगां, सोदरा बहन मांगां, हांड़ा धोबण फूफी मांगां, झाडू देवण भूवा ।—लो. गी.

भूवाजी—सं० स्त्री०—१ कंगाली, दरिद्रता ।
उ०—दुरबिध धमडी दै सणकारी साजी, भारी भभडीलै घर मैं भूवाजी । चिलमीं अमली के जुलमीं चितचावा, दासी बेस्यां रा मदवां रै दावा ।—ऊ. का.
२ देखो 'भूग्रा' (रू. भे.)

भूवारि—सं० स्त्री०—हाथी पकड़ कर रखे जाने या बांधे जाने का स्थान ।

भूवाळ—देखो 'भूपाळ' (रू. भे.)
उ०—वर कन्या बिन्है धातिया वांनइ, वेई बारां वरसां रा बाळ । भमर ज्युंही केतकी भीना, भोली चक्रवर्त्ति भूवाळ ।
—महादेव पारवती री वेलि

भूवासासू—देखो 'भूग्रासासू' (रू. भे.)

भूवासुसरौ—देखो 'भूग्रासुसरौ ।

भूविदार—सं० पु० [सं०] सूअर । (अ. मा.)

भूविद्या—सं० स्त्री० यौ० [सं० भू+विद्या] भू-विज्ञान ।

भूसक्र—सं० पु० [सं० भूशक्र] राजा, नृप ।

भूसण—सं० पु० [सं० भूषण] १ अलंकार, गहना ।
२ शोभावृद्धि करने वाली वस्तु या गुण ।
३ साहित्य में अलंकार ।
उ०—प्रस्नोत्तर चरचा मत पींगळ, भूसण सबद अरथ रस भाय । बांकैदास जांणिया बिध बिध, राज अनुग्रह जंगळराय ।—बां. दा.

४ वनस्पति विशेष, जिसका शाक बनता है।

उ०—भेडा गारी भांमटी, भांभरहूली भाति। **भूसण** भूली भारथी, भडहड भोली राति।—मा. कां. प्र.

५ भूषण कवि।

६ बारह की संख्या। *

वि०—बाहरवां।

रू० भे०—भुखण, भूंकण, भूकण, भूखण, भूखांण।

भूसणोपमा-सं० पु० [सं० भूषणोपमा] उपमा अलंकार का एक भेद।

भूसणभोजन-सं० पु०—६४ कलाओं में से एक।

भूसरग-सं० पु० [सं० भू+स्वर्ग] सुमेरु पर्वत का नाम।

भूसी-सं० स्त्री०—१ किसी वस्तु के छोटे २ छिलकों या टुकड़ों का चूर्ण।

ज्यूं—ईसबगोळ की भूसी।

रू० भे०—भुसी।

२ देखो 'भूसौ' (अल्पा., रू. भे.)

भूसुर-सं० पु० यौ० [सं० भू+सुर] धरती का देवता, ब्राह्मण।

भूसौ-सं० पु०—१ गेहूं, जौ आदि के सूखे डंठलों के महीन छोटे-छोटे टुकड़े जो गाय-भैंस आदि को खिलाये जाते हैं।

२ चोकर, चापड़।

रू० भे०—भुस।

अल्पा०—भुसी, भूसी।

भूह—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—१ मूंछ जाय **भूहां** मिळी, मिळिया भुज असमांन। साचौ सांमंत 'चांदियौ', 'पाबू' री परधांन।—पा. प्र.

भूहड़-सं० पु०—१ सोलंकी वंश के क्षत्रियों की एक शाखा जो पहले सिंध (वर्तमान पाकिस्तान) में थी और मुसलमान हो गई।

२ इस शाखा का व्यक्ति।

भूहर-सं० स्त्री०—आकाश में छाए हुए धूलिकण।

भूहरणौ, भूहरबौ-क्रि० अ०—धूलि कणों का आच्छादित होना, गर्द छा जाना।

भूहरणहार, हारौ (हारी), भूहरणियौ—वि०।

भूहरिओड़ौ, भूहरियोड़ौ, भूहरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भूहरीजणौ, भूहरीजबौ— भाव वा०।

भूहरियोड़ौ-भू० का० कृ०—धूलि-कणों से आच्छादित हुवा हुआ (स्त्री० भूहरियोड़ी)

भूहरौ—१ देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

भूहार, भूहारौ—१ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—बणै नैंण **भूहार** भालं विचत्रं, पडै दीपकौ काजळं हेमपत्रं। बिचित्रं बणी भहकी रेख बकं, धरचौ कांमदेवं कर (रां) मे धनंकं।

—बगसीरांम प्रोहित री बात

२ देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

भूहि— देखो 'भूमि' (रू. भे.)

भेंइसि—देखो 'भैंस' (रू. भे.)

उ०—गद्दह गाइ नइ **भेंइसि**, ऊंट छाली नइ एवड। अम्हनइ ए आधार, तियां धणीयां नै त्रेवड।—स. कु.

भेंच—देखो 'भींच' (रू. भे.)

उ०—वडा **भेंच** भूपाळ कै काळवाळा, खिडै नाग सुं केण केवांन खाळा। अहीराव नै दावडा एह आडा, गुणां वेद जोतां कहौ क्रोड गाडा।—ना. द.

भेंट—देखो 'भेट' (रू. भे.)

भेंटणौ, भेंटबौ—१ देखो 'भींटणौ, भींटबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सेठ कह्यौ—म्हैं कमाई सारू दिसावर जावूं हूं। सगळा घर वाळा म्हनै कंजूस मांनै तौ ई कमाई रै बिना म्हैं अणचींत्या धन नै नीं भेंटूं।—फुलवाड़ी

उ०—२ मिनख री उणियारौ होयन म्हैं मिनख री लोई-मांस सपना में ई नीं भेंटूं।—फुलवाड़ी

२ देखो 'भेटणौ, भेटबौ' (रू. भे.)

भेंटणहार, हारौ (हारी), भेंटणियौ—वि०।

भेंटिओड़ौ, भेंटियोड़ौ, भेंटयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भेंटीजणौ, भेंटीजबौ—कर्म वा०।

भेंटियोड़ौ—१ देखो 'भींटियोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भेटियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भेंटियोड़ी)

भेंटी—देखो 'भेटी' (रू. भे.)

उ०—के इत्ता में वौ बळद जोर सूं उण बाळदिया रा मोरां में **भेंटी** दी।—फुलवाड़ी

भेंसाखंदियौ-सं० पु०—सोने या चांदी पर खुदाई करने का एक कीला। (स्वर्णकार)

भेंसाद—देखो 'भैंसाद' (रू. भे.)

भे-सर्व० [सं० भवन्त] आप।

भेइरवी—देखो 'भैरवी' (रू. भे.)

भेउ-वि०—१ भेद जानने वाला।

२ देखो 'भेद' (रू. भे.)

उ०—१ मेकवीस मूरछा, त्रिण (ह) ग्रांम निसपति सुर। लहण **भेउ** खटराग कंठे, भ्रक्खै मोखंतर।—गु. रू. बं.

उ०—२ चउवीसमउ जिणेसर देव, तिहिं जाएवा आपिउ **भेउ**। मोक्समारगि इण परि जाइं, यति बीजा जे स्रावक थाइं।

—चिहुंगति चउपइ

उ०—३ विनयकीरति अभिरांमिहिं नांमिहिं जाणउ एउ, ग्रंथ अनेक बखाणए, जांणए अगम **भेउ**।—प्राचीन फागु संग्रह

भेक–सं॰ पु॰ [सं॰ भेकः] १ मेढ़क।

उ॰—१ सुक पिक लगै सवाद, भल थोड़ो ही भाखणौ। व्रथा करै बकवाद, भेक लवै ज्यूं भंरिया।

—महाराजा बळवंतसिंह (रतलाम)

२ देखो 'भेख' (रू. भे.)

उ॰—१ करनला कयौ सुणियौ न कांन। वैकृत भेक मुख चोळवांन।—रामदांन लाळस

उ॰—२ फंदा में मोडां रै फंसगी, रुळगी रेहड़ली। भेक धारतां कीधी भूंडी, कुबधां केहड़ली।—ऊ. का.

उ॰—४ चोर गुरु बिच्छू चटकावै, ग्यांन राब बिरळा गटकावै। भेक छाछ कारण भटकावै, लुच्चा वागळ ज्यूं लटकावै।—ऊ. का.

भेख–सं॰ पु॰ [सं॰ वेश] १ किसी मनुष्य का वस्त्रादि के पहनावे से प्रकट बाह्य रूप-रंग, वेश।

उ॰—१ तन उजळा मन सांवळा, बुगला कपटी भेख। इणसें तो कागा भला, बाहर भीतर अेक।—अज्ञात

उ॰—२ अजमेर रौ सूबेदार संताजी बावळियौ दिखणी भाऊ रा जंग सूं कंगाल रै भेख किसनगढ छतरी में आय बैठो हो। माळी कनां सूं मूळा मांग खाधा।—बां. दा. ख्या.

क्रि॰ प्र॰—बणाणौ, बदळणौ।

२ वह कृत्रिम पहनावा जो वास्तविकता छिपाने के लिए धारण किया जाय।

उ॰—भेख लिया सूं भगत नंह, ह्वै नंह गहणां हूर। पोथी सूं पंडित नहीं, ससतर सूं नंह सूर।—बां. दा.

क्रि॰ प्र॰—धारणौ।

३ साधु संन्यासी का पहनावा या वेश-भूषा जो विशिष्ट सम्प्रदाय का सूचक होता है।

उ॰—१ जे सांई का ह्वै रहै, सांई तिसका होइ। दादू दूजी बात सब, भेख न पावै कोइ।—दादूबांणी

उ॰—२ नमौ बपु दीरघ बांमन बेख, भिखंग पुरंदर भांजण भेख। नमौ नरसिंघ लिछम्मी-नाह, बिसंभर बिट्ठळ आदि बराह।—ह. र.

उ॰—३ सोफी सबद सुणाय, चोर रंग देत चिगाड़ै। बैरागी नै जगत, जगत नै भेख बिगाड़ै।—ऊ. का.

४ संन्यास।

उ॰—१ सुखमां वरणूं सुख सागर की, अपनी रुख भेख उजागर की। चित चाह उछाह पथा चुणिले, सब संत समाज कथा सुणिये।

—ऊ. का.

उ॰—२ पितह पुत्र विरोधे, भ्रितह सोम विग्रहे भ्राता। सजण जणा नि क्रोधे, खिम्या समौ भेख जो नथि।—गु. रू. बं.

५ मत, सम्प्रदाय।

उ॰—१ तंडण कर कविता तणों, घालूं चंडण घूब। भंडण जोगे भेख रौ, खंडण करणौ खूब।—ऊ. का.

उ॰—२ अपणे अपणे भेख की, सब कोई राखे टेक। निगम निसांणा एक है, गोळंदाज अनेक।—अज्ञात

६ देखो 'भेक' (रू. भे.)

उ॰—गढ़ि गोळ गोफळ अलति पीनहि, जिहां रतन पायल रेख। नेपुरां नादइं रुणझुणइं, बहु त्रिविधि प्रतिरव भेख—रुकमणी मंगळ

रू॰ भे॰—भेक, भेग, भेस।

भेखख—देखो 'भिक्षुक' (रू. भे.)

भेखज—देखो 'भेसज' (रू. भे.)

उ॰—१ निरंतर अंतर में निज नाथ, स्वयं धर ध्यान वनंतर साथ। जरा रिपु भेखज के ढिग जाय, महाजन जांमण मरण मिटाय।—ऊ. का.

भेखणौ, भेखबौ–क्रि॰ स॰—१ संन्यास लेना।

२ भेष बदलना।

भेखणहार, हारौ (हारी), भेखणियौ—वि॰।

भेखिओड़ौ, भेखियोड़ौ, भेख्योड़ौ—भू॰ का॰ कृ॰।

भेखीजणौ, भेखीजबौ—कर्म वा॰।

भेखधारी–क्रि॰ यौ॰ [सं॰ वेश+धारी] भेष धारण किया हुआ, संन्यासी, साधु।

उ॰—जेहवी प्रीति कुटिल नारी नी, जेहवी हो बादल केरी छांहड़ी जी। जेहवी मित्राई भेखधारी नी, तेहवी हो कापुरुसां री बांहड़ी जी।—वि. कु.

भेखियोड़ौ–भू॰ का॰ कृ॰—१ संन्यास लिया हुआ. २ भेष बदला हुआ. (स्त्री॰ भेखियोड़ी)

भेग—देखो 'भेख' (रू. भे.)

उ॰—भूधर कही—खरची दिरावौ। ताहरां साठ रिपिया दिराया सो पल्ले बांध, अतीत रौ भेग धर बाहिर हुवौ सो ढींगसर जाय पहुंचियौ।—सूरेखीवें कांधळोत री वात

भेड़–सं॰ स्त्री॰ [सं॰ भेडः] १ बकरी के आकार प्रकार का एक पालतू चौपाया जानवर जिसकी ऊन व खाल कई कामों में आती है तथा मांस खाने के काम आता है।

मुहा॰—भेड़ चाल=अनुकरणीय प्रवृत्ति।

२ बैल। (अ. मा.)

३ राज मंडूक, बड़ा मेंढक।

४ बहुत ही सीधा-सादा या मूर्ख व्यक्ति।

रू॰ भे॰—भेड़ी।

भेड़णौ, भेड़बौ–क्रि॰ स॰—१ टक्कर लगाना, भिड़ाना।

उ॰—डाक काळ रूपी डाच उबेड़े कटार उढ्ढां, भीमनाद भेड़े रेड़ै गयंदां गंभीर। आहेड़ै तेड़ै पेड़ै वीर देवीसिंघ आळा, केड़ै लाग तूंहीं छेड़ै डांखियौ कंठीर।—कंवर दौलतसिंघ रौ गीत

२ धारण करना, कसना ।

उ०—१ दुजल छतीसुंहि डाबियां, भूधारण भेड़ीह । धनुस भुजा डंड धारियां, आया आहेड़ीह ।—पा. प्र.

३ प्रहार करना।

४ भिड़ाना, सटाना।

५ सुसज्जित होना।

भेड़णहार, हारौ (हारी), **भेड़णियौ** —वि० ।

भेड़िअोड़ौ, भेड़ियोड़ौ, भेड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भेड़ीजणौ, भेड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भेडणौ, भेडबौ—रू० भे० ।

भेड़व–वि०—योद्धा, सुभट ।

भेड़ाव–सं० पु०—भेड़िया । (शेखावाटी)

भेड़ियौ–सं० पु०—जंगली कुत्तों से मिलता-जुलता एक मांसाहारी जानवर जो भेड़ बकरी आदि को उठाकर ले जाता है।

भेड़ै–क्रि० वि०—१ बराबर, समानान्तर ।

२ समीप, निकट ।

उ०—१ इण रीति प्रमारां रा सहाय काज सोभति रा खेत में जय रा दुंदुभी घुराय प्रथ्वीराज रा बीरां भूंहारै **भेड़ै** मांसुरी लोभ आंणियौ ।—वं. भा.

उ०—२ भजै बास चोथौ नरी 'मेभ' **भेड़ै**, नरांनाह यूं नांनणौ द्रंग नेड़ै ।—वं. भा.

भेड़ौ–सं० पु०—१ नर भेड़ ।

२ देखो '**भैंड़ौ**' (रू. भे.)

उ०—१ पच्छ ग्रहै प्रालब्ध, नहीं पुरुसारथ नेड़ौ । चोखै मत नहीं चाय, भाय आवै मत **भेड़ौ** ।—ऊ. का.

उ०—२ पड़ियौ सेडौ पेखि, भवन **भेड़ौ** भणणावै । भींतांहि भेडै भरी, गरट मांख्या गणणावै ।—ऊ. का.

भेजणौ, भेजबौ–क्रि० स०—१ किसी व्यक्ति को आदेश देकर या आग्रह से कहीं जाने के निए प्रवृत्त करना, रवाना करना ।

उ०—१ पाय हुकम पागड़ै, पाव दीधौ छत्रपत्ती । भैरव दोनां **भेजि**, सकनि तेड़ी त्रिसकत्ती ।—मे. म.

उ०—२ ठाकरसा सौ बात सुणनै घणा ई हंसिया । कणवारियां नै **भेज** सेठां नै कोट में बुलाया ।—फुलवाड़ी

२ किसी वस्तु या पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी साधन द्वारा पहुंचाना ।

उ०—बिणजारौ थोड़ौ फेर जोर सूं कह्यौ—हुकम, म्हारी अरज तौ सुणावौ, नगर कठियारा वाळौ ईंग्टूखां म्हारै साथै औ निजरांणौ **भेजियौ** है, कबूल फरमावौ ।—फुलवाड़ी

भेजणहार, हारौ (हारी), **भेजणियौ**—वि० ।

भेजवाड़णौ, भेजवाड़बौ, भेजवाणौ, भेजवाबौ, भेजवावणौ, भेजवावबौ, भेजाड़णौ, भेजाड़बौ, भेजाणौ, भेजाबौ, भेजावणौ, भेजावबौ—प्रे० रू० ।

भेजिअोड़ौ, भेजियोड़ौ, भेज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भेजीजणौ, भेजीजबौ—कर्म वा० ।

भेजाड़णौ, भेजाड़बौ—देखो 'भेजाणौ, भेजाबौ' (रू. भे.)

भेजाड़णहार, हारौ (हारी), **भेजाड़णियौ**—वि० ।

भेजाड़िअोड़ौ, भेजाड़ियोड़ौ, भेजाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भेजाड़ीजणौ, भेजाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भेजाड़ियोड़ौ—देखो 'भेजायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भेजाड़ियोड़ी)

भेजाणौ, भेजाबौ–प्रे० रू०—१ किसी व्यक्ति को आदेश देकर या आग्रह से कहीं पर जाने को प्रवृत्त कराना, रवाना करवाना, भिजवाना ।

२ किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी साधन द्वारा पहुंचाना, भिजवाना ।

भेजाणहार, हारौ (हारी), **भेजाणियौ**—वि० ।

भेजायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भेजाईजणौ, भेजाईजबौ—कर्म वा० ।

भेजाड़णौ, भेजाड़बौ, भेजावणौ, भेजावबौ—रू० भे० ।

भेजायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ किसी बड़े व्यक्ति को आदेश देकर साग्रह कहीं पहुंचने में प्रवृत्त कराया हुआ, रवाना कराया हुआ. २ किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी साधन द्वारा पहुंचाया हुआ, भिजवाया हुआ.

(स्त्री० भेजायोड़ी)

भेजावणौ, भेजावबौ—देखो 'भेजाणौ, भेजाबौ' (रू. भे.)

भेजावणहार, हारौ (हारी), **भेजावणियौ**—वि० ।

भेजाविअोड़ौ, भेजावियोडौ, भेजाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भेजावीजणौ, भेजावीजबौ—कर्म वा० ।

भेजावियोड़ौ—देखो 'भेजायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भेजावियोड़ी)

भेजियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ किसी व्यक्ति को कहीं पर जाने में प्रवृत्त किया हुआ, रवाना किया हुआ, भेजा हुआ. २ किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर किसी साधन द्वारा पहुँचने में प्रवृत्त किया हुआ.

(स्त्री० भेजियोड़ी)

भेजी—देखो '**भेजौ**' (अल्पा., रू. भे.) (अमरत)

उ०—१ जैमलजी सरफुद्दीन माल कोटरी पोळ आगै ऊभा देख रावजी देवदासजी नूं दिवी हुती बांरा खिजमतदार रै कनै हुती अेक मुगळ बन्दूक लेण भूंकियौ जद कड़ियाळी गेडी मुगळ रै माथै जड़ी । गेडी रा लगणा सूं नाक में **भेजी** निसरी—बां. दा. ख्या.

उ०—२ आंत ओज भेजौ असत, नैण नळी भख नेह। आंमिख नर नांखै उदर, आंगणै हरख अछेह।—बां दा.

भेजौ—सं० पु०—१ मस्तिष्क, दिमाग।

उ०—१ हा उण इच्छा पर भिच्छा गत हांणीं, जग में दैविच्छा किण हीं नह जांणीं। बादळ बीजळियां नभ में नहिं नेड़ी, भेजौ भणणायौ भळकी पुळ भेड़ी।—ऊ. का.

उ०—२ पण वा पूगी-पूगी जितरै तौ एक तरवार ठाकर रौ भेजौ फोड़'र कनपड़ा री लपतरौ उखेलती खांधा तक जाय पूगी।
—रातवासौ

मुहा०—भेजौ खाणौ, भेजौ चाटणौ=मस्तिष्क को पूरा थका देना। २ खोपड़ी के अन्दर का गुदा, मगज।

उ०—उण समय चहुंवाण कन्है घणा मेरां रा माथां सूं माथा भिड़ाय भेजा काढिया।—वं. भा.

भेट—सं० स्त्री०—१ मिलन, मुलाकात।

उ०—१ साजी बाजी सुरग सिधायौ, मिळे दांन खग दुवां मद। भेट हुवौ नह जकौ भाजसी, कूरम धोकौ मूफ कद।—बां दा.

उ०—२ मिनखां में थळियौ, जिनावरां में नळियौ अर भोजन में दळियाळी कैबत कूड़ी कोनी, सोळै आना सांची है। आं: भाग्यां सूं भेटा हुवै न, धोरियाळा गांव देखां।—दसदोख

२ सप्रयोजन किसी से मिलना, साक्षात्कार करना।

उ०—सती जती कव सूर, मेहप मित पिंडत मुगध। जांणै भेद जरूर, भेट हुआ सूं भेरिया।—महाराजा बळवतसिंह (रतलाम)

३ किसी को सम्मानपूर्वक दिया जाने वाला उपहार, सौगात, नजराना।

उ०—'अजण' भेट आंणियौ, कमध पह लिया उछब करि। विंद इंद वणि वरै, सकति रूपा बहु सुंदरि।—सू प्र.

४ भिड़न्त, टक्कर, युद्ध।

उ०—भुजंगां तणी भेट थारा भुजा री, दिसी अंतरा रात छोटी दुजा री। सदा आंणियौ नागणी बोल सारौ, थयौ वेद पासै नको वेण थारौ।—ना. दा.

५ दर्शन।

उ०—बे कर जोड़ी वीनवुं रै, सुणिजो थंभण पास। प्रभु परदेसइं चालतां रै, एक करूं अरदास। जीवनजी वेगि देज्यो भेट।—स. कु.

६ देवता या पूज्य व्यक्ति की सेवा में भक्ति एवं श्रद्धा से अर्पित की जाने वाली वस्तु।

उ०—कियौ हरख कमधज्ज, निरख नायक व्रहमंडां। भेट ग्रांम गज भिड़ज, पूज प्रम धांम घमंडां।—रा. रू.

क्रि० प्र०—आणी, चढाणी।

७ कर, टैक्स।

उ०—दांण, पूंछी, हल भोभ भाग, भेट, तलारक्षक, वद्धापन, मलवरक, बल, चंचा, चारिका, गढ, वाटी, छत्र, आलहण, थोटक, कुमारादि सुखडी इति क्रमेणा रा दस करा जाता।—व. स.

रू० भे०—भेट, भेटि।

अल्पा०—भेटड़ी।

भेटकौ—देखो 'भेट' (अल्पा., रू. भे)

उ०—१ इण गवाड़ी पूग्यां पैं'ली पैं'ली तौ वै घणी बातां विचारनै आवै पण डोकरी सूं भेटका व्हैतां ई कीं बात कैं'वणी बांरै हाथ री बात नीं रैं'वै।—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हारै साथै ई वौ कम कोगत नीं करी बेटी! भेटका व्है जावै तौ पैं'ल फटकारै फारगती कर दूं।—फुलवाड़ी

उ०—३ चमचमाट करतौ परभातियो तारौ ऊगौ जित्तै ई सेठां नै किणी सूं भेटका नीं व्हिया—फुलवाड़ी

भेटण—सं० स्त्री०—१ मिलने की क्रिया या भाव।

२ स्पर्श करने की क्रिया या भाव।

भेटणौ—सं० पु०—१ विनती, प्रार्थना।

उ०—चित्त इम लेई राजाजी रौ भेटणौ, आयौ गुरां के पास हो महामुनी। स्वेतांबिका' नगरी हो जाता भाव सूं, वंदणा करे उल्लास हो महामुनि।—जयवांणी

२ मिलाप।

३ टक्कर, भिड़ंत।

४ देखो 'भेट' (रू. भे.)

उ०—इक आवी पाग्रे पडइ, अलगा करइ जुहार। इक अनोपम भेटणां, सुंपइ संपति सार।—मा. कां. प्र.

भेटणौ, भेटबौ—क्रि० स०—१ मिलना।

उ०—१ चीरी रही धन हीयडउ लगाई, जांणिक बाछरू है मेल्ही गाई। नयन ते आंसू खेरिया, कब म्हैं भेटस्यां सांभरया-राव।
—बी. दे.

उ०—२ मह लागौ पाप अभनमां 'मोकळ', पंड सुदतार भेटतां पाप। आज हुवा निकळंक अहाडा, पेखे मुख ताहरौ 'परताप'।
—महाराणा प्रतापसिंह रौ गीत

२ साक्षात्कार होना, भेट करना।

३ आलिंगन करना।

उ०—१ कर नवल किसोरी संघर सोरी, मरियादा मेटंता है, बिसफळ बैरागी त्रिभवन त्यागी, भागी भुज भेटंदा है।—ऊ. का.

उ०—२ हरिखीय उग्रसेन बेटीय भेटीयउ वर अवरोध, जगगुरु अमीय समांणिय वांणीय जन प्रतिबोध। उपसम तरुवर रोपइं लोपइं मन संदेह, मुक्ति तणउ पंथ दाखिय राखिय त्रिभुवन रेह।
—नेमिनाथ फागु

उ०—३ काचल कातरिया बाजू में काठा, भुजतळ भेटै जां मेटै अघ माठा। कर में कांकणियां जसदा गळ काठी, अदभुत मोरां पर लुठतोड़ी आटी।—ऊ. का.

४ टकराना, भिड़ना।

उ०—१ भयंकर रूप भुजां जुध भार, हणें खळ भूत भणै बळिहार। खणाखण खेटक भेटत खाग, रिखेस्वर बींण झणझ्झण राग।—मे. म.

उ०—२ अधिप 'भीम'रै अग्ग, विजय कीधां कई बारां। भड सात्रव घण भेटि, किया धड़ पार कटारां।—वं. भा.

५ युद्ध करना, लड़ना।

६ दर्शन करना।

उ०—१ मोरो मन तीरथ मोहियउ, मंइ भेटयउ हो पदम प्रभु पास। मूलनायक प्रतिमा भली, प्रणमंता हौ पूरै मननी आस।

—स. कु.

७ तीर्थयात्रा करना।

उ०—पांचै पांडव संघ करि, सेत्रुंज भेटचउ अपारोजी। कास्ट चैत्य विब लेपनउ, ए बारमौं उद्धारो जी।—स. कु.

८ स्पर्श करना, छूना।

उ०—१ गोह सरीखां पांमर गाऊं, व्याध कबंघा ग्रीध बताऊं। नै सट पापी गौतम नारी, तै रज पावां भेटत तारी।—र. ज. प्र.

उ०—२ जिन चरण ध्रुव अटळ कीनै, राखि अपनी सरण। जिन चरण ब्रह्मांड भेट्यौ, नख सिखौ स्री भरण।—मीरां

उ०—३ वरियांम सिलह पोसां विचै, भुजां 'अभै' नभ भेटियौ। तदि जांणि भांण ग्रीखम तणौ, काळी घटा लपेटियौ।—सू. प्र.

९ अस्पृश्य का स्पर्श करना, अशौच लगना।

ज्यूं—मरियोड़ा जिनावर भेटणा।

उ०—सिवियांण 'कल्यांण' तणै अत सीधो, अगै भेटिया असत अयांन। आजस् आभड़छोत उतरियो, स्रोण गंगोदक हुवो सिनांन।।—दूदो आसियो

१० संसर्ग में लाना।

उ०—सदाई लगै खाग नै त्याग सूरा, परतै जै प्रिथीनाथ भूपाळ पूरा। पर स्त्री न भेटै गऊ विप्र पाळै, चलै राह वेदौ खित्रि ध्रम्म चालै।—वचनिका

११ अर्पण करना, चढाना।

१२ प्राप्त करना।

उ०—१ सब सुख मेरे सांइयां, मंगळ अति आनंद। दादू सज्जन सब मिळै, जब भेटै परमानंद।—दादूबांणी

उ०—२ मौत नै इण विध हरख सूं भेटणी तौ आज पै'ली कदेई नीं सुणी।—फुलवाड़ी

१३ उदय होना।

उ०—ऐसै दिनकर भेटीयां, निसकर जाहि नसाय। यु 'हरीया' गुर भेटीयां, अग्य अंधारा जाय।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

भेटणहार, हारौ (हारी), भेटणियौ—वि०।

भेटिओड़ौ, भेटियोड़ौ, भेटयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भेटीजणौ, भेटीजबौ—कर्म वा०।

भेंटणौ, भेंटबौ, भेडणौ, भेडबौ—रू० भे०।

भेटरड़ौ—सं० पु०—जौ व गेहूं का मिश्रण।

भेटा—सं० पु० (ब. व.) १ मिलाप, मिलन।

उ०—१ तद इहां रै आ रीत जो जै दिन परणीजै ते दिन हीज सिर गूंथणौ कर रात वींदणी भेटा करै वींद सौं।

—ठकुरै साह री वात

उ०—२ किसनजी बोल्यौ—भाग चोखौ ही है। जद ही थां जिसा भला माणसां सूं भेटा हुआ है।—दसदोख

२ टक्कर, भिड़ंत।

उ०—खेटा करहु खळन सो, भेटा लेहु भीर। मन हेटा कर हुं न मरद, बेटा तूं है बीर।—केसरीसिंघ बारहठ

भेटि—देखो 'भेट' (रू. भे.)

भेटी—सं० स्त्री०—१ पशुओं या मनुष्यों द्वारा सिर से किया जाने वाला आघात, प्रहार या चोट।

उ०—जोधपुर गढ माथै मुकनदासजी नें छिपीयें ठाकर उदावत परतापसिंघजी मारिया तद भीम धनौ सिनांन करण गा हा पण पाछा आया गढ माथै लोहा पोळ रा किमाड़ तोड़ भेटी सूं 'धनौ' कांम आयो नै छिपीये।—वी. स. टी.

२ टक्कर, भिड़ंत।

उ०—धेठी लाज आगेठी पळेटी ज्यूं ऊजळी धारा, जेटी भार पड़ेतै कणैठी काथै जोम। हेठी चखां न धारै प्रथमी जीत गोरां हूंता, भीम ज्यूं करबां भेटी खाधी बीर भोम।—जसौ आढ़ौ

३ तुकबन्दी।

उ०—भेटी री तुक भांगवा, ऊभै लघु आंणोर। रखै नेम इण रीत रौ, सो हिं खुड़द सांणोर।—पिं. प्र.

४ नम्बर खुलने वाले जुए में जुआरी द्वारा सुबह और शाम के लिए लगाया जाने वाला एक अक्षर।

वि० वि०—उस दिन दोनों समय वही नम्बर खुल जाने पर ६४ गुना वैसा मिलता है।

५ सहारा।

रू० भे०—भेंटी।

भेटौ—देखो 'भेटा'।

उ०—पिण मन माहि हिवै जांणूं अछूं रै, कोइक पुण्य प्रमांण। बंधवजी तुम सुं भेटौ हुऔ रै, तो भय भागौ सुलतांन।—प. च. चौ.

भेडणौ, भेडबौ—देखो 'भेटणौ, भेटबौ' (१) (रू. भे.)

उ०—१ कूंयर तुरीय खेडउ राउ हूंइं लेउ भेडउ। कुरुपति दल रोली तउ वलउं सैन्य भेली।—सालिसूरि

उ०—२ रोसि पांडव चडचा रथ खेडचा, तउ सुसरम दल नाभउ

भेड्या। भीम भीसरा गदा लेउ धायउ, तउ सुसरम ग्रप चित्ति विछाहिउ।—सालिसूरि

२ देखो 'भेड़णी, भेड़बी' (रू. भे.)

भेडणहार, हारौ (हारी), **भेडणियौ**—वि०।

भेडिग्रोड़ौ, भेडियोड़ौ, भेड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भेडीजणौ, भेडीजबौ—कर्म वा०।

भेडव—सं० पु०—योद्धा, वीर।

भेडवणौ, भेडवबौ—देखो 'भिड़ाणौ, भिड़ाबौ' (रू. भे)

उ०—भीम भीडंतउ जमरा तडै, कूटइ कुरव वीर। पाडइ द्रउडइ **भेडवइ**, बांधी बीलइ नीर।—सालिभद्र सूरि

भेडवणहार, हारौ (हारी), **भेडवणियौ**—वि०।

भेडविग्रोड़ौ, भेडवियोड़ौ, भेडव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भेडवीजणौ, भेडवीजबौ—कर्म वा०।

भेडवियोड़ौ—देखो 'भिड़ायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भेडवियोड़ी)

भेडा—सं० स्त्री०—एक प्रकार की रंग बिरंगी बतख।

भेडागारी—सं० स्त्री०—शाक बनाने वाली वनस्पति का नाम।

उ०—**भेडागारी** भांमटी, भांभरहूली भाति। भूसरा भूली भारथी, भड्हड भोली राति।—मा. कां प्र.

भेडागारौ—देखो 'वेढ़ागारौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भेडागारी)

भेडियोड़ौ—१ देखो '**भेटियोड़ौ**' (रू. भे.)

२ देखो 'भेड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भेडियोड़ी)

भेडौ—सं० पु०—भेड़ का मूत्र।

भेणी—सं० पु०—पंजाब का एक तीर्थ स्थान भेणी साहब जहां सिक्खों का गुरुद्वारा भी है।

भेणौ, भेबौ—देखो 'भेयणौ, भेयबौ' (रू. भे)

भेणहार, हारौ (हारी), **भेणियौ**—वि०।

भेयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भेईजणौ, भेईजबौ—कर्म वा०।

भेदंग—वि०—भेद जानने वाला।

उ०—राजांन कुग्रर किसा एक रजपूत छै। दूत हकीकत कहै छै, जु राजांन कुग्रर उठती वहीरौ जुवांन ग्राजांन बाहू राजहंस लीलंग छै। **भेदंग** छै। तिसा ही पोरस रा गाढ़, तिसा ही कामवट रा ग्रंग, तिसा ही रजपूतवट रा ग्राचार देख नैं महाराजा राजेसर ग्रजमेर रै थांणै राखैग्रा छै।—रा. सा. सं.

भेदंगर—वि०—भेदन करने वाला।

उ०—समर वाग वज्र कुसम, भमर जिम करि **भेदंगर**। दूं दूहां मझि एक, सुवप ग्रम्मर काइ संकर।—सू. प्र.

भेदंगी—वि०—भेद जानने वाला, रहस्य जानने वाला।

भेद—सं० पु० [सं० भेदः] १ भेदने या छेदने की क्रिया या भाव, छेदन, वेधन।

२ दरार, फटन।

३ ग्रलहदगी, ग्रलगाव।

४ झगड़ा, ग्रनैक्य।

५ गुप्त बात।

उ०—१ दे दे दरसरा दौड़, **भेद** घर री लै भारी, दे दे दरसरा दौड़, निलज भागै लै नारी।—ऊ. का.

उ०—२ 'केहर' सांम धरम परा कीधो, दियो जीव परा **भेद** न दीधो। बोले बोल वधंती बाजी, राव हुवौ उर 'इंदर' राजी।

—रा. रू.

उ०—३ सेवट खपतां खपतां मंत्री रौ बेटौ राजकंवर सूं **भेद** री साची बात जांणी।—फुलवाड़ी

उ०—३ खवासजी पूरी बात बताई जित्तै जित्तै बादळ ग्रापरा मन में सै जुगत विचारली। पै'ली बतायां बात रौ सगळौ मठ मर जावै, इरा वास्तै किणी नै कीं **भेद** नीं दियौ।—फुलवाड़ी

मुहा०—१ भेद खोलणौ=गुप्त बात प्रकट कर देना। २ भेद देणौ=गुप्त बात प्रकट कर देना। ३ भेद पाणौ=गुप्त बात जान लेना। ४ भेद बताणौ=गुप्त बात बता देना, गुप्त बात प्रकट कर देना। ५ भेद मिळणौ=गुप्त बात का पता लगना। ६ भेद लैणौ=गुप्त बात का पता लगाना।

३ छिपा हुग्रा वह रहस्य या तत्त्व जिसे साधारण बुद्धि से न जाना जा सके, मर्म।

उ०—१ ग्रग्र देखइ इक चिटी उघाडी, विध ग्राखइ तउ कहतउ वेद। माता नमौ तुम्हारी महिमा, भूलउ तउ ब्रह्मादि (क) **भेद**।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तासों पीर कहूं तन केरी, फिर नहिं भरमौ खांनी। खोजत फिरूं **भेद** वा घर कौ, कोई न करत बखांनी।—मीरां

उ०—३ बडा तत तूझ लहै न विचार. पुरंदर तूझ न जांणै पार। भला मुनि ग्रादि न जांणै **भेद**, बिरंचिय तूझ न जांणै वेद।

—ह. र.

४ तात्पर्य, गूढार्थ।

उ०—१ लागूं हूं पहली लुळे, पीतांबर गुर पाय। **भेद** महारस भागवत, प्रांमू जास पसाय।—ह. र.

५ ग्रन्तर, फर्क।

उ०—१ हंसा बगला हाल सूं, जिम ग्रंतरो जणाय। कवत सुकवियां कुकवियां, **भेद** प्रगट इण भाय —बां. दा.

उ०—२ उण दिन रा तमासा ग्रर ग्राज रा तमासा में थांनै कीं **भेद** निगै ग्रावै।—फुलवाड़ी

६ मतमतान्तर।

उ०—हुए हिंदु बळ हीण, धरा पण खीण सुरां भ्रम। मिटै वेद मरजाद, भेद गुण आद पड़ै भ्रम।—रा. रू.

७ किस्म, तरह, प्रकार।

८ विश्वास घात।

९ धोखा।

१० द्वैतता।

११ प्राचीन राजनीति में शत्रु को वश में करने हेतु चार उपायों में से एक जिसके द्वारा शत्रु के मित्रों में परस्पर झगड़ा उत्पन्न कर दिया जाता है।

उ०—इणनै तौ भेद सूं काबू करणौ पड़सी। सूर वीर नै भेद पाड़नै पराजित करणौ—आ बडेरां री सीख है।—फुलवाड़ी

रू० भे०—भिदि, भेउ, भेदि, भेव।

भेदक-सं० पु० [सं०] १ संगीत के भेद जानने वाला, संगीतज्ञ।

उ०—पाछइ प्रोहित राखियउ, तेड़चा मांगणहार। जै भेदक गीतां-तणा, बात करइ सुविचार।—ढो. मा.

२ भेदने या छेदने वाला, वेधक।

भेदकसूळ-सं० पु० [सं० भेदकशूल] एक प्रकार का शस्त्र।

भेदकातिसयोक्ति-सं० पु० [सं० भेदकातिशयोक्ति] एक अर्थालंकार जिसमें वास्तविक अभिन्न उपमेय को भिन्न (अभेद होने पर भी भेद) कहा जाय। इसके वाचक शब्द प्रायः 'औरै' वा इसके पर्याय 'नवीन', न्यार' आदि होते हैं।

भेदकारी-वि०—१ भेदन या छेदन करने वाला।

२ मिलावट।

भेदग, भेदगर-वि०—१ भेद या रहस्य जानने वाला।

उ०—१ 'हणु' अंगद खळ 'प्रहारण', 'भालपत' नळ नील भारण। आद भेदग दस अधारण, बडा डारण वीर।—र. रू.

उ०—२ नारी नदी निघात, चाहीजै भेदग चतुर। वातां ही में वात, रीझ खीझ में 'राजिया'।—किरपारांम

उ०—३ जांगी भड़ां कवी गुण जोड़ा, साकुर तूज समेळा। ऊदा-वत सुबरांम अभनमौ, भेदग राखै भेळा।

—केसरीसिंघ उदावत रौ गीत

उ०—४ वहै करारा लोह औरै जठै बहादर, भेदगर खरारा अेम भाखै, जतन न करै 'रतन' जिद रा जुड़ंतौ, 'रतन' ईजति तणा जतन राखै।—पूरणदास महियारियौ

उ०—५ स्रुत सप्त छंद खट पंच नव संपूरण, भेदगर च्यार दस बोध भाळी। अरथ जुत बोलबौ हैल बीजा 'अजा', वेळ अम्रत-तणा उदध वाळी।—र. ज. प्र.

२ भेद बताने वाला।

३ गुप्तचर।

भेदड़ी-सं० स्त्री०—आटे व चावल का बना पतला खाद्य पदार्थ, राब।

भेदजमा-सं० पु०—बलभद्र। (अ. मा.)

भेदणौ, भेदबौ-क्रि०स० [सं० भेदनं] १ भेदन करना, छेदना, बींधना।

उ०—१ भेदे तैं बार किता भूगोळ, करंती आंणी गंग किलोळ। दळे तैं केता बार दईत, इंद्रासण दीधौ सक्र अजीत।—ह. र.

उ०—२ काळी-कंठळि वीजुळी, नीची खीवइ निहल्ल। उर भेदंती सज्जणां, ऊचेड़ंतौ सल्ल।—ढो. मा.

२ विदीर्ण करना।

उ०—मम ढील करौ हल वार म लावौ, वेग चढ़ौ वहिळा वहिळा। भिडता भड सूरज मंडल भेदै, झूळ भरै रंभ झूझ झळा।

—गु. रू. बं.

क्रि० अ०—३ व्याकुल होना।

उ०—तिण बेला पंथी एक कि, भूख त्रिस भेदीयउ रे। विण अमलें गहिलें देहकि, पंथ अति देखियउ रे।—प. च. चौ.

भेदणहार, हारौ (हारी), **भेदणियौ**—वि०।

भेदिओड़ौ, भेदियोड़ौ, भेदयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भेदीजणौ, भेदीजबौ—कर्म वा०।

भिदणौ, भिदबौ—रू० भे०।

भेदन-सं० पु०—भेदने या छेदने की क्रिया।

वि०—भेदने या छेदने वाला, दस्तावर।

रू० भे०—भेयण।

भेदनकाळंद्री-सं० पु०—श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम। (ह. नां. मा.)

भेदबुद्धि-सं० स्त्री०—फूट, अलगाव।

भेदभाव-सं० पु० यौ० [सं० भेदः+भाव] १ मन में होने वाला वह भाव कि अमुक और अमुक में अन्तर है।

२ पक्षपात-पूर्ण नीति।

३ अन्तर, फरक।

४ मतैक्य का अभाव।

५ एकता या एकात्मता का अभाव या विचार।

६ पारस्परि विरोध या वैमनस्य, आपसी अनबन या बिगाड़, फूट।

उ०—पीछै बीकानैर रै भेदभाव री वातां करमचंद पातसाहजी सूं बौहत जाहर कीवी। अर कांम दीवांणगी री मुंहता वैद ठाकु-रसी नूं हुवौ।—द. दा.

रू० भे०—भेवभाव।

भेदागळ-वि०—भेद या रहस्य जानने वाला।

उ०—भेदागळ री भूख, भू पड़ियां माजै नहीं। दाखां होवै दूख, जीव तळमलै 'जेठवा'।—जेठवौ

भेदि—देखो 'भेद' (रू. भे.)

उ०—१ अणंत काल जीव रहइ निगोदि, सूक्ष्म बादर छइ बिहु भेदि। सतर वार एक ऊसासह माहि, वली वली ऊपजइ तीहं वलइ जाइ।—चिहुंगति चउपई

उ०—२ सतीय बेउ छइं कासगि रही, इंद्रह आयसु तु तुम्ह कही। मेल्हउ पंडव बडइ वछेदि, विणु हथियार वांधा भेदि।—पं. पं. च.

भेदिनी-सं० स्त्री०—योगियों की षटचक्र को भेदन करने की शक्ति या सिद्धि।
रू० भे०—भेयणी।

भेदियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ भेदन किया हुआ, छेदा हुआ, बेधन कियां हुआ. २ विदीर्ण किया हुआ. ३ व्याकुल हुवा हुआ. (स्त्री० भेदियोड़ी)

भेदियौ—देखो 'भेदी' (अल्पा., रू. भे.)

भेदी-वि० [सं० भेदिन्] १ भेदन करने वाला।
उ०—डगां घीसता साकळां सूत डोरा, घरा यूं खणै ज्यूं बणै खेत धोरा। भळा जूह वै बेरियां व्यूह भेदी, बिजै मित्र जे चित्र संग्रांम बेदी।—वं. भा.
२ रहस्य जानने वाला।
३ गुप्तचर, जासूस।
रू० भे०—भेदू।
अल्पा०—भेदियौ।

भेदीसबद-सं० पु०—१ शब्द सुनकर निशाने पर बाण चलाने वाला।
२ अर्जुन।
३ दशरथ।

भेदुर—देखो 'भिदुर' (रू. भे.)

भेदू—देखो 'भेदी' (रू. भे.)

भेद्य-वि०—भेदन करने योग्य, जो भेदा जा सके।

भेभराभूत—देखो 'भाभराभूत' (रू. भे.)

भेमसेनीकपूर—देखो 'भीमसेनीकपूर' (रू. भे.)

भेय—देखो 'भेद' (रू. भे.)
उ०—जिण सासन जे अवर, बहुय सिद्धंत प्रसिद्धि। तै जांणइ सवि भेय बेय, वपु दै पिग बुद्धि।—ऐ जै. का. सं.

भेयण—१ देखो 'भेदन' (रू. भे.)
२ देखो 'भुवन' (रू. भे.)
३ देखो 'भवन' (रू. भे.)

भेयणी—देखो 'भेदिनी' (रू. भे.)

भेयणौ, भेयबौ-क्रि० स०—गीला करना, भिगोना।
२ औषधि को भावना देना। (अमरत)
भेयणहार, हारौ (हारी), भेयणियौ—वि०।
भेयोड़ौ—भू० का० कृ०।
भेईजणौ, भेईजबौ—कर्म वा०।
भेणौ, भेबौ, भेवणौ, भेवबौ—रू० भे०।

भेयोड़ौ-भू० का० कृ०—भिगोया हुआ. (स्त्री० भेयोड़ी)

भेयौ-वि०—भीगा हुआ, गीला। (अमरत)

भेर-सं० पु०—१ तरबूज, मतीरा।
[सं० भेरः] २ एक प्रकार का वाद्य, जो भेरी नामक वाद्य से आकार-प्रकार में भिन्न होता है।
उ०—रोड़ि द्रुमति ढोल रवद, सहनाई भेर सद्द, निफेरी भेरी निनद, नीसांण धुबे। पंचसद दमांम पूर, रुडै डूंड रिणतूर, प्रमांणै मेघ पड्डर (पडर), हैरांन हुवै।—गु. रू. बं.
३ बड़ा ढोल।
४ बड़ा नगारा।
अव्य०—१ फिर, पुनः।
२ और।
उ०—कदंच जो कहां समंद री सींप तिका पण न फबै इण रै समीप। भेर जो मीढ़ां छोटी सी मीन, तिका तौ लाजां मरती हुई जळ में लीन।—र. हमीर
३ देखो 'भेरी' (मह., रू. भे.)
उ०—हुई पहिरावणी हरखीउ राई, अंचल बंधी राजकुमार। चौरी चढियौ भोज की, बाजइ बरगूं भूगळ भेर।—वी. दे.

भेरव—देखो 'भैरव'।

भेरवौ—देखो 'भैरव' (अल्पा., रू. भे.)

भेरि—देखो 'भेरी' (रू. भे.)
उ०—हस्ती, हयवर, धन, देखकर, फूल्यौ अंग न माइ। भेरि दमांमा एक दिन, सब ही छाडे जाइ।—दादूबांणी

भेरी-सं० स्त्री० [सं० भेरिः, भेरी] १ युद्ध में प्रयुक्त वाद्य विशेष।
उ०—१ खेलै कळाधर धींग डंडाळां पंखाळां खमें, रणंकै भेरी बीरूप सूरा भरै रीस। खेळा मिळै बीर चंडा मारतंडा पंग खड़ै, अड़ै ऊभौ सुरतांणां चहूवाणां ईस।—राव सत्रसाळ रौ गीत
२ तुरही के आकार का वाद्य विशेष।
उ०—१ वीर अदंग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सांमह्या, त्रहत्रहतै त्रंबक तणै त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउं, भेरि भुंगळ तणै भूभूयाटि भूकिइं भिलकि फाटी।—वं. सा.
उ०—२ तूटा गज सिर करै त्रंबका, दांतूसळां वजावै डंका। गत त्रत करि सिंधू सुर गावै, वयंड सूंडची भेर बजावै।—सू. प्र.
उ०—३ इण भांत री अनेक आसीस दियै छै। अैसौ गहरै साद कविराज बोलै छै, जांणै नगारै डंकौ हुवौ कना भेर घाव हुवौ। इण भांत कविराज आसीस देवै छै।—रा. सा. सं.
३ ढोलक।
उ०—भंभा अदंग भेरी भुंकार बधिरीकृत दिगंतर, रथचक्र घनघनारवि पूरित गिरिधरणि विवर उत्फालितरजः पुंजमलिनीकृत गगनमंडल।—व. स.
४ ढोल।
उ०—विसम ढाक स ढूकस ढमढमी, भरहरी भर भेरि विहामणी। उचचरी तुररी कुरूरी जसी, सुभट ना सवि रोम ज उद्धसी।
—सालिसूरि

भेरीपरीक्षा-सं० स्त्री०—७२ कलाओं में से एक।

भेरूं, भेरू, भेरूजी—देखो 'भैरव' (रू. भे.)

उ०—१ पांचूं पांडव फेरि, घेरि अपणै घरि आया। चावंड के सिर चोट, भैद भेरूं का पाया।—ह. पु. वां.

उ०—२ मुलतांणी ताखौ मछीपटण तासतौ टुकडी दुमैंणां बासतौ मीसंजर भेरू तनसुख चोरसौ अटायण दुमांमी सालु जरकसी कचीयौ चूंनडी जांमसाइ मुंगीपटण जांमावाडि सुप।—व. स.

भेरौ—देखो 'भेळौ' (रू. भे.)

उ०—जन हरिदास भै सिंध तजि, भेरै बैठा जाय। सो गुर सिख कूं लै चल्या, अपणैं मतै मिळाय।—ह. पु. वा.

(स्त्री० भेरी)

भेळ-सं० पु०—१ मिलावट, मिश्रण।

उ०—१ ओसर मोसर मांय, ब्यावड़ा आड़ी आवै। चारै पारै मिळा, करहलां मौज मणावै। कूतरड़ी रै भेळ, गिणीजै नीरौ माड़ौ। पण! धिटाळै टळै, नरां अपजस अंबाड़ौ।—दसदेव

उ०—२ थोड़ी घणी काळाई रौ भेळ तौ म्हांमें है, आ बात म्हैं आछी तरै जांणूं।—फुलवाड़ी

२ वर्ण संकरता।

उ०—बोलै मीठी बांण, कांनां लपराइयां करै। पारख बिना पिछांण, भेळ जगत में 'भैरिया'।—महाराजा बळवंतसिंह रतलांम

भेळकौ-सं० पु०—मेल-मिलाप, प्रेम।

उ०—आ भाली रीत कीसुं अमरावां, लोग तरफ की छाडै लज। भगतणियां सूं करै भेळका, भेळौ नही रिण में भिड़ज।

—कविराजा बांकीदास

२ भिड़ंत, टक्कर।

उ०—भेळका करंता आ वात दोहूं कांनी देख भारी, सजै ना करारी सोभा भाईपै सुधार। गया बेहूं फौजां राजी-बाजी व्है विचार गाढ़ा, दिया डेरा सोढ़ां बागां अगंजी दातार।

—बादरदांन दधवाड़ियौ

३ आमना-सामना, मुलाकात।

४ स्पर्श करने या छूने का भाव।

भेलड़ी—देखो 'भेली' (अल्पा., रू. भे.)

भेळण—देखो 'भेळ' (रू. भे.)

भेळणौ, भेळबौ-क्रि० स०—१ मिश्रित करना, मिलाना।

उ०—१ भासण उपमां और मनोरथ भेळिया, मभ्क आटी मखतूळ क मोती मेळिया।—बां. दा.

उ०—२ ताहरां त्रिभुवणसी रौ भाई पदमसी हुतौ, तियै नूं मखायौ—'तूं त्रिभुवणसी नूं मारै तौ तोनूं टीकौ देवां। ताहरां पदमसी लोभायै थकै जाइ नै त्रिभुवणसी नूं पाटां मांहै, सोमल नींब मांहै, भेळियौ—नैणसी

२ शामिल करना, संग में करना।

उ०—१ ताहरां चारण री मां बोली—'बेटा चूंडा! केरड़ा आघैरां जंगळ मांहै टोघड़ा चरै छै, तिहां मांहै भेळ आव। ताहरां चूंडो केरड़ा ले अर भेळण गयौ।—नैणसी

उ०—२ जीत दळ सभि हलै राजा, वाजंता रिणजीत वाजा। राव 'ईदौ' मांण रोळै, भीम गयंदां हूंत भेळै।—सू. प्र.

३ झोंकना।

उ०—१ कहै पिरोहित राज अणंकळ, 'माहव' रौ 'विजपाळ' महा-बळ। भेळूं तुरंग भमर गज भारां, धड़छूं दुसह ऊजळी धारां।

—सू. प्र.

उ०—२ दीठा भाव दिखावणा, हुरकणियां रा हाथ। हात नहीं मन किमि हिचै, भेळै अस भाराथ।—बां. दा.

उ०—३ अै राठौड़ महाबळी, करौ दिलासा तेड़। भेळण जंगां बारग्रह, वधे तुरंगां खेड़।—रा रू.

४ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला, गढ या गांव जीतकर अधिकार में ले लेना।

उ०—१ गांव भेळियौ, सारो लूटियौ।—सुंदरदास भाटी री बात

उ०—२ पछै भाटिए कोस-कोस डेरौ करनै उठै देवीसिंघ नूं तेड़ियौ। तेड़नै ऊमरकोट भेळियौ।—नैणसी

उ०—३ सो उहां मांहै बाहर निसरण वाळौ कोई नहीं और अै चलाय भेळै सो एक तौ अराबै आगै जोर न लागै।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—४ पतळी भींत फळेह, मांय ज सांवत सूरमा। भेळी नांहि भिळेह, रावत ऊभां राजिया।—किरपारांम

उ०—५ तिकौ औ तौ सदा ई कवांरी घड़ा रौ भेळणहार रिण रौ रिझवार। चवरी ऊपर बींद जाय जिण भांत बिहसतौ बिळ-कुळतौ अलवलियौ भंवर हुवौ थकौ ताखडौ कंवरां रा साथ नूं लेय नै तुरी तोरिया।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

५ किसी खेत में खड़ी फसल को पशुओं द्वारा चराना।

६ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि पशुओं को चराना।

७ नष्ट करना, बर्बाद करना।

८ तोड़ना।

९ किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ सिद्धि हेतु किसी को अपने दल या गुट में शामिल करना।

१० पहुंचाना, पहुंचा देना।

भेळणहार, हारौ (हारी), भेळणियौ—वि०।

भेळिओड़ौ, भेळियोड़ौ, भेल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भेळीजणौ, भेळीजबौ—कर्म वा०।

भेळप-सं० पु०—१ साथ या शामिल रहने का भाव।

उ०—इकलापी मिनख री आ इज गत व्हिया करै। मिनख तौ संगत अर भेळप सूं सुधरै।—फुलवाड़ी

२ प्रेम, अनुराग ।

उ०—लोग चुगल कानां लग्या, घूघू बोल्यौ मेह । भायां सूं भेळप नहीं, विपत लिखी विधि तेह ।—बां. दा.

३ मित्रता, मेल ।

उ०—१ साबळ श्रणियां सांकही, चोरंग बणिया चेत । भणियां सूं भेळप नहीं, हुरकणियां सूं हेत ।—बां दा

उ०—२ बटपाड़ां रा बंस नूं, माजी लीधौ मार । भेळप राखै मांन भय, मूंसा सूं मंजार ।—बां. दा.

उ०—३ वौ स्याळ दोनां री भेळप में भंज घालण रा घणा ई कळाप करिया ।—फुलवाड़ी

उ०—४ हुळकर मलारराव दिखण मे बेटी रौ ब्याव कियौ जद भेळप रै तावै बुलायोड़ा ब्याव ऊपर बूंदी सूं उमेदसिंघजी राव राजा दिखण में गया हुता ।—बां. दा. ख्या.

४ एकता, संगठन ।

उ०—१ जोध सबळ बळ अग्गळौ, महवेचौ 'विजपाळ' । भेळप राखण आपणी, दाखी प्रीत विसाळ ।—रा. रू.

उ०—२ आप पधारौ तौ आप री इंछा पण इण घर में सदा संपत बणी रै वै, म्हनै औ वरदांन दिरावौ । किणी भांत घर वाळां री भेळप नीं टूटै ।—फुलवाड़ी

५ साझा, सीरवाळी ।

उ०—चिड़ी बोली—भेळप रौ धंधौ तौ वत्तो इज है, पण हाडा भाई थनै भेळौ थुड़णौ पड़ेला, म्हारै जोड़ै बिरौबर कांम करणौ पड़ैला ।—फुलवाडी

६ संयोग ।

उ०—लिछमी अर सुरसत री भेळप बिरळी ठौड ई लाधै, पण उण बांमण रै पाखती ग्यांन ई अणूंतौ हौ अर माया ई अणूंती ही ।—फुलवाड़ी

भेळपदार—वि०—१ साथ रहकर या मिलकर काम करने वाला, साझीदार ।

२ मित्र, दोस्त ।

उ०—भेळपदार गिनायत भाई, समय देख पलटै सगळाई । कीजै जेज मती तूं काई, आवै देसणोंक सूं आई ।

—श्री करणीदेवी रौ गीत

भेळमभेळ—क्रि० वि०—१ किसी कार्य या घटना की संलग्नता में, साथ ही साथ ।

उ०—मन में सोच्यौ के अपांरै घरै ले जायनै रोट्यां तौ खवाड़णी ई पड़ैला । विरथा औ क्यूं पड़पंच करूं । भेळमभेळ अठै ई जीमा-ड़णो सावळ है ।—फुलवाड़ी

२ शामिल ।

उ०—वौ खुद अणमाप धन कमायनै लावैला । अपांरौ धन उण रै भेळमभेळ जुड़ जावैला ।—फुलवाड़ी

भेळवाड़—स० पु०—१ सम्मिश्रण ।

२ साथ या शामिल रहने की क्रिया या भाव ।

३ हिस्सेदारी, साझेदारी ।

४ फसल कटने के बाद मवेशियों को खेत में मिलने वाला घास सहित फसल का अवशिष्ट भाग ।

भेळाडणौ, भेळाड़बौ—देखो 'भेळाणौ, भेळाबौ' (रू. भे.)

भेळाड़णहार, हारौ (हारी), भेळाड़णियौ—वि० ।

भेळाड़िग्रोड़ौ, भेळाड़ियोड़ौ, भेळाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भेळाड़ीजणौ, भेळाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भेळाड़ियोड़ौ—देखो 'भेळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भेळाड़ियोड़ी)

भेळाणौ, भेळाबौ—क्रि० स० [भिळणौ क्रि० का० प्रे० रू०] १ मिश्रित कराना, मिलवाना ।

२ शामिल कराना, संग में कराना ।

३ झोंकाना ।

४ आक्रमण कराना ।

५ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला, गढ या गांव जीतकर शत्रु के द्वारा अधिकार करवाना ।

उ०—भेळाया भुरजाळ ज्यां, पांणौची गम पैठ । जिके कहांणा खोय जस, वसुधामडळ बैठ ।—बां. दा.

६ किसी खेत में खड़ी फसल को पशुओं द्वारा चराना/चरवाना ।

७ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि को पशुओं को चरवाना ।

८ नष्ट कराना, बर्बाद कराना ।

१० किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हेतु किसी को अपने दल या गुट में शामिल कराना ।

भेळाणहार, हारौ (हारी), भेळाणियौ—वि० ।

भेळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भेळाईजणौ, भेळाईजबौ—कर्म वा० ।

भेळाड़णौ, भेळाड़बौ, भेळावणौ, भेळावबौ—रू० भे० ।

भेळापौ—सं० पु०—१ एक साथ रहने की क्रिया या भाव ।

२ मैत्री, दोस्ती ।

३ हिस्सेदारी, साझेदारी ।

भेळायोड़ौ—भू० का० कृ०—मिश्रित कराया हुआ, मिलवाया हुआ. २ शामिल कराया हुआ, संग में कराया हुआ. ३ झोंकाया हुआ. ४ लूटाया हुआ, लुटवाया हुआ. ५ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला, गढ या गांव जीतकर शत्रु के अधिकार में करवाया हुआ. ६ किसी खेत में खड़ी फसल को पशुओं द्वारा चराया हुआ. ७ फसल कटने बाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि का पशुओं को चरवाया हुआ. ८ नष्ट कराया हुआ, बर्बाद कराया हुआ. ६ तुड़ाया हुआ. १० किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हेतु किसी को अपने दल या गुट में शामिल कराया हुआ.

(स्त्री० भेळायोड़ी)

भेळावणौ, भेळावबौ—देखो 'भेळाणौ, भेळाबौ' (रू. भे.)

भेळावणहार, हारौ (हारी), भेळावणियौ—वि० ।

भेळाविग्रोड़ौ, भेळावियोड़ौ, भेळाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भेळावीजणौ, भेळावीजबौ—कर्म वा० ।

भेळावियोड़ौ—देखो 'भेळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भेळावियोड़ी)

भेळियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ मिश्रित किया हुआ, मिलाया हुआ. २ शामिल किया हुआ, संग में किया हुआ. ३ झोंका हुआ. ४ लूटा हुआ ५ युद्ध के प्रसंग में कोई मोर्चा, किला, गढ़ या गांव जीतकर अधिकार में लिया हुआ. ६ किसी खेत में खड़ा अनाज पशुओं द्वारा चरा हुआ. ७ फसल कटने के बाद अवशिष्ट घास-फूस, चारा आदि पशुओं को चराया हुआ. ८ नष्ट या बर्बाद किया हुआ. ९ तोड़ा हुआ. १० किसी लक्ष्य प्राप्ति या स्वार्थ-सिद्धि हेतु किसी को अपने दल या गुट में शामिल किया हुआ.

(स्त्री० भेळियोड़ी)

भेळियौ-सं० पु०—विभिन्न प्रकार के पदार्थों का सम्मिश्रण।

भेली-सं० स्त्री०—गुड़ या किसी अन्य वस्तु की गोल पिंडी या वट्टी।

उ०—अेकर गुळ नै कुरटतां ऊंदरी गुळ री **भेली** रै हेटै आयगी।
—फुलवाड़ी

रू० भे०—भैली।

अल्पा०—भेलड़ी।

भेळौ, भेलौ-वि० (स्त्री० भेळी, भेली) १ एकत्रित, इकट्ठा।

उ०—१ तद पाथां दोनूं सरदारां री लीन्ही। सो बटका-बटका न्यारा सा चुग, **भेळा** कर, ओठियां लियां, बीजा सारां नै दाग कर पाछा आया।—सूरेखींवै कांधलोत री बात

उ०—२ भीलड़ी चुग किया **भेला**, बौ'त हित सूं बोर। प्रीत कर रघुनाथ पाया, कोय'क खांडी कोर। तौ किसोर जी किसोर, किरपा करणहार किसोर।—भगतमाळ

उ०—३ **भेळौ** तैं कीधौ भलौ, जळहर श्रौ जळजाळ। धुन मुधरी पुहमी ध्रवै, दुसह निवार दुकाळ।—बां. दा.

उ०—४ ठाकरां रै मोकळा वरसां सूं कोई बाळगोपाळ नीं हुवौ। रावळै में ठकुरांण्यां री धाड़ **भेळी** कर धाप्या पण नुवौ कांनलौ नीं वापरचौ।—दसदोख

उ०—५ जब राजा दोयां नै **भेळा** कर पूछ्यौ।—भि. द्र.

२ शामिल, साथ।

उ०—१ अर जाहरां कुंवरजी! जीमण नूं बुलावै ताहरां काळै नूं **भेळौ** बेसांणज्यौ।—नैणसी

उ०—२ राव दूदै रौ काकौ गिरधर चांदावत पण दौलताबाद दूदा **भेळौ** कांम आयौ।—नैणसी

उ०—३ नरसिंघ ऊदावत। खेतसीरै गुढै कांम आयौ, मांनसिंघ **भेळौ**।—नैणसी

उ०—४ ताहरां जमलैं कह्यौ, ठाकुरै जे कांही रै वडकुमार बेटी हुवै तौ **भेळी** सुवांणौ।—लाखै फूलांणी रौ गीत

३ सम्मिलित।

उ०—तरै राव नासनै समरा, सूरा रा गाडा था तठै आयौ। इणै **भेळा** हुय टीकौ राव सुरतांण रै काढियौ।—नैणसी

४ संकुचित।

उ०—मगरमच्छ बांदरा री बात सुण नै घणौ ई **भेळौ भेळौ** व्हियौ, पण अबै कांई कारी लागै।—फुलवाड़ी

५ संचित या संग्रहित।

ज्यूं—रुपया भेळा करणा।

उ०—१ आपरी माया रौ बिड़द बखांणती वगत वौ आपरा संखिया जैड़ा दांतां नै काढतौ फेर कै'वण लागौ—कोई नावै तौ ऊमर में इत्ता कांकरा ई भेळा नीं कर सकै जित्ता म्हैं मोती **भेळा** करिया हूं।—फुलवाड़ी

उ०—२ नगर सेठां रै ई पाछी विराज गें वरगत। गिणिया दिनां में गई उण सूं दूणी माया **भेळी** करनै बतावेला।
- फुलवाड़ी

६ समेटने की क्रिया या भाव।

ज्यूं—बिछावणा भेळा करना।

७ मिश्रित हुआ, मिश्रित।

८ छोटी नाव, डोंगी।

९ साझा, सीर।

उ०—चौमासा रा दिन नैड़ा आया तौ एक दिन हाडौ चिड़ी नै कह्यौ—चिड़ी बैन, अैस अपां **भेळी** खेती करां अे।—फुलवाड़ी

१० व्यवस्थित रूप से जमाने की क्रिया।

ज्यूं—गाबा भेळा करणा, बिखरयोड़ौ समांन भेळौ करणौ।

रू० भे०—भेरौ, भैरौ, भैळौ।

भेव—देखो 'भेद' (रू. भे.)

उ०—१ बीजइ बाजवट आइ नइ बइठी, देवांग वसत्र पहिराया देव। आगळि सखी आभरण आंणइ, भलम संगार लहइ जउ **भेव**।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ भूलै कार सताब **भेव**, भख चाहै भारै। श्री औखांणै अंगद आदि, सुणता प्रसतारै।—सू. प्र.

उ०—३ सो भरत डंड अरु करत सेव, भटकियौ बबर इम सुणै **भेव**। मुणियौ खिज दै फुरमांण मूझ, तूं नोकर न दियूं हाथ तूझ।
—सू. प्र.

उ०—४ भव तूं जांणै **भेव**, बेध्यौ मछ जिणवार रौ। देव देव सहदेव, बेल करै तौ आ वगत।—रांमनाथ कवियौ

उ०—५ दरसण हुवा न देव, **भेव** विहुणा भटकिया। सूना मंदिर सेव, जूंण गमाई 'जेठवा'।—जैतदांन बारहठ

उ०—६ संता सायक तूं सदा, दुसटां खायक देव । केसव तौ वरणन करूं, भल गुरु दीनौ भेव ।—भगतमाळ

उ०—७ दीनबंधु देवदेव, भाखत स्रुति ब्रहम भेव । जेता जग सौ अजेव, गहर गरुड़ गांम रे —र. ज प्र.

उ०—८ कळजुग में कळदार बिन, भार्यां पड़ियौ भेव । जिण घर माया जोर में, दरसण आवै देव ।—ऊ. का.

उ०—९ रज-रज हुऔ 'जगौ' भरियौ रज, भिळवा मुगत जांणियौ भेव । समहर भ्रुगट लियण दससहंसै, दस सौ करग वधाया देव ।
—जगरांमसिंघ रौ गीत

भेवणौ, भेवबौ–क्रि० स० [सं० भेदनम्] १ भिगोना, आर्द्र करना ।

उ०—१ वणतइ वर जइ पहिरीयउ वागउ, भल चोली सूंधइ सूं भेव । असडी कळा देखजै ईसर, देवां ? विराजइ देव ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ ठाकुर कह्यौ—रीड़ौ आवै है । मो नूं उठाणौ, बैठो करौ, छोतरा भेवौ ।—प्रतापमल देवड़ा री बात

२ तरबतर करना ।

भेवणहार, हारौ (हारी), भेवणियौ—वि० ।

भेवाड़णौ, भेवाड़बौ, भेवाणौ, भेवाबौ, भेवावणौ, भेवावबौ
—प्रे० रू० ।

भेविओड़ौ, भेवियोड़ौ, भेव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भेवीजणौ, भेवीजबौ—कर्म वा० ।

भेवभाव—देखो 'भेदभाव' (रू. भे.)

भेवाड़णौ, भेवाड़बौ—देखो 'भेवाणौ, भेवाबौ' (रू. भे.)

उ०—कहियौ—गाढा स-दौरा हां । खावै को फेर करावियौ है, अमल भेवाड़ियौ है ।—प्रतापमल देवड़ा री बात

भेवाड़णहार, हारौ (हारी), भेवाड़णियौ—वि० ।

भेवाड़िओड़ौ, भेवाड़ियोड़ौ, भेवाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भेवाड़ीजणौ, भेवाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

भेवाड़ियोड़ौ—देखो 'भेवायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री० भेवाड़ियोड़ी)

भेवाणौ, भेवाबौ–क्रि० स०—१ भिगोवाना, आर्द्र करवाना ।

२ तरबतर करवाना ।

भेवाणहार, हारौ (हारी), भेवाणियौ—वि० ।

भेवायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भेवावीजणौ, भेवावीजबौ—कर्म वा० ।

भेवायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ भिगोवाया हुआ, आर्द्र करवाया हुआ.

२ तरबतर करवाया हुआ.

(स्त्री० भेवायोड़ी)

भेवावणौ, भेवावबौ—देखो 'भेवाणौ, भेवाबौ' (रू. भे)

भेवावणहार, हारौ (हारी), भेवावणियौ—वि० ।

भेवाविओड़ौ, भेवावियोड़ौ, भेवाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भेवावीजणौ, भेवावीजबौ—कर्म वा० ।

भेवावियोड़ौ—देखो 'भेवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भेवावियोड़ी)

भेवौ—देखो 'भेद' (अल्पा., रू. भे)

उ०—सियाळू ऊनाळू विमळ बरसाळू सब सुखी । दयाळू हौ देवा भजन बिन भेवा द्रव दुखी ।—ऊ. का

भेस—देखो 'भेख' (रू. भे.)

भेवियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ भिगोया हुआ, आर्द्र किया हुआ. २ तरबतर किया हुआ.

(स्त्री० भेवियोड़ी)

३ देखो 'भेख' (रू. भे.)

उ०—जोगिया नै कहियौ रे आदेस । आऊंगी मैं, नाहिं रहूंगी, कर जोगन को भेस ।—मीरां

भेसज–सं० पु० [सं० भेषजं] १ औषधि, दवा । (डि. को.)

२ चिकित्सक, वैद्य ।

रू० भे०—भेखज, भैखज ।

भेसधारी—भेस को धारण करने वाला ।

उ०—स्रावक ही प्रसंसवा जोग अराधक । साध ही प्रसंसवा जोग अराधक । पिण खोटा नामां रा साथी भेसधारी अराधक नहीं ।
—भि. द्र.

भेसाद—देखो 'भैंसाद' (रू. भे.)

उ०—नींबाज मदन परमार विसनू-अरथ मंदिर करायौ जद खेजड़ला सूं भेसाद री मूरत आय विराजी ।—बां. दा. ख्या.

भेहरण–सं० पु० [सं० भयहरणः] ईश्वर, भगवान ।

वि०—भय को दूर करने वाला ।

भैं–सं० स्त्री०—भेड़ के बोलने की ध्वनि ।

उ०—गोवै चरतोड़ी पेडां थिग गेडी, भैं-भैं करतौड़ी भेडां ढिग भेडी । ऊणां ऊरणियां खरसणियां ओलै, डरड़ा नरड़ा बिण अरड़ादै टोलै ।—ऊ. का.

रू० भे०—भै ।

भैं'—देखो 'भैंस' (रू. भे.)

भैंचक—देखो 'भैचक' (रू. भे.)

भैंचकणौ, भैंचकबौ—देखो 'भैचकणौ, भैचकबौ' (रू. भे)

उ०—अजक पर धर थरक उद्रक चमक उजबक तुरक भैंचक, अटक कटकां सत्रां अंतक अरक तक ओजास । पति मुलक जदवंस दीपक कनक बगसण लियण रूपक, लखपती सक सुयण लायक जगि सरस जस वास ।—ल. पिं.

भैंचकणहार, हारौ (हारी), भैंचकणियौ—वि० ।

भैंचकिओड़ौ, भैंचकियोड़ौ, भैंचक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भैंचकीजणौ, भैंचकीजबौ—कर्म वा० ।

भैंण—देखो 'बहन' (रू. भे.)

भैंणचोद—देखो 'भैंनचोद' (रू. भे.)

भैंणड़—देखो 'बहन' (मह., रू. भे.)

उ०—जरिया हंदौ पेचौ मेरै सायब तांई ल्याई रे। लंपाझंपा रौ चूनड़ तेरी **भैंणड़** तांई ल्याई रै।—लो. गी.

भैंन—देखो 'बहन' (रू. भे.)

उ०—छऊं **भैंन** छोटी दहूं ग्रोड़ छाजै, बिचै पाट राजीव माजी विराजै। खड़ौ लांगड़ौ बीरबीराधि खेतू, करै रागड़ां छागड़ां राह केतू।—मे. म.

भैंफोड़—देखो 'भूफोड़' (रू. भे.)

भैंरू—देखो 'भैरव' (रू. भे.)

उ०—चंडी हाक बागतां घूमंडी **भैंरू** डाक चोडै, नार-तंडी तमासै लागतां गैरा माग। मंडी तोपां नागणी जागतां ग्रायौ रोस माथै, नबीपरां 'पीथळै' उडंडी काळौ नाग।—जसौ ग्राढौ

भैंस-सं० स्त्री० [सं० महिष] १ गाय जैसा ही दूध देने वाला एक भारी डील-डौल वाला पशु।

उ०—कीच निहारचां कनैं, **भैंस** रौ चळणूं भारी। पैल बळद पग प्रगट, खिसै नह दीठां खारी।—ऊ. का.

२ ग्राक या मदार का फल जिसमें रूई के ग्राकार के रेशे निकलते हैं ग्रौर जिन पर ग्राक के बीज चिपके रहते हैं।

३ लाक्षणिक ग्रर्थ में काली व मोटी ग्रौरत।

४ क्रूर।

रू० भे०—भंइस, भइस, भेंइसि, भैं', भैंसि, भैंसी, भै', भैंस, भैंसी।

ग्रल्पा०—भैंसड़ली, भैंसड़ी।

भैंसड़ली, भैंसड़ी—देखो 'भैंस' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—**भैंसड़ियां** दस बीस सुवाड़ी बाखड़ी, चर चर लीला घास, वाड़ा में रहे खड़ी। चोखा चावळ ग्राण सकर में ग्रोलणा। एता दे करतार तौ फेर नईं बोलणा।—ग्रज्ञात

भैंसड़ौ—देखो 'भैंसो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

भैंसपूंछौ-सं० पु०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष जिसकी पूंछ पृथ्वी को छूती हो। (शा. हो.)

रू० भे०—भैंसापूंछौ।

भैंसागूगल-सं० पु०—एक प्रकार का गूगल विशेष। (ग्रमरत)

रू० भे०—भैंसागूगल।

भैंसात-सं० पु०—विसायती।

उ०—तंबोली सुधार ठीक **भैंसात** ठंठारू। नव नारु इण नांम कहै हिव पांचै कारू।—ध. व. ग्रं.

रू० भे०—भैंसात।

भैंसाद-सं० स्त्री०—माहीषासुर मर्दनी, एक देवी का नाम।

रू० भे०—भैंसाद।

भैंसापाज-सं० स्त्री०—महिषासुर नामक राक्षस को मारने वाली देवी, दुर्गा।

भैंसापूंछौ—देखो 'भैंसपूंछौ' (रू. भे.)

भैंसामाता-सं० स्त्री०—बड़े-बड़े दानों का शीतला रोग।

भैंसालसण-सं० पु०—एक प्रकार का गहरा लाल दाग या निशान जो प्रायः गाल, गर्दन या पेट पर होता है।

भैंसासुर-सं० पु०—महिषासुर नामक एक राक्षस।

भैंसि, भैंसी—देखो 'भैंस' (रू. भे.)

भैंसौ-सं० पु० [सं० महिष] १ भैंस नामक पशु का नर, महिष।

उ०—१ कजळी वन कुंजर घणा, ग्रग **भैंसा** ग्रगराज। पसु पंखी सब भांत कै, ग्रेक ग्रेक सिरताज।—गजउद्धार

उ०—२ भरै पत्र **भैंसां** ग्रजा रत्र भोगै, ग्रछक्कां छकां छाक दारू ग्ररोगै।—मे. म.

२ मदार वृक्ष का फल।

३ लाक्षणिक ग्रर्थ में काळा व मोटा मनुष्य।

रू० भे०—भइंसौ।

ग्रल्पा०—भैंसड़ौ, भैंसड़ौ।

भैं-सं० पु० [सं०] १ नक्षत्र, तारा।

२ देखो 'भैं' (रू. भे.)

३ देखो 'भय' (रू. भे.)

उ०—हुवै मुवां बिन मुकत नंह, भैं बिन हुवै न प्रीति। सुधा पियां बिन ग्रमरपद, ह्वै न दिया बिन क्रीत।—बां. दा.

उ०—२ उपना दांणव दोय ग्रजीत, भयै तिण देव थया **भैं**-भीत। पइट्ठा ग्रांण तुहाळी पूठ, उबार बिसन्न कहै सुर ऊठ।—ह. र.

भैंखज—देखो 'भेसज' (रू. भे.)

उ०—जग कायरि काळख झड़ै, घण खाधां रण घाव। भखियां कड़वी **भैंखजां**, तूटै तण रौ ताव।—रेवतसिंह भाटी

भैंड़ौ-वि० (स्त्री० भैंड़ी) १ भयंकर, डरावना, खतरनाक, बुरा।

उ०—१ हा उण इच्छा पर भिच्छा गत हांणीं, जग में दैविच्छा किणहीं नह जांणीं। बादळ बीजळियां नभ में नहिं नैड़ी, भेजी भणणायौ भळकी पुल **भैंड़ी**।—ऊ. का.

उ०- २ निरगुण ग्रगविद्या छाई जग जिग्णु। बिद्या बीसरगौ सदगुण बस विरणु। हा हा जगदीस्वर **भैंड़ी** पळ हेरी, गाफल दुनियां पर ग्रैड़ी पुळ गेरी।—ऊ. का.

रू० भे०—भेड़ौ।

भैंचक-वि०—१ भौंचक्का, चकित, विस्मित।

२ घबराया हुग्रा।

३ भयभीत, डरा हुग्रा।

उ०—१ रघुवर तित रहयाजी, मोटी कर मया। **भैंचक** खळ भयाजी, गहबळ तज गया।—र. रू.

उ०—२ छुडावण घणां खपियौ दिली छातपत, रुक **भैंचक** हुवा देख दोय राह। पुरांणा नवा 'बीका' तणा परवाड़ा, सीस बांधै गयौ जंगळ-पातसाह।—द. दा.

४ महान्, बड़ा, प्रचण्डकाय ।

५ भयंकर, डरावना ।

सं० पु०--यह एक भयंकर जलजन्तु होता है, जो मौका पाकर भैंस या घोड़े जैसे पशु को अपने तन्तु के बल दबा लेता है। यह आकार में गोल होता है। जब यह जल में चक्कर काटता है तो पानी भांवरे काटने लग जाता है। इसके चारों ओर कई तंतू होते हैं, जिनसे यह अपने शिकार को फंसा लेता है। यह जानवर प्रायः चम्बल नदी में भैंसरोड़ के पास पाया जाता है।

रू० भे०—भयचक, भैंचक्क, भैंचक्क, भैचक्ख ।

भैंचकणौ, भैंचकबौ-क्रि० अ०—१ भयभीत होना, डरना।

उ०—१ मौहरै चडियां मयंद रै, **भैंचक** जाय भड़ाक। गैंवर भूलै गाळबौ, चीसै चढ चित चाक।—बां. दा.

उ०—२ जळनिध सहल जुग्रांण, 'सांमा' तू वेड़ा सजै। **भैंचकि** पड़ै भगांण, मिसर अरब ऐराक मभ।—बां. दा.

उ०—३ छलंग बाछरू घरू न उच्छरैं चरैं चिरैं। फलंग **भैंचकी** थकी न नैचकी चकी फिरैं।—ऊ का.

२ संभ्रमित होना।

उ०—रीझै सांभळ राग, भीजै रस नह **भैंचकै**। नैंडौ आवै नाग, पकड़ीजै छाबड़ पड़ै।—बां. दा.

३ भौंचक्का होना, स्तंभित होना।

४ चौंकना।

५ घबराना।

भैंचकणहार, हारौ (हारी), **भैंचकणियौ**—वि०।

भैंचकिग्रोड़ौ, भैंचकियोड़ौ भैंचक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भैंचकीजणौ, भैंचकीजबौ—भाव वा०।

भैंचक्कणौ, भैंचक्कबौ—रू० भे०।

भैंचकियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ भयभीत हुवा हुआ, डरा हुआ. २ संभ्रमित हुवा हुआ. ३ भौंचक्का हुवा हुआ, स्तंभित हुवा हुआ. ४ चौंका हुआ. ५ घबराया हुआ.

(स्त्री० भैंचकियोड़ी)

भैंचक्कणौ, भैंचक्कबौ—देखो 'भैंचकणौ, भैंचकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हुवौ सोच आसुरां हुवौ मद सोच दिलेसर। हुवा देस **भैंचक्क** हुवा अवनेस भयंकर।—रा. रू.

उ०—२ दड़ीदड़ी तूट माथा कमंधां पांवंडा देवै, रिमां सीस खाथा सार बजावै आरांण। हैकंपै कायरां प्रांण छूटगा वीरांण हांसै, **भैंचक्कै** भूलोक रत्थां थंभायौ सु भांण।—बादरदांन धधवाड़ियौ

भैंचक्कणहार, हारौ (हारी), **भैंचक्कणियौ**—वि०।

भैंचक्किग्रोड़ौ, भैंचक्कियोड़ौ—भू० का० कृ०।

भैंचक्कीजणौ, भैंचक्कीजबौ—भाव वा०।

चक्कियोड़ौ—देखो 'भैंचकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भैंचक्कियोड़ी)

भैंण—देखो 'बहन' (रू. भे)

उ०—माळीड़ा री डीकरी यै तू छै धरम की **भैंण**, तेरै कनौकर ढोलौ नीसरचौ यै, किस यै उमावै जाय बाई म्हानै भेद बता दै यै।—लो. गी.

भैंणड़ी—देखो 'बहन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आई थाकी माकी जाई **भैंणड़ी** जी राज जी। पीया धोय धोय जी क पगल्या पीव।—लो. गी.

भैंणचोद—देखो 'भैनचोद' (रू. भे.)

भैं'णौ—देखो 'वैं'णौ' (रू. भे.)

भैंत—१ देखो 'भीति' (रू. भे.)

उ०—नही तू काळ नहीं तू क्रम्म, नहीं तू व्याळ नहीं तू ब्रह्म। नहीं तू देव नहीं तू दैत, नहीं तू भैंव नहीं तू **भैंत**।—ह. र.

२ देखो 'वैं'त' (रू भे.)

भैंन—देखो 'बहन' (रू. भे.)

उ०—बाई जैसिंघजी की 'अभा' नैं विवाही, अभैसिंघजी **भैंन** व्याही जैसा ही।—शि. व.

भैंनड़ी—देखो 'बहन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आई तेरी मां की जाई **भैंनड़ी** जी राज, ओ बीरा रोय रोय नूक समद भी, कोल बीर ऊपर चढ हैलौ दियौ जीं राज, यै बाई रूसडी नणद जांनै द्यांय।—लो. गी.

भैंनचोद-सं० पु०—अपनी बहन से कुकर्म करने वाला (गाली बाजारू)।

रू० भे०—भैंणचोद, भैंणचोद।

भैंभंग-वि० [सं० भय+अंग] १ भयभीत।

उ०—है हींस हुअं, **भैंभंग** भुअं, । भुज फौज भडां, घण रूप घडां।
—गु. रू. बं.

२ देखो 'भूजंग' (रू. भे)

भैंभीत—१ निर्भय, निडर।

उ०—१ गोळा गावै गीत, राग सुणावै 'रांण' नै। 'भारत' रौ **भैंभीत**, आछौ लड़ै 'उम्मेदियौ'।—अज्ञात

उ०—२ चूंडा नावै चीत, काचर काळाऊ तणा, भूप भयो **भैंभीत**, मंडोवर रै मा'ळियै।—आल्हौ बारहठ

२ जबरदस्त, बड़ा।

उ०—१ 'गजन' सुतण साह छळ गाढौ, भांजै भुरज उरड़ **भैंभीत**। पांण सुजड़ ऊपाड़ै पोगर, जोरावर अेही रिण जीत।
—महाराजा जसवंतसिंघ रौ गीत

उ०—२ रजी धोम सूं वींटिया गज्ज राजै, वडै अन्नड़ै जांणि रींछ विराजै। भयाणंक **भैंभीत** सोभंत भारं, क्रमै जांणि आधी निसा अंधकारं।—वचनिका

३ देखो 'भयभीत' (रू. भे.)

भैंभेकार-सं० पु०—हाहाकार।

उ०—'जगडू' जग जीवाड़ियौ, भांजै भैभैकार । कीधौ जै जैकार अन, बागौ राय सधार ।—बां. दा.

भैमी—देखो 'भीमी' (रू. भे.)

भैं'मी—देखो 'वहमी' (रू. भे.)

भैया-सं० पु०—भाटी वंश की एक शाखा जो मुसलमान हो गए हैं ।

भैयौ—देखो 'भाई' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बीराजी मनावै मीरां थैं मांनों, **भैया** री पत राख, भक्ति छोडौ हरिनांम की ।—मीरां

भैरवांण—देखो 'भैरव' (मह., रू. भे.)

भैरव-सं० पु० [सं०] १ तेल और सिंदूर से पुजे जाने वाले एक देवता, जिनकी उत्पत्ति शिव से मानी जाती है ।

वि० वि०—भैरव की उत्पत्ति के विषय में ऐसी पौराणिक कथा है कि एक बार ब्रह्मा और विष्णु गर्वोद्धत हुए और उन्होंने वाद-विवाद में शिव की निंदा करके उनका अपमान किया । तब भगवान रुद्र की कृपा से एक महान् ज्योति प्रकट हुई, जिसमें से महाकाल भैरव की उत्पत्ति हुई । इस भैरव ने अपनी अंगुली के नाखून से ब्रह्मा के पांचवे मुख को, जिसने शिव की निन्दा की थी काट डाला । परिणामत: वह सिर भैरव के हाथ के चिपक गया । ब्रह्मा का सिर कटने के साथ एक ब्रह्म-हत्या नामक कन्या का जन्म हुआ, जिसने भैरव का पीछा किया । चूंकि शिव ने भैरव को काशी का अधिपति बनाया, अतः वह उस कन्या से पीछा छुड़ाने के लिए नाना तीर्थों में घूमता हुआ काशी पहुंचा । वहां वह कन्या पाताल में प्रवेश कर गई एवं भैरव के हाथ से भी सिर छूट गया, अतः यह स्थान कपालमोचनतीर्थ नाम से प्रसिद्ध हुआ । ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार भगवान श्री कृष्ण के दक्षिण नेत्र से भयंकर, संहार, काल, असित, क्रोध, भीषण, महाभैरव एवं खट्वांग नाम के अष्टभैरव उत्पन्न हुए । कई लोगों का मत है कि वीरभद्र और भैरव एक ही हैं परन्तु वास्तव में दोनों अलग-अलग हैं । वीरभद्र के अनुयायी वीरों की संख्या ५२ है एवं भैरव ६४ माने गए हैं । वैसे मुख्यत: काला और गोरा दो प्रकार के भैरव माने गए हैं जिनकी पूजा शनिवार या रविवार को की जाती है तथा इनका स्वरूप उग्र माना जाता है एवं साथ में दो कुत्ते ईनके आगे सेवक के रूप में माने जाते हैं ।

६४ भैरवों की नामावली निम्न प्रकार है—१ उरध केस (उर्ध्व-केश) । २ विरूपाक्ष । ३ घोर रुद्रिण । ४ रक्त नेत्र । ५ पिंगाक्ष । ६ ······ । ७ अस्वर । ८ स्वीय कुंभ या स्वयंभुव । ९ इडाचार । १० इंद्र मूरति (इन्द्र-मूर्ति) । ११ कोलाक्ष । १२ उपपाद । १३ रितुत्सव (ऋतूत्सव) । १४ सिद्धेय । १५ वलिक (वलिक:) । १६ नीलपाद । १७ एक दंस्ट्र (एक दंष्ट्रक:) । १८ इरापति । १९ अघहारी । २० विघ्नहारी । २१ अंतक । २२ उरधपाद (उर्ध्वपाद:) । २३ कंबल (कम्बल:) । २४ खंजन (खंजन:) । २५ खर (खर:) । २६ गोमुख । २७ जंघाल (जंघाल:) । २८ गणनाथ (गणनाथ:) । २९ वारण । ३० जटाल । ३१ अजटाल । ३२ ···· । ३३ रिकार (ऋकार:) । ३४ हठकारी ३५ टंकपाणि । ३६ खणि (खणि:) । ३७ ठंठंकण (ठंठंकण:) । ३८ जंबर (जंबर:) । ३९ स्फुलिंग । ४० तडिद्रुचि (तडिद्रुचि:) । ४१ ······ । ४२ दतुर (दंतुर:) । ४३ घननाद । ४४ नदक (नन्दक:) । ४५ फेत्कारकारी । ४६ पंचास्य । ४७ बरबरी (बर्बरी) । ४८ भीमरूपक (भीमरूपक:) । ४९ भग्नपक्ष (भग्नपक्ष:) । ५० कालमेघ (कालमेघ:) । ५१ भुवान । ५२ लम्बोस्ठ (लम्बोष्ठ:) । ५३ रौर । ५४ वणिज । ५५ सुरजातिकर । ५६ हुहुक । ५७ पाताल-रक्षक । ५८ महालक्ष: । ५९ ज्वालाक्ष: । ६० वसनोस्थित: । ६१ घंटारव । ६२ दुरारोह । ६३ मणिभद्र । ६४ रसाध्यक्ष ।

मतान्तर के अनुसार ये ६४ नाम निम्नांकित ८ भागों में विभक्त हैं ।

(१) १ असितांग । २ विशालाक्ष । ३ मार्तण्ड । ४ मोदकप्रिय । ५ स्वच्छंद । ६ विघ्नसंतुष्ट । ७ खेचर । ८ सचराचर ।

(२) १ रूरू । २ क्रोध । ३ जटाधर । ४ विश्वरूप । ५ विरूपाक्ष । ६ रूपधर । ७ वज्रहस्त । ८ महाकाय ।

(३) १ चंड । २ प्रलयांतक । ३ भूमिकंप । ४ नीलकंठ । ५ विष्णु । ६ कुलपालक । ७ मुण्डपाल । ८ कामपाल ।

(४) १ क्रोध । २ पिंग लक्षण । ३ अभ्ररूप । ४ धरापात । ५ कुटिल । ६ मंत्रनायक । ७ रुद्र । ८ पितामह ।

(५) १ अनंतभैरव । २ वटुकनायक । ३ शंकर । ४ भूतवैताल । ५ त्रिनेत्र । ६ त्रिपुरान्तक । ७ वरद । ८ पर्वतवासी ।

(६) १ भीषण । २ भयहर । ३ सर्वज्ञ । ४ कालाग्नि । ५ महारुद्र । ६ दक्षिण । ७ मुखहर । ८ अस्थिहर ।

(७) १ कपाल । २ शशिभूषण । ३ हस्तिचर्माम्बरधर । ४ योगीश । ५ ब्रह्मराक्षस । ६ सर्वज्ञ । ७ सर्वदेवेश । ८ सर्वभूतहृदिस्थित ।

(८) १ संहारभैरव । २ अतिरिक्तांग/कालाग्नि । ३ प्रियवर । ४ घोरनाद । ५ विशालाक्ष । ६ योगीश । ७········ । ८ ······ ।

२ शिव, महादेव । (डिं. को.)

३ शिव के गण, जो उन्हीं के अवतार माने जाते हैं ।

४ साहित्य में भयानक रस ।

५ ताल के सात मुख्य भेदों में से एक ।

६ संगीत में एक राग का नाम ।

उ०—छतीस राग छाजती, निहाव धाव नोबती । भजै विभास भैरवं, रळी कळी कळी रवं ।—रा. रू.

७ एक प्रवार का बढिया वस्त्र । (सभा)

उ०—चीणी बिलींदी जरबाफ, सुखम वस्त्र बुलबुल, चसमां, अवल कथीपा, अटांण वस्त्र, टसरीया भैरव, नारी कुंजर, सखरां सेलां, सीलूथांन, घणा मुगटा ।—व. स.

८ एक प्रकार की चिड़िया विशेष, जिसके रात्रि में शकुन लिए जाते हैं।

वि० [सं० भै+रव] १ भीषण शब्द वाला।

२ जो देखने में भयंकर हो, भयानक।

३ घोर विनाश करने वाला।

४ बहुत उग्र, तीव्र या विकट।

रू० भे०—भइरव, भयरव, भेरव, भेरूं, भेरू, भैरवौ, भैंरू, भैरूं, भैरूंजी।

अल्पा०—भैरवौ, भैरूड़ौ।

मह०—भैरवांण।

भैरवझांप, भैरवझांफ-सं० स्त्री०—पहाड आदि बहुत ऊंचे स्थान से मनोकामना की सिद्धि के लिए महादेव या भैरव का नाम लेकर छलांग लगाने की क्रिया।

रू० भे०—झांपभैरव, झांफभैरव।

भैरवझोळी-सं० स्त्री० १ दशनामी संन्यासियों द्वारा भिक्षा मांगने का एक प्रकार का विशेष ढंग जिसमें भीख मांगते समय यदि कोई घर छूट जाता है और वह भीख देना चाहता है तो भिक्षुक उल्टे पैरों उस घर पर जाता है न कि घूमकर।

२ इस प्रकार की भिक्षा की झोली।

रू० भे०—भैरूंझोळी।

भैरवमस्तक-सं० पु०—संगीत में ताल के ६० मुख्य भेदों में से एक।

भैरवा-सं० पु०—पक्षी विशेष। (सभा)

भैरवी-सं० स्त्री०—१ तांत्रिकों के अनुसार एक प्रकार की देवी विशेष जो महाविद्या की मूर्ति मानी जाती है।

२ चामुण्डा, दुर्गा, देवी।

उ०—१ भवांनी नमौ दच्छ लोकेस छोनी, भवांनी नमौ जोग निद्रा अजोनी। भवांनी नमौ जोगनी जुथ्थ सथ्थी, भवांनी नमौ भैरवी बीस हथ्थी।—मे. म.

उ०—२ देवी कौमारी चामुंडा विजैकारी, देवी कुबेरी भैरवी क्षेमकारी। देवी अगसं व्रख्ख हस्ती मयंखे, देवी पंख केकी गरुड धिरट पखे।—देवि.

३ उल्लू से मिलती जुलती एक प्रकार की चिड़िया का नाम। (कोचरी)

उ०—उणी वखत डावी तरफ नदी री ढा' पर आयोड़ा गोगा खेजड़ा पर बैठ्योड़ी भैरवी बोली—कैं ऽऽ क-कैं ऽऽ क-चरर चरर चरर! रात रा पै'ला पौ'र में वैरण इसी नी बोली के जांणे भाठा में करवत चाली व्है।—रातवासौ

४ पार्वती।

५ संगीत में भैरव राग की पत्नी, जो प्रातःकाल गाई जाती है।

६ एक प्रकार का बढिया वस्त्र।

रू० भे०—भइरवी, भयरवी, भईरवी।

भैरवीचक्र-सं० पु०—तांत्रिकों का वह अनुष्ठान जो कुछ विशिष्ट तिथियों, नक्षत्रों व समय में किया जाता है, जिसमें चक्र में बैठकर देवी पूजन व मद्यमान करते हैं।

भैरवेस-सं० पु० यौ० [सं० भैरव+ईश] शिव, महादेव।

भैरवौ—देखो 'भैरव' (अल्पा. रू. भे.)

उ०— खांडा हत्थउ भैरवौ रै, कर डमरू नै डाक। तिण अवसर प्रगटचौ तिहां, आव्यौ मारंतौ हाक।—स्रीपाल

भैरस-सं०पु० [सं०भय+रस] भय उत्पन्न करने वाला साहित्यिक रस।

उ०—अपछरा सिंगार रस किआ। नारद हास रस किआ। काइ-रे भैरस बीभच्छरस किआ। सुरे सांतरस अदभुतरस किआ।

—र. वचनिका

भैराहर-सं० पु०—ऊंठ।

उ०—१ बुगर बलोच बंबाळ, जूंग जाळोरी जब्बर। अजगर कंध अझौझ, अगुट मुदगर भैराहर।—सू. प्र.

उ०—२ 'नाहर' सुत नरनाह, कहै हाजर छक कारण। घैसाहर सिणगार, दुती भैराहर दारण।—सू. प्र.

उ०—३ सीसा भार सतोल, भार बांणां गाडाभर। गंज भार गोळियां, भार गोळां भैराहर।—सू. प्र.

भैरिपु-सं० पु० [सं० भयरिपु] ईश्वर, परमात्मा।

उ०—पार ब्रह्म दुख हरण, प्रांण तहां मन लाय। भेद सहत भैरिपु भजौ, हरि गाईजै त्युं गाय।—ह. पु. वां.

भैरूं—देखो 'भैरव' (रू. भे.)

उ० तणं तार सैतार बीणादि तंत्री, बणं बीस बत्तीस भैरूं बजंत्री। डफां मादळां नाद डैरूं डमंकै, धरा ब्योम पाताळ धूजै धमंकै।—मे. म.

भैरूंजी-सं० पु०—१ एक राजस्थानी लोक गीत।

२ देखो 'भैरव' (रू. भे.)

उ०—भैरूंजी ऊंचै सै धोरै थारौ देवरौ, भैरूंजी, धजा अै फरूकै असमांन, सेवगां की, औ बाबा, भली करौ।—लो. गी.

भैरूंझोळी—देखो 'भैरवझोळी' (रू. भे.)

भैरूंडौ—देखो 'भैरव' (अल्पा., रू. भे.)

भैंरौ—१ देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भेळौ' (रू. भे.)

उ०—मोहरै महरांण रै दळां रा महाबळ, भुजा बळ वनपती कीध भैरौ। राजि रा पमाड़ा हुबैं सह रीधिया, बींधिया कवाडां जहीं बैरौ।—नगराज खीची रौ गीत

(स्त्री० भैरी)

भैली—१ देखो 'बहल' (रू. भे.)

२ देखो 'भेली' (रू. भे.)

भंळौ—देखो 'भेळौ' (रू. भे.)
उ०—हमैं सेतरांम अठै रहै चाकर-वासै अर साथ **भंळौ** करै, घोड़ा भंळा करै, वडै सैमांन सूं रहै।—नैणसी

भंस—देखो 'भैंस' (रू. भे.)
उ०—बूंदी में सवाईरांम ओसवाल चरचा करतां भिक्खु कह्यौ—गाय **भंस** रा मूंहडा आगै घणौ चारी नाख्यां ओगाळी करै।
—भि. द्र.

भंसड़ौ—देखो भैंसौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ बलि चाढ़े बोकड़ा, रुधर **भंसड़ा** जरूरं। वदन चोळ करि विखम, लोह कांबिया सिंदूरं।—सू. प्र.
(स्त्री० भंसड़ी)

भंसागूगळ—देखो 'भैंसागूगळ' (रू. भे.)

भंसागोह—देखो 'पाटड़ागोह'।

भंसात—देखो 'भैंसात' (रू. भे.)

भंसाद—देखो 'भैंसाद' (रू भे.)

भंसी—देखो 'भैंस' (रू. भे.) (अमरत)

भंहरण-सं० पु० यौ० [सं० भय+हरण] १ ईश्वर, परमात्मा।
(ह. नां. मा.)
उ०—परम रीति पर प्रीति, परमनिधि आंपण स्वांमी। जुराकाळ **भंहरण**, करण निरभय निज नांमी।—ह. पु. वां.

भों—१ देखो 'भव' (रू. भे.)
उ०—आयौ धींग दूढाहड़ आळौ, भोंरा सीस लो त्यों भांनि। **भों** की आस छोड़ द्यो भोम्यां, छावो कहूं डूंगरां छांनि।
—राजसिंघ भाखरोत री गीत
२ देखो 'भय' (रू. भे.)

भोंगरी-सं० पु०—ऊंट के चरने का एक प्रकार का घास, जो जैसलमेर में होता है।

भोंदू-वि०—१ बेवकूफ, मूर्ख।
उ०—१ भूला **भोंदू** फेर मन, मूरख मुग्ध गंवार। सुमिर सनेही आपना, आत्मा का आधार।—दादूबांणी
उ०—२ सुण समझै कोई सुघड़ सयांणौ, **भोंदू** सुण भमजावै। आयां साध न देवै उत्तर, वांछित वस्तु बतावै।—ऊ. का.
२ सीधा-सादा, भोला।
रू० भे०—भांदू, भोदू।

भोंपणियौ—देखो 'भांपणौ' (अल्पा., रू. भे.)

भोंपणी—देखो 'भांपणौ' (अल्पा,. रू. भे.)

भोंपणौ—देखो 'भांपणौ' (रू. भे.)

भोंपू-सं० पु०—१ फूंक से बजने वाला तुरही के आकार का बाजा।
२ कारखाना या फैक्ट्री में समय सूचित करने हेतु बजाई जाने वाली सीटी।
३ मोटर आदि वाहनों में यात्री को सचेत करने हेतु बजाया जाने वाला बाजा, हॉर्न।

भोंय—देखो 'भांय' (रू. भे.)
उ०—मुंहडा थी यों वायक बोल्यौ। अबला असत्री नैं लियां घणी **भोंय** अहीर तूं आयौ छै।—वेलि

भोंरामांटी—देखो 'भंवरामाटी' (रू. भे.)

भोंवळ—देखो 'भंवळ' (रू. भे.) (अमरत)

भोंसले-सं० पु०—मराठों के राजकुल की एक उपाधि।

भोंह—देखो 'भ्रू' (रू. भे.) (डिं. को)

भो-अव्य०—१ हे! अरे!
उ०—मित्र पिता को किसकी माता, **भौ** सुत बनिता किसके भ्राता। जग सब दीखत आता जाता, सबका मन दुख मांहि समाता।—ऊ. का.
२ देखो 'भय (रू. भे.)
उ०—१ दिवस केता दिल दराजै गुमर गरिया, आय गाजैं रोस ताजैं रोपिया। **भो** तेग भाजैं सयल साजैं तखत राजैं तेह, वर कंठ वांमा धरी धांमा किता कांमा बद किया। भय मेट भारी धनुमधारी अरज सारी थेह।—र. रू.
उ०—२ तारै ढोलोजी बोलिया, म्हांने तौ **भो** कोई नहीं।
—ढो. मा.
३ देखो 'भव' (रू. भे.)
उ०—लंगर में बैठ'र जीमै, कतार में कासण मांजे, नूंवा डरता रे'वै, वोदां रौ **भो** भाजै। अफसर रै हुकमां हालै जको मोज सूं मालै।—दसदोख

भोई-सं० पु० (स्त्री० भोयण) १ पालकी या डोली उठाने का पेशा करने वाली एक जाति या इस जाति का व्यक्ति, कहार।
(मा. म.)
उ०—१ **भोई** मेहर अजइ ठाठिया, चालइ कहार कमांणी। च्यारि सहस साथइ सांचरीया, वहइ पखाली पांणी।—कां. दे. प्र.
उ०—२ चढतां **भोई** नूं कह्यौ—'रै, पनोतै रै वाहळै भूंजाई करिज्यो।'—नैणसी
उ०—३ **भोई** खोई भरडीया, सोनी नई सूतार। व्यवसाईया साहू जातिना, जे जोईइ तिणी वारि।—मा. कां. प्र.
२ हाथी पर अम्बारी आदि कसकर तैयार करके महावत के सामने लाने वाला व्यक्ति।
उ०—१ हाथियां रै बांट खरच रा दांम लेखौ कर दिया। महावत **भोई** साथै दिया—नैणसी
३ खरादने वाला, खरादी।
४ भोजन करने वाला, भोजी।
५ तीर के फल और लकड़ी को जोड़ने वाला लोहे का छल्ला।
उ०—नाहर डैर रा भील सिंदूर री आड कियां, कमरै घुघरमाळा बांधियां बैस नै पगां धुणां में पाल तीर चलावै, झगड़ै गाढा

अलवांणा पगां अेक वेंत च्यार आंगळ भाल तीर री, अढाइ आंगळ **भोई**।—बां. दा. ख्या.

भोक्ता-वि० [सं० भोक्तृ] १ खाने वाला, भोजन करने वाला।

२ उपभोग करने वाला।

३ भोग करने वाला।

सं० पु०—स्त्री का पति, स्वामी।

भोग-सं० पु० [सं० भोगः] १ भोगने की क्रिया या भाव।

२ इच्छा-पूर्ति या प्रसन्नता की दृष्टि से अभीष्ट या सुखद वस्तु को अपने मनमाने ढंग से उपयोग में लाने की क्रिया या भाव।

उ०—करि सनांन ध्रम करै, धरै प्रम ध्यांन स्यांमध्रम। काया जोग अनेक, **भोग** माया तजि विभ्रम।—सू. प्र.

३ उपयोग।

उ०—जै थां लोगां नै सुखी होवण री थोड़ो घणी चावना है तौ आज सूं इण बात रौ प्रण करलौ कै हाथां कमायां बिना थें किणी चीज रौ **भोग** नीं करौला।—फुलवाड़ी

४ देवी देवताओं के उपभोगार्थ मूर्ति के सामने रखा जाने वाला भोज्य पदार्थ, नैवेद्य।

उ०—१ धूप दीप नैवेद्य आरती, सब ही सौंज लै आ री। बहु विध सूं पकवांन बणाकर, करो **भोग** की त्यारी।—मीरां

उ०—२ है! उठौ सासूजी रांधौ लापसी, है देवता रै **भोग** लगाड़। उठौ बाइसा बांधौ राखड़ी, थारां वीरोसा जतन कराव।—लो. गी.

क्रि० प्र०—लगाणी, मेलणी।

५ भोजन करने या खाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—लागणी।

६ भोज्य पदार्थ, खाना, भोजन।

उ०—१ अन धन जिण घर आसरौ, भला अरोगे **भोग**। पइसौ हुवै न पास में, लूलू करदै लोग।—ऊ. का.

उ०—२ क्यूं कांम कमावै, तन मन तावै, खावै **भोग** खटंदा है। बिदवाहां बासै सोगन सांसै, कासै रोग कटंदा है।—ऊ. का.

७ वह अवस्था जिसमें किसी भूमि या संपत्ति को अपने अधिकार में रखकर उससे पूर्ण लाभ उठाया जाता है।

८ कब्जा, भुक्ति।

९ आराम, चैन, ऐश।

१०—संभोग, मैथुन।

उ०—संझ्या समै रावजी महिलां पधारीया तरै अपछरा मुजरो करै नै सीख मांगी। अबै तौ साहिबजी मोनै लोकां दीठी। राज पीण हकीगत कीही सो म्हैं तौ जावसूं। रंग **भोग** विलास करनै अलोप हुई।—वीरमदे सोनगरा री बात

११ संभोग शक्ति।

उ०—**भोग** बधावण भखौ, भोग फिर दूर भमैला, रोग मिटावण रखौ, जनम रौ रोग जमैला। सोग हटावण सधौ, सोग में पड़िया सिड़स्यौ, लोक रीत सूं लधौ, लोक सूं चिड़स्यौ लड़स्यौ। ओखदि पिछांण खावौ अमल, ओखदि है नह अकल रौ, असल रौ मजौ क्यूं और है, निकमूं आनंद नकल रौ।—ऊ. का.

१२ घर, मकान।

१३ निवास-स्थान।

उ०—गढ़ चितौड़ नां रहां, नहीं रहण का जोग। वसस्यां रूडी द्वारिका, जहां हरि भगतां का **भोग**।—मीरां

१४ सुख।

उ०—सता समाध अगम घर सोऊं, दस दिस रांम रमैयौ दोऊं। जगत **भोग** सपनां सम जोऊं, हमहीं गाय सिंघ मैं होऊं।—ऊ. का.

१५ दुख, कष्ट।

१६ पाप या पुण्य का वह फल जो सहन किया जाता है।

१७ किसी काम से, बात से प्राप्त होने वाला फल।

१८ किराया, भाड़ा।

१९ राज्य कर।

उ०—१ पत्र जेण लिखौ इण विध प्रियोग, भेजौ सताब खुरसांण **भोग**। मो पाटि बइट्टां पछौ माल, उपजेस सकळ भेजौ अपाल।—सू. प्र.

उ०—२ आवै दाव कळहण दुनियांन सौह ऊचरै, बडी धर राव रूकां विभाड़ी। उधारी राड़ि रजपूत आंबेरि धरि, 'पहाड़ी' 'कांमां' ले **भोग** पाड़ी।—फतैसिंघ नरूका रौ गीत

२० जागीरदार द्वारा कर-स्वरूप लिया जाने वाला कृषि की उपज का कुछ निश्चित अंश यां हिस्सा, हासिल।

उ०—१ उदैपुर री हवेली रा गांव नजीक तिण रौ हैंसो **भोग** रौ वरसाळी हैंसो लाग सूधौ आध उनाळी हैंसो आध पड़ै।—नैणसी

उ०—२ सवळो भरीजै तद हासल इजाफा हुवै। काठा गोहूं मण १५००० बीज बावै तिकै साठां नीपजै। बीज बावै तितरौ **भोग** आवै। बीजी लागत घणी छै।—नैणसी

२१ ज्योतिष में, सूर्य आदि ग्रहों का मीन, मेष आदि राशियों में अवस्थित रहने का काल या समय।

२२ सांप का फन।

उ०—१ बंबी अंदर पोढियौ, काळौ दबकै काय। पूंगी ऊपर पाधरौ, आवै **भोग** उठाय।—वी. स.

उ०—२ दूजा गज रौ पोगर अरिसिंघ री पाघ ऊपर आयौ जांणै पूंग्यां रा पूंज पर नागराज **भोग** उठायौ।—वं. भा.

२३ सांप।

२४ आय, आमदनी।

उ०—धरती मांहै थांणा ठोड़-ठोड़ राखिया छै, पण धरती **भोग** पड़ सकै नहीं।—नैणसी

२५ बलि।

२६ दावत, प्रीतिभोज।
२७ लाभ, फायदा।
२८ धन, सम्पत्ति।
२९ वैश्या के साथ संभोग करने पर उसको दिया जाने वाला धन।
३० शरीर, देह।
३१ परिमाण, मान।
३२ प्रारब्ध, भाग्य।
३३ छप्पन की संख्या। ❀
३४ शासन, हुकूमत।
३५ मालगुजारी।
३६ देखो 'संभोग' (रू. भे.)
रू० भे०—भोय, भोग।

भोगण–वि०—भोगने वाला।

भोगणजमी–सं० पु०—राजा, नृप। (डिं. को.)

भोगणौ–वि० (स्त्री० भोगणी) १ भक्षण करने वाला, खाने वाला।
उ०—भांण उदोत रै समै पळ **भोगणी**, थोगणी मौत रै समंद थागै। असुर उर खोतरै मेछ आरोगणी, जोगणी जोत रै रूप जागै।—खेतसी बारहठ।
२ उपभोग करने वाला।
३ उपयोग करने वाला।
४ सभोग करने वाला।
५ सहन करने वाला।

भोगणौ, भोगबौ–क्रि० स०—१ दुख-सुख या पाप-पुण्य के फल को सहन करना।
उ०—१ दूखियां देखी देवनि अति दूखडूं लागि। पणि **भोगव्या** विण क्यम छूटीयि ये कीधां आगि।—नळाख्यान
उ०—२ आछा करम करिया है तौ सुरग रौ आणंद सुरग ई में लेजै। नीतर नरक रौ, संताप तौ **भोगणौ** है इज।—फुलवाड़ी
उ०—३ हाथां कांम बिगाड़ियौ, फळ तौ म्हनै ई **भोगणौ** पड़सी।
—फुलवाड़ी
२ स्त्री प्रसंग या संभोग करना।
उ०—१ चोरां जुगती कुगती कीनीं, भोग **भोगणें** घण सुख भीनीं। कपटी दरसण मूरत कोनीं, दिव्य धरम बोळावणि दीनीं
—ऊ का.
उ०—२ मोडां दुग्गह माळिया, गाबर फोगै गाल। **भोगै** सुंदर भांमणी, मुफत अरोगै माल।—ऊ. का.
३ उपभोग करना।
उ०—१ हंसतौ हंसतौ ई कै'वण लागौ—ओ बिणजारौ इण माया नै **भोगै** के आ माया इण बिणजारा नै भोगै।—फुलवाड़ी
उ०—२ इण रा करम में धन री आंमद रौ तौ जोग है, पण उणनै **भोगण** रौ जोग कोनीं।—फुलवाड़ी
उ०—३ भूख तिस तथा नींद **भोगता** थका चकडूंडियै दांई भूंवाळी खांवता रै'ता।—दरादोख
४ भुगतना।
उ०—१ स्रीमुख सिड़ै सेदखांना जिसौ, नाक भरै ज्यूं नारदौ। भव जांण नरक **भोगै** जकां नै, लांनत दै ललकार दौ।—ऊ. का.
५ किसी कार्य, पदार्थ, बात आदि के शुभ या अशुभ फलों का वहन करना या सहना।
६ आनन्द लेना, ऐश करना।
उ०—१ बरखां री ऊमर हीय सुरग रा सुख **भोगवै** (पड़ियां थण पहली पड़ै) सो आ पारख कांही पड़ी मरनैं तौ पाछौ कोई आय सकै नही नै आ कहै थण पड़ियां पहला पड़ै सो कोई वार मरनैं पाछौ आयौक कांई।—वी. स. टी.
उ०—२ रतन जटित पहिरौ आभूषण, **भोगौ** भोग अपारी। मीरांजी थें चलौ महल में, थानै सोगन म्हारी।—मीरां
७ उपयोग में लाना, बरतना।
उ०—नार नपुंसक रा घरां, अदतारै घर अत्थ। भागहीण **भोगै** नहीं, देखै परसै हत्थ।—बां. दा.
८ शासन करना, राज्य करना।
भोगणहार, हारौ (हारी), **भोगणियौ**—वि०।
भोगाड़णौ, भोगाड़बौ, भोगाणौ, भोगाबौ, भोगावणौ, भोगावबौ
—प्रे० रू०।
भोगिओड़ौ, भोगियोड़ौ, भोग्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भोगीजणौ, भोगीजबौ—कर्म वा०।
भोगवणौ, भोगवबौ—रू० भे०।

भोगता–सं०पु० [सं० भोक्ता] १ पति, भरतार। (अ. मा., ह. नां. मा.)
२ उपभोक्ता।
३ जागीरदार की एक किस्म। (बीकानेर)

भोगदेह–सं० पु० [सं०] मनुष्य का मरने के उपरांत स्वर्ग या नरक में जाकर पाप या पुण्य फलों को भुगतने के लिए धारण किया जाने वाला सूक्ष्म शरीर। (पौराणिक)

भोगनौ–सं० पु०—१ कान के पास का हिस्सा, कनपटी।
२ लघु मस्तिष्क।
उ०—१ नित नेम हियै भूलै नहीं, चालै सदा सचेत नें, **भोगना** फूट परत्रिय भजै, हाय तजै इण हेत नें।—ऊ. का.
उ०—२ खुद रौ **भोगनौ** तौ फूटयौ जकौ फूटयौ ई, म्हारा पेट नै बिरथा ई दुखायौ।—फुलवाड़ी
मुहा०—भोगनौ भंगाणौ=ठगाना। २ भोगनौ फूटणौ=मस्तिष्क का ठीक काम न करना। ३ भोगनौ गांव जाणौ=मस्तिष्क का ठीक काम न करना। ४ भोगनौ भंवणौ=मस्तिष्क का ठीक काम न करना।
३ सिर, मस्तक।

उ०—१ खेत रै मांह पग ई दे दियौ तौ **भोगना** बिखेर दूंला।
—फुलवाड़ी

उ०—२ बै वठै कोपरिया रा बगावट बजाया। कोपरिया चूकनै कित्ताक चूकता। च्यारां रा **भोगना** बिखरग्या।—फुलवाड़ी

४ प्रारब्ध, भाग्य।

भोगपत, भोगपति–सं० पु० [सं० भोगपति] किसी नगर आदि का प्रधान अधिकारी, सूबेदार।

भोगपतर, भोगपत्र–सं० पु० यौ० [सं० भोगपत्र] १ वह पत्र जिसके अनुसार व्यक्ति विशेष को किसी पदार्थ के उप-भोग का अधिकार दिया गया हो।

भोगपाळ–सं० पु० [सं० भोगपाल] १ भोगपति।

२ साईस।

भोगभाड़ौ–सं० पु० यौ० [सं० भोग+भाटक] कृषक द्वारा जागीरदार को चुकाई जाने वाली एक लाग या कर विशेष जो वह खलिहान में निकाले हुए अनाज मे से उसका हिस्सा उसके (जागीरदार के) घर पहुंचाने पर देता है।

भोगभूमि–सं० स्त्री० यौ० [सं० भोग्य+भूमि] १ क्रीड़ा स्थल।

२ विलास का स्थान।

३ जैन मतानुमार वह लोक जिसमें किसी प्रकार का कर्म नहीं करना पड़ता है और सब प्रकार की सुख भोग की आवश्यकता एक कल्पवृक्ष द्वारा पूर्ण होती है।

भोगळ, भोगल–सं० स्त्री० [सं० भुजार्गल] अर्गला। (उ. र.)

भोगळाऊ, भोगळावू–वि० [सं० भोग+लाभ+रा० प्र० ऊ] किसी को ऋण देने के बदले में प्राप्त वह घर, भूमि या खेत जिसका उपभोग करने का ऋणदाता को पूर्ण अधिकार होता है एवं उस पर कोई ब्याज नहीं लिया जाता।

भोगळावौ–सं० पु० [सं० भोग+लाभः] एक प्रकार का ऋण या कर्ज लेने का ढंग विशेष।

वि० वि० 'भोगळावा' में रुपया कर्ज देने वाला बिना किसी ऐवजाना के गिरवी रखे हुए मकान या जमीन की आमदनी का उपभोग करता है और कर्जदार रुपयों का ब्याज नहीं देता। रहन रखी हुई भूमि की उपज का लाभ या मकान का किराया ही सूद समझा जाता है।

भोगलिप्सा–सं० स्त्री० यौ० [सं० भोग+लिप्सा] सभोग की इच्छा, व्यसन।

भोगळियाळ, भोगळियाळी–सं० स्त्री०—कटार। (डिं. को.)

उ०—आडै मांन आगळै असपत, चित उतकाय धारियौ चोज। इण में छै ज चिपण कोई आवौ, **भोगळियाळ** दिखाळै 'भोज'।
—राव राजा भोजराज रौ गीत

भोगळियौ–सं० पु०—वह व्यक्ति जो ऋणदाता के यहां ब्याज (सूद) के उपलक्ष में नौकरी करता है।

भोगळी, भोगली–सं० स्त्री०—१ स्त्रियों के सिर के आभूषण 'बोर' के पीछे का भाग।

२ देखो 'भूंगली' (रू. भे.)

भोगळौ–सं० पु०—बैलगाड़ी के चक्के के बीच में लगाया जाने वाला लोहे का उपकरण।

भोगवण–सं० पु० [सं० भोग+रा० प्र० वण] भोग करने योग्य वस्तु।

उ०—हमै वरदळ हुई काढ गूंघट हियै, सजै नख सिख बिचै सोळ सिणगार। राज राजेसवर जोड़ कायम रहौ, **भोगवण** धरा 'अग जीत' भरतार।—द्वारकादास दधवाड़ियौ

भोगवणौ, भोगवबौ—देखो 'भोगणौ, भोगबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ५ रावळ लखणसेन करन रौ। करन पछै पाट बैठौ। भोळौ सो ठाकुर हुवौ। वरस १८ जैसलमेर **भोगवियौ**।—नैणसी

उ०—२ प्रथीराज कह्यौ, 'दीवांण! आप तौ घणा ई दिन धरती **भोगवी**, हमें म्हैं मोटा हुवा, दीवांण विराज्या रहौ, म्है धरती री खबर लेस्यां।'—नैणसी

उ०—३ तरै प्रथीराज परधांनांनू कह्यौ, 'हुई सु नीवड़ी म्हैं थांनु विगर पूछियै विचार कियौ तिण रौ फळ म्हे रूड़ौ **भोगवां** छां, हमैं थे भली जांणौ त्यूं करौ।—नैणसी

उ०—४ राव राजा पदवी अजीतसिंघजी तीन वरस **भोगवी** पछै रांमसरण हुआ।—बां. दा. ख्या.

उ०—५ जद कांणौ पाड़ौसी रै घर जाय कही—रे! गंवार ने इतरा वरस रजपूतांणी थे **भोगवी**। अजूं ही नीं धाप्यौ।
—कांणा रजपूत री वात

उ०—६ तद कुंवर फूलमती नूं हाथ पकड़ अर फेरा लेनै परणीज अर उठै **भोगवी**।—चोबोली

उ०—७ स्यांम धरम कुळ धरम न साजै, कांम धरम अभियास करै। भरमा-मरमी पीड़ **भोगवै**, मांचै गरमी हूंत मरै।
—कविराजा बांकीदास

उ०—८ बळिहारी तूझ तणइ बहुनांमी, महि पाळिग ताइ अचळ महि। वांक सबळ टाळियउ विसंभरि, सुर नर सुख **भोगवइ** सहि।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—९ अनेक सुगंध वस्तु सुं अरगजा सों खवलित कीजै छै। महलां कै विखै अनेक सुख **भोगविजै** छै।—वेलि. टी.

उ०—१० जक्षेस वारिईस की सुरेस नेस प्री जिसा, 'अभौ' त्रिलोक में अचंभ भोग **भोगवै** इसा।—रा रू.

उ०—११ जउ उदयागत आवइ आपणइ, पूरब क्रत पुण्य पाप। विण **भोगवियां** तै नवि छूटियइ, करतां कोड़ि कळाप।—प. च. चौ.

भोगवणहार, हारौ (हारी), भोगवणियौ—वि०।

भोगविओड़ौ, भोगवियोड़ौ, भोगव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भोगवीजणौ, भोगवीजबौ—कर्म वा०।

भोगवती–सं० स्त्री० [सं०] १ गंगा।

२ पाताल गंगा।
३ नागिन।
४ नागों की पुरी जो पाताल में है।
५ द्वितीया तिथि की रात्रि।
रू० भे०—भोगावती।

भोगवांन-सं० पु० [सं० भोगवत्] १ सांप।
२ गाना, गीत।

भोगविलास-सं० पु० यौ० [सं०] सुख-चैन की वह स्थिति जिसमें मनुष्य इन्द्रियों या वासनाओं की तृप्ति में लिप्त रहता है।

उ०—राजा स्यांमसुंदर नुं कह्यौ, 'थे एक बार दरबार आई मुजरौ करिनै डेरै तुरत गया करौ। हिवै स्यांमसुंदर सुख सुं आस्या सुं **भोगविलास** करै छै।—स्यांमसुंदर री वात

भोगसरीर—देखो 'भोगदेह'।

भोगसील—देखो 'भोगीसैल' (रू. भे.)

उ०—आदि सहर मंडोवर थौ। सासत्र मांहै नै पदमपुरांण माहै वात छै। **भोगसील** परवत मेर री बेटी कहै छै।—नैणसी

भोगांतराय-सं० पु०—जैन मतानुमार वह अंतराय जिसका उदय होने से भोगों की प्राप्ति में विघ्न पड़ता है। मतांतर से—वह कर्म जिसके उदय होने से जीव स्वतन्त्रता पूर्वक उपलब्ध होने वाली भोग सामग्री का मन की कृपणतावश एवं संकीर्णतावश, ईच्छा रहते हुए भी उपभोग नहीं कर सकता है।

भोगाड़णौ, भोगाड़बौ—देखो 'भोगाणौ, भोगाबौ' (रू. भे.)
भोगाड़णहार, हारौ (हारी), भोगाड़णियौ—वि०।
भोगाड़िओड़ौ, भोगाड़ियोड़ौ, भोगाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भोगाड़ीजणौ, भोगाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भोगाणौ, भोगाबौ-क्रि० स० ['भोगणौ' क्रि० का प्रे० रू०] १ दुख-सुख या पाप-पुण्य के फल को सहन कराना।
२ स्त्री प्रसंग या संभोग कराना।
३ उपभोग कराना।
४ भुगताना।
५ आनन्द लेने में प्रवृत्त करना, ऐश कराना।
६ उपयोग में लेने को प्रवृत्त करना, बरताना।
भोगाणहार, हारौ (हारी), भोगाणियौ—वि०।
भौगायोड़ौ—भू० का० कृ०।
भोगाड़णौ, भौगाड़बौ—कर्म वा०।
भोगाड़णौ, भोगाड़बौ—रू० भे०।

भोगायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ दुख-सुख या पाप-पुण्य के फल को सहन कराया हुआ. २ स्त्री-प्रसंग या संभोग कराया हुआ. ३ उपभोग कराया हुआ. ४ भुगताया हुआ. ५ आनन्द लेने में प्रवृत्त किया हुआ, ऐश कराया हुआ. ६ उपयोग में लेने को प्रवृत्त किया हुआ, बरताया हुआ.
(स्त्री० भोगायोड़ी)

भोगावणौ, भोगावबौ—देखो 'भोगाणौ, भोगाबौ' (रू. भे.)
भोगावणहार, हारौ (हारी), भोगावणियौ—वि०।
भोगाविओड़ौ, भोगावियोड़ौ, भोगाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भोगावीजणौ, भोगावीजबौ—कर्म वा०।

भोगावियोड़ौ—देखो 'भोगायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भोगावियोड़ी)

भोगावती—देखो 'भोगवती' (रू भे.)

भोगि—देखो 'भोगी' (रू. भे.)

भोगियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ दुख-सुख या पाप-पुण्य के फल को सहन किया हुआ. २ स्त्री-प्रसंग या संभोग किया हुआ. ३ उपभोग किया हुआ. ४ भुगता हुआ. ५ आनन्द लिया हुआ, ऐश किया हुआ. ६ उपयोग में लिया हुआ, बरता हुआ.
(स्त्री० भोगियोड़ी)

भोगियौ—देखो 'भोगी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कहूं सूकर कहु स्वांन मति, मोरमुख उर काग। कहूं जोगी कहुं **भोगिया**, कहुं रोवै कहुं राग।—ह. पु. वा.

भोगिओभंमर—देखो 'भोगियौभंवर' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांति करिनै **भोगिआभंमर** लंजा छयल हुसनाक जवांन निजरबाज बाजार मांहै ऊभा जोहां खाए छै।—रा. सा. सं.

भोगियौभंवर-सं० पु०—विलास-प्रिय, विलासी।

भोगिसैल—देखो 'भोगीसैल' (रू. भे.)

भोगी-सं० पु०—१ सर्प, सांप। (अ. मा., ह. नां. मा.)
२ छंद शास्त्रकार एक विद्वान का नाम।

उ०—किवळौ पिच्छू कहैं लहू लघु अंक लहावैं गिरां छंद बस गुरू कवी लघु चार कहावैं। बीजा दीरघ वरण जपै गुरु आदि संजोगी, विसरग अग सिर बिंदू भणैं तारख सों **भोगी**।—र. रू.

३ शेष नाग।

उ०—खूब बजाई खग्ग तें धारा धमचक्कै, कुक्कै क्रोड कराहि कै कमठेस मचक्कै। नीसासा नासानुगी, आसागज तक्कै, **भोगी** भोगन झिलि सकै, भुम्मि अकबक्कै।—वं. भा.

४ नृप, राजा।

उ०—राज करंता नरक पड़ंता, **भोगी** जोरै लीया। जोग करंता मुकति पहुंता, जोगी जुग जुग जीया।—मीरां

५ जमींदार।
६ धनी, सम्पत्तिशाली।
७ संगीत में एक राग का नाम।

वि०—१ उपभोग करने वाला, उपभोक्ता।

उ०—सुरसर सुजल अमळ संजोगी, दळ मळ अघ ओघी दुख दंद।
साभ कमळ पद रांम असोगी, मन अलियळ **भोगी** मकरंद।
—र. ज. प्र.

२ खाने वाला।

उ०—१ देवी जख्खणी भख्खणी देव जोगी, देवी अम्मळा भोज **भोगी** निरोगी, देवी मात जांनेसुरी अन्न मेहा, देवी देव चांमुंड संख्याति देहा।—देवि.

उ०—२ कट उडियांण लियां डमरू कर, भांग धतूरा **भोगी**।
—क. कु. बो.

३ इन्द्रिय सुख का अभिलाषी, विषयासक्त।

४ विषय-भोग में रत, विषयी।

उ०—१ जग में कहे जोगी भीतर **भोगी**, सोगी सम सोवंदा है, महिला नैं मोगी गूंगी गोगी, रोगी जिम रोवंदा है।—ऊ. का.

उ०—२ **भोगिय** मोख कुरोगिय भोजन, जोगिय जोखत जोवत जैसे। पातर कों उपदेस पतीव्रत, कातर को सुर सिंधु न तैसे।
—ऊ. का.

उ०—३ अति कोक कळा **भोगी** अपार, दातार सूर अति चित उदार। बळिवंत हुवै आजांनबाह, असि गयंद हुवै दळ बळ अथाह।
—सू. प्र.

५ आनन्द लूटने वाला।

उ०—सियाजी रा नैणां निरख हरि नैणा जळ भरै, प्रियाजी रा प्यारा सहज गुण मारा हिय धरै। हरि चिंता सारी तदपि दुख भारी चित करै, विजोगी है जोगी भगति रस **भोगी** सब परै।—गी. रां.

६ ऐश आराम करने वाला, ऐय्याश।

उ०—जिहां **भोगी** करइ रेवाडी, इसी विसाल वाडी। जिहां पढइ छात्र चउसाल, तिहां इसी अनेक लेसाळ।—सभा

अल्पा०—भोगियौ।

भोगीकुसम—सं० पु०—भ्रमर, भौंरा। (अ. मा.)

भोगीसैल—सं० पु० [सं० भोगीशैल:] जोधपुर में मंडोर के पास के पर्वत का नाम, जिसकी पुरुषोत्तम (मल) मास में परिक्रमा लगाई जाती है।

वि० वि०—ऐसा कहा जाता है कि मरूभूम्यान्तर्गत 'भोगीसैल' पर्वत के स्थान पर सर्पों का एक बड़ा भारी बिल (विवर) था। ये सर्प ब्राह्मणों को बहुत सताते थे। ब्राह्मणों ने इनके दुख से दुखित होकर इन्द्र का आह्वान किया तब इन्द्र ने हिमालय के पुत्र को आज्ञा दी कि तुम उनके बिल पर जाकर स्थित हो जाओ। इन्द्र की आज्ञा से वह पहाड़ यहां आकर स्थित हो गया। तदन्तर राजा जनमेजय ने अपने पिता परीक्षित का बदला लेने के लिए एक यज्ञ किया जिसमें वह इन सर्पों की आहुति देने लगा। तब सर्पों ने ब्रह्मा जी से प्रार्थना की कि 'अब हम किसी को भी न सतायेंगे अत: आप हमारी रक्षा करो।' तब ब्रह्माजी ने उनको मरु-देश का यह पहाड़ बतलाया कि 'तुम यहां निर्भय रहो।' साथ ही यह वरदान भी दिया कि 'जो मनुष्य श्रावण की पंचमी को तुम्हारी पूजा करेगा उसे अभीष्ट फल मिलेगा। ब्रह्मा की आज्ञा से उन सभी सर्पों ने इस पहाड़ में आकर निवास किया इसीलिए इसका नाम भोगीशैल या नागाद्रि पड़ा, जिनका अर्थ सर्पों का पहाड़ होता है।

रू० भे०—भोगसील, भोमसैल।

भोगेसर, **भोगेस्वर**—सं० पु०—एक तीर्थ का नाम। (पौराणिक)

भोग्य—वि०—१ उपभोग करने योग्य, भोगने लायक।

उ०—**भोग्य** चित भजै, ग्रीधणी गरज्जै। नीर धार निजै, सोहड़ै सलज्जै।—रा. रू.

भोग्यमांन—सं० पु०—जो भोगा जाने को हो।

भोड़—देखो 'भोड' (रू. भे.)

भोड़कियौ—देखो 'भोड' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—चौधरी मतीरा नाख दिया। जिकां नै देख'र गंगू बोलियौ—ना रे भाई! मतीरड़ा, **भोड़किया** ज्यूं हैं, अर है-ई थोड़ा सा।'
—वरसगांठ

भोड़णौ, **भोड़बौ**—क्रि० स०—नाश करना, मिटाना।

उ०—जड़भरत अतीत सम रस रा छाकिआ रांम रस प्यालै रा पीअणहार दया धरम रा पाळणहार करम-जाळ रा **भोड़णहार** तापस अस्टांग जोग रा साझणहार सांत रस मांहे गलतांण होइ नै रहिआ छै।—रा. सा. सं.

भोड़णहार, **हारौ** (**हारी**), **भोड़णियौ**—वि०।

भोड़िओड़ौ, **भोड़ियोड़ौ**, **भोड़्योड़ौ**—भू० का० कृ०।

भोड़ीजणौ, **भोड़ीजबौ**—कर्म वा०।

भोडणौ भोडबौ—रू० भे०।

भोड़ियोड़ौ—भू० का० कृ०—नाश किया हुआ, मिटाया हुआ. (स्त्री० भोड़ियोड़ी)

भोड़ीरौ—देखो 'भोसड़ी रौ' (रू. भे.)

भोड़ौ—देखो 'भोसड़ी रौ' (रू. भे.)

भोचकियौ—देखो 'भोसकियौ' (रू. भे.)

भोज—सं० पु० [सं०] १ किसी विशिष्ट अवसर या उपलक्ष में निमंत्रित व्यक्तियों को खिलाया जाने वाला भोजन, दावत।

२ खाद्य-सामग्री, खाने-पीने की वस्तुएं।

उ०—साकर सिरसाळी थिर भर थाळी, अगलाकर ऊगंदा है। जग त्रण सम जांणै मोजां माणै, भांणै **भोज** भरंदा है।—ऊ. का.

३ यादव कुल के अन्तर्गत एक राजवंश।

४ एक लोक समूह, जो सुदास राजा का अनुचर था।

५ यादववंशीय सात्वत राजा का पुत्र।

६ मार्तिकांवत् (मृतिकावती) नगरी का एक राजा, जो द्रोपदी के स्वयंवर में उपस्थित था।

७ पुराणों के अनुसार महाभोज राजा के वंशजों के लिए प्रयुक्त सामूहिक नाम।

८ एक राजवंश, जो हैहयवंशीय तालजंघ राजवंश में समाविष्ट था।

९ मत्स्य पुराण के अनुसार एक राजा, जो प्रतिक्षत्र राजा का पुत्र था।

१० कश्यप कुलोत्पन्न गोत्रकार ऋषिगण।

११ कान्यकुब्ज देश का एक राजा।

१२ परमारवंशी मालवे का एक प्रसिद्ध राजा, जो बहुत विद्वान एवं विद्या प्रेमी था।

उ०—'जबदळ' 'पदम' 'रायसी' जुजस्टळ, 'हरचंद' 'वीकम' 'भोज' हुवा। मांगी मता छता महमंडळ, मता न मांगी जीता मुवा।
—गोरधन खीची

भोजक, भोजग–सं० पु०—१ एक सूर्योपासक राजा।
२ शाकद्वीपी ब्राह्मणों का एक नाम।
वि०—१ भोजन करने वाला।
२ भोग करने वाला, विलासी।

भोजड़ली–सं० स्त्री० (सं० भुर्जपत्र) चिट्ठी, पत्र।
उ०—पीवड़ले लिख **भोजड़ल्यां** पठावां, कहौ अै भेजां संदेस। भोजड़ल्यां, सायब, हम ना पतीजां, संदेसै न आवै म्हारौ वीर।
—लो. गी.

२ देखो 'भोजाई' (अल्पा., रू. भे.)

भोजण—देखो 'भोजन' (रू. भे.)
उ०—अख अढार **भोजण** भांगि, तंवोळ मुख तरणि। वाजेंद्र राह वाहणि, आरूढ वळै। रिति वरखा सरद, हैमंत सैंसर हद। वसंत गीखम सद, सुख सगळै।—गु. रू. बं.

भोजन–सं० पु० [सं०] १ खाद्य पदार्थों को भक्षण करने की क्रिया।
२ पेट भरने हेतु खाया जाने वाला खाद्य-पदार्थ, खाने की वस्तु।
(अ. मा., ह नां. मा.)

उ०—१ भोज न गिणै चढ़ावै मूंढौ, जोजन दूरौ जाय। खोज न करै निकाळै, खोड़ां मादौ **भोजन** मांय।—ऊ. का.

उ०—२ घर घर तुलसी ठाकुर पूजा, दरसन गोविंदजी कौ। निरमळ नीर बहत यमुना कौ, **भोजन** दूध दही कौ।—मीरां

३ विशेष अवस्था में खाई जाने वाली कुछ विशिष्ट प्रकार की वस्तुएं।

रू० भे०—भुज्जन, भोजण, भोजनु, भोयण।
अल्पा०—भोजनियौ।

भोजनखांनौ–सं०पु० [सं० भोजन+फा० खान:] रसोईघर, पाकशाला।

भोजनभट, भोजनभट्ट–सं० पु० [सं० भोजन+भट्ट] बहुत अधिक खाने वाला, पेटू।

भोजनसाळ, भोजनसाळा–सं० स्त्री० [सं० भोजनशाला] १ रसोईघर, पाकशाला।

उ०—१ मांय वाग है जठै मै'ल तीन नवा कराया। वाग रै ऊपर **भोजनसाळ** कराई।—मारवाड़ री ख्यात

उ०—२ देवीसिंघजी वगरै पकडिया ज्यांनूं रस्सा सूं बांध **भोजनसाळा** हेटली ओरियां ज्यां में घालिया।—बां. दा. ख्या.

भोजनालय–सं० पु० [सं०] १ रसोईघर, पाकशाला।
२ वह स्थान जहां मूल्य लेकर पका हुआ भोजन खिलाया जाता है।

भोजनियौ—देखो 'भोजन (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ रांम नांम बिन घड़ी न सुहावै, रांम मिळै म्हारा हियरा ठराय। **भोजनिया** नहिं भावै म्हानै, नींदड़ली नहिं आय।
—मीरां

उ०—२ अगली तौ पेड़ी जी आमादे रांणी पग धरचौ, **भोजनियां** री थाळ ज हाथ, चौथी तौ पेड़ी जी आमादे रांणी पग धरचौ, पांनां री डबी अे ज हाथ।—लो. गी.

भोजनु—देखो 'भोजन' (रू. भे.)
उ०—**भोजनु** आंणइ मारग वहइ करइ भगति सरसी दुख सहइ। नवउ अवासु करी नइ रमइ पंचह पंडव सरसी भमइ।—पं. पं. च.

भोजपत्र–सं० पु० [सं० भूर्जपत्र] १ ऊंचे पर्वतों पर पाया जाने वाला मझोले आकार का वृक्ष, जिसकी छाल प्राचीन काल में कागज की जगह लिखावट में काम आती थी।

उ०—भीलामां नइ भालकी, भरडु भागिगि भांगि। भंभेडी ब्रह्मांड घणा, **भोजपत्र** भड चंगि।— मा. कां. प्र.

२ उक्त वृक्ष की छाल।
रू० भे०—भूरजपत्र।

भोजपरीक्षक–सं० पु० यौ० [सं० भोजन+परीक्षक] रसोई या भोजन की परीक्षा करने वाला।

भोजपुरियौ–सं० पु०—भोजपुर का रहने वाला, भोजपुर का निवासी।

भोजपुरी–सं० स्त्री०—भोजपुर की बोली या भाषा।
वि०—भोजपुर से सम्बन्धित, भोजपुर का।

भोजराजोत–सं० पु०—राठोड़ों की एक उप-शाखा।

भोजरू–सं० पु०—शरपंखा।

भोजवंसी, भोजांणी–सं० पु०—१ शेखावत कछवाह क्षत्रियों की एक उप-शाखा 'भोजराजजीका' या उस शाखा का व्यक्ति।

उ०—१ किसनैं खंडपुर कै बात ढाबी परम अंगी, सारा ही बिसाह नोलगढ़ का **भोजवंसी**।—शि. वं

उ०—२ बीसी च्यारि **भोजांणी** हरा कै बंस जाया, दोनूं खांप ही का बाजि तेगां कांमि आया।— शि. वं.

२ राठौड़ वंश की एक उप-शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

भोजाई–सं० स्त्री० [सं० भ्रातृ+जाया] (ब. व. भोजायां) १ बड़े भाई की स्त्री, भाभी।

उ०—१ जळहरजांमी बाबी मांगां, रातादेई माय, कान्हकंवर सो वीरौ मांगां, राम्री-सी **भोजाई**।—लो. गी.

उ०—२ ताहरां आफळियौ, कह्यौ—**भोजाई** कासूं कियौ? हूं आपच कर मरीस।—नैणसी

रू० भे०—भउजाई, भुजाई, भौजाई।
अल्पा०—भोजड़ली, भो'जी।

भोजावत–सं०पु०—१ राठोड़ों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति।

भोजी–वि०—भोजन करने वाला, खाने वाला।

भो'जी— देखो 'भोजाई' (अल्पा., रू. भे.)

भोजीसुधा–सं० पु० [सं० शुधाभोजिन्] इन्द्र। (अ. मा.)

भोज्यविधि–सं० स्त्री०—६४ कलाओं में से एक कला। (व. स.)

भोट–सं० पु०—१ भूटान देश का नाम, जहां के घोड़े मजबूत होते हैं। (सभा)

२ तीव्र ताप, प्रचंड गर्मी।

उ०—पड़ रही तावड़ै री **भोट**, तिरसा सूं सूखा होट, सुणौ रिसभजी।—जयवांणी

३ बौछार, झड़ी।

उ०—दुयणां कोट संभावियौ, गोळां चोट निहाव। **भोट** पड़तै गोळियां, ओट न रक्खै राव।—रा. रू.

४ अग्नि।

रू० भे०—भोट्ट, भोठ।

भोटणौ, भोटबौ–क्रि० स०—१ दांतों से तोड़ना या काटना।

२ भोजन करना, खाना।

उ०—जिण वगत इक्कीस माणिगर हाथियां रै निजरांणा री बात सुणनै रांणोजी खुमी में बावळा सा व्हैण लागा इण वगत इरट्ठखां आपरी तूटी टपरी में बैठौ लूखी मकूनी रोटी मिरचां री चटणी सूं **भोटतौ** हौ अर मिरचां री बळत रै कारण सूसाड़ा करतौ हौ।—फुलवाड़ी

३ शस्त्र प्रहार करना, प्रहार करना।

भोटणहार, हारौ (हारी), भोटणियौ—वि०।

भोटिओड़ौ, भोटियोड़ौ, भोटयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भोटीजणौ, भोटीजबौ—कर्म वा०।

भोठणौ, भोठबौ—रू० भे०।

भोटौ–वि० (स्त्री० भोटी) १ जिसकी धार, किनार या नोक तीक्ष्ण न हो।

उ०—सांम्ही नाई नै कं'वता—यूं डरतौ डरतौ कांई टपोरिया देवै। थारौ पाचणौ **भोटौ** व्है तौ म्हारी कटार भिलावां।

—फुलवाड़ी

२ लाक्षणिक अर्थ में मन्द बुद्धि वाला।

३ मंद।

उ०—मींडकौ मंद पांणी रै मांय सूं ई टर-टर करतौ बोल्यौ—टूंच बिचै थारी अकल घणी **भोटी** है, पै'ला उणनै तीखी करनै लाव।

—फुलवाड़ी

भोट्ट—देखो 'भोट' (रू. भे.) (सभा)

भोठ—देखो 'भोट' (रू. भे.)

उ०—१ रूकां वागी रीठ, **भोठ** पड़ै माथा भड़ां। जोड़न मामारीठ, आयौ दीसै ऊगलौ।—राठौड़ ऊगौ

उ०—२ ताहरां हरदास बोलियौ—'केरी बेटियां? तरवारां रा माथै **भोठ** पड़सी।—नैणसी

रू० भे०—भोड।

भोठणौ, भोठबौ—देखो 'भोटणौ, भोटबौ' (रू. भे)

उ०—ताहरां मांडण कहै, 'निसंग पीई।' इतरै पांणी नूं हाथ घालण लागौ इतरै डांग री सिर मांहे **भोठी** सु गत नहीं।

—मांडणसी कूंपावत री वात

भोठणहार, हारौ (हारी), भोठणियौ—वि०।

भोठिओड़ौ, भोठियोड़ौ, भोठयोड़ौ—भू० का० कृ०।

भोठीजणौ, भोठीजबौ—कर्म वा०।

भोठियोड़ौ—देखो 'भोटियोड़ोड़ी' (रू. भे.)

(स्त्री० भोठियोड़ी)

भोड–सं० पु०—१ कठोर व बेकार हिंदवान (मतीरा)।

२ मस्तक, सिर।

उ०—ओखा लादा ऊंटां लदै, कई **भोडां** भारिया। वन रा वाळा सै'रां वजै, बा'र गांव रा भ्यारिया।—दमदेव

३ देखो 'भोडल' (मह., रू. भे)

अल्पा०—भोड़कियौ, भोडकियौ, भोडकौ, भौडलौ, भोडी।

मह०—भोडक, भोडल।

भोडक—देखो 'भोड' (रू. भे.)

उ०—१ मुड़दा कड़हट में पड़िया नह मावै, सड़िया बासै सब बिकरंद बभकावै। आडां खाडां में **भौडक** अड़वड़ता, संतां आस्रम जिम तूंबा तड़भड़ता।—ऊ. का.

उ०—२ झटका सूं नवौ **भोडक** काटनै हौद रै माथै कड़ा में टेर देवै। **भोडक** सूं टपक टपक छांटा पड़ता रै'वै।—फुलवाड़ी

भोडकौ—देखो 'भोड' (अल्पा., रू. भे.)

भोडणौ, भोडबौ—देखो 'भोड़णौ, भोड़बो' (रू. भे.)

भोडणहार, हारौ (हारी), भोडणियौ—वि०।

भोडिओड़ौ, भोडियोड़ौ, भोड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

भोडीजणौ, भोडीजबौ—कर्म वा०।

भोडळ–सं० पु०—१ अभ्रक नामक खनिज धातु।

उ०—१ छरहै मास सेत गज छाया, कारण एण कळप ह्वै काया। पट देवळ भिदि जोत प्रकासै, जिम **भोडळ** मझि दीप उजासै।—सू. प्र.

उ०—२ जग औ भूठौ जांण, सुख इण रौ भूठौ समझ। है दोऊं बाता हांण, **भौडळ** पळकौ 'भेरिया'।

—महाराजा बळवंतसिह (रतलांम)

२ श्वेत, सफेद। *

३ देखो भोड' (मह., रू. भे.)

भोडळौ, भोडलौ–वि०—१ बुद्धू, मूर्ख।

२ भोळा, नासमझ।

उ०—इम सुणी सेठ मनि हरखियौ जी, परखीयौ स्त्री तणौ भाव। **भोडलौ** एम जांणै नहीं जी, इहां न कोलावन साव।—वि. कु.

३ देखो 'भोड' (अल्पा., रू. भे.)

भोडागार–सं० पु०—भंडार।

भोडियोड़ौ—देखो भोड़ियोड़ौ' (रू भे)
(स्त्रीं० भोडियोड़ी)

भोडी—१ देखो 'भोड' (अल्पा., रू भे)
२ छोटा मतीरा।

भोण—१ देखो 'भवन' (रू. भे.)
उ०—चवै नाट रायसिंह पेड वेदन नह परणां, भणै भाटिया **भोण** कारबारी बुधकरणां।—पा. प्र.
२ देखो 'भुवन' (रू. भे.)

भोणमती–वि० यौ० [सं० भ्रमण+मती] अपनी बात पर स्थिर न रहने वाला।

भोत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)
उ०—१ भयंकर सोर सिवा अग्र भाग, चोळै मुख होत उदोत चराग। जिकां जगि जोति छिपा छिप जात, द्रगां मग **भोत** सपष्ट दिखात।—मे. म.
उ०—२ बाणी घुलि-गांठ परी, रसना गुण रटकी। अब छुटायै छूटै नहीं, **भोत** बार झटकी।—मीरां

भो'तर—देखो 'बग्रोतर' (रू. भे.)

भोतेरौ—देखो 'बहुतेरौ' (रू. भे.)
उ०—रुपैया तौ भोतेरा लेलौ म्होरां रौ निरधन अंत न पार। तिलां तौ **भोतेरी** लेलौ, अंगिया रौ निरधण अंत न पार।—लो. गी.
(स्त्री० भोतेरी)

भोथार–सं० पु०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष।

भोदू—देखो 'भोंदू' (रू. भे.)

भोन—१ देखो 'भवन' (रू. भे.)
२ देखो 'भुवन' (रू. भे.)

भोपणियौ—देखो 'भांपणौ' (अल्पा, रू. भे)
उ०—घुळै जद आंखड़ियां में नींद, पलक में भोळैपण रौ मोल। नैन्हां **भोपणियां** री पाळ, भरीजै सुख समदर बेछौळ।—सांझ

भोपणौ—देखो 'भांपणौ' (रू. भे.)
उ०—चळापळ ग्रोगनियां री कोर, **भोपणां** किण भूलां रौ भार? बिहारै गळै अडोळी नार, सोधवा इण धरती वो हार।—सांझ

भौपाई–सं० स्त्री०—१ भोपा के क्रिया कलाप।
२ 'भोपे' की सिद्धि या चमत्कार।
उ०—सिद्धां सिद्धाई धरणी में धसगी, भोपां **भोपाई** फांफां में फसिगी। झूठा जोतसियां जोतिस की झूठी, करसा कळपाया बरसा नह बूठी।—ऊ. का.

भोपाडय, भोपाडफ, भोपाडफर, भोपाडफरी–सं० स्त्री०—१ भोपा द्वारा किया जाने वाला ढोंग।
२ ढोंग, आडम्बर।
उ०—दरबारी कह्यौ—अंदाता, ग्रै तौ रिजक री अटकळबाजियां हैं। भांड इण भांत री थोथी **भोपाडफरियां** नीं करै तौ वो भांड ई कांई।—फुलवाड़ी
३ ढोंगपूर्ण धमकी या आतंक।
ज्यूं—म्है जाऊं थोड़ी भोपाडफर करनै आऊं।

भोपाळ—देखो 'भूपाळ' (रू. भे.) (डिं. को.)
उ०—१ सोज्या धर रा चांनणा रे भूखां रा **भोपाळ**। पाळणै में सोज्या प्रिथीपाळ।—चैतमांनखौ
उ०—२ कुरवंसी कर चाळौ, रत्त रोसाळां, भीठ वडाळां, **भोपाळां**। रिळिया रिणताळां, कट किरमाळां, सीस भुजाळां सूंडाळां।—भगतमाळ

भोपाळी, भोपाली–सं० स्त्री०—संगीत में एक रागिनी।

भोपौ–सं० पु० (स्त्री० भोपण, भोपी) १ किसी देव विशेष का शरीर में प्रवेश अनुभव करते हुए उसी प्रकार क्रिया-कलाप करने वाला मनुष्य। (नैणसी)
उ०—सिद्धां सिद्धाई धरणी में धसगी, **भोपां** भोपाई फांफां में फसिगी। झूठां जोतसियां जोतिस की झूठी, करसा कळपाया बरसा नह बूठी।—ऊ. का.
२ देव विशेष की पूजा करने वाला, पुजारी।
उ०—रा० भारमल जोधावत रौ दत्त, भोपा देवसी राठौड़ नागणेचां जी रौ **भोपौ** चांपौ गेला बसै।—नैणसी
३ भील जाति के व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द।

भोबर—१ देखो 'भोभर' (१) (रू. भे.)
२ देखो 'भोभरौ' (मह., रू. भे.)

भोबरौ—देखो 'भोभर' (२) (अल्पा., रू. भे.) (डिं. को.)

भोभर–सं० स्त्री०—१ छोटे २ अंगारेयुक्त गर्म आग।
उ०—१ दांम घणौ उत्तर दिए, हूं ते बित सत हार। मुंहडौ लै उण मिनख रौ, **भोभर** भीतर भार।—बां. दा.
उ०—२ म्हारै इण झूंपै में **भोभर** सूं ओटचा बासदी रै कारण कीकर ई लाय लाग जावै तौ कांई सगळी ऊमर बासदी सूं बैर करियां सर जावैला। लाय रै दूजै दिन ई म्हनै चूल्है बासदी तौ चेतन करणौ ई पड़ैला।—फुलवाड़ी
रू० भे०—भोबर।
अल्पा०—भोबरौ, भोभरौ।
२ देखो 'भोभरौ' (रू. भे.)

भोभरि—देखो 'भोभर' (१) (अल्पा., रू. भे.)
उ०—उलझै नौं तु आप सुं ज्युं जोगी जट्टा, पाचिस पाप संताप में ज्युं **भोभरि** भट्टा।—ध. व. ग्रं.

भोभरौ—देखो 'भोभर' (२) (अल्पा., रू. भे.)

भोभीत—देखो 'भयभीत' (रू. भे.)

भोम—सं० स्त्री० [सं० भौमः] १ मंगल ग्रह।
उ०—सुकीर नालिका सरुप, वेस रीत राजियै। सुरू गुरू र **भोम** सुक्र, राज द्वारा राजियै।—सू. प्र.
[सं० भूमि] २ बाहुबल द्वारा अधिकार में की हुई भूमि।
उ०—एक डोळी या **भोम** री पैदास १२५०००) सवाई हमार छै। —नैणसी

वि० वि०—प्राचीन काल में राजपूतों के द्वारा कब्जे की हुई खेती योग्य भूमि को उनके वंशज अंग्रेजी सत्ता तक उपयोग करते रहे। जिसका वे किसी को कर नहीं देते थे और जिसे वे स्वयं की भूमि कहते थे। ऐसी स्वउपार्जित भूमि भोम कहलाती थी, क्योंकि यह किसी से इनायत के तौर पर प्राप्त नहीं हुई थी।
२ श्मशान भूमि।
३ अग्नि, आग। (ना. डिं. को.)
४ राज्य।
उ०—१ इम कहै वयण सँदेस आय, परदेस दबावौ खळ पजाय। पर **भोम** दबावौ खगां पांण, पर भोम जिकै वाजै पंचांण। —सू प्र.
उ०—२ खूंदाळम जपै तूं खुरम, सुकरि खग्ग संभाहियौ। भर भार भळावै **भोम** छळि, पिता पूत पडिगाहियौ।—गु. रू. बं.
५ स्थान।
उ०—अगम **भोम** सूं म्हे चल आया, पूरां कारण ब्रह्म पठाया। पोंची जात हीण घर पाया, लिछमी वर सूं प्राण लगाया।— ऊ. का.
६ ज्ञान, बुद्धि।
७ परिचय, जानकारी।
८ ध्यान, सतर्कता।
९ कार्य करने की दक्षता।
१० देखो 'भूमि' (रू. भे.) (अ. मा., डिं. को.)
उ०—१ जिती **भोम** लीधां जळ जावै, आंनन रांम रटंती आवै। सो रुद्रवंति जळ गंग समांणै, एकण कनक कळस मझि आंणै। —सू. प्र.
उ०—२ कसमसे घाट अहि कोम कंध, **भोम** पाट लग्गौ भवण, चढ़ि रीस जांणि रावण चढ़ै, रांमहूंत धमचक करण।—सू. प्र.
उ०—३ निजर परक्खै राठवड़, अकबर तेज दिणंद। जांणै व्योम विमांन सम, **भोम** प्रगटचौ इंद।—रा. रू.

भोमअंस—सं० पु० [सं० भौमः+अंस] रक्तवर्ण का मूंगा या लाल।
उ०—सरां मैं ज्यूं मांनसरोवर, तरां मैं ज्यौं कलपतरोवर। खगां मैं ज्यौं राजहंस, नगां में **भोमअंस**। नसां में ज्यौं नेहरौ नसो, रसां में ज्यौं सिणगार रौ रसौ। तुरंगां में ज्यौं सूरज रौ तुरंग, दुरंगां मैं ज्यौं इण भांति चंद्रदुरंग।—र. हमीर

भोमका—देखो 'भूमिका' (रू. भे.)
उ०—१ कुत्ता कागला जूटै, मजूरां रा माथा फूटै है। घर मुसांण **भोमका** सा हो रै'या है।—दसदोख
उ०—२ बैठा सूं वेगार भली, जायनै मसाणां री **भोमका** में ईं हळ जोतौ पण जोतौ।—फुलवाड़ी

भोमदंती—सं० स्त्री०—उत्तर दिशा का दिग्पाल।
२ सार्वभौम दिग्गज।

भोमबाव—सं० पु० [सं० भोम+अ० बाव] 'भोमियों' से वसूल किया जाने वाला एक सरकारी कर विशेष।
वि० वि०—देखो 'भोमियौ'।

भोमवार—देखो 'भौमवार' (रू भे.)

भोमविज्जा—सं० स्त्री० [सं० भूमि+विद्या] भूकम्प के द्वारा शुभाशुभ फल को जानने की विद्या। (जैन)

भोमसैल—देखो 'भोगीसैल'।

भोमि—देखो 'भूमि' (रू. भे.)
उ०—१ बापीकी **भोमि** बराबरि बोलै, घड़ त्रि सरूप रचे घण घाइ। सूरां वट उजवाळी सेखै, रावां वट उजवाळी राइ। —सेखा सूजावत नै गांगा बाघावत रौ गीत
उ०—२ कनियां **भोमि** विवर लघु काया, आयस जेम दास धरि आया। वदियौ वळि धर मगन बाळ वय, जय मम वर, मम पिता पराजय।—सू. प्र.
उ०—३ भार उतारै **भोमि**, अवधि सँदेह उधारै। वसै रांम वैकुंठ, विमळ जग जस विसतारै।—सू. प्र.

भोमियाचारौ—देखो 'भौमीचारौ' (रू. भे.)
उ०—भला रजपूत भूमिया छै। गांव ४०० मांहे उणां रौ **भोमियाचारा** रौ ग्रास लागै छै।—नैणसी

भोमियाजी—सं० पु०—गाय, ब्राह्मण, धर्म, गाम और भूमि की रक्षार्थ एवं परोपकार के लिए युद्ध करता हुआ वीर-गति को प्राप्त वीर, जिसकी बाद में पूजा भी की जाती है।

भोमियावंट—सं० पु०—पिता की सम्पति प्रायः जमीन व अचल सम्पत्ति का उसकी सन्तान में बराबर विभाजित होने की प्रथा या ढंग।
रू० भे०—भूमियावंट।

भोमियोजी—देखो 'भोमियाजी' (रू भे.)

भोमियौ—वि०—१ जानकार, विज्ञ।
२ चतुर, दक्ष।
सं० पु०—१ स्वबाहुबल द्वारा उपार्जित भूमि का स्वामी।
उ०—१ अर बारह दिन सहर में रहा था सो सगळै सहर में लोगां रै वेला वखत हांडी चढ़ी नहीं सो उठै आपरौ आधार थौ। आप पधारौ तौ सूरज ऊगै। **भोमिया** आप दबा लिया था सो आप जांणौ हीज छौ।—पलक दरियाव री बात

उ०—२ आया राठौड़ है खडै प्रजा चढंत अखडै । भगांरा भोमिया डरै, गया अलंग ऊतरै ।—गु. रू. बं.

वि० वि०—प्राचीन काल में खेती योग्य भूमि पर कब्जा कर लिया । तदन्तर अंग्रेजी राज्य-काल तक उनके वंशज उसका उपभोग करते रहे और कोई भी उस भूमि का कर या लगान राज्य में नहीं देता था, क्योंकि उनका कहना था कि वह भूमि उनकी स्वयं की बापौती है तथा किसी के द्वारा इनायत की हुई नहीं है, ऐसे भूमिदार भोमिया कहलाते थे ।

२ लुटेरा डाकू ।

३ क्षेत्र विशेष का पूर्ण जानकार या विज्ञ व्यक्ति ।

उ०—तिकै जैसलमेर था कोस २५ आथवरा नूं मंगळीकाथळ छै, तठै रहै छै । वा ठौड़ मंगळीकाथळ कहावै छै । तठै द्रम छै । सु भोमियौ होय सु डांडी आवै । असेंधौ डांडी टळै सु घोड़ौ असवार गरक हु जाय ।—नैरासी

४ खेतिहर राजपूत, जो किसी प्रकार का कर न देता हो ।

५ चूहा ।

६ देखो 'भोमियाजी' ।

रू० भे०—भोमीयौ, भोम्यौ ।

भोमी—देखो 'भूमि' (रू. भे.)

उ०—पांरणी नरिंद पुत्रां, भोमी गढ़ व्रद भारिया । खट-मेक जतन कीजै, कथितं आदि जुगादि ।—गु. रू. बं.

भोमीचार-सं० पु०—भूमि का आधिपत्य ।

उ०—जिरण दिनां मैं इतरा भोमीचार जाटां रा है जिणां री याद । लाधड़ियै वा सेखसर लारै गांव ३६० है सू औ गांव गोदारां रा है । —द. दा.

भोमीचारौ-सं०पु०—१ 'भोमियों' की आबादी का घनत्व वाला स्थान ।

उ०—१ गाय सिंघ ओक घाट जळ पीवै, सांढियां रा वरग सूना ही चरै, बाजारां री हाट में कोई बोपारी ताळो न मारै । बडी बांकी भोमीचारै री जायगां छै तिरण रै चिकोड री उगूणी दिसा छै ।—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ कूच थयौ सुरण अस्टक न्यारा, चळ चळिया थळ भोमीचारा । इळ जतने घर जोस अछायौ, असंख दळै जैतारण आयौ । —रा. रू.

२ 'भोमियों' का अधिकार ।

उ०—और थिरराजजी वडावड आंब काटनै आंबेर सूं लायौ नै महारोठ में लगाया । पछै कितराक पीढ़ियां पछै मारोठ में गौड़ां री भोमीचारौ रैयौ ।—मारवाड़ री ख्यात

३ लूट-खसोट, डकैती ।

उ०—पातसाह री बेटी परणीयो देपाळ धंध रजपूत । अठै देपाळपुर राज करै । अठै औ भोमीयोचारौ करै । सो ईयै पासै असवार २५ रहै । सो वडा तरवारीया अर देपाळ पिरण वडौ तरवारीयौ । जैमोई दातार वडौ रजपूत । सो औ भोमीचारौ करै । परखंडां रा माल ले आवै । तठै गांम मांहे लेनै खावै खरचै । गांम मांहे वडी गढी बळवंत । सु देपाळ अठै ईयै भांत सुं रहै ।

—देपाळ धंध री वात

४ कृषि योग्य भूमि का 'भोमिया' द्वारा निशुल्क उपभोग करने की क्रिया ।

५ जमींदारी ।

रू० भे०—भोमियाचारौ, भौमीचारौ, भौमियाचारौ ।

भोमीबळ-सं० पु०—१ जल, पानी । (डिं. को.)

भोमीयाचारौ—देखो 'भोमीचारौ' (रू. भे.)

उ०—पोकरण राठौड़ां रा गांव ३० । पोकरण राठौड़ जगमाल मालावत रा पोतरा पोकरण रै परगनै भोमीयाचारै गांव खावै । पेस कसी, नाळ-बंधी घणी का दै नहीं, ना कदै चाकरी करै ।

—मारवाड़ री ख्यात

भोमीयौ—देखो 'भोमियौ' (रू. भे.)

उ०—१ अठे जमीयत कर रहीया भली भांत सौ । उपरा वरखा लागी । भोमीयौ सारो ही गळै । भोमीया खड गया ।

—राजा नरसिंघ री बात

उ०—२ तिको गया जी रै कोठै पिंड भरावंण नै गया थ्या, पाछा वळतां थकां मारग मै भोमीया उठ्या, भोमीया सु लड़ाई कीनी । भोमिया नै मारि धरती सरद करि, आपरै नांमै कनवज सहर वसायो नै राजस्थान बांध्यौ ।—राजा रासटेस्वर री वारता

भोयंकर—देखो 'भयंकर' (रू. भे.)

उ०—अखाडा महोदद डोहतौ ओकटा, पेख तन सुपह विमुहा पधारै । 'भीम' सरखौ कहर 'माल' हर भोयंकर, जहरगाजी संकर तुईज जारै ।—चुतरौ मोतीसर

भोयंग देखो 'भुजंग' (रू. भे.)

उ०—२ पदमरण नाग नारावां पैणां, अधको भोयंग नलौ पै आंरण । वडा छत्री छटको बीछू रौ, चाररण सु टाळै चहुआंरण ।

—आसाजी गाडरण

भोयंगमंडळ-सं० पु० [सं० भुजंग+मंडल] नागलोक, पाताल ।

उ०—आंनन रांमरांम सुरण आंणी, अंतर आंणी रांम उर । भोयंगमंडळ लोह जणावरण, गोरिवै कुंजा प्रांणगुर ।

—महाराणा स्त्री कुंभा रौ गीत

भोय—१ देखो 'भूमि' (रू. भे.)

उ०—कोई दिन गादी कोई दिन तकिया, कोई दिन भोय में पड़रणा रे । कोई दिन खाना तौ कोई दिन पीना, कोई दिन भूखे ही मरणा रे ।—मीरां

२ देखो 'भोग' (रू. भे.) (जैन)

भोयड़लौ-सं० पु० (स्त्री० भोयड़ली) एक अछूत व नीच जाति ।

उ०—संख समदां नीपजै, ज्यांहूं की न्यारी न्यारी जात । एक संख सेवा चढ़ै, दूजौ **भोयड़ल्यां** के हाथ ।—मीरां

भोयण—१ देखो 'भुवन' (रू. भे.)

उ०—भार गज टलां फौजां भमंग **भोयणां**, जुध अड़ग ओयणां रूप जाभा । क्रोध भर अतर मखै अगन कोयणां, कंवर घर दोयणां लियण काजा ।—रांमलाल आढ़ौ

२ देखो 'भोजन' (रू. भे.)

उ०—खारा नइ खोटा, मीठां मधुरा भक्ष, काचा नइ कोरां, कंदा मूल अभक्ष । रयणि **भोयण** घण, परदारा गम (न) किद्ध, तोहि त्रपति नहीं मुझ, जिम खारइ जलि पिद्ध ।—ऐ. जै. का. सं.

३ देखो 'भवन' (रू. भे.)

भोयणउ—देखो 'भुवन' (रू. भे.)

उ०—जांउ जागइ तांउ मागइ, जांउ जोयणउं तांउ **भोयणउं**, जेतिय राति तेतउं जागर, जेवडउं खांडउं तेवडउ घाउ ।—व स.

भोर-सं० पु०—१ सवेरा, प्रातःकाल ।

उ०—१ पसु लासुवा पिळ पड़ै सै, रवै न टोडा टारड़ा । छड़ी बूंघरां मिस लुळ करां, नित घर **भोर** जुहारड़ा ।—दसदेव

उ०—२ तुमसों तो मन लाग रह्यौ, तुम जागौ मोहन प्यारै । **भोर** भई चिड़ियां चहचईं, कागा बोले कारै ।—मीरां

२ धोखा, भ्रम ।

वि०—३ चकित, स्तंभित ।

रू० भे०—भौर ।

भोरड़—वृद्ध ।

उ०—हुं यौवन तनि जालवुं, चढी सुमालइ मींत । भव जातइ **भोरड** थसिइ, चतुर ! म चूकिसी चींत ।—मा. कां. प्र.

भोरणौ, भोरबौ-क्रि० स०—भ्रम में डालना ।

उ०—वडी ठगारी जांनीयै, हरीया माया जोरि । और किनी सुं ना टरी, लीया त सब जुग **भोरि** ।—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

भोरणहार हारौ (हारी), **भोरणियौ** – वि० ।

भोरिओड़ौ, भोरियोड़ौ, भोरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।

भोरीजणौ, भोरीजबौ—कर्म वा० ।

भोरियोड़ौ—भ्रम में डाला हुआ ।

(स्त्री० भोरियोड़ी)

भोरी-सं० स्त्री०—शीतला रोग का भेद विशेष । (अमरत)

भोरौ-सं० पु०—१ कण, दाना, महीन टुकड़ा ।

उ०—१ वा आपरै कटोरा सूं चूरमा री अेक **भोरौ** नीचे न्हाक दियौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ कुट-कुट करती अेकली सगळी रोटी खायगी । चिड़ी नै अेक **भोरौ** ई को दियौ नीं ।—फुलवाड़ी

उ०—३ स्याळ खिरगोसिया नै केर रा पांन माथै अेक टोपौ खीर अर मालपूआ री एक **भोरौ** पुरस दियौ ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'भोळौ' (रू. भे.)

भोळ—देखो 'भौळ' (रू. भे.)

२ देखो 'भोळानाथ' (मह., रू. भे.)

उ०—सिल किस्तूरी गंध समांणी घण मिरगाळै, गंग बहावणहार हेमाळ-सीस हिमाळै । लेत विसांणी मेघ सांवळौ इसौ लुभावै, **भोळ** नादियै कीच गुदळतां, सींग सुहावै ।—मेघ

भोल-सं० पु०—स्त्री की योनि, भग ।

भोळउ—देखो 'भोळौ' (रू. भे.)

उ०—जो उणु बोलि तो **भोळउ**, न बोलि तो मितभासी, भोग-चपल तो कंदर्प्पावितार, अविसइ तो परनारिसहोदर, जो टालि माथि तो पुण्यवंत जि होइ ।—व. स.

भोळणौ, भोळबौ—देखो 'भळणौ, भळबौ' (रू. भे.)

भोळणहार हारौ (हारी), **भोळणियौ**—वि० ।

भोळिओड़ो, भोळियोड़ौ, भोल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भोळीजणौ, भोळीजबौ—भाव वा० ।

भोळप-सं० स्त्री०—१ गलती, त्रुटि, भूल ।

उ०—१ तरै माळी पण बात सुणी थी सो माळी जांणी—आज साह जलाल बूबना रै महल जायसी. सो **भोळप** करै छै ।

—जलाल बूबना री बात

उ०—२ सगळी बात सुणनै सेठ बोल्यौ—'गैंणौ तौ उणनै सूंपणौ ई पड़ेला । सात पीढियां री साख जावै । जायनै सावळ समझा । यूं **भोळप** री बातां करियां घर री साख कीकर रै'वैला ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ सु धरती ग्रासियां दाब लीवी । आ वात सांगैजी बीका-नेर सुणी । जो सिरदारां री **भोळप** सूं जमी जाय छै । तद सांगैजी राव जैतसीजी सूं मदत री वीनती करी ।—द. दा.

२ अविवेक ।

उ०—१ भतीजै उणनै समझाई—इण में आपरी कीं चूक कोनीं । **भोळप** सूं भूल व्है ई जावै तौ भगवांन इण माथै कीं विचार नीं करै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ मां नै सोनळ माथै अणूंती रीस आई । उणनै **भोळप** अर टाबर पणा वास्तै खासी भली आडै हाथां ली ।—फुलवाड़ी

३ भुलावा, भ्रम ।

उ०—१ म्हैं घणा दिन **भोळप** में रह्यौ । थें सगळा ई जाळसाजी में कंवरां रै भेळा हौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सरकार रौ लोग खास खेली सो तमासगीर गयौ हुतौ सौ खांत राख कजियौ न कियौ और फौजदार पण **भोळप** सूं चढ़ियौ ।

—डाढाला सूर री बात

रू० भे०—भौळप ।

भोळवणौ, भोळवबौ-क्रि० स०—१ भुलावे में डालना ।

उ०—१ जे के, म्हारी बेटी, देख्यौ सपनां मांय, के थारी साथण **भोळवै** । ना ना, म्हारी माता, देख्यौ सपना मांय, ना म्हारी साथण भोळवै ।—लो. गी.

उ०—२ किया काचा अमा सूरहर कळोधर, डरत गत न पीधौ फूल-दारू। वडा री **भोळवी** हूर आवी वरण, मेलती गइ नीसास। मारू।—नरहरदास बारहठ

उ०—३ गमइ सहूनइ वरसा रुडु एहवइ धन महिसी चारए परणामिइ ते मुगध **भोलुव्या**, व्रत्ति करइ सुविचार ए।

—नलदवदंती रास

२ धोखा देना।

उ०—करि करी करवउ प्रिय जोवती, भमइ भीरु रणांगिण रोयती। मरण नइं भइ गिउ मझ **भोलवी**, किस्यूं किह्यां उरतु हिव ओलवी।—सालिसूरि

३ पुचकारते हुए समझाना।

४ देखो 'भळणौ, भळबौ' (रू. भे.)

भोळवणहार, हारौ (हारी), भोळवणियौ—वि०।

भोळविप्रोड़ौ, भोळवियोड़ौ, भोळव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भोळवीजणौ, भोळवीजबौ—कर्म वा०।

भौळवणौ, भौळवबौ—रू० भे०।

भोलांण, भोलांवण—देखो 'भोळावण' (रू. भे.)

भोळाई—सं० स्त्री०—भोलापन, सरलता, सीधापन।

भोळाणौ, भोळाबौ—क्रि० स०—कुछ समय के लिए किसी की देख-रेख या निगरानी में रखना।

उ०—१ पीछै सं० १६३८ तोसणीवाळ कलोजी तिणां री भतीजो तिलोकसी नागौर सूं बीकानेर आयौ। महाराज रायसिंघजी कारखांनै री चाकरी **भोळाई**।—द. दा.

उ०—२ आगै दसमी दोढी वाळिया नै **भोळाइ** दियौ।

—सयणी चारणी री बात

२ सौंपना, सुपुर्द करना।

३ हुक्म देना, बतलाना।

ज्यूं—ओ कांम म्हैं उण नै **भोळाय** दियौ हुं।

४ भुलाना।

५ धोखा करना, छल-कपट करना, भ्रम में डालना।

उ०—१ हिवै जगदेवजी हवेली भाड़ै लेनै पाछा घोड़ां री ठौड़ आवै तौ चावड़ी, घोड़ा दीसै नहीं नै रथ रा खोज दीसै। तरै जांणियो चावड़ी नै कोई **भोळाय** नै ले गयौ।

—जगदेव पंवार री बात

उ०—२ तरै चावड़ी जांण्यौ म्हारी साळी मालजादी मोसूं घणौ दगौ कीन्हौ नै मोनै जोर **भोळाई**।—जगदेव पंवार री बात

६ हिदायत देना।

भोळाणहार, हारौ (हारी), भोळाणियौ—वि०।

भोळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भोळाईजणौ, भोळाईजबौ—कर्म वा०।

भळाणौ, भळाबौ, भळावणौ, भळावबौ, भुळाणौ, भुळाबौ, भुळावणौ, भुळावबौ, भोळावणौ, भोळावबौ—रू० भे०।

भोळानाथ—सं० पु०—शिव, महादेव। (डि. को.)

उ०—**भोळानाथ** दिगंबर यै दुख मेरा हरो रे। सीतळ चंदन बेल पतरवा, मस्तक गंग धरो रे।—मीरां

मह०—भोळ।

भोळापण, भोळापणौ—सं० पु०—१ नादानी, नासमझी।

उ०—नगर आइ जोगी रम गया रे, मो मन प्रीत न पाइ। मैं भोळी **भोळापण** कीन्हौ, राख्यौ नहीं बिलमाइ।—मीरां

२ भ्रम आदि के कारण कुछ का कुछ समझने का भाव, अज्ञानता, असावधानी।

उ०—कोई एक वीर पुरस मारीज गयौ नैं लार नाबाळक जांण सत्रुआं हलौ करणौ विचारियौ तठै उण वीर पुरख री स्त्री आपरा बाळक रौ पखि सत्रुआं नैं करावै छै—हे सत्रुआं थे हूं जांणूं **भोळापणै** भूला छौ क्यूं कि म्हारौ पुत्र आठ बरस रौ बाळक जांण युद्ध रौ मतौ करौ छौ।—वी. स. टी.

३ सीधापन, सरलता, सादगी।

उ०—ठगां री सिरदार आपरी बेटी नै मगखरी रा भाव सूं कह्यौ—बेटी, आंरो **भोळापणौ** तो देख के औ खुद चलायनै अठै ठगीजण सारू आया है।—फुलवाड़ी

४ मूर्खता।

भोळावट—जिम्मेवारी, उत्तरदायित्व।

उ०—घोड़ां तुरकीयां राहदार ऊपर नांख पाखर दोनां ही पाखतीयां लगाय तरगस कूंटा मारचा भडीया री **भोळावट** हाथ मांहै लै बरछी नै राणी दहड़ चढी, सकत रूप धार।

—राजा नरसिंघ री बात

भोळावण, भोळावणि—सं० स्त्री०—१ निगरानी में देने की क्रिया या भाव, संभाळ।

उ०—१ पन्नांमारू आप तो सिधावौ परदेस, म्हारी नै **भोळावण** किण नैं दे चाल्या हो।—लो. गी.

उ०—२ धाय धावड़ सहेली खवास सूं मिळी। तरै सासू तिलक काढ़ि नै नाळेर देनै चावड़ी री **भोळावण** जगदेवजी ने दीधी।

—जगदेव पंवार री बात

२ सावधानी रखने के लिए कथन, देख-रेख।

उ०—१ अरु पड़गनां री संभाळ थांणैदार पड़ियार वेळौजी, प्रोहित विक्रमसी, वैद लालोजी, लाखणसी मय जमायत कै देस मैं वा पड़गनां मैं गया, अरु जावतौ कियौ। नै किले री **भोळावण** वास्तै किता अेक सिरदार वा किलैदार नापैजी सांखलैनूं राखियौ।—द. दा.

उ०—२ सु राजा घड़ी घड़ी री खबर मंगावै। जैत सांमधरमी छै, इम वार वार कहै, उसताद नूं **भोळावण** देवौ।

—जैतमाल पुमार री बात

३ सिफारिश।

उ०—आणंद में इतरी अळूझी, विसेस बिगति न बूझी। चतरुनै

इणहीज सरभरां मैं राखी, इण बात री घणी **भोळावणी** दाखी ।
—र. हमीर

४ हिदायत, शिक्षा ।

रू० भे०—भळ, मळण, भळांग, भळांमण, भळांवण, भळांवणी, भळाव; भळावण, भुळावण, भुळावणी, भुळाविणी, भुळाविनी, भोळांण, मोळांवण, मौळावण ।

भोळावणौ, भोळावबौ—देखो 'भोळाणौ, भोळाबौ' (रू. भे.)

भोळावणहार, हारौ (हारी), भोळावणियौ—वि० ।

भोळाविग्रोड़ौ, भोळावियोड़ौ, भोळाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भोळावीजणौ, भोळावीजबौ—कर्म वा० ।

भोळावियोड़ौ—देखो 'भोळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भोळावियोड़ी)

भोळि-सं० पु० [सं० बहुलिट] ऊंट । (डिं. को.)

भोळीचक्रवत, भोळीचक्रवति भोळीचक्रवरति-सं० पु०—शिव, महादेव ।

उ०—१ अगतवचा पहिरि रुंडमाळा, **भोळीचक्रवति** वणियौ भेख । चढियौ व्रख भव बभूति चढावै, वर तोरण वादिवा विसेख ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वांणी इम आकास चवांणी, ओ **भोलीचक्रवरति** भूवाळ । आ ओ तपइ रइ जो ईस्वर, तप करिस्युं मिळसी ततकाळ ।
—महादेव पारवती री वेलि

भोळेपण—सीधापन, सरलता ।

उ०—सांस में सपनां रौ संसार, अलेखां सरगां रै उणिहार । तिरै है **भोळेपण** रै तीर, बिहि री मन चींती मनुहार ।—सांभ

भोळेराव—सं० पु०—पृथ्वीराज के समकालीन गुजरात के राजा भोळे-भीम के लिए प्रयुक्त ।

उ०—लीधौ दळ परमार दळ, आबू **भोळेराव** । गाजे जादव देव-गिर, लीधौ करन सुजाव ।—बां. दा.

भोळै-क्रि० वि०—भ्रम से, भ्रांति से ।

उ०—१ गजसिघज गैंभर गोडिया, तीह कलेवर पंजरा । सावज्ज सीह व्याया सघण, रहि **भोळै** गिर कंदरां ।—गु. रू. बं.

उ०—२ पाजौ सूधौ भरियौ । थबोहलां खाय बै । चांनणी रात रा बीलाय आवै तौ, दूध रै **भोळै** पी जाय ।—पनां

रू० भे०—भौळावै, भौळै ।

भोळैनाथ—देखो 'भोळौनाथ' (रू. भे.)

भोळौ-वि० (स्त्री० भोळी) १ सरल स्वभाव, सीधा ।

उ०—१ कांमी क्रोधी क्रपण कलंकी कुटिल कजाक कसाई, चोर चुगल चालाक चतुर सूं **भोळौ** आछौ भाई ।—ऊ. का.

उ०—२ सु कुंवर 'जोगौ' **भोळौ** सो ठाकुर हुतौ । सु 'जोगा' सूं धरती रस नह आई, नै धरती मांहै मोहिलां रौ दखल हुवण लागौ ।
—नैणसी

उ०—३ नगर आइ जोगी रम गयारै, मो मन प्रीत न पाइ । मैं **भोळी** भोळापण कीन्हौ, राख्यौ नहीं बिलमाइ ।—मीरां

२ मासूम, निरीह ।

उ०—१ **भोळी-भोळी** बाळिकावां रा सोवणा गिरस्थ बाग-बगेचा बळण सूं उबारौ, नीं तौ भारत सूनौ हो जावैलो ।—दसदोख

उ०—२ माईतां रै मरियां **भोळा** रेढ़ां रा कांई दीन व्हैला ।
—फुलवाड़ी

३ मूर्ख, बेवकूफ ।

उ०—१ तरसै देख अवर बनतावां, भूलै रघुवर **भोळा** । जद करसी पिसताबौ जम रा, दूत फिरैला दोळा ।—र. रू.

उ०—२ बेहद रा बासी हद में हांसी, आसी बिख उफणंदा है, खूटोड़ा खोळा गाफल गोळा, **भोळा** इस्क भणंदा है ।—ऊ. का.

उ०—३ नाई कह्यौ—बापजी, कांई अरज करूं म्हारो बाप साव इज **भोळौ** अर अबूझ ।—फुलवाड़ी

उ०—४ म्हैं राजाजी जित्ती **भोळी** कोंनी जको कविता सुणनै राजी व्है जावूं—फुलवाड़ी

४ सयाना, समझदार ।

५ निश्चल ।

६ अभाव ।

उ०—सुंदर गोरी ओळूं थारी परी रै निवार, चंपक वरणी, बाभोसा रा **भोळा** सुसरोजी भांगसी ।—लो. गी.

७ नासमझ ।

उ०—नगर कोतवाळ कह्यौ—आप ई कैड़ी **भोळी** बातां करौ । घरवाळी नै तौ सूती छोड छांनै आयौ ।—फुलवाड़ी

८ भ्रम ।

उ०—१ कदेही सैहलां निकळौ नहीं सो दीवांण पधारौ, काळीयै द्रह विराजज्यो । म्हें पिण आवां छां । रांणोजी **भोळा** हुआ, यां रौ तरदोज चूक जांण्यौ नहीं—राव रिणमल री बात

उ०—२ कांई वा इत्ती रूपाळी है ? वा आपरा रूप में डूबगी । इंदरापुरी री अपछरावां रा ई **भोळा** भांजै जैड़ी, अबोट अखूट रूप ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—भोळउ, भोरौ, भोळवौ, भोळवौ, भौळौ ।

भोळौनाथ-सं० पु०—शिव, महादेव ।

रू० भे०—**भोळैनाथ** ।

भोवाळ—देखो 'भूपाल' (रू. भे.)

उ०—दादै जैतल करण दादै देदल वानगदेव, वैरसीह लखमण विरद-विसाळ । 'माला' हरौ मनमौट मोटै पाट मेरगिर, भाटियां भवाड़ै भला भींवजी **भोवाळ** ।—नैणसी

भोसकियौ-सं० पु०—स्त्री की योनि ।

रू० भे०—भोचकियौ, भोसक्यौ ।

अल्पा०—भोसकी, भोसड़ी ।

मह०—भोसड़, भोसड़ौ ।

भोसकी—देखो 'भोसकियौ' (अल्पा., रू. भे.)
भोसक्यौ, भोसकौ—देखो 'भोसकियौ' (रू. भे.)
भोसड़, भोसड़ौ, भोसड़ौ—देखो 'भोसकियौ' (मह., रू. भे.)
भोसड़ी रौ-वि०—एक अश्लील गाली।
रू० भे०—भोड़ी रौ, भोडौ।

भोसागर—देखो 'भवसागर' (रू. भे.)
उ०—१ तुम सुनो दयाल म्हारी अरजी। **भोसागर** में बही जात हूं, काढ़ौ तो थारी मरजी।—मीरां

भोहणौ, भोहबौ-क्रि० स०—उपभोग करना, भोगना।
उ०—अर घणां देसां रा लूटणहार धारां रा अधीस पराइ भूमि रा **भोहणहार** मेड़तिया बलभद्र नूं रांमपुरे लेजाइ बिबाहियौ।
—वं. भा.

भोहणहार, हारौ (हारी), **भोहणियौ**—वि०।
भोहिग्रोड़ो, भोहियोड़ो, भोह्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भोहीजणौ, भोहीजबौ—कर्म वा०।

भोहियोड़ौ-भू० का० कृ०—उपभोग किया हुआ, भोगा हुआ.
(स्त्री० भोहियोड़ी)

भौं-सं० स्त्री० [अनु०] ध्वनि विशेष।
उ०—सिव मग सन्मुख थाज्यौ, धप मप दों दों, भर हर **भौं-भौं** मादल भेर बजाज्यौ।—ध. व. ग्रं.

भौंकणौ, भौंकबौ—देखो 'भूंकणौ, भूंकबौ' (रू. भे.)
उ०—कायर कूकर कोटि मिळ, **भौंकै** अरु भागै। दादू गरवा गुरुमुखी, हस्ती नहि लागै।—दादूबांणी
भौंकणहार, हारौ (हारी), **भौंकणियौ**—वि०।
भौंकिग्रोड़ो, भौंकियोड़ो, भौंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
भौंकीजणौ, भौंकीजबौ—भाव वा०।

भौंकियोड़ौ—देखो 'भूंकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० भौंकियोड़ी)

भौंचक-वि०—हक्का-बक्का, घबराया हुआ।
रू० भे०—भौचक।

भौंजाई—देखो 'भुंजाई' (रू. भे.)
उ०—तिस परि भोजन पूर कनक-थाळ विराजमांन करि खिजमतगारूं नै अरज कीवी **भौंजाई** की तयारी।—सू. प्र.

भौंडिरू-सं० पु०—विवाह आदि अवसरों पर अपनी हमेशा की सेवाओं के बदले कुछ विशेष नेग लेने वाली जातियों का समूह।
भौंपणी—देखो 'भांपणौ' (अल्पा., रू. भे.)
भौंपणौ—देखो 'भांपणौ' (रू. भे.)
भौंर, भौंरौ—देखो 'भ्रमर' (रू. भे.)
उ०—१ हमाऊ रसं सारसं राजहंसं, अखै **भौंर** भंकार वेपार वंसं।—रा. रू.

उ०—फल-फूलूं के भार भरी अढ़ार भार। ठांम ठांम के ऊपर मोरूं का तंडव **भौंरू** का गुंजार।—सू. प्र.

भौंरामाखी-सं० स्त्री०—बड़ी जाति की एक विशेष मक्खी।
रू० भे०—भमरामाखी।

भौंरामाटी—देखो 'भंवरामाटी' (रू. भे.)
भौंळ, भौंळि—देखो 'भंवळ' (रू. भे.) (अमरत)
भौंह—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)
उ०—काढ़ियां खगां मुजरा करै, **भौंह** मूंछ अणियां भिड़ी। सूरज-पसाव आगै सफै, इम त्रिहुं वागां ऊपड़ी।—सू. प्र.

भौंहारौ—१ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)
उ०—सुणि इम वैण वीररस साजा, रंग मजीठ कीध मुख राजा। अगन नयण धिखि नजर अंगारां, भिड़ै मूंछ अणियां **भौंहारां**।
—सू. प्र.

२ देखो 'भंवारौ' (रू. भे.)

भौ—१ देखो 'भय' (रू. भे.)
उ०—१ ताहरां रायसल रौ रावनूं अणी अत **भौ**, सदा धमक राखै। को कहै रायसल कांम आयौ, को कहै कांम नहीं आयौ।
—नैणसी
उ०—२ लोगां बात बणाई कै—सिंघ में आळस, सांप में **भौ**, बामण में फूट अर सोधां गोधां रै पल्लै हार नां आंती तो मुलक बसतौ नहीं, उजड़ जातौ।—दसदोख
उ०—३ **भौ** मेटि उभै संसार भव, इम कुण कुळ उद्धारसी। परसियौ राय जोधहपुरै, बिस्वनाथ बांणारसी।—गु. रू. बं.
२ देखो 'भव' (रू. भे.)
उ०—१ औ सिंघ अैंठवाड़ी सिकार नै मूंडौ नीं घालै, पण अैंठौ करण वाळा नै तीन **भौ** में ई नीं छोडै।—फुलवाड़ी

भौआरौ—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)
भौग—देखो 'भोग' (रू. भे.)
उ०—परदार प्यार हुयगो प्रमत, बिन सींगां रौ बैलियौ, **भौग** रै मांय भंवता भंवर, गयौ जनम सब गेलियौ।—ऊ. का.

भौड़-सं० स्त्री०—१ सूर्य की कड़ी धूप व गर्मी।
२ अत्यधिक खुजली का रोग, जिसमें छोटी २ फुंसियां हो जाती हैं।
भौचक—देखो 'भौंचक' (रू. भे.)
भौजाई—देखो 'भोजाई' (रू. भे.)
भौटौ-वि० (स्त्री० भौटी) जो तीक्ष्ण या पैना नहीं हो, बिना धार वाला।
उ०—जिण वगत वौ जैपर राजा रै सांमा इक्कीस नवलखा हारां रौ निजरांणौ धकै करियौ उण वगत ईस्टुखां अेक काळा भाटा रै माथै रगड़ रगड़नै **भौटी** कवाड़ी रौ पांनौ करतौ हौ।—फुलवाड़ी
भौड, भौडक—देखो 'भोडक' (रू. भे.)
उ०—कटकै काछी तणै, 'गाजीसाह' नरिंद। बाधै नेत विराजियौ, **भौडक** बाधै विंद।—गु. रू. बं.

भौंडिडुभ-सं० पु० [सं० भय+दुंदभि] भय के समय का युद्ध के संकेत स्वरूप बजाया जाने वाला युद्ध वाद्य विशेष।

भौण—१ देखो 'भवन' (रू. भे.)
२ देखो 'भुवन' (रू. भे.)

भौत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)
उ०—तठै भींवराजजी अरज करी कै हजरत हम दोय जणां दीन मैं आयै सै तुमारा दीन वडा होय तौ **भौत** आछी बात है।
—द. दा

भौतिक-सं० पु० [सं० भौतिकः] १ शिव, महादेव।
[सं० भौतिकं] २ आंख, कान आदि इन्द्रियां।
३ आधि-व्याधि, कष्ट, उपद्रव।
वि०—१ पर्थिव, शरीर संबन्धी।
२ पंचभूत से बना।
३ पचभूत से सम्बन्धित।
४ लौकिक, सांसारिक।
५ भूत-योनि से सम्बन्धित।
६ प्राकृतिक नियमों, सिद्धान्तों, रूपों आदि से सम्बन्ध रखने वाला।

भौतिकस्रस्टि-सं० स्त्री० [सं० भौतिकसृष्टि] पुराणानुसार दैव, मनुष्य और तिर्यक योनि की समष्टि।

भौदोख-सं० पु० [सं० भयदोष] वह दोष जब मनुष्य स्वेच्छा से नहीं अपितु लोकोपवाद के भय से सामयिक कर्म करता है। (जैन)

भौपणियौ—देखो 'भांपणौ' (अल्पा., रू. भे.)

भौपणौ—देखो 'भांपणौ' (रू. भे)

भौपति—देखो 'भूपति' (रू. भे)
उ०—**भौपति** बहौत कळै माया में, मीर मलिक सुलितांना रे। जन हरिदास विरळा जन कोई, उलटी पांख उडांणां रे।
—ह. पु. वा.

भौपाळ -देखो 'भूपाल' (रू. भे)

भौप्रद—देखो 'भयप्रद' (रू. भे.)

भौम—१ देखो 'भोम' (रू. भे.) (अ. मा.)
२ देखो 'भूमि' (रू. भे)
उ०—१ चित्त साह चिंतवै, **भौम** इक राह निभ्रम्मां, खुरासांण घमसांण, रांण घेरियौ मुहम्मां।—रा. रू.
उ०—२ वाधै फौज अकब्बर वाळी, नीरध जांण पलट्टै नाळी। प्रबळ रजी ऊठी चहुं पासा, ऊडी **भौम** कि मिळण अकासा।
—रा. रू.

भौमप्रदोस-सं० पु० [सं० भौमनप्रदोष] मंगलवार को पड़ने वाला प्रदोष का व्रत, जो विशेष महत्व का माना जाता है।

भौमवार-सं० पु० [सं०] मंगलवार।
रू० भे०—भोमवार।

भौमासुर-सं० पु०—नरकासुर नामक एक राक्षस।

भौमि, भौमी-सं० स्त्री०—१ पृथ्वी की कन्या, सीता।
उ०—खुध्यावंत हूं मातहूं वैण अक्खै, भणै मात **भौमी** फळां वीण भक्खै। स्त्रियां छांह राखिया व्रच्छ सूधा, अनै रास कोरा लिया व्रच्छ ऊंधा।—सू. प्र.
२ देखो 'भूमि' (रू. भे.)
उ०—१ व्रज में आवोला जी व्रजवासी, रांमा थां विन **भौमि** उदासी। ब्रंन्दावन थारी सूखण लागी, कुज कुंज कुमळासी।—मीरां
उ०—२ रोड़ बजि हैवरां आगि धकि रारियां, धजर भाला खेवण अभागी धारियां। **भौमि** गूगळी गयण चढ़ै रज भारियां, तूटिसी घणा सिर आजि तरवारियां।
—जालमसिंघ मेड़तिया रौ गीत
उ०—३ सोभि जांन सिरदार रूप अणपार विराजै, रतन निकरि किरि रुचिर **भौमि** वैरागर भ्राजै।—रा. रू.

भौमीचारौ, भौमीयाचारौ—देखो 'भोमीचारौ' (रू. भे.)
उ०—**भौमीचारौ** मांडियौ, वारौ वदै जिहांन। जस हूंता न करै जुदा, दई सदा परधांन।—रा. रू.

भौम्यौ—देखो 'भोमियौ' (रू. भे.)
उ०—जणी रजपूतांणी ओठी लै जणी मांहै हांडा, चाटु और वसत मेल माथै लै चाल्या जो एक **भौम्या** रै गांम आया।
—पंचमार री बात

भौयंग—देखो 'भुजंग' (रू. भे.)
उ०—भड़ बका बहै छकड़ुंद सज कज **भौयंग**, पतंग चखचुंद गत मुंद हेकण पयंग। सुंद कळ खळां बुंद करसी सयंग, खुंद छळ वळां दळ बुंद करसी खयंग।—बदरीदास खिड़ियौ

भौयण—१ देखो 'भवन' (रू. भे.)
२ देखो 'भुवन' (रू. भे.)
उ०—हलै चलै दुनीयाळ विमन वहाळिया, **भौयण** मुरड़िगै धर आभ भिळगा। प्रिथी चौ नाथ कविपात वेळा पड़ी, वडै तरवर कुंवर पळै विळगा।—महाराजकुमार अनोपसिंह रौ गीत

भौर—देखो 'भोर' (१) (रू. भे)
उ०—चोर अचूकी सूं चवै, **भौर** हुआ धर भेख, थई नफा नै दौड़तां, थारां अवळा लेख।—अज्ञात

भौरिक-सं० पु० [सं०] १ किसी राजा या रईस के सोने के जेवर आदि रखने के विभाग का अध्यक्ष।
२ अध्यक्ष।

भौळप—देखो 'भोळप' (रू. भे.)
उ०—१ जे **भौळप** राखौ छौ सो वाजिब नहीं।
—जयसिंघजी री वारता
उ०—२ कियौ आप सूं हेत, म्हैं वडी **भौळप** करी, आपरा लखण अब निजर आया। अरज सुण म्हारी बडा ठाकुर अमल, कळंक मत लगाजै मूझ काया।—ओपौ आढ़ौ

भौळवणौ, भौळवबौ—देखो 'भोळवणौ, भोळवबौ' (रू. भे.)

उ०—इण तरै धण आपरै पिता री स्त्री नै आपरै माता तिण री मा नांनी अनै मांमा रै पिता नांनै (नांनी नांनै) वीर बाळक नैं वेर लैण रौ हठ करतां भौळवीयौ (पौटायौ)।—वी. स. टी.

भौळवणहार हारौ (हारी), भौळवणियौ—वि०।

भौळविओड़ौ, भौळवियोड़ौ, भौळव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भौळवीजणौ, भौळवीजबौ—कर्म वा०।

भौळवियोड़ौ—देखो 'भोळवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भौळवियोड़ी)

भौळावण—देखो 'भोळावण' (रू. भे.)

उ०—चाकरी रो वेहराव, डेरा कनात सांमान खरची लीधी। असवार सौ तीन (३००) सूं चढियौ। लारली भौळावण भाई देवानै दीधी।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

भौळावै—देखो 'भोळै' (१) (रू भे.)

उ०—कड़ियां सु'वै पांणी मैं पैठां पगां रा नख भाखै छै। दूध रै भौळावै विलाव वासीजै छै।—रा. सा. सं.

भौळि—देखो 'भंवळ' (रू. भे.) (अमरत)

भौळै—देखो 'भोळै' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीखंडूंका डंबर समीर सैं झोला खावै। मळियागिर के भौळै भूलि पंखेसर मिणधर भुजंग आवै।—सू. प्र.

उ०—२ दगै तोफां वहै गोळा रोहळा मोरछा दोळा, जौ लार सकै सूता सेर नै जगाय। भूरजाळ वांकडौ बीटियौ दूजां गढां भौळै लोहां जाळ घसै केहौ नसेणी लगाय।—बां. दा.

भौळौ-सं० पु०—१ भुलावा।

उ०—वैर लेवण हारू सारू सोहै बीजा कुळ रौ एक ही बाळक है नें एक हीं जुद्ध सारू ऊससै है सो इण नें थूं कोई तरै भौळौ दे'र थथोपौ वा पोटाय नैं अबार जुद्ध न करै इण तरह सूं भुलावसी।—वी. स. टी.

२ देखो 'भोळौ' (रू. भे.)

उ०—१ लाइयां लंगरां पेखि पट्टाझरां, डील भौळौ पडै कुंजरां डूंगरां। गज्ज ऊधोळियौ रज्ज सूं गूडळा, घोम मैं पब दीपै किरै घूंघळा।—गु. रू. बं.

उ०—२ भौळा प्रांणी रांम भज, तूं तज झौड़ तमांम। दीहा छेल्है देख रे, कैसै हूंता कांम।—र. ज. प्र.

उ०—३ बाई तौ जबरौ कांम करियौ। भौळौ सैण दुस्मण री गरज सार्जै।—फुलवाड़ी

भौवाळ—देखो 'भूपाल' (रू. भे.)

उ०—धन जननी जिण जायौ वीसलराव, बीसल समौ नवि कोई भौवाळ। रूप अपूरव पैखीयौ, लावण लाडु अरी पकवांन।

—बी. दे.

भौंसिध, भौंसिधु—देखो 'भवसिंधु' (रू. भे.)

उ०—अपरंपार अपार, पार भौंसिध उतारण। तुम नरहरी निरवंस, वंस (तोहि) साधां सुख कारण।—ह. पु. वा.

भौंह—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

भौहण—देखो 'भवन' (रू. भे.)

भौहरौ, भौहारौ देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—भौहरा जांणै भमर भमाय, मूंगफळी सी आंगुळी। कुसम-कळी, कर-नख जीरा, कनक कुंडळ धज सोहइ कांन।—बी. दे.

भ्याड़-सं० पु०—बड़ा मेंढक।

उ०—भ्याड़, जोख, झख भेक, वारिज कै भेळा वसै। इसकी भंवरो अेक, रसकी जांणै, 'राजिया'।—किरपारांम

भ्यारियौ—तुच्छ, भौंदू, मूर्ख। (बीकानेर)

भ्यास—देखो 'भास' (रू. भे.)

उ०—नहीं तो स्रम्म नहीं तो सास, नहीं तो भ्रम्म नहीं तो भ्यास। नहीं तौ नांम नहीं तू नेम, नहीं तू प्रीत नहीं तू प्रेम।—ह. र.

भ्रंग-सं० पु० [सं० भृंग] १ भ्रमर, भंवरा।

(अ. मा., ना. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ देखी तेह तडाग अनोपम, पंकज नांना-रंग। चक्रवाक सारस सुभ बोलि, अति गुंजारव भ्रंग।—नळाख्यांन

उ०—२ बुरी चुगल मुंह में बसै, आछी रौ नंह अंग। माखी बैसै स्वांन मुख, भूल न बैसे भ्रंग।—बां. दा.

२ हाथी, गज। (डिं. को.)

३ लता, बेल।

४ अभ्रक।

५ दालचीनी।

६ देखो 'भ्रगु' (रू. भे.)

उ०—सनिस्चर पुठि पाग देइ खाट बइसइ, कोडि देव उलग करइ, आस्थानइं इंद्र मालि, ब्रह्मा पुरोहित पुराउं करइ, भ्रंग रीसि आचमन दिइ।—व. स.

भ्रंगराज-सं० पु०—१ भंगरा नामक वनस्पति।

२ काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी, भीमराज।

३ बड़ा भौंरा।

रू० भे०—भिंगराज।

भ्रंगरीट-सं० पु०—१ शिव का द्वारपाल।

२ लोहा।

भ्रंगली-सं० पु०—एक वाद्य विशेष।

उ०—वाजिया ताल कंसाल तिवली, भेरि वीणा भ्रंगली। अति हरस माचइ पात्र नाचइ, भगति भांमिनी सवि मिली।

—ऐ. जै. का. सं.

भ्रंगार-सं० पु०—१ पक्षी विशेष। (सभा)

२ राज्याभिषेक के समय काम में आने वाला घट।

उ०—चोसठि व्यंजन रूप आहार दइं, एक स्थाल विसाल, वाटुली सीप कच्चोलां, भ्रंगारादिक भाजन सरवै समोपइं।—व. स.

३ स्वर्ण, सोना।

४ लौंग।

भ्रंगारी-सं० पु०—झींगुर।

भ्रंगि—देखो 'भ्रंगी' (रू. भे.)

उ०—इतर-सिउं आवी रहिउ, भांड भवाईया संगि। धूरि धंतूरु सेवतु, खातु भूकी भ्रंगि।—मा. कां. प्र.

भ्रंगिरीटि—देखो 'भ्रगु' (रू. भे.)

उ०—रंभा नाचइ, ब्रहस्पति पुस्तक वाचइ, इंद्र माळी, ब्रह्मा परोहित, भ्रंगिरीटि रीसि आचमन करावइ।—व. स.

भ्रंगी-सं० पु०—१ शिव, महादेव।

२ शिवजी का एक गण।

३ गुंजार करने वाला एक प्रकार का पतिंगा।

४ भौंरा।

उ०—मिण (णी) माणकं हेम ताटंक मंडे, चलै भांण दोयं जगा जोत चंडे। लसै चंद्रुका बिंद जाडी लपेटचौ, चितै दूज के चंद भ्रंगी बसटचौ।—बगसीरांम प्रोहित री बात

५ भांग, विजया।

रू० भे०—भ्रंगि, भ्रिंगि।

भ्रंगीस-सं पु० [सं० भृंगीश] शिव, महादेव।

भ्रंता-वि०—भ्रान्ति वाला, संदेही।

उ०—सुरतांण साल भ्रंता सबद, उर तै चिंता आकरी। तप लेख करै पतिसाह तौ, चयारू सोबा चाकरी।—रा. रू.

भ्रंति—देखो 'भ्रांति' (रू. भे.)

उ०—विरहणि वंस विहंसक किंसुक नहिं ए भ्रंति। विलवइं विरह करालिय बालिय इम एकंति।—जयसेखर सूरि

भ्रंमणौ, भ्रंमबौ—देखो 'भंवणौ, भंवबौ' (रू. भे.)

उ०—अे सांमहा उठ आया। तरै आप पागड़ी छांडिओ। ई आंनू बौहत लछीवांन देखनै भ्रंमिओ। तरै सारा ही आय मळिआ।

—कल्याणसिंह वाढेल री वात

भ्रंसणौ-वि०—नाश करने वाला।

उ०—भूतळ भूरां भ्रंसणौ, वेटौ हुव बड़ भाग। दागळ कर दुवणां दल्या, दस पीढी रा दाग।—रैवतसिंह भाटी

भ्रंसणौ, भ्रसबौ-क्रि० स०—नाश करना।

भ्रंसणहार, हारौ (हारी), भ्रंसणियौ—वि०।

भ्रंसिओड़ौ, भ्रंसियोड़ौ, भ्रंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भ्रंसीजणौ, भ्रंसीजबौ—कर्म वा०।

भ्रंसियोड़ौ-भू० का० कृ०—नाश किया हुआ.

(स्त्री० भ्रसियोड़ी)

भ्रकुंड-वि०—जिसकी भ्रकुटि चढी हुई हो।

सं० पु०—सिर, मस्तक।

उ०—मंड घमंड जुध थंड विहंड रुंडमुंड, झुंड भ्रकुंड चंड त्रिपत ग्रध झुंड।—सू. प्र.

भ्रकट, भ्रकट्ट, भ्रकुट, भ्रकुटक, भ्रकुटि, भ्रकुटी, भ्रकुट्टी-सं० स्त्री० [सं० भृकुटिः, भृकुटी] १ भौंह, भ्रू।

उ०—१ भ्रकुटी कमांन वांन वाकै लोचन, मारत है तक कस कै री। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, कैसै रहूं घर बस कै री।—मीरां

उ०—२ गति गयंद, जंघ केळि ग्रभ, केहरि जिम कटि लंक। हीर डसण, विद्रम अधर, मारू भ्रकुटि मयंक।—ढो. मा.

उ०—३ संक्रम सुभ रूटि द्रस्टी लुभ देती, लंपुट संपुट लख घूंघट पट लेती। लुळकर लकुटी लै भ्रकुटी सळलाती, भूखी बाघण सी भ्रकुटी भळकाती।—ऊ. का.

२ ललाट।

स० पु०—३ शिर, मस्तक।

उ०—१ भिड़ै हिक नीजुडियं भ्रकुटेह, चडै हिक रोस पडंत चटेह। जुटै हिक बथां जोध जुआंण, पोरस्स हुवै हिक नाहै पांण।

—गु. रू. बं.

उ०—२ कर सूळ बिकटह सुभट कौचट, रांम थट झट झपट रींझट। पछट वज्रघट कुघट ऊपट, रंगट भट फुट भ्रकुट मरकट।

—सू. प्र.

उ०—३ हरी हरां रहा चहूं तरफां असेस होत, नमेस इसट्टां धार खत्री वट्टां नेम। पड़ै पावां सार झट्टां हजारां भ्रकट्टां पेस, अरच्चै भूतेस-नांमी मारहट्टां अेम।—महेसदान कूंपावत री गीत

उ०—४ भूव पट याही मझ प्रगटत असे वीर, द्वंद मैं अदट वट दो दन विदार कै। परै कट भ्रकुट पै रटै मुख मार मार, धावा दै कमध घट फट खग धारकै।—जैतदांन बारहठ

रू० भे०—भरकुट, भरकूट, भिउड, भिउडि, भिउडी, भुगटी, भ्रकट, भ्रकट्ट, भ्रकुट, भ्रगट, भ्रगिट, भ्रगुट, भ्रगुटि, भ्रगुटी, भ्रगुट्ट, भ्रगुट्टी, भ्रगूट, भ्रगूटी, भ्रगूटीय, भ्रिकुटि, भ्रिकुट्ट, भ्रिकुट्टह, भ्रिगुट, भ्रृकुटि।

भ्रख—देखो 'भक्ष' (रू. भे.)

उ०—१ भ्रख अढार भोजण भांणि. तंबोळ मुख तरणि। वाजेंद्र राह वाहणि, आरूढ वळै। रिति वरखा सरद हैमंत सैसर हद, वसंत गीखम सद सुख सगळै।—गु. रू. बं.

उ०—२ तठा उपरांति करिनै राजांन सिलांमति पनरह दिन तांई जांन राखि घणी मनहारि करि भांतिगारी भगति जुगति महिमांनी करि सतरह भ्रख भोजन रा वणाव कीजै छै।—रा. सा. सं.

उ०—३ पग पगां संपड़ै, आंख संपड़ै क अंधै, भूखै भ्रख संपड़ै, जेम लोभी द्रब लढै।—ज. खि.

२ देखो 'भख' (रू. भे.)

उ०—हव रंभ झलंभ प्रबल हुई, थित खेंग लए नट रंभ थई। सिध ताजण 'धांधल'री समरी, भ्रख लेवण काज उनै भंवरी।—पा. प्र.

भ्रखण—देखो 'भक्षण' (रू. भे.)

भ्रखनिस-सं० पु० [सं० निशा+भ+रक्ष] चन्द्रमा, शशि । (नां. मा.)

भ्रग—देखो 'भ्रगु' (रू. भे.)

भ्रगट, भ्रगिट—देखो 'भ्रकुटि' (रू. भे)

उ०—१ सुभट समट घट गरट हट चाहसा, विकट रजवट उछट अघट बै बाहसा । निपट असळी भ्रगट कठी नव साहसा, अरक अथरक हरक धरक झुक अफछरा ।—महादांन महड्ड

उ०—२ बगतर सहित अूछळइ बरंगा, धीब पडइ नेजाळ धड । भाजइ भ्रगिट अरी चां भिडतां, घाय रमाडइ ति विध धड ।

—महादेव पारवती री वेलि

भ्रगु-सं० पु० [सं० भृगु] १ एक गोत्र प्रवर्तक मुनि, जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं ।

२ सप्त ऋषियों में से एक प्रसिद्ध मुनि, जो शिव के पुत्र माने जाते हैं ।

३ परशुराम ।

४ जमदग्नि ।

५ शुक्राचार्य ।

६ शिव, महादेव ।

७ शुक्रवार ।

८ श्री कृष्ण ।

९ पहाड़ के शिखर की समतल भूमि ।

रू० भे०—भरग, भरगु, भिरग, भिरगु भ्रंग, भ्रंगिरीटि, भ्रगू, भ्रिगु ।

भ्रगुकच्छ-सं० पु०—प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध नगर जो आजकल भडौंच कहलाता है ।

भ्रगुट, भ्रगुटि, भ्रगुटी, भ्रगुट्ट, भ्रगुट्टी—देखो' भ्रकुट' (रू. भे.) (ह. नां मा.)

उ०—१ बुगर बलौच बंबाळ, जूंग जांळोरी जब्बर । अजगर कंध अफोफ, भ्रगुट मुदगर भैराहर ।—सू. प्र.

उ०—२ पाट अंग वरंग जग झाट खागां पड़ै, बहै धड़ खाग पड़िया भ्रगुट बड़बड़ै । हर खड़ा वीर चोसट सहत हड़हड़ै, लूथबथ हुवा अमराव खांवंद लड़ै ।—ठा. सुरतांणसिंह रो गीत

उ०—३ हीमाचळ नारद नूं हसिया, कुंवरि आविया गोद कियइ । वर कोइ एक साखइत वतावउ, दही जियइ रइ भ्रगुटि दियइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ दीपंत भ्रगुटि बींदि सिंदूर, सीसी भाळ जनु प्रतबंब सूर । नवनवो रूप सोबा नवीन, प्रतपाळ वचन करियै प्रवींन ।

—रामदांन लाळस

उ०—५ आप सिलह कसि आंवधां, भरि त्रसुळ भ्रगुट्टी । चढ़ै 'किसन' असि भड़ चढ़ै, अग नयण उछट्टी ।—सू. प्र.

भ्रगुतुंग-सं० स्त्री० [सं० भृगुतुंग] हिमालय की एक चोटी (तीर्थ) ।

भ्रगुनंद, भ्रगुनंदण-सं० पु० [सं० भृगुनंद] परशुराम ।

भ्रगुनाथ-सं० पु० [सं० भृगुनाथ] परशुराम ।

भ्रगुपत, भ्रगुपति, भ्रगुपती, भ्रगुरांम-सं०पु० [सं० भृगुपति, भृगुराम] परशुराम ।

उ०—जोयो भ्रगुपत सब जगत, भोम उतारै भार । सहसाजुन कु साभीयो, परसराम अवतार ।—गजउद्धार

भ्रगुलता, भ्रगुलात—देखो 'भ्रिगुलता' (रू. भे.)

उ०—१ वैजंतीमाळा, अधिक रिसाळा, कौस्तभ मणि सोहंदा है । भ्रगुलता छाजै, विविध विराजै, अति ही रूप अनंदा है ।

— गजउद्धार

उ०—२ वण भ्रगुलात उवर विसतीरण तण दासरथ धनो जन तारण । –र. ज. प्र.

भ्रगुसुत-सं० पु०—१ शुक्राचार्य ।

२ शुक्र-ग्रह । (नां. मा.)

रू० भे०—भिरगुसुत ।

भ्रगू—देखो 'भ्रगु' (रू. भे.)

भ्रगूट, भ्रगूटी, भ्रगूटीय—देखो 'भ्रकुट' (रू भे.)

उ०—१ अड़ै भुज्ज असमांन, भिड़ै मूंछाळ भ्रगूटै । चढ़ै रीस चख चोळ, खाग स तोलउ खूटै ।—पे. रू.

उ०—२ सुणे जद बच्चन 'भैरव' सूर, नरांपत धोय नणां नह नूर । भ्रगूटीय रेख चढ़ै मुरभाल, भिड़ै भ्रूह मूछ अड़ै भुपाल ।

—पे. रू.

भ्रगेस-सं० पु० [सं० भृगु+ईश] परशुराम ।

भ्रत-सं० पु०—१ एक देव जाति । (अ. मा., नां. मा.)

वि०—२ अति, बहुत ।

३ देखो 'भ्राता' (रू. भे.)

४ देखो 'भ्रत्य' (रू. भे.)

उ०—१ कितक भरथ हणा लियत कळहकर, उचर धनुस गह उठिय अभंग । तिकण वखत भ्रत सह लसकर तज, चपळ सिखर गय नजिक सुचंग ।—र. रू.

उ०—२ आगळ नपति वात उचारी, समै पाय निज भ्रत सु विचारी । मुकनदास कर अरज मिळाया, लेख हितू नप पाय लगाया ।—रा· रू.

भ्रतखंड—देखो 'भारतखंड' (रू. भे.)

उ०—भारी तोल समझ गुण भारी, मेहै भारी रांय तन मंड । भारी उदक रीज कर भारी, भारी जै राजा भ्रतखंड ।

—रांमदांन गाडण

भ्रतार—देखो 'भरतार' (रू. भे.)

उ०—रत्ता तौ नांम जिकै रहमांण, जिकां नंह्रं थायै आवा जांण । भणै गुण तोरा लच्छि-भ्रतार, लगै नंह्रं त्यां तन पाप लगार ।

—ह. र.

भ्रत्य–सं० पु० [सं० भृत्यः] नौकर, चाकर। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—ख्वास पासवांन क्रपापात्र **भ्रत्य** रास्ट्र भर, सुधर सुचाल सभ्य सबकौ सुहायौ तूं। काहूकौ न बुरौ कीनौं दांन सनमांन दीनौ, लोभ कौ न पंथ लीनों धरम रुख धायौ तूं।—ऊ. का.

रू० भे०—भ्रत, भ्रतयळ, भ्रित।

भ्रद्रजाती—देखो 'भद्रजात' (रू. भे)

उ०—मदुकर वरण तरण छक माती, घुमंड मचाती दूद घणौ। भोटी समप हमैं **भ्रद्रजाती**, गुणीयण हाती जेम गिणौ।—अज्ञात

भ्रद्रजोध–सं० पु०—वीरभद्र नामक महादेव का एक वीरगण।

भ्रम–सं० पु०—१ भ्रमण करने या घूमने की अवस्था या भाव।

२ वह अवस्था जिसमें मनुष्य किसी को कुछ का कुछ समझ लेता है, भूठा विश्वास।

२ भूल, गलती।

उ०—भमिया भूगोळक नभ गोळक भाई, कविजण करुणारस अलमिति अधिकाई। सूका सरवरिया तरवरिया सूका, च्यारूं वरणाश्रम भय **भ्रम** क्रम चूका।—ऊ. का.

३ एक रोग विशेष, जिसमें मनुष्य चक्कर खाकर जमीन पर बेहोश पड़ जाता है।

४ बेहोशी, मूर्छा।

५ पुत्र।

उ०—१ खत्रवट बह खाग तियाग अखूटित, समहर जीपणहार सत्र। तारण कवि, 'केहरी' तणौ **भ्रम**, 'जगौ' जगौ' भाखै जगत्र। —जगरामसिंह रौ गीत

उ०—२ तणौ **भ्रम** 'ऊद' असवार चेटक तणौ, घणौ मगरूर बहरार घटकी। आचरै जोर मिरजा तणौ आछटी, भाचरै चाचरै बीज भटकी।—गोरधन बोगसौ

६ देखो 'भरम' (रू. भे)

उ०—१ अज भेक उजागर नर खर नागर, गुण सागर गूंजंदा है। नाभा क्रत नांमी कथा निकांमी, **भ्रम** गांमी भूंजंदा है।—ऊ. का.

उ०—२ भूपति आयौ पुर विभ्रमियै, सारंग विजै मिळै तिण समियै। आसीवाद करै इम अक्खै, राजा किण कारण **भ्रम्म** रक्खै।—सू प्र.

उ०—३ हुए हिंदु बळहीण, धरा पण खीण सुरां ध्रम। मिटै वेद मरजाद, भेद गुण आद पड़ै **भ्रम**।—रा. रू.

उ०—४ तिण वेळा तारण तरण, गिरधारी गोपाळ। मिळियौ उर **भ्रम** मेटवा, हिंदू ध्रम रुखवाळ।—रा. रू.

रू० भे०—भ्रम्म, भ्रम्ह, भ्रहम।

भ्रमक–सं० पु० [सं० भ्रम] भय, डर, आतंक। (अ. मा.)

भ्रमकारी–वि० [सं०] १ भ्रम में डालने वाला।

२ सन्देह उत्पन्न करने वाला।

३ विश्वास या प्रतीति वाला।

४ गुंजाइश वाला।

५ सार या तत्त्व वाला।

६ भेद या रहस्य वाला।

रू० भे०—भरमकारी।

भ्रमगांमी–वि० [सं० भ्रम+गामिन्] १ चलचित्त, डांवाडोल।

२ भ्रमित।

भ्रमजाळ—देखो 'भंवरजाळ' (रू. भे.)

भ्रमण–सं० पु० [सं० भ्रमणं] १ घूमना-फिरना, विचरण।

उ०—थोड़ा दिन बीतियां सेखर आइयौ, सो किण ही वीं री बात नहीं बूझी। जद फेर यौ **भ्रमण** नूं वन मांहीं नीसरि गयौ। —सिंघासण बत्तीसी

२ यात्रा, सफर।

३ चक्कर, फेरी।

उ०—सिसमार चक्र ध्रुव विण सु तौ, भजै न कुण रिसि गण **भ्रमण**। अंगमै साह 'अवरंग' सूं, कमधां विण चाळौ कवण। —रा. रू.

४ आना-जाना, आवागमन।

५ धोखा, भूल।

६ भ्रम, भ्रांति।

रू० भे०—भमण, भरमण, भवण।

भ्रमणी–वि०—१ भ्रमण करने वाला, फिरने वाला।

२ यात्री।

३ चक्कर या फेरी लगाने वाला।

भ्रमणौ, भ्रमबौ–क्रि० अ० [सं० भ्रमणम्] १ धोखा खाना।

उ०—वात वळै असुरां विसतारी, धर विस असट दिलासा धारी। कितराई सुण **भ्रमिया** काचा, सबळ विखायत रहिया साचा। —रा. रू.

२ सफर करना, यात्रा करना।

३ बहकना।

४ चकित होना।

५ देखो 'भंवणौ, भंवबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हाक डाक त्रंबक धमहमिया, भाखर विकट असटकुळ **भ्रमिया**। कमधज दळ हालतां कराळां, दहसत पड़ै दसै द्रगपाळां। —सू. प्र.

उ०—२ अवर ग्यांन नह ध्यांन उचारै, आप जेम प्रिया प्रिया उचारै। सिव त्रिय इम प्रभु लखि तिण समियै, भूली चित माया ब्रित **भ्रमियै**।—सू. प्र.

उ०—३ मन **भ्रमिया** सुण कोप महानै, थयौ सोच सब हिंदुसथांनै। —रा. रू.

उ०—४ उड रहियौ मन लाग अलंगै, गुड्डी जांण **भ्रमै** गयणंगै। ऊभा दास खिजमती आगी, ताव वितव लखै टगटगी।—रा. रू.

उ०—५ मधुकर भ्रमत सुबास मद, भाल सुधाकर भास। मोदक कर मन मोदमय, नितजय ग्यांन निवास।—बां. दा.

भ्रमणहार, हारौ (हारी), भ्रमणियौ—वि०।

भ्रमिओड़ौ, भ्रमियोड़ौ, भ्रम्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भ्रमीजणौ, भ्रमीजबौ—भाव वा०।

भ्रमभूळक—वि० [सं० भ्रम+मूलक] भ्रम के कारण उत्पन्न।

भ्रमर—सं० पु० [सं० भ्रमरः] १ काले रंग का पतंगा, जो भूं-भूं की ध्वनि करता हुआ उड़ता है, भौंरा। (ह. नां मा.)

उ०—अहि-वेल पत्र कप्पूर सुक्ख, तंबोल लाल सोहत मुक्ख। आघ्रांण छभा परिमळ असंख, गुंजारव डंबर भ्रमर पंख।

—गु. रू. ब.

उ०—२ चरणांकै भड़ चिहुर, छीजि कातर छगणांकै। टगणांकै टांमक, भ्रमर फीलां भगणांकै।—वं. भा.

२ श्याम रंग।

३ लहर, तरंग। (ह. नां. मा.)

४ प्राण, जीव, आत्मा।

५ दोहे का एक भेद, जिसमें २२ गुरु तथा ४ लघु वर्ण होते हैं।

६ छप्पय छंद का ६५ वां भेद, जिसमें ६ गुरु और १४० लघु से १४६ वर्ण या कुल १५२ मात्राएं होती हैं।

७ देखो 'भंवर' (२) (रू भे.)

उ०—गुण सागर दुस्तर अगाध, अति बाध अपारण। वेळ निजर विद्‌दुसां, असह कवि भ्रमर अकारण।—रा. रू.

रू० भे०—भंग, भंमर, भंवर, भमग, भमण, भमर, भरमर, भवंर भवर।

अल्पा०—भंमरौ, भंवरौ, भंवरियौ, भंवरचौ, भउंरौ, भमरड़ौ, भमरडउ, भमरचौ, भवरियौ, भवरचौ, भमरलउ, भमरलो, भमरियौ भमरौ, भौंरौ।

मह०—भंमराळ, भमरांण।

भ्रमरकेतु—सं० पु० [सं०] एक राक्षस।

उ०—प्रबल भुज जुद्ध खिण मां उपसम थयौ, निठुर कायर भ्रमरकेतु नाठौ। धन्य ही धन्य जोगणि कहै चित्त धरि, कीयौ राक्षस थकी हीयौ काठौ।—वि. कु.

भ्रमरगुंजार—देखो 'भंवरगुंजार' (रू. भे.)

भ्रमरावध—सं० पु०—हाथी।

भ्रमरावळ—देखो 'भ्रमरावळी' (रू. भे.)

उ०—महलां पूनम चंद मुख, आठम चंद ललाट। केहर कड़ ज्यूं खीण कड, भ्रूं भ्रमरावळ घाट।—बां. दा.

भ्रमरावळी—सं० स्त्री० [सं० भ्रमर+अवलि] १ भ्रमरों की श्रेणी या पंक्ति।

२ प्रत्येक चरण में ५ सगण युक्त १५ वर्णों का मात्रिक छंद।

रू० भे०—भमरावळि, भमरावळी, भ्रमरावळ।

भ्रमरी—सं० स्त्री०—१ मिर्गी नामक रोग।

२ जतुका नाम की लता, पटपदी।

भ्रमवाहण—सं० पु०—इन्द्र। (अ मा., नां. मा.)

भ्रमाड़णौ, भ्रमाड़बौ—१ देखो 'भ्रमाणौ, भ्रमाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भंवाणौ, भंवाबौ' (रू. भे.)

भ्रमाड़णहार, हारौ (हारी), भ्रमाड़णियौ—वि०।

भ्रमाड़िओड़ौ, भ्रमाड़ियोड़ौ भ्रमाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

भ्रमाड़ीजणौ, भ्रमाड़ीजबौ—कर्म वा०।

भ्रमाड़ियोड़ौ—१ देखो 'भ्रमायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भंवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भ्रमाड़ियोड़ी)

भ्रमाणौ, भ्रमाबौ—क्रि० स०—१ धोखा देना।

२ बहकाना।

३ सफर कराना, यात्रा कराना।

४ चकित करना।

५ देखो 'भंवाणौ, भंवाबौ' (रू. भे.)

भ्रमाणहार, हारौ (हारी), भ्रमाणियौ—वि०।

भ्रमायोड़ौ—भू० का० कृ०।

भ्रमाईजणौ, भ्रमाईजबौ—कर्म वा०।

भ्रमाड़णौ, भ्रमाड़बौ, भरमाणौ, भरमाबौ, भ्रमावणौ, भ्रमावबौ

—रू० भे०।

भ्रमायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ धोखा दिया हुआ. २ सफर या यात्रा कराया हुआ. ३ देखो 'भंवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भ्रमायोड़ी)

भ्रमावणौ, भ्रमावबौ—१ देखो 'भ्रमाणौ, भ्रमाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'भंवाणौ, भंवाबौ' (रू. भे.)

भ्रमावणहार, हारौ (हारी), भ्रमावणियौ—वि०।

भ्रमावियोड़ौ—भू० का० कृ०।

भ्रमावीजणौ, भ्रमावीजबौ—कर्म वा०।

भ्रमावियोड़ौ—१ देखो 'भ्रमायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो भंवायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भ्रमावियोड़ी)

भ्रमियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ धोखा खाया हुआ. २ यात्रा या सफर किया हुआ. ३ देखो 'भंवियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० भ्रमियोड़ी)

भ्रमना—देखो 'भरमणा' (रू. भे.)

उ०—मन मेरा समझ समझ पग धरना, मिटै भव जळ भ्रमना। कनक कामनी ज्वाळ बुरी है, उण सूं निशि दिन डरना।

—स्री सुखरामजी महाराज

भ्रमावणकुंजर—सं० पु०—पांडु पुत्र भीमसेन। (ह. नां. मा.)

भ्रमि—सं० स्त्री० [सं०] उतानपाद पुत्र ध्रुव राजा की पत्नी, जो शिशुमार प्रजापति की कन्या थी।

भ्रमी–वि० [सं० भ्रमिन्] १ जिसे भ्रम हो, भ्रम वाला।
२ चकित, भौंचक्का।
३ वह बन्दूक जो छूटने पर मुड़ जाती है जिससे निशाना ठीक नहीं बैठता।

भ्रमुबल्लभ–सं० पु० [सं० अभ्रमुवल्लभ] ऐरावत हाथी। (नां. मा.)

भ्रम्म—देखो 'भ्रम' (रू. भे.)
उ०—१ भजै हरि नांम टळै मन **भ्रम्म**, कथै हरि नांम जळै तन क्रम्म। जपै हरि नांम अहोनिस जीह, संसार तिकां न सतावै सीह। —ह. र.
उ०—२ आ घात बात रमतौ इसी, पड़िस **भ्रम्म** भूलिस पगा। हरिनांम वरत ऊपर हळव, जीव नट्ट जेही 'जगा'।—ज. खि.

भ्रम्ह—१ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)
२ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)
उ०—निमौ रांम जेणं तरी **भ्रम्ह** नारी, यूं हीं ताड़का मार बांणां उधारी। सुबाहूं कियौ खंड खंडं सरंखै, निमौ च्यार सै कोस मारीच नंखै।—र. ज. प्र.
३ देखो 'भ्रम' (रू. भे.)

भ्रसंड—देखो 'भ्रसुंड' (रू. भे.)

भ्रसंडी–वि०—भयंकर, जबरदस्त।

भ्रसंस–सं० स्त्री० [सं० भृश्] निंदा, अपकीर्ति।

भ्रसंसनीय–वि०—निंदनीय।
उ०—धायकै **भ्रसंसनीय** धाम तैं धरचौं, कांम तैं प्रसंसनीय कांम नां करचौ।—ऊ. का.

भ्रसुंड–सं० पु०—हाथी का मस्तक।
उ०—१ हे देवी काळी—तथा काल्ही वावळी आज म्हारौ पती जुद्ध करसी सो लोही पीण औ छोटौ खपर कांही लीधौ हाथी रा **भ्रसुंड** रौ कड़ाव होवै जेड़ौ खप्पर (माथा रौ आधौ भाग) लै—तथा रिण समें हाथी रा चाचरा माथै ढाल बंधै छै सो कड़ाव होवै जैड़ी होवै छै।—वी. स. टी.
उ०—२ जमी पुड़ धर हरै उडै रूकां जरक, देख क्रपणां थरक पीठ दीधी। हचण रण सुकर जमदाढ ग्रहियां हरक, करी वाळै **भ्रसुंड** गरक कीधी।—गुलाबसिंह चूंडावत रौ गीत
२ हाथी की सूंड।
रू० भे०—भ्रुसंड।
अल्पा०—भ्रसूंडौ।

भ्रसूंडौ—देखो 'भ्रसुंड' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—पंचू पटा वहंतां मद पूरण, सारी दरगह सोधै। सिंधुर तणै **भ्रसूंडै** सुजड़ी, जड़ी अभनमै 'जोधै'।—रतनसिंह रौ गीत

भ्रस्ट–वि० [सं० भ्रंश्+क्त] नीचे गिरा हुआ, पतित।
२ खराब, दूषित।
३ बदचलन, दुराचारी।
४ बरबाद, नाश।
५ भूला-भटका।
रू० भे०—भरस्ट, भसट, भिंसट, भिसट, भिस्ट, भीसट, भीस्ट।

भ्रस्टा–वि० [सं० भृश्] कुलटा, पुंश्चली।
रू० भे०—भरस्टा।

भ्रस्टाचार–सं० पु० [सं० भ्रष्ट+आचार] १ दुषित और निंदनीय आचार। २ घूस, रिश्वत।

भ्रहम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)
उ०—पुणै कमण तर पत्र, **भ्रहम** माया कुण भक्खै।—र. ज. प्र.
२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)
उ०—रघुवर महाराज गाव नहचै यक पळ न लाव, रंक करै सोई राव, सुद्ध भाव सांम रे। दीनबंधु देवदेव, भाखत स्रुति **भ्रहम** भेव, जेता जग सौ अजेव, गहर गरुड़ गांम रे।—र. ज. प्र.
३ देखो 'भ्रम' (रू. भे.)

भ्रमहचार—देखो 'ब्रह्मचरज' (रू. भे.)

भ्रहमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

भ्रहमांण—१ देखो 'ब्रह्मा' (मह., रू. भे.)
उ०—भारा आक्रांत हुवंदी भूम्मी, वरतंदी सुरवार विक्खम्मी। अमरूं कथ **भ्रहमांण** अखंम्मी, थंदै उथ्थल थांनूंदा।—र. ज. प्र.

भ्रहमा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

भ्रहमेण—१ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)
उ०—ते रज पाय तरी रिख तरणी, मझ वेदां बरणी **भ्रहमेण**। डहिया विरद वडा भुजडंडे, तीख करे मिथळापुर तंडे। जटधर चाप विहंडे जेण।—र. ज. प्र.
२ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

भ्रहांमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)
उ०—अप सुवारथी मरौ आदमी, सत छोडै सौ मरौ सती। भणियौ नह सो मरौ **भ्रहांमण**, जंत्र मंत्र विण मरौ जती।—अज्ञात

भ्रहास—देखो 'वरहास' (रू. भे)
उ०—चढै जद बाघहसीह सुजांण, चढै अरिकाळ सुपुत्रह-भांण। चढै सुज यूं 'चतुरेस' **भ्रहास**, नमे सिर सूर किया अरिनास।
—शि. सु. रू.

भ्रहुं देखो 'भ्रू' (रू. भे.)
उ०—सुणै जद बच्चन 'भैरव' सूर, नरांपत धोय चखां चढ नूर। भ्रगूटीय रेख चढै मुर भाळ, भिड़ै **भ्रहुं** मूछ अड़ै भुवपाळ।—पे. रू.

भ्रांत–सं० पु० [सं०] १ विरोध, वैमनस्य, शत्रुता।
उ०—१ भायां घालै **भ्रांत**, अजर दांणौ जारण करै।—अज्ञात
उ०—२ तपस्या में क्यां दोखी दुसमणां रै कह्या सूं स्त्री दीवांण री निजर माफक छै। क्या दोखियां म्हांनै हरांमखोर कहि मन मांहै **भ्रांत** नांखी।—राव रिणमल री बात
२ घूमना-फिरना, भ्रमण।

३ विचार ।
उ०—अतरी ताइ भ्रांत न आंगी अंनरि, हित हिज करे जांणियउ हेक । माता पिता मिळण ऊमाहइ, ऊथपिया सिव वचन अनेक ।
—महादेव पारवती री वेलि

वि० [सं०] १ भ्रांति या भ्रम में पड़ा हुआ, धोखे में डाला या पड़ा हुआ ।
उ०—कितरा दिन लगइ चाकरी कीधी, एकण ध्यांन रह्यौ एकांत । दीठउ साच तरइ वर दीन्हउ, भरम दिखायउ उभ्रत भ्रांत ।—महादेव पारवती री वेलि
२ संदेह, भ्रम, शक ।
उ०—उत्तमकुमार किहां अछै आगलि कहि व्रतांत, जीवै छै किंवा मूओ, भांजि भांजि मन भ्रांत ।—वि. कु.
३ भूला हुआ, भटका हुआ ।
४ चक्कर खाया हुआ ।
५ इधर-उधर घूमा हुआ ।
रू० भे०—भरांत ।

भ्रांतापह्नुति-सं० पु० [सं० भ्रान्तापह्नुति] किसी भ्रांति को दूर करने के लिए सत्यवस्तु के वर्णन का एक काव्यालकार ।

भ्रांति, भ्रांती-सं० स्त्री० [सं० भ्रान्ति] १ भ्रम, धोखा ।
उ०—दिस बतावौ ब्रहन कूं, तो सुख पाऊं वेस । भिळिया भ्रांति भागसी, जासी सरब भ्रन देस ।—स्री हरीरांमजी महाराज
२ संदेह, शक ।
उ०—अंतरि धुरा पंचमी एह, छठी लिखौ कोठां री छेह । पंगति छठी पांचमी पांति, भेळी करे न कीजै भ्रांति ।—ल. पि.
३ भूल-चूक ।
४ घबड़ाहट, परेशानी ।
५ मोह ।
६ प्रमाद ।
७ चक्कर, फेर ।
८ एक काव्यालंकार जिसमें उपमान के समान उपमेय को देखने से उपमान का भ्रम हो जाता है, उपमेय को उपमान समझा जाता है ।
रू० भे०—भरांति, भ्रंति ।

भ्रांतिजथा-सं० स्त्री०—डिंगल साहित्य में प्रयुक्त होने वाला एक अलंकार विशेष ।
वि० वि०—यह वस्तुतः भ्रान्ति अलंकार ही है, परन्तु डिंगल गीतों में इसके दो भेद बताए हैं—१ एकरंगी भ्रान्ति, जो संदेह अलंकार के नजदीक रहती है तथा २ निश्चय भ्रान्ति, यह पूर्णतया भ्रांति अलंकार है । (क. कु. बो.)

भ्रांमक-वि० [सं० भ्रामक] १ भ्रम में डालने वाला ।
२ धोखे में डालने वाला ।
३ संशय या सन्देह में डालने वाला ।
४ घुमाने या चक्कर देने वाला ।
५ धूर्त, चालाक ।

भ्रांमणौ, भ्रांमबौ-क्रि० अ०—१ भ्रमण करना ।
२ घूमना-फिरना ।
३ चक्कर खाना ।
४ भटकना ।
उ०—करो क्रपा तौ सेवा कीजै, लिवरावौ तौ नांम ज लीजै । पखै रजा कोई चलण न प्रांमै, भगत वछळ पड़ियौ जुग भ्रांमै ।
—ह. र.
५ यात्रा करना, सफर करना ।
क्रि० स०—६ घुमाना, फिराना ।
उ०—बपु स्यांमसुंदर मेघ रुचि फबि तड़ित पीत पटंबरं । भुज बांम चाप निखंग कटि तट, दच्छ कर भ्रांमत्त सरं ।—र. ज. प्र.
भ्रांमणहार, हारौ (हारी), भ्रांमणियौ—वि० ।
भ्रांमिओड़ौ, भ्रांमियोड़ौ, भ्रांम्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
भ्रांमीजणौ, भ्रांमीजबौ—भाव वा० ।

भ्रांमर-सं० पु०—१ दोहा छंद का एक भेद विशेष, जिसमें २१ गुरु एवं ६ लघु होते हैं ।
२ गोलाकार ।
उ०—चमर धार परवार करी भ्रांमर परिक्रमा । भुज लंबत डंडोत, वयण व्रत पेख ब्रह्म्मा ।—रा. रू.
सं० स्त्री०—३ परिक्रमा, भांवरी ।
४ बहुत से लोगों का मंडल बनाकर किया जाने वाला नृत्य ।
वि०—५ भ्रमर सम्बन्धी ।

भ्रांमरौ—देखो 'भ्रमर' (अल्पा., रू. भे.)

भ्रांमियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ भ्रमण किया हुआ. २ घूमा-फिरा हुआ. ३ चक्कर खाया हुआ. ४ भटका हुआ. ५ यात्रा या सफर किया हुआ. ६ घुमाया या फिराया हुआ.
(स्त्री० भ्रांमियोड़ी)

भ्रांमी—१ ब्राह्मण की स्त्री ब्राह्मणी ।
२ एक प्रकार का गाथा छंद ।
उ०—भीना अंगी तीन कके भण, तव बोह ककां नांम काळी तण । भ्रांमी वसण सेत तन भासत, वसन लाल खित्रणी सुवासत ।
—र. ज. प्र.
२ देखो 'ब्राह्मी' (रू. भे.)

भ्राजक-सं० पु० [सं० भ्राजकं] त्वचा में स्थित पित्त (वैद्यक) ।

भ्राजणौ, भ्राजबौ-क्रि० अ०—शोभायमान होना ।
उ०—१ कज संख गदाजं चक्र उछाजं, आयुध साजं भुज भ्राजं । मह गौ दुजमानं रिखि नर राजं सुचित जराजं दत साजं ।
—र. ज. प्र.

उ०—२ सोभि जांन सिरदार रूप अणपार विराजै, रतन निकरि किरि रुचिर भौमि वैरागर भ्राजै ।—रा. रू.

भ्राजणहार, हारौ (हारी), भ्राजणियौ—वि० ।

भ्राजिओड़ौ, भ्राजियोड़ौ, भ्राज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

भ्राजीजणौ, भ्राजीजबौ—भाव वा० ।

भ्राजियोड़ौ—भू० का० कृ०—शोभायमान हुवा हुआ. (स्त्री० भ्राजियोड़ी)

भ्रात—सं० पु० [सं० भ्रातृ] सहोदर, भाई । (अ. मा.)

उ०—१ भ्रात मित्र जुग जुग भला, नीत प्रसिद्ध निराट । जुगळ भुजा कर जांणिया, क्रपणां जुगळ कपाट ।—बां. दा.

उ०—२ मात न तात न भ्रात सुत, सगा न सूंदरि साथ । 'हरीया' जासैं हेकलौ, करि वोळाऊ हाथि ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—भ्रत, भ्राता, भ्रित ।

भ्रातविजेसर—सं० पु०—श्री कृष्ण का भाई बलभद्र । (नां. मा.)

भ्राता—देखो भ्रात' (रू. भे.)

उ०—तुंहीं माता ताता बहिन निज भ्राता भल तुंहीं । तुंहीं दाता खाता अवळ अनदाता बळ तुंहीं ।—ऊ. का.

भ्रातालछी—सं० पु० [सं० लक्ष्मी+भ्राता] चन्द्रमा, शशि । (डिं. को.)

भ्रातीज, भ्रातीजौ, भ्रात्रीज, भ्रात्रीजौ—देखो 'भतीजौ' (रू. भे.)

उ०—१ जांम निसा जावतां भूआ सूं मिळ भ्रातीजौ । कंथै ऊवर कटार जड़ी जद पौहरौ बीजौ ।—पा. प्र.

उ०—२ बिजड़ी सूं बीजाह, पिंड में खीची पाडियौ । भाळै भ्रात्रीजाह, रिम तो सारू राखियौ ।—पा. प्र.

भ्रासड—सं० स्त्री०—भड़भूंजे की भट्टी ।

उ०—उस्णकाल पहुंतइ, जिसी दावानल तणी ज्वाला तिसी लू वाइं, जिसउ बावन्न पल तणउ गो धमिउ हुइ तिसिउ आदित्य तपइ, जिसी भ्रासड तणी वेळ तिसी भूमिका धगधगइ ।—व. स.

भिंगी—देखो 'भ्रंगी' (रू. भे.)

उ०—फबै मोगरौ सेवती जाय फूली, भ्रंगी पंति सेवंति भूली अमूली । लता माधुरी मालती फूल लेखैं, दसा आप भूलै तपी रूप देखै ।—रा. रू.

भ्रिकुट्ट, भ्रिगुट—देखो भ्रकुटि' (रू. भे.)

उ०—१ गुडै जूह मद-गंध, सेन अनमंध सुभट्टह । धड बेहड ऊकरड, कटै कोपट्ट भ्रिकुट्टह ।—गु. रू. बं.

उ०—२ चंद सूर लग नांम चढावै, करि जस समंदां तणैं कडै । सूरां मरण सांमि-ध्रम साटौ, वसुधा दीन्ही भ्रिगुट वडै ।

—महेस कल्याणमलोत सांखला रौ गीत

भ्रिगुरिसि—सं० पु० [सं० भृगु+ऋषि] परशुराम ।

उ०—कमलापति कैवल्य अति, विस्वविधाता जेह । भलपण ग्रै भ्रिगुरिसि तणउं, पाटु मारिउ तेह ।—मा. कां. प्र.

भ्रिगुलता, भ्रिगुलात—सं० स्त्री० यौ० [सं० भृगु+राज० लात] विष्णु भगवान के वृक्षस्थल पर भृगु ऋषि द्वारा मारी गई लात का चिन्ह ।

उ०—सुंदर तन घनस्यांम, भुजा आजांन चतुरभुज । कुंडळ तिलक मणिमुकुट, धरण भ्रिगुलता गरुडध्वज ।—सू. प्र.

रू० भे०—भरगुलता, भिरगुलता, भ्रगुलता, भ्रगुलात ।

भ्रित—१ कोयल ।

उ०—कंक कंकी भ्रि (भ्रि)त चील कुलंगां, अंबरचर सर छैदै अंगां ।—रा. रू.

२ देखो भ्रात' (रू. भे.)

उ०—सिंघासणौ वा इंद्रासणौ वा, प्रिथीपती वा सरगपती वा । भ्रितं सुरौ वा भ्रितं नरौ वा, दिलीसरौ वा जगदीस रौ वा ।

—गु. रू. बं.

३ देखो 'भ्रत्य' (रू. भे.)

भ्रिहम—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—भूमंडळ पाज नभ सिखर पुर उवर भव, गुरत द्रुत गहर मुद कोप छिब गाथ । रिख रिखी रिख उदध भ्रिहम कज दासरथ, नाग खग दध हरी हर बिरंचनाथ ।—र. ज. प्र.

२ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

भ्रुकुटि—देखो 'भ्रकुटि' (रू. भे.)

भ्रुह, भ्रुव्ह—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

भ्रुसंड—देखो 'भ्रसुंड' (रू. भे.)

उ०—गजां ऊघड़े भ्रुसंड तुंड धडड़ै पाताळ गोम, बड़ड़ै जरदां कड़ी ऊडै खगां बूर । भ्रुहां रवां भड़ै मुछ गैंणा रवां अड़ै भुजा, साल मीत कुसुचौड़ै लड़ै माहासूर ।—पहाड़खां आढ़ौ

भ्रुह—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—१ भ्रमैं प्रत्यूह ब्यूह पै समस्तु भ्रुह लौं भिरी । क्रमैं प्रत्यूह ओपमा दुरूह दंत ली किरी ।—ऊ. का.

उ०—२ ये जु पासि सखी त्यां जब स्रीकस्नजी अर रुखमणीजी कौ आंखिया थैं अर मुख का विलास थैं अंतहकरण जांण्यौ । तब ये भ्रुहां ही में थोड़ो थोड़ो हसि ।—वेलि

भ्रूं—देखो 'भ्रू' (रू. भे)

भ्रूंण—देखो 'भ्रूण' (रू. भे.)

भ्रूंह—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—१ दखै नांम अल्लाह दे हाथ दाढ़ी, चवै रांम मूंछां वळै भ्रूंह चाढ़ी ।—सू. प्र.

उ०—२ चपळ नेत्र सारंग, रेख भ्रूंहां मकरंद । दीपक-नासा दिपंत सरद-रैंणी मुख-इंद्रह ।—गु. रू. बं.

भ्रू—सं० पु० [सं] आंख के ऊपर के धनुषाकार बाल, भौंह ।

रू० भे०—भंवहारौ, भंवारौ, भंहरौ, भमुह, भह, भुंअ, भुंवारौ, भुंहरौ, भुंहारौ, भुआरौ, भुह, भुहरौ, भुहार, भुहारव, भूं, भूंह,

भूंहार, भूंहारौ, भू, भूहार, भूहारौ, भोंह, भौंह, भौंहारौ, भौंआरौ, भौह, भौहारौ, भ्रहुं, भ्रूह, भ्रूव्ह, भ्रूं, भ्रूंह, भ्रूअ, भ्रूआवळ, भ्रूह, भ्रोंह, भ्रौह ।

भ्रूअ—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—जन्मथी बि **भ्रूअ** मध्यि तिल छि सुविसाल। मि तौ रमतां दीठु हूतु याहि नाहा नी बाल ।—नळाख्यान

भ्रूआवळ—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—**भ्रूआवळ** बेहुं भडी, भमरांण गुंजारा। भोयण (लोयण) कीजै भांमणौं, कोयण कुरगांरा ।—मयारांम दरजी री बात

भ्रूण-सं० पु० [सं० भ्रूणः] १ स्त्री का गर्भ ।

२ बालक की वह अवस्था जब कि वह गर्भ में रहता है।

उ०—थाळ बजंता हे सखी, दीठो नैण फुलाय। बाजां रै सिर चेतनो, **भ्रूणां** कवण सिखाय ।—वी. स.

रू० भे०—भ्रूंण ।

भ्रूणहत्या-सं० स्त्री० यौ० [सं० भ्रूण+हत्या] १ गर्भस्थ शिशु की हत्या ।

२ गर्भपात करना ।

भ्रूभंग-सं० पु० यौ० [सं० भ्रू+भंग] भौंह टेढ़ी करने की क्रिया, तेवरी चढाने की क्रिया ।

भ्रूविक्षेप-सं० पु० [सं० भ्रू+विक्षेप] तेवरी बदलने की क्रिया, नाराजगी दिखाने का भाव ।

भ्रूह, भ्रोंह, भ्रौह—देखो 'भ्रू' (रू. भे.)

उ०—कैलास तणइ सिहर तूं कहिजइ, जोग ध्यांन रह्यौ जोगिंद। **भ्रूह** कबांण जेहवी भणियइ, चाचर तिलक विराजइ चंद ।

—महादेव पारवती री वेलि

—×—

म

म-सं० पु०—देव नागरी वर्णमाला के प वर्ग का अन्तिम वर्ण। यह सघोप, अल्पप्राण द्वचोष्ट्य अनुनासिक व्यंजन के लिए प्रयुक्त होता है और अनुनासिक स्पर्श व्यंजनों के समान इसके उच्चारण मे भी नासिका मार्ग पूर्णतः उन्मुक्त रहता है।

मं-सं० पु०—१ मंगलग्रह। २ दुष्ट। ३ गुड़। ४ मिलन। ५ सुन्दर। ६ रूप। ७ मंगलगीत। ८ उत्सव। (एका.) ९ देखो 'म' (रू. भे.)

मंइ—१ देखो 'म्हैं' (रू. भे.)

उ०—१ स्रीवासु पूज्य जिनेसर ताहरी ओलग हो मंइ कीधी सहीजी।—वि. कु.

उ०—२ पिण तुम्हें सगुण सा पुरीस सवाई, पाई हो हो बांहड़ली मंइ तुम तणीजी।—वि. कु.

२ देखो 'में'।

उ०—चमोंद्र चित्त मंइ उपभोग आंण्युरै।—स. कु.

३ देखो 'मय' (रू. भे.)

मंकड—१ देखो 'मकड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ करह द्राक्षावनि किसिउं करइ, ऊंदिर रत्न करंडि किसिउं करइ, मंकड नाग वल्ली दलि किसिऊं करई।—व. स.

उ०—२ असि भंफ मंकड पाळ ए, पडकंति सात पंयाळ ए। खेडंत खैंग जुबांण ए, सुरजांणि वोम विवांण ए।—गु. रू. बं.

२ देखो 'मांकण' (रू. भे.)

मंकलक-सं० पु० [सं०] एक ऋषि का नाम। (महाभारत)

मंकवांणा—देखो 'मकवांण, मकवाणा' (रू. भे.)

मंकवांणौ—देखो 'मकवांणौ'।

मंकुवांणा—देखो 'मकवांणा' (रू. भे.)

मंकू-सं० पु० [सं० मङ्कु] गति या चाल में होने वाली तेजी, शीघ्रता, वेग। (अ मा.)

रू० भे०—मंखू।

मंकड़ौ—देखो 'मकडौ' (रू. भे) (शा. हो.)

मंख—१ चित्रपट दिखाकर निर्वाह करने वाली भिक्षु जाति।

२ देखो 'मख' (रू. भे.)

उ०—लाख हमालै मख लगि, न न आंणियौ पिनाक।—रांमरासौ

मंखू—देखो 'मंकू' (रू. भे.) (ह. ना. मा)

मंग-सं० पु०—१ सिंह, वनराज। (अ. मा., नां. डिं. को., ह. नां. मा.)

२ देखो 'मांग' (रू. भे.)

उ०—वणी 'भुजंग रूप वेणि, मंग सीस मोतियं। प्रजा लजै न छत्र पांति, जोय तास जोतियं।—सू. प्र.

३ देखो 'मारग' (रू. भे.)

मंगजण—देखो 'मांगण' (रू. भे.)

उ०—दातारां री बत्तड़ी, दातारां भावंत। वैरी मंगजण पांमणा, अंणचित्या आवंत।—बां. दा.

मंगजाई—देखो 'मगजाई' (रू. भे.)

मगण—देखो 'मांगण' (रू. भे.)

उ०—१ धन देणौ जिण अंगड़ै, हैकौ पुरुख न होय। सुपनैं ही नहि संचरै, लोभी मंगण लोय।—बां. दा.

उ०—२ मिळनौ मंगण नूं कहै, मुदौ करूं मालूम। मारग लागौ मत टिकौ, हाजर नाजर सूंम।—बां. दा.

मंगणि, मंगणी—देखो 'मंगनी' (रू भे.)

मंगणौ, मंगबौ—देखो 'मांगणौ, मांगबौ' (रू. भे.)

उ०—१ मोटौ दाता मंगियौ, तोटौ भाजै तेण। कोजै मायर खेप किल, जुड़ै जवाहर जेण।—बां. दा.

उ०—२ तन अमित मौल्य मंडित रतन, आभूखण गुण ऊधरै। स्रंगार साजि मंगै मसस्त्र, महाराजा मंडोवरै।—रा. रू.

मंगणहार, हारौ (हारी), मंगणियौ—वि०।

मंगिओड़ौ, मंगियोड़ौ, मंग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मंगीजणौ, मंगीजबौ—कर्म वा०।

मंगत—१ देखो 'मांगत' (रू. भे.)

२ देखो 'मगतौ' (मह., रू. भे.)

उ०—भगतां पांच तथा सात भली तरह सूं करी। घणा भाट मंगतजणां नै राजी किया।—पलक दरियाव री बात

मंगतड़—देखो 'मंगतौ' (मह., रू. भे.)

मंगतजण—देखो 'मगतजण' (रू भे.)

मंगतराय-सं० पु०—याचकों मे अग्रगण्य, अत्यधिक दीनता दिखाने वाला याचक।

मंगतवाड़, मंगतवेड़-सं० पु०—याचक दल, याचकों का समूह।

मंगताई-सं० स्त्री०—१ मांगने का कार्य।

उ०—कुटुंब तज्या चेला बहु सीन्हा, कर वातां दळ चतुराई। औ यूं करसी, औ यूं देसी मंगतां का मंगताई।

—स्री सुखरांमजी महाराज

२ दीनता और हीनता का भाव।

३ नीचता।

मंगतौ-सं० पु० (स्त्री० मंगतण, मंगती) याचक, भिक्षुक, भिखारी।

उ०—१ तद औ डरियौ और कही—भाई हूं गरीब मंगतौ छूं मोसूं महाराज रौ किसो कांम छै।—साह रांमदत्त री वारता

उ०—२ खुद तौ लोगां री कमाई माथै मछरां करौ अर म्हनैं इंछा परवांण मांगण रौ आदेस करौ। म्हनै थे कांई मंगती जांणी।

—फुलवाड़ी

रू० भे०—मगतौ।

महृ०—मंगत, मंगतड़, मंगति, मगत ।

मंगदणौ, मंगधणौ—देखो 'मुंगदणौ' (रू. भे.)

मंगन—१ देखो 'मांगण' (रू. भे.)

२ देखो 'मग्न' (रू भे)

मंगनी—सं० स्त्री०—१ मांगने की क्रिया या भाव ।

२ कुछ समय के लिए मांगकर ली जाने वाली वस्तु ।

३ एक प्रकार की प्रथा विशेष जिसमें वर और कन्या दोनों पक्ष के व्यक्ति वर और कन्या के विवाह सम्बन्ध को निश्चित करते हैं, सगाई ।

रू० भे०—मंगणि, मंगणी ।

मंगर—१ देखो 'मगर' (रू. भे.)

२ देखो 'मगरौ' (मह , रू. भे.)

उ०—जोतवाग भळकै मिळ नदि जळ । चमकै **मंगर** उछळै चंचळ ।
—सू. प्र.

मंगळ—वि० [सं० मंगल] १ शुभ, मांगलिक, सुख, सौभाग्य देने वाला ।

मुहा०—पट मंगळ करणा=देव मंदिर, घर या मकान के द्वार बन्द करना । (शुभ)

२ समृद्धिवान ।

३ वीर, बहादुर ।

सं० पु० [सं० मंगलम्] १ कल्याण, कुशल-क्षेम, हित ।

उ०—गणपति गिरा निवासी सुरगण । **मंगळ** करण अमंगळ मेटण ।—रा. रू.

२ हर्ष, प्रसन्नता, आनन्द ।

उ०—१ सूर न पूछै टीपणौ, सुकन न देखै सूर । मरणा नूं **मंगळ** गिणै, समर चढ़ै मुख नूर ।—बां. दा.

उ०—२ निरालिय नीति उदंगळ नांय । मुनी किय **मंगळ** जंगळ मांय ।—ऊ. का.

३ सप्ताह के सात दिनों में से एक दिन, जो सोम के पश्चात् और बुद्ध के पूर्व पड़ता है, भौमवार । (अ. मा.)

४ सौर जगत् में पृथ्वी के बाद पड़ने वाला नव ग्रहों में से एक ग्रह । (अ. मा.)

उ०—जावै नहीं जाचक घरां, संत महंता सत्थ । **मंगळ** री जणणी मही, अदतारां री अत्थ ।—बां. दा.

वि० वि०—पृथ्वी के पश्चात् यह ग्रह पहले पहल पड़ता है । इसका व्यास ४२०० मील है और सूर्य से दूरी १४ १०,००००० मील है। यह ग्रह सूर्य की परिक्रमा ६८७ दिन में करता है । ऐसा अनुमान किया जाता है कि इस ग्रह का जलवायु पृथ्वी के जलवायु से बहुत कुछ मिलता जुलता है और यहां स्थल और जल विद्यमान हैं ।

५ विष्णु ।

६ डिंगल का एक गीत विशेष ।

७ डिंगल के 'वेलियौ' सांणोर (छोटौ सांणोर) छंद का भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाळे में १२ लघु, २६ गुरु कुल ६४ मात्रायें तथा इसी क्रम में शेष द्वाळे में १२ लघु, २५ गुर, कुल ६२ मात्रायें होती हैं ।
(पि. प्र.)

८ एक छंद विशेष जिसमें प्रथम दो नगण फिर पांच भगण और अन्त में दो दीर्घ वर्ण होते हैं । (ल. पिं)

९ शुभ अवसर या आयोजन के समय गाया जाने वाला गीत, मांगलिक गीत ।

उ०—घर घर बधाई हुवै छै, घर घर उछाह हुवै छै । घर घर **मंगळ** गायै छै ।—पंचदंडी री वारता

मुहा०—मंगळ गावणौ=शुभ अवसर पर आनन्द के गीत गाना, प्रसन्न रहना ।

१०—देवी देवता के कपाट बन्द करते समय गाया जाने वाला लोक-गीत विशेष ।

११ वह घोड़ा जिसके कंठ, ललाट व शिर पर भौंरी हो । (शुभ)
(शा. हो.)

१२ लाल या रक्त वर्ण ।

१३ विवाह मंडप में वर-वधू द्वारा वेदी के चारों ओर दी जाने वाली भांवरी ।

उ०—चौथे **मंगळ** रांमचंद सुर तरणि स्रीरांम आगै क्रमि आंगि अनंति सीता वांम सु अंग ।—रांमरासौ

१४ वीर पुरुष, योद्धा ।

उ०—लत्थोबथ लागा रै, आहुड़िया **मंगळा** आगा रै । घरां दस लाग पिया घेरै रै, खेसविया 'अचळै' खागै रै ।
—रावत अचलदास सगतावत रौ गीत

१५ विवाह ।

१६ एक देव जो स्वायंभुव मन्वंतर के जित देवों में से एक था ।

१७ देखो 'मदकळ' (रू. भे.)

१८ देखो 'मंगळा' (रू. भे.)

उ०—१ सघण तांम वूठौ समराथां । **मंगळ** प्रजळ अमंगळ माथां ।
—गु. रू. ब.

उ०—२ हुतासण **मंगळ** जळण हुबह, दावक-नळ पावक वन दह, धखण ऊसण दहण धोमह, वासदेव वज्राग । जुडै अरियण खाग जाळै, प्रसण तर धाये प्रजाळै, वडै राजा अंक—वाळै अरी बाळै आग ।—महाराजा गजसिंह रौ गीत

मुहा०—मंगळ मेलणौ=अनिष्ट करना, किसी के अहित की चाहना करना ।

यौ०—मंगळग्रस्ट, मंगळकरण, मंगळकळस, मंगळकारी, मंगळगांन, मंगळगीत, मगळगौरीव्रत, मंगळघट, मगळचंडिका, मंगळचार, मंगळफळ, मंगळदायक, मंगळधमळ, मंगळपाठ, मंगळपाठी, मंगळप्रद, मंगळरूप, मंगळवाद, मंगळवार, मंगळवारी, मंगळवेळा, मंगळसूत्र, मंगळस्नांन ।

मंगळग्रस्ट—देखो 'अस्टमंगळ' (रू. भे.)

मंगळकरण–वि० [सं० मंगलकरण] (स्त्री० मंगलकरणी) कल्याण करने वाला, हित करने वाला।
सं० पु०—१ गजानन, गणेश।
२ देखो 'मंगळकरणी' (रू. भे.)

मंगळकरणी–वि०—कल्याण करने वाली।
सं० स्त्री०—१ केसर।
२ देखो 'मंगळकरण'।

मंगळकळस–सं० पु० यौ० [सं० मङ्गलकलश] विवाह आदि शुभ अवसरों पर पूजा के लिए रखा जाने वाला जल से भरा हुआ घड़ा या कलश।

मंगळकारी–वि०—आनन्द करने वाला, मांगलिक।
रू० भे०—मंगळाकारी।
अल्पा०—मंगळाकारौ।

मंगळकारौ, मंगलकारौ—देखो 'मंगळकारी' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—संसार मांहैं जीवसुं तां सीम सरणा चारीजी। गणि समयसुंदर इम कहइ, कल्याण **मंगळकारौ** जी।—स. कुः

मंगळगांन–सं० पु० यौ० [सं० मंगलगायन] शुभ अवसर पर गाए जाने वाले गीत, मांगलिक-गीत।
उ०—सहचरीय रंभ समान। गावंत **मंगळगान**।—सू. प्र.

मंगळगोरीवरत–सं० पु० यौ० [सं० मंगलगौरीव्रत] स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला व्रत विशेष।
रू० भे०—मंगळागोरी।
वि० वि०—यह व्रत श्रावण माह के कृष्ण पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ किया जाकर भाद्रपद कृष्ण पक्ष के अन्तिम मंगलवार तक किया जाता है। इस प्रकार यह व्रत चार मंगलवारों में पूर्ण होता है।

मंगळग्रह–सं० पु० [सं० मंगलग्रह] शुभग्रह।

मंगळघट—देखो 'मंगळकळस'।

मंगळचंडिका–सं० स्त्री० [सं० मंगलचण्डिका] दुर्गा का एक नाम।

मंगळचार, मंगलच्यारि—देखो 'मंगळाचार' (रू. भे.)
उ०—१ तीन अखत ढाल गज तोरण, चहुं दिसि कळल **मंगळचार** चवरी बडौ पेखियौ चगतै, 'करण' कळोधर राजकंवार।
—किसनौ आढ़ौ
उ०—२ तब पिंगळ तेड़ौ सुभवार, परिणाव्यउ करि **मंगळच्यारि**।
—ढो. मा.

मंगळछाया–सं० स्त्री० [सं० मंगलछाय:] प्लक्ष वृक्ष।

मंगळणौ, मंगळबौ–क्रि० अ०—१ प्रज्वलित होना, जलना (होली)।
मंगळणहार, हारौ (हारी), मंगळणियौ—वि०।
मंगळांड़णौ, मंगळाड़बौ, मंगळाणौ, मंगळाबौ, मंगळावणौ, मंगळावबौ—सक० रू०।
मंगळिग्रोड़ौ, मंगळियोड़ौ, मंगळयोड़ौ—भू० का० कृ०।
मंगळीजणौ, मंगळीजबौ—भाव वा०।

मंगळदायक–वि० [सं० मङ्गलदायक] कल्याण व आनन्द देने वाला।
उ०—पोस महा सुख पेखतां, स्त्री नर पति 'अभसाह'। आयौ रस लाइक अवनि, **मंगळदायक** माह।—रा. रू.

मंगळधमळ, मंगळधवळ—देखो 'धवळमंगळ' (रू. भे.)
उ०—१ **मंगळधमळ** उदमाद, वजै वाजंत्र जिण वेळा। ग्रहि ग्रहि उडि गुडियां, मिळै सज्जण घण मेळा।—सू. प्र.
उ०—२ हुवै **मंगळधमळ** दमंगळ वीर हक, रंग तूठौ कमध जंग रूठौ। सघण वूठौ कुसुम बोह जिण मौड़ सिर, विखम उण मौड़ सिर लोह वूठौ।—बां. दा.
उ०—३ धांम धांम **मंगळधवळ**, हुए हंगाम हलोर। छड़क पगारा नीर छित, घुरै नगारां घोर।—र. रू.
उ०—४ रांणा ऊमरकोट रा, गया जमारौ जीत। ज्यांरा **मंगळधवळ** में, गवरीजै जस गीत।—बां. दा.

मंगळपाठ–सं० पु० यौ० [सं० मंङ्गलपाठ] १ किसी उत्सव आदि के पूर्व देव तुष्टि के लिए किया जाने वाला पाठ।
२ कल्याण या क्षेम के लिए किया जाने वाला पाठ, स्वस्ति पाठ।

मंगळपाठक–सं० पु० [सं० मंगलपाठक] भाट, बंदीजन।

मंगळपाठी–वि० यौ० [सं० मङ्गलपाठी] मांगलिक या कल्याणकारी पाठ करने वाला।

मंगळरूप–सं० पु० यौ० [मंगलरूप] १ शुभ व आनन्ददायक रूप।
२ ईश्वर। (नां. मा.)

मंगळवाद–सं० पु० [सं० मङ्गलवाद] आशीर्वाद, आशीष।

मंगळवार–सं० पु० [सं० मङ्गलवार] सप्ताह के सात दिनों में से एक जो सोमवार के पश्चात् और बुधवार के पूर्व पडता है, भौमवार।

मंगळवारी–वि०—मंगलवार से सम्बन्धित, मंगलवार का (की)।
उ०—होळी सुक्र सनीचरी, **मंगळवारी** होय। चाक चहोड़ै मेदनी, विरला जीवै कोय। (शकुन)

मंगळवेळा–सं० स्त्री० [सं० मङ्गलवेला] शुभ काल, शुभ अवसर, मांगलिक समय, मुहूर्त।

मंगळसूत्र–स० पु० यौ० [सं० मंङ्गलसूत्र] १ किसी भी शुभ अवसर पर कलाई में बांधा जाने वाला धागा।
२ वह डोरा जो सौभाग्यवती स्त्री अपने गले में तब तक बांधती है जब तक उसका पति जीवित रहता है।
३ ताबीज या बाजूबंद की डोरी।
४ स्त्रियों के गले में धारण किया जाने वाला आभूषण विशेष जो सुहाग चिन्ह माना जाता है।
वि० वि०—यह प्रायः स्वर्ण निर्मित होता है और धागे में पीले

या काले मोतियों के साथ पिरोकर अथवा सोने की जंजीर में पिरोकर गले में धारण किया जाता है।

मंगळस्नान-सं० पु० [सं० मङ्गलस्नानं] मंगल कामना से किसी शुभ अवसर पर किया जाने वाला स्नान।

मंगळा-सं० स्त्री० [सं० मंगला] १ पार्वती, गिरिजा।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

२ दुर्गा।

उ०—तुही काळिका ज्वाळिका वज्रकाया। तु ही **मंगळा** तोतळा जोग माया।—मे. म.

३ पतिव्रता स्त्री।

४ दूर्वादल, दूब।

५ भोर के समय विष्णु, शिव या कृष्ण की पूजा के लिए गाई जाने वाली आरती।

६ तुलसी।

७ हल्दी। (अ. मा.)

८ एक देवी जिसने त्रिपुर वध के समय भगवान् शंकर को वर-प्रदान किया था।

९ ज्वाला।

१० अग्नि, आग।

उ०—काढ़ी दळां सूं **मंगळा** प्रळै समंदां ऊफळी किना, खळां धू अरुठी जज्ञ गे थंडां खाणास। सरंगा विछूठी तूटी माघ पब्बै काळा सीस। वीर 'चूंडा' वाळी ज्वाळा बोजळा बांणास।
—तेजरांम आसियौ

रू० भे०—मंगळ, मंगळि, मांगळी।

मंगळाकार-वि० यौ० [सं० मंगलाकार] मंगल करने वाला।

उ०—कोरौ कळस कुंभार, वणावै आखा लावै। व्यावां वेहां रोप, नेग विन नोरै पावै। खोपर ढकणी खिडा, वीर वनड़ौ बण ज्यावै। माटी **मंगळाकार**, निरन्तर काज सरावै।—दसदेव

मंगळाकारी—देखो 'मंगळकारी' (रू. भे)

मंगळागोरी—देखो 'मंगळगोरीवरत'।

मंगळाचरण-सं० पु० [सं० मङ्गल+आचरण] १ किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व पढ़ा जाने वाला या उच्चरित किया जाने वाला मांगलिक मंत्र या पद्य।

२ सफल सम्पूर्णता या मंगल अथवा शुभ की कामना से किसी ग्रन्थ के प्रारम्भ में लिखा जाने वाला पद्य या श्लोक।

उ०—नियम **मंगळाचरण** नह, काव्य समापत काज। काव्य उचारण कु कवि ए, करै महाकवराज।—बां. दा.

मंगळाचार, मंगलाचार-सं० पु० यौ० [सं० मङ्गल+आचार] १ आनन्दोत्सव, हर्षोल्लास।

उ०—१ वर लाडो मोतियां वधाया, अति आणंद विनोद अति। **मंगळाचार** सिवपुरी मांहैं, गूडी ऊछली दैव गति।
—महादेव पारवती री वेलि

२ मांगलिक कृत्य।

उ०—१ पीछै सब वात की तयारी कर अकबर जलालदीन का औजूंदसाह की साहजादी सैं व्याह हुवा अरु बहुत उत्सव **मंगळाचार** हुवै।—द. दा.

उ०—२ आला नीला बांस कटाड़नै कळश कर घणां **मंगळाचार** कर लगन जोय दैत्य दमनी नुं परणियौ।—पंचदंडी री वारता

३ किसी शुभ कार्य के प्रारम्भ में मंगल कामना हेतु उच्चरित किया जाने वाला मंत्र, श्लोक या पद्य।

४ मांगलिक गीत।

उ०—**मंगळाचार** कृष्ण रुकमणी कौ नर नारी सुर गावै। पदई लहै यंद्रराजा की, मन बछित फळ पावै।—रुकमणी मंगळ

रू० भे०—मंगळचार, मंगळचारि।

अल्पा०—मंगळाचारौ।

मंगळाचारौ, मंगलाचार—देखो 'मंगळाचार' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वाट जोवता आविया रे, हरख्या सहु नर नारी। संघ सहु उच्छव करइ रे, घरि घरि **मंगलाचारौ**—स. कु.

मंगळाचौथ-सं० स्त्री० [सं० मंगलाचतुर्थी] शुक्ल पक्ष की वह चतुर्थी जिस दिन मंगलवार हो।

मंगळाडणौ, मंगळाडबौ—देखो 'मंगळाणौ, मगळाबौ' (रू. भे.)

मंगळाडणहार, हारौ (हारी), मंगळाडणियौ—वि०।

मंगळाडिओड़ौ, मंगळाडियोड़ौ, मंगळाड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मंगळाडीजणौ, मंगळाडीजबौ—कर्म वा०।

मंगळाडियोड़ी—देखो 'मंगळायोड़ी' (रू. भे)

मंगळाडियोड़ौ—देखो मंगळायोड़ौ' (रू. भे.)

मंगळाणौ, मंगळाबौ-क्रि०स० [मंगळणौ क्रि० का सक० रू०] १ प्रज्वलित करना, जलाना (होली)।

उ०—पीछै हेरायत धौळहरै गया नै जाय आस-पास हेरौ लगायौ। अरु यां सिरदारां होळी रात पौर एक गयां **मंगळाई**।—द. दा.

२ देव मंदिर आदि के कपाट बंद करवाना।

मंगळाणहार, हारौ (हारी), मंगळाणियौ—वि०।

मंगळायोड़ी, मंगळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मंगळाईजणौ, मंगळाईजबौ—कर्म वा०।

मंगळाडणौ, मंगळाडबौ, मंगळावणौ, मंगळावबौ—रू० भे०।

मंगळामुखी-सं० स्त्री० [सं० मंगलमुख+रा० प्र० ई] वेश्या, रंडी।

मंगळायोड़ी-भू० का० कृ०—प्रज्वलित की हुई, जलाई हुई (होली)।

मंगळायोड़ौ-भू० का० कृ०—देव मंदिर आदि के कपाट बंद करवाया हुआ।

मंगळारंभ-सं० पु० [सं० मङ्गल+आरम्भ] १ कार्य का शुभारम्भ, श्री गणेश।

२ गजानन का नामान्तर।

मंगळालय-सं० पु० [स० मङ्गल+आलय] परमेश्वर। (डिं. को.)

मंगळावणौ, मंगळावबौ—देखो 'मंगळाणौ, मंगळाबौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरां होळी नै मंगळावै नै पहोर १ रात गई, ताहरां गांगी साहणी कनै गयौ —नैणसी

मंगळावणहार, हारौ (हारी), मंगळावणियौ—वि० ।

मंगळाविश्रोड़ौ, मंगळावियोड़ौ, मंगळाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मंगळावीजणौ, मंगळावीजबौ—कर्म वा० ।

मंगळावियोड़ी—देखो 'मंगळायोड़ी, (रू. भे.)

मंगळाव्रत—सं० पु० यौ० [सं० मंगलाव्रत] शिव-पार्वती के निमित्त स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला एक व्रत ।

मंगळि—१ देखो 'मंगळा' (रू. भे.)

उ०—अजु आलण पख आपरा, नारि तजै ग्रिह नेह । चढ़ि चंचळ सरवर चली, मंगळि जाळण देह ।—वचनिका

मंगळिक—सं० पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष । (व स.)

२ देखो 'मांगळिक' (रू. भे.)

मंगळिकाथळ—देखो 'मंगळीकाथळ' (रू. भे.)

मंगळियोड़ी—भू० का० कृ०—प्रज्वलित हुई, जली हुई (होली) ।

मंगळियौ, मंगलियौ—सं० पु०—मिट्टी का वह जल-पात्र जो व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् द्वादसे के क्रिया कर्म में प्रयोग में लाया जाता है ।

उ०—म्रत्यु चेत धरम नर करै, आंतां खड़ी उठांवतां । मंगलिया मौसर भरावै, मीणौ घड़ौ भरांवतां ।—दसदेव

रू० भे०—मांगळियौ ।

मंगळी—वि०—१ वह जिसकी जन्म कुण्डली में जन्म के चौथे, आठवें, बाहरवें घर में मंगलग्रह पड़ा हो । यह अशुभ माना जाता है ।

वि० वि०—देखो 'मौळियामंगळ' ।

२ देखो 'मागळिक' (रू. भे.)

उ०—१ आज मिरति मंगळी आज पति वरत संभाळै । ऊपन्नौ जग अंस, आज सुज वंस उजाळै ।—रा. रू.

उ०—२ ढोल सुणंतां मंगळी मूंछां भूंह चढंत । चंवरी ही पहचाणियौ, कंवरी मरणौ कंत ।—वी. स.

सं० पु०—३ एक प्रकार का प्राचीन वाद्य विशेष जो मांगलिक अवसरों पर बजाया जाता था ।

उ०—म्रदंग, ढोल, मंगळी, रबाब तार सार ली । वजंति वेरि वेरियं, भणं कि भंकि भेरियं ।—रा. रू.

४ प्रवचन न होने के कारण उसी अवसर पर किया जाने वाला स्वस्ति पाठ । (जैन मत)

५ देखो 'मंगळा' (रू. भे.)

मंगळीक—१ देखो 'मांगळिक' (रू. भे.)

उ०—१ मूंडा में मंगळीक गुळ देय नै व आपरा बेटा नै घर वाळां रौ बदळौ लेवण सारू विदा करियौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सहनाय मुरसलां रंग सवाद । नवबती घोर मंगळीक नाद ।—सू. प्र.

उ०—३ संसार तिका हिज वात सरहदी, राय हर जिका दिखाळी रीत । गीत तिकै मंगळीक गाइजै, गाया तियइ दिहाडइ गीत ।

—महादेव पारवती री वेलि

मंगळीकमाळा, मंगलीकमाला—सं० स्त्री०—मांगलिक पदार्थों की पंक्ति या श्रेणी ।

उ०—पूरवारजित पाप खीजइ, मनुस्यभव क्रतारथ नीपजावीयइ, स्रावकाचार साचवीइ, सरव दुख प्रमारजीइ, ईणि परि स्त्री धरम समाराधतां जिम उत्तम मंगळीकमाळा प्रांमउं तिम स्त्री धरम नइ विसइ सदैव सावधांन हुयौ । इत्युपदेस ।—व. स.

मंगळीकाथळ—सं० पु०—रेगिस्तान में पाया जाने वाला वह स्थळ जहां बालू रेत इस प्रकार की होती है कि उसकी सतह पर पैर रखते ही मनुष्य या प्राणी उसमें धंस जाता है ।

उ०—तिकै जैसळमेर था कोस २५ आथवण नूं मंगळीका-थळ छै, तठै रहै छै । वा ठोड मंगळीका-थळ कहावै छै । तठै द्रुम छै । सु भोमियौ होय सु डांडी आवै । असैंधौ डांडी टळै ।—नैणसी

रू० भे०—मंगळिकाथळ ।

मंगळ्य—वि० [सं० मंगल्य] १ मंगलकारक । २ मंगलदायक । ३ सुन्दर । ४ साधु । ५ शुभ । ६ पवित्र ।

सं० पु० [सं० मंगल्यम्] १ तीर्थस्थलों से लाया हुआ जल जो राज्याभिषेक के अवसर पर उपयोग में लाया जाता है । २ बेल । ३ दही । ४ चन्दन काष्ठ । ५ सिन्दूर । ६ स्वर्ण, सोना । ७ वटवृक्ष । ८ नारियल का वृक्ष या फल ।

मंगळ्या—सं० स्त्री० [सं० मंगल्या] १ दुर्गा का एक नाम ।

२ एक प्रकार का अगरू जिसमें चमेली के फूल जैसी महक आती है ।

मंगवाणौ, मंगवाबौ—देखो 'मंगाणौ, मंगाबौ' (रू. भे.)

उ०—राज री कोजी सूं कोजी लुगायां हेर हेर मंगावै और वांरै साथै प्रीत करै ।—फुलवाड़ी

मंगवाणहार, हारौ (हारी), मंगवाणियौ—वि० ।

मंगवायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मंगवाईजणौ, मंगवाईजबौ—कर्म वा० ।

मंगवायोड़ौ—देखो 'मंगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मंगवायोड़ी)

मंगसखांनौ—सं० पु०—बड़े तम्बू के अन्दर राज्यासन लगाए जाने के लिए छोटा तम्बू ।

उ०—उस बखत चौसरियै पंति करि जरकसी समियांना । खीसाप का मंगसखांना खड़ा करि सुनहरी की चौकी धरी ।—सू. प्र.

मंगसर, मंगसिर—देखो 'मिगसर' (रू. भे.)

उ०—१ संमत् १६७६ रा मंगसर मांहै कुंवर अमरसिंघ उदैपुर परणीया ।—नैणसी

उ०—२ संवत् १६२७ मंगसिर सुदि ६ पातिसाहजी रौ मेलिह्यौ घेमूखांन तेड़ण आयौ ।—द. वि.

मंगाड़णौ, मंगाड़बौ—देखो 'मंगाणौ, मंगाबौ' (रू. भे.)

उ०—खबरदार नर जबर नूं, बसत मंगाड़ै मोल। बिगड़ै उरा दिन बांरिगयौ, तोलरा हूंता तोल।—ब दा.

मंगाड़णहार, हारौ (हारी), मंगाड़णियौ—वि०।

मंगाड़िग्रोड़ौ, मंगाड़ियोड़ौ, मंगाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मंगाड़ीजरणौ, मंगाड़ीजबौ—कर्म वा०।

मंगाड़ियोड़ौ—देखो 'मंगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मंगाड़ियोड़ी)

मंगाणौ, मंगाबौ—क्रि० स० [मांगरगौ क्रि० का प्रे० रू०] १ अपनी इच्छा पूर्ति के लिए किसी को अभीष्ट पदार्थ लाने के लिए आदेश करना, मंगवाना।

उ०—परिरगांम समय रै हजारां बीवियां रा हाथ बंगड़ी बिहूरा करि काचा कुंभ जिम उजळा लोहां खंड खंड होय परलोक पायौ। जिरा रा कटिया सीस नूं थाळ मैं मगाय जवनराज री सुता वरमाळा पटकरा रौ विचार कियौ।—वं. भा.

२ मांगने का कांम दूसरे से करवाना, किसी को मांगने में प्रवृत्त करना।

३ किसी से यह कहना कि अमुक स्थान या अमुक व्यक्ति से अमुक पदार्थ ले आना।

उ०—हरख मिळै आदर करै, पौसे थाळ मंगाय। मीठौ उत्तर मौकळै, मीठौ सूंब कहाय।—बां. दा.

मंगाणहार, हारौ (हारी), मंगाणियौ—वि०।

मंगायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मंगाईजणौ, मंगाईजबौ—कर्म वा०।

मंगवाणौ, मंगवाबौ, मंगाड़णौ, मंगाड़बौ, मंगावरगौ, मंगावबौ, मगवाणौ, मगवाबौ, मगाड़णौ, मगाड़बौ, मगाणौ, मगाबौ, मगावणौ, मगावबौ—रू० भे०।

मंगायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ अपनी इच्छा पूर्ति के लिए अभीष्ट पदार्थ लाने के लिए आदेश दिया हुआ, कहा हुआ। २ मांगने का काम दूसरे से करवाया हुआ. ३ किसी से पदार्थ आदि मंगवाया हुआ.

मंगावणौ, मंगावबौ—देखो 'मंगारगौ, मंगाबौ' (रू. भे.)

उ०—धरा सुरा थारा धरम सूं, साबत लायौ सीस। मोल अबार मंगावसुं, पाघां बीस पचीस।—बां. दा.

मंगावणहार, हारौ (हारी), मंगावणियौ—वि०।

मंगाविग्रोड़ौ, मंगावियोड़ौ, मंगाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मंगावीजणौ, मंगावीजबौ—कर्म वा०।

मंगावियोड़ौ—देखो 'मंगायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मंगावियोड़ी)

मंगिण—देखो 'मांगरा' (रू. भे.)

उ०—जिसौ नूर नरपती, इसौ सांमंत सूर नर। जब जैसोइ जंगमां, सोभि तैसेइ मद सिंधुर। समरा वरद संपजै, सबद तेसा वाजंतां। मुख विरद मंगिरगां, इसा जै सद्द कवित्तां।—रा. रू.

मंगित—देखो 'मंगतौ' (मह., रू. भे.)

उ०—रांरगै उदयसिंघ री पुत्री परगि, घरगौ उच्छव करि, मंगित जरगां री घरगी आसीस ले करि, करहू केकांरग, सोना, सावटू, रुपइया, महुरां घरगी दे,…… …बीकानेर पधारिया छै।—द. वि.

मंगियोड़ौ—देखो 'मांगियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मंगियोड़ी)

मंगेज—सं० पु०—गर्व, अभिमान।

रू० भे०—मगेज।

मंगेजण—वि० स्त्री०—गर्विता, मानिनी।

उ०—इंदरियौ घररायौ, ए घोड़ी मधरी-मधरी चाल चौमासौ लग गयौ ए! मंगेजण हळवां-हळवां हाल।—लो. गी.

रू० भे०—मगेजरा।

मंगेड़ौ—सं० पु० [सं० मार्ग+रा० प्र० एड़ौ] द्वार, दरवाजा।

रू० भे०—मंगरगौ, मांगेड़ौ, मांगेरगौ।

मंगेतर—सं० स्त्री०—१ वह लड़की जिसका विवाह होना निश्चित हो चुका हो, होने वाली वधु।

पु०—२ वह लड़का जिसका विवाह किसी लड़की से होना निश्चित हो चुका हो। (मा. म.)

मंगेरणौ—देखो 'मगेड़ौ' (रू. भे.)

मंगोळ—सं० पु०—१ (मंगोलिया देश से) मध्य एशिया और उसके पूर्व की ओर तातार, चीन, जापान आदि प्रदेशों में बसने वाली जाति, मंगोलिया निवासी।

२ इस जाति का व्यक्ति।

मंच, मंचक—सं० पु० [सं० मञ्च] १ वह ऊंचा बना स्थान या तख्त जिस पर बैठकर जन-समुदाय के सामने कोई कार्य किया जाय अथवा उपदेश या व्याख्यान दिया जाय, स्टेज, चौकी।

२ खेत की रखवाली या शिकार करने के लिए बनाया गया ऊंचा मचान।

३ पलंग, खाट।

उ०—१ वप पूरै वरैंजी आतुर बांग दससिर आय। आपौ आपरै जी बैठा कनक मंच बिछाय।—र. रू.

उ०—२ अर महीप भी आपरी माळा नूं मंच पर ही मेलि एक दिसा रौ मारग लियौ।—वं. भा.

रू० भे०—मांचइ, मांचउ।

अल्पा०—मांची।

मंचिका—सं० स्त्री० [सं०] कुर्सी।

रू० भे०—मांची।

मंचोनमंच—सं० पु०—मंडप।

उ०—पुत्र जन्मोत्सव करावइ, दंपाक निसेप हूउ, सरवत्र मारग चौखालिया गोमाय पांणी सिंचाइ, मंचोनमंच बांधा, वांनरवालि बांधी, हट्ट सोमा सरवत्र रची।—व. स.

मंच्छावाचा-सं० पु० [सं० मनस्+वाञ्छा] शिव की तुष्टि के लिए किया जाने वाला व्रत जो इच्छा पूर्ति के उद्देश्य से किया जाता है। वि० वि०—यह व्रत पुरुष तथा महिला दोनों ही के द्वारा किया जाता है। इसे श्रावण मास के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ कर कार्तिक मास के अन्तिम सोमवार तक आने वाले सभी सोमवार के दिन किया जाता है। सोमवार के दिन व्रत करने वाले एकत्रित होकर कथावाचक से कथा सुनते हैं। यह व्रत निरन्तर चार वर्ष तक किया जाता है। तद्पश्चात् व्रतोद्यापन होता है।

मंछर—देखो 'मछर' (रू. भे.)

उ०—तैं गुरुवा गिरनार, कांई मन **मंछर** धरचौ। मरतां रा' खेंगार, एकौ सिखर न ढाळियौ।—अज्ञात

मंछा—देखो 'मंसा' (रू. भे.)

मंछी—देखो 'मच्छी' (रू. भे.)

उ०—जुं **मंछी** जळ विन मरै, जळ मन जांणै नांह। तुं पिउ कौ जिय अति कठिण, हुं चाहुं पीय छांह।—ढो. मा.

मंज-सं० पु०—१ रंग।

उ०—आद गुर भगण, फळ सुजस स्वांमी मयंक, जनक भ्रम मंगळा मात सित **मंज**। अंगरारिस सुमा वाह रस हाम यण, कळंदी राव कुळ वैस्य त्रय कंज।—र. रू.

२ देखो 'मंजु' (रू. भे.)

उ०—मुख निकट प्रकासित नाम **मंज**। क्रित उलट प्रगट किरि सुघट कंज।—रा. रू.

३ देखो 'मंजरी' (रू. भे.)

उ०—मछर धर **मंज** सुरसत सुजल माटकां।—किसनजी आढ़ौ

मंजण-सं० पु० [सं० मार्जनम् या मार्ज] १ स्नान।

उ०—१ कुम कुमै **मंजण** करि धौत वसत धरि, चिहुरै जळ लागौ चुवण। छीणै जांणि छछोहा छूटा, गुण मोती मखतूल गुण।—वेलि

उ०—२ जळबा काज नरूकी जादम। धुर ऊठी पतिवरत तणै भ्रम। रट हरि मुख पति ध्यांन रहायौ।**मंजण** कर सिणगार मंगायौ।—रा. रू.

२ दांत साफ करने का चूर्ण, मंजन।

वि०—नष्ट करने वाला, मिटाने वाला।

उ०—मांण **मंजण** थूरि भजण थाट। पर दुख पल्लण भूल भल्लण वस चल्लण वाट।—ल. पिं.

रू० भे०—मंजणि, मंजन, मजण, मजन, मज्जण, मज्जन।

मंजणि—देखो 'मंजण' (रू. भे.)

उ०—कंवळा कूंपळ अधर कुम्हलिया घणी निसासां। कोरै **मंजणि** लूखी लट मुख हिलै उसांसां।—मेघ

मंजणौ, मंजबौ-क्रि० अ० [सं० मार्जन] १ स्वच्छ होना, मंजा जाना, चमक पाना (वस्तु)।

२ दक्ष होना, कार्यकुशल होना।

३ अनुभवी होना (व्यक्ति)।

४ पारंगत होना।

५ स्नान करना, नहाना।

६ देखो 'मांजणौ, मांजबौ' (रू. भे.)

उ०—जिकां पार जोवतां वार लगै वरणांतां, तड़ित सार अवतार अणी गुण धार अनंतां। वेदांगी तन **मंजि** रंजि आ भीच लगन्नै, घडै सघर पुळ सज्जि धूप डंबर वासन्नै।—रा. रू.

मंजणहार, हारौ (हारी), मंजणियौ—वि०।

मंजाडणौ, मंजाडबौ, मंजाणौ, मंजाबौ, मंजावणौ, मंजावबौ—प्रे० रू०।

मंजिओड़ौ, मंजियोड़ौ, मंज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मंजीजणौ, मंजीजबौ—भाव वा०।

मजणौ, मजबौ, मज्जणौ, मज्जबौ—रू० भे०।

मंजन—देखो 'मंजण' (रू भे.)

उ०—१ **मंजन** करै सधीर मन, सूरां सारां धार। कायरड़ा **मंजन** करै, आंसु धार मंझार।—बां दा.

उ०—२ ऊठै बे दळ जोध अकारा, साझ सरीर तणां भ्रम सारा। कहि गंगा तन **मंजन** कीधा, दांन वितांन मांन करि दीधा।—रा. रू.

मंजमून—देखो 'मजमून' (रू. भे.)

मंजर-सं० पु० [सं० मञ्जर] १ मोती।

२ मोर पंख की चन्द्रिका के ऊपर के महीनतम बाल।

उ०—**मंजर** मोर चन्द्र मिर माधव। सोभा सहत प्रपित सिणगार।—ह. नां. मा.

वि०—१ सुन्दर, मनोहर।

२ देखो 'मंजरी' (रू. भे.)

उ०—भाराथ रांमायण भागवत, कथा पवित्र धरि धरि करां। धरि मरण नेम सिर परि धरां, तुररा तुलसी **मंजरां**।—सू. प्र.

मंजरणौ, मंजरबौ-क्रि० अ०—वृक्षों या पौधों पर मंजरी आना, बौर युक्त होना।

उ०—१ अंबर मोरीजै छै। कूंपळां फूटीजै छै। बणराइ **मंजरी** छै। वासावळी फूट रही छै।—रा. सा. सं.

उ०—२ **मंजरै** अदभुत चैत्र मासै, पांगरै पत्र कोमळा। सी जाय घर दिसि घांम प्रगटै, हुवै अंबर त्रिम्मळा।—ईसरदास बारहठ

मंजरणहार, हारौ (हारी), मंजरणियौ—वि०।

मंजरिओड़ौ, मंजरियोड़ौ, मंजरचोड़ौ—भू० का० कृ०।

मंजरीजणौ, मंजरीजबौ—भाव वा०।

मंजुरणौ, मंजुरबौ—रू० भे०।

मंजरि—देखो 'मंजरी' (रू. भे.)

उ०—मंत्री तहां मयण वसंत महीपति, सिला सिंघासण घर सधर। माथै अंब छत्र मंडांणां, चलि वाइ **मंजरि** ढळि चमर।—वेलि

मंजरिनेत्र-सं० पु०—एक रंग विशेष का घोड़ा जो अशुभ माना जाता है। (शा. हो.)

मंजरियोड़ौ-भू० का० कृ०—मंजरी आया हुआ, बौराया हुआ (वृक्ष या पौधा), फूला हुआ (वृक्ष).
(स्त्री० मंजरियोड़ी)

मंजरी-सं० स्त्री० [सं० मंजर+ङीष] १ कुछ विशिष्ट पौधों के फल आने से पहले सींको में लगे हुए दानों के समूह अर्थात फूलों के प्रारम्भिक रूपों का समूह।
ज्यूं—तुळसी मंजरी, आंम मंजरी।
उ०—१ आसमांन ऊतरी, इंद्र री अपछरा, सरोवर रौ हंस, मरद कों कमळ, बसंत की **मंजरी**, भाद्रवा की बादळी।
—लाली मेवाड़ी री बात
उ०—२ महाराज नूं राज रीझै समाप्यौ, थिरु राज रौ राज देसांण थाप्यौ, जठै झाडिया खंड, स्रीखंड जैड़ी, नगां पुंज री **मंजरी** रूप नैड़ी।—मे. म.
२ एक राग विशेष।
उ०—सरी सरी सपोसयं सुनाळ माळकोसयं। मिठास आम **मंजरी** गरी गरी सगुज्जरी।—रा. रू.
रू० भे०—मज, मंजर, मजरि, मजुर, मांजरि, मांजरी।

मंजरीक-सं० पु०—१ मोती।
स्त्री०—२ तुलसी।

मंजळी—देखो 'मंजुळ' (रू. भे.)
उ०—प्रतख्ख चख्ख पौइणी, महा मदन मोहिणी, मयंक मुख्ख **मंजळी**, करार नेत कंजळी।—मा. वचनिका

मंजवती-सं० पु०—एक वर्णिक छन्द।

मंजा-सं० स्त्री० [सं०] बकरी।
उ०—१ कहियौ—सौलंखियां रौ ओज तौ इण समय हिंदुस्थांन रा अंधकार नूं मंद्द आगळी **मंजा** करि बांधव जनां रा दुख रूप सुसीम नै उडावै छै।—वं. भा.
उ०—२ जिण बाळक नै आपरी भुवा **मंजा** रौ दूध दे'र नीठि-नीठि पाळि दस बरस रा वय मे आंणियौ।—वं. भा.
२ मंजरी।
३ लता, वेल।

मंजाणौ, मंजाबौ-क्रि० स० [मंजणौ क्रि० का प्रे० रू०] राख, मिट्टी आदि से रगड़कर स्वच्छ कराना, चमकाना। (बर्तन आदि)
मंजाणहार, हारौ (हारी), मंजाणियौ—वि०।
मंजायोड़ौ—भू० का० कृ०।
मंजाईजणौ, मंजाईजबौ—कर्म वा०।
मंजावणौ, मंजावबौ, मांजाणौ, मांजाबौ—रू० भे०।

मंजायोड़ौ-भू० का० कृ०—राख, मिट्टी आदि से साफ कराया हुआ, चमकाया हुआ (बर्तन आदि), मंजाया हुआ.
(स्त्री० मंजायोड़ी)

मंजार—१ देखो 'मारजार' (रू. भे.)
उ०—१ उदैराज उद्यम कियां, सब कुछ होवै त्यार। गाय भैंस कुळ में नहीं, दूध पिवै **मंजार**।—उदैराज
उ०—२ सोभा अति सागर तणी जो नहिं बरणी जाय। देखि भरयौ **मंजार** दधि, पय भोळै पी जाय। पय भोळै पी जाय, भलौ इण भात सूं। हंसां संभ्रम होय, क्षीर सिंधु ख्यात सूं। बणियौ ताळ बिदद् 'बखत' नृप बार रौ। उण पर अधिक आरांम धांम छत्रधार रौ।—सिवबगस पाल्हावत
२ देखो 'मध्य' (रू. भे.)
उ०—कीरति कही कुरांण मां, गिणिजै वरग **मंजार**। राजा जिन्या रासि रै, देव तिकौ दातार।—पी. ग्रं.

मंजारखळ-सं० पु० [सं० मार्जार+खल] स्वान, कुत्ता।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

मंजारड़ी—१ देखो 'मारजार' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—बाट काटे **मंजारड़ी**, सांमही छीक हगाद कपाळ। आली लुकडी आवज्यौ, गोरड़ी कउ प्रीय पाछौ हौ वाळ।—बी. दे.
२ देखो 'मंजा' (अल्पा., रू. भे.)

मंजारछळ-सं० पु० [सं० मार्जारछल] शेर, सिंह। (अ. मा.)

मंजारी—देखो 'मारजार' (रू. भे.)
उ०—नाचैं मोर निहारै अहिफण ऊपरै, मूसक सीस न धारैं घात **मंजारियां**। माहोमाह न मारैं बैर बुन्यादरां, ऐसे तेज अकारै राजै रघुपति।—र. रू.

मंजावट-सं० स्त्री०—मांजने या स्वच्छ करने (बर्तन) की क्रिया या भाव।

मंजावणौ, मंजावबौ—देखो मंजाणौ, मंजाबौ' (रू. भे.)
उ०—ते दूमातउ देखी पंडित एक दिवस बोलावइ। गविट्ठं छात्र तणा सवि पाटा पाटी सदा **मंजावइ**।—हीराणद सूरी
मंजावणहार, हारौ (हारी), मंजावणियौ—वि०।
मंजाविओड़ौ, मंजावियोड़ौ, मंजाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मंजावीजणौ, मंजावीजबौ—कर्म वा०।

मंजावियोड़ौ—देखो 'मंजायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मंजावियोड़ी)

मंजासणौ—देखो 'मजासणौ' (रू. भे.)

मंजियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ दक्षता प्राप्त किया हुआ, कुशल, अनुभवी.
२ मंजा हुआ, राख आदि से साफ हुवा हुआ. (बर्तन)
(स्त्री० मंजियोड़ी)

मंजिल–सं० स्त्री० [अ०] १ वह स्थान जहां यात्रा करते समय मार्ग में ठहरते हैं, पड़ाव, विश्राम स्थल ।
२ वह स्थान जहां तक पहुंचना हो, गन्तव्य स्थल ।
३ ऊपर-नीचे बने हुए होने के विचार से मकान का खण्ड, माला ।
४ एक दिन की यात्रा ।
५ नक्षत्र ।
६ चांद का घर ।
७ लम्बी यात्रा ।
रू० भे०—मजल ।

मंजीठ—देखो 'मजीठ' (रू. भे.)
उ०—एक बइठा कहइ कथा कल्लोल । एक बइठा बीकई **मंजीठ** चोल ।—नळ दवदंती रास ।

मंजीठी—देखो 'मजीठी' (रू. भे.)
उ०—काळी **मंजीठी** कियां, नइणौं नींदालुद्ध । अंबर लागौ ऊठियौ, विढवा बम विसुद्ध ।—हा. झा.

मंजीयासणौ—देखो 'मजासणौ' (रू. भे.)

मंजीर–सं० पु० [सं० मंजीर] १ पैरों में पहिनने का एक आभूषण विशेष, नूपुर, झांझर । (अ. मा.)
२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
३ वह डण्डा या खम्भा जिसमें मथानी का डण्डा बंधा रहता है ।
४ प्रथम गुरु के नगण के प्रथम भेद का नाम । (डिं. को.)
५ देखो 'मंजीरौ' (मह., रू. भे.)
उ०—बड़े प्रात स्त्रीमात **मजीर** बागै । जरां गात जमात जम्मात जागै ।—मे. म.

मंजीरा–सं० पु० (ब. व.) [सं० मञ्जीर] १ कांसी या पीतल के प्यालानुमा युग्म वाद्य जो प्रायः ढोलक के साथ बजाये जाते हैं ।
२ पिंगल प्रकाश' के अनुसार १८ वर्णों का वर्णिक छन्द विशेष ।
रू० भे०—मजीरा ।
मह०—मंजीर, मजीर ।

मंजु–वि० [सं० मञ्जु] सुन्दर, मनोरम । (अ. मा., ह. नां. मा.)
उ०—रिख सिख गंगारांम सेवै, पद कंज **मंजु** सीतावर । सौ 'राधौ'पै किसना चींतव, निस दिवस उर चंगा ।—र. ज. प्र.
रू० भे०—मंज, मंजू ।

मंजुकेसी–सं० पु० [सं० मञ्जुकेशिन्] श्री कृष्ण ।

मंजुघोस–सं० पु० [सं० मञ्जुघोष] तांत्रिकों का देवता ।

मंजुघोसा–सं० स्त्री० [सं० मंजुघोषा] १ एक अप्सरा का नाम ।
उ०—इंद्र लोक री अपछरा, **मंजुघोसा** नांम । देव भाव सब निस्ट कर, कहौ द्रस्ट धर कांम ।—पा. प्र.
वि० वि०—इसको मेघाविन ऋषि ने पिशाच बनने का शाप दिया था ।
२ अप्सरा । (अ. मा., नां. मा.)
रू० भे०—मंजूघोसा, मजघोसा ।

मंजुनासी–सं० स्त्री० [सं० मञ्जुनाशी] १ दुर्गा का एक नाम ।
२ इन्द्राणी का एक नाम ।

मंजुर—१ देखो 'मंजरी' (रू. भे.)
उ०—मिळि अंब साख प्रसाख रसमय अमिति **मंजुर** अंजुरे । रसहीन अनि तर सरब रैंगा सीत छळ क्रति संचरै ।—रा. रू.
२ देखो 'मंजूर' (रू. भे)

मंजुरणौ, मंजुरबौ—देखो 'मजरणौ, मंजरबौ' (रू. भे.)
उ०—मिळि अंब साख प्रसाख रसमय, अमिति मंजुर **मंजुरै** ।
—रा. रू.

मंजुरियोड़ौ—देखो 'मंजरियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री० मजुरियोड़ी)

मंजुळ–वि० [सं० मञ्जुल] १ सुन्दर, मनोहर । (अ. मा., ह. नां. मा.)
उ०—ताकव त्रप तणी जी कर कर मुणौं **मजुळ** कीत । घट उमदा घणी जी, पूछै गहर गुण घर प्रीत ।—र. रू.
२ सुरीला ।
रू० भे०—मंजळी, मजूळ ।

मंजुसी–सं० पु० [सं० मंजुश्री] १ एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य ।
२ देखो 'मंजूसौ' (अल्पा., रू. भे.)

मंजू—१ देखो 'मंजु' (रू. भे.)
२ देखो 'मंजूसौ' (अल्पा., रू. भे.)

मंजूघोसा—देखो मंजुघोसा' (रू. भे.)

मंजूड़ी—देखो 'मंजूम' (अल्पा., रू. भे.)

मंजूर–वि० [अ०] जो स्वीकार कर लिया गया हो, स्वीकृत ।
उ०—महंतजी ने पूछ्यौ तौ वै खुद आपरै मूंडा सूं **मंजूर** करियौ के सेठां रै कैणा मूजब ई म्है वां'री मुगति रौ उपाय करियौ है ।
—फुलवाड़ी

मंजूरड़ौ—देखो 'मंजूसौ' (अल्पा., रू. भे.)

मंजूरी–सं० स्त्रीं०—१ मंजूर होने का भाव, स्वीकृति ।

मंजूळ—देखो 'मंजुळ' (रू. भे.)

मंजूस—देखो 'मंजूसौ' (मह., रू. भे.)
उ०—तुम उपगार गिणीस छिपाय, तुं मुझ नै तिण **मंजूस** । तिण मंजूस में एक, भरवारै घाल्यौ ठूंस ।—ध. व. ग्रं.
रू० भे०—मजू' ।

मंजूसड़ौ—देखो 'मंजूसौ' (अल्पा., रू. भे.)

मंजूसी—देखो 'मंजूसौ' (अल्पा., रू. भे.)

मंजूसौ–सं० पु० [सं० मंजूषा] १ छोटा पिटारा या पिटारी, डिब्बा ।
२ पक्षियों का पिंजरा ।

३ हाथी का हौदा ।

रू० भे०—मजूसौ ।

अल्पा०—मंजूड़ी, मंजूरड़ी, मंजूसड़ी मंजूभी ।

मह०—मंजू', मंजूस, मजूस ।

मंजेस-सं० पु०—देशी चरखे के नीचे का सीधा लम्बा डंडा या पटड़ी जिसपर चरखा जमा रहता है ।

मंझ—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—१ केसर मिलक सराज दी बे मूळहत्थांह । जांग कंदोई ऊथलै, खाजी **मंझ** कड़ाह ।—नैणसी

उ०—२ बांबाळि कांइन सिरिजियां, मारु **मंझ** थळांह । प्रीतम बाढत काबड़ी, फळ सेवत करांह ।—ढो. मा.

मंझम—१ देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—बाबा कुरभड़ी मरावहो के सरवरियौ फोडाव । जब म्है सूता नीद भर, तब बोली **मंझम** रात ।—ढो. मा.

२ देखो 'मध्यम' (रू. भे.)

मंझमान—देखो 'मिजमांन' (रू. भे.)

मंझमानी—देखो 'मिजमांनी' (रू. भे.)

मंझळी—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—जीव चा सबद सुण जीवड़ा, महियळ जळ थळ **मंझळी** । आलेख पुरस अपरम परम, जळहर सद्द सु संभळी ।—ह. र.

मंझळौ—देखो मझलौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मंझली)

मंझा-सं० स्त्री० [सं० मध्या] १ कमर, कटि । (जैसलमेर)

२ देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—थण **मंझा** जिम खीर सीर, जिम कुदरत कमावै ।

—केसोदास गाडण

मंझार—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—१ ऊठै सौर झालां अनल, आभ धुम्रां अंधियार । ओळां जिम गोळा पड़ै, मेछां कटक **मंझार** ।—बां. दा.

उ०—२ और आसरौ नाहिन तुझ बिन, तीनूं लोक **मंझार** । आप बिनां मोहि कछु न सुहावै, निरख्यौ सब संसार ।—मीरां

मंझारड़ी—१ देखो 'मारजार' (रू. भे.)

अल्पा०—मंजा ।

मंझरि, मंझारै, मंझारौ, मंझाळ, मंझि—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—१ एक अहेड़ो वईह **मंझारी** ले वांणां उरहु हणी, जनम दीज्यौ जगनाथ दुवार ।—बी. दे.

उ०—२ मोसर उण चंद्र कूप **मंझारै** । आकसमात् बांणी उच्चारै ।

—सू प्र.

उ०—३ सतरै सै गुणत्रीस में, मिगसर मास **मंझारौ** रे । यात्रा करी जिनवर तनी, धरम सील चित धारौ रे ।—ध. व. ग्रं.

उ०—४ आराबां ऊछळ आतस झाळ । मंडै फिर भाद्रव मेह **मंझाळ** ।—मा. वचनिका

उ०—५ दादू **मंझि** सरोवर विमल जळ, हंगा केलि करांहि । मुक्ताहळ मुकता चुगैं, तिहिं हंसा डर नाहिं ।—दादूबांणी

उ०—६ बाबा म दइस मारूवां, सूधा एवाळांह । कांधि कुहाड़उ सिरि घड़उ, वासउ **मंझि** थळांह ।—ढो. मा.

मंझिम—१ देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—मंझि समंदां बींट घर, जळ सूं जामोपत्त । किण ही अवगुण कूंझड़ी, कुरळी **मझिम** रत्त ।—ढो. मा.

२ देखो मध्यम' (रू. भे.)

मंझियार-वि० [सं० मध्य+रा०प्र० यार] मध्य का, मझला, बीच का ।

मंठ—देखो 'मठ' (रू. भे.)

मंठणौ, मंठबौ-क्रि० स०—रचना, बनाना, निर्माण करना, सृजन करना ।

उ०—मारु आयौ मधुपुरी, स्री दूलह 'अभमाह' । परमोछव परणायवा, सुख **मंठै** 'जैमाह' ।—रा. रू.

मंठणहार, हारौ (हारी), मंठणियौ—वि० ।

मंठाडणौ, मंठाडबौ, मंठाणौ, मंठाबौ, मंठावणौ, मंठावबौ

—प्रे० रू० ।

मंठिओड़ौ, मंठियोड़ौ, मंठ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मंठीजणौ, मंठीजबौ—कर्म वा० ।

मंठाणौ, मंठाबौ-क्रि० स०—बनवाना, सृजन कराना, निर्माण कराना, रचवाना ।

मंठाणहार, हारौ (हारी), मंठाणियौ—वि० ।

मंठायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मंठाईजणौ, मंठाईजबौ—कर्म वा० ।

मंठावणौ, मंठावबौ—रू० भे० ।

मंठायोड़ौ-भू० का० कृ०—बनवाया हुआ, रचित, निर्मित ।

(स्त्री० मंठायोड़ी)

मंठावणौ, मंठावबौ—देखो 'मंठाणौ, मंठाबौ' (रू. भे.)

मंठावणहार, हारौ (हारी), मंठावणियौ—वि० ।

मंठाविओड़ौ, मंठावियोड़ौ, मंठाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मंठावीजणौ, मंठावीजबौ—कर्म वा० ।

मंठावियोड़ौ—देखो 'मंठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मंठावियोड़ी)

मंड-सं० पु० [सं०] १ आभूषण, गहना ।

उ०—चांपावत चंड बळबंड रखपाळ । मुरधर के **मंड**, सिंभू कोप रिणताळ ।—रा. रू.

२ रचना, सृष्टि ।

उ०—१ आदूं खट रस ऊपरां, मांडी नवरस **मंड** । कुकवि कहै विध सूं कियौ, आचारजां अफंड ।—बां. दा.

उ०—२ अधिकारी गीतां अवम, चारण सुकवि प्रचंड। कोड प्रकारां गीत की, मुरधर भाखा मंड।—र. ज. प्र.

३ ब्रह्माण्ड।

उ०—चमू काळ बळ चंड, ज्वाळ किर मंड जळायण। सरस कोप किर सिभु महा, दिख दंभ मिटावण।—रा. रू.

४ शरीर, देह। (अ. मा.)

५ निर्भरता।

उ०—जोधपुर रिणमलां माथै मंड त्यूं जेसलमेर कालण रा परवार ऊपर सारी साहिबी री मदार।—नैणसी

६ देखो 'मंडप' (रू. भे)

उ०—मांडौ जिग मंड प्रधान सुमित्र।—रांमरासौ

७ देखो 'मंडांण' (रू. भे.)

८ देखो 'मांडौ' (रू. भे.)

९ देखो 'माडांणी' (रू. भे.)

उ०—वनि वनि विकसइं वेउळ, वेउ लगाडइं चींति। दीठा द्राखह मंडव मंड बधारइं प्रीति।—जयसेखर सूरि

१० देखो 'मंढ' (रू. भे.)

उ०—मंड में काळी मांता जागिया, पुरी में जगन्नाथ बाबो जागिया, बंगळै में हणमांन बाबौ जागिया, परीडै पितर देवता जागिया, मदिर में सती माता जागिया, मंड में भैरू बाबौ जागिया।—लो. गी.

११ देखो 'मुंड' (रू भे.) (अ मा.)

उ०—घण मेळै घमसांण, राखस आहेडौ रमण। चंड मंड बे भ्राता चढ़ै, प्राजळिता निज प्रांण।—मा. वचनिका

उ०—२ तौ चंड मंड राजि भारत ने चाढ़ीजै। कलहांगारी रा हाथ देखीजै दिखाइजै।—मा. वचनिका

१२ देखो 'मांड' (रू. भे.)

सं० स्त्री०—पानी पीने या भरने के लिये किसी कुएं या तालाब पर जाने या जाकर एकत्र होने की क्रिया या भाव।

उ०—कुवा रुखी वाय एक चहुवांण तेजसी री कराई छै, तिण रौ खारौ पाणी। घणी सहर री मंड उण ऊपर छै।—नैणसी

मंडग्रौ—देखो 'मंडवौ' (रू. भे.)

मंडक—देखो 'मंडकौ (मह., रू. भे.)

मंडकियौ—देखो 'मंडकौ' (अल्पा., रू. भे.)

मंडकौ–सं० पु० [सं० मण्डकः] १ मैदे को घी तथा शक्कर के समिश्रण से बनी रोटी विशेष।

उ०—१ एक घ्रत पूरण अनइ सरकरा चूरण, सातूअ कचालित अनइ गोघ्रत मिलित, एक मंडक अखंड अनइ सिंहरुली खंड।
—व. स.

उ०—२ ओ ए दासी ओ ए बांदी बूझां थांने वात, कांई म्हारी जच्चा रांणी पथ लियौ, राज। मीठै को मंडकौ, अळसी को तेल बो थारी जच्चा रांणी पथ लियौ राज।—लो. गी.

२ मोटी चपाती जिसे आग के अंगीरों पर ही सेका जाता है।

रू० भे०—मांडौ।

अल्पा०—मंडकियौ।

मह०—मंडक।

मंडण–सं० पु० [सं० मण्डनम्] १ सजावट, शृंगार।

२ आभूषण, गहना।

३ शोभा।

उ०—१ स्री रघुनाथ अनाथ नाथ सुज, बेढ़ सत्र दसमाथ विहंडण। जाहर मही जहूर सुजस जिण, महपत नूर सूर कुळ मंडण।
—र. ज. प्र.

उ०—२ 'भारांणी' जस भार, भुज मंडण थारा भुजां। ऊगै दीह उदार, पातां घर पूगै पवंग।—बां. दा.

४ किसी कथन या सिद्धांत का युक्ति आदि देकर पुष्टीकरण। प्रमाण द्वारा कोई बात सिद्ध करना।

विलो०—खंडन।

रू० भे०—मंडन।

मंडणगढ़ां–सं० पु० यौ० [सं० मंडन+कोट] हाथी, गज।
(ना. डिं. को.)

मंडणछत्र–सं० पु० यौ० [सं० मंडन+छत्र] आकाश, नभ। (नां. मा.)

मंडणौ, मंडबौ–क्रि० अ० [सं० मंडनम्] १ होने की स्थिति में आना, कुछ होना।

उ०—१ छेह घणै ऊछज छरा, केहर फाड़ै डाच। ऐरावत कुळ ऊपरां, मीच मंडीजै नाच।—बां. दा.

उ०—२ मावड़ियौ जुध मंडियां, विलखौ करै विलाप। आडा म्हारै आवजौ, जणणी रा व्रत जाप।—बां. दा.

उ०—३ मंडियौ वाद दिली मेवाड़ां, समहर तिकौ दिहाड़ै सींव। भवस न पैठा किसा भाखरां, भाखर किसै न विढियौ 'भींव'।
—भीम सीसोदिया रौ गीत

२ ठनना, पक्का होना, निश्चित होना।

उ०—अड़ियौ दळ रांवण रांम तणौ, मंडियौ अत ही जुध जोर घणौ। हथियार लै राखस आंण अड़ै, गिरि रूंख ले वांनर रीछ लड़ै।—गी. रां.

३ कटिबद्ध होना, तत्पर होना, उद्यत होना, उतारू होना।

उ०—१ ताहरां सादूळ अपूठो घिरियौ। रजपूत सांम्हां मंडियौ। लड़ाई हुई, रजपूत कांम आयौ।—नैणसी

उ०—२ अर सांमोर बारहठ लोहठ री पाघ रै आंटै मंटोवर रा नरेस पड़िहार हम्मीर नूं गंजि रांणै लाखा रौ पण बिगडाई जठै तठै जिम तिम मरण मंडियौ, परंतु आपरै आगार ही अवसांण आयौ।—वं. भा.

उ०—३ राव चंद्रसेन नीसरियो। देवड़ौ बीजो हरराजोत पिण नीसरीयो। उहड़ जैमल मुदायत हुय मंडियौ।
—राव चंद्रसेन री बात

४ उत्पन्न होना, अंकुरित होना।

उ०—सुण वाकौ पातसाह आस मंडी उर अंतर। मूनदीन फिर मीर, पीर परसिया अजैपुर।—रा. रू.

५ स्थिर होना, रुपना, जमना, रुकना ।
उ०—१ वागी खगां वे घड़ी, ज्यां वज्जै घड़ियाळ । पांव न मंडे राव पिड़, गौ छंडे रिणताळ ।—रा. रू.
उ०—२ बरंगळ झड़ै ऊधड़ै बगतर, चौधारां धारां खग चोट । ग्रोट होय मंडियौ 'ग्रमरावत', काळौ पड़ै न मैमत कोट ।
—खेमराज सौदौ
उ०—३ त्रिजड़ां झाट त्रंबाट बाजतां, स्यांम ध्रम सूरातन साहि । सत छांडै टेभा ग्रवछंडिया, गिड़ भूरा मंडिया गज गाहि ।
—बैरीसाल हाडा रौ गीत
६ ग्रटल होना, ग्रडिग होना, दृढ होना, डटना ।
उ०—वदन तेज कळवंत रौ वयळ बाडव वर्णे, ऊफणै क्रोध पोरस ग्रमांमौ । मंडांणौ हेक राजा घणै मछर सूं, साहजादा दुहुं तणै सांमहौ ।—रूधौ मूहतौ
७ जुड़ना, लगना ।
ज्यूं—दरबार मंडणौ, मेळौ मंडणौ ।
उ०—ग्रागळि रितु राय मंडियौ ग्रवसर, मंडप वन नीझरण ग्रदंग । पंचबांण नायक गायक पिक, वसुह रंग मेळगर विहंग ।
—वेलि
८ ग्रारम्भ होना, शुरू होना ।
ज्यूं—घट्टी मंडणी, रांमत मंडणी ।
उ०—१ छवि नवी नवी नव नवा महोछव, मंडियै जिणि ग्राणंद मई । कातिग घरि घरि द्वारि कुमारी, थिर चीत्रंति चित्रांम थई ।
—वेलि
उ०—२ एकर उदयापुर में उण नटणी री रांमत मंडी । रांणीजी कई वरसा सूं उण रांमत रा कोडाया हा ।—फुलवाड़ी
९ स्थापित होना, कायम होना ।
ज्यूं—प्याऊ मंडणी, पौसाळ मंडणी ।
उ०—महमूद मीर निरखे निबळ, कचर घांण घमसांण करि । मंडियौ तखत दिल्ली मुगळ, कातर वंस पठांण करि ।—वं. भा
१० किसी दुकान संस्था या कार्य का नियत समय पर सार्वजनिक दृष्टि से चालु होना, निश्चित समय पर खुलना ।
ज्यूं—दुकांन मंडणी ।
११ उमड़ना, उभरना, मंडराना ।
उ०—१ हुई फौज हाजरी, बोझ नाग न बरदासै । जांण गजब गाजती, मंडी कांठळ चवमासै ।—मे. म.
उ०—२ दादुरा डहिडहै सांवण ग्रावण वैरी सिध कहै । इसो समइयौ वण रह्यौ छै । वरखा मंडनै रही छै । बिजळी झिळौ मिळ करनै रही छै ।—रा. सा. सं.
१२ चित्रांकित होना, चित्रित होना ।
उ०—१ ग्रो कंवळौ मंडियोड़ा ठाकरसा रौ ई पुन्न परताप है के ग्रापरी हवेली में किणी भांत री चोरी-चकारी नी व्ही ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ जोई जळद पटळ दळ सांवळ ऊजळ, धुरै नीसांण सोइ घणघोर ।—प्रोळि प्रोळि तोरण परठीजै, मंडै किरि तंडव गिरि मोर ।—वेलि
उ०—३ भावज म्हारी ए, देखो भावज कांई ए जिनावर जाय । मोरां पर मंडिया है जिण रै मांडणा, मांडणा जी, म्हारा राज ।
—लो. गी.
१३ लिखा जाना, दर्ज होना ।
उ०—१ सातळमेर पोकरण जागीर में मंडी, ग्रमल न हुवौ ।
—नैणसी
उ०—२ डोढौ दूणौ मंडियोड़ौ लैणौ उतारै तौ कीकर ।
—फुलवाड़ी
१४ किसी यन्त्र का पुर्जे ग्रादि व्यवस्थित लगकर कार्य करने की स्थिति में ग्राना ।
ज्यूं—ग्ररट मंडणौ, ढोलर हींडो मंडणौ ।
१५ ग्रंकित होना, चिन्हित होना ।
उ०—१ जमीं माथै लंगूरां रा एकठ घणा सारा खोज मंडियौड़ा देखनै उण रा मन में खुड़कौ व्हियौ के कठैई माटा लंगूरिया तौ कुबद नीं करग्या ।—फुलवाड़ी
उ०—२ ग्राथण रा खड़ खायनै हिरणी ग्राई तौ कांई देखै के ग्राडौ तौ खुलियोड़ौ । छांन बा'रै खोड़िया ना'र रा खोज मंडियोड़ा ।
—फुलवाड़ी
१६ बनना, निर्मित होना ।
उ०—हरीया जळ की ग्रोवरी, बीच मिनख रा वास । पल मंडे पल ढहि परै, हरिजन रहै उदास ।—हरिरांमदासजी महाराज
उ०—२ उलटा मन ग्रममांण कुं, मिळै त्रिवेणी तट । जन 'हरीयै' जांह मंडीया, सुरति सबद का मट ।—हरिरांमदासजी महाराज
१७ उपयोग की दृष्टि से किसी वस्तु का किसी के सहारे लगना, सटना, संलग्न होना, सहारा बनना, ग्राधार बनना ।
उ०—प्रिथु वेलि कि पंच विध प्रसिध प्रणाळी, ग्रागम निगम कजि ग्रखिळ । मुगति तणी नीसरणी मंडी, सरग लोग सोपांन इळ ।
—वेलि
१८ ग्रहण करने या लेने के लिये या गिरते हुए को झेलने के लिये पात्र, वस्तु या हाथ रक्खा जाना, पसरना, फैलना ।
ज्यूं—पल्लौ मंडणौ, पाळौ मडणौ, घड़ौ मडणौ, हाथ मंडणौ ।
उ०—दाता ग्रागै मंडियौ दाता हंदौ हत्थ । दातारां सिर ऊपरै, सौ नित रहौ समत्थ ।—बां. दा.
१९ तनना ।
उ०—१ मंत्री तहां मयण वसंत महीपति, सिळा सिंघासण घर सघर । माथै ग्रंब छत्र मंडांणां . चलि वाइ मंजरि ढलि चमर ।
—वेलि

उ०—२ सुरतांण रांण संकोडिया, सफि लीधा दे सहि सहि। मालदे सीस छत्र **मंडियौ**, 'माल' हुवौ मंडलीक महि।
—राव मालदेव री बात

२० घोड़ा, ऊंट आदि सवारियों पर चारजामा या जीन बांधा जाना, कसा जाना।

उ०—१ मारग में वौ इज ऊंट पाछौ सांमौ धकियौ। पिलांण **मंडियोड़ौ** देखनै सूंठ वाई मन करियौ के माथै बैठा चालां तो ठीक रैं'वै।—फुलवाड़ी

उ०—२ ब्रहमांणी हंस चढै, मोर कौमारी **मंडै**। नारसंघी सिंघ सिरै, नर वाहनी नर चढै।—मा. वचनिका

२१ सृजन होना, सृष्टि होना।

उ०—तू ग्रनाद जुगाद ग्राद तूझ हूंत **मंडांणी**।—केसौदास गाडण

२२ रचा जाना, रचित होना।

ज्यूं—चंवरी मंडणी, व्याव मंडणौ।

उ०—महा **मंडियौ** ज्याग उज्जेण व्हांगां मधै, रुदन विलखावती रही रोती। हेळवी ग्रमरा' रै हियै करती हरख, 'जसा' ग्रपछर रही वाट जोती।—महाराजा जसवंतसिंह री गीत

२३ मनाया जाना।

उ०—ग्रागमि सिसुपाळ **मंडिजै** ऊछव, नीसांणे पड़ती निहस। पट मंडप छाइजै कुंदणपुर, कुंदणमै बाभै कळस।—वेलि

२४ सजना, संवरना, सुसज्जित होना, तैयारी होना।

उ०—इभ कुंभ ग्रंधारी कुच सु कंचुकी, कवच संभु कांम क कळह। मनु हरि ग्रागमि **मंडे** मंडप, बंधण दीध कि वारगह।—वेलि

२५ ग्राच्छादित होना, ढका जाना।

२६ तैयार होना, उद्यत होना, प्रस्तुत होना।

२७ छितरना, बिखरना।

२८ प्रबन्ध होना, व्यवस्था होना।

२९ व्यक्त होना। ३० सम्बन्ध जुड़ना, मेल होना।

३१ संधान होना। ३२ शोभित होना।

उ०—१ दंत स्रेणि दीठा पछी, मणि **मंडिउं** मंडांण। भमहि धनुख थी सीखव्या, नर नाखेवा बांण।—मा. कां. प्र.

उ०—२ मांग फूल सिर फूल, जडाऊ **मंडिया**। खिण खिण निरखै नाह, हिए दुख खंडिया।—बां दा.

क्रि० स०—३३ रत्न ग्रादि कोई वस्तु किसी दूसरी वस्तु में बैठाना, जमाना, जड़ना।

३४ ढोल ग्रादि ग्रवनद्ध वाद्यों के मुख पर चमड़ा चढाना।

३५ ग्रभिमन्त्रित गंडा या तावीज पर धातु-पत्तर चढाना, ग्रावेष्ठित करना।

३६ तस्वीर, चित्र ग्रादि को सुरक्षार्थ, शीशा लगी किसी चौखट में बैठाना, स्थिर करना।

३७ सुसज्जित करना, सजाना, संवारना।

३८ शृंगार करना।

३९ कुछ करना।

उ०—१ मीरेखांन चडौ रण **मंडौ**। खळ पकड़ौ मारौ वळ खंडौ।
—रा. रू.

उ०—२ धण बोलै जोधार, हिचण तोलै नभ हाथै। विण प्रारंभ रूप रा, **मंडै** ग्रारंभ किण माथै।—मे. म.

उ०—३ बध बीरां सह बोळिया, केसर कुंड दुकूळ। बळै तरुण भड़ बरजिया, **मंडै** साहस मूळ।—वं. भा.

४० देखो 'मांडणौ, मांडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जीवत ग्रित हुई साहिजहां, दिल्ली वै सुरतांण। राति दीह ग्रंदर रहै न **मंडै** दीवांण।—वचनिका

उ०—२ रुखाळा मोरचै **मंडै** लुळै लाडवां री भाव ग्रर भूजियां री ग्रोडी सूं सिरावण करै ग्रर रात नै सौ-सौ कोसां रौ सरड़ातौ भर जावै।—दसदोख

मंडणहार, हारौ (हारी), मंडणियौ—वि०।

मंडाड़णौ, मंडाड़बौ, मंडाणौ, मंडाबौ, मंडावणौ, मंडावबौ
—प्रे० रू०।

मंडिओड़ौ, मंडियोड़ौ, मंडयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मंडीजणौ, मंडीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

मंढ़णौ, मंढ़बौ—रू० भे०।

मंडन—देखो 'मंडण' (रू. भे.)

मंडप—सं० पु० [सं० मंडपः] १ देव मन्दिर, देवालय। (ह. नां. मा.)

उ०—ग्रवचळ **मंडप** तर ग्रागाहट, सुर जिम थापै कवेसुर। मुह मांगियौ सो दीधौ मोनें 'पता' समोभ्रम रायपुर।—दुरसौ ग्राढ़ौ

२ भवन।

उ०—१ कळी सेत ग्रन पालटै, पड़ै जोखिम कळस, खसै खुंभी हुवै **मंडप** खांगौ। भींतड़ा भागि ढहि जाइ धरती मिळै, गीतड़ा नह जाय कहै 'गांगौ'।—राव गांगौ

उ०—२ 'बाघ'उत ऊचरै, सुणौ खट-तीस बंस, जुरा ग्रागळि रहै वदूं जाहीं। भोज वीकम तणौ सुजस सारै भुयण, नरां, तिण वार रा **मंडप** नाहीं।—राव गांगौ

३ विवाह संस्कार या किसी उत्सव या समारोह के लिए छाया हुग्रा स्थान, वितान।

उ०—१ तेडावि मोटाराय रांणां, रचौ **मंडप** माळ। ए जक्ष क्यंवर सिधि साधिक, ग्राविया सुर चाल।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ ग्रागमि सिसुपाल मंडीजै ऊछव, नीसाणै पड़ती निहस। पट **मंडप** छाइजै कुंदणपुरि, कुंदणमै बाभै कळस।—वेलि

४ छाया हुग्रा वह स्थान जहां पर बहुत से व्यक्ति धूप वर्षा ग्रादि के बचाव के लिए बैठ सकें।

५ चारों ग्रोर से खुला तथा ऊपर से छाया हुग्रा स्थान।

६ देव मन्दिर में मूर्ति-स्थल के ठीक सामने दर्शकों के बैठने तथा भजन कीर्तन करने के लिए मंडलाकार व गुम्बजाकार बना हुआ भाग।

उ०—चांवड बुरज ऊपर माता जी चांवडाजी रौ **मंडप** करायौ नै थापना करी तिण मंडप आगै राव मालदेवजी नवौ मंडप फेर करायौ। औ मिंदर नै मंडप सं० १६१४ रा भादवा वद ५ सोर उडियौ तरां मंडप सिखर गयौ।—मारवाड़ री ख्यात

७ राजाप्रासाद, देवालय आदि के ऊपर बना गोलाकार या गुम्बजाकार ऊंचा सिखरनुमा भाग।

उ०—१ छाजा पड़ै अछेह **मंडप** उडि पड़ै महल्लां। मुगळांणियां अमाप, पड़ै आधांन दहल्लां।—सु. प्र.

उ०—२ मरद कसणां जरद तणां तूटै मछर, जवन चा दळां जूटै हुआ जंग। खंडेले देवळा **मंडप** न हुवै विखंड, अखंड 'सूजा' तणौ जतै उतमंग।—सुजांणसिंघ सेखावत रौ गीत

८ देव-मन्दिर में मूर्ति पर तना हुआ वस्त्र, चंदोवा, वितान।

उ०—कटहड़ां **मंडप** कराळ झळि काठ भक्त झाळ। हिम हीर जळि हिंडलाट, अंगीर दमंग उपाट।—सू. प्र

९ तंबू, शामियाना।

उ०—इभ कुंभ अंधारी कुच सुकंचुकी, कवच संभु कांमरु कळह। मनु हरि आगमि मंडै **मंडप**, बंधण दीध कि वारगह।—वेलि

रू० भे०—मंड, मंडपि, मंडव, मांडव।

अल्पा०—मंडवौ।

मंडपपुर–सं० पु० [सं०] मंडोर नामक नगर का नामांतर।

उ०—रात **मंडपपुर** ईस, 'चंड' सुत कहिय चडहुह। मत्रुमाळ तिम सबळ, महत वणीय विरोध मह।—वं भा.

मंडप-राइ–सं० पु० [सं० मंडपराज] राजा।

उ०—हइ कंप हिंदूकार घर-घर प्रति हूवउ घणउ। मिळियइ **मंडप-राइ** कइ कुण ऊपरइ कंधार।—अ वचनिका

मंडपाळ–सं० पु० [सं० मंडपाल] राजा, नरेश।

उ०—मयाळ **मंडपाळ** मेघमाळ मोहनीं नहीं। हिलंब से प्रलंब थंभ, बिंब सोहनी नहीं।—ऊ. का.

मंडपि—देखो 'मंडप' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आंणइ अनुचर आकुला चाकुला चाउरि पाट। मांडइ **मंडपि** मांडणी आडणी ऊपरि त्राट।—जयसेखर सूरि

मंडरणौ, मंडरबौ–क्रि० अ० [सं० मंडल] चारों ओर से घिरना, चारों ओर छा जाना।

मंडरणहार, हारौ (हारी), मंडरणियौ—वि०।

मंडरिओड़ौ, मंडरियोड़ौ, मंडरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मंडरीजणौ, मंडरीजबौ—भाव वा०।

मंडराणौ, मंडराबौ–क्रि० अ० [सं० मंडल] १ मंगलाकार रूप में छा जाना, चारों ओर से घिर जाना।

२ पक्षियों, पतंगों आदि का मंडल बनाकर चक्कर लगाते हुए उड़ना।

३ किसी स्थान या व्यक्ति के आस-पास चक्कर लगाते रहना।

मंडराणहार, हारौ (हारी), मंडराणियौ—वि०।

मंडरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मंडराईजणौ, मंडराईजबौ—भाव वा०।

मंडरायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ मंडलाकार रूप में घिरा हुआ, घेरा या मंडल बनाकर छाया हुआ. २ गोल घेरे में चक्कर लगाते हुए उड़ा हुआ. ३ किसी स्थान या व्यक्ति के आस पास घूमा या घिरा हुआ.

(स्त्री० मंडरायोड़ी)

मंडरियोड़ौ—चारों ओर से छाया हुआ।

(स्त्री० मंडरियोड़ी)

मंडळ–सं० पु० [सं० मंडलम्] १ किसी एक बिन्दु के चारों ओर समान अन्तर पर घिरी हुई परिधि, चक्र के आकार का घेरा, वृत्त।

उ०—१ अर सिंधु रै सीस पताका खुलाय अनीका रा ओघ मिळाय प्रथ्वी रा पुड़ चलावतौ जिकण भद्र काळी रै घरै निमंत्रण लगावतौ अरबुद रै ऊपर प्रस्थांन कीधौ। दरकूंचा जाय दुरग रै प्रतना रौ पलेटौ दीधौ किना सुमेरु परबत रै चौतरफ जंबू दीप रौ **मडळ** थियौ।—वं. भा

२ चंद्रमा या सूर्य के चारों ओर पड़ने वाला घेरा जो बादलों की बहुत हलकी तह या कुहरा रहने पर दिखाई पड़ता है।

उ०—कायर थाकौ दौड़कर, ससि सूं करै पुकार। अग ज्यूं मूझ बसावजै, **मंडळ** तणौ मंझार।—बां दा.

३ दृष्टि के सम्मुख पड़ने वाले पदार्थ विशेष का गोलाकार भाग।

ज्यूं—मुख मंडळ, चन्द्र मंडळ।

४ किसी प्रकार की गोलाकार आकृति या रचना।

ज्यूं—नभ मडळ, भूमडळ।

उ०—अस्विनि चैत्र मास पख ऊजळ। थित सब सामति होत **मंडळ** थळ।—मे. म.

[सं० मंडलः] ५ श्वान, कुत्ता। (अ. मा, डिं. को ह. नां. मा)

उ०—बदै 'जसौ' जिणवार कंवर अग्गळ जोड़ै कर। मीणां अधम गंमार घणौ छक अनड़ रहै घर। बीरां सम्मुह बेग पूंछ पटकै **मंडळ** मित। एक खीची आइ सबळ कीधा खळ संकित। अभिधांन 'गंग' सगौ संगर, निम्मदेव अंगज निडर। असवार एक जडिया उठै ओखळिया भालां अरर।—वं. भा.

६ चारों दिशाओं का घेरा जो गोल दिखाई देता है, क्षितिज।

ज्यूं—दिगमंडळ।

७ कुछ विशिष्ट प्रकार के लोगों का वर्ग या समाज।

ज्यूं—मित्र मंडळ, मूढ मंडळ।

उ०—सठ **मंडळ** स्रोता हुवै, वक्ता कुकवि बखांत। भूंकरण लागौ भूंकवा, जांण जमां दीपंत।—बां. दा.

८ ढेर।

उ०—अर सैंकडां अत म्लेच्छां रा **मंडळ** रै बीच करगाट राजा रौ कुमार नरसिंह देव घणा घावां करि घायल पड़ियौ थकौ भी चेतन समेत भाळियौ।—वं. भा.

९ दल, समूह।

उ०—१ तेज पुंज नृप सुतण, हुवौ जस वेस झळाहळ। साईनां साथियां, मिळै खेलै मझि **मंडळ**।—सू. प्र.

उ०—२ तितरै स्रीक्रस्णजी घोड़ा तेज खड़ि कै सत्रु की सेन्या कौ **मंडळ** थौ ते मारि आया।—वेलि. टी.

१० देश। (अ. मा., डिं. को.)

उ०—१ पर **मंडळ** पर दीप में, हद घर घर कथ होत। कीरत वर, जेही कुंवर, जाड़ेचां धर जोत।—बां. दा.

उ०—२ पंद्रह दिन रहिया पछै, मुगळ मीर तैमूरा। क्रम इण **मंडळ** जीतकरि, गो ग्रह पांणियपूरा।—वं. भा.

उ०—३ कुमळ विहावउ सज्जणां, पर **मंडळै** थयांह। जउ बिह हिया न हारिस्यइ, वळै मिळेवउ त्यांह।—ढो. मा.

११ बारह राज्यों का क्षेत्र, वर्ग या गुट। (प्राचीन)

१२ समीपवर्ती प्रदेश या भू-भाग।

१३ व्यवस्था या प्रशासन की दृष्टि से प्रान्त का एक विभाजित भाग, डिवीजन।

१४ चालीस योजन लम्बा व बीस योजन चौड़ा भू-भाग।

१५ ग्रह के घूमने का कक्ष।

१६ आकाश, नभ।

उ०—धरती धांन न नीपजै, तारा न **मंडळ** होय, म्हैं मन धरलां अवरसां, पिरथी परळै होय।—अज्ञात

१७ कोई गोलाकार दाग या चिन्ह।

१८ वृताकार या अण्डाकार विस्तार या फैलाव।

१९ एक प्रकार का कुष्ठ रोग।

[सं० मंडल:] २० युद्ध स्थल में की जाने वाली एक प्रकार की व्यूह रचना विशेष।

[सं० मंडलम्] २१ ऋग वेद का एक खण्ड, भाग।

२२ पांच शामियानों को मिलाकर चार खम्भों पर खड़ा किया जाने वाला खेमा।

२३ एक जाति विशेष का सर्प। (अमरत)

२४ संसार। (जैन)

२५ तीर्थ स्थान।

उ०—अवधपुरी मधुपुरी द्वारिका, चित्रकूट यमुना सी। गोवरधन गोकुळ ब्रून्दावन, बीच **मंडळ** चौरासी।—मीरां

[सं० मंडल] मुड़ी हुई तलवार विशेष, खांडा।

मंडळओखौ–सं० पु०—द्वारिका प्रदेश का समीपवर्ती क्षेत्र, ओखामंडल।

उ०—इम लीध **मंडळ** ओखौ उदार। धर समंद वीटि गढ़ संखो-धार।—सू. प्र.

मंडळदिल्ली—देखो 'दिलीमंडळ'।

मंडळक–सं० पु० [सं० मंडलकम्] मंडलीक राजा, एक क्षेत्र या सूबे का अधिपति।

उ०—राजा जुवराज कुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामंत, लघु-सामंत तलवर तंत्रपाल चतुरसीतिक ताड़कपति मंत्रि महामंत्रि ग्रहवाहक स्त्रीकरणिक व्ययकरणि राजकार धरमाधिक सौवरणक देवक **मंडळक** गडुरक उस्टक इस्टिकाक·········।—व. स.

मंडळकरिणिक—राज्य के एक क्षेत्र अर्थात् मंडल (सूबा) का कार्यकारी अधिकारी।

उ०—जुवराज कुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामंत लघुसामंत तलवर तंत्रपाल चतुरसीतिक तांडकपति मंत्रि महामंत्रि ग्रहकाहक स्त्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकरणिक, धरमाधिकरणिक सौवरणकरिणिकदेव करिणिक **मंडळकरिणिक** उस्टकरिणिक·······। —व. स.

मंडळा–सं० स्त्री०—राठौड़ वंश की एक उप-शाखा।

मंडळाग, मंडळाग्र–सं० स्त्री० [सं० मण्डल+अग्र:] तलवार। (ह. नां. मा.)

उ०—तिण समय चहुवांण कुमार **मंडळाग्र** रौ आघात दे'र नाहर राज रा तुरंग रौ खध पाखर समेत भाड़ियौ।—वं. भा.

मंडळाधीस—देखो 'मंडलेस्वर'। (डि. को)

मंडळावत—१ देखो मंडळा' (रू. भे.)

उ०—**मंडळावत**, रूपावत, भाटी, कछावाहा, तंवर, चद्रावत पंवार, सोनगरा इतरा साथ लिया।—मारवाड़ रा अमरावां री वात

२ इस शाखा का व्यक्ति।

मंडळि—देखो 'मंडळी' (रू. भे.)

मंडळिक—देखो 'मडळीक' (रू. भे.)

उ०—१ राय रांणा **मंडळिक** आखंडळीक सामंत महासामंत लघु-सामंत स्रीगरणा वयगरणां धरमाधिगरणा··········।—व. स.

उ०—२ जयकुंजर हाथीया तणइ कुंभस्थलि चडिउ, पाखती अंग-रक्षक तणी ओलि, **मंडळिक** तणइ परिवारि, पताका फुरकती मेघाडंबर तणइ आडंबरि··········।—व. स.

मंडळी–सं० स्त्री० [सं० मण्डली] १ मानव दल, मानव समूह।

२ गोलाकार, वर्तुल।

उ०—भुरजमाळ फण **मंडळी**, सोर झाळ विख झाळ। जांण संख बैठौ जमीं, मिस चीतोड़ कराळ।—बां. दा.

३ समान उद्देश्य या विचार रखने वालों अथवा एक ही प्रकार का कार्य करने वालों का समूह या दल।

उ०—अमित गुलालां अरगजां, केसर अतर फुलेल। हुवै सबोली **मंडळी**, होळी हुंदा खेल।—रा. रू.

सं० पु०—४ एक प्रकार का सांपों का वर्ग विशेष।
५ वट वृक्ष ।
६ काटे हुए चनों व गेहूं का खेत में ढेर। (बीकानेर)
७ नाच या खेल करने वालों का एक झुंड। (बीकानेर)
रू० भे०—मंडळि।

मंडळीक, मंडलीक–सं० पु० [सं० मांडलिक] १ प्रान्त या क्षेत्र अथवा मंडल विशेष की रक्षा या शासन करने वाला व्यक्ति, प्रशासक।
२ राजा, नृप ।
उ०—१ माड़ेची धरा 'अना' कुळ मंडण, वड दातार अभनमा 'बीक'। मौड वंध्या आयौ तूं मारग, मौड वंधा संके **मंडळीक**।
—द. दा.
उ०—२ उग्रंकार अनाहत अक्खर, सिद्धि बुद्धि दे सारद गुणेसर। **मंडळीकां** मोटौ कुळ मउडां, रसणि सुवांणि क्रीति राठउडा।
—रा. ज. सी.
३ बारह राज्यों का अधिपति।
रू० भे०—मंडळिक, मांडलिक।

मंडलेसर, मंडलेस्वर–स० पु० [सं० मंडल+ईश्वर] १ एक मंडल का शासक या अधिपति। (डिं. को)
२ बारह राज्यों का स्वामी, अधिपति।
३ खाखी साधुओं में कई साधु मंडलियों का सर्वोपरि साधु, बड़ा महंत, मठाधीश।
४ महादेव का एक नामांतर।
रू० भे०—मंडळाधीस।

मंडव—देखो 'मंडप' (रू. भे.)
उ०—वनि वनि विकसइं वेउल खेउ लगाडइं चींति। दीठा द्राखह **मंडव** मंड वधारइं प्रीति।—जयसेखर सूरि

मंडवी—देखो 'मांडवी' (रू. भे.)
उ०—वर्णे चत्र धाए रूचै पतिव्रत्ता। सिया **मंडवी** उरमिळा सत्यक्रत्ता।—सू. प्र.

मंडवौ–सं० पु०—१ एक प्रकार का कदन्न।
रू० भे०—मंडओ, मंडुओ।
२ देखो 'मंडप' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—ऊंचौ सो **मंडवौ** रोपायौ मेरे बाबल, रेसम तणी ए बंधाय, ओ ल्यौ भावज घर आपणूं, मैं तौ जावूंगी पियाजी रै देस।
—लो. गी.
३ देखो 'मांडौ' (रू. भे.)

मंडांण–सं० पु० [सं० मंडनम्] १ मंडित करने की क्रिया या भाव।
२ किसी आयोजन विशेष के प्रारम्भ में की जाने वाली व्यवस्था, प्रबंध।
ज्यूं—विवाह रा मंडांण, राज तिलक रा मंडांण।
३ रचना, बनावट।
उ०—१ जैमल जैतावत नूं परगनौ थौ। पछै जैगल रै चाकरै वेढ़ कीवी। कटक काढ़ी भागौ। पछै मुं. जैगल कोट फेर संवरायौ। सहर री **मंडांण** निपट गमतौ छै, बडौ बाजार गुजरात री तरै' कैहलवां री छायौ छै।—नैणसी
उ०—२ मूंठी जेतलौ जमारौ नरां अहै काय काठी मूंठी, पुण्य कियां गाढ़ी मूंठी साबतौ प्रमांण। मोटौ धणी याद करौ झूठी बातां लागौ मती मूंठी धूळ तणौ थारी देह रौ **मंडांण**।
—ओपौ आढ़ौ
४ आडंबर।
उ०—ऊपर सूं इणी **मंडांण** गांड राखियौ हौ कै कंई बात री ओछ नीं दीखती ही नी।—डकैबाळौ
५ गजधज, गजावट।
उ०—जी हौ बंदीग्गांना मोकलया लाला, कीणा बहु **मंडांण**। जी हौ नगरी नी सोभा करी लाला, बाजै विविध निसांण।—जयवांणी
६ तैयारी।
उ०—हैजमांण आरौ सूरांण ठौड़ ठौड़ हाथां, नीसांण बजांण सिधु कायरां नरम। धुबांणा आतसां पूर ठांणांण लपटै धुआ, कताल **मंडांण** केण ऊपरै कुरम।- पहाड़खां आढ़ौ
७ चिह्न, निशान।
८ किसी घटना या बात की भावी गति विधि के लक्षण, आसार।
ज्यूं—महामारी रा मडांण, मेह रा मंडांण।
उ०—जिण समै महामारी रे **मंडांण** नरां रो नास देखि कोईक कच्चा मंत्र रा देणहार आहव रा अमेध सांमतर सूचिया घोड़ै चढ़णा री हूंस धारि दारासाह हाथी रूप तखत हूं हेठौ उतरियौ।
—वं भा.
रू० भे०—मंड।

मंडाई–सं० स्त्री० [राज० मंडण] १ मंडने की क्रिया या भाव।
२ मडने का व्यवसाय।
३ मंडने का पारिश्रमिक।
रू० भे०—मढाई।

मंडाड़णौ, मडाड़बौ—देखो 'मंडाणौ, मंडाबौ' (रू. भे.)
उ०—सांसण हसत समापैं सोव्रन, सारौ रोर मिटै हिक साथ। मेवाडो जां हाथ **मंडाड़ै**, हेटै किणी न मांडै हाथ।—सुखजी आढौ
मंडाड़णहार, हारौ (हारी), मंडाड़णियौ—वि०।
मडाड़िओड़ौ, मंडाड़ियोड़ौ, मंडाड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मंडाड़ीजणौ, मंडाड़ीजबौ—कर्म वा०।

मंडाड़ियोड़ौ—देखो 'मंडायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मंडाड़ियोड़ी)

मंडाणौ, मंडाबौ–क्रि० स० ['मंडणौ' क्रिया का प्रे० रू०] १ होने की स्थिति में लाना।

२ ठनवाना, पक्का करवाना, निश्चित करवाना।

३ कटिबद्ध करवाना, तत्पर, उद्यत या उतारू होने के लिये प्रेरित करना।

४ स्थिर कराना, रुपवाना, जमवाना।

५ अटल या अडिग करवाना, दृढ होने या डटने के लिये प्रेरित करना।

६ जुड़वाना, लगवाना।

७ स्थापित करवाना, कायम करवाना।

उ०—१ तरै गढ़ री ठौड देखतौ फिरै छै। पछै जैसलमेर था कोस ······आथवरण नूं सीहांरग रा भाखर छै, तठै गढ **मंडायौ**, सु बांभरग ईसौ बरस १४० रौ हुवौ थौ।—नैरगसी

उ०—२ भंडारी ताराचंद नारणोत में देहरा **मंडाया**, देहरौ पारसनाथजी रौ नै देहरौ स्री ठाकुरजी रौ नै देहरौ स्री मा'देवजी रौ।
—मारवाड़ री ख्यात

८ आरम्भ करवाना, शुरू करवाना।

९ किसी दुकान, संस्था या कार्य को नियत समय पर सार्वजनिक दृष्टि से चालू करवाना, खुलवाना।

१० चित्रांकित करवाना, चित्रित करवाना।

११ लिखवाना, दर्ज करवाना।

उ०—१ भाटिया री पीढ़ी चारण रतनूं गोकळै इण भांत **मंडाई**।
—नैणसी

उ०—२ खाता **मंडाय** अंगूठा रा निसांण दिरावण री बात तौ अळगी. वौ किणी आसांमी नै मूंडा सूं हुंकरावतौ ई नीं हौ।
—फुलवाड़ी

१२ अंकित करवाना, चिन्हित करवाना।

१३ निर्माण करवाना, बनवाना।

१४ किसी यन्त्र के पुर्जों को यथा स्थान लगवाकर कार्य करने योग्य बनवाना।

उ०—और गढ़ में चोकेळाव में वेरौ भाखर में सुरंगा सुं खोदाय करायौ नै ऊपर अरठ **मंडायौ** नै दोय कोठार वाग में सेमांन रा कराया।—मारवाड़ री ख्यात

१५ उपयोग की दृष्टि से किसी वस्तु का किसी के सहारे लगवाना, सटवाना, संलग्न करवाना, सहारा बनवाना, आधार बनवाना।

१६ ग्रहण करने या लेने के लिये या गिरते हुए को झेलने के के लिए पात्र, वस्तु या हाथ रखवाना, पसराना, फैलवाना।

१७ तनवाना।

१८ घोड़ा, ऊंट आदि सवारियों पर चारजामा कसवाना, बंधवाना।

उ०—तद एक दिन रिणमलजी घोड़ै ऊपर जीण साज-बाज **मंडायौ** अर घोड़ै ऊपर असवार हुवा।
—रिणमल राठौड़ री वारता

१९ सृजन करवाना, सृष्टि करवाना।

२० रचना करवाना, रचवाना।

२१ मनाने के लिये प्रेरित करना।

२२ सुसज्जित करवाना, सजवाना, संवराना।

२३ आच्छादित करवाना, ढकवाना।

२४ तैयार करवाना, प्रस्तुत करवाना।

२५ छितरवाना, बिखराना।

२६ प्रबन्ध या व्यवस्था करवाना।

२७ व्यक्त करवाना।

२८ सम्बन्ध जुड़वाना, मेल करवाना।

२९ संधान करवाना।

३० रत्न आदि कोई वस्तु किसी दूसरी वस्तु में बिठवाना, जमवाना, जड़वाना।

३१ ढोल आदि वाद्यों के मुख पर चमड़ा चढ़वाना।

३२ अभिमंत्रित, गंडा या तावीज पर धातु-पत्तर चढवाना, आवेष्ठित करवाना, मंडित करवाना।

उ०—तथा मरनै भूत होवै तरै प्रेत रौ जंत्र मादळिया में तथा चौकी में **मंडाइजजौ**।—वी. स. टी.

३३ तस्वीर, चित्र आदि को सुरक्षार्थ, शीशा लगी किसी चौखट में बिठवाना, स्थिर करवाना।

३४ शृंगार करवाना, सुसज्जित करवाना।

३५ कुछ करवाना।

मंडाणहार, हारौ (हारी), **मंडाणियौ**—वि०।

मंडायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मंडाईजणौ, मंडाईजबौ—कर्म वा०।

मंडाड़णौ, मंडाड़बौ, मंडावणौ, मंडावबौ, मंढ़ाड़णौ, मंढाड़बौ, मंढाणौ, मंढाबौ, मंढावणौ, मंढावबौ, मढाणौ, मढाबौ—रू० भे०।

मंडायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ होने की स्थिति में लाया हुआ. २ ठनवाया हुआ, पक्का व निश्चित करवाया हुआ. ३ कटिबद्ध करवाया हुआ, तत्पर, ऊद्यत या उतारू होने के लिये प्रेरित किया हुआ. ४ स्थिर कराया हुआ, रुपवाया हुवा, जमवाया हुआ. ५ अटल या अडिग करवाया हुआ, दृढ होने या डटने के लिए प्रेरित किया हुआ. ६ जुडवाया हुआ, लगवाया हुआ. ७ स्थापित व कायम करवाया हुआ. ८ आरम्भ या शुरू करवाया हुआ. ९ नियत समय पर सार्वजनिक दृष्टि से चालू करवाया हुवा, खुलवाया हुआ. (दुकान, संस्था, आदि) १० चित्रांकित या चित्रित करवाया हुआ. ११ लिखवाया या दर्ज करवाया हुआ. १२ अंकित करवाया हुआ, चिन्हित करवाया हुआ. १३ बनवाया हुआ, निर्माण करवाया हुआ. १४ उपकरणों या पुर्जों को सुव्यवस्थित लगवाकर कार्य करने योग्य बनवाया हुआ. (यन्त्र) १५ उपयोग की दृष्टि से किसी के सहारे लगवाया हुआ, संलग्न करवाया हुआ, सहारा या आधार बनवाया हुआ. १६ ग्रहण करवाया हुआ,

ऊपर से गिरते हुए को संभालने के लिये रखवाया हुआ, पसराया हुआ, फैलाया हुआ. (हाथ, पल्ला, पात्र) १७ तनवाया हुआ. १८ चारजामा कसवाया हुआ. (घोड़ा, ऊंट, सवारी) १९ सृजन या सृष्टि करवाया हुआ. २० रचना करवाया हुआ, रचवाया हुआ. २१ मनाने के लिये प्रेरित किया हुआ. २२ सुसज्जित करवाया हुआ, सजवाया हुआ, संवराया हुआ. २३ आच्छादित करवाया हुआ, ढकवाया हुआ. २४ तैयार करवाया हुआ, प्रस्तुत करवाया हुआ. २५ छितरवाया हुआ, बिखरवाया हुआ. २६ प्रबन्ध या व्यवस्था करवाया हुआ. २७ व्यक्त करवाया हुआ. २८ सम्बन्ध जुड़वाया हुआ, मेल करवाया हुआ. २९ संधान करवाया हुआ. ३० किसी दूसरी वस्तु में बिठवाया हुआ, जमवाया हुआ, जड़वाया हुआ. (रत्नादि) ३१ मुख पर चमड़ा चढ़वाया हुआ. (वाद्य) ३२ धातु-पत्र चढवाया हुआ, आवेष्ठित करवाया हुआ, मंडित करवाया हुआ. ३३ किसी चौखट में बिठवाया हुआ, स्थिर करवाया हुआ. ३४ शृंगार करवाया हुआ, सुसज्जित करवाया हुआ. ३५ कुछ करवाया हुआ.

(स्त्री० मंडायोड़ी)

मंडावणौ, मंडावबौ—देखो 'मंडाणौ, मंडाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गुरि वीनविउ अवसरि राउ, सखिहुं बैठां करउ पसाउ। तुम्हि मंडावउ नवउ अखाडउ, नव नव भंगि पूत्र रमाडउ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ पातसाह मदमंद वडौ धरमात्मा हुवौ। श्रो ग्रोखदां री हाट मंडावी वैद्य राखिया।—नैणसी

उ०—३ ढोलाजी रै ऊंटिया मोलावौ। ढ़ोलाजी रै काठियां मंडावौ—लो. गी.

मंडावणहार, हारौ (हारी), मंडावणियौ—वि०।

मंडाविओड़ौ, मंडावियोड़ौ, मंडाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मंडावीजणौ, मंडावीजबौ—कर्म वा०।

मंडावियोड़ौ—देखो 'मंडायोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री० मंडावियोड़ी)

मंडावी—देखो 'मांडवी' (रू. भे.)

मंडित—वि० [सं०] शोभित, विभूषित, सजाया हुआ।

उ०—महिनयर घर प्रति दीप मंडित माळ जोत मनोहरं। किर व्योम नाखत्र परखि कमळा सोभ धारत सुंदरं।—रा. रू.

२ छाया हुआ, छाजनयुक्त, आच्छादित।

३ जटित, जड़ा हुआ।

उ०—तन अमित मौल्य मंडित रतन, आभूखण गुण ऊधरै। स्रंगार साजि मंगै ससत्र, महाराज मंडोवरै।—रा. रू.

मंडियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ होने की स्थिति में आया हुआ, कुछ हुवा हुआ. २ ठना हुआ, पक्का या निश्चित हुवा हुआ. ३ कटिबद्ध या तत्पर हुवा हुआ, उद्यत या उतारू हुवा हुआ. ४ उत्पन्न हुवा हुआ, अंकुरित हुवा हुआ. ५ स्थिर हुवा हुआ, रुपा हुआ, जमा हुआ. ६ अटल या अडिग हुवा हुआ, दृढ़ हुवा हुआ, डटा हुआ. ७ जुडा हुआ, लगा हुआ. ८ आरम्भ या शुरू हुवा हुआ. ९ स्थापित व कायम हुवा हुआ. १० नियत समय पर सार्वजनिक दृष्टि से चालु हुवा हुआ, नियत समय पर खुला हुआ. (संस्था या कार्य) ११ उमड़ा हुआ, उभरा हुआ, मंडराया हुआ. १२ चित्रांकित व चित्रित हुवा हुआ. १३ लिखित, दर्ज हुवा हुआ. १४ उपकरणों सहित सुव्यवस्थित होकर कार्य करने की स्थिति में आया हुआ. (यंत्र) १५ अंकित हुवा हुआ, चिन्हित हुवा हुआ. १६ बना हुआ, निर्मित हुवा हुआ. १७ उपयोग की दृष्टि से किसी के सहारे लगा हुआ, सटा हुआ, संलग्न हुवा हुआ, सहारा या आधार बना हुआ. १८ ग्रहण करने या ऊपर से गिरते हुए को झेलने के लिये रक्खा हुआ, पसरा हुआ, फैला हुआ (हाथ, पल्ला, पात्र) १९ तना हुआ. २० चारजामा कसा हुआ, बंधा हुआ. (घोड़ा, ऊंट आदि) २१ सृजनित, सृष्टि हुवा हुआ. २२ रचित २३ मनाया गया हुआ. २४ सजा, संवरा, व सुसज्जित हुवा हुआ. २५ आच्छादित हुवा हुआ. २६ तैयार, उद्यत व प्रस्तुत हुवा हुआ. २७ छितरा हुआ, बिखरा हुआ. २८ प्रबन्धित, व्यवस्थित हुवा हुआ. २९ व्यक्त हुवा हुआ. ३० सम्बन्ध जुड़ा हुआ, मेल हुवा हुआ. ३१ संधान हुवा हुआ. ३२ जड़ा हुआ, जमाया हुआ, किसी के अन्दर बैठाया हुआ. (रत्नादि) ३३ मुख पर चमडा चढ़ा हुआ. (वाद्य) ३४ धातु-पत्र चढ़ा हुआ, आवेष्टित, मंडित. (गंडा, तावीज) ३५ चौखट में स्थिर किया हुआ, बैठाया हुआ. ३६ सुसज्जित किया हुआ, सजाया हुआ. ३७ शृंगार किया हुआ. ३८ कुछ किया हुआ. ३९ देखो 'मांडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मंडियोडी)

मंडी—सं० स्त्री०—१ दशनामी साधु संन्यासियों के रहने का स्थान, मठ।

उ०—१ तीरथ जात समस्त सकळ माथां मिळ संगा, रास तमासा रमै हुळम नाचै हुड़दंगा। सांजी मेळा सांग देव राखी चंदोळी। मिंदर मंडी मसांण होळिका फाग हरोळी। भागवत कथा भूतावळी हिरण दरस हींडोरचा। परवीण होय जांणौ पुरुस, माल्जदां रा मोरचा।—ऊ. का.

उ०—२ सीत निवारण जीरण कंथा, ताकै थेगळ लागी। गिर तरु मंडी मसांण चौड़ै ऐसै रह अनुरागी।

—सुखरांमदासजी महाराज

२ वह स्थान जहां थोक माल बेचने की बहुत सी दुकानें हों, व्यापार केन्द्र।

ज्यूं—धान री मंडी, साग री मंडी।

रू० भे०—मंढ़ी, मडी, मढ़ी।

अल्पा०—मडुली।

मंडुग्रौ—देखो 'मंडवौ' (रू. भे.)

मंडुक, मंडूक–सं० पु० [सं० मंडुक:] (स्त्री० मंडुकी) १ एक प्रसिद्ध छोटा जलचर जीव मेंढ़क, दादुर।

उ०—चतुर पुरुस वातक तणी सखि मिट गई तरस तुरंत। हरि हर रूप नक्षत्र नउ सखि नाठउ तेज नितंतरे। थयउ दुरित जवासक ग्रंतरे मुनिवर **मंडुक** हरखंत रे। जिहां विजयमांन भगवंत रे विकसित त्रय भुवन वनंत रे।—वि. कु.

२ एक प्राचीन ऋषि।

३ दोहा नामक छन्द का पांचवां भेद जिसमें १८ गुरु ग्रौर १२ लघु वर्ण सहित ४८ मात्रायें होती हैं।

४ रुद्रताल के बारह भेदों में से एक। (संगीत)

५ एक प्रकार का वाद्य विशेष। (प्राचीन)

६ एक प्रकार का नृत्य।

७ घोड़े की एक जाति विशेष या इस जाति का घोड़ा। (शा. हो)

मंडूकपरणी–सं० स्त्री० [मडूकपर्णी] १ ब्राह्मी बूटी।

२ मंजिष्ठा, मंजीठ।

मंडूकासण, मंडूकासन–सं० पु० यौ० [सं० मण्डूकासन] योग के चौरासी ग्रासनों के ग्रन्तर्गत एक ग्रासन जिसमें दोनों पांवों को घुटने के स्थान पर मोड़कर दोनों पंजों का ऊपरी भाग पृथ्वी को स्पर्श कराकर ग्रोर दोनों पावों के ग्रंगूठे गुदा के पास ग्रामने सामने लाकर बैठना होता है।

वि० वि०—इस ग्रासन से बैठकर शिर पर प्रथम बांये हाथ की ठेउनी रखने ग्रौर उस पर दाहिने हाथ की ठेउनी रखने से उतान मंडूकासन कहलाता है।

मंडूकी–सं० स्त्री० [सं० मण्डूकी] १ मादा मैंढ़क, मैंडुकी।

२ स्वेच्छाचारिणी स्त्री, छिनाल स्त्री।

मंडूर–सं० स्त्री० [स० मंडूरं] लोह कीट जौ भस्म बनाकर ग्रौषधियों में उपयोग में लिया जाता है।

मंडेरी–सं० स्त्री० [सं० मंडप] १ विशाल भवनों या हवेलियों के तोरण द्वार पर बना बड़ा छज्जा जिसका उपयोग उत्सव ग्रादि के ग्रवसर पर स्त्रियां बैठकर गीत ग्रादि गाने के लिए करती हैं।

२ मकान की छत पर चारों ग्रोर बनी हुई छोटी दीवार।

रू० भे०—मुंडेर।

मंडेलौ–सं० पु० [सं० मंडप+रा० प्र० लौ] बड़े से छोटे ग्राकार के क्रम से एक के ऊपर एक रखे हुए बर्तनों का समूह। (ढूंढाड़)

मंडोर, मंडोउर, मंडोवर[सं० मंडपपुर] राजस्थान के प्रसिद्ध नगर जोधपुर से उत्तर में छः मील की दूरी पर बसा हुग्रा एक प्रसिद्ध ग्रति प्राचीन ऐतिहासिक नगर जो मरु-प्रदेश की प्राचीन राजधानी था।

उ०—ग्रठी चीतोड़ रा ग्रधीस रांणा लाखा रा पट्टपकुमार चूंडा थी पुत्री रौ संबंध करण रै काज **मंडोउर रै** नरेस राठोड़ रणमाल ग्रापरा पोळिपात्र भेजिया।—वं. भा.

मंडोवरौ–वि० [सं० मण्डपपुर+रा० प्र० ग्रौ] मंडोर नगर का, मंडोर नगर संबन्धी।

सं० पु०—१ मंडोर नगर का निवासी।

२ राठौड़ वंशीय राव चूंडा के वंशजों के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला शब्द।

उ०—मुहरि मांडिजै काजि दिग-विजय **मंडोवरौ**, धर धमळ सिरै परिगह धरीसै।—गु. रू. बं.

मंढ़–सं० पु० [सं० मंडप] १ दशनांमी साधु संन्यासियों के रहने का स्थान, मठ।

२ चौकी या चबूतरे पर बना हुग्रा छोटे ग्राकार का मंदिर जिसमें किसी देव या देवी विशेष की मूर्ति स्थापित की जाती है।

३ देवी का मंदिर।

उ०—१ इम्रत खाळ बहे **मंढ़** ग्रागळ, खांण पळांकण खंडी। ए नर ग्रमर जातरी ग्राए, चंवर ढुळाड़ै चंडी।—ग्रज्ञात

उ०—२ ग्राई कीजै ऊंदरा, मेहाजी **मंढ़** मांय। किणक चुगां कोठार री, पड्चा रहां पडछांय।—हिंगळाजदांन कवियौ

वि० वि०—इस शब्द का ग्रधिकतर प्रयोग देवी या महादेव के मंदिर के लिये ही किया जाता है।

रू० भे०—मंड, मढ़।

मंढ़णौ, मंढ़बौ—देखो 'मंडणौ, मंडबौ' (रू. भे.)

उ०—१ पण हाडा नैं वेम पड़ग्यौ—हो न हो मांय भींटियौ इज है। वौ **मंढ़ियोड़ा** खालड़ा माथै जोर सूं टूंच मारी। ढेमकी फूटगी।
—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हारै वीरेजी मंढ़ायौ चंग वाजणौ, म्हारौ रेगर **मंढ़** कर लायौ'रे रंगीलौ चंग बाजणौ।—लो. गी.

मंढ़णहार, हारौ (हारी), मंढ़णियौ—वि०।

मंढ़वाड़णौ, मंढ़वाड़बौ, मंढ़वाणौ, मंढ़वाबौ, मंढ़वावणौ, मंढ़वावबौ, मंढ़ाड़णौ, मंढ़ाड़बौ, मंढ़ाणौ, मंढ़ाबौ, मंढ़ावणौ, मंढ़ावबौ
—प्रे० रू०।

मंढ़िग्रोड़ौ, मंढ़ियोड़ौ, मंढ़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

मंढ़ीजणौ, मंढ़ीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

मंढ़ाड़णौ, मंढ़ाड़बौ—देखो 'मंडाणौ, मंडाबौ' (रू. भे.)

मंढ़ाड़णहार, हारौ (हारी), मंढ़ाड़णियौ—वि०।

मंढ़ाड़िग्रोड़ौ, मंढाड़ियोड़ौ, मंढ़ाड़चोड़ौ—भू० का० कृ०।

मंढ़ाड़ीजणौ, मंढ़ाड़ीजबौ—कर्म वा०।

मंढ़ाणौ, मंढ़ाबौ—देखो 'मंडाणौ, मंडाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारै वीरेजी **मढ़ायौ** चंग वाजणौ, म्हारौ रेगर मंढ़ कर लायौ'रे रंगीलौ चंग बाजणौ।—लो. गी.

उ०—२ खीर-खांड रौ थनै थाळ परोसूं, थारी सोने में चांच मंढ़ाऊं कागा, कद म्हांरो मारूजी घर आवै।—लो. गी.

उ०—३ ऊडि उडि म्हारा ऊं सरवरिया रा हंस, सुरंग थारी पांखड़ी। सोने मंढाऊं थारी चूंच, रूपा की दोइ आंखड़ी।
—मीरां

मंढ़ाणहार, हारौ (हारी), मंढ़ाणियौ—वि०।

मंढ़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मंढ़ाईजणौ, मंढ़ाईजबौ—कर्म वा०।

मंढ़ायोड़ौ—देखो 'मंडायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मंढायोड़ी)

मंढावणौ, मंढावबौ—देखो 'मंडाणौ, मंडाबौ' (रू. भे.)

मंढावणहार, हारौ (हारी), मंढावणियौ—वि०।

मंढाविओड़ौ, मंडावियोड़ौ, मंढाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मंढावीजणौ, मंढावीजबौ—कर्म वा०।

मंढावियोड़ौ—देखो 'मडायोड़ौ' (रू. भे.)

मंढियोड़ौ—देखो 'मंडियोड़ौ (रू. भे.)
(स्त्री० मंढियोड़ी)

मंढी—देखो 'मंडी' (रू. भे)

उ०—१ जमकि जमकि तन मति पतित काळ ढगत ढग तोही। मोह मंढी में सो रह्या यह अचंभा मोही।—ह. पु. वां.

उ०—२ फलोधी था खबर आई—भाटियां रौ साथ पोकरण आयो। गांव नुं ढोवो कीयो, स्त्री जी रै साथ बाहर नीसर बेढ की। ऊवै हाटां तांऊ आया, मंढी कनै वेढ की। तरै राजाजी रौ साथ जीतौ, बेढ भाटियां हारी।—नैणसी

मंढूकळी—देखो 'मंडकौ' (अल्पा., रू भे.)

मंणणौ—देखो 'मुंणणौ, मुंणबौ' (रू. भे.)

उ०—मंणौं कुआरी मेघड़ी, भलो भलो भरतार। माहरो दुख-सुख माहवा, हीअड़ो जांणणहार।—पी. ग्रं.

मंत, मंतर—देखो 'मंत्र' (रू भे.)

उ०—१ चरचा करतां चुगल सूं, प्रक्रत हुवै परतंत। चुगली कांना सुणण सूं, मैलो हुवै गुर-मंत।—बां. दा.

उ०—२ पांगळा खड़ै जमदूत फीटा पड़ै, जोखमी ऊघड़ै नयण जूटी। दिया बरदांन मंतर महादेव रा, बभूती धनंतर तणी बूटी।
—मे. म.

उ०—३ उणनै इण भांत हंसतां देख दोनां रौ ई जीव ठांणै आयो। जे वा थोड़ी ताळ फेर नीं हंसती तौ वांनै भंवळ खाय हेटै गुड़णौ ई पड़तौ। निस्चै आ डोकरी तौ कीं न कीं मंतर सारियोड़ी है।—फुलवाड़ी

उ०—४ आज ई म्हारै समझायां पछै ओ ऊमर में कदै ई अमलांणी रौ नांव लेलै तौ म्हनै कैजो। सेठां पूछयौ—आप कनै अैड़ौ कांई मंतर है।—फुलवाड़ी

उ०—५ जंतर मंतर लिख के लावै, ओखद लावै घसकै री। जो कोई लावै स्यांग वैद को, तौ उठ बोलूं हंस के री।—मीरां

उ०—६ परी उण भांत मूंडौ उघाड़यां सूती ही। पलकां मूंदयोड़ी। रेसमी होठ, तीखौ नाक। किणी साधु रा मंतर सूं गुलाब री फूल तौ इण उणियारा री रूप धारण नीं कर लियौ।—फुलवाड़ी

उ०—७ डोकरी समझावण लागी—आप चावौ तौ राजाजी री भावना पलट सको। अठै बैठाई कोई मंतर फूंको तौ वै काले रौ काले महारांणी नै तेड़वा सारू बीस घोड़ां रौ रथ जुतायनै भेज दै।
—फुलवाड़ी

उ०—८ पछै वारा स्वारथ माथै थूकती कह्यो —आपड़ा होण पुन्या जादू मंतरां सूं ई वातां सारणी चावै।—फुलवाड़ी

मंतरकार—देखो 'मंत्रकार' (रू. भे)

मंतरजंतर—देखो 'जंतर-मंतर' (रू. भे)

मंतरणा—देखो 'मंत्रणा' (रू. भे.)

मंतरतंतर—देखो 'मंत्रतंत्र' (रू. भे.)

मंतरणौ, मंतरबौ—क्रि० स० [सं० मंत्रम्] १ मंत्र द्वारा संस्कृत करना, पवित्र करना, अभिमंत्रित करना।

२ जादू-टोना करना।

३ वशीभूत करना।

उ०—पाछा राजी व्हियां राजाजी नै मंतरणा तौ साव सैल।
—फुलवाड़ी

४ झाड़-फूंक करना।

५ फुसलाना, भुलावे में डालना।

उ०—म्हनै तौ अबार वाळी बात मिनखरी री लखावै। ए कैणा घूड़ रा राजाजी है। ए तौ मिनखां दाई मिनख है। बेटा, थूं म्हनै कांई मंतरै, म्हैं घणी दुनियां देखी हूं।—फुलवाड़ी

६ किसी के मन में अभिमान या गर्व उत्पन्न करना, फुलाना।

उ०—म्हारै जैड़ी हजार मासियां ई थारी अकल नै नीं पुग सकै। थनै जो कांम करणौ है, वौ सब पैं'ला सूं ई तेवड़ियोड़ौ है, पछै म्हनै फालतू क्यूं मंतरै।—फुलवाड़ी

मंतरणहार, हारौ (हारी), मंतरणियौ—वि०।

मंतरिओड़ौ, मंतरियोड़ौ, मंतरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मंतरीजणौ, मंतरीजबौ—कर्म वा०।

मंत्रणौ, मंत्रबौ—रू० भे०।

मंतरवाद—देखो 'मंत्रवाद' (रू. भे.)

मंतरवादी—देखो 'मंत्रवादी' (रू. भे.)

मंतरविद्या—देखो 'मत्रविद्या' (रू. भे.)

मंतरसाधक—देखो 'मत्रसाधक' (रू. भे.)

मंतरसाधन—देखो 'मंत्रसाधन' (रू. भे.)

मंतरसिधी—देखो 'मत्रसिद्धि' (रू. भे.)

मंतराई—सं० स्त्री० [सं० मंत्रता] १ अभिमंत्रित करने का कार्य।

२ झाड़-फूंक करने का कार्य ।
३ जादू-टोना करने का कार्य ।
रू० भे०—मंत्राई ।
४ देखो 'मित्राई' (रू. भे.)

मंतरियोड़ौ—भू० का० कृ०—मंत्र द्वारा संस्कृत किया हुआ, पवित्र किया हुआ, अभिमंत्रित किया हुआ. २ जादू-टोना किया हुआ. ३ वशीभूत किया हुआ. ४ झाड़-फूंक किया हुआ. ५ फुसलाया हुआ, भुलावे में डाला हुआ. ६ किसी के मन में अभिमान या गर्व उत्पन्न किया हुआ, फुलाया हुआ
(स्त्री० मंतरियोड़ी)

मंतरियोड़ौडोरौ—सं० पु० यौ० [सं० मंत्र-सूत्र] सूत या रेशम का वह धागा जो मंत्रित कर शरीर के किसी अंग पर बांधा जाता है, मंत्र-सूत्र, गंडा । (मि. तांती २)

मंतरी—देखो 'मंत्री' (रू. भे.)

मतरोळियौ—सं० पु०—१ बनावटी मित्रता ।
रू० भे०—मितरोळियौ ।
२ देखो 'मित्र' (अल्पा., रू भे)

मंतव्य—सं० पु० [सं०] किसी कार्य अथवा बात के सम्बंध में वह विचार जो मन में स्थिर किया गया हो ।
उ०—**मंतव्य** मांन गंतव्य ग्यांन वेदिक विधांन धर ध्येय ध्यांन ।
—ऊ. का.

मंतु—सं० पु०—अपराध, गुनाह ।
उ०—तौ भी **मंतु** बिहूण जनक रौ मित्र मारण मे म्हारौ तौ मन आघात रौ उत्करस न मांनै ।—वं. भा.

मंत्र—सं० पु० [सं०] १ देवाभिसाधन गायत्री आदि वैदिक वाक्य जिसके द्वारा देवस्तुति तथा यज्ञ आदि क्रिया करने का विधान हो ।
वि० वि०—वैदिक मंत्र तीन प्रकार के माने गये थे । छंदोबद्ध या पद्य रूप में रचित मंत्र जो उच्च स्वर से उच्चरित किये जाते थे उन्हें 'ऋचा' कहते थे । ऐसे ही गद्य रूप के मंत्रों को जिनका उच्चारण मंद स्वर में किया जाता था 'यजु' कहते थे और पद्य रूप में गाए जाने वाले मंत्रों को 'साम' कहते थे । निरुक्त में भी मंत्रों के 'परोक्षकृत', 'प्रत्यक्षकृत' और आध्यात्मिक' तीन भेद बताये गए हैं ।
२ वेदों का वह भाग जिसमें उक्त प्रकार के मंत्रो का संग्रह हो ।
३ कोई ऐसा शब्द या शब्द-समूह जो दैवी शक्ति से युक्त माना जाता हो और जिसका उच्चारण किसी देवता को प्रसन्न करके अपनी कामना पूरी करने के लिए किया जाता हो ।
उ०—तठै नदी रा जळ सूं पुद्गळ पवित्र करि कोई सिद्ध रा दीधा **मंत्र** रा जाप पूरवक तप्त तैल रा कटाह में बडा २ राजा झंप लीधी ।—वं. भा.
वि० वि०—ऐसे मंत्र एकाक्षरी और बिना स्पष्ट अर्थ वाले होते हैं । तंत्र शास्त्र में ऐसे अक्षरों को बीजाक्षर कहते हैं ।
४ गोप्य या रहस्यपूर्ण बात । (मंत्रणा, सलाह, परामर्श)
उ०—१ अर अनामय पूछण रौ व्याज करि पिता नूं बडा भाई रै समेत मारि साह होण रौ संकल्प करि दिल्ली माथै आपरी चतुरंग चमूं चलाई । तिकौ **मंत्र** उपव्हर भी चार लोकां रा चतुर पणां थी चौड़े आयौ थकौ पहली ही इसौ घाट घड़ता तीजा साहजादा औरंगजेब रै सहायक बणियौ ।—वं. भा.
उ०—२ जयमल पतै जबाब जद, हजरत तणी हजूर । **मंत्र** करे लिख मेलिया, मांभळ हरखै सूर ।—बा. दा.
उ०—३ विपत **मंत्र** विपरीत, अधरम आळस ऊंघणौ । अपजस सौर अनीत, पे'लां घर बांधै पिसण ।—बां. दा.
उ०—४ ताहरां ईंदै चंवडै नूं कह्यौ—आपै मंडोवर लेस्यां । ताहरां कह्यौ—भलां ताहरां रजपूत सरब एकठा हुआ । **मंत्र** कियौ । ताहरां च्यार-च्यार ठाकुर गाडी मांहै बैठा ।—नैणसी
५ चौसठ कलाओं में से एक । (काम शास्त्र)
६ कोई ऐसी बात या शिक्षा जो किसी प्रकार का उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी को गुप्त रूप में बतलाई, समझाई या सिखाई जाय, कार्य सिद्धि या गुर, ढंग या नीति ।
यौ०—गुरु मंत्र ।
मुहा०—गुरू मंत्र देणौ=गुप्त रीति से अपनी बात किसी को कान में कहना, सिखावट में लाना, बहकाना ।
७ विचार ।
उ०—असुचि **मंत्र** दिल्लीस उपायौ । बारि पटकि गोपळ बिगडायौ ।
—वं. भा.
८ जादू ।
९ तांत्रिक साधना या विद्या ।
रू० भे०—मंत, मंतर ।
१० देखो 'मंत्री' (रू. भे.)
उ०—महि कनवज महि जग मुकट, आयो **मंत्र** उदार । छक चढ़ियो चढ़ियौ छभा, जैचंद करण जुहार ।—सू. प्र.

मंत्रकार—सं० पु० [सं०] मंत्र दृष्टा ऋषि ।
रू० भे०—मंतरकार ।

मंत्रकुसळ—वि० [सं० मंत्रकुशल] १ परामर्श देने में कुशल ।

मंत्रकृत—सं० पु० [सं० मंत्रकृत] १ वेद रचयिता ।
२ वेदपाठी, मंत्रोच्चार करने वाला ।
३ परामर्शदाता, सलाहकार ।
४ दूत ।

मंत्रग्य—सं० पु० [सं० मंत्रज्ञ] १ मंत्री ।
२ पंडित, ब्राह्मण ।
३ गुप्तचर ।
४ वेदज्ञ ।

मंत्रजळ–सं० पु० [सं० मंत्रजल] अभिमंत्रित जल।

मंत्रजांण–स० पु० [सं० मंत्रज्ञ] दूत। (डिं. को.)

मंत्रणा–सं० स्त्री० [स०] १ परामर्श। २ सलाह।

रू० भे०—मतरणा।

मंत्रणी–वि० स्त्री०—१ मंत्र सम्बन्धी क्रिया करने वाली, जादू-टोना करने वाली।

उ०—१ तुही जंत्रणी **मंत्रणी** अंत्रजांमा, तुही थंत्रणी तंत्रणी बुद्धि धांमा।—मे म.

उ०—२ नमौ **मंत्रणी** तंत्रणी मेघमाळा, नमौ संकरी सुंदरी प्रेम साळा।—मा. वचनिका

मंत्रणौ–सं० पु० [सं० मत्रणं] परामर्श, सलाह, मंत्रणा।

उ०—१ ताहरां महेवै ही किरोड़ी आयो। ताहरां कांनड़दे सरब राजपूत तेड़िया। कांमेतियां मालजी नूं तेड़िया। तेड़नै **मंत्रणो** कियो—जु कासु करस्यां।—नैणसी

उ०—२ आलोच्यो आलौच अम्हारो ए अछै। कीज्यें तोह विचार कहो जे तुम अछै। बादल बोले वारू कीयो ए **मंत्रणौ**, पण इक माहरी बात सुणि आलोचणौ।—प. च. चौ.

मंत्रणौ, मंत्रबौ—देखो 'मंतरणौ, मंतरबौ' (रू. भे.)

उ०—तरै महाराज उभरांणै पगे गोतमजी रा पगां गया। प्रणांम करि अरज कीधी—महाराज अग्यांन पणै **मंत्रियौ** पांणी खवास मोनै पायौ —रा. वं.

मंत्रणहार, हारौ (हारी), मंत्रणियौ—वि०।

मंत्रिओड़ौ, मंत्रियोड़ौ, मंत्र्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मंत्रीजणौ, मंत्रीजबौ—कर्म वा०।

मंत्र-तंत्र–सं० पु० यौ० [सं०] १ जादू टोनेका कार्य विशेष।

२ कुछ विशिष्ट कियायों के साथ जादू टोने के रूप में किये जाने वाले मंत्र विशेष।

रू० भे०—मंतर-तंतर।

मंत्रदेव, मंत्रदेवता–सं० पु० [सं०] वह देवता जिसका मंत्र में आह्वाव किया गया हो।

मंत्रपाळ, मंत्रपाल–सं० पु० [सं० मंत्रपाल] राजा को मंत्रणा देने वाला, सलाहकार।

उ०—राय रांणा मंडलिक आखंडलीक सामंत महासामंत लघु सामंतस्रीगरणा वयगरणा धरम्माधिगरणा अमात्य महांमात्य सुहा-सोला उचित बोला दासदीकोला गादीया मसूरीया पुडपुडीया कांबडीया दौवारिक तलार मुडउधा सेलहथ **मंत्रपाल** तंत्रपाल स्रेष्टि सारथपति जीणइं सभा।—व. स.

मंत्रपूत–वि० [सं०] १ मंत्र द्वारा पवित्र किया हुआ।

सं० पु०—२ गरुड। (अ. मा., ह. नां. मा.)

मंत्रप्रयोग–सं० पु० यौ० [सं०] १ मंत्र द्वारा काम लेने का भाव या क्रिया।

२ मंत्र का प्रयोग।

मंत्रबीज–सं० पु० [सं०] मंत्र विशेष का प्रथमाक्षर, मूलमंत्र।

मंत्रमुग्ध–वि० [सं०] मंत्र द्वारा मोहित किया हुआ, वशीभूत किया हुआ।

मंत्रमूरत, मंत्रमूरति–सं० पु० [सं० मंत्रमूर्ति] शिव, महादेव। (नां. मा.)

मंत्रमूळ–सं० पु० [सं० मंत्रमूल] इन्द्रजाल, जादू।

मंत्रयोग–सं० पु० [सं०] १ मंत्र का प्रयोग।

२ मंत्र पढ़ने का कार्य।

३ इन्द्रजाल, जादू।

मंत्रवाद–सं० पु० [सं०] पुरुष की ७२ कलाओं में से एक कला विशेष।

रू० भे०—मंतरवाद।

मंत्रवादी–वि० [सं०मंत्रवादिन्] मंत्र का उच्चारण करने वाला, मंत्रज्ञ।

उ०—१ आया **मंत्रवादी** किगा गति सूं बोलाणो अंग। सरवथा न छोडूं पायो राजा रो सरीर। लाडलो कंवार तथा महारांणी प्रांण लेहूं, धारी मनां रवा हुओ प्रधान मंत्री धीर।

—राजसिंह कूंपावत री गीत

उ०—२ बागधर सुजांण चित्रजाण धातुनिरुपणिजांण ज्योतिम-जांण **मंत्रवादी** यंत्रवादी तंत्रवादी धातुवादी……।—व. स.

रू० भे०—मंतरवादी

मंत्रविद्या–सं० स्त्री०—१ मंत्र तंत्र की विद्या।

२ मंत्र-तंत्र शास्त्र।

रू० भे०—मंतरविदिया, मंतरविद्या।

मंत्रवी—देखो 'मंत्री' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

उ०—१ मत सीखै **मंत्रवी**, राग सीखै रसचारी। सीखै धरम कुळ सकळ रीत सीखै छत्रधारी।—सू. प्र.

उ०—२ घोड़ा लाख दोढ़ री जमींत लीधां रहै। दरियाव मांहै जेहाज मारै। तिण रो माल चीजां घणो ही भेळो हुवै। तिण रै सुजांण साह **मंत्रवी** छै।—कहवाट सरवहिया री बात

उ०—३ मिळि मिळि मोटा **मंत्रवी**, सूर सुभट रजपूत। इण विध आलोचै तिसै, आयो आलम पूत।—प. च. चौ.

मंत्रसंसकार, मंत्रसंस्कार–सं० पु० [सं० मंत्रसंस्कार] १ मंत्र पढ़कर किया जाने वाला संस्कार।

२ मंत्रग्रहण के पूर्व किया जाने वाला तंत्रोक्त संस्कार।

३ विवाह।

रू० भे०—मंत्रसँसकार।

मंत्रसंहिता–सं० स्त्री० [सं०] वेदों का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह है।

मंत्रसाधक–सं० पु० [सं०] तांत्रिक साधना करने वाला व्यक्ति।

रू० भे०—मंतरसाधक।

मंत्रसाधन-सं० पु० [सं०] किसी मंत्र को साधने या सिद्ध करने की क्रिया या भाव।

रू० भे०—मंतरसाधन।

मंत्रसिद्ध, मंत्रसिध-वि० [सं० मंत्रसिद्ध] १ जो मंत्र द्वारा सिद्ध किया गया हो।

२ मंत्र की साधना कर सिद्ध करने वाला।

मंत्रसिद्धि-सं० स्त्री० [सं०] मंत्रों द्वारा प्राप्त शक्ति, मंत्र की सफलता।

रू० भे०—मंतरसिधी।

मंत्रसंसकार—देखो 'मंत्रसंस्कार' (रू. भे)

मंत्राई—१ देखो 'मित्राई' (रू. भे.)

२ देखो मंतराई' (रू. भे)

मंत्रि—देखो 'मंत्री' (रू. भे)

उ०—१ राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सांमंत लघु सांमंत तलवर तंत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति **मंत्रि** महामंत्रि। —व. स.

मंत्रित-वि० [सं०] मंत्रों द्वारा सुसंस्कृत, अभिमंत्रित।

मंत्री-सं० पु० [सं० मंत्रिन्] १ सलाहकार या परामर्श देने वाला व्यक्ति, परामर्श दाता।

उ०—जिण राजा रै अनेक **मंत्री** बांणी रा जुद्ध में महाप्रतिभट······ ।—वं. भा

२ राजा का वह प्रधान व्यक्ति जिसके परामर्श से राज्य का संचालन होता है, अामात्य।

उ०—१ कवि पंडित गायक कथक, **मंत्री** गज भडमल्ल। तौ दरबार जिता तिता, जग चावा जेहल्ल।—बां दा.

उ०—२ भंडारी अखंड नेम आसकरन आगै, राजा दळ राज काज साजा छळ जागे। वरधमांन नंद इंद्र 'अगजीत' का **मंत्री**, सरव सावधांन जैसे थांन थांन जंत्री।—रा. रू.

३ राज्य के विभाग विशेष के कार्य का संचालन करने वाला व्यक्ति, (मिनिस्टर)।

४ संस्था अथवा संगठन विशेष का एक पदाधिकारी जो सम्बधित संस्था अथवा संगठन का प्रमुख कार्य भार वहन करता है, सचिव।

५ शतरंज के खेल में वजीर नाम की गोटी।

रू० भे०—मंतरी, मंत्र, मंत्रवी, मंत्रि, मितरी, मित्री।

मंत्रीपाराथ-सं० पु० यौ० [सं० पार्थमंत्री] श्री कृष्ण। (डिं. को)

मंत्रीसर, मंत्रीस्वर, मंत्रेस्वर-सं० पु० [सं० मंत्रीश्वर] राज्य कार्य संचालकों में प्रधान, महामंत्री, महामात्य।

उ०—१ तठै एकदा समाजोग रै विखै राजा भोज रा घर रा नै राजा मांन रा घर रा नाळेर आया। तिण साथै **मंत्रीसर** आया छै।—रीसाळ री बात

उ०—२ हस्ति सहसदळ कमळ, पुरुस प्रमांण सिंहासण, कटी प्रमांण पादपीठ पाछइ थई आइतु, डावइ **मंत्रीस्वर** जिमणइं पुरोहित······ ।—व. स.

उ०—३ सांमंत सूरा सुहड घणा, हय गय संख्य न पार। सेनांनी साहसिक भट **मंत्रेस्वर** सुविचार।—मा. कां. प्र.

मंत्रोळियौ—देखो 'मित्र' (अल्पा., रू भे.)

उ०—केई मित केई **मत्रोळिया**, ताड़ी मित अनेक। विपत पड़्यां बांटले, सो सोआं में एक।—

२ देखो 'मतरोळियौ' (रू भे.)

मंथ-सं० पु० [सं० मंथ:] १ मंथन, विलोड़न।

उ०—जथा के कड़क्कै छटा मेघ जोड़ां। मचै सिंधु के **मंथ** पब्बै घमोड़ां।—वं. भा.

२ मलना अथवा रगड़ना क्रिया का भाव।

३ दही बिलोने का दंड, मथानी।

४ एक प्रकार का मृग।

५ एक प्रकार का शरबत विशेष जो कई पदार्थों के समिश्रण से बनाया जाता है।

६ बाल रोगों के अन्तर्गत माना जाने वाला एक प्रकार का ज्वर।

७ देखो 'महंत' (रू. भे.)

उ०—चेला लावै मांगकर, बैठा खावै **मंथ**। रांम भजन का नांव है, पेट भरण का पंथ।—अज्ञात

मंथअचळ-सं० पु० यौ० [सं० मंथ:अचल] मंदराचल पर्वत का नामान्तर।

मंथगिरि-सं० पु० यौ० [सं० मंथ:गिरि] मंदराचल पर्वत का नाम।

मंथज-सं० पु० [सं० मंथजम्] मक्खन, नवनीत। (डिं. को.)

मंथण—देखो 'मथन' (रू. भे.)

मंथणी – देखो 'मथणी' (रू. भे.)

मंथणौ, मंथबौ—देखो 'मथणौ, मथबौ' (रू. भे.)

उ०—ग्यांन के **मंथांन** सुं, मिथ्यात मोह मंथ मंथ।—ध. व. ग्र.

मंथणहार, हारौ (हारी), **मंथणियौ**—वि०।

मंथिओड़ौ, मंथियोड़ौ, मंथ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मंथीजणौ, मंथीजबौ—कर्म वा०।

मंथन-सं० पु० [सं० मंथन:] १ मथने की क्रिया या भाव, विलोड़न।

२ मथन करने का दण्ड, रई।

३ देखो 'मथन' (रू. भे)

रू० भे०—मंथण।

मंथनी—देखो 'मथणी' (रू. भे.)

मंथपरबत, मंथपरवत—देखो 'मथपरबत' (रू. भे.)

मंथरां-क्रि० वि० [सं० मंथर] धीमा, मंद। (अ. मा.)

मंथरा-सं० स्त्री० [सं०] १ कैकई की प्रमुख दासी जिसने उसे बहका कर राम को १४ वर्ष का बनवास दिलवा दिया था।

रू० भे०—मथरा।

अल्पा०—मथरी।

२ देखो 'मथुरा (रू. भे.)

मंथांण–वि०—१ मथने का, मथन सम्बन्धी ।
उ०—घणा रोद्र घेरै, फिरै चक्र फेरौ । **मंथांणौ** मटल्लै, मही जांण हल्लै ।—रा. रू.
२ देखो 'मथांणी' (रू. भे.)
उ०—समंद प्रळय विहार स्रीरंग, वेद मुख वांणी । वळ चवद रतन उधार हित वप, कठण पिठ धारी मंद्र कछप । उदध कर **मंथांण** अणघट, प्रगट कंज-पांणी ।—र. ज. प्र.
३ देखो 'मथणी' (मह., रू. भे.)
उ०—देव दांणव भेळा करि स्रप को नेत्रौ करि । मंदराचळ परबत को **मंथांण** करि समुद्र मांह थी काढि लीधी ।—वेलि टी.
४ देखो 'मथण' (रू. भे.)
५ देखो 'मथांण' (रू. भे.)
रू० भे०—मंथांन ।

मंथांणी–सं० स्त्री०—१ 'रघुवर जस प्रकास' के अनुसार दो तगण का वर्ण छंद विशेष ।
२ देखो 'मथांणी' (रू. भे.)
३ देखो 'मथणी' (रू. भे.)

मंथांन—देखो 'मथणी' (मह., रू. भे.)
उ०—१ ग्यांन के **मंथांन** सूं मिथ्यांन मोह मंथ मंथ ।—ध. व. ग्रं.
उ०—२ दसमी भावना एम भावउ लोक स्वरूप **मंथांन** रे । जिम विलवणउ विलवतां थकां सरीर नउ संस्थांन रे ।—स. कु.
२ देखो 'मथांणी' (मह., रू. भे.)

मंद–वि० [सं०] १ बेवकूफ, मूर्ख, मूढ । (अ. मा.)
२ कृपण, कंजूस ।
उ०—खत्रियां गुर आखै राव खीची, मूंठी भीची वहै **मंदा** । नह रहै नांम सभायां नीची, सींची कीरत रहै सदा ।
—गोरधनसिंह खीची
३ तनिक, थोड़ा । (अ. मा.)
४ कान्तिहीन, फीका, निष्प्रभ ।
उ०—सरद घटा जिम ऊजळी, दिस दिस अटा विलंद । नगर थटा रुख निरखियां, स्वरग छटा है **मंद** ।—बां. दा.
५ कमजोर, क्षीण ।
उ०—रचियौ जिण जग राजसू, मेछां कर वळ **मंद** । पत कनोज दळ पांगळो, जग जाहर जैचंद ।—बां. दा.
६ जिसकी चाल, गति, प्रवाह, वेग कम हो, धीमा, मंथर ।
उ०—तिण उपवनि झोलै नदि तीरां । सीतळ **मंद** सुगंध समीरां ।
—सू. प्र.
७ हल्का, धीमा ।
उ०—१ बांकी चितवन'र **मंद** मुसकांन ।—मीरां
उ०—२ आ छोटी मूंफाड़ किसड़ीक सोहै, श्रो **मंद** हास किण नूं न मोहै ।—र. हमीर
८ खल, दुष्ट ।
९ प्रभावहीन ।
ज्यूं—मंदविख ।
सं० पु० [देशज] १ घोड़ी की गर्दन का एक रोग विशेष ।
(शा' हो.)
[सं० मंदः] २ चार प्रकार के हाथियों में वह हाथी जिसके वक्ष और मध्य भाग की वली ढीली, पेट लम्बा, चमड़ा मोटा, गर्दन और कांख मोटी और पूंछ की चंवरी मोटी हो ।
(डिं. को.)
उ०—ठण भद्र **मंदां** अगां बंस ठावा । छटा फैल हालै किनां सैल छावा ।—वं. भा.
३ शनिश्चर । (अ. मा.)
४ यमराज, यम ।
५ देखो 'मद' (रू. भे.)
उ०—१ नमो जग जीवण नंद, महाविख नाग उतारण **मंद** ।
—ह. र.
उ०—२ उत्तर आजस उत्तरउ, पाळउ पड़इ रवंद । का वासंदर सेवियइ, कइ तरूणी कइ **मंद** ।—ढो. मा.
प्रत्यय [फा०] किसी गुण या पदार्थ युक्त या सम्पन्न ।
ज्यूं—अकलमंद, दौलतमंद ।
६ देखो 'मंदौ' (मह., रू. भे.)
रू० भे०—मंदउ ।

मंदउ—१ देखो 'मंद' (रू. भे.)
२ देखो 'मंदौ' (रू भे)

मंदक–वि० [सं०] मूर्ख, मूढ़ ।
२ देखो 'मंदौ' (रू. भे.)

मंदकमाऊ–वि० यौ०—कम उपार्जन करने वाला ।

मंदकोरा–सं० पु०—१ घोड़े की जाति विशेष ।

मंदग–वि० [सं०] १ मंदगति से चलने वाला, धीमी चाल चलने वाला ।
सं० पु०—२ भोजक जाति के व्यक्तियों के अनुसार शाक द्वीप के चार वर्णों में से एक वर्ण ।

मंदगति–सं० स्त्री० [सं०] १ ग्रहों की गति की वह अवस्था जब वे अपनी कक्षा में घूमते हुए सूर्य से दूर चले जाते हैं । (ज्योतिष)
३ धीमी चाल ।

मंदजुर, मंदज्वर–सं० पु० [सं० मंदज्वर] प्रायः निरन्तर बना रहने वाला या चढ़ने वाला वह ज्वर जिससे शरीर का तापमान सामान्य से बहुत अधिक न हो ।

मंदता—देखो 'मंदी' ।

मंदफळ–सं० पु० [सं० मंदफल] ग्रहों की गति का एक भेद ।
(फलित ज्योतिष)

मंदभाग, मंदभागी–वि० पु० [सं० मंदभाग्य] (स्त्री० मंदभागण) हत-भाग्य, मंदभाग्य ।
उ०—१ और घणाई आवसी, चिड़ी कमेड़ी काग । हंसा फेर न आवसी, सुण सरवर **मंदभाग** ।—अज्ञात

उ०—२ क्रिपा करौ म्हारै भवन पधारौ नहिं यौ जिवड़ौ जासी। मैं **मंदभागण** काहे को सरजी, पिया मोसूं रहत उदासी।—मीरां

मंदमति, मंदमती—देखो 'मतिमंद' (रू. भे.)

उ०—१ छंद ह्वै सुछंद ग्रौ ग्रणंद कौ कह्यौ। **मंदमती** 'ऊमरौ' विफंद में फर्यौ।—ऊ. का.

उ०—२ मन वंछै कित **मंदमति**, केथ काळिका क्रीति।
—मा. वचनिका

मंदर—सं० पु० [सं०] १ मंदराचल पर्वत।

उ०—देख सखी होळी रमै, फौजां में धव एक। सागर **मंदर** सारखौ, डोहै ग्रनड़ ग्रनेक।—वी. स.

२ इंद्र। (डिं. को.)

३ वरुण। (ह. नां. मा.)

४ पुराणानुमार कुश द्वीप का एक पर्वत।

५ स्वर्ग।

६ देखो 'मंदिर' (रू. भे.)

उ०—१ उतंग चंग भीत चीत मंड चंड **मंदरं**। कळी सपेत जांणि सेत, धार धम्मळा गिरं।—गु रू. वं.

उ०—२ घणा उछाह त्यौं सराह नाह कूरमां धरै। मने कमंध चीत जास प्रीत वास **मंदरै**—रा. रू.

७ देखो 'मंदरा' (रू. भे.)

८ देखो 'मंदार'।

रू० भे०—मंद्र।

मंदरगर, मंदरगिर, मंदरगिरि, मंदरगिरी—सं० पु० [सं० मंदरगिरि] मंदराचल पर्वत का नामान्तर।

रू० भे०—मंदागिर।

मंदरा—सं० पु०—प्रत्येक चरण में एक भगण का छंद विशेष।

मंदराचळ—सं० पु० [सं० मंदराचल] मंदराचल पर्वत जिससे देवताग्रों ने समुद्र को मथा था।

उ०—नमौ कमढाधर रूप सुकाय। नमौ **मंदराचळ** पीठ भ्रमाय।
—ह. र

रू० भे०—मंद्राचळ, मद्राचळ।

मंदरियौ—देखो 'मंदिर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—कर केसरिया खड़वा कीजे, **मंदरिए** साजन मेलीजै। 'सूर' हरा ग्ररदास सुणीजै, देस पधारो दरसण दीजै।
—द्वारकादास दधवाड़ियौ

मंदरौ—वि० [सं० मंद] (स्त्री० मंदरी) मंद, धीमा।

उ०—कोयळ वैरण **मंदरि-मंदरि** बोल, ज्यूं चित ग्रावै भंवरजी नै गोरड़ी।—लो. गी.

मंदळ—देखो 'मादळ' (रू. भे.)

मंदवाड़, मंदवाड़ि, मंदवाड़ी—देखो 'मांदगी' (रू. भे.)

उ०—१ नर मांदौ निरखिनै, वैद कफ वात बतावै। जो पूछै जोतसी, लार ग्रह केई लगावै। भोपौ कहै भूत छै, लोभ बीजासणि लीधौ। जंत्र मंत्र रा जांण, कहै कोई कांमण कीधौ। **मंदवाड़** एक नव नव मता, मूळ न जांणै को मरम। कहै साधु ग्रसुभ पूरब करम, धरि सुखकारी इक धरम।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ मरगी नइ **मंदवाड़ि**, गया गुजरात थी नीसरि। गयउ सोग संताप घणौ, हरख हुयउ घरि घरि।—स. कु.

मंदहास—सं० पु० [सं० मंदहासः] मुस्कान।

उ०—**मंदहास** मुळकै ग्रिघा, व्रंगी विछोया पै वज्ज ऐ।
—मा. वचनिका

मंदा—सं० स्त्री० [सं०] १ उत्तर फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तर भाद्रपद ग्रौर रोहिणी नक्षत्र में पड़ने वाली संक्रान्ति।

[सं० मंदाकिनी] २ गंगा नदी।

मंदाग्राखर—सं० पु० [सं० मंद+ग्रक्षर] मंद भाग्य, मंद प्रारब्ध।

उ० कमळादे ग्राणंद करौ, सुख सिंधु हरसाल। **मंदाग्राखर** मेट दे, वंदै सेवक 'बाळ'।—बालाबखस बारहठ

मंदाइण—देखो 'मंदाकिनी' (रू. भे.)

उ०—काटळ ग्रावध सूझकर, मन **मंदाइण** न्नन्न। ग्रावध राखै ऊजळा, मैला ज्यां रा मन्न।—बां. दा.

मदाक—वि० [सं० मंद] तुच्छ, तनिक। (ग्र. मा.)

मंदाकण, मंदाकणी, मंदाकनी, मंदाकिण, मंदाकिणी—'देखो' मंदाकिनी (रू. भे.) (ग्र. मा., डिं को., ह. नां. मा.)

उ०—१ झूलां मखतूल जमाजळ झाग, पग पग होत उद्योत प्रयाग, **मंदाकण** मांण नंदा बह मद, बहै सुरसत्ति प्रवाह बलंद।—मे. म.

उ०—२ उदर भरै पीधौ उदक, **मंदाकणी** मंझार। तिकां उदर त्रिभुग्रण तणौ, भरण लियां भुजभार।—बां. दा.

उ०—३ नारायण पग नीर, मांनूं किन **मंदाकनी**। सांपड़ जेथ सरीर, हर कौ नारायण हुए।—बां. दा.

उ०—४ जिण पय **मंदाकिण** जनम, ग्रघनासणी ग्रपार, जिण भजतां ग्रधजाण रौ, विसमय किसूं विचार—र. ज. प्र

मंदाकिनी—सं० स्त्री० [सं०] १ पुराणानुसार गंगा की वह धारा जो स्वर्ग में बहती है ग्रौर जो एक ग्रयुत योजन लम्बी है।

२ गंगा का नामान्तर।

३ ग्राकाश गंगा।

४ चित्रकूट के पास बहने वाली एक नदी का नाम।

५ सात प्रकार की संक्रान्तियों में एक

६ प्रत्येक चरण में क्रमशः दो दो नगण ।।। ग्रौर दो दो रगण ऽ।ऽ का एक वर्णिक छन्द विशेष। (पिं. प्र.)

७ पुलस्त्यपुत्र विश्रवस् नामक ऋषि की दो पत्नियों में से एक। भगवान शंकर के प्रसाद से इसे कुबेर नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।

रू० भे०—मंदाइरा, मंदाकरा, मंदाकरणी, मंदाकनी, मंदाकिरा, मंदाकिणी, मंदाकिरणी, मंदागनी, मंदागिरणी, मंदायरा, मंदायरणी, मंदायिरणी।

मंदाक्रांता–सं० स्त्री० [सं०] प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण, दो तगण और अंत में दो गुरु वाला सत्रह अक्षरों का वर्ण-वृत्त विशेष।

मंदागनी—१ देखो, 'मंदाग्नि' (रू. भे.)

२ देखो 'मंदाकिनी' (रू. भे.)

मंदागिणी—देखो 'मंदाकिनी' (रू. भे.)

उ०—सागर वंस उद्धरण कारणि, आंण मथा सीस **मंदागिणी**, तैं भागीरथ तणी सहजै 'गाजीसाह' हुऔ' कमधज्जै।—गु. रु. बं.

मंदागिर—देखो 'मंदरगिरि' (रू. भे.)

मंदाग्नि–सं० स्त्री [सं०] पाचन शक्ति मंद हो जाने का एक रोग विशेष।

रू० भे०—मंदागनी।

मंदायण, मंदायणी, मंदायिणी—देखो 'मंदाकिनी' (रू. भे.)

उ०—१ **मंदायण** तो माग, पग देतां पुरखां तणा। भूतळ जागै भाग, अघ भागै खिण एक में।—बां. दा.

उ०—२ कावेरी जळ स्त्रीकळस, घसियौ सनमुख धार। ऐरावत किर आवियौ, **मंदायिणी** मंझार।—बां. दा.

मंदार–सं० पु० [सं० मंदारः] १ इन्द्र के नन्दन कानन के पांच वृक्षों में से एक। (डि. को., नां. मा.)

उ०—१ पत्रां विहंगेस वाळी **मंदार** हैमंक पव्वै, घोम काळकूट मेघधारां गंगधार। धूपदांन क्रीत रांम माहवाह मोटा धरणी, तीनूं बातां तूझ तणी मोखरी दातार।—र. रू.

उ०—२ कलपव्रक्ष संतांन, परिजाती हरि चंदण, तर **मंदार** दुवार, आंण ऊगा सुख अप्पण।—रा. रू.

२ आक, मदार।

उ०—चूका वयण **मंदार** चाढ़तां, सुर नर साहो मांन असत्त। भोळै भाव आवियौ भूरो, भोळा संभू तणी भत्त।—गु. रू. बं.

३ धतूरा।

४ मंदराचल पर्वत।

रू० भे०—मंदर।

५ एक असुर, जो हिरण्य कशिपु का ज्येष्ठ पुत्र था।

६ धौम्य ऋषि का पुत्र।

७ डिंगल का एक छंद विशेष जो उमंग छंद और सिंहचाल के योग से रचा जाता है। पहिले दो चरण उमंग के और फिर एक सिंहचाल का।

वि० वि०—इस छंद में उमंग छंद के चरणों के साथ उमंग के और सिंहचाल के साथ सिंहचाल के तुक मिलाये जाते हैं।

मंदारक–सं० पु० [सं०] मंदार वृक्ष।

मंदाळासा—देखो 'मदाळासा' (रू. भे.)

मंदासय–सं० पु० [सं० मंद+आशय] अश्लील या अनुचित अर्थ का भाव।

मंदिर–सं० पु० [सं० मंदिरम्] १ वह भवन जिसमें पूजा या उपासना की दृष्टि से देव-मूर्ति स्थापित की गई हो।

२ भवन, मकान।

उ०—१ प्रभू भजतां प्रांणियां, कीजै ढील न काय। भर बत्थां अथ काढ़जै **मंदिर** जळते मांय।—ह. र.

उ०—२ गरक घणौ जळ गूदड़ा, ले तन सूं लपटाय। अत्थ बत्थ भर काढ़जै, **मंदिर** जळतां माय—बां. दा.

३ महल, प्रासाद।

उ०—मिळिया सेज आपणइ **मंदिर**, बे घण जांण बिहुं घण नेह। पहिलउ ई हूंतउ पारवती, सहिस गुणउ वाधियउ सनेह।

—महादेव पारवती री वेलि

[सं० मंद्र] ४ वरुण। (डि. को.)

रू० भे०—मदर, मंदिरि, मिंदर, मिंदिर।

अल्पा०—मंदरड़ौ, मदरियौ, मंदिरड़ौ, मंदिरडउ, मंदिरयौ, मिंदरड़ौ, मिंदरियौ।

मंदिरडउ—देखो 'मंदिर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—प्रिय सुखिइं सुर **मंदिरडउं** लही।—सालिसूरि

मंदिरि—देखो 'मंदिर' (रू. भे.)

उ०—द्रूपदी रहइं ते मति आली। ग्या विराट अप **मंदिरि** चाली।

—सालिसूरि

मंदी–सं० स्त्री० [सं० मंद+रा. प्र. ई] १ मंद होने की क्रिया, अवस्था या भाव।

२ व्यापार केन्द्र पर पदार्थों के भाव या दर उतर जाने की स्थिति या अवस्था।

उ०—बांणियौ कह्यौ—**मंदी** तेजी री रूण थांरा सूं कांई छांनी म्हैं तौ आप कैवौला ज्यूं करूंला।—फुलवाड़ी

३ बाजार की वह स्थिति जिसमें वस्तुओं का क्रय विक्रय कम होता हो, क्रय विक्रय की मंद स्थिति।

रू० भे०—मंदता, मंदीवाड़।

मह०—मंदीवाड़ौ।

मंदील–सं० स्त्री० [अ०] जरदोजी का बना हुआ एक प्रकार का वस्त्र विशेष जिसे सिरबंदी बनाने के लिए उपयोग में लिया जाता है।

—व. स.

रू० भे०—मदील।

मंदीवाड़–सं० स्त्री०—१ देखो 'मंदी'।

२ देखो 'मांदगी' (रू. भे.)

मंदीवाड़ौ—१ देखो 'मंदी'।

२ देखो मांदगी (मह., रू. भे)

मंदुर-सं० स्त्री० [सं० मंदुरा] अश्वशाला, घुड़शाला।

उ०—यौं बुंदीस अवनीक में गजराज चलाया, मिळि हयपाळक **मंदुर** ना तिम हयन तुकाया—वं. भा.

मंदोच्च-सं० पु० [सं० मंद+उच्च] ग्रहों की एक प्रकार की गति जिसमें राशि आदि का संशोधन करते हैं।

मंदोदर-वि० [सं०मंद+उदर] (स्त्री० मंदोदरी) १ छोटे या पतले पेट वाला। (२) मयदानव का एक नामान्तर।

उ०—मंडोवर सहर री आदि थापना मंदोदर दईतरी कीवी छै।
—नैणसी

२ देखो 'मंदोदरी' (रू. भे.)

मंदोदरि, मंदोदरी, मंदोवर, मंदोवरी-सं० स्त्री० [सं मंदोदरी] मय दानव की कन्या जो रावण की पट्टमहिषी थी।

उ०—१ हालै वाग दिसां कुळ हांणी, जाजुळ वात **मंदोदरि** जांणी।—र. रू.

उ०—२ **मंदोदरी** वायक रावण सुं।—र. रू.

उ०—३ लंका सुख छोडि व्रत लीधो, करणीं कर करम दूरं कीधो। **मंदोदरी** सील सदा सुगति।—जयवांणी

उ०—४ रांणी कह्यौ **मंदोवरी** थे वुरा कमाया।
—केसोदास गाडण

रू० भे०—मंदोदर।

मंदौ-वि० [सं० मंद+रा० प्र० औ] (स्त्री० मंदी) १ सुस्त, शिथिल, आलस्य युक्त।

उ०—हुए हिंदु बळहीण, घरा पण खींण सुरां भ्रम। मिटै वेद मरजाद, भेद गुण आद पड़ै भ्रम। ठांम ठांम पुर ग्रांम, कांम, हरिधांम अकाजां। पंडित **मंदा** पड़ै करै जिदा आवाजां। जग लोक वांण सीखै जवन, पढै ब्रहम मुख पारसी। हित देव सेव आघा हुवा, काई लग्गां आरसी।—रा. रू.

२ मंद गति से कार्य करने वाला।

३ रहित, हीन।

उ०—नरपति लीधो नागपूर, अरिगंजे 'अभसाह'। गह **मंदै** 'ईंदौ' गयौ, दिल्ली हंदै राह।—रा. रू.

४ अस्वस्थ, रुग्ण।

५ जो स्वभाव से उग्र न हो।

६ बाजार की वह स्थिति जिसमें क्रय विक्रय का कार्य मंद हो।

रू० भे०—'मंदउ'।

मंद्र—१ हाथियों की एक जाति विशेष।

२ देखो 'मंदर' (रू. भे.)

उ०—समंद प्रळय विहार श्रीरंग, वेद मुख वांणी। बळ बवद रतन उधार हित वप कठण पिठ धारी **मंद्र** कछप उदध कर मंथाण अण घट, प्रगट कंज पांणी।—र. ज. प्र.

मंद्राचळ—देखो 'मंदरांचळ' (रू. भे.)

मंधरौ—देखो 'मंदरौ' (रू. भे.)

मंन—देखो 'मन' (रू. भे.)

उ०—देखत ही दिल परचीया, मिथ्या अपरचा **मंन**। जनहरिया बिन देखिया, ताहि न परचै तंन।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मंनव—देखो 'मांनव' (रू. भे.)

मंमता—देखो 'ममता' (रू. भे.)

मंमद—देखो 'मैंमद' (रू. भे.)

उ०—मैया के माथां नै **मंमद** सोहै, रखड़ी री अजब सुहाग।
—लो. गी.

मंयलौ—'देखो 'मांयलौ' (रू. भे.)

उ०—१८३२ री साल मंयली बाग नैभल री करायो नै वाग री कमठो मैलायत कंवळ—चोकी बंगलो आददे सारा पासवांनजी हा हुवो, तिणरा रू. ५०००००) पांच लाख अंदाज लागा।—नैणसी

(स्त्री० मंयली)

मंयगळ, मंयगल—देखो 'मदकळ' (रू. भे.)

उ०—बिहु पखा सनइ बइ नीपना सुभटे जरहि जीणसाळा लीधी। **मंयगळ** गुडिया सुंडादंडि सुहवडि घातिया।—रा. सा. सं

मंरुधन्वा—देखो 'मरुधन्वा' (रू. भे)

उ०—द्रुंत '**मंरुधन्वा**' लीजै दबाय। जब राज बीज निरबीज जाय।
—ऊ. का.

मंवर—देखो 'मौर'

मंस—देखो 'मांस' (रू. भे.)

उ०—१ जंह गिरवर तंह मोरिया, जंह सायर तंह हंस। जंह बाघो तंह भारमलि जंह दारू तंह **मंस**।—आसौ बारहठ

उ०—२ पुनह राम्रे सब पसु अखे, सरेह केम वन **मंस**।
—वात वाढेल कल्यांणसिंघ नगराजोत री

वि०—मांसल, पुष्ट।

उ०—मारू-लंक दुइ अंगुळा, वर नितम्ब उर **मंस**। मल्हपइ मांझ सहेलियां, मांन-सरोवर हंस।—ढो. मा.

मंसचर, मंसचार—देखो 'मांसाचर' (रू. भे.)

उ०—१ झुक परी बरै रेवा काळ कूकै झंपु, चूकै डाक नेरवा गडूकै **मंसचार**। कंठ रूकै कायरां जवांणा लुकै सुकै कई। धुकै प्रांण मुकै के भभक्कै स्रोणधार।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—२ पाड़ि खळ सबळ दळ लियां रण पोढियो, **मंसचरां** मनोरथ लिय मेळा। 'भीम' गजसाहि' निखाहि जुग जुग भेळपण 'भीम' 'गजसाहि' गा भुगति भेळा।
—भीमसिंघ हाडा अर गजसिंह कछवाह री गीत

मंसब—देखो 'मनसब' (रू. भे.)

मंनसबदार—देखो 'मनसबदार' (रू. भे.)

उ०—कै गोळां कै गोळियां, कै तरवारां धार। मरै गडै कबरां महीं, बीबा **मंसबदार**।—बां. दा.

मंसा–सं० स्त्री० [सं० मंशा] १ इच्छा, कामना, लालसा।

उ०—१ राजा खुद हळफळियौ नीचै उतरै पाखती बैठ गयौ। पूछ्यौ—रांणी कांई बात व्ही? थूं ग्रो भेस कीकर धारण करियो। म्हनै तुरत बता, थारी कांई **मंसा** है। म्हैं तुरत पूरण करूं।—फुलवाड़ी

उ०—२ ग्रा भोळी डोकरी तौ ग्रांगळियां रा पेरवा माथै नचावै। ग्रर जठा लग राजाजी री **मंसा** पूरी नीं व्है तठा लग नाचणौ ई पड़ैला।—फुलवाड़ी

२ मर्जी, स्वेच्छा।

उ०—१ जे किणी घरगोड़िया राजपूत रै सागै उण रौ ब्याव व्हियो व्हैतौ तौ नीं वा इत्ता दिन **मंसा** परवांण लापतै रै' पाती ग्रर नीं इण भांत लापतै रह्यां पछै पाछी गांव में पग धर सकती।

—फुलवाड़ी

उ०—२ थां राजावां रै कांई, ज्यूं **मंसा** व्है त्यूं डूंडी फिराय दौ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ म्हांनै धापनै मिठाइयां खावण दै ग्रर थूं थारी **मंसा** मुजब रिपिया ले लेजै।—फुलवाड़ी

३ ग्रभिप्राय, ग्राशय, मतलब।

४ इरादा, संकल्प।

५ मनोरथ।

६ मन, चित्त, बुद्धि।

उ०—ग्रापरी सांनी मिळ जावै तौ म्हैं खुद ई उणनै परसादी चखाय दां। म्हांनै तौ ग्रापरी **मंसा** री कायदौ राखणौ पड़ै। ग्रर वा गैली रांड समझै के म्है उण सूं डरां।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मंछा, मनंछा, मनछा, मनसा, मन्नछा।

ग्रल्पा०—मनसूड़ी।

मंसहार, मंसाहार, मंसाहारी—१ देखो 'मांसाहार' (रू. भे.)

२ देखो 'मांसाहारी' (रू. भे.)

उ०—त्रिपत्तां तियारं, हुए **मंसहारं**। कमाळी कपाळं, रचै रूंड-माळं।—गु. रू. बं.

मंसुख, मंसूख–वि० [ग्र० मंसूख] रद्द, खारिज।

(ग्राज्ञा या निश्चय)

मंसूखा–सं– स्त्री० [ग्र०] मंसूख या रद्द कर दिए जाने की क्रिया या भाव।

मंसूबौ, मंसोबो–सं० पु० [ग्र० मंसूबः] १ विचार, इरादा।

२ संकल्प।

३ ग्रभिलाषा, मनोरथ।

४ योजना।

उ०—बिणियांणी तौ ग्रा कैयनै निरांत सूं ग्रापरी हवेली में गी परी ग्रर चोर बाड़ा में चापळनै बैठग्यौ। ग्राज उण रा मन में खुसी रौ पार नीं हौ। वौ बैठौ बैठो मन में **मंसूबा** बांधण लागौ कै घरै जाताई ग्रेक पक्की हवेली चुणाऊंला।—फुलवाड़ी

५ कल्पना, भावना (विचार)।

उ०—१ दोनूं जणां ग्राखै दिन कुदड़का मारता। नीं तावड़ौ गिणता ग्रर नीं भूख। रेत रा धोरा वांनै सोना रा टीबा ज्यूं लखावता। सांचैली दुनियां नै छोड़ वै सपनां ग्रर **मंसोबां** री दुनियां में ग्रस्ट-पोर सैर करता।—फुलवाड़ी

उ०—२ गूजरी रै कसूंबल ग्रोरणा रा रंग में ग्रांख्यां रा डोळा घोळतौ नाई सोचण लागौ जे नाई री जात में जलम नीं लेय तौ इण राज रौ राजा व्हैतौ तौ"""। पण कुत्तां रौ भुसणौ सुणनै उण रै सगळै **मंसोबां** रौ पोखाळौ व्हैगौ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मनसूबौ, मनसोबौ, मनसोभौ।

मंह—१ देखो 'मांय' (रू. भे.)

उ०—किया रवानां दौलती, वीसळनंद विगोय। क्रपण हिया **मंह** कांगसी, नहि फेरे नर लोय।—बां. दा.

२ देखो 'मैं' (रू. भे.)

मंहगौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

उ०—सो जे सारा भेळा होय चालस्यौ जणां ग्रागै **मंहगा** रहिस्यां रिजक ग्राधो मिळसै।—गोपाळदास गौड री वारता

मंहण—देखो 'महण' रू. भे.)

मंहदड़ली—देखो 'मैंदी' (रू. भे.)

उ०—बनड़ा **मंहदड़ली** दिन च्यार हाथ रचाल्यौ। बनड़ा काज-ळिया दिन च्यार नैण घुळाल्यौ।—लो. गी.

मंहदी—देखो 'मैंदी' (रू. भे.)

उ०—माई म्हांनै सुपना में परणी गुपाळ। राती पीरी चूनर पहरी, **मंहदी** पांन रसाळ।—मीरां

मंहमाइ, मंहमाई—देखो 'महामाया' (रू. भे.)

उ०—**मंहमाइ** चढ़ै प्रगट मयंद, गह करै गमै मेछी मयंद। नीकड़ो काट भाटां निराजि, पींजरै दळां मुगळां ग्रपाजि।

—मा. वचनिका

मंहल—देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—बैठौ रांण्यां रै मांय, **मंहलां** रै मांय। भक्ति छोड़ो जी साळिगरांम की।—मीरां

मंहि, मंही—देखो 'मांय' (रू. भे.)

उ०—१ राजा दास कुसळ हूं रहिया। बैरी सकळ सुजळ **मंहि** बहिया।—सू. प्र.

उ०—२ मांनवियां मन बन मंही, लागी लालच लाय। 'बांका' इण संतोस विण, बीजै केण बुझाय।—बां. दा.

म–सं० पु० [सं० मः] १ समय, काल। २ विष, जहर। ३ विष्णु। ४ ब्रह्म. ५ चन्द्रमा, ६ यम, ७ शिव, ८ राम, ९ हाथी, गज। १० मस्तक। ११ शरीर। १२ युद्ध। १३ समूह (एका.)
१४ मगण गण ऽऽऽ (पिंगल)
१५ मध्यम स्वर (संगीत)
[सं० मं] १६ जल १७ सुख, कुशलता।
सर्व० [सं० अहं] १ सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्त्ता का रूप, मैं।
उ०—दैवइं लिखिउं ते नवि टलइ', वाडव रहिउ विचारि। धीर धरी धर उडितु, हुईडा हवइ म हारि।—मा. कां प्र.
२ 'मैं' शब्द का वह रूप जो उसे प्रथमा और षष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियों के लगने पर प्राप्त होता है।
उ०—१ रे! तैं म-नैं रावजी खनैं ओळभौ दरायौ, पण हमैं वगड़ी वेगी छांडज्यौ।'—द. दा.
उ०—२ सो वसंतसेना सुणै, कहियौ बित्त निकांम। मांनौ गुण दासी म नैं, धनदासी घण धांम।—व भा.
[अव्य०] निषेध सूचक शब्द—मा, मत, नहीं।
उ०—१ धीरा धीरा ठाकुरां, गुम्मर कियां म जाह। महुंगा देसी झूंपड़ा, जै घरि होसी नाह।—हा. झा.
उ०—२ जग दातार जनारदन, गिरधारी गुण गेह। व्रजपत रोटी बांटणां, मोटी-नींद म देह।—बां. दा.
उ०—३ अंडज्ज, स्वेदज्ज जरा उद्भिज्ज। माया सब तूझ म भूलव मुज्झ।—ह. र.
रू० भे०—मं।

मइं–सर्व०—१ मैं।
उ०—१ गौड चौड गाजणउ कनूजउ, मरहठ मइं वसि कीधा। लाड देस नइ सिंधु सवालख, गूजर सोरठ लीधा। मइं लीधा मालव चंदेरी, मांडव सारंगपुर। रिणथंभोर चीडोत्र भलागढ, वली लीउ नागुर।—कां. दे. प्र.
उ०—२ मइं जांणिउ तूं माधवु, पुरिस मन नी आस। गाडर आंणीउ ऊन नइं, खाधु तिणि कपास।—मा. कां. प्र..
२ मुझ।
उ०—१ विरह-विटंबन विधि घणी, सो मइं सही न जाय। मुझ मरवांनुं सोहिलुं वाडव म मारै, माय।—मा. कां. प्र.
उ०—२ जिण दीहे पावस झरइ, बाबीहउ कुरळाइ। तिणि दिन कउ दुख वल्लहा, मइं क्यउं सहणउ जाइ।—ढो. मा.
३ मेरा।
उ०—मइ घरि रहिवउं।—उ. र.
क्रि० वि०—अंदर, भीतर, में।
४ देखो 'मई' (रू. भे.)
रू० भे०—मइ।

मइंगळ—१ देखो 'मदकळ' (रू. भे.)
उ०—१ बारह लक्ख त छइ वड पइदळ। मदिमत्ता चवरासी मइंगळ।
उ०—२ स्यंधासण चढी सांमळौ जी, वइट्ठौ सारंग प्रांण। मइंगळ नई मद पाई ज्यइ जी, दीजई खंभौट्टाण।—रुक्मणी मंगळ

मइंद—देखो 'मयंद' (रू. भे.)
उ०—१ सूतौ लख संसार सब, 'पातल' सूं पुळ-जाय। मरण दसा में मइंद रै, जीव न नेड़ौ जाय।—ऊ. का.
उ०—२ आंखें रोस कसाइयां, किय मूंछां बिय-चंद। चाढ़ै भूंहां बंकियां, कि (र) कणणियौ मइंद।—गु. रू. बं.
उ०— ३ हाडां रा वंस नूं बीजां मैं बधतौ बताइ लाज रूप लंगर रा खैंचिया पैलां रा प्रतिमल्ल मदांलागा मइंद माधांणी मुकुंद सिंघ,मोहणसिंघ, कन्हीरांम, जूझारसिंघ च्यारि ही भाई पैलांनूं जयसंसय जगांइ खागां रा खेल्ह मैं खंड बिहंड होइ बिमांणां बैठा नारियां रै साथ गळबाह कीधां।—वं. भा.

मइ—१ देखो 'मई' (रू. भे.)
उ०—१ जीव संताप्या मइ घणा, पर आसायें वींध। वलि रात्रि भोजन करघा, काज अकारज कीध।—वि. कु.
उ०—२ मइ धणीं! थार मिल्हीय आस। मइला राजा थारउ कीसउ हो वेसास।—बी. दे.
२ देखो 'मय' (रू. भे.)
उ०—दुख दावानल उपसम्यौ, वूठउ अमिय मइ मेह। मुझ आंगणि सुरतरू फल्यउ, भाग भव भ्रमण संदेह।—स. कु.
३ देखो 'महीन' (रू. भे.)

मइण—देखो 'मदन' (रू. भे.)
उ०—१ बत्तीस लखण सुभ आचरण, बाळपणैं हूओ तरुण। कमधज्ज कुंअर कमधज्ज हर, राज हंस मूरति मइण।—गु. रू. बं.
उ०—२ मन मोहन कांमनी, वळै सुरंगां मेह। रंग लुब्ध राचा रहघा, जिम मइण नैं मेह।—ढो. मा.

मइत–सं० पु० [सं० मृतक] शव। (मुसलमान)
रू० भे०—मयत।

मइथळ—देखो 'मैथिळ' (रू. भे.)

मइथळी—देखो 'मैथिळी' (रू. भे.) (अ. मा.)

मइदौ—देखो 'मैदो' (रू. भे.)
उ०—झगरीआ लाडू, माठा लाडू, सिंहकेसरिया लाडू, पाटण तणा कंदोई, घ्रतस्यूं मइदौ मोई वणी सेव पातली।—व. स.

मइमंत, मइमत—देखो 'मैमत' (रू. भे)
उ०—पातिसाह पर भब्बिय आब उतारि अभंगां। कहं गिड़ावि गोमट्ट ताडि आंठुअें तुरंगां। कहं समीर मइमत भोमि लोटइ धाइ भरिया। कहं हडहडइ तुरंग अंग असमरि ऊतरिया।
—रा. ज. सी.

मइयळ—देखो 'महीतळ' (रू. भे.)
उ०—जस गल्ह रहावण जे सहल, **मइयळ** भंजै मेहवर 'गजमल्ल', 'मल्ल' 'गंगै' कुळी रिण दुभल्ल राठौड हर।—गु रु. बं.

मइयौ—देखो 'मईयौ' (रू. भे.)

मइलौ—सर्व०—१ मेरा, मुझको।
उ०—'**मइला**' राजा थारउ कीसउ हो वेसास।—बी. दे.
२ देखो 'मैलौ' (रू. भे.)
उ०—मुख **मइलइ** चितउ उज्जळइ। दुई पगि उतरी कह्यौ हो संदेस।—बी. दे.
३ देखो 'मांयलौ' (रू. भे.) (स्त्री० मइली)

मई–वि०—विनीत, नम्र स्वभाव वाला।
सं० पु०—अंग्रेजी वर्ष का पाचवां महीना।
क्रि० वि०—में।
उ०—भलौ भलौ सारौ जग भाखै, कही न लाई वात कई। मागज घरां वधावण मोटां, मोटी पाघ संसार **मई**।—द. दा.
१ देखो 'मय' (रू. भे.)
उ०—१ सब ही कथा मालम सखी, लधराज कही बुधराज लखी। लख ओज तणा गुण अंग लई, मुणिया सब छंद प्रसाद **मई**।
—पा. प्र.
उ०—२ सिय सोहै अंग बांम हे, हे म्हारी सखी! हे सहेली! सिय सोहै अंग बांम है। जगदंबा महिमा **मई** हे।—गी. रां.
२ देखो 'महीन' (रू. भे.)
३ देखो 'मही' (रू. भे.)
रू० भे०—मइं।

मईथुन—देखो 'मैथुन' (रू. भे.)

मईन—देखो 'महीन' (रू. भे.)

मईनौ—देखो 'महीनौ' (रू. भे)
उ०—भंवारां में पटकियोड़ी मूंडकियां बारै **मईना** तांई अरड़ावती रै'वे।—फुलवाड़ी

मईप—देखो 'महीप' (रू. भे.)

मईस—देखो 'महीस' (रू. भे.)

मईमन—देखो 'महिम्न' (रू. भे.)

मईयौ–सं० पु० [सं० मयः] मादा ऊंठों के झुण्ड में रखा जाने वाला नर ऊंठ।
रू० भे०—मइयौ, मयौ, महियौ, मायौ।

मउंग–सं० पु०—१ एक प्रकार का वाद्य विशेष।
उ०—भंभा **मउंग** मद्दल कंडव झल्लरि दुडुक्क कंसाला। काहुल तिलिमा वंसौ संखौ पणवौ य बारसमौ।—व. स.
२ देखो 'मूंग' (रू. भे.)

मउ—देखो 'महुओ' (रू. भे.)
उ०—आंब फळै नीचौ लुळै, **मउ** फळै पत खोय। जिण रौ रस जे नर पियै, पत्ता कठा सूं होय।—अज्ञात

मउड़—देखो 'मौड़' (रू. भे.)
उ०—छोगौ सिरपेच **मउड़** जोड़ै दड़िए रमै नइ बहसै होड़ै।
—ध. व. ग्रं.

मउड़ौ—१ देखो 'मोड़ौ' (रू. भे.)
उ०—चंद सूरज वीर वांदण आव्या, निरति नहीं निस दीस। अगावती तिण **मउड़ी** आवी, गुरुणी कीधी रीस।—स. कु.
(स्त्री० मउड़ी)
२ देखो 'महुओ' (अल्पा., रू. भे)

मउज—१ देखो 'मौज'।
उ०—साहिबा कांइ **मउज** करौ नइ, साहिबा कांइ मउज करउ। मउज करउ कांइ अंग सुहाता, सुणि सुणि नै बिगताली बातां।—वि. कु.
२ देखो 'मूंज' (रू. भे.)
उ०—कासमीरी बिन्है विराजइ कांने, सांधौ विचइ रहियइ सिंदूर। चढ़ती **मउज** रसण पिण चढ़ती, सेहरां बिजइ ऊगतऊ सूर।—महादेव पारवती री वेलि

मउठ—देखो 'मौठ' (रू. भे)
उ०—सगलइ हुवउ सुगाल, अन्न चिहुं दिसि थी आयउ। आप आपणइ व्यापारी सकौ अधिकारइ लायउ। बाजरी चउंळा **मउठ** के के धांन सुंहगा कीधा। सुंहगा मुंहगा सरब, लोक ते आंणी लीधा।—स. कु.

मउड, मउडि—देखो 'मौड़' (रू. भे)
उ०—१ घर उपइ घरणी, गगन उपइ तरणि, व्रक्ष उपइं पल्लवि, तांबूल उपइ चूरण, वस्त्र उपइ रंगि **मउड़** उपइ मस्तक संगि।
—व. स.
उ० २ समरइ मउडि मउडिइ फुटइं, हारि हार तुटइं, हियउ हियउ दलइं।—व. स.

मउनावणौ, मउनावबौ—देखो 'मनाणौ', 'मनाबौ' (रू. भे)
उ०—सतसील प्रभावइ रे! दुख नइ **मउनावइ** रे, बहु आणंद बधावइ, दिन रयणी गरवइ रे।—प. च. चौ.
मउनावणहार, हारौ, (हारी), **मउनावणियौ**—वि०।
मउनाविओड़ौ, मउनावियोड़ौ, मउनाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मउनावीजणौ, मउनावीजबौ—कर्म वा०

मउनावियोड़ौ—देखो 'मनायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मउनावियोड़ी)

मउर—१ देखो, 'मौड़' (रू. भे.)
२ देखो 'मौर' (रू. भे.)
उ०—१ अंगि अभोखण अच्छियउ, तन सोवत सगळाइ। मारू अंबा **मउर** जिम, कर लगाइ कुंमळाइ।—ढो. मा.

उ०—२ रूपड़ा नउं उठींगणउ, हरिद्रा तणउ रंग पांणी तणउ तरंग दासी तणउ हेज, आंबा तणउ **मउर** कलाल नउ लेखउ।
—व. स.

मउरणौ, मउरबौ—देखो 'मौरणौ' 'मौरबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ढाढी एक संदेसड़उ ढोलइ लगि लइ जाइ। जोवन चांपउ **मउरियउ** कळी न चुट्टइ आइ।—ढो. मा.

उ०—२ **मउरिया** व्रख मसत वसंत मांणवा, चंचळ बांण वनख सिर चाढ़।—महादेव पारवती री वेलि

मउरणहार, हारौ (हारी), **मउरणियौ**—वि०।

मउरिग्रोड़ौ, मउरियोड़ौ, मउरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मउरीजणौ, मउरीजबौ—भाव वा०।

मउरियोड़ौ—देखो 'मौरियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मउरियोड़ी)

मउलसिरी—देखो 'बोलसरी' (रू. भे.)

मउळी—देखो 'मौळी' (रू. भे.)

मउळू, मउळू, मउलू—देखो 'मौळी' (रू. भे)

उ०—रोस चडी कुण ही न मनावीय, रांधती सीधती खारू **मउळू** करइ।—व. स.
(स्त्री० मउळी)

मऊ-सं० पु०—१ मालव प्रदेशान्तर्गत एक प्रसिद्ध स्थान व शहर का नाम।

सं० स्त्री०—२ प्रजा, रय्यत।

उ०—१ गांव घंणा लागै, चवदै चेढीरा। पैहली तौ घंणा गांव वसता। हिमैं गांव १४० बसै छै। १०० पारकर रा धणियां रै। गांव ४० सोढारांम री **मऊ** वसै।—नैणसी

उ०—२ **मऊ** रा टोळा रा टोळा सहर कांनी भाग्या जा रह्या हा। सबराइ बाळ बिखरयोड़ा अर पेट चेंठोड़ा। च्यारूं मेर एक ईज आवाज ही—भूख ! भूख ! भूख !—रातवासौ

रू० भे०—मऊवाड़ौ।

मऊड़ौ—देखो 'महुग्रौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—**मऊड़ौ** लेहरां खाय, कोयलड़ी हद बोली।—लो. गी.

मऊजी—देखो 'माजी' (रू. भे.)

मऊवाड़ौ—देखो 'मऊ' (मह., रू. भे.)

मएडौ-सं० पु०—एक प्रकार का अशुभ रंग का घोड़ा। (शा. हो.)

मग्रोतौ—देखो 'मसोतौ' (रू. भे.)

मकंद-सं० पु०—एक प्रकार का कंद।

उ०—भसम भराडी भभरीया चोलहिरा चांडाल। भू-कोहली भूवतरी कंद **मकंद** विसाल।—मा. कां. प्र.

मकड़—१ देखो 'मत्कुण' (रू. भे.)

२ देखो 'मरकट' (रू. भे.)

मकड़ांण—१ देखो 'मकरांणी' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'मकराणौ' (मह., रू. भे.)

मकड़ी-सं० स्त्री०—१ एक प्रकार का आठ पैरों वाला प्रसिद्ध कीड़ा जो अपने मुंह से लसीला पदार्थ निकालते हुए जाल बुनता है और उसमें फंसे हुए कीट, पतंगों, मक्खियों आदि का रक्त चूसता है।
(डिं. को)

उ०—१ **मकड़ी** का सिर माखी तोड़चा, जंबुक सिंघ जगाया। कुंजर मगर दंत तळ चूरचा, हिरणी चीता खाया।—ह. पु. वां.

उ०—२ मत जकड़ी भव माग, **मकड़ी** जाळा जेम मन। हर द्रढ़ कर पकड़ी हिया, लकड़ी हरी पळ लाग।—र. ज. प्र.

पर्याय०—१ जाळकार। २ जाळिक। ३ मरकट। ४ लूता। ५ लालासाव।

२ एक प्रकार का रोग जो नीचे के होठ पर होता है। इससे होठ में सूजन आ जाती है और उसमें पीप पड़ जाती है।

उ०—झाड़-बोरां जैड़ी छोटी आंख्यां लिलाड़ माथै सा'तेक आडा सळ, मूंडा माथै खत री ठौड़ कांनी कांनी तुग्गियां ऊगोड़ी, निचला होठ माथै **मकड़ी री भगवो चाटो**·······।—फुलवाड़ी

३ एक प्रकार का घास विशेष। (शेखावाटी)

४ हाथी की पीठ पर 'तैहरू' को बांधने के कारण हाथी की पीठ के निचले भाग पर पूंछ से कुछ ऊपर रस्सी की कसावट के कारण पड़ने वाला जख्म या उससे होने वाला दाग।

५ माया। (संत साहित्य)

रू० भे०—मकरी, मक्री, माकड़ी।

मकड़ूद-सं० स्त्री०—बंक, टेढ़ापन, ऐंठ।

उ०—ओध भालां धसण थोग थांनक अरी। **बनी नव जोवनी** रतनगर बाबरी। फौज पतियां मोहर दियां ठरड़ै परी। **कैलपुर** धुद **मकड़ूद** सूधी करी।—महादांन महडू

मकड़ौ-सं० पु० [सं० मर्कट] १ मर्कट के रंग से मिलते जुलते रंग का घोड़ा।

उ०—कुमैत नीला समंदा **मकड़ा** सेली समंद भूवर बोर सोने री कागड़ा गंगाजळ·······अनेक रंग का घोड़ा।—रा. सा. सं.

२ घोड़ा।

३ एक प्रकार का घास विशेष जिसके बीज की रोटी बनती है और उपवास के अवसर पर फलाहार के रूप में खाई जाती है।

रू० भे०—मंकड़ौ।

मह०—मंकड़।

मकतब-सं० पु० [अ० मक्तब] वह स्थान जहां पढ़ना लिखना सिखाया जाता है, पाठशाला, विद्यागृह।

मकतूल-वि० [अ० मक़्तूल] १ जो कत्ल कर दिया गया हो।

२ प्रेमी।

३ देखो 'मखतूळ' (रू. भे.)

मकदूर-सं० पु० [अ० मक़दूर] सामर्थ्य, शक्ति।

उ०—'भारथ' हम से जुध करें, यें ता क्या **मक़दूर**। पाव घरी में हम करें, उसके गढ़ चकचूर।—ला. रा.

रू० भे०—मक्दूर, मगदूर, मग्दूर।

मकदोख-सं० पु०—हीरे का एक दोष। इसके अनुसार हीरे के मध्य में मल होता है। यह अशुभ माना जाता है।

मकनउ, मकनौ—देखो 'मुकनौ' (रू. भे.)

उ०—**मकना** मेकदंत घटा अमळा, किळळंत घूमंत रिणां विकळा।—मा. वचनिका

मकबरौ-सं० पु० [अ० मकबर:] वह इमारत जिसमें किसी का शव दफनाया गया हो, रोजा, मजार।

मकबल-सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—जरजरी, मलबारी, लाछरी, अघोतरी, अभरी, गंगापारी, मोती चूरि, हमरू, मसरू, रत्नकंबल, छाइल, **मकबल**, अगल साउला······।—व. स.

मकबूजा-वि० [अ० मक़बूज़:] जिसपर अधिकार किया गया हो, अधिकृत।

मकरंद-सं०पु० [सं०] १ पुष्परस जिसे मधुमक्खियां और भौंरे चूसते हैं।

उ०—१ स्रीपत चरण सरोज री, गंगाजळ **मकरंद**। अलियळ ज्यूं कर पांन अब, अधिकांवण आणंद।—बां. दा·

उ०—२ अढ़ार भार वनस्पती **मकरंद** फूलादि रा रस मांणतौ थकौ वहै छै।—राजान राउत री बात

२ फूल का केसर, पराग कण।

३ कुंद पुष्प।

४ कोयल।

५ मधु मक्षिका।

६ भ्रमर, भौंरा। (अ. मा.)

उ०—मुख की उपमा कहा कहूं, सरस सुधा को कंद। देखत रत लज्जित भई, भूल रह्यौ **मकरंद**।—कुंवरसी सांखला री वारता

७ प्रत्येक चरण में २१ मात्रा का मात्रिक छद विशेष। (ल पि.)

८ डिंगल गीत 'वेलिया सांणोर का भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ५० लघु ७ गुरु कुल ६४ मात्रायें और अन्य द्वालों में ५० लघु ६ गुरु कुल ६२ मात्रायें होती हैं। (पिं. प्र.)

वि०—श्याम, कृष्ण, काला।

उ०—१ मालव देसावर धणी राजा भीम नरिंद। तास धणी धू माळवी सुंदर सिर **मकरंद**—ढो. मा.

उ०—२ चपळ नैत्र सारंग, रेखां भ्रूंहां **मकरंद**। दीपक नासा दपंत, सरद रैणी मुख इंद्रह।—गु. रू. बं.

रू० भे०—मक्रंद।

मकर-सं० पु० [सं० मकर:] १ बारह राशियों में से दसवीं राशि जिसकी आकृति मकर (जंतु) के समान मानी गई है।

२ घड़ियाल या मगर नामक प्रसिद्ध जल जंतु जो कामदेव की ध्वजा का चिह्न और गंगा तथा जलदेव वरुण का वाहन माना गया है।

उ०—सुर असुर गिर कर स्रवण स्रीवर। तळप परहर असुर चढ तुर। चकरधर मग सधर संचर। सिथळ पर घर जांण ईसर। छांड नगधर धरण दूछर। **मकर** यर सर चकर मोख'र। फंद हर पग सथर कर फिर। बळ सुकर गह सुकर रघुबर, तार सिंधुर तांम।—र. ज. प्र.

३ माघ मास।

४ एक प्रकार का लग्न विशेष। (ज्योतिष)

५ नौ निधियों में से एक निधि। (अ. मा., ह. नां. मा.)

६ मछली। (अ. मा., ह. नां. मा.)

७ एक प्राचीन पर्वत का नाम।

८ रण-स्थल पर सैनिक व्यूह रचना का एक प्रकार। (प्राचीन)

९ मस्ती, उन्माद।

उ०—मदमसत ऊडावै रेत करता **मकर**। आदेवां तेथ घर दसत आवै।—तिलोकजी बारहठ

१० मौज।

११ ऐश्वर्य।

१२ गर्व, अभिमान।

उ०—डरर डोफर डमर अतर भरतौ डकर, अत **मकर** वयण कहतौ अभूभा। पाट रखवाळ 'जैमाळ' हर पचाले, दाख खग वाट रिडमाल दूजा।—पहाड़खां आढ़ौ

१३ छप्पय छंद का ४१ वां भेद जिसमें ३० गुरु ९२ लघु से १२२ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं अथवा ३२ गुरु ८४ लघु से ११६ वर्ण या १४८ मात्राएं होती हैं।

१४ दर्पण।

उ०—१ मुख **मकर** में रैण का 'हरिया' दरसै नांहि। उदय भया जब सूर का मुख परकासै मांहि।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ अै तौ इण भांत खड़िया आवै छै। पण पनां नै तौ ढील न सुहावै छै। आ तौ उकळाइ थकी खिणेक झरोखे खिणेक ढोलियै आवै छै। इण रा आमां सामा फिरबा सूं **मकर** चांनणी कौ सो रूप दरसावै छै।—पनां

[फा० मक्र०] १५ छल, कपट, फरेब।

कहा०—रोटी खाणी सक्कर सूं दुनिया ठगणी **मकर** सूं स्वार्थी होना।

१६ नखरा, अदा।

१७ देखो 'मक्कर' (रू. भे.)

अव्यय रा०—निषेध सूचक शब्द: 'मत कर, ठहर।

रू० भे०—मक्र।

मकरकुंडळ-सं० पु० [सं० मकर कुण्डल] मकर (जंतु) की आकृति का कान का आभूषण विशेष।

मकरकेत, मकरकेतन–सं० पु० [सं० मकरकेतनम्] कामदेव।
रू० भे०—मक्रकेत, मक्रकंत।

मकर केतु–सं० पु० [सं० मकरकेतुः] १ कामदेव।
२ श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का नामान्तर।

मकरधज, मकरधुज, मकरध्वज–सं० पु० [सं० मकरध्वज] १ कामदेव। (अ. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१ **मकरध्वज** वाहणि चढ्यौ अहिमकर, उत्तरवाउ वाए अउर। कमळ बाळि विरहिणी वदन किय, अंबपाळि संजोगि उर। —वेलि
उ०—२ समर मनोज अनंग पंचसर मनपथ मदन **मकरध्वज** मार।—वेलि
२ रस सिंदूर (ओषधि)
३ मछली के गर्भ से उत्पन्न हनुमानजी का एक पुत्र जो अहि-रावण का द्वारपाल था। (पौराणिक)
४ धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो भीम द्वारा मारा गया।

मकरपत, मकरपति, मकरपती–सं० पु० [सं० मकरपति] १ कामदेव।
२ ग्राह, मगरराज।

मकरमोयौ–सं० पु०—कम घी के साथ आटे को भूंनकर बनाया हुआ चूरमा।

मकररासि–सं० पु० [सं० मकरराशिः] बारह राशियों में दशवीं राशि जो मकर के आकार की होती है। (नां मा)
उ०—१ रवि मीन रासि सनि करक राह। अरू **मकररासि** केतह अथाह।—सू प्र.
उ०—२ रवि **मकररासि** निवास राजत उत्तर मगहर अनुसरै। —रा. रू

मकरव्यूह–सं० पु० [सं० मकरः+व्यूहः] मकर के आकार की की जाने वाली एक प्रकार की सैनिक व्यूह रचना विशेष। (प्राचीन)

मकरसंकरांत, मकरसंकरांयत, मकरसंक्रांत, मकरसंक्रांति, मकरसक्रांयत–सं० स्त्री० यौ०—मकर राशि में सूर्य का प्रवेश होने का दिन तथा इस दिन पर मनाया जाने वाला पर्व।
उ०—तठा उपरांति राजांन सिलांमति उण रित मांहै सूरजजी पणि **मकरसंक्रांत** भेळा हुआ छै।—रा. सा सं.
उ०—२ अहिमकर कहतां सूरथ जब **मकरसंक्रांति** आंणि चढ्यौ, तब उत्तर कौ वाउ प्रबळ बाजण लागौ।—वेलि टी.
उ०—**मकर संक्रायत** बैठी भारी, क्षत्रिय हित लागी अतिखारी भू पर ब्राह्मण भये भिखारी, हे प्रवेस करणी हतियारी।—ऊ. का.

मकरसातम–सं० स्त्री० [सं० मकर सप्तमी] माघशुक्ला सप्तमी।

मकरांण—१ बलुचिस्तान के समीप के प्रदेश का नाम, मकरान।
उ०—मिळै नहीं **मकरांण** ताज केच मांभल तुरी। जेहलियै घण जांण, मौजां दियण मंगाविया।—बां. दा.
२ देखो 'मकरांणी' (मह., रू. भे.)
३ देखो मकरांणौ' (मह., रू. भे.)

मकरांणी–सं० पु०—१ बलुचिस्तान के समीप मकरान प्रदेश का व्यक्ति।
२ उक्त प्रदेश का एक प्रकार का प्रसिद्ध घोड़ा।
३ मकरान प्रदेश में रहने वाले व्यक्तियों की एक जाति।
रू० भे०—मकडांण' मकरांण'।
वि०—मकराने का, मकराना संबंधी।

मकरांणौ–सं० पु०—१ बलुचिस्तान के समीप का मकरान नाम का एक प्रदेश।
२ राजस्थान प्रान्त के नागौर जिले का एक नगर जो संगमरमर नामक प्रसिद्ध पत्थर की खान के लिए प्रसिद्ध है।
३ संगमरमर नामक प्रसिद्ध पत्थर जो मकराना नगर के समीप की खानों में पाया जाता है।
उ०—तिण समै रतनां रा रैवास मैं एक **मकरांणा** रौ महल है, जिण में इण री घणी सारी सहल है। सू इण री पगथलियांरा प्रतब्यंब हूं फरस तौ मूंगियां री छिब पावै है।—र. हमीर
वि०—मकराने का।
रू० भे०—मकडांण, मकरांण।

मकराई–सं० स्त्री० [अ० मक्र+रा० प्र० ई०] १ धूर्तता, ठगाई।
२ छल, कपट।
३ गर्व, अभिमान।

मकराक—देखो 'मकराक्ष' (रू. भे.)

मकराकर–सं० पु० [सं० मकर+आकर] १ समुद्र, सागर। (डिं. को.)
उ०—जिण समय दो ही फौजां रा हिलोळा समुद्र रे समांण प्रमांण में आया अर तोपां री गाज हूं सेस रा सीसां समेत **मकराकर** मेखळा मही रै मचोळा लगाया।—वं. भा.

मकराक्रत, मकराक्रिति–वि० [सं० मकर+आकृत] मकर (जंतु) की आकृति के अनुसार बना हुआ।
उ०—सुंदर स्यांम मनोहर मूरत, सोभा अधिक अपार। क्रीट मुकुट **मकराक्रत** कुंडळ, गळ पुस्पन को हार।—मीरां
उ०—२ हां रे सखी देख्यौ री नंद किसोर। मोर मुकुट **मकराक्रिति** कुंडळ. पीतांबर भणक हरोळ।—मीरां

मकराक्ष, मकराख, मकराख्य–सं० पु० [सं० मकराक्ष] लंकापति रावण के भतीजे का नाम जो खर नामक राक्षस का पुत्र था।
उ०—१ मारै तैं बार किता मकराख, सानुज्ज उबारै बेदां साख। —ह. र.
उ०—२ नमो मकरारख्य इंद्रजीत मार, नमो सब राकस बंस संहार।—ह. र.
रू० भे०—मकराक।

मकराळ, मकरालय–सं० पु० [सं० मकरालय] समुद्र, सागर।

मकराव-सं० पु०—सागर ।
उ०—विद्या रतन पसाव वीदगां, दाताराव भाव दरियाव । कीरत नाव धाव चहुंकानीं, कायब जळमाळ **मकराव** ।—क. कु. षो.

मकरासन-सं० पु० [सं०] हाथ और पैर पीठ की ओर कर लेने का एक आसन । (तांत्रिक)

मकरासव, मकरास्य-सं० पु० [सं० मकराश्व] वरुण ।

मकरी-सं० स्त्री०—मछली ।
वि०—१ अभिमानी, गर्व करने वाला ।
२ टेढ़ी, तिरछी, व्यंगपूर्ण ।
उ०—बाबहिया बग चंचड़ी, बोल्यौ **मकरी** वांण । कांइ बोलंतौ मुस्ट करे, कै परदेसी पिव आंण ।—ढो. मा.
देखो 'मकड़ी' (रू. भे.)
रू० भे०—मक्री ।

मकरूह-वि०—अपवित्र, घृणित ।

मकरोणौ, मकरोबौ—थोड़े घी में आटा, मैदा या बेसन भूनना या भून कर कोई खाद्य पदार्थ बनाना । (अमरत)
मकरोणहार, हारौ (हारी), **मकरोणियौ**—वि० ।
मकरोयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
मकरोवीजणौ, मकरोवीजबौ—कर्म वा० ।

मकरोयोड़ौ—थोड़े घी में आटा, बेसन या मैदा भुना हुआ या भूनकर कोई खाद्य पदार्थ बनाया हुआ ।
(स्त्री० मकरोयोड़ी)

मकरोवणौ, मकरोवबौ—देखो 'मकरोणौ, मकरोबौ' (रू. भे.)
मकरोवणहार, हारौ (हारी), **मकरोवणियौ**—वि० ।
मकरोविप्रोड़ौ, मकरोवियोड़ौ, मकरोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मकरोवीजणौ, मकरोवीजबौ—कर्म वा० ।

मकळ—देखो 'मक्कळ' (रू. भे.)

मकवांण, मकवांणा-सं० स्त्री०—१ झालावंश की एक शाखा ।
रू० भे०—मंकवांणा, मंकुवांणा, मकुआंण, मकुआंणा ।

मकवांणौ-सं० पु०—झाला वंश की मकवांण शाखा का व्यक्ति ।
रू० भे०—मंकवांणौ, मकुआंणौ ।

मकवौ-सं० पु०—१ मक्का अनाज का वह पौधा जो भुट्टा लगने के पूर्व की अवस्था में हो ।
२ एक प्रकार का पौधा विशेष ।

मकसद, मकसब-सं० पु० [अ० मक्सिद] १ उद्देश्य ।
२ मंशा, इच्छा ।
उ०—तरै केहीक गांव राव सातल केलवा सूं वरसिंघ नूं जोधपुर रा दिया तिके सुणीया, कही आपरौ **मकसद** कीयौ, मांहरी पेसकसी राखी सु कुण वासतै ।—नैणसी
३ आशय, तात्पर्य ।

मकसूद-सं० पु० [अ० मक्सूद] १ अभिप्रेत, उद्दिष्ट ।
उ०—१ हक हासिल नूर दीदम, करारे **मकसूद** । दीदार दरिया ऊरवाहै आंमद मौजूदे मौजूद ।—दादूबांणी
उ०—२ दरबार दोजिक गरक गुरमां मनी मारै मीर । महर का **मकसूद** एही, पड़द पोसै पीर ।—ह. पु. वां.
२ कामना, इच्छा, ख्वाहिश ।
उ०—मेरे एक तूं रहमांन, **मकसूद** मेरी प्रीति तुझ सूं । और सूं क्या कांम ।—ह. पु. वां.
रू० भे०—मखसूद ।

मकांन-सं० पु० [अ० मकान] १ भवन, गृह ।
उ०—पछै ब्याव क्यूं करौ ? मरियां किसा मकांन साथै चालै, पछै **मकांन** क्यूं चुणावौ ?— फुलवाड़ी
२ रहने की जगह, निवास स्थान, आवास ।
उ०—रूड़े तीरथ राज रै, नित जळ कीजै न्हांन । तो पिण न हुए पाकतन, मूळ पुरीख **मकांन** ।—बां. दा.
रू० भे०—मुकांन, मुकांम ।

मकांम—१ देखो 'मुकाम' (रू. भे.)
उ०—मौजूद खबर मावूद खबर, अखाह खबर वजूद । **मकांम** चे चीज हस्त, दादनी सजूद ।—दादूबांणी
२ देखो 'मकांन' (रू. भे.)

मकाई-वि० [अ० मक्का+रा० प्र० ई] मक्के का, मक्का सम्बन्धी ।
सं० पु०—मक्के का निवासी ।
उ०—मीर पाक ऐराक **मकाई**, तुरक सगुर जस थांनी ताई ।
—रा. रू.
देखो 'मक्की' (रू. भे.)

मकाय—देखो 'मकोय' (रू. भे.)

मकार-सं० पु०—१ देवनागरी लिपि का 'म' अक्षर ।
उ०—मनी मन मांह रकार **मकार**, लगा धक धूंनन की ललकार ।
—ऊ. का.
२ पिंगल में मगण का संक्षिप्त रूप ।
३ देखो 'मक्कार' (रू. भे.)

मकाळ-सं० स्त्री०—१ शीत काल में ताप सेंकने के लिए आग जलाने का एक पात्र विशेष ।
उ०—उतराध रौ पवन ऊनांमळो टीयां खाइनै रहीयो छै । तिणि रीति मांहै छोह ढाळियां ऊंडा मोहरां मांहै ऊंडा तहखांना मांहै खैर कोइलां री **मकाळां** जगाड़ी छै ।—रा. सा. सं.

मकियारणौ—देखो 'मखिआरणौ' (रू. भे.)

मकियौ-सं० पु०—१ मक्का अनाज के पौधे के लगने वाला भुट्टा जिसे सेक कर खाया जाता है ।
२ स्त्रियों द्वारा धारण किया जाने वाला पैरों का आभूषण विशेष ।
३ पुरुषेन्द्रियां, शिश्न (बाजारू) ।
क्रि० प्र०—घलावणौ, घालणौ, मेलणौ ।

मकी—देखो 'मक्की' (रू. भे.)

उ०—बाबा म देई माळवै, जिण देसे कुकंख। जव **मकी** रौ खावणौ, मांणस नहीं ते मूक।—ढो. मा.

मकीचूस—देखो 'मक्खीचूस' (रू. भे.)

मकुंद—देखो 'मुकुंद' (रू. भे.)

मकुग्रांण, मकुग्रांणा—देखो 'मकवांण' (रू. भे.)

मकुग्रांणौ—देखो 'मकवांणौ' (रू. भे.)

मकुट—देखो 'मुकुट' (रू. भे.)

मकुनौ—देखो 'मुकुनौ' (रू. भे.)

मकुर—देखो 'मुकुर' (रू. भे.)

मकूनीरोटी–सं० स्त्री०—गेहूं व चने के आटे के मिश्रण से बनी रोटी।

उ०—जिण बगत इक्कीस मांगिगर हाथियां रै निजरांणा री बात सुणनै रांणीजी खुसी में बावळा सा हैण लागा। उण बगत इस्दूखां आपरी टूटी-टपरी में बैठौ लूखी **मकूनी** रोटी मिरचां री चटणी सूं भोटतौ हौ अर मिरचां री बळत रै कारण सूसाड़ा करतो हौ।—फुलवाड़ी

मकैसरीफ—देखो 'मक्कासरीफ' (रू. भे.)

मकोड़ी–सं० स्त्री०—चींटी।

उ०—**मकोड़ी** कीट पतंग मुणाळ, भिखंग तुं हीज तुं हीज भुवाळ। —ह. र.

मकोड़ौ–सं० पु०—१ लोह पर खुदाई करने का एक औजार विशेष।

२ देखो 'मौकौ' (अल्पा., (रू. भे.)

रू० भे०—मकोडउ।

मकोट–सं० पु०—चींटा, मकोड़ा।

मकोडउ—१ देखो 'मौकौ' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'मकोड़ौ' (रू. भे.)

मकोय–सं० पु०—एक प्रकार का क्षुप विशेष जो काकमाची के नाम से भी जाना जाता है और औषधि में काम आता है।

रू० भे०—मकाय, मकौ।

मकौ–सं० पु०—'मैंने कहा' का संक्षिप्त रूप।

देखो 'मौकौ' (रू. भे.)

देखो 'मकोय' (रू. भे.) (अमरत)

देखो 'मक्कासरीफ'

रू० भे०—मक्कौ।

मक्क—देखो 'मौकौ' (रू. भे.)

मक्कड़—देखो 'मरकट' (रू. भे.)

२ देखो 'मत्कुण' (रू. भे.)

मक्कर–सं० पु०—१ गर्व, अभिमान।

उ०—तज **मक्कर** फक्कर तसूं, उर सुध करखे रांत अपंदे। वस करदे इंद्री अवस, तन मभी तप सीळ तप्पंदे।—र. ज. प्र.

२ छल, ढोंग, पाखंड, धूर्तता, फरेब।

उ०—तद कान्हौ बोल्यौ तमक, मत करणा **मक्कर**। बीरोटण पण देखतां, नंह सोभ चढै नर।—ठाकुर जुंझारसिंह मेड़तियौ

उ०—खड़गस खपर हाथ लियां। मुख बीड़ी **मक्कर** मुख ऊपर चख्खियां।—मा. वचनिका

४ देखो 'मकर' (रू. भे.)

मक्कळ–सं० पु० [सं० मक्कल्लः] प्रसव के पश्चात् जच्चा के नाभि के नीचे पसळी, मूत्राशय तथा उसके ऊपर वायु की ग्रंथी बनने से होने वाला दर्द। (अमरत)

रू० भे०—मकळ।

मक्कार–वि० [अ०] धोखा देने वाला, कपटी, धूर्त, कृतघ्न।

रू० भे०—मकार।

मक्कारी–सं० स्त्री० [अ० मक्कार+रा० प्र० ई] धोखा देने की प्रवृति या कार्य। छल, कपट।

मक्कासरीफ–सं० पु० [अ० मक्कः] हजरत मुहम्मद साहब का जन्म स्थान, जहां मुसलमान हज के लिए एकत्रित होते हैं।

उ०—गरीबपरवर मक्का सरीफ री यात्रा में चैन चाहिजै। —नी. प्र.

रू० भे०—मकै सरीफ, मकौ, मक्कैसरीफ।

मक्की–सं० स्त्री० [देशज] १ एक प्रसिद्ध अन्न जिसका पौधा ज्वार व बाजरी के पौधे के समान ही ५-६ फीट ऊंचा होता है। इसके भुट्टे में इस अन्न के दाने लगते हैं।

रू० भे०—मकई, मकी।

२ देखो 'माखी' (रू. भे.)

मक्कीचूस—देखो 'मक्खीचूस' (रू. भे.)

मक्कुन–सं० पु०—जांघ का कवच।

उ०—हडौती हाजिर भई कटिबंध कसाया। हूरां सूरां सत्थ ही वर साज बनाया। यों जावक लग्गै चरन यों लंगर लाया। यों नेडर पग अंकुरै यों **मक्कुन** आया।—वं. भा.

मक्कैसरीफ—देखो 'मक्कासरीफ' (रू. भे.)

मक्कौ–सं० पु० [अ० मक्कः] १ देखो 'मक्का सरीफ'।

उ०—अल्लाह मुहम्मद सिर उठाय, मगरिबै **मक्के** मन्नत मनाय। —ऊ. का.

२ देखो 'मकौ' (रू. भे.)

मक्खण—देखो 'माखण' (रू. भे.) (डिं. को.)

मक्खी—देखो 'माखी' (रू. भे.)

मक्खीचूस–वि० [सं० मक्षिका+राज० चूसणौ] अति कृपण, महा-कंजूस।

रू० भे०—मकीचूस।

मक्खीमार—देखो 'माखीमार' (रू. भे.)

मक्दूर—देखो 'मकदूर' (रू. भे.)

मक्रंद—देखो 'मकरंद' (रू. भे.)

उ०—पाए सुचंग स्यांम पाट, पै कनंक नूपरं। मक्रंद कंज रक्खिमांन, पीत भौर ऊपरं।—सू. प्र.

मक्र—देखो 'मकर' (रू. भे.)

उ०—१ माता कर मक्र लहै चक्र मोख। तिलत्तिल अंग न जंग संतोख।—मे. म.

उ०—२ मक्र सीस मेटवा, चक्र ही कोप चलावै। कनां सक्र कर क्रोध, वज्र पहाड़ां पठावै।—र. ज. प्र.

उ०—३ दिसा दिसा न मांन तोप मांननी दगै नहीं। अडोळ चक्र नक्र मक्र ग्रांनती अगै नहीं।—ऊ. का.

मक्रकेत, मक्रकेत—देखो 'मकरकेत' (रू. भे.) (डिं. को.)

उ०—१ सिधांराव रै गणेस अधां राव रै दिनेस सोहै। जोध बळी राव रै लंकेस रौ है जेम। त्रिळोक राव रै मक्रकेत तायजादौ तेम। उम्मेदराव रै 'अजौ' रायजादौ येम।

—रावराजा अजीतसिंह रौ गीत

उ०—करां मक्रकेत रै लचोला लेती तूजी किना, नक्र रै मंचोळा हूं हचोळा लेती नाव।—र. हमीर

मक्री—देखो 'मकरी' (रू. भे.)

मक्षिका–सं० स्त्री० [सं०] १ मक्खी।

२ मधुमक्खी।

मक्सी–सं० पु०—१ सब्ज रंग का घोड़ा जिसके शरीर पर काले चक्र या दाग होते हैं।

२ श्याम रंग का घोड़ा।

मख–सं० पु० [सं०] १ यज्ञ। (अ. मा., ह. ना. मां)

उ०—१ मुनि कीधौ आरंभै मख, बलि रघुवीर दुबाह।

—रांमरासौ

उ०—२ वहिया मख रिख ठोड़ ठोड़, काडे भय कोड़।

—र. ज. प्र.

रू० भे०—मंख, मख्ख।

२ देखो 'माखौ' (मह., रू. भे.)

मखडपाव–सं० पु०—वह घोड़ा जिसके पांव चलते या दौड़ते समय जमीन में धंसते हों। (अशुभ) (शा. हो.)

मखण—'देखो 'माखण' (रू. भे.)

मखणी–सं० पु० [देशज] एक प्रकार का घास विशेष। (जयसलमेर)

अल्पा०—'माखणियौ'।

मखतूळ–सं० पु० [सं० महर्घतूल] काला रेशम।

उ०—१ भूलां मखतूळ जमा जळ भाग। पगप्पग होत उद्योत प्रयाग।—मे. म.

उ०—२ खाती रा गोळ चंदण रौ रुख काट लाजै रंग रौ ढोलियौ, आया पाया रतन जड़ाव ईसां ढ़ळावौ जाभा हींगळू। चमचीर बेभ बणाव दावण घलावौ मखतूळ री। सूआ वरणी सोड़ भराय गाल मसीरा गादी गींड़वा।—लो. गी.

रू० भे०—मकतूल, मखहूळ।

मखतूळी–वि०—१ काले रेशम का।

सं० पु०—२ एक प्रका का घास जिसके पत्तों व बीजों से भीनी भीनी सुगन्ध आती है।

उ०—सुण सुण रे जोधांणा रा तेली, ओ घांणी काढ़ौ केसर ने किस्तुरी। ओ मांय घालौ मरवौ ने मखतूळी हो।—लो. गी.

मखत्राता–सं० पु० [सं०] १ यज्ञ की रक्षा करने वाला, यज्ञ रक्षक।

२ श्री रामचन्द्र भगवान का नामान्तर।

मखदूम–सं० पु० [अ० मख़दूम] (स्त्री० मख़दूमा] १ वह जिसकी सेवा या खिदमत की जाय।

२ मालिक, स्वामी, पूज्य।

३ एक प्रकार के मुसलमान धर्माधिकारी।

उ०—अरथ कर नवां फुरमांण री आयतां, लियां कर साह रै कांन लागै। कहै मखदूम जग हेक मजहब करौ, 'जसौ' हिंदू धरम मदत जागै।—नरहरदास बारहठ

मखदोखी, मखद्वेसी, मखधेखी, मखधेसी–सं० पु० [सं० मखदोषिन्]

१ राक्षस, असुर। (नां. मा.)

२ शिव का एक नामान्तर। (अ. मा.)

मखन—देखो 'माखण' (रू. भे.)

मखनाथ–सं० पु० [सं०] विष्णु का एक नामान्तर।

मखमल–सं० पु० [अ० मख़मल] [वि० मख़मली] बहुत चिकना व रोंएदार एक प्रकार का प्रसिद्ध कपड़ा।

उ०—वां इंडां सूं मखमल री जात फूटरा रूपाळा बिचिया निकळिया।—फुलवाड़ी।

रू० भे०—मखमली, मुखमल।

मखमली–वि० [अ० मखमल+रा० प्र० ई] १ मखमल का, मखमल सम्बन्धी।

२ मखमल के समान, मुलायम।

३ देखो 'मखमल' (रू. भे.)

मखयारणौ—देखो 'मखिआरणौ' (रू. भे०)

मखरक्षक–सं० पु० [सं०] १ यज्ञ की रक्षा करने वाला।

२ श्री रामचन्द्र भगवान का एक नामान्तर। (नां. मा.)

मखवाळ–सं० पु० [सं० मख+आलुच] यज्ञ करने वाला, ऋषि।

उ०—आयौ ग्रह 'अभसाह' अटकि फौजां उजबंकी। अवधि जेम आवियौ, रांम परणै जांनकी। गांजि फरसि असपती, भांजि धांनंख मुदफ्फर। मखवाळा मंडळी, करै सगळा राजिंदर। राजा 'अजीत' दसरत्थ ज्यौं, सुत सजीत परखै सही। वारणा लिए 'अभसाह' रा, जणणी कौसल्या जिही।—रा. रू.

मखसाळा–सं० स्त्री० [सं० मखशाला] यज्ञशाला।

मखसूद—देखो 'मकसूद' (रू. भे.)

उ०—हिवै मालदेव विचारण पड़ियौ जु किराड़ वात कहीं। दीठौ

कासू कीजै। बिना **मखसूद** उपाव हुवां जे लड़ीजै छै त, ई बात बेसूली।—अमीपाळ साह री वात

मखहूळ—देखो 'मखतूळ' (रू. भे.)

उ०—केसां रा जूड़ा बांधीजे छै, ऊपरा **मखहूळ** रा डोरा बांधीजै छै।—रा. सा. सं.

मखांणौ–सं० पु०—१ तिल, इलायची, पोस्त के दाने को चीनी में पाग कर तैयार की जाने वाली मिठाई।

२ देखो 'तालमखांणौ'।

मखारणौ—देखो 'मखिआरणौ' (रू. भे.)

मखालय–सं० पु० [सं०] यज्ञशाला।

मखिअारणौ–सं० पु० [सं० मक्षिका+आवरण, मुख+आभरण] झल्लरी के आकार का चमड़े या सूत का बना एक प्रकार का उपकरण विशेष जो घोड़े व बैल के मुख पर शोभा बढ़ाने तथा मक्खियों से रक्षा करने हेतु बांधा जाता है, तिल्हारी।

रू० भे०—मकियारणौ, मखयारणौ, मखारणौ, मखियारणौ।

मखिका–सं० स्त्री०—एक प्रकार का शस्त्र। (व. स.)

मखियारणौ—देखो 'मखिआरणौ' (रू. भे.)

मखी—देखो 'माखी' (रू. भे.)

मखेस–सं० पु० [सं० मख+ईश] राजसूय यज्ञ।

मखोळ, मखोल—देखो 'मखौळ' (रू भे.)

मखोळियौ—देखो 'मखौळियौ' (रू. भे)

मखौळ, मखोल–सं० पु०—मजेदार तथा व्यंगपूर्ण बात जो प्रायः किसी को हास्यास्पद बनाने के लिए कही जाती है।

रू० भे०—मखोळ, मखोल।

मखौळियौ–वि०—मजेदार बात या मजाक करने वाला। व्यंगपूर्ण चुटकी लेने वाला, मखौल करने वाला, मसखरा।

रू० भे० 'मखोळियौ'।

मख्ख–सं० पु० [सं० मधुकं] १ मधु, शहद।

उ०—अहर, पयोहर, दुइ नयण मीठा जेहा **मख्ख**। ढोला, एही मारूई जांणे मीठी दख्ख।—ढो. मा.

२ देखो 'मख' (रू. भे)

उ०—देवी जम्मणी **मख्ख** आहूति ज्वाला। देवी वाहिनी मंत्र लीला विसाला।—देवि.

मग–सं० पु० [स० मंग् (गति)+अच, पृषो० सिद्धि] १ मगध देश।

२ मगध देश का निवासी।

३ भोजक जाति के ब्राह्मणों के अनुसार शाकद्वीप के चार वर्णों में से एक वर्ण। (मा. म.)

४ देखो 'मूंग' (रू. भे.)

उ०—**मग** गोधूमादि, दियै, प्रथवी रतन सुरंग।—बि. कु.

५ देखो 'मारग' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ धुर घण घटा जिही **मग** छायौ। औरंग वळै अजैगढ़ आयौ।—रा. रू.

उ०—२ करणौ सो अब ही कियौ, मरणौ वेस महीप। दिल्ली **मग** मोनूं दहे, दीजे पग कुळदीप।—वं. भा.

रू० भे०—मगस।

मगज–सं० पु० [अ० मग्ज] मस्तिष्क, दिमाग।

उ०—ऊंडा वेरा सूं चिड़ी नै काढ़ै तो कीकर काढ़ै कांई जुगत बिठावै। कीं **मगज** में बैठी नीं।—फुलवाड़ी

मुहा०—१ मगज खपाणौ=किसी समस्या के हल के लिए दिमागी जोर लगाना। बहुत अधिक सोचना। २ मगज खाणौ=व्यर्थ की बकझक कर किसी को परेशान करना। ३ मगज खाली करणौ=व्यर्थ की बकझक कर अपने दिमाग को परेशान करना या मस्तिष्क थकाना। ४ मगज चाटणौ=देखो 'मगज खाणौ'। ५ मगज पचाणौ=व्यर्थ की सिर पच्ची करना। ६ मगज फिरणौ=मानसिक संतुलन बिगड़ना, पागलपन का असर होना। ७ मगज भरणौ=किसी को बहकाना, गुमराह करना। ८ मगज मारणौ=देखो 'मगजपचाणौ'।

२ फल आदि के अन्दर का गूदा, गिरी।

३ गर्व, अभिमान।

उ०—१ साह मिळै निज **मगज** सवायौ। 'अजन' विदा हुय डेरां आयौ। दोनूं राह गात छत देखै। लखि गति सकळ सिरै दुति लेखै।—रा. रू.

उ०—२ मिणधर विख अण माव, मोटा नह धारै **मगज**। वीछू पूंछ वणाव, राखै सिर पर राजिया।—किरपारांम

४ रौब, दबदबा।

५ देखो 'मगद' (रू. भे.)

उ०—जद तेली री बेटी नूं भीतर बुलाय एक आछौ बेस आदा मण **मगज** खाजा दस रुपिया गहणां रा और उण तेली नूं सिर पाव दियौ।—ठाकुर जेतसिंह री वारता

रू० भे०—मग्गज।

मगजचट—वि० [अ० मग्ज्+राज० चाटणौ] बहुत बातूनी, बकवास करने वाला, बकवादी।

मगजचट्टी–सं० स्त्री०—बकवाद, बकझक।

मगजपच्ची—देखो 'मगजमारी'।

मगजमारी–सं० स्त्री०—मग्ज पच्ची करने की क्रिया, सिर पच्ची।

मगजाई–सं० स्त्री० [अ० मग्ज+रा० प्र० आई] १ गर्व अभिमान।

उ०—महितल **मगजाई** मेलै थळ मेली।—ऊ. का.

२ गौरव।

उ०—पेट मांय खोटी पुळ पड़ियौ, मेटण कुळ **मगजाई** नै।
—ऊ. का.

रू० भे०—'मंगजाई'।

मगजी-सं० स्त्री० [अ० मग़ज+रा० प्र० ई] १ गर्व, अभिमान।
उ०—१ तुटै कळा छूटै ठोड़ ठोड री खंचांणी तोपां, लाखां हाडां गोड़ री कुरम्भां आडी लीक। जोड रा ठिकांणा घणां **मगजी** मेल दी जठै, तठै रही रौठौड़ री हेक चोक-लीक।—नवळजी लाळस
उ०—२ रायसींग जैमींग सूं मिळतौ **मगजी** राखे। दाखै दवागीरां हूंता नरमीं दैसोत।—रायसींग रौ गीत
२ किसी वस्त्र में सिलाई के साथ निकाली गई किनारी।
क्रि० प्र०—कढ़ाणी, घालणी।

मगजू-सं० पु०—ढोल का एक उपकरण।

मगण-सं० पु० [सं०] छंद शास्त्र के आठ गणों में से एक जिसमें तीन गुरु वर्ण होते हैं।
वि०—देखो 'मगन' (रू. भे.)

मगत—देखो 'मंगतौ' (मह., रू. भे)

मगतजण-सं० पु० [सं० मार्गण+याचना] याचक।
रू० भे० मंगतजण।

मगतौ—देखो 'मंगतौ' (रू. भे)
उ०—रांणं म्हांनै ऐडी कही महाराज, **मगतण** होय मीरां जगत लजायो, कीन्हो सारो काज।—मीरां
(स्त्री. मगतण, मगती)

मगथग्ग-वि० [सं० मार्ग+राज० थग्ग] लड़खड़ाता हुआ।
उ०—जड़लग्ग प्रलग्ग अलग्ग भळै। **मगथग्ग** वळै पग डग्ग मिळै।
—पा. प्र.

मगद-सं० पु० [मगध=परिवेष्ठने] १ मैदे को घी के साथ सेक उसमें उचित मात्रा में शक्कर मिला कर बनाया हुआ सुस्वादु बुरबुरा व्यंजन विशेष।
उ०—गढ़ से तो मीरांबाई उतरया जी, हाथ में **मगद** को थाळ।
—मीरां
उ०—२ तताऊ घेवर, पायल घेबर, तल्या गुंद, कुंडलाकृत जळेबी, मीठउ **मगद**, आछुमाळ निगद, प्रीस्यु सीरु, जीमतां मन हुई अधीरु।
—व. स.
२ देखो 'मगध' (रू. भे.)
रू० भे०—मगज, मगदळ, मगध।

मगदळ, मगदल-सं० पु० [देशज] १ उड़द या मूंग के आटे को घी में भूनकर उसमें शक्कर मिलाकर बनाया जाने वाला एक प्रकार का व्यंजन विशेष।
२ देखो 'मगद' (रू. भे)
उ०—उत्तरतां घेवर, तळ्या गूंद कुंडळाकृत जळेबी, सीरा लापसी, मीठउ **मगदळ**, साकर नूं चूरमुं ······ ।—व. स.

मगदूर—देखो 'मकदूर' (रू. भे.)
उ०—१ नटस्यूं तौं हूं नठस्यूं, जावो पधारो, कोनी घालूं आटो। मूंडो **मगदूर** बापड़ी रो कै म्हारै थकां आ नटै।—फुलवाड़ी
उ०—२ मूंडो **मगदूर** बापड़ा रो के म्हारै थकां कोई म्हारो खेत भेळाय दे।—फुलवाड़ी

मगध-सं० पु० [सं०] १ दक्षिणी बिहार का प्राचीन नाम। (डिं. को.)
२ देखो 'मगद' (रू. भे)
रू० भे०—मगद्ध, मगह, मगहर, मगेहर, मागध।

मगधपति-सं० पु० यौ० [सं०] १ मगध देश का राजा।
२ जरासंध का नामान्तर।
रू० भे०—मगहपति।

मगधवरण्णसर—एक प्रकार का आभूषण।
उ०—जालक मानक गोपुच्छक उरस्त्रिक **मगधवरण्णसर** कदंबपुस्प कलल भंगक अभ्रमेसक नुटक।—व. स.

मगधांण-सं० स्त्री०—मूर्खता।
उ०—मुगळांण मुगध बुद्धी, कि गुर सब्द साधु उपदेसो। दिन्न मेक उदधि रहणो, नह मूंचित **मगधांण**।—गु. रू. बं.

मगधेस, मगधेस्वर-सं० पु० [सं० मगधेश, मगधेश्वर] जरासंध का नामान्तर।

मगन—देखो 'मग्न' (रू भे)
उ०—१ राजकंवर आज पैं'ली इण गत रो खिलको नीं देखियो हो इण खातर वो अणूंता कोड सूं सगळो तमासो देखण में **मगन** हो।—फुलवाड़ी
उ०—२ लीला बिना **मगन** होय रे'ता, नहीं नगर नहिं नांमा। अपना सहज आप नित जांणे, नहिं कोई कांम अकांमा।
—स्री हरिरांमजी
उ०—३ मद पांन **मगन** मांदा रहै, देय हकीमां दांन जू। परणी तज पातर रखै, खग गुणां री खांन जू।—ऊ. का.
रू० भे०—मगण।

मगनता-सं० स्त्री० [सं० मग्न+रा० प्र० ता] १ प्रसन्नता, हर्ष, खुशी।
उ०—तद वैरमखां हमायूंजी सैं हकीगत सारी कही। तारां हमाऊ जी कयो, जो वैरमखां आज हमारे दिली घरै आवै जैसी **मगनता** भई है।—द. दा.
२ तल्लीनता, लवलीनता।
३ मस्ती।

मगर-सं० पु० [सं० मकर:] १ घड़ियाल। (डिं. को.)
उ०—अति खेवि धूप आसावरी, रूप सकति वायण रखी। धमजगर अगर तोपां धरी, **मगर**, सूर, नाहर मुखी।—सू. प्र.
२ मछली।
यौ०—मगरधर।
[राज०] पीठ।
उ०—१ जावतां ई मा'राज पदमसिंघजी सांवतराय नूं सांग री वाह करी। सांग उण री छाती में लागौ सू फोड़ छाती, फोड़

मगर अरु घोड़ै री पीठ फोड़, काछ फोड़ हाथ एक पार हुई वा सांवतराय रा घोड़ै ऊपर प्रांण मुक्त हुवा ।—द. दा.

उ०—२ तठा उपरांयत सूळागरियां हौसनाकां नै हुकम हुवै छै—जाजमां कनांरै सूळा तयार करौ, सू हिरणां रा **मगर** पसवाड़ा पीड़ां सूं मांस उतारजै छै ।—रा. सा. सं.

४ करील वृक्ष के पुष्प (शेखावाटी) इसका दूसरा नाम 'बाट' भी है ।

वि०—पूर्ण, पूरा ।

यौ०—मगरपचीस, मगरपचीसी ।

अव्य० [फा०] लेकिन, परन्तु ।

मुहा०—अगर मगर करणी=आना कानी करना । प्रत्युत्तर देने में असमर्थ होना ।

देखो 'मगरौ' (मह., रू. भे,)

रू० भे०—मंगर ।

अल्पा०—मगरि, मगरियौ ।

मगरघर–सं० पु० [सं० मकरगृह] सागर, समुद्र । (डिं. को.)

मगरपचीस–वि०—भरपूर जवान, पूर्णयुवा ।

उ०—१ सुजि जळ पियै जरत विण सूरति । **मगरपचीस** हुवै दिब मूरति ।—सू. प्र.

उ०—२ सोळै वरसां कांमणी, **मगरपचीसां** कंत । अै दिन फेर न आवसी, जोवन रा महमंत ।—अज्ञात

रू० भे०—'मगरपच्चीस' ।

मगरपचीसी–सं० स्त्री० [राज० मगर+पचीसी] भरपूर जवानी, पूर्ण युवावस्था ।

उ०—१ सरधा घटगी सेंग, बेग बिरधापण वळियौ । निकळण रौ रथ नहीं कळण ऊंडी में कळियौ । **मगर-पचीसी** मांय, डोकरौ बणगौ डाकी । डांगड़ियां निठ डिगै, थिगै टांगड़िया थाकी । ऊठगी उमेद बैठण उठण, भेद न पै'ला भाळियौ । बहु गरथ 'देह बांदी बिपद, करगौ अनरथ काळियौ ।—ऊ. का.

उ०—२ असपत सूं मुरड़ साहियौ असमर, जुध रूपी सुज हुवौ जद । दीठौ वरस सितर में 'दुरगौ', **मगरपचीसी** तणौ मद ।

—दुरगादास राठौड़ रौ गीत

उ०—३ मरदां मरणौ हक्क है, **मगरपचीसी** मांय । महलां भूरै पदमणी, मित हथायां मांय ।—अज्ञात

रू० भे०—मगरपच्चीसी ।

मगरपच्चीस—देखो 'मगरपचीस' (रू. भे.)

मगरपच्चीसी—देखो 'मगरपचीसी' (रू. भे.)

मगरब—देखो 'मगरिब' (रू. भे.)

मगरबी–वि० [अ० मगरिबी] १ पश्चिम का, पश्चिमी ।

सं० स्त्री०—२ देखो 'मगरेब' (रू. भे.)

मगरमच्छ–सं० पु० [सं० मकर+मत्स्य] मगर या घड़ियाल नामक प्रसिद्ध जल जन्तु ।

उ०—कांम क्रोध लोभ मोह अहंता, ये डोले जळ मांई । काळ **मगरमच्छ** सब कूं खावै, बच सकैला नांई ।

—स्री हरिरांमजी महाराज

मगरि—१ देखो 'मगर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बाबहिया निळ पंखिया **मगरि** ज काळी रेह । मति पावस सुणि विरहणी, तळफि तळफि जिउ देह ।—ढो. मा.

२ देखो 'मगरौ' (अल्पा., रू. भे.)

मगरिब–सं० पु० [अ० मगरिब] पश्चिम दिशा ।

उ०—अल्लाह मुहम्मद सिर उठाय, मगरिब मक्के मन्नत मनाय ।

—ऊ. का.

रू० भे०—मगरब ।

मगरियौ–सं० पु०—१ कृषक स्त्रियों का एक गीत

२ गांव या कस्बे के समीप जलाशय के निकट का वह मैदान जहां प्राय: मेला लगता है ।

३ मेला ।

उ०—तीज तिवार **मगरिया** मंडै, रतनागर रौ रूप है । देवकरण राव सो दांनी भोम भंडाणै भूप है ।—दसदेव ।

क्रि० प्र०—मंडणौ ।

४ देखो 'मगरौ' (अल्पा., रू. भे.)

५ देखो 'मगर' (अल्पा., रू. भे.)

मगरी—देखो 'मगरौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मोडकी **मगरी** रौ पांणी ढाळौ ढाळ ढळियौ रे । आबू थारा पाहाड़ां में अंग्रेज बड़ियौ रे, काळी टोपी रौ ।—लो. गी.

मगरूर–वि० [अ० मगरूर] १ जिसमें गुरूर या अहंकार या गर्व हो, गर्वीला, अभिमानी ।

उ०—१ अमीरजादौ जवंन **मगरूर** थौ, तिण सोंस खाधी तूं बाग रा मेवा नहीं खावसी, आ कहि नै चलौ गयौ ।—नी. प्र.

उ०—२ वाग री सैल फिरै छै । अैस रस बिना महा **मगरूर** फैल करे छै ।—पनां.

उ०—३ इम त्रिहुंवै घड़ अडर, भीच **मगरूर** 'अभा' रा । फतै करण ऊफणै, डरै बंब रै वरारा ।—सू. प्र.

२ वीर, जोशीला ।

उ०—पित कुरब लूंण भूपाळ रौ, करि ऊजळ जुध जस करगि । **मगरूर** भेदि सूरज मंडळ, सूरजमल पहुंतौ सरगि ।—सू. प्र.

मगरूरी–सं० स्त्री० [अ० मगरूर] गर्व, अभिमान ।

उ०—१ दूत रौ वचन स्रवण में पड़तां ही नाहरराज कहियौ राजा अनंगपाळ तौ संबंध रा संभव री सहज बात कीधी जिको चहुवांणां **मगरूरी** रै मतै सांची वणाय कीधी ।—वं. भा.

उ०—२ जे उठ खड़ा हो गंवार ऐसी **मगरूरी** करै सो कुण ।

—दूलची जोइये री वारता

मगरेब-सं० स्त्री०—१ एक प्रकार की तलवार विशेष ।
उ०—तठा उपरांयत तरवारियां रा कमसारियां खुलै छै । सू तरवारियां किण भांत री छै ? सीरोही री नीपनी, बे आंगळा बाढ़ भेरियां थकां जनैब **मगरेब** पुड़तकाळ सेफ विलायती····म्यांन मांहां काढ़ घास में नांखजै तौ पांणी रै भौळावै जनावर ठूंग बाहै ।—रा. सा. सं.
२ तलवार ।
रू० भे०—मुग्राब ।

मगरोपा-सं० स्त्री०—गहलोत वंश की एक शाखा ।

मगरौ-सं० पु० [सं० मर्करः] १ पर्वत, पहाड़ ।
उ०—१ तळाब उदैसागर दोळा चौगिरद **मगरा** छै, पांवडा दो सौ तथा ढ़ाइसौ उदैसागर री पाळ रौ बंधेज छै—नैणसी
उ०—२ **मगरां** केरा बाहळा,ग्रोछा नरां सनेह । बहता वहै उतावळा छटक दिखावै छेह—ग्रज्ञात
उ०—३ चित सुध, 'अभो' पयंपै 'चिमनौ', ऊपर खड़ आया अरयंद । खोसे धन **मगरा** बळ खाधौ, गळै जिकौ बांधौ गिरयंद ।
—जादूरांम आढ़ौ
२ पत्थरीली या कंकरीली ऊंची भूमि, कठोर भूमि ।
उ०—खेत **मगरा** रा, जुवार हुवै, चिणा हुवै । अरट चार हळ ६० री धरती छै ।—नैणसी
अल्पा०—मगरि, मगरियौ, मगरी ।
३ देखो 'मगर' (अल्पा., रू. भे.)

मगवन-सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र । (व. स.)
उ०—कद दोकद चुपदी मासपदा तनुबंध सरबंध कमरबंध **मगवनां** कमलवनां दरीयाखांना···।—व. स.

मगवांन—देखो 'मघवा' (रू. भे.)
उ०—१ हेळां **मगवांन** 'भोज' 'क्रन' हाथां, दांन करण कव हरण दुख । छत्रधर कवर ग्रांन नह छाजै, राज कंवार 'जवांन' रुख ।—जवांनजी आढ़ौ
उ०—२ अग्राजै अनड़ घटा आरोहै, भूप मांन' **मगवांन** भुयंद । भ्रावै हाथ नहीं तिण आंटै, मसळै हातळ 'जगौ' मयंद ।
—महाराज मानसिंह रौ गीत

मगवाणौ, मगवाबौ—देखो 'मंगाणौ, मंगाबौ' (रू. भे.)
मगवाणहार, हारौ (हारी), मगवाणियौ—वि० ।
मगवाविग्रोड़ौ, मगवावियोड़ौ, मगवाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मगवावीजणौ, मगवावीजबौ—कर्म वा० ।

मगविवसानु-सं० पु० [सं० मार्ग विवस्वत्] आकाश । (नां. मा.)

मगस-सं० पु०—भोजक जाति के ब्राह्मणों के अनुसार शाक द्वीप के चार वर्णों में एक वर्ण । (मा. म.)
रू. भे.—मग ।

मगसर—देखो 'मिगसर' (रू. भे.)
उ०—पिया मोहि दरसण दीजौ हो । **मगसर** ठंड बहोती पड़ै, मोहि वेगि सम्हाळौ हो ।—मीरां

मगससि-सं० पु० यौ० [सं० मार्गशशि] 'आकाश' (नां. मा.)

मगसिर, मगसीर—देखो 'मिगसर' (रू. भे.)
उ०—१ **मगसिर** सुदी दसमी दिनइ हो ।—स. कु.
उ०—२ आसू कातिग कहा, सांम भादवै ज सांमणि । माह पोह **मगसीर**, चैत वैसाखां फागणि ।—ईसरदास बारहठ

मगसुर-सं० पु० यौ० [सं० मार्गसुर] आकाश । (अ. मा.)

मगसौ-वि० [स्त्री० मगसी] १ कान्तिहीन, निष्प्रभ, फीका ।
उ०—दावौ पड़चोडी कै भोलौ लाग्योड़ी साख लुगशुकी पड़ै ज्यूं बादळ रौ डील लूखौ पडग्यौ । दीप दीप करतौ उणियारौ साव **मगसौ** पड़ग्यौ ।—फुलवाड़ी
२ जो यथेष्ट चमकीला या तेज न हो, धूमिल, मलिन ।
उ०—देस देस रा इकरंग सपेत छै । जांहरी सपेती आगै बगला ही **मगसा** नजर आवै ।—रा. सा. सं.
३ जो उच्च या श्रेष्ठ न हो, बुरा, बद, मंद ।
उ०—वां री खरी कमाई र **मगसौ** भाग पतीजै । वां री रळियां पर गुमांन । मन खिखरां कीजै ।—फुलवाड़ी
४ तेज हीन, मंद ।
उ०—थोड़ा घणां उजास रै कारण बीजळियां **मगसी** चमकती ही ।
—फुलवाड़ी
५ जिसका प्रकाश क्षीण हो गया हो, धुंधला, निस्तेज ।
उ०—उण रै ग्यांन रौ उजास गरीबी री अपार धुंध में **मगसौ** पड़ग्यौ हो ।—फुलवाड़ी
६ प्रभावहीन ।

मगह—देखो 'मगध' (रू. भे.)

मगहपति—देखो 'मगधपति' (रू. भे.)

मगहर-सं० पु० [सं० मृगहर] १ वायु, पवन ।
उ०—रवि मकर रासि निवास राजत, उतर **मगहर** अनुसरे । दिन वधत अनुक्रम किरण दीपति, रैण लघु पण आदरे ।—रा. रू.
रू० भे०—'मर्गहर' ।
२ देखो 'मगध' (रू. भे.)

मगा—देखो 'मघा' ।

मगाड़णौ, मगाड़बौ—देखो 'मंगाणौ, मंगाबौ (रू. भे.)
उ०—तठा उपरांति करिनैं राजांन सिलांमति केसरिये वागै चंदा-चंदा जुग्रांन माहिल वाड़िग्रां रौ साथ ऊपड़िग्रां घटा रा चुवता पटां रा खासीग्रां बांहा रा बोलता कहारां राजांन राजावत रै बेपारै वास्तै बाकरा **मगाड़ीजै** छै ।—राजांन राउत रौ वात वणाव
मगाड़णहार, हारौ (हारी), मगाड़णियौ—वि० ।
मगाड़ियोड़ौ—भू० का० कृ० ।
मगाड़ीजणौ, मगाड़ीजबौ—कर्म वा० ।

मगाड़ियोड़ौ–भू० का० कृ०—देखो 'मंगायोड़ौ'।
(स्त्री० मगाडियोड़ी)

मगाणौ, मगाबौ—देखो 'मंगाणौ, मंगाबौ' (रू. भे.)
मगाणहार, हारौ (हारी) मगाणियौ—वि०।
मगायोड़ौ—भू० का० कृ०।
मगाईजणौ, मगाईजबौ—कर्म वा०।

मगायोड़ौ–भू० का० कृ०—देखो 'मंगायोड़ौ'।
(स्त्री० मगायोड़ी)

मगावणौ, मगावबौ—देखो 'मंगाणौ, मंगाबौ' (रू. भे.)
मगावणहार, हारौ (हारी) मगावणियौ—वि०।
मगाविग्रोडौ, मगावियोडौ, मगाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मगावीजणौ, मगावीजबौ—कर्म वा०।

मगावियोड़ौ–भू० का० कृ०—देखो 'मंगायोड़ौ'
(स्त्री० मगावियोडी)

मगीग्रां—एक प्रकार का वस्त्र।
उ०—कस्तूरीग्रां प्रतापीग्रां कुसंभीग्रां मोलीग्रां मांडवीग्रां मीणीग्रां वाटलीग्रां जलीदरीग्रां **मगीग्रां** जोडदरीग्रां प्रागीग्रा चुकडीग्रां····।
—व स.

मगेज—देखो 'मंगेज' (रू. भे.)
उ०—१ ज्यूं ज्यूं सूकै जीव जग, त्यू त्यू लूग्रां तेज। बाळै जाळै सोसवै, दूणी चढ़ै **मगेज** —लू
उ०—२ भवैराई का पेच **मगेज** भ्रमाडिया, बिच ऊतरियौ ग्राय-सहैली बाड़ियां।—बगसीरांम प्रोहित की बात

मगेजण—देखो 'मंगेजण' (रू. भे.)

मगेरणौ—देखो 'बारणौ'।

मगेहर—१ देखो 'मगहर' (रू. भे.)
२ देखो 'मगध' (रू. भे.)
३ देखो 'मघा' (रू. भे.)
उ०—भादवउ बरसइ छइ **मगेहर** गंभीर। जळ, थळ, महीयळ सहु भरचा नीर।—बी. दे

मग्ग, मग्गड़—देखो 'मारग' (रू. भे.)
उ०—१ चंदण तापइ ससि जळइ, पवन करइ प्रकास। मेह तणा **मग्ग** रूंधीया, ग्रहो! रे ग्रासो मास।—मा. कां. प्र.
उ०—२ नव जळ भरिया **मग्गड़ा**, गयणि धडकइ मेह। इत्थंतरि जइ ग्राविसिइ, तंई जांणि सिइ मेह।—ग्रज्ञात

मग्गड़ौ—देखो 'मारग' (ग्रल्पा., रू. भे.)

मग्गज—देखो 'मगज' (रू. भे)
उ०—**मग्गज** भइयौ वहै चाहि न रखे मुकट, बन सघण मांहि मुरळी बजावै। इसा हर धके चढ़ कुण ग्रहीरी, ग्रंगूठौ दिखावै घरां ग्रावै।—ग्रां. दा.

मग्गि—देखो 'मारग' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—मांणिक रतन ग्रमोल मणि, मीढ न कियौ तिण **मग्गि**। रूप ग्रनूप तुरंग रै, लोक तियां मन लग्गि।—रा. रू.

मग्दूर—देखो 'मकदूर' (रू. भे.)
उ०—ग्रबकी डोकरी किड़कतौ बोल्यौ—ग्राया बापड़। म्हारै थकां घर री फिकर करण वाळा। किण रौ मूंडौ **मग्दूर** कै म्हारै बैठां घर रौ कोई सोच करै।—फुलवाड़ी

मग्न–वि० [सं०] १ किसी कार्य में निमग्न या तल्लीन।
२ प्रसन्न, ग्रानन्द में लीन।
३ डूबा हुग्रा, सराबोर।
उ०—देस मांहि ग्रावतां ही ग्रोठी नूं सीख दे'र विपत्ति रा महा-रणव मैं **मग्न** मांगळियांणी पुत्र सहित बेस रौ बिपरयास करि कैराऊ ग्रांम रा ठाकुर रोहड़िया बारहठ ग्राल्हा रै बास जाइ रही ग्रर थोड़ा दिनां मैं बड़ा विस्वास रै साथ महानस री मालिक होइ चारण री चाकरी में चित्त लगाइ चातुराई री रीझ चही।
रू० भे०—मगण, मगन।

मघ—१ देखो 'मघा' (रू. भे.)
२ देखो 'मघवा' (रू. भे.)
३ देखो 'मारग' (रू. भे.)
उ०—कंभ कळस भरि नीसरी, ग्रीख भरै **मघ** जोय। पतिवरता दूजा धका, 'हरिया' सहै न कोय।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मघई–वि० [सं० मगध] १ मगध देश का।
सं० पु०—एक प्रकार का तांबूल विशेष।
उ०—भाग त्रगुण पंकज पर भेळै, **मघई** पांन छगुण रस मेळै।
—सू. प्र.

मघबळ–सं० पु०—तीर, बांण। (ग्र. मा.)

मघबांण, मघबांन, मघबांनू, मघव, मघवांण, मघवांणौ, मघवांन, मघवा–सं० पु० [सं० मघवन्] (स्त्री० मघवांणी) सुरपति इन्द्र का एक नाम। (ग्र. मा., डि. ना. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१ लहर समंद बकसण लखां, महर उभळ **मघवांन**।
—सिवबगस पाल्हावत
उ०—२ बंबी जद घोर जंगदा बग्गा, लड़ण मेघनाद रिण लग्गा। भिड़ तिण सेस भुजूं बळ भग्गा, मिटा सोच **मघवांनूंवा**।
—र. ज. प्र.
उ०—३ कमळ उदध कळवरछ, भांण **मघवांण**, मेर ससि। बदन सहज दत, तेज राज, गरूवत दीठ लसि।—र. ज. प्र.
उ०—४ रज परसण उदमाद करै रिख, मरै हूंस **मघवांणौ**। क्रत दत कौट कियां हूं यघकौ, हरि नग ग्रोट रहांणौ।—र. ज. प्र.
उ०—५ मेघ जिकौ तावै **मघवा** रै, वारै रजा विना नह वीख। सुरंग हरी रंग पीत दरसिया, रिख वादळ लसिया ग्रंतरीख।
—महाराजा भीमसिंह रौ गीत

उ०—६ सीता सी रांणी वेद वखांणी, सारंग पांणी सांम। मीढ़ न मघवांणी बळ ब्रहमांणी, नहीं रुद्रांणी नांम—र. ज. प्र.

यौ०—मघवापुर, मघवारिपु।

रू० भे०—मगवांन, मघ, मघवाह, माघव, माघवांण, मावबांन।

मघवापुर-सं० पु० [सं० मघवः+पुरं] इन्द्रपुरी, सुरलोक।

उ०—बाळी वय सुत बिहंडियौ, घड़ भांजै घण घौर। भीनी भुव सोणित भिनी, मघवापुर में मोर।—अज्ञात

मघवारिपु-सं० पु० [सं० मघवः+रिपुः] इन्द्र का शत्रु, मेघनाथ।

मघवाह-सं० पु० [मघः] १ ब्रह्मा के चौदह पुत्रों में से एक (मनु) जो मानव सृष्टि के मूल पुरुष माने जाते हैं।

२ देखो 'मघवा' (रू. भे.)

मघा-सं० पु० [सं० मघा] पांच तारों वाला सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवां नक्षत्र।

उ०—१ अंकुस सीस वरण गुण ऐसौ, जग वेधियौ मघा सनि जैसौ। —रा. रू.

उ०—२ आदित्यवार अनइं वळी, मूळ मघा रेवत्ति। पोढी पुस्य पुनरवसु, सेजि चढइ नहीं सत्य।—मा. कां. प्र.

रू० भे०—मगा, मगैहर, मघ।

मघाभव-सं० पु० [सं० मघा+भवः] शुक्र ग्रह का नामान्तर।

मघोनी-सं० स्त्री० [सं० मघवा] इन्द्र की पत्नी, शचि।

मड़—देखो 'मड़ौ' (मह., रू. भे.)

मड़क-सं० स्त्री० १ मुड़ना क्रिया का भाव, मोड़।

२ गर्व, अभिमान।

मड़कल-वि० [मृतक+ल=तुल्य] १ क्षीण-काय, कृश, दुबला-पतला।

२ जिसमें कुछ भी दम न हो, शक्तिहीन।

रू० भे०—मड़ियल, मड़ियौ।

मड़तंग-सं० पु०—१ सारंगी में वह स्थान जहां सभी तारों को एकत्रित कर बांधा जाता है। इसे सिन्धी में कुरदी भी कहते हैं।

२ देखो 'मरतंग' (रू. भे.)

मड़हट—देखो 'मरघट' (रू. भे.)

मड़हटौ—देखो 'मरहठौ' (रू. भे.)

उ०—नेजाहळां मड़हटां निहसै, घण खागां बहिया रत घाव। दुरंग गिरंद वाळा वेळा द्रुम, रंगिया सुरंग खीचियां राव। —राजा फतेसिंघ खीची री गीत

मड़हठ—देखो 'मरघट' (रू. भे.)

उ०—देहळी लग महळी पिण दौड़ी, फळसा लग मा बहण फिरी। मड़हठ लागौ कुंटुंब चौ मेळौ, किणिय न सुख दुख वात करी। —प्रथवीराज राठौड़

मड़ाघाट-सं० पु० [सं० मृतः+घट्टः] नदी पर वह स्थान जहां पर शव जल प्रवाह में बहा दिया जाता है, मुरदाघाट।

उ०—बांणियौ गंगाजी पूगौ तौ पंडा रा डर सूं वौ सीधौ मड़ाघाट माथै ई गियौ।—फुलवाड़ी

मड़ियल—देखो 'मड़कल' (रू. भे.)

मड़ियौ—१ देखो 'मड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'मड़कल' (रू. भे.)

उ०—मड़ियौ कुडियौ मेर, संग सड़ियौ न सुहावै। पड़ियौ रहै परेत, दैत ज्यूं दांत दिखावे।—ऊ. का.

मड़ेठौ—देखो 'मरहठौ' (रू. भे.)

उ०—दुय चत्रमास बादियौ दिखणी, भोम गई जो लिखत भवेस। पूगौ नहीं चाकरी पकड़ी, दीधौ नहीं मड़ेठां देस।—बां. दा.

मड़ोड़—देखो 'मरोड़' (रू. भे.)

मड़ोड़ी—देखो 'मरोड़ी' (रू. भे.)

मड़ौ-वि० [सं० मृत] १ मरा हुआ, मृत।

२ दुर्बल, क्षीण, काय।

३ शक्ति हीन, अशक्त।

सं० पु०—शव, लाश।

उ०—१ सेठ तौ साचेला मड़ा री गळाई सांस ऊंचौ चाढ़ लियौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ अेकण साह री बेटौ मुवौ सु मड़ौ इण खेड़ै बळ पावै नहीं। —नैणसी

रू० भे०—मढ़ौ।

अल्पा०—मड़ियल, मड़ियौ।

मह०—मड़, मडउ।

मचंक—देखो 'मचक' (रू. भे.)

मचकंद, मचकंध—देखो 'मुचुकुंद' (रू. भे.)

उ०—बेढ़ रा बिखम तासा तबल बजासी। यर दुरंग छोड भागै अगौ-अगासी। लाय दसकंध वाळै सदन लगासी। जोध मचकंध सुतौ थकौ जगासी।—कुंवर रतनसिंघ जी री गीत

मच-सं० पु० १ पुष्टता, सुडौलता।

उ०—१ ठाकुरां घोड़ां हाथियां जवां रौ नै बाड़ री मच दीसै नहीं, कीं बात सूं।—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ किणीई बैंगण बायड़ा अर किणीई बैंगण पच। किणीई चढ़ै आफरौ ने किणीई चढ़े मच।—अज्ञात

क्रि० वि०—शीघ्रता से, झटके के साथ।

रू० भे०—'मच्च'।

मचक-सं० स्त्री०—१ मचकना क्रिया का भाव।

२ लचक, दबाव।

उ०—तिण पर उतरादी तरफ तौ स्री तीजांमाजी मिंदर १९०२ रा. फागण बद २ तयार करायौ। उतराधा घाट पर सूं पछै १९०६ रा बरस मिंदर मचक खादी तद दूजौ मिंदर घासमंडी में करायौ।—मारवाड़ री ख्यात

३ शरीर के अंग पर विशेष दबाव पड़ने से नाड़ी के अस्त व्यस्त होने की दशा ।

रू० भे०—मचंक, मचक्क, मच्चक ।

मचकणौ, मचकबौ–क्रि० अ०—१ आघात और बोझ पाकर दबना, झुकना, लचकना ।

उ०—१ वीर जोद्धारां रौ जुद्ध होवण लागौ तिण सूं धरती धूजण लागी तद नागणी नाग नैं पूछै छै—हे नाग ! आज धरती में धरराट कांई तरह होवै छै तद नाग कही—हे नागण आ धरती **मचकै** छै। नागण कह्यौ क्यूं—तद फेर नाग कहै—इण धरती रा भोगण वाळा धणी इण जमी सारूं आज रण में अड़िया है ।—वी. स. टी.

उ०—२ **मचकै** फुणाटां चील लचकै कमठी मौर, बौम ढंकै उडै खेहा रूकै घीर वाट । अजादा दधेस मुकै भेचकै भवेस मीट, तणै धू नरेस हकै हैजमां तुराट ।—अनोपसिंह राठौड़ रौ गीत

२ धक्का या झटका खाकर हिलना, झूलना ।

उ०—लचकै गोडी लागतां, **मचकै** हींड मचोळ । तन दमकै दांमणि तरह, झमकै पग रमझोल ।—सिवबगस पाल्हावत

३ पैर न जमना, पीछे हटना, अपने स्थान पर ठहर न सकना ।

उ०—मेळियौ 'जसैं' वळ दिली-दळ **मचकतां**, प्रबळ भुज बळ सरळ तरळ पूगौ ।—नाथौ सांदू

मचकणहार, हारौ (हारी), **मचकणियौ**—वि० ।

मचकिओड़ौ, मचकियौड़ौ, मचक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मचकीजणौ, मचकीजबौ—भाव वा० ।

मछकणौ, मछकबौ—रू० भे० ।

मचकाणौ, मकाचबौ–क्रि० स०—१ प्रहार करना, आघात करना, मारना ।

उ०—म्हारी म्हारी छाळियां नै दूधौ दही पाऊं। म्हारियो आवै तौ सोटै री **मचकाऊं** ।—लो. गी.

२ झूले में पेंग या झटका लगाना, झूले में झोंका लेना ।

उ०—यौ भळकौ वंकौ हुवौ, हळकौ लग हाथांह । साथण सूं छाती भिड़ी, हींडौ **मचकातांह** ।—पनां

३ खाना खाना, भोजन करना । (व्यंग्य)

४ मसलना, मलना ।

५ सम्भोग करना, मैथुन करना ।

उ०—मांणी धर **मचकाय**, प्यारी कर 'दौलत' 'पदम' । आस्रम चौथे आय, चींदी ते दीधी 'चिमन'—लक्ष्मीदांन बारहठ

६ पैर न जमने देना, पीछे हटाना, अपने स्थान पर ठहरने में असमर्थ करना ।

मचकाणहार, **हारौ** (हारी), **मचकाणियौ**—वि० ।

मचकायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मचकाईजणौ, मचकाईजबौ —कर्म वा० ।

मचकाड़णौ, मचकाड़बौ, मचकावणौ, मचकावबौ, मछकाणौ, मछकाबौ—रू० भे० ।

मचकाड़णौ, मचकाड़बौ—देखो 'मचकाणौ, मचकाबौ' (रू. भे.)

मचकाड़णहार, हारौ (हारी), **मचकाड़णियौ**—वि० ।

मचकाड़िओड़ौ, मचकाडियोड़ौ, मचकाड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मचकावीजणौ, मचकावीजबौ—कर्म वा० ।

मचकायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ. २ (झूले में) झोंका या झोंटा लगाया हुआ. ३ खाना खाया हुआ (व्यंग्य). ४ मसला हुआ. ५ सम्भोग किया हुआ. ६ पैर न जमाया हुआ, पीछे हटाया हुआ, अपने स्थान पर ठहरने में असमर्थ किया हुआ ।

(स्त्री० मचकायोड़ी)

मचकावणौ, मचकावबौ—देखो 'मचकाणौ, मचकाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ इण भांत रौ तिजारौ सू गोरो भूवरियां पुहचां सूं दुजण साह्यां कटोरां में भला जुवांन **मचकावै** छै । बेवड़ी गळणी सूं खीची चाढ़ छांणजै छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ सेखी सांवळदास री बेगी गई विलाय । मालूपा **मकचा-वता**, कांदा रोटी खाय ।—अज्ञात

मचकावणहार, हारौ (हारी), **मचकावणियौ**—वि० ।

मचकाविओड़ौ, मचकावियोड़ौ, मचकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मचकावीजणौ, मचकावीजबौ—कर्म वा० ।

मचकावियोड़ौ—देखो 'मचकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मचकावियोड़ी)

मचकियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ आघात या बोझ के प्रभाव से दबा हुआ, लचका हुआ. २ धक्का या झटका खाकर हिला हुआ, झूला हुआ. ३ पैर न जमा हुआ, पीछे हटा हुआ, अपने स्थान पर ठहर सकने में असमर्थ हुवा हुआ.

(स्त्री० मचकियोड़ी)

मचकुंद—देखो 'मुचुकुंद' (रू. भे.)

मचकूर–सं० पु०—१ विशेषतः लिखित विवरण ।

२ वृतान्त, हाल, वार्ता ।

उ०—१ तठै राजावां सारां मनसोभौ कीयौ जो किण ही तरै साची खबर मंगावौ, कांई **मचकूर** है ।—द. दा.

उ०—२ राजा कनकरथ सारी हकीकत पूछी । वेणीदास, चंदण, हरदांन सारौ **मचकूर** हुवौ सौ मालम कियौ ।

—पलक दरियाव री बात

३ सलाह, मंत्रणा, मसविदा ।

उ०—करतां इम **मचकूर**, अडर 'अवरंग' दळ आया । राजलोक भूप रा, सज्जि खग सुरग वसाया ।—सू. प्र.

४ फौज, लसकर ।

उ०—अरु अठै पातसाहजी **मचकूर** नूं कूच तरफ ईरांन री कियौ।
—द. दा.

५ चर्चा, जिक्र।

उ०—ताहरां मां पण आहीज कही—हालण रै वास्तै सारौ लोक आतुर छै। महाराज निपट काहल करै छै। थांरौ मुलाहिजौ करि दबायनै कहै न छै। तैंसूं संवारै तौ हालियां सरसी। उठै कुंवर आहीज कही कै हालसां। इतरी कहि ऊठियौ, आपरी डोढ़ी गयौ। सदांमद आवतां सांम्हां सहल—सहेली त्यूं हीज मुजरौ कियौ। भींतर ले गया। उठै पण इण हीज भांति **मचकूर** हुवौ सो साह अजैपाळ आपरै कन्है सुणियौ।—पलक दरियाव री बात

६ वार्तालाप, बात।

उ०—उठै उहां आडा किवाड़ था सो खोलाया, 'जो वडा सिरदार ताक खोल। हमैं कितरी ताळ बंचीस ? म्हे बाहर खड़ा सो हरगिज छोडां नहीं। कुहाड़ा मंगाय किवाड़ तोड़स्यां। तैंसुं सिरदार छै, बाहर नीसर कांम आव।' इण भांत **मचकूर** करै छै।
—कुंवरसी सांखला री वारता

७ मालूम।

उ०—पड़ै **मचकूर** लंधन खबर पाड़ियां। जोध खग झाड़ियां धकौ जमरौ।—कमजी दधवाड़ियौ

रू० भे०—मछकूर।

मचकोड़णौ, मचकोड़बौ—क्रि० स०—पराजित करना, हराना।

उ०—मारी मलिक अवाला कीधा, **मचकोडिउं** तरकांणउं।
—कां. दे. प्र.

२ भोजन करना।

मचकोड़णहार, हारौ (हारी), मचाकोड़णियौ—वि०।

मचाकोड़िग्रोड़ौ, मचाकोड़ियोड़ौ, मचाकोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मचाकोड़ीजणौ, मचाकोड़ीजबौ—कर्म वा०।

मचकोड़ियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ पराजित किया हुआ, हराया हुआ.

२ भोजन किया हुआ.

(स्त्री० मचकोड़ियोड़ी)

मचकोळणौ, मचकोळबौ—क्रि० स०—मुख मुद्रा बनाना, मुख की आकृति को बिगाड़ना।

उ०—पण चौपड़ियै घड़ै छांट लागै तौ बांरै बात लागती। सगळा मूंडौ **मचकोळ'र** कै'ता—बैन रौ अधकारौ ईज घणौ माथै चाढलै।
—वरसगांठ

मचाकोळणहार, हारौ (हारी), मचाकोळणियौ—वि०।

मचाकोळिग्रोड़ौ, मचकोळियोड़ौ, मचाकोल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मचकोळीजणौ, मचकोळीजबौ—कर्म वा०।

मचकौ—सं० पु०—१ भूले में लगने वाला झोंका, या झोंटा।

क्रि० प्र०—दैणौ, लगाणौ।

२ धक्का।

३ चापलूसी का कार्य।

४ रति क्रिया में पुरुषेन्द्रियों द्वारा लगने वाला धक्का।

क्रि० प्र०—दैणौ, मारणौ, लगवाणौ, लगावणौ, लागणौ।

रू० भे०—मचक्कौ।

मचक्क—देखो 'मचक' (रू. भे.)

मचक्कणौ, मचक्कबौ—देखो 'मचकणौ, मचकबौ' (रू. भे.)

उ०—हय हिन्दुनि हक्किय बीर किलक्किय, सोर भभक्किय और दहूं। सिर सेस लचक्किय भूमि भचक्किय, कोल **मचक्किय** दंत कहूं।—ला. रा.

मचक्कणहार, हारौ (हारी), मचक्कणियौ—वि०।

मचक्किग्रोड़ौ, मचक्कियोड़ौ, मचक्क्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मचक्कीजणौ, मचक्कीजबौ—भाव वा०।

मचक्कियोड़ौ—देखो 'मचकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मचक्कियोड़ी)

मचक्कौ—देखो 'मचकौ' (रू. भे.)

उ०—गोळा रीठ बाज खंभां, गौरंभां नीहाव गाजै। भांजपै **मचक्कां** पीठ, कुरंभां भवांन।
—राव राजा उम्मेदसिंह बूंदी रौ गीत

मचणौ, मचबौ—क्रि० अ० [अनु०] १ होना, घटना।

उ०—अमलां खोबा बाजियां, **मचै** भड़ां मनुवार। जांगड़िया दूहा दियै, सिंधू राग मझार।—बां. दा.

२ छिड़ना, आरम्भ होना, धूम धांम से शुरू होना।

उ०—१ **मच** धांमधूम सर सेल मार, पड़त्रास आस आठूं प्रकार।
—रा. रू.

उ०—२ **मचियै** कांकळ मदत री, वीर न देखे वाट। एक अनेकां सूं हिचै, छाती वजर कपाट।—बां. दा.

३ जोर से होना, तेज होना, तेजी आना, तीव्र रूप से होना।

उ०—१ प्रथम गजर तोपां पड़े, गोळा बजर गुड़ांण। **मचियौ** जिण दिन माझियां, घोर प्रळै घमसांण।—वं. भा.

उ०—२ सक चउदह सत्रह समैं, उज्जैणी रण एह। हुवौ हजारां मरण हद, **मचि** असिधारां मेह।—वं. भा.

४ चारों ओर फैलना, अधिक प्रभावी होना।

उ०—जैन बांम **मचिया** बडजोरां, गहरे सुर आई गिणगोरां।
—ऊ. का.

५ पुष्ट होना, मोटा ताजा होना।

ज्यूं—नारां री मचणौ, बछेरां री मचणौ।

६ प्रबल होना, उग्र होना।

७ मस्ती में आना।

८ लाक्षणिक अर्थ में अनीति करना, नाजायज हरकतें करना।

मचणहार, हारौ (हारी), मचणियौ—वि०।

मचिग्रोड़ौ, मचियोड़ौ, मच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मचीजणौ, मचीजबौ—भाव वा०।

मचमचणो, मचमचबो, मचणो, मचबो, मांचणो, मांचबो, माचणो, माचबो—रू० भे० ।

मचमचाणो, मचमचाबो—देखो 'मचणी, मचबो' (रू. भे.) (सं० ३, ४, ५, ६)

उ०—मैंमद **मचमचिया** जदो, सभियो फिरंग समाज । चट उगणीसैं चौपने, मतो कियो महाराज ।—जुगतीदांन देथो

मचमचणहार, हारौ (हारी), मचमचणियो—वि० ।

मचमचिओड़ो, मचमचियोड़ो, मचमच्योड़ो—भू० का० कृ० ।

मचमचीजणो, मचमचीजबो—भाव वा० ।

मचमचाट, मचमचाहट, मचमची–सं० स्त्री०—१ मस्ती ।

२ कामातुरता ।

३ आतुरता ।

मचरको–सं० पु०—१ किसी भारी अथवा बोझिल वस्तु का दबाव ।

उ०—चहल तिहुं लोक चळ सिद्ध आसण चले, हरी ताळी खुली सूलहाथा । कमठ पर भार पड छिले रस कचरकां, **मचरकां** सेस रा हले माथा ।—र. रू.

२ घर्षण ।

मुहा०—मचरको मारणो, मचरको लगाणो—बात बढ़ाने के भाव से अपनी ओर से कुछ कहना, चिनगारी डालना ।

मचळ, मचाळण–सं० स्त्री०—१ 'मचळणो', क्रिया का भाव । मन की घबराहट ।

२ देखो 'मचळांण' (रू. भे.)

३ देखो 'मचळी' (रू. भे.)

मचळणो, मचाळबो–क्रि० अ०—१ किसी वस्तु आदि की प्राप्ति के लिए आतुर होना या उद्विग्न होना ।

२ किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए जिद्द करना, हठ करना ।

३ किसी कार्य के करने या कहीं जाने मे इन्कार हो जाना ।

उ०—१ चरखां गडि चक्र मगां **मचळै**, चरहूं थिर थाय पगां न चलै, जड़ हूं करि जगम देत जिका, तन अद्र मतंगज रंग तिकां ।
—मे. म.

४ चलना ।

उ०—मरि पेटिय सोर महोर हकी, मछ सूकर बाघ मुखी मळकी । मग दीरघ तोप किती **मचळै**, उन्मत्त करीगन लागि टलै ।—ला. रा.

५ विचलित होना ।

उ०—दिगंतां लों दोरें **मचळ**, मन मोरें मुदमुदी । विदांतो झंझोरें विसय, विस वोरें बुदबुदी ।—ऊ. का.

मचळणहार, हारौ (हारी), मचळणियो—वि० ।

मचाळिओड़ो, मचाळियोड़ो, मचाळ्योड़ो—भू० का० कृ० ।

मचाळीजणो, मचाळीजबो—भाव वा० ।

मछळणो, मछळबो—रू० भे० ।

मचळांण, मचलांण, मचळाट–सं० स्त्री०—१ बू, गंध ।

रू० भे०—मचळ, मचळण, मछळांण, मछलांद, मछळाट, मिचलांण, मिचलाट ।

मचळी–सं० स्त्री०—कैय, वमन ।

मचली—देखो 'मांचो' (अल्पा., रू. भे.)

मचळो–वि० (स्त्री० मचळी) १ अप्रिय, जो मचलाहट उत्पन्न करता हो ।

२ अम्ल-युक्त ।

रू० भे०—मिचळो ।

मचांण, मचांन–सं० पु० [सं० मंचः+हिं० आन (प्रत्य०)] वह ऊंचा आसन या मंच जिस पर बैठकर कृषक अपने खेत की रखवाली करता है या शिकारी शिकार करता है ।

मचाणो, मचाबो–क्रि० स० [अनु०] १ आरम्भ करना, जारी करना ।

उ०—सो उठारै अधीस दलै नांम जोइये आपरा बैभव समेत आधी अवनी देर आगै कीधो आपरा बचावण रो उपकार बिचारि बडा आदर रै साथ झेलियो तो भी महामूढ़ बारूणी रै बसीभूत अनेक उपद्रव **मचाइ** ऊबट ही बहियो ।—वं. भा.

२ करना, मचाना ।

उ०—सुणै सुरताणां दिल्ली उदैपुरा रांणा सुणी ? कछवाहां चव्हाणां **मचाणां** रणै कीच ।—हाडां कछवाहां रो गीत

३ चारों ओर फैलाना, अधिक प्रभावशाली बनाना ।

उ०—१ खिच्ची कुळ 'दूदो' अरि खावण, राढ़ी दुलह हुवो बळ रावण । मारि खळां घर कूक **मचाई**, चंडी जिण बहुबार नचाई ।
—वं. भा.

उ०—२ दिल्ली रा दळ में दरोळ देखतां ही साहजादां री सेना बडे जोर बधी थकी आगै आइ उछाह रै उफांण महांप्रळै **मचायो** ।
—वं. भा.

उ०—३ हाथी, चीता, हिरण, लूंकड़ी अर छाळीनारिया इत्याद सरब जिनावरां नै गधो एक मोटा सिंघासण माथै बैठनै समझावण लागो—इण जंगळ में कीं कायदो कांनून कोनी । थैं सगळै रुळपट **मचाय** राखी है ।—फुलवाड़ी

उ०—४ जोत रा दरसण व्हैतां ईं सगळा लोग खम्मा खम्मा री एकर फेर हाक **मचाय** दी ।—फुलवाड़ी

४ जोर पकड़ाना, तेज करना ।

५ पुष्ट एवं मोटा ताजा करना ।

६ प्रबल एवं उग्र बनाना ।

७ मस्ती में लाना ।

८ अनीति कराना, नाजायज हरकतें कराना ।

मचाणहार, हारौ (हारी), मचाणियो—वि० ।

मचायोड़ो—भू० का० कृ० ।

मचाईजणो, मचाईजबो—कर्म वा० ।

मचणो, मचबो,—अक रू० ।

मचावणो, मचावबो—रू० भे० ।

मचामच-सं० स्त्री० [अनु०] 'मचमच' की शब्द ध्वनि जो किसी पदार्थ को दबाये जाने से उत्पन्न होती है।

मचावणौ, मचाववौ—देखो 'मचाणौ, मचाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ गाहै गजराजां गुड़ां, रुहिर **मचावै** कीच। ज्यांरै नवग्रह पाघरा, जे बंका रण बीच।—बां. दा.

उ०—२ तीजणियां हींडा **मचावै** है, लंक लचावै है।—र. हमीर

मचावणहार, हारौ (हारी), मचावणियौ—वि०।

मचाविश्रोड़ौ, मचावियोड़ौ, मचाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मचावीजणौ, मचावीजवौ—कर्म वा०।

मचीड़ौ—जोर, ताकत।

उ०—ईं मुसाफरी में घरां अर गांव रै बीचाळै जगां मोल लेवै है। जगां राज रै गढ़ री वडा **मचोडा** सूं मिळै है।—दसदोख

मचोळ-सं० स्त्री०—१ तरंग, लहर, हिलोर।

२ धक्का, आघात, झटका।

उ०—पीठ बड़बड़ात कूरम घटा प्रळै री। मही खड़खड़ात हैजम **मचोळां**—अज्ञात

३ देखो 'मचोळौ' (मह., रू. भे.)

उ०—लचकै गोडी लागतां, मचकै हींड **मचोळ**। तण दमकै दांमणि तरह, झमकै पग रमझोळ।—सिवबगस पाल्हावत

मचोळणौ, मचोळबौ-क्रि० स०—१ विलोड़ित करना, मथना।

२ विध्वंस करना, तहस नहस करना।

३ झूले के पेंग या झोंका लगाना।

उ०—मचकै हींड **मचोळतां**, लचकै झींणीं लंक। तन दमकै दांमणि तहीं, मुखड़ौ जांण मयंक।—र. हमीर

४ भोजन को चबाना।

मचोळणहार, हारौ (हारी), मचोळणियौ—वि०।

मचोळिश्रोड़ौ, मचोळियोड़ौ, मचोळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मचोळीजणौ, मचोळीजबौ—कर्म वा०।

मचोळियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ विलोड़ित किया हुआ, मथा हुआ. २ विध्वंस किया हुआ. ३ पेंग या झोंका लगा हुआ (झूला). ४ चबाया हुआ. (भोजन)

(स्त्री० मचोळियोड़ी)

मचोळौ-सं० पु०—१ हिंडोला या झूला झूलते समय उस पर इस प्रकार जोर या झटका लगाना जिससे झूले का वेग बढ़ जाए और वह दोनों ओर अधिक दूरी तक झूले।

२ धक्का, टक्कर।

उ०—१ अर तोपां री गाज हूं सेस रा सीसां समेत मकराकर मेखळा मही रै **मचोळा** लगाया।—वं. भा.

उ०—२ या सुणतां ही अणिहलपुर रौ अधीस सेना रा संभार सूं मही रै **मचोळा** देतौ गजनवी रौ वेग झेलण रै काज जवनेस रौ राह रोकि……।—वं. भा.

३ मोठ (चड़स) की लाव खींचने के स्थान का वह आखरी हिस्सा जहां पर बैल रुकते हैं और लाव की कीली निकाली जाती है, झोला।

४ मस्ती में झूमने की क्रिया, झूमना।

उ०—दुरद **मचोळा** दे रह्या, सुभट सचोळा साज। बचां न इण खोळा बिचै, भोळा कंथ उठि भाज। भोळा कंथ उठि भाज, आज नहिं ऊबरां। पा'रों नगर पहाड़, बसां ज्यां विम्भरां।

—सिवबगस पाल्हावत

रू० भे०—मच्छोळौ, मछोळौ,।

मह०—मचोळ।

मच्च—देखो 'मच' (रू. भे.)

मच्चक—देखो 'मचक' (रू. भे.)

मच्चकणौ, मच्चकबौ—देखो 'मचकणौ, मचकबौ' (रू. भे.)

मच्चकणहार, हारौ (हारी), मच्चकणियौ—वि०।

मच्चकिश्रोड़ौ, मच्चकियोड़ौ, मच्चक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मच्चकीजणौ, मच्चकीजबौ—भाव वा०।

मच्चणौ, मच्चबौ—देखो 'मचणौ, मचबौ' (रू. भे.)

उ०—वीतां अधूरां वार पूरां वेध वच्चए। सेले प्रहारं धार सारं मार मारं **मच्चए**।—रा. रू.

मच्चु—देखो 'म्रत्यु' (रू. भे) (जैन)

मच्छ-सं० पु० [सं० मत्स्य प्रा० मच्छ] १ बड़ी मछली।

उ०—इक कहत मोद अथाह, गिण **मच्छ** कच्छप ग्राह। जळ गहर सागर जोर, तिण बीच थाह न तोर।—रा. रू.

२ ग्राह, मगर।

उ०—**मच्छां** रै जळजीव जिम, सवजी तरां सदीव। अदतारां धन जीव इम, जस दातारां जीव।—बां दा.

रू० भे०—मछ, मछौ, माछ माछु, माछौ।

अल्पा०—माछळउ, माछळौ, माछलौ।

मह०—माछळ।

३ सात गुरु और ३४ लघु मात्राओं का दोहे का एक भेद।

४ छप्पय छंद का २३ वां भेद जिसमें ४८ गुरु, ५६ लघु से १०४ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। मतांन्तर से ६८ गुरु, १२ लघु से ८० वर्ण तथा १४८ मात्राओं का भी माना जाता है।

५ मत्स्य के आकार का हाथ की हथेली में होने वाला एक प्रकार का सामुद्रिक चिन्ह जो शुभ माना जाता है।

६ देखो 'मत्स्य' (रू. भे.)

उ०—**मच्छ** कच्छ बाराह महमहण। नारसिंह बांमन नारायण।

—ह. र.

यौ०—मच्छअसवारी, मच्छवेदणी।

वि०—१ प्रबल, शक्तिशाली। २ भीमकाय।

२ देखो 'माछर' (रू. भे.)

मच्छअसवारी-सं० पु० यौ० [सं० मत्स्य+राज० असवारी] कामदेव, मदन। (डिं. को.)

मच्छड़—देखो 'माछर' (रू. भे.)

मच्छदेस-सं० पु० [सं० मत्स्य+राज० देश] प्राचीन विराट देश का नामान्तर।

मच्छर—१ देखो 'मछर' (रू. भे.)

उ०—१ कर थक्के तरवार, म्लेच्छ कर थक्के **मच्छर**। बरि थक्के बरि हूर, सूर बरि थक्के अच्छर।—ला. रा.

उ०—२ **मच्छर** और न संग्रहै, आ मछरीकां आद। अड़ै कमंधां अग्गळी, विचत्रां हूंता बाद।—रा. रू.

उ०—३ कमधज 'छाडै' कीध कोपियै, माडधरा ऊपर **मच्छर**। 'धूहड' हरौ धूण खग धारां, सत्र लूटै वळीयी समर।

—राव छाडा रौ गीत

उ०—४ छोडावियौ **मच्छर** 'छाडावत', कळह वार ग्रहे केवांण। भिड़तै खेत भील-पुर भागौ, चौरंग सांवत सीह चहुवांण।

राव तीडा रौ गीत

२ देखो 'माछर' (रू. भे.)

मच्छरमांण-सं० पु० [सं० मत्सर+रा० मांण] गर्व को मिटाने वाला।

उ०—ऊगमण लगै सूर उछजियै, मिळै महादळ **मच्छरमांण**। तांणै वतलायौ 'तीडावत', ढांणियां ताय ढीलवियै ढांण।

—राव सलखा रौ गीत

रू० भे०—मछरमांण।

मच्छराळ—देखो 'मछराळ' (रू. भे.)

उ०—'जसवंत' मडोवर दिग्गपाळ, 'महेस' कळोधर **मच्छराळ**।

—गु रू. बं.

मच्छराळी—देखो 'मच्छराळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—दाढाळी बाढाळी बंधै, रंढाळी करतां दौड़। मांनै नहीं **मच्छराळी**, मभाळी मरम्म।—ध. व. ग्रं.

(स्त्री० मच्छराळी)

मच्छरि—१ देखो 'माछर' (रू. भे.)

२ देखो 'मछर' (रू. भे.)

उ०—पाहाडै 'सादूळ', भाजि चढियौ भिडवायौ। चीतौडौ चतुरंग, भीम दळ मेले आयौ। बळि बोलै सीसोद, मूछ वळ घाळै **मच्छरि**। अभै-दांन आपियौ, आव पैलालि विनौ करि।—गु. रू. बं.

मच्छरियौ—१ देखो 'मछरीक' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'माछर' (अल्पा., रू. भे.)

मच्छरी—१ देखो 'मछर' (रू. भे.)

उ०—भोग दिखाडइ भुवि घणां, विधि विधि तणां विचित्र। मूंछ समारइ **मच्छरी**, मन्मथ-केरा मित्र।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'माछर' (रू. भे.)

मच्छरीक—देखो 'मछरीक' (रू. भे.)

मच्छरूप-सं० पु० [सं० मत्स्य+रूप] मत्स्यावतार, मच्छ अवतार।

उ०—**मच्छरूप** करि वेद उधारचा, ऐसा अचिरज किया। भक्ति हेतु हरि आप पधारचा, ले ब्रह्मा कूं दीया।—ह. पु. वां.

रू० भे०—मछरूप।

मच्छरैत—देखो 'मछरैत' (रू. भे.)

मच्छवा—देखो 'मछवा' (रू. भे.)

मच्छवौ—देखो 'मछवौ' (रू. भे.)

मच्छवेदणी-सं० स्त्री० [सं० मत्स्य+वेधिनी] मछली पकड़ने का कांटा।

मच्छावतार—देखो 'मछावतार' (रू. भे.)

मच्छिया-सं० स्त्री० [सं० मक्षिका] मक्खी।

मच्छियारौ—देखो 'मछियारौ' (रू. भे.)

मच्छी-सं० स्त्री० [सं० मत्स्य] प्रसिद्ध जल जंतु, मछली। (डिं. को.)

उ०—आंणि अछी गति ओभळै, ज्यूं **मच्छी** जळ मांइ। निजरि तिरच्छी न्हाळतां, बरछी सी बह जाय।—र. हमीर

पर्याय०—अंडज, अनमिख, अलुकी, आतमासी, इंदुजयकर, कुळ-खय, कुसळी, खडपीण, ग्रहवार; चंचल, जलआधार, जादस, झख, तिम, थिरजीह, पयनिरत, पाठीन, प्रथुरोमा, बैसारिण, मकर, मीन, वारचर, वारज, विसार, वैसारण, संबर, सफर, सलकी, सिखचारी, सिघचीरी, सुकसार।

यौ०—मच्छीकेतु, मच्छीमार।

रू० भे०—मंछी, मछी, माछि, माछिणी, माछी।

अल्पा०—मछळी, मछली, माछलड़ी, माछली, माछिळी।

मह०—मच्छ, मछ, माछ, माछळौ, माछलौ।

२ बांह, जंघा आदि की मांस पेशी।

३ उक्त मांस पेशी का पकाया हुआ मांस।

४ मच्छी के आकार का सोने चांदी का लटकन जो आभूषणों में लगाया जाता है।

५ पैर में धारण करने का महिलाओं की एक आभूषण विशेष।

मच्छीकेतु-सं० पु० [सं० मत्स्यकेतु] कामदेव।

रू० भे०—मछीकेत।

मच्छीमार—मच्छी पकड़ने का व्यवसाय करने वाला, मछुआ।

उ०—पातर भगतण पेख, परम मन में सुख पाई। मिळियां **मच्छी-मार**, करे ज्यूं मोद कसाई।—ऊ. का.

रू० भे०—मछळीमार।

मछंदर, मछंदरनाथ, मछंद्र, मछंद्रांणी, मछंद्री-सं० पु० [सं० मत्स्य+इन्द्र] नाथ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध नवनाथों में एक, मत्स्येन्द्रनाथ।

उ०—भांण तेजगीरां तीरां विध्या मैंधा जै भाखा, जांण **मछंद्रांणी** जोग मत्ती रौ बोधांण जो भार। जम्मीरा जौखीरां वीरां वीरभद्र जेम, जोयजौ 'हम्मीरां' अेम 'खेम' रौ जोधार।—हुकमीचंद खिड़ियो

रू० भे०—मछिंदर, मछेंदर, मछेंद्र, माछंदर, माछंद्र ।

मछ—१ देखो 'मच्छ' (रू. भे.)

उ०—१ पड़ै कोट उर टकर, पड़ै गज घकै अपारां । जळ धारां **मछ** जेम, घसै सांमो खग धारां ।—सू. प्र.

उ०—२ मणिबंध तीन मणि जब प्रमांणि । **मछ** कच्छ कुंभ गज रथ मंडांणि ।—सू. प्र.

२ देखो 'मच्छी' (मह., रू. भे.)

उ०—खळके लहर समंद जळ खारी । दाभै **मछ** कछ जीव दुए ।
—सांवळदांन कवियो

३ देखो 'मत्स्य' (रू. भे.)

मछकणौ, मछकबौ—देखो 'मचकणौ, मचकबौ' (रू. भे.)

मछकणहार, हारौ (हारी), मछकणियौ—वि० ।

मछकाड़णौ, मछकाड़बौ, मछकाणौ, मछकाबौ, मछकावणौ, मछकावबौ—प्रे० रू० ।

मछकिप्रोड़ो, मछकियोड़ो, मछक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मछकीजणौ, मछकीजबौ—भाव वा० ।

मछकाणौ, मछकाबौ—देखो 'मचकाणौ, मचकाबौ' (रू. भे.)

मछकायोड़ौ—देखो 'मचकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मछकायोड़ी)

मछकावणौ, मछकावबौ—देखो 'मचकाणौ, मचकाबौ' (रू. भे.)

उ०—दूजी मारी देखसी, सारी साथणियांह । म्यारांमजी **मछकावतां** हींडा री तणियांह ।—मयारांम दरजी री वात

मछकावियोड़ौ—देखो 'मचकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मछकावियोड़ी)

मछकियोड़ौ—देखो 'मचकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मछकियोड़ी)

मछकूर—देखो 'मचकूर' (रू. भे.)

उ०—मारू मो मनुहार को, पीवौ दारू पूर । माफ करावौ म्यारजी, मरुधर रौ **मछकूर** ।—मयारांम दरजी री वात

मछगंधा—देखो 'मत्स्यगंधा' (रू. भे.)

मछगात—वि० [सं० मत्स्य+गात्रम्] महाकाय, बड़े शरीर वाला ।

मछटयल—सं० स्त्री०—'निसांणी' छंद का एक भेद विशेष, जिसमें प्रतिचरण २९ मात्राएं होती हैं । १३ और १६ मात्राओं पर यति एंव अंत में दो कुरु होते हैं ।

मछपति—सं० पु० [सं० मत्स्यपति] वरुण देव । (नां. मा., ह. नां. मा.)

मछपळ—सं० पु० [सं० मत्स्य+पाल] समुद्र । (अ. मा.)

मछबारस—सं० स्त्री० [सं० मत्स्य+द्वादशी] अगहन मास के शुक्ल पक्ष को द्वादशी ।

मछर—सं० पु० [सं० मत्सर] १ गर्व, अभिमान ।

उ०—१ अजमेरा ऊतरै, कमळ कूं बोल चडावै । मेल्हि पराक्रम **मछर**, कुळह काळक्ख लगावै ।—गु. रू. बं.

उ०—२ बातां बिसतारे वणै, सठ आगै सरवग्य । मून ग्रहे छांडे **मछर**, तीखौ मिळियां तग्य ।—बां. दा.

उ०—३ 'सूर' रौ दिली दरगाह असहां सिरै, हियै चड प्रवाडा लियण हिळियौ । मूहां सैंदां तणा मार हिंदू मुगळ, **मछर** सैंघां-मुहां आंण मिळियौ ।—देवराज रतनूं

२ ओज, तेज ।

उ०—श्री अखीयात कीध 'आसावत, रोदां सूं तेवड़ै रिण । वप वधियौ वरधापण वढतां, पोरस **मछर** जवांनपण ।
—दुरगादास आसकरणोत री गीत

३ जोश, साहस ।

उ०—वदन तेज कळपंत रौ वयळ वाडव वणै, ऊफणै क्रोध पोरस अमांमो । मंडांणौ हेक राजा घणै **मछर** सूं, साहजादां दुहुं तणै सामहो ।—रूघो मुहतौ

४ शौर्य, पराक्रम ।

उ०—इण भांति पंकति बैठा देवगण आप आपरा दुख रौ विवेदन कियौ । इतरा मांहे छिलतै **मछर** सूर पूर रौ उजाघर केवियां रौ काळ सत्रां रौ साल, बोलिया इंद महाराज ।—मा. वचनिका

५ क्रोध, कोप, गुस्सा ।

उ०—१ डसै अहर जमदूत, **मछर** छिलंतै मेलियौ । कूंभै वाळौ कूंत, हेमै वप सांसर हुवौ ।—नैणसी

उ०—पूरब पछम धरा दध-पारू, दिखण तणौ खूटो बळ दारू । सक उतराध धरा तो सारू, **मछर** धरैं किण ऊपर मारू ।
—चतुरौ मोतीसर

६ शत्रुता ।

उ०—मनै सैज ऊतारिया महल सुख माळिया, **मछर** मछरीक मेले मछरमांण । 'सूर' भय ताहरै कमंध आखाडसिध, साथरै पाथरै सुये 'सुरतांण' ।—दुरसौ आढ़ौ

७ डाह, ईर्ष्या ।

८ मलीनता, कलुषता ।

९ प्रमाद, आलस्य ।

१० देखो 'माछर' (रू. भे.)

रू० भे०—मंछर, मच्छर, मच्छरि, मच्छरी, मछरि ।

मछरगुर—वि० [सं० मत्सर+गुरु] १ वीर शिरोमणि ।

२ महा अभिमानी, गर्वीला ।

मछरणौ, मछरबौ—क्रि० स०—१ गर्व करना, अभिमान करना ।

उ०—ते चाल्या चिति हरखता, मत्तायत **मछरंति** । बइठा दीघइ बारणि, हाक दीइ हलकंति ।—मा. कां. प्र.

२ कोप करना, क्रोध करना ।

उ०—रिम गंजण सिंघ **मछरियौ** राजा, जो जिण ठांभ स जुवा जुवा । झाला चौंडा समा झळहळै, हालाहूर हैकंप हुवा ।—द. दा.

३ आलस्य करना, प्रमाद दिखाना ।
४ आनन्द करना ।
मछरणहार, हारौ (हारी), **मछरणियौ**—वि० ।
मछरिओड़ौ, मछरियोड़ौ, मछरचोड़ौ—भू० का० कृ० ।
मछरीजणौ, मछरीजबौ—कर्म वा० ।

मछरमांण—देखो 'मच्छरमांण' (रू. भे.)
उ०—मनै सैंज ऊतारिया महल सुख माळिया, मछर मच्छरीक मेले **मछरमांण** ।—दुरसौ आढ़ौ

मछरां–सं० पु० [ब. व.] आनन्द, मौज ।
उ०—१ खुद तौ लोगां री कमाई माथै **मछरां** करौ अर म्हनै इंछा परमांण मांगण री आदेस करौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ वै कैवै के राजा री देह में कोई पीड़ अर कळेस ऊपजै अर रया साजी सूरी सुख चैन सूं **मछरां करै तौ** उण रा राजा पण में धूळ ।—फुलवाड़ी

मछराळ–वि० [सं० मत्सर+आलुच्] (स्त्री० मछराळी) १ वीर, बहादुर ।
उ०—१ माझी 'मेघ' हरौ **मछराळ**, हूंतल्लमल्ल हाथाळ । जैत्रवादी जंमजाळ, केवियां रौ काळ सूर धीर सप्पखाळ ।—ल. पिं.
उ०—२ 'रासौ' जुध 'माहव' रौ **मछराळ** । रमै खग झाट खळां विकराळ ।—सू. प्र.
२ गर्वीला, अभिमानी ।
उ०—१ मुह रावत **मछर** भयंकर मांडण, महि 'मंडळावत' **मछराळ** । 'पातावत' 'परभुमीह' पंचांइण 'रूपा' जीपण रिणताळ ।
—गु. रू. बं.
उ०—२ लखपति बिरदाळ कळहिलं काळ, असुरां काळ खत्री अड़साळ । मिणिधर **मछराळ**, भींच भुजाळ, इळ रखपाळ पखां अजुआळ ।—ल. पिं.
३ कोप करने वाला, क्रोध करने वाला ।
४ योद्धा ।
५ द्रुतगामी, तेज गति वाला ।
उ०—खइंगरू वहइ गति नंदधोख, **मछराळ** अचप्पळ पमण मोख । अगरांण पूठि आहवि अवीह, सुजड़ाहथ चडियउ करमसीह ।
—रा. ज. सी.
रू० भे०—मच्छराळ ।
अल्पा०—मच्छराळौ, मछराळौ ।

मछराळौ—देखो 'मछराळ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—**मछराळा** मूंछाळ, वेहद हद वेढ़ीगारा । सुर भग्गा लख वार, प्रथी इक छात्रप सारा ।—मा. वचनिका

मछरि—देखो 'मछर' (रू. भे.)
उ०—१ कमधज्ज गरजि कंठीर जिम, महाकोप चडियौ **मछरि** ।
—गु. रू. बं.
उ०—२ साझियां वीरमदेव संभ्रम, **मछरि** चढ़ि रिण मीर । कर जोड़ि बीबी तोडि कंकण, नयण नांखै नीर ।
—चांदा वीरमदेओत मैड़तिया रौ गीत

मछरियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ गर्व किया हुआ, अभिमान किया हुआ. २ कोप किया हुआ, क्रोध किया हुआ. ३ प्रमाद किया हुआ. ४ आनन्द किया हुआ, मस्त ।
(स्त्री० मछरियोड़ी)

मछरीक–सं० पु०—चौहान राजपूतों के लिये प्रयोग किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द ।
उ०—हुई दळ मूगळ चाढ़त हीक, महाबळ राड़ करै **मछरीक** ।
—सू. प्र.
रू० भे०—मच्छरीक ।
अल्पा०—मच्छरियौ ।

मछरूप—देखो 'मच्छरूप' (रू. भे.)
उ०—मीरां तूं हीज **मछरूप**, तूं संख सवांला ।—केसौदास गाडण

मछरैत [सं० मत्सर+रा० प्र० एत] जबरदस्त, शक्तिशाली ।
उ०—नांमैंत घैंत मिळिया निजोड़, कांमैंत भीच नखतैंत कोड़ । वांनैंत कौड़ि अभ्रैंत वीर, परचैंत जांण **मछरैंत** पीर ।
—मा. वचनिका
रू० भे०—मच्छरैत ।

मछळणौ, मछळबौ—देखो 'मचळणौ, मचळबौ' (रू. भे.)

मछळांण, मछळांद, मछळाट—देखो 'मचळांण' (रू. भे.)
उ०—तठा उपरांयत खरगोस होसनाक वणावै छै । **मछळांद** मिटायजै छै ।—रा. सा. सं.

मछळी—१ देखो 'मच्छी' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ डाबर नैंण नाचती भंवती पूतळियां जांणै दो **मछळियां** रमै नाचै ।—फुलवाड़ी
उ०—२ जळ से प्रीत करी **मछळी** नै, बिछुरत प्रांण तजै । अगां की प्रीति लगी नादां से, सनमुख सेळ सहै ।—मीरां
२ देखो 'मच्छ' (मह., रू. भे.)

मछळीमार—देखो 'मच्छीमार' (रू. भे.)

मछवा–सं० स्त्री० [सं० मत्स्य] मच्छी पकड़ने व बेचने का व्यवसाय करने वाली जाति विशेष ।
रू० भे०—मच्छवा ।

मछवौ–सं० पु०—मछवा जाति का व्यक्ति, मछी को जाल द्वारा पकड़ने का कार्य करने वाला व्यक्ति ।
रू० भे०—मच्छवौ ।

मछांचर–सं० पु० [सं० मत्स्य+चर] १ छोटे २ जल-जन्तु ।
उ०—सुजळ कळा पोढ़िम स्रवण दांन धरियां सको, ऊजळ पथ सुरां छंट भुजां उनमांन । **मछांचर** दमंग बड चात्रगां मांगणां, समंद चंद गिरंद इंद कुंवर 'सुनमांन' ।—सुनमांनसिंह हाडा रौ गीत

२ बगुला ।
वि०—मछली खाने वाला ।

मछावतार–सं० पु० [सं० मत्स्यावतार] चौबीस अवतारों में से विष्णु का एक अवतार, मत्स्यावतार ।
रू० भे०—मच्छावतार, मछ ।

मछिंदर—देखो 'मछंदर' (रू. भे.)

मछियारौ–सं० पु० [मत्स्य+रा० प्र० यारौ] मछली पकड़ने का कार्य करने वाला व्यक्ति, मछुआ ।
उ०—राजकंवर री बात सुणनै मछियारौ डग डग हंसियौ। हंसतौ हंसतौ ई बोल्यौ—आ बात म्हारै सोचण री नीं है, मछळियां रै सोचण री है ।—फुलवाड़ी
रू० भे०—मच्छियारौ ।

मछी—देखो 'मच्छी' (रू. भे)
उ०—तुम भये तरुवर मैं भई पंखियां । तुम भये सरवर मैं तेरी **मछियां** ।—मीरां

मछीकेत—देखो 'मच्छीकेतु' (रू. भे.)

मछीपटण—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
उ०—**मछीपटण** मनभावतौ, कांचु दियौ सिवाइ। प्रीतम पोढै पिलंग परि, सुंदर ढोलें वाइ ।—व. स.

मछेंदर, मछेंद्र—देखो 'मछंदर' (रू. भे.)

मछेछी–सं० स्त्री० (स० मीनाक्षी] एक लता विशेष जिसके पुष्पों की तरकारी बनाई जाती है । इसके फल मच्छी के आकार के होते हैं ।

मछोदरी–सं० स्त्री० [सं० मत्स्य+उदर+रा० प्र० ई] मत्स्य के उदर से उत्पन्न होने वाली, सत्यवती ।
वि० वि०—देखो 'मत्स्यागंधा' (रू. भे.)

मछौळौ—देखो 'मचोळौ' (रू. भे.)
उ०—मदवी को **मछौळौ** हाथी की हाल, तीजणींयां को तुररौ । रूप की मुसाल ।—मयारांम दरजी री वात

मजकूर–वि० [अ०] १ पूर्वोक्त, जिक्र किया हुआ ।
सं० पु०—१ विवरण ।
२ चर्चा, जिक्र ।
३ पूर्व लिखित विवरण, उल्लेख ।
उ०—तिण वचन रै विरुद्ध चाल न चलै, ज्यूं तवारीख में **मजकूर** छै ।—नी. प्र.
४ वृत्तान्त, हाल, वार्ता ।
उ०—तद बादसाह कही वहां कांम काज का **मजकूर** किससे पूछें ।
—गौड गोपाळदास री वारता
५ सलाह, मंत्रणा ।
६ वर्तमान, हाजिर ।
उ०—हुसंग साह बेटा स्यांम करां में छै । तिको आपरै बेटा नूं कही थी सो **मजकूर**—नी. प्र.

मजघोसा—देखो 'मंजुघोसा' (रू. भे.)

मजण—देखो 'मंजण' (रू. भे.)

मजणौ, मजबौ—देखो 'मंजणौ, मंजबौ' (रू. भे.)
मजणहार, हारौ (हारी), मजणियौ—वि० ।
मजिओड़ौ, मजियोड़ौ, मज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मजीजणौ, मजीजबौ—भाव वा० ।

मजदूर–सं० पु० [अ० फा० मज्दूर] (स्त्री० मजदूरण, मजदूरणी) बोझा ढोने वाला व्यक्ति, मज्दूरी करने वाला, श्रमिक ।
रू० भे०—मजूर ।
अल्पा०—मजूरड़ौ, मजूरियौ ।

मजदूरी–सं० स्त्री० [अ०फा० मज्दूरी] १ मज्दूर या श्रमिक का कार्य ।
२ वह धन जो किसी नियत कार्य या श्रम के लिए दिया जाता हो, पारिश्रमिक ।
३ जीवन यापन के लिए किया जाने वाला कोई छोटा मोटा कार्य ।
रू० भे०—मजूरी ।
अल्पा०—मजूरड़ी ।

मजन—देखो 'मंजण' (रू. भे.)

मजनूं–सं० पु०—अरब का एक प्रसिद्ध 'कैस' नामक किशोर जो लैला नामक किशोरी पर आसक्त होकर उसके प्रेम में पागल हो गया था ।
वि०—प्रेम में दीवाना, प्रेमोन्मत्त ।

मजब—१ देखो 'मजहब' (रू. भे.)
२ देखो 'मुजब' (रू. भे.)

मजबी—देखो 'मजहबी' (रू. भे.)

मजबूत–वि० [अ० मज़बूत] १हृष्ट-पुष्ट ।
२ दृढ, ठोस ।
उ०—दळ बळ सूं घेरौ दियौ, प्रबळ हुमांऊ पूत । गैलोतां चीतौड़ गढ़, मिळ कीधौ **मजबूत** ।—बां. दा.
३ सबल, बलवान ।
उ०—कुल रजपूत **मजबूत** करतार कीनौं, रंग मजबूत मजबूत रजपूती मैं ।—ऊ. का.
४ अटल, स्थिर ।
उ०—चित सूं आगम चितवै, आ **मजबूत** उपाव । 'बंक' जुड़ै नंह वांछियौ, इण कारण ह्वै आव ।—बां. दा.
५ स्थायी, पक्का ।
उ०—विदीया साळ रौ कमठौ संवत् १९०२ फीरंच साब अजंट रा कै'णा सूं लड़कां नै पढ़ावण सारू तठै ई साळ रौ कमठौ बडौ **मजबूत** वीयौ ।—मारवाड़ री ख्यात

मजबूती–सं० स्त्री० [अ० मज़बूती] १ पुष्टता ।
२ दृढ़ता ।
३ स्थिरता ।
४ बल, शक्ति ।

मजबूर–वि० [अ०] विवश, लाचार।

मजबूरी–सं० स्त्री० [अ०] विवशता, लाचारी।

उ०—घांसी म्हारी फेर बिगड़गी। माथौ दरद सूं फाटै। फगत दबाव रै कारण कांम री **मजबूरी**।—फुलवाड़ी

मजमांन—देखो 'मिजमांन' (रू. भे.)

मजमांनदारी, मजमांनी—देखो 'मिजमांनी' (रू. भे.)

मजमून–सं० पु० [अ० मज़मून] १ विषय, इबारत।

उ०—फेर इण **मजमून** री गीत।—द. दा.

२ लेख, विवरण, लिखावट।

उ०—**मजमून** पहला—तूं बंदौ निरबळ छै प्रभू जोरावर छै तिण तौ नूं बड़ौ कियौ छै। **मजमून** बीना विचार कर गरीबां ऊपर प्रभू री सौंप रै उतावळ सूं कांम मत कर।—नी. प्र.

रू० भे०—मंजमून।

मजमौ–सं० पु० [अ० मजमः] १ बहुत से लोगों का समूह, जन समुदाय की भीड़।

उ०—वौ जिण वगत उठै पूगौ, लांठा सामियांना हेटै पूरौ **मजमौ** जमियोड़ौ हौ।—फुलवाड़ी

२ वह स्थान जहां लोगों की भीड़ हो।

मजराफ–सं० पु०—एक वाद्य विशेष। (व. स.)

मजल—देखो 'मंजिल' (रू. भे.)

उ०—१ जे कौई ही चैन परलोक नै अठारौ चाहे तिकौ विगैर मदद ऊंडा विचारां री **मजल** नै पहुंचै।—नी. प्र.

उ०—२ मल्हार रौ कूंच करायौ **मजल** एक डेरा कर मोनूं सीख दीवी।—मारवाड़ री ख्यात

उ०—३ उठा सूं हालिया फौज बडी घणी सो **मजल** छोटी हुवै। महनौ एक मारग में लगायौ।—गौड गोपाळदास री वारता

उ०—४ सीहाजी सांम्हौ चलायौ नै कह्यौ—दिन रौ दिन डेरौ जठै हुवै तठा री खबर म्हांनुं मेलजौ। नै वह **मजल** दस पांच सीहाजी भेळा हुवौ।—मारवाड़ री ख्यात

उ०—५ माहाराज रै समईयै री खबर हुई। आ जांणौ छै, लोक राजा नूं **मजल** पोहचावण नूं गया छै, रांणी दहड सती हुसी, अर 'नरसंघ' छोटौ छै।—राजा नरसिंघ री वात

मजलस, मजलिस–सं० स्त्री० [अ० मजलिस] १ सभा।

उ०—ऐसी विध भुंजाई की तैयारी करि हवालगींरू नै अरज गुजराई। तिस बखत खिलबत के लोगूं के बीच **मजलस** बणवाई।
—सू. प्र.

२ महफिल, नाच रंग।

उ०—विचित्रकुमार नै साथी राजा रै दरबार आया। **मजलस** हुई। साथ में अमल पांणी री मनवार हुवै छै। विचित्रकुमार रो नजर ओळगुवां मांहीं छै। ओळगुवां पण हुलनै गावै छै। रबाब-सारंगी, ढ़ोल-मंजरी बाजै छै।—पलक दरियाव री बात

३ नाच रंग का स्थान।

रू० भे०—मजलेस।

मजलिसी–वि०—१ मजलिस में बैठने वाला।

२ मजलिस सम्बन्धी।

मजलेस—देखो 'मजलिस' (मह., रू. भे.)

उ०—सुकवि देख संभरै, कोड़ उच्चरै विरद्दां। रीत 'अजन' राठौड़, जोड़ लखि हद्द समंदां। वासिव घर **मजलेस**, नेस लखि ईस परक्खौ। 'अभै' जिसौ नर अवर, राज घर कुंवर निरक्खौ।
—रा. रू.

मजहब–सं० पु० [अ० मजहब] १ धर्म, दीन।

उ०—जनाजा सूं उण री करणी रा बारा में पूछताछ करै कै थारौ रब कुण है, थारौ **मजहब** कांइ है।—फुलवाड़ी

उ०—२ अरथ कर नवा फुरमांण रीं आयतां, लिया कर साह रै कांन लागै। कहै मखदूम जुग हेक **मजहब** करौ, 'जसौ' हिन्दू-धरम मदत जागै।—नरहरदास बारहठ

२ सम्प्रदाय, पंथ, मत।

रू० भे०—मजब।

मजहबी–वि० [अ० मजहबी] १ धार्मिक।

२ मजहब से सम्बन्धित।

३ साम्प्रदायिक।

रू० भे०—मजबी।

मजाक–सं० स्त्री० [अ० मज़ाक] १ हंसी ठट्ठा, दिल्लगी, हास परिहास, मखौल।

उ०—म्हारै धकै तौ फगत कांम होवणौ चाहीजै। आप **मजाक** में ईं हुकम फरमाय दियौ तौ अबै बंदौ तौ दोनूं टंक लीद ई जोखेला।
—फुलवाड़ी

२ तिरस्कार।

क्रि० प्र०—उडाणी, करणी, सहणी।

रू० भे०—मजाख।

मजाकियौ—देखो 'मजाकी' (अल्पा., रू. भे.)

मजाकी–वि०—मजाक करने वाला, हंसी ठट्ठा या दिल्लगी करने वाला।

उ०—काढ़ै दोसण कायबां, बातां दिए बिगोय। पूछै अरथ रु पहलियां, खूब **मजाकी** सोय।—बां. दा.

रू० भे०—मजाखी।

अल्पा०—मजाकियौ।

मजाख—देखो 'मजाक' (रू. भे.)

मजाखी—देखो 'मजाकी' (रू. भे.)

मजाज—देखो 'मिजाज' (रू. भे.) (डि. को.)

मजार–सं० पु० [अ० मज़ार] कब्र, समाधिस्थल।

उ०—इमांन मां उतपत्ति जे, नोज **मजार** निवेस। कमाल पयंपै मूळरज, तास न कोई वेस।—नैणसी

२ देखो 'मध्य' (रू. भे.)

मजारी—देखो 'मारजार' (रू. भे.)

मजाल-सं० स्त्री० [अ०] १ शक्ति, सामर्थ्य ।

उ०—अर जो अै पगां ऊभा हुवै तौ चोरी हुवै इसी कै री मजाल छै ।—राजा भोज अर खापर चोर री वात

उ०—२ तरै रजपूते कह्यौ—मजाळ छै । पछै उग्रसेन नुं सीत्रांणां रो विचार कियौ कह्यौ तोड़ दियौ, सु उठै जा ।

—राव चंद्रसेन री बात

२ हौसला, हिम्मत ।

उ०—आप उणनै इत्ती माथै नीं चाढ़ता तौ उण री कांई मजाळ के घर घर यूं वेळ बातां बकती फिरै ।—फुलवाड़ी

मजासणौ-सं०पु० [सं० मसि+आसनम्] स्याही रखने का पात्र, दवात ।

उ०—बो धम धम नीचै उतरियौ । पगांथियां पर मेलियोड़ौ मजासणौ पग री ठोकर सूं ऊंधौ हुय यौ । अर इण अपमांन सूं बै री सरीर टुकड़ा टुकड़ा हुयग्यौ ।—वरसगांठ

रू० भे०—मंजासणौ, मंजीयासणौ, मज्याणौ, मज्यासणौ ।

मजाह—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—वार वार बावरै, सार ऊपरै सनाहां । बीज जांण बादळे मिळे ऊछळे मजाहां ।—रा. रू.

मजिसटर, मजिस्टर, मजिस्ट्रेट-सं० पु० [अं० मजिस्ट्रेट] फौजदारी अदालत का दण्डनायक, न्यायाधीश।

मजिस्ट्रेटी-सं० स्त्री०—मजिस्ट्रेट का पद या अदालत ।

मजीठ-सं० स्त्री० [सं० मजिष्ठा] १ पहाड़ी क्षेत्र में पाई जाने वाली एक लता विशेष जिसके सूखे डंठलों व जड़ को उबालकर गहरा लाल रंग बनाया जाता है । वैद्यक में इस लता के डंठलों आदि का प्रयोग अनेक रोगों में होता है ।

उ०—घण रत छूटत फूटत घाट । मजीठ कि जांणि ढुळै रंग माट ।

—सू. प्र.

२ लाल रंग ।

३ लाल रंग का घोड़ा जो शुभ माना जाता है । (शा. हो.)

वि०—मजिष्ठा के रंग का, लाल रंग का, रक्त वर्ण का ।

उ०—वदन मजीठ रूप विकराळां, पमंगां चढ़ै पूर पखराळां ।

—सू. प्र.

रू० भे०—मंजीठ, मज्जीठ ।

अल्पा०—मजीठी ।

मजीठउ—देखो 'मजीठौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तुम्ह सुं लागउ नेहलउ, जांण मजीठउ राग, पट्टकूल फाटै थकें, रहें त्रागां सुं लागौ रे ।—प. च. चौ.

मजीठियौ—मजीठ के रंग के समान रंगदार कपड़ा विशेष ।

वि०—मजीठ के रंग का, मजीठ संबंधी ।

मजीठी-वि०—१ मजीठ का, मजीठ संबंधी ।

२ लाल, रक्त वर्ण ।

३ देखो 'मजीठ' (अल्प ., रू. भे.)

रू० भे०—मंजीठी ।

मजीठौ-वि० (स्त्री० मजीठी) १ मजिष्ठा के रंग का, लाल रंग का, रक्त वर्ण का ।

उ०—कांमा कांम कमधज दीठौ, पलकां अंतर अमी पइट्ठौ । रत्ता लोचन मुख मजीठौ, आवि सिंघासण सिंघ बइट्ठौ ।—गु. रू. बं.

सं० पु०—मजीठ के रंग से मिलते जुलते रंग का घोड़ा विशेष ।

(शुभ)

रू० भे०—मजीठ, मज्जीठौ, मांजिस्टौ ।

मजीत, मजीद—देखो 'मसजिद' (रू. भे.)

मजीर—देखो 'मंजीर' (रू. भे.)

२ देखो 'मंजीरा' (मह., रू. भे.)

उ०—एक इकतारौ आयौ, ढोलक अर मजीरा मंगवाया ।

—दसदोख

मजू'—देखो 'मंजूस' (रू. भे.)

मजूर—देखो 'मजदूर' (रू. भे.)

उ०—१ तद कुंवर कही रै एक मांणस म्हारौ तै पासै मजूर राखै तौ राखां ।—चौबोली

उ०—२ सु सुपीयारी आथण मजूरणी री वेस करनै माथै घड़ौ ले नीसरी ।—नैणसी

(स्त्री० मजूरण, मजूरणी)

मजूरड़ी—देखो 'मजदूरी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कारी कुटका वरसाळै में, टळै ऊंटां मजूरड़ी । ढोलौ अर आंगळी देवण, माडण खूब खजूरड़ी ।—दसदेव

मजूरड़ौ, मजूरियौ—देखो 'मजदूर' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री० मजूरड़ी)

मजूरी—देखो 'मजदूरी' (रू. भे.)

उ०—१ बैल बंधावौ मांवै घोड़ा बंधावौ, चाहै करावौ मजूरी ।

—मीरां

उ०—२ खरी मजूरी कर अर खरा रिपिया ले । यूं ओजौ ताक्यां तौ बात नीं बणै ।—फुलवाड़ी

उ०—३ सील अर साहस रै सागै मरदांनगी सूं मजूरी करै, आपरौ टापरौ रूखाळै ।—दसदोख

मजूस—देखो 'मंजूसौ' (मह., रू. भे.)

उ०—गैणा गांठा सूं सैंठौ मजूस भरनै वा रांमदुवारा कांनी वहीर व्ही ।—फुलवाड़ी

मजूसौ—देखो 'मंजूसौ' (रू. भे.)

मजेज-क्रि० वि०—१ शीघ्र, तुरंत ।

२ देखो 'मिजाज' (रू. भे.)

उ०—१ तुल वाद बरोबर राज तेज। महाराज आप बधतै मजेज।
—सू. प्र.

उ०—२ समाधांन री तिण समै, जिय सह सक्यौ न जेज। प्यारी नह जावां परत, मत घर मांन मजेज।—र. हमीर

उ०—३ ढळकतां ढाल मदधर धजां, घंट घोर अग्राज घण। चढियां मजेज होतां चमर, तेज पुंज 'अगजीत' तण।—सू. प्र.

मजेदार—वि० [फा० मज:दार] १ स्वादिष्ट, जायकेदार।

२ आनन्द देने वाला।

मजेदारी—सं० स्त्री० [फा० मज:+दारी] १ स्वाद, जायका।

२ आनन्द, मजा।

मजेरौ—वि० (स्त्री० मजेरी) अच्छी तरह, सुविधापूर्वक, संतोषजनक।

उ०—जे कोई टीका-टमका करै, माळा-मिणियौ फेरै, पोथी पांनड़ौ उघाड़ै बो: आपरौ मजेरौ धाको धिका लेवै।—दसदोख

मजौ—सं० पु० [फा० मज:] १ किसी कार्य करने से आने वाला आनन्द, लुत्फ, मौज, मस्ती।

उ०—१ लाफसी'र घीरौ धूंवो नूंतो कर दियौ है। हांतो अर हरख रौ मजौ ले लियौ है।—दसदोख

उ०—२ जद ईं सोखी नाई में ही मजौ नीं आवै, गजो ऊपरली गळी जावै है।—दसदोख

उ०—३ रात रा कुळबै-कुळबै काकड़ियां रा ठोरौ दे आवै। गधौ तौ थोड़ा दिनां में मुस्तंड व्हैगौ। मजौ बणियौ पण बणियौ।
—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—आणौ, करणौ, देणौ, बणणौ, लाधणौ, लूटणौ, लेवणौ, लैणौ, होणौ।

मुहा०—१ मजो आणौ=आनन्द होना, सुख मिलना, मस्ती आना। २ मजो किरकिरौ होणौ=सुख में व्यवधान पड़ना, कोई आनन्द का प्रसंग चल रहा हो वहां एकाएक दुख की बात होना। रंग में भंग पड़ना।

२ खाने-पीने की वस्तुओं से मिलने वाला स्वाद, जायका, रस, तृप्ति।

मुहा०—१ मजा उडावणा=खूब माल-मलीदा खाना, इच्छित भोजन करना, मस्ती छानना।

३ सुख, चैन आराम।

उ०—कूंजड़ौ दुकांन मांडनै बजार में बैठतौ अर कूंजड़ी ओडी लेयनै फेरी लगावती। मजा में घर रौ गुजरांण चालतौ हौ।
—फुलवाड़ी

४ किसी बात या प्रसंग से होने वाला मनोरंजन, हंसी।

५ तमाशा, खेल।

६ सैर।

७ दंड, सजा, फल।

उ०—१ कात्योड़ी काळी ऊन, पैसी पूरी कांभळी अर पीळी कांनी रा केई पट्टड़ा पुळस अर अदालत हाळांनै खील-खील'र उढावै है। खून्यां नै मजौ चखा देणौ है।—दसदोख

उ०—२ परणिजियां पछै इण रौ वट काढूंला, आंट रौ मजौ बतावूंला।—फुलवाड़ी

मुहा०—१ मजो चखाणौ, मजो चखावणौ=दण्ड देना, कोई चोट करना, सजा देना, बदला या प्रतिशोध लेना। २ मजो बतावणौ=देखो 'मजो चखाणौ'।

८ स्त्री संभोग से मिलने वाला रति सुख, आनन्द।

मज्ज—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

मज्जण—देखो 'मंजण' (रू. भे.)

उ०—सुच्छ अमळ तासीर फबै अलि फूटरौ। मज्जण पीवण मधुर स्वाद मधु घूंट रौ।—अज्ञात

मज्जणौ, मज्जबौ—क्रि० स०—१ जमीन में गड्ढा करना, खोदना।

उ०—पना को तनू येम 'गोपाळ' सज्जै। धरां नेत बंधी हयं खूर मज्जै।—ला. रा.

२ देखो 'मंजणौ, मंजबौ' (रू. भे.)

मज्जन—देखो 'मंजण' (रू. भे.)

उ०—निरमळ जळ जतनइ करी, मांहि मिस्र कपूर। एक चिंतई अतिसिइ घणी, मज्जन दोइ चतूरि।—मा. कां. प्र.

मज्जा, मज्जाव—सं० स्त्री० [सं० मज्जा] १ शरीर की हड्डी के भीतर का गूदा जो चिकना और कोमल होता है। (डि. को.)

२ फलों आदि के अन्दर का गूदा।

उ०—फुट वांनरेण कच नालिकेर फळ, मज्जा तिकरि दधि मंगळिक। कुंकुम अखित पराग किंजळक। प्रमुदित अति गायंति पिक।
—वेलि

३ पौधों के बीच की नस।

मज्जारस—सं० पु० [सं० मज्जा+रस:] वीर्य, शुक्र।

मज्जीठ—देखो 'मजीठ' (रू. भे.)

उ०—धरती जेहा भरखमा, नमणा जेही केळि। मज्जीठां जिम रच्चणा, दई सु सज्जण मेळि।—ढो. मा.

मज्जीठौ—देखो 'मजीठौ' (रू. भे.)

उ०—मज्जीठै मुहरंग, नयण जोती जाळंनळ। विक्ख वंक क्रिस लंक थोर बाहू डंड हत्थळ।—गु. रू. बं.

(स्त्री० मज्जीठी)

मज्झ—१ देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—१ साजन बोलावै हूं खड़ी, ऊभी बजारां मज्झ। लाख घरां री बसतड़ी, लागै बिरंगी अज्ज।—अज्ञात

उ०—२ मज्झ नदी पांणी में बैठो। खिणेक बिसाई खायनै ऊभौ व्हियौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ मन्न! मरइ तु हूं मरूं, मन ऊभर न मराइ। माधव मूंकी मज्झ विण, अबरां ऊपरि जाइ।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'मुझ' (रू. भे.)

मज्झलौ—१ देखो 'मझलौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मज्झली)

२ देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—रांमा हवइं रुडुं हसइ, रूठा देव मनावि । वाटइ लागु वेदीउ, तुं घर मज्झलि आवि ।—मा. कां. प्र.

मज्झि, मज्झे—१ देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—१ महाजुध मज्झि छिबै असमांण, दुवौ हदमाल लड़ै दइवांण ।—सू. प्र.

उ०—२ गिण छप्पय चा बरण लघु । त्यां मज्झे दळ टाळ ।
—र. ज. प्र.

२ देखो 'मध्ये' (रू. भे.)

मज्याणौ, मज्यासणौ—देखो 'मजासणौ' (रू. भे.)

मझ—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—१ भूप कहै धनि धनि धनि भाई । कळजुग मझ सतजुग अधिकाई ।—सू. प्र.

उ०—२ लींधी दिसि लंका-तणी, मझ हईडा सिउं चंपि । रोई-रोई नइं रहिउ, थाकु थिरथिर कंपि ।—मा. कां. प्र.

उ०—३ त्रकुटबंध तिण गीतनै, कहै सरब कवियांण । राघव जस जिण मझ रटै, वळै सतारथ वांण ।—र. ज. प्र.

देखो 'मुझ' (रू. भे.)

उ०—बहु गुणवंती गोरड़ी, कंठि विलाइ कंत । मझ पांहि तुझ वल्लही, ते कहीइ कुण तंत ।—मा. कां. प्र.

मझताळी-सं० पु०—महादेव । (ना. डि. को.)

मझधार-सं० स्त्री० [सं० मध्य+हिं० धार] १ जल प्रवाह की बीच की धारा ।

२ असहाय अवस्था ।

उ०—छांड गयौ मझधार सांवरौ, बिना अकल कौ जाट ।—मीरां

३ किसी कार्य अथवा बात के मध्य की स्थिति ।

मुहा०—मझधार में छोडणौ=किसी को संकट की स्थिति में डालना, इस प्रकार की स्थिति में किसी का साथ छेड़ना । कोई काम अधूरा रहने देना, अपूर्णावस्था में छोड़ना ।

मझम—देखो 'मध्यम' (रू. भे.)

मझमांन—देखो 'मिजमांन' (रू. भे.)

मझमांनी—देखो 'मिजमांनी' (रू. भे.)

उ०—पै'लां मैं पबिपात रै प्रमांण पूगतां ही उठी रा भी कायर चळ-बिचळ थिया । अर सूर हूंता तिकै कंवर दूदै मझमांनी मिळाइ निहाल किया ।—वं. भा.

मझलौ-वि० [सं० मध्य+रा० प्र० लो] (स्त्री० मझली) १ बीच का, मध्य का ।

रू० भे०—मंझलौ, मज्झलौ, मझालौ ।

२ देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—विध बलमीक विधांन, रचि संखेप कहूं गुण राघव । अनड़-मेर उनमांन, मेरह जेम प्रिथी दत मझळी ।—सू. प्र.

मझलोक-सं० पु० [सं० मध्यलोक] सुमेरू पर्वत के १,०००४० योजन की ऊंचाई पर मध्यवर्ती लोक । (जैन)

मझा—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—आद पुरख मझा अछत छत रा वड आंणी ।
—केसोदास गाडण

मझार, मझारि, मझारै—देखो 'मध्य' ।

उ०—१ बोलै वेद लाभ ग्रह बासत, तीरथ अड़सठ सुफळ तयार । निज मन हुलस सांपड़ै जे नर, जस रघुवर सुरसरी मझार ।
—र. ज. प्र.

उ०—२ ज्यां जस छत्र तणावियौ, माथै जगत मझार । जिकै छत्रधर जांणणा, सुदतारां सिणगार ।—बां. दा.

उ०—३ समय सुंदर कहै ध्यांन इक तेरउ, मेरे चित्त मझार ।
—स. कु.

उ०—४ रमै हसै नरिंदरं, मझार राज मिंदरं । करै उछाह सुक्कियां, पचास सातसै प्रिया ।—सू. प्र.

उ०—५ कहि तु काळिज मांहां धरूं, राखुं हृदय मझारि । मूझनि मूकी माधवा ! पगलूं रखै पधारि ।—मा. कां. प्र.

उ०—६ ऐक बार मेल्हौ अंगद, महि लंक मझारै । दई हुकम अंगद दियौ, वप तांम वधारै ।—सू. प्र.

मझालौ—देखो 'मझलौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मझाली)

मझि, मझी—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—सिव सकती सम मुगती, सिव मझि सकति सकति सिव मझै ।—गु. रू. बं.

उ०—२ तज मक्कर फक्कर तसूं, उर सुध करखै रात अपंदै । बस कर दे इंद्री अवस, तन मझी तप सील तप्पंदै ।—र. ज. प्र.

उ०—३ उण अवसर मझि 'अमर', अधक धर दुंद उठायौ । मिळि असपति खुरंभ, अधिक दळ बळ मझि आयौ ।—सू. प्र.

मझे, मझेण, मझ्झ—१ देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—१ सिव सकत्ती सम मुगती, सिव मझि सकति सिव मझे ।
—गु. रू. बं.

उ०—२ लिजीयौ नयरैण हीरा, सायर मझेण रतन नेपती ।
—गु. रू. बं.

उ०—३ मासी आ भीड़ देखी तौ आपरा छवूं चीतरां नै लेय भीड़ रै मझ्झ आय ऊभगी ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मध्ये' (रू. भे.)

मझ्यांन–सं० पु० [सं० मध्याह्न] दोपहर का समय, मध्य दिवस, दिन का मध्य काल।

उ०—सयणी खेलती **मझ्यांन** तळाव आई छै।—सयणी री बात

मटंब—ऐसी बस्ती जिसके आस-पास ढाई कोस (पांच मील) तक कोई बस्ती न हो।

उ०—केवडउं राज्य चक्रवरत्ति तणउं चउद रत्न, नव महानिधान, सोल सहस्र यक्ष,·······नवाणु सहस्र द्रोणमुख, अठितालीस सहस्र पाटण, चउवीस सहस्र करबट, चउवीस सहस्र **मटंब**, सोल सहस्र खेटक, चउद सहस्र संबाहन, छपन्न अंतरदीप।—व. स.

मट—१ देखो 'मटकौ' (रू. भे.)

उ०—तन प्रथक नरां गण तुरंग तुंड। **मट** जेम फुटै गज किरां मुंड।—रा. रू.

२ देखो 'मंड़' (रू. भे.)

उ०—उलटा मन असमांण कुं, मिळै त्रिवेणी तट। जन हरीयै जांह मंडीया, सुरति सबद का **मट**।—अनुभव वांणी

मटक–सं० स्त्री०—१ गति चाल।

२ मटकने की क्रिया, नाज, नखरा, अदा।

३ गर्व, अभिमान।

उ०—झड़ बागां जाय जिकै नर झूठा, मछर तणी भागवै **मटक**। कटकां सरणन छूटै कांधाळ, कांधळा छूटै कटक।

—रतनसिंह चुंडावत रौ गीत

मटकणौ, मटकबौ–क्रि० अ० [सं० मट्] १ चलते या बातें करते समय नाज नखरे के साथ शरीर के अंगों का हिलते या लचकते रहना, मटकना।

उ०—१ एक दिन छांनै माखण रा केई लूंदा डकार, होठां, मूंडा, अर हाथ रै माखण लाग्यां थकां ई वौ **मटकतौ**, नाचतौ, हाथ री आंगळी नै हिलावतौ नांनी-मां रै सांम्ही अबूझ अजांण बणनै गावण लागौ—मैया मोरी मैं नहिं माखण खायौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ निपट बंकट छवि नैना अटकै। देखत रूप मदन मोहन को, पियत पियूख न **मटकै**।—मीरां

२ नखरे के साथ नेत्र, भृकुटि, कटि आदि का हिलना या लचकना।

३ गर्व करना, ऐंठना।

मटकणहार, हारौ (हारी), मटकणियौ—वि०।

मटकाड़णौ, मटकाड़बौ, मटकाणौ, मटकाबौ, मटकावणौ, मटकावबौ

—प्रे० रू०।

मटकिओड़ौ, मटकियोड़ौ, मटक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मटकीजणौ, मटकीजबौ—भाव वा०।

मटकाचर—देखो 'मुंठकाचर'। (शेखावाटी)

मटकाणौ, मटकाबौ–क्रि० स०—१ चलते या बात करते समय कुछ नखरे के साथ अंगों को हिलाना या लचकाना, मटकाना।

उ०—पिंडतजी, खुसी रैवौ रा दोय सबद कैया, हाथ री सीध सूं बैठण री सेन करी अर मूंढै नै **मटका'र** नस रौ लटकौ करियौ।

—दसदोख

२ नखरे के साथ नेत्र, भृकुटि, कटि, नितम्ब आदि अंगों को हिलाना या लचकाना।

३ खाद्य पदार्थों को खाना या निगलना।

मटकाणहार, हारौ (हारी), मटकाणियौ—वि०।

मटकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मटकाईजणौ, मटकाईजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

मटकारणौ, मटकारबौ, मटकावणौ, मटकावबौ—रू० भे०।

मटकायोड़ौ—१ चलते या बात करते समय नखरे के साथ अंगों को लचकाया हुआ।

२ गर्व किया हुआ, ऐंठा हुआ।

३ खाद्य पदार्थ खाया हुआ या निगला हुआ।

(स्त्री० मटकायोड़ी)

मटकार–सं० पु० [सं० मुष्टिका+आकार] १ मुट्ठी के आकार की छोटी ककड़ी। (काचरा)

२ नाज, नखरा।

उ०—मोह्या मुख मुलकै सहु, तिम निजर तणै **मटकार** रे।

—वि. कु.

मटकारणौ, मटकारबौ—देखो 'मटकाणौ, मटकाबौ' (रू. भे.)

मटकारणहार, हारौ (हारी), मटकारणियौ—वि०।

मटकारिओड़ौ, मटकारियोड़ौ, मटकारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मटकारीजणौ, मठकारीजबौ—कर्म वा०।

मटकारियोड़ौ—देखो 'मटकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मटकारियोड़ी)

मटकाळौ–वि० (स्त्री० मटकाळी) मटकने वाला, नखरे करने वाला।

उ०—हिरण घसै खुरताळी, मारी आंखि लीधी **मटकाळी** हो।

—वि. कु.

रू० भे०—मटकीलौ।

मटकावणौ, मटकावबौ—देखो 'मटकाणौ, मटकाबौ' (रू. भे.)

उ०—अमली ठाकरड़ा डेरां में आवै। मोटी घसकां घड़ मावा **मटकावै**।—ऊ. का.

मटकावणहार, हारौ (हारी), मटकावणियौ—वि०।

मटकाविओड़ौ, मटकावियोड़ौ, मटकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मटकावीजणौ, मटकावीजबौ—कर्म वा०।

मटकावियोड़ौ—देखो 'मटकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मटकावियोड़ी)

मटकियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ शरीर के अंगों को नखरे के साथ लचक दिया हुआ. २ गर्व किया हुआ, ऐंठा हुआ. ३ खाद्य पदार्थ खाया हुआ, निगला, हुआ.

मटकी–सं० स्त्री० [सं० मार्तिकी] १ मिट्टी का बना जल भरने का छोटा पात्र, छोटा मटका। (डिं. को.)

उ०—१ रूप देख अटकी, तेरौ रूप देख अटकी। देह तैं बिदेह भई ढुरि परि सिर **मटकी**।—मीरां

उ०—२ चांदणी रै सागै चांद ठारी बरसावणी चालू करदी। **मटकियां** में पांणी जम जातौ।—फुलवाड़ी

२ एक प्रकार का लोक नृत्य।

उ०—नाचण लागी नाचवा, रंभ नाच नचाया। ताजण **मटकी** तोयचा, लख तांन लगाया।—वी. मा.

३ एक प्रकार का वाद्य विशेष।

रू० भे०—माटकी।

अल्पा०—मटली, माटली।

मटकीलौ—देखो 'मटकाळौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मटकीली)

मटकौ-सं० पु० [सं० मार्तिक] १ मिट्टी का बना हुआ जल भरने का पात्र विशेष।

उ०—पख रैत जरद घटका पड़ै, रटकां गोळा रीठ रा। हाथियां सीस कुटका हुवै, **मटकां** जांण मजीठ रा।—सू. प्र.

रू० भे०—मट, माटकौ।

[सं० मट:स्फटि] मटकने का भाव, नाज नखरा।

उ०—श्रे भांवरणियां रा लच्छण है। ईसर री गवर व्है ज्यूं बण ठण'र **मटका** करती फिरै है।—रातवासौ

रू० भे०—मटरकौ, मट्ट, मट्टौ।

मह०—मटल्लौ।

मटखोरौ-सं० पु०—एक प्रकार का हाथी। (दूषित)

मटणौ, मटबौ—देखो 'मिटणौ, मिटबौ' (रू. भे.)

उ०—रसिक जिकण जग रटत। मुण रघुबर अघ **मटत**।

—र. ज. प्र.

मटणहार, हारौ (हारी), मटणियो—वि०।

मटिश्रोड़ौ, मटियोड़ौ, मटयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मटीजणौ, मटीजबौ—भाव वा०।

मटमैलौ-वि०—मिट्टी के समान रंग वाला, मटमैला।

मटयोड़ौ—देखो 'मिटयोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मटयोड़ी)

मटर-सं० पु०—१ शरद् ऋतु में भारत के प्राय: सभी भागों में होने वाला एक मोटा गोलाकार द्विदल अन्न जो अपने पौधे की फलियों से निकलता है।

२ इस अन्न का पौधा।

रू० भे०—मठर।

मटरकौ—देखो 'मटकौ' (२)।

उ०—जद वा ऊंदरी आपरै रूप रौ बखांण सुणने मिजाज में **मटरका** करती घरै आयगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ सारी ऊमर मढ़ में बैठी ई **मटरका** करिया है बांणियां नै टाबर को दिया नीं।—फुलवाड़ी

मटरगस्त, मटरगस्ती-सं० स्त्री०—१ धीरे धीरे घूमना।

२ व्यर्थ इधर उधर घूमना।

मटरमाळा-सं० स्त्री०—गले का आभूषण विशेष।

मटली—देखो 'मटकी' (रू. भे.)

मटल्लौ—देखो 'मटकौ' (मह., रू. भे.)

उ०—घणां रोद्र घेरै, फिरै चक्र फेरै। मथांणै **मटल्लै**, मही जांण हल्लै।—रा. रू.

मटवी—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—पट्टकूल, हीरवडि गजवडि नीलवडि सेवत्रीवडि सोवनवडि जादर पोतीपट साउली अगहल नेत्र रावेटउं सांभारावउं **मटवी** फूलपगर कणवीरउं पोतिउं, सेत चउवडियउं.......।—व. स.

मटांडौ—देखो 'मोतींड'। (शेखावाटी)

मटाणौ, मटाबौ—१ देखो 'मिटाणौ, मिटाबौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मठाणौ, मठाबौ' (रू. भे.)

मटाणहार, हारौ (हारी), मटाणियौ—वि०।

मटायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मटाईजणौ, मटाईजबौ—कर्म वा०।

मटायोड़ौ—१ देखो 'मिटायोड़ौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मठायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मटायोड़ी)

मटि—देखो 'माटै' (रू. भे.)

उ०—हार अहीनि कहि कांमिनि, गुणवंत छि तूं नवि घटि। पर-नारिना बि पयोधरनि, स्परस करिछि सा **मटि**।—नळाख्यान

मटिया, मटीया-सं० पु०—मटमैला रंग, खाकी रंग।

वि०—मटमैले रंग का, खाकी रंग का।

उ०—लांबी गोळ बांयां रौ ढ़ीलौ कुड़तौ, **मटिया** गोळ फेंटौ डावै पसवाड़ै कीं तीखौ अर डीगौ।—फुलवाड़ी

देखो 'माटी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हरिया मन की वासना, जांह तांह होसी साथि। श्रैसैं **मटीया** खांन की, चाक चढ़ैगी हाथि।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मटियामेट-स० पु०—विनाश या लोप, पूर्णत:ध्वस्त, विध्वंस, सर्वनाश, विनष्ट, तहस-नहस।

क्रि० प्र०—करणौ, होणौ।

मटियाळ—१ देखो 'मटियाळौ' (मह., रू. भे.)

२ देखो 'मटियाळी' (मह., रू. भे.)

मटियाळी-सं० स्त्री०—चिकनी मिट्टी (भूमि)।

वि०—मटमैली, खाकी रंग की।

देखो 'मटियाळ' (मह., रू. भे.)

मटियाळौ, मटीयाळौ-वि० (स्त्री० मटियाळी) १ चिकनी मिट्टी वाला। (भू-भाग)

उ०—१ धरती हळवा ३० खेत काठा **मटीयाळा**।—नैणसी

उ०—२ घरती हळवा ६० खेत काठा **मटियाळ**।—नैणसी
२ खाकी रंग का, मटमैला।

मटियोड़ौ—देखो 'मिटयोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मटियोड़ी)

मटीयौनीलौ–सं० पु०—एक शुभ रंग का घोड़ा। (शा. हो.)

मटु, मटुड़ी–सं० स्त्री०—हाथ की तीसरी अंगुली जो मध्यमा और कनिष्ठा के बीच में है, अनामिका।
वि०—प्रिय।

मटुकनाथ—एक तीर्थ स्थान का नाम।
उ०—**मटुकनाथ** अरु मांनसरोवर, मांनलता अरु हांसी। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, सहज कटै यम फांसी।—मीरां

मटोटणौ, मटोटबौ—देखो 'मठोठणौ, मठोठबौ' (रू. भे.)
उ०—थोड़ी देर में अटकतौ बोल्यौ—तकतूळी व्है ज्यूं थाकोड़ौ भलांई दीसूं, पांणी रै लगावण सूं लूखां टुकड़ा भलांई **मटोटूं** पण थें मोत्यां सूं भरया म्हारा भंवारा नीं देख्या।—फुलवाड़ी
मटोटणहार, हारौ (हारी), **मटोटणियौ**—वि०।
मटोटिओड़ौ, मटोटियोड़ौ, मटोटयोड़ौ—भू० का० कृ०।
मटोटीजणौ, मटोटीजबौ—कर्म वा०।

मटोटियोड़ौ—देखो 'मठोठियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मटोटियोड़ी)

मट्ट—१ देखो 'माट' (रू. भे.)
उ०—तई कुंभ तूटा, छिलै स्रोण छूटा। मही रंग मट्टा, फवै जांणि फुट्टा —सू. प्र.
२ देखो 'मटकौ' (मह., रू. भे)
३ देखो 'मठ' (रू. भे.)

मट्टिया, मट्टी—देखो 'माटी' (रू. भे.)

मट्टौ—१ देखो 'माटौ' (रू. भे.)
उ०—फिर फूटै विच चोहटा, रंगरेजां **मट्टै**।—द. दा.
२ देखो 'मटकौ' (रू. भे.)
३ देखो 'मट्ठौ' (रू. भे.)

मट्ठ—१ देखो 'मठ' (रू. भे.)
उ०—गिरंकंदर पाहाड़, गाहि पाए केकांण। किया **मट्ठ** मैवास, प्रज्ज पाळी मेल्हांण।—गु. रू. बं.
२ देखो 'मट्ठौ' (मह., रू. भे.)

मट्ठौ—दही मथ कर मक्खन निकालने के बाद शेष रहने वाला घोल, तक्र।
उ०—१ वौ **मट्ठौ** व्है जैड़ौ दूध अर गूजरी रै हाथां घाल्योड़ौ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ देखूं कैड़ौक खड़पा पड़तौ दही अर **मट्ठौ** व्है जैड़ौ जाडौ दूध घालौ हौ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मट्टौ, मठौ, मठ्ठौ।
मह, रू० भे०—मट्ठ।

मठ–सं० पु० [सं० मठं, मठ] १ वह स्थान जहां दशनामी साधु अपने गुरु के साथ रहते हों।
२ दशनांमी संन्यासियों के किसी बड़े साधु का निवास स्थान।
३ वह स्थल जहां विद्यार्थी दीर्घावधि तक रहकर ज्ञानार्जन करते थे। (प्राचीन)
उ०—अथ नगर वर्णनं,·······भांडागारिक, कोस्टाकार सत्राकार **मठ** विहार प्रपामंडप त्रिक चतुएक चत्वर चतुस्पथ राजमारग···· सरोवर।—व. स.
४ देवी का मंदिर।
उ०—१ जद रावजी गढ छोड स्रीमाताजी करणीजी रै **मठ** गया।—ठाकुर जैतसी री वारता
उ०—२ **मठ** अंदर सुंदर मूरत्ती, स्रीकरणी जय जयति सकत्ती।
—मे. म.

५ गर्व, अभिमान।
उ०—भूपकां मौड माठां, **मठ** भांन रै। ईढ मघवांन रै, ब्रवण आथां।—लिछमणसिंह सीसोदिया री गीत
मुहा०—मठमारणौ=गर्व खंडित करना।
६ छवि, शोभा।
उ०—१ म्हैं जांणतौ के उण कमसल छोकरी रै परवांण सोरै सास दूजो उणियारौ लाधैला कोनीं। अर लाध्यौ तौ अैड़ौ लाध्यौ के उणरा रूप रौ सगळौ **मठ** ई मार दियौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ पण औ डकरेल चोर तौ बाड़ी री सोभा रौ जांणै मुळगौ **मठ** ई मार दियौ।—फुलवाड़ी
मुहा०—मठ बिगाड़णौ, मठ मारणौ—शोभा नष्ट करना।
७ आनन्द, खुशहाली, मजा।
उ०—१ नसौ तौ संगत मांगै। झांझरकै दो घड़ी रात थकां ऊठतौ नै भांग सूं माथा-फोड़ी करतौ। नसा रौ सैंग **मठ** मारयौ जावतौ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ रांम मारया बात रै बिचाळै हुंकारौ तौ दिया कर। बिना हुंकारै बात रौ सगळौ **मठ** ई मर जावै।—फुलवाड़ी
८ महत्व।
उ०—नसा में बड़बड़ावण लागौ—लुगाई लाज-सरम छोडनै फीटी व्है जावै तौ सगळा आणंद रौ **मठ** मर जावै।—फुलवाड़ी
९ ऊंचा लम्बा टीला।
उ०—लकड़ी थांरो रीढ़ लास रौ भावळ लै'रां। ढिस्सा **मठ** ढम ढेर, ईळ जल ऊंडा वेरा।—दसदेव।
वि०—१० कृपण, कंजूस।
उ०—१ महण सुभावां कमंद गुर तायजादौ **मठां**, खगां बळ दली दळ खायजादौ। पायजादौ सुजस सायजादौ पनौ। रायजादां मुगट रायजादौ।—मेगराज आढौ

उ०—२ चाचर चहू सुकाळ, जग 'अभमल' 'चूंडा' जिहीं। खलक चरू जळ खाळ, मठा पहां वहिया मगज।—सू. प्र.

रू० भे०—मंठ, मट्ठ, मठ्ठ।

मठठ—देखो 'मठोठ' (रू. भे.)

उ०—१ भळै छक सुतन 'जगतेस' बड भाग रै। दत मठां त्याग रै **मठठ** दै लै।—माधौसिंह सीसोदिया री गीत

उ०—२ अधप सुता पति हूंत कहै कथ औसांन रा। सवागरा दांन रा दयरा सागै। आखवां **मठठ** तज वही जो भ्रांन रा। अरणी भ्रप 'मान' रा तरा आगै।—रांमलाल आसियो

मठणौ, मठबौ—क्रि० अ०—१ मथा जाना।

२ देखो 'मठाणौ, मठाबौ' (रू. भे.)

मठणहार, हारौ (हारी), मठणियौ—वि०।

मठाणौ, मठाबौ, मठावणौ, मठावबौ—प्रे० रू०।

मठिओड़ौ, मठियोड़ौ, मठ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मठीजणौ, मठीजबौ—भाव वा०।

मठधारी, मठपति—सं० पु० [सं० मठधारिन्, मठपति] १ दशनामी साधुओं के निवास स्थान (मठ) का अधिकारी, साधु या महन्त।

२ मठाधीश, मठ का स्वामी।

रू० भे०—मढपति, मढपत्ती।

मठमठौ—वि० (स्त्री० मठमठी) १ न अधिक सख्त न अधिक मुलायम।

२ कृपरा, कंजूस।

मठर—सं० स्त्री०—जिद्द, हठ।

उ०—अबीढ़ा खेल खेलै, भुजां आपरां। मीर रद्द हुवै, मेलै **मठर** मांरा।—म. जयसिंह आमेर रा धणी री वारता

पु०—देखो 'मटर' (रू. भे)

उ०—मोठ **मठर** चूंला फली रे लाल, छमकारचा देइ वघार। मुंग फूलै फल पांनड़ा रे लाल, अथांरा सुखकार।—प. च. चौ.

मठरी (ली)—सं० स्त्री०—मैदे का बना हुआ एक मीठा पकवान जो घी में तल कर बनाया जाता है।

मठसेडी, मठसेढ़ी—सं० स्त्री०—वह गाय या भैंस जिसका दुग्ध दोहन कठिनता से होता हो।

उ०—काया कठसेडी **मठसेडी** कांपै। ढांगी बेलां नै तेलां नें ढांपै।
—ऊ. का.

रू० भे०—माठसेडी, माठसेढी।

मठाठ—देखो 'मठोठ' (रू. भे.)

मठाणौ, मठाबौ—क्रि० स०—किसी पदार्थ को मथ कर गाढ़ा करना, मथना।

मठाणहार, हारौ (हारी), मठाणियौ—वि०।

मठायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मठाईजणौ, मठाईजबौ—कर्म वा०।

मटाणौ, मटाबौ, मटावणौ, मटावबौ, मठावणौ, मठावबौ
—रू० भे०।

मठाधीस—सं० पु० [सं० मठाधीश] मठ का अधिकारी, महन्त।

मठारणौ, मठारबौ—क्रि० स०—१ मठरना नामक औजार से कसेरों, सुनारों आदि द्वारा पत्तरों या चद्दरों को पीटना।

२ पत्तरों, चद्दरों आदि को पीटकर गोलाई में लाना।

३ गूंदे हुए आटे को हाथों से इस तरह मसलना व संवारना कि उसमें लोच पैदा हो जाय।

४ धीरे धीरे तथा बढ़ा-चढ़ा कर कोई बात कहना।

मठारणहार, हारौ (हारी), मठारणियौ—वि०।

मठारिओड़ौ, मठारियोड़ौ, मठारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मठारीजणौ, मठारीजबौ—कर्म वा०।

मठावणौ, मठावबौ—देखो 'मठाणौ, मठाबौ' (रू. भे.)

मठावणहार, हारौ, (हारी), मठावणियौ—वि०।

मठाविओड़ौ, मठावियोड़ौ, मठाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मठावीजणौ, मठावीजबौ—कर्म वा०।

मठोड़णौ, मठोड़बौ—देखो 'मठोठणौ, मठोठबौ' (रू. भे.)

मठोड़णहार, हारौ (हारी), मठोड़णियौ—वि०।

मठोड़िओड़ौ, मठोड़ियोड़ौ, मठोड़्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मठोड़ीजणौ, मठोड़ीजबौ—भाव वा०।

मठोटणौ, मठोटबौ—देखो 'मठोठणौ, मठोठबौ' (रू. भे.)

उ०—चौधरी तौ कळाकंद री परसाद खावरा ढूकौ जकौ दो थाळ बगळ बगळ **मठोटग्यौ**।—फुलवाड़ी

मठोटणहार, हारौ (हारी), मठोटणियौ—वि०।

मठोटिओड़ौ, मठोटियोड़ौ, मठोट्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मठोटीजणौ, मठोटीजबौ—कर्म वा०/भाव वा०।

मठोटी—सं० स्त्री० १—मरोड़ने की क्रिया या भाव।

उ०—चौधरी रा हाथ में कळाई सैंठी फिलियोड़ी ही। **मठोटी** देवतौ बोल्यौ—बाबौ, काल़ै हाथ जोड़िया, पगां में पोतियौ मैलियौ, पण थांरौ काळजौ नीं पसीजियौ।—फुलवाड़ी

२ मरोड़ने के कारण पड़ने वाला बल।

३ किसी प्रकार का घुमाव-फिराव या चक्कर।

४ मन में होने वाला क्षोभ या कपट जिसका कारण दुख, व्यथा, दुर्भाव आदि हों।

५ रह रह कर पेट में अपच के कारण होने वाली पीड़ा भरी ऐंठन, पेचिश।

मह० रू० भे०—मठोटौ।

मठोटौ—देखो 'मठोटी' (मह., रू. भे.)

मठोठ—सं० पु०—१ गर्व, अभिमान, अकड़।

उ०—ठठोर सत्रु गोठ की जबांन गोठ लें जबैं। बडी **मठोठ** में बहैं दु होठ दंत तें दबैं।—ऊ. का.
२ स्वाभिमानता।
३ कृपणता, कंजूसी।
४ मकानों में स्तम्भ के ऊपर लगाया जाने वाला पत्थर।
रू० भे०—मठठ, मठाठ।

मठोठणौ, मठोठबौ—१ खाना, निगलना।
उ०—१ थोड़ी रोजीना री दोय सेर दांणौ **मठोठ** जावै। पण असवारी वास्तै अड़ण ई नीं दे।—फुलवाड़ी
उ०—२ दिन में चार बगत रोटचां रौ ठीरौ देतौ, आथण सवार बत्तीस सोगरा **मठोठ** जातौ।—फुलवाड़ी
२ गर्व करना, ऐंठना।
३ कंजूसी करना, कृपणता दिखाना।
४ ऐंठन देना, घुमाना।
मठोठणहार, हारौ (हारी), **मठोठणियौ**—वि०।
मठोठिग्रोड़ौ, मठोठियोड़ौ, मठोठयोड़ौ—भू० का० कृ०।
मठोठीजणौ, मठोठीजबौ—कर्म वा०/भाव वा०।
मटोटणौ, मटोटबौ, मठोड़णौ, मठोड़बौ, मठोटणौ, मठोटबौ
—रू० भे०।

मठोठियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ खाया हुआ, निगला हुआ. २ गर्व किया हुआ, ऐंठा हुआ. ३ कंजूसी किया हुआ, कृपणता दिखाया हुआ. ४ ऐंठन दिया हुआ, घुमाया हुआ.
स्त्री० मठोठियोड़ी)

मठौ—१ देखो 'मट्टौ' (रू. भे.)
२ देखो 'माठौ' (रू. भे.)
उ०—मुरें अवान बांनलैं, प्रायांण में कठा **मठा**। अरेन प्रांन फायदैं, बिफायदे सठा सठा।—ऊ. का.

मट्ठौ—१ देखो 'माठो' (रू. भे.)
२ देखो 'मट्ठौ' (रू. भे.)

मडि, मडी—देखो 'मंडी' (रू. भे.)

मढ़—देखो 'मंढ' (रू. भे.)
उ०—१ मझि वन सघन सकति काळी **मढ़**। गंगा तीर प्रगट कुरहैगढ़।—सू. प्र.
उ०—२ जोया गढ **मढ** पोलि पगार किहइं न लाधी महता सार।
—हीराणंद सूरि

मढगोरख—सं० पु०—द्वारिका के निकट का एक तीर्थ स्थान, गोरखमढी।

मढ़णौ, मढ़बौ—देखो 'मंडणौ, मंडबौ' (रू. भे.)
उ०—१ चाप करां व्रप रांम चढ़ै, मांझ रजी तद मांण **मढ़ै**। खोहण के असुरांण खपै, पंख सिवा पळ खाय ध्रपै।—र. ज. प्र.
उ०—२ घड़नौ दियो हौ जकांरो पाछौ घेरचौ नहीं, **मढ़णौ** लियो जकां रौ ओठौ मोड़चौ नहीं।—दसदोख
उ०—३ थे पै'ला तौ खरचौ करता लखौ कोयनी, पछै बीजां माथै कसूर **मढ़ौ**।—वरसगांठ
मढ़णहार, हारौ (हारी), **मढ़णियौ**—वि०।
मढ़िग्रोड़ौ, मढियोड़ौ, मढ़चोड़ौ—भू० का० कृ०।
मढ़ीजणौ, मढ़ीजबौ—कर्म वा०/भाव वा०।

मढपति, मढपत्ती—देखो 'मठपति' (रू. भे.)
उ०—'पाटण' नयर 'दुल्लभ' राय यदा। वाद हुग्रो **मढपति** स्युं तदा।—ऐ. जै. का. सं.

मढाई—देखो 'मंडाई' (रू. भे.)

मढाणौ, मढाबौ—देखो 'मंडाणौ, मंडाबौ' (रू. भे.)
उ०—वीर फरास बढाड़वा, द्रब खाती ढोवै। केक मुलां तागा करै हुब हाका होवै। हिंदू मन हरखत होये, घण ढोल घड़ावै। बाढ़ फरासह 'वीरमौ', मह ढोल **मढावै**।—वी. मा.
मढाणहार, हारौ (हारी), **मढाणियौ**—वि०।
मढायोड़ौ—भू० का० कृ०।
मढाईजणौ, मढाईजबौ—कर्म वा०।

मढायोड़ौ—देखो 'मंडायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मढायोड़ी)

मढियोड़ौ—देखो 'मंडियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मढियोड़ी)

मढी—देखो 'मंडी' (रू. भे.)

मढुली—देखो 'मंडी' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—खेलि अम्हारी क्षीपवी, हवी हवइं मसवासि। **मढुली** मांहि मडउं रहिउं, मन माधव नइ पासि।—मा. कां. प्र.

मढो—देखो 'मड़ो' (रू. भे.)
उ०—दादू **मढ़ा** मसांण का, केता करै उफांन। मृतक मुरदा गोरका, बहुत करै अभिमांन।—दादूबांणी

मणंधर—देखो 'मणिधर' (रू. भे.)

मण—सं० पु०—१ ४० सेर का एक तोल।
उ०—१ कासूं काज करेह, सिधुर बाधा सांकळां। भगवत पेट भरेह, **मण** नित चाहियै 'मोतिया'।—रायसिंह सांदू
उ०—२ **मण** मण आटो, मण मण चावळ मंगाया नै रसोई कराई, सो सरब जीमिया।—देपाळधंध री वारता
मुहा०—मण मण रा घूटिया भरणा—आर्थिक संकट में जीवन व्यतीत करना, किसी बात को प्रकट न करने के लिए दीर्घावधि तक मौन रहना।
रू० भे०—मणूं, मणू।
२ सुवृत। (डिं. को.)
३ देखो 'मणि' (रू. भे.)
उ०—महाराज रघुवंस **मण**, सुज रांवण समथरा धुन सर पांणां धरै।—र. ज. प्र.

उ०—२ मण सरद चकित निस, रति पतिह लंघणीक मंदह चलत। मिथळेस कुवरी, सीता सुतन। कवि एती ओपमा कहत।—र. ज. प्र.

मणकरणका—देखो 'मणिकरणिका' (रू. भे.)

मणकौ—१ देखो 'मणियौ' (रू. भे.)

उ०—दादू काया महल में नमाज गुजारूं, तहं और न आवन पावै। मन मणकै कर तसबीह फेरूं, तब साहिब के मन भावै।

—दादूबांणी

२ देखो 'मणिकौ' (रू. भे.)

मणगयण—सं० पु० [सं० गगनमणि] सूर्य। (डिं. को.)

उ०—आंठुआं चाढ़तां धकै साबळ अणी, खेलतां धसळ खत्रवाट आखेट। विढंतां सेस मणगयण लागा वधै, नग भिड़ज करग राजा तणा नेट।—नाथौ सांदू

मणगुत्ती [सं० मनोगुप्ती] चारों ओर घूमते हुए मन को निग्रह करके रखने का भाव। (जैन)

मणचौ—देखो 'मळीचौ' (रू. भे.)

मणछिउ—वि० [सं० मनवांछित] मन में चाहा हुआ, इच्छित।

उ०—अज्जवि जु देवु लोइ ट्ठियउ, संघ मणछिउ देइ फलु।

—ऐ. जै. का. सं.

मणछौ—देखो 'मळीचौ' (रू. भे.)

मणणो, मणबौ—देखो 'मुणणो, मुणबौ' (रू. भे.)

उ०—सगुड हाथीया लूडइ, रथावली ऊथलावइ, मउडधा मांकड जिम खेलावइं, पाखरिया थाट हणइ, महायोध संमुख मणइ, दल बइ भाजि,......तूर्य वाजइ।—व. स.

मणधर—देखो 'मणिधर' (रू. भे.)

उ०—१ मांनव नको नको ताइ मणधर, भमण तणा अनेरा भेव। इसडउ रूप अनूप आखियइ, देवांगना न कोई देव।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ घणनांमी इम सुणै विगत घण, जण जटायु भर अंक जण। वण द्रिग गोद धरै पत त्रिभवण, मणधर छवरी हरख मण।

—र. रू.

मणपुन्न—सं० पु० [सं० मनःपुण्य] दानरूप, शीलरूप, तपरूप, भावरूप और दयारूप आदि शुभ मन रखने का भाव। (जैन)

मणरथ—देखो 'मनोरथ' (रू. भे.) (जैन)

मणसिल—देखो 'मैनसिल' (रू. भे.)

मणहर, मणहारी—देखो 'मनोहर' (रू. भे.)

उ०—मणहर नवरस मझै सुंदरि नारीण सरस संबंधा। निरुपम कहै निबंधा, सुणंत सैणा जांण सुगणा।—ढो. मा.

मणा, मणाई—सं० स्त्री० [सं० मनाक्] १ अभाव, कमी।

उ०—१ कुळ उधोर 'प्रताप' कहंतां, पोढ़ो घणूं घणा व्रद पाय। मणा न तौ कुळ मणा न तोमैं, मणा न सुकब बखांणां मांय।

—महारांणा प्रताप री गीत

उ०—२ निवसइ लोक तिहां अतिघणा जिहं घरि रिद्धि तणा नहीं मणा।—हीराणंद सूरि

उ०—३ बापी पाव कबीर बणाई, चौखी ईंटां पकी चणाई। मूरख मिळ ना रखी मणाई, घुम खर गिंडक पियौ घणाई।

—ऊ. का.

२ पराकाष्ठा, चरमसीमा।

मणांबंध—क्रि० वि०—मनों की तादाद में।

उ०—थें कलम रा भार सारै मणाबंध रिपिया भेळाकर लिया अर म्हें लाखां मण भार उंचायनै ई मूठी रै परवांणै रिपिया भेळा नीं कर सकिया।—फुलवाड़ी

मणारंभ—सं० पु०—सागर।

उ०—मणारंभ मथै काढ़ियउ माहव, जहर इतउ किण बीजइ जरइ।—महादेव पारवती री वेलि

वि०—अप्रबल, समर्थ, शक्तिशाली।

उ०—मोड़ै घड़ सोरठ मेछ मणारंभ, बांह विलागा वर त्री वेय।—सरवहिया जैसा कवाटोत री गीत

मणाळ—देखो 'मुणाळ' (रू. भे.)

उ०—१ अग मणधर की मणाल मीढ़तां, सिहलोक ओपमा किसी।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ कर माळ फुणाळ मणाळ कळी। रूहराल हुई कर 'पाल' रळी। वढ़ हड्ड कड़क्क बड़क्क वजै। भड़ थाट भड़क्क धड़क्क भजै।

—पा. प्र.

मणि—सं० स्त्री० (पु०) [सं० मणिः] १ बहुमूल्य रत्न, जवाहर।

उ०—१ मणि मांणिक हीर पन्नै सोव्रन संयुगत मीनकै कांम पाद्य पर जंबहरी किलंगी धरी सो साजोतिकी सिखा परि मांनूं नव ग्रहूं नैं पंकति करी।—सू. प्र.

उ०—२ जो मन सार मेरे मन उपज्यौ, ज्यौं कंचन मणि सांची।

—मीरां

२ हाथ की कलाई।

यौ०—मणिबंध, मणिसूत्र।

३ आभूषण।

उ०—गज ठणियां घण ग्राह बाह जणियां बादाळक। तणियां करभ तिमीस चरम भणियां चउ चालक। मणिआं रयण अमोल रोप अणियां मोती रुख। सोहत धणियां सीप मिळै असिबर फणियां मुख।—वं. भा.

४ घड़ा।

५ योनि का अग्रभाग।

६ लिंग का अगला भाग।

यौ०—मणिबंध।

७ एक प्रकार का विष नाशक पदार्थ विशेष जो किसी २ काले सर्प के सिर में होना माना जाता है।

वि० वि०—ऐसी मान्यता है कि यह मणि सर्प दंश पर लगाने से सर्प का विष उतर जाता है।

यौ०—मणिधर।

८ मणि के आकार का हाथ की कलाई या हथेली में होने वाला एक सामुद्रिक चिह्न जो शुभ माना जाता है।

उ०—कहि हस्त चिहन बांणिक प्रकार। सति सांम दुरग विध वचन सार। मणिबंध तीन मणि जब प्रमांणि। मछ कच्छ कुंभ गज रथ मंडांणि।—सू. प्र.

६ सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, कुल भूषण।

रू० भे०—मण, मणी, मयण, मिण, मिणि।

मणिग्रार—१ देखो 'मणियारा' (रू. भे.)

२ देखो 'मणियारौ' (मह., रू. भे.)

(स्त्री० मणिग्रारी)

मणिग्रारौ—देखो 'मणियारौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मणिग्रारी)

मणिक-सं० स्त्री०—घोड़े की चोटी पर होने वाली भौंरी (चक्र)। (शुभ) (शा. हो)

मणिकरणिका-सं० स्त्री० [सं० मणिकर्णिका] काशी के पास के पांच मुख्य घाटों में से एक।

रू० भे०—मणकरणका।

मणिकार—देखो 'मणियारौ' (मह., रू. भे.)

उ०—सौवरणकार कास्यकार **मणिकार** पूंगी फल तांबूलिक मालिक सौत्रिक······ सरोवर।—व. स.

मणिकूट-सं० पु०—कामरूप देश के पास का एक पर्वत। (पौराणिक)

मणिकेतु-सं० पु०—एक छोटा पुच्छल तारा जिसकी पूंछ श्वेत मानी गई है।

मणिकौ-सं० पु०—१ चालीस सेर वजन का तोल या बाट।

रू० भे०—मणकौ, मणीकौ।

अल्पा०—मणियौ।

मणिजळ-सं० स्त्री० [सं० जलमणि] बिजली, विद्युत। (ह. नां. मा.)

मणिजाळ—एक प्रकार का आभूषण।

मणिजालक—एक प्रकार का आभूषण।

उ०—मुद्रानंतक दस मुद्रिका अंगुलीयक अंगूथला हेम जालक **मणिजालक** रत्नजालक मांनक।—व. स.

मणिधर-सं० पु० [सं०] १ वह कृष्ण सर्प विशेष जिसके मस्तक में विष नाशक मणि हो।

उ०—ख्यांत कर देखियौ वंश खटतीसनै, भांत परड़ोटियां रंग भिळियौ। भांण हिंदवांण दुनियांण इण विचाळै, **मणिधर** सुपातां तूं हिज मिळियौ।—नीमाज ठाकुर उम्मेदसिंह रौ गीत

२ सर्प, नाग।

उ०—हितवां स बींटियौ अळग न होवै, छाए साख ऊपरि छत्र छात। **मणिधर** तेथि जेथि मळयातर, 'पांचौ' जेथि तेथि कवि पात।—नांदण बारहठ

वि०—श्रेष्ठ, शिरोमणि।

रू० भे०—मणंधर, मणधर, मणीधर, मिणधर, मिणिधर, मिणीधर।

मणिनील—देखो 'नीलमण' (रू. भे.)

मणिपुर, मणिपूरक-सं० पु०—योग विद्या के अनुसार योग साधना के ८ चक्रों या कमलों में से तृतीय चक्र या कमल जिसका स्थान नाभि या नाभि के पास माना जाता है। इसका रंग कहीं हरा और कहीं नीला लिखा मिलता है। यह दस दल वाला तथा इसके देवता कहीं शिव और कहीं विष्णु माने गये हैं।

मणिबंध-सं० पु०—हाथ की कलाई।

उ०—**मणिबंध** तीन मणि जब प्रमांणि। मछ कच्छ कुंभ गज रथ मंडांणि।—सू. प्र.

२ पुरुषेन्द्रिय के अग्र भाग के नीचे का वह घेरा जो अग्र भाग की सीमा बनता है।

मणिबंधन-सं० पु० [सं०] अंगूठी का वह स्थान जहां पर रत्न जड़ा होता है।

मणिबीज-सं० पु० [सं०] अनार का पेड़। (अ. मा.)

मणिभद्र-सं० पु० [सं०] शिव के एक प्रधान गण का नाम।

मणिभू, मणिभूमि-सं० स्त्री० [सं०] १ रत्न खान।

२ हिमालय क्षेत्र का एक तीर्थ। (पौराणिक)

३ रत्नजड़ित फर्श।

मणिमंडित-वि० [सं०] जिसमें रत्न जड़े हों, रत्न जड़ित।

मणिमइ—देखो 'मणिमय' (रू. भे.)

उ०—तां वणि पेखइ **मणिमइ** भूयणु, तीछै निवसइ नारीरयणु।—पं. प. च.

मणिमथ-वि० [सं० मणि+मस्तकः] श्रेष्ठ, शिरोमणि।

उ०—पिलंगि महारिण पौढ़ियौ काळौ भलां कहाय। जस जोबण साजै 'जसौ' **मणिमथ** फौज मलहाय।—हा. झा.

सं० पु० [सं० मणिमंथ] सैंधा नमक।

मणिमय-वि० [सं० मणि+मयट्] मणियुक्त, रत्न जटित।

सं० पु०—संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

रू० भे०—मणिमई।

मणिमाळ, मणिमाळा-सं० स्त्री० [सं० मणिमाला] १ मणियों या रत्नों का हार।

उ०—ओम नमस्ते चंडका चंद्रभाळ री नवीन आभा, छटा **मणिमाळ** री भुजाटां रही छाय। आरोहा लंकाळ रीक सत्रां घू झाळ री आग, रमा रूप जयौ काछ पंचाळ री राया।—नवलजी लाळस

२ चमक, दीप्ति, आभा।

३ गाल पर या अन्यत्र प्रेम क्रीड़ा में दांतों से काटने पर बना गोल

चकता या दाग।
४ लक्ष्मी का नाम।
५ एक बारह अक्षरीय वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण, यगण तगण होते हैं।
६ एक प्रकार का आभूषण।
उ०—अहिव तणउ मंगल, चारू घट जुअल दीप प्रदीप **मणिमाला**। प्रवाल वंदरवाल ए द्रव्य मंगलीक।—व. स.

मणियड़, मणियर-सं० पु०—जोधपुर डिविजन के बाड़मेर जिले व इसके आस-पास के प्रदेश के भू-भाग का नाम, मालानी।
रू० भे०—मांणयड़, मिणियड़, मिणियर।

मणियाडर-सं० पु० [अं० मनिआर्डर] डाकघर द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान को रुपया भेजने का आदेश, धनादेश।

मणियाबंधत्र्ंभक-सं० पु० यौ०—घोड़ों का एक रोग जिसमें घोड़ों के कंठ दुखने लगते हैं और कंठ से घटर घटर की ध्वनि निकलती है। घोड़े का खाना पीना छूट जाता है। (शा. हो.)

मणियार—१ देखो 'मणियारा' (रू. भे.)
२ देखो 'मणियारौ' (मह., रू. भे.)

मणियारा-सं० स्त्री० [सं० मणिकारः] १ एक मुसलमान जाति विशेष जो बिसायती का काम करती है।
२ कांच का सामान एवं चूड़ी बेचने का व्यवसाय करने वाली जाति।
रू० भे०—मणिहार, मणिहारा।

मणियारी-सं० स्त्री०—चूड़ी, सुई, धागा, शीशा कंघा, मोती मनिका आदि फुटकर सामान बेचने का काम।
ज्यूं—मणियारी माल, मणियारी धंधा।
स्त्री०—मनिहारा जाति की स्त्री।
रू० भे०—मणिहारी।

मणियारौ-सं० पु० [सं० मणिकारः, मणि+हृ=ले जाना] (स्त्री० मणियारी) मणिहारा जाति का व्यक्ति।
२ कांच का सामान एवं चूड़ी आदि के बेचने का व्यवसाय करने वाली जाति का व्यक्ति, मनिहारा, चूड़िहारा।
उ०—जद बींरभांणजी बोल्या—ओलखणां दोहरा भव जीवां आ ढाल सिखाई। अनें एक नंदण **मणीयारा** नो बखांण सिखायो। —भि. द्र.
रू० भे०—मणिआरौ, मणिहारौ।
मह०—मणिआर, मणिकार, मणियार, मणिहार।

मणियौ-सं० पु० [सं० मणिक] १ माला में पिरोया जाने वाला दाना, मनिका।
उ०—नगजी ने स्वामीजी पूछ्यौ—तूं नंदण मणियारा नौ बखांण सीख्यो है सो ओ **मणीयो** लकड़ा रौ है कै सोना रौ है कै रुद्राक्ष माळा रौ है।—भि. द्र.
क्रि० प्र०—पिरोणौ, पोणौ, बींधणौ, बेधणौ।
रू० भे०—मणकौ, मणिकौ।
२ गर्दन की उभरी हड्डी जो ठोडी के नीचे होती है।
३ गर्दन के पीछे की हड्डी जो रीढ़ की ऊपरी भाग में होती है।
४ गला, ग्रीवा।
मुहा०—मणियौ मोड़णौ=हत्या करना, गला घोंटना।
५ रत्न, मणि।
वि०—मन के तोल का, ४० सेर के वजन का।
उ०—सौ खोजीजी घणा मोद सूं वौ सवा **मणियौ** कांदौ राजाजी रै निजर करियो—फुलवाड़ी

मणिरागग्यांन-सं० पु० [सं० मणि+राग+ज्ञान] मणियों के रंगों का ज्ञान करने की एक योग्यता जो ६४ कलाओं में से एक है।

मणिवक-सं० पु० [सं०] पुष्प। (नां. मा., ह. नां. मा.)
रू० भे०—मणीबक, मणीवक।

मणिवास-सं० पु० [सं० मणिवासः] रत्न जटित वस्त्र।
उ०—विधु झळमळ **मणिवासं**, त्रिप त्रिपुरारि तुम्योनम। —राम रासौ

मणिहार—१ देखो 'मणियारा' (रू. भे.)
२ देखो 'मणियारौ' ((मह, रू. भे)

मणिहारा—देखो 'मणियारा' (रू. भे.)

मणिहारी—देखो 'मणियारी' (रू. भे.)
उ०—**मणिहारी** जा री सखी, अब न हवेली आव। पीव मुवा घर आविया, विधवा किसा बणाव।—वी. स.

मणिहारौ—देखो 'मणियारौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मणिहारी)

मणी—देखो 'मणि' (रू. भे.)
उ०—१ तम गिर गुफा न पायदे, जेथ **मणी** जोगेस। कीजे आदर कुकवियां, दरसे तम जिण देस।—बां. दा.
उ०—२ खिरी सीस कुंभा **मणी** हेम साऊ। जथा नारि बक्षोज चोळी जड़ाऊ।—वं. भा.

मणीकौ—देखो 'मणिकौ' (रू. भे)
मणीचौ—देखो 'मळीचौ' (रू. भे.)
मणीधर—देखो 'मणिधर' (रू. भे.)
मणीबक—देखो 'मणिवक' (रू. भे.)
मणीमाळ, मणीमाळा—देखो 'मणिमाळा' (रू. भे.)
मणीवक—देखो 'मणिवक' (रू. भे.)

मणु—१ देखो 'मन' (रू. भे.)
उ०—विक्कमपुरि जिण वीर भुवणि वादिय **मणु** मोहइ। —ऐ. जै. का. सं.

२ देखो 'मनुस्य'।
३ देखो 'मनु' (रू. भे.)

मणुअ—देखो 'मनुज' (रू. भे.)

मणुन्न–वि० [सं० मनोज्ञ] सुन्दर, मनोहर। (जैन)

मणुय—देखो 'मनुज' (रू. भे.)

उ०—१ नवरस देसण वांणि, सवणंजलि जे नर पियहि। **मणुय** जम्मु संसारि, सहलउ किउ इत्थु कलि तिहि।—सारमूर्तिमुनि

उ०—२ **मणुया** तिसयतिडुत्तर, नारय चउदसय तिरिय अडयाला। देव अड़नवइसयं, पणसयतेसट्ठि जियं भेया।—स कु.

मणुहार—देखो 'मनवार' (रू. भे)

मणूं, मणू–सर्व०—१ मुझे, मुझको।
२ देखो 'मण' (रू. भे.)
३ देखो 'मन' (रू. भे.)
४ देखो 'मनुज' (रू. भे.)

उ०—**मणु** कोडि मिली दिसि कस्मली, ललीय धूलि दिनि अंबर नइं मिली। करइ दाहु विदाहु हियइ धरइ, 'कहु कीचक हुइ मरत मरइ।'—सालिसूरि

मणूश्र—देखो 'मनुज' (रू. भे.)

उ०—उभी उभी इसुं म बोलिइं पंडव बीजां **मणूश्र** म तोलि, जग ऊद्धसिवा घर अवतरइं रूठा जग नं, जीवीउ हरइ।—सालिसूरि

मणेंक–वि०—एक मन के लगभग।

मणेस—देखो 'चिंतामणि'। (अ. मा.)

मणोगय–सं० पु०—मनोगत भाव, मन के भाव। (जैन)

मणोरथ—देखो 'मनोरथ' (रू. भे.)

मणोरम—देखो 'मनोरम' (रू. भे)

मणोरह, मणोरहु—१ देखो 'मनोरथ' (रू. भे.)
२ देखो 'मनोहर' (रू. भे.)

उ०—पुन्न प्रभाविहि पामीयउ पहिलुं कुंतादेवी, पुन्न **मणोरहं** पूत्त पुण सुमिणां पंच लहेवि।—सालिसूरि

मणोहर, मणोहार—देखो 'मनोहर' (रू. भे.)

उ०—अनेकि तिहां चंद्रोश्रा, चंद्रमा आवइ जेहनइं जोश्रा, अतिहि **मणोहार,** माहि मणि मांणिक्य रत्न तणउ संभार, तेजि करी नसाडइं अंधकार।—व. स.

मतंग–सं० पु० [सं० मतंगः] १ हाथी।

उ०—१ रामसिंघ 'जैत' का सो जैत ही निबाहै, कूंपावत जंग मैं **मतंग** सैल ढाहै।—रा. रू.

उ०—२ चरखी हजारां डाक भालां डाकदारां चलै, खहंत अचल्लै मारां बिछूटां खतंग। बापूकारां बोल बोल फौजदारां नीठ बाघा, महा जंगा जैत बारां खंभारा **मतंग**।—हुक्मीचंद खिड़ियौ

२ बादल। (अ. मा., नां. मा.)
३ एक ऋषि का नाम।
४ एक दानव।
५ एरावत हाथी।
६ एक प्राचीन राजा जो शाप के कारण व्याध बना।
७ फर्श की बिछावन को उड़ने से रोकने के लिए उसके कोनों पर रखा जाने वाला भार, मीरफर्श।

उ०—लाहानूंर मुसैद अजील की चोपस्मी गिलमूं की बिछायत करै। ज्वाब ज्वाब के ऊपर सबज हमरंग वर **मतंग** धरै।
—सू. प्र.

अल्पा०—मतंगौ।
वि०—मस्त, उन्मत्त।
रू० भे०—मयंग, मातंग।

मतंगज–सं० पु० [सं० मतंगजः] हाथी। (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—चरखां गडि चक्र मगां मचलै, चर हूं थिर थाय पगां न चलै। जड़ हूं करि जंगम देत जिकां, तन अद्र **मतंगज** रंग तिकां।
—मे. म.

मतंगरिप, मतंगरिपु–सं० पु० [सं० मतंग+रिपु] शेर, बाघ्र।
(डि. को., ह. नां. मा.)

मतंगी–सं० पु० [सं० मतंगिन्] १ बहुत से हाथियों का स्वामी, गज यूथ का स्वामी।
२ हाथी का सवार।
३ महावत।

मतंगौ—देखो 'मतंग' (अल्पा., रू. भे.) (७)

मत–सं० पु० [सं०] १ राय, विचार, सम्मति।

उ०—सगळा गौड़ एक **मत** होय ऊठिया। मुदै तो गोपाळदास बीजा भाई सारा हुकम सिर ऊपर झलियौ।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

२ उदाहरण, दृष्टान्त।

उ०—विस मुख जास बसंत, मीठा बोला हंस मिळै। उरग तणौ कर अंत, मोर प्रकासै एह **मत**।—

३ सोच समझ कर निश्चित की हुई बात।

उ०—१ आपा मेटै हरि भजे, तन मन तजै विकार। निर वैरी सब जीव सौं, दादू यहु **मत** सार।—दादूवांणी

उ०—२ निर वैरी निज आतमा, साधन का **मत** सार। दादू दूजा रांम बिन, वैरि मंझ विकार।—दादूवांणी

४ ऋषियों, मुनियों, महात्माओं या धर्मग्रन्थों द्वारा प्रतिपादित कोई सिद्धान्त।

उ०—**मत** भेदन खेद खुबी **मत** की, सत चूंप चुभी उपनिसत की। फटकार हळाहळ तें फिरगौ, धन आनंद अम्रत घां घिरगौ।
—ऊ. का.

५ किसी विशिष्ट महापुरुष के सिद्धान्त का अनुयायी संप्रदाय, पंथ।

६ लोकतंत्र के क्षेत्र में, अपना प्रतिनिधि चुनने के लिए किसी व्यक्ति अथवा समाज को प्राप्त वह अधिकार जिससे वह अपनी इच्छा, रुचि आदि के अनुकूल दो या अधिक व्यक्तियों, पक्षों आदि में से किसी एक या कुछ का अधिकारिक रूप से समर्थन कर सकता है, वोट।

७ उक्त के द्वारा किसी का किया जाने वाला समर्थन।

अव्य०—१ निषेधवाचक शब्द, नहीं, न।

उ०—१ है झूठौ सोचौ हिए, अखलेस्वर री आंण। मत अपणांओ माढुआं, जग नूं सांचौ जांण।—बां. दा.

उ०—२ पून्य प्रताप होय अंग पूरन, पाप प्रताप अपंगी। प्रथम विचार पाप को पापी, कर मत मीत कुसंगी।—ऊ. का.

२ स्यात, शायद।

उ०—१ बाबहिया, चढि गउखसिरि, चढि ऊंचइरी भीत। मत ही साहिब बाहुडइ, कउ गुण आवइ चीत।—ढो. मा.

उ०—२ बाबहिया, चढि डूंगरै, चढि ऊंचइरी पाज। मत ही साहिब बाहुडइ, सुणि मेहां री गाज।—ढो. मा.

रू० भे०—मती।

३ देखो 'मति' (रू. भे.)

उ०—१ साह दुकानां चोरटा, साहब कांनां चाड़। लागै बित मत हर लिए, बे सोभा का फाड़।—बां. दा.

उ०—२ मात है! जग जीवण नें, सुख अवसर दूख दीनौ है, मत हीणी है माय। रतन फेंकनै जतन कंकर रौ कीनौ है ए माय, माता है! अमरत जांण हळाहळ मो नै पायौ है। मत हीणी है माय।
—गी. रां.

उ०—३ अलख निरंजन अज अविकारी, व्याप रया सब जग मांहीं। आप तणी गत मत कुण जांणै हो? नमो नमो ही सांईं।
—गी. रां.

४ देखो 'मात्रा' (रू. भे.)

उ०—पहल त्रतिय पद सोळ मत, दुव चव ग्यारह दाख। चरण दूहा चुरस कर, भल किव तिण नूं भाख।—र. ज. प्र.

५ देखो 'मत्त' (रू. भे.)

मतकुण—देखो 'मत्कुण' (रू. भे.) (डि. को.)

मतकेमास, मतकेवास—वि०—१ असाधारण बुद्धि वाला, तीव्र बुद्धि वाला।

२ बल में अद्वितीय।

मतक्षेत्र—पु०—निर्वाचन क्षेत्र।

मतगणना—स्त्री०—जनमत संग्रह।

मतदांन—पु० [सं० मतदान] किसी प्रकार के निर्वाचन के समय अथवा किसी विषय या प्रस्ताव के सम्बन्ध में पक्ष अथवा विपक्ष में मत देने की क्रिया। (वोटिंग)

मतदांन-केंद्र—पु० [सं० मतदान केन्द्र] निर्वाचन का वह स्थान या केन्द्र जहां निर्वाचन के समय किसी विशेष क्षेत्र में आकर मत-दाता मतदान करते हैं। (पोलिंग स्टेशन)

मतदांन-कोस्ट—पु० [सं० मतदानकोष्ठ] पर्दे की ओट, जिसमें रखी पेटी में मत-पत्र छोड़ा जाता है। (पोलिंग बूथ)

मतदांन-पेटिका—स्त्री०—वह पेटी जिसमें मतदाताओं द्वारा मत छोड़े या डाले जाते हैं। (बैलट बाक्स)

मतदाता—पु० [सं०] प्रजातंत्र में मत देने का अधिकार प्राप्त व्यक्ति। अपना प्रतिनिधि निर्वाचित करने हेतु मतदान का अधिकार प्राप्त नागरिक।

मतपत्र [सं०] विभिन्न उम्मीदवारों के नाम और नामों के आगे अंकित चिह्नों वाला पत्र जिसे मतदान पेटिका में डालते हैं। शलाका पत्र, गूढ़ मत पत्र।

मतबाळ—देखो 'मतवाळ' (रू. भे.)

मतबाळु, मतवालु—देखो 'मतवाळौ' (रू. भे.)

उ०—जिमणवार लिखीइ छइ, राजानइं बइसवानइं सुवर्णमइ पाट, बीजानइ बइसवा चुकीवट, विसाल सेजवट। मतबाळु ए आवइ।
—ब. स.

मतभेद—पु० [सं०] किसी विषय या सिद्धान्त पर किसी दल, समूह या वर्ग के सदस्यों का एक मत न होना।

मतमंद—देखो 'मतिमंद' (रू. भे.)

उ०—भव दरियाव भयंद, लहरां ऊठै लोभ री। मांहै ज्यां मतमंद, मनख घणा डूबै मरै।—बां. दा.

मतळब, मतलब—सं० पु० [अ० मत्लब] १ तात्पर्य, अभिप्राय, आशय।

उ०—भंवारा जित्ता लांठा अर कम बंणै, उत्ता ई सावळ। बीचली भींतां यूं ई मोल्यां री ठौड़ रूंधेला। कांई मतळब?—फुलवाड़ी

२ स्वयं का भला या हित सोचने की क्रिया या भाव, स्वार्थ।

उ०—१ प्रीत उतारण पार, जेवरळा लाधै जगत। हेतू वर्णे हजार, मतळब अपणै मोतिया।—रायसिंह सांदू

उ०—२ नांणौ नारायण प्रद परायण, रांमायण रोसंदा है। छळ बळ कर छांनै, मतळब मानें, मूरख गळ मोसंदा है।—ऊ. का.

मुहा०—मतळब गांठणौ=स्वार्थ सिद्धि करना। २ मतळब काडणौ, मतळब निकाळणौ=स्वार्थ सिद्धि करना। ३ मतळब हो जांणौ=स्वार्थ सिद्ध हो जाना।

३ पद, वाक्य, शब्द का अर्थ, माने।

४ उद्देश्य, विचार।

उ०—जिण मतळब सूं आई ही वौ तौ थनै बिना बतायां ई पार पड़ग्यौ।—फुलवाड़ी

५ सम्पर्क, सम्बन्ध, वास्ता।

ज्यूं—मारौ उण सूं कोई मतलब नहीं।

रू० भे०—मुतळब।

मतलबियौ—देखो 'मतलबी' (अल्पा., रू. भे.)

मतलबी–वि० [अ० मतलब+रा० प्र० ई] वह जो केवल हित का ध्यान रखता हो, अपने स्वार्थ में लीन रहने वाला, स्वार्थी।

उ०—ऐड़ी म्हारा सूं कांई गरज पजगी। थां **मतलबी** आंघा रौ कीं भरोसौ नीं।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मुतलबी।

अल्पा, रू० भे०—मतलबियौ, मुतलबियौ।

मतवंत—देखो 'मतिवंत' (रू. भे.)

उ०—प्रांण सटै ही प्रीति जुड़ती जो दीसै 'जसा'। आदरि रुड़ी रीति, मति छोडै **मतवंत** तूं।—जसराज

मतवाय—देखो 'मथवाय' (रू. भे.)

उ०—कड़ियां चीस, पगां सरणां, मतवाय, ऊबका, उछांटां, रूं रूं तूटणौ और हाडकां रौ कुळणौ।—फुलवाड़ी

मतवारौ—देखो 'मतवाळौ' (रू. भे.)

उ०—घूम रह्यौ दुरयोधन राजा, जैसे गज **मतवारौ**।—मीरां

(स्त्री० मतवारी)

मतवाळ–सं० स्त्री०—१ नशा, खुमारी, मस्ती।

उ०—बरच्छिय वेधत घाट बराळ। मदां छकि जांणि पड़ै **मतवाळ**।—सू. प्र.

२ मजलिस, महफिल।

उ०—१ रळा रांग जड़ रंग, वणावै दारू देसां। मुळकत मन **मतवाळ**, कोटड़्यां हुवै हमेसां।—दसदेव

उ०—२ सेज रमां सुख करांजी, करस्यां रंग **मतवाळ**।—मीरां

३ मदिरा-पान।

उ०—सैं होळी नै ढळी जाजमां, होय रही **मतवाळ**। बोतल तो जग-जग करै, कोई प्याला करै पुकार।—डूंगजी जवारजी री छावली

४ किसी उपकरण में लगे हुए दस्ते या हत्थे को दृढ़ करने के लिए उसमें लगाई जाने वाली लकड़ी की पतली पट्टी।

५ मजाक, दिल्लगी।

६ शराब, मदिरा।

रू० भे०—मतबाळ।

७ देखो 'मतवाळौ' (मह., रू. भे.)

मतवाळड़ौ—देखो 'मतवाळौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बाई घर आयौ छै मारू **मतवाळड़ौ**। ऊनै ज्यूं त्यूं बिलमाजै बाई घर थारै के म्हारै।—लो गी.

मतवाळौ–वि० (स्त्री० मतवाळी) १ नशे आदि के प्रभाव से मस्त, नशे में चूर।

उ०—भीज रीझ झेली भली, पावस पांणी पैल। **मतवाळा** मनवार री, छाक म ठेलौ छैल।—बां दा.

२ उन्मत्त, मस्त, मत्त। (डिं. को.)

उ०—बाजता घंट बिहुवै बळां, ऊरध सूंड उछाजतां। दाझता क्रोध ज्वाळा दग्या, गज **मतवाळा** गाजता।—मे. म.

३ किसी प्रकार के अभिमान या मद के कारण मस्त और लापरवाह, अल्हड़, मदोन्मत्त।

उ०—**मतवाळौ** इम मुणै, कमंध दारण 'कुसळावत'। जाऊं खासा गजां, घणां मुगळां दळ घावत।—सू. प्र.

४ रसिक, रतिप्रिय।

उ०—बादळ काळा बरसिया, अत जलमाळा आंग। कांम लगौ चाळा करण, **मतवाळा** रंग मांग।—बां. दा.

रू० भे०—मतवाळु, मतवारौ, मतिवाळौ।

अल्पा०—मतवाळड़ौ।

मह०—मतवाळ, मतिवाळ।

पु०—१ दुर्ग या पहाड़ी पर से शत्रुओं को मारने के लिए लुढ़काया जाने वाला पत्थर।

२ देखो 'मलौ'।

मतसयाखड़ग–सं० स्त्री०—एक प्रकार की तलवार विशेष।

मतस्याधांनी–सं० स्त्री० [सं० मतस्याधानी] शिकार करते समय मछली फसाने का यंत्र। (अ. मा.)

मतहींण, मतहीण, मतहीणौ—देखो 'मतिहीण' (रू. भे.)

मतां—देखो 'मती' (रू. भे.)

उ०—रावजी बातां पूछी सो कही फेर जोगी वाळी बात कही और समझाया जे आ किहीं नूं जाहर **मतां** करज्यो।

—नापै सांखले री वारता

२ देखो 'मता' (रू. भे.)

उ०—एक वडौ सहर छै पण राखस सूनौ कर राखियौ छै। बाजार री हाटां **मतां** सु भरी पड़ी छै।—चौबोली

मतांतर–सं० पु०—विचारभेद, मतभेद।

मता–सं० स्त्री० [अ० मताअ] १ लक्ष्मी, धन-दौलत।

उ०—१ जबदळ, 'पदम', रायसिंघ जुजठळ, हरचंद प्रीछत भोज हुआ मांणी **मता** छता मही मंडळ, **मता** न मांणी जिता मुआ।

—गोरधन खीची

उ०—२ जगमाल रे सिवदास अरजुनसिंह औ दोय हुआ सो बडा ही मरद हुइया, हजारां री **मता** लूटी पछै हिसार रौ फोजदार चढ आइयौ।—ठाकुर जेतसिंह री वारता

२ माल, असबाब।

उ०—तद रजपूत कही, 'जु मोनै महाराज, क्यां ईसौ दीजै, सु फेर कहीं रौ आसत न हुं। अर बैठौ खावां अर खुटै नहीं, सु दीजै। तद समुद्रजी आपरै कांमेतीयां नूं पूछी, 'इसड़ी कोई वस्त छै? तद परधांनै कही, 'जु एक खीरसंख छै, सु दीजै।' तिकौ रजपूत नूं संख दे, घोड़ा दे, **मता** देनै विदा कियौ—बूढ़ी ठग राजा री बात

मतालब–सं० पु० [अ० मतालिब] मतलब का बहु वचन।

उ०—नौख न जोख करै नव रोजै, जोख न भूखरा धरै जवाहर। दसकत करै न मिळै दिवाणां, अरजी फरज मतालब ऊपर।
—सू. प्र.

मतालबौ—१ राजाओं द्वारा जागीरदारों से लिया जाने वाला एक कर।
२ देखो 'मुतालबौ' (रू. भे.)

मताह—देखो 'मता' (रू. भे.)
उ०—आगै देखै तौ कांसूं घर पण सूना पडीया छै। मताह घणा ही छै पण मनंख री जात नहीं।—चौबोली

मति-सं० स्त्री० [सं० मन्+क्तिन्] १ बुद्धि, अक्ल।
उ०—बांह चंदन सुगम सेव्यइ, भाव संचारिक वधइ। तेत्रीस धृति मति स्मरण, लज्जा सोक निद्रादिक सधइ।—वि. कु.
२ राय, सम्मति।
३ इच्छा, कामना।
४ साहित्य के अंतर्गत एक प्रकार का संचारी भाव।
रू० भे०—मत, मती, मत्त, मत्ति, मत्ती, मत्य।
५ देखो 'मती' (रू. भे.)
उ०—१ पूत घणौं मैं पालियौ, जूंभण तूं मति जाइ। हूं मोड़े आऊं हमैं, सुत दो ही समुझाइ।—वं. भा.
उ०—२ मति करौ म्हारी व्याव सगाई, क्यूं बांधो जंजाळ।
—मीरां
६ देखो 'मिति' (रू. भे.)

मतिगुर-वि० [सं० मतिः+गुर] तीक्ष्ण बुद्धि वाला, प्रतिभावान।

मतिघण-वि० [सं० मतिः+घन] विद्वान, पंडित। (ह. नां. मा.)

मतिजीवी-वि० [सं० मति+जीविन्] १ बुद्धि पूर्वक काम करने वाला।
२ विवेकी।
३ जिसकी जीविका दिमागी काम से चलती हो, बुद्धि-जीवी।

मतिधर, मतिधीर-सं० पु०—बुद्धिमान, विवेकशील।
उ०—द्वादस रांमचंद्र सुत दीठा, गुण तोलण जग हूंत गरीठा। प्रकट बडौ संग्रांमसीह पहु, मतिधर सुकवि मिलिंद कंज महु।
—वं. भा.

मतिभ्रंस-पु०—बुद्धि की वह अवस्था जबकि बुद्धि कुछ भी सोचने या समझने में असमर्थ हो जाती है, बुद्धिभ्रंश।

मतिभ्रम-पु०—बुद्धि या समझने की शक्ति विकृत हो जाने के कारण होने वाले भ्रम से मनुष्य कुछ उल्टा-सीधा समझने लगता है।

मतिमंत—देखो 'मतिवंत' (रू. भे.)

मतिमंद-वि० [सं० मंदमति] मूर्ख, बुद्धिहीन।
रू० भे०—मंदमति, मंदमती, मतमंद।

मतिमांन-वि० [सं० मति+मतुप्] विवेकशील, समझदार।

मतिवंत-वि० [सं० मति+मत्] (स्त्री० मतिवंती) चतुर, बुद्धिमान, विचारवान।
रू० भे०—मतवंत, मतिमंत।

मतिवांन-वि०—बुद्धिमान, विवेकी।
उ०—श्रै साढा तीन घर छै राजसिंहजी बडौ साहसी मतिवांन गुण खांन हुवौ।—राठौड़ राजसिंह री वारता

मतिवाळ—१ देखो 'मतवाळौ' (मह., रू. भे.)
२ देखो 'मतवाळ' (रू. भे.)

मतिवाळौ-वि०—बुद्धिमान।
२ देखो 'मतवाळौ' (रू. भे.)
उ०—१ भारा खग तूटत ऊपर भाळ। मुड़ै नह सूर लड़ै मतिवाळ।
—सू. प्र.
उ०—२ भुरज भुरज आरबा, दुगम जुथ गोळंदाजां। मतिवाळां मेलियां, कंगुर कंगुरै सकाजां।—सू. प्र.

मतिसार-वि०—बुद्धिमान।

मतिहींण, मतिहीण-वि० [सं० मतिहीन] निर्बुद्धि, मतिहीन।
रू० भे०—मतहींण, मतहीण।
अल्पा०—मतहींणौ, मतीहीणौ।

मतिहीणौ—देखो 'मतीहीण' (अल्पा., रू. भे.)

मती-सं० स्त्री०—निषेधवाचक शब्द, न नहीं, मत।
उ०—दांमोदर दीजै मती, कायर कांठै वास। सरणै राखै सूर रै, तेथ न व्यापै त्रास।—बां. दा.
रू० भे०—मत, मतां, मता, मति, मतै, मत्त, मत्ति।
२ देखो 'मति' (रू. भे.)
उ०—मिळकै लख गोरन मती एक, इत एक एक की मत अनेक। उत रेल तार उद्दम अपार, गौरव इत विद्या बिन गंवार।—ऊ. का.
३ देखो 'मिति' (रू. भे.)

मतीर—देखो 'मतीरौ' (मह., रू. भे.)
उ०—मीठा हुवै मतीर, खूब खाटोड़ा फोगां। काचर काकड़िया, टींडसा सागां जोगा।—दमदेव

मतीरड़ौ—देखो 'मतीरौ' (अल्पा., रू. भे.)

मतीरियौ—देखो 'मतीरौ' (अल्पा., रू. भे.)

मतीरी—देखो 'मतीरौ' (अल्पा., रू. भे.)

मतीरौ-सं० पु०—तरबूज की जाति का एक लता फल, हिंदवान।
मुहा०—मतीरां रौ भारौ बांधणौ=मूर्ख समूह को संगठित करने का असफल प्रयास करना।
मह०—मतीर।
अल्पा०—मतीरड़ौ, मतीरियौ, मतीरी।

मतीहीण, मतीहीणौ—देखो मतिहीण' (रू. भे.)

मतू—देखो 'मत्तू' (रू. भे.)
उ०—जिणमैं मतू मा'राज पदमसिंघजी री अरू साख सूरज चंद्रमा री लिखी।—द. दा.

मतूड़ी—देखो 'मति' (अल्पा., रू. भे.)

मते, मतेई—देखो 'मतै' (रू. भे.)

उ०—१ कागद समाचार पण कोई जावै नहीं आपरै **मते** तो कोई कागद मेल सकै नहीं सरम करै।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ उणांरी नूरांणी देखने स्वांमी बोल्या—आज तो थें कजिया रै **मते** आया दीसो छो।—भि. द्र.

मतै-सं० पु०—१ इच्छा, इरादा।

उ०—उठै थंभि दो दीह लाखां उडांऊ, हठां ले भटां भेजियौ द्रंग भाऊ। जिकी बात भाऊ घणी नीच जांणी, पिता रै **मतै** नीठि सोही प्रमांणी।—वं. भा.

२ विचार।

उ०—राव जोधौ मारवाड़ धणी बडो राजा छै। गुजरात रै मुहड़ै इण रो मुलक छै नै हजरत गुजरात ऊपर मुहम करण **मतै** छै। तो राव जोधा नूं आपरो करो।—राव जोधाजी रै बेटां री बात

वि०—कटिबद्ध, सन्नद्ध।

अव्य०—१ अपने आप, स्वत: ही।

उ०—हंसी हंसी में राजाजाजी रै स्रीमुख सूं **मतै** ई आ बात निकळगी।—फुलवाड़ी

२ हरगिज।

उ०—चलायनै आई तो अबै बिना बताया पाछी **मतै** ई नीं जावण दूं।—फुलवाड़ी

३ लिए।

उ०—सु तिण नै जांम सतै सुख हुतो। सु आजमखांन गिरनार लेवण **मतै**। तरै जांम इणरो ऊपर करै।—नैणसी

देखौ 'मतौ' (रू. भे.)

उ०—आंन धरम एकादसी, जोग जिग आचार। इन आसै भूलो **मतै**, हरीया बिनां विचार।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—मते, मतेई मत्तै।

मतोमति-अव्य०—अपने आप, अपनी अपनी इच्छानुसार, आप ही आप।

मतौ-सं० पु०—१ विचार विमर्श, परामर्श, सलाह।

उ०—१ प्रभु आगळ करि करि सुर प्रणांम। धरि **मतौ** गए इम धांम धांम।—सू. प्र.

उ०—२ सह बोलिया सकाज, **मतौ** करै बिहुंवै मिसल। मन वंछित महाराज, ऐ मोहमदीय असपती।—सू. प्र.

२ इरादा, विचार।

उ०—ओ हाको सुणनै राजा रो मन कीं मोळो पड़ियो। वो उठै जावण सारू **मतौ** करियो।—फुलवाड़ी

३ निर्णय, निश्चय।

उ०—तद सेठ कह्यौ—आप जावण रो ई पूरो **मतौ** कर लियो तो पछै म्हैं ढाबूं ईं कीकर।—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—करणौ, होणौ।

रू० भे०—मत्तौ।

मत्कुण-सं० पु० [सं० मत्कुणः] १ रक्त चूसने वाला कीड़ा, खटमल।

रू० भे०—मंकड़, मकड़, मक्कड़, मतकुण, मांकड़, मांकण, मांकर, मांकुण, माकड़, माकण।

अल्पा०—मांकड़ियो।

२ पांच वर्ष का हाथी। (डि. को.)

३ बिना दांतों का हाथी।

४ छोटा हाथी।

रू० भे०—मतकुण।

मत्त-वि० [सं० मत्तः] १ मस्त, मतवाला। (डि. को.)

उ०—सत्थ न को बळ हत्थ के, नां जीपै छळ **मत्त**। जै पांमै रिप संग्रहै, तप हूंतां छत्रपत्त।—रा. रू.

२ उन्मत्त, मदोन्मत्त।

उ०—मगरूर धतांधत **मत्त** मदां, उनमत्त मुनेस्वर दत्त अदां।—मे. म.

सं० पु० [सं०] वह हाथी जिसके मस्तक से मद झरता हो।

२ देखो 'मात्रा' (रू. भे.)

उ०—कर कर आद में हिक नगण सुभंकर। धुर उगणीस **मत्त** नहचै धर।—र. ज. प्र.

३ देखो 'मात्र' (रू. भे.)

उ०—अकबर साह निरक्खिया, जेता चांपावत्त। मीढ़ सहस्सां मत्थणौ, लक्ख गिणै तिण **मत्त**।—रा. रू.

रू० भे०—मत, मति, मती, मत्ती, मत्तौ।

मत्तगयंद-सं० पु० [सं० मत्त+गजेन्द्र] १ सवैया छंद का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और अंत में दो गुरू होते हैं।

२ मस्त हाथी।

मत्तभाव-सं० पु०—मस्ती, उन्मत्तता।

मत्तवाळौ—देखो 'मतवाळौ' (रू. भे.)

उ०—अखंडी ब्रह्मंडीं चंडी आनंदी अनूप आई, महामाई सुरां राई नमो तोनैं माय। चिरत्ताळी महाकाळी **मत्तवाळी** चित्तचौखी, अनोखी सुरंगी चंगी अनंगी सदाय।—मा. वचनिका

(स्त्री० मत्तवाळी)

मत्तायत-वि०—मदमस्त।

उ०—ते चाल्या चिति हरखता, **मत्तायत** मछरंति। वइठा दीधड बारणि, हाक दीइ हलकंति।—मां. का. प्र.

मत्ति—१ देखो 'मति' (रू. भे.)

उ०—एह बचन राजा सुणी, चितै इम निज चित्त। घन माहैसदत्त ग्रहपति, जेह नी अविरल **मत्ति**।—वि. कु.

२ देखो 'मती' (रू. भे.)

३ देखो 'मिति' (रू. भे.)

मत्ती—१ देखो 'मति' (रू. भे.)

उ०—बीराधिवीर मिळे मीरं, सूर धीरं सत्थ ए। आरेण **मत्ती** भीम भत्ती, बांण पत्ती पत्थ ए।—गु. रू. बं.

२ देखो 'मती' (रू. भे.)

३ देखो 'मिति' (रू. भे.)

मत्तू–सं० पु०—ऋण प्राप्त करने वाले व्यक्ति द्वारा तवान या ऋण पर किए गए हस्ताक्षर।

उ०—अह प्रभू चौधरियां कुळ कवण उबारै, मत्तू अत्तू में गत्तू दै मारै। आखी ऊमर आंरी कस आयो, छळ बळ मुतळब कर बस कर छिटकायौ।—ऊ. का.

रू० भे०—मतू।

वि०—साक्षी स्वरूप हस्ताक्षर करने वाला।

मत्तै—देखो 'मतै' (रू. भे.)

उ०—१ जिण थी स्वतंत्र संभव में एक आपरा आलय हूं काढ़ि देण रौ उपकार करि जिकण रा सीलणां मैं सहियौ न जाइ इसड़ा अनेक अनरथ कुमांई मन मत्तै वहै तिकण रौ अंत तौ इसड़ौ ही खटावै।—वं. भा.

उ०—२ अठी महमूदसाह नूं जीति दिल्ली पै पंद्रह दिन पातसाही करि आरयावरत रा कै ही अधीसां नूं दंडि मीर तैमूरबेग रै पाछौ गयां कैड़ी दिल्ली रा सूबादार जठी तठी आप आप रै मत्तै रहण ढूका।—वं. भा.

मत्तौ—१ देखो 'मत्त' (रू. भे.)

२ देखो 'मतौ' (रू. भे.)

मत्थ—१ देखो 'माथै' (रू. भे.)

उ०—तंबेरम कुंभ दुहाथळ तत्थ। आडागिरि मत्थ को हत्थ अगत्थ।—मे. म.

२ देखो 'माथौ' (रू. भे.)

उ०—वेह समत्थ वणावियो, बाघ डाच जम बत्थ। जिण माफळ लग जाड़ियां, माय जाय गज मत्थ।—बां. दा.

मत्थण–वि०—मथने के लिए, मथने को।

रू० भे०—मथण।

मत्थणौ, मत्थबौ—देखो 'मथणौ, मथबौ' (रू. भे.)

मत्थणहार, हारौ (हारी), मत्थणियौ—वि०।

मत्थिओड़ौ, मत्थियोड़ौ, मत्थ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मत्थीजणौ, मत्थीजबौ—कर्म वा०।

मत्थारौ—देखो 'मथारौ' (रू. भे.)

मत्थे—१ देखो 'माथै' (रू. भे.)

उ०—'परेज'साह सत्थे, दै कमधज लज भूडंडै। सुरतांण खुरम मत्थे, दै बीड़ौ कीध फुरमांणं।—गु. रू. बं.

२ देखो 'माथौ' (रू. भे.)

मत्थेन—जैनियों का एक अभिवादन।

उ०—पछै स्वांमीजी पधारचा जद सिवरांमदासजी संतोखचंदजी स्वांमीजी ने आवतां देखनें मत्थेन बंदामि कहिनें उभा थया।
—भि. द्र.

मत्थेहण—देखो 'मंथन' (रू. भे.)

उ०—भिड़वायौ सारौ भुआ-मंडळ, वसुधा गोधम गहण चिहूं-वळ। किळवां महण मत्थेहण कंदळ, दिल्ली मातौ दुंद दमंगल।
—गु. रू. बं.

मत्थै—१ देखो 'माथै' (रू. भे.)

उ०—डोहंत सूंडाडंड ए. स्रीखंड सरपक हिंड ए। गज-वाग मत्थै मैंगळा, वळकत्त वीजक वद्दळां।—गु. रू. बं

उ०—२ सींगाळौ अब खललणौ जिण कुळ हेक न थाय। जास पुरांणी बाड़ जिम, जिण जिण मत्थै पाय।—हा. भा.

२ देखो 'माथौ' (रू. भे.)

मत्थौ—देखो 'माथौ' (रू. भे.)

उ०—तांम 'भीम' ऊठियो, खाग धूणै भूडंडह। जडै पाउ पायाळ अडै, मत्थौ ब्रहमंडह।—गु रू. बं.

मत्य—देखो 'मति' (रू. भे.)

उ०—वचन माहारु' चिति आंणु, भली छि तुझ मत्य।—नळाख्यांन

मत्रि—देखो 'माता' (रू. भे.)

मत्स—देखो 'मत्स्य' (रू. भे.)

उ०—मगध मंडळ अंग बंग कलिंग कासो कुसट्ट पंचाळ जांगळ विदेह संडिल्ल मळय वस्त मत्स दसारण्ण चेदी सिंधु सूरसेन भंग।
—व. स.

मत्सर–सं० पु० [सं०] १ क्रोध, कोप।

२ डाह, ईर्ष्या।

३ गर्व, अभिमान।

उ०—मनि मावीत्रह मत्सर रहीउ, पाछइ अरजुनु अति गहगहीउ।
—पं. पं. च.

मत्सरता–सं० स्त्री० [सं०] १ डाह या ईर्ष्या का भाव।

२ गर्व करने का भाव, अहंकारिता।

३ कोप या क्रोध करने का भाव।

मत्सरी–वि०—१ डाह या जलन रखने वाला, ईर्ष्यालु।

२ क्रोधी।

३ अभिमानी।

मत्सरीकृता–सं० स्त्री० [सं०] संगीत में एक मूर्च्छना का नाम।

मत्स्य–सं० पु० [सं०] १ मछली।

२ ज्योतिष में मीन नामक राशि।

३ विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार जो मछली के रूप में हुआ था।

रू० भे०—मच्छ, मछ, मत्स, मांछ।

अल्पा०—मांछळौ, माछलौ।

४ पुराणानुसार विराट देश।

वि० वि०—इस देश की स्थिति के सम्बन्ध में ऋग्वेद में उसे इन्द्रप्रस्थ से दक्षिण या दक्षिण-पश्चिम तथा सूरसेन या मथुरा से दक्षिण में बताया है। उपनिषदों, ब्राह्मणों आदि में उल्लेख मिलता है कि वत्स, साल्व, कुरु-पांचाल आदि जनपद मत्स्य के

इर्द गिर्द ही थे। महाभारत के विराट पर्व (१=१०-१४) में कुरु देश के चारों ओर जो जनपद गिनाये गए उनमें पांचाल, चेदि, मत्स्य, दशार्ण, नवराष्ट्र, मल्ल, शाल्व, युगन्धर आदि हैं। वर्तमान अलवर, भरतपुर और जयपुर का कुछ भू-भाग मत्स्य प्रदेश का ही क्षेत्र माना जाता है।

मत्स्यगंधा-सं० स्त्री० [सं०] कुरुवंश के शांतनु राजा की पत्नी, जो चित्रांगद एवं विचित्र वीर्य राजाओं की माता थी। इसके 'काली', गंधवती, योजनगंधा, गंधकाली, सत्यवती, आदि नामान्तर भी प्राप्त हैं।

वि० वि०—पौराणिक आख्यान के अनुसार मत्स्यगंधा उपरिचर वसु राजा की कन्या थी। इसकी माता का नाम अद्रिका था जो ब्रह्मा के शाप के कारण मछली का स्वरूप प्राप्त हुई अप्सरा थी। इस मछली स्वरूप अप्सरा से उत्पन्न होने के कारण इसके शरीर से मछली की गंध आती थी। इसी कारण यह 'मत्स्यगंधा' के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसे मल्लाहों ने पाल-पोस कर बड़ा किया था। मल्लाहों के परिवार में रहकर वह नाव चलाने का कार्य करने लगी। एक दिन पाराशर ऋषि ने इसे देखा और अत्यधिक रूपवती होने के कारण इसके साथ समागम की इच्छा प्रकट की। पाराशर ऋषि से ही इसे कौमार्यावस्था में वेदव्यास नामक पुत्र की उत्पत्ति हुई। कौमार्यावस्था में व्यास का जन्म होने के पश्चात् शांतनु राजा से इसका विवाह हुआ जिससे इसे चित्रांगद और विचित्रवीर्य नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए।

रू० भे०—मछगंधा।

मत्स्यदेसि, मत्स्यदेसी—वि०—मत्स्य देश का, मत्स्य राज्य का।

मत्स्यपुराण—सं० पु० [सं० मत्स्यपुराण] अठारह पुराणों में से एक। यह महापुराण कहलाता है।

रू० भे०—मच्छपुराण।

मत्स्यमुद्रा—सं० स्त्री० [सं०] दाहिने हाथ के पृष्ठ भाग पर बांये हाथ की हथेली रख कर दोनों अंगूठों को हिलाने की तांत्रिकों की एक मुद्रा।

मत्स्यासन—सं०पु० [सं०] योग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें दोनों पैरों की स्थिति पद्मासन की तरह रखकर सीधे लेटकर दोनों हाथों की कुहनी को सिर पर रखते हैं। इससे मल शुद्धि होती है।

मत्स्येंद्रनाथ—देखो 'मछंदर'।

मत्स्येंद्रासन—सं० पु० [सं०] योग के चौरासी आसनों में से एक। इसमें बाये पैर की जांघ के मूल में रखी दाहिने पैर की एडी को, बांये हाथ को पीठ के पीछे से घुमाकर पकड़ते हैं तथा दाहिने पांव के घुटने के पास भूमि पर रक्खे हुए बांये पैर के अंगूठे को दाहिने हाथ से, जो घुटने के बाहर निकलता है, पकड़ते हैं। उक्त स्थिति बनाकर मुंह को बांई ओर मोड़कर बैठने से मत्सेंद्रासन होता है। इस आसन क्रिया से कुंडलिनी जागृत होती है और जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

मथ—१ देखो 'माथौ' (रू. भे.)

२ देखो 'माथो' (मह., रू. भे.)

मथण—सं० पु०—१ समुद्र। (ह. नां. मा.)

२ मथने की क्रिया।

३ देखो 'मथन'।

रू० भे०—मंथांण, मत्थण।

मथणी—सं० स्त्री०—१ दही मथने का काष्ठ का बना मथ-दंड।

उ०—१ जरे मनसा **मथणी** मथ जांण, करे कथणीं कथ कै गुजरांण। कुजीव कुसंग कहां कुसळात, विजोगण पीव संजोगण बात।
—ऊ. का.

उ०—२ फजरां हथणीं सी दधि **मथणी** फुरती, माटां घर घर में घणहर सी घुरती। खूली आथणियां साथणियां खाती, फूली-फूली फिर फूंद्याळी गाती।—ऊ. का.

२ देखो 'मथांणी' (रू. भे.)

रू० भे०—मंथणी, मंथनी, मंथांणी, मथनी।

मह०—मंथांण, मंथान।

मथणौ, मथबौ—क्रि० स० [सं० मंथनम्] १ मथानी या रई के द्वारा दूध या दही को इस प्रकार हिलाना या मथना कि उस पर मक्खन आ जाय, बिलोना।

उ०—१ आखी कळी री आंख सो, जगत सरब रौ जीव। करता निज हथ काढ़ियौ, घण गोरस **मथ** घीव।—सिवबगस पाल्हावत

उ०—२ जांणपणउ कळा तियइ तन जोवण, विध बिन्हे ही लागा वाद। **मथ** काढी जांणी महामह प्यारंभ, मांडी तिण रूप री अजाद।—महादेव पारवती री वेलि

२ कई द्रव पदार्थों को हिला डुला कर एक करना, विलोड़ित करना।

उ०—अरि डरिया तस केहौ अचंभौ, मारुवा राव नमौ परवांण। **मथि** हाथियें कियौ जळ मैंळौ, मिळतौ नदी डरै महिरांण।
—गाडण नेतौ

३ उथल-पुथल करना, अस्त-व्यस्त करना।

४ नष्ट-भ्रष्ट करना।

५ किसी कार्य का बार बार अभ्यास करना।

मथणहार, हारौ (हारी), **मथणियौ**—वि०।

मथिओड़ो, मथियोड़ो, मथ्योड़ो—भू० का० कृ०।

मथीजणो, मथीजबो—कर्म वा०।

रू० भे०—मंथणो, मंथबो, मथ्थणो, मथ्थबो।

मथदंड—सं० पु० [सं० मंथदण्ड] दही मथने का काष्ठ का बना उपकरण।

मथन—सं० पु० [सं० मथनः] १ गनियारी नामक वृक्ष।

[सं० मथितं] २ छाछ, तक्र, मठा। (अ. मा.)

३ दधि, दही। (अ. मा.)

४ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र विशेष ।
५ देखो 'मंथन' (रू. भे.)
रू० भे०—मथण ।

मथनी—देखो 'मथणी' (रू. भे.)

मथपरबत—सं० पु० [सं० मंथन पर्वत] मंदराचल पर्वत का नाम ।
रू० भे०—मंथपरबत, मंथपरवत ।

मथरा—१ देखो 'मथुरा' (रू. भे.)
२ देखो 'मंथरा' (रू. भे)

मथवाय—सं० पु० [सं० मस्तवात] शिर में होने वाली पीड़ा, शिरशूल ।
रू० भे०—मतवाय, मथवाह ।

मथवाळ—सं० पु० [सं० मस्तक+बाल] स्त्रियों के शिर के वे बाल जो शिर की धुलाई करते या कंघी करते समय शिर से अलग हो जाते हैं ।

मथवाह—सं० पु०—१ हाथी को चलाने वाला, महावत ।
२ देखो 'मथवाय' (रू. भे.)

मथांण—सं० पु०—झुण्ड, समूह, दल ।
उ०—देवळ तूं मत कर फिकर, मोटो देख **मथांण** । कळह विरोळू एकलो, घांसाहर घमसांण ।—पा. प्र.
२ नाश, ध्वंस ।
उ०—केलपुरै अठी उठी चक्र वेग फेर कीधौ, मार टक्र मार हूटी सेन रौ **मथांण** ।—बद्रीदास खड़ियौ
३ बड़ा नगर, शहर ।
४ सागर ।
५ देखो 'मंथांण' (रू. भे.)
उ०—बोहळी गूजरां री थाट भैंसियांरी लाहोर कनै थां आंणी । सोना रौ **मथांण** ले आयौ ।—नैणसी
६ देखो 'मथांणी' (मह., रू. भे.)
उ०—मिळ **मथांण** घाराळ तणै मुंह, जत्र कत्र सत्र होयै जणौ जण । बार बार दध जेम विलोम्रै, ताईयां दळ नगराज तण ।
—दूदा नगराजोत खीची रौ गीत
वि०—वह जो मथा गया ।

मथांणा—सं० पु०—प्रत्येक चरण में दो तगण सहित ६ वर्ण का वर्णिक छंद विशेष ।

मथांणी, मथांनी—सं० पु० [सं० मंथनम्] १ वह पात्र जिसमें दही मथा जाता है ।
२ देखो 'मथणी' (रू. भे.)
उ०—बादळ रा मन में **मथांणी** घूमती बंद व्ही तौ करौत चालती सी लखाई ।—फुलवाड़ी
रू० भे०—मंथणी, मंथनी, मंथांणी, मथनी ।
मह०—मंथांण, मंथांन, मथांण, मथांन ।

मथाणौ, मथाबौ—क्रि० स० [मथणौ क्रि० का प्रे० रू०] मन्थन कराना, मथने का कार्य दूसरे से कराना ।
मथाणहार, हारौ (हारी), मथाणियौ—वि० ।
मथायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
मथाईजणौ, मथाईजबौ—कर्म वा० ।

मथारी—सं० स्त्री०—१ कंटीली झाड़ियों को काटकर बनाया हुआ वह भार जो सिर पर ढोया जाता है ।
२ 'सीवण' नामक घास का वह छोटा ढेर जो घास को काटते समय बनाया जाता है । (जैसलमेर)

मथारौ—स० पु०—१ बीचो-बीच का ऊपर का स्थान, शिखर ।
उ०—वौ ढोल लेय नै उण रै माथै चढ़ियौ, ठेट **मथारै** चढ़नै जोर जोर सूं ढोल घमकावण लागौ ।—फुलवाड़ी
मुहा०—दिन मथारै आणौ=तेज धूप चढ़ना, दोपहर का समय होना, सूर्य का शिखर पर आना ।
२ उद्गम स्थान ।
उ०—मेह **मथारै** बरसियौ, नदी किराड़ां मार । घोड़ा हींसन भल्लिया, सीस किराड़ां भार ।—बां. दा.
३ किसी मकान, टीबा, पर्वत आदि का सबसे ऊपर का शिरा, चोटी ।
४ अन्तिम मंजिल ।
५ किसी वंश का आदि पुरुष ।
६ अन्त, छोर, हद, सीमा ।
उ०—१ हजार सूं दस हजार घणा वत्ता व्है । इण गिणती रौ कांई **मथारौ**, लाख, दसलाख, करोड़ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ चौधरी ई मन में जांणली के अैदीपणां रौ काठौ **मथारौ** आयग्यौ है, अबै हाथ-पग नीं हिलाया तौ सूखनै खेलरा व्है जावांला ।—फुलवाड़ी
७ पूर्वजों की जन्म भूमि, पूर्वजों का उद्गम स्थान ।
रू० भे०—मत्थारौ ।
८ देखो 'माथासरौ' (रू. भे.)

मथावटी—सं० स्त्री०—१ सिर का ऊपरी भाग ।
२ शिर ।
३ ऊपर का भाग ।
रू० भे०—माथावटी ।

मथासरौ—देखो 'माथासरौ' (रू. भे.)

मथित—वि० [सं० मथित] मथा हुआ, विलोडित ।
रू० भे०—मतीथ ।

मथिति—सं० स्त्री० [सं० मथितं] छाछ, मठा । (ह नां. मा.)

मथियळ—सं० पु०—वह जो मथा गया, सागर, समुद्र ।
उ०—१ रे **मथियळ** रे नथियळ थिर रही, थरक म कनक कोट थिर थाय । 'गांगावत' गांजियौ न गांजै, गांजै राव अगंजिया गाय ।
—राव मालदेव रौ गीत

उ०—ग्राहं कमंध तूझ पग ऊंडा, हाथां गयरण छिबै हथवाह।
मथियळ ने धुरिणयळ नह मीढ़ां, समवड तूझ तणी 'गजसाह'।
—किसनौ ग्राढ़ौ

मथियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ मथा हुग्रा, विलोड़ित. २ उथल-पुथल किया हुग्रा, ग्रस्त-व्यस्त किया हुग्रा. ३ नष्ट-भ्रष्ट किया हुग्रा. (स्त्री० मथियोड़ी)

मथिला—देखो 'मिथिला' (रू. भे.)

मथी-सं० स्त्री० [सं०] दही मथने का मथदंड, रई।

मथीत-सं० पु० [सं० मथित] १ दही। (ह. नां. मा.)
२ देखो 'मथित' (रू. भे.)

मथुरा-सं० स्त्री०—१ पश्चिमी उत्तर प्रदेश की एक प्रसिद्ध नगरी जिसकी गिनती पुराणानुसार सात मोक्ष दायिनी पुरियों में होती है।
२ देखो 'मंथरा' (रू. भे.)
रू० भे०—मथरा।

मथुरी—देखो 'मंथरा' (रू. भे)

मथेण, मथेरण-सं० पु०—वह जैनी यति जो विवाह कर लेता है।
उ०—१ उण री बेटी फळोधी रा **मथेण** स्रीचंद नूं परणाई।
—बां. दा ख्यात

उ०—२ ग्राधाकरमी थांनक में रहै ग्रनै घर छोडचा कहै तिण ऊपर स्वांमीजी द्रस्टांत दियौ: ज्यूं जती रै उपासरौ, **मथेरण** रै पोसाळ, फकीर रै तकियौ, भक्तां रै ग्रस्तल, फुटकर भक्त रै मंढी, कनफड़ां रै ग्रासण, संन्यासी रै मठ, रांमसनेहियां रै रांमदुवारौ कठेयक कहै रांममोहिलौ, घर रा धणी रै घर, सेठ रै हवेली, गांम रा धणी रै कोटरी, कठेयक कहै रावळौ, राजा रै महल तथा दरबार, ग्रनै साधां रै थांनक, नांम में फेर है बाकी सगळा घर रा घर है।—भि. द्र.

मथै—१ देखो 'माथै' (रू. भे.)
२ देखो 'माथौ' (रू. भे.)

मथोग-सं० पु०—कलंक, धब्बा।

मथ्थ, मथ्थई—१ देखो 'माथौ' (मह., रू. भे.)
२ देखो 'माथै' (रू. भे.)
उ०—धर पौरस मेछां धणी, कांमणि हंदी कथ्थ। सांभळि बैठी सांप्रत, महागिरिंदा **मथ्थ**।—मा. वचनिका

मथ्थणौ, मथ्थबौ—देखो 'मथणौ, मथबौ' (रू. भे.)
उ०—हिरणायख हांणै संख सभांणै, हयग्रीवा खळ हंता है। हरणाकुस हत्ते महणसु **मथ्थे** छितलै बळि छळंता है।—र. ज. प्र.
मथ्थणहार, हारौ (हारी), **मथ्थणियौ**—वि०।
मथ्थिग्रोड़ौ, मथ्थियोड़ौ, मथ्थ्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मथ्थीजणौ, मथ्थीजबौ—कर्म वा०।

मथ्थियोड़ौ—देखो 'मथियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मथ्थियोड़ी)

मथ्थै—देखो 'माथे, माथै' (रू. भे.)
उ०—पाल्है डेरा परठिया, मारग **मथ्थै** ग्राय। सिरकण ताणै तांतियां, डेरा किया वणाय।—जसमा ग्रोडणी री वात

मदंती-सं० स्त्री० [सं०] विकृत धैवत की चार श्रुतियों में से दूसरी श्रुति का नाम।

मदंद, मदंध—देखो 'मदांध' (रू. भे.)
उ०—१ गुड़िया ढ़ाहै **मदंध** गज, ताता चाळ तुरंग। सांकड़ भीड़ौ सुरग व्है, जिकौ कहीजै जंग।—बां. दा.
उ०—२ वरतै ग्राप बसंत रित, इम करता ग्राणंद। नव पल्लव तरु नीसरै, मधुकर हुवै **मदंध**। मधुकर हुवै मदंध सबज वन सोहणा।—सिवबगस पाल्हावत
उ०—३ पड़ै कटि सीरस बीर पठांण, मद्राचळ चक्र चमू महरांण। गुड़ै गिड़-कंध **मदंध** मुगल्ल, ख्याली रिखराज हंसै खल-खल्ल।
—मे. म.

मदंन—देखो 'मदन' (रू. भे.)
उ०—प्रतख्ख चख्ख पीतणी, महा **मदंन** मोहिणी। मयंक मुख्ख मंजळी, करार नेत कंजळी।—मा. वचनिका

मद-सं० पु० [सं०] १ मादक पदार्थों के सेवन से होने वाली वह उद्वेगपूर्ण ग्रवस्था जिसमें मस्तिष्क ठीक प्रकार से कार्य नहीं करता, नशा, खुमारी।
उ०—हड हड़ हसत, मसत मदिरा **मद**, धड़-हड़ सेर धवाड़ै। चड़चड़ चाव जोगण्यां चौसट, धड़धड़ भूमि धुजाड़ै।—मे. म.
२ ग्रहंकार, गर्व। (ग्र. मा., ह. नां. मा.)
उ०—लछवर धनंख साथ, तेज निज हर लिया, रद कर **मद** दुज रांम, ग्रवधपुर ग्राविया।—र. ज. प्र.
मुहा०—मद उतरणौ=गर्व चूर-चूर होना। २ मद उतारणौ=गर्व नष्ट करना। मद चढ़णौ=गर्व में चूर होना।
३ ग्रपनी विशिष्टता या श्रेष्ठता के कारण व्यक्ति की वह मानसिक दशा जिसमें वह किसी दूसरे को तुच्छ समझता है, थोथा ग्रभिमान, झूठा ग्रहंकार।
४ वह मानसिक ग्रवस्था जिसमें यौवन ग्रथवा काम वासना के प्रभाव से उचित ग्रनुचित का ध्यान नहीं रह जाता, कामोत्तेजना, कामुकता।
उ०—१ हमै कंवर मदन रै जोरै, सुगंध रै धोरै। जोबन **मद** चुवतौ, प्रेमातुर हुवतौ। 'सुखिया' नूं साथ लेइ चवड़ारौ मारग टाळियां, हालियौ विलालौ छोगा राळियां।—र. हमीर
उ०—२ 'रतना' **मद** मैं मत्त निसंक हुई थी तिणरा संकोज हूं रुकण लागी, लाज रै भार ग्राखियां झुकण लागी।—र. हमीर
५ उन्मत्तता, पागलपन, मतवालापन।
६ हर्ष, ग्रानन्द।

७ जोश, ग्रावेग, उत्तेजना ।

उ०—करां खग मोगर घूण करूर । पटाभर ग्राहुड़िया मद पूर ।
—गो. रू.

मुहा०—मद भरणौ=मतवाला होना, मदमस्त होना।

८ एक प्रकार का स्राव जो कुछ विशिष्ट पशुग्रों यथा मस्त हाथी, ऊंट, सिंह ग्रादि के मस्तक ग्रौर ग्रीवा के संधि-स्थल से निकलता है।

उ०—१ केहर तणीं कळाइयां, भणणाहट भमरांह । भीजी गज-सिर भांजतां, मद सोरंभ डमरांह ।—बां. दा.

उ०—२ दिकपाळां रा गाढ़ समेत दिग्गजां रा मद छूटि । ग्राठूही ग्रनेकप चकितपणां का चीकार करण लागा ।—वं. भा.

उ०—३ मद भरै करै ग्राकास मून' रिस भरै चरै ताते सु चून । गूंगळा मस्त बोलै दुगाळ, भुकता सखुबी नुखता सभाळ ।—पे. रू.

वि० वि०—हाथी के मद में सुगंध होती है ग्रौर सिंह व ऊंट के मद में सिंह ग्रौर ऊंट की बू (गंध) ग्राती है।

९ मदिरा, शराब ।

उ०—ग्रालीजा ग्रलबेलिया, हो हंजा हुमनाक । भीनोडा रसिया भमर, छैल पियो मद छाक ।—बां. दा.

१० मधु, शहद ।

उ०—धूप दीप नैवेद पुस्प फळ । कस्मीरज मळयज नागज कळ । मद म्रग-मद तांबूळ महावर । बन घनसार घिरत बैसांनर ।
—मे. म

११ कस्तूरी ।

१२ एक विशिष्ट स्राव जो विशेष वृक्षों तथा पत्थरों के सन्धि स्थलों से निकलता है।

१३ वीर्य।

१४ कामदेव, मदन ।

१५ एक दानव जो कश्यप एवं दनु का पुत्र था ।

१६ एक दानव जो च्यवन ऋषि से उत्पन्न हुग्रा था ।

१७ छप्पय छंद का ४२ वां भेद जिसमें २९ गुरू, ६४ लघु से कुल १२३ वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं।

१८ दो भगण का एक छंद विशेष ।

१९ मस्त हाथी । (डिं. को.)

२० खाता या खाते का विभाग ।

२१ वह लम्बी लकीर जो बही में खींचकर उसके नीचे भिन्न-भिन्न रकमें लिखते हैं।

२२ किसी कार्य या कार्यालय का विभाग, शाखा ।

२३ काला, श्याम । * (डिं. को.)

रू० भे०—मंद, मदि, मद्द, मध, मय, महि ।

ग्रल्पा०—मदड़ौ ।

मदग्रंध—देखो 'मदांध' (रू. भे.)

उ०—ऊतरती बातां करै, ग्रौरां री ग्रणबंध । निज मुख पांणी ऊतरै, ईखै नंह मद-ग्रंध ।—बां. दा.

मदउत्कट—सं० पु० [सं० मदउत्कट:] मतवाला हाथी, मदमस्त हाथी । (डिं. को)

वि० [सं० मदउत्कट] १ नशे में चूर ।

२ कामुक ।

३ ग्रहंकारी, ग्रभिमानी ।

मदकंध—सं० पु० [सं० मद+स्कंध] १ ऐरावत, हाथी । (डिं. को.)

२ हाथी ।

रू० भे० – मदगंध ।

मदक—सं० पु०—१ ग्रफीम के सार से बनाया जाने वाला मादक पदार्थ जिसे चिलम पर तम्बाकू के साथ पीते हैं।

२ सांड ।

मदकार—वि०—जिससे मद उत्पन्न हो, मद वर्द्धक ।

मदकरण—सं० पु०—हाथी । (ना. डिं. को.)

वि०—मतवाला, मस्त ।

मदकळ—वि० [सं० मदकल] १ मस्त, उन्मत्त ।

उ०—इण कारण बूंदी समेत छोटा बड़ा १२ ग्रांमां रो ग्रास पाइ मदकळ मातंग मारण रो मन करता सियाळ रै समांन छत्रधारियां रो ग्रनुकरण करै ।—वं. भा.

२ ग्रस्पष्टतया बोलने वाला ।

३ धीरे धीरे प्रेमालाप करने वाला।

४ मदोन्मत्त ।

५ मन्द मधुर ।

६ मदमाता ।

सं० पु० [सं० मदकल:] १ मतवाला हाथी ।

२ बाईस लघु ग्रौर १३ गुरु कुल ३५ वर्ण या ४८ मात्रा का दोहा नामक छन्द का भेद विशेष ।

३ ग्रार्या गीति या खंधाण (स्कंधक) का भेद विशेष ।

रू० भे०—मंइगळ, मंगळ, मंद्गळ, मंयगळ, मइंगळ, मदगर, मदगळ, मदग्गळ, मद्गळ, मयंगळ, मयंगळि, मयगळ, महगल, मेंगळ, मैंगळ, मैंगळय, मैंगळ ।

मदगंध—१ देखो 'मदकंध' (रू. भे.)

उ०—१ कळह रचै दसकंध, नवग्रह बंध निवारियौ । हुवा धनुम गुण सबद, है गतमद जग मदगंध ।—बां दा.

उ०—२ वाधै सिखर वडै लाधै प्रव, इळ पुड़ नांम वधै ग्रनमंध । दीन्हा नको नहीं कोइ देसी, मारू राव जिसा मदगंध ।
—महाराजा रायसिंह रौ गीत

मदगंधा—सं० स्त्री० [सं०] १ मदिरा, शराब । (डिं. को.)

२ भांग ।

मदगर, मदगळ—देखो 'मदकळ' (रू. भे.)

उ०—हे सखी इसा तोटा ऊपरै तौ हूं अनेक वेळा वारणै जाऊं जिण तोटा में ही पोत (तेवटा री चीड़ां) तो गज मोतियां री नै चूड़ौ ही उणहीज मैंगळ (मदगळ) मदोनमत हाथी रा दांत रौ है।
—वी. स. टी.

मदगळत-वि०—मदमत्त, मस्त।
उ०—**मदगळत** जूह मैंगळमसत, सिणगार खड़ा किय सदोमत्त।
—गु. रू. बं.

मदगळित-वि०—मदच्युत।
उ०—समंद जाइ खांडउ पखाळियउ। अनेक राइ **मदगळित** करि मेहल्या।—वचनिका

मदगू-सं० पु०—जल काग, जल कौआ। (डिं. को.)

मदग्गळ—देखो 'मदकळ' (रू. भे.)
उ०—भाज राज व्रत वेब करै नट राज तणी कळ। गजां राज घण गरज, गाज सरराज **मदग्गळ**।—सू. प्र.

मदड़ौ--देखो 'मद' (अल्पा.. रू. भे.)
उ०—मदछकिया भंवरजी **मदड़ौ** तो मोलाय, ओ कोडीला भंवरजी कोई मदड़ो तो पावौ मूंगा मोल रौ हो म्हांरा राज।—लो. गी.

मदछकियौ-वि० (स्त्री० मदछकी) नशे में मदमत्त, मस्त, मद से परिपूर्ण।
उ०—चवसठ मझि बावन चिरताळा। **मदछकिया** रमै मतवाळा।
—सू. प्र.

मदछाक-सं० पु०—मदिरा से परिपूर्ण (प्याला)।

मदजीवण-सं० पु०—शराब का व्यवसाय करने वाला व्यक्ति, कलाल।

मदज्झर, मदझड़, मदझर-वि०—वह जिसके मद का स्राव होता हो।
सं० पु०—१ हाथी।
उ०—१ कहौ तो आंणां किलमरा, **मदझर** मतवाळा। साहिजादा कै अमीर सूं चित ह्वै चकचाळा।—सू. प्र.
उ०—२ दोय लाख दंताल मसत गाजत **मदज्झर**। सात लाख नीसांण घुरै दुंदभि लख घुम्मर।—सू. प्र.
२ सिंह।
३ ऊंट।
रू० भे०—मदांझर।

मदत—देखो 'मदद' (रू. भे.)
उ०—दीवांण अरज मांन **मदत** साथ दीवी।—नैणसी

मदतकार, मदतदार—देखो 'मददगार' (रू. भे.)

मदति, मदती, मदत्तिय—देखो 'मदद' (रू. भे.)
उ०—१ 'नाग' दुरंग पति जवन, साह 'दौलत' दळ सब्बळ। सेखै सुज पतिसाह, **मदति** आंणियौ महाबळ।—सू. प्र.
उ०—२ वागां ऊपड़ै विखमीवार धड़कै आकास धर। खरौ खेध वाजी खरा वहसै दुवाह। निहसै कैंवाण नागै ऊससै विचै आरांण, साह री **मदति** साजै जांगळू रौ साह।—जगौ सांदू

मदद-सं० स्त्री० [अ०] सहायता, सहारा, सहयोग।
उ०—रिणी में मुत्सद्दी साथ फेर राख पधारिया जे हिसार नूं कांम पड़े **मदद** चाहिजै तो सताब जाय सांमल हुयने।—नैणसी
रू० भे०—मदत, मदति, मदती, मदत्तिय, मदा।

मददगार-वि०—मदद करने वाला, सहायक, सहयोगी।
रू० भे०—मदतकार, मदतदार।

मदधर-सं० पु०—हाथी।
उ०—ढळकतां ढाल **मदधर** धजां, घंट घोर अग्राज घण। चढियां मजेज होतां चमर, तेज पुंज 'अगजीत' तण।—सू. प्र.
२ सिंह। ३ ऊंट।

मदन-सं० पु० [सं० मदनः] १ कांमदेव। (अ. मा., ह. नां. मा.)
उ०—बागायत प्रथमी बिचै, निज अलवर सर नांम। नीर हवद छळिया नहर, तर सर सबज तमांम। तर सर सबज तमांम, छ रितु छबि छाविया। मांनहु **मदन** महीप वितांन वणाविया।
—सिवबगस पाल्हावत
यौ०—मदन-कदन।
२ बसन्त।
३ धतूरा।
४ रति क्रीड़ा, संभोग।
५ कामवासना, कामेच्छा।
उ०—मगसर महीना में मेरे मन में उठे तरंग। अरध निसा में आय के **मदन** करत मोहे तंग।—लो. गी.
६ भौंरा।
७ मैंना पक्षी।
८ मौलसिरी।
९ उड़द।
१० ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म से सातवें गृह का नाम।
११ डिंगल के 'वेलियां' सांणोर छंद का भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ५४ लघु, ५ गुरु से कुल ६४ मात्रायें हों तथा अन्य द्वालों में ५४ लघु, ४ गुरु से ६२ मात्रायें हों।
१२ छप्पय छद का २२ वां भेद जिसमें ४९ गुरु ५४ लघु से १०३ वर्ण या १५२ मात्रायें होती हैं।
१३ आर्यागीति या 'खंधांण' (स्कंधक) का भेद विशेष।
रू० भे०—मइण, मदंन, मदन्न, मयण, मयणि, मयन, मैण।

मदनकंटक-सं० पु० [सं० मदनकण्टक] साहित्य में सत्विक रोमांच।

मदनक-सं० पु०—१ प्रथम आठ लघु और फिर एक सगण का ११ वर्ण का वृत्त विशेष।
२ मदन-वृक्ष, मैंनफल।
३ मौलसिरी।
४ धतूरा।

मदन-कदन-सं० पु० [सं०] शिव, महादेव। (डिं. को.)

मदनका-सं० पु०—छे लघु वर्ण का वृत्त विशेष।

मदनगोपाळ–सं॰ पु॰ [सं॰ मदनगोपाल] श्रीकृष्ण का एक नाम।

मदन-ग्रह–सं॰ पु॰ [सं॰ मदनगृह] १ योनि, भग।

२ फलित ज्योतिषानुसार जन्म कुंडली में सातवां स्थान।

३ मदनहर नाम का एक छन्द विशेष।

मदनचतुरदसी, मदनचौथ–सं॰ स्त्री॰ [सं॰ मदनचतुर्दशी] चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी।

मदनताळ–सं॰ पु॰—संगीत में एक प्रकार का ताल विशेष जिसमें पहले दो द्रुत और अंत में दीर्घ मात्रा होती है।

मदनतेरस–सं॰ स्त्री॰ [सं॰ मदनत्रयोदशी] चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी।

मदनदमन–सं॰ पु॰ [सं॰ मदनदमन:] शिव का एक नाम।

मदन-दिवस–सं॰ पु॰ [सं॰ मदनदिवसं] मदनोत्सव का दिन, वसंत।

मदनदोळा–सं॰ स्त्री॰—संगीत में, इन्द्र ताल के छ: भेदों में से एक ताल विशेष।

मदनपति–सं॰ पु॰—१ इन्द्र।

२ विष्णु।

मदनपाठक–सं॰ पु॰ [सं॰ मदनपाठक:] एक पक्षी विशेष, कोकिल, कोयल।

मदनफळ–सं॰ पु॰—मैनफल।

मदन-भवन–सं॰ पु॰ [सं॰] १ योनि, भग।

२ जन्म कुण्डली में जन्म से सातवा स्थान। (फलित ज्योतिष)

रू॰ भे॰—मदनालय।

मदन-भेरी–स॰ स्त्री॰—वाद्य विशेष।

उ॰—**मदनभेरी** वाज्यां नीसांग, तुं ढीली पुहुतउ सुरतांण।
—कां. दे. प्र.

मदन-मस्त–वि॰—१ मतवाला, मस्त।

२ कामासक्त, विषय में लीन।

३ चम्पे की जाति का एक फूल।

मदन-महोत्सव–सं॰ पु॰ [स॰ मदनमहोत्सव:] चैत्रमास के शुक्ल पक्ष में द्वादशी से चतुर्दशी पर्यंत मनाया जाने वाला प्राचीन भारत का एक उत्सव विशेष।

मदन मोहन [सं॰]१ योगिराज कृष्ण का नामान्तर।

२ ईश्वर का एक नाम।

मदनरस—एक औषध।

उ॰—घोडाचोली **मदनरस**, अभ्रक पारु वंग। खाइ ते सिउं खप करी, आपण कीजइ संग।—मा. कां. प्र.

मदन-रेखा–सं॰ स्त्री॰—एक महासती।

रू॰ भे॰—मयणरेहा।

मदनसदन—देखो 'मदनभवन' (रू. भे.)

मदनसाही–सं॰ पु॰—राजपूतानान्तर्गत भूतपूर्व झालावाड़ राज्य का एक सिक्का विशेष।

मदनांकुस–सं॰ पु॰ [सं॰ मदनांकुश] १ लिंग।

२ नख, क्षत।

३ योनी, भग।

उ॰—पेट ज्यूं लच्छी पाट की नितंब नारियल जांण। **मदनांकुस** की जायगां त्रिवली सींप समांन।—कुंवरसी सांखळा री वारता

मदनांतक–सं॰ पु॰ [सं॰] महादेव, शिव।

मदनांध–वि॰ [सं॰] कामांध, कामासक्त।

मदनातुर–वि॰ [सं॰] कामातुर।

रू॰ भे॰—मयणातुर।

मदनायुध–सं॰ पु॰ [सं॰] १ कामदेव का अस्त्र।

२ भग, योनी।

मदनारि–सं॰ पु॰ [सं॰] महादेव, शिव।

मदनालय—देखो 'मदनभवन'।

मदनी–सं॰ स्त्री॰—१ सुरा, वारुणी। (अ. मा.)

२ कस्तूरी।

मदनोत्सव–सं॰ पु॰ [सं॰ मदनउत्सव:] मदन महोत्सव।

मदन्न—देखो 'मदन' (रू. भे.)

मदपग्रसण–सं॰ पु॰—शराब की महफिल में शराब के दौर के साथ खाई जाने वाली खाद्य सामग्री। (डिं. को)

मदपटाधर–सं॰ पु॰—हाथी।

वि॰—मदमत्त, मस्त।

उ॰—घकै क्रोध हरसाह जेहवार जुध बटाधर। दुरंद **मदपटाधर** जेम दोवै। धार खग जटा ऊघटा पड़ै छटाधर, जटाधर मुगटधर खेल जोवै।—हुक्मीचंद खिड़ियौ

मदपती–वि॰—१ उन्मत्त, मस्त, मतवाला।

२ शराब पीने वाला।

मदपांन–स॰ पु॰ [सं॰ मद] सुरापान, मदिरापान।

मदभाव–सं॰ पु॰—हाथी के अधिक मद स्राव होने की बीमारी। इस बीमारी के कारण हाथी छटपटाता है, सबको मारने दौड़ता है। उसके शरीर में दर्द होता है। वह जंजीरों के बंधन का तोड़कर भागने का प्रयत्न करता है।

मदमणी–सं॰ स्त्री॰—युवती, महिला।

मदमत–वि॰ [सं॰ मदमत्त] मतवाला, मस्त।

मदमत्त, मदमसत, मदमस्त, मदमातौ–वि॰ [सं॰ मद+फा॰ मस्त] (स्त्री॰ मदमती, मदमत्ती, मदमाती) १ मतवाला, मस्त।

उ॰—१ चडै तांम गजपती, करै लसकर आडंबर। भड़ वंका वर तुरी, लिया **मदमत्ता** कुंजर।—गु. रू. बं.

उ॰—२ मा दीहड़ **मदमत्ती** छत्र चमर छत्ती।—मे. म.,

उ॰—३ सझि सज्झि तीन सलांम, अति खमै सिर इतमांम। जुड़ि खड़ा बिहुं कर जोड़, **मदमसत** गज घड़ मोड़।—सू. प्र.

उ०—४ सो कैसे पोसाक कूं सै जलूस **मदमस्त** गयंद की चाल। ग्रावधूं से कड़ा जूड़ ढळकती ढाल।—सू. प्र.

उ०—५ ग्रसी लख तोखार लख मैंगल **मदमाता**। हाली ग्रली-मसंद दयत राकस दीसंता।—राव मालदे री वात

उ०—६ मदवा पी पी सब **मदमाती**, मैं बिन पियां मदमाती। प्रेम भटी का मैं रस चाख्या, मैं छकी रहूं दिन राती।—मीरां

उ०—७ ग्रोर सखी मद पीवन ग्राईं, मैं मद की **मदमाती**। मैं मद पीयो पंचवटी को, छकी रहूं दिन राती।—मीरां

उ०—८ **मदमसत** सोभित महामाया, पात्र मदरा पूरऐ। चख चौळ गोसां जोस चंचळ घुळै लोचन घूरऐ।—मा. वचनिका

२ मदनोन्मत्त, कामातुर।

सं० पु०—हाथी।

रू० भे०—मदोमत्त, मदोमद, मदोमसत्त, मद्दोमत्त।

मदमूक—देखो 'मदमोख'।

उ०—रंग भौम उतंग सुढ़ाळै रोदां मारुत मूकै मांण। **मदमूक** महाबळ प्रेम परघ्घळ वारामास वसांण।—मा. वचनिका

मदमोख—सं० पु०—हाथी।

उ०—परबत पंख प्रचंड ए। मल्हपति मांणकडंड ए। **मदमोख** जूह महाबळी। सद्दरूप मेधक सिंघळी।—गु. रू. बं.

वि०—मदमत्त, मस्त।

उ०—१ छूरा खग्ग ऊपाड़ि, सीह करि सांकळ छूटा। मुरड़ि खंभ **मदमोख**, जांण सूंडाहळ जूटा।—गु. रू. बं.

उ०—२ ग्रावतां ही महा वेछाड़ **मदमोख** ग्रड़ीलो ग्रठेल पहाड़ रूप हाथी सांमहो ग्रायो।

—कल्यांणसिंघ नागराजोत वाढ़ेल री वात

रू० भे०—मदमूक।

मदरदन—देखो 'मरदन' (रू. भे.)

उ०—पहलां तौ बडारण **मदरदन** कियौ पछै संपाड़ौ कराइयौ।

—कुंवरसी सांखला री वारता

मदरसौ—सं० पु० [ग्र० मदरसा] पाठशाला, विद्यालय।

मदरा—देखो 'मदिरा' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

मदरागंध—सं० पु०—कदम का वृक्ष। (ग्र. मा.)

मदराळ—वि०—मुद्रा धारण करने वाला।

सं० पु०—योगी, मुनि।

मदरास—सं० पु०—१ दक्षिणी भारत का एक प्रांत जिसका पुनर्नाम-करण तमिलनाडु किया गया है।

२ इस प्रांत का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह।

रू० भे०—मद्रास।

मदरौ—देखो 'मधरौ' (रू. भे.)

मदळ—सं० पु०—घर के मुख्य द्वार पर शिल्पकारी से युक्त लगाये जाने वाले पत्थरों के नीचे सहारे के लिए लगाये जाने वाले वे पत्थर जिन पर शिल्प की खुदाई के साथ मध्य-भाग में एक रेखा खींची हुई होती है जिसके कारण वह दो भागों में विभक्त दिखाई देता है।

मदलेखा—सं० पु०—एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात-सात वर्ण होते हैं।

मदव—सं० पु०—एक वस्त्र विशेष।

उ०—ग्रथ वस्त्र, देवांगचीर चींनांसुक पटांसुक पट्टदुकूल पट्टहरी **मदव** गजवडि सुवर्णपडि क्रस्णपड़ि माठउं जादर भाती गतुं जादर......।—व. स.

मदवी—वि० स्त्री०—मस्त, उन्मत्त, मदयुक्त।

सं० पु०—एक वस्त्र विशेष।

उ०—नागवटां सारनाला खासटां ग्रगिहिल कबीच संजरामां **मदवी** फूल-पगरीयां सारीपी तिलवास गरब्भ सूत्र राजिउ वयराजीउं।

—व. स.

मदवौ—वि० (स्त्री० मदवी) १ मदिरापान करने वाला, शराबी।

उ०—सातु मिळ सहेलियां, माडां कर मनुहार। मद पायो म्यारांम नै, ऊगायो ग्रणपार। बेलीयां कमर बांधी छै, भारवरदार लादी छै। घोड़ा, ऊंट भींजै छै, **मदवौ** जी मै'ला में रींजै छै।

—मयारांम दरजी री बात

२ मदोन्मत्त, मस्त।

उ०—धरियो तप हिक धार, ग्रंग न फिरियो एक चित। बांधा ज्यां दरबार, **मदवा** कुंजर मोतिया।—रायसिंह सांदू

३ कामातुर, कामविह्वल।

उ०—जिण समैरा रस रौ किसौ छेह, धण जिका तौ धरती नै **मदवौ** जिका सांवणरौ मेह। इण भांत सुरत जंग जूटा, घाइल हुइ छूटा।—र. हमीर

४ गर्व में चूर, गर्वित।

उ०—ग्ररु राव रतनसीजी सैल सौ सिरदार **मदवौ** हुवौ नै मुंडे ग्रागै कांमेती तेजसी रायमलौत हो।—द. दा.

रू० भे०—मधवौ।

मदसुदन, मदसूदन—देखो 'मधुसूदन' (रू. भे.)

मदांभर—देखो 'मदझर' (रू. भे.)

मदांति—देखो 'वेदांती' (रू. भे.)

उ०—वेसाखि का **मदांति** सांख्य सोगत नैयायक। मीमांसक मुख मुखर वादि गुरु गर्व निवारक।—ग्रभयतिक यती

मदांध—वि० [सं० मद+ग्रंधः] १ वह जिसे ग्रभिमान या ग्रहंकार के नशे में भले बुरे का ज्ञान न हो, ग्रन्य को तुच्छ समझे, दर्प में चूर।

उ०—कहें क्या ध्यावे धी कहन नहीं ग्रावे कुल कुले। **मदांधौ** मायावी तुम से हम भावी सम तुलें।—ऊ का.

२ कामातुर, कामसक्त, कामांध।

३ मदोन्मत्त, मतवाला।

रू० भे०—मदंध, मदग्रंध।

अल्पा०—मदांधौ।

मदांधौ—देखो 'मदांध' (रू. भे.)

मदा—देखो 'मदद' (रू. भे.)

उ०—तोडै पण आदमी मेलीयौ—'म्हैं थां कन्है आया छां, किम मदा करणी हुवै तौ वेगी करजो।—राजा नरसिंघ री बात

मदाखिलत-सं० स्त्री० [अ० मदाख़िलत] १ दाखिल होंने की क्रिया या भाव।

२ दखल, हस्तक्षेप।

मदाखिलत-बेजा-सं० स्त्री० [अ० मदाख़िलत+फा० बेजा] अनुचित रूप से कहीं प्रवेश करना, अतिक्रम करना, अनधिकार प्रवेश।

मदार-सं० पु० [अ०] १ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी।

उ०—१ पातसाही सारी री मदार साहजादे दारासकोह माथै छै। —नैणसी

उ०—२ महाबतखांन नुं सारी मदार दे परवेज रै मुंहडै आगै देसां री हींदू ताबीन दे खुरम बांसै विदा कीयौ।—नैणसी

२ निर्भरता।

उ०—जोधपुर रिणमलां माथै मंड त्यूं जेसलमेर केलण रा परवार ऊपर सारी साहिबी री मदार।—नैणसी

३ आश्रय।

४ मुसलमानों का एक पीर।

५ हाथी।

६ आक नाम का पौधा।

मदारत-सं० स्त्री० [अ० मुदारात] आदर सत्कार, आवभगत।

उ०—प्रथम ओक दोस्त दुस्मन सूं मनुहार मदारत करौ कांम विगर सलाह अकलवंतां रै आरंभ मत करौ।—नी. प्र.

मदारी-सं० पु० [अ० मदार] १ बंदर, रीछ आदि जानवरों को सिखा समझाकर उनका खेल दिखाने वाला व्यक्ति।

२ बाजीगर, तमाशा दिखाने वाला।

३ सूफी मत के मुसलमानों की एक शाखा।

४ शाह मदार नामक पीर का अनुयायी।

५ मिट्टी का हुक्का (मेवात)।

मदारौ-सं० पु०—सीमा पर गड़ा हुआ पत्थर।

मदाळ-सं० पु० [मं० मद+आलुच् या मदकल] १ हाथी।

उ०—झंडा फरक्कै मदाळां पीठ आरबां नत्रीठा झड़ै, धूपंडां ऊधड़ै वे विरंडा सूर धीर।—फतहरांम आसियौ

२ एक रंग विशेष। (अमरत)

वि०—मदोन्मत्त, मतवाला।

उ०—१ राळा कराळा झाळा अताळा विछूटै बांण, तइ खेत्र पाळा मंडे बे ताळा तमास। मदाळा दंताळा काळ नेजाळा सुंडाळा माथै। वाघ चाळा 'कीता' वाळौ आछटै बांणास। —राजा रायसिंह झाला रौ गीत

उ०—२ महाबीर पाड़ै पछाड़ै मइंदां। गहै दत रोकै मदाळा गइंदां।—वं. भा.

अल्पा०—मदाळौ।

मदालसा-सं० स्त्री० [सं०] पुराणानुसार काशी देश के ऋतुध्वज राजा की पत्नी जिसके प्रथम छे पुत्रों ने अल्पायु में ही संन्यास ले लिया और अन्तिम पुत्र अलर्क को जब राजा राज्य भार सौंपने लगे तो वह भी अपने पिता के साथ संन्यासी हो गया। एक बार पाताल केतु नामक राक्षस ने इसका हरण किया लेकिन राजा ने पाताल केतु को पराजित कर उसे पुन: प्राप्त कर लिया।

रू० भे०—मंदालसा।

मदाळौ—देखो 'मदाळ' (अल्पा., रू. भे.)

मदावर-सं० पु०—हाथी।

उ०—मदावर लोहनी सांकल त्रोडि, आलांन स्तंभ मोड़ि हस्तिसाल भांजि पउंतार गाजइ कमाड़ फाडइं....वन माहि सांचरइ।—व. स.

वि०—मदमत्त, मतवाला।

मदि—देखो 'मद' (रू. भे.)

उ०—बाइ मोकलि न सूं मदि मातउ। कूड कीचक परस्त्री रातु। —सालिसूरि

मदिमातौ—देखो 'मदमत्त' (रू. भे.)

मदियौ-सं० पु०—एक जंगली पौधा विशेष।

रू० भे०—मधियौ।

मदिरा-सं० स्त्री० [सं०] १ कुछ विशेष अन्नों, फलों तथा वृक्षों की छाल को सड़ाकर उनका भभके से खींचकर निकाला जाने वाला नशीला द्रव, आसव।

२ शराब।

३ बाईस वर्णों का एक वर्णिक वृत जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और अंत में एक गुरु होता है। इसे मालिनी भी कहते हैं।

वि० वि०—रघुवर जस प्रकास में केवल सात भगण का ही मदिरा छंद माना गया है।

४ रक्त-वर्ण, लाल-वर्ण।

रू० भे०—मदरा, मदीरा।

५ एक स्त्री, जो देवदैत्यों ने किये समुद्रमंथन मे निकले हुए चौदह रत्नों में से एक थी। इसे 'सुरा' नामान्तर भी प्राप्त था।

६ श्री कृष्णपिता वसुदेव की अनेक पत्नियों में से एक। वसुदेव की मृत्यु के पश्चात् देवकी, भद्रा एवं रोहिणी नामक अन्य वसुदेव पत्नियों के साथ यह सती हो गयी।

मदीनौ-सं० पु० [अ० मदीन:] अरब का एक प्रसिद्ध नगर जहां इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब ने समाधि ली थी।

वि० वि०—यह मुसलमानों का पवित्र तीर्थ स्थल माना जाता है।

मदीय-सर्व०—मेरा।

उ०—भवाब्धिनाथ भावना विभू नहीं विकारसी। **मदीय** में न मूढ़ता त्वदीय है न तारसी।—ऊ. का.

मदीयून—वि० [फा०] जिस पर कर्ज का दावा किया गया हो।

मदीरा—देखो 'मदिरा' (रू. भे.)

मदील—देखो 'मंदील' (रू. भे.)

उ०—विभाति श्रंक कोट लंक धोवती वनी। **मदील** की चमंक ज्यों दमंक दांमिनी।—मे. म.

मदुरोग—सं० पु०—घोड़े का एक प्रकार का रोग विशेष। (शा. हो.)

मदुरौ, मदूरौ—सं० पु० [सं० मधुज्वर] प्रायः २१ दिन तक का एक मियादी बुखार, मधुर-ज्वर।

मदेरौ—देखो 'मधरौ' (रू. भे.)

उ०—होले भंवरजी **मदेरा** जी बोल हां वो मद छकियाजी कोई सेज्यां में सूत्यो पूत कलाळ रो।—लो. गी.

मदोदध—सं० पु० [सं० महोदधि] सागर। (डिं. को.)

मदोद्धत—वि० [सं०] १ मदोन्मत्त, मदमत्त।

२ गर्व में चूर, अभिमानी।

मदोनमत्त, मदोन्मत्त, मदोमत्त, मदोमद, मदोमसत्त—देखो 'मद-मत्त' (रू भे)

उ०—**मदोनमत्त** हस्ती मेल्हि चाल्यउ।—श्र. वचनिका

उ०—२ वर तुरंग उत्तंग, करण साकति विराजित **मदोमत्त** मात्तंग, जांण जळ वादळ गरजित।—गु. रू. बं.

उ०—३ झरंत दांण कुंजरं। गिरै कि नीर नीझरं। **मदोमसत्त** मैंगलं। करै प्रवीत काजलं।—गु. रू. बं.

मद्द—देखो 'मद' (रू. भे.)

उ०—१ जोधां राकसे जरद्द मूंगला उतारै **मद्द**, बांहालो खाटै विरद्द, मरदां मरद्द रिमां खागे करै रद्द, वहू लियै सु सबद्द हींदू ऐहद विहद्द जद जद जद्द।—ल. पिं.

उ०—२ रोळ हैं पक्खरं। गै गुड़ै भक्खरं। **मद्द** में नीझरं। घोर घट्टा सरं।—गु. रू. बं.

उ०—३ उत्तर आज उतरीयउ, पाळो पड़ै रवद्द। कै वैसनर सेवीयै, कै तरुणी के **मद्द**।—ढो. मा.

मद्दगळ—देखो 'मदकळ' (रू. भे.)

उ०—उभै तरफि आरबा, मंडै दळ उभै **मद्दगळ**। उभै तरफि बंधि अणी, दमंग झाळा दावानळ।—सू. प्र.

मद्दळ, मद्दल—१ एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—१ तंती ताळ टबक्कड़ा **मद्दल** वंस विसाल। निरति करइ नव राग मां, मांडीं मस्तक थाल।—मा. कां. प्र.

उ०—२ भेरि **मद्दळ** ढोल नीसांणा, वाज्या चढची बोल प्रमांण।—कनक सोम

२ देखो 'मादळियौ, मादलीयौ' (मह., रू. भे.)

३ देखो 'मादळ' (रू. भे.)

मद्दोमत्त—देखो 'मदमत्त' (रू. भे.)

उ०—**मद्दोमत्त** खंभ मरोड़, जूह वहंति गैतूळ जोड़। मस्सी बरन मद्दमसत, पांखां उड्डिया परबत्त।—गु. रू. बं.

मद्धम—देखो 'मध्यम' (रू. भे.)

मद्धरौ—१ देखो 'मधरौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मधुर' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'मधुरौ' (रू. भे.)

मद्धि—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—अधिकुं कहुं आसाढ सूं, माठउ महीश्रळ **मद्धि**। पगदंडा पंथी तणा, तइं भंज्या भव सिद्धि।—मा. कां. प्र.

मद्धूरं, मद्धुरौ—देखो 'मधुर' (रू. भे.)

उ०—तीखां तमतमां राईतां, मीठां **मद्धुरां** गल्यां तल्यां मचमचां इस्यां सालणां तणी मुगति······।—व. स.

मद्धे—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

मद्य—देखो 'मद' (रू. भे)

मद्यप—वि० [सं०] मद्य पीने वाला, शराबी, नशेबाज।

मद्यपान—सं० पु० [सं०] मदपान, सुरापान।

मद्र—सं० पु०—१ पंचनद में स्थित एक प्राचीन देश।

२ इस देश का एक राजा।

३ मारवाड़ प्रदेश।

उ०—प्रथम देस जेसांण वीकांण प्रगटी पछैं, बरजियौ भांण वेड़ौ उबांरचौ। अबै परब्रह्म वाळी प्रकृति अद्रजा, धजाळी **मद्र** अवतार धारचौ।—मे. म.

वि० [सं०] कुशल, प्रसन्न। (ह. नां. मा.)

मद्रक, मद्रकि—वि०—मद्र देश का।

उ०—बीजी **मद्रकि** मद्रधुय पंडु तणइ घर नारि। गभु धरीऊ गंभु धरीऊ देवि गंधारि।—सालिभद्र सूरि

मद्राचळ—देखो 'मंदराचळ' (रू. भे.)

उ०—पड़ै कटि सीरस वीर पठांण। **मद्राचळ** चक्र चमू महरांण।—मे. म.

मध—सं० पु० [सं० मध्याह्न] १ दोपहर का समय।

२ देखो 'मधु' (रू. भे.)

३ देखो 'मध्य' (रू. भे.)

४ देखो 'मद' (रू. भे.)

मधक—सं० पु०—महुआ नाम का वृक्ष।

मधकर—१ पुत्री को विवाहोपरान्त विदा देते समय गाया जाने वाला लोक-गीत।

२ एक प्रकार का वाद्य विशेष।

३ देखो 'मधुकर' (रू. भे.)

मधकीट, मधकीटग, मधकेटभ—देखो 'मधुकैटभ' (रू. भे.)

उ०—१ लंकापति रांमण सारिखा कुंभक्रन इंद्रजीत सारिखा, हिरणाखस हिरणकासिब सारिखा मुर दांणव महाबळी सारिखा,

मथकीट महिखासुर सारिखा तिकै पण खैं गया, वासस्ट मारकंड कथा में कह्यौ, तौ आजरै काळ संभ नै निसंभ महाजोधार, असुरां धणी निडार, तिण रौ उदिम कीजै दोखी मरै सुजस लीजै।

—मा. वचनिका

उ०—२ सांधां गिरि राया जै महामाया, सातां दीपां मां छाया। कोइळा गिरि काया धंध धंमाया **मथकीटग** तें माराया।—पी. ग्रं.

मथन-सं० स्त्री०—भैरव राग की पुत्र वधू एक रागिनी। (संगीत)

मथम—देखो 'मध्यम' (रू. भे.)

उ०—१ स्वर वाजंत्र का भेद कहि दिखाया सो कैसे खड़ज रखव गंधार **मथम** पंचम धईवंत निखाख सप्तसुर के अलाप करि कोकिलूं की बांणी सैं बोलते हैं।—सू. प्र.

उ०—२ नहिं ज्यां उत्तम **मथम** कनिस्ठा, नहिं कोई लाभ न हांणी। अप्रमेय चेतन निज केवळ सौ सुखरांम निरवांणी।

—स्री सुखरांमजी महाराज

मथमति—देखो 'मधुमति' (रू. भे.)

मधर-क्रि० वि०—१ भीतर, अन्दर।

उ०—गरवा आदर न, करै प्रीत पाळंत। संकर विख, सायर वहनि, कोर'**मधर** धारंत।—अज्ञात

२ देखो 'मध्य' (रू. भे.)

मधरौ-वि० (स्त्री० मधरी) १ मंद, धीमा, क्षीण।

उ०—१ आधौ रहग्यौ ऊंखळी, आधौ रहग्यौ छाज। सांगर सट्टै। धण गई, (अब) **मधरौ** मधरौ गाज।—अज्ञात

उ०—२ दिन आथमियां पछै वै अणूंता चोकस व्हिया दसम री चांनणी रौ **मधरौ** उजास हो।—फुलवाड़ी

उ०—३ हुळकी, मीठी, **मधरी** बोली में पेमजी मुरळी दालाल नै कयौ अर आप मुड्डै माथै बैठग्यौ।—दसदोख

२ छोटे कद का, ठिगना।

सं० पु०—ऊंट की चाल।

रू० भे०—मंदरौ, मदरौ, मदुरौ, मदूरौ, मदेरौ, मद्धरौ।

मधवंन—देखो 'मधुवन' (रू. भे.)

मधवाचारी-सं० पु० [सं० मध्वाचार्य] दक्षिण भारत के मध्यकालीन एक प्रसिद्ध आचार्य। (बारहवीं शताब्दी)

मधवौ—देखो 'मदवौ' (रू. भे.)

मधि—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—१ कठै साख इण विध कही, सुणी इम कहे सुजांण। मांडै कायब माघ **मधि**, पंडित माघ प्रमांण।—सू. प्र.

मधिपंडव, मधिपांडव-सं० पु० [सं० पाण्डवमध्य] १ अर्जुन। (ह. नां. मा.)

२ पाण्डु पुत्र भीम।

मधिम—देखो 'मध्यम' (रू. भे.)

मधियौ—देखो 'मदियौ' (रू. भे.)

मधिलोकेस-सं० पु० [सं० मध्यलोकेश] राजा। (ह. नां. मा.)

मधीणी-सं० स्त्री०—दूध न देने वाली गाय, भैंस आदि।

मधीणौ-सं० पु०—जिस घर धीणा अर्थात् दूध देने वाले पशु न हों।

मधु-सं० पु० [सं०] १ शहद।

उ०—सेवक सुकवि करत नित सेवा, **मधु** मिस्ठान चढ़त अति मेवा।—मे. म.

२ मदिरा।

३ चैत्रमास। (डिं. को.)

४ दूध। (अ. मा., ह. नां. मा.)

५ घी। ६ मक्खन। ७ मिश्री। ८ शिव।

९ विष्णु द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य।

१० शत्रुघ्न द्वारा मारा जाने वाला असुर लवण के पिता का नाम।

११ महुये का पेड़।

१२ फूलों का रस, मकरंद।

१३ बसंत ऋतु। (अ. मा.)

१४ मुलेठी।

१५ अमृत। (ह. नां. मा.)

१६ वन, जंगल।

१७ अशोक वृक्ष।

१८ भौंरा।

१९ जल, पानी।

२० भैरव राग का पुत्र एक राग (संगीत)।

२१ श्रीकृष्ण।

२२ विष्णु भगवान।

२३ प्रत्येक चरण में दो लघु वर्णों का वर्णिक छंद विशेष।

२४ घोड़े का एक रोग विशेष। (शा. हो.)

वि०—१ मीठा।

यौ०—मधुकंठ, मधुत्रय, मधुदीप।

२ पीला। * (डिं. को.)

३ मधुर।

रू० भे०—मध, मधू, महू।

मधुकंठ-सं० पु० [सं०] कोयल।

मधुक—देखो 'मधूक' (रू. भे.)

मधुकर, मधुकरि-सं० पु० [सं० मधुकर] (स्त्री० मधुकरी) १ भौंरा, भ्रमर।

उ०—१ चरण आरण धिखता रूप चोळ। क्रीड़ा करंत **मधुकर** कपोळ।—सू. प्र.

उ०—२ कोडांमणि कुहू कुहू करइ, कोकिल आंबा डालि। तरुअर नवपल्लव धरइ, **मधुकरि** मणिकिइ मालि।—मा. कां. प्र.

२ चन्द्रमा। (अ. मा.)

३ डिंगल का एक गीत (छंद) जिसके द्वाले के प्रथम चरण में १६ मात्रायें दूसरे व तीसरे में १४ तथा चौथे में ९ मात्रायें होती हैं।

४ भिक्षा।

रू० भे०—मधकर, मधुकरी, मधुक्कर, मधूकर, महुकर, महुयरी, महूग्रर।

मधुकरी–सं० स्त्री०—१ पके व्यंजन की भिक्षा।

२ देखो 'मधुकर' (रू. भे.)

मधुकीट, मधुकीटक, मधुकीटब, मधुकीटभ, मधुकैटब, मधुकैटभ–सं० पु० [सं० मधुकैटभ] मधु और कैटभ नाम के दो भाई दैत्य जो विष्णु के द्वारा मारे गए थे। (पौराणिक)

उ०—१ विढतां पांच हजार लग, बीता बरसांणं। मांग मांग वर बोलिया, मधुकीटब दांणं।—गजउद्धार

उ०—२ रचियौ लेख ग्रलेख, ग्राये ग्रद्भुत जुत जांणं। मधु-कैटब कर मेरसा, कट्टे कांनांणं।—गजउद्धार

उ०—३ सुर साम्रिधे कज्जं, ब्रह्मांणी रूप ग्रनेक विध करियं। मधुकीटक रिण मज्जं, ग्रसुर निरदळण जायौ जय ग्रंबां।
—मा. वचनिका

रू० भे०—मधकीट, मधकीटग।

मधुक्कर–देखो 'मधुकर' (रू. भे.)

उ०—फरस पांणी फाबेस उभे डसणेस ग्रधक्कर। निलै ग्ररध नखतेस मसत भणणेस मधुक्कर।—सू. प्र.

मधुग्राहक–सं० पु०—भौंरा। (ग्र. मा., ह. ना. मां.)

मधुघोस–सं० पु० [सं० मधुघोष] कोयल।

मधुजा–सं० स्त्री० [सं०] पृथ्वी (मि० मधु=विष्णु)।

मधुतम, मधुतर–सं० पु०—भौंरा, भ्रमर। (ग्र. मा.)

मधुता–सं० स्त्री०—तमाल पत्र। (ग्र. मा.)

मधुत्रय–सं० पु० [सं०] शहद, घी और चीनी के मिश्रण से बना पदार्थ।

मधुद–सं० पु०—भौंरा। (ग्र. मा.)

मधुदीप–सं० पु०—कामदेव। (ह. नां. मा.)

रू० भे०—मधूदीपक।

मधुदैत्य–सं० पु०—१ वह घोड़ा जिसके कान व मस्तक सफेद रंग के हों और शेष शरीर एक रंग का हो। (ग्रशुभ) (शा. हो.)

२ मधु नामक एक राक्षस।

मधुधूळ–सं० स्त्री० [सं० मधुधूलि:] शक्कर, चीनी।

रू० भे०—मधूधूळ।

मधुप–सं० पु० [सं०] १ भौंरा, भ्रमर। (ग्र. मा.)

२ शहद की मक्खी, मधुमक्खी।

३ उद्धव का एक नाम, ४ काला, श्याम। * (डिं. को.)

रू० भे०—मधूप।

मधुपक्क–वि०—शहद या शक्कर की चासनी में पचाई हुई।

मधुपति–सं० पु० [सं०] श्री कृष्ण।

मधुपरक–सं० पु० [सं० मधुपर्क] १ दही, घी, शहद, जल और चीनी का समाहार जो यज्ञ आदि में ग्राहुति देने और देवताओं को भोग लगाने के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

उ०—१ पच्छिम दिसि पूठ पूरब मुख परठित, परठित ऊपरि ग्रातपत्र। मधुपरकादि संस्कार मंडित, त्री वर वे बैसांणि तत्र।
—वेलि.

उ०—२ ग्रौपै वेद जमणिका ग्रागै, ज्वाळ ग्रमळ वेदी मधि जागै। मधुपरकादि सरस रस माधुर, संसकार परखै देवासुर।—रा. रू.

मधुपुर, मधुपुरी–सं० पु०—मथुरा नगरी का नाम।

उ०—मारू ग्रायौ मधुपुरी, स्री दूलह 'ग्रभसाह'। परमोछव परणायवा सुख मंठै 'जैसाह'।—रा. रू.

मधुप्रकासी–सं० पु० [सं० मधु+प्रकाशिन्] वन, जंगल।

रू० भे०—मधूप्रकासी।

मधुप्रिय–सं० पु० [सं०] श्री कृष्ण के बड़े भाई, बलराम।
(ग्र. मा., डिं. को.)

मधुबन—देखो 'मधुवन' (रू. भे.)

मधुभार–सं० पु०—प्रत्येक चरण के ग्रंत में जगण सहित ८ मात्रा का मात्रिक छन्द विशेष।

मधुमई–सं० स्त्री०—मालती लता। (ग्र. मा)

वि०—मधुयुक्त।

मधुमक्खी–सं० स्त्री० [सं० मधुमक्षिका] फूलों का रस चूस कर शहद इकट्ठा करने वाली एक प्रकार की प्रसिद्ध बड़ी मक्खी।

रू० भे०—मधुमाखी।

मधुमती–सं० स्त्री०—१ प्रत्येक चरण में दो नगण और एक गुरु के ग्रनुसार सात वर्णों का एक वर्ण वृत।

२ पार्वती का एक नाम।

३ दुर्गा का नाम।

रू० भे०—मधमति।

मधुमथन–सं० पु० [सं०] विष्णु।

मधुमाखी—देखो 'मधुमक्खी' (रू. भे.)

मधुमात-सारंग–सं० पु०—सारंग राग का एक भेद।

मधुमाधव–सं० पु० [सं०] मालश्री, कल्याण, और मल्लार के मेल से बना एक राग। (संगीत)

मधुमाधवसारंग–सं० पु० [सं०] ओडव जाति का एक संकर राग जो मधुमाधव और संकर राग के योग से बनता है। (संगीत)

मधुमाधवी–सं० स्त्री० [सं०] भैरव राग की सहचरी एक रागिनी।
(संगीत)

मधुमारण–सं० पु०—मधु नामक दैत्य का संहार करने वाले श्रीकृष्ण।

मधुमालती–सं० स्त्री० [सं०] मालती नामक पीले फूलों वाली एक लता।

मधुमास–सं० पु०—१ चैत्रमास।

२ बसंत ऋतु।

रू० भे०—मधूमास।

मधुमेह-सं० पु० [सं०] प्रमेह रोग का बढ़ा हुआ रूप जिसमें पेशाब गाढ़ा एवं श्वेत तथा शर्करा-युक्त आता है ।

मधुमेही-सं० पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसे मधुमेह रोग हो ।

मधुरंगी-सं० पु० [सं० मधुः=शराब+राज० रंगी] श्रीकृष्ण के बड़े भाई, बलराम । (नां. मा.)

मधुर-सं० पु० [सं० मधुरम्] १ मीठा पदार्थ, रस या शरबत ।
२ मिठास ।
[सं० मधुरः] ३ शक्कर, गुड़ ।
४ लाल गन्ना ।
५ मक्खन । (अ. मा)
६ बादाम । ७ चावल । ८ आम विशेष ।
९ जंगली बेर । १० मटर । ११ महुआ ।
१२ धान । १३ लोहा । १४ विष, जहर ।
१५ मक्खी ।
१६ प्रत्येक चरण में २०-२० मात्राओं वाला एक मात्रिक छंद ।
१७ एक असुर जो वृत्रासुर का पुत्र था ।
१८ स्कंध का एक सैनिक ।
१९ बिन्दुमत राजा का पुत्र, एक राजा ।
वि० [स्त्री० मधुरी] १ स्वाद की दृष्टि से जो मधु के समान मीठा हो, मीठा, स्वादिष्ट ।
२ जो सुनने में अच्छा जान पड़े, मीठे स्वर वाला, कर्ण प्रिय ।
उ०—१ **मधुर** बचन मनहर कहो हो, हांजी म्हारा स्रवणां में अम्रत सिंचाय ।—गी. रां.
उ०—२ बाबहिया रत पंखिया, बोलइ **मधुरी** बांणि । काइ लवंतउ माठि करि, परदेसी प्रिउ आंणि ।—ढो. मा.
३ मनोहर, सुन्दर, मोहक, प्रिया । (अ. मा., ह. नां. मा.)
४ जो सब प्रकार की कटुताओं से रहित हो ।
५ गति की दृष्टि से जो धीमा हो, मंद ।
उ०—बिज्जुळियां नीळज्जियां, जळहर तूं ही लज्जि । सूनी सेज, विदेस प्रिय, **मधुरइ** मधुरइ गज्जि ।—ढो. मा.
६ धीर, शांत ।
७ सुस्त, उदास ।
क्रि० वि०—मधुरता से, मीठे स्वर से, प्यार से ।
रू० भे०—मद्धुर, मधूर, महुर, महुरउ, महूर, माधुर ।
अल्पा०—मद्धरौ, मधरौ, मधुरौ ।

मधुरता-सं० स्त्री० [सं० मधुर+ता प्र०] १ मधुर होने का गुण, भाव या दशा ।
२ मीठास, माधुर्य ।
३ सुन्दरता, कोमलता ।
४ मोहकता ।
रू० भे०—मधुराई, मधूरता, माधुरता ।

मधुरत्रय-सं० पु० [सं०] शहद, घी और शक्कर इन तीनों का समूह ।

मधुरमा—देखो 'मधुरिमा' (रू. भे.)

मधुरसा-सं० स्त्री० [सं०] १ दाख, दाक्ष ।
२ मुनक्का । ३ अंगूरों का गुच्छा ।
रू० भे०—मधूरसा ।

मधुराई—देखो 'मधुरता' ।
उ०—नंदन वन रा फळ भला हो, आता भूपति भेट । **मधुराई** वांरी रही हो, थांरा बौरां हेट ।—गी. रां.

मधुराज-सं० पु० [सं०] भौंरा ।

मधुराम्रत-सं० पु० [सं० मधुरामृत] १ फूलों का रस, पराग ।
उ०—भंवरां रा भरणाट, गूंजवै माख्यां गावै । चीटचां डोलै चाव, महक **मधुराम्रत** चावै ।—दसदेव
२ शहद का मीठा रस, अमृत ।

मधुरिपु-सं० पु० [सं०] मधु नामक राक्षस के शत्रु, विष्णु ।

मधुरिमा-सं० स्त्री० [सं० मधुर+इमनिच्] १ मधुर होने की दशा या अवस्था ।
२ मीठास, माधुर्य ।
उ०—अंब-साखिनी **मधुरिमा**, जंगी सेलडी जगीस । अे रस अलगा नारिथी, सि सरज्या जगदीस ।—मां. का. प्र.
३ सुकुमारता, सुकोमलता ।
४ मोहकता ।
रू० भे०—मधुरमा ।

मधुरी-सं० स्त्री० [सं० मधुर+ई प्र०] १ शराब ।
२ फूंक कर बजाया जाने वाला बाजा ।
३ देखो 'मधुर' (स्त्री०)

मधुरौ—देखो 'मदुरौ' (रू. भे.)
२ देखो 'मधुर' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ वजसी थाढौ वायरौ, गजसी **मधुरौ** गाज । धण जद तजसी ढोलीयौ, सजसी जाग समाज ।—मयारांम दरजी री बात
उ०—२ दांत दमंकै अहर दुत, जांण चमंकै बीज । ज्यांरी धुनि **मधुरी** सुणै, रहै तपोधन रीज ।—बां. दा.
उ०—३ तीखां तमतमां खाटां खारां कडूआं कसायलां मीठां **मधुरां** गलिम्रां चोपडां, काचां पाकां छोल्यां छुबरयां वधारियां अणवधारियां, इस्यां सालणां ।—व. स.
(स्त्री० मधुरी)

मधुलोलुप-सं० पु० [मं०] भौंरा, भ्रमर ।

मधुवन-सं० पु० [सं० मधुवन] १ मथुरा के पास, यमुना के किनारे का वन, जिसमें मधुदैत्य रहता था । बाद में शत्रुघ्न ने इसके पुत्र लवण को मार कर वहां मधुपुरी स्थापित की ।
२ ब्रज में यमुना तट का एक वन ।
३ किष्किन्धा के पास सुग्रीव का एक वन ।

४ वह वन जिसमें प्रेमी व प्रेमिका का मिलन होता है।
५ कोयल, कोकिला।
रू० भे०—मधवंन, मधुबन।

मधुवनमधुप, मधुवनसिंधु–सं० पु०—१ ईश्वर, परमेश्वर। (नां. मा.)
२ श्री कृष्ण। (अ. मा.)

मधुवनी–सं० पु०—श्री कृष्ण। (अ. मा.)

मधुवरत–सं० पु० [सं० मधुव्रत] भ्रमर, भौंरा। (नां. मा., ह. नां. मा.)

मधुसख, मधुसखा–सं० पु० [सं० मधुसखा] कामदेव, मदन।

मधुसदन—देखो 'मधुसूदन' (रू. भे.)

मधुसहाय, मधुसारथि–सं० पु० [सं०] कामदेव, मदन। (डिं. को.)
रू० भे०—मधुस्वारथी, मधूसारथी।

मधुसुदन, मधुसूदन–सं० पु० [सं० मधुसूदनः] १ मधु नामक दैत्य को मारने वाले, विष्णु, ईश्वर।
उ०—हिये बसाई हरख सूं, **मधुसूदन** महाराज। नर जिण सूं ललचै नहीं, सो त्रिभुअण सिरताज।—बां. दा.
२ श्रीकृष्ण। (अ. मा.)
उ०—सतबार जरासध आगळ स्रीरंग, विमहा टीकम दीध बग। मेलि धात मारै **मधुसूदन**, असुर घात नांखै अलग।
—जमणोजी सोदो
३ भ्रमर, भौंरा।
४ शहद की मक्खी, मधुमक्खी।
रू० भे०—मधुसदन, मधूसूदन।

मधुस्रवा–सं० स्त्री०—संजीवनी बूंटी। (अ. मा.)

मधुस्रवा-तीज–सं० स्त्री० यौ०—श्रावण शुक्ला तृतीया तिथि।

मधुस्वर–सं० स्त्री० [सं०] कोयल।

मधुस्वारथी—देखो 'मधुसारथि' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

मधुहंता–सं० पु० [सं० मधुहंतृ] १ मधु नामक दैत्य को मारने वाला, विष्णु।
२ श्रीकृष्ण।
३ शिकारी पक्षी।
वि०—१ शहद को नष्ट करने वाला।
२ आगम बतलाने वाला।

मधुहेतु, मधुहेतू–सं० पु०—कामदेव, मदन। (डिं. को.)

मधू–सं० पु०—१ युद्ध, समर। (अ. मा.)
२ देखो 'मधु' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१ बोहो लोह भूप सुभड़ां बकसि, स्रीहाथै खग साहियौ। करि क्रोध **मधू** माथै किनां, लखमी-बर नंदक लियौ।—मे. म.
उ०—२ सनी सी **मधू** दाख अंनार सेवा। दियौ आंणि लंचै, सुधा जांणि देवा।—रा. रू.
उ०—३ लालच रस रै लाग, मांखी लपटांणी **मधू**। उडणी बळियौ आग, जिणरै मुसकल जीवणौ।—बां. दा.

मधूक–सं० पु० [सं०] १ महुए का पेड़।
२ उक्त पेड़ के फूल व फल।
३ शहद की मक्खी।
४ भ्रमर, भौंरा। ५ मुलेठी।
रू० भे०—मधुक।

मधूकफळ, मधूकफल–सं० पु० यौ० [सं० मधूक+फलः] महुए के फल।
उ०—जिणि द्राक्ष फलै भरिउ हुइ कवल, तसु किसिउ रुचइ **मधूक** फल।—व. स.

मधूकर—देखो 'मधुकर' (रू. भे.)
उ०—गवर मात सिव तात, सिध पूजित सुरेसुर। मद सुगंध ऊपर भमै, मद-मत्त **मधूकर**।—ठाकुर झूंझारसिंह मेड़तियौ

मधूदीपक—देखो 'मधुदीप' (रू. भे.)

मधूधूळ—देखो 'मधुधूळ' (रू. भे.)

मधूप—देखो 'मधुप' (रू. भे.)
उ०—विमल जिनेसर सुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप। मनड़ौ विलूधौ रे ताहरै रूप, जेम विलूधौ रे कमल **मधूप**।—वि. कु.

मधूप्रकासी—देखो 'मधुप्रकासी' (रू. भे.) (नां. मा.)

मधूमास—देखो 'मधुमास' (रू. भे.)
उ०—**मधूमास** आसोज में रास मंडै, तिहूं लोक री डोकरी तेथि तंडै।—मे. म.

मधूर–सं० पु०—१ कामदेव, मदन। (अ. मा.)
२ देखो 'मधुर' (रू. भे.)

मधूरता—देखो 'मधुरता' (रू. भे.)

मधूरसा—देखो 'मधुरसा' (रू. भे.) (अ. मा.)

मधूसारथी—देखो 'मधुसारथि' (रू. भे.) (डिं. को.)

मधूसूदन—देखो 'मधुसूदन' (रू. भे.) (डिं. को.)

मधे—देखो 'मध्ये' (रू. भे.)
उ०—दव तो लागौ छे राजाजी वन **मधे**, हिरण ससादिक बळै मांय।—जयवांणी

मध्ध, मध्धि—देखो 'मध्य' (रू. भे.)
उ०—कथ इम सासत्र कहै, दुलह लहिजै पूरब दत। आज दोय अधिकार, **मध्धि** सरस्वति द्वारांमति।—सू. प्र.

मध्धे—देखो 'मध्ये' (रू. भे.)

मध्य–सं० पु० [सं०] १ किसी पदार्थ या स्थान के बीच का भाग, मध्यभाग।
२ बीच की अवस्था, मध्यावस्था।
३ कमर, कटि।
४ पेट, उदर।
५ घोड़े की कोख या वक्खी।
६ संगीत में स्वरों के तीन सप्तकों में से बीच का सप्तक जिसका उच्चारण स्थान वक्षस्थल व कण्ठ होता है।

७ पश्चिम दिशा।

८ विश्राम।

९ सोलह वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था।

१० दस अरब की संख्या।

वि०—१ बीच का, बीचवाला, मध्यवर्ती।

२ मझोला।

३ जो बुरा भी न हो, बहुत अच्छा भी न हो, ठीक-ठीक, उचित।

४ जो न तीव्र हो, न मंदा हो, मध्यम।

५ जो किसी दल या पक्ष से सम्बन्धित न हो, तटस्थ, निरपेक्ष।

क्रि० वि०—६ बीच में, मध्य में, दरम्यान।

उ०—तुही गिव्वरां बिव्वरां बीच गाजै। तुही रावळां देवळां मध्य राजै।—मे. म.

रू० भे०—मंजार, मंझ, मंझम, मंझली, मंझा, मंझार, मंझारि, मंझारी, मंझारै, मंझारौ, मंझाळ, मंझि, मंझिम, मजार, मज्ज, मज्झ, मज्झि, मझा, मझ, मझा, मझार, मझारि, मझारौ, मझि, मझी, मझ्झ, मद्धि, मद्धे, मध, मधि, मधे मध्ध, मध्धि, मांज, मांझ, मांझि, मांझू, माझ, माझि, माझी।

मध्यकुरु—सं० पु० [सं०] एक प्राचीन देश जो उत्तरकुरु और दक्षिणकुरु के मध्य में स्थित था।

मध्यखंड—सं० पु० [सं०] पृथ्वी का वह भाग जो उत्तर क्रान्तिवृत्त और दक्षिण क्रान्तिवृत्त के मध्य में पड़ता है। (ज्योतिष)

मध्यता—सं० स्त्री०—१ मध्य होने की अवस्था या भाव।

२ बीच बचाव।

मध्यत्ररेख—सं० पु० [सं० मध्यचिरेखा] शंख। (अ मा)

मध्यदेस—सं० पु० [सं० मध्य+देशः] १ भारत के मध्य का प्रदेश, मध्य-प्रदेश।

२ मध्य भाग।

मध्यनायक—एक आभूषण विशेष जो छाती पर रहता है।

उ०—पादसंकलिका उत्तरिका पादक ग्रैवेयक सरवहार **मध्यनायक** कृष्णनायक नीलनायक·······आभरानि।—व. स.

मध्यपात—सं० पु०—ज्योतिष में एक पांत।

मध्यम—सं० पु० [सं० मध्यमः] १ संगीत में सुरग्राम का चौथा स्वर।

वि० वि०—इसमें प्राण वायु नाभि से उठकर हृदय और ओठ पर आकर रुकती है। इसका स्वर-स्थान हृदय है।

२ एक राग विशेष। (संगीत)

३ साहित्य में तीन प्रकार के नायकों में से एक।

४ वह उप-पति जो नायिका के कुपित होने पर अपना अनुराग प्रगट न करे और उसकी चेष्टाओं से उसके मन के भाव ताड़ ले।

५ मध्यदेश।

६ प्रान्तीय शासक, सूबेदार।

७ व्याकरण में तीन पुरुषों में से मध्यम पुरुष।

[सं० मध्यमं] ८ कमर, कटि।

वि० [सं० मध्यम] १ जो दो विपरीत दिशाओं या सीमाओं के बीच में हो, बीच का, मध्य का।

२ जो न बहुत बड़ा हो न छोटा हो।

३ मझोला।

उ०—इण रीति सिंघदेव १ मुहब्बतखांन सहित **मध्यम** २ कुमार भोज रै सहाय बडा कुंवर दूदा नूं मारण रै काज बुंदी ऊपर अकबर रौ अनीक आयौ।—वं. भा.

४ पक्षपात शून्य, निरपेक्ष।

५ हल्का। ६ नीच।

रू० भे०—मंझम, मंझिम, मझम, मद्धम, मधम, मधिम।

मध्यमइभ्य—सं० पु०—हाथी के बराबर हीरा माणिक की राशि का स्वामी। (जैन)

मध्यमपदलोपी—सं० पु० [सं० मध्यमपदलोपिन्] व्याकरण में एक समास जिसमें प्रथम पद से द्वितीय पद का सम्बन्ध बतलाने वाला शब्द लुप्त रहता है, लुप्त पद समास।

मध्यमपुरुस—सं० पु० [सं० मध्यमपुरुष] १ व्याकरण में तीन पुरुषों में से वह पुरुष जिससे बात की जाय।

२ बीच-बचाव करने वाला व्यक्ति, मध्यस्थ।

मध्यमरात्रि—सं० स्त्री० [सं० मध्यरात्रि] अर्द्धरात्रि, आधीरात।

मध्यमलोक—देखो 'मध्यलोक' (रू. भे.)

मध्यमांन—सं० पु० [सं० मध्यमान] संगीत में एक ताल जिसमें आठ लघु और ४ दीर्घ मात्राएं होती हैं।

मध्यमा—सं० स्त्री० [सं०] १ हाथ की पांच अंगुलियों में से बीच की अंगुली।

२ वह लड़की जो विवाह योग्य हो गई हो।

३ वह युवा स्त्री जो यौवन की मध्यावस्था को पा चुकी हो।

४ रजस्वला नारी।

५ अपने प्रियतम के प्रेम या दोष के अनुसार उसका मानापमान या आदर-अनादर करने वाली नायिका।

६ नाद के चार भेदों में से एक।

उ०—१ परा नाभ में वसत है, पस्यंती हिरदे मंझार। **मध्यमा** कंठ में खुलत है, वैखरी सब्द उचार।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ पराचित चितवन करै, पस्यंती मनन मनार। **मध्यमा** लखत व्यवहार कूं, वैखरी ऊं अहंकार।—स्री हरिरांमजी महाराज

उ०—३ हृदय स्थांन **मध्यमा**, बदन में वैखरी। चतुर भांति की गिरा, नरायण है खरी।—साधक सुधा

मध्यमेळ—देखो 'तूंबेल'। (२)

मध्यरेखा—सं० स्त्री० [सं०] ज्योतिष और भूगोल शास्त्र में वह रेखा जिसकी कल्पना देशान्तर निकालने के लिये की जाती है। यह रेखा

उत्तर-दक्षिण रहती है, जो उत्तरी व दक्षिणी ध्रुवों को काटती हुई एक वृत्त बनाती है ।

मध्यलोक-सं० पु० [सं०] पृथ्वी ।

रू० भे०—मध्यमलोक ।

मध्यविवरण-सं० पु० [सं० मध्यविवर्ण] सूर्य या चन्द्र ग्रहण के मोक्ष का एक प्रकार जिसमें उनका मध्य भाग पहले प्रकाशित होता है। (वृहत्संहिता)

मध्यस्थ-वि० [सं०] १ दो प्रति पक्षियों के बीच में पड़कर विवाद मिटाने वाला, मध्यता करने वाला ।

२ तटस्थ, निरपेक्ष ।

३ अपनी हानि न करते हुए दूसरों का उपकार करने वाला ।

४ मध्यवर्ती ।

५ मझोला ।

६ उदासीन ।

सं० पु०—शिवजी की एक उपाधि ।

मध्यस्थता-सं० स्त्री०—१ मध्यस्थ होने की अवस्था या भाव ।

२ बीच-बचाव ।

मध्यांगुलीयक—एक आभूषण विशेष ।

उ०—चतुस्त्रनायक, त्रिसटनायक आधंगुलोयक **मध्यांगुलीयक** सर्वांगुलीयक लघुचूडक मुक्ताचूडक मोतीसरा करंगी ।—व. स.

मध्यांन—देखो 'मध्याह्न' (रू. भे.)

उ०—१ लग्गी हांम विलासं, वित्ती अग्यात प्रात **मध्यांनं** सायंकाळ निसीतं, रतं भूप चूंप मदनायं ।—रा. रू.

उ०—२ **मध्यांन** में बिराजमांन ध्यांन में धुनी । रुद्राक्ष माळ पांन में मुद्रा उंनमुनी ।—मे. म.

मध्या-सं० स्त्री० [सं०] वह नायिका या स्त्री जिसमें लज्जा एवं कामवासना समान हो । (काम शास्त्र)

उ०—१ के बाळा राइ-कुंअरि, केय मुगधा कुळवंती । के **मध्या** मांणणी, जिसी सूरज झांयंती ।—गु. रू. बं.

उ०—२ इसी इसी खोडस वरसां री मुगधा **मध्या** प्रोढ़ा रूप रो निधांन ।—रा. सा. सं.

मध्याहन, मध्याह्न-सं० पु० [सं० मध्याह्न] दिन का मध्य भाग, ठीक दुपहरी का समय ।

उ०—मिळि माह तणी माहुटि सूं मसि व्रन, तपि आसाढ तणौ तपन । जन ब्रीजन पणि अधिक जाणियौ, मध्यरात्रि प्रति **मध्याहन** ।—वेलि

रू० भे०—मध्यांन ।

मध्ये-क्रि० वि० [सं०] १ बीच में, मध्य में, में ।

२ विषय में, बाबत, सम्बन्ध में ।

३ लिए ।

रू० भे०—मज्झे, मझे, मझेण, मद्धे, मधे, मध्धे ।

मध्वास्रवलब्धि-सं० स्त्री०—अट्ठाईस प्रकार की सन्धियों में से लब्धि तक जिससे सुनने वालों को उसकी वाणी मधुर लगे ।

उ०—अक्षीण महांणसी लब्धि, क्षीरास्रवलब्धि, **मध्वास्रवलब्धि**, जीववुद्धि, कोस्टवुद्धि पादांनुसारिणीलब्धि ।—व. स.

मनंग—देखो 'मन' (मह., रू. भे.)

मनंछा—देखो 'मंसा' (रू. भे.)

उ०—**मनंछा** परब्रह्म हिंगोळ माता । समैं सात पो'रां रमै दीप साता ।—मे. म.

मनंतर—देखो 'मन्वंतर' (रू. भे.) (अ. मा.)

मन-सं० पु० [सं० मनस्] १ अन्तःकरण, हृदय । (ह. नां. मा.)

उ०—१ कथूं केम ईसर कहै, खांणा सकळ अत खेत । बांणी स्रवणां **मन** बसी, निगम अगोचर नेत ।—ह. र.

उ०—२ आह **मन** महि नरिंदौ पारधि संभावइ । सइं दलि रमलि करंतउ गंगातडि आवइ ।—पं. पं. च.

पर्या०—अंतहकरण, अनिद्री, ऊंचळ, गूढ़-पथ, चंचल, चेत, चित्त, दिल, पित-मन-मथ, मांनस, हृदै ।

२ प्राणियों में अन्तःकरण की वह वृत्ति या शक्ति जिसके द्वारा उनको वेदना, संकल्प, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, बोध और विचार आदि का अनुभव होता है । चित्त, बुद्धि, मस्तिष्क, दिमाग ।

उ०—१ देंत **मन** में जांण्यो के इत्ती माया रौ लेखो बतावणा सूं इण आदमी नै उणारो रुतबो मांनणो ई पड़ैला ।—फुलवाड़ी

उ०—२ इण परि देखी बाप पराभव धन सागर सुपवीत । मान धरी **मन** माहि नीसरिउ नयर बाहरि चलचींत ।—हीराणंद सूरि

मुहा०—१ मन अटकणौ=आसक्ति होना, प्रेम या मुहब्बत होना, बार-बार किसी की याद आना, मन रुकना । २ **मन आणौ**= इच्छा होना, इरादा होना । ३ मन उकताणौ=कहीं से या किसी से जीव उचटना, उकता जाना, विरक्ति होना । ४ **मन उतरणौ**= उदासीन होना । ५ मन उळझणौ—देखो **'मन अटकणौ'** । ६ मन ऊठणौ=जी नहीं लगना, देखो **'जीव ऊठणौ'** । ७ मन कच्चो करणौ=हिम्मत हारना, दुःख या आफत से घबराना, भावुक होना । ८ मन करणौ=इच्छा करना, इरादा करना, कल्पना करना । ९ मन काठो करणौ=हिम्मत रखना, धैर्य रखना, कंजुसी करना । १० मन काबू में रैणौ = इच्छाएं वश में रहना, संयमशील होना । ११ मन खराब होणौ=अरुचि होना, मन की असामान्य अवस्था होना, नाराज होना, मन में विकार पैदा होना । १२ मन खाटो पड़णौ (होणौ) = घृणा होना, अन्तर पड़ जाना । १३ मन खिचणौ=आकर्षित होना, वशीभूत होना । १४ मनखोलणौ=दुराव हटाना, अपने भाव या विचार प्रगट करना । १५ मनचालणौ—देखो 'मन करणौ' । १६ मन चौगुणौ होणौ= हिम्मत और उत्साह बढ़ना । १७ मन टंटोळणौ=हृदयगत भाव ज्ञात करने का प्रयत्न करना । १८ मन टूटणौ=हतोत्साह होना,

मन उचट जाना, प्रेम समाप्त हो जाना। १९ मन ठा' माथै नीं रैं'णौ=चित्त का अस्थिर होना, घबराहट के कारण मन: स्थिति का खराब होना। २० मन ठैं'रणौ=चित्त स्थिर होना, मन लगना। २१ मन डिगणौ=प्रतिज्ञा, संकल्प या वचन से विमुख होने की अवस्था आना २२ मन डुलणौ=थोड़े थोड़े स्वार्थ या न्यून रसास्वादन के लिये नियत खराब करना। २३ मन डोलणौ= लालच लगना, चित्त चंचल होना, मन में विकार पैदा होना। २४ मन तड़फणौ=किसी को देखने या पाने के लिये उत्कंठा बढ़ना, जी छटपटाना। २५ मन तोड़णौ=किसी को अप्रिय लगने वाला कार्य करना, हतोत्साह करना। २६ मन दैणौ=मन के भाव प्रगट करना, किसी के प्रति आसक्त या मुग्ध होना, देखो 'मन लागणौ'। २७ मन फाट जाणौ, मन फाटणौ=अनुचित या अकृत्य के कारण किसी के प्रति घृणा के भाव बनना, विरक्ति होना, उदासीन होना। २८ मन फिरणौ=किसी काम या बात से मन हट जाना। २९ मन फीकौ पड़णौ=हतोत्साह होना, उदासीन होना। ३० मन फेरणौ=किसी कार्य से मन को हटा लेना, किसी के प्रति बेरुख हो जाना। ३१ मन बधणौ=उत्साह बढ़ना, किसी के प्रति प्रेम के भाव बनना। ३२ मन बिगड़णौ—देखो 'मन खराब होना। ३३ मन बैं'लणौ=देखो 'मन लागणौ'। ३४ मन भरणौ=तृप्ति होना, संतोष होना। ३५ मन भागणौ=चित्त वृत्ति का इधर उधर फिरना, चित्त अस्थिर रहना, किसी कार्य या वातावरण में मन न लगना, उसे छोड़कर जाने का प्रयत्न करना। ३६ मन भाणौ=मन को अच्छा या भला लगना, प्रिय लगना, पसंद आना, उपयुक्त लगना। ३७ मन भारी करणौ=उदास होना, दुखी होना। ३८ मन मरणौ—देखो 'मन टूटणौ'। ३९ मन मांनियौ=यथेष्ट, इच्छित। ४० मन मांनी=इच्छित कर्म, अपनी मर्जी से सब कुछ करना। ४१ मन मारणौ=भावों को जबरदस्ती दबा देना, उत्साह समाप्त करना, हताश होना। ४२ मन मार बैठणौ=उत्साह छोड़कर किसी कार्य के प्रति नि:चेष्ट हो जाना। ४३ मन मार रैं'णौ—देखो 'मन मारणौ'। ४४ मन मिळणौ=परस्पर सम्पर्क बनना, दोस्ती होना, प्रेम होना। ४५ मन मीठौ करणौ=किसी दूसरे की वस्तु को दबा लेना, देने योग्य वस्तु को न देना, संतोष करना। ४६ मन मुटाव होणौ= परस्पर मित्रता टूट कर दुराव बढ़ना, एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या द्वेष की भावना बनना। ४७ मन में आणौ=मन के अन्दर किसी प्रकार के भाव बनना, कोई बात ध्यान या समझ में आना, इच्छा होना। ४८ मन में कैं'णौ=मन ही मन कुछ कहना। ४९ मन में चोर बैठणौ=संदेहास्पद भावना बनना, अन्त:करण का अस्पष्ट होना, धोका या विश्वासघात करने की भावना बनना। ५० मन में जमणौ=किसी भावना या धारणा का दिल में जमना, कोई बात ठीक समझ में आना। ५१ मन में धरणौ= किसी बात या कार्य का निश्चय करना, किसी बात को मन में रखना, प्रगट न करना। ५२ मन में धारणौ=संकल्प करना, निश्चय करना, हृदयंगम करना, धारण करना। ५३ मन में पायौ जाणौ=किसी अनुचित बात या व्यवहार के प्रति दुखी होना, भावनाओं पर ठेस लगना। ५४ मन में बसणौ=दिल में हरदम रहना, अच्छा लगने के कारण हर वक्त ध्यान में रहना। ५५ मन में बैठणौ=देखो 'मन में जमणौ'। ५६ मन में भरणौ=मन के विचार व भावों का संग्रह करना, देखो 'मन में धरणौ'। ५७ मन में मरोड़ करणौ=छल कपट करना। ५८ मन में राखणौ=किसी बात या विचार को मन में छुपाकर गुप्त रखना, धारण करना। ५९ मन में लाणौ=किसी बात पर गौर करना, विचार करना, सोचना। ६० मन मैलौ करणौ=किसी के प्रति क्रुद्ध होना, नाराज होना, किसी के प्रति द्वेष या दुर्भाव रखना। ६१ मन मोकळौ करणौ=उदार बनना, शान्ती धारण करना। ६२ मन मोड़णौ=देखो 'मन फेरणौ'। ६३ मन मोटौ करणौ (होणौ)=उदारता दिखाना, सहनशील होना। ६४ मन मोळौ पड़णौ=देखो 'मन फीकौ पड़णौ'। ६५ मन मोवणौ=वश में करना, प्रभावित करना। ६६ मन रमाणौ=दिल बहलाना, मन को कामों में लगा देना। ६७ मन राखणौ=किसी की बात मान लेना, इच्छा पूरी करना, प्यार करना। ६८ मन रा लाडू खाणा=हवाई किले बनाना, ख्याली पुलाव पकाना, काल्पनिक खुशी में मग्न होना। ६९ मन री गांठ खुलना=मनोभाव प्रगट होना, रहस्योद्‌घाटन होना। ७० मन री मन में रैं'णी=इच्छाएं पूरी न होना, इरादे पूरे न होना। ७१ मन रौ मारियौ=दुखी। ७२ मन रौ मैलौ=छली, कपटी, धूर्त। ७३ मन ललचाणौ=किसी के प्रति लालायित होना। ७४ मन लागणौ=किसी काम में चित्त लगना, देखो 'मन अटकणौ'। ७५ मन लेणौ=देखो 'मन टंटोळणौ'। ७६ मन सूं उतरणौ= देखो 'मन उतरणौ'। ७७ मन सूबा बांधणा=देखो 'मन रा लाडू खाणा'। ७८ मन हरणौ=देखो 'मन मोवणौ'। ७९ मन हरौ होणौ=प्रसन्नता या खुशी होना। ८० मन हाथ में लैणौ= वश या काबू में करना। ८१ मन हारणौ=कायल होना, हताश होना। ८२ मन ही मन=मन-मन में ही कुछ करना, स्वयमेव, भीतर ही भीतर। ८३ मन होणौ=देखो 'मन आणौ'।

कहा०—मन चंगा तो कठौती में गंगा=अपना दिल साफ है तो किसी का डर नहीं।

३ न्याय के अनुसार आत्मा या जीव से भिन्न एक द्रव्य।

वि० वि०—वैशेषिक दर्शन में मन को एक अप्रत्यक्ष द्रव्य माना है। संख्या, परिणाम, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व और संस्कार मन के गुण बतलाये गये हैं। मन अणु रूप है। मन चित्त, बुद्धि एवं अहंकार से भिन्न एक तत्त्व है।

४ इच्छा, इरादा, कामना, अभिलाषा।

उ०—नितु नितु राउ अहेडइ चल्लइ । रोसि चडी रांणी इम बुल्लइ, प्रियतम पारधि मन करउ ।—पं. पं. च.

५ विचार, धारणा, कल्पना, ख्याल ।

६ प्रकृति, स्वभाव ।

७ स्फूर्ति, उत्साह ।

८ प्रतीति, आभास ।

९ झुकाव । १० प्रतिभा ।

११ सम्मान । १२ मान सरोवर झील ।

१३ भव्य तुषित एवं साध्य देवों में से एक ।

उ० मागि अरजन तणां हथियार । वेगि वेगि मन लायसि वार ।
—सालिसूरि

वि०—१ श्वेत ।

२ चंचल । * (डि. को.)

रू० भे०—मंनु, मण, मणू, मणु, मनंग, मनवं, मनां, मना, मनि मनी, मनुं, मनु, मन्न, मन्नि ।

अल्पा०—मनड़उ, मनड़ौ, मनडुं, मनडौ, मनवौ, मनियौ, मनुओ ।

मनउपंग, मनउपयंग—सं० पु०—घोड़ा । (डि. नां. मा.)

क्रि० वि० अपनी मर्जी से,मन माने ढंग से ।

उ०—कविता की कदर मुज कुं वी दीखाइ, कांणासा चाकर से रासा की पोथी मंगाइ । च्यार घड़ी से एक पांना वाचकर मनउपंग अरथ किया, देखकर एक उमराव ने थुथकारा दिया ।
—दुरगादत्त बारहठ

मनऊंच—दातार, दानी, उदार । (ह. नां. मा.)

रू० भे०—मनऊंचौ ।

मनऊंचौ—सं० पु०—१ अभिमान, घमंड ।

२ देखो 'मनऊंच' (रू. भे.)

मनक—देखो 'मनुष्य' (रू. भे.)

मनकरी—सं० स्त्री०—एक प्रकार की घास, जिसमें लाल रंग का बारीक दाना निकलता है ।

मनकांमना—देखो 'मनोकांमना' (रू. भे.)

मनकूळ, मनकूळा—वि० स्त्री० [अ० मन्कूल] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने योग्य, चल । (संपत्ति)

२ जिसकी नकल तैयार करली गई हो, प्रतिलिपित ।

मनखंच—सं० स्त्री०—मन-मुटाव, वैमनस्य ।

उ०—एक वरस लग वड रयौ आलण, अप वूहो मगनीत । मनखंच दूजै वरस लग, अंत लगौ करण अनीत ।—पा. प्र.

मनखंचौ—वि०—१ उदासीन, विरक्त ।

२ अप्रसन्न ।

मनख—देखो 'मनुस्य' (रू. भे.)

उ०—१ भव दरियाव भयंद, लहरां ऊठै लोभ री । मांहै ज्यां मतमंद, मनख घणां डूबै मरै ।—बां. दा.

उ०—२ हातां ठाली हालणौ, जाभो संपत जोड़ । मोत सरीखी मनख रै, खलक महीं नहं खोड़ ।—बां. दा.

उ०—३ मिळै न पळ-पुळ तन मनख, धनख धरण चित धार । पात झड़ै तरवर पहव, चढ़ै न फेर विचार ।—र. ज. प्र.

मनखांमनमोहिणीमहा—सं० स्त्री० [सं० मनुष्य+मन+मोहिनी] पृथ्वी, धरती । (ह. नां. मा.)

मनखा—देखो 'मनीसा' (रू. भे.) (नां. मा.)

मनखाचार—देखो 'मिनखाचार' (रू. भे.)

मनखाजनम—सं० पु० [सं० मनुष्य+जन्म] मनुष्य जन्म, मनुष्य जीवन, मनुष्य योनि ।

उ०—केसव भजतौ हरख कर, मत कर आळस मूढ़ । जिण दीधौ मनखाजनम, गरभ कौल कर गूढ़ ।—र. ज. प्र.

रू० भे०—मिनखाजनम ।

मनखाधरम, मनखाध्रम—देखो 'मनुस्यधरम' (रू. भे.)
(अ. मा., नां. मा.)

रू० भे०—मिनखाधरम ।

मनखिंचाव—सं० पु०—१ मन के अन्दर, दुराव, अप्रसन्नता, मन-मुटाव आदि का भाव ।

२ वैर, वैमनस्य ।

मनख्यौ—देखो 'मनुस्य' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मनख्या मत विललाय, गाय प्रभूजी पख तू टल । रांमण हणियौ रांम, गूह खाधौ तारक खळ ।—र. ज. प्र.

मनगढ़ंत—वि०—कपोल कल्पित, अव्यावहारिक ।

मनगमणौ, मनगमबौ—क्रि० अ० [सं० मन+गम्य] मन को भाना, रुचिकर लगना ।

मनगमतौ—वि० [सं० मन+गम्य] मन को भाने वाला, रुचिकर लगने वाला, इच्छित ।

उ०—देस विरंगउ ढोलणा, दुखी हुया इहां आइ । मनगमता पांम्या नहीं, ऊंटकटाळा खाइ ।—ढो. मा.

मनगराई—सं० स्त्री०—जोश, आवेश, उत्साह ।

उ०—१ सो इसा पक्का हठ सूं और पूरी मनगराई सू तथा पूरै ही मांटीपणै रै कार सूं मोठा प्रभू फतह दीवी ।—नी. प्र.

उ०—२ हजरत मुरत लड़ाई में जठै भारी ठौर होती तिण नूं मारता धणी मनगराई सूं लड़ाई में पेसता आपरो जतन नहीं राखता ।—नी. प्र.

मनगरौ—वि०—१ जोशीला, साहसी ।

उ०—जिकौ बादसाहां में सूरो मनगरौ होय घणी भीड़ पड़ियां पगां सपगो रहै तिको प्रथ्वी वेगी जीतै ।—नी. प्र.

२ उत्साहित ।

उ०—अर निबळाई, डर, सुस्ती मन भंगाई वैरी नूं आपरै ऊपर मनगरौ करै छै ।—नी. प्र.

३ युद्ध के लिये उद्यत, तत्पर, कटिबद्ध ।

उ०—बादसाह आप **मनगरौ** होय जणां ही फौज रो मन बधै ।
—नी. प्र.

४ खुश, प्रसन्न ।

उ०—विसेस बादसाह उमराव जो आपरा चाकरां सूं मजाक करै तो **मनगरा** होवै ।—नी. प्र.

५ आन-बान वाला, स्वाभिमानी ।

उ०—दलेलखां भलो **मनगरौ** सिपाही थौ, महाबळवांन थौ ।
— महाराज पदमसिंह री बात

६ उदार ।

उ०—सूरो खींवो वीर अति, सोभाळो दातार । हीमत धारी **मनगरां**, हुवा न होणेहार ।—सूरे खींवै कांधळोत री बात

७ मस्त, उन्मत्त ।

उ०—सूंड सूं पांच हाथ लांबी तरवार बांध तीनूं फौज सांम्हो करै सो हाथी इसो जे **मनगरो** होय फौज मांही बड़ जावै ।
—ठाकुर जैतसी री वारता

८ अनुकूल ।

उ०—कांई हुवो खेटो सांम्हां अव्वल आयो, तिण सूं लोग सारो **मनगरो** रहियो अर काठ लियां सारो संका राखण लागियो ।
—भाटी सुंदरदास वीकूंपुरी री वारता

मनगुप्ति-सं० स्त्री०—चित्त की एकाग्रता ।

रू० भे०—मनोगुप्ति ।

मनड़उ, मनड़ौ—देखो 'मन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ **मनड़उ** ते मोहघउ मुनिवर माहरूं रे, कहइ इम कोस्या ते नारि रे ।—स. कु.

उ०—२ पीतांबर कट काछनी काछै, रतन जटित माथै मुकट कस्यो । मीरां के प्रभु गिरधर नागर, निराव बदन म्हारो **मनड़ो** फंस्यो ।—मीरां

उ०—३ हे गोरी तें ए स्युं कीधो, **मनड़ो** लीधो खंच । ताहरै सरिखी अंतेउर विच, मुझ न लागै अंच ।—वि. कु

उ०—४ राज बहुत विधसूं समझायो । यो **मनड़ो** नहिं मानै ।
—रसीलैराज रो गीत

मनचलौ-वि० (स्त्री० मनचली) १ साहसी, हिम्मतवान् ।

२ रसिक ।

मनचायौ, मनचाह्यौ-वि०—इच्छित, अभिलाषित ।

उ०—१ जे कोई धूजी ने दुपारै रो गावै, दुपारै रो गावै **मनचायो** फळ पावै ।—लो. गी.

उ०—२ अर लूंमड़ी खुसांमद रै पांण आपरी मनचाही करली ।
—फुलवाड़ी

मनचींतउ, मनचींतिउ, मनचींतियौ, मनचींतौ, मनचीतौ-वि० [सं० मनस्+चिन्तितं] इच्छित, मनचाहा, मन-पसन्द ।

उ०—१ राधावेधु सु अरजुनि साधिउ, **मनचींतिउ** वरु लाडीय लाधउ ।—पं पं. च.

उ०—२ पहलो मुकाबलो डाढ़ाळै रो बागवांन सूं हुओ, सो भगवांन री दया सूं डाढ़ाळै री जीत हुई । बागवांन मरियौ । **मनचींतिया** मनोरथ हुआ । चीलहरां नेन्हा नूं लड़णै री दाव दिखाय सिखायौ ।—डाढ़ाळा सूर री बात ।

उ०—३ बंध बांध्या छुडवाय, कारज **मनचींता** करै । कहो चीज है काय, रुपिया सरसी राजिया ।—किरपारांम

मनछा—देखो 'मंसा' (रू. भे.)

उ०—चढिया रथे जोवंता चिहुं दिसि, ग्रह छाडै वन रा वचन । पल माहै जितरी रथ पहचइ, **मनछा** तितरी धरइ मन ।
—महादेव पारवती री वेलि

मनछाफळ-सं० पु०—मन का अभिष्ट फल ।

उ०—ओपि वनै फळ पुहप, थिया **मनछाफळ** प्रापत । सत्रां सापति थियौ, नाक विग्रह आइ संपत ।—गु. रू. बं.

मनजांणियौ, मनजांणी-वि०—जो मन को अभिष्ट हो, इच्छित ।

उ०—१ आज री इण खुसी वास्तै म्हैं थारी **मनजांणी** मुराद पूरी कर सकूं ।—फुलवाड़ी

उ०—२ रांणी री तौ **मनजांणी** व्ही । राजा रै खरायां पछै वा क्यू आगै बात नै खांचै ।—फुलवाड़ी

मनजात-सं० पु० [सं०] कामदेव, मनोज, मदन । (डिं. को., ह. नां. मा.)

वि० [सं०] मन से उत्पन्न ।

मनजीत-वि०—मन को वश में रखने वाला, संयमी ।

उ०—माताजीत **मनजीत** सेवगी रो पख साचो । सुणै हाक सात्रवां 'पाल' न देवै पग पाछो ।—पा. प्र.

मनडुं, मनडौ—देखो 'मन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ **मनडुं** अस्टापद मोहचुं माहरुं रे, हूं नांम जपूं निस दीस रे । चत्तारि अठ दस दोय नमुं रे, चिहुं दिसि जिन चउवीस रे ।
—स. कु.

उ०—२ चेतरे अजूं **मनडा** चतुर, रट-रट स्रीसीता रमण । करुणा निधांन सूं गहजकर, गमैं सहज आवागमण ।—र. रू.

उ०—३ बनडा बाबोजी छोडचा ए न जाय, दादी में म्हारो **मनडो** बसै ।—लो. गी.

मनण—देखो 'मनन' (रू. भे.)

उ०—**मनण** करै जब मनवा कहिये, चितवन कर चितवाजी । बोध करै जब बुद्धि कहिये, आपा कर अहंताजी ।
—स्री सुखरांमजी महाराज

मनणौ, मनबौ-क्रि० अ० [सं० मन्] १ राजी होना, खुश होना, प्रसन्न होना, नाराजगी मिटना ।

उ०—मावीतां ही नां **मनै** दुख री दंदोळी । गरढ़ै न सरै का गरज नांणै विण नोळी ।—ध. व. ग्रं.

२ सम्मान पाना, मान्यता पाना ।

उ०—चितोड़ माथै रावत भीमसिंघजी जद ग्रां ग्रागै समीचा खेड़ा रा संध्यागिरिजी मनीजता ।—बां. दा. ख्यात

३ सहमत होना, संतुष्ट होना ।

उ०—बना विहार तें वहै, मना किये नहीं मनै । इसा महा ग्रभग्ग जग्ग, नित रंडनी जनैं ।—ऊ. का.

४ देखो 'मांनणौ, मांनबौ' (रू. भे.)

उ०—साच कहां तौ ना मनौ, संनेसौ पावंत । मौ नायण रौ बालहो, घोड़ै चढ़ ग्रावंत ।—राव रिणमल राठौड़ खाबड़ियै री वात

मनणहार, हारौ (हारी), **मनणियौ**—वि० ।

मनिग्रोड़ौ, मनियोड़ौ, मन्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मनीजणौ, मनीजबौ—भाव वा० ।

मन्नणौ, मन्नबौ—रू० भे० ।

मनदेवता—सं० पु०—१ विवेक ।

२ ग्रन्तरात्मा ।

मनद्रोह—सं० पु०—कपट, छल । (ह. नां. मा.)

मनन—सं० पु० [सं० मननम्] १ किसी विषय को ठीक तरह समझने के लिये किया जाने वाला प्रयत्न, चिन्तन, विचार ।

२ किसी बात का तर्क एवं प्रश्नोत्तर द्वारा निकाला जाने वाला परिणाम ।

३ ग्रध्ययन ।

४ कल्पना ।

रू० भे०—मनण ।

मननसील—वि० यौ० [सं० मननशील] १ जो विचार या चिन्तन करने योग्य हो, विचारणीय, चिन्तनीय ।

२ जो स्वभावतः विचारशील हो, मनन करने वाला ।

मननिग्रह—देखो 'मनोनिग्रह' (रू. भे.)

मननिध—सं० पु० यौ० [सं० मनोनिधि] कवि, पंडित । (ग्र. मा.)

मनपरवग्यांनी—वि० यौ० [सं० मनःपर्वज्ञानी] ग्रढ़ी द्वीप में रहे हुए संज्ञी के मनोभाव को जानने वाला । (जैन)

मनपुण्ण, मनपुण्य—वि० यौ० [सं० मनः+पुण्य] शुद्ध विचारों वाला, परहित चिन्तक । (जैन)

मनबंछत, मनबांछित—देखो 'मनवांछित' (रू. भे.)

उ०—१ वरै रंभ **मनबंछत** वसै सुर थांन वच, एळा सर सुजस दध कड़ां ग्रड़ियौ—भाटी माहसिंह मोही री गीत

उ०—२ उठै महादेव रौ देहरौ दीठौ **मनबांछित** दाता च्यार जक्ष द्वारै बैठा ।—पंचदंडी री वारता

मनभंग, मनभंगौ—वि० (स्त्री० मनभंगी) १ निराशा, हतोत्साह, उदास ।

उ०—१ जिकै सिरदार सारां सूं मिळियौ मन मन सुद्ध ग्रापरा रजपूत तालक दारां सूं रहै प्रयोजन । सरदार रौ **मनभंग** देख ग्रापरा तालकदार तथा ग्रसेंधा ही लेण री इच्छा तौ स्वारथ वाळा रौ कांम है ।—वी. स. टी.

उ०—२ इसी कह नका पढ़ी नै जलाल **मनभंग** थकियौ पोढ़णै गयौ ।—जलाल बूबना री बात

२ कायर, डरपोक ।

उ०—१ मांटी पणै सूं सारौ संसार ले सकीजै छै, **मनभंगा** सूं कांईं ही नहीं होय सके छै ।—नी. प्र.

उ०—२ **मनभंगा** मरदा रौ भरोसौ लड़ाई सूं भागणै ऊपर छै ।
—नी. प्र.

मनभरियौ—सं० पु० यौ०—जिसके देखने से मन प्रफुल्लित हो जाय, प्रियतम, पति ।

उ०—जाय मनभरिये ने यूं कहै—थारै कंवर हुयौ घर ग्राय सोदागर महंदी राचणी ।—लो. गी.

मनभांमण, मनभाणौ, मनभाइण, मनभायौ—देखो 'मनभावण' (रू.भे.)

उ०—१ ते वली पीला वरणां, नीलां नारिंगां, रंगि दीसता सुरंगा, नीकोली रायण, ते प्रीसी **मनभाइण**, दाडिमनी कुली····।—व. स.

उ०—२ 'माहेसौत' 'हरी' **मनभांणौ**, खेड़पती साथै खूंमांणौ । मुखि हरनाथ खीचियां माहै, साथै सांमि धरम छळ साहै ।—रा. रू.

उ०—३ सखियां रांणी सूं कहइ, मारू **मनभाणी** । साल्हकुंमर पासइ विना, पदमिणि कुंमलांणी ।—ढो. मा.

उ०—४ महाराजा ग्रजमाल रै, नगर वधाई ग्राज । नरपति **मनभायौ थयौ**, जायौ पुत्र सकाज ।—रा. रू.

(स्त्री० मनभाणी)

मनभाव—देखो 'मनोभाव' (रू. भे.)

मनभावण, मनभावणौ, मनभावन, मनभावतौ—वि० यौ० (स्त्री० मनभावणी) मन को ग्रच्छा लगने वाला, प्रिय, प्यारा ।

उ०—भगत बछळ गोकळ **मनभावन** पावन मूरति जगतपति ।
—ह. नां. मा.

रू० भे०—मनभांमण, मनभाणौ, मनभाइण, मनभायौ ।

मनभू—देखो 'मनोभव' (रू. भे.)

मनसंध—वि० यौ०—बश में करने वाला, वशीकरण ।

उ०—के नाड़े के कंचुए, बांध्या वेणी बंध । कांमण रा राखै कनै, मादळिया **मनसंध** ।—बां. दा.

मनमट्ठौ, मनमठौ—वि० यौ० (स्त्री० मनमठी) १ कृपण, कंजूस ।

उ०—की **मनमट्ठा** बळ करै, भुयण समट्ठा भूप । 'पतौ' गज घटा पाड़णौ, सझियां भीम सरूप ।—किसोरदांन बारहठ

२ निश्चेष्ट, उदास ।

उ०—सुत 'वीरम' समराथ, मारू दीठौ **मनमठौ** । हेरू पटके हाथ, दीण वायक दाखिया ।—गो. रू.

मनमत—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

मनमति—वि० [सं० मन+मति] मनमानी करने वाला, स्वेच्छाचारी ।

मनमतै, मनमत्तै–क्रि० वि० [सं० मन+मतं] १ स्वतः ही, स्वेच्छा से, अपने आप।

उ०—१ किणी नैं ई औ वे'म नीं हौ के मंगती आपरै **मनमतै** राजमै'ल रौ आसरौ छोड देवैला।—फुलवाड़ी

२ स्वतन्त्रता से।

उ०—जिण थी स्वतंत्र संभव में एक आपरा आलय हूं काढ़ि देण रौ उपकार करि जिकण रा सीलणां में सहियौ न जाय इसड़ा अनेक अनरथ कुमाइ **मनमत्तै** बहै तिकण रौ अंत तौ इसड़ौ ही खटावै।—वं. भा.

मनमत्थ, मनमथ–सं० पु० [सं० मनमथनः] कामदेव, मदन।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ धरि पूठी वर सांमहा, सहू जुवांणां सत्थ। मन रत्त **मनमत्थ** सूं, मन चाहै मनरत्थ।—गु. रू. बं.

उ०—२ समर मनोज अनंग पंचसर, **मनमथ** मदन मकरध्वज मार।
—वेलि

उ०—३ गायणी ब्रत्त संगीत, रंग करत उरवस रीत। करि हाव भाव अनेक, कट्टाच्छ **मनमथ** केक।—सू. प्र.

उ०—४ इसड़ी आंखड़ियांह किया अग वारणै। सर **मनमथ** गा हारि क अंजण सारणै।—बां. दा.

रू० भे०—मन्मथ।

मनमथहरण—सं० पु० यौ० [सं० मनमथ+हरण] शिव, महादेव।
(डि. को.)

मनमांनियौ-वि० यौ०—इच्छित, अभिष्ट, मन वांछित।

उ०—जिण नूं कठै ही मिळै नहीं सो उण बखत भुजाई में जलाल री रहवास आवै सौ **मनमांनियौ** भोजन जीमै।
—जलाल बूबना री बात

रू. भे.—मनमांयौ, मनमांनौ

मनमांनी-सं. स्त्री.—१ उचित-अनुचित का ख्याल किये बिना, मन-मानी करने की क्रिया, भाव या अवस्था।

२ मन माने ढंग से किया जाने वाला कार्य।

वि० स्त्री०—जो मन को अच्छी लगे, इच्छित, अभिष्ट।

उ०—प्रीति करै तीरथ रै ऊपर, मोज दियै **मनमांनी**। तक्यौ न मन हर पग जिह ताई, पार न उतरै प्रांनी।—र. रू.

मनमांनौ—देखो 'मनमांनियौ' (रू. भे.)

मनमुखी-वि०—गुरु रहित।

उ०—१ हरिया सांमी **मनमुखी** माया मांही हेत। क्यूंइक गाडै रेत में, और वीयाजू देत।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ माळा फेरै **मनमुखी**, चित्त न एकौ ठौर। मेटै मारग मुगति का, हरिया दूजी दौर।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मनमुटाव–सं० पु०—मन के अन्दर द्वेष, वैमनष्य या दुराव आदि का होने वाला भाव।

मनमेळण, मनमेळू–सं० पु०—१ पति, खाविंद, प्रियतम।

उ०—१ मिळियां **मनमेळू** माती मुसकाती, डुसका भरतोड़ी आती डुसकाती।—ऊ. का.

उ०—२ सूतां सपनै आइ, **मनमेळू** नित कौ मिळै। जागूं तां उठि जाइ, जतन कियै न रहै 'जसा'।—जसराज

२ मित्र, दोस्त। (ह. नां. मा.)

३ प्रेमी, स्नेही।

उ०—कंवर वीरमदे गैला का साथ्यां नै अमल हाथ सूं देवै छै। घणा **मनमेळूं** छै ज्या की पण मनवारचां हुवै छै।
—पनां

मनमेलौ, मनमैलौ–वि० (स्त्री० मनमेली) जिसका मन साफ न हो, नीच, कपटी, धूर्त।

मनमोट–वि०—उदारचित्त, दातार, विशाल हृदय, दानवीर।
(ह. नां. मा.)

उ०—१ कटि तूंण चाप कराग, खळ भंज रावण खाग। पह सिद्ध बंधण पाज, **मनमोट** स्रीमहाराज।—र. ज. प्र.

उ०—२ एक एक सूं आगळा, रांणां ऊमरकोट। प्रगट हुवा परमार वै, मांणीगर **मनमोट**।—बां. दा.

उ०—३ मैंहीं छतीसां दूहड़ां, है वरणण हमरोट। आ हमरोट छतीसिका, मिनख सुणौ **मनमोट**।—बां. दा.

उ०—४ मांगळिया **मनमोट**, 'दळपति' नै 'खांनौ' दुवै। विहंडै खगधारां विचित्र, कळहि दुबाहां कोट।—वचनिका

रू० भे०—मनमोट, मन्नमोट।

मनमोद–सं० पु०—१ डिंगल के वेलिया सांणोर (छोटो सांणोर) छन्द का, एक भेद विशेष जिसके प्रथम द्वाले में ६ लघु, २९ गुरु, कुल चौसठ मात्राएं तथा इसी क्रम से शेष द्वालों में ६ लघु, २८ गुरु कुल ६२ मात्राएं होती हैं। (पिंगल प्रकास)

२ 'दोहा' छंद के साथ 'कड़खा' छन्द मिलाकर बनाया जाने वाला गीत। ३ मन की खुशी।

रू० भे०—मनमोह।

मनमोदक–सं० पु०—मन का लड्डू, खयाली पुलाव।

मनमोह—देखो 'मनमोद' (रू. भे.)

उ०—कह दूहौ पहला सुकव, कड़खा ता पर कथ्थ। पंथ प्रगट कड़खौ दुहौ, सौ **मनमोह** समथ्थ।—र. ज. प्र.

मनमोहण—देखो 'मनमोहन' (रू. भे.)

उ०—सत आचार अथग रा सहजां, खग रा खळां खवांना। **मन-मोहण** थिर चर खग अग रा, जग रा मुकट 'जवांना'।
—महारांणा जवानसिंह रौ गीत

(स्त्री० मनमोहणी)

मनमोहणहारौ–वि० [सं० मन-मोहन+रा० हारौ] (स्त्री० मनमोहणहारणी) मन को लुभायमान करने में समर्थ, वश में करने वाला ।

उ०—प्रियतम परम प्रेम मय प्यारौ, सकळ स्रस्टि **मनमोहणहारौ** ।
—गी. रां.

मनमोहन–सं० पु० [सं०] १ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

२ एक मात्रिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में चौदह मात्राएं होती हैं तथा अन्तिम तीन मात्राओं का लघु होना आवश्यक है ।

वि० (स्त्री० मनमोहनी) १ मन को मोहित करने वाला, चित्ताकर्षक । २ प्रेमी, प्रियतम, प्यारा ।

उ०—घट में रही न घाट में, घर में रही न व्हार । वन-वन तन भटक्यौ फिरै, **मनमोहन** की लार ।—अज्ञात

रू० भे०—मनमोहण, महमोहण ।

मनमौजी–वि० [हिं० मन+मौज] अपने मन में उठी तरंग के अनुसार काम करने वाला ।

२ अपनी प्रसन्नता के उद्देश्य से कोई विशेष आचरण करने वाला । (स्त्री० मनमौजण)

उ०—बेटौ **मनमौजी** है, पण करम रौ पोचौ है ।—वरसगांठ

मनमौट—देखो 'मनमोट' (रू. भे.)

उ०—अवतार 'लखप्पती' एव हौ, जम ग्राहग, 'जैहळ' जेब हौ । **मनमौट** निरेहण मंडळी, इळ माहि खत्रीवट ऊजळी ।—ल पिं.

मनयस्ट–सं० पु० [सं० मन-ईष्ट] पति, खाविंद । (अ. मा.)

मनयोग–सं० पु०—मन के शुभाशुभ विचारों का मनन ।

मनरंगी–वि० [सं० मन+रंग] मनमौजी, रसिक, मस्त ।

मनरंजण, मनरंजन–सं० पु० [सं० मन+रंजन] १ आंख ।
(नां. डिं. को.)

२ धन, द्रव्य । (नां. मा., ह. नां. मा.)

वि०—१ मन को खुश करने वाला, मनोरंजन करने वाला ।

२ देखो मनोरंजन' (रू भे.)

मनरख, मनरखमांगण–सं० पु०—१ याचक, मांगने वाला ।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

२ खुशामदखोर ।

मनरखौ–सं० पु० (स्त्री० मनरखी) मन रखने वाला, दास, सेवक ।

उ०—सुख लाधै केलि स्यांम स्यांमा संगि । सखिए **मनरखिए** संघट । चौकि चौकि ऊपरि चित्रसाळी, हुइ रहियौ कहकहाहट ।
—वेलि

मनरत्थ, मनरथ—देखो 'मनोरथ' (रू. भे.)

उ०—धरि पूठी घर सांमहा, सहू जुवांणां सत्थ । मनरत मनमत्थ सूं, मन चाहै **मनरत्थ** ।—गु. रू. बं.

मनरळि, मनरळी, मनरली–सं० स्त्री०—मन की मुराद, इच्छा, चाहना, कामना ।

उ०—१ त्रीजौ सुत जायौ तिण वलि, मात तात पुहती **मनरली** ।
—कवि गुण विजय

उ०—२ कलस । इम वीर जिणवर तणा मुख थी अरथ गणधर सांभली । कहै सूत्रवांणी मन सुहांणी सुणौ भवियण **मनरली** ।
—वृ. स्तौ.

वि० स्त्री०—मुदित-मना, मुदित, हर्षित ।

उ०—सोले ही सिणगार कुमरी वणाया हो सुंदर **मनरली** । आवी चवरी मांहि, बादल मांहें हो जांणौ चमकी वीजली ।—स्रीपाल रास

मनरसि–सं० पु०—मन के भाव ।

उ०—**मनरसि** दिवसि पंचावनि, पावनि वलि आलोकु । जिनपति हुउ स केवली, ते वली आवइ लोक ।—जयसेखर सूरि

मनरूंगी–वि०—१ अपनी धुन का पक्का ।

उ०—सुंगी ढीग राग समाज सुरावट, **मनरूंगी** गो काज मरै । मूंगी हैक गीरणे नह मारू, पुंगीराग अवाज परै ।
—चीमनदांन धधवाड़ियौ

२ चिड़चिड़े स्वभाव का, सिड़ी स्वभाव का ।

मनलाडू—देखो मनमोदक' ।

मनलाणौ, मनलाबौ–क्रि० स०—१ विचारना, सोचना, मन में कोई बात लाना ।

२ किसी बात या विषय पर ध्यान देना, ध्यान लगाना ।

उ०—सीलवंती नै हो एहिज जोगता, धरम पणै द्रढ़ थाय । वलि विसेसे हो जेह वियोगिणी, धरम करइं **मनलाय** ।—वि. कु.

मनलायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ मन में कोई बात लाया हुआ, सोचा हुआ, विचारा हुआ. २ ध्यान लगाया हुआ, ध्यान दिया हुआ. (स्त्री० मनलायोड़ी)

मनवं—देखो 'मन' (रू. भे.)

मनवंछत, मनवंछित, मनवंछितु—देखो 'मनवांछित, (रू.भे.)

उ०—१ चीर हीर चांमीर, अंग परमळ ओपावै । रस तंबोल कपूर, अन्न **मनवंछत** खावै ।—जगौ खिड़ियौ

उ०—२ जहां पहूतौ आय. वास कियौ वैकूंठ में । रही न ऊणारत काय, **मनवंछत** कारज मिळै ।—गज-उद्धार

उ०—३ नांना प्रकार का जु वनसपती फल दिये छै, जैसे कांमधेन **मनवंछित** अरथ देइ ।—वेलि टी.

उ०—४ स्वांमि कल्पतरू सारिखौ सखी, बीजा बावल बोर । **मनवंछित** दायक मिल्यौ सखी, न करू अवर निहोर रे ।—ध. व. ग्रं.

उ०—५ मेल्ही चांवर वइसणइ, **मनवंछित** भोजन अर चीर ।
—बी. दे.

उ०—६ ऊजेणी नउ जीपी राजा लेई सरवस राज । इण परि बाप तणां हुं सारिसुं **मनवंछित** सवि काज ।—हीरांणंद सूरि

मनवंछचा—१ देखो 'मनवांछा' (रू. भे.)
२ देखो 'मनवांछित' (रू. भे.)
उ०—सो तो मनसब रीझ इनांम **मनवंछचा** पावै ।—रा. रू.

मनव—१ देखो 'मांनव' (रू. भे.)
उ०—समर में दसकंठ जिण सजै, पह वडा हर चाप दळ पजै ।
मनव ते धन जांण सुध मता, रघुपति जस जेस नित रता ।
—र. ज. प्र.
२ देखो 'मन' (रू. भे.)

मनवांछतौ—देखो 'मनवांछित' (रू. भे.)

मनवांछा-सं० स्त्री० [सं० मन+वांछा] मन की इच्छा, कामना, अभिलाषा ।
रू० भे०—मनवंछचा, मनोवांछा ।

मनवांछित-वि० [सं० मन+वांछित] १ मन में जिसकी चाह की गई हो, इच्छित, अभिष्ट ।
उ०—महाराज ! एक रतन थी इच्छा भोजन, बीजा थी **मनवांछित** लक्ष्मी, तीजा थी मनवांछित सेना, चौथा रत्न थी सकळ कांमना पूरी होय ।—सिंघासण बत्तीसी
२ मन को अच्छा लगने वाला, मन को संतुष्टि प्रदान करने वाला, उपयुक्त ।
रू• भे०—मनबंछत, मनबांछित, मनवंछत, मनवंछित, मनवंछितु, मनवंछचा, मनवांछतौ ।

मनवाणौ, मनवाबौ-क्रि० स०—१ मानने के लिये प्रेरित करना ।
२ कबूल कराना ।
मनवाणहार, हारौ (हारी), मनवाणियौ—वि० ।
मनवायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
मनवाईजणौ, मनवाईजबौ—कर्म वा० ।

मनवायोड़ौ-भू० का• कृ०—१ मानने के लिये प्रेरित किया हुआ.
२ कबूल कराया हुआ.
(स्त्री० मनवायोड़ी)

मनवार, मनवारी-सं० स्त्री० [सं० मान+हरणं] १ भोजन, पान आदि के लिये किया जाने वाला निहोरा, खातरी, आह्वान, निमन्त्रण, (ओफर) ।
उ०—१ चतरु सीरांवण री अरज करी मूंडा आगै तासक धरी । कंवर री मनवारयां हुवै है, हात हौं परसपर अधर खुवै है ।
—र. हमीर
उ०—२ कनैं न बैठौ कोय मनैं करदो **मनवारां** । मनवारां रै मांहि, मनैं होसी मनवारां । मिनख न लो मनवार, महा भूंडी मनवारां । मार दिया मनवार, मांन लिखि लिखि मनवारां । मनवारां करौ उण दिन मरद, मिळै घड़ी मनवार री । मनवार बणासी नांमरद मोज इसी मनवार री ।—ऊ. का.
उ०—३ गाळ लुगायां गावही, नर मुख उचत न गाळ । अमल गाळ **मनवार** कर, का सुभ बचन उगाळ ।—बां. दा.
२ आदर, सत्कार, खातिर-तवज्जा ।
उ०—१ रावतजी नुं आवणौ छै तो बेगा कीजै असवारी । भली भांत **मनवार** करस्यां ।—प्रतापसिंह म्होकमसिंह री बात
उ०—२ सगळी सरबरा रौ मठ मार दियौ । अबै कांई **मनवार** करै । काठौ हार थाक्यौ ।—फुलवाड़ी
३ किसी व्यक्ति को किसी बात या कार्य के लिये सहमत करने के लिये किया जाने वाला प्रयत्न ।
उ०—इस्टूखां फेर धकै कैवण लागौ—अबै तौ म्हारै ना दियां पै'ली ई आप ध्यांन कर लियौ व्हैला के औ निजरांणौ तौ म्हैं किणी विध कबूल नीं करूंला । पछै थोथी **मनवारियां** में कांई धरियौ ।
—फुलवाड़ी
४ किसी रूठे हुए व्यक्ति या बालक को मनाने के लिये किया जाने वाला प्रयत्न ।
५ खुशामद, चापलूसी ।
६ तृप्ति, तुष्टि ।
रू० भे०—मणुहार, मनहार, मनहारि, मनुवार, मनुहार, मनुहारि, मनुहारी ।

मनवा-सं० स्त्री० [सं० मन+वा] १ मन की इच्छा ।
उ०—सळसळिया आयौ सहज, तन नींद मीटांणं । मन में **मनवा** ऊपनी, मंडण मंडांणं ।—गजउद्धार
२ मन की तरंग, उमंग ।

मनवाह—सं० पु०—गरूड़ । (अ. मा.)

मनवौ—देखो 'मन' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—दादू रांम कहै सब रहत है, लाहा मूळ सहेत । रांम कहै बिन जात है, मूरख **मनवा** चेत ।—दादूबांणी

मनसख—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
उ०—खीरोदक पदांसुक चीनांसुक खांडकी तनसुख **मनसख** कमखा चलाखा मलाखा देवदूस्य बंधालग कोठालग कलगइ कोकची पंचवर्ण यज,········ ।—व. स.

मनसज—देखो 'मनसिज' (रू. भे.)

मनसता—देखो 'मनुस्यता' (रू. भे.)

मनसप, मनसप्प, मनसफ—देखो 'मनसब' (रू. भे)
उ०—१ मंडोवर नर-समंद, सीख **मनसप** वध्धारै । दे नगारा तोग, तुरी साकति सिगारै ।—गु. रू. बं.
उ०—२ व्रवि सिरपाव तुरी गज व्रविया, खग जमदाढ़ जड़ित नग **खंजर** । **मनसप** पंचहजारी समपै, परठै कुरब राह दो ऊपर ।
—सू. प्र.
उ०—३ पहली टीकै बैसतां तीन हजारी जात दोय हजार असवार **मनसप** हुऔ, तिण माहे जागीर पाई ।—नैणसी

उ०—४ दरगाह मनसप माहै लिखाणी नही ।—नैणसी

उ०—५ मोहकमसिंह किल्यांण तरण, मेड़तियौ पराबंध । तज मनसफ सुरतांण रौ, मिळियौ फौज कमंध ।—रा. रू.

मनसफदार—देखो 'मनसबदार' (रू. भे.)

उ०—साहू कुलीखांन, बीजौ अलहदी सु विहांणकुली सारिखा नइ खंजरी सारिखा घणा मांणस पंच-सइया मनसफदार, राजा जगतमणि सारिखा घणा मांणस साथि दिया ।—द. वि.

मनसब—सं० पु० [अ० मंसब] १ राज्य या शासन (मुगल काल) में सैना का एक उच्च पद या ओहदा जिसके साथ कुछ विशेषाधिकार होते थे ।

उ०—१ साह अवरंग के पास या समै आवै । सो तो मनसब रीभ इनांम मनवंछया पावै ।—रा. रू.

उ०—२ स्रीपातसाहजी महाराज नूं छाती सूं लगाय दिलासा दिवी। सिरपाव मोतियां री माळा दे सदांमंद रौ मनसब दे देस री सीख दिवी ।—बां. दा. ख्यात

उ०—३ रांणां सूं बात हुई तद मेवाड ऊपर पांच हजारी जात, पांच हजार असवार रौ मनसब दीयो छौ, तिण री जागीर में इतरी ठोड़ दीवी छी ।—नैणसी

वि० वि०—इस पद के साथ सैना का एक विभाग रहता था। आइने अकबरी के अनुसार बादशाह अकबर ने छोटे बड़े ६६ मनसब बनाये थे । सबसे बड़ा मनसब दश हजारी था, अर्थात् दश हजार सैनिकों का संगठन (बाद में कुछ बढ़ा भी) तथा सबसे छोटे मनसब की संख्या दश थी। बादशाह की मर्जी के अनुसार ये मनसब शाहजादे, अमीर-उमराव, राजे-महाराजे या अच्छे व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों को प्रदान किये जाते थे । प्राय: पांच हजार से ऊपर के मनसब शाहजादों को दिये जाते थे। मनसबों का जब निर्माण किया गया तब ऊंट, हाथी, खच्चर गाड़ियें आदि की संख्याएं निर्धारित करदी गई थी । घोड़े व हाथियों और उंटों की संख्या उनकी जातियों के अनुसार रहती थी । (देखो आईने अकबरी) उक्त निर्धारित संख्या एवं संगठन के अनुसार ही मनसब का वेतन या खर्चा तय किया जाता था । मनसबदार को अपने मनसब में यथा निर्धारित व्यवस्था रखनी पड़ती थी । राजाओं या जागीरदारों को मनसब के साथ वेतन या जागीरें दी जाती थी। पांच हजारी मनसब व उनसे नीचे वाले मनसबों की तीन श्रेणियां बनाई गई थी—१ जिन मनसबों में निर्धारित संख्या के अनुसार व्यवस्था या सैनिक संगठन होता था वे प्रथम श्रेणी के मनसब गिने जाते थे । २ जिन मनसबों में सवारों की संख्या निर्धारित संख्या से आधी या उससे अधिक होती थी वे द्वितीया श्रेणी के मनसब माने जाते थे । ३ तृतीय श्रेणी में बे मनसब आते थे जिनके सैनिकों की संख्या निर्धारित संख्या से भी कम होती थी । ये मनसब जाती, अर्थात् व्यक्तिगत सवार वाले होते थे । इसके अतिरिक्त अन्य सवार भी होते थे । अतिरिक्त सवारों की संख्या जाति सवारों से कम ही रहती थी । जैसे—हजारी जात=७०० सवार, तीन हजारी जात=२००० इत्यादि ।

२ काम, कर्त्तव्य ।

३ अधिकार, हक ।

४ वृत्ति ।

५ इरादा, इच्छा ।

रू० भे०—मंसब, मनसप, मनसप्प, मनसफ ।

मनसबदार—सं० पु० [अ० मंसब+फा० दार] उच्च पदस्थ अधिकारी।

उ०—१ एक पहोर भीक वागी । मियां रै साथ मनसबदार हाथियां रा सवार हुता जिकै इता कांम आया ।—बां. दा. ख्यात

उ०—२ वीठळदास नूं बावन हजारी मनसबदार किया पातसाहजी साहिजांनजी—द. दा.

रू० भे०—मनसफदार ।

मनसमी, मनसम्मी—देखो 'मनस्विनी' (रू. भे.) (अ. मा)

उ०—१ हथमेळा रै हाथ, धरै नाळेर हसंती । सलभ सदा मनसमी, वलभ धर तणी वसंती ।—अरजुणजी बारहठ

उ०—२ आपै खैंग अलल्ल, स्त्रिया आपै मनसम्मी । आपै द्रव आभरण, जूथ आपै बहु जम्मी ।—ज. खि.

मनसा—सं० स्त्री० [सं०] १ कश्यप ऋषि की कन्या जो सर्पराज अनन्त की बहन व जरत्कारु की पत्नी थी, मनसादेवी ।

वि० वि०—इसके पुत्र का नाम आस्तिक था, शिव कृपा से इसे विष बाधा दूर करने का सामर्थ्य प्राप्त था । सर्पादि विषैली जातियां इसकी उपासना करती थी । इसके उपासकों में इन्द्र का नाम भी आता है । यह सर्पों के विष को सहज में ही उतार देती थी जिसे स्वयं धनवन्तरि भी नहीं उतार सकते थे ।

२ सिन्धु दैत्य की कन्या ।

३ इरादा, विचार ।

उ०—हरिया भोजन जीमिये, अैसा आवै स्वाद । इन तन का सारा नहीं, मनसा इसी मुराद ।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

वि०—१ मन से सम्बन्धित, मन से उत्पन्न ।

२ मन को अच्छा लगने वाला, इच्छित ।

उ०—आखै आय क्षुधत निज आरत । मनसा भोजन दियै महांमत ।
—सू. प्र.

३ देखो 'मंसा' (रू. भे.)

उ०—मनसा बाचा क्रमणा मांही । नरहर तो विण रांखिस नांही—ह. र.

उ०—२ दादू मनसा वाचा करमणा, साहिब का विस्वास । सेवक सिरजनहार का, करै कौन की आस ।—दादूबांणी

उ०—३ फेर मुलतांन रा पीरां री जारत ऊपर मनसा कीवी सो मारग चलियौ आवै सो परसनेउ आयौ ।
—सूरे खींवै कांधलोत री बात

रू० भे०—मनसादेवी, मनस्या ।

अल्पा०—मनसूड़ी ।

मनसादेवी—देखो 'मनसा' (सं० स्त्री)

उ०—तदा मन मांहि इच्छा ऊपनी जु स्रस्टि उपारजिसु तदा **मनसादेवी** माया तै ऊपनी ।—द. वि.

मनसापंचमी, मनसापांचम–सं० स्त्री०—आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की पंचमी । इस दिन मनसादेवी की की पूजा की जाती है ।

मनसालू—सं० स्त्री० [सं० मनः+शल्य] मानसिक कष्ट, मन में होने वाली दाह ।

उ०—तउ सैन्य छांडी रथ वांम खेडिउ । गोव्रिंद वाली **मनसाल** फेडिउ । तउ वाउवेगि कुरुराउ रूधउ, अगस्ति अंभोनिधि जेम पीधउ ।—सालिसूरि

मनसिज—सं० पु० [सं० मनसिजः] १ कामदेव, मदन । (ह. नां. मा.)

२ प्रेम ।

रू० भे०—मनसज ।

मनसूख–वि० [अ. मंसूख] १ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, परित्यक्त ।

२ निरस्त या रद्द किया हुआ ।

३ टाला हुआ ।

मनसूखी–सं० स्त्री० [अ० मंसूखी] १ मनसूख होने की अवस्था या भाव ।

२ त्यागना, छोड़ना, रद्द करना आदि क्रिया ।

मनसूड़ी—देखो 'मंसा' (अल्पा., रू. भे.)

मनसूबौ, मनसोबौ, मनसूभौ, मनसोभौ—देखो 'मंसूबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तद पाछै कईक स्यांणा समझणा आदमी **मनसूबौ** कियौ ।
—ठाकुर जेतसी री वारता

उ०—२ कोई दाव माफ कोई भी न आया । रायांमल राजा एक **मनसूबा** उपाया ।—शि. वं.

उ०—३ जोर सूं फुफकारतौ फुण करने एकण सागै ई सगळा बिचियां नै खावण रौ **मनसोबौ** करियौ के नेवळौ भच देणी उणरी घांटी पकड़ली ।—फुलवाड़ी

उ०—४ पीछै यां जैमलजी नूं समंचार कया तद लडाई रौ **मनसोभौ** थापियौ नै दूजै दिन मालदेजी फौज सझ जैमल ऊपर आया ।—द. दा.

मनस्तंभिनी–सं० स्त्री० [सं०] एक महाविद्या ।

उ०—आकास गांमिनी सौदांमिनी कांमगांमिनी कांमसांमिनी । भुवनक्षोभिनी कांमरूपिणी **मनस्तंभिनी** जलस्तंभिनी । आग्नेयी वायवी वरसणी कौमारी ······ ।—व. स.

मनस्या—देखो 'मनसा' (रू. भे.)

उ०—बेटै रै बाप मोटा-मोटा मै'ल दिखाल्या । डागो मोटी **मनस्या** नै ताड़तौ थकौ हौ ।—दसदोख

मनस्विनी–सं० स्त्री० [सं०] १ पतिव्रता व सती स्त्री । (अ. मा.)

२ उदारमन वाली अभिमानिनी स्त्री ।

३ दुर्गा का एक नाम ।

४ मृकंडु ऋषि की पत्नी ।

५ दक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म की पत्नी थी ।

६ उत्तानपाद राजा की सुनृता नामक पत्नी से उत्पन्न कन्या ।

७ पुरुवंशीय सम्राट अग्तिनार राजा की पत्नी ।

रू० भे०—मनसमी, मनसम्मी ।

मनस्वी–वि० [सं० मनस्विन्] १ श्रेष्ठ मन का, उच्च विचार वाला ।

२ बुद्धिमान, चतुर, प्रतिभाशाली ।

३ दृढ़ मन वाला ।

मनहंस–सं० पु०—एक वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक सगण, दो जगण, भगण और अंत में रगण होता है ।

मनहर–सं० पु० [सं० मन+हरः] १ कुन्द पुष्प ।

[सं० मन+हरं] २ सोना ।

३ कामदेव । (ह. नां. मा.)

४ एक ३१ वर्ण का वर्णिक छन्द ।

५ देखो मनोहर' (रू. भे.) (अ. मा.)

मनहरण–वि० [सं० मन+हर] (स्त्री० मनहरणी) मन को हरने वाला, चित्ताकर्षक ।

उ०—१ दुख-वीसारण **मनहरण**, जउ ई नाद न हुंति । हियड़उ रतन-तळाव ज्यउं, फूटी दह दिसि जंति ।—ढो. मा.

उ०—२ चंद बदन अगलोचणी, सिंघ कटी गज गत्त । एही ऊमा सांखली, मनहरणी (ज्यूं) कवित्त ।—अज्ञात

मनहरणी–सं० स्त्री० [सं० मन+हरणी] पृथ्वी । (अ. मा)

मनहरू—देखो 'मनोहर' (रू. भे.)

मनहार, मनहारि—देखो 'मनवार' (रू. भे.)

उ०—१ सो मांणसां नूं धणी भली तरह सूं राखिया । सुंदरदास जाबतौ करायौ । सारां नूं सिरोपाव दिया । ऊंट एक देय बिदा किया । धणी **मनहारां** हुई ।—भाटी सुंदरदास वीकूंपुरी री वारता

उ०—२ तठा ऊपरांति करिनै राजांन सिलांमति पनरह दिन तांई जांन राखि **मनहारि** करि भांतिगारी भगति महिमांनी करि सतरह अख भोजन रा वणाव कीजै छै ।—रा. सा. सं.

मनहितू–सं० पु० [सं० मन+हितः] मन का मित्र, दोस्त, प्रेमी ।
(अ. मा.)

मनहु, मनहू—देखो 'मांनो' (रू. भे.)

उ०—१ वेस्टित अरुन उरन के अंबर । तप मुख **मनहु** प्रात रातंबर ।—मे. म.

उ०—२ हैवरां उरड़ भड़ रूक हात, पारंब कीयां दळ **मनह** पाथ । त्रंबाळ धीह बाजंत तार, क्रत खेह उमर मिळ अदकार ।
—रांमदांन लाळस

मनहूस–वि० [अ० मन्हूस] १ अशुभ, बुरा ।

२ सुस्त, आलसी, निकम्मा ।

३ उदास, मंद, नीरस ।

४ बदकिस्मत, अभागा ।

मनां—१ देखो 'मन' (रू. भे.)

उ०—जेसौ एम बोल्यौ थे **मनां** धीर राखौ। रोटी जीमि पाछै ई मुदा की बात भाखौ।—शि. वं.

२ देखो 'मांनौ' (रू. भे.)

उ०—मिळै पीठि छत्री **मनां** केक मोहै। सिरै जांणि प्रासाद रै गोख सोहै।—वं. भा.

३ देखो 'मना' (रू. भे.)

मनांग्यांनां—अव्य०—मन और ज्ञान विवेक से।

उ०—१ बांमण **मनांग्यांनां** विचार करियौ—इण जीवणा बिचै तौ मरणौ सावळ।—फुलवाड़ी

उ०—२ चारू वेदां रै जांणकार पिंडतजी री निजर चरू माथै ही वै **मनांग्यांनां** हिसाब करण लागा के चरू में कित्तौ कांई माल व्है सकै।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मनैग्यांनै, मनगनै।

मना—वि० [अ०] १ जिसके लिये निषेध कर दिया गया हो, निषिद्ध वर्जित।

उ०—बना विहार तें वहै **मना** किये नहीं मनै। इसा महा अभग्ग नित्त रंडनी जनै।—ऊ. का.

२ जिसपर कोई रोक लगा दी गई हो।

३ जिसको करने से इनकार हो।

रू० भे०—मनां, मन्नै, मन्हा, मन्है।

४ देखो 'मन' (रू. भे.)

उ०—महाराजधिराज सुग्रीव **मनां** रा सारा कारज सारै। कीधौ भूप पुरी केकंधा, दोयण दूर विदारै।—र. ज. प्र.

मनाई—देखो 'मनाही' (रू. भे.)

उ०—वांनै तौ फगत आपरै राज री सींव लांघणी ही। इण सींव में तौ वांनै खावण-पीवण री ई **मनाई** ही।—फुलवाड़ी

मनाणौ, मनाबौ—क्रि० स० [सं० मान, 'मनणौ' क्रि० का प्रे० रू०] (मानयति) १ किसी को मानने के लिये उद्यत करना, तैयार करना, सहमत करना।

उ०—वांरो मन तौ इक्कीस आंना जागतो हो के इस्टूखा नै बै **मनाय** लेवैला, पण कदास वौ नीं मांनै तौ पै'ला चरचा करणी आछी कोनी।—फुलवाड़ी

२ किसी रूठे हुए को प्रसन्न करना, राजी करना, सुलह करना, संधि करना।

उ०—तरै पंवार रात पड़ियां आपरो साथ खजांनो ले नै रिसाय नै निकळियौ। किण ही **मनायौ** नहीं।—राव रिणमल री बात

३ देवता, पीर आदि की प्रार्थना करना, अभ्यर्थना करना, स्तुति करना।

उ०—१ देवी **मनाई** विज्जैदास, चतुरंग दळां चढ़ियौ भरणि। कह ताज मेंर माझी 'कमौ', गयौ भाजि मेरां सरणि।—गु. रू. बं.

उ०—२ धुर घण घटा जिही मग छायौ, औरंग वळै अजैगढ़ आयौ। चाढ़ै देग नेग चढ़ढाया, मीरां ख्वाजा पूज मनाया।

—रा. रू.

उ०—३ दउरउ सखि पियु पाय परउ तुम, मोहनलाल **मनाई**। समयसुंदर प्रभु प्रेम उदक करि, अंतर ताप बुझाई।—स. कु.

उ०—४ घणा ई खट-करम करिया, जिग करिया, थांन पूजिया, देवी देवता **मनाया**, मंतर-जाप करिया, पण रांणी रै आसा नीं मंडी।—फुलवाड़ी

४ दूसरों के मानने योग्य कार्य करना।

५ मानने के लिये मजबूर करना।

उ०—अग कीया प्रगट जिग महा हुंती भड़, वेढ़ीमणा कुदरथी वीर। आठै गण पाछा अउहटिया, एकण धाय **मनाई** हीर।

—महादेव पारवती री वेलि

६ किसी विशेष कार्य का आयोजन करना। किसी विशेष दिन को परम्पराओं और प्रथाओं के अनुसार कार्य क्रम करना।

उ०—१ उणी दिन सिझ्या रा चिड़ी आठ धोळा-धोळा मोत्यां रै उनमांन फूठरा ईंडा दिया। रांणी सगळा नगर में हरख अर उच्छब **मनायौ**।—फुलवाड़ी

उ०—२ लाली रौ दिन है, लाली रौ दिन है, करता म्हारा कांन खायग्या। अबै म्हारौ दिन ई भेळौ **मनायलौ**।—फुलवाड़ी

७ स्वागत करना, सत्कार करना।

उ०—मिळ सुळतांण 'अजीत' **मनायौ**, प्रगट कुरब सब ऊपर पायौ।

—रा. रू.

मनाणहार, हारौ (हारी), मनाणियौ—वि०।

मनायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मनाईजणौ, मनाईजबौ—कर्म वा०।

मउनावणौ, मउनावबौ, मनावणौ, मनावबौ—रू० भे०।

मनायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मानने के लिए उद्यत किया हुआ, तैयार किया हुआ, सहमत किया हुआ. २ (रूठे हुए को) प्रसन्न किया हुआ, राजी किया हुआ, सुलह या संधि किया हुआ. ३ (देवता आदि को) प्रार्थना किया हुआ, अभ्यर्थना किया हुआ, स्तुति किया हुआ. ४ मानने योग्य कार्य किया हुआ. ५ मानने के लिये मजबूर किया हुआ. ६ किसी विशेष कार्य का आयोजन किया हुआ, किसी विशेष दिन को परम्पराओं और प्रथाओं के अनुसार कार्यक्रम किया हुआ. ७ स्वागत किया हुआ.

(स्त्री० मनायोड़ी)

मनावणौ—सं० पु० [सं० मानयति] किसी को मनाने की क्रिया या भाव।

उ०—ऊमादे रावजी रोसणै हुवौ तद बीच राज माहै भला-भला आदमी हुता सू **मनावणा** नूं फिरिया।—ऊमादे भटियांणी री बात

मनावणौ, मनावबौ—देखो 'मनाणौ, मनाबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ नमौ सिसुपाळ मनावण संक। जरासंघ जीपण सेन उजंक।
—ह. र.

उ०—२ नाग देव नर तोहि मनावत, पढि पढि सुयस पार नहिं पावत।—मे. म.

उ०—३ विणजारौ अर बिणजारी अणूं तौ हरख मनावता इस्टूखां रै गांव पूगा।—फुलवाड़ी

उ०—४ पूत्ति भतारिहिं देवी अतिघणुं मनावी। पूत्तु समोपीउ सय आपणि नवि आवी।—सालिभद्र सूरि

रू० भे०—मउनावणौ, मउनाववौ।

मनावियोड़ौ—देखो 'मनायोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री० मनावियोड़ी)

मनावी—सं० स्त्री० [सं०] मनु की स्त्री का नाम।

मनाही—सं० स्त्री० [अ०] १ रोक, निषेध, वर्जन, मुमानियत।
२ न करने की आज्ञा।
रू० भे०—मनाई।

मनि—१ देखो 'मन' (रू. भे.)

उ०—१ मन के बसि सब जीव है, मनि बसि करै स कोय। जन हरिदास मन राज है, तहां राज विराजी होय।—ह. पु. वां.

उ०—२ देवळ काबा मनि डरै, बोडा भड बालोत। सगळा आवै सांमहा, मिळिया देखै मौत।—गु. रू. बं.

२ देखो 'मांनौ' (रू. भे.)

उ०—अस्व दुरद जेब अनेक, अनि छात ग्रह अनेक। सुभ तांन नौबत सद्द, मनि हरत गंध्रब मद्द।—रा. रू.

३ देखो 'मनी' (रू. भे)

मनिख—देखो 'मनुस्य' (रू. भे.)

उ०—१ नौमी नवै संवारिए अनड न मोडै अंग। मन फेरया तन फिरत है, मनिख जन्म का भंग।—ह. पु. वां.

उ०—२ पंचकळा पकड़ि लीयौ। अर ख्याल करतां देखै तौ राखड़ी छै। राखडी छोडै तौ मनिख हूवौ। राति मनिख करै। दिनै सूवटौ करै।—चौबोली

मनियावट—प्रशंसा।

उ०—तूं धन्य तूं क्रत पुण्य मोटो जती, जीवित जन्म प्रमाणोजी। ऋस्ण नी मनियावट देखि करी, भद्रक नइ थयौ भावो जी।
—स. कु.

मनियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ राजी हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ, प्रसन्न हुवा हुआ. २ सम्मान प्राप्त, मान्यता प्राप्त. ३ सहमत हुवा हुआ, संतुष्ट हुवा हुआ.
(स्त्री० मनियोड़ी)

मनियौ—१ देखो 'मिनियौ' (रू. भे.)
२ देखो 'मन' (अल्पा., रू. भे.)

मनिसउ [सं० मनीषा] विचार।

उ०—न जांणियइं पांडव कींह नाठा, तेरमउं वरिस गिउं तु धाटा। इसिउं विमासी मनिसउ पयठउ, नरेंद्र दुर्योधन मंत्रि बयठउ।
—सालिसूरि

रू० भे०—मनीसा।

मनिसि—देखो 'मनीसि' (रू. भे)

मनी—सं० स्त्री०—१ अहंकार, गर्व। (अ. मा.)

उ०—१ दादू मना मनी सब ले रहे, मनी न मेटी जाइ। मनामनी जब मिट गई, तब ही मिळै खुदाइ।—दादूबांणी

उ०—२ अपनी मनी के आगै औरूं की खातर न आंणें।—सू. प्र.

२ वीर्य। ३ मणि।
रू० भे०—मन, मनि।

मनीखा—देखो 'मनीसा' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

मनीखी—देखो 'मनीसि' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

मनीबैग—सं० पु० [अं०] चमड़े या प्लास्टिक आदि का बना एक प्रकार का बटुवा अथवा छोटा थैला, जिसमें रुपये-पैसे रखे जाते हैं।

मनीसा—सं० स्त्री० [सं० मनीषा] १ मानसिक शक्ति, बुद्धि, अक्ल, समझ। २ अभिलाषा, इच्छा, कामना।
३ प्रतिभा। ४ प्रशंसा, तारीफ।
५ विचार, खयाल। ६ स्तुति, प्रार्थना।
रू० भे०—मनखा, मनिसउ, मनीखा।

मनीसि—वि० [सं० मनीषिन्] १ पण्डित, विद्वान्, प्रतिभाशाली।

उ०—मनीसि गोन मांन है न होनहार हांन की। जहां न कोन जांन हैं, क्रपा क्रपा निधांन की।—ऊ. का.

२ बुद्धिमान, चतुर, विवेकी, विचारवान।
सं० पु०—१ ऋषि, मुनि।
२ बुद्धिमान व्यक्ति।
रू० भे०—मनिसि।

मनुं—१ देखो 'मांनौ' (रू. भे.)

उ०—उडी झर सोर बिथोरत बाय, लगी मनुं ग्रीखम की रितु लाय। तळत्तळि तोय तत्तै मनु तेल, लगै दुहुं ओर नितै यह खेल।
—ला. रा.

२ देखो 'मन' (रू. भे.)
३ देखो 'मनु' (रू. भे.)

मनुंतर—देखो 'मन्वंतर' (रू. भे.) (नां. मा.)

मनु—सं० पु० [सं०] १ ब्रह्मा का पुत्र जो, मानव सृष्टि का प्रवर्तक आदि पुरुष एवं समस्त मानव जाति का पिता माना जाता है।

वि० वि०—यह यज्ञ प्रथा का आरंभकर्ता माना जाता है। ऋग्वेद के अनुसार विश्व में अग्नि प्रज्वलित करने के बाद सात पुरोहितों के साथ इसने ही सर्वप्रथम देवों को हवि समर्पित की थी। मनु ने सभी लोगों के प्रकाश हेतु अग्नि की स्थापना की थी। मनु का यज्ञ वर्तमान यज्ञ का ही प्रारंभक है क्योंकि इसके बाद जो भी यज्ञ किये गये उनमें इसके द्वारा दिये गये विधानों को ही आधार मान-

कर देवों को हवि समर्पित की गयी। अन्य विधान भी इसी के अनुसार किये जाते हैं। कई विद्वानों ने इसे तथा 'मनु बैवस्वत' को एक ही माना है, परन्तु इसमें काफी मतभेद है। (च. को.)

२ चौदह मन्वंतरों के अधिपति।

वि० वि०—पुराणानुसार ब्रह्मा के एक दिन और रात को कल्प कहते हैं। इनमें से ब्रह्मा के एक दिन के चौदह भाग माने गये हैं। प्रत्येक भाग को एक मन्वंतर कहते हैं। प्रत्येक मन्वन्तर के काल में सृष्टि का नियंत्रण करने वाला मनु अलग होता है और इसी के नाम से मन्वंतर का नाम-करण किया गया है। अतः ये चौदह मन्वन्तर एवं मनुओं के नाम इस प्रकार हैं—१ स्वायंभुव। २ स्वारोचिष। ३ औत्तम। ४ तामस। ५ रैवत। ६ चोक्षुष। ७ वैवस्वत। ८ सावर्णि (अर्कसावर्णि)। ९ दक्षसावर्णि। १० ब्रह्मसावर्णि। ११ धर्मसावर्णि। १२ रूद्रसावर्णि। १३ रौच्य। १४ भौत्य। उपर्युक्त प्रत्येक मन्वन्तर की काल मर्यादा चतुर्युगों के इकहत्तर भ्रमण माने गये हैं। चतुर्युगों की काल मर्यादा ४३,२०,००० मानुषी वर्ष माने गये हैं। इस प्रकार प्रत्येक मन्वंतर की काल मर्यादा ४३,२०,०००×७१ मानुषी वर्ष होती है। मनु प्रत्येक का राजा होता है जिसकी सहायतार्थ सप्तर्षि, देवतागण, इन्द्र, अवतार एवं मनुपुत्र रहते हैं। (च. को.)

३ ब्रह्मा।

४ विष्णु। ५ अग्नि। ६ मंत्र।

७ एक रुद्र का नाम। ८ यज्ञ। (अ. मा.)

९ अन्तःकरण। १० जैनों के जिनदेव।

११ एक राजा, जिसके राज्यकाल में प्रलय हुआ तथा विष्णु ने मत्स्यावतार लिया था।

१२ 'मनुस्मृति' नामक ग्रन्थ के रचयिता।

१३ एक अर्थशास्त्रकार।

१४ एक अग्नि विशेष जो तप नाम धारण करने वाले पांचजन्य नामक अग्नि का पुत्र था।

१५ एक ऋषि जो कृशाश्व ऋषि का पुत्र था। इसकी माता का नाम धिषणा था।

१६ एक यादव राजा, जो वायु पुराण के अनुमार मधु राजा का पुत्र था।

१७ एक यादव राजा, जो मत्स्य पुराण के अनुमार लोमपाद राजा का पुत्र था। इसके पुत्र का नाम ज्ञाति था।

१८ एक इक्ष्वाकु वंशीय राजा, जो शीघ्र राजा का पुत्र था।

१९ धर्मसावर्णि मनु के पुत्रों में से एक।

२० अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

२१ चौदह की संख्या। * (डिं. को.)

सं० स्त्री० [सं० मनुः] २२ मनु की स्त्री मनावी।

२३ एक अप्सरा जो कश्यप एवं प्राधा की कन्या थी।

२४ वन मेथी।

रू० भे०—मणु, मनुं, मनूं, मनू।

२५ देखो 'मन' (रू. भे.)

उ०—१ गिउ कौरवाधिपति सैन्य समस्त हारी। गिउ पारथ उत्तर सहिउ मनु हरस भारी।—सालिसूरि

उ०—२ पंखेरू परदेसियां रे, नवि सरज्यउ नित वास। तनु छइ साथी माहरइ रे, मनु छइ तोरइ पास।—स. कु.

२६ देखो 'मांनो' (रू. भे.)

मनुअो—देखो 'मन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—भंडारी माडण नइ भगति घणी, साह जावउ ने घणा भाव। साह मनुआ ने साह सहजीया, भंडारी अमीउ अधिक उछाह रे।
—कवि कुसललाभ

मनुख—देखो 'मनुस्य' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ दीवांण तणउ चोज देखंतां, किसा मनुख वाखांण करइं।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ चालो देखि विचारि सहज घरि साचा सोदा लेहु वै। कर मनुख जन्म हीरा चढ़चा, कोडी सटै न देहु वै।—ह. पु. वां.

उ०—३ तद कुंवर कही म्हे जद हीज लेसां तद परमेस्वर देसी अर जिकै मनुखां धीरजबंत है तिकां रा कारज परमेस्वरजी करसी।
—चौबोली

मनुज—सं० पु० [सं० मनुजः] १ मनुष्य, मानव। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—परतक्ष ठगोरी पेरियो, मनुज अहै ठग मंडळी। पेरियां मंत्र सिंधुर सगह, आवै दरगह अग्गळी।—रा. रू.

२ मानव जाति।

३ दस विश्व देवों में से एक।

रू० भे०—मणुअ, मणुय, मणूं, मणू, मणूअ, मणूय।

मनुजात—वि० [सं०] मनु से उत्पन्न, मनु का।

सं० पु०—मनुष्य, मानव।

मनुजाधिप—सं० पु० [सं० मनुजः+अधिपति] राजा, नरेश।

मनुजुग—सं० पु० [सं० मनु+युग] प्रत्येक मनु का समय, युग, काल, मन्वंतर।

मनुवार—देखो 'मनवार' (रू. भे.)

उ०—अमलां खोबां बाजियां, मचै भड़ां मनुवार। जांगड़िया दूहा दियै, सिंधू राग मल्हार।—बां. दा.

मनुस्म्रति—सं० स्त्री० [सं० मनुस्मृति] मनु द्वारा रचित धर्म-शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

मनुस्य—सं० पु० [सं० मनुष्य] एक स्थनपायी प्राणी जो अपने मस्तिष्क एवं बुद्धि की तीव्रता के कारण जरायुज जाति के समस्त प्राणियों से श्रेष्ठ माना जाता है, नर, आदमी, मानव। (उ. र.)

उ०—पिण थांनै इसीज दीसै है। आप री आंख में पीळियो हुवै जद मनुस्य पीळा पीळा निजर आवै।—भि. द्र.

रू० भे०—मणु, मणुग्र, मनक, मनंख, मनिख, मनुख, मिनक, मिनख, मोनुख ।
अल्पा०—मनख्यौ ।

मनुस्यता–सं० स्त्री० [सं० मनुष्यता] १ मनुष्य होने का भाव या अवस्था, इन्सानियत, मानवता ।
२ मानवी गुण ।
रू० भे०—मनसता ।

मनुस्यधरम–सं० पु० [सं० मनुष्यधर्मन्] १ मनुष्य का धर्म ।
२ कुवेर ।
रू० भे०– मनखाधरम, मनखाध्रम ।

मनुस्यलोक–सं० पु० [सं० मनुष्य+लोक:] भू-लोक, मृत्यु-लोक ।

मनुस्रेस्ठ–सं० पु० [सं० मनुश्रेष्ठ] विष्णु ।

मनुहरि—देखो 'मनोहर' (रू. भे.)
उ०—बांहै सुंदरि बहरखा, चासू चूड़ सवचार । **मनुहरि** कटि थळ मेखळा, पग झांझर झणकार ।—ढो. मा.

मनुहार—देखो 'मनवार' (रू. भे.)
उ०—१ मिळै दहूं महिपती, हेत **मनुहार** हुलासां । चढ़ै मेघ-डंबरां, प्रगट उच्छाह प्रकासां ।—सू. प्र.
उ०—२ हाथी एक बांकेराव, घोडा दोय तुर रा च्यार दिया, घणी घणी **मनुहारां** करी ।—सू. प्र.
उ०—३ राजूखां **मनुहारां** घणी करण लागियो ।
—सूरे खींबे कांधळोत री बात
उ०—४ सूरे नूं हाथ झाल गादी ऊपर बैठायो । खींबे सू, घणी **मनुहार** किवी पण उवो गादी ऊपर नहीं बैठियौ ।
—सूरे खींबे कांधळोत री बात
उ०—५ **मनुहारिया** कर कर दूणां दोढ़ा ग्रमल करावै छै ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात
उ०—६ ग्रमलां री रह-छह मंडी छै । भूरो, मेवती, काळो, किसनागर, ग्रागराई, मरोडी, मुहर तोलो, लाभै तिण भांत रो केसरियो, पोतां घोळियो **मनुहारां** हुवै छै ।—डाढ़ाळा सूर री बात

मनुहारणौ, मनुहारबौ–क्रि० स० [सं० मान+हरणम्] १ ग्रातिथ्य सत्कार करना, ग्रादर करना, स्वागत करना ।
उ०—ग्रार पार हुय जाय, सेल तरवार कटारी । गळबांहां, गूंथणी जांण मित्रां **मनुहारी** ।—रा. रू.
२ किसी का मान छुड़ाने, क्रोध शान्त करने का प्रयत्न करना ।
३ किसी कार्य या बात के लिये सहमत करना ।
४ किसी वस्तु को लेने, स्वीकार करने के लिये ग्राग्रह करना ।
मनुहारणहार, हारो (हारी), मनुहारणियो—वि० ।
मनुहारिग्रोड़ो, मनुहारियोड़ो, मनुहार्‌योड़ो—भू० का० कृ० ।
मनुहारीजणो, मनुहारीजबो—कर्म वा० ।

मनुहारि—देखो 'मनवार' (रू. भे.)
उ०—ऊंमर सालह उतारियउ, मन खोटइ **मनुहारि** । पग सूं पग कूंटियउ, मुहरी झाली नारि ।—ढो. मा.

मनुहारियोड़ो–भू० का० कृ०—१ ग्रातिथ्य सत्कार किया हुग्रा, ग्रादर किया हुग्रा, स्वागत किया हुग्रा. २ मान छुड़ाने या क्रोध शान्त करने का प्रयत्न किया हुग्रा. ३ सहमत किया हुग्रा. ४ ग्राग्रह किया हुग्रा.
(स्त्री० मनुहारियोड़ी)

मनुहारी—देखो 'मनवार' (रू. भे.)

मनूं, मनू—१ देखो 'मांनो' (रू भे.)
उ०—इण विध ग्राभरणांह, **मनूं** मुकता मिळी । छक तरुणाई छोळ पयोनिध ज्यूं छिली ।—बां. दा.
२ देखो 'मनु' ।

मनेत्र—एक तरह का वस्त्र ।
उ०—जादर पोती पारेवउं पट साउल मेघाडंबर संझारावउं रावेटउं कणवीरं सोवन्नच्छलेउं **मनेत्र** नीलउं नेत्र रातकडाहउं वईंगणीउं कन्ही गरूडसन्नाह········ ।—व. स.

मनै—१ देखो 'मना' (रू भे.)
उ०—मैं तो हजरत सूं पैं'ली ग्ररज की थी तरै वां तीरंदाजां नूं **मनै** किया ।—नैणसी
२ देखो 'मांनो' (रू. भे.)
उ०—गावै करि मंगळ चढ़ि चढ़ि गोखै, **मनै** सूर सिसुपाळ मुख । पदमिणि ग्रनि फूलै परि पदमिणि, रुखमणि कमोदणी रुख ।—वेलि

मनैगनै, मनैग्यांनै—देखो 'मनांग्यांनां' (रू. भे.)
उ०—१ सु 'तेजसीजी' नै राठौड़ प्रिथीराज जैतावत रै घणो सुख थो । कितरेक दिने चाट सूं पंवारां नुं झूंबणो बिचार **मनैगनै** कीयो ।
—राव मालदे री बात
उ०—२ बगतर, झिलम, जिरह-सूथण, जिरै जूता, घोड़ां री पाखरां काढजै छै, सुवारजै छै । **मनैग्यांनै** सारी तेवड़ कर रह्यो छै । सखरा रजपूत तयार कीजै छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

मनोकांमना–सं० स्त्री०—मन की इच्छा, ग्रभिलाषा ।
उ०—ढील न कीजै कंवरजी, बोलाया सनमंध । मन का चिंत्या हरि किया, **मनोकांमना** सिध ।—कुंवरसी सांखला री वारता
रू० भे०—मनकांमना ।

मनोगत, मनोगति–वि०—मन में ग्राया हुवा, दिली ।
उ०—म्हारी कही **मनोगत** बात ए । तदि समझ्यो स्वांमी नाथ ए ।
—जयवांणी
सं० स्त्री०—मन की गति, इच्छा ।

मनोगिन—देखो 'मनोग्य' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

मनोगुप्ति—देखो 'मनगुप्ति' (रू. भे)

उ०—**मनोगुप्ति** वचनगुप्ति कायगुप्ति प्रधांन······· ।—व. स.

मनोग्य-वि० [सं० मनोज्ञ] सुन्दर, मनोहर।

उ०—मम इस्ट मिस्ट ग्रादर ग्रभिस्ट । महिमां **मनोग्य** जप जपन जोग्य ।—ऊ. का.

रू० भे०—मनोगिन ।

मनोग्यता-सं० स्त्री० [सं० मनोज्ञता] सुन्दरता, मनोहरता ।

मनोज-सं० पु० [सं० मनस्+ज या जन्मन्] कामदेव, मदन।

(ग्र. मा., ह नां. मा.)

उ०—१ लालचियां संतोस ज्यूं, मन हींजड़ा **मनोज** । ऊमर में नहं ऊपजे, इम मावड़ियां मोज ।—बां. दा.

उ०—२ रूप री **मनोज** राजा महाराजा 'रंग' ।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

वि०—मन से उत्पन्न ।

मनोजधेनु-सं० स्त्री०—कामधेनु ।

उ०—गिरवांणां सहाई **मनोजधेनु** ग्यांन गोभा । नाराज वरीस सोभा इसी प्रथीनाथ ।—र. रू.

मनोजव-सं० पु० [सं०] १ छठे मन्वन्तर (चाक्षुष) के इन्द्र का नाम।

२ रुद्र के एक पुत्र का नाम ।

३ ग्रनिल नामक वसु का जेष्ठ पुत्र, इसकी माता का नाम शिवा था।

४ धर्म सावर्णि मन्वन्तर का एक देव ।

५ एक सोमवंशीय राजा, जिसका उद्धार मंगल तीर्थ नामक तीर्थ स्थान में स्नान करने के कारण हुग्रा था ।

६ एक प्राचीन तीर्थ ।

वि०—१ मन के समान वेगवान ।

२ कोई बात समझने व करने में फुर्तिला ।

३ बाप का, पैतृक ।

४ पिता तुल्य, बड़ों के समान ।

रू० भे०—मनोजवी ।

मनोजवा-सं०स्त्री० [सं०] १ ग्रग्नि की एक जिव्हा। (मार्कण्डेय पुराण)

२ क्रौंच द्वीप की एक नदी ।

३ स्कंद की एक ग्रनुचरी मातृका ।

मनोजवी—देखो 'मनोजव' (रू. भे) (वि०)

मनोती—देखो 'मनौती' (रू. भे,)

उ०—कुणवी गुजरात में हाड मांडै, **मनोती** करै. करसण करै. सालवी पणौ करै, छेमाई पणौ करै ।—बां. दा. ख्यात

मनोद्रव-सं० पु० [सं० मनस्=मन+द्रूह=पुत्र] कामदेव, मदन ।

(ह. नां. मा.)

मनोध्यांन-सं० पु० [सं० मनोध्यान] सम्पूर्ण जाति का एक राग ।

(संगीत)

मनोनिग्रह-सं० पु० [सं० मन+निग्रह] ग्रपने मन को विषय वासना या दुराचारों की ग्रोर प्रवृत्त होने से रोकने की क्रिया या भाव, संयम ।

रू० भे०—मननिग्रह ।

मनोनीत-वि० [सं०] १ मन के ग्रनुकूल ।

२ पसंद । ३ चुना हुग्रा ।

४ नियुक्त या पदासीन किया हुग्रा ।

मनोभव-सं० पु० [सं० मनोभवः, मनोभू] १ कामदेव, मदन। (ग्र. मा.)

उ०—१ वेल कियौ बिसतार, **मनोभव** बागवां । इखै नाभि निवांण, उपाई ग्रनुभवां ।—बां. दा.

उ०—२ **मनोभव** लगाड़ै बांण मोहण मदन । सहंस बातां सजन ग्राण सदनी ।—बां. दा.

२ चन्द्रमा । ३ प्रेम, स्नेह ।

४ कामवृत्ति ।

रू० भे०—मनभू ।

मनोभाव-सं० पु० [सं० मन+भाव] मन की इच्छा, कल्पना ।

रू० भे०—मनभाव ।

मनोभू—देखो 'मनोभव' (रू. भे)

मनोन्य—एक फल विशेष ।

उ०— सुवरण्ण स्थालि, मोटइ झमालि, ग्रावी ऊजमालि, परीसइं फलहुलि । किसी किसी ते फलहुलि, ग्रखोड खंड **मनोन्य** वाइमी, वारु चारउली······ ।—व. स.

मनोमथन-सं० पु० [सं० मनस्+मथन] कामदेव ।

मनोमय-वि० [सं०] १ मन से युक्त, मानसिक ।

२ ग्राध्यात्मिक ।

मनोमयकोस-सं० पु० [सं० मनोमयकोशः] वेदान्त के ग्रनुसार पांच कोशों में तीसरा कोश जिसमें मन, ग्रहंकार व कर्मेन्द्रियां रहती हैं।

मनोयोग-सं० पु० [सं० मनस्+योग] मन की एकाग्रता ।

मनोरंजक-वि० [सं० मनस्+रंजक] १ मन का रंज मिटाने वाला, मन को प्रसन्न करने वाला, दिल बहलाने वाला ।

२ हास्यास्पद ।

मनोरंजण, मनोरंजन-सं० पु० [सं० मनस्+रञ्जनम्] १ दिल बहलाव, मनो-विनोद ।

२ ऐसा कार्य या बात जिससे मन को प्रसन्नता हो, मन का रंज मिटाने वाली बात या कार्य ।

रू० भे०—मनरंजण, मनरंजन ।

मनोरथ-सं० पु० [सं०] १ ग्रभिलाषा, इच्छा, कामना ।

उ०—१ जिण थी दो ही बार लड़ाई में पराजय पाइ भागै प्रसाद रै ग्रधीन भाग हीण जवनां रै ग्रधिराज नासरुद्दीना ग्रपरनांम महमूद तीजी बार सांम्है चलाइ रण रो रस चाखण रो **मनोरथ** भी न जांणियो ।—वं. भा.

उ०—२ राजा कागळ लिखै कुंग्रर तेडै निय कन्हळि। मिळण मनोरथ करै, साह जांहगीर तणै छळि।—गु. रू. बं.

उ०—३ माता हे मनरा मनोरथ पूरण म्हारा कीजो हे। जग जननी हे माय।—मी. रां.

२ संकल्प।

उ०—१ सारा गोड भेळा ह्वै मनोरथ बांध लीनां। थांनकी मारोट रायमल का व्याव दीनां।—शि. वं.

उ०—२ भासण उपमां ग्रौर मनोरथ भेळिया। मभ ग्राटी मखतूल क मोती मेळिया।—बां. दा.

रू० भे०—मणरथ, मणोरथ, मणोरह, मणोरहु, मनरत्थ, मनरथ।

मनोरथ-द्वादसी-सं० स्त्री० यौ० [सं०] १ चैत्र शुक्ला द्वादशी की तिथि।

२ उक्त तिथि को किया जाने वाला व्रत।

मनोरम-वि० [सं० मनस्+रम] (स्त्री० मनोरमा) जिसमें मन रम जाये, मनोज्ञ, सुन्दर। (ह. नां. मा.)

मनोरमा-सं० स्त्री० [सं० मनस्+रमा] १ सुन्दर स्त्री।

२ सात सरस्वतियों में से चौथी।

३ गौतम बुद्ध की एक शक्ति।

४ एक ग्रप्सरा जो कश्यप एवं प्राधा की कन्याग्रों में से एक थी।

५ ध्रुवसंधि राजा की पत्नी, जिसके पुत्र का नाम सुदर्शन था।

६ विद्याराधिप इंदीवराक्ष नामक गंधर्व की कन्या।

७ महाकवि चन्द्रशेखर के ग्रनुसार ग्रार्या के ५७ भेदों में से एक जिसमें १२ गुरु ग्रौर २२ लघु वर्ण होते हैं।

८ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में दस दस वर्ण होते हैं तथा प्रत्येक चरण का पहला, दूसरा, तीसरा, सातवां ग्रौर नौवां वर्ण लघु होता है।

९ दस ग्रक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, रगण, जगण ग्रौर ग्रंत में गुरु होता है।

१० केशव के मतानुसार चौदह ग्रक्षरों का एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में चार सगण ग्रौर ग्रंत में दो लघु होते हैं।

११ केशव के ग्रनुसार दोधक छंद का एक नाम जिसके प्रत्येक चरण में ४ भगण ग्रौर दो गुरु होते हैं।

१२ सूदन के ग्रनुसार दस ग्रक्षरों का एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तीन तगण ग्रौर एक गुरु होता है।

१३ गोरोचन।

मनोराज, मनोराज्य-सं० पु० [सं० मनोराज्य] मानसिक कल्पना।

मनोरी-सं० स्त्री०—मन की भावना।

उ०—बादसाह सलांमत इतरी कहितां मनोरी फुरी जो दस हजार सिपाही म्हारी किड़ी में घर पण म्हारो सबळो बादसाही लेयस्यां।
—जैतसी री वारता

रू० भे०—मनोहरी।

मनोवरी—देखो 'मनोहर' (रू. भे.)

उ०—कोई किसी एक पाबू री सूरत मनोवरी।
—पाबूजी रो पवाड़ो

मनोवांछा—देखो 'मनवांछा' (रू. भे.)

मनोविकार-सं० पु० [सं० मनस्+विकार:] १ योग के ग्रनुसार चित्त की वृत्ति या ग्रवस्था।

२ मन की वह ग्रवस्था जब उसमें किसी प्रकार के सुखद या दुखद भाव उत्पन्न होते हों।

मनोविग्यांन-सं० पु० [मनोविज्ञान] वह विज्ञान-शास्त्र, जिसमें मनुष्य के मन के भावों या ग्रवस्थाग्रों का विवेचन किया गया है।

मनोवेग-सं० पु० [सं०] मन का ग्रावेश, जोश।

मनोव्रत्ति-सं० स्त्री० [सं० मनस्+वृत्ति] वह मानसिक शक्ति जिसका प्रभाव मनुष्य के ग्राचरण पर पडता है।

मनोहर-सं० पु० [सं०] १ परमेश्वर, ईश्वर। (नां. मा., ह. नां. मा.)

२ श्रीकृष्ण। (ग्र. मा.)

३ एक प्रकार का संकर राग। (संगीत)

४ छप्पय छन्द का ६० वां भेद जिसमें ११ गुरु ग्रौर १३० लघु से एक सौ इक्तालीस वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं।

५ छप्पय छन्द का एक भेद जिसमें १३ गुरु, १२६ लघु से १३९ वर्ण ग्रौर १५२ मात्राएं होती हैं।

वि० वि०—मतान्तर से इसमें १३ गुरु, १२२ लघु से १३५ वर्ण ग्रौर १४८ मात्राएं भी मानी जाती हैं।

वि०—१ मन को हरण करने वाला, चित्ताकर्षण करने वाला, मनोज्ञ, सुन्दर। (ह. नां. मा.)

उ०—१ दुति बहो सरू रूप में डंमर। मदन फौज नीसांण मनोहर।
—सू. प्र.

उ०—२ सखी ग्रमीणो साहिबो, मदन मनोहर गात। महाकाळ मूरत वणै, करण गयंदा घात।—बां. दा.

उ०—३ महि नयर घर प्रति दीप मंडित माळ जोत मनोहरं। फिर व्योम नाखत्र परखि कमळा, सोभ धारत सुंदरं।—रा. रू.

२ देखो 'मनहर' (रू. भे.)

रू० भे०—मणहर, मणहारी, मणुन्न, मणोरह, मणोरहु, मणोहर, मणोहार, मनहरू, मनुहरि, मनोवरी, मनोहारू।

मनोहरता, मनोहरताई-सं० स्त्री०—सुन्दरता।

मनोहरा-सं० स्त्री०—वह गाथा छंद जिसमें ग्रनुस्वारों की बाहुल्यता हो। (र. ज. प्र.)

मनोहरी—देखो 'मनोरी' (रू. भे.)

उ०—पीछे फौज एक मजल सूं पाछी बुलाइ। पातसाहजी री मनोहरी स्त्रीकरनीजी फोर दीवी।—द. दा.

मनोहारू—देखो 'मनोहर' (रू. भे.)

उ०—दहां एक सुयक्खंध वारू, त्रिण्ह वग वली मनोहारू हो। उद्देसा त्रिण्ह सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो।—वि. कु.

मनौ—देखो 'मांनौ' (रू. भे.)

उ०—तळोटा खुरां थंभ पावां तराजै, सको पिंड प्रासाद आधार साजै। जड़ै बज्र नाळां झड़ै फूल ज्वाळा, मनौ मेघ सद्योत खद्योत माळा।—वं. भा.

मनौती-सं० स्त्री०—१ किसी देवी-देवता की विशेष रूप से पूजा करने के लिये किया जाने वाला संकल्प, मानता, मन्नत।

२ असंतुष्ट को संतुष्ट करना, मनुहार।

रू० भे०—मनोती।

मन्न—देखो 'मन' (रू. भे.)

उ०—१ अहर रंग रत्तउ हुवइ, मुख काजळ मसि अन्न। जांण्यउ गुंजाहळ अछइ, तेण न ढूकउ मन्न।—अज्ञात

उ०—२ काटळ आवध मूझ कर, मन मंदाइण अन्न। आवध राखै ऊजला, मैला ज्यांरा मन्न।—बां. दा.

उ०—३ अकबर अगम अगाध गह, ते रहिया अजतन्न। वाचै त्यूंही विचारियौ, कमधै साचै मन्न।—रा. रू.

मन्नछा—देखो 'मंसा' (रू. भे.)

उ०—देवी मन्नछा माइया जग्ग माता, देवी ब्रह्म गोवींद संभु विधाता।—देवि.

मन्नणौ, मन्नबौ—देखो 'मनणौ, मनबौ' (रू. भे.)

उ०—खाळिक खूरम न मनही, नह मन्नै पीरांह। ऊभौ खांडै ऊभियौ, आडौ हम्मीरांह।—गु. रू. बं.

मन्नणहार, हारौ (हारी), मन्नणियौ—वि०।

मन्निग्रोड़ौ, मन्नियोड़ौ, मन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मन्नीजणौ, मन्नीजबौ—भाव वा०।

मन्नमोट—देखो 'मनमोट' (रू. भे.)

उ०—नरसिंघदास सूरत समूह, जगमाल सुत्त गोडवै जूह। 'कांनौ' भिडंत चालतौ कोट, 'माधव्व' समोभ्रम मन्नमोट।—गु. रू. बं.

मन्नि—देखो 'मन' (रू. भे.)

उ०—१ ऐ थोडुं कहितां भलूं, मारुत जांणै मन्नि। माधवनइ। त्याविसि नहीं, तुझ नहीं राखुं तन्नि।—मा. कां. प्र.

उ०—२ मांटी पर्ण घर्ण मन्नि, विकसीया वीर तन्नि। सांम नूं निरोहा सार, जु आंग करै जुहार।—गु. रू. बं.

मन्नियोड़ौ—देखो 'मनियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मन्नियोड़ी)

मन्मथ—देखो 'मनमथ' (रू. भे.)

उ०—हेमागिरि थी हाथिणी, आवइ पवन परांणि। झंभाडी ऊपरि चढ़ी, मारइ मन्मथ बांण।—मा. कां. प्र.

मन्मथलेख-सं० पु०—प्रेम पत्र।

मन्मथी-वि० [सं० मन्मथिन्] कामुक, कामी।

मन्यु, मन्यू-सं० पु०० [सं० मन्युः] १ यज्ञ, हवन। (ह. नां. मा.)

२ क्रोध, गुस्सा। (अ. मा.)

३ अभिमान, गर्व।

४ दुख, शोक।

५ दीनता। ६ कर्म। ७ स्तोत्र।

८ अग्नि। ९ शिव, महादेव।

१० वितथ राजा के पुत्र का नाम।

मन्वंतर-सं० पु० [सं० मनु+अन्तर] १ इकहत्तर, चतुर्युगी काल या समय जो ४३,२०,०००×७१ मानवी वर्ष का होता है। ब्रह्मा के एक दिन का चौदहवां भाग।

वि० वि०—देखो 'मनु' (२)

२ पुराणानुसार प्रत्येक मनु का शासन काल या अवधि।

३ चौबीस अवतारों में से एक।

४ अकाल, दुर्भिक्ष।

रू० भे०—मनंतर।

मन्हा—देखो 'मना' (रू. भे.)

उ०—१ उहां इण नूं मारणै नूं छळ कियौ छै तिण सूं थां बुलाय मन्हा करौ, उठै गयौ तौ मारियौ जासी।—कुंवरसी सांखलै री वारता

उ०—२ तद गळ बांखड़ी घाल दारू री दाव मांझै से दियौ। दळकरण नूं रजपूतां निराठ मन्हा कियौ।

—सुंदरदास भाटी बीकूंपुरी री वारता

मन्है-सर्व०—१ मुझको।

उ०—१ ताहरां देवीदास अरज कीवी—जो आप पलक दरियाव कहावौ छौ तौ म्हनै पलक दरियाव रौ तमासौ दिखावौ।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ झूंठ तौ मतां जांणौ अोर डोढ़ी मन्है बुलायौ थौ सौ आ फुरमायौ छै—झूंठ तौ मतां जांणौ, पण दूजा रौ कांम नहीं, यूं अरज करै छै।—पलक दरियाव री बात

२ देखो 'मना' (रू. भे.)

उ०—१ मेलि परवांन मांन महाराज कीधा मन्है, लोपीयौ हुकम करतूत लहसी। हुइ सहुकौ कहैं हाकमैं हाकमी, रैत वर वैत दुस्ट दूर करसी।—ध. व. ग्र.

उ०—२ तद विट्ठळदास मन्है करणै लाग्यौ तौ बादसाह सलामत फरमाई मन्है मता करौ सच काहेता है।

—गौड गोपाळदास री वारता

मपणौ, मपबौ-क्रि० अ०—मापा जाना, परिमाण निकाला जाना।

मपणहार, हारौ (हारी), मपणियौ—वि०।

मपिग्रोड़ौ, मपियोड़ौ, मप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मपीजणौ, मपीजबौ—भाव वा०।

मापणौ, मापबौ—सक रू०।

मपधुनि-सं० स्त्री०—ढोल की आवाज।

उ०—मपधुनि मपधुनि झणझणण वीण, निनि खुणि खंखणि आउज लीण।—हीरांणंद सूरि

मपारी-सं० स्त्री०—एक जाति विशेष।

उ०—सोनी पारखि जवरीह गांधी दोसी नेस्ती कणसरा **मपारी** मणीयार सोनार कुंभार ठठार लोहार तलाल पटोलीया पटसूत्रीया मोली तंबोली······· ।—व. स.

मपियोड़ौ-भू० का० कृ०—मपा हुआ, परिमाण निकला हुआ। (स्त्री० मपियोड़ी)

मपुरांण—देखो 'महापुरांण' (रू. भे.)

मफरा-सं० स्त्री०—नशीली वस्तु।

उ०—मगरपचीसी मांणतौ करै कांम कल्लोली। गाहड में घुमैं घणुं, गिलि **मफरा** गोली।—ध. व. ग्रं.

मफौ—देखो 'मापौ' (रू. भे.)

उ०—भळ हळ साजां गज भिड़ज, **मफा** इका सुखपाळ। घोड़-वहल खासा घणा, दरगह मुहर दुभाळ।—सू. प्र.

ममंकार—देखो 'मकार' (रू. भे.)

उ०—आदि एक ररंकार कुं, सिवरचां सिध न होय। जन हरिया **ममंकार** मिळ, युं पंची पर होय।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

मम-सर्व० [सं०] मेरा, मेरे, मेरी।

उ०—१ दुरवेस विकट करिवा दुरस, पुरस रूप जोधापुरौ। **मम** हुकम लाज राखण मुदै, महाराज मंडोवरौ।—रा. रू.

उ०—२ कुळ न्यात हीण फीटा कुटळ, जिकै बिगाड़ू जात रा। **मम** सेण बात सुणज्यो मती, रहण न दीज्यौ रात रा।—ऊ. का.

उ०—३ क्रम चोथौ भारत कंवर, नटतां रुकियौ नीठि। मुणियौ भारत नांम **मम**, दीधौ किण गुण दीठि।—वं. भा.

अव्य० [सं० म+म] निषेध सूचक शब्द, नहीं, मत।

उ०—१ दोस तूं **मम** देयसि बाई। ताहरउ भस्म होसि भाई।
—सालिसूरि

उ०—२ तास कटक मेले दसरथ तणा, लोपि समंद लीधौ गढ़ लंक। **मम** करि ढील म करि मन माया। समरि समरि स्रीरांम निकंक।—ह. नां. मा.

रू० भे०—मम्म।

ममकार—देखो 'मकार' (रू. भे.)

उ०—जन हरिया **ममकार** की, मुख सिवरन की वांनि। रोम रोम ररंकार की, जोग न आयौ जांनि।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

ममत—देखो 'ममत्व' (रू. भे.)

उ०—अरु भींवराजजी रै वजीर सूं वडी **ममत** बंधी ही सु उण नूं कैय वीरमदेजी नूं पातसाहजी रै पावां लगाया।—द. दा.

ममतमल-सं० पु०—ममता का मेल। (जैन)

ममता-सं० स्त्री० [सं०] १ अपना होने का भाव, अपनत्व, स्नेह, प्रेम, वात्सल्य।

उ०—१ तूं **ममता** री मूरती है। तूं जिवड़ा री हे जोत।—गी. रां.

उ०—२ घणै हरख सूं कागली इंडा देवती। घणी **ममता** सूं इंडां नै सेवती।—फुलवाड़ी

२ कृपा, दया, सहृदयता।

उ०—१ थोड़ी घणी **ममता** विचारौ अर आंनै मारण रौ हुकम मत दिरावौ फगत देस निकाळौ देयनै ई मोटी विचारौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ जे चिड़ा नै आसरौ देय देती तौ राजा अवस मन में म्हारी सरा करतौ के रांणी **ममता** वाळी है।—फुलवाड़ी

३ लोभ, लालच।

उ०—१ आतम ध्यांन विचारतौ जी, मूकी **ममता** देह। जड चेतन भिन्न भिन्न करेजी, लागो सिव सूं नेह।—जयवांणी

उ०—२ क्रसन राखि हिव हूं तूं करतौ, धरणीधर **ममता** मन धरतौ। तूझ विखै मत दै ध्रु-तारण, कूप संसार काढ़ स्रब-कारण।
—ह. र.

४ अहंकार, गर्व।

उ०—१ सेवतौ पाप अठार, **ममता** मोह विकार। मरयादा लोपतौ ए, अधरम में ओपतौ ए।—जयवांणी

५ उचथ्य आंगिरस नामक ऋषि की पत्नी एवं दीर्घ मामतेय ऋषि की माता।

रू० भे०—मंमता।

ममत्व-सं० पु० [सं०] १ ममता, प्रेम, स्नेह, वात्सल्य।

२ दया, कृपा।

३ लोभ, लालच।

४ अहंकार, गर्व।

रू० भे०—ममत।

ममद—देखो 'मैंमद' (रू. भे.)

ममरणौ, ममरबौ-क्रि० स०—चबाना।

उ०—ललित गरभेसर, द्रव्य अविनस्वर सालिभद्रावतार मदन मुद्रावतार, अस्नांन तंबोल **ममरइ**, पंच प्रकारि विसय सुख अ मांणइ उगिउ आथमिउ काइ न जांणइ जाइ।—व. स.

ममरियोड़ौ-भू० का० कृ०—चबाया हुआ. (स्त्री० ममरियोड़ी)

ममाई-सं० स्त्री०—१ कस्तूरी।

उ०—कहा होत है रूप ते, गुण ते होत निधान। ऊजळ सोमल ते मरत है, रखत **ममाई** प्रांण।—जैतदांन बारहठ

रू० भे०—मम्माई।

ममारक, ममारख, ममारखी-सं० स्त्री० [फा० मुबारक] १ शुभ-कामना, मगल-कामना, बधाई।

उ०—१ विभाड़ै जादवां कोट घर कीध वस, सबळ अद खाटिया भवां सारू। तप बळी अभनमा, 'माल' 'गंगेव' तो, **ममारक** पोकरण राव मारू।—महाराजा जसवंतसिंह रो गीत

उ०—२ मिळण मीर-उमराव, सब राजा सब आवै। कोड़ **ममारख** कहै उवरि, वड सुख उपजावै।—रा. रू.

रू० भे०—मांमारखी ।

ममीरौ–सं० पु० [अ० ममीरान] हलदी की जाति के एक पौधे की जड़ जिसकी कई जातियां होती हैं ।

ममु–सं० पु०—'म' वर्ण ।

उ०—ररौ **ममु** जुगम ऐं अंक बाकी रह्या, प्रसिध तिण सूं करैं लिया प्यारा । जेण परभाव निध सिधादिक मो जुमैं, सुर असुर नाग नर नमैं सारा ।—र. रू.

ममे–सं० स्त्री०—अहं की भावना, मैं ।

उ०—लीला तउ महेस्वर तणी, स्रस्टि ब्रह्मा तणी, प्रतिग्या स्रीरांम तणी, पवनवेग कला हनूमंत तणी, **ममे** दुरयोधन तणी, सूरय तणउं तेज······ ।—व. स.

ममौ–सं० पु०—'म' अक्षर ।

उ०—पोथी पुस्तग टीपणौ, विद्या दूरि वहाय । हरिया सब ही छांडि कै, ररै ममै चित लाय ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

ममोई–सं० स्त्री०—बम्बई नगर ।

उ०—**ममोई** दरवाजो, वरियारौ दरवाजो इत्यादिक चवदै दरवाजा सूरत रा है ।—बां. दा. ख्यात

ममोलियौ—देखो 'ममोलौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—पंछियां री मीठी बोलणी, मींडकां री गावणी, कुदरत री लीलौ बणाव, **ममोलियां** री सुरंगौ रंग—कोई इण बिरखा ने समझ सूं देखलै तौ वो सपना में ई सुरग रै आणंद री बात नीं करै ।—फुलवाड़ी

ममोलौ–सं० पु०—एक बरसाती कीड़ा जिसको वीरवघूटी कहते हैं ।

उ०—ग्रीध चात्रिग वीरघंटा दादुर बोलै । मुगळ लाल **ममोला** सा निजर आवै ।—वचनिका

रू० भे०—ममोलौ, मांमोलौ ।

अल्पा०—ममोलियौ, ममोल्यौ, मांमलियौ, मांमूल्यौ, मांमोलियौ, मांमोल्यौ ।

ममोल्यौ—देखो 'ममोलौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—नाभि जांणै गुलाब रौ फूल । पासा जांणै माखण री लोथ । नितंब कटोरा सा । नख लाल **ममोल्या** हीरा दमकमता । नवी रांणी तौ जांणै आभै री बीज—फुलवाड़ी

ममौलौ—देखो 'ममोलौ' (रू. भे.)

उ०—मेहकौ **ममौलौ**, बादळा की बीज, होली की झाळ, सांमण की तीज ।—मयारांम दरजी री बात

मम्म—१ देखो 'मरम' (रू. भे.)

२ देखो 'मम' (रू. भे.)

मम्मांणी–वि०—मकराने की, मकराने सम्बन्धी ।

उ०—**मम्मांणी** पाखांण नीं, प्रतिमा सुंदर रूपौ जी । स्रीसेत्रुंज नउ संघ करि, थापी सकल सरूपौ जी ।—स. कु.

मम्माई—देखो 'ममाई' (रू. भे.)

मयंक–सं० पु० [सं० मृग+अङ्कः] १ चन्द्रमा ।

(अ. मा., नां. मा., नां. डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ छटा देख अपछरा छिपै, सची छिपै कर संग । छतीयां अनारां छिपै, मुख सौं छिपै मयंक ।—पनां.

उ०—२ पडगरियौ सोहड खेड पत्त, निस **मयंक** जांण माळा नखत्त । घाघरढ़ धूस घण थाट घेर, मिळिया सुभट्ट मेखळा मेर ।

—गु. रू. बं.

उ०—३ साखा बियौ **मयंक** पह सुभ्रम, मन अण बछत तूझ मण । कलम कुरांण पांण तज कुंभा, बांचण लागा हर बयण ।

—महारांणा कुंभा री गीत

२ पवन । ३ कपूर ।

रू० भे०—मयंकर, मयंख ।

मयंकर—देखो मयंक' (रू. भे.)

उ०—तिण नाद थकत हुई रथ **मयंकर**, घणूं सुसब जोवतां घणी । काढ़ा कोर वडइ कारीगर, चाहड चरण जडाव तणी ।

—महादेव पारवती री वेलि

मयंख—देखो 'महिस' (रू. भे.)

उ०—हींगोळ राय अठ दस हथी, भ्रखै **मयंख** भुवनेसरी । कवि जोड़ पांण 'ईसर' कहै, उदौ उदौ आसापुरी ।—देवि.

२ देखो मयंक' (रू. भे)

मयंग—देखो 'मतंग' (रू. भे.)

मयंगळ—देखो 'मदकळ' (रू. भे.)

उ०—मद झरता इतरा **मयंगळ**, पाएलै चालस्यइ पलड ।

—महादेव पारवती री वेलि

मयंद–सं० पु० [सं० मृगेन्द्र] (स्त्री० मयंदण, मयंदणी) १ सिंह ।

(अ. मा., नां. डिं. को.)

उ०—१ झालै क्यूं साहिब झाला ऐ, **मयंद** ऊठियौ त्रिभैं मणौ । मुंह झालियौ न जाऐ मिळऐ । त्रिणै घणै ही मंगळ तणौ ।

—नैणसी

उ०—२ उवक्कत घाव रगत्र उलाळ, काळी भर पत्र पिवंत कराळ । हिचैं जुध 'लाल' तणौ हरियंद, मिळै गज घूमर जांणि **मयंद** ।—सू. प्र.

उ०—३ मंडळ मांह वसाय म्रग, थयौ कळंकी चंद । पायौ सीह **मयंद** पद, हण हाथळ म्रग व्रंद ।—बां. दा.

उ०—४ मारू-घूंघटि दिट्ठ मइं, एता सहित पुणिग । कीर, भमर, कोकिल, कमळ, चंद **मयंद** गयंद ।—ढो. मा.

[मद+इन्द्र] २ हाथी, गज ।

उ०—झुकती कुळ दावांनळ झाळै, च्यार हजार पायदळ चालै । कवि अंगि सिलह जोम ऊफणिया, वीस **मयंद** आरोहक वणिया ।

—सू. प्र.

३ ऊंट । (डिं. को.)

उ०—हुग्रो नगारो दूसरो, भेर भणंकै सद्द । सब ग्रातुर जण दळ सकळ, करण मयंदां लद्द ।—रा. रू.

[सं०] ४ राम की सेना का एक वानर ।

उ०—जांमवंत क्रुध भळ जळहळी, सुनखेण मयंदह सतबळी ।

—सू. प्र.

५ चन्द्रमा ।

६ काव्य छन्द का एक भेद विशेष ।

७ प्रथम लघु फिर एक दीर्घ फिर एक लघु वर्ण का छंद विशेष ।

८ डिंगल गीतों (छंदों) में सिंहचले गीत का एक भेद ।

रू० भे०—मइंद, मयंदी ।

मयंदगति—सं० स्त्री० [सं० मृगेन्द्र+गति] सिंह की चाल ।

उ०—'सूराउत' डाबि छतीस सार । मलपियौ मयंदगति गयंद मार ।

—गु. रू. बं.

मयंदी—देखो 'मयंद' (रू. भे.)

उ०—मयंदी बर्णी 'कांन्ह' रै थाप मारी, तरी साह तोफांन रै माह तारी ।—मे. म.

मयंबर—देखो 'मैंबर' (रू. भे.)

उ०—मयंबर नांम ले कहूं नहीं मुनासब । लियाकत स्यांम ध्रम रखे लीधौ ।—जुगतीदांन देथा

मयंमंत—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

मयंमिरा—सं० स्त्री०—मदिरा, शराब । (अ. मा.)

मय—सं० पु० [सं०] १ प्रसिद्ध शिल्पी दानव जिसने पांडवों का सभा भवन बनाया था ।

२ ऊंट । ३ घोड़ा । ४ हाथी ।

उ०—सूंडा-डंड प्रचंडो, मूसा ग्रारुढ़ मेक मय दंतो ।—गु. रू. ब.

५ खच्चर । ६ ग्राराम, सुख ।

७ तद्धित का एक प्रत्यय जो प्राचुर्य अर्थ में शब्दों के आगे लगाया जाता है, युक्त ।

उ०—१ भाळ विसाल सिंदूर सुसोभित, हाल मराळ हसत्ती । रूप ग्रनूप तेज मय राजत, मिळत पलक मदमत्ती ।—मे. म.

उ०—२ कोई कुकवी जीभ सुं, बांछै रस मय बांण । कंचन बांछै काढणौ, सो लोहारी खांण ।—बां. दा.

रू० भे०—मंइ मइ, मई, मयै, मैं ।

८ एक देश का नाम । (प्राचीन)

९ ग्राधार या ग्राश्रय रूप । ज्यूं०—ग्रन्नमय प्राणमय ।

१० देखो 'मद' (रू. भे.)

११ देखो 'मैं' (रू. भे.)

मयउं—एक प्रकार का कपड़ा विशेष ।

उ०—वीणउसीउं चीणउसीउं मलउसीउं ग्राउंचीयउं मूगनउं मयउं मंगलिकं मेदियउं सीलउरं सिंहलउरउं वइरागरउं हीरागरउं······· ।

—व. स.

मयकांमा—सं० स्त्री०—मदिरा, शराब । (ग्र. मा.)

मयगळ, मयगल, मयगळि, मयगलि—देखो 'मदकळ' (रू. भे.)

उ०—१ नाभि सकोमळ मुख कमळ, डील सु सीतळ गात । तिण का दव खुध्या रहै, मन मयगळ मयमंत ।—ढो. मा.

उ०—२ हंसगति जिम चालती, मयगल जिम माल्हती, कांमिनी गरव भांजती, चंद्रकला जिम गुणहिं वाधती, कंचुक ताडती नयन-बांणि जणमण वींधती······ ।—व. स.

उ०—३ ए मयगल मन माहरूं, ग्रंकुस माधव-हाथि । कुंभस्थल ऊपरि चढ़ी, हुं परिण बईठी साथि ।—मा. कां. प्र.

उ०—४ पुण्यइ मयगल बाभइ बारि, पुण्यवंत भुज नावइ हारि । पुण्यइ हुइ नित नवला रंग, पुण्यइ सुणीइ वेणि ग्रदंग ।

—कां. दे. प्र.

उ०—५ मयगल जिम रेवा सुं मोह्या, हंस मांनस सुं सदोरा रे । मीन मोह्या जिम जलनिधि मांहै, चद सुं जेम चकोरा रे ।—स. कु.

उ०—६ ग्रंबाडी ऊपरि धरी, मयगलि मुखि चित्रांम । घमकइ सोवनि-घूघरी, मनि गमता मन कांम ।—मा. कां. प्र.

मयड़ी—देखो 'मैड़ी' (रू. भे.)

उ०—ग्राज ग्रबेळो ऊनम्यो, मयड़ी ऊपरि मेह । जाऊं तो भीजैं कंचुवो, रहूं त तूटै नेह ।—जसराज

मयण—सं० पु०—१ हाथी ।

उ०—ग्रहपवत्ति करण करि हूं चल्यउ, करम ग्रंथि थकी पाछउ वल्यउ । मयण निम्मिय दंत करी घणा, किम चबायइ लोह तणा चणा ।—स. कु.

२ देखो 'मदन' (रू. भे.) (ग्र. मा.) (उ. र.)

उ०—१ कुंग्रर कमला रति-रमण, मयण महाभड नांम । पंकजि पूजिय पय-कमल, प्रथम जि करू प्रणांम ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ खग नीर, घीर ग्रंतर खरा, मद कुंजर वपु जिम मयण । मन बसै तेम तूं मांहरै, मो मन बसियौ महमहण ।—ह. र.

उ०—३ मंत्री तहां मयण वसंत महीपति, सिळा सिघासण धर सधर । माथै ग्रंब छत्र मंडांणा, चलि वाइ मंजरि ढलि चमर ।

—वेलि

३ देखो 'मैण' (रू. भे.)

उ०—हेम की कूंपी मयण की मुंध । साधन समरई जीम मात-गयंग ।—बी. दे.

४ देखो 'मणि' (रू. भे.)

उ०—चूड़ामणि वोलइ सुणि ब्राह्मण, ग्रादि विस्नु ग्रहिनांण । पाई पदम उर स्रीवछ लंछन, कोटइ कौस्तुभ मयण ।

—रुकमणी मंगळ

मयणरेहा—देखो 'मदनरेखा' (रू. भे.)

उ०—मयणरेहा गई नासि होजी, जायउ पुत्र उजाड़िमइ ।—स. कु.

मयणहल–सं० पु० [सं० मदन-फलकं या मदन-फलम्] ग्राम विशेष । (उ. र.)

मयणा—१ देखो 'मैणा' (रू. भे.)

उ०—भील कोली मयणा मीर तणा । मारग में भय अत्यंत घणा । —स. कु.

२ देखो 'मेना' (रू. भे.)

उ०—मलपती आवइ रे, जिम वन हाथणी रे । मयणा वयण सुविसाल ।—स. कु.

३ देखो 'मैना' (रू. भे.)

मयणातुर—देखो 'मदनातुर' (रू. भे.)

उ०—राखस हिडंब तणी हूं धूय, तइं दीठइं मयणातुर हूय । वइ-ठउ ताउ अछइ नीय ठांणि, वाइं आवी मांणुसहांणि ।—पं. पं. च.

मयणि—देखो 'मदन' (रू. भे.)

उ०—अनु कंठि कुसुमह माल किरि सुं मयणि आपणि आवीह । कोइ इंदु चंदु नरिंदु सइंवरि पुहुत इम संभावीयइ ।—पं. पं. च.

मयत—देखो 'महत' (रू. भे.)

मयथुनीप्रजा—देखो 'मैथुनीप्रजा' (रू. भे.)

मयदानव—देखो 'मय' (१) ।

मयन–सं० पु०—१ पंवारों की एक शाखा ।

२ देखो 'मदन' (रू. भे.)

मयनक–सं० पु०—१ जलंधरनाथ के गुरु का नाम ।

उ०—मारग बाग तणी मति मेटे, भगत निरंतर उर धर भाव । तूठे सुतन 'महेस' तूठिया, सिस मयनक 'गुमनेस' सुजाव ।—बां. दा.

२ देखो 'मैनाक' (रू. भे.)

मयना—१ देखो 'मेना' (रू. भे.)

२ देखो 'मैना' (रू. भे.)

मयनाक—देखो 'मैनाक' (रू. भे.)

उ०—बडे गजराजनि रंग चढ़ाय, करै उन्मत्त घनूं मद पाय । चढ़े छलतें हुजदार कजाक, मनौ हनमंत चढ्यो मयनाक ।—ला. रा.

मयमंत—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

उ०—१ पय ठव सूका पांनड़ा, मां बजाड़ मयमंत । खबरदार कै बे-खबर, वन इण सीह वसंत ।—बां. दा.

उ०—२ गुडै मयमंत सेना मुहर गैमरां, प्रकटिया मारका थाट जोधापुरां । धूंसियै हैय पुरा पाय अरबद, पसरियै सिंध परवत थया पाधरा ।—द. दा.

उ०—३ दोउ मयमंत सुजांण सेज दिसि बाहुडइ । जांणै धरती-काज, असप्पति आहुडइ ।—ढो. मा.

मयमंतौ—देखो 'मैमंत' (अल्पा., रू. भे.) (नां. डिं. को.)

उ०—मयमंतौ भादू मलौ, सेहरै चमकै बीज । पिय प्यारी सेझां रमै, आज काजळी तीज ।—कुंवरसी सांखला री वारता

मयमत, मयमत्त—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

उ०—१ जैरौ बारहं आंगळ खग लीड़ीकट छै, कांधो-पूठ एक सारखो छै । गुळवाड़ गोहूं, जव चिणां रौ, जुवार रौ चरणहार छै, मयमत छै । सू चर चर आया छै ।—रा. सा. सं.

उ०—२ मन मयगळ मयमत्त ।—ढो. मा.

मयमत्तौ—देखो 'मैमंत' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मयमत्ता मैंगळ, मणिधरि केहरि मल्ल । सगला दमता सोहिला, मन दमणौ मुसकल्ल ।—ध. व. ग्रं.

मयरहरौ–सं० पु०—समुद्र, सागर ।

उ०—ता (उ) तूं गो मेरु गिरी, मयरहरौ (सायरौ) ताव होइ दुत्तारी । ता विसमा कज्जगइ, जाव न धीरा पवज्जंति ।—कविवर सार

मयराळ, मयराल—देखो 'मराळ, मराल' (रू. भे.)

उ०—१ मांन सरोवर-मन-महिं, माधव तूं मयराळ । चाहसि चंच चबूक्कडा, चिणतु बाल प्रबाल ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ मधुकरनी परि मणकतु, मंडि रहिउ मयराल । सुंदरि ताहरी सीखवा, चाल्यांनी चकचाल ।—मा. कां. प्र.

मयलूं—देखो 'मैलौ' (रू. भे.)

उ०—ऊंचपणउं आपइं गणइ, कठिन तु कहियां न जाय । मिलतां मुख मयलूं गणी, मेहेल्या माधव राय ।—मा. कां. प्र.

मयसुता–सं० स्त्री० [सं०] मय दानव की कन्या एवं रावण की स्त्री मंदोदरी ।

मयांनगर–सं० स्त्री०—तलवार का म्यान बनाने वाली एक जाति । (मा. म.)

मयांनौ—देखो 'म्यानौ' (रू. भे.)

उ०—जिसकी तारीफ सुणि सुरलोक के बीच सुरियंद लाजै । जिसका मयांना इस नरयंद नै अनेक गज कविराजों को दिया । —सू. प्र.

मया–सं० स्त्री० [सं० माया, ममता] १ कृपा, दया, अनुग्रह, अनुकम्पा । (अ. मा., ह. नां. मा)

उ०—१ आय गोकळ मही लेर सुर अनोखां, मया कर सुणावो फेर मुरळी ।—बां. दा.

उ०—२ राजा जसवंतसिंघ पण घणी मया कीवी ।—नैणसी

उ०—३ लाख करोड माल खज्जीना, हैं गैं मुलक मया करि दीना । —गु. रू. बं.

२ प्रेम, ममता, स्नेह ।

उ०—१ ठाकरसा रा गुण तौ आप सू वत्ता कुण जांणै । आपरै माथै तौ वांरी विसेस मया ही ।—फुलवाड़ी

उ०—२ मात हूंत अधिकी मया, करै चुगल विध केण । मल वा करसूं भेटही, औ रसणां अग्रेण ।—बां. दा.

उ०—१ डाकं पर घर डारि डर, कूकरम करै कठोर। मन में नांहि दया मया, चाहैं पर धन चोर।—ध. व. ग्रं.

[सं० मर्त] ३ इजाजत, अनुमति, स्वीकृति।

उ०—१ भूत मन में जांण्यौ के पाछी वसूंत बसियां तौ ठावको कांम बणैला। वो उणनै पीवर जावण री मया दे दी।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजकंवर री बात सुणनै सोनल लाज सूं माथौ नीचौ कर लियौ। होळै सूं बोली—म्हारा इण भतीजा बिना म्हैं खुद नीं जीव सकूं जे आप इणनै हरदम म्हारै साथै रै'वण री मया देवौ तौ म्हैं आप री बात कबूल कर सकूं।—फुलवाड़ी

४ छूट।

उ०—ठाकरसा मन में सोच्यौ के हजार मोहरां तौ घणी बात फगत कोई दस मोहरां निजर करै तौ म्है गधा नै सोनौ पैरण री मया दे सकूं।—फुलवाड़ी

[सं० मा, मात्] ५ माता।

उ०—तूं आद सगत हिंगळाज माय। मया तूं आवड़ महमाय।

—रांमदांन लाळस

वि०—कृपालु, दयालु, महरबांन, तुष्टमान।

उ०—वेला बुरी रा सीरी छै। जितरै म्हाराज मया छै इतरै थे सरब म्हारा छौ। अर जद म्हाराज उपांन हुई तद ए तीन्हे म्हारा छै।—चौबोली

रू० भे०—माया।

मयाचळ—देखो 'मलयाचळ' (रू. भे.)

उ०—काया केसरी किसनागरि, जबाधि मैं जळहरि। म्रिग नाभ मलंतरि, मयाचळं।—गु. रू. बं.

मयाद–सं० स्त्री० [अ० मीआद] १ वक्त, समय, काल।

२ एक निश्चित अवधि, मुद्दत।

३ वादा, वचन, करार।

रू० भे०—मिआद, मियाद, मीयाद।

मयादी–वि० [अ० मीआदी] १ जिसके लिए कोई अवधि निर्धारित की गई हो।

२ जिसका प्रभाव एक निश्चित अवधि तक रहता हो।

रू० भे०—मिआदी, मियादी, मीयादी।

मयादी-बुखार–सं०पु०यौ०—एक प्रकार का ज्वर विशेष, आंत्रिक ज्वर।

रू० भे०—मिआदीबुखार, मियादीबुखार।

मयाळ, मयाळू–वि० [राज० मया+प्र० ळ] दयालु, कृपालु।

उ०—मेघ अवेखत पांण चखां तू नीर उभाळै। देख पराई-पीड़ मयाळू हिया पिघाळै।—मेघ.

मयावंत–वि० [राज० मया+सं० वत्] १ दयावान, कृपालु।

२ कृपापात्र।

उ०—मांनसिंघ पछै भावसिंघ टीकौ पायौ, वडो महाराजा हुवौ, रांणी गोड़री बेटौ, जहांगीर पातसाह री वार मांहै वडौ मयावंत चाकर हुवौ।—नैणसी

मयु–सं० पु० [सं० मयुः] १ किन्नर। (डिं. को.)

२ मृग, हिरण।

मयुर—देखो 'मयूर' (रू. भे.)

मयुराज–सं० पु० [सं० मयुः+राजः] किन्नरराज कुबेर।

मयूक, मयूख–सं० स्त्री० [सं० मयूखः] १ किरण, रश्मि।

(अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—अर रज धूम रा बितांन में मारतंड रा मयूख अंतरधांन बिद्या रौ अभ्यास धरण लागा।—वं. भा.

२ दीप्ति, आभा।

३ अंगरा। ४ सौन्दर्य।

रू० भे०—मियूख।

मयूर–सं० पु० [सं०] १ मोर। (नां. मा., ह. नां. मा.)

२ एक पुष्प विशेष।

३ मयूर-शिखा नामक क्षुप।

४ सूर्य शतक का रचयिता कवि।

५ एक सुविख्यात असुर जो विश्व नामक राजा के रूप में उत्पन्न हुआ था।

६ सुमेरु पर्वत के अन्तर्गत एक पर्वत।

७ काव्य छन्द का एक भेद विशेष। (पिं. प्र.)

८ डिंगल के वेलिया 'सांणोर' छंद का एक भेद जिसके प्रथम द्वाले में १८ लघु व २३ गुरु से ६४ मात्राएं होती हैं तथा इसी क्रम से शेष द्वालों में १८ लघु तथा २२ गुरु से ६२ मात्राएं होती है।

(पिं. प्र.)

९ एक रंग विशेष का घोड़ा।

रू० भे०—मयुर, मयोर, मोर।

मयूरणी–सं० पु०—एक छन्द विशेष, जिसमें एक रगण, एक जगण, फिर एक रगण और अन्त में गुरु होता है।

मयूरन्रत्य–सं० पु० [सं० मयूरनृत्य] एक प्रकार का नृत्य जिसमें थिरकन अधिक होती है।

मयूरासन–सं० पु० [सं०] योग के चौरासी आसनों में से एक।

वि० वि०—इसमें दोनों हाथों की ठेउनी को नाभि से लगाकर शरीर को मयूर की तरह हाथों पर ऊंचा उठाकर रखा जाता है। इससे आलस्य का नाश होकर जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

मयूरिय–सं० स्त्री०—घोड़ी।

उ०—मन साहस सूर मनूर मढै। छत्रपत मयूरिय सीस चढै।

—पा. प्र.

मयूरीवीणा–सं० पु०—एक प्रकार की वीणा विशेष।

मयूरेस–सं० पु० [सं० मयूर+ईशः] स्वामी कार्त्तिकेय।

मयेळी–सं० स्त्री०—१ आकाश में उड़ने वाले पक्षियों की पंक्ति।

२ उक्त पंक्ति में उड़ने की क्रिया।

मयेस्वर–सं० पु० [सं० मयेश्वर] मय नामक दैत्य का नामान्तर।

मयै—देखो 'मय' (७)।
उ०—जद वरसळपुर रा राव करणसिंघजी **मयै** जमीयत के चाकरी में मौजूद थे।—द. दा.

मयोमय–सं० पु० [सं० महा-महिमन्] शिव, महादेव।

मयोर—देखो मयूर' (रू. भे.)
उ०—१ वरसात भर धर परम सुख, वणि उमड़ि जळधर आवही। घण घोर सोर **मयोर** रस, घण घटा धण घहरावही।—रा. रू.
उ०—२ धर सोर **मयोर** झिंगोर धरी, कर अग्र कतार बलाह करी।—पा. प्र.

मयौ–वि०—१ महीन, बारीक।
२ देखो 'मईयौ' (रू. भे.)
रू० भे०—महियौ।

मय्यसांमंद–सं० पु०—श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। (अ. म.)

मरंद, मरंदक–सं० पु० [सं०] फूलों का रस, पराग।

मर–सं० पु० [सं० मृ] १ मरण क्रिया, मृत्यु, मौत।
२ नाश, विनाश।
३ मृत्युलोक, संसार, जगत।
४ पृथ्वी। ५ ईश्वर।
उ०—दादू मरणा खूब है, **मर** मांही मिळ जाइ। साहिब का संग छाडि कर, कौन सहे दुख आइ।—दादूबांणी
६ देखो 'मुर' (रू. भे.)
उ०—प्रथम पुवाडई पूतनां सोखी, **मर** दळीयौ मुमाळ। ए हरि (नइ) आगइं दावांनळ, दांणव नइ कुळि काळ।—रुकमणी मंगळ

मरक–सं० पु० [सं० मर्क, मक्] १ शरीर, देह। २ प्राण।
३ बन्दर।
[सं० मृ+अप्+कन्] ४ एक संक्रामक रोग (ऐपिडेमिक)।
५ भेद, रहस्य।
६ आकर्षण, खिंचाव।
७ मन में दबा रहने वाला द्वेष।
८ मन की उमंग।

मरकट–सं० पु० [सं० मर्कट] (स्त्री० मर्कटी) १ वानर, बंदर। (अ. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१ अग **मरकट** मन मीन, नाव नागरी नयण नट। देख हुवै ऐ दीन, अस 'जेहल' बगसै इसा।—बां. दा.
उ०—२ पछट वज्र घट कुघट ऊपर। रंगट भट फुट भ्रकुट **मरकट**। —सू. प्र.
उ०—३ सूत्र सिद्धांत वखांणतां जी, सुणतां करम विपाक। खिण इक मन मांहि ऊपजइ जी, मुझ **मरकट** वइराग।—स. कु.
२ तांबा। (अ. मा., ह. नां. मा.)
३ मकड़ी। ४ सारस।
५ एक प्रकार का विष विशेष।
रू० भे०—मंकड़, मकड़, मक्कड़, मांकड़, मांकर, मांकुण, माकड़, मारकट। अल्पा०—मांकडियौ, माकड़ौ।
६ स्त्री संभोग का एक आसन।
७ दोहा छंद का एक भेद जिसमें १७ गुरु तथा १४ लघु होते हैं। (र. ज. प्र.)
८ छप्पय छन्द का आठवां भेद जिसमें ६३ गुरु, २६ लघु के अनुसार ८६ वर्ण व १५२ मात्राएं होती हैं। इसमें ६३ गुरु, २२ लघु के अनुसार ८५ वर्ण व १४८ मात्राएं भी होती हैं।
९ देखो 'मरकटक'।

मरकटक–सं० पु० [सं० मर्कटकः] १ एक मछली विशेष।
२ एक अनाज विशेष।
३ एक दैत्य का नाम।
४ देखो 'मरकट' (रू. भे.)

मरकटपाळ–सं० पु० [सं० मर्कट+पालः] बन्दरों का राजा सुग्रीव।

मरकटी–सं० स्त्री० [सं० मर्कटी] १ मादा वानर, वानरी, बंदरी।
२ मकड़ी। (अ. मा.)
३ छन्द शास्त्र के ९ प्रत्ययों में से अंतिम प्रत्यय। इसके द्वारा मात्रा के प्रस्तार में छन्द के लघु-गुरु कला तथा वर्णों की संख्या का परिज्ञान होता है।

मरकत–सं० पु० [सं०] पन्ना। (डिं. को.)
उ०—१ **मरकत** मांणिक्य मुक्ताफल मेघाडंबरि मयूर तणउं मंडांण छत्रदंड, अलंब।—व. स.
उ०—२ को साधू राखै रांम धन, गुरू बाइक वचन विचार। गहिला दादू क्यों रहै, **मरकत** हाथ गंवार।—दादूबांणी
रू० भे०—मरगय।

मरकतमणि, मरकतमिणि, मरकति, मरकतिमणि, मरकतिमिण–सं० स्त्री०—१ पन्ना नामक रत्न। (व. स.)
२ नग, नगीना। (अ. मा.)
३ नीलम नामक रत्न। (डिं. को.)
उ०—किहां किहां मोती ना चउक पूरिया छइं, **मरकतमणि** मय भाजन, फूलना पगर, दिस दिसइं बहकइं क्रसणागर इसिउं विमांन। —व. स.

मरकब–सं० पु० [अ० मर्कब] १ एक प्रकार का वाहन, सवारी।
उ०—**मरकब** यवन देसां वाहण हुवै सो नित सौ कोस जावै। घोड़ा सूं ही मजबूत हुवै।—बां. दा. ख्यात
२ घोड़ा, अश्व।

मरकलडइ—मुख मुद्रा बनाना।
उ०—मांनिनी **मरकलडइ** हसइ, मुख भरिउ तंबोलि। तिणइ त्रितय भूयणपति, जांणइ चिणोठी चोल।—मा. कां. प्र.

मरकी—देखो 'मुरकी' (रू. भे.)

उ०—तदनंतर सुस मुसती मरकी सिसि विसद सुंहाली, चंद्रकिरणोज्वल गुणा, फगफगां फीणां, दुधवरणा दहीथरां, घ्रतवरणा घारी, सुकुमाल साकुली, सेव साकुली, परीसणहारि नहीं ग्राकुली''''''।—व. स.

मरखण-सं० पु० [सं० मर्षण] राजा मर्षण जो पुराणों के अनुसार मरू का प्रपौत्र था।

उ०—जे सुत हुवौ संधि हत दूजण। मरखण संधि सुतण कुळ मंडण। मरखण सुत सिहसांन भूप मणि। भूप विस्वासा द्वै तै सुत भणि।—सू. प्र.

मरग—देखो 'म्रिग (रू. भे.)

उ०—वड वाहां देतो 'मुकनावत', ग्रै दोहुं मरग न खेलै ग्राळ। चांमरीयाळ घास मुख चीनौ, मरगण डाळ न लाभै माळ।

—रुघो मुतो

मरगड-सं० पु० (स्त्री० मरगडी) १ बिना सिर का धड़, कबंध।

उ०—करमाळां कड कड पडि सिर दड दड, भाजै मरगड कंध मडां। खेंगरजै खेंगड लागै लोहड, घाइ उजड पड घूम घडां।

—गु. रू. बं.

२ मृग, हरिण।

उ०—चडी मरगडी रींछडी, तास-तणां मुख मेलि। माधव त्यावै मुंहनई, करिसि कुतूहल-केलि।—मा. कां. प्र.

रू० भे०—मरगड।

मरगचौ-सं० पु०—एक प्रकार का मर्दन।

उ०—तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति जिकै छोगाळा छबीला जुग्रांन हुसनांक फूलां रा छोगा नाखीग्रां थकां फूलां रा चोसर पेहरीग्रां थकां ग्ररगचै मरगचै केसरिऐ कचमैलै वागै कीऐं घणीं चोऐ ग्रंतर फूलेल गला मांहि भीनां थकां घणै ग्रंबीर नै गुलाल मांहै गरकाब हुग्रा थका झोळी भरिग्रां थकां दिसि दिसि छूटि रही छै।—रा. सा. सं.

मरगछाळा—देखो 'म्रिगछाळा' (रू. भे.)

मरगद-सं० पु०—हरा रंग का वस्त्र विशेष।

उ०—गारूडसन्नाहु उभयखरम मरगद गुच्छ पटउलउं सावपट्ट पट्टहीर सूहवी''''''।—व. स.

मरगधर—देखो 'म्रिगधर' (रू. भे.)

मरगय—देखो 'मरकत' (रू. भे.)

मरगराज—देखो 'म्रिगराज' (रू. भे.)

मरगलौ, मरगलियौ—देखो 'म्रिग' (ग्रल्पा., रू. भे.)

मरगाबूं-सं० पु०—मुर्गे की जाति का एक पक्षी विशेष, मुर्गाबी।

उ०—नहरूं परूं चूंच जड़े चरज बटेर मरगाबूं कूं धर ग्रावते हैं।

—सू. प्र.

मरगी—देखो 'मिरगी' (रू. भे.)

उ०—मरगी नइ मंदवाडि, गया गुजरात थी नीसरि। गयउ सोग संताप, घणौ हरख हुयउ घरिघरि।—स. कु.

मरगोजौ-सं० पु०—वसंत ऋतु में होने वाला एक प्रकार का उद्भिज पदार्थ।

मरग्गड—देखो 'मरगड' (रू. भे.)

उ०—भडीयड भांजि मरग्गड मूंड, रडब्बड रैण करंडक रुंड।

—गु. रू. बं.

मरघट-सं० पु० [सं० मरघट्ट] मुर्दों को जलाने का स्थान, श्मशान भूमि।

रू० भे०—मड़हट, मड़हठ, मरहट, मरहट्ट, मरहट्टय, मरहट्ठ, मरहठ।

मरघलौ, मरघलियौ—देखो 'म्रिग' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—निरखी निरमल चंदलु, ऊगिऊ ग्रंबर-रेसि। मरुउ चारसि मरघला, म म ग्राघू चालेसि।—मा. कां. प्र.

मरड़—देखो 'मरोड़' (रू. भे.)

मरड़कणौ, मरड़कबौ-क्रि० स०—१ मारना, संहार करना।

उ०—भाइयां बिहुं भुज भार सा हुए भळा। माडा तणां घाय मरड़कै मैंगळां।—करमसिंह व खेंगार सगतावत री गीत

क्रि० ग्र०—२ टूटना, फटना।

उ०—विहुंड खेंग ठरड़कै मिळै करड़कै कवांणां, कंगळ गात झरड़कै, पार खरड़कै सरांणां। रूक धार बरड़कै, घाव फरड़कै, ग्रफारां, खंजर बाथ खरड़कै, हाड मरड़कै हजारां।

—बखतो खिड़ियो

मरड़कौ-सं० पु०—ऐंठन, मरोड़।

२ गुस्सा।

मरडूसी-सं० स्त्री०—एक जंगली पौधा।

रू० भे०—मरडूसी।

मरच—देखो 'मिरच' (रू. भे.)

उ०—त्यांनै पकडनै कह्यो—माल बतावो। मरचां री धुई दीधी।

—भि. द्र.

मरछा—देखो 'मुरछा' (रू. भे.)

मरछागत—देखो 'मुरछागत' (रू. भे.)

उ०—प्रोहित रै हाथ सिरपाव बीड़ी दैण लागी। इसै समै पवन सूं सारी परेच उड गई। ताहरां पुरोहित री खवास री निजर मारवणी ग्राई। मारवणी री सीबी देखनै दोनुं मुरछागत ग्राय, हेटा पड़िया।—ढो. मा.

मरज-सं० पु० [ग्र० मर्ज] १ रोग, बीमारी।

उ०—चरम रोग चट हरै, हटावै दाद दुखणिया। खावै खुजली मरज, मिटावै खेद थकणिया।—दसदेव

२ बुरी ग्रादत, कुटेव, ऐब, व्यसन।

मुहा०—मरज पाळणौ=कोई व्यसन पकड़ना, बुरी ग्रादत पड़ना।

मरजदार-वि० [ग्र० मर्ज+दार] १ बीमार, रोगी, रुग्ण।

उ० सूळीदार सुभाव त्रिसूळदार तैयारी। मरजदार होय मांग, श्रांणी कहुं दार उधारी।—ऊ. का.

२ बुरी आदत वाला, ऐबी।

मरजाद, मरजादा—सं० स्त्री० [सं० मर्यादा] १ गौरव, मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

उ०—१ तीडे पाट सलख कुळ तारग। मह्रि मरजाद खत्रि-ध्रम मारग।—रा. रू.

उ०—२ बेटौ मोटघार काटी है, हुथणी व्है जेड़ी बींदणी है अर म्हारा मोटघार सूं ग्वाड़ी री मरजादा बणी रै'वैला।—फुलवाड़ी

उ०—३ 'सुंदर' सुतन्न सात्रवां सल्ल। मरजाद महा नेठाह-मल्ल।
—गु. रू. बं.

२ नियम, विधान, विधि, रीति, रस्म, परम्परा।

उ०—१ वरणास्रम ध्रम मरजाद वेद, भाखा खट नवरस ग्ररथ भेद।—वि. सं.

उ०—२ साबास छै, बड़ी रजपूती राखी। जसा पुरसां रा थे लड़का था विसी ही कीवी। जनांनी मरजाद मतां भांजौ।
—सूरे खींवे कांधळोत री बात

उ०—३ बाघ व्रखभ एकठा वहतां, करइ नहीं मन संका काइ। मेट सकइ न को मरजादा, हालइ सको मरजादा माहि।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ स्याळियौ मरजादा सूं कैं'वण लागौ—ग्रबै थनै दो बार बंदगी करणी पड़सी अर दो बार आरती करणी पड़सी।
—फुलवाड़ी

३ हस्ती, हैसियत, ग्रौकात।

उ०—दुनियां रा सगळा राव-उमराव, राजा-महाराजा अर नवाब-पातसाह इणरै आगै सात बार पांणी भरै। वांरी कांई मरजादा के वै इस्टूखां री होड कर सकै।—फुलवाड़ी

४ सीमा, हद।

उ०—१ गरजंति मीम नादं पूरण, चंदाइ पेखि उफणिए। धन समद धीरं नह लंघत लाज मरजादं।—गु. रू. बं

उ०—२ सायर मरजादा जो लोपै, क्षमावंत मुनिवर जो कोपै।
—श्रीपाळ रास

उ०—३ सागर मरजादा तजै, अर पच्छिम में जाय ऊगै जे भांण। जो धरणी-धर धरणी तजै, तो ही रांम न लोपे बापरी बांण।
—गी. रां.

उ०—४ जब देहळी भीतर,रुखमणीजी आया। तब देहळी लांघतां पग आधौ दीयौ। तठे जेहड़ि पग की स्रीक्रस्णजी की नजरि पड़ी। जे हरि देखतां जु कोई आणंद उपज्यौ। तिहि की मरजादा नहीं। इतरौ आणंद अधिक उपज्यौ।—वेलि टी.

उ०—५ मरजाद छिलो मेटै महण, चवै चौथ मह पुड चलै। सेवगां तणा मेहासदू, साद न करनी संभळै।—चौथ बीठू

५ लाज, शरम।

६ शान-शौकत।

उ०—इस्टूखां कह्यौ—भूठी ग्रांट अर कूड़ी मरजादा रा नसा में मिनख इण सूं ई धणी इदकी बातां कर सकै।—फुलवाड़ी

७ शोभा।

उ०—कनक-कोट कंगुरे कनक, कनक तणा परसाद। रतन-दंड राजत धजा, निजपुर की मरजाद।—गजउद्धार

८ महत्व।

उ०—जे धन-संपत्त में ई गुण अर मरजादा व्हैती तौ अरबां-खरबां रा हीरा-मोती अर अणगिण माया ढोवण वाळी म्हांरी बाळद दुनियां में सबसूं सुखी अर मरजादा वाळी व्हैती।
—फुलवाड़ी

रू० भे०—मरज्यादा, मरयाद, मरयादा, मरियाद, मरियादा, मुरजाद, मुरजादा, म्रजा, म्रजाद, म्रजादा, म्रजादा, म्रयाद, म्रयादा।

मह०—मरजादौ।

मरजादौ—देखो 'मरजादा' (मह., रू. भे.)

उ०—ऊंधौ-मुख दस मास गरभ में, असुचि तणौ पिंड बाधौ रे। नीसरियौ जब दुख विसरियौ, मूक दीनी मरजादौ रे।
—जयवांणी

मरजियौ—वि०—१ मरकर जीने वाला।

२ जो प्राण छोड़ने की दशा में हो, मरणासन्न।

३ अधमरा।

सं० पु०—समुद्र से मोती निकालने वाला, गोताखोर।

उ०—हरीया सरवर तीर, मांणिक मोती अति घणा। क्या जांणै सुधि कीर, मरजीया सो जांणिसी।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—मरजीयौ, मरजीवउ, मरजीवौ।

मरजी—सं० स्त्री० [अ० मर्जी] १ इच्छा, चाह, कामना, ख्वाहिश।

उ०—१ इण भांत आपरै समझ समझायां पछै इस्टूखां तौ आपरी मरजी सूं बातां करतौ रह्यौ अर लोग आपरी मरजी सूं उण री सिखरां करता, कोगतां अर खमडोळां करता।—फुलवाड़ी

उ०—२ रांणी चिड़ी नै कह्यौ—नैनी चिड़कल आज सूं थूं म्हारी धरम बैन है। म्हारा कमरा में थारी मरजी व्है जठै ईंडा दे।
—फुलवाड़ी

२ खुशी।

उ०—१ साचौ गिणौ चाहै कूड़ौ गिणौ, म्हारै तौ मन में एक इज है। अर म्हैं उण मन में जांणूं जकी बात ई दरसावूं। थें कूड़ो करनै गिणौ तौ थांरी मरजी।—फुलवाड़ी

उ०—२ जाट बोल्यौ—आज राजी नीं व्हैला तौ फेर कद व्हैला। पूरा सौ रिपियां रौ खातौ वाळियौ हूं। अबै थांरौ मीठौ मूंडौ नीं करावै तौ सेठां री मरजी—फुलवाड़ी

३ स्वीकृति, अनुमति।

उ०—हमैं कंवर देस मैं जावण री मरजी लीवी । तद रतनां इसी अरजी कीवी ।—र. हमीर

४ आज्ञा, आदेश ।

५ रजामंदी ।

मरजीदांन-वि० [अ० मर्जी+सं० दान] १ कृपापात्र ।

उ०—दरबार में अबै फगत राजा, रांणी, मंत्री, आठ काळा घोड़ा, नैं काळौ भेख धारियां आठ राजकंवर अर रांणी री मरजीदांन डावड़ी मरदांनौ भेख धारियां आपरै घोड़ा समेत ऊभी ही ।
—फुलवाड़ी

२ मुखिया, प्रधान, प्रमुख, खास ।

उ०—इण भांत म्होकमसिंघ देख हंसनै चल्यौ गयौ । मूंढा सूं तौ कोई बात न कही । पण मरजीदांन था जिकां मन री लही । म्होकमसिंघ गढ़ देखतां ही उड पड़सी ।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

३ विश्वासपात्र ।

मरजीपात्र—देखो 'मरजीदांन' ।

मरजीयौ, मरजीवउ, मरजीवौ—देखो 'मरजियौ' (रू. भे.)

उ०—१ मरजीवउ पांणी तणउ, साल्ह उघटनइ खाइ । दुख सहणा पुहरा दियण, कंत दिसाउरि जाइ ।—ढो. मा.

उ०—२ सून्य सरोवर सहज का, तहं मरजीवा मन । दादू चुणि चुणि लेयगा, भीतर रांम रतन ।—दादूबांणी

मरज्यादा—देखो 'मरजादा' (रू. भे.)

उ०—लोक लाज कुळ रा मरज्यादां, जगमा एकणां राख्यांरी ।
—मीरां

मरट, मरट्ट-सं० पु०—१ गर्व, घमंड, अभिमान ।

उ०—१ त्रिहुं पक्ख ऊजळी, कमळि निकळंक कळा निधि । मांण महातम मरट, अडग सूरातन अव्वधि ।—गु. रू. बं.

उ०—२ प्रसन्न मुखकमळ, उन्नत स्कंध, मांसल विपुल वक्षस्थल, सरल भुजदंड, मदन मुद्रावतार, तरुण तरट्ट, फिरि कंदरप तणउ मरट्ट नवयौवन विलास, मदन तणउ लघु बांधव, एवं विध पुत्र ।
—व. स.

उ०—३ मन मैं धरता मरट घरट जिम भूखै घूमै, मेले घर गया मऊ भटकि मूआ पर भूमैं ।—ध. व. ग्रं.

उ०—४ हंसगतइं चालती, गजगतइ माहलती, कांमकांमनी पालती, आंखिनइ मटकारती मदन नी वागुरा घालती कस्तूरी अलंकृत भाल पट्ट, तरुण तणा भांजइ मरट्ट पूरणा चंद्र समांन वदन''''''''''''' ।
—व. स.

२ गौरव, मर्यादा ।

उ०—१ हलै थाट दखणाद लग टळ तोपां हसत, खसत मद मींढ रा नरां खागां । मरट तिणवार राखी विकट मोसरां, सुपेती चौसरां तणी 'सांगा' ।—रावत संग्रांमसिंह सगतावत री गीत

उ०—२ अमो समा आछटै, छोह उपटै छछोहां । मिटै घटै नह मरट, लहै चहै गळ लोहा ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

उ०—३ मनि मेल्हिय मरट मांण, अरिअण मांनइ आंण । करइ सुभ वखांण सुपरिकरो, कवि कहइ ।—व. स.

३ ऐंठन, मरोड़, घुमाव ।

उ०—तिसा ही वागां रा वणाव, तिसाही मूछां रा मरट, तिसा ही भुजां रा आंमला, तिसा ही पोरसरा गाढ़, तिसा ही कांमवट रा अंग'''''' ।—रा. सा. सं.

४ समूह, फौज ।

५ क्रोध में आग बबूला ।

उ०—सो आ खबर अमरसिंहजी नूं गई, सो सुणत सुवां काळौ मुरट हुय गयौ । हाथ पटके दांतां सूं हथेळी नूं बटका भरै, कटारी सूं तकियौ फाड़ नांखियौ ।—अमरसिंह गजसिंहोत री बात

रू० भे०—मरठ, मुरट ।

मरठ-सं० पु०—१ काव्य छन्द का एक भेद विशेष । (पिं. प्र.)

२ देखो 'मरट' (रू. भे.)

मरड—देखो 'मरोड़' (रू. भे.)

उ०—१ के जल थल इक करैं, उणां थी पुगै आसा । मरड फरड केइ गरजि, नेटि उडिजाइ निरासा ।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ वयण-कमल जीह लागती, मूंछि मरड अपार । निरखी निरमल नासिका, तेल तणी ते धार ।—मा. कां. प्र.

मरड़ूसी—देखो 'मरड़ूसी' (रू. भे.)

मरड़डणौ, मरड़डबौ—देखो 'मरोड़णौ, मरोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—आलस छंडी उठीउ, मुछि मरड़ी वेह । चउद लोक कीधा जिणइ, चिंता करस्यइ तेह ।—मा. कां प्र.

मरड़ियोड़ौ—देखो 'मरोड़ियोड़ौ' (रू भे.)

(स्त्री० मरड़ियोड़ी)

मरण-सं० पु० [सं० मरणं] १ मरने की क्रिया, भाव या अवस्था, मौत, मृत्यु ।

उ०—१ आया दूत खुस्याली आई । साह मरण री विगत सुणाई ।
—रा. रू.

उ०—२ जनम मरण रांमण रांम सधीर ।—ह. नां. मा.

उ०—३ सहू भीम रा भीच आखाड-सिध्धं । मरण प्रब्ब संपेख मंगळीक किद्धं ।—गु. रू. बं.

उ०—४ छूटा जांमण मरण सूं, भव सागर तिरियाह —बां. दा.

२ एक विष विशेष ।

३ साहित्य में एक अनुभाव जो विरही की मरणासन्न अवस्था को स्पष्ट करता है ।

रू० भे०—मरणु, मरणू मरणौ, मरण्ण ।

मरणदिन-सं० पु०—किसी के मरने का दिन, वह दिन जिस दिन किसी की मृत्यु हुई हो।

उ०—चंदाणणि चीर चमीर न चंचळ, कुंवर भंडार न चित करिया। माहव सभा 'खंगार' मरणदिन, सोयण सुणि जी संभरिया।—सोढा खंगार रौ गीत

मरणांत-सं० पु०—मरण पर्यन्त, मृत्यु पर्यन्त।

उ०—याकूब लेस प्रथम हाल में मरणांत भय खैंचतौ, आरांम न करतौ मसक्कत सूं एक दम टळतौ नहीं।—नी. प्र.

मरणी-सं० स्त्री०—मौत, मृत्यु।

उ०—जै जै मरणी जुग मरै, सो मरणौ आसांन। हरीया बिन मरणी मरै, सो तौ कठण जांन।—श्रीहरिरांमदासजी महाराज

मरणीक-वि० -जो मरने मारने के लिये उतारू हो, मरने को तैयार।

उ०—१ नै रावळ कनै रजपूत मरणीक हुय रह्या छै।—नैणसी

उ०—२ जिकौ सुणतां ही बळभद्र नूं ऊढ़ा उभय रै साथ आगै चलाई कंवर दूदा पाछै रहि मरणीक थियौ।—वं. भा.

उ०—३ आगै रजपूत कोई फौज माथै मरणीक व्है जाता तद वींद वणता आगै अपछरा परणीजसां तरै मोड़नै ऐ कपड़ा उठै नहीं सो अठा सूं पहरने फौज ऊपरै जावता।—वी. स. टी.

उ०—४ अर जीवण री आस व्है तौ मरणीक हुवा सत्य संध अग्रज रै साथ जावण रो न धारो।—वं. भा.

मरणु, मरणू, मरणौ-वि० [सं० मृ] १ जो मरने-मारने को उद्यत हो, वीर, बहादुर।

उ०—ढोल सुणंतां मंगळी, मूंछां भूंह चढंत। चंवरी ही पहचाणियौ, कंवरी मरणौ कंत।—वी. स.

२ देखो 'मरण' (रू. भे.)

उ०—१ तींछे हूंफी ऊठई करणु, अरजुनु पांमइ मूं करि मरणु।—पं. पं. च.

उ०—२ आ बात म्हारै सोचण री नीं है, मछलियां रै सोचण री है। वांनै मरणौ आछौ लागै तौ वै आपरौ जाब्तौ करै।—फुलवाड़ी

उ०—३ मरणौ लाभति भागै, दखै खुमांण रांण दस सहसौ। असपति उभै जद्ध ए, एह ओसर कदं प्रांमेस।—गु. रू. बं.

मरणौ, मरबौ-क्रि० अ० [सं० मरणं, म्रियते] १ जीव-जन्तुओं या प्राणियों के शरीर से प्राण शक्ति का निकल जाना, आयु की समाप्ति के कारण जीवन का अन्त हो जाना, मृत्यु होना, मरना। (उ. र.)

उ०—१ भव दरियाव भयंद, लहरां उठै लोभ री। मांहे ज्यां मतमंद, मनख घणा डूबै मरै।—बां. दा.

उ०—२ हंस मांयला मूढ़ रे, कर हर सर बिसरांम। मर-मर घर-घर नहं फिरै, उर धर गिरधर नांम।—ह. र.

उ०—३ दादू मरणा खूब है, मर मांहीं मिळ जाइ। साहिब का संग छाड कर, कौन सहै दुख आइ।—दादूबांणी

उ०—४ गायत्री य अनु नायक रूंधइ, जो मरइ सुहड मांनसि सूधइ।—सालिसूरि

२ युद्ध में लड़कर मरना, वीरगति प्राप्त होना, झूंझना। (उ. र.)

३ भूख या प्यास से व्याकुल होना, त्रस्त होना।

उ०—१ मुड़ मुड़ पड़तोड़ी आंखड़ियां मींचै, भूखां मरतोड़ी मूंठ-ड़ियां भींचै।—ऊ. का.

उ०—२ गोह किरावती बोली—तिरसां मरतोड़ी रो म्हारो तौ जीव जावै, थांनै आरती री पड़ी।—फुलवाड़ी

४ किसी द्वारा मारा जाना, हत्या, कत्ल या संहार किया जाना, नष्ट होना, मिटना।

उ०—१ करइ दाहु विदाहु हियइ धरइ, कहु कीचक हुइ मरत मरइ।—सालिसूरि

५ न्योछावर होना, उत्सर्ग होना, वारी जाना।

उ०—केहरि मरू' कळाइयां, रुहिरज रत्तड़ियांह। हेकणि हाथळ गै हणै, दंत दुहत्थां ज्यांह।—हा. झा.

६ किसी के प्रेम या रूप पर आसक्त होना, विकल या विव्हल होना।

उ०—कमल ने दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ।—सालिसूरि

७ कुम्हला जाना, मुरझा जाना, सूख जाना। (वनस्पति आदि)

८ अत्यधिक कष्ट, दुःख या विपत्ति के कारण मृतक समान होना। (उ. र.)

९ मरणासन्न होना, मृत प्राय: होना, मृतक की सी दशा में होना।

उ०—म्है तौ सगळा मरियां समांन हां। मरियोड़ी लास नै किणी बात रौ अनुभव व्है तौ म्हांनै व्है।—फुलवाड़ी

१० बोझ या भार सहन किया जाना।

उ०—सोनौ-रूपौ पहरतौ, मोत्यां मरतौ भार। सो कासी रै चौवटै, हरचंद वेची नार।—अज्ञात

११ किसी बात या कार्य के प्रति अत्यन्त चिंतित होना, अत्यधिक चिन्ता करना।

१२ किसी कार्य को पूरा करने में अत्यधिक श्रम करना, पचना।

१३ किसी वस्तु के गुण समाप्त होना, अप्रयोज्य होना।

१४ इच्छा, उत्साह, वेग आदि का दबना, मंद होना।

ज्यूं—भूख मरणी, मन मरणौ।

१५ खेल के अन्दर किसी गोटी या खिलाड़ी का पराजित होकर बाहर होना, पराजित होना, परास्त होना।

१६ डाह या जलन होना।

१७ पेठना, समाना, विलीन होना।

ज्यूं—भींत में पांणी मरै।

मरणहार, हारौ (हारी), मरणियौ—वि०।

मरवाड़णौ, मरवाड़बौ, मरवाणौ, मरवाबौ, मरवावणौ, मरवावबौ, मराड़णौ, मराड़बौ, मराणौ, मराबौ, मरावणौ, मरावबौ —प्रे० रू०।

मरिश्रोड़ौ, मरियोड़ौ, मरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मरीजणौ, मरीजबौ—भाव वा०।

मारणौ, मारबौ—सक रू०।

मरण्ण—देखो 'मरण' (रू. भे.)

उ०—तिम माधव नइ मांनिनी, मन सुधी माराइ मरण्ण। श्राई ग्रम्हनइ ग्राविज्यो, चींति तुम्हारा चरण।—मा. कां. प्र.

मरतंग-सं० पु०—मरण, गमी।

रू० भे०—मरतक।

मरत-सं० पु० [सं० मर्तः] १ मानव, मनुष्य, आदमी।

२ पृथ्वी। ३ मृत्यु-लोक।

४ देखो 'म्रत्यु' (रू. भे.)

५ देखो 'मरत्य' (रू. भे.)

मरतक—देखो 'मरतंग' (रू. भे.)

मरतकाळ, मरतगाळ-सं० पु० यौ० [सं० मृत्यु+काल] मृत्यु का समय, अन्तिम समय।

मरतब-सं० पु० [अ० मर्तबः] १ पद, दर्जा, श्रेणी।

२ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान। ३ वर्ग।

रू० भे०—मुरतब।

अल्पा०—मरतबौ, मुरतबौ।

मरतबान-सं० पु०—१ रोगनी बर्तन जिसमें आचार, मुरब्बा आदि रखा जाता है।

२ अमृतबान।

मरतबा-सं० पु० [अ० मर्तबः] वार, दफा, पारी।

मरतबौ—देखो 'मरतब' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ याकूब दौलत री चाह सूं इसी स्नम करी तो किसै मरतबै पंहोचियौ।—नी. प्र.

उ०—२ म्हारो हठ महनत इण में छै, जे आप नूं इसै मरतबै पहुंचाऊं जिण कोई म्हारै सरीक न होय।—नी. प्र.

उ०—३ मन नूं दुख धावां नूं खेंचणें वास्ते मोटी ठोर मरतबा रै पहोंच करावे।—नी. प्र.

मरतलोक—देखो 'म्रत्युलोक' (रू. भे.)

उ०—अन्नादिक सुं पितर छै तिणि को मरतलोक प्री लागै। —वेलि टी.

मरतुंजय—देखो 'म्रत्युंजय' (रू. भे.)

मरतु—देखो 'म्रत्यु' (रू. भे.)

मरतुजाअली-सं० स्त्री०—हजरत अली की एक उपाधि।

उ०—तिस बखत परवरदिगार कूं सिजदा करि महमंद मरतुजाअली को याद करि दाहिणै दसत सेती समसेर तोल हुकम फुरमाया। —सू. प्र.

मरत्य-सं० पु० [सं० मर्त्य] शरीर, बदन।

वि० [सं० मर्त्य] मरणशील, मरणासन्न।

मरत्यलोक—देखो 'म्रत्युलोक' (रू. भे.)

मरदंग—देखो 'म्रिदंग' (रू. भे.)

उ०—पाय गयंद तूटा घण पावै। जेणि करै मरदंग वजावै। —सू. प्र.

मरद-सं० पु० [फा० मर्द] १ पुरुष, नर।

उ०—१ माया मांणजो रे मत चूकजो मरदां, जो वो हलियो जाय जहां। राखो धर ऊंडी मत राजां दांन करो आछै सिवदांन। —महाराज सिवदांनसिंह (बागोर)

उ०—२ मरद रा भेख में आ नवी रांणी री खास डावड़ी ही। —फुलवाड़ी

२ पति, खाविंद।

३ मंत्री। (डिं नां. मा.)

४ वीर पुरुष।

उ०—पांच गोळा'र दोय सेल लागां पछै, 'सदा' रो सेर मरद, 'अचळ' हर पाधरो 'कुसळ' आयो।—पहाड़खां आढ़ो

५ मनुष्य जाति या वर्ग।

उ०—१ थां मरदां री जात ही निकांमी है।—फुलवाड़ी

उ०—२ समर तजण सूं सोगुणो, दुरंग तजण रो दोख। मरद दुरंग जातां मरै, मिळै जिकां नूं मोख।—बां. दा.

२ साहसी, हिम्मतवर।

३ पुरुष का, पुरुष संबंधी।

उ०—मरद पवसाख भूखण कड़ा मूदड़ी, कंठ डोरो मुरति लवंग कांनां।—मे. म.

वि०—१ बल पौरुष वाला, शूर वीर।

[सं० मर्द] ४ कुचलने वाला, नष्ट करने वाला।

५ पीसने वाला, घोंटने वाला।

रू० भे०—मरद्द, मल्द।

मरदक-वि० [सं० मर्दक] १ मर्दन करने वाला। २ चबाने वाला।

रू० भे०—मरद्दक।

मरदगी—देखो 'मरदानगी' (रू. भे.)

उ०—अरजन मरतै-मरतै मरदगी करी, आखी वातां कह नाखी खरी खरी। थांणेदार सैना-मैनी सूं बियांन लिया, चाळ्या। —दसदोख

मरदण—देखो 'मरदन' (रू. भे.)

उ०—कांम पड्यां पावै कसठ, से अबळा रे संग। सुज मरदण खंडण सहै, ऐ मुभ वाळा अंग।—र. हमीर

मरदणौ, मरदबौ-क्रि० स० [सं० मर्दनं] १ किसी वस्तु या शरीर के किसी अंग को हाथों या किसी अंग द्वारा मसलना, रगड़ना।

२ मालिश करना, लेपन करना, मलना ।

३ दबाव डालना, दबाना ।

४ सन्तापित करना, पीड़ित करना ।

५ पीसना, घोंटना ।

६ नाश करना, उजाड़ना, कुचलना, रौंदना ।

मरदणहार, हारौ (हारी), मरदणियौ—वि० ।

मरदिग्रोड़ौ, मरदियोड़ौ, मरद्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मरदीजणौ, मरदीजबौ—कर्म वा० ।

मरदन—सं० पु० [सं० मर्दन] १ मसलने या रगड़ने की क्रिया या भाव ।

२ मालिश, लेपन, उबटन ।

उ०—१ बागां मांही सैलां करै । गुलाबजळ री तूंगां सूं सांपड़ै । छिड़काव गुलाब रौ हुवै । केसर-कस्तुरी, भीमसेनी कपूर री मरदन हुवै-तिण रौ कीच मंचियौ रहै ।—जलाल बूबना री बात

उ०—२ कीयौ मरदन घण सधळइ अंग । पंचजटा छइ सीरइ भूयंग ।—बी. दे.

उ०—३ वडारण बैठी पगां हाथ दीयौ । घड़ी दिन च्यार चढ़तां जागीयौ । संपाड़ै रौ पांणी, मरदन री तेल हाजर कीयौ ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

३ सन्तापन, उत्पीड़न ।

४ दबाव । ५ विनाश, उजाड़ ।

वि०—कुचलने वाला, पीसने वाला, नाश करने वाला ।

रू० भे०—मरदण, मरद्दण, मरद्दन ।

मरदन-काळी—सं० पु० यौ० [सं० मर्दन+कलिय] १ ईश्वर ।

२ श्रीकृष्ण ।

रू० भे०—मरद्दन-काळी ।

मरदनमेघ—सं० पु० यौ०—श्रीकृष्ण । (अ. मा.)

मरदनी [फा० मुर्दनी] कमजोर, उदासी, श्रीहीनता ।

उ०—समभाया—जे आ किंही नूं जाहर मतां करज्यौ नहीं तो लोग आपणी मरदनी नहीं बखांणसै ।—नापै सांखलै री वारता

मरदनीयौ—वि०—मर्दन करने वाला, मालिश करने वाला ।

सं० पु०—१ मालिश करने वाली जाति या वर्ग का व्यक्ति ।

उ०—ब्राह्मण क्षत्रिय वैस्य सुद्र. चिहुं वरण संभाली । कंदोई कुंमार कठी, मरदनीया माली ।—ध. व. ग्रं.

मरदमसुमारी—देखो 'मरदुमसुमारी' (रू. भे.)

मरदमी—सं० स्त्री० [फा० मर्दुमी] १ बल, पौरुष, वीरता, साहस ।

उ०—१ पछै वखत पाय अर खुरम निकळियौ सू गौड़ां री मरदमी सूं कछवा सूंडा खनै आया गोरखर चढ़िया आया ।—द. दा.

उ०—२ अफरासीयांन तूरांन री बडौ बादसाह सौ आपरा उमरावां नूं कही रूप, सरीर, मरदमी, साज, सांमांन इण रे ऊपर भूलौ मतां ।—नी. प्र.

२ पुरुषत्व के गुण, पुंसत्व, काम-शक्ति ।

उ०—जद वैद्य नाड़ी देखनै कही, दूजौ तो इलाज थांहरै कोई लागै नहीं । अर मच्छी रौ उदक काढ़ै फाड़ै देसूं । जणीं सूं थांहरै मरदमी आवसी ।—साहूकार री बात

३ मानवता, इन्सानियत ।

४ सुशीलता, शालीनता ।

वि०—बलशाली, पुरुषार्थी, साहसी ।

उ०—जगत इण आणंद, आच्छादित, वधै फळीजै नीम ज्यूं । स्रमजीवी मतवाळा वणी, मांण मरदमी भीम ज्यूं ।—दसदेव

रू० भे०—मरदुमी ।

मरदल—सं० पु०—एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—पटुपटह अदंग करडि मरदल वेणु तलिमताल कंसाल झल्लरि भेरि मदनभेरि जयभेरि भरहभंभ हुडुक्क ढक्क बुक्क त्रंबक काहल काहली बरगां प्रभृति वादित्र ।—व. स.

मरदांनगी—सं० स्त्री० [फा० मर्दानगी] १ शूरता, वीरता, बहादुरी ।

उ०—जो धीरज में पूरा छै तौ उण नूं मरदांनगी में पूरौ भरोसौ करो ।—नी. प्र.

रू० भे०—मरदांनी ।

उ०—ताहरां राजा री कुंवरी महळ में गई । जाइ आगला कपड़ा उतारि मरदांनगी कपड़ा पहिर मूंहरां सु तोसदांन भर छोकरी एक लैनै पाइगह गई ।—चौबोली

रू० भे०—मरदगी, मरदाई ।

मरदांनी—देखो 'मरदांनगी' (रू. भे.)

मरदांनी-डोढी, मरदांनीडोढी—सं० स्त्री० यौ०—राज्य प्रासादों में पुरुषों के लिए प्रवेश द्वार ।

उ०—मरदांनी डोढी कनै सांमी जनांनी डोढी री पोळ थी । हमार चक्रसेवारी डोढी बाजै ।—मारवाड़ री ख्यात

रू० भे०—मरदांनीडोढी ।

मरदांनू, मरदांनौ—वि० [फा० मर्दानः] (स्त्री० मरदानी) १ मर्दों का, मर्दों सम्बन्धी, मर्दों जैसा, मर्दों की तरह ।

उ०—१ ताहरां जिकौ सुपियारदे रौ कागळ ल्यायौ हुंतो, तै साथै मरदांनी पोसाख मेल्ही सुपियारदे नूं ।—नैणसी

उ०—२ सोई खुद्द आज दिन सांप्रत, स्रीदुरगा सकळाई । सूरत अदुल भेख मरदांनू, सूरत हृदय समाई ।—मे. म.

उ०—३ कंवरां रै देखा-देखी चिड़ौ अर चिड़ी ई चुगौ पांणी नीं करियौ । मरदांनौ भेख करियां अकेली डावड़ी पड़दी रा लाडू गटकावती ही अर दीवड़ी में भरियोड़ौ ठांडौ पांणी पीवती ही ।
—फुलवाड़ी

२ बल-पौरुष वाला, शूर-वीर, साहसी ।

उ०—१ तद सांगैजी कयौ जी इण नूं खाटरौ मत देखौ । म्हां भेळा घणा रौळा किया है, सू आदमी वडौ मरदांनौ है ।—द. दा.

उ०—२ लालचंद कहै साहि अलावदी रे, बोलाया बड़ वीर । सभ हुई सिंहलद्वीप नैं ते, जे मरदांना वीर ।—प. च. चौ.

सं० पु०—वीरता, साहस ।

उ०—साहि कहै सुभटां भणी, होज्यो हिवैं हुसीयारो रे । मरदांनी मरदां तणी, देखैंगे इण वारो रे ।—प. च. चौ.

मरदां-मरद–वि०—१ मर्दों में मर्द, नर में श्रेष्ठ ।

उ०—ऊभौ दिली सीस उसांसैं, 'जगा' तणौ कसीयां जरद । महलां तणा मरद अन महपत, मेवाड़ो मरदां-मरद ।—जोगीदास कंवारियौ

२ अद्वितीय योद्धा, वीरों में वीर, श्रेष्ठ वीर ।

उ०—मांण हीण सुपह भरै थत मांमलत, पांण कुण करै महारांण पाजा । मीसरां तांण महाराज मरदांमरद, रचै घमसांण जमराज राजा ।—जवांनजी आढ़ौ

३ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—मलफ चढ़ै मरदां-मरद, विकट जगां लग बग्ग । पग पग जय कीधी 'पतैं', एलिम जनरळ अग्ग ।—जुगतीदांन देथौ

सं० पु०—अर्जुन का एक नामान्तर । (ह. नां. मा.)

क्रि० वि०—जबरदस्ती, बलात्, येन-केन प्रकारेण ।

रू० भे०—मरद्दां-मरद्द ।

मरदांमरदी, मरदा-मरदी–सं० स्त्री०—मरदां-मरद होने की दशा, अवस्था या भाव ।

मरदाई—देखो 'मरदांनगी' ।

उ०—सिंघ रै सांभी पांणी पीयनै कोरा निकळ जावै तौ मरदाई है।
—फुलवाड़ी

मरदियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ मसला हुआ, रगड़ा हुआ (शरीर या अंग). २ मालिश किया हुआ, लेपन किया हुआ, मला हुआ. ३ दबाव डाला हुआ, दबाया हुआ. ४ सन्तापित या पीड़ित किया हुआ. ५ पीसा हुआ, घोटा हुआ. ६ नष्ट किया हुआ, उजाड़ा हुआ, कुचला हुआ, रौंदा हुआ.

(स्त्री० मरदियोड़ी)

मरदुम–सं० पु० [फा० मर्दुम] मनुष्य, इंसान ।

मरदुम-सुमारी–सं० स्त्री० यौ० [फा०] जनगणना ।

रू० भे०—मरदमसुमारी ।

मरदुमी—देखो 'मरदमी' (रू. भे.)

मरदूद–वि० [फा० मर्दूद] तिरस्कृ, बहिष्कृत, नीच ।

मरद्द—देखो 'मरद' (रू. भे.)

उ०—१ दाढ गरद्दां भारिया, अंग जरद्दां दूण । रूप मरद्दां मीर सब, लंक करद्दां तूंण ।—रा. रू.

उ०—२ मरोड़ै गजां कंध त्रोड़ै मरद्दं । रहच्चै जिसा सिंघ मुक्की रवद्दं ।—वचनिका

उ०—३ सुरत्त तुं हीज तुं हीज सबद्द, मरद्दां मादां बीच मरद्द ।
—ह. र.

उ०—४ सेलाळ जरद्द मरद्द सकाज । वेधै वज्र भाखर पाखर बाज ।
—सू. प्र.

मरद्दक—देखो 'मरदक' (रू. भे.)

मरद्दण, मरद्दन—देखो 'मरदन' (रू. भे.)

उ०—नमौ मुर-मेघ मरद्दण मल्ल । कंसासुर काळ संखासुर सल्ल ।
—ह. र.

मरद्दनकाळी—देखो 'मरदन-काळी' (रू. भे.) (नां. मा.)

मरद्दल–सं० पु०—एक वाद्य विशेष ।

उ०—पटुपटह म्रदंग करडि मरद्दल वेणु तलिमताल कंसाल झल्लरि भेरि मदन भेरि जय भेरि भरहभंभ हहुक्क ढक्क बुक्क त्रंबक काहल काहली बरगां प्रभृति वादित्र ।—व. स.

मरद्दां-मरद्द—देखो 'मरदांमरद' (रू. भे.)

उ०—जोधां राकसे जरद्द मूंगळा उतारैं मद्द, बांहाळौ खाटै विरद्द मरद्दां-मरद्द ।—ल. पि.

मरद्दित–वि०—१ मसला हुआ ।

२ नष्ट किया हुआ । ३ पीसा हुआ ।

मरपूरौ–वि० मरकर के भी कार्य को पूरा करना ।

उ०—वीर क्षत्री कहै है कै तौ मार दुसमणा नें और गऊंवा ले आवां सो लुगायीयां वही रा माट विलोवसी कै मरपूरा देसां सो गऊवां ऊपरा सूं देदे पग और घट सरीर खूंदती जासी ।—वी. स. टी.

मरम–सं० पु० [सं० मर्म] १ सार तत्त्व, यथार्थ, सत्य ।

उ०—भुज भिड़ज रूप सपतास भांति, कवि तेण लखण गुण वरण क्रांति । सत उकति जेण पंडित प्रमांण, जुधि जैत मरम क्रम प्रथम जांण ।—रा. रू.

२ आशय, अर्थ, भाव ।

उ०—भासा संस्कृत प्राकृत भणंता, मूंझ भारती ए मरम । रस दायिनी सुंदरी रंमतां, सेज अंतरिख भूमि सम ।—वेलि

३ रहस्य, भेद ।

उ०—१ मंत्री सूं आलोचै वइठा, मूळ मरम सहु जांणी । रूखमईयौ राजा ऊवेखई, तुरी अमोलिक आंणी ।—रुकमणी मगळ

उ०—२ म्हैं घणा दिनां तक इण मरम नैं मन में छिपायां राखियौ ।—फुलवाड़ी

४ कपट, छल । (अ. मा.)

५ शरीर का स्थान या नाजुक भाग, जहां चोट लगने से अत्यन्त वेदना होती है ।

उ०—आवतौ आवतौ रांणा री बेहल नजीक आयौ, खुरी घोड़ौ करनै जैमल रै रतनै सांखलै बरछी दोय २ छाती मांहै लगाई, मरम री लागी रांणौ मुवौ ।—नैणसी

६ संधि स्थान । ७ हृदय ।

८ युद्ध का एक वाद्य विशेष ।

उ०—हक्का १, इक्का २, **मरम** ३, काहल ४, पुप्फभेर भांणगं ५, पडहो ६, जुग ७, संख ८, करड ९, पागय १०, मुद्दल ११, कंसाल १२, रणनंदी १३, इति रणनंदी।—व. स.

वि०—छुपा हुआ, गुप्त, रहस्यमय।

उ०—सेस कूरम जितै समरम, इळा सुर ध्रम निगम आगम। सुखि तपो अण भरम प्रम सम, **मरम** निध जिम 'माल'।—रा. रू.

रू० भे०—मम्म, मरमु, मरमौ, मरम्म।

मरमक—एक प्रकार का आभूषण। (व. स.)

मरमग, मरमग्य—वि० [सं. मर्मज्ञ] १ वह जो किसी बात का गूढ़ रहस्य जानता हो, तत्वज्ञ।

२ रहस्य या भेद जानने वाला।

सं० पु०—१ प्रकाण्ड-पण्डित। २ विद्वान।

मरमचर—सं० पु० [सं० मर्म+चर] हृदय। (डि. को.)

मरमट—सं० पु०—१ गर्व, अभिमान।

उ०—लड़ खड़ती पड़ती लालरती, मेल मांग सिर संबर मरती। गी 'अभमल' अगं पड़ गळियां, **मरमट** मूंक मरद्दां मिळियां। —द्वारकादास दधवाड़ियो

२ बल, पौरुष, शक्ति।

मरमत—देखो 'मरम्मत' (रू. भे.)

उ०—बगतर, झिलम, जिरह-सूथण, जिरै जूता, घोड़ा री पाखरां काढजै छै, सुवारजै छै। मनैग्यांनै सारी तेवड़ कर रह्यो छै। सखरा रजपूत तयार कीजै छै। चिलकतां रा तह संभाळजै छै **मरमत** हुवै छै।—कुंवरसी सांखला री वारता

मरमपीड़ा—सं० स्त्री०—१ आन्तरिक पीड़ा।

२ मानसिक क्लेश।

मरमप्रहार—सं० पु०—शरीर के मर्मस्थल पर किया जाने वाला प्रहार, गहरी चोट।

मरममोख—सं० पु०—चोर। (ह. नां. मा.)

मरमर—सं० स्त्री० [सं० मर्मर] १ पत्तों की हल्की खड़कन।

२ वस्तुओं की परस्पर होने वाली हल्की रगड़न।

३ उक्त रगड़न या खड़कन से होने वाली ध्वनि। (उ. र.)

[फा० मर्मर] ४ एक प्रकार का सफेद पत्थर।

मरमराणौ, मरमराबौ—क्रि० अ०—१ परस्पर रगड़न का शब्द होना,

२ बोझ या दबाव के कारण वृक्ष की टहनी का मरमर शब्द करते हुए झुकना।

मरमरी—सं० स्त्री०—१ बेसन की पकोड़ी या सेव। (मेवाड़)

२ मरने की इच्छा।

ज्यूं—तनै कांई मरमरी आ री' है।

३ दूध या छाछ की ऊपरी सतह पर घी का छोटी छोटी गांठों के रूप में तैर आना।

रू० भे०—मिरमरी।

मरमस्थळ, मरमस्थांन—सं० पु० [सं० मर्मस्थल, मर्मस्थान] शरीर का वह नाजुक स्थान या संधिस्थल जहां चोट लगने से अत्यन्त दर्द होता है।

मरमी—वि०—१ मर्म का, मर्म सम्बन्धी।

२ मर्म जानने वाला।

मरमीक—देखो 'मरमग्य'।

उ०—पारबती अवतार प्रगटसी. कहियउ तरइ ब्रह्म **मरमीक**। —महादेव पारवती री वेलि

मरमु, मरमौ, मरम्म—देखो 'मरम' (रू. भे)

उ०—१ केवि दिखाडई खांडा **मरमु**, केवि तुरंगम जांणइ **मरमु**। चक्र छुरी किवि सावल भालइ, किवि हथियार पडंता झालइ। —पं. पं. च.

उ०—२ दुरगति पडतां प्रांणियां के, राखइ स्रीजिन धरम। कुटंब सहू को कारियूं रे, मति भूलउ भव **मरमौ** रे।—स. कु.

मरम्मत—सं० स्त्री० [फा०] १ टूटी हुई या क्षत विक्षत वस्तु को सुधारने व अच्छी स्थिति में लाने का कार्य, जीर्णोद्धार। (रिपेयर्स)

२ मारपीट, दण्ड।

रू० भे०—मरमत।

मरयाद, मरयादा—देखो 'मरजाद' (रू. भे.)

उ०—१ मेरु-गिरि **मरयादा** छे छती रे, सक्र दक्षिण दिस अधिपती।—जयवांणी

उ०—२ न करीजै जो नीक, लीक नहु सायर लंघै। **मरयादा** मेटतां सदा टालीजै संघै।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ बे **मरयादा** मित नहीं. ऐसे किये अपार। मैं अपराधी बापजी, मेरे तुमहि एक आधार।—दादूबांणी

उ०—४ सूरिज ऊगै पच्छिमें, मूंकै समुंद **मरयाद** रावत। ध्रुव चलै पिण न चलइ, सापुरिसां रा साद रावत।—प. च. चौ.

मरवट—देखो 'मरोट, मरोठ' (रू. भे.)

उ०—खंड पूंगळ खळ भळै, कोट **मरवटां** टळक्कै। देरावर डिगमगै, लसेवरि हा हीं संकै।—नैणसी

मरवण—सं० स्त्री०—अर्धांगिनी, पत्नी के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द।

उ०—१ आप चालिया चाकरी (जी) ढोला, **मरवण** ने लीजो साथ, जवाइयां री एळची।—लो. गी.

उ०—२ ऐ तो देरांण्या-जेठांण्या जाया हालरा। **मरवण** थे कांई जायी है धीव।—लो. गी.

२ एक राजस्थानी लोक गीत।

३ देखो 'मारवणी' (रू. भे.)

मरवौ—सं० पु० [सं० मरुबकः] १ बन तुलसी या बबरी जाति का एक पौधा, जो औषधि के काम आता है। इसे बागों में भी लगाया जाता है।

उ०—१ फागण फोगां महक केवड़ां मरवां वाळी । बरसाळै बंगाळ सस्य स्यांमळ हरियाळी ।—दसदेव

उ०—२ चंपा, मरवा, मोगरा, जुही जाये केतकी छै ।
—बगसीरांम प्रोहित री बात

२ एक राजस्थानी लोक गीत ।

३ दोहे छन्द का एक भेद जिसमें ७ गुरु व ३४ लघु होते हैं ।
(ल. पिं.)

रू० भे०—मरुग्रौ, मरुवउ, मरुवौ, मरूग्रउ, मरूवौ ।

मरसियौ-सं० पु० [ग्र० मर्सिय:] किसी मृत व्यक्ति के शोक में बनाया हुआ पद्य ।

मरहट—देखो 'मरघट' (रू. भे.)

उ०—तात मात वनिता सुत बंधु, जतन जीवतां करही रे । मूवां जाळि बाळि घरि आवै, ता मरहट तें डरही रे ।—ह. पु. वा.

२ देखो 'मरहठ' (रू. भे.)

मरहटी—देखो 'मरहठी' (रू. भे.)

मरहटौ-सं० पु०—१ उनतीस मात्राओं का एक छन्द विशेष जिसमें १०, आठ और ११ पर विश्राम होता है तथा अंत में एक गुरु व एक लघु होता है ।

रू० भे०—मरहट्टौ. मरहट्ठौ ।

२ देखो 'मरहठौ' (रू. भे.)

मरहट्ट, मरहट्टय—१ देखो 'मरहठ' (रू. भे.)

उ०—१ ले लच्छी मरहट्ट री, गूजर खंड अधीस । आय महालच्छी चरण, सींग नमायौ सीस ।—बां. दा.

उ०—२ जोणग चीण हूण मरहट्टय कोकय ड्रुंविलय कुलखय खर-मुख तुरगमुख सिंहमुख हयकरण गजकरण प्रभृति अनारय देस मनुस्य ।—व. स.

२ देखो 'मरहठौ' (मह., रू. भे.)

उ०—तद तीठी 'अभपति' विकट तौर, दळ दिखण भाग मरहट्ट दौर । दीन हो आसरीबाद दीध, कंकर तब बाजीराव कीध ।
—वि. सं.

३ देखो 'मरघट' (रू. भे.)

मरहट्टी—देखो 'मरहठी' (रू. भे.)

मरहट्टौ—१ देखो 'मरहटौ' (रू. भे.)

उ०—पद प्रतमत गुणतीस पढ़ि, अंत गुरु लघु होय । राघव जस जिण मंफ रटां, कहै मरहट्टा सोय —र. ज. प्र.

२ देखो 'मरहठौ' (रू. भे.)

मरहट्ठ—१ देखो 'मरहठ' (रू. भे.)

२ देखो 'मरघट' (रू. भे.)

मरहट्ठी—देखो 'मरहठी' (रू. भे.)

उ०—मरहट्ठी गादहि किसिउ कुंकुणउं वासई, मालवी वांछ किसिउं मारुयं भासइ, गोबर कीडउ किसिउं भ्रमर जिम रणझ-णइ······· ।—व. स.

मरहट्ठौ—१ देखो 'मरहटौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मरहठौ' (रू. भे.)

मरहठ-सं० पु० [प्रा० मरहट्ठ, सं० महाराष्ट्र] १ दक्षिण भारत का एक प्रदेश, महाराष्ट्र । (उ. र.)

उ०—कुंकण कंनवज नइं कलहटौ, मरहठ नइ मुलबारी । स्थंघळ सेतबंध नौ राजा, ते सवि लीया हकारी ।—रुकमणी मंगळ

रू० भे०—मरहट, मरहट्ट, मरहट्टय, मरहट्ठ, मारहट, मारहट्ट ।

२ देखो 'मरघट' (रू. भे.)

मरहठी-वि०—महाराष्ट्र का, महाराष्ट्र सम्बन्धी ।

सं० स्त्री०—महाराष्ट्र की भाषा, मराठी ।

रू० भे०—मरहटी, मरहट्टी, मरहट्ठी, मराटी, मराठी, मारहटी, मारहट्टी ,मारहठी ।

मरहठौ-सं० पु०—महाराष्ट्र प्रदेश का निवासी, मराठा ।

रू० भे०—मड़हट, मड़ैठौ, मरहटौ, मरहट्टौ मरहट्ठौ, मराठौ, मरेटौ, मरेठौ, मारहटौ, मारहट्टौ, मारहठौ ।

मह०—मरहट्ट, मरहट्टय, मारहट, मारहट्ट ।

मरहम—देखो 'मलम' (रू. भे.)

मराड़णौ, मराड़बौ—देखो 'मराणौ, मराबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां राखायत रजपूतां नूं कहै—हूं पूछूं अर मांमोजी मो ऊपर रीस कर मोनूं मराड़ै तो कुण छोडावै ?—नैणसी

उ०—२ मुंसा दादरां हूंत नागां मराड़ै । खुरां कीड़ियां हूंत हाथी खुंदाड़ै ।—सू. प्र.

उ०—३ लोक आधा पाछा होइ गया । आपरा हीज घोड़ा रजपूत मराड़ि गया ।—द. वि.

मराड़णहार, हारौ (हारी), मराड़णियौ—वि० ।

मराड़िग्रोड़ौ, मराड़ियोड़ौ, मराड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मराड़ीजणौ, मराड़ीजबौ—कर्म वा० ।

मराड़ियोड़ौ—देखो 'मरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मराड़ियोड़ी)

म'राज—देखो 'महाराज' (रू. भे.)

मराट-वि०—१ मारने वाला, मर्दन करने वाला, नष्ट व विध्वंस करने वाला ।

उ०—१ मांभी मीह मराट, 'पातल' रांण प्रवाड-मल । दुजडां किय द्रहबाट, दळ मैंगळ दांणव तणा ।—सूरायच टापरियौ

२ जबरदस्त, जोरदार ।

३ शक्तिशाली, बलवांन ।

४ सख्त, दृढ़, मजबूत ।

५ अधिक, बहुत ।

मराटी, मराठी—देखो मरहठी' (रू. भे.)

मराठौ—देखो 'मरहठौ' (रू भे.)

मराणौ, मराबौ—क्रि० स० ["मरणौ" क्रिया का प्रे० रू०] १ किसी मनुष्य, जीव या प्राणी को मारने के लिए प्रेरित करना, मरवाना, हत्या कराना, बध कराना।

२ युद्ध में झूंझने या वीर गति प्राप्त करने के लिये प्रेरित करना, उकसाना।

३ भूख या प्यास से पीड़ित करवाना, त्रास दिलाना।

४ पिटवाना, कष्ट, पीड़ा या दुख दिलवाना।

५ पराजित या परास्त कराना।

६ गुदा मैथुन या संभोग करवाना। (बाजारू)

मराणहार, हारौ (हारी), **मराणियौ**—वि०।

मरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मराईजणौ, मराईजबौ—कर्म वा०।

मराड़णौ, मराड़बौ, मरावणौ, मरावबौ—रू० भे०।

मरातब, मरातिब—सं० पु० [अ० मर्तबः] १ अधिकार युक्त पद।

उ०—१ मलिक तणा जूजूआ मरातब, मांहि भला भूंझार। दळ जोयतां दीस आथम्यउ, तुहि न आवइ पार।—कां. दे. प्र.

उ०—२ पांणी धांन चलावउ साथइ, सोबति वाहु अपार। आप आपणा मरातब लेज्यो, मांहि भला भूंझार।—कां. दे. प्र.

२ दर्जा, श्रेणी।

३ क्रमशः आने वाली अवस्थाएं।

४ तह पृष्ठ। ५ मकान। ६ मंजिल।

७ ध्वजा, पताका, झंडा।

८ प्रतिष्ठा, इज्जत।

यौ०—माहि-मुरातब।

मरायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मारने के लिए प्रेरित किया हुआ, हत्या या वध कराया हुआ, मरवाया हुआ। २ युद्ध में झूंझने या वीर गति प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया हुआ, उकसाया हुआ. ३ भूख या प्यास से पीड़ित करवाया हुआ, त्रास दिराया हुआ. ४ पिटवाया हुआ, कष्ट, पीड़ा या दुख दिराया हुआ. ५ परास्त या पराजित करवाया हुआ. ६ गुदा मैथुन कराया हुआ. (बाजारू) (स्त्री० मरायोड़ी)

मराळ, मराल—सं०पु० [सं० मरालः] (स्त्री० मरालि, मराली) १ हंस। (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा)

उ०—१ कीर कंवळ अर कोकिळा, अहि गज सिंह मराळ। उदै-राज देख्या इता, लूंवत एकहि डाळ।—उदयराज

उ०—२ देख हवाल भाल देवी, चाल मराळ चलाई। मोखमपुरै 'बिसन' हुय मांदो, पूरण अड़चल पाई।—मे. म.

उ०—३ डींभू लंक मराळि गय, पिक सर एहि वांणि। ढोला एही मारुई, जेहा हंभ निवांणि।—ढो. मा.

२ बतख की जाति का एक जलचर पक्षी, कारण्डव।

३ घोड़ा, अश्व।

४ हाथी। ५ बादल, मेघ।

६ अंजन, सुरमा।

७ अनार के वृक्षों का कुंज या बाग।

८ दोहा छंद का ६ वां भेद जिसमें १४ गुरु व २० लघु के अनुसार अड़तालीस मात्राएं होती हैं।

वि०—१ कोमल, चिकना।

२ छली, कपटी, बदमाश।

रू० भे०—मयराळ, मयराल।

मरावणौ, मरावबौ—देखो 'मराणौ, मराबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

मरावणहार, हारौ (हारी), **मरावणियौ**—वि०।

मराविओड़ौ, मरावियोड़ौ, मराव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मरावीजणौ, मरावीजबौ—कर्म वा०।

मरावियोड़ौ—देखो 'मरायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मरावियोड़ी)

मरिच—१ देखो 'मरीचि' (रू. भे.)

२ देखो 'मिरच' (रू. भे.)

उ०—१ तदनंतर वडां आव्यां, घणइ तेलइं सीना, घोलि भींनां, ऊपरि आगलु वाटु, जांणीइ किरि अम्रतनउ घाटु मरिचना चमत्कार, अत्यन्त सुकमार, हस्तिपद प्रमांण, प्रीणता प्राण······।—व. स.

उ०—२ दुग्धं गोधूम चूरणं घ्रत गुड सहितं नालिकेरस्य खंडं। द्राक्षा खरजूर सूंठी तज मरिच युतं पेसलं देव पुस्पम्।—व. स.

३ देखो 'मरीच' (रू. भे.)

मरियम—सं० स्त्री० [अ० मर्यम] ईसा मसीह की माता का नाम, जिसके कौमार्यावस्था में ही ईसा का जन्म हुआ था।

मरियाद, मरियादा—देखो 'मरजाद' (रू. भे.)

उ०—मरियाद मित्र पावन पवित्र, धन्यास्ति धन्य, गुरु अग्रगम्य। —ऊ. का.

मरियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ प्राणहीन, मृतक, मरा हुआ. २ वीर गति पाया हुआ, झूंझा हुआ. ३ भूख प्यास से व्याकुल, त्रस्त। ४ हत्या या कत्ल किया गया हुआ, नष्ट या मिटा हुआ. ५ न्यो-छावर, उत्सर्ग हुवा हुआ. ६ प्रेम में आसक्त, विव्हल या विकल हुवा हुआ. ७ कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ, सूखा हुआ. ८ मरणासन्न या मृत प्रायः हुवा हुआ. ६ अत्यन्त चिन्तित हुवा हुआ. १० कष्ट या विपत्ति का मारा हुआ. ११ बोझ या भार से दबा हुआ. १२ गुण समाप्त हुवा हुआ, अप्रयोज्य हुवा हुआ. १३ इच्छा, उत्साह, वेग आदि मंद हुवा हुआ, दबा हुआ. १४ पराजित या परास्त होकर बाहर हुवा हुआ, आउट. (प्लेयर) १५ पेठा हुआ, समाया हुआ.

(स्त्री० मरियोड़ी)

मरी-सं० स्त्री०—१ जनपद व्यापी एक भयंकर संक्रामक रोग जिससे तुरन्त मृत्यु होती है, महामारी।
उ०—१ बरस तीसरै मेह न वूठै, ईत मरी दुरभख भय ऊठै।
—सू. प्र.
२ मृत्यु, मौत।
रू० भे०—मारी।

मरीच-सं० पु० [सं०] १ एक रघुवंशीय राजा। (रांमरासौ)
२ काली मिरच।
३ काली मिरच का पौधा।
रू० भे०—मरिच।
४ देखो 'मारीच' (रू. भे.)
उ०—रावण जहां नांनी रहै, मात सुबाहु मरीच।—रांमरासौ
५ देखो 'मरीचि' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

मरीचि-सं० पु० [सं०] १ इक्कीस प्रजापतियों में से एक जो ब्रह्मा के नेत्र से उत्पन्न हुआ था। यह ब्रह्मा का प्रथम पुत्र था।
२ एक ऋषि जो भृगु के पुत्र एवं कश्यप के पिता थे।
३ एक स्मृतिकार ऋषि।
४ एक ज्योतिष शास्त्रज्ञ।
५ एक मरुत का नाम।
६ एक दानव जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था।
७ एक राजा जो वृषभदेव के वंश में उत्पन्न सम्राज नामक राजा का पुत्र था।
८ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। ९ कंजूस।
१० प्रकाश का अणु। ११ सूर्य।
सं०स्त्री०—१२ किरण, मयूख, रश्मि। (डिं. को.)
उ०—परैं मरीचि मांह पैं न छांह आलपत्र की। क्रमैं न बायु अत्र ताल पत्र तैं कलत्र की।—ऊ. का.
१३ मृग-तृष्णा।
रू० भे०—मरिच, मरीच, मरीची।

मरीचिका-सं० स्त्री० [सं०] १ किरण, रश्मि। (अ. मा.)
२ मृग-तृष्णा।

मरीची—देखो 'मरीचि' (रू. भे.) (अ. मा.)

मरीज-वि० [अ०] रोगी, बीमार।

मरीयंत-सं० स्त्री० [सं० म्रिङ्] महामारी।
उ०—मो पुर प्रज मो देस मझारै। मरीयंत दुरभख नह मारै।
—सू. प्र.

मरु-सं० पु० [सं० मृ+उ] १ वह भूभाग या प्रदेश जहां पानी न हो, केवल रेत के सूखे मैदान या टीले हों, रेगिस्तान, मरु-भूमि।
२ मारवाड़ व उसके आस पास का भू-भाग।
३ वह पर्वत जो जल रहित हो।
४ सूर्यवंशी राजा शीघ्र का उत्तराधिकारी एक राजा।
उ०—मरु जिण सुतण तपोबळ मंडै। खित गलिका परगट नव खंडै।—सू. प्र.
५ विदेह देश का एक निमिवंशीय राजा, जो हर्यश्व जनक नामक राजा का पुत्र था।
६ एक दैत्य जो नरकासुर का प्रमुख सहायक था।
रू० भे०—मरू।

मरुआड़ि, मरुआडि—देखो 'मारवाड़' (रू. भे.)
उ०—किलंबां संग्रांमि विचनउ करन्न। थरहरिय सवे मरुआड़ि थन्न।—रा. ज. सी.

मरुओ—देखो 'मरवो' (रू. भे.)

मरुक-सं० पु० [सं०] १ मोर, मयूर।
२ एक लोक समूह। (महाभारत)

मरुकांतार—रेगिस्तान, मरु-भूमि।

मरुग-सं० पु०—मरु प्रदेश, मारवाड़।
उ०—सगवण गज्जण सबर बरबरकाय चिलाय तुरंड गुंड उडकुड पक्कण चुक्कण कुडक्क तोसल सिंहल दमिल अज्जल विल्लल पारस खस लउस हारोसमोसहिम रोम मरुग पल्लव मालव बहुलिय सउलिय जोणग चीण हूण मरहट्टय कोकय डुंबिलप कुलखय खरमुख तुरगमुख मिढमुख हयकरण्ण गजकरण्ण प्रभ्रति अनारयदेस मनुस्य।
—व. स.

मरुत-सं० पु० [सं० मरुत्, मरुतः] १ वायु, पवन। (अ. मा.)
२ वायु का अधिष्ठाता देव।
३ इन्द्र। (ह. नां. मा.)
४ देवता। (डिं. को.)
५ एक देवगण, इनकी संख्या उनच्चास मानी गई है। ये कश्यप और दिति के पुत्र थे।
वि० वि०—कश्यप से उत्पन्न दिति के सभी पुत्र विष्णु द्वारा मारे गये तो दिति ने कश्यप से वर मांगा कि 'इन्द्र को मारने वाला एक अमर पुत्र मुझे प्राप्त हो। कश्यप ने दिति को यह वर दे दिया। इन्द्र को जब यह पता चला कि दिति अपने गर्भ में उसका काल पाल रही है तो वह साधु वेष में दिति के पास रहने लगा। एक बार मौका पाकर योगबल से उसने दिति के गर्भ में प्रवेश किया और उसके गर्भ को नष्ट करने के लिये उसके सात टुकड़े कर डाले। परन्तु जब वे नहीं मरे तो उन सातों के सात सात टुकड़े और कर डाले। (इस प्रकार ये उनच्चास हो गये) इस पर भी जब वे नहीं मरे तो इन्द्र ने समझ लिया कि वे किसी देवता के अंश हैं। अतः उसने इन्हें अपने भाई मान लिये। कालान्तर में दिति के जब उनच्चास पुत्र उत्पन्न हुए तो वह आश्चर्य चकित हो गयी और इन्द्र से इसका कारण पूछा। इस पर इन्द्र ने अपना रहस्य दिति को बताया और

उसके सभी पुत्रों को स्वर्ग में ले गया। वहां उन्हे यज्ञ के हविर्भाग का अधिकारी बना कर भाई की भांति रक्खा।

६ मनुष्य। (ह. नां. मा.)

७ पहाड़, पर्वत। (अ. मा., ह., नां. मा.)

८ मरुवक नामक एक पौधा।

९ एक महर्षि, जिसने शान्ति दूत बन कर जाने वाले श्रीकृष्ण की परिक्रमा की थी।

रू० भे०—मरुत, मरूत।

मरुतचक्र–सं० पु० [सं० मरुत=हवा+चक्रः] वातचक्र।

उ०—आंगणि जळ तिरप उरप अलि पिग्रति, मरुतचक्र किरि लियत मरू। रांमसरी खुमरी लागी रट, धुया माठा 'चंद' धरू।
—वेलि

मरुतजण–सं० पु०—राक्षस, असुर।

उ०—कंत कमळा कळह रटक पांणां करै, धाव वांणां करै कटक धाया। मरुतजण मोह सूं—र. रू.

मरुतवांन–सं० पु० [सं० मरुत्वत्] इन्द्र। (ह. नां. मा.)

मरुतसखा–सं० पु० [सं० मरुत्+सखः] १ इन्द्र। (ह. नां. मा.)

२ पवन।

मरुतसुत, मरुतसुति–सं० पु० [सं० मरुत्+सुतः] १ हनुमान, बजरंग।

२ भीम।

रू० भे०—मरुत्सुत।

मरुत्त–सं० पु० [सं०] १ तुर्वसुवंशीय एक राजा, जो महाराज करंधम का पौत्र और आवीक्षित का पुत्र था।

वि० वि०—इसके यज्ञ में देवता आकर काम करते थे। यह वैशाली का सुविख्यात सम्राट हुआ।

२ एक यादव राजा।

३ देखो 'मरुत' (रू. भे.)

मरुत्पति–सं० पु० [सं०] देवराज इन्द्र।

मरुत्पथ–सं० पु० [सं०] आकाश, अन्तरिक्ष। (डि. को.)

मरुत्सुत—देखो 'मरुतसुत' (रू. भे.)

मरुथळ—देखो 'मरुस्थळ' (रू. भे.)

मरुत्वत–सं० पु० [सं०] १ बादल, मेघ।

२ इन्द्र। ३ हनुमान।

मरुद—देखो 'मरद' (रू. भे.)

मरुदेव–सं० पु० [सं०] १ इक्ष्वाकु वंशीय एक राजा जो राजा सुप्रतीक का पुत्र था।

उ०—प्रतीकास जिण सुत बोह पौरस, जेण सुतण सुप्रतीक उजळ जस। सुत जे नप मरुदेव वयण सति, पूत्र जास सुनक्षत्र प्रथमि पति।—सू. प्र.

२ एक देव विशेष।

उ०—देव अनाथनाथ जगन्नाथ त्रिभुवनस्वांमि, विमलवाहन-चक्षुस्मंत- यसस्वी-अभिचंद्र-प्रसेनजित् मरुदेव-नइ अन्वयि नाभिरेस्वर-कुलनभस्थल-मयूसमाली, मरुदेवां-कुक्षिकंदरा-केसरिकिसोरक, समीहितारथकारी, सरवातिसयरवस्वधारी…… ।—व. स.

रू० भे०—मरुदेव।

मरुदेवी–सं० स्त्री०—भगवान ऋषभदेव की माता का नाम।

उ०—नाभिराय मरुदेवी नंदन, यगलाधरम निवारणहार।—स. कु.

रू० भे०—मरुदेवा, मरुदेवी।

मरुद्रथ–सं० पु०—घोड़ा।

मरुद्विप–सं० पु०—१ हाथी। २ ऊंट।

मरुदेस–सं० पु०—मारवाड़।

उ०—जिसा मरुदेसि कूपजल, जिसी सिला उच्च सरल।—व. स.

मरुधन्वा–सं० पु० [सं० मरु+धन्वन्] मरुस्थल, मारवाड़।

रू० भे० — मरुंधन्वा।

मरुधर–सं० पु०—मारवाड़ का एक नाम।

उ०—१ मरुधर देश वखांणिए।—धरम-पत्र

उ०—२ मरुधर गूजर सोरठ मालव पूरब सिंध संपूरि।
—मुनि जयसोम

रू० भे०—मरुध्धर, मरूधर।

मरुधरा–सं० स्त्री०—१ मारवाड़ का एक नामान्तर।

२ निर्जल भूमि।

रू० भे०—मरुभूमि, मारवधरा।

मरुधरियौ–सं० पु०—१ मारवाड़ का निवासी, मारवाड़ी।

वि०—२ मारवाड़ संबंधी, मारवाड़ का।

मरुध्धर—देखो 'मरुधर' (रू. भे.)

मरुभूमि—देखो 'मरुधरा'।

मरुयउ—देखो 'मरवौ' (रू. भे.)

उ०—सघ मिल्यउ करइ कांम उलट पट, कनक पीतल रूप तरुयउ रे। समयसुंदर कहइ स्रीसंघ सोहइ, वाड़ी मांहे जिम मरुयउ रे।
—स. कु.

मरुवण—देखो 'मारवण' (रू. भे.)

मरुवौ—देखो 'मरवौ' (रू. भे.)

उ०—जिहां किण कमल अपार रे र०, चांपौ मरुवौ वे दमणौ मालती रे। वउलसिरी सुखकार रे र०, जाई जूई रे दुखडां पालती रे।—वि. कु.

मरुस्थळ, मरुस्थलि–सं०पु० [सं० मरु+स्थल] निर्जल प्रदेश, रेगिस्तान।

उ०—१ दिस मरुस्थळ पति देस, व्रत अलख चख पंडवेस।
—रा. रू.

उ०—२ उसरक्षेत्रि इक्षुलता, मरुस्थलि गंगा तरंग, गिरिसिखरि पद्मनी, धूलिमाहि रत्न।—व. स.

रू० भे०—मरुथळ।

मरूंडीयौ—१ एक जाति विशेष।

उ०—ग्रावइ ऊड तलावीया, विणजारा बिलवाल। हूडदलीया हींडइ घणा, मरूंडीया गलि माल।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'मुंड' (ग्रल्पा., रू. भे.)

मरू-सं० पु०—१ मुर्छा, गश।

उ०—ग्रांगणि जळ तिरय उरप ग्रलि पिग्रति, मरुतचक्र किरि लियत मरू। रांमसरी खुमरी लागी रट, घुया माठा चंद घरू।

—वेलि

२ देखो 'मरु' (रू. भे.)

उ०—सुरायण पूर किया रिणसाज, बिढ़ै देविचंद ग्रनै बछराज। सदा तड़ वंकिय वांकिम सूर, मरू मुहणोत मंत्रि मगरूर।—सू. प्र.

मरूग्रउ—देखो 'मरवौ' (रू. भे.) (उ. र.)

मरूग्राड़ि—देखो 'मारवाड़' (रू. भे.)

मरूउ-सं० पु०—मुकुल।

उ०—दव जिम दीठइं करुणए करणइ ए हियुं निकांमु। मरूउ वरूउ दमनकि मन किहि नहीं य विस्रांमु।—जयशेखर सूरि

मरूक-सं० पु० [सं०[१ मोर, मयूर।

२ एक प्रकार का मृग।

मरूत—देखो 'मरुत' (रू. भे.)

मरूतयांन-सं० पु० [सं० मरुतः-यान] गरुड़। (ना. डि. को.)

मरूदेव—देखो 'मरुदेव' (रू. भे.)

मरूदेवा, मरूदेवी—देखो 'मरुदेवी' (रू. भे.)

उ०—वीनति सुणी रे म्हांरा वाल्हा, राजि मरूदेवा रांणी ना लाला।—वि. कु.

मरूधन्वा—मारवाड़ का एक नाम।

रू० भे०—मरुधन्वा।

मरूधर—देखो 'मरुधर' (रू. भे.)

उ०—इम ग्रचड़ां ग्रणपाळ, कंवरांगुर दिन दिन करै। मरूधर 'ग्रभमाल' ग्रति छक धारै 'ग्रजण' उत।—सू. प्र.

मरूधरौ—देखो 'मरुधर' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—मरूधरै देस महाराज मोटौ मरुद, कदै नहीं परज नैं चिंत कांइ।—ध. व. ग्रं.

मरूमंडळ-सं० पु०—मारवाड़।

मरूवौ—देखो 'मरवौ' (रू. भे.)

उ०—तिलक केसर कोरंट बकुल, पाडल वली रे। दमणौ मरूवौ कुसुमकली बहुविध मिली रे।—वि. कु.

मरेटौ—देखो 'मरहठौ' (रू. भे.)

उ०—मरेटां दिनै उ भूख करंतो जनेवां मूढै, एक घाव रोई टक जनेऊ उतार।—बद्रीदांन खिड़ियौ

मरेठी—देखो 'मुलेठी' (रू. भे.)

मरेठौ—देखो 'मरहठौ' (रू. भे.)

मरोड़-सं० स्त्री० [सं० मुरं] १ मोड़ने, घुमाने या ऐंठन डालने की क्रिया या भाव।

२ ऐंठन, बल।

उ०—राजाजी मूंछ्यां री मरोड़ बिखेरता कै'वण लागा—म्हैं केवूं सो ई थूं म्हनै ग्रेकलो छोडनै मत जाजै।—फुलवाड़ी

३ वात विकार के कारण पेट में होने वाली ऐंठन, दर्द, पीड़ा।

४ विरोध, शत्रुता।

उ०—चेटक पसंग न दै चीतोड़ौ, कन्या न ग्रापै गरथ करोड़। चगता रहै चतरगढ चढता, रहै ग्रकबर 'परताप' मरोड़।

—रांणा प्रताप री गीत

६ गौरव, मान, प्रतिष्ठा, इज्जत, ग्रान।

उ०—१ नौरा ले ले पीव सूं सांभरिया तणी कहै नारी, मैंल ग्राया सारी छत्री पणा री मरोड़।—दलजी महडू

उ०—२ गरज इणां री छिपावण ग्रौगुण नैं कमी ग्रापरी मरोड़ में जांणी।—नी. प्र.

७ वीरता, पराक्रम।

उ०—रहै न तन धन राखियां, कीधां जतन किरोड़। मांन लहै मरदां भलां, महि सुण बात मरोड़।

—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

८ गर्व, ग्रभिमान, घमंड।

उ०—१ रंग बंको राठौड़ ग्राह सुणी देवल तणी। मिरजा खांन मरोड़ गह लायौ गढ़ गूंजवै।—पा. प्र.

उ०—२ बोर कुल्यां मांहि ऊपनौ, तोने खाय मुंडा थी थूक्यौ रे। हीये मरोड़ राखै घणी, तू जाय छै ग्रवर चुक्यौ रे।—जयवांणी

उ०—३ बरसी दुलही दिव बधु, मन जिण ग्रांणि मरोड़। बर कंकण वर बंधियौ, माथै धरियौ मोड़।—वं. भा.

९ नायिका द्वारा नायक के सम्मुख किया जाने वाला ग्रभिमान।

उ०—ढोल्यो तो डगमग करै जी बना म्हारा, तकियो करै किलोळ। बनड़ो तो न्होरा करै जी बना म्हारा, बनड़ी करै मरोड़।

—लो. गी.

रू० भे०—मड़ोड़, मरड़, मरड. मुरड़।

मरोड़णौ, मरोड़बौ-क्रि० स० [सं० मुरम्] १ किसी वस्तु या शरीर के किसी ग्रंग को एक ग्रोर से दूसरी ग्रोर घुमाना, फेरना, ऐंठन या बल डालना, तनाव देना।

उ०—१ सु राव लाडक नूं गाबड़ सूं झालनै नीचै दियौ। नीचै दे हाथ मरोड़ तरवार ले राव झटकारी दी।—नैणसी

उ०—२ सूतौ बनड़ो सुख भर नींद, बाबोजी हैलो मारियोजी म्हारा राज। ऊठ्यौ बनड़ो ग्रंग मरोड़ जी कोई कुळ में सूरज ऊगियोजी म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—३ कर गहि मूंछ मरोड़ी मच्छर मनि भावतां। नांना विध रस राग रजा में गावतां।—ह. पु. वां.

२ नष्ट करना, समाप्त करना, मारना, उन्मूलन करना।

उ०—१ भांगेसुर वासुं रहि जुड़ण रिणवड़ हि जोड़ै। फतैखांन सारिखा म्लेछ भूग्र-डंड मरोड़ै।—रावमालदे री वात

उ०—२ मेल दळां पर दळां मरोड़ण, छव वरणां आधार छतो। अकल निधांन 'भीम' सुत ऊभां, हींदवसथांन नचीत हुतो।
—बुधजी आसियो

३ कष्ट या पीड़ा देना।

४ तोड़ना।

उ०—तिण जेम लंगरां बंध तोड़। मदभरां कंध नांखै मरोड़।
—वि. सं.

५ रूठना।

उ०—करमचंद भांनीदासोत, मदनै कन्हां मरोड़ाइ अर पाछो घिरियो। मदनै नूं कहियो म्हे तो थारा चाकर नहीं छां।—द. वि.

मरोड़णहार, हारौ (हारी), मरोड़णियौ—वि०।

मरोड़िग्रोड़ौ, मरोड़ियोड़ौ, मरोड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

मरोड़ीजणौ, मरोड़ीजबौ—कर्म वा०।

मरडुणौ, मरडुबौ—रू० भे०।

मरोड़फळी, मरोड़ाफळी—सं० स्त्री०—ओषधी में काम आने वाली एक फली विशेष, आवर्तनी।

वि० वि०—यह ऐंठन खाई हुई होती है। पेट में वात विकार के लिये गुणकारी होती है।

मरोड़ियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ एक ओर से दूसरी ओर घुमाया हुआ, फिराया हुआ, ऐंठन या बल डाला हुआ, तनाव दिया हुआ. २ नष्ट या समाप्त किया हुआ, उन्मूलन किया हुआ, संहार किया हुआ. ३ कष्ट या पीड़ा दिया हुआ. ४ तोड़ा हुआ. ५ रूठा हुआ. (स्त्री० मरोड़ियोड़ी)

मरोड़ी—सं० स्त्री०—१ लोह की बनी छोटी पेचदार कंटिया।

२ देखो 'मरोड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

रू० भे०—मड़ोड़ी।

मरोड़ौ—सं० पु०—१ वात विकार के कारण पेट में होने वाला दर्द, पीड़ा।

उ०—म्हारै तो पेट में मरोड़ौ चालण लागगो, नीतर म्है खुद दो हाथ बतावतो।—फुलवाड़ी

२ रक्तातिसार का रोग।

३ गर्व, अभिमान।

४ ऐंठन, बल। ५ घुमाव।

६ तेज गर्मी के कारण होने वाली उमस। (शेखावाटी)

७ देखो 'मरोड़ी' (अल्पा., रू. भे.)

मरोट, मरोठ—देखो 'मारोट, मारोठ' (रू. भे.)

उ०—सोलइसइ सतसठि समइ हो, नगर मरोट मझार।—स. कु.

मरोडी—सं० पु०—एक जाति विशेष का अफीम।

उ०—अमलां री रह-छह मंडी छै। भूरो, मेवती, काळी, किसनागर मरोडी, मुहरतोलो लाभै तिण भांत रो केसरियो, पोतां घोळियो, मनुहारां हुवै छै।—डाढाळा सूर री वात

मरौ—सं० पु०—मृत्यु, मौत।

उ०—म्रग लंछन सेति ध्यांन रह्यां, स्री सांति जिनेस्वर मुगति गया। पछै मेट दियौ सब जन्म मरौ स्री सांति जिनेस्वर सांति करौ।
—जयवांणी

मलंग—सं० पु० [फा०] १ मदारशाह के अनुयायी मुसलमान साधु।

२ मुसलमान सूफियों में मदारी शाखा के वे फकीर जो अविवाहित रहते हैं।

३ मस्त फकीर।

४ एक प्रकार का बड़ा बगुला, जिसकी चोंच पीली होती है।

५ छलांग, झंप।

उ०—१ मझि खगां झाट खेल्है मलंग। आफळै अणी पर धार अंग।—सू. प्र.

उ०—२ सूरां जमदाढ़ लई उण संग, लई रवि रेवत माड मलंग।
—मे. म.

उ०—३ तुरंग नूं लोह छकियो देखि पाळो ही कन्ह चहुवांण रीस रै साथै तरवारि छोडि नट रै माफिक मलंग भर पल्हण प्रतिहार रै जमदाढ़ जाय जड़ी।—वं. भा.

उ०—४ असमांन भ्रमत मानहु अर्वांन, लखि भुव बटेर तुट्यो सिवांन। अग हेरि मनहु चीता मलंग, झंप्योक बाज चंप्यो कुलंग।
—ला. रा.

६ छलांग लगाते हुए चलने की क्रिया।

उ०—करि साकणि डाकणि संग कई, लंगड़ा मग जंग मलंग लई।
—मे. म.

वि०—१ छलांग लगाने वाला।

२ मस्त, बेफिक्र, निश्चिंत।

३ पुष्ट, मोटा।

४ लापरवाह।

रू० भे०—मलंगो।

मलंगणौ, मलंगबौ—क्रि० अ०—१ छलांग लगाना, कूदना।

उ०—खगां जीतणां घाव मैं दाव खेल्है, मलंगै तड़ां माकड़ां पीठ मेल्है।—वं. भा.

२ कूद-कूद कर चलना।

मलंगणहार, हारौ (हारी), मलंगणियौ—वि०।

मलंगिग्रोड़ौ, मलंगियोड़ौ, मलंग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मलंगीजणौ, मलंगीजबौ—भाव वा०।

मलंगियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ छलांग लगाया हुआ, कूदा हुआ।

२ कूद कूद कर चला हुआ।

(स्त्री० मलंगियोड़ी)

मलंगो—देखो 'मलंग' (रू. भे.)

मळ, मल-सं० पु० [सं० मलः] १ शरीर से निकलने वाला मल-मूत्र, विष्ठा, गुह।

उ०—१ पेट धरै जायौ पछै, धवरायौ मळ धोय। जिण कारण जगदीस सूं, जगणी गरवी जोय।—बां. दा.

उ०—२ चुगली करतां चुगलरा, जुग होटड़ा जुड़ंत। मळ नांखण जांणै मिळै, दोय ठीकरा दंत।—बां. दा.

२ शरीर की चमड़ी या कपड़ों आदि पर लगने वाली गंदगी, मैल।

उ०—सहु पातक मल साबू, भल भल देवल जोज्यौ। देवल जोज्यौ हरखित होज्यौ, धुरि पातक मल धोज्यौ।—ध. व. ग्रं.

३ मनुस्मृति के अनुसार शरीर के बारह मल—बसा, शुक्र, रक्त, मज्जा, मूत्र, विष्टा, कान का मैल, नख, श्लेष्मा या कफ, आंसू, शरीर के ऊपर जमने वाला मैल, पसीना।

४ पाप,दोष, दुष्कर्म।

उ०—१ अकरण करण समरण अघ अणघट, सक रघुबर असरण सरण। लछवर सधर अमर नर रख लज, महपत समरत हरत मळ।—र. ज. प्र.

उ०—२ फूटै भांडे नीर गरक गाफिल नर सोवै। भजै नहीं भगवंत बहोड़ि मळ सूं मळ धोवै।—ह. पु. वां.

५ मनो विकार, दूषित भावना।

उ०—आखइ ताइ अरज करै ईसर नूं, सांम तूं हीज अपराध सहइ। मळ धारी मांनवी न मूंझइ, कहइ ज ब्रह्मा विसन कहइ।—महादेव पारवती री वेलि

६ कपूर। ७ समुद्र फैन। ८ धातु का मैल।

९ मिलावटी धातु विशेष।

१० मादा पशुओं के गर्भावस्था या प्रसव के कुछ समय बाद तक योनि मार्ग से गिरने वाला गंदा पदार्थ।

११ कमाया हुआ चमड़ा व इसका वस्त्र।

१२ देखो 'मळमास'।

१३ देखो 'मल्ल' (रू. भे.)

उ०—रंक रुलंदा मार कर, कोइ मल कहावै।—केसौ दास गाडण

मलउसीउं-सं० पु०—एक वस्त्र विशेष।

उ०—वीणउसीउं चीणउसीउ मलउसीउं आउंचीयउं मूगनउं''''''।—व. स.

मलकछ, मलकछौ-सं० पु०—एक शुभ घोड़ा, जिसके मस्तक पर चन्द्रमा के आकार का सफेद तिलक होता है तथा शरीर जामुनी रंग का व चारों पैर सफेद होते हैं। (शा. हो.)

मलका—देखो 'मलिका' (रू. भे.)

उ०—लख जुध ललकाराह, प्यारा तुकमा तो 'पता'। मिळिया मलका राह, हलकारा जस रा हमैं।—जुगतीदान देथौ

२ एक गुरु व एक लघु के क्रम से आठ वर्णों का एक छंद विशेष।

रू० भे०—मलक्का।

मलकाहुली-सं० स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—सघुड हाटथीया लूडइ, रथावली ऊथलावइ, मउडघा मांकड जिम खेलावइं, पाखरिया थाट हणइ, महायोध संमुख मणइ, दल बइ भाजि, जलसमुदाय गाजि, एतलइ समइ मलकाहुली वाजइं''''।—व. स.

मलक्का—१ मांसाहारी पक्षी विशेष।

उ०—जरख रीछ वहुाख, सिवा सत लस्स मलक्का। साकणि डायणि सकति, काळ भैरव काळक्का।—गु. रू. बं.

२ देखो 'मलका' (रू. भे.)

मलखंभ, मलखंम-सं० पु० [सं० मल्ल+खम्भ] १ लकड़ी का एक स्थम्भ जो कसरत के काम आता है।

२ इस थम्भे के साथ की जाने वाली कसरत।

रू० भे०—मल्लखंभ, मालखंभ।

मलजुध—देखो 'मल्लयुद्ध' (रू. भे.)

उ०—मलजुध कीयां विना रहवा री आखडी।—रा. सा. सं.

मळज्वर-सं० पु० [सं० मल+ज्वर] मल के रुकने के कारण होने वाला एक ज्वर।

मळण-सं० पु०—मालिश, उबटन।

उ०—मह मह सुगंध चिक्कस मळण, जीतण तप अहमद जुई। जह मह बिबाह लाडां जुड़ण, हाडां धर गहमह हुई।—वं. भा.

मळणौ, मळबौ-क्रि०स० [सं० मलनं] १ मालिश करना, उबटन करना।

उ०—सूती पड़ी रणौहि, जोयइ दिसि जातां-तणी। जोगी हाथ मळेहि, विलखी हुई वल्लहा।—ढो मा.

२ लेपन करना, पोतना।

३ दबाना, अधिकार में करना।

४ किन्ही दो वस्तुओं अथवा अंगों को परस्पर रगड़ना, मसलना।

उ०—१ बळोबळ मैंगळ बाह दुबाह, प्रळै लखि हाथ मळै पतिसाह।—मे. म.

उ०—२ जोड़ी जिसकी बीछड़ै, हाथ मळेसी जांह। बीच पड़ेसी अन्तरौ, हरिया हरि सुं तांह।—श्री हरिरांमदासजी महाराज

४ हाथ फेरना।

५ मिटाना, नष्ट करना।

उ०—'अभौ' छभा ईखियौ, ज्यास लेखियौ जणोजण। कांण मळण केवियां, जांण ध्रम कांम अरज्जण।—रा. रू.

उ०—२ चक्कल पिहुल मांसल स्तन युगल, गंभीर नाभीकूप, अत्यत मय रूप, नारंग छालि जिम युवान लाला मेल्हावती, मुनि तणां मन मूलहइ हलावती, अप्सरायण रूप मरट्ट मलती — व. स.

उ०—३ महि लियण सत्तरि अरि मलण मांण। सज्जे पयांण गज्जे निसांण।—रा. रू.

६ कुचलना। ७ मरोड़ना, ऐंठना। ८ पीसना।

६ देखो 'मिळणौ, मिळबौ' (रू. भे.)

उ०—पाय सिंघ गळ श्रड़ै चक्र भळहळै चउदह । मळै क्रोड तेतीस, उदौ सुरियंद श्रणंदह ।—देवि.

उ०—२ जोड़ गत्र टोळी मळी नाग जादी, वढ़ै सापने सांमळो सूर वादी ।—ना. द.

उ०—३ डमरां घुळतां श्रास मळेगौ श्रदोत वीहां । चमरां ढुळतां गोत भळेगौ चहुश्रांण ।—दुरगादत्त बारहठ

उ०—४ भटकै करकर भेक, घर घर श्रलख जगावता, दुनियां रा ठग देख, मळसीं पनिया मोतिया —रायसिंह सांदू

उ०—५ श्रपछर देख मळै श्राखाड़ै, विधन तणौ रचियौ वीमाह । रिणवट उरा बांधियौ 'रतनै' परा फौज श्रावी पतसाह ।—दूदौ

मळणहार, हारौ (हारी), मळणियौ—वि० ।

मळिश्रोड़ौ, मळियोड़ौ, मळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मळीजणौ, मळीजबौ—कर्म वा० ।

मल्लणौ, मल्लबौ—रू० भे० ।

मलतांन—देखो 'मुलतांण' (रू. भे.)

उ०—संधु सवालक्ष, ऊच मलतांन हींदूस्थांन, देवकूं पाटण, चीण माहाचीण भोट माहाभोट संखोद्धार······ ।—क. स.

मळद्वार-सं० पु० [सं० मलः+द्वार] १ शरीर की मल निकलने वाली इंद्रियां । २ गुदा ।

मळधारी-वि०—मल को धारन करने वाला ।

मलप—देखो 'मलफ' (रू. भे.)

उ०—१ या सुणतां ही लोह छक होय पड़ियै थकै ही मलप लेर चालुक्यराज हमीर कैमास री कांख में चंपिया श्रापरा स्वांमी नूं भाटकियौ ।—वं. भा.

उ०—२ श्रागळा कंध पड़छी श्रलप, मलप गुलाली मूंठियां ।
—मे. म.

मलपणौ, मलपबौ—देखो 'मलफणौ, मलफबौ' (रू. भे.)

उ०—१ इण विध मेळ श्रमेळ, करै साहां कळिनारौ । सीख करै साहसूं, श्रडर मलपियौ 'श्रजा' रौ ।—सू. प्र.

उ०—२ मारगि चालइ मलपता, जांणे परवत-माळ । काळा जिम कज्जळ-तणा, काळ-तणा पणि काळ ।—मा. कां. प्र.

उ०—३ मलपंति मदोमत्त मैंगळयं । बरखा रित जांणक वद्दळयं ।
—गु. रू. बं

उ०—४ सेना चालि, सेस हालि, माहाळै मही महीपति मलपता । नारि वरसूं प्रीति करसूं, मोद धरसूं जलपता ।—नळाख्यांन

उ०—५ जांणे हंस मलपीयौ सर मांन मभारां । हाथी जांण क हालीयौ, मद पीध बजारां ।—मयाराम दरजी री बात

उ०—६ मिगसर में वलि मलपिया, गज ज्यूं स्री गुरुराज । श्रावै 'श्राबू' श्ररचिया, जगनायक जिनराज ।

—जिनलाभ सूरि

मलपणहार, हारौ (हारी), मलपणियौ—वि० ।

मलपिश्रोड़ौ, मलपियोड़ौ, मलप्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मलपीजणौ, मलपीजबौ—कर्म वा० ।

मलपियोड़ौ—देखो 'मलफियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मलपियोड़ी)

मलप्पणौ, मलप्पबौ—देखो 'मलफणौ, मलफबौ' (रू. भे.)

उ०—१ परबत-माळ क चल्लै पाए, घणां पताखां श्रंबर छाए । फौजां मुहरि मलप्पै मैंगळ, पेरे जांणि पवन्नै बादळ ।—गु. रू. बं.

उ०—२ भूल पाटंबरं, लोहमै लंगरं । भ्रम्कुटे चम्मरं, मलप्पै कुंजरं ।—गु रू. बं.

मलप्पणहार, हारौ (हारी), मलप्पणियौ—वि० ।

मलप्पिश्रोड़ौ, मलप्पियोड़ौ, मलप्प्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मलप्पीजणौ, मलप्पीजबौ—कर्म वा० ।

मलप्पियोड़ौ—देखो 'मलफियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मलप्पियोड़ी)

मलफ-सं० पु०—१ छलांग, कुदान ।

उ०—१ रेसमी गलफां लोच टुकेक परीती लीधां, बोल दीधां भरै चीती मलफां बाजंद ।—महाराणा सरूपसिंघ रौ गीत

उ०—२ उद्दम श्रांगम श्राखड़ी, ताप मिडरता तंत । गाज मलफ एता गुणां, सीहां काज सरंत ।—बां. दा.

२ उडान । ३ झूमना क्रिया, मस्ती ।

४ प्रयाण ।

रू० भे०—मलप ।

मलफणौ, मलफबौ-क्रि० स०—१ छलांग लगाना, उछलना, कूदना, फांदना ।

उ०—१ तैं जेहा दीधा तुरी, श्रग जीपण मलफंत । चढ़ै जिकां श्रन पह चढ़ै, तोरण वारण तंत ।—बां. दा.

उ०—२ तास वरणागिये दीठि मनहतणौ मलफियौ सांमहौ कळह बेढ़ीमणौ ।—हा. भा.

उ०—३ श्रंग पसम सुलफ श्राघो कियां ऊठियौ, चख कुलफ खूटियां मलफै चीतौ ।—महादांन महड्

२ तेजी से श्रागे को बढ़ना ।

उ०—साह रौ जोध जोतां समंद । कठहड़ै चढ़ण मलफै कमंद ।
—वि. सं.

३ झूमते हुए चलना, झूमना ।

४ मंद गति से मस्त चाल चलना ।

५ उड़ान भरना, उड़ना ।

६ प्रयाण करना, चलना ।

७ फंदे में फंसना ।

८ दौड़ना, भागना ।

मलफणहार, हारौ (हारी), मलफणियौ—वि० ।

मलफिओड़ौ, मलफियोड़ौ, मलप्पयोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मलफीजणौ, मलफीजबौ—कर्म वा० ।

मलपणौ, मलपबौ, मलप्पणौ, मलप्पबौ, मलपफणौ, मलपफबौ, मल्हपणौ, मल्हपबौ, मल्हप्पणौ, मल्हप्पबौ—रू० भे० ।

मलफियोड़ो–भू० का० कृ०—१ छलांग लगाया हुआ, उछला हुआ, कूदा हुआ, फांदा हुआ. २ तेजी से आगे बढ़ा हुआ. ३ झूमते हुए चला हुआ, झूमा हुआ. ४ मंद गति से मस्त चाल चला हुआ. ५ उड़ान भरा हुआ, उडा हुआ. ६ प्रयाण किया हुआ, चला हुआ. ७ फंदे में डाला हुआ, फंसाया हुआ. ८ दौड़ा हुआ, भागा हुआ.

(स्त्री० मलफियोड़ी)

मलपफणौ, मलपफबौ—देखो 'मलफणौ, मलफबो' (रू. भे.)

उ०—उड्डै नभ रागनि लग्ग छछोह, मलप्फत पंच बरच्छनि बोह। सजै तिनपै असवार कजाक, छकै उन्मत दुबारनि छाक।—ला. रा.

मलपिफयोड़ो—देखो 'मलफियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० मलपिफयोड़ी)

मलबाथ–सं० स्त्री० [सं० मल्ल+राज० बाथ] १ मल्ल युद्ध में हाथों को पकड़कर छाती से भिड़ाने की क्रिया।

२ कुश्ती लड़ने का एक दाव, पेच।

मलबारी–सं० स्त्री०—१ एक फल विशेष जिसकी चटनी बनती है।

उ०—तदनंतर प्रधांन पीपलि, आखी आंबी, नलोडांनी कयरी, आबूआं आबां, मलबारी मिरीमंजरि, छूहारां लीबूआं, गिरनारी गिरमर, मारवाडां मुगीयां कयर, परवती राई प्रमुख साक पीरीस्यां।—व. स.

२ एक प्रकार का कपड़ा।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ'''''' पीतांबर चादर रक्तांबर नेत्रांबर खासरी सालूर चौलहिरां नीलुहुरां अरजरी मलबारी लाछरी अधोतरी'''''' ।—व. स.

मळबौ–सं० पु०—१ कूड़ा, कर्कट, फूस आदि का ढेर।

२ गिरे हुए मकान या इमारत के पत्थर, धूल आदि का ढेर।

३ निरर्थक वस्तुओं का ढेर, किसी वस्तु के टूटे हुए भागों का ढेर।

४ दौरे पर आने वाले हाकिमों व अन्य गांवाऊ खर्च के लिये गांव के भूमिधारी लोगों से वसूल की जाने वाली रकम।

उ०—मूंड मुंडायां तीन गुण गई माथा री खाज। मळबौ छोड्यो चौधरयां, हासल छोड्यो राज।—अज्ञात

मळमजण–सं० पु०—पानी, जल। (ह. नां. मा.)

मलम–सं० पु० [फा० मर्हम] घाव पर लगाने की औषधि।

उ०—१ मरणा री मार दुनिया में सब सूं तीखी अर खारी लागै, पण दिनां री मलम वगत लाग्यां उण मार री घाव ई मिळाय दे।—फुलवाड़ी

उ०—२ गांव अर घरवाळां वास्तै हळदी तौ ही दूखणियां रै माथै मलम ज्यूं।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मरहम, मल्लम, मल्हम, मल्हिम।

मलमपट्टी–सं० पु०—घाव या व्रण पर मलम लगाकर पट्टी बांधने की क्रिया, प्राथमिक चिकित्सा।

क्रि० प्र०—करणी, कराणी, होण।

मलमल–सं० स्त्री०—सूत के अत्यन्त बारीक डोरों का बना एक प्रकार का महीन कपड़ा।

रू० भे०—मुलमुल।

मलमलसाही–सं० पु०—एक वस्त्र विशेष।

उ०—रेसमी भइख, लाहि मही मुंदीसाही मलमलसाही प्रमुख नांनाविध भातिनां नांनाविध देसनां वस्त्र आंणी समस्त परिवार, नगर लोक पहिरावी नांमस्थापना कीधी।—व. स.

मळमळाणौ, मळमळाबौ—देखो 'मुळमुळाणौ, मुळमुळाबौ' (रू. भे.)

मळमळायोड़ौ—देखो 'मुळमुळायोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० मळमळायोड़ी)

मळमास–सं० पु० [सं० मल+मासः] १ मलिनमास।

[सं० मलमास] १ वह चांद्रमास जिसमें दो अमावस्या हो तथा सूर्य संक्रान्ति का अभाव हो।

वि० वि०—मलमास दो प्रकार के होते हैं, एक अधिमास जो सूर्य संक्रान्ति रहित होता है तथा दूसरा जिसमें दो सूर्य संक्रान्ति होती है, उसे क्षयमास भी कहते हैं। मलमास में मांगलिक कार्य नहीं किये जाते हैं।

मलमुलच–सं० पु० [सं० मलिम्लुचः] चोर। (अ. मा.)

रू० भे०—मलीमलुच, मुळमुच।

मळय–सं० पु० [सं० मलय] १ दक्षिण भारत की एक पर्वत माला जहां चंदन के वृक्ष अधिक पाये जाते हैं।

२ उक्त पर्वत के आस-पास का प्रदेश, मालावार प्रान्त।

३ उक्त प्रदेश का निवासी।

४ उक्त प्रदेश में होने वाला सफेद चंदन।

उ०—तोय भरणि छंटि ऊवसत मळय तरि, अति पराग रज धूसर अंग। मधु मद स्रवति मंद गति मल्हपति, मदोनमत्त मारुत मातंग।—वेलि

रू० भे०—मलै, मलैय।

६ एक उप-द्वीप।

७ इन्द्र का नन्दन वन। ८ बाग।

९ गरुड़ का एक पुत्र।

१० एक राजा जो प्रियव्रत वंशीय ऋषभदेव राजा का पुत्र था।

११ छप्पय छंद का एक भेद जिसमें २५ गुरु, १०२ लघु के अनुसार १२७ वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं या २५ गुरु, ९८ लघु के अनुसार १२३ वर्ण या १४८ मात्राएं होती हैं।

मळयगिरि–सं० पु० [सं०] १ दक्षिण भारत का मलय नामक पर्वत। २ उक्त पर्वत में होने वाला चंदन। ३ एक देश का नाम। (प्राचीन)

उ०—तत्र देसे गोमुख नरा, महाभोट ३ कोडि अस्व मुख नरा, कान्हडउ १२ लक्ष, चोड सारद्ध ३ लक्ष, मलयगिरि ७ लक्ष, पांडीउ १७ लक्ष, सिंघलद्वीप १ कोडि, चीण महाचीण २ कोडि, त्रंबावती एक कोडि,''''''इति देसा।—व. स.

रू० भे०—मळयागिरि, मळागरी, मळागिरी, मळियागर, मळियागरि, मळियागरी, मळियागिर, मळियागिरि, मळियागिरी, मळीआगिरि, मळीयागर, मळैगिर, मळैगिरि, मह्यियागिर।

मळयज–सं० पु० [सं० मलयज] १ चन्दन।

उ०—धूप दीप नैवेद पुस्प फळ, कस्मीरज मळयज नागज कळ। —मे. म

२ राहु नामक ग्रह।

वि०—१ मलय पर्वत में उत्पन्न होने वाला। २ शीतल। * (डिं. को.)

रू० भे०—मलयुज।

मळयद्रुम–सं० पु० [सं०] चंदन का वृक्ष।

मळयवासिनी–सं० स्त्री० [सं०] दुर्गा देवी।

मळयवासी–वि०—मलय देश का रहने वाला या निवासी।

मळयागिरि–सं० पु०—१ एक रंग विशेष। २ देखो 'मळयगिरि' (रू. भे.)

रू० भे०—मलागरी, मलागिर।

मळयाचळ, मलयाचल–सं० पु० [सं० मलय+अचल] मलय पर्वत।

उ०—१ सबळ जळ सभिन्न सुगंध भेट सजि, डिग मिग पाउ वाउ क्रोध डर। हालियौ मळयाचळ हूंत हिमाचळ। कांमदूत हर प्रसन कर।—वेलि

उ०—२ समुद्र रहई लवण मूंठि भेट, रोहणा चलनई रत्न भेठ, गंगा रहई कनकफल भेट, मलयाचल नई चंदन भेट, मेरूगिरि नइ सुवरण भेट, कल्पवृक्ष नई कांइ फल भेट।—व. स.

रू० भे०—मयाचळ, मळियाचळ।

मळयातर—देखो 'मलैतर' (रू. भे.) (नां. मा.)

मळयानिळ–सं० पु० [सं० मलय+अनिल] मलय पर्वत की ओर से आने वाली मंद सुगंध व शीतल वायु, मलयबयार।

उ०—ऐसे त्रिगुण कहतां, सीत मंद-सुगंध मलयानिळ लागौ सोई। त्यांही वसंत नै जनमत ही भूख त्रिस लागी छै।—वेलि टी.

रू० भे०—मिळीआनील, मिळीयानळ।

मळयालम–सं० पु०—१ भारत के पश्चिमी घाट के किनारे दक्षिण की ओर का एक पहाड़ी प्रदेश, वर्तमान केरल प्रान्त।

सं० स्त्री०—२ उक्त प्रदेश या प्रान्त की भाषा।

मळयाळी–सं० पु०—मलयालम में बसने वाली एक पहाड़ी जाति का नाम।

मलयुज—देखो 'मलयज' (रू. भे.) (नां. मा.)

मलयुद्ध—देखो 'मल्लयुद्ध' (रू. भे.)

मलयेचा–सं० पु०—चौहान वंश की एक शाखा।

मलयेचौ–सं० पु०—चौहान वंश की 'मलयेचा' शाखा का व्यक्ति।

मळरोधक–वि०—जो मल को रोकता है, कब्ज करने वाला।

मलवरक–सं० पु०—एक प्रकार का राजकीय कर या टैक्स विशेष।

उ०—दांण पूंछी हल भोभ भाग भेट तलारक्षक वद्धापन मलवरक बल चंचा चारिका गढ़ वाटी छत्र आलहण थोटक कुमारादिसुखडी इति क्रमेणाऽस्टादसा करा जाता।—व. स.

मलविद्या—देखो 'मल्लविद्या' (रू. भे.)

उ०—किता औखधि वैद विद्या प्रकासै। किता मलविद्या अखाड़ै कलासै।—अज्ञात

मळसाणौ, मळसाबौ–क्रि० स०—झल्लाना, चिढ़ना।

उ०—ढाल एक ऊंनै उरी लीधी छै। तदि कैवाटजी मळसाय नै कह्यौ, भांणेज, एकै हाथ ताळी बजावौ छौ। —कहवाट सरवहिये री बात

मळसायोड़ौ–भू० का० कृ०—झल्लाया हुआ, चिढ़ा हुआ. (स्त्री० मलसायोड़ी)

मळसिया–सं० पु०—ईंदा पड़िहार वंश की एक शाखा।

मलांण–सं० पु०—१ वाहन, सवारी।

उ०—सीतापति सबजांण, कांई अत बीनां करो। मह सीतळा मलांण, रासभ दीनौ राजिया।—किरपाराम

२ देखो 'म्लांन' (रू. भे.)

मलांणि, मलांणी—देखो मालांणि' (रू. भे.)

मळाई–सं० स्त्री०—१ दूध को गर्म करने पर उस पर आने वाली घी व गाढ़े पदार्थ की झिल्ली, परत, दूध की साढ़ी। दूध व दही पर आने वाली घी और कैसीन की परत।

उ०—नानांणौ जावण दै, दूध मळाइ पीवण दै, घी अर बटिया खावण दै।—फुलवाड़ी

२ सार तत्व, मुख्य तत्व। ३ मलने की क्रिया या भाव। ४ उक्त कार्य की मजदूरी। ५ देखो 'मिलाई' (रू. भे.)

मलाकरसी–सं० पु० [सं० मलाकर्षिन्] १ भंगी, महत्तर, हरिजन। २ कूड़ा कचरा साफ करने वाला।

मलाका–सं० स्त्री० [सं०] १ कामातुर स्त्री। २ दूती। ३ वेश्या, रंडी। ४ मादा हस्ती, हथिनी।

मलाखा-सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—मनसख कमखा चलाखा, मलाखा देवदूस्य बंधालग कोठालग कलगइ कोकची पंचवरण न यज''''''।—व. स.

मलाखी-वि०—अज्ञानी।

उ०—मलाखी पोपट जेहवा, देखीता रूपवंत। सास्त्रस्लोक न आवडइ, तस परि जांणी चींति।—मळदवदंती रास

मलागरी, मलागिरी—१ देखो 'मळयगिरि' (रू. भे.)

२ देखो 'मळयागिरि' (रू. भे.)

मलाजमत—देखो 'मुलाजमत' (रू. भे.)

उ०—स्री अजीम साहजादा री मारफत संवत् १७६७ वेसाख माहे पातसाह री मलाजमत कीनी ने महाराजा रो मनसब ठहरीयो।
—रा. वं. वि.

मलाणौ, मलाबौ—देखो 'मल्हाणौ, मल्हाबौ' (रू. भे.)

मलापणौ, मलापबौ—देखो 'मलाफणौ, मलाफबौ' (रू. भे.)

उ०—१ देतराज मलापनै राजकंवरी रै पाखती गियो।
—फुलवाड़ी

उ०—२ पाज माथै आय नै वो दो दो पगोतिया मलापतौ राजकंवरी नै झालण री पूरो मतो करियो ई ही के वा तो पांणी में पग धरतां ईं अदीठ व्हैगो।—फुलवाड़ी

उ०—३ मारग में मलापतां सिंघ खिरगोसिया नै फेर पूछ्यो—कित्तोक अळगो उण रो है किलो परकोटो।—फुलवाड़ी

उ०—४ सिंघ जोर सूं दहाड़तै उण माथै मलापियो।—फुलवाड़ी

मलापणहार, हारौ (हारी), मलापणियौ—वि०।

मलापिओड़ौ, मलापियोड़ौ, मलाप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मलापीजणौ, मलापीजबौ—कर्म वा०।

मलापियोड़ौ—देखो 'मलाफियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मलापियोड़ी)

मळाफ—देखो 'मलफ' (रू. भे.)

मलाफणौ, मलाफबौ-क्रि० स०—१ छलांग लगाना, उछलना, कूदना, फांदना।

२ झूमते हुए चलना, झूमना।

३ मंद गति से मस्त चाल से चलना।

४ उड़ान भरना, उड़ना।

५ प्रयाण करना, चलना।

६ दौड़ना, भागना।

मलाफणहार, हारौ (हारी), मलाफणियौ—वि०।

मलाफिओड़ौ, मलाफियोड़ौ, मलाफ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मलाफीजणौ, मलाफीजबौ—कर्म वा०।

मलापणौ, मलापबौ—रू० भे०।

मलाफियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ छलांग लगाया हुआ, उछला हुआ, कूदा हुआ, फांदा हुआ। २ झूमते हुऐ चला हुआ। ३ मंद गति से मस्त चाल से चला हुआ। ४ उड़ा हुआ, उड़ान भरा हुआ। ५ प्रयाण किया हुआ, चला हुआ। ६ दौड़ा हुआ, भागा हुआ।

(स्त्री० मलाफियोड़ी)

मलाबार-सं० पु०—भारत के पश्चिमि घाट के समुद्र तट पर स्थित प्रदेश, वर्त्तमान केरल प्रान्त का एक प्रदेश।

मलामली—देखो 'मलोमली' (रू. भे.)

मलायोड़ौ—देखो 'मल्हायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मलायोड़ी)

मलार-सं० स्त्री०—वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक राग। (संगीत)

उ०—१ रजै मलार सारंग, रितगं रंग मारगं। रसाल ताल सोरठी, सगांन तांन सांमठी।—रा. रू.

उ०—२ काछि काछि वन कीधी काया, उलसी अंब उम्रह धर आया। रित तिण साहब पावस राया, सुकवि चलावि मलार सुहाया।—आसो बारहठ

रू० भे०—मल्लार, मल्हार।

मलारी-सं० स्त्री०—वसंत ऋतु की एक रागिनी। (संगीत)

वि०—मलार का, मलार सम्बन्धी।

मलाल-सं० पु० [अ०] १ दुख, रंज।

२ पश्चात्ताप, अफसोस, उदासी।

३ कष्ट, तकलीफ।

४ एक खास रंग का घोडा।

उ०—चमराळ लखी फुलमाळ चकवीयै, केहर लाल प्रवाळ कीसै। अकड़ाळ चंगी बोहोराळ अजबीयै, जेजव बाज हीराळ जीसै, वस नाग सींगाळठी ताजीवै वैगड़, मांणक रूप मलाल कीयै।
—किसनजी धधवाड़ियौ

मलावण—देखो 'मळेवण' (रू. भे.)

मालवधंसी-वि०—१ मल को दूर करने वाला। (जैन)

२ कर्म रूप मल को दूर करने वाला। (जैन)

मलासय-सं० पु०—मल का स्थान, मलाशय।

मलि—देखो 'मैल' (रू. भे.)

उ०—मिय नांम सीत जाळै वरण नीला, जाळै नळणी थकी जळि। पातिग तिण द्वारिका न पैसै, मांजियै विण मन तणौ मलि।
—वेलि

मलिक-सं० पु० [अ०] (स्त्री० मलिका) १ बादशाह, सम्राट।

उ०—कवि कहइ सुजस, सद मलिक स्री अहिमद, दलइ दूजण मद सुहडवरो।—व. स.

२ शासक, अधीश्वर नवाब।

उ०—पणि कस्या एक पातसा स्री अकबर। जंबू द्वीप मांहइ

प्रवरसतु छइ, अन्य पराय रांणा, मोटा मीर मलिक, माहाभड़ खांन, खोजा सर क्षिल साहणा, ते सघला करइ सेवा......।

—व. स

३ बादशाही दरबार में होने वाली एक उपाधि।

उ०—किसा एक जे छइ राजाधिराज श्रीमहिमूद पातसाह। खांन खोजा मलिक मीरूंबरा मलांणा सहणा सलेदार तेहि करी सेवाय-मांन।—व. स.

रू० भे०—मिलक।

मलिका-सं० स्त्री० [अ० मलिक:] १ बादशाह की बेगम, साम्राज्ञी। २ किसी राजा की रानी, महारानी।

३ देखो 'मल्लिका' (रू. भे.)

रू० भे०—मलका।

मलिच्छ—देखो 'मलेच्छ, मलेछ' (रू. भे.)

मलिन-सं० पु० [सं०] १ अपराध, पाप, दोष।

२ रत्नों का एक दोष जिसके कारण वे धुंधले पड़ जाते हैं।

३ मट्ठा, तक्र। ४ सोहागा।

५ चन्दन, अगर। ६ गौ का ताजा दूध।

७ हंस। ८ दस्ता, मूठ, हत्था।

९ नखरा।

वि०—१ जो मल से युक्त हो। २ अपवित्र, गंदा, मैला।

३ जो दिल का काला हो, पापात्मा, पापी।

४ दुष्कर्मी, नीच, बुरा।

५ कान्ति हीन, प्रकाशहीन, मंद।

६ मेघाछन्न, अन्धकारमय, धुंधला।

७ उदास, म्लान। ८ दोष युक्त, दोषी।

रू० भे०—मळीण, मलीन।

मलिनता मलिनाई-सं० स्त्री०—१ मलिन होने की दशा, अवस्था या भाव। २ अपवित्रता, गंदगी, मैल।

३ उदासी। ४ फीकापन।

४ कालापन।

५ दोष, खराबी। ६ पाप।

रू० भे०—मलीनता।

मळियागर, मळियागरि, मळियागरी, मळियागिर, मळियागिरि, मळियागिरी—देखो 'मळयगिरि' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ साग साळ मलियागरी, वळि नाळेर विदांम। सोपारी खिरणी सरस, हेम हुवा तिहिं ठांम।—गजउद्धार

उ०—२ स्रीखंडू का डंबर समीर सैं झोला खावै। मळियागिर के भौळै भूलि पंखेसर मिणधर भुजंग आवैं।—सू. प्र.

उ०—३ मळियागिरी मंझार, हर को तर चंदण हुवै। संगत लियै सुधार, रूखां ई ने राजिया।—किरपारांम

मळियाचळ—देखो 'मळयाचळ' (रू. भे.)

उ०—विस्व सुबासित होय जिकै मुख बास हूं। मळियाचळ महकंत वसंत बिलास हूं।—बां. दा.

मळियातर—देखो 'मलैतर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

मलियेच—देखो 'मळेच्छ' (रू. भे.)

उ०—मलियेच सुणी यम सूर मटौं। तिण धूपर नाळ दियौ प्रवटौं।—पा. प्र.

मळियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ मालिश किया हुआ, उबटन किया हुआ. २ लेपन किया हुआ, पोता हुआ. ३ किन्ही दो वस्तुओं अथवा अंगों को परस्पर रगड़ा हुआ, मसला हुआ. ४ हाथ फेरा हुआ. ५ मर्दन किया हुआ, हनन किया हुआ, मिटाया हुआ. ६ कुचला हुआ, नाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ. ८ मरोड़ा हुआ, ऐंठा हुआ. ८ पीसा हुआ. ९ देखो 'मिळियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मळियोड़ी)

मलियौ-सं० पु०—१ बंदर। (उदयपुर)

२ देखो 'मल्लौ' (अल्पा., रू. भे.)

मलींदौ—देखो 'मलीदौ' (रू. भे.)

मळी-सं० स्त्री०—१ जस्ते का फूला जो गुलाब जल में घोट कर आंखों में डालते हैं आंखों की दवा विशेष।

२ आफत, बला। (जेसलमेर)

मली-सं० स्त्री०—१ ऊन भरने की बड़ी बोरी।

२ देखो 'मैल' (रू. भे.)

मलीआगिरि—देखो 'मळयगिरि' (रू. भे.)

उ०—ए चंदनकाठ किहां नीपनु मलीआगिरि परवति, माहा मसवाडि...... ।—व. स.

मलीच—देखो 'मलेच्छ' (रू. भे.)

उ०—पण उण मलीच जीव सूं वत्ता च्यार रिपिया देवणी नीं आवै। वो यूं ई उपरवाडी कांम सारणी चावतौ हौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पण वा तौ मलीच सुभाव री इण फूटोड़ा लोटा सूं ई धकावणी चावै।—फुलवाड़ी

उ०—३ कूंजड़ी रौ पैरवास देखनै सेठांणी मन में सोच्यौ के वा मूंजी घणी है। इत्तौ नफौ व्है तौ ई यूं मलीच री गळाई रै'वै।

—फुलवाड़ी

मळीचौ-सं० पु०—एक प्रकार का घास, जिसके बीजों का व्रत, उपवास के दिन शाकाहार के रूप में हलवा बनाकर खाते हैं।

रू० भे०—मणचौ, मणछौ, मणीचौ।

मळीजी-सं० स्त्री०—बलाय, आफत।

मलीण—देखो 'मलिन' (रू. भे.)

उ०—१ मंत्री मूढ़ मलीण, चाकर चोर सभीत चित। हलकारा सुध हीण, पैलां घर वांछै पिसण।—बां. दा.

उ०—२ सैवा उच्छव सांपना, मुगलां वदन मलीण। दिल्ली अति चाळौ दरस, पुर सौचियौ प्रवीण।—रा. रू.

उ०—३ कर मुख दे लचकाय कट, भमक चलै सुर भीण। माव-ड़ियो महिला तणी, मारै रोज मलीण।—बां. दा.

मलीणपुहकर–सं० पु०—चन्द्रमा। (नां. मा.)

मलीदौ–सं० पु० [फा० मलीदः] १ चूरमा नामक खाद्य पदार्थ।

२ उत्तम प्रकार के खाद्य पदार्थ एवं मिष्ठान्नादि के लिये प्रयुक्त शब्द।

उ०—ऊंची हाथी घोड़ा नी जातो रे, घणा मेवा मलीदा खातो रे। —जयवांणी

रू० भे०—मलींदौ।

मलीन—देखो 'मलिन' (रू. भे.)

उ०—१ विसयानंद मलीन विकारा, यह मान्या सो जुग जुग हारा।—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ सूमण पूछै सूम सूं, काहे मुख्ख मलीन। का गांठी सें गिर पड्या, का काहू को दीन।—अज्ञात

मलीनता—देखो 'मलिनता' (रू. भे.)

मलीनमुख–वि०—जिसका चेहरा उदास हो, खिन्न चित्त।

मलीनाथ—देखो 'मल्लिनाथ' (रू. भे.)

मलीमलुच—देखो 'मलमुलच' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

मलीमस–सं० पु०—१ लोहा।

२ पाप। ३ मलिन, मैला। ४ पापी।

मळीयागर—देखो 'मळयगिरि' (रू. भे.)

उ०—अंग री सुगंध इसी लखावै छै जांणै मलीयागर नै भेट हर पवन आवै छै।—पनां

मलीर–सं० पु०—सिंधियों में, वर को ओढाया जाने वाला एक छपा हुआ वस्त्र विशेष, जो सगाई का प्रतीक होता है।

मलुक, मलूक–सं० पु० [अ० मुलूक] १ युवक।

उ०—तरै छोकरी कह्यौ—अठै तळाव मांहै नींबौ सीमाळोत कंवर एक सो चालीस सारीखा मलूक लियां भूलै छै। तिण री सुवास छै।—नैणसी

२ बादशाह, राजा, नरेश।

३ घोड़ा, अश्व।

उ०—पाव घड़ी जोजन परा, जिकै सहज मझ जाय। कसि मलूक गदरा किया, इसड़ा हाजर आय।—सू. प्र.

४ बन्दर। ५ पुष्प, फूल।

उ०—विवह करन्न कप्पड़ा, विवह वरन्ना पाग। फजर हुवंदी फूलिया, जांण मलूकां बाग।—गु. रू. बं.

६ एक प्रकार का पक्षी विशेष।

७ एक प्रकार का कीड़ा।

८ उदर, पेट।

९ एक बहुत बड़ी संख्या। (बौद्ध शास्त्र)

वि०—१ कोमल, सुकुमार, नाजुक।

उ०—१ पग हाथ मलूक ज पंकजयं। गुणि छत्तिय गात विन्है गजयं।—वचनिका

उ०—२ इसी इसी खोडस वरसां री मुगधा मध्या प्रोढ़ा रूप रो निधांन। जाका मलूक हाथ-पांव। जंघा कदळी को गरभ। बांह चंपा री डाळ। सिंघ सी कमर। कुच नारंगी।—रा. सा. सं.

२ सुन्दर, मनोहर, मनोरम।

३ मुलायम, नरम।

रू० भे०—मल्लूक।

अल्पा—मलूकौ।

मलूकजादौ–सं० पु०—शाहजादा, राजकुमार।

उ०—उवै कांमणी घणै क्रिसनागर कस्तूरी अंबर अंतर सांधे सूं गरकाब हुई थकी उवां राजां रा मलूकजादां रा मन राखती थकी लोट पोट हुइ रही छै।—रा. सा. सं.

मलूकौ–सं० पु०—१ नरसिंह चौदस के रोज हरिणकश्यप का वेष करने वाले का सम्बोधन।

२ देखो 'मलुक, मलूक' (अल्पा., रू. भे.)

मलेच्छ, मलेछ–सं० पु० [सं० म्लेच्छ] (स्त्री० मलेच्छणी, मलेछणी)

१ आर्य संस्कृति के अनुसार मनुष्य की वे जातियां या वर्ग जिनमें वर्णाश्रम धर्म न हो, शूद्र।

उ०—१ जिसो अग्नि माहि उचिस्ट होम करै छै। कि जिसौ सालिग्रांम सूद्र का ग्रह कै विखै। कि जिसौ मलेछ के मुखि वेदमंत्र। —वेलि टी.

उ०—२ आगै कोई गुजराती लोक भील मलेछ रैहता सु सारा दूर कीया।—नैणसी

२ यवन, मुसलमान।

उ०—१ पढावौ कुरांण आछा बणावौ मलेछ पाता। समापां जागीरी लाख लाख लख रो सांमान।

—गोकळदास सक्तावत रो गीत

उ०—२ वौ दातार है, सूरवीर है, दोनूं पख ऊजळा है, अनैं मलेछ मुसळमांनां रो चाकर नहीं। मुसलमांनां सूं सगारथ नहीं। —वी. स. टी.

३ अनार्य। ४ जाति बहिष्कृत। ५ तांबा।

६ अस्पष्ट या जंगलियों की तरह बोलने की क्रिया।

वि०—१ निकृष्ट, नीच, हीन, हेय।

उ०—अमूछा मलेछा बली मन्न खोटा, जियां चक्खु चुंचा लुल्या गाल गोटा।—ध. व. ग्रं.

२ गंदा, मैला।

३ अस्पष्ट या जंगलियों की तरह बोलने वाला।

रू० भे०—मलिच्छ, मलियेच, मलीच।

मलेछणी–वि०—१ मुसलमान की, मुसलमानी, यवनों की।

उ०—कमंध स्यांम कांमयं जुटै अरद्ध जांमयं। मुड़े घड़ा मलेछणी, विचार धार भज्जणी।—रा. रू.

२ म्लेच्छ की, म्लेच्छ सम्बन्धी।

३ देखो 'म्लेच्छ' (स्त्री०)

मलेछमुख-सं० पु० [सं० म्लेच्छ+मुख] तांबा नामक प्रसिद्ध धातु। (अ. मा., ह. नां. मा.)

मलेरिया-सं० पु० [अं०] एक प्रकार का ज्वर जो वर्षा ऋतु के मच्छरों के काटने पर फैलता है।

मळेवण—देखो 'मेळण' (रू. भे.)

मळै—देखो 'मलय' (रू. भे.)

उ०—मळयाचळ सुतनु मळै मन मोरै, कळी कि कांम अंकूर कुच। तणी दखिणदिसि दखिण त्रिगुणमै, ऊरध सास समीर उच।—वेलि

मळैअद्र—देखो 'मलयगिरि'।

उ०—अटा टोप वनां री चनणां कीधां मळैअद्र, संभु नळै ऊजळै वचाळै रांणां सैण। दीपै मानताळ हंसा मंडळी नवास दीधा, कबंदां मंडळी लीदां दुसरा 'कुंभैण'।—कविराजा बांकीदास

मळैगिर, मळैगिरि—देखो 'मलयगिरि' (रू. भे.)

उ०—१ राजा दूजो मूळराज, दिखणातां दळ लोप। अडर मळैगिर कावियो, सुरपत जेम सकोप।—बां. दा.

उ०—२ ओपम दुती मळैगिर आंणै। जळ भंपियो हणु' कपि जांणै।—सू. प्र.

मळैतर, मळैतरि, मळैतरु-सं० पु० [सं० मलय-तरु] चंदन का वृक्ष व इस वृक्ष की लकड़ी।

उ०—१ जेथ मळैतर मेखचा, गडै मळैतर मेख। जळै मळैतर ईंधणा, दळचाळक री देख।—बां. दा.

उ०—२ दिसि निहंग बूंग उडुं दवंग, अगन बांण उडुं बहत। आवंत मळैतर उड्डिया, अहिक पंख मिण संजुगत।—गु. रू. बं.

उ०—३ ऊकड़ा भिड़ि दुहुं कड़ा आंणि। जड़किया मळैतर नाग जांणि।—सू. प्र.

रू० भे०—मलयातर, मलियातर।

मलैयंद्र—देखो 'मलय' (रू. भे.)

उ०—ऊमा तात अंदु हेम पवै मलैयंद्र ईस, देवताळ वध दांणु छुटीया दंताळ। कांम ग्रछ जात सो कहांणां बीच च्यार कूंटां, प्रतपै छ व्रनां पाळ रांणा छटी पाळ।—कविराजा बांकीदास

मलोमली-क्रि० वि०—जबरदस्ती से, बलात्।

उ०—तठै पातसाहजी री हुकम हुवौ के अमरसिंघ जांणै नहीं पावै अरु अमरसिंघजी मलोमली नीसर गया।—द. दा.

रू० भे०—मलामली।

मलौ-सं० पु०—जंगल की कंटीली झाड़ी।

मल्कियत—देखो 'मिल्कियत' (रू. भे.)

उ०—सो ऊ पकड़ियौ आयो थो सो छोड दियो उण री माल मल्कियत बहाल राखी।—नी. प्र.

मल्ल-सं० पु० [सं०] १ एक प्राचीन जाति।

वि० वि०—इस जाति के लोग द्वन्द्व युद्ध में निपुण होते थे।

२ द्वन्द्व युद्ध करने वाला योद्धा।

उ०—सेल धमेड़ां सल्ल पड़ै मल्लां प्रति मल्लां। भल्लां भल्लां भणै ऊगतां भड़ां अमल्लां।—ऊ. का.

३ योद्धा, वीर, बहादुर।

उ०—१ नमो मुर-मेघ-मरद्दण मल्ल। कंसासुर काळ संखासुर सल्ल।—ह र.

उ०—२ कवि पंडित गायक कथक, मंत्री गज भड़ मल्ल। तो दरबार जिता तिता, जग चावा जेहल्ल।—बां. दा.

उ०—३ माझी मीर बलक्की मल्लं, मीर सैद पट्ठांण मुगल्लं।—रा. रू.

४ एक प्रकार का युद्ध, द्वन्द्व।

५ पहलवान।

उ०—१ दोनूं जणा राईकांणी री वात मांनग्या। डोकरी माथा माथै ओडी उखणियां हालती री अर मल्ल मलापनै ढकणी रा टुचकणा माथै चढ़ग्या। चढ़तां ईं बूकिया ठोर नै भिड़ग्या।—फुलवाड़ी

उ०—२ पंडित साला लेख साला भंडारी कोठारी मांडवीया मल्ल हस्ति तुरंग रथ पायक टंकसाली व्यायांमकारक......।—व. स.

६ एक संकर जाति।

७ एक प्राचीन जनपद।

८ मजबूत या ताकतवर व्यक्ति।

९ प्याला, कटोरा।

१० कपोल, कनपटी। ११ नैवेद्य।

१२ अयोध्यापति राम के मंत्री सुज्ञ का पुत्र।

१३ धर्म के सात पुत्रों में से एक।

१४ मल्ल देश के रहने वाले का सम्बोधन।

१५ एक राक्षस।

वि०—१ बलवान, ताकतवर।

२ मजबूत, दृढ़। ३ कसरती।

४ रोबीला। ५ अच्छा, उत्तम।

रू० भे०—मल। मह०—माल।

मल्लक—एक व्यवसायिक जाति।

उ०—कणकार वेस्याकार, चरमकार मल्लक खलक धान्यखलक वाटक वाटिका वावी पुस्करणी क्रीडातडाग सरोवर।—व. स.

मल्लखंभ—देखो 'मलखंभ' (रू. भे.)

मल्लजुध, मल्लजुध्ध—देखो 'मल्लयुद्ध' (रू. भे.)

उ०—जुडित्त एक जोरदार, थोर भुज्ज डंड ए। जेठी प्रचंड प्रौढ पिंड मल्लजुध्ध मंड ए।—गु. रू. बं.

मल्लणौ, मल्लबौ—१ देखो 'मलणौ, मलबौ' (रू. भे.)
२ देखो 'मिळणौ, मिळबौ' (रू. भे.)

मल्लताळ-सं० स्त्री०—संगीत में एक ताल।

मल्लभूमि-सं० स्त्री० [सं०] १ मल्ल युद्ध का स्थान, युद्ध-भूमि।
२ कुश्ती लड़ने का स्थान, अखाड़ा।

मल्लम—देखो 'मलम' (रू. भे.)

मल्लयुद्ध-सं० पु० [सं०] १ बिना किसी अस्त्र-शस्त्र के दो योद्धाओं के बीच होने वाला युद्ध, द्वन्द्व युद्ध।
२ कुश्ती।
रू० भे०—मलजुध, मलयुद्ध, मल्लजुध, मल्लजुध्ध।

मल्लयोद्ध-सं० पुं०—मल्ल युद्ध करने वाला योद्धा।
उ०—चित्रक देसालिक मसूरिक अंककार फलिहकार मल्लयोद्ध सख्यपाल बालबंध अंगरक्ष वीरमहर धनुरद्धर खड्गधर ....। —व. स.

मल्लविद्या-सं० स्त्री० [सं०] कुश्ती लड़ने की विद्या।
रू० भे०—मलविद्या।

मल्लसाळा-सं० स्त्री० [सं० मल्लशाला] १ मल्लयुद्ध करने का स्थान।
२ कुश्ती लड़ने का स्थान, अखाड़ा।

मल्ला—देखो 'माळा' (रू. भे.)

मल्लाखाड़ौ-सं० पु०—पहलवानों का अखाड़ा।
उ०—रतनसेन राजा कहै रे, हुं जीपूं निरधार। मल्लाखाड़े रण मुखें रे, रांमति कउण प्रकार रे।—प. च. चौ.

मल्लार—देखो 'मलार' (रू. भे.)

मल्लारि-सं० पु० [सं० मल्ल+अरि] मल्ल नामक राक्षस के शत्रु कृष्ण, शिव।

मल्लारी-सं० स्त्री०—बसंत ऋतु की एक रागनी। (संगीत)

मल्लाह-सं० पु० [अ०] नाव चलाकर आजीविका चलाने वाला, धीवर, मांझी, केवट, नाविक।

मल्लि-सं० पु०—जैनियों के उन्नीसवें तीर्थंकर।
उ०—मल्लि जिनेसर तु माहामल्ल, हणिया मोह मदन हैं ठल्ल। पिता तणी पिण चिंता पल्ल, सगला दूर किया अरि सल्ल। —ध. व. ग्रं.

मल्लिक-सं० पु० [सं०] एक प्रकार का हंस जिसके पांव व चोंच कुछ मेले या धूमिल होते हैं। (वसंतराज)

मल्लिका-सं० पु०—१ प्रत्येक चरण में एक रगण एक जगण अन्त में गुरु लघु सहित आठ वर्ण का वर्णिक छंद।
२ चमेली।
३ एक प्रकार का बेला, जिसे मोतिया भी कहते हैं।
रू० भे०—मलिका, मल्ली।

मल्लिकाक्ष-सं० पु० [सं० मल्लिका अक्षि] १ एक प्रकार का घोड़ा जिसके आंख पर सफेद धब्बे होते हैं।
२ उक्त प्रकार के सफेद धब्बे।
३ एक प्रकार का हंस जिसके चरण व चोंच मेली हो।

मल्लिकामोद-सं० पु०—ताल का एक मुख्य भेद जिसमें चार विराम होते हैं। (संगीत)

मल्लिकारजुन-सं० पु० [सं० मल्लिकार्जुन] १ एक शिव लिंग जो श्री शैल पर प्रतिष्ठित है।
२ एक राजा का नाम।
उ०—राय पितामह अप्रतिमल्ल मल्लिकारजुन नरेस्वर सिरः सरोज पूजा प्रसिद्ध प्रभावु......।—व. स.

मल्लिजिन, मल्लिनाथ-सं० पु०—जैनियों के उन्नीसवें तीर्थंकर।
उ०—१ मल्लिजिन मिल्यउ री मुगति दातार।—स. कु.
उ०—२ मल्लिनाथ उगणीसम साहु सहस चालीस।—ध. व. ग्रं.

मल्लिनाथ-सं० पु० [सं०] एक प्रसिद्ध संस्कृत टीकाकार जो १४ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुए थे।
रू० भे०—मलीनाथ।

मल्लिवाल-सं० पु०—एक देश का नाम। (प्राचीन)
उ०—अवध्या वणारसी चंदेरी मल्लिवाल महबर महोब हरियांणउ भयाणउ रत्नपुर कांमरू ओडियांण जाळंधर।—व. स.

मल्ली—देखो 'मल्लिका' (रू. भे.)

मल्लीत—देखो 'मसलति' (रू. भे.)
उ०—सभै एम मल्लीत, प्रकट इम लिखे पठांणां। अम्हां उतन कर दियौ, सोन गिरि वर सुरतांणां।—सू. प्र.

मल्लूक—देखो 'मलूक' (रू. भे.)
उ०—मल्लूक पसम मुखमल कुमाच।—सू. प्र.

मल्लौ-सं० पु०—१ व्यायाम हेतु उठाने का एक बड़ा पत्थर जिसमें खुदाई करके पकड़ने का हत्था बनाया हुआ होता है।
२ उक्त पत्थर को उठाने की क्रिया।
वि०—मस्त, मतवाला।
रू० भे०—मालौ।
अल्पा०—मलियौ।

मल्हडौ-सं० पु०—एक जाति विशेष का घोड़ा। (का. दे. प्र.)

मल्हणौ, मल्हबौ—देखो 'माल्हणौ, माल्हबौ' (रू. भे.)
उ०—सावण री तीज पावासर रै हंस ज्यूं मल्हती थकी सुख भीनै गात रंग भप करती आई।—कुंवरसी सांखला री वारता
मल्हणहार, हारौ (हारी), मल्हणियौ—वि०।
मल्हिओड़ौ, मल्हियोड़ौ, मल्हयोड़ौ—भू० का० कृ०।
मल्हीजणौ, मल्हीजबौ—भाव वा०।

मल्हपणौ, मल्हपबौ—देखो 'मलफणौ, मलफबौ' (रू. भे.)
उ०—१ मसतकि बांधै मौड़, धारै भुज हिंदू धरम। मेछ घड़ा विसि मल्हपिओ, 'रतनागिर' राठौड़।—वचनिका

उ०—२ तोय झरणि छंटि ऊघसत मळयतरि, अति पराग रज धूसर अंग। मधू मद स्रवति मंद गति मल्हपति, मदोनमत्त मारुत मातंग।—वेलि

उ०—३ मारू-लंक दुइ अंगुळां, वर नितंब उर मंस। मल्हपइ मांझ सहेलियां, मांन सरोवर हंस।—ढो. मा.

उ०—४ मारवणी सिणगार करि, मंदिर कूं मल्हपंति। सखी सुरंगी साथ करि, गयगयणी गय गंति।—ढो. मा.

उ०—५ मल्हपियौ रूप अछियांमणौ, बहसतौ बंबाड़तौ। उरड़तौ सुजड़ जड़तौ असुर, पांच हजारी पाड़तौ।—सू. प्र.

मल्हपणहार, हारौ (हारी), मल्हपणियौ—वि०।

मल्हपिओड़ौ मल्हपियोड़ौ, मल्हप्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मल्हपीजणौ, मल्हपीजबौ—कर्म वा०।

मल्हपियोड़ौ—देखो 'मलफियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मल्हपियोड़ी)

मल्हप्पणौ, मल्हप्पबौ—देखो 'मलफणौ, मलफबौ' (रू. भे.)

मल्हप्पियोड़ौ—देखो 'मलफियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मल्हप्पियोड़ी)

मल्हम—देखो 'मलम' (रू. भे.)

मल्हांण-सं० पु०—पड़ाव।

उ०—१ दोयज छळि बळ दक्खण, खीटावण खुरसांण। दीनो आवै दखणिऐ, कटकै कोस मल्हांण।—गु. रू. बं.

मल्हाणौ, मल्हाबौ-सं० पु०—१ मस्ती में झूमना, झूमते हुए चलना।

२ विध्वंस करना, नाश करना, अस्त-व्यस्त करना।

उ०—पिलंगि महारिण पौढ़ियौ. काळौ भलां कहाय। जस जोबण साजै 'जसौ', मणिमथ फौज मल्हाय।—हा. झा.

३ मलार राग गाना, अलापना।

उ०—कवण देसतइं आवियां, किहां तुम्हारउ वास। कुंण ढोलउ कुंण मारुवी, राति मल्हाया जाम।—ढो. मा.

मल्हाणहार, हारौ (हारी), मल्हाणियौ—वि०।

मल्हायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मल्हाईजणौ, मल्हाईजबौ—कर्म वा०।

मलाणौ, मलाबौ—रू० भे०।

मल्हायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मस्ती में झूमा हुआ, झूमते हुए चला हुआ. २ विध्वंस, नाश या अस्त-व्यस्त किया हुआ. ३ मलार राग गाया हुआ, अलापा हुआ.

(स्त्री० मल्हायोड़ी)

मल्हार—वि०—१ प्यारा, प्रिय।

उ०—ऋखभ लांछन सुखकार रे, स्रीश्रेयांस मल्हार रे। सत्यकी उरि अवतार रे, रुकमणि नउ भरतार रे।—स. कु.

२ देखो 'मलार' (रू. भे)

उ०—१ ढाढी गाया निसहू भरि, राग मल्हार निवाज। च्यार पहर झड़ मांडियउ, घण गुहिरइ सुरराज।—ढो. मा.

उ०—२ कह्यौ—मल्हार आलापौ, ताहरां मल्हार आलापतां मेह आयौ।—सयणी री बात

उ०—३ मोरां बिन डूंगर किसा, मेह बिन किसा मल्हार। तिरिया तिरिया बिन तीजां किसी, पिव बिन किसा सिंगार।—अज्ञात

मल्हारणौ, मल्हारबौ—क्रि० स०—१ मल्हार राग गाना, अलापना।

२ सुमिरन करना, भक्ति करना।

उ०—नाभिराय कुल सिर तिलौ, मरुदेवी मात मल्हारौ रे। लंछन ऋखभ सोहांमणौ, युगला धरम निवारौ रे।—स. कु.

मल्हारणहार, हारौ (हारी), मल्हारणियौ—वि०।

मल्हारिओड़ौ, मल्हारियोड़ौ, मल्हारयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मल्हारीजणौ, मल्हारीजबौ—कर्म वा०।

मल्हारियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मल्हार राग गाया हुआ, अलापा हुआ. २ सुमिरन किया हुआ, भक्ति किया हुआ.

(स्त्री० मल्हारियोड़ी)

मल्हावियौ—सं० पु०—एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—तुरगी ऊघसीया नीघसीया डाटकीया, डोटकीया, खेलविया, मल्हाविया लडाविया पुलाविया सरला तरला छोटकरणा एकरणा।

—व. स.

मल्हिम—देखो 'मलम' (रू. भे.)

मल्हियोड़ौ—देखो 'माल्हियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मल्हियोड़ी)

मवइ—सं० स्त्री०—मनौती। (उ. र)

मवकिल—सं० पु० [अ० मुवक्किल] १ वह व्यक्ति जो अपना मुकद्दमा किसी वकील को सौंपता है, वकील का आसामी।

२ देवता, फरिश्ता।

३ अपना कार्य किसी को सौंपने वाला व्यक्ति।

मवक्ष—सं० पु०—पाडळ नामक वृक्ष। (अ. मा.)

वि० वि०—देखो 'पाडळ'।

मवड़—देखो 'मौर' (रू. भे.)

उ०—सावणिये री तुळछां पांन-दो-पांन, भादूड़े च्यार पांन हो रांम। आसोजां में तुळछां मवड़ ज काढ्या, काती व्यांव रचावो हो रांम।—लो. गी.

२ देखो 'मौड़' (रू. भे.)

उ०—मवड़ ज बांधी मारवी, आइ अवतरी पेट। पूरे मासे पदमणी, जनमी रतन ज पेट।—ढो. मा.

३ देखो 'माता' (मह., रू. भे.)

मवड़ौ—देखो 'मोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—रांमलै बूंटी-रै नसै में, एक सोट जमाय दियौ अर गुदड़ो पकड़'र घींसतै-घींसतै धोरी मवड़ै सूं बारै काढ़ दी।—वरसगांठ

मवजूद—देखो 'मौजूद' (रू. भे.)

उ०—तपावी राख ज्यूं पूठ री कारी करां। जिसड़ै तपाइ अर मवजूद दियरण नूं हुया तिसड़ै सीघो मुंहतो बोलियो।—द. वि.

मवताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

उ०—१ सिरी घटियाळ अरोहित सेर, सध्यां मवताहळ माळ सुमेर।—मे. म.

उ०—२ हाथ्यां मवताहळ गंग हिलोळ, छिलै रत्रधार सरस्वति छोळ।—मे. म.

मवर—देखो 'मौर' (रू. भे.)

उ०—दीजै तिहां डंक न दंड न दीजै, ग्रहणि मवरि तरु गांनगर। करग्राही परवरिया मधुकर, कुसुम गंध मकरंद कर।—वेलि

मवरणौ, मवरबौ—देखो 'मौरणौ, मौरबौ' (रू. भे.)

उ०—सीत काळ उत्तरै, अंब मवरै रित आगम, रस आयौ तरवरै, भयौ भमरै सुर संगम।—रा. रू.

मवरणहार, हारौ (हारी), मवरणियौ—वि०।

मवरिओड़ौ, मवरियोड़ौ मवरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मवरीजणौ, मवरीजबौ—भाव वा०।

मवराल—सं० स्त्री०—पुण्य।

उ०—खैरात मवरात सो पुण्य पवित्र पुण्य दांन रो राह करणौ बादसाहां दोलतमंदां रै सिर भार छ।—नी. प्र.

मवरित—देखो 'मौरियोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—मवरित रूंख छै। एही तो लेखागर हुआ अर भमर छै एही उगाहा हुआ।—वेलि टी.

मवरियोड़ौ—देखो 'मौरियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मवरियोड़ी)

मवसर—देखो 'मौसर' (रू. भे.)

उ०—द्रुम समूह सम सोभा सुंदर, मुरधर-पत दीठो मंडोवर। मवसर तिकां कुसम फळ मंजर, साख प्रसाख सरूप सुरंतर।—रा. रू.

मवसी—१ देखो 'मौसी' (रू. भे.)

२ देखो 'मवेसी' (रू. भे.)

मवाद—सं० पु० [अ०] १ घाव से निकलने वाला पीब।

२ सामग्री, सामान।

३ मसाला। ४ प्रमाण।

मवेसी—सं० पु० [अ० मवेशी] गाय, बैल, भैंस आदि चौपाये जानवर, पशु धन।

उ०—दरबार री फतै हुई। अर नदी सतलज ताईं मासूल साभी। वा पांनचराई मवेसी री वा दाळ वछेरचारी जोइयां खनै सूं उदै भांणजी लेता रया।—द. दा.

रू० भे०—मवसी।

मवेसीखांनौ—सं० पु०—१ मवेशियों को रखने का बाड़ा, वह स्थान जहां पर मवेशी रखे जाते हैं।

२ फसल या सामाजिक सम्पत्ति को हानि पहुंचाने वाले, आजाद छोड़े हुए मवेशियों को पकड़कर रखने का सरकारी बाड़ा या मकान।

वि० वि०—देखो 'फाटक' (३-४)

मवोड़—१ देखो 'मौड़' (रू. भे.)

२ देखो 'मसोड़' (रू. भे.)

मसंजर—सं० पु०—एक प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र विशेष।

उ०—१ पाटंबर पहरंत, सूफंजर बाफ मसंजर। जम दाढां नमि जड़ित, कड़ा जड़िया जर कंबर।—गु. रू. बं.

उ०—२ रतनकांबल, चीर, सोनहरी पांमरी खोरोदक खासा अधोतरी नरमांनी मुलमुल मसंजर चीणी बिलींदी जरबाफ·······।

—व. स.

मसंत—देखो 'मस्त' (रू. भे.)

उ०—मदगळत जूह मैंगल मसंत, सिणगार खड़ा किय सदोमत्त। वरियांम विढोबा वड बडंत, जमदूत जोध सिलहां जड़ंत।

—गु. रू. बं.

मसंद—सं० पु०—१ सामंत।

उ०—माथौ मूंछ मुंडाय मसंदां, पोहो पतिसाह मिलया ले पेस। कळंक अकेक सबै कुळ लागो, निकळंक 'अरजन' हुरो नरेस।

—राव भोज हाडा री गीत

२ राजा।

उ०—१ नेत-बंधो नागंद्रहो, मेवाडो मसंद जी। आहाडो खूमांणो ओपै, निडुर नरिंदजी।—गु. रू. बं.

उ०—२ मछरियो राउ मारू मसंद। रांमण सीस जिम रांमचंद। गरजियो विढण दूजी 'गंगेव', मारिवा त्रिपुर किरि महादेव।

—गु. रू. बं.

उ०—३ अतुलीबळ थट्ट मेल्हिया आंहचद्द, महूरत गिर साभिवा मसंद। प्रभु लिण घमंड किया पइसारद्द, दळ मेळे आविया नरंद।

—महादेव पारवती री वेलि

३ देखो 'मसनंद, मसनद' (रू. भे.)

उ०—१ चढ़ि मसंद बैसि इम कहै चौज, कुण देस नगर पूरब कनोज। निज धणी कमण जयचंद नरेस, दे भेजै कुछ फुरमांण देस।—सू. प्र.

उ०—२ तिसीहीज बिछायत ऊपरां गाव-तकिया, बगल-तकिया, गींदवा बादेला पारवा मसंद ऊपरै पड़िया छै।

—जगदेव पंवार री बात

मसंदी—वि०—सामन्तों की।

उ०—साह बइण सोहिया, सभा मसंदी सज्ज। चंद दिपंदा वेखिया, जांण नखत्रां मज्झ।—गु. रू. बं.

२ देखो 'मसनदी' (रू. भे.)

मसंध—सं० पु०—सीमा, हद।

उ०—ऊगमणी मसंध बारै घरती कोस सो-तीन तांई आंण बरतै।

—कहवाट सरवहिये री बात

मस-सं० पु० [सं० मश] १ मच्छर, डांस।
२ गुंजार, गुनगुनाहट। ३ क्रोध।
[सं० मसः] ४ एक तौल विशेष, मासा।
[सं० मशक] ५ शरीर पर होने वाला छोटा काला चिन्ह।
वि० वि०—कभी कभी यह ऊभर कर बड़ा भी हो जाता है।
६ घोड़ा या बैल आदि का एक रोग।
उ०—खुरफाड़ी फाटै, एक खुरी आगै बध आवै, एडी में मस, मुरचां कमजोर······ ।—फुलवाड़ी
७ देखो 'मस्सौ' (रू. भे.)
[सं० श्मश्रु] ८ मूंछ निकलने के स्थान की रोमावली।
९ देखो 'मसि' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१ रैणु विना खळां अरबदराव, घरा ताव कज अंक धरै। व्रन मस मेट करै कुंकुं व्रन, कुंकुं व्रन मस वरन करै।
—भीमजी आसियौ
उ०—२ कागळ नहीं क मस नहीं, नहीं क लेखणहार। संदेसा ही नाविया, जीवुं किसइ आधार।—ढो. मा.
१० देखो 'मिस' (रू. भे.)
रू० भे०—मस्स।

मसउ, मसक-सं० पु० [सं० मशक] १ मच्छर, डांस। (उ. र.)
उ०—१ मसक समांन 'कांन्ह' कूं मारचौ, उदनवांन जळजांन उबारचौ।—मे. म.
२ एक विशेष प्रकार का चमड़े का थैला जो भिश्तियों द्वारा पानी ढोने के काम आता है।
उ०—दूध दही ए दोय मसक ढुळाओजी अलबेल्यां री भांगड़ली सिंचावो जी।—लो. गी.
रू० भे०—मसग, मिसक।
सं० स्त्री०—३ कलाई।
उ०—मांहै जगदेव आपरा कछुणा सूं भेळं नें अपूठी मसकां बांधियो नें थिरमां मांहै गांठड़ी बांधि कांधो करि नै आपरै डेरे ल्याया।
—जगदेव पंवार री बात
४ दोनों हाथों को पीठ पीछे लेकर कलाईयों को मजबूत बांधने की क्रिया।
५ मसकने की क्रिया या भाव।
६ किसी को मजबूती से बांधने की क्रिया या भाव।
उ० घड़ी चार दिन चढ़तां सूअर सिकार खेल ऊंटा ऊपर मसकां बांध पाछा घरां नूं हालिया।—कुंवरसी सांखला री वारता

मसकणौ, मसकबौ-क्रि० अ० [सं०] सरकना, पसरना, फैलना।
उ०—कसतूरी कड़ि केवड़ो, मसकत जाय महक्क। मारू दाड़म फूल जिम, दिन दिन वनी डहक्क।—ढो. मा.
मसकणहार, हारौ (हारी), मसकणियौ—वि०।
मसकिओड़ौ, मसकियोड़ौ, मसक्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मसकीजणौ, मसकीजबौ—भाव वा०।

मसकत-सं० स्त्री० [अ० मशक्कत] १ मेहनत, मजदूरी, परिश्रम, परिश्रम से किया जाने वाला कार्य।
उ०—जु घड़सी आप चतुर थौ, सु उठै किणाहेकां सिरदारां उमरावां रा बागा डेरै बैठो सीवतौ। वागै एक मसकत रौ लेतौ।
—नैणसी
२ सेवा, चाकरी, नौकरी।
उ०—हाल दोय सूं बाहिर नहीं छै जे दोरां हुवां अरथ सुधरै तो भली बात छै ने कदाचित ढील होय तो कोई आकल उण नूं आलसी नहीं कहै ने उण री आंगमण मसकत सारां ऊपर जाहिर होय।—नी. प्र.
३ योग्यता।
रू० भे०—मसकित, मसक्कत।

मसकर-सं० पु० [सं० मस्कर] १ बांस। (नां. मा., ह. नां. मा.)
२ ज्ञान।
सं० स्त्री०—३ बांसुरी, वंशी। (अ. मा.)
४ गति चाल।
५ पोली या थोथी लकड़ी।

मसकलौ-सं० पु०—छुरी, चाकू आदि शस्त्रों पर धार देने का पत्थर।
उ०—जन हरीया सतगुर इसा, जिसा कमागर होय। सबद मसकला फेर करि, दाग न रखै कोय।—हरिरांमदासजी महाराज

मसकरि, मसकरी—देखो 'मसखरी' (रू. भे.)
उ०—१ पूठै कछवाहा मसकरी करणै लागिया—जे इण रै भरोसे इतरा दिन निकम्मा रह्या।—अमरसिंह गजसिंहोत री बात
उ०—२ रजपूतां निराठ मन्हा कियौ। जे वडा सरदार असी कोई कहै नहीं छै। कूड़ी सूं तो रांमत मसकरी सांची सूं गाळ छै।
—भाटी सुंदरदास वीकूंपुरी री वारता

मसकरौ—देखो 'मसखरौ' (रू. भे.)
उ०—१ सीस अमोलक अजबथा, दीन्हा सोहबी ठोर। जन हरिदास मन मसकरा, मन की उल्टी दौर।—ह. पु वां.
उ०—२ टेर-समझ सठ आतम ग्यांन अग्यांनी। माया बादी गूढ़ मसकरा मूढ़ महा अभिमांनी।—ऊ. का.

मसकित—देखो 'मसकत' (रू. भे.)
उ०—खिजमत करि कर जोड़ि खिजमत, आप न रीझै औजांह। मोल दियै पिण मसकित माफक, मोटां री नहीं मौजांह।—ध. व. ग्रं.

मसकियोड़ौ-भू० का० कृ०—सरका हुआ, पसरा हुआ, फैला हुआ।
(स्त्री. मसकियोड़ी)

मसकी-सं० स्त्री० [सं०] गूलर।
वि०—मशक से पानी भरने वाला।

मसकीन-वि० [अ० मिस्कीं] १ प्रार्थी, विनीत, विनम्र।
उ०—केतै खड़ै नवाज कूं मसकीन गदाई।—केसौदास गाडण

२ दीन, असहाय, दरिद्र, गरीब।

उ०—मसकीन लोक पांमइ नहीं लेतां धांन लागइ धक्का। समयसुंदर कहइ सत्यासीया, तइं कुमति दीधी तिका।—स. कु.

३ सरल, सीधा-सादा।

४ भिखारी। ५ त्यागी, विरक्त।

रू० भे०—मिसकीन, मिस्कीन।

मसक्कत—देखो 'मसकत' (रू. भे.)

उ०—मसक्कत सूं कदे नहीं थाकै उण नूं ही प्रथ्वी री चोकी री हिम्मत छै।—नी. प्र.

उ०—२ याकूब लैस प्रथम हाल में मरणांत भय खैंचतौ अरांम न करतौ मसक्कत सूं एक दम टलतौ नहीं।—नी. प्र.

मसक्की-सं० पु०—रंग विशेष का एक प्रकार का घोड़ा।

उ०—डूंगरी मसक्की वेसि वीय, अइराक ततारी आरबीय। खुरसांणी मकुरांणी खतंग, पतिसाह तणा छूटइ पवंग।—रा. ज. सी.

मसखरी-सं० स्त्री० [अ० मस्खरः+रा० प्र० ई] १ हंसी-मजाक, दिल्लगी, ठठोली।

उ०—चौधरी पगां पड़तौ कह्यौ-म्हारा धणी। औ मसखरी रो मौको नीं है। आपने वार चढणी ई पड़सी।—फुलवाड़ी

२ किसी की अवहेलना या बेइज्जती के लिये की जाने वाली बात।

उ०—१ कूंजड़ी हंसनै बोली-सेठांणीजी थें कांई म्हारी मसखरी करो हो। दो जणा बिचै ई खावण रा पूरा बरतन कोनीं।—फुलवाड़ी

उ०—२ कांणिया काचर री बातां री कीं गिनरत करी नीं। उणरी मसखरी करतां बोल्या—थारो नांव कांणियो काचर है तो औ ई ठगां रो गुड़ो है।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मसकरि, मसकरी, मिसकरी, मिसखरी।

मसखरौ-वि० [अ० मस्खरः] हंसी, दिल्लगी या मजाक करने वाला।

सं० पु०—१ उक्त प्रकार के स्वभाव वाला व्यक्ति।

२ हास्य अभिनेता।

३ विदूषक।

रू० भे०—मसकरौ, मिसकरौ, मिसखरौ।

मसग—देखो 'मसक' (रू. भे.)

मसगूल-वि० [अ० मश्गूल] १ लीन, व्यस्त।

२ किसी कार्य में लगा हुआ, प्रयत्नशील।

उ०—जाहिरा म्हारे मांहै कांई रौब देखे छै सो कह्यौ उण रै मिटावणै मसगूल होऊं।—नी. प्र.

मसजिद-सं० स्त्री० [अ० मस्जिद] वह स्थान या भवन जहां मुसलमान लोग एकत्र होकर ईश्वर वंदना करते हैं, नमाज पढ़ते हैं।

रू० भे०—मजीत, मजीद, मसीत, मसीति, मसीद, मस्जिद, महजित, महजिद, महजीत, महजीद, महिजीत, महिजीद, महीजीत।

मसज्जर-सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—पछइ भला वस्त्र पहिराया ते कुण कुण, देवदुस्य वस्त्र, रत्नकंबल पांमडी खीरोदक मसज्जर चीणी बुलबुल चसमा अतलस.........।—व. स.

मसट, मसट्ट-वि० [सं० मष्ट] १ चुप, मौन।

उ०—मिल्यां धनंतर नह मरै, राम हूंत रोगीह। गुरड़ मसट रह तज गरब, भव गळ गो भोगीह।—रेवतसिंह भाटी

२ संस्कार शून्य।

३ भूला हुआ।

४ ध्वस होने की क्रिया या भाव, चूर्ण, नाश।

उ०—जड ऊबड व्रिखख पडंत जुआ, हुंपाए पहाड मसट्ट हुआ। पतिसाह पयांण पुरं...किय, असमांनक अस्सणि ऊलटिय।—गु. रू. बं.

मसत—देखो 'मस्त' (रू. भे.)

उ०—१ इण सोभा वपु तेज उफांणै, जोवन मसत कंठीरव जांणै।—सू. प्र.

उ०—२ मसत हसत बहु मोल द्वार घूमै खळदाहण। बालां हींसै बाज वणै जांणै रविवाहण।—बां. दा.

उ०—३ मउरीया अख मसत वसंत मांणवा, चंचळ बांण धनख सिर चाढ। रित रइ हाथ भालियइ रमतउ, आया खडै वडइ अवगाढ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ मसत महीनो आवियो रे जला अब तो खबर म्हारी लेय।—लो. गी.

उ०—५ हड़हड़ हसत, मसत मदिरा मद, धड़ हड़ सेर धुवाड़ै। चड़ चड़ चाव जोगण्यां चोसट, धड़धड़ भूमि धुजाड़ै।—मे म.

मसतक, मसतक्क, मसतग—देखो 'मस्तक' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ तूं गैहली 'ऊदा' तणी, बोल न जांणै बोल। धुर लीना कोळू धणी, म्हारा मसतक मोल।—पा. प्र.

उ०—२ अड़ियो जाय मसतक्क उरसि धूपर दिठ धारै। प्रचंड नमाए लंक प्रोळ आए उपरारै।—सू. प्र.

उ०—३ मसतग पवित्र करिस मधुसूदन। बंदै तूझ चरण जुग बंदन।—ह. र.

मसतफी, मसतफा-सं० पु० [अ० मुस्तफा] मोहम्मद साहब की एक उपाधि।

वि०—१ पवित्र आत्मा, सत्पुरुष।

उ०—महमद जेसा मसतफी, निवाज नमंदे।—केसोदास गाडण

२ शुद्ध, पवित्र, निर्मल।

३ दुर्गुण रहित।

मसताक-वि० [अ० मुश्ताक] उत्कंठित, उत्सुक।

उ०—छक मसताक रूप अति छाजै। लख दुति सची उरबसी लाजै।—सू. प्र.

मसतांन—१ देखो 'मसतांनौ' (मह., रू. भे.)

उ०—महमाय पूजा मांन, महरंग गज मसतांन। कटि घंट घोर किलाव, वरिण चमर बंध बणाव।—सू. प्र.

२ देखो 'मस्त' (मह., रू. भे.)

उ०—मंडे कट तेग हुवे मसतांन, खंडे अंगरेज ह नाहर खांन।
—सू. प्र.

मसताक—देखो 'मुस्ताक' (रू. भे.)

उ०—धाक पड़ै जिण अरि धरा, डाक बजै जिण दिन। छाक चढ़ै जिण छत्रवट, वै मसताक सु मन।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

मसती—देखो 'मस्ती' (रू. भे.)

उ०—मुकनौ दुरद मलार, गळ डागं भरतै गयौ। गाडर छोडि गलार, मसती फेरि न मंडियौ।—शि. वं.

मसनंद, मसनद—सं० पु० [अ० मस्नद] १ बिछायत, गद्दी, तकिया आदि।

२ बिछायत में लगने वाला बड़ा तकिया।

३ तकिया लगाने का स्थान।

रू० भे०—मसंद, मिसंद।

मसनदनसीन—वि० [अ० मस्नद+फा० नशीन] १ मसनद पर बैठने वाला। २ अमीर, बड़ा आदमी।

मसनदी—वि०—मसनद से युक्त।

रू० भे०—मसंदी।

मसपूरज—सं० स्त्री०—अस्थि, हड्डी।

उ०—नदी सहस नाडियां प्रगट परवत मसपूरज लत दिस पवन उसास, सकल लोयण ससि सूरज।—र. रू.

मसर-मसर—क्रि० वि०—मंद गति से, धीरे धीरे।

उ०—मसर-मसर ढोला दूखै छे पेट हाथ पगां में फूटणीजी राज।
—लो. गी.

मसरी—देखो 'मिसरी' (रू. भे.) (डिं. को.)

मसरू, मसरू—सं० पु० [अ० मशरूअ] १ एक प्रकार का रेशमी वस्त्र विशेष।

उ०—जरजरी मलबारी लाछरी अघोतरी अमरी गंगापारी मोती-चूरि टमरू मसरू रत्नकंबल छाइल मकबल अगल साउला उरसाला वाला पटुलां वाकलां''''''।—व. स.

२ रेशम और सूत से बुना एक प्रकार का धारीदार वस्त्र।

मसल—सं० स्त्री० [अ०] १ कहावत, लोकोक्ति।

२ समान, तुल्य।

३ विषय, प्रसंग।

[अ० मस्लहत] ४ सलाह, परामर्श।

उ०—जटै कर मसल अंगरेज आया जबर, दाटवां भंडारां देर दुबौ।—सूरजमल आसियौ

रू० भे०—मसलि, मसल्ल, मस्ल।

५ देखो 'मिसल' (रू. भे.)

उ०—'अजै' विदा कीधौ 'अभौ', परखि कळा अणपार। आठ मसल बळ आगळा, सफि दळ हुवा तयार।—रा. रू.

६ देखो 'मिसिल' (रू. भे.)

मसळणौ, मसळबौ—क्रि० स०—१ दोनों हाथों को परस्पर रगड़ना, मलना।

उ०—१ जाई जोवन धन मसळै हाथ। जोबन जवि गिणइ दीह ने राति।—बी. दे.

उ०—२ अबै वौ पांणी में लारौ करै तौ कीकर करै। हाथ मसळतौ, मन में कळपतौ वौ निरीताळ उठै ई ऊभौ रह्यौ।
—फुलवाड़ी

२ हाथ से दबाते हुए रगड़ना, दबाकर रगड़ना।

उ०—१ आंख्यां मसळतौ मसळतौ देंत ई बोल्यौ—म्हारौ ग्यांन ओछौ है, म्हारा सूं घणौ बोलणौ नीं आवै।—फुलवाड़ी

उ०—२ खवासजी घड़ी घड़ी आंख्यां मसळनै अर घड़ी घड़ी ठाडा पांणी सूं आंख्यां छांटनै टोळा सांमी देखता—कांई औ सपनौ तौ नी है।—फुलवाड़ी

उ०—३ मालधांनी भूमि, तिहांना नींपना गोधूम, हाथस्युं मसल्या, धोइनइ दल्या।—व. स.

३ जोर से दबाना, गूंदना।

उ०—पड पकवांन प्रवाडा प्रमरथ, साहां सेन करै बोह संग। मैदा कटक महारस मसळै, जीम्हण रांण कियौ रणजंग।
—रांणा खेता रौ गीत

४ रगड़कर मारना, संहार करना, नष्ट करना, हनन करना।

उ०—१ मरे नहीं भकमार तिकै जीवण नै ताता। मारै जूंवां मसल रहै रंगिया नख राता।—ऊ. का.

उ०—२ जदी पंचमार कहै मा'राज ईतरा दिन कौं ढील कीधी। पेली ही केता तो गोला है मसल नाखता।—पंचमार री बात

उ०—३ पांच गोळा'र वोय सेल लागां पछै, 'सदा' रौ 'सेर' पौरस सवायौ। मसळतौ हाथियां घमल भरतौ मरद, 'अचळ' हर हर पाधरौ 'कुसळ' आयौ।—पहाड़खां आढ़ौ

५ मर्दन करना।

उ०—केतकी मीर मसळै तुरी केवड़ा, रंग बहै धरा सिरि रुधिर रातौ।—तेजसिंह सेखावत रौ गीत

मसळणहार, हारौ (हारी), मसळणियौ—वि०।

मसळिओड़ौ, मसळियोड़ौ, मसळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मसळीजणौ, मसळीजबौ—कर्म वा०।

मिसळणौ, मिसळबौ—रू० भे०।

मसलत, मसलति, मसलती, मसलत्त, मिसलत्ती-सं० स्त्री० [अ० मस्-लहत] १ परामर्श, सलाह, मशविरा।

उ०—१ तितरै वीरमजी रजपूत एकठा किया। मसलत करनै आया।—नैणसी

उ०—२ मोटां पुरसां नूं पण पांच मांणसा सूं मसलत कर कांम करो।—नीं. प्र.

उ०—३ कुळ सब मिळ मसलति इम कीधी। दइव फतै असमांनी दीधी।—सू. प्र.

२ गुप्त परामर्श, गोपनीय वार्ता।

उ०—कियौ विदा जोधां सिरै, नूरमली पूंतार। प्रात नगारा वज्जिया, मसलत रात विचार।—रा. रू.

३ अपने हित-अहित के प्रति किया जाने वाला विचार, वार्तालाप, भलाई की बात।

उ०—सुर मिळै कीध मसलति सकाज। आखां प्रभु आगळ अरज आज।—सू. प्र.

४ ऐसी युक्ति जो सहज में न जानी जा सके।

उ०—१ पड़ियौ तकिये सूं परा, आडो दियौ प्रजंक। मसलत आया मीरज्यां, ऐ ऊठिया असंक।—रा. रू.

उ०—२ भय दिखाय कूंभेण, जीव घर अोह जणाये। करण चूक कमधज्ज, ठीक मसलति ठहराये।—सू. प्र.

५ भेद, रहस्य।

६ वर्णन, उल्लेख।

उ०—इति फौज बंधी मसलत भारथ जुध सिकार रो तीसरो प्रस्ताव पूरो हुवो।—रा. सा. सं.

७ विचार, मंशा, इच्छा, आशय, मतलब।

रू० भे०—मसलत्त, मसलत्ती, मसलह्त, मसिलत, मल्लीत, मिसलत, मिसल्लत।

मसलत्त, मसलत्ती—देखो 'मसलत' (रू. भे.)

उ०—१ अरज सुणी राजा 'अजै', वणी गरज रज वत्त। कंवर वडाई जैवहो, मन भाई मसलत्त।—रा. रू.

उ०—२ स्यांम ध्रमी चितसाच, सूर दारण मसलत्ती। बहसि 'भांण' बोलियौ, पांण तप भांण प्रभती।—सू. प्र.

मसलहत—देखो 'मसलत' (रू. भे.)

उ०—एक दिन बादसाह उमरावां सूं कही—मैं आज तलक रैयत री रिआयत में थौ आज पछै रिआयत बरतरफ करूं छूं जो मसलहत होय तो आवो रैयत नूं लूट लेवां रैयत रै कुछ नै रहण देवां।—नी. प्र.

मसळाणौ, मसळाबौ-क्रि० स० ['मसळणौ' क्रिया का प्रे० रू०] १ दोनों हाथों को परस्पर रगड़ने के लिये प्रेरित करना।

२ हाथ से दबाते हुए रगड़ाना, दबाकर रगड़ाना।

३ जोर से दबवाना, गूंदाना।

४ मरवाना, संहार कराना, नष्ट कराना, हनन कराना।

५ मर्दन कराना।

मसळाणहार, हारौ (हारी), मसळाणियौ—वि०।

मसळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मसळाईजणौ, मसळाईजबौ—कर्म वा०।

मसळामसाय-सं० पु०—विचारणीय विषय एवं समस्या।

मसळायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ दोनों हाथों को परस्पर रगड़ने के लिये प्रेरित किया हुआ. २ दबा कर रगड़ाया हुआ. ३ जोर से दबवाया हुआ, गूंदाया हुआ. ४ मरवाया हुआ, संहार कराया हुआ, नष्ट कराया हुआ. ५ मर्दन कराया हुआ।

(स्त्री० मसळायोड़ी)

मसलि—१ देखो 'मिसल' (रू. भे.)

उ०—गज तिलक रै वांसै काळी कुंवर री मसलि हुंती।—द. वि.

२ देखो 'मिसिल' (रू. भे)

३ देखो 'मसल' (रू. भे.)

मसळियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ दोनों हाथों को परस्पर रगड़ा हुआ. २ हाथों से दबाते हुए रगड़ा हुआ, दबा कर रगड़ा हुआ. ३ जोर से दबाया हुआ, गूंदा हुआ. ४ मारा हुआ, संहार किया हुआ, नष्ट किया हुआ, हनन किया हुआ. ५ मर्दन किया हुआ.

(स्त्री० मसळियोड़ी)

मसलौ-सं० पु०—१ व्यंग, ताना।

उ०—१ मत ना ए रांणी मसलौ मारौ मत ना काढो सेल। जैपर मिली जोधपुर मिलगी मिलगी बीकानेर। दोय पगां नै जागां कोनी, भाई होग्या लैर।—डूंगजी जवारजी री छावली

उ०—२ पीळी तो ओढ़ म्हारी जच्चा रांणी मुढ़लै बैठी जी, तो सास नणद भोत सरायौ गाढा मारूजी, तो थोर जेठांण्यां मसलौ मारियौ गाढा मारूजी, पीलौ—ली. गो.

२ समस्या, दिक्कत, उलझन।

३ लोकोक्ति, कहावत। ४ परामर्श।

५ विषय, प्रसंग।

मसल्ल—१ देखो 'मसल' (रू. भे.)

२ देखो 'मिसल' (रू. भे.)

३ देखो 'मिसिल' (रू. भे.)

मसवाडउ-सं० पु०—१ मासिक वृत्ति, वेतन।

उ०—देवलोकि छइ घणी परि देव एक ठाकुर बीजा करइं सेव। न लहइ मसवाडउ न लहइं ग्रास महियां मोदिक तीहना वास।

—वस्तिग

२ देखो 'मास' (अल्पा., रू. भे.)

मसवाडि—मास में।

उ०—पणि कस्यु एक पाट ए चंदनकाठ किहां नीयनु। मलीआगिरि परवति माहा मसवाडि सुकल पखवाडि बीज तणि दिहाड़ि......।

—व. स.

मसवाड़ौ—देखो 'मास' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ पुणि सरस सकोमल, जेस्ट मसवाडा नी काकडीनइ अनुमांनि, सोवन रेखनइ वांनि...... ।—व. स.
उ०—२ सात मसवाडा नइ वहइ ।—उ. र.

मसवासि—सं० पु० [सं० मासवासी] (स्त्री० मसवासिणी) वह विरक्त या वैरागी जो एक मास तक एक ही स्थान पर रहता हो।
उ०—खेलि अम्हारी क्षीपवी, हवी हवई मसवासि । मढुली-मांहि मंडउं रहिउं, मन माधव-नइ पासि ।—मा. कां. प्र.
रू० भे०—मसवासी ।

मसवासिणि, मसवासिणी—सं० स्त्री०—१ वेश्या ।
उ०—[तिणि वचनि राजा कहइः] तूं सूधी धूतारि । तइं मसवासिणि मिस करिउं, घणा पुरुखनइं मारि ।—मा. कां. प्र.
२ देखो 'मसवासी' (स्त्री०)

मसवासी—देखो 'मसवासि' (रू. भे.)

मसविदौ—सं० पु० [अ० मसव्विदः] १ किसी पत्र या लेख का प्रारूप या डौल, जिसमें संशोधन किया जाकर अन्तिम रूप दिया जाना हो । पांडु लिपि ।
२ किसी कार्य की भूमिका ।
रू० भे०—मसूदौ, मसोदौ, मसौदौ ।

मसविरौ—सं० पु० [अ० मशविरा] विचार-विमर्श, परामर्श, सलाह ।

मसहद—सं० पु०—मुसलमानों का एक तीर्थ स्थान ।
उ०—अथ यवनां रा तीरथ लिखंते—मक्कौ १, मदीनौ २, करबलौ ३, बगदाद ४, स्थान जफ ५, काज मैन ६, मसहद ७, रुकना बाद ८,......... ।—बां. दां. ख्यात

मसहूर—वि० [अ० मश्हूर] प्रसिद्ध, प्रख्यात, विख्यात ।
रू० भे०—मसूर ।

मसां—क्रि० वि०—मुश्किल से, कठिनता से ।
उ०—बीसूं झगड़ा झंटां सुं पूरी माथापच अर छाती-पचौ करतां करतां मोसर रै दूहै नै मसां पार घाल्यौ है ।—दसदोख
रू० भे०—मस्सा ।

मसांण—सं० पु० [सं० श्मशान] १ मृतक की दाह क्रिया करने का स्थान, शव जलाने का स्थान, मरघट, श्मशान ।—उ. र.
उ०—१ दादू प्रांण पयांण कर गया, माटी धरी मसांण । जाळण हारे देखकर, चेतें नहीं अजांण ।—दादूबांणी
उ०—२ कनक महल दिया दास नै परमेस्वरजी, बसै मसांणां आप, ईस्वर जी ।—गी. रां.
क्रि० प्र०—जगाणौ, जागणौ ।
मुहा०—मसांण जगाणौ=१ शव को जलाना ।—२ श्मशान में बैठकर तांत्रिक सिद्धि के लिये प्रयत्न करना ।
२ श्मशान की तरह प्रतीत होने वाला या जलने वाला मकान, स्थान या पदार्थ ।
उ०—१ सज्जण चाल्या हे सखी, वाज्या विरह-निसांण । पालंखी विसहर भई, मंदिर भयउ मसांण ।—ढो. मा.
उ०—२ छाहुणी धूप नू आलगई, कवियक-झूपड़ा होई मसांण ।—बी. दे.
उ०—३ पछै वा राजकंवरी रै सोनळ बाळां सांमी देखनै कह्यौ भाई रै बिना म्हनै पंयाळ-लोक मसांण ज्यूं लागै ।—फुलवाड़ी
३ युद्ध-भूमि, रण भूमि ।
उ०—धम धमिउ धुरि नाद नीसांण नउ, गहगहिउ सुर वरग मसांण नउ । कलकली वहली रिण काहली, टलवली प्रज हूई आकुली ।—सालिसूरि
४ भूत-पिशाचों के लिये प्रयुक्त शब्द ।
वि०—अतिवृद्ध ।
मह०—मसांणौ, मसांन, महसांण, मुसांण, मुसांन ।

मसांणखंभ—सं० पु० [सं० श्मशान+स्थम्भ] श्मशान घाट का स्थम्भ ।
उ०—निरधन उंचउ तो मसांणखंभ खाटरो तो हीनांग, घणु बोलइ तो लवाड बाडलो, न बोलइ तो मुंगउ''''''' ।—वस.

मसांणभोम—सं० स्त्री० [सं० श्मशान+भूमि] श्मशान भूमि, मरघट ।
उ०—माठी विचारी मन मांय, इण ने मसांणभोम लेजाय, सुकोमल साध । त्वचा उतारी देहनी ए ।—जयवांणी

मसांणवासी—सं० पु० [सं० श्मशान+वासिन्] १ महादेव, शिव ।
२ भूत,प्रेत । ३ साधु, संन्यासी, फक्कड़ ।

मसांणियौवैराग—सं० पु०—१ किसी के दाहसंस्कार के समय जीवन की क्षणिकता को देखते हुए, उठने वाला वैराग्य, विरक्त भावना, क्षणिक वैराग्य ।
२ क्षणिक वैराग्य, अल्पकालीन वैराग्य ।

मसांणियौ—वि० [सं० श्मशान+रा० प्र० इयो] १ श्मशान का, श्मशान सम्बन्धी ।
सं० पु०—१ श्मशानों में रहने वाले साधु ।
उ०—मसांणिया ने कारटिया रे, वले जट वणी ते जटिया । कुंभार सिरावा सोनारो रे, हुवौ नायक भार लदारो रे ।—जयवांणी
२ श्मशानों में रहने वाले भूत, प्रेत आदि ।
उ०—चाचरियां भूचरयां, लोह तोड़ण सूळ भांजण । मसांणियौ आगियौ, कवडियौ दांणव गंजण ।—मा. वचनिका
३ जोगियों के अन्तर्गत एक भेद विशेष जिन्हे कनफटे भी कहते हैं ।

मसांणी—सं० स्त्री० [सं० श्मशान्ः+रा० प्र० ई] १ श्मशान में रहने वाली प्रेतनी, पिशाचनी ।
२ देखो 'मसाहणी' (रू. भे.)

मसांणौ—देखो 'मसांण' (मह., रू. भे.)
उ०—दादू झूठे के घर देखकर, झूठे पूछै जाइ । झूठे झूठा बोलतैं, रहै मसांणौ जाइ ।—दादूबांणी

मसांन—देखो 'मसांण' (रू. भे.)

उ०—हरिया वसै मसांन विच, किनी न बूझी वात । रांम लिया वतलाय कै, ज्यूं बाळक कूं मात ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मसारगल्ल-सं० पु०—एक प्रकार का रत्न विशेष ।

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैडूरय सूरयकांत चंद्रकांत नील महानील इंद्रनील सवकर विभकर ज्वरहर रोग हर सूलहर विसहर हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष **मसारगल्ल** हंसगरभ पुलक अंक अंजन अरिस्ट चिंतामणि ······ ।—व. स.

रू० भे०—मसारी ।

मसारी—देखो 'मसारगल्ल' ।

मसाळ, मसाल-सं० स्त्री० [अ० मशाल] १ पुराने समय का एक बड़ा चिराग, बत्ती ।

उ०—१ इतरै रात पड़ी, मारे वडै ठाकुर कह्यौ—डेरौ करौ, सवारै गांडां रौ धंस लेस्यां, वांसै जास्यां जैमल घणी कस मांहे, कहै मलालां घणी करौ, मसालां हाथियां ऊपर झालनै चडी, वांसै गाडां रै खड़ी ।—नैणसी

उ०—२ यूं बातां करतां थकां पील सोत मंगाई **मसाल** बौहडाई ।
—जयसिंह आंमेर रै धणी री वारता

उ०—३ त्रंबक धुन म्रदंग विकराळ रज धोम तम, ज्वाळ धख मसालां तोप ज्वाळा ।—महाराजा बहादरसिंघ री गीत

वि० वि०—इसमें लकड़ी के डंडे के शिरे पर लोहे की एक छड़ लगी रहती है । उस छड़ के सिरे पर कपड़ा लपेटकर गेंदनुमा बना दिया जाता है । उस पर तेल डालकर जला दिया जाता है । डंडे का दूसरा शिरा हाथ में पकड़ने के काम आता है ।

रू० भे०—मुसाल ।

मसालची-सं० पु०—१ मशाल जलाने वाला व हाथ में लेकर प्रकाश दिखाते हुए चलने वाला व्यक्ति ।

उ०—गनीम सोचियौ—जठै इता **मसालची** है बठै फौज तौ कुण जांणै कितीक हुवैला ।—वरसगांठ

२ राजघराने या धनी पुरुषों के घर दीपक जलाने का कार्य करने वाला सेवक, नौकर ।

उ०—१ तद लोक सरब ऊठि ऊभा हुवा । **मसालची** पीळ चौसा नै गया ।—चलक दरियाव री बात

उ०—२ तठा उपरायंत मसालां हुई छै । दुसाखा हुवा छै । **मसालचियां** आण मुजरौ कियौ छै ।—रा. सा. सं.

३ रसोई घर में मसाले पीसने का कार्य करने वाला व्यक्ति ।

रू० भे०—मुसालची ।

मसाली, मसालेदार-वि०—जिसमें मसाले हों, मसालों से युक्त ।

सं० पु०—अच्छे मसालों से युक्त स्वादिष्ट भोजन, व्यंजन ।

मसालौ-सं० पु० [फा० मसालह] १ शाक-सब्जी या दाल में डाली जाने वाली नमक, मिरच, धनिया, हल्दी आदि वस्तुएं ।

२ मेवा, मिश्री तथा खट्टी-मीठी व सुगंधित वस्तुओं का सामूहिक रूप, जो पेय या खाद्य पदार्थों में मिलाया जाता है ।

उ०—होळै-होळै वौ भांग रौ पुट वत्तौ अर केसर बिदांमां रौ **मसालौ** कम करतौ गयौ अर वांनै ठंडाई पावतौ रह्यौ ।—फुलवाड़ी

३ कई प्रकार की औषधियों या रसायनिक पदार्थों का मिश्रित रूप ।

उ०—चारूं जणा एकण सागै बोबाड़ करनै रोवण लागा—म्हांरी आंख्यां फूटगी रे—भींटिया **मसालौ** तेज घणौ ।—फुलवाड़ी

४ वे वस्तुएं जिनके मिश्रण से कोई वस्तु तैयार होती है ।

५ किसी कार्य के लिये वांछित साधन, सामग्री ।

उ०—बि हजार तोप कठठी बडी, गोळमदाज फिरंगरा । करि अजर क्रोध कीधा किलम, जबर **मसाला** जंगरा ।—सू. प्र.

६ किसी विषय या लेख से सम्बन्धित आवश्यक बातें, सूचनाएं ।

रू० भे०—मुसालौ ।

मसाहणी-सं० पु० [सं० महासाधनिक] १ राज्य के घुड़शाला का अधिकारी (प्राचीन) । (उ. र.)

उ०—१ सेना सहू पूठइं-थिकी, सिरि सल्लहत्थ प्रधांन । भंडारी वारी वतूं, **मसाहणी** बहू मांन ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ नायक दंडनायक अंगलेखक भांडागारिक संधिविग्रही साहणी **मसाहणी** पडसाहणी तलदग्गी दंडाधिपति प्रतिहार आरक्षक कह्नवहक······· ।—व. स.

उ०—३ सूयार सूडकर **मसाहणी** मीठा बोला सरसतरुणा इसी सभा अनइ एतला देस तणउ अधिपति······· ।—व. स.

२ घोड़ों को शिक्षित करने वाला ।

रू० भे०—मसांणी, महामसाणी, महासाणी ।

वि० [सं० श्मशान+रा० प्र० ई] श्मशान में जाकर तांत्रिक साधना करने वाला । (उ. र.)

मसि-सं० स्त्री० [सं० मसि, मषी] १ काली स्याही ।

उ०—१ धूलि नइं तिमरि अंबर रोलिउ, सूरय बिंब **मसि** मांहि कि बोलिउ । अस्ववार फिरतां नहु सूझइं, ए रणांगणि किसि परि झूंझइ ।—सालिसूरि

उ०—२ अहर रंग रत्तउ हुवइ, मुख काजल **मसि** अन्न । जांण्यउ गुंजाहळ अछइ, तेण न ढूकउ मन्न ।—ढो. मा.

२ स्याहि, इंक ।

उ०—१ जन हरिदास मसकरि लागी, बहोड़ि मसी सूं **मसि** धोवै । कालरि बाहै खेत, साह की पूंजी खोवै ।—ह. पु. वां.

उ०—२ कागळ नहीं क **मसि** नहीं, लिखतां आळस थाइ । कइ वण देस संदेसडा, मोलइ वक्कइ विकाइ ।—ढो. मा.

३ कालिख, कालिमा ।

उ०—वरिसइ मेघ अनइं राति अंधारी, कुहींराव अनइं मांहि कंसारी, जवनी रोटी अनइं कागिइं बोटी, कालि नइं **मसि** लाई···· ।
—व. स.

सं० पु०—५ काजल ।

६ अंधेरा । ७ निर्गुंडी का फल ।

८ कृष्ण वर्ण, काला, श्याम। * (डिं. को.)
रू० भे०—मस, मसी, मस्सी, मिस, मिसि।
९ देखो 'मिस' (रू. भे.)
१० देखो 'मिस्सी' (रू. भे.)

मसिबिंदु-सं० पु०—काजल का छोटा टीका, जो बच्चों के नजर आदि से बचाव के लिये लगाया जाता है।

मसिलत—देखो 'मसलत' (रू. भे)
उ०—करि मसिलत प्रणाम करि, फिरवर तोल करग्ग।
—मा. वचनिका

मसी-सं० स्त्री०—ऊंट, हाथी आदि पशुओं के झरने वाला मद।
उ०—बिन्ह बिन्ह लाजां बंध, कमळा दीरध कंध। मसी झरै मदोमत्त, हंडी कोसा विरतं।—गु. रू. बं.
२ देखो 'मसि' (रू. भे.)
उ०—जन हरिदास मसकरि लगी बहोड़ि मसी सूं मसि धोवै। कालरि बाहै खेत साह की पूंजी खोवै।—ह. पु. वां.
३ देखो मिस्सी' (रू. भे)
उ०—अंजन न घालै आंख। मसी न लगावैं दांत।—जयवांणी
रू० भे०—मस।

मसीजणौ-सं० पु०—मसिपात्र, दवात।
उ०—पांच दोरा रे लेखणि पांच मसीजणा। वास कूंपी रे कांबी बारू वरतणा।—स. कु.

मसीत, मसीति मसीद—देखो 'मसजिद' (रू. भे.)
उ०—१ मिंदर, मसीतां रा ऐ पंथ तौ अरफंडा है। ऐ धरम रा नीं' अकरम अर अधरम रा परकोटा है।—फुलवाड़ी
उ०—२ दादू यहु मसीत यहु देहुरा, सद्गुरु दिया दिखाइ। भीतर सेवा बंदगी, बाहर काहै जाइ।—दादूवांणी
उ०—३ वडी मसीत ईदगाह वाळी। रत सूवरां तणी रुहराळी।
—रा. रू.
उ०—४ हिंदू थापै देहुरा, मुसलमांन मसीति। पखा पखी जग पचत है, यही दुहुं की रीति।—ह. पु. वां.

मसीन-सं० स्त्री० [अं०] यंत्र, कल।

मसीह, मसीहा-सं० पु० [अ०] ईसाइयों के धर्म-गुरु महात्मा ईसा का एक नाम।

मसु-सं० पु० [सं० मशक, प्रा० मसअ] मच्छर।
उ०—अंतर दीसइ एवडू, किहां गरुड किहां मसु रे। अंतर दीसइ एवडू, किहां गजनइ किहां ससउ रे।—नलदवदंती रास

मसुरौ—देखो 'मसनद'।
उ०—सुबारनी सोड़ भराय गाल मसुरा गादी गींडवा ढोलणी ने चोवारे चढ़ाय ढोलो मारुणी दोन्यु पोढ़स्यां।—लो. गी.

मसूड़ौ, मसूढ-सं० पु० [सं० श्मश्रु] दांतों की जड़ों पर जमा हुआ, मुंह के अन्दर का मांसल अंग, मसुड़ा। इससे दांत मजबूती से जमे रहते हैं।
उ०—१ बिलाई रै कूंटिया जिसा दांत, मगर मच्छ री गळाई खुरदरा अर काठा मसूड़ा, जरख जैड़ी लपरका करती जीभ·······।
—फुलवाड़ी
उ०—२ की कस करैड़ै कूकरी, मुख नौ झरते मांस मसूढ कि। ममन हुवै ते स्वाद मैं, मांहिली हांनि न जांणै मूढ़ कि।
—ध. वं ग्रं.
रू० भे०—मसोड़ौ।

मसूदौ—देखो 'मसविदौ' (रू. भे.)

मसूर-सं० पु० [सं० मसुरः, मसूर] १ एक प्रकार का द्विदल अन्न, जिसका दाना चिपटा हुआ होता है तथा जिसकी दाल बनती है।
उ०—मूंग मोठ तूअर तणी रे लाल, राती दाल मसूर।
—प. च. चौ.
२ देखो 'मसहूर' (रू. भे.)
रू० भे०—मसूरि।

मसूरति-सं० स्त्री०—सलाह, विचार, परामर्श।
उ०—करी मसूरति देई सीखांमण, नांमजाद ल्यउ साथि। माहआदि ऊपरि सुरतांणइ, बीडउं आप्यउं हाथि।—कां. दे. प्र.

मसूरयौ-सं० पु० [सं० मसूर+कन्] गोल तकिया।
उ०—लाख दस लहै पलिंग सोड़ि तीस लख सुणीजै। गाल मसूरया सहस सहस दोय गिंदूआं भणीजैं।—प. च. चौ.

मसूरि—देखो 'मसूर' (रू. भे.)
उ०—मंडोरा मग, करडूआ मग, नीलूआ मग, तेहनी दालि, कान्हमी तूअरि मसूरि तेह तणी दालि ··· ।—व. स.

मसूरिक—कर्मचारी विशेष।
उ०—उपांनहधर भंगारधर स्थगिताधर चित्रक देसालिक मसूरिक अंककार फलिहार मल्लयोद्ध सस्या पाल······· —व. स.

मसूरिका-सं० स्त्री० [सं०] १ मसूर के दाने के बराबर की चेचक, छोटी माता।
२ दूती।

मसूरिया, मसूरीया—तकिया रख कर चलने वाला।
उ०—१ आरक्षक कडूवहक राज द्वारिक लेखक कथक वातगर कवि काठीया मसूरिया दीवटीया उपाध्याय बहकार—व. स.
उ०—१ अमात्य महामात्य सुहासोला उचित बोला दास दीकोला गादीया मसूरिया पुड पुडीया कांबडीया दौवारिक तलार·······।
—व. स.

मसूरियौ-सं० पु०— १ जोधपुर के दक्षिण-पश्चिम की एक छोटी पहाड़ी जहां पर बाबा रामदेव का प्रसिद्ध मन्दिर है।
उ०—महि मालम थांन मसूरियौ ओथ हूंत सूं। वेगड़ा पाल गउ वाहरू दम इक जेज म सूं।—पा. प्र.

२ स्त्रियों के पांव का एक आभूषण विशेष।

मसूस-सं० स्त्री०—१ मन को मसोसने की क्रिया या भाव, मन के भावों को बलात् दबाने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'महसूस' (रू. भे.)

मसोड़, मसोड़ि-सं० स्त्री०—सर्दी के बचाव के लिये, रजाई में अन्दर चादर डालकर अथवा दो चादरों को एक परत में करके, ओढने के लिये तैयार किया गया विस्तर।

उ०—१ थूं **मसोड़** कांरी लेवै ऐ ? के कांचळी री। थूं धासै कीकर ऐ ? के खूं खूं।—फुलवाड़ी

उ०—२ तस ऊपरि **मसोड़ि** मोल दइ लखै लीधी। अगर कुसम पटकूल सेभ कुंकम पुट दीधी।—प. च. चौ.

रू० भे०—मवोड़।

मसोड़ौ—देखो 'मसूड़ो' (रू. भे.)

उ०—दांत लांबा, जड़ियां उघड़ियोड़ा। काळा **मसोड़ा**। मसोडां रै पाखती दांत ई काळा।—फुलवाड़ी

मसोतौ-सं० पु०—१ पाकशाला या रसोईघर का वह छोटा वस्त्र जो झाड़ने, पोंछने या गर्म पात्र उठाते समय हाथ में रखने के काम आता है।

उ०—बिणियांणी **मसोता** मैं पकड़नै कांदां रै साग री थेगची लाई।
—फुलवाड़ी

२ लकड़ी का एक डंडा जिसके एक शिरे पर छोटा मोगरा बना होता है। यह गन्ने के रस का मैल हटाने के काम आता है।

रू० भे०—मश्रोतौ, मसोदौ, मसौदौ।

मसोदौ—१ देखो 'मसोतौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मसविदौ' (रू. भे.)

मसोसणौ, मसोसबौ-क्रि० स०—१ मारना, समाप्त करना, सांस रोककर मारना।

उ०—जद खिड़की खोल भींतर लिवाय गई चट बकरे नूं **मसोस** रांणी नूं कही जे इण में प्रवेस कर बतावौ।
—नापै सांखले री वारता

२ मन के आवेश, जोश, इच्छा या भाव को दबाना, रोकना।

उ०—निद्रा मांही थकी **मसोसै** बादि चढ़ी सिर ऊपर खेलै।
—ह. पु. वा.

३ मन ही मन कुढना, रंज करना।

४ ऐंठना, मरोड़ना।

५ तंग करना, परेशान करना। ६ निचोड़ना।

मसोसणहार, हारौ (हारी), मसोसणियौ—वि०।

मसोसिश्रोड़ौ, मसोसियोड़ौ, मसोस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मसोसीजणौ, मसोसीजबौ—कर्म वा०।

मसोसियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ सांस रोककर मारा हुआ, समाप्त किया हुआ. २ मन के आवेश, जोश या भाव को दबाया हुआ, रोका हुआ. ३ मन ही मन कुढ़ा हुआ, रंज किया हुआ. ४ ऐंठा हुआ, मरोड़ा हुआ. ५ तंग किया हुआ, परेशान किया हुआ. ६ निचोड़ा हुआ.

(स्त्री० मसोसियोड़ी)

मसौ-सं० पु० [सं० मशक, प्रा० मसअ] १ मच्छर।

उ०—१ जांणे फिरिया सीह रहइं सीयाल। मातंग नइं जेम मसा झमाल। चिहुं पखे अरजन बांण छूटइ, सन्नाह माहिइं सर सीध्र फूटइं।—सालिसूरि

२ देखो 'मस्सौ' (रू. भे.)

मसौदौ—१ देखो 'मसविदौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मसोतौ' (रू. भे.)

मसौदेबाज-वि०—१ अच्छी युक्ति सोचने वाला।

२ मसविदा बनाने वाला।

३ धूर्त, चालाक।

मस्कोरणौ, मस्कोरबौ-क्रि० स०—बिगड़ना, विकृत करना (मुख)।

उ०—१ नाई मूंडौ **मस्कोरतौ** बोल्यौ—इण सूं कांई सांधा लागै ? थांरै कोल मुजब म्हनै पूरौ राजी करौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ रांणी राजा नै होळै सूं मूंडौ **मस्कोर** नै कह्यौ—आंरै पगां सांमी देखनै आप आं रै मन री बात नीं जांण सकौ ?
—फुलवाड़ी

मस्कोरियोड़ौ-भू० का० कृ०—बिगाड़ा हुआ, विकृत किया हुआ (मुख).

(स्त्री० मस्कोरियोड़ी)

मस्जिद—देखो 'मसजिद' (रू. भे.)

मस्तंगी-सं० पु०—१ एक प्रकार का गोंद।

२ मस्ती।

मस्त-वि० [सं० मत्त, फा० मस्त] १ मतवाला, उन्मत्त।

२ मदोन्मत्त, नशे में चूर।

उ०—ठाकर इत्ती ताळ नीठ चुप रह्या। वै दारू लेवण में **मस्त** हा। आधी बातां सुणी अर आधी सुणी ई कोनीं।—फुलवाड़ी

३ मौज या मस्ती से परिपूर्ण।

४ किसी बात की परवाह न करने वाला, बेपरवाह, निश्चिंत।

५ सदा प्रसन्न रहने वाला, खुश मिजाज।

६ किसी प्रकार की अनुभूति से प्रसन्न।

उ०—मकोड़ौ ढोल गळा में टेरनै बहीर हुवौ खुसी में **मस्त** व्हियोड़ौ—फुलवाड़ी

७ जो अपने आप में लीन हो, इधर उधर की न सोचने वाला।

उ०—अर इस्टूखां मन में बड़बड़ावतौ आपरा हाल में **मस्त** हौ।
—फुलवाड़ी

८ किसी कार्य या विषय में लीन, संलग्न, रमा हुआ।

उ०—गधौ तौ आपरा गाणां में पूरौ **मस्त** हौ के अणचींत्यौ करक माथै लीडोड़ पड़ियौ।—फुलवाड़ी

९ किसी पर मोहित, अनुरक्त, रीझा हुआ ।
१० यौवन से परिपूर्ण ।
११ अभिमानी, घमंडी । १२ भयंकर ।
१३ खिलाड़ी, रसिक । १४ पागल ।
रू० भे०—मसंत, मसत, मस्तज, मस्थ ।
मह०—मसतान, मस्तांन ।

मस्तक-सं० पु० [सं०] १ सिर, माथा, मुण्ड । (ह. नां. मा.) (उ. र.)
उ०—१ जननी तूझ हस्त **मस्तक** जिहं । त्रिदशालय सुख वसत निलय तिहं ।—मे. म.
उ०—२ भारथ बरंग हुवो घरा भिड़तां, सत्र साभंतां बाहतां सार । हर महरांग तणो **मस्तक** हद, जड़िया गति मेळै जटधार ।
—जोगीरांम हाडा री गीत
उ०—३ धरणीधर संकर देव धियावउ, जोति प्रकास अलोप जग । **मस्तक** मुगट प्रकास मांडियउ, अनंत कोट ब्रह्मंड लग ।
—महादेव पारवती री वेलि
२ भाग्य, तकदीर ।
उ०—सो वैरी कटवरा मिळै, **मस्तक** लिख्या सो होय । लेख लिख्या कू बाळका, मेट न सक्कै कोय ।—अज्ञात
३ शिखर, चोटी ।
रू० भे०—मसतक, मसतक्क, मसतग, मस्तकु, मस्तक्क, मस्तग, मस्तगि, मस्तगी, मस्तिकि ।

मस्तकु, मस्तक्क—देखो 'मस्तक' (रू. भे.)
उ०—१ कुडउं बोळइ घरमपूतु, हथीयार छंडावइ । छेदिवउं **मस्तकु** द्रस्टद्युमनि क्रमु सिउं न करावइ ।—पं. पं. च.
उ०—२ सीसोद सीस स्रोणी निवेस, **मस्तक्क** जांण गंगा महेस ।
—गु. रू. बं

मस्तग, मस्तगि—देखो 'मस्तक' (रू. भे.)
उ०—१ यह बिसवास आसग्रास निज अंतरि, अबला चोबारे खरी । **मस्तग**, दे दे हाथ, पंथ हेरू हरी ।—ह. पु. वां.
उ०—२ सोहड सीधउ चढै छत्र **मस्तगि** धरै । निज नांव परतीति हरि निकटि नांही ।—ह. पु. वां

मस्तगी-सं० पु०—१ एक प्रकार का बढ़िया गूंद ।
वि० वि०—इसका रंग पीला होता है तथा यह भूमध्य सागर के आस-पास के प्रदेश में पाई जाने वाली एक झाड़ी विशेष से निकाला जाता है ।
२ देखो 'मस्तक' (रू. भे.)

मस्तांन—१ देखो 'मस्त' (मह., रू. भे.)
२ देखो 'मस्तांनौ' (मह., रू. भे.)

मस्तांनि, मस्तांनी—१ देखो 'मस्ती' ।
उ०—दास कबीर जम लोकि जावै नहीं । अलख रस पीवै **मस्तांनि** मातौ ।—ह. पु. वां.
२ देखो 'मस्तांनौ' (स्त्री०) ।

मस्तांनौ-वि० [फा०मस्तानः] (स्त्री० मस्तांनी) १ मस्तों की तरह का ।
२ उन्मत्त, मस्त ।
३ मोटा ताजा, तगड़ा ।
४ पागल ।
मह०—मसतान, मस्तांन ।

मस्ताई—देखो 'मस्ती' (रू. भे.)
उ०—१ हीरा, मोती जड़ियां सोना रा वंधरा सूं हींडो बंधियोड़ौ हो । माथै अपछरावां री रूपाळी राजकंवरी बैठी **मस्ताई** सूं हींडती ही ।—फुलवाड़ी
उ०—२ इक्कीस मांणिगर हाथियां रौ टोळो **मस्ताई** सूं दरदूखां रै गांव री सोय में चालरा लागौ उण वगत वौ फाटोड़ा लिगतरां सूं लिप्तर लिप्तर करतौ आपरै गांव सांमी चालतो हो ।
—फुलवाड़ी
उ०—३ पछै **मस्ताई** सूं आपरै मारग वहीर व्हियौ । बड़बड़ातो करतो बोल्यौ—पांणी री तिस तौ पांणी सूं ई बुझै । इत्तौ तेल पीयौ तौ ई हाल कंठ सूखणा बंद नीं व्हिया ।—फुलवाड़ी

मस्ताणौ, मस्ताबौ-क्रि० अ०—१ मस्त होना, उन्मत्त होना ।
२ पागल होना । ३ मुग्ध होना ।
४ मोटा ताजा होना ।
क्रि० स०—५ मस्ती में झूमना ।
६ मस्त करना, मस्ती में लाना ।
७ मोहित करना, मुग्ध करना ।

मस्तायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ मस्त हुवा हुआ, उन्मत्त हुवा हुआ. २ पागल हुवा हुआ. ३ मुग्ध हुवा हुआ. ४ मोटा ताजा हुवा हुआ. ५ मस्ती में झूमा हुआ, ६ मस्त किया हुआ, मस्ती में लाया हुआ. ७ मोहित किया हुआ, मुग्ध किया हुआ,
(स्त्री० मस्तायोड़ी)

मस्तिकि—देखो 'मस्तक' (रू. भे.)
उ०—हरि एरावण मातलि दांमिट्टी हरिणैगमेखी सरवांगि सन्नाह पहिरि, दृढ़ कसा बंधि, धनुखि गुण चडावी रह्या, ग्रीवा भरण विभूख्यूं, **मस्तिकि** नेत्रादि वस्त्रम (य) अथवा सुवरणमय टोप धरतां,"''''' ।—व. स.

मस्ती-सं० स्त्री० [फा०] १ मस्त होने की क्रिया, भाव या अवस्था ।
२ उन्मत्तावस्था, मतवालापन, उन्माद ।
३ खुशी, आनन्द ।
उ०—१ सगळी साथणियां सूरज री उगाळी आप आपरा घर सूं निकळ जावती । माथा माथै सुरंगी पारियां लियां वै **मस्ती** सूं गीत गावती सगळै मारग चालती रैवती ।—फुलवाड़ी
उ०—२ कोयल कुहू कुहू री **मस्ती** में मीठा गीत गावती के एक मोरियौ उडतौ उण आंब रा रूंख माथै आयौ ।—फुलवाड़ी

४ नशा। ५ संभोग की प्रबल इच्छा, काम-वेग।

उ०—माल ऊडावै आवै मस्ती, तन पर लावै तयारचां। जद वेवां सूं हेत जणावै, सेजां रमै सिकारचां।—ऊ. का.

६ शैतानी, बदमाशी।

७ लापरवाही, निश्चितता।

क्रि० प्र०—आणी, उतरणी, ऊठणी, चढ़णी, झड़णी, झरणी, झाड़णी, निकाळणी।

मुहा०—१ मस्ती आणी = उन्माद चढ़ना, नशा चढ़ना, आवेग या जोश आना, कामेच्छा होना, अहंकार होना। २ मस्ती उतरणी= उन्माद, नशा, जोश, आवेग आदि का शान्त होना, उदासी छाना, पीटा जाना। ३ मस्ती झड़णी=कामेच्छा शान्त होना, मस्ती उतरणा। ४ मस्ती झाडणी, मस्ती निकाळणी=संभोग क्रिया करना, किसी की पिटाई करके बदमाशी या शैतानी मिटाना, गर्व हनन करना, उन्माद या नशा उतारना।

८ पशुओं के होने वाला मद स्राव।

९ वृक्षों या पत्थरों का रस स्राव।

क्रि० प्र०—चूणी, झरणी।

१० ईश्वरोपासना में लीन होने की अवस्था।

११ मुग्धावस्था।

रू० भे०—मसती, मस्ताई।

मस्तु-सं० पु० [सं० मस्+तुन्] १ दही का पानी।

२ फटे हुए दूध का पानी।

मस्तूल-सं० पु० [पूर्त०] बड़ी नाव के बीच का वह बड़ा खम्भा, जिसके पाल बांधा जाता है।

मस्थ—देखो 'मस्त' (रू. भे.)

उ०—प्रबल प्रभाथी स्रीप्रताप मस्थ हाथी जेम, नाथ सब ही के नाथी साथ भयो सुच्चों को।—ऊ. का.

मस्ल—देखो 'मसल' (रू. भे.)

उ०—उमराव मुतळक उण मस्ल में बात न काढ़ी हल चल उण में जाहिर नहीं हुई।—नी. प्र.

मस्स—१ देखो 'मस' (रू. भे.)

२ देखो 'मस्ती' (रू. भे.)

मस्सां—देखो 'मसां' (रू. भे.)

उ०—कमावै जकै में सूं ऊपर रो ऊपर ही जावै। हजार री साल पावै, लारै पांचसौ मस्सां उबारै।—दसदोख

मस्सी—१ देखो 'मसि' (रू. भे)

उ०—मद्दोमत्त खंभ मरोड, जूह वहंति गैतूळ जोड। मस्सी वरन मद्द मसल, पांखां उड्डिया परबल।—गु. रू. बं.

२ देखो 'मिस्सी' (रू. भे.)

मस्सौ-सं० पु०—१ अर्श रोग।

उ०—रातिंदा वाळा नै, निकाळा वाळा नै, आधा सीसी री माथी दूखण वाळा नै मस्सा री तकलीफ वाळा नै अर सरणा चालती व्है जका नै इत्याद मांदगियां वास्तै वो नींबू रै रस री दवाई बतावतौ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मस' (अल्पा., रू. भे.) (वरदा)

उ०—मूंडा माथै पांच सातेक इदकाई में मस्सा में धोळा रूंगतां री तुग्गियां ऊगोड़ी।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मस, मसौ, मस्स, मह।

महं—देखो 'महा' (रू. भे.)

महंक—देखो 'महक' (रू. भे.)

महंकणौ, महंकबौ—देखो 'महकणौ, महकबौ' (रू. भे.)

महंकणहार, हारौ (हारी), महंकणियौ—बि०।

महंकिओड़ौ, महंकियोड़ौ, महंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

महंकीजणौ, महंकीजबौ—भाव वा०।

महंगाई—देखो 'मूंगाई' (रू. भे.)

महंगौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

उ०—कोई कहै सोंघो, कोई कहै महंगो, (मैं तो) लियो है हीरां सूं तोल।—मीरां

महंत-सं० पु० [सं०] १ किसी संप्रदाय या मठ का अधिष्ठाता, आचार्य, प्रधान साधु।

उ०—१ एकै जय जीह लहै कुण अंत, पारौ नंहं प्रांभै सेस पुणंत। मुनेसर ध्यांन धरंत महंत, अखै जुग हेको ही नांम अनंत।—ह र.

उ०—२ महंत जी कीं ऊंचा सुणता हा। जोर सूं बोलनै पूछ्यौ कुण चालतौ रह्यौ?—फुलवाड़ी

२ शिष्य परंपरा के अनुसार किसी गुरु गादी का अधिकारी, गद्दीधारी।

३ ब्राह्मण, पंडित।

वि०—प्रधान, मुखिया।

रू० भे०—मंथ, महंति, महंती।

महंतमोह-सं० पु०—महामोह।

महंतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे)

महंताई-सं० स्त्री०—१ महंत होने की दशा, अवस्था या भाव।

२ महंत का पद या गद्दी।

३ महंत कार्य या प्रतिष्ठा।

रू० भे०—महंति, महंती।

महंति, महंती—१ देखो 'महंत' (रू. भे.)

उ०—संगि संति सखीजण गुरुजण स्यांमा, मनसि विचारि ए कही महंति। कुसथळी हूंता कुंदणपुरि, किसन पधार्‌या लोक कहंति।

—वेलि

२ देखो 'महंताई' (रू. भे.)

महंदी—देखो 'मैंदी' (रू. भे.)

उ०—१ रसराज नथनी महंदी चमकै। लोक लखै मन लाजै राज।

—रसीलैराज रौ गीत

उ०—२ महंदी ऊगी ऊगी पांन दो पांन । पेम रस महंदी राचणी जी राज ।—लो. गी.

महंमाई, महंमाय—देखो 'महामाया' (रू. भे.)

उ०—१ बिरच अनूप बणी थल बंका, सैंजळ कूप सवाई । 'आलण' बंस दियै उजियागर, माल्हणदे महंमाई ।—जसकरण लाळस

उ०—२ महंमाय तू ही तुही जोग माया । प्रकत्ती सकत्ती तुही नांम पाया ।—मे म.

मह—सं० पु० [सं० महः] १ उत्सव, जुलूस

उ०—१ मह मह सुगंध चिक्कस मळण, जीतण तप ग्रहमह जुई । जह मह बिबाह लाडां जुड़ण, हाडां घर गह मह हुई ।—वं. भा.

२ उत्साह, खुशी ।

उ०—बिरचै एम बधावणों, ग्रांणि कंवर अति ग्राघ । मीणां कहियौ अतुल मह, बचिया तो बळ बाघ ।—वं. भा.

३ नैवेद्य, भेंट । ४ यज्ञ, हवन ।

५ बलिदान, उत्सर्ग । ६ भैंसा ।

सं० स्त्री०—७ आभा, दीप्ति, चमक ।

वि०—१ मधुर, मीठा ।

उ०—मह-मह सुगंध चिक्कस मळण, जीतण तप ग्रहमह जुई । जह मह बिबाह लाडां जुड़ण, हाडां घर गहमह हुई ।—वं. भा.

सर्व०—२ मेरा ।

उ०—दुजोहण वयणु सुणि एक वार मह भणिउ किज्जई । निय अवधि आवीया पंडवाह बहु मांनु दिज्जई ।—पं. पं. च.

[सं० अहंम] मैं ।

उ०—मह मह सुगंध चिक्कस मळण, जीतण तप ग्रह मह जुई । जह मह बिबाह लाडां जुड़ण, हाडां घर गह मह हुई ।—वं. भा.

२ देखो 'मही' (रू. भे.)

उ०—१ गिर पुर देस गमाड, भमिया पग पग भाखरां । मह अंजसै मेवाड़ सह अंजसै सीसोदिया ।—महाराजा मांनसिंह

उ०—२ हर रथ माठो होय, सकत रथ होय सयांणा । सित रथ देवै पूठ, घटै उतराध पयांणां । हंस हाल परहरै, बचन पलटै दुरवासा । मह मोरां झड मंडै, इंद नहिं पूरै आसा । प्रहलाद भगति छोड़ै परी, कळजुग सतजुग नै कळै । सेवगां तणा मेहा सदू, साद न करणी संभळै ।—चौथवीठू

उ०—३ पुणै कमण तर पत्र ग्रहम माया कुण भक्खै । मह उत्तर पथ माय, आप लहरां कुण अक्खै ।—र. ज. प्र.

उ०—४ गह भरियौ गजराज, मह पर वहै आपह मतै । कूकरिया बेकाज, रुगड़ भुंसै किम राजिया ।—किरपारांम

देखो 'महा' (रू. भे.)

उ०—१ बिस गजर दो जणां सीस झेलौ बिहद, सरब पाळांण चूनै गरक सार । 'मांन'हर कियौ भुरजाळ सुज बणी मह, अलख रा पींजरा तणा आकार ।—उमेदजी सांदू

उ०—२ मह कहर आवह माचियो, खूदाळ खित रवि खांचियो । छिब अरस विबुध विमांण छायो, इंद्र आद असेस ।—र. रू.

देखो 'मैं' (रू. भे.)

उ०—१ मह जाय पेखै छाह निरमळ, प्रघण हिम पांणी । तित समय परभा त्रिया तिणनूं, वदे मुख बांणी ।—र. रू.

उ०—२ मत्त सतावन सब गाथा मह, कळा तीस पुरबा अरध कह ।
—र. ज. प्र.

महकंध—सं० स्त्री०—खुशबू, सुगंध, सोरभ ।

वि०—बड़े बड़े कंधों वाला ।

महक—सं० स्त्री० [सं० महक्क] १ सुगंध, सुवास, खुशबू, सौरभ ।

उ०—१ सोन जुह रियाबेल चंबेल चंबेली के फुलवाद मोगरै की महक गुलाब फूलूंकी सुगंध जवाद ।—सू. प्र.

उ०—२ महक सहु वारणै धूप धांणा सही ।—बृ. स्त.

२ गंध, वास ।

रू० भे०—महंक, महिक ।

महकणौ, महकबौ—क्रि० अ०—१ सुगंधित होना, सुवासित होन, खुशबू फैलना, महकना ।

उ०—१ लोयण चंचळ स्रवण लग, लांबा वेणी डंड । महकै सहज सुबास बप, किर लायौ स्रीखंड ।—बां. दा.

उ०—२ विस्व सुबासित होय जिके मुख वास हूं । मळियाचळ महकंत बसंत बिलास हूं ।—बां दा.

उ०—३ थळ भूरा वन झंखरा, नहीं सु चंपइ जाइ । गुणे सुगंधी मारवी, महकी सहु वणराइ ।—ढो. मा.

२ गंध देना, वास देना, बू देना ।

३ बोलना, कुहकना ।

उ०—वरसायत आवण की धारी छै, आपकै जावण की त्यारी छै । जमी नीला सिणगार धारसी, जसां सिणगार उतारसी । मोरीया महकसी डेडरा डहकसी, झिलीगण झणकसी भमरा भणकसी ।—मयारांम दरजी री बात

महकणहार, हारौ (हारी), महकणियौ—वि० ।

महकिग्रोड़ो, महकियोड़ौ, महक्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

महकीजणौ, महकीजबौ—भाव वा० ।

महंकणौ, महंकबौ, महक्कणौ, महक्कबौ—रू० भे० ।

महकदार—वि०—१ जिसमें महक हो, सुगंध हो ।

२ जिसमें गंध हो ।

महकम—वि० [अ० महकूम] अधीन ।

उ०—करता अकरता कीयौ होय सु मेटै सब ही बातां सामरथ । करणजी जु हाथ साळा नै महकम करि लगाया था सोई हाथ माथा ऊपरि दीया । थाप्यौ निवाजि चाल्यौ ।—वेलि टी.

महकमौ—सं० पु०[अ० मह्कमः] १ अदालत, न्यायालय ।

२ विभाग, कार्यालय (सरकारी)।

महकाणौ, महकाबौ–क्रि० स० ['महकणौ' क्रि० का प्रे० रू०] १ सुगन्धित करना, सुवासित करना, खुशबू फैलाना, महकाना।

उ०—प्रतिबूधौ मदहर सुत पिण व्रप संगति पाइ। मलयाचल संगै तरु बीजा पिण महकाय।—ध. व. ग्रं.

२ दुर्गंध लाना, बू फैलाना।

महकाणहार, हारौ (हारी), महकाणियौ—वि०।

महकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

महकाईजणौ, महकाईजबौ—कर्म वा०।

महकायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ सुगंधित या सुवासित किया हुआ, खुशबू फैलाया हुआ, महकाया हुआ. २ दुर्गंध फैलाया हुआ, बू फैलाया हुआ.
(स्त्री० महकायोड़ी)

महकाली—देखो 'महाकाली' (रू. भे.) (डिं. को.)

महकासुर—देखो 'महिखासुर' (रू. भे.)

उ०—लंकापति रावण कहां, कुंभ करण कहां वंस। हिरणाकुस हिरणाखि कहां, महकासुर कहां कंस।—ह. पु. वा.

महकियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ सुगंधित या सुवासित हुवा हुआ, महका हुआ. २ गंध, वास या बू दिया हुआ. ३ बोला हुआ, कूका हुआ.
(स्त्री० महकियोड़ी)

महकी—देखो 'महिसी' (रू. भे.)

उ०—त्यौंकी के सुत जागि, सिंध बन मांही मारया। महकी करै मलार, ससै फिरि स्वांन संगारया। खिमा संवारै सेज, बसै चीटी निरदावै। महकी करै सिंगार, खेत खर खांण न पावै।—ह. पु. वा.

महकीलौ–वि०—खुशबूदार, सुगंध देने वाला।

महक्कणौ, महक्कबौ—देखो 'महकणौ, महकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रवि भैरव जीवणी घणी श्राणंद चहक्की। संग वेळ सूरमा, वास अगरेल महक्की।—रा. रू.

उ०—२ सिंधु परइ सउ जोश्रणे, खिवियां बीजुळियांह। सुरहउ लोद्र महक्कियां, भीनी ठोवड़ियांह।—ढो. मा.

महक्कणहार, हारौ (हारी), महक्कणियौ—वि०।

महक्किश्रोड़ौ, महक्कियोड़ौ, महक्कयोड़ौ—भू० का० कृ०।

महक्कीजणौ, महक्कीजबौ—कर्म वा०।

महक्कियोड़ौ—देखो 'महकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० महक्कियोड़ी)

महकत—देखो 'महाकृत, महाकित' (रू. भे.)

महख—देखो 'महिस' (रू. भे.)

उ०—चक्र चालण झटक झालण ग्रभ गाळण गाजणी। विड़दाव धारण महख मारण दुख दळिद्र भांजणी।—मा. वचनिका

महखी—देखो 'महिसी' (रू. भे.)

उ०—पोढ़ै तेण वखत व्रप पावै। महखी दूध सवांमण मावै।
—सू. प्र.

महखौ—देखो 'महिस' (रू. भे.)

महगल—देखो 'मदकळ' (रू. भे)

उ०—तुरीय सहइस पंचास, दोय सई महगल मंता। राजकुली छत्तीस, सोहड भड सेव करंता।—ध. व. ग्रं.

महगाई—देखो मूंगाई' (रू. भे.)

महग्घ–वि० [सं० महार्घ्य] मूल्यवान, कीमती।

उ०—श्रट्ठां दिकपालन सम असंक, निरखियें श्रट्ठ मिसलन निसंक। ईसाग्यावरती अचळ अग्घ, मारवाराव मुरधर महग्घ।—ऊ. का.

महड़ीसिया–सं० पु०—राठौड़ वंश की एक उप-शाखा। (बां. दा. ख्यात)

महचक्र–सं० पु० [सं० महस्+चक्र] १ प्रकाश का गोला, सूर्य।
(डिं. को.)

२ चंद्रमा।

महज–वि० [अ०] १ केवल, सिर्फ, मात्र।

२ निर्मल, खालिश, शुद्ध।

३ निरा, अत्यल्प।

महजरनांमौ—देखो 'मेजरनांमौ' (रू. भे)

महजित, महजिद, महजीत, महजीद—देखो 'मसजिद' (रू. भे.)

उ०—१ सक खग खांन संभाय, मैंके हाल छांमै मुलक। महजिदां चै माय, वीरम सूर विधोड़िया।—गो रू.

उ०—२ महजीवां ढाहजै आवड़ जोड़जै अरोड़ां थंड देख थर हरै। डंड संस है किरोडां।—अरजुनजी बारहठ

उ०—३ सुर झालर घंटा सरसाया, महजीतां सुरबांग मिटाया। सिव हरि सकत सेव सरसाई, मीर पीर त्यां पूज मिटाई।—रा. रू.

उ०—४ पीछै हिंदवां रै तीरथां मैं देव-मूरतां खंडण करायी। तथा काशी मैं विस्वेसरजी री लिंग ग्यांन वापी मैं दाखल हुई। अरु मिंदर रै लारै लारै महजीद कराई।—द. दा.

महज्जुई–सं० पु० [सं० महाद्युति] अत्यन्त तीव्र प्रकाश, आभा कान्ती।
(जैन)

महडौ—१ देखो 'मांडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मुंडौ' (रू. भे.)

महण–सं० पु० [सं० महार्णव] १ महासागर, समुद्र।
(अ. मा., ना. डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ मोज महण मूरत मयण, लोयण लाज अपार। 'जेहल' राजकुंवार जिम, कुण अन राजकुंवार।—बां. दा.

उ०—२ महामत महण जसराय मुनि बालमिक, कोट सत चिरत रघुनाथ कीधौ।—र. रू.

उ०—३ वहरहि हिलै वहीर, पाइक ओठक पड़तळां। मिळवा किर चाली महण, नवसै नदि ले नीर।—वचनिका

उ०—४ बोदा नाडां बार, पीधां विन ही खूटै परी। सो जळ पीयै संसार, महण घटै नह मोतीया।—रायसिंह सांदू

२ ईश्वर।

उ०—सोय दूजो संसार, माटी सूं घड़ियौ महण। तौ घड़ियौ किरतार, काया हूंता करमसी।—द. दा.

४ डिंगळ का वेलिया साणोर नामक छंद विशेष, जिसके प्रथम द्वाले में २ लघु व ३१ गुरु कुल ६४ मात्राएं होती हैं तथा शेष द्वालों २ लघु व ३० गुरु कुल ६२ मात्राएं होती हैं।

रू० भे०—मंहण, महणि, महणी।

महणमत्थ, महणमथ–सं० पु०—१ समुद्र का मंथन करने वाला, विष्णु।

उ०—रात दिवस हरि ह्रदै रहाविस, आठूं पहर अनंत उल्लाविस। मांडे पूजा तूझ महणमथ, सकळ सरीर करिस इम सुक्रियथ।

—ह. र.

वि०—महाशक्तिशाली।

उ०—'मधकर' हर 'हिम्मत' महण मत्थ, मेड़तै रूप हिम्मत समत्थ। एताल आद दूहा अथाह। नव कोटां आगळ नरां नांह।—रा. रू.

रू० भे०—महणामथ।

महणमह–सं० पु०—ईश्वर, परमेश्वर। (ह. नां. मा.)

महणामथ—देखो 'महणमथ' (रू. भे.)

महणारंभ—देखो 'महारणव' (रू. भे.)

महणारथ–सं० पु०—समुद्र।

उ०—पवन चक्र बळ पाइ लाय पावक ऊलट्टै। कना सीम दव चूंक फूंक महणारथ फट्टै।—रा. रू.

महणि महणी—१ देखो 'महण' (रू. भे)

उ०—आवतां लखे नर नार इम भार कतार भंगेलियां। मिलि जाय महणि पावस समै, जांण नदीरस जेळिया।—रा. रू.

२ देखो 'मैणी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मांनै लागै महणी कुल लाजै पत जाय। कोंही बाइ किउं कीजीयै, भूपालां सै बात।—पन्नावीरमदे री बात

महणो—देखो मैणो' (रू. भे.)

उ०—१ 'गांगावत' जिम मांम गमाडै, करन-समोभ्रम जाय किम। भाजण तणा ज महणा अणभंग, जैत न सहियौ माल जिम।

—द. दा.

उ०—२ काल्ह पग पसार थे—म्है मरीस तौ अगत जायसै, मौनूं अगत होयसी, थांनूं बड़ो महणो होसी।—डाढाळा सूर री बात

महणव—देखो 'महारणव' (रू. भे.)

महत–वि० [सं० महत्] १ महान, श्रेष्ठ।

उ०—लाख वरीस महत तूं 'लाखा', तायक समवड कीजै ताय। इळ अणवूठे कसौ अंबहर, अगड अदठनै उहवै आय।

—महारांणा लाखा री गीत

२ विशाल, भीमकाय, बड़ा, मोटा।

उ०—पीठ बड़बड़ात कूरम छटा प्रलै री, मही खड़खड़ात हैजम मचोळां। मुनि हड़हड़ात घड़ड़ात तोपां महत, गयण गड़ड़ात पड़ झाट गोळां।—कविराजा बांकीदास

३ लम्बा-चौड़ा, विस्तृत, फैला हुआ।

उ०—है नभ जतै अहमकर हमकर, नर पुर अतै रहण री नीम। महत सुजस वसतार न मावै, भरतखंड मझ रांणा भीम।

—महाराजा मानसिंघ

४ विपुल, पर्याप्त, बहुत, अत्यधिक।

उ०—मिल अछर हरखत चित महत, पख निरख वीरत वरत पत। खग मिलत गूंदा तत अखत, वण असत परवत मेर वत। सह त्रिपत विहंग विसेस।—र. रू.

५ मजबूत, दृढ़। ६ ताकतवर, बलवान।

७ उग्र, प्रचंड, तेज। ८ गाढ़ा, घना।

९ आवश्यक, महत्वपूर्ण। १० प्रसिद्ध, प्रख्यात।

११ उच्च, ऊंचा, कुलीन।

सं० पु० [सं० महत्व] १ मान, सम्मान, आदर।

उ०—दोय हजार गांव दीधा, घोड़ा हजार दोय हाथियां रौ हलको पालखी ११०० रथ २०० लाख एक रुपिया रोजीना कर दिया। घणौ महत बधारियौ नैं सीख दीधी।—जगदेव पंवार री बात

२ बड़प्पन, बड़ाई।

३ अनन्तता, अखण्डता, असंख्यता।

४ राज्य, सलतनत। ५ प्रकृति का मूल तत्व।

६ ब्रह्म। ७ शिव। ८ जल, पानी।

९ पवित्र ज्ञान। १० ऊंट।

११ देखो 'महत्व' (रू. भे.)

महतउ—देखो 'महत्त्व' (रू. भे.)

२ देखो 'महता' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—वेस्या जांणी पडिउ कोइ ओलखीउ 'ए महतउ होइ'। घरि आंणी जांणी संकेत मणिजल पाई कीउ सचेत।—हीराणंद सूरि

महतकळायण, महकिलांण–सं० स्त्री०—१ बादल, मेघ।

(नां. मा., ह. नां. मा.)

२ घन-घोर घटा।

महतगुण–सं० पु० [सं० महा-गुण] हंस। (अ. मा.)

महतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे.)

महतत्व—देखो 'महत्तत्व' (रू. भे.)

उ०—जाहरां परमात्मा माया दिसि देख्या तियां थी महतत्व नीपना। महतत्व थकी अहंकार नीपनौ।—द. वि.

महता–सं० पु० [सं० महत्तर] १ राजा या किसी रईस के राज्य या जागीर का प्रबन्धक।

२ मुख्य व्यक्ति, प्रधान व्यक्ति।

रू० भे०—महतउ, मू'ता, मू'था, मै'ता, मोहता।

३ देखो 'महत्ता' (रू. भे.)

महताप, महताब–सं० पु० [फा०] १ चन्द्रमा।

उ०—मुखड़ा सोह रह्या महताब वे। रसराज आफताफ जरी जेवर चमकै।—रसीलैराज रौ गीत

सं० स्त्री०—२ चन्द्रमा की चांदनी, चंद्रिका, ज्योत्स्ना।

३ अग्नि।

उ०—प्रजा महाराज रा ताप मांहे असुर, पतंग महताप रा तेम प्रजळे।—अजीतसिंह राठौड़ रौ गीत

४ रोशनी, चिराग, मोमबत्ती।

उ०—१ महताबां रौ चांदणौ हुवै, सू महिताबां पचास सव सांवठी ही लागी छै। जांणै जेठ रौ दो पहरौ खुलियौ छै। इण भांत रै चांदणै में जीमण री हौंस मांणजै छै।—रा. सा. सं.

उ०—२ ताव दांन के जलूस अस्टपदीका भाव। असमूं की आव जे महताबूं का ताव।—सू. प्र.

५ एक प्रकार की आतिश-बाजी जिसकी रोशनी बहुत तेज होती है।

६ जहाज पर, रात में, संकेत के लिये लगाई जाने वाली एक प्रकार की रोशनी।

रू० भे०—महिताब।

महताबी–वि० [फा०] १ महताब का, महताब सम्बन्धी।

२ महताब के समान चमकने वाला।

सं० पु०—१ सोने चांदी के तारों से बना हुआ एक वस्त्र विशेष, जरबफत।

उ०—तन पवसाक जरी महताबी, फबि चीरा किलंगी सिर फाबी। —सू. प्र.

२ एक प्रकार की आतिशबाजी जिसे छोड़ने से चांदनी सी छिटक जाती है। यह मोमबत्ती के आकार की होती है।

महतारी–सं० स्त्री० [सं० माता] माता, जननी, मां।

उ०—निज पितु छोड़ै नीच तुरत छोड़ै महतारी। निज ध्रम छोड़ै निलज छोड़ै निज नारी।—ऊ. का.

महतिजसुर–सं० पु० [सं० महतीजसुर] स्वामी, कार्तिकेय। (नां. मा.)

महती–सं० स्त्री० [सं०] १ किसी मन्त्री या अमात्य या महामात्य की स्त्री।

उ०—कहीउ सघसउ ते अवदात महती हरखी निसुणी बात। सखीअ पाहि वीनवीउ नरिंद निसुणी राय हूंउ आणंद। —हीराणंद सूरि

२ किसी चौधरी, पटेल, प्रधानामात्य या मुखिया की स्त्री।

उ०—'अभमल' हरो 'खंगार' अभनवो, बिजड़ां रीठ बजाड़ै। महता हूंत पुकारै महती, पीव बिछोड़ा पाड़ै।—देवसिंघ खंगारोत

३ नारद की वीणा का नाम।

उ०—डोलि अवनि डुंगर डगमगिय, भगिय भरग समाहित भाव। लचि आलुक तालुक भर लगिय, चंडी चित्तहु जगिय चाव। नच्चहिं कलहबिसारद नारद महती तंत्रिन कोन मिळाइ। लखहिं प्रेत डाकिनी बेताल रु जोगिनी बीर जानु गन जाइ।—वं. भा.

वि० स्त्री०—बड़ी, विशाल, दीर्घाकार।

उ०—फटकार हलाहल तें फिरगो, धन आनंद अम्रत घा धिरगो। मुसला पर डार सिला महती, गुरु कारज आरज बंस गती। —ऊ. का.

महतीद्वादसी–सं० स्त्री० यौ० [सं०] भाद्रपद शुक्ला द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र में पड़ती है।

महत्तत्त्व–सं० पु० [सं०] १ प्रकृति का विकार, मूल तत्व।

२ पच्चीस तत्वों में से तीसरा तत्त्व।

रू० भे०—महतत्व, महातत, महातत्व।

महत्तम–वि० [सं०] १ सबसे बड़ा।

२ सबसे ऊंचा, सर्वोच्च श्रेष्ठ।

३ सबसे अधिक।

महत्तर–सं० पु० [सं०] १ सर्वाधिक प्रतिष्ठित व्यक्ति।

२ मुख्य, प्रधान या सबसे बूढ़ा आदमी।

३ गांव का मुखिया या बड़ा बूढ़ा।

४ राजा या किसी रईस के राज्य या घर का प्रबंधकर्ता।

५ भंगी, हरिजन।

रू० भे०—महंतर, महतर, मिहतर, मै'तर।

महत्तरियां—देखो 'मावलियां'।

महत्ता–सं० स्त्री०—१ बड़ाई, विशेषता, महत्व।

उ०—केवळ ही मरण मंडियां बसुधा र बडाई दो ही व्यरथ जावसी। अर धीर लीधां मंत्र री महत्ता रै साथ सीमां मैं सारोही फैल खटावसी।—वं. भा.

२ सम्मान, आदर।

रू० भे०—महता, महथा।

महत्पुरस–सं० पु० [सं० महत्पुरुष] १ पुरुषोत्तम।

२ महापुरुष, बड़ा आदमी।

महत्व–सं० पु०—१ महान होने की अवस्था या भाव।

२ विशेषता, खासियत।

२ विशालता, गुरुता।

रू० भे०—महत, महतउ, महुत, महुत्त।

महद–वि०—१ उत्सवदायक, उत्साहवर्धक।

उ०—आस्चरयं रघुनाथं भूप महदं त्व नांम मुच्चारणम्। जन्मं संचिद घोर घोर कळुसं, नासं तमेकं-छिनम्।—र. ज. प्र.

२ महान, बड़ा। ३ विशाल।

महद्वालय–सं० पु०—आकाश, आसमान, नभ।

उ०—ओढण महद्वालय ओढण थण ओढै, प्रमुदा आलयबिण प्रमथालय पोढै। भुर भुर कुरजांसी उरजां सुक भड़कै, तीखा नेतर री छेतर में तड़फै।—ऊ. का.

महदी—सं० पु० [अ०] १ ठीक रास्ते पर चलने वाला।
२ शीया मुसलमानों का धर्म गुरु।
३ शीया सम्प्रदाय के १२ वें इमाम।
उ०—महदी मारिया गया, लाखां रुपियां री दोलत लुटांणी।
—बां. दा. ख्यात
वि०—जिसको दीक्षित किया हो, दीक्षा प्राप्त।
२ देखो 'मेंदी' (रू. भे.)
३ देखो 'मैंदी' (रू. भे.)
उ०—जो जांणु पीव जावसी, उळग विचारै नाह। हाथै महदी न दीयां, न काजळ सारांह।—राव रिणमल राठौड़ खाबड़ियै री वात

महदीप—देखो 'महाद्वीप' (रू. भे.)
उ०—महदीप छंद तेरहै दस मत पय जांणौ। इण जोड़ सुजस रांम अपत उर मज्झ आंणौ।—र. ज. प्र.

महदेव—देखो 'महादेव' (रू. भे.)

महनत—देखो 'मैं'नत' (रू. भे.)
उ०—कूड़े ऊतारे सुकवि, गाढी महनत गीत। खाल उतारै खांत सूं, इसड़ी कुकव अनीत।—बां. दा.

महनौ—देखो 'महीनौ' (रू. भे.)
उ०—१ रांणी कही महनै एक इठै बिराजौ। म्हे बाई नूं बुलावां दिन घणां हुवा मिळस्यां।—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—२ नारणोत हठीसिंह केसरीसिंहोत सूं इतरै धाय भाई पण सांमिल हुवौ महनौ एक लड़ियौ पछै नीसरियौ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

महन्नत—देखो 'मैं'नत' (रू. भे.)

महपत, महपति, महपत्ती, महपत्ति, महपत्सी—देखो 'महीपति' (रू. भे.)
उ०—१ विस्वामित्र तणां सुण बैणां, आनंद अंग उमंगै। महपत बदै पांव मुनी रा, सार दिया सुत संगै।—र. रू.
उ०—२ मल्हपै देखि गयंद हूं महपति। गज पर गिरंद कंठीर तणी गति।—सू. प्र.
उ०—३ सजि दसकतां सुरतांण, महपती दिस फुरमांण। दाखियौ जिम लिख दीध, कूरमां ऊपर कीध।—सू. प्र
उ०—४ अबै इतरौ कांइ देखीजै, कवरजी राज जमां खात्तर राखीजै, म्हां ऊभां महपत्ति कीसौ सोच दाखीजै।—पनां
उ०—५ महाराज 'अभमाल' पूछ धावड़ महपत्ती। एक रंग अण भंग बोल करि अगुट बिरत्ती।—सू प्र.
उ०—६ महपत्ती कमधज्ज, मसंदां' मोड़णा, त्रिजड़ां मुहि तुरकांण तणी जड़ तोड़णा।—महाराजा करणसिंह री गीत

महपसमी—सं० पु० [सं० महत्+फा० पश्मी] बढ़िया ऊन का बना एक वस्त्र विशेष।
उ०—मुंहगा घणा मोल रा, पड़ै पगमंडा अपारां। महपसमी मुखमलां, तास अतलस जरतारां।—सू. प्र.

महपाळ—देखो 'महीपाल' (रू. भे.)
उ०—रांणीं सुवयण सरीत रे, अप इसी उपजी नीतरे। तन भरथ सूं कर प्रीत रे, महपाळ करसी मीतरे।—र. रू.

महपिता—देखो 'पितामह' (रू. भे.)
उ०—धूहड दुहूं जोधांण सुमेर सुरेस सौ। सुपह महपिता साथ रिमां उर रेसमौ।—किसोरदांन बारहठ

महपुर—सं० पु० [सं० महिपुर] भूलोक, पृथ्वी लोक।
उ०—अहपुर महपुर इंद्रपुर, स्यौं ब्रह्मा लो जोंय। जन हरिदास दुभर दुनी, सूभर भरचा न कोय।—ह. पु. वा.

महफिल—सं० स्त्री० [अ०] १ मजलिस, सभा, गोष्ठी।

महबंबी—सं० स्त्री०—प्रेयसी, प्रेमिका, महबूबा।

महबर—सं० पु०—एक प्राचीन देश।
उ०—अवध्या वणारसी चंदेरी मल्लिवाल महबर महोब हरियांणउ भयांणउ रतनपुर कांमरू······ ।—व. स.

महबळी—देखो 'महाबळी' (रू. भे.)
उ०—गज दंत तोड़ अरि थाट गाह। महबळी लोह पड़ खेत माह।
—शि. रू.

महबुब, महबूब—सं० पु० [सं० महबूब] (स्त्री महबूबा) १ अत्यधिक प्यारा, प्रिय, आशिक, अजीज, प्रेमी।
उ०—१ कुंवर कनै ऊ कागद आयौ, जांणै चात्रग स्वाति बूंद पायौ। महबुब का दसकत छाती लगाय लीना।—पनां
उ०—२ सब लालों सिर लाल है, सब खूबों सिर खूब। सब पाकां सिर पाक है, दादू का महबूब।—दादूबांणी
उ०—३ नजर निजारे दी यार, मन बस गईयां वे। रसीलाराज महबूबां दी नजरां, फूट कलेजै पार।—रसीलैराज रा गीत
२ वह जिससे प्रेम किया जाय, इश्क या मुहब्बत करने योग्य।
उ०—हंसि कै साहि कहै इसौ, क्युं वे खोजा खूब। हम महलें सब संखणी, नहि पदमणि महबूब।—प. च. चौ.
३ रसिक, शौकीन, इश्क मिजाज, खुश मिजाज।
उ०—मेह्मां हुंदा मुलक में, जो मावड़ियौ जाय। महबूबां री मिसल में, किल सिरदार कहाय।—बां. दा.
रू० भे०—महिबूब।

महब्बळ—देखो 'महाबळ' (रू. भे.)

महब्भूय—देखो 'महाभूत' (रू. भे.)

महमंडळ—देखो 'महिमंडळ' (रू. भे.)

महमंत—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)
उ०—१ सोळै बरसां कांमणी, मगरपचीसां कंत। ए दिन फेर न आवसी, जोबन रा महमंत।—अज्ञात
उ०—२ सांवण आयौ साहिबा, मोर हुआ महमंत। इण रित पीयर मोकळै, कठण हिया रा कंत।—अज्ञात

महमंतौ—१ देखो 'मैमंतौ' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

२ देखो 'मैमंत' (अल्पा., रू. भे.)

महमंद—१ देखो 'मैमद' (रू. भे.)

उ०—सांझी समय धण कीयौ सीणगार। सीरह महमंद गळि मोतीहार।—बी. दे.

२ देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

३ देखो 'महमूद' (रू. भे.)

४ देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

महम—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—बेगड़ौ महमूद गुजरात पातिसाही करै। सू पताई रावळ ऊपर महम कीवी। पावैगढ नूं वरस बारह तांई घेरियौ।

—पताई रावळ री वात

महमद—देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

२ देखो 'मैमद' (रू. भे.)

उ०—वीरा, म्हारै माथा नै महमद लाज्यौ। म्हारी रखड़ी वैठ घड़ाज्यौ।—लो. गी.

३ देखो 'महमूद' (रू. भे.)

महमदी—देखो 'मुहम्मदी' (रू. भे.)

महमह–क्रि० वि०—खुशबू के साथ।

महमहइ—देखो 'माहीमांहि' (रू. भे.)

महमहण–सं० पु०—१ श्रीकृष्ण का एक नामान्तर। (अ. मा.)

उ०—मेवा तजिया महमहण, दुरजोधन रा देख। केळा छोत विसेख, जाय बिदुर घर जीम्हिया।—र. ज. प्र.

२ ईश्वर, परमेश्वर।

उ०—१ संत संगत समरण सदा इता थोक वंछै अदै। मांगियौ मूझ द्यौ महमहण, दइव सीळ संतोक दै।—जगौ खिड़ियौ

उ०—२ खग नीर धीर अंतर खरा, मद कुंजर बपु जिम मयण। मन बसै तेम तूं मांहरै, मो मन बसियौ महमहण।—ह. र.

३ विष्णु।

उ०—मच्छ कच्छ बाराह महमहण, नारसिंह बांमन नाराथण। दुज्ज-रांम रघु-रांम दमोदर, क्रसन बुद्ध कलकी करुणाकर।—ह. र.

[सं० महार्णव] ४ समुद्र, सागर।

उ०—ब्रहमंड लगै भुजडंड वध्धि, महमहण मथण किरि महोदध्धि।

—गु. रू. बं.

रू० भे०—महमाहण, महमेहण, महामहण।

महमहणौ, महमहबौ–क्रि० अ० [प्रा०महमहइ] १ महकना, खुशबू देना। (उ. र.)

उ०—१ महासर आगै आइयौ, चंदन रा तरु पाल। पंकज परमळ महमहै महा सुगंधी साल।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ बउल बेउल चंपक मालती। महमहइं फलि फूलि वनस्पति।—जयशेखर सूरि

२ गंध देना।

महमहियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ महका हुआ, खुशबू दिया हुआ. २ गंध दिया हुआ.

(स्त्री० महमहियोड़ी)

महमां—देखो 'महिमा' (रू. भे.)

उ०—चारण बरण चितार, कारण लख महमां करी। धारण कीजै धार, परम उदार प्रतापसी।—दुरसौ आढ़ौ

महमांण, महमांन—देखो 'मैं'मान' (रू. भे.)

उ०—१ दुनिया सब कोय पांच दिन आया महमांणां।

—केसोदास गाडण

उ०—२ सगतै केम सत्ता करौ रे, कांय पचारौ पांण। थोड़ा ही होवै घणा रे, लीज्यें भेलि महमांन रे।—प. च. चौ.

महमांनी—देखो 'मैं'मानी' (रू. भे.)

उ०—रतन मंजरी राजा विक्रमादित्य नूं परणा ई गवी घणी महमांनी हुई।—पंचदंडी री वारता

महमा—देखो 'महिमा' (रू. भे.)

उ०—१ तद करणसिंघजी वगेरै सारांई राजावां इण री महमा करी।—द. दा.

उ०—२ कारण कवण वयण लघु काया। महमा प्रबळ ईस्वरी माया।—सू. प्र.

महमाई, महमाय, महमाया—देखो 'महामाया' (रू. भे.)

(नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ सुंभ निसुंभ चंड मुंडासुर, दुसह सुरां दुखदाई। दांनव महिख रकत बीजादिक, मार लिया महमाई।—मे. म.

उ०—२ कांकळ समै कुबेलियां, म दे संग महमाय। निजरां आगै निमस मैं, हारमोर व्है जाय।—बां. दा.

उ०—३ किनिया पंच वरस धरि काया। मिळै आंण सनमुख महमाया।—सू. प्र.

महमाहण—देखो 'महमहण' (रू. भे.)

उ०—मुख हूंता भाख 'किसन' महमाहण, प्रभु नित भीड़ साच पखा रे।—र. ज. प्र.

महमुंद, महमुद—१ देखो 'महमूद' (रू. भे.)

२ देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

महमुदी, महमूंदी–सं० पु० [अ० मुहम्दी] १ एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा या वस्त्र।

उ०—१ मन जांणै पहरू महमुदी, फाटा धाबळ लियां फिरै। कासूं हुवै मिनखां कीधौ, करै जिको करतार करै।—ओपौ आढ़ौ

उ०—२ पछै अकबर पातसाह जांमनूं तुरक कियौ। हमैं तुरक छै। वडा दातार छै। चारण आयेरी खबर दै तिणनूं ५ महमूंदी दीजै

—नैणसी

२ देखो 'मुहम्मदी।

रू० भे०—महमूदी, महिमुंदी, महिमुदी, मांहमुंदी ।

महमूद—वि० [अ०] १ श्रेष्ठ, उत्तम।

२ शुभ, अच्छा ।

३ प्रशंसनीय, प्रशंसित । ४ इष्ट ।

सं० पु०—१ एक प्रसिद्ध मुस्लिम बादशाह ।

रू० भे०—महमंद, महमद, महमुंद, महमुद, महिमुद, महिमूद ।

महमूदी—१ देखो 'मुहम्मदी' (रू. भे.)

२ देखो 'महमूंदी' (रू. भे.)

महमेहण—देखो 'महमहण' (रू. भे.)

महमोहण—देखो 'मनमोहन' (रू. भे.)

उ०—मिणधर मेछ कमळ **महमोहण**, चाच वंसोधर दे चलण ।
मूंणस वट तो तण माडेचा, मनखत मांणी भिमें मण ।—नैणसी

महम्मद—देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

महम्मह—वि०—सब से बड़ा, सर्वश्रेष्ठ, महान ।

महम्मा—देखो 'महिमा' (रू. भे.)

उ०—**महम्मा** जांणै ब्रह्म महेस । पगां रिख लाग करै नति पेस ।
—ह. र.

महया—देखो 'महत्ता' (रू भे.) (जैन)

महरंभ, महरंम—सं० पु०—१ परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म ।

उ०—१ नमो महरंभ नमो न्यारा, नमो पद परमेस्वरम् ।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ निरभै राज भया पतिनीका, अधर अमर वर कीन्हा ।
जन हरिरांम मिले महरंम सूं, अरस परस लिव लीन्हा ।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

२ ज्ञान, बोध ।

उ०—गळै जनेउ घालि करि, अपनो करै गुमांन । तन मन को
महरंम नहीं, करि करि मूवो गिलांन ।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

३ आत्मा ।

उ०—ऐसा रे कोई दरद दिवांना । आपा मन **महरंम** कूं जाना ।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

वि०—१ भेदी, जानकार ।

उ०—१ देही भीतरि देव हमारै, चेतन चौथे धांमका । वाकै
आसि पासि रहुं लागा, **महरंम** ताहि मुकांम का ।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

२ ज्ञानी, विवेकी, तत्वज्ञ ।

उ०—१ पांच पचीस गलीम कूं सभिलै, मंन कूं जीत **महरंम** होई ।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ विनां वाती जोति भिलमिल, अखंड दीया लोय । देह विन
ववेह पुरखा, लहै **महरंम** सोय ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

३ पवित्र, शुद्ध ।

उ०—वेद कतेब ले पाठ दोउं पढ़ै, देहाथि छापां करि द्वारिकाजी ।
तन तीरथ फिर नाहि आया घरे, मन **महरंभ** विनऊ न राजी ।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—महारंभ ।

महर—सं० स्त्री० [फा० मेह्र] १ दया, कृपा, अनुग्रह । (अ. मा.)

उ०—१ मिळियौ साहब महर सूं, नर तन तुनै निपाप । पेख हुवौ
सो पंकरै, आगमद हूंत मिलाप ।—बां. दा.

उ०—२ मास असाढ़ सुकळ पख मांही, तिथि नोमी बरताई ।
स्वांत नखत्र समय संध्या री, **महर** करी महमाई ।—मे. म.

उ०—३ दादू काढ़ै काळ मुख, **महर** दया कर आइ । दादू ऐसा
गुरु मिल्या, महिमा कही न जाइ ।—दादूबांणी

उ०—४ भभीखण सरण आय भूधर, **महर** कर मन कोट । धुर-
धमळ ग्रवियौ धनख धारण, कनक वाळी कोट ।—र. ज. प्र.

उ०—५ दादू मुईमार मांनुख घणैं, ते प्रत्यक्ष जम काळ । **महर**
दया नहि सिंघ दिल, कूकर काग सियाळ ।—दादूबांणी

२ सहानुभूति, हमदर्दी ।

उ०—सु करन रै बैर दुहागण हुती, तिण सूं गरीबनाथ **महर**
करता ।—नैणसी

३ ममता, प्यार । ४ करुणा ।

रू० भे०—मिहर, मै'र, मैहर ।

५ देखो 'महिर' । (अ. मा., ना. डिं. को.)

उ०—**महर** थंभै गयण मागां तुरी वागां तांण ।—र. रू.

६ सूर्य, सूरज । (अ. मा., ना. डिं. को.)

७ मुसलमानों में वर की ओर से कन्या को दिया जाने वाला धन ।
(स्त्री० महियारी) ८ गूजर, ग्वाला, अहीर ।

उ०—लारोवरि अस चित्रांम कि लिखिया, निहखरता नरवरै नर ।
मांखण चोरी न हुवै माहव, महियारी न हुवै महर ।—वेलि

रू० भे०—महरि, महरु, महिर, महिरि ।

६ देखो 'मुहर' (रू. भे.)

उ०—पांच **महर** स्रीफळ अप अर्प्पै । जडसी घणौ आव मढ़ि जर्प्पै ।
सू. प्र.

महरघ—वि० [सं० महार्घ] १ बहुमूल्य ।

उ०—अह अद्वितीय पद पूजनीय । उत्साह अरघ मिळनौ **महरघ** ।
—ऊ. का.

२ महंगा, दुर्लभ्य ।

महरघता—सं० स्त्री० [सं० महार्घ्य] महंगा होने की अवस्था या भाव ।

महरबांन—१ देखो 'मै'रबान' (रू. भे.)

उ०—१ बंदगी करैगे महरबांन, जिंदगी बकस किबले-जिहांन ।
—ऊ का.

उ०—२ पछै वीरमदेजी नूं ऊ पातसाह री हजूर ले गयौ । पातसाह सूं मिळायौ । पछै वीरमदेजी सौं पातसाहजी महरबांन हुवा ।
—नैणसी

महरबांनगी, महरबांनी—देखो 'मैं'रबांनी' (रू. भे.)

उ०—१ आज तो किंही बडै सगै महरबांनगी करी सो अळगी भुयरी नारेळ म्हांनू अठै साम्हौ आयौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ खाफरौ राजा-रौ मुजरौ हमेस करै । राजा री वडी महरबांनगी है । हेक दिन राजा फुरमायौ—खाफरा ! चोरी करणी सीखाय ।—राजा भोज अर खापरा चोर री वात

उ०—३ बिणजारा री वाजिब सीख रौ औ नतीजौ व्हियो के राजकंवर उण रै मूंडै मूंड ई कह्यौ- आपरी घणी महरबांनी के म्हनै मरण सूं बचण री सीख दीवी ।—फुलवाड़ी

महरम-सं० पु० [अ०] १ रहस्य या भेद, मर्म ।

उ०—प्यारा महरम दिल की जांणै, और न जांणै कोई बात नैं । मीरां दरसन कारण झूरै, ज्यूं बालक झूरै मात नैं ।—मीरां

२ जो जनान खाने में जा सकता हो ।

३ दोस्त, अंतरंग मित्र । ४ भीतरी रहस्य से परिचित ।

५ कन्या की दृष्टि से वह सम्बन्धी या व्यक्ति जिससे उस कन्या का विवाह जायज न हो । (मुसलमान)

६ जानकारी ।

उ०—हरिया निज निरकार की, महरम बिन गम नांहि । एक अखंडी होत धूनि, सुनि सिखर कै मांहि ।
—श्री हरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—माहरम ।

महरलोक-सं० पु० [सं० महर्लोक] सात ऊर्ध्व लोकों में से चौथा लोक, महर्लोक । (पौराणिक)

रू० भे०—महालोक ।

महरलो-वि० (स्त्री० महरली) भीतर का, अन्दर का ।

उ०—महरला मोरचा बंधिया देख आपस में कहणै लागिया जायगां टूटणी रांमजी रे सारे थी ।
—भाटी सुंदरदास बीकूंपुरी री वारता

महरवांन—देखो 'मैं'रबान' (रू. भे.)

उ०—१ दादू बंदीवांन है तू बंदि छोड़ दीवांन । अब जनि राखौ बंदि में, मीरां महरवांन ।—दादूबांणी

उ०—२ तद इण अरज कीवी, 'जो महरवांन, मनै तो इण जीव सुं कांम छै । बीजा जीव में किया कारणां छै ! म्हारै तो आसरो इण जीव रो छै ।—कुंवरसी सांखळा री वारत

महरवांनगी, महरवांनी—देखो 'मैं'रबानी' (रू. भे.)

उ०—हमैं सिवौ पातसाहजी री चाकरी करै । पातसाहजी सिवै ऊपर घणी महरवांनगी करै ।—नैणसी

महरसि, महरसी-सं० पु० [सं० महर्षि] महर्षि, महान ऋषि ।

रू० भे०—महरिख, महरिसि, महारिस, महारिसी, महारीसी, महेसी ।

महरांण, महरांणौ—देखो 'महारणव' (रू. भे.)
(अ. मा., ना. डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ मथै तैं बार किता महरांण । सुरां ले दीध अम्रत सुजांण ।
—ह. र.

उ०—२ वल करै मार घड़ मेंगळां, जळ पीवै महरांण हूं । पेहळाद चाड पथर विहर, तिको सिंघ रायसिंघ तूं ।—द. दा.

उ०—३ ओपमा देण कारण उठै, करि विचार चारण कहै । महरांणा नीर अंदर मनहु, बीर रींछ बंदर बहै ।—मे. म.

२ देखो 'महारांणा' (रू. भे)

३ महाराजा, राजा, नृप ।

उ०—मोहरै महरांण रै दळां रा महाबळ, भुजा बळ वन पती कीध भैरी ।—नगराज खीची रो गीत

महरांवण—देखो 'महारावण' (रू. भे.)

महरा-सं० स्त्री०—पानी भरने व डोली उठाने का कार्य करने वाली एक जाति विशेष, कहार । (मा. म.)

रू० भे०—मैं'रा ।

महराई-सं० स्त्री०—अहीर होने का भाव ।

उ०—चत्रमुख ईस प्रारथै चत्रभुज, कौतूहल गोकळ सुख काज । देव अमां छांडी देवाई, महराई पावां महाराज ।—स्रीक्रस्ण रो गीत

महराज, महराजा—देखो 'महाराजा' (रू. भे.)

महराबदार—देखो 'मेहराबदार' (रू. भे.)

उ०—वीं मिंदर मांहीं सुंदर भींत सुवरणमई अर खंभा रतनजटित, तोरण, दरीखांनो, दरवाजा, महराबदार महल कोटड़ी······ ।
—सिंघासण बत्तीसी

महराब—देखो 'मेहराब' (रू. भे.)

महरावण—देखो 'महारावण' (रू. भे.)

उ०—हत्यौ महरावण तेणि हकारि । वध्यो महिखासुर बीर बकारि ।—मे. म.

महरि—देखो 'महर' (रू. भे.)

उ०—१ सावत्री सरसती गवरि गंगा गोमत्ती । मिळ सतियां घरि महरि करै इण पर कीरत्ती ।—रा. रू.

उ०—२ अस्ट भवन की प्रीतड़ी नव में तांणा तांणि । जल बिन मछली किउं रहइ, कछु महरि हमारी आंणि ।—स. कु.

महरिख, महरिसि—देखो 'महरसि' (रू. भे.)

महरु—देखो 'महर' (रू. भे.)

महरूम–वि० [अ० मह्रूम] १ निराशा, नाउम्मेद, वंचित ।
२ बदकिस्मत, अभागा ।
३ असफल, नाकामयाब ।

महळ—देखो 'महिळा' (रू. भे)
उ०—१ सु तैरो बेटो परणीजण नूं कठैक गयो हुतो सु हलांणो लियांग्रावतो । सु बीच आवतां महळ रौ डील वैचाक हुग्रो ।
—नैणसी
उ०—२ जनानै सारै ही में धीरज दीवी । कुंवर री मां ग्रर महळ दोनूं ही हठ भालियो—कुंवर रो मुंहडो देखां ।
—पलक दरियाव री बात
उ०—३ महळां पूनम चंदमुख, आठम चंद ललाट । केहर कड़ ज्यूं खीण कड़, भ्रू भ्रमरावळ घाट ।—बां. दा.
उ०—४ क्रम क्रम ढोला पंथ कर, ढांण म चूकै ढाळ । आ मारू बीजी महळ, आखई झूठ एवाळ ।—ढो. मा.
उ०—५ मुदै एह खट महळ, सहल ग्रत गिणै सुपावन । पड़दायत हित प्रिया अघट, सती मिळी ग्रठावन ।—रा. रू.

महल–सं० पु० [अ० महल (ल्ल)] १ मकान, घर ।
उ०—१ तूटै घर सांधौ लगै, सूनै महल चिराग । रूठा राजंद रिळमिळै, ग्राइयो मित ऐराक ।—फुलवाड़ी
उ०—२ हठ नाळ पेठ बाजार हाठ । प्राजळै महल चंदण कपाट ।
—वि. सं.
२ किसी राजा, रईस या धनी का भवन, हवेली, राजप्रासाद ।
उ०—१ दाटक ग्रनड़ दंड नह दीधो, दोयण घड सिर दाव दियो । मेळ न कियो जाय बिच महलां, कैलपुरै खग मेळ कियो ।
—दुरसो आढ़ो
उ०—२ परभात सखरौ महूरत देख महलां में देवसरमा नूं बुलाइयो ग्रर उण सूं स्री हरिवंस पुरांण कथा आरंभ कराई ।
—सांई री पलक में खलक री बात
३ देवळ, देवालय ।
उ०—महल अतीव उच्च नभ मापत. पती प्रसन्न संपती प्रापत । ब्यापत नांहि कदापि बिपत्ती, स्री करनी जय जयति सकत्ती ।
—मे. म.
४ रनिवास, जनान-खाना ।
उ०—महलां सूं थिरमो एक एक, रुपया पचास पचास दिया ।
—कुंवरसी सांखला री वारता
५ स्थान, जगह ।
६ अवसर, मौका ।
७ देखो 'महिला' (रू. भे.)
उ०—मुदे एह खट महल, सहल ग्रत गिणै सुपावन । पड़दायत हित प्रिया अघट सती मिळी अठावन ।—रा. रू.,
रू० भे०—मंहल, महला, महल्ल, महिल, महिला, महिल्ल, महुल, महेल, महोल, मांहल, मिहल, मुहल, मोहल, मौहल ।

महळकाढ–सं० पु० [सं० काष्ठ+फा० महल] चिता ।
उ०—ग्रातुर चित आगळी, धांम विसरांम सुधारै । वन चंदन बाधना, अगर घणसार अपारै महळकाढ चुणि विमळ, महल्ल रूई घ्रत पूरित । ग्रोप सदल ग्रौछाड़, ग्रमल परिमळ ग्रांकूरित । उण भवण वसण राजा 'अजन' ग्राप सुखासण उत्तरी । लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नंगी किन्नरी ।—रा. रू.
(मि० कठमंदिर)

महलगोता–सं० स्त्री०—सोलंकी वंश की एक शाखा व इस शाखा का राजपूत ।

महळा—देखो 'महिळा' (रू. भे.)

महला—देखो 'महल' (रू. भे.)

महलायत–सं० पु० (ब व.) [फा० महल+रा० प्र० यत] राज्य प्रासाद, भवन ।
उ०—१ कोट री सफील ऊंची गज १९ ग्रोसार गढ़ रो महलायत हेठै गज २० ग्रौर गज १० कोट ग्रर पड़कोटै रै वीच छै ।
—द. दा.
उ०—२ एहड़ी महलायतां मांहे कांम रो भीनो, रंजिग्रो भमर, जुग्रांन वांनैत घणां ग्रतर सूंघे मांह बैराजमांन हुग्रो छै ।
—कल्यांणसिंह वाढेल नगराजोत री बात
उ०—३ राजा इण भांत नगरी देखतो फिरै छै राजा रै महलायत आयो छै ।—पंचदंडी री वारता
रू० भे०—महिलाइत, महिलायत ।

महलार—देखो 'मलार' (रू. भे.)

महळि, महळी—१ देखो 'महल' (रू. भे.)
उ०—स्वांमीजी कौंण अटकि ग्ररि उरतैं डारैं मुक्त महळि विराजै । गोरख भवण गवण करि जीवै, सुख में सींगी बाजै ।—ह. पु. वां.
२ देखो 'महिला' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ कहियो फरजंद न मांनै काई, छक तरुणाई मछर छिळै । महळी नूं तो मिळै कमाई, माइतां नूं भूंड मिळै ।
—हिंगळाजदांन कवियो
उ०—२ देहळी लग महळी पिण दौडी, फळसा लग मा बहन फिरी । मड़हठ लगो कुटुंब चो मेळो । किणियन सुख दुख वात करी ।—प्रथ्वीराज राठौड़
उ०—३ हाड सगो न होय, सगो नेह सोही सगो । जुग च्यार ग्रग जोय, जोवत मा महळी जळै ।—र. हमीर

महलोटी—देखो 'मुलेठी' (रू. भे.)

महलौ—देखो 'महल्लो' (रू. भे.)
उ०—राजाजी पातिसाही बकसी नूं महलौ दियण लागा ।
—द. वि.

महल्ल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ महल्ल गोख सोभ मांन कुंदनी कळस्स ए। पणंत काच नील अन्न, आरिखै अरस्स ए।—गु. रू. बं.

उ०—२ जादम जाडा वज्जिया, रांगो नै ऊदल्ल। विच सुरपुरां वसाड़िया अच्छरां तणा महल्ल।—रा. रू.

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

महल्लक-सं० पु०—राज्य कर्मचारी।

उ०—चांमरधारिणी वार विलासनी महल्लक महल्लिका उपाध्याय गायन बहकार आलवणिकार वीणाकार·······।—व. स.

महल्लकल्लिका-सं० स्त्री०—राज्य कर्मचारिणी विशेष।

उ०—कविराज सभ्य सभापति लाक्षणिक साहित्यक तार्किकच्छांदसिक अलंकारिक ज्योतिखिक चांमर धारिणी वार विलासिनी महल्लकल्लिका उपाध्याय गायन बहकार ·····।—व. स.

महल्लिका-सं० पु०—राज्य कर्मचारी विशेष।

उ०—अलंकारिक योतिसिक चांमर धारिणी वारविलासनी महल्लक महल्लिका उपाध्याय गायन बहकार······।—व. स.

महल्लो-सं० पु० [अ० महल्ल] किसी नगर, शहर या गांव का कोई भाग, खण्ड, मुहल्ला, बास। कई मकानों या घरों का एक सामूहिक रूप।

उ०—चढ़ै लोक चल्लै मसीतां महल्लै। झरोखो सझायो, उठी साह आयो।—रा. रू.

रू० भे०—महलो, महोलो।

महवर-सं० स्त्री० [सं० महोवर] अग्नि। (नां मा.)

महवीर—देखो 'महावीर' (रू. भे.)

उ०—इक पोहर रच जुध्धस अरोड़, महवीर दीध रण असर मोड़।—शि. रू.

महवेच, महवेचा, महवैचा-सं० पु०—राठौड़ों की एक उप शाखा।

महवैचो-सं० पु०—राठौड़ों की 'महवेचा' उप शाखा का राजपूत।

महवौ—देखो 'महुओ' (रू. भे.)

महव्वय—देखो 'महावत' (रू. भे.)

महसई-सं० पु०—ब्रह्मा। (नां. मा.)

महसल-सं० पु०—सलाहकार।

उ०—ताहरां कुंवर स्री भोपतजी कहियो भाभा मैं बीहतै राजाजी रै महसलां हूं कहियो नहीं।—द. वि.

महसांण—देखो 'मसांण' (रू. भे.)

उ०—नीस भवन महसांण, मंत्र योगिनी आराधी। कहो नद देव कुण काज, आज ए विद्या साधी।—प. च. चौ.

महसा, महसासुर—देखो 'महिसासुर' (रू. भे.)

उ०—सिंभ निसंभ संघारिया, महसासुर मारै। चंड मुंड साचरिया, कै असुर अपारै।—गज उद्धार

महसी—देखो 'महिसी' (रू. भे.)

महसूल-सं० पु०—१ कर, लगान, चूंगी।

२ किराया, भाड़ा।

रू० भे०—मासूल।

महसूस-वि० [अ०] अनुभव करने योग्य, जिसका ज्ञानेन्द्रियों द्वारा आभास हो।

रू० भे०—मसूस, मैंसूस।

महसेन—एक राजा का नाम।

उ०—उग्रसेन प्रमुख सोल सहस मुकुटबद्ध राजा, महसेन प्रमुख छपन्न सहस बलवंत।—व. स.

महां—१ हम।

उ०—तद कुंवरसी कह्यो, 'आ तौ क्रपा परमेस्वरजी महां ऊपर करी। इतरा थोक परमेस्वरजी थांनै बकसीया, तो फेर इतरी अंब क्युं राखो? क्युं तो थैं मांगो।—कूंवरसी सांखळा री वारता

२ देखो मांय' (रू. भे.)

उ०—पुरख स्रवण प्यालो भरै, चुगली कांजी चाड़। मन पय हिय प्याला महां, वेगो दिए बिगाड़।—बां. दा.

रू० भे०—महा।

महांण—१ देखो 'महारणव' (रू. भे.)

उ०—हाकां हूं फाटै हियो, जुध रूप जणांणां। जळह उछाळै जोर सूं, मन डरै महांणां।—गज-उद्धार

२ देखो 'महांन' (रू. भे.)

महांन-वि०—१ जो गुणों की दृष्टि से उच्च या श्रेष्ठ हो, सर्वश्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—लघुतै दीरघ पुन पुलित, यां मात्रा इधकाय। त्यां छोटन वड किय पता, वडे महांन बढाय।—जैतदांन बारहठ

२ बहुत बडा, विशाल।

३ अत्यन्त, अत्यधिक, बहुत।

उ०—निनाद बंध अंध के दुबंध ओटते नदें। महांन लंठ संठ के कुकंठ घोटते मदें।—ऊ. का.

रू० भे०—महांण।

महानता-सं० स्त्री०—१ महान होने की दशा, अवस्था या भाव।

२ बड़प्पन।

३ गौरव।

महा-वि० [सं०] १ अत्यन्त, अति, बहुत, अधिक।

उ०—१ महा दिय मांन करी गुह मीत। तारे सह कीर कुटुंब सहीत।—ह. र.

उ०—२ कसै व्याळ हूं नींव पाताळ कांनै, महा उच्चता आखरां तुच्छ मांनै।—मे. म.

२ सर्वोच्च, उच्चतम।

३ सर्वोत्तम, उत्तमोत्तम।

उ०—सदा तूं रमै रास नो कोड़ साथै, महा मोड़ तू कोड़ तेतीस माथै।—मे. म.

४ भयंकर, घोर।

उ०—नग्री सोनमेनी पछै गांम नांही। महा कासटा घोर ऊजाड़ मांही।—मे. म.

५ बड़ा, महान।

उ०—महा मही बसंत पंचमी, फागां सब गावै हो। फागुण फागा खेल हैं, वणराइ जरावै हो।—मीरां

६ योद्धा, वीर, बहादुर। (डिं. नां. मा.)

रू० भे०—महं, मह, महिं, मा, माह, माहा।

सं० स्त्री० [सं० मातृ] १ गाय। (अ. मा.)

२ देखो 'महां' (रू. भे.)

उ०—त्रिक्काल-दरस्सी जोइसी, कहै एम आगम कहा। असमांन उपद्रह थाइसैं, उठी आग पांणी महा।—गु. रू. बं.

महाअंग—सं० पु० [सं०] ऊंट। (डिं. को.)

महाअहि—सं० पु०—शेषनाग।

रू० भे०—माहअहि।

महाउखद—देखो 'महाओखद' (रू. भे.)

महाउत—देखो 'महावत' (रू. भे.)

महाउर—देखो 'महावर' (रू. भे.)

उ०—अरुनाई महाउर की दरसै। तरवे मनु पावक से परसै।—ला. रा.

महाऊखधी, महाओखद—सं० स्त्री० [सं०महोषधं] १ सर्वरोगहरण दवा।

२ सोंठ। (अ. मा.)

३ लहसुन। ४ वत्सनाभ।

[सं० महा+ओषधिः] १ बड़ी गुणकारी दवाई।

२ दूब, घास।

रू० भे०—महाउखद।

महाकंबु—सं० पु० [सं० महाकम्बुः] शिव, महादेव।

रू० भे०—माहकंबु।

महाकच्छ—सं० पु० [सं० महाकच्छः] १ समुद्र।

२ वरुण। ३ पर्वत।

४ भारत के पश्चिम में काठियावाड़ के पास की कच्छ की खाड़ी।

महाकल्प—सं० पु० [सं०] ब्रह्मा की पूर्ण आयु के बराबर का समय।

रू० भे०—मा'कलप।

महाकवि—सं० पु० [सं०] शुक्राचार्य का नामान्तर।

वि०—कोई बड़ा कवि, लब्ध प्रतिष्ठित कवि।

उ०—हुवो महाकवि मंगणो, दातारां सिर भाग। दाता मंगण भाव व्है, 'जेहा' जस छळ भाग।—बां. दा

महाकस्ट—सं० पु०—भयंकर विपत्ति, अत्यन्त दुख।

उ०—दिपैं मेघ राघेय सरबस्व दांनी। महाकस्ट 'भीमांगवै' भूप मांनी।—व. भा.

महाकांत—सं० पु० [सं० महाकान्तः] शिव, महादेव।

महाकांता—सं० स्त्री० [सं० महाकान्ता] पृथ्वी, भूमि।

महाकाय—सं० पु० [सं०] १ हाथी, गज।

२ विष्णु। ३ शिव।

४ शिव का एक गण, नन्दी।

रू० भे०—माहकाय।

महाकारत्तिकी—सं० स्त्री० [सं० महाकार्त्तिकी] रोहिणी नक्षत्र में आने वाली कार्तिक मास की पूर्णिमा।

रू० भे०—माहकारतिकी।

महाकाळ—सं० पु० [सं० महाकाल] १ शिव।

२ शिव का एक गण।

३ शिव की एक प्रलय कारिणी प्रतिमा या रूप। इस नाम की प्रतिमा उज्जैन में है।

उ०—१ सखी अमीणो साहिबो, मदन मनोहर गात। महाकाळ मूरत वणी, करण गयंदा घात।—बां. दा.

उ०—२ इम ऊजेणी आविउ, प्रगट पूरणा-तीरि। महाकाल-मांहि गयु, मज्जन करी सरीरि।—मां. कां. प्र.

४ विष्णु। ५ भयंकर दुर्भिक्ष, अकाल।

६ कठिन समय।

७ एक नदी जो नन्ददेवी पहाड़ियों से निकल कर अवध में से होती हुई घाघरा नदी में गिरती है।

रू० भे०—मा'काळ, माहकाळ।

महाकाळी—सं० स्त्री० [सं० महाकाली] १ महाकाल स्वरूप शिव की पत्नी, जिसके पांच मुख व आठ भुजाएं थी।

२ दुर्गा, शक्ति, पार्वती।

उ०—देवी सरसती लख्खमी महाकाळी। देवी कन्न विस्णु ब्रह्म्मा कमाळी।—देवि.

३ शक्ति की एक अनुचरी।

४ जैनियों के सोलह देवियों में से एक जो अवसर्पिणी के पांचवें अर्हत की देवी है।

रू० भे०—महकाळी, माहकाळी।

महाकाव्य—सं० पु० [सं०] १ वह ग्रंथ जिसमें आठ सर्ग से अधिक सर्ग हों।

वि० वि०—वह प्रबन्ध काव्य जिसमें किसी व्यक्ति के जीवन का आद्योपान्त विवरण होता है। इसका कथानक सर्गबद्ध होता है जिसमें आठ या उससे अधिक सर्ग होते हैं। इसका नायक देवता, राजा या धीरोदात्त क्षत्रिय होता है। इसमें शृंगार, वीर या शान्त रसों में से किसी एक की प्रधानता होनी आवश्यक है। बीच बीच में प्रसंगवश अन्य रसों का समावेश भी होना आवश्यक है तथा सूर्य, चन्द्रमा, नदी पर्वत आदि सभी प्राकृतिक तत्वों का यथास्थान वर्णन होना भी आवश्यक है। देश काल के अनुसार सामाजिक जीवन पर भी पूरा प्रकाश डाला जाना आवश्यक है। आजकल उस काव्य को, जो कवित्व की दृष्टि से उच्चकोटि का हो तथा

जिसमें विभिन्न विषयों का सुन्दर रूप से वर्णन हो, महाकाव्य मान लिया जाता है।

२ बड़ा काव्य।

रू० भे०—माहकाव्य।

महाकुमार-सं० पु० [सं०] किसी राजा का बड़ा पुत्र, युवराज।

रू० भे०—माहकुमार।

महाकुस्ट-सं० पु० [सं० महाकुष्ठ] कोढ़ रोग के अठारह भेदों में से वह भेद जिसमें हाथ पैर की अंगुलियां गल कर गिर जाती हैं, गलित कुष्ठ।

रू० भे०—माहकुस्ट।

महाकोट-सं० पु०—एक तीर्थ का नाम।

उ०—सिद्धकरण गोकरण पण, रुद्रकोट महाकोट। गुरजेस्वर जिहां गरज्जना, महिमा केरी मोट।—मा. कां. प्र.

महाक्षेत्र-सं० पु० [सं०] कालिका पुराण के अनुसार एक तीर्थ।

रू० भे०—महाखेत, महाखेतर।

महाक्त, महाक्रित-सं० पु० [सं०महाकृत्य] दान, पुण्य आदि अच्छे कार्य।

उ०—करि श्रंग पांन सिनांन महाक्रित। बड तीरथ मधि दीध विप्रां वित।—वचनिका

महाखरब-सं० पु० [सं० महाखर्व] सौ खरब के बराबर की एक बड़ी संख्या।

रू० भे०—माहखरब।

महाखाड—देखो 'ब्रह्मखाड'।

महाखेत—देखो 'महाक्षेत्र' (रू. भे.)

महागणपति-सं० पु०—गणेश, गजानन।

रू० भे०—माहगणपति।

महागरिस्ठ-वि०—अत्यधिक ठोस, दृढ़।

२ अत्यधिक वजनी, भारी।

३ जो पचने में भारी हो, आसानी से हजम न होने वाला। (भोजन)

महागवरी—देखो 'महागौरी' (रू. भे.)

महागिड़-सं० पु०—वराहावतार का एक नाम।

उ०—करेवा देव तणा कोइ कांम। रहंच्चै मांहि महाजळ रांम। महागिड़ पैस महाजळ मज्झ, किया तैं जुद्ध प्रथम्मी कज्ज।—ह. र.

२ बड़ा वराह, बड़ा सूअर।

रू० भे०—महागीड़।

महागिरी-सं० पु०—१ हिमालय, सुमेरु आदि बड़े पर्वत।

२ कुबेर के आठ पुत्रों में से एक।

रू० भे०—माहगिर।

महागीड़—देखो 'महागिड़' (रू. भे.)

महागौरी-सं० स्त्री०—१ दुर्गा।

२ पार्वती, अम्बा।

३ विंध्य पर्वत से निकलने वाली एक नदी।

४ आठ विशिष्ट देवियों में से एक।

रू० भे०—महागवरी, माहगोरी।

महाग्यांनी-सं० पु० [सं० महाज्ञानिन्] १ शिव।

२ बहुत बड़ा विद्वान।

रू० भे०—माहग्यांनी।

महाग्रह-सं० पु० [सं० महाग्रहः] १ सूर्य। (नां. डिं. को.)

२ राहु।

उ०—द्वारिकाजी मांहि लोगां ने घरां का कारज भूलिगा घर घर कै विखै महाग्रह सो पड्यौ छै। जोई आवै छै। त्यांनै पूछिजै छै। महाचितावंत हुआ छै।—वेलि टी.

महाग्रीव-सं० पु० [सं० महाग्रीवः] १ शिव। २ ऊंट।

रू० भे०—माहग्रीव।

महाघण-सं० पु०—प्रलयकालीन मेघ।

उ०—कलंबै सिर हथ्थड़ा, चाहंदी रस-लुब्ध। विरह महाघण ऊम-ट्यउ, थाह निहाळइ मुग्ध।—ढो. मा.

महाघणरूप-सं० पु० [सं० महा+घन्+रूप] विष्णु, ईश्वर।

उ०—निरंजण नाथ परम्म-प्रवांण। किसन्न महाघणरूप कल्यांण।
—ह. र.

महाघोस-सं० पु० [सं० महाघोष] भारी शब्द, भयंकर नाद।

रू० भे०—माहघोख, माहघोस।

महाघ्रत-सं० पु० [सं०महाघृत] एक सौ ग्यारह वर्ष पुराना घी। (वैद्यक)

रू० भे०—माहघरत।

महाचंड-वि० [सं०] भयानक, जबरदस्त।

रू० भे०—माहचंड।

महाचंडी-सं० स्त्री० [सं०] दुर्गा।

रू० भे०—माहचंडी।

महाचकरवरती, महाचक्रवरती-सं० पु०—सम्राट।

महाचक्री-सं० पु०—विष्णु।

रू० भे०—माहचकरी।

महाचतुर-सं० पु० [सं०] १ पंडित। (ह. नां. मा.)

२ होशियार, चतुर, सतर्क, दक्ष।

उ०—घड़ी च्यार-पांच रै झांझरकै आदमी च्यार पांच बारणै आय खड़ा रह्या। तद भरमल तो महाचतुर सो पग रौ खड़को सुणीयो। तद जाग होळै सै कुंवरसी नैं जगायो—'जो हरामखोर बाहर खड़ा छै। उठो, सावधांन हुवो।'—कुंवरसी सांखला री वारता

महाचपळा-सं० स्त्री० [सं० महाचपला] वह आर्या छंद जिसके दोनों दलों में चपला छंद के लक्षण हों।

रू० भे०—माहचपळा।

महाचाई-वि०—महात्यागी। (जैन)

महाचीण-सं० पु०—एक देश का नाम। (व. स.)

रू० भे०—माहाचीण।

महाछत-सं० पु० [सं० महा+राज० छत] बड़ा क्षत्रिय, शूरवीर।
उ०—'अजबसाह' सिवदांन, 'अखो' 'भगवांन' असंकत। 'सांमंतसी' 'जूंझार', 'मुकन' 'तेजसी' **महाछत**।—रा. रू.

महाजंग-सं० पु० [सं० महा+फा० जंग] भयंकर युद्ध।
उ०—काळा सौर उछळै कराळ झाळ दहूं कांनी। जोधपुरां आंमेरां मंडांणी **महाजंग**।—बखतसिंघ रौ गीत

महाजग्य—देखो 'महायग्य' (रू. भे.)

महाजटियळ, महाजटीयाळ-सं० पु० [सं० महाजट+रा० प्र० इयळ, ईयाळ] महादेव, शिव।
उ०—**महाजटीयाळ** भ्रुगट भेक बंक्रत मयंक। अलंक्रत सेस मेचख ऊथाळौ। करण तप प्रभा परभात रा समोकर, तेज पुंज 'नाथ' रा तणौ ताळौ।—कंवर भीमसिंग रौ गीत

महाजत-सं० पु०—संयमी या महायती होने की अवस्था या भाव।
उ०—सुप्रवीत **महाजत** सूर सरौ। कमधैस पड़ै अप्रवीत करौ।
—पा प्र.

महाजन-सं० पु० [सं०] १ धनी व्यक्ति।
उ०—अकुलीन पसाउ निखेधवउ, नीच जाइ संसरग वरजेवउ, **महाजन** समांनेवउ, मंडलीक प्रति उचित्य वरत्तेवउ, सीमाला सर्वे ऊससता राखेवा""""।—व. स.
२ बनिया, व्यापारी। ३ व्यापारी वर्ग।
उ०—तरै रौ लोग **महाजन**, छोकरी, हीड़ागर, घांची मोची सिको महेसजी रौ गिलौ करै।—राव चंद्रसेन री वात
४ व्यापारी वर्ग का मुखिया। ५ बड़ा या श्रेष्ठ पुरुष।
उ०—१ अथ मंत्रि: समस्त **महाजन**-प्रधांन दाक्षिण्य करणैक वत्सल नीति मारग प्रकास ने कदक्ष प्रियवक्ता दृढप्रतिज्ञ करुणा रस समुद्र प्रसिद्ध पदवीं प्रभु।—व. स.
६ साधु पुरुष। ७ जन समुदाय।
उ०—संघ आवी रे विक्रमपुर नो उमही। गुरु वंद्या रे **महाजन** मजलई गहगही।—जिनचंद्र सूरि
रू० भे०—महाजन्न, मा'जन, माहजन।

महाजनिक-सं० पु०—जन समुदाय।
उ०—प्रतिहार चतुद्वरिक कास्टिक राजद्वारिक संधिविग्रहिक भांडपति स्रेस्टि महाजनिक दूत दालिइद्द कटुक""""।—व. स.

महाजनी-सं०स्त्री०—१ व्यापारिक गणित, एक प्रकार की अंक गणित।
२ बही खातों में लिखी जाने वाली लिपि।
३ रुपयों के लेन देन का व्यवसाय। ४ सज्जनता।
वि०—महाजन का, महाजन सम्बन्धी।
रू० भे०—मा'जनी, माहजनी।

महाजन्न—देखो 'महाजन' (रू. भे.)
उ०—लाडणू वसै **महाजन्न** लोक, चौपड़ां पड़ै बाजार चौक।
—पे. रू.

महाजळ-सं० पु०—समुद्र, सागर।
उ०—करेवा देव तणां कोइ कांम। रहंच्चै मांहिजळ रांम। महा-गिड़ पैस **महाजळ** मज्झ, किया तैं जुद्ध प्रथम्मी कज्ज।—ह. र.

महाजुग—देखो 'महायुग' (रू. भे.)

महाजुध—देखो 'महायुध' (रू. भे.)
उ०—धीबिया छडाळां किता लोटै धरा, प्रगट रजपूत वट दाख पूरै। 'माल' दूजै वधै **महाजुध** मेलियौ, खाग अणिरां तणै प्रगट खूरै।—गु. रू. बं.

महाजोगी—देखो 'महायोगी' (रू. भे.)
उ०—तिण ठांम संथा दांन रै समय गुरु छात्र रै अंतर एक गज-राज अचांणक कढ़ियौ जिण कारण **महाजोगी** उपाध्याय माळव रै महीप व्याकरण रा अध्यापन में एक अब्द रौ अनध्याय मांनि पाणिनीय रौ प्रतिनिधि भट्टि नांमक काव्य बणाय पढ़ायौ।
—वं. भा.

महाजोगेसर, महाजोगेस्वर—देखो 'महायोगेस्वर' (रू. भे.)

महाजोधा, महाजोधार-सं० पु०—वीरों में अग्रणी।
उ०—१ गात मेर गज भीम, **महाजोधा** ऊतळी बळ। भुजा-दंड परचंड, जेम गंगाजळ ऊजळ।—गु. रू. बं.
उ०—२ धकचाळा करि कांमणी भेटां। क्रीति उबारां। आगलां जाळंधर **महाजोधार** सारिखां रा वैर कळियां काढ़ां। भसमासुर रा विरोध मांहै इंद्रादिक देवता वाढां।—मा. वचनिका

महाज्वाळ, महाज्वाळा-सं० स्त्री० [सं० महा-ज्वाला] १ यज्ञ की अग्नि।
सं० पु०—२ एक नरक का नाम। ३ महादेव।
रू० भे०—माहज्वाळ, माहज्वाळा।

महाडोल, महाडौल-सं० स्त्री०—राजा-महाराजा या रईसों के बैठने की डोली या पालकी जिसको मनुष्य अपने कंधों पर उठाकर चलते हैं।
उ०—तिका **महाडोल** मांही बैठांण सखी सहेलियां, दासियां रै घणा जलूस सूं विदा किया।—जलाल बूबना री वात
रू० भे०—माहाडोळ, माहाडौळ।

महातंक-सं० पु० [सं० महा-आतंक] १ भयंकर आतंक, डर, भय।
[सं० महा+अंतक] २ भयंकर रोग।
उ०—जिण समय दिल्लीस साहजिहांन रै मूत्रक्रच्छ्र नांमक **महातंक** रौ प्रकोप थियौ।—वं. भा.
३ मृत्यु, मौत।
वि०—अत्यन्त भयंकर।

महातत, महातत्व—देखो 'महतत्व' (रू. भे.)
उ०—**महातत** तूझ न जांणै माह, कियौ तुझ केण आयौ तूं काह।
—ह. र.

महातप, महातपि-सं० पु० [सं० महातपस्] १ बड़ा तप, साधना।
उ०—सोसइ सहइ **महातपि** आतपि रहइ गंभीर। मोह तणा जग-बंधव बंध वछोडइ धीर।—जयसेखर सूरि

२ विष्णु। ३ बड़ा तपस्वी।

महातम-सं० पु० [सं० माहात्म्य] १ महिमा, गौरव, बड़ाई, महत्व।

उ०—१ सरस्वती नदी प्रभासक्षेत्र छै, तिण रौ **महातम** कह्यौ छै। —नैणसी

उ०—२ नांम **महातम** वरण कर, हम कूं किये निहाल। सुणियौ गुरु हरनाथ सूं, दादू दीनदयाळ।—भगतमाल

उ०—३ थकै मन वांछिय स्वातम थांन। महागुरु मंत्र **महातम** मांन।—ऊ. का.

२ आदर, मान, सम्मान।

रू० भे०—मांतम, माहतम, माहातम, माहात्म्य।

३ देखो 'महात्मा' (मह., रू. भे.)

महातमा—देखो 'महात्मा' (रू. भे.) (अ. मा.)

महातळ-सं० पु० [सं० महातलम्] अधः लोकों में से पांचवां लोक। (पौराणिक)

रू० भे०—माहतळ।

महातळाव-सं० पु०—बड़ा तालाब।

महातपोधण-सं० पु० [सं० महातपोधन] १ बड़ा तपस्वी।

२ बड़ा तपोधन।

महाताव-सं० पु० [सं० महातापः] सिंह, शेर। (ना. डिं. को.)

महातिक्ख-वि० [सं० महातीक्ष्ण] अत्यन्त तीक्ष्ण।

उ०—डगै फाडि डाचौ वडं वज्ज मुंडं, **महातिक्ख** नक्खं रखै रोस चंडं।—घ. व. ग्रं.

महातेज, महातेजस, महातेजेसुर-सं० पु० [सं० महातेजस्] १ स्वामी कार्तिकेय। २ शिव।

३ अग्नि। ४ पारा, पारद।

५ शूरवीर, बहादुर।

रू० भे०—माहतेज, माहातेज।

महात्मन, महात्मा-सं० पु० [सं० महात्मन्] १ परमब्रह्म, ईश्वर।

२ शिव। ३ बड़ा साधु या संन्यासी।

उ०—**महात्मा** आत्मा ए परम परमात्मा हिल मिलें। झिलें जीवो-क्षयोती झगमगत ज्योती झिल मिलें।—ऊ. का.

४ वह पुरुष जिसके विचार व आचार व्यवहार अत्यन्त उच्च हों, महापुरुष।

५ दांनी, दातार। ६ धूर्त, चालाक। (व्यंग)

रू० भे०—महातमा, मातमा, माहतमा, माहातमा।

मह०—महातम।

महात्रिफळा-सं० पु० [सं० महात्रिफल] हड़, बेहड़ आंवलों का समूह (औषधि)

रू० भे०—माहतिरफळा, माहत्रिफळा।

महाथंभ-सं० पु० [सं० महा-स्तंभ] १ बड़ा या भीमकाय स्थंभ।

२ बड़े व मोटे तने वाला वृक्ष।

उ०—अनेकै फळे भारिया वृक्ख ओपै। लिये चाहि सेवा न को जाम लोपै। सुगंधाकरं सुंदरं फूल सोहै। **महाथंभ** सौरंभ सिंभू विमोहै।—रा. रू.

वि०—बड़े तने वाला, दीर्घाकार।

महादंड-सं० पु० [सं०] १ बड़ी भारी सजा।

२ यम का दंड। ३ बड़ा भारी डंडा।

४ बड़ी बांह, या भुजा।

रू० भे०—माहदंड।

महादंडधारी-सं० पु० [सं० महादण्डधारिन्] यमराज।

रू० भे०—माहादंडधारी।

महादत, महादत्त-सं० पु० [सं० महा-दत्त] बड़ा भारी दान।

उ०—कुळ करसण करै बरीसण कोडी। ढीक कनक मभ ढाल-डिया। 'अडसी' संभ्रम ठोड सिचै इम, हम्म **महादत्त** हालडिया।

—महाराणा हम्मीरसिंह रौ गीत

वि०—बड़ा दानी, दातार।

महादळ-सं० पु० [सं० महादल] महासेना, बड़ी फौज।

उ०—ऊगमण लगै सूर उछजियै, मिळै **महादळ** मच्छर मांण। तांणै वतळायौ 'तीडावत, ढांणियां तांय ढीलवियै ढांण।

—राव सलखा रौ गीत

महादव-सं० स्त्री०—१ प्रचंड दावानल।

उ०—पंथी एक संदेसड़उ, लग ढोलउ पौहचाइ। विरह **महादव** जागियउ, अगिन बुझावउ आइ।—ढो. मा.

२ देखो 'महादेव' (रू. भे.)

महादसा-सं० स्त्री०—गणित ज्योतिष के अन्तर्गत चालु मुख्य ग्रह की दशा।

वि० वि०—बृहत्पाराशर होरा शास्त्र में सर्वसाधारण के लिये विंशोत्तरी दशा को मुख्य महादशा मानी है और विशेष रूप से किसी आचार्य ने अष्टोत्तरी, किसी ने षोडशोत्तरी, द्वादशोत्तरी, पञ्चोत्तरी, शताब्दिका, चतुरशीतिसमा, द्विसप्ततिसमा, षष्ठिहायनी एवं षट्त्रिंशत्समा दशाएं जन्मनक्षत्र के आधार वाली मानी गई हैं। इनके अतिरिक्त कालदशा, चक्रदशा, कालचक्रदशा, चरदशा, स्थिर-दशा, केन्द्रदशा, कारकदशा, ब्रह्मग्रहदशा, मण्डूकदशा, शूलदशा, योगार्धदशा, दृग्दशा, त्रिकोणदशा, राशिदशा, पञ्चस्वरादशा, योगि-नीदशा, पिण्डदशा, नैसर्गिकदशा, अष्टवर्गदशा, सन्ध्यादशा, पाचक-दशा, तारादशा आदि दशा के विविध भेद हैं किन्तु ये दशाएं सर्व-सम्मत नहीं हैं और इस शास्त्र में विंशोत्तरी महादशा को ही मुख्य माना गया है।

महादांन-सं० पु० [सं० महादान] १ ग्रहण के समय भंगी, चमार, डूम आदि जातियों को दिया जाने वाला दान।

२ स्वर्ग प्राप्ति हेतु दिया जाने वाला दान।

उ०—महादांन आछइ घडइ, दूध मांहि साकर पडइ सोनउ नइ सु-वास, एक 'अचळ' कथइ सिवदास।—अ. वचनिका

रू० भे०—माहदांन।

महादांनी-सं० पु० [सं० महादान + रा० प्र० ई] बड़ा दातार, दानवीर।

उ०—हिरणाकुस हिरणाक्ष मुचकंद, करण महादांनी भया। कहो छळ बळ कहां माया, अति सब खाली गया।—ह. पु. वा.

महादीन-वि० [सं० महा+फा० दीन] अत्यन्त निर्धन, गरीब।

उ०—कुळको वह स्वधीन और ठग के अधीन। ऊमरदांन महादीन लाळस लुट जाता।—ऊ. का.

महादीप—देखो 'महाद्वीप' (रू. भे.) (र. ज. प्र.)

महादीव—देखो 'महाद्वीप' (रू. भे.)

महादुकाळ, महादुकाल-सं० पु०—भयंकर दुष्काल, भारी अकाल।

उ०—दुरभिक्ष महादुकाळ, वरस सत्यासीयउ बूरो। दीठा घणा दुकाळ, पणि एइवउ को न हूवौ।—स. कु.

महादुस्ट, महादुस्टी-सं० पु०—महादुष्टता करने वाला, महान् अत्याचारी।

उ०—तब ते बोल्यो—पासी काढै ते महा उत्तम पुरुष, मोक्षनों जांणहार, देवलोक में जांणहार, दयावंत। घणां गुण कीधा। नहीं काढै जिको महापापी, महादुस्टी, नरक रौ जावणहार।—भि. द्र.

महादे, महादेव-सं० पु० [सं० महादेवः] शिव, शंकर।

(अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—पांगळा खड़ै जमदूत फीटा पड़ै, जोखमी ऊघड़ै नयण जूटी। दिया बरदांन मंतर महादेव रा, बलूती धनंतर तणी बूंटी।

—मे. म.

रू० भे०—महदेव, महादव, मादेव, माहदिव, माहदेव, माहेव।

महादेवी-सं० स्त्री० [सं०] दुर्गा, पार्वती, शक्ति।

महाद्रह-सं० पु० [सं० महा+ह्रद] बहुत बड़ा गर्त।

उ०—सुंडादंडि आच्छोडतउ गिरिनदी विलोडतउ, महाद्रह डोहतउ साहस्सिक तणां मन खोहतउ, तुरंगम त्रासवतउ, पवन जिम चालतउ........।—व. स.

महाद्रुम-सं० पु० [सं० महाद्रुमः] १ अश्वत्थ, पीपल।

२ वट वृक्ष। ३ ताड़ वृक्ष।

रू० भे०—माद्रुम, माहद्रुम।

महाद्वीप-सं० पु० [सं०] १ पृथ्वी का बड़ा भाग जो चारों ओर से नैसर्गिक सीमाओं (यथा समुद्र, जल आदि) से घिरा हुआ हो तथा जिसमें कई देश हों।

२ तेरह, बारह पर यति का एक मात्रिक छंद।

रू० भे०—महदीप, महादीप, महादीव, मा'दीप, माहदीप।

महाधन-वि० [सं०] १ बड़ा धनवान।

२ बड़ा खर्चीला।

सं० पु० [सं० महधन] १ सोना, स्वर्ण।

२ बहुमूल्य पोशाक।

महाधनुस-सं० पु० [सं० महाधनुस्] शिवजी का एक नामान्तर।

महाधातु-सं० पु० [सं० महाधातुः] १ सुवर्ण सोना।

२ महादेव, शिव। ३ सुमेरुपर्वत।

महाधिराज, महाधीराज—देखो 'महाराजाधिराज' (रू. भे.)

उ०—समाधियोग सावधी परावधी पिछांणलो। महेसराज राजतै महाधिराज मांनलो।—ऊ. का.

महाधू-वि० [सं० मह+धी] १ बुद्धिमान, ज्ञानी।

उ०—रहै बिलंबै रांमरस, अनरस गिणै अलप्प। एह महाधू आतमा, ऐ तीरथ ऐ तप्प।—ह. र.

२ सर्वोच्च, शिरोमणि।

उ०—कळप तरु ऊखळि पड़ै 'जसौ' महाधू जांम। माळां गाळां ठांम महि, तिको न सूझै तांम।—हा. भा.

[सं० महा + ध्रुव] ३ अटल, निश्चय।

महानंदी-सं० स्त्री० [सं०] शराब, मदिरा।

महानट-सं० पु० [सं०] १ शिव।

उ०—१ अर सिंहदेव साथ ही हेठै आय खडग खेल्ह मचाय महाप्रळय रा समय रा महानट री आभा धरी।—वं. भा.

उ०—२ महानट हाथ हकाळत मुंड। रोळा मझ घुम्मर घालत रुंड।—मे. म.

२ श्री कृष्ण।

महानद-सं० पु०—१ एक बड़ी नदी। (पौराणिक)

२ एक प्राचीन तीर्थ।

रू० भे०—माहनद।

महानदी-सं० स्त्री० [सं०] १ गंगा, यमुना, कृष्णा, सिंधु, ब्रह्मपुत्रादि बड़ी नदियों में से कोई एक नदी।

२ एक नदी का नाम जो बंगाल की खाड़ी में गिरती है।

महानरक-सं० पु० [सं० महानरकः] इक्कीस बड़े २ नरकों में से एक नरक।

महानवमी-सं० स्त्री०—आश्विन शुक्ला नवमी।

महानस-सं० पु० [सं०] रसोईघर, रसोवड़ा।

उ०—देस मांहि आवतां ही ओठी नूं सीख दे'र बिपती रा महारणव में मग्न मांगळियांणी पुत्र सहित बेस रौ बिपरयास करि कैराऊ ग्रांम रा ठाकुर रोहड़िया बारहठ आल्हा रै बास जाइ रही अर थोड़ा दिनां मैं बडा बिस्वास रै साथ महानस री मालिक होइ चारण री चाकरी में चित्त लगाइ चातुराई री रीझ लही।

—वं. भा.

महानाद-सं० पु० [सं० महानादः] १ बादल की गरज।

२ तेज आवाज, कोलाहल।

३ बड़ा ढोल, नगाड़ा।

४ सिंह, शेर। (अ. मा., ह. नां. मा.)

५ हाथी। ६ ऊंट। ७ शिव, महादेव।

८ कान। ९ शंख।

[सं० महानादम्] एक प्रकार का वाद्ययंत्र।

रू० भे०—माहानाद।

महानारायण-सं० पु० [सं०] विष्णु।

महानाव-सं स्त्री० [सं०] बड़ी नौका, जहाज, बेड़ा।

रू० भे०—महनाव।

महानास-सं० पु० [सं०] प्रलयकालीन रूद्र, रूद्र।

महानिद्रा-सं० स्त्री० [सं० महानिद्रा] मृत्यु, मौत।

महानिधान-सं० पु० [सं० महानिधान] १ धातु भेदी पारा।

२ बुभुक्षित।

महानिसा, महानिसि-सं० स्त्री० [सं० महानिशा] १ रात का मध्य भाग, अर्ध रात्रि।

२ कल्पांत या प्रलय की रात, काल रात्रि।

३ रात का दूसरा या तीसरा भाग।

४ निशाकाल, रात्रि का समय।

उ०—राता तत चितारत चितारत, गिरी कंदरि घरि बिन्है गए। निद्रावस जग एहु महानिसि, जांमिए कांमिए जागरए।—वेलि

रू० भे०—माहनिसा।

महानींबू-सं० पु०—बड़ा नींबू, बिजौरी नींबू।

महानील-सं० पु० [सं० महानील:] एक प्रकार का नीलम नामक रत्न जो सिंहलद्वीप में होता है।

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वैडूरय सुरयकांत चंद्रकांत नील महानील इंद्रनील ......।—व. स.

रू० भे०—माहनील।

महानुभाव-सं० पु० [सं०] १ सज्जन पुरुष, सभ्य व्यक्ति।

२ आदरणीय पुरुष, उच्च विचारों वाला व्यक्ति।

३ सत्यनिष्ठ पुरुष।

महानुभावता-सं० स्त्री० [सं०] १ महानुभाव होने की अवस्था या भाव।

२ महानता।

रू० भे०—माहनुभावता।

महानेत्र, महानैत्र-सं० पु०—शिव, महादेव।

महान्रत्य-सं० पु० [सं० महानृत्य] शिव, महादेव।

महान्रप-सं० पु०—देवराज इन्द्र (अ. मा., नां. मा.)

रू० भे०—माहन्रप।

महापंचमूळ-सं० पु० [सं० महा पंचमूलं] बेल, अरनी, सोना पाढ़, काश्यरी और पाटला इन पांच वृक्षों की जड़ों का समूह। (वैद्यक)

रू० भे०—माहपंचमूळ।

महापंचविस-सं० पु० [सं० महा पंच विषं] शृंगी, कालकूट, मुस्तक, बच्छनाग और शंखकर्णी इन पांच विषों का समूह।

रू० भे०—माहपंचविस।

महापंडित-सं० पु० [सं०] बहुत बड़ा पंडित, लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान।

उ०—ज्योतिसी वैद्य महावैद्य अस्ववैद्य गजवैद्य मांत्रिकादि पंडित महापंडित इति राज वरणनं।—व. स.

महापइण्ण-वि० [सं० महप्रतिज्ञ] दृढ़ प्रतिज्ञ। (जैन)

महापक्ष-सं० पु० [सं०] १ गरुड़।

२ एक प्रकार की बत्तख।

रू० भे०—मापंख, माहपंख, माहपक्ष।

महापक्षी-सं० पु० [सं०] १ उल्लू।

२ पेचक। ३ कोई बड़ा पक्षी।

महापचखांण-सं० पु० [सं० महाप्रत्याखान] १ जैनियों का पयन्ना नामक ग्रंथ जिसमें अनशन करने की विधि का विवेचन है।

उ०—तीजो महापचखांण कहीस, गाथा इकसौ नइ चौत्रीस।
—ध. व. ग्रं.

२ अनशन।

महापथ-सं० पु० [सं०] १ हिमालय के अन्तर्गत एक तीर्थ।

२ इक्कीस नरकों में से १६ वां नरक। (याज्ञवल्क्य स्मृति)

३ परलोक का मार्ग मृत्यु और मौत।

४ शिव, महादेव।

५ बहुत लम्बा व चौड़ा रास्ता, राजपथ।

६ कई ऊंचे शिखरों के नाम।

वि० वि०—ऐसा माना जाता है कि इन शिखरों पर चढ़ कर लोग इसलिए कूदते हैं कि वे सीधे स्वर्ग पहुंच जायं।

रू० भे०—महापह, माहपथ।

महापथिक-सं० पु०—मरने के उद्देश्य से हिमालय पर जाने वाला

रू० भे०—माहपथिक।

महापदम, महापद्म-स० पु० [सं० महापद्म] १ कुबेर की नौ निधियों में से एक। (ह. नां. मा.)

२ आठ दिग्गजों में से एक। ३ हाथियों की एक जाति।

४ नागों के नौ वंशों में से एक व इस वंश का नाग।

५ सफेद कमल। ६ सौ पद्मों की एक संख्या।

७ एक नगर का नाम। ८ नारद का एक नामान्तर।

९ कुबेर का एक अनुचर।

रू० भे०—मा'पदम, माहपदम।

महापब, महापब्ब—देखो 'महापरव' (रू. भे.)

महापरळै—देखो 'महाप्रळय' (रू. भे.)

उ०—मन जंबुक मन बग्घ, कौवा का रूप बणावै। मन सूकर मन स्वांन, महापरळै वह जावै।—ह. पु. वा.

महापरव-सं० पु० [यौ० सं० महापर्वन्] १ उत्सव, पुण्यकाल।

२ अवसर, सुअवसर, मौका।

३ यज्ञादि के समय होने वाला महोत्सव ।
४ त्योंहार ।
रू० भे०—महापव, महापब्ब, महाप्रब्ब ।

महापरसाद—देखो 'महाप्रसाद' (रू. भे.)

महापवितर, महापवित्र–सं० पु० [सं० महा पवित्र] विष्णु ।
रू० भे०—माहपवितर ।

महापसाव–सं० पु० [सं० महाप्रसाद] एक प्रकार का बड़ा इनाम या दान ।
उ०—पछै भलौ दिन जोय, दीवांण वणाय सारा उमराव तेड़नै सांवळसुध कवि नूं डेराथी तेड़ायनै आपरै तखत बैसांण नै आऊठ-लाख सांमई रो महापसाव करनै आप गाडो जोत राय समंद रै बैंट कराड़े गयो ।—नैणसी

महापह—देखो 'महापथ' (रू. भे.) (जैन)

महापांण–सं० पु० [सं० महा-पाणि] अजानबाहु ।
उ०—महाजोध जोधवंसी, महापांण पांण । आंगमणी अंगद सा हणू सा अवसांण ।—रा. रू.

महापातक–सं० पु० [सं०] १ ब्रह्म हत्या, मद्यपान, चोरी, गुरु पत्नी के साथ संभोग आदि पापकर्म । (मनु)
२ अत्यन्त हेय कर्म ।
उ०—जिकण महापातक माथै लेर आधी पातसाही रो लोभ दे प्रतीची रा पति आपरा अनुज मुरादसाह नूं मिळाइ पाउसरी कादं-बिनी रो अनुकार आपरो अनीक तणियो ।—वं. भा.
३ देखो 'महापातकी' (रू. भे.)
रू० भे०—मा'पातक, मा'पातकी, माहपातक ।

महापातकी–सं० पु० [सं० महापातकिन्] १ महापातक पाप करने वाला पापी, महापापी ।
२ बहुत बड़ा पापी ।
रू० भे०—महापातक, मा'पातक, मापातकी, माहपातकी ।

महापातयोग–सं० पु० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग ।
वि० वि०—यह सूर्य व चंद्र की क्रान्ति साम्य से होने वाला गणित गम्य एक योग विशेष है जो पंचांग के १७ वें व्यत्तिपात और २७ वें वैधृति योगों से भिन्न है । इसके महाव्यत्तिपात और महावैधृति नामक दो भेद हैं ।

महापाप–सं० पु०—१ बड़ा पाप ।
उ०—इतरी कही मरमल बोली, 'जो रै पापी थे आया, सौ बुरी करी । जुंवाई कर मारणौ न थो । इण में कासुं सिध करस्यौ । थांनु महापाप सराप लागसी ।—कुंवरसी सांखला री वारता
२ दुष्कर्म, हेय कर्म ।
उ०—जिण समय राठौड़ चंद्रहास चलावण में कुमी न कीधी परंतु महापापां रा करणहार तौ स्त्री परमेस्वर रा प्रपंच में जीती हूं न जावें ।—वं. भा.

महापापी–सं० पु०—बहुत बड़ा पाप करने वाला, महापातकी ।
उ०—तब ते बोल्यौ—पासी काढे ते महा उत्तम पुरुष, मोक्षनों जाणहार, देवलोक में जांणहार, दयावंत । घणां गुण कीधा । नहीं काढै जिको महापापी, महादुस्टी, नरक रो जावणहार ।—भि. द्र.

महापास–सं० पु० [सं० महा पाश] १ एक यमदूत । (पौराणिक)
२ यमपाश । ३ बहुत बड़ा बंधन ।
रू० भे०—मा'पास, माहपास ।

महापीठ–सं० पु० [सं०] १ कोई बड़ा पुण्य स्थान ।
२ वह स्थान जहां किसी देवी-देवता की प्रतिमा स्थापित हो ।
३ वह स्थान जहां दक्ष पुत्री सती का कोई अंग या आभूषण विष्णु-चक्र से कट कर गिरा हो । (पौराणिक)
४ शंकर मठ । ५ कोई बड़ा स्थान या केन्द्र ।

महापुट–सं०पु० [सं०] वैद्यक में भस्म, आदि तैयार करने की एक विधि ।
रू० भे०—माहपुट ।

महापुरस—देखो 'महापुरुस' (रू. भे.)

महापुरांण–सं० पु० [सं० महा पुराण] अठारह पुराणों में से एक जिसके रचयिता व्यास थे ।
उ०—जिसकी साखि स्री भागवत महापुरांण में गाए ।—सू. प्र.
रू० भे०—मपुरांण, माहपुरांण ।

महापुरी–सं० स्त्री० [सं०] १ राजधानी ।
२ कोई बड़ा नगर ।

महापुरुस–सं० पु० [सं० महापुरुष] १ नारायण, परमात्मा, ईश्वर ।
२ विष्णु का एक नामान्तर । ३ उच्च विचारों वाला व्यक्ति ।
४ दस नामी संन्यासियों का एक नाम । (मा. म.)
५ दुष्ट, पाजी, मूर्ख । (व्यंग्य)
रू० भे०—महापुरस, मा'पुरस, मा'पुरुस, माहपुरस ।

महापूजा–सं० स्त्री०—आश्विन के नवरात्रों में की जाने वाली दुर्गा की पूजा ।
रू० भे०—माहपूजा ।

महापूठ–सं० पु० यौ० [सं० महापृष्ठः] ऊंट ।

महापूर–वि० [महान्+पूर्ण] बड़ों में भी बड़ा, बहुत बड़ा ।
उ०—सोनग के भाईबंध भतीजे दळ आगळ । सूरां तैं सूरा महापूरां से अवळ ।—रा. रू.

महाप्रतिभट–वि०—१ बलवान, शक्तिशाली, महावीर ।
२ योद्धा ।
उ०—जिण राजा रै अनेक मंत्री बांणी रा जुद्ध मैं महाप्रतिभट जिका राजा री कीधी कारिका अनेक अपूरव व्याख्यानकरि बसुधा मैं बिदित करी ।—वं भा.

महाप्रब्ब—देखो 'महापरव' (रू. भे.)
उ०—सांमंत सुहड दीपै सरब्ब । जीपंत जिकै जुध महाप्रब्ब ।
—गु. रू. बं.

२ कोई बड़ा पर्व।

महाप्रभु-सं० पु० [सं०] १ ईश्वर, परमात्मा।

२ विष्णु। ३ शिव, महादेव।

४ इन्द्र। ५ राजा। ६ प्रधान या मुखिया।

७ वल्लभाचार्य की एक पदवी। ८ चैतन्य।

९ सन्यासी। १० बड़ा स्वामी या उच्च कोटि का साधु।

उ०—सुनूं हरिरांम गुनूं किय साफ। महाप्रभु मांगत आगन माफ। —ऊ का.

रू० भे०—मा'प्रभु, माहपरभु, माहप्रभु।

महाप्रळय, महाप्रळै-सं० पु० [सं० महाप्रलय] १ जब समस्त सृष्टि का सर्वनाश होकर सर्वत्र जलाकार ही जलाकार हो जाता है, कल्परूप।

उ०—अर सिंहदेव भी साथ ही हैठै आय खडग खेवह मचाय महाप्रळय रा समय रा महानट री आभा धरी।—वं. भा.

वि० वि०—पुराणानुसार ब्रह्मा के अन्तिम दिन ऐसा प्रलय होता है।

२ महाविनाश का दृश्य या वातावरण अथवा भयंकर विनाशकारी स्थिति।

उ०—दिल्ली रा दळ मैं दरोळ देखतां ही साहजादा री सेना बडे जोर बधी थकी आगै आइ उछाह रै उफांण महाप्रळै मचायौ। —वं. भा.

रू० भे०—महापरळै, मा'प्रळै।

महाप्रसाद-सं० पु० [सं०] १ श्री जगन्नाथजी को चढ़ाया हुआ प्रसाद, नैवेद्य।

२ किसी देवता को चढ़ाया हुआ नैवेद्य।

३ किसी महापुरुष या महात्मा के भोजन का उच्छिष्ट अंश।

४ कोई बड़ा अनुग्रह।

५ मांस, आमिष। ६ भोजन।

रू० भे०—महापरसाद, मा'प्रसाद, माहपरसाद, माहप्रसाद।

महाप्रस्थांन-सं० पु० [सं० महाप्रस्थान] १ मारने के उद्देश्य से की जाने वाली हिमालय की यात्रा।

२ मृत्यु, देहान्त।

उ०—आपरा अग्रज री चरचा इण रीति सुणि बंगराज गौड़ हरिस्चंद री रांणी पण पति रा महाप्रस्थांन रै अनंतर निज पुत्र गोपीचंद रै यों ही बीतराग जोग रौ उपदेस लगायौ।—वं. भा.

रू० भे०—मा'प्रसथांन, मा'प्रस्थांन, माहप्रस्थांन।

महाप्रांण-सं० पु० [सं० महाप्राण] वे वर्ण जिनके उच्चारण में प्राण वायु का अधिक प्रयोग होता है। यथा—ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, स, ह आदि। (व्याकरण)

वि०—अल्पप्रांण।

रू० भे०—मा'प्रांण, माहपरांण, माहप्रांण।

महाप्रांणध्यांन-सं० पु० यौ० [सं० महाप्राणध्यान] प्राण (जीव शक्ति) को बड़े स्तर पर संयुक्त करने का ध्यान, धर्म ध्यान जो तीसरा ध्यान है।

उ०—प्रतिबोध जंबूस्वांमि तणउ, तप तउ दृढ़ प्रहार तणउं, महाप्रांणध्यांन भद्रबाहुस्वांमि तणउं ''''''।—व. स.

महाबराह-सं० पु० [सं० महा-वराह] १ वाराहावतार का नामान्तर।

२ बड़ा सूअर।

उ०—हिरण्याक्ष रा अंग ज्यों महाबराह दंत तुंडाघात सोभित केही बन, पर्वत, घिराय केही सूकर सिंहां रा प्रांणां रौ संघात भगायौ। —वं. भा.

महाबळ-सं० पु० [सं० महाबलः] १ वायु, पवन। (ह. नां. मा)

२ शिव का एक पार्षद।

३ विष्णु का एक पार्षद।

४ वैवस्वत मन्वन्तर का इंद्र।

५ स्कन्द का एक सैनिक।

६ एक दानव जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से था।

७ एक पुरुवंशीय राजा, जो वायु पुराण के अनुसार बृहद्विष्णु राजा का पुत्र था।

८ गुहावासिन् नामक शिवावतार का शिष्य।

९ पितरों में से एक।

१० हनुमान। (नां. मा.)

[सं० महाबलं] ११ सीसा, रांगा।

वि०—अत्यन्त बलवान, सर्वशक्तिमान, वीर शिरोमणि।

उ०—१ मुनीस महेस कोयन्नळ मंज। प्रसिद्ध महाबळ तेजस-पुंज। —ह र.

उ०—२ घर करोत अवधूत, बहुत मजबूत महाबळ। अजब गजब आवाज, गाज मावळ त्रंमागळ।—मे. म.

उ०—३ अवधि राज करि इधक, महल सुख कीध महाबळ। सफै त्याग असमेध दइव जीता बोह त्रपदळ।—सू. प्र.

रू० भे०—महब्बळ, माहाबळ।

महाबळा-सं० स्त्री० [सं० महाबला] १ स्कन्ध की एक अनुचरी।

२ सहदेवी नाम की जड़ी, पीली सहदेइया। ३ पीतल।

४ धौ का पेड़। ५ नील का पौधा।

६ कार्तिकेय की एक मातृका। ७ एक बड़ी संख्या की संज्ञा।

महाबळि, महाबळी-वि० [सं० महा बलिन्] शूरवीर, पराक्रमी, बड़ा योद्धा।

उ०—१ जड़ि ठांम थांणा जबर, बैठा मुगळ महाबळी।—सू. प्र.

उ०—२ औरंग साह महाबळी, बिसव तणौ बड़वाग। रीस तरस्सी पूत सिर, सोर परस्सी आग।—रा. रू.

सं० पु०—१ आकाश, आसमान।

२ मन।

रू० भे०—महबळी, माहबळी, माहबळीय।

महाबवाळ-सं० स्त्री०—१ बड़ी बलाय, बड़ा संकट।
२ झगड़ा, दंगा, फसाद।
रू० भे०—माहबलाल।

महाबाह, महाबाहु-वि० [सं० महा-बाहुः] १ लम्बी भुजाओं वाला, आजानबाहु।
उ०—जती बोलियौ बालि नूं रांम जांरै, महाबाह हैको बहै बांण मारै।—सू. प्र.
२ शूरवीर, बलवान।
उ०—१ सुत 'रांम' 'रूप' निज दळ सनाह। 'गोरधन' तणौ 'नाहर' दुगाह। मुख एता ऊदा महाबाह, सांधिया वेध सूं पातसाह।
—रा. रू.
उ०—२ आठूंई मिसल के कमंध महाबाह। जाकी सुण मांनी बांनी विखै की सलाह।—रा. रू.
सं० पु०—१ विष्णु का नामान्तर।
२ एक राक्षस जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से था।
३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
४ मगध का एक राजा जो श्रुतंजय राजा का पुत्र था।
रू० भे०—माहबाह।

महाबिख, महाबिस—देखो 'महाविस' (रू. भे.)
उ०—महाबिख नाग उतारण मंद।—ह. र.

महाबीर—देखो 'महावीर' (रू. भे.)
उ०—अर और भी दो ही तरफ रा प्रबीर जुदा जुदा जुद्ध करता यां दो ही महाबीरां रै पाछैं रहिया आवै।—वं. भा.

महाबिल-सं० पु० [सं० महाबिलं] १ आकाश २ हृदय ३ सुराख।

महाबेग—देखो 'महावेग' (रू. भे.)

महाबेध—देखो 'महावेध' (रू. भे.)

महाब्राह्मण-सं० पु० [सं० महत्+ब्राह्मण] १ वह ब्राह्मण जो मृतक का दान लेता हो, निकृष्ट ब्राह्मण।

महाभंडारी-सं० पु० [सं०] बड़ा कोषाध्यक्ष।
उ०—कवि सभाशृंगारहार, समस्यासआगार, प्राकृत परमाप्रस-प्रवाह, संस्कृतसमुद्र विहितावगाह, वसुधावाचस्पति, अप्रतिममति, सरव सास्त्र पारंगम, लक्ष्मी सरस्वती वेणी संगम, सरव जनोपकारी, महाभंडारी कुडडि········ ।—व. स.

महाभगत-सं० पु०—भक्त शिरोमणि।

महाभड़, महाभड़ि, महाभड, महाभडि-वि० [सं० महा-भट] महान योद्धा, जबरदस्त वीर।
उ०—१ 'अमर' 'किसोर' तणौ अतुळीबळ। अगन सोर पर जोर अप्रबळ। 'भांण' तणौ हरनाथ महाभड़। आयां परब उबारण अच्चड़।—रा. रू.
उ०—२ मतवाळा जेम घुमंत महाभड लोह तणी छक लालुरता। जमदूठ उठंतं खै जमदाढां, वाहै आवध वीबरता।—गु. रू. बं.

उ०—१ तूं उपजइ न खपइ नहु आइस, कुळ न कहइ कहियइ उकळीए। भीनउ नादि विनोद महाभडि, अखभ चढइ तइ वावइ वीण।—महादेव पारवती री वेलि
सं० पु०—कामदेव, मदन।
उ०—कुंअर-कमला रति-रमण, मयण महाभड नांम। पंकजि पय कमल, प्रथम जि करूं प्रणाम।—मा. कां. प्र.

महाभद्र-सं० पु० [सं०] १ पुराणानुसार एक पर्वत।
२ देखो 'महाभद्रजिन'।
उ०—वइरसेन वंदूजिन सतरमौ, श्री महाभद्र अठारम नित नमौ। देवजसा उगणीसमौ देव ए, जसोरिद्धि वीसम जिन सेव ए।
—ध. व. ग्रं.
३ एक व्रत विशेष।
उ०—१ कनकावलि रत्नावलि मुक्तावलि सिंह विक्रीडित महासिंह विक्रीडित गुण रत्न संवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोत्तर सर्वतोभद्र···।
—व. स.
उ०—२ ज्ञानपंचमी, मुकुटसप्तमी, मांणिक्य प्रस्तारिका, निष्क्र-मणतप वरद्धमांनतप इंद्रियजय कसायजय जोगसिद्ध भद्र महाभद्र, भद्रोत्तर, सरवतोभद्र ·····।—व. स.

महाभद्रजाति, महाभद्रजाती-सं० पु०—सफेद रंग का हाथी।
उ०—जपै नाग पूत्री खत्रि रूप जोती, महाभद्रजाती तणौ कांन मोती।—ना. द.

महाभद्रजिन-सं० पु०—जैनियों के अठारवें विहरमान। (स. कु.)

महाभद्रा-सं० स्त्री०—गंगानदी।
रू० भे०—मा'भद्रा।

महाभर—वर्षा की तेज बौछार।
उ०—वह छूटै कंबर सोक नलीसर, सींधणि संधर साजवियं। धुबि जांण धराहर सालुळि सेहर, मेघ महाभर माचवियं।—गु. रू. बं.

महाभंडारिक-सं० पु०—भण्डार का मालिक, खजाने का मालिक, खजांची।
उ०—अस्ववाहक प्रतीकारआरिक भांडागारिक महाभंडारिक, मांणिक्य भांडारिक करप्प भांडारिक।······ ।—व. स.

महाभागवत-सं० स्त्री० [सं०] १ पुराणानुसार प्रसिद्ध बारह भक्त—मनु, सनकादि, नारद, कपिल, जनक, ब्रह्मा, बलि, भीष्म, प्रह्लाद, शुकदेव, धर्मराज और शंभु।
२ परम वैष्णव। ३ श्रीमद्भागवत पुराण।
४ एक प्रकार का छंद।

महाभारत, महाभारथ-सं० पु० [सं० महाभारत] १ वेद व्यास द्वारा रचित एक प्रसिद्ध पौराणिक महाकाव्य जिसके अठारह पर्व हैं और जिसमें कौरवों और पांडवों के युद्ध का वर्णन है।
२ वह भयंकर युद्ध जो कौरवों और पांडवों के बीच हुआ था और जिसमें विश्व के सभी राजाओं ने भाग लिया था।

उ०—जंग करण महाभारथ ज्यूंही, 'करण' नांम साचौ करूं ।
—सू. प्र.

३ भयंकर युद्ध, घमासान लड़ाई ।

उ०—साढ़े सात मण साहजांनी पक्के तोल रो लोह डाढ़ाळै रै डील मांही रहियौ । महाभारत जीत सूग्रर खड़ो रहियौ ।
—डाढाळा सूर री बात

रू० भे०—मा'भारत, माहभारत ।

महाभास्य-सं० पु० [सं० महाभाष्य] १ पाणिनी के व्याकरण पर पतंजलि द्वारा लिखा गया प्रसिद्ध भाष्य, टीका ।

२ बड़ी टीका ।

रू० भे०—मा'भास्य, माहभास्य ।

महाभुजंग-सं० पु०—शेष नाग । (ह. नां. मा.)

महाभुज-वि० [सं० महत्+भुज:] बड़ी भुजाग्रों वाला, ग्राजांन बाहु ।

उ०—छत्रपत जोधां छात रै, जोध महाभुज जांण । करण सबोधां सांम कज, खग जोधां वाखांण ।—रा. रू.

महाभूत-सं० पु० [सं०] प्रकृति के पांच मुख्य तत्व—पृथ्वी, जल, ग्रग्नि, वायु ग्रौर ग्राकाश ।

उ०—तांमस ग्रहंकार तै पांच महाभूत पांच सूक्ष्म भूत नीपना । एवं चौबीस तत्व भेळा हुग्रा ।—द. वि.

रू० भे०—महब्भूय, माहभूत ।

महाभैरव-सं० पु० [सं०] शिव ।

रू० भे०—महभैरव ।

महाभैरवी-सं० स्त्री० [सं०] १ तांत्रिकों की एक विद्या ।

२ पार्वती, शक्ति, दुर्गा ।

महाभोग—देखो 'महाप्रसाद' ।

रू० भे०—माहभोग ।

महाभोगा-सं० स्त्री० [सं०] दुर्गा देवी ।

महाभोगी-वि०—महान ग्रय्याश ।

सं० पु०—बड़े फण वाला सर्प ।

महामंगळा-सं० स्त्री०—१ पृथ्वी, धरा, भूमि ।

उ०—महामंगळा सै हुंती जोग माया । छळी सीत रांणी ग्रली रूप छाया ।—सू. प्र.

२ ग्रग्नि ।

महामंडळ-सं० पु०—१ कोई बहुत बड़ा मण्डल या वृत्त ।

२ वह बड़ा मण्डल जिसके ग्रधीन छोटे छोटे ग्रन्य मण्डल हों ।

महामंडलेस्वर-सं० पु०—कई मंडलेश्वरों का ग्रधिपति या नेता ।

उ०—राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सांमंत लघु-सांमंत तलवर तंत्रपाळ चतुरसीतिक ताडकपति······ ।—व. स.

महामंत—देखो 'महामत्त' (रू. भे.)

उ०—निरमळ नीर निहारतौ, महामंत गजराज । ग्राधौ ग्राधौ हालियौ, पांणी पीवा काज ।—गजउद्धार

महामंत्र-सं० पु० [सं०] १ कोई वेद मन्त्र ।

२ ऐसा कोई मन्त्र जिसको विधिवत साधने से सिद्धि प्राप्त होती है ।

उ०—कोई कोई ग्रंथ में इसो पण लेख जांणियौ सो विक्रमादित्य नैं कोई सिद्ध री संगति सह महामंत्र रौ साधन करि ग्रग्नि १ कोकिल २ नांम दोय २ बीर बसीभूत किया ।—वं. भा.

३ ईश्वर या किसी देवता का मंत्र जिसको जपने से बाधाएं व संकट दूर होते हैं ।

उ०—थियौ सदय सुण निज थुई, टीटभ हुत क्रसांन । उणरा बाळ उबारिया, महामंत्र जस मांन ।—बां. दा.

४ ऐसा मन्त्र जो ग्रपना ग्रसर तुरन्त ही बता देता है ।

५ ग्रच्छी सलाह या मन्त्रणा ।

रू० भे०—माहमंत्र ।

महामंत्रि, महामंत्री-सं० पु०—किसी राजा या राज्य का प्रधान मन्त्री, महामात्य ।

उ०—राजा जुवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सांमंत लघु-सांमंत तलवर तंत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति मंत्रि महामंत्रि ग्रहवाहक'''' ।—व. स.

रू० भे०—माहमंतरी, माहमंत्री ।

महामणिमरथ-सं० पु०—मद से पूर हाथी, मस्त हाथी ।

उ०—पायै ग्रवर सुरां नै पाड्या, मदन महामणिमरथजी । तिण नै पिण जिण खिण में जीत्या, सहु में ए समरत्थजी ।—ध. व. ग्रं.

महामणि-सं० स्त्री०—१ स्त्रियों का सौभाग्य सूचक चिन्ह ।

उ०—फूली भूली भामिनी, कान कहंती बात । पीयल-उपरि पांनडी, मंडि महामणि सात ।—मा. कां. प्र.

२ हीरा ।

महामत, महामति, महामत्त-वि० [सं० महामति] १ महान बुद्धिमान, विद्वान, पंडित ।

उ०—महामत महण जसगाथ मुनि बालमिक, कोट सत चिरत रघुनाथ कीधी ।—र. रू.

२ मदोन्मत्त, मस्त ।

३ बुद्धिमानी, ज्ञानी, पंडित ।

उ०—पिप्पलराज इणकुळ खिच्चीपति, महित हुवौ हरिभक्त महामति ।—वं. भा.

सं० पु० [सं०] १ गणेश ।

२ एक बोधिसत्व ।

रू० भे०—महामंत ।

महामद-सं० पु० [सं० महामद;] १ मस्त हाथी । (ना. डिं. को.)

२ ग्रत्यधिक गर्व ।

रू० भे०—माहामद ।

महामन-वि० [सं० महा+मनस्] १ जिसका मन उदार हो, उदार हृदय । २ दानी, दातार । (ह. नां. मा.)

३ अभिमानी।

महामल्ल–वि० [सं०] बड़ा योद्धा, श्रेष्ठ वीर।

उ०—मल्लि जिनेसर तु महामल्ल, हणिया मोह मदन हैं ठल्ल। पिता तणी पिण चिंता पल्ल, सगला दूर किया अरि सल्ल।—ध. व. ग्रं.

महामसांणी—देखो 'मसाहणी' (रू. भे.)

उ०—इग्यार सांमंत. बार महामंडलेस्वर, तेर पसाइता, चऊद चडियात, पनर पउंतार, सोल महामसांणी सतर आडणीया, अढ़ार भूझार·········।—व. स.

महामह–सं० पु० [सं०] १ महोत्सव।

उ०—अर पाछैं सूं आपरौ साथ आइ मिळियां पछैं कंवर भी आगला साथ मैं आइ मेड़तिया नूं अभय रौ महामह मनाइ अरक रै उपमांन ऊगौ।—वं. भा.

२ समुद्र, सागर।

उ०—मथ काढ़ी जांणी महामह प्यारंभ। मांडी तिण रूप री मजाद।—महादेव पारवती री वेलि

महामहण—देखो 'महमहण' (रू. भे.)

महामहिमक, महामहीमक–सं० पु०—वह घोड़ा जिसका मुंह काले रंग का तथा शेष शरीर अन्य रंग का होता है। (अशुभ) (शा. हो.)

महामहोच्छव, महामहोत्सव–सं० पु० [सं० महामहोत्सव] विशाल उत्सव, विशाल समारोह, महामहोत्सव।

उ०—महामहोच्छव करि नै पैसारौ कियौ छै। राव कल्यांणमल अर सरव राजलोक दूलह-दुलहणि देखि दूणा रलियाइत हुआ।—द. वि.

महामहोपाध्याय–सं० पु० [सं०] १ गुरुओं का गुरु, आचार्य।

२ पंडितों, विद्वानों आदि को मिलने वाली एक प्रकार की बड़ी उपाधि।

महामांणक–सं० पु०—एक रत्न विशेष, महामानिक।

उ०—भांवरि भांवरि भूप रौ, नरपति वदन निहार। रजत महामांणक रतन, आपै सीस उवारि।—रा. रू.

महामाइ, महामाई—देखो 'महामाया' (रू. भे.) (वरदा)

उ०—१ महामाइ माहालइ घणी, भरिया भूत पिसाच। घण पंथी थिउ धाबरु, वयण न सूझइ वाच।—मा. कां. प्र.

उ०—२ कना रांम कहतैं, रसा रांमण सिर छाई। संभ सेन सालुळे कना माथै महामाई।—रा. रू.

महामात्य—देखो 'महामंत्री'।

उ०—सांमंत महासांमंत लघु सांमंत स्रीगरण वयगरण धरम्माधिगरण अमात्य महामात्य सुहासोला·········।—व. स.

महामाय, महामाया–सं० स्त्री० [सं० महामायार] १ माता, जननी।

उ०—उठै बाग आसोक रूंखां अथाहे। महामाय सीता बसै जैण मांहै।—सू. प्र.

२ प्रकृति।

३ देवी, दुर्गा।

उ०—जिस बखत स्रीमहाराज महामाया का आराध करि ऊंच पोसाक धरि वीर आवध धरि पौरससैं पूर अंदर सैं बाहिर पधारै।—सू. प्र.

४ पार्वती। ५ सीता।

६ अष्ट सिद्धियों में से एक। ७ गंगा।

८ बुद्ध की माता का नाम।

९ आर्या छन्द का तेरहवां भेद जिसमें १५ गुरु और २७ लघु वर्ण होते हैं। (पिं. सि.)

१० देखो 'मावलियां'।

रू० भे०—मंहमाय, महंमाई, महंमाय, महमाई, महमाय, महमाया, महामाइ, महामाई, महिमाय, माहमाई, माहमाया।

महामारी–सं० स्त्री० [सं०] हेजा, प्लेग आदि भीषण संक्रामक रोग जिसमें बहुत से लोगों की मृत्यु होती है।

उ०—जिण समै महामारी रै मंडांण नरां रौ नास देखि कोईक कच्चामंत्र रा देणहार आहव रा अमेध सांमंतर सूचिया घोड़ै चढ़ण री हूंस धारि दारासाह हाथीरूप तखत हूं हेठौ उतरियौ।—वं. भा.

रू० भे०—मा'मारी, माहमारी।

महामुद्रा–सं० स्त्री० [सं० महामुद्रा] योग साधन की एक मुद्रा विशेष।

महामुनि, महामुन्नी–सं० पु० [सं० महामुनि] १ मुनियों में श्रेष्ठ, अगस्त्य, व्यास आदि ऋषियों का आदर सूचक सम्बोधन।

२ कपटी व्यक्ति, ठग। (व्यंग)

महामुरातब—देखो 'माहिमरातब' (रू. भे)

महामुह—देखो 'माहोमाहि' (रू. भे)

महामूढ–वि०—अत्यन्त मूर्ख।

उ०—तो भी महामूढ बारुणी रै बसीभूत अनेक उपद्रव मचाइ ऊबट ही बहियौ।—वं. भा.

महामेद–सं० पु०—अष्टगण वर्ग में से एक।

महाम्रत्युंजय–सं० पु० [सं० महामृत्युंजय] १ शिव का एक मंत्र।

२ एक औषधि विशेष।

महायग्य–सं० पु० [सं० महायज्ञ] १ बड़ा यज्ञ।

२ आर्य संस्कृति के अनुसार नित्य किये जाने वाले पांच प्रकार के यज्ञ—ब्रह्मयज्ञ (संध्योपासना), देवयज्ञ (हवन), पितृ यज्ञ (तर्पण), भूत यज्ञ (बलि) और नृयज्ञ (अतिथि-सत्कार)।

रू० भे०—महाजग्य।

महायांन–सं० पु० [सं० महायान] १ बौद्धों के तीन मुख्य सम्प्रदायों में से एक।

२ उत्तम, प्रशस्त और श्रेष्ठ मार्ग।

महायांम–सं० पु० [सं० महा-याम्यः] विष्णु।

महायुग–सं० पु० [सं०] देवताओं का एक युग जो मनुष्यों के चारों युगों का समूह होता है।

रू० भे०—महाजुग।

महायुध-सं० पु० [सं० महा आयुध] १ शिव, महादेव।
२ महान् युद्ध, महाभारत।
रू० भे०—महाजुध।

महायोगनाथ-सं० पु० [सं०] योगियों के भेद विभेद।
उ०—सास्त्र रत्न सागर कूरचाल सरस्वती, महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसउ विद्वांस।—व. स.

महायोगी-सं० पु० [सं० महायोगिन्] १ शिव, महादेव।
२ विष्णु। ३ मुर्गा।
४ महान्‌योगी, बड़ायोगी।
रू० भे०—महाजोगी, माहजोगी, माहयोगी।

महायोगेस्वर-सं० पु० [सं०] बहुत बड़े योगी या ऋषि यथा-पितामह, पुलस्त्य, वसिष्ठ, अंगिरा, ऋतु, कश्यप आदि।
रू० भे०—महाजोगेसर, महाजोगेस्वर।

महारंभ-सं० पु० [सं० महारम्भ] १ किसी कार्य की शुरुआत जो बड़े यत्न पूर्वक की गई हो।
उ०—सीता रमा सोय, कीजै सर्म कोय। भाखो परीश्रंम, राघौ महारंभ।—र. ज. प्र.
२ देखो 'महरंभ' (रू. भे.)

महारजत-सं० पु० [सं० महारजतं] १ स्वर्ण, कनक। (ह. नां. मा.)
२ धतूरा। ३ कुसुम पुष्प।
रू० भे०—माहारजत।

महारठ—देखो 'महारास्ट्र' (रू. भे.)

महारठी—देखो 'महारास्ट्री' (रू. भे.)

महारणव-सं० पु० [सं० महार्णव] समुद्र, सागर।
उ०—देस मांहि आवतां ही ओठी नूं सीख देर बिपत्ति रा महारणव में मग्न मांगळियांणी पुत्र सहित बेसरो विपरयासकरि कैराऊ ग्रांम रा ठाकर रोहड़िया बारहठ आल्हा रै बास जाइ रही।
—वं भा.
रू० भे०—महणारंभ, महण्णव, महरांण, महांण, महारांण, महा-राणव, महिणारांम, महिरांण, महिरांणवर, महिरांमण, महिरा-उण, महिराउणि, महिरावण, महिरिवांण, महैरांण, माहेण।

महारथ-सं० पु० [सं०] १ बड़ा रथ।
२ बड़ा योद्धा या भट।

महारथी-सं० पु० [सं०] १ वह बड़ा योद्धा जो अकेला दस हजार योद्धाओं से युद्ध करने में समर्थ हो।
उ०—सतांग बांग बांग स्वांग सारथी सजै नहीं। महारथी न उत्त-मांग भारथी भजै नहीं।—ऊ. का.
२ नेता, अग्रणी, अगुवा।
रू० भे०—मा'रथी।

महारस-सं० पु० [सं० महारसः] १ परमानन्द, खुशी।
(अ. मा., ह. ना.)
उ०—१ उवह वेळां वडिम महारस दांनैत, जौति जळ अचळ सीतळ प्रबळ जांण। कोक जळचर निजर दमंगचर पाळ कब, मीत सागर गिरंद चंद 'खुमांण'।
—महारांणा जगतसिंह सिसोदिया रौ गीत
उ०—२ भूप महारस भोगवै, सुरपति रीत सुप्रीत। जोधपुरै की जोधपुर, वरखा सरद वितीत।—रा. रू.
२ लोहू, रक्त।
उ०—षड पकवांन प्रवाडा प्रमरथ, साहां सेन करै बोह संग। मैदा कटक महारस मसळै, जीम्हण रांण कियौ रणजंग।
—महारांणा खेता रौ गीत
३ रसास्वादन।
उ०—गोपि अधर खंडन मुख गोविंद। पीयै महारस परसपर।
—ह. नां मा.
४ स्वादिष्ट पेय पदार्थ जिसको पीने से तृप्ति हो जाती है।
उ०—महारस मीठा पीजिये, अविगत अलख अनंत। दादू निरमळ देखियै, सहजै सदा झरंत।—दादूबांणी
५ वीर्य, शुक्र।
उ०—मदन महारस देह का राखत ही छीजै। मन हसती आंकुस विना, कैसे वस्य कीजै।—श्री हरिरांमदासजी महाराज
६ ऊख। ७ खजूर। ८ जामुन।
९ पारा। १० अभ्रक।
११ ईंगुर। १२ कांतिसार लोहा।
१३ सोना मक्खी। १४ रूपा मक्खी।
१५ कांजी। १६ कसेरु।
१७ नशा, मादकता।
उ०—माह महारस मयण सब, अति ऊलहइ अनंग। मो मन लागौ मारवण, देखण पूगळ अंग।—ढो. मा.
रू० भे०—माहारस।

महारसायण-सं० पु० [सं० महा-रस-अयनं] १ वैद्यक के अनुसार वह औषधि जो जरा और व्याधि का नाश करती है।
उ०—एक दिन राजा रै अरथ कोई तपस्वीन महारसायण रौ निदांन एक अपूरव स्वादु फळ दीधो।—वं. भा.

महारांण—१ देखो 'महारणव' (रू. भे.)
उ०—गिरंद गजां घमसांण, नहचै धर माई नहीं। मावै किम महारांण, गज दो सौ रै गिरद में।—केसरीसिंह बारहठ
२ देखो 'महारांणौ' (रू. भे.)

महारांणौ-सं० पु० (स्त्री० महारांणी) १ राजा, नरेश।
उ०—ठीक मंडोवर परम ठिकांणौ, जळी महारांणी जग जांणौ।
—रा. रू.

२ मेवाड़ या उदयपुर के राजा की उपाधि ।
मह०—महारांण, महिरांण ।
महारांमण—देखो 'महारावण' (रू. भे.)
महारांमणौ—देखो 'महारावण' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—**महारांमणौ** सुंभ निसुंभ मारचा, बळी चंड मुंडादि तू ही बिदारचा ।—मे. म.
महारा—१ देखो 'मं'रा' (रू. भे.)
२ देखो 'मेरा' (रू. भे.)
महाराई—देखो 'महाराज' (रू. भे.)
उ०—विंद्रावन मांहि हो, **महाराई** धेनु चारी । रुखमणि रथ बइट्ठी हो, महाराज एक सरी ।—रुखमणि मंगळ
महाराज-सं० पु० [सं० महा+राजः] (स्त्री० महारांनी) १ राजाओं में श्रेष्ठ राजा, बड़ा राजा ।
उ०—तदवार अंस पुरसां तणी, आय वणी जग ऊपरां । **महाराज** तणौं छळ मारवां, धारीं लाज मुरद्धरां ।—रा. रू.
२ ब्राह्मण, गुरु, साधु, सन्यासी या प्रतिष्ठित व्यक्ति के लिए आदर सूचक सम्बोधन ।
उ०—१ हियै बसाई हरख सूं, मधुसूदन **महाराज** । नर जिण सूं ललचै नहीं, सो त्रिभुवण सिरताज ।—बां. दा.
उ०—२ नाथजी द्वारा में नैणसिंहजी री जमांई उदैपुर सूं आयौ । नैणसिंहजी कह्यौ—**महाराज** यां नै समझावौ । जद स्वामीजी समझावण लागा ।—भि. द्र.
३ ब्राह्मण ।
४ जोधपुर, बीकानेर आदि के महाराजाओं के छोटे भाई या उसके वंश के लिए प्रयोग किया जाने वाला सम्मान सूचक शब्द ।
रू० भे०—म'राज, महराज, महाराई, महाराय, माराज, मा'राज, माहराज, माहाराज ।
महाराजा-सं० पु० [सं० महा-राजः] (स्त्री० महारांनी) १ राजाओं में श्रेष्ठ राजा, बड़ा राजा ।
उ०—सुर घर छत्र 'जसौ' **महाराजा** । सुर पुर गयौ लिवां ग्रद साजा ।—रा. रू.
२ राजाओं में श्रेष्ठ राजा या बड़े राजा के लिए आदर सूचक शब्द ।
रू० भे०—महराजा, माराजा, मा'राजा, माहाराजा ।
महाराजाधिराज-सं० पु०—१ अनेक राजाओं में श्रेष्ठ राजा ।
उ०—कुंवरपदै थका **महाराजाधिराज** महाराजा श्री रायसिंघजी ने साथै लै पधारिया ।—द. वि.
२ ब्रिटिश सरकार द्वारा राजाओं को दी जाने वाली उपाधि ।
रू० भे०—महाधिराज, महाधीराज, माहाराजाधिराज ।
महारांणव—देखो 'महारणव' (रू. भे.)
महारात, महारात्रि-सं०स्त्री० [सं० महारात्रि] १ महाप्रलय की रात्रि ।
२ कालरात्रि ।
३ आधी रात बीतने पर दो महूर्त्त का समय । (तांत्रिक)
महाराय—देखो 'महाराजा' (रू. भे.)
उ०—कहै मोनै तो खबर न काय, फुरमायो **महाराय** सुकोमल साथ । खाल उतारी देहनी ए ।—जयवांणी
महाराव-सं० पु० [सं० महाराट्] बूंदी, कोटा, सिरोही के राजाओं की उपाधि विशेष ।
उ०—ईम कहि गढ़ बारणै, संचरीयौ **महाराव** । खुरसांणी खोटे मनै देखैं दाव उपाव ।—प. च. चौ.
महारावण-सं० पु०—एक हजार मुख व दो हजार हाथों वाला रावण ।
रू० भे०—महरांमण, महरावण, महारांमण । (पौराणिक)
अल्पा०—महारांमणौ ।
महारावत-सं० पु० [सं० महाराज+पुत्र] महा योद्धा ।
उ०—सझि हौदां जंग सजै, **महारावतां** मदगळ । हुकम हुता हाजरां मसत आंणिया महाबळ ।—सू. प्र.
महारावळ-सं० पु०—जैसलमेर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि ।
महारास्टर, महारास्ट्र-सं० पु० [सं० महाराष्ट्र] १ भारत का एक प्रान्त जो दक्षिण की ओर है तथा जिसकी राजधानी बम्बई है । महाराष्ट्र । (मा. म.)
२ बहुत बड़ा राष्ट्र या देश ।
रू० भे०—महारठ ।
महारास्ट्री-वि० [सं० महा-राष्ट्री] १ महाराष्ट्र का, महाराष्ट्र सम्बन्धी । २ महाराष्ट्र का निवासी ।
सं० स्त्री०—१ महाराष्ट्र की भाषा, मराठी ।
रू० भे०—महारठी ।
महारिख—देखो 'महरसि' (रू. भे.)
उ०—हौदां मझि लोह, करै करि हाक । **महारिख** देखि, हुवै मुसताक ।—सू. प्र.
महारिण-सं० पु० [सं० महा+रणः] बड़ा भारी युद्ध, संग्राम, समर, महाभारत ।
उ०—१ दुगम जवन घड़ि कांमणि दोळी, हुय खेलूं गेहरियां होळी । खग झट वसंत **महारिण** खेलूं, झट खग सुजळ अनिरता झेलूं ।
—सू. प्र.
उ०—२ जांणि प्रेत जागिया, **महारिण** काळ मसांणी ।—सू. प्र.
महारिस, महारिसि, महारीसी—देखो 'महरसि' (रू. भे.)
उ०—पंच पंडवि वनंतरि विमासिउं, तेरिमूं वरस केमि गमेसिउं । बुद्धि नारद **महारिसि** आपी, मध्यदेस रहियौ तुम्हि व्यापी ।
—सालिसूरि
महारी—देखो 'म्हारी' (रू. भे.)
उ०—राय पसेणी हो ग्याता भगवती, जीवाभिगम नइ मांझ । ए सूत्र मांनइ हौ प्रतिमा मांनै नहीं, **महारी** मां नइ बांझ ।—स. कु.

महारुद्र, महारूद्र–सं० पु० [सं०] महादेव ।

उ०—१ करं पाव केकं, उड़ै धू अनेकं । करै ले कराळा, महारुद्र माळा ।—सू प्र.

उ०—२ गौड़ राजा अरजुनसिंघ बैरियां रा थाट बिरोळि बैंडा गजां रै चाचर चंद्रहास चलाइ सैंकडां सूरां नूं साथी करि महारूद्र री माळा में आपरा मुंड री मेरु चढाइ रुंड थकौ भी धारा में तिल-तिल पळचरां री पांती पुद्गळन राखि इस्टलोक पूगियौ ।—वं. भा.

महारूप–सं० पु० [सं०] शिवजी का एक नामान्तर ।

२ महा सौन्दर्य, महान सुंदरता ।

उ०—करै काकणां खळक्कै चूड, कूंडळ झळक्कै कांनै । महारूप दीपै कंठ मोताहळां माळ । हसंती खेलंती देवी झूलंती चिसूळ हाथ हाथै, भलौ भलौ भलौ भलौ लील मैं भुवाळ ।—मा. वचनिका

महारोग–सं० पु०—असाध्य रोग, भयंकर रोग ।

उ०—दांन सरीखौ दूसरौ, ओखद नह अदभूत । हेक थकौ सारा हरै, महारोग मजबूत ।—बां. दा.

महारोगी–वि०—असाध्य रोग का रोगी, जिसके महारोग हो ।

महारोरव, महारौरव–सं० पु० [सं० महारौरव] इक्कीस प्रधान नरकों में से एक का नाम ।

२ भयंकर दरिद्रता, आपातकालीन अवस्था ।

उ०—केहीज लोभ राखिया तणां पातसाह उहकाळै । केहीज रंक राखिया, महारोरवे दुकाळै ।—नैणसी

महारौ—देखो 'म्हारौ' (रू. भे.)

उ०—तद इण कही हमारं महारौ बांम सूरजगढ़ हूं आयौ है ।
—र. हमीर

(स्त्री० महारी)

महालक्ष्मी, महालक्ष्मी–सं० स्त्री० [सं० महा-लक्ष्मी] १ विष्णु की अर्द्धांगिनी लक्ष्मी, देवी ।

२ लक्ष्मी देवी की एक मूर्ति जिसकी दीपावली को पूजा की जाती है । ३ धन की अधिष्ठात्री देवी ।

४ नारायण की एक शक्ति । (पौराणिक)

५ तीन रगण का एक वर्ण वृत्त ।

रू० भे०—महालखमी, महालच्छी, महालछमी, महालछी, महालिछमी ।

मह०—महालछ, मा'लक्ष्मी, मा'लछमी, मा'लिछमी ।

महालक्ष्मीव्रत–सं० पु०—आश्विन कृष्णा अष्टमी को किया जाने वाला एक व्रत । (श्रीमाली ब्राह्मण)

महालखमी, महालच्छी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—ले लच्छी मरहट्ट री, गूजर खंड अधीस । आय महालच्छी चरण, सींग नमायौ सीस ।—बां. दा.

महालछ—देखो 'महालक्ष्मी' (मह., रू. भे.)

उ०—ले बनवास हराय महालछ कप हैंज्जम अण पार कस । काटां हिव झालै किरमाळां, दस सिरवाळां सीसदस ।—र. रू.

महालछमी, महालछी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—महालछी रूपक मरम, तवै रगण पय तीन । विघन विदारण वर नवं, अनंतम तगत आधीन ।—पिं. प्र.

महालिंग–सं० पु० [सं० महा-लिंग] १ शिव, महादेव ।

२ शिवलिंग की प्रतिमा ।

महालिछमी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू. भे.)

उ०—महालिछमी पद महीं, तीन रगण दरसंत । दुजबर करणह सगण दखि, सारंगिका लसंत ।—र. ज. प्र.

महालोक—देखो 'महरलोक' (रू. भे.)

महावड़–सं० पु० [सं० महावट] विशाल वट वृक्ष, बरगद का बड़ा पेड़ ।

महावत–सं० पु० [सं० महा-मात्र] हाथी को चलाने वाला, फीलवान ।

उ०—१ हस्ती छूटा मन फिरै, क्यों ही बंध्या न जाइ । बहुत महावत पच गये, दादू कछू न बसाइ ।—दादूबांणी

उ०—२ अमर मंत्र उर धरै, विरुद ऊचरै महावत । संक साह संपणै, वयण न भणै असुहावत ।—रा. रू.

रू० भे०—महाउत, मावत, मावथ, माहवत, माहावत, माहुत माहुति ।

महावन–सं० पु० [सं०] १ बड़ा जंगल, सघन वन ।

उ०—मीना दध सिखां मेघ भुवंगां सोरंभमूळ, वारण नू वरतण पित महावन ।—आसौ बारहठ

सं० स्त्री० [सं० महा+अवन] २ गाय ।

महावर–सं० पु० [सं० महा-वर्ण] सौभाग्यवती स्त्रियों के पैरों में लगाने का लाख से बनाया जाने वाला एक प्रकार का लाल रंग ।

उ०—मद म्रगमद तांबूल महावर, बन घनसार घिरत बैसांनर । ढूरत चमर उतरत आरत्ती, स्त्रीकरनी जय जयति सकत्ती ।—मे. म.

रू० भे०—महाउर, मावर, मा'वर ।

महावरेदार—देखो 'मुहावरेदार' (रू. भे.)

महावरौ–सं० पु०—१ अभ्यास ।

२ आदत । ३ व्यसन, लत ।

महावाक्य–सं० पु० [सं०] १ सोऽहं शब्द ।

२ कोई बड़ा या महत्वपूर्ण वाक्य या मंत्र ।

३ दान देते समय कहा जाने वाला शब्द ।

महावायुदोस–सं० पु० [सं० महा-वायुदोष] एक वात-व्याधि विशेष ।

उ०—ज्वर, संनिपात प्रमेह आभवात वायु महावायुदोस खाधा-विकार, फोडि, गुलमक्षयन ...... ।—व. स.

महावारुणी–सं० पु० [सं०] ज्योतिष के अनुसार एक योग जो चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र व शनिवार होने पर, पड़ता है ।

वि० वि०—इस योग में गंगा स्नान का बड़ा महत्व है ।

रू० भे०—मा'वारुणी, माहवारुणी ।

महाविकळ-वि० [सं० महा-विकल] १ अत्यन्त दुखी, त्रस्त ।
२ मूर्ख, मूढ । (ह. नां. मा.)

महाविक्रम-सं० पु० [सं०] सिंह, शेर ।

महाविख—देखो 'महाविस' (रू. भे.)

महाविगन्यांनि-वि०—घूंघरुओं से ।
उ०—कंठि कनक मय पदकडी, महाविगन्यांनि जडी, नाग पोलरी अनि निगोदरी, प्रमुख खीटली सहित घूघरी······ ।—व. स.

महाविदे, महाविदेह-सं० पु०—भारत वर्ष के समान ही एक खण्ड जो सुमेरुपर्वत के पूर्व और पश्चिम के आस पास स्थित है । (जैन)
उ०—धंन कृतारथ ते नरनारि, जे वरतइं जिण धरम मभारि । समोसरणि प्रभ करइं वखांण, तीहुंणी प्रसंसा महाविदे जांण ।
—वारितग

वि०—१ विरक्त, निर्लिप्त ।
उ०—जासी स्वारथ सिद्ध विमांणो, चवि महाविदेह वखाणोजी । मनुस हुसी बहु चतुर सुजाणो, दढ़पइण्णा नो परिमाणो जी ।
—जयवांणी

रू० भे०—माहविदेह ।

महाविद्या-सं० स्त्री० [सं०] १ तन्त्र शास्त्रानुसार दस देवियां—काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका । ये सब व इनमें से प्रत्येक ।
२ दुर्गा । ३ गंगा ।

महाविस-सं० पु० [सं० महा+विष] १ महाविषैला सर्प जिसके खाते ही प्राणी मर जाता है ।
२ प्राण धातक विष ।
रू० भे०—महाबिख, महाबिस, महाविख, महाविस ।

महाविसुव-सं० पु० [सं० महा-विषुवं] वह दिन या समय जब सूर्य मीन से मेष राशि में जाता है, और रात-दिन बराबर होते हैं । मेष संक्रान्ति या चैत्र की संक्रान्ति ।

महावीही, महावीथी-सं० स्त्री० [सं० महा-वीथी] बड़ा मार्ग, बड़ी गली ।

महावीर-सं० पु० [सं०] १ हनुमान, बजरंग ।
उ०—हांजी रांमजी मग में मिळ्या महावीर, सजन सुगरीवराजी म्हारा रांम ।—गी. रां.
२ विष्णु । ३ गरुड़ ।
४ बाज पक्षी । ५ सिंह, शेर ।
६ सफेद रंग का घोड़ा ।
७ इन्द्र का वज्र ।
८ योद्धा, वीर, भट्ट ।
उ०—महावीर महासूर, तेज सरसावै । मंडण ज्यां जोस, वंस मंडण कहावै ।—रा. रू.
९ जैनियों के २४ वें तीर्थंकर ।
उ०—आंमलकप्पा नगरिये सम वसरया महावीर । सूरयाम देव तिहां आवियो, नाटक करवा तीर ।—जयवांणी
वि०—१ शक्तिशाली, बलवान ।
उ०—मंडोवर के बीच निवास । जहां स्रीमहाराज के खड्ग जैतकारी काळै गोरे महावीरू भैरूं का वास ।—सू. प्र.
२ साहसी, बड़ा बहादुर ।
रू० भे०—महवीर, महाबीर, माहवीर ।

महावीरजयंती-सं० स्त्री०—जैनियों द्वारा, चैत्रशुक्ला त्रयोदशी को मनाया जाने वाला उत्सव ।

महावेग-सं० पु० [सं०] १ गरुड़ ।
२ वानर । ३ महादेव ।
४ बड़ी तेज चाल । ५ वज्र ।
रू० भे०—महावेग, महाबेग ।

महावेध, महावेधक-सं० पु०—बड़ा जंग, युद्ध, संग्राम ।
उ०—१ कीधो हद विखो धरा रै कारण, महावेध मंडाणो । देसां चावो कियो देवड़ा, भूरा बाघ 'भटांणो' ।—नाथूसिंह देवड़ा रो गीत
उ०—२ वाजिया वेढक महावेधक, सार साबळ सोहड़ां ।—रा. रू.
रू० भे०—माहवेध ।

महावेल-सं० पु० [सं० महाबिलं] बहुत बड़ा, विशाल, दीर्घाकार ।
उ०—तठै ऐक महावेल खाड़ी । तकण री पाखती सेखावंनर असै नांम नगर रै वखै आय नीसरियो । तठै महावेल खाड़ी रै कनारै जळ री होलोलियो, संदरै लेख महावीर मोटो मछ आय पड़ियो ।
—कल्याणसिंह वाढ़ेल नगराजोत री वात

महावैद्य-सं० पु०—बड़ा वैद्य ।
उ०—पास्चात्य पक्षे तार्किक ज्योतिसी वैद्य महावैद्य अस्ववैद्य गजवैद्य मांत्रिकादि पंडित महापंडित······ ।—व. स.

महावैध्रति-सं० पु०—महापात योग का एक भेद विशेष ।

महावैध्रतियोग—विष्कम्भ आदि सत्ताईस योगों में से एक अन्तिम अर्थात् सत्ताईसवां योग विशेष ।

महाव्यतिपात, महाव्यतीपात-सं० पु०—महापात योग का एक भेद विशेष ।
वि० वि०—महोत्पात, अपयान, विष्कम्भ आदि सत्ताईस योगों में से एक सत्रहवां योग विशेष । श्रवण, अश्विनी, धनिष्ठा, आर्द्रा, नाग दैवत, मस्तक नक्षत्रयुक्त रविवार को यदि अमावस्या तिथि हो तो वह व्यतीपात योग माना गया है ।

महाव्याधि, महाव्याधी-सं० स्त्री०—१ दुस्साध्य रोग, भयंकर बीमारी ।
२ कठिन संकट ।
रू० भे०—माहव्याधि, माहव्याधी ।

महाव्रत-सं० पु० [सं०] १ कठिन या दुसाध्यव्रत, भारी संकल्प ।
उ०—सव्रत जळी भळहळ त्रप संगै, अस्ट निकट गायण उछरंगै । असह खबर जोधांणै आयी, सती महाव्रत लियां सुणायी ।—रा. रू.
२ आश्विन की दुर्गा पूजा या नवरात्र ।

३ वह व्रत जो बारह वर्ष तक जारी रहे।

४ अहिंसा, सत्य, दत्त, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह इन पांच व्रतों का पूर्ण रूप से पालन करने को महाव्रत कहते हैं। (जैन)

५ मतान्तर से उपर्युक्त पांच व्रत में से कोई एक भी महाव्रत कहलाता है। (जैन)

उ०—१ किण ही पूछ्यौ भीखणजी थे यूं कहो एक महाव्रत भागा पांचूई भागै सो यूं सार्थं पांचू किम भागै ? जद स्वामीजी बोल्या—पापरो उदै हुवै जब संसार में इ जीव दुःख भोगवै। जिम एक भिक्षाचर नें शहर में फिरतां पांच रोटी रौ आटौ मिल्यौ। रोटी करणं लागै। एक तो रोटी उतारनै चूला लारै मेली। एक रोटी तवै सिकै। एक रोटी खीरां सिकै। एक रोटी रो लोयौ हाथ में अनै एक रोटी रो आटौ कठोती में। एक कुत्तो आयो सो कठोती में एक रोटी रौ आटौ तो ले गयौ। तिण कुत्ता रै लारै भिखारी न्हाठौ। हेठै पड़ियो सो हाथ मांहलौ लोयौ धूळ में मिल गयौ। पाछो आय देखै तो चूला लारै रोटी पड़ी हुंती ते मिनकी ले गइ। तवेरी तवे बल गइ। खीरां री खीरां बल गइ। इण रीते एक महाव्रत भागां पांचु भाग जावै।—भि. द्र.

उ०—२ ज्यूं लेवा री वेळां तो पांच महाव्रत आदरया अनें पालवा री वेळां पूरा पाळै नहीं तिण री पिण इह लोक परलोक बिगड़ै।
—भि. द्र.

उ०—३ पंच महाव्रत ल्याई प्रभु पासैं, ग्रै त्रिपदी जिनवर मनरंग। श्रीगौतम गणधर तिहां गूंथ्या, पूर व चउद दुवालस अंग।—स. कु.

६ देश विरति (आंशिक रूप से प्राणाति पातादि पांचो पापों से हटना) श्रावक की अपेक्षा महान गुणवान साधु मुनिराज के सर्व विरति (पूर्ण रूप से प्राणाति पातादि पांचो पापों से हटना) रूप-व्रत को महाव्रत कहते हैं। (जैन)

महाव्रतधारी—वि०—कठिन व्रत करने वाला, बड़ी प्रतिज्ञा करने वाला।

उ०—मांगळियौ सुंदर मिणधारी, धुर भगवान महाव्रतधारी।
—रा. रू.

महाव्रती—सं० पु० [सं० महा+व्रतिन्] १ शिव, महादेव।

२ संन्यासी। ३ भक्त।

४ वह जिसने महाव्रत लिया हो।

रू० भे०—माहव्रती।

महासंकट—सं० पु०—घोर विपत्ती, अत्यधिक दुख।

उ०—अब आपरै ऊपर महासंकट मांनि एक वीधौ तौ परमेस्वर दूजौ भी देसी ही परतु आपदा मैं दिल्लीस भी इसो व्याकुळ थियौ।
—वं. भा.

महासंख—सं० पु० [सं० महाशंख] १ कुबेर की नौ निधियों में से एक।

२ बहुत बड़ा शंख। ३ ललाट।

४ कनपटी की हड्डी। ५ मनुष्य की ठठरी।

६ एक प्रकार का सर्प।

७ सौ शंख की एक बड़ी संख्या।

वि०—मूर्ख।

उ०—महासंख री मित्र, सेज नहीं सोवा जाऊं। पोरीसौ मुख पेख, घणी दोरी घबराऊं।—ऊ. का.

रू० भे०—माहसंख।

महासईय—देखो 'महासती' (रू. भे)

उ०—पूछइ राजा कहि ससि वयणि, इणि वणि वसीइ कारणि कमणि। बोलइ गंग महासईय।—सालि भद्रसूरि

महासक्ति, महसगत, महासगति, महासगती—सं० स्त्री० [सं० महा-शक्ति]

१ सृष्टि की रचना करने वाली मूल शक्ति।

२ प्रकृति। ३ दुर्गा।

उ०—वेदै-रै वडो द्रव्य। सयणी बेटी। महासक्ति योग माया। तिका सिकार रमै। म्रग मारै।—सयणी चारणी री वात

४ कोई बड़ी हस्ती। ५ शृगाली।

६ 'भैरवी' नामक पक्षी जिसके शकुन लिए जाते हैं, 'रूपारेल' नामक पक्षी जिसके भी शकुन लिए जाते हैं।

सं० पु०—७ शिव। ८ स्वामी कार्त्तिकेय।

रू० भे०—महासत्ति, मा'सकति, मा'सकृति, मा'सगति, माहसकति, माहसगति।

महासतक—सं० पु०—एक नरवर।

उ०—महासतक नी नारि रेवती, नरक गई निरधार।—ध. व. ग्रं.

महासति—देखो 'महासती' (रू. भे.)

महासतियां—सं० स्त्री० (ब. व.) राजाओं व जागीरदारों की श्मशान भूमि। (मेवाड़)

महासती—सं० स्त्री० [सं०] पतिव्रता स्त्री, साध्वी स्त्री।

उ०—महासती सूं एह अकारज, उत्तमं नैं नहीं छाजै। जो अति मीठो तो पिण मुनिवर, अखज कहो किम खाजै।—जयवांणी

रू० भे०—महासईय, महासति, महासत्ति, माहासती।

महासत्ति—१ देखो 'महासक्ति' (रू. भे.)

उ०—डांवी महासत्ति फै करइ, डांवा सारस स्यंघ सियाळ।
—बी. दे.

२ देखो महासती' (रू. भे.)

महासत्य—सं० पु० [सं०] यमराज।

महासद, महासद्द—वि०—१ ताजा मांस, तुरन्त कटा हुआ मांस।

उ०—तन ग्रीध महासद मन अपत्त, पूरिया रहै निज सगत पत्र। जवनां समेळ दळ तुरंग जुंग। तिण वार मिळै नह टळै तुंग।
—रा. रू.

२ तुमुल नाद।

उ०—वैताल वीर मिळिया विहद्द, सीकोतरि साकणि महासद्द। मिळ समळ ग्रीध आंमंख मक्ख, जंबक्क रींछ वड्डाक जक्ख।
—गु. रू. बं.

महासभ्य-सं० पु०—राज्य सभा की एक उपाधि विशेष।
उ०—सामंत लघुसामंत अमात्य सभ्य महासभ्य प्रधान प्रमाणीक······ ।—व स.

महासय्या-सं० स्त्री० [सं० महा शय्या] १ राज सिंहासन।
२ राजाओं की शय्या।
रू० भे०—माहसया।

महासर-सं० पु०—१ बड़ा तालाब।
२ समुद्र, सागर। (ह. नां. मा.)

महासरग-सं पु० [सं० महा सर्ग] महाप्रलय के उपरान्त, सृष्टि की पुन: होने वाली रचना।
रू० भे०—माहसरग।

महासरवर-सं० पु० [सं०] बड़ा तालाब।
उ०—इणि भांति सूं च्यारि रांणी ग्रिणिह खवासि द्रव्य नाळेर उछाळि बळण चाली। चंचळां चढि महासरवर री पाळि आइ ऊभी रही।—वचनिका

महासांणी—देखो 'मसाहणी' (रू. भे.)

महासांतपन-सं० पु० [सं०] एक व्रत विशेष जिसमें पांच दिन तक क्रमश: पंचगव्य, छठे दिन कुशक जल पीकर सातवें दिन उपवास किया जाता है।
रू० भे०—माहसांतपन।

महासांमंत-सं० पु० [सं० महासामन्त] राज्य सभा की एक उपाधि।
उ०—राय रांणा मंडलिक मांडलीक सांमंत महासामंत लघु सांमंत, स्रीगरणा······ ।—व. स.

महासागर-सं० पु०—१ कोई बहुत बड़ा समुद्र।
२ संसार, भव।

महासास—देखो 'महास्वास' (रू. भे.)

महासिंग, महासिंघ—देखो 'महासिंह' (रू. भे.)

महासिंधु-सं० पु०—महासागर।
रू० भे०—माहासंध।

महासिंह-सं० पु० [सं०] दुर्गा का वाहन, सिंह।
रू० भे०—महासिंग, महासिंघ, माहसिंघ।

महासिंहविक्रीडित-सं० पु० यौ०—एक प्रकार का व्रत।
उ०—कनकावलि रत्नावलि मुक्तावलि सिंहविक्रीडित, महासिंहविक्रीडित गुण रत्न सवंत्सर भद्र महाभद्र भद्रोत्तर सरवतोभद्र'।
—व. स'

महासिणांण—देखो 'महास्नांन' (रू. भे.)

महासिव-सं० पु० [सं० महा-शिव] शिव, महादेव।
रू० भे०—माहसिव।

महासिवरात, महासिवरात्रि-सं० स्त्री० [सं० महाशिवरात्रि] फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी की रात।

महासुक्क, महासुक-सं० पु०—१ दिगंबर (जैन) मतानुसार दसवें स्वर्ग का नाम।
२ श्वेताम्बर जैन मतानुसार सातवें स्वर्ग का नाम।

महासूर-सं० पु० [सं० महाशूर] १ हनुमान, महावीर।
२ अर्जुन। (अ. मा.)
रू० भे०—माहसूर।
३ महान् योद्धा, वीर, पराक्रमी, बहादुर।
उ०—१ सज महासूर, समहर सकाज। लग घणी भिड़, भुजा सांम लाज।—शि. रू.
उ०—२ सुणो ठाकुरां सिरदारां, आय वणी महासूरां की वारां।
—रा. रू.

महासेत-सं० स्त्री० [सं० महाश्वेता] १ सरस्वती, शारदा।
२ दुर्गा, भवानी।
रू० भे०—महसेत।

महासेन-सं० पु० [सं० महासेन:] १ स्वामी कार्तिकेय।
(नां. मा., डिं. को.)
२ ऐरावत क्षेत्र के एक भावी जिन देव।
३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिस ने भगवान महावीर के पास दीक्षा ली थी।
४ एक यादव।
रू० भे०—माहसेन।

महास्नांन-सं० पु० [सं० महास्नान] दुष्कर्म निवारणार्थ आत्म शुद्धि के लिए किया जाने वाला आध्यात्मिक स्नान। (जैन)
रू० भे०—महासिणांण।

महास्त्रमी-वि०—गृहस्थी।
उ०—विसाळ चट्टसाळ बीच, वेदकी धुनी नहीं। महास्त्रमी ग्रिहास्त्रमी, गिरास्त्रमी गुनी नहीं।—ऊ. का.

महास्वास-स० पु० [सं० महाश्वास:] १ दमे का रोग।
२ मृत्यु के कुछ पहले चलने वाला श्वास।
रू० भे०—महासास, माहसास।

महाहवि, महाहव्य-सं० पु० [सं० महाहव] युद्ध, संग्राम।
(अ. मा., ह. नां. मा.)
उ०—रथग जास्ट सहस्र जउ निरजणइ, दस सहस्र महाभट जो हणइ। फुरसरांम महाहवि निरजणिउ, इसिउं भीस्म पितामह मई थुणिउ।—सालि सूरि

महि—देखो 'मही' (रू. भे.) (डिं. नां मा., ह. नां. मा')
उ०—१ मेघ विना महि तणां अंग कुण सरब उजाळै। विण गंगा नय वार कमण वाधै ऊंनाळै।—रा. रू.
उ०—२ महि भरै डंड बूंदी मळं, दळ तप तेज दुभाळरै। सांसण पसाव कीधा सतरि, रावजोध रिणमाल रै।—रा. रू.
२ देखो 'मद' (रू. भे.)
३ देखो 'महा' (रू. भे.)

महिग्रळ—देखो 'महीतळ' (रू. भे.)

उ०—सपत दीप नवखंड सपत दधि, जळ थळ महिग्रळ। एक भाग हजरत्त मारि लीयौ महि मंडळ।—गु. रू. बं.

महिग्रा–सं० स्त्री० [सं० महिका] कोहरा, पाला।

महिग्रार—१ देखो 'महियारा' (रू. भे.)

२ देखो 'महिग्रारा' (मह., रू. भे.)

महिग्रारा–सं० स्त्री०—दूध दही बेचने का व्यवसाय करने वाली जाति विशेष।

रू० भे०—महियार, महीयार।

महिग्रारौ–सं०पु० (स्त्री० महिग्रारी) दही या छाछ बेचने वाला, ग्वाला।

उ०—१ मारग मांहि मिला महिग्रारा, तिण गोरस विहरायउ रे।

—स. कु.

उ०—२ रमता करता रास सांझ परभात सदाई। मांहे महिग्रारियां दांण मांगता दिनाई।—पि. प्र.

रू० भे०—महियारौ, महीग्रारौ, महीयारौ।

ग्रल्पा०—महियारड़ौ।

मह०—महिग्रार।

महिक—देखो 'महक' (रू. भे.)

उ०—कसतूरी ऊपट्ट महिक सोरंभ मळेतर। कमकम्मौ कपूर ग्रनै केसर किसनागर।—गु. रू. बं.

महिख—देखो 'महिस' (रू. भे)

उ०—१ सुंभ निसुंभ चंड मुंडासुर, दुसह सुरां दुखदाई। दांनव महिख रकत बीजादिक, मार लिया महमाई।—मे. म.

उ०—२ ग्रारण करणि रूप ग्रविकारी, चरै महिख गूंद गिरि चारौ। मैंदा घ्रत मेवा मिसरीरा, सौ महखियां भखै नित सीरा।

—सू. प्र.

उ०—३ महाराजा दळ मेळ पौळ जोधांण पधारै, महिख पंच मैमत्त सगत पोखो खग धारै।—रा. रू.

महिखघ्नखांडौ–सं० पु० यौ०—एक प्रकार की तलवार विशेष।

महिखजीह–सं० स्त्री० [सं० महिष+जिह्वा] कटार।

महिखधुज—देखो 'महिसधुज' (रू. भे.) (डिं. को.)

महिखाक–सं० पु० [सं० महिषाक्ष] गुग्गुल नामक पदार्थ।

महिखासुर—देखो 'महिसासुर' (रू. भे.)

उ०—हत्यौ महारावण तेण हकारि, बध्यौ महिखासुर बीर बकारि।—मे. म.

रू० भे०—महिकासुर।

महिखी—देखो 'महिसी' (रू. भे.)

उ०—डोढा कंधलोटा जूटण नै घुमड़ै। महिखी महिखी ज्यूं डाबर में रमड़ै।—ऊ. का.

महिखु—देखो 'महिस' (रू. भे.) (उ. र.)

महिख्ख, महिख्ख—देखो 'महिस' (रू. भे)

उ०—१ बलिस्ट धूम्र ग्रक्ष की तुही विपक्षनी। भई तुही महिख्ख रक्तबीज भक्षनी।—मे. म.

उ०—२ यतै हनुमंत कहि यह बत्त, ग्रवै घन मेच्छ भयै उन्मत्त। गह्यौ कर बांन उदग्गनि हत्थ, महिख्ख समांन उनत्थहि नत्थ।

—ला. रा.

महिजा—देखो 'महीजा' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

महिजीत, महिजीद—देखो 'मसजिद' (रू. भे.)

उ०—लोक सगलां कन्है जीजीया लीजियै, देहरा ठांम महिजीद दीसै।—ध. व. ग्रं.

महिड्डि–सं० स्त्री०—महर्द्धि, महाऋद्धि। (जैन)

महिणारंभ—देखो 'महारणव' (रू. भे.)

उ०—इळ कारण ग्रारंभ कियौ, पूरौ कियौ पारंभ। दक्खणियां दळ सै मिळै, मल्यण महिणारंभ।—गु. रू. बं.

महिणौ—देखो 'महिनौ' (रू. भे.)

महित–वि० [सं०] प्रतिष्ठावान, कीर्तिवान।

उ०—पिप्पराज इण कुळ खिच्ची पति, महित हुवौ हरि भक्त महामति।—वं. भा.

सं० पु० [सं०] शिवजी का त्रिशूल।

महितळ—देखो 'महीतळ' (रू. भे.)

उ०—महितळ मगजाई, मेलै थळ मेली। लेली महिमामत महिला दळ लेली।—ऊ. का.

महिताब—देखो 'महताब' (रू. भे.)

उ०—फेर हुकम हुवै छै। महिताबां री चांदणी हुवै। सू महिताबां पचास सव सांवठी ही लागी छै।—रा. सा. सं.

महिथळ—देखो 'महीतळ' (रू. भे.)

उ०—पतियारौ ग्रावै प्रसध, राड रहे सो राज। सोढी थांनै साधसी, महिथळ ग्रंबर समाज।—पा. प्र.

महिवउरउं—एक वस्त्र विशेष।

उ०—नागवटां सारनाला खासटां ग्रगिहिल कबीन्द्र संजरांमा मदवी फूलपगरीय सारीवी तिलवास गरब्भसूत्र राजिउ वयराजिउं महिव-उरउं तीतग्रागिउं......।—व. स.

महिदेव—देखो 'महीदेव' (रू. भे.)

महिधर—देखो 'महीधर' (रू. भे.)

महिनाथ—देखो 'महीनाथ' (रू. भे.)

उ०—ग्रनिबंध चमू वणि चतुर ग्रंग। महिनाथ हुकम खुल्लिय मतंग। गज स्रवत दांण मद जळद गाज, सोभंति चमक नग कनक साज।—रा. रू.

महिनौ—देखो 'महीनौ' (रू. भे.)

उ०—सखी री ग्रब मिगसर महिनौ ग्रायौ। सब ही कौ नेह सवायौ।—ध. व. ग्रं.

रू० भे०—मिंनौ।

महिप—देखो 'महीप' (रू. भे.) (डि. को.)

महिपड़—देखो 'महिपुड़' (रू. भे.)

महिपत, महिपति, महिपती, महिपत्ति, महिपत्ती—देखो 'महीपति' (रू भे.)

उ०—१ जोड़ै पांण महिपत जंपै, को रिख आग्या कीजै। आग्या एक सुणौ अप आगम, संग उभै सुत दीजै।—र. रू.

उ०—२ धारै अणी सरीर करै भ्रित। महिपति अभिमुनि हायळ हे भ्रित।—सू प्र.

उ०—३ रहियौ हेकण रूप, भव पैलां ने भाखरा। भड़ां भड़जां भूप, महिपती कहिए 'मोतिया'।—रायसिंह सांदू

उ०—४ आणंदपुर अरि करण अकाजा, मिळियौ साह सरस महा-राजा। नमि फागुण उज्जळ नरपत्ती, मेछां पति दीठौ महिपत्ती।—रा. रू.

महिपाळ—देखो 'महीपाळ' (रू. भे.)

महिपुड़, महिपुड़ि—पृथ्वी, भूमि।

उ०—१ माया रहै न मन्न, कर भेळी बांटी करो। कहियौ भोज करन्न, महिपुड़ सारे मोतिया।—रायसिंह सांदू

उ०—२ जंग छत्रदळां विधूंसे चंद जुड़ि। महिपुड़ि भार गया अहि फुण मुड़ि।—सू. प्र.

रू० भे०—महिपड़।

महिप्पति—देखो 'महीपति' (रू. भे.)

महिबूब—देखो 'महबूब' (रू. भे.)

उ०—सरसी सेजां अर सिरां सुघर सरेहली खूब। आसमांन चंद्रा-वली अनंग धजा महिबूब।—अज्ञात

महिमंडळ, महिमंडळी–सं० पु० यौ० [सं० मही+मंडल] भूमण्डल, पृथ्वी।

उ०—उण पुळ अमरापुर कापुर उर आयौ। मुरधर मंडळ तळ महिमंडळ मायौ।—ऊ का.

रू० भे०—महमंडल।

महिम—१ देखो 'महिमा' (रू. भे)

उ०—आगरइ सहरि नागौर अरु मेड़तइ। महिम लाहोर गुजरात मांहइ।—स. कु.

२ देखो 'मुहिम' (रू. भे)

महिमट्ट–सं० पु०—गर्व, अभिमान।

उ०—गज गुडीय पाखर वेगि वाहुउ, मिळी मोगर थट्ट। ए सीस मणि ऊतरिस्यइं, किम मेल्हस्यां महिमट्ट।—रुखमणी मंगळ

महिमद—देखो 'मैंमद' (रू. भे.)

उ०—म्हारै माथा नै महिमद ल्याव, म्हारा हंजा मांही रेवोजी।—लो. गी.

महिमन—देखो 'महिम्न' (रू. भे.)

महिमांनी—देखो 'मैंमानी' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपरांति करि नै राजांन सिलांमति पनरह दिन तांई जांन राखि घणी मनहारि करि भांतिगारी भगति जुगति महिमांनी करि सतरह अख भोजन रा वणाव कीजै छै।—रा. सा. सं.

उ०—२ पाहुणउ तूं हम आज, कहुं ते महिमांनी करांजी। सगली तुम्ह नई लाज, वादळ राज हमां तणी जी।—प. च. चौ.

महिमा–सं० स्त्री० [सं० महिमन्] १ महत्वपूर्ण या विशेष होने की अवस्था या भाव।

२ महत्व, माहात्म्य, बड़ाई, गौरव।

उ०—१ तो चरणां लागै तिकौ, चाळक करन सुजाव। नर गरिमा महिमा लहै, सांचौ तूं सिघराव।—बां. दा.

उ०—२ उत्तम धांम दुवारिका, महिमा सुहित संभारि। लियौ महासुख एक पख, अप परसियौ मुरारि।—रा. रू.

३ प्रभाव, प्रताप, रौब।

उ०—महिमा परमातम आतम नहि मालम। बाल्ही धण नैं तजि बिलखांणी बालम।—ऊ. का.

४ कीर्ति, प्रशंसा।

उ०—आप आपरी उगत सूं, तीख रचै तवनांह। मात तणी महिमा कही, जैन वेद जवनांह।—बां. दा.

५ आदर, सत्कार, मान।

उ०—अभिमांन इसो मन आंणै, प्रभु आया पुण्य प्रमांणै। महिमां करूं सबल मंडांणैं, वाह वाह सकोई वखाणै।—ध. व. ग्रं.

६ सुन्दरता, शोभा।

उ०—अंग अंग महिमा अधिकावै। सैंज अनंत तेज दरसावै। नार संभारै जतन निहारै, ऊपर राई लूण उतारै।—रा. रू.

७ अणिमा आदि आठ सिद्धियों में से पांचवी सिद्धि।

रू० भे०—महमां, महमा, महम्मा, महिम।

महिमाय—१ देखो 'महामाया' (रू. भे.)

उ०—विद्या धर वड वखतावरु, महियळ मैं हो महिमा महिमाय। राउ रांणा मोटा राजिया, पुहवीपति लागै जसु पाय।—ध. व. ग्रं.

महिमावंत–वि० [सं० महिमन्+वत्] १ जिसकी प्रतिष्ठा, प्रशंसा या कीर्ति हो, महिमा वाला।

उ०—भव भय दुख भंजन, चद्रबाहु भगवंत। रेणुका रांणी सुत, महियल महिमावंत।—स. कु.

महिमाह—देखो 'माहोमांहि' (रू. भे.)

उ०—जो एक भोम्या रै गांव आया। जठै भोम्या रै महिमाहै कजीयौ लागौ। जै अण्णा रै राजपूती री घणी चाव।—पंचमार री वात

महिमुंदी—१ देखो 'महमूंदी' (रू. भे.)

उ०—अधोतरी महिमुंदी दुदांमी भयरव टसरीया मुगटा सिणीयां कसबी जरबाफ मुखमल......।—व. स.

२ देखो 'मुहम्मदी' (रू. भे.)

महिमुंदी-घटी–सं० स्त्री०—१ दूल्हे-दुल्हन के प्रणय बंधन का वस्त्र विशेष। (व. स.)

२ देखो 'महमुदी'।

महिमुद—देखो 'मुहम्मद'।

उ०—इसिउ एक राजाधिराज स्री महिमुद पातसाह वरणवीतउ।
—व. स.

रू० भे०—महमूंद।

महिमुदी—देखो 'महमूंदी' (रू. भे.)

उ०—घटी, घटी कया प्रकार नुं वस्त्र छै तेनी माहिती नथी, परंतु तेनी एक प्रकार महिमुदी छै। तै लाल रंग नुं वस्त्र हतुं एम 'ढट्टी लाल' जेवा प्रयोगथी लागे छै।—व. स.

महिमूद—देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

उ०—सांभळि, राजाधिराज स्री महिमूद पातसाह वरणववुं।
—व. स.

रू० भे०—महमूद।

महिम्न–सं० पु० [सं०] पुष्पदंताचार्य द्वारा रचित शिव का एक प्रधान स्तोत्र।

वि० वि०—यह शिखरणी वृत्त में है।

रू० भे०—मईमन, महिमन, महीमन।

महियं–सं० पु० [सं० मथित] दधि, दही।

उ०—१ लिय कुंकुंम चंदन तंदुलयं महियं। मुख गावत मंगळ धंमळयं सहियं।—गु. रू. बं.

उ०—२ देवलोकि छइ घणी परि देव, एक ठाकुर बीजा करइं सेव। न लहइ मसवाडउ न लहइं ग्रास, महियौ मोदिक तीह ना दास।—वस्तिग

महियंद–सं० पु० [सं० महि-इन्द्र] राजा, नृप।

महियळ, महियल, महियलि—देखो 'महीतळ' (रू. भे.)

उ०—१ जीव चा सबद सुण जीवड़ा, महियळ जळ थळ मंझळी। आलेख पुरस अपरम परम, जळहर सद्द सु संभळी।—ह. र.

उ०—२ वट वाटै घाट औघटै रण वन, जळ थळ महियळ अजर जरै।—दोलो

उ०—३ एह चरित सुणतां सदा रै, वाधै महियळ मांम। सुख संपति बहु पांमियै रै, अनुक्रमि मन विस्रांम।—वि. कु.

उ०—४ हो रोई रोई मुंइ हूं रांन मइं, रांन रै, हो महियलि पड़ी हूं मूरछि।—स. कु.

उ०—५ आसू कातिक कहा सांम भादवै सांमणि। माह पोह मगसीर, चैत वैसाखां फागणि। साले जेठ असाढ़ दांनि लख कोड़ वरीसण। कळिजुगी वलि करण, ल्हास बरदां बगसावण। बारह मास चोईस पख, वडहथ वेवि न विसरू'। महियळ माल पातां मिळै, सहु रुत रावळ संभरू।—ईसरदास बारहठ

उ०—६ 'गाजीसाह' अभनमौं 'गांगौ', महियळ 'सूर' सुभ्रमकुळ-मोड़। वहता हसता कूदता वाजंद्र, रहता करै वडा राठौड़।
—किसनौ आढौ

महियव–सं० पु०—राठौड़ों की एक शाखा, महेचा राठौड़।

उ०—आहव सूरां आगळा, सुरतांणां हटमल्ल। महियव रीत उजाळणा, अमर तणा पीथल्ल।—रा. रू.

महियागिर—देखो 'मलयगिरि' (रू भे.)

महियार—देखो 'महिआर' (रू. भे.)

उ०—भलै महियार जसोदा भाग, नमौ नंद नंदण नाथण नाग।
—गुण नारायण नेह

महियारड़ौ—देखो 'महिआरौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वीर कहइ रिखि सांभलउजी, गोरस वहेरचउ रे जेह। मारग मिली महियारड़ी जी, पूरव जनम नी माय तेह।—स. कु.

(स्त्री० महियारड़ी)

महियारौ—देखो 'महिआरौ' (रू. भे.)

उ०—तद भरमल ऊंचे साद सूं महियारां नूं कही भैंसां दुही सोतौ दुही नहीं सो कटी तो सांम्ही छोड देवौ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

(स्त्री० महियारी)

महियासधू—देखो 'मेहासधु' (रू. भे.)

महियौ—१ देखो 'मयौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मईयौ' (रू. भे.)

उ०—लाल चौभर्णे मांमा मोचा, लाल कनारी जोड़ौ। लाल पाघड़ी रातौ वागौ, रातै महियै घोड़ौ।
—डूंगजी जवारजी री छावली

महिर–सं० पु० [सं०] १ नृप, राजा।

२ योद्धा।

३ देखो 'महर' (रू. भे.)

उ०—मिठड़ा राजिद भिल रही, इक मांनौ मोरी वात। महिर करो मो ऊपरै, जिम न हुवै उतपात।—वि. कु.

४ देखो 'मिहिर' (रू. भे.)

महिरवांन, महिरवान—देखो 'मेरवान' (रू. भे.)

उ०—एक दिन रिखीस्वर महिरवांन हुवा छै। राजा नुं संतुस्ट हुइ नै पांणी मंत्र दीयौ छै।—चौबोली

महिरवांनी—देखो 'मे'रबानी' (रू भे.)

उ०—तद घोड़ौ एकलै ही उठाय प्रोहित कन्है आय कहण लागौ—जो आज तो कही बडै सगै महिरवांनी करी, सो अळगी भूंह रो नाळेर मोनै अठै सांम्हो आयौ 'वडी कीरपा कीवी।'
—कुंवरसी सांखला री वारता

महिरांण—१ देखो 'महारणव' (रू. भे.)

उ०—१ देवगिरि अन्नै जोगणिपुरां, सबळौ भारथ सूत्रियौ। महिरांण महिखकर मत्थतां, च्यार मास विग्रह कियौ—गु. रू. बं.

उ०—२ जळ चादरूं की थरहर मांनूं छिल्लै महिरांण। सीखंडूं का डंबर समीर सै झोला खावै।—सू. प्र.

उ०—३ श्रोपीयौ प्रथमादि ऊपरि, जब जै बाखांण। फौज रौ सिरणगार फाबै, मौज रौ महिरांण।—ल. पि.

२ देखो 'महारांणौ' (रू. भे.)

उ०—१ जग जोत जांण, ऊगो क भांण। मुख चे प्रमांण, महिरांण मांन।—अ. वचनिका

उ०—२ सीख लाख दे निसंक सूं, वातां घणी बणाय। मन लागो महिरांण सूं, जीवन रह्यौ न जाय।—पनावीरमदे री वात

उ०—३ राय साधार बंदिछोडि मोटा विरुद, साह पतिसाह सम फौज महिरांण।—वि. कु.

३ देखो 'महरांण' (रू. भे.)

उ०—राजि रा पाउ पाताळ तणी रुख, मसतक सरगां जिसो मंडाण। राज रा छूमण दिसै रुघराजा, मन ससिहर कूखां महिरांण।—पी. ग्रं.

महिरांणवर-सं० पु०—१ राजा, नृप। (डिं. नां. मा.)

२ देखो 'महारणव' (रू. भे.)

महिरांमण—१ देखो 'महिरावण' (रू. भे.)

उ०—रांमण नै महिरांमण रेसण दइता तणौ मरण सी डोर।
—पीरदांन लाळस

२ देखो 'महारणव' (रू. भे.)

महिराउण, महिराउणि—१ देखो 'महिरावण' (रू. भे.)

२ देखो 'महारणव' (रू. भे.)

महिरावण-सं० पु०—एक राक्षस जो रावण का पुत्र व पाताल का राजा था।

उ०—जिम रांम कज्ज हनुमंत करि, महिरावण बंध्यउ तिखिण।
—प. च. चौ.

रू० भे०—महिरांमण, महिराउण।

२ देखो 'महारणव' (रू. भे.)

महिरिवांण—१ देखो 'मेहरबांन' (रू. भे.)

उ०—ग्रहि ग्रमर रखेसर नर असुर, पहचि तुझ दाखै प्रघळ। हु महिरिवांण माया हिमै, वइण मुझ दीजै विमळ।—पी. ग्रं.

२ देखो 'महारणव' (रू. भे.)

महिरी—देखो 'महर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

महिरेळण-सं० पु०—पृथ्वी पर पानी फैलाने वाला, इन्द्र।

वि०—विश्व में अपना यश या कीर्ति फैलाने वाला, यशस्वी।

सं० पु०—राठौड़ राव रायपाल का विरुद।

उ०—गांव राड़द्रह री दुगहदौ महिरेळण रायपाळ धूहड़िया रौ वस्त चंद पायौ।—बां. दा. ख्यात

महिळ—देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—र्‍यां रावत रै महिळ सोनगरी। सो रावजी रै नांनांणै दिसासौं साख हुतौ, सु रावजी जुहार कहायौ।—नैणसी

महिल—देखो 'महल' (रू. भे)

महिलांण-सं० पु०—पड़ाव, डेरा, ठहराव, विश्राम।

उ०—इसी भांति जळूस करि बीजारौ तो वयूं कहणी नहीं, असवार हजार २ सूं चिढ्या, तिका चालतां-चालतां टोडै टूंक महिलांण हुवा।—जगदेव पंवार री वात

महिळा-सं० स्त्री० [सं०] १ स्त्री, औरत, रमणी। (ह. नां. मा.)

उ०—१ प्राचीन करम सुभ ए, पुरखा पाइता उतमा महिळा। कुळ दीप पुत्र जिणयै, कुळ धू बिनै रूप संजुगता।—गु. रू. बं.

उ०—२ पसू पणौ पंखी पणूं, सुतर मुरग रै संग। मरद पणौ महिळापणौ, मावड़िया रे श्रंग।—बां. दा.

२ पत्नी, प्रिया, प्रियतमा।

उ०—माधव महिळा थी ठरइ, महिळा माधव दीठ। अन्योअन्यइ स्यां थयां, चटकु चोल-मंजीठ।—मा. कां. प्र.

३ स्त्रियों के लिये आदर सूचक सम्बोधन।

४ नशे में मस्त महिला, मस्तानी औरत।

रू० भे०—महळ, महल, महळा, महल्ल, महिळ, महिल्ला, महुळ, महेळ, महोळ, मुहळ, मोहल, मोहळ।

अल्पा०—महळि, महळी, महिळि, महिळी, महिल्ला, महेळि, महेळी, महेळीय, मिहल, मिहिली, मेहड़ली, मोहळ।

५ प्रियंगु लता।

६ रेणुका नामक पौधा।

महिलाइत, महिलायत—देखो 'महलायत' (रू. भे.)

उ०—वैकुंठनाथ विसक्रमा कूं हुकम हुआ, वैकुंठ री रौस मातलोक माहै सोव्रनमै महिलाइत पदास करी।—वचनिका

महिलाव-वि०—स्त्रियों का, स्त्रियों सम्बन्धी।

उ०—कवि आखर ज्यूं करण तण, मरहट्टौ महिळाव। कुच आधा ढकिया निरखि, रीधौ बाळक राव।—बां. दा.

महिळि, महिली—१ देखो 'महिळा' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—इक्क महिली पंच जण तींह मिलिउं तुं पक्खि। ए उग्रहांणउ सच्चु किउ कूडउ कूडा सक्खि।—पं. पं. च.

२ देखो 'महल' (रू. भे.)

महिल्ल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—जुग सकळ मांहि देखे 'जगा', लाभ धरम समरण लिया। जोती सरूप जग्नारजन, दिल महिल्ल दीयग दिया।—जगौ खिड़ियौ

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

महिल्ला—देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—कंवर विदा पहला कियौ, सरब महिल्लां साथ। अण संका आगै हुवा, भड़ बंका भाराथ।—रा. रू.

महिस-सं० पु० [सं० महिष] १ भैंस। २ महिषासुर।

वि०—बहुत मोटा और सुस्त।

रू० भे०—मयंख, महख, महखो, महिख, महिखु, महिक्ख, महिख्य, महीख ।

महिसधुज-सं० पु० [महिषध्वज] यमराज ।

रू० भे०—महिखधुज, महीखधुज ।

महिसघ्नी-सं० स्त्री० [सं० महिष-घ्नी] दुर्गा देवी ।

महिसमरदणी, महिसमरदिणी-सं०स्त्री० [सं० महिष-मर्दनी] दुर्गा देवी ।

महिसवाहण-सं० पु० [सं० महिष-वाहन] यमराज ।

महिसासुर-सं० पु० [सं० महिष-असुर] एक असुर जो मयासुर एवं रंभा का पुत्र था ।

उ०—महिसासुर जू माइ, मर जइ महिखासुर मरइ । सुर छूटइ सुर राइ, वार तुहारी वीस-हथि ।—अ. वचनिका

रू० भे०—महसासुर, महिखासुर ।

महिसि, महिसी-सं० स्त्री० [सं० महिषी] १ पटरानी, रानी, साम्राज्ञी । २ भैंस । ३ काला, कृष्ण । ❀ (डिं. को.)

रू० भे०—महकी, महखी, महसी, महिखी, महीखी, महेसी ।

महिसुत—देखो 'महीसुत' (रू. भे.) (अ. मा.)

महिसुर—देखो 'महीसुर' (रू. भे.)

महिसूफ-सं० पु०—एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।

उ०—दहीथरां, तिलसांकळी, फाफडा पूरी गूंभां गुंदवडां परीमीडां घूघरी गुळपापड़ी गुंदपाक **महिसूफ** कूलिरि मुगनुं उसड........ ।

—व. स.

महीं—देखो 'महीन' (रू. भे.)

उ०—कातणवाळी छैल छबीली, बैठी पीढ़ी ढाळ । **महीं** सहीं वा पूणीं कातै, लंबो काढै तार । चाल रै चरखला ।—लो. गी.

२ देखो 'में' (रू. भे.)

उ०—बैर **महीं** तोटो वसै, वसै नफो नह 'बंक' । सिया विरह राघव सह्यो, रावण पलटी लंक ।—बां. दा.

३ देखो 'मही' (रू. भे.)

मही-सं० स्त्री० [सं०] १ पृथ्वी, धरती, धरा, भू ।

(अ. मा., नां. डिं. को., डिं. को.)

उ०—१ जावै नहि जाचक घरां, संत महंता सत्थ । मंगळ री जगणीं **मही**, अदतारां री अत्थ ।—बां. दा.

उ०—२ जु रवि पस्चिम ऊगमइ, मेरु चलइ **मही** मांहि । विहि तणा पणि जे लख्या, चतुर न चूकइ क्यांहि ।—मा. कां. प्र.

२ भू-सम्पत्ति, रियासत, जागीर ।

३ राज्य, देश । ४ मिट्टी ।

५ समूह । ६ सैना, फौज ।

७ खाली स्थान, अवकाश ।

८ गाय, गो ।

उ०—**महियां** चरावै वंसी बजावै, नई नई रमक बताय ।

—अज्ञात

९ छाछ, मट्ठा । (ह. नां. मा)

१० दहि, दधि ।

उ०—१ पथिक जाय मथुरा कहै जादवां पतीनूं, आवरा मिलण कूं बात उरळी । आय गोकळ **मही** लेर सुर अनोखां, मया कर सुणावो फेर मुरळी ।—बां. दा.

उ०—२ घणा रोद्र घेरै, फिरै चक्र फेरै । मथांणी मटल्लै, **मही** जांण हल्लै ।—रा. रू.

११ एक नदी का नाम ।

१२ एक लघु एक गुरु के क्रम से २०० वर्णों का एक छन्द ।

(र ज. प्र.)

१३ त्रिकोण । ❀ (डिं. को.)

१४ एक की संख्या । ❀ (डिं. को)

रू० भे०—मइ, मई, मह, महि, महीं, मिहि, मिही ।

अल्पा०—महीड़ो ।

महीअर—देखो 'महीधर' (रू. भे.)

उ०—मात तात न संभरइ, **महीअर** तूं माहाराज । पाली-नइ पोढउ करी, कांइ ऊवेखइ आज ।—मा. कां. प्र.

महीअरी-सं० स्त्री०—मासी ।

उ०—**महीअरियां** नहं मांनीइ, भलीपरि भांणेज । आसा पूगइ बहिनिनी, हरखि आंणइ हेज ।—मा. कां. प्र.

महीअळ, महीअळि—देखो 'महीतळ' (रू. भे.)

उ०—१ अधिकुं कहुं आसाढ़ सूं, माठउ **महीअळ** मद्धि । पगदंडा पंथी तणां, तई भंज्या अवसिद्धि ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ अतिहिं सोहांमणउं ए **महीअळि** ऊपरि चरीइ ए । जे भणइं जे सुणइं ए तींह घरि अचल वधांमणु ए ।—हीराणंद सूरि

महीआरो—देखो 'महिआरो' (रू. भे.)

उ०—बन मांहि वजाड़ी वांसळी, **महीआरै** तुं सां मिळै । आजरै घणी हुइ ऊलटै, व्रम मूरति सांमै वळै ।—पी. ग्रं.

(स्त्री० महीआरी)

महीइंद-सं० पु० [सं० महेन्द्र] १ देवराज इन्द्र, महेन्द्र ।

२ नेता, मुखिया, प्रधान ।

३ राजा, नृप ।

महीकाळबासर-सं० पु०—प्रलय दिवस ।

उ०—प्रलय सिंधु सम खिजि असुर, यहि विधि चले उमगिग । **महीकाळबासर** समय, यहि विधि चले उमगिग ।—ला. रा.

महीख-सं० पु०—१ एक प्रकार का पक्षी विशेष ।

२ देखो 'महिस' (रू. भे.)

उ०—**महीख** चक्रं चाढि मात, स्रोण चंड सो पियो । 'अजो' नरिंद जेण वार, इंद्र जेम ओपियो ।—सू. प्र.

महीखधुज—देखो 'महिसधुज' (रू. भे.)

महीखासुरमरदणी—देखो 'महिसमरदणी'।
महीखी—देखो 'महिसी' (रू. भे.)
महीड़ो—देखो 'मही' (९-१०) (अल्पा., रू. भे.)
उ०—कोई तो बोलो महीड़ो मेरो लूटै। छोड कनैया ईंडाणी हमारी मही की कांना मेरी फूटै।—मीरां
महीज-सं० पु० [सं० मही+जः] १ मंगल ग्रह।
२ वृक्ष, पेड़। ३ अदरक।
महीजा-सं० स्त्री० [सं०] सीता, जानकी।
रू० भे०—महिजा।
महीजीत—देखो 'मसजिद' (रू. भे.)
महीडा-सं० पु०—सोलंकी वंश की एक शाखा तथा इस शाखा का व्यक्ति।
महीणो—देखो 'महीनो' (रू भे.)
उ०—रातरी धूंई में दिनूंगै री पून, वासते में लाल-लाल खीरा जियां उछाळै, बियां ही लालजी रै घर री कूड़ो सोग महीणां सूं पैल्या ही उधड़ ज्यावै है।—दस दोख
महीतळ, महीतळि, महीथळ-सं० पु० [सं० मही-तल] १ पृथ्वी का धरातल, सतह, भूमि।
उ०—राइं कहाविउं ते कहिउं, सेवकि सूंपी सार। महीतळि पडियु माधवु, तनु धूजी तिणि वारि।—मा. कां. प्र.
२ संसार, भव।
रू० भे०—मइयळ, मईयळ, महिग्रळ, महितळ, महियळ, महियळ, महियल, महियलि, महीग्रळ, महीग्रळि, महीथळि, महीथळी, महीयळ, महीयळि।
महीथळि, महीथळी—१ देखो 'मैथिली' (रू. भे.)
२ देखो 'महीतळ' (रू. भे.)
महीदेव-सं० पु० [सं०] ब्राह्मण, विप्र।
रू० भे०—महिदेव।
महीधर-सं० पु० [सं] १ विष्णु।
२ पर्वत। (डिं. नां. मा.) ३ शेषनाग।
४ एक वर्ण वृत जिसमें क्रमशः चौदह बार लघु व गुरु आते है।
रू० भे०—महिधर, महीग्रर।
महीन-वि० [अ०] १ अत्यन्त लघु, जिसका अस्तित्व सहसा दिखाई न पड़े। २ स्थूल या मोटे का विपर्याय, सूक्ष्म।
३ तुच्छ। ४ जीर्ण-शीर्ण।
५ कमजोर, क्षीण। ६ अत्यन्त पतला, भीना।
७ कोमल, मंद, धीमा। (स्वर)
रू० भे०—मइ, मई, मईन, महीं, महीण, मियूं, मियो, मिहीं, मींयो, मींह, मिहीन।
महीनदार-सं० पु० [अ० महीनः+दार] मासिक वेतन पर कार्य करने वाले कर्मचारी।
उ०—घोड़ां रो रातब दांणो, महीनदारां रो महीनो, मोदीखांनै री जिनस और ही सारा लोगां रो सरंजांम सरतंत कर घोड़ां नुं खुद रै खेत भीळाय हाथियां नूं गुळ वाड़ री बाड़ भोळाय जाय गैर महिलां रहियो।—डाढ़ाळा सूर री बात
महीनाथ-सं० पु०—राजा, नृप।
रू० भे०—महिनाथ।
महीनो-सं० पु० [अ० महीनः] १ वर्ष के बारहवें अंश के बराबर का समय जो प्रायः तीस दिन का माना जाता है, मास, माह।
उ०—१ जेठ नांम जेठ और महीनो बाड़ी जेठ महीनो दीठां सूक जावै है जिणतरै जेठ नें देख दुसमणां री बाड़ी सूक जावसी।
—वी. स. टी.
उ०—२ अबै पाछा बारै महीना सूं उठै भेळा व्हैला।—फुलवाड़ी
२ मासिक वेतन।
रू० भे०—मईनौ, महणो, महनो, महिणो, महिनो, महीणो, मांहीनौं, मीणो, मी'णो।
महीनो'क-वि०—करीब एक मास, एक मास के लग भग।
उ०—अरु रावत कांधळजी रै वडो बेटो तो वाघोजी हा जिकै तो कांधळ जी सूं महीनो'क पछै झगड़े में कांम आया।—द. दा.
महीप-सं० पु० [सं०] १ इन्द्र। (ना. डिं. को.)
उ०—मिळि पधराय सवाय हित, डेरा दिया समीप। छत्रपति छाजै ऊधरै, राजै जोड़ महीप।—रा. रू.
२ राजा, नृप।
उ०—१ करणो सो अब ही कियो, मरणो वेस महीप। दिल्ली मग मोनूं वहै, दीजै पग कुळदीप।—वं. भा.
उ०—२ सोभा रूप गांन व्रत सोहै, महीप किसूं इंद्र मन मोहै।
—सू. प्र.
रू० भे०—मईप, महिप, माहीप।
महीपत—देखो 'महीपति' (रू. भे.)
उ०—वेड़ तो पेख पतसाह वाकारियो, टाळ अन करै मन जहीं टाळियो। महीपत 'करन' सालीयां दूणी मगज, वाग मह लीध वा खुद वळियो।—द. दा.
महीपति, महीपती, महीपत्ति-सं० पु० [सं० महीपतिः] राजा, नृप।
(ह. नां. मा.)
उ०—१ मंत्री तहां मयण वसंत महीपति, सिळा सिंघासण घर सधर।—वेलि
उ०—२ वळै हुई तिणवार महीपत्ति हूं कथ मालिम। जुध करि ग्रहियो जवन खांन अबदुल्ल खूंदालिम।—सू. प्र.
रू० भे०—महपत, महपति, महपती, महपत्ति, महपत्ती, महिपत, महिपति, महिपती, महिपत्ति, महिपत्ती, महिप्पति, महीपत, माहिपत, माहिपति।
महीपाळ, महीपाल-सं० पु० [सं० महीपाल] १ राजा, नृप।
उ०—पुळियो जिम सुत हूं पिता, महीपाळ तजि माळ।—वं. भा.

२ मेघ ।
रू० भे०—महपाळ, महिपाळ ।

महीपुत्र-सं० पु० [सं०] मंगळ ग्रह ।

महीभरत—देखो 'महीभ्रत' (रू. भे.)

महीभुजंग-सं० पु० [सं०] १ राजा, नृप ।

उ०—इरण कुळही देवट अभिधानी, महीभुजंग हुवौ रणमांनी । कुळ जिरणरी देवड़ा कहावै, दान-समर अनुपम दरसावै ।—वं. भा.

२ गणिका का पति ।

महीभ्रत-सं० पु० [सं० महीभर्तृ] १ राजा, नृप ।

२ पर्वत, पहाड़ ।

रू० भे०—महीभरत ।

महीमंडण-सं० पु० [सं० मही+मंडन] इन्द्र ।

उ०—माधव तूं महीमंडणउ, जिहां जाएसी तिहां जांणि । चिहुं करी चलावीइ, ए अम्ह अधिकी हांणि ।—मा. कां. प्र.

महीमंडळ-सं० पु०—भूमंडळ, पृथ्वी ।

महीमन—देखो 'महिम्न' (रू. भे.)

महीमुंदीसाही-सं० पु० यौ०—एक प्रकार का बढ़िया वस्त्र विशेष ।

उ०—कतास अतलस खासु कमसु भइरव, मिसु भइरव, रेसमी भइरव, लाहि महीमुंदीसाही मलमलसाही प्रमुख नानाविध भांतिनां, नानाविध देसनां वस्त्र आंणी समस्त परिवार, नगरलोक पहिरावी ।
—व. स.

महीमुरतब, महीमुरत्तब, महीमुरातब, महीमुरातिब—देखो 'माहीमुरातब' (रू. भे.)

उ०—१ गजमिका तराजू अदल गहि, तोग महीमुरतब तुरंग । पतिसाह हुवौ अजमाल पह, दिली जेम तारा दुरंग ।—सू. प्र.

उ०—२ धज फरर नेजा धार, सझि तोग धर असवार । वणी महीमुरत्तब वाग, नौबति धारक नाग ।—सू प्र.

उ०—३ के सकत पूज नौबत कसं, आरोहक के आरबां । धर फरर चढै नीसांण धर, तोगां महीमुरातबां ।—सू. प्र.

महीयळ, महीयळि—देखो 'महीतळ' (रू. भे.)

उ०—१ भादवउ बरसइ छइ मगेहर गंभीर, जळ थळ महीयळ सहू भरया नीर ।—वी. दे.

उ०—२ किहां मुत्ताहळ गुंज किहां, किहां सरसव किहां मेर । माधव जोतां मानिनी, महीयळि एतु केर ।—मा. कां. प्र.

महीयां-वि०—मूढ़, अज्ञानी ।

उ०—हूं माधव वंछूं वली, ते माधव तूं होय । पीड़इ कां मुझ पापीया, महीयां मांम न खोय ।—मा. कां. प्र.

महीयारी—देखो 'महिआरी' (रू. भे.)

(स्त्री० महीयारी)

महीरजण-सं० पु०—मेघ, बादल । (ना. डि. को.)

महीर-वि०—१ महान, बड़ा ।

सं० पु०—२ पृथ्वी, भूमि ।

३ देखो 'मिहिर' (रू. भे.)

उ०—पधारया वेदाई पंथ हेमाळै गळैवा पंड, गौरी पातसाह राज गभायी गहीर । पंच तुंड पीठ घू पीरोज बिराजै पांन, मही दुनी भरै साख चंद्रमा महीर—पन्नारांम मोतीसर

महीरानाथ-सं० पु०—राजा, नृप । (डि. को.)

महीरुह-सं० पु० [सं०] वृक्ष, पेड़ । (ह. नां. मा.)

महीवर-सं० पु० [सं० मही+राज० वर=पति] राजा, नृप । (डि. को.)

महीस-सं० पु० [सं० महीश] राजा, नृप ।

उ०—मद्र देस में आपरौ अमल जमाय महीस हुवौ जिणरी संतति समस्त माद्रेचा चहुवांण कहीजै ।—वं. भा.

रू० भे०—मईस ।

महीसुत-सं० पु० [सं०] १ मंगल ग्रह ।

२ वृक्ष, पेड़ । (नां. मा.)

रू० भे०—महिसुत ।

महीसुर-सं० पु० [सं०] ब्राह्मण, विप्र ।

रू० भे०—महिसुर ।

महीसूर-सं पु० [सं० मही+शूर] अर्जुन । (ह. नां. मा.)

महु'र—देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—पिण दांणव ची प्रौळि, कूक तिम करळी कीधी । मिळिया सुणि तिण महु'र संभ निहसंभ स वीधी ।—मा. वचनिका

महु—देखो 'मधु' (रू. भे.)

उ०—१ प्रकट बडौ संग्रांम सिंह पहु, मतिधर सुकवि मिलिंद कंज महु ।—वं भा.

उ०—२ लोभे लागो खाय नै खरचै, रांक मनै लछि राखी । घाटी मिलीयां हाथ घसेलौ, महुं चुटै जिम मांखी ।—ध. व. ग्रं.

महुअड़ौ, महुअडौ-सं० पु०—देखो 'महुग्रो' (अल्पा., रू. भे.)

महुआल-सं० पु० [सं० मधुजल] मधुजाल । (उ. र.)

महुऊ-सं० पु०—देखो 'महुग्रो' (रू. भे.)

महुग्रो-सं० पु० [सं० मधुक, मधूक+प्रा० महुअ] १ भारत के सभी भागों में होने वाला एक वृक्ष, महुए का वृक्ष

वि० वि०—यह पहाड़ों पर प्रायः तीन हजार फुट की ऊंचाई पर पाया जाता है । इसके फल, फूल, लकड़ी, बीज सभी वस्तुएं उपयोगी होती हैं ।

२ एक प्रकार का घोड़ा विशेष ।

उ०—पाडवां जहीं किता पळ खंडिया विहरै हाड विजूजळ वाह । सहुग्रां सिर महुग्रौ सूरजमल, मेल्यौ मेछ तणौं वळ मांह ।
—महाराजा सूरसिंह रौ गीत

३ मधुर । ❀ (डि. को.)

रू० भे०—मउ, महवो, महुऊ, महुबो, महू, महूग्रउ, महो ।

ग्रल्पा०—मउड़ौ, मऊड़ौ, महुग्रड़ौ, महुग्रडौ, महुड़ौ, महुडौ, महूग्रड़ौ, महूड़ौ, महूडौ, महूयडौ, महूवौ।

महुकम–वि०—समर्थ।

उ०—दधि परणनइ पासइ रहइ छइ, ग्रति ते गुणवंत। पण डीलिइ स्वामी कूवडउ, महा महुकम बलवंत।—नळदवदंतीरास

महुकर—देखो 'मधुकर' (रू. भे.)

महुड़ौ—देखो 'महुग्रौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

महुच्छव, महुछव—देखो 'महोत्सव' (रू. भे.)

उ०—१ जमु नयरि जेसलमेरि राउल, मालदे महुच्छव कियं।
—स. कु.

उ०—२ उदय प्रभ सूरि प्रमुख ना ए, पदठवणां एकवीस। महुछव सेती करावीया, जाचकां पूरी जगीस।—स. कु.

महुडौ—देखो 'महुग्रौ' (ग्रल्पा० रू. भे.)

उ०—द्राक्षा तणि कांक्षा किसिउं महुडे फेटइ, सरकरा'नी स्रद्धा किं गुलि पूजइ।—व. स.

महुत, महुत्त—१ देखो 'महुरत' (रू. भे)

उ०—समया वळिय महुत्त दीह पख मास नें साल।—वृ. स्त.

२ देखो 'महत्व' (रू. भे.)

उ०—ग्रांणइ नगरिइ जोइवू रे, पुहुतु सभा मझारि। उलखीउ रूतुपरण राजाइ, दीधउं महुत ग्रतिसार।—नलदवदंतीरास

महुयर, महुयरि–सं० स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य विशेष जिसे राजस्थानी मे 'पूंगी' भी कहते हैं।

उ०—१ मधुर स्वरि महुयरि वाइं, वानि काळा, मुहि विकराळा।
—व. स.

उ०—२ वीणां डफ महुयरि वंस वजाए, रोरी करि मुख पंचम राग।—वेलि

रू० भे०—महुवरि, महुवरी।

महुयरौ—देखो 'मधुकर' (रू. भे)

उ०—जिण चंद पय ग्ररविंद सुंदर, सार सेवा महुयरौ। गणि सकलचंद सुसीस जंपइ, समय सुंदर सुहकरौ।—स कु.

महुर, महुरउ—१ देखो 'मधुर' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—धां धां धपमु महुर म्रदंग चचपट चचपट तालु सुरंग। कधुंगनि धोंगनि धुंगा नादि, गाइं नागड़ दों दों सादि।—हीराणंद सूरि

२ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—ईये भांत छोकरी महुर १ रोज ले ग्रावै नै वांणीयै नुं ले जाइ देवै।—स्यांमसुंदर री वात

महुरत, महुरति–सं० पु० [सं० मुहूर्त] १ काल या समय का एक मान जो ४८ मिनट का होता है, रात व दिवस का तीसवां भाग।

उ०—किण महुरत कहियांह, वरिवा कदि वीजांणदै। वार्ता विच रहियांह, सिरै न चढिया सूरउत।
—सयणी चारणी री बात

२ फलित ज्योतिष के ग्रनुसार गणनाक्रम से, किसी शुभ कार्य या प्रस्थान के लिए निकाला हुग्रा कोई समय।

उ०—सुभ दिवस महुरत सार, 'ग्रजमाल' हुय ग्रसवार। रंग सुरंग वण गजराज, क्रिति ग्रम्रत होत ग्रकाज।—रा. रू.

३ निर्दिष्ट क्षण, काल या समय।

उ०—निज गउखै चढि चढि वाट निहाळइ, महुरत पिण ग्रायो तिल मात।—महादेव पारवती री वेलि

४ शुभ घड़ी, शुभ समय, शुभ ग्रवसर।

उ०—१ तपवंत हुवै 'ग्रजमाल' सुतन्न, धनि वेळा महुरत वार धन्न।—सू प्र.

उ०—२ 'दमयंती' स्वयंवर मांडयु, महुरत छि ते कालि। जु जवाइ तु तिहां जईइ, ग्रस्व ग्रनोपम चालि।—नळाख्यान

५ श्री गणेश, प्रारम्भ।

क्रि० प्र०—ग्रांणी, जांणौ, टळणौ, टाळणौ, दिखाणौ, देखणौ, निकळणौ, निकाळणौ, सजणौ, साजणौ।

रू० भे०—महुत, महुत्त, महूरत, महूरति, महोरत, महोरथ।

महुरी—देखो 'मोरी' (रू. भे.)

उ०—जरबाफ तणा ताइ पाटा जोडिया, रेसम री महुरी बहुरंग।
—महादेव पारवती री वेलि

महुळ—देखो 'महिळा' (रू. भे.)

महुल—देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—नाळेर लियउ प्रभु बात परीछी, जांणणहार सुजांण जगि। ग्राया महुल करै ताइ ग्राइत, प्रिथी प्रमांणइ धरण पगि।
—महादेव पारवती री वेलि

महुलेठी–सं० पु० [सं० मधुयष्टि] गन्ना ईख। (उ. र)

महुवरि, महुवरी—देखो 'महुयरी' (रू. भे)

महुवौ—देखो 'महुग्रौ' (रू. भे.)

उ०—सुर काज पीरोजियै कैहरड़ा सज, चंप हूरी महुवा चकरी। संदली भरद्वाज भसमीयै चीनस, नील पीळा गुरड़ा नु करी।
—किसनजी धधवाड़ियौ

महू—१ देखो 'महुग्रौ' (रू भे.)

२ देखो 'मधु' (रू. भे.)

उ०—जइ ग्रम्रपपान पीजइ तु कांजीइ किसिउं कीजइ, जउ द्राक्षाफल दीसइ तउ महू कवण नउ वीस (र) इ।—व. स.

महूग्रउ—देखो 'महुग्रौ' (रू. भे.) (उ. र.)

महूग्रडौ—देखो 'महुग्रौ' (ग्रल्पा., रू. भे)

उ०—उराहा सेराहा केकांण सूनडा सिरखंडा महूग्रडा दक्षिण पथा पांणीपथा मांकडा नीलडा''''''।—व स.

महूग्रर—देखो 'मधुकर' (रू. भे.)

उ०—सेवइ जसु पय साध ग्रहे, पंकय महूग्रर रण उणइ ए। धन धनु जे नरनारि ग्रहे, नितनितु प्रभु गुण गण थुणइ ए।
—भावप्रभ सूरि रौ गीत

महूड़ौ, महूडौ, महूयडौ—देखो 'महुग्रो' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ ग्रमरांणै में महूड़ै रौ पेड़ हो जी हो, म्हारा 'रतन' राणां ग्रमरांणै महूड़ै रा रूंख ।—लो. गी.

उ०—२ ग्रबळक सीविराजी, तापणा महूडा ताजी । लालमां मोळा लाखीक, कुलिथ्या केवी कोडीक ।—गु. रू. बं.

उ०—३ कनूजदेसनां कुलथा । मध्यदेसना महूयडा देवगिरा देवगिरा देखाऊ ।—कां. दे. प्र.

महूर-वि०—१ पहला, प्रथम ।

२ देखो 'मधुर' (रू. भे.)

३ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

महूरत, महूरति—देखो 'महुरत' (रू. भे.)

उ०—१ घड़ी महूरत ग्राजसु दिन दिन, पतिवरता यूं भाखै । चीरि लिखी विप्रनें दीन्ही, रखै विप्र बिचि राखै ।—ह. पु. वां.

उ०—२ ता पांछै भलो महूरत देख ज्योतिसी बुलाय पंच दंड रो छत्र धारि राजा बैठियौ छै ।—पंचदंडी री वारता

उ०—३ ग्रागलि ये ग्रक्षर हुता, ते वांच्या ग्रवनेसि । माधव महूरत को महि, ग्राविउ तेणि निवेसि ।—मा. कां. प्र.

उ०—४ कोग्रण कोम कटक्क में, वोम विलग्गै वद्धि । कीध सताबी साह विस, चडण महूरत मद्धि ।—गु. रू. बं.

उ०—५ ग्रंत दिन लगन महूरति ऊपरि, धवळ मंगळ दळ ढूंकळ घोड़ । मीरां घड़ परणण कोमारी, मारू 'रयण' बांधियो मौड़ ।

—दूदौ

महेंद्र-सं० पु० [सं०] विष्णु ।

२ इन्द्र । ३ एक पर्वत का नाम ।

महेंद्राळ-सं० स्त्री०—एक नदी का नाम जो गुजरात में बहती है ।

महेचा-सं० स्त्री०—राठौड़ वंश की एक शाखा ।

महेचौ-सं० पु०—राठौड़ वंश की 'महेचा' शाखा का व्यक्ति ।

महेछ-सं० पु० [सं० महेच्छ] दातार, दानी । (ह. नां. मा.)

महेळ—देखो 'महिळा' (रू. भे.)

महेल—देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—इण परि पदमिणी रा गुण सांभळी रे, हरख्यौ मन सुलतांन । हम महेलें पदमणी केते ग्रछैरे, परख्यौ व्यास सुजांण ।—प. च. चौ.

महेळि, महेळी—देखो 'महिळा' (ग्रल्पा., रू भे.)

उ०—तेण विहूणउ दीवडु, मूंल विहूणी वेळि । पांणी विहूणी दद्दुरी, तिम होई ति महेळि ।—मा. कां. प्र.

महेलीय—देखो 'महिला' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—एक महेलीय पंच भरतार, सती सिरोमणि गाई ए ।

—पं. पं. च.

महेव-सं० पु०—मारवाड़ का 'मालांनी' नामक प्रदेश (प्राचीन) ।

रू० भे०—महेवपुर, महैवो ।

महेवपुर—देखो 'महेव' ।

महेवेचा-सं० पु०—राठौड़ों की एक उपशाखा ।

महेवेचौ-सं० पु०—राठौड़ों की 'महेवेचा' शाखा का व्यक्ति ।

उ०—विजा मनोहर दास का महेवेचा समरत्थ । बांहांपण निभाहुणा, साहां सूं समरत्थ ।—रा. रू.

महेवौ—देखो 'महेव' (रू. भे.)

उ०—गाजै नगारां चहूंगमां धर माग रुकांणी, पडिया धूंस बहादरां, बंधै किरवांणी । देस महेवा वीटिया त्रिबधी तुरकांणी, रावळ 'माल' महाबळी ग्रागळ हिंदवांणी ।—वी. मा.

महेस-सं० पु० [सं० महेश] १ शिव, महादेव । (ग्र. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ जादम 'किसोर' महेसदास का जाया, महेस के कंकण सा विरद जिण पाया ।—रा. रू.

उ०—२ पगि-तलि हूंती चोटलइ, चौद लोक नुं वास । ब्रह्मा विस्णु महेस पणि, पिंजर ग्रोणि प्रकास ।—मा. कां. प्र.

२ ईस्वर ।

उ०—मुणाळ भुग्राळ छत्राळ महेस । ग्रादेस ग्रादेस ग्रादेस ग्रादेस ।

—ह. र.

रू० भे०—माहेस ।

महेसकंकण-सं० पु०—वह कंकण या वलम जिसको शिव ने भस्मासुर को दिया था ।

महेसचख-सं० पु० [सं० महेश-चक्षु] ग्रग्नि, ग्राग ।

रू० भे०—माहेसख, माहेसचाख ।

महेसर—देखो 'महेस्वर' (रू. भे.)

उ०—सिर रीझ दयूं हूं महेसर नै, कर साकल ग्रांणोय केसरनै ।

—पा. प्र.

महेसरी-सं० पु०—वैश्यों की एक जाति ।

उ०—सहर री वसती संमत १७१९—१००० बांमण, ७०० वांणिया, ४०० महेसरी, ३०० ग्रोसवाळ, ३०० रजपूत, १०० मोची, १० घांची, ५० छींपा, २० सोनार ।—नैणसी

रू० भे०—माहेसरी ।

महेसवर—देखो 'महेस्वर' (रू. भे.)

महेसानी-सं० स्त्री० [सं० महेशानी] १ दुर्गा, देवी ।

२ पार्वती ।

महेसी-सं० स्त्री० [सं० माहेश्वरी] १ दुर्गा, देवी ।

उ०—देवी वैस्णवी महेसी ब्रह्मांणी, देवी इंद्रांणी चंद्रांणी रनारांणी ।—देवि.

२ एक मातृका ।

रू० भे०—माहेसी ।

३ देखो 'महिसी' (रू. भे.)

४ देखो 'महरसि' (रू. भे.)

महेसुर, महेस्वर-सं० पु० [सं० महेश्वर] १ शिव, महादेव । (नां. मा.)

उ०—१ सबळ पड भार सिर तणावै ग्रहेसुर, महेसुर वणावै मुंड माळा ।—र. रू.

उ०—२ राघव रयणायर रसा, सेस महेस्वर वैण। सुणे बधायी गिरि-सुता, सो म्हो मो सुख दैण।—बां. दा.

२ ईश्वर।

उ०—अनादि ऐस्वरय अतति वर वरय्य अति वुधा। महेस्वरय्या भागी कवन बल त्यागी स्तुति मुधा।—ऊ. का.

रू० भे०—महेसर, महेसवर, माहेसुर, माहेस्वर।

महैरांण—देखो 'महारणव' (रू. भे)

उ०—लहैरी महैरांण भूपाळ 'लच्छो', 'अखो' दूसरी रीझ खीजाळ अच्छो।—मे. म.

महोख—वि० [सं० महोक्ष] बड़ी आंख वाला।

सं० पु०—एक पक्षी विशेष जो बाग बगीचे मे प्राय: सवेरा होने के पूर्व बोलता है।

महोच्छव, महोछब, महोछव, महोछिअ, महोछिव—देखो 'महोत्सव' (रू. भे.)

उ०—१ नवी नवी सोभा सहित प्रथी के विखै नवा नवा महोच्छव। आणंदमई हुई छै।—वेलि टी.

उ०—२ जेठ पढम पखि अस्टमी, जायउ स्री जिनराय। जनम महोच्छव सुर करइ, त्रिभुवन हरख न माय।—स. कु.

उ०—३ छबि नवी नवी नव नवा महोछब, मंडियै जिणि आणंद मई।—वेलि

उ०—४ गुरु जिणचंद सूरि, आप हाथ पाट दीनौ। कीनो है महोछब, पुर सूरत सनूर जूं।—ध. व. ग्रं.

उ०—५ माड धर वीच मैं महोछिव मंडांणा, दांन सूं अदेवां हिया दहतां। चूंडहर अनड़ जैसांण चंवरी चढ़ै, वीदणां चढाया गजां वहतां।—द. दा.

महोतपळ, महोतपल—सं० पु० [सं० महेत्पल] पुंडरीक, कमल। (अ. मा., ह. नां. मा.)

महोत्सव—सं० पु० [सं०] १ किसी के स्वागत में या किसी प्रकार की खुशी के अवसर पर मनाया जाने वाला बड़ा उत्सव।

उ०—तहां थी राजा उज्जेण आइयो, घणां महोत्सव हुवै। —पचदंडी री वारता

२ कामदेव।

रू० भे०—महुच्छव, महुछव, महोच्छव, महोछब, महोछव, महोछिब, महोछिव।

महोदद, महोदध, महोदधि, महोदधी, महोदध्धि—सं० पु० [सं०-उदधि] १ महासागर, महा समुद्र।

उ०—१ सांध उखेळ करण साह बैठा सबळ, हुवौ पातसाह धर लयण होडै। उळटियौ महोदध पाज कुण उळजे, आभ डीगियै खवा तूं हीज ओडै।—द. दा.

उ०—२ पींडियां तणी ओपमा पुणतां, अतिनाळी जोवतां अनूप। मछि ताइ महे महोदधि माहै, रहिया थरक थायंकवा रूप। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ दुख महोदधि पाज, भव जळ तारण जहाज। आज हो रंगइ रे रळियाळउ साहिब सेवियइ जी।—वि. कु.

उ०—४ ब्रहमंड लगै भुजडंड वध्धि, महमहण मथण किरि महोदध्धि।—गु. रू. बं.

२ इन्द्र।

उ०—अखाड़ा महोदद डोहतो एकटा, पेख तन सुपह वमुहा पधारै 'भीम' सरखो कहर 'माल' हर भौयंकर, जहर 'गाजी' संकर लुईज जारै।—चतरो मोतीसर

रू० भे०—महोदध, महोदधि।

महोदय—सं० पु० [सं० महत्-उदधि] (स्त्री० महोदया) १ अधिपति, स्वामी।

२ बड़ों के लिये सम्मान सूचक सम्बोधन।

३ महानुभाव, महाशय। ४ स्वर्ग।

५ कान्य कुब्ज प्रदेश का नाम।

६ देखो 'महोदव' (रू. भे.)

रू० भे०—महोदया।

महोदया—सं० स्त्री०—१ नाग बला, गुल शकरी, गंगेरन।

२ देखो 'महोदय' (स्त्री०)

महोदर—सं० पु० [सं०] १ एक नाग, जो कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक था।

२ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ३ घटोत्कच का मित्र एक राक्षस।

४ रावण का एक पुत्र। ५ रावण का एक प्रधान राक्षस।

उ०—महोदर वजर मुसटंदु दाहैं मसत, दुरीमुख धूंमनगर धूंम वामी दसत। सुंग-तन अकंपन देख वड़तोलरा, दस वदन मुसाहिब किया चंदोलरा।—र. रू.

६ रावण का एक भाई। ७ एक ऋषि।

८ एक प्रात: स्मरणीय राजा। ९ एक रोग विशेष।

उ०—फ़स्ण कुम्दु खसकुस्दु महोदर जलोदर कठोदर वातोदर भगंदर अतिसार·······।—व. स.

१० समुद्र। (ह. नां मा.)

वि०—जिसका उदर बड़ा हो, बड़े पेट वाला।

महोदरमभ्रवाळा—सं० पु० यौ०—युरोप का निवासी, युरोपियन।

उ०—वीगड़ै न महोदरमभ्रवाळा, चड करै नवी जम लहर चाळा। चड करसी। 'स्री जम ल'हर, चाळा, वीगड़सी महोदरमभ्रवाळा। —महाराजा मानसिंहजी रो गीत

महोदव—सं० पु० [सं० महत्+उदधि] समुद्र, सागर।

उ०—आपसो, एक सांसण अवल, दुनी सरब कहसी दियौ। नर अवर कूप जाचु नही, भूप महोदव भेटीयौ।—साहिबो सुरतांणियौ

रू० भे०—महोदय।

महोब, महोबौ—सं० पु०—बुंदेलखण्ड का एक प्राचीन नगर। (ऐतिहासिक)

उ०—अवध्या वणारसी चंदेरी मल्लियाल महबर महोब हरियांणउ भयांणउ '' ''''।—व स.

महोर—देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—बिन रांम भजन खोवै बखत, उळभ्र अमल होकां अठै। इक सास अंतपुळ में अहह, कोड़ि महोर मिलणू' कठै।—ऊ. का.

महोरत, महोरथ—देखो 'महुरत' (रू. भे.)

उ०—१ सदगुरु जिन चंद सूरिजी, सगळै गुणे देखि सुघाट रे लाल। सुभ महोरत सत्योत्तरै, पाटण में दीधो पाट रे लाल।
—वि. कु.

महोरह–क्रि० वि०—आगे की, पूर्व की।

उ०—भरि पेटिय सोर महोरह की, मछ सूकर बाघ मुखी मलकी। मग दीरघ तोप किती मचलैं, उन्मत्त करीगन लागि टळैं।—ला. रा.

महोळ, महोल—१ देखो 'महळ' (रू. भे.)

उ०—सोभत था कोस ८ मगरै लगतै भाखरा था कोस ५ आगै हुलीजण री बडी ठुकराई हुई, बडी ठोड़ सेहर सूनो दुकांनां छै। गोरी पातसा रा कराया महोळ छै।—नैणसी

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

महोलौ–सं० पु०—१ झुक कर किया जाने वाला सलाम।

उ०—१ इणि भांति सूं राजा रतन नूं वकुंठनाथ समीप बेसांणि दीवांण किया। अवर ही छत्रीस वंस हिंदू सरजीत करि महोला लिया।—वचनिका

उ०—२ महोलौ म्हांरी तीज रो आलीजाजी हो। लीजो म्हांरा पना मारू घणां नैं सनेह सूं।—रसीलै राज रौ गीत

२ मुजरा, अभिवादन।

उ०—दळ वावळ लागि नैं रहिआ छै। रजपूतां रा थाट मोगर मिळै छै। महोला लीजै छै।—रा. सा. सं.

३ राजा-महाराजा या किसी बड़े आदमी के स्वागत में गाया जाने वाला गायन।

उ०—१ इण तरै सुं खंभायची रा दूहा रा महोला लेता आवळै बीख पाव देता, म्हैलां सुं नीजीक आया।—पनां

उ०—२ उसी बखत दरबांन नैं अरजी गुदराई दीदार की उमेदवार चार कांजरीयां आई। सुनते ही बुलाकर महोला लिया बोहत सी तारीफ कर सात टका इनांम का दिया।—दुरगादत्त बारहठ

४ उत्सव, समारोह।

उ०—सांवण घणौ सिराविये, रसीयो बगसीरांम। निरभै गढ़ बूंदी नगर, तीज महोला तांम।—बगसीरांम प्रोहित री बात

५ स्वागत। ६ निवास स्थान, डेरा।

उ०—सब कूं बुलाय वैंण अकबर साह बोलै। मेरी निसा खातरी है तुमारै महोलै।—रा. रू.

७ सेना का पड़ाव।

उ०—सेन के प्रमांण कोन कहा साह बोलै। सेनापत कोन मीर देखन महोलै।—रा. रू.

८ काव्य रस, रस स्वाद।

९ देखो 'महल्लो' (रू. भे.)

महोखधि—देखो 'महोसधि' (रू. भे.)

महौवध, महौवधि—देखो 'महोवधि' (रू. भे.)

उ०—नाचै तिम नट्ट थई जिम नांच, महौवधि मज्झ कूदै सुज मांछ।
—मा. वचनिका

महोबत—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे.)

उ०—विरहा धूम मचाई मोरे रांम, रसराज त्याय महोबत यूं ही।
—रसीलै राज रौ गीत

महौर, महौरि—देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—फबि बिस सहंस गयंद धज फरहर। घरै महौरि वि सहंस वाजित्र धर।—सू. प्र.

महौसधि–सं० स्त्री० [सं० मह+औषधि] कुछ विशिष्ट औषधियों का समूह जिनका चूर्ण महास्नान या अभिषेकादि के जल में मिलाया जाता है।

रू० भे०—महोखधि।

मह्य़ुसालू–सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—उरसाला वाला पटुलां बाकलां घनवेलि कमलवेळि कपूरवेलि सेलांपटुली खमरतली भमरतली चेउली मह्य़ुसालू चारसा खरबास खेस।—व. स.

महवौ—देखो 'महुग्रौ' (रू. भे.)

मां—देखो 'मा' (रू. भे.)

उ०—१ चूड़लो चीरासै घण रो सायबो रे लंजा ओठी हे लो। ओढ़णियां ओढ़ासी मां जायो बीर बाला जी ओ।—लो. गी.

उ०—२ राय पसेणी हो ज्ञाता भगवती, जीवाभिगम नइ मांझ। ए सूत्र मांनइ हो प्रतिमा, मांनै नहीं महारी मां नइ बांझ।—स. कु.

उ०—३ म्हारी बाई, म्हारी मां री सीख थारी समझ में सावळ बैठी कोनीं।—फुलवाड़ी

उ०—४ जे दुमात सावका बेटां नै सगा बेटां री ठौड़ नीं मानै तो सावका बेटा किसा दुमात नै मां री ठौड़ मांनै।—फुलवाड़ी

उ०—५ राजकंवर मुळकतो थको कैवण लागो-मां, मन में थोड़ी घणी तो निरांत राखो। म्हैं अबारूं थां सगळां री बातड़ी ठांणै बिठाय देवूंला।—फुलवाड़ी

सर्व०—हम।

उ०—इसा में वातां करतां सेलां सिकारां फिरतां दिन तीसर गया। सांवण आयो, तद बहुवां सारयां अरज कीवी, जो कुंवरसी मां-सूं क्रपा कर गोठां मांहरी जीमो।—कुंवरसी सांखला री वारता

अव्य०—१ मत, नहीं, ना।

उ०—१ उठै जाय हाथ-पग धोय नै आपरी तरवार काढ़ नै कंवल पूजा रै वास्तै गळा ऊपर मेली। तरै देवीजी कह्यौ—**मां** ! **मां** !
—नैणसी

उ०—२ पग ठव सूका पांनड़ा, **मां** बजाड़ मयमंत। खबरदार के बेखबर, वन इण सीह वसंत।—बां. दा.

उ०—३ राघव जपतौ प्रांणी, मूढ़ आळस **मां** करै।—र. ज. प्र.

२ देखो 'मांय' (रू. भे.)

उ०—१ साहिब जी के नांम **मां**, विरहा पीड़ पुकार। ताळा बेळी रोवणा, दादू है दीदार।—दादूबांणी

उ०—२ हा हा करूं हिवे कांसूं रे, माहरौ हिवड़ौ फटै **मां** सूं।
—जयवांणी

उ०—३ दिन जास्यै हिव दोहिला, किम रहिसै मुझ प्रांण। संतावै मुझ नै सदा, घट **मां** पांचै बांण।—वि. कु.

उ०—४ माया कारण देस देसांतरै, अटवी वन **मां** जावै रे। प्रवहण बइसी धीर द्विपांतर सायर मांझ पावै रे।—स. कु.

उ०—५ ताही पंथ कोई कूरमां के बंस जायौ, मारुदेस **मां** सूं जो कबीला लेर आयौ।—सि. वं.

मांग्रडौ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.) (जैसलमेर)
सर्व—मेरा।

मांइ—देखो 'माता' (रू. भे.)
२ देखो 'मांय' (रू. भे.)

उ०—साहिब, तुझ्झ सनेहड़इ, प्रीति तणी पति जाइ। जळ खिण ही जांणइ नही, मच्छ मरइ खिण **मांइ**।—ढो. मा.

मांई—१ देखो 'मांईमां'।

उ०—१ ईहां आपस मांहै विचारी, 'आपांनां **मांई** घर मांहे कढ़ाया तो आपां अठै रहां नही।—हसराज बछराज री बात

उ०—२ तिणसूं माजी नै गांव १ आप दीधो छै। तिण री हासल माफक हीज आवै छै। नै **मांई** जी रे (सौतेली मां के) हाथ राज री कांम छै।—जगदेव पंवार री बात

२ देखो 'माता' (रू. भे.)

उ०—**मांई** ! सुराधांम सरसावौ। मेछ धरम दुर करम मिटावौ।
—रा. रू.

३ देखो 'वांई' (रू. भे.) (वरदा) (शेखावटी)
४ देखो 'मांय' (रू. भे.)

उ०—१ महूडा मिळयागिरी मिरी, मींढल नई मंदार। **मांई** मजीठ मरि हठी, मरडासींगे मार।—मां. कां. प्र.

उ०—२ समझाऊं सौ वार, सनझ रौ घाटौ सांई। जगत कमावण जाय, मुरड बैठौ घर **मांई**।—ऊ. का.

मांईजायौ—सं० पु० [सं० मा+जात] १ विमाता का पुत्र, सौतेला भाई।

मांईमां—सं० स्त्री० [सं० मूर्त-माता] सौतेली मां, विमाता।

मांऊं—क्रि० वि०—अन्दर से, भीतर से।

मांक—सं० पु० [सं० मकि=मंडने=मक=रा=मांक] अर्जुन का एक नामान्तर। (अ. मा.)

मांकड़—सं० पु० [सं० मर्कट] (स्त्री० मांकड़ी) १ एक जाति विशेष का घोड़ा।

उ०—दक्षिणापथा पांणीपथा **मांकड़ा** नीलडां वयाहड़ा गंगाजला सिंधुआ पारकरा कंबोजा।—व. स.

२ देखो 'मरकट' (रू. भे.)

उ०—१ और चढ़ै गढ़ ऊपरां, नीसरणी बळ नीठ। अजकौ धव पूगौ उठै, **मांकड़** मेल्हे पीठ।—वी. स.

उ०—२ राजा लोह संपूरण सन्नद्ध हूउ युद्ध करइ, सुहड चूरइ, रथावली ऊधळावइ, मुडुउधा **मांकड़** जिम नचावइ······।—व. स.

उ०—३ एक घण **मांकड़ी** अनइ पाए बांधी कांकड़ी····।—व. स.

३ देखो 'मत्कुण' (रू. भे.)

उ०—**मांकड़** हाड मिलइ नहीं, मीनी-ससली-सिंग। परिपरि पूजइ पदमिनी, स्वांन-विलग्गां लिंग।—मा. कां. प्र.

मांकड़ा—देखो 'माकड़ा' (रू. भे.)

मांकड़ियौ—१ देखो 'मत्कुण' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—तीड़ा मांखी डांस मंच्छर कंसारी घार, कवउ डोला **मांकडिय** पतंग इत्यादिक भेद।—व. स.

२ देखो 'मरकट' (रू. भे.)

मांकड़ी—देखो 'माकड़ी' (रू. भे.)

मांकण—सं० पु०—१ कीट जाति का कोई जीव।

२ देखो 'मत्कुण' (रू. भे.)

उ०—बाला बढाव्या टांकता, **मांकण** खाटला कूटि। विरेच लेई कृमि पाड़िया, गलणौ गयउ छूटि।—स. कु.

३ देखो 'माखण' (रू. भे.)

मांकणौ, मांकबौ—क्रि० स०—१ मांगना।

उ०—पाडउ **मांकइ** खीरा प्रांणि, वच्छ मांकइ दूध प्रांणि, धनवंत मांकइ धनप्रांणि, राजा मांकइ देस प्रांणि, राजपुत्र मांकइ सूर प्रांणि, चोर मांकइ मावा प्रांणि, पायक मांकइ नायक प्रांणि, वधू मांकइ पीहर प्रांणि।—व. स.

२ शोषण करना, खून चूसना।

मांकणहार, हारौ (हारी), मांकणियौ—वि०।

मांकिओड़ौ, मांकियोड़ौ, मांक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मांकीजणौ, मांकीजबौ,—कर्म वा०।

मांकर—१ देखो 'मत्कुण' (रू. भे.)

उ०—**मांकर** ज्यूं जीव हालइ डोलइ, थांम्यउ किहीं नी जावई।
—स. कु.

२ देखो 'मरकट' (रू. भे.)

मांकियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ मांगा हुवा. २ शोषण किया हुआ, खून चूसा हुवा.
(स्त्री० मांकियोड़ी)

मांकुण—१ देखो 'मत्कुण' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—खर उखरलुं, **मांकुण** मांचां भिरिया, जू भरिया गोदड़ां कांन मिलि भरिया, रालड़ां फुहड़ा, पग भरिउ साडळउ।—व. स.
२ देखो 'माखण' (रू. भे.)
३ देखो 'मरकट' (रू. भे.)

मांखण—देखो 'माखण' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—१ कळ चाळण चंद्रसेन कळोधर, कळहिये वहै कस। काळा तैं दळ मथै काढ़ियो, जुग **मांखण** ऊजळौ जस।
—दूदा नगराजोत री गीत

मांखी—देखो 'माखी' (रू भे.)
उ०—१ लालच रस रै लाग, **मांखी** लपटांणी मधू। उडणौ बळियौ आग, जिणरै मुसकळ जीवणौ।—बां. दा.
उ०—२ तितरै घरसूं भातौ आयौ, तरै भातौ पत्तर मांहै पुरस नै आप **मांखी** राखण लागौ।—नैणसी

मांग-सं० स्त्री० [सं० मार्गण] १ बाजार में खरीददारों द्वारा किसी वस्तु की निश्चित मूल्य से खरीदने के लिये की जानेवाली इच्छा या चाह।
२ किसी वस्तु की एक निश्चित मात्रा में बताई जाने वाली आवश्यकता।
३ किसी प्रकार की इच्छा।
४ अपने अधिकारों या हकों के प्रति सामूहिक रूप से उठाई जाने वाली आवाज।
५ वह कन्या जिसका प्रणय सम्बन्ध किसी के साथ निश्चित हो चुका हो।
उ०—अर तिकी ही **मांग** पिता नूं परणाइ तटस्थ भाव धारि अपूरब जस लीधौ।—वं. भा.
उ०—२ तरै पिउसंधी कह्यौ, तैं मोनैं छळी, पिण हूं सूरकणी छूं नै आंटा भीलरी **मांग** छूं। इण री जाब कासूं छै। तरै भींवै कह्यौ, मैं सरब कबूल्यौ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात
६ सिर के बालों को दोनों ओर विभक्त करके बनाई जाने वाली रेखा, स्त्रियों का सौभाग्य चिन्ह।
उ०—१ पटियां पारूं च्यांन की मन **मांग** संवारूं हो। पिया तोरे कारणें धन जोबन वारूं हो।—मीरां
उ०—२ **मांग** जड़्या गज मोतियां, कड़्या रुळंता केस। ताळी हस देती जणी, बाळी कांमण वेस।—पनां
७ देखो 'मांगण' (रू. भे.) (अ. मा.)
रू० भे०—मंग, मागु।

मांगटीकौ-सं० पु०—स्त्रियों की मांग पर धारण किया जाने वाला गहना, सौभाग्य चिन्ह।

मांगण-सं० पु० [सं० मार्गण] १ मांगने की क्रिया या भाव, याचना।
उ०—१ बाबो बांमणी नें ई वेंड़ी सवाल करियो—बाला, थूं तो भला घर री दीखैं, श्रो **मांगण** रो निकूंच कांम क्यूं करैं।
—फुलवाड़ी
२ पथ प्रदर्शक।
३ याचक, भिखारी। (अ. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१ जैतो साळोड़ी पीपळ वइसायैं परणीजण आयौ हुतौ सु किणही सूळ ब्याह तो न हुवौ, नै **मांगण** घणा भेळा हुवा।
—नैणसी
उ०—२ दीनानाथ अभै पद दांनख, भांनख अंतक समर भर। मांनख जनम सफळ कर **मांगण**, धांनखधर पद सीसधर।
—र. ज. प्र.
उ०—३ कापण कहै भ्रह्मा किया, **मांगण** बड़ी बलाय।—बां. दा.
४ बंदीजण, भाट, चारण।
५ विप्र, ब्राह्मण। ६ जोशी, ज्योतिषी।
७ पंडित, कवि।
वि०—मांगने वाला, याचना करने वाला।
रू० भे०—मंगजण, मंगण, मंगन, मंगिण, मांग, मागज, मागण, मागिण।

मांगणगार, मांगणयार, मांगणहार-सं० पु० [सं० मार्गण] १ याचक।
उ०—१ रांणी राजा नूं कहइ, मेल्हउ **मांगणहार**। मांगणगारा रीझवइ, ल्यावइ साल्हकुमार।—ढो. मा.
उ०—२ पछै ढोलोजी दारू अमल पीवण लागा। तद मोसर देखने **मांगणहार** कहै।—ढो मा.
२ ढाढियों की एक शाखा। (सिंध) (मा. म.)
३ भिखारी, भिक्षुक।
रू० भे०—मांगणियार, मांगणिहार, मांगिणहार, मागणहार, मागणियार, मागिणहार, मागीणहार, मागिणिहार।

मांगणि—देखो 'मांगणी' (रू. भे.)

मांगणियार, मांगणिहार—देखो 'मांगणगार' (रू. भे.)
उ०—१ ओ गढ कहै दुनी आड़पियो, अण गढ़ रांण थमो अद तार। खीजै गयो खजांनो खोयौ महमंद सरखो **मांगणियार**।
—महाराणा री गीत
उ०—२ घड़च्छत फील खगां सिरधार। रचै मुकताहळ **मांगणि**-हार।—सू. प्र.
उ०—३ तितरै रायसिंघ रौ **मांगणिहार** गांव जाडै साहिब रो सासरो थो, तठै ओ पण परणियो थो, सु सासरै गयो थो, सु साहिब रायसिंघ ऊपर आयौ सुणनै ओ ही रायसिंघ तीरै आयौ।
—नैणसी

मांगणी-सं० स्त्री०—याचना ।

उ०—तिण री बेटी नागारजन, तिको ग्रहमंदावाद पातसाह महमंद वेगड़ा कनै **मांगणी** गयौ हुतौ ।—नैणसी

रू० भे०—मांगणि ।

मांगणौ-सं० पु०—भिक्षा ।

उ०—१ साध न मांगै **मांगणौ**, मांगै मांगिणहार । हरीया उर इक तार धरि, हरि है पूरणहार ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ भूख भूंडी हुवै, पेट मैं आळा जमाया । छेकड़ नारळी हाथ **मांगणौ** पड़चौ ।—दसदोख

मांगणौ, मांगबौ-क्रि० स० [सं० मार्गण] १ कुछ पाने के लिए किसी के आगे याचना करना, हाथ फैलाना, प्रार्थना करना ।

उ०—१ सत्रूपा नार स्वयंभू भूप, रहिस्स विचार न दीठौ रूप । **मांगै** बर पुत्र हुतौ हरि मोज, हुतौ ज हुतौ ज हुतौ ज हुतौ ज ।
—ह. र.

उ०—२ हैमाचळ केइलास विचइ हिक, ध्यांन रह्या तिण सहरि घरि । प्रसन हुसी इण वात सही प्रभु, किरि **मांगउ** फळ सेव करि ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ पायौ किण धनवंत पद, दामै डावड़ियांह । कवियण किन पायौ कुरब, **मांगै** मावड़ियांह ।—बां दा.

२ इच्छा या आकांक्षा-पूर्ति के लिये किसी से निवेदन करना, कहना ।

उ०—सु प्रसन हुया तियइ तप संकर, रे मांनवी वंछइ सोइ **मांग** ।
—महादेव पारवती री वेलि

३ भिक्षा वृत्ति करना ।

उ०—म्हैं तौ थें कैंवौ के खुदा नै नीं मांनूं जिण कारण फोड़ा भुगतूं, पण इण री म्यांनौ तौ म्हनै दौ के आठ पौ'र भगवांन री माळा फेरण वाळा भीख **मांगता** क्यूं फिरै ।—फुलवाड़ी

४ किसी को कोई वस्तु देने के लिये कहना, कोई चीज मांगना ।

उ०—१ उणां री राव मंडळीक तारीफ सुणी, तरै चारण कनै घोड़ा **मांगिया** । चारण न दिया । राव मंडळीक घोड़ा मांगण इणां रै घरै आयौ । इणां उजर कियौ तरै परौ गयौ ।—नैणसी

५ ऋण के रूप में किसी को कुछ देने के लिये कहना, मांग करना । प्रस्ताव करना ।

उ०—अेक वौ बांणियौ बिणज करण सारू बांमण कना सूं पांच हजार मोहरां **मांगी** ।—फुलवाड़ी

६ किसी वस्तु को लौटाने के लिये किसी से कहना ।

उ०—म्हैं तौ मांगनै पांणी ई नीं पीयौ । सेठां कनै ई दीयोड़ी **मांगण** नै आई हूं ।—फुलवाड़ी

७ लौटाने के लिये किसी पर कुछ बाकी रहना ।

ज्यूं—वौ म्हारा में पचा रुपया मांगै है ।

८ विक्री योग्य वस्तु के दाम बताना, मूल्य कहना, कीमत मांगना ।

उ०—म्हैं थनै पूछचौ के बाबा गाडी रौ कांईं मोल करै । तौ थूं पांच रिपिया **मांगिया** अर म्है थनै पांच सूं कम दिया व्हूं तौ बता ।
—फुलवाड़ी

९ प्रस्थान या किसी कार्य को करने लिये सहमति, अनुमति या इजाजत लेना, पूछना ।

उ०—१ पहुतउ किलास तणइ जाइ परवत, माता कन्हा आगिया **मांग** ।—महादेव पारबती री वेलि

उ०—२ जद साह आपरी वहू तीरे सीख **मांगवा** गयौ । नै कही देख तू भला घर री छोरू है । नै हूं दखण जांउं छूं । जणी थी तू पाग री सरम राखजै ।—बंधी बुहारी री बात

१० किसी गलती या भूल के लिये अफसोस जाहिर करना, खेद प्रगट करना, क्षमा याचना करना ।

उ०—बेटी ! माफी **मांगण** वास्तै थारा इण विध हाथ उकळै तौ पछै उण रात थारै हाथां रै कांईं बळियौ हौ ।—फुलवाड़ी

११ लड़के या लड़की के सम्बन्ध के लिये प्रस्ताव करना, सम्बन्ध करने के लिये कहना ।

मांगणहार, हारौ (हारी), **मांगणियौ**—वि० ।

मांगिश्रोड़ौ, मांगियोड़ौ, मांग्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मांगीजणौ, मांगीजबौ—कर्म वा० ।

मंगणौ, मंगबौ, मागणौ, मागबौ—रू० भे० ।

मांगत-सं० स्त्री० [राज० मांगणौ] १ हिस्सा, अंश, हक ।

उ०—१ पिंडतजी पुन्न रौ मांगै सो भलां आया । पण औ जाट कांईं **मांगत** मांगै ? थूं भेळौ थुड़ियौ हौ कांईं ?—फुलवाड़ी

उ०—२ राजपूत रै पाखती आयनै कडकतौ बोल्यौ—किणी रा धणी हौ तो आपरै घरै व्हौला । अठै कांईं **मांगत** मांगौ ? धणी व्है जकौ तौ सांमी जाव्तौ करै के चोरघां करै ।—फुलवाड़ी

२ कर्जा, ऋण ।

उ०—जे वा व्याव पछै मरती तौ इण सूं दूणा रिपिया खरच व्हैता के नीं । लाली आपरी **मांगत** मांगै जकौ तौ उठै बैठी ई वसूल करैला ।
—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—मांगणी ।

मुहा०—मांगत मांगणी=हक मांगना, कर्जा वसूल करना ।

रू० भे०—मंगत ।

मांगफूल-सं० पु०—मांग पर धारण करने का स्त्रियों का एक आभूषण ।

उ०—**मांगफूल** सिरफूल, जड़ाऊ मंडिया । खिण खिण निरखै नाह, हिए दुख खंडिया ।—बां. दा.

मांगरिया-सं० पु० [दे०] भाटी वंश की एक शाखा ।

मांगळगीत-सं० पु० [सं० मांगल्यगीत] शुभ अवसरों या मांगलिक अवसरों पर गाया जाने वाला लोक गीत, गीत ।

रू० भे०—मंगळगीत ।

मांगळिश्रा—देखो 'मांगळिया' (रू. भे.)

उ०—कहै चुहुआंण रा होज सगा हुआ छी । एहड़ा तोफादार हुंता तकां कहीज घाट रजपूत तो मांगळिआ पण नहीं, तको राज म्हांनै परणिआं पछै मुहडो ही न देखाळिओ ।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढ़ेल री वात

मांगळिक, मांगलिक–वि० [सं०मंगल+इक] १ शुभ माना जाने वाला।
उ०—अहिवु स्त्री पांहइ गूहली देवरावु, ऊपरि मोती तणु चुक पूरावु, अह्म वर राजेंद्र आव थिकां हूंतां इस्यां मांगळिक वरतावु ।
—व. स.

२ शुभ या मंगल करने वाला ।
३ शुभ अवसरों पर गाया जाने वाला । (गीत)
सं० पु०—गुड़ ।
रू० भे०—मंगळिक, मंगळी, मंगळीक, मांगळी, मांगळीक ।

मांगळिया–सं० पु०—१ भाटी वंश की एक शाखा जो बाद में मुसलमान हो गई ।
२ गहलोत वंश की एक शाखा ।
रू० भे०—मांगळिआ, मांगल्या ।

मांगळियावटी–सं० स्त्री०—मारवाड़ राज्यान्तर्गत वह प्रदेश जहां पर 'मांगळिया' (गहलोत) वंश के राजपूतों का आधिपत्य था ।

मांगळियौ–सं० पु०—१ गहलोत वंश की 'मांगळिया' शाखा का व्यक्ति। (बां. दा. ख्यात)
२ भाटी वंश की 'मांगळिया' शाखा का व्यक्ति ।
३ देखो 'मंगळियौ' (रू. भे.) (वरवा)

मां'गली–सं० स्त्री०—१ जल पात्र ।
उ०—सिर पर लेस्यां जळ री मां'गली । इस विध निरखण जास्यां जी । सुहागदार विड़लो ।—लो. गी.
२ देखो 'मंगळा' (रू. भे.)
३ देखो 'मांगळिक' (रू. भे.)
रू० भे०—मां'गल्या ।

मांगळीक—देखो 'मांगळिक' (रू. भे.)
उ०—महाराय स्री कल्यांणमलजी जन्म महोच्छव मांगळीक वधावणा कराया ।—द. वि.
उ०—२ गुवाड़-गुवाड़, घर-घर ऊपर लुगायां बधाई रा बधाव मांगळीक गावै छै ।—पलक दरियाव री बात

मांगलुरी–सं० स्त्री०—एक वस्त्र विशेष ।
उ०—पंच वरण गज, दुरंगी गज, मांगलुरी गज, गढ़ गजी, सवा-गजी चुगजी पटणी पटपाटू, पंचवरण छींट ।—व. स.

मांगल्य–वि० [सं०] मंगलकारक, शुभ ।
सं० पु०—शुभ, मंगल या हर्षप्रद होने की अवस्था या भाव ।

मां'गल्या—१ देखो 'मांगळिया' (रू. भे.)
२ देखो 'मां'गली ।

मांगसर, मांगसुर—देखो 'मिगसर' (रू. भे.)

उ०—दत्त राजा स्री सूरजसिंघजी री बाहारैट लाखा नांदणोत रोहड़ीया नुं संमत १६७२ मांगसुर सुद ७ गांव ३ रै भेळो छै ।
—नैणसी

मांगातांगी–सं० स्त्री०—१ मांगने की क्रिया ।
उ०—कैणा मैं तो ठाकर री बांटो चौथो हो, पण रोजीना री मांगी-तांगी में के आज फलांणजी रै मिरचां भेजणी, आज ढींकड़जी रै अर आज पूंछड़जी रै, यूं करनै सगळो बांटो आधा सूं ई करड़ो पड़ियो ।—फुलवाड़ी
२ ऋण कर्ज ।
रू० भे०—मांगातांगौ ।

मांगातांगौ—देखो 'मांगातांगी' ।

मांगिण—देखो 'मांगण' (रू. भे.
उ०—आपे ही जांणावसी, भलो ज होसी खगि । कै मांगिण दरसावियां, कै ऊछजियां खगि ।—हा. झा.

मांगिणहार—देखो 'मांगणगार' (रू. भे.)
उ०—साध न मांगे मांगणो, मांगे मांगिणहार । हरीया उर इक तार धरि, हरि है पूरणहार ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मांगियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ कुछ पाने की आशा से किसी के आगे याचना किया हुआ, हाथ फैलाया हुआ, प्रार्थना किया हुआ. २ इच्छा या आकांक्षा की पूर्ति के लिये निवेदन किया हुआ, कहा हुआ. ३ भिक्षा वृत्ति किया हुआ. ४ किसी को कोई चीज देने के लिये कहा हुआ, मांगा हुआ. ५ ऋण के रूप में किसी को कुछ देने के लिये कहा हुआ, मांग या प्रस्ताव किया हुआ. ६ कोई वस्तु लौटाने के लिए कहा हुआ. ७ भुगतान योग्य कुछ बाकी रहा हुआ. ८ कीमत मांगा हुआ, मूल्य कहा हुआ. ९ प्रस्थान या किसी कार्य के लिए सहमति, अनुमति या स्वीकृति लिया हुआ, पूछा हुआ. १० अफसोस जाहिर किया हुआ. ११ सम्बन्ध या रिश्ते के लिए प्रस्ताव किया हुआ.
(स्त्री० मांगियोड़ी)

मांगेड़ौ, मांगेरणौ—देखो 'मंगेड़ौ' (रू. भे.)

मांगौ–सं० पु०—१ लड़के या लड़की के रिश्ते के सम्बन्ध में किया जाने वाला प्रस्ताव ।
२ मांगने की क्रिया या भाव ।
३ जलपात्र के ऊपर रखा जाने वाला अतिरिक्त जल-पात्र । (ढूंढाड़)

मांच–सं० स्त्री०—१ आरे के चारों ओर लगने वाला लकड़ी का चौखटा । २ ईंटे बनाने के लिए गीली मिट्टी ढोने का एक उपकरण ।
३ रथ या बैलगाड़ी की मचान ।
४ खाट के बीच बनी हुई झोली ।

मांचइ, मांचउ—१ देखो 'मंच, मंचक' (रू. भे.) (उ. र.)
२ देखो 'मांचौ' (रू. भे.)

मांचकरोत–सं० पु०—वह आरा जिसके चारों ओर लकड़ी के हत्थे लगे हों ।

मांचणौ, मांचबौ—देखो 'मचणौ, मचबौ' (रू. भे.)

उ०—१ तुरंगम पाखरघा, सूरा सांमह्या, लागि वाजइं, हस्ति मांचइं, कबंध नाचइं''''''। —व. स.

उ०—२ खमां भणि जोगणि खांचत खून, सुरां कर मांचत मेह प्रसून। —मे. म.

मांचणहार, हारौ (हारी), मांचणियौ—वि०।

मांचिश्रोड़ो, मांचियोड़ौ, मांच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मांचीजणौ, मांचीजबौ—भाव वा०।

मांचियोड़ौ—देखो 'मचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मांचियोड़ी)

मांची—१ देखो 'मांचौ' (अल्पा., रू भे.) (उ. र.)

२ देखो 'मंच' (अल्पा, रू. भे.)

३ देखो 'मंचिका' (रू. भे.)

मांचौ-सं० पु० [सं० मंच] चारपाई, खाट।

उ०—१ नहीं गया मांचै मुवा, रवि मंडळ रै राह। जूझ मुवा रण मै जिकै, गत पंचमी गयाह। —बां. दा.

उ०—२ वा हळफळाई मांचा सू ऊभी व्ही। उणरा हाथ सूं दीवौ छूट नैं हेटै पड़ग्यौ—फुलवाड़ी

रू० भे०—मांचइ, मांचउ, मांची।

मांछ—देखो 'मत्स्य' (रू. भे.)

उ०—पड़ै घड़ कळस दीस प्रगट्ट, थहै किर खेत सिरां चा थट्ट। नाचै तिम नट्ट थई जिम नाच, महोदधि मज्झ कूदै सुज मांछ। —मा. वचनिका

मांछळी, मांछली—देखो 'मच्छी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—पपैया नैं मेघ प्यारौ, मांछली मध नीर। म्हांनैं तो गिरधर हि प्यारौ, छांडचौ जगत सूं सीर। —मीरां

मांछलौ, मांछौ—१ देखो 'मत्स्य' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—उलटै जिम इंद अरीहर आयै, करिवा अंत कथा आकाहि। वहतै जळ धारा वीरमदे, मांछां जहीं चढ़ियौ जळ मांहि। —वीरमदे गौड़ री गीत

२ देखो 'माछळौ' (रू. भे.)

मांज—श्रद्धा और भक्ति के साथ किसी को धन देने की क्रिया या भाव।

देखो 'मध्य' (रू. भे.)

देखो 'मौज' (रू. भे.)

मांजण-सं० स्त्री [सं० मार्जन] १ मांजणे, सफाई करने की क्रिया या भाव।

२ स्नान, मज्जन, परिमार्जन।

उ०—कर ऊठी मांजण रायकुंवरी, सु पहिरण लागी सिणगार। —महादेव पारवती री वेलि

रू० भे०—मांजणउ, मांजिण, मांजिणउ।

वि०—सफाई करने वाला, 'मांजने' वाला।

सं० पु०—देखो 'मारजन' (रू. भे.)

मांजणउ—देखो 'मांजण' (रू. भे.)

उ०—१ चंद्रमा घडी घडी अम्रत झरइ, यम पांणी वहइ, सात समुद्र मांजणउं करावइ, मातर आरती ऊतारइ''''''। —व. स.

उ०—२ पहिरण वसत आभरण पहिरण। राय कुंवार मांजणउ करइ। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—लागउ तेथ करण मांजणउ लाडउ, इंद्र सुर कहइ धनउ दिन आज। —महादेव पारवती री वेलि

मांजणियौ, मांजणौ–वि० [सं० मार्जक] १ मांजने वाला, साफ करने वाला।

२ सफाई करने वाला।

३ स्वागत करने वाला, आदर सत्कार करने वाला।

रू० भे०—माजिणौ।

मांजणौ, मांजबौ–क्रि० स० [सं० मार्जनं] १ वर्तन या किसी वस्तु पर धूल या कोई पदार्थ विशेष रगड़ कर उसका मेल छुड़ाना, साफ करना, उजला व स्वच्छ करना।

उ०—१ अमि धावक आविया, सस्त्र मांजिया सताबी। सांणां चढ़िया सुक्र. फूल झड़िया हद फाबी। —मे. म.

उ०—२ वौ खोळा टांक नै ढूकौ जकौ सगळी हवेली रौ फूस-वांईदौ काढ़ दियौ। बरतन-बासन सगळा मांज न्हाकिया। —फुलवाड़ी

उ०—३ नाक रै हाथ लगाय नै कह्यौ-आ तौ झारा री नळकी अर औ मांजियोड़ौ झारा रौ पींदौ पळ पळाट करै। —फुलवाड़ी

२ स्नान करना, नहाना।

३ सफाई करना, झाड़ना, पोंछना, पोंछकर साफ करना।

उ०—१ सावळ जमनै बैठ्यौ जित्तै जड़ाव मासी सगळी खीर सबो-ड़ली। तबरा नै आंगळियां सूं पूरौ चाटनै मांज्यौ। —फुलवाड़ी

उ०—२ कमळ पड़ियां पछै मारि अरी म्यांन कीधी। मांहिळै पळै तळवारि मांजै। —कुंवर नरपाळ देवळ लोहियांणा रौ गीत

४ घोड़ा ऊंट आदि पशुओं के शरीर की धूली आदि साफ करना, दूर करना।

उ०—कीधा असि चाकरां, तुरत साकुरां तयारी। खुररां मांजी खेह, धजा तुररां सिरधारी। —मे. म.

५ अभ्यास करना। ६ रगड़ना।

७ मिटाना, दूर करना। ८ नष्ट करना।

मांजण हार, हारौ (हारी), मांजणियौ—वि०।

मांजिश्रोड़ौ, मांजियोड़ौ, मांज्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मांजीजणौ, मांजीजबौ—कर्म वा०।

मंजणौ, मांजिणौ, मांजिबौ, माजणौ, माजबौ—रू० भे०।

मांजरि—देखो 'मांजरी' (रू. भे.)

उ०—गंध हस्ति तणइ कुण माथइ मोती उकिरइ, नागराज नइ माथइ चूडामणि कवण करइ, मयूर माथइ **मांजरि** कवण करई''' ।
—वं. स.

२ देखो 'मंजरी' (रू. भे.)

उ०—मारग मंइ आंबउ मिल्यउ म्हांकी सहियर **मांजरि** रही महकाय हे ।—स. कु.

मांजरियौ—देखो 'मांजरौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सो में फूल सैंस में काणो । सब से ऊंचौ एंचाताणो । एंचाताणो करयौ विचार । **मांजरियौ** सब को सिरदार ।—अज्ञात

मांजरी—सं० स्त्री०—१ बिल्ली जैसी या भूरी आंख । २ किलंगी ।

रू० भे०—मांजरि, माजरि

३ देखो 'मंजरी' (रू. भे.)

उ०—कोयल करै टहूकड़ा म्हांकी सहियर, सुंदर फल फूल पांन हे । राजा एक **मांजरी** ग्रही म्हांकी सहियर, तिम मंत्री परधांन हे ।
—स. कु.

४ देखो 'मांजरौ' (पु०)

मांजरौ—वि० [सं० मार्जर] (स्त्री० मांजरी) १ बिल्ली के समान आंखों वाला । (वरदा)

उ०—मन मैला चख **मांजरा**, भाळै जे चख भांज । गोला अवगुण नू ग्रहै, गुण भलपण रा गांज ।—बां. दा.

२ भूरी आंखों वाला ।

सं० पु०—१ भूरी अथवा बिल्ली के समान आंखों वाला व्यक्ति ।

२ बिलाव ।

३ छोटी बस्ती या गांव ।

उ०—दस जाजीवाळ ते में २ सूनी **मांजरै** छै ।—नैणसी

अल्पा०—मांजरियौ ।

४ देखो 'माजरौ' (रू. भे.)

मांजा—सं० पु० (ब० व०) गाड़ी के अग्र भाग में लगी हुई (दो) लकड़ियां विशेष ।

मांजणौ, मांजबौ—देखो 'मंजणौ, मंजाबौ' (रू. भे.)

मांजाणहार, हारौ (हारी), मांजाणियौ—वि० ।

मांजायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मांजाईजणौ, मांजाईजबौ—कर्म वा० ।

मांजायौ—देखो 'माजायौ' ।

(स्त्री० मांजाई, माजायी)

मांजायोड़ौ—देखो 'मंजायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मांजायोड़ी)

मांजिण, मांजिणउ—सं० पु० [सं० मंजन] स्नान ।

उ०—साखिए ऊगट **मांजिणउ** खिजमति करइ अनंत । मारू-तन मंडप रच्यउ, मिलण सुहावा कंत ।—ढो. मा.

मांजिणौ—देखो 'मांजणौ' (रू. भे.)

मांजिणौ, मांजिबौ—देखो 'मांजणौ, मांजबौ' (रू. भे.)

उ०—सखी भणइ सांभिळि हिव सुणउ एह दोस नवि कुणइ दैविहिं कीधां छइ जे कांम तेह **मांजिवा** धरइ कुण हांम ।
—हीराणंद सूरि

मांजिणहार, हारौ (हारी), मांजिणियौ—वि० ।

मांजिओड़ौ, मांजियोड़ौ, मांज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मांजीजणौ, मांजीजबौ—कर्म वा० ।

मांजियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ धूल आदि से रगड़ कर साफ किया हुआ, ऊजला किया हुआ, स्वच्छ ।

२ स्नान किया हुआ ।

३ झाड़ा हुआ, पोंछा हुआ, पोंछ कर साफ किया हुआ ।

४ अभ्यास किया हुआ । ५ रगड़ा हुआ ।

६ मिटाया हुआ, दूर किया हुआ । ७ नष्ट किया हुआ ।

(स्त्री० मांजियोड़ी)

मांजिस्टो—देखो 'मजीठी' (रू. भे.)

उ०—इसी दाल परीसी सद्यस्तापितु, परमाभ्रत भ्रितु, सद्य तावितं, घाई नांभिउं, **मांजिस्टा** वरण्ण, अव धारइ करण्ण, सरहुरी, धार, प्रीणइ जिमणहार, सोभाग्य अजेय, नासापटु पेउ, साक्षात् अम्रत एवं विध घ्रत ।—व. स.

मांजी—देखो 'मांझी' (रू. भे.)

उ०—भोल गुहो बन मिलै भाव सूं, [परम भगत पोरस भरपूर । मोड़गलागो आप दिस **मांजी** जिण नूं कही हकीगत जांभी ।—र. रू.

२ देखो 'माजी' (रू. भे.)

मांजूफळ—देखो 'माजूफळ' (रू. भे.)

मांजोट—सं० पु०—बैल गाड़ी का एक उपकरण ।

मांजौ—सं० पु०—१ तानै क मध्य का भाग ।

२ खेत का वह टुकड़ा जो बचत होने पर बाद में जोता जाता है ।

३ हल चलाते समय हल की दो रेखाओं के बीच की छूटी हुई भूमि ।

४ विभिन्न प्रकार के पदार्थों के लेपन से मजबूत की हुई पतंग की डोर ।

५ देखो 'मांहजो' (रू. भे.)

(स्त्री० मांजी)

उ०—साथलड़ी सपीठी पींडी पातली, **मांजी** गाड़ेची सूमल हालेनी रे आलीजे रै देश ।—लो. गी.

रू० भे०—मांझौ ।

मांझ—देखो 'मध्य' (रू. भे.)

उ०—१ आखै सो जागां देख अऊर, नहीं जिण **मांझ** तुहाळो नूर ।—ह. र.

उ०—२ ओयण मत चौवीस होय जिण रोळा आखत । भल कवि जोड़ग छंद **मांझ**, राघो जस भाखत ।—र. ज. प्र.

उ०—३ राय पसेणी हो ग्याता भगवती, जीवाभि गम नई **मांझ** ।
—स. कु.

मांझर, मांझळ–क्रि० वि०—१ बीच में, मध्य में।
उ०—१ तैं गज गुड़ियौ स्री कळस, विच दळ करूं बखांण। गिर कुळ रूप सपंख गिर, जळ निधि मांझळ जांण।—बां. दा.
उ०—२ मारग 'वीरम' हर कुळ मंडण, मुड़िया तो सूं ग्रभं-मण। मुड़िवां तणौ हमैं जळ मांझळ, परियां वह जांणै प्रसण।
—गु रू. बं.
२ अन्दर, में, भीतर।
उ०—१ गाजै ग्रह मांझळ वैठौ गुज्झ, पुजारा पंच चढावै पुज्ज।
—ह. र.
उ०—२ वणि ससिवेस रमैं मांझल बन। तैं वळहती वेल सोव्रन तन।—सू. प्र.
उ०—३ भिदि वज्र सिखर चकर इम भळकै। झीण बदल मांझळ रवि झळकै।—सू. प्र.
उ०—४ दुजजळ मांझळ सांपड़ै, अरुण उदै री बार। गावै कै दातार गुण, कै गावै किरतार।—बां. दा.
३ मध्य, बीच, अर्द्ध।
उ०—हलकार पुतार जुवांण वीरां हक, सारि अंगार धुखै सरिसा। मच घोर अंधार गिरां सिर मांझळ, आतस काळ अकाळ इसा।
—मा. वचनिका
रू० भे०—मांझळि, मांझळी, मांझिम, मांझिल, माझळ, माझळि, माझली, माझिम, माझिळ।

मांझळनिस, मांझळरात–सं० स्त्री० [सं० मध्य निशा, मध्य रात्रि] मध्य रात्रि, अर्द्ध रात्रि।
उ०—उड़ी कुरजां ढळती मांझळ रात। दिनड़ो उगायो माझ्जी रे देस में जी म्हारा राज।—लो. गी.
रू० भे०—माझळरात, मझिमरात।

मांझळि, मांझळी—देखो 'मांझळ' (रू. भे.)
उ०—१ सयदांण कमध सकाज मिळ, थाट सझि महाराज। अंब खास मांझळि आय, असपत्ति लीय उठाय।—सू. प्र.
उ०—२ मावड़ियां मन मांझळी सौ गाडां भर सीत। की ऊंचौ माथौ, करै, पड़िया रहै पलीत।—बां. दा.

मांझवन–सं० पु०—रथ, स्यंदन। (डि. नां. मा.)

मांझि—१ देखो 'मांझी' (रू. भे.)
२ देखो 'मध्य' (रू. भे.)
उ०—१ जिण मांझि लिखौ उमराव जेम। तिण सुणै खिजै सुरतांण तेम।—सू प्र.
उ०—२ पत राखि पांडवां, अंब कर मांझि उपाये। गजपत पत राहवै, अनंत खगपत चढ़ आए।—जगो खिड़ियो

मांझिम—देखो 'मांझळ' (रू. भे.)
उ०—मंझि समंदां वींट घर, जळसूं जामोपत्त। किणहीं अवगुण कूंझड़ी, कुरळी मांझिम रत्त।—ढो. मा.

मांझिमरत्त, मांझिमरात—देखो 'मांझळरात'।
उ०—मंझि समंदां वींट घर, जळ सूं जांमो पत्त। किण हीं अवगुण कूंझड़ी, कुरळी मांझिमरत्त।—ढो. मा.

मांझियांण—देखो 'मांझी' (मह., रू. भे.)

मांझियांमांझी–सं० पु०—सरदारों का सरदार, बड़ा सरदार।

मांझिळ—देखो 'मांझळ' (रू. भे.)
उ०—जग मांझिळ थारौ जिते, पांणी गंग प्रवीत। अमरां मुख पांणी इते, गावैं सह ऐ गीत।—बां. दा.

मांझी–सं० पु० [सं० मध्य] १ प्रधान, नेता, मुखिया, अगुवां, नायक।
उ०—१ मांझी मोह मराट, 'पातल' रांण प्रवाड मल्ल। दुजड़ां किय दहवाट, वळ मैंगळ दांणव तणां।—सूरायचो टापरिया
उ०—२ मांझी मोगर थटां मोडौ, घातै लखां दळां विच घोड़ौ। देसां देसां ऊपरै दौड़ौ, चढियौ कठि चाळण चीतोड़ौ।—गु. रू. बं.
उ०—३ मांझी नोहत्था रूप होफरां किला में मारै। सावड़ी पुकारै बीबी अल्ला नूं सलाम।—संकरदांन सांमौर
उ०—४ पड़ियौ मुरझाय सेस इळ ऊपर, सकत रांण सुत सांझी। थरकै भाल वनचरां थांणा, मुख कुमलांणा मांझी।—र. रू.
२ बलवान, वीर, योद्धा।
उ०—धाह भांजै धड़ा खाग आछै घणौ। मेर मांझी 'जसौ' हेक रिण माल्हणौ।—हा. झा.
३ मुख्य, खास।
उ०—मांझी मेर अभंग भड, मारु अमली-मांण। गिळण गढां भूखाळुओ, ओ बासै जमरांण।—गु रू. बं.
४ स्वामी, अधिष्ठाता।
उ०—आया साह अलावदी, विढ़ कटकांसूं वीर। मांझी रिणथंभर मुओ, हठ निरवाह हमीर।—बां. दा.
५ मेणा जाति के व्यक्तियों की एक उपाधि। (सम्मान)
६ नाविक, मल्लाह, खेवट।
रू० भे०—मांजी, माजी, मांझि, माझि, माझी।
अल्पा०—माजियौ, माझियौ, माझ्जी।
मह०—मांझियांण।

मांझीपणौ, मांझीपौ–सं० पु०—१ 'मांझी' होने की अवस्था या भाव।
२ 'मांझी' होने पर मिलने वाला अंश या हिस्सा।
रू० भे०—माझीपौ।

मांझू—१ देखो 'मझ' (रू. भे.)
२ देखो 'मांझी' (रू. भे.)

मांझौ–सं० पु०—१ सुनहरी या रूपहरी जरी का एक वस्त्र जो मेवाड़ के उन सरदारों की पगड़ियों पर बांधा जाता था जिनको महाराणा की इजाजत होती थी।
उ०—जाहर छड़ी जळेब, छाप कागळ बड छापण। मांझौ पाघ मझार, थरू बीड़ौ जस थापण।—वीर विनोद

रू० भे०—मांझू।

२ देखो 'मांजो' (रू. भे.)

उ०—हालीड़े री मवरादे जावै रे बलाय। राय हालीड़ै रा बाया मांझै मोती नीपजै।—लो. गी.

मांट—देखो 'माट' (रू. भे.)

उ०—१ स्रोण भू में खळाकं कसूंबा मांट फूटा सा-क, उठै सूरां गेंदता विलम्मै केक ग्रांण।—जसो ग्राढो

उ०—२ दूध दही की कमारी फोरी (मथनिया फोरी) मांट फोरबो गह छींको।—मीरां

मांटी-सं० पु० (स्त्री० मांटण) १ पति, खाविंद, भर्तार, कंत।

उ०—१ तरै उण कह्यौ—ग्राज म्हारै मांटी घरे ग्रायो, तिण हूं ग्राज मोड़ेरी ग्राई, तरै जिंदै कह्यौ—तोनूं मांटी रो ग्रतरो प्यार छै तो तूं घरे जाय, थारा पेम थारा मांटी सूं कर।—नैणसी

उ०—२ तठै ठग री बेटी नुं पिण दया ग्राई। तद ईयै रजपूत नूं मांचै सूं छोडीयो ग्रर कही—ग्रागली तो कीवी सो मोनूं माफ। हिवे थे म्हांरा मांटी ग्रर हूं थारी बाइर। तठै ईयां वळै भोग कर बोल चाल नै सुई रह्या।—बूढ़ी ठगराजा री वात

उ०—३ मांटी मुंकी बहर, मुवया बहरै परिण मांटी। बेटे मुवया बाप, चतुर देता जे चांटी।—स. कु.

२ मालिक, स्वामी।

३ पुरुष, मर्द, मनुष्य।

उ०—१ तरै सोफल पाछी ग्राय भाखरी हेठै ऊभी रही। ग्रागै देखै तो मांटी १ ऊभो छै। तरै इण बुलायो, कह्यौ—तूं कुण छै? तरै इण कह्यौ—हूं बांधरो हुल छूं।—नैणसी

उ०—२ ताहरां ग्रौ भोकाई बोलियो—थे इण मांटी सु ठरिस्यो नहीं।—कांवळो जोईयो ने तीडो खरळ री वात

उ०—३ तिणि ग्रवसर नाटक तिहां राजा, ग्रागला पड़इ राति रे। मिली खलक लोगाई, बयरी मांटी बहुभांति रे।—स. कु.

४ दोस्त, मित्र, साथी।

उ०—१ लोग हंसता ढबिया तो वो लोगां नै कह्यौ—मांटियां, ग्रबै तो ग्राप सगळा नै म्हारी बात रो साच ग्रायग्यो।—फुलवाड़ी

उ०—२ बाकी सगळा सिरदार बात सुणतां ई हांमळ भरी हां, हां, ग्रा बात तो मांटी पूरी ठेल बंद करी है।—फुलवाड़ी

५ वीर, बलवान, जबरदस्त, जोरदार।

उ०—मुंडीयो तो हिव जासी मांम, मांटी छै तो करि संग्रांम। कहै ग्रालिम क्या करै खुदाय, तें तो हम सुं खेल्यो डाय।—प. च. चौ.

रू० भे०—माटी।

ग्रल्पा०—मांटीड़ो, मांटीलो।

मांटीड़ो—देखो 'मांटी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

मांटीपण, मांटीपणो-सं० पु० [सं० मठ+रा० प्र० पणो] १ क्षत्रित्व।

उ०—१ वीर बडो गोपाळसिंह गोड़ वंस रै मांहि मांटीपण री ग्रांक यह, ग्रहड़ो दीसै नांहि।—गोड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ मांटीपणै धणी मझि, विकसीया वीर तझि। सांम नूं निरोहा सार, जु ग्रांण करै जुहार।—गु. रू. बं.

२ मर्दानगी, पुरुषत्व।

उ०—ग्रांटीपणौं सोबादार सतारानाथ नूं ग्राखै। हिंदुवां में मांटीपणौं 'राजा'न रो हेक।—महाराजा बख्तावरसिंघ री गीत

३ बहादुरी, वीरता।

उ०—१ ताहरां मूळवै नूं खबर हुई, जु रजपूत राजा सौं कह्यौ—करां कांसूं? मूळवो मांटीपणै न गयो घोड़ै रै बळ गयो।

—मूळवै सांगावत री वात

उ०—२ जीणूं मरणे रो डर नहीं सो मांटीपणे में बडो होवे छै।

—नी. प्र.

४ साहस।

उ०—१ ग्राद इता भड़ ग्राठरो, गढ ग्राया गहवंत। माप न को मांटीपणौं, उर ज्यां ताप न ग्रंत।—रा. रू.

उ०—२ सो मरणे रै समय पछतावै सूं ग्रांसू नाखै थो ग्रर कहै थो कि इतरी लड़ाइयां में मांटीपणो कियो कितरा घाव सहिया पण हमार तो सांथरै ऊपर बूढी रांड दाई मरूं छूं।—नी. प्र.

५ स्वामीत्व, स्वामीपन, मालिकाना।

उ०—प्रसध नांम इधकार जगजारे मांटीपणो। ग्रतुळ दातार कीरत उजाळा।—र. रू.

मांटीलो—देखो 'मांटी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—हैजमां हीलोळ हूतां तैगां उ सांटीलो हलै, साथ वीर चलै चंडी चाटीलो समंद। वेद धंकी जंगां मेळै वारंगां मांटीलो वींद। कैवांणा कोमंकी वागो ग्रांटीलो कमंद।—हुकमीचंद खिड़ियो

मांठ—१ देखो 'मोंठ' (रू. भे.)

२ देखो 'माठ' (रू. भे.)

मांठफळी—देखो 'मोठफळी' (रू. भे.)

मांठोड़ी-सं० स्त्री०—मोठ की बड़ी।

मांड-सं० स्त्री० [सं० मण्ड] १ कपड़ों में लगाने की कलफ जो प्रायः मैदे की बनती है। (उ. र.)

२ रचना, बनावट, सृष्टि।

उ०—१ तरै पंजु ग्ररज की साहिब री बडी मांड छै, किण ही बात री परमेस्वर रे घरे कमी न छै।—नैणसी

उ०—२ निरगुण सेती सरगुण बणिया, तीनूं देव थपाया। सावित्री गायत्री लछमी पारवती, यूं मिळ मांड मंडाया।

—हरिरांमजी महाराज

३ वैभव, विस्तार।

उ०—मांमासा री मांड, कर दोऊ ताळी करै। मह्रि उपर रिण मांड, एक बजावै ऊकड़ो।—सरवहिया केहवाट री वात

४ पानी पीने या मरने के लिये किसी कूए या तालाब पर जाने या जाकर एकत्र होने की क्रिया या भाव ।

उ०—सहर मांहै अरहट २, एक तौ पावटौ अतुट पांणी । सारा सहर री मांड पावटा ऊपर ।—नैणसी

५ कन्या पक्ष । (विवाह)

उ०—निमंत्रीहार अमार निसासहि, ब्रिहूंगसि ढोलां रवद दुवाड़ । विसकन्या देखं वजवाया, मुणियउ मांड अनड़ मेवाड़ ।—दूदौ

ज्यूं—मांड रौ आदमी ।

६ दबाव ।

उ०—मूंए न लाभइ किरि खीर खांड । किसिउं मूआं हुइ बलवंड मांड ।—सालिसूरि

७ एक रागिनी विशेष ।

८ जैसलमेर राज्य का वह स्थान जहां सबसे पहले 'मांड' राग गाई जाती थी ।

रू० भे०—मंड, मांडह, मांडी, मांढ, माड, माढ ।

९ देखो 'मोड़' (रू. भे.)

उ०—तिण उजर घणौ ही कीयौ पिण बेगम पातसाह री मां छेहड़ा मांड बांध जात कीया छै ।—नैणसी

१० देखो 'मांडौ' (मह., रू. भे.)

मांडण—सं० स्त्री० [सं० मण्ड, मण्डनिक] १ रचने या बनाने की क्रिया या भाव ।

२ बनाव, शृंगार, सजावट ।

उ०—१ एक बार मोरी बीनतडी सुणि सुंदर लाडण रे । लाडण नइ मांडण नारिनइ नाहलु ए ।—नळदवदंती रास

उ०—२ म्हारा नवळ बना सिरदार मुखडा को मांडण नथ ल्या-ज्यो जी राज ।—लो. गी.

शोभा ।

उ०—रांणां सांझ्या मोकल्या जो, पाछा ल्यावो मोड । कुल की मांडण इस्तरी जी, मुरड़ चली राठोड़ ।—मीरां

रू० भे०—मांडणी ।

मांडणउ—देखो 'मांडणौ' (रू. भे.) (उ. र.)

मांडणी—सं० स्त्री० [सं० मण्डनिक] १ व्यवस्था, प्रबन्ध ।

उ०—आगळती हिमाचळ आया, जांन आय अूतरिया तठइ । मांडिया जांणे अचळ मांडणी, तीन भुवन तिण वार तठइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'मांडण' (रू. भे.)

उ०—१ आंणइ मनुचर आकुळा चाकुळा चाउरि पाट । मांडइ मंडपि मांडणी, आडणी ऊपरि आट ।—जयसेखर सूरि

उ०—२ तुरक पायक सायक सुं सरियां, सुहड चरम ति फोडइ सुंसरां । गज गजिइं रथ स्यूं रथ ना धणी, तुरग सिउं तुरगे रथ मांडणी ।—सालिसूरि

उ०—३ रुखमणि अंबिका पूजिवा जाहिरे, साथ लीधी वर कांमणी । देवीहइं सोहइं सयळ सिणगार, माय माथां तणी मांडणी ।

—रुकमणि मंगळ

मांडणौ—सं० पु० [सं० मण्डन] १ शुभ एवं मांगलिक अवसरों पर स्त्रियों द्वारा, घर की दीवारों अथवा आंगण में बनाया जाने वाला चित्र ।

उ०—१ कणां तौ आखी गवाड़ी नीप-चौपनै धोळी, कणां सगळै चांद, सूरज, पगल्या, सारका अर मांडणां मांडचा उणनै खुद ई इण बात री जाच कोनीं ।—फुलवाड़ी

उ०—२ जीहो-यादव नारी सांवटी लाला, आवें गावे गीत । जीहो-चोक पुरावै मांडणा लाला, साचविये सुत्र रीत ।—जयवांणी

उ०—३ कस्तुरि केसर कुंकमां, करि रोल भरीय कचोळ । मन रंग मांडै मांडणा, अधिकै भाव इलोळ ।—ध. वं. ग्रं.

२ चिन्ह, निशान ।

उ०—लांठै हिरण रा लोभ में सिंघ हाथै आयोड़ा खिरगोसिया नै ई गमायो । लचकांणो पड़नै पूंछ हिलावतो वो उठा सूं होळै होळै टुरग्यो । लालच रै पगलियां रा सेवट ऐ इज मांडणा व्है ।

—फुलवाड़ी

३ चित्र ।

उ०—पण बेटी । ऐ वगत रा मांडणा तौ वगत माथै ई उघड़ै ।

—फुलवाड़ी

४ शृंगार, सजावट ।

उ०—चांद बिना किणरी सगती जकी रात रा अंधारा ने उजाळै, सिणगारै, अर बादळां बिना किणरी ठरकी जकी इत्ती लांठी धरती री तिरस बुझावै, उणरो काळजो ठारै । सूखी अर पांगळी नदियां नै पगां हलावै । सूखा में हरियाळी उगावै । फूलां रा मांडणा मांडै ।

—फुलवाड़ी

५ रंगढंग ।

उ०—नाई मन में सोचण लागौ के इण प्रीत रा सरू पोत ई ऐड़ा मांडणा उघड़िया तौ पछै अंत में रांम जांणे कांई व्हैला ।

—फुलवाड़ी

६ नतीजा, परिणाम ।

उ०—बा ! आ बात तौ आपनै उण दिन सोचणी ही के राजा नै बेटी दियां ऐ मांडणा तौ एक दिन उघड़ैला ई ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मांडणउ ।

मांडणौ, मांडबौ—क्रि० स० [सं० मण्डनम्] १ लिखना, लिखकर देना ।

उ०—१ दाब घरोहड़ मांड खत, लटपट करके लाय । बडी बडाई वांणिया, धन लेणौ धो जाय ।—बां. दा.

उ०—२ पण वेमाता री मांडियोड़ी ऐक लांठी खोड़—के रांणी री पेट नीं मंडियो ।—फुलवाड़ी

उ०—३ परगनै मेड़ता री बसती संमत १७२० रा काती मांहे मु० नैणसी मांडी, तिण री विगत ।—नैणसी

उ०—४ तिकै जैतारण री फिरसत मांहै अगै न छै नै हिसाब मेरां रा गांव मांडीया तरै मेरां रा ऐ गांव जैतारण दाखळ मांडीया छै ।—नैणसी

उ०—५ साहू तांम दिस 'सूर' मांडि दीधौ फुरमांणौ। इण लिखियौ नृप आप, दुंद मेटौ दखियांणौ ।—सू. प्र.

२ वर्णन करना, विस्तार से कहना ।

उ०—१ अठै आयां सारी वातां मांडनै वीरमदेजी नुं कही । वीरमदेजी बात सुण राजी हुवा ।—नैणसी

उ०—२ विरतंत सहु कुमरे कह्यौ जिम थयौ धुर थी मांडि । सा पुरुस झूठ कहै नहीं तेह न नांखै छांडि ।—वि. कु.

उ०—३ पछै राजकंवर मांडनै सगळी बात बताई । वेदंतराज तौ काळा भाटा री मूरत रै उनमांन उण री वातां सुणतौ रह्यौ ।
—फुलवाड़ी

उ०—४ फुलांणौ राजा री बेटी छुं । इयै भांत तिसरीयौ छुं । जैसा तरह तीसरीया सो बात मांड हर कही ।—चौबोली

३ प्रारंभ करना, शुरू करना ।

उ०—१ जैतमाल जैसलमेर रावळ मालदे री बेटी परणीयौ हुतौ । कपूत सो ठाकुर हुतौ । उण रै को परधांन थौ तिण महाजनां नुं घणो दुख देणौ मांडीयौ, घर लूटणा मांडिया ।—नैणसी

उ०—२ कडूंबा री लुगायां भेळी बैठ बधावा रा गीत गावणा मांडिया ।—फुलवाड़ी

उ०—३ नरसिंघ नांन्हौ छै. नरसिंघ रा जतन करौ । फौज लारै मतो जावौ । इम तयारी मांडी छै ।—राजा नरसिंघ री बात

४ रचना करना, निर्माण करना, निर्मित्त करना, बनाना ।

उ०—१ आंणइ अनुचर आकुळा चाकुळा चाउरि पाट । मांडई मंडपि मांडणी आडणी ऊपरि थाट ।—जयसेखर सूरि

उ०—२ दिन ऊगौ, ताहरां रिणमलजी सीसोदियां रा माथा वाढि चवरी रचाय तियांरी चोक्यां कीधी । तियां ऊपर बरछां री वेह मांडी ।—नैणसी

उ०—३ अंधकार हुवइ नइ सूर आथमइ, कळा इसी वरतै कैलास । मांडियउ मुहल सातमइ ब्रहमंड, रतनां तणी वेखिजै रास ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ अबै सोचूं के इण प्रण में कीं नीं धरियौ । खेत में भूंपी मांड थारै साथै भेळी रै जावूं तो पछै तीजो भगवांन ई आय जावै तो उण री गरज कोनीं ।—फुलवाड़ी

उ०—५ पिडत चंवरी मांडी । तेल चढ़ती वगत डोकरी रै ठळाक ठळाक आंसू ढळकण लागा ।—फुलवाड़ी

५ स्थिर करना, स्थापित करना, टिकाना ।

उ०—१ तरै सोभत कह्यौ—राजा री राज तोनुं दीयौ । मांहारै नावै सहर री नांव सोभत देई । नै म्हांरी थापना फलांणी ठोड़ मांडजौ ।—नैणसी

उ०—२ एकोकइ रोम ऊपरइ ईसर, मांडिया कोट अनंत ब्रहमंड । सायर सात दिपइ परिदक्खिणा, डंबर चा अंबर धजडंड ।
—महादेव पारवती री वेलि

६ सजाना, सुसज्जित करना, शोभित करना ।

उ०—घूघरमाळ चिहूं दिसि घमकइ, घणूं स थट्ट जोवतां घणउ । मुखमल रउ गउखउ गेर मांडियउ । जडियउ जांण जडाव तणउ ।
—महादेव पारवती री वेलि

७ चित्रित करना, चित्रांकित करना ।

उ०—१ जंघस्थळ युगल केळिग्रभ जिसडा, गति जोवतां जिसा गज खंड । चितसाळी रचतइ चीतारइ, कुंभ तणां मांडिया कुंभ ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सूखा गैं हरियाळी उगावै । फूलां रा मांडणा मांडै ।
—फुलवाड़ी

उ०—३ कस्तुरि केसर कुंकमां, करि रोळ भरीय कचोळ । मन रंग मांडै मांडणा, अधिकै भाव झलोळ ।—ध. व. ग्रं.

उ०—४ वा झट नीप्योड़ा आंगणा माथै मांडणा मांड दिया ।
—फुलवाड़ी

८ शृंगार करना ।

उ०—एक मांड्यौ चूंक्यो आवो विनायक सरब सुहागण के सीस ज्यूं ।—लो. गी.

९ चिन्हित करना, निशान बनाना, अंकित करना ।

उ०—१ मांडिया सरोज भयंग चढ़ माथइ हरणाखी चित लावन हरि । अतिरगता विराजइ ऊपर, पगथळियां मीमलइ परि ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ गैणाग ऊछाह भ्रूल बारंगां रा बांधै गूंथी । महाभांण रत्थां खाग खुराटां मांडीस ।—करणीदांन कवियो

१० रोपना, दृढ़ करना ।

उ०—१ बारै आवरै रिण रोपण बंका, बंध सुग्रीव बकारै । ऊठै सुण ध्रमजघड अधायो, धींग क्रोध उर धारै । हूं हिव आवियो पग मांड हकारै ।—र. रू.

उ०—२ चांपा-धणी मांडियो चावै, 'वीठळ' खळां सरिस खग वाहि । अड़ियौ 'जसै' मेल्हियौ ऊभौ, पड़ियौ रणि पायौ पतिसाहि ।
—विठळदास चांपावत री गीत

११ ठानना, निश्चय करना ।

उ०—१ जठै सलख रा सरकार री अरथ पहली अजमेर सूं केमास भेजियौ जिण नागोर आय प्रांमार सूं कहियौ केवळ ही मरण मांडिया वसुधा'र बडाई दोही व्यरथ जायसी ।—वं. भा.

उ०—२ सखी अमीणी साहिबौ, जमसूं मांडै जंग। ओळे अंग न राखही, रण रसिया दे रंग।—बां. दा.

उ०—३ हुं भव-भव भमतौ हारचौ, बहु दिवसे तुझ सम्भारचौ रे। तुझ सेवा करिवी मांडी ते किम जायइ कहौ छांडी रे।—वि. कु.

उ०—४ घणां जसवंत रा जोध निहसै घणां। मांडिसी सही मति-वाळा वेढीमणां।—हा. झा.

उ०—५ मन उद्यांन गुफा तरइ विचइ, धूंणी घाती सबळ धडइ। मिलियां प्रभु झगडउ मांडण री, घणी स बातां जीव घडइ।

—महादेव पारवती री वेलि

१२ कुछ करना।

उ०—१ रात दिवस हरि ह्रदै रहाविस, आठूं पहर अनंत उल्ला-विस। मांडै पूजा तूझ महणमथ, सकळ सरीर करिस इम सुक्रियथ।

—ह. र.

उ०—२ उपाय मांड्यउ राय एहवा, मन धीरिज ना मेटणां। पुंडरीक कामातुर थयउ घणुं, भल भला करइ भेटणां।—स. कु.

१३ फैलाना, पसारना (लेने के लिये)।

उ०—१ ताहरां स्री भगवांन फुरमायौ—ऐ हाथ अयाची छै। म्है किन्हीं कन्है हाथ मांड्यौ नहीं, सारां नै ही देऊं छूं, लेण नै हाथ आगौ न करूं।—पलक दरियाव री बात

उ०—२ एक ई खारक पतासा वास्तै हाथ नीं मांडियौ।

—फुलवाड़ी

१४ विस्तार करना, फैलाना, छितराना, बिखेरना।

उ०—धरणीधर संकर देव धियावउ, जोतिप्रकास अलोप जग। मस्तक मुगट प्रकास मांडियउ, अनंत कोट ब्रहमंड लग।

—महादेव पारवती री वेलि

१५ सृष्टि करना, सृजन करना, रचना।

उ०—१ दहणइ कर दीध प्रगट राजादिक, ब्रह्मा आगा ते कीध विचार। ईसर तूं जगदीस तणउ अंस, सहु ब्रह्मै मांडियउ संसार।

—महादेव पारवती री वेलि

१६ कुछ उठाने, ग्रहण करने या वहन करने के लिये प्रस्तुत करना, तैयार करना।

उ०—१ मांडिया उतबंग जियइ द्रू माथइ नांम जपंतां एक निमंख। संकर देव पखउ कुण साहइ, पडती गंग तणा झट पंख।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तेतीसै सुरां हिंदवां तुरकां, कोय न यूं जन मांडै कंध। आराधियां बिना वह आयौ, बीजौ महादेव 'गजबंध'।

—चतुरौ मोतीसर

उ०—३ तयीं गज भार भर 'अभा' राजा तणा, मांडिजै तौ भुजां सेर मारू।—सेरसिंघ मेड़तिया रौ गीत

१७ जमाना, स्थिर करना।

उ०—आसण मांड अडिग होय बैठा, याही भजन की रीत।

—मीरां

१८ व्यापार करने के लिये किसी स्थान पर माल लेकर बैठना, उद्योग करना, व्यापार करना।

उ०—१ कमाई कमाई में कैड़ौ फरक, एक कसाई री हाट घटै जको मांडलौ—घणी ई नफौ व्हैला।—फुलवाड़ी

उ०—२ अबै थैं अपांरा गांव में ईं एक छोटी मोटी हाट मांडलौ।

—फुलवाड़ी

१९ प्रबन्ध करना, व्यवस्था करना, आयोजन करना।

उ०—नयण सलूणउ लडसडंतु जउ तोरिहिं आविउ। माइ बापि बंधवहिं मांड वीवाह मनाविउ।—राजसेखर सूरि

२० व्यक्त करना, जतलाना, दिखाना।

उ०—मुख ऊपर अति मीठी बोलै, मांडे छे बहुली प्रीत रै।

—जयवांणी

२१ विचारना, सोचना।

उ०—यूं करतां माहे वरस १२ री हुई। ताहरां सगाई री अटकळ मांडी।—देवजी बगड़ावतां री वात

२२ शुरु करना, आरंभ करना।

उ०—१ इंद्र बाई रम्मत रास अखाड़ै, मा आसोज चैत में मांडत, खेल सुकल पखवाड़ै।—मे. म.

उ०—२ तठै राजा अगरजीत बोलीयौ। पछै दूजी रांमत वळै मांडी।—रीसालू री वारता

२३ घोड़े या ऊंट पर चारजामा कसना, बांधना।

उ०—१ तिसड़ै आयनै वाहरुवां कह्यौ—राज! पनोतैरै वाहलै एक वडौ वाराह आयौ छै। यूं हीज ऊठियौ। घोड़ै पलांण मांडियौ। तयार हुय तुरत असवार चढ़ियौ।—नैणसी

उ०—२ ताहरां कांवळौ ऊंठ पलांण मांडि नै हालीयौ।

—कांवळौ जोईयौ नै तीडौ खरळ री बात

२४ कायम करना।

उ०—इतरै गोहिलां पिण आलोच कियौ—जो राठोड़ जोरावर। सिरांणै आय राजस्थांन मांडियौ।—नैणसी

२५ सम्बन्ध जोड़ना, मिलान करना, संलग्न करना, मेल करना।

उ०—१ उण खंखर सिकोतरी नै तद वौ मत्री रौ डीकरौ पूछ्यौ—थूं सिंघणी अर गिडक रौ घर मांड सकै कांईं।

—फुलवाड़ी

२६ उपयोग की दृष्टि से किसी वस्तु को किसी के सहारे खड़ा करना, टिकाना, सटाना, संलग्न करना।

२७ किसी यन्त्रादि के पुर्जों को व्यवस्थित करके कार्य करने की स्थित में करना। २८ रखना।

उ०—मुहरि मांडिजै काजि दिग-विजय मंडोवरौ। धुर धमळ सिरै परिगह धरीसै।—गु. रू. बं.

२९ प्रहार के लिये शस्त्र उठाना, संधान करना, उद्यत करना।

उ०—बीजै फेरै वळै तरवार कांधै नूं मांडी, तरै देवीजी मोहडै बोलिया—तूं विजैराव कंवळपूजा मत करै, म्हैं तौ थारी कंवळपूजा मांनी। इतरो कही अबोला रह्या। तरै इण वळै कांधै नूं तरवार मांडी।—नैणसी

२६ जबरदस्ती करना।

उ०—१ तुझ साथइ कोई जोर न चालइ, तउ पिण हो २ आड़ौ मांडिस्युं जी।—वि. कु.

उ०—२ ब्रह्मादिक तणउ हुओ दईतां वर, अतिगति मांडी तियां अनंत।—महादेव पारवती री वेलि

३० देखो 'मंडणौ, मंडबौ' (रू. भे.)

उ०—अउछाडे लीध रिदइ रइ आगइ, आंणियउ ताइ आप रे आवास। मिलियइ नाळ उछाह मांडिया, पळ एक तियां न छोडइ पास।—महादेव पारवती री वेलि

मांडणहार, हारौ (हारी), मांडणियौ—वि०।

मांडिओड़ौ, मांडियोड़ौ, मांड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मांडीजणौ, मांडीजबौ—कर्म वा०।

मांडोणौ, मांडोबौ—रू० भे०।

मांडविक, मांडवीक-सं० पु०—मण्डप के ऊपरी कार्य-कर्त्ता।

उ०—एक सौ चौबीस सहस्र कटक, ६० सूपकार, अन्येपि स्रेष्ठि सारथवाह मांडविक कौटंबिक।—व. स.

उ०—२ अनेक गणनायक दंड नायक राजेस्वर तलवर मांडवीक कौटंबिक मंत्रि महामंत्रि गणक''''''।—व. स.

मांडळ-सं० पु०—चरस के मुख पर लगाया जाने वाला लोहे का गोलाकार कड़ा। (वरदा)

मांडलिक—देखो 'मंडलीक' (रू. भे.)

मांडलीओ-सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—टसरीआं पुरीआं अमरीआं सूहबीआं मुगीआं चलवलीआं चारुलीआं पारवालीआं मांडलीआं खाजलीआं पिपलीआं''''''।—व. स.

मांडळौ-सं० पु०—घोड़ों की जातियों में से एक जाति विशेष।

उ०—अबळखी ऊजळा, सोनेरी सांमळा। राहदारां रळा, मादुवां मांडळा। पसंमी प्रेमळा कुमैतां काछळा। हरिया हांसळा, ग्रहास छोडै वळा।—मा. वचनिका

मांडव-सं० पु०—१ मालवे का एक नगर। (ऐतिहासिक)

उ०—महमंद मांडव रो पातसाह। महिपो पमार पहीरा डूंगर सूं नीसरियो सु मांडव रै पातसाह रै पूठ आयौ। ताहरां रांणौ कुंभौ मांडव रै पातसाह ऊपर आयो।—नैणसी

२ देखो 'मंडप' (रू. भे.)

मांडवउ—देखो 'मंडप' (रू. भे.)

उ०—मांड्यउ उत्तंग तोर मांडवउ, तुरत नवउ वइसिवांनउ आंगणउ, ते तु नील रतन तणउ,''''''।—व. स.

मांडवगढ़-सं० पु०—एक नगर का नाम।

उ०—१ साहि 'सलेम' उदार, करवा सुगुरु दीदार। मांडवगढ़ गुरु तेड्या कुमति ना मद फेड्या।—कवि गुणविजय

उ०—२ पछै रांणौ कुंभौ, रिणमलजी मांडवगढ़ ऊपर आया। ताहरां भीतरलां पण सांकौ राखियौ।—नैणसी

उ०—३ भरूअच मांगल हुर जूनुगढ़ चांपानेर मांडवगढ़ अणहलपर पाटण, रांणपर वीसलनगर''''''।—व. स.

मांडवड़ौ—१ देखो 'मांडौ' (अल्पा., रू. भे.)

मांडवी-सं० स्त्री० [सं०] १ विदेहराज जनक के भाई कुशध्वज की पुत्री जो अयोध्यापति दशरथ के पुत्र भरत की स्त्री थी।

२ वात्सी-मांडवीपुत्र नामक आचार्य की माता।

रू० भे०—मंडवी, मंडावी।

मांडवीओ, मांडवीयो-सं० पु०—१ मण्डप का अधिपति, मण्डप का व्यवस्थापक।

उ०—भंडारी कोठारी मांडवीया मल्ल हस्ति तुरंग रथ पायक टंकसाली व्यायांम कारक''''''।—व. स.

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रतिवस्त्र वस्त्र आपइ, गुडीआं सणीआं कस्तूरीआं प्रतापीआं कुसंभीआं मोलीआं मांडवीआं।—व. स.

मांडवु, मांडवौ—देखो 'मांडौ' (रू. भे.)

उ०—१ चपळ तुंग तुरंगम पाखरिया, गुड गुड्या असवार ते सांचरिया। नृप विराट निजांगज पांडवे, सहि गयउ समरांगणि मांडवे।—सालि सूरि

उ०—२ जे तो बीमाह री वाट जोती जगह, रूक बळ आसियौ गयौ राजा। मराड़ी जांन घर आवियौ मांडवै, तेल चढी रही अच्छर ताजा।—नरहरदास बारहठ

उ०—३ घणी करै वाखांण सत्र करै अमंगळ धमळ, सहोवर साथ अण वरस ओधा। मांडवै परणजै कमंद गोपाळमल, जांनीया साय रड़माळ जोधा।—दुरसौ आढ़ौ

मांडव्य-सं० पु० [सं०] १ एक आचार्य, जो कौत्स ऋषि का शिष्य था। (पौराणिक)

२ विदेहराज जनक का मित्र एक आचार्य।

३ एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो धैर्यवान, सत्यनिष्ठ और तपस्वी था। इसको अणिमांडव्य या आणि मांडव्य भी कहा है।

मांडह—१ देखो 'मांडौ' (रू. भे.)

उ०—सुभ छवि मांडह नयर सचेळौ। सुर ब्रत्ति मिलण थयौ साम्हैळौ।—रा. रू.

२ देखो 'मांड' (रू. भे.)

मांडहड़ौ—देखो 'मांडौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कव 'ओपा' लाडीले कीरत, भूपत वार भजाड़ै। अण मांडहड़ौ आला आला, वळिया ढोल बजाड़ै।—ओपो आढ़ौ

मांडहिय—देखो 'माडां, माडांणी' (रू. भे.)

मांडही—देखो 'मांडी' (रू. भे.)

उ०—दळकार हठं दखणाध रा, दिल्ली फौजां निरवही। किरि जांण अपूठा बाहुडे, जांन बोलाए मांडही।—गु. रू. बं.

मांडहौ—१ देखो 'मांडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मंडप' (रू. भे.)

मांडां, मांडांणी—देखो 'माडां, माडांणी' (रू. भे.)

उ०—१ उण हुकम दियौ हीज थो, ने जेठवं काठियां भेळा हुयनै कह्यौ—ओ आपणी धरती मांहे मांडां आय पैठी।—नैणसी

उ०—२ पिण जाड़ेची कहै—थे म्हारौ कुस्वारथ करो छौ। पिण मांडां राखी।—नैणसी

उ०—३ सेवट वांनै मांडांणी वहीर करिया। साथै कोई संभाळ घाली नीं कोई बींदड़ी।—फुलवाड़ी

मांडियौ—१ देखो 'मांडौ' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'मांडी' (अल्पा., रू. भे.)

मांडियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ लिख कर दिया हुआ, लिखा हुआ. २ विस्तार से कहा हुआ, वर्णन किया हुआ. ३ प्रारंभ किया हुआ, शुरू किया हुआ. ४ रचना किया हुआ, निर्मित, बनाया हुआ. ५ स्थिर किया हुआ, स्थापित किया हुआ, टिकाया हुआ. ६ सजाया हुआ, सुसज्जित किया हुआ, शोभित किया हुआ. ७ चित्रित या चित्रांकित किया हुआ. ८ शृंगार किया हुआ. ९ चिन्हित किया हुआ, निशान बनाया हुआ, अंकित किया हुआ मंडित किया हुआ. १० दृढ़ किया हुआ, रोपा हुआ. ११ ठाना हुआ, निश्चित किया हुआ. १२ कुछ किया हुआ. १३ फैलाया हुआ, पसारा हुआ (हाथ) १४ विस्तार किया हुआ, फैलाया हुआ, छितराया हुआ. १५ सृष्टि किया हुआ, सृजन किया हुआ, रचा हुआ. १६ कुछ उठाने, ग्रहण करने या वहन करने के लिये तैयार या प्रस्तुत किया हुआ. १७ जमाया हुआ, स्थिर किया हुआ. १८ व्यापार के लिये किसी स्थान पर माल लेकर बैठा हुआ. १९ प्रबन्ध, व्यवस्था या आयोजन किया हुआ. २० व्यक्त किया हुआ, जतलाया हुआ, दिखाया हुआ. २१ विचारा हुआ, सोचा हुआ. २२ जोड़ा हुआ, एकत्र किया हुआ, संगठित किया हुआ. २३ कसा हुआ, बांधा हुआ. (चार जामा) २४ कायम किया हुआ. २५ सम्बन्ध जोड़ा हुआ, मिलान कराया हुआ, संलग्न कराया हुआ. २६ किसी के सहारे खड़ा किया हुआ, सटाया हुआ, टिकाया हुआ. २७ प्रसिद्ध किया हुआ, प्रतिष्ठित किया हुआ. २८ रखा हुआ. २९ कार्य करने की स्थिति में लाया हुआ. (यंत्र) ३० उठाया हुआ, संधान किया हुआ, उद्यत किया हुआ. (शस्त्र) ३१ जबरदस्ती किया हुआ. ३२ देखो 'मंडियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मांडियोड़ी)

मांडियौ–सं० पु०—१ विवाह में कन्या पक्ष का व्यक्ति।

२ देखो 'मांडौ' (अल्पा., रू. भे.)

रू० भे०—मांढियौ।

मांडी–सं० स्त्री० [सं० मण्डिका] १ एक प्रकार की रोटी विशेष, बाटी।

उ०—१ परीसण हारि नहीं आकुली, अखंड मांडी सउंतल्यां सेवआं प्रभृति पक्वांन्न परीस्यां।—व. स.

उ०—२ मूक्यां नव नव परिसालणां, मूंक्यां सरहां घी अतिघणां। मूंकी मांडी सुरकी सेव, मूंकी खीर खांड घ्रत सेव।
—हीरांणंद सूरि

२ दूध की मलाई। (उ. र.)

सं० पु०—३ विवाह में वधू पक्ष का व्यक्ति।

रू० भे०—मांडही, मांढ़ी।

४ देखो 'मांड' (रू. भे.)

मांडूक–सं० पु० [सं०] भृगु कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

मांडूकायनि–सं० पु० [सं०] एक आचार्य जो मांडव्य नामक ऋषि का शिष्य था। इसके शिष्य का नाम सांजीवी पुत्र था।

मांडूकायनीपुत्र–सं० पु० [सं०] एक आचार्य जो मांडूकी पुत्र नामक ऋषि का पुत्र था।

मांडूकि–सं० पु० [सं०] एक ऋग्वेदी श्रुतर्षि।

मांडूकीपुत्र–सं० पु० [सं०] एक आचार्य, जो शांडिलीपुत्र नामक आचार्य का पुत्र था।

मांडूकेय–सं० पु० [सं०] १ एक आचार्य समूह, जो ऋग्वेद पाठ की एक विशेष शाखा का प्रणयित्ता माना जाता है।

२ एक आचार्य, जो मंडूक नामक महर्षि का पुत्र था।

मांडूक्य–सं० पु०—एक उपनिषद।

मांडे, मांडेई—देखो 'माडां, माडांणी' (रू. भे.)

उ०—जोगियां २ नूं घणौ हठ करनै ले गया, ऐ कहै म्हे नहीं हालां पिण मांडे लेगया।—नैणसी

मांडेतियौ, मांडेती–सं० पु०—विवाह में कन्या पक्ष का व्यक्ति। (वरदा)

रू० भे०—मांडैती।

मांडै—देखो 'माडां, माडांणी' (रू. भे.)

मांडैती—देखो 'मांडेती' (रू. भे.)

मांडोणी—देखो 'माडां, माडांणी' (रू. भे.)

उ०—गळा में अटक्योड़ा सोगरा रा टुकड़ा नै पांणी रा घूंट साथै उतार नै मांडोणी हंसतो-हंसतो चौधरी बोल्यौ—दुनिया में सब रोगां री दवा है पण वेम री ओखद कठैई कोयनी।—रातवासौ

मांडोणौ, मांडोवौ—देखो 'मांडणौ, मांडबौ' (रू. भे.)

उ०—देहरौ देवी स्री खीवजजी रौ, सिखरबंध। सहर सूं कोस ०॥ दिखण नुं कदीम। सहर मांडोयौ तरै छै।—नैणसी

मांडौ–सं० पु० [सं० मण्डप] १ विवाह के लिए बनाया हुआ मण्डप।

२ विवाह में वधू का पक्ष।

३ विवाह के अवसर पर कन्या के नातेदारों आदि के ठहरने का स्थान जहां विवाह का मंडप आदि रचाया जाता है।

४ शिकार का मचान।

५ कच्चे दूध की साडी।

६ देखो 'मंडको' (रू. भे)

उ०—१ खांड मांडा, पूरण मांडा, कुरकुरा मांडा, पत्रवेटीया मांडा, आकासीआ मांडा, आछा मांडा, खाटउं चूरिमउं, गुलिउं चूरिमउं, प्रधांन पनोळी······ ।—व. स.

उ०—२ जलेबी हेसमी, वारू पडसूधी तणा आछा मांडा लगर नहीं खांडा······ ।—व. स.

७ देखो 'मूंडो' (रू. भे.)

रू० भे०—मंड, मंडवो, महडो, मांडवु, मांडवो, मां'डह, मांडही, मांहंडो, मांहडो, मांढ़वो, मांढो।

अल्पा०—मांडवड़ो, मांडहड़ो, मांडियो, मांढवड़ो, मांढहड़ो, मांढहूड़ो, मांढियो।

मह०—मांड।

वि०—१ खिन्न, उदास, मलीन।

उ०—सो नीराठ मांडो आंख्यां मांही आंसूं पड़ै, तो नापो दिलासा दिन्ही।—नापै सांखले री वारता

मांढ—देखो 'मांड' (रू. भे)

मांढवड़ो—देखो 'मांडो' (अल्पा., रू. भे.)

मांढवो—देखो 'मांडो' (रू. भे.)

मांढहड़ो, मांढहूड़ो—देखो 'मांडो' (अल्पा., रू. भे)

उ०—१ होय रंग हबोळोय मांढहड़ो, वळियो जववास हमें वनड़ो।
—पा. प्र.

उ०—२ मिळ देखत जांनिय मांढहूड़ो, असवर सुं केसर आवतड़ो।
—पा. प्र.

मांढहो—१ देखो 'मांडो' (रू. भे.)

उ०—पाटण 'सीह' अचळ परणिया, 'मूळा' तणै मांढहै माल।
भाटी तणी कमंध घट भांजे, सग तणो अरधंगो साल।
—रावसीहा री गीत

मांढां, मांढांणी—देखो 'माडां माडांणी' (रू. भे.)

मांढियो—१ देखो 'मांडियो' (रू. भे.)

२ देखो 'मांडो' (अल्पा., रू. भे.)

मांढी—देखो 'मांडी' (रू. भे.)

मांढो—देखो 'मांडो' (रू. भे.)

उ०—१ हुय हयकंप कंपै मन 'हाजन' उद्रक भ्रमंक चमंक उर।
मीर घड़ा कूमारी मांढै, अणपरणी लसीयो असुर।—दूवो

उ०—२ बात मानली लंपै बांढां, नीत बिगाड़ी निलजां नांदां।
मिलगी जोड़ी जांनां मांढां, ढेढ कह्यो ज्यूं सुणियो ढांढां।—ऊ. का.

मांण—सं० स्त्री०—१ शराब की भट्टी।

उ०—सोरठ मांण प्रमांण, रस घोटीजै रागां तणां। मेहूड़ा गुड़ै प्रमांण, रूप देख रचियै घणां।—बींजासोरठ री बात

२ देखो 'मांन' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ कवी लेह जे राचिया रेह कूदै सजै डांण लंबा अगां मांण सूदै।—वं. भा.

उ०—२ जिकै सूर ढीला जरद, ऊबड़ही आरांण। मूंछ अणी भूहां मिळै, मुंहगो राखै मांण।—बां दा.

उ०—३ थिर ते राजस्थांनं, महि इक छत्र भोम सामरथं। एकै आंण अखंडं, खंडण मांण प्रांण नव खंडं।—रा रू.

उ०—४ आंन्या हुं मेटि अठइ लाइ आई, वात इयइ रउ अउहिज विचार। मांण हवइ मन भंग (तेथ) मरिजइ, सती तणउ बाधक संसार।—महादेव पारवती री वेलि

मांणक—देखो 'मांणिक्य' (रू. भे.)

उ०—१ सो वैरे मांहे सत खणिया आवास छै, हीरा पन्ना मांणक जड़िया छै।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ मिण मांणक आभूखणा पहिरै गहणां। मंगळ गांइणां घमळ घणां।—गु. रू. बं.

उ०—३ करै दांन हित कंत तरै दुज दीन निरंतर। किता चीर मंजीर हीर मांणक जव्वाहर।—रा. रू.

उ०—४ चढिया काज चंचळ, वाळि छूट वैंगाळ। हुरड किहाडा हीर, मांणकै बोर हमीर।—गु. रू. बं.

उ०—५ राधा तेरी मंहदी रो मांणक रंग।—मीरां

२ श्रेष्ठ, शिरोमणि।

मांणकडंड—देखो 'मांणिक्यदंड' (रू. भे.)

उ०—१ रुंड मुंड सै खंड, गुडै गज मांणक-डंड ह। अगनि बांण आरिख, बीज विरखा अह मंडह।—गु. रू. ब.

उ०—२ परबत्त पंग प्रचंडए, मल्हपति मांणकडंड ए। मदमोख सूह महाबळी, सद रूप मेघक सिघळी।—गु. रू. बं.

रू० भे०—मांणिक्यदडउ।

मांणकथंभ—सं० पु०—तेल घाणी का एक उपकरण जो करीब ४ इंच का एक मोटा डंडा होता है और पाट के ऊपर लगा रहता है।

मांणकरूप—सं० पु०—एक प्रकार का घोड़ा।

मांणग—वि०—१ भोग विलास करने वाला, आनन्द लूटने वाला रसिक, प्रेमी।

उ०—१ पोढाड़ै नांद वेद परबोधै, निसि दिनि वाग विहार नितु।
मांणग, मयण एण विधि मांणै, रुखमिणि कंत वसंत रितु।
—वेलि

२ उपभोग करने वाला।

उ०—१ वडो ठाकुर हुवो। वडो दातार, वडो जुंझार, वडो मांणग, जबादिजळहर। पातसाह अकबर कनै घणां दिन चाकरी कीवी।
—नैणसी

उ०—२ धनवंतियां सुणौ कहै 'गोरधन', माया मांणण मोट मन्न। बांटै नहीं आपरै वारै, धारै आंटे किसी धन्न।—गोरधन खीची

३ देखो 'मांणिक्य' (रू. भे.)

रू० भे०—मांणिण।

मांणगर—देखो 'मांणीगर' (रू. भे.)

मांणगाळौ—वि०—शत्रुओं का मान मर्दन करने वाला।

मांणण—सं० स्त्री०—१ उपभोग करने की क्रिया या भाव।

२ स्त्री, औरत।

वि०—१ उपभोग करने वाला।

उ०—कैळासी रौ अंस कमंधज, खटव्रन रौ आधार खरौ। मंडळीकां सर माया मांणण, हैयक खांमंद 'गजन' हरौ।—ओपौ आढौ

मांणणि, मांणणी—सं० स्त्री०—स्त्री-रमणी। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—गाइत्ति एक आप ग्रेह. मांणणीस मंगळं।—गु. रू. बं.

वि०—मान करने वाली, मांनवती।

उ०—के बाळा राइ-कुंअरि, केय मुगधा कुळवंती। के मध्या मांणणी, जिसी सूरज क्रांयंती।—गु. रू. बं.

मांणणौ, मांणबौ—क्रि० स० [सं० मण् या मंड] १ भोगना, संभोग करना।

उ०—१ बादल काळा बरसिया, अत जळ माळा आंण। कांम लगौ चाळा करण, मतवाला रंग मांण।—बां. दा.

उ०—२ मांणीरे मूमल ने रांणौ म्हदरे, माजी जेसांणे री मूमल। हाले नी रे अमरांणें रे देस।—लो. गी.

उ०—३ मिळी अंधेरी रैण सुहेली मोरा गावै मल्हार। राज गहैली रै संग मांणौ, सरस तीज री रात।—रसीलैराज रा गीत

२ आनन्द लूटना, मौज करना, सुख प्राप्त करना।

उ०—१ पोढ़ाड़ै नाद वेद पग्बोधै, निसि दिन वाग विहार नितु। मांणण मयण एण विधि मांणै। रुखमिणि कंत वसंत रितु।—वेलि

उ०—२ दखिण दिसा मलयाचळ पहाड़ रौ पवन वाजिओ छै सीत मंद सुगंध गति पवंन मतवाळा मैंगळ ज्यां परिमल झोला खावतौ वहै छै। अढ़ार भार वनसपती मकरंद फूलादि रा रस मांणतौ थकौ वहै छै।—राजानराउत री वात

३ ऐश्वर्य भोगना, सुख भोगना।

उ०—जोधांणौ जिण वार, दळ मांणै राजा 'अजौ'। आसीसे अणपार, जस खट व्रन्न 'जसराज' उत।—सू. प्र.

४ द्रव्य लुटाना, दान देना।

१ मांणी मता छतां मही मंडळ, मता न मांणी जिता मुआ।
—गोरधन खीची

उ०—२ दत्त देता धन मांणतां, जगि सुणतां जसवास। वसुधा इण पर वौळिया, नवकोटी खट मास।—गु. रू. बं.

५ रखना।

उ०—नारद ही देखे पग नमियौ, गेम घणां भगतां रौ गमियौ। प्रांणी मांणै पाव महेसुर, पगां तणी दे सेव प्रमेसर।—पी. ग्रं.

६ करना।

उ०—साचैला हित्यारा झूठ बोलनै आज दिन तांई मौजां मांणै है।
—फुलवाड़ी

७ देखो 'मांनणौ, मांनबौ' (रू. भे.)

उ०—सांमंतां कहियौ—जवनेस सूं तोड़ि चहुवांण सूं बिगाड़ करण में आपरौ बिचार नीतिरा लस बिनां जांणियौ तथापि साहसरै साथ असूयारै अनुचर आपरौ ही आदेस प्रबळ मांणियौ।—वं. भा.

मांणणहार, हारौ (हारी), मांणणियौ—वि०।

मांणिओड़ौ, मांणियोड़ौ, मांण्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मांणीजणौ, मांणीजबौ—कर्म वा०।

मांणतुंबौ—वि०—मानहीन, मान भंग।

उ०—भामी हुवां तुझ वाह तु मे दासा हुंसी भूप, भड़ा की समरथां मिटै काल कूट मांही। न राजी खगेस आमै धूड़बी ईसांण नाग, मांणतुंबौ होय पैठौ बंबी कोट मांहू।
—उम्मेदसिंह सिसोदिया रौ गीत

मांणदुजोधण—वि०—दुर्योधन के समान मान या गर्व रखने वाला।

मांणनिसूरण—वि०—वैरियों का मान मर्दन करने वाला। (जैन)

मांणभंग—वि०—अपमानित या तिरस्कृत।

मांणयड़—देखो 'मणियड़' (रू. भे.)

उ०—कर धूंकळ घर कज्ज, सकत दाखवे सवाई। मध मांणयड़ राड़द्रहि, करे छेहली लड़ाई।—रा. रू.

मांणव—देखो 'मांनव' (रू. भे.)

उ०—कय दांणव मांणव नरिंद।—स. कु.

मांणस—सं० पु० [सं० मनुष्य] १ मनुष्य, आदमी, मानव।

उ०—१ ताहरां विसोढै रै साथै राजा मांणस दिया। विसोढौ मूळू रै गांम गयौ। मूळसूं मिळियौ।—नैणसी

उ०—२ मांणस हुवां त मुख चवां, म्हें छां कूंझड़ियांह। प्रिउ संदेसउ पाठविसु लिखिदे पंखड़ियांह।—ढो. मा.

उ०—३ पूठै मांणस गया, धणौ ही कहियौ पण रहियौ नहीं।
—अमरसिंह राठौड़ री बात

२ परिवार, कुटुम्ब।

उ०—तिण समै किणहीक कह्यौ पातसाह नूं,—चारण वीर धवळ लांगड़ियौ, औ पातसाही मुलक में रहै छै। इण सूं जेसौ धणी मया करै छै। औ वडौ कवीसर छै। इणसूं जेसौ निपट कावौ छै। सु इण रा मांणस वेटा बंद करौ।—नैणसी

अल्पा०—मांणसियौ।

३ स्त्री, औरत।

उ०—१ मांसण भला रहउ वन मांहि, कहउ नहीं तप करउ किम। पूछइ तरइ बांमण परमारथ, जांणणहार अजांण जिम।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ अरु अमरसिंघजी रै लारै रांणी सती हुई। बाकीरी मांणस वा पदमां तथा साथ बीकानेर आया।—द. दा.

४ पत्नी, अर्द्धांगिनी।

५ दासी, परिचायिका।

उ०—१ तद मांहै सुं मांणस तेड़ण नै आई। हाथ जोड़ केहण लागी—महलां पधारीजै।—कल्यांणसिंघ वाढेल नगराजोत री बात

उ०—२ तद मांणस बोली—थे मोनै सांवरतक कह्यो थो सो तू ठाकुरां नै तेड़े ले आव।—राजा रा गुर रा बेटा री बात

६ पुत्र वधू। ७ जीवात्मा, जीव, प्राणी।

उ०—आभ-विहूणां मांणसां, है घर भेलण हार। धरणी धर धर छंडियां, अच्छे तूं आधार।—ह. र.

८ देखो 'मांनस' (रू. भे.)

मांणसखांणी-वि० स्त्री०—नर भक्षी, मनुष्य भक्षणी।

उ०—तरै कंकाळी कह्यो, हूं कोई मांणस-खांणी न छूं, भिक्षुक छूं दीधो लूं छूं।—जगदेव पंवार री बात

मांणसर, मांणसरोवर—देखो 'मांनसरोवर' (रू. भे.)

उ०—१ तिण स्रोण वदन कीयो तिलक, सुकरां स्रोण बंबाळियो। 'खूमांण' तणौ रिण मांणसर, अछरि हंस वरमाळियो।—गु.रू. बं.

उ०—२ कडि लंछण केहरी, जंघ जांणै जाळंधर। राइ-आंगण गति क्रमति, हंस किरि मांण-सरोवर।—गु. रू. बं.

मांणसाचार—देखो 'मिनखाचार' (रू. भे.)

मांणसियो-सं० पु०—१ आंख की पुतली।

उ०—दूजो दीवौ जुपायनै सेठां री मूंडो जोयो वांरो बाको फाटोड़ो हो, आंख्यां रा मांणसिया फिरियोड़ा हा।—फुलवाड़ी

२ आंख में प्रतिबिंब स्वरूप किसी पुरुष की आकृति देखने वाला।

३ देखो 'मांणस' (अल्पा., रू. भे.)

मांणातूंबो-वि०—अपमानित, मानहीन।

मांणिक—देखो 'मांणिक्य' (रू. भे.)

उ०—'हरीया' जो कुछि वखत में, पाट पिछोरी त्यार। वखत विना न पाईये, मांणिक भरया भंडार।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मांणिकमाळा-सं० स्त्री [सं०-मांणिक्यमाळा] लाल नामक रत्नों की माला।

मांणिक, मांणिक्क, मांणिक्य-सं० पु० [सं० मांणिक्य] १ लाल रंग का एक रत्न, पद्मराग।

उ०—१ पन्नास लाल मांणिक अपार, धवि जांणि जवाहर सघण धार।—सू. प्र.

उ०—२ सरस्वती आगलि कुल पढीयइ, अम्रत कउणि कढीइ, मांणिक कउणि वीकीइ, मोती कउणि छडीइ, निरगुण कउणि वंदीइ"""।—व. स.

उ०—३ अति किमति हीर उदार, मांणिक्क लाल मंझार। सझि सीप ओपति सिंध, बड वार मुकत अबिध।—सू. प्र.

उ०—४ सुगंधपणापूरी इसी कस्तूरी, मनोहर मांणिक्य, मनोरथ रूडां रत्न, अनेकि विदेसी वस्तु, इसिउं व्यवहारिया तणउं भवन।—व. स.

२ मांणिक्य रंग से मिलते जुलते रंग का घोड़ा।

३ घोड़े के चोटी के नीचे की भौंरी।

४ इस भौंरि वाला घोड़ा। ५ एक प्रकार का केला।

वि०—लाल।

रू० भे०—मांणक, मांणग, मांणिक, मांणिग, मांनक।

मांणिक्यदंडउ—१ एक प्रकार का हाथी।

उ०—१ अथ हस्ती, त्रिदंडगलित त्रिपाटप्रसरित भद्रजाती दक्षिणदंडउ मांणिकदंडउ मूलचक्र वनचक्र, तिसोता पाटिलागउ झरइ"।

—व. स.

२ हाथी।

रू० भे०—मांणकदंड।

मांणिक्यप्रस्तारिका-सं० स्त्री०—एक व्रत विशेष।

उ०—१ ग्यांनपंचमी, मुकुट सतमी, मांणिक्यप्रस्तारिका, निक्रमणतप, वर्द्धमानतप,"""।—व. स.

उ०—२ मांणिक्यदंडउ हस्ती, खुरसांणिउ घोडउ, मुरस्थली नउं उंट दंडाहि नउ बलद"""।—व. स.

मांणिग—१ देखो 'मांणग' (रू. भे.)

उ०—परि जिम धरणि धरै पीढंती, पिड़ तिम रिण पौढ़ै खग पांणि। माडेचौ जीवतौ मांणिग, मांणिग गयौ बिन्है कळि मांण।

—सुरतांण मांनावत रौ गीत

२ देखो 'मांणिक्य' (रू. भे.)

मांणिगर—देखो 'मांणीगर' (रू. भे.)

उ०—जैपर रजवाड़ा रा मांणिगर हाथी सगळा मुलक में चावा है।

—फुलवाड़ी

मांणियोड़ो-भू० का० कृ०—१ संभोग किया हुआ, भोगा हुआ.

२ सुख प्राप्त किया हुआ, आनन्द लूटा हुआ, मौज किया हुआ.

३ द्रव्य लुटाया हुआ, दान दिया हुआ. ४ ऐश्वर्य भोगा हुआ, सुख भोगा हुआ. ५ रखा हुआ।

६ देखो 'मांनियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० मांणियोड़ी)

मांणिस—देखो 'मांणस' (रू. भे.)

उ०—ताहरां रजपूत बोलीया—राज सवा लाख री मांणिस कहीजै। सवा लाख री मांणिस कराइ नै जीभ काटाड़ीजै।

—लाखा फूलांणी री बात

मांणी-वि०—१ मान वाला।

२ वीर।

मांणीगर-वि०—१ वैभव को भोगने वाला, उपभोग करने वाला।
उ०—१ एक एक सूं आगळा, रांणां ऊमरकोट। प्रकट हुवा पर मारवै, मांणीगर मन मोट।—बां. दा.
उ०—कांम जती सूर सौम, भूपतीस सुती काहा, बिप्र रुद्र तती ब्रन हुयौ जीप बार। मांणीगर छरती ग्रांमती जो सुरंगी काहा, सोहियौ भ्रांमती रायजादां रौ सींगार।—सनमांनसिंह हाडा रौ गीत
२ संभोग करने वाला, भोगने वाला।
उ०—लोरां सांवण लूंबियौ, धोरां घण घरराय। मांणीगर रंग मांण अब, प्याला भर मद पाय।—अग्यात
३ आनन्द लूटने वाला, मौज करने वाला, रसिक।
उ०—दिन दुलहां मांणीगरां इण गढ़ रा धणियांह। आंणी सींगल दीप सूं, पेखै पदमणियांह।—बां. दा.
४ दानी, उदारचित्त, दातार।
उ०—१ बैठा कीकर सो बुधा कव उदम करांणां, मांणीगर म्यांरांम की घर बात धरांणां।—मयरांमदरजी री बात
उ०—२ मांणीगर धन कुणी, कुणी मन री घर माया।
—अरजुणजी बारहठ
५ स्वाभिमान वाला, मान वाला।
उ०—तिण रै एक रामदत्त नांम बरस बीस रौ बेटौ, मोटियार सयांणौ मांणीगर।—साहरांमदत्त री वारता
सं० पु०—हाथियों की जाति विशेष।
रू० भे०—मांणगर, मांणिगर, मांनगरौ।

मांणेतण—देखो 'मांनेतण' (रू. भे.)
उ०—हे उठौ मांणेतण खोलौ कोथळी। हे थांरी सासू-नणद नै ओढाव, हे म्हांनै घणी ए सुवावै जच्चा पींपळी।—लो. गी.

मांणेराव—देखो 'मांणीगर'।
उ०—लूटो सांमांन भंडारां वार पारां डांणेराव लागो, सोभा आंणेराव खूटौ खजांनां सचूप। तणी बांध सांम घटा मौजां मांणेराव तूटो, रांणै राव रूपा धार बूटो यंद्र रूप।—महादांन महडू

मांणौ-सं० पु० [देसज] १ अनाज आदि का एक तौल या परिमाण विशेष जो मन का आठवां भाग होता है।
२ उक्त तौल के बराबर अनाज मापने का एक पात्र।
३ गर्व, मान।
उ०—धीर जो लज मांणौ, अवसांण मैं सिध अण भंगौ। पौरस पराक्रमो, सूरांणै सपत चिह्नांनि।—गु. रू. ब.
सर्व०—मेरा, अपना।

मांत—देखो 'मौत' (रू. भे.)
उ०—राति विढियौ इसी भांति नरवै रयण, सम-समी मार देतौ सबांही। तेण उदमादियौ चंद कमधां तिलक, मांत मांदौ थियौ सूर मांही।—गु. रू. बं.

मांत्रिक-वि०—मन्त्र साधना करने वाला, जिसको मन्त्र सिद्धि प्राप्त हो चुकी हो।
उ०—सूयकार चक्षक नरवैद्य गजवैद्य तुरगवैद्य व्रक्षभवैद्य मांत्रिक तंत्रिक गाडरिक⋯⋯।—व. स.

मांद-सं० स्त्री० [सं० मान्द्य] १ मन्दा होने की दशा, अवस्था या भाव।
२ अस्वस्थता, बीमारी, रूग्णता।
उ०—१ भूख अर तिरस रै बिनाई घणां डर है। जंगळी जिनावर, साज मांद अर बिच्छू-कांटां रा केई घया है।—फुलवाड़ी
उ०—२ मावड़ियां तन मेंणरा, मिटै कदै नह मांद। मावड़ियां हूळा मरद, चूला हुंदा चांद।—बां. दा.
३ पीड़ा, दर्द। (अ. मा., ह. नां. मां.)
[फा०] ४ हिंसक जानवरों के रहने का विवर, खोह, गुफा, शेर की मांद।
[स०] ५ रवि या चंद्र सम्बन्धी ग्रहों की नीचोच्च या मंदोच्च गति।

मांदउ—देखो 'मांदौ' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—वळतउ पूछइ बात विवेक, लगन विचई थायइ दिन एक। पंथइ वहतां मांदउ पड़चउ, तिणि कारणि मोडउ आवड्यउ।
—ढो. मा.

मांदगी-सं० स्त्री० [फा० मांदगी=सं० मांद्य] १ बीमारी, रोग, अस्वस्थता।
उ०—१ एक तौ सेठांणी री मांदगी में वौ उणरा हीड़ा घणा करिया, दूजौ सेठां नै वौ होणहार अणूंतौ लखायौ।—फुलवाड़ी
उ०—२ मिनख जनम ही पायनै, आउखौ ओछौ थाय रे। रोग मांदगी लागी रहै, तब धरम कियौ कांई जाय रे।—जयवांणी
क्रि० प्र०—आंणी, लागणी।
२ उदासी, सुस्ती। ३ थकावट।
४ मंदापन, फीकापन।
रू० भे०—मंदवाड़, मंदवाड़ि, मंदवाड़ी, मंदीवाड़, मांदवाड़, मांदीवाड़। मह०—मंदीवाड़ौ, मांदीवाड़ौ।

मांदळ-सं० स्त्री०—एक प्रकार अवनध वाद्य विशेष।
उ०—जन-जन के उठ पीछै लागै, घर घर भरमत डोलै। ता थैं दादू खाइ तमावै, मांदळ दुहु मुख बोलै।—दादूबांणी
२ देखो 'मांदौ' (मह., रू. भे.)

मांदळियौ—देखो 'मादळियौ' (रू. भे.)
उ०—भाठा जितरा देव पूज्या, राखड़ी मांदळिया ई कराया, गांव रा गुरांसा खनै इलाज ई करायौ अर जोधपुर जाय'र डाक्टरां री छाती में रुपिया ई बाळिया पण गरज कांई सजी कोयनी।
—रातवासौ

मांदलियौ—देखो 'मांदौ' (अल्पा., रू. भे.)

मांदवाड़, मांदीवाड़–सं० स्त्री० [सं० मन्द्य-वर्त्ति] १ बीमारी, अस्वस्थता, रुग्णता। २ थकावट, उदासी।

रू० भे०—मंदवाड़, मंदवाड़ी, मंदीवाड़, मांदगी।

मांदीवाड़ौ—देखो 'मांदगी' (रू. भे.)

मांदौ–वि० [सं० मान्द्य] (स्त्री० मांदी) १ बीमार, रुग्ण, रोगी, अस्वस्थता।

उ०—तद रायसिंघजी दिली सागै पधारिया। तठै मालम हुई कै करमचंद मांदौ घणौ छै।—द. दा.

उ०—२ मुवा जीवै मांदा सरन, लहि आंधा चख लहै। तुहै आता तोभी संकट, तव धोभी किम सहै।—मे. म.

उ०—३ तांदी धाया गच्छतति, मांदी काया मेल। चांदी खाया नह चडै, बांदी जाया बेल।—ऊ. का.

उ०—४ आं हरख अर उच्छब रै दिनां में ई कुशोग री बात कै चिड़ी मांदी पड़गी।—फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—पड़णौ, होणौ।

२ थका हुआ।

३ उदास, सुस्त।

उ०—राति बिढ़ियौ इसी भांति नरवै रयण, सम समी मार देतौ सवांही। तेण उदमादियौ चंद कमंधा तिलक, मांत मांदौ थियौ 'सूर' मांही।—गु. रू. बं.

रू० भे०—मांदउ।

अल्पा०—मांदळियौ। मह०—मांदल।

मांधाता—देखो 'मांनधाता' (रू. भे.)

मांन–सं० पु० [सं० मान] १ प्रतिष्ठा, इज्जत, सम्मान, गौरव।

उ०—१ महा दिय मांन करी गुह मीत, तारै सह कीर कुटुंब सहीत।—ह. र.

उ०—२ जैसलमेर रा रावळजी अर सगळा सिरदार घणै मांन सूं कह्यौ कै आं सुदांमा रा चावळां नै आप आदर सूं कबूल करौ। —फुलवाड़ी

क्रि० प्र०—करणौ, खोणौ, पाणौ, मिळणौ, होणौ।

२ आदर, सत्कार, स्वागत।

उ०—वइरी ही जउ हवइ घरे आवइ, आदर तिहां कीजइ अग्यांन। बाप हुंती बीहती न बोलइ, माता ही दीयइ तुछ मांन। —महादेव पारवती री वेलि

क्रि० प्र०—करणौ, देणौ, होणौ।

३ अहंभाव, स्वाभिमान।

४ गर्व, अहंकार, मद।

५ स्त्रियों के रूठने की क्रिया या भाव, क्रोध।

६ आकार, आयतन, प्रमाण।

उ०—जरै साह भी सैंतीस हजार सेना भेजी, जिकण रा समुद्र में मेहवा रौ मांन बहित्र विधांन बूंलियौ।—वं. भा.

७ सामर्थ्य, शक्ति।

उ०—मिनखां घणौ न मांन, मांन रहै हेकण मनां। जीतौ जुध जापांन, रूस तणौ बल राजिया'—फतैकरण उज्जवल

८ किसी वस्तु का भार, तौल, मात्रा या परिमाण।

९ किसी चीज को मापने का साधन, पैमाना।

१० प्रमाण। ११ अपने व्यक्ति को भूल करते देख मन में होने वाला विकार, गिला।

१२ ढोल, तबले आदि साज पर किया जाने वाला वह आघात जो सम, अल्प विराम या पूर्ण विराम का द्योतक होता है। (संगीत)

१३ एक राठौड़ राजा।

उ०—पुत्र स्रीपुज ३२, पुत्र मांन राजा ३३, पुत्र नमुचि······। —रा. वं. वि.

१४ एक मंत्र। १५ ग्रह।

१६ उत्तर दिशा का एक देश। १७ मनुष्य, आदमी।

वि०—समान।

रू० भे०—मांण।

अल्पा०—मांनौ।

मांनक—१ देखो 'मांणिक्य' (रू. भे.)

२ देखो 'मांनुस' (रू. भे.)

मांनकौ—१ देखो 'मांनखौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मांनुस' (अल्पा, रू. भे.)

मांनख—देखो 'मांनस' (रू. भे.)

उ०—तौ सुरसरी तरंग, कूंची सरग कपाट री। ऐथ पखाळै अंग, जग में धिन मांनख जिकै।—बां. दा.

अल्पा०—मांनकौ, मांनखौ।

मांनखाचार—देखो 'मिनखाचार' (रू. भे.)

मांनखी—देखो 'मांनवी'।

उ०—कारज सुरां करण किय क्रीला। लीला समंद मांनखी लीला। —सू. प्र.

मांनखौ–सं० पु० (ब. व.) [सं० मानवः] १ जनसमूह, जनसमुदाय।

उ०—१ अठी नै राजा रौ औ कैं'णौ व्हियौ अर उठीनै राज दरबार रै सांमी अड़वड़तौ बेसुमार मांनखौ अेकण सागै जोर सूं पुकार करी।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजा रै मीट लग मांनखौ ई मानखौ निजर आवतौ। —फुलवाड़ी

रू० भे०—मांनकौ।

२ देखो 'मांनुस' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ इस्तूखां रौ औ हठ देखनै लक्खी बिणजारा नै पक्कौ विस्वास व्हैगौ कै इण गूदड़िया भेख में औ कोई विरळौ ई मांनखौ है।—फुलवाड़ी

उ०—२ रोळ अ‍ैंड़ै डफोळ, डावाडोळ में रह्यौ। मांनखौ अमोल, गोळ मोळ में रह्यौ।—ऊ. का.

अल्पा०—मांनख।

मांनगरौ—देखो 'मांगणगर' (रू भे.)

उ०—सो केसरीसिंहजी पण इसा दातार मांनगरा हुवा। बडा-बडा परवाड़ा दखिण में किया।—महाराज पदमसिंह री बात

मांनग्रह-सं० पु० [सं० मान-ग्रह] स्त्रियों का कोप भवन।

मांनचित्र-सं० पु० [सं० मानचित्र] किसी स्थान का नक्शा, चित्र।

मांनण-सं० स्त्री०—१ मानने या स्वीकार करने की क्रिया या भाव।

उ०—पण वा बात किणी रै मांनण में आवै जैड़ी नीं ही।
—फुलवाड़ी

२ स्वीकृति।

उ०—अर आपरी रजपूतां उपेत पाहुणां नूं तौ मांनण री दुंदुभी दिरायवाइ बडे वेग सांम्हो चलायौ।—वं. भा.

मांनणौ, मांनबौ-क्रि० स० [सं० मानं] १ स्वीकार करना, मंजूर करना।

उ०—१ थियो सदय सुण निज थुई, टीटभ हुन कसांन। उण रा बाळ उबारिया, महामंत्र जस मांन।—बां. दा.

उ०—२ जठै नरेस १ नवाब २ हूं कहियो आपणैं आवतां अकबर ३७। १ रो आदेस इसड़ो हुवो सो बूंदी १ रै एवज ओर स्थांन २ लेर चाकरी करणी न मांनै तो दूदा नै पकडि आंणो।—वं. भा.

उ०—२ ईसुरी छाक ऐराक आरोगता, चोगता दया द्रग कुसळ चाता। प्रसन चित थाय पहराय माळा पुहप, मांनली भूपरी बिनय माता।—मे. म.

उ०—४ सेठ बिणज में ऐड़ो मन लगायो के पांचूं बेटा वांरै सांमी हार मांनग्या।—फुलवाड़ी

२ ध्यान देना, गौर करना।

उ०—१ रांणी कैवण लागी—आप तौ मांनौ नी हौ, पण म्हनै काच में दीसै ज्यूं साफ दीसै के कंवरां नै मारण रो हुकम सुणतां ई सगळी नगरी में लाय लाग जावैला।—फुलवाड़ी

उ०—२ मंत्र बसीकर मांनजै, बांणी रस बरसंत। सरसुति बीणां प्रगट सुर, कोयल लाज करंत।—बां. दा.

३ किसी के कहने या समझाने पर ठीक मार्ग पर चलना, अनुकूल आचरण करना।

उ०—१ अरज करी प्रभु सूं इम अंगद, छळबळ कर समझायौ छांनै। कंटक न मांनै हेत कियां सूं, मोटी डंड दियां सूं मांनै।
—र. रू.

उ०—२ पण ऊंदरी किण री सीख मांनै उण नै तो बोछरड़ायां री साव लाधोड़ी हो।—फुलवाड़ी

४ मन में किसी प्रकार की धारणा बनाना।

उ०—१ करहे असवारी कियां, सोना हरणी संग। उण ढोला ज्यूं आंपरो, ढोलो मांनै ढंग।—बां. दा.

उ०—२ पण जे मिनख खुद खोटौ अर कूड़ो व्हियो तौ वो आं पदारथां नै अमोलक, खरा अर साचा मांनैला।—फुलवाड़ी

५ किसी धर्म या ईश्वर को मानकर चलना, आस्था रखना, मानना, धारण करना।

उ०—१ भगवांन ने मांनण वाळा सगळा ई किसा एक सरीखा है। भगवांन नै मांनण वाळो एक तो राजा बणियोड़ो है अर दूजै कांनी उणी नै सिवरण वाळा भूखां मरता मरै।—फुलवाड़ी

उ०—२ तिको सोम जिसा राजा चंद्र उपासीक मुसलमांन हुवौ। तिण रो केड मुसलमांन चंद्रमा नै मांनै छै।—रा वं. वि.

उ०—३ बोलै बंधव रूपसी, बोलै मोकमदास। तज अवसांण विलास पद, को मांनै भ्रम जास।—रा. रू.

६ ग्रहण करना, अंगीकार करना, स्वीकार करना।

उ०—१ वैरी रा मीठा वचन, फळ मीठा किंपाक। वे खाधां वे मांनियां, हुआ कतांत खुराक।—बां. दा.

उ०—२ बदियौ जदि रणमस्त बहु, मांनि कंवर सो वैण। बिण रण हालो धाम बणि, अप्पण पावण ऐण।—वं. भा.

उ०—३ चिड़ो कह्यौ—जद आप मैं'ल छोडनै जावो तो पछै म्है किण रै भरोसै रै'वां। म्है दोनूं ईंडां समेत आपरै साथै चालस्यां। राजकंवर उणरी बीणती मांनली।—फुलवाड़ी

उ०—४ हवा रा तेज झोला सूं नींबड़ा रा छिंबरा हिलिया जांणै वो वांरी कांमना मांनली है।—फुलवाड़ी

७ खुश होना, राजी होना।

८ पालन करना, धारण करना, शिरोधार्य मानना।

उ०—१ मांत तणी आग्या मही, सोहज पूत सपूत। मांत बचन मांनै नहीं, कहिए जको कपूत। मांत वचन ध्रू मांनियो, सारा मिटिया सोक। सारा लोकां सूं सिरै, लाभो अवचळ लोक।
—बां. दा.

उ०—२ बाप रौ हुकम मांनणां में ई बेटां रै सरब सुख अर सरब आणंद है।—फुलवाड़ी

उ०—३ माईतां रो हुकम मांनणौ ई टाबरां रै वास्तै सरब सुख है। माईत सदा टाबरां रो भलो ई चींत्या करै।—फुलवाड़ी

९ समझना, समझा जाना, माना जाना, जानना।

उ०—१ अब आपरै ऊपर महा संकट मांनि एक दीधो तो परमेस्वर दूजो भी देसी ही परन्तु आपदा मे दिल्लीस भी इसो व्याकुळ थियो।
—वं भा.

उ०—२ जाहर जग जीवाड़णो, मांनै दोयण मेह। किण सूं राखै केहरी, सैणांचार सनेह।—बां. दा.

उ०—३ आ काठां चढ़सी अवस, धरणीधर दे धोक। सठ मन मांनै सुधरसी, पातर सूं परलोक।—बां. दा.

उ०—४ दुनियां में आप जैड़ी पराय मांनणी। आपरै जीव रै समांन ई दूजा रो जीव मांनणो।—फुलवाड़ी

उ०—५ करत नहीं रांणा कुंभकन्न, जो तूं बळवंत बाथ जम।
मांनव देव दई मन मांनव कळह कटारी तणौ क्रम।
—महाराणा कुंभा रो गीत

१० किसी विचार, बात या कार्य के लिये सहमत होना, एकमत होना, प्रस्ताव स्वीकार करना।

उ०—१ पांन नै मन उपरांत ई ढगळा रौ कै'णौ मांनणौ पड़ियौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हारौ कै'णौ मांनौ तौ एक भैंस अपांरै ई मोल ले लौ।
—फुलवाड़ी

११ हठ छोड़ना, आवेश छोड़ना, अनुचित हरकत करते रुकना।

उ०—१ राजकंवरी दौड़नै उणरा हाथ खांचिया। खुद मरण री धमकी दी तद वौ मांनियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पिण नरबद जोर चढीयो सु मांनै नही।—नैणसी

१२ विश्वास करना, भरोसा करना।

उ०—१ मांनौ वचन साह सत मेरौ। तुरत करां सब कारज तेरौ।—रा. रू.

उ०—२ चूका वयण मंदार चाढ़तां, सुर नर साहौ मांन अवत्त। भोळै भाव आवियौ भूरो, भोळा संभु तणौ भक्त।—गु. रू. बं.

उ०—३ आपणपउं धन धन मांनती जांण, सिरो मणि प्रिय देखती।—हीराणंद सूरि

१३ कदर करना, महत्व देना, मान्यता देना।

उ०—रांम भणंतां रै! ह्रदा, कह केता गुण होय। ठाकुर मांनै जग नवैं, पिसण न गंजै कोय।—ह. र.

१४ किसी उक्ति या विचार धारा को मानकर चलना।

ज्यूं—सबर रौ फळ मीठौ मांनीजै।

१५ कल्पना करना।

१६ अनुकूल पड़ना, माफिक पड़ना।

उ०—पाळै दळद सेवगां पांणां, दुरंग पालटै 'खुरम हुवै। 'सूजा' हरौ असहतां सालै, हालै मन मांनियौ हुवै।—नाथौ सांदू

१७ सम्मान करना, आदर करना।

१८ दक्ष, पारंगत या निपुण समझना।

१९ पूजा करना, अर्चना करना।

२० प्रभावित होना, कायल होना।

उ०—१ महंतजी ई मांनग्या के ऐड़ो भगत तौ वै आपरी ऊमर में ई देख्यौ नीं।—फुलवाड़ी

उ०—२ इण समझ रै आगै म्हनै हार मांनणी पड़ै।—फुलवाड़ी

२१ प्रतिज्ञा या संकल्प करना।

२२ धैर्य रखना। २३ स्थिर रहना।

मांनणहार, हारौ (हारी), मांनणियौ—वि०।

मांनिग्रोड़ौ, मांनियोड़ौ, मांन्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मांनीजणौ, मांनीजबौ—कर्म वा०।

मनणौ, मनबौ, मांणणौ, मांणबौ, मांनिणौ, मांनिबौ—रू० भे०।

मांनता—सं० स्त्री० [सं० मान्यता] १ मनौती, मन्नत।

उ०—राज कंवर घणी ई मांनतावां बोली पण सुगन चिड़ी तौ आपरी जगा छोडी ई नीं।—फुलवाड़ी

२ प्रतिष्ठा, इज्जत, मान्यता।

उ०—१ कोटरै मुंहडै ठाकुरद्वारौ तठै राखिया ऐ किणही रै घर मांगण न जाय। किण ही सूं घणां बोलै नहीं। इणां री वडी मांनता हुई।—नैणसी

उ०—२ अठी नै डोकरा डोकरी अंजस नै मोद सूं आपरा बेटा रै बारा में बातां करता हा, अर अठीनै ठिकांणा में रैवता तीडा री मांनता दिनो-दिन बधती गी।—फुलवाड़ी

३ श्रद्धा, भक्ति।

उ०—बूंदी मीरांजी जागती पीर है। राव घणीं मांनता राखै।
बां. दा. ख्यात

रू० भे०—मांनितां।

मांनताळ—सं० पु०—मान सरोवर झील।

उ०—अटाटोप वनां री चनणां कीधां मळै अद्र, संभु नळै ऊजळै चचाळै रांणां सैण। दीपै मांनताळ हंसा मंडळी नवास दीधां, कवंदां मंडळी लीदां दुसरा 'कुंभेण'।—कविराजा बांकीदास

मांनतालकार—सं० पु०—एक जाति या वर्ग विशेष।

उ०—उपाध्याय गायन बड़कार आलविणकार वीणाकार वंसकार छतिकार मांनतालकार अडाउजिय पखाउजिय पाटलिहिक प्रमुख राजलोक पौरलोक इति।—व. स.

मांनधाता—सं० पु० [सं० मान्धातृ] युवनाश्व का पुत्र एक सूर्यवंशी राजा।

उ०—सुत युव्वनास सेसट सवेस। निज हुवौ मांनधाता नरेस।
—सू. प्र.

रू० भे०—मांधाता।

मांनध्वज—सं० पु०—एक राठौड़ राजा (ऐतिहासिक)

उ०—अक्रूर राजा रो पुत्र ब्रुधसेन राजा, तिण वधनावर वसायो, रो जससेन ८०, रो मांनध्वज ८१, रो अगनि भूति ८०,।
—रा वं. वि.

मांनमंदिर—सं० पु० [सं०] १ वह एकान्त कक्ष जहां स्त्रियां रूठकर बैठती हैं। कोप भवन।

२ वेध शाला।

मांनराजा—सं० पु०—एक राठौड़ वंशीय राजा। (ऐतिहासिक)

उ०—स्री मंजुराजा रो नमुची राजा, रो मांनराजा।
—रा. वं. वि.

मांनव—सं० पु० [सं० मानवः] १ मनुष्य जाति का एक प्राणी, आदमी, इन्सान। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ जळ जाळ माळ विसाळ नभ जुत उरड़ झड़ अणपार ए। मिटि जळण धरणि विनोद मांनव भूरि सर जळ भार ए।
—रा. रू.

उ०—२ खुधा न भाजै पांणियां, त्रखा न भाजै अन्न। मुकत नहीं हुर नांव बिन, मांनव साचै मन्न।—ह. र.

उ०—३ कारण बिन जगसूं करै, आठ पोहर उपगार। जांणीजै सुरतर जिकै, मांनव लोक मझार।—बां. दा.

उ०—४ 'सूर' तणो सुरसरी तणै सर, मांनव विहूंडिया वजावै मार। रण रेखग भेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिणगार।—गु. रू. बं.

पर्या०—आदम, आदमी, कायाधर, गुणनील, गोध, तनसार, देहतती, धव, नर, ना, नी, पंचजन, पंचीकनी, पुमांन, पुरख, मनुज, मनुस, मरद, मरत, मांनस, मिनख, म्रतलोकी, सुग्यांनी।

२ मनुष्य जाति, वर्ग व समाज।

उ०—बळवंत सेन अति सबळ, सितर पदम हुइ संचरै। बळिराव पयांणो संभळी, सुर मांनव विसहर डरै।—रा. वं. वि.

३ चौदह मात्राओं का एक छन्द इसके ६१० भेद हैं।

४ नाभानेदिष्ठ एवं शार्यात नामक आचार्यों का पैतृक नाम।

५ एक पुराण वेत्ता एवं धर्म शास्त्रकार।

६ अंगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

७ उत्तम मन्वंतर का एक देव विशेष।

वि० [सं० मानव] १ मनु सम्बन्धी, मनु का, मनु से उत्पन्न।

२ मनु के वंशधर।

३ मनुष्य सम्बन्धी, मनुष्य का।

रू० भे०—मंनव, मनव, मांणव, मांनवा, मांनवी।

मांनवती—सं० स्त्री० [सं० मानवती] १ नायक से मान करने वाली नायिका, गर्विता। २ अभिमानिनी स्त्री।

मांनवदेव—सं० पु० यौ०—राजा।

मांनवधरमसास्त्र—सं० पु० यौ० [मानव-धर्मशास्त्र] मनुस्मृति।

मांनवपति—सं० पु० यौ० [सं० मानव+पति] राजा, नरेश।

मांनवसासतर, मानवसास्त्र—सं० पु० यौ० [सं० मानव-शास्त्र] वह शास्त्र या ग्रन्थ जिसमें मानव जाति की उत्पत्ति तथा विकास का विवेचन है।

मांनवा, मांनवी—वि० [सं० मानव] १ मनुष्य की, मनुष्य सम्बन्धी, इन्सानी।

उ०—१ ताहरां हरमाळा कळस ले तळाव गई। जायनै सरब तजबीज दीठी, देखनै पाछी आई, कह्यो—बाइजी छै तो मांनवी बडो डेरो।—पलक दरियाव री बात

उ०—२ कुमेर बोलियो—आगै ही लंकापति रांवण सीता री चोरी करी ले गयो। तरै आप चत्रभुज मांनवी देह धारनै विणासियो।—मा. वचनिका

उ०—३ म्हैं तो इण धरती री मांनवा देह हूं।—फुलवाड़ी

२ मनुष्योचित।

सं० स्त्री०—१ स्वयंभु मनु की कन्या का नाम।

२ परशु एवं इडा नामक वैदिक वाङ्मय में निर्दिष्ट स्त्रियों का पैतृक नाम।

३ देखो 'मांनव' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ मळधारी मांनवी न मूंझइ, कहइ न ब्रह्मा विसन कहइ। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ मांनवियां मन बन महीं, लागी लालच लाय। 'बांका' इण संतोस बिण, बीजै केण बुझाय।—बां. दा.

उ०—३ वीसळदे वाळीह, मत कोई कीजो मांनवी। भेळी कर भाळीह, मांण न जांणी मोतिया।—रायसिंह सांदू

मांनवीय—वि० [सं० मानवीय] इन्सानी।

मांनवेंद्र—सं० पु० [सं० मानव-इन्द्र] राजा, नरेश।

मांनस—सं० पु० [सं० मानस] १ मन की आन्तरिक सत्ता जिसमें विचार, संवेदना या अनुभूति होती है, मन, चित्त, मस्तिष्क। (ह. नां. मा.)

२ हृदय, दिल।

३ संकल्प, विकल्प। ४ कामदेव।

५ विष्णु का एक रूप।

६ ज्योतिर्भास नामक लोक में रहने वाले पितरों का सामूहिक नाम।

७ एक यक्ष जो मणिवर एवं देवजनी के पुत्रों में से एक था।

८ वशवर्तिन देवों में से एक।

९ वासुकी कुलोत्पन्न एक नाग।

१० धृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग, जो जनमेजय के सर्पसत्र में दग्ध हुआ। ११ चर, दूत।

१२ शाल्मली द्वीप का एक वर्ष, देश।

१३ एक राग विशेष। (संगीत)

१४ मानसरोवर झील।

१५ पुष्कर द्वीप का एक पर्वत।

१६ एक लवण विशेष।

१७ मनुष्य, आदमी।

१८ दो मात्राओं का समूह ऽ'। * (छन्द-शास्त्र)

१९ देखो 'मांनसर'।

वि०—१ मन से उत्पन्न, मनोभव।

२ मन से सम्बन्धित।

३ मन से सोचा हुआ, विचारा हुआ।

४ मानसरोवर पर रहने वाला।

रू० भे०—मांणस।

मांनसओक—सं० पु० यौ० [सं० मानस-ओकस्] १ हंस। (डिं. को.)

२ कामदेव।

रू० भे०—मांनसाक।

मांनसचारी—सं०पु० [सं०मानसचारिन्] मानसरोवर में रहने वाला, हंस।

मांनसपुतर, मांनसपुत्र—सं० पु० [सं० मानस-पुत्र] इच्छा मात्र से उत्पन्न होने वाली संतान। (पौराणिक)

मांनसमुद्र–सं० पु०—मानसरोवर झील।

मांनसर, मांनसरवर, मांनसरोवर, मांनसरोवरि–सं० पु० [सं० मानसर] हिमालय के उत्तर में स्थित एक बड़ी झील जो बड़ा पवित्र तीर्थ माना जाता है। यह कैलाश पर्वत के नीचे है।

उ०—१ उडियांणी कमी मेखळी ऊपरि, काख अंधारी डंड कर। भळ दीसइ फाबियउ विसंभर, सिहरा छायउ मांनसर।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ जो तू चाहै मुकत-फळ, धूनां मन धीरच्छ। तोख मांनसरवर तठै, माल हुवै मा मच्छ।—बां. दा.

उ०—३ ग्रक्ष मांहि जिमि कलप तरोवर, मांनसरोवर सार। जिम गिरि हेम प्रेमति प्रमादां, पर पदमनी बिचार।—रुकमणी मंगळ

उ०—४ जिम पारिजाति नंदनवन सोभइ, भद्रजाति हस्ती विंध्याचळ, राजहंस मांनसरोवरि, चिंतामणि रोहणाचळि'''।—व. स.

२ जयसिंह की माता मीलनदेवी का बंधाया हुआ एक तालाब जो वीरमगांव के पास है।

उ०—मोताहळ मयछत्र सिर, मांनसरोवर राय। देवी गूजर खंडरी, स्रीबहिचरा सहाय।—बां. दा.

रू० भे०—मांणसर, मांणसरोवर, मांनससर।

मांनसव्रत–सं० पु० [मांनसव्रत] मन में पालन किये जाने वाले व्रत-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि।

मांनससंन्यासी–सं० पु०—दशनामी संन्यासियों की एक शाखा का संन्यासी।

मांनससर–सं० पु०—देखो 'मांनसरोवर' (रू. भे.)

मानसाक—देखो 'मांनसम्रोक' (रू. भे.)

मांनससासतर, मांनससास्त्र–सं० पु० [सं० मानस-शास्त्र] वह शास्त्र जिसमें मन से उत्पन्न होने वाली वृत्तियों एवं मन के कार्यों का विवेचन किया गया है।

मांनसाचार—देखो 'मिनखाचार' (रू. भे.)

मांनसिक–वि० [सं०] १ मन से सम्बन्धित, मन का।

२ मन की कल्पना से उत्पन्न। ३ मन में होने वाला।

ज्यूं०—मांनसिक संताप।

४ मन से सोचने विचारने लायक, मनन करने लायक।

सं० पु०—विष्णु का एक नामान्तर।

मांनसी–सं० स्त्री० [सं० मानसी] १ एक विद्या देवी का नाम।

२ एक ऐतिहासिक नदी।

उ०—ताहरां नगारो देनै उठा सौ गोड़ ठाकुर चढीया। तिकै मांनसी नदी श्राय उतरीया।—राजा नरसिंघ री बात

३ देखो 'मांनसीपूजा'।

वि०—१ मन का, मन सम्बन्धी।

२ मन में किया जाने वाला।

३ मनुष्यों का, मनुष्यों सम्बन्धी, मानवी, इन्सानी।

मांनसीगंगा–सं० स्त्री० [सं० मानसी गंगा] गोवर्धन पर्वत के पास के एक सरोवर का नाम।

मांनसीपूजा–सं० स्त्री०—मन ही मन की जाने वाली पूजा।

उ०—अर प्रथीराजजी वडा भक्त हा। सू मांनसीपूजा करता। सू आगरै बैठां लक्ष्मीनाथजी री मूरत बीकानेर में बायर पधराई थी तिका बताय दीनी।—द. दा.

मांनसूक–सं० पु० [सं० मानसौकः] हंस। (श्र. मा.)

मांनसून–सं० पु०—१ भारतीय महासागर एवं दक्षिणी ऐशिया में चलने वाली हवा जो छः मास दक्षिण-पश्चिम की ओर से तथा छः मास उत्तर-पूर्व की ओर से चलती है।

२ उक्त हवा से बनने वाला मौसम, वातावरण।

३ दक्षिण-पश्चिम की हवा के कारण बनने वाला वर्षा का मौसम, पावस।

४ बादल।

मांना–सं० स्त्री०—गाथा छन्द का एक भेद जिसमें १२ गुरु व ३३ लघु होते हैं।

मांनाथ–सं० पु० [सं० मानाथ] लक्ष्मी के पति, विष्णु।

मांनिख—देखो 'मांनुस' (रू. भे.)

उ०—जुड़ै रांम लाखंमणा काजि जैता। दुवै रूप मांनिख ज भाख दैता।—सू. प्र.

मांनिटर–सं० पु० [अं०] १ स्कूल की कक्षा में अनुशासन बनाये रखने वाला छात्र।

२ उक्त छात्र हेतु प्रयोग किया जाने वाला संबोधन सूचक शब्द।

मांनिणौ, मांनिबौ—देखो 'मांनणौ, मांनबौ' (रू. भे.)

उ०—'करण' जीविस्यै मांनिस्यै गुण कवि, कितै जगत चा सरिस्यै काज।—ईसरदास बारहठ

मांनिता—देखो 'मांनता' (रू. भे.)

उ०—ऊभो करो ओखदी श्रांणै, धीर सांच मन जेम धरै। हणवंत प्रसिध लखण ची हवड़ां। कवण मांनिता लोक करै।

—ईसरदास बारहठ

मांनितौ—देखो 'मांनीतौ' (रू. भे.)

मांनिनी–सं० स्त्री० [सं० मानिनी] १ दक्षिण नरेश विदूरथ की कन्या जो वैशाली के राजा राज्यवर्धन की पत्नी थी।

२ देखो 'मांनी' (स्त्री०)

उ०—मांनिनी मरकलडइ हसइ, मुख भरिउ तंबोळि। तिणइ त्रितय भूयणपति, जांणइ चिणोठी चोळ।—मा. का. प्र.

मांनियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ स्वीकार कराया हुआ, मंजूर कराया हुआ. २ ध्यान दिया हुआ, गौर किया हुआ, समझा हुआ. ३ अनुकूल आचरण किया हुआ, ठीक मार्ग पर चला हुआ. ४ मन में किसी प्रकार की भावना बनाया हुआ. ५ किसी धर्म या ईश्वर को माना हुआ, आस्था रखा हुआ. ६ ग्रहण, अंगीकार

या स्वीकार किया हुआ। ७ खुश या राजी हुवा हुआ। ८ पालन किया हुआ, धारण किया हुआ, शिरोधार्य माना हुआ। ९ माना हुआ, समझा हुआ, जाना हुआ। १० प्रस्ताव स्वीकार किया हुआ, विचार या बात पर सहमति दिया हुआ। ११ अनुचित हरकत करते रुका हुआ, हठ या आवेश छोड़ा हुआ। १२ विश्वास या भरोसा किया हुआ। १३ मान्यता या महत्व दिया हुआ, कदर किया हुआ। १४ किसी विचार धारा या उक्ति को मानकर चला हुआ। १५ कल्पना किया हुआ। १६ अनुकूल या माफिक पड़ा हुआ, १७ सम्मान या आदर किया हुआ। १८ दक्ष, निपुण या पारंगत माना हुआ। १९ पूजा या अर्चना किया हुआ। २० प्रभावित या कायल हुवा हुआ। २१ प्रतिज्ञा या संकल्प किया हुआ। २२ धैर्य रक्खा हुआ। २३ स्थिर रहा हुआ।
(स्त्री० मांनियोड़ी)

मांनी–वि० [सं० मानिन्] (स्त्री० मांनिनी) १ अपने मानापमान, गौरव या प्रतिष्ठा का ध्यान रखने वाला, स्वाभिमानी।
उ०—दिये मेय राधेय सरवस्व दांनी। महाकस्ट भी मांगवै भूप **मांनी**।—वं. भा.
२ माननीय, सम्माननीय, प्रतिष्ठित।
३ अभिमानी, घमंडी, गर्विला। ४ जिसमें मान हो।
सं० पु० [अ० मा'नी] १ अभिप्राय, आशय, अर्थ, मतलब, भाव।
२ रहस्य मूलक तत्व, भेद। ३ प्रयोजन, उद्देश्य।

मांनीतौ–वि०—१ माना हुआ, प्रिय।
उ०—झाळै झूलर झीलतां, पैठौ कुंवर विचित्र। अजहु न आयो आपणौ, मन **मांनीतौ** मित्र।—पलक दरियाव री बात
२ विशेष रूप से विश्वास पात्र।
३ मान, प्रतिष्ठा या गौरव प्राप्त।
४ कृपा पात्र। ५ प्यारा, दुलारा।
रू० भे०—मांनितौ, मांनेतौ।

मांनु—१ देखो 'मांन' (रू. भे.)
उ०—**मांनु** दीन्हउं **मांनु** दिन्हउं गंगेय।—पं. पं. च.
२ देखो 'मांनौ' (रू. भे.)

मांनुक्ष, मांनुख—देखो 'मांनुस' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
उ०—१ मांनव रूप फळ मुख कमळ, इसा आइ अर्ख अई। **मांनुक्ष** अक्ष नवि नीपजे, कहो ब्रह्म कीधो कई।—रा. वं. वि.
उ०—२ हर जस गावण हार, धन **मांनुख** तन धार।—र. ज. प्र.
उ०—३ लीलाधण ग्रहै **मांनुखी** लीला, जग वासग वसिया जगति। पित प्रदुमन जगदीस पितामह, पोतौ अनिरुध ऊखापति।
—वेलि
(स्त्री० मांनुखी)

मांनुस–सं० पु० [सं० मानुषः] (स्त्री० मांनुसी) १ मनुष्य, आदमी, इन्सान, नर।
२ मिथुन, कन्या, और तुला राशियों का नामान्तर।
३ प्रमाण के तीन भेदों में से एक।
[सं० मानुषं] ४ मनुष्यत्व, इंसानियत।
५ पुरुषार्थ।
वि० (स्त्री० मानुखी) १ मनुष्य सम्बन्धी, मानवी।
२ अनुग्रहशील, दयालु।
रू० भे०—मांनक, मांनिख, मांनुक्ष, मांनुख।
अल्पा०—मांनकौ, मांनखौ।

मांनुसता–सं० स्त्री० [सं० मानुषं] इन्सानियत, आदमियत।

मांनूं—देखो 'मांनौ' (रू. भे.)

मांनेतण–वि० स्त्री० [सं० मानित] १ मांनवती, मानिनी।
२ कृपा पात्र, विशेष प्रिय।
सं० स्त्री०—वह स्त्री या नायिका जो अपने पति या प्रियतम को विशेष प्रिय हो।
उ०—१ **मांनेतण** रांणी तारां झड़ी चूंदड़ी ओढ़, चांदा रै उणियारै इमरत बरसावती प्रीतम नै रीझावण सारू नाचण लागी।
—फुलवाड़ी
उ०—२ पछै वा **मांनेतण** ऊंदरी सवा हाथ रौ लांबौ घूंघटौ काढ़नै लाज सरम सू दोवड़ी व्हैती न्यात में गी।—फुलवाड़ी
रू० भे०—मांणेतण।

मांनेतौ—देखो 'मांनीतौ' (रू. भे.)

मांनौ–अव्यय—१ यथा, जैसे, गोया, मानों।
रू० भे०- मनहु, मनहू, मनां, मनि, मनुं, मनु, मनूं, मनू, मनै, मनौ, मांनु, मांनूं।
२ देखो 'मांन' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—वचन रचन सुणज्यो हिवै, आंणी भाव प्रधानौ रे। देज्यो दांन इसी परै, जेम लहौ तुमे **मांनौ** रे।—वि. कु.

मांन्य–वि० [सं० मान्यः] १ जो मानने योग्य हो, जिसे मान्यता दी जा सके, मान्य।
२ उचित, ठीक।
३ मान, सम्मान या आदर योग्य।
सं० पु०—१ विष्णु।
२ शिव। ३ मैत्रावरुण।

मांम–सं० पु० [सं० माम=ममत्व] १ इज्जत, मान, प्रतिष्ठा, गौरव।
उ०—गांगांवत जिम **मांम** गमाड़े। 'करन' समोभ्रम जाय किम। भाजण तणां ज महणां अण भंग। 'जैत' न सहियौ 'माळ' जिम।
—द. दा.
उ०—२ कूरमां जादमां अहाड़ां कमधजां, चलावी चहूं जुग बीच चावी। **मांम** हिंदू धरम तणी सारी मिळै, 'अना' राजा खनै चाल आवी।—आसियो भोपत

उ०—तिरिण द्विज मारगि पाछउ वळइ, खीजै चित्ति हीयऊ कळकळई। वळिनइ आव्यौ आपणि गांमि, देस विदेस गमाडी मांम।
—ढो. मा.

उ०—४ सुज असुरां संग्रांम, किया नह पोंहचां कदै। कांई न राखी ठकुरां, सुर भवण पति मांम।—मा. वचनिका

२ सम्मान, आदर। ३ जीत, विजय।

उ०—जेवडउ अंतर मेरु सरसिव, जेवडउ अंतर मांम अनइ परिभव, जेवडउ अंतर लोह अनइं कांचन, जेवडउ अंतर रांम अनइं रांवण।—व. स.

३ मर्यादा, हद, सीमा।

उ०—१ हूं माधव वंछूं वळी, ते माधव तूं होय। पीडइ कां मुझ पापीया, महीयां मांम म खोय।—मा. कां. प्र.

उ०—२ महरांण प्रबळ जिम लोप मांम।—पा. प्र.

४ गर्व, अहंकार, घमंड।

उ०—१ सीवर सारणौ जी, केतां निबळ संतां कांम। महपत मारणौ जी, महजुध फरस घरसां मांम।—र. ज. प्र.

उ०—२ वनाती भूलां घातियां रहकलां इकां खड़सलां जूता छै। सू हालियां थकां घोड़ां री मांम पाड़ै।—गंगेव खींची री दो-पहरी

५ दृढ़ता।

उ०—धुज धरम सर कोदंड धारण, मेर ओपत मांम रा। आंनूप भुज परचंड आहव, रूप रिवकुळ रांम रा।—र. ज. प्र.

६ पहाड़, पर्वत। (अ. मा.)

७ इच्छा, अभिलाषा, कामना।

उ०—खीचि राव खग बंधियौ 'आसावत' 'जैरांम'। करवा नवकोटी कुसळ, मोटी धारै मांम।—रा. रू.

८ युद्ध।

९ शक्ति, बल।

उ०—करमसीहौ खत्री करम का उजागर। कांम कांम अवसांण मांम का रतनागर।—रा. रू.

१० बदला।

११ धन, दौलत, वैभव। (ह. नां. मा.)

१२ कार्य, काम।

उ०—सुत रिणछोड़ मांण पण साचै। वप ध्रम सांम मांम जग वाचै।—रा. रू.

वि०—१ लायक, योग्य।

उ०—अजब वर्णं दळ मारवां, अजबावत द (ब) ळरांम। रूके आंटा रवखणां, मोटां कांमां मांम।—रा. रू.

२ युद्ध करने वाला, योद्धा।

उ०—लखमीदास 'पातल' का उज्जळ अरेह। सांम धरम कांम कोट मांम का सा देह।—रा. रू.

[सं० मांम] ३ मेरा, अपना।

उ०—१ वेखि अंगद वहौ चोपदार, अति मांम वचारै। चंद मंद बुद्धि धीर चव, असतुति अपारै।—सू. प्र.

उ०—लागू हुण कीवा मांम लीन, काकौ पित्त सर धड़ जुदा कीन।
—पा. प्र.

४ देखो 'मांमौ' (मह., रू. भे.)

उ०—महै रांम लंकेसरै मांम मारै।—सू. प्र.

५ देखो 'मोम' (रू. भे.)

मांमउ—देखो 'मांमौ' (रू. भे.)

उ०—भाई भणिउ किसिउं गुल विइ, राखस मांमउ भणिउ किसिउ छांडइ।—व. स.

मांमगर—सं० पु०—एक वर्ग विशेष।

उ०—रंगाचारय उचितबोला, साहसबोला मो०बोला मेलगर मांमगर कउतिगीया कुहुटीया नट वट गांछां छीपा''''''।—व. स.

मांमड़—सं० पु०—१ आवड़ देवी के पिता का नाम।

उ०—मांमड़ रै माल्हिया, नांव आवड़ नै आई। आई रौ अवतार, हुवा करनल मेहाई।—मे. म.

२ देखो 'मांमौ' (मह., रू. भे.)

मांमड़ाई, मांमड़ियाळ—सं० स्त्री०—मांमड़ की बेटी आवड़ देवी।

उ०—१ जठै आवड़ा मांमड़ाई पुजावै। आई धोकवा लोक अन्नेक आवै।—मे. म.

उ०—२ आवड़ मांमड़ियाळ खोडिया रह खेत्राही। बूट अनै वैचराय, उभै मांगचरी जाई।—पा. प्र.

मांमदस्तौ—देखो 'हमांमदस्तौ' (रू. भे.) (शेखावटी)

मांमलत, मांमलति, मांमलात—सं० स्त्री० [अ० मुआमलत, मुआमलात]

१ पारस्परिक व्यवहार।

उ०—मांण हीण सुपह भरै थत मांमलत, पांण कुण करै महारांण पाजा।—जवांनजी आढ़ौ

२ विवादास्पद बात, मुकदमा।

३ कोई बात या विषय।

४ घटना।

मांमलागुजार—वि०—मामला नामक कर देने वाला।

मांमलियौ—१ देखो 'मांमौ' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'ममोलौ' (रू. भे.)

मांमलौ—सं० पु० [अ० मुआमल:] १ युद्ध, झगड़ा, लड़ाई।

उ०—१ मरणौ लाजम मांमलै, धार अणी चड धाप। पड़णौ सांकळ पींजरै, सिंहां वड़ौ सराप।—बां. दा.

उ०—२ तरै समसदी कह्यौ—नांव तौ हूं जांणूं नहीं नै मौसूं मांमलौ कियौ तठै थांहरा वड़ा उमरावां मुसलमांनां मांहि घणां साथ रौ धणी को न हुतौ। वे तौ असवार दो हिंदु हुता, तिणां मांनूं झालियौ नै उणौ म्हारा माथा री टोप रुपिया सवा लाख री कीमत रौ लियौ छै।—नैणसी

उ०—३ पीछै स्रीजी दक्षण रै सोवै प्रादूणी पधारिया । उठै बार एक गनीमां सूं मांमलौ हुवौ । जठै माराज बडो झगड़ो कियो ।
—द. दा.

उ०—४ मीसण पड़िया मांमले. 'सांमौ' अनै रतन्न' । दिल्ली खेत न छंडियौ, धारण चारण छिन्न —रा. रू.

२ आक्रमण, हमला ।

उ०—वरस १२ विग्रह नै हुवा छै । मांमला घणांही हुवा पण गढ़ हाथ आवै नहीं ।—नैणसी

३ समस्या, उलझन ।

उ०—आपस में मांमलौ नीं निवड़तौ देखनै वांनै नवौ पंच थापणौ ई पड़्यो ।—फुलवाड़ी

४ दुसाध्य कार्य, दुष्कर कार्य ।

उ०—तद नापै अरज करी—दीवांण सलांमत राठोड़ां रै वैर रो मांमलौ खरौ जोरावर छै । अर वळै वैर ही राव रिणमल रो ।
—नैणसी

५ कार्य या काम ।

उ०—१ कह्यो-जी बांभण आवै छै । मत क्यूं ही कहो । वाहर रो मांमलौ छै ।—नैणसी

उ०—२ जोसी गावड़ खुजावतौ बोल्यौ—जोखौ तौ ऐड़ौ कीं खास नीं । टाबरां रै भाग रा साजा-सूरा आय जावैला । पण जोग अंवळा है । थें हीमत राखौ तौ मांमलौ सुधर जावै ।—फुलवाड़ी

६ कोई विषय, बात ।

उ०—१ तरै सांवणियां सांवण वेध्या नै कह्यो यां सांवणां सूराचंद रो राजा तो हाथ चढै नै आपां मांहे कुसळ वरतै नै वेढ रो मांमलौ छै, खित्री रौ घरम छै पिण सूराचंद रो राजा तो मारियो।
—जैतसी ऊदावत री बात

उ०—२ जे गूजरी री टोय नीं लेग्यौ तौ राजाजी खीझैला । ऐड़ा मांमला में वानै रीस अणूंती वेगी आवै ।—फुलवाड़ी

उ०—३ बातां हंदा मांमला, दरियां हंदा फेर । नदियां बहै उतावळी देदे घूमर घेर ।—फुलवाड़ी

७ विवादास्पद विषय, मुकद्दमा ।

उ०—विरमांजी कह्यो—थूं तौ खुद बळद वाळौ ई रोवणौ रोयौ। पण थांरी ऊमर कोई ओढ़ण वास्तै त्यार व्है जावै तौ म्हैं तुरत औ मांमलौ सलटाय दूं ।—फुलवाड़ी

८ घटना ।

उ०—तरै रिणमल दीठौ—आही बात तौ वणी नहीं । चंद्रसेन रो तौ इणां दोनां ही मांमलां बिगड़ियौ क्यूं नहीं ।
—रावचंद्रसेन री बात

९ वैभव, ठाट-बाट ।

उ०—तद ए केसरीयै साह रै घरे गया । आगै साह री वडो मांमलो । ईयै रै बडो वणज, केइ केरोड़ां री मताह, गांहणो कपड़ा विसायत री वडी जलूस ।—ठाकुरै साह री बात

१० व्यापार, व्यवसाय ।

११ प्रभाव, रोब ।

उ०—पछै पताई रावळ रै साळी सहयो वांकलियो तिकेरो बडो मांमलो, वडो इतबार गढी री कूंची तै वसू ।—नैणसी

१२ स्थिति, हालत, दशा ।

उ०—दैंत झिझकनै बैठो व्हियौ । बगनौ व्है ज्यूं अठी उठी देखनै बोल्यौ—म्हनै ऐड़ो लखायौ के म्हारौ माथौ पगां में आयग्यौ अर म्हारा पग माथा री ठौड़ आयग्या । सगळौ मांमलौ ई जांणै उलट गियौ ।—फुलवाड़ी

१३ वृत्तान्त, हाल ।

उ०—१ रांणा प्रताप रा कंवरां रा मांमला विगत—अमरसिंघ पूरबिया परमार मयारखखां असोकमलोत रो दोहितो ।
—बां. दा. ख्यात

उ०—२ सं० १६४१ चारण बांभण सुं मांमलौ आउवै ।
—राजा उदैसिंह री बात

१४ समझौता, परस्पर तय की जाने वाली बात ।

१५ कोई व्यवस्था या परम्परा जो सर्व सम्मति से निश्चित की जाती है ।

१६ प्रधान या मुख्य बात ।

१७ कौल, वचन ।

१८ खिराज नामक एक प्रकार का कर जो सेना खर्च के लिये लिया जाता था । (जयपुर, सीकर)

मांमस—सं० स्त्री०—सासू के भाई की स्त्री, सासू की भोजाई, मामी सास । (शेखावटी)

मांमसरौ—सं० पु०—सासू का भाई, मामा श्वसुर । (शेखावाटी)

उ०—म्हारै मांमांजी रै मांडी गणगौर, मांमसरां घर मांड्यो रंग झूमकड़ो ।—लो. गी.

मांमांण, मांमांणौ—सं० पु०—मामा का घर, ननिहाल ।

मांमाई—सं० पु०—मामा का वंशज ।

वि०—मामा का, मामा से सम्बन्धित ।

मांमात—सं० स्त्री०—मामा की बेटी बहन ।

मांमामुरकी—सं० स्त्री०—कान का आभूषण विशेष । (वरदा)

मांमारखौ—देखो 'ममारखौ' (रू. भे.)

उ०—नै ठाकुर वडा राजी हुवा । अर ठाकुरां बऊजी गांगैजी री माजी नूं कहायौ, जो थांरा बेटा नूं जोधपुर री मांमारखौ है । तद गांगैजी री माजी ठाकुरां नूं कहायौ, जो जोधपुर म्हां पायौ, नै श्री राज तो थांरै ई सारै है. सू थे देवी जिण नूं आवै ।—द. दा.

मांमाळ—सं० पु०—१ ननिहाल, मातृ-गृह, मामा का घर ।

उ०—१ तात मात मांमाल तक, सूरां साख संसार । पलटै घर ऊभी पगां (म्हारो) लाजै पीहर लार ।—अगरांबाई उदावत

उ०—२ बांधोड़ी कमरां श्रो बुजी सा नहीं खोलौ। लाजै म्हांरौ लाडकियौ **मांमाल**।—लो. गी.

मांमालूणी-सं० स्त्री०—बरसात की मौसम में होने वाला एक पौधा विशेष जिसका स्वाद खट्टा होता है। यह पौधा पृथ्वी पर छितराया हुआ रहता है।

उ०—पंयाळ-लोक रा नीं नीं व्है जैड़ा अमरफळ छोडनै वा बोर, ढालू, कंकेड़ा, केरूंदा, खिरणिया, पींपिया, भड़ोलिया, गुट्टा, पीलू, गूंदा, गूंदियां, आंमलियां, गैंगणियां, डांणियां, घीतोला, मोथिया, केड्ला, खोखा, **मांमालूणी**, काचरा, काकड़ियां, खरबूजा अर मतीरां वास्तै तड़फा तोड़ती।—फुलवाड़ी

मांमी-सं० स्त्री—मामा की स्त्री।

उ०—घीणो फगत छोटोड़ी **मांमी** रै इज हो। भींटियो छोटोड़ी मांमी रै घरै ठैरियो।—फुलवाड़ी

मांमीसासरौ-सं० पु०—सासू का पीहर, सासू के भाई का घर।

मांमीसासू-सं० स्त्री०—सासू की भोजाई।

मांमीसुसरौ, मांमीसूसरौ-सं० पु०—सासू का भाई, पति या पत्नी का मामा।

मांमू—देखो 'मांमौ' (रू. भे.)

उ०—ताहरां उवां कहियौ **मांमू** आवण दिये नहीं।—द. वि.

मांमूर-सं० पु० [अ० मामूर] १ बस्ती, आबादी।

२ साधन, सामग्री।

उ०—'मांनौ' तिण समै निपट बेखरच छै, सूल सांमांन **मांमूर** कूं न छै सु उठै धारू री मां करटी रात री, तरै डेरो डांडो साथै **मांमूर** क्यूं न छै।—नैणसी

वि०—१ जिसे आदेश दिया गया हो।

२ तैनात, मुकर्रर, नियुक्त।

[अ० मा'मूर] ३ बसा हुआ, आबाद।

४ भरा हुआ, परिपूर्ण।

५ बंद। ६ खचाखच भरा हुआ।

७ समृद्ध। ८ बिल्कुल।

उ०—बूंदी सहर भाखर लागती बसै छै, रावळा घर भाखर रै आधोफरै छै। तिण मांहै पांणी **मांमूर** नहीं। सहर री आयौ पीजै।
—नैणसी

मांमूली-वि० [अ० मा'मूली] १ साधारण, सामान्य।

उ०—१ पुटियौ टिव टिव करतां बोल्यौ—पंचायती तौ साव **मांमूली** ही। लोग आ बात जांणण सारू एकठ व्हिया के इण दुनिया में जीव मरै घणां के जीवै घणां।—फुलवाड़ी

उ०—२ अबकी भांणजी नरमाई सूं जवाब दियौ—म्हारौ बूतौ ई कांई के थारै साथै व्हियोड़ी मिसखरी नै म्हैं झेल सकूं पण मासी! म्हारै माथै ई कोई **मांमूली** मिसखरी तौ नी व्ही।—फुलवाड़ी

२ अत्यल्प, थोड़ासा, छोटासा।

उ०—१ अधगावळी कुत्तौ कह्यौ—म्हैं इण **मांमूली** बदळा री बात नीं करी। मिनखां री कड़ियां तौ भागैला ज्यूं ई भागैला। आपांरी अर वांरी कड़ियां में घणौ फरक व्है।—फुलवाड़ी

उ०—२ रांणी चिड़ा रै मन री बात लखगी। वा उणनै लाड सूं कह्यौ—बावळा, म्है देखूं के आज काले थारा मन में घणां घणां गोटा ऊठै। थारा **मांमूली** सा आरांम वास्तै, थूं कठैई आ नीं व्है के बापड़ा बिचियां नै हेमाळै गेल दै।—फुलवाड़ी

उ०—३ बड़ी गतागूंम में फंसग्यौ। कित्ता भंवारां री मंसा परगट करूं। नवा भंवारा बणण में देर ई लागैला। अबारूं तौ साव **मांमूली** भंवारा है।—फुलवाड़ी

३ महत्वहीन, निरर्थक।

उ०—१ एक नाकुछ **मांमूली** सा कांम सारू कित्ता कळाप व्हिया।
—फुलवाड़ी

उ०—२ नाई रै मूंडै राजाजी रै मन री बात सुणतां ई डोकरी पैला तौ खूब हंसी। पछै कह्यौ—इण **मांमूली** सी बात सारू थें कित्ता ओळावा लिया।—फुलवाड़ी

४ आसान, सरल, सीधा-सादा।

उ०—१ भांणजी री आटी गूंथतां मासी पूछ्यौ—म्हैं थनै एक साव **मांमूली** सी बात पूछूं, जिणरौ जवाब दीजै बेटी के जद आपांरी जलम ई संजोग सूं व्है तौ पछै उण री नींव माथै चिणियोड़ौ जीवण कीकर संजोग बिना आपरौ गुजारौ कर सकै।
—फुलवाड़ी

उ०—२ नवा मांनखा अर मन रा सपना नै जलम देवणौ कोई **मांमूली** बात नीं ही।—फुलवाड़ी

५ रोजमर्रा का।

उ०—थूं फालतू रा दपूचा मत लै। थूं चार-पांच साल री अबूझ टाबर कोनीं जको ऐ **मांमूली** बातां ई नीं जाणै।—फुलवाड़ी

६ प्रायः होता रहने वाला।

उ०—इस्टूखां मुळकती-मुळकती सांमी आयी। अबै ऐ निजरांणां री बातां उणरै वास्तै साव **मांमूली** व्हैगी ही।—फुलवाड़ी

७ परम्परागत, रस्मी।

८ नियत या निश्चित ढंग से होने वाला।

मांमूल्यौ—देखो 'ममोलौ' (अल्पा., रू. भे.)

सं० पु०—मामा का पुत्र भाई।

मांमेरौ—देखो 'मायरौ' (रू. भे.)

मांमोलियौ—देखो 'ममोलौ' (अल्पा., रू. भे.)

मांमोलौ—देखो 'ममोलौ' (रू. भे.)

मांमोल्यौ—देखो 'ममोलौ' (रू. भे.)

मांमौ-सं० पु० (स्त्री० मांमी) १ माता का भाई, नांनै का बेटा।

उ०—१ **मांमौ** पड़ियौ 'मीर' री आठां सूं अबदल्ल। अठी 'सिवौ' नरसींघ री, 'राजड़' री पातल्ल'।—रा. रू.

उ०—२ थट सहित 'कुंभो' थर हरै। साहाय मांमो संभरै।
—सू. प्र.

उ०—३ ताहरां निजांमसाह कह्यौ—श्रो म्हारो मांमो छै। ताहरां मलकंवर कह्यौ—थारो मांमो पण म्हारो बेटो छै।—नैणसी

२ भील जाति के व्यक्ति के लिए सम्मान सूचक शब्द (मेवाड़)

रू० भे०—मांमउ, मांमू।

अल्पा०—मांमलियो।

मह०—मांम, मांमड़।

मांमोजी-सं० पु०—परोपकार के लिए लड़कर वीर गति प्राप्त करने वाला वीर, योद्धा जो जनता द्वारा पूजा जाता है।

मांय-क्रि० वि० [सं० मध्य] १ भीतर, अन्दर, में।

उ०—१ मुकुंद बसै मन ज्यांरै मांय, सदा सुख वासर रैण बिहाय।
—ह. र.

उ०—२ परदार प्यार हुयगो प्रमत, बिन सींगां रां बेलियां। भोगरै मांय भंवता भंवर, गयो जनम सब गेलियां।—ऊ. का.

उ०—३ आठम आज सहेलियां, श्रो पख ऐळो जाय। हियै खटूकै साहिबो, कांटो ऐडी मांय।—अज्ञात

उ०—४ कंवर आपरा घोड़ा नै थोड़ो लारै लेय दूजोड़ा साथियां नै कह्यौ—यूं डरग्या कांई। इत्ती भांय लारो करनै आलोच में पड़ग्या। रजपूतां नै तो जलम सूंई पैला मां रा पेट में मौत री गुटकी मिळै। मांय वड़नै बूंटो बूंटो खूंद न्हाको।—फुलवाड़ी

उ०—५ डावड़ी मोसा री डंक मारती बोली—सांटा अरोगण री ऐड़ी ही भावड़ व्है तो मांय पधारो।—फुलवाड़ी

२ ओट में, आड़ में।

उ०—मुकुंद म पैस पड़द्दा मांय। ठावो मैं कीधो सरवह ठांय।
—ह. र.

३ दैरम्यान, बीच।

४ बहुतों के बीच में, मध्य में।

उ०—१ ढोलिया माथै सूती सूती पसवाड़ा पलटती री पण उण री नींद तो जांणै तारां रै मांय ई चापळगी ही।—फुलवाड़ी

उ०—२ आं तीनां मांय सूं थारै जचै जकी सोगन समझ जाजै
—फुलवाड़ी

रू० भे०—मंह, मंहि, मंही, महां, मां, मांइ, मांई, मांह, मांहा, मांहा, मांहि, मांहि, मांही, मांहे, मांहै, माय, मायनै, मायै, माह, माहा, माहि, माहि, माहीं, माही, माहें, माहे।

५ देखो 'माता' (रू. भे.)

मांयकर-अव्य०—अन्दर से होकर।

उ०—खेत रै मांयकर निकळतां महारांणी सूं गाढ़ नीं राखीजियो।
—फुलवाड़ी

रू० भे०—मांहकार, मांहाकर।

मांयड़ी—देखो 'माता' (अल्पा., रू. भे.)

मांयनो-सं० पु० [अ० मुआयनः] १ किसी पर गौर करने या उसे ठीक से देखने की क्रिया या भाव।

२ निरीक्षण, जांच-पड़ताल। ३ अर्थ, मतलब।

मांयलड़ो—देखो 'मांयलो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मांयला मांयलोड़ी नगरी जोय, बिन जोया भटकत फिरै, थारो भलो काय सूं होय।—हरिरांमजी महाराज

(स्त्री० मांयलोड़ी)

मांयली—१ देखो 'माता' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'मांयलो' (स्त्री०)

मांयलोड़ो—देखो 'मांयलो' (अल्पा., रू. भे.)

मांयलो-वि० [सं० मध्य+रा० प्र० लो] (स्त्री० मांयली) बाहरी का विपरीत, भीतरी, अन्दर का।

उ०—१ हंस मांयला मूढ रे, कर हर सर बिसरांम। मर मर घर घर नंहं फिरै, उर घर गिरधर नांम।—ह. र.

उ०—२ थाळ मांयला दीवा जगमगाट करता हा।—फुलवाड़ी

उ०—३ दीवांणजी नै लखायो के रगां मांयलो लोई अबै ठरयो अबै ठरयो।—फुलवाड़ी

उ०—४ दूजोड़ा बाग में बंगळो १ नवो नै मांयली कांनीं जनांना रैवास री जायगां कराई।—नैणसी

२ किसी स्थान, क्षेत्र या परिधि में रहने वाला।

उ०—१ हमैं गढ़ मांयला नूं पूरो जोर पौहतो। तद राव सूजैजी री माजी हाडी जसमादेजी कहायो कै थांरा भला आदमी मेलो।
—द. दा.

उ०—२ पन्ना मारू आपनै सिधावौ परदेस। वरजोने वागां री हो मांयली कोयली म्हारा राज।—लो. गी.

३ जो किसी के अन्दर स्थिर या स्थित हो।

उ०—वा तो पछै भली सोची नीं कोई भूंडी, खांचनै हाथ मांयली सोटी वगाई।—फुलवाड़ी

४ चारों ओर का।

उ०—राजकंवर गळा मांयलो हार मछियारा नें भिलावतो कह्यौ—म्हैं थनै लाखूं रिपियां रो श्रो हार देवूं, थूं मछलियां मारणी छोड़ दे तो।—फुलवाड़ी

५ कईयों के बीच का।

उ०—आंमलियां पाकी नै अंब रुत आई रे जला। जला रे राजा मांयलो राज भलो राठोड़ी रै।—लो गी.

६ गुप्त, गोपनीय।

सर्व०—मेरा।

रू० भे०—मंयलो, मइलो, मांहलु, मांहलो, मांहिलो, मांहीलो, मांहेलो, माहलो, माहिरलो, माहिलइ, माहिलु, माहिलो, माहिल्यूं।

अल्पा०—मांयलोड़ो।

मांयां—१ सोतेली माताएं।

उ०—बीजी मांयां सूं मिलिया सारे निछरावळ कीधी ।
—कुंवरसी सांखला री वारता

२ देखो 'मायां' (रू. भे.)
३ देखो 'माया' (रू. भे.)

मांर—१ देखो 'मोर' (रू. भे.)
२ देखो 'मार' (रू. भे.)

मांराई—देखो 'मुराई' (रू. भे.)

मां'रौ—देखो 'भैरौ' (रू. भे.)
उ०—मां'रौ थांरो कर माया में, उळझ्योड़ा उळजावै। कुळबै लगै गुरांरी कूंची, खट ताळा खुल जावै ।—ऊ. का.

मांळ—देखो 'मोळ' (रू. भे.)
ज्यूं—हमार चीणां री मांळ है ।

मांलत—देखो 'मोहलत' (रू. भे.)

मांवड़ी—देखो 'माता' (अल्पा., रू. भे.)

मांवणी—सं० स्त्री० [सं० म्ना-अभ्यासे=ल्युट=म्नानी] पाठशाला में छात्रों द्वारा संध्या समय बोली जाने वाली पहाड़ों की गिनती ।

मांवसी—देखो 'मासी' (रू. भे.)
उ०—मरो मा, जीवो मांवसी, घी घालसी, न गोडा चालसी·..· ।
—अज्ञात

मांवीत—देखो 'माईत' (रू. भे.)
उ०—थांहरा मांवीतां री थां नूं सरम छै, कहड़ा हुवो छो।
—नांन्है वाघेलै री वात

मांस—सं० पु० [सं०] १ मनुष्य, पशु व पक्षियों आदि के शरीर का वह अंश जो हड्डी के ऊपर तथा चमड़ी के नीचे रहता है तथा खून, नाड़ियों आदि से भिन्न होता है। यह चिकना एवं मुलायम तथा लाल रंग का होता है, गोश्त, आमिष ।

उ०—१ जस चाहै वाहै जिको मांसां चूकी हड्ड। अखियातां बातां वचै, जरा काळ डर छड्ड।—बां. दा.

उ०—२ लुगायां रै कूख री थैलियां अर हांचळां रै मांस री म्हनै अणूंती भावड़ है। मांस रै हिसाब सूं ऐ सांमी भूंडी चीजां है।—फुलवाड़ी

पर्या०—आमिख, कासम, कीन, कव्य, तरस, तेजभव, पळ, पलल, पिसित, मेदकर, रक्तभव।

२ कुछ विशिष्ट प्राणियों (पशु-पक्षियों) का गोश्त जो प्रायः खाने में काम आता है।

३ फल का गूदा।

४ मछली।

रू० भे०—मंस, मांसु, मास।

अल्पा०—मासड़ो।

मांसअहारी—देखो 'मांसाहारी' (रू. भे.)
उ०—भूखा मांसअहारी भाखै, वलखै रंग ऊचारै वांणी। 'वांको' चालण फौज विहंडण, ओख विड़ंग गयौ 'अमरांणी'।
—सुखजा खिड़ियो

मांसकर—सं० पु०—१ मांस बेचने वाला, कसाई।
२ खटीक।

मांसकरण, मांसकारि—सं० पु० [सं० मांस-कारि] रक्त, रुधिर, खून।

मांसकेसी—सं० पु० [सं० मांस-केशिन्] वह घोड़ा जिसके पैरों में मांस के गुठले निकले हुए होते हैं।

मांसखोर—वि०—१ मांस खाने वाला, मांसाहारी।
२ जिसे मांस खाने की आदत हो।

मांसचर—देखो 'मांसाचर' (रू. भे.)
उ०—सुरतांण जतै घमसांण किया सत्र, चोळ थई रण मांसचरः, छटका रुधर पहाड़ां छरंगै, पंखी पावस तणी परः···· ।
—दुरसो आढ़ो

मांसट्ट—सं० पु०—मांस पिंड, मांस खंड।
उ०—पूरपियै भर जोगणी, भर पत्र उलट्टै। मिळिया खेचर भूचरा, गोटै मांसट्टै।—द. दा.

मांसती—देखो 'मासती' (रू. भे.)

मांसपिंड—सं० पु० [सं०] शरीर, देह।

मांसपिंडी—सं० पु०—शरीर के अन्दर मांस की ग्रन्थी।

मांसपेसी—सं० स्त्री० [सं० मांसपेशी] शरीर के अन्दर होने वाली झिल्ली या रेशों के आकार का मांस पिंड जिसका मुख्य कार्य गति उत्पन्न करना है। ये करीब ५०० या ५१९ होती हैं।

मांसभक्षी, मांसभखी—वि० [सं० मांस+भक्षिन्] मांस खाने वाला, मांसाहारी।

मांसमौजी—वि०—मांस खाकर मस्त या तृप्त रहने वाला।

मांसर—देखो 'मौसर' (रू. भे.)

मांसरोहिणी—सं० स्त्री०—एक प्रकार का जंगली वृक्ष जिसके फल बहुत छोटे छोटे होते हैं।

मांसल—वि० [सं०] १ मांस से भरा हुआ, परिपूर्ण।
२ हृष्ट-पुष्ट। ३ स्थूल-काय।

मांसलता—सं० स्त्री०—'मांसल' होने की दशा, अवस्था या भाव।

मांसाचर, मांसाचारी—सं० पु०—१ मांस खाने वाले प्राणी।
उ०—मांसाचरां धपाडै मांसां, बांसां करै अमावड बाड। मावै नहीं पहाडां माहे। हाथ्यांरा दांतूसळ हाथ।
—महारांणा अमरसिंह रौ गीत

२ वह पक्षी, जानवर या प्राणी जिसका आहार मांस हो, शेर, गिद्ध।
रू० भे०—मंसचर, मंसचार, मंसहार, मंसाहार, मंसाहारी, मांसचर।

मांसांडौ—सं० पु०—पशुओं के मुंह में होने वाला एक रोग।

मांसारी—देखो 'मांसाहारी' (रू. भे.)

मांसाल—सं० पु०—मामा का घर, ननिहाल।

मांसाहार—सं० पु० [सं० मांस-आहार] मांस भक्षण।
रू० भे०—मंसहार, मंसाहार।

मांसाहारी-वि० [सं० मांस-आहारी] मांस खाने वाला, मांस भक्षी ।
उ०—महाराज वीर विक्रमादित्य उज्जैण मांहीं राज करै । तेथी जूवारी, मांसाहारी सुरापांनी, वेस्यारत, चोर, आखेटी, परदाररत रौ नांम नहीं ।—सिंघासण बत्तीसी
रू० भे०—मंसहार, मंसाहार, मंसाहारी, मांसग्रहारी, मांसारी, मांसेरी, मांसैरी ।

मांसु—देखो 'मांस' (रू. भे)

मांसुरीलोम-सं० पु०—मूछ ।
उ०—इण रीति प्रामारां रा सहाय काज सोभति रा खेत में जय री दुंदुभी घुराय प्रथ्वीराज रा बीरां भूंहारै भेड़े मांसुरीलोम आंणिया ।—वं. भा.

मांसेरी, मांसैरी—देखो 'मांसाहारी' (रू. भे.)

मांह—१ देखो 'मांय' (रू भे.)
उ०—१ मेटै सुरलोक पेठौ जळ मांह । तठै इक अंड निपायौ तांह ।—ह र.
उ०—२ आसाढाऊ सूध नभ, मंगळ महलां मांह । 'मुहकम' चो ग्रत मेड़तै, सुणियौ दक्खण साह ।—रा. रू.
उ०—३ मंडळ मांह वसाय ग्रग, थयौ कळंकी चंद । पायौ सीह मयंद पद, हण हाथळ ग्रग व्रंद ।
उ०—४ सबै कुछ जागां बैटो साह । मिनक्खां देवां नागां मांह ।
—ह. र.
२ देखो 'माह' (रू. भे.)
३ देखो 'मुख' (रू. भे.)
उ०—परै मरीचि मांहपै न छांह ग्रात पत्र की । क्रमैं न बापु ग्रत्र ताल पत्र तैं कलत्र की ।—ऊ. का
४ देखो 'म्हां' (रू. भे.)
उ०—मूरख तौ बांमण है के बांमण री संगत करै सो मूरख है । तद ठाकुर बोल्यौ—थे तौ मांह नै मूरख कीधा ।
—गांव रा धणी री वात

मांहकार—देखो 'मांयकर' (रू. भे.)
उ०—तद नायण गुफा मांहकर भीतर गई ।—चोबोली

मांहगौ—देखो 'मूंगौ' ।
(स्त्री० मांहगी)

मांहजौ-सर्व० (स्त्री० मांहजी) हमारा, मेरा ।
उ०—तिण ऊपर रावळ जोस कर बोलियौ—ग्ररु लाल नूं इसी कही के तांहचा राठोड़ मांहजी धरती मैं घोड़ो फेरै जितरी जमी ब्राह्मण नूं उदक कर दूं ।—द. दा.
रू० भे०—मांजौ ।

मांहडौ, मांहडो—देखो 'मूंडो' (रू. भे.)
उ०—खेड़ो माखर री खंभ ढीसा मगरां रै मांहडै ग्रो गांव ।
—नैणसी

२ देखो 'माडै' (रू. भे.)
३ देखो 'मांडौ' (रू. भे.)

मांहणी—देखो 'म्हांणी' (रू. भे)

मांहणौ—देखो 'म्हांणौ' (रू. भे.)

मांहणौ, मांहबौ—देखो 'मोहणौ, मोहबौ' (रू. भे.)

मांहदी—देखो 'मेंदी' (रू. भे.)

मांहमां—देखो 'माहोमांहि' (रू. भे.)
उ०—ग्रठ दीह कसर करै भड आया । मांहमां संज मंत्रियां फुरमाया ।—सू. प्र.

मांहमुंदी—देखो 'महमूंदी' (रू. भे.)
उ०—ग्रर एक केसरीया कराई । थांन दोय बाफतां रा, दोय मांहमुंदी, पांच सेल्हा ग्रवल ल्याई । सो दरजी भरमल रै कारखांनै बैसांणीया ।—कुंवरसी सांखला री वारता

मांहरइ—देखो 'म्हारै' (रू. भे.)
उ०—सखि ग्रावउ स्रावण मास, पिउ नहीं मांहरइ पासि । कंत बिना हुं करतार, कीधी किसा भणी नार ।—स. कु.

मांहरी—देखो 'म्हारी' (रू भे.)
उ०—१ भोगवि किते भू किता भोगवसी, मांहरी मांहरी करइ मरैं । ऐंठी तजि पातलां उपरि कुंवर मिळि मिळि कळह करै ।
—ध. व. ग्रं.
उ०—२ घोड़ी लांप चाढ़नै राखसियै सोमै नूं नागोर राव चंडा कनै बोलाऊ मेलियौ थौ जु मांहरी मदत करौ ।—नैणसी

मांहरे, मांहरै—देखो 'म्हारै' (रू. भे.)
उ०—१ खग नीर, धीर ग्रंतर खरा, मद कुंजर बपु जिम मयण । मन बसै तेम तूं मांहरे, मो मन बसियौ महमहण ।—ह. र.
उ०—२ ताहरां रांणंगदै कह्यौ—मांहरै राठोड़ां सूं वैर, सु परणीजण कोई नीं ग्रावै ।—नैणसी

मांहरौ—देखो 'म्हारौ' (रू. भे.)
उ०—१ नायक मांनै चुगल नूं, परगह करै पुकार । मांहरा सिर रा मोड़ नूं, कर बोळो करतार ।—बां. दा.
उ०—२ तींसूं म्हैं काची बात कीं वास्तै तोड़ा भटनेर तो मांहरौ छै ।—ठाकुर जैतसी री वारता
उ०—ग्राज पछै मांहरा राठोड़ वंस मैं माता पंखणी पूजसी राज मांहरा वंस में पूजनीक गुरु होयस्यौ ।—रा. वं. वि.

मांहल—देखो 'महल' (रू. भे.)

मांहलु—देखो 'मांयलौ' (रू. भे.)
उ०—राहु नूं सिर हरि छिदूं, पुरांणिक मिथ्यां कहि । विरहणि नूं छेदिऊं ते, मरम मांहलु नवि लहि ।—नळाख्यांन

मांहलौ—देखो 'मांयलौ' (रू. भे.)
उ०—१ तरै लूंणगनूं पातसाह कनै ले गया । उठै पातसाह मांहला मांडै तेड़नै लूंणग ग्रागै कबांण नांखी ।—नैणसी

उ०—२ आगै बहै तिण बाहळै करनै गांव मांहली बावड़ियां पांणी री सेझौ छै।—नैणसी
(स्त्री० मांहली)

मांहां, मांहा—१ देखो 'मांय' (रू. भे.)
उ०—१ पातिसाह रै उड्दू बाजार मांहां मिरजे रै लसकर सीधौ लियौ।—द. वि.
उ०—२ तद राजा मछ री पेट चीरियौ तै मांहां उवा मोतीयां की जोड़ी लाख रुपीयां की नीसरी।—चौबोली
२ देखो 'म्हां' (रू. भे.)
उ०—१ आ डावड़ी जाय तठै वांसै हुयौ जाय नै जिका खबर होय, सु मांहां नै देई।—नैणसी
उ०—२ ताहरां रजपूतांणी नूं 'नरो' कहै- बोहत बुरी हुई। भीलां मांहां सो डरीयौ नहीं।—जैतमाल पंवार री बात

मांहाकर—देखो 'मांयकर' (रू. भे.)

मांहारी—देखो 'म्हांरी' (रू. भे.)
उ०—पातसाहजी रौ पाछौ हुकम आयौ—रा० वीरमदे नुं बवळी दी सु भलौ कांम कीयौ, अबै रा० बीरमदे कुं खरची देनै सताब मांहारी हजूर भेजजो।—नैणसी

मांहारै, मांहारैं—देखो 'म्हांरै' (रू. भे.)
उ०—जाट थका पुकारै छै, पुकारू आया छै, मांहारै सदांमद लेता सु लै छै।—नैणसी

मांहारौ—देखो 'म्हांरौ' (रू. भे.)
उ०—परधांन आया, आ वात परधांन की थी पण मलुखांन बरसिंघ सुं लागतौ थौ हीज कहै—एक तो मांहरी सैंभर मारी, तिण रौ मांहारौ म्है बित मांगां।—नैणसी
(स्त्री० मांहारी)

मांहि, मांहि—देखो 'मांय' (रू. भे.)
उ०—१ त्रिभुवन मांहि न तोसूं तोलै, सरण राख मो ईसर बोलै।—ह. र.
उ०—२ चित लालच वेळां चढ़ै, चेलां जिनस चढांहि। हेलां पर घर हांण दै, मेळां खेलां मांहि।—बां. दा.
उ०—३ बळै तंनमो तनमो इंद्रबाई, तुही सुन्य रै मांहि चैतन्यताई। महंमाय तूही तुही जोग माया, प्रकत्तो सकत्ती तुही नांम पाया।
—मे. म.
उ०—४ जु रवि पस्चिम ऊगमई, मेरू चलइ मही मांहि। विहितणां पखि जे लख्या, चतुर न चूकइ क्यांहि।—मा. कां. प्र.
उ०—५ अधकी तन आकाहि, सोण धरा पड़ियां सैंहस। जागै जुध जुड़तां जवन, मांझी कटकां मांहि।—मा. वचनिका

मांहिजौ—सर्व०—मेरा, हमारा।

मांहिलौ—देखो 'मांयलौ' (रू. भे.)
उ०—१ मांहिलौ ठाकुर लाधौ मांय। पुजावै आपो आप ही पांय।—ह. र.
उ०—२ अबिनासी आया सुणूं जब नोंति धिपाऊं हो। साहिब सूं मन मांहिलौ दुख टेरि सुणाऊं हो।—मीरां
उ०—३ आगोत्तर सुख कारणै, छत्ती रिध छोड़ी आवास। हाथूं छोडि कुण करै, पेट मांहिली आस।—जयवांणी
(स्त्री० मांहिली)

मांही—देखो 'मांय' (रू. भे.)
उ०—१ पोख हित वेळ गावौ चरित पेमरा, मुरळिका सुणावौ घोष मांही।—बां. दा.
उ०—२ आप तक आवणौ ही जै नहीं देयस्यां, बीच ही मांही जै झाल लेयस्यां।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
उ०—३ नखी जांणि भूलां जरी तास नांहीं, मिळी तांमसी व्रित्ति राजसी व्रित्ति मांहीं।—व. भा.
उ०—४ तरफ हुओ 'दारा' तणी हुओ 'सूजा' तरफ, पिछु लिया खजांना पार पखै। खून जिता करै 'जसौ' बळ खाग रै, रोद इता राह मांही राखै।—नरहरदास बारहठ
उ०—५ मुख ऊपर मिठियास, घट मांही खोटा घड़ै। इसड़ां सूं इकलास, राखीजै नहीं राजिया।—रा. सो.

मांहीनौ—देखो 'महीनौ' (रू. भे.)
उ०—लूंणजी नाळेर हरख करनै झालीयौ। साहौ मांहीनां रौ थापीयौ।—पीठवै चारण री बात

मांहीमांही—देखो 'माहोमांहि' (रू. भे.)

मांहीलौ—देखो 'मांयलौ' (रू. भे.)
उ०—इतरी सुणी और मांहीलौ लोग हां-हां करि दौड़ियौ।
—सूरे खींवै कांधळोत री बात
(स्त्री० मांहीली)

मांहे—देखो 'मांय' (रू. भे.)
उ०—१ चुगल फिरंगी अत चतुर, विद्यातणां बखांण। पांणी मांहे पलक में, आग लगावै आंण।—बां. दा.
उ०—२ घर आंगण मांहे घणां, त्रासै पड़िया ताव। जुध आंगण सोहै जिकै, वालम वास वसाव।—बां. दा.
उ०—३ एक जगण जिण मांहे आवै, कुळवंतीसौ गाहा कहावै।
—र. ज. प्र.
उ०—४ तद राह मांहे स्री कंवरजी जाय पातसाहजी रै पांवै लागा।—नैणसी

मांहेमांहे—देखो 'माहोमांहि' (रू. भे.)
उ०—तीनूं मकुआंणां मांहे सूं निसरिया, मांहे-मांहे संबंध हुवौ छै।
—बां. दा. ख्यात

मांहेलौ—देखो 'मांयलौ' (रू. भे.)
उ०—१ तो कहो मांहेलौ भेद रे।—धरम-पत्र

उ०—२ जे खाविंद निराठ आबरू सूं राखिया, पेट काठा घपाया, मारवाड़ री रूहाड़ मिट गई, तिण सूं इण मांहेलौ कोई रहै नहीं। —अमरसिंह गजसिंहोत री बात

(स्त्री० मांहेली)

मांहै—देखो 'मांय' (रू. भे.)

उ०—१ सोबा आद जोधपुर सोजत, च्यारूं तरफ रहै चक्राकित। सेख रहै भड़ मेछ सनाहै, नूर अली जैतारण मांहै।—रा. रू.

उ०—२ तरै देवी नागही कह्यौ—थे सवारा सूता ऊठौ, तरै थांहरी पाघ मांहै सूं चावळ रंगिया नीसरै तौ साच कर जांणीजो। —नैणसी

मांहोमां, मांहोमांह, मांहोमांहि, मांहोमांही, मांहोमांहे—१ देखो 'माहो-माही' (रू. भे.)

उ०—१ उडै गुलाल अबीर रे र० नीर छांटे रे मांहोमां सहु रे। भीजै नवला चीर रे र०, प्रेम वधावै नर नारी बहु रे।—वि. कु.

उ०—२ किताईक वरसां मांहोमांह मतौ कियौ—पंचायती कियां नूं घणां वरस हुवा सो हमैं निहचौ करौ, पंचायती करणी आपै भूला क न भूला।—बां. दा. ख्यात।

उ०—३ मांहोमांहि ते लसकर बे मिलिया, सनद्ध बद्ध संकळीया। टंकारव लागै नवि टळीया, भड़ सहु कोई भिळीया रे।—वि. कु.

उ०—४ सुं डाहळियां नै वागड़ियां मांहोमांहि खिसण थी। —नैणसी

उ०—५ सबल निबल ने भखै जीवा, वैर मांहो-मांहि देख। —जयवांणी

उ०—६ सखी री अति सीत परतु है माहैं, सब सोवत मांहोमांहे। —ध. व. ग्रं.

मांहोमांह—देखो 'माहोमांहि' (रू. भे.)

उ०—पछै ऐ ठाकुर मांहोमांह कहण लागा म्हे मारसां। —नैणसी

मा—सं० स्त्री० [सं० मातृ, मा] १ जन्म देने वाली माता, जननी, अंबा। (ह. नां. मा)

उ०—इण अवसर स्त्रीकसणजी मा ने वंदन काज। आवै प्रणमी चरण युगल, बेठा स्त्री महाराज।—जयवांणी

पर्या०—अंबा, अमा, आई, कूखधारण, जणी, जननी, जनयंती, माता, मादर, माय, रख्यकरण, सवती, सवयती।

२ माता की स्थानापन्न या माता के स्थान पर होने वाली स्त्री, विमाता।

३ वृद्ध या आदर करने योग्य स्त्री, पूजनीय स्त्री।

४ उक्त प्रकार की स्त्री के लिए सम्बोधन।

[सं०] ५ लक्ष्मी। (अ. मा.)

६ सीता। (अ. मा.)

७ दुर्गा, देवि, शक्ति।

उ०—१ देवी कालिका मा नमौ भद्रकाळी। देवी दूरगा लाघवं चारिताळी।—देवि.

उ०—२ नवौ जन्म लै कुंड कंडीर न्हावै, महा सुद्ध व्है युद्ध मा नूं नमावै।—मे. म.

८ गौरी, गिरिजा, पार्वती।

९ पृथ्वी। १० गौ, गाय।

रू० भे०—मां।

११ गति।

अव्य०—१ मत, नहीं, न।

उ०—१ जो तू चाहै मुकत-फळ, धूना मन धीरच्छ। लोख मांन सरवर तठै, माल हुवै मा मच्छ।—बां. दा.

उ०—२ आगा चल पीछा फिरै, ताका मुंह मा दीठ। दादू देखै दोइ दळ, भागै देकर पीठ।—दादूबांणी

२ अन्दर, भीतर, में।

अल्पा०—मांवड़ली, मावड़ी, मावडी।

मह०—मावड़।

मा'—देखो 'महा' (रू. भे.)

उ०—हा हा पापण मा' हत्यारी रे, नहीं आंणी दया लिगारी। देखो रांणी री कमांई रे, जोयजो स्वारथ नीं सगाई।—जयवांणी

माइ—देखो 'माता' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ माइ जनक भ्राता मिळण अतरा अंतर अंत। अतिजब तीजौ आवियौ, भूप कंवर 'भगवंत'।—वं. भा.

उ०—२ करमादांन पनरे कह्याजी, प्रगट अठारेजी पाप। जे मई सेव्या ते हुवइजी, बगस-बगस माइ बाप।—स. कु.

माइडी—देखो 'माता' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तू मत बरजै माइडी, साधां दरसण जाती। राम नाम हिरदै बसै, माहिलै मन माती।—मीरां

माइत—देखो 'माईत' (रू. भे.)

उ०—१ थर हर कंपै नेड़ां थकां रे, अळगा पावै चैन। ओरां री कुंणसी चले रे, न मांनै माइतां रां वैन।—जयवांणी

उ०—२ अब माइतां व्याव की होंस कीनी छै। रांमेसुर ब्राह्मण नै आग्या दीनी छै।—बगसीरांम प्रोहित री बात

माइतपण, माइतपणौ—देखो 'माईतपणौ' (रू. भे.)

माइल्ल—देखो 'मायौ' (रू. भे.)

माइवाहक—सं०पु० [सं०मातृ-वाहक] लकड़ी में लगने वाला कीड़ा, घुण।

माई—देखो 'माता' (रू. भे.)

उ०—१ भाई बेटउ बाप पणि, सगपण माई न मित्र। राजसभा नवि घीरीइ, लिखी चितारइ चित्र।—मा. कां. प्र.

उ०—२ माई एहा पूत जण, जेहा 'ऊनड़' जांम। दीधी सातूं सिंध इम, जिम दीजै इक गांम।—बां. दा.

उ०—३ मुणीं मैं जिका आदि अनादि माई। अवतार ले मांमड़ा धांम आई।—मे. म.

माईजायौ—देखो 'माजायौ' (रू. भे.)

उ०—रांमजी भूठा थे भूठा ना बोल। सावण आसा जी, माईजाये बीर कै।—लो. गी.

माईत—सं० पु० [सं० मातृ-पितृ+प्रा० माइ-विइ] १ माता-पिता, मां-बाप।

उ०—१ तद कंवर वीकैजी कयौ, ठीक है, आप माईत हौ, नै आपरो वचन माथै ऊपर है फुरमाईजै।—द. दा.

उ०—२ इस्टूलां आपरै डील रै आवै तौ माईतां रा घणां ई हीड़ा करतौ, पण नांणां री गरज तौ नांणां सूं ई सरती ही।—फुलवाड़ी

२ पूर्वज, बडे-बूढ़े, बडेरे।

३ वह बुजुर्ग या वृद्ध पुरुष जो माता-पिता के समान ही आदर करने योग्य हो।

४ संरक्षक, अभिभावक।

रू० भे०—मांवीत, माइत, मायत, मावत, माधित, माविश्र, मावीत, मावीत्र।

माईतपण, माईतपणौ—सं० पु०—१ माता-पिता होने का भाव, वात्सल्य, प्रेम।

२ अपने से छोटों पर दया करने का भाव, बड़प्पन।

३ अभिभावकत्व।

रू० भे०—माइतपण, माइतपणौ, मायतपणौ, मायीतपण, मावीतपणौ।

माईय—देखो 'माता' (रू. भे.) (उ. र.)

माईया—१ देखो 'माया' (रू. भे.)

उ०—देवी मथुरा माईया मोक्ष दाता, देवी अवंती अजोध्या अध्य हाता।—देवि.

२ देखो 'माता' (रू. भे.)

माईरौलाल—सं० पु०—१ वह व्यक्ति जो किसी कार्य के लिये अपने स्वार्थ को त्याग कर भारी जोखिम उठाने को तैयार हो, कठिन कार्य करने वाला।

ज्यूं—कुण माईरौलाल ऐड़ो है सो ओ बीड़ो उठावै।

२ हितैषी, शुभेच्छु।

उ०—कोई माईरौलाल हूंकारो भरतौ तौ या तो पैलां पावड़ी मांगतौ अथवा लुगाई टाबरां वाळां नै तो राखण नै तैयार हो पण म्हांरै जिसा वांडा कुतकां नै नहीं।—रातवासो

माउ—देखो 'माता' (रू. भे.)

उ०—१ उणी री माउ तो जोगण हुई श्रै समाचार बीरम सुणनै वैराग आयौ।—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

उ०—२ सवागढ़ अचूकी री माउ आय पूछै, तो कहै—बे तो कद-काई गया। तद ऐंण नूं वैराग आयौ। माउ रौ जीव रह्यौ न गयौ।—कल्यांणसिंह नागराजोत वाढ़ेल री वात

माउड़ी—देखो 'माता' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कांई रे करै छै वीरा माउड़ी, कांई रे गांवा रा लोग।—लो. गी.

माउजी—देखो 'माजी' (रू. भे.)

उ०—१ म्हांरा माउजी लावै छकियार।—लो. गी.

उ०—२ बना किण विध ओढाजी क घर में थारा माउजी बुरा। बनी महलां में ओढो है नीरखांला थारी धनसपुरी।—लो. गी.

माउलउ—देखो 'माउलौ' (रू. भे) (उ. र)

उ०—धनुख कला माउलउ पढावइ, जीव दया नियचित्ति रहावइ।—सालिभद्र सूरि

माउलाहो—वि० [सं० मातुलीय] मामा का, मामा सम्बन्धी। (उ. र.)

माउलौ—सं० पु० [सं० मातुलः] माता का भाई, मामा।

उ०—मात न तात न माउला, बहिनर बंधु न कोय। जिहां जिहां सज्जन आपणउ, रांनि वेलाउल होय।—मा. कां. प्र.

रू० भे०—माउलउ, माऊलौ।

माऊ—देखो 'माता' (रू. भे.)

उ०—एक डोकरी नै गांव री बस्ती रा सै माऊ रा नांव सूं आदरै। पाखती चौताळै रा सैंधा लोग उण नै माऊ कैयनै बतळावै। डोकरी रौ मिजाज आकासां चढग्यौ।—फुलवाड़ी

माऊजी—देखो 'माजी' (रू. भे.)

उ०—१ डाढाळी सूं रूड़ो लागै थळवट हुंदौ देस। माऊजी सूं प्यारौ लागै देसांणा रौ देस।—अज्ञात

उ०—२ इतरौ माऊजी री लाड छोड'र बाई सिध चाल्या?—लो. गी.

माऊलौ—देखो 'माउलौ' (रू. भे)

माकंद—सं० पु० [सं०] आम का वृक्ष।

२ उक्त वृक्ष का फल।

३ इन्द्र।

उ०—बीज तणउ जिम बाधइ चंद, तिम बाधइ 'धारलदे' नंद। मात पिता उमहइ आणंद, देवलोक नउ जिम माकंद।—कविवर सार

माकंदी—सं० पु० [सं०] महाभारत युद्ध से पूर्व युधिष्ठिर द्वारा दुर्योधन से मांगे गये पांच गांवों में से एक का नाम।

माक—सं० पु०—अर्जुन का एक नामान्तर। (ह. नां. मा.)

माकड़—१ देखो 'मरकट' (रू. भे.)

उ०—१ खगां जीतणां धाव मैं दाव खेल्है, मलंगी तड़ां माकड़ां पीठ मेल्है।—वं. भा.

उ०—२ बैठी बाखड़ियां चाखड़ियां चाटै, कांमळ नै चकियां चकियां सूं काटै। माकड़ माकड़ सी मोळी मुख मोळै, घरणीं हिरणीं लख हिरणी चख घोळै।—ऊ. का.

उ०—३ जुवारी घर रिद्ध कस, माकड़ कंठे हार। गहला माथै वेवड़ौ कुसल वे केत्ती बार।—पंचदंडी री वारता

उ०—४ ओर जोधार तौ सत्रुग्रां रा गढ ऊपरै नीसरणी देनै नीठ नीठ चढै अने माहरै पती है सो गढ़ पर धावौ कर चढै उठै इतरौ कूद ने ऊपर जावै है के माकड़ (लिगूंर) घणा कूदण वाळा होवै है पण बांनै ही मेलै पींठ-(लारै मेलै) अरथात लिगूर ही लारै रहै छै। —वी. स. टी.

२ देखो 'मत्कुण' (रू. भे.)

माकड़ा-सं० पु० (ब व.) १ गाड़ी के 'ओदणों' पर थाटे के कुछ आगे लगने वाले लकड़ी के दो चोकोर टुकड़े जिनके दोनों ओर बड़े बड़े छेद होते हैं।

२ ऊंट के पुट्ठे।

उ०—माकड़ा झाड़ आखाड़मल चाढ्यां मसती चालिया। सिधराज जांण माजम मसत, हिंगळाज मग हालिया।—मे. म.

रू० भे०—मांकड़ा।

माकड़ी-सं० स्त्री०—१ पीठ।

उ०—छोटी मूतणीं, चोड़ी माकड़ी, खुल्ला वयांरां री········। —फुलवाड़ी

२ कान का एक आभूषण।

३ कूऐ खोदने का उपकरण कुआ खोदते समय जब जमीन में फंस जाता है तो, उसे निकालने का एक उपकरण।

४ देखो 'चाखड़ी' (१ से ५)

५ देखो 'मकड़ी' (रू. भे.)

रू० भे०—मांकड़ी।

माकड़ौ-सं० पु०—१ पशुओं के पुट्ठे की हड्डियों का संधीस्थल।

२ देखो 'मरकट' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—घोडा नै असवार पांच पांच वरछीयां रा ठेका देवै छै। काछी माकड़ा ज्यूं लांफां भरै छै।—पनां

माकण—१ देखो 'मत्कुण' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—माय बाहा क्रम पीरादिक वेइंडी होय। गोमी माकण जुआ कीडा कीडी दोय।—ह्व. रत.

२ देखो 'मरकट' (रू. भे.)

माकरी-सं० स्त्री०—माघ शुक्ला सप्तमी जो पर्व दिन माना जाता है।

मा'कलप—देखो 'महाकल्प' (रू. भे.)

मा'काळ—देखो 'महाकाळ' (रू. भे.)

माकूल-वि० [अ० मा'कूल] १ उचित, मुनासिब, वाजिब।

२ उत्तम, उम्दा, अच्छा, बढ़िया।

उ०—खावण पीवण रौ सगळौ माकूल इंतजाम पें'ला सूं व्हियोड़ौ हो।—फुलवाड़ी

३ जसा आवश्यक, अपेक्षित और वांछनीय हो, यथेष्ट।

उ०—लखुखी आपरा घर में बांमणी रै वास्तै सगळौ माकूल इंतजाम कर दियौ।—फुलवाड़ी

४ योग्य, लायक।

५ सभ्य, शिष्ट। ६ शुद्ध।

माख-सं० पु० [सं० मक्ष] १ मक्खियों का झुण्ड या समूह।

२ गर्व, अभिमान।

उ०— माख में वातां वणावै है कैवै है—भाईड़ा अब कै तो दोलड़ी लुगाई ल्यावां तो चोखी वात हुवै।—दसदोख

३ नशा, मद।

४ नाराजगी, क्रोध।

५ पश्चाताप, पछतावा।

६ देखो 'माखी' (मह., रू. भे.)

७ देखो 'माखौ' (मह., रू. भे.)

माखण-सं० पु० [सं० म्रक्षणं] १ दही को मथकर निकाला जाने वाला सार तत्व, जो अत्यन्त स्निग्ध होता है और जिसको तपाकर घी निकाला जाता है, नवनीत, मक्खन। (ह. नां. मा.)

उ०—१ एकर एक कागला रै माखण मीसरी लाग्योड़ी एक रोटी हाथ आई।—फुलवाड़ी

उ०—२ सुरंगा वेस, दूध, दही, छाछ अर माखण सूं लथपथ व्हैगा।—फुलवाड़ी

पर्या०—तक्रसार, दधसार, नवनीत, नवोध्रति, नैगवीन, परघ्रत, मधुर, मेळसरुज, सरज, सारज।

२ सार तत्व।

रू० भे०—मक्खन,मखण, मखन, मांकण, मांकुण, मांखण, माखन।

अल्पा०—मखनी, माखणियौ।

मह०—माखणड़ौ।

माखणड़ौ—देखो 'माखण' (मह., रू. भे.)

उ०—नागजी माखणड़ौ सो तैं लियौ रै, वैरी, रह गई खाटी छाछ रै ओ नागजी।—लो. गी.

माखणियौ-सं० पु०—१ एक प्रकार का कपड़ा।

२ एक प्रकार का घास।

३ एक प्रकार का पत्थर।

४ देखो 'माखण' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—माखणिया की पाळ बंधा द्यौ मारूजी, नीमड़ली सींचा द्यौ काचा दूध रै जी म्हां रा राज।—लो. गी.

माखन—देखो 'माखण' (रू. भे.)

उ०—साधु हमारे हम साधुन के, साधु हमारे जीव। साधुन मीरां जो मिल रही है, जिमि माखन में घीव।—मीरां

माखी-सं० स्त्री० [सं० मक्षिका] १ पतंगे की जाति का प्रायः समस्त संसार में पाया जाने वाला जीव जो प्रायः खाने पीने वाले पदार्थों पर बैठता है। यह गंदे पदार्थों पर बैठकर संक्रामक रोग फैलाता है, मक्षिका। (उ. र.)

उ०—१ बुरी चुगल मुख में बसे, आछी रौ नंह अंग। माखी बैसै स्वांन मुख, भूल न बैसे भ्रंग।—बां. दा.

उ०—२ ढीलुं गीलुं करइ, जे खाधुं ते खाधुं, सेख माखी भिणहणतउं ·····।व. स.

२ मधु-मक्खी।

उ०—१ तीर खांचनै कांन गोडै लियौ हो के माखी फूलां रौ रस चूसती देख लियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ रस संचै माखी जुंही, कीड़ी ज्यूं कंणरास। धरै भेस जिम जीर वै, बैस दूकांनां बास।—बां. दा.

३ बन्दूक की नाल के अग्र भाग पर बना हुआ नुक्का, जो निशाना साधने में सहायक होता है।

रू० भे०—मकी, मक्की, मक्खी, मखी, मांखी।

मह०—माख।

माखीना'र-सं० पु०—मक्खी से मिलते जुलते आकार प्रकार वाला एक जीव जो प्रायः आश्विन मास में उत्पन्न होता है और मक्खियों का शिकार करता है।

माखीमद-सं० पु० [सं० मधु+मक्षिका] मधु-मक्खी का मधुयुक्त छत्ता।

उ०—क्रपण करै धन कोय, कोडी कोडी का पुरस। जावै बाधौ जोय, माखीमद ज्यूं मोतिया।—रायसिंह सांदू

माखीमार-सं० पु०—१ वह छोटा जानवर जो मक्खियों को मार-मार कर खाता है।

२ वह छड़ी जिसके आगे चमड़ा या कपड़ा लगा होता है जिसके द्वारा लोग प्रायः मक्खियां उड़ाया करते हैं।

३ समाज का बहुत घृणित व्यक्ति जो कंजूस हो, मक्खीचूस।

वि०—वह वस्तु जिसके द्वारा मक्खियां मारी जाती हो।

रू० भे०—मक्खीमार।

माखीमाळ, माखीमाळौ-सं० पु०—मधु-मक्खियों का छत्ता।

उ०—दूजोड़ो कह्यौ—चूंदड़ी री ठोड़ डाळा रै माखीमाळ टिरियोड़ो हो।—फुलवाड़ी

माखौ-सं० पु०—१ बड़ी मक्खी।

२ सोना मक्खी।

३ बड़ा अफीमची।

उ०—ताकत डोलै तीसरा, साथरवाड़ा सोद। पै'लां घर पटकी पड़ै, माखां रै मनमोद।—ऊ. का.

मागंण—देखो 'मांगण' (रू. भे.)

माग-सं० स्त्री०—१ घोड़े की एक चाल विशेष।

रू० भे०—मागइ।

२ देखो 'मारग' (रू. भे.)

उ०—१ करै दांन कुरखेत में, मंजन करै प्रयाग। मरै चुगल कासी मही, मिटै न दोजख माग।—बां. दा.

उ०—२ बहै जातरी रात री दीह बारा, थकै चाढवौ माग रौ खाग धारा।—मे. म.

उ०—३ जलहरि जल संजल करियां, दिसि दिसि रूंध्या माग। न लहइ ऊगिउ आथमिउ, सेवंतां पीऊ-पाग।—मा. कां. प्र.

३ देखो 'माघ' (रू. भे.)

मागड़ौ—देखो 'मारग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—छूटै मूठ हातरी आगड़ै सूंगां पड़ै छाती, खळां अथागड़ै धुजागड़ै खांगै राव। वैणां वीरताइ रै मागड़ै राजसींग दूजा, राइ तनै पागड़ै लगाया राणै राव।—राणाभीमसिंह रौ गीत

मागज—देखो 'मांगण' (रू. भे.)

उ०—मागज धरां वधावण मोटां, मोटी पाघ संसार मई।

—द. दा.

मागडौ—देखो 'मारग' (अल्पा., रू. भे.)

मागण—देखो 'मांगण' (रू. भे.)

उ०—वाजए नंदिय तूर मागण जण कलिख करए। सीकरि ए तणइ झमालि नंदि मंडपु जण मणु हरए।—कवि ग्यांन कलस

मागणहार, मागिणयार—देखो 'मांगणहार' (रू. भे.)

उ०—भाक भाट-तणीं मनि वात ढोला तणीं बसी मनि घात। मागणहार उ दूहउ कहियउ, तिणि ढोलइ दूहइ चिति रह्यउ।

—ढो. मा.

मागणौ, मागबौ-क्रि० स० [सं० मार्गण, मार्गयतिम्, मृगणाम्, मार्गितम्] १ खोजना, तलाश करना, (उ. र.)

२ अनुसंधान करना, शोध करना।

३ देखो 'मांगणौ, मांगबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ तसु घरि बइसी राउ सा बाली मागइ। घात स वेडी वाहा पुण चींति न लागइ।—सालि भद्र सूरि

उ०—२ त्रिसिउ करालिउ मागइ नीर, तासउं करी ते पाई कथीर।

—वस्तिग

उ०—३ त्रस्णा माडी रही नइ हसी, हिव डोकर मागइ लापसी।

—वस्तिग

मागणहार, हारौ (हारी), मागणियौ—वि०।

मागिओड़ो, मागियोड़ौ, माग्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मागीजणौ, मागीजबौ—कर्म वा०।

मागध-सं० पु० [सं०] १ एक प्राचीन वर्ण संकर जाति जो वैश्य पिता व क्षत्रिय-माता से उत्पन्न हुई। इसका कार्य वंशावली पढना है।

उ०—वळै भाग सेवगां लाग धारी समसत्तां। मागध वंदीजणां सूत अदभूत निरत्तां।—रा. रू.

२ उक्त जाति का सदस्य। ३ बंदीजन, भाट।

४ मगध देश का राजा। ५ जरासंध का एक नामान्तर।

६ मगध देश का निवासी।

७ मगध देश की भाषा। (अ. मा.)

८ जीरा। ९ पिप्पली मूल।

वि०—१ मगध का, मगध सम्बन्धी।
रू० भे०—माहव।
२ देखो 'मगध' (रू भे.)
उ०—नेपाल, अंग वंग कलिंग तलिंग मागध लाट करण्णाट डाहल कनउज पंचाल गोरजर······।—व. स.

मागधक–सं० पु० [सं० मगध+अक] १ मगध देश का निवासी।
२ मागध भाट।

मागधी–सं० स्त्री० [सं०] १ मगध देश की प्राचीन भाषा।
२ मगध की राजकुमारी।
३ जुही, यूथिका।
४ छोटी इलायची।
५ चीनी, शक्कर।
६ बड़ी पीपल।

मागधेय–सं० पु०—चुंगीकर, महसूल।

मागनिसार–सं० पु० [सं० मार्ग+निष्कासन] निकलने का मार्ग, रास्ता।

मागरवाळ–सं० पु०—याचक, भिक्षुक।
उ०—स्रवण संदेसा सांभळै ढाढी किया प्रयांण। मागरवाळ जु आविया, देमे साल्ह सुजांण।—ढो. मा.

मागसिर, मागसिरि—देखो 'मिगसर' (रू. भे.)
उ०—१ मागुं तुझनइं मागसिर, जउ मुझ आंणि प्रेमि। हृदय-कमलि रांमा रही, त्यांह म पाडिसि हेम।—मा. कां. प्र.
उ०—२ मोटउं कूडउं मागसिरि वली विचारि जोइ। दिन थोडिउ रयणी घणी, वयरणी कांइ विगोइ।—मा. कां. प्र.

मागि—देखो 'मारग' (रू. भे.)
उ०—रातिं चालइ राउ मागि सुरंगह कुणबि सउं। दियइ पुरोहितु दाउ लाख हरइ विसनह ठवइ।—सालिभद्र सूरि

मागिणहार, मागिणिहार—देखो 'मांगणहार' (रू. भे.)
उ०—१ आऊ भाट नै मागिणहार, सीख मागि चाल्या असवार। आहेडा मिसि साल्हकुमार, पहुचावी आव्यौ तिणि वार।—ढो मा.
उ०—२ साल्ह कुमारनइ करी जुहार, करइ वीनती मागिणिहार। बिहुं मांसनउ अम्हसुं बोल, करी आवी तुम्ह पासै ढोल।—ढो. मा.

मागियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ खोजा हुआ, तलाश किया हुआ. २ अनु-संधान किया हुआ, शोध किया हुआ. ३ देखो 'मांगियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मागियोड़ी)

मागु—१ देखो 'मांग' (रू. भे.)
उ०—अरे कुरल केस अगनयणि ए, मागु भरवि सिंदुरा। अरे नयण कटखं आहणइ, मिलि सवि सांमल धीर।—समुधर
२ देखो 'मारग' (रू. भे.)
उ०—सीमु सिखंडी तणउं तांमु छेदीउ छलु साधीउ। पाम पराभव नइ प्रवेसि, गति मागु विराधीउ।—सालिभद्र सूरि

माघ–सं० पु० [सं०] १ शिशिर ऋतु का प्रथम मास जो पौष मास के बाद व फाल्गुन मास से पूर्व आता है। यह १०वां सौर मास तथा ११वां चंद्र मास माना जाता है।
उ०—माघइ वरसइ माहवठउं, सीत सलिल एक ठाह। हूं धूजी धरणीइं ढळूं, दिइ हरगांखी बाह।—मा. का. प्र.
रू० भे०—माह।
२ संस्कृत भाषा के एक लब्ध प्रतिष्ठित महाकवि।
उ०—१ मांडै कायब माघ मधि, पंडित माघ प्रमांण।—सू. प्र.
उ०—२ जैन भक्ति कुमारपाल नीं, नगरी वरणना लंका नीं, पुरुस वरणना विस्णु नी, काव्य वरणना माघ नी, कविता कालिदास नी·····।—व. स.
वि० वि०—इनका समय ईसवी की १०वीं शती में माना जाता है।
३ उक्त महाकवि द्वारा रचित प्रसिद्ध महाकाव्य, शिशुपाल वध।
उ०—कठै साख इण विध कही, सुणि इम कहै सुजांण। मांडै कायब माघ मधि, पंडित माघ प्रमांण।—सू. प्र.
४ कुंद का फल।
रू० भे०—माग, माघि, माघी।

माघजी–सं० पु० [सं० माघ] १ ज्योतिषी।
२ देखो 'माघ'। (२)
३ देखो 'मघवा'।

माघव—देखो 'मघवा' (रू. भे.)
उ०—भुजगेस महेस दुजेस रिसी, नित पै रज चाहत माघव रै।
—र. ज. प्र.

माघवई, माघवती–सं० स्त्री०—१ सात नरकों में से एक। (जैन)
उ०—घम्मा वंसा सेला अंजण रिठ्ठा ग्यात। मघा माघवई नारग ए नांमै सात।—वृ स्त.
[सं० माघवती] २ पूर्व दिशा।

माघवन–वि० [सं०] इन्द्र द्वारा शासित, इन्द्र का।

माघवांण, माघवांन—देखो 'मघवा' (रू. भे.)
उ०—१ सुखवर सुरांणां गो दुजांणां माघवांणां सुख मिळै। मह जिग मंडांणां थांण थांणां देत घांणां दूठ।—र. ज. प्र.
उ०—२ बेद में बिधाता हरी सत रौ चंदेस वाच, माघवांन छोळ ओप रिखीकेस नांम।—भगतरांम हाडा रौ गीत

माघि, माघी–सं० स्त्री० [सं० माघ] १ माघ मास की पूर्णिमा।
वि०—१ माघ की, माघ सम्बन्धी।
२ माघा नक्षत्र से युक्त।
रू० भे०—माही।
३ देखो 'माघ' (रू. भे.)
उ०—लागै माघि लोक प्रति लागो, जळ दाहक सीतळ जळण।
—वेलि

माघीपूनम—सं० स्त्री० [सं० माघ+पूर्णिमा] माघ मास की पूर्णिमा जो माघ कवि का जन्म दिन माना जाता है। कलियुग का प्रारम्भ भी इसी दिन से माना जाता है।

माड़ेची—देखो 'माडेची' (रू. भे.)

उ०—साथलड़ी सपीठी पींडी पातळी मांजी माड़ेची मूमल। हाले नी रे आलीजे रे देस।—लो. गी.

माड़ौ—वि० [सं० मंद] (स्त्री० माड़ी) १ अशुभ, खराब, खोटा।

उ०—१ अउतियै राजा री मूंडौ देखणा सूं उणनै सुगन माड़ा व्हिया, वो मूंडौ फेरनै पाछौ मुड़ग्यो, मूंडा मांय सूं थूंकियौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ कोड-कुसळ रै कांमां में हाथ लगावणौ ही माड़ौ मांनता।—दसदोख

२ निम्न कोटि का, घृणित, हेय।

उ०—मिनख मारणियां सूं लोग बात करणौ ही माड़ौ कांम समझै।—दसदोख

३ भद्दा, गंदा।

उ०—पै'ली बैः बिहाल की बात नै डाढी चोखी बणावै, जिका ही पछै बीं बात री माड़ी चुगली करण लाग ज्यावै।—दस दोख

४ नीच, बुरा।

उ०—संसार में वांणियां ही पैलांतर विगाड़णियां बडा माड़ा मांणस है।—दसदोख

५ अनुचित, खराब।

उ०—१ चोखा कांम सिद्ध होणै में घणी ताळ लागै पण माड़ा कांम तौ तुरता-फुरत पूरा हुय ज्यावै।—दसदोख

उ०—२ जुगरी जांण कारी राखतो थकौ आपरै गांवड़ै में माड़ी रीतरीवाजां मिटावण नै नौजुवांना री संगठण करै है अर करडा विचार लियां आपरै घर सूं ही तोड़ण रो सरुपोत मतो करै है।
—दसदोख

६ सोचनीय चिन्ताजनक।

उ०—सिपायां मरद री माड़ी हालत देखी जद आंख्यां सूं च्यार-च्यार चोसरा वरसाया।—दसदोख

७ दुबला-पतला, कमजोर। ८ बीमार, रोगी।

९ उदास, खिन्न। १० अरुचिकर।

११ हल्के दर्जे का, न्यून।

माच—देखो 'मोच' (रू. भे.)

माचणौ, माचबौ—देखो 'मचणौ, मचबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ निस्चित केतउं चालइ, सस्त्र समरहित केतउं धाउ वंचइ दूरबल केतउं माचइ''''''।—व. स.

उ०—२ म्हैं तौ सोच सोच में आधो व्हैगो, भलौ! आदमण थोड़ो घणोसोच तो थूं ई राख्या कर, थूं तौ दिनो दिन रांम जांणै कीकर माचै है।—फुलवाड़ी

उ०—३ सही प्रथिवी रही गहगही, साचइं कादम माचइं, कारसणी नाचइं, नीपजइ सातइं धांन, देखतां प्रधांन, नासइ दुकाल, भाद्रवइ वूठइ सुगाळ।—व. स.

उ०—४ सैन्य छांडइं अलुआरी मांडइं, कंठ पूरइं, गढ चूरइं, घाय रचइं, निहाय माचइं करदंत ताकइं''''''''।—व. स.

उ०—५ माच कमंधां मुग्गळां, यां जुद्धां खग आळ। अजक अणीधां अमल ज्यूं, विण कीधां रणताळ।—रा. रू.

उ०—६ स्रोण छोळां रा कीच माचि रह्या छै। नारद रिखहसै छै। वीर नाच रह्या छै।—पना

उ०—७ सजण सिधाया हे सखी, ऊभा आंगण बीच। नैणां छूटा चोसरा, काजळ माच्यौ कीच।—अज्ञात

उ०—८ आप लोगां रै जांणा सूं तौ सगळा राज मैं रुळियारो माच जावेला।—फुलवाड़ी

उ०—९ भीड़ में एकर फेर खळवळ माची।—फुलवाड़ी

उ०—१० कलबीं लोक ते अतिहिं नाचइ, सचराचरि जीव लोक माचइ।—नळ दवदंती रास

उ०—११ मत विसयारस माचज्यौ, बाचेज्यौ एहवा गुरुवैण कि। दुन्ही नै हित दाखवै साचा, तेह कहीजै सैण कि।
—ध. व. ग्रं.

माचणहार, हारौ (हारी), माचणियौ—वि०।

माचिप्रोड़ौ, माचियोड़ौ, माच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

माचीजणौ, माचीजबौ—भाव० वा०।

माचवणौ, माचवबौ—देखो 'मचणौ, मचबौ' (रू. भे.)

उ०—गजसिघोत कमंध नर गाढ़िम, तततखिण माचवियौ रणताळ दु-वयण काढियो दुआ सूं, प्रिसण परां काढ़ी प्रतमाळ।
—केसोदास गाडण

माचवियोड़ौ—देखो 'मचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० माचवियोड़ी)

माचियोड़ौ—देखो 'मचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० माचियोड़ी)

माचोद—वि०—माता के साथ संभोग करने वाला।
सं० पु०—एक गाली विशेष।

माछंदर—देखो 'मछंदर' (रू. भे.)

उ०—वांनी अंग वलेट मेखळी भुजपर मेली। ले माछंदर नांम साह तन कंथा सेली।—पा. प्र.

माछंदरसिख—सं० पु० [राज० मछंदर+सं० शिष्य] मत्स्येन्द्रनाथ का शिष्य, गोरखनाथ।

माछंद्र—देखो 'मछंदर' (रू. भे.)

उ०—१ जग ऊपर ऐ जाव, अण कथ रा रहसी अमर। सतमौ बगस सताब, चहू काठ माछंद्र सिख।—पा. प्र.

उ०—२ देवी वेद रै रूप तूं ब्रम्म वांणी, देवी जोग रै रूप माछंदर जांणी।—देवि.

माछ-सं० पु० [सं० मत्सर] १ गाढ़।

उ०—अपसरा आंण ऊभी तठे अधमगे, तंनर तरवारियां बहै तरसूं। राखजै माछ थोड़ो घणौ राठवड़, वीर वर अवर हूं किसो वरसूं।—ठा. सुरतांणसिंह रौ गीत

२ देखो 'माछर' (रू. भे.)

उ०—गांजीजै नहं चीतगढ, बींट वळां बळियांह। गांजीजै नहं गंध-गज, माछ घणां मिळियांह।—बां दा.

३ देखो 'मच्छ' (रू. भे.)

उ०—१ पाधू माछ पनंग गज पंखी, किहीं न बीजै सेव करंत। राउळ समंद मळैतर रेवा, मांन-सरोवर मन मांनंत।

—ईसरदास बारहट

उ०—२ सांभळ श्रप 'मांन' हिंदवा सूरज, बीदग आखै बीसबिसा। जळ तज माछ किसे थळ जावै, ज्यां जळ जीवन बीया 'जसा'।

—साहबदान सुरतांणियौ

४ देखो 'मच्छी' (मह., रू. भे.)

उ०—चीलां गगन तजै द्रुम चंदण, माछां गण नह तजै महण। मोटा धणी अबै तो 'मांना', पर पाळै तो बड़ापण।

—राजूरांम महडू

माछर-सं० पु० [सं० मत्सर] प्रायः कीचड़ में जलपर उत्पन्न होने वाला पतंगा जिसकी मादा अपने डंक से दूसरे का रक्त चूसती है।

उ०—१ दळ अकबर तोपां दगै, सूकै नीर निवांण। गोळां लागै चीतगढ़, मेंगळ माछर जांण।—बां. दा.

उ०—२ म्हैं तो एकलो ई हो अर वो ई नीं जैड़ो। म्हनै तो माछर नै मसळै ज्यूं मसळ न्हांकता।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मंछर, मच्छ, मच्छड़, मच्छर, मच्छरि, मच्छरी, मछर, मछरि, माछ।

अल्पा०—मच्छरियो, माछरियौ।

माछळ, माछलउ—देखो 'मच्छ' (रू. भे.) (उ. र.)

माछलड़ी, माछळी माछली—देखो 'मच्छी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ माता देववी टलवलइ जी, माछलड़ी विनुं नीर। नारी सगली पाय पड़ी जी, मत छंडो साहस धीर।—स. कु

उ०—२ थांरी तो घाली गोरी रा सायबा, जळ में माछलड़ी हो जास्यां म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—३ ग्रोऊजी हास्य करुं छूं तह्यो, हवडां प्रांण छांड सूं अह्यो। प्रीति कांहा गई पाछली। जल विण किम जीवि माछली।

—नळाख्यांन

उ०—४ जाळ रै मांय एक लांठी माछळी छटपटाट करती बारै आई।—फुलवाड़ी

माछळो, माछलो-सं० पु० [सं० मत्स्य] १ उदय होते सूर्य केआस पास, उत्तर की ओर मत्स्य के आकार का प्रकाश मण्डल जो वर्षा का सूचक माना जाता है।

२ देखो 'मच्छ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ खाम पछट्टा मीर खग, कटिया कोपट्ट। जांण उळट्ट माछळा, जळ तोछा तट्ट।—द. दा.

उ०—२ तिहां मच्छ नै अभिलास संचरै, धीवर सायर कूलै। समुद्रग बंधन थयो माछलो, जल प्रायक विण सूलै।—वि. कु.

३ देखो 'मच्छी' (मह, रू. भे.)

उ०—तुछ जल ज्यांही माछळा तड़फड़, भड लडफड़ तिण विध भाराथ।—महादेव पारवती री वेलि

रू० भे०—मांछळो।

माछि—देखो 'मच्छी' (रू. भे.)

उ०—माछि तुं मत तडफडइ, वनसी लागो दंत। वीछड़ियां मेळो नहीं, तो सरवर मां कंत।—ढो. मा.

माछिणि, माछिळी, माछिली—देखो 'मच्छी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ नारी तरावती नावडी, मांहि मुनिवर कोइ। माछिणि सिउं मनसिद्धि मिलिउ, सदगति पांमिउ सोइ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ मधु कर नइ जिम मालती, इंद्रांणी जिम इंद्र। प्रीति पांणी नइ माछिली, जिम कमलिनी दिणंद।—नळदवदंती रास

माछी-सं० पु०—मछी पकड़ने वाला व्यक्ति, धीवर, मछुवा।

उ०—तीजांमा नई नायता, माछी मिल्या गुआर। मीणा मोची मोकलां, मुकी गया दुआर।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'मच्छी' (रू. भे)

माछु—नहीं, न।

उ०—रंग देऊं वां नरां काछु रा पूरा काठा। रंग देऊं वां नरां माछु देवण हिय माठा।—ऊ. का.

२ दखो 'मच्छ' (रू. भे.)

माछौ—देखो 'मच्छ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—नइ माहि माछा हींडइं।—उ र.

माज-सं० पु०—मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

उ०—इवड़ी करइ केम आवाज रे, तु सहु देव्यां सिरताज रे। माहरी राखीजै माज रे, इतलो हिज दीजै राज रे।—वि. कु.

माजणउ—देखो 'मांजण' (रू. भे.) (उ. र.)

माजणो, माजबो—देखो 'मांजणो, मांजबो' (रू. भे.)

माजणहार, हारो (हारी), माजणियौ—वि०।

माजिओड़ो, माजियोड़ो, माज्योड़ो—भू० का० कृ०।

माजीजणो, माजीजबो—कर्म वा०।

मा'जन—देखो 'महाजन' (रू. भे.)

उ०—खिरगोसियो उण कनै जायर कह्यो—मा'जन वीरा, थारो वोपार फळै, थारै घर लिछमी वधै, थारो परदेसां जस फैलै म्हनै थोड़ी खांड दे।—फुलवाड़ी

मा'जनी—देखो 'महाजनी' (रू. भे.)

माजनूं—देखो 'माजनौ' (रू. भे.)

उ०—उरड़ अकुळाय आघा पड़ै आय अत। पड़ावै माजनूं लाज नूं खो अपत।—ऊ. का.

माजनौ-सं० पु०—१ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत।

उ०—१ ए मिळताई ऐंठ भूंठ परसाद भिळावै। कुळ में घालै कळह माजनौ धूड़ मिलावै।—ऊ. का.

उ०—२ माजनौ चोड़ै आयग्यौ, मूळीरौ हाथ पड़ग्यौ।—दसदोख

उ०—३ भूतां री सांन रा तौ टका व्हैगा। दो वेळा माजनौ गमायौ।—फुलवाड़ी

मुहा०—१ माजनौ गमणौ=वेईज्जती होना। २ माजनौ गमाणौ=वेईज्जती करना/कराना, फटकारना,भला बुरा कहना। ३ माजनौ धूड़ में मिळणौ=वेईज्जती की हद होना। ४ माजणौ पाड़णौ=फटकारना, भला बुरा कहना, धिक्कारना।

२ लक्षण, गुण। (व्यंग्य)

उ०—१ रांणी राजा नै तौ आपरै पेटा री बात नीं दरसाई पण आपरै माजना री एक डावड़ी नै सगळी बात बतायनै कह्यौ—जे थूं म्हारौ ओ कांम कर दियौ तौ म्हैं थनै गळा रो ओ नवलखौ हार बगसीस करूंला।—फुलवाड़ी

उ०—२ तरै लखै साद करनै कह्यौ—म्है थांहरौ माजनौ जांणता हीज था। नै म्हैं थांहरै बोलै आयां, नै म्है थांहरौ दीयौ गढ़ ल्यां? म्हां नु परमेस्वर देसी।—राव लाखै री बात

३ बुद्धि, अक्ल। (व्यंग्य)

उ०—कांणियौ काचर बोल्यौ—म्हैं थांनै आतां ई कह्यौ हो के म्हारौ नांव कांणियौ काचर है, म्हारा गाडी बळद पाछा सूंप दौ, पण थांनै तौ कुमत सूज्योड़ी ही। थांरै खुद रै माजनां सूं इतरौ बिगाड़ करायौ।—फुलवाड़ी

४ अस्तित्व, हस्ती।

उ०—बोल्यौ—दिन करै सो बैरी नीं करै। मिनख री के माजनौ है? ऐः बोल रांम कुवावै, सगौ नाक चणा नहीं चबावै है।

—दसदोख

५ मान, आदर, सम्मान।

६ बड़ाई, तारीफ।

७ कृत्य, कर्म।

रू० भे०—माजनूं।

माजम-सं० स्त्री०—१ भंग मिलाकर तैयार की गई बादाम की चक्की, स्वादिष्ट मादक पदार्थ।

उ०—१ अेधुळो प्रोहित माजम कसुमा लै छै, परगहै नै फूलमद का प्याला दै छै।—बगसीरांम प्रोहित री बात

उ०—२ माकड़ा भाड़ आखाड़मल, चाळ्यां मस्ती चालिया। सिध-राज जांण माजम मसत, हिंगळाज मग हालिया।—मे. म.

उ०—३ ऐ वाह्यां कांइ करो इसी दारू विनां ऐस कीसी। अबै माजम नै तो रैवणद्यौ आज तो सवाद दारू कोई ल्यौ।—पनां

रू० भे०—माजुम, माजून, माभम।

माजरि—देखो 'मांजरी' (रू. भे.)

उ०—पीत वरणाक, काकवत् स्वर, माजरि नेत्र, उस्ट्रवत् लंबहोट मूखकवत् लघु करणा।—व. स.

माजरौ-सं० पु० [अ० माजरा] १ घटना।

२ किसी घटना का हाल, वृत्तान्त, विवरण।

३ मामला।

४ देखो 'मांजरौ' (रू. भे.)

माजा-सं० स्त्री०—१ आज्ञा।

उ०—हुं गांम तणौं छुं राजा, कोण लोपै माहरी माजा।

—धरमपत्र

२ मर्यादा, सीमा।

उ०—सायजादां हुता सरस कर सैफळै, मिटी राखी भुजां जांण माजा। साज सक्रिया नहीं खळां दळां साजतां, रण अकळ जीवतां-संभ राजा।—नाथौ सांदू

माजाई, माजायी-सं० स्त्री० [सं० मातृ+जाता] बहिन, सहोदरा।

माजायौ-सं० पु० [सं० मा+जातः] (स्त्री० माजाई) सहोदर, भाई।

उ०—मिळि भायां कियौ मतौ माजायां, दळ बळ छळ आयां दुरित।—बदरीसिंघ अनोपसिंघ भाटी री गीत

रू० भे०—मांजायौ, माईजायौ, मातजायौ।

माजियोड़ौ—देखो 'मांजियोड़ौ' (रू. भे)

(स्त्री० माजियोड़ी)

माजियौ—१ देखो 'मांभी' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'माजी' (अल्पा., रू. भे.)

माजी-सं० स्त्री० [सं० मा+जी] १ वृद्धा स्त्री, बुढ़िया।

२ वृद्ध या विधवा स्त्री के लिये आदर सूचक सम्बोधन।

३ मां, माता।

उ०—१ माजी रोवै मांय, बापजी रोवै बारै। भाई रोवै भलां, सुणै नहीं किण रै सारै।—ऊ. का.

उ०—२ आब अमोलक ऊजळां, सभर गुणां तत सार। न्याय इसा नग नीपजै, माजी कूख मभार।—बां. दा.

४ किसी ठाकुर या राजा की माता।

उ०—पार पखै राजा प्रजा, पाजी न करै पाप। साजी ताजी साहबी, माजी रै परताप।—बां. दा.

५ दुर्गा, देवी।

उ०—छळं भैंन छोटी वहूं ओड़ छाजै, बिचै पाट राजीव माजी बिराजै।—मे. म.

रू० भे०—मऊजी, मांजी, माउजी, माऊजी।

अल्पा०—माजियौ ।

६ देखो 'मांझी' (रू. भे.)

उ०—कित रा ऐक माजियां नुं मार लीदा, इण भांत दांत तोडि पाछा दीना ।—पनां

माजुम—देखो 'माजम' (रू. भे.)

उ०—काले लीधी रीज करि माजुम गळां डळां, सोय रही विण सांमरयां साळु भरचौ सळां ।—पनां

माजू-सं० पु० [फा०] एक प्रकार का वृक्ष, जिसका फल ओषधि में काम आता है ।

माजून-सं० पु० [अ० मअ़जून] १ ओषधि में काम आने वाला मीठा अवलेह ।

२ देखो 'माजम' (रू. भे.)

माजूफळ-सं० पु० [फा० माजू + सं० फलम्, सं० मायाफल] 'माजू' वृक्ष का फल जो ओषधि या रंगाई में काम आता है ।

वि० वि०—यह वात नाशक, चरपरा, गरम व शिथिलता को दूर करने वाला है ।

रू० भे०—मांजूफळ ।

माजौ-सं० पु० [अ० मौजा] १ ग्राम, गांव ।

२ स्थान, जगह ।

माझ-सं० पु० [अ० मवाज] १ राज्य, देश ।

उ०—दवदंती रायनइ कहइ, द्यूत न रमीइ देव रे । अतिघणउं सहू कांई नहीं, माझ नइ कीजइ सेव रे ।—नळदवयंती रास

२ रिआसत ।

उ०—घोड़ी पिरथी री रूप छै । इसी घोड़ी माझ मांही नहीं ।

—सूरे खींवै कांधळोत री बात

३ सीमा, हद ।

४ मर्यादा । ५ छेद ।

६ देखो 'मध्य' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—हिया माझ उठै घरा हूकां, च्यार वरण अपणो मग चूकां ।

—ऊ. का.

माझम-सं० स्त्री०—१ एक नदी जो डूंगरपुर के पास पहाड़ों से निकलकर ईडर राज्य में होती हुई आमलियारा ठिकाने के पास वाकत्र नदी में मिलती है ।

२ देखो माजम' (रू. भे.)

माझळ—देखो 'मांझळ' (रू. भे.)

उ०—१ दीह घणा माझळ दुनीं, रुळियौ देखे रूप । माधव हमे प्रकास मौ, सिव ताहरौ सरूप ।—ह. र.

उ०—२ गाज हतै ऊखेड़ गज, माझळ वन तर मूळ । जागै नह थह में जितै, सझ हाथळ सादूळ ।—बां. दा.

उ०—३ गुण मै जण जण कंठ गवीजै, नरमळ जू निरभर मै नीर । जग माझळ वसतार घणौ जस, हुऔ अमावड़ दुआ हमीर ।

—महाराजा मांनसिंघजी

माझळरात—देखो 'मांझळरात' (रू. भे.)

उ०—अव्वल संकड़ी कोठड़ी दूजी माझळरात । तीजां संकड़ी ढोलियो, मतवाळै को साथ ।—लो. गी.

माझळि, माझळी—देखो 'मांझळ' (रू. भे.)

उ०—ज्यूं 'दुरग' 'अगजीत' मुरद्धर माझळी । आहव आहव अग वणायौ भुजबळी ।—किसोरदांन बारहठ

उ०—२ कळ-हळ करसी केकीयां, वळ-वळ खवसी बीज । म्यारा अलवल माझळी, तण पुळ रमसां तीज ।—मयारांम दरजी री बात

माझि—१ देखो 'मध्य' (रू. भे)

२ देखो 'मांझी' (रू. भे.)

माझिम—देखो 'मांझळ' (रू. भे.)

माझिमरात—देखो 'मांझळरात' (रू. भे.)

उ०—माझिमराति मोर तूं, म करसि मूआ पोकार । सूती जांणी सटक दे, 'मारि' करइ मुझ मारि ।—मा कां. प्र.

माझियौ—देखो 'मांझी' (अल्पा., रू. भे.)

माझिळ—देखो 'मांझळ' (रू. भे.)

उ०—वीरति मुख सूरति विळकुळियं, कमधज तेज कमळ कळमळयं । किसन वरण माझिल कंठळियं, सूरज किरण जांण झळहळियं ।—गु. रू. बं.

माझी—देखो 'मांझी' (रू. भे.)

उ०—१ कम हीमत कुळवाट, माझी मरण मलीण मत । कुळ ऊछेर कुवाट, पै'लां घर वाळै पिसण ।—बां. दा.

उ०—२ एक उण कवळा मोटोड़ा सूर विनां डार झाड झाड हो गई—तात्वरच सूर वडो माझी जोधार डार उण रौ कुळ भालां रौ भार दुसमणां रा भालां रौ भार झाड़ २ घर घर रा होय गया ।

—वी. स. टी.

उ०—३ वयणां वाकारियौ, तांम माझी गज केसरी । पवन पूर ऊफणां, जळण जांणं वन अंतरि ।—गु. रू. बं.

उ०—४ अत अछडां करण माझियां मारण, कटकां अटक केवियां काळ । भागां तूझ तणौ भणकारौ, 'गोपाळा' न करै गोपाळ' ।

—बां. दा.

माझीपौ—देखो 'मांझीपौ' (रू. भे.)

उ०—धाड़ै धाड़ै धन मां माझीपौ माऐ, 'वीरम' ना देवां वळै लखवैरं लाऐ ।—वी मा.

माझौ-सं० पु०—हिफाजत, जाब्ता ।

उ०—कुंवर बाहिर आया घोड़ा च्यार तुरंग च्यार इहां आंण मेलिया सो घणी गाढ़ सूं माझै से रखाया ।

—गौड़ गोपाळदास री वारता

माट-सं० पु० [सं० मृद्-भांड] १ दही मथने की रेई ।

उ०—१ फजरां हुयणीं सी दधि मथणीं फुरती। माटां घर घर में घण हरसी घुरती।—ऊ. का.

उ०—२ घरघर में धीणां घणां, घर घर घूमै माट। राग रंग रळियावणो, वर पुड़ मांभळ थाट।—बां. दा.

२ मटका, भाण्ड।

उ०—माछां-मांस घणउ मिलइ, भरचास-मदिरा माट। आवइ अति ओखांगता, संढ-तणइ गलि घांट।—मा. कां. प्र.

क्रि० प्र०—उतारणौ, फूटणौ, भरणौ।

मुहा०—माट मटकण उतारणा=छोटा मोटा काम करना।

३ मिट्टी का बना बड़ा पात्र।

४ मालिक, स्वामी।

उ०—गोकळि तणा भरवाडा भागा, सदा हीका नाट। बहिन मोरि गया चोरि, यादवां स्या माट।—रुकमणि मंगळ

४ मुख पर चमड़ा चढ़ा हुआ मिट्टी का बरतन। (वाद्य)

सं० स्त्री०—५ खेत की मेंड़।

६ देखो 'माठ' (रू भे)

७ देखो 'माटी' (मह., रू. भे.)

रू० भे०—मट्ट।

माटइ—देखो 'माटी' (मह, रू. भे.)

उ०—ते माटइ करिनइ मया रे, आंणी मन उपगार। आवी नइ मुझ थी मिलउ, दरसण द्यौ इकबार।—वि. कु.

माटकी—देखो 'मटकी' (रू. भे.)

माटको—देखो 'मटको' (रू. भे.)

माटली—देखो 'मटकी' (अल्पा., रू. भे.)

माटवी-सं० स्त्री०—चारण कुलोत्पन्न एक देवी।

उ०—माटवी खूबड़ी बूटमात, सचीयाय तूं ही वांकळ वीसैक।
—रांमदांन लाळस

माटि—१ देखो 'माटी' (रू. भे.)

उ०—१ सुकिण माहरी सरवरी, संतापइ सा माटि। जमालिथिकी जाई नहीं, परठी बईठी पाटि।—मा. कां. प्र.

उ०—२ निद्रा वसि ते राय दीठु ग्रिहि पांनि मन चलिऊं। अपूरव माटि भूपति नूं मन पंखी मांहां भलिऊं।—नळाख्यांन

उ०—३ मि एक तापस मुनि पीड्यु विना ते अपराध। साप तेणि मूंहि जी फु कीधा माटि बाध।—नळाख्यांन

२ देखो 'माटी' (रू. भे.)

उ०—दीलइं माहरइ दव बलई, पव पही लिइ वाट। सीत मंद सोरभ थई, फूंकि म फोकट माटि।—मा. कां. प्र.

माटी-सं० स्त्री० [सं० मृत्तिका] १ पृथ्वी के ऊपरी सतह पर प्राय: सर्वत्र होने वाला, बारीक कणों के रूप में एक भुर-भुरा एवं मुलायम तत्व, जिसमें उर्वरा शक्ति होती है और पृथ्वी पर के समस्त प्राणियों एवं पदार्थों में इसका अंश होता है, धूल, मिट्टी, रज, रेणु।
(उ. र.)

उ०—१ कंचन कूं माटी कर जांणौं, तिरिया कूं पाखांण बखांणौं।
—स्री सुखरांमजी महाराज

उ०—२ अइ मत्तउ रिसी जि रम्यउ, जल मांहैं हो बांधी माटी नी पाल। तिरती मूकी काछली, तइं तारघा हो तेहनइ तत्काल।
—स. कु.

उ०—३ धांन माटी सरिखौ लागै जद संथा रौ करणौ बाकी आऊखौ थोड़ौ जांणौ।—भि. द्र.

वि० वि०—अलग अलग स्थानों की मिट्टी में रंग भेद व गुण भेद होता है।

२ किसी स्थान विशेष की मिट्टी, जिसके बर्तन आदि बनते हैं।

उ०—कवरां नै तो माटी री पारी खातर ई वैंम को उपजतो नीं।
—फुलवाड़ी

३ पांच तत्वों में से वह तत्व जिससे प्राणियों का शरीर बनता है, पृथ्वीतत्व।

उ०—१ खाटी सो दाटी घर खोदै, साथ न चाली एक सिळी। पवन ज जाय, पवन विच पैठौ, माटी माटी मांहि मिळी।
—प्रथवीराज राठौड़

उ०—२ मांड्या सौ ढहि जावसी, माटी तणा मंडांण। जनहूरीया जमराय का, आवैंगा फरवांण।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

४ ताजा 'खोदी' हुई मिट्टी।

५ शरीर, देह।

उ०—कपड़ो माटी सेती लपेट अर कळाई सूधो हाथ लपेटियो हेकरसो।—द वि.

६ मृत शरीर, शव, लाश।

उ०—१ वो खांधियां नै यूं ई अटपटा सवाल पूछतो—म्हांरै गळाई थें लास नै बाळो क्यूं नीं? थांरै दफणायां पछै जिनावर माटी री सांन बिगाड़ै।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजा रा रंगमैं'ल रै ठोकर मारनै आपरा मांदा धणी री संभाळ खातर घरमसाळ में पूगी तो वो सांप रै खावणा सूं आगै मरियोड़ो सूतो। धणी री माटी नै है ज्यूं छोड नै उठा सूं न्हाटी तो मारग में चोर खोसली।—फुलवाड़ी

७ मांस, आमिष।

उ०—१ माटी मंगावी तुज्झ नइ देवुं, तेहनउ तूं कर आहार रूड़ा पंखी।—स. कु.

रू० भे०—मट्टिया, मट्टी, मांठि, मिटी, भिट्टी।

अल्पा०—मटिया, मटीया।

मह०—माट।

८ देखो 'मांटी' (रू. भे.)

उ०—तद खटोली उडी जठैं राज दरवार कियो बैठी छै। अर नायण री माटी मोर छड़ करै छै।—चौबोली

माटुवौ–सं० पु०—एक प्रकार का घोड़ा विशेष ।
उ०—अबलखी ऊजळा, सौनेरी सांमळा । राहुदारां रळा, माटुवा मांडळा ।—मा. वचनिका

माटे, माटै–क्रि० वि०—१ लिये, वास्ते, निमित्त ।
उ०—ते माटे उतावळा, राज पधारो एथ । निजर-दोलत निज सांमनी, पांमीजै कहौ केथ ।—ढो. मा.
अव्य० [सं० मात्र] केवल, सिर्फ, भर ।
उ०—२ 'करन'हर तमासै हैल माटै कियौ, सुरांपत बि मासै बेल सारूं ।—महाराणा राजसिंह री गीत
रू० भे०—मटि, माटई, माटि ।

माटौ–सं०पु० [सं० मातिक] (स्त्री० माटी) १ मिट्टी का बड़ा मटका । २ अपने से छोटे ऐसे व्यक्ति के लिए एक सम्बोधन जिसमें कोई विशेषता, चतुराई, बड़प्पन, साहस या आश्चर्यजनक बात हो ।
उ०—हाली तौ माटौ जाळकी री ठाडी छींया में गोडा माथै पग धरनै नेगम सूतौ हो ।—फुलवाड़ी
३ विवाह के बाद वधु की विदाई के साथ ही वधु के पिता की ओर से एक नऐ मटके में भरकर भेजी जाने वाली, मगद, खाजा, बड़ी-पापड़ आदि वस्तुऐं । (परम्परागत)
उ०—मिठाई मगद र माटा काठा दाटा दे दे'र बूमी मोळी सूं बांध्या । आप डागै गतै री टोपी लगाई, वडै भाई केसरिया पाग झुकाई ।—दसदोख
रू० भे०—मट्टौ ।

माठ–सं० स्त्री० [सं० मष्ठ, प्र० मस्ट्ट] १ किसी चालु कार्य को रोकने, बंद करने, समाप्त करने या पूर्ण करने की क्रिया या भाव, अंत, समाप्ति ।
उ०—१ अबै थूं वां'णी देवणी माठ करनै थोड़ी टोळा री साळ-संभाळ कर ।—फुलवाड़ी
उ०—२ भगवांन जांणै इण आड़त री अबै कद माठ आवैला ।
—फुलवाड़ी
२ सीमा, हद, सरहद ।
उ०—१ उण रा जिम्मा री नीं कोई माठ है अर नीं कोई सींव ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ म्हनै ऐ राजा-पातसाह घणां गरीब लखावै, क्यूं कै आंरी लालसावां री कोई माठ नीं व्है ।—फुलवाड़ी
३ संतोष, सब्र, धीरज ।
उ०—१ म्हैं निरभागी म्हारी जीवती आंख्यां सूं सगळां नै बिछ-ड़तां देख्या, पण बेटी इण निजोरी बात माथै किण रौ जोर चालै । रोय रोय नै माठ झेली ।—फुलवाड़ी
उ०—२ आंगणा माथै सांप री मोटो अर तिरछी लींगटी देखनै वा तुरत समझगी के सांप डसग्यौ । पण अबै समझ में आयां ईं कांईं व्है । करम ठोकनै माठ झेली ।—फुलवाड़ी
उ०—३ म्हैं अळगौ ऊभनै सुणूं'ला, थूं जित्तै माठ कर ।—फुलवाड़ी
४ शान्ति, चुप्पी, मौन ।
उ०—भूवाजी झालियोड़ा हाथ नै जंभेड़ता थका कैवण लागा—म्हारौ माथौ मत पचा । माठ कर । भगवांन थनै लुगाई री ठौड़ कागला री कुपाळी दी है ।—फुलवाड़ी
५ खेत की मेंड़ ।
उ०—१ माठ माठ खेत रा धणी नै आवतौ लखियौ के कागलौ हिरण नै इसारौ कर दियौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ इत्ता में डोकरी री खेत आयग्यौ । मां रै माठ माथै आवतां ईं बेटी तौ हूळ फिटो करियौ ।—फुलवाड़ी
उ०—३ आ कैयनै वौ स्याळियौ तौ खेत री परली माठ माथै जायनै ऊभौ रैगौ ।—फुलवाड़ी
६ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।
७ स्वाभिमान ।
उ०—पण विधवा मू'ती पागड़ी बा'रो मरद, माठ हाळी लुगाई दटै नहीं । सील अर साहस रै सागै मरदानगी सूं मजूरी करै, आपरौ टापरौ रुखाळै ।—दसदोख
७ देखो 'माठौ' (मह., रू. भे.)
रू० भे०—मांठ, माट, माठि माठी ।

माठणौ, माठबौ–क्रि० स० [देशज] १ घड़ाई करके पत्थर को साफ करना ।
२ देखो 'मठारणौ, मठारबौ' (रू. भे.)

माठर–सं० पु० [सं०] १ वेद व्यास ।
२ सूर्य का एक गण जो इन्द्र द्वारा सूर्य की सेवार्थ नियुक्त किया गया था ।
३ अष्टादश विनायकों में से एक ।
४ ब्राह्मण ।
५ कलाल, कलवार, शौण्डिक ।

माठल–सं० स्त्री०—एक प्रकार की अंगुठी ।

माठमौ, माठवौ–सं० पु०—घड़ाई करके साफ किया हुआ पत्थर ।

माठसेडी, माठसेढी—देखो 'मठसेडी' (रू. भे.)

माठा–सं० स्त्री०—एक मधुर रागिनी विशेष ।
उ०—रांमसरी खुमरी लागी रट, धूया माठा चंद धरू ।—वेलि

माठाकर–वि०—कंजूस, सूम ।

माठादिन–सं० पु० यौ०—दुर्दिन, बुरे दिन, दुख का समय ।
उ०—माठादिन मिटिया हुवै, सेवक थयां सनाथ । सफळी सेवा चाकरी, आज थई अम नाथ ।—ढो. मा.

माठामनो–वि० यौ०—कृपण, कंजूस ।

माठावरण–सं० पु० यौ०—भाग्य के बुरे लेख ।
उ०—सरण साधार अवसाप गयद सम, सत्रां परताप रा करण सूरा । माप रा ब्रहम माठावरण मेटबा, भेटबा आपरा चरण भूरा ।
—दुरगादत्त बारहठ

माठि—१ देखो 'माठ' (रू. भे.)
उ०—बाबहिया रत पंखिया, बोलइ मधुरी बांणि । काइ लवंतउ माठि करि, परदेसी प्रिउ आंणि ।—ढो. मा.
२ देखो 'माठी' (रू. भे.)

माठी-सं० स्त्री०—१ पुरुषों के हाथ में पहनने का सोने या चांदी का कड़ा, पुराने समय का एक आभूषण ।
उ०—खवासजी तौ घणां मोद सूं आवरै सिरपेच, मुगट, कांनां में गुरकियां, गुड़दा, भंवरियौ, गळा में कंठौ डोरी, जीनेऊ अर हड़ुमांनजी रा फूल, सोना रा बटणा, हाथां में माठियां अर आंग-ळियां में बींटियां घड़ाई ।—फुलवाड़ी
२ कवच, सन्नाह । ३ आवरण ।
४ देखो 'माठौ' (स्त्री०) ।
रू० भे०—माठि ।

माठु, माठू—देखो 'माठौ' (रू. भे.)

माठोड़ौ—देखो 'माठौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—माठोड़ौ घर मांय, जे क्रोड़ां संपति जुड़ै । मौज दैण मन मांय, रती न आवै राजिया ।—किरपाराम

माठौ-वि० [सं० मष्ठ] (स्त्री० माठी) १ मंद गति से चलने वाला, धीमा, मंद गति वाला, शिथिल ।
उ०—१ हर रथ माठौ होय, सकत रथ होय सयांणौ । सित रथ देवै पूठ, घटै उतराध पयांणौ ।—चौथ बीठू
उ०—२ भूत तौ काठौ वचनां बंधग्यौ । माठौ बळद बुचकारा रै हैवा । आज तौ नांमी भरै पड़ी ।—फुलवाड़ी
२ सुस्त, आलसी ।
उ०—१ एक जाट ऐदी अर माठौ अंत इज घणौ हो ।—फुलवाड़ी
उ०—२ वो माठौ अर जिद्दी घणौ हौ ।—फुलवाड़ी
उ०—३ देव-लोक अर पंयाळ-लोक में कीं कमी कोनीं, कीं दुख-संताप कोनीं अर कीं कळेस कोनीं । इण खातर दोनां रा वासिंदा निबळा, ऐदी, माठा अर निकांमा व्हैगा है ।—फुलवाड़ी
मुहा०—माठौ बळद बुचकारा रै हैवा=आलसी आदमी (प्राणी) बहाने और आश्वासनों का सहारा लेता है ।
३ धीट, धृष्ट, बेशर्म ।
उ०—ज्यूं माठा रै बागै चांमठी ताता रै लागै घाव । ईण भांत उण रजपूत नूं पोलारसा नै तीख चोख रो बचन उचारतां ईण रै तीख रौ वचन जाय लागौ ।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात
४ उदास, मंद ।
उ०—मोर-सबद माठा थया, अति उच्चरता हंस । ऊंचा चढ़िया अगस्ति-रिखि, वनि वनि फूल्या कास ।—मा. कां. प्र.
५ बुरा, खोटा, अधम ।
उ०—१ तोय करमनासा तणौ, नर सुभ करम नसाय । तोय तुं आळे त्रिपथगा, माठा क्रम मिट जाय ।—बां. दा.
उ०—२ कुमति घणीं मुझ मन बसइ, सुमति थकी नहीं नेह । माठी करणी मां पड्यउ, हुं अवगुण नउ गेह ।—वि. कु.
उ०—३ थें आगै माठा करम किया तिण सूं कसाइ रै कुळ उपनौ । —भि. द्र.
उ०—४ माठी विचारी मन मांय, इण ने मसांण भोम ले जाय, सुकोमल साध । त्वचा उतारी देह नी ए ।—जयवांणी
६ न्यून, निम्न, नीचा (अधो) ।
उ०—भारे करी आफेइ तले जाय तिम जीव करम रूप भारे करी माठी गति में जाय ।—भि. द्र.
७ अनुचित, नाजायज ।
उ०—पाप्यां रो तूं पखज खांचै । सो माठी करै कमाई रे । —जयवांणी
८ मिथ्या, असत्य, झूठा ।
९ गंदा, असभ्य ।
उ०—१ जे कोई देवै न्याय री सीख, चलती देवै अपूठी भींख । मुख थी बोलै माठी गाळ ।—जयवांणी
उ०—२ मूंढा मांसू माठौ बोलै, न गिणै थारो नै म्हारो रे । —जयवांणी
१० कंजूस, सूम, कृपण ।
उ०—भूप का मौड़ माठां मठ भांन है । ईंद मघवांन रै श्रवण आथां ।—लीछमणसिंह सिसोदिया री गीत
११ मजबूत, दृढ़ ।
उ०—इतरै बात करतां थकां पनां नै तौ हाथ घालीया, हात पकड़ आपके पाछै बैसांण लीनी । माठौ दुपटा रौ आंटौ दीनौ । —पनां
१२ कठिन, कठोर ।
१३ जबरदस्त, भयंकर ।
रू० भे०—मट्ठौ, मठा, मठौ, मट्ठौ, माठु, माठू ।
अल्पा०—मठोड़ौ, माठोड़ौ ।
मह०—माठ ।

माडंबीक-सं० पु०—मंडप का उपरि कार्य-कर्त्ता ।
उ०—अनेक गणनायक दंडनायक राजेस्वर तलवर माडंबीक कोटं-बिक मंत्रि महामंत्रि······ ।—व स.
वि०—मंडप संबंधी, मंडप का ।

माड-सं० पु०—१ गर्व, अभिमान ।
उ०—हठियौ सिर हिंदुवां, माड मेले खूमांणां । आदि वैर संभरै, सरस दिल्ली सुरतांणां ।—गु. रू. बं.
२ ऊमरकोट राज्य का उत्तरी भाग एवं जैसलमेर के दक्षिण का एक लम्बा प्रदेश ।
३ जैसलमेर राज्य का एक नाम ।
क्रि० वि०—१ हठात्, बलात्, जबरदस्ती ।

उ०—सूरां जमदाढ़ लई उण संग, लई रवि रेवत माड मलंग ।
—मे. म.

रू० भे०—माढ़ ।

२ देखो 'मांड' (रू. भे.) (७-८)

माडधर, माडधरा–सं० स्त्री०—जैसलमेर राज्य का नाम ।

उ०—कमधज 'छाडै' कीध कोपियै, माडधरा ऊपर मच्छर ।
'धूहड' हरौ धूण खग धारां, सत्र लूटै वळीयौ समर ।
—राव छाडा रौ गीत

माडपंच–सं० पु०—१ मुखिया, अगुआ, नेता ।

२ अपने बल या प्रभाव से पंचायती करने वाला ।

माडां, माडांणी–क्रि० वि०—१ जबरदस्ती, बलात्, दबाव डालकर ।

उ०—१ तरै साहिब तो रहतो न थौ, पण सासरियां माडां राखियौ ।—नैणसी

उ०—२ सातु मिळ सहेलीयां, माडां कर मनुहार । मद पायौ म्या-रांम नै, ऊगायौ अणपार ।—मयारांम दरजी री बात

उ०—३ तरां रांणो मांनी नहीं अरु यांनै माडांणी मेलिया नै ऐ ठाकुर अजमेर आया —द. दा.

उ०—इण समें रा कापुरसां (कायरां) ने बिरदाय माडांणी जोतिया पिण गाडी किण सूं ही खंचियौ नहीं'''' ।—वी. स. टी.

२ मन मार कर, मन के उपरांत, न चाहते हुऐ भी ।

उ०—१ मंत्री रा बेटा रौ कांम वा माडांणी ई करणी चावती, पण मन में कळेस बधतो ई जावै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ सेठांणी कांई जोर करती । उणनै माडां चुप व्हैणी पड़ियौ ।—फुलवाड़ी

३ स्वतः ही, अपने आप ।

उ०—पाखती रा खोडां सूं रात-दिन चिराळियां सुणूं तो माडांणी ई म्हारा मूंडा सूं चिराळिया निकळै ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मड, मांडहिय, मांडां, मांडांणी, मांडी, मांडे, मांडेई, मांडै, मांडोणी, मांढ़ाणी, माडे, माडै, माडैई ।

माडू–सं० पु०—१ एक प्रकार की प्राचीन ढाल जिसके दो तरफ मध्य में हिरन के सींग लगे होते हैं, जिनमें तेज नुकीले भाले लगे होते हैं । इससे वार भी किया जा सकता है और रक्षा भी ।

२ देखो 'माढू' (रू. भे.)

उ०—जग थित झूठी जांणणी, मूठी भीड़ म रख्ख । माया मेवौ माडुवां, चंगा चाखव चक्ख ।—बां. दा.

रू० भे०—मादू ।

माडे--देखो 'माडां, माडांणी' (रू. भे.)

उ०—१ कोड़ वचन खातर कियां, पातर न करै प्रीत । आथ देख अकुलीण नूं, माडे कर ले मीत ।—बां. दा.

उ०—२ लोग अरज करी—मुजरै नूं पधारो । दिन घणां हुवा सो माडे सूं मुजरै नूं लेय गया ।—अमरसिंह गजसींहोत री वात

माडेचा–सं० स्त्री०—जैसलमेर प्रदेश के भाटी वंश की एक शाखा ।

माडेची–सं० स्त्री०—१ आवड़ देवी का एक नाम ।

२ जैसलमेर के राजवंश (भाटी राजपूत) की कन्या ।

वि० स्त्री०—जैसलमेर की, जैसलमेर सम्बन्धी ।

उ०—माडेची धरा 'अना' कुळ मंडण, वड दातार अभनमा 'चीक' । मौड बंध्यां आयौ तूं मारग, मौड बंधा संकै मंडळीक ।—द. दा.

रू० भे०—माड़ेची, माढेची ।

माडेचौ–सं० पु० (स्त्री० माडेची) १ भाटी वंश की माडेचा शाखा का व्यक्ति ।

उ०—१ परि जिम धरणि धरै पोढंतो, पड़ि तिम रिण पोढै खग पांणि । माडेचौ जीवतो मरतो मांणिग, मांणिग गयौ बिन्है कळि-मांण ।—सुरतांण मांनावत री गीत

उ०—२ माडेचा साहेब का, देस किंवाड़ 'किसोर' । जोड़ै 'रांम' 'मुकंद' का, आयां दुंद सजोर ।—रा. रू.

२ जैसलमेर का निवासी ।

वि०—जैसलमेर का, जैसलमेर सम्बन्धी ।

माडै, माडैई—देखो 'माडां, माडांणी' (रू. भे.)

उ०—१ धकै चाढ़ि कमधजां, मुलक ले लीधौ माडै । जिण गाडै सजि जोर और कुण कांधौ वाडै ।—मे. म.

उ०—२ बिणजारो कह्यौ—म्हारै बस पुगतां तो म्हैं घणो ई ना देवूं, पण कोई मांनै जद व्है । माडै ई गळै घाल देवै, जिण रौ तो म्हैं कांई करूं ।—फुलवाड़ी

उ०—३ पै'ल पोत गरीब हिरण री ई बारी आई । माडैई उणनै रुकणी पड़ियौ ।—फुलवाड़ी

उ०—४ पातसाह खातर राखै तौ पछै सगळा रजवाड़ां नै माडै खातर राखणी पड़ै ।—फुलवाड़ी

उ०—५ पण आज औ जबरौ मिनख धकियौ, म्हनै देखनै डगडग हंसै । इण में कीं न कीं चाळौ जरूर है । चीतो माडैई धीमो पड़-ग्यौ ।—फुलवाड़ी

माढ–सं० पु०—१ हठ, बहस, हां-नां ।

उ०—ताहरां हाथी मंगाय नजर कियो । तांहरा कंवरजी कह्यौ—हाथी रौ मोल फुरमावो । नायक कह्यौ—कोई लेवां नहीं । यूं घणी माढ हुवौ ।—पलक दरियाव री बात

२ देखो 'माड' (रू. भे.)

उ०—उतारत नीर खळां अवगाढ़ । महाबळ नीर चढावत माढ ।
—सू. प्र.

३ देखो 'मांड' (रू. भे.) (७-८)

उ०—स्लोकां धुणी पाठ दुरगा सुणावै, गुणी माढ़ रै राग सोभाग गावै ।—मे. म.

माढराछात-सं० पु०—जैसलमेर का राजा ।
२ भाटी वंश का क्षत्रिय ।

माढव, माढवौ—देखो 'माढू' (रू. भे.)
उ०—१ भारी अगै उगै रा भारत, हेकण जीभ प्रताप हुवा । मन मिळियोड़ा तिकां माढवां, जीभ करै खिणमांह जुवा ।—बां. दा.
उ०—२ तूं ऊंचा खेंचै तिकै, जग ऊंचा होय जाय । मन खांचै तूं माढवा, जिकै रसातळ जाय ।—ऊ. का.
उ०—३ जणां ही सूं जड़ियोह, मद गाढी करि माढवा । पारस खुल पड़ियोह, रोयां मिलै न राजिया ।—किरपाराम

माढांणी—देखो 'माडां, माडांणी' (रू. भे.)
उ०—सूरख 'कांन्है' सकत न मांनी, बीरोटणीं बखांणी । व्है सिंह-रूप आछटी हाथळ, मार लियौ माढांणी ।—इंद्रकुमारी बाई

माढी-सं० स्त्री०—पत्तों के अन्दर की नस ।

माढू-सं० पु०—१ मानव, मनुष्य, आदमी ।
उ०—हिळ मिळ सब सूं हालणौ, गहणौ आतम ग्यांन । दुनियां में दस दीहड़ा, माढू तूं मिजमांन ।—बां. दा.
उ०—२ चगै माढू घर रह्यां, ए तीन अवगुण होय । कपड़ा फाटै रिण वधै, नांम न जांणै कोय ।—जगदेव पंवार री बात
२ मित्र, दोस्त, यार, प्रेमी ।
उ०—१ आळस मरडइ अंगनइं, आवइ बहू बगाई । माढू ऊपरि माहरूं, मन मरडी-नइ जाई ।—मा कां. प्र.
रू० भे०—माडू, माढव, माढवौ, माढू ।

माढेची—देखो 'माडेची' (रू. भे.)
उ०—माढ़ेची सोधै महिप, पाड़ेची खळ पंथ । काढेची दुख कवि-जणां, दाढ़ेची रिम दंत ।—बालाबक्ष बारहठ

माणो, माबौ–क्रि० स० [सं० मा] १ समाना । (उ. र.)
उ०—कांमी कलि मैं आय कै, आपै मांहि न माय । अगिळौ बोज न उतरियौ, औरुं गयौ उठाय ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज
२ निभना, निर्वाह होना, खटना ।
३ सहन होना, बर्दाश्त होना ।
उ०—जिकी बात प्राची रा अधीस दूजा कुमार सुजासाह रा उर में न माई ।—वं. भा.
४ हजम होना, पचना ।
उ०—मांहो मांहि विद्या आपी ऊलटि अंग न माय । बीजु तेडी सारथि रिपुपरण रा घिरि जाय ।—नळाख्यांन
माणहार, हारौ (हारी), माणियौ—वि० ।
मायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
माईजणी, माईजबौ—भाव वा० ।
मावणी, मावबौ—रू० भे० ।

मातंग-सं० पु० [सं०] (स्त्री० मातंगी) १ हाथी, गज ।
(अ. मा., डिं. नां. मा., ना. डिं. को., ह. नां. मा.)
उ०—१ छती तूं सती भूपती दच्छ छोणी, गती मत्त मातंग तू हंस गोणी ।—मे. म.
उ०—२ आवीयां अलजइ घणइ, आळस मांहइ गंग । रैलि आविउ रंक-घरि, मद-मातउ मातंग ।—मा. कां. प्र.
उ०—३ मधु मद स्रावति मंद गति मल्हपति । मदोनमत्त मारुत मातंग ।—वेलि
२ इन्द्र के हाथी का नाम, ऐरावत । (नां. मा.)
३ पीपल, अश्वत्थ ।
४ संवर्त्तक, मेघ ।
५ एक नाग का नाम ।
६ चांडाल, श्वपच, हरिजन ।
७ किरात, शूद्र ।
८ एक राक्षस का नाम जो कश्यप एवं खशा का पुत्र था ।
९ वार, व नक्षत्रों सम्बन्धी २८ योगों में से चोबीसवां योग ।
१० देखो 'मतंग' (२) (रू. भे.)
रू० भे०—मात्तंग ।

मातंगधू-सं० पु० [सं० मातंग+राज० धू = मस्तक] गणेश, गजानन । (डिं. को.)

मातंगपुर-सं० पु० [सं० मातंग+पुर] हस्तिनापुर, दिल्ली ।
उ०—विच साचोर भीलपुर वासी, 'सीहा' हरै मनाडै संक । मातंगपुर कटकां मरवाडै, धणियां ताय ढीलविया धंक ।
—राव तीडा री गीत

मातंगर-सं० पु०—हाथी, गज ।

मातंगी-सं० स्त्री० [सं०] १ कश्यप एवं क्रोधवशा की नौ कन्याओं में से एक । इसने हाथियों को जन्म दिया ।
२ वसिष्ट की पत्नी ।
३ पार्वती, गिरिजा । (अ. मा.)
उ०—मात रमा सुण बात, कर जोड़ै वंदन करूं । हो मातंगी मात, हूं छूं सेवग रावळो ।—गज-उद्धार
४ दस महाविद्याओं में से नवीं महाविद्या । (तांत्रिक)
५ चंडाल जाति की स्त्री ।
६ विजिया, भंग ।
सं० पु०—७ हाथी ।
उ०—ओड़ै वीर घंटा घोक मातंगी ताजांन वाळी, रोड़ै वीज विखमी वाजांन वाळो रीठ ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

मात-सं० स्त्री० [अ०] १ हार, पराजय ।
उ०—पण उठै ई उणनै मात खावणी पड़ती ।—रातवासो
क्रि० प्र०—करणी, खावणी, होणी ।
२ हस्ती, सामर्थ्य ।
उ०—१ चतुर किहां तूं चातर्‌यौ, बकैं जु अईसी बात । हम सूं डरै जो सुर असुर, मांनव केही मात ।—प. च. चौ.

उ०—२ दीठी सिव पुरी किसुं राजा दिख, मानुसां तणी तखत कइ मात । इंद्रा पुरी हुता रथ आवइ, जीवन तणी करेवा जात ।
—महादेव पारवती री वेलि

३ गेहूं के आटे को भून कर उसमें गुड़ की चासनी मिलाकर बनाया जाने वाला एक खाद्य पदार्थ ।

रू० भे०—मातर ।

वि०—१ नगण्य ।

उ०—अम्रत ईख रस आखां, भरिया कुंड तणइ तइ मात । उण माहै इसी मो आचरतां, ब्रहमंड तणी जांणिजइ वात ।
—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'माता' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ बंदवीर बजरंग कीसबर मंगळकारी, समर मात सरसती विमळ कविता विसतारी ।—र. रू.

उ०—२ मोनूं सुगंध सोनूं मिळ्या, बळिहारी इण बात री । सारवात सकति 'इंदर' सुणै, महिमा करनळ मात री ।—मे. म.

उ०—३ देवी मात जांनेसुरी व्रन्न मेहा, देवी देव चांमुंड संख्याति देहा ।—देवि

उ०—४ देव कळा धन मात देवकी । कूख नीपना नंद कुमार ।
—ह. नां. मा.

उ०—५ दसरथ न्रपति हो लाल, नंदन गुण निलयौ । मात सरसती हो लाल विजया कंत जयौ ।—वि. कु.

उ०—६ विनां नीर जहां कंवळ है, विन विरखा वरसाळ । विनो मास जहां रत है, मात पिता विन बाळ ।
—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

५ देखो 'मात्र' (रू. भे.)

उ०—१ धणी तणै छळ ओपण धारां । अ्रत तिल मात गिणां अरि मारां ।—रा. रू.

उ०—२ जुध सहस गुणा खळ मिळै जात । मन गिणै तिकां नूं त्रिणह मात ।—वि. सं.

उ०—३ एकण नै हुलरायौ नहीं कन्हैया । गोद न खिलायौ खंण मात रे ।—जयवांणी

उ०—४ सत्रु ग्राह ग्रासी, गयौ डूब सारा । रती मात हाथी, रही सूंड वारा ।—भगतमाळ

६ देखो 'मात्रा' (रू. भे.)

उ०—१ मुण पाय दह मात दीपक्क सुखदात । जीहा अठूंजांम संभार स्रीरांम ।—र. ज. प्र.

उ०—२ गुणपचासै कारतिक, उतरते बरसात । आयौ खेजड़लै असुर, मेछ परवखण मात ।—रा. रू.

देखो 'मातौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ जिणि कोकिलि क्रीडा कीधी चूतवनि, तेह किम लागइ पलास मनि, जु मधुकर मातउ मालती परिमल पूरि,''' ।—व. स.

उ०—२ तांम हस्ति मदि मातउ गाजइ । जांम केसरि निनाद न वाजइ ।—सालिसूरि

मातजायौ—देखो 'माजायौ' ।

उ०—दिल्ली सूं नूरदी नवाब चालि आयौ । भाई अबदूखांन को मातजायौ ।—शि. वं.

मातबर-वि० [अ० मो'तबर] जिसका विश्वास या ऐतबार किया जाय, विश्वनीय ।

उ०—१ हाडां रा मातबर मांणस आया ।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ इतरै दोय मातबर मांणस आइया जे सताब पधारौ फेर खास रुक्को लेय आदमी निराठ जेहत लाइयौ ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

२ सम्पन्न धनाढ्य ।

उ०—खींवसर गाव में तौ कांई पण पड़ोस रा गावां में ई कोई मातबर करसौ इसौ नहीं हौ के जो सेठां रौ देणदार नहीं व्है ।
—रातवासौ

३ प्रतिष्ठित, प्रभावशाली, सज्जन ।

उ०—तद बदुवां रा मांणस मातबर सांम्हां आइया ।
—ठाकुर जैतसी री वारता

४ आंन-बांन वाला, प्रतिभाशाली, पौरुसशाली ।

उ०—गोपाळदास कही जे पच्चीस ही लेवौ तौ मांणस दोय मातबर राखौ ।—गौड़ गोपाळदास री वारता

रू० भे०—मातवर ।

मातबरी-सं० स्त्री० [अ० मो'तबरी] १ 'मातबर' होने की दशा या भाव । २ विश्वसनीयता । ३ साहूकारी । ४ गंभीरता ।

मातबो [सं० महात्मा] वह जैन यति जो शादी कर लेता है ।

मातभोम—देखो 'मात्रिभूमि' (रू. भे.)

मातम-सं० पु० [फा०] १ मृतक के पीछे किया जाने वाला शोक ।
२ दुख, गम ।
३ देखो 'महातम' (रू. भे.)

मातमपुरसी, मातमपोसी-सं० स्त्री० [फा० मातमपुर्सी] मृतक के पीछे शोकाकुल व्यक्तियों को दी जाने वाली सांत्वना । शोकाकुल व्यक्तियों के सामने प्रगट की जाने वाली सहानुभूति ।

उ०—१ बखतसिंहजी समायां री मातमपुरसी कराई, पछै मिळिया बात कीवी ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ पीछै करमचंद तौ समायौ । तद महाराजा फेर मातमपोसी नूं उणां री हवेली पधारिया ।—द. दा.

मातमा—देखो 'महात्मा' (रू. भे.)

उ०—साधू मातमा उणनें चेलो मूंड लियो। मातमा जी रै अड़-खंजो लांठो ही।—फुलवाड़ी

मातमी–वि० [फा०] १ शोक सम्बन्धी, शोक सूचक।

उ०—चोपदार के मारफत रुघनाथसिंह से मिलने का इरादा किया। उसने साल भर पहले ओरत के मरने की मातमी का बहाना लिया।—दुरगादत्त बारहठ

२ देखो 'मातमपोसी'।

उ०—पीछै करमचंद बछावत रै घरै मातमी नूं गया।—द. दा.

मातमुख–वि०—१ आलसी, सुस्त।

२ मूर्ख, मूढ, जड़मति। (डि. को.)

मातर—१ देखो 'मात्र' (रू. भे.)

उ०—१ तिल मातर भीत न बीत तणीं, थंभि हालत अग्रकियां हथणीं।—मे. म.

उ०—२ प्रभाकर प्रांणिय मातर प्रांण। विभाकर वांणिय ते निरवांण।—ऊ. का.

२ देखो 'मात्रका' (रू. भे.)

उ०—आदित्य रसोइ तपइ, चंद्रमा घडी घडी अम्रत झरइ, यम पांणी वहइ, सात समुद्र मांजणउं करावइ, मातर आरती ऊतारइ, विस्वकरम्मा स्रंगार करावइं...... ।—व. स.

३ देखो 'माता' (रू. भे.)

उ०—आज मातर भोम रौ ओरणो खेंचीज रह्यो है, अर म्हूं जांणतो थको मूंडो लुकाय नै बैठूं तो म्हारी मौत तो व्है चुकी।—रातवासो

४ देखो 'मात्रा' (रू. भे.)

५ देखो 'मात' (सं० स्त्री० ३) (रू. भे.)

मातरा–सं० स्त्री०—१ धन, दौलत, सम्पत्ति।

उ०—आविया असंक दळ लियां अधरात रा, जिका 'उदो' कंवर दमांमी जात रा। मार उदियानयर लूट ली मातरा, पूळ गया रांण जगमिंदरा प्रात रा।—स्यामजी बारहठ

२ देखो 'मात्रा' (रू. भे.)

३ देखो 'माता' (रू. भे.)

मातरौ–सं० पु०—मूत्र, पेशाब। (जैन)

उ०—विस्टा ने बली मातरौ ए नाक तणो मल खेल। वाय पित्त सलेसमाए, सुक्र लोही राध चेल।—जयवांणी

मातळ, मातलि–सं० पु० [सं० मातलि] १ महावत।

उ०—१ हींसलां भलां अप्पलां हूंत, भ्रंगळां सळां आघळां कूंत। पत्थळां दळां मातळां पील। डर-बळां डळां बरघळां डील।—गु. रू. बं.

उ०—२ कटक, नाट्य गंधरव हय गज अखभ रथ पदाति रूपक तणां स्वांमी नील जणां रिढंजस हरि एरावण मातलि दांमिट्ठी हरिणेगमेखी सरवंगि सन्नाह पेहिरि, द्रढ़ कसा बंधि, धनुखि गुण चडावी रह्या, ' ''''।—व. स.

२ इन्द्र का सारथी, रथवान।

रू० भे०—मातुलि।

मातलोक–सं० पु० [सं० मृत्यु-लोक:] १ मृत्युलोक, मनुष्यलोक।

२ मातृभूमि, जन्मभूमि।

मातवट, मातवटि—देखो 'मथावटि' (रू. भे.)

मातवर—देखो 'मातबर' (रू. भे.)

उ०—तद हरदांन राजा सूं अरज कीवी और बोल्यौ—आदमी दोय कोई मातवर दूजा साथै देवौ।—पलक दरियाव री बात

माता–सं० स्त्री० [सं० मातृ] १ जन्म देने वाली मां, जननी, अंबा। (अ. मा.)

उ०—सो सपूत हुवै सो तो पिण माता रा यत्न करै अनें कपूत हुवै ते उंधा अंवला बोलै। माता ने रंडकारा री गाल बोलै।—भि. द्र.

२ माता के स्थान पर मानी जाने वाली स्त्री।

उ०—ज्यूं दया रा धणी तो भगवांन ते तो मुक्ति गया। लारै साध स्रावक सपूत ते तो दया माता रा यत्न करै। अनै थां जिसा कपूत प्रगटिया सो रांड २ कहि ने बोलावौ।—भि. द्र.

३ आदरणीय या वृद्धा स्त्री।

४ पार्वति।

५ दुर्गा, देवी, शक्ति।

उ०—१ एकै कांनी वडो काच, दूजै कांनी रांम लिछमण री रूड़ी तसबीर अर तीजै-चौथे पासां में माताजी भेरूंजी आपरी सीबी में खप्पर खोले बैठ्या है।—दसदोख

उ०—२ थिर बीलोचिसथांन, थांन, धवळा गिर थावै। पोहो साता दीप हूं, ऊठै माता नित आवै।—मे. म.

६ लक्ष्मी। ७ गौ।

८ पृथ्वी, भूमि।

९ दौलत, धन।

१० शीतला या चेचक नामक रोग।

उ०—गालां माथै गोकळा सळ, जबाड़ा बैठ्योड़ा। सूकौ अर ठाली चैरो माता रा वण चैठ्योड़ा।—दसदोख।

११ नव दुर्गाएं।

१२ इन्द्र वारुणी।

१३ जटामासी।

रू० भे०—मत्रि, मांइ, मांई, मांय, माइ, माई, माईय, माईया, माउ, माऊ, मात, मातर, मातरा, मातु, मात्रेई, मायं, माय, मायां, माया।

अल्पा०—मांयड़ी, मांयली, मांवड़ी, माइडी, माउड़ी, मायड़, मायड़ौ, मायड़ी, मावड़ली, मावड़ी, माबडी।

महु०—मवड़, मातौ, मायौ ।

मातामता—क्रि० वि०—घूमते-फिरते ।

उ०—इयै भांत मातामता अठै सूथार रै आया ।—चौबोली

मातामह—सं० पु० [सं०] (स्त्री० मातामही) माता का पिता, नाना ।

उ०—तिण समय मंडोवरेस प्रतिहार नाहरराज तोमरावतंसरी प्रसाद लेण दिली आयौ अर मातामह री सभा रै अंतर दौहित्र कुमार प्रथ्वीराज नूं देखि मोद पायौ ।—वं. भा.

मातीगोठ—सं० स्त्री०—वह बड़ी दावत या गोष्ठी जिसमें सभी प्रकार के भोजन बने हों ।

उ०—करै गरक दुजी कोटडियां, पाव विरत नै जणां पचास । भूप 'अनोप' तणी भुंजायां, मातीगोठां बा'रै ई मास ।

—नींबज साहब अनोपसिंह री गीत

मातीमुरगी—सं० स्त्री०—१ धनवान व्यक्ति, सम्पन्न व्यक्ति । (व्यंग्य)

मातु—देखो 'माता' (रू. भे)

उ०—पुनै चैत आसोज रा स्वेत पाखां, लुळै मातु नूं जातरी लोक लाखां ।—मे. म

मातुळ, मातुल—सं० पु० [सं० मातुलः] १ माता का भाई, मामा ।

उ०—१ निरख छटै रिपु ग्रह ससिनंदण । कुळ मातुळ सुख अरी निकंदण । राजभवन सुर-गुर सुभ राजै । विसव एक छत्र आंण विराजै ।—रा. रू.

उ०—२ चबै अप जायळ व्याकुळ साज । रह्यौ रण मैंदर मातुल राज ।—पा. प्र.

२ धतूरे का पौधा ।

३ एक सर्प विशेष ।

रू० भे०—मातुलि ।

मातुलि—१ देखो 'मातलि' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

२ देखो 'मातुल' (रू भे)

माते—देखो 'माथै' (रू. भे.)

मातेत—सं० पु० [अ० मातहत] १ अधीनस्थ कर्मचारी ।

२ हाथ के नीचे कार्य करने वाला व्यक्ति, सहायक ।

वि०—१ आज्ञाधीन रहने वाला ।

२ पराधीन ।

मातेती—सं० स्त्री० [अ० मातहती] १ 'मातहत' होने की दशा, अवस्था, या भाव ।

२ अधीनता ।

मातै—देखो 'माथै' (रू. भे.)

मातौ—वि० [सं० मत्त] (स्त्री० माती) १ मोटा-ताजा, स्थूल-काय ।

उ०—अधिक करइ आवाज रे, राता माता रे हस्ती घूमता रे ।

—वि. कु.

२ हृष्ट-पुष्ट, तंदुरुस्त ।

उ०—धवला ने माता घणां, बले छोटी सिंगड़ियां जांण रे लाल । दोनूं बराबर दीसता, तूं एहवा रिखभ आंण रे ।—जयवांणी

३ मस्त, उन्मत्त, मतवाला ।

उ०—१ निसि पति नारी मोहन गारी, रोहणि रंग रातौ । प्रभु करणी परणी तजि तरुणी, अद्भुत गुण करि मातौ ।—वि. कु.

उ०—२ तुरां तोखै मेळवा लोह तातौ । मरेवा तणी होडरौ कोड मातौ । वरस्सोह वध्धावळै आंक आडो, लखै थाट जांनी हुओ 'भीम' लाडो ।—गु. रू. बं.

उ०—३ ताईयां सेनि बाड़ी विचै 'ऊद'तण, मधप रंगि रमै मैंमंत मातौ ।—तेजसिंह सेखावत री गीत

४ मद-मस्त, नशे में धुत्त, गर्क, लीन ।

उ०—१ हरि रस पीया जांणियै, सो मतवाळा होय । मद रस का माता फिरै, 'हरीया' चित्त न कोय ।—श्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ पीवै पिलावै रांम रस, माता है हुसियार । दादू रस पीवै घणां, औरों को उपकार ।—दादूवांणी

५ घायल ।

६ अभिमानी, अहंकारी, गर्वीला ।

उ०—उच्च जाति मद एक महाकुल मद सूं मातौ । लाभ तणौ मद लोल, तेम तप मद सु तातौ ।—ध. व. ग्रं.

७ प्रसन्न, खुश ।

८ बहुत दिनों तक पड़े रहने के कारण सड़ांध देने वाला, बदबूदार । (घृत, तेल आदि)

९ बलवान, शक्तिशाली ।

१० भयंकर, भयानक ।

उ०—१ धोम पिड़ वरछियौ वेध मातौ धरा । खार खुद रांम रिण हाथ लागा खरा । पांण तज मेलिया मांण हुय पाधरा । मिळै वहवाट त्या थाट मंडोवरा ।—द. दा.

उ०—२ धिखि सोर धूवर धूंवा-धार । आवत मिळै तब अंधकार । रांमायण भारथ रूप सुद्ध । जोधपुरै मातौ खुरम जुद्ध ।

—गु. रू. बं.

११ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—आतुर वहुं आगरै आया, वहुं दिस काळ भड़ां वरसाया । पर 'मुहकम' जिम लख पहातौ, महाप्रळै असुरां घर मातौ ।

—रा. रू.

उ०—२ बसूं मांस कादम मचै असत परवत वर्ण, रुधिर मिळ सरतपत हुओ रातौ । अजोध्यानाथ दसमाथ रांवण अडग, महा वे ओर भाराथ मातौ ।—र. रू.

१२ सघन, घना, गहरा ।

उ०—१ कमल बीय ससि-कळा, कळा वडती जग वंदै, कळाहीण खळ हुवै, जेम निस पूनिम चंदै । भुज विसाळ लंकाळ, वरण झाळाहळ सुंदर । भरि मातै भाद्रवै जांणि ऊगौ भासंकर ।

—गु. रू. बं.

उ०—२ नप सुख ग्रीखम निरखतां वधि बरसात विलास। मातौ कादंब मेदनी, ग्रायौ भाद्रव मास।—रा. रू.

१३ तेज, तीव्र, उग्र।

उ०—१ एक महूरत सार झड़, मातौ तातौ बांण। लग्गा हाथी भग्गणौ, यां वग्गा ग्रारांण।—रा. रू.

उ०—२ दुहुं दळ हाळोहळ सबळ, दुहुं दळ घुरै दमांम। दमंगळ मातौ दुहुं दळां, दुहुवै कोस मुकांम।—गु. रू. बं.

उ०—३ मातौ धूम गुरद्धरा, तातौ जोस कटक्क। 'सोनंग' रातौ वेध लख, जातौ साह ग्रटक्क।—रा. रू.

१४ बहुत, अधिक, भारी।

उ०—मिळै ताळ तातौ, धका-धोम मातौ। हिलै रत्त खाळं, नदी जांण नाळं।—गु रू. बं.

रू० भे०—मातउ, माथौ।

१५ देखो 'माता' (मह, रू. भे)

उ०—चंद्रा वदनी रे चारित चूकव्यउ सुख विलसइ दिन राती जी। इक दिन गोखइ रमतउ सोगठइ, तब दीठउ निज मातौ जी।
—स. कु

मात्संग—देखो 'मातंग' (रू. भे.)

उ०—वर तुरंग उत्तंग कर्ण साकति विराजित। मदोमत्त मात्संग जांण जळ वादळ गरजित।—गु. रू. बं.

मात्र-ग्रव्य० [सं०] १ केवल, सिर्फ।

उ०—१ बैरी बैर न वीसरै, बिना हियै ही 'बंक'। राहु ग्रहै राकेस नूं, नभ सिर मात्र निसंक।—बां. दा.

उ०—२ डोढी पड़दो देखियै, सूमां घरै सिवाय। भीतर जम किंकर बिना, जीव मात्र नहु जाय।—बां. दा.

उ०—३ ढूंढार मैं स्वांमी भीखणजी पासै स्रावगी चरचा करवा ग्राया। बोल्या मुनी नें तार मात्र वस्त्र राखणौ नहीं।—भि. द्र.

२ समान, सर।

उ०—तुही हाथ लै सूळ सादूळ हक्कै। त्रणां मात्र तू सुक रा छात्र तक्कै।—मे. म.

रू० भे०—मत्त, मत्त, मात, मातर।

३ देखो 'माता' (रू. भे.)

उ०—१ वैजळ में लखण क्यूं ही नहीं। मात्र ई था चूको। तरै वैजळ नूं भाटियां मारि परौ काढ़ियौ।—नैणसी

उ०—निरग्रंथ तणउ साटउ, दीवालीनउ तेज। मात्रे ई नउं हेज,···
—व. स.

मात्रक-सं० पु० [सं०] माता का भाई, मामा।

मात्रका-सं० स्त्री० [सं० मातृका] १ अंधकासुर का लहू चूसने के लिए शिव द्वारा उत्पन्न सप्त मातृकाएं—ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वाराही, नारसिंही, वैष्णवी, ऐन्द्री।

वि० वि०—ये मातृकाएं अंधकासुर का लहू चूसने के बाद पृथ्वी पर के प्राणियों का लहू चूसने लगी तब इन पर नियन्त्रण करने के लिये शिव ने नृसिंह का निर्माण किया उसने अपने जिव्हादि ग्रवयवों से बत्तीस अन्य मातृकाग्रों का निर्माण किया जिससे सारी व्यवस्था ठीक हो गई। तदनन्तर शिव ने इन मातृकाग्रों को लोक संरक्षण का कार्य सौंप दिया। महाभारत एवं पुराणों में उक्त सप्त मातृकाग्रों के ग्रतिरिक्त निम्नलिखित अन्य मातृकाग्रों का भी उल्लेख मिलता है:—१ ग्रष्ट मातृका—ब्राह्मी, माहेश्वरी, चंडी, वाराही, वैष्णवी, कौमारी, चामुण्डा एवं चर्चिका। २ सप्त शिशु मातृका—काकी, हलिमा, रुद्रा, बृहली, ग्रार्या, पलाला एवं मित्रा। ३ ग्रष्टादश मातृका—विनता, पूतना, कष्टा, पिशाची, ग्रदिति (रेवती), मुखमण्डिका, दिति, सुरभि, शकुनि, सरमा, कद्रू, विलीनगर्भा, करंजनीलया, धात्री, लोहितायनि, ग्रार्या ग्रादि। ४ चौदह मातृका—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, धृति, पुष्टि, तुष्टि. एवं कुलदेवी जो हरेक व्यक्ति की अलग ग्रलग होती है।

तांत्रिक साधना की भी ये ही मातृकाएं हैं तथा विवाह में भी इन्हीं मातृकाग्रों की पूजा की जाती है।

२ देवी, देवमाता।

३ ग्रार्यमा नामक ग्रादित्य की पत्नी।

सं० पु०—४ तांत्रिक यंत्र विशेष।

५ यंत्र में लिखे जाने वाले ग्रक्षर या वर्ण।

रू० भे०—मातर, मात्रिक, मात्रिका, मायां।

मात्रभोम—देखो 'मात्रिभूमि' (रू. भे.)

मात्रा-सं० स्त्री० [सं०] १ नाप या तौल के हिसाब से कोई एक निश्चित परिमाण, मिकदार।

२ नाप या तौल करने का उपकरण।

३ किसी ग्रक्षर या व्यंजन के ग्रागे-पीछे व नीचे-ऊपर लगने वाला स्वर चिन्ह।

४ छन्द शास्त्र के ग्रनुसार कल या कला जिसके समूह या निश्चित संख्या से किसी छन्द का निर्माण या गठन होता है।

ज्यूं—चौदह मात्राग्रों रौ छंद।

५ परिमाण, संख्या।

६ ग्रौषधि का एक बार में लिया जाने वाला ग्रंश, खुराक।

७ ग्रंश, भाग।

८ कण, ग्रणु।

९ पल, लहमा।

१० धन, सम्पत्ति।

११ तत्व। १२ शक्ति, बल।

१३ संगीत में ताल का निश्चित भाग।

१४ स्वर के उच्चारण में लगने वाला समय।

१५ संगीत में गीत ग्रौर वाद्य में समय का निरूपण।

१६ कान की बाली ।
१७ एक आभूषण, रत्न ।
रू० भे०—मत, मत्त, मात, मातर, मातरा ।

मात्रि–वि० स्त्री० [सं० मातृ] माता की, माता सम्बन्धी ।

मात्रिक–वि० [सं०] १ मात्रा सम्बन्धी, मात्रा का ।
सं० पु०—२ मात्राओं से बनने वाला छन्द ।
३ देखो 'मात्रक' (रू. भे.)

मात्रिका—देखो 'मात्रका' (रू. भे.)

मात्रिभाखा, मात्रिभासा–सं० स्त्री० [सं० मातृभाषा] १ माता द्वारा बोली जाने वाली भाषा, जिसे बालक माता की गोद में सीखता है ।
२ वह भाषा जो अपने देश या मातृभूमि में बोली जाती है, राष्ट्रीय भाषा ।

मात्रिभूमि–सं० स्त्री० [सं० मातृ-भूमि] वह स्थान जहां जन्म हुआ हो, स्वदेश ।
रू० भे०—मातभोम, मात्रभोम ।

मात्रिरिस्ट–सं० पु० [सं० मातृ-रिष्ट] अशुभ लग्न में संतान जन्म ने के कारण माता-पिता पर आने वाला संकट का एक दोष । (फलित ज्योतिष)

मात्रीमुख–सं० पु० [सं० मातृ-मुखः] मूढ़ या मूर्खजन । (अ. मा.)

माथ—१ देखो 'माथो' (मह., रू. भे.)
उ०—कुळ अनेक करै निज सुधारै काय नै । नांमतो माथ दसमाथ रघुनाथ नै ।—र. ज. प्र.
२ देखो 'माथै' (रू. भे.)

माथइ—देखो 'माथै' (रू. भे.)
उ०—१ मांडिया उतबंग जियइ द्रू माथइ, नांम जपंतां एक निमंख । —महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ आथा परधांन आगळै ईस्वर । गिर माथइ बइठउ गिर-मेर ।—महादेव पारवती री वेलि

माथइयौ—देखो 'माथो' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—नायो मूमल माथईयो रे मेट सुं हांजी रे कडीये रे । रालया मूमलड़ी केसड़ा, म्हांरी जग मीठी मूमल ।—लो. गी.

माथउ—देखो 'माथो' । (उ. र.)
उ०—एकंतर ताप सीयउ दाहू, उखध बिण जायइ थइ माहू । दूखइ नहीं माथउ पग गोडउ, नित नांम जपउ स्रीनाकउड़उ । —स. कु.

माथड़ौ—देखो 'माथो' (अल्पा., रू. भे.)

माथणी—देखो 'मथणी' (रू. भे.)

माथलियौ—देखो 'माथो' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—न्हायो मूमल माथलियौ रे मेट सूं हांजी रे, कड़ियां तो रालया मूमल केसड़ा म्हारी जगमीठी मूमल, हालै नी अे आलीजै रै देस ।—

माथसरौ, माथाअरौ—देखो 'माथासरौ' (रू. भे.)

माथाकर–क्रि० वि०—ऊपर होकर, ऊपर से ।
उ०—लुगायां, टाबर अर बूढ़ा-ठाडा सुणियो जका रो ई माथो अर डील सुन्न व्हैगौ, जांणै वांरै माथाकर वा'ण वैगौ व्है ज्यूं । —फुलवाड़ी

माथाधोवण, माथांनावण–सं० पु० [सं० मस्तक+धावनं, मस्तक+स्नान] १ प्रसव के कुछ दिन बाद किसी शुभ दिन को किया जाने वाला प्रसूता का स्नान ।
२ घी और छाछ मिला हुआ सिर धोने का पानी ।

माथापच, माथापच्ची, माथाफोड़, माथाफोड़ी–सं० स्त्री०—१ किसी कार्य के लिये किया जाने वाला दिमागी श्रम, मगज-पच्ची, सिरपच्ची ।
उ०—दरवाजा सूंमा तणां, मूढ़ां तणा हियाह । खुलिया माथापच कियां, सो नहं सांभळियाह ।—बां. दा.
२ प्रपंच, झंझट ।
उ०—पण लड़कै ऊठतां पांण थांनै सगळी जोखम सूंप देवूंला । म्हारा सूं आ माथाफोड़ी नीं व्है ।—फुलवाड़ी
३ परिश्रम, मेहनत ।
उ०—१ चिड़ीमार कह्यो—म्हैं नीं मारूं तौ कांई, मांनै कोई न कोई तो मारैला ई । पछै म्हैं ई क्यूं चूकूं । आज तो घणोई माथा-फोड़ी करी, तौ ई औ एक तीतर हाथ आयौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ भांणूं रै जावण री बात सुणतां ई भूत रो तौ काळजो बैठग्यो । उणरै जातां ई फेर वा माथाफोड़ी करणी पड़ैला । —फुलवाड़ी
४ बहस, हुज्जत ।
उ०—१ मोद मचै कर चढ़ियां माया, माथापच नह मोद मचै । रच थारा चरणां रा रूपग, रूपग म्हारा काय रचै ।—बां. दा. ख्या
उ०—२ बीसूं झगड़ा झंटां सूं पूरी माथापच अर छाती-पची करतां-करतां मोसर रै दूहै नै मसां पार घाल्यो ।—दसदोख

माथायलौ–वि० (स्त्री० माथायली) ऊपर वाला, ऊपर का ।
उ०—१ चोर चोर रा हाका रै सागै मूंडा माथायलौ घड़चौ आगो फेंक ताचकी तो सांम्ही दीवांणजी ऊभा । नगर सेठ, राज व्यास अर कविराजा ऊभा ।—फुलवाड़ी
उ०—२ खांधा माथायली धोतड़ी बिछायनै वै चक्र खाली करियो । —फुलवाड़ी

माथारखी–सं० स्त्री० [सं० मस्तक+रक्षिका] छिपने का स्थान, सुरक्षा की जगह ।

उ०—काळीभर री पहाड़ वडी गांव सूं कोस''' "पछम दिसा लांबो कोस ५। मांहै पांणी घणो, भाड़ घणा नास भाज नूं वडी माथारखी।—नैणसी

माथावटी—देखो 'मथावटी' (रू. भे.)

माथासरो, माथासिरो—सं० पु०—१ बीचोबीच का ऊपर का स्थान, शिखर।

२ उद्गम स्थान।

उ०—१ पंवार री पैंतीस साख, त्यां मांहे एक साख भायलां री, भायलां रो माथासरो गांव रोहिसी मगरा नीचै वळी छै तठै नै सिवांणची नूं।—नैणसी

उ०—२ एक छत्तीस वंस री थापना हुई नै माथासिरो कहिनै बतायो। वळै रिखभदेवजी सु दोय राह चाल्या।—रा वं वि.

३ किसी मकान, टीबा, पर्वत आदि का सबसे ऊपर का शिरा, चोटी।

४ अन्तिम मंजिल।

५ किसी वंश का आदि पुरुष।

६ अंत, छोर, हद, सीमा।

उ०—सोजत थी कोस ७ व्यापारी सिरीयारी मलसियावावड़ी। इण रै माथासरो मेरां रा गांव।—सोजत रै मडळ री वात

७ पूर्वजों की जन्मभूमि, पूर्वजों का उद्गम स्थान।

रू० भे०—मथासरो, माथसरो, माथाभरो, माथाहरो।

८ देखो 'मथारो' (रू. भे.)

माथासून—सं० पु० [सं० मस्तक+शून्य] एक प्रकार का घोड़ा जिसके मस्तक में भंवरी (चक्र) न हो। (अशुभ)

माथासूल—सं० पु० [सं० मस्तक+शूलः] शिर दर्द, शिर में होने वाली पीड़ा।

उ०—डरै लोग वन डांडियां, सूते ही सादूळ। जे सूता ही जागता, सबळां माथासूळ।—बां. दा.

माथाहरो—देखो 'माथासरो' (रू. भे.)

माथीओ—सं० पु०—गाड़ी के जूऐ के नीचे बांधा जाने वाला भैंस के बच्चे का चमड़ा।

माथुर—सं० पु०—१ कायस्थों की बारह शाखाओं में से एक।

२ मथुरा में रहने वाले चतुर्वेदी ब्राह्मणों की एक जाति।

माथे, माथै—क्रि० वि०—१ ऊपर, पर।

उ०—१ अस नांखे गाहण असह, रिण माथे रजपूत। आवध नांखे आचसूं, दासी केरा पूत।—बां. दा.

उ०—२ अर प्रमारां रा बैर माथै अब चाहुवांणां री चक्र अरबुदाचळ री सरणी रै समुख पाधरो ही धकाव छै।—वं. भा.

उ०—३ फागण री महीनो अर चांदणी घट्ट रात। नीलकंठ गांव माथै डोढ़ बोतल रो नसो चढ्योड़ो।—रातवासो

उ०—४ औरंगसाह छत्रीसै आयो, उर राव रांण लागो असहायो। संख्या विण लीधां दळ साथै, मारग पड़ै पहाड़ां माथै।—रा. रू.

उ०—५ ताहरां सरप बिल मांहै सूं नीसर नै 'चूंडै' माथै छत्र कर बैठो।—नैणसी

क्रि० प्र०—आणो, करणो, टूटणो, देणो, धरणो, बांधणो, मांडणो, लैणो, होणो।

मुहा०—१ माथै आणो=किसी की जिम्मेदारी पर पड़ना, हमले के लिये चढ़कर आना। २ माथै करणो=सामान लेकर पैसा बाकी रखना, ऋण लेना। ३ माथै जीव देणो=विशेष प्रेम करना, निछावर होना। ४ माथै टूटणो=विशेष कृपा करना, तुष्टमान होना। ५ माथै तूटणो=देखो 'माथै टूटणो'। ६ माथै तूट पड़णो=हमला करना, वार करना। ७ माथै बांधै जैड़ो=चतुर, होशियार, किसी के चक्र में न आने वाला। ८ माथै मंडाणो=कर्ज अपने नाम लिखवाना। ९ माथै राखणो=अपनी ओर कुछ बाकी रखना, किसी का प्रभाव मानना। १० माथै लैणो=किसी कार्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। ११ माथै हाथ फेरणो=आशीर्वाद देना। १२ माथै हाथ होणो=संरक्षण मिलना। १३ रांम नै माथै राखणो=ईमानदारी से कार्य करना। १४ सिर आंख्या माथै=विशेष मान्य। १५ हाक माथै हाक मचणो=चारों ओर से हल्ला होना। १६ हाथ माथै हाथ धर बैठणो=निकम्मा या बेरोजगार होने की स्थिति, प्रयत्नशील न होने की अवस्था।

२ मस्तक पर, सिर पर।

उ०—१ ज्यां जस छत्र तणावियो, माथै जगत मझार। जिकै छत्र धर जांणणा, सुदतारां सिणगार।—बां. दा.

उ०—२ डोकरी कह्यो—म्हारै माथै भार छै, थे उतरनै ल्यो।
—नैणसी

उ०—३ एकर वो बळदां री जोड़ी खरीवण सारू मेळै जावतो हो। माथै बाजरी री पोट उखणियोड़ी ही।—फुलवाड़ी

उ०—४ धूप सीत बरखा माथै सहै'—देवजी बगड़ावतां री वात

३ आसरे, सहारे, निर्भर।

उ०—आवियै जेण संसार रो व्है उदो, मूंदी सब बात री मेह माथै।—ध. व. ग्रं.

क्रि० प्र०—बैठणो, रैणो, होणो।

४ भरोसे, विश्वास पर।

उ०—पूछ्यो—के आ किसा अन्याव री बात के प्रांण बचाया जिणरा ई वो प्रांण लेवण री बात करै। थूं ई बता, औ न्याव थारै माथै ई छूटयो।—फुलवाड़ी

५ निकट, पास, नजदीक।

उ०—वा तौ सोनल रै हूंकारौ भरियां पछै अरणेज नाडी माथै पूगी ।—फुलवाड़ी

६ अवसर पर, मौके पर।

उ०—मोटै पागड़ाळो लोभी पिंडत ई परवार में बेटी रै जलम माथै सदाही सीतुड़ी, गोरली, पारली, रुकड़ी, रांमली, हाळा नांवटा राखतौ ।—दसदोख

रू० भे०—मत्थ, मत्थे, मत्थै, मथ मथै मथ्थ, मथ्थई, मथ्थै, माते, मातै, माथ, माथइ, माथउ ।

माथौ-सं० पु० [सं० मस्तक] १ मस्तक, शिर । (अ. मा.)

उ०—१ भुज दुहवां बळ बीस भुज, कळ दस माथा काट । तैं दीधौ दसरथ तणा, दससिरधर दहवाट ।—बां. दा.

उ०—२ कियां जाग जोडां खडै पंज कावै । अडा-भीड आकास माथौ अडावै ।—गु. रू. बं.

मुहा०—१ माथौ उतरणौ=शिर की पीड़ा कम होनी । २ माथौ ऊंचौ करणौ=विद्रोह करना, गर्व करना, आवाज उठाना । ३ माथौ ऊंचौ नी करण देणौ=दबाकर रखना, काम से लाद रखना । ४ माथौ कलम करणौ=शिरच्छेद करना, गर्दन काटना । ५ माथौ गिरणाटी खावणौ=चक्कर आना । ६ माथौ चढ़णौ=शिर दर्द होना, गर्व या अहंकार बढ़ना । ७ माथौ नवावणौ, माथौ निवावणौ=प्रणाम करना, नमस्कार करना, हार मानना । ८ माथौ भंवणौ=चक्कर आना । ९ माथौ मुंडाणौ=साधु होना, अधिक या फालतू खर्चा करना, केश कटवाना । १० माथा में कबोड़ौ हालणौ=जोर का शिर दर्द होना, अनुचित कार्य करने की प्रेरणा होना । ११ माथा में खावणौ=नुकसान उठाना । १२ (पगां में) माथौ रगड़णौ=क्षमा याचना करना । १३ माथौ लुकावणौ=छुप कर बैठना, शर्म करना, घर में रहना । १४ माथौ हळकौ पड़णौ=शिर दर्द कम होना, चिंताओं से मुक्ति पाना । १५ माथौ हिलावणौ=इन्कार करना ।

पर्या०—उतमंग, उरधमूळ, कं, कमळ, धू, भ्रकुटक, मसतक, मुंड, मूंड, मूरधा, मोळी, रुंड, वरंग, सिर, सीस ।

२ मस्तिष्क की विचार शक्ति, बुद्धि, चित्त ।

उ०—१ अकल रा बैरी इत्तौ तौ माथौ लड़ावणौ हौ के ढिगली बिखरतां ईं थारौ डौल उघड़ जावैला ।—फुलवाड़ी

उ०—२ दरजी जांण्यौ परभात री वगत राजा करण री वेळा कुण माथौ लगावै ।—फुलवाड़ी

मुहा०—१ माथौ ठणकणौ=संदेह पैदा होना । २ माथौ धुणणौ=सोच या चिंता करना, पछताना । ३ माथौ पचावणौ=व्यर्थ प्रलाप करना, शांति भंग करना । ४ माथौ भंवणौ=चित्त का संतुलन बिगड़ना, चक्कर आना । ५ माथौ फिरणौ=विवेक खोना, अनुचित कार्य, हरकत या बात करना । ६ माथौ भिड़ावणौ=बहस करना, हुज्जत करना । ७ माथौ लड़ावणौ=बहस करना, झगड़ा करना । ८ माथौ हळकौ होणौ=निश्चित होना ।

३ मनः स्थिति, विचार ।

४ मस्तक का ऊपरी भाग, खोपड़ी ।

उ०—के इत्ता में वौ अणछक उछळियौ । छात सूं माथौ टकरायौ ।—फुलवाड़ी

मुहा०—माथा रौ मालपूवौ होणौ=अत्यधिक मार पड़नी, वजन या चोट के कारण मस्तक की हालत बिगड़नी ।

५ मस्तक के ऊपर की केश-राशि ।

उ०—१ सुथराई सूं लीकां काढ नै हळदी मिन्नी रौ माथौ गूंथियौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै हमेसां वा उण सूं माथौ सुलझावती ।—फुलवाड़ी

मुहा०—१ माथौ गूंथणौ=केशों को सुव्यवस्थित कर बांधना । २ माथौ गूंथाणौ=केशों को व्यवस्थित बंधवाना । ३ माथौ मुंडाणौ=मस्तक के सभी केश कटवा कर रुंड-मुंड होना । ४ माथौ सुळझावणौ=कंगे के द्वारा केशों को सुलझाना ।

६ मुख या शिर की आकृति या चित्र ।

७ किसी वस्तु का ऊपरी या अग्र भाग ।

८ एक प्रकार की सवारी ।

रू० भे०—मत्थ, मत्थै, मत्थौ, मथ, मथौ, मथ्थ, मथ्थइ, माथइ, माथउ । अल्पा०—माथड़ौ, माथड़ौ, माथलियौ ।

मह०—माथ ।

८ देखो 'मातौ' (रू. भे.)

माद-सं० पु० [सं० माद] १ नशा, मद ।

२ हर्ष, आनन्द ।

३ अभिमान, अहंकार ।

सं० स्त्री०—४ खलिहान में भूसे सहित अनाज का लंबा ढेर जो अनाज की बालों को कुचल कर एकत्र किया गया हो ।

उ०—सिट्टियां रौ गाईटौ गाहियौ तौ ई टोळा रौ तौ खुड़ व्हियौ नीं कोई खुड़कौ । नायण आपरै हाथां सूं सगळी माद उफणी पण ओठारुवां रौ तौ बुड़ व्हियौ नीं कोई बुड़कौ ।—फुलवाड़ी

५ देखो 'मादा' (रू. भे.)

मादक-वि० [सं०] १ नशा देने वाला, नशीला ।

२ मस्ती व आनन्द देने वाला ।

सं० पु०—१ मादक पदार्थ, शराब आदि ।

उ०—परजा पालण पुत्रां सम, केहण प्रांण कपूत रा । मादक अलीण मेले न मुख, प्रिय लक्षण रजपूत रा ।—ऊ. का.

मादकता-सं० स्त्री० [सं०] १ मादक होने की दशा या भाव ।

२ नशा । ३ मस्ती ।

४ आनन्द । ५ नशीलापन ।

मादड़ेचा-सं० पु०—चहुवांण वंश की एक शाखा।
रू० भे०—मादरेचा।
मादर-सं० स्त्री० [सं० मातृ, फा० मादर] माता, मां, जननी। (डि. को.)
उ०—विदर विदर जांणुं नहीं, मादर विदरां मूळ। राखै अगणत रंग रा, दिल री कुसी दुकूळ।—बां. दा.
मादरचोद-वि०—१ माता के साथ कुकर्म करने वाला, मां के साथ व्यभिचार करने वाला।
२ नीच, निकृष्ट।
सं० स्त्री०—एक प्रकार की गाली।
मादरजात, मादरजाद-वि० [फा० मादरजाद] १ जैसा माता के उदर से बाहर आया वैसा।
२ जन्म का, पैदाइशी।
३ वस्त्रहीन, नंगा।
४ सगा, सहोदर।
५ मूर्ख।
मादरेचा—देखो 'मादड़ेचा' (रू. भे.)
मादळ, मादल-सं० पु० [सं० मर्दल:] १ पखावज या मृदंग से मिलता-जुलता एक वाद्य। (उ. र.)
उ०—१ भ्रद मादळ वाजै अदंग अउब भति उपंग। निरूपै गीत नादंग, जस न जिमै।—गु. रू. बं.
उ०—२ माती ऊहाड़ां दरसै मादळ सी। वेई बीलोई बरसै बादळ सी।—ऊ. का.
उ०—३ मेघाडंबर छत्र तणउ आडंबर, सीकरी तणउ झमाल, अलंबा तणी उमाल, भेरि तणौ भांकारि, झल्लरी तणौ झात्कारि, संख तणौ औंकारइ, तिविल तणौ दोंकारि, मादल तणौ धोंकारि, ढोल तणौ ढमढिमाट,...... ।—व. स.
उ०—४ सिव मग सन्मुख धाज्यौ, धप मप दों दों। भर हर भौं भौं मादल वजाज्यौ।—ध. व. ग्रं.
२ ढोल।
उ०—१ आरबी बंब मादळ उभै, धुबै नाद बादळ धजर। मो नूं बताय वेढीमणा, नाह कठी टेढ़ी नजर।—मे. म.
उ०—२ तलिआं तोरण ऊभीआं घरि घरि बांधीआं ए वनर वालि। मुहरइं मादळ रणकीआं तिहिं नाचइं ए नवरंगि बाल।
—हीराणंद सूरि
३ मृदंग।
उ०—नाचती गोपी अहां किस्ण गातां, मादळ वंश महुयरि वातां। हरिसी रमति ते हीइ आवि, अह्मनइ वनबयरी रो भावि।
—चतुरभुज
४ न उष्ण न शीतल, शीतोष्ण। (खाद्य पदार्थ व औषध)
रू० भे०—मंदळ, मद्दळ।
मादळियौ, मादलीयौ-सं० पु०—१ चांदी या सोने का एक आभूषण जिसमें कोई मंत्रित वस्तु रखी जाती है। यह गले में लटकाया जाता है या भुजा पर बांधा जाता है।
उ०—१ गळा में तीमणियौ, आड, पटियौ, हांस, हांयली, कंठी, दुसी, कांठलौ, मादळिया अर कठपुतळियां रो हार...... ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ कांनिइ उगनिउं झलहलइ, कोटिइ नवसर हार। माद-लीआ डोडी भजइ, गरसली कालीउं सार।—नळदवदंती रास
उ०—३ पितरां रा फूल घड़ीजै सो पितरां रा फूला मैं मढाई हो जो तथा मरने भूत होवे तरै प्रेत रो जंत्र मादळिया मैं तथा चोकी में मंडाईज जो।—बी. स. टी.
२ तावीज, गंडा।
उ०—भूतणी काढै, जमी में बूरै, जिद जरू करै, खेजड़ै में कीलै है। ओपरी छायां ओळावै, चिमठियां बांधै, थुथकी नाखै, माद-लिया मंढावै।—दसदोख
३ ऊंट के अगले पावों में बांधी जाने वाली 'नाल' का एक अवयव।
४ रहट पर कूए की ओर लगाया जाने वाला एक लकड़ी का डंडा।
५ मुखिया।
६ मित्र या दोस्त।
रू० भे०—मांदळियौ।
मह०—मद्दळ।
७ देखो 'मादळ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—म्हे तो आंगण गार गिलीवस्यां, म्हारी विरधी रा कोडां, चोखौ रे मादळ घुळ रह्यौ। रंग रातौ रे मादळियौ थारो रे सबद सुहावणौ।—लो. गी.
मादलीओ—देखो 'मादळियौ' (रू. भे.) (व. स.)
मादिक-सं० पु०—मादक पदार्थ, मद्य।
उ०—अ'वं फूल सुगंधं, बंधं सारत्रि पांन मादिकं। रत्तं चवख सहासं, आंमासं पासि रमणीयं।—रा. रू.
मादा, मादिन-सं० स्त्री० [फा० माद:] १ नर का विपर्याय, स्त्री जाति का प्राणी, जीव।
२ स्त्री, औरत, नारी।
उ०—१ सुरत्त तुं हीज तुं हीज सबद्द। मरद्दां मादां बीच मरद्द।
—ह. र.
उ०—२ धुबी चराकां हा दिन धोलै, मादिन सोर मचायौ। नाद सुवाचन पत्ति निसादिन, सादिन नहीं सुहायौ।—ऊ. का.
वि० [सं० मंद] १ सुस्त, आलसी।
२ रोगी। ३ कम, थोड़ा।
उ०—चंचल चपला सी चितवन चिरताली, निरखै निगमागम नागम निरताली। मादा मरजादा जादा मदमस्ती, बेली अलबेली छेली छदमस्ती।—ऊ. का.
रू० भे०—मादी। मह०—माद।
मादियौ-सं० पु० [सं० मध्यस्थ] गहरा एवं लंबा छेद करने का एक कीला विशेष।

वि०—१ मस्त ।
२ लुच्चा, लफंगा, उद्दंड ।
रू० भे०—माधियो ।

मादिलर—सं० स्त्री०—एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

मादी—देखो 'मादा' (रू. भे.)
उ०—मेले पग मंडा अग्र अखंडा, रंडा प्रिय राचंदा है। पढ दुरस प्रमादी मुरसद मादी, महन्त पुरस माचंदा है ।—ऊ. का.

मादीकड़कम—सं० स्त्री०—पुरुषों के कानों में पहनने का एक गोल आभूषण ।

मा'दीप—देखो 'महाद्वीप' (रू. भे.)

मादू—१ देखो 'माडू' (रू. भे.)
२ देखो 'माढू' (रू. भे.)
उ०—दुरधर डंका दे बंका ब्रद धाया, उठिया उद्योगी उद्दिम उमगाया । कित है बंबोई उड़िया कलकत्तो, मादू मुरधरिया करियो मिल मतो ।—ऊ. का.

मा'देव—देखो 'महादेव' (रू. भे.)
उ०—ठाकुरजी स्रीगंगास्यांमजी रौ मिंदर पाछौ उखेलाय नवो करायो, सिखर बंदी पोळ नै सूरजजी रौ मिंदर नै मा'देव रौ मिंदर करायो नै दोळी पेड़कोटो पको करायो ।—मारवाड़ री ख्यात

मादौ, माद्दौ—सं० पु० [अ० माद्द:] १ वह गुण या तत्व जिससे मनुष्य कुछ करने या समझने में समर्थ होता है, योग्यता, सूझ-बूझ, लायकी, तमीज, विवेक ।
२ सृष्टि की उत्पत्ति का मूल तत्व, प्रकृति ।
३ वह मूल पदार्थ जिससे कोई दूसरा पदार्थ बना हो ।
४ व्याकरण में शब्द की व्युत्पत्ति ।

माद्री—सं० स्त्री० [सं०] मद्र राजा की पुत्री, कुरुराज पाण्डु की द्वितीय पत्नी तथा नकुल व सहदेव की माता ।
रू० भे०—मुद्री ।

मा'द्रुम—देखो 'महाद्रुम' (रू. भे.)

माद्रेचा—सं० स्त्री०—चोहान वंश की एक शाखा ।

माद्रेय—सं० पु०—माद्री के पुत्र नकुल व सहदेव का नामांतर ।

माधव—सं० पु० [सं०] १ ईश्वर, परमेश्वर, नारायण, विष्णु ।
(नां. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१ माधव दस दस हेक म्रिढ़, ऐ बारह आदीत । एक एक तो जिम अवर, 'जेहा' कुण जग जीत ।—बां. दा.
उ०—२ निरमोही निरलज्ज मुग, काहे हुआे निकाज । माधव विरियां माहरी, कहां गमाई लाज ।—गजउद्धार
[सं० मा+धव] २ श्री कृष्ण । (अ. मा.)
उ०—निसदिन जनमाठम आठम गमनांहीं, माधव जनम्यों के मरियो जगमांहीं । कूड़ा पूजारी कूड़ी कथ कीनीं, देवण कांनां में पंजीरी दीनीं ।—ऊ. का.
३ इन्द्र ।
४ कामदेव का सखा, वसंत ऋतु ।
५ वैशाख मास ।
६ परशुराम ।
७ मालिक, स्वामी ।
८ एक राग विशेष ।
९ ऋग्वेद के भाष्य कर्ता, संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान जो मायण के पुत्र या सायण के भाई थे ।
१० उत्तम मन्वन्तर के मनु का पुत्र ।
११ भृगु कुल का एक गोत्रकार ।
१२ भौत्य मनु का एक पुत्र ।
१३ तालध्वज नगर के राजा विक्रम का पुत्र एक राजा ।
१४ यदु राजा का पुत्र एक यादव राजा ।
१५ एक धार्मिक ब्राह्मण ।
१६ मधु राक्षस के वंशज ।
१७ देखो 'माधवाचारी' (रू. भे.)
उ०—माधव साधन अरठ मंडायो, खारो मुख लै घणो खिडायो । छाक पियो जिण पेट छुडायो, भारी पांणी जन्म भंडायो ।—ऊ. का.
रू० भे०—माधौ, माध्व, माहव ।
अल्पा०—माधवो, माहवो ।

माधवमास—सं० पु०—वैशाख मास ।
उ०—वरस अढारह सत्तावीस में रे, माधवमास मझार । ऊझल-द्वादसी दिवसे थापीया रे, बिंब अनेक उदार ।—वृ. स्त.

माधवरित, माधवरितु—सं० स्त्री० [सं० माधव + ऋतु] वसंत ऋतु ।
उ०—माधवरित वैसाख मैं स्री 'अजमाल' अभंग । रांणी झाली परणियो, घणी खुसाली अंग ।—रा रू.

माधवाचारी, माधवाचारज—सं० पु० [सं० माधव+आचार्य] १ ऋग्वेद के भाष्यकर्ता एक प्रसिद्ध विद्वान ।
२ एक वैष्णव धर्माचार्य ।
रू० भे०—माधव ।

माधवी—सं० स्त्री० [सं०] १ चमेली की जाति की एक प्रसिद्ध लता जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं ।
उ०—फूलत वेल विरछ मालती माधवी । लहलहै कुंज कुंज विकसै ।—रसीलेराज रौ गीत
२ तुलसी
३ मिश्री ।
४ मधु से बनाई जाने वाली एक शराब विशेष ।
५ दुर्गा ।
६ दूती, कुटनी ।
७ ओड जाति की एक रागिनी । (संगीत)
८ सवैया छंद का एक भेद ।

६ नहुष कुलोत्पन्न राजा ययाति की कन्या।
१० रथध्वज राजा के पुत्र धर्मध्वज की पत्नी।
११ पुरुपुत्र जनमेजय 'प्रथम' की पत्नी।
१२ स्कंध की अनुचरी एक मातृका।
रू० भे०—माध्री, माध्वी।

माधवीलता–सं० स्त्री०—चमेली जाति की एक लता जिसमें सुगन्धित फूल लगते हैं।

माधवौ—देखो 'माधव' (अल्पा., रू. भे.)

माधियौ—देखो 'मादियौ' (रू. भे.)

माधुर–सं० पु० [सं०] १ चमेली, मल्लिका।
२ देखो 'मधुर' (रू. भे.)
उ०—मधुपरकादि सरस रस माधुर। संसकार परखै देवासुर।
—रा. रू.

माधुरई—देखो 'माधुरय' (रू. भे.)

माधुरता—देखो 'मधुरता' (रू. भे.)

माधुरी–सं० स्त्री० [सं०] १ मधुर होने की दशा, अवस्था या भाव।
२ मिठास, मीठापन।
३ शराब।
४ एक लता।
उ०—लता माधुरी मालती फूल लेखै। दसा आप भूलै तपी रूप देखै।—रा. रू.
वि० स्त्री०—१ मोहित करने वाली, मनोहर।
उ०—माधुरी मूरति वह प्यारी, बसी रहै निसिदिन हिरदै बिच, टरै नहीं टारी।—मीरां
२ सुन्दर।
उ०—मन भावनी माधुरी मोहनि, चंद बदन चित चंगी। अंतकाल में अरथ न आवत, कामनि नेन कुरंगी।—ऊ. का.
३ मीठी।

माधुरय, माधुरयय–सं० पु० [सं० माधुर्य] १ मधुर होने की दशा, अवस्था या भाव।
२ मिठास, मीठापन, मधुरता।
उ०—माधुरय्य मेह आसार एह, सद्गुरु समांन जीवन जहांन।
—ऊ. का.
३ सौंदर्य, लावण्य।
४ मोहकता।
५ काव्य का एक गुण जिसमें सरसता, शिष्टता, एवं सुसंस्कृतता होती है।
६ कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
७ सात्विक नायक का एक गुण।
रू० भे०—माधुरई।

माधुरयप्रधांन–वि०—माधुर्य की अधिकता वाला।
सं० पु०—माधुर्य का अधिक ध्यान रखकर गाया जाने वाला गीत, गाना।

माधोसिंहोत–सं० पु०—मेड़तिया राठौड़ों की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।

माधौ—देखो 'माधव' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—मैं माहरा इंद्रियां दुख माधा। बळि-उद्धरण बिखै तां बाधा।
—ह. र.

माध्यंदिन–सं० पु० [सं०] मध्यान्ह, दुपहर।

माध्यंदिनी, माध्यदिन–सं० स्त्री० [सं० माध्यदिनं] शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा।

माध्यम–सं० पु० [सं०] १ कार्य सिद्ध करने का साधन, उपाय।
२ वह भाषा जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय।
३ प्रस्तुतिकरण का साधन।
वि०—मध्यस्थ, बीच का।

माध्याकरसण–सं० पु० [सं० माध्याकर्षण] पृथ्वी के मध्य भाग का आकर्षण जो सब वस्तुओं को अपनी ओर खींचता रहता है।

माध्री—देखो 'माधवी' (रू. भे.) (१) (अ. मा.)

माध्व–सं० पु० [सं०] १ माध्वाचार्य द्वारा चलाया हुआ वैष्णव संप्रदाय।
२ उक्त सम्प्रदाय के अनुयायी।
वि०—१ मधुर, मीठा।
२ देखो 'माधव' (रू. भे.)

माध्वी–सं० स्त्री० [सं०] १ मदिरा, शराब।
२ देखो 'माधवी' (रू. भे.)

माप–सं० पु० [सं० मापन] १ मापने या तौलने की क्रिया या भाव।
उ०—ओछौ न कूं नकूं तिल अधको, मुणतां सुकव करां ले माप। तूं ताहरां रांण टोडरमल, परियां सारिखौ 'परताप'।
—महारांणा प्रताप रौ गीत
२ मापने या तौलने पर ज्ञात होने वाला परिमाण, मान, मात्रा।
उ०—माप का विहाई सा प्रताप का निदांन। मार्त्तंड आगे जिसी जोतसी जिहांन।—रा. रू.
३ किसी वस्तु या पदार्थ को मापने का साधन, मान, तौल।
४ वह पात्र जिसमें भरकर कोई चीज मापी जाय।
५ सीमा, हद।
उ०—आद इता भड़ आठ सौ, गह आपा गहवंत। माप न को मांटीपणौ, उर ज्यां ताप न अंत।—रा. रू.
६ देखो 'मापा' (रू. भे.)

मापक–सं० पु०—१ वह वस्तु जिससे कोई चीज मापी जा सके, किसी चीज का परिमांण, मान ज्ञात करने का साधन।
२ लम्बाई-चौड़ाई ज्ञात करने का उपकरण।
३ मापने का कार्य करने वाला व्यक्ति।
४ तराजू।

वि०—१ मापने या तौलने वाला।
रू० भे०— मापक, मापीक।
२ देखो 'माफक' (रू. भे.)

मा'पख—देखो 'महापक्ष' (रू. भे.)

मापख—१ देखो 'माफक' (रू. भे.)
२ देखो 'मापक' (रू. भे.)

मापणि–सं० स्त्री०—१ मापने का कार्य।
२ रस्सी, डोरी।
उ०—घोडा समउ ग्रास ते लहइ, मापणि बांधी माथइ रहइ। पीयइ दूध मनगमता ग्रास, वेगइ ते हारवइ ग्रहास।—ढो. मा.
३ अनाज आदि मापने का एक पात्र।

मापणौ, मापबौ–क्रि० स० [सं० मापनं] १ किसी पदार्थ या वस्तु का किसी निर्धारित मान के आधार पर वजन, तौल या भार निकालना, तोलना।
२ किसी क्षेत्र या वस्तु का विस्तार, चौड़ाई-लम्बाई या वर्गत्व ज्ञात करना।
उ०—१ पादू में एक भाये कह्यौ—हेमजी स्वांमी री पछेवड़ी मोटी दीसै। जद स्वांमीजी लंबपणै चौड़पणै माप दिखाई —भि. द्र.
उ०—२ जद स्वांमीजी कह्यौ—थें दोनू जणां डोरी ले जायने जायगां माप आवौ।—भि. द्र.
३ छूना, स्पर्श करना।
उ०—महल अतीव ऊच्च नभ मापत। पती प्रसन्न संपती प्रापत।
—मे म.
४ किसी पैमाने में भर कर द्रव पदार्थ या अन्नादि को नापना।
उ०—तोल दिए परखाय दे, गणी दिए दे माप। वांणा न छोडै वांणियौ, बंधव गणै न बाप।—बां. दा.
५ तुलना करना।
उ०—सस्त्र बांध हरि सुमर, देह धर प्रीत अदावै। समै तैण साहंस, जेण मापियौ न जावै।—रा. रू.
६ थाह लेना।
उ०—अखैराज प्रोहित को हित मापै कूंण। 'दळपत' का द्रोण गुर जैसैं जोर दूंण।—रा. रू.
मापणहार, हारौ (हारी), मापणियौ—वि०।
मापिओड़ौ, मापियोड़ौ, माप्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मापीजणौ, मापीजबौ—कर्म वा०।

मा'पदम—देखो 'महापदम, महापद्म' (रू. भे.)

मापलौ–सं० पु०—माप करने का पात्र।
उ०—कूड़ा तोला मापला ए, ताकड़ी अंतर कांण के। इण धन रे कारणै ए, भांजे राजा री आंण के।—जयवांणी

मा'पातक, मा'पातकी—१ देखो 'महापातकी' (रू. भे.)
२ देखो 'महापातक' (रू. भे.)

मा'पास—देखो 'महापास' (रू. भे.)

मापियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ निर्धारित मान के आधार पर वजन, तौल या भार निकाला हुआ, तौला हुआ. २ विस्तार, चौड़ाई-लम्बाई या वर्गत्व ज्ञात किया हुआ. ३ छूआ हुआ, स्पर्श किया हुआ. ४ पैमाने में भर कर द्रव पदार्थ या अन्नादि को नापा हुआ. ५ तुलना किया हुआ. ६ थाह लिया हुआ.
(स्त्री० मापियोड़ी)

मापीक—देखो 'मापक' (रू. भे.)

मा'पुरस, मा'पुरुस—देखो 'महापुरुस' (रू. भे.)

मापेट–सं० पु०—सहोदर।

मापौ–सं० पु०—१ आयात या निर्यात की जाने वाली वस्तुओं पर लिया जाने वाला एक प्रकार का कर, चुंगी, टैक्स। (मा. प. वि.)
२ पर्दा नशीन औरतों के बैठने की गाड़ी पर लगाया जाने वाला पर्दा। ३ उक्त प्रकार का पर्दा लगी गाड़ी, सवारी।
४ मापने की क्रिया या भाव।
५ मापने का उपकरण, तोला या बर्तन।
उ०—जी हो तोला मापा वधारिया लाला, दस दिन महोच्छव थाय।—जयवांणी
६ सीमा, हद।
उ०—ठाकर फेर डोढ़ में बोल्या—इण अकल री तौ कांई मापौ आ तौ मौका मौका माथै आवती ई रै'वै।—फुलवाड़ी
रू० भे०—मफो, माफो।

मा'प्रभु—देखो 'महाप्रभु' (रू. भे.)

मा'प्रळै—देखो 'महाप्रळय' (रू. भे.)

मा'प्रसथांन—देखो 'महाप्रस्थांन' (रू. भे.)

मा'प्रसाद—देखो 'महाप्रसाद' (रू. भे.)

मा'प्रस्थांन—देखो 'महाप्रस्थांन' (रू. भे.)

मा'प्रांण—देखो 'महाप्रांण' (रू. भे.)

माफ–सं० पु० [अ० मुआफ] क्षमा, माफी।
उ०—१ सैधां मुहडां भाईपै री राड छै सो तोय खांनो माफ कीजै।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
उ०—२ वौ बोलो बोलो चुपचाप सगळी बातां सुणतौ रह्यौ। पछै हाथ जोड़तौ बोल्यौ—अबकी भळै माफ कर। कोई नवौ उपाव बता।—फुलवाड़ी
वि०—जिसे क्षमा किया गया हो या माफी दी गई हो, क्षमा प्राप्त, क्षमित।
उ०—वौ निरविकार भाव सूं पूछ्यौ—बाई, थूं कुण है? म्हनै साच बता, थनै सौ ई गुना माफ है, म्हारा सूं डरण री थनै कोई जरूरत नीं।—फुलवाड़ी
रू० भे०—माप, माफी, मुआफ।

माफक–वि० [अ० मुआफिक] १ अनुसार, मुताबिक।

उ०—१ करि सलांम सजोड़ि कर इम, बोलिया स बजीर। हुकम माफक होवसी, वरियांम हित चित वीर।—सू. प्र.

उ०—२ अठ ठाकरां खड़गसेणजी नूं सरसै सूं बुलाया वा सला हुई तथा हुकम माफक समंचार कया अरु रुका दीना।—द. दा.

उ०—३ ऐ मात्रा उपछंद, कहिया मत माफक 'किसन'। नहचै सुण रघुनंद, निज सेवगां निवाजसी।—र. ज. प्र.

२ अनुकूल।

३ ठीक, उचित।

उ०—तिवारै खेतसी जी स्वांमी कह्यो—हेमजी, आज बिनां चाख्यां धोवण भेळो कीयौ है। माफक निकळियौ तो स्वांमीजी इसा निखेधता दिसै है बाकी कांण राखै ज्यूं कोइ नहीं।—भि. द्र.

४ थोड़ा, मामूली, साधारण, ठीक-ठीक।

उ०—तदै कंवर कह्यो—म्हांरी तपस्या मांहे खोट छै महाराज रै घरै जनम पायो, पिण महाराज रै माल देस मांहै सीर थोड़ो घलायो, तिण सूं माजी नै गांव १ आप दीधो छै तिण रौ हासल माफक हीज आवै छै।—जगदेव पंवार री बात

उ०—२—लोग उहां रे कन्हा सांवठो छै। आपां कन्है लोग माफक छै।—भाटी सुंदरदास बींकूंपुरी री वारता

उ०—सूरेजी नूं कहियो—थे काढ़ो, साथ माफक छै हूं इहां नूं विलमायस्यूं।—सूरे खींवै कांधळोत री बात

५ समान।

उ०—गोली कह बतळावियां, चिड़ ऊठे चंडाळ। जग में सोधी नंह जुड़ी, गोला माफक गाळ।—बां. दा.

रू० भे०—मापक, मापख, माफग, माफिक, माफिग।

माफकत–सं० स्त्री० [अ० मुआफकत] १ समानता।

२ अनुकूलता।

३ मैत्री, दोस्ती।

४ इत्तिफाक, संयोग।

रू० भे०—माफगत, माफिकत, माफिगत।

माफग—देखो 'माफक' (रू. भे.)

माफगत—देखो 'माफकत' (रू. भे.)

उ०—आईज बात कुदरत सोळै आंना माफगत है।

माफड़दै—मुफ्त में।

उ०—लोग ठाटा ढोवै, माठा चालै, मोकळी मजूरी माफड़दै घालै है।—दसदोख

माफिक—देखो 'माफक' (रू. भे.)

उ०—१ थे ससाब आवज्यो, थांहरी सलाह माफिक कांम होसी।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ सो ई माफिक वारी-वारी मांणस आवै, जिका राक्षसराज भक्षण करै।—सिंहासण बत्तीसी

माफिकत, माफिगत—देखो 'माफकत' (रू. भे.)

माफिजखांनौ, माफिजदफ्तर–सं० पु० [फा०] कचहरी का वह स्थान जिसमें सब प्रकार की मिसलें रहती है।

माफी–सं० स्त्री० [अ० मुआफी] १ क्षमा या माफ करने की क्रिया या भाव।

उ०—मंत्री आखता पड़नै कै'वण लागा—म्हांरी गुस्ताखी नै ई राज माफी बगसावै।—फुलवाड़ी

२ क्षमा।

उ०—१ ठग सगळा कांणिया काचर रै पगां पड़िया। माफी मांगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ सागड़ी घणौ ई रोयौ रींक्यौ के म्हारी धूड़ खांणी व्हैगी, माफी चावूं। पण थळियो तो एक ई सुणी नीं।—फुलवाड़ी

३ बखशिश।

४ वह भूमि या खेत जिस पर सरकारी कर माफ हो, कर मुक्त भूमि। ५ देखो 'माफ' (रू. भे.)

उ०—सुक कूबत ने डील रे जोर रौ निरबळ कमजोर सरणागतां नूं अपराध बकसणो माफी करणो।—नी. प्र.

माफीखांनौ—देखो 'माफिजखांनौ'।

माफीदार–सं० पु० [अ०] वह व्यक्ति जिसकी भूमि की मालगुजारी माफ हो, कर मुक्त भूमि का उप-भोक्ता।

माफौ–सं० पु०—१ हरिण की नाभि में होने वाली कस्तूरी की पोटली या थैली।

उ०—हरख रौ हींडो, उदेगर री भेट, जीव रौ जतन, इंद्र री भेट। किस्तूरी रौ माफौ, केसर री क्यारी, रूप रौ रूखड़ो।
—मयाराम दरजी री बात

२ देखो 'मापौ' (रू. भे.)

उ०—घोड़ बहल रथ घणां, धमळ धुर के असि धारी। सुजि खासा सुखपाळ, इका माफा असवारी।—सू. प्र.

मा-बाप–सं० पु० यौ०—माता-पिता।

उ०—दोस रोग मेटण देहां री, जैहारी जगणौ जस जाप। 'केहा' री रक्षा तैं कीनी, 'मेहा' री मोटी मा-बाप —अज्ञात

माबूद–वि० [अ० मा'बूद] १ जिसको पूजा जाय, पूजनीय।

२ परमात्मा, ईश्वर, ब्रह्म।

उ०—१ मौजूद खबर माबूद खबर, अरवाह खबर वजूद। मकांम चे चीज हस्त, दादनी सजूद।—दादूबांणी

उ०—२ चहार मंजिल बयांन कुफतम, दस्त करदः बूद। पीरां मुरीदां खबर करदः जा राहे माबूद।—दादूबांणी

उ०—३ दादू नूरी दिल अरवाह का, तहां बसै माबूद। तहं बंदे की बंदगी, जहां रहे मौजूद।—दादूबांणी

मा'ब्रामण—देखो 'महाब्राह्मण' (रू. भे.)

मा'भद्रा—देखो 'महाभद्रा' (रू. भे.)

मा'भारत—देखो 'महाभारत' (रू. भे.)

मा'भास्य—देखो 'महाभास्य' (रू. भे.)

मा'मारी—देखो 'महामारी' (रू. भे.)

मायं, माय—देखो 'माता' (रू. भे.)

उ०—१ मैं उणहिज माय रो रूप, हिरदा मझ राख्यो। 'जैत' भूप जैत नूं दिई जिण रो दस दाख्यो।—मे. म.

उ०—२ रेसम हूंदा पोतड़ां पालणिये पोढाय। तो 'जेहा' बेटा तिके, भळे झुलाया माय।—बां. दा.

उ०—३ ज्यां थारे तट जाय, उदर भरे पीधो उदक। मिनख जिके फिर माय, आया नह जननी उदर।—बां दा.

उ०—४ अह दैवह वसि तेवि पंच ए पंडव वणि चलिय। हथिणउरि जाएवि मुकलावइं, निय माय पिय।—सालिभद्र सूरि

उ०—५ महल पधार्‌या पदमिणी, तेहवै बादळ माय रावत। सगळी बात सुणी करी, पासैं ऊभी आय रावत।—प. च. चौ.

उ०—६ नहीं तो माय नहीं तो बाप, आपेज आपे ज उपन्नो आप। मनच्छा बीज चलावै मूळ। थयो चर बेचर सुक्खम थूळ।—ह. र.

उ०—७ साची बात है—मत मरज्यो टाबर री माय, ना मरज्यो बूढ़ै री नार।—दसदोख

उ०—८ रुखमणि अंबिका पूजिवा जाहिरे, साथ लीधी वर कांमणि। देवी हुई सोहई सयळ सिणगार, माय मायां तणी मांडणी। माय मायां तणी मांडणी, सज्या सयल सिणगार, अहि ओपमां मिरि वेणी हळकइ, चिहुर चंपक भार।—रुकमणी मंगळ

२ देखो 'मात्रा' (रू. भे.)

उ०—अइ मायं पांण भोयणं।—जै. त. प्र.

३ देखो 'मांय' (रू. भे.)

उ०—मिलै सिंह बन माय, किण मिरगा अगपत कियो। जोरावर अति जाय, रहै उरधगत राजिया।—किरपारांम

मायई—देखो 'माता' (अल्पा., रू. भे.) (उ. र.)

मायड़, मायड़ी—देखो 'माता' (मह., रू. भे.)

उ०—१ डाकी ठाकर सहण कर, डाकण दीठ चलाय। मायड़ खाय दिखाय थण, धण पण वलय बताय।—बी. स.

उ०—२ पीदे तो बैठी मायड़ मन करचो, मन कर मेल्यो लोड़ो वीर।—लो. गी.

उ०—३ जनम दियो म्हारी मायड़ी। होजी वै रे रूप दियो करतार।—लो. गी.

उ०—४ रे जाया मायड़ी सांमी रे नाळ।—जयवांणी

मायत—देखो 'माईत' (रू. भे.)

उ०—१ तद वेरसी सलांम कर कही—जे इसी ही होणहार थी सो हुई। थे म्हांरै मायत छो।—सूरे खींवे कांधळोत री बात

उ०—२ गोतम जीत करै मायतां तणी, तीव्र प्रणांमे जोय हो।
—जयवांणी

मायतपणौ—देखो 'माईतपणौ' (रू. भे.)

मायताय—सं० पु० [सं० मातृ+तात] माता-पिता।

उ०—मायताय मनि पुगी हांम, साल्हकुमर तसु दीधउ नांम। मनवच्छा माता भय होइ, ढोलउ नांम कहइ सहु कोइ।—ढो. मा.

मायदे—सं० स्त्री०—परमार चाहड़ देव की पुत्री जो शक्ति अवतार मानी गई है।

मायनै—देखो 'मांय' (रू. भे.)

मायरादार—सं० पु०—माहेरा लेकर आने वाला, मामा या उसका सम्बन्धी। रू० भे०—माहेरेदार।

मायरौ—सं० पु० [सं० मातृ+भरह] विवाह के समय वर या वधू के मामा द्वारा दिया जाने वाला धन या वस्त्रादि।

उ०—थोड़ी देर अठीनै-बठीनै री वातां हुयां रै बाद गोपाळ मीठास सूं पूछियो—थांरै माथै कित्तोक करजो है? "अंदाजन कोई तीन सौ-साढ़ी तीन सो रो।" कांई मायरौ मोसेरो अथवा नुकतो काढियो हो?—वरसगांठ

रू० भे०—मांमेरो, मायेरो, माहिरो, माहेरो।

मायां—सं० स्त्री० (ब. व.) [सं० मातृ] १ वैवाहिक अवसरों पर किसी दीवार या पाटे पर घी की सात धाराएं लगाकर उस पर कुंकुम की बावन बिंदियां देकर पूजनार्थ की जाने वाली मातृकाओं की स्थापना। वर-वधू को सर्वप्रथम इन्हीं को प्रणाम करवाया जाता है।

उ०—१ रुखमणि अंबिका पूजिवा जाहिरे, साथ लीधी वर कांमणि। देवी हुइ सोहइ सयल सिणगार, माय मायां तणी मांडणी।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ बइठा मायां आगळी वेऊं, छेहड़ा बाधा धणी छत।
—महादेव पारवती री वेलि

२ देखो 'माअका' (रू. भे.)

३ देखो 'माता' (रू. भे.)

उ०—छ तो इम छांना बध्या कन्हैया, एक रह्यो तूं पास रे। तोख मायां रा राखतो कन्हैया, तूं आवे छट्ठे मास रे।—जयवांणी

४ देखो 'माया' (रू. भे.)

५ देखो 'मावलियां'।

६ देखो 'मांयां' (रू. भे.)

माया—सं० स्त्री० [सं०] १ धन की अधिष्ठात्री, लक्ष्मी-देवी।

उ०—ईडरिया आचार री, वीर चढ़ै तो वेळ। हसत चढ़ै चारण हुवै, माया सरसत मेळ।—बां. दा.

२ द्रव्य, धन, सम्पत्ति, वैभव। (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ देखी जे सूंमां द्रुमां, एकी प्रकत अभंग। जड़ माया घर में जिते, इते प्रफुलत अंग।—बां. दा.

उ०—२ सती बळै जूझै सुभट, करै ग्रंथ कविराज। दाता माया ऊधमैं, नांम उबारण काज।—बां. दा.

उ०—३ इसी माया के कांम री जो खरचै न खावै, ना वात माथै लगावै। अर इसी माया ही के कार री जके प्रीत गिणै न नीत, आपो गिणै न मुलायदो, कोरो परसंगी रो जी दुखावै। का वात नै अर का सुवाद नै। माया री रंग तांना-तैंया में नहीं, नांम अर कांम में होणो चाहीजै।—दसदोख

उ०—४ एक बेटा रै जीवतां उण री मां नै औ विखो काढणो पड्यो, धिरकार है उण रा जीवणा नै। लांणत है उण री माया संपत नै।—फुलवाड़ी

उ०—५ माया का सुख पंच दिन, गरब्यौ कहा गंवार। स्वप्ने पायौ राजधन, जात न लागै वार।—दादूबांणी

उ०—६ दादू माया का बळ देखकर, आया अति अहंकार। अंध भया सूझै नहीं, का कर है सिरजन हार।—दादूबांणी

उ०—७ 'हरीया' माया जोडि करि, गाडी गोडै हेठ। माया इत की इत रही, आप गये करि वेठ।—स्री हरिरांमदास जी महाराज

३ ईश्वर की एक काल्पनिक अलौकिक शक्ति, जिसके द्वारा बाह्य जगत की रचना एवं भौतिक पदार्थों का निर्माण हुआ है। अपने प्रभाव के कारण यह जीव को ब्रह्म से दूर रखती है। (वेदान्त)

उ०—१ दादू माया सब गहले किये, चौरासी लख जीव। ताका चेरी क्या करै, जे रंग राते पीव।—दादूबांणी

उ०—२ बाजीगर की पूतली, ज्यों मरकट मोह्या। दादू माया रांम की सब जगत विगोया।—दादूबांणी

उ०—३ माया मैली गुण मई, धर धर उज्वल नांम। दादू मोहै सबन कौं, सुर नर सब ही ठांम।—दादूबांणी

उ०—४ 'हरीया' माया रांम की, महा अपर बळ होय। मेरी मेरी करि गया, साथि न चाली सोय।

—स्री हरिरांमदास जी महाराज

उ०—५ 'हरीया' माया मोहनी, मोह्या सुर नर नाग। एक न मोह्या रांम जन, उर उपज्या वैराग।

—स्री हरिरांमदास जी महाराज

वि० वि०—वेदान्त दर्शन के अनुसार ब्रह्म की अलौकिक शक्ति से ही हमें यह दृश्य जगत दिखाई देता है। पुराणों में इसी शक्ति (माया) में चेतन धर्म का आरोप करके इसे स्त्री रूप में ब्रह्म की सहधर्मिणी माना है। इसी कारण प्राणियों को अवस्तु में वस्तु, अस्वाभाविक में स्वाभाविक व मिथ्या में सत्य का आभास होता है। एक अन्य मत के अनुसार इसे अधर्म की पुत्री माना है और इसकी माता का नाम मृषा कहा है। ब्रह्म को इसका भाई बताया है जिसके संसर्ग से इसे लोभ एवं विकृति नामक दो पुत्रों की उत्पत्ति हुई। सृष्टि निर्माण के समय ब्रह्मा ने इसकी सहायता ली जिससे निम्नलिखित सात वस्तुओं या शक्तियों का निर्माण किया गया:—(१) गायत्री—जिससे समस्त वेदों का निर्माण हुआ, तदनन्तर वेदों के द्वारा संसार का निर्माण हुआ। (२) सत्यवती—जिससे जीव पोषक वनस्पत्तियों एवं समस्त औषधियों का निर्माण हुआ। (३) ज्ञानविद्या—इससे सारे शास्त्रों का निर्माण हुआ। (४) लक्ष्मी—इससे वस्त्र एवं आभूषण उत्पन्न हुऐ। (५) उमा—इसने शिव की सहायता से समस्त शास्त्रों का भूलोक में प्रसार किया। (६) वणिका—इसने समस्त सृष्टि का भार अपने ऊपर लिया। (७) धर्म द्रवा—यह एक नदी थी जो आगे चलकर गंगा के नाम से प्रसिद्ध हुई। वस्तुतः माया एक मूर्तिमान भ्रम है जो प्राणियों को भुलावा देकर ईश्वर से विमुख रखती है। जितने कार्य, बातें या पदार्थ वास्तव में कुछ और होते हैं और दिखने में कुछ और होते हैं इसका अंतर ही माया है।

४ सृष्टि की उत्पत्ति का मूल कारण।

उ०—१ प्रथम जळ जळाकार हुतो। तिहां निरंजन निराकार वडपात मांहि पौढिया हुता। तदा मन मांहि इच्छा ऊपनी जु सृष्टि उपाजिसु। तदा मनसा देवी माया तै ऊपनी। माया थकी थोक हुइ ऊपना, आत्मा एक। द्वितीयौ परमात्मा। ताहरां माया सेती जु मिल्यौ ते जीवात्मा (अर) माया थकी जु भिन्न रह्यौ ते परमात्मा।—द. वि.

उ०—२ मन मनसा माया रती, पंच तत्व परकास। चौदह तीनों लोक सब, दादू होइ उदास।—दादूबांणी

५ शैव मतानुसार मन को बांध रखने वाले चार पासों में से एक।

उ०—माया फांसी हाथ लें, बैठी गोप छिपाइ। जे कोई धीजै प्राणियां, तांहि के गळ बांहि।—दादूबांणी

६ मन के २४ दुष्ट विकारों में से एक विकार। (बौद्ध)

उ०—१ दादू माया सौं मन बीगड़ा, ज्यों कांजी कर दुद्ध। है कोई संसार में, मन कर देवै सुद्ध।—दादूबांणी

उ०—२ माया पापनि पैस करि, कीया कळेजै घाव। 'हरीया' बोह बळिबंतु कुं, रंक न पुंहचै राव।—स्री हरिरांमदास जी महाराज

७ छल, कपट, धोखा, प्रवचना।

८ जादू का खेल बाजीगरी, ऐन्द्रजाल।

९ अविद्या, अज्ञान, भ्रम, मोह।

उ०—माया विसरी बेलड़ी, 'हरीया' पसरी दूरि। केताई फळ कारणै, रह्या विसूरि विसूरि।—स्री हरिरांमदास जी महाराज

१० भ्रम या मोह वश होने वाला अनुराग, आसक्ति, ममत्व।

उ०—१ मावीतां तणी इसी ताइ माया, ध्यांन रहइ धर प्रांण आधार। बाधइ सायर बळै ज्यूं ही विप्र, वासुर वरस तणइ विस्तार।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ जीवों मांहीं जिव रहै, ऐसा माया मोह। सांई सूधा सब गया, दादू नहिं अंदोह।—दादूबांणी

उ०—३ ऊतरता एता मला, माया मोह विकार। रांम नं मना उतारियो, जन हरीया छिन वार।—स्री हरिरांमदास जी महाराज
११ राजनैतिक धोखा-धड़ी।
१२ मिथ्या या अवास्तविक धारणा।
उ०—'हरीया' माया कीच मैं, केताई कळीयाह। जे कोई निकसै बापड़ो, सतगुर सैं मिळियाह—स्री हरिरांमदास जी महाराज
१३ कोई गूढ़ या विलक्षण बात जो आसानी से नहीं जानी जा सके।
उ०—झीणी माया लींण हुय, रही प्रांण सुं रचि। सिध सिन्यासी जोगना, गए मुनि जन पचि।—स्री हरिरांमदास जी महाराज
१४ लालच, लोभ।
उ०—१ माया करि करि मांनवी, मन में मोटी आस। 'हरीया' पांणी ओस का, पीयां मिटै न प्यास।
—स्री हरिरांमदास जी महाराज
१५ मन की वृति, वासना।
उ०—१ मन हस्ती माया हस्तिनी, सघन वन संसार। ता में निरभय हो रह्या, दादू मुग्ध गंवार।—दादूवांणी
उ०—२ दादू माया मगन जु हो रहे, हम से जीव अपार। माया मांहीं ले रही, डूबै काळी धार।—दादूवांणी
१६ भोग विलास की सामग्री।
उ०—१ माया सौं मन रत भया, विसय रस माता। दादू साचा छाड कर, झूठे रंग राता।—दादूबांणी
उ०—२ यों माया का सुख मन करै, सय्या सुंदरि पास। अंत काळ आया गया, दादू होउ उदास।—दादूबांणी
१७ झंझट, झमेला, प्रपंच।
उ०—१ बात सुणतां ई माळण री तो इचरज सूं आंख्यां फाटी री फाटी रैंगी। हे रांम! ओ कांई खिलकौ व्हियो अबै कीकर इण माया सूं फंद कटैला।—फुलवाड़ी
उ०—२ माया विसरी वेलड़ी, अंधा रह्या अळूझि। जन 'हरिया' से जांनि कै, चाल्या देख सळूझि।—स्री हरिरांमदास जी महाराज
१८ तांत्रिक चमत्कार।
उ०—१ आ तौ उण सपना वाळा बाग में हींडती अपछरा है। रांम जांणै आ कांई माया है। कांई चाळो है।—फुलवाड़ी
उ०—२ उण रै वास में निसंक आय नै मूंडकी नै धड़ सूं चेपणी अर यूं म्हारै सांमी मुळकती जोवणी, अवस आ कोई देवां उपरली माया है।—फुलवाड़ी
१९ रचना, लीला, खेल।
उ०—१ माया सोह सांमट बाळ-मुकुंद। सूतौ बड़-पांन समाधि समंद।—ह. र.
उ०—२ तूं हीज भांजै तूं घड़ै, पोसै त्रिपुराया। दुनियां में दीसै विका, सह थारी माया।—गजउद्धार
उ०—३ आ सगळी माया अर ओ सगळो परताप इण जीव री ई है।—फुलवाड़ी
२० दैविक चमत्कार।
उ०—१ अमरु एकु पयडउ हूउ बोलइ सांभलिणाह। ए माया सवि मइं करी करया राखे वाह।—सालिभद्र सूरि
उ०—२ कवण अखैवड़ विगर, प्रळै सागर सिर सोभै। कवण विनां सुखदेव, देव माया नह लोभै।—रा. रू.
२१ सृष्टि, संसार, जगत।
उ०—१ अनळ पंखि आकास को, माया मेर उलंघ। दादू उलटै पंथ चढ, जाइ विलंबै अंग।—दादूबांणी
उ०—२ यहु सब माया मिरग जळ, झूठा झिळमिळ होइ। दादू चिळका देखकर, सत कर जांणा सोइ।—दादूबांणी
उ०—३ दादू नैनहुं भर नहीं देखिये, सब माया का रूप। तहं ले नैना राखिये, जहं है तत्व अनूप।—दादूबांणी
२२ ठाट-बाट।
उ०—माया देखे मन खुसी, हिरदै होइ विकास। दादू यह गति जीव की, अंत न पूगै आस।—दादूबांणी
२३ सांसारिक बन्धन।
उ०—१ दादू झूठी काया झूठ घर, झूठा यहु परिवार। झूठी माया देखकर, फूल्यो कहा गंवार।—दादूबांणी
उ०—२ माया बंधक बांण ज्युं, मारै अंग लगाय। जन 'हरीया' तिंह लोक मैं, भाजि किती लग जाय।
—स्री हरिरांमदास जी महाराज
उ०—३ बेटी रै जोग वर सारू म्हैं इण माया में झिलियो रह्यो। अबै म्हैं अत-लोक री वास करणौ चावूं।—फुलवाड़ी
२४ प्रधान या प्रकृति।
२५ दुष्टता, मन की कुटिलता। (जैन)
२६ प्रज्ञा, बुद्धि, ज्ञान।
२७ शक्ति, दुर्गा, देवी।
उ०—सच्चिदानंद व्यापक सरब, इच्छा तिण में ऊपजै। जगदंब सकति त्रिसकति जिका, ब्रह्म प्रकृति माया बजै।—मे. म.
२८ वैष्णवों के अनुसार विष्णु की नौ शक्तियों में से एक।
२९ नारी का एक रूप।
३० गौतम बुद्ध की माता।
३१ सप्त पुरियों में से एक पुरी का नाम। (अ. मा.)
उ०—प्रथम अजोध्यापुरी, बहुरि मथुरा अरु माया। कासी कांती प्रसिद्ध, मुकत पाई जे आया।—गजउद्धार
३२ एक वर्णिक छन्द जिसमें, प्रथम पांच गुरु, फिर एक सगण, भगण अंत में दो गुरु होते हैं।
रू० भे०—माईया।
मह०—मायो।

३२ देखो 'मायां' (रू. भे.)

उ०—१ ग्राय बइठा माया तराइ ग्रागळि, भरिया थाळ रतन बहु भांति।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ दिख राजा ग्रागळि दाखियउ, राज परीछउ काइ रुख। ग्रचरिज सहु रहियउ ग्रंतेउरि, माया जरइं बोलिया मुख।
—महादेव पारवती री वेलि

३३ देखो 'मया' (रू. भे.)

उ०—जिण सुणि रुदन दया मनि जांणी। ग्रासम रिख माया जित ग्रांणी।—सू. प्र.

३४ देखो 'माता' (रू. भे.)

३५ देखो 'मावलियां'।

३६ देखो 'मांयां' (रू. भे.)

३७ देखो 'मायां'।

मायाग्राळ—देखो 'मायाजाळ' (रू. भे.) (जैन)

मायाकार-सं० पु० [सं०] जादूगर, बाजीगर, ऐन्द्रजालिक।

मायागोलक-सं० पु०—साबुन के पानी का बुलबुला, जो कि बच्चे कागज की नलिका में फूंक मार कर बनाते हैं।

उ०—जिसिउं स्वप्नराज्य, जिसिउं गंधरव नगर, जिसिउं नदी पुलिनांतरालि लिखित प्रासाद, जिसिउं ग्रलातचक्र, जिसी ग्रगन्त्रिणिका, जिसा मायागोलक, जिसिउं इंद्र जालवन तिसिउं माया मय संसार।—व. स.

मायाजाळ-सं० पु० [सं० माया+जालं] १ सांसारिक बंधन, झंझट, प्रपंच।

उ०—घर के मारे वन के मारे, मारे स्वरग पयाळ। सूक्ष्म मोटा गूंथ कर, मांड्या मायाजाळ।—दादूबांणी

२ मोहजाल, ममत्व का बंधन।

उ०—सूरदास कीं ग्रटकतौ ग्रटकतौ जबाब देवतो—वां दिनां म्हैं ईं थोड़ी-घणी मायाजाळ में फंसियोड़ो हो।—फुलवाड़ी

३ चमत्कार।

उ०—भूख ग्रर तिरस मिटियां पछै राजकंवर ग्रर सगळा जांनिया इण मायाजाळ माथै विचार करियो तो वांनै ग्रणूतो इचरज व्हियो।—फुलवाड़ी

४ ऐन्द्रजाल, जादू।

५ धोखा, ठगी, प्रवंचना।

रू० भे०—मायाग्राळ।

मायातंत्र-सं० पु० [सं०] एक प्रकार का तंत्र।

मायालि-सं० स्त्री० [सं०] दुर्गा को प्रसन्न करने के लिये ग्रष्टमी या नवमी को दी जाने वाली नर बलि। (तांत्रिक)

मायादोख, मायादोस-सं० पु० [सं० मायादोष] दगाबाजी करके ग्राहार लेने पर लगने वाला दोष। (जैन)

मायापत, मायापति-सं० पु० [सं० मायापति] १ परमात्मा, ईश्वर

२ धनवान।

उ०—१ मायापत पिंडतजी री बांमणी नैं थें ग्राज मंगती बतावौ। कोई खायो है तो ग्राज दिन तांई म्हारो ई खायो है। म्हैं तो मांगने पांणी ई नीं पीयो।—फुलवाड़ी

उ०—२ ग्रबै किण रो भरोसो! निरास मायापतियां रो मन भगवांन माथै डुलसियो। ठौड़ ठौड़ मिंदरां री नींवां दिरीजण लागी। जूना मिंदरां में ग्रस्टपौर पूजा होवण लागी।—फुलवाड़ी

मायापास, मायापासु-सं० पु० [सं० माया+पाशः] माया का बंधन, मोहजाल।

उ०—पसुबंधन जिम छोडिय मोडिय मायापासु। ग्रसिव निवारण वारण वलिउ तहिय उदासु।—जयसेखर सूरि

वि० वि०—देखो 'माया' (५)।

मायाबी—देखो 'मायावी' (रू. भे.)

मायामोसौ-सं० पु०—कपट पूर्वक बोला जाने वाला झूठ। (जैन)

मायामोह-सं० पु० [सं०] १ विष्णु के शरीर से निकला हुग्रा एक कल्पित पुरुष जिसने ग्रसुरों का दमन किया था। (पौराणिक)

२ विष्णु का एक ग्रवतार।

३ माया के प्रति होने वाला मोह।

मायावंत, मायावत-सं० पु० [सं० मायावत्] १ धनवान, धनाढ्य।

उ०—स्यांम सुभायक मेघ, मेघ नह मायावंतह। मायावंतह साह, साह नहीं खर ग्रंतह।—र. ज. प्र.

२ कंस का एक नाम।

३ राक्षस।

वि०—१ छली, कपटी, धोखे-बाज।

२ मायावी, बाजीगर, जादूगर।

उ०—पांवां लाग्यो पदमयो जिझा बैठे रुकमणी जादुराय। मायावंत हो स्त्री कस्णजी पीतांबर पहराय।—रुकमणि मंगळ

३ भ्रमात्मक ग्रसत्य।

मायावती-सं० स्त्री० [सं०] १ कामदेव की स्त्री रति का एक नामान्तर जो उसने शंबरासुर के यहां रहते समय धारण किया था।

२ प्रद्युम्न की स्त्री का नाम।

मायावाद-सं० पु० [सं०] ब्रह्म सत्य ग्रौर जगत मिथ्या का सिद्धान्त। इसमें समस्त सृष्टि को मिथ्या व ग्रसत्य माना जाता है।

मायावादी-वि० [सं० मायावादिन्] 'मायावाद' के सिद्धान्त को मानने वाला।

मायावियौ—देखो 'मायावी' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—केई वेरागी ग्रालोवसी, ग्रालोवे नहीं लपटी रे। ग्राठ बोल ठांणायंग कह्या, मायाविया होय कपटी रे।—जयवांणी

मायावी-सं० पु० [सं० मायाविन्] १ ईश्वर का एक नाम।

२ ऐन्द्रजालिक, बाजीगर, जादूगर।

३ कपटी, धोखेबाज, छलिया।

४ मय दानव के पुत्र का नाम जिसकी मा का नाम हेमा था। यह बालि द्वारा मारा गया।

५ माजूफल।

६ बिड़ाल, बिल्ला।

७ धनवान।

वि०—१ विचित्र एवं रहस्यमय कार्य करने वाला, तरह तरह की मायाएं रचकर प्रभावित करने वाला, बाजीगरी में निपुण।

उ०—१ कहें क्या ध्यावेधी, कहन नहि आवै कुळ कुळै। मदांधी मायावी तुम रु हम भावी सम तुलैं।—ऊ. का.

उ०—२ अर जे इण मायावी ऊंट नै छेड़ूं तो परतख इण जम रै हाथां मौत है।—फुलवाड़ी

२ माया सम्बन्धी।

३ माया के रूप में होने वाला।

४ जादू आदि से सम्बन्ध रखने वाला।

रू० भे०—मायावी।

अल्पा०—मायावियौ।

मायाबीज-सं० पु०—ह्रीं नामक तांत्रिक मंत्र।

मायासंपत-सं० स्त्री० यौ० [सं० माया+संपति] धन-दौलत।

उ०—माईतां री हुकम अर वांरी पग धूळ माथा माथै, टाबरां री मायासंपत आ इज है।—फुलवाड़ी

मायासीता-सं० स्त्री० यौ० [सं०] सीता हरण से पूर्व अग्नि द्वारा वास्तविक सीता को हटाकर रखी गई एक कल्पित सीता। (पौराणिक)

मायास्त्र-सं० पु० [सं० माया-अस्त्र] एक प्रकार का कल्पित अस्त्र।

मायी-सं० पु० [सं० मायिन्] १ माया का अधिष्ठाता, ईश्वर।

२ कपटी, गुंडा, छलिया।

३ बाजीगर, जादूगर।

४ मायावी।

सं० स्त्री० [सं० मातृ] ५ मौसी।

६ माता, मां।

रू० भे०—माइल्ल।

मायूस-वि० [अ०] १ निराशा, हताश।

२ उदास।

मायूसी-सं० स्त्री० [अ०] १ मायूस होने की अवस्था या भाव।

२ निराशा, उदासी।

मायेरौ—देखो 'मायरौ' (रू. भे.)

मायै—देखो 'मांय' (रू. भे.)

मायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ समाया हुआ. २ निभा हुआ, खटा हुआ. ३ सहन या बर्दाश्त हुवा हुआ. ४ हजम हुवा हुआ, पचा हुआ. (स्त्री० मायोड़ी)

मायौ—१ देखो 'माता' (मह., रू. भे.)

उ०—१ देस यसा जगि चिरजयौ, रांगा देवी मायौ जी। सरव भूति नांमे पिता, ससिहर चिन्ह सुहायौ जी।—स. कु.

उ०—२ मोने तो रोवांणी तमें, अब तो क्रिया करायौ रे। लीजो पदवी सिवपुर तणी, कांई दूजी म रोवाये मायौ रे।—जयवांणी

२ देखो 'माया' (मह., रू. भे.)

३ देखो 'मईयौ' (रू. भे.)

मार-सं० पु० [सं०] १ कामदेव, मदन। (अनेका., अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—नायक तीजी नार रौ, मों दुख दायक मार। धरणी धर खावंद धके, परणी करै पुकार।—बां. दा.

२ श्री कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का एक नामान्तर।

उ०—ए प्रदिमन का नांम जु कांमदेव कौ अवतार। दरपक। कांम कुसमायुध। संवरारि। रतिपति। तनसार। समर। मनोज। अनंग। पंचसर। मनमथ। मदन। मकरधज। मार। ए प्रदिमन का नाम। —वेलि टी.

३ आघात, प्रहार, चोट।

उ०—१ मच धांम धूम सर सेल मार। पड़ त्रास आस आठूं पुकार।—रा. रू.

उ०—२ राजा 'गाजी' सारिखा, से वडा सिरदार। दखणी मार मनाविया, मार कहीजे सार। मार सार मारकां इळा हुवै आंपांणी, मुहि खग्गां है-खुरां, जेह रखवी ते मांणी।—गु. रू. बं.

उ०—३ चंत्रइं चंपक कुंअलआं, होडीले सहिकार। तरु अर बहु पल्लव धरइ, 'मारि' करइ बहु मार।—मा. का. प्र.

४ युद्ध, झगड़ा, लड़ाई।

उ०—महाबळ वीर बहादुर मार, करै दहुंवै बळ पार कटार। चलै दहुंवै बळ खंजर घात, दहूं वळ पंजर पार दिखात।—मे. म.

५ घायल, घावों से पूर्ण।

उ०—अठै कंवर वडो पराक्रम कियो, आदमी च्यार मार कंवर खेत पड़ियौ, वा सत्रसालजी आदमी सात मार खेत पड़िया। घावां सूं मार हुवा घूमै है।—द. दा.

६ विष, जहर। (अनेका., ह. नां. मा.)

[फा०] ७ नाग, सर्प।

[सं०] ८ अमृत। (अनेका., ह. नां. मा.)

९ निशाना, लक्ष्य जिस पर वार किया जाय।

१० गोली आदि के वार की संहारक शक्ति की सीमा।

११ संहारक, नाशक।

उ०—नमो मकराख्य इंद्रजीत मार। नमो अब राकस-वंस-संहार। —ह र.

१२ मारक या नाशक तत्व।

१३ धतूरा।

१४ कार्य या उत्तरदायित्वों का पड़ने वाला अत्यधिक दबाव, बोझ।

१५ विघ्न, अड़चन, बाधा।

१६ प्रेम, अनुराग, ।
१७ हनन, नाश ।
१८ चमड़ा भिगो कर रंगने का पानी । (चमार)
१९ श्वेत, सफेद । * (डिं. को.)
सं० स्त्री०—२० मारने की क्रिया या भाव ।
२१ मार-पीट, पिटाई ।

उ०—नहीं आवै जाब, पड़ै जम आब । दीवी मार दूतां, गुरज घोट सूथा ।—स्री मूळदासजी

२२ जिस वस्तु पर मार पड़े ।
२३ भूमि, पृथ्वी । (अ. मा.)
२४ पराजय, हार ।
२५ मृत्यु और मौत ।
२६ हानि, नुकसान ।
[अव्य०] १ बुरी तरह से ।

उ०—१ रांणी आपरी आख्यां देख्यौ के एक चिड़कली रोसनदांन रा काच साथै मार टूंचा मारै है ।—फुलवाड़ी

उ०—२ म्हारा मोती म्हारा मोती वेलतौ वौ मोत्यां रा ढिगला में मार अठी उठी लुटण लागौ ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मांर ।
अल्पा०—मारौ ।

मारकंड, मारकंडे, मारकंडेय, मारकंडेव—सं० पु० [सं० मार्कंडः, मार्कंडेय:] १ भृगु कुलोत्पन्न एक ऋषि जो चिरजीवियों में माना जाता है । इसके पिता का नाम मृकंड था ।

उ०—देवी मारकंडे महा पाठ बांध्यौ । देवी लगी तव पाय नौ पार लाधौ ।—देवि.

२ अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।
३ एक ऋषि जो अयोध्या के राजा दशरथ के उप-ऋत्विजों में से एक था ।
४ एक आचार्य, जो वायु पुराण के अनुसार व्यास की ऋक् शिष्य परंपरा में से इंद्रप्रमति ऋषि का शिष्य था ।

मारक—वि० [सं०] १ मारने वाला, घात करने वाला ।
२ प्रहार या अघात करने वाला ।
३ प्रतिघात करने वाला ।
४ किसी के प्रभाव को नष्ट करने वाला ।
सं०पु० [सं०] १ प्लेग आदि संक्रामक रोग ।
२ कामदेव ।
३ हत्यारा, घातक ।
४ बाज पक्षी ।
५ बार, मार ।
६ निशान, लक्ष्य ।

उ०—तीरां गोळीआं रै मारक पड़ते जिनावर पांख समारण न पावै छै ।—रा. सा. सं.

रू० भे०—मारक्क, मारिक ।

मारकट—सं० पु०—१ शृंगार में एक आसन ।
२ देखो 'मरकट' (रू. भे.)

मारकण, मारकणौ—वि० (स्त्री० मारकणी) १ मारने वाला, प्रहार करने वाला, संहार करने वाला । २ देखो 'मारणौ' ।

मारकाट—सं० स्त्री० यौ० १ लड़ाई, झगड़ा ।
२ किसी को मारने या काटने की क्रिया या भाव ।

मारकीन—सं० पु०—एक प्रकार का मोटा कोरा कपड़ा ।

मारकुऔ—सं० पु०—वार झेलने वाला, प्रहार का जवाब देने वाला ।

उ०—अळगी ही नैड़ी की उखवते, देठाळी हुआै दळां दुंह । वागां ढेरवियां वाहरुए, मारकुए फेरिया मुंह ।—वेलि

मारकेट—सं० पु० [अं० मार्केट] बाजार ।

मारकेस—सं० पु० [सं० मारकेश] जन्म कुंडली में पड़ने वाले कुछ विशिष्ट ग्रहों का योग जो अमंगळकारी होता है । यह अष्टम, द्वितीय और सप्तम स्थान की दशा बतलाता है ।

मारकौ—सं० पु० [अ० मारिकः] १ युद्ध, लड़ाई, संग्राम ।
२ उपद्रव, हंगामा ।
३ महत्वपूर्ण घटना ।
४ महत्वपूर्ण कार्य ।
५ प्रहार ।

उ०—१ फौज रौ मारकौ रेढ़ा ऊपर पड़ै छै । रेढ़ौ उण रै तूंड री देवै छै सो घोड़ौ नै सवार गुड़ भेळा हुवै छै ।—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ भाजतां रै पूठै लोग लागियौ पाछली रां असवारां भेळियौ सो मारकौ पडियौ तीसूं लोग सारो बाढ उतारियौ ।
—कुंवरसी सांखलै री वारता

उ०—३ आतस आराबा हुवायां रौ मारकौ पड़ि नै रहियौ छै ।
—रा. सा. सं.

६ योद्धा, महाभट्ट, वीर, बहादुर ।

उ०—१ विढ़ण किलियांण रा मारकौ वड वडी । खेत कनवज सिरी, रांम आयौ खड़ी ।—द दा.

उ०—२ 'मांन' सुत अनै 'किसनेस' सुत मारका, सार का कोट अरगेज सारां । थापिया एक छत्र एक ऊथापिया, धापिया सनमंधी फूल-धारां ।—रांमसिंह हाडा नै राजसिंह राठौड़ रौ गीत

उ०—३ उपाड़ै किता मारका खैंग आगा । लड़ेवा जिकां सीस गैणाग लागा ।—सू. प्र.

उ०—४ एका एक अभंग भड, थिया थिडंबै थट्ट । मारू मांझी मारकां, कुण कुण वडा सुभट्ट ।—गु. रू. बं.

उ०—५ आज दिन परख्यौ छै मारकौ, लड़ाई रौ मूस मरदां री छै जिण चोखा सोना विगैर नहीं रहै । मैळ वाळौ घट जाय ।
—नी. प्र.

७ किसी का प्रतीक।

८ चिन्ह, निशान।

९ व्यापारिक चिन्ह, छाप। (ट्रेड मार्क)

१०—शिर से प्रहार कर मारने वाला या आक्रमण करने वाला पशु।

वि०—१ मारने वाला, मार करने वाला।

उ०—१ सुणी भड़ां 'अजमाल' रां, आयो राव चलाय। भड़ां सकाजां मारकां, वणी गरज्जां आय।—रा. रू.

उ०—२ सौक पड़ै सायकां, सेल धमरोळ सतावां। मिळे लोह मारकां, नरिंद हरवळां नबावां।—सू. प्र.

२ प्रबल, शक्तिशाली, बलवान।

उ०—१ मंडळीक कळोधर मारको, ऊससि लग्गो अंबहर। आइयो तांम असि ऊलके, रांम भीची जिम राजधर।—गु. रू. बं.

उ०—२ खुरम कटक्कै अग्गळो, साह दळै असमांन। मूळ न मावै मारका दोय खंडा इक म्यांन।—गु. रू. बं.

३ भयंकर, भयावह।

४ जबरदस्त।

उ०—मारू परधर मारका ठहरे समहर ठोड़। ऊखांणो उजवाळियो, चढ़ जयमल चीतोड़।—बां. दा.

५ आन-बान वाला।

उ०—निरभयगढ़ निवाई गाम छै, देगतेग बर दायेक बगसीरांम नाव छै। देस परदेस में मारको कहावै छै।
—बगसीराम प्रोहित री बात

रू० भे०—मारक्कौ।

मारक्क—देखो 'मारक' (रू. भे.)

मारक्को—देखो 'मारको' (रू भे.)

उ०—असंख फौण ओपति बहुत चीधां बैरक्कां। मारवाड़ मरजाद भड़ां अनडां मारक्कां।—गु. रू. बं.

मारखाई, मारखाही—सं० स्त्री०—चोरी के माल का पता लगाने वाले को दिया जाने वाला धन।

वि०—उक्त कार्य करने वाला।

मारग—सं० पु० [सं० मार्गः] १ रास्ता, पथ, सड़क। (डिं. को)

उ०—१ जिण री संगति रे प्रभाव स्वरगलोक रो मारग मुद्रित कराय कुंभीपाक रो निवास भाळियो।—वं. भा.

उ०—२ कवण बध मारग करै, दिस च्यारूं निस दीह। सीहां सूं सांकै सको, सांकै किण सूं सीह।—बां. दा.

उ०—३ संख्या बिण लीधां दळ साथै। मारग पड़ै पहाड़ां माथै।
—रा. रू.

उ०—४ राजा सोच्यो इण मिचळांद रा डर सूं रैयत चुपचाप आपरो मारग लेय लेवैला।—फुलवाड़ी

पर्या०—अयनक, इकपदी, गैलो, पंथ, पथ, पदवी, पद्धति, पविभाग, बाट, मग, सरणी।

मुहा०—१ मारग चालणो=रास्ते पर चलना, मृत्यु हो जाना। २ मारग पकड़णो=धंधे लगना, सही आचरण करना। ३ मारग मारणो=लूट-पाट करना। ४ मारग लागणो=राह लेना, रवाना होना। ५ मारग लैणो=देखो 'मारग लागणो'।

२ पगडंडी, वीथि।

३ जगह, स्थान।

४ चिन्ह, निशान।

५ सम्प्रदाय, पंथ।

उ०—सुणि बात है साच सिद्धंत सु म्यांन की बोहत गुणी करणी बलिहारी। प्रथ्वी के तारक पंच में आरमें भीखण स्वांमी का मारग भारी।—भि. द्र.

६ अनुसंधान, खोज।

७ कार्य सिद्धि का माध्यम, साधन, उपाय।

८ ढंग, तौर, तरीका।

९ अभिनय, नृत्य और संगीत की एक उच्च श्रेणी की शैली।

१० अगहन या मार्गशीर्ष मास।

११ मृगशिरा नक्षत्र।

१२ ग्रह का रास्ता।

१३ विष्णु। १४ नहर।

१५ नाली। १६ कस्तूरी।

१७ मलद्वार, गुदा। १८ धर्म, कर्त्तव्य।

उ०—१ गुरां नें कहै मोनै त्रिसा घणी लागी गुरां कह्यो—साधु रो मारग है सैंठाइ राखो।—भि. द्र.

उ०—२ तीडै पाट सलख कुळ तारग। महि मरजाद खत्रि ध्रम मारग।—रा. रू.

उ०—३ रांणी कही, "बाई रै तो घर रो खांवंद यो, भुळावै चुकावै। तै रो मारग हीज छै।—कुंवरसी सांखले री वारता

१९ मृत्यु, मौत।

उ०—राजकंवर अर राजा नै छोड नै सेवट रांणी तो आपरै मारग चाली।—फुलवाड़ी

मुहा०—१ मारग चालणो=मर जाना, संसार को छोड़कर चले जाना। २ मारग लागणो=देखो 'मारग चालणो'।

२० तरीका, ढंग।

उ०—सम ना आवै जीव को, अगकीया सब होइ। दादू मारग महर का, विरला बूझै कोइ।—दादूबांणी

रू० भे०—मग, मग्ग, मग्गि, मघ, माग, मागि, मागु, मारगि, मारग्ग, मारिग।

अल्पा०—मग्गड़, मग्गड़ो, मागड़ो, मागडो, मारगियो।

मारगण, मारगन—सं० पु० [सं० मार्गण]—१ भिक्षुक, याचक, मांगने वाला, (अ. मा., ह. नां, मा.)

२ तीर, बांण, सायक, सर। (अ. मा., डिं. नां. मा., ह. नां, मा.)

सं० स्त्री०—३ मांगने की क्रिया या भाव, याचना।

४ खोज, अनुसंधान, तलाश ।

५ पांच की संख्या ❀ (डि. को)

मारगमास—सं० पु०[सं मृग-मास:] मार्गशीर्ष का महिना ।

उ०—माठी थाइ मालती, कमल-तणा कुल-नास । विरहणीयां दुख दाखविइ, मरि तूं मारगमास ।—मा. कां. प्र.

मारगसिर, मारगसिरि—सं० पु०[सं० मार्गशीर्ष] १ मार्गशीर्ष मास ।

उ०—मारगसिरि ऊभी रही, मारगसिर सुणि मास । चखि चुहुटी चित्रांम जिम, मुझनइ माधव-श्रास ।

पर्या०—आगण, मंगसर, संवत आद, सह ।—मा. कां. प्र.

[सं० मार्गशिरी, मार्गशीर्षी] २—पूस मास की पूर्णिमा ।

[सं० मृगसिरस] ३—मृगशिरस नक्षत्र ।

उ०—मारगसिरि ऊभी रही मारगसिर सुणि मास । चखि चुहुटी चित्रांम जिम, मुझनई माधव-आस ।—मा. कां. प्र.

मारगि—देखो 'मारग' (रू. भे.)

उ०—जुदा हुए जिद जीव, त्रिग खग आंमूझै मरै । मारगि वहतै मांडिग्रो, दांणव प्रळै दईव ।—वचनिका

मारगियौ—देखो 'मारग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—थांरो मारगियो लीलांणो, घरे पधारो ओ राजा म्हांरा साथीड़ा रे ।—लो. गी

मारगी, मारगु, मारगू—वि०[सं० मार्गिन् , मार्गी] १ मारग का, मार्ग सम्बन्धी ।

२ किसी पंथ या सम्प्रदाय का मानने वाला, अनुयायी ।

उ०—श्रोधार महतां कथां राखवा समदां कई, स्री हथां रामज्यूं लई मारीच सुबाहु । मारगी कदीम रूक चलाक भारथां मुई, 'दयाल' मारगी तथां आहुई दुबाहु ।—दादूपंथी साधां री गीत

सं० पु०—१ राहगीर, पथिक ।

उ०—लांबा पैंडा सूं थाक्योड़ो कोई मारगू भोजन रै उपरांत पांवणा रूपी अवतरै तो उण री सरबरा अर आव-आदर करणा सूं सुरग रौ लाभ व्है ।—फुलवाड़ी

२ संगीत में एक मूर्च्छना ।

मारग्ग—देखो 'मारग' (रू. भे.)

उ०—भरै मांग सिंदूर मारग्ग माळै, वहै सांमलो व्रज्ज सेरी विचाळै ।—ना. द.

मारच—सं० पु० [अं० मार्च] १ गमन, प्रस्थान, कूच ।

२ ईस्वी सन् का तीसरा मास ।

मारजण—सं० पु० [सं० मार्जन] १ नहाने या सफाई करने की क्रिया या भाव ।

२ सफाई, स्वच्छता ।

उ०—आगै जाइ आलि केलि गृह अन्तरि, करि अंगण मारजण करेण । सेज विधाज खीर सागर सजि, फूल विधाज सजै तसु फेण ।—वेलि

३ नहाने की क्रिया, स्नान ।

४ उबटन, मालिश ।

५ मांजन क्रिया ।

६ प्रतिलेपन ।

उ०—इतै करण पख तेरस आई, सरस वणी गढ़ तणी सझाई । अजिर मारजण गुण ओपाया, महले नवरंग चित्र मंडाया ।—रा. रू.

७ सुधार, परिमार्जन ।

८ अभ्यास, रियाज ।

रू० भे०—मांजण,

मारजणी—सं० स्त्री०[सं० मार्जनी] १ झाड़ू, बुहारी

२ संगीत के मध्यम स्वर की चार श्रुतियों में से अंतिम श्रुति ।

मारजर, मारजार, मारजारी—सं० स्त्री०[सं० मार्जर, मार्जारी] १ बिल्ली, बिलार ।

२ ऊद बिलाव ।

३ मुश्क, कस्तूरी ।

रू० भे०—मंजार,

अल्पा०—मंजारड़ी, मंजारी, मंझारड़ी, मजारड़ी मजारी,

मारजारी टोडी—सं० स्त्री० [सं० मार्जारी-टोडी] सम्पूर्ण जाति की एक रागनी ।

मारण—सं० पु० [सं०]१ मारने या हत्या करने की क्रिया या भाव ।

उ०—दुस्टी बातां तो कैड़ी मीठी-मीठी करै, पण मांय रा मांय बाप नै मारण रा करतब रचै ।—फुलवाड़ी

२ विष, जहर । (अ. मा., ह. नां. मा.)

३ एक मंत्र विशेष ।

उ०—कांमण, मोहन, मारण, थंमन, जंगम, थावर, जड़ी, बूंटी, जंत्र, मंत्र ।—पंचदंडी री वारता

४ मनुष्य को मारने के लिए किया जाने वाला एक तांत्रिक प्रयोग । तांत्रिक षट्कर्मों में से एक । (कल्पित)

वि०—१ मारने वाला, हनन करने वाला, नष्ट करने वाला ।

उ०—नमो प्रहलाद उबारण प्रम्म, नमो अग-कासब मारण अम्म —ह. र.

२ मिटाने व दूर करने वाला ।

उ०—राघव तण जोड़ि गुण रूपक । मारण दळिद्र वधारण मांम । —ह. नां. मा.

मारण, मरण—वि० यौ०—मार कर मरने वाला ।

उ०—पड़ती बाथ साथ पलटंतै, हाथ वखांणि वखांणि हियौ । मारण मरण मारकै मैंणौ, कूड़ ऊपनै साच कियौ ।—कल्याणदास जाडावत

मारणी—सं० स्त्री०[सं० म्ना-अभ्यासे=ल्युट्=म्नानी] १ पाठशाला में संध्या समय छात्रों द्वारा बोली जाने वाली गिनती ।

२ देखो 'मारणी' (स्त्री.)

रू० भे०—मुआरणी,

मारणौ–वि० [सं० मारणं] (स्त्री० मारणी) १ मारणे वाला, संहार करने वाला।

उ०—मार दइतां धणा राकसां मारणी। भखे पळ धारणी रगत भेळी।—खेतसी बारहठ।

सं० पु०—किसी के पास जाने पर सिर हिलाकर वार करने या आघात करने वाला पशु। इस प्रकार के स्वभाव वाला।

उ०—बोल्यौ–हिरणी हिरणी आगी होय, म्हारा बळद मारणा।
—फुलवाड़ी

मारणौ, मारबौ–क्रि० स०[सं० मारणं] १ किसी के जीवन का अन्त करना, प्राण लेना, वध करना, हत्या करना।

उ०—१ म्हारा सूं आ वात देखणी नीं आवै इण बिचै तौ आप म्हनै आप रे हाथां मार न्हाकौ तौ म्हनै सांयत मिळे।—फुलवाड़ी

उ०—२ मारे खांन चडो रण मंडो। खळ पकड़ौ मारौ बळ खंडो।
—रा. रू.

उ०—३ कांधळजी वरस तौ ७३ में हा पिण विडे आप वडो झगड़ो कियो। आदमी इकीस मारनै सारंगखांन नूं तरवार वाही।
—द. दा.

२ आघात या प्रहार करना, पीटना, चोट लगाना।

उ०—१ छाती माथै गोडा देयनै जूता मार मारनै उण रै माथा रौ माल पूरौ कर दियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ मयंदी बणौ कांन्हरै थाप मारी। तरी साह तोफांन रै माह तारी।— मे. म.

३ मिटाना, नष्ट करना। (उ. र.)

४ सजा देना, दण्ड देना।

५ लूट-मार करना, लूटना, छीनना।

उ०—१ पीछै राजासर सूं साथ करनै कांधळजी चढ़िया, सू हंसार रौ कांठो सरब मारियौ।—द. दा.

उ०—२ आदमी सवार पाळा आपरा साथ लिया सो जाय सरसे दोड़िया वित मारियौ गांव मारिया।—ठाकुर जैतसी री वारता

उ०—३ खाडाळ रा गांव १० मारनै वित लीनौ।—नैणसी

६ कब्जे में करना।

७ दुखी करना, परेशान करना, सताना, मानसिक कष्ट देना।

८ इच्छा या किसी मनोविकार को बल पूर्वक दबाना।

उ०—आसा तौ एकौ भली, दूजी भली न काय। दूजी आसा मारसी 'हरिया' जुग में आय।—श्री हरिरांमदासजी महाराज

९ पछाड़ना, पटकना।

१० अपने विपक्षी या प्रतिद्वन्दी को हराना, परास्त करना।

११ प्रतियोगिता में किसी को पीछे रखना।

१२ खेल में गोटी या पत्ते का हराना।

१३ किसी वस्तु को किसी अन्य वस्तु से जोर से फेंक कर या पटक कर टकराना।

१४ किसी योग्य न रहने देना, अयोग्य या निकम्मा बना देना, बल या प्रभाव समाप्त कर देना।

१५ मरणासन्न स्थिति में करना।

१६ गुण समाप्त कर देना।

१७ स्त्री प्रसंग करना, मैथुन करना।

उ०—पण वळकरण मांनै नहीं इतरै फेर ही आय गळ बाखड़ी मारी और नसे में कही थारी मा कूं मारूं।
—भाटी सुंदरदास बीकूपुरी री वारता

१८ अनुचित ढंग से हथियाना, हड़पना।

१९ धातु आदि की भस्म बनाना। (वैद्यक)

उ०—भणंत एक व्याकरण, वीर इस्ट के करै। तरक्क नीति सासत्रांणि एक मुक्ख उच्चरै। मारतं एक सब्ब धात केळवै रसायणं, अगाध वैदराज राज ओखदी विचारणं।—गु. रू. बं

२० शिकार करना।

२१ उद्विग्नता से प्रयास करना।

उ०—दोनूं हाथां सूं झांपळियां मारतौ होद में फुरती सूं कीं हेरण लागौ।—फुलवाड़ी

२२ लगाना, देना, भिड़ाना।

उ०—१ तळाव-री मुहुरत पूछि-नै ले जाइ-नै नीव मारी भलै मुहरत।—जसमा ओडणी री वात

उ०—२ घोड़ां तुरकीयां राहदार उपर नांख पाखर दोनां ही पाखलीयां लगाय तरगस कूंटा मारचा भडीया री भोलावट हाथ मांहे ले बरछी नै रांणी दहड़ चढी, सकत रूप धार।
—राजा नरसिंह री वात

२३ सम्मिश्रण करना, मिलाना।

उ०—ओझरा धोय-धोय मांहे मसालां मारियौ मांस घात दबगर कीजे छै।—रा. सा. सं.

मारणहार, हारौ (हारी), मारणियौ—वि०

मारिओड़ौ, मारियोड़ौ, मारयोड़ौ—भू० का० कृ०

मारीजणौ, मारीजबौ—कर्म वा०

मारिणौ, मारिबौ—रू० भे०

मारतंड–सं० पु०[सं० मार्तंड] १ सूर्य, रवि, भानु।(अ. मा., नां. मा.)

उ०—१ अर रज धूम रा बितांन मैं मारतंड रा मयूख अंतरधांन बिद्या रौ अभ्यास घरण लागा।—वं. भा.

उ०—२ माप का विहाई सा प्रताप का निदांन। मारतंड आगे जिसौं जोतसी जिहांन।—रा. रू.

२ आक वृक्ष, मदार।

३ सूकर, सूअर।

४ बारह की संख्या। * (डिं. को.)

रू० भे०—मारतंड,

मारतंडमंडळ-सं० पु० यौ० [सं० मार्तंड-मण्डल] सौर मण्डल, सूर्य का मण्डल।

मारतंडसुत-सं० पु० यौ० [सं० मार्तंड-सुत] १ सूर्य पुत्र कर्ण।

२ यमराज।

३ सुग्रीव।

४ शनिग्रह।

मारत—१ देखो 'मारुत' (रू. भे.) (ह नां मा.)

—२ देखो 'मारुति' (रू. भे.)

मारतुंड—देखो 'मारतंड' (रू. भे.)

उ०—झंडा फरक्कै मदाळां पीठ आरबां नत्रीठा झड़ै, धूपंडां ऊधड़ै वे विरंडां सूर धीर। रमै दे घुमंडां वीर मारतुंडां रुकै राह हकै बीच थंडां जठै उडंडां 'हमीर'।—फतहराम आसियो

मारतोल-सं० पु० [पुर्त० मार्टेलो] एक प्रकार का बड़ा हथोड़ा।

मा'रथी—देखो 'महारथी' (रू. भे.)

मारपीट-सं० स्त्री०—१ मारने-पीटने की क्रिया या भाव।

२ वह झगड़ा या लड़ाई जिसमें परस्पर पिटाई होती है।

३ हाथा पाई।

मारफत-अव्य० [अ० मारिफत] १ द्वारा, जरिये, माध्यम से (अ.)।

उ०—१ इण दीवांणगिरी रै मारफत म्हनै आपरी सेवा करण रौ मौको हाथ आयौ है।—फुलवाड़ी

उ०—२ इणरै मारफत हाथी री करड़ी खाल चीरावण री जुगती बिठावूं।—फुलवाड़ी

२ किसी को बीच में रख कर।

उ०—उठै बखतै साहणी री मारफत बखतसिंहजी सूं बात ठहराई।—मारवाड़ रा अमरावां री वात

मारमिक-वि० [सं० मार्मिक] १ मर्म का, मर्म, सम्बन्धी।

२ मर्म स्थान (हृदय) पर प्रभाव डालने वाला।

३ किसी विषय, बात या वस्तु के मर्म को जानने वाला।

४ किसी विषय के अन्तर्निहित तत्व के आधार पर होने वाला।

मारव-सं० पु० —१ राठौड़

उ०—१ तद वार अंस पुरसां तणी, आय वणी जग ऊपरां। महाराज तणौ छळ मारवां, धारी लाज मुरद्धरां।—रा. रू.

उ०—२ होकबा राग सिंधु हुवा, दगे तोप झळ दारुवां। अम्ह सम्हा रीठ गोळां उडै, मारू धर कजि मारवां।—सू. प्र.

२ मरु देवता।

३ मारवाड़ का निवासी, मारवाड़ी।

४ देखो 'मारू' (रू. भे.)

मारवण, मारवणि, मारवणी-सं० स्त्री०—१ प्रेयसी, प्रियतमा।

उ०—१ आव म्हारा मारूड़ा मारवण तो बुलावै छै। खांन-पांन जर जेवर न भावै, उवै नै एक तुंही सुहावै।

—रसीलै राज रौ गीत

उ०—२ मन डीग जाय महेस रो, वेस वणाय विसेस। महलां तोनै मारवण, पोचास्यां कर पेच।—पनां

उ०—३ चालो चालो चंपा बाग बाड़ी में आज। मारू छौ कंत मारवणी नारी, थां दोनां री छै चंगी जोड़ी जी।

—रसीलै राज रौ गीत

२ पूगळ की राजकुमारी, जो नरवर के राजकुमार ढोला की पत्नी थी।

उ०—पिंगळ-पुत्री पदमिणी, मारवणी तिणि नांम। जोडी जाइ विचारियउ, धन्न विधाता कांम।—ढो. मा.

३ मरु देश की स्त्री।

४ एक मारवाड़ी लोक गीत।

५ देखो 'मरवण' (रू. भे.)

उ०—१ आयो आयो मारवाणी मिळण मारूड़ो, घर आयो छै म्हां वालो पीव।—रसीलै राज रौ गीत

उ०—२ पधारो गोरी रा साहिबा मांनो मारवण री मनवार।

—लो. गी.

रू० भे०—मारुणि, मारुणी, मारुवणि मारूणी,।

मारवधरा-सं० स्त्री०—देखो 'मरुधरा' (रू. भे.)

उ०—जिण रीति भाई नै पाळो हुवो देखि मारवधरा रौ कंवाड़ कनक प्रतिहार असि री आघात देर प्रथ्वीराज रा अस्व रौ अंस उड़ाय पाड़ियौ।—वं. भा.

मारवराव—देखो 'मारूराज' (रू. भे.)

मारवा-सं० स्त्री—एक संकर राग (संगीत)

मारवाड़-सं० पु० [सं० मरुवाट, प्रा. मरुआड] राजपुताने का वह प्रदेश जहां राठौड़ों का राज्य था।

उ०—१ उज्जैण नरपति महाराज वीर विक्रमादित्य रा प्रताप थी। माळवी, निम्यार, खांनदेस, बराड़, मेवाड़, गुजरात, मारवाड़, ढूंढार, अन्लूवेध, गुड़वांनो।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ जनपद मारवाड़ धनि जिणमें, जनमी जोति जागती

—मे. म.

रू० भे०—मरुआडि, मारुअडि, मारुआड़, मारुआड़ि, मारुआड मारुयाड़, मारुयाडि, मारूआड, मारूआडि, मारूयाड, मारूयाड़ि, मारूयाड, मारूयाडि,

मारवाड़ी-सं० स्त्री०—१ मारवाड़ प्रदेश की भाषा।

सं० पु०—२ मारवाड़ प्रदेश का निवासी।

वि० स्त्री०—मारवाड़ की, मारवाड़ सम्बन्धी।

उ०—डेरा बादिसाहां मारवाड़ी भूमि कीनां, जैपुर जोधपुर का भायपां नैं साथि लीनां।—शि. वं.

रू० भे०—मारुयाड़, मारुयाड़ि, मारूयाड़, मारूयाड़ि मारूयाड, मारूयाडि।

मारवाड़ो-सं० पु०—१ मारवाड़ का अधिपति।

२ राठौड़ों के लिये प्रयुक्त होने वाला शब्द, राठौड़।

उ०—१ रूठियां धूंधली नाथ कळाई ऊजळी रूकां। मारवाड़ां

दिल्ली ने मिळाई धूड़ मांय ।—नवलजी लाळस

उ०—२ ऊंटी आपगा कै ववकै खोण धारवाड़ा, मारवाड़ा हकी हकी, वकै मार मार । चौडंडी हुवदां खासा बाग रा टलां सुं चलै, हलै हमलां सूं माथा नाग रा हजार ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

वि०—१ मारवाड़ का, मारवाड़ सम्बन्धी ।

मारवी-सं० स्त्री०—१ मरु प्रदेश की स्त्री ।

२ एक रागिनी विशेष ।

रू० भे०—माहवी,

मारवीराव, मारवैराव, मारवौराव—देखो 'मारूराज' (रू. भे.)

उ०—पमंग अफाळि सुरज्ज पसाव । रोळा मझि मेलियौ मारवैराव ।—सू. प्र.

मारसलला-सं० पु० [अं० मर्शल-लॉ] १ किसी देश के शासन का सेना को सौंपे जाने का आदेश ।

२ प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में गड़बड़ी हो जाने पर उसमें सुधार लाने व व्यवस्थित करने के लिये, कुछ समय के लिये लागू किया जाने वाला सैनिक शासन, फौजी हुकूमत ।

मारहट—१ देखो 'मरहठौ' (मह., रू. भे.)

२—देखो 'मरहठ' (रू भे)

मारहटां—देखो 'मरहठी' (रू. भे)

उ०—जुंझवां फुहार टक्क उडै धकै आय जेता, अंग चक वार हुआ वक के अथांग । केळपुरै अठी-उठी चक्र वेग फेर कीधौ, मार टक्क मारहटां सेन रौ मथांग ।—बद्रीदास खिड़ियौ

मारहटौ—देखो 'मरहठौ' (रू. भे.)

उ०—आसमांन लागौ धुत्र भागौ कीधुं सेल आयौ, जाडौ भार झेल आयौ लोहां जंगां जीप । आडौ मारहटां चो सांकड़ो थाट ठेल आयौ, 'माधवेस' वैल आयौ वांकड़ौ महीप ।

—हुकमीचंद खिड़ियौ

मारहट्ट—देखो 'मरहठ' (रू. भे.)

२—देखो 'मरहठौ' (मह. रू. भे.)

मारहट्टी—देखो 'मरहठी' (रू. भे.)

मारहट्टौ—देखो 'मरहठौ' (रू. भे.)

उ०—तेगां पांण अग्रनंद सतारा नाथ सूं तोड़ै । मोड़ै मारहट्टां धड़ा मरोड़ै मतंग ।—हुकमीचंद खिड़ियौ

मारहठी—देखो 'मरहठी' (रू. भे)

मारहठौ—देखो 'मरहठौ' (रू. भे.)

उ०—मारहठौ कहै मैं गांजिया लोक पाजां मांहै, राजां मांहै अगंजी रंजियौ मारुराव ।—महाराजा बहादरसिंघ रौ गीत

मारहतौ, मारहथौ-वि०—मारने वाला, वार करने वाला ।

उ०—पळ खूटा पतिसाह, कर आवध वाहै किलंब । मारहथै मरि मारिऔ, रिण 'गोदौ' रिमराह ।—वचनिका

मारांकुस-सं० पु० [सं०] नाखून, नख ।

माराज, मा'राज—देखो 'महाराज' (रू. भे.)

उ०—१ सुज अहूं वीर जुध हरख साज, सिर हुकम चाढ़ बोलै सकाज । मा'राज तणा तव कर परमांण, अण नीत गुड़ाआं आसुरांण ।—शि. रू.

उ०—२ उण नै सांमी एक गरीब बांमण धकियौ । राजकंवर हाथ जोड़ नै कह्यौ—पगां लागूं मा'राज —फुलवाड़ी

उ०—३ बोल्यौ—जोगेसर मा'राज थोड़ा ढबौ, थांरी एकर आरती करूं ।—फुलवाड़ी

उ०—४ दलाल ऊभै ही परै' र हाथ जोड़्या । होड-हौड किसनजी ही कैंणं सूं मोढ़ा मोड़्या । पगां लागूं, गुरु मा'राज । ऊंचा विराजौ ।—दसदोख

उ०—५ राजाधिराज *मा'राज रांम । ते ताज सीस आलम तमांम ।*

—र. ज. प्र.

माराजा, मा'राजा—देखो महाराजा' (रू. भे)

उ०—१ लखी बिणजारा रौ कुरब-कायदौ किणी राजा मा'राजा सूं कम नीं हौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ केई राजा, माराजा, सेठ-साहूकार नीं नीं व्है जैड़ा बणाव में अडीजंत ठसियोड़ा राजकंवरी नै वरण सारू ऊभा हा ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ तेल-फुलेल,अंतर-सेंटरा कंटर अर साबण-सोढै रा गोडै-गोडै सूणा सिंदूक राजा मा'राजा रा सा पड़्या दीखै ।—दसदोख

मारा-मार-सं० स्त्री० [अनु०] मार-धाड़, युद्ध ।

उ०—मारामार हुई महिमंडळ मेछां भंग पडै महि मंडळ । मांडै धीर नकौ महिमंडळ, मच्छ गळा-गळा दिल्ली मंडळ ।—गु. रू. बं.

मारि-सं० स्त्री०[सं. मारि] १ नाश, विध्वंस, हनन ।

उ०—राजरसि, परमारहत धरमातमा मारि निवारक सप्त व्यसन-निवारक प्रतिग्यानिरवाह दशारणभद्र न्यायव्रति विस्तारित जगद्रुद्र प्रजापाल रिपुकुलप्रलयकाल'''। व. स.

२ मरी, प्लेग ।

मारिक—देखो मारक' (रू. भे.)

उ०—छूटि कोवंड गुण वांण गाजै । फारकां मारिकां हाक वाजै ।

—गु. रू. बं.

मारिख—देखो 'मारिस' (रू. भे.)

मा'रिख—देखो महारिसी' (रू. भे.)

मारिग—देखो 'मारग' (रू. भे.)

उ०—*राजा मांनधाता दीठौ जाईजै केथ ताहरां एक मारिग दीठौ ।*

तीयै मारिग चालीयौ आगै जावै देखै तो तपसी च्यार बैठा छै ।

—चोबोली

मारिच—देखो 'मारिच' (रू. भे.)

उ०—आया रत स्रवतैह तई, सत्र मारिच सुबह ।—रांमरासौ

मारिणौ, मारिबौ—देखो 'मारणौ,मारबौ' (रू भे.) (उ. र.)

उ०—१ काळौ पहाड़ कैलहणहरौ, देव साह दीयौ हुकम । राठौड़ हुआ हठि मारिबा ग्रास वेध 'गोइंद' जम ।—गु रू. बं.

मारिणहार, हारौ (हारी,) मारिणियौ—वि०

मारियोड़ौ—भू० का० कृ०

मारिईजणौ, मारिईजबौ—कर्म वा०।

मारित—वि०—१ जो भस्म कर दिया गया हो। (वैद्यक)

२ मृत, वधित।

३ पीटा हुआ, आहत।

मारियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ जीवनान्त किया हुआ, प्राण लिया हुआ, वध या संहार किया हुआ, मारा हुआ, हत्या किया हुआ।

२ आघात या प्रहार किया हुआ, पीटा हुआ।

३ मिटाया हुआ, नष्ट किया हुआ।

४ सजा या दण्ड दिया हुआ।

५ लूट-मार किया हुआ, लूटा हुआ, छीना हुआ।

६ कब्जे में किया हुआ।

७ दुखी या परेशान किया हुआ, सताया हुआ, मानसिक कष्ट दिया हुआ।

८ इच्छा या विकार को बल पूर्वक दबाया हुआ।

९ पछाड़ा या पटका हुआ।

१० हराया हुआ, परास्त किया हुआ।

११ प्रतियोगिता में पीछे रखा हुआ।

१२ खेल में गोटी या पत्ते को हराया हुआ।

१३ दो वस्तुओं को परस्पर टकराया हुआ।

१४ अयोग्य या निकम्मा बनाया हुआ, बल या प्रभाव समाप्त किया हुआ।

१५ मरणासन्न स्थिति में किया हुआ।

१६ गुण समाप्त किया हुआ।

१७ स्त्री प्रसंग या मैथुन किया हुआ।

१८ अनुचित ढंग से हथियाया हुआ, हड़पा हुआ।

१९ भस्म बनाया हुआ (धातु)

२० शिकार किया हुआ।

२१ उद्विग्नता से प्रयास किया हुआ।

२२ लगाया, दिया या भिड़ाया हुआ।

२३ सम्मिश्रण किया हुआ, मिलाया हुआ।

—(स्त्री० मारियोड़ी)

मारिस—सं० पु० [सं० मारिष] १ नाटकों का सूत्रधार।

२ प्रतिष्ठित या माननीय।

रू० भे०—मारिख,

मारी—सं० स्त्री०—देखो 'मरी' (रू. भे.)

मा'री—देखो 'म्हारी' (रू. भे.)

उ०—आंखड़ीयां अणीयाली, बिचि सोहै टीकी काली हो। हिरण घसैं खुरताली, मा'री आंख लीधी मटकाली।—वि. कु.

मारीच, मारीछ—सं० पु० [सं० मारीच] १ रावण का आश्रित एक राक्षस जिसने सीता हरण के समय माया-मृग (स्वर्णमृग) बनकर राम को धोखा दिया था।

उ०—१ देवी बांण रे रूप मारीच, मारी, देवी मार मारीच, लखणं पुकारी।—देवि.

उ०—२ म्रग रूपी मारीच मारियौ। भुजां भांमणौ राम अभंग।
—ह. नां. मा.

२ कश्यपकुलोत्पन्न एक ऋषि।

३ बादशाह या राजा की सवारी का बड़ा हाथी।

उ०—समस्त ही मंडप रा प्राघुण का प्रामारराज की तरफ सूं बरात रै सिविर जाय दुल्लाह नूं मारीच चढ़ाय अरबुद रा दुरग रै तोरण पधरावियौ।—वं भा.

४ देखो 'मरीचि' (रू. भे.)

उ०—जिण ब्रह्म तणौ मारीच जांणि, मारीच तणौ कासिप प्रमांणि।—सू. प्र.

रू० भे०—मरीच, मारिच,

मारु—१ देखो 'मारू' (रू. भे.)

उ०—१ माभी मेर अभंग भड, मारु अमळी-मांण। गिळण गढां भूखाळुओ, ओबासै जमरांण।—गु रू. बं.

उ०—२ हसती तो कजळी देसां रा ल्याज्योजी घुड़ला तो मारु देस रा ल्याज्योजी।—लो. गी.

२—देखो 'मारुनिसांणी'

उ०—इकळ सीड़ध द्रावस करै, म्होरे दुगुरु मिलाय। मारु निसांणी तिहुंमुंणौ, सुकव 'मंछ' सरसाय।—र. रू.

मारुअइ, मारुअउ—देखो 'मारू' (रू. भे.)

उ०—१ कळि काळि परीकम ए करन्न, देखियइ दुवापुर दिख्या दन्न। कणइछु कन्हा धर लूणकन्नि, मारुअइ राइळी मोट मन्नि।
—रा. ज. सी.

उ०—२ हिंदुआं देखि हथियारि हार, असपत्ति तणा लूंबइ अयार। फरि चडिए कीधउ भडै फेर, मारुअउ राउ डोलइ न मेर।
—रा. ज. सी.

मारुअड़ि, मारुआड़, मारुआड, मारुआडि—देखो 'मारवाड़' (रू. भे.)

उ०—१ राठउड़ राउ जोवण रुहाड़ि। मन्नि किय मूगुळे मारुआड़ि।—रा. ज. सी.

उ०—२ ब्राह्मण नि तां वरुण करंतां सिंधु न थ्यु मारुआडि। तु सूं दांन करचूं मि मनसूं, चिंता पांमि हाडि।—नळाख्यांन

मारुओ—देखो 'मारूवो' (रू. भे.)

उ०—करि कोप दळां प्रारंभ कहर, धेघिगर आगै धरै। मांडिओ मुगलसै मारुऐ रिण 'ओरंग' 'जसराज' रै।—वचनिका

मारुड़ौ—देखो 'मारूड़ौ' (रू. भे.)

उ०—मंत्री जंत्री सुकन जोतसी, यां रै हाथ न उपाय। ऊबी कोई सैण मिळावै सइयां, जो मारुड़ौ दे मिळाय।—लो. गी.

(स्त्री० मारुड़ी)

मारुजी—देखो 'मारूजी' (रू. भे.)

उ०—सूवटा, पीव मिळादै रे, सूवटा, मारुजी मिळादै रे । तेरो जलम-जलम गुण गास्यूं, सूवा, म्हारो भंवर दिखादै रे ।
—लो. गी.

मारुणि, मारुणी—देखो 'मारूणी' (रू भे.)

उ०—१ मारुणि नारी मिली सब गावत सुंदर रूप सोभागी रे आज सखि पुन्य दिसा मेरी जागी ।—समयसुंदर गणि

उ०—२ सात सैयांक झुमक कर लाल ढोलो निरखण जाय, थांनै चातर जद बदांजी थारी मारुणी ने ल्योरे पीछांण ।—लो. गी.

मारुत-सं० पु० [सं० मारुतः] १ हवा, पवन । (अ. मा, ह. नां. मा)

उ०—१ सोळेई थांन अचळ इंद्रीसुर, अति सुख उदै कियो अंतरिउर । विसन ब्रह्म सिव अरक बखांणो, जळपति ससि दिस मारुत जांणो ।—रा. रू.

उ०—२ ओप सिंदूर तेल अपल्ल, गडडे बाज ढळके ढल्ल । वहता विडंग दाखै वेग, मारुत पेरियो किरि मेग ।—गु. रू. ब.

२ वायु का अधिष्ठाता, पवन देव ।

३ स्वांसा ।

४ शरीर के त्रिदोषों में से एक ।

५ हाथी की सूंड ।

६ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि ।

७ अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

८ नितान एवं द्युतान नामक वैदिक सूक्त द्रष्टाओं का एक सामूहिक नाम ।

[सं० मारुतं] ९ स्वाति नक्षत्र ।

रू० भे०—मारत, मारूत,

१० देखो 'मारुति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—सीता सुंदरी अरधंग ससोभत, सेवग 'मारुत' सारखा । बाळ जिसा बळवंड बिहंडण, पांण भुजाडंड पारखा ।—र. ज. प्र.

मारुतचक्र-सं० पु० [सं०] वातचक्र, वातूल, वायु का गुल्म ।

उ०—मिळिया किर मारुतचक्र मही ।—रा. रू.

मारुतसखा-सं० पु० यौ० [सं० मारुतः+सखा] अग्नि ।(नां. मा.]

मारुतसुत-सं० पु० यौ०[सं० मारुतः+सुत] १ हनुमान ।

२ भीम ।

मारुति-सं० पु० [सं] १ हनुमान, बजरंग । (ह. नां. मा.)

उ०—मारुति जेण कियो अजरांमर, कैकंध भूप सुकंठ दियो कर ।
—र. ज. प्र.

२ भीम ।

रू० भे०—मारत, मारुत, मारूत,

मारुधर—देखो 'मारूधर' (रू. भे.)

मारुनिसांणी-सं० स्त्री०—डिंगल का एक निसांणी छंद जिसमें प्रथम १६ मात्रा, फिर १२ तथा तुकान्त में दो गुरु होते हैं ।

मारुबैंगण-सं०पु०—वृंताक की एक जाति ।

मारुयाड़, मारुयाड़ि—१ देखो 'मारवाड़' (रू. भे.)

उ०—घणी गालइ घाली बंदि छोडावी, रेख रहावी, खाडइ जइत्र अणावी नव कोटी मारुयाड़ि भली माल्हावी ।—रा. सा. सं.

२ देखो 'मारवाड़ी' (रू. भे.)

मारुराय, मारुराव—देखो 'मारूराज' (रू. भे.)

मारुवौ—देखो 'मारुवौ' (रू. भे.)

उ०—राजि नाळेर ल्याया तिको म्हांनै सगा जांण्या पिण एक मारुवां ठाकुरां सूं म्हांकी अरज छै, ज्यो हुकम हुवै तो अरज करां ।
—राव रिणमल री वात

मारुवणी—देखो 'मारवणी' (रू. भे.)

उ०—कुंवरी पिंगळरायनी, मारुवणी तसु नांम । नरवरगढ़ ढोलइ भणी, परणी पुहकर ठांम ।—ढो. मा.

मारुवी—देखो 'मारवी' (रू. भे.)

उ०—इसइ आरखइ मारुवी, सूती सेज विछाइ । साल्हकुंवर सुपनइं मिल्यउ जागि निसासउ खाइ ।—ढो. मा.

मारुवौ—१ देखो 'मारूवौ' (रू. भे.)

उ०—मारुवै रावतां गाजतां मैंगळां, वाधियो वाद सूं इंद्र रो वादळां ।—गु. रू. बं.

२ देखो 'मारू' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बाबा म देइस मारुवां, सूधां एवाळांह । कंधि कुहाड़उ सिरि घड़उ, वासउ मंझि थळांह ।—ढो. मा.

मारू-सं० पु०—१ मारवाड़ का राजा, अधिपति ।

उ०—ईहगां घणो विरदावियो, मारू अमली मांण नूं । आपरो करै दीधो उतन, तेरै राव सुरतांण नूं ।—सू. प्र.

२ राठौड़ ।

उ०—१ मारू घर घर मारका, ठहरै समहर ठौड़ । ऊखांणो उजवाळियो, चढ़ जयमल चीतोड़ ।—बां. दा.

उ०—२ वात अकब्बर आगळी, अक्खी हाथ मिळाय । दूत विदा करकै लियो, मारू 'दुरग' बुलाय ।—रा. रू.

उ०—३ भइ बहतरि ऊमरा, खांन सत्तरि थहरिया, तिण वेळा तुडि-तांण विढण मारू बळ भरिया ।—गु. रू. बं.

३ मरुप्रदेश का निवासी ।

४ मरुप्रदेश, मारवाड़ ।

उ०—१ दिस मारू खुरसांण तणा दळ, वाधै जोग प्रळै चा बद्दळ । त्रण तर थळां सिखर खुर तूटै, फौजां घमां परब्बत फूटै ।
—रा. रू.

उ०—२ बुद्धी एक दंत वंत वंत संत गुरू मंत्र जैसे । मारू कंत वास 'जसवंत' बाग राईके ।—ऊ. का.

५ मारवाड़ की भाषा, डिंगल, मारवाड़ी ।

उ०—भाखा ब्रज मारू सुर भाखा, भाखा प्राक्रत जांन भर । पायो रचण रूपगां पैंडो, मेहाही थारो महर ।—बां. दा.

६ पति, प्रियतम ।

उ०—१ सुद अबै आप लीजो सजन, जे चावो छो जीवती । जिण भांति वतिक दारू विना, मारू इम भूलो मती ।—पनां

उ०—२ या प्रेम पत्रिका दीज्यौ हो, म्हांरा मारू ने जाय कीज्यौ। आंसू टप टप अंगिग्रा टपके, बदन गुलाबी भीज्यौ।—लो. गी.

७ रसिक।

उ०—१ छलवलिया घोड़ा भला, ग्रलवलिया ग्रसवार। मद छकिया मारू भला, मरवण नखरादार। दारुडी दाखां रौ।—लो. गी.

उ०—२ भरणहरण भंवर मस्त फूलां सुं, ग्रौर उड रह्यौ छै पराग। मारू ग्रासी रसराज वसंत में किणियक सुगणी रै भाग।—रसीलै राज री गीत

८ एक राग विशेष। (मीरां)

९ एक लोकगीत का नाम।

१० युद्ध में गाया जाने वाला एक राग।

११ युद्ध का बाजा।

१२ कुम्हारों की एक शाखा।

वि०—१ मारने वाला, समाप्त करने वाला।

उ०—तोस पोस ग्रौस मारू, काय ग्रफसोस कोस। हाय दारू तेरे दोस, कहांलौं पुकारूं मैं।—ऊ. का.

२—देखो 'मारुनिसांणी'

उ०—मत सोळह फिर बार मुण, दख मोहरे गुरू दोय। मारू दोस नीसांणी मुणै, सुकव मह्या मत सोय।—र. ज. प्र.

रू० भे०—मारव, मारु, मारुग्रई, मारुग्रउ

ग्रल्पा—मारुवौ, मारुड़ौ,

मारूग्राड, मारूग्राडि—देखो 'मारवाड़' (रू. भे.)

उ०—नवकोटी नामि भणूं मारूग्राडि धण देस। धण कण घरि सधिकहि तणइ कप्पण कणय सुवेस।—कां. दे. प्र.

मारुग्रौराव—देखो 'मारूराज' (रू. भे.)

उ०—ढिल्ली पैंह ग्रायां रांण ग्रत ढिल्लीयौ। तिणसूं कहैं चित्रगढ़ तूफ। 'जैमल' जोध कांम तो जोठी, मारूग्रांराव म ढील स मूफ।—जयमल मेड़तिया री गीत

मारूड़ी—देखो 'मारूड़ौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—बकरियां रोसावै कुकड़ा कटावै ग्रर दारूड़ी मारूड़ी तो उडती ही रैवै है।—दसदोख

मारूड़ौ—सं० पु० [स्त्री० मारूड़ी] १ एक मारवाड़ी लोक गीत।

रू० भे०—'मारुड़ौ'

२ देखो 'मारू' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—सांभ पड़ै दिन ग्रांथवै, रै जला, खातण लावै खाट। कांई ए करूं थारी खाटनें, म्हारे मारूड़ै विना किसो ठाट।—लो. गी.

ग्रल्पा.—मारूड़ी

मारूजी—सं० पु०—पति, प्रियतम।

उ०—एक वर, ग्रो मारूजी, करला जी पाछा मोड़। राजीदां ढोला, ग्रोळूं घणी ग्रावै म्हारी माय री।—लो. गी.

रू० भे०—मारुजी,

मारूणी—सं० स्त्री०—१ मरुप्रदेश की स्त्री या ग्रौरत।

२—देखो 'मारवण' (रू. भे.)

उ०—सातवों वधावौ भंवरजी री सेज में, म्हारे बैठ्या राज-दिवांण। ढोलौ तो मारूणी हुंत वतळावसी।—लो. गी.

रू० भे०—मारुणि, मारुणी

मारूत—१ देखो 'मारुत' (रू. भे.)

२—देखो 'मारुति' (रू. भे.)

उ०—गिरां में सुमेर ग्रोपै सुरतांण राहां गणां। जत्यां में मारूत प्रजापति रिखां जांण।—भगतरांम हाडा री गीत

मारूदेस, मारूधर, मारूधरा—सं० पु० [सं० मरु+देश, मरु+धर या धरा] मरु प्रदेस, मारवाड़।

उ०—१ ततखण माळवणी कहइ, सांभळि कंत सुरंग। सगळा देस सुहांमणा, मारूदेस विरंग।—ढो. मा.

उ०—२ ग्रौरंग ऐसैं ग्रक्खियौ, दूजैं दिन राठौड़। गया दरग्गह साह रै, मारूधर कुळ मौड़।—रा. रू.

उ०—३ नमो देस मारूधरा कोट नोवां। नमो द्रंग गेढ़ा कलां खुरद दोवां।—मे. म.

रू० भे०—मारुधर

मारूभाखा, मारूभासा—१ देखो 'मारू' (५)

उ०—करमांणंद ग्राणंद कवेस वहण मारूभाखा वट। बगस जिको विरदैत 'इकडांणी' ग्रागा हट।—पा. प्र.

मारूयाड़, मारूयाड़ि, मारूयाड मारूयाडि—१ देखो 'मारवाड़' (रू. भे.)

उ०—१ जिम ए तीरथ जागता, तिम ए तीरथ सारो जी। मारूयाड़ि मांहे बडउ सेत्रुंज नउ ग्रवतारो जी।—स. कु.

२—देखो 'मारवाड़ी' (रू. भे.)

मारूरांण—सं० पु० [सं० मरु+राट] १ मारवाड़ का राजा।

२ राठौड़।

मारूराई, मारूराज, मारूराजा, मारूराव, मारूवाराव—सं० पु० [सं० मरु+राजा] १ मारवाड़ का राजा, ग्रधिपति।

उ०—१ बाधै सिखर वडै लाधै ग्रब। इळपुड़ नाग वधै ग्रनमंध। दीन न को नहिं कोई देसी, मारूराव जिसा मदमंध।—द. दा.

उ०—२ ग्रख जड़ तोड़ मोड़ वैरियां, धरधारूजळ दांत धरै। मारूराव ग्रसो मद मैंगळ, कोट गड़ां सैलोट करै।—महाराजा जसवंतसिंहजी री गीत

उ०—३ राग हरख मंगळ रळी, चक्रवति ग्रायां चाव। पति नव कोट पधारिया, महिले मारूराव।—रा. रू.

२ राठौड़।

रू० भे०—मारवराव, मारवीराव, मारवैराव, मारवौराव, मारुराय, मारुराव, मारूग्रौराव।

मारूवौ—सं० पु०—१ राठौड़।

२ मरु प्रदेश का निवासी।

रू० भे०—मारुग्रौ, मारुवौ।

मा'रे-सर्व०—मेरे।
मारेल-वि०—१ दबा हुआ,
२ थका हुआ।
३ घायल।
उ०—जनहरिया मारेल मन, सारेला निज तत। न्यारेला दुनीयांन सुं, यारेला अवगत।—श्री हरिरांमदासजी महाराज
मारोट, मारोठ-सं० स्त्री०—१ विवाह के समय दूल्हे या दुल्हिन के मुख पर सुनहरी दाणों से की जाने वाली चित्रकारी।
२ एक प्रान्त का नाम।
रू० भे०—मरवट, मरोट, मरोठ,
मारोमार-क्रि० वि० [अनु०] १ निरन्तर, लगातार।
उ०—सतो सास सम्हांता समरण तन मन खूब तपावै। लोह लुहार तणो गति लागं मारोमार मचावै।—ऊ. का.
२ अत्यन्त शीघ्रता से, द्रुत गति से।
३ क्रमशः एक के बाद एक।
सं० पु०—हुल्लड़, भगदड़।
मारौ—देखो 'मार' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—नीलजु निविणु मई अजांणु कांइ मारइ मारौ। ईणि जनमि मुझ पंडुकुमर विणु नहीं य भतारौ।—सालिभद्र सूरि
मा'रौ देखो 'म्हारौ' (रू भे.)
उ०—प्रीतम मा'रा भमरलां जी कांइक कीजे संक। फुल्या दीसै फुठरांजी, आफू आडै अंक।—वि. कु.
माळ, माल-सं० स्त्री० [सं० मालः, मालं] १ किसी कस्बे या गांव की समस्त कृषि भूमि।
यौ०—आडै माळ=पूर्ण भूमि।
२ खेत, भूमि।
उ०—सोरठ गूजर खंड सरीखा, मुलकां तणी न पाकी माळ। मुहगी अन पहुडै माळागिर, मुहगी अन अवहड़ मुदराळ।
—देवनाथ री गीत
३ वन, जंगल।
उ०—१ पंथी मारग पांतरै, हिया फूट हिय हार। जंबक हू हू रव करै, सूनी माळ मझार।—कविराजा बांकीदास
उ०—२ आसा खेती अमर धन, निरधन यूं जीवंत। गौरी पींडा बेचती, मिरगा माळ चरंत।—अज्ञात
४ ऊंची भूमि।
उ०—मदाहर पाहै घोळा माळ, दुरब्बळ भाटी देस दुकाळ।
—रंगरेलौ बीठू
५ कंकरीली भूमि।
६ स्थान, जगह।
[सं० माला]-७ कूए पर चलने वाले रहट पर घूमने वाली मिट्टी या धातु के बने जल-पात्रों की माला (टिंड)।
उ०—सहजिइं जीव निरमल झलकंति, आठ पहुर छइं करम बांधंति। अरहटि घटिका जिम कूइ माल, तिम जीव फिरइ अणंतउ काल।—वस्तिग
८ चरखे की डोरी जो बेलन व तकुवे को घुमाती है।
उ०—ताकू तेरो सोवणो, लाल गुलाबी माल। चरकूं-मरकूं फिरै घेरणी, मधरी मधरी चाल।—लो गी.
९ किसी चक्र को घुमाने वाली माला के आकार की रस्सी।
१० नदी।
उ०—नदी जळ नील सुफील निसांण, उभेलत छीलर ढीलन आंण। बगत्तर भीवर जाळ वहंत, आवै नह माळ रगत्तर अंत।
—मे. म.
[सं० माल] ११ फसल की उपज। (मा. प्र. वि.)
उ०—गुलजी कह्यो, स्वांमीनाथ! रुपिया दसेक रो माल पाछौ आयो। इतरीक बाजरी, सरब रुपया दसेक रो माल पाछौ आयो।
—भि द्र.
१२ मेघमाला, घनघटा।
उ०—जळ जाळ माळ विसाळ नभ जुत, उरड़ झड़ अण पार ए। मिटि जळण धरणि विनोद मांनव, भूरि सर जळ भार ए।
—रा. रू.
१३ अच्छी फसल पर लिया जाने वाला कर (टेक्स), राजस्व।
यौ०—माळ सेरणी।
१४ बाल, केश।
उ०—मसतग माळ मूंडायकै, दाड़ी मूंछ मुंडाय। हरीया मन मूंड्यां विनां, निज पद कैसे पाय।—श्री हरिरांमदासजी महाराज
१५ पंक्ति, कतार, श्रेणी।
उ०—तुरां खुरताळ बज तूर तासा त्रंबट। माळ फरहर गजां धजां माळा।—कविराजा बांकीदास
१६ झुण्ड, समूह।
१७ देखो 'माळा' (रू. भे.)
उ०—१ रांम नांम चंगो, रतन सो मुनिराजां माळ। पिल बांधो बांधै गळै, गळै म बांधो गाळ।—बां. दा.
उ०—२ पत्र सुधारै जोगणी, माळ सुधारै रंभ। थंभ चलेवौ सोम रवि, देखै व्योम अचंभ।—रा· रू.
उ०—३ दीन अळाव फिरे गढ़ दोळा, हर सिर माळ बणाव हुवा। सात लाख भड खत्री सूरांरा, मेछ अठारा लाख मुवा।
—महाराणा गढ़ लक्ष्मणसिंह री गीत
उ०—४ विण तरुवर जिम वेलड़ी, कंठ विना जिम माल। पुरुस विहूणी पदमनी, किणि परि ठेलिसि काल।—मा. कां. प्र.
माल-सं० पु० [सं०] १ द्रव्य, धन। (नां. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१ तीडां करसण सूंपियो, बांनरडां नूं बाग। माल किराड़ां सूंपियो, ज्यां रा फूटा भाग।—बां. दा.
उ०—२ जदी चोर कहै। श्री परमेसरजी खावा दीधो अर माल पण आछो आयो।—पंचमार री बात

उ०—३ पछै सरव कांम श्राय चूका अर सरव श्राग मांहै पड़ियां। तद पातिसाह सदयै वांकलियै नूं साबासी दीवी । अर गढ़ मांहै श्रायो तद कह्यौ—अबै माल मसां बतायौ, पछै बतायौ।
—पताई रावळ री वात

उ०—४ चारूं वेदां रै जांणकार पिंडतजी री निजर चरू माथै ही। वै मनाग्यांना हिसाब करण लागा के चरू में कित्तो कांई माल व्हे सकै।—फुलवाड़ी

उ०—५ जद स्वांमीजी बोल्या—कुबदी चोर हुवै ते चोरी करनैं लाय लगाव जावै। लोक तौ लाय रै धंधे लाग जावै नें श्राप माल लेय नैं चालतो रहै।—भि. द्र.

मुहा०—१ माल उडाणौ (उडावणौ)=चोरी करना।

२ माल हाथ लागणौ=धन की प्राप्ति होना।

२ सम्पत्ति, जायदाद।

उ०—१ बुद्धि सूं च्यारां ने पकड़्या माल राख्यो। श्रनै एक साथै च्यारां सूं झगड़तो तो कद पूगतो।—भि.द्र.

उ०—२ प्रभुता देखी पुत्र नी, राजा हुवै खुस्याल। पुण्य बिना किम पांमीयै, एल मुलक ए माल।—वि. कु.

३ सामान, सामग्री।

४ क्रय-विक्रय का सामान।

उ०—रोळ बिगाड़ै राज नूं, मोल बिगाड़ै माल। सनै-सनै सिरदार री, चुगल बिगाड़ै चाल।—बां. दा.

५ स्वादिष्ट या उत्तम भोजन, पकवान।

उ०—१ खुसी खुसी में ही लूंटा दी लाल, मजा-मजा में ही घुटा दियो माल।—दस दोख

मुहा०—माल उडावणौ, माल घुटावणौ=इच्छित भोजन करना, मस्ती छानना।

६ किसी वस्तु का सार-तत्त्व।

७ सुन्दर स्त्री।

८ युवती। (बाजारू)

९ हरसाल।

१० विष्णु का एक नामान्तर।

११ छल, कपट, दगा।

१२ दक्षिण—पश्चिमि बंगाल के एक जिले का नाम।

१३ मालवा देश।

१४ एक प्राचीन अनार्य जाति।

१५ सामर्थ्य, हस्ती।

उ०—बाबर नूं जीत्यौ नहीं, 'सांगौ' साहां साल। उणरे घर रा ऊमरा, मो श्रागे की माल।—बां. दा.

१६ शकुन चिड़ी जो दाहिनी ओर बैठ कर शुभ शकुन देती है।

उ०—लंघिया चांबिल पाछिला खाल। डावी देवी श्रनइ दाहिणी माल।—बीसलदेवरास

१७ गणित में वर्ग का घात, वर्ग अंक।

१८ देखो 'मल्ल' (मह., रू. भे.)

उ०—१ गोविंदइं सवि माल सरीखउ चांखूर ते चूरीउ। बीजइं बंधवि माल मोस्टिक, हणिउ तउ कंस कोपिइं चडिउ।
—धनदेव गणि

उ०—२ न मालाखाडइ झूझइ माल. लोक तणइ मनि श्रतिहि साल। २वाडी न स्रीवंत करइ, खेल वाडी न गुडी श्रा धरइ।
—नळदवदंती रास

मालक—देखो 'मालिक' (रू. भे.)

उ०—१ कोरो मालकांणो जचावै, कीं श्रावै न जावै।
—दसदोख

उ०—२ श्रालमगीर नूं गिरफदार करण श्ररु साह सूजै नूं मालक करण सू म्हैं हरौळी में हां झगड़ौ वखत भगी घातसां।—द. दा.

मालकत—देखो 'मालकियत' (रू. भे.)

उ०—तुरक हिंदू रहै फिरंग मालकत। कै कहै बीकांण रा कूक-करणां। भूप नव कोट रा श्रगर हासल भरौ। चाकरी करौ सिर धरौ चरणां।—बां. दा.

मालकपणौ—सं० पु० यौ०—१ स्वामी या मालिक होने का भाव, स्वामित्व।

२ बड़प्पन, दयालुता।

मालकांकणी, मालकांगणी—सं० स्त्री०—१ हिमालय पर ४०० फुट तक पाई जाने वाली एक लता विशेष।

२ उक्त लता के बीज जो श्रोषध में काम आते हैं। इनमें से तेल भी निकलता है।

३ एक प्रकार का कदन्न।

मालकियत—सं० स्त्री० [श्र०] मालिक होने का भाव, स्वामित्व।

रू० भे०—मालकत।

मालकी—देखो 'मालकपणौ'

उ०—तिण वगत मालकी फेर रायणतणी, लाग रख राखडी बांद लीदी।—ऊमरदांन लाळस

मालकेत, मालकेतु—सं० पु०—१ एक लोक देवता, जो लोहार्गल पहाड़ पर स्थापित है।

उ०—मंड में भैंरू बाबो जागिया पहाड़ां में बदरीनाथजी जागिया परबत में मालकेत जागिया श्रां के पीठ बसै सकराय झालर बाजै राजा रांम की।—लो. गी.

२ लोहार्गल पहाड़ का एक नामान्तर।

मालकोस—सं० स्त्री० [सं० मालकोश] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसे कौशिक राग भी कहते हैं श्रौर यह प्रायः रात के दूसरे प्रहर में गाया जाता है। (संगीत)

उ०—सरी सरी सपोसयं, सुताळ मालकोसयं। मिठास श्रास मंजरी, गरी गरी सगुज्जरी।—रा. रू.

रू० भे०— मालव कौसिक।

मा'लक्ष्मी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू. भे.)

मालखंम—देखो 'मलखंभ' (रू. भे.)

मालखांनौ–सं० पु०—सामान रखने का कक्ष, कोठार, भंडार।

मालगाडी–सं० स्त्री०—माल, असबाब या व्यापारिक माल की पार्सलें आदि ढोने की रेलगाड़ी।

मालगुजारी–सं० पु०—१ लगान।

२ जमीदार से सरकार द्वारा लिया जाने वाला एक कर।

मालगुरजरी–सं० स्त्री०—सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी जिसके सभी स्वर शुद्ध होते हैं। (संगीत)

मालगोडी–सं० स्त्री०—एक रागिनी विशेष। (संगीत)

उ०—दिये तरुणी मुख चुंबन दांन, सुख छबि अंग किये मधु पांन। चलो संकेत समझि जिय सांझ। मालगोडी अपति उद्यांन।—रा. रू.

मालगोदाम–सं० पु०—१ व्यापारिक माल जमा रखने का स्थान।

२ माल-गाड़ी से भेजे जाने वाले सामान को संग्रहीत करने का स्थान।

मालड़ौ–सं० पु०—ऊंट या घोड़े के चारजामें पर रखा जाने वाला चमड़े का एक उपकरण।

मा'लछमी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू. भे.)

मालजादी–सं० स्त्री०—१ दुश्चरित्र व कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी स्त्री, पतिता।

उ०—तरै चावड़ी भूंजती बोली, मालजादी रांडां, थारे बापने जरै ही मारि गांठड़ी बांधि झरोखे रै मारग नाख दीधौ।

—जगदेव पंवार री बात

२ वेश्या पुत्री, वेश्या।

उ०—१ राजा कह्यौ—तोने सहर इसा कुकरम करण नें मोळायौ छौ? इसरौ कहि कोटवाळी सूं दूर कीधौ नै मालजादी तितरी थांणै पकड़ मंगाई, कांन नाक काटि माथौ मुंडाय पाटड़ा पाड़ि गधै चाढ़ि सहर भदर कीनी।—जगदेव पंवार री बात

उ०—२ लालकंवर कह्यौ—म्हांरी जांबोती बडी चाकरी कीधी। चावडीजी, ऐ मालजादी छै। मैं यांनै कह्यौ थौ, कुळवंती रूपवंत चतुर बाळक काई मिळावै तौ खवास थापूं। तिसा हीज थे छौ।

—जगदेव पंवार री बात

मालजादौ–सं० पु०—१ दुश्चरित्र व व्यभिचारी व्यक्ति।

(स्त्री० मालजादी)

उ०—१ मालजादां मन मांहि रांड सूझै दिनराती। मालजादि मन मांहि यार सूझां अकुळाती।—ऊ. का.

उ०—२ चाकर पंच हथियार साथे लीधा। एक मालजादौ खोसरौ थौ, तिकौ खोजो वणाइ घोड़े चढ़ि लीधौ।

—जगदेव पंवार री बात

२ वेश्या पुत्र।

मालटौ–सं० पु० [अं० माल्टा] लाल रंग की एक नारंगी विशेष।

मालण–सं० पु० [देशज] १ चौहान वंश की एक शाखा।

सं० स्त्री०—दुल्हा बारहठ की पुत्री, एक देवी।

उ०—सोरमदे मालण तुं सभैव, दैवळ तुं खोड़ी आद दैव।

—रांमदांन लाळस

१ देखो 'माळी' (स्त्री०)

उ०—मकोड़ौ सूई लेय नै जावतौ के उण नै एक मालण बगीचा में बैठी मिळी।—फुलवाड़ी

मालणी–सं० स्त्री०—१ दुर्गा सप्तशती के अनुसार ललाट प्रदेश की रक्षिका देवी, मालाधरी।

उ०—देवी मालणी जोगणी मत्त मेधा, देवी वेधणी सूर असुरां उवेधा।—देवि.

२ योग के अनुसार आत्मा।

उ०—मतवाळी मालणी नहि दूरी। हरि परम सनेही है हजूरी।

—ह. पु. वा

३ देखो 'माळी' (स्त्री०)

४ देखो 'मालिनी' (रू. भे.)

मालणौ, मालबौ—देखो 'माल्हणौ, माल्हबौ' (रू. भे.)

उ०—१ जो तू चाहै मुकन, फळ, धूनां मन धीरच्छ। तीख मांन सरवर तठै, माल हुवै मा मच्छ।—बां. दा.

उ०—२ जलो म्हारी जोड़ रौ उदियापुर मालै रे। मस्त महीनौ आवियौ रे जला! अब तो खबर म्हारी लेह।—लो. गी.

उ०—३ सो किण भांति रा बाकरा जिके कड़कती सांध रा, बड़कती नळी रा, भाहू रै साद रा, मादलिए पेट रा, माडि बोर काचर रा बरड़णहार, घणूं कूंभट नै बावळी री टीसीआं रा आड़णहार, सिखिरि रा मालणहार, फिरणीऐ रा बैसणहार....

—रा. सा. सं.

मालणहार, हारौ (हारी), मालणियौ—वि०।

मालिओड़ौ, मालियोड़ौ, माल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मालीजणौ, मालीजबौ—कर्म वा०।

मालति, मालती–सं० स्त्री० [सं० मालती] १ एक लता विशेष जिसके फूल स्वेत व बहुत ही सुगंधित होते हैं। (अ. मा.)

उ०—१ लता माधुरी मालती फूल लेखै। दसा आप भूलै तपी रूप देखै।—रा. रू.

उ०—२ मालती सेवती केतकी प्रफूलमांन! फूलूं की सोभा असमांन के तारूं का विधांन।—सू. प्र.

उ०—३ भमरि मालति जेम विरोलियइ, तिम न केतकि केलि घंघोलियइ। त्रिणह काजि न डूंगर ढोलियइ, जडइ कालु करी कुल बोलियइ।—सालिसूरि

पर्या०—अंबष्टा, उत्तमगंधा, प्रियवादनी, मधुमई, सुगंधमल्लका, सुमना।

२ उक्त लता के फूल । (अ मा.) (उ. र.)

उ०—चुरौ चंपेली चाय, मोगरौ मालती, हरीलता मैं जांरण, हेम लत हालती । वरणी पनां इम वागिक साथि सहेलियां, परिहां रंग (भीनी) अांनूप रूप रंगरेळियां । —पनां

३ कली ।

४ क्वांरी युवती ।

५ जायफल का वृक्ष ।

६ रात्रि, रात ।

७ ज्योत्स्ना, चांदनी ।

८ प्रत्येक चरण में दो जगण का एक छंद । (र. ज. प्र.)

९ द्वादश वर्ण का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः एक नगण, दो जगण और एक रगण होता है ।—पिं. प्र.

१० सवैया छंद के मत्तगयंद नामक छंद का दूसरा नाम ।

११ १४ मात्रा का एक मात्रिक छंद ।

१२ प्रत्येक चरण में ग्यारह दीर्घ वर्ण का एक छंद विशेष ।

१३ मद्र देश के अश्व पति राजा की पत्नि ।

१४ इक्ष्वाकु वंशीय शत्रुघातिन राजा की पत्नी ।

मालतीटोडी-सं० स्त्री०—एक रागिनी विशेष जिसके सभी स्वर शुद्ध होते हैं ।

मालतोड़-सं० पु०—बड़ा हथौड़ा ।

मालदार-वि० [फा०] धनवान, अमीर,

मालदेग्रोत-सं० पु०—१ राठौड़ वंश की एक उप शाखा व इस शाखा व्यक्ति ।

२ भाटी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

—बां. दा. (ख्यात)

मालदौ-सं० पु०—एक प्रकार का आम ।

मालनेरी-सं० पु०—एक प्रकार का मूल्यवान कपड़ा ।

उ०—चरणा पहरजै छै सू किण भांतरा चरणा छै ? इलायचैरा मिसरूरा गुलबदन रा मालनेरी रा बाफतां रा, चाळीस चाळीस हाथां रा छै ।—रा. सा. सं.

मालपुग्रो,मालपुवो,मालपूग्रो, मालपूवो-सं० पु०[सं० पूप] गेहूं या सूजी के आटेको मीठे पानी में घोल कर, घी में पूरी की तरह तल कर बनाया जाने वाला पकवान । (अमरत)

उ०—१ नागजी मालपुवै को टूक रे, वैरी, जीम्या अड़ियो नै ताळवै ।—लो. गी

उ०—२ एकर चौमासा रा दिनां में वै गोठ करी । खीर अर मालपूवा बणाया । गावा घी में भरभरता मालपूवा री सौरम सूं स्याळ रा मन में कुटलाई चेती ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मालपुड़ौ, मालूपो,

मालपोससांमेरी-सं० स्त्री०—१ एक रागिनी विशेष ।

मालबंध-सं० पु०—बैलगाड़ी के अग्रभाग में धरसूंडे या ऊंटड़े को बांधने की रस्सी ।

मालबंधण-सं० स्त्री०—तलवार ।—ना. डिं. को.)

मालम-वि० [अ. मालूम] १ जिसकी जानकारी हो चुकी हो, जाना हुआ ज्ञात, विदित ।

उ०—१ अरजन री कतल करवाती बिरियां भुगाने री भू नै इयै आखी दोरपां रो जाबक मालम नीं हो, जकी आई ।—दसदोख

उ०—२ आगै री वात दांई पूंजी री कींनै ही कूंत नहीं आवै, मतां रो मालम नीं पड़ै ।—दसदोख

२ प्रगट, जाहिर ।

उ०—१ आलम सूं मालम थई, विदिसां दिसां दिगत्त । असवारी कज आखियौ, आंणौ नाग उचित्त ।—रा. रू.

उ०—२ कंवर चूंडा सुं मालम कीयो । मंडोवर सुं राठौड़ां नाळेर मेलीया छै ।—राव रिणमल री वात

उ०—३ अनंत संदेसा जीव का, लिख राख्या मन मांय । मिळिया मालम कीजसी, कागद लिख्या न जाय ।—अज्ञात

३ स्पष्ट, साफ ।

४ सूचित ।

उ०—वांसा थी साहजादाजी सुं किणहीक मालम कीयो, 'कांबो अबु' मेड़ते बरस २ रह्यो छै उण री वाकप छै ।—नैणसी

सं० पु०—१ नाव चलाने वाला नाविक, केवट । (अ. मा.)

रू० भे०—मालिम, मालुम, मालूम,

मालमता, मालमतौ, मालमत्ता-सं० स्त्री० यौ०—१ धन, दौलत, द्रव्य, सम्पति ।

उ०—१ माल-मता अर जगां सेठाई रै पगां, सदा सुरंगी रैती आई ही ।—दसदोख

उ०—२ पछै सरब कांम आय चुका । सरब रजपूतांण्या आग मांहे पड़ी, तद पातस्याह सइये बांकलिये नूं साबास दीवी । अर गढ़ मांहे आप आयौ तद कह्यौ-'अबै माल-मता बताय ? पछै बताई ।—नैणसी

उ०—३ पण ठग किणरा मांनै । सगळा दोळा व्हिया जको रोवतां-रोवतां उण रो सगळो माल-मतौ खोस लियौ ।—फुलवाड़ी

२ व्यापारिक सामान, सामग्री ।

उ०—गधो दिन रा माल-मत्तौ ऊखणतौ । इण गांव सूं उण गांव में मिणियारी-माल पुगावतौ ।—फुलवाड़ी

माल-मलीदौ-सं० पु० [अ० माल+मलीदः] बढ़िया भोजन, पकवान ।

मालमोटियार, मालमोटयार-सं० पु०—पूर्ण-युवा, जवान ।

माळयौ—देखो 'माळियो' (रू. भे.) (अ. मा.)

माळव, मालव-सं० पु० [सं० मालव] १ मध्य भारत के एक प्रदेश का नाम । (व. स.)

उ०—माळव नैह काबिल मुकरांण, कासमीर हुरमुज खुरसांण ।

—ढो. मा.

२ पंजाब प्रान्त स्थित एक प्राचीन भू भाग या प्रदेश ।
३ उक्त देश का निवासी ।
उ०—ग्रजड मेवाड राय जीप मालव तणा । तुरक वळ रहचिया रायमल तीर ।—महारांणा रायमल रौ गीत
४ भैरव राग का एक भेद विशेष । (संगीत)
मालवउ—देखो 'माळवौ' (रू. भे) (उ. र.)
मालवकौसिक—देखो 'मालकोस' (रू. भे.)
उ०—मालवकौसिक राग मधुर धुनि, सुर नर को मन रंजणं ।
माळवगिरी-सं० पु० [सं] १ मालवा स्थित एक पर्वत । (२) मालवा प्रदेश । (स. कु.)
रू० भे०—मालागर, मालागिर, मालियार
मालवगौड़-सं० पु०—बाड़व जाति का एक संकर राग (संगीत)
माळवण-सं० स्त्री०—१ मालवे की उत्पन्न तंबाकू ।
उ०—सिंघ री तमाखूं नव सेर विकै १) री, जठै माळवण सेर विकै ।—बां. दा. ख्यात
२ मालवा देश की स्त्री ।
३ देवस्थान के चारों ओर का छोटा वन जिसकी लकड़ी नहीं काटी जाती है ।
४ चोहान वंश की एक शाखा ।
माळवणी, मालवणी-सं० स्त्री०—१ मालव देश की स्त्री ।
उ०—सउदागर राजा सुं कह, सुणउ हमारी कथ्थ । मारवणी छांनी रही, सै माळवणी तथ्थ ।—ढो. मा.
२ एक प्रकार की लिपि । (प्राचीन)
रू० भे०—मालविणि,
मालवराउ, मालवराव-सं० पु०—मालव देश का राजा ।
उ०—तपह प्रभाविइ सेठिश्वर नंदन हूउ मालवराउ । इम विमासी पुण्यह ऊपरि घणउ करी मनि भाउ ।—हीराणंद सूरि
माळवळो-सं० पु०—कच्चे मकान के छाजन के बीच में लगने वाली लम्बीमोटी लकड़ी ।
मालवसिरी, मालवस्री-सं० स्त्री० [सं० मालवश्री] एक रागिनी विशेष जो प्रायः सायंकाल को गाई जाती है, श्रीराग । (संगीत)
रू० भे०—मालसी, माल स्री,
मालवाखर-सं० पु०—घोड़े पर डाला जाने वाला पाखर, कवच ।
उ०—तेहे घोडे पंच,विघ पाखर सांचरी, मीणवाखर, मालवाखर., कातलीग्राली पाखर, राजपुत्र तेहे घोडे किस्या चडचा ?—व. स
मालविउ—देखो 'मालवियौ' (रू. भे.)
उ०—गाजणि गोजी, वांणरसी कांची, खेडाग्रा ह्वाचउल, मालविउ माडउ, पांडवसिउं खाडउं, गूजरउ लोटउ'''' ।—व. स.
मालविणी—देखो 'मालवणी' (रू. भे.)
उ०—मालविणी नडि नागरि लाडलिवी पारसी य बोघव्वा । तह य निमित्ती ग्र लिवी चांणक्की मूलदेवी ग्र ।—व. स.

माळविया-सं० पु०—लुहारों की एक शाखा । (मा. म.)
मालवियौ-सं० पु०—१ मालव देश का निवासी ।
२ लुहारों की 'मालविया' शाखा का व्यक्ति ।
वि० १ मालव का, मालव सम्बन्धी ।
रू० भे०—मालविउ,
माळवी, मालवी-सं० पु०—१ मालवा प्रान्त (प्रदेश) का घोड़ा । (शा. हो.)
उ०—सोवनरा ताजी च्यार साल, पंच दोक दिनां पौरस प्रपाल । धुर केक माळवी सरस धज्ज, भीमड़ाथ थळी वाळा भिड़ज्ज ।—सू. प्र.
२ मालवे का निवासी ।
३ श्रीराग के ग्रन्तर्गत एक रागिनी । (संगीत)
४ एक प्रकार का गुड़ ।
वि०—मालव का, मालव सम्बन्धी ।
माळवीक, माळवीख-सं० स्त्री—१ घोड़े की एक चाल विशेष ।
उ०—वीखां भर लंबी माळवीख । तै धांम एविया चूच तीख ।—सू. प्र.
२ ऊंट की एक चाल विशेष ।
माळवीविद्या-सं० स्त्री०—मालव प्रदेश की विद्या ।
माळवौ, मालवौ—देखो 'मालवउ'
उ०—१ म्हारी हळदी रो रंग सुरंग निपजै माळवै । हळदी मोल पसारी री हाट बनड़ा रै सिर चढ़ै ।—लो. गी.
उ०—२ कांनड मेवाड़ मालवौ '' ।—धरमपत्र
मालस—देखो 'मालिस' (रू. भे.)
मालसाहिब-सं० पु० यौ०—पूंजी पति, धनवान । उ०-माल-साहिब तिकै मौज मांणै मही ।—ध. व. ग्र.
मालसी—देखो 'मालवस्री' (रू. भे.)
मालसेरणौ-सं० पु०—जड़बेरी ग्रोर समीवृक्ष (खेजड़ी) के पत्तों (पाला व लूंग) के ऊपर किसानों से लिया जाने वाला एक प्रकार का कर विशेष ।
मालस्री—देखो 'मालवस्री' (रू. भे.)
मालांणी-सं० स्त्री०—मारवाड़ में बाड़मेर के ग्रास पास के प्रदेश का नाम ।
उ०—काबल राजधांणी करी, सत्र धर हांणी सीह । मालांणी धर मुरधरा, ग्रांणी 'पत्ते' ग्रबीह ।—किसोरदांन बारहठ
रू० भे०—मलांणी,
माळा, माला-सं० स्त्री० [सं० माला] १ फूलों का हार, पुष्प हार, गजरा ।
उ०—सूंड में माळा लियां हाथी ग्राखो भीड़ मे घूमैला । वो जिण किणी रा गळा में माळा पैरावै, उण रै सागै ई राजकंवरी रो ब्याव व्हैला ।—फुलवाड़ी

२ कण्ठहार, हार, जंजीर, लड़ ।
उ०—१ पेखि रोस पतिसाह माळ मोतियां समप्पैं । बगसी भेजि सताब, श्रांणि माळा सुज अप्पै ।—सू. प्र.
उ०—२ श्रा बात करती वगत उगरी निजर राजकंवर रै गळा रा नवलखा हार माथै पड़ी । वी काळा उणियारा रै बीच धोळा दांत काढ़तो कह्यो—इण माळा रा बीस मिणिया देवौ तौ श्रो तीतर श्रापरै सांमी श्रठै इण वगत ई छोड दूं ।—फुलवाड़ी
३ श्राभूषण (श्र. मा.)
४ पंक्ति, कतार, शृंखला, श्रेणी ।
उ०—१ माळा उड़ जोत लसी सुर माग । चसी रण श्रांगण जोत चराग ।—मे. म.
उ०—२ ढाल ढळकइ नेजा फरकई, चाली परवत माळा ।
—रुखमणी मंगळ
५ ईश्वर भजन या जप करने के लिये हाथ में फेरी जाने वाली माला ।
उ०—१ वाकी सगळै दिन जप-तप करती । माळा फेरती । घणाई व्रत-उपवास राखती ।—फुलवाड़ी
उ०—२ 'हरीया' माळा काठ की, पोयर फेरै हाथि । श्रंदर काती कुबुधि की, सो तो मन कै साथि ।—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज
उ०—३ नगजी ने स्वांमी जी पूछ्यो तूं नंदणमणीयारा नो बखांण सीख्यौ है सो श्रो मणियो लकड़ा रो है कै सोना रो है कै रुद्राक्ष माला रो है ।—भि. द्र.
६ मन में किसी का नाम जपने या ध्यान करने की क्रिया, रट ।
उ०—१ क्या फेरै कर काठ की, मन की माळा फेर । जनहरीया माळा फिरै, विनां विचेरण मेर ।—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज
उ०—२ पछै कागली निरभै श्रापरा श्राळा में ईंडा दिया । मन में स्याळ रै नांव री माळा फेरती ईंडा नै सेविया ।—फुलवाड़ी
उ०—३ किण रो गुरुजी में तिलक बणाऊं, किणरी माळा फेरुं रे लोय । पंच मुदरा रो चेला तिलक बणावौ, निरगुण माळा फेरो रे लोय ।—स्त्री हरिरांमजी महाराज
मुहा०—माळा जपणी, माळा फेरणी = ध्यान करना, जप करना, रट लगाना, किसी को निरन्तर याद करना, ईश्वर का नाम निरंतर लेना ।
७ मुण्ड माला ।
उ०—१ बागा नेजाळां कजाक वीर बेताळां चाहक बागा, माळा चाढ़ बागा डाक डमरू महेस ।—राजा बखतसिंहजी रो गीत
उ०—२ जगच्चख माळत कोतुक जुद्ध, माळा कज संकर ढाळत मुद्ध ।—मे. म.
उ०—३ मिलम्मिळ मुंड पुवै सिव माळ । तिलत्तिल रुंड हुवै रिणताळ ।—मे. म.
८ किसी कार्य या बात का निरन्तर चलता रहने वाला क्रम, शृंखला । (सिरीज)
ज्यूं—पुस्तक माळा ।
९ रेखा ।
१० झुण्ड, समूह ।
११ एक मात्रिक छंद विशेष ।
उ०—१ दुजबर नव ता पछ रगण, करण ता पछै होय । श्ररध फेर गाथा श्रधर, माळा कहजै सोय ।—र. ज. प्र.
उ०—२ पुर दळ धार नव बे भगण, रगण करण धर श्रंत । श्ररध गाह श्रर बीश्र दळ, माळा छंद जपंत—हरिपिंगल प्रकास
उ०—३ करि नव दुज रग्गण करण, इम पय गण इग्यार । श्रवर श्ररध गाहा श्ररध, गुण माळा सिणगार ।
—पिं. प्र.
१२ निसाणी छंद का एक भेद ।
उ०—कीला, लीला, थिरा, कुंवारी, वीणा, रंगी, चंगी, वारि । विद्या, माला, बाला बांम, नीसाणी रा बारा नांम ।—पिं. प्र.
१३ उपजाति छंद का एक भेद ।
१४ दूब ।
१५ श्रांवला ।
१६ एक प्राचीन नदी का नाम ।
१७ तलवार के नीचे का एक भाग जो कुछ मोटा होता है ।
१८ राठौड़ों की एक शाखा ।
उ०—१ जैतमाल माला जठै, बाला साहस बंध । पण जेता जुध प्रांधिया, भार धरा धर कंध ।—रा. रू.
उ०—२ मिळे जैत माला, मुदी वेल माला । वरापूर सूरां धजा संगि बाला ।—रा रू.
रू० भे०—मालि, माळी, माली, माल्य ।
१९ देखो 'माळ' (रू. भे.)
उ०—१ भव २ भमते पार न पायो, मोह रहट की माळा । पावुं ग्यांनी तो श्रब पूछुं, कब यह मिटय कसाला ।—ध. व. ग्रं.

माळाकार—सं० पु० [सं० माला+कर:, माला+कार] १ माली ।
२ मालियों की एक जाति ।
३ पुराणानुसार एक जाति जो विश्वकर्मा श्रौर शूद्रा के संयोग से उत्पन्न हुई, वर्ण संकर जाति ।
मतान्तर से—पराशर पद्धति के श्रनुसार यह तेलिन श्रौर कर्मकार से उत्पन्न है ।
रू० भे०—मालीकार ।

मालाखाड—सं० पु० [सं० मल्ल+श्रक्षवाट] व्यायामशाला, श्रखाड़ा ।
उ०—मारिउ कूवलय चांपी रे, काढिय यादव सल साल । सवि कहइ जाता संहारचा रै, मालाखाड इ माल ।—चतुरभुज

माळागर—देखो 'माळवगिरी' (रू. भे.)
उ०—पेढ़ घर संवर ऊंडा सर थागै, श्रांरै माळागर मूंढ़ा रै

आगै ।—ऊ. का.

माळागळ-सं० स्त्री०—मालवा की भूमि, मालव प्रदेश ।

माळागिर—देखो 'माळवगिरी' (रू. भे.)

उ०—चाल्यौ प्रोहित **माळागिर** देस, वस्त्र कंखवर अरि भला वेस । हाथ कमंडळ भळभळई, ब्राह्मण वेद भणइ भूणकार ।

—वी. दे.

माळाजप-सं० पु०—माला जपने की क्रिया या भाव ।

माळादीपक-सं० पु०—दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें पूर्वोक्त वस्तुओं से उत्तरोत्तर वर्णित वस्तुओं का सम्बंध एक ही धर्म से स्थापित किया जाता है ।

वि० वि०—यह 'दीपक' एवं 'एकावली' अलंकार के मेल से बनता है ।

माळादेवि, माळादेवी-सं० स्त्री०—विंध्याचल पर्वत पर रहने वाली एक देवि ।

उ०—१ इवा पंच वरस कन्यका आई, **मालादेवि** तिका महमाई ।

—सू. प्र.

उ०—२ चव इम सुणी दियै वर चाहै । **मालादेवि** विंभ गिर माहै ।—सू. प्र.

माळाधर-सं० पु०—१ एक छंद विशेष जिसके प्रत्येक चरण में प्रथम चार लघु मात्रा, फिर जगण, फिर भगण, फिर तगण व अंत में गुरु होता है ।

उ०—दुज ज भ त गुर पाय प्रत, सो **माळाधर** कत्थ ।

—र. ज. प्र.

२ सतरह अक्षरों का एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में नगण, सगण, जगण, फिर समगण, यगण और अंत में लघु-गुरु होता है ।

माळाधरा-सं० पु०—१७ वर्ण का एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में जगण, भगण, जगण भगण व रगण अंत में गुरु वर्ण होता है ।

माळाधार, माळाधारी-वि०—माला धारन करने वाला, पहनने वाला ।

सं० पु०—१ संन्यासी ।

२ वैष्णव ।

३ साधु ।

माळामणियौ, माळा मिणियौ-सं० पु० यौ०—ईश्वर आराधना में फेरी जाने वाली माला का मनिका ।

उ०—१ घर हाला भाई-बेटा मन्नै सदा कैंवता रैता—बदरीजी जावो, अड़सठ तीरथ न्हावो । धरम-पुन्न करो, **माळा मणियौ** फेरौ ।—दस दोख

उ०—२ जे कोई टीका-टमका करै, **माळा-मिणियौ** फेरै, पोथी पांनड़ो उघाड़ै बो: आपरौ मजेरो धाको धिका लेवै ।

—दस दोख

मालाळी-सं० स्त्री०—प्रस्थान के समय बांई तरफ बोल कर शकुन देने वाली चिड़िया ।

उ०—१ बाहर नीसरती काल घणी सखरी **मालाळी** हुई ।

—कुंवरसी सांखला री बात

उ०—२ तिण ऊपरां रूपां **मालाळी** हुई ।

—जैतसी ऊदावत री बात

रू० भे०—माल्हाळी ।

मालाळौ-सं० पु०—१ प्रस्थान करते समय बांई तरफ बोलने वाला तीतर ।

२ बांयी ओर से दांई ओर आकर शकुन देने वाला हरिन (शुभ)

उ०—१ तिकै आछा सांवण मांग्या । तरै पहिली हिरण **मालाळा** हुवा ।—जैतसी ऊदावत री बात

उ०—२ तरां पछै गोरहर **मालाळौ** हुवौ ।

—जैतसी ऊदावत री बात

वि० वि०—उपर्युक्त शकुन (मालाळा) घर से प्रस्थान करते समय शुभ माने जाते हैं और लौटते समय अशुभ माने जाते हैं ।

रू० भे०—माल्हाळौ ।

मालावती-सं० स्त्री०—एक प्रकार की संकर रागिनी । (संगीत)

मालि-सं० स्त्री—[सं०] १ सुकेश राक्षस का पुत्र जो माल्यवान और सुमाली का भाई था ।

२ देखो 'माळा' (रू. भे.)

उ०—तदनन्तरु ऊपेलइ **मालि**, प्रसन्नइ कालि, सुवर्णमय स्थालि, गोरइ भमालि·····················—व. स.

२ देखो 'माळौ' (रू. भे.)

उ०—ते तु नील रतन तणउ, ऊपरलइ **मालि**, मध्यान्ह कालि, केलिपत्रई छाया, इस्या मंडप नीपाया, तलइ मांड्या पाट, ऊपर पाथरचा रेसमी घाट ।—व. स.

३ देखो 'माळी' (रू. भे.)

मालिओ—देखो 'मालियौ' (रू. भे.)

उ०—मणि मांणक मोटा, **मालिआ**, सोना रूपां नी थालियां ।

—कविगुणविजय

मालिक-सं० पु० [अ.] १ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—कहियौ सुणि दूदै 'कंवर', इळा न लैणी और, ले हालो बूंदी लगा, जाण् **मालिक** जोर ।—व. भा.

२ अधिपति, स्वामी ।

उ०—१ **मालिक** काबुल मुलकरौ, कमरौ साजि कटक्क । जंग करण अप जैत हूं, आयौ लांघि अटक्क ।—मे. म.

उ०—२ अर थोडा दिनां में बडा विस्वास रै साथ महानस री **मालिक** होइ चारण री चाकरी में चित लगाइ चातुराई री रीझ चही ।—वं भा.

३ सम्पति या जायदाद का हकदार, वारिस ।

४ पति, खाविंद।

उ०—जठै बढण बाढ़ण नूं बुलावण रो बंब वाजियौ सुण मांगळियांणी मालिक रा उसीसौ हुवौ आपरौ वांमितर बाहू अवेरियौ।—वं. भा.

५ पदाधिकारी, अधिकारी।

६ अध्यक्ष, सरदार।

७ नरक का अध्यक्ष एक देवता।

सं०—८ माली।

उ०—चतुस्पथ राज मारग गंधिका पण दौस्यिका पण सोवरण्णकार कांस्यकार मणिकार पूगीफल तां बूलिक मालिक सौत्रिक...
—व. स.

९ रंगरेज।

१० चित्रकार, चितेरा।

रू० भे०—मालक।

मालिकपणौ-सं० पु०—१ मालिक होने की अवस्था या भाव।

२ स्वामित्व। ३ हकदारी।

मालिका-सं० स्त्री०—१ हार, माला।

२ गजरा।

३ चमेली।

उ०—ताल साल **मालिका**, बकुंल कुबजक खरजूरी बोलसरी माधुरी, निगर भरहरी सनूरी।—रा. रू.

४ शराब, मदिरा।

५ पुत्री, बेटी।

६ अलसी।

७ लता-गुंज।

८ मुरा नामक गंध द्रव्य।

मा'लिछमी—देखो 'महालक्ष्मी' (रू. भे.)

माळिण, माळिणी, माळिन-सं० स्त्री० [सं० मालिनी] माली जाति की स्त्री।

उ०—१ (इसी) जु **मालिण** छै सु वनि वनि रै विखै केसरि चुणै छै।— वेलि टी.

उ०—२ वणि वणि **माळिणि** केसरि वीणति, भूली नख प्रतिबिंब भ्रम।—वेलि.

मालिणी, मालिनी-सं० स्त्री० [सं० मालिनी] १ दुर्गा देवी एक नामान्तर।

२ सात वर्ष की कन्या जो दुर्गा पूजा में दुर्गा की प्रतिनिधि मान कर पूजी जाती है।

३ गौरी।

४ स्कन्ध की सप्त मातृकाओं में से एक।

५ आकाश गंगा।

६ रौच्य मनु की माता का नाम।

७ एक प्राचीन नदी जिसके तट पर शकुंतला का जन्म होना माना जाता है।

८ विभीषण की माता का नाम।

९ अज्ञातवास के समय द्रौपदी का एक नाम।

१० पंद्रह वर्ण का एक छंद जिसके प्रथम चरण में दो नगण, फिर एक भगण अंत में दो यगण होते हैं।

रू० भे०—मालणी।

मालिम—देखो 'मालम' (रू. भे.)

उ०—जळमूक सजळ बीजळ जिसी, धकै खाग खेटक धरी। कर जोड़ जुलम जालिम कथा, कमध मोड़ **मालिम** करी।—मे. म.

उ०—२ वळै हुई तिणवार, महीपति हूं कथ **मालिम**। जुध करि ग्रहियौ जवन, खांन अबदुल खूंदालिम।—सू. प्र.

उ०—३ पवननउं पूर, कूयार्थभउ डोलइ, तिवारइं **मालिम** छांडइ, अकस्मात् धूंअरि पडिवा लागी ···—व. स.

मालियत-सं० स्त्री० [अ०] १ धन, द्रव्य।

२ सम्पत्ति, जायदाद।

३ मूल्य, कीमत।

मालियार—देखो 'मालव गिरी'

मालियोड़ौ—देखो 'माल्हियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मालियोड़ी)

माळियौ, मालियौ-सं० पु०—१ मकान के ऊपरी मंजिल पर बना हवादार कमरा।

उ०—१ सोने नौ रूपै सायबा, ग्रींट पड़वायजी। जिण रा चिणाय दो महल'र **माळिया** जी।—लो. गी.

उ०—२ रे मंदर रे **माळिया**, हिव तुझ डग न भरेस। जिण कारण हम आवता, सो चाल्या परदेस।—अग्यात

उ०—३ राते **माळीयै** सूता। सोनगरां जांणीयौ—परभाते **माळीया** सुं उतरता मारसां।—राव रिणमल री बात

२ ऊपरी मंजिल पर बने महल। (अ. मा.)

उ०—१ अति विसाल दीरध अधिक, सोभत अधिक अनूप। मंदर सुंदर **माळिया**, नानाविध के रूप।—गजउद्धार

उ०—२ सुंदर मंदिर **मालिया**, मुलकंती नेह विलुद्ध। पूरे हाथे पूजियौ, परमेस्वर मन-सुद्ध।—जयवांणी

३ महल, अटारी।

उ०—१ तठै राजा इयै रो रूप देख बहुत राजी हुवौ। नायण ना पण इनाम दे नै फूलमती नु भीतर ले गयौ तठै रात पड़ी जद राजा फूलमती कै **माळीयै** गयौ।—सूरां सतवादियां री बात

उ०—२ गुरड जेम पांखिया नाग अगमांग मे, गौड़ गजबंध धज बंध गोड़े। अवर पंखियां जहीं ताळीयै न उड़ै, **माळियै** सोहियौ प्रिसण मोड़ै।—अनिरुद्धसिंह गौड़ री गीत

४ घर, मकान।

५ दालान।

रू० भे०—माळयौ, मालियौ, मालीड़

मालिस-सं० स्त्री० [फा० मालिश] १ मलने की क्रिया या भाव।

२ शरीर पर तेल आदि स्निग्ध पदार्थ मलने की क्रिया, उबटन, मर्दन ।

३ चमकीला बनाने के लिये की जाने वाली रगड़न।

रू० भे०—मालस,

माळी, माली—सं० पु० [सं० मालिन्] (स्त्री० मालण) १ प्रायः बागवानी या साग सब्जी का उत्पादन व कृषि कार्य करने वाली एक जाति ।

उ०—१ माळी ग्रीखम मांय, पोखि घणौ द्रुम पाळियौ । जिणरौ जस किम जाय, अत धण बूठां ही अजा ।—अग्यात

उ०—२ माळी रौ बेटौ हूं, धूळ अर बूटी देखनै धरती री ठा पटकूं ।—फुलवाड़ी

उ०—३ बूज्यौ धारण मालीडा रौ पूत, बाग बताग्रौ राजाजी रो कुण सो जी म्हारा राज ।—लो गी.

उ०—४ माली तंबोली छींपा परीयट बंधारा तूनारा सोनारा ठांठारा लोहार चमार ।—व. स.

२ उक्त जातिका व्यक्ति ।

उ०—माळी पूछ्यौ—थनै कीं जांच है के अपां कठै आयग्या ? मालण कह्यौ—कोई दस बीस खेतड़ा अळगा, कोई हेमाळी तौ लांघणा सूं रह्या ।—फुलवाड़ी

३ बागवानी का कार्य करने वाला कोई व्यक्ति ।

४ मिट्टी के बने कोठे में छोटी २ वस्तुओं के रखने हेतु बनाया गया कंगूरा, प्राचीर ।

उ०—गुला ! दस रुपिया कोठा री माळी में पड़िया रहता तो इतरौ पाप तो न लागतौ ! इसौ आरंभ क्यूं कीधौ ।—भि. द्र.

५ राजीव-गण नामक छंद विशेष ।

वि०—१ जो माला धारण किये हुए हो, माला-धारी।

[अ] २ माल से सम्बंधित, आर्थिक ।

३ देखो 'माळा' (रू. भे.)

उ०—देखउ तुम्हे असोक माली नव पुरपनी पूजा लगई ।—व. स.

रू० भे०—मालि,

अल्पा०—माळीड़ौ, मालीयड़ौ,

मालीइ—देखो 'माळियौ' (रू. भे.)

उ०—कोए पण तो जांणि नहीं रे तेहना करमनी काहांणी जी । मालीइ त्याहारि बिठी हूतौ राजमाता ते रांणी जी ।—नलाख्यांन

मालीकार—देखो 'माळाकार' (रू. भे.)

माळीड़ौ—देखो 'माळी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—बूजौ भंवरजी माळीड़ा रौ पूत ऐजी औ मायला, म्हांनै बाग बताग्रौ असल कलाळ रौ जी म्हारा राज ।—लो. गी.

मालीत—सं० स्त्री०[अ० मालियत] द्रव्य, सम्पति, धन ।

उ०—१ सिवलाल के दली की उकीलायत, त (अ) ने बावन कलां रौ कांम, कोड रुपियां की ध (ध) रे नगद मालीत ।

—मयारांम दरजी री वात

उ०—२ म्हे घण मालीत ले आप कनै हीज आयौ छुं । तरै हरकरै पूछियौ—ठाकुरां मो बताड़जै,जो मांहरौ पण मन राजी होऐ । तरै आप जांध चीर रतन बताड़िया ।—कल्यांणसिंह वाढेल री वात

माळीपनौ, माळीपन्नो—सं० पु०—किसी धातु विशेष (संभवतः लोहा) से निर्मित अत्यन्त बारीक पत्र जो तेल सिन्दूर के साथ हनुमानजी, माताजी, भैरूंजी आदि देवि देवताओं की मूर्तियों पर चिपकाये जाते हैं ।

उ०—पण तौडौ मन में आछी तरै जांणतौ हौ के जे देगची में आज औ जीव नीं व्हैतौ तौ उणरी मौत ही । सगळा माळीपन्ना उतरतः जका तौ उतरता ई पण आज मरणा में घाटौ नीं हौ ।

—फुलवाड़ी

मुहा०—१ माळीपना उतरणा=बेइज्जती होनी ।

२ माळीपना चाढणा=देवि देवताओं की पूजा करना, आडम्बर करना ।

३ माळीपना लागणा=पूजा होनी, आदर सत्कार होना ।

मालीबापची—सं० स्त्री०—एक प्रकार क्षुप जिसके बीज विशेष कर रक्त शोधक माने जाते हैं ।

रू० भे०—माळीबापचौ

माळीबापचौ—देखो 'माळीबापची' (मह., रू. भे.)

मालीयड़ौ—देखो 'माळी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—माळीयडा तूं मोकलि, अह्मनई कुसुम अनीठ । फेरी फेरी फूलडै, पगर भरेस्यूं पीठ ।—मा. कां. प्र.

मालु—सं० स्त्री० [सं०] १ स्त्री, औरत ।

२ एक लता विशेष ।

मालुधांन—सं० पु० [सं० मालु+धानः] १ आठ प्रमुख नागों में से एक । (पुराण)

२ एक सर्प विशेष ।

३ महापथ ।

मालुपड़ौ—देखो 'मालपूओ' (रू. भे.)

उ०—पांचवो मास उलरियो ए जच्चा मालुपड़ै मन जाय । छटो मास उलरियो ए जच्चा घेवरिये मन जाय ए ।—लो. गी.

मालुम—देखो 'मालम' (रू. भे.)

उ०—तथा स्री चंद फरजंद परतू तणौ, पाय संकट घणौं खुड़द पूगो । कसट सहियो जिकौ हाल मालुम कियौ, हाल कहियो अतै ब्हाल हूगो ।—मे. म.

मालूपौ—देखो 'मालपूओ' (रू. भे.)

मालूम—देखो—'मालम' (रू. भे.)

उ०—१ मिळतौ मंगण नूं कहै, मुदौ करूं मालूम । मारग लागौ मत टिको, हाजर नाजर सूंम ।—बां. दा.

उ०—२ दायजै री डरावणी वातां अर कालेज री ख्यातां में रात-दिन रौ अंतर है,मनै-पोत ही मालूम हुयो है के—आजकालै रा ब्याह-मावा, एक अथोग आफत रौ मोरचौ है ।—दसदोख

मालूर-सं० पु० [सं] १ बिले का वृक्ष। (अ. मा.)
२ केथं का पेड़।

मालेकम सलाम-सं० पु० यौ०—ईश्वर सम्बन्धी अभिवादन,दुआ-सलाम, राम राम।
उ०—सबको है मालेकम-सलाम, अब जल्दी कीजे कतल आम। —ऊ. का.

मालेरियौ-सं० पु०—रहट के अन्दर लगने वाला लकड़ी का एक डंडा, जो माल को सुचारू रूप से चलाने का कार्य करता है।

मालोच-सं० पु०—१ आव भगत, आदर-सत्कार।
२ उपचार।

मालोपमा-सं० स्त्री०—उपमा अलंकार का सातवां भेद जिसमें एक ही उपमेय के लिये अनेक उपमानों का गुम्फन होता है। एक ही उपमेय को उपमानों की माला पहनाई जाती है।
रू० भे०—मालोवम

मालोमाल-सं० पु० [फा० मालामाल] धन से परिपूर्ण, सम्पन्न।

मालोवम—देखो 'मालोपमा' (रू. भे.)
उ०—तासु पट्टि जिणचंद सूरि, गुणमणि रोहण सम। विहिय जेण संवेग-रंग-साला मालोवम।—धरमकलस मुनि

मालोहड़-सं० पु०—जैन धर्मानुसार एक दोष जो, ऊपर,नीचे या तिरछी रखी हुई वस्तु को पीढा या सीढ़ी लगा कर उतार कर साधु को देने से लगता है।

माळौ, मालौ-सं० पु० [अ० महल] १ पक्षियों का घोंसला नीड़।
उ०—१ पंचे देखि नै कह्यो कुरदांतळी रा ईंडा ल्यावै तैरी वडाई। ताहरां एकै पीपळ रौ माळौ हेरि नै आया।—चौबोली
उ०—२ कमरा कचरा सूं भरचा पड़चा हा अर ठौड़-ठौड़ काळतरां रा जाळ अर पंखेरुग्रां रा माळा हा।—रातवासौ
उ०—३ वरस सीम कांउसग रह्याउ, वेलड़िए वींटांणाउ रे। पंखी माळा मांडिया, सीत तावड सोखांणाउ रे।—स. कु
२ खेत की रखवाली करने या शिकार करने के लिये किसी पेड़ पर बनाया जाने वाला मचान, मंच।
उ०—सो ऊंची जायगा देखि ब्राह्मण माळौ घाल्यो। सो उवौ ब्राह्मण जद माळा ऊपर चढै तद उदार मन होय अर उत्तरै तौ कपण रौ क्रपण।—सिंहासन बत्तीसी
३ तलवार में संधि या जोड़ जो मूठ के पास होता है।
४ देखो 'मल्लौ' (रू. भे.)
रू० भे०—माळि, माहालइ, माहालौ,

माल्य—देखो 'माळा' (रू. भे.)

माल्यवत, माल्यवांन-सं० पु० [सं० माल्यवत] १ सुकेश नामक राक्षस का जेष्ठ पुत्र एक राक्षस, जो रावण का मातामह एवं सभासद था।
२ पुष्पदंत नामक गंधर्व का पुत्र।
३ इलावृत वर्ष एवं केतुमाल के बीच का एक पर्वत। (पौराणिक)
वि०—जो माला पहने हुए हो।

माल्हण-सं० स्त्री०—एक देवि का नाम जो दूल्हेराज बारहट की पुत्री थी।
उ०—बजै माल्हणा मात तू ही बिराई. बळू तू प्रथीराज रै राजबाई।

माल्हणौ, माल्हबौ-सं० स्त्री०—१ मस्ती में झूमना, झूमते हुए चलना।
उ०—माल्हतौ धरि आंगणै सखी सहेलो ग्रांमि। जो जांणू पिय माल्हणौ जे मल्है संग्रामि। ग्रांमि संग्रामि झूंझार माल्है गहड़, अरि घड़ा खेसवै आप न खिसै अनड़। घाइ भांजै घड़ा खाग आछै घणी। मेर मांझी जसो हेक रिण माल्हंणौ।—हा. झा.
उ०—२ धूणीयो चोधार धारी, वीजळता वारी। खँड दळ खँड पती, माल्हीयो मयंद गती।—गु. रू. बं.
उ०—३ सुहड़ रजपूत तौ इण सरदार रा मतवाळा हुवोड़ा घूमै वा माल्है आगा पाछा फिरै छै।—वी. स. टी.
उ०—४ हंस गति जिम चालती, मयगल जिम माल्हती, कांमिनी गरव भांजती……।—व. स.
२ आनन्द करना, मौज करना।
उ०—१ तुम्हथी कुण मुझनइ वाल्हूं, हुं तउ तुमहिज ऊपरि माल्हुं हो।—वि० कु०
उ०—२ मद्यप जिम पदि पदि स्कलतउ लीलां चालतउ, रंमसि माल्हतउ क्रीडा खेलतु, सूरकार मेल्हतउ'''।—व. स.
३ उप भोग करना, भोग करना।
उ०—लीलइं केलि घणी,घणी प्रिय तणी केडइ लगी लाजती। वीसइ ते रति माल्हती, मयण नी पूठिइं जिसी आवती।
—प्राचीन फागु संग्रह
४ मंदगति से निर्भय चलना।
उ०—१ कवि सुभड़ां करि कुरब, सभै आणंद समाजा। मगज धार माल्हियौ, राजमिंदर महाराजा।—सू. प्र.
उ०—२ मभी समर बीर नारद अछर माल्हिया। माल्हिया वयंडचर समर मांहै।—राव बुधसिंह हाडा रौ गीत
५ जन्म लेना, अवतार लेना।
उ०—मांमड रै माल्हिया, नांव आवड़ नैं आई। आई रौ अवतार, हुआ करनळ मेहाई। मे. म.
६ मस्ती में बोलना, झूमना, मस्त होना।
उ०—पण पारबती रौ अवतार आ सुगन चिड़ी तो परदेसां जावता डावै माल्है है। पछै कोकर आगै बधणी आवै।—फुलवाड़ी
७ मंडराना।
उ०—परिमल बहकती मालती, माल्हती भमरनी स्रेणि। प्रीयडा सरण निहालग्रो, वालग्रो रूपडु जेणि।—प्राचीन फागु संग्रह
८ व्याप्त होना, जागृत होना, उद्दीप्त होना।
उ०—जिम जिम पसरइ साल ए माल्हइं तिम तिम कांम। निय परिमळ गुण पाडल, लाड लहइं अभिरांम।—प्राचीन फागु संग्रह
९ विध्वंस करना, नाश करना।

१० अस्त व्यस्त करना।

११ मलार राग गाना।

माल्हाळी—देखो 'मालाळी' (रू. भे.)

उ०—बाहर पधारतां नेकाळ धणी सखरी मनमानी माल्हाळी हुई। ऊपरा तुरत लाभ री सांमूणी हुई।—कंवरसी सांखला री वारता

माल्हणहार, हारौ (हारी), माल्हणियौ—वि०

माल्हिग्रोड़ो, माल्हियोड़ौ, माल्ह्योड़ौ—भू० का० कृ०

माल्हीजणो, माल्हीजबौ—कर्म वा०

मालणो, मालबौ, माहालणौ, माहालबौ—रू० भे०

माल्हाळौ—देखो 'मालाळो' (रू. भे.)

उ०—खुदाई-खुदाई तोब तोब करतउ नाठउ, जातउ गणउ, धाठउ माल्हाळा हिरण तणी परिनाठउ।—रा. सा. सं.

माल्हियोड़ौ—भू. का. कृ.—१ मस्ती में झूमा हुआ, झूमते हुए चला हुआ।

२ आनन्द किया हुआ, मौज किया हुआ।

३ भोग किया हुआ, उपभोग किया हुआ।

४ मंद गति से निर्भय चला हुआ, घूमा हुआ।

५ जन्म या अवतार लिया हुआ।

६ मस्ती में बोला हुआ, झूमा हुआ, मस्त हुवा हुआ।

७ मंडराया हुआ।

८ व्याप्त, जागृत व उद्दीप्त हुवा हुआ।

९ विध्वंस व नाश किया हुआ।

१० अस्त व्यस्त किया हुआ।

११ मलार राग गाया हुआ।

(स्त्री० माल्हियोड़ी)

रू० भे०—**मालियोड़ौ**

मावड़—देखो 'माता' (मह., रू. भे.)

उ०—**मावड़** बैठी थेपड़ै ने हियौ हुलराय। दूध पियां ने दो दिन हुयग्या नींद कठा सूं आय।—चेत मांनखां

मावड़ली—देखो 'माता' (अल्पा', रू. भे.)

उ०—**मावड़ली** बिना धीवड़ली निरधार। **मावड़ली** बिना हो बापजी सूनो संसार।—लो. गी.

मावड़ियां—देखो 'मावलियां' (रू. भे.)

मावड़ियौ—वि० [सं० मातरि पुरुष] १ जो केवल घर में ही (अपनी माता आदि के सामने) वीरता की बातें करता हो, कायर, डरपोक।

उ०—१ पायौ किण धनवंत पद, दांमै डावड़ियांह। कवियण किन पायौ कुरब, मांगै मावड़ियांह।—बां. दा.

उ०—२ होस उड़ै फाटै हियौ, पड़ै तमाळा आय। देखे जुध तसवीर द्रग, मावड़िया मुरझाय।—बां. दा.

उ०—३ गरबै फोड़ै कुंभगज, घणबळ धावड़ियांह। पापड़ फोड़ पोमावही, मन में मावड़ियांह।—बां. दा.

२ जिसका स्वभाव तथा हाव-भाव स्त्रियों जैसा हो।

उ०—१ **मावड़ियां** अंग मोलियां, नाजुक अंग निराट। गुपत रहै ऊमर गमै, खाय न निजबळ खाट।—बां. दा.

उ०—२ कर मुख दे लचकाय कट, झनक चलै सुर झीण। मावड़ियौ महिला तणी, मारै रोज मलीण।—बां. दा.

३ सदा माता के पास रहने वाला।

उ०—जाय नवोढ़ा सासरै, आंसू नांख उसास। **मावड़िया** जावै गुहम, इण विध हुवै उदास।—बां. दा.

मावड़ी—देखो 'माता' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ भागळ भारथ भीड़ में, बांणी सह बिसरंत। मुख बापुड़ो **मावड़ी**, भाईड़ो भाखंत।—बां. दा.

उ०—२ मैं तो मरूं के जीवूं म्हारी **मावड़ी**। ऐ तो कमधजियै बोल्या हे रे बोल।—लो. गी.

उ०—३ सांम्हउ जो इकवार मन वालइ थारी **मावड़ी** जी हो। नांण्यउ नेह लगार सालि भद्र सांम्हउ जोयउ नही जी हो।—स. कु.

उ०—४ म्हारो बूढ़ो बाप, म्हारी बूढ़ी **मावड़ी** अर म्हारा सादयूं भाई म्हारा- नांव नैं रोय रोय मरग्या व्हैला।—फुलवाड़ी

मावड़्यां—देखो 'मावलियां' (रू. भे.)

मावजाणो, मावजो—देखो 'मुआवजो' (रू. भे.)

मावट,—देखो 'मावठ' (रू. भे)

मावटी—सं० स्त्री०—स्त्रियों का एक आभूषण।

उ०—मागि भरइ सरि मावटी मस्त किं भरीया खुप। भमहडीए भमरा भमई चांद्र यसउ मुखरूप।—मा. कां. प्र.

मावटौ, मावठ, मावठौ—सं० पु० [सं० माघ-प्रावृष्] हेमंत ऋतु या माघ मास में होने वाली साधारण वर्षा।

उ०—मावट पोवट मध्य, गुलम गण कूंपळ काढ़ै। नेसावरिया डगा, घणेरा घुरड़ै वाढ़ै।—दसदेव

रू० भे०—मावट, माहट, माहवठउ, माहुटि

अल्पा—माहावठी,

मावडी—देखो 'माता' (रू. भे.)

उ०—रांतिल मोरी **मावडी**, हुं छउं तोरू बाल। परिपरि पीडाती गणी, स्वांमिनि करि संभालि।—मा. कां. प्र.

मावणी, मावबौ—क्रि० अ० [अ० समाना] १ किसी घेरे या क्षेत्र में आजाना, समाजाना।

उ०—१ जिकण नूं मीणां रा मारण रो निश्चय जणाइ उण रो बडौ पुत्र कुंभराज १ तिण हूं छोटो कन्हड़ २ यां दो ही बधवा नूं बड़ी बरात रै साथ बरण नूं बुलाई मीणां रै मावण जिसड़ौ एक १ बाडो जुदो बणायौ।—वं. भा.

उ०—२ सटा न मावै बाथ में, फलंग अटा गरकाव। पेख छटा सूर्कपटा, सिंधुर घटा सताब।—बां. दा.

२ सीमा में रहना।

उ०—१ इंद्र धनुख तणियौ अजब चातुक धुन मन चाव । बीज न मावै बादळां, रसिया तीज रमाव ।—बां. दा.

उ०—२ पग झीणा अर ऊजळा गाभां रै ओलै बूढ़ापो कद मावै ।
—दसदोख

३ खटना, रहना ।

उ०—बेटी किसी घर में थोड़ी मावै दोरी-सोरी फेरी तो देणी ही पड़सी ।—दसदोख

४ निभना ।

५ सहन होना ।

६ हजम होना ।

मावणहार, हारौ (हारी), मावणियौ—वि० ।

माविओड़ौ, मावियोड़ौ, माव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मावीजणौ, मावीजबौ—भाव वा० ।

माणौ, माबौ—रू० भे० ।

मा'वत—१ देखो 'महावत' (रू. भे.)

उ०—१ मुजरो कर मा'वतां आवत सबीया अधारै । यार बीन बी खुदाय, साहयली अला उचारै ।—बखतौ खिड़ियौ

उ०—२ नेम कहै मावत भणी रे ए जीव किण काजो । बलतौ बोले सारथी रे, सांभल जो महाराजो ।—जयवांणी ।

२—देखो 'माईत' (रू. भे.)

उ०—वण सगे वण सागवे, वण नातरिए नेह । वण मावत रे जीवीये, तूं वण मरी ए मेह ।—जेठवौ

मा'वतससतर-सं० पु० [राज० महावत+सं०शस्त्र] हाथी को हांकने का शस्त्र, अंकुश । (डिं. को.)

मा'वथ—देखो 'महावत' (रू. भे.)

उ०—विगर मा'वथ हाथी लड़ै ।—जयवांणी

मावर, मा'वर—देखो 'महावर' (रू. भे.)

मावलियां-सं० स्त्री० ब. व. [सं० मातृका] एक प्रकार की सप्त देवियों का समूह जो लोक देवियां मानी जाती हैं। बालकों के रोगों में इनके प्रकोप का कारण माना जाता है ।

वि० वि०—महाभारत (वन पर्व अध्याय १२८) में स्कंद मातृकाओं के रूप में इनका विस्तृत विवरण देते हुए सप्त शिशु मातृकाओं के नाम इस प्रकार से दिये हैं:—काकी,हरिमा,मालिनी, बृंहता, आर्या, पलाला और वैमित्रा ।

अध्याय २३० में अन्य प्रकार से वर्णन करते हुए लिखा है कि सप्त ऋषियों ने जिन पत्नियों का त्याग कर दिया था, वे सब स्कंद के पास पहुंची । उनकी प्रार्थना पर उन्हें मातृकाओं के रूप में स्वीकार किया । इन्होंने स्कंद से कहा कि "ब्राह्मी, माहेश्वरी आदि लोक माताएं जो पहले से ही मानी जाती हैं वे अपना स्थान छोड़ दे और इनके स्थान पर हमारी पूजा हो । उन्होंने हम पर मिथ्या अपवाद लगाकर हमें संतानवाली नहीं होने दिया इसलिये इन माताओं की संतान हमें खाने के लिये सौंप दी जाय ।" स्कंद ने इनकी प्रार्थना स्वीकार की परन्तु साथ ही उनसे उक्त संतानों की रक्षार्थ भी प्रार्थना की इन मातृकाओं ने स्कंद को संतानों की रक्षा का वचन दे दिया । तदनन्तर स्कंद ने इनके आवास के लिये स्कंदापस्मार नामक ग्रह समूह बनाया एवं यह तय किया कि वे बालकों पर सोलवें वर्ष तक ही बाधा दे सकेंगी ।

ये शिव और अशिव दो प्रकार की मानी जाती हैं । अत: इनके पूतना, शीत पूतना, शकुनि,रेवती, मुख मण्डिका, सरमां आदि नाम भी प्राप्त हैं।

कुमार गुप्त प्रथम के एक शिला लेख में मातृकाओं एवं डाकिनी आदि का वर्णन मिलता है ।

बृहत्संहिता के टीकाकार उत्पल ने मातृकाओं में ब्राह्मी, वैष्णवी, माहेश्वरी, कौमारी, ऐन्द्री, यामिनी, वारुणा आदि नाम गिनाए हैं । रूप मंडन के अनुसार पहले बीर भद्र की मूर्ति होनी चाहिये उसके बाद मातृकाओं तथा अंत में विनायक की ।

इसी प्रकार अन्य पुराणों में भी मतृकाओं का उल्लेख है । ऐसा प्रतीत होता है कि मातृकाओं के दो स्वरूप थे । एक पौराणिक और दूसरा लोकिक । पौराणिक रूप में ब्राह्मी, माहेश्वरी आदि की गणना की जा सकती है और लोकिक में अन्य देवियों की । ये दोनों रूप आरम्भ में एक दूसरे से भिन्न रहे होंगे, परन्तु कालान्तर मे एक हो गये ।

पर्या०—ऊपर लियां, बायांसा, बीजासणियां, मेलड़ियां, रेंवतियां, रू० भे०—मावड़ियां, मावड़्यां

मावळिआई-भाई-सं० पु० यौ०—सहोदर भ्राता ।

मावली-सं० स्त्री—१ दक्षिण भारत की एक पहाड़ी वीर जाति ।

२—देखो मावलियां (ब. व.) उ०—चावळां भरियो वाटको ओ बहू, थे कित चाल्या जी राज । आज म्हारा मावली मंढ में विराजे-म्हे धोकण पूजण जाय विजासण हरख होलरियौ जी राज । आज म्हारी मावली मढ में विराजे ।—लो. गी.

३—देखो माता (अल्पा., रू. भे.)

मावस—देखो 'अमावस' (रू. भे.)

उ०—ज्ञांन सबद सति अरथ बिचारे, मावस मन का मैल उतारे ।
—ह. पु. वां.

मावसी—देखो 'मासी' (रू. भे.)

उ०—नहीं म्हारी माय न मावसी हो राजा । कुण म्हारो आंणो लई जाय ।—लो. गी.

मावस्य—देखो 'अमावस' (रू. भे.)

मा'वारुणी—देखो 'महावारुणी' (रू. भे.)

मावाळी-सं० स्त्री—मिट्टी के बर्तन की वृद्धि के निमित्त उसके ऊपर लगाई जाने वाली मिट्टी ।

मावित, मावित्र, मावीत—देखो 'माईत' (रू. भे.)

उ०—१. छोरू हुवे केई खोटा रे, पिण मावित सदा होवे मोटा रे ।
—जयवांणी

उ०—२ वरजइं ताइ सती ध्यांन बइठी वळि, परम दयाळ किसी परवाह। मिस ईण मिळवा मावीतां, चींत सती चइ लागउ चाह।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ तां उपरि राजा भोज एक डंको दीयो। ताहरां चौबोली रा मावीत सहर लोक सरब खुसी हुवा।—चौबोली

उ०—४ मावीत्र ग्रजाद मेटि बोलै मुखि, सुवर न को सिसुपाळ सरि। ग्रति ग्रंबु कोपि कुंवर ऊफणियो, वरसाळू वाहाळा वरि।
—वेलि

मावीलपण, मावीतपणौ—देखो 'माईतपणौ' (रू. भे.)

मावीती-सं० स्त्री०—१ वात्सल्य, प्रेम।

२ ग्रपने से छोटे के प्रति दया या रक्षा का भाव, संरक्षण ग्रभिभावकत्व।

उ०—पांचो ग्राठो दस पनरो खूपड़िया, सतरै बीसै हय खतरै में पड़िया। कालप चावीकर भावी भुज भेटी, मोटा मोटा री मावीती मेटी।—ऊ. का.

मावीत्र—देखो 'माईत' (रू. भे.)

उ०—१ प्रायै छोरु न लहै सार, मावीत्रां नी किणही वार। पिण मावीत्र तपै दिन राति, पांणी वल विरही न खमात।—वि. कु.

उ०—२ उछाह करइ मावीत्र ग्रनोपम, चढ़इ नहीं के बीजा चीत। ग्रादिग्रा सकत तणी गति ग्रसड़ी, ऊगो ग्रहां विचइ ग्रादीत।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०— ३ मावीत्रै पहिलउ वीवाह, बाळपणइ कीधउ उच्छाह। हूं परण्यउ जाणुं ही नहीं, तेह वात सहु वीसरि गई।—ढो. मा.

मावौ-सं० पु० [सं०मंड] १ दूध को ग्रोटा कर बनाया जाने वाला खोग्रा।

उ०—१ पोढ़ै तेण वखत ग्रप पावै। महखी दूध सवांमण मावै।
—सू. प्र.

उ०—२ पेम पीयाला पीजीयै, मावा करि भरिपूर। जन हरीया पीयां पछै, विखै विलासा दूर।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

२ किसी वस्तु का सार-भाव, तत्व।

३ किसी प्रकार का मसाला, सामग्री।

४ ग्रोषधि विशेष।

उ०—दीपक लोय ग्रांच सम दीजै। दिन तेरमैं खोल देखीजै। ग्रोपम काच भळक ग्रधिकावौ, मिळ जल जड़ी बंधै तिण मावौ।
—सू. प्र.

५ ग्रफीम का नशा।

उ०—मूंछां गालड़िया सेडै में भरिया, उबासा लेवैं मावा ऊतरिया।
—ऊ. का.

६ एक बार मैं ली जाने वाली ग्रफीम की मात्रा, खुराक।

उ०—ग्रमली ठाकरड़ा डेरा में ग्रावै, मोटी घसकां घड़ मावा मटकावै।—ऊ. का.

७ कद्र, इज्जत।

उ०—जबांन री मावौ क्यूं घटावे।

८ प्रकृति।

९ रस, प्रेम।

मास-सं० पु० [सं०] १ वर्ष का बारहवां भाग या ग्रंश, महीना।

उ०—१ बारै मास लगै सदा, नील हरी जिहां दीसै रे। फल फूलै छाइ घणु हीयड़ो देखी हीसै रे।—वि. कु.

उ०—२ दिन गुड़तां कांई वगत लागै। ग्रा तो ठैरण वाळी चीज कोनीं। पल, घड़ी, दिन, मास ग्रर बरस बीततां-बीततां, सोळै वरस हां करता लोप व्हैगा।—फुलवाड़ी

उ०—३ विनां नीर जांह कवल है, विन विरखा वरसाळ। विनां मास जांह रुत है, मात पिता विन बाळ।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—४ ग्राव्यौ मास वसंत रे रलीयां रो राजा, सुख द्यो साजा, तरु होइ ताजा।—वि. कु.

२ ग्रवधि, समय।

उ०—दिन-दिन डोहला पूरतां, बोल्या पूरा मास। सुत जायो रलियांमणो, सहुनी पूगी ग्रास।—वि. कु.

३ ऋतु।

४ बारह की संख्या। ··· ✽ (डि. को.)

५ देखो 'मांस' (रू. भे.)

उ०—जा घट वेदन विरह की, लोहू चढ़ै न मास। हरिया मिळबो पीव सुं, वसिबो धीगां पास।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—मासउ, मासि, मासे

ग्रल्पा०—मसवाड़ौ, मसवाडउ, मासड़ौ,

मासउ—१ देखो 'मासौ' (रू. भे.) (उ. र.)

२—देखो 'मास' (रू. भे.)

मासक-सं० पु० [सं० मासकः] १ महीना, मास।

२—देखो 'मासूक' (रू. भे.)

३—देखो 'मासिक' (रू. भे.)

४—देखो 'मासौ'

मा'सकति, मा'सक्ति -देखो 'महासक्ति' (रू. भे.)

मासकल्प-सं० पु०—चातुर्मास के ग्रलावा उन्नीस दिन की ग्रवधि जिसमें साधु को एक ही स्थान पर रहना पड़ता है। (जैन)

उ०—पातसाह ग्रकबर के मांनै, जिहां स्री जिन सिंह सूरि। मासकल्प राखै ग्राग्रह करि, थांनसिंह साहि सनूरि'—स. कु.

मासक्षमण, मासखमण-सं० पु० यौ०—एक महीने तक किये जाने वाले व्रत। (जैन)

उ०—१ मूलदेव मुनिवर पड़िलाभ्यउ, मासक्षमण ग्रणगार जी।
—स. कु.

उ०—२ जद स्वांमीजी साधां नें कह्यो—मासखमण इहां रहिवा रा भाव है।—भि. द्र.

मा'सगती—देखो 'महासक्ति' (रू. भे.)

मासड़ो—१ देखो 'मास' (अल्पा., रू. भे.)
२—देखो 'मांस' (अल्पा., रू. भे.)

मासती–सं० पु०—अपने पुत्र को गोद में लेकर सती होने वाली माता, महासती। वीर पुत्र के साथ सती होने वाली माता।
उ०—निज पती भगा तो म्रत्यु रै समैं सत करने साथ खांमंद रौ कहूं नहीं सूनू टाळ बेटा रौ भरोसौ है। म्हारौ दूध पीयौ है जुद्ध में मरसी तद इण लारै सत्य कर मासती कहाव सूं......वी. स. टी.
रू० भे०—मांसती

मासदिवस–सं० पु०—१ एक मास की अवधि।
२—तीस की संख्या। * (डिं. को.)

मासद्ध–सं० पु०[सं० अर्द्धमास] एक पक्ष, आधा मास।

मासपदो–सं० पु०—एक वस्त्र विशेष।
उ०—चूडाभाति सकलात पोतु तास्तु नील नैत्रां बासत्था, मिसरु बासत्था, कद दोकद चुपदा मासपदा तनुबंध, सरबंध, कमरबंध मगवनां कमलवनां''''''व. स.

मासपरणी–सं० स्त्री० [सं० माष+पर्णी] जंगली उड़द जो वैद्यक के अनुसार बलवर्धक व शीतल औषधि मानी जाती है।

मासफळ–सं० पु० [सं० मास-फलः] १ वह पत्र जिसमें मास भर का शुभाशुभ फल लिखा हो।
२ मास का शुभाशुभ फल।

मासवारो–सं० पु०—प्रसूता द्वारा एक मास के उपरांत किसी शुभ दिन को किया जाने वाला स्नान।

मासांत–सं० पु० [सं० मास+अंत] १ महिने का अन्तिम दिन।
२ महिने का अंत।
३ सक्रांति।
४ अमावस्या।

मासाअल्लाह–सं० पु० (पद) [अ० माशाअल्लाह] व्यंगात्मक रूप में की जाने वाली तारीफ, वाह-वाह।

मासाधिप–सं० पु० [सं० मास+अधिपति] वह ग्रह जो मास का स्वामी हो, मासेश।

मासाब–सं स्त्री०—माता साहिबा, माता तुल्य स्त्री के लिये आदर सूचक सम्बोधन।
उ०—धर साहम कुलधियां पुणै सासूंसू पिआरी। मत कळपौ मासाब एम रचना विधना री।—पा प्र.

मासस–सं०पु० [सं० मास+आशः] घोड़ा अश्व।

मासि—१ देखो 'मास' (रू. भे.)
उ०—फागुण मासि वसंत रुत, आयउ जइ न सुणेसि। चाचरिकइ मिस खेलती, होळी झंपा देसि।—ढो. मा.
२—देखो 'मासी' (रू. भे.)

मासिक–वि०—१ मास का, मास सम्बन्धी
२ मास में एक बार होने वाला।
सं० पु०—किसी कार्य का प्रति मास नियमित रूप से चलने वाला क्रम।
रू० भे०—मासक,

मासिकधरम, मासिकधरम्म–सं० पु०—प्रायः एक मास की अवधि पर्यन्त स्त्रियों के होने वाला रजो स्राव।

मासियाइ, मासियात, मासियाळ, मासिहाई–सं० पु०[सं० मातृष्वस्रीय] मौसी की संतान। (भाई/बहन) (उ. र.)
उ०—ठाकुरसी ईसरदास उदैराज रांणी सूरजमल मासियाळ भाई हुतो।—बा. दा. ख्यात
वि०—मौसीका, मौसी सम्बन्धी।
रू० भे०—मासीयाई, मासीयात, मास्याई, मास्याही

मासी–सं०स्त्री० [सं० मातृष्वसा, पा० मातुच्छा, प्रा० मउच्छा माउसिआ] १ मां की बहन, मौसी। (उ. र.)
उ०—मासी आगलि मांडीनि सघली कही तें वात। सुबाहु सोक करि घणु, घणूं इ कहचू देई मांन।—नलाख्यांन
२ मौसी के रूप में मानी जाने वाली।
उ०—१ मकोड़ी कह्यौ—मालण मासी, यू बांसड़ा सूं कांई हार पोवै, म्हारी सूई ले लै।—फुलवाड़ी
उ०—२ ऊंदरा मिनकी री श्री खिलको देखियौ तौ उण नै पूछयौ मिनी मासी औ कांई नवौ तोतक रचायौ।—फुलवाड़ी
३ बनास नदी की एक सहायक नदी जो जयपुर रियासत में पचेवर के पश्चिम १० मील बह कर ५० मील की दूरी पर बांडी नदी में जाकर मिलती है। (वीर विनोद)
रू० भे०—मांवसी, मावसी, मासि,

मासीयाई, मासीयात—देखो 'मासियाई' (रू. भे.)

मासीसासु–सं० स्त्री—सासु की बहिन।

मासीसुसरो–सं० पु०—सासु का बहनोई।

मासीसौ–सं० पु०—मृतक के पीछे प्रति मास मृत्यु तिथि को दिया जाने वाला ब्राह्मण-भोज। (कायस्थ)

मासुधाकर–सं०पु० [सं० महा-सुधाकर] चंद्रमा।

मासुरी–सं० स्त्री० [सं०]१ दाढ़ी
२ मूंछ
उ०—इण रीति प्रामारां रा सहाय काज सोभति रा खेत में जय रा दुंदुभी घुराय प्रथ्वीराज रा बीरां भूंहारै भेड़ैं मासुरी लोम आविया।—वं. भा.
रू० भे०—मासूरी

मासूक–सं० पु० [अ० माशूक] (स्त्री० मासूका) १ प्रियतम, प्रेमी।
उ०—भळका नगा तेणूं दा यार, मासूक दा आसकां दे दिल नूं।
—रसीलैराज रौ गीत
२ प्रेम पात्र
३ जिसके साथ प्रेम किया जाय।
रू० भे०—मासक, मास्यूक

मासूकी–सं०स्त्री०[अ० मा'शूकियत]१ 'मासूक'होनेकी अवस्था या भाव ।
२ प्रेम पात्रता । नाजोअंदाज, हाव भाव ।

मासूम–वि० [अ० मा'सूम] १ जो निर्दोष हो, दोषरहित ।
२ जिसने कोई पाप नहीं किया हो, निष्पाप ।

मासूरी—देखो 'मासुरी' (रू. भे.)

मासूल—देखो 'महसूल' (रू. भे.)
उ०—१ पीछै ऐ 'पूलो'वगैरै साराई नरसिंघ सूं मिळिया, अरु कयौ, 'म्हारौ बदळी थेरावौ थांनूं बा'रै महीनां में इतरौ मासूल भरस्यां'। —द. दा.
उ०—२ तठै वेढ हुई। तिण मैं जोइया भागा वा वहलोल पकड़यौ गयौ। दरबार री फतै हुई। अरु नदी सतळज ताई मासूल साफी। —द. द.

मासोतम,मासोत्तम–सं०पु०[सं०मास+उत्तम]१ उत्तम मास,श्रेष्ठ मास ।
उ०—१ बारौ संवत पेख, निसचै वरख निनांणमैं। पावू जनम संपेख, मासोतम फागुण सुकर ।—पा. प्र.
उ०—२ मासोत्तम वैसाख में, गढ़ जाळंधर हूंत । रांणी पधरावी सहर, साथै कुंवर सपूत ।—रा. रू.
२ अधिक मास ।
३ मल मास ।

मासौ–सं० पु० [सं० माषः] १ तोले का बारहवां अंश, एक मान, जो आठ या छः रत्ती के बराबर होता है। इससे सोना, चांदी आदि बहुमूल्य वस्तुएं तोली जाती हैं।
उ०—सज्जन, संपत विपत में, जे झूरै ते कूर। मासौ घटै न तिल वधै, जे विध लिख्या अंकूर ।—अज्ञात
२ मौसी का पति, माता का बहनोई ।
रू० भे०—मासउ,

मास्याई, मास्याही—देखो 'मासियाई' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—'स्रेणिक' राय नौ दीकरौ, हुंतौ मास्याई भाय । 'कोणिक' चंपा नौ धणी, रह्यौ समीपे जाय ।—जयवांणी

मास्यूक—देखो 'मासूक' (रू. भे.)
उ०—निजरांदे मारे मर गये मास्यूकां। हो मास्यूकां तुझ कूं एता दरद न्हीं आया ।—रसीलै राज रो गीत

माह–सं० पु० [सं० मास, प्रा. माह] १ महीनां, मास ।
उ०—तकै भादवी माह ऊगांत–तिथ्थी। पड़ै माय रै पाय प्रत्थीप प्रथ्थी ।—मे. म.
२—देखो 'माघ' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—१ पड़िया आसुर पांच सौ,घायल हुवा हजार। माह उजाळी सपतमी, वेढ़ सनीसर वार ।—रा. रू.
उ०—२ दुपहरा की वरीयां ऐसौ नीजण होय गयौ छै जु कोई मनुस्य फिरै डोलै न छै, कैसी भांति जैसी माह की राति होय। मेघ बरसतौ होय ।—वेलि. टी.
उ०—३ तीरथ सघलां सोधतां, उत्तम एक ज ठाह । प्रमदा ताहरि प्रेम-जलि, हुं हवि नाहसि माह ।—मा. का. प्र.
उ०—४ महमूद माह सूरज प्रमांण ।जेठ रौ अरक'अभमाल' जांण । —वि. सं.
३—देखो 'मांय' (रू. भे.)
उ०—१ गत पंथ तारक गाह रे, सुज सपत दिन जिग साह रे। हरण खंड कीध सुबाह रे, मारीच नख दध माह रे ।—र. ज. प्र.
उ०—२ मयंदी बणी कांन्ह रै थाप मारी। तरी साह तोफांन रै माह तारी ।—मे. म.
उ०—३ देव दांणव भेळा करि स्रप को नेत्रौ करि । मंदराचळ परबत को मंथांण करि समुद्र माह थी काढ़ि लीधी ।—वेलि. टी.
४—देखो 'महा' (रू. भे.)

माहग्रहि—देखो 'महाग्रहि' (रू. भे.)
माहकंत—देखो 'महाकंत' (रू. भे.)
माहकंबु—देखो 'महाकंबु' (रू. भे.)
माहकाय—देखो 'महाकाय' (रू. भे.)
माहकारतिकी—देखो 'महाकारतिकी' (रू. भे.)
माहकाळ—देखो 'महाकाळ' (रू. भे.)
माहकाळी—देखो 'महाकाळी' (रू. भे.)
माहकाव्य—देखो 'महाकाव्य' (रू. भे.)
माहकुमार—देखो 'महाकुमार' (रू. भे.)
माहकुस्ट—देखो 'महाकुस्ट' (रू. भे.)
माहखरब—देखो 'महाखरब' (रू. भे.)
माहखेतर—देखो 'महाक्षेत्र' (रू. भे.)
माहगणपति—देखो 'महागणपति' (रू. भे.)
माहगिर—देखो 'महागिर' (रू. भे.)
माहगोरी—देखो 'महागोरी' (रू. भे.)
माहग्यांनी—देखो 'महाग्यानी' (रू. भे.)
माहग्रीव—देखो 'महाग्रीव' (रू. भे.)
माहघरत—देखो 'महाघ्रत' (रू. भे.)
माहघोख, माहघोस—देखो 'महाघोस' (रू. भे.)
माहचंड—देखो 'महाचंड' (रू. भे.)
माहचंडी—देखो 'महाचंडी' (रू. भे.)
माहचकरवरती—देखो 'महाचक्रवरती' (रू. भे.)
माहचकरी—देखो 'महाचक्री' (रू. भे.)
माहचपळा—देखो 'महाचपळा' (रू. भे.)
माहाचीण—देखो 'महाचीण' (रू. भे.)
उ०—ऊच मलतांन, हींदूस्थांन, देवकूं पाटण, चीण महाचीण, भोट माहाभोट, संखोद्धार एतला संजिगत अह्यारा 'देस देसाउर' वरणवीता सोभइ ।—व. स.
माहजन—देखो 'महाजन' (रू. भे.)
माहजनी—देखो 'महाजनी' रू भे.)

माहजी—देखो 'मांझी'। उ०—सुरा देपाळ कहै खग साहै। माहजी 'दलो' जोइयां मांहै।—गो. रू.

माहजोगी—देखो 'महायोगी' (रू. भे.)

माहज्वाळ, माहज्वाळा—देखो 'महाज्वाळा' (रू. भे.)

माहट—देखो 'मावठ' (रू. भे)

उ०—माह में माहट मांडचो मेह ते भ्राहट रूस। तौ पिरा माहरै नाह न पूरी माहरी हूंस।—ध व. ग्रं.

माहण-सं० पु० [सं० मा+हन्] (स्त्री० माहणी) १ वह साधु या व्यक्ति जो मन, कर्म, वचन से प्राणीमात्र की हत्या का विरोधी हो। उ०—माहण स्रमरा सावयादि के, मांडी मोटी साल। असनादिक निपजायनै दांन देऊं दग चाल।—जयवांणी

२ ब्राह्मण, विप्र।

३ उच्च, सभ्य।

उ०—निरखए भरह खेत्तंमि तीथंकरो, भवतरधउ अज्ज माहण कुळे जिणवरो।—स. कु.

माहणरूप-सं० पु०—ब्राह्मणरूप, ब्राह्मणवेश।

माहणसंपाय-सं० स्त्री०—१ ब्राह्मण संप्रदाय। (२)ब्राह्मणों की संपदा।

माहणी-सं० स्त्री०—१ साध्वी स्त्री।

उ०—हूंती सोभा माहणी, कांम भोग तणी केला रे।—जयवांणी

माहणो—देखो 'मैंणो' (रू. भे)

माहतम—देखो 'महातम' (रू. भे.)

माहतमा—देखो 'महात्मा'(रू. भे.)

माहतळ—देखो 'महातळ' (रू. भे.)

माहतिरफळा—देखो 'महात्रिफळा' (रू. भे.)

माहतेज—देखो 'महातेज' (रू. भे.)

माहत्रिफळा—देखो 'महात्रिफळा' (रू. भे.)

माहदंड—देखो 'महादंड' (रू. भे.)

माहदंडधारी—देखो 'महादंडधारी' (रू. भे.)

माहदांन—देखो 'महादांन' (रू. भे.)

माहदिव—देखो 'महादेव' (रू. भे.)

माहद्वीप—देखो 'महाद्वीप' (रू. भे.)

माहदेव—देखो 'महादेव' (रू. भे.)

उ०—घरि घरि सघलइ गोरडी, रडइ सहुदयमंभारि। माधव-विण जीवाडि मां, माहदेव हवइ मारि।—मा. कां. प्र.

माहद्रुम—देखो 'महाद्रुम' (रू. भे.)

माहनद—देखो 'महानद' (रू. भे.)

माहनिसा—देखो 'महानिसा' (रू. भे.)

माहनील—देखो 'महानील' (रू. भे.)

माहनुभावता—देखो 'महानुभावता' (रू. भे.)

माहन्नप—देखो 'महान्नप' (रू. भे.)

माहपंख—देखो 'महापक्ष' (रू. भे.)

माहपंचमूळ—देखो 'महापंचमूळ' (रू. भे.)

माहपंचविस—देखो 'महापंचविस' (रू. भे.)

माहप-सं० पु०—पड़िहार वंश की एक शाखा।

माहपक्ष—देखो 'महापक्ष' (रू. भे.)

माहपथ—देखो 'महापथ' (रू. भे)

माहपथिक—देखो 'महापथिक' (रू. भे.)

माहपदम—देखो 'महापद्म' (रू. भे.)

माहपरभु—देखो 'महाप्रभु' (रू. भे.)

माहपरसाद—देखो 'महाप्रसाद' (रू. भे.)

माहपरांण—देखो 'महाप्रांण' (रू. भे)

माहपवितर—देखो 'महापवित्र' (रू. भे.)

माहपातक—देखो 'महापातक' (रू. भे.)

माहपातकी—देखो 'महापातकी' (रू. भे.)

माहपास—देखो 'महापास' (रू. भे.)

माहपूजा—देखो 'महापूजा' (रू. भे.)

माहपुर—देखो 'महापुर' (रू. भे.)

माहपुरस—देखो 'महापुरुस' (रू. भे.)

माहपुरांण—देखो 'महापुरांण' (रू. भे.)

माहप्रभु—देखो 'महाप्रभु' (रू. भे.)

माहप्रसाद—देखो 'महाप्रसाद' (रू. भे)

माहप्रस्थांन—देखो 'महाप्रस्थांन' (रू. भे.)

माहप्रांण—देखो 'महाप्रांण' (रू. भे.)

माहबळी, माहबळीय—देखो 'महाबळी' (रू. भे)

उ०—चढ़ै जुध माहबळीय सुजास, चढ़ै अहहास भुवेस सुजास।—शि. रू.

माहबाह—देखो 'महाबाहु' (रू. भे.)

उ०—पत्रा विहगेस बाळी मंदार हेमंक पव्वै,। धोम काळकूट मेघ धारां गंगा धार। धूप दांन क्रीत रांम माहबाह मोटा धणी, तीनूं बातां तूभ तणी मोख री दातार।—र. रू.

माहभारत—देखो 'महाभारत' (रू. भे.)

माहभास्य—देखो 'महाभास्य' (रू. भे.)

माहभूत—देखो 'महाभूत' (रू. भे.)

माहभैरव—देखो 'महाभैरव' (रू. भे.)

माहभोग—देखो 'महाभोग' (रू. भे.)

माहमंतरी—देखो 'महामंत्री' (रू. भे.)

माहमंत्र—देखो 'महामंत्र' (रू. भे.)

माहमंत्री—देखो 'महामंत्री' (रू. भे.)

माहमद—देखो 'महामद' रू. भे.)

माहमाई—देखो 'महामाया' (रू. भे.)

माहमात्य—देखो 'महामंत्री'

माहमाया—देखो 'महामाया' (रू. भे.)

माहमारी—देखो 'महामारी' (रू. भे.)

माहमाह—देखो 'माहोमांहि' (रू. भे.)

उ०—पछै विदर पूजिया पंडव कैरवां सदाई । माहमाह कट मुवा दिली जीवतां न पाई ।...—ग्ररजुणजी बारहठ

माहय—देखो 'मागध'

माहयोगी—देखो 'महायोगी' (रू. भे.)

माहरइ—देखो 'म्हारै' (रू. भे.)

उ०—१ भागीरथ कहइ अजोनी संभवि, वडावडा जग विरद वहउ । कुळ माहरइ सधारण कवळा, गंगाजी ग्रावती ग्रहउ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ तु रंगि रमवा गयु,जिहां अवरनी ग्रांण । होली हीयडइ माहरइ, कीधी कंत सुजांण ।—मा. कां. प्र.

माहरउं, माहरउ—देखो 'म्हारौ' (रू. भे.)

उ०—१ स्त्री वयराट सुणि कीचक चीनउं, माहरउं मन पराभवि भीनउं । काल नइ मुहि एणइ कर घालिउ । संचकार यम नइ घरि घालिउ ।—सालिसूरि

उ०—२ हाडा खीची हेक, सोळंकी सूरिज-वंसी, सुणिस्यइ ग्रित माहरउ, सदा, अवरे राइ अनेक ।—अ. वचनिका

माहरम—१ मालूम ।

उ०—इयुं करता थकां ग्राथूण री ग्राइ समझि करि करि जाय समाचार पूछै । पूछतां दिन ५ ऽ ६ हूवा । तठै सारी माहरम पाई ।

—चौबोली

२ देखो 'महरंम' (रू. भे.)

३ देखो 'मलम'

४ देखो 'मुहरम' (रू. भे.)

माहराज—देखो 'महाराज' (रू. भे.)

उ०—धारत कर सायक धनुख, त्रेभोयण सिरताज । भजिया जन कारक अभै, जै राघव माहराज ।—र. ज. प्र.

माहरि, माहरी—देखो 'म्हारी' (रू. भे.)

उ०—१ देवर माहरि घरि नहीं, ऊठी गिउ ग्राखेटि । प्रीऊडा—पंजरि पामीइ, जलण वधारिउं जेठि —मा. कां. प्र.

उ०—२ थांनै माहरी दुग्राइती है सो थांरा ससतर भलांई वाहय लो अनै ग्रौ हूं एकलो थांरै सांमनै ग्रायनै खड़ी हूं ।—वी. स. टी.

उ०—३ नेमजी हो ग्ररज सुणो रे वाल्हा माहरी हो राज । राजुल कहइ घरि नेह, घरि रहउ नै राज ।—वि. कु.

माहरु', माहरु, माहरू—देखो 'म्हांरो' (रू. भे.)

उ०—१ मुख माहरु ग्राछउ थयु, निरमल पणु' निलाडि । बात त्यजीनइं वैद्य, नइं ग्राई ग्राज देखाडि ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ जाहरू बात मन री सरव जांणगर, देख ब्रद माहरू मदत देगी । सीह ग्रारोहणी काज तव साहरू,बाहरू बरन री ग्राव बेगी ।

—बालाबक्स बारहठ

माहरे, माहरै—देखो 'म्हारै' (रू भे.)

उ०—१ तरै राजा कयो माहरे तो ग्राहीज दरकार छे । पछे रखेसर राजा कने हरद्वारजी मांहे जितरा रिखेसर सरब बताया ।

—रा. वं. वि.

उ०—२ मन दुसह दुहूं विध माहरै, ग्रसह वार लगै इसी । मुख लियां कठण नागेंद्र मनु, जग सदोख मूखक जिसी ।—रा. रू.

माहरौ—देखो 'म्हारौ ' (रू. भे.)

उ०—१ माहरा अक्रम मेटवा माहव, क्रम हूं कथिस तुहारा केसव, नांम तुम्हीणो हौ घणनांमी, सास उसास संभारिस स्वांमी ।

—ह. र.

उ०—२ पिता ताहरौ माहरौ साच पायौ । इसौ पावसी तूं ज ग्रौ जोग ग्रायौ ।—सू. प्र.

माहली—वि०—अन्त: पुर में जाने ग्राने वाला ।

सं० पु०—१ खोजा, दास-दासी, सेवक ग्रादि ।

२ राज महल या अन्त: पुर का नौकर ।

माहलौ—देखो 'मांयलौ' (रू. भे.)

उ०—प्रोळ कोट री ग्राडा भाठा जड़ीया था सु खोलाया । माहलौ साथ सारो रा: जगमाळ रा: चंद्रसेन पोकरण ग्रायौ मीळीयौ ।

—नैणसी

(स्त्री० माहली)

माहव—देखो 'माधव' (रू. भे.)

उ०—१ महदातार पयंपै माहव, बोल किसी ऊचरां बियौ । ग्रहियां पछै उग्रहणौ गोविंद, कीधौ जिम सगरांम कियौ ।

—महारांणा सांगा रौ गीत

उ०—२ मणारंभ मथै काढियउ माहव, जहर इतउ किण बीजइ जरइ । ईसर त्ये सरणइ ऊवरजइ, तिण वेळा समरीयउ तरइ ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ खिलवत हास खुसांमदी, सुरका दुरकी सांग । किसब लिया ए कुकवियां, माहव हूता मांग ।—बां. दा.

माहवठउ—देखो 'मावठौ' (रू भे.)

उ०—माघइ वरसइ माहवठउ, सीत सलिल एक ठाह । हूं धूजी घरणीइं ढळूं, दिइ हरणांखी बाह ।—मा. कां. प्र.

माहवत—देखो 'महावत' (रू. भे.)

माहवार—पु०—प्रत्येक मास में मिलने वाला वेतन, मासिक वेतन

वि०—प्रत्येक मास होने वाला, मासिक

ग्रव्य. प्रतिमास, हरमास

माहवारी—पु०—१ प्रति-मास या मासिक रूप से चलने वाला क्रम ।

२ प्रति-मास मिलने वाला वेतन ।

३ स्त्रियों का मासिक धर्म

वि०—प्रतिमास होने वाला, मासिक ।

क्रि० वि० [फा०] महिने के महिने, प्रतिमास ।

माहवारुणी—देखो 'महावारुणी' (रू. भे.)

माहविदेह—देखो 'महाविदेह' (रू. भे.)

उ०—सील पाली संजम लियउ रे, पांचमइ गई देवलोकिरे । माहविदेह मई सीझस्यइ रे, सील थकी सहु थोक रे ।—स. कु.

माह्विस—देखो 'महाविस' (रू. भे.)

माह्वीर—देखो 'महावीर' (रू. भे.)

उ०—'विजपाळ'आखे हम माह्वीर थे स्यांम काज सारण सधीर। —शि. रू.

माह्वेग—देखो 'महावेग' (रू. भे.)

माह्वौ—देखो 'माधव' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—ओळखियो परो तन्नां म्है अविगत, गोकळ ग्रांम तणौ तूं ग्वाळ। माह्वा नांम तुहारो मीठो, दीठो दीनदयाळ। —पीरदांन लाळस

माह्व्याध, माह्व्याधी—देखो 'महाव्याधि' (रू. भे.)

माह्व्रती—देखो 'महाव्रती' (रू. भे.)

माह्संख—देखो 'महासंख' (रू. भे.)

माह्सकती, माह्सगती—देखो 'महासक्ति' (रू. भे.)

माह्सया—देखो 'महासय्या' (रू. भे)

माह्सरग—देखो 'महासरग' (रू. भे.)

माह्सांतपन—देखो 'महासांतपन' (रू. भे.)

माह्सास—देखो 'महास्वास' (रू. भे.)

माह्सिव—देखो 'महासिव' (रू. भे.)

माह्सिंघ, माह्सींघ—देखो 'महासिंह' (रू. भे.)

माह्सूर—देखो महासूर' (रू. भे.)

उ०—सज भ्रात पुत्र पोरस करूर, सज ससत्र मिळिया माह्सूर। —शि. रू.

माह्सेत—देखो 'महासेत' (रू. भे.)

माह्सेन—देखो 'महासेन' (रू. भे.)

माहां-माहां—देखो 'माहोमांहि' (रू. भे.)

उ०—एक इसिद्द आविउ तिहां, ऊजेणी नु बंभ। मिलया माहां-माहां बिन्है, सभयां काज सुलंभ।—मा. कां. प्र.

माहा-सं० स्त्री० [सं० माहेयी] १ गौ, गाय। (ह. नां. मा.)

२ देखो 'महा' (रू. भे.)

उ०—पुण्य स्लोक कथारस पीतां अम्रत खाटूं लागे। माहा कवि स्रंगार वरणवौ, पूरवे जे माहा भागे।—नळाख्यान

३ देखो 'मोय' (रू. भे.)

उ०—सुंन माहा सुंन के ऊपरे, तेज पुंज एक ख्रांन। केवल चेतन देखसी, केवळ मंदिर अस्थांन।—स्रीहरिरांमजी महाराज

माहाकाळियो-सं०पु०—१ एक असुर जो काली देवी के हाथों मारा गया।

उ०—जित माहाकाळियो देत जोर। घण जोस डील बळ स्रस्ट जोर।—रांमदांन लाळस

२ कालिया नाग।

माहाग्यांनी—देखो 'महाग्यांनी'

माहाचीण-सं० पु०—एक देश विशेष। (प्राचीन)

उ०—हींदूस्थांन देवकूंपाटण, चीण चीण भोट'''।—व. स.

माहाडोळ, माहाडौळ—देखो 'महाडोळ' (रू. भे.)

उ०—पीछै राव सूजेजी री माजी हाडी जसमादेजी माहाडोळ मैं बिराज स्रीबीकैजी खनै पधारिया।—द. दा.

माहातम—देखो 'महातम' (रू. भे.)

उ०—जठै एक दिन बांमण कथा बांचतौ थो। जठै ईसो बंचांणी सो एकादमी री ईसो माहातम है।—गांम रा धणी री वात

माहातमा—देखो महात्मा' (रू. भे.)

माहातेज—देखो 'महातेज' (रू. भे.)

माहात्म्य—देखो 'महातम' (रू. भे.)

उ०—जहां रैणी धौंस उतपति नहीं, चंद नहि तहां भांन। जहां पावक पवन पांणी नहीं, तहां माहात्म्य(जन)हरिदास का स्थांन। —ह. पु. वां.

माहानाद—देखो 'महानाद' (रू. भे.)

माहाबळ—देखो 'महाबळ' (रू. भे.)

उ०—रस चादिनी रसवती जिवती जिनांना, माहाबलं ते सरदक राजमांना।—व. स.

माहाभोट-सं० पु०—एक देश विशेष (प्राचीन)

उ०—ऊच मलतांन हींदूस्थांन, देवकूं पाटण, चीण माहाचीण भोट माहाभोट संखोद्धार एतला सांजिगत''''।—व. स.

माहामरातब, माहामुरातब—देखो 'माहीमरातिब' (रू. भे.)

उ०—सोवरणमि छत्र, रगत रातां छत्र, पीत पीलां छत्र, अलंब नेजा, माहामरातब ढोल, दमांमा नीसांण।—व. स.

माहार-सं० पु०—कुम्हारों की एक शाखा। (मा. म.)

माहारजत—देखो 'महारजत' (रू. भे.)

माहारस—देखो 'महारस' (रू. भे.)

माहाराज—देखो 'महाराज' (रू. भे.)

उ०—जद हेमजी स्वांमी बोल्या-माहाराज ओगुण तो म्हारा इ सूझै।—भि. द्र.

माहाराजा—देखो 'महाराजा' (रू. भे.)

माहारी—देखो 'म्हारी' (रू. भे.)

उ०—हमें मेड़तो थे किणी ही ओर नु देवो छौ तो माहारी जमीयत सारी परी जावै छै।—नैणसी

माहारो—देखो 'म्हारो' (रू. भे.)

माहालइ—देखो 'माळी' (रू. भे.)

माहालणो, माहालबो—देखो 'माल्हणो, माल्हबो' (रू. भे.)

उ०—हंसगतइ चालती, गजगतइ माहालती, कांम कांमणी पालती, आंखिनइ मटकारइ मदन नी वागुरा घालती—व. स.

उ०—२ सेना चालि सेस हालि, माहालै महीपति मलपता। —नला ख्यांन

माहालणहार, हारो (हारी), माहालणियो—वि०

माहालिओड़ो, माहालियोड़ो, माहाल्योड़ो—भू० का० कृ०

माहालीजणो, माहालीजबो—भाव वा०

माहालियोड़ो—देखो 'माल्हियोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० माहालियोड़ी)

माहावठी—देखो 'मावठ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मावे वाइ माहावठी सीत करइ संचार। माहरइ माधव-सरण थी, लागइ नहीं लगार।—मा. कां. प्र.

माहावत—देखो 'महावत' (रू. भे.)

उ०—कळ छळि रायांमीग कलावत, मोहरियाळ सिवो माहावत।
'ऊदो' 'हरी' तणो दळ आगळ, करमसीयोत जीपवा कांकळ।
—रा. रू.

माहाववाळ—देखो 'महाववाळ' (रू. भे.)

उ०—माहववाल हमीरसी, साथ भदावत सूर।—रा. रू.

माहासंध—देखो 'महासिंधु' (रू. भे.)

उ०—ऊकामरण अनड़ अंजतोव अंग ऊमाहै, माहासंध समाहै मुनंद्र मुहंडै।—करनीदान कवियो

माहासती—देखो 'महासती' (रू. भे.)

उ०—कंथ सुरां मंदिरां पधारो माहासती कै छै। रंभा कै छै वीवांणां पधारो माहराव।—वनजी खिड़ियो

माहि—देखो 'मांय' (रू. भे.)

माहि—देखो 'मांय' (रू. भे.)

उ०—१ आगइ द्वावर माहि जु वीतो, पंचह पंडव तणउ चरीतो।
हरिख दिया नइ हूं भणउं।—सालिभद्र सूरि

उ०—२ मेट सकइ न को मरजादा। हालइ सको मरजादा माहि।
—महादेव पारवती री वेलि

माहित—सं० स्त्री० [अ० माहीयत] १ किसी बात का वास्तविक ज्ञान, जानकारी, मालूम।

उ०—१ जद जालमसिंह कही मोनूं ठीक माहित न छै।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ ताइरां राजा ब्रहदभांग कह्यो–देवीदास, आ तपावस म्हां सूं ना होवै। आ तो सूं हीज होसी। तोनै इण बात री माहित छै। ज्यों तूं जांणै छै त्यों सरब कह।—पलक दरियाव री बात

२ वास्तविकता, हकीकत।

३ किसी पदार्थ का वास्तविक गुण, तत्त्व।

४ प्रकृति।

५ विवरण।

माहिपत, माहिपति—देखो 'महीपति' (रू. भे.)

माहिमरातब, माहिमुरातब—देखो 'माहीमरातिब' (रू. भे.)

माहिर—सं० पु० [सं०] १ इन्द्र का एक नामान्तर।

वि० [अ०] १ किसी कार्य में चतुर, होशियार, दक्ष, निपुण।

२ अभ्यस्त।

माहिरलौ—देखो 'मांयलो' (रू. भे.)

(स्त्री० माहिरली)

माहिरौ—देखो 'मायरो' (रू. भे.)

माहिलइ—देखो 'मांयलो' (रू. भे.)

उ०—पांडव दीइ चासणी खांण, वाळि लेई बांध्या केकांण। सवि कहि दियइ हरख न माय, माहिलइ मुहुलि पधारीया राय।
—कां. दे. प्र.

माहिलवाड़िओ, माहिलवाडियो—सं०पु०—अन्त: पुर में आने जाने वाला व्यक्ति

उ०—१ इतरै अठै सिधाराव जैसिंघदेव रो माहिलवाड़ियो डूंगरसी कोटवाळ पाटण री छै। तिण रो बेटो एक लालकंवर। तिको मोटियार छै। परण्यो तो छै, पिण मोटयार, पाटण रै कोटवाळ री बेटो नै माहिलवाड़ियो छै।—जगदेव पंवार री बात

उ०—२ ५०००० माहिलवाड़ियो लोक।—नैणसी

माहिल, माहिलौ—देखो 'मांयलो' (रू. भे.)

उ०—१ हाव भाविइ करी ते नाचइ, माहिलु कहइ संकेत। तिम तिम कुब्जक मोही रहइ, सुखतइ अति गह गहंति।
—नळदवदंती रास

उ०—२ ओखध मोटो अन्न इक, भांजै जिण थी भूख। साले अन विण सांमठा, देही माहिलां दूख।—ध. व. ग्रं.

उ०—३ गोविंद भजि मन माहिला, अब जिन चालै हारि।
—ह. पु. वां.

(स्त्री० माहिली)

माहिल्युं—देखो 'मांयलो' (रू. भे.)

माहिस्मती—सं० स्त्री० [सं० माहिष्मती] हैहय राजवंशीय राजाओं की राजधानी।

माहीं—देखो 'मांय' (रू. भे.)

उ०—भगत-वछळ भगतां रे कारण। प्रगट हुवो जुग जुग माहीं।
—गी. रां.

माही—सं० स्त्री० [फा०] १ मछली।

२ एक नदी जो बांसवाड़ा-डूंगरपुर की सीमा पर बहती है।

३ देखो 'माघी' (रू भे)

उ०—मरुदेवी नी प्रतिमा वली, माही पुनिम थापी रली।—स. कु.

४ देखो 'मांय' (रू. भे.)

उ०—येक समें द्वारापुर माही हरख्यो रुकमणी रांणी। केल करत बोलत भई, ऐसी अमरत बांणी।—रुखमणी मंगळ

माहीदांत—सं० पु० [फा० माही+सं० दंत] मछली का दांत।

वि० वि०—यह गैंडे के आकार के एक पशु का दांत होता है जो प्राय: हाथी दांत के समान होता है और उसी नाम से बिकता है।

उ०—तिकांरा दस्ता किण भांत रा छै' मोहरो रा गुरड़ोदगाररा संगरे-सम रा माहीदांत रा रूपै रा सीप रा जड़िया'''।—रा. सा. सं.

माहीप—देखो 'महीप' (रू. भे.)

उ०—मत विलम तूं करै भजण रांम माहीप रे। जप 'किसन' नांम जे जनम औ लियो जीप रे।—र. ज. प्र.

माहीमरातिब, माहीमुरातब, माहीमुरातबौ, माहीमुरातिब–सं०पु०[फा० + अ०] मुगल बादशाहों की सवारी के आगे हाथी पर चलने वाले सात झंडों का समूह जिसमें मछली, सात ग्रहों आदि की आकृतियां अलग अलग बनी होती हैं।

उ०—१ फौजां री धांमधूम थी तिण सूं माहीमुरातब झालरदार पालकी खिलत इनायत हुवो सो अठै आय पहुंचिया।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ जाति जाति रा मीरजादा भेळा हुवा छै। माहीमुरातबा समेत पीहकर अजमेर रा थांणां ऊपरै विदा हुआ छै।
—रा. सा. सं.

उ०—३ साही नोबत माहीमुरातबौ सोलह तीरी मुजरौ कियौ।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

रू०भे०—महीमुरतब, मही मुरातब, महीमुरातब, महीमुरातिब, माहामरातब, माहामुरातब, माहिमरातब, मुरातबमांही

माहीसातम–सं०पु० [स माघ सप्तमी] माघशुक्ला सप्तमी जिस रोज सूर्य की पूजा विशेष रूप से होती है।

माहुटि—देखो 'मावठ' (रु. भे.) उ०—मिळी माह तणी माहुटि सू मसिव्रन। तपि आसाढ़ तणौ तपन।—वेलि

माहुत, माहुति—देखो 'महावत' (रु. भे.)

उ०—१ माहुत नै गज ऐसा हाजर कर राखै।—र. रू.

उ०—२ लोक भणै माहुति अतलेखै, सूर महा त्यां हूंत विसेखै।
—रा. रू.

माहुर–सं० पु० [सं० मधुर, प्रा० माहुर] १ विष।

उ०—सूर सीह मूंछां सवा, माहुर भरी महांण। बळियां पूठे रह न बिख, बधै कवण बळवांण।—रेवतसिंह भाटी

२ विष समान वस्तु।

३ मालियों का एक भेद।

वि०—पहिले का, पुराना।

देखो मांय' (रू. भे.)

माहेंद्र–वि० [सं] १ इन्द्र का, इन्द्र सम्बन्धी।

२ जिसका देवता महेन्द्र हो।

सं०पु०—१ वार के अनुसार भिन्न भिन्न दंडों में पड़ने वाला एक योग जिसमें यात्रा करने का विधान है।—(ज्योतिष)

२ एक प्राचीन अस्त्र।

३ जैन मतानुसार चौथे स्वर्ग का नाम।

४ सुश्रुत के अनुसार एक देवग्रह।

माहेंद्री–सं० स्त्री० [सं०] १ इन्द्र की शक्ति।

२ इन्द्र की पत्नी।

३ सप्त मातृकाओं में से एक।

४ गो, गाय।

माहे—१ देखो 'मांय' (रू.भे.)

उ०—१ मांसाचरां घपाड़े मांसां, बांसां करै अमाबड बाड़। मावै नहीं पहाड़ां माहे, हाथ्यां रा दांतूसळ हाड।
—महाराणा अमरसिंह रौ गीत

उ०—२ सको राकसां एकणी हाथ साहे। मेलूं लंक साहेत पाताळ माहे।—सू. प्र.

उ०—३ चडियइ हींगुलाज नइ हडइ ए, कालिकुंड नमियइ पास। बारी माहे पइसीयइ ए, आंणी अंगि उल्हास।—स.कु.

माहेई—देखो 'माहेयी' (ह. नां. मा.)

माहेड़ा–सं०पु०—१ भाटी वंश की एक शाखा।

२ सोलंकी वंश की एक शाखा।

माहेयी, माहेरी–सं० स्त्री० [सं० माहेयी] गाय, गौ।

रू०भे०—माहेई,

माहेरेदार—देखो 'मायरादार' (रू.भे.)

माहेरौ—देखो 'मायरौ' (रू.भे.)

उ०—१ महता हेत करै माहेरौ। भगतां हूंडी आप भरै।
—भगतमाळ

उ०—२ थांरी भांणीजी परणीजे, माहेरौ भरण घरे आवो ओ जूंझारजी। झगड़े किण विध जूंजिया। [लो. गी.

माहेव–सं०पु०—१. बाड़मेर जिले का प्राचीन नाम।

उ०—राड़द्रह अनै माहेव रासि। बह मोल रूप बळवंत्त हुबासि।
—सू. प्र.

२. देखो ' महादेव ' (रू. भे.)

माहेस—देखो ' महेस ' (रू. भे.)

उ०— फुंकार अहेस हरी चंदणां पयोभ फैण, माहेस त्रिनैंण इंद्र जुन्हाई समाथ। गिरवांणां सहाई मनोज धेनु ग्यांन गोभा, नाराज, वरीस, सोभा इसी प्रथीनाथ।—र. रू.

माहेसच, माहेसचख—देखो ' महेसचख ' (रू. भे.) (ह. नां. मा.) (अ. मा.)

माहेसर—देखो ' महेस्वर ' (रू. भे)

माहेसरी—देखो ' माहेस्वरी ' (रू. भे.)

माहेसवर—देखो ' महेस्वर , (रू. भे.)

उ०–गावै गुण माहेसवर अर ब्रह्मा मुखच्यार। सेस सहसफण जिह्‌ दुगण, तोउ न पावै पार।—गजउद्धार

माहेसी—देखो ' महेसी ' (रू. भे.)

माहेसुर—देखो ' महेस्वर ' (रू. भे.)

माहेसुरी—देखो 'माहेस्वरी ' (रू. भे.)

माहेसौत–सं०पु०—राठौड़वंश की एक शाखा।

उ०—माहेसौत 'हरी' मन भांणी, खेड़पती सालै खूमांणी।—रा. रू.

माहेस्वर–सं०पु०. [सं० माहेश्वर] १. शिव के पुजारी, शैव। २. एक यज्ञ का नाम। ३. पाणिनि के वे चौदह सूत्र जिनमें स्वर और व्यंजन वर्णों का संग्रह प्रत्याहारार्थ किया गया है। ४. देखो महेस्वर ' (रू. भे.)

माहेस्वरी-सं० स्त्री०—१ पार्वती, गिरिजा। (ह. नां. मा.

२ दुर्गा।

३ एक मातृका।

सं० पु०—४ वैश्यों की एक जाति व इस जाति का व्यक्ति।

रू. भे.—माहेसरी, माहेसुरी,

माहै—देखो 'मांय' (रू. भे.)

उ०—१ ग्राद्र ऊतन धांम ग्रजोध्यया, जगचख वंश ग्रंस हरि जोवा। पेखो त्यां माहै धरपत्ती, पूरण ग्रंस हुवौ छत्रपत्ति।
—रा. रू.

उ०—तरै ग्रबलहुमेन ग्ररज की—रुपीया २,००००००) माहै मेड़तौ इण नूं दीयौ छै —नैणसी

माहौंमांहि, माहोमांह, माहौंमांहै माहोमा, माहोमाह, माहोमांहि, माहैमाहे-क्रि०वि०—ग्रापस में, परस्पर, एक दूसरे के प्रति।

उ०—१ ग्रनें हाथी निकल्यां सगळा भेळा होयनै भूसवा लाग जावै। त्यां स्वांन रै माहौंमांहि कद एकौ थौ।—भि. द्र.

उ०—२ धनो जैमाल माहोमांह री वेढ़ में मारांणा।
—बां. दा. ख्यात

उ०—३ तिण थी इणां ठाकरां रै माहोमाहै ग्रसुख घणौ वधियौ।
—नैणसी

उ०—४ माहोमा मनुग्रार हुई, हथवाह तणी हव। 'पाल' कह्यौ तूं वाह तुज्ज गुनहि धाड़ी तव।—पा. प्र.

उ०—५ नर थोड़ा पिंगळ नरनाथ, सबळ एह रिण धवळह साथ। माहोमाह भूझ मांडिस्यइ, कुळि काळंक माहरइ लागिस्यइ।
—ढो. मा.

उ०—६ माळा गळि मालती-तणी, करि-वरि कणयर कांब। माधव-सिंह माहोमहि, वाली खेलइ बांब।—मा. कां. प्र.

उ०—७ ग्राया सिवपुरी हुग्रो कारिज सिध, परमगुरु चा ग्रहिया पगि। माहोमाहि करइ वातां मिळि, जनम सुकियारथ हुग्रो जगि।
—महादेव पारवती रीवेलि

उ०—८ तेथी पद्मालय नाम नगर। जेथी एक देहरी, उहां राजा गयौ। दरसण किया। दोय यात्री माहोमाहे बात करी सो सुणी।
—सिंघासण बत्तीसी

रू० भे०—महमहइ, महामुह, महिमाह, मांहमां, मांहीमांही, मांहेमांहे, मांहोमां, मांहोमांह, मांहोमांहि, मांहीमांही, मांहोमाहे, माहमाह, माहांमाहां।

मिगणी—देखो 'मींगणी' (रू. भे.)

मिगणौ—देखो 'मींगणौ' (रू. भे.)

मिगसर—देखो 'मिगसर' (रू. भे.)

मिगी—देखो 'मींगी' (रू. भे.)

मिजासणौ—देखो 'मजासणौ' (रू. भे.)

मिट—देखो 'मिनट' (रू. भे.)

उ०—उगणीसै बावन उरज, ग्राठम कवि वद ईस। चार बज्यां जसवंत चल्यौ, पूरा मिट पैंतीस।—ऊ. का.

मिठु—देखो 'मीठौ' (रू. भे.)

उ०—भूठु मिठु लागो जनने कडुयां फळ छै तेह।—कवियण

मिढ—देखो मींढौ' (मह., रू. भे.)

२—देखो 'मींढ' (रू. भे.)

मिढ़णौ, मिढ़बौ-क्रि० ग्र०—१ बराबर होना समान होना

२—देखो 'मींडणौ, मींडबौ' (रू. भे.)

उ०—सरोतर ग्रंब नयर मिढलो सदाही, घाय, घड़ मोड़वा ग्राद धाणी।—जयसिंह राठौड़ री गीत

मिढ़मुख-सं० पु०—एक देश का नाम। (प्राचीन)

उ०—खरमुख, तुरग मुख, मिढ़मुख हय करणा, गजकरणा, प्रभृति ग्रनारच देस।—व. स.

मिढ़योड़ौ-भू० का० कृ०—१ समान हुवा हुग्रा, बराबर हुवा हुग्रा।

२—देखो 'मींडियोड़ौ' (रू. भे.)

मित—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

उ०—१ वेव धवळ ग्रा बत्तड़ी, कांनां लाग कहंत। जिको मित मत जांणजै, केवी जाणे कंत।—बां. दा.

उ०—२ ग्रापरै वांसै ग्रायोड़ा पान री वौ घणी ग्राव-ग्रादार करी। दोनूं गाढ़ा मित व्हैगा।—फुलवाड़ी

मितर—१ देखो 'मित्र' (रू. भे.)

उ०—२ बोल्यौ-मितर मोहल्लै परखियै, धीणौ मंदै घास।
—दसदोख

२ देखो 'मंत्र' (रू. भे.)

उ०—पांच-सात विरियां, छुट्टी विसरांम रै वखत, करणै नै जमी पर सुंवो सुवांण्यौ, ऊपर चादर उढाई तथा मितर पढ़ायौ।
—दसदोख

मितरणौ, मितरबौ—देखो 'मंतरणौ,मंतरबौ' (रू. भे.) उ०—पांणी मितरै पावै ग्राकड़े में लोटो ढुळावै।—दसदोख

मितरणहार हारौ (हारी) मितरणियौ—वि०।

मितरियोड़ौ, मितरियोड़ौ, मितरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मितरीजणौ, मितरीजबौ— कर्म वा०।

मितरता—देखो 'मित्रता' (रू. भे.)

उ०—एक ही कीड़ी नै एक ही सांयड। दोनों में ही ग्रतूट मितरता। ग्राठ पौर साथै। रै' वै' साथै खावै ग्रर साथै पीवै।
—फुलवाड़ी

मितराई—देखो 'मित्राई' (रू. भे.)

मितरियोड़ौ—देखो 'मंतरियोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री० मितरियोड़ी)

मितरी—१ देखो 'मंत्री' (रू. भे.)

२—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

मितरोळ—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

उ०—सेठ स्यांमजी जाबक गुगा-गाळ, मा'रजा रै लोही रा पीऊ! मितर नहीं मुतळविया मिंतरोळ।—दसदोख

मिंतरोळियौ—देखो 'मित्र' (अल्पा., रू. भे.)

मिंत्ती—देखो 'मिति' (रू. भे.)

उ०—सिसु वै मिंत्ती वित्तीं, उदभौ पोगंड मंड सिंगारौ। ज्यों वृंदारक तर्यं, प्रांमै डाळ संगि पत्तेणम्।—रा. रू.

मिंत्र—देखो 'मित्र' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—करै कपि मिंत्र सुग्रीव सुकाज। रहच्चे बाळि दियौ कपि राज।—ह. र.

मिंत्राई-सं० स्त्री०—मित्र होने की दशा या भाव, मित्रता, दोस्ती

रू० भे०—मंतराई, मंत्राई, मितराई, मितराई, मिताई, मित्राई।

मिंत्री—देखो 'मंत्री' (रू. भे.)

उ०—मा'रजा, सेवा लाईब्रेरी रा मिंत्री सनातन धरम रा सभापति ग्रांम सेवासंघ रा उपाध्यक्ष अर आरयसमाज रा सदा सूं सदस्य है।—दसदोख

२—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

मिंदर—१ देखो 'मंदिर' (रू. भे.) (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ उर अंतर में करुणा आई, सारै देस करण सुख दाई। मिंदर तीरथ पोवां मंडाई, खर पावै खारौ जळ खाई।—ऊ. का.

उ०—२ हरीया कर दीपग दीयां, मिंदर भया उजास। यु गुर दीपग नंदीयां, उर अंधारा जास।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

२—देखो 'कठमंदिर'

उ०—एम वयण उच्चरि, नयण अप वदन निहारै। तजि सुंदर धर तांम, चाह मिंदर चीतारै। असवारी दिस अगम, प्रगट नक्कीब पुकारै। पड़ै संक पर लोक, हुए टांमक नगारे। हरिनांम प्रेम धारै हियै, सांमो लियै मगि संचरै। छत्रपती साथ रांणी छहूं, आज त्रिहूं कुळ उद्धरै।—रा. रू.

मियाळ-सं० पु०—कच्चे मकान की छाजन में लगी बल्ली के सहारे के लिये उसके नीचे लगने वाली प्राय: धनुषाकार लकड़ी जिसके दोनों सिरे दोनों ओर की दीवारों पर टिके रहते हैं।

मि-सर्व०—१ मैं।

उ०—विहिची मेरु माहागिरी नाप्पु पात्र तणि तां पांणि। तु सूं दांन करधूं मि मही मांहां मनि मोटौ ए कांणि।—नळाख्यांन

२ मेरे।

मिआंन—देखो 'म्यांन' (रू. भे.)

उ०—सु किण भांतरी तरवार थेट सिरोही री, सांतरी, दांणादार मिआंन घातियां बिआगुळे बाढ़े केरिआं-मिआंन सू काढिनै घास में नाखी हुऐ तो पांणी रै भोळे जिनावर ठूंक मारै।

—रा. सा. सं.

मिआद—देखो 'मयाद' (रू. भे.)

मिआदी—देखो 'मयादी' (रू. भे.)

मिआदीबुखार—देखो 'मयादीबुखार' (रू. भे.)

मिउ—देखो 'म्रदु' (रू. भे.)

मिकदार-सं० पु०—[अ. मिकदार] १. मात्रा, परिमाण।

२ तोल, वजन।

३ अंदाज अनुमान।

मिक्सचर-सं० पु०—[अं०] १ कई प्रकार की तरल औषधियों का मिश्रण। २ कई प्रकार के पदार्थों का सम्मिश्रण।

मिग—देखो 'म्रिग' (रू. भे.)

उ०—हंस-वाहणि मिग-लोचनि नारि। सीस समारइ दिन गिणाइ। —बी. दे.

मिगसर-सं०पु० [सं० मार्गशिर: मार्गशीर्ष:] १. कार्त्तिक मास के बाद आने वाला मास, अगहन मास।

उ०—संवत सतरैं बरस वीसै मास मिगसर जांण ए।

—ध. व. ग्रं.

(सं० मृगशिर:) २. मृगसरा नक्षत्र।

रू. भे.—मंगसर, मंगसिर, मगसर, मगसिर, मगसीर, मांगसर मांगसुर, मागसिर, मागसिरि, मिंगसर, मिगसरी, मिगस्सर, अल्पा:—मिगसरियौ,

मिगसरियौ—देखो 'मिगसर' (अल्पा., रू भे.)

उ०—मिगसरियौ वर सूं डोले, तुलछां रा फूल किसनजी तोले।

—लो. गी.

मिगसरी-सं० स्त्री०—१ मार्ग शीर्ष मास की तिथि।

२—देखो 'मिगसर' (रू. भे)

मिगस्सर—देखो 'मिगसर' (रू. भे.)

उ०—मास मिगस्सर वार-गुरु बीज उजाळी पाय। चढ़ घोड़े भड चल्लिया, 'चांपा' कोप चढ़ाय।—रा. रू.

मिड़कल—देखो 'मड़कल' (रू. भे.)

उ०—सिरदारां नै अमल ऊगोड़ो हो। वांनै पांणी री ढील खटी कोनीं। एक मिड़कल सिरदार भालो हाथ में लेयनै ऊभौ व्हियौ।

—फुलवाड़ी

मिचकोड़णौ, मिचकोड़बौ—देखो 'मचकोड़णौ, मचकोड़बौ' (रू भे.)

उ०—फोजी बूंटा में पांमोजा पैरयौ ही सीधौ साळ में आ धमकयौ और में सुती राजी री धणी नराजी सु नाड़ देख रे मूंढो मिचकोड़यौ।—दसदोख

मिचकोड़ियोड़ो—देखो 'मचकोयोड़ो' (रू. भे.)

(स्त्री० मिचकोड़ियोड़ी)

मिचणौ, मिचबौ-क्रि० अ०—बंद होना। (आंख)

मिचळणौ, मिचळबौ—देखो 'मचळणौ, मचळबौ' (रू. भे.)

मिचळांण, मिचळांद, मिचळाट—देखो 'मचळांण' (रू. भे.)

उ०—म्हैं तो राजा हूं। देस रौ धणी हूं। राज चलावणौ थांरौ कांम है के म्हारौ। इण भीड़ नै फुरती सूं आप आपरै ठिकांणै रवांना करौ। आं अलेखूं जिनांवरां री कोजी मिचळांद सूं म्हारौ

तो माथो चढ़गयो ।—फुलवाड़ी

मिचळाणौ, मिचळावौ–क्रि० अ०—१ उबकाई आना, जी मतलाना ।
२—देखो 'मचळणौ, मचळवौ (रू. भे.)

मिचळायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ उबकाई आया हुआ, जी मतलाया हुआ ।
२—देखो 'मचळियोड़ौ' (रू भे.)

मिचळियोड़ौ—देखो 'मचलियोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री० मिचळीयोड़ी)

मिचलौ—देखो 'मचलौ' (रू भे)

मिच्च–सं० पु० [सं० म्लेच्छ] मुसलमान ।

मिच्छ–सं० स्त्री० [सं०] बाधा, अड़चन ।

मिच्छत, मिच्छत्त–सं०पु०—असत्य को सत्य और सत्य कोअसत्य समझने की अवस्था । मिथ्यात्व । (जैन)

मिच्छदिट्ठि, मिच्छदिट्ठी–सं० स्त्री०—मिथ्या दृष्टि । (जैन)

मिच्छांमिदुक्कड़–सं० पु०—मिथ्यादुष्कृत.
उ०—जद स्वांमीजी कह्यो थे सन्नी के असन्नी ? ते बोल्यो: हूं सन्नी । स्वांमी पूछ्यो किण न्याय ? जद ते बोल्यो: ना, मिच्छांमिदुक्कड़ हूं असन्नी ।—भि. द्र.

मिच्छा–सं० स्त्री०—मिथ्या ।
उ०—पणि विधिनी खय कोजतां हो, अविधि हुवइ जिकाय । मिच्छा दुक्कड दीजतां हो, छुटक बारउ थाय ।—स. कु.

मिच्छादंसण–सं० पु०—मिथ्या दर्शन ।

मिच्छादिट्ठी–सं० स्त्री०—मिथ्या दृष्टि ।

मिच्छादुकड़—देखो 'मिच्छांमिदुक्कड़'
उ०—सांमि वरभ ने सील तणा गुण सांमठा रै,पूगै मन नी आस । ओछो अधिको जे कह्यो कबि चातुरी रे मिच्छादुकड़ तास ।
—ध व. ग्रं

मिछ–वि०—मृत ।

मिछत–सं० स्त्री०—मिथ्यात्व, मिथ्यापन ।
उ०—तासु पाटि उदयगिरि उदय ले, जिण प्रम सूरि भांणु । भविय कमल पडिबोहणु, मिछत तिमिर हरणु ।—जिन प्रम सूरि री गीत

मिछलांण—देखो 'मचलांण' (रू. भे.)

मिजनू—देखो 'मजनू' (रू. भे.)
उ०—मात सलांमत पित मुआ, आवै नंह आपांण । धांमधूम मिजनूं घटा, जे सावड़िया जांण ।—बां. दा.

मिजबांनी—देखो 'मिजमांनी' (रू. भे.)

मिजमांण, मिजमांन–सं० पु० [फा० मेहमांन] अतिथि, मेहमान ।
उ०—१ इण कह्यो है कै आंपांरा मिजमांन उलटो अरथ आंपांरा सत्रु जीमावो, मारो, आगत-स्वागत करो ।—वी. स. टी.
उ०—२ खाड़ैत्यां खोलियां,खिड़क खासा रथ खांनां । सिणगारघा सिंदणां मिळण सांमां मिजमांनां ।—मे. म.
रू० भे०—मजमांन, मझमांन, मिझमांन, मीजमांन, मीझमांन,

मिजमांनिय, मिजमांनी–सं० स्त्री०[फा० मेजवानी] १ आतिथ्य-सत्कार, स्वागत ।
उ०—१ ओ ठहराव हुवौ के अबुलजाफर दिलमीं नूं कोट में मिजमांनी करै ।
उ०—२ खिज खाज न भोजन खोजन की, मिजमांनिय भिच्छ न भोजन की । छिबवंत उदंत बिगंत छये । भल संत महंत अनंत भये ।—ऊ. का.
२ आतिथ्य-सत्कार में दिया जाने वाला भोज ।
उ०—१ पछै फेर फरमाई तद दूसरे दिन फेर मिजमांनी हुई ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता
उ०—२ मिळतां ही मरद घोड़ा सूं उतरिया अने घोड़ा आपो आप रा सेल, भालां रै बांधिया, मिजमांनी गोठ में मिळतां हरख होवै ज्यूं जुधरी समै खोबा बाजियां री खेल मचियो ।—वी. स. टी.
उ०—३ नायक नै बेटो दोनूं सांम्हा आया, पांवां लागा । डेरै भीतर बिराजिया । मिजमांनी री नायक जावतो करायो ।
—पलकदरियाव री बात
३ आतिथ्य सत्कार में दी जाने वाली भेंट ।
उ०—पछै रुपया इक्कीस बडारण रै हाथ मिजमांनी रा प्रोहितजी नूं मेलिया ।—कुंवरसी सांखला री वारता
रू० भे०—मजमांनी, मझमांनी, मिजबांनी, मिझमांनी,मीजमांनी, मुझमांनी,

मिजराब–सं० पु०[अ०] सितार आदि तार के वाद्य बजाने का एक छल्ला जो तारों का ही बना होता है ।

मिजलस—देखो 'मजलिस' (रू. भे)
उ०—बा'र बणायर बैठतौ, मिजलस मिजलस मोड़ । पड़दै में नहीं पैठतौ, दूजां ज्यूं घुस दोड़ ।—ऊ. का.

मिजळी–सं० स्त्री—न्यून, निरर्थक ।

मिजळौ–वि० [स्त्री० मिजळी] निम्न एवं ओछि प्रकृति का, जिसकी बात का विश्वास नहीं किया जा सकता हो, दिल का काला, मन का मेला, कृतघ्न— ।
उ०—सब भांत कही हम सोगन की, मिजळे मिटळे महि मोगन की । अन भाय न जोयन आड करै, पुन आय न कोय न लाड परै ।
—ऊ. का.

मिजांन–सं० पु० [अ० मीजान] १ तराजू, तुला ।
उ०—खाक में बहियां हाथ में मिजांन अर कांन में कलम खोस्यां वो इण गांव सूं उण गांव लैण देण करतो ई रैवतो ।—फुलवाड़ी
२ तुला राशि ।
३ गणित में कई अंकों का योग, जोड़ ।
रू० भे०—मीजांन, ।

मिजाज–सं० पु० [अ०] १ किसी प्राणी की मुख्य प्रवृत्ति, स्वभाव आदत ।

उ०—१ माभी खिराक मिजाज, वेग्रदबी सातूं विसन । लोभ घणौ कम लाज, पैळां घर वांछे पिसण ।—बां. दां.

उ०—२ नै सूंठ आकरा मिजाज री तेज तरराट, बोली री बाड़ी, अकड़ेल अर कांमचोर ही ।—फुलवाड़ी

२ किसी पदार्थ का मूल-भूत गुण ।

३ स्वास्थ्य, तबीयत ।

उ०—तद नबाव जांणियो मौत आयी । तारां हाथ जोड़नै कयौ "राजा सा'ब, आपकी मिजाज अच्छी है?" यूं कहने तुरत असवारी नूं टोराय गयो ।—द. दा.

४ गर्व, अभिमान, घमंड ।

उ०—१ यो धापरामन में कै'वतो—भांबणाकी री जात अर हाजरिया आगे मिजाज ! समंदर में रै'वणौ अर मगरमच्छ सूं बैर देखूं कितराक दिन अकड़ती फिरै ।—रातवासौ

उ०—२ इतनू कांई छै मिजाज म्हारे मिंदर आ [ब] तां । थांनै इतनूं कांई छै मिजाज ।—मीरां

५ नाज, नखरा ।

उ०—आलीजै री सेजा में रीझं रहूंली,
कहि रे मिजाज करू रसिया ।—लो. गी.

६ खुसी, मोद ।

उ०—जद वा ऊंदरी आपरे रूप री बखांण सुणनै मिजाज में मटरका करती घरै आयगी ।—फुलवाड़ी

७. दिल, मन ।

रू० भे०—मजाज, मजेज,

मिजाजआली–सं० पु०[अ.] कुशल मंगळा पूछने के लिये प्रयुक्त होने वाला शब्द ।

मिजाजण–वि०—गर्व, अभिमान करने वाली ।

उ०—हे हां ए म्हारी सदा हे मांनेतण सुंदर नार, मिजाजण गोरी सुखपाल मेलां हे ।—लो. गी.

रू० भे०—मीजाजन,

मिजाजदार–वि० [अ० मिजाज–दार] गर्व व अभीमान करने वाला ।

मिजाजपुरसी–सं० स्त्री०[अ०मिजाज+फा पुर्सी]कुशल मंगल पूछने की क्रिया या भाव ।

२. सहानुभूति जतलाना ।

मिजाज शरीफ–सं० पु०—[अ० मिजाजे शरीफ] कुशल–मंगल या स्वास्थ्य-लाभ पूछने के लिये प्रयुक्त शब्द ।

मिजाजी–वि०—[अ० मिजाज+रा० प्र० ई०] (स्त्री० मीजाजण)

१ गर्विला, अभिमानी ।

उ०—ज्यांनी बीच पड़े ग्रो बाजार मिजाजी ढोला, बीच बजार, बजारां एकलड़ी डरपूं जी बजारां एकलड़ी डरपूं जी ।
—लो. गी.

२ नाज–नखरे वाला ।

रू०भे०—मीजाजी,

अल्पा–मिजाजीड़ौ'

मिजाजीड़ौ—देखो 'मिजाजो' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ऊमा राज मिजाजीड़ा अमलां में
अमलां रा छावया सेजलड़ी रे मारगा ।
छक मतवाळी रा बुलाया थे ।—रसीले राज री गीत

मिजाजौ—देखो 'मिजाजी' (रू. भे.)

मिझमांन—देखो 'मिजमांन' (रू. भे.)

उ० हिल मिळ सब सूं हालणो, ग्रहणों आतमग्यांन ।
दुनियां में दस दीहड़ा, मालू तू मिझमांन ।—बां. दा.

मिझमांनदारी, मिझमांनी—देखो 'मिजमांनी' (रू. भे.)

उ०—१ हे प्यारा कोई पांहुणा मिळिया है–(दुसमण आया हैं) ज्यां ने अबे मिझमांनी (जीमावणा रो) वार जेज दीसे है–जीमावणी सस्त्रां सूं प्रहार करणो–अठे लक्षणा लक्षणा ।
—वी. स. टी.

उ०—२ कीधी निछरावळ निजर, मिझमांनी मनुहार ।
दरसण कीधौ सांमरो, 'दुरगो' मोती वार —रा. रू.

मिझलस—देखो 'मजलिस' (रू. भे.)

उ०—रांणेरांव विलास रत, जगनिवास नित जाय ।
मिझलस जांणे माणवा, अंद्र अखाड़े आय ।
—महादांन महडू

मिटणौ, मिटबौ–क्रि०अ०—१ समाप्त होना, खतम होना ।

उ०—१, मांन मिट जातो मोटां हूंट हट जातो हेर,
दांन दट जातो दुख देस को विदेस को ।—ऊ. का.

उ०—२ रसना मुख मयकार मिट, रटि सहजां ररंकार ।
हरीया इंम्रत छांडि करि, विखे न पीवण हार ।
—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ तोय करमानसा तणे, नर सुभ करम नसाय ।
तोय सुमाळे त्रिपथगा, माठा क्रम मिट जाय ।—बां. दा.

उ०—४ मासी कहयो–थने आछी नीं लागै तो म्हने किसो लागै बेटी, पण अपारे दाय नीं आवणा सूं जकी साची बात है वा मिटै तो कोनी ।—फुलवाड़ी

२ बंद होना, रुकना ।

उ०—१ जूंभणो मिटग्यो उण दिन समझलो के जीवणो ही ई मिटग्यो । थे आज सूं ई न्यारा–न्यारा फंट जावौ । न्यारा–न्यारा जूंभौ अर न्यारा न्यारा ई कळाप करौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ रांम नांम जपता रहैं, तर्जे न आला ग्रांन । जन हरीया उंन जीव की, मिटै ना खांचातांन ।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

३ दूर होना, अलग होना, हटना ।

उ०—१ मावड़िया तन मैण रा, मिटै कदे नहं मांद । मावड़िया ढूळा मरद, चूला हंदा चांद ।—बां. दा.

उ०—२ ऐड़ा दूध री जीभ माथै छांटौ पड़ियां ई भूख भागै। खड़ण पड़ता दही री आंगळी ई चाटली व्है तौ दस दिनां तांई चिकणास नीं मिटै।—फुलवाड़ी

उ०—३ एक पुरस नै किणही कह्यौ: थारै बाई रौ रोग है सो सतखंडिया महिल थी पड्यां थारी बाई मिटै।

४ नष्ट होना, क्षय होना।

उ०—१ पिंड री गई प्रतीत, मांण मिटग्यौ मरदां में, ग्यांन मिळ गयौ गरद, दांम रुळग्यौ दरदां में।—ऊ. का.

५ निवारण होना, समाधान होना।

उ०—१ उलटा मन अर पवन, पांच इक धागै पोया। मिथ्या भरम अंधार, द्वार दस दीपक जोया।

—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ वा कीं कैवै उण सूं पैं'ला नागण बोली-आई तौ थनै डसण सारू ही, पण आसीस सुणनै सगळौ भरम मिटग्यौ।

—फुलवाड़ी

६ छूटना, जाना,

उ०—१ दो तीन पीढ़्यां सूं गवाड़ी साव इज थाकल ही। बोहरां रौ खेरो मिटचौ इज नीं हौ तद कीकर ऊपरली पांनौ आवतो।

—फुलवाड़ी

उ०—२ सितर वरसां रौ नांढ़पणौ एक दिन में मिटै इज कीकर आप इण माथै खीझ करो तौ म्हारो पेट बळै—फुलवाड़ी

उ०—३ फटकारती कह्यौ-मोनल, अबै थूं टाबर तो है कोनी, पण थारी हाल टाबरपणौ को मिटियौ नीं। सेवट समझ तो थारी खुद री कांम आवैला।—फुलवाड़ी

७ शान्त होना।

उ०—१ आपरा मित नै वौ गूंचौ झिलायनै कैवण लागो—इण अपछरा सूं परणीजूं तो म्हारो संताप मिटै।—फुलवाड़ी

उ०—२ चाव घणौं कर चेत, सांपड़ता थारे सुजळ। सुर सुर पाप समेत, ताप मिटै जीवां तणा।—बां. दा.

उ०—३ ताहरां स्रीरावजी उतरिया। भगत हुई। आरोगिया। पण मन मांहिलो गुस्सो मिटियौ नहीं।—नैणसी

८ कम होना, घटना, क्षीण होना।

उ०—ग्राह तणौ बळ नहिं मिटचौ, मिटियौ बळ गजराज। तब कुंजर यूं जांणियो, अब हूं भयो निकाज।—गजउद्धार

९ मरना, अवसान होना।

मिटणहार, हारौ (हारी), मिटणियौ—वि०।

मिटिओड़ौ, मिटियोड़ौ, मिटचोड़ौ—भू० का० कृ०।

मिटीजणौ, मिटीजबौ—भाव वा०।

मटणौ, मटबौ—रू० भे०।

मिटाड़णौ, मिटाड़बौ—देखो 'मिटाणौ, मिटाबौ' (रू. भे.)

मिटाड़णहार, हारौ (हारी), मिटाड़णियौ—वि०।

मिटाड़िओड़ौ, मिटाड़ियोड़ौ, मिटाड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मिटाड़ीजणौ, मिटाड़ीजबौ—कर्म वा०।

मिटाड़ियोड़ौ—देखो 'मिटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मिटाड़ियोड़ी)

मिटाणौ, मिटाबौ—क्रि० स० [मिटणौ क्रि. प्रे. रू.] १ समाप्त करना/कराना

उ०—दीवांणजी राजाजी रै पाखती बैठ गया। वो एक खंखारा करनै कै'वण लागा—अंदाता म्हैं आपरी बात माथै घणौ ऊंडो विचार करचौ। जे वडेरा री वातां नै मुळगी ई मिटाय दां तौ लोग कैवैला औ राज ई वडेरां रो चलायोड़ो है इण नै मिटाय दो।

—फुलवाड़ी

२ बंद करना/कराना, रोकना/रुकाना

३ दूरकरना/कराना, अलग करना/कराना, हटाना

४ नष्ट करना/कराना

उ०—दीपक दे मिंदर वड़चा, नांना तिमर नसाय। हरिया ग्यांन प्रकासिया, उर अग्यांन मिटाय।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

५ निवारण करना/कराना, समाधान करना/कराना।

उ०—पावन तूं हरि पाय कटि, कै तो करि हरि पाय। है पावन औ मूझ हियै, मास संदेह मिटाय।—बां. दा.

६ छोडाना पृथक करना/कराना, हटाना

७ शान्त करना/कराना

८ कम करना/कराना, क्षीणकरना/कराना

मिटाणहार हारौ (हारी), मिटाणियौ—वि०

मिटायोड़ौ—भू० का० कृ०

मिटाईजणौ, मिटाईजबौ—कर्म वा०

मटाणौ, मटाबौ, मिटाड़णौ, मिटाड़बौ, मिटावणौ, मिटावबौ।

—रू. भे.

मिटायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ समाप्त किया या कराया हुआ, खतम किया या कराया हुआ. २ बंद किया या कराया हुआ. ३ रोका या रुकाया हुआ ४ दूर किया या कराया हुआ. हटाया हुआ. ५ नष्ट किया या कराया हुआ. ६ निवारण या समाधान किया या कराया हुआ. ७ छूटा हुआ, गया हुआ. ८ शान्त किया या कराया हुआ. ९ कम किया या कराया हुआ।

(स्त्री० मिटायोड़ी)

मिटावणौ, मिटावबौ—देखो 'मिटाणौ, मिटाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ धरम, जात अर कुळ धुराधुर नै मिटावण री ऊंडी फिरायदी।—फुलवाड़ी

उ०—२ सतगुरु सा सामथ नहीं कोई, विसिया लहरि मिटावै सोई।—स्रीहरिरांमदास जी महाराज

मिटावणहार, हारौ (हारी), मिटावणियौ—वि०

मिटाविओड़ौ, मिटावियोड़ौ मिटाव्योड़ौ—भू० का० कृ०

मिटावीजणौ, मिटवीजबौ—कर्म वा०

मिटावियोड़ौ—देखो 'मिटायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मिटावियोड़ी)

मिटियाड़–सं० स्त्री०—कीचड़, पंक,

उ०—घोटियोड़ा वासणां माथै गेरु अर पांडू रा मांडणा मांडतौ

वो कु

थोड़ी

सारू

मिटियामेट–

२ तह

मिटियोड़ौ–

२ बंद

४ नष्ट

हुवा हु

हुआ, घ

(स्त्री०

मिटी—देखो

मिटी रो तेल

जिसका

मिट्टि, मिट्टी–

मिट्ठु—देखो

उ०—क

जग वल्ल

मिठड़ौ—देखो

उ०—१

करी मो

उ०—२

मिट्ठौ—१ दे

उ०—मं

दादू तो

२ देखो

मिठ—देखो

उ०—बा

मिट्ठु, मिट्ठू–

रू० भे०–

अल्पा०–

मिठाबोलो–वि

मिठरस–सं०

उ०—ख

मिठांण—देखो 'मिस्टांन्न' (रू. भे.)

मिठाई–सं० स्त्री०—१ मीठा होने की अवस्था, क्रिया या भाव, मिठास, माधुरी,

मिणिग्रोड़ौ, मिणियोड़ौ, मिण्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मिणीजणौ, मिणीजबौ—कर्म वा०।

मिण—सं० स्त्री०—१ कुए के घेरे की दीवार, घेराव
उ०—महावीर गोतम मुख मोड़ी चौतीणो खिणियों मिण चौड़ी जैनी खाड चिड़ी पट जोड़ी, मौत हुवै कौ जाय मकोड़ी।—ऊ. का.
रू० भे०—मीण,
२ देखो 'मणि' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१ सखी ग्रमोणो साहिबो, निरभै काळो नाग। सिर राखे मिण स्यांमध्रम, रीझै सिंधु राग।—बां. दा.
उ०—२ खुडिया ऊपरि जांणि खांभिग्रां, मिणधर राजा तणी मिण।—महादेव पारवती री वेलि
उ०—३ कापड़माल ग्रसंख,हेम मिण रयण विभूखण —गु. रू. बं.

मिणजल—सं० पु० [सं० मणिजल] विद्युत, बिजली (ह. नां. मा.)

मिणधर, मिणधरण, मिणधारी—देखो 'मणिधर' (रू. भे.)
उ०—१ मिणधर विख ग्रणमाव, मोटा नह धारै मगज। बीछू पूंछ बणाव, राखै सिर पर राजिया।—किरपाराम
उ०—२ चंदण लपटै मिणधरण, रीझै सांभळ राग। विण मुख मांझल जहरतै, निदवियौ जग नाग।—बां. दा.
उ०—३ मांगळियौ 'सुंदर' मिणधारी, धुर भगवांन महाव्रत धारी।—रा. रू.

मिणसणौ, मिणसबौ—क्रि० स० [सं० मनस्यन्] १ मन में इच्छा विचार या सकल्प करना
२ मन में दृढ़ निश्चय या संकल्प करना.
३ कोई पदार्थ दान करने के उद्देश्य से, सम्मुख रखकर या हाथ में लेकर विधिपूर्वक मंत्र पढ़कर सकल्प करना.

मिणसियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मन में इच्छा, विचार या संकल्प किया हुआ. २ मन में दृढ निश्चय या संकल्प किया हुआ. ३ कोई पदार्थ दान करने के उद्देश्य से सम्मुख रख-कर या हाथ में लेकर विधि पूर्वक मंत्र पढकर संकल्प किया हुआ.
(स्त्री० मिणसियोड़ी)

मिणसीकर—सं० पु० [सं० सीकरमणि]चंद्रमा, चांद, (नां. मा.)

मिणि—देखो 'मणि' (रू. भे.)

मिणिग्रड—देखो 'मणियड़' (रू. भे.)
उ०—मिणिग्रड नेपति भडां, खग्गवाहां खत्र घोडा।—गु रू. बं.

मिणिधर—देखो 'मणिधर' (रू. भे.)

मिणियड़, मिणियर—देखो 'मणियड़' (रू. भे.)
उ०—सझ दळ बालां हरा सवाया, ग्रखई पवै प्राग सम ग्राया। मिणियड दल मेळे घर मंगल,ग्रायौ जैतमाळ ग्रतुलीबळ।—रा. रू.

मिणियार—देखो 'मणियारा' (रू. भे.)

मिणियारौ—देखो 'मणियारौ' (रू. भे.)

मिणियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ नापा हुग्रा.
२ देखो 'मुणियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मिणियोड़ी)

मिणियौ—देखो 'मणियौ' (रू. भे.)

मिणिहार—देखो 'मणियार' (रू. भे.)

मिणिहारौ—देखो 'मणियारौ' (रू. भे.)
उ०—कोयल ऐ ग्राज म्हारै जांमण जायौ बहनड़ जोइजे। बहनड़ म्हारी मिणिहारा री हाट, मूंगा मोलां री मोती बहनड़ मोलवै।—लो. गी.

मिणी—देखो 'मणि' (रू. भे.)

मिणीधर—देखो 'मणिधर' (रू. भे.)

मिणीयड़, मिणीयर—देखो 'मणियड' (रू. भे.)
उ०—१ नगधर मिणीयड नीपजै, कोडीधज केकांण।—वी. मा.
उ०—२ कूक गई महमंद कने जग सारै जांणी। इळ मिणीयर कर ऊजळी तीजणियां ग्रांणी।—वी. मा.

मितंग, मितंगम—सं० पु० [सं०] हाथी, गज

मितंपच—वि० [सं०] १ निर्धन, दरिद्र।
उ०—कै जुव्वन व्यय ब्याह पै नायक हरखाया। जांणी मितंपच रंक कौ नव हो निधि पाया।—वं. भा.
२ कृपण, कंजूस (निन्द्य)
३ थोडा पकाने वाला।

मित—वि० [सं०] १ परिमित, थोड़ा।
उ०—वय एकादस मित बरस, समर जीति हय सूर। प्रतिहारी ग्रांणी प्रथम, 'पिथ' कवर गुण पूर।—वं भा.
२ तुल्य, समान, तरह।
उ०—१ मथै जवन दळ उदधिखीर मित, 'ग्रचळ' हुवौ तिलतिल सुर ग्रंचित।—वं. भा.
उ०—२ बदै 'जसो' जिणवार, कंवर ग्रग्गळ जोड़ कर। मीणां ग्रधम गंमार, घणां छक ग्रनड़ रहै घर। बीरां सम्मुह वेग, पूंछ पटकै मंडळ मित। एक खीचि ग्राइ सबळ, कीधा खळ संकित। ग्रभिधांन 'गंग' सगो संगर, निम्मदेव ग्रंगज निडर। ग्रसवार एक जडिया उठै, ग्रोखळिया भाला ग्ररर।—वं. भा.
सं० स्त्री०—१ संख्या, गिनती।
उ०—१ गहर में भीति ग्ररणा नदी तरिब बहै, ग्रनंत ग्रागे बह्या मित नांही। साध ग्राकास में ग्रटकि उलटा चढ्या,प्रांण मन सुरति ग्राकास मांहि।—ह. पु. वां.
उ०—२ नीड़ै दिल्ली नैर रै,लाख उभै मित लोक। कत्ती हैठै करि कतल, ग्रमल कियौ सब ग्रोक।—वं. भा.
२ पार, सीमा।
उ०—दादू जैसा रांम ग्रपार है, तैसी भक्ति ग्रगाध। इन दोनों की मित नहीं, सकळ पुकारै साध।—दादूबांणी
३ माप
उ०—दादू एक जीभ केता कहूं, पूरण ब्रह्म ग्रगाध। वेद कतेबां मित नहीं, थकित भये सब साध।—दादूबांणी

४ मृत्यु, मरण।

उ०—जोगाभ्यासी कीजै, कीजै संग्राम सांम छळ मरणौ। पांमीजै मित मोखौ, निस्चयं तत निरबांण।—गु. रू. बं.

५ देखो 'मित्र' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

मितड़ौ—देखो 'मित्र' (अल्पा., रू. भे.)

मितभासी-वि० [सं० मितभाषिन्](स्त्री० मितभासणी) समझ बूझ कर थोड़ा बोलने वाला, मितभाषी।

मितर—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

उ०—सेठ स्यांमजी जाबक गुण-गाल, मारजा रै लोही रा पीऊ। मितर नहीं मुतळबिया मितरोळ।—दसदोख

मितरता—देखो 'मित्रता' (रू. भे.)

मितराई—देखो 'मित्राई' (रू. भे.)

उ०—दोसती-मितराई मोटी चाल, कितौ ही तुलावौ चाबै मन्डी सूं माल।—दसदोख

मितरी—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

२ देखो 'मंत्री' (रू. भे.)

मितळणौ, मितळबौ-क्रि०अ०—कै आने को होना, मिचलाना।

उ०—बांवलिया री छाल रै उनमांन मगसौ अर खुरदरौ डील। डीगी तौ फूलकंवर रै लगै टगै। पण विडरूप उणियारै। देख्यां जी मितळै। दांत एक दूजा माथै चडचोड़ा।—फुलवाड़ी

मितळणहार, हारौ (हारी), मितळणियौ—वि०

मितळिओड़ौ, मितळियोड़ौ, मितळ्योड़ौ—भू०का०कृ०

मितळीजणौ, मितळीजबौ—भाव वा०

मितळावणौ, मितळावबौ—देखो 'मितळणौ, मितळबौ' (रू.भे.)

उ०—खायौ-पीयौ अंग लागै नीं। अस्टपौर जी मितळावतौ। नींद में गेळीज्योड़ो व्है ज्यूं रैवतौ।—फुलवाड़ी

मितळावणहार, हारौ (हारी), मितलावणियौ—वि०

मितळाविओड़ौ, मितळावियोड़ौ, मितळाव्योड़ौ—भू०का०कृ०

मितळावीजणौ, मितळावीजबौ—भाव वा०

मितवौ—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

उ०—१ वरात चलूंगी प्यारे, नई दुलही कैसी लावोगे। बेसक व्याहौ मितवा मैं राजी, मोहि सन मिलकै सिधावोगे।

—रसीलै राज रा गीत

उ०—२ अब आंन मिलादै कासिदवा रै। मोरै मितवा मोहि सेजरियां।—रसीलै राज रा गीत

मितव्यय-सं० पु० [सं०] थोड़े खर्च में काम चलाना, आवश्यकता से अधिक खर्च न करना, किफायत।

वि०—कम खर्च करने वाला।

मितव्ययता-सं० स्त्री—मितव्यय होने की अवस्था या भाव। किफायत सारी।

मिताई—देखो 'मित्राई' (रू.भे.)

उ०—वजीर अरज कीवी, मिठांई, मिताई, खमाई नरमाई और मुलायमी किण वास्ते। जे इण गुणां सूं रैयत दुआ आपरै बादसाह नूं देवै'—नी. प्र.

मिति, मिती-सं० स्त्री [सं० मिति] १ मान, परिमांण।

२ सीमा, हद।

३ समय की अवधि, दिया हुआ वक्त।

४ देशी महीनों की तिथि या तारीख।

रू० भे०—मिती, मत्ति, मती, मत्ति, मत्ती।

मितीकाटौ-सं० पु० यौ०—१ किसी हुंडी या बिल की निश्चित तिथि से पूर्व भुगतान करने पर मिलने वाली एक प्रकार की छूट, मुद्दत, रियायत।

वि० वि०—यह एक प्रकार का ब्याज है जो अवधि से पूर्व रुपया अदा करने के कारण भुगतान करने वाले को मिलता है।

२ पारस्परिक लेन-देन में, भारतीय-महाजनी प्रणाली के अनुसार अलग-अलग रकमों पर अलग-अलग तिथियों से जोड़ा जाने वाला ब्याज।

मितु—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

मित्त, मित्तर-देखो 'मित्र' (रू.भे)

उ०—१ तुम प्रीतम जे माहरौ मित्त, तुं हिवै कोइ न मेलै चित्त।

—ध. व. ग्रं.

उ०—२ महपाळ सिधां कुळ मित्ता रौ, पहपाळक संतां पीसा रौ। जग जाय जमारौ जीतारौ, सुज संभर सायब सीता रौ।

—र. ज. प्र.

उ०—३ दादू बिरही पीड़ मौं, पड़ा पुकारै मित्त। रांम बिना जीवै नहीं, पीव मिळन की चित्त।—दादू बांणी

मित्र-सं० पु० [सं० मित्रः] १ सूर्य, भानु (अ.मा., डि.को., ना.डि.को., नां.मा.)

२ बारह आदित्यों में से एक।

वि० वि०—भविष्य के अनुसार, मार्गशीर्ष माह में प्रकाशित होने वाले सूर्य को मित्र कहा जाता है। किन्तु भागवत के अनुसार ज्येष्ठ माह में उदय होने वाले सूर्य को मित्र कहा जाता है।

३ एक वैदिक देवता।

४ वार और नक्षत्र सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में १२ वां योग।

५ पुराणों के अनुसार मरुदगण में से पहले मरुत का नाम।

६ ऊर्ज्जा के गर्भ से उत्पन्न वशिष्ठ के एक पुत्र का नाम।

[सं० मित्रम्] ७ सदैव हित चाहने वाला, सुख दुख में काम आने वाला व्यक्ति। सुहृद, हितैषी, शुभेच्छु।

८ प्रेमी प्रियतम

९ सखा, दोस्त, यार।

उ०—१ भ्रात मित्र जुग जुग भला, नीत प्रसिद्ध निराट। जुगळ भुजा कर जांणिया, ऋपणां जुगळ कपाट।—बां. दा.

पर्या०—नेहवाळ नेही, प्रांण, प्रांणइस्ट, प्रीतम, प्रेमीगुण, मन-मेळग,

मनहितू, यस्ट, वलभ, वलभतन, संगतवळ संध्रीच, सखा, सज्जन, सनिगध, सवय, सहकारी, सहक्रतबास, सहचर, सहायक, सुखदा, सुबैण, सुहृद, सैण, सोहारद, हारद, हेतू।

१० श्वेत, सफेद, * (डिं. को.)

रू० भे०—मित, मितर, मित्र, मित्री, मित, मित्त, मित्री, मित्रु, मित्रू, मीत, मींत्र,।

अल्पा०—मंतरोळियौ, मंत्रोळियौ, मितरोळियौ, मितड़, मितरोळियौ। मीतौ,

मह० मितरोळ।

मित्रकपि–सं० पु० यौ० [सं०] श्रीरामचंद्र भगवान (नां. मा.)

मित्रधात–सं० स्त्री० यौ० [सं०] १ मित्रहत्यारा २ मित्र के साथ किया जाने वाला धोखा।

मित्रघातक–वि० [सं०] १ मित्रकी हत्या करने वाला। २ मित्रके साथ धोखा करने वाला।

मित्रता, मित्रताई–सं० स्त्री० [सं० मित्रता] मित्र होने की अवस्था, धर्म या भाव।

उ०—१ प्रयांन तैं अमित्रता विचित्रता विचित्र की। महान मित्र मित्रता पवित्र तैं पवित्र की।—ऊ. का.

उ०—२ ग्रहांराज साखी नंदी ज्वाला गाई। तरैं रांम सुग्रीव री मित्रताई।—सू. प्र.

रू० भे०—मितरता, मितरता

मित्रवांन–सं० पु० [सं०] १ कृष्ण के एक पुत्र का नाम

२ मनु के एक पुत्र का नाम

मित्रविंदा–सं० स्त्री०—श्री कृष्ण की एक पत्नी का नाम।

मित्रसंजोग–सं० पु० [सं० मित्रसंयोग] सुख (डिं. को) *

मित्रसप्तमी मित्रसातम–सं० पु० [मित्रसप्तमी] मार्गशीर्ष व माघ शुक्ला सप्तमी

मित्रसेन–सं० पु० [सं०] १ बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

२ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

मित्रा–सं० स्त्री० [सं०] शत्रुघ्न की माता सुमित्रा का नाम

मित्राई—देखो 'मित्राई' (रू. भे.)

उ०—जेहवी हो वादल केरी छांहड़ी जी, जेहवी मित्राई भेख धारी नी।—वि. कु.

मित्री—१ देखो 'मित्र'

२ देखो 'मंत्री' (रू. भे.)

मित्रु, मित्रू—देखो 'मित्र' (रू. भे.) (अ. मा.)

मिथ–सं० पु० [सं० मिथ] १ संगम करना, सम्मिलित करना।

२ घायल करना, प्रहार करना।

३ पहचानना, समझना।

४ झगड़ा करना, लड़ाई करना।

५ देखो 'मिथ्या' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

मिथन—देखो 'मिथुन' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

मिथया—देखो 'मिथ्या' (रू. भे.)

मिथला—देखो 'मिथिला' (रू. भे.)

उ०—मिथला महिपतीजी अवनी, कीध जिग आरंभ। तेडै समगतीजी लिख, फुरमांण बाहु-प्रलंभ।—र. रू.

मिथळापतजा–सं० स्त्री० [सं० मिथिलापतिजा] मिथिला देश के राजा की राजकुमारी, सीता, जानकी।—(डिं. को.)

मिथळापुरी—देखो 'मिथिळापुरी' (रू. भे.)

मिथळेस, मिथल्लेस–सं० पु० [मिथिला+ईश] मिथिला का स्वामी, राजा जनक।

उ०—१ मिथळेस कुंवरी सीता सुतन, कवि एती ओपमा कहत।

उ०२—मिथल्लेस रै ज्याग आए समीपं। दुवा भूप आए मिळे सात दीपम्।—सू. प्र.

मिथळेसर—देखो 'मिथिळेसर' (रू. भे.)

मिथा—देखो 'मिथ्या' (रू. भे.) (ह. नां. मां.)

मिथि–सं० पु० [सं०] विदेह देश के एक राजा का नाम।

वि० वि०—निमि राजा के मृत्य देह का मंथन करने पर इनका उत्पन्न होना माना जाता है।

मिथिया—देखो 'मिथ्या' (रू. भे.)

मिथियाचार—देखो 'मिथ्याचार' (रू. भे.)

मिथिळा–सं० स्त्री [सं० मिथिला] १ वर्तमान तिरहुत का प्राचीन नाम।

२ उक्त प्रदेश की प्राचीन राजधानी का नाम, जनकपुरी।

मिथिळापुरी–सं० स्त्री०—मिथिला।

रू. भे.—मिथळापुरी।

मिथिळेस, मिथिळेसर–सं० पु० [मिथिलेश, मिथिलेश्वर] निमि के पुत्र राजा जनक।

उ०—सहेल्यां हे आंबो मोरियौ, मोरयौ मोरयौ हे मिथिळेसर द्वार।—गी. रा.

रू० भे०—मिथळेस, मिथळेसर

मिथुन–सं० पु० [सं०] १ बारह राशियों में तीसरी राशि का नाम।

२ ज्योतिष में तीसरा लग्न।

उ०—कहि व्रदचक भांण बुध बुध प्रकास। तन लगन मिथुन सुभ अनंतवास।—सू. प्र.

३ एक साथ उत्पन्न दो बच्चे।

४ जोड़ा, जुट, युग्म।

उ०—देखी नई पंखी मिथुन, हियडई हारी जाय। वली विलोकइ वांनरां, हरण हसंतां धाय।—मा. कां. प्र.

५ संभोग, मैथुन।

उ०—मारगि खर मिथुन करइ, जिमणां जाइ हरण। सांहमी सधव मिलइ बहू, बाहु पहिरि आभरण।—मा. कां. प्र.

६ संगम, समागम।

मिथुनचर–सं पु० [सं०] चक्रवाक, पक्षी, चकवा

मिथ्या–वि० [सं०] १ जो अस्तित्व में न हो परन्तु फिर भी जिसका अज्ञान वश बोध होता है।

उ०—मिथ्या कहूं तो कही न जावै, सत्य नहीं ठहरांणी। ग्यांन विचार जग्या उर अंदर, जिण कुछ है जांणी।
—श्री सुखरांमजी महाराज

२ असत्य, झूठ।
उ०—मिथ्या कूं मिथ्या बताया, मिट्या सांच में सांच मिळाया।
—श्री सुखरांमजी महाराज

३ कृत्रिम, बनावटी।
४ निराधार।
५ कपटपूर्ण।
६ नीति या नियम के विरुद्ध।
रू० भे०—मिथ, मिथया, मिथ्या, मिथिया।

मिथ्याचार-सं०पु० [सं०] १ ऐसा व्यवहार या आचरण जिसमें सत्यता न हो, कपटपूर्ण आचरण।
२ उक्त प्रकार का आचरण या व्यवहार करने वाला।
रू० भे०—'मिथियाचार'

मिथ्याजोग-सं० पु० [सं० मिथ्यायोग] वह कार्य जो रूप, रस, प्रकृति आदि के विरुद्ध हो।

मिथ्यात—देखो मिथ्यात्व (रू.भे.)
उ०—१ मिथ्यात तउ मांनइ नहीं मूल, वलि बिकथा न करइ वातूल।—स. कु.
उ०—२ मिथ्यात नी मति दूर निवारी, साची सद्दहइ मन धारी।—स. कु.
उ०—३ दीठौ सुपनौ आठमौं, आगियानो चमत्कारो रे। अल्प उद्योत जिन धरम, बहुत मिथ्यात अंधारो रे।—जयवांणी

मिथ्याति, मिथ्याती-वि०—देखो 'मिथ्यात्वी' (रू. भे.)
उ०—१ एक गांम में स्वांमीजी उतरचा। अमरसिहजी रा दो साध ईसरदासजी, कोजीरांमजी आया। ऊवै उतरचा। तिहां स्वांमीजी जाय ऊभा प्रश्न पूछ्यो। अणुकम्पा आंणनै किणही भूखा मरता नै मूला दिया तिण में कांइ हुवौ? जद उवै बोल्या: इसौ प्रश्न मिथ्याती हुवै सो पूछै। जद स्वांमीजी बोल्या: पूछणवालां तो पूछ लीवी। पिण कहिण वाला कह्यां मिथ्याती हुवै तो मत कहो।
—भि. द्र.
उ०—२ एम अनादि तणी, मिथ्याती जीव एकंत। वनस्सपति मांहे तिहां, रहियौ काल अनंत।—ध. व. ग्रं.

मिथ्यातौ—देखो 'मिथ्याती' (रू.भे.)
उ०—धुरी थी सूधूं समकित जे धरइं, मांनइ नहि य मिथ्यातौ जी। साहमी सुं धरणइ बइसइ नहीं नहि राग द्वेस नी बातो जी।
—स०कु०

मिथ्यात्व-सं० पु० [सं० मिथ्यात्व प्रा० मिच्छत्त] जो बात जैसी हो उसे वैसा न मानना या विपरीत मानना मिथ्यात्व कहलाता है। मतान्तर से कुदेव, कुधर्म और कुशास्त्र पर श्रद्धा (विश्वास) करना भी मिथ्यात्व कहलाता है।—जैन
उ०—१ हिव मिथ्यात्व वमीयउ, मन उपसमियौ अति घणुं। दुरदम दिल दमियउ, समकित रमीयउ गुण थुणुं।—वि.कु.
उ०—२ आगला नै समझावा द्रस्टांत करड़ावै, जब किणही स्वांमीजी नैं कह्यो: आप द्रस्टांत करड़ा देवो। जद स्वांमीजी कह्यौ रोग तो गम्भीर रो उठचौ अनै कहै म्हारै खूजालो। पिण खूजाल्यां साता न हुवै। हलवांणी रा डांम दियां साता हुवै। ज्यूं रोग तो मिथ्यात्व रूप करड़ो। ते द्रस्टांत सूं हटै।—भि द्र.
वि०वि०—ये दस प्रकार के होते हैं। उनके नाम निम्नलिखित हैं।
१. अधर्म को धर्म समझना।
२. वास्तविक धर्म को अधर्म समझना।
३. संसार के मार्ग को मोक्ष का मार्ग समझना।
४. मोक्ष के मार्ग को संसार का मार्ग समझना।
५. अजीव को जीव समझना।
६. जीव को अजीव समझना।
७. कुसाधु को सुसाधु समझना।
८. सुसाधु को कुसाधु समझना।
९. जो व्यक्ति राग द्वेष रूप संसार से मुक्त नहीं हुआ है उसे मुक्त समझना।
१०. जो महापुरुष संसार से मुक्त हो चुका है, उसे संसार से लिप्त समझना।
रू. भे.—मिथ्यात

मिथ्यात्वी-वि० [सं० मिथ्यात्विन्, प्रा० मिच्छत्ति] सत्य व धर्म पर विश्वास नहीं करने वाला, परमार्थ पर अश्रद्धालु।
उ०—रुघनाथजी स्वांमी नें पूछयो विजयसिहजी पड़हो फेरायो, तालाब कूंवा पर गलना नखाया। दीवां पर ढाकणां दिराया, बूढ़ा मां-बाप री चाकरी करणी, इत्यादिक कार्यों में राजाजी नै कांई हुवो। जद स्वामी बोल्या: राजाजी समद्रस्टी है के मिथ्यात्वी? इम पूछ्यां जाब देवा असमर्थ थया।—भि.द्र.

मिथ्यापुरस-सं०पु० [सं० मिथ्यापुरुष] छाया पुरुष

मिथ्यामत-स० पु०—झूठा मत, पाखण्ड, नास्तिकमत।

मिथ्यामति, मिथ्यामती-वि० [सं० मिथ्यामति] १ दुष्ट बुद्धि, दुर्मति
उ०—१ मिथ्यामति टलिउ दिन मुझ वालियउ है जइ धणई।
—वि. कु.
उ०—२ परदेसी प्रतिबोधीमउ, मिथ्यामति अग्यांनो जी।—स.कु.
२ नास्तिक
सं० पु०—धोखा, छल, कपट।

मिथ्यावाद-सं० पु० [सं०] असत्य बोलना, झूठ बोलना।

मिथ्यावादी-वि० [सं०] असत्यवादी, झूठा

मिथिलोकेस-सं० पु० यौ० [सं० मध्यलोकेश] राजा, नृप (ह. नां. मा.)

मिनक—१ देखो 'मनुस्य' (रू. भे.)
उ०—जटा कनफटा जोगटा खाकी पर धन खावणा, मरुधर में कोड़ां

मिनक, करमा एक कमावणा।—ऊ. का.
२ देखो 'मिनख' (रू. भे.)
मिनकचारौ—देखो 'मिनखचारौ' (रू भे)
मिनकपण मिनकपणु मिनकपणौ—देखो 'मिनखपणा' (रू. भे.)
मिनक्काख—देखो मुनक्का' (रू. भे.)
मिनकियौ-सं० पु०—देखो 'मिनियौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)
२ देखो 'मनुष्य (ग्रल्पा., रू. भे.)
मिनकी—देखो 'मिन्नी' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—फाटी नहीं ग्रांख झबकाई, लेगी नह लपकाईनै। लख लांणत मिनकी नै लागी, उण वेळा नह ग्राई नै।—ऊ. का.
मिनकौ—देखो 'मिन्नो' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—जाब्तौ राखतां थकां ई म्हांटो मिनको तौ नित जांवखियां चाट जावै।—फुलवाड़ी (स्त्री० मिनकी)
मिनक्ख—१ देखो 'मनुष्य' (रू. भे.)
उ०—ग्रावो पं हूंना सो तूं ग्राप, विसंभर भूत सरव्व बियाप। सबै कुछ जागां बैठो साह, मिनक्खां देवां नागां मांह।—ह. र.
२ देखो 'मिनख'
मिनख-सं० स्त्री० [सं० मनुष्य] १ स्त्री, ग्रौरत
२ पत्नी
३ जनता, प्रजा
सं० पु०—४ पति, खाविंद।
५ देखो 'मनुष्य' (रू. भे)
उ०—१ नाव तिरै नह नीर में, निबळां नावड़ियांह। राजस नंह साबत रहै, मिनखां मावड़ियांह।—बां. दा.
उ०—२ मिनख री था गुलांमी तो हवा ग्रौर उजास में ही विस घोळ दे।—फुलवाड़ी
रू० भे०—'मिनक्ख'
मिनखजूण-सं० पु० [सं० मनुष्य+योनिः] मनुष्य योनि, मनुष्य जन्म।
उ०—सब सूं हंस हंस बोल, पर दुख में साथवणो। मिनख जूण ग्रनमोल, च्यार दिनां री चांदणी—ग्रज्ञात
रू० भे०—मिनखाजूण।
मिनखपण, मिनखपणु मिनखपणौ—सं० पु० [सं० मनुष्यत्व] मनुष्यता इन्सानियत।
उ०—मांनखो पैसा सूं घणो मूंघो गिणीजतो। उण बखत तक मिनखपणा रो साफ काळ नी पड़ियो हो। इण वास्ते कांम पड्यां मिनख मिनख रै कांम ग्रावतो।—रातवासो
रू० भे—मिनकपण, मिनकपणु, मिनकपणौ, मिनखापण, मिनखापणू, मिनखापणौ,
मिनखमार-वि० [सं० मनुष्य+मृ] मनुष्य-हत्या करने वाला, मनुष्य को मारने वाला।
उ०—वौ खांड जोखतो हो। उणनै जायर कह्यौ-मिनखमार किराड़, थारो देवाळो निकळै, थारो घर भागै।—फुलवाड़ी
मिनखांमनमोहणी-सं० स्त्री० [सं० मनुष्य+मन+मोहिनी] पृथ्वी, जमीन। (ह. नां. मा.)
मिनखा-सं० स्त्री [सं० मनिषा] बुद्धि, ग्रक्ल। (ग्र. मा.)
मिनखाचार-सं० पु० [सं० मनुष्य+ग्राचार] मनुष्य के साथ व्यवहार करने के गुण, मनुष्यत्व, मनुष्यपन, इन्सानियत।
रू० भे०—मिनकचार, मिनकचारौ, मिनखीचार, मिनखीचारौ।
मिनखाजूण—देखो 'मिनखजूण' (रू. भे)
मिनखादाख—देखो 'मुनक्का' (रू. भे.)
मिनखापण, मिनखापणू, मिनखापणौ—देखो 'मिनखपणा' (रू. भे.)
उ०—१ बोलो, कांई इसी जूंण पूरी करण-रो नांव ई 'जीवण' है? इयै-नै मिनखापणौ कंवूं कन ढांढापणौ?—वरसगांठ
मिनखी—देखो 'मिन्नी' (ग्रल्पा. रू. भे.)
उ०—मावड़ियो वन मांझळी, सो नहं जाय सिकार। डोळा मिनखी सूं डरै, मूसा ज्यूं मुरदार।—बां. दा.
मिनखीचार, मिनखीचारौ—देखो 'मिनखाचार' (रू.भे.)
उ०—१ म्हैं फगत मिनख हूं ग्रर मिनखीचारौ ई म्हारो धरम ग्रर भगवांन है।—फुलवाड़ी
उ०—२ तपसी कह्यो-पूरी पतियारो ग्रर विस्वास व्हैतां थकां ई म्हैं थांरी सावळ परख करणी चावतो हो। सोना में खोट व्है सकै पण थांरा मिनखीचारा में कीं कसर कोनीं।—फुलवाड़ी
मिनखेड़ो-वि० [स्त्री० मिनखेड़ी] मनुष्यों के पास रहने का ग्रादि। (पशु, पक्षी)
मिनड़ी—देखो 'मिन्नी' (ग्रल्पा., रू.भे.)
उ०—१ सेठ ई मनाग्यांना सोच लियो के लारो छूटणो दोरो है। ग्रा मिनड़ी तो जबरो ग्रांटो साजियो।—फुलवाड़ी
उ०—२ सिरिया दे धाया, करो सहाया। मिनड़ी जाया, संभ ग्राया।—भगतमाळ
मिनड़ो—१ देखो 'मिन्नो' (ग्रल्पा रू.भे.)
२ देखो 'मन' (ग्रल्पा., रू.भे)
मिनट-पु० [ग्रं०] समय गणना में एक घंटे का साठवां भाग, साठ सेकंड का समय।
उ०—मूळी रौ हियौ फूटण लागग्यो, उफणग्यो, होळ उड़ग्यौ ग्रर चित्त भरम हुयग्यो। मन मिनट भर ही मरै नहीं। जी घड़ी पळ हीज जमैं नहीं।—दसदोख
रू०भे०—मिट, मिलट, मिल्ट।
मिनमिन-सं०पु० [ग्रनु०] बकरी के बोलने जैसी ग्रावाज, ग्रस्पष्ट व दबी हुई ग्रावाज।
उ०—डोकरो भिड़कनै कह्यौ—उभौ बळ, पूछूं जित्ती बात ई बता, घणा मिनमिन नीं करणा।—फुलवाड़ी
मिनमिनाणौ, मिनमिनाबौ-क्रि० स० [ग्रनु०] १ धीमे-धीमे दबे हुए स्वर में कुछ कहना।
२ बहुत धीरे-धीरे काम करना।

मिनमिनौ-वि० [अनु०] १ मिनमिन करने वाला, धीमे दबे हुए अस्फुट स्वर में कुछ कहने वाला।
२ छोटी-छोटी बात पर चिढ़ने वाला।
३ धीरे-धीरे काम करने वाला, सुस्त।

मिनि—१ देखो 'मन' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ तो रवराया रांणी सकति सप्रांणी भगतां भांणी मिनि भांणी।—पी. ग्रं.
उ०—२ मिनि ब्रहमा मोरी फते फरसरी रैण मुखी तुं रतरी।
—पी. ग्रं.
२ देखो 'मिन्नी' (रू.भे.)

मिनियौ—बिल्ली का बच्चा।
उ०—मिनिया मंजारीह, अगन प्रजाळी ऊबरया। वरतो मो वारीह, सुणे क बहरो सांवरा।—रामनाथ कवियौ

मिनिस्टर-सं० पु० [अं०] मंत्री, वजीर।

मिनी—देखो 'मिन्नी' (रू.भे.)

मिनीआडर—देखो 'मणियाडर' (रू.भे.)
उ०—सौ-सौ रा मिनीआडर गंगाबदरीजी रै पंडा नै लगा दिया।
—दसदोख

मिनौ—१ देखो 'महीनौ' (रू.भे.)
उ०—जद मोह कह्यौ-चूलो म्हारौ रायरंगीलो, छठै मिनै सिळगै।
—फुलवाड़ी
२ देखो 'मिन्नौ' (रू.भे.)

मिन्नत-सं० स्त्री० [अ०] विनती, प्रार्थना, दुआ।
रू.भे.—मीनति,

मिन्नी-सं० स्त्री०—१ बिल्ली, मार्जार।
उ०—बेटी रा बापां थोड़ौ घणौ तो विचार करौ कै बापड़ा ऊंदरा तो धांन अर कपड़ा रौ थोड़ो घणौ बिगाड़ करै, पण थें तो बांनै मिन्नी रै हाथां जिया मोत मराय न्हांको हो।—फुलवाड़ी
२ घीया आदि के छोटे टुकड़े करने का उपकरण विशेष।
रू० भे०—मिनि, मिनी, मीनी,
अल्पा०—मिनकी, मिनखी, मिनड़ी

मिन्नौ-सं० पु०—बड़ा बिल्ला, बिलाव।
महा०—मीनड़ौ,

मिमंत-वि०—देखो मैमंत
उ०—सांभै सुपना पाइया, घण जोवण मिमंत। जांणु ढोलै जागवी, केसर भीनै कंत।—ढो. मा.

मिमजर, मिमझर-सं० स्त्री०—बबूल, नीम आदि वृक्षों पर फल लगने पूर्व आने वाला बौर, मंजरी।
उ०—मेघ मरोड़ै डाळ, पवन आंधी झकझोळै। दावौ देवै दाग, बैर गिरमी मिस घोळै। अड़ उपकारी मरद,दटै ना दुसम्यां रै डर। सिर धर पीळो मुकुट, खांड कण मुकता मिमझर।—दस-देव
रू० भे०—मीजर, मीमजर।

मिमता—देखो 'ममता' (रू. भे.)
उ०—मिमता माया मोह मन,संसा सोग सरीर। हरिया जब संगी हता, हरि सुख लहै न सीर।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज
उ०—२ हरिया सुन चित मोह भया, मिमता अजूं न अघाय। कीड़ा होसी करम का, चुड़िख चुड़िख तन खाय।
—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

मिय-वि०—१ मित, परिमित (जैन)
२ स्वल्प (जैन)
३ देखो 'म्रिग' (रू. भे.)

मियां-सं० पु० [फा०] १ पति, खांविद।
२ स्वामी, मालिक
३ प्रतिष्ठित और मान्य व्यक्ति (मुसलमान)
४ मुसलमान, यवन।
उ०—जागव्वळ भाळत कौतुक जुद्ध, माळा कज संकर ढाळत मुद्ध। बिचै बहु हूर किमां गळ बांह, मियां रजपूत हिचै रण मांह।
—मे. म.
५ उत्तर भारत के पहाड़ी राजपूतों की उपाधि
रू० भे०—मींयो, मीयां, मीयौ

मियांघोड़ी-सं० स्त्री० यौ०—छोटे बच्चों का एक खेल विशेष
वि० वि०—खेल में हारने वाले घोड़ी बनते हैं और जीतने वाले उनकी पीठ पर बैठते हैं।

मियांन—देखो 'म्यांन' (रू. भे.)

मियांनी—देखो 'म्यांनी' (रू. भे.)

मियांनौ—देखो 'म्यांनो' (रू. भे.)

मियांमिट्ठू-वि०—१ अपने मुह अपनी प्रशंसा करने वाला
२ मधुर भाषी, मीठा बोलने वाला।

मियूं—देखो 'महीन' (रू. भे.)

मियूख—देखो 'मयूख' (रू. भे.)

मियै—देखो 'मांय' (रू. भे.)

मियौ—देखो 'महीन' (रू. भे.)

मिरक' मिरख-सं० स्त्री०—कांटे का सूक्ष्मतम भाग, या खंड।

मिरखावाद—१ देखो 'मिरसावाद' (रू. भे.)
उ०—हिंसा कीधी रे जीवनी, बोल्या मिरखावाद। चोरी कीधी रे पर तणी, मैथुन में परमाद।—जयवांणी

मिरग—देखो 'म्रिग' (रू. भे.)
उ०—१ रांम बिना व्रज ऐडी सूनी लागै, डार सूनी ज्यां एक मिरग बिन।—लो. गी.
उ०—२ मिरग न वाज्यौ वायरौ अदरा न वूठौ मेह। जीवन न आयौ वैटड़ौ, तीनूं ही हारी देह।—अज्ञात
उ०—२ नणद पूछयौ के आंख रौ डोळौ बारै कीकर आयौ। पैं'ला तो मिरग नै ई लाजां मारै जैड़ी आंख्यां ही।—फुलवाड़ी

मिरगचड़ौ-सं० पु०—वर्षा ऋतु में पाया जाने वाला एक कीट विशेष।
मिरगछाळा—देखो 'म्रिगछाळा' (रू. भे.)
मिरगजळ—देखो 'म्रिगजळ' (रू. भे.)
उ०—यह सब माया मिरगजळ, झूठा झिलमिल होइ। दादू चिलका देखकर, सत कर जांणा सोइ।—दादूबांणी
मिरगत्रसणा—देखो 'म्रिगत्रसणा' (रू. भे.)
मिरगधर—देखो 'म्रिगधर' (रू.भे.)
मिरगनाथ—देखो 'म्रिगनाथ' (रू.भे.)
मिरगनैणी—देखो 'म्रिगनैणी' (रू.भे.)
मिरगपति—देखो 'म्रिगपति' (रू.भे.)
मिरगनाभ—देखो 'म्रिगनाभ' (रू.भे.)
मिरगमंदा—देखो 'म्रिगमंदा' (रू.भे.)
मिरगमद—देखो 'म्रिगमद' (रू.भे.)
मिरगमित्र—देखो 'म्रिगमित्र' (रू.भे.)
मिरगया—देखो 'म्रिगया' (रू.भे.)
मिरगराज—देखो 'म्रिगराज' (रू.भे.)
मिरगलड़ौ, मिरगलौ—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ काया कठिन कमांन है, खांचे विरळा कोइ। मारै पंचां मिरगला, दादू सूरा सोइ।—दादूबांणी
उ०—२ बाबौ धकै कैवण लागौ-जद भगवांन रांम ई सोना रा मिरगला रै छळावा में आय उणरौ लारौ करण री लालसा नीं ठांम सक्या, पछै उण मीटीघड़ कुमार री कांई ठरकौ जको माया रा छळबा में नीं फदै।—फुलवाड़ी
उ०—३ सैल करण सायबौ गयौ हुय लीली असवार, कै जंगळ की मिरगल्यां म्हारो लियो छै स्यांम बिलमाय, दासी, कण बिलमायो ए, रावत नहीं आयो अब तक बारणै।—लो. गी.
(स्त्री० मिरगलड़ी, मिरगली)
मिरगवीथी—देखो 'म्रिगवीथी' (रू.भे.)
मिरगसिरा—देखो 'म्रिगसिरा' (रू.भे.)
मिरगांक—देखो 'म्रिगांक' (रू भे.)
मिरगा—देखो 'म्रिग' (रू.भे.)
उ०—मिरगा वाव न वाजिया, रोहण तपी न जेठ। कंथा म बांधै झूंपड़ी, रहसां बड़ला हेठ।—अज्ञात
मिरगानयन, मिरगानैणी, मिरगानैनी—देखो 'म्रिगनैणी' (रू.भे.)
उ०—१ नारी मिरगानयन, रंग रेखा रस राती। वर्द सुकोमळ वयण, महा भर योवन माती।—वि.कु.
उ०—२ थांनै तो प्यारी पिया चाकरी जी ढोला म्हांनै तो लागो प्यारा आप,म्हांनै तो लागो प्यारा आप। अब घर आयजा मिरगानैणीरा बालमा हो कै रै।—लो. गी.
उ०—३ ढोलाजी रै' सासरै। कै रै' म्हारी मिरगानैणी के पी'र जी ढोला।—रा.लो.गी.
मिरगाळौ—देखो 'म्रिग (अल्पा., रू.भे.)
(स्त्री मिरगाळी)
मिरगी—देखो 'म्रिगी' (रू.भे.)
उ०—भींगी री गळाई उणरौ रांटौ नाक रातौ लाल व्हैगौ मिरगी री रोगी घर धर धूजै अर तड़ाचा बावै ज्यूं वो धूजण लागौ।
—फुलवाड़ी
मिरगेंद्र—देखो 'म्रिगेंद्र' (रू.भे.)
मिरगेस—देखो 'म्रिगेस' (रू.भे.)
मिरगौ—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—१ कठैयन लाध्यो जुलमी मिरगलो। ढूंढ्या ढूंढ्या रांण खमांण मिरगे विना मिरगी एकलड़ी। मिरगौ छोड़ गयो वन खंड मांय मिरगी नै एकलड़ी।—लो.गी.
उ०—२ थे तो धनुसर धारो मिरगो मारो रघुवर रसिया हिरण हेरौ जो
—गी.रां.
(स्त्री० मिरगी)
मिरघ—देखो 'म्रिग' (रू.भे.)
उ०—१ जन हरिया मन मिरघ ज्यूं, बरज्यौ केती वार। काया बाड़ी बीच में, करि करि जाय बिगार।
—स्रीहरिरांमदासजी महाराज
उ०—२ मिरघै मरम न जांणियो, मुश्कि कस्तुरी नाभ। हरिया सब घट रांम है, गुरु बिन गयै अलाभ।
—स्री हरीरांमदासजी महाराज
उ०—३ वद वाहां देतो 'मुकनावत' श्रै बे वरणा न खेलै आळ। चांभरियाळ डाब मुख चीना, मिरघण डाब न लाधै माळ।
—रांमसिंह भाटी री गीत
(स्त्री० मिरघण, मिरघी)
मिरघमाळ-सं० स्त्री०—१ एक प्रकार की भांग।
उ०—इसै में भांगेसुर मंगाय जै छै। सू किण भांत छै? केसररी क्यारी दोलळी वासग-माथारी। थोहररा बिड़ारी, भाखररा, खुडारी, भूरै मोररी, काळै पांनरी, आबूरा बिहड़ांरी, भमरमार मिरघमाळ लरियाळ चिड़ियाळ चोटड़ियाळ। एक पांन अडगरियां पान एक पांन अहमदाबाद पांन-पांनरो रस लीजै छै तिण भांग साक मसाळा मंगायजै छै।—रा.सा.सं.
२ मृगों की पंक्ति।
मिरघलौ—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—खड़ो पुकारै मिरघलो, या वन मांहि अनेक। और पारधी चुणि लिया। आय रह्या हम एक।
—स्रीहरिरांमदासजी महाराज
(स्त्री० मिरघली)
मिरघांणू—देखो 'म्रिग' (मह., रू.भे.)
उ०—बीटै मिरघांणू अति विघनांणू, बळ तूटांणू बीहांणू। सिमरै तिह टांणू भील डसांणू स्वांन हटांणू छुटवांणू।—भगतमाळ

मिरघानैणी—१ देखो 'म्रिगानैणी' (रू.भे.)

उ०—जावा दो छिणगारी नार जावा दो ना जी थांनै श्राय पुजावां गणगोर। म्हारी मिरघानैणी जावा दो ना ए। हूं जा मारू यांही रैवो जी।—लो गी.

मिरघी—देखो 'म्रिगी' (रू.भे.)

उ०—सूली देवै सहज, देय दै फांसी देखो। मिरघी लकवै मांहि, उभय अंतर अवरेखो। जांन्हूं ढेरू जोय, विगत दुख भेद बतावो। श्राधासीसी श्रांखि, जुवर कुण सूळ जतावो। ब्राह्मण रु गाय हित्या विखै, नीच ऊंच निरखो नमण। तिम अमल तमाखू तोलि लौ कुण घटतौ, बढ़तौ कमण।—ऊ.का.

२ देखो 'म्रिग' (स्त्री.)

मिरड़—देखो 'मिरड़ो' (मह., रू. भे.)

मिरड़ियौ—देखो 'मिरड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मूल मोलता मिनख, मिरड़िया घणां घुरावै। हल वावतड़ी वेर, फोगड़ा बीज तुरावै। मीठा हुवै मतीर, खूब्र खाटोड़ा फोगां। काचर काकड़ियां, टींडसा सागां जोगां।—दसदेव

मिरड़ो-सं० पु०—काटे हुए झाड़ों और वृक्षों का ढेर।

उ०—निकळै मिरड़ा लार, गंठेली सूकी सांकळ। घर कोटां रै ध्येय, पड़ी लद लकड़्यां वाखळ। टेका कड़ियां बांध, ढोवता घर पर श्राखी। फोगां हूंदी फसल, गरीबां गायक लाखी।—दसदेव

मिरच-सं० स्त्री० [सं० मरीचं, मरिचः मरीचः] १ एक प्रसिद्ध पौध जिसके लंबी फली लगती है जो प्रारंभ में हरी और पकने पर लाल हो जाती है।

उ०—वणक पुत्र कागद लिखै, कांनामात न देत। हींग मिरच जीरो लिखै, हुंग मर जर कर देत।—अज्ञात

२ उक्त पौध की फली।

वि० वि०—लालमिर्च का क्षुप मकोय के क्षुप के समान होता है। फूल इसके सफेद रंग के आते हैं। फल फलीनुमा अपक्वावस्था में हरा और पकने पर लाल हो जाता है। यह मसालों के साथ शाक में विशेष रूप से डाली जाती है।

मुहा०—१ मिरचां लागणी—किसी को अप्रिय और तीक्ष्ण बातें सुनने में बहुत बुरा लगना। २ मिरचां लगाणी—किसी को अप्रिय और तीखी बातें सुनाना। १ एक प्रसिद्ध लता का गोल आकार का दाना विशेष जो स्वाद में तीखा होता है। इसे काली मिर्च भी कहते हैं। (अ. मा.)

उ०—उर पतसाह उचाट अत, वाट अटकी देखा। मिरच हुतासण होमियां, मंत्र कतेब विसेखा।—रा. रू.

वि० वि०—मिर्च लता दक्षिण प्रदेश के त्रिवाङ्कुर, मलावार आदि की खादर उपजाऊ भूमि में अधिक मात्रा में उत्पन्न होती है, वहां के रहने वाले इस लता के छोटे छोटे टुकड़े करके बड़े बड़े वृक्षों की जड़ों में लगा देते हैं। तीन वर्ष में लता पर फल आता है। फल पक कर लाल हो जाते हैं परन्तु सूख जाने पर काला रंग हो जात है। शाक इत्यादि में काली मिरच मसाला हो गई है।

पर्याय—उखणा, कोळका, क्रसनाफळा, सिखता, तीख, वेळज, सिधकांम, सुघकर।

३ तास के पत्तों से खेला जाने वाला एक खेल।

रू० भे०—मरच, मरिच, मिरचि, मिरची, मिरच्च।

मिरचाई-सं० स्त्री०—मुनक्का दाख।

मिरचि—देखो 'मिरच' (रू. भे.) (अमरत)

मिरचियाकंद-सं०पु०—एक प्रकार का कंद जो सर्प काटे जाने वाले व्यक्ति को घिस कर पिलाया जाता है।

मिरचियागंध-सं० पु०—रूंसा नामक घास।

मिरची—१ छोटे बच्चों का एक प्रकार का खेल (शेखावाटी)

२ देखो 'मिरच' (रू भे.)

मिरचौ—देखो 'मिरजौ' (रू. भे.)

मिरच्च—देखो 'मिरच' (रू. भे.)

उ०—कोप मिरच्चां होम कर, घर फिर मेळ सलाह। दुंद मिटावण अविखयौ, 'सोनंग' हूंता साह।—रा. रू.

मिरजई-सं०पु० [फा० मिराज] एक प्रकार की बंददार कुरती।

मिरजौ-सं०पु० [फा० मीरजा] १ मीर या अमीर का लड़का।

२ शाहजादा।

३ तैमूर वंश के शाहजादों और मुगलों की एक उपाधि।

उ०—१ पाली सुण मिरजै पुकारां,तुंग कसे चढियौ तोखारां।—रा.रू.

उ०—२ आगै भड़ 'अजमाल' रा बाहर हेरे वाट। अतरै मिरजौ आवियौ, गह छावियौ निराट।—रा. रू.

वि०वि०—यहां मिरजा शब्द नूरमली मुगल के लिए प्रयोग हुआ है।

उ०—३ मिरजौ नूरमली बळ मंडै, आयौ भांण सिरै उमंडै।
—रा रू.

उ०—४ मिरजै मुहकम मारियौ, कर छळ मिळ प्रकास। वेढक डेरै वजियौ, पड़िया सुहड़ पचास।—रा. रू.

४ मुसलमान,यवन।

उ०—जीण मेरी बाई ए खैरचां खैरचां बंद भ्या टारड़ा। तमवों की रुपगी गाडी मेख। जांमण की ये जाई,भाठै भाठै पर मिरजा बैठिया।—लो गी.

वि०—कोमल, नाजुक।

रू०भे०—मिरचौ

मिरणाळ—देखो 'म्रिणाळ' (रू.भे.)

मिरणाळी—देखो 'म्रिणाळी' (रू.भे.)

मिरत—देखो 'म्रित' (रू.भे.)

मिरतक—देखो 'म्रितक' (रू.भे.)

मिरतककरम—देखो 'म्रितककरम'

मिरतग—देखो म्रितक' (रू.भे.)

उ०—मन जांणु मिरतग भयो, पांच सती भई लार। हरिया अहरन ऊठि के, बोले मारु मार।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मिरतगकरम—देखो 'म्रितककरम' (रू. भे.)

मिरतजीव—देखो 'म्रितजीव' (रू.भे.)

मिरतजीवनी—देखो 'म्रितजीवनी' (रू.भे.)

मिरतसनांन—देखो 'म्रितस्नांन' (रू.भे.)

मिरतस्थांन—देखो 'म्रितस्थांन'(रू भे.)

मिरति—देखो 'म्रिति' (रू.भे.)

उ०—वांणी सुण चहुवांण,ग्रांण ऊभी राय ग्रंगण। सखी हूंत नव सपत, मांगि मुख ग्रादि समंजण। ग्राज मिरति मंगळी, ग्राज पतिवरत संभाळे। ऊपनी जग ग्रंस ग्राज, सुज वंस उजाळे।

—रां. रू.

मिरतिका—देखो 'म्रितिका' (रू.भे.)

मिरतु—देखो 'म्रित्यु' (रू भे.)

मिरतुलोक—देखो 'म्रित्युलोक' (रू. भे)

मिरत्युंजय—देखो 'म्रित्युंजय' (रू.भे.)

मिरत्यु —देखो 'म्रित्यु' (रू.भे.)

मिरत्युलोक—देखो 'म्रित्युलोक' (रू.भे.)

मिरथा—१ देखो 'व्यरथा' (रू भे)

२ देखो 'म्रिसा' (रू.भे.)

मिरदंग—देखो म्रिदंग' (रू.भे.)

उ०—रांम तणें रंग राची, रांणा मैं तौ सांवळियां रंग राची रे। ताळ पखावज मिरदंग बाजा, साधों ग्रागे नांची रे।—मीरां

मिरदंगी—देखो 'म्रिदंगी' (रू.भे.)

मिरदु—देखो 'म्रिदु' (रू. भे.)

मिरदुता—देखो 'म्रिदुता' (रू.भे.)

मिरमरी—देखो 'मरमरी' (रू.भे)

मिरसावाद—सं०पु० [सं० मृषावाद] १ ग्रसत्य भाषण, ग्रसत्य, झूठ।

उ०—हिंसा कीधी जीव नी, बोल्या मिरसावाद। दोस ग्रदत्तादांन ना, मैथुन उनमाद।—स.कु.

उ०—२ बोल्या मिरसावाद ग्रदत्तादांन स्युं। जघन्य एकासण जांणियै ए।—ध.व.ग्रं.

२ ग्रयथार्थ भाषण, चापलूसी।

३ व्यंग्य।

रू०भे०—मिरखावाद, म्रिखावाद

मिरा—सं० स्त्री० [सं०] मदिरा, शराब।

उ०—कीधौ दुल्लह कंवर, मिरा छकियै ग्रनुमोदन। बहियौ भावी विखम, नरां रहियौ रु विनोदन।—वं. भा.

मिरिगाखी—देखो 'म्रिगाक्षी' (रू. भे.)

उ०—सुसमित सुनमित निज वदन सुव्रीड़ित, पुंडरीकाख थिया प्रसन। प्रथम ग्रग्रज ग्रादेस पाळिवा, मिरिगाखी राखिवा मन।

—वेलि

मिरिग्घ—देखो 'म्रिग' (रू. भे.)

उ०—१ म्रिघ जेम फाळ मांडइ मिरिग्घ। सुकुमार सार साहणां सिग्घ।—रा. ज. सी.

उ०—२ मुज्जरळी द्रेठि पाछि मूठि। साझइ मिरिग्घ गुण बांण सूठि।—रा. ज. सी.

मिरिच—देखो 'मिरच' (रू. भे.)

मिरियौ—सं० पु०—घी, तेल, दूध ग्रादि के तरल पदार्थ निकालने तथा नापने के लिये बना हुग्रा धातु का एक कटोरी नुमा बरतन जिसको पकड़ने के लिए एक लम्बी डंडी नुमा शलाख लगी रहती है तथा यह डंडी ऊपर से नुकीली व मुड़ी हुई होती है।

उ०—ग्रौरां नै तो मां मिरियो ए घीव। मनै मिरियौ, मिरियौ मां तेल को जे।—लो. गी.

मिरिहठी—देखो 'मुळेठी' (रू. भे.)

मिरी—मिर्च

उ०—लाभइ खांड तेल नइ मिरी, करइ सालणां लाभइ सुरी। ग्रजमा जीरां लाभइ बहू, वेसण विरहाळी लइ सहू।—कां. दे. प्र.

मिरीवढ—सं० पु०—छोटा खंड।

उ०—सू ग्रागरा ही ग्रमळ री चकी बंवयां छुरचां सूं मिरीवढ कीजै छै।—खीची गंगेव नींबावत री दो-पहरी

मिलक—देखो 'मलिक' (रू. भे.)

उ०—न मिळतौ मिलक जबदळ निडर, पकड़ी बळ खग पांण री। तौ करां वरण करतां तिकौ, सराजांम घमसांण रो।—सू.प्र.

मिळकणी—सं०स्त्री०—मुह का फीकापन, स्वादहीनता।

उ०—भरमल नुं ग्रासा रही। महीना च्यार री गरभ हुवौ। तैसुं डील सिथल पड़ण लागो। नेत्रां री तरैं गहळीजण लागी। पगां री बीख छीदरी पडण लागी। रोमावळी डील री उभरवी निजर ग्रावण लागी। ग्रन भावै नहीं। मुंहडै मिळकणी रहै। खाली ग्रोकारी रहै।—कुंवरसी सांखला री वारता

मिळणी—सं० स्त्री०—१ मिलने भेटने की क्रिया का भाव।

२ मिलाप, भेंट।

३ विवाह में कन्या पक्ष के लोगों का वर पक्ष के लोगों से स्वागत स्थान (सांमेळो) पर बाहु पाश से ग्रालिंगन करते हुए मिलाप करना।

४ उक्त ग्रवसर कन्या पक्ष वालों की ग्रोर से वर पक्ष वालों को दी जाने वाली भेंट।

मिळणौ, मिळबौ—क्रि० स०—१ प्राणियों, व्यक्तियों ग्रादि के संबंध में किसी प्रकार या रूप से, भेटना, साक्षात्कार होना, मिलाप होना।

उ०—मिळबौ भलौ ग्रसाध कौ, हरिया भोळै भाय। हरि सुं वेमुख वैसनो, तासुं मिळै बलाय।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

२ किसी व्यक्ति, पदार्थ या प्राणी का ग्रागे या सामने ग्राना

३ किसी पदार्थ, बात या ग्रवस्था का किसी रूप में प्राप्त होना, हस्तगत होना।

उ०—१ सदा मिळै बिल स्याळ रै, वच्छ पुच्छ खुर चांम । मिळै गयां म्रगराज ग्रह, गजरद मोती ग्रांम ।—बां. दा.

उ०—२ समर तजण सूं सौगुणौ, दुरंग तजण रौ दोख । मरद दुरंग जातां मरै, मिळै जिकां नूं मोख ।—बां. दा.

४ अनुसंधान, खोज या छान बीन करने पर किसी पदार्थ, तत्व या बात का ज्ञान या परिचय होना ।

५ व्यक्तियों का इस प्रकार से एक दूसरे के आमने सामने होना कि परस्पर बातचीत हो सके ।

६ किसी प्रकार का सुखद या अभीष्ट लाभ या सिद्धि प्राप्त होना ।

७ व्यक्तियों का किसी उद्देश्य की सफलता के लिए परस्पर समझौता करके किसी दल या गुट में सम्मिलित होना ।

८ अपना पक्ष या दल छोड़कर प्रत्यक्ष या गुप्त रूप से किसी दूसरे दल या पक्ष में होना ।

उ०—अरि जाळंधर आवियौ, मिळिया खळ अणदाद । पखि गुण हीन निरास पण, हितू 'अरज्जण' आद ।—रा. रू.

९ स्पर्श होना, छूना, अड़ना ।

उ०—१ जिके सूर ढीला जरद, ऊबड़ही आरांण । मूंछ अणी भूहां मिळै, मुंहगी रालै मांण ।—बां. दा.

उ०—२ सांम धरम कुळ धरम संभारै, आच 'गजेसौ' खडग उभारै। ऊफणियौ असमांन अधारै, मिळिया मुंछ अणी भूंहारै ।
—गु. रू. बं.

उ०—३ मूंछां भूंहां मिळै, छिळै बीरारस छोळां, बाज अहिमकर बाज, डकर हिमकर ग्रग डोळां ।—मे. म.

१० दो या अधिक तत्वों या पदार्थों का अवस्था, गुण रूप आदि के विचार से परस्पर अनुरूप, तुल्य या समान होना ।

उ०—हुई फौज हाजरी,बोझ नाग न बरदासै । जांण गजब गाजती, मंडी कांठळ चवमासै । बादळ मसत बयंड, रसत मादळ घहरावै । इन्द्रधनुस आकार, फील झंडा फहरावै । में' का प्रतच्छ लच्छण मिळै, केका हय हूंकळ कळळ । खिण-प्रभा रूप साबळ खिवै,कंस बंस 'कमरा' कमळ ।—मे. म.

११ किसी रेखा, बिंदू, सीमा आदि पर दो या कई चीजों का इस प्रकार आकर पहुंचना, स्थित होना कि वे एक दूसरे से परस्पर लग जाय ।

ज्यूं—बीकानेर नै जोधपुर री सीमा नागौर जिला रै उत्तर में मिळै है । जयपुर अर जोधपुर री सीमा सांभर रै पूरब में मिळै है ।

१२ परस्पर सटना, जुड़ना ।

उ०—चुगली करतां चुगल रा,जुग होटड़ा जुड़ंत । मळ नांखण जांणै मिळै,दोय ठीकरा दंत ।—बां. दा.

१३ एकत्रित होना, इकट्ठा होना ।

उ०—१ दळबळ सूं घेरौ दियौ, प्रबळ हुमाऊं पूत । गैलोतां चीतोड़गढ, मिळ कीधौ मजबूत ।—बां. दा.

उ०—२ मोर सिखर ऊंचा मिळै, नाचै हुआ निहाल । पिक टहकै झरणां पड़ै, हरिए डूंगर हाल ।—बां. दा.

उ०—३ थरकै कोट सहतपुर थांणा, भार सताड़ै पड़ै भगांणा । 'ऊदा' हरा सकळ मिळ आया, आद 'जगड़' जुध वाद अछाया ।
—रा. रू.

उ०—४ मारू छळ 'अगजीत' समेळा, । सोजत मिळिया कटक सचेळा ।—रा. रू.

१४ दो या अधिक तत्वों, पदार्थों आदि का इस प्रकार एक स्थान पर या स्थिति में आना, होना या पहुंचना कि उनका अलगाव या भेद भाव दूर हो जाय, लगजाना ।

ज्यूं—१ सूकड़ी अर जोजरी दोनूं नदियां समदड़ी रै कनै लूणी में मिळै । २ विरोधी दळां रौ आपस में मिळणौ ।

१५ सम्मिलित होना, साथ होना ।

उ०—१ संगै केहर रांम रै, मिळियौ जंगै 'भीम' । 'सबळांणी' सोबां तणी, सार विधूंमै सीम ।—रा. रू.

उ०—२ दोनूं तरफां हूंत लियां दळ, मिळिया 'सामंत' 'रांम' महाबल । आवै धकै सुथांणी ऊठै, पिसणां चमू चढै नह पूठै ।
—रा. रू.

उ०—३ रूळधा खुळधा रजपूत बिरांमण मिळगा बिटळा, वैस्य मिळ गया विकळ, सूद्र कुळ रळगा सिटळा । चोड़धाड़ै चोर, ढंग बिन ढेढस ढेढी, जिके नहीं किण जोग, मिल्या घर घर रा मेढी । चांपज्यौ मती वांरा चरण, कांप कांप रौ कीचड़ौ, फांपरी देर मुख फेर ज्यों, खांप खांप रौ खीचड़ौ ।—ऊ. का.

१६ टक्कर लेना, भिड़ना ।

उ०—१ वळिया जादम बीरवर, मिळिया सेल उपाड़ । भड़ वळिया साळै तणां, पुळिया पहली राड़ ।—रा. रू.

उ०—२ उण समय पाळा होय दो ही बीरां अजमेर मंडोवर रा सुहागरी लाज रा लंगर घसीटता अस्वमेघ अध्वर रा अवभ्रथ रौ तिरस्कार करता पैंड सांम्है ही लगाया । जठै दो ही तरफां रा किताक सूरवीर आपरै ऊभां मालिकां रौ मिळिवौ अनुचित जांणि बीच में आया ।—वं भा.

१७ पदार्थों का एक दूसरे में पड़कर इस प्रकार एकाकार हो जाना कि उनको सहज में ही एक दूसरे से पृथक न किए जा सके, घुलना ।

ज्यूं—साग में लूण मिळणौ, दूध में पांणी मिळणौ ।

१८ पदार्थों का परस्पर साधारण रूप से एक दूसरे में इस प्रकार आकर सम्मिलित होना कि उनका स्वतंत्र अस्तित्व बना रहे ।

ज्यूं—गेहूंओं में चणा या जव मिळणा । बाजरी में मौठ मिळणा ।

१९ कुछ विशिष्ट प्रकार के वाद्यों के संबंध में ऐसी स्थिति में आना या लाया जाना कि उनमें ठीक तरह से और एक मेल में स्वर निकल सकें और साथ के दूसरे वाद्यों के स्वरों के अनुरूप हो सके ।

वि०वि०—बाजों का अधिक उतरा या चढा न रहना बल्कि सम-स्थिति में आना या होना ।

ज्यूं—पखावज रौ सितार सूं मिळणौ,तबला रौ सारंगी सूं मिळणौ।
२० व्यक्तियों के शरीरांगों का सम्बद्ध,संलग्न होना या एक दूसरे के सामने होना।
२१ गाय के बछड़े के साथ स्तन पान करते समय स्तनों में दूध ऊतरना।
२२ जख्म का भर जाना व ठीक हो जाना।
२३ स्त्री संभोग होना, मैथुन होना।
२४ संगठित होना।
मिळणहार, हारौ (हारी), मिळणियौ—वि०।
मिळिओड़ौ, मिळियोड़ौ, मिल्योड़ौ—भू०का०कृ०।
मिळीजणौ, मिळीजबौ—भाव वा०
मीलणौ, मीलबौ—रू.भे.।

मिळताऊ—वि०—१ सब से मेल जोल रखने वाला।
२ मिलनसार।

मिळतियांण, मिळतीयांण—सं०पु०—वह बैल जिसके दूध के दांत टूटने के बाद पूरे दांत आ गये हों और जवान हो गया हो।

मिळती—वि०—१ मेल खाने योग्य।
२ अवसर के अनुरूप।
उ०—नाई मिळती मारतौ कह्यौ—लिछमी रा लाडला सेठां माथै विसास नीं व्हैला।—फुलवाड़ी
क्रि. प्र.—मारणौ

मिळतौ—वि० [स्त्री०मिळती] समान, तुल्य, बराबर।

मिलमची—सं०स्त्री०—सप्तकोशी नदी की एक सहायक नदी।
वि०वि०—यह नदी गुमांई स्थान पर्वत के पूर्व तरफ जिबजिबिया से निकलती है और पहाड़ियों व घाटियों में बहती हुई दौलत घाट मुकाम पर भोटेकाशी नदी से संगम करती है। तिब्बत में टिंगरी मैदान से निकली भोटेकाशी नदी इससे मिल जाती है फिर इनका नाम सूनकोशी हो जाता है और यह सुनकोशी के नाम से बाराह क्षेत्र घाट पर अरुण और तमोर के संगम से मिल जाती है।
(वीर विनोद)

मिळवाई—देखो 'मिळाई' (रू. भे.)

मिळवाणौ, मिळवाबौ—देखो मिळाणौ, मिळाबौ' (रू.भे.)

मिळांण, मिलांन—सं०पु०—१ मिलाने की क्रिया या भाव।
२ दो प्राणियों की परस्पर होने वाली भेंट, साक्षात्कार।
३ दो अथवा अधिक वस्तुओं का एक साथ रखकर तुलनात्मक दृष्टि से जांच करना, मिलाना, या देखना।
ज्यूं—कपड़ा रौ मिलांण करणौ।
४ किसी लिखित प्रति लिपि के जांच हेतु असल से मिलान करने की क्रिया।
५ दो वस्तुओं, बातों या पक्षों के सम्बन्ध में जानकारी हेतु विशेताओं, विभेद एवं गुण दोष पर विचार अथवा विवेचन करना।
६. राहगीरों या पथिकों के ठहरने का स्थान, पड़ाव या डेरा।
उ०—१ मोती का आखा किया, कं कूं चंदन पाका पांन। अमली समली आरती' जाई वधेरइ दीयौ मिलांण।—बी.दे.
उ०—२ मंडलाग्र निमांहिसौ, बीसल व्रप इक बंधि। चालुक्कन उप्पर चढ्यौ, सबळ मुच्छ कर संधि। मुररि रहे जे बहु मिळे, चढ़त भूप चहुवांन। तस बीसलसागर तटहि, मंडिय प्रथम मिलांन।
—वं भा.

मिळाई—सं०स्त्री०—१ तेल कीटा।
उ०—चोटी में हड़मांन जी री मिळाई। लिलाड़, नाक अर गला रै काजल री टीकियां।—फुलवाड़ी
२ देखो 'मळाई' (रू.भे)

मिळाड़णौ, मिळाड़बौ—देखो 'मिळाणौ, मिळाबौ (रू.भे.)
मिळाड़णहार, हारौ (हारी), मिळाड़णियो—वि०
मिळाड़िओड़ौ, मिळाड़ियोड़ौ, मिळाड़्योड़ौ—भू०का०कृ०।
मिळाड़ीजणौ, मिळाड़ीजबौ—कर्म वा०।

मिळाड़ियोड़ौ—देखो 'मिळायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० मिळाडियोड़ी)

मिळाणौ, मिळाबौ, मिलाणौ, मिलाबौ—क्रि०सं० ['मिलणौ' क्रिया का प्रे० रू०] १ दो या दो से अधिक प्राणियों-व्यक्तियों की परस्पर भेंट कराना, साक्षात्कार कराना, मिलाप कराना।
उ०—गया तीन गढ़ चूरि, चित चौथे घर लाया। बस्या अपूरब देस, जीव अर सीव मिळाया।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज
२ व्यक्तियों को इस प्रकार एक-दूसरे के आमने सामने लाना कि परस्पर बात-चीत कर सके।
उ०—इण कारण यो ही अधरम अनुमत्त में जांणि उणां नूं मिळाइ छळ कीधां एक भी अधम जीवण न पावै।—वं.भा.
३ सामने लाना, आगे लाना, प्रकाश में लाना।
४ किसी प्रकार का सुखद या अभीष्ट लाभ या सिद्धि प्राप्त कराना, हस्तगत कराना। वांछित उपलब्धि कराना।
५ ज्ञान कराना, परिचय कराना।
६ परस्पर समझौता कराके किसी दल या गुट में सम्मिलित करना, कराना। पक्ष में करना/कराना।
७ अपना पक्ष छुड़ा कर प्रत्यक्ष रूप में विपक्ष की ओर करना/कराना।
८ स्पर्श कराना, छूआना, अड़ाना।
९ किसी बिंदु, सीमा, रेखा आदि पर दो या कई चीजों का लाकर स्थित करना कि वे परस्पर लग जाय, फासला मिटाना।
ज्यूं—भींत छत सूं मिळाणी, पुळ सूं सड़क मिळाणी।
१० परस्पर जोड़ना, सटाना।
११ एकजाई करना, एकत्र कराना, इकट्ठा कराना।
१२ दो तत्वों, पदार्थों या अस्तित्वों को मिलाकर एक करना, एक

दूसरे में विलीन करना, एकाकार करना ।
ज्यूं–दो नदियां रौ मिळाणौ, दूध में पानी मिळाणौ ।
१३ संगठित करना ।
उ०—सचिव भणी निज राज्य भलाव, चाल्यौ चतुरंग सेन मिलाव ।—वि.कु.
१४ बिछुड़े हुए का साथ कराना, मिलाना ।
ज्यूं–छोरा ने मां-बाप सूं मिळाप दियौ ।
१५ टक्कर लिवाना, भिड़ाना ।
१६ रासायनिक क्रिया के अनुसार, एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ को डाल कर एकाकार करना, घुलाना ।
ज्यूं–साग में लूण मिळाणौ, दूध में शक्कर मिळाणौ ।
१७ दो या दो से अधिक पदार्थों का मिश्रण करना, सम्मिलित करना ।
१८ स्त्री समागम के लिये प्रेरित करना, स्त्री-पुरुष का संयोग कराना ।
उ०—इयां करतां-करतां ही बकराईद नैड़ी आयगी जकै मार्थ हलाली वेगी फाजल कमर कसली अर करणे नै प्रेमिका सूं मिळा देणै री बा: ही तारीख घड़ली ।—दसदोख
१९ वैमनस्य मिटा कर परस्पर समझौता कराना,स्नेह कराना, मेल कराना ।
२० गांठ लगाकर, सी कर या जोड़ कर एक करना ।
२१ गुण या महत्व देखने के लिए एक दूसरे की तुलना करना, मुकाबला कराना ।
२२ लिखित अवतरण के शुद्धाशुद्ध की जांच करना/कराना, मिलान करना/कराना ।
२३ एक दूसरे के साथ रखना, सटाना, भिड़ाना ।
२४ चिकित्सा द्वारा किसी जख्म या घाव को ठीक करना/कराना।
उ०—मरण री मार दुनियां में सब सूं तीखी और खारी लागै, पण दिनां रौ मलम बगत लाग्यां उण मार रौ घाव ई मिळाय दे ।—फुलवाड़ी
२५ केन्द्रित करना/कराना ।
उ०—'हरीया' तन मन वचन की, सारी सौंज मिळाय । चोथी गुर को ग्यांन मिळ, भगति भरोसौ थाय ।
—श्री हरिरांमदासजी महाराज
२६ वैवाहिक सूत्र में बांधना, सम्बन्ध कराना ।
उ०–पुन्यूं रै चांद अर उसा री लालीसी सुवावती आवै । गुणां री खोळ अर फुटरापै री खजानौ सो भळकै ! केळू री कांब, जकी घरांण री जांम सूं जोड़ौ मिळाय देवां । जकौ जियौ जितै चेतै राखौ ।—दसदोख
२७ गायन व वाद्यों का स्वर-साम्य करना, स्वर मिलाना ।
उ०–नांनजी स्वांमी हेमजी स्वांमी नें कह्यौ:हेमजी! भीखणजी स्वांमी म्हां सांधां नें तो हाट में बेसांणता । कंठ मिलाण वाला भाया आडा वेसता ।—भि. द्र.
२८ शारीरिक अंगों की क्रियाओं या भावनाओं द्वारा सम्पर्क स्थापित करना ।
ज्यूं–आंख मिळाणी ।
मिळाणहार, हारौ (हारी), मिळाणियौ—वि० ।
मिळायोड़ौ—भू०का०कृ० ।
मिळाईजणौ, मिळाईजबौ—कर्म वा० ।
मिळाड़णौ, मिळाड़बौ, मिळावणौ, मिळावबौ—रू०भे० ।

मिळाप, मिलाप–क्रि०अ०—१ मिलने की क्रिया या भाव ।
२ मिले हुए होने की अवस्था या भाव ।
३ भेंट, साक्षात्कार ।
उ०—इण रीति अमरसिंह नागोर जाय कैमास रा मिळाप में, कपट रै निदांन के ही कैद करण रा प्रपंच किया —वं.भा.
४ दो या अधिक व्यक्तियों का परस्पर प्रेम पूर्वक मिलन ।
उ०—१ वा सोचण लागी–मां अर बेटा री आज एड़ौ मिलाप व्हियौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ जिकौ दो ही पिता पुत्रां रौ मिळाप सुणि अंतर में एक जांणि तुरकां रौ तोम आसियौ ।—वं.भा.
५ स्नेह पूर्वक मिलन ।
उ०—१ अंतस रा मिळाप सूं सबदां रौ कांई तह्णौ मह्णौ । च्यारां रौ अंतस एक मेख व्हैगौ ।—फुलवाड़ी
उ०—२ अंतस रा मूंन मिळाप पछै वांणी री सुध-बुध बावड़ी ।
—फुलवाड़ी
६ वह अवस्था जिसमें लोग परस्पर मिलजुल कर प्रेम पूर्वक रहते हों ।
७ सामना ।
८ दो नदियों के मिलने की क्रिया ।
९ स्त्री-पुरुष द्वारा मैथुन करने की क्रिया या भाव ।

मिळायोड़ौ, मिलायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ दो या दो से अधिक प्राणियों या व्यक्तियों की परस्पर भेंट कराया हुआ, साक्षात्कार कराया हुआ, मिलाप कराया हुआ ।
२ आमने-सामने लाया हुआ ।
३ सामने लाया हुआ, आगे लाया हुआ, प्रकाश में लाया हुआ ।
४ अभीष्ट लाभ या सिद्धि प्राप्त कराया हुआ, हस्तगत कराया हुआ, वांछित उपलब्धि कराया हुआ ।
५ परिचय कराया हुआ, ज्ञान कराया हुआ ।
६ परस्पर समझौता कराके किसी दल या गुट में सम्मिलित किया हुआ या कराया हुआ, पक्ष में किया हुआ ।
७ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में विपक्ष की ओर किया हुआ या कराया हुआ ।
८ स्पर्श कराया हुआ, छूवाया हुआ, अड़ाया हुआ ।

९ किसी बिन्दु या सीमा पर परस्पर लगने की स्थिति में लाया हुआ, फासला मिटाया हुआ।
१० परस्पर जोड़ा हुआ, सटाया हुआ।
११ एकजाई किया हुआ, एकत्र व इकट्ठा कराया हुआ।
१२ मिलाकर एक किया हुआ, एक दूसरे में विलीन किया हुआ।
१३ संगठित किया हुआ।
१४ बिछड़े हुए का साथ कराया हुआ।
१५ टक्कर लिराया हुआ, भिड़ाया हुआ।
१६ घुलाया हुआ, एकाकार किया हुआ।
१७ मिश्रण किया हुआ, सम्मिलित किया हुआ।
१८ स्त्री समागम के लिये प्रेरित किया हुआ, स्त्री-पुरुष का संयोग कराया हुआ।
१९ परस्पर समझौता कराया हुआ, स्नेह कराया हुआ, मेल कराया हुआ।
२० गांठ लगाकर, जोड़कर या सी कर एक किया हुआ।
२१ तुलना किया हुआ, मुकाबला कराया हुआ।
२२ शुद्धा-शुद्ध की जांच किया या कराया हुआ, मीलान किया या कराया हुआ।
२४ चिकित्सा द्वारा किसी जख्म या घाव को ठीक किया हुआ/कराया हुआ।
२५ केन्द्रित किया हुआ/कराया हुआ।
२६ वैवाहिक सूत्र में बांधा हुआ, सम्बन्ध कराया हुआ।
२७ स्वर-साम्य किया हुआ, स्वर मिलाया हुआ।
२८ शरीरांगों को क्रिया या भावनाओं से सम्पर्क स्थापित किया हुआ।
(स्त्री० मिळायोड़ी, मिलायोड़ी)

मिळाव-सं० पु०—१ मिलाने की क्रिया या भाव।
२ देखो 'मिळावट' (रू. भे.)
३ देखो 'मिळाप' (रू. भे.)

मिळावट-सं० स्त्री०—१ मिलाए जाने की क्रिया या भाव।
२ किसी बढ़िया या श्रेष्ठ चीज में कोई घटिया चीज का किया जाने वाला मिश्रण।
३ इस प्रकार मिलाया जाने वाला घटिया पदार्थ।
४ अपने पक्ष में विरोधी पक्ष के व्यक्ति को मिलाए जाने की तरकीब, युक्ति।
५ साजिश, सांठ-गांठ, गुप्त समझौता।
उ०—अरु सूजै री तरफ जैसिंघजी वा जसवंतसिंघजी धरम-करम कियौ के पातसाह साहसूजै नूं करणा। पीछै जैसिंघजी तौ सूजै सांमा गया। अर सूजै सूं मिलावट थी जिण सूं यां रै जाणै सूं साहसूजै पाछौ कूच कियौ।—द. दा.
६ सम्मिश्रण।
उ०—अपां रै इण कळजुग री सिरै धरम है—झूठ, मिळावट, छळ, चोरी, जारी, लोभ, धोखौ अर दिखावौ। आपरा जुग-धरम री टेक राखै जकौ मिनख साचौ कहावै।—फुलवाड़ी

मिळावणौ, मिळावबौ, मिलावणौ, मिळावबौ—देखो 'मिळाणौ, मिळाबौ' (रू. भे.)
उ०—१ मोती धूड़ मिळाविया, तैं स दूळ तमांम। देतौ सदा जणाय दिप, किळ ओ होणौ कांम।—वां दा.
उ०—२ मूंछौ खांचौ मेल हाथ खांधड़ौ हिलावै। सीस धरणि दिस सिथळ मुरड़ खांधड़ौ मिळावै।—ऊ. का.
उ०—३ सोनजी रै हटडै में कई दिनां सूं धमचक बाजै ही। सेर सेर पक्कौ सोनौ सागै ही एक एक साहूकार सूंपै हो। गैणौ घड़ावै हा मन मिळावै हा।—दसदोख
उ०—४ विसम लहरि ऊठै अंग अंगा, ता तैं होय सकळ जुग भंगा। गरू गारडू कोय मिळावै, मेरे तन की तपति बुझावै।
श्रीहरिरांमदासजी महाराज
मिळावणहार, हारौ (हारी), मिळावणियौ—वि०।
मिळाविओड़ो, मिळावियोड़ो, मिळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मिळावीजणौ, मिळावीजबौ—कर्म वा०।

मिळावियोड़ो—देखो 'मिळायोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० मिळावियोड़ी)

मिलिंद-सं० पु० [सं० मिलिन्द:] १ मधु मक्षिका।
२ भ्रमर, भौंरा।
उ०—प्रगट वडो संग्रामसिंह पहु। मतिधर सुकवि मिलिंद मह।
—वं. भा.

मिळित-वि० [सं० मिलित] मिला हुआ, युक्त।

मिळियोड़ो-भू० का० कृ०—१ प्राणियों, व्यक्तियों आदि से किसी प्रकार या रूप से भेंट किया हुआ, मिला हुआ. २ कोई व्यक्ति या प्राणी आगे आया हुआ. ३ कोई बात या पदार्थ प्राप्त हुवा हुआ. ४ अनुसंधान या खोज द्वारा किसी पदार्थ, तत्व या बात का परिचय या ज्ञान हुवा हुआ. ५ (बात चीत करते हुए) आमने सामने हुवा हुआ (व्यक्ति) ६ अभीष्ट या सुखद लाभ प्राप्त हुवा हुआ ७ उद्देश्य की सफलता हेतु किसी दल या गुट में सम्मिलित हुवा हुआ. ८ अपने पक्ष को छोड़ कर विपक्षी या दूसरे दल या गुट में गया हुआ. ९ स्पर्श हुवा हुआ, छुवा हुआ. १० अवस्था, गुण, रूप आदि के विचार से अनुरूप या समान हुवा हुआ. ११ रेखा, बिन्दु या सीमा पर पहुंच कर लगा हुआ. १२ सटा हुआ, भिड़ा हुआ, जुड़ा हुआ. १३ एकत्रित हुवा हुआ, इकट्ठा हुवा हुआ. १४ एक स्थान या स्थिति में पहुंचा या आया हुआ. १५ सम्मिलित हुवा हुआ, साथ हुवा हुआ. १६ टक्कर लिया हुआ, भिड़ा हुआ. १७ एकाकार हुवा हुआ, मिला हुआ (नमक व साग, दूध व पानी). १८ अपना अस्तित्व रखते हुए सम्मिलित हुवा हुआ (अनाज).

१९ एक मेल में स्वर निकला हुआ. (वाद्य). २० संभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ. २१ स्तनों में दूध उतरा हुआ (गाय, भैंस). २२ ठीक हुवा हुआ, भरा हुआ (घाव)।

मिळीभगत–सं० स्त्री० यौ०—आपस में मिलजुल कर चली जाने वाली धूर्ततापूर्ण चाल जो बाहर से देखने में बहुत कुछ निर्दोष या साधारण सी जान पड़ती है।

मिळीग्रानीळ, मिळीयानळ—देखो 'मळयानळ' (रू. भे.)

उ०—मिळीग्रानीळ घणूं वायउ वाउ, रतिपति पहुतु वसंतराउ।
चंदनवनि बिहिकइ सिहिकार, सोहइ भ्रमर तणा झमकार।
—अज्ञात

मिल्कियत–सं० स्त्री० [अ०] १ धन संपति, जायदाद।

२ जमींदारी।

३ जागीर।

४ वह पदार्थ या धन संपति जिस पर नियमानुसार होने वाला अपना स्वामित्व या अधिकार, स्वत्व।

रू० भे०—मल्कियत

मिसंजर–सं० पु०—एक प्रकार का बहु मूल्य वस्त्र।

उ०—मिसंजर के मिस मन भयो, पीउ जो लाय बुलाय। मोल मुहेंगो थें लीयो, सो माहरै आवी दाय।—व. स.

मिसंद—देखो 'मसनद' (रू. भे.)

मिस–सं० पु० [सं० मिषम्] १ ऐसी अवस्था, स्थिति या बात जिसके वास्तविक रूप में कुछ गूढ़ उद्देश्य निहित हो पर प्रगट रूप में कुछ और दिखाई देता हो।

ज्यूं—उपदेश रै मिस दोस बताणां।

उ०—१ लुगाई री प्रीत रै आगै ई तौ आ दुनिया टिकियोड़ी है। मिनख तौ प्रीत रै मिस छळ करै।—फुलवाड़ी

उ०—२ छाळी नारियै देखतां ई उण काचा जिग उरणिया नै खावण रौ पक्कौ मतौ कर लियौ। पण कीं न कीं मिस बतायनै खावणौ चावतौ, दोसण काढ़नै उणनै खतम करणौ चावतौ।
—फुलवाड़ी

२ अवलंब, आधार, सहारा, बहाना, मौका,अवसर।

उ०—१ छता दिल्ली जावां ई हां, गोता खावण जिसी कोई बात नीं। इण मिस पातसाह रा दरसण ई व्है जासी।
—फुलवाड़ी

उ०—२ सेठां नै ओळबौ तौ देवणौ ई हौ। औ मिस ई हाथ लाग्यौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ पण नागण किणी भाव नीं मांनैला! उणनै तौ औ अणचींत्यौ मिस लाधग्यौ।—फुलवाड़ी

उ०—४ जनकसोम बरज्यौ जदपि, करि मिस तदपि सिकार। इतर वयस्य रु कंह इक, लै चढ्यौ सु व्रत लार।—वं.भा.

३ आड़।

उ०—१ कठियारा रै धन्धा री मिस वौ नकली भेख धारण करियां फिरै। औ नवाब तौ कोई विरळौ ई नवाब है।
—फुलवाड़ी

उ०—२ खवासजी इण झिकाल में खास बात तौ भूल ई गिया। दूध दही रौ तौ मिस है। जे गूजरी री टोय नीं लेग्यौ तौ राजाजी खीझैला।—फुलवाड़ी

४ छल,कपट, जाल, झूठी बात, बहाना। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ पण हीमत हारयां थांरी-म्हांरी प्रीत नी निभै। म्हैनैं कीं न कीं जुगत विचारणी ई पड़ैला। कोइ मिस बणाय म्हैं ठाकरसा नै चंपा रा फूल तोड़ण सारू भेजूं।—फुलवाड़ी

उ०—२ भुरजमाळ फण मंडळी,सोर झाळ विस झाळ। जांण सेस बैठौ जमी, मिस चीतोड़ कराळ।—बां. दा.

उ०—३ राजवैद सगळा दवायां दे थाका पण दरद व्है तौ मिटै। इत्ती किणीरी हीमत कोनीं के कै सकै रांणी मिस करै।
—फुलवाड़ी

उ०—४ सीस मांनता देवाधिपती, ससिहर एहवुं जांणी। विनयचंद्र प्रभु चरणे लागो, लंछन नउ मिस आंणी।—वि.कु.

५ ढोंग, पाखंड, बनावटी, दिखावटी।

उ०—कह्यौ—भलांई गंगाजी जावौ कै गयाजी,सगळै धन कमावण रा ई अफंडा है, कीं दूजी बात कोनीं। धरम,भगवांन, अर मुगति रौ तौ फगत मिस है।—फुलवाड़ी

६ किसी कार्य, घटना या बात के लिये बनने वाला कारण।

उ०—राजा वांनै लाडसूं बुचकारनै कह्यौ–हां, अबै थें थांरै ठायै-ठिकांणै जावौ। बिरथा रोड़िया। पण इण मिस म्हारी ई आंख्यां उघड़गी।—फुलवाड़ी

७ समान, अनुरूप।

उ०—१ जेहा जीण जड़ाव, गजगांवां मिस कुंअर गुर। रचि सपंख हयराव, दीधा तैं लाखा दुग्रा।—बां. दा.

उ०—२ राजगुरु अमोलक हंसी रै मिस मुळकियौ।—फुलवाड़ी

८ किसी रिश्ते–या सम्बन्ध की आड़ लेने की क्रिया या भाव।

सं० स्त्री० [ग्रं०] ९ अविवाहिता स्त्री, युवती, कन्या।

अव्य०—१ रिश्ते या सम्बन्ध विचार से।

ज्यूं—बाप मिस देणौ, बेटी मिस लेणौ।

२ रूप में।

उ०—१ भगवांन तौ राजावां रै मिस ई आपरी लीला रचै, तद वांरा कांमां में दुजौ कुण खांमी काढ़ सकै।—फुलवाड़ी

३ मानो (उत्प्रेक्षा)

४ देखो 'मसि' (रू. भे.)

उ०—पाटी पोथी पूंछना, निस लेखण हो झिलमिल सु जगीस।
—व्र. स्त.

रू० भे०—मिसि, मिसी, मिसु, मिसे,

अल्पा०—मिसियौ,

मिसक—देखो 'मसक' (रू. भे.)

उ०—सो उवो अरबी मिसक भर सहर बगदाद नूं ले हालियौ ।
—नी. प्र.

मिसकरी—देखो 'मसखरी' (रू. भे.)

उ०—हांसी खांमी रे मिसकरी कीधी चावत वात । आरत ख्वज ध्यान में गमाया दिन रात ।— जयवांणी

मिसकरौ—देखो 'मसखरौ' (रू.भे.)

मिसकीन—देखो 'मसकीन' (रू. भे.)

उ०—जोर करे मिसकीन सतावे,दिल उसके में दरद न आवै । सांई सेती नांही नेह, गरव करै अति अपनी देह ।—दादूवांणी

मिसखरी—देखो 'मसखरी' (रू. भे.)

उ०—सेठांणी नै तौ हाल पूरौ विस्वास नीं व्हियौ । बा जांणयौ के बाप बेटा मिळनै यूं ई मिसखरियां करै ।

मिसखरौ—देखो 'मसखरौ' (रू. भे.)

मिसटांण, मिसठांण—देखो 'मिस्टांण (रू. भे.)

उ०—१ सतमेस सर्द, अज सैंस अर्द । मिसटांण मर्द, अण अन्न हर्द । जिण रंच कलेवौ, कीध जर्द ।—र. रू.

उ०—२ अदतारां घर ऊख रस, नंह कारण मिसठांण । मन कारण मिसठांणरौ, जठै भूख रस जांण ।—बां. दा.

मिसतंगा–सं०पु०—बच्चों का एक खेल विशेष । (शेखावाटी)

मिसतर—देखो 'मिस्तर' (रू. भे.)

मिसतरी—१ देखो 'मिस्तरी' (रू. भे.)

उ०—छोटू मारजा रै तीन बेटचां, जकां में सूं बडोड़ी री साख डूंगरगढ़ रै एक पावर हाउस रै मिसतरी रै दसवीं पास बेटै सूं मंडचौ है ।—दसदोख

मिसन–सं० पु० [अं०] १ विशिष्ठ व्यक्तियों का वह दल जो किसी विशेष कार्य या उद्देश्य से कहीं भेजा जाय ।

२ ईसाइयों की वह संस्था जो सम्मिलित रूप से धर्म प्रचार का कार्य करती है ।

३ उद्देश्य ।

मिसनरी–सं० पु०—१ वह जो लोक सेवा के भाव से प्रायः विदेश में जा कर रहता है ।

२ वे ईसाई पादरी जो धर्म प्रचार के उद्देश्य से विदेशों में जाकर धर्म प्रचार करते हैं ।

३ उक्त प्रकार का ईसाई पादरी ।

मिसर–सं० पु०—१ खाद ।

उ०—बाड लियाडै उचत पांच बिध, न्याय कनक कर मिसर नखै । रोरव राह समंद पैं'ली रुख, रांम रवा कर रांम रखै ।

२ देखो 'मिश्र' (रू. भे.)

उ०—डेरा दिवाद्यौ ए, ए सईयां मिसरां के घर में । मिसर भला छै ए, ए सईयौ मिसराणी है खोटी । (स्त्री० मिसरांणी)

मिसरत मिसरित–सं० पु० [सं० मिश्रित] मिला हुआ घुला हुआ,

उ०—मांया में मिसरत मिल्या, चित्त नांम धरांणी । स्वरूप भूल स्त्रा भयो, दोस विक्षेप दरसांणी ।—श्रीसुखरांमजी महाराज

मिसरा–सं० पु० [अं०] कविता, उर्दू, फारसी आदि की कविता का पद ।

मिसराई–स० पु०—मसूड़ा ।

उ०—मिसरायां चूनी जड़ी, हो जी, बैरा दांत दाड़म केरा बीज, हे गवरल, रूड़ो है नजारौ तीखोड़ै नैणां रो ।—लो. गी.

मिसरी–स० स्त्री० [अ० मिस्री] १ दो बार साफ करके किसी थाल या मटके में जमाई हुई मोटे मोटे रवेदार चीनी जो स्निग्ध, बलवर्धक व बहुत गुणकारी मानी जाती है ।

उ०—मूंघौ मांखण सूं मिसरी सूं मीठौ । द्रग सूं दो घड़ीयां अंन बिकतो दीठौ ।—ऊ. का.

२ मिस्र देश की भाषा ।

सं० पु०—३ मिस्र देश का निवासी ।

वि०—१ अत्यन्त मीठा ।

२ शीतल । ॐ (डिं. को.)

३ मिस्र देश का, मिस्र देशसम्बन्धी ।

रू० भे०—मसरी, मिस्री, मिस्री

मिसरु–सं० पु०—एक प्रकार का कीमती रेशमी कपड़ा ।

उ०—१ मिसरु गलीम, गदरा मसंद, सज्या कसंत विध विध सुगंध ।—बगसीरांम प्रोहित री वात

उ०—२ चूडा भांति सकलात पोतु तास्तु नील नेत्रां बासत्था, मिसरु बासत्था,कद दोकद चुपदा मासपदा,तनुबंध सरबंध कमरबंध मगवनां कमल बनां दरीयाखांना... ।—व. स.

मिसल–सं० स्त्री०—१ राज्ज-दरबार का एक उच्च पद, पद समूह या स्थान,जो राज्य के प्रमुख-प्रमुख सरदारों या सामन्तों को दिया जाता था । ये राज्य के स्तम्भ माने जाते थे और प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य में इनकी सहमति होनी आवश्यक थी ।

उ०—१ आठ मिसल उमराव, सूर आविया सकाजा । दुज मंत्री कवि दुभल, मिळे दरगह महाराजा ।—सू. प्र.

उ०—२ जयसिंहजी ऊपर बखतसिंह जी भूहर बळ किया, मिसल सारी सांमल कीवी ।—मारवाड़रा अमरावां री वारता

उ०—३ तारासिंहजी भेलो करणे राखिया बीजा बीदावत तीनूं मिसलां केसवदासोत, जेतस्योत खंगारोत मनोहर दासोत ''' ।
—माड़वाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—४ तांम बुलाए साह तिण, आठूं मिसल अभंग । जोध रिणमल जोरावर, सोनंग आद दुरंग ।—रा. रू.

उ०—५ अटुों दिकपालन सम असंक, निरखियें अठ्ठ मिसलन निसंक । ईसाग्याबत्ती अचळ अग्घ, मारवा राव सुरवर महग्घ ।
—ऊ. का.

वि० वि०—यह अत्यन्त महत्व पूर्ण पद या स्थान था । प्रत्येक दरबार में ऐसे कुछ स्थान निश्चित किये हुऐ थे, यथा-जोधपुर में आठ, बीकानेर में चार इत्यादि । ये स्थान राज्य के प्रमुख-प्रमुख सरदारों को दिये जाते थे, जो कि उस राज्य के विशिष्ट वंश, वर्ग

या समूह के प्रतिनिधि होते थे। जैसे-जोधपुर में आठ स्थानों में चार जोधाजी के वंशजों को दिये जाते थे और चार रिणमलजी के वंशजों को दिये जाते थे। जोधपुर में यह व्यवस्था महाराजा शूरसिंह जी के राज्य काल में भाटी गोविन्ददास द्वारा की गई और राव रिणमल्लजी के वंशजों के लिए दांई तरफ व जोधाजी के वंशजों के लिये बांई तरफ का स्थान निश्चित किया गया। पहले मारवाड़ में राजाओं और जागीरदारों के बीच भाई-बिरादरी का बर्ताव चलता था परन्तु मिसलें बनने के बाद इनमें स्वामी-सेवकों का संबंध हो गया। जिस वंश को यह मिसल दी गई थी वह उसी वंश में चलती रही। एक वंश से हटा कर दूसरे को मिसल नहीं दी जाती थी। इसी प्रकार बीकानेर के चार स्थानों में से दो स्थान राज्य परिवार के लिये थे, एक स्थान कान्धलजी के वंशजों के लिए व एक बीदावतों के लिए था। इत्यादि। दरबार में बैठने के लिए ये स्थान निश्चित होते थे, तदनुसार ये सरदार राजा के दायें-बायें पंक्ति बद्ध बैठा करते थे। मिसल बहुत शक्तिशाली होती थी, यहां तक कि पूरी मिसल एक मत होकर राजा को भी बदल सकती थी। मिसल का रूप एक प्रकार का मंत्रि-मण्डल ही था। राज्य के महत्वपूर्ण कार्यों में इसकी सहमति आवश्यक थी।

२ राज-सभा या दरबार में बैठने का निश्चित स्थान।

उ०—सो नाहर राज देसकाळ विचारि दिल्ली आय इण रीति अनंगपाळ नूं प्रसन्न करण सभा में मिसल माफिक बैठो।

—वं. भा.

३ पंक्ति, कतार, श्रेणी।

उ०—मेछां हंदा मुलक में, जो मावड़ियो जाय। महबूबां री मिसल में, किल सिरदार कहाय।—बां. दा.

४ वर्ग, समूह।

उ०—लारली भौळावण भाई देवा नै दीधी। सखरै सावणै चाल्या, तिके दर-मजले दिली पोहता। सखरी ठोड़ आपरी मिसल मांहै डेरा कीधा।—जखड़ामुखड़ा भाटी री बात

५ सिक्खों के विभिन्न नायकों की अधीनता में स्वतन्त्र होने वाले विभिन्न समूह।

६ सभा, समाज।

वि०—समान, तुल्य, सदृश।

क्रि० वि०—तरफ, ओर।

रू० भे०—मसल, मसलि, मसल्ल, मिसलत, मिस्ल, मीसल,

१ देखो 'मिसाल' (रू. भे.)

२ देखो 'मिसिल' (रू. भे.)

मिसलत—१ देखो 'मसलत' (रू. भे)

उ०—१ घर काज मिसलत धार, चक्रवतिय जतन विचार। दिस मरुस्थळ पति देस, व्रत अलख चख पंडवेस।—रा. रू.

उ०—२ ताहरां इसी मिसलत कीधी-आज हूं पांचमैं दिहाड़ै दोपहर री विरियां सरब कांम करस्यां। आ मिसलत करि ऊठिया। नैणसी

२ देखो 'मिसल' (रू. भे.)

उ०—हुक्त हजारी चमरू की भ्रपट करते हैं। दोऊ मिसलत खड़े हैं। हिंदू मुसलमांन जिस बखत मीर-तुजक के दस्त पर जंवाहर का पांन दांन। जिस बखत हाजर कोण कोण।—सू. प्र.

मिसळणौ, मिसळबौ—देखो 'मसळणौ, मसळबौ' (रू. भे.)

उ०—मिसळिया लड़ाकां मीरजां सुणै किया बोळा स्रवण। अण काळ मरण अण आदरै, काळ चाळ झेलै कवण।—रा. रू.

मिसळणहार, हारौ (हारी), मिसळणियौ—वि०।

मिसळिओड़ौ, मिसळियोड़ौ, मिसळयोड़ौ—भू०का०कृ०।

मिसळीजणौ, मिसळीजबौ—कर्म० वा०।

मिसलसर—क्रि० वि०—अपनी मिसल के अनुसार।

उ०—आणंद री लै'र जोर सूं वह चाली।धूड़रो तखत वणियौ। सारा सिरदार मिसलसर ऊभा हुवा।—वरसगांठ

मिसल्लत—देखो 'मसलत' (रू. भे.)

उ०—इम करै मिसल्लत आसुरांण,मिळ करां सब्ब वळ अप्रमाण।

सि. सु. रू.

मिसवन—वि० [सं० मसि-वर्ण] १ कृष्ण वर्ण, काला।

२ अंधकारमय।

मिसा पुग्गल, मिसा पुग्दल—सं० पु०—आत्म संयोगी।

मिसाल—सं० स्त्री० [अ०] १ उदाहरण।

उ०—की करैं जोर लाचार, कवि आदत तजै न आलसी। सोधी मिसाल लाधी सितम, खतम दुतरफ खिलालसी।—ऊ. का.

२ उपमा।

उ०— एक वांणियों मूं'जी इसो हो के नीं उण रैं मूं'जीपण री किणी सूं मिसाल दी जा सकै अर नीं उण रैं मूं'जीपणा रौ बयांन कियौ जा सकै।—फुलवाड़ी

३ दृष्टान्त।

उ०—कीं कांम नीं काज। बोलतां-बोलतां ई कायौ व्है जाऊं म्हारै एदीपणा री मिसालां लागै।—फुलवाड़ी

४ कहावत लोकोक्ति।

५ नमूना।

६ आदर्श।

उ०—म्हैं दुनियां में कंजूसी रै बेजोड़ गुण री मिसाल थाप नै जावूंला।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मिसल,

मिसि—१ देखो 'मिस' (रू. भे.)

उ०—१ बंभण मिसि वंदै हेतु सु बीजो, कही स्रवणि संभळी कथ। लिखमी आप नमै पइ लागी। अचरिज को लाधै अरथ।—वेलि.

उ०—२ आभा चित्र रचित तेणि रंगी अनि अनि,मणि दीपक करि सूध मणि। मांडि रहै चन्द्रमा तणौ मिसि, फण सहसेई सहस फणि।

—वेलि.

उ०—३ अनि पंखि बंधै चक्रवाक असंधै, निसि संधै इमि अहो निसि। कांमिणि कांमि तणी कांमागिनी,मन लायां दीवकां मिसि।
—वेलि.

उ०—४ पंच कलप तरु अवतरचा रे, अंगुलि मिसि तुम्ह बांहि हो।—वि. कु.

उ०—५ ए गंधकारी मिसि रूप दासी, रही अछइ उत्तम नारि नासी।—सालिसूरि

२ देखो 'मसि' (रू. भे.)

मिसिज्जाए-सं० पु०—मिश्रित दोष जो साधु और गृहस्थ दोनों को साथ-साथ बताया जाता है। (जैन)

मिसिमिस-सं० पु०—अत्यन्त गुस्सा। (जैन)

मिसियौ—देखो 'मिस' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कारलै मिसिया, जांणै मरग्यो। लागै जणै पीड़ हुवै है। माजी! हुवै क्यूंनी! मिसिया करणा र वखत गुमावणी।
—वरसगांठ

मिसिर—देखो 'मिस्र' (रू. भे.)

मिसिल-सं० स्त्री० [अ०] १ किसी मुकदमें, विवाद या विषय में एक साथ नत्थी किये हुऐ कागज, पत्रावली।

२ जिल्दसाजी में किसी पुस्तक के सिलाई के लिये क्रमशः रखे हुए फर्में।

रू० भे०—मसल, मसलि, मसल्ल, मिसल, मिस्ल, मीसल।

मिसिली-वि०—१ जिसके सम्बन्ध में न्यायालय में कोई मिसल बन चुकी हो।

२ जिसको अदालत से कोई सजा मिल चुकी हो।

मिसी-सं० स्त्री० [सं० मिश्र, मिश्रण] १ दो या दो से अधिक अनाजों का मिश्रण जो रोटी बनाने के लिये किया गया हो।

उ०—छेकड़ नारळी हाथ मांगणो पड़चो। रांमजी घणा देवाळ है। बाजरी मिसी भांवती नहीं जकां नै भगर रा ही सांसा पड़ग्या।
—दसदोख

२ देखो 'मिस्सी' (रू. भे.)

उ०—कंवळ-पत्री मुख मिसी सुहाईं, छुटी जुलफ सुलजावणी।
—रसीलैराज रा गीत

३ देखो 'मिस' (रू. भे.)

मिसु—देखो 'मिस' (रू. भे.)

उ०—करी य कूड सिलेद्री आठवीं। मिसु करी मदिरा लेई पाठवी।—सालिसूरि

मिसूर-सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—मिसूर थे भल ल्यावो जीवना, म्हारा चांबो थे भल ल्याय। स्याळू सांगानेर का जी बना, म्हारा अंगियां के कोर जड़ाय।
—लो. गी.

मिसे—देखो 'मिस' (रू. भे.)

उ०—सुख समधि पूछण ने मिसे रे, राजा ने गले टूंपौ दीधो जाय रे।—जयवांणी

मिस्कीन—देखो 'मसकीन' (रू. भे.)

उ०—दादू सिदक सबूरी सांच गह, साबित राख यकीन। साहिब सौं दिल लाइ रहु, मुरदा व्है मिस्कीन।—दादूबांणी

मिस्कीनी-सं० स्त्री०—१ मिस्कीन होने की अवस्था या भाव।

२ दीनता, गरीबी।

उ०—गरीब गरीबी गह रह्या, मिस्कीनी मिस्कीन। दादू आपा मेट कर, होइ रहे लौ,लीन।—दादूबांणी

३ सरलता।

४ विरक्ति।

मिस्ट-वि० [सं० मिष्ट] १ मधुर, मीठा।

२ स्वादिष्ट।

मिस्टांन, मिस्टांन्न, मिस्ठांन, मिस्ठांन्न-सं० पु० [सं० मिष्ट+अन्न]

१ मधुर एवं स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ।

उ०—१ प्रति दिन अति विंजन प्रवित, पाकादिक मिस्टान्न। बात कही मैं क्यों वणै, जांणै बात जिहांन।—रा. रू.

उ०—२ घ्रत पुरित रस जेण घण, अन मिस्टांन अपार। तरकारी सुथरी अतर, अति सुंदर आचार।—रा. रू.

२ प्रायः, कंदोईयों द्वारा बेची जाने वाली मिठाई। (उ० र०)

रू०—देसूरी वाला नाथूजी साध नैं जीभ री लोलपी जांणने घ्रत दूध दही मिस्टांन कड़ाइ विगै खावा री मरयादा साधां रै बांधी...
—भि. द्र.

३ देवताओं को चढ़ाया जाने वाला नेवेद्य।

उ०—सेवक सुकवि करत नित सेवा। मधु मिस्टांन्न चढ़त अति मेवा।—मे. म.

रू० भे०—मिठांण, मिसटांण, मिसठांण, मीठांण,

मिस्तर-सं०पु०[अ०]१ दफ्ती के एक टुकड़े पर समानान्तर दूरी के डोरे चिपका या सी कर बनाया हुआ एक उपकरण, जिस पर लिखने का कागज रख कर दबाब डाल कर सीधी रेखाओं के निशान बनाये जाते थे। (प्राचीन)

२ भवन-निर्माण में राच पीटने का एक काष्ट का उपकरण।

रू० भे०—मिसतर

मिस्तरी, मिस्त्री-सं० पु०—१ चतुर-शिल्पकार, कारीगर।

२ यन्त्रों की मरम्मत करने वाला व्यक्ति।

रू० भे०—मिसतरी,

मिस्र-सं० पु० [अ०] १ अफ्रीका के उत्तर-पूर्व में स्थित एक प्रसिद्ध देश जो आज कल अरब गण राज्य के अन्तर्गत है।

[सं० मिश्र] २ ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि।

३ साहित्य में इतिवृत के मूल विचार से नाटकों की कथावस्तु के तीन भेदों में से एक।

४ व्याकरण में तीन प्रकार के वाक्यों में से एक, जिसमें मुख्य उपवाक्य तो एक ही होता है, परन्तु आश्रित उपवाक्य एक से अधिक होते हैं।

५ ज्योतिष में सात प्रकार के गणों में से सातवां या अंतिम गण जो कृत्तिका और विशाखा नक्षत्र के योग में होता है।

६ हाथियों की एक जाति।

७ सिंहों की एक जाति। (अ. मा.)

८ सन्निपात रोग।

९ खून, रक्त।

१० मूली,।

११ मिश्रित पदार्थ।

१२ सचित्त व अचित्त पदार्थों का योग। (जैन)

उ०—जद स्वांमीजी कह्यो–मूलां में तो पुण्य पाप दोनूं है। पिण मूला अणुकंपा आंण नें खुवांयां केइ मिस्र कहै। जद कह्यो: मिस्र कहै सो पापी।—भि.द्र.

वि०—१ जो कईयों के योग से बना हुआ हो, कईयों को मिलाकर एक किया हुआ, मिला हुआ, संयुक्त।

२ अनेक तत्वों, योगों, अंगों आदि के योग से नए व स्वतन्त्र रूप में आया हुआ।

३ बड़ा, मान्य, श्रेष्ठ।

रू० भे०—मिसर, मिसिर.

मिस्रकेसी–सं० स्त्री० [सं० मिश्रकेशी] मेनका की सखी एक अप्सरा। यह कश्यप एवं प्राधा की कन्या थी और पुरुराजा के पुत्र रौद्राश्व के साथ इसका विवाह हुआ।

मिस्रजाति–सं०पु० [सं० मिश्र-जाति] वर्णसंकर।

मिस्रण–सं० पु० [सं० मिश्रण] १ मिलाने, सम्मिश्रण करने की क्रिया या भाव।

२ दो या दो से अधिक पदार्थों को एक साथ मिलाने की क्रिया, मिलावट।

३ उक्त क्रिया से तैयार होने वाला पदार्थ।

४ कई औषधियों के मेल से बनने वाली औषधि। (मिक्सचर)

५ गणित में जोड़ लगाने की क्रिया।

मिस्रपांनी–सं० पु०—धोवन (जैन)

उ०—मिस्रपांनी न बहराय, ग्रही के सरणे नहीं जाय।

—जयवांणी

मिस्रवाली—

उ०—ज्यं मस्रवालां मांहि सूं तो केइ समझाया अबे पुन्यवालां री वारी। पछै पुन्य री स्रद्धा वाला नें निखेधवा लागा।

—भि. द.

मिस्रित–सं० स्त्री० [सं मिश्रित] १ कृत्तिका और विशाखा नक्षत्र के समय होने वाली सात प्रकार की संक्रांतियों में से एक संक्रांति।

वि०—१ मिला हुआ, मिश्रित।

उ०—खीर कंद मिस्रित हित खंती। भोजन अवर दियै बह भंती।

—सू. प्र.

२ जिसमें मिलावट की गई हो।

मिस्री–वि० [फा०] मिस्र का, मिस्र सम्बन्धी।

सं० पु०—१ मिश्र देश का निवासी।

२ एक नाग जो बलराम के स्वर्गारोहण के समय उसके स्वागतार्थ प्रभास क्षेत्र में उपस्थित था।

३ देखो 'मिसरी' (रू. भे.)

उ०—१ मेवा वस्त्र आभरण मिस्री, बद जइ किसा किसा वाखांण।—महादेव पार्वती री वेलि

उ०—२ जद स्वांमीजी बोल्या–किण ही खाधी तो मिस्री नैं जांण्यो जहर तो ऊ मरै के न मरै ? जद ऊ बोल्यो न मरै।—भि.द्र.

मिस्ल—१ देखो 'मिसल' (रू. भे.)

उ०—मिस्ल अठ मत्ता वो मरोर को मरोर नाखी। तौर नांखी पोपजी की ख्यातां खोय खत्ता में।—जुगतीदान बारहठ

२ देखो 'मिसिल' (रू. भे.)

मिस्सी–सं० स्त्री० [फा० मिसी] १ माजूफल, लोहचून, तूतिया आदि के योग से तैयार किया जाने वाला एक मंजन जिससे स्त्रियां दांत व होठ रंगती है।

२ मुसलमान वेश्या के पहले-पहल किसी पुरुष से समागम करने पर किया जाने वाला उत्सव। इस समय उसके मिस्सी लगाते हैं।

वि०वि०—इसे सिर ढकाई या नथ-उतराई की रस्म भी कहते हैं।

रू०भे०—मसि, मसी, मस्सी, मिसी।

मिहटणौ, मिहटबौ–क्रि० अ० [सं० मिह्] जलते हुए का बुझना, ठंडा पड़ना।

उ०—इम कहि नै घोड़ौ बळती झाळ मांहै ठेलीयौ, तिको झाळ मांहां सो घोड़ौ कोरीयां पावां नीसरीयो। झाळ मिहटि गयौ।

—मांडणसी कूंपावत री वात

क्रि०स०—२ नम करना, तर करना।

३ छिड़कना।

४ मूत्र करना।

मिहटणहार, हारौ (हारी), मिहटणियो—वि०।

मिहटिओड़ौ, मिहटियोड़ौ, मिहट्योड़ौ—भू०का०कृ०।

मिहटीजणौ, मिहटीजबौ—भाव वा०/कर्म वा०।

मिहटियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बुझा हुआ, ठंडा पड़ा हुआ।

२ नम व तर किया हुआ।

३ छिड़का हुआ।

४ मूत्र किया हुआ।

(स्त्री० मिहटियोड़ी

मिहतर, मिहत्तर—देखो 'महतर' (रू. भे.)

मिहनत—देखो 'मैंनत' (रू. भे.)

मिहर—सं०पु० [फा० मह्न] १ मुसलमानों में वधु पक्ष की ओर से वर पक्ष से तय करवाई जाने वाली धन राशि जो स्त्रीधन के रूप में रहती है और तलाक हो जाने की दशा में स्त्री के गुजारे में काम आती है (मा.म.)

२ देखो 'मिहिर' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ भ्रूंटि भ्रवि मुभ्र नारि विगोई। आथमिउं मिहर सूं मुह जोई।—सालिसूरि

उ०—२ मध्य दीरघ जगरण रोग दत सुर मिहर। निरपमनु विता सेना अरुण नेक।—र. रू.

३ देखो 'महर' (रू. भे)

उ०—१ करहा सुणि सुंदरि कहइ, मिहर करउ मो आज। साहिब म्हारउ ऊमह्यउ, हिव सगळी तो लाज।—ढो. मा.

उ०—२ तूं तो मेंडड़ी ज्यांन सिपाईडा रे। मिहर करै मेंडी गलियां आवं। इतनी अरज मेंडी मांन।—रसीलैराज रा गीत

मिहरवांणी—देखो 'मे'रबांनी' (रू. भे.)

उ०—ताहरां वार २-४ उमरावे कहियो पिण पातिसाहजी कहै हूं न मारूं मिहरवांणी आवै।—द. वि.

मिहरवौ—देखो 'मेहराब' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आयो फाग उमंड आली री, मची है मिहरवा के धूंम।
—रसीलैराज रा गीत

मिहरी—

उ०—अनुज भाई निसंभ बोलियौ-भावी पदारथ मिटै नहीं। विधाता लेख घातियो तठै इसो हीज लिखीयो थो। रगतबीज सांमंत मारिखां रो परब मिहरी रै हाथ हुमी। तिका तो आंकांबंधी। होणहार सूं जोर लागै नहीं।—मा. वचनिका

२ देखो 'मिहिर' (रू. भे.)

मिहल—१ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—मिहल विछीया चुगल मुख, नायक कांन लगांह। भूषणगण मांगण भला, मिळही च्यार मगांह।—बां. दा.

२ देखो 'महल' (रू.भे.)

मिहि—देखो 'महि' (रू. भे.)

उ०—असि वेग वहै, गिरी संग गहै। रवि रैण मिळे, मिहि मैन मिळे।—गु. रू. बं.

मिहिका—सं०पु० [स] १ हिम, बर्फ।

२ कोहरा।

३ ओस।

४ कपूर।

मिहिर—सं० पु० [सं०] १ सूर्य, भानु, रवि।

२ चन्द्रमा।

३ बादल, मेघ।

४ वायु, हवा, पवन।

५ राजा।

६ आक, मदार।

७ तांबा।

८ वृद्धजन।

९ विक्रमादित्य की सभा का एक पंडित।

रू०भे०—महर, महिर, महीर, मिहर, मिहरी, मीहर।

मिहिरकुळ—सं०पु० [फा० मह्लगुल] शाकल प्रदेश के प्रसिद्ध हुए राजा तोरमाण का पुत्र। (ऐतिहासिक)

मिहिली—देखो 'महिळा' (रू. भे.)

मिहीं, मिहींन—देखो 'महीन' (रू. भे.)

उ०—दादू मिहीं महल बारीक है, गांउं न ठाउं न नाउं। तासौं मन लागा रहै, मैं बळिहारी जाउं।—दादूबांणी

मींगणमाळा—सं० स्त्री०—ऊंट, बकरी या भेड़ के विष्टे की सूखी गोटी की माला।

उ०—माटी केरो घूमाळो, लीद गोबर सूं ढोळचो है। कांनां में दोय भड़भोल्या, गळा में मींगण-माळा है।—फुलवाडी

मींगणी—सं० स्त्री०—भेड़ बकरी या चूहे आदि के विष्टे की छोटी गोटी।

रू०भे०—मिंगणी

मींगणो—सं० पु०—ऊंट के विष्टे की गोटी जो बड़े बोर के आकार की होती है।

उ०—१ अर बीजो खीवै री पलट माहे मींगणो मूं'कै अर ईंडोलै।
—चौबोली

उ०—२ नाडी रा पांणी सूं गारो करनै वो माटी रो एक लांठो घूमाळो बणायो। कांनां में दोय भड़भोल्या घाल्या। गळा में मींगणां री माळा पे'री।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मिंगणी,

मींगी—देखो 'मींजी' (रू. भे.)

मींच—देखो 'मीच' (रू. भे.)

उ०—१ लसै प्रताव तावदे लदाव को लदावनी। सदैव वेरि मींच बीच मींच को सदावली।—ऊ.का.

उ०—२ लख चोरासी बीच, खड़ी है मींच सिरांणे। लंघणा औघट घाट, पड़ैगी दूरि पीयांणे।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ ताहरां लाखो देवी नूं कह्यो-मीनूं मींच भली देई।
—नैणसी

मींचणो, मींचबो—देखो 'मीचणो, मीचबो' (रू. भे)

उ०—१ फीटो मूंढो फाड़, नाड़ कर लेवै नींची। छिली रहै जळ छाख, मिळी आंख्या अध मींची।—ऊ. का.

उ०—२ अमल री डळी अर जैर, रो गुट कौ है,जको बेटी रै हर एक बाप नै आंख मींच र कंठां सूं हेठो उतारणो ईंज पड़ै।
—दसदोख

उ०—३ दूजा मितखां री बात मांन जावै तौ वौ राजा ई कांई । जूंझल खावता कैवण लागा—म्रांख्यां मींचलो, म्रबारू' ग्रंधारौ व्है जावैला ।—फुलवाड़ी

मींचणहार, हारौ (हारी), मींचणियौ—वि० ।

मींचिग्रोड़ौ, मींचियोड़ौ, मींच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मींचीजणौ, मींचीजबौ—भाव वा० ।

मींचा—देखो 'मीच' (रू. भे.)

मींचाणौ, मींचाबौ—देखो 'मीचाणौ, मीचाबौ' (रू. भे.)

उ०—ऊपर चादर उढ़ाई तथा मितर पढायौ । ग्रांख्यां मींचा'र, ग्रापरी प्रेमिका रौ नांवौ चितारण वेगी कैयौ ग्रर पीरां नै पांच पीसां री सीरणी चढवाई ।—दसदोख

मींचाणहार, हारौ (हारी), मींचाणयौ—वि० ।

मींचायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मींचाईजणौ, मींचाईजबौ—कर्म वा० ।

मींचायोड़ौ—देखो 'मीचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मींचायोड़ी)

मींचावणौ, मींचावबौ—देखो 'मीचाणौ, मीचाबौ' (रू. भे)

उ०—सीधौ सुवांण परौ र करणै री ग्रांख्या मींचावै है ग्रर जेवड़ी सूं जरू बांध देणै रौ भळै कैवै है ।—दसदोख

मींचावणहार, हारौ (हारी), मींचावणियौ—वि० ।

मींचाविग्रोड़ौ, मींचावियोड़ौ, मींचाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मींचावीजणौ, मींचावीजबौ—कर्म वा० ।

मींचावियोड़ौ—देखो 'मीचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मींचावियोड़ी)

मींचि—देखो 'मीच' (रू. भे.)

उ०—ताहरां दिली टीकै सलेमसाह पातिसाह बैठौ । वरस सात पातिसाही करि ग्रर मींचि मूयौ ।—द. वि.

मींचियोड़ौ—देखो 'मीचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मींचियोड़ी)

मींची—देखो 'मीच' (रू. भे.)

मींजणौ, मींजबौ—क्रि० स०—१ मसलना, मलना ।

उ०—१ कठिन क्रूर ग्रक्रूर ग्रायौ, साजि रथ कहं नई । रथ चढाय गोपाळ लै गयौ, हात मींजत रही ।—मीरां

२ बंद करना, मूंदना ।

मींजणहार, हारौ (हारी), मींजणियौ—वि० ।

मींजिग्रोड़ौ, मींजियोड़ौ, मींज्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मींजीजणौ, मींजीजबौ—कर्म वा० ।

मींजर—देखो 'मिमजर' (रू. भे.)

मींजियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मसला हुग्रा, मला हुग्रा ।
२ बंद किया हुग्रा, मूंदा हुग्रा ।
(स्त्री० मींजियोड़ी)

मींजी—सं० स्त्री० [सं० मज्जा] १ हड्डी के भीतर का गूदा, मांस का गूदा । (उ. र.)
२ फल या बीज के भीतर का गूदा ।
३ चर्बी, बसा । ४ वीर्य, बीज
५ ग्रन्तः करण, हृदय, मर्म ।

उ०—मयणा चाली उंबर संगे, हीयडे हरख धरी उछरंगे । जैन धरम मींजी भेदांणी, किम पलटे तेह नी कही वांणी ।
—स्रीपाळा रास

रू० भे०—मींगी

मींट—देखो 'मीट' (रू. भे.)

उ०—१ मुनि सुव्रत मन माहरौ जी, लागौ तुम लगि थेट । पिण तूं मींट न मेलवै जी, ए व्रत दुक्कर नेट ।—वि. कु.

उ०—२ मार पालथी मींट लगावै, करै गजब का फेल ।
—डूंगजी जवारजी री छावली

उ०—३ कपड़ा काळा कीट, नीठ उठ ऊठ निरोधै । मींट ग्रमल रै मांय, सींठ कुचरै जं सोधै ।—ऊ. का

उ०—४ एहिज परि थई भीरि कजि ग्रायां,धनंजय ग्रनै सुयोधन । मासै मगसिर भलउ जु मिलियौ, जागिया मींट जनारजन ।
—वि. कु.

मींठौ—देखो 'मीठौ' (रू. भे.)

उ०—१ मूंघौ माखण सूं मिसरी सूं मींठौ । द्रग सूं दो घड़ियां ग्रन बिकतौ दीठौ ।—ऊ का.

उ०—२ पल पल दीठां बिन पांणी नह पीता । जांरा मींठा मुख जोय'र जग जीता ।—ऊ. का.

मींड—सं० पु०[सं० मीड़म्] १ तार वाद्यों में स्वर की ग्रटूटता को कायम रख कर तथा मध्य ग्रंश को मधुर बना कर एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाने की क्रिया । (संगीत)
२ समानता, तुल्यता, बराबरी ।

रू० भे०—मीड

मींडक—देखो 'मींडकौ' (मह., रू. भे)

उ०—दादू संसा सब्द है, सुन हां संसा मारि । मन मींडक सूं मारियै, संका सरप निवारि ।—दादूबांणी

मींडकी—सं० स्त्री०—१ मादा मेंढक ।
२ मेंढक का बच्चा ।
३ वह गाय ग्रौर भैंस जिसके दोनों सींग नीचे की ग्रोर मुड़े हुए होते हैं ।

उ०—राजाजी तौ बोबाड़ौ करनै डोकरी रा पग झाल लिया । रोवणकाळा होय कैवण लागा—थांरी मींडकी गाय हूं, ग्रां पांडवां सूं पिंड छुडावौ ।—फुलवाड़ी

पद—मींडकी-गाय=दीन-हीन, ग्रसहाय, ग्रसमर्थ ।

मींडकीपाव—सं० पु०—एक नाथ सम्प्रदाय के सिद्ध पुरुष ।

उ०—नेम कंवार नेहक्रम, हालीपांव होतब,निहकंप कबीर, मींडकी पाव परमोद, नांम देव नेठाव, धूंधळीमल ध्यांन, रहित रैदास,

ग्रौघड़नाथ ग्रघट ।—ह. पु. वां.

मींडकौ-सं० पु० [सं० मण्डूक] (स्त्री० मींडकी) मेंढक, दादुर ।

उ०—१ मांन कियोड़ी महळ ज्यूं, बुगलां ज्यूं कम बोल । मावड़ियौ घर मींडकौ, पुरख पणा री पोल ।—बां. दा.

उ०—२ समद नीर माछली बिरोळै. सुखिम सीरां पीवै । पैली कथा परम पद सुणतां, मन मींडका न जीवै ।—ह. पु. वां.

पर्या०—डेडरौ,प्लवग, बरसाभू, भेक,हरि।

रू० भे०—मीडकौ, मेंढकौ, मेंढ़कौ

मह०—मींडक, मींढक, मेंढक, मेडक, मेढक ।

मींडणौ, मींडबौ-क्रि० स०—१ तुलना करना, मीलान करना ।

२ जांच करना ।

३ ग्रंकित करना, लिखना ।

४ निरखना, देखना ।

उ०—फैंट पकर के फगुवा ल्योंगी मुख मींडोंगी ब्रजराज । मीरां के प्रभु गिरधर नागर, सदा रहौ सिरताज—मीरां

५ बराबरी करना, मुकाबला करना ।

६ समानता करना ।

मींडणहार, हारौ (हारी), मींडणियौ—वि० ।

मींड़िग्रोड़ौ, मींडियोड़ौ, मींड्योड़ौ—भू०का०कृ० ।

मींडीजणौ, मींडीजबौ—कर्म वा० ।

मिंढणौ मिंढबौ, मींढणौ, मींढबौ, मीढणौ, मीढ़बौ, मीढवणौ, मीढवबौ (रू. भे.)

मींडल—१ देखो 'मींडी'

२ देखो 'मींढल' (रू. भे.)

मींडली—देखो 'मींडी' (ग्रल्पा., रू. भे)

उ०—फुकी नस मींडलियां रै बीच, जांणे बिरछै कंवळी डाळ ।

—सांझ

मींडाखड़बड़-सं० स्त्री०—१ बकझक ।

२ कलह, झगड़ा ।

मींडासींगी—१ देखो 'मेढ़ासींगी' (रू. भे.)

२ देखो 'मींढासींगी' (रू. भे.)

मींडियोड़ौ-भू०का०कृ०—१ तुलना किया हुग्रा, मीलान किया हुग्रा. २ जांच किया हुग्रा. ३ ग्रंकित किया हुग्रा, लिखा हुग्रा. ४ निरखा हुग्रा, देखा हुग्रा. ५ मुकाबला या बराबरी किया हुग्रा. ६ समानता किया हुग्रा ।

(स्त्री० मींडियोड़ी)

मींडी-सं० स्त्री०—१ स्त्री के सिर में गूंथे हुए केशों की लट ।

उ०—मासी महारांणी री मींडियां गूंथती बोली-बेटी, म्हैं जको विखो सगळी ऊमर भुगतियौ उण रै कारण म्हनै तो कोइ दूजी बात निगेई नीं ग्रावै ।—फुलवाड़ी

२ वह गाय या भैंस जिसके सींग नीचे की ग्रोर मुड़े हुए होते हों ।

३ शून्य का ग्रंक (०) ।

रू० भे०—मींढी,

ग्रल्पा०—मींडली, मींढली,

मह०—मींडल, मींढल

मींडौ-सं० पु०—१ बैल, भैंसा ग्रादि वह पशु, जिसके सींग नीचे की ग्रोर मुड़े होते हैं ।

२ शून्य का ग्रंक. जीरौ (०) ।

उ०—जिको न पूरी जांणतौ, ठंठौ मींडौ ठोठ । वाचै ग्रविरल वांणी सुं, पुस्तक भरिया पोठ ।—ध. व. ग्रं.

३ देखो 'मींढौ (रू. भे.)

उ०—जमनाजी कै बांयैं-डावैं रेवड़ चरतौ जाय । निजर पड़ी करणै मीणै की, जद यूं बोल्यौ ग्राय । हुकम करौ तो सिरदारां मैं मींडौ ल्याऊं उठाय ।—डूंगजी जवारजी री छावली

मींढ-सं० स्त्री०—१ बराबरी, समता ।

उ०—कासी सेव करैह, दस क्रोडां सुरभी दियै । हेकण नांम हरैह, मींढ न ग्रावै मोतिया ।—रायसिंह सांदू

वि०—बराबर, समान, तुल्य ।

उ०—१ वरदायक सकति री, कंत क्रीत री कहावै । उरड़ जोम ग्रंगरौ, ग्रवर पह मींढ न ग्रावै ।—सू. प्र.

२ किम पूगै तो मींढ 'कलावत' दो मंझ रायांसिह दुझाळ । चांदो गिरवरी झंग चीतवै, सायर ग्रोट तकै सह साळ ।—द० दा०

रू०भे०—मिंढ़, मीढ

मींढउ—देखो 'मींढौ' (रू. भे.) (उ. र.)

मींढक—देखो 'मींडकौ' (मह., रू. भे.)

मींढणौ, मींढबौ—देखो 'मींडणौ, मींडबौ' (रू. भे.) (उ. र)

मींढणहार, हारौ (हारी), मींढणियौ—वि० ।

मींढ़िग्रोड़ौ, मींढियोड़ौ, मींढ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मींढीजणौ, मींढीजबौ—कर्म०वा० ।

मींढरौ-वि०—१ उपमा देने योग्य ।

२ बराबर का ।

मींढल-सं०पु०—१ वृक्ष विशेष ।

उ०—महूडा मिलयागिरी मिरी, मींढल नई मंदार । मांई मजीठ मरिहठी, मरडासींगे मार ।—मा०कां०प्र०

२ देखो 'मींडी' (मह., रू. भे.)

रू० भे०—मीडल

मींढली—देखो 'मींडी' (ग्रल्पा , रू. भे.)

मींढवणौ, मींढवबौ-क्रि०स०—देखो 'मींडणौ, मींडबौ (रू. भे.)

उ०—बिखमी पुळ चामंड मींढवणी, तद वीर भयंकर राव तणी। धुर छितीय वज्र कमाड धरा, ग्रसवार कना भड़ ग्रंतक रा ।

—पा. प्र.

मींढ़ा–सं० स्त्री०—एक नदी जो जयपुर जिले के जैतगढ़ की पहाड़ियों में से निकल कर सांभर झील में गिरती है।

मींढासींगी–सं० स्त्री०—१ घोड़े के कानों के नीचे और आंखों के ऊपर होने वाली भंवरी (चक्र)। (अशुभ) (शा. हो.)

२ देखो 'मेढासींगी' (रू. भे.)

मींढी—देखो 'मींडी' (रू. भे.) (उ. र.)

मींढौ–सं०पु० [सं० मेण्ढक] मुड़े हुऐ सींगों वाला नर भेड़, मेष।

उ०—राव सूं महलां अरज की–रावजी सलांमति! म्हां मल लड़ता दीठा, हिरण लड़ता दीठा, मींढा लड़ता दीठा, ऊंठ, घोड़ा हाथी लड़ता दीठा पिण रजपूत लड़ता दीठा नहीं छै।

—नांन्है वाघेलै री वात

वि०—बिना सींग का, सींग रहित।

रू०भे०—मींडौ, मीढौ, मूंडौ, मूडौ, मेंढौ, मेढौ,

मह०—मिढ

मींणा—देखो 'मीणा' (रू. भे.)

उ०—भीलन कूं न भळावियौ, नांहिं मेरां मींणांह। तोनूं रांण भळावियौ, सोहड़ां सुकळणियांह।—बां०दा०

मींत, मींत्र—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

उ०—१ तीस बरस कुसती करी, पड़ गुड़ उथल-पथल्ल। तैं दीधौ गोडां तळै, अइयौ मींत अमल्ल।—ऊ. का.

उ०—२ मणिमय मंदिर-मांहिथी, महिला वंछइ मींत। पणि प्रीऊ पेखी आवतुं, अबल ऊतरिउ चींत।—मा. कां. प्र.

उ०—३ प्रीत कियां सुख नहिं मोरी सजनी, जोगी मींत न कोई।

—मीरां

मींदर—देखो 'मंदिर' (रू. भे.)

उ०—श्री मींदर नै मंडप सं० १६१४ रा भादवा वद ५ सो उडीयौ तरां मंडप सिखर गयौ।—मारवाड़ री ख्यात

मींन—देखो 'मीन' (रू. भे.)

उ०—कठै आ गूजरी अर कठै ऐ निकांमी ओपमावां–सीस नाळेर। मिरग सा नैत्र, मींन जिसा चपळ।—फुलवाड़ी

मींनमेख—देखो 'मीनमेख' (रू. भे.)

उ०—१ ठाकरसा मूंछयां माथै हाथ फेरनै घांटी हिलायनै बोल्या–हां, इण में कांई मींनमेख।—फुलवाड़ी

उ०—२ वां री जीत में कीं मींनमेख बाकी नीं ही के अणचींत्यौ सगळौ पाटियौ ई उलटग्यौ।—फुलवाड़ी

मींमचौ–सं०पु०—छोटी तलवार जो प्रायः बच्चों को सिखाने के लिए काम में आती थी।

रू० भे०—मीमचौ,

अल्पा०—मीमचियौ,

मींमासा—देखो मीमांसा' (रू. भे.)

मींयौ—१ देखो 'मियां' (रू. भे.)

२ देखो 'महीन' (रू. भे.)

मींह—देखो 'महीन' (रू. भे.)

उ०—घणां मींह जांमां अतर मैं तिलवाय कीधा तिकां रा बंध छाती उपरासूं खोल दीधा छै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

मी–सं० स्त्री०—१ रमा।

२ यति। (एका०)

मीआद—देखो 'मयाद' (रू. भे.)

मिआदी—देखो 'मयादी' (रू. भे.)

मीच–सं०स्त्री० (सं० मृत्यु प्रा० मिच्चु] १ मृत्यु, मौत, काल।

उ०—१ पैंड दियै असमेद रा, मरै खड़ग चो मीच। अछरां बांहड़ियां गळै, वसै विमांणां बीच।—बां दा.

उ०—२ तरै दीवीजी हाथ झालिया–कहै–तूं मती मरै, थारै हाथ तो लाखा री मीच नहीं नै तैं अतरो हठ मांडीयौ म्हे तोनूं लाखा मारण रौ उपाव बतावां छां।—नैणसी

उ०—३ दुरवासा कारण स्राप दियौ, लखजै अंबरीख उबार लियौ। बिच पेट परीछत मीच बचाय' र थेट हरी जन थापियौ।

—र. ज. प्र.

२ आंख का इशारा।

३ आंख बंद करने की क्रिया या भाव।

रू० भे०—मींच, मींचा, मींचि, मींची,

मीच-आलौ–सं० पु० [सं० मृत्यु-आलय] यमलोक।

उ०—परलोक जाय आवै कवन, कवन मीचआलै गवन। कंठीर कंठ हिम कंठ लौं, कर पसारि घल्लै कवन—ला. रा.

मीचणौ, मीचबौ–क्रि० स० [सं० मीलति] १ बंद करना, मूंदना। (आंख) (उ. र.)

उ०—खीच रा डळा खावै खिसक, नींच तळा कुळ नाळ रा। नित मीच आंख बैठै निलज, भीच अमल भूपाळ रा।—ऊ. का.

२ जोड़ना, मिलाना।

मीचणहार, हारौ (हारी), मीचणियौ—वि०।

मीचिओड़ौ, मीचियोड़ौ, मीच्योड़ौ—भू०का०कृ०।

मीचीजणौ, मीचीजबौ—कर्म वा०

मींचणौ, मींचबौ—रू० भे०

मीचाणौ, मीचाबौ–क्रि०स० १ बंद करवाना, मूंदने के लिये प्रेरित करना। (आंख)

२ जुड़ाना, मिलवाना।

मीचाणहार, हारौ (हारी), मीचाणियौ—वि०।

मीचायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मीचाईजणौ, मीचाईजबौ—कर्म वा०।

मींचाणौ, मींचाबौ, मीचावणौ, मीचावबौ—रू० भे०।

मीचायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ बंद करवाया हुआ, मूंदने के लिये प्रेरित

किया हुआ। (आंख)
२ जुड़ाया हुआ, मिलवाया हुआ।
(स्त्री० मीचायोड़ी)

मीचावणौ, मीचावबौ—देखो 'मीचाणौ, मीचाबौ' (रू. भे)
मीचावणहार, हारौ (हारी), मीचावणियौ—वि०।
मीचाविम्रोड़ौ, मीचावियोड़ौ, मीचाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मीचावीजणौ, मीचावीजबौ—कर्म वा०।

मीचावियोड़ौ—देखो 'मीचायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मीचावियोड़ी)

मीचियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ आंख बंद किया हुआ, आंख मूंदा हुआ।
२ जोड़ा हुआ, मिलाया हुआ।
(स्त्री० मीचियोड़ी)

मीजर—देखो 'मिमजर' (रू. भे.)

मीजांन—देखो 'मिजांन' (रू. भे.)

मीजाजण—देखो 'मिजाजण' (रू. भे.)
उ०—गोरी गज को घूंघट काड मीजाजण गोरी गज को घूंघट काड दीपक तुम ऐसे जोवोजी।—लो. गी.

मीजासणौ—देखो 'मजासणौ' (रू. भे.)

मीट–सं० स्त्री०—१ देखने की शक्ति, निगाह, दृष्टि।
उ०—१ निरांत सूं वावड़ी रो कमीद व्है जैड़ो ठाडो पांणी पीयनै वो पाछो जावण लागो के सूतै ई उणरी मीट राजकंवरी रै केसां माथै पड़ी।—फुलवाड़ी
उ०—२ सौ तुरंग सारखां, भड़ां अणभंग समेळां। मीट पड़ी मेळिया, घड़ी नह लागी वेळां।—रा. रू.
२ ध्यान, याद।
उ०—घड़ळियां री माळ रै उनमांन बीत्योड़ा वरस एक-एक करनै उणरी मगसी मीट सांम्ही सुभट घूमण लागा।—फुलवाड़ी
३ एकाग्र होकर बैठने की अवस्था या भाव।
४ निद्रा, नींद, तंद्रा।
५ नयन, नैत्र। (ह. नां. मा.)
६ किसी रोग के प्रभाव से होने वाली निद्रावस्था, बेहोशी।
ज्यूं–ताव री मीट।
७ नशे में धुत होने की अवस्था।
रू० भे०–मींट, मीटि, मीटी, मीठ,

मीटवायु–सं० पु०—घोड़ों में होने वाला एक रोग विशेश। (शा. हो.)

मीटिंग–सं० स्त्री० [अं०] १ बैठक, गोष्ठी।
२ किसी सभा या समिति का अधिवेशन।

मीटि, मीटी—देखो 'मीट' (रू. भे)
उ०—मीटि आगलि देखूं रही रे, ऊतर नापु आज रे। किंहि कुंज मांहि नासी रह्या रे, मुहि बाहु छु महाराज रे।
—नळाख्यांन

मीठ–सं० स्त्री० [सं० मिष्ट] १ मीठा होने की अवस्था या भाव।
२ मीठास, मधुरता।
वि०—१ मीठा, मधुर।
उ०—१ खाधौ सोही मीठ है। अग्र जनम किण दीठ। ऊखांणो अदतां पढ़ै, पूरब पद दे पीठ।—बां.दा.
उ०—२ सिमरौ सांस उसांस, ब्रह्म रस मीठ हो। आवागमन न होय, आनंद पद दीठ हो।—स्री हरिरांमजी महाराज
२ देखो 'मीट' (रू. भे.)
उ०—उण कांनी गधा री मीठ ई को पड़ी नीं।—फुलवाड़ी

मीठउ—देखो 'मीठौ' (रू. भे.) (उ. र.)

मीठड़उ, मीठड़ौ—देखो 'मीठौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—ए प्रवचन निग्रंथ तणाउ जुगतई वड़उ हो लाल। साकर सेलड़ी द्राख थकी पिण मीठड़उ हो लाल।—वि. कु.

मीठम–सं०पु० [सं० मिष्टम्] मीठास, मधुरता।
उ०—१ ऊल गिरी घर ऊपरै, यळ खांडामय आब। तूंबा मीठम होय तौ, सूवां होय सबाब।—बां. दा.
उ०—२ बायक लवंग मसाला बांटै, जीभ सकर मीठम जेम। सोहड़ां कज कोडां परसा सुत, आखर तणौ रांम रस एम।
—बसरांम रावळ

मीठवांणीया–सं०पु०ब०व० [सं० मिष्ट-पानीयं] मीठे पानी के कूए की सिंचाई से उत्पन्न गेहूं।
उ०—सोफत था कोस ८ भरेहर कूंण मांहै। लोक कोई नहीं, बसीयां रहै। खेत सखरा ऊनाळी ढीबड़ा १० हुवै, खारचीया मीठवांणीया। जोड सखरो छै।—नैणसी

मीठांण—देखो 'मिस्टांन्न' (रू. भे.)
उ०—तठा उपरायंत मोदियां नै हुकम हुवौ छै। भूंजाई सारू सारी ही वसत सीधो मीठांण वेसवार सरब लेय रात्ती-नाडी चालज्यो।—रा. सा. सं.

मीठांणी, मीठांनी–सं०स्त्री० [सं०मिष्ठ+पानीय] वह भूमि जिस पर निरन्तर मीठे पानी की सिंचाई द्वारा फसल उत्पन्न की जाय।

मीठा–सं० स्त्री०—एक व्यवसायिक जाति। (सभा)

मीठाखाऊ–वि०—अपेक्षाकृत अधिक मीठा खाने वाला।

मीठागेहूं–सं०पु०—मीठे पानी से उत्पन्न होने वाले गेहूं।
उ०—ढीबड़ा ४ मीठागेहूं हुवै।—नैणसी

मीठापणौ–सं०पु० [सं मिष्ठ+रा०पणौ] १ मीठा होने की अवस्था या भाव, मृदुता।
उ०—गत साकर काकर ग्रही, किसमिस सकुच कुईह। प्यारी मुख मीठापणै, जोड़े कमण जुईह।—र. हम्मीर
२ मीठास, मधुरता।

मीठापोइया–सं०पु०—घोड़े की एक मध्यम चाल।

मीठावरौ–वि० [स्त्री० मीठावरी] मीठी वस्तुएं खाने का इच्छुक।
रू०भे०—मिठावरौ,

मीठाबोलो–वि० [स्त्री० मीठाबोली] मधुर वचन बोलने वाला मृदुभाषी, ।

उ०—महाहणी मीठाबोला सरस तरुणा इसी सभा अनई एतला देस तणउ अधिपति ''''।—व. स.

मीठास—देखो 'मिठास' (रू. भे.)

उ०—१ थोड़ी देर अठीनै-बठीनै-री वातां हुणै रै बाद गोपाळ मीठास सूं पूछियो- थांरै माथै कित्तोक करजो है ।—वरसगांठ

उ०—२ आठमा अंग ना पाठमइंजी, एहवउ छइ रे मीठास । सरस अनुभव रस ऊपजइजी, संपजइ पुण्य नी रासि ।—वि. कु.

उ०—३ तरै मन में कही मैं पहलां सुणी थी जे प्रभु रा बैकुंठ में पांणी इसो छै जे उण री मीठास घटै न स्वाद बिगड़े ।—नी.प्र.

मीठी—१ देखो 'मीठीमां' (रू. भे.)

२ देखो 'मीठो' (स्त्री.)

उ०—पाचणा रै धार लगावतो नाई भीणा सुर में मीठी रागां करण लागो ।—फुलवाड़ी

मीठीईद–सं० स्त्री०—मुसलमानों का एक त्यौहार विशेष ।

मीठीकोळी–सं०स्त्री० [सं० मिष्ट-कवल] देवताओं को चढाया जाने वाला मीठा पदार्थ ।

वि०—चरकी कोळी

मीठीछुरी–वि०—धोखाबाज जो मुख से मीठी-मीठी बात करे व मन में घातक भावना रखता हो, छलिया, कपटी ।

सं०पु०—धोखा, कपट ।

क्रि०प्र०—मारणी, लगानी ।

मीठीजाळ–सं० स्त्री०—वह जाल का वृक्ष जिसके फल मीठे हों ।

मीठीझील–सं० स्त्री०—मीठे पानी की झील ।

उ०—किणी एक मीठीझील रा कांठा माथै जांमुन रौ एक लांठो रूंख हो ।—फुलवाड़ी

मीठीबांणी–सं०स्त्री०—ऐसा बोल या वचन जो सुनने में भला जान पड़े, मधुर वचन ।

मीठीबोरड़ी–सं० स्त्री०—बोर का वह वृक्ष जिसके फल मीठे हों ।

उ०—दोनूं बेनां एक मीठीबोरड़ी रा बोर खावण ढूकी ।

—फुलवाड़ी

मीठीमां–सं० स्त्री०—बड़े बाप की स्त्री, बड़ी मां, ताई ।

रू० भे०—मीठी,

मीठीमार–सं० स्त्री० १—तीक्ष्ण व्यंगात्मक हास्य ।

२ ऐसी चोट जो ऊपर से मामूली जान पड़े परन्तु उसकी आन्तरिक पीड़ा बहुत होती है ।

मीठू—देखो 'मीठो' (रू. भे.)

उ०—सिंधु थकी सर अधिकूं अतिसि मि मन साथि दीठूं । येह नूं जल कांई अरथि न आवि, आ तौ अत मीठूं ।—नळाख्यांन

२—देखो 'मिट्ठू' (रू. भे.)

मीठोउत्तर–सं० पु०—१ अत्यंत मीठी भाषा या धीमे स्वर से किया जाने वाला इन्कार,

२ मांगने वाले की इच्छा पूर्ति न कर सकने की दशा में उसे न्यूनाधिक कुछ देकर संन्तुष्ट करने की क्रिया ।

उ०—हरख मिळै आदर करै पोखै थाळ मंगाय । मीठोउत्तर मोकळै, मीठो सूंब कहाय ।—बां. दा.

मीठोकवो–सं० पु०—१ मीठे खाद्य पदार्थ का ग्रास ।

उ०—मीठो बोलै हुंस मिळै पातां नंह ढक पल्ल । कर आदर मीठा कवा, जीमाड़ै जैहल्ल ।—बां. दा.

२ गुप्त वार्ता ।

क्रि० प्र०—लैणां

मीठोड़ो—देखो 'मीठो' (अल्पा., रू. भे.)

मीठोठग–वि०—भला बनकर धोखा देने वाला, कपटी ।

उ०—पोढै परियंका सदा निसंका स्रीखंड-स सुंगंधा है । धन लेवत धीठा देत न दीठा मीठाठग मोहंदा है ।—ऊ. का.

मीठोतेल–सं० पु०—तिल्ली का तेल ।

उ०—गिलबिलियोड़ा मांथां में मीठातेल री टीपरियां राळी तद आकड़ा री बळत मिटी ।—फुलवाड़ी

मीठोनींब, मीठोनीमड़ो–सं० पु०—नीम का वह वृक्ष जिसके पत्ते मीठे होते हैं ।

मीठोबच, मीठोबैण, मीठोवचन, मीठोवयन,मीठोवैण—देखो 'मीठोवचन' (रू. भे.)

उ०—१ आठौं पौर अंगीठा ओपम, उर मीठाबच आंणै ।

—ऊ. का.

उ०—२ कोयल रा मीठाबैण सुणनै पूछ्यो-कोयल बाई,कालै तौ थारा बोल खारा आक ज्यूं हा, पण आज मिसरी सूं ई मीठा कीकर ? —फुलवाड़ी

उ०—३ वैरी रा मीठावचन, फळ मीठा किंपाक । वे खाधां वे मांनियां, हुवा क्रतांत खुराक ।—बां. दा.

उ०—४ जतरी मुख आखी जवन, वात वणाय वणाय । सह झूठा मीठावयण, दीठा न आया दाय ।—रा. रू.

उ०—५ मीठावैण प्रकास मुख, जग मैं लालच जीत । ऊधम हत्थां प्रत्यड़ी, कांनां सुणा निज क्रीत ।—बां दा.

मीठोमारू–सं पु०—प्रियतम ।

उ०—लावो तो लावौ हो हंजा मारू लावो दोय चार । हो कांई म्हारी होड हो म्हारा मीठामारू ।—लो. गी.

मीठोमेरांणो–सं० पु०—सतलज नदी की एक शाखा जो पाकिस्तान के पूर्वी भाग में बहती है ।

मीठो–वि० [सं० मिष्ट] (स्त्री० मीठी) १ शक्कर और शहद की तरह जो स्वाद में मधुर हो, मीठा ।

उ०—१ वैरी रा मीठा वचन, फल मीठा किंपाक । वे खाधां वे

मांनियां, हुवा क्रतांत खुराक ।—बां. दा.
उ०—२ कहै है भीखरण बाबा! हूं भगतां नै लापसी जीमाऊं सो कांई हुवै ? स्वांमीजी बोल्या: लापसी में जैसो गुळ घालै जैसी मीठी हुवै ।—भि. द्र.
उ०—३ नवा गांव में पेठ जमावण सारू वौ मिसरी सूं ई मीठौ बोलरण लागौ तौ ई उरण रै अंतस रौ विस लोगां सूं छांनो नीं रह्यौ ।
—फुलवाड़ी
उ०—४ सगै-सगै री रळग्यौ जी, मीठा हुया ज्यूं सक्कर घी । सगो सगै री वाजै जड़, वात वैठगी आछै घड़ ।—दसदोख
२ स्वादिष्ट, जायकेदार, सुस्वादु, रुचिकर ।
उ०—१ सांच बोलियां टुकड़ा सूका, मिळ जावै सोई मीठा । कूड बोल पकवांन करावै, धूड बराबर धीठा ।—ऊ.का.
उ०—२ ऊनाळी सिगळी सींव में सेझो । पांणी हाते ७ तथा ८ घणौ मीठौ ।—नैणसी
३ प्रिय, प्यारा ।
उ०—१ नंद इंद्र कोपियां, नंद नंदरण गुरण दीठो । सेखै छळि गंग नूं, माल बळ लग्गो मीठौ ।—रा. रू.
उ० २ वाल्ही घरण बालम मीठी मुख बोली । घड़ियां अम्रत री घुळती घरण मोली ।—ऊ. का.
४ सुशील, सरल, विनम्र ।
उ०—१ आपरै साळस अर मीठा सुभाव सूं वा जरणा-जरणा रो मन मोह लियौ ।—फुलवाड़ी
५ सीधा-सादा ।
उ०—सगळां नै मीठौ जबाब देती । किणी माथै कदै ई छींटा नीं देवती ।—फुलवाड़ी
६ कोमल, मधुर ।
उ०—१ उठै एक कोयल मीठा सुर में कुहू कुहू करती ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ सुर बड़ौ मीठौ हो अर गावरण वाळी ही टेपरिया भांबी री लुगाई रंभाड़ी ।—रातवासो
उ०—३ सांचो कहै संदेस वैंरण मीठा करूं । राज मुदै पट हथ्थ रंग महिलां धरूं ।—मा. वचनिका
७ मन भावता, रुचिकर अनुकूल, ।
उ० १ पातर वाळी प्रीत, मीठी लागै प्रथम मन । मंद हुआ धन मीत, हुए विरस व ड्री हुवै ।—बां.दा.
उ०—२ राणांजी म्हांनै या ही बदनांमी मीठी ।—मीरां
८ ठीक, उचित, भला, अच्छा ।
९ धीमा, मंद, हल्का, थोड़ा ।
ज्यूं—मीठो दरद, मीठी पीड़ ।
उ०—उणरो मीठौ माजनो ई पाड़ता । परण तौ ई वौ आपरो ओ ग्यांन छोडियो कोनीं ।—फुलवाड़ी
१० लाभ दायक ।
उ०—परण ऊंदरी तौ चटोकड़ी घणी बळती ही । आपरा घणी रा धीमा सुभाव नै जांणती ही । करड़ावरण रा मीठा सवाद चाखियोड़ी ही ।—फुलवाड़ी
११ मोद भरा, प्रेम भरा ।
उ०—१ प्रेमिका सूं मिळणै रा मीठा मनसूबा बांधै अर मंतर सीधा होणै री अवधी नै आंख्यां फाड़्यां अडीकै है ।—दसदोख
उ०—२ सोनळ नै सिरावरण करण सारू मीठा नेवरा करती ।
—फुलवाड़ी
१२ धूर्त्त, पाखण्डी ।
सं०पु०—१ मीठा खाद्य पदार्थ ।
२ मिठाई, मिष्ठान्न ।
उ०—मीठा मेवा जीमते बोह भोजन बोह भांति । ता सुं तन छैती पड़ै, जन हरीया करि खांति ।—श्रीहरिरांमदासजी महाराज
३ नमक का एक नामान्तर ।
रू०भे०—मिठ, मिट्ठौ, मींठौ, मीठउ, मीठू,
अल्पा०—मिठडौ, मीठड़उ, मीठड़ौ' मीठोड़ौ,
मह०—मिट्ठ, मिठ,
मीठौवचन—सं०पु०—१ मुंह से बोला जाने वाला वह शब्द जो सुनने वाले को प्रिय लगे ।
२ सुरीली आवाज ।
रू०भे०—मीठोबच, मीठौबैण, मीठोवचन, मीठोवयन, मीठोवैरण,
मीड—देखो 'मींड' (रू. भे.)
उ०—कीजै कुरण मीड न पूगै कोई, धरपत भूठी टसक धरै ।
—भींमसिंह रो गीत
मीडकौ—देखो 'मींडकौ' (रू. भे.)
उ०—तिरण परिण त्रिकम जे परमेस्वर का जस को पार न पायो तौ मो मीडका कौ किसो वस छै ।—वेलि टी.
मीडाआवळ—सं०स्त्री०—प्रायः एक फुट ऊंचा एक प्रकार का क्षुप जो सनाय से मिलता-जुलता होता है व उसी के गुणों का होता है ।
मीढ—देखो 'मींढ' (रू. भे)
उ०—१ अकबर साह निरक्खिया, जेता चांपावत्त । मीढ सहस्सां मत्थणे, लक्ख गिणै त्रिणमत्त ।—रा. रू.
उ०—२ जग मझ रांम न को तौ जेहो, केहो भूपत मीढ करां ।
—र. ज. प्र.
उ०—३ मिळै न मीढ मीढ के अरीढ रीढते अरी । करै न ईढ ओर की उन्हें न ईढ को करी ।—ऊ.का.
मीढणौ, मीढबौ—देखो 'मींडणौ, मींडबौ' (रू. भे.)
उ०—१ असल सूं नकल मीढौ असल, गुरगम हींणां गम नहीं । अमलियां हूंत देखौ अपत, हूका वाळा कम नहीं ।—ऊ.का.
उ०—२ कवी कहै इण मनवार ने मीढो जमी रै सारू परम सगा पहला इण तरै मिळिया नें पछै इण तरै मनुहारां कर सस्त्र वाहै ।
—वी. स. टी.

उ०—३ बांदणी गोठ आहूर लग बगसतै. सुतन बंभ वंस-खट-तीस सोढौ। सुतन बंभ वंस सम मीढजै, 'माल' सुत 'लखण' सुत समौ मोढौ।—नेणसी

मीढणहार, हारौ (हारी), मीढणियौ—वि०।

मीढिग्रोड़ौ, मीढियोड़ौ, मीढयोड़ौ—भू०का०कृ०।

मीढीजणौ, मीढीजबौ—कर्म वा०

मीढियोड़ौ—देखो 'मींडियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मीढियोड़ी)

मीढुस-सं०पु० [सं० मीढुष] शक्र नामक आदित्य का एक पुत्र।

मीढौ—देखो 'मींढौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—रायांमल पूगा कांम खांनी देखि अडिगा। मीढां की तरह सूं एक टक्कर ले मुरडिगा।—शि. वं.

(स्त्री० मीढी)

मीण—१ देखो 'मणि' (रू. भे.)

उ०—जातुं बाहिरो को अजे तूं न जांणे, निसांणे फणे मीण पाखे न मांणे।—ना. द.

२ देखो 'मैण' (रू.भे.)

उ०—मीण सरीसउं मन्न करि, कठिन पणउं तूं काढि। कांम-कुतूहल-केरडा, वेच्छि! म वेला वाढि।—मा.कां. प्र.

३ देखो 'मिण' (रू. भे.)

४ देखो 'मीन' (रू. भे.)

मीणमेख—देखो 'मीनमेख' (रू. भे.)

उ०—धन अर प्रांण दोनूं गमावणा में अबै कीं मीणमेख नीं।
—फुलवाड़ी

मीणवाखर-सं०पु०—एक प्रकार का घोड़े का पाखर।

उ०—तेहे घोड़े पंच विध पाखर सांचरी, मीणवाखर मालवाखर, कातली आली पाखर……।—व. स.

मीणा-सं० स्त्री०—एक जाति।

उ०—नीजांमा नई नायता, माछी मिल्या गुआर। मीणा मोची मोकळां, मूंकी गया दूआर।—मा. कां. प्र.

रू०भे०—मींणा, मैणा।

मीणिग्रौ, मीणियौ-सं० पु०—१ एक वस्त्र विशेष।

उ०—हुवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ! गुडीग्रा सणीग्रां वस्तूरीग्रां, प्रतायीग्रां कुसभीग्रां मोलीग्रा मांडवीग्रां मीणीग्रां वाटलीग्रां जलोदरीग्रां……।—व. स.

२ देखो 'मणियौ' (रू. भे.)

उ०—नसड़ी चिगथर भोडकी मीणियै सूं परियां पटकी।
—दसदोख

मीणी—१ देखो 'मणि' (रू. भे.)

उ०—वहरागरं हीरागरं फुल्लयागरं पूतलीउं बहूमूलं घूणोलियं मीणीयं कालं……।—व०स०

मीणीधर—देखो 'मणिधर' (रू. भे.)

उ०—मैर पंछीं सांम सुर द्रुमी सुक्र मीणीधर, जती हुए मछंद्री पयोद पाथ जोड़।—ठा. सावंतसिंह रौ गीत

मी'णेदार-वि०—मासिक वेतन लेने वाला।

उ०—निकमाळै निकमा फिरै ना, लगै कूटवा कारड़ी। मी'णेदार मजूरी करै, विच-विच अपणी वारड़ी।—दसदोख

मीणौ, मी'णौ [स्त्री० मीणी] १ मीणा जाति का व्यक्ति।

२ देखो 'महीनौ' (रू. भे.)

उ०—१ दलाल री हिम्मत दगी—बोल्यौ—लुगाई मरै छैः मी'णौ ही नीं हुवौ है। डांगरौ थोड़ौ ही हो?—दसदोख

उ०—२ अत्यु चेत धरम नर करै, आंता खड़ी उठांवतां। मंगळिया मोसर भरावै, मी'णै घड़ौ भरांवता।—दसदेव

रू०भे०—मैणौ।

मीत—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

उ०—१ महा दिय मांन करी गुह मीत। तारै सह कीर कुटुंब सहीत।—ह. र.

उ०—२ वरस बासठौ कातिक वीतां। मोकम बळू किया निज मीतां—रा. रू.

उ०—३ पून्य प्रताप होय अंग पूरन, पाप प्रताप अपंगी। प्रथम विचार पाप को पापी, कर मत मीत कुसंगी।—ऊ. का.

उ०—४ थपै दास कर सथर, रघुवर किता अरोड़। बिरद पीत 'सागर' बिये, मीत तणै कुळ मौड़।—र. ज. प्र.

मीतौ—देखो 'मित्र' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—है जंग वागां दसमाथ हंता। माहेस वाछल्य सुकंठ मीता।
—र. ज. प्र.

मीथौ—एक वस्त्र विशेष।

उ०—नव पलां रो मीथौ रहतौ। दस पलां रौ लबायचौ रहतौ। जाडी पींडियां तांई काछ रहती।—बां. दा. ख्यात

मीन-सं०स्त्री० [सं] १ मछली। (अ. मा.)

१ जळ अवगाहन जीवणौं, दूर हुआं अति दीन। तूं गंगा तो जळ तणो, मो कद करसी मीन।—बां. दा

२ बारह राशियों में से एक राशि जिसमें पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्र पद तथा रेवती नक्षत्र होते हैं। (अ. मा., नां. मा.)

उ०—रवि मीन रासि सनि करक राह। अरु मकर रासि केतह अथाह।—सू. प्र.

३ विष्णु के चौबीस अवतारों में से मत्स्यावतार। (नां. मा.)

उ०—हंस मीन कूरम हुवौ, स्रीभरतार समत्थ। सरित हुवौ द्रव होय सो, किसू अछेरा कत्थ।—बां. दा.

४ मच्छी के आकार की हस्त रेखा।

उ०—भुज प्रलंब आजांन कमळ आक्रति पद कोमळ। जव अंबुज ध्वज कळस मीन अंकुस जंबूफळ।—रा. रू.

५ संशय, संदेह।

६ देखो 'मीनमारग'

उ०—भक्त जोग परे हठ जोग है, सांख्य जोग ता आगी। मीन पपील विहंग पुनि कहिये, तीहूं राह चीन बडभागी।

—श्रीहरिरामजी महाराज

वि०—मर्यादाच्युत, पतित, नीच।

रू० भे०—मींन, मीण, मीना,

अल्पा०—मीनी,

मीनकेत, मीनकेतन, मीनकेतु–सं०पु०[सं०मीनकत:,मीनकेतन:.मीनकेतु:] मदन, कामदेव। (अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—ज्वाळा वाळै नेत मीनकेत ज्यूं पचातां जयौ, रूकां हूंर चातां दळा विखम्मी रोधांण। राहां दहूं वीच एक अनम्मी बीजैस राजा, जाणियो जिहांन जम्मी ठांमता जोधांण।—हुकमीचंद खिड़ियौ

मीनख—१ देखो 'मनुस्य' (रू. भे.) २ देखो 'मिनख' (रू. भे.)

मीनखा—देखो 'मनीसा' (रू. भे.)

मीनगंधा–सं० स्त्री० [सं० मीनगन्धा] व्यास की माता सत्यव्रती का एक नाम।

मीनडौ—देखो 'मिन्नौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—लीजीए मीनडौ रुयडौ ए।—धरमपत्र

मीनति, मीनती—देखो 'मिन्नत' (रू. भे.)

उ०—१ सत्तर सहस गुज्जरधर धणी, तिणि प्रधांन मूंक्या अम्ह-भणी। कुमरि मंगावी मीनति करी, दीन्ही ऊमादे कुंअरी।

—हो. मा.

उ०—२ नेमजी हो सउ मीनति करतां थकां हो राजि, मत जावउ मुझ मेलि।—वि. कु.

उ०—३ फिरि फिरि मीनती वीनती जिनपति केती कराय। गिरुआ साहिब आगलि लाग लही कहवाय।—उदयविजय

मीननाथ–सं०पु०—मत्स्येन्द्रनाथ का एक नामान्तर।

मीननिवास–सं०पु० [सं०] १ जल, पानी।

२ समुद्र, सरोवर।

मीनमारग–सं०पु०[सं० मीनमार्ग:]योग साधना के तीन मार्गों में से एक।

वि०वि०—इसमें साधक अपने ब्रह्म की उपासना में लीन रहता है और जिस प्रकार मछली हर वक्त जल में रहती है और क्षणिक रूप से बाहर निकलती है उसी प्रकार से साधक क्षणिक रूप से, जिज्ञासु के प्रश्न का उत्तर देने तक ही, संसार की ओर देखता है। ऐसे साधक को वरियान पद-प्राप्त ब्रह्मनिष्ठ योगी कहा जाता है।

मीनमेख०सं०पु०—१ संशय, संदेह।

उ०—१ सिकोतरी रै मूंडा सांमी जोयां मंत्री रा बेटा नै पूरण विस्वास व्हैगो के कांम इक्कीस आंना बण जावैला इण में कीं मीनमेख नीं।—फुलवाड़ी

उ०—२ पीढियां सूं जुलम करणिया इणरी लाय में भसम व्हैला। पगथळियां चाटण वाळा इण राज रौ आंको आयग्यो। इण में कीं मीनमेख नीं।—फुलवाड़ी

२ कमी, खामी, कसर।

उ०—१ राजाजी वळै खराय-खराय पूछ्यौ—इण में तौ धनै कीं मीनमेख निगै नीं आवै।—फुलवाड़ी

उ०—२ सब सूं पैं'ली राजव्यास जका नखतर बांच्या वां में कीं मीनमेख नीं।—फुलवाड़ी

३ आगा-पीछा, सोच-विचार।

रू०भे०—मींनमेख, मीणमेख,

मीनहा–सं०स्त्री० मछली के शिकार करने का यन्त्र, वंसी। (अ.मा.)

मीना–सं०स्त्री०—१ उषा की कन्या व कश्यप की पत्नी।

[फा०] २ सोने चांदी पर किया जाने वाला रंग-विरंगा काम जो चमकीला एवं ठोस होता है।

३ रंग-विरंगा शीशा।

४ नीले रंग का एक बहुमूल्य रत्न।

५ शराब का पात्र, सुराही।

६ शराब की बोतल।

७ गिनती, संख्या ?

उ०—एकि घायल ही भीना, राति-दिवसि न मीना। रुधिर-का प्रवाह नदी माहिं मिल्या। आवारत अनिबंध होवण लागउ।

—अ. वचनिका

८ देखो 'मीन' (रू. भे)

उ०—जगत नगीना हो लाल, आयौ हुं तुझ सरणइ। जिम जल मीना हो लाल, लीणउ तिम तुझ चरणइ।—वि. कु.

रू०भे०—मीणा,

मीनाकार–सं०पु० [फा०] सोने चांदी पर रंग-बिरंगा काम करने वाला कारीगर।

मीनाकारी–सं०स्त्री० [फा०] सोने-चांदी पर किया जाने वाला रंग-विरंगा कार्य।

उ०—मीनाकारी माळिया चितरे चित्र अनूप। ताकी सोभा को कहै, नांनाविध के रूप।—गजउद्धार

मीनाबाजार–सं०पु० [फा०] अकबर के राज्यकाल में लगने वाला एक विशेष प्रकार का बाजार जिसमें विशेष कर मीनाकारी की चीजें क्रय-विक्रय होती थी।

मीनाबाव–सं०पु०—एक प्रकार का सरकारी लगान।

मीनार–सं०स्त्री० [अ०मनार०] ईंट पत्थरों से की हुई, स्तम्भ के आकार की गोलाकार व बहुत ही ऊंची, चुनाइ या रचना, लाट।

रू०भे०—मुनार

मीनारोग–सं०पु०—मीन की संक्रांति के दिन प्रतिवर्ष, सिरोही में लगने वाला मेणा जाति का एक बड़ा मेला। (मा.म.)

मीनालय-सं०पु० [सं०मीन+आलय] समुद्र।

मीनी—१ देखो 'मिन्नी' (रू.भे.)

उ०—दादू जीव अजा विध काळ है, छेली जाया सोई। जब कुछ वस नहिं काळ का, तब मीनी का मुख होई।

—दादूबांणी

२ देखो 'मीन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—दादू ध्यांन धरै का होत है, जे मन का मैल न जाई। बक मीनी का ध्यांन धर. पसू विचारे खाई।—दादूबांणी

मीनोदर-सं०पु० [सं०मीन+उदर] मच्छी का पेट।

उ०—हुं वारिधि मांहै पड्यौ, मीनोदर रह्यौ केम। गणिका घरि सुक किम थयौ, भाखौ जिम छै तेम।—वि.कु.

मीनौ-सं०पु०—१ वह रगीन शीशा जिससे सोने-चांदी पर नक्काशी होती है।

उ०—१ सुनही गुलजार कस्मीर के कांम। सबजी असम सध मीने के विरांम।—सू.प्र.

उ०—२ रंग केसर कीया मन कै सनेह सूं। सोनै री सीसी ओर, मीनै कै पियालै अलवेली।—रसीलैराज रा गीत

मीम-सं०पु०—दुशाला।

मीमचियौ—देखो मींमचौ' (अल्पा., रू. भे.)

मीमचौ—देखो 'मींमचौ' (रू.भे.)

उ०—मुगल रौ मीमचौ विखायत रौ भालौ। सिध रौ गोटकौ,प्रेम रौ प्यालौ।—मयाराम दरजी री बात

मीमजर—देखो 'मिमजर' (रू. भे.)

मीमलइ, मीमली-सं०स्त्री०—बीर वहूटी।

उ०—मांडिया सरोज भयंग चड़ माथइ, हरणाखी चित लावन हरि। अतिरगता विराजइ ऊपर,पगथळियां मीमलइ परि।

—महादेव पारवती री वेलि

मीमांस—देखो 'मीमांसा' (रू. भे.)

मीमांसक-सं०पु० [सं० मीमांसकः]१ मीमांसा करने वाला।

२ मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता या पण्डित।

मीमांसा-सं०स्त्री० [सं] १ किसी विषय, बात या तत्त्व पर किया जाने वाला विवेचन, विचार या निर्णय, समीक्षा।

२ एक वैदिक दर्शन जिसका विषय वेदोक्त धर्म की व्याख्या है। यह पूर्व मीमांसा व उत्तर मीमांसा नामक दो भागों में विभक्त है।

उ०—सांख्य सास्त्र में कपिल सम, अस्टिक्रम समभाय। मीमांसा में जैमिनी, करमकांड करवाय।—ऊ.का.

वि०वि०—मीमांसा, कर्म मीमांसा और ज्ञान मीमांसा, कर्मकाण्ड और ज्ञानकाण्ड दोनों के लिये प्रयुक्त होता है। इसीलिये प्रथम को 'पूर्व मीमांसा' और द्वितीय को उत्तर मीमांसा कहते हैं। पूर्व और उत्तर शब्दों से स्पष्ट है कि वस्तुतः ये दोनों शास्त्र एक ही दर्शन के अंग हैं।

पूर्व मीमांसा में मुख्यतःवैदिक कर्मकाण्ड का विवेचन है,इस लिए इसे कर्म मीमांसा भी कहते हैं। इसमें वेदों के यज्ञपरक संदिग्ध स्थलों का विचार करके उनका स्पष्टीकरण किया गया है। इसमें आत्मा, जगत्, ब्रह्म आदि का विवेचन नहीं है और वेदों तथा उसके मन्त्रों को ही नित्य तथा सर्वस्व माना है, इसीलिए इसकी गणना अनीश्वर वादी दर्शनों में होती है। उत्तर मीमांसा में ब्रह्म अथवा विश्वात्मा का विवेचन है, इसलिये यह वेदान्त दर्शन कहलाता है।

गौतम बुद्ध ने वेदोक्त धर्म के कर्मकाण्ड-पक्ष पर प्रहार किया। इसके फलस्वरूप जैमिनी, शबर, कुमारिल भट्ट, रामानुज, माधवाचार्य आदि वेदज्ञों ने अपने धर्म को सुव्यवस्थित रूप से रखने के लिये प्रयास किये। इनमें से जैमिनि का प्रयास सर्वोत्तम रहा और "कर्म मीमांसा सूत्र" मीमांसा का मौलिक ग्रन्थ हो गया। शबर ने इस पर अपना भाष्य लिखा और कुमारिल और प्रभाकर ने इस भाष्य की व्याख्या की और बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का खण्डन किया तथा उसका प्रभाव क्षीण किया।

मीमांसा को लोग प्रायः प्राचीन कर्मकाण्ड समझते हैं इसी कारण इसकी कटु आलोचना करते हैं। परन्तु वस्तुतः मीमांसा कर्मकाण्ड न होकर कर्मवाद है। यह कर्म और उसके फल को बिना ईश्वर के, अपूर्व या नियोग की मदद से सम्बन्धित करती है और निष्काम कर्म करने पर जोर देती है। इस अर्थ में मीमांसा की शिक्षाएं सदा ग्राह्य हैं।

रू०भे०—मीमासा, मीमांस,

मीयण—१ देखो 'मैण' (रू. भे.)

उ०—दीपत दीवा मीयण ना, मांहिं अग-मद मेहेलि। अगोचरि उरइ-करइ, कत सरीसी केलि।—मा.कां.प्र.

२ देखो 'मीयौ' (स्त्री०)

मीयां—देखो 'मियां' (रू. भे.)

उ०—संवत १७६६, खोजी अजमेर आय लागा तरै सोबे खांनजादो थो सो सेहर मीयां ने घेरीयो।—रा.वं वि.

(स्त्री० मीयांणी)

मीयाद—देखो 'मयाद' (रू. भे.)

मीयादी—देखो 'मयादी' (रू. भे.)

मीरंबर-सं०पु०—अमीर।

उ०—पड़ैवाज गजराज, राउ राउत्र नरेसुर। पड़ै खांन उमराउ, मुगल भूरा मीरंबर।—वचनिका

मीर-सं०पु० [अ०] १ बादशाह।

उ०—१ बिडंग बडाळा पायगां, रावत बांका धीर। मांझी देणौ मारणौ, सो मीरां सिर मीर।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ अठि महमूदसाह नूं जीति दिल्ली पैं पंद्रह १५ दिन पातसाही करि आरघावरत रा केही अधीसां नूं दंडि मीर तैंमूर-

वेग रै पाछी गयां केई दिल्ली रा सूबादार जठी तठी आप आपरै मर्त्त रहण लूका ।—वं.भा.

२ राजा, नवाब ।

उ०—पातसा स्री अकबर १ जंबूद्वीप मांहइ प्रवरत्ततु छइ, अन्य पराय रांणा, मोटा मीर मलिक, माहभड खांन, खोजा सरखिल साहणा, ते सघला करइ सेवा ।—व. स.

३ सरदार, सामंत ।

उ०—१ हौदा मझि लोह करै करि हाक, मझारिख देखि हुवै मुसताक । हिलौळि छडाळ ग्रहै चंद्रहास, तछै घण मीर कलम्म तरास ।—सू. प्र.

उ०—२ दाढी कर घात मीर ऐसें कुछ बोलै । प्रांण के गुमांन भर, आसमांन तोलै ।—रा. रू.

उ०—३ धाइ धांण उतरै, खांन सुरतांण निघट्टा । राव रांण हुइ रहव, मीर उमराव अहट्टा ।—गु.रू.बं.

४ प्रधान, मुखिया, नायक ।

उ०—मीर अकब्बर साह सूं, बोलै ग्यांन सजुत्त । काफर साहां अवगुणी, गौ आंणी करतुत्त ।—रा. रू.

५ किसी बड़े सरदार का पुत्र ।

६ बलवान, शक्तिशाली ।

उ०—दादू जे तूं मोटा मीर है, सब जीवों में जीव । आपा देख न भूलिये, खरा दुहेला पीव ।—दादूबांणी

७ मुसलमान, यवन ।

उ०—ओरै असि 'ऊदल' जंग अथाह । निजोड़त मीर खगां नर नाह ।—सू. प्र.

८ सैयद जाति की उपाधि ।

९ बहुत से व्यक्तियों में सबसे पहले काम करने वाला अगुवा ।

१० प्रतियोगिता में प्रथम रहने वाला ।

११ ताश आदि में बड़ा पत्ता जो दहले से अधिक महत्व का होता है ।

१२ धार्मिक आचार्य (इस्लाम)

१३ ईश्वर, मालिक ।

उ०—१ दादू कारण कंत के, खरा दुखी बेहाल । मीरां मेरा महर कर, दे दरसन दर हाल ।—दादूबांणी

उ०—२ मीरां मेटण मेक तूं, जम हंदा दांणी ।

—केसोदास गाडण

१४ पति, स्वामी ।

उ०—दसदस पास खवासी दासी,चंपक बरण ओढियां चीर । सिसवदनी नांखै सिसकारा, मीरां कहां हमारा मीर ।—रुघौ मुहतौ

[सं० मीरः] १५ समुद्र, सागर ।

१६ पर्वत, पहाड़ ।

१७ सीमा, हद ।

१८ जल, पानी ।

रू० भे०—मीरी

मीरज-सं० पु० [फा०] मुसलमान ।

उ०—१ चढ़े मीरजां मीर मीयां किलक्कं । चढ़े खांन निढबाब खांडा खाइक्कं ।—गु. रू. बं.

उ०—२ पै गजां सीस दे रिवपसावै,घण 'अभौ' मीरजां करै घाव । आफरी बार दाखै अमीर, बांमीबंध भोका महत बीर ।—वि. सं.

मीरजादूं , मीरजादौ-सं० पु० [फा० मीरजाद]१ किसी उमराव, सरदार या सामन्त का लड़का ।

उ०—जिस बखत सिर-बिलंदखां बहादुर ममरजुलमुलक पीरोजजंग मीरजादूं खांन जादूं के बीच कैसा दरसावै ।

—सू. प्र.

२ शाहजादा ।

उ०—रायजादा रा भाला भळकि नें रहीया छै तबलबंधा मीरजादा बांकां बहादुरां नै तारा तबल बाजि नै रहीआ छै ।

—रा. सा. सं.

मीरजौ, मीरज्यौ-सं० पु० [फा० मीरजा] १ किसी सरदार, अमीर या सामन्त का लड़का ।

२ मुसलमान ।

उ०—१ हाथी तहवरखांन गौ, गौ सौ धांनख भज्ज । धको न साहै मीरजां, वाहै सार गरज्ज ।—रा. रू.

उ०—२ पड़ियो तकियै सूं परा, आडौ दियौ प्रजंक । मसलत आया मीरज्यां, ऐ ऊठिया असंक ।—रा. रू.

३ सैयद मुसलमानों की उपाधि ।

४ शाहजादा ।

मीरतुजक, मीरत्रुजक-सं० पु० [अ० मीरतुजुक] सेना का प्रबन्ध करने वाला, सेनानायक ।

उ०—१ मीरतुजक मारिवा, धिखे जमदढ़ कर धारै । दुफ़ळ खांन दौरास, पटाफर जिम पूंतारै ।—सू.प्र.

उ०—२ ऊभौ लोपि अमीर, जवन बह हफतहजारी । मीरत्रुजक इतमांम, कियौ तदि जड़ै कटारी ।—सू. प्र.

मीरपति-सं०पु०—बादशाह ।

उ०—सूर रौ तपै नरनाह आखाड़सिध, धजवडां पांण गैणाग धारै । मीर भय थरहरै दूसरा महीपत, मीरपति थरहरै 'करण' मारै ।—महाराजा करणसिंह रौ गीत

मीरबक्सी, मीरबख्सी-सं०पु० [अ० मीर + फा० बख्शी] मुस्लिम शासन-काल में सरकारी कर्मचारियों को वेतन बांटने वाला अधिकारी

वि०वि०—सल्तनत-युग में दीवाने आरिज के बाद मीरबख्शी का ही सबसे बड़ा पद था । सरकार के समस्त अधिकारियों, मनसबदारों और कर्मचारियों को वेतन मीरबख्शी के कार्यालय से ही दिया जाता था । सभी श्रेणियों के मनसबों के नियुक्ति पत्र भी इसी के कार्यालय से जारी किये जाते थे । मनसबों का समस्त विवरण मीरबख्शी के पास ही रहता था । सैनिक विभाग की नौकरी के

लिये ग्राने वाले उम्मीदवारों को यह बादशाह के पेश करता था। यह सेना का प्रधान नहीं होता था परन्तु कभी कभी इसे सैनिक अभियानों का नेतृत्व भी करना पड़ता था। इसी के हस्ताक्षरों ऐवं सील-मुहर के साथ मनसबों के प्रमाण-पत्र जारी किये जाते थे। इसके अतिरिक्त इसका एक प्रमुख कार्य था बादशाह के महल की रखवाली करने वाले रक्षकों की सूची बनाना। इन रक्षकों में बड़े बड़े मनसबदार होते थे और इनकी ड्यूटी प्रतिदिन बदली जाती थी। विभिन्न प्रान्तों में संवाद लेखकों की नियुक्तियां करना एवं उनसे प्राप्त संवादों को बादशाह तक पहुंचाना इसी का कार्य था।

इस प्रकार मीरबख्शी का काम बहुत ही महत्वपूर्ण और जिम्मेदारी का था। इसका विभाग बहुत ही बड़ा था जिसमें इसके कई सहायक एवं कर्मचारी कार्य करते थे।

मीरबचा–सं०पु० [फा० मीर-बच्चा] किसी बड़े अमीर, उमराव, सरदार या सामंत का लड़का।

मीर-बहर–सं०पु० [अ० मीरबह्र] जल-सेनाध्यक्ष, जो बंदरगाहों पर कर व चुंगी वसूल करने का प्रबन्ध भी करता था।

मीर–बार–सं०पु० [फा०] शाही-दरबार का एक अधिकारी जो बादशाह से भेंट करने वालों का पहले साक्षात्कार करता था तदनन्तर बादशाह से भेंट करने की अनुमति देता था।

मीरभुचड़ी–सं०पु०—एक कल्पित पीर जिसे हिजड़े अपना आदि पुरुष मानते हैं।

मीरमजलस–सं०पु० [फा० मीर–मजलिस] किसी सभा या अधिवेशन का सभापति।

उ०—पातिसाहजी सू मालूम करायौ। हजूर श्रावण रो हुकम कीयौ। तठै **मीर-मजलस** रै साथै होय पातिसाहां रै निजर पेस कीधी।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

मीरमुंसी–सं०पु० [अ० मीरमुंशी] शाही दरबार के समस्त (क्लर्कों) मुंशियों का नायक।

मीरमुल्ला–सं०पु० [फा०] बड़ा मौलवी।

उ०—बड़े **मीर मुल्ला** कहा बात कीनी, खुदा मीरखां को नई भूमि दीनी।—ला.रा.

मीरल—देखो 'मीर' (मह., रू.भे.)

उ०—समीर लघ **मीरल** त्रचक धकवळां सम, थट खळां न **मीरल** जुध ऊथांपो। रंजै पतसाह नर समंद चतच मीरळ। चत वलंद **अमीरल** छजै चांपो।—कवियौ करनीदांन

मीरसांमां–सं०पु० [फा०] १ मुस्लिम शासन काल का एक अधिकारी।

२ रसोवड़े का दारोगा।

३ खान-सामां

वि०वि०—अकबर के शासनकाल में मीरसांमा दीवान या वजीर के अधीन कार्य करता था। इसके प्रबन्ध में शाही राजमहल, हरम रसोई, कारखाने आदि थे इसलिए यह एक बड़ा पद माना जाता था। बाद में जहांगीर के शासनकाल से मीरसांमा को भी मंत्रियों के बराबरी के दर्जे में माना जाने लगा।

मीरसिकार, मीरसिकारू–सं०पु० [मीरे शिकार] बादशाहों की शिकार गाहों का प्रबन्धक।

उ०—पंखी जिनावरूं की सिकार। कंदीलूं का विसतार। **मीरसिकारू**ं का हुन्नर नजर होत है।—सू. प्र.

मीरां–सं०स्त्री०—१ मेड़ता के शासक एव राठौड़ों की मेड़तिया शाखा के प्रवर्त्तक राव दूदाजी के पुत्र रत्नसिंह की पुत्री, जो मेवाड़ के राणा सांगा के पुत्र भोजराज को व्याही गई थी। इसका बचपन का नाम पेमल था। यह ईश्वर की अनन्य भक्त एवं कवियित्री थी।

वि०वि०—

जन्म—मीरांबाई का जन्म मेड़ता रियासत के कुड़की गांव में संवत १५६१ के श्रावण मास में हुआ।

बाल्यकाल व विवाह—मीरां के दादा रावदूदाजी ईश्वर के परम भक्त थे। उन्होंने मेड़ता में चतुर्भुज जी का एक विशाल मन्दिर बनवाया जो अब भी विद्यमान है। इस प्रकार दूदाजी का समस्त परिवार भक्ति भावनाओं से ओत-प्रोत था। मीरां की माता के विषय में ऐसा माना जाता है कि उनका स्वर्गवास मीरां की अत्यन्त अल्पावस्था में हो गया था इसलिये मीरां को उसके दादा के पास कुड़की से मेड़ता लाकर रक्खा गया। अतः एक तो भक्ति-भाव पूर्ण वातावरण में रहने तथा अपने पूर्व जन्म के प्रारब्धों के कारण उसमें ईश्वर भक्ति का प्रादुर्भाव बाल्यकाल से ही हो गया। इस सम्बन्ध में कुछ अन्य किंवदन्तियां भी प्रचलित हैं।

मीरां का विवाह मेवाड़ के राणा सांगा के पुत्र भोजराज से संवत १५७३ में हुआ। रामदानजी लालस कृत भीमप्रकाश में इस बात का उल्लेख है—

भोजराज जेठो अभंग, कंवर पदे मृत कीध।
मेड़तणी मीरां महल. प्रेमी भगत प्रसीध।

कर्नल जेम्स टॉड ने मीरां का पति राणा कुम्भा को माना है, परन्तु इतिहास से प्रमाणित होता है कि राणा कुम्भा व राव रिणमल, जो मीरां के दादा के भी दादा थे, समकालीन थे। इसलिये राणा कुम्भा मीरां के पति नहीं हो सकते।

मीरां के पति भोजराज की राणा सांगा के जीवनकाल में ही मृत्यु हो गई। इस असामयिक वैधव्य से मीरां को इस संसार से व लौकिक जीवन से और अधिक विरक्ति हो गई और श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति भावना अधिक प्रबल हो गई। पति का वियोग ईश्वर के प्रति विरह में परिणित हो गया।

मीरां व पेमल:—मीरां का जन्म का नाम पेमल था। इसका प्रमाण ब्रह्मदास कृत भगतमाळ में मिलता है:—

न हुवौ घट नास पियौ विस 'पेमल'। जास धणी वळ तास जरै। ग्रहियां बिद लाज उबारण ग्रायक, काज इसा महाराज करै।

परन्तु इसका मीरां नाम कब, कैसे और क्यों पड़ा ? इस सम्बन्ध में कोई पुष्ट एवं प्रामाणिक तथ्य नहीं मिलता। पुरोहित श्री हरिनारायणजी विद्या भूषण व कतिपय अन्य विद्वानों का मत है कि मीरां के जन्म से पूर्व उसकी मां ने अजमेर के मीरांसा की मिन्नत की जिसके फलस्वरूप इसका जन्म हुआ और नाम भी मीरां रखा गया।

अन्य मत से—मीरां शब्द का प्रयोग उच्चकुलीन एवं सज्जन पुरुषों के लिये किया जाता है। अतः उच्च राजकुल में जन्म लेने, ईश्वर के प्रति भक्ति भावना, सज्जनता तथा मानवता के अच्छे गुणों के कारण इसका मीरां नाम पड़ गया। कर्नल जेम्सटॉड ने अपनी पुस्तक'पश्चिमी भारत की यात्रा'में आबू के पहाड़ों का वर्णन करते समय 'मीरां' नाम किसी पहाड़ी देवी का उल्लेख किया है। अतः मीरां नामक यदि कोई पार्वती देवी रही हो तब तो मीरां का नामकरण उक्त देवी के नाम के आधार पर माना जाना संभव हो सकता है। अन्यथा इसके लिये अनुसंधान अपेक्षित है।

तीर्थयात्रा:—संवत १५९५ में जोधपुर के राव मालदेव ने मेड़ता पर अपना अधिकार कर लिया तब मीरां अपने ताऊ वीरमदेवजी के साथ तीर्थयात्रा के लिये चली गई और वहीं (द्वारका में) उनका सं० १६०३ में देहावसान हुआ।

सं०पु० [फा०] २ ईश्वर, परमात्मा।

उ०—मीरां मुझ सौं महर कर, सिर पर दीया हाथ। दादू कलियुग क्या करै, सांई मेरा साथ।—दादूवांणी

३ स्वामी, मालिक।

उ०—१ ज्यूं राखै ज्यूं रहै, जहां निरमै तंहीं जावै। हुकम सो ही सिर हुवै, जिको मीरां फुरमावै।—ह.र.

उ०—२ दादू वंदीवांन है, तूं बंदि छोड़ दीवांन। अब जानि राखो बदि में, मीरां महरवांन।—दादूवांणी

४ सज्जन, सुहृदय, भला, संत, उदार।

उ०—मीरां कीया महर सौं, परदे थैं लापरद। राखि लिया दीदार में, दादू भूला दरद।—दादूवांणी

५ अमीर, धनवान।

६ कुलीन, उच्च।

मीरांबर-सं०पु०—मुसलमान।

मीरांसा, मीरांसाह-सं०पु०—१ उदार, सज्जन, सहृदय।

२ अमीर।

मीरात-सं०पु०—मवेशी, पशु।

उ०—काढ़ै गायां कूटनैं, घोड़ां आगळ घात। चरण न देवें सीम में, म्हांरी तो मीरात।—पा. प्र.

मीरादमीर-सं०पु—१ बादशाह।

२ राजा

३ सरदारों का प्रमुख।

उ०—इसी भांत आसुरणां हिंदू अभंग, जुड़ै दस्स कंधं जु होता सुजंगं। बहै तांम कै बांण मीरादमीरं, सुजै होत खंडं निखंडं सरीरं।—शि. रू.

मीरासी-सं०पु० [अ०] मुसलमानों की एक जाति विशेष जो गाने-बजाने व मस्खरेपन का पेशा करती है।

मीरी—देखो 'मीर' (रू. भे.)

उ०—इसा मीरी आंख मुख मांकड़ जिसा। करै घात बोलै पारसी, बगतर तवा भिळै जांणे आरसी।—अ० वचनिका

मीरूंबरा-सं० पु० [फा० मीर+उमराव] अमीर-उमराव, सामंत, सरदार।

उ०—किसा एक जे छइ राजाधिराज स्रीमहिमूद पातसाह ? खांन खोजा मलिक मीरूंबरा मलांणा सहुणा सलेदार तेहि करी सेवायमांन।—व. स.

मीरूं-सं० पु०—गायों व बैलों के होने वाला एक रोग जिससे उनके शरीर में ग्रन्थियां पड़ जाती हैं एवं उनमें कीड़े पड़ जाते हैं।

मील-सं० पु० [अ०] १. १७६० गज या आठ फरलांग की दूरी का एक माप जो प्रायः आधा कोस के बराबर होता है।

२ उक्त माप या दूरी-सूचक पत्थर।

३ सुरमा या अंजन लगाने की सलाई।

सं० स्त्री [अं० मिल] ४ बड़े पैमाने पर कपड़े, ऊन, या अन्य वस्तुओं का उत्पादन करने वाला कारखाना।

ज्यूं—तेल री मील, कपड़े री मील, दाळ री मील।

उ०—एक पिंजारो कपड़ा री एक छोटी सी मील में कांम करतो हो —फुलवाड़ी

५ उक्त कारखाने में चलने वाली बड़ी मशीन।

मीलणौ-सं० पु०—देशी रियासतों में लिया जाने वाला एक कर या लगान विशेष।

उ०—मीलणौ ५०) —नैणसी

मीलत—देखो 'मीलित' (रू. भे.)

मीलित-वि० [सं०] १ मुंदा हुआ, बंद।

२ अधखुला, अधखिला।

३ पलक झपकाये हुए।

४ जो नष्ट हो चुका हो, लुप्त।

सं० पु०—एक अलंकार, जिसमें दो पदार्थों की समानता के कारण भेद नहीं जान पड़ता है।

रू० भे०—मीलत,

मीसंजर—देखो 'मसंजर' (रू. भे.)

उ०—१ सालू जरकसी दुमेणा कचीयौ तनमुख नीलक पटोली सुप चूंनडी अटायण मीसंजर तासतो चोरसो।—व. स.

उ०—२ मुलतांणी ताखो मछीपटण तासतो टुकडी दुमैणा बासतो मीसंजर भेरू तनमुख चोरसो अटायण दुमांमी सालु जरकसी कचीयो

चूंनड़ी जांमसाइ······।—व. स.

मीसरी—देखो 'मिसरी' (रू. भे.)

उ०—एकर एक कागला रै माखरण मीसरी लग्योड़ी एक रोटी हाथ आई।—फुलवाड़ी

मीसल—१ देखो 'मिसल' (रू. भे.)

उ०—कमधज पाट जीकां रै 'केहर', मीणघर आट मीसल चा मोड़।
—पहाड़खां आढौ

२ देखो 'मिसिल' (रू. भे.)

मीहर—देखो 'मिहिर' (रू. भे.)

उ०—बळ थियो दित हरणाक्ष अप्रबळ। तेज मीहर धर रसातळ तांम।—र. ज. प्र.

मुं—देखो 'मूं', (रू. भे.)

मुंअंधारौ—सं० पु०—अरुणोदय से पूर्व का वह समय जब हल्का हल्का अंधेरा रहता है।

रू० भे०—मुंह अंधारौ, मूंधारौ,

मुंदयौ—वि०—अग्रणी, प्रधान, हरावळ।

उ०—तद पातसाहजी यांनूं देख वडा राजी हुवा। नै भींवराजजी वीरमदेजी फोज रा मुंदया।—द. दा.

मुंई—वि० स्त्री० [सं० मृत] १ मरी हुई, मृत।

उ०—मुंई मिटीया मुरदार कहत है, हाथे हक हलाला। काजी घणी' र ग्रोर घलाली, सब स्वारथ का चाळा।
—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

२ सोतेली,

रू० भे०—मुई,

मुंग्रो—वि० [सं० मृतः] (स्त्री० मुंई) मरा हुआ।

उ०—आरण कारण करण नै, सगला मिल्या सब कोय। मुंग्रो सेठ अपूतियो, सुणीयो रांणी सोय।—ध. व. ग्रं.

मुंकरणौ, मुंकबौ—देखो 'मूकणौ, मूकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ नगरी तणी छवि देखई सोहांमणी, प्रसन थयो मन मांहि सोभागी जोवा लायक सगली जाइगा, जिण मुंकी अवगाहि सो।
—वि. कु.

उ०—२ ताहरां लाखैजी पूछीयो, कह्यो, 'सीडी माहे कोण छै?' कह्यौ 'जी, चच आढो छै।' ताहरां लाखैजी पूछीयो, कह्यो, सीडी घरती मुंकौ'—लाखा फूलांणी री बात

मुंकणहार, हारौ (हारी), मुंकणियौ—वि०।

मुंकिओड़ौ, मुंकियोड़ौ, मुंक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मुंकीजणौ, मुंकीजबौ—कर्म वा०।

मुंकाणौ, मुंकाबौ—देखो 'मूकाणौ, मूकाबौ' (रू. भे.)

उ०—सीढ़ी घरती मुंकाई नै लाखैजी निजीक आइनै दुहो कह्यौ।
—लाखा फूलांणी री बात

मुंकाणहार, हारौ (हारी), मुंकाणियौ वि०।

मुंकायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मुंकाईजणौ, मुंकाईजबौ—कर्म वा०।

मुंकायोड़ौ—देखो 'मूकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मुंकायोड़ी)

मुंकावणौ, मुंकावबौ—देखो 'मूकाणौ, मूकाबौ' (रू. भे.)

उ०—हाथ मुंकावण द्यै तिहां, मणि मांणिक हे भली रतन नीकोड़ि। द्यै आसीस सुहांमणी, मत लागौ हो इण जोड़ि नै खोड़ि।
—वि. कु.

मुंकावणहार, हारौ (हारी), मुंकावणियौ—वि०।

मुंकाविओड़ौ, मुंकावियोड़ौ, मुंकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मुंकावीजणौ, मुंकावीजबौ—कर्म वा०।

मुंकावियोड़ौ—देखो 'मूकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मुंकावियोड़ी)

मुंकियोड़ौ—देखो 'मूकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मुंकियोड़ी)

मुंक्की—देखो 'मुक्की' (रू. भे.)

मुंगउ—१ देखो 'गूंगौ'

उ०—खाटरौ तौ हीनांग, घणुं बोलइ तौ लबाड बाउलौ न बोलइ तौ मुंगउ, घणुं जमइ तौ छारीउ,···।—व. स.

२ देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

मुंगतौ—देखो 'मंगतौ' (रू. भे.)

उ०—भूपति टोटां में दीवाळा भिळिया, मोटां मोटां रा कुळ मुंगतां मिळिया।—ऊ. का.

मुंगदणौ—सं० पु० [सं० मुग्धेन्दनम्] मांगलिक कार्यों में जलाने के लिये मंगाई जाने वाली लकड़ियों की गाड़ी।

रू० भे०—मगदणौ, मंगधणौ, मूंगदणौ, मूंगधणौ,

मुंगम—सं० स्त्री०—१ अतिथि सत्कार, स्वागत।

२ प्रतिष्ठा, इज्जत।

रू० भे०—मुंघम,

मुंगलौ—सं० पु०—असुर।

उ०—पछाड़ि कौड़ि पाखती घपाड़ धाड़ धांमळी। मजाड़ि संक मुंगला कहाड़ि क्रीत कंमळी।—मा० वचनिका

मुंगवड़ी—देखो 'मूंगोड़ी' (रू. भे.)

उ०—मुंगवडी पेठावड़ी रे लाल, खारावड़ि मन खंति। डबकवड़ी दाधावड़ी रे लाल, व्यंजन नांना भंति।—प. च. चौ.

मुंगियौ—१ देखो 'मूंगियौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मूंगौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हीरां बार बार मुंजरौ कर हरख धरै छै। मोती मोहोर मुंगियां से निछरावळ करै छै।—बगसीरांम प्रोहित री बात

मुंगीपटण—सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—कचीयौ चूंनडी जांमसाइ मुंगीपटण जांमावाडि सुप लखारस खासौ तपई थिरमौ कसबी पटोलि मुलमुल।—व. स.

मुंगौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

मुंगी—देखो 'मूंगी' (रू. भे.)
मुंघम—देखो 'मूंगम' (रू. भे.)
मुंचणी, मुंचबी–क्रि० अ० [सं० मुच] १ झरना, टपकना।
उ०—दाड़िमी बीज विसतारिया दीसै, निउंछावरि नांखिया नग।
चरणे लुंचित खग फळ चूंबित, मधु मुंचति सींचति मग।—वेलि
२ छूटना, मुक्त होना, रिहा होना।
मुंचणहार, हारौ (हारी), मुंचणियौ—वि०।
मुंचिओड़ौ, मुंचियोड़ौ, मुंचयोड़ौ—भू० का० कृ०।
मुंचीजणौ, मुंचीजबौ—भाव वा०।
मूंचणौ, मूंचबौ—रू० भे०।
मुंचियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ झरा हुआ, टपका हुआ।
२ मुक्त रिहा, छूटा हुआ।
(स्त्री० मुंचियोड़ी)
मुंच्छ, मुंछ—देखो 'मूंछ' (रू. भे.)
उ०—उंवा मउड पडइं, रेवंत रडवडइं, पखिया पंचायण नी परि हाकरइं, रोस लगीं मुंच्छ भूंच्छ फरकावइ ...।—व. स.
मुंछणौ, मुंछबौ—देखो 'मूछणौ, मूछबौ' (रू. भे.)
मुंछणहार, हारौ (हारी), मुंछणियौ—वि०
मुंछिओड़ौ, मुंछियोड़ौ, मुंछयोड़ौ—भू०का०कृ०।
मुंछीजणौ, मुंछीजबौ—कर्म वा०।
मुंछाणौ, मुंछाबौ—देखो 'मूछाणौ, मूछाबौ (रू. भे.)
उ०—तिण समैं दिल्ली बैठे पंवार अकल उठाई। लकड़ी एक आगै पाछै मुंछाई घणौ आछौ रंग दिरायौ—राव रिणमल री बात
मुंछायोड़ौ—देखो 'मूछायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मुंछायोड़ी)
मुंछार—देखो 'मूंछार' (रू. भे.)
उ०—उगा मुख बारह दीत उदार। भिड़ै तिणवार मुंछार भूंहार।
सू. प्र.
मुंछाळौ, मुंछालौ—देखो 'मूंछाळौ' (रू. भे.)
उ०—१ सूर सुभट मांटी मुंछाळा, करि झलकइ करवाल कराळा।
व्यापारी दीसई दूंदाळा, घरि घरि सुत्रिख सुगाळा।
—कवि गुणविजय
उ०—२ तिहां बैठा बत्रीस लक्षणा पुरूस दूंदला, फूंदला जाकजमाला मुंछाला केई जमाई केई साला।—व.स.
मुंछियोड़ौ—देखो 'मूछियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मुंछियोड़ी)
मुंज—१ देखो 'मुझ' (रू. भे.)
उ०—वडा वडा जोगिंद्र किया वसु. चाचरि मुंज खमइ कुण चोट।
—महादेव पारवती री वेलि
२ देखो 'मूंज' (रू. भे.)
मुंजक–सं०पु०—घोड़ों की आंख पर होने वाला एक रोग विशेष।
(शा. हो.)
मुंजकेतु–सं०पु० [सं०] युधिष्ठिर की सभा का एक राजा।
मुंजकेश–सं०पु० [सं०] १ एक आचार्य, जो सैंधवायन ऋषि का शिष्य था।
२ एक क्षत्रिय राजा, जो निचंद्र नामक असुर के अंश से उत्पन्न हुआ था।
मुंजमेखळा–सं०स्त्री०—यज्ञोपवीत के समय धारण की जाने वाली मूंज की मेखला।
मुंजमेखळी–सं०पु०—१ महादेव, शिव।
२ विष्णु।
मुंजरौ—१ देखो 'मुजरौ' (रू. भे.)
उ०—हीरां बार-बार मुंजरौ कर हरख धरै छै, मोती मोहोर मुंगिया सूं निछरावळ करै छै।—बगसीरांम प्रोहित री बात
मुंजाल–सं०पु०—मूंज का पौधा।
उ०—पाछौ उणहीज मारग सातां असवार आवता था, सु उण कटक री साथ सिरदार असवार ३०० सूं मुंजाळां मांहे छिप रह्यो थौ।—राव मालदेव री बात
मुंजेवड़ी, मुंजोवड़ी—स०स्त्री०—मूंज की रस्सी।
रू०भे०—मुजेवड़ी, मुजोवड़ी,
मुंझाणौ, मुंझाबौ—देखो 'मुरझाणौ, मुरझाबौ' (रू. भे.)
उ०—रोवै अबला एकलीजी, खिण खिण मां मुंझाय। सहजै अगनि उछालतांजी लागि उठी क्षण मांहि।—वि.कु.
मुंझायोड़ौ—देखो 'मुरझायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मुंझायोड़ी)
मुंड–सं०पु० [सं०] १ मनुष्य के शरीर की गर्दन के ऊपर का अंग, मस्तक, सिर, माथा।
उ०—१ धीरण रा पांणि रा प्रहारण हूं धीरमदेव रौ मुंड अछंट उडि पड़ियौ। तौ भी राठोड़ रौ रुंड अनेक म्लेच्छां रा मुंड प्रेतां रा झुंड रै उपहार करि नीठिनीठि चेस्टा बिहूण थियौ।—वं.भा.
उ०—२ दयालु व्है न सरवथा, व्रथा दया मया दटै। मिळै जु गुंड मुच्छ मुंड धुंड ऊंट कै थकै।—ऊ.का.
उ०—३ तन प्रथक नरां गण तुरंग तुंड। भट जेम फुटै गज कितां मुंड।—रा. रू.
२ कटा हुआ सिर।
उ०—१ पड़ झाट खगे ब्रढ़ घाट पगे, जुध काट निसाट निराट जगे। बहु रुंड उठै मुख मुंड बकै, घड़ खंड हुवै भड चंड धकै।
—रा.रू.
उ०—२ भिलम्मिल मुंड पुवै सिव माळ। तिलत्तिल रुंड हुवै रणताळ।—मे.म.
उ०—३ भांजे असुर भख दे भगवती, संकर लियै मुंड कर सीस।
असमर हंस समावै 'अमरा' समर कीयौ करतब सु-जगीस।
—लूणकरण
३ मुंडा हुआ या गंजा सिर।

४ उक्त प्रकार के सिर वाला मनुष्य ।
५ पेड़ का केवल तना जिस पर डाली आदि न हों, वृक्ष का ठूंठ ।
६ राहु नामक ग्रह ।
७ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।
८ एक उपनिषद का नाम ।
९ राजा बलि का सेनापति एक दैत्य ।
१० एक असुर जो शुंभ एवं निशुंभ का सेनापति था ।
उ०—बलिस्ट धूम्र अक्ष की तुही विपक्षनी, भई तुही महिख्ख रक्त बीज भक्षनी । निसुंभ सुंभ चंड मुंड तू निकंदनी, नमांमि मात इंदरा 'समंद' नंदनी ।—मे.म.
११ कौरव दल का एक योद्धा ।
१२ नाई ।
१३ लोहा ।
१४ मंडूर ।
वि०—१ मुंडा हुआ, गंजा
२ कटा हुआ ।
३ कमीना, नीच ।
रू०भे०—मंड, मूंड, मूंडि, मूड, मूढ,
अल्पा०—मूंडड़ौ ।

मुंडक-सं०पु० [सं०] १ सिर, मस्तक ।
२ एक उपनिषद ।
३ नाई, हज्जाम ।
वि०—मुण्डन करने वाला ।

मुंडकी-सं०स्त्री०—सिर, मस्तक, खोपड़ी ।

मुंडकौ—देखो 'मूंडकौ' (रू. भे.)

मुंडण-सं०पु० [सं०मुण्डन] १ यज्ञोपवीत संस्कार के समय किया जाने वाला मस्तक का मुण्डन, इसे मुण्डन-संस्कार भी कहते हैं ।
२ बच्चे का पहले-पहल किया जाने वाला मुण्डन ।
उ०—मुंडण न्हावण स्राद्ध मुख, साधे पूरब सूर । बख से धन कीधा बळै, दुजराजां दुख दूर ।—वं. भा.
३ हजामत ।

मुंडणौ, मुंडबौ-क्रि० अ० [सं० मुंड] १ सिर के बाल कटे जाना, मुंडा जाना, मुण्डन होना ।
२ ठगा जाना ।
३ पीसा जाना ।
मुंडणहार, हारौ (हारी), मुंडणियौ—वि० ।
मुंडिओड़ौ, मुंडियोड़ौ, मुंड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मुंडीजणौ, मुंडीजबौ—भाव वा० ।
मूंडणौ, मूंडबौ—सक० रू० ।

मुंडत—१ मुड़ा हुआ ।
यौ०—मुंडत हाथ

२ देखो 'मुंडित' (रू. भे.)

मुंडमाळ, मुंडमाळा-सं० स्त्री० [सं० मुण्ड-माला] कटे हुए सिर या मस्तकों की माला, जो प्रायः शिव या दुर्गा (काली) के गले में रहती है ।
उ०—१ जैत भूप 'जैत' री हार 'कमरा' री होसी । त्रिड पोसी मुंडमाळ, जगतचख कौतुक जोसी ।—मे. म.
उ०—२ बरंगां राळ वरमाळ सुरांवरै, त्रिपत पंखाळ दिल खुले ताळा । सबळ पड भार सिर तणावै अहेसुर, महेसुर वणावै मुंडमाळा ।—र. रू.
रू० भे०—मुंडमाळी,

मुंडमाळिनी-सं० स्त्री० [सं० मुण्ड + मालिनी] मुण्डों की माला धारण करने वाली महाकाली, दुर्गा ।
रू० भे०—मुंण्डमाळी,

मुंडमाळी-सं० पु०[सं० मुण्ड–मालिन्] १ शिव, महादेव ।
उ०—खिलै महाकाळी दे दे ताळी नचै वीर खेला, हैला मुंडमाळी पाड़ै संचै हार हेत ।—प्रभुदांन मोतीसर
२ देखो 'मुंडमालिनी' (रू.भे.)
उ०—भवानी नमौ मोहनी मुंडमाळी, भवानी नमौ काळ क्रव्यादि काळी ।—मे.म.
३ देखो 'मुंडमाळा' (रू. भे.)

मुंडरुई-सं० पु० [सं० मुण्डरुचि] ऐसे साधु जो वेष तो साधुओं का कर लिया पर मन-क्रम से साधुओं का आचरण नहीं करते अर्थात् व्रतों में अस्थिर एवं तप नियमों के अनुष्ठान में पराङ्मुख हों ।(जैन)

मुंडहा-सं० स्त्री० [सं० मुंड+हन्] १ मुंड नामक राक्षस को मारने वाली दुर्गा ।
उ०—भवांनी नमौ नित्य सोभा नवीनी, भवांनी नमौ भीम तें प्रेम भीनी । भवांनी नमौ मुंडहा मांन मत्ती, भवांनी नमौ राधिका कांन्ह रत्ती ।—मे. म.
२ देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)

मुंडाई-सं० स्त्री०—१ मूंडने या मूंडाने की क्रिया या भाव ।
२ उक्त कार्य के लिये लिया व दिया जाने वाला धन ।

मुंडाणौ, मुंडाबौ-क्रि० स० [सं०मुंड्] १ सिर के बाल कटवाना, सिर के बाल उतरवाना ।
उ०—कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी सब गोपी । मूंड मुंडाइ डोरी कटि बांधी, माथे मोहन टोपी ।—मीरां
२ किसी मृतक के पीछे सिर मुंडाना, सिर के बाल उतरवाना ।
उ०—माथौ मूंछ मुंडाय मसंदा, पोहौ पतिसाह मिलया ले पेस । कळंक अकेक सबै कुळ लागौ, निकळंक 'अरजन' हरौ नरेस ।
—राव भोज हाडा रौ गीत
३ ठगने के लिये प्रेरित करना, ठगवाना ।
मुंडाणहार, हारौ (हारी), मुंडाणियौ—वि० ।
मुंडायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मुंडाईजणौ, मुंडाईजबौ—कर्म वा०।
मुंडाड़णौ, मुंडावबौ—रू० भे०।

मुंडायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ सिर के बाल कटवाया हुआ, बाल उतरवाया हुआ. २ किसी मृतक के पीछे सिर मुंडाया हुआ. ३ ठगवाया हुआ।
(स्त्री० मुंडायोड़ी)

मुंडाळियौ, मुंडाळौ–सं० पु० [देशज] वह स्थान जहां से चड़स का पानी नाली में आगे बढ़ता है।

मुंडावणौ, मुंडावबौ—देखो 'मुंडाणौ, मुंडाबौ' (रू. भे.)
उ०—लोक लाज कुळ रीत लोप के, मस्तक मूंछ मुंडावै। लागी लगन नींद नहिं लेवै, घोरे प्रात चुंमावै।—ऊ. का.
मुंडावणहार, हारौ (हारी), मुंडावणियौ—वि०।
मुंडाविश्रोड़ौ, मुंडावियोड़ौ, मुंडाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मुंडावीजणौ, मुंडावीजबौ—कर्म वा०।

मुंडावियोड़ौ—देखो 'मुंडायोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० मुंडावियोड़ी)

मुंडासुर–सं० पु० [सं० मुण्ड–असुर] मुंड नामक असुर।
उ०—सुंभ निसुंभ चंड मुंडासुर, दुसह सुरां दुखदाई। दांनव महिस रकत बीजादिक, मार लिया महमाई।—मे. म.

मुंडासौ—देखो 'मुंड़ासौ' (रू.भे.)
उ०—माई एहुड़ा पूत जण, जेहड़ौ दुरगादास। मार 'मुंडासौ' थामियौ, विण थंभा आकास।—अज्ञात

मुंडित–वि० [सं०] १ मुंडा हुआ, बाल उतरा हुआ, गंजा।
उ०—न मरद न जोरू लख्या नहीं जावत, मस्तक मुंडित कन्न फड़ा। अचरिज्ज भया मोहि देख नहीं एहु, कुण दुकांण देखउ रिखड़ा।
—स. कु.
२ कटा हुआ।
सं० पु०—लोहा।
रू० भे०—मुंडत, मूंडत.

मुंडिभ–सं० पु०—एक प्राचीन आचार्य।

मुंडियोड़ौ—देखो 'मूंडियोड़ौ' (रू.भे.)
(स्त्री० मुंडियोड़ी)

मुंडी–सं० स्त्री०—१ विधवा, रांड।
२ एक लिपि, जिसके न तो मात्रा लगती है और न ऊपर रेखा दी जाती है।

मुंडीयौ–सं०पु०—किसी क्षेत्र की सीमा या सरहद पर रोपा जाने वाला छोटा स्थम्भ।
रू० भे०—मुडियौ,

मुंडेर—देखो 'मंडेरी' (रू.भे.)

मुंडौ—देखो 'मूंडौ' (रू.भे.)

मुंढौ—देखो 'मूंढौ' रू. भे.)

मुंतजिम–वि० [अ०] १ व्यवस्थापक, प्रबंधक।
२ प्रकाशमान, प्रदीप्त, रोशन।

मुंतणौ, मुंतबौ—देखो 'मूतणौ, मूतबौ' (रू. भे.)
उ०—सेजां घण सूतेह, ऊबा मुंतै अधपती। हूंते अण हूंतेह, मुनसी चुंथे मुरधरा।—ऊ. का.

मुंतियोड़ौ—देखो 'मूतियोड़ौ (रू.भे.)
(स्त्री० मुंतियोड़ी)

मुंथा–सं० स्त्री०—नव ग्रहों के अतिरिक्त १० वां ग्रह जो वर्षफल में आवश्यक माना जाता है।

मुंदगर—देखो 'मुगदर' (रू. भे.)
उ०—वीरा रस घण घोख वाजई, अभिनवा सिरि द्रोण। सेल साबळ कुंत मुंदगर, उछळई अति स्रोण।—रुकमणी मंगळ

मुंदड़उ—देखो 'मूंदड़ी' (मह., रू.भे.)
उ०—देइस हाथ कउ मुंदड़उ, सोवन-सिंगी नई कपिला गाई।
—बी. दे.

मुंदड़ी—देखो 'मूंदड़ी' (रू.भे.) (उ. र.)
उ०—१ माता हे आ मुंदड़ी, प्रभु दीनी नेह-निसांणी हे।
—गी. रां.
उ०—२ हूं सोनी नी मुंदड़ी सुपियारा हो। तूं हिव हीरो होय, नेम सुपियारा हो।—स. कु.

मुंदड़ौ—देखो 'मूंदड़ौ' (रू.भे.)

मुंदणौ, मुंदबौ–क्रि० अ० [सं० मुद्रणं] १ खुली हुई आंखें बंद होना, मिचना।
उ०—मुंदयोड़ी आंख्यां। माटी री लोथ सस्ते लोथ।—फुलवाड़ी
२ अंत होना, समाप्त होना।
मुंदणहार, हारौ (हारी), मुंदणियौ—वि०।
मुंदिश्रोड़ौ, मुंदियोड़ौ, मुंदयोड़ौ—भू० का० कृ०।
मुंदीजणौ, मुंदीजबौ—भाव वा०।
मूंदणौ, मूंदबौ—सक० रू०।

मुंदरड़ी—देखो 'मूंदड़ी' (अल्पा., रू.भे.)
उ०—सीता नइ संदेसउ रांमजी मोकल्यउ रे। कांइ मुंदरड़ी दे मूंक्यउ हनुमंत वीर रे।—स. कु.

मुंदरी—देखो 'मूंदड़ी' (रू.भे.)

मुंदरौ—देखो 'मूंदड़ौ' (रू.भे.)

मुंदियोड़ौ–भू० का० कृ०—१ बंद हुवा हुआ, मिचा हुआ। (नेत्र)
२ अंत हुवा हुआ, समाप्त हुवा हुआ।
(स्त्री० मुंदियोड़ी)

मुंदौ—देखो 'मुदौ' (रू. भे.)

मुंद्र–सं० पु० [सं० समुद्र] समुद्र, सागर।
उ०—हीयां ध्रसक्कई कायर लोक संत तणां मन करइं ससोक। जांणे बीज पडि [अ] अकालि, जांणे मुंद्र खुम्या कलिकालि।
—सालिभद्र सूरि

मुंद्रड़ी—देखो 'मूंदड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ पछइ वली मुकट तिलक कुंडल हार वोर वीर विलय अंगद बहिरखा नवग्रहां मुंद्रड़ी कंदोरु हथ सांकली''''।—व. स.

उ०—२ रत्नजडित जे मुंद्रडी, ते अंगूलीए आठ। पीड-तणइ जे पारखी, पढी न जांणइ पाठ।—मा. कां. प्र.

मुंद्रणौ, मुंद्रबौ—देखो 'मूंदणौ, मूंदबौ' (रू. भे.)

उ०—अविधि देस त्याग करांविउ, मोहराज लेई भूलविउ, दुरगति द्वार मुंद्रिउं, मुगति द्वारा ऊमूंद्रिउं अनरगलि काल वेतन उचाटिउ मदन पिसाच निरघटिउ, जीणि जिन वचन पालिउं।—व. स.

मुंद्रियोड़ौ—देखो 'मूंदियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मूंद्रियोड़ी)

मुंद्रौ—देखो 'मूंदड़ौ' (रू.भे.)

मुंध, मुंधि—सं० स्त्री०[सं० मुग्धा, प्रा० मुद्धा] मुग्धा नायिका।

उ०—१ दिसि चाहंती सज्जणा, नेहाळंदी मुंध। सा धण कुंभि-अचाह ज्यउं लंबी थई तुं कंध।—ढो. मा.

उ०—२ सहस-फणालइ काळ भूयंग, जीमणा थी उतरउ बामेइ अंग। रूपि-चंगा, विस-आगला, वोय कर जोड़े वीनमैं मुंध।—वी. दे.

उ०—३ घोडा-ऊपरि हूं चढिउ, तुझ चढावउं कंधि। गांन सुणाविसी मुंहनइ, तुं मुझ भावइ मुंधि।—मा. कां. प्र.

उ०—४ सूनि गोकलि जई सूं करीसि, क्रिश्ननां ठांम जोतां मरीसि। मन मठी मुंधि मंदिरि पुहती, नगरनी नारि पूरी पनोती।—चतुरभुज

मुंनिंद्रेस—देखो 'मुनींद्र' (मह., रू. भे.)

उ०—मुंनिंद्रेस जोगेस कब्बेस मेळा, भुजंगेस देवेस सब्बेस भेळा।—सू. प्र.

मुंपति, मुंपती—देखो 'मुंहपति' (रू.भे.)

मुंसरिम—सं० पु० [अ०] १ प्रबन्धक, व्यवस्थापक।

२ दीवानी अदालत में काम करने वाला एक कर्मचारी।

मुंसिफ—सं० पु० [अ०] १ न्यायाधीश

२ छोटी अदालत का न्यायाधीश।

मुंसिफकोरट—सं० पु०[अ० मुंसिफ+अं० कोर्ट] उक्त न्यायाधीश की अदालत।

मुंसिफी—सं० स्त्री० [अ०] १ न्याय, इन्साफ।

२ मुंसिफ का पद।

मुंसी—सं० पु० [अ० मुंशी] १ लेखक।

२ किसी कार्यालय का लिपिक, क्लर्क।

३ वकील का मुहर्रिर।

४ कचहरी में अर्जियां लिखने वाला व्यक्ति।

रू० भे०—मुनसी

मुंसीखांनौ—सं० पु०[अ० मुंशीखाना] मुंशियों के बैठने का कक्ष

मुंसीगिरी—सं०स्त्री० [अ० मुंशीगिरी] १ मुंशी का काम।

२ मुंशी का पद।

मुंसौ—देखो 'मूसौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिहां डांस मुंसा मांकुण जू प्रमुख न उपजइं।—व. स.

उ०—२ मुंसा दादरा हूंत नागां मराड़े। खुरां कीड़ियां हूंत हाथी खूंदाड़े।—सू. प्र.

मुंह—देखो 'मुख' (रू. भे.)

उ०—१ मुंह न दियौ पर मारियौ, भागां न करै घाव। सादूळौ साचा गुणां, वेह कियौ वन-राव।—बां. दा.

उ०—२ नंदी गण चढी आठ गण आगळ, लोपी अगड तणी ताइ लाज। उण वेळा विख रह मुंह आगळि, आई सती हुई आवाज।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ अवसर दांन ज अप्पही, रिण भज्जै मुंह मोड़। राठोडां कुळ मेहणौ, ते खत्री पण खोड।—गु रू.बं.

मुंहअंधारौ—देखो 'मुंअंधारौ' (रू. भे.)

मुंहकम—देखो 'मुहकम' (रू. भे.)

उ०—संवा राग'र दोख. जीप, गुर गम सुं। हरिहां दास कहै हरिराम, राज मुंहकंम सुं।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ हरीया नख-चख वीच मैं, धावे मुंहकम पूर। सूर पड़ै रिण खेत मैं, कायर भागा दूर।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मुंहकांण—देखो 'मुकांण' (रू. भे.)

मुंहगउ, मुंहगौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे)

उ०—सत्यासीयउ साहसी, ऊठि बलि सांगउ धावइ। पल्लयउ न रहई पापीयउ, धांन मुंहगउ करि धावइ।—स. कु.

उ०—२ इण वीर स्त्री रे वासतै बाळण नै कढायौ आतौ मुंहगौ ही ले लेती हमैं बेचूं तो सुंहगो ही इण बिना कुण लेवै।—वी.म.टी.

उ०—३—जिके सूर ढीला जरद, ऊबड़ही आरांण। मूंछ अणी भूहां मिळै, मुंहगौ राखै मांण।—बां. दा.

उ०—४ प्रम अंस सूर दाता प्रमांण। वित दियण लियण मुंहगा बखांण।—सू. प्र.

उ०—५ करनी थांरै कारणै,प्यारी थळवट पंथ। मोत्यां सूं मुंहगौ मिळै, हीरां पाज हरंत।—चोथ बीठू

(स्त्री० मुंहगी)

मुंहचोर—सं०पु०—दूसरों के सामने जाने से मुंह छिपाने वाला, अपने काम से जी चुराने वाला।

मुंहजोर—वि०—१ अधिक बोलने वाला, वाचाल।

२ बिना कारण बहस या हुज्जत करने वाला।

३ उद्दण्ड।

४ एक प्रकार का अशुभ घोड़ा।

रू०भे०—मूंजोर,

मुंहजोरी—सं०स्त्री०—१ बकवास, प्रलाप।

२ अशिष्ठता, उद्दण्डता।

उ०—'तो इत्ता वडा थारै उठै हुया हां कं'। 'साळा मुंजोरी करै है ? ठैर तौ'।—वरसगांठ

मुंहड–क्रि·वि०—मुंह पर, अग्र भाग पर।

उ०—आगै विभर रै मुंहड पातिसाह भींत चुणाइनै छोह दिराइ लयो।—सयणी री वात

मुंहडइ—देखो 'मूंडो' (रू. भे)

उ०—लाजतै भीख लीधी नहीं, मुंहडइं पग सूजी मूग्रा। समयसुंदर कहइ सत्याधीया, ते हणाल ताहरा हूग्रा।—स. कु.

मुंहडे, मुंहडै–क्रि०वि०—१ आगे, अगाड़ी।

उ०—१ सू पहाड़ इसड़ो पव्वत सू पहाड़ कोरिनै माहे घर कियो सू घर रै मुंहडै पहाड़ री विटां कोरिनै राखी छै।

—कूंगरैवलोच री वात

उ०–२ सु हाथी पाखरिया कर लोह वांध,गरक किया छै। सु हाथी फोज रै मुंहडै छै।—नैणसी

२ सम्मुख, आमने-सामने।

उ०—१ तितरै रायसिंघ ही आय भेळो हुग्रो। अणी मिळी। अठै वेढ निपट सखरी हुई। रजपूत रजपूतां रै मुंहडै आया।

—नैणसी

उ०—२ एकोको मुंहडै जो आवत, प्रतरै कळहणि तणी परि। रहचति कटक सिगळ डोइ रांदो' वात कहत कुंण बैरहरि।

—नादण बारहठ

उ०—३ ताहरां अरजनजी नगै भारमलोत रै मुंहडै आयो।

—नैणसी

३ सीमा पर।

उ०—राव जोधो मारवाड़ रो धणी वडो राजा छै। गुजरात रै मुंहडै इण रो मुलक छै···।—राव जोधै रै वेटां री वात।

४ मुंह पर

५ मुंहसे,

६ मुंहमें,

७ अनुपात में, परिमाण में

८ चेहरे पर,

रू० भे०—मूहडे, मुहडै, मुहूडै, मूंडे, मूंडै,।

मुंहडो—देखो 'मूंडो' (रू. भे.)

उ०—१ जसो पण आपरा साथ सूं चढ आयो। गांव रा मुंहडा आगै तळाव छै तिण रै पाछै मैदान छै।—नैणसी

उ०—२. जितरी वोलो तितरी करौ तौ कींगे मुंहडो—छै जे जोधपुर लार आंख उठाय देखें।—राजसिंह री वारता

उ०.—३ मुंहड़ा आगला किणी कांम में गरज लोभ सूं बात नहीं करै।—नी. प्र.

उ०—४ हूं बांमण रो वेटो अर मूरख। का विद्या दे का लोही बांटीस। ताहरां सारदा बोली –मुंद मांडि। तांहरां मुंहडै मांहि राख मेली।—चौबोली

उ०—५ हरिया तोसुं प्रीतड़ी, आतम मेरे यार। जो दूजै सुं तुझि विन, करू त मुंहडै छार।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

उ०—६. दांन घणो उत्तर दियै, हूंतै वित सत हार। मुंहडो ले उण मिनक रो, भोभर भीतर भार।—बां०दा०

मुंहता–सं०पु०—देखो 'महता' (रू. भे.)

उ०—ताहरां मूरिखो बोलियो–हूं मूरिख छूं। मुंहतै रो वेटो मुंहतै राखीयो।—चौबोली

मुंहत्रांण–वि०—मुंह के बल।

उ०—दोढ़ पहर हिंदू तुरक, कहर लड़ै रिण ढांण। मुड़िया भड़ पतसाह रा, के पड़िया मुंहत्रांण।—रा.रू.

मुंहदिखाई–सं०स्त्री०—१ एक वैवाहिक प्रथा जिसमें वर द्वारा वधू को पहले पहल मुंह दिखाने के लिये कुछ धन दिया जाता है।

२ उक्त प्रथा में दिया जाने वाला धन।

रू०भे०—मूंडो दिखाई,

मुंहनाळ–सं०स्त्री०—१ घोड़े का एक रोग विशेष। (शा. हो.)

२ तलवार का वह ऊपरी भाग जो मूठ के नीचे रहता है।

रू०भे०—मुहिनाळ, मूंनाळ, मूंहनाळ, मूनाळ,

मुंहपति, मुंहपती, मुंहपत्ती–सं०स्त्री० [सं०मुख+पट्टिका] श्वेत वस्त्र (प्राय:) का एक टुकड़ा, जिसे स्थानकवासी व तेरी पंथी जैन मुनि अपने मुख पर बाधते हैं। (जैन)

उ०—१ समितो तीन ज धरो तो इ साचा यति, पास राखो नहीं ओघो नै मुंहपति।—ध.व.ग्रं.

उ०—२ ए बात सुण तिण नें निखेध नें बोल्यो:–म्हैं ढीला पड़ गया हां तो ही माना एक दाणा में च्यार परयाय च्यार प्रांण ते खुवाया पुण्य किम हुओ मनै थे मुंहपति बांधनैं क्यूं खोटी हुवा ?

—भि. द्र.

रू०भे०—मुंपति, मुंपता, मुखपति, मुहपति, मुहपती, मुहपत्ती, मुहपोती, मूंबती, मूंबत्ती।

मुंहपल्लो–सं०पु०—किसी मृतक के शोक मे मुख ढककर रोने की क्रिया।

मुंहफट—वि०—वाचाल, बकवादी, विना विचारे बकने वाला।

रू०भे०—मुखफट्ट, मूफट।

मुंहम—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—पछै राजसिंघ खींवावत रै वतियो। सं १६७७ बालापुर री मुंहम लात लागी तिण सूं खोड़ावतो।—नैणसी

उ०—२ सं०१६७८ तिमरणी री मुंहम कांम आयो।

—नैणसी

मुंहमीठड़ो, मुंहमीठो–सं०पु०—एक प्रकार का घोड़ा

वि.—मृदुभाषी।

रू०भे०— मुखमिट्ठु, मूंमीठो, मूंमीठो

मुंहमैज—देखो 'मुहमेज' (रू.भे.)

उ०—खागहारी बिन्है रजवाट रा खटाउ,थाट रा धणी मुंहमेळ थाया।—रांमसिंघ हाडा व राजसिंघ राठौड़ रौ गीत

मुंहमेळ—देखो 'मुहमेळ' (रू.भे.)

मुंहसाल—देखो 'मोसाळ' (रू. भे.)

उ०—भाद्रवडा आविउ भलइ, मयण-तणा मुंहसाल। कांम जगावइ तेहनइं, जेह-सिरि बूढ़ा बाल। —मा. कां. प्र.

मुंहांणी, मुंहांणौ—देखो 'मुहांणी' (रू.भे.)

उ०—तोप मुंहांणी म्हांनै चाड़े, रहै कैद के मांय।

—डूंगजी जवारजी री छावली

मुंहासौ-सं०पु०—युवावस्था में मुंह पर निकलने वाली फुंसी।

मुंहि—१. देखो 'मुख' (रू.भे.)

उ०—मुंहि प्रामळि 'गज साह' पराक्रम भांमणा। परिहां ऐसा पूत सपूत क (नित) वधामणां।—गु.रू.बं.

२. देखो 'मैं' (रू.भे.)

उ०—जन हरिदास निद्रा सूं हेत, अंतकाळि मुंहि पड़सी रेत।

—ह.पु.वां.

मुंहियड़—देखो 'मुहियड़' (रू.भे.)

उ०—पड़ी बिहड़ ऊपरि प्रवाड़ै सत्रहर अंजस बहै सहि। मुंहियड़ जिणि पाड़ियौ मदाउत, मुंहियौ बोलौ न कोइ महि।

—नांदण बारहठ

मुंहियौ—देखो 'मुहियौ' (रू. भे.)

उ०—मुहियड़ जिणि पाड़ियौ मदाउत, मुंहियौ बोलो न कोइ महि।—नांदण बारहठ

मुंही—१ देखो 'मुही' (रू. भे.)

२ देखो 'मैं' (रू. भे.)

३ देखो 'मुख' (रू. भे.)

मुंहुंगौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

मुंहुंडौ—देखो 'मूंडौ' (रू.भे.)

उ०—अर चांडाळ रै मुख सावित्री रै समांन केहरी रौ विभाग फेरंड रै मुंहुंडै कदापि न खटावै।—वं.भा.

मुंहे-क्रि०वि०—मुख पर।

मु-सं०पु० [सं०मु:] १ शिवजी का एक नाम।

२ बंधन।

३ कारागार, कैद।

४ मोक्ष, मुक्ति।

५ ऋषि।

६ मुष्टिका, मुट्ठी।

७ चिता।

८ देखो 'मूं' (रू. भे.)

रू०भे०—मू

मुग्रज्जन, मुग्रज्जिन-सं०पु० [ग्र. मुग्रज्जिन] मस्जिद में ग्रजान देने वाला।

मुग्रत्तल-वि० [ग्र०] १ जिसे किसी कार्य या पद से, कुछ समय के लिये दोषस्वरूप ग्रलग कर दिया हो, निलंबित।

२ बेकार, खाली।

३ जो काम नहीं कर रहा हो।

मुग्रत्तली-सं०पु० [ग्र०[१ 'मुग्रत्तल' होने की ग्रवस्था या भाव।

२ निलंबन।

३ बेकारी।

मुग्राफ—देखो 'माफ' (रू. भे.)

मुग्रारणौ—देखो 'मारणौ' (रू. भे.)

मुआवजौ-सं०पु० [ग्र. मुग्रावज:] १ वह रकम जो जमीन के मालिक को उस जमीन के बदले में कानूनन मिलती है।

उ०—१ ठिकांणा री पूरो कांम ठकुरांणी ग्रापरा हाथ में ले लियौ हौ। मुग्रावजा री रकम सूं एक ट्रैक्टर खरीद लियौ ग्रर ग्राटौ पीसण री एक चक्की ई लगाय दी गई।—रातवासौ

उ०—२ मुआवजौ नीं मिळियौ जिकण री परवा नीं पण भांडणा में तो हुं ई पाछ को राखूं नीं।—फुलवाड़ी

२ किसी प्रकार की क्षति-पूर्ति के लिये दिया जाने वाला धन।

३ बदला।

४ किसी वस्तु का मूल्य जो उस वस्तु के बदले में दिया जाय।

रू०भे०—मावजांनौ, मावजौ,

मुइय—देखो 'मुदित' (रू.भे.)

मुइयड—ग्रगाडी, ग्रागे।

उ०—संग्रांम कांम 'राजौ' स 'कूप' राठौड़ प्रमांणे पंच-रूप। 'विसनावत' वीरति वधी धाड, मेडतियौ मुइयड भड किमाड।

—गु. रू. बं.

मुइयमण—देखो 'मुदितमन' (रू.भे.)

मुई—देखो 'मुंई' (रू.भे.)

उ०—१ सूवा, एक संदेसड़उ, बार सरेसी तुज्झ। प्रीतम वांसइ जाइनई, मुई सुणावै मुज्झ।—ढो.मा.

मुग्रौ-वि० [सं०मृत] (स्त्री० मुई) मरा हुग्रा, मृत।

उ०—जुड़े नह मंडोवरां कदे मी जीवतै, पलटसी मंडोवर मुग्रां पूठै।

—जालमसिंह मेड़तिया रौ गीत

मुकंद—देखो 'मुकुंद' (रू. भे.) (ग्र. मा., नां. मा)

उ०—पुरसोत्तम पूरण प्रभू राघव गिरधर रूप। मुरळीधर मोहण मुकंद, भजलै त्रिभुवण भूप।—ह. र.

मुकंदक—देखो 'मुकुंदक' (रू. भे.)

मुकट—देखो 'मुकुट' (रू. भे.)

उ०—१ पछइ वली मुकट तिलक कुंडल हार दोर वीर विलय ग्रंगद वहिरखा नवग्रहां मुंद्रडी कंदोरु हथ सांकली पगनी सांकली प्रमुख पहिराया।—व. स.

उ०—२ सिर आयौ इकयासियौ, वरसे मुकट विचार । असपति बोलायौ 'अभौ' दिल्ली राज दुवार ।—रा. रू.

उ०—३ बांको मुकट काछनी सुंदर, ऊपर जरद किनारी ।
—मीरां

मुकटबंध—देखो 'मुकुटबंध' (रू. भे.)

उ०—कीध जिको तै दीध कलावत, एही मौज लहर अनमंघ । जस उर धकै आवतां जातां, वूड अनेरा मुकटबंध ।—द. दा.

मुकटमणि, मुकटमिण—देखो 'मुकुटमणि' (रू.भे.)

उ०—१ इतरै देवी प्रकट होय कही —धन्य विक्रम ! धन्य तू ! सकळ राजां मांही मुकट-मणि है ।—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ पुत्र दसमौ चित सुबुधि प्रकासी । भूप मुकटमिण खळां अमामी ।— सू०प्र०

मुकटि—देखो 'मुकुट' (रू०भे०)

उ०— मणि वाहण मुकटि, रीत सजव नव रूप । किया साज महाराज कजि, ऐसा बाज अनूप । —रा०रू०

मुकटौ सं०पु०—१ एक प्रकार की रेशमी धोती जो प्रायः भोजन के समय पहनी जाती है ।

२ देखो 'मुकुट' (अल्पा., रू. भे.)

मुकणौ मुकबौ—देखो 'मूकणौ, मूकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कंठ रुकै कायरां जुबांणां लुकै मुकै कई । धुकै प्रांण मुकै के भमक्कै स्रोण धार ।

उ०—२ बूंब देऊं छळ वंभणा, मुकी दिइ मुझ मीत । कर जोड़ी निलवटि करइ, चतुर चोरतो चित्त ।—मा. कां. प्र.

मुकत—१ देखो 'मुक्त' (रू. भे.)

उ०—१ चमकै रतन पेच चीरां रा । हार मुकत भूखण हीरां रा ।
—सू. प्र

उ०—२ ओपै रूप घणौ राय अंगण, चौक मुकत कण केसर चंनण । तर मंजर फळ माळा तोरण, सोहै द्वार मेळ भ्रत सज्जण ।
—रा. रू.

२ देखो 'मुक्ति' (रू भे.)

उ०—१ दसरथ रा नंद मुकत रा दाता,असुर जुवां घाता असेस ।
र.ज.प्र.

उ०—२ खुधा न भाजै पांणियां, त्रखा न भाजै अन्न । मुकत नहीं हर नांव बिन, मांनव साचै मन्न ।—ह. र.

मुकतज—देखो 'मुक्तज' (रू. भे.)

मुकतदा—वि०स्त्री० [सं०मुक्ति-दात्री] मुक्ति देने वाली । (अ. मा.)

मुकतफळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

उ०—फबै सवा मण मुकतफळ, मैंगळ कुंभ मझार । विण हाथळ बळ सूं हुवौ, सीह बनै सिरदार ।—बां. दा.

उ०—२ इळ छीलरै बिमळ खग ओपै, भेद करै जळचरि भखै । लाभै सीप मुकतफळ लाभै, निज मराळ रसग्राळ लखै ।
—उत्तमरांम गौड़ रौ गीत

मुकतमाळ, मुकतमाळा—देखो 'मुक्तामाळ' (रू. भे.)

उ०—सुभ खिल्लत पंच वसन सुरंगी, असि खजर सरपेच कलंगी । मुकतमाळ दुलड़ी उर मंडित, अती भार सब सत्र अखंडित ।
—रा.रू.

मुकतसांमीप—देखो 'सांमीप्यमुक्ति' (रू. भे.)

उ०—बोम छब कमळ प्रतमाल कर बाहतौ, गजघड़ां गाहतौ खळां गूंडौ । रण कटै गयो बैकुंठ भ्रम राहतौ, चाहतौ मुकतसांमीप चूंडौ ।—रावत गुलाबसिंह चूंडावत रौ गीत

मुकतहार—देखो 'मुक्ताहार' (रू. भे)

मुकता—२ देखो 'मुक्ता' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—१ इण विध आभरणांह मनूं मुकता मिली । छक तरुणाई छोळ पयोनिध ज्यूं छिली ।—बां दा.

उ०—२ पलकन डटै पयोरी बिरघ पात पर बूंद । पड़ै भोम पर पाघरा, मनु मुकता धर खूंद ।—लो.गी.

मुकतागळ-सं०पु०—मोतियों का झुण्ड, समूह ।

उ०—धड़च्छत फील खगां सिरधार । रचै मुकतागळ मांगणिहार ।
—सू.प्र.

मुकताग्रह-सं०पु०—प्रहास या गरबत गीत का एक भेद, जिसके विषम पदों में २० मात्राएं व सम पदों में १७ मात्राएं होती हैं । प्रथम द्वाले के प्रथम पद की मात्राएं २३ होती हैं ।

उ०—गरबत कीजै गीत अत, विसम तुक आद सम । सिंघ बिलोक सरीत, मुकताग्रह जिण नै मुणे ।—र.रू.

वि०वि०—इसमें विषम तुक के अंतिम शब्द को सम तुक के आदि में रखकर सिंहावलोकन किया जाता है ।

मुकताग्रहजथा-सं०स्त्री०—डिंगल साहित्य में गीत (छंद) रचना की एक प्रणाली या नियम । (कः कु बो.)

मुकताचर—देखो 'मुक्ताचार' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

मुकताफळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

उ०—१ आबदार ऊजळ बडवार मुकताफळ सोव्रन लाल संजुति रूपवंत स्रवणां बीच राजै ।—सू.प्र.

उ०—२ मोर मुकुट मुकताफळ कुंडळ, उर बैजंती माळ ।
—मीरां

मुकतामाळ—देखो 'मुक्तामाळ' (रू. भे.)

उ०—सीसफूल मणिमाळ बिंदलियां मुकतामाळ बिसाल ।
—रसीलैराज रा गीत

मुकताळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

उ०—मांग भरयां मुकताळ, जाळ रुळता जवाहारां । भ्रतर भमर ऊपरां, भवर भवंतां भवहारां ।—पनां

२ देखो 'मुक्तावळी' (रू. भे.)

मुकताळि, मुकतावळ, मुकतावळि, मुकतावलि, मुकतावळी—देखो 'मुक्तावळी' (रू. भे.)

उ०—१ छु मुकतावळि लावां हइ, सोहई रूप सोभांतारे । कुंकु

भरी कचोळिय, भोळीय छांटणां छांटइरे ।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ कणगावलि तपु एकु बीजउ एकरइ रयणावली ए। मुकतावळि तपु साऊ चउथऊ ए सिंह निकीलि ऊए।

—सालिभद्र सूरि

मुकताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

उ०—कंठसरी बहुकांति मिळी मुकताहळां। हिंडुळ नोसरहार, जलूस जळाहळां।—बां.दा.

मुकताहार—देखो 'मुक्ताहार' (रू भे.)

उ०—लंबोदर फरसी-धरण, मुखमें कर दांणा। मुकताहार विराजमान, सिंदूर झलांणा।—द.दा.

मुकति, मुकती—देखो 'मुक्ति' (रू. भे.)

उ०—१ चांद बणाय रावळी चिरजां, सनमुख गाय सुणाई। दीजै भगति मुकति जगदंबा, कीजै जेज न काई।—मे म.

उ०—२ सीतल सील छायां वीसमउ, भावना निरिहिं सीचिउ धरउ फुल पत्र बार देव लोक जांणि एह ब्रक्ष नउं फल मुकति निरवांणि।—जयसेखर सूरि

२ देखो 'मुक्ता' (रू. भे.)

उ०—म्रिदु हरित वंस मंगाय, प्रति वेह जुत रोपाय। रचि चौक चंदण चार, क्रति मुकति रेख प्रकार।—रा. रू.

मुकतिसाजोति–सं०स्त्री० [सं० मुक्ति+स+ज्योति] पांच प्रकार की मुक्तियों में एक प्रकार की मुक्ति का नाम, जिसमें जीव ईश्वर ज्योति में विलीन हो जाता है।

उ०—विचि तिमिर छोर गोळा वहे, जाजुळ मंगळ जोति रा। ग्रम्ह सम्हां जांणि लागा उडण, सिखर मुकतिसाजोति रा।

सू. प्र.

रू०भे०—मुगतिसजोत, मुगतिसाजोत

मुकत्ता—देखो 'मुक्ता' (रू. भे.)

मुकत्ति—देखो 'मुक्ति' (रू. भे.)

उ०—भगत्त ग्रधीन मुकत्ति भंडार। ग्रागोचर बेद ब्रहम्म ग्रपार।

—ह.र.

मुकदम—देखो 'मुकद्दम' रू. (भे.)

उ०—सांसण जूना सोध, दत मुकदम भूपाळ दत्त। करै न खेचल कोय, जग पाळग 'जसराज' उत।—सू प्र.

मुकदमेबाज–सं०पु० [ग्र०+फा०] जो प्रायः मुकदमे लड़ा करता हो। किसी न किसी मुकदमें में लगा रहने वाला व्यक्ति।

मुकदमेबाजी–सं०स्त्री०[ग्र०+फा०] मुकदमें लड़ने की क्रिया या भाव।

मुकदमो–सं०पु० [ग्र० मुकद्दमः] १ किन्हीं दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच खड़ा होने वाला विवादास्पद विषय या झगड़ा जिसे न्यायालय में निर्णयार्थ प्रस्तुत किया जाता है, अभियोग, दावा, नालिश।

२ कोई विषय या मामला।

४ एक प्रकार का कर। (प्राचीन)

रू०भे०—मुकद्दमो,

मुकद्दम–वि० [ग्र०] १ प्रधान, मुख्य।

२ विशेष, खास, महत्वपूर्ण।

३ ग्रावश्यक, जरूरी।

सं०पु०—१ गांव का मुखिया।

२ ग्रग्रभाग।

मुकद्दमो—देखो 'मुकदमो' (रू. भे.)

मुकद्दर–सं०पु० [ग्र०] १ भाग्य, तकदीर, किस्मत

२ ग्रदृष्ट।

३ लुप्त शब्द।

वि०—१ मलिन, मैला, गंदा।

२ ग्रप्रसन्न, नाराज, नाखुश।

३ दुखी, चिन्तित, परेशान।

मुकन–सं०पु०—शत्रु, दुश्मन।

मुकनौ–सं०पु०—१ पर्दा नशीन स्त्रियों के ग्रोढने का सफेद, बुर्का।

उ०—दोई घोडां गिलांण करायो। घणा जडावरा हलका सोना मांहै जड़िया लीधा। मुकनौ चावड़ी नै पहिरायो।

२ बिना दांत का हाथी।

उ०—ग्रटळराज रौ टीकौ कीनौ। मुकनौ सो हाथी धूजी नै चढवा दीनौ।—लो.गी.

३ बिना मूंछ वाला व्यक्ति।

रू०भे०—मकनउ, मकनौ, मकुनौ, मुकुनौ, मुक्कनौ,

मुकनौदुरंद मुकनौदुरत, मुकनौहाथी–सं०पु०—वह हाथी जिसके दांत न हो अथवा बहुत छोटे-छोटे हों।

उ०—ग्राउवा री सूरजपोळ मुकनौहाथी घूमे ग्रो। लो. गी.

मुकम्मल–वि० [ग्र०] १ जो सब तरह से तैयार हो, जिसमें कोई कमी न हो।

२ जो सर्वांग पूर्ण हो।

३ पूर्ण, समाप्त, खतम।

मुकरंद—देखो 'मकरंद' (रू. भे.)

मुकर–वि० [ग्र०मुकर्रर] १ जो तय हो चुका है, निश्चितः नियत, तय।

उ०—मुसळमांन कहैं–सीयां रै मुकर दोलत होय, सुन्नी फतै नसीब होय।—बां.दा.ख्यात

२ नियुक्त, तैनात।

उ०—जनांना मैल मांहे कराया १६६८ रा, तैरो प्रबंद पातसाई तौर बांदियौ नै ८ सिरायत मुकर किया।

३ यकीनी, विश्वस्त।

उ०—गांवां सहरां गोलणां, रहै हुवा रजपूत। लखणां हूं लखि लीजिये, मुकर धणा रां मूंत।—ऊ का.

क्रि० वि०—१ दुबारा, फिर से, पुनः ।
२ देखो 'मुकुर' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१ मुकर ठगाई मारवा पाई रसिया पीव । इम तरसाइ आयतौ, जी जी बाइ रा जीव ।—पनां
उ०—२ सतगुरु मुकर दिखाया घटका नाचूंगी देदे चुटकी ।
—मीरां

मुकरड़ै-अव्य०—एक मुश्त ।
उ०—सीसिरकार में''''''भरै है । मूकरड़ै रुपीया ठेरै है । नै गांव बिना पटै खावै है ।—नैणसी
रू० भे०—मूकरड़ै

मुकरणौ, मुकरबौ-क्रि० स०—१ एक बार किये गये वादे या समझौते से बदल जाना, अपनी बात से फिर जाना ।
२ इनकार करना, मना करना, नट जाना ।
उ०—अठीनै खाड बठीनैं कूवौ । रांमले रा सासरै वाळा गैं'णा देवणसूं मुकर ग्या ।—वरसगांठ
३ छोड़ना, मुक्त करना ।
मुकरणहार, हारौ (हारी), मुकरणियौ—वि० ।
मुकरिओड़ौ, मुकरियोड़ौ, मुकरयोड़ौ—भू० का०कृ० ।
मुकरीजणौ, मुकरीजबौ—कर्म वा० ।

मुकरर-वि० [अ० मुकर्रर] १ निश्चित
उ०—जनाना मैं'ल मांहे कराया १६६८ रा तैरो प्रबंध पातसाई तौर बांदियो ने ८ सिरायत मुकरर कीया ।
२ नियुक्त, तैनात ।
क्रि० वि०—दुबारा, दूसरी बार, पुनः, फिर से
रू०भे०—मुकरिर

मुकरांण-देखो 'मकरांणी' (रू. भे.)
उ०—दीठो सगळउ दक्षण देस, चतुर नारि तनि चंचळ वेस । माळव गेड़ काबिल मुकरांण, कासमीर, हुरभुज खुरसांण ।
—ढो. मा.

मुकरांणी—देखो 'मकरांणी' (रू भे)
रू० भे०—मुकरांणी.

मुकरियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ वादे या समझौते से बदला हुआ, अपनी बात से फिरा हुआ. २ इनकार किया हुआ, मना किया हुआ, नटा हुआ. ३ छोड़ा हुआ, मुक्त किया हुआ ।
(स्त्री० मुकरियोड़ी)

मुकरिर—देखो 'मुकरर' (रू भे.)
उ०—सूजा बंदगी प्रभू री विध आग्या सहित त्याग भुंडी बांतां री मुकरिर छै ।—नी. प्र.

मुकळाई, मुकळायत-सं० स्त्री०—१ किसी प्रकार की सीमा से अधिक होने की दशा, आधिक्य ।
उ०—पण इण बात रौ औ सैनांण है, जो इणां रै डेरै खरची री मुकळाई देखौ तौ जांणज्यो मिळिया ।—द. दा.
२ गुंजाईश ।
उ०—पण थारै पाखती किला भंवारा बणण री मुकळाई है, पैं'ला इण बात रौ ग्यांन तौ सावळ करल्यौ ।—फुलवाड़ी
३ छूट ।

मुकळावणौ, मुकळावबौ-क्रि० स० [प्रा० मोक्कलई] १ विदा करना, भेजना ।
उ०—१ कर जोड़ै नरपति कहई । राजांमती मुकलावउ राय ।
वी. दे.
उ०—२ अह दैवह वसि तेवि पंच ए पंडव वणि चलिय । हथिणउरि जाएवि मुकलावइं निय माय पीय ।—सालिभद्र सूरि
२ दूर करना, अलग करना ।
३ छोड़ना, मुक्त करना ।

मुकळावियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ विदा किया हुआ, भेजा हुआ. २ दूर किया हुआ, अलग किया हुआ. ३ छोड़ा हुआ, मुक्त किया हुआ ।
(स्त्री० मुकळावियोड़ी)

मुकलावौ-सं०पु०—शादी के बाद दुल्हन को ससुराल लेजाने की रस्म, गौना, द्विरागमन ।
उ०—१ दीवांणजी नै लखायो के मुकलावा री बात सुण उणनै थोड़ी लाज आई । कदास इण वास्तै ई तुरत जवाब नीं दिरीजियौ । थोड़ी ताळ ढबनै संकती बोली-आज ई तौ मुकलावौ लेवण सारू आया । इण सारू ई तौ अधराती बोलवां बोली ।
—फुलवाड़ी
उ०—२ भरमल नूं आसा छै, कि हीं तरह मुकलावौ कर इणनूं विदा करौ ।—कुंवरसी सांखला री वारता
उ०—३ पछै मुकलावौ दायजो ले हाल स्यूं, तहां राजा विक्रमादित्य नूं सीख दी छै ।—पंचदंडी री वारता
उ०—४ डूंगर ऊपर डूंगरी, डूंगर ऊपर कैर । कर मुकलावौ छोड ग्यौ तेरी मेरी कद को बैर ।—लो.गी.

मुकांण-सं०पु० [सं० मुखकथानिका, मुखविकरणम्, प्रा०मुहकहाणिआ] मृतक के पीछे उनके घर वालों के पास संवेदना प्रगट करने के लिये जाने की क्रिया या भाव ।
रू०भे०—मुंहकांण, मुखांण, मुहकांण, मुहकांणि,

मुकांन—१ देखो 'मकांन' (रू. भे)
२ देखो 'मुकांम' (रू. भे.)

मुकांम—सं०पु० [अ०मुकाम] १ निवास स्थान, घर ।
उ०—१ कोड़ प्रकारां खून कर, मूकै नहीं मुकांम । घेरा सूं पौरस घणौ, केहर केरा कांम ।—बां दा.
ठहरने का स्थान, डेरा, पड़ाव ।
उ०—१ हुई कटक सब हाजरी, मथुरा नयर मुकांम । सब कुसुंभ केसर बसण तुलै वराती तांम ।—वं भा.
उ०—२ ग्रांम बडधा १ कुमारती २ रै बीच मुकांम हुवौ । अर रात्रि रै आगम तिकां रै प्रमाद राखण री कुकांम हुवौ ।
—वं.भा.
उ०—३ हुकम मिळतां ई केई सिकारी बंदूकां तांणियोड़ा सिंघ री हौकारां सांमी दौड़िया । संतां रै मुकांम जायनै देख्यौ तौ सिंघ तौ नींबड़ा सू बंधियोड़ौ ऊभौ मार हौकारां करै है ।—फुलवाड़ी

३ यात्रा के बीच लिया जाने वाला विश्राम, ठहराव, पड़ाव, टिकाव ।

उ०—१ दिल्ली गयो कूच मन दीधौ । किणही ठौड़ मुकांम न कीधौ ।—रा.रू.

उ०—२ दुहुं दळ हाली़हळ सबळ, दुहुं दळ घुरै दमांम । दमगळ मातौ दुहुंदळां दुहुं वै कोस मुकांम ।—गु.रू.बं.

३ आवास, विश्राम ।

उ०—१ रांम रांम रसनां लीया, मास दोय विसरांम । हरीया हिरदै कंठ मैं, सागर वरस मुकांम ।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ तकै लपक चोटा तरफ, जी नहिं चहै मुकांम । जांण करै 'पातल' जिसा, मरणा धकै मुकांम ।—जुगतीदांन देथौ ।

४ जगह, स्थान ।

उ० देही भीतरि देव हमारै, चेतन चौथे धाम का । बाकै आसि पासि रहुं लागा, महरंम ताहि मुकांम का ।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

५ कब्रिस्तान ।

६ अवसर, मौका ।

७ विश्नोइयों के गुरू जांभेजी का मन्दिर स्थल, जहां प्रतिवर्ष मेला लगता है ।

रू०भे०—मकांम, मुकांन, मुकीम, मुक्कांम,

मुकांमलौ—देखो 'मुकाबलौ' (रू. भे.)

उ०—सूरिज पीलै पांन सरिखौ निजर आवै छै. मुरचां रा मुकांमला मंडाया छै । अणी मेळ हूओ छै ।—रा. स. सं.

मुकाणौ, मुकाबौ—देखो 'मूकाणौ, मूकाबो' (रू. भे.)

मुकालगीर—वि०—मुकाता की रकम भरने वाला ।

उ०—थैं हाथ मारौ आपां किहींरा चाकर नहीं मुकालगीर छां ।

—गौड़ गोपाळदास री वारता

मुकातर—सं० पु०—मोक्ष, मुक्ति ।

उ०—थूं तौ निपट सादगी सूं रैवण वाळो जीवण बितावै । थनै सुखी देखूं तौ म्हैं मरियां मुकातर पावूं ।—फुलवाड़ी

मुकाती—सं० स्त्री०—१ मुकाता नामक भूमि कर से प्राप्त होने वाली रकम ।—नैणसी

२ मुकाता पर भूमि लेकर जोतने वाला किसान आदि ।

उ०—निबळा पड़िया, तरै घोधांरी ठाकुराई मांहै मुकाती थका रहेता ।—नैणसी

मुकातौ—सं० पु०—एक प्रकार का कर, जो जागीरदार खेत जोतने वाले किसान से एक निश्चित रकम के रूप में लेता है, भूमि-कर ।

उ०—१ तठा पछै रांणा रा हूकम सूं सीसोदियो जोध सकतावत मोरैवण, कराड़ियौ, कुंडळरी सादड़ी, जीहरण रा गांव कितराहक मुकातै लिया ।—नैणसी

उ०—२ स्याळ नेठाव सूं लूंकी नैं समझावतौ कैवण लागौ—म्हैं तौ खुद ई लुका-छिपी सूं काठौ आंती आयगौ । खड़ खावां जीव तौ सोरका में रैवै । कायौ होयनै एक खेत रौ मुकातौ इज कराय लियौ । रिपिया तौ घणा भरणा पड़िया, पण बात सगळी फायदा री व्हैगी ।—फुळवाड़ी

उ०—३ सो एक जायगा म्हा कन्हा मुकातै कराये लेवौ उपरां कर साख स्याळू आई छै सो लोगां कन्हे बहावौ ।

—गौड़ गोपाळदास री वारता

मुकाबलौ—सं०पु० [अ०] १ साक्षात्कार, आमना-सामना, प्रत्यक्ष मिलन ।

२ समानता, बराबरी, तुल्यता ।

उ०—१ राजाजी एक दीवांण रै मूंडा सांम्ही देखनै कैवण लागा-लोग समझैला के म्हैं फगत प्रीत करणी ई जांणूं, न्याव करणौ जांणूं ई कोनी । जांणूं सब हूं, पण बेळा कठै । कोई राजा न्याव करणा में म्हारौ मुकाबलौ कर सकै भलां ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पछै तीनूं लोकां में म्हारौ कुण मुकाबलौ कर सकैला अबै थनै ठा' पड़ी के माया रा जोर सूं कांईं बातां व्है सकै ।

—फुलवाड़ी

३ लड़ाई या कुश्ती में होने वाली भिड़ंत, टक्कर, मुठभेड़, सामना ।

उ०—१ म्हैं फौज रा नाकुछ सिपाई उण कळजुगी अवतार संत तीडाराव रौ कीकर मुकाबलौ कर सकता ?

उ०—२ इतरै में दिन ऊगणै नूं आयौ सो मुकाबलौ हुवौ, तीर गोळी चाली ।—सूरे खींवे कांधळोत री बात

४ प्रतियोगिता में आने की क्रिया या भाव, कम्पीटीशन ।

५ तुलना, जोड़ ।

उ०—नाजाइज लगांन अर कर वसूल करणा में उण सूं किणी रौ मुकाबलौ नीं हो ।—फुलवाड़ी

६ असल व नकल लेख का मीलान ।

७ विरोध ।

रू० भे०—मुकांमलौ, मुकाबिलौ, मुकालबौ, मुकालवौ,

मुकाबिल—क्रि० वि०—१ सम्मुख, सामने ।

२ तुलना में, जोड़ में ।

३ विरोध में ।

वि०—१ प्रतिद्वन्दी ।

२ शत्रु, विरोधी ।

मुकाबिलौ—देखो 'मुकाबलौ' (रू. भे.)

मुकायोड़ौ—देखो 'मूकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मुकायोड़ी)

मुकालबौ, मुकालवौ—देखो 'मुकाबलौ' (रू. भे.)

उ०—१ राठोड़ूं पठांणूं के जंग आगूं सै लेखा जिसी बखत मुकालबा हुवा'''।—सू. प्र.

उ०—२ तद सत्रसाळजी आधीक फौज लेय जाबूराय री फौज

सूं मुकालवौ कियौ सू मोरचा वैठां गोळियां री राड़ हुवण लागी ।
—द. दा.

उ०—३ लाखोजी चढ़िया । कटक मुकालवौ आयौ ।—नैणसी

मुकावणौ, मुकावबौ—देखो 'मूकाणौ, मूकाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सगलां नै सला-सूत देवणियौ अवभण्यौ सपूत, सोचै-समझै अर न्याव तपास, झगड़ा-झांटा रा टंटा मुकाणै ।
—दसदोख

उ०—२ सुग्रीव तणौ दुख भांग्यौ सइ । मुकावौ बाली जरासंध मइ ।—ह. र.

मुकावणहार, हारौ (हारी), मुकावणियौ—वि० ।

मुकाविओड़ौ, मुकावियोड़ौ, मुकाव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मुकावीजणौ, मुकावीजबौ—कर्म वा० ।

मुकावियोड़ौ—देखो 'मूकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मुकावियोड़ी)

मुकियोड़ौ—देखो 'मूकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मुकियोड़ी)

मुकीम-वि० [अ०] जो थोड़े समय के लिये कहीं ठहरा हुआ हो, अस्थायी निवासी ।

पु०—तरकारियों आदि का थोक व्यापारी ।

उ०—बाजार रे अधबीच गया व्योपारी नै मोदी खानै सराफै मुकीमां री दुकाना कन्है गया ।—गौड़ गोपाळदास री वारता

मुकुंद-सं० पु० [सं०] १ ईश्वर, परमात्मा, भगवान ।

उ०—मुकुंद वसै मन ज्यांरै मांय । सदा सुख वासर रैण विहाय ।
—ह. र.

२ विष्णु का नामान्तर ।

उ०—१ अर नीच क्रव्याद रा कुळ नूं दुहिता दैणा री किण मूढ कही छै । जिण रीति मुकुंद रा मंदिर नूं विहाय खेत्रपाळ पूजण री स्रद्धा किसो कापुरुष चित धरै ।—वं. भा.

उ०—२ नमौ मछ स्रग-मंडाण मुकुंद । नमौ कळि रास दइत-निकंद ।—ह. र.

३ श्री कृष्ण ।

४ नव निधियों में से एक (पौराणिक)

५ एक प्रकार का रत्न ।

६ पारा, पारद ।

७ सफेद कनेर ।

८ ढोल विशेष ।

९ मुक्ति देने वाला ।

१० एक राजा । (प्राचीन)

रू० भे०—मकुंद, मुकंद, मुकुंदि, ।

मुकुंदक-सं० पु० [सं०] १ व्याज ।

२ साठीधान ।

रू० भे०—मुकंदक,

मुकुंदि—देखो 'मुकुंद' (रू. भे.)

उ०—रांम लक्ष्मण मही दुखि पाड्या, पांच पांडव विदेसि भमाड्या । डूंब नइं घरि जल वहिउं हरचंदिइ, भालडी मरण लाध मुकुंदि-इं ।—सालिसूरि

मुकुट-स० पु० [सं०] १ प्राचीन समय में प्राय: राजाओं के शिर पर धारण किया जाने वाला तथा वर्तमान देवी-देवताओं की मूर्तियों पर बांधा जाने वाला एक शिरो-भूषण, ताज, किरीट ।

उ०—१ राजा सयमेव आस्थांन सभा बइसइ, ऊपरि मेघाडंबर छत्र, मस्तकि मुकुट, कांनि कुंडल, हृदय मोती तणउ हार ।
—व. स.

उ०—२ मूंछ नाक सिर रौ मुकुट, ससतर सांम सनाह । साबत लायौ समर सूं, कै नंह लायौ नाह ।—बां. दा.

२ किलंगी ।

३ शिखर, शृंग ।

४ एक क्षत्रिय वंश । (प्राचीन)

वि०—सर्वोत्तम, श्रेष्ठ ।

रू० भे०—मकुट, मुकट, मुकटि, मुकुटि, मुकुटी, मुकुट्ट, मुगट, मुगट्ट,

अल्पा०—मुकटौ, मुगटियौ, मुगटौ,

मुकुटबंध मुकुटबद्ध-सं० पु०—१ सर्व श्रेष्ठ राजा, राजाओं में श्रेष्ठ ।

उ०—वीर सेन प्रमुख एक वीस सहस्त्र वीर, उग्रसेन प्रमुख सोल सहस मुकुटबद्ध राजा, महसेन प्रमुख छपन्न सहस बलवंत ।—व. स.

२ संन्यासी ।

रू० भे०—मुकटबंध, मुगटबंध,

मुकुटमण, मुकुटमणि-वि०—सर्वश्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—रांम बरण जुग रूप में, सह बरणां सिरताज । रहैं मुकुट मण राज, आखर अवरां ऊपरै ।—र. रू.

सं० स्त्री०—मुकुट में लगने वाली मणि ।

रू०भे०—मुकटमणि, मुकटमिण, मुगटमण,

मुकुटसप्तमी-सं०स्त्री०—जैनियों का व्रत विशेष ।

उ०—जिन शासन प्रभावना, चतुरथ सस्ट अस्टम दसम अरद्ध मास क्षपण, ग्यानपंचमी, मुकुटसप्तमी, मांणिक्य प्रस्तारिका, निक्रमणतप, वरद्धमांनतप, इंद्रियजय ।—व.स.

मुकुटि, मुकुटी-वि०—१ जो मुकुट धारण किये हुए हो ।

२ देखो 'मुकुट' (रू. भे.)

मुकुटेस्वर-सं०पु० [सं०मुकुटेश्वर] १ एक शिव लिंग ।

२ एक तीर्थ विशेष ।

मुकुट्ट—देखो 'मुकुट' (रू. भे.)

उ०—नमो लख कंद्रप कोटि लावन्न, नमो हरि मारण रूप मदन्न । बदन्न उलासित नेत्र विसाळ, मुकुट्ट किरीट अखै गळ माळ ।
—ह.र.

मुकुनौ—देखो 'मुकनौ' (रू. भे.)

मुकुर-सं०पु० [सं०] १ दर्पण, शीशा, आईना, काच ।

उ०—मन, मोती, चख, मेर, पाको घट, मूंगो, मुकुर । फूटा एता

फेर, मेळया मिळै न, मोतिया ।—रायसिंह सांदू

२ अविकसित फूल, कली ।

४ बकुल वृक्ष, मौलसिरी ।

४ बेर ।

५ कुम्हार के चाक का डंडा ।

रू०भे०—मकुर, मुकर,

मुकुळ–सं०पु० [सं० मुकुलं] १ शरीर, देह ।

२ जीवात्मा, आत्मा ।

३ पृथ्वी ।

४ कली ।

५ जमाल गोटा ।

६ गुग्गुल ।

मुकुळित–वि० [सं० मुकुलित] १ अध मुंदा, अध खिला ।

२ कलियों से युक्त (वृक्ष)

३ खिला हुआ ।

४ शोभायमान, शोभित ।

उ०—संयोगिनी को वेस देखयउ, तब उवेखयउ कंत । सिंगार सोभत सहल अंगई, महल दीप दीपंत । उनमत पीवर अति घन स्तन, मध्य मुकुलित माल, सखी मास काती दहत छाती, माल तौ भई भाल ।—वि कु.

मुकेस, मुकैस–सं०पु० [अ०मुक्कैश] १ सोने-चांदी के चौड़े तार ।

२ उक्त तारों का बना कपड़ा, बादला ।

उ०—सजंत के चिकन्न साज, सुंदरां ससोभरा । करंत के मुकेस कांम, भार कार चोभरा ।—सू.प्र.

मुक्क—१ देखो 'मुक्त' (रू. भे.)

२ देखो 'मूक' (रू. भे)

३ देखो 'मुख' (रू. भे.)

मुक्कणो, मुक्कबौ—देखो 'मूकणौ, मूकबौ' (रू. भे.)

उ० १ वहलै दिग्गज दिसा मेर मरजादा मुक्किय । अदळ-बदळ जळ उदध, चंडि सिध आसन चुक्किय ।—र.रू.

उ०—२ दुल्लह राउ राठौड़, दखण घणा कांम मैमती । कारण पांण ग्रहणौ, सांम्है ले मुक्कियो बांण ।—गु. रू. बं.

मुक्कणहार, हारौ (हारी), मुक्कणियौ—वि० ।

मुक्किओड़ो, मुक्कियोड़ौ, मुक्कयोड़ौ—भू०का०कृ० ।

मुक्कीजणौ, मुक्कीजबौ—कर्म वा० ।

मुक्कतामाळ—देखो 'मुक्तामाळ' (रू. भे.)

उ०—कोमुंड खर्ग कडि कसै तांण, भड-पत्यक भीखम करण द्रोण । केसर तिलक्क भाळीअळेय, मुक्कतामाळ सोहै गळेय ।

—गु.रू.बं.

मुक्कनौ—देखो 'मुकनौ' (रू. भे.)

उ०—पुग्गिपूत चढि हुरम तुरंगे । आव्रति वसन मुक्कना अंगे ।

रा. रू.

मुक्करांणी—देखो 'मकरांणी' (रू. भे)

उ०—केवी केची मुक्करांणी, खेत जाया खुरसांणी । सांमंद्री वेग मैं सार, पेखियै प्रबत्तं पर ।—गु रू बं.

मुक्कळा–सं०पु०—चौहान वंश की एक शाखा ।

मुक्कांम—देखो 'मुकांम' (रू. भे.)

उ०—जदि नजीक जोधांण, सभै मुक्कांम सकाजा । अंग केसर वहो अतर, मंडै डंबर महाराजा ।—सू.प्र.

मुक्कियोड़ौ—देखो 'मूकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री०मुक्कियोड़ी)

मुक्की–सं० स्त्री०—१ हाथ की चारों अंगुलियां व अंगुष्ठ को हथेली पर एकत्र करने की दशा, अवस्था या भाव, बांधी हुई मुठ्ठी ।

२ उक्त प्रकार बंधे हुए हाथ से किया जाने वाला प्रहार ।

रू०भे०—मूंकी, मूंक्की, मूकि, मूकी, मूक्की ।

मुक्केबाज–वि०—१ जो मुक्का मारने में दक्ष हो ।

२ जो मुक्का मारकर लड़ता हो ।

मुक्केबाजी–सं०स्त्री०—१ मुक्कों का आघात करने की क्रिया ।

२ खेल-कूद में एक प्रतियोगिता जिसमें परस्पर मुक्के मार पराजित किया जाता है । (बॉक्सिंग)

मुक्कौ–सं० पु०—हाथ की पांचों अंगुलियों को समेट कर बनाया हुआ रूप, घूंसा ।

उ०—हाथ जिका होय सो तरवार सूं तुरत कांम करै तरवार नहीं भी जे होय तरे मुक्का सेती मार भजावै ।—नी.प्र.

रू०भे०—मूंकौ, मूंक्कौ, मूक्कौ ।

मुक्ख—१ देखो 'मुख' (रू. भे)

उ०—१ मुरार जिकांह बसै तू मुक्ख । संसार समंद तिरै ते सुक्ख ।

—ह.र.

उ०—२ अहि-वेल पत्र कप्पूर सुक्ख । तंबोल लाल सोहंत मुक्ख ।

—गु.रू.बं.

२ देखो 'मुक्त' (रू. भे.)

मुक्खमल—देखो 'मखमल' (रू. भे.)

उ०—करै वाणिज्ज एक हट्ट रूप सक्कलत्त ए । साखा चौतार मुक्खमल रेसमी वसत्त ए ।—गु रू.बं.

मुक्खहलि–सं०पु० [सं०मोक्ष–स्थल] वैकुण्ठ, मोक्षस्थल ।

उ०—सव्वट्ठ सिद्धि तसु उप्परि, जिम तसु उप्परि मुक्खहलि । तिम सूरि जिणेसर जुगपवर, सूरिहिं उप्परि इत्थ कलि ।

—अभयतिक यति

मुक्खि—१ देखो 'मुख' (रू. भे.)

वहै वाज लीणं, झरै मुक्खि फीणं । मवै मग्ग मोणं, असूभत्त श्रोणं ।

—गु.रू.बं.

२ देखो 'मुक्ति' (रू. भे.)

मुक्त—वि० [सं०] १ जो बंधन से छूट गया हो,स्वतंत्र,आजाद ।

२ जो सांसारिक बंधनों से अलग हो, जो सामाजिक बंधनों से अलग हो।

उ०—१ मन दे मरजीवन के मग में, जनजीवन मुक्त फिरे जग में, फरियाद हिये धरले फिर ले। बस वे जन हैं सरले विरले।

—ऊ.का.

उ०—२ जपै जगदीस सजीवन मुक्त, महा धन जे जनजीवन मुक्त।

—ऊ.का.

३ जो मरण जीवन से छूट कर मोक्ष पा गया हो। छूटा हुआ।

उ०—ताहरां लाखैजी राखाईत नूं नजीक अणायौ, माथा उपर हाथ दियौ। जीव मुक्त हुवौ।—नैणसी

४ जो पराधीन न हो।

५ जो त्याग दिया गया हो, फैंक दिया हो।

६ प्रदत्त।

७ गिरा हुआ।

सं०पु०—१ एक ऋषि।

२ देखो 'मुक्ति' (रू. भे.)

उ०—गुरु आप अर्यांनी जुगत न जांणी; चेला मुक्त चहंदा है। करणी रा काचा साध न सांचा, बाचा बहोत बकंदा है।

—ऊ.का.

रू भे०—मुक्त, मुक्क, मुख्ख, मुगत, मुगत्त,

मुक्तकंठ—वि० [सं०] १ जो निर्भीक एवं स्पष्ट वक्ता हो, स्पष्टवादी।

२ जो बोलते समय सीमा को तोड़ देता हो।

३ जोर से बोलने वाला।

रू०भे०—मुगतकंठ,

मुक्तक—सं०पु० [सं०] १ ऐसी कविता जो अपने आप में पूर्ण हो, अर्थात् एक छंद में पूरा विषय या बात आ गई हो। प्रबन्ध काव्य का उलटा जिसे उद्भट भी कहते हैं, फुटकर कविता।

२ छोटे-छोटे वाक्यों का सरल एवं सीधा गद्य।

३ छंद शास्त्र में कविता का एक भेद जिसमें गणों का बंधन नहीं रहता है।

४ प्राचीन काल का एक शस्त्र, हथियार।

रू०भे०—मुगतक,

मुक्तकर—वि० [सं] उदार, दानी।

मुक्तक्षेत्र—देखो 'मुक्तिक्षेत्र' (रू. भे.)

उ०—तीरथां नैं रवांना होय गया था सो आगै केदारनाथ परस, विस्वधारपरस, भूठंति मांहीं कर नैपाळपरस, मुक्तक्षेत्रपरस, बदरीनाथ परस अयोध्या कासी परस परागनी आय, मकर रो नाहण करि, फेर पाछा जाय कुंवर रा पिंड भरायां पछै वैजनाथजी, जगन्नाथजी परस मारकंडेय कुंड तरपण किया।—पलक दरियाव री बात

मुक्तज—सं०पु०—मोती। (डिं. नां. मा., नां. मा.)

रू०भे०—मुकतज, मुगतज,

मुक्तपुरख, मुक्तपुरस—सं०पु० [सं०] १ वह व्यक्ति जिसकी आत्मा मोक्ष को प्राप्त हो चुकी हो

२ वह व्यक्ति जो किसी बंधन या प्रपंच में उलझा हुआ न हो।

मुक्तमाळ, मुक्तमाळा—देखो 'मुक्तामाळ' (रू. भे.)

उ०—'अभमाळ' क्रोध देखे अताळ, महमंदसाह दिये मुक्तमाळ।

—वि. सं.

मुक्तवसन—वि० [सं०] निर्वसन, नंगा, दिगम्बर।

सं०पु०—जैन यतियों का एक भेद।

रू०भे०—मुगतवसन,

मुक्तवेणी—सं०स्त्री०—पृथ्वी, धरती। (डिं. नां. मा.)

मुक्तहस्त—देखो 'मुक्तकर'

मुक्ता—सं०स्त्री० [सं०] १ मोती। (नां.मा.)

२ वेश्या, रंडी।

३ बहुत, पर्याप्त।

रू०भे०—मुक्ता, मुकति, मुकती, मुकत्ता, मुगता, मुत्ता, मूक्ता मूगता।

मुक्ताग्रहजथा—सं० पु०—डिंगलगीत रचना की एक प्रणाली विशेष

रू० भे०—मुगताग्रहजथा,

मुक्ताग्रहजुगबंधजथा—सं० पु०—डिंगल में गीत या छन्द रचना की एक प्रणाली।

मुक्ताचर—सं० पु० [सं०] हंस। (नां. मा.)

रू० भे०—मुकताचर मुगताचर,

मुक्ताचूडक—सं० पु०—एक आभूषण विशेष।

उ०—लघुचूडक, मुक्ताचूडक सुवरणचूडक मोतीसरी करंगी कंकणी पादवेस्टक पोलरकत्रिक चतुसरक नव सरक अस्टादससरक इति आभरणाणि।—व. स.

मुक्ताप्रसू—सं०पु० [सं०] सीप।

मुक्ताफळ—सं०पु० [सं० मुक्ताफलं] १ मोती। (व. स.)

उ०—प्रधळ परोजा नीलवी, मुक्ताफळ ता मांहि। लसत हसत से लसणिया, सोभा कही न जाय।—गजउद्धार

२ कपूर।

३ एक छोटी जाति का लिसोड़ा।

४ लवनीफल, हरफा रेवरी।

५ नगीना, रत्न।

रू०भे०—मुकताहळ मुकताफळ, मुकताळ, मुकताहळ, मुक्ताहळ, मुगतफळ, मुगताफळ, मुगताहळ, मुताहळ, मुताहळ, मुत्ताहळि, मूगताफळ, मूगताहळ,

मुक्ताभक्षि—सं० पु० [सं०] हंस, मराल।

रू०भे०—मुगताभखी,

मुक्तामाळ—सं० स्त्री० [सं० मुक्ता + माला] मोतियों की माला, मोतियों का हार।

रू०भे०—मुकतमाळ, मुकतामाळ, मुक्कतामाळ, मुक्तमाळ, मुक्तमाळा,

[illegible] मुक्ताफळ ।

[illegible] विशेष ।

[illegible] मुक्त [illegible] मुकतासुख

[illegible] आयुध विशेषी

[illegible]

[illegible] ।—व. स.

मुक्तालंकार—सं० पु०—एक आभूषण विशेष ।

उ०—[illegible] हार मुक्ती, श्रेणीबंद्ध छूटते [illegible] पहिला [illegible] मणिभुवन विभासते, अनेकि आभरणि [illegible] मुक्ती, [illegible] विभासते, मुक्तालंकार [illegible], [illegible] जीवा [illegible] कारणि वाणित ।—व. स.

मुक्तालर—सं० स्त्री० [सं० मुक्ता—लतिका] मोतियों की माला, हार ।

उ०—सीस फूल मध कंठसरी कोर, सीलक हीरन कौं मुक्तालर ।

—रसीलैराज रा गीत

मुक्तावळ, मुक्तावळि, मुक्तावळी—सं० स्त्री० [सं० मुक्ता—आवलि]

१ मोतियों की माला, हार । (व. स.)

२ डिंगल का एक गीत या छंद विशेष ।

३ तपस्या, साधना ।

४ प्रायश्चित ।

रू०भे०—मुकताळ, मुकताळि, मुकतावळ, मुकतावळि, मुकतावळी, मुगताळा, मुगतावळि मुगतावळी,

मुक्ताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

उ०—दादू सहज सरोवर आतमा, हंसा करैं कलोल । सुख सागर सूभर भरया, मुक्ताहळ मन मोल ।—दादूबांणी

मुक्ताहार—सं० पु० [सं०] मोतियों की माला, मोतियों का हार ।

रू०भे०—मुकताहार, मुकताहार, मुक्तहार,

मुक्ति, मुक्ती—सं० स्त्री० [सं०] १ मुक्त करने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

२ किसी प्रकार के बंधन से छुटकारा, आजादी, स्वतन्त्रता ।

३ जन्म-मरण से छुटकारा, मोक्ष, निर्वाण, परमपद ।

उ०—१ कोटन ऋषी सील के कारन, परम मुक्ति जिन पाई । ऊमरदांन अब सील आराधत, पर हर नार पराई ।—ऊ. का.

उ०—२ ऋद्धि न मांगूं सिद्धि न मांगूं मुक्ति न मांगूं बड़ाइ । साधु संगत मांगत हूं देवा, कृपा कर बगसाई ।—स्रीसुखरांमजी महाराज

उ०—३ मुक्ति को गहणों पहरस्यां कांई पहरयो है हरि गुरु परताप ।—मीरां

उ०—४ तिवारे विचारयौ साधापणो दोहरौ घणौं । वले विचारयौ इसो दोहरो जद मुक्ति मिलै ।—भि. द्र.

उ०—५ स्वासा सजीवन साधके, स्वांमी वेद रचीजेए । नीति नेम बताय के, मुक्ती पद दीजेए ।—स्रीसुखरांमजी महाराज

वि० वि०—इसमें ऐसा माना जाता है कि जीवात्मा विश्वात्मा में जाकर मिल जाता है । उसे वापस जन्म लेने की आवश्यकता नहीं रहती ।

४ दैहिक या भौतिक कष्टों से छुटकारा, मृत्यु, मौत ।

५ किसी प्रकार के बोझ या उत्तरदायित्व से छुटकारा ।

६ त्याग ।

७ फैंसाने की क्रिया या भाव ।

रू०भे०—मुकत, मुकति, मुकती, मुकत्ती, मुक्ति, मुक्त मुक्ती, मुखती मुगत, मुगति, मुगती मुगत्त, मुगिति, मुगोती, मुगुत, मुति, मुत्ति, मुत्ती,

मह०—मुगती,

मुक्तिक्षेत्र—सं० पु० [सं०] १ काशी या वाराणसी का एक नामान्तर ।

२ कावेरी के तट पर वकुलारण्य नामक तीर्थ ।

रू०भे०—मुक्तक्षेत्र, मुगतिखेत

मुक्तिपुरी—सं०स्त्री० [सं०] वैकुण्ठ पुरी ।

उ०—जीवितव्य तह आज ए फलिउ, द्वार मुक्तिपुरी आज मोकलिउ ।—सालिसुरि

उ०—२ स्री धरमसी आतम रूप दाता । देत सदांना मुक्तिपुरी ।

—ध. व. ग्रं.

रू०भे०—मुक्तीपुरी, मुगतपुरी,

मुक्तीपुरी—देखो 'मुक्तिपुरी' (रू. भे.)

मुक्तेस्वर—सं०पु० [सं०मुक्तेश्वर] एक शिव लिंग ।

रू०भे०—मुगतेसर,

मुखंढि—सं०पु०—एक शस्त्र विशेष ।

उ०—त्रिशूल सक्ति सर तोमर मुरवि अरद्ध मुरवि परसु पास पट्टिस द्रुम लांगूल मुसल मुखढि मुग्दर लगुड गदा दंड ।—व.स.

मुख—सं०पु०[सं०] १ प्राणियों के शरीर का वह प्रमुख अंग जो आंख व नाक के नीचे होता है तथा खाने-पीने बोलने, बात करने आदि का कार्य करता है । यह ओष्ठ, दांत, जीभ, तालु, स्वर-यन्त्र आदि कई अवयवों का संगठित रूप है । मुंह, मुख ।

उ०—१ मुख ग्रही सोखी पूतना मारि । वडिमि बखांणे धिन विसन ।—ह नां मा.

उ०—२ साचा मुख मांनव तणा, जा मुख निकसै रांम । जन हरिया मुख रांम बिन, सोई मुख बेकांम ।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ मुख न बोलै पट न खोलै सांझ तैं परभात । बोलनै जुग बीतन लागौ, काहे की कुसलात ।—मीरां

उ०—४ रंग लखण रजपूत बात मुख झूठ न बोलै । रंग लखण रजपूत काछ परनार न खोलै ।—ऊ.का.

उ०—५ अग छावडइ जिसा लोचन मुख । तीखा जिसा खुतंगी तीर ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—६ राजकंवर फेर तपसी रै पगां में माथौ निवाय नै कैवण लागा—आपरा स्रीमुख सूं आप औ कांई फरमावौ ।

—फुलवाड़ी

पर्या०—अखण, अस्टा, आंनन, आस, घण, घनोत्तम, तुंड, दंताळय,

बोलण, मुंह, मूंढौं, रसनाग्रह, लयन, वकक, वकतर, वक्र,वदन।

२ शिर का अग्रभाग, चेहरा, आकृति, शक्ल, सूरत।

उ०—१ मुख वांनैत महीपती, करत अनै चंद्रभांण। कियो सक्रोधां सांम कज, यां जोधां आरांण।—रा.रू.

उ०—२ भगति करेसी रांम की, साच वचन मन सूर। चोट सहै सत सबदी की, हरीया जा मुख नूर।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ दिलीवै सोच 'गजसाह' मुख देखिजै। दिलीवै हरख तोई 'गजण' दीखै।—गु.रू.बं.

उ०—४ मुख देखन के अवधूत मती, जन पूजत जांनत काछ जती।

—ऊ.का.

३ दरवाजा, दरवाजे के रूप में काम आने वाला विवर, द्वार, मुहाना।

४ बोरी, थैली, बर्तन आदि का खुला भाग, मुंह।

५ ऊपरि भाग, सिरा, छोर।

६ नोक।

७ अगला हिस्सा, अग्रभाग, सामना।

उ०—मछराळ आफाळ चढ़ै अणियां मुख, वीफर मांडि भड़ाळ वटी. पड़ताळ धबुक्क घड़ां बिच पाकड़ि, जीह बकै मारि-मारि जुटी।—मा. वचनिका

८ गर्दन के ऊपर का या अगला भाग।

९ चेहरे का हाव-भाव, भावना, प्रकृति।

उ०—सुण सातां मुख सोय, चुण बातां चरचा चले। घुण लकड़ी तन धोय, जिण री कुण 'जांणै 'जसा'।—ऊ का.

१० पक्षी की चोंच।

वि० [सं० मुख्य] १ मुखिया प्रधान, मुख्य, अगुवा।

उ०—१ मुख इतां धणी छळ मारवां, मुहर अणी वध मेळिया। जुध करण जैत-नांमो जरू, भड़ां अमांमा भेळिया।—रा.रू.

उ०—२ मुंडण न्हावण स्राद्ध मुख, साधै पूरब सूर। बखसे धन कीधा बळै, दुजराजां दुख दूर।—वं. भा.

उ०—३ पहली मुखे चमरबंध पड़ियां, गौड़ै गज-बंधां ओगाढ़। जवन तणी दरगा जोधपुरो, जड़िया सह हैकण जम-दाढ़।

—गु.रू.बं.

क्रि० वि० [सं० मुख] सामने, सम्मुख, आगे।

उ०—मुख ऊपर मिठियास,घट मांहि खोटा घड़ै। इसड़ां सूं इकळास राखीजै नह राजिया।—किरपारांम

रू० भे०—मांह, मुं, मुंह, मुंहि, मुंही, मुक्ख, मुक्ख, मुखि, मुखा, मखि, मुखिइं मुखी, मुख्ख, मुह, मुहि, मुही, मूं, मूंह, मूख, मूखी, मूह.

अल्पा०—मुखड़ो,

मह०—मूहड़,

मुखअग्र-सं० पु० [मुखाग्र] १ अधर, ओष्ठ, होठ। (ह. नां. मा.)

२ अगला भाग, सामने का हिस्सा।

३ देखो 'मुखाग्र' (रू. भे.)

मुखक—देखो 'मूसक' (रू. भे.)　　(अ. मा.)

मुखखुर-सं०पु० [सं० मुखः+खुरः] दांत।

मुखगंधक-सं० पु० [सं० मुखगंधकः] प्याज।

मुखाग—देखो 'मुखाग्र' (रू. भे.)

मुखड़ो—देखो 'मुख' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ रांम राय जिण बन बसै हो, सो बन धन धन जांण। इक मुखड़ौ प्रभु-गुण घणा हो,किण विध करूं वखांण।—गी. रां.

उ०—२ आंख्यां नहीं चौखैं म्हारी अच्चा मुखड़े नहीं बोलै जी।

लो. गी.

उ०—३ बिडरी हिरणींसी फिरणीं बिजकाती। मुखड़ौ मुसकाती जोरो जतळाती।—ऊ. का.

उ०—४ मुखड़ौ कुम्हळायो भोजन बिन भारी। पय पय करतोड़ी पोढ़ी पिय प्यारी।—ऊ. का.

मुखचंग-सं० पु०—एक प्रकार का वाद्य।

मुखचपळ-वि० [सं० मुखचपल] १ वाचाल, बकवादी।

२ गाली बकने वाला, कटु-वक्ता।

३ बढ़कर बोलने वाला, लबार।

मुखचपळता-सं० स्त्री०—१ मुखचपल होने की दशा, अवस्था या भाव।

२ कटु भाषण।

मुखचपेटिका-सं० स्त्री० [सं०] थप्पड़।

मुखचबु-सं० पु०—चार मुख वाला, ब्रह्मा, चतुरानन।

मुखचीरी-सं० स्त्री० [सं०] जिव्हा, जीभ।

मुखछूवा-सं० स्त्री०—सुपारी।

मुखज-सं० पु० [सं] ब्राह्मण।

मुखजबांनी-वि०—कंठस्थ।

मुखतार-वि० [अ० मुख्तार] १ जिसको किसी विशेष अवसर पर कुछ अधिकार देकर प्रतिनिधि बनाया गया हो प्रतिनिधि, एजेण्ट।

२ स्वतन्त्र, आजाद स्वच्छन्द।

सं० पु०—१ किसी जागीर का व्यवस्थापक।

उ०—साहजी सय्यद पटेल रै मुखतार हो जिण रौ बेटो मोहमद मीरखां दिलीं फिरंगी री सिरकार सूं पांच सो रुपिया महीनां रा महीनै पावै —बां. दा. ख्यात

२ हलके दर्जे का वकील, छोटी अदालतों का वकील।

रू०भे०—मुखतियार, मुखत्यार, मुगतार, मुगत्यार,

मुखतारआम-सं० पु० [अ० मुख्तार-आम] ऐसा प्रतिनिधि जिसको सभी कार्य करने के अधिकार दिये गये हों।

रू०भे०—मुगतारआंम,

मुखतारकार-सं०पु० [अ.] वह जिसे किसी काम की देख रेख के लिये नियुक्त किया गया हो।
रू. भे.—मुगतारकार,

मुखतारकारी-सं०स्त्री० [अ.] 'मुखतार' का काम या पद।
रू.भे.—मुगतारकारी,

मुखतारखास-सं०पु० [अ.] विशेष प्रतिनिधि।
रू.भे.—मुगतारखास,

मुखतारनांमो-सं०पु० [अ. मुखतार-नामः] १ वैध रूप से मुखतार नियुक्त करने का पत्र।
२ ऐसा पत्र, जिसके द्वारा किसी को प्रतिनिधि बनाते हुए कुछ अधिकार दिये गये हों।
रू.भे.—मुगतार नांमो,

मुखतारी-सं०स्त्री० [अ. मुखतारी] १ मुखतार होने की दशा, अवस्था या भाव।
२ मुखतार का पद या कार्य।
३ प्रतिनिधित्व।
४ एक प्रकार की कानूनी परीक्षा, जिसे छोटी अदालतों में मुकदमा लड़ने के अधिकार प्राप्त करने के लिये, पास करना पड़ता है।
रू०भे०—मुखत्यारी, मुगतारी, मुगत्यारी,

मुखतियार—देखो 'मुखतार' (रू.भे.)

मुखती—देखो 'मुक्ति' (रू.भे.)

मुखत्यार—देखो 'मुखतार' (रू.भे.)

मुखत्यारी—देखो 'मुखतारी' (रू.भे.)
उ०—तद इणां सुरतांण भांण रै नूं मालक कियौ। अरू विजै हरराजोत परधांन हुवौ। मुखत्यारी विजै री। राव सुरतांण तौ नांम मात्र रयौ। —द. दा.

मुखदरस-सं०पु०—दर्पण, शीशा, आरसी, काच। (अ. मा.)

मुखदीपण, मुखदीपन-सं०पु० दांत, दंत। (अ. मा.)

मुखदूसण-सं०पु० [सं० मुख दूषण:] प्याज।

मुखधोवण-वि०— १ कड़ुवा। (२) स्वादहीन।
३ अप्रिय, कटु।

मुखनस, मुखन्नस-सं० पु० [अ० मुखन्नस] १ हींजड़ा, नपुंसक।
उ०—वा पातसाह आलमगीर हाथी असवार कुरांन में सुरत लगाय रयौ है। लारै खवासी में मुखनस बैठौ मोरछड़ करै है। —द. दा.
२ कायर, डरपोक।

मुखपट-सं० पु० [सं०] १ घूंघट।
२ नकाब।

मुखपति—देखो 'मुंहपति' (रू. भे.)
उ०—ओघा नै वलि मुखपति जीवा, मेरू जितरा लीध। किरिया समकित बाहिरी जीवा, एकौ काज न सीध।—जयवांणी

मुखपाक-सं०पु०—मुख का रोग, जिससे मुंह में छाले पड़ जाते हैं।

मुखपिंड-सं० पु० [सं० मुख्य पिंड] १ मृत व्यक्ति के उद्देश्य से उसको अंत्येष्टि क्रिया से पहले किया जाने वाला पिंड।
२ कौर।

मुखपूरण-सं०पु० [सं०] कुल्ला, आचमन।

मुखप्रिय-सं०पु० [सं०] संतरा, नारंगी।

मुखफट्ट—देखो 'मुंहफट' (रू.भे.)

मुखबंध-सं०पु [सं०] भूमिका, प्रस्तावना।

मुखबंधन-सं०पु० [सं०] १ ढक्कन।
२ भूमिका

मुखबर—देखो 'मुखबिर' (रू.भे.)

मुखबास-सं०पु० [सं० मुख+वास] १ भोजनोपरांत, मुख शुद्धि के लिये खाया जाने वाला पदार्थ।
उ०—तिसे घड़ी दो मांहे सगळौ साथ जीमियौ। चळू कीया पांन, लूंग, मुखबास दीधा।—जगमाल मालावत री बात
२ पांन, ताम्बूल। (अ.मा.)
रू०भे०—मुखवास,

मुखबिर-सं०पु०[अ. मुख्बिर] गुप्त रूप से समाचार देने वाला, गुप्तचर, जासूस
रू.भे.—मुखबर

मुखबिरी सं०स्त्री०—१ गुप्तचरी, जासूसी।
२ मुखबिर का पद।

मुखबिसय-सं०पु०—बड़ा चमगादड़।

मुखभा-सं०पु०—तोता, कीर। (अ.मा.)

मुखमंडण, मुखमंडन-सं०पु०—१ पान। (अ.मा)
२ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक। (व.स.)

मुखमल-सं०पु०—१ पुष्प, फूल। (अ. मा.)
२ देखो 'मखमल' (रू.भे.)
उ०—१ असलूफ रंग उजास, खित मंडै मुखमल खास। अतिलूंब छिब्ब उणवार, दुति जरी छापादार।—सू. प्र.
उ०—२ कसबी जरबाप मुखमल कथीपा इलाइचा नारीकुंजर प्रमुख पचरंगी वागा पहरिया।—व. स.
उ०—३ मेह बिना धरती तरसै, मेहड़ौ हुवण दै। मोचड़ियां घड़ावं मुखमल री मेहड़ौ हुवण दै।—लो.गी.
उ०—४ सेठांणी पाळगोटी मारचां रथ में बैठी ही। मुखमल री वेल रै मांय लावड़ा री रेसो ई आवण री ठौड़ नीं ही।—फुलवाड़ी

मुखमली—देखो 'मखमली' (रू.भे.)
उ०—१ नगर कठियारा रै नबाब इस्टूखां री चरचा करता करता ई सगळा रईस मुखमली बिछावणां माथे सूयग्या।—फुलवाड़ी
उ०—२ झीणा झुगा, चूनड़ी री पाग, पल्लाळी धोती, मुखमली जूती, जड़ाव रा लूंग, सोनै रा जाळिया —दसदोख

मुखमलू—देखो 'मखमल' (रू.भे.)

मुखमल्ल—देखो 'मखमल' (रू. भे.)
उ०—जंगम्मं पसम्मं मुखंमल्ल जेही। दियै जांणि आरीस सारीस देही।—वचनिका

मुखमिट्ठ—देखो 'मुंहमीठौ' (रू. भे.)
उ०—काछ द्रढा कर बरसणां, मन चंगा मुख मिट्ठ। रण सूरा जग वल्लभा, सो हम चाहत दिट्ठ।—ऊ. का.

मुखमुली—देखो 'मखमली' (रू. भे.)
उ०—बिणजारौ घणी ई समझाइस करी,पण बांमणी एक ई बात नीं मांनी। आपरी मुखमुली रवत्ती सूं वौ बांमण वास्तै निसैवार दवाई दे दी, पण इण सूं वत्ती मदत सारू वौ बांमणी नै राजी नीं कर सक्यौ।—फुलवाड़ी

मुखम्मल—देखो 'मखमल' (रू. भे.)
उ०—कळवूत रजत सोवन सकाज। सिकळात मुखम्मल फिरंग साज।—सू. प्र.

मुखर-सं० पु० [सं०] १ प्रधान पुरुष।
२ शंख। ३ नेता।
४ नूपुर। ५ काक, कौआ।
६ मुख, चेहरा।
उ०—ऊठतौ अनै पड़तौ अवन, तन विपती सूं तावियौ। मन दुमन थियौ फीकै मुखर, यम सूरजमल आवियौ।—पा. प्र.
७ शब्द।
वि०—१ बातूनी, वाचाल।
२ रुमझुम शब्द करने वाला।
३ द्युतिमान करने वाला, द्योतक, प्रकाशक।
४ कटुभाषी।
५ उपहास करने वाला, मजाकिया।
६ मुख्य, प्रधान।

मुखरातळ-सं० स्त्री०—१ दुर्गा, देवी।
२ मांस-भक्षी पक्षी।
३ रक्तवर्ण मुख।

मुखरिका, मुखरी-सं० स्त्री० [सं०] लगाम, बागडोर।

मुखरित-वि० [सं०] शब्दायमान। (ध्वनि)

मुखरूप-सं० पु०—होठ, ओष्ठ। (अ. मा.)

मुखरोग-सं० पु०—मुख के अन्दर अर्थात् जीभ,दांत, मसूड़ों आदि में होने वाला रोग। ये प्रायः ६७ रोग माने गये हैं।

मुखलांगळ-सं० पु० [सं० मुख-लाङ्गल] सूअर, शूकर।

मुखलेप-सं० पु० [सं० मुखलेपः] १ शोभा व सुगंध के लिये मुख पर किया जाने वाला लेपन।
२ एक मुख रोग विशेष।

मुखवयंड—देखो 'वयंडमुख' (रू. भे.)
उ०—सिहंड-ध्वज मुखवयंड धजसंड। प्रचंड रुंड मुंडमाळ परचंड।—सू. प्र.

मुखवयळ—सं०स्त्री०—मुख की शोभा, मुख की कान्ति।

मुखवाद-सं० पु०—बहस, विवाद।
उ०—ठाकर अब रहिया चित मठिया,बुद सटीया करणा मुखवाद। पर उपगार न जांणै प्रांणी, सुद बुद जांणण सरसवाद ......।
—अज्ञात

मुखवास—देखो 'मुखवास'(रू. भे.)
उ०—१ तत मनसा भोजन दिव तिम तिम, जळ मुखवास अगै कहिया जिम।—सू. प्र.
उ०—२ ऊपरा कपूर, पांन, बीड़ा, सोपारी, केसरि, ताड़ां, लौंग, डोडा, काथा, चूंना संजुगम मुखवास मुंहछण दीजै छै।—रा.सा.सं.
उ०—३ ऊपर दीधा अति प्रबळ, पांन लविंग मुखवास। जस लीधौ जीमाड़नै, सहू कहै साबास।—श्रीपाल रास
उ०—४ हिवइ मुखवास दीजै छै ते केहवा वांकडी वेल सोपारीनी फाल, नीली सोपारी ते पणि केसरकपूरवासित; वली तणी लीला ताजा लविंग, जाविश्री नइ जाइफल ...।—व. स.

मुखवासिणी-सं०पु० [सं. मुखवासिनी] सरस्वती, शारदा।

मुखवीणा- सं०स्त्री०—एक वाद्य विशेष।

मुखसंभव-सं०पु०—ब्राह्मण, द्विज।

मुखसिखसंधि-सं०स्त्री०—ललाट, भाल।

मुखसोस-सं०पु० [सं. मुखशोष] मुख के सूजन का रोग विशेष।
(अमरत)

मुखस्राव-सं०पु० [सं०] थूक, खंखार।

मुखस्री-सं०स्त्री० [सं० मुख-श्री] मुख की शोभा, मुखकी कान्ति।

मुखांण-सं०पु०—१ मोक्ष, मुक्ति।
उ०—चवतां रांम मुखांण गयौ चव, भव दुख काढ़ै कीध भव। लव लागां फिर रांम रसण लव,रववंसी इम वहै रव।—र०रू०
२ देखो 'मुकांण' (रू. भे.)

मुखा—देखो 'मुख' (रू. भे.)
उ०—१ हरीया कळि मैं आय कै, कहा करै नर कूर। आसी वरीयां अंत की, मुखा परैगी धूर।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज
उ०—२ हरीया माया नागनी, बैठी मुखा उबाय। तीन लोक में वस्य रही, जाहू जांउं ताहू खाय।
—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

मुखागनि-सं० पु० [सं० मुख-अग्नि] १ दावानल।
२ यज्ञीय अग्नि।
३ दाह क्रिया की अग्नि।
४ आगिया वेताल।

मुखाग्र-वि० [सं०] जो जबानी याद हो, कंठस्थ।
क्रि० वि०—सम्मुख, सामने, आगे।
रू० भे०—मुखग्ग, मुखग्र।

मुखाघाय-सं० पु०—मुख से बजने वाला वाद्य अलगोजा आदि।
उ०—विराजै मुखाघाय तंती वितंती। वदै आरसी राग वांणी

वर्णंती ।—रा. रू.

मुखात-वि०—मौखिक, जबानी ।

उ०—ग्रोठी एक सारी परठ लिख मुखात समाचार कहि ताकीद घणी देय विदा कियौ ''।—कुंवरसी सांखला री वारता

मुखातर—देखो 'मुकातर' (रू. भे.)

उ०—एक वरदांन फेर सेसनाग रा बेटा सूं मांग लेतौ तौ मरियां मुखातर पावतौ—म्हनै हजार जलम ग्रा इज बींनणीं मिळै।
—फुलवाड़ी

मुखानिल-सं०पु० [सं०मुख-ग्रनिल] श्वास, सांस ।

मुखामुख, मुखामुखि-क्रि०वि०—१ प्रत्यक्ष, प्रगट ।

उ०—१ तिणी ही न ग्राडौ देखूं तुज्झ, मुखामुख सेव करावौ मुज्झ ।—ह. र.

उ०—२ मुखामुखि म्यलि जु एह,रूप तणु भांगि नलाख्यांन संदेह।

२ मुंह के सामने, चौड़े में ।

३ एक दूसरे के देखादेखी ।

उ०—चव मेछ मुखामुख जोस चढ़ै । पंडवेस सभा निज मंत्र पढ़ै ।
—रा. रू.

मुखारबंद, मुखारबिंद-सं०पु० [सं०मुख-ग्ररविंद]कमल के सदृश मुख, मुख-कमल ।

उ०—१ पदां कंज उण कार नुपरां हीर री प्रभा, पोसाखां चोर री दुती ऊक्ती प्रकास । कीट चंद्र कीर री मुखारबंद बाळी कंत, हासी सुधा सीर री रसमां मंद हास।—चैनजी सांदु

उ०—२ संतां खुद ग्रापरे मुखारबिंद सू फरमायो के ग्रो सगळो भगती री इज परताप है ।—फुलवाड़ी

मुखालपत—देखो 'मुखालिफत' (रू. भे.)

मुखालिफ-वि० [ग्र०] १ विरोधी, शत्रु ।

२ प्रतिद्वन्द्वी, प्रतिपक्षी ।

मुखालिफत-सं०पु०—१ विरोध, शत्रुता ।

२ प्रतिस्पर्धा

रू० भे०—मुखालपत,

मुखि—१ देखो 'मुख' (रू. भे.)

उ०—१ है हरि ग्रनळ सकळ विस व्यापी, नैरा बसौ हक दूरि, । जन हरिदास निजरूप न जांण्यौ, ता पसुवा मुखि धूरि ।
—ह. पु. वां.

उ०—२ ग्रसपति राय इसूं मुखि बोलइ,ग्रा गढ लीजइ धुरि। पाडी भेलि मेलहीइ थांण, तउ जईइ जालहुरि ।—कां. दे. प्र.

२ देखो 'मुख्य' (रू. भे.)

उ०—माहेमीत हरी मन भांणौ, खेड़पती साथे खूंमांणौ । मुखि हरनाथ खीचियां माहे, साथै सांमि धरम छळ साहे ।—रा. रू.

मुखियौ-वि० [सं०मुख्य] १ प्रधान, मुख्य, खास ।

उ०—मुखिया मन मोहण दोहण घर मेढी । गोढै ढेरौ व्है खूंणी में गेढी ।—ऊ. का

२ किसी समाज, ग्राम, जाति या वर्ग का नेता ।

उ०—एक दिन बो हो, डोकरी रौ धणी रूघनाथजी गांव में मुखियौ बाजतौ ग्रर करतौ ज्यूं हूंतौ ।—दसदोख

३ ग्रगुग्रा, ग्रग्रगण्य ।

उ०—करतौ ऊंधी बात, रहता लोही खरड्या हाथ । पर सुखिये दुखियौ ए, ग्रन्यायी में मुखियौ ए ।—जयवांणी

रू० भे०—मुखीयौ, मुख्यौ,

मुखी-वि०—१ मुख से युक्त, मुखवाला ।

२ किसी विशिष्ट दिशा में मुख रखने वाला ।

३ देखो 'मुख्य' (रू. भे.)

उ०—खवास कांमदार मुखी होवै तिणां नुं दुसाला थीरमा, मीसरु दीजै ।—नैणसी

४ देखो 'मुख' (रू. भे.)

मुखीयौ—१ देखो 'मूसक' (ग्रल्पा; रू. भे.)

उ०—परथम कम चढ़ मुखीयै गणपत, पंचांनन रै ग्रखब पलांण ।
—पूरजी भादौ

२ देखो 'मुखियौ' (रू. भे.)

मुख्ख, मुख्खि—१ देखो 'मुख' (रू. भे.)

उ०—मयंक मुख्ख मंजळी करार नेत कंजळी । गरव्व धारि गेहणी, सुरत्त भ्रत सोहिणी ।—मा. वचनिका

२ देखो 'मुख्य' (रू. भे)

मुख्तसर-वि० [ग्र.] १ संक्षिप्त ।

२ सार रूप ।

३ न्यून, थोड़ा ।

मुख्य-वि० [सं०] १ जो सब से ऊपर हो, उच्चतम, श्रेष्ठ ।

२ प्रधान, खास, प्रमुख ।

३ महत्वपूर्ण, ग्रावश्यक ।

४ ग्रपने वर्ग या समुदाय में सब से बड़ा हो, ग्रगुग्रा, नेता ।

रू० भे०—मुखि, मुखी, मुख्ख, मुख्खि,

मुख्यता-सं० स्त्री० [सं०] १ मुख्य होने की ग्रवस्था या भाव ।

२ प्रधानता, श्रेष्ठता, ।

३ विशेषता, खासियत ।

मुख्यपति-सं०पु० [सं० मूष्यपति-महाचोर] चूहा, मूषा ।
(ना. मा)

मुख्यौ—देखो 'मुखियौ' (रू. भे.)

मुगंध—१ देखो 'मुग्ध' (रू. भे.)

२ देखो 'मुग्धा' (रू. भे.)

मुग-सं०पु०—१ देखो 'मूंग' (उ. र.)

२ देखो 'मग' (रू. भे.)

मुगउ—देखो 'मूक' (रू भे) (उ. र.)

मुगट—देखो 'मुकुट' (रू.भे.)
उ०—१ भूप जड़ावै मुगट मझ, रोहण गिर उतपन्न । तिस दीपग प्रतिनिध रतन,प्रभा अपूरव भन्न ।—बां. दा.
उ०—२ नाई बोल्यो-अंदाता, आपरै धारण करण सूं तो मुगट अर नौलखा हार री छिब ई निखरगी ।—फुलवाड़ी
उ०—३ भिळिया इंद इतरा दखिणमुख, घासइ मुगट तियां घमसांण ।—महादेव पारवती री वेलि

मुगटजथा-सं० स्त्री—डिंगल-गीत-रचना का एक भेद, जिसमें वर्णनीय का वर्णन प्रमाण-सहित होता है ।

मुगटधर-सं०पु०[सं०मुकुट+धारिन्]१ मुकुट धारन करने वाला,राजा, २ देवता ।
उ०—धकै क्रोध हर साह जेह वार जुध बटाधर, दुरद मद पटाधर जेम दोवै, धार खग भटा अधटा पड़े छटाधर, जटाधर मुगटधर खेल जोवै ।—हुकमीचन्द खिड़ियो

मुगटबंध—देखो 'मुकुटबंध' (रू. भे.)
उ०—संपेख तेज जम रवि उदै, मुगटबंध वांदै समंद । 'गजबंध' महीपति जोधपुर, जिम अजोधिया रांमचंद ।—गु.रू.बं.

मुगटमण, मुगटमणि—देखो 'मुकुटमणि' (रू. भे.)
उ०—होमाया उण हीज हुतासण माहै , महि एक ऊभा मुगटमण ।
—महादेव पारवतीरी वेळि

मुगटियौ—देखो 'मुकुट' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—डोकरी बिचाळै ई जबाब दियौ—थांरा इण मुगटिया बिचै म्हारै पांडुवां री मांन घणौ वत्तौ है ।—फुलवाड़ी

मुगटौ-सं०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।
उ०—मुलमुल नरमा दोरीआ, स्रीसाप सीसाप बास्ता अधोतरी महिमुंदी दुदांमी भयरव टसरीयां मुगटा सिणीयां कसबी जरबाप....।
—वं. सं.
२ देखो 'मुकुट' (अल्पा; रू.भे.)

मुगट्ट—देखो 'मुकुट' (रू भे)
उ०—कवि तद बोलै 'केहरी' सकवी सूर सुभट्ट । बोध समप्पण धूहड़ां, कुळ रोहड़ां मुगट्ट ।—रा.रू.

मुगत-सं०स्त्री०—१ पृथ्वी । (ना. डिं. को.)
सं०पु०—२ मोती ।
३ आभूषण, अलंकार, भूषण । (अ. मा.)
४ देखो 'मुक्त' (रू. भे.)
उ०—१ इण पाप रा भार सूं जित्तो वेगो मुगत करो तो म्हारो औ बिगड़ियोड़ो जमारो थोड़ो घणो सुधरै ।—फुलवाडी
उ०—२ जे कोई माई री लाल बांमणी री सुध लेवण ने आय जावै, उण री मोल अर सोळै बरसां री खरचौ चुकायनै इण नै आपरै सार्थं लेय जावै तो वा इण पाप करम सूं मुगत व्है जावै ।
—फुलवाड़ी
उ०—३ सकल सुरासुर वंदित पदकज, पुण्यलता घन पाथ । समयसुंदर कहइ तेरी कृपा तें, होत मुगत सुख हाथ ।—सं. कु
उ०—४ कालिंदर दूध रै उनमांन धवळ हंसी हंसतौ बोल्यौ—आ बात अंगै ई सोच करै जैड़ी नीं है । इणसूं म्हैं सराप मुगत व्है जांउला ।—फुलवाड़ी
५ देखो 'मुक्ति' (रू. भे.)
उ०—१ सुणनैं कथा मुगत हरि दीनी, चाल्या विकळ अगाऊ जी,
—गी. रां.
उ०—२ भैरव देव अदेव भलांई, निरखो फिर फिर नैंनां । मुगत तणी साता री मालिक, हरि बिन दाता है नां ।—र. रू.
उ०—३ छटा अलोकिक छाय, ऊंची लहरां ऊपड़े । मुगत निसेणी माय, सुखदेणी असुरां सुरां । —बां. दा.
उ०—४ ऐसी कही हेतु जुगत ए, तिण मुं वेगी मिलै मुगत ए ।
—जयवांणी

मुगतकंठ—देखो 'मुक्तकंठ' (रू. भे.)
मुगतक—देखो 'मुक्तक' (रू. भे.)
मुगतज—देखो 'मुक्तज' (रू. भे.)
मुगतपुरी—देखो 'मुक्तिपुरी' (रू. भे.)
उ०—दीनदयाल भविक कुं मेलै, मुगतपुरी को साथ ।—स.कु.
मुगतफळ—देखो 'मुक्ताफल' (रू. भे.) (अ.मा.)
उ०—नासिका सुक चंच सरिखी, मुगतफळ संजोति । अहिर विद्रम ओपमां, जेहा डसण हीरा जोति ।—रुकमणि मंगळ
मुगतबसन—देखो 'मुक्तवसन' (रू. भे.)
मुगतमाळ—देखो 'मुक्तामाळ' (रू. भे.)
उ०—१ दे गजराज तुरंग द्रब, तोरा सपत वसन्न । मुगतमाळ सरपेच नग, रकमां सात रतन्न ।—रा.रू.
मुगता—देखो 'मुक्ता' (रू. भे.)
उ०—१ आंणी रिख संग कहै विप्र एह । मुगता हो दूध राजिय मेह ।—रांमरासौ
उ०—२ रिस्ट रतन मगवीसे मुनिपदे, सतसठि एकावन्न । सित्तर ने पंचास उलास सुं मुगता सेम सुमन्न ।—स्रीपाळ रास
उ०—३ कंचण खंभ मंडति कीन वरणण छबिकरां । झळहळ क्रंतपूर झळूस मुगता झालरां ।—बां.दा.
मुगताग्रहजथा—देखो 'मुक्ताग्रहजथा' (रू. भे.)
मुगताचर—देखो 'मुक्ताचर' (रू. भे.)
मुगताचाळ-सं०पु०—हंस । (अ. मा.)
मुगताफळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)
उ०—खीची यम वायक कहै, जे न सहै भालाळ । तिण कारण विड तूटसी, मुगताफळ री माळ ।—पा.प्र.
मुगताभखी—देखो 'मुक्ताभक्षि' (रू. भे.)
मुगतामाळ—देखो 'मुक्तामाळ' (रू. भे.)
उ०—मधनायक 'मांडण' हरौ, 'राजौ' भीम भुजाळ । सयळ

छभा पंगति सुहड, जांणक मुगतामाळ ।—गु.रू.बं.

मुगतार—देखो 'मुखतार' (रू. भे.)

मुगतारआंम—देखो 'मुखतारआंम' (रू. भे.)

मुगतारकार—देखो 'मुखतारकार' (रू. भे.)

मुगतारकारी—देखो 'मुखतारकारी' (रू. भे.)

मुगतारखास—देखो 'मुखतारखास' (रू. भे.)

मुगतारनांमौ—देखो 'मुखतारनांमौ' (रू. भे.)

मुगतारी—देखो 'मुखतारी' (रू. भे.)

मुगताळा, मुगतावळि, मुगतावळी—देखो 'मुक्तावळी (रू. भे.)

उ०—अस्टपाग्र सब चंग, काइ तरुणि काइ बाळा। पिक हंसद्द आलाप, कंठ मोहित मुगताळा।—गु.रू.बं.

मुगताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

उ०—१ साहब नोबत सुद्रब, बसन जरकस जवाहर। रतन जड़त सिरपेच, माळ मुगताहळ सुंदर।—रा.रू.

उ०—२ हंस मुगताहळ निसदिन ठूंगै करक काग ते न्यारा। काग कुबुधि सूं नेह न बांधै, ऐसी गहै बिचारा।—ह.पु.वां.

मुगति—देखो 'मुक्ति (रू. भे.)

उ०—१ एक गया भगत्राट, सामिछळ मेल्है कुळ छळ। हेक मुगति साजोत, गया भेदै रवि मंडळ।—गु.रू.बं.

उ०—२ जीवता रह्या तौ थांरौ मूंडो निरखांला अर जुद्ध में खेत रह्या तौ मुगति व्हैला।—फुलवाड़ी

उ०—३ माया मोह भरम की भीता, मोख मुगति कै आडी।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—४ धरम नरम मन जे धरै, भरम करम ना भाजै रे। चरम जिणंद कहै ते चढ़े, परम मुगति गढ़ पाजै रे।—ध.व.ग्रं.

२ देखो 'मोती' (रू. भे.)

उ०—सुंदर पाघ मोड़ सिर सोहै, मुगति पंति लख जगत विमोहै। वचन सहास हुलास विहारै, नयण हरख जुत भिरत निहारै।

—रा.रू.

मुगतिखेत—देखो 'मुक्तिक्षेत्र' (रू. भे.)

उ०—कोटि गउ दिज दांन देत, मरत कासी मुगतिखेत।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मुगतिसजोत, मुगतिसाजोत—देखो 'मुकतिसाजोति' (रू. भे.)

मुगतिसिला—सं०स्त्री० [सं. मुक्ति शिला] सर्वार्थ सिद्ध स्वर्ग से बारह योजना ऊपर का मुक्त जीवों का एक स्थान। (जैन)

उ०—अहे बार देवलोक बारां भलां नगर छइ नव ग्रैवेक। मुगतिसिला पाटण भलुं, तिहां छइ विनु रे विवेक।

—प्राचीन फागु संग्रह

मुगती—देखो 'मुक्ति' (रू. भे.)

उ०—१ नटणी ज्यूं मुगती नचै सदा बास सुर स्यांम।—अ. मा.

उ०—२ तन तारहिगौ जुगती तिळहैं, मन मारहिगौ मुगती मिळहैं।

—ऊ. का.

उ०—३ कांई राजा मन बिलखीयौ, सूना पाटण देस खंधार। कर जोड़ै [इ] नै राई बीनई, देहि बिदा मो मुगती दातार।—बी. दे.

उ०—४ म्हारी मुगती तौ अबै मौत री संगत सूं ई व्हैला। म्हैं तौ आज मरियां पैली ई मरगी—फुलवाड़ी

उ०—५ दुनियां रै जंजाळां सूं मुगती पावण सारू बारै बरस तप करियौ, पण इण उपरांत आ दुनियां तौ सांमी घणौ मन मोयौ।

—फुलवाड़ी

२ देखो 'मोती' (रू. भे.)

मुगतीक—देखो 'मोती' (रू. भे.)

मुगते,—क्रि०वि०—मुक्ति को, मोक्ष को।

उ०—केई देवता थया ए, केइक मुगते गया ए। सुख सासता लहया ए।—जयवांणी

मुगतेसर—देखो 'मुक्तेस्वर' (रू. भे.)

मुगतौ—देखो 'मंगतौ' (रू. भे.)

मुगत्त—१ देखो 'मुक्त' (रू. भे.)

२ देखो 'मुक्ति' (रू. भे.)

उ०—छत्रीसै सुद भादवै एकादसी वरत्त। राजोधर एतां लियां, गौ हरि धांम मुगत्त।—(रा. रू.)

मुगत्यार—देखो 'मुखतार' (रू. भे.)

मुगत्यारी—देखो 'मुखतारी' (रू. भे.)

मुगदर—सं०पु० [सं० मुग्दर] १ एक कुंडलाकार बड़ा पत्थर जिसे हाथ से उठा कर व्यायाम किया जाता है।

२ व्यायाम के लिये बनाई गई भारी एवं मोटी लकड़ी, मोगरी। इसकी बनावट बम्ब की तरह होती है।

३ गदा।

रू०भे०—मुंदगर। मुदगर,

मुगदल्ल—सं०पु०—शस्त्र विशेष।

उ०—गडा गड़ी गिर तणा गडा गिर गिर पड़ै, चड़ाचड़ि ऊछलै मुगदल्ल रहोला।—प. च. चौ.

मुगध—सं०पु०—श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम, बल भद्र। (नां. मा.)

२ गुप्त, छुपा हुआ। (अ. मा.)

३ देखो मुग्ध' (अ. मा., ह. नां. मा.)

४ देखो 'मुग्धा' (रू. भे.)

मुगधता—देखो 'मुग्धता' (रू. भे.)

मुगधप्रिय—सं०पु०[सं. मुग्ध-प्रिय] मदिरा, शराब। (अ. मा.)

मुगधबुद्धि, मुगधबुद्धी—देखो 'मुग्धबुद्धि' (रू. भे.)

उ०—मुगळांण मुगधबुद्धी कि गुर सब्द साधु उपदेसौ। दिन्न मेक उदधि रहणौ, नह मूंचित मगधाण।—गु.रू. बं.

मुगधा—देखो 'मुग्धा' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ के बाळा राइ-कुंआरि, केय मुगधा कुळवंती। के मध्या मांणणी, जिसी सूरज कांयंती।—गु. रू. बं.

उ०—२ मुगधा वेस प्रमांणौ, लखि अति रूप उरवसी लज्यत। पय

घूघर वंध पांणे, सभ्भियो नमसकार सारदा।—सू. प्र.

उ०—३ मुगधा मध्या नै मोडा मिळजावे। पढ-मढ़ प्रारथनां प्रोढा पिलजावै।—ऊ. का.

उ०—४ कुच ऊपजै काची कळी, हिवडै लागौ हाथ। मुगधा जांण्यो रोग मन, बिसर गई सब बात।—बगसीरांम प्रोहितरी बात

उ०—५ निद्रा आसा वेल द्रोह, मन होय मुगधा—केसोदास गाडण

मुगधापण, मुगधापन—देखो 'मुग्धापन' (रू. भे.)

मुगपटण—सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—मुगपटण मन भावतो, कंता केसरी पाग। जिणि कंइसौ पिऊ छइ, ता सुंदर को भाग—व. स.

मुगरब—सं०स्त्री०—देखो 'मगरेब' (रू. भे.)

उ०—उठी विलद दळ असुर, बंधि मुगरबां जनेबां। पेसकबज खंजरां जकड़ वणिया रणजेबां।—सू. प्र.

देखो 'मगरिब' (रू. भे.)

मुगराटी—सं०स्त्री—एक प्रकार का वस्त्र।

मुगळ, मुगल—सं०पु०—१ मुसलमान। यवन।

(स्त्री०मुगळण, मुगळांणी)

उ०—१ जुगळ पाण जोड़ियां, मुगळ सुलतांण न मांनी। चढियो कर चक्र रो, कूंच विक्रमपुर कांनी।—मे.म.

उ०—२ मुगळांण मुगध वुद्धि, कि गुर सब्द साधु उपदेसो। दिन्न मेक उदधि रहणो, नह मूंचित मगधांण।—गु.रू.वं.

उ०—३ डूंम न जांणै देवजस, सूंम न जांणै मोज। मुगळ न जांणै गो दया, चुगल न जांणै चोज।—बां. दा.

२ मुसलमानों के चार वर्गो में से एक।

३ तुर्किस्तान का निवासी, तुर्क।

४ तूर्कों की एक शाखा।

५ मंगोल देश का एक निवासी।

६ पवन, हवा। (ना. डिं. को.)

७ देखो 'मदकळ' (रू. भे.)

उ०—धुब्बै मुगळ अकळ कांठळां सरळ घर। अरळ साबळ भरळ कळ ऊगो।—महाराज जसवंतसिंह रो गीत

रू०भे०—मुगळी, मुगल्ल, मुगुल्ल, मुग्गळ, मुग्गुळ, मुळगळ, मूंगळ, मूंगल,

मुगळांणी—वि०—१ मुगलों का, मुगल सम्बन्धी।

२ मुगल जाति या वर्ग का।

मुगळांराव—मुसलमान बादशाह।

उ०—मुगळांराव तणै जवाब मरोड़ै, घर घातियां निबाबां घाव। चालियौ काळ जड़ाळ चुअंती, रूपा तणै कटहड़ै राव।—जोगीदास कवारियो

मुगळी—वि०—१ मुगलों की, मुगलों सम्बधी।

उ०—जाजली फोज मुगळी सजोर। कर दिली सिली दस्तूर कोर।—वि. सं.

२ देखो 'मुगळ' (रू भे.)

उ०—विकराल काळ मुगळी अजाग। खटपटी आंण रण बीच खाग। खरंयि उभी हय पदन खेह मंडियो अहमदपुर अनंत मेह। वि.सं.

मुगळेस—सं०पु० [उ. मुगल+सं०ईश] मुगल बादशाह।

उ०—जिकै बज्रपात जिसड़ा वचन सुणतांही पातसाह रा मन मैं भी पातसाही करण री आधी आस रही। जठै दारा नूं उपालंभ देर पछतावा रै प्रमांण सोक रा समुद्र मैं मग्न मुगळेस इण रीति कही।—वं.भा.

मुगल्ल—देखो 'मुगळ' (रू. भे.)

उ०—१ मुगल्लां न गो दिल्लीस थांणां मिळण। हींदवांणां तणों छात हालै।—गोविंद बारहठ

उ०—माझी मीर बलक्की मल्लं, मीर सैद पट्टांण मुगल्लं। खारी और सजोर बुखारी, घर काबली विलाति खंधारी।—रा.रू.

मुगवण, मुगवन—सं०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र

उ०—हीरपट्ट साउला विलिविलिया नरम्म खमी उभयखरम्म बांमखरम्म वांम सऊआ मुगवनां मांगलियां वयरागरां हीरागरां।—व. स.

२ मूंग के पौधे के समान एक पौधा। वनमूंग।

३ मोठ।

मुगातर—सं०पु०—देखो 'मुकातर' (रू. भे.)

उ०—थैं दूजा सगळा कळाप छोड़ फगत एक कौल करौ तौ मरधां ईं मुगातर पाऊं।—फुलवाड़ी

मुगाळतौ—सं०पु० [अ०मुगालतः] १ धोखा, छल, प्रपंच।

२ भ्रम, संदेह, गलत फहमी।

३ त्रुटि, भूल।

मुगिति, मुगीती, मुगुत—देखो 'मुक्ति' (रू. भे.)

उ०—मुगुत चिहुर सिरि मंडि वछि कठ तुळसी वासी। 'भोजाउत' भुज-बळहि करहि करिमर काळासी।—अ. वचनिका

मुगुळराइ—मुगल बादशाह।

उ०—जउंणिपुरी अजोध्या खड़िय जाइ। रइयत्ति लोक किय मुगुळराइ।—रा.ज.सी.

मुगुल्ल—देखो 'मुगळ' (रू. भे.)

उ०—पूरब्ब धरा हुइ खूदि पाई। वळियउ मुगुल्ल नीसांण वाइ।—रा. ज. स.

मुग्गर—देखो 'मुद्गर' (रू. भे.)

मुग्गळ. मुग्गुल—देखो 'मुगळ' (रू. भे.)

उ०—१ मिळ मस्स साकणि डाकणि भोत,हलीसक नाच भली विधि होत। घटै दळ मुग्गळ सैयद घांण, पटैत कटै कई सेख पठांण।—मे.म.

उ०—२ पड़ै गज मुग्गळ बाज अपार। बखांणत सूर हथां तिण वार।—सू प्र.

मुग्ध—वि० [सं०] १ नया, नवीन।

२ मोह में पड़ा हुआ, मोहित, आसक्त, लुब्ध।

३ अनजान, भोला, नादान।

४ सरल, सीधा-सादा।

उ०—काळा मुंह कर करद का, दिल थैं दूर निवार। सब सूरत सुबहांन की, मुल्ला मुग्ध ! न मार।—दादूबांणी

५ स्तब्ध- भौंचक्का।

६ मूर्ख, मूढ, अज्ञानी।

उ०—भूला, भोंदू फेर मन, मूरख मुग्ध गंवार। सुमिर सनेही आपना, आतमा का आधार।—दादूबांणी

७ मस्त, मतवाला।

८ मदमस्त।

९ मनोहर, सुन्दर।

१०—निरीह।

११ पागल।

सं०पु०—१ प्रथम गुरु गगण का नाम (र. ज. प्र.)

रू०भे०—मुगंध, मुगध, मुद्ध, मुध्ध, मूंध, मूध,

मुग्धता-सं०स्त्री० [सं०] १ मुग्ध होने की अवस्था या भाव

२ मूढ़ता, मूर्खता, पागलपन।

३ नादानी।

४ सुन्दरता, मनोहरता।

५ सरलता, सादगी।

रू०भे०—मुगधता,

मुग्धबुद्धि-सं०स्त्री० [सं०मुग्ध-बुद्धि] १ बुद्धि रहित, मूर्ख, मूढ।

२ सीधा-सादा, भोला।

३ पागल।

रू०भे०—मुगधबुद्धि, मुगधबुद्धी।

मुग्धा-सं०स्त्री० [सं०] १ साहित्य में वह नवयौवना नायिका जिसमें काम चेष्टाएं जागृत न हुई हों।

वि०वि०—साहित्य में नायिकाओं के विभिन्न भेद किये हैं जिसमें मुग्धा नायिका भी है। साहित्य दर्पण में मुग्धा के पांच भेद किये हैं:—१ **प्रथमावतीर्ण यौवना**—इसमें नवीन यौवन की छटा प्रथम विकसित हुई हो अर्थात् यौवनांकुर फूटने शुरु हुए हों। २ **प्रथमावतीर्ण मदन-विकारा**—जिसमें कामनाओं के विलास पहले पहल आविर्भूत हुए हों, ३ **रतिवामा**—जो रति में संकोच करे। ४ **मानमृदु**—जिसका मान चिरस्थायी न हो और ५ **समधिक लज्जावती**—जो अत्यन्त लज्जाशील हो। इन पांचों अवस्थाओं को देखने से मालूम पड़ता है कि मुग्धा नायिका यौवन में प्रवेश करती हुई काम-चेष्टाओं से परिचय प्राप्त करती है। इसी प्रकार विद्वानों ने इसके १ अज्ञात यौवना, २ ज्ञात यौवना और पुनः १ नवोढ़ा तथा २ विश्रब्ध नवोढ़ा आदि और भेद किये हैं।

२ सुकुमारी, तरुणी। नवयौवना,

३ स्त्री, महिला।

रू०भे०—मुगंध, मुगध, मुगधा, मुध्ध।

मुग्धापण, मुग्धापन-सं०पु० [सं०मुग्धत्व] मुग्धावस्था होने की अवस्था या भाव।

रू०भे०—मुगधापण, मुगधापन,

मुड़-सं०स्त्री० [सं०मुच्] हाथ-पांव आदि के संधि स्थलों पर आने वाली मोच।

उ०—किणी रा पग में मुड़ पड़गी तो किणी रा डील माथै रगड़ आई —फुलवाड़ी

वि०वि०—शरीर अंगों में झटका लगने या अंगों के मुड़ने के कारण संधि स्थलों की नसें अपना स्थान छोड़ देती हैं, जिससे वहां पर सोजन आ जाती है तथा बहुत दर्द रहता है।

क्रि०प्र०—काडणी, पड़णी।

रू०भे०—मुड़क, मुढ़, मुरड़,

मुड़क-सं०स्त्री०—१ मुड़ने की क्रिया या भाव।

२ लचीलापन।

३ नरमी।

४ देखो 'मुड़' (रू. भे.)

रू०भे०—मुड़क्क, मुडक,

मुड़कणौ, मुड़कबौ—देखो 'मुड़णौ, मुड़बौ' (रू. भे.)

मुड़कणहार, हारौ (हारी), मुड़कणियौ—वि०।

मुड़किओड़ौ, मुड़कियोड़ौ, मुड़क्योड़ौ—भू०का०कृ०।

मुड़कीजणौ, मुड़कीजबौ—भाव वा०। कर्म वा०।

मुड़कियोड़ौ—देखो 'मुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

मुड़क्क—देखो 'मुड़क' (रू. भे.)

उ०—मुरड़क मुड़क्क असंध मुड़ै। जुध 'पाल' अनै 'जिदराव'जुड़ै।—पा.प्र.

मुड़क्कणौ, मुड़क्कबौ—देखो 'मुड़णौ, मुड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ मुड़ै साळलै साळलै पै मुड़क्कै। झड़ां ओझड़ां सांड ज्यौं मांड भुक्कै।—रा.रू.

उ०—२ मुड़क्कै कायरां सूर बकै मार मार।—बुधसिंह सिंढ़ायच

मुड़क्कियोड़ौ—देखो 'मुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मुड़क्कियोड़ी)

मुड़णौ, मुड़बौ-क्रि०अ० [सं० मुरणं] १ किसी सीधी वस्तु का बल खा जाना, सीधे खड़े का झुक जाना, दूसरी ओर घूम जाना, मुड़ जाना।

उ०—१ मुड़ै तार कच्चै किनां बार मच्छी। अटै कार जे पंच ही धार अच्छी।—वं.भा.

उ०—२ जंग छत्र दळां विधूंसै 'चंद' जुड़ि। महि पुड़ि भार गया अहि फुण मुड़ि—सू.प्र.

२ धारदार या नोकदार वस्तु की नोक या धार सीधी न रहना, ऊपर से कुछ मुड़ जाना।

३ चलते-चलते किसी दूसरी ओर उन्मुख होना, दिशा परिवर्तन होना।

उ०—१ सिंध वोनूं जणा नै खासी भांय तांई पुगावण नै

आयो। ठेट मारग लग आयनै वौ आपरी थै सांमी मुड़ियौ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ मुड़ै 'उग्रसेण' तणौ 'फतमाल'। लुहां खळकट करै गंज 'लाल'।—सू.प्र.

४ लौटना, वापस आना, पलट जाना।

उ०—१ चोर फीटो पड़नै पाछो मुड़ग्यौ। आछी तरै'जांण लियो के आं तिलां तेल कोनीं।—फुलवाड़ी

उ०—२ पण जंवाई तो विलांण ही हेठो नीं उतारै, साग्गी पगां ही पाछो मुड़णौ चावै है।—दसदोख

५ पराङ्मुख होना, विमुख होना, पृष्ठ फेरना।

उ०—गूंगी नै लाज आयगी। वा अपूठी मुड़नै ऊभगी।
—फुलवाड़ी

६ शरीरांग या मुख पीछे या इधर-उधर फिरना, घूमना।

उ०—१ राजकंवरी पांणी में पग धरियां पै'ली एकर मुड़नै लारै जोयो।—फुलवाड़ी

उ०—२ लारै मुड़नै ई नीं जोयो के उणरा माईत, उणरी ग्वाड़ी अर उणरै कुटम कबीलो कित्तो आंतरै छूट ग्यो।—फुलवाड़ी

७ लकीर की तरह सीधा न होना। घुमावदार स्थिति में होना। टेढा होना।

८ घुमाव लेना।

उ०—अच्छी तरह उडांण, बेबि परमांण बरच्छी। बाग ताग बाहुड़ै, मुड़ै जांणै जळ मच्छी।—मे. म.

९ विरुद्ध होना, विमुख होना।

उ०—बूंदी आइ सम्हाळि बळ, सावधांन करि सरब। 'दूदौ' मुड़ि रहियौ दुसह, पावण जस रण परब।—वं. भा.

१०—छिन्न-भिन्न होना। अस्त-व्यस्त होना।

उ०—तरै सोजत जैतारण रांणा री खोस लीवी। तो ही सींधल जैतारण मांहै था, भागा मुड़ीया रहता।—नैणसी

११ पीछे हटना, खिसकना, पीठ दिखाना।

उ०—१ कमंध स्यांम कांमयं जुटै अरद्ध जांमयं। मुड़ै घड़ा मलेछ्णी, विचार धार भज्जणी।—रा. रू.

उ०—२ मिरजौ नूरमली जुध मुड़ियौ। जोधां जैत प्रवाड़ौ जुड़ियौ।
—रा. रू.

१२ गिरना, पड़ना।

उ०—भोज भुजां बळ थंभणा, मुड़ता गयण समाथ। सांम जगावत सीम बळ, जोड़ै भीम कि पाथ।—रा. रू.

१३ कागज या वस्त्रादि में सलवट पड़ना।

मुड़णहार, हारौ (हारी), मुड़णियौ—वि०।

मुड़िओड़ो, मुड़ियोड़ो, मुड़योड़ौ—भू० का० कृ०।

मुड़ीजणौ, मुड़ीजबौ—भाव वा०।

मोड़णो, मोड़बौ—सक रू०।

मुड़कणो,मुड़कबौ,मुड़क्कणो,मुड़क्कबौ मुडणो, मुडबौ,—रू० भे०।

मुड़दासंख, मुड़दासिंगी, मुड़दासिंघी—देखो 'मुरदासिंघी' (रू. भे.)

मुड़दियौ—वि०—१ क्षीण काय, अत्यन्त कमजोर, मरियल।

उ०—लाली रा इण सराध माथै फगत एक बांमण नै ई जीमावणौ, आ सेठां री मंसा ही। बांमण ई ऐड़ो मुड़दियौ व्है जैड़ो सोधणौ दो कवा ई नीठ खावै।—फुलवाड़ी

मुड़दियो-बुखार—सं० पु० यौ०—जीर्ण-ज्वर।

मुड़दौ—देखो 'मुरदौ' (रू. भे.)

उ०—१ आं सात चरुवां री आंच सूं तो मुड़दा ई मूंडै बोलण लाग जावै।—फुलवाड़ी

उ०—२ सेवट कायौ होय मुड़दा री गळाई पाछो मांचा माथै खूंटी ताण नै सूयग्यो।—फुलवाड़ी

उ०—३ मुड़दा मड़हट में पड़िया नह मावै, सड़िया बासै सब बिकरंद बभकावै।—ऊ. का.

उ०—४ गौ वळग्यो निज गांव थाट घर मंगळ थाया, मुड़दौ देख मसांण चिलमियां चाढण चाहया।—ऊ. का.

उ०—५ गांव सूं एक कोस आंतरै एक बावड़ी ही। उठै च्यारूं मुड़दां नै धरकावण री मतौ करियौ।—फुलवाड़ी

उ०—६ राजाजी च्यारूं सिरदारां रै कांनी हाथ करनै धाकल करता बोल्या—यूं मुड़दा चालै ज्यूं कांई चालो। वेगा क्यूं नीं आवो।—फुलवाड़ी

मुड़ाणो, मुड़ाबौ—क्रि० स० ['मुड़णौ' क्रिया का प्रे०रू०] १ किसी वस्तु को बल देना, सीधे खड़े को झुका देना, दूसरी ओर घुमा देना, मोड़ देना।

२ धारदार या नोकदार वस्तु की धार या नोक सीधी न रहने देना, मोड़देना।

३ चलते-चलते को किसी दूसरी ओर उन्मुख करना, दिशा परिवर्तन कराना।

४ वापस चले जाने या आने के लिये प्रेरित करना, लौटाना

५ पराङ्मुख होने या पृष्ठ फेरने के लिये कहना, विमुख करना।

६ शरीरांग या मुख को पीछे या इधर-उधर घुमाने के लिये कहना।

७ लकीर की तरह सीधा न रहने देना, घुमावदार स्थिति में कराना। टेढा कराना।

८ घुमाव लेने के लिये प्रेरित करना।

९ विरुद्ध एवं विमुख होने के लिये प्रेरणा देना।

१० छिन्न-भिन्न करवाना। अस्त-व्यस्त कराना।

११ पीछे हटने के लिये कहना, खिसकाना।

१२ गिराना, पटकाना।

१३ कागज या वस्त्रादि में सलवट डलवाना।

मुड़ाणहार, हारौ (हारी), मुड़ाणियौ—वि०।

मुड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मुड़ाईजणौ, मुड़ाईजबौ—कर्म वा०।

मुड़ावणौ, मुड़ावबौ—रू० भे० ।

मुड़ायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ बल दिया हुआ, झुकाया हुआ, दूसरी ओर घुमाया हुआ, मोड़ा हुआ ।
२ नोक या धार मोड़ा हुआ ।
३ दूसरी ओर उन्मुख किया हुआ, दिशा परिवर्तन कराया हुआ ।
४ वापस आने या जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, लौटाया हुआ ।
५ परांङ्मुख किया हुआ, पृष्ठ फिराया हुआ, विमुख किया हुआ ।
६ पीछे या इधर-उधर मुड़ाया हुआ, घुमाया हुआ । (मुख) ।
७ घुमावदार स्थिति में कराया हुआ, टेढ़ा कराया हुआ ।
८ घुमाव लेने के लिये प्रेरित किया हुआ ।
९ विरुद्ध या विमुख कराया हुआ ।
१० छिन्न-भिन्न या अस्त व्यस्त कराया हुआ ।
११ पीछे हटाया हुआ, खिसकाया हुआ ।
१२ गिराया हुआ, पटकाया हुआ ।
१३ सलवट डलाया हुआ ।
(स्त्री० मुड़ायोड़ी)

मुड़ावणौ, मुड़ावबौ—देखो 'मुड़ाणौ, मुड़ाबौ' (रू. भे.)
उ०—धुवांधोर आलसां झला री रुड़ावणौ धुस । सेना मुड़ावणौ खळा डळा री साइत । छत्रधारी बना हूं इळा री कोट छोडावणौ, तुड़ावणौ भूखा बाघ गळा रो ताइत ।—महादांन महड़ू
मुड़ावणहार, हारौ (हारी), मुड़ावणियौ—वि. ।
मुड़ाविओड़ौ, मुड़ावियोड़ौ. मुड़ाव्योड़ौ—भू. का. कृ. ।
मुड़ावीजणौ, मुड़ावीजबौ—कर्म वा. ।

मुड़ावियोड़ौ—देखो 'मुड़ायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मुड़ावियोड़ी)

मुड़ासौ—सं०पु०—शिर पर बांधने का वस्त्र, साफा ।
रू०भे०—मुंडासौ,

मुड़ियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ बल खाया हुआ झुका हुआ, दूसरी ओर घूमा हुआ, मुड़ा हुआ ।
२ नोक या धार मुड़ा हुआ ।
३ दूसरी ओर उन्मुख हुवा हुआ, दिशा परिवर्तन किया हुआ ।
४ लौटा हुआ, पलटा हुआ ।
५ पृष्ठ फेरा हुआ, परांङ्मुख, विमुख ।
६ पीछे या इधर-उधर घूमा हुआ, फिरा हुआ । (मुख)
७ टेढ़ा हुवा हुआ, घुमावदार स्थिति में हुवा हुआ ।
८ घुमाव लिया हुआ ।
९ विरुद्ध या विमुख ।
१० छिन्न-भिन्न, अस्त-व्यस्त ।
११ पीछे हटा हुआ, खिसका हुआ ।
१२ गिरा हुआ, पड़ा हुआ ।
१३ सलवट पड़ा हुआ ।
(स्त्री० मुड़ियोड़ी)

मुड़ीयण—सं०पु०—मुड़ने वाला, भागने वाला ?
उ०—मुड़ीयण भुंय थारा महेचा, सत्र सुख सुत्रै न थांणा साय । चंचळ रहै लगांमां चड़िया, महपत गळै सनाहा मांय ।
—माधोसिंग महेचा रौ गीत

मुड़ौ—१ देखो 'मुरदौ' (रू. भे.)
२ देखो 'मुड्डौ' (रू. भे.)

मुचकंद, मुचकंध, मुचकुंद, मुचकुंध—देखो 'मुचुकंद' (रू. भे.)
उ०—१ उभळ कोप उछावार, दुभळ 'अभमल' दरसायौ । काळजवन कथ कहै, जांण मुचकंद जगायौ ।—सू. प्र.
उ०—२ काळ धार कुंडली पूंछ दाबत पलटायौ । किनां काळ बस काळ-जवन, मुचकंध जगायौ ।—मे. म.
उ०—३ कहै एम मुचकुंद सुणी खित्री धरपत्ती । दुरभिख्यै अन दांन जेठ पौ दीयै उकत्ती ।—रा. वंशावली

मुचकोड़णौ, मुचकोड़बौ—देखो 'मचकोळणौ, मचकोळबौ' (रू. भे.)
उ०—वड़ि क [- -] पीडिइ छइ डोकर नी कोइ न करइ सार । आवउ वहुडी भणिउं करउ माइ, मुह मुचकौडी पाछी थाइ ।
—वस्तिग

मुचकोड़ियोड़ौ—देखो 'मचकोळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मुचकोड़ियोड़ी)

मुचणौ, मुचबौ—क्रि०अ०[सं. मुच्] १ किसी धातु के बने पात्र या वस्तु में प्रहार या गिरने के कारण मोच आना ।
२ झुकना ।
३ छूटना, अलग होना ।
उ०—महत लघु जैत कहि एव मिळ, सकळ प्रकासत आप स्रम । रुचिर अन रुचिर कविता रचन, मुचत न जात स्वभाव मम ।
—जैतदांन बारहठ
४ त्यागना ।
उ०—बिन कारन दुख करै, रविस कबहू नहिं मुच्चै ।—अज्ञात
मुचणहार, हारौ (हारी), मुचणियौ—वि० ।
मुचिओड़ौ, मुचियोड़ौ, मुच्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
मुचीजणौ, मुचीजबौ—भाव वा० ।
मुच्चणौ, मुच्चबौ—रू०भे० ।

मुचत—सं०स्त्री०—छोड़ने की क्रिया या भाव ।

मुचळकौ—सं०पु० [तु०मुचल्का] अभियुक्त या अपराधी से लिखवाया जाने वाला एक प्रतिज्ञा पत्र जिसमें अभियुक्त यह प्रतीज्ञा करता है कि भविष्य में वह यदि अपराध करेगा तो अमुक दण्ड का भागी होगा ।

मुचियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ मोच पड़ा हुआ । (पात्र)
२ झुका हुआ ।
३ छूटा हुआ, अलग हुवा हुआ ।
४ त्यागा हुआ ।
(स्त्री०मुचियोड़ी)

मुचिर-सं०पु० [सं०] १ देवता।
२ पवन, हवा।
३ गुण।
४ भलाई।

मुचुकंद, मुचुकुंद-सं०पु० [सं०] १ एक सुविख्यात इक्ष्वाकुवंशीय राजा, जो राजा मानधाता का तृतीय पुत्र था। राम दाशरथि के पूर्वजों में से यह इकतालीसवां पुरुष था।
२ एक वृक्ष विशेष जिसकी छाल एवं फूल औषधि में काम आते हैं। इसे सुगंध वृक्ष कहते हैं।
उ०—चंपक राज चंपक विचकिल स्वरण जूथिका। केतकी पुन्नाग मालती जाय कुसुम कुंद मुचुकुंद।—सभा
रू०भे०—मचकंद, मचकंध, मचकुंद, मचकुंध, मुचकंद, मुचकंध, मुचकुंद, मुचकुंध,

मुच्चणौ, मुच्चबौ—देखो 'मुचणौ, मुचबौ' (रू. भे.)
उ०—हंस जिहां गय तिहां गय, मही-मंडण हवंति। छेहू तांह सरोवरां, जे हंसे (हिं) मुच्चंति।—मा. कां .प्र.

मुच्चियोड़ौ—देखो 'मुचियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री०मुच्चियोड़ी)

मुच्छ—देखो 'मूंछ' (रू. भे.)
उ०—१ जरै अपेय अचळ जळ जांणे,तोड़ै अरर मुच्छ कर तांणे।
—वं.भा.
उ०—२ नटाळि दे भटाळि की जटाळि ऐंचते अभें। अरीन मुच्छ मुच्छ दें स्वमुच्छ खेंचते अभें।—ऊ.का.
२ देखो 'मूछौ' (रू. भे.)
३ देखो 'मुरछा' (रू. भे.)

मुच्छमुंड, मुच्छमुंडौ—देखो 'मूंछमुंडौ' (रू. भे.
उ०—दयाळु व्है न सरवथा व्रथा दया मया दटें। मिळै जु गुंड मुच्छमुंड थुंड ऊट कें थकें।—ऊ.का.

मुच्छित, मुच्छिय—देखो 'मुरछित' (रू. भे.)

मुछंदर—देखो 'मूंछंदर' (रू. भे.)

मुछ—देखो 'मूंछ' (रू. भे.)

मुछार—देखो 'मूंछ' (मह., रू. भे.)

मुछाळ—१ देखो 'मूंछाळ' (रू. भे.)
२ देखो 'मूंछ' (रू. भे.)
उ०—चढ़ भाळ अयोसळ नेत्र चोळ, भ्रगुटी मुछाळ मिळ करत खोळ।—पे.रू.

मुछाळौ—देखो 'मूंछाळ' (अल्पा, रू. भे.)
उ०—नारी होय तो धीरे-धीरे खाय। मरद मुछाळौ तो श्रो भट दे जीम चळू करै।—लो.गी.

मुछि—देखो 'मूंछ' (रू भे.)
उ०—आळस छंडी उठीउ, मुछि मरड्डी वेह। चउद लोक कीधा जिणइ, चिंता करस्यइ तेह।—मा.कां. प्र.

मुछियळ—देखो 'मूंछाळ' (रू. भे.)

मुज—देखो 'मुझ' (रू. भे.)
उ०—ज्यां करां लीखांण अंक, ऐ जोस रा,प्रगट कै वार ज्यां बीरद पायौ। जांणीयौ मुज दिल जगत हथ जांणसी,आवीयां पत्र जोधांण आयौ।—महाराजा मानसिंह

मुजनस-सं०पु०—घोड़ा, अश्व।
उ०—मुजनसां पगे वाजिया माळ, रवि भाळ समी ऊडी रिवाळ। घमघमइ घंट पाखर घिसत्त, मल्हपंता आवइ मदोमत्त।
—रा.ज.सी.

मुजब-क्रि०वि०—१ अनुसार, मुताबिक, माफिक।
उ०—१ दूजां री बात तौ अळगी, कमाई रै मापै जनम देवण वाळा माईत ई उण मुजब ममता करै। कमाई मुजब ई लुगाई नै घणी आछी लागै।—फुलवाड़ी
उ०—२ म्हांनै धापनै मिठाइयां खावण दै, अर थूं थारी मंसा मुजब रिपिया ले लेजै।—फुलवाड़ी
२ तरह से, प्रकार से।
उ०—१ मा'राज स्रीगजसिंघजी रै राज में कमठा इण मुजब।
—नैणसी
उ०—२ खास वां फिर मींदर वलभ कुळ रा इण मुजब तळेटी रै मैं'लां हेट बालकिशनजी रौ मिंदर करायौ।—नैणसी
उ०—इण मुजब घणीं वार कांम पड़चौ जद स्वांमीजी बुद्धी सूं कह्यौ।—भि.द्र.
३ अनुरूप, तुल्य।
उ०—म्हारी हैसियत तौ उण मुजब कोनीं, पण आपनै पाछौ कीं न कीं निजराणौ लै जावणौ पड़सी।—फुलवाड़ी
रू०भे०—मजब, मुजब्ब, मुजाव, मूजब, मूजिब

मुजब्ब—देखो 'मुजब' (रू. भे.)

मुजरउ—देखो 'मुजरौ' (रू. भे.)
उ०—दस दस दिगपाळ दीसइ दस, मिळिया ग्यांन पखइ कळमूळ। दीवांणी मुजरउ देखण नूं, छिलता छडीहथा घण भूल।
—महादेव पारवती री वेलि

मुजराई, मुजरायत-वि०—१ किसी राजा या रईस को मुजरा करने वाला, अभिवादक।
उ०—१ नेक वखत एक विरहमण नै स्यांम को अरज गुजराई है तौ मिलण के लायक एक चारण मुजराई।—दुरगादत्त बारहठ
उ०—२ जदै पयादां उतावळां मुजरायतां खोलणी मांडी। जठै तीजो वट खोलै तिठै लोह। लागौ दीठौ।
—जगदेव पंवार री बात
सं०पु०—३ वह व्यक्ति जो केवल मुजरा करने का कार्य करता हो और वेतन पाता हो।

मुजरिम-सं०पु० [अ०] १ जिस पर कोई कानूनी जुर्म हो, अभियुक्त।
२ जिस पर जुर्म या अपराध का आरोप हुआ या लगाया गया हो।

मुजरौ-सं०पु० [अ०मुज्रा] १ राजा या किसी बड़े आदमी के सामने झुककर किया जाने वाला अभिवादन, नमस्कार, प्रणाम।

उ०—१ पीछै कुसलसिंघजी मा'राज सूं मुजरौ कियौ। तद मा'राज कयौ कूं ठाकरां, सचा छोरू तौ वडै मा'राज रा थे हुवा, अर म्हे छोरू कहण रा छां।—द.दा.

उ०—२ संज्या समै रावजी महिलां पधारीया तरै अपछरा मुजरौ कर नै सीख मांगी।—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—३ हुव्वाहोळ चांनणी लुळलुळ मुजरा लेवती हो।
—फुलवाड़ी

उ०—४ इसड़ी बातां सुणि भीमराजजी उठ मुजरौ कर कही।
—ठाकुर जैतसी री वारता

२ सामान्यतया किया जाने वाला अभिवादन, नमस्कार।

उ०—१ दिन खासौ चढ़ग्यौ तो ई वै गरव-गुमान में पोहरौ देवता रह्या। लोगां सूं जवारड़ा करता रह्या, मुजरा झेलता रह्या।
—फुलवाड़ी

उ०—२ घड़ी लियां चावड़ी कनै आई। मुजरौ कीयौ।
—जगदेव पंवार री बात

३ वेश्या द्वारा बिना नाचे, बैठकर गाया जाने वाला गाना।

४ दामाद को गाया जाने वाला एक लोक गीत।

५ किसी राजा या बादशाह के दरबार में नोकरी हेतु उपस्थित होने की क्रिया या भाव।

उ०—अजमेर रा धणी रो चाकर हुवो। मुजरै पोहतौ, गांव १ दीयो।—नैणसी

रू०भे०—मुंजरौ, मुजरउ,

मुजळी—देखो 'मिजळी' (रू. भे.)

उ०—पाहण गळ बांधे पड़ौ, वेरां बावड़ियांह। पिण मंगण मत पारथी, मुजळां मावड़ियांह।—बां.दा.

मुजवर—देखो 'मुजावर' (रू. भे.)

मुजाब—देखो 'मुजब' (रू. भे.)

मुजायद—देखो 'मुजाहिद' (रू. भे.)

उ०—१ खवाज-बगस हठिखान मुजायद नायक। बळूखांन अजमति इतलुल्ला अजरायक।—सू प्र.

मुजावर-सं०पु० [अ०मुजाविर] १ किसी पीर की दरगाह आदि पर रहकर सेवा कार्य करने वाला मुसलमान।

उ०—१ जड़ खिण अछ ढाहै जग जाहर। मारै वळै हेक मुजावर।
—गो.रू.

उ०—२ सु उठै पीरां रा दरसण तो वेर नुं हुवै जो मरद रा छेहड़ा बांधै, नहींत मुजावर दरसण करावै नहीं।—नैणसी

२ पड़ोसी।

रू०भे०—मुजवर

मुजेवड़ी, मुजोवड़ी—देखो 'मुंजेवड़ी' (रू. भे.)

मुज्ज—देखो 'मुझ' (रू. भे.)

उ०—स्री सरसत गणपत नमसकार, दीजिये मुज्ज वर बुध उदार।
—वि.सं.

मुज्झ—देखो 'मुझ' (रू. भे.)

उ०—१ अंडज्ज, स्वेदज्ज जरा उद्‌भिज्ज, माया सब तुझ न भूलव मुज्झ।—ह.र.

उ०—२ रटै मुज्झ हुं वांणि जै उद्धरेता। तरेसी ज तूं रांम ओतार तेता।—सू.प्र.

मुज्भिम—देखो 'मध्यम' (रू. भे.)

मुज्झौ—देखो 'मुझे' (रू. भे.)

उ०—ढंढण रिखि पूछ्युं भगवंत नइ, अभिग्रह पूगउ मुज्झौ जी।
—स.कु.

मुझ-सर्व० [सं० मह्यम्, प्रा० मज्झं] १ एक आत्मवाची सर्वनाम तथा मैं का रूप जो कर्ता और संबंध कारक की विभक्तियों के अतिरिक्त अन्य कारकों की विभक्तियां लगने पर प्राप्त होता है।

ज्यूं—मुझको, मुझसे, मुझमें इत्यादि।

उ०—१ मूरिख तें मुझ नें गण्यौ, वचन कह्यौ अविचार। जो पदमणि हाथै जीमस्यूं, तो आवुं तुझ वार।—प. च. चौ.

उ०—२ अंतरीख हूंता ऊतर अनड़, आठो परवत आवरू। कहै कविण मुझ हूंतो सबळ, धणी तिको माथै धरूं।—मा. वचनिका.

उ०—३ बूब देऊं छऊं बंभणा मुकी दिइ मुझ मीत। कर जोडी निलवटि करइ, चतुर चोरती चित्त।—मा. कां. प्र.

२ मेरा, मेरी, मेरे।

उ०—१ माधव? करि माहरूं कहिउं, जु मुझ वंछइ खेम। सास लगइ सेवा करिसि, सीत दमयंती जेम।—मा. कां. प्र.

उ०—२ छट्ठ तणौ पारणौ थाके, मुझ घर कीजै आज रे।
—जयवांणी

उ०—३ भगवत्ति आवौ भाई, मुझ मदत स्रीमहामाई। नित पढ़े प्रहस में नांम, त्यां रोरि भंजि विरांम।—मा. वचनिका

उ०४ प्रोहित कहै जाण्यौ छै, एणै मुझ विकार। तो आयौ इण वेला कीजै कवण विचार।—ध.व ग्रं.

३ स्वयं, खुद।

क्रि०वि०—४ मेरे लिये।

उ०—जिणि-करी रा रंजीइ, व्यापारि जीवन्त। माधव! ते मुझ मोकळे, जिम वसि राखूं मन्त।—मा.कां.प्र.

सं०पु०—५ अपनत्व।

रू०भे०—मज्झ, मझ, मुंज, मुज, मुज्ज, मुज्झ, मुझि मुहझि, मूंज, मूंझ, मूझ।

मुझमांनी—देखो 'मिजमांनी' (रू. भे.)

उ०—अठै सेखावत रायमल मिळियो। नै मुझमांनी घोड़ा दिखाया सू रखाया नहीं। —द० दा०

मुझाणौ, मुझाबौ—देखो 'मुरझाणौ, मुरझाबौ' (रू. भे.)

मुझारि–क्रि०वि० [सं० मध्यागारे, प्रा० मज्झाग्रारे] बीच में, मध्य में।
उ०—पंचाली केसि [ग्रहीनि] तांणी, ग्रांणी सभा **मुझारि**। ते दुःख हई थी (नवि) जाइ, करतां कीडि प्रकार।—नळाख्यांन

मुझि—१ देखो 'मुझ' (रू.भे.)
उ०—१ पुरबै जनम की होती गोपक्या, चूक पड़ी **मुझि** मांहीं। —मीरां
उ०—२ दिह सौ वार न तिथ पुरब, लोक लाज कुळ नाहि। हरीया साईं **मुझि** मैं, **मुझि** सांईं कै मांहि। —स्रीहरिरांमदासजी महाराज
उ०—३ डाळ पुकारै मूळ कुं, वागी ग्राई तुझि। जन हरीया ग्रब चेतलै, जुग मैं मरणौ **मुझि**।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज
उ०—४ हरीया कथणी जब कथी, मरम न पाया **मुझि**। ग्रब लिव लागी तुझि सुं, कहन सुनन नहीं कुझि। —स्रीहरिरांमदासजी महाराज
२ देखो 'मुझे' (रू. भे.)
उ०—१ मैं ग्रमली हरिनांव की **मुझि** बाइड़ ग्रावै।—मीरां
उ०—२ हरिया होदै बीच मैं, **मुझि** मिल्या रहमांन। पूरा लिख दीया पटा, खरच न खूटै खांन।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज
उ०—३ हरीयै ग्रौगुन बौह कीया, संक न ग्रांनी कांय। भावै तो **मुझि** बगसीयै, भावै कूंद भराय।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

मुझे, मुझैं, मुझै–सर्व० [प्रा० मज्झम] कर्म ग्रौर सम्प्रदान में होने वाला 'मैं' का रूप, मुझको, मुझसे।
उ०—१ तथा ग्रतीव नम्रता करी सु नम्र मैं तुझैं। महा प्रयोग योग को महा उद्योग दे **मुझैं**।—ऊ. का.
उ०—२ मुझि मिळबौ तुझि हाथि है, तुझि **मुझि** कै नहीं हाथि। हरीयैसा तेरै किता, तेरी **मुझै** ग्रनाथि। —स्री हरिरांमदासजी महाराज
रू०भे०—मूं

मुटकणौ–वि० [सं० मटकन्] बड़ा।
उ०—हळफळ तूट्या हार **मुटकणा** मोती झड़िया। परभातां यूं रात रमण रा भेद उघड़िया।—मेघ

मुटकाचर—देखो 'मुठकाचर' (रू. भे.)

मुटकारणौ, मुटकारबौ–क्रि०सं० [सं० मुट्] १ बोलना, कहना, बात करना।
उ०—१ कोई बात नहीं। कैवता थका मा'रजा **मुटकारै** ही नहीं है। मांडणियां नै इबारत बोलै, बांचणियां रै दूहां रा ग्ररथाव खोलै है। विलम्या बैठ्या है।—दसदोख
उ०—२ रीस में ग्रांटो टुरड़ ग्रर करड़ो ठूंठ हुय रै'यो है. **मुटकारै** ही नीं, ग्रालै घर रा मिनख एक पग रै तांण ऊभ रैया है। —दसदोख
२ भर्त्सना करना, फटकारना।
३ कुचलना, पीसना।
मुटकारणहार, हारौ (हारी), मुटकारणियौ—वि०
मुटकारिग्रोड़ौ, मुटकारियोड़ौ, मुटकारयोड़ौ—भू०का०कृ०।
मुटकारीजणौ, मुटकारीजबौ—कर्म वा०।

मुटकारियोड़ौ–भू०का०कृ०—१ बोला हुग्रा, बात किया हुग्रा, कहा हुग्रा. २ भर्त्सना किया हुग्रा, फटकारा हुग्रा. ३ कुचला हुग्रा, पीसा हुग्रा।
(स्त्री०मुटकारियोड़ी)

मुटबोलौ–वि०—१ बढ़-बढ़ कर बातें करने वाला।
उ०—एक भाई घुनौ, दूजो **मुटबोलौ** ग्रर मुंफट।—दसदोख
२ झूठी शान दिखाने वाला।

मुटाव–सं०पु०—१ तनाव, खिचाव।
२ दूर या दूरस्थ होने की ग्रवस्था।

मुट्ठी–सं०स्त्री० [सं०मुष्टिका] १ हाथ की वह स्थिति व मुद्रा जो पांचों ग्रंगुलियों को हथेली पर समेटने पर बनती है, मुष्टिका।
उ०—नांबरी नियत हम जियत नाहिं, ग्राकास न ग्रावहि **मुट्ठी** मांहि।—ऊ.का.
मुहा०—१ मुट्ठी गरम करणी=रिश्वत देना।
२ मुट्ठी में ग्राणी=वश में ग्राना, काबू में ग्राना।
३ मुट्ठी मैं करणी=वश में करना, काबू में करना, कब्जे में करना।
४ मुट्ठी में होणी=वश में होना, इशारे पर नाचना।
२ उक्त मुद्रा या स्थिति में समाने वाली वस्तु या वस्तु का परिणाम, मात्रा।
ज्यूं—**मुट्ठी** धांन सारू ई तड़पा तोड़ै।
३ थकान मिटाने के लिए शरीर के किसी ग्रंग को हाथ से दबाने की क्रिया।
मुहा०—मुट्ठी मारणी=थकान मिटाने के लिए शरीर पर मुष्टिका का प्रहार करना, हस्त-मैथुन करना।
क्रि०प्र०—दैणी, भरणी, मारणी,
रू०भे०—मुठी, मुठ्ठी, मूंठि, मूंठी, मूटी, मूठि, मूठी
ग्रल्पा०—मूठड़ी, वेठड़ी,

मुठकाचर–सं०पु०—मुट्ठी में समाने लायक छोटी ककड़ी या इसी ग्राकार का काचर।
रू०भे०—मटकाचर, मुटकाचर.

मुठड़ी—१ देखो 'मुट्ठी' (ग्रल्पा., रू. भे.)
उ०—१ रूप नै सजीसी ग्रो थांरी धण ऊजळी ग्रो राज। राज ढोला राखोनी थांरी **मुठड़ी** रे मांय।—लो. गी.
उ०—२ भीलणी का बेर सुदांमा का तंदुळ भर **मुठड़ी** बुकंद। —मीरां
२ देखो 'मूठड़ी' (रू. भे.)

मुठभेड़–सं०स्त्री०—१ सामना, साक्षात्कार, भेंट।
२ दो पक्षों में होने वाली लड़ाई।
३ प्रतिस्पर्धा में होने वाली टक्कर।

मुठांगो–सं०पु०—तरकस, तुणीर।
उ०—तद बादसाह **मुठांगा** रा तीर काढ़ होदे में ढिगली किया। —पदमसिंह री बात

मुठांणी-सं०स्त्री०—तलवार (डिं०को०)

मुठाणौ, मुठाबौ-क्रि०स०—तलवार पकड़ना।

उ०—घोर तोपां जंभीरां बुठाबौ ओळां जेम गोळां, धुकळां मचाबौ जोस अमावै धेधींग। कना हड़ुमांन रौ ऊठाबौ द्रौण प्रळैकाळ, सीस केण तेग रौ मुठाबौ तेजसींग।—जवांनजी आढो

रू०भे०—मुठावणौ, मुठावबौ, मूठाणौ, मूठाबौ, मूठावणौ, मूठावबौ।

मुठावणौ, मुठावबौ—देखो 'मुठाणौ, मुठाबौ (रू. भे.)

मुठियौ—देखो 'मूठियौ' (रू. भे.)

मुठी—देखो 'मुट्ठी' (रू. भे.)

मुठीक—देखो 'मूठीक' (रू. भे.)

मुठीयौ—देखो 'मूठियौ' (रू. भे.)

उ०—तैरी दांतण री मुठीयौ एक वणायौ ले आयौ।
—बिसनी रै बे खरच री वात

मुट्ठी—देखो 'मुट्ठी' (रू. भे.)

उ०—१ सुदामा के दारिद खोयै, बारे की पहिचांन। दो मुट्ठी तंदुळ की चाबी दीन्हो द्रव्य महांन।—मीरां

उ०—२ सीयाळै री रात, मूळी निवार रै मांचै माथै पोढी पड़ी है। पेमजी पग-हाथ दाबै, मुट्ठी देवै है।—दसदोख

उ०—३ फूठरो नुवावै। सगळा गाभा धोवै अर सौरी मुट्ठी देय'र सुवाणै। आखी रात छाती माथै हाथ फेरै अर मन रळी बात वणावै।—दसदोख

मुड—१ देखो 'मुरड' (रू. भे.)
२ देखो 'मूढ' (रू. भे.)

मुडइ—देखो 'मूढ' (रू. भे) (उ. र.)

मुडक—देखो 'मुड़क' (रू. भे.)

उ०—राधा तेरी बोली मांहीं मुडक घणी।—मीरां

मुडणौ, मुडबौ—देखो 'मुड़णौ, मुड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ तरे महाराजा अजीतसंघजी ने राजा सवाई जेसंघ, दुरगदासजी साथे गांव वरडीया रा डेरा सुं पाछा मुडीया सो उदेपूर आया। —रा. वं. वि.

उ०—२ मारग 'वीरम' हर कुळ मंडण, मुडिया तो सूं अभै-मण। मुडियां तणौ हमैं जळ मांभळ, परियां वट जांणै प्रसण।
—गु. रू बं

उ०—३ मुडिया पिंड मैंगळ असी उर्छछळ, रावत विम्मळ लडि पडियं।—गु. रू. बं.

मुडियांण-सं०पु० [देशज] हरिणों की एक जाति व इस जाति का हरिण।

उ०—पाछै रंजक मुडियांण काळे गोरे म्रग खरगोस जांणै न पावै।
—सू० प्र०

मुडियाळ-सं०पु० [देशज.] डिंगल का एक गीत या छंद जिसके प्रथम तीन चरण में १४ मात्राएं तथा चतुर्थ चरण में ३ सगण होते हैं और तुकांत लघु होता है।

मुडियोड़ौ—देखो 'मुड़ियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मुडियोड़ी)

मुडियौ—देखो 'मुंडियौ' (रू. भे.)

मुडुध—देखो 'मुकुटबद्ध' (रू.भे.)

उ०—एकदा सभाइ बइठउ भूप, इंद्र सरीखुं अद्‌भुत रूप। छीगरणा वइगरणा घणा, मंडलीक मुडुधा नहीं मणा।—नळदवदंती रास

मुड्डौ-सं०पु०—१ कुर्सी।

२ सरकंडों की बनी कुर्सी जिसकी बैठक मूंज की बनी होती है।

३ छोटा स्तम्भ जो किसी सीमा या स्थान विशेष पर गाड़ा जाता है।

उ०—नदी रै ढावै पीळा भाटा रौ मुड्डौ रुपियोड़ौ हौ।
—फुलवाड़ी

४ मूंज की बनी पायदार चौकी, पीढा।

रू०भे०—मुड़ौ, मुडौ, मुड्डौ, मुढौ.

अल्पा०—मुढलो

मुड्डौ—देखो 'मुड्डौ' (रू. भे.)

उ०—१ हुळकी मीठी, मधरी बोली में पेमजी मुरली दलाल नैं कैयो अर आप मुड्डै माथै बैठ्यो —दसदोख

उ०—२ बारली बैठक में मांचा-ढोलिया, खुरसी अर मुड्डा ढाळ राख्या हा।—दसदोख

मुढ—देखो 'मूढ' (रू. भे.)

उ०—राजन के राजा मुढ महाराजा, ताजा घर ताकंदा है।
—ऊ. का.

मुढलौ—देखो 'मुड्डौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—घण मुढलै पीव पिलंगां, दोय जणा बात करैं मती ए उपावै।—लो. गी.

मुढेस—देखो 'मूढेस' (रू. भे)

उ०—वडो धन वेस, म खोय मुढेस चवां चित चेत, पुणीं मत प्रेत।—र. ज. प्र.

मुढौ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)

उ०—मुढा आगे साळ नई कराई। और हवद करायो ने ऊपर दिवांणखांनौ करायो।—नैणसी

२ देखो 'मुड्डौ' (रू. भे.)

मुढ्ढ—देखो 'मूढ' (रू. भे.)

उ०—चाह न थी इस सब्द री मंद मती सुण मुढ्ढ। प्रोढ देख धारण पती, मो मन हुती सु गुढ्ढ।—पा. प्र.

मुण—१ देखो 'मुनि' (रू. भे.)
२ देखो 'मून' (रू. भे)

मुणणौ, मुणबौ-क्रि० स० [सं० मुण] १ कह कर सुनाना, कहना, बोलना।

उ०—१ मुणै किता दीधी मऊ, इण फरमांण अधीन। पंच मास अंतर पड़ै, बेळा अधिक बधीन।—वं. भा.

उ०—२ ओछी तिल नकूं नकूं तिल अधकी, मुणतां सुकव करी ले माप। तूं ताहरा रांणा टोडरमल, परियां सारिखी परताप।
—महारांणा प्रताप री गीत

उ०—३ खैंग अलंग हूंता निस खड़िया, ऊगै वीह कमंध हूं अड़िया। छज करि गोळ चहूंदिस छांगां, मुणियौ वैर पिता चौ मांगां।
—सू. प्र.

उ०—४ विचै आवतां बंधनां बांह वाळै, रटै रांम बांणां जती छेदि राळै। मुणै रांमचंद्रेस अद्वीत माया, कहौ कोण आंटै हुई दैत काया।
सू. प्र.

२ वर्णन करना।

उ०—बाल अजोध्याकांड विध, मुणिया सूक्षम मांड। कहै मंछ जिमिही कहूं, केकिधा हिव कांड।—र. रू.

३ सुमिरन करना, ध्यान करना।

उ०—गदा ले खड़ी लांगड़ी अग्र गांमी, भलै मात हिंगोळ हिंगोळ भांमी। मुणीं मैं जिका आदि अन्नादि माई, अवतार ले मांमड़ां धांम आई। मे. म.

४ मनन करना।

५ प्रतिज्ञा करना।

६ पुकारना, पुकार करना।

७ रचना, रचना करना।

८ गुनगुनाना, गुंजन करना।

उ०—दस मास समापित गरभ दीघ रित, मन व्याकुळ मधुकर मुणंति। कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपति प्रसवती वसंति।—वेलि

९ जानना।

उ०—तिणि कुलि मुणीइ संतणु रामो। भुयबलि भंजइ रिउभडिवावो।—सालिभद्र सूरि

मुणणहार, हारौ (हारी), मुणणियौ—वि०।

मुणिओड़ौ, मुणियोड़ौ, मुण्योड़ौ—भू०का०कृ०।

मुणीजणौ, मुणीजबौ—कर्म वा०।

मणणौ, मणबौ, मिणणौ, मिणबौ—रू०भे०।

मुणस—देखो 'मांणस' (रू. भे.)

उ०—टांगर लियै लियै न टोळा, आरण बार अकारी। करसा हूंत पुकारै करसी, मुणसां मारण हारी।
—देवसिंघ कछवाहा री गीत

मुणाळ—सं०पु० [सं०मृणाल] १ कमल।

उ०—कपाळ विसाळ सिंघाळ किसव, बडाळ भुजाळ उजाळ विसन्न। मुणाळ भुआळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।
—ह.र

२ कमल की नाल।

३ कमल की जड़।

४ हंस।

उ०—१ कवि तो राता धमळ कळोधर, भावठि भंजण लील भुवाळ। लहुवै सरै वसंता लाजै, मांण सरोवर तणा मुणाळ।
—ईसरदास बारहठ

उ०—२ जांणतां तूझ न जांण्यौ-जाय। काया तो पाखै दाखै काय। मकोड़ी कीट पतंग मुणाळ, भिखंग तुं हीज तुं हीज भुआळ।
—ह. र.

उ०—३ खंजन नेत्र मुणाळ गति, नासा दीपक लोय। ढोलौ रूळीयायत हुयौ. जब धन दीठी जोय।—ढो. मा.

रू०भे०—मणाळ,

मुणिद—देखो 'मुनींद्र' (रू. भे.)

उ०—१ मुणिद चाहै तो वेस्या मेल्हि।—रांमरासौ

उ०—२ इण प्रस्तावैं समोसरचा, केवलधार मुणिंद। चित्त मां अति उच्छक थई, वांदण चाल्यौ नरिंद।—वि.कु.

मुणि—देखो 'मुनि' (रू. भे.)

मुणिपवर—देखो 'मुनिप्रवर' (रू. भे.)

मुणिवर—देखो 'मुनिवर' (रू. भे.)

उ०—भवि पहिलेरइ बंभणि हूंती, कडुउं तूंबु मुणिवर दिंती। नरग सहीवलि साहुणि हुई, पांचह पुरिस नियाणु धरेई।
—सालिभद्र सूरि

मुणिस—सं०पु०—युद्ध।

मुणिसगुर—सं०पु०—योद्धा, सुभट, वीर।

मुणिसाळ—सं०पु०—मानव श्रेष्ठ।

उ०—परळ जळ गरळ दळ जळै पांडेसवौ, नरा अंत कळै कळै बळै नीड़ौ। केहरी बियौ मुणिसाळ रळतौ कळै, ताइयां जांणियौ काळ तीड़ौ।—रावभीमसिंघ हाडा रौ गीत

मुणिसुव्वय—देखो 'मुनिसुव्रत' (रू. भे.) (जैन)

मुणि, मुणिइ—देखो 'मुनि' (रू. भे.) (जैन)

मुणीसर—देखो 'मुनीस्वर' (रू. भे.)

उ०—सकलचंद मुणीसर सील उन्नतिकार, समय सुंदर सदा सुख अपार।—स कु.

मुतअल्लिक—क्रि०वि० [अ०] विषय में, सम्बन्ध में।

सं०पु०—नौकर, मुलाजिम।

वि०—सम्बन्धित।

रू०भे०—मुतलक, मुतलिक,

मुतफरकात—सं० स्त्री० ब० व० [अ० मुतफर्रिकात] १ भिन्न-भिन्न विविध।

२ फुटकर खर्च की मदें।

३ किसी एक ही गांम के अंतर्गत जमीन के अलग अलग टुकड़े।

मुतबळ—देखो 'मलळब' (रू० भे.)

मुतरज्जिम—सं० पु०[अ० मुतर्जिम] अनुवाद करने वाला, तर्जुमा करने वाला। अनुवादक,

मुतलक—देखो 'मुतअल्लिक' (रू. भे.)

उ०—उमराव मुतलक उण मरल में बात न काढी हल चल उण में जाहिर नहीं हुई।—नी. प्र.

मुतळब, मुतलब—देखो 'मतळब' (रू.भे.)

उ०—१ अह प्रभु चोधरियां कुळ कवण उबारै अत्तू मत्तू में गत्तू दे मारै। आखी ऊमर आं रो कस आयो, छळ बळ मुतळब कर बसकर छिटकायो —ऊ. का.

उ०—२ जद स्वांमीजी बोल्या ए आपरै मुतळब लाडू दरावै छै। जांणै म्हांनें ई वहिरावसी।—भि. द्र.

मुतळबियौ—देखो 'मतळबी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सेठ स्यामजी जाबक गुण-गाळ, मारजा रै लोही रा पीऊ। मितर नहीं मुतळबिया मितरोळ। —दसदोख

मुतळबी—देखो 'मतळबी' (रू. भे.)

मुतळिक—देखो 'मुतअल्लिक' (रू. भे.)

मुतसवी, मुतसद्दी—सं०पु० [अ०-मुतसद्दी] १ प्रबन्धक, व्यवस्थापक।

२ राजस्थान के वे ओसवाल जो देशी रजवाड़ों की राज सत्ता में महत्व पूर्ण पदों पर कार्य करते थे

३ उक्त पदाधिकारियों के वंशजों का लकब।

उ०—१ सूर सागर कनै बाग ८४ सिरदारां, खवास पासवांन मुतसदीयां सारां आप आपरा न्यारा कराया।—नैणसी

उ०—२ और महाराज री असवारी घणे .... बाळसमंद विराजता तिण सूं मुदत पछां मुतसवी खवास पासवांना रा डेरा जुदा-जुदा सु हुवोड़ा है।—नैणसी

३ मुंशी, पेशकार, लिपिक।

उ०—फिरंगण बीबी मुतसद्दी अंगरेज नूं अंगीकार न करै, जंगी अंगरेज नूं अंगीकार करै।

५ हिसाब-किताब रखने वाला गुमास्ता।

मुताणौ, मुताबौ—देखो 'मूताणौ, मूताबौ' (रू. भे.)

मुताबक, मुताबिक—क्रि०वि० [अ० मुताबिक] अनुसार, बमूजिब।

वि०—१ सदृश्य, तुल्य।

उ०—रिपियौ कांकरै दांई करणौ पड़सी। मकांन ठाकरां नै आपरै मांण-तांण मुताबक बणावणौ होसी।—दसदोख

२ समान, बराबर।

मुतायोड़ौ—देखो 'मूतायोड़ौ, (रू. भे.) (स्त्री०मुतायोड़ी)

मुताळब—वि० [अ०] १ जो तलब करने योग्य हो, मांगने योग्य।

२ बकाया, बाकी, लेने योग्य।

उ०—समत १७२१ रा आसोज बद ७ उकील मनोहरदास कागळ आयौ तिण माहैं लिखीयो छै-मुताळब स्री माहाराजाजी रै रूपीया ८००००० इण भात छै किसत भाळी नै रूपीया २०००००) कीया छै।—नैणसी

सं०पु० १ मांग, तकाजा।

२ बकाया रकम।

३ प्रार्थना।

रू० भे०—मुतालिब,

मुतालबी—देखो 'मतलबी' (रू. भे.)

उ०—सूकौ जोइ सरोज नूं, झटक उड़ै परझाड़। मधुकर मित मुतालबी. बसकर देह बिगाड़।—र. हमीर

मुतालबौ—स०पु० [अ०मुतालब] १ वह रकम जो किसी के यहां बकाया हो।

२ प्राप्त होने योग्य धन।

रू०भे०—मतालबौ,

मुतालिब—देखो 'मुतालब' (रू. भे.)

मुतावणौ, मुतावबौ—देखो 'मूताणौ, मूताबौ' (रू. भे.)

मुतावियोड़ौ देखो 'मूतायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री०मुतावियोड़ी)

मुताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

उ०—वधै गज चांचर साबळ वाहि। मुताहळ गंज किया जुध मांहि।—सू. प्र.

मुति—देखो 'मुक्ति' (रू. भे.)

उ०—खंति मुति अज्जव मद्दव, लाघव पांचमौं जांण।

—जयवांणी

मुत्तफिक—वि० [अ०] जो किसी विषय या राय में सहमत हो, एक मत हो।

मुत्ता—देखो 'मुक्ता' (रू. भे.)

मुत्ताहळ,, मुत्ताहळि—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

उ०—१ चूडी सवि चटकी गई, रलिउ मुत्ताहळ हार। आभरणां ऊतरि पडइ, खाट खमइ नहीं भार।—मा.कां.प्र.

उ०—२ तस्करि लूटी तारुणी,आपा प्रांण-प्रमांणि। मुत्ताहळ अधरइं अडिउं, ते गुंजाहळ जांणि।—मा.कां.प्र.

उ०—३ कांनि कुंडळ सिरि मुगट, मुत्ताहळि गळि माळ। दिव्य वस्त्र दीसइ भलां, वीर जिके वइताळ।—मा.कां.प.

मुत्ति—१ देखो 'मुक्ति' (रू. भे.)

२ देखो 'मोती' (रू. भे.)

३ देखो 'मूती' (रू. भे.)

मुत्तिमाग—सं०पु० [सं०मुक्ति-मार्ग] मुक्ति या मोक्ष का मार्ग अर्थात् तपस्या, त्याग।

मुत्तियदांम—देखो 'मोतियदांम' (रू. भे.)

उ०—दिपैं गुण निम्मल मुत्तियदांम, सेवुं मन सुद्ध तिको हिज स्वांम।—ध.व.ग्रं.

मुत्ती—१ देखो 'मुक्ति' (रू. भे.)

उ०—कयदांणव मांणव नरिंद किन्नर पय भत्ती। पुरिसादांणिअ पासनाह रेहइ तुह मुत्ती।—स.कु.

२ देखो 'मोती' (रू. भे.)

३ देखो 'मूती' (रू. भे.)

मुत्सवी, मुत्सद्दी—देखो 'मुतसद्दी' (रू. भे.) (मा. म.)

उ०—१ देस रो काम सारो मुत्सदियां नूं देय आप जनांने मांहीं एस करै।—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ अै पण हजूर था और सगळा लोग अमराव मुत्सद्दी था तिण में कुसलसिंह राजा नूं कही।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—३ प्रभात सवेरे दिन ऊगतां ही मुत्सद्दी प्रधान दींवांन बकसी रै डेरे गया।—ठा. राजसिंह री वारता

उ०—४ पाछती गोपालदास रा मुत्सद्दियां नूं हाडां रा मुत्सद्दी कही जे रांणी सूं जुहार कर चढ़ज्यो।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

मुथकदा–सं०पु०—फलित ज्योतिष के २८ योगों में से एक।

मुथरा—देखो 'मथुरा' (रू. भे.)

उ०—मुथरा मांहि वरतिया मंगळ। घण कितूहळ घरोघरि।
—ह.नां.मा.

मुद—सं०पु० [सं०] १ आनन्द, हर्ष, मोद। (ह.नां मा.)

२ उत्साह।

मुदई—देखो 'मुद्दई' (रू. भे.) (मा.म.)

मुदक—सं०पु०—एक आभूषण विशेष। (व. स.)

मुदकारी–वि० [सं०मुद कारिन्] प्रसन्न करने वाला।

उ०—ता अप्र कै सारंगदेव सुत, प्रतिहारी ओरस प्रकट्यो नुत। तोक सुहोत मरी जननी तस, बीसलदेव भयो चिंता बस। धात्री बनिक वधू इक धारी, कुमर ताहि सौंप्यौं मुदकारी। लख्यो दुग्ध तांको सुभलच्छन वेधक मतसन खोजि बिचच्छन।—वं.भा.

मुदग–सं०पु० [सं० मद्गः] १ मूंग।

२ ढक्कन।

३ आच्छादन, गिलाफ।

मुदगर—१ देखो 'मुगदर' (रू. भे.)

उ०—डंड सहत करि दुरत, रवद काचा पळ रौळै। मण बारह मुदगरां, अणा जेही ऊतोळै।—सू.प्र.

उ०—२ अलगी नहीं मूकां रे, जलती में फूंकां रे। बखतावर सगारे, जांणे आंण विलगारे। घणी रे मनुहरां मूसल मुदगरां रे।
—जयवांणी

२ देखो 'मुद्गर' (रू. भे.)

मुदत—१ देखो 'मुद्दत' (रू भे.)

उ० १ टकसाळ व्याज में हैंसो ४, मुदत उप्रंत हुवा, हैंसों ८ तिण रा रु. २०००) री ठोड़। —नैणसी

उ०—२ और महाराज री असवारी घणै ...... बाळसमंद विराजता तिण मुं मुदत पछां मुतसदी खवास पासवांनां रा डेरा जुदा जुदा सु हुवोड़ा है।—नैणसी

२ देखो 'मदद' (रू. भे.)

उ०—दार वखांनै नायौ मुदत अरक अंत आयौ खरै। दो पहर जुद्ध दखणांध सुं, कीयौ जुड़ै जोधपुरै। —गु. रू. बं.

३ देखो 'मुदित' (रू. भे.)

मुदति—१ देखो 'मदद' (रू. भे)

उ०—प्रिथम पाट उद्धरै त्याग उधारि खट अन्नां। आच खडग ऊधरै, मुदति सुरतांणां खांनां। —गु. रू. बं.

२ देखो 'मुद्दति' (रू. भे.)

३ देखो 'मदद' (रू. भे.)

मुदमंगळ–सं०पु०यौ० [सं०] आनन्द, खुशहाली,

मुदर—देखो 'मुंदिर' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना. मा,)

मुदरा—देखो 'मुद्रा' (रू. भे.)

उ०—१ कहजे दिगपाळ जटाळ कणा। मुदरा लाय जोगिय आप मणा। —पा. प्र.

उ०—२ माळा मुदरा मेखला रे बाला, खप्पर लूंगी हाथ। जोगिण होइ जुग ढूंढसूं रे, म्हांरा रावळियारी साथ। —मीरां

मुदरामारग—देखो 'मुद्रामारग' (रू. भे.)

मुदराळ—देखो 'मुद्राळ' (रू. भे.)

उ०—१ लंगोटबंध बाला सहूं लाल चिढ्यो मुदराळ वणि। ओभिकै वीर सहूं जागिया, भगवंती नीपाइ भणि —मा. वचनिका

मुदल—देखो 'मुद्दल' (रू. भे.)

मुदांम–सं०पु०—आनन्द का स्थान,

उ०—टीडीरो मुदांम जतन चिड़कोल्या चोळो। लटां सूंट रैवास, घास-फूंसा रो झाळो।—दसदेव

मुदाइत–सं०पु० [अ० मुद्दई] १ उत्तराधिकारी, वारिस, दावेदार, हकदार।

उ०—तठा पछैली सीहा रै पटरांणी और हुती। तिण रै पेट रा बेटा ४ हुता, तिण माहै वडो बेटो टीकायत साहबी रो धणी मुदाइत छै।—नैणसी

२ मुखिया, प्रधान।

३ खास, मुख्य,

उ०—कुंभै कह्यौ–घोड़ा राज, घोडा हीज मुदाइत, जिण रै घोडा रो अधिकार हुसी तिण रो राज।—रावरिणमल री बात।

४ जिम्मेदार, उत्तरदायी।

रू०भे०—मुदाई, मुदायत, मुदेत,

मुदाई—१ देखो 'मुद्दई' (रू. भे)

२ देखो 'मुदाइत' (रू. भे.)

उ०—मांन दळै कायदय मुदाई। सांदू भड़ धीरियो सवाई।
—रा.रू.

मुदादसिल–सं०पु०—एक विशेष प्रकार के पत्थर का टुकड़ा जिसमें हर समय मोर का आकार मालूम होता है।

उ०—दुनि दिल दरपण भई, सरब रूप सम भाय। मो मन भया मुदादसिल मित्र मोर दरसाय। —रज्जब

मुदायत—देखो 'मुदाइत' (रू. भे)

उ०—१ बुद्धि बल सेती कांम, लसकर रो मुदायत सेनापति किसानूं

ठहरावणो।—नी. प्र.

उ०—२ आया मिळण अमीरळ एता। जवनां दळे मुदायत जेता।
—रा. रू.

उ०—३ तरै रावळ केहर रौ वडौ बेटौ केलहण थौ, जिणनूं परौ काढियो, नै लखमण नूं मुदायत कियो।—नैणसी

उ०—४ अठै तिण मांहै जेसल मुदायत वडो कोहर छै।—नैणसी

उ०—५ राव चंद्रसेन नीसरीयौ। देवड़ौ बीजौ हरराजोत पिण नीसरीयो। उहड़ जैमल मुदायत होम मंडीयौ—रावचद्रसेन री बात

उ०—६ विरवं के तुम नायक और सबके मुदायत। सो जंग की ढील मैं वरस जैसी सायत। —रा. रू.

मुदायले, मुदायलौ—देखो 'मुद्दालेह' (रू. भे.) (मा. म.)

मुदार-सं०पु० [अ० मदार] १ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी, भार।

उ०—१ ईयां रै परधांन जैतमल रै ऊपर मुदार।—नैणसी

उ०—२ सरब कांम नांमै-लेखै री मुदार बेटे ऊपर और देवीदास रै ठाकुरां रै दरसण री प्रतीज्ञा सो सहर सूं बाहिर अधकोस देहरौ तठै स्री लिखमिनाथजी बिराजै सो देवीदास नित दरसण करवानै जावै। —पलक दरियाव री बात

उ०—३ पछै कितरेह दिने तेजसी दरबार आया। पछै एक दिन राव अरोगता था। तद रावजी रै कांम रौ मुदार अभा माथै थौ।
—राव मालदे री बात

२ निर्भरता।

उ०—१ साहबी सारी री मुदार राव रिणमल ऊपर सु मेवाड़ रा रजपूतां नै स्वावै नहीं।—नैणसी

उ०—२ लाखे रै माथै कुंवर पदै री मुदार। सरब राज लाखे साऊ हुवौ। बलोचां री जाइगा वंगी देस। घणौ पांणी घणी नदी
—लाखा फूलांणी री बात

३ आश्रय, सहारा, आधार।

उ०— १ पण ईछना करचां मौत ई कद आवै? इण छळ रै टाळ जीवण रो दूजो मुदार ई कांई चुणती। पण औ मुदार कठै जाय छूटैला—कीं बेरौ नीं। —फुलवाड़ी

मुदाळौ—देखो 'मुद्राळ' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—मुदाळा प्रताप कोट साबूत राखियो मारू, सादूळा पटैत वाळा खूंगाळा सारीख।—महादांन मडडू

मुदित-वि० [सं०] आनन्दित, हर्षित, प्रसन्न, खुश।

उ०—१ नमो स्रस्टा त्वस्टा अगम ऊतक्रस्टा अह नमो। नमो स्रेस्टी जेस्टी मुदित परमेस्टी मह नमो।—ऊ. का.

उ०—२ भोळा भोळा बाळ, करै रोळा रुड़कावै। भोळा भर घर लाय मुदित मोघाबां पावै।—दसदेव

सं०पु०—१ रति क्रिया में एक प्रकार का आलिंगन।

२ देखो 'मदद' (रू. भे.)

रू०भे०—मुदय, मुदत, मुदति, मुदीत, मूदति, मूदती।

मुदितमन-वि०—प्रसन्न चित्त।

रू० भे०—मुदणमन,

मुदिता-सं० स्त्री० [सं०]१ साहित्य में वह परकीया नायिका जो पर-पुरुष सम्बन्धी प्रेम की अभिलाषा पूर्ण होते देखकर प्रसन्न होती है।

२ प्रसन्नता।

मुदिर-सं० पु० [सं०] १ बादल, मेघ। (डिं. को., नां डिं. को.)

उ०—फ्रासिकार मुदिर निरफळ कढ़त, माता जिम सुत लखि मुवो।
—वं. भा.

२ प्रेमी। ३ लंपट या कामुक व्यक्ति।

४ मेंढ़क।

रू०भे०—मुदर,

मुदी—१ देखो 'मुद्दई' (रू. भे.)

उ०—१ मांहै राजा सूं मालम करियो,करसा ऊभा छै, हुकम करो तौ आवै। तरै हुकम हुवौ। तरै मांहै,पौहता। त्यां मांहै ऊणौ मुदी बोल्यौ, राज्याजी, रांम रांम, राज्याजी समाध्या छौ।
—सरवहिया कहवाट री बात

उ०—२ उठै इये राजा रै किफायत कर देखाळीयो। तद ईये नुं सरव जगात हासल रो मुदी कीयो।—ठाकुरैसाह री बात

उ०—३ सेखावत रावत बड साजै,सुतन 'बहादर' समर सगाह। फौजां तणो मुदी नह फिरियौ, गिरियौ बीच करै गजगाह।
—राजा केसरीसिंह सेखावत रौ गीत

उ०—४ तद जगमालजी भूतां मांहै मुदी थौ उमराव, तिणनै कंवर कह्यौ, कोस ५० घोड़ौ खड़ियो, तिको आळप करै छै, तिण सूं नगर महेवै पोहचायो जोईजै।—जगमाल मालावत री बात

मुदीत—देखो 'मुदित' (रू. भे.)

मुदु—देखो 'म्रदु' (रू. भे.)

उ०—मुदु बायक बोध दियै महिला, प्रिति लागन काळ किये पहिला। महि पुन्न प्रतापहि साध मिळै,हहरै जमराज निकेत हिलै।
—ऊ. का.

मुदेत—देखो 'मुदाइत' (रू. भे.)

उ०—थे मुदेत थाट रा फड़ाया भुजां आभ थांभे। लाट रा लिखाया मैदपाट रा लिखत।—राघोदास सांदू

मुदै—देखो 'मुद्दई' (रू. भे.)

उ०—१ इण फौज मैं मुदै सांगोजी संसारचंदोत हा।—द. दा.

उ०—२ मेड़तिया महाराज दळ किया मुदै करतार। दुंद अमंदी साळुळे, त्यां हंदी तरवार।—रा.रू.

उ०—३ लुद्रवै रावळ भोज (राज) करै। जेसलदे रै भाटी, जो मुदै जेसल माथै।—वरसे तिलोकसी भाटी री बात

मुदोत-सं०पु०—सीसोदियों की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति

मुदौ-सं०पु० [अ० मुद्दआ] १ अभिप्राय, तात्पर्य, आशय।

उ०—१ गुसांई ने कहै नमो नारायण। जद ते बोल्या—नारायण। इण रौ मुदौ ओ म्हां में करांमात कोई नहीं है। नमस्कार नारायण कूं करौ।—भि.द्र.

उ०—२ अबै कहै दया पालो। दया पाल्यां निहाल हुसौ पिण

म्हांनै वांधां कोई तिरो नहीं। इण रो मुदो यो है।—भि.द्र.

उ०—३ पातसाहजी मुनसब तागीर कियो पछै साबत हुवो जिण मुद्दै रो।—द.दा.

२ उद्देश्य, लक्ष्य।

उ० जेसो एम बोल्यो थे मनां में धीर राखो, रोटी जीमि पाछै ई मुदा की बात भाखो।—शि.वं.

३ अर्थ, मतलब, भाव।

उ०—हींण दोख सो हुवै, जात पित मुदो न जाहर। निनंग जेणनै निरख, विकळ वरणण बिन ठाहर।—र.रू.

४ असलियत, वास्तविकता।

उ०—मिळतो मंगण नूं कहै, मुदो करूं मालूम। मारग लागो मत टिको, हाजर नाजर सूंम।—बां.दा.

५ स्वार्थ, गरज।

६ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी, भार।

उ०—१ हमैं ही जैतारण सारीखो सहर वसै छै। मुदो वस्ती रो वांणियां ऊपर छै।—नैणसी

उ०२ फूल रै और बेटो कोई न थो। लाखा ऊपर हीज मुदो हुवो। —नैणसी

७ प्रबंध।

उ०—वरस दोय तो सीहे नुं राव दूदै हासल मेड़तै रो आधो-आध लीयो। मुदो सारो दुदै रै हाथ छै।—नैणसी

८ अवसर, मौका।

९ विषय, प्रसंग, सम्बन्ध।

१०—खुलासा, स्पष्टीकरण।

११ निर्भरता।

उ०—तळाब १ आसळ कन्है छै। पांणी रो मुदो झरणा माथै छै। —नैणसी

रू०भे०—मुद्दो, मूदो,

मुद्गर—सं०पु०[सं०] १ वार व नक्षत्र सम्बन्धी बनने वाले २८ योगों में से एक।

२ तक्षक कुलोत्पन्न नाग।

रू०भे०—मुग्गर, मुदगर,

मुद्दई—सं०पु० [अ०] १ दावा करने वाला, दावेदार, वादी।

२ उत्तराधिकारी, वारिस, हकदार।

३ प्रधान, मुखिया, अगुवा।

४ प्रमुख, खास, मुख्य।

५ शत्रु, वेरी।

६ निर्भर, आश्रित।

रू०भे०—मुदई, मुदाई, मुदी, मुदै, मुदो, मुद्दी, मुद्दे, मुद्दै।

मुद्दका—देखो 'मुद्रिका' (रू. भे.)

उ०—जिहां मांहि जोधा पणूंमांन जेहा। दई मुद्दकां जेणनूं मेघ देहा।—सू.प्र.

मुद्दत—सं०स्त्री० [अ०] १ किसी कार्य या लेन-देन के प्रति निर्धारित की गई अवधि, मयाद।

उ०—कही मैं वायदो कियो थो सो किण भांति जावै थो। जे मुद्दतां नहीं आवतो तो ही हुं बैठो रहितो, अठा सूं ऊठतो ही नहीं। —नी.प्र.

२ समय, काल, वक्त।

३ बहुत लम्बा समय, दीर्घकाल।

४ देर, विलंब।

रू०भे०—मुदत,

५ देखो 'मदद' (रू. भे.)

उ०—कहै साह जिहगीर, खुरम सुरतांण (सुणे रहंत)। तम सूर हम खुदाई, पीर पक्कंबर मुद्दत।—गु.रू.बं.

मुद्दति, मुद्दती—वि० [अ०मुद्दत+रा०प्र०इ०] १ जिसमें कोई अवधि निश्चित की गई हो।

२ जो किसी निश्चित अवधि तक के लिये मान्य हो।

सं०पु०—१ एक प्रकार का बुखार।

रू०भे०—मुदति, मूदति, मूदती,

मुद्दल—सं०पु० [सं०मर्दलः] १ ऋण पर दिया जाने वाला मूलधन।

२ एक प्रकार का वाद्य विशेष।

उ०—भंभा मउंग मुद्दल कडंब झल्लरि हुडुक्क कंसाला। काहुल तिलिमा वंसो संखो, पणवो य बारसमो।—व-स.

रू० भे०—मुदल,

मुद्दालेह—सं० पु० [अ० मुद्दआअलैह] जिस पर कोई दावा या मुकदमा किया गया हो, प्रतिवादी।

रू० भे०—मुदायले, मुवायलो,

मुद्दी, मुद्दे, मुद्दै—देखो 'मुद्दई (रू. भे.)

उ०—१ जो राजा म्हांनूं देस मांहीं काढ़ै, रिणमलां मांही तौ आप मुद्दी छौ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ इतरो विचार कर दरबार रा आदमी सागे देय काजी नै मुद्दै कर, हाथी घोड़ा कपड़ो मेवो रोकड़ बेवड़ा नारेळ टीके मेलिया।—जलालबूबना री बात

उ०—३ सगळा गौड़ एक मत होय उठिया, मुद्दै तो गोपाळदास बीजा भाई सारा हुकम सिर ऊपर झालियो।

—*गौड़ गोपाळदास री वारता*

उ०—४ पण रायधण, कुंवर पदै रावळ रै आगै मुद्दै, रावळ रै जीव प्रांण। बीजा बेटा हता पण रायधण सूं बडो प्यार।

—रायधण री बात

मुद्दो—देखो 'मुदो' (रू. भे.)

उ०—१ दीवांण सुंदरदास ऊपरि कांम रो मुद्दो छै। साह सुंदरदास रो बेटो साह बेणीदास, तिको कुंवर रै हजूर रहै।

—*पलक दरियाव री बात*

उ०—२ परायो सुख अर आपरो दुख घणो लखाया करै। इण मुद्दा

रौ खुलासौ करण सारू आ एक छोटी सी बात है।—फुलवाड़ी

उ०—३ राव जैतसी बिहारीदासोत बीकमपुर में राज करै। बडौ भलौ सरदार, व्रिद्ध भयौ, तीय रै बैटो सुंदरदास वीं पर मुद्दौ सो उवां सुंदरदास भलो सांचौ सरदार।

—भाटी सुंदरदास बीकमपुरी री वारता

उ०—४ दाता रैं धुरि देखि, दांन रो लाधौ दद्दो। सुंब नगौ संग्रहै, माह रै इण सुं मुद्दौ।—ध.वं.ग्रं.

मुद्ध-सं०पु०[सं० मूर्धन] १ मस्तक, सिर।

उ०—नवौ जन्म लै कुंड कंडीर न्हावै, महासुद्ध व्है मुद्ध मां नूं नमावै।—मे.म.

२ मुंड, कटा हुआ सिर।

उ०—जगच्चख भाळत कोतुक जुद्ध, माळा कज संकर ठाळत मुद्ध।

—मे.म.

३ देखो 'मुग्ध' (रू. भे.)

मुद्धरौ—देखो 'मधुर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—जिण समै गहरौ मुद्धरौ मुद्धरौ गाजै है, पवन सीतळ मंद वाजै है।—र. हमीर

मुद्र-सं०पु०—१ पुरुषों की बहत्तर कलाओं में से एक।

२ देखो 'मद्र' (रू. भे.)

३ देखो 'मुद्रिका' (मह., रू. भे.)

उ०—लहै मुद्र चूड़ामणी दीध लीधी।—सू.प्र.

मुद्रक-सं०पु० [सं०] १ मुद्रणालय या छापाखाना का वह अधिकारी जिसके नियन्त्रण में छपाई का कार्य होता है।

२ मुद्रण कार्य या मुद्रण कला का जानकार।

३ एक आभूषण विशेष। (व. स.)

वि०—मुद्रण करने वाला।

मुद्रका—देखो 'मुद्रिका' (रू. भे.)

उ०—१ हिरन्न मै पन्न हीरै जडित्त, सांकळा करग्गै सुसोभित। मुद्रका सु कर-साखा सुभग्ग, मिण जांण दिपै फुण सेस नग्ग।

—गु.रू.बं.

उ०—२ दई दीध सो मुद्रका सीत दीधी। लहै मुद्र चूड़ामणी दीध लीधी।—सू.प्र.

मुद्रड़ी, मुद्रडी—देखो 'मूंदड़ी' (रू. भे.)

उ०—मांणिक-बइठी मुद्रडी करि नव-ग्रहुं अनंत। कंठि जनोई लगलगइ, ग्रंथि त्रिणि त्रय तंत।—मा.कां.प्र.

मुद्रण-सं०पु० [सं०] १ मुद्रणालय या छापाखाने में होने वाला छपाई का कार्य।

२ वस्त्रादि पर की जाने वाली छपाई या अंकन।

३ किसी ठप्पे आदि की सहायता से अंकित किया जाने वाला चिन्ह।

मुद्रणयंत्र-सं० पु० [सं०] छपाई करने वाली कल, प्रेस की मशीन।

रू०भे०—मुद्राजंत्र, मुद्रायंत्र

मुद्रणालय-सं० पु० [सं० मुद्रण+आलय] जहां पुस्तकें, पत्र, दैनिक-पत्र आदि की छपाई का कार्य होता हो छापाखाना, प्रेस।

२ वह स्थान जहां किसी प्रकार की छपाई का काम होता हो।

मुद्रांक-सं० पु० [सं० मुद्रा+अंक] १ सरकारी मुद्राअंकित वह पत्र जिस पर कोई पक्की लिखा-पढ़ी का कार्य किया जाता है, तथा जिस पर अर्जी दावा लिखकर अदालत में पेश किया जाता है। (स्टाम्प)

२ उक्त कागज पर अंकित मुद्रा, चिन्ह, मोहर।

३ डाक-टिकट।

४ छाप, मोहर (स्टैम्प)

५ छाप या मोहर का अंकित किया हुआ चिन्ह।

मुद्रांकित-वि० [सं०मुद्रा+अंकित] १ जिस पर किसी मुद्रा या मोहर का अंकन किया गया हो।

२ शरीर पर विष्णु के आयुध के चिन्ह लगवाया हुआ, (वैष्णव-व्यक्ति)

३ मुद्रा या मोहर अंकित कर अधिकृत किया हुआ, (पत्र)।

मुद्रा-सं० स्त्री० [सं०] १ किसी के नाम की या किसी निर्धारित चिन्ह की छाप, मोहर, (सील)

उ०—छोडिउ पंडु कुमारी पासि तसु मुद्रा लाधी।

—सालिभद्र सूरि

२ अंगूठी, मुद्रिका, छल्ला।

३ ऐसी अंगूठी जिस पर किसी का नाम अंकित हो।

४ प्राचीन समय में मुद्रा या चिन्ह से अंकित अधिकार पत्र जो यात्रा का परवाना माना जाता था।

५ सरकार द्वारा प्रचलित धातु के सिक्के जो वस्तुओं के क्रय विक्रय में काम आते हैं, मुहर, रुपया, पैसा आदि।

उ०—पंच लाख ५००००० मुद्रा, पटा लै जयसिंघ दलेल।

—वं. भा.

६ अर्थ शास्त्र में-किसी सरकारी बैंक द्वारा अधिकृत किया हुआ कागज का नोट, चैक, ड्राफ्ट आदि कागजी मुद्रा जो लेन-देन एवं भुगतान में निर्विरोध काम आते हैं।

७ कोई सिक्का।

८ पदक, तमगा।

९ चपरास पर लगाने का बिल्ला।

१० आधुनिक प्रेसों में छपाई के लिये बने हुऐ धातु के अक्षर।

११ योगियों के कान में पहनने का आभूषण (नाथ एवं सिद्ध)

उ०—१ तरै चेले १ कह्यौ—हाथां रा पाळिया कांय वाढ़ो ? कांनै मुद्रा छै, आंबा रौ वरण फेरो। तरै आ वात गरीबनाथ रै दाय आई।—नैणसी

उ०—२ मुद्रा माळा भेख लू रे, खप्पड़ लेऊं हाथ। जोगिन होय जग ढूंढसूं रे, रावळिया के साथ। —मीरां

१२ भक्त जनों के शरीर पर अंकित विष्णु के आयुधों के चिन्ह।
उ०—१ नभ कंठ पवित्र करिस हूं नरहर, धारै मुद्रा तूझ संखधर। उदर पवित्र करिस अपरंपर, चरणाम्रत तो धरै चक्रधर।—ह. र.
उ०—२ गावै मुख हरजस गोपाळ, मुद्रा छाप तिलक गळ माळ। मांगै भीक फिरै दळ मांह, राति पड़ै नै लागै राह।—रा. रू.
१३ मुखाकृति जो हृदयगत भावों के अनुसार बदलती रहती है।
१४ हाथ, पांव, आंख, मुंह, गर्दन आदि की कोई स्थिति।
१५ देव पूजन में हाथ और अंगुलियों को विशेष प्रकार से समेटने मोड़ने आदि का ढंग।
१६ हठ योग में साधना के लिये शरीर को विशेष प्रकार से समेट कर बैठने का ढंग, अंग विन्यास।
१७ तान्त्रिकों की एक साधना।
१८ तान्त्रिक गुह्य साधनाओं में वह रमणी जो तान्त्रिक अनुष्ठानों में सहसाधिक रहती है।
१९ रहस्य, भेद।
२० साहित्य में वह अलंकार जिसमें प्रस्तुत अर्थ प्रतिपादक शब्दों से किसी अन्य अर्थ का भी बोध होता हो।
रू० भे०—मुदरा, मूदरा,

मुद्राजंत्र—देखो 'मुद्रणयंत्र' (रू. भे.)

मुद्रानंदक-सं० पु० यौ०—एक आभूषण विशेष। (व. स.)

मुद्रामारग-सं०पु० [सं० मुद्रा-मार्ग] मस्तक के भीतर का वह रन्ध्र जहां से योगियों का प्राण वायु बाहिर निकलता है, ब्रह्मरंध्र।
रू० भे०—मुदरामारग

मुद्रायंत्र—देखो 'मुद्रणयंत्र' (रू. भे.)

मुद्राळ-वि० [सं० मुद्रा×आलुच्] जिसने कान में मुद्रा धारण कर रखी हो, मुद्रा धारन करने वाला।
उ०—जुगां वाळी देहारी वेहारी अनुज्जा जयो। मेहा री तन्नुज्जा जयो घंटाळी मुद्राळ।—हुकमीचंद खिड़ियो
सं०पु०—नाथ सम्प्रदांय का योगी।
रू० भे०—मुदराळ,
अल्पा०—मुदाळो

मुद्राळी-सं० स्त्री०[सं० मुद्रा+आलुच्+रा० ई] १ दुर्गा, महाकाली।
उ०—भरै भाल सिंदूर ज्यों ज्वाळ भाळा। मुद्राळी गळै हिंडुळै मुंड माळा। भुजां भांमणां कंकणां सज्ज कीधां, लसै सूळ डैरू खड़गखप्र लीधां।—मे. म.
२ हठयोग में विशेश अंग विन्यास की पांच मुद्राएं—खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी।
३ महादेव, शिव।
४ नाथ सम्प्रदाय का योगी।
५ महात्मा।

वि० जिसने कान में मुद्रा धारण करली हो।

मुद्रिका-सं०स्त्री० [सं०] १ अंगूठी, छल्ला। (व. स.)
२ तर्पण आदि पितृ-कार्य करते समय पहनी जाने वाली कुश की अंगूठी
३ योगियों की कर्ण-मुद्रा।
४ सिक्का, मुद्रा।
५ मोहर छाप वाली अंगूठी।
रू० भे०—मुद्का, मुद्रका, मुद्री,
मह०—मुद्र,

मुद्रित-वि० [सं०] १ मुद्रण किया हुआ, छपा या छापा हुआ।
२ चिन्हांकित, चिन्हित।
३ मोहर किया हुआ।
४ रुका हुआ, बंद।
उ०—जिण री संगति रै प्रभाव सूं स्वरग-लोक रो मारग मुद्रित कराय कुंभीपाक रो निवास भाळियो।—वं. भा.
५ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।
६ अनखिला, अविकसित।

मुद्री—१ देखो 'माद्री' (रू. भे.)
उ०—सच्चवई पिय माय अंबा अंबाली अंबिका। कुंती मुद्री जाइ वउलावेवा नंदणह।—सालिभद्रसूरि
२ देखो 'मुद्रिका' (रू. भे.)

मुधप—देखो 'मधुप' (रू. भे.)
उ०—केतकी मोर मुसळे तुरी केवड़ी, रंग वहै घरा सर रुधर रातौ। ताईयां सेन वाड़ी वचै 'ऊद'तण मुधप रंग रमै मैमंत मातौ।
—तेजसिंह सेखावतरो गीत

मुधरु, मुधरू, मुधरौ—देखो 'मधरो, (रू. भे.)
२ देखो 'मधुर' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—१ अनी ऊंन्हालइ मं विलसीइ, नव योवन गलि लाइइ। मुधरु वाउ राति चांद्रिणी, करइ विलास करइ प्रिय तणी।
—प्राचीन-फागु संग्रह
उ०—२ नाच गाय कर निलजता, रच वप भूसण रास। मार निजारा मोहियो, हंजो मुधरे हास।—बां. दा.
उ०—३ भीणा ओरणा में बाळां पोया मोती मुधरा-मुधरा चिमकता हा।—फुलवाड़ी
उ०—४ सेठां री हुंस हाल मिटी नीं ही। मुधरा-मुधरा मुळकता बोल्या।—फुलवाड़ी
उ०—५ सूरज निगै नीं आवै तौ ई मुधरा-मुधरा ठाडा उजास में कुदरत साव सुभट दीसै।—फुलवाड़ी
उ०—६ आतम अणभै ब्रह्म ग्यांन, मुधरा अमीयाह।
—केसौदास गाडण
उ०—७ उजळी पांखां हंस, लीली पांखां सूवटा, कोयल मुधरी वाणी अर छत्तर धारी मोर।—फुलवाड़ी

उ०—८ चिड़ियां री मीठी चकचक रौ मिठास धुळियोड़ी हवा मुधरी मुधरी बाजती ही।—फुलवाड़ी

(स्त्री० मुधरी)

मुधा—अव्य० [सं०] १ व्यर्थ, निरर्थक।

२ भूल से।

वि०—१ मृषा, झूठ, असत्य।

२ व्यर्थ

सं० स्त्री०—१ असत्यता, झूठ।

२ व्यर्थता।

मुधि—देखो 'मुग्धा'

उ०—निलवटि कस्तूरी तिलक म करिसि मुधि अयांण। सहिजि ससिहर लेखवी, करसि राहु-निवांण।—मा. कां. प्र.

मुध्ध—१ देखो 'मुग्ध' (रू.भे.)

२ देखो 'मुग्धा' (रू. भे.)

उ०—१ थाह निहाळइ दिन गिणइ, मारू आसा-लुध्ध। परदेसँ धांधळ घणा, विरुउ न जांणइ मुध्ध।—ढो. मा.

उ०—२ पावस मास, विदेस प्रिय, धरि तरुणी कुळसुध्ध। सारंग सिखर निसद्द करि, मरइ स कोमळ मुध्ध।—ढो. मा.

मुनंद, मुनंद्र—देखो 'मुनींद्र' (रू. भे.((अ.मा.)

उ०—१ हर क्रत हार मुनंद क्रत हासै। पड़िया जुध कमधज पनरासै।—सू. प्र.

उ०—२ ईख लंका क्षेत्रां त्रेता जुगेतां सग्रांम असौ, उधरेत केता धू अनेता उनंद्र। रुद्र छाक लेता वीर देता राह जेता फरै, मळै हास हेता वेता अनेता मुनंद्र।—बद्रीदास खिड़ियौ

मुन—१ देखो 'मुनि' (रू. भे.)

उ०—१ सिद्ध कपिल मुन सारखां, महिमा जाहर कीध। जननी हंदौ चरण जळ, पावन सिर धर पीध।—बां.दा.

उ०—२ गुर की महमा मुन जन गावैं, मूरख अंधा मरम न पावैं।

—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

२ देखो 'मून' (रू. भे.)

मुनकलब, मुनकलिब—वि० [अ० मुन्कलिब] १ पलटा हुआ, फिरा हुआ।

उ०—नै लस्कर ऊपर मांन मन राखै क्यों जे सिपाई री हाल मुनकलब छै लालची छै।—नी. प्र.

२ औंधा, उल्टा।

३ अस्त-व्यस्त, उथल-पुथल।

मुनकिर—सं० पु० [अ० मुन्कर] मुसलमानों के दो फरिश्तों में से एक जो मुर्दों से कब्र में पूछ ताछ करते हैं। (काल्पनिक)

उ०—मुसलमांन पड़ूतर देवता-जनाजौ दफणायां पछै मुनकिर अर नकीर नांव रा फरिस्ता आवै।—फुलवाड़ी

मुनक्का—सं० स्त्री० [अ०] एक प्रकार की बड़ी दाख, जिसमें बीज होते हैं और वह औषधि में काम आती है, मुनक्कादाख।

रू० भे०—मनकादाख, मनखादाख, मिनकादाख, मिनखादाख।

मुनजन—देखो 'मुनिजन' (रू. भे.)

उ०—वडे वडे मुनजन छले, वै रहते एकंत।

—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

मुनब्बतकारी—सं०स्त्री० [अ० फा०] किसी लकड़ी पर की हुई बेल बूंटों आदि की चित्रकारी।

मुनमथ—देखो 'मनमथ' (रू. भे.)

उ०—गुल नारंग महंदी गुल रेसमी गुल सोहै। मुनमथ का इंद का मुनेस्वरूं का मन मोहै।—सू. प्र.

मुनमाळ—सं०स्त्री० [सं० मुनि+माला] मुनियों की पंक्ति 'मुनि-समाज, मुनि-वृंद।

उ०—जगत दिखायौ जनम दे, पोख करी प्रतिपाळ। ईस्वर नूं उपमा दिए, मात तणी मुनमाळ।—बां. दा.

मुनराज—देखो 'मुनिराज' (रू. भे.)

मुनवर—देखो 'मुनिवर' (रू. भे.)

उ०—तीस कोडि तिन्न कोड देव तन्न, सुर आधी आवीया सहि। दास तणी परिकांम दिखावह, मुनवर रूधा दइत महि।

—महादेव पारवती री वेलि

मुनसप—देखो 'मनसब' (रू. भे.)

उ०—१ सवंत १६७६ रा मंगसर माहे पातसाहजी री हजूर सुं टीको आयौ, मुनसप आयौ। पहली टीकै बैसतां तीन हजारी जात दोय हजार असवार मनसप हुऔ, तिण माहे जागीर पाई।

—नैणसी

उ०—२ 'गजसाह' देखि जंहगीर गह, करि हित कमळ प्रकासियौ। पूजियौ साह मुनसप पटां, 'सूरसाह' साबासियौ।—सू. प्र.

मुनसपदार—देखो 'मनसबदार' (रू. भे.)

उ०—इण मुनसपदार स्रीमहाराजाजी साथै विदा हाजर था सु कीया, दूजां नुं फरमांन हुवा।—नैणसी

मुनसफ—देखो 'मुनसब' (रू. भे.)

उ०·१ मिळवा खांन 'अजन्न' सूं, प्रात हुवौ असवार। रजवाइत मुनसफ तणी, मिळ दीनी तिण वार।—रा. रू.

उ०—२ तिस बखत राव नै छळ द्रोह किया। जोधांण अपणै मुनसफ में लिया।—सू. प्र.

मुनसब—देखो 'मनसब' (रू. भे.)

उ०—१ जदै जवनेस सुरजन रै कहियां श्रीमाउत १६१२ हाडा सिंघदेव नूं सहरसाप १ सहर रै साथ अढाई हजारी २५०० रो मुनसब देर बुंदी रै ऊपर विदा कीधो।—वं. भा.

उ०—२ सिवानूं साहजादी कह्यौ— तूं म्हारौ भाई छै। तूं म्हां साथै मांडव आवै तो तोनूं पातसाहजी सूं अरज करनै मुनसब दिराऊं।

—नैणसी

मुनसबत—देखो 'मनसब' (रू. भे.)

उ०—सो नबाब चढ़ गयौ। केसरीसिंह बैठ रहियौ। मुनसबत तागीर हुवौ।—अमरसिंहजी राठौड़ री बात

मुनसबदार—देखो 'मनसबदार' (रू. भे.)

उ०—१ बाकी तीनूं ही भाई मुनसबदार हुवा। कोई किहीं भाई रो चाकर ग्रासकारियो नहीं हुवौ।—महाराजा पदमसिंह री बात

उ०—२ मुनसबदार थौ सु ग्रसवार २०० तथा ४०० सुं वांसे चढ़ीयौ, सु मेड़तै जातां ग्रापड़ीयौ। —नैणसी

मुनसम—देखो 'मुनसब' (रू. भे.)

उ० सुणि रीझि ग्रकबरसाह, दसकत लिख दिया। पटझरा ग्रसि सिरपाव, मुनसम मेलिया। —सू प्र.

मुनसी—देखो 'मुंसी' (रू. भे.)

उ०—१ वस चित चित विसेख, तरै मुनसी तेडाया। तन विह्वळ दुख तलफ, कळप उपजे निज काया। —रा. रू.

उ०—२ बोली रा बाड़ाह, रीत बिगाड़ा राज रा धोळै दिन धाड़ाह, मुनसी पाड़ै मुरधरा। —ऊ. का.

मुनहार देखो 'मनवार' (रू. भे.)

उ०—मुनहारां हुवै छै. देसीत ग्रारोगै छै। ग्रमलां चाक हुयजै छै।
—रा. सा. सं.

मुनादि, मुनादी—वि० [ग्र० मुनादी] घोषणा करने वाला

सं० स्त्री० [ग्र०] १ घोषणा, ऐलान।

२ डुग्गी या ढोल पीटकर कर ग्राम जनता को सुनाई जाने वाली बात, ढींढोरा।

३ ग्रोकात, हैसियत।

उ०—ब्रह्मा विसन सेस सिव नारद, नर सुरपति ले ग्रादि। गिरही रिखव देव ग्रौतारा, ग्रौर की कौन मुनादि।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मुनाफौ—सं०पु०—क्रय-विक्रय या व्यापार में होने वाला नफा, लाभ, फायदा।

मुनार, मुनारौ—देखो 'मीनार' (रू. भे.)

उ०—१ तिण ऊपर तुरक मेहमेद परदार राजा सूरसिंघजी री वार में मुनारा दोय कराया। —नैणसी

उ०—२ हेकर चढै निहार, गांग मुंनारै उपरै।—देपाळ धंघ री बात

मुनाळ—सं०स्त्री०—१ एक प्रकार का सुंदर पहाड़ी पक्षी।

२ देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)

मुनासब, मुनासिब—वि० [ग्र० मुनासिब] १ उचित, ठीक, वाजिब।

२ यथेष्ट, काफी, पर्याप्त।

३ योग्य, काबिल।

मुनिंतर—देखो 'मन्वंतर'

उ०—तूं बळि तूंहिज व्यास, पिरथ हरि हंस मुनिंतर। जग राख्यो हय ग्रीव, धुंव तूं ग्राप धनंतर। —गजउद्धार

मुनिंद, मुनिंद्र—देखो 'मुनींद्र' (रू. भे.)

उ०—१ इण दोखण ग्रप नह ग्रादरसी। भावी साखि मुनिंद तद भरसी।—सू. प्र.

उ०—२ देस देस सहुकी द्रियै, सूरां नूं स्याबास। ज्यांरी कोतक देख जुध, हुवै मुनिंद्रां हास।—बां. दा.

मुनि—सं०पु० [सं०] १ जो ब्रह्म ज्ञान एवं सूक्ष्मज्ञान की प्राप्ति के लिये मौनव्रत धारण करते हुए ग्रध्ययन, मनन एवं यज्ञादि साधनाएं करता हो, महात्मा, तपस्वी, ऋषि।

उ०—१ मुनि घालै तप जोग बळ, सरग कपाटां हत्थ। वेही ग्रपण कपाट नूं, उघाडण ग्रसमत्थ। —बां. दा.

उ०—२ बडा तत तूझ लहै न विचार, पुरंदर तूझ न जांणै पार। भला मुनि ग्रादि न जांणै भेद, विरंचिय तूझ न जांणै वेद।
—ह. र.

२ त्यागी, वैरागी।

३ जो मौनव्रत रखता हो।

उ०—स्वांमीजी बोल्या—जिसी उण मुनि री मून जिसी सावद्य दांन में थांरै मून है। —भि. द्र.

४ नारद।

५ ग्रगस्त्य।

६ वेदव्यास।

७ बुद्धदेव।

८ ग्रह्नु नामक वसु का एक पुत्र।

९ कुरु राजा के पांच पुत्रों में से एक।

१० रैवत एवं वैवस्वत मन्वन्तर के सप्त ऋषियों में एक।

११ दस विश्व देवों में से एक।

१२ प्रसूत देवों में से एक।

१३ ग्रमिताभ देवों में से एक।

१४ विदेह देश का एक राजा।

१५ एक राजा जो द्युतिमन् राजा के सात पुत्रों में से एक था।

१६ ग्राम का पेड़।

१७ छप्पय छंद का ७१ वां भेद जिसमें १४८ या १५२ लघु होते हैं।

सं० स्त्री०—१८ कश्यप ऋषि की पत्नी,जो प्राचेतस दक्ष प्रजापति की कन्या थी।

१८ सात की संख्या। * (डिं० को०)

रू० भे०—मुण, मुणि, मुणी, मुणीइ, मुन, मूंनी, मूनि, मूनी।

१९ देखो 'मणि' (रू. भे.)

उ०—द्रोण पुत्र मुनि ग्ररजन लीधउं, चरम नूं कवच करणि सु दीधउं। चींतविउं सहू ग्रालि जाइ, दैव सिउं कुणि किंपि न थाइ।
—सालिसूरि

मुनिचीर—सं० पु० [सं०] वल्कल।

मुनिजण, मुनिजन—सं० पु०, ब० व० [सं० मुनि-जन] ऋषि-समाज, मुनिगण, मुनिवृंद।

रू० भे० मुनजण, मूनीजन।

मुनिपट—सं०पु० [सं०] वल्कल।

मुनिपुंगव–सं०पु० [सं०] मुनिश्रेष्ठ, ऋषिराज।

मुनिप्रवर–सं०पु० [सं०] मुनिश्रेष्ठ, ऋषिराज।

रू० भे०—मुणिपवर,

मुनियंद, मुनियंद्र —देखो 'मुनींद्र' (रू. भे.)

उ०—एह छभा असुरांण इंद, मुनियंद्र प्रहारे। ईखे मन हसियौ अंगद, धर छळ धूतारे। —सू. प्र.

मुनियपय–सं० पु०[सं० मुनिपद] मुनि-पद, मुनि की उपाधि।

उ०—तसु अंगोल मुनियपय जोगि, जांणिय सयहत्थि दीखि करै। तयण जिण सासण पभाव पयडंतउ, पहुतउ पाल्हणपुर नयरे। —साह रयण

मुनिराज, मुनिराव–सं० पु० [सं० मुनि+राजन्] ऋषि-मुनियों में अग्रणी, प्रधान-ऋषि।

उ०—१ खूबी न रही काय, खतंगां खंजनां। नेही व्है मुनिराज, विसारि निरंजनां।—बां. दा.

उ०—२ सिध मुनिराव सेव इम साधै। इम रितराज समै आराधै। —सू. प्र.

मुनिवर–सं० पु० [मुनि-वर्य] ऋषि श्रेष्ठ।

उ०—लहियै सोभा लोक मैं, तप करि कसतां तन्न। परतखि वीर प्रसंसियौ, धन्नौ मुनिवर धन्न।—ध. व. ग्रं.

रू०भे०—मुणिवर, मुनवर, मुनीवर,

मुनिव्रत–सं० पु०[सं०] १ ऋषियों-मुनियों द्वारा रक्खे जाने वाले व्रत। २ तपस्या।

मुनिसर, मुनिसरू—देखो 'मुनीस्वर' (रू. भे.)

उ०—सनतकुमार मुनिसरू, नांण्यउ नेह लगार। काज समारयउ रे आपण्यउ, समयसुंदर कहइ सार।—स. कु.

मुनिसुव्रत, मुनिसुव्रतजिन–सं० पु०—जैनियों के बीसवें तीर्थंकर का नाम।

उ०—१ वीसम मुनिसुव्रत जसु साधु तीस हजार। सहस पचासे साध्वी, गणधर जास अढार।—ध. व. ग्रं.

उ०—२ सखि सुंदर रे पूजा सतर प्रकार। श्रीमुनिसुव्रत सांमी केरउ रे, रूप बण्यौ जगिसार।—स. कु.

रू० भे०—मुणिसुव्वय,

मुनींद्र–सं० पु० [सं० मुनि+इन्द्र] १ जो मुनियों में श्रेष्ठ हो, मुनिश्रेष्ठ। २ नारदमुनि।

रू० भे०—मुणिंद, मुनंद, मुनंद, मुनिंद, मुनिंद्र, मुनेंद्र,

मह०—मुंनिंद्रेस, मुनियंद, मुनियंद्र

मुनी—१ देखो 'मुनि' (रू. भे.) (अ० मा०)

उ०—१ अनंग न अंग उमंग इलोळ, हरी पद संगम गंग हिलोळ। निराळिय नीति उदंगळ नांय, मुनी किय मंगळ जंगळ मांय। —ऊ. का.

उ०—२ मिळै मुनी महारुद्र, मिळै, चंद्रांणण अच्छर। मिळै पंख आंमख, मिळै रैणी पति अम्मर।—मा. वचनिका

उ०—३ ढूंढार मैं स्वांमी भीखणजी पासै स्रावगी चरचा करवा आया। बोल्या:—मुनी ने तार मात्र वस्त्र राखणौ नहीं।—भि. द्र.

उ०—४ केइ कहै सावद्यदांन में पुन्य पाप मिस्र न कहिणौ तिण सू सावद्यदांन में म्हैं मून राखां। जद स्वांमीजी मुनी रौ द्रस्टांत दियौ। —भि. द्र.

मुनीउन—देखो 'उनमुनी' (रू. भे.)

उ०—मुनीउन आ गोचरी मुण। निवह मुद्रा तपण नाहि, मीढ रेफ मकार। —र ज. प्र.

मुनीजन—देखो 'मुनिजन' (रू. भे.)

उ०—हरीयां माया पापनी लीया मुनीजन मोहि। दुकीयेक जोवै निजरि भरि, सब जुग लेवै टोहि।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मुनीब, मुनीम–सं०पु० [अ० मुनीब] १ किसी व्यापारी के यहाँ लेखा जोखा व बही-खाते का काम करने वाला कर्मचारी, गुमाश्ता।

उ०—१ सेठ अर मुनीम दोनूं आंख्यां फाटोड़ा एक दूजा रै मूंडा सांम्ही टग-टग भाळता रह्या। —फुलवाड़ी

उ०—२ तीन सौ रिपिया लीना हा जकांरा पांचसौ लिख्योड़ा मिल्या ब्याज न्यारो। आःभूल कींरै वगी? कुड़ी कलम कैयां चाली? मुनीम दोनूं हरांमी, इन्याव रा कांम करै।—दसदोख

उ०—३ धरमराज आपरा मुनीम चित्रगुप्त माथै चिड़ता थका केवण लागा– हाल पतौ को पड़ियौ नीं। इत्ती ताळ व्हैगी, म्हैं कणाकलौ खोटी व्हूं। आं सेठां नैं कांई जबाब देवूं। —फुलवाड़ी

२ खजांची।

३ प्रतिनिधि।

४ अभिकर्त्ता।

रू० भे०—मुनीव.

मुनीमी–सं०स्त्री०—१ मुनीम का कांम।

२ मुनीम का पद,

३ मुनीम को मिलने वाला वेतन।

मुनीव—देखो 'मुनीम' (रू. भे.)

मुनीवर—देखो 'मुनिवर' (रू. भे.)

मुनीस–सं०पु० [सं०मुनि+ईश] १ मुनियों में श्रेष्ठ, प्रधान।

२ नारद मुनि।

उ०—भद्र काळी पीवै स्रोण उमंगै खप्परां भरै, बाजै यूं मुनीस वाळी भेरी नाद बंग।—सूरजमल मीसण

३ विष्णु।

४ नारद।

५ गौतम बुद्ध का एक नाम।

रू०भे०—मुनेस, मूनेस

मुनीसर, मुनीसरू—देखो 'मुनीस्वर' (रू०भे०)

उ०—१ भला मुनिसर म्हारा भाग, आप दयाकर दरसण जे दिया।

कहो मुनीसर किरपा रा कंद, किणविध सूं सेवक सेवा अनुसरे।
—गी. रां.

उ०—२ पुंजराज मुनिवर वंदौ, मन भाव मुनीसर सोहै रे। उग्र करइ तप आकरौ, भवियण जन मन मोहइ रे।—स०कु०

उ०—३ कोई चांपे साथ रौ रे हां, कोई संघटे अणगार, मेघ मुनीसरू।—जयवांणी

मुनीसौ—देखो 'मुनीस्वर' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—पाय उवरांणइ रे वेलु परि जलइ, तन सुकुमाल मुनीपो जी।
—सं० कु०

मुनीस्वर—सं०पु० [सं०मुनी+ईश्वर] १ मुनियों में श्रेष्ठ एवं प्रधान।

२ बृहस्पति।

३ शुक्राचार्य।

४ नारद।

५ विष्णु।

६ शिव, महादेव।

रू०भे०—मुणीसर, मुनिसर, मुनिसरू, मुनीसर, मुनीसरू, मुनेसर, मुनेस्वर,

मुनेंद्र—देखो 'मुनींद्र' (रू. भे.)

उ०—पलासी गजेंद्रां गूद नरेंद्रां नचाया पूर। अंमरां मुनेंद्रां नाच नचाया अनूप।—हुकमीचंद खिड़ियौ

मुनेस—देखो 'मुनीस' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ जपै नर नार उभै कर जोड़, करै सुर सेव तेतीसूं कोड़। नागेस नरेस सुरेस मुनेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।—ह. र.

उ०—२ संगीत व्रत सोहती मुनेस हंस मोहती। अनंग रंग आतुरी प्रिया नचंत पातुरी।—सू. प्र.

मुनेसर, मुनेस्वर—देखो 'मुनीस्वर' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ मुनेसर ध्यांन धरंत महंत, अखै जुग हेकौ ही नांम अनंत।
—ह. र.

उ०—२ मगरूर घतांधत मत्त मदां, उनमत्त मुनेस्वर वत्त अदां।
—मे. मा.

मुफत—देखो 'मुफ्त' (रू. भे.)

उ०—२ मारवाड़ रो माल मुफत में खावै मोडा, सेवक जोसी संग गरीबां दे नित गोडा।—ऊ का.

उ०—२ बिणज म्हारौ धंधौ है। चीज नैं खरीद करूं अर वेचूं। मुफत में कोई चीज देदूं पण मुफत में कोई चीज लूं कोनीं, लखी बिणजारा रौ नांव लाजै।—फुलवाड़ी

मुफतखोर—देखो 'मुफ्तखोर' (रू. भे.)

मुफतखोरी—देखो 'मुफ्तखोरी' (रू. भे.)

मुफती—देखो 'मुफ्ती' (रू. भे.)

मुफर—देखो 'मुफरेह' (रू. भे.)

उ०—अंबर गुलाबी अतर, वंटै विध विध जिणवारां। मंडै अधिक मनुंहार, अमल वंटि मुफर अपारां।—सू. प्र.

२ देखो 'मुफिर' (रू. भे.)

मुफरद—सं०पु० [अ० मुफ़द] १ एक। (२) अकेला।

मुफरह—देखो 'मुफरेह' (रू. भे.)

मुफरि—१ देखो 'मुफिर' (रू. भे.)

२ देखो 'मुफरेह' (रू. भे.)

मुफरेह—सं०पु० [अ० मुफर्रेह] एक प्रकार की औषधि, जिसके सेवन करने से हृदय में उमंग एवं आनन्द का संचार होता है।

वि०—मन में उल्लास एवं उमंग पैदा करने वाला।

रू०भे०—मुफर, मुफरह, मुफरि, . मुफरौ,

मुफरौ—देखो 'मुफरेह' (रू. भे.)

उ०—इयै भांत रहवै। रहितां नायण फूलमती नुं कही एक हूं ऊखध जांणां छां तैसुं तेनुं बोहोत सुख होसी। तद फूलमती कही तौ बणाय तद नायण उठै मुफरौ बणायौ अर खवायौ कुंवर नुं अर फुलमती नुं दोनां ही नुं। तैसुं ए बहुत राजी हुवा ऐ मुफरौ खावै।—चौबोली

मुफलिस—वि० [अ० मुफ्लिस] निर्धन, गरीब, दरिद्र, कंगाल।

मुफलिसी—सं०स्त्री० [अ० मुफ्लिसी १ 'मुफलिस' होने की अवस्था या भाव।

२ गरीबी, निर्धनता। ३ दरिद्रता, कंगाली।

मुफसिल—वि० [अ० मुफस्सल] १ विस्तारपूर्वक, विस्तृत, ब्यौरेवार।

२ स्पष्ट, सरल।

रू०भे०—मुफस्सिल.

मुफस्सिर—सं०पु० [अ०] टीकाकार, भाष्यकार।

मुफस्सिल—देखो 'मुफसिल' (रू. भे.)

मुफिर—वि० [अ०] भागने वाला, पलायन करने वाला।

रू०भे०—मुफर, मुफरि।

मुफीद—वि० [अ०] १ लाभदायक, उपयोगी।

२ यथा योग्य, योग्य, लायक, उपयुक्त।

उ०—पालड़ी में ऐड़ा कांदा निपजै ! वै राज रसोड़ा वास्ते ई मुफीद है ! छतै राजा एड़ा कांदां नै कुण भोग सकै।—फुलवाड़ी

३ अनुकूल।

उ०—कांदा री नेपै वास्तै पालड़ी री जमीं अणूंती मुफीद ही।
—फुलवाड़ी

मुफ्त—वि० [अ०] १ जिसका कोई मूल्य या दाम न हो, बेदाम। जो बिना कुछ भुगतान किये प्राप्त किया जासकता हो।

२ जो बिना किसी मेहनत, परिश्रम या प्रयास से प्राप्त हो गया हो।

३ जो व्यर्थ हो, बेकार हो, निरर्थक हो, निष्प्रयोज्य।

४ अकारण, बेसबब।

रू०भे०—मुफत।

मुफ्तखोर—वि० [अ०] १ जो दूसरों की कमाई या धन मुफ्त में खाता हो। जो हराम का माल खाने का आदी हो।

२ जो दूसरों के सिर पर बोझा बनकर रहता हो।

रू०भे०—मुफतखोर,

मुफतखोरी–सं०स्त्री [अ०] १ 'मुफतखोर' होने की अवस्था या भाव।

२ दूसरों का माल या धन मुफ्त में उड़ाने की आदत।

मुफती–सं०स्त्री०[अ०] मुसलमानों का धर्म शास्त्रवेत्ता'धर्माचार्य,मौलवी।

रू०भे०—मुफ्ती

मुबारक–वि० [अ०] १ मंगलदायक, कल्याणकारी, शुभ।

२ खुश किस्मत, धन्य।

३ जिसके कारण लाभ व बरकत हुई हो।

सं० स्त्री०—१ बधाई।

रू० भे०—मुबारकी, मुबारिक,

मुबारकबाद, मुबाररबाद–सं० पु० [अ०] १ बधाई।

२ धन्यवाद।

३ शुभ सूचना व खुश खबरी।

रू० भे०—मुबारकबादी,

मुबारकबादी–वि०—१ मुबारकबाद देने वाला।

२ देखो 'मुबारकबाद' (रू. भे.)

उ०—बादसाहजी गळे लगाय मिळिया घणी मया कीवी सारां मुबारकबादी दीवी, संसार चैन हुवां री बधाई बांटी।—नी. प्र.

मुबारकी—देखो 'मुबारक' (रू. भे)

मुबारिक—देखो 'मुबारक' (रू. भे.)

उ०—सारी फौज बादसाह नूं मुबारिक मेल्ही।—ठा.जे.

मुबालिग–सं० स्त्री० [अ० मुबालग] १ किसी बात को बढा चढा कर कहने की क्रिया या भाव।

२ उक्त प्रकार से कही जाने वाली बात।

३ अतिशयोक्ति, अतिरंजना।

मुमई—देखो 'ममाई' (रू. भे.)

मुमकिन–वि० [अ० मुम्किन] १ जिसका होना संभव हो, संभव।

२ शक्य।

मुमानियत–सं०स्त्री० [अ०मुमानअत] मनाहि, निषेध, रोक।

मुमारखी—देखो 'ममारखी' (रू. भे)

उ०—इतरै रोसनी हुई। दासी सहेलियां श्रां मुमारखी दीवी।
—जलाल बूबना री बात

मुमुक्षा–सं०स्त्री [सं०] मोक्ष या मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा, कामना।

रू०भे०—मुमुक्षुता, मुमुखता, मुमुखा,

मुमुक्षु–सं०पु० [सं०] वह जिसे मुमुक्षा हो, मोक्ष की कामना करने वाला

उ०—महा अग्यांन नींद में सूता, सब ही जीव अभागी। जाग्या कोई मुमुक्षु चेतन, सो सब से बड़भागी।—स्री सुखरांमजी महाराज

रू०भे०—मुमुक्षू, मुमुखु,

मुमुक्षुता—देखो 'मुमुक्षा' (रू.भे.)

मुमुक्षू—देखो 'मुमुक्षु (रू. भे.)

उ०—जीवन मुक्ति की देहसुं जुगती ग्यांन, मुमुक्षू पाई।
—स्त्री सुखरांमजी महाराज

मुमुखता, मुमुखा—देखो 'मुमुक्षा' (रू भे.)

मुमुखु—देखो 'मुमुक्षु' (रू. भे.)

मुम्मुर—देखो 'मुरमुर' (रू. भे.)

मुरंगी–वि०स्त्री०—मृदुअंगी, कोमलांगी।

उ०—ए जिम मइगलीयउ बरा बीभ विनोदी, जिम धन दरसरा मोरा रे रविदंसरिगयइ कोक मुरंगी. दरसरा चंद चकोरा रे।
—साधु कीरति

मुर–सं०पु० [सं०] १ एक दैत्य, जो ब्रह्मा के अंश से उत्पन्न तालजंघ नामक दैत्य का पुत्र था। इसकी राजधानी चंद्रवती नगरी में थी। इसके वध के लिये विष्णु ने योग माया देवी का निर्माण किया।

२ एक पंचमुखी राक्षस, जो नरकासुर का सेनापति था। इसका वध श्रीकृष्ण ने किया।

उ०—नर नाग सुरासुर जोड़ नथी, कथ वेद पुरांण दुजांण कथी। मुर कीटमधु हण सिंध मथी, रट रे मन राघव दासरथी—र.ज.प्र.

३ एक यवन राजा जो जरासंध का मांडलिक था। इसकी कन्या का नाम मौर्वी था जो घटोत्कच को विवाह दी।

४ एक राक्षस जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था। इसने शिव की तपस्या करके वर प्राप्त किया था। यह कृष्ण द्वारा मारा गया।

५ तीन की संख्या।

उ०—१ इंद्रहू सरस राजस अमास। प्रिय जूथ सात सै मुर पचास।
—सू. प्र.

उ०—२ कळ दह पंच जांण जैकरी, दुज मुर प्रिय अंतै गुरु धरी। भज भज सीता राघव भई, दससिर जेता अघ हर दई।—र.ज.प्र.

६ तीन।

उ० - १ सरब लघु नगण आयुस प्रवण सुर सुरक, तात विध सावित्री कनक रंग तैण। भगु मुनि चढ़ण गज नऊं रस में अभंग,नप मगध देस कुळ विप्र मुर नैण।—र. रू.

उ०—छळ महेस मुर देस, मुओ डीघोड महारिण। परणी अकबर घडा, चढै गज दांतां तोरण।—गु. रू. बं.

७ वेष्ठन, घेरा।

८ मृदंग।

उ०—सतौ हालियौ आगरै चक्र सज्जे, बजै बंब भेरी मुरै त्रंब बज्जे। छळै मेह ज्यों खेह आकास छाई, दिपै चंचळा सेल धारा दिखाई।
—वं. भा.

अव्य०—दुबारा, फिर।

रू०भे०—मर, मुरू, मूर,

मुरकी, मुरकीय–सं०स्त्री० [प्रा० मुरुक्की] १ पुरुषों के कान में पहनने की सोने या चांदी की छोटी बाली।

उ०—१ ओरां रे मुरकी कांन श्रो बाईसा ओरां रे, मुरकी कांन। ऊजळे तो मोती रांणी काछबौ।—लो. गी.

उ०—२ छोटा कानां में चांदी री **मुरकियां**, कुड़तौ तारतार व्हियोड़ौ......' —फुलवाड़ी

उ०—३ भींटियौ हंसतौ थकौ ई बोल्यौ—मांमाजी, वै तौ साळियां थांरा कांन बींधती ही। सौ तोळां री सांकळियां अर बीस तोळां री **मुरकियां** पैरावती ही। —फुलवाड़ी

२ स्त्रियों के नाक का एक आभूषण।(व० स०)

३ सफेद, जलेबी (मिष्ठान्न)।

उ०—१ पछइ प्रीसी **मुरकी**, खाइवा जीभ फुरकी, सेव भीणी, फगफगती फीणी, घ्रत नी घारी, स्वादस्युं आहारी, साकरस्युं रुली —व. स.

उ०—२ मूकयां नव नव परि सालणां,मुंक्या सरहां घी अति घणां। मूंकी मांडी **मुरकी** सेव,मूंकी खीर खांड घ्रत हेव —हीराणंद सूरी

उ०—३ पहिलउं नीली सूकिय मूंकिय फलहलि तीह। देखीय मोदक **मुरकीय** फुरकीय जीमतां जीह। —जयसेखर सूरि

४ नुकती, बूंदी। (मिष्ठान्न)।

५ संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाने की एक प्रक्रिया विशेष।

६ तीन अथवा चार स्वरों को शीघ्रता से गाने की क्रिया, इसका प्रयोग ठुमरी, टप्पा आदि में होता है। (संगीत)

७ तलवार की मूठ के कलस में लगने वाली कड़ी।

रू०भे०—मरकी, मुरक्की,

मुरकौ—सं०पु०—बड़े डील-डौल वाला हाथी जिसके दांत बड़े बड़े एवं सुन्दर होते हैं।

मुरक्की—देखो 'मुरकी' (रू. भे.)

मुरखंड—सं०पु०—तीन लोक।

उ०—हारिया असुर इम हिंदुवै जस हुवौ, वांणीयै इसौ कर दाख वारौ। थापियौ मालदे तौनूं तेजा थिरा, थयौ खंड **मुरखंडे** नांम थारौ। —साह तेजा री गीत

मुरख—देखो 'मूरख' (रू. भे.)

उ०—मीरां के प्रभु गिरधरनागर, को तजि **मुरख** अनतहि भटकै। —मीरां

मुरखाई—देखो 'मूरखाई' (रू. भे.)

उ०—तद रांनी बीनती कीवी "माहाराज,आ वात **मुरखाई** छै। जु विनां समधां इमा रै कहै खासौ चाकर मारौ पण पछतासो।" —ठाकुरै साह री वात

मुरग—देखो 'मुरगौ' (मह, रू. भे.) (मा. म.)

मुरगखांनौ—सं०पु० [फा० मुर्ग+खाना] वह स्थान या कक्ष जहां मुर्गे रक्खे जाते हैं, पाले जाते हैं।

मुरगबाज—सं०पु० [फा० मुर्ग—बाज] मुर्गे लड़ा कर खेल करने वाला।

मुरगबाजी—सं०स्त्री० [फा० मुर्ग-बाजी] (१) मुर्गे लड़ाने की क्रिया। (२) मुर्गे लड़ाने का खेल।

मुरगाबी, मुरगाबूं—सं०स्त्री०[फा०] १ मुर्गे की जाति का एक पक्षी जो जल में तैरता है और मछलियों का शिकार करता है, जल-मुर्गा

उ०—१ डेडरा डहकनै रहया छै। टीटोड़ी टहकनै रही छै। जळ काग कुटकनै रहया छै। **मुरगाबी** तिरनै रही छै। —रा. सा. सं.

उ०—२ फळ वहु सेल मछां दुति फाबी। मझि जळ ग्रीभ तिरै **मुरगाबी**। —सू. प्र.

२ एक प्रकार की तलवार।

उ०—वहै वैर लेणं यहै सायत आई जिस सेली जनेबूं **मुरगाबूं** की झाट खासूं झंडूं के बीच खेलेंगे। —सू. प्र.

३ जूती।

उ०—आ वात कहिनै गढनूं चालिया, पातसाह री हजूर अमराव मंमूसाह, मीर गाभरू, सु हरम री खुटक नै **मुरगांब्यां** पगां उबांणां सो तीजै भाई नूं आपड़ियौ थौ सु आ घणी वात छै। —नैणसी

मुरगी—सं०स्त्री० [फा० मुर्ग़ी] मुर्गे का मादा, मादा-मुर्ग। यह अण्डे देती है।

उ०—रोजा तीस दिनूं का राखै, सारै पंच निवाजा। मन अपना कुं मारै नाही, मारै **मुरगी** ताजा। —स्री हरिरांमदासजी महाराज

मुरगौ—सं०पु० [फा० मुर्ग] (स्त्री० मुरगी) १ सिर पर लाल किलंगी वाला एक प्रसिद्ध नर-पक्षी जो प्रभात के समय कुकड़ं कूं की आवाज बोलताहै। कुक्कुट पक्षी।

पर्या०—कूकड़ौ, क्रकवाक, चरणायुधक, तांम्रचूड़।

२ एक चिड़िया।

मह०—मुरग।

मुरड़—सं०पु०—१ एक प्रकार की कंकरीली मिट्टी जो सड़क जमाने व दीवार की चुनाई में गारे के काम आती है।

उ०—१ कंथ **मुरड़** री कांकरी, रतना तिका रतन्न। विधना री रचना वडी, जिण रौ नको जतन्न। —र. हमीर

उ०—२ परख चौकणीं चुट्ट, पड़ै डागळिया पक्कां, सुद्ध पाथरी पड़ी,जकी सगळी विन टक्कां। **मुरड़** मजै री मिळै, गांवड़ां निकट घणेरी, ल्याय मोगरी मार, छांण छोडा घर ढेरी। —दसदेव।

२ आत्म गौरव, स्वाभिमान।

उ०—विहंतौ जसौ बिसकन्या वाखांणियौ। परणती कंथ चौ **मुरड़** पहचांणियौ। —हा. भा.

३ गर्व, अभिमान, घमंड।

४ ऐंठन, अकड़

उ०—धकायौ रांण हूं मळण बण करड़ धज, भड़ां हड़वड़ उरड़ धाव भाळी। मिट गई किसनगढ़ नाथ वाळी **मुरड़**, उरड लख साहिपुर नाथ आळी। —अमरसिंह सिसोदिया रौ गीत।

५ क्रोध।

रू०भे०—मुड, मुरड,

६ देखो 'मूढ़' (रू. भे)

७ देखो 'मुड़' (रू. भे.)

मुरड़क, मुरड़क्क—सं० स्त्री०—१ मरोड़ने या मोड़ने की क्रिया या

भाव।

उ०—मुरड़क्क मुड़क्क असंध मुडै। —पा. प्र.

रूभे०—मरड़क,

मुरड़णौ, मुरड़बौ—क्रि०अ०[सं०] १ मुड़ना, बलखाना, ऐंठना, घूमना।

उ०—मंडळ रै प्रधानजी रौ बखांण सुण'र बीन री मुरड़ीजती मूंछां तणगी। —दसदोख

२ कुपित होना, क्रोधित होना, नाराज होना।

उ०—१ उरड़ मेछ आविया, मुरड़ि जंगळ धर माथै। भगि तीड़ा दव भड़ै, खड़ै घोड़ा जब खाथै —मे. म.

उ०—२ साहज्यहां तिण समै,जुगत त्रिय वसि चित जादा। मिळि अवरंग' 'मुरादि', दखिण मुरड़ै साहिजादा।—सू. प्र.

उ०—३ सूर मुरड़ि इम साह सूं, लूटै हय जय लाह। हणि रच्छक 'दूदा' हठि, आयौ धरत उछाह। —वं. भा.

३ विरुद्ध होना विपरीत होना।

उ०—१ जिण राठौड़ कंवर दूदा नूं अकबर हूं मुरड़ि आयौ जांणि जिकोही आपनूं अवलंब रौ देणहार बिचारियौ। —वं. भा.

उ०—२ कंवर बिरड़ियौ मुरड़ अमरराव फिरियौ सकौ, एरसी वार बिखमी बणी आंण। पाट चीतौड़ री हुवौ ऊथळपथळ,' दुरंग' नूं सिमरियौ तई दीवांण। —दुरगादास राठौड़ रौ गीत

४ पलटना, लौटना, घूमना।

उ०—१ सीस उडतां ही पड़िहार हसिया अर महाराज मुरड़ि चालियौ तिकण रै लार। —वं भा.

उ०—२ अत जीतौ वीतौ समर, जादम पड़िया जोड़। लड़ जुड़ खगां बोहळै, मुरड़ चलै राठौड़। —रा. रू.

५ भागना, पीछे हटना।

उ०—वांसे बरदेत कमंध बळ दाखै, लोह छतीस भुजां डंड लेव। रांणा रावळ राव मुरड़ंता, दोयण हटक्या वीरमदेव।

—राव वीरमदेव राठौड़ रौ गीत

६ अलग हटना, दूर होना, विलग होना।

क्रि० स०—७ मोड़ना, मरोड़ना, बलदेना घुमाना।

८ गर्व करना, घमंड करना, अभिमान करना।

९ छीनना, झपटना।

१० उखाड़ना।

११ नष्ट करना।

मुरड़णहार, हारौ (हारी), मुरड़णियौ —वि०।

मुरड़िओड़ो, मुरड़ियोड़ौ, मुरड़्योड़ौ —भू० का० कृ०।

मुरड़ीजणौ, मुरड़ीजबौ —भाव वा० / कर्म वा०।

मुरडणौ, मुरडबौ —रू. भे.।

मुरड़ियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मुड़ा हुआ, बल खाया हुआ,ऐंठा हुआ. २ कुपित या क्रोधित हुवा हुआ, नाराज हुवा हुआ. ३ विरुद्ध या विपरीत हुवा हुआ. ४ पलटा हुआ, लौटा हुआ, घूमा हुआ. ५ भागा हुआ, पीछे हटा हुआ। ६ अलग हटा हुआ, दूर हुवा हुआ, विलग हुवा हुआ. ७ मोड़ा हुआ, मरोड़ा हुआ, बल दिया हुआ,घुमाया हुआ. ८ गर्व किया हुआ, घमंड किया हुआ,अभिमान किया हुआ. ९ छीना हुआ, झपटा हुआ. १० उखाड़ा हुआ. ११ नष्ट किया हुआ.

स्त्री० (मुरड़ियोड़ी)

मुरच—देखो 'मुरचौ' (मह., रू. भे.)

उ०—पछै वौ आंगळियां रा पंरवां माथै अंगूठां सूं गिणतौ नीची धूण करियां खोड़ां गिणावतौ ई जावतौ—खुरफाड़ी फाटै, एक खुरी आगै बध जावै, एडी में मस, मुरचां कमजोर,''' ''। —फुलवाड़ी

मुरचौ—सं०पु०—१ चरणग्रंथी व पैर के मध्य का भाग।

उ०—डाढाळौ एक हाथी रै मुरचै री सांध में खग री खळकाई जकौ मुरचै रौ खालड़ौ अर मांस चीरनै हाड जाय रड़कियौ।

— फुलवाड़ी

२ टखना, गुल्फ।

३ मनुष्य के हाथ और कलाई का संधि स्थल।

४ देखो 'मोरचौ' (रू. भे.)

उ०—गयणा गरज डंबर छायौ छै,सूरिज पीछै पांन सरिखौ निजर आवै छै। मुरचां रा मुकांमला मंडाया छै। अणी मेळ हुवौ छै।

—रा. सा. सं.

मुरच्छा—देखो 'मुरछा' (रू. भे.)

मुरच्यौ—देखो 'मुरचौ' (रू. भे.)

मुरछ—देखो 'मुरछा, (रू. भे.)

उ०—भळाभळ भूलणां भांड भड़वां विगत, पिंड रगत देखियां मुरछ पाया। जो मरदपणौ छै जिसौ जांणै जगत, ऐ किसे बगत मैं कांम आया। —उदैभांण बारहठ

मुरछागत, मुरछागति देखो 'मुरछागत' (रू. भे.)

मुरछणौ, मुरछबौ—देखो 'मुरछाणौ, मुरछाबौ' (रू. भे.)

मुरछत—देखो 'मुरछित' (रू. भे)

मुरछन, मुरछना—देखो 'मूरछना' (रू. भे.)

उ०—गांन सत सुर ग्राम मुर, अरु मुरछन यकवीस। तांन कोटि गुणचासते, मूरतिवंत मईस। —सू. प्र.

मुरछळ—सं०पु०—१ मुर्च्छित, बेहोश।

उ०—ऐसे कह गिर गिर पड़ै, देही मुरछळ होय। बार बार किललात है, प्रभू उबारो मोय। —गजउद्धार

२ देखो 'मोरछळ' (रू. भे.)

मुरछा—सं०स्त्री० [सं० मूर्च्छा] १ किसी प्राणी के शरीर की वह अवस्था जब कुछ समय के लिये वह चेतन्य-हीन हो जाता हो, बेहोशी, मूर्च्छा, संज्ञाहीनता।

उ०—१ आपरौ काळजौ बारै नीकाळियोड़ौ हो सो काटनै आंखियां

माथै न्हांक दीधौ कारण काळजौ कंवळो होवै सो चील काळजो खावसी जितरै मुरछा खुलजासी नै नेत्र रह जासी इणनै सांम धरमी सूरवीर कहजै । —बी. स. टी.

उ०—२ छन मुरछा,छन चेतना सीतावरजी । कोई छन छन छीजै देह प्यारा रघुवरजी ।—गी. रां.

उ०—३ जोबण थारो गजब छै, लोयण बांण लगाय । चो निजरयां तो सूं चहै, पडैस मुरछा खाय । —पनां

उ०—४ सुंदरि दीठ सिंगार सोळ सझि, मुरछा आय पड़ै उपवन मझि । —सू. प्र.

२ शिथिलता, कमजोरी ।

३ प्रमाद, आलस्य ।

उ०—हुई सुभद्रा साधवी, बाल मुरछा सेवी रे । गुरणी वचन नहि मांनियो, हुई बहुपुत्तिया'' देवी रे —जयवांणी

रू०भे०—मरछा, मुच्छ, मुरच्छा, मुरछ, मूरच्छा, मूरछ ।

मुरछागत, मुरछागति–सं०स्त्री०—अचेतनावस्था, बेहोशी, मूर्छावस्था ।

उ०—१ तठै देपाळ कही, म्हे तौ मुरछागत हुईनै पचीसे ही लुटीया । —देपाळ धंध री वात

उ०—२ वचन अनिस्ट अलखावणौ,दोहरो लागो माय । थई अचेतन तिण समै, पड़ी मुरछागत खाय —जयवांणी

उ०—३ एह अमंगळ वत्त सुणी, मुरछागति पड़ियौ । उदियाचळ जिम संभ निसंभ, अस्ताचळ निड़ियौ । —मां. वचनिका

रू०भे०—मरछागत, मुरछगत, मुरछगति, मुरझागत, मूरछागत, मूरछागति ।

मुरछाणो, मुरछाबो–क्रि०अ० [सं० मूर्च्छनम्] १ किसी प्राणी की संज्ञा या चेतना का किसी विशेष कारण से अस्थाई तौर पर लोप होना, बेहोश होना, मूर्च्छित होना ।

२ तांत्रिक क्रिया से समाधिस्थ होना ।

३ ऐन्द्र जालिक प्रभाव में आना ।

मुरछाण हार, हारौ(हारी), मुरछाणियौ, —वि० ।

मुरछायोड़ौ —भू. का. कृ. ।

मुरछाईजणौ, मुरछाईजबौ —भाव वा. ।

मुरछणौ, मुरछबौ, मूरछाणौ, मूरछाबौ —रू. भे. ।

मुरछायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ चेतना या संज्ञा लोप हुवा हुआ, मूर्च्छित, बेहोश. २ समाधिस्थ हुवा हुआ. ३ ऐन्द्रजालिक प्रभाव में आया हुआ ।

(स्त्री० मुरछायोड़ी)

मुरछावत–वि०—मूर्च्छित, बेहोश, अचेत ।

मुरछित–वि० [सं० मूर्च्छित] संज्ञा हीन, चेतना हीन, बेहोश, मूर्च्छित ।

उ०—१ वन री बातां माता सब सुणी, कोई बीज लड़ी ज्यूं बेल । मुरछित माता जी, सचेती सुत करी । —गी. रां.

उ०—२ मुरछित हो धरणी पड़यो, वलि मूंके हे मोटा निसांस की सूं. । —प. च. चौ.

रू० भे०—मुच्छित, मुच्छिय, मुरछत, मूंछीयइं, मूरछत, मूरछित ।

मुरछियोड़ौ—देखो 'मुरछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मुरछियोड़ी)

मुरज, मुरजा–सं० पु० [सं० मुरजा] १ मृदंग, पखावज ।

उ०—स्रीमंडळवीणा, मुरज,धस्या सरस रस भीन । मधुरै सुर बाजै नहीं, परस्यां विना प्रवीण ।—प्रवीणसागर

२ कुबेर की पत्नी का नाम ।

मुरजाद, मुरजादा—देखो 'मरजादा' (रू. भे.)

उ०—१ नीचै धरती ऊपरि अंबर बिचिबिचि मुलक बसाया । असी मुरजाद आप हरि बांधी, हूकमा कांम चलाया ।—रुकमणी मंगळ

उ०—२ सर धनुं धार समाथ, माथदस भंज समर मह । मह राखण मुरजाद, जादपत पव्वै तार जह ।—र. ज. प्र.

मुरजादी, मुरजादीक–वि०—मर्यादा से रहने वाला ।

मुरजित—देखो 'मुरजीत' (रू. भे.)

मुरजी—देखो 'मरजी' (रू. भे.)

मुरजीत–सं० पु०—मुर नामक राक्षस पर विजय प्राप्त करने वाले, श्रीकृष्ण ।

रू० भे०—मुरजित,

मुरझणो, मुरझबो—देखो 'मुरझाणौ, मुरझाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ वैसो 'जसवंत' बळी उरमयो असाध्या व्याधी, मुरझयो मुखारविंद मांनव मलिंद को ।—ऊ. का.

उ०—२ सूखां नै हरिया किया, मुरझ्या विकसाया हो । प्रेमानंद पियूखरा बादळ बरसाया हो ।सैयां ।—गी. रां.

मुरझणहार, हारौ (हारी), मुरझणियौ—वि० ।

मुरझिओड़ौ, मुरझियोड़ौ, मुरझ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मुरझीजणौ, मुरझीजबौ—भाव वा० ।

मुरझागत—देखो 'मुरछागत' (रू. भे.)

मुरझाणौ, मुरझाबौ–क्रि० अ० [सं० मूर्च्छनं] १ पेड़-पौधे या वनस्पती का कुम्हला जाना, सूखने लगना ।

उ०—१ सारी ओर सवासण्यां सोदागर रा सेल । कीधा इंद्र बाई कयां, बप मुरझाई वेल ।—मे. म.

उ०—२ संत संगत सुर बाग सुकायो,मिळै कहूं बळियो मुरझायो । ठंडो जळ नहि ठरै ठरायो, भूलै ग्यांन सुण्यो मन भायो ।

—ऊ. का.

२ उदास होना, म्लान होना ।

उ०—१ सूकी सेवण री हेला उर हाई, मैंदी देवण री बेळा मुरझाई —ऊ. का.

उ०—२ बाजी निसबळ किताई पुळांणा । मेळाउवां वदन मुरझांणा ।—रा. रू.

३ श्री हीन होना, कान्ती हीन होना ।

उ०—खांन पांन मोहि फीको सो लागै, नैणां रहै मुरझाई ।

—मीरां

४ खिन्न होना।

उ०—कर दिल काठौ दियौ न दाटौ, मन माठौ मुरझाई नै। उरसूं काठौ आगे पड़ियौ, औ भाटौ जद आई नै।—ऊ. का.

५ कुंठित होना।

उ०—फेदड़ फेदड़ सी नभ में निजराई, माखण चाखण री मनसा मुरझाई—ऊ. का.

६ विकल होना।

उ०—तुम बीछड़ियां दुख पाऊं जी, मेरा मन मांही मुरझाऊं जी।
—मीरां

७ उत्साह हीन होना, निराश होना।

उ०—जद बाप ही आंख्यां फेरली तौ पछै फूलकंवर किण आगै मुरझायोड़ौ हिवड़ा रौ संताप प्रगट करै।—फुलवाड़ी

८ शिथिल होना, असक्त होना, रुग्ण प्रायः होना।

९ सुस्त होना, आलसी होना।

उ०—ओध उरझायो सुरभायौ ताकूं सार सार। नाहीं मुरझायौ मौज सुंदर मचायो तें।—ऊ. का.

१०—मूर्च्छित होना, बेहोश होना।

उ०—१ होस उड़ै फाटै हियौ, पड़ै तमाळा आय। देखै जुध तसवीर द्रग, मावड़िया मुरझाय।—बां. दा.

मुरझाणहार, हारौ (हारी), मुरझाणियौ—वि०।

मुरझायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मुरझाईजणौ, मुरझाईजबौ—भाव वा०।

मुंझाणौ, मुंझाबौ, मुझाणौ, मुझाबौ, मुरझणौ, मुरझबौ, मुरझावणौ, मुरझावबौ, मूझाणौ, मूझाबौ—रू० भे०।

मुरझायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ कुम्हलाया हुआ (पेड़-पौधे वनस्पती) २ उदास या म्लान हुवा हुआ. ३ श्रीहीन या कान्ती हीन हुवा हुआ. ४ खिन्न हुवा हुआ. ५ कुंठित हुवा हुआ. ६ विकल हुवा हुआ. ७ निराश या उत्साह हीन हुवा हुआ. ८ शिथिल, असक्त या रुग्ण प्रायः हुवा हुआ. ९ सुस्त आलसी. १० मूर्च्छित, बेहोश।

(स्त्री० मुरझायोड़ी)

मुरझावणौ, मुरझावबौ—देखो 'मुरझाणौ, मुरझाबौ' (रू भे.)

उ०—जाचक हिरण तिसाया जावै, पुन्न नीर सुपनें नहिं पावै। धर जिग्यांसू दिस दिस धावै, अग त्रिसणा गुर लख मुरझावै।
—ऊ का.

मुरझावणहार, हारौ (हारी), मुरझावणियौ—वि०।

मुरझाविओड़ौ, मुरझावियोड़ौ, मुरझाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मुरझावीजणौ, मुरझावीजबौ—भाव वा०।

मुरझावियोड़ौ—देखो 'मुरझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मुरझावियोड़ी)

मुरट—सं०पु०[देशज]१ एक प्रकार का घास जो कच्चे झोपड़े की छाजन बनाने के काम आता है।

उ०—१ खींपा पींपा फोग, मुरट बूई बरणावै। भुरट लांपड़ी लुळै। गजब वेलां गरणावै।—दसदेव

उ०—उठै सिरांणै इयांरै एक नाग आय, एक मुरट रौ बूंटौ हुतौ, तियैरै ओळौ दोळौ हुई, अर पूंछ हुती सु मूंह में झाली अर इयै भांत बैठौ छै।—नैणसी

२ देखो 'भरट' (रू. भे.)

मुरड—१ देखो 'मुरड़' (रू. भे.)

२ देखो 'मरोड़' (रू. भे.)

मुरडणौ, मुरडबौ—देखो 'मुरड़णौ, मुरड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ मरगडां जूह मुरडंत माड, चूनौ हुइन्त चौसट्ठि हाड।
—गु. रू. बं.

उ०—२ छूरा खग्ग उपाडि, सीह करि सांकळ छूटा, मुरडि खंभ मदमोख, जांण सूंडाहळ जूटा।—गु. रू. बं.

उ०—३ कंवळ मद बोहोती री कासां, सुरत अति विलखाय। ऊरड आई देखण अली, मुरड चली मुरझाय।—पना

उ०—४ ज्यों मदि वहतौ हाथी ग्रीख(पैंड) दोय चलै। अर वळै। मुरड नै ऊभौ रहै।—वेलि टी

मुरडणहार, हारौ (हारी), मुरडणियौ—वि०।

मुरडिओड़ौ, मुरडियोड़ौ, मुरड्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मुरडीजणौ, मुरडीजबौ—भाव वा० / कर्म वा०।

मुरडियोड़ौ—देखो 'मुरड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मुरडियोड़ी)

मुरतब—१ देखो 'मरतब' (रू. भे.)

उ०—१ तिण सूं बादसाहां रौ मुरतब पैगंबरां सूं मिळतो जुळतो छै।—नी. प्र.

उ०—२ जे कोई इण सूं दांन मांन तरवार सांच सील में ऊंचौ नहीं पहुचे, मुरतब रा कारण सारां सूं बाध होवै।—नी. प्र.

उ०—३ सो जुलफकारखां बडे मुरतब सूं मुलाहिजे रै साथ महाराज नै कन्है राखिया।—पदमसिंह री बात

२ देखो मुरत्तब' (रू. भे.)

उ०—१ मुरतबां तोग नेजां महीं, धज बहरक फरहर धजा। दळ हिलै एक मुरधर दिसी, समंद ऊझळै जळसजा।—सू. प्र.

उ०—२ सगळा हालौ आगरे, होकर अभी तैयार। मुरतब संग सारा रहै, करियै नांहि अबार।—ठा. राजसिंघ री वारता

मुरतबौ—१ देखो 'मरतब' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मुरतबौ हजारी हफत महि, पांन ग्रहंतां पावियौ। इम विदा होय मुदफरअली, 'अजण' भूप दिस आवियौ।—सू. प्र.

२ देखो 'मुरत्तब' (अल्पा; रू. भे.)

मुरति, मुरती—देखो 'मूरति' (रू. भे.)

उ०—जिन आ जळ तैं देह धरि, करि नख चख सुरति। हरिया वाकूं सिवरीयै, अधर एक मुरति।—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

मुरत्तब–वि० [अ०] १ क्रमबद्ध, सिलसिलेवार।
२ शृंखलाबद्ध, श्रेणीबद्ध, कतारबद्ध।
३ संग्रहीत।
४ सम्पादित।
५ तरी युक्त, तर।
रू०भे०—मुरतब, मुरातब.।
अल्पा०—मुरतबौ, मुरातबौ,

मुरत्ति—देखो 'मूरति' (रू. भे.)
उ०—कड़ा लवंग मुद्रिका मुरत्ति कुंद नी।—मे. म.

मुरद–सं०पु०—१ शब्द।
२ देखो 'मुरदौ' (मह., रू. भे.)

मुरदनी–वि०—म्लानता।
उ०—वे महर गुमराह गाफिल, गोस्त खुरदनी। वेदिल बदकार आलम, हयात मुरदनी। —दादूवांणी

मुरदांणव–सं०पु०—मुर नामक दानव।
उ०—कुंभक्रन इंद्रजीत सारिखा, हिरणाखस हिरण कासिब सारिखा, मुरदांणव महाबळी सारिखा ''''''। —मा. वचनिका।

मुरदार–वि० [फा०मुर्दार] १ मृतक, निष्प्राण, मृत।
उ०—चुगली बिसतारत चुगल, सांप्रत होय सचेत। सो मुरदार सरीर री, लट मुख मांझल लेत। —बां. दा.
२ अपनी मौत से मरा हुआ।
उ०—मुई मटीया मुरदार कहत है, मारी हक निवाला। —श्री हरिरांमदासजी महाराज
३ कमजोर, अशक्त, बेदम, बेजान।
उ०—छळदार होय छाती छड़ै अमलदार मुरदार री। —ऊ. का.
४ डरपोक, कायर।
उ०—मावड़ियौ बन मांझली.सो नह जाय सिकार। डोळा मिनखी सूं डरै, मूसा ज्यूं मुरदार।—बां. दा.
५ अपवित्र, नापाक।
सं०पु०—१ फोड़ा या फुंसी से निकलने वाली मवाद, पीव।

मुरदासंख, मुरदासिंगी, मुरदासिंघी, मुरदासिंही–सं०स्त्री०—सीसे और सिंदूर को फूंक कर बनाया हुआ एक औषध।
रू०भे०—मुड़दासंख, मुड़दासिंगी, मुड़दासिंघी,

मुरदौ–सं०पु० [फा० मुर्द:] १ प्रेत, भूत।
उ०—मुरदे मनावै मूढ़, जसोदा जणावै जायौ, पिता को जनावै प्रेत खुमी खेल खोधां की। —ऊ. का.
२ शव, लाश।
वि०—१ जिसके प्राण पंखेरू उड़ चुके हों, निष्प्राण, निर्जीव, मृत।
२ मरे हुए के समान, अधमरा।
उ०—क्यूं नहं लालच बस करौ, बहु हाका बिरदांह। है नह ऊंची हत्थड़ौ, मावड़ियां मुरदांह।—बां. दा.
३ अशक्त, कमजोर, दुर्बल।
उ०—हिळता हिळता हाथ, भिळौ मत दुख सूं भाई। मिळ मुरदां मनवार, करो मत बुरी कमाई —ऊ. का.
४ कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ।
रू०भे०—मुड़दौ, मुड़ौ,
अल्पा—मुड़दियौ,
मह०—मुड़द।

मुरद्धर—देखो 'मरुधर' (रू. भे.)
उ०—१ विदा किया तिण वार, धूत दळ असुरमुरद्धर। 'अवरंग' भड़ आवियौ, भूत गिड़कंध भयंकर।—सू. प्र.
उ०—२ धरपत सीहै लयौ मुरद्धर। आसथांन तिल पाट उजागर। —रा. रू.

मुरद्धरा—देखो 'मरुधरा' (रू. भे.)
उ०—तद वार अंस पुरसां तणी, आय वणी जग ऊपरा। महाराज तणौ छळ मारवां, धारी लाज मुरद्धरा। —रा. रू.

मुरधर–सं०स्त्री० [रा० मरुधर] देखो 'मुरधर भाखा'
उ०—व्रज भाखा मुरधर विमळ, आदि करै उच्चार। देस देस भाखा डंबर, वरणू करि विसतार। —सू. प्र.

मुरधरभाखा, मुरधरभासा–सं०स्त्री० [सं०मरुधर+भाषा] मारवाड़ की भाषा, मारवाड़ी, राजस्थानी।
२ देखो 'मरुधर' (रू. भे.)
उ०—१ ईसाण्या बरती अचळ अग्ध, मारवा राव मुरधर महग्घ। —ऊ. का.
उ०—२ पंथ लगौ मुरधर पाय, तज दिली छळ तैं ताय। सुण बात कमंध सुग्यांन, बळ मूंछ घर बळवांन।—रा. रू.

मुरधरमंडण–वि०—मारवाड़ की शोभा बढ़ाने वाला।
उ०—खाधा चोर तणौ खेड़ेचा, माथै रहत घणा दिन मोस। मुरधर-मंडण तूझ तणौ व्रत, देतौ दुरंग स टळियौ दोस। —दुरसौ आढौ
सं०पु०—एक जेवर विशेष।

मुरधरा—देखो 'मरुधरा' (रू. भे.)
उ०—१ बकसी मात राव बीका नैं, धर थळवट रजधांणी। रिड़मल तणौ मुरधरा राखी, है साखी हिंदवांणी।—मे. म.
उ०—२ द्रढ़ दंत दब्बि देखत दुसार, आवत न पार दुख सिंधु पार। आपकी इजाजति चहत अग्ग, मुरधरा जांन को देहु मग्ग। —ऊ. का.

मुरधरियौ—देखो 'मरुधरियौ' (रू. भे.)
उ०—१ मन थारौ मुणजै, मुरधरिया, खुम रीझां देवण दध खीर। —द. दा.
उ०—२ मांणस मुरधरिया मांणक सम मूंगा। कोडी कोडी रा करिया सम सूंगा।—ऊ. का.

मुरधा–सं० स्त्री० [सं० मूर्धन्] १ सिर।

२ देखो 'मरुधरा' (रू. भे.)

मुरनयण, मुरनैण–सं० पु० [रा० मुर=३+सं० नयनं] तीन नेत्र वाले, महादेव, शिव। (ना० डिं० को०)

उ०—चकव केकी मच्छां सिधां वन चारणां, तरण धण महण मुरनयण छाताळ।—छत्तरसिंह हाडा रौ गीत

मुरपुर–सं० पु० [रा० मुर=३+सं० पुरम्] तीन लोक।

मुरपुरधणी, मुरपुरपत, मुरपुरपति, मुरपुरपह–सं० पु० [रा०मरु+सं० धनिक+सं० पति,+सं० प्रभु] त्रिभुवन पति, तीन लोक के स्वामी, विष्णु। (ह. नां. मा.)

मुरव्वत–सं० स्त्री० [अ० मुरव्वत] १ भल मनसात, इन्सानियत।

उ०–१ कवी सो इणनुं जांणै ही नहीं थौ सो कही हे मोटा मांणस आ मुरव्वत नहीं जो मैं सरणै आयोड़ा नूं काढ किणी नूं देऊं अर तूं मार खावै।—नी. प्र.

२ लिहाज, रिआयत, परोपकार।

उ०—यमन रौ बादशाह घणौ दांन अहसांन मुरव्वत में ऊठियो थौ।—नी. प्र.

३ शील, संकोच। ४ कृपा, अनुग्रह।

रू० भे०—मुरौव्वत, मुरौवत,

मुरव्बी, मुरब्बी–वि० [अ०] १ आश्रय दाता, संरक्षक।

२ पालन-पोषण करने वाला।

३ सहायक, मददगार।

उ०—कायमखां कपतांन से करि बातें चब्बी, सेख इनायत खांन के भुज पलटण दब्बी। टेरि कुतबीखांन से खुद कहा मुरब्बी, हल्ले पूठ ना फिरै कल उसकी फब्बी।—ला. रा.

४ बड़प्पन रखने वाला, गौरवशाली।

५ प्रधान, मुखिया, अग्रणी।

उ०—१ पहु सुत दसम प्रबाळ देस बगसर धर दब्बी। बगसरिया जिण बंस मरण सब प्रथम मुरब्बो।—व. भा.

उ०—२ के तुम किल्ले तोरियौ के मरियौ सब्बी, देखौ नब्बी क्या करै कर नाख ससब्बी। उस बिरयौं वज्जीर दौल कूं कहै कुतब्बी, जांनिक सुरगे लेन को हिरनाख्य मुरब्बी।—ला. रा.

६ कृपा या दया करने वाला।

रू० भे०—मुरव्वी,

मुरब्बौ–सं० पु० [अ० मुरब्बा] १ कच्चे फल, सेव, आंवला, बेल आदि में चीनी की चासनी मिला कर बनाया जाने वाला पाक।

२ कृषि भूमि का एक माप। ३ उक्त माप का खेत।

४ वर्गाकार, चौखूंटा, समचौरस।

मुरभवण–सं० पु० [रा० मुर+सं० भुवन] तीन-लोक, त्रिलोकी।

उ०—१ गहवगां जण जण अगण गण मुरभवण कंपण लगण मण लंकाळ धूजिय लंक।—र. रू.

उ०—२ डाकी दूभर डांण, सुर जख रिख उर सालिया। आता बे मुरभवण में, राज करै असुरांण —मा. वचनिका

मुरभवणपति–सं० पु०—त्रिलोकी के स्वामी, विष्णु।

उ०—सुज असुरां संग्रांम, कियां नह पोंहचां कदे। कांई न राखी ठकुरां, मुरभवण-पति मांम।—मा. वचनिका

मुरभूम—देखो 'मरुधरा'

उ०—मुरभूम पाठ पिंगळ मता, साहित बीदग सारनै। कहूं मंछ भलां रूपक करौ, ए दस दोख निवारनै।—र. रू.

मुरभूमभाखा, मुरभूमभासा—देखो 'मुरधरभासा'

उ०—कह मंछ स्रीरघुनाथ रूपक पढ़ै जो नर प्रीत सूं। मुरभूमभाखा तणौ मारग रमैं आछी रीत सूं।—र. रू.

मुरमंडळ, मुरमंडल–सं०पु—मारवाड़।

उ०—देसि मुरमंडले नयरि विकम पुरे, जसौ वरद्धनु जगि जांणीउ ए।—कवि भत्तउ

मुरमरदण–सं०पु० [सं० मुर+मर्द्दन] १ मुर नामक दैत्य को मारने वाले, श्रीकृष्ण।

२ विष्णु।

मुरमुर–सं०पु० [सं०] १ कामदेव, मदन।

२ सूर्य के रथ के घोड़े।

३ अग्निकण, चिनगारी।

रू०भे०—मुम्मुर,

मुरमुरया, मुरमुरिया–सं०स्त्री०—बेसन की नमकीन बूंदी।

उ०—सात रुपियां रा पकवांन मुरमुरियां आदि हुंता तिण में १६ जणा चूकाया गया।—भि. द्र.

मुरराघवेस–सं०पु०—१ श्रीकृष्ण, मुरारि।

२ विष्णु।

मुररिप, मुररिपु–सं० पु० [सं० मुर+रिपु] १ श्री कृष्ण।

२ विष्णु।

मुरळिका, मुरळिया—देखो 'मुरळी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ पोख हित वेल गावौ चरित पेमरा, मुरळिका सुणावौ घोख मांही।—बां. दा.

उ०—२ नेम धरम कोन कीनौ मुरळिया कौन तिहारै पासु री। —मीरां

मुरळी, मुरली–सं०पु० [सं०] बांस या किसी धातु की नलिका पर छेद कर के बनाया हुआ बाजा जिसे मुंह से फूक मार कर बजाया जाता है, बांसुरी, वंशी।

उ०—१ संख चक्र गदा पद्म बिराजै, माधुरी मुरळी किसोर। मोर मुकुट सिर छत्र बिराजे, कुंडळ की छवि ओर —मीरां

उ०—२ पथिक जाय मथुरा कहे जादवां पती नूं, आपरा मिळण कूं बात उरली। आय गोकळ मही लेर सुर अनोखा, मया कर सुणावौ फेर मुरळी।—बां. दा.

मुरळीधर–सं०पु०—१ श्री कृष्ण।

उ०—१ पुरसोतम पूरण प्रभू, राघव गिरधर रूप। मुरळीधर मोहण मुकंद, भजलै त्रिभुवण भूप।—ह. र.

उ०—२ गांव रौ पक्कौ जोड़ौ, मुरळीधर रौ मिंदर, जकांरौ

उ०—१ दून रा उघाड़ा क्रूर दांत। भूत रा मुराड़ा तरणह भांत। हुव जेठ तावड़ा दुमह होम, धावड़ा अंगारां चिनख धोम। —वि. सं.

उ०—२ वैरियां बराड़ा पाड़ बाखांणजै, जांणजै मुराड़ा भूत जेही। —महारांणा भीमसिंह रै भाला री गीत

२ अग्नि, आग।

उ०—१ तोपां ताड़ मुराड़ा ताउध, आवध वरिखां परै उरै। तणि बळिराव आज रा तौ सिरि, घाव बहा नीसांण घुरै। —सुभराज गौड़ री गीत

उ०—२ उथापै दळी ऊमेद थापै यळा, सवाड़ा पवाड़ा भाग साथै। आगि बूंदी धरा लियंतां ऊपड़ी, मुराड़ा भड़ै आंमेर माथै। —दुरजणसाळ हाडा री गीत

३ अग्नि की ज्वाला।

४ जलती हुई लकड़ी।

५ सूरत, शक्ल।

मुराड़ौ—सं०पु०—१ अग्नि की ज्वाला।

उ०—दुरजणसाळ नांम ही ज्यां दुरजन कूं सल्लै। भाटी वीर आखाड़े मैं मुराड़े से भल्लै। —रा. रू.

२ दाह क्रिया में चिता जलाने के लिये जलाया जाने वाला घास का पूवाल।

३ घास आदि का पूवाल।

उ०—जिका वात जगमाल रै किणयक घाती कांन। आग बळंती ऊपरा, कियौ मुराड़ौ तांन। बी. मा.

४ सूखे कांटों का ढेर या समूह जो जलाने के काम आता है।

वि०—१ क्रोध युक्त, कुपित।

२ भयानक, डरावना।

३ प्रचंड।

४ मूढ, मूर्ख।

मुरातब—१ देखो 'मरातब' (रू. भे.)

उ०—१ वजीर खांनसांमां बगसी अपने अपने मुरातब के पाये पर छक पूर छाजे। —सू. प्र.

उ०—२ अपछरा म्हांरी बरोबर मुरातब क्यो कर लहै छै। —प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

२ देखो 'मुरत्तब' (रू. भे.)

मुरातबौ—१ देखो 'मरातब' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तद जलाल बोलियौ—चाकरी खूब करावो पण बादसाहां रो अमल-दस्तूर दुरस्त करियो चाहौ तौ म्हारे मुरातबा माफक मनसब देवो।—जलाल बूबना री बात

२ देखो 'मुरत्तब' (अल्पा., रू. भे.)

मुरातब्ब—वि०—सुसज्जित, सजा हुआ, शृंगारा हुआ।

उ०—ओपी रूप में अजब्ब, तूरी कीयौ मुरातब्ब। सांमी आगळी सिगार, आंणीयौ लूंण ऊतारै।—गु. रू. बं.

मुराद—सं० स्त्री० [अ०] १ वह प्रबल इच्छा जिसको पूरी करने के लिये मन हर वक्त लालायित रहता है, तमन्ना, लालसा।

उ०—१ मांग, थारी इंछा व्है सो मांग। आज री इण खुसी वास्तै म्है थारी मनजांणी मुराद पूरी कर सकूं।—फुलवाड़ी

उ०—२ बडी ईद री पै'ली रात, दोनवां आंख्यां सूं काढी, आप आप री मुराद वाढी।—दसदोख

२ इच्छा, कामना, वांछा, आकांक्षा।

उ०—हरीया भोजन जीमीयें, ऐसा आवै स्वाद। इन तन का सारा नहीं, मनसा इसी मुराद।—श्रीहरिरांमदासजी महाराज

३ उमंग।

४ अभिप्राय, आशय, मतलब, प्रयोजन।

उ०—मीठा स्वभाव नै मिळता स्वभावां सूं मुराद, तंत भला स्वभाव खलक सूं।—नी. प्र.

रू० भे०—मुराद, मुरादि, मुरादी,

मुरादा—१ देखो 'मरजाद' (रू. भे.)

उ०—आप मुरादा आप री, असमर जीतै आंण। थांणां मुरभवणां थपै, छत्र एक मेछांण।—मा. वचनिका

२ देखो 'मुराद' (रू. भे.)

मुरादि, मुरादी—वि० [अ०] १ जिसके कोई मुराद हो, इच्छा या तमन्ना रखने वाला।

२ आशययुक्त, मतलबी।

३ देखो 'मुराद' (रू. भे.)

मुराफौ—सं० पु० [अ० मुराफअ] अपील।

मुरायळी, मुरायली—सं० स्त्री०—१ एक प्रकार की कंटीली झाड़ी, जिसकी टहनियां नमक बनाने के खड्डों में डाली जाती है।

रू० भे०—मुराळी,

२ देखो 'मुराई' (अल्पा., रू. भे.)

मुरार—देखो 'मुरारि' (रू. भे.) (अं. मा.)

उ०—१ बूठा दूधां बादळा, तूठा देव मुरार। जेहल आज जुहारिया, काछ नरेस कुंवार।—बां. दा.

उ०—२ नमौ धम-देह बिसंभर धार, नमौ धर व्यापिय सोय मुरार।—ह. र.

मुरारमाळी—सं० पु०—मालियों की एक जाति व इस जाति का व्यक्ति।

मुरारि, मुरारी—सं०पु०[सं०मुर+अरि] १ मुर नामक दैत्य को मारने वाले, श्रीकृष्ण।

उ०—गिणतां गिणतां घस गइ रेखा, आंगरियां की सारी, अजहूं नहिं आये मुरारी। —मीरां

२ विष्णु।

उ०—संत पैहळाद तणी सुणी साहुळि, कर फुरळै हिरणाखस काहुळि। आहि कन्हि ली बारुण गिरधारी, मोखै दोहूं तैं हींज मुरारी। —मा. वचनिका

३ परमेश्वर, ईश्वर। (अ. मा., ह. नां. मा.)

रू०भे०—मुरार,

मुराळ-सं०स्त्री०—१ दुम, पूंछ।

२ देखो 'मराल' (रू. भे.) (हिं. को.)

उ०—तिरगुण अनातम माया त्यागी, चेतन संत मुराळ। तुरीये आतम सत सदाई निज स्वरूप अकाळ।—स्रीसुखरांमजी महाराज

मुराळी—१ देखो 'मराळ' (स्त्री.)

उ०—भद्र जाती चुणं सीस मोती स्रोण पंका भळै। खात मोती मुराळी नसंका चुगै खूद।—बद्रीदास खिड़ियौ

२ देखो 'मुराई' (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'मुरायली' (रू. भे)

मुरिखौ—देखो 'मूरख' (अल्पा., रू. भे.)

मुरिति, मुरिती—देखो 'मूरति' (रू. भे.)

मुरी—देखो 'मोरी' (रू. भे.)

मुरीद-सं०पु० [अ०] १ चेला, शिष्य।

२ अनुयायी, अनुगामी।

उ०—सुरतांन तारकीन कुतुब साहिब दोनूं मुरीद खाजा मुईनउद्दीन रा।—बां. दा. ख्यात

मुरु—देखो 'मुर' (रू भे.)

मुरुलोक, मुरूलोक—देखो 'मुरलोक' (रू. भे.)

मुरेठी—देखो 'मुलेठी' (रू. भे)

मुरेठौ-सं० पु०—१ साफा।

२ पगड़ी।

मुरैलौ—देखो 'मोर' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—आई आई सांवण तीज, मुरैला बोल्या मैं'रा डूंगरां जी।
—रसीलेराज रा गीत

मुरैंठी—देखो 'मुलेठी' (रू. भे.)

मुरोबत, मुरोवत—देखो 'मुरव्वत' (रू. भे.)

मुळ-अव्य०—१ बिल्कुल।

२ एकदम।

उ०—वीरमदे दूदावत नै राव मालदे मुळ हीज नाड़ी विरोध हुवौ।
—राव मालदेव री वात

३ कतई।

४ तनिक भी, थोड़ा भी, रंचमात्र।

उ०—जळ मांहै बळ ग्राह रौ बारै मुळ लग नांहि। बारै बळ गजराज रौ, मुळ नांहीं जळ मांहि।—गज उद्धार

५ अगर, मगर, किन्तु, परन्तु, लेकिन।

६ अन्ततः।

७ मूलतः

मुळक-सं० स्त्री० [सं० पुलक] मुस्कराने की क्रिया या भाव, मंदहास्य, पुलक।

उ०—१ लवखू बोली-म्हारी देह रा इण रूप अर होठां री इण मुळक रै विणासियां म्हैं इण नांव रौ कांई करूंला।—फुलवाड़ी

उ०—२ जळ जळी आंख्यां अर होठां माथै मुळक रै सागै वै एक दूजा सूं बिछड़चा।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मुळकी, मुळक्की, मुळिक, मुळुक,

मुलक-स० पु० [अ० मुल्क] १ कोई बड़ा देश, राष्ट्र।
(अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ मालिक काबुल मुलक रो, कमरो साजि कटक्क। जंग करण अप जैत हूं, आयौ लांघि अटक्क।—मे. म.

उ०—२ प्रभुता देखी पुत्र नी, राजा हुवै खुस्याल। पुण्य बिना किम पांमीयै, एल मुलक ए माल।—वि. कु.

उ०—३ नाग रा भाग पीवै निलज भ्रांक आग चख में भड़ै। अंगरेज मुलक दाबण अड़ै, ए जूंवां सूं आथड़ै।—ऊ. का.

उ०—४ म्हैं सगळा मुलकां री धरती बिना देख्यां ई ओळखूं हूं। माळी री बेटी हूं, धूळ अर बूंटी देखने धरती री ठा पटकूं।
—फुलवाड़ी

२ रियासत, प्रान्त, सूबा प्रदेश।

उ०—१ दक्खिण मैं साह रै तथा इण रा तीजा कुपुत्र रै साथ केही जुद्ध जीति केही पुर दुरग दाबि पचहत्तरि लाख ७५००००० रौ मुलक दाबि दिल्ली हेठै पटकियौ—वं. भा.

उ०—२ थांरे मुलक में भक्ति नहीं छै, लोग बसै सब कूड़ौ।
—मीरां

उ०—३ आगला सूंराचंदां नै परा काढीया सूं आगे तो पारकर मुलक में गया था नै हमार थळ रा गांवां में गंगासर नै गंगासर रा गांवां में बैठा है।—नैणसी

उ०—४ कांधळजी हिसार रौ मुलक मारियौ तौं पर सारंगखांन पठांन आयौ।—नापै सांखले री वारता

मुहा०—मुलक मारणौ-किसी प्रदेश या क्षेत्र अथवा रियासत पर कब्जा करना, कोई देश विजय करना, लूटना।

३ संसार, दुनिया, विश्व।

उ०—१ चोड़ै कर चाळोह, लूटै भाळौ लोक नें। कद हुसी काळोह, मुनस्यां वाळौ मुलक सुं।—ऊ. का.

उ०—२ मुलकां चावी गवाड़ी ही। माया अर मिनख दोनां रा थाट हा।—फुलवाड़ी

मुह०—मुलकां चावौ-विश्व विख्यात, जग प्रसिद्ध, लब्ध-प्रतिष्ठित।

४ कोई भू-भाग, क्षेत्र।

उ०—काळ पड़ियोड़ा मुलक में बरसात व्हैणा सूं लोग जितरा राजी व्है, हळदी बाई नै देखनै उत्ता ई राजी व्हिया।—फुलवाड़ी

५ जन्म भूमि, वतन।

६ जनता, समाज।

७ विदेश, परदेश।

उ०—ऐड़ौ रूपाळौ मोटयार छोडनै म्हैं कठै मुलकां में रोवता फिरां।
—फुलवाड़ी

रू०भे०—मुलक्क, मुलिक, मुलुक, मुल्क,

मुलकगिरी, मुलकगीरी–सं०स्त्री० [अ० मुल्क+फा०गीरी] देशों को जीतना, देश विजय।

उ०—उठा सूं कूंवर मुलकगिरी नै असवार हुवा। मुलक घूमिया, सारा रस किया। मुलक दोय-तीन दूजा नया बसाया।
—पलक दरियाव री वात

२ लूट-पाट, डकेती।

उ०—जे रांमसिंह मेड़ते जाय दाखिल हुवौ तद फेर मुलक मांही मुलकगीरी कीवी।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

३ देशाटन, भ्रमण, यात्रा।

रू०भे०—मुल्कगीरी।

मुळकण–सं०स्त्री०—१ मुस्कराने या हंसने की क्रिया या भाव।

२ मंद हास्य, हंसी।

उ०—छकी हीरां मदन छकि, वण बुध सदन वीसेख। चंद बदन मुळकण दमक, रदन तडत की रेख।—बगसीरांम प्रोहित री बात

मुळकणौ, मुळकबौ–क्रि०अ० [सं० पुलकनम्] १ मंद मंद हंसना, मुस्कराना।

उ०—१ सखि वउळावी फिरि गई, प्री मिळियउ एकंत। मुळकत ढोलउ चमकियउ, बीजळ खिवी क दंत।—ढो. मा.

उ०—२ दसण निपाप करिस दांमोदर, आणंद तूझ हुवै गिरवर-धर। अहर निपाप करिस अघ-वारण। मुळकै तूझ प्रेम मधु-मारण।
—ह. र.

२ हंसना।

उ०—१ चरचीयै चंडी खळां खंडी मुदत मंडी मुळकती। भजियै भवांनी जगत जांनी धी राज रांणी भगवत्ती।—मा. वचनिका

उ०—२ चौजां चटकाळा गुरु गटकाळा, मटकाळा मुळकंदा है। माथा हद मसळै श्रैं कद असळै, धमळै जद धूजंदा है।—ऊ. का.

३ मुदित होना, हुलसना, चाव आना।

उ०—मेंदी देऊं मुळक मेल सूं करदै मोळी। दीवाळी रै दिवस दिया में ऊठै होळी।—ऊ. का.

४ प्रसन्न होना, खुश होना, पुलकित होना।

उ०—एकली बैठी फूसी कलपै-कुढै। वठै मारजा हरिजण बालकां में रीझै-मुळकै।—दसदेव

मुळकणहार, हारौ (हारी), मुळकणियौ—वि०

मुळकिग्रोड़ौ, मुळकियोड़ौ, मुळक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मुळकीजणौ, मुळकीजबौ—भाव वा०।

मुळक्कणौ, मुलक्कबौ—रू० भे०।

मुळकाणौ, मुळकाबौ–क्रि० स० ["मुळकणौ" क्रि० का० प्रे० रू०]

१ हंसने या मुस्कराने के लिये प्रेरित करना।

२ प्रसन्न करना, खुश करना।

३ हंसाना, मनोरंजन कराना।

मुळकाणहार, हारौ(हारी), मुळकाणियौ—वि.।

मुळकायोड़ौ—भू. का. कृ.।

मुळकाईजणौ, मुळकाईजबौ—कर्म वा.।

मुळकायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ हंसने या मुस्कराने के लिये प्रेरित किया हुआ. २ प्रसन्न व खुश किया हुआ. ३ हंसाया हुआ।

(स्त्री. मुळकायोड़ी)

मुलकियोड़ौ–भू. का. कृ.—१ मंद मंद हंसा हुआ, मुस्काया हुआ. २ हंसा हुआ. ३ मुदित हुवा हुआ, हुलसा हुआ. ४ प्रसन्न, खुश व पुलकित हुवा हुआ।

(स्त्री. मुळकियोड़ी)

मुळकी—देखो 'मुळक' (रू. भे.)

मुलकी—देखो 'मुल्की' (रू. भे.)

मुळकौ—देखो 'मुळक'

उ०—म्हारी हुती ने म्हैं ई लाई, बैंन हुती ने सौक कहाई। सांमी बैठी सुरमौ सारै, माखी नइ आ मुळकौ मारै।—अज्ञात

मुळक्क—देखो 'मुळक' (रू. भे.)

मुलक्क—देखो 'मुलक' (रू. भे.)

उ०—वाजत्रे सुर जैत रौ, डावी चील किलक्क। आभ पड़ंतां थंभ पर, थई सलाह मुलक्क।—रा. रू.

मुळक्कणौ, मुळक्कबौ—देखो 'मुळकणौ, मुळकबौ' (रू. भे.)

उ०—सुंदर सोळ सिंगार सजि, गई सरोवर-पाळ। चंद मुळक्कयउ जळ हंसयउ, जळहर कंपी पाळ।—ढो मा.

मुळक्कणहार, हारौ(हारी), मुळक्कणियौ—वि.।

मुळक्किग्रोड़ौ, मुळक्कियोड़ौ, मुळक्कयोड़ौ—भू. का. कृ.।

मुळक्कीजणौ, मुळक्कीजबौ,—भाव वा.।

मुळक्कियोड़ौ—देखो 'मुळकियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. मुळक्कियोड़ी)

मुळक्या—देखो मुळक' (रू.भे.)

उ०—निलजी कैरव नार,कै ऊभी मुळक्या करै। आसी कुटुंब उधार, देणा सो लेणा दुरस।—रांमनाथ कवियौ

मुळगुळ—देखो 'मुगळ'(रू. भे.)

उ०—साथै हिंदू मुसलमांणां, हिंदुसथांन खिडे खुरसांणां। मुळगुळ ऊजबकि खुरसांणी, वोलै जेम विहंगम बांणी।—गु. रू. बं.

मुळगौ–वि. [सं. मूल] (स्त्री. मुळगी) १ पूर्णतया।

उ०—१ पण औ डकरेल चोर तौ बाड़ी री सोभा रौ जांणै मुळगौ मठ ई मार दियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ भारा उखणता-उखणतां सगळौ माथौ जिण दिन मुळगौ ई विण जावैला उण दिन इण री अकल ठांणै आवैला।
—फुलवाड़ी

उ०—३ एक बडेरै कह्यौ-जायनै चौधरी नै पालूं, नीतर औ तौ अठा सूं अपांरौ मुळगौ पाणी ई काट न्हाकैला। फुलवाड़ी

२ बिल्कुल।

उ०—१ सेठ बाद करता बोल्या—थे' राजी व्हौ भलांई' वेराजी व्हौ। म्है तौ मुळगौ ई पांतरयौ के फेरा कीकर खाया हा।
—फुलवाड़ी

उ०—२ आ कालाई तौ बरसां तांई जूता मारियां ई ठांणै नीं आवै, इण वास्तै म्हैं तौ मुळगी ई माठ झाल ली।—फुलवाड़ी

३ तनिक भी, किंचित मात्र भी।

उ०—१ म्हनै तौ नीं खुदा माथै भरोसौ है अर नीं भगवांन् माथै मुळगौ ई विस्वास है।—फुलवाड़ी

उ०—२ आं हीरां-मोत्यां री म्हनै मुळगौ ई चाव नीं है।
—फुलवाड़ी

४ मुख्य, मूल, व असल।

रू०भे०—मुळकौ, मुळौ, मूळकौ, मूलकौ, मूलगउ, मूलगउ, मूलगु, मूलगू, मूळगौ, मूलगौ, मूलागौ

मुलजिम—वि० [अ० मुल्जम] १ जिस पर कोई इल्जाम या अभियोग लगाया गया हो, अभियोगी, अभियुक्त।

मुळणौ, मुळबौ—क्रि०अ०—१ नटना, इन्कार करना।

उ०—जो न भांण ऊगमैं, जो नवि वासग धर झलै, रांम बांण न ग्रहैं, करण पारथ्यौ जु मुळै। ब्रह्मा छोड़ै वेद, पवन जा रहै पुळंतौ, चंद सूर ना वहै, रहै किम ग्रमी झरंतौ। पंमार नाकारौ नां करै, मेर-समौ जाकौ हियौ, कंकाळी कीरति करै, सीस दांन जगदे दियौ।
—जगदेव पंवार री बात

२ मुकरना, पलटना।

मुळणहार, हारौ (हारी), मुळणियौ—वि०।

मुळिग्रोड़ौ, मुळियोड़ौ, मुळयोड़ौ—भू०का०कृ०।

मुळीजणौ, मुळीजबौ—भाव वा०।

मुळतबी, मुलतवी—देखो 'मुल्तवी' (रू. भे.)

मुळतांण, मुलतांण—सं०पु०—पश्चिमी पंजाब या वर्तमान पाकिस्तान का एक प्रसिद्ध नगर।

रू०भे०—मलतांन, मुलतांणी, मुलतान, मुलतांनी, मूलथांण

मुळतांणी, मुलतांणी—वि०—मुलतान का, मुलतान सम्बन्धी।

उ०—मुळतांणी घर मन वसी, सुहंगा नइ सेलार। हिरणाखी हसि नइ कहइ, आंणउं हेडि तुखार।—ढो.मा.

सं०पु०—१ एक वस्त्र विशेष।

उ०—१ सुणि सुंदरि साहिब कहैं, याछे रेणइ सिवाय। कंचु मुलतांणी तणी पेहरचौ सोहत खुसि।—व.स.

उ०—२ मुलतांणी ताखौ मछीपटण तासतौ।—व.स.

सं०स्त्री०—२ हल्के-पीले रंग की एक अत्यन्त कोमल एवं चिकनी मिट्टी जिसे औरतें सिर धोने के काम में लेती हैं।

३ मूलतान का निवासी।

४ एक रागिनी विशेष। (संगीत)

रू०भे०—मुलतांनी,

देखो 'मुळतांण' (रू. भे.)

उ०—जाळंधर कसमीर सिंध सोरठ खुरसांणी, ओड़ीसा कनवज्ज नगर थट्टा मुळतांणी। कुंकुण नै केदार दीप सिंघळ मालेरी, द्रावड़ सावड़ देस, आंण तिलंगांणह फेरी।—नैणसी

मुलतांन—देखो 'मुळतांण' (रू. भे.)

मुलतांनी—१ देखो 'मुळतांणी' (रू. भे.)

उ०—१ कोस ४ रीत हर कूण उत्तर रै सांधै। जाट वांणीया मुलतांनी वसै। वडी गांव में छै।—नैणसी

उ०—२ खासो टुकडी जांमसाइ मुलतांनी तपाइ सालु मुगीपटण ताखो खीसाप तासती चुनडी चोरसो लाखारस दुदांमी जांमावाड कचीयो।—व. स.

उ०—३ जलाजी मारू, छींटां मांयली छींट भली मुलतांनी हो मिरगानैणी रा जलाल।—लो. गी.

२ देखो मुळतांण' (रू. भे.)

मुलतांनी लुहार—सं०पु०—लुहारों की एक शाखा।

मुळमुळच—देखो 'मलमुलच' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

मुलमुल—देखो 'मलमल' (रू. भे.)

उ०—मुलमुल मुहुगां मोल की, ताको बागो कीन। सुंदर आवी सांमहि पीउ केंडि कर लीण।—व. स.

मुळमुळाणौ, मुळमुळाबौ—क्रि०स०—१ फेरना।

उ०—वौ जीभ मुळमुळायनै आपरो लोई चाखियौ।—फुलवाड़ी

२ हिलाना।

उ०—भांणजी बीच में बोलण सारू होठ मुळमुळाया ई हा के मासी उणनै ढाबती कैवण लागी—थूं धीरप सूं म्हारी सगळी बातां सुण वेटी।—फुलवाड़ी

३ मुंह में डाल, कर हिलाना-फिराना।

मुळमुळाणहार, हारौ(हारी), मुळमुळाणियौ—वि.।

मुळमुळायोड़ौ—भू. का. कृ.।

मुळमुळाईजणौ, मुळमुळाईजबौ—कर्म वा.।

मळमळाणौ, मळमळाबौ, मुळमुळावणौ, मुळमुळावबौ—रू. भे.।

मुळमुळायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ फेरा हुआ. २ हिलाया हुआ. ३ मुंह में डालकर हिलाया व फिराया हुआ।

(स्त्री. मुळमुळायोड़ी)

मुळमुळावणौ, मुळमुळावबौ—देखो 'मुळमुळाणौ, मुळमुळाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हांचळ मुळमुळावतौ बाळक केई वेळा आंख्यां री जोत रै मारग पाछौ जच्चा रै हिवड़ा में समाय जातौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ हांचळ मुळमुळावतां ई बाळक रै होठां अर मूंडा सूं ऐड़ी ठा पड़ती के उणनै मासी बिचै मां रौ दूध तौ अवस सखरौ लागै।
—फुलवाड़ी

मुळमुळावियोड़ौ—देखो 'मुळमुळायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री. मुळमुळावियोड़ी)

मुलम्मौ—सं०पु० [अ० मुलम्मा] सोने या चांदी आदि की कलई, झोल निकल।

मुलवारी—एक प्रकार-का घोड़ा ।

उ०—रुमहरी हुसेना बाद राति, जिण अरब मांहि वळि नौख जाति । कंधारी उतन खंधार खेत, लख लख मुलवारी मोल लेत ।
—सू. प्र.

मुला—देखो 'मुल्ला' (रू. भे.)

उ०—१ मौलवी कराडै अरज काजी मुला, पाडजै देवहर दळा कर पेल । मेच्छ वांचै जिकौ हिंव इकळीम मज्झ, खडौ राजा जितै वर्णां नह खेल ।—नरहरदास बारहठ

मुलाकात-सं० स्त्री० [अ०] १ दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होने वाला परस्पर मिलन, भेंट, साक्षात्कार ।

उ०—१ जीव-निरजीव री मुलाकात ! मौत मैंणी री घात ! फरारां री टोळी रा दबग अर धाखड़-धाड़ेत चेत्या, चमक्या तथा चट देणै मौके जा पूग्या ।—दसदोख

उ०—२ मारग में काचा आदमियां री बातां नहीं सुणी, पिता री आग्या प्रभू री आज्ञा ज्यूं जांण कूच दर कूच आय बादसाह सलांमत सूं मुलाकात कीवी ।—नी. प्र.

२ जान-पहचान, परिचय ।

उ०—आपरै बेटा सागै ठकरांणी री प्रीत रौ सगळौ खातौ उघाड़ नै सुणाय दियौ के कीकर चाकरी चढता ठाकर सूं मुलाकात व्ही ।
—फुलवाड़ी

३ प्रेम-व्यवहार, मैत्री ।

४ सहवास, रतिक्रीड़ा, मैथुन ।

रू० भे०—मुलाखात,

मुलाकाती-वि०—१ मुलाकात करने वाला, जिससे जान-पहचान हो ।

२ परिचित ।

३ प्रेमी, मित्र ।

रू० भे०—मुलाखाती

मुलाखात—देखो 'मुलाकात' (रू. भे.)

उ०—तद उदैरांम कयौ, गांम आधा हूं बही मैं उतार देसूं । सू उतार दीना ओर कयौ, थे मा'राज सूं मुलाखात मती करज्यो, जो कहावै तौ ऊतर देज्यो कै हमार नहीं पछै हुसी!!—द. दा.

मुलाखाती—देखो 'मुलाकाती' (रू. भे.)

मुलाजम—देखो 'मुलाजिम' (रू. भे.)

२ देखो 'मुलाजमत' (रू. भे.)

उ०—संवत १७७५ सावण वद ११ दिली दाखल हुवा । पातसाह फरकसा री मुलाजम कीवी ।—रा. वं. वि.

मुलाजमत, मुलाजमती-सं०स्त्री० [अ० मुलाजमत] १ सेवा सुश्रुषा ।

२ नौकरी, चाकरी ।

उ०—१ जाहांगीर पातसाहि अजमेर नुं आवतौ थौ, माहाराजा स्री गजसिंहजी चाटसु कन्है जाय पातसाह जांहागीर सुं मिळिया । मुलाजमत कीवी । पातसाह अजमेर आया ।—नैणसी

उ०—२ मिगसर वद ६ सोम महाराज साहजादा सूं मुलाजमत करायी तरै पांच हजारियां में सभानूं ऊभौ राखियौ, सिरपाव दियौ पांचहजारी रौ मनसब दियौ ।—बां. दा. ख्यात

उ०—३ पछै जाय मुलाजमती की बोहत दिलासा कीवी । घोड़ौ सिरपाव हाथी दे, डेरा नूं विदा कीया ।—नैणसी

रू० भे०—मुलाजमत, मुलाजम, मुलाजिमत,

मुलाजिम-सं० पु० [अ०] १ नौकर, चाकर, सेवक ।

२ दास, गुलाम ।

रू० भे०—मुलाजम,

मुलाजिमत—देखो 'मुलाजमत' (रू. भे.)

मुलाजौ—देखो 'मुलाहिजौ' (रू. भे.)

उ०—तुंकारौ काढै तुरक, मुंह मुलाजौ मेट । कुल उत्तम जन्म्यां किसूं, नीच कहीजै नेट ।—ध. व. ग्रं.

मुळाटौ-सं० पु०—कपड़े को गोलाकार लपेट कर बनाई हुई एक प्रकार की गेंडुरी (इंडुरी) जो सिर पर बोझा उठाने में काम आती है ।

मुलाणौ, मुलाबौ—देखो 'मोलाणौ, मोलाबौ' (रू. भे.)

मुलाम—देखो 'मुलायम' (रू. भे.)

मुलायजौ—देखो 'मुलाहिजौ' (रू. भे.)

उ०—१ सिधराज जेसंघ रै दीवाळी होळी दसरोहे बार परब पोसाक सिरपाव गहणौ सरब नेग पुमार जंत पावै, कारण ईजत बडौ मुलायजौ ।—जैतमाल पुमार री बात

उ०—२ मेमद मुराद अबु भेळा हुआ आगे मेमद मुराद पंवार सादूळ रा. नरसिंघदास रौ कायदौ मुलायजौ कोई न करतौ, अळघा बैसांणता ।—नैणसी

उ०—३ मालुम मुलायजे करहु माफ, आलिम हैं आलमगीर आप ।
—ऊ. का.

उ०—४ सू इणां रै चारण १ गैपौ सिढायच हौ इण री पण मुलायजौ छौ । सारां नूं तुंकारौ देयनै बतळावतो ।—द. दा.

मुलायम-वि० [अ०] १ कोमल, नरम ।

२ नाजुक, सुकुमार ।

३ जिसमें कठोरता या तीव्रता न हो, शान्त, सरल ।

रू० भे०—मुलाम,

मुलायमत, मुलायमी-सं०स्त्री० [अ० मुलायमत] १ मुलायम होने की अवस्था या भाव ।

उ०—वजीर अरज कीवी, मिठाई, मिताई, खमाई, नरमाई और मुलायमी किण वास्ते जे इण गुणां सूं रैयत हुआ आपरै बादसाह नू देवै ।—नी. प्र.

२ कोमल, नरमी ।

उ०—मुदार मुलायमत ऐ स्वभाव भला छै ।—नी. प्र.

३ नाजुकता, सुकुमारता ।

मुलायोड़ौ—देखो 'मोलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मुलायोड़ी)

मुलावणौ, मुलावबौ—देखो 'मोलाणौ, मोलाबौ' (रू. भे.)

उ०—गूंथे गोली तन गुडकावै, ऊंनै नींद न आवै। सूंघै सुजस इतर तव साजन, मूंघै मोल मुलावै।—ऊ. का.

मुलावणहार, हारौ (हारी), मुलावणियौ—वि०।

मुलाविस्रोड़ौ, मुलावियोड़ौ, मुलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मुलावीजणौ, मुलावीजबौ—भाव वा०।

मुलावियोड़ौ—देखो 'मोलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मुलावियोड़ी)

मुलाहिजौ—सं० पु० [अ० मुलाहजः] १ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत, आदर।

उ०—१ नापो पूछी क्यों ना गया। उण कही कासूं जावां। म्हारौ कारण मुलाहिजौ थौ सो सगळौ महने सबा महना मूं मेटियौ।—नापै सांखले री वारता

उ०—२ उम्मीदवार कांम आया त्यांनूं पट्टौ जागीर दीवी। खास चोकी मांही राखिया। बड़ो महरबांनी, कायदौ-कुरब मुलाहिजौ दियौ।—डाढाळा सूर री बात

२ लिहाज, संकोच।

उ०—१ सो हम महाराज का बहुत मुलाहिजा राखै हैं। अब हमसे मुलाहिजा नहीं रहेगा।—जयसिंह आंमेर रा धणी री वारता

उ०—२ ताहरां मां पण आ हीज कही-हालण रै वासते सारो लोक आतुर छै। महाराज निपट काहल करै छै। थारौ मुलाहिजौ करि दबाय नै कहै न छै।—पलक दरियाव री बात

३ प्रभाव, रौब, शान-शौकत।

उ०—यह आंमेर जयसिंह जी रै परणियौ थौ सो उवां री भारी मुलाहिजौ सो अमरसिंहजी नूं बादशाह नीकी तरह राखै।

—रा. रा. सि. री वारता

४ निरीक्षण, गौर।

रू० भे०—मुलाजौ, मुलायजौ,

मुलिक—देखो 'मुलक' (रू. भे.)

मुळियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ नटा हुआ, इन्कार किया हुआ. २ मुकरा हुआ, पलटा हुआ।

(स्त्री० मुळियोड़ी)

मुळुक, मुलुक—देखो 'मुळक' (रू. भे.)

मुळेट, मुळेठ—सं०पु०—कुंभकार द्वारा चाक पर से उतारे हुए कच्ची मिट्टी के वर्तन का प्रारंभिक रूप।

उ०—वै इणी भांत चाक फेरणी सूं चाक घुमावै माथै पींडौ धरै। सागै इणी भांती चूळ खांचै। पछै मुळेट उतारै।—फुलवाड़ी

मुळेठी मुलेठी—सं० स्त्री०[सं० मधुयष्टि,प्रा० मूलयट्ठी] १ उष्ण प्रदेशों में, काली मिट्टी में होने वाली एक लता।

२ उक्त लता की जड़, जो स्वाद में मीठी व तृष्णा, ग्लानि व क्षयनाशक एवं बल वर्धक औषधि मानी जाती है।

रू० भे०—मरेठी, महलोटी, मिरिहठी, मुरेठी, मुरैही।

मुळौ—देखो 'मुळगौ' (रू. भे.)

उ०—स्याळिया तौ इण फरमांण आगै बोलणौ मुळौ माठ कर दियौ।—फुलवाड़ी

मुल्क—देखो 'मुलक' (रू. भे.)

मुल्कगीरी—देखो 'मुलकगीरी' (रू. भे.)

मुल्की—वि० [अ०] १ देशका, देश सम्बन्धी,

२ अपने देश का बना हुआ, देशी।

रू० भे०—मुलकी।

मुल्तवी—वि० [अ०] १ जिसका विचार छोड़ दिया गया हो, स्थगित।

२ रुकने वाला, रुका हुआ।

रू०भे०-मुलतबी, मुलतवी,

मुल्लौ—सं०पु० [अ०मुल्ला] १ मस्जिद में अजान देने वाला मौलवी, इस्लाम धर्माचार्य।

उ०—१ मुल्ला काजी मंगहु मयाद, फतवा लीजै मेटन फसाद।

—ऊ. का.

उ०—२ कांई करैला म्हारौ दुरजन पुरजन, कांई करैला झूठा पाजी जी। कांई करैला म्हारौ राजा रांणी, कांई करैला मुल्ला काजी जी।—मीरां

उ०—३ दादू काया मसीत कर पंच जमाती, मन ही मुल्ला इमांम। आप अलेख इलाही आगे, तहं सिजदा करै सलांम।—दादूबांणी

२ मुसलमानों का विद्या गुरु, शिक्षक।

रू०भे०—मुला।

मुवक्किल—सं०पु० [अ०] १ मुसलमानों का एक कल्पित देवता, फरिश्ता।

२ वह रूह व आत्मा जो आमिल द्वारा वश में की गई हो।

३ वकील का आसामी, जो अपना मुकद्दमा वकील को सौंपता है।

मुवारणौ—देखो 'मारणौ' (रू. भे.)

मुवारौ—देखो 'मुहावरौ' (रू. भे.)

मुवाळ—सं०स्त्री०—मुखाकृति।

मुवोड़ौ, मुवौ—वि० [सं०मृत] मरा हुआ, मृत।

उ०—१ विद्या रौ जाप अतंजय रौ जाप छै। जु जपै सु तीन वरसौ मुवौ जीवै।—चौबोली

उ०—२ मुवा बालक सुलसा जणौजी, ते मेलै तुम पास। ताहरा मेलै जीवता जी सुलसा री पूरै आस।—जयवांणी

मुसं—वि० [सं०मृषा] झूठा।

मुसंद—देखो 'मसंद' (रू. भे.)

मुसक—१ देखो 'मसक' (रू. भे.)

उ०—चाहैं पर धन चोर, जोर कुविसन ए जांणौ। मुसक बंधि मारिजै, घणी वेदन करि घांणी।—ध. व ग्रं.

२ देखो 'मुश्क' (रू. भे.)

मुसकरा'ट—देखो 'मुस्कराहट' (रू. भे.)

मुसकराणौ, मुसकराबौ—क्रि०अ०—देखो 'मुमकाणौ, मुसकाबौ' (रू.भे.)

मुसकराणहार, हारौ(हारी), मुसकराणियौ—वि.।

मुसकरायोड़ौ—भू. का कृ.।

मुसकराईजणौ, मुसकराईजबौ—भाव वा.।

मुसकरायोड़ौ—देखो 'मुसकायोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. मुसकरायोड़ी)

मुसकराहट—देखो 'मुस्कराहट' (रू. भे.)

मुसकल, मुसकलि, मुसकल्ल—देखो 'मुस्किल' (रू. भे.)

उ०—१ तद रावजी बोल्या–जु आ वात तौ खरी पण वैर ही करणां आसांण छै, वैर छूटणा मुसकल छै।—नैणसी

उ०—२ ज्यारी रिच्छचा देवता, सेवा पीर प्रधान। त्यां अण चीती संपजै, मुसकल मैं आसांन।—रा. रू.

उ०—३ लालच रस रै लाग, मांखी लपटांणी मधू। उडणी बळियौ आग, जिण रै मुसकल जीवणौ।—बां. दा.

उ०—४ माता पितु बेटी बेटा भल मरिया। प्यारां प्यारां नै मुसकल परहरिया।—ऊ. का.

उ०—५ जन हरियै की बीनती, सांई करीयै कांनि। बंदै कूं मुसकल घनी, तेरै सब आसांनि।—स्त्रीहरीरांमदासजी महाराज

उ०—६ ऊभां सीहां केस इक, कर लेणौ मुसकल्ल। पांण छतै क्यूंकर पडै, ऊभां सीहां खल्ल।—बां. दा.

मुसकांण, मुसकांन, मुसकांनी—देखो 'मुस्कांन' (रू. भे.)

उ०—हाट बाट मोहि रोकत टोकत, या रसिया की मैं सारी न जांनी। सुंदर वदन कमळ दळ लोचन, बांकी चितवन'रु मंद मुसकांनी।—मीरां

मुसकाणौ, मुसकाबौ–क्रि०अ० [सं०मुद्] १ मंद-मंद हंसना, मुस्कराना।

उ०—१ बिजरी हिरणीं सी फिरणीं बिजकाती, मुखड़ै मुसकाती जोरौ जतळाती।—ऊ. का.

उ०—२ गहै द्रुम–डार कदम की ठाड़ौ, मृदु मुसक्याय म्हारी ओर हंस्यौ। पीतांबर कटि काछनी काछै,रतन जटित सिर मुकुट कस्यौ। —मीरां

उ०—३ मुख मुसकाती उमंग सूं, महदी हाथ भग मंग। भळक छतीसूं आभरण, अंतर लगायां अंग।—पनां

२ हर्षित होना, खुश होना, पुलकित होना।

उ०—१ मिळियां मन मेळूं माती मुसकाती। बुसका भरतोड़ी आती हुसकाती।—ऊ का.

उ०—२ मन मुसकाय खेत के माहीं बोल्यौ मोटी बांनी। चंगी चाल चाह कर चूक्यौ, गढ़ नंहं सज्यौ गुमांनी।—ऊ. का.

मुसकाणहार, हारौ(हारी), मुसकाणियौ—वि.।

मुसकायोड़ौ—भू. का. कृ.।

मुसकाईजणौ, मुसकाईजबौ—भाव वा.।

मुसकराणौ, मुसकराबौ मुसकिराणौ, मुसकिराबौ, मुसकुराणौ, मुसकुराबौ, मुसुकाणौ, मुसुकाबौ, मुस्काणौ, मुस्काबौ, मुस्कावणौ मुस्कावबौ—रू. भे.

मुसकायोड़ौ–भू. का. कृ.—१ मंद मंद हंसा हुआ, मुस्कराया हुआ. २ हर्षित हुवा हुआ, खुश हुवा हुआ, पुलकित हुवा हुआ।

(स्त्री. मुसकायोड़ी)

मुसकिराणौ, मुसकिराबौ—देखो 'मुसकाणौ, मुसकाबौ' (रू. भे.)

मुसकिरायोड़ौ—देखो 'मुसकायोड़ौ (रू. भे.)

(स्त्री. मुसकिरायोड़ी)

मुसकिराहट—देखो 'मुस्कराहट' रू. भे.)

मुसकिल—देखो 'मुस्किल' (रू. भे.)

उ०—१ मुसकिल कूंच्यां मांहि, तिकां निठि कीधा ताबै। अड़ता सिर आकास, फेण झड़ता मुख फाबै।—मे. म.

उ०—२ भूधर कह्यौ–गांव मांही तौ हूं कोई आऊं नहीं। म्हारै झाड़े री मुसकिल, बीजौ तळाव पर पाणी रो निवास छै, कोई नीम उतार दे, कोई हळद तेल आंण देवै, पाळ रै नीचै हूं झाड़े फिर आऊं।—सूरे खींवे कांधळोतरी बात

मुसकी—देखो 'मुस्की' (रू. भे.)

उ०—१. के लीला के कागड़ा, करड़ा हरड़ा केक। मुसकी नुकरा मेटिया, इसड़ा तुरंग अनेक।—पे. रू.

उ०—२ बह अबरस मुसकी अर संजाब। बौरता केहरी पेस बाब।—सू प्र.

मुसकुराणौ, मुसकुराबौ—देखो 'मुसकाणौ, मुसकाबौ' (रू. भे.)

मुसकुराणहार, हारौ(हारी), मुसकुराणियौ—वि०।

मुसकुरायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मुसकुराईजणौ, मुसकुराईजबौ—भाव वा०।

मुसकुरायोड़ौ—देखो 'मुसकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मुसकुरायोड़ी)

मुसकुराहट—देखो 'मुस्कराहट' (रू. भे.)

मुसटंड—देखो 'मुस्टंड' (रू. भे.)

मुसट–सं० स्त्री०—१ चुप्पी, मौन।

उ०—लाज भला कहवौ कवै, लाज न आवै काज। कही भलौ कहणौ कही, मुसट भली छै राज।—पंच दंडी री वारता

२ देखो 'मुस्टी' (रू भे)

उ०—विस्ट न आवै मुसट मैं, नहीं रूप न रेखा। हरिरांमा परि सुनि मैं, मुझि मील्या अलेखा।—स्री हरिरांमदास जी महाराज

मुसटक, मुसटि—देखो 'मुस्टी' (रू. भे.)

उ०—छत्रपति इता मिळि जुटत छत्र। तिल मुसटि पड़त नह भोमि तत्र।—सू. प्र.

मुसणौ, मुसबौ—देखो 'मूसणौ, मूसबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

मुसता–स० स्त्री०—नागर मोथा।

मुसताक, मुसताकि—वि० [अ० मुश्ताक] १ उमंगित, उत्साहित, उत्तेजित।

उ०—१ हौदां मझि लोह करै करि हाक। महारिख देखि हुवै मुसताक।—सू. प्र.

उ०—२ सकति पूजि 'अभमल' सुपह, पहरि ऊंच पौसाक। करि

दघवंध ग्रावध कसै, मलपै छक मुसताक।—सू. प्र.
२ बहुत अधिक कामना रखने वाला, अभिलाषी, इच्छुक, उत्सुक।
३ उत्कंठित, लालायित।
४ मस्त, मतवाला।
उ०—१ धर करि ग्रमल पदम छत्र धारै, सुंदरि नवलापुरी सिंगारै। रंग महलि दंपति दुति राजै, छक मुस्ताकि कांम रति छाजै।—सू. प्र.
उ०—२ ग्रठी हूं कंवर हुवौ मुसताक. छकियौ घणौ छबीलौ प्रेम रस री छाक।—र. हमीर
रू० भे०—मसताक, मुस्ताक,
मुसदी, मुसद्दी—देखो 'मुतसदी' (रू. भे)
उ०—१ मोटां छोटां मुसदियां बुलवाली दरबार। 'जसवंत' खातर जीव का, सारां लेतौ सार।—ऊ. का.
उ०—२ यो मन मुसदी सकळ का, ग्रापा ग्रंतर जांणी। हरीया पांच पचीस कु, उलटि एकठा ग्रांणि।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज
उ०—३ मुहता मारवाड़ रा मुसद्दी हा तो सेठ लिछमी रा लाडला—रातवासौ
उ०—४ पाछती गोपाळदास रा मुसद्दियां नूं हाडां रा मुत्सद्दी कही—जे रांणी जी सूं जुहार कर चढज्यो।
—गौड़ गोपाळदास री वारता
मुसन्ना—सं० स्त्री० [ग्र०] १ ग्रसल कागज की वह नकल जो मीलान ग्रादि करने के लिये रक्खी जाती हो।
२ रसीद का ग्रर्द्धांश जो पीछे रक्खा जाता है।
मुसब्बर—सं० पु० [ग्र०] १ ग्रौषध के रूप में काम लेने के लिये कुछ विशिष्ट क्रियाग्रों से जमाया हुग्रा घी-कुंवार-रस। (वैद्यक)
२ एलुवा।
मुसमल्ला, मुसमुल्ला—देखो 'मुसलमांन'
उ०—मिळिया नर मंदांन में, माफी ग्रपमल्ला, सांगो वीरम सारका, झालै कुण झल्ला। ग्रछरां हूरां ग्रावसी, वर सूरां भल्ला, होसी मरणा हिंदवां, मरसी मुसमल्ला—वी. मा.
मुसमूरण—वि० [प्रा० मुसमूर] नाश कारक, नष्ट करने वाला विनाश करने वाला।
उ०—मोह ग्ररि मुसमूरण पूरण परम पसाय। संखेसर परमेसर केसर चरचित काय।—उदयविजय
मुसरफ, मुसरिफ—सं० पु० [ग्र० मुशर्रफ] एक उच्चाधिकारी व इस ग्रधिकारी का पद। (नैणसी)
वि० १ प्रतिष्ठित, सम्मानित।
[ग्र० मुस्रिफ] २ व्यय करने वाला, खर्च करने वाला।
३ ग्रपव्ययी, बहु खर्चीला।
मुसळ, मुसल—देखो 'मूसळ' (रू. भे.)
उ०—त्रिसूल सक्ति सर तोमर मुरधि ग्ररद्ध मुरधि परसु पाम पट्टिस द्रुम लांगूल मुसल मुसंढि मुद्गर लगुड गदा'''।—व स.
मुसलमांन—सं० पु० [ग्र० मुसलमान] महम्मद साहब द्वारा चलाये हुए धर्म एवं सम्प्रदाय का ग्रनुयायी, इस्लाम धर्म को मानने वाला।
उ०—१ जन हरीया उन देसड़ै, ग्रभिनासी की ग्रांन। ग्रौर किसी का डर नहीं, हिंदू न मुसलमांन।—स्री हरिरांमदास जी महाराज
उ०—२ ग्रसल मुसलमांन हुवै जकौ मजब रै कायदै सुं निवाज पढै, रोजा राखै ग्रर वरस में दो-चार बार हलाली कर परो र मालक नै मूंढौ दिखाळै।—दसदोख
रू० भे०—मुसलमीन. मुसल्मांन, मूसळमांण, मुसळौ मुसलौ, मुसल्लौ।
मुसलमांनी—सं० स्त्री०—१ मुसलमानों में बच्चों ग्रादि के की जाने वाली सुन्नत, खतना (रस्म)
२ मुसलमान का कर्त्तव्य, धर्म।
वि०—मुसलमान का, मुसलमान सम्बन्धी।
रू० भे०—मूसलमांण, मूसलमांन
मुसलमीन—देखो 'मुसलमांन' (रू. भे.)
उ०—मालिक नहिं खालिक मुसलमीन। ग्रल्ला हैं रब्बुलग्रालमीन।
—ऊ. का.
मुसला—सं० पु०—मुसलमान जाति या वर्ग।
उ०—लूवां मगलागी धरणीतल धायां। मुसला मिटिगा ज्यूं ग्रंगरेजां ग्रायां। ऊ. का.
रू० भे०—मुसल्ला।
मुसळायुद्ध, मुसलायुध—देखो 'मूसळायुध, मूसलायुद्ध (रू. भे.)
उ०—हलायुध हलायुधई, मुसलायुध मुसलायुधई सूलायुध सूलायुधई ''''।—व. स.
मुसळि, मुसलि—१ देखो 'मूसळ' (रू. भे.) (ग्र. मा.)
२ देखो 'मूसळी' (रू. भे.)
मुसळी—सं० स्त्री०—१ छिपकली, विसूंदरा।
२ देखो 'मूसळी' (रू. भे.)
मुसळौ, मुसलौ—१ देखो मुसलमांन'
उ०—फटकार हलाहल तें फिरगी, घन ग्रानंद ग्रम्रत धां घिरगी। मुसला पर डार सिला महती गुरु कारज ग्रारज बंस गती।—ऊ. का.
२ देखो मूसळ, (ग्रल्पा., रू. भे.)
मुसल्मांन—देखो 'मुसलमांन' (रू. भे.)
उ०—कल्मां नहिं भरिहैं पांन कांन। मारेहु न व्है हैं मुसल्मांन।
—ऊ. का.
मुसल्ला—देखो 'मुसला' (रू. भे.)
उ०—गल्ला सुभगाथा को पवित्रता को पल्ला थो बो। ग्रल्ला थो मुसल्लावों को मल्ला धन माता को। ग्रत्र थो प्रसिद्ध ग्रातपत्र मात्र ग्रारय्यन को, छत्र छत्र धारिन नछत्र सुख साता को। ऊ. का.
मुसल्लौ—सं० पु० [ग्र० मुसल्ला] १ नमाज पढने की दरी, चटाई।
२ देखो 'मुसलमांन'
उ०—हिंदू लोग ग्यारा सै ग्रसीलां कामि ग्राया। सोळा सै

(स्त्री॰ मुस्कायोड़ी)

मुस्कावणौ, मुस्कावबौ—देखो 'मुसकाणौ, मुसकाबौ' (रू. भे.)

उ॰—पावण नै चांदी रा टुकड़ा, वा लागी नाचण-गावण नैं। वा लागी प्रीत लुभावण नै, वा हंसी बिनां मुस्कावण नै।
—चेत मांनखा

मुस्कावियोड़ौ—देखो 'मुसकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री॰ मुस्कावियोड़ी)

मुस्किल—वि॰ [अ॰ मुश्किल] १ कठिन, दुष्कर, दुस्वार, असाध्य, असंभव।

उ॰—म्हारी इसी हालत व्हैगी ही के बाधिया नै हाकौ करणौ तौ आधौ रहयौ, म्हारौ खुद रौ उठा सूं हिलणौ मुस्किल व्हगयौ हौ।
—रात वासौ

२ पेचीदा, जटिल।

३ गूढ़, सार-गर्भित।

४ सूक्ष्म, बारीक।

सं॰ स्त्री॰—१ कठिनाई, दिक्कत।

२ विपत्ति, संकट, बाधा, दुख।

३ पेचीदगी, उलझन, जटिलता।

४ गूढ़ता, गहराई।

५ सूक्ष्मता, बारीकी।

रू॰ भे॰—मुसकल, मुसकलि, मुसकल्ल, मुसकिल, मुसिकल, मुस्कल

मुस्की—वि॰ [फा॰ मुश्की] १ कस्तूरी के रंग के समान काला।

२ कस्तूरी के समान सुगंधित।

सं॰ पु॰—वह घोड़ा जिसका शरीर कस्तूरी जैसा काला हो।

रू॰ भे॰—मुसकी,

मुस्कोरणौ, मुस्कोरबौ—देखो 'मस्कोरणौ, मस्कोरबौ' (रू. भे.)

उ॰—दीवांणजी लप पग बारै काढ दियौ। तद बा टाबर री गलाई मूंडौ मुस्कोर रिसांणी करती व्हैं ज्यूं बोली। —फुलवाड़ी

मुस्कोरियोड़ौ—देखो 'मस्कोरियोड़ौ' (रू॰ भे.)

(स्त्री॰ मुस्कोरियोड़ी)

मुस्टंड, मुस्टंडौ—वि॰—हृष्ट-पुष्ट, बलवान।

२ मोटा-ताजा।

३ गुंडा, लुच्चा, बदमाश।

रू॰ भे॰—मुसंडौ, मुसटंड, मुस्तंड

मुस्ट—सं॰ पु॰ [सं॰ मुष्टं] १ चोरी का माल।

२ चुप, मौन, खामोश।

उ॰—रहौ मंमाणी मुस्ट करि, करहो कांब म मारि। कोउ बटाऊ पंथसिर, ढोला तणौ उणहारि।—ढो. मा.

३ देखो 'मुस्टी' (रू. भे.)

उ॰—नख चख रूप न नासिका, दिसट मुस्ट मैं नांहि। हरिरांमा हरि पाईया, सुरति निरति कै मांहि।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मुस्टि—देखो 'मुस्टी' (रू. भे.) (व. स.)

उ॰—१ कीजै रे दिल दोसत ऐसा, दिस्ट मुस्टि मैं नहीं आवै तैसा।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ॰—२ नूर तेज ज्यों ज्योति है, प्रांण पिंड यौं होइ। द्रस्टि मुस्टि आवै नहीं, साहिब के वस सोइ।—दादू बांणी

मुस्टिक—सं॰ पु॰ [सं॰ मुष्टिक] १ कंस का एक पहलवान जो बलराम के हाथों मारा गया।

२ सुनार।

३ मुक्का, घूंसा।

मुस्टिका—सं॰ पु॰ [सं॰ मुष्टिका] १ मुट्ठी,

२ मुक्का, घूंसा।

मुस्टिभेद—सं॰ पु॰ [सं॰मुष्टि-भेद] पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक। (व. स.)

मुस्टी—सं॰ स्त्री॰ [सं॰ मुष्टिः] १ हाथ की पांचों अंगुलियों को हथेली में समेटने पर बनने वाली मुद्रा या स्थिति, मुट्ठी, मुष्टिका।

२ उक्त मुद्रा द्वारा चोट करने या मारने की क्रिया।

३ उक्त मुद्रा में समाने वाली वस्तु की मात्रा।

४ घूंसा।

५ पुरुषों की ७२ कलाओं में से एक।

रू॰ भे॰—मुसट, मुसटक, मुसटी, मुस्ट, मुस्टि,

मुस्टौ—सं॰ पु॰—कढाई के अन्दर दूध का मावा घोटने का एक लकड़ी का उपकरण, जिसके आगे मुट्ठी के आकार की एक लकड़ी आडी लगी रहती है।

मुस्तंड—देखो 'मुस्टंड' (रू. भे.)

उ॰—रात रा कुळबै कुळबै काकड़ियां री ठौरी दे आवै। गधौ तो थोड़ा दिनां में मुस्तंड व्हैगौ।—फुलवाड़ी

मुस्त—सं॰ स्त्री॰ [फा॰ मुश्त] १ मुट्ठी।

२ मुक्की, घूंसा।

३ किसी चीज की मुट्ठी भर मात्रा।

मुस्तकिल—वि॰ [अ॰] १ अटल, अडिग, दृढ़, मजबूत।

२ निश्चित, स्थिर।

३ स्थायी।

४ पाबंद।

५ निरन्तर, लगातार।

मुस्तगीस—सं॰ पु॰ [अ॰] अदालत में अपना कोई दावा या अभियोग पेश करने वाला, दावेदार, वादी, फरियादी।

मुस्तनद—वि॰ [अ॰] १ विश्वास करने योग्य, विश्वस्त।

२ प्रामाणिक, मान्य।

मुस्तफी, मुस्तफौ—वि॰ [अ॰ मस्तफा] १ पवित्र, पुनीत।

२ शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल।

३ जिसमें अवगुण न हो, गुणवान।

सं॰ पु॰—१ हजरत महम्मद साहिब का खिताब।

२ पीर-पैगंबर ।

मुस्तरका-वि० [अ० मुश्तरकः] जिसमें कई लोग मिले हुए हों, साझे का, सामूहिक ।

मुस्तसना-वि० [अ० मुस्तस्ना] १ जो किसी प्रकार की पाबंदी,शर्त या कानून के दायरे में न हो, मुक्त, स्वतंत्र ।
२ प्रतिष्ठित ।
३ चुना हुआ ।
४ अपवाद स्वरूप ।

मुस्तहक-वि० [अ०] १ स्वत्व या हक रखने वाला, हकदार ।
२ योग्य, लाइक, सुपात्र ।
३ जरूरत मंद ।

मुस्ताक-देखो 'मुशताक' (रू. भे.)
उ०-परियां बिरह दी मुस्ताक,न करदी दिल न्यारे ।
रसीलैराज रौ गीत

मुस्ती खांड-सं० पु०-एक प्रकार की शक्कर जो कम सफेद व आटे की तरह बारीक होती है तथा इसमें कुछ ढेले भी बंधे रहते हैं । इसकी प्रकृति शीतल मानी गई है । गुड़िया-शक्कर ।
उ०-दौड़तो-दौड़तो वो उण सेठ रै घरै पूगौ । वो बोरी सूं मुस्तीखांड जोखतो हो ।-फुलवाड़ी

मुस्तैद-वि० [अ० मुस्तइद] १ सन्नद्ध, कटिबद्ध, तैयार, तत्पर ।
२ चुस्त, फुर्तिला, निरालस्य ।
३ सावधान, सचेत, होशियार ।
४ चालाक ।
रू० भे०-मुसैद

मुस्तैदी-सं० स्त्री० [अ० मुस्तइदी] १ 'मुस्तैद' होने की अवस्था या भाव ।
२ तत्परता, तैयारी, उत्साह, सन्नद्धता ।
३ फुर्ती, चुस्ती ।
४ सावधानी, सतर्कता, होशियारी ।
५ चालाकी ।

मुस्लमांण, मुस्लमांन, मुस्सलमांण, मुस्सलमांन-देखो 'मुसलमांन' (रू. भे.)
उ०-१ नह संख्यां कुंजरा, नका संख्या केकांणां । नह संख्या हिंदुवां संख नह मुस्सलमांणा ।
उ०-२ 'अजन' इंद्र अवतार, कियौ दरबार हरक्खै । हिंदू मुस्सलमांण, रहै अचरिज्ज निरक्खै ।-रा. रू.
उ०-३ 'अभौ' उजागर अरक ज्यौं, जस इम करै जिहांन । डरो सको 'अगजीत' सूं, हिंदू मुस्सलमांन ।-रा. रू.

मुहंगौ-देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)
उ०-ईडर की घर अउलगणा, हूं तउ जांणण देसि । घरि बइठांही आभरण, मोल मुहंगा लेसि ।-ढो. मा.

मुहंडौ-देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)

मुहंम-देखो 'मुहिम' (रू. भे.)
उ०-दक्खण देस मुहंम, नयर मुक्कांम महीकर । भुगति आउ भूपाळ, वरस गुणचासां भीतर ।-गु. रू. बं.

मुह-देखो 'मुख' (रू. भे.)
उ०-१ आयौ 'गजसाह' उभारि असंमर,जोध तयांरां जोधपुरौ । मुह आगळि तात तणौ कळि माती, मारण केवी 'माल' हरौ ।
-गु. रू. बं.

मुहकणौ, मुहकबौ-देखो 'मूकणौ, मूकबौ' (रू. भे.)
उ०-दखणी दक्खण पसरिया दळ, किरमंकडा करस्सण मेहळ । दखणी कटक चहूं दिस दौडै, महिकर नह मुहक्यौ राठौड़ै ।
-गु. रू. बं.
मुहकणहार, हारौ (हारी), मुहकणियौ-वि० ।
मुहकिओड़ौ, मुहकियोड़ौ, मुहक्योड़ौ-भू० का० कृ० ।
मुहकीजणौ, मुहकीजबौ-भाव वा० ।

मुहकम-वि० [अ० मुहकम] १ दृढ़, मजबूत, पक्का ।
उ०-अर गांव मांहै खेजड़ी हुती तिण सेती च्यारे थांधा मुहकम । तिण ऊपर ढांहर बधाड़िया । -द. वि.
२ टिकाऊ ।
३ अटल, अडिग ।
४ चिरस्थायी ।
५ फंसा हुआ, जकड़ा हुआ ।
उ०-बात मुकते गात बंध,मुहकम माया मांहि । सफरी सुआ जाळ पिंजरै, सिर निकळै धड़ निकसै नांहि ।-रज्जब
रू०भे०-मुंहंकम, मुंहकम ।

मुहकमौ-देखो 'महकमौ' (रू. भे.)

मुहकांण, मुहकांणि-देखो 'मुकांण' (रू. भे.)
उ०-१ अरजन आख मतांण, पापण भय बीहै प्रथी । दे भेळा मुहकांण, भलौ मनावी भीमवत ।-अरजन हमीर भीमोत री बात
उ०-२ मइं मूरखि अजांणि अविणउ कीधउ तुम्हा रहइं । मूं मोटी मुहकांणि तुम्हं, खमउ अवराह गुरु ।-सालिभद्र सूरि

मुहकियोड़ौ-देखो 'मूकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मुहकियोड़ी)

मुहगौ, मुहघौ-देखो मूंगौ' (रू. भे.)
उ०-१ ताखो आखो लावयो कांमण प्यारा कंत । मोल मुहगौ मनि समो, सोवयुं रहें निरखंत ।-व. स.
उ०-२ सीत कालि दिवसिइ गोधूम अद्धि थाई,वेटी आपणे सासुरे जायइं, पास रंग मुहघा थांई कंबलि जोइ'''।-व. स.

मुहछाळ-देखो 'मूंछाळ' (रू. भे.)
उ०-मुडै नह कोय थुडै मुहछाळ । कडै चढ पेम झडै किरमाळ ।
-पे. रू.

मुहझि-देखो 'मुझ' (रू. भे.)

मुहडउ, मुहडु-देखो 'मूंडो' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०-इणि मारीसइ मुहडु भिडंतु बीजउ कोई धाउ तुरंतु । इसुं सुणी नई धायउ पत्थु, झूझइ भीम मिलिउ भडसत्थु ।
-सालिभद्र सूरि

मुहडे, मुहडै—देखो 'मुंहडै' (रू. भे.)

उ०—१ जुटिया विन्है आवरत जुंहरी, घाए रीठ घडइ घमचाळ । उड मछा आवधां **मुहडे**, पाछा दियण परत री वार ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ यु मयारांम नै माल तोरण रै **मुहडै** लाई। सात बीस सहेलीयां निरखणनै आई।—मयारांम दरजी री बात

उ०—३ 'पाळ' कळोधर पक्खर पूरै, खैंगां वाहण खागां खूरै । थाटां **मुहडै** थांणा थूरै, आरांणां माथै दळ ऊरै ।—गु. रू. ब.

मुहडौ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)

उ०—१ त्रिजडां **मुहडै** तर तूटै, वसु पड़ियौं प्रांण विछूटै ।

—र रू.

उ०—२ अंतरंग जे माया धरइ, **मुहडा** नी मलि मलि नवि करइ । सुख दुख घणउं जांणइ जेह, प्रीतूं मांणस कहीइ तेह ।

—नलदवदंतीरास

उ०—३ दिन घड़ी ४ वांसली थौ तरै श्रां ठाकुरां सहर ऊपर दौड़ाया। सेहर भेळ नै कोट रै **मुहडे** रौ छै तठै जाय मोरचौ मांडीयौ ।—नैणसी

उ०—४ हे कंथ आपरै **मुहडै** धोळा खत रा कैस देखतां आपरै विसेखतौ जींवण री आस नहीं चोथी पछेवड़ी आयोड़ा हो ।

—वी. स. टी.

मुहत—देखो 'महता' (मह., रू. भे.)

उ०—उज्जयणी पुहचाविज्यौ जी, वित्तसुं अम्ह चउ बोल । **मुहत** मांन्यउ बचन ते जी, रंग रली चित खोलि ।—कनकसोम वाचक

मुहतउ—देखो 'महता' (रू. भे.)

उ०—१ **मुहतउ** भाव जणावइ, मंगल बाहिर आवइ । जोरि न काढ्यउ ए जावइ, राजा नै मनि भावइ —कनक सोम वाचक

उ०—२ सहीम कहिउ सहुइ तिहां आवी । मुहतउ हरिखिई बोलइ भावि ।—हीराणंद सूरि

मुहता—देखो 'महता' (रू. भे.)

मुहताज—वि० [अ०] १ गरीब, निर्धन, धनहीन ।

२ दरिद्र, कंगाल ।

३ जो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये दूसरों का मुंह ताकता हो, जो दूसरों पर आश्रित हो, जो परवश हो ।

४ जिसे किसी की सहायता की जरूरत हो, जरूरत-मंद ।

५ जिसकी कामना या इच्छा की गई हो, इच्छित, वांछित ।

उ०—सु दैत्य दमनी नै नेडी बुलाय पहराई छै, दैत्य दमनी खुसी हुई, **मुहताज** पाई ।—पंच दंडी री वारता

रू० भे०—मोहताज,

मुहताजी—सं० स्त्री० [अ०] १ 'मुहताज' होने की अवस्था या भाव ।

२ गरीबी, निर्धनता ।

३ दरिद्रता, कंगाली ।

४ परवशता, विवशता ।

मुहतौ—सं० पु०—देखो 'महता' (रू. भे.)

उ०—१ भलइं भलइं सुंदरिनी बुद्धि, देखउ **मुहता** तणी कुबुद्धि । विना दोख पुत्री दूहवी, मिल्यउ कलंक रिधि पांमी नवी ।

—कनकसोम वाचक

उ०—२ तीन भंडारी नीवड़ै, **मुहतौ** पड़ै सुजांण । फौजदार वरियांम भड़, रांमो पड़ रिण-ढांण ।—रा. रू.

मुहपति, मुहपती, मुहपत्ती, मुहपोती—देखो 'मुंहपति' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ केई अजांण कहैः म्है तो ओघा **मुहपति** नें बांदां । म्हांरै करणी सूं कांई कांम ।—भि. द्र.

उ०—२ विण धोयै विण लूहचै पात्रै, एकासण तिम पुरिमढ मात्रै । गई **मुहपोती** आंबिल सारौ, तिम ओघै अट्ठिम अवधारौ ।

—ध. व. ग्रं.

मुहब्बत—सं० स्त्री० [फा०] १ एक दूसरे के प्रति होने वाला प्रेम, प्रीति।

२ स्त्री-पुरुष या युवक-युवती में परस्पर होने वाला प्यार, इश्क, लगाव ।

रू० भे०—महोबत,

मुहम—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—१ एक बादसाह नूं **मुहम** पण करडी बणी, तरै प्रभू सूं कौल कियौ ।—नी. प्र.

उ०—२ परदेसां की **मुहम** बताबौ, फैर कोई किसीय वहांनै । राज बहुत विध सूं समझायौ, यौ मनडौ नहीं मांनै ।—लो. गी.

उ०—३ पछै महाराजाजी नुं जैतंघजी नुं नांनग गुरुरी **मुहम** दीनी तरै सहरोरै पधारिया संवत १७६८।—रा. वं वि.

उ०—४ जाय नवोढा सासरै, आंसू नांखे उसास । मावड़िया जावै **मुहम**, इण विध हुवै उदास ।—बां दा.

उ०—५ **मुहम** प्रकोप उदेपुर माथै, सातैइ महण थया फिर साथै । लाधां जळ वेळांमौ लीजै, छीजै जंतु प्रजा पुर छीजै ।—रा. रू.

उ०—६ यों नव ब मुख आखियौ, **मुहम** फिरै मौ तांम । 'अजन' मिळै पतसाह सूं. टळै दमंगळ जांम ।—रा.रू.

उ०—७ **मुहम** सिरोही मुलक, सरद करि लेहु पेसकस । लेहु सलांमी लडै, विखम मेवाड़ करै वस ।—सू. प्र.

मुहमह—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

मुहमांगी—वि०—इच्छित, वांछित ।

मुहमेज, मुहमेजौ—सं० पु०—१ युद्ध, समर ।

२ मुठ भेड़, झड़प।

क्रि० वि०—आमने-सामने, सम्मुख।

उ०—१ सूर तन तैज भरळाट पोरस सरस, खित सु छळ जैज नह धरै अड़ीखंब । तेज व दोहु ओछाड़ कोटां नवां, थया **मुहमेज** धरती तणा थंब ।—पहाड़खां आढौ

उ०—२ बेमुरीदौ लोग सो रहे नहीं, बरछी हाथ लेवै तोलै कहै-- हेकर से **मुहमेजां** हुवै तो ही पैलै री छाती मां देवां ।

—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

वि०—वीर गति प्राप्त ।

रू०भे०—मुंहमेज, मुहमेभ्र, मूहमेज,

मुहमेभ्र—देखो 'मुहमेज' (रू. भे.)

उ०—पीछै दूजे फौजां रा मुहमेभ्र हुआ नै तठै सारांई सैण करी।
—द. दा.

मुहमेळ, मुहमेळु—वि०—१ मिलनसार, व्यावहारिक।

२ एक प्रकार की तुक बंदी।

उ०—ती चवदह दस गुरु लघुवंत, यण मुहमेळ चवदमी श्रंत।
—र. ज. प्र.

३ देखो 'मुहमेज'

उ०—१ इम दुरगेस भडसियै श्रायो. दळ दुरवेस ऊठ दरसायो।
क्यों मुहमेळ कियो नवकोटां, असुर गया भज घाटी श्रोटां।
—रा. रू.

उ०—२ क्यौं मुहमेळ प्रथम दिन कीधौ, लुड़ थुड़ गयो कोट निठ लीधौ।—रा. रू.

उ०—३ काज भड़ां वंकड़ां, 'श्रजन' महाराज उचारै। मीर थयां मुहमेळ, वीर किम जेभ्र विचारै।—रा. रू.

रू०भे०—मुंहमेळ, मूहमेल

मुहम्म—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—चित साह चितवै, भीम इक राह निभम्मां। खुरासांण घमसांण, रांण घेरियो मुहम्मां।—रा. रू.

मुहम्मद-सं० पु० [श्र०] इस्लाम या मुसलमानी धर्म के प्रवर्तक, अरब के एक प्रसिद्ध धर्माचार्य जो ईस्वी सन् ५७० से ६३२ के बीच में हुए थे। मुसलमान सम्प्रदाय इन्हीं से चला। ये पैगंबर माने जाते हैं।

उ०—अल्लाह मुहम्मद सिर उठाय। मगरिब मक्के मन्नत मनाय।
चच्चे मांमूकी थी चकार, बिसमल्ला करैं न बार बार।—ऊ. का.

वि०—प्रसंशित, प्रसंशनीय, सराहनीय।

रू० भे०—महमंद, महमद, महमुंद, महमुद, महम्मद, महिमुंद महिमुद, मैमंद।

मुहम्मदी-वि० [श्र० मुहम्दी] मुहम्मद का, मुहम्मद सम्बन्धी।

सं० पु०—१ मुहम्मद साहब का अनुयायी, मुसलमान।

२ एक प्रकार का सिक्का।

३ एक प्रकार का बढ़िया वस्त्र, मलमल।

रू० भे०—महमदी, महमुंदी, महमुदी, महमूंदी, महमूदी, महिमुंदी महिमुदी।

मुहर—देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—१ कुंवरसी वेहड़ै में पांच मुहर घाली।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ भींतर नूं जुहार कहायो सो मुहर दस श्रौर नारियळ तौ गोपाळदास नूं श्रौर दोय दोय मुहर नारियळ बेटां नूं।
—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—३ ब्रह्मादिक मुहर विसन वर समवड, घणइ उमंग नाइ घमंड घणइ। सवण जस श्रावइ सांभळता, तोरण प्रभु हेमगिरि तणइ।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ गयंद 'मांन' रै मुहर ऊभी हुतो दुरद गत, सिलहपोसां तणां जूथ साथै। तद वही रूक श्रणचूक 'पातल' तणी, मुगळ बहलोलखां तणैं माथै।—गोरधन बोगसो

उ०—५ गुडै मयमंत सेना मुहर गैमरां, प्रकटिया मारका घाट जोधपुरा। धूंमियौ हैय पुरा पाय श्ररवद, पसरियै सिंघ परवत थया पाधरा।—द. दा.

उ०—६ वधाऊ मुहर मेल्हि विध सूं, तांह श्रांह्चइ दीध बधाई श्राय। श्राई जांन घणइ श्राडंबर, घोराडिया जांगी घण घाय।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—७ मार लियो कहतै मुहर, उर खीजियो छड़ाळ। फिर गजराज संघारियो, सिंघ करंतै श्राळ।—रा. रू.

उ०—८ कूंपावत पहिलै श्रणी, वावर खग्ग करग्ग। भीमाजळ सारां मुहर, पड़ियौ धारां लग्ग।—रा. रू.

उ०—९ 'भीम' रांणा खूमांण, बियो विकमाइत बंभण। त्रियो 'खांन दाराव' मुहर मंडै कळि मत्थण।—गु रू. बं.

उ०—१० भेळा जूल भ्रळक्कै भालै, मुहर कियो जोधै रिणमालै।
साहण-समंद दिलीचै सांमी, दीनो 'गाजीसाह' दमांमी।—गु.रू.बं.

उ०—११ वहरसी तुरी वीरत्ति वाइ, घण भूभ्रइ भेळिय मुहर घाइ। घोकारव धुण ही वाजि घार, श्रांमाल फिरी पाखी श्रपार।
—रा. ज. सी.

उ०—१२ मेल्हिय प्रधांन कहियउ मुगुल्लि। घर साजि मुहर हूं म करि ढिल्लि।—रा. ज. सी.

मुहरखो—सन्देश वाहक।

उ०—१ मूगळी घड़ा श्रावइ मजूस, जासूस फिरइ पसत जापूस।
मुहरखे श्रावि कहियउ मुहाह, असपत्ति सेन श्रावइ श्रथाह।
—रा. ज. सी.

उ०—२ जु जाय गोड़ां ठाकुरां नूं कहौ वळ छै तौ काठा मांटी हुया, नहीं तो परा नासज्यो। फौज पठाणां री श्राकरी श्रावै छै। मांहरा तो घोड़ा थाको हुवो। थें. जाय नै भाखरसी नूं कहिजो। राजा नूं काढजो। काम श्रावजो। इम सुण नै मुहरखा पाछा चलाया।—राजा नरसिंघ री वात

मुहरत—देखो 'महुरत, (रू. भे.)

उ०—१ भादवै री देव भूलणी एकादसी रै दिन मुकळावा रो मुहरत हो, उण में फगत च्यार दिन श्राडा रैया हा।—रातवासो

उ०—२ इतरै कुंवर विचित्र नूं बुलायो सो कुंवर पोसाख भली भांति सूं करि, आपरा हजूरिया नै साथै ले श्रायो। दरबार सारो ही ऊठ ऊभो हुवो। पुरोहित सूं कुंवर मिळियो। कुंवर राजा रै मूंहडे श्रागै बैठो छै। मुहरत ठीक छै।—पलक दरियाव री बात

उ०—३ मिळियां दळ जोधांण मभि, देखैं भूप दुबाह। डेरा दिल्ली

दिस दिया, सुभ मुहरत 'अभसाह' ।—सू. प्र.

मुहरम-सं०पु०[अ०मुहर्रम] इस्लामी या अरबी वर्ष का पहला महिना।
वि०—वर्जित, निषिद्ध ।
रू०भे०—माहरम,
देखो 'महरम' (रू. भे.)

मुहरमुह-क्रि०वि० [सं०मुहुर, मुहुस] बार-बार, रह-रह कर, पुनः पुनः।
उ०—बोलंति मुहरमुह विरह गयै बे.तिणी सुकळ निसि सरद तणी। हंसणी ते न पासै देखै हंस हंस, हंस न देखै हंसणी ।—वेलि
रू०भे०—मुहुरमुह,

मुहराइ-सं० स्त्री०—१ मुख कान्ति ।
उ०—गज बंधी इम आखियो, करि धूणै कर माळ । 'गोइंद' माथै आवसी, त्यां सिरि आयो काळ । 'केहरि' वेंडी(वें) घणां, मउजीठी मुहराइ, 'करन' 'कमौ' ककै मतै, बे ऊभा पडगाहि ।—गु. रू. बं.
क्रि०वि०—२ आगे ।
उ०—पौह घणा भागळां गई मुहराइ पड़ि । चाव गुर 'जसौ' जिण वार वर सोह चढि । —हा. झा.
३ देखो 'मुराई' (रू. भे.)

मुहरि—१ देखो 'मोहर' (रू. भे.)
उ०—१ जुगति वात हूं कहूं तुझ जिम । तूं अप मुहिर वात कहिजे तिम ।—सू. प्र.
उ०—२ स्रीराम मुहिर लंका समरि, कियौ 'अजै' कपि जिम करूं। भागड़ूं सेर-विलंद हूं, अमरपूर जाऊं अर रंभ वरूं ।—सू. प्र.
उ०—३ संमूह सेन असंख सफां, भ्रिग मुज्झै मंझळी । मल्हपति फोजां मुहरि मैंगळ, सूंड डोहै सिघळी ।—गु.रू.बं.
उ०—४ खांन वरावा खडकियौ, ले मत्थै भर भार । 'गजण' कटक्कां हुई मुहरि, कळि मथ्थण जोधार ।—गु.रू.बं.
उ०—५ अधपत्ति चढै देव में अंस, रजपूत चढै छत्तीस वंस । मंडोवर राजा मुहरि मंड, डावै ली जोगणि भुजाडंड ।
—गु रू बं
उ०—६ ग्रहपति भरौ संपेखै ग्रहतां, किताई असुर सुर धरा सकांम । 'भगवंत' तणौ दीठ हिक भिड़तौ, सुपह अयारां मुहरि सग्रांम । जुग चहुं लगै बडा जुध जोया, भड़ां पराक्रम पर्यपै भाण । मांझी भींचां मुहरि सूर जिम, जुड़तौ नह को दीठ जुवांण ।
—लक्खो बारहठ
उ०—७ दिल्ली जैत सुबोल सहंसदस, राजा मुहरि मरण रिमराह । सुभ दातार जूंझार सुपातां, दांन च्यारि बकसिया दुवाह ।
—सुभराज गौड़ री गीत
२ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

मुहरिर-सं०पु० [अ०मुहर्रिर] १ वकील का मुंशी ।
२ लेखक ।
३ लिपिक, क्लर्क ।

मुहरिरी-सं०स्त्री० [अ०मुहर्रिरी] १ 'मुहरिर' का पेशा ।
२ मुन्शीगिरी ।

मुहरी—देखो 'मो'री' (रू. भे.)
उ०—१ वहै साज बींटिया, विहद मुखमलां वनातां । रेसम तंग मुहरियां, लखी दुरखी दरसातां ।—सू.प्र.
उ०—२ ऊंमर साल्ह उतारियउ, मन खोटइ मनुहारि । पगसूं ही कूंटियउ, मुहरी झाली नारि ।—ढो मा.
२ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

मुहरे—देखो 'मोहरे' (रू. भे.)
उ०—बाळियौ वैर-वैरां तणौ वाहरू, अमर मुहरे हुये सर रंग आयौ।
—अमरसिंह राठौड़ री बात

मुहरौ-सं०पु० [सं०मधुरं] १ विष, गरल, माहुर ।
उ०—गिर सूं पड़ियै धाय, जाय समंदां डूबियै । मरियै मुहरौ खाय, मूरख मित्र न कीजियै ।—अज्ञात
२ देखो 'मो'रौ' (रू. भे.)
उ०—आडि पेच करि अडिग, पाघ पर धर हम्मां पर । लाज विरज लाईत, जंत्र मुहरा सिर ऊपर ।—सू. प्र.
३ देखो 'मोहरौ' (रू. भे)

मुहल—देखो 'महल' (रू. भे.)
उ०—पातिसाह मनि वात विमासी नाहर मलिक बोलाव्यउ। साथि थिकउ भोजलु खांडाधर, मुहल आगिलइ आव्यउ ।—कां.दे.प्र.

मुहलत—देखो 'मोहलत' (रू. भे.)

मुहलाअत, मुहलायत—देखो 'महलायत' (रू. भे)
उ०—ऊभी आय अचांनकै, कहै सोक तुम कोय । मुहलाअत ऐह माग को, मलियौ महरम मोय ।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढ़ेल री बात

मुहलौ,मुहल्लौ—१ देखो 'महल्लौ' (रू. भे.)
२ देखो 'महल' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—आप कह्यौ जु म्है तौ मास ७ रहिस्यां, सीख नहीं कहां । इतरौ कहिनै अचळजी मुहल पधारिया ।
—लाली मेवाड़ी री बात

मुहवड, मुहवडि-सं०स्त्री०—१ युद्ध के समय हाथी की सूंड पर धारण करने वाला कवच ।
उ०—निस्कंटक राज्य प्रतिपालतां संग्रांम विसय कदाचित् उपजइ, विपखा ग्रहत्पुरुखा सांचरिया, क्षेत्र मूंडाविउं, बिहुं गमी सन्नद्धबद्ध नीपना. सभटे जरहि जीण साल लीधी, मयगल गुडिया, सुंडादंडि मुहवडि घातिया ।—व.स.
२ आगे का भाग ।
उ०—इम कांम समरि वे समरथ समवडि, मुहवडि चडी गुरुराय रे —आगम मांणिक्य

मुहांणी, मुहांणौ-सं०पु०—१ प्रवेश द्वार ।
२ अग्र भाग ।

३ नदी का मुख ।

क्रि०वि०—सम्मुख, सामने । आगे ।

रू०भे०—मुंहांणी, मुंहांणो,

मुहांमहि–क्रि०वि०—सामने, सम्मुख ।

मुहा–सं०स्त्री० [सं०मुधा] १ झूठ, असत्य, मिथ्या ।

उ०—भक्ष्य भोज्य सवि भीमि निहालि, खाय खाखसि करी मुखि बाली । चंहि माहि मुहा मलिउ प्रीमि, खीच कीचक कर भद्र भीमि ।—सालिसूरि

२ व्यर्थ, निरर्थक ।

मुहाजीवी–सं०पु०—भिक्षा वृत्ति से जीवन निर्वाह करने वाला ।

उ०—मुहादाई ने मुहाजीवी ले, निरदूखरा आहारी रे । निरजरा हेते करे तपस्या, फिर फिर न करे हारी रे ।—जयवांणी

मुहाडि–विचार विमर्श ।

उ०—खीव ऊरिया, खांरा भीजव्यां, भूंजाई नीपनी, मंत्रणी मुहाडि हुई, सेलहथनइ सीखांमरा हुई''''''।—व. स.

मुहाळ, मुहाल–सं०पु०—१ मधु मक्खियों का छाता ।

२ पशुओं के मुंह में होने वाला एक रोग जिससे पशु के मुंह में छाले हो जाते हैं । —(शेखावटी)

३—प्रसन्न चित, खुश ।

उ०—सो कोट जाय कबजे मांही करियो लोग सगळो ताजो थो हीज, हमै विसेस ताजो मुहाळ हुवो ।—सुंदरदास भाटी, वीकूं पुरी री बात

४ देखो 'मुहाळो' (रू. भे.)

मुहाळो–सं०पु०—१ हाथी के दांत पर,शोभा के लिये लगाई जाने वाली पीतल की चूड़ी या बंद ।

२ दरवाजे के आगे का ऊपर का भाग ।

मुहावरेदार–वि०—जिसमें मुहावरों का सम्यक प्रयोग हुवा हो, मुहावरों से युक्त । (कथन या भाषा)

रू०भे०—महावरेदार,

मुहावरो–सं०पु० [अ०मुहावर:] १ वह शब्द, वाक्य या वाक्यांश जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विलक्षण हो ।

२ अभ्यास, आदत ।

रू०भे०—महावरो, मुवारो,

मुहासिर–सं०पु० [अ०मुहासर] किसी किले या सेना के पड़ाव के चोरों ओर किया जाने वाला घेराव, युद्ध का घेरा ।

मुहह–मुखपर ।

उ०—मूगळी घड़ा आवइ मजुस, जासूस फिरइ पसत जापुस । मुहरखे आवि कहियउ मुहाह, असपत्ति सेन आवइ अथाह ।—रा. ज. सी.

मुहि–१ देखो मुख' (रू. भे.)

उ०—१ माड़ राइ मुहि मूंछ मोड़ि,केल्हणि कटक्क तांणिया कोड़ि । काळइ कलूठि जांगळू काजि, दउद्रां दळ तांखिय देवराजि ।

—रा. ज. सी.

उ०—२ कीधो विसेख करतै कळह,तरसि तूंग 'चांदे' तणौ । वखियोक चंद संकर वदन, सुजड घाइ मुहि सांमणौ ।—गु. रू. बं.

उ०—३ वपि विहंड पळ खंड, तेग तिमछां मुहि तुटो । धारां मुहि घडछियो, कुंभ किरि काली फूटो —गु. रू. बं.

उ०—४ गजदंतां मुहि चडै, जिकै गजदंत विभाड़ै । गाढ़ि सीम गज भीम, गयण गज रूप भमाड़ै । —गु. रू. बं.

२ देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—१ अमर अनइ पीथल्ल अचागळ, बरविय राइ मल्ल अतुळीबळ । जोड़ाळां मुहि रियण जबोड़ां, रांम सिहाइ हुअ अउ राठौड़ां । —रा. ज. सी.

उ०—२ अभिनमा चौंडरज भुजां बळ एरसो, छात्रपति ग्रहै ग्रहै हूंत छोडै । असपति तणा दळ पूठि तो ऊबरै, मुहि चढै असपति तुहिज मोडै ।—गु. रू. बं.

उ०—३ हुऐ मीर संघार, सोक सर पूर विछूटै, प्रळै काळ आग्रत, फौज फौजां मुहि जुट्टै ।—गु. रू. बं.

उ०—५ मार की वार मभि मारका ओलै लख दळ उबरै । सत्र सेन तुझ सांगाहरा, मुहि मावै सोई मरै —अ०वचनिका

३ देखो 'महि' (रू. भे.)

मुहिअड़, मुहिअड, मुहिड़–वि०—१ मुख्य, प्रधान ।

उ०—मुहिअड़ सोनिगरै फतमल्लो, दुजड़ाहथों जोड़ तिण 'दल्लो' । 'कमा' सदा आगळ नवकोटां, चडियां पति आरति चड चोटां ।

—रा. रू.

२ योद्धा, भट, वीर ।

३ सामने, संमुख ।

४ आगे ।

उ०—वांसै तेग ज फौज बिराजी, मुहिअड भीम हरोळां माझी ।

—गु. रू. बं.

रू०भे०—मुंहियड़ मुहियड़,

मुहिनाळ—देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)

उ०—वाहै खग चूहड़-खांन विकाळ, नाराजक बाजतणो मुहिनाळ । आ वाहि पठांण सकै न उभारि । तितै भड़ 'सेर' वाही तरवारि ।

—सू. प्र.

मुहिम, मुहिम्म–सं०पु० [अ०मुहिम] १ युद्ध, समर, संग्राम ।

उ०—१ 'अमरो' रतना रो, तिमरणी रा, मुहिम में चोरी की तद राजा गजसिंघ गरदन मरायो ।—नैणसी

उ०—२ धुंध हुऐ सारी धरा, सहर दिली पड़ि सोर । मुहिम हूंता त्यां मंडि औ, ज्यां सहिजादां जोर ।—वचनिका

उ०—३ जिण रे उर लालच जच्यो, बाजै किण बिध बीर । मथ मतीर दे भड़ मुहिम, कीणा साटै कीर ।—रेवतसिंह भाटी

उ०—५ भटनेर भंजि सरसउ संघार, हिसार कोट मन्नाविं हार । नरहड़ मुहिम्म मांडियउ नास, वड़सी नह हांसी करइ वास ।

—रा. ज. सी.

२ युद्ध-यात्रा, सेना का प्रयाण, चढ़ाई।

उ०—आसोजी दसराहौ पूजि नै मुहिम कीधी। ताहरां वडी फौज कर मालदेजी आया होज।—नैणसी

३ किसी बड़े या महत्वपूर्ण कार्य के लिये किया जाने वाला प्रयाण, प्रस्थान, यात्रा।

उ०—बूबना सुणी तद नेत्रां खवास नूं कही—जलाल साहिब करड़ी मुहिम नूं जावै छै।—जलाल बूबना री बात

४ सेना, फौज।

५ फौज का अगला भाग, हरावल।

६ कोई महत्व पूर्ण या बड़ा कार्य।

७ महिमा, प्रशंसा।

८ तपस्या।

क्रि०वि०—१ सम्मुख, सामने।

२ आमने-सामने।

३ आगे, अगाड़ी।

वि०—४ भ्रम में डालने वाला, भ्रामक।

रू०भे०—महम, महिम, मुंहम, मुहंम, मुहम, मुहमह, मुहम्म, मुहि, मुही, मुहीम।

मुहियड़—देखो 'मुहिअड़' (रू. भे.)

मुहियौ—वि०—१ प्रधान, प्रमुख, नेता।

उ०—सू भागचंदजी दरबार रा सांमधरमी छा, फौज रा मुहिया ऐ छै।—द. दा.

२ व्यर्थ, निरर्थक। (उ. र.)

३ काटने का भाव।

रू०भे०—मुंहियौ, मुहीऔ, मुहीयौ.

मुहिर—सं०पु० [सं०] कामदेव, मदन।

वि०—मूर्ख, मूढ।

क्रि०वि०—आगे, अगाड़ी।

उ०—वीरति असिमर वाहि, दूदाउत भांजै दुइण। रतनौ छळि राजा रतन, मुहिर रहै रिण माहि।—वचनिका

मुहिली—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

मुहिवटौ—सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—नीलवटां, चकवटां धौतवटां, मुहिवटां, नाटी दोटी घदीकठपीठ पाघडी विडी रेट चूनडी''''''।—व. स.

मुही—वि० [अ०] १ जिन्दा करने वाला, जीवन दान देने वाला, प्राण दाता।

२ पक्का, दृढ़, मजबूत।

उ०—छूटा सार सबद का गोळा, मुही मोरचा भागा। ग्यान ध्यांन का हाथि खड़ग लै, मन सूं लड़िवा लागा।—श्रीहरिरांमदासजी महाराज

रू०भे०—मुही.

३ देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—जुमौ हजार अगई लोग सिपाही रहै। तरै खुसी आवै सो चाकरी करावौ। करड़ी मुही में भेजौ।—जलाल बूबना री बात

४ देखो 'में' (रू. भे.)

मुहीऔ—देखो 'मुहियौ' (रू. भे.) (उ. र.)

मुहीम—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—१ अर पातसाह जी गुना माफ कर फेर मुनसब दियौ। तथा मुहीम का हुकम दिया सू सरंजांम हुवौ नहीं।—द. दा.

उ०—२ इण करतां बरस दोय-तीन नूं बादसाह रौ कूच लाहोर नूं हुवौ। सो लाहोर आयौ, काबल ऊपर मुहीम करी।

—अमरसिंह राठौड़ री बात

उ०—३ नबाब मुहीम सर कर पदमपुरे सूं पाव कोसे'क गांव थौ उण में आ उतरियौ थौ।—पदमसिंह री बात

मुहीयौ—देखो 'मुहियौ' (रू. भे.) (उ. र.)

मुहुंगौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

उ०—गुलमुल मुहुंगा मोल की, ताकौ वागौ कीन। सुंदर आवी सांमहि पीउ कंठि कर लीण।—व. स.

मुहुतु—देखो 'मुहतौ' (रू. भे.)

मुहुर—१ देखो 'मधुर' (रू. भे.)

उ०—वांणी बोलइ मुहुर, विमल किरि गंगा वांणी। रांणी चउसठि सहस, जास रूवहि इंद्रांणी।—प्राचीन फागु संग्रह

२ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

मुहुरवाई—वि०—परोक्षवादी निंदक। (उ. र.)

मुहुरणौ, मुहुरबौ—देखो 'मौरणौ, मौरबौ' (रू भे.)

उ०—वनि वनि केसू मुहुरिया, तनि तिनि त्रिगुणउ कांम। हे! है! दैव! हरि किंसि, हईडा भीतरि हांम।—मा. कां प्र.

मुहुरत—देखो 'महुरत' (रू. भे.)

उ०—करणीगर रूड़ा करै, करनै बिलंब न काय। मार उपावै मेदिनी, मुहुरत हेकण मांय।—ह. र.

मुहुरमुह—देखो 'मुहरमुह' (रू. भे.)

मुहुरियौ—देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

मुहुल—देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ अलूखांन आयसि पूंतारइ, ततखिण गयवर गुडीया। वालि तणा तेजी पखराव्या, मलिक मुहुल मांहि तेड्या।—कां. दे. प्र.

उ०—२ मल्ल भाट सुरतांण पय, आयउ मंगण कज्जि। मुहुल तलइ जइ द्रा करइ, जिहां खडै असपति सज्जि।—प. च. चौ.

मुहुसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू. भे.)

उ०—सूरिज तणइ वंसि हुं आज। बडा पुरुसनी नांणुं लाज। गोल्हण तूं मनि झंखिसि आळ। हिव लाजइ माहरूं मुहुसाळ।

—कां. दे. प्र.

मुहूंडै—देखो 'मुंहडै' (रू. भे.)

उ०—भागो न भूंडौ लेय पाघड़ साहि मुहुडै मूंक। गोरिल बोलै फिट्ट तुझ नै, जाती थारी में थूक।—प. च. चौ.

मुहूरत—देखो 'महूरत' (रू. भे.)

उ०—१ परधानै परधान पूछिया, लगन मुहूरत वार लहि। भ्रावै कियै दिहाडै ईसर, कही राव सौ बात कही।

—महादेव पारबती री वेलि

उ०—२ तिण भय करि अर राजि आगळि औ जबाब कियौ। राजि उठा हुंती भलै मुहूरत खड़िया छै।—द. वि.

मुहेंगौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

उ०—मिसंजर के मिस मन भयौ, पीउ जो लाय बुलाय। मोल मुहेंगौ थें लीयौ, सो माहरे आवौ दाय।—व. स.

मुहौ-सं० पु०—सामना, आगा।

उ०—१ इतरै में बगळाऊ खड़ा था उहां भेळिया उहां रो मुहौ झलियो।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

उ०—२ राव ईं वेळा मूंह सू आहिज कहै छै-जे बड़ा सरदारां सूप्ररड़ै री जाबती राखजौ, मुहौ झालियां रहो, लोग सभीड़ो देख फेर आंण पड़सी।—डाढाळा सूर री वात

मूं-सर्व [सं० अस्मद्] १ म्हैं, मैं।

उ०—१ साबह नह छोड़ूंह, तोड़ूं हूं जड ताहरी। मूं खंजर मोड़ूंह, काळज फीफर छेक कर।—पा प्र.

उ०—२ तूं बांमण बांणयै री, कै विणजारै री धीय। नां मूं बांमण बांणयै री, नां विणजारै री धोय।—लो.गी.

२ मुझे, मुझको।

उ०—रमतां जगदीसर तणौ रहसि रस, मिथ्या वयण न तासु महै। सरसै रुखमणि तणी सहचरी, कहिया मूं मैं तेम कहै।

—वेलि

३ मेरा, मेरी।

उ०—१ चकडोळ लगै इणि भांति सुं चाली, मति तै वखांणणान मूं। सखी समूह मांहि इम स्यांमा, सील आवरित लाज सूं।

—वेलि

उ०—२ पिंडि नख सिख लगि ग्रहणै पहिरिए, महि मूं वांणी वेलि मई। जग गळि लागी रहै असैं जिमि, सहै न दूखण जेम सई।

—वेलि

रू०भे०—मु, मू

मूं' देखो 'मुख' (रू. भे.)

उ०—पींपळ खेजड़ी रो ब्याह मांड्यो अर जागण-जीमण रो परबंध करचौ। अ सै बातां पूरी हुई जकै दिन सोनजी नै मांनो मूं' मांग्यौ फळ मिळायौ।—दस-दोख

मूंओड़ौ-भू०का०कृ०—मरा हुआ, मृत्य।

(स्त्री०मूंओड़ी)

मूंकगिर, मूंकगिरी –देखो 'रिसीमूक'।

मूंकणौ, मूंकबौ—देखो 'मूकणौ, मूकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ धग धगती सगडी भरी, आंणउ अति अंगार। मांहि मूंकउ मांनिनी, सटक देई सिणगार।—मा.कां.प्र.

उ०—२ मांन कहै दळपत्त रो, लाभ निदांन सुणाय। धांम न मूंकै सांम का, लिण मुख सरम सवाय।—रा रू.

उ०—३ एकदा प्रस्ताव। दिली रै पातसाह सारी धरती मांहै डंड घातियो। गढ़ किरोड़ी मूंकिया। ताहरां महेवे ही किरोड़ी आयौ। ताहरां कांनड़दे सरब रजपूत तेड़िया।—नैणसी

उ०—४ तिवारै पतिसाहजी सरसौ पाटण वास गांव दियौ। बयांणो, हैंसार, मेवात, रेवाड़ी समेत पड़गना मूंकिया। बहुत दिलासा मूंकी।—द.वि.

उ०—५ संसार सुपहु करता ग्रह संग्रह,गिणि तिणि हीज पंचमी गाळि। मदिरा रीस हिंसा निंदा मति, च्यारै करि मूंकिया चंडाळि।

—वेलि

उ०—६ गिरवर मोर गहकिकया, तरवर मूंक्या पात। धणियां घण सालण लगा, वूठै लौ बरसात।—ढो.मा.

उ०—७ ढोला, ढीली हर किया, मूंक्या मनह विसारि। संदेसउ नह पाठवइ, जीवां किसइ अधारि।—ढो.मा.

उ०–८ मुख नीसांसां मूंकती, नयणे नीर प्रवाह। सूळी सिरखी सेझड़ी, तो विण जांणे नाह।—ढो.मा.

उ०—९ मुरछित ही धरणी पड़चौ, वलि मूंकै है मोटा नीसास कि।—प.च चौ.

उ०—१० मुगल मडाभड़ साहसी, मूंकै दोय दोय वांणौ रे। 'लालचंद' पतिसाह स्यूं, पूजै केहौ किम पांणी रे।—प.च.चौ.

उ०—११ ताहरां लाखैजी पूछीयौ, "सीढ़ी मांहे कोण छै?" कह्यौ "जी, चच आढौ छै।" ताहरां लाखैजी पूछीयौ, कह्यौ, "सीडी धरती मंकौ।—लाखै फूलांणी री वात

मूंकणहार, हारौ (हारी), मूंकणियौ—वि०।

मूंकिओड़ौ, मूंकियोड़ौ, मूंक्योड़ौ—भू०का०कृ०।

मूंकीजणौ, मूंकीजबौ—कर्म वा०।

मूंकाणौ, मूंकाबौ—देखो 'मूकाणौ, मूकाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां राव साथै आदमी दे दीव मूंकायौ। उठी बाहण बैसि दीव हालियौ। इसौ हीज समइयौ हुवौ। चोर न लागौ, कोई जीवजंत न लागो। सयणी री वारता

उ०—२ ताहरां लाखैजी पूछीयौ, कह्यौ, 'सीडी धरती मूंको।' सीढी धरती मूंकाई नै लाखैजी निजीक आइ नै दूहौ कह्यौ।

—लाखै फूलांणी री वात

मूंकाणहार, हारौ (हारी), मूंकाणियौ—वि०।

मूंकायोड़ौ—भू०का०कृ०।

मूंकाईजणौ, मूंकाईजबौ—कर्म वा०।

मूंकायोड़ौ—देखो 'मूकायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री०मूंकायोड़ी)

मूंकावणो, मूंकावबो—देखो 'मूकाणो, मूकाबो' (रू. भे.)
मूंकावणहार, हारो (हारी), मूंकावणियौ—वि० ।
मूंकाविप्रोड़ो, मूंकावियोड़ौ, मूंकाव्योड़ौ—भू०का०कृ० ।
मूंकाबीजणौ, मूंकावीजबौ—कर्म वा० ।

मूंकावियोड़ौ—देखो 'मूकायोड़ौ' (रू. भे)
(स्त्री०मूंकावियोड़ी)

मूंकियोड़ौ—देखो 'मूकियोड़ो' (रू. भे.)
(स्त्री० मूंकियोड़ी)

मूंकी, मूंक्की—देखो 'मुक्की' (रू. भे.)
उ०—१ उत्तम थूंक विलोवहि, मध्यम मूंकी थाप । बणिक अधम चिड़ता करै, पनसेरी सूं पाप ।—बां.दा.
उ०—२ धक्का मूंक्की धूप दीप लातां रो देवै, नाक भांग नैवेद साध पद इण विध सेवै ।—ऊ. का.

मूंक्को—देखो 'मुक्को' (मह , रू. भे.)

मूंग-सं० पु०[सं०मुद्ग:] १ हरे रंग का एक प्रसिद्ध द्विदल अन्न जिसकी दाल बनती है ।
उ०—१ खोड़उ हुउं डांभिज्यउं, बंधियउ भूख मरेह । जाउं ढोला रह सासरइ, सफळां मूंग चरेह ।—ढो. मा.
उ०—२ सूंम नांम लेणौ सुतौ, मूंग पकावण बेर । अन दिन उण री आथजूं , डाटौ भाठौ देर ।—बां. दा
मुहा०—(छाती पर) मूंग दळणा=किसी को दिखाते हुए ऐसा काम करना जिससे उसके हृदय में ईर्ष्या,दाह, जलन या कष्ट हो ।
२ उक्त द्विदल का पौधा ।
रू०भे०—मउंग, मग, मुंग्ग, मूंध,

मूंगथाल-सं०पु० यौ० [सं० मुद्ग:+स्थाल] बेसन आदि की जमाइ हुइ चक्की (मेवात) ।

मूंगदणो, मूंगधणो—देखो 'मुंगदणो' (रू भे)

मूंगफळी, मूंगफली-सं० स्त्री० १ जमीन पर फैलने वाला एक प्रकार का पौधा जिसकी खेती उसके फलों के लिए भारत के प्रायः सभी भागों में की जाती है । इसके फलों से तेल भी निकाला जाता है ।
२ उक्त पौधे की फली व उसके दाने ।
३ मूंग नामक पौधे की फली ।
उ०—भुजादंड सोवन घड्या रै कोमल कलस सुनालि रे रंग । मूंगफली चंपाकली रै, आंगलियां सुविसाल रै रंग ।—प. च. चौ.

मूंगम-सं० पु०—१ आदर, सत्कार ।
२ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।
रू०भे०—मूंघम,

मूंगळ, मूंगल—देखो 'मुगळ, मुगल' (रू. भे.)
उ०—१ इळ नांम उच्चारण मूंगळ मारण, वंसि वधारण बांन । मनमोट नरिंद समंद जिसौ, महि इंद जिसौ अनमांन ।—ल. पिं.
उ०–२ किम गोहर सांई दिवराई,अंगि एतली आहि । मारी म्लेछ मांकडा मूंगल, पछइ पड्या रिण माहि ।—कां. दे. प्र.

मूंगाई-सं० स्त्री०—१ बाजार में वस्तुओं की कीमतों या मूल्यों का उचित से अधिक होने की अवस्था या स्थिति । मूल्यों के बढ़ने की स्थिति, महंगाई । (डीअरनेस)
२ उक्त स्थिति से बचाव के लिए कर्मचारियों को वेतन के अतिरिक्त दी जाने वाली राशि, महंगाई भत्ता ।
३ आदर, सत्कार ।
४ मान, प्रतिष्ठा, इज्जत ।
रू०भे०—महंगाई, महगाई, मूंगाई, मूंघाई, मेंगाइ, मैंगाई, मैंघाई ।

मूंगियाड़ौ-सं० पु०—१ महंगा होने की अवस्था या भाव, महंगाई ।
२ बाजार में वस्तुओं की कीमतें ऊंची होने की अवस्था ।
रू०भे०—मूंगीवाड़ौ, मेंगीवाड़ौ,

मूंगियौ–वि०—१ लाल रंग का ।
२ मूंग के समान हरे रंग का ।
सं० पु०—१ एक वस्त्र विशेष ।
रू०भे०—मुंगियो, मूंगीयो, मुगीओ, मूगीयो,
१ देखो 'मूंगौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ सोना री पूतळियां, मरदां! मांय मूंगिया भार । घुरसामलजी, अणंतमलजी, बां सेठां रो माल ।
—डूंगजी जवारजी री छावली
उ०—२ तिण समै 'रसना' रा रंवास मैं एक मकराणां री महल है, जिण मैं इण री घणी सारी सैं'ल है । सू इणरी पगथाळियां रा प्रतिब्यंबहूं फरस तो मूंगियां री छिब पावै है नै अंग री ओपमा सूं भींतां जिकै सुबरण री निजरि आवै है ।—र. हमीर
उ०—३ भल भला करइ राव भेटणा, चंदन चोवा अबीरो जी । मांणिक मोती मूंगिया, चोली चरणां चीरो जी ।—स.कु.

मूंगीयौ—१ देखो 'मूंगौ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—सतगुर साह भये सौदागर, विणजै वसत अपारा । कांही मिणीया लीया मूंगीया, कांही हीर हजारा ।
—श्री हरिरांमदासजी महाराज
२ देखो 'मूंगियौ' (रू. भे.)

मूंगीवाड़ौ—देखो 'मूंगियाड़ौ' (रू. भे.)

मूंगु—१ देखो 'मूंग' (रू. भे.)
उ०—सोहती मंन मोहती, पुंहचउ सदल सुरंग । अंगुळी मूंगु नी फळी, समस्त तीखा नख सुरंग ।—एकमणी मंगळ
२ देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

मूंगेड़ौ—१ देखो 'मंगेड़ौ' (रू. भे.)
२ देखो 'मूंगियाड़ौ' (रू. भे.)

मूंगोड़ी-सं०स्त्री०—मूंग की बड़ी ।
उ०—म्हारै पापड़ बी नाईं म्हारै मूंगोड़ी बी नाईं, क्यां से करां नीगोड्यो ब्याव, रायजादी ये लूर छैला प्यारी ये लुरडी ।
—लो.गी.

रू०भे०—मुंगवड़ी, मूगेड़ी, मूगोड़ी

मूंगौ-सं०पु०—समुद्र में कृमियों के समूह पिंड की लाल ठठरी का एक रत्न, प्रवाल। (ग्र. मा.)

उ०—हीरा माणक मूंगौ तजीने, कथीर संगाते मलि तोल मां रे।
—मीरां

२ रत्न, नगीना।

३ सात प्रकार की उप धातुओं में से एक। (ग्र. मा.)

वि०—लाल हरा,।

उ० जळ खूटै सीकाळ, रंग मूंगौ पड़ ज्यावै। ज्यूं घोड्योड़ी भांग, दूरसूं वरण दिखावै।—दसदेव

रू०भे०—मुंगौ, मूंगु।

अल्पा०—मुंगियौ, मूंगियौ, मूंगीयौ,

मूंगौ-वि० [सं०महत्+अर्घ] १ जिसका मूल्य या कीमत उचित से ज्यादा हो, जरूरत से ज्यादा कीमत का।

उ०—"एक-इ बात कैंद्? भळै मोल-तोल तो को करो नीं'क? 'हां एक-ई।' 'तो लो, ऐ साढ़ी तीन दे दो।' 'नाख-नाख, है तो मूंगां ई।—वरसगांठ

२ जो साधारण से अधिक कीमत का हो, बहुमूल्य। स्वभावतः कीमती।

३ जिसे प्राप्त करने में अधिक कष्ट या व्यय करना पड़ा हो, दुर्लभ्य।

४ सम्मान, इज्जत व मान-प्रतिष्ठा वाला।

५ अधिक प्यारा, विशेष प्रिय।

रू०भे०—मंहगौ, महंगौ, महुंगौ, मुंगउ, मुंहगउ, मुंहगौ, मुंहुंगौ, मुहंगौ, मुहगौ, मुहघौ, मुहुंगौ, मुहेंगौ, मूंघौ, मूंघौ, मूंहगौ, मूघौ, मूहघूं, मैंगौ, मैंहघौ।

मूंघ—देखो 'मूंग' (रू.भे.)

मूंघम—देखो 'मुंगम' (रू. भे.)

मूंघौ, मूंघौ—देखो 'मूंगौ (रू. भे.)

उ०—१ गुरांजीड़ा बडाई रो भूखौ, नैं एक मूंघै मोल रौ जेबी तिरपाल भेंट करघौ।—दसदोख

उ०—२ सुण सुण जसवारौ आनंद मन आण्यौ जग में जीवावण जैपुर पति जांण्यौ। मूंघौ मांखण सूं मिसरी सूं मीठौ, द्रग सूं दो घड़ियां अन बिकतौ दीठौ—ऊ. का.

उ०—३ ग्रंबळीमांण अडूप आपांणी, कवळ वाराह संग्राम करै। सूंगा साई अनै सेरड़ौ, मूंघा दीधा भळै मरै।—दूदौ ग्रासियौ

उ०—४ मुळकनै ठाकर रै सांम्ही इण भांत मदछकी निजर सूं देख्यौ के वांनै पीयां बिना ई हजार बोतल रौ नसौ चढ़ग्यौ। पैली वार वांरै समझ में आई के राजाजी री चाकरी कित्ती आंहजी अर कित्ती मूंघी।—फुलवाड़ी

(स्त्री० मूंघी)

मूंचणौ, मूंचबौ—देखो 'मुंचणौ, मुंचबौ' (रू. भे.)

मूंचणहार, हारौ (हारी), मूंचणियौ—वि०।

मूंचिग्रोड़ौ, मूंचियोड़ौ, मूंच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मूंचीजणौ, मूंचीजबौ—भाव वा०।

मूंचियोड़ौ—देखो 'मुंचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मूंचियोड़ी)

मूंछंदर-वि०—बड़ी-बड़ी मूछोंवाला।

रू०भे०—मुछंदर,

मूंछ-सं०स्त्री० [सं०श्मश्रु प्रा०-मस्सु, मच्छु] पुरुषों के नाक के नीचे एवं होठ के ऊपरी भाग में उगने वाले केशों का समूह, मूछ।

उ०—१ मूंछ नाक सिर रौ मुकुट, ससतर सांम सनाह। सावत लायौ समर सूं, कै नह लायौ नाह—बां. दा.

उ०—२ चख चोळ मूछ भूंहां चढी, तांमस ऊठि तमौ तणी। मेहरी गाज जाणै मरद, सारदूळ कांनां सुणी।—मे. म.

मुहा०—१ मूंछ उखाड़णी=१. कठिन दंण्ड देना, अपमान करना।

२. मूंछ नीची होणी=अपमान होना, गर्व नष्ट होना, लज्जित होना।

३. मूंछ पर ताव देणौ=गर्व एवं अहंकार करना।

४, मूंछ मरोड़णी=गर्व करना, गर्व के मारे मूछों पर ऐंठन या बल देना।

५. मूंछ माथै हाथ फैरणौ=अपना पौरुष दिखलाना, विजय का गर्व करना।

६. मूंछ रौ बाळ—घनिष्ट व्यक्ति, विशेष विश्वास वाला। ज्यादा नजदीक रहने वाला।

२. कुछ विशिष्ट जानवरों या जीव-जन्तुओं के मुख पर भी यह बाल समूह होता है।

रू०भे०—मुंच्छ, मुंछ, मुच्छ, मुछ, मुछि।

अल्पा०—मूछड़ली, मूंछड़ी, मूछ, मूछड़ी।

मह०—मुंछार, मुछार, मूंछाळ

मूंछड़ली—देखो 'मूंछ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कोई मूंछड़ली मुरळावै सूरत सांवळी।—लो. गी

मूंछड़ी—१ देखो 'मोछ' (अल्पा', रू. भे.)

उ०—खोड़ी लीलां री डेढा ढिग ढीली, पोली सेढां री लीलां बिण पीळी। खड़ती सूवाड़ी वाड़ी बिन खटकै, मरती मूंछड़ियां पूंछड़ियां पटकै।—ऊ. का.

२ देखो मूंछ' (अल्पा., रू. भे.)

मूंछण—देखो 'मूछण' (रू. भे.)

उ०—चलू करी मूंछण दिया रै लाल, लूंग सुपारी पांन।
—प.च.चौ.

मूंछणियौ, मूंछणौ—देखो 'मूंछण' (अल्पा. रू. भे.)

उ०—धण रे तो आंगण बिड़ला बंधावौ ढोला, मूंछणियै रै मिस आवौ रे। हांजी रे मांजे ब्रैवंतै बादल ने केण विलमायौ रे।
—लो.गी.

मूंछणौ, मूछबौ—१ देखो 'मूछणौ, मूछबौ' (रू. भे.)

मूंछणहार, हारौ(हारी), मूंछणियौ—वि०।
मूंछिओड़ौ, मूंछियोड़ौ, मूंछयोड़ौ—भू० का० कृ०।
मूंछीजणौ, मूंछीजबौ—भाव वा०।

मूंछरेल—देखो 'मूंछाळ' (रू. भे.)

मूंछार—देखो 'मूंछ' (मह., रू भे.)

मूंछाळ, मूंछाल—वि० [सं०श्मश्रु+आलुच] १ जिसके मूंछें हों, मूंछों वाला।
उ०—पण अबै ऐड़ा ई मूंछाळा मरद हौ तौ म्हारै सांम्ही आंगळी उठायनै तौ जोवौ— —फुलवाड़ी
२ बल, पौरुष एवं गौरव वाला।
उ०—मछराळा मूंछाल, वेहद हद वेढ़ीगारा। सुर भगा लख वार, प्रथी इक छत्रप सारा।—मा. वचनिका
३ युवा, जवान।
रू०भे०—मुछाळ, मुछियाळ, मुहछाळ, मूछरेल, मूछरेळ, मूछरैल मूछाळ।
अल्पा०—मुछाळौ, मूछाळौ
४ देखो 'मूंछ' (मह., रू. भे.)
उ०—सुण इम वचन सधीर, वीर रणधीर ववक्कै, मतवाळा मदमत्त, घोम भाळा धक धक्कै। अड़ै भुज्ज असमांन भिडै मूंछाळ अगूटै, चढै रीस चख चोळ, खाग स सोलउ खूटै।—पे. रू.

मूंछाळी—सं०स्त्री०—१ तलवार।
२ वह स्त्री जिसके मूंछें हो।
३ देवी दुर्गा।
रू०भे०—मूछाली,

मूंछाळौ—देखो 'मूंछाळ' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ आगै सयणीजी मूंछाळै मालदेव रै ऊतरिया।
—सयणी री वात
उ०—२ बांभण पूत न वीसरै, ज्यूं विसहर काळै। आल्हणसीह न वीसरै, मेहराज मूंछाळै।—नैणसी

मूंछियोड़ौ—देखो 'मूछियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मूंछियोड़ी)

मूछियौ—सं०पु०—काटना क्रिया या भाव।

मूंछीयइ—देखो 'मुरछित' (रू. भे.)
उ०—कृत्रिम सरवरि पांणी पीइ, पांचइ पुहवी तलि मूंछीयइं। सरवर पालि द्रूपदि मिली, एकि पुलिंदइं आंणी वली।
—सालिभद्र सूरि

मूंज—सं०स्त्री० [सं०मुञ्ज:] १ सरकंडों की ऊपरी छाल जिसको भिगो कर व कूट कर चार पाई बुनने के लिए रस्सी बनाई जाती है।
२ इस छाल की बुनी हुई रस्सी।
उ०—करणी तै बचबचा' र पकड़ लियौ, बूकिया झाल लिया अर मूंज रा बंध दे परा' र थांणै में सूंप दीनौ —द दोख
३ धारा नगरी का परमार राजा मुंज।
उ०—स्रीदसरथ दसरथ सुतन, पीथल मूंज पंवार कुण कुण डहकांणा नहीं, बस चुगलां वापार।—बां. दा.
रू०भे०—मउज, मऊज, मुंज, मुंभ, मूज, मूभ,
४ देखो 'मुभ' (रू. भे.)

मूंजणौ—सं०पु०—देखो 'मुंगदणौ' (रू. (
उ०—जेई ले जंगळ सूं लावै, फोगां सूं सुभ मूंजणौ। चिरच माथ सकर घी पावै, भूलै ब्यावां भूजणौ।—दरादेव

मूंजणौ मूंजबौ—देखो 'अमूभणौ, अमूभबौ' (रू. भे.)

मूंजि, मूंजी—सं०पु०—कृपण, सूम, कंजूस।
रू० भे०—मूंजीड़ो

मूंजियोड़ौ—देखो 'अमूभियोड़ौ' (रू. भे.)

मूंजीड़ौ—देखो मूंजी (अल्पा., रू. भे.)

मूंजीपणौ—सं०पु०—१ कंजूस होने की अवस्था या भाव।
२ कंजूसी।
उ०—सेठां री मूंजीपणौ चौवळा में किणी सूं अछांनौ नीं हौ।
—फुलवाड़ी
रू०भे०—मूंभीपणौ,

मूं'जोर—देखो मुंहजोर' (रू. भे.)

मूंजौ—सं०पु०—मूंज का बना एक प्रकार का ढक्कन जो बड़े-बड़े जल पात्रों पर ढका जाता है।
वि०वि०—यह ढक्कन प्रायः उस समय काम आता है जब बड़े-बड़े जल पात्रों को गाड़ी पर रख कर दूर दूर से पानी लाया जाता है।

मूंझ—१ देखो 'मुझ' (रू.भे.)
उ०—१ ठहियां तो पिण राज ठिकांणै, जगत मूंझ दिल उजळ न जांणै। मनि हुव वचन लोपसी मोनं, तन प्रतवाय लागसी तोनूं।
—सू. प्र.
उ०—२ रांणै दाखै 'राजसी' राठौड़ां उपकार। यां कळ झल्ली आवगी, पल्ली मूंझ अंवार।—रा. रू.
२ देखो 'मूंज' (रू. भे.)

मूंझणौ, मूंझबौ—देखो 'अमूझणौ, अमूझबौ' (रू. भे.)
उ०—१ दळ देख डरै, ग्रिध मूंझ मरै। मिळि भोमि तणी, पुडि वोम पणी।—गु.रू.बं.
उ०—२ बार पहर लउ चडीउ रोसि गुर नंदणु झूझइ। रणि पाडिउ भगदत्तु राउ कउख दल मूंझइ।—सालिभद्र सूरि
उ०—३ विकल थाती, क्षणि जोइ,क्षणि रोइ क्षणि हसइ,क्षणि आक्रंदइ, क्षणि निंदइ,क्षणि मूंझइ, क्षणि भूझइ, क्षणि बूझइ,एवं विधि विरहांनल नीपजइ।—व.स.
मूंभणहार, हारौ (हारी), मूंझणियौ—वि०।
मूंझिओड़ौ मूंझियोड़ौ, मूंझयोड़ौ—भू०का०कृ०।
मूंझीजणौ, मूंझीजबौ—भाव वा०

मूंझियोड़ौ—देखो 'अमूझियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मूंझियोड़ी)

मूंझी—देखो 'मूंजी' (रू. भे.)

उ०—पण मूंझी व्हैतां थकां ई वो नेकनांमी ही । खोटी कमाई नीं करतौ ।—फुलवाड़ी

मूंझीपणौ —देखो 'मूंजीपणौ' (रू. भे.)

उ०—वो आपरी माया वास्तै ई चोखळा में चावो हो अर आपरा मूंझीपणा वास्तै ई उण री अणूंती नांमवरी ही ।
—फुलवाड़ी

मूंठ—देखो 'मूठ' (रू. भे.)

उ०—१ अणियाळा नयण आंजिया अंजण, कागज रेख सुरेख कर । इंद्र तणइ दिन मूंठ अपूठी, भळका नाखइ वांमवर ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ ले भड़ां रटाकां पूर अरिदां ताड़व्वा लागा, महावीर खीज में पाड़व्वा लागा मूंठ । बीर वेसतावा जहां दूधारा भाड़व्वा लागा, रोजगारा खाती ज्यूं फाड़व्वा लागा रूंठ ।
—सुखदांन कवियौ

उ०—३ आडा डूंगर वन घणा,तांह मिळीजइ केम । उलाळीजइ मूंठ भरि, मन सींचांणउ जेम ।—ढो.मा.

मूंठड़ी—देखो 'मूठी' (अल्पा., रू. भे)

उ०—मुड़ मुड़ पड़तोड़ी आंखड़ियां मींचै, भूखा मरतोड़ी मूंठड़ियां भींचै । सीधी सैणीं सी मैणीं सुण माल्है, बेसक पुर बसणौ हसणौं तजि हालै ।—ऊ.का.

मूंठि—१ देखो 'मूठ' (रू. भे.)
२ देखो 'मुट्ठी' (रू. भे.)

मूंठियौ—देखो 'मूठियौ' (रू. भे.)

मूंठी—१ देखो 'मुट्ठी' (रू. भे.)

उ०—१ मूंठी भरि सति रेणु जळ साम्ही, आपणपउ दाखइ अधिकार । कुंभ हुवइ ततकाळ कहंतां, सो पाणी ल्यावै पणिहार ।
—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ म्हैलां सांकडीसी आंण भैली थांभि दीनी । मूंठी एक बालू की पला कै बांध लीनी ।—शि.वं.
२ देखो 'मूठ' (रू. भे.)

मूंड—१ देखो 'मूढ' (रू. भे.)

उ०—बांझ के पास प्रसूत की वेदन, भेद न जांनत मूंड भमायौ । पूत कपूतन कों चटसाल कि, ज्यूं कुलटा सुमराल सुनायौ ।
—ऊ.का.

रू०भे०—मूंढ, मूड, मूढ,

२ देखो 'मुंड' (रू. भे.)

उ०—१ तकादौ भोत बताड़े, दांत से तुड़ावेगो तूं । माजनां सूं रेज्यै देज्यै फुड़ावेगो मूंड ।—ऊ.का.

उ०—२ कित छोडी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी सब गोपी । मूंड मुंडाइ डोरि कटि बांधी, माथै मोहन टोपी ।—मीरां

उ०—३ भड़ीयइ भांजि मरग्गड मूंड । रड़व्वड रैण करंडक रूंड ।
—गु.रू.बं.

उ०—४ सांग मूंड सहसी सको, समजस जहर सवाद । भड पीथल जीतो भलां, वैण तुरक सूं बाद ।—महाराणा प्रतापसिंह

३ देखो 'मूंद' (रू. भे.)

मूंडकटाई, मूंडकटी—सं०स्त्री०—१ युद्ध में वीरता पूर्वक लड़ते समय शिर कटने की क्रिया या भाव ।

२ वह भूमि या जागीर जो पूर्वजों के युद्ध में बलिदान होने पर पीछे वंशजों को मिलती है ।

३ मस्तक मुण्डाने की क्रिया ।

मूंडकी—सं०स्त्री० [सं० मुण्ड] कटा हुआ शिर ।

उ०—अडसी सूं अड़िया जिकै पड़िया करै पुकार । म्हापुरसां री मूंडक्यां, गिलगी गांव गंगार ।
—महाराणा अरिसिंह तीसरे का दोहा

रू०भे०—मूंडि ।

मूंडकौ—सं०पु० [सं० मुंडक:] १ मस्तक, शिर ।

२ व्यक्ति, आदमी ।

उ०—तरै एकै रजपूत कह्यौ, थोड़ी मूंडका माफक बांटौ । तरै ऊ वचन सांभळ पिउसंधी कह्यौ, कुटुम्ब मूंडका क्या, आधी हमारी है आधी तुमारी है ।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

३ सीमान्त पर गड़ा रहने वाला पत्थर, छोटा स्थम्भ ।

रू०भे०—मुंडकौ,

मूंडड़ौ—देखो 'मुंड' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कहाड़ै बीरद बंका भीड़ियां छकड़ा कड़ां, वधै रोळै भड़ां आगा वाधै वंसवांन । बिछोड़ै गयंदां चड़ा दूजड़ां ओफड़ां वाह, मुगल्लां मूंडड़ां वड़ां मेळै दूजौ 'मांन' ।
—रावत सारंगदेव रौ गीत

मुंडण—सं० पु० [सं० मुंडन] १ शिर के बाल काटने की क्रिया या भाव ।

२ बालकों के प्रथम बार शिर के केश काटने का एक संस्कार ।

मूंडणौ, मूंडबौ—क्रि०स० [सं०मुण्डनम्] १ उस्तरे, पत्ती आदि से शिर के बाल या शरीर के किसी अंग विशेष पर उगे हुए केशों को, रगड़ कर काटना, साफ करना, मुण्डन करना, केश काटना ।

उ०—१ सिर डाढी मूंडी करी, भगवउ लीधउ वेस । पग अणूहांण पंकज जिसे, पंथि पलिउ परदेसि ।—मा. कां. प्र.

उ०—२ दाड़ी मसतग मूछ का, घुरिड़ मूंडीया केस । हरीया मन पलिट्या नहीं, पलिट्या तन का वेस ।
—श्रीहरिरांमदासजी महाराज

२ भेड़ के शरीर की ऊन काटना ।

३ किसी प्रकार की शिक्षा दीक्षा या सलाह देकर चेला बनाना, अनुयायी बनाना, वशीभूत करना, प्रभाव में लाना ।

उ०—जीयौ बांमण थोड़ा दिन फेर करड़ो रह्यौ । नवा मूंडियोड़ा

दो तीन चेला-चांटियां नै कीं तकलीफ नीं करण देवतौ।

—फुलवाड़ी

४ धोखे से माल ऐंठना, ठगना :

५ किसी मृतक के पीछे दाढ़ी-मूंछ कटाना, भद्र करना।

उ०—मुई बेगम समैं सैहस जग मूंडिया, दूर की मूंछ पतिसाह हुवै। राखिया भोज यम ठाकुरै राखज्यौ, हिंदुवां ध्रम अहंकार हुवै।—राव भोज हाडा री गीत

मूंडणहार, हारौ (हारी), मूंडणियौ—वि०।

मूंडिओड़ौ, मूडियोड़ौ, मूंडयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मूंडीजणौ, मूंडीजबौ—कर्म वा०।

मुंडणौ, मुंडबौ,—अक रू०।

मूडणौ, मूडबौ—रू०भे०।

मूंडत—देखो 'मुंडित' (रू. भे.)

उ०—समर ढिलोकर सांम नूं, लस आवै लबड़ाक। मूंछ थकां मूंडत जिकै, नाक थकां बिन नाक।—बां दा.

मूंडतहाथ-सं०पु० यो०—१ कोहनी से हाथ की अंगुलियों के मोड़ तक बनने वाला लम्बाई का एक माप। मतान्तर से कुहनी से अंगुलियों के पेरवों से वापिस मोड़कर अंगुलियों की जड़ तक का माप।

२ उक्त माप की लम्बाई की वस्तु।

रू०भे०—मूंडहाथ।

मूंडवाळ-सं०पु०—नाई, केशकार, नापित। (डिं. को.)

रू०भे०—मूडवाळ, मूंडाळ,

मूंडहाथ—देखो 'मूंडतहाथ' (रू. भे.)

उ०—कुतां रा डोर छूटै छै। लाहोरी ताजी लूच बांण गिलजा पहाड़ी, जिकांरी मूंडहाथ मोहनाळ हाथ भर नस।—रा. सा. सं

मूंडांमूंड, मूंडामूंडी—क्रि०वि०—मुंह के सामने, सम्मुख, मुंह की मुंह पर, रूबरू।

उ०—घर री कळै सूं नाको-नाक आय' र, भूवाजी, रांमलै-री मां नै मूंडांमूंड कैण लागी—अबै कांम को चालै नी, चार पांच दिनां में म्हां रौ उथळौ कर दौ।—वरसगांठ

रू०भे०—मूंडेमूंड, मूंडैमूंड।

मूंडाणौ, मूंडाबौ-क्रि०स० ['मूंडणौ' क्रिया का प्रे०रू०] १ उस्तरे, पत्ती आदी से शिर या शरीर के किसी अंग विशेष पर उगे हुए केशों को कटवाना, मुण्डन करवाना, बाल कटवाना।

उ०—मसतग माळ मूंडाय कै, दाढ़ी मूंछ मूंडाय। हरीया मन मूंड्यां विनां, निज पद कैसैं पाय।—स्री हरिरांम दासजी महाराज

२ भेड के शरीर की ऊन कटवाना।

३ किसी प्रकार की शिक्षा दीक्षा या सलाह द्वारा चेला बनवाना, अनुयायी बनवाना, वशीभूत कराना, प्रभाव में कराना।

४ धोखे से माल ऐंठवाना, ठगवाना।

५ किसी मृतक के पीछे दाढ़ी मूंछ कटवाना, भद्र करवाना।

मूंडाण हार, हारौ (हारी), मूंडाणियौ—वि०।

मूंडायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मूंडाईजणौ, मूंडाईजबौ—कर्म वा०।

मुडाणौ, मूडाबौ, मूडावणौ, मूडावबौ—रू०भे०।

मूंडापाली—सं०स्त्री०—१ एक प्रकार का पौधा जिसकी गांठों पर सफेद फूल लगते हैं, गुमा द्रोण पुष्पी।

मूंडायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ उस्तरे, पत्ती आदि से शिर या शरीर के किसी अंग विशेष पर उगे हुऐ केशों को कटवाया हुआ, मुण्डन करवाया हुआ, बाल कटवाया हुआ. २ शरीर की ऊन कटवाया हुआ. (भेड़) ३ चेला बनवाया हुआ, अनुयायी बनवाया हुआ, वशीभूत या प्रभाव में कराया हुआ. ५ धोखे से माल ऐंठवाया हुआ, ठगाया हुआ. ५ किसी मृतक के पीछे दाढ़ी मूंछ कटवाया हुआ, भद्र करवाया हुआ।

(स्त्री०मूंडायोड़ी)

मूंडाळ—देखो 'मूंडवाळ' (रू. भे) (डिं.को.)

मूंडी—१ देखो 'मूंड' (रू. भे.)

२ देखो 'मुंड' (रू. भे.)

३ देखो 'मूंडकी' (रू. भे.)

४ देखो 'मूंडवाळ'।

मूंडे मूंड, मूंडै मूंड—देखो 'मूंडामूंड' (रू. भे.)

उ०—ठाला भूला बता तो खरी थूं इत्ता धन री कांई करयौ। खजानै जमा क्यूं नीं करायौ। थारी इत्ती हीमत के मूंडैमूंड नटै।

—फुलवाड़ी

मूंडो दिखाई—देखो 'मुंहदिखाई' (रू. भे.)

मूंडो-सं०पु० [सं०मुंडः] १ मनुष्य या प्राणियों के शरीर का वह अंग जिसमे खाने-पीने एवं बोलने आदि की क्रियाएें होती हैं, मुख।

उ०—१ गळियोड़ा सब गाथ गजब कांधो गळियोड़ौ। अमल खांण ने अजे बळै मूंडौ बळियोड़ौ।—ऊ. का.

उ०—२ मंवळ खायनै छपाक देती रौ वौ पांणी रै मांय पड़ग्यौ। पड़तां ई वौ तो मूंडौ फाड़नै गळळ गळळ पांणी खांचण ढूकौ।

—फुलवाड़ी

मुहा०—१ मूंडा जित्ती बातां=जितने मुंह उतनी बातें होती हैं'। मनुष्य हरेक बात अपने ढंगसे कहता है। अफवाहें उड़ने पर ऐसा कहा जाता है।

२ मूंडा मूं आवै ज्यूं बोलणौ=असभ्यता से बोलना, बोलते समय सुध न रहना।

३ मूंडा में अन-पांणी घालणौ=खाना-पीना, मुश्किल से भोजन प्राप्त होने पर ऐसा कहा जाता है।

४ मूंडा में गुळ देणौ= खुश-खबरी सुनाने या इच्छित बात करने पर मुंह मीठा करना। चुप करना।

५ (थारा) मूंडा में घी शक्कर=वांछित कार्य करने वाले के लिये अच्छे भोजन कराने का भाव।

६ मूंडा में पांणी आंणौ=स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ को देखने पर मूंह में पानी आना, लालायित होना

७ मूंडा में मुळक नीं मावणी=खुशी के कारण मुंह से हंसी फूट पड़ने का भाव होना।

८ (थूक थारा) मूंडा मूं = अमांगलिक बात करने पर।

९ मूंडा में मूंडौ घालणौ = घुट-घुट कर बातें करना।

१० मूंडा में लाय लागणी = अधिक चर्री चीज खाने से मुंह में जलन होना, मुंह जलना।

११ मूंडा रै खांम लागणी = निरुत्तर होना, मुंह से बोल न निकलने की दशा होना।

१२ मूंडा री स्वाद = क्षणिक तृप्ति, जिससे कोई स्थाई लाभ न होता हो। जो खाने से अच्छा लगता हो पर वस्तुतः नुकसान दायक हो।

१३ मूंडा सूं थूक उछाळणौ = असभ्यता से बोलना, व्यर्थ बकना।

१४ मूंडा सूं फूल झड़णा - अच्छी बात कहना हंसना।

१५ मूंडै आंणौ = तृप्ति होनी, किसी चीज को खाने से मन भर जाना।

१६ मूंडै मीठौ = जो सामने तो मीठी-मीठी बातें करें और पीठ पीछे बुराई करें।

१७ (छोटे) मूंडै मोटी बात - अपनी हेसियत से ज्यादा की बात करना।

१८ मूंडै लगाणौ = किसी को बोलने, बात करने या पंचायती करने की छूट देना। शिष्टता की सीमा से बाहर तक बात करने की छूट देना।

१९ मूंडै लागणौ = निस्संकोच होकर किसी से बात करना, खुल कर बात करने की दशा में होना, अशिष्टता का व्यवहार करना।

२० मूंडौ ऐंठणौ, मूंडौ ऐंठौ करणौ = बहुत कम खाना। किसी के यहां खाने का दस्तूर करना, मुंह झूंठा करना।

२१ मूंडौ काळौ करणौ = चले जाना पलायन कर जाना. दृष्टि से दूर हो जाना। बदनामी के रूप में कहा जाता है।

२२ मूंडौ खीलणौ = निरुत्तर कर देना, कचबावट पकड़ लेना।

२३ मूंडौ खोलणा - कुछ कहना, कहने के लिये मुंह खोलना। बहुत कम बोलने वाले के लिये कहा जाता है।

२४ मूंडौ घालणौ - खाने या पीने के लिये मुंह आगे करना। जानवरों पक्षियों आदि के लिये।

२५ मूंडौ चालतौ रैवणौ = हर वक्त कुछ न कुछ खाते रहना।

२६ मूंडौ फाड़णौ = खाने के लिये मुंह खोलना, अधिक पाने की आशा करना, लोभ करना।

२७ मूंडौ बंद कर देणौ = देखो 'मूंडौ खोलणौ'।

२८ मूंडौ बळणौ = मुंह जलना, तेज मसालेदार चीज खाने से मुंह में जलन होना।
किसी चीज के लिये लालयित होना, उत्कंठा दिखाना।

२९ मूंडौ मारणौ = व्यर्थ फिरना, बद चलन होना।

३० मूंडौ मीठौ करणौ = मीठी चीज खिलाना, खुश खबरी सुनाने, या अच्छा कार्य करने पर ऐसा होता है।

३१ मूंडौ रातौ करणौ = पान खाना, क्रोध करना।

२ चेहरा, आकृति, शक्ल।

उ०—१ मूंडौ सूजायं रैती. आमोड़ां पर भुंजती बळती अर कीनै ई गुड़ री किरची-मिरकी सी ही आपरै हाथ सूं नहीं देती।

—दसदोख

उ०—२ वौ मिनखां रा उणियारा देखतौ आगै बधतौ जावतौ। उणरै आगै बधणा रै सागै लोगां रा मूंडा उतरता जावता।

—फुलवाड़ी

उ०—३ पछै खवास काली मासो रै मूंडा सांम्ही देखने कैवण लागौ-माजी! कांई कांई बातां बतावूं। कह्या सुण्यां पाप लागै जेड़ा बखांण है।—फुलवाड़ी

मुहा०—१ मूंडा माथै थूकणौ = धिक्कारना, फटकारना।

२ मूंडा माथै फैं फा उडणी = मुंह पर थप्पड़ें पड़णी, जूते पड़ने पिटाई होना। ३ मूंडा री प्रीत = अस्थाई या दिखावटी प्रेम, मुंह देखने पर प्रगट किया जाने वाला प्रेम। ४ मूंडा रै ठोकर मारणौ = अपमान करना, मुंह पर पांव की ठोकर मारना। ५ मूंडा सांमी देखणौ = अवाक रह जाना, परमुखापेक्षी होना। ६ मूंडौ ई नीं बतावणौ = जाने के बाद वापस न आना, जो काम सौंपा गया है, न तो वह करना, न वापस आकर मिलना। जी चुराना।

७ मूंडौ उतरणौ = उदास होना, चेहरे पर उदासी छाना, खिन्न होना। ८ मूंडौ ऊंचौ करणौ = गर्दन उठाना, स्वतन्त्र होना, आजाद होना, मुकाबले में आना, विद्रोह करना। गर्व करना।

९ मूंडौ करणौ = रुख करना, उन्मुख होना। १० मूंडौ चढावणौ = मुंह फुलाना, रूठना, गुस्सा करना। ११ मूंडौ जोवणौ - देखना मात्र. कुछ करने की दशा में न होना। १२ मूंडौ ढेरणौ = व्यर्थ खड़े होना, असावधान होना। १३ मूंडौ थाप खावणौ = सहसा उदास होना. किसी बात में पोचा पड़ जाना। १४ मूंडौ धोणौ, मूंडौ धोवणौ = प्राप्ति की आश लगाना, वांछित वस्तु प्राप्त करने को तैयार होना। १५ मूंडौ निरखणौ=किसी के मुंह की ओर एक टक हो कर देखना, बार बार देखना, देख कर खुश होना। १६ मूंडौ नीं देखणौ=घृणा करना, नफरत करना। १७ मूंडौ नीचौ करणौ=शर्माना. शर्म से झुक जाना, हार मान लेना।

१८ मूंडौ फेरणौ=मुंह मोड़ लेना, बेरुख हो जाना, सम्बन्ध विच्छेद कर लेना। १९ मूंडौ फेर देणौ=वापस घुमा देना, हरा देना, ऐसा मारना की गर्दन सीधी न हो सके। २० मूंडौ मरदूर =हेसियत या औकात की दृष्टि से। २१ मूंडौ मरकोड़णौ, मूंडौ मरकोरणौ=मुंह बिगाड़ना। नखरे दिखाना। २२ मूंडौमोड़णौ

=देखो 'मूंडौ फेरणौ' २३ मूंडौ रातौ व्हेणौ, होणौ=शर्माना, शर्म करना। क्रोध करना। २४ मूंडौ लुक थुकौ पड़णौ=भय भीत होना, हवाइयें उड़ना, चेहरा रूखा पड़ जाना, उदासीन होना। २५ मूंडौ लुकाणौ, मूंडौ लुकावणौ=मुंह छुपाना, जी चुराना, सामने न आना, कतराना। २६ मूंडौ लेय नै जाणौ=अपना रास्ता लेना, रूठ कर चल देना। त्याग कर देना, ऐसा जाना कि वापस आने की आशा न हो। कुछ प्राप्त किये बिना, निराश लौटना। २७ मूंडौ सूजणौ, मूंडौ सुजाणौ=देखो 'मूंडौ चढावणौ'

३ पक्षी की चोंच।

उ०—मोटा मोटा पंछियां रै सूंडा सूं सगळी बात सुणियां पछै पुटियौ खिल खिल हंसियौ।—फुलवाड़ी

४ बोरी, थैली आदि का खुला भाग, मुंह, विवर

५ बर्तन का मुख।

उ०—धरती माथै चारू कांनी दूध दही अर छाछ रळगी। घणाकरी पारियां चकना चूर व्हैगी। किणी रौ मूंडौ खांडो व्हियौ तौ किणी किणी री पींदौ तिड़कियौ।—फुलवाड़ी

६ दरवाजा, द्वार।

७ अग्र भाग, शिरा, नोक।

८ देखो 'मोडौ' (रू. भे.)

उ०—रांमसिंघजी इसड़ै ताव सेती आइ अर लोहे भिळिया जिम सूंडौ हिरण नायतो आवै छै त्यूं फोगां मांहै कूंदता आइ भिळिया।
—द. वि.

रू०भे०—मांअंडौ, मांअड़ौ, मांहंडौ, मांहडौ, मुंडहौ मुंडौ, मुंढौ मुंहुंडौ, मुंहडइ मुंहडौ, मुढौ, मुहंडौ, मुहडउ, मुहडु, मुहडौ मुहौ, मंढौ, मंहडउ, मूंहडौ, मूंहुढौ, मूंडौ, मूढौ।

मूंढ—१ देखो 'मूढ' (रू. भे.)

उ०—देवल ढहता देखीया, देख न भया उदास। जन हरीया उंन मूंढ को, रिदौ न खूल्हे जास।—श्री हरिरांमदासजी महाराज

२ देखो 'मूंड' (रू. भे.)

मूंढौ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)

उ०—१ भल पण खांचै पण रांचै भूंडै में, मांचै सूतां रै हूको मूंढै में।—ऊ. का.

उ०—२ बीन रै बाप रौ अंस खिचग्यौ। सगळां रा मूंढा घिरते जांन्यां रा सा हुयग्या। मियौ–बीबी राजी, जद के करैलौ काजी।
—दसदोख

उ०—३ ततरै ठग कनिआंण सूं कहण लागा—मो अब तौ थारी लेख सांई लखिआ को कुण मेट करै। हमैं तूं मांहरै सांचौ सगौ छै। पण मांहरी पुत्री रौ मूंढौ तौ देखाळ।
—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

मूंण–सं०स्त्री०—१ मिट्टी का बड़ा जल–पात्र, जिसमें तीन–चार मटके पानी आ जाता हो।

उ०—१ लांठौ बड़लौ। घेर घुमेर। ठौड़ ठौड़ साखां भूमै। गोड रै च्यारूं मेर एक गोळ चांतरौ। आठ दसेक मूंणां भरी। पीढ़ा माथै एक रूपाळी डावड़ी बैठी। बटावुवां नै पांणी पावण सारू।—फुलवाड़ी

वि०वि—ये मूंण दो प्रकार की होती है, एक घड़े के तरह छोटे मुंह की और दूसरी बड़े मुंह की। यह प्रायः जल संग्रह करने या दूर से गाड़ी पर रख कर पानी लाने के काम आती है। संग्रहार्थ कोई अन्य पदार्थ भी इसमें रख दिये जाते हैं।

रू०भे०—मूंणि, मूण,

अल्पा०—मूंणियौ।

२ देखो 'मोण' (रू. भे)

मूंणि—देखो 'मूंण' (रू. भे.)

उ०—छळती हिक मूंणि सराब छकै, भर घूंण पुलाव कबाब भखै गहली घट पिंड प्रतीत गणै, घर सै नभ मूंह घमंड घणै।—मे. म.

मूंणियौ—देखो 'मूंण' (अल्पा., रू. भे.)

मूंत—देखो 'मूत' (रू. भे.)

उ०—आवै देख उबाक थूक रा पेचा थाया। उतरया सूत अगूंत मूंत रैला नह माया।—ऊ. का.

मूंतणियौ—देखो 'मूतणौ' (अल्पा०, रू. भे.)

मूंतणौ—देखो 'मूतणौ' (रू. भे.)

मूंतणौ, मूंतबौ—देखो 'मूतणौ, मूतबौ' (रू भे)

मूंतणहार, हारौ(हारी), मूंतणियौ—वि०।

मूंतिओड़ौ, मूंतियोड़ौ, मूंत्योड़ौ—भू० का कृ०।

मूंतीजणौ, मूंतीजबौ—कर्म वा०।

मूंतरणौ—देखो 'मूतणौ' (रू. भे)

मूंता—देखो 'मुंहता' (रू. भे.)

उ०—बीन रै मूंता परवार गैं कींरौ ही जमीन पर पग नीं टिकै। लालैजी रै बडै, पढ्यै लिख्यै मुं' लागतै बेटै रै ब्याह री सगळा, बडाई–लाड कोड तथा सरावण करै है।—दसदोख

मूंतियोड़ौ—देखो 'मूतियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मूतियोड़ी)

मूंवड़ी—सं०स्त्री० [सं०मुद्रिका] १ हाथ की अंगुली की अंगुठी, मुद्रिका।

उ०—१ रंगीळी चंग बाजणू, चंग आंगळियां बाजे। चग मूंवड़ियां बाजै, चंग पूंचै के बळ वाजै।—लो. गी.

उ०—२ नाई रै मूंडा री आ बात सुण राजाजी इत्ता राजी व्हिया के उणनै अमोलक नग जड़ी मूंवड़ी उतार बगसीस में देदी।
—फुलवाड़ी

उ०—३ ताहरौ फूलजो कागळ लिख दीयौ। हाथ री मूंवड़ी दीन्ही छै।—लाखा फूलांणी री बात

उ०—४ बाजूबंद मूंवड़ी अंगुळी, नखसिख गहणौं सातां। पहर कूबड़ी न्हावण चाली, जळ जमना कै घाटां।—मीरां

२ पितृ कार्य करते समय पहनी जानी वाली कुश की अंगुठी।

रू०भे०—मुंदड़ी, मुंदरी, मुंद्रड़ी, मुद्रड़ी, मुद्रडी, मूंदरी, मंूदली, मंूद्रड़ी, मूदड़ी, मूदरी ।
अल्पा०—मुंदरड़ी, मंूदरड़ी,
मह०—मुंदड़उ

मूंदड़ौ—देखो 'मंूदड़ी' (मह., रू. भे.)
उ०—१ मोज कड़ां मूंदड़ां गजां गांमां तोलारां । पंच ठांम अंबरां जरी जांमां जर तारां ।—रा. रू.
उ०—२ मोतीयां मूंदड़ां कड़ां जनेऊ जड़ा व मालां । श्रोपै बींद राजा यमी पोसाकां अनेक ।—मयारांम दरजी री वात

मूंदणौ, मूंदबौ—क्रि०स० [सं०मुद्रण] १ बंद करना, मीचना । (आंखें)
उ०—१ आकूळत व्याकुळत चलत नह आंवणौं । पीव किए भांत आरांम पांमै । सुकरदे सकरचा नैण मूंदै सची । नागणी नाग सिर घडा नांमै ।—महारांणा राजसिंह रौ गीत
उ०—२ जिणनूं सुपनें देखती प्रगट भए प्रिव आइ । डरती आंख न मूंदही, मत सुपनउ हुय जाइ ।—ढो. मा.
उ०—३ संत कांई जबाब देवता । आंख्यां मूंदनै माळा फेरण लागा । बिचाळै ई दांत पीसता बोल्या—ठाकुरजी रै सांमी ऊभौ थूं ठाकुरजी नै ई भांडै, थनै सराप लागैला ।—फुलवाड़ी
२ किसी छेद या विवर को बंद करना, सूराख बंद करना ।
उ०—मेरी गई पुकार सब ज्यूं समंद में बूंद । सुणी न एकौ सांवळा, कांन रहै हो मूंद ।—गजउद्धार
३ ढकना, आच्छादित करना, आवेष्ठित करना ।
४ अंत करना, समाप्त करना ।
मूंदणहार, हारौ(हारी), मूंदणियौ—वि० ।
मूंदिश्रोड़ौ, मूंदियोड़ौ, मूंद्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मूंदीजणौ, मूंदीजबौ—कर्म वा० ।
मुंदणौ, मुंदबौ—अक०रू० ।
मुंद्रणौ, मुंद्रबौ, मूंधणौ, मूंधबौ—रू०भे०

मूंदरड़ी मूंदरी—देखो 'मूंदड़ी' (रू. भे.)
उ०—१ पदक प्रियु तउ हूं मोतिन माला । हीरउ तउ हूं मूंदरड़ी रे बहिनी ।—स. कु.
उ०—२ द्रुम तळै बाग असोक दरसै प्रगट परसै पाव । तो कपरावजी कपराध करदे मूंदरी कपराव ।—र. रू.

मूंदली—देखो मूंदड़ी' (रू. भे.)

मूंदियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ बंद किया हुआ. मीचा हुआ. (नेत्र)
२ छेद, सुराख या विवर बंद किया हुआ. ३ आच्छादित या आवेष्ठित किया हुआ, ढका हुआ. ४ अंत किया हुआ, समाप्त किया हुआ ।
(स्त्री० मूंदियोड़ी)

मूंद्रड़ी—देखो 'मूंदड़ी' (रू, भे.) (व.स.)

मूंध—देखो 'मुग्ध' (रू. भे.)
उ०—१ चौड़े चंड मंडां चवी, संभ आगळि सकाज । मोहण वेली श्रध नयण, मूंध अजब महाराज ।—मा. वचनिका
उ०—२ स्त्री की केती जाति, कहि न राघव सुविचारी । रूपवत पतिव्रता, मूंध सोहइ सुपियारी ।—प. च. चौ.
उ०—३ जउ तूं साहिब नाविय‍उ, सावण पहिली तीज । बीजळ तणइ झबूकड़इ, मूंध मरेसी खीज ।—ढो. मा.

मूंधणौ, मूंधबौ—देखो 'मूंदणौ, मूंदबौ' (रू. भे.)
मूंधणहार, हारौ (हारी), मूंधणियौ—वि० ।
मूंधिश्रोड़ौ, मूंधियोड़ौ, मूंध्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मूंधीजणौ, मूंधीजबौ—कर्म वा० ।

मूंधारौ—देखो 'मुंअंधारौ' (रू. भे.)

मुंधौकांटौ—सं० पु०—ऊंधा कांटा नामक पौधा ।

मूंन—देखो 'मून' (रू भे.)
उ०—१ जद रुघनाथ जी बोल्या-म्हैं तो साध हां । म्हारै कठै कहणो है रे ? म्हारै तो मूंन है ।—भि. द्र.
उ०—२ पण घणी ताळ तांई मूंन राखणी ई उणरै बसरी बात नीं ही । हिवड़ा में श्रोळ्योड़ौ मन रौ अखूट दरद आखरां रौ रूप धार माडांणी रळक पड़चौ ।—फुलवाड़ी

मूंनाळ—१ देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)
२ देखो 'मोहनाळ' (रू भे)

मूंनी—देखो 'मुनि' (रू. भे)
उ०—मोहणी कंमळा मूख मूंनी । नमो धोम धुतारणी संभ धूनी ।
—मा. वचनिका

मूंफाड़,मूंफाड़ौ—सं०स्त्री०यौ०—दोनों होठों के बीच का मुख आयतन । मुख के विवर का बाहरी भाग ।
उ०—१ आ कंयनै वौ पूरी मूंफाड़ फाड़ नै हंसियौ ।—फुलवाडी
उ०—२ भीरू आरातुर मूंफाड़ा भाजै । बैंतां फुरणां रा फूंफाड़ा बाजै ।—ऊ. का.
रू० भे०—मूफाड़,

मूंवती,मूंवत्ती—१ देखो 'मुंहपत्ती' (रू. भे.)
२ देखो 'मोमबत्ती' (रू. भे.)

मूंम—देखो 'मोम' (रू. भे.)
उ०—धूंहरि पडय अथाह ते बिरहांनल नौ धूम । वैगा जावौ कोई पिघलावौ, प्रिय मन मूंम ।—ध. व. ग्र.

मूंमांणौ—देखो 'मांमांणौ' (रू. भे.)

मूंमारकौ—देखो ममारखौ' (रू. भे.)

मूंमारखौ—देखो 'ममारखौ' (रू. भे.)
उ०—१ बीकानेर रावजी नूं मेल्हिया, कोट फतेह कियां री मूंमारखी सो मेल्ही ।—ठा. जे.
उ०—२ सारै लोग मूंमारखी दीवी —गौड़ गोपाळदास री वारता
उ०—३ सारा ठाकुर गढ ऊपर जाय महाराज नूं खबर मूंमारखी मेल्ही ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

मूंमीठौ मूंमीठौ—देखो 'मुंहमीठौ' (रू. भे.)

उ०—कोड़ां में रापूत रौ कोड, करवला में ज्यूं जेसलमेरी टोड जिया जगत जस में बाजींदा है, बियां ही गरब गांव में मूंमीठै ताईं घड़ी खड़ वेगराज जी मूंतै रौ नांव सिवरण सिरै अर नांम जाबीक हो रैयौ है।—दसदोख

मूंया-सं० पु०—राठौड़ वंश की एक उप शाखा।

मूंरौ—देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

मूंळ—देखो 'मूळ' (रू. भे.)

मूंळी—देखो 'मूळी' (रू. भे.)

मूंवौ-वि०—१ मृत, मरा हुवा।

उ०—१ परवार गयौ पिस्तावणौं करूं न मूंवां कंथ रौ। म्हांरौ महा दुःख मेट दें, भलौ हुवे भगवंत रौ।—ऊ. का.

२ देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)

उ०—भंडांणी रौ मूंवौ, सर लूणासर ग्रांम री सवाल, मारजा रौ हाल हुकम बांणिया भूपाल।—दसदोख

मूंसणौ, मूंसबौ—देखो 'मूसणौ, मूसबौ, (रू. भे.)

उ०—१ उत्तम मूंसे एक भड़, मध्यम दूहा मूंस। अधम गीत मूंसे अहर, त्रिविध कुकवि विण तूस।—बां. दा.

मूंसणहार, हारौ (हारी), मूंसणियौ—वि०।

मूंसिग्रोड़ौ, मूंसियोड़ौ, मूंस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मूंसीजणौ मूंसीजबौ—कर्म वा०।

मूंसल—देखो 'मूसल' (रू. भे.)

उ०—लीकां कुळ लोपी जगत न जोपी, खोपी में खावंदा है। जरकावण जोगा मूंसल मोगा, गोगा गुण गावंदा है।—ऊ. का.

मूंसळी, मूंसली—देखो 'मूसळी' (रू. भे.)

उ०—मरडा मोगरि मूंसली तापस तेली कंद। पाजरण क्षीर कपूरीआ चंद चमारी चंद।—मा. कां. प्र.

मूंसारौ-सं० पु०—चोर।

उ०—कोई मूंसारौ मूंसी गयौ। कंचु कसण ते लंक की वेढ।

—बी. दे.

मूंसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू. भे.)

मूंसौ-सं० पु० [अ० मूसा] १ यहूदियों के एक पैगंबर, हजरत मूसा।

२ चूहा।

उ०—चीटीं के मुख मेर समाना मूंसे गिली मजारी। दादुर सरप समद में डारया, लौंकी परि असवारी।—ह. पु. वा.

मूंह, मूंहई—देखो 'मुख' (रू. भे.) (ड. र.)

उ०—मूंछा डाढी मूंह फूंकदै बाले फीटा। धुक धुक दे नित धुवां काळजा करदे कीटा।—ऊ. का.

मूंहगौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

उ०—बाई ऐ जोऊं म्हारा वीराजी री बाट ए, माहेरौ मूंहगा मोल रौ।—लो. गी.

मूंहडउ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)

उ०—मांणस मारि मांस ले मूंकइ, रिखिदत्ता नइ पासि रे। लोही सुं मूंहडउ वलि लेपइ, आवी निज आवासि रे।—स. कु.

मूंहडौ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)

उ०—जद स्वामीजी कह्यो-म्हैं तो यूं न कहां—मूंहडौ दीठां स्वरग नरक जाय तिण थांरी कहिणी रे लेखे थांरो मूंहडौ तो म्हैं दीठौ सो मोक्ष ने देवलोक तो म्हैं जास्यां। अने म्हांरों मूंहडौ थे दीठौ सो थांरी कहिणी रे लेखे थांरे पानें नरक ईज पड़ी।—भि. द्र.

मूंहनाळ—१ देखो 'मूंहनाळ' (रू. भे.)

२ देखो 'मोहनाळ' (रू. भे.)

मूंहौ—देखो 'मुख' (रू. भे.)

उ०—पत मेड़ता समर पत साहां, अगियां मूंहे दीध उभेल। वीरमदेव आवतां वांसे, अन रावां पायौ ऊबेल।

—राव वीरमदेव मेड़तिया राठौड़ री गीत

मू—१ देखो 'मूं' (रू. भे.)

उ०—१ वंसि तू सूर वंसि मू बीक भेजे संवूह घातउं निभ्भीक। वरनवियं राइ हाकलि ग्रहास, गेठहिय लुगी निग्रेड़ि नास।—रा.ज.सी

उ०—२ म गरि कीचक कूड निकालिजा, मरी म मू करि मूढ म जालिजा।—सालिसूरि

२ देखो 'मु' (रू. भे.)

मूग्रणौ, मूग्रबौ—क्रि०अ० [सं०—मृत] प्राणान्त होना, देहावसान होना, मरना।

उ०—१ मा मूई जब एहनी, तब ए लघुतर बाल रा०। पय पाई मोटौ कियौ, एम कहै भूपाल रा०।—वि. कु.

उ०—२ उत्तम कुमर किहां अछै, आगलि कहि अतांत। जीवै छै किंवा मूग्रौ, भांजि भांजि मन भ्रांत।—वि.कु.

उ०—३ नलनि नरति नथी जाणती, जीवि छि के मूग्रौ। वलतु समाचार नथी रे, यहि निसा थयु जुग्रौ।—नलाख्यान

मूग्रणहार, हारौ (हारी), मूग्रणियौ—वि०।

मूग्रोड़ौ—भू०का०कृ०।

मूईजणौ, मूईजबौ—भाव वा०।

मूग्रळी—देखो 'मूसळी' (रू. भे.)

मूईमाटी—सं०स्त्री०—१ लाश, शव, मृत शरीर।

२ मरे हुए प्राणी का मांस।

मूउ—देखो 'मूंवौ' (रू. भे.)

उ०—आकुलउ अति सुयोधन हुउ। कउण जीवइ किहां कुण मूउ।

—सालिसूरि

मूग्रोड़ो—भू०का०कृ०—मरा हुआ, मृत।

(स्त्री०मूग्रोड़ी)

मूग्रो—देखो 'मूंवौ' (रू. भे.)

मूक—वि० [सं०] १ जो वांणी से रहित हो, बोलने में असमर्थ हो, वाणीहीन, गूंगा।

२ जो कुछ बोलना नहीं चाहता हो, मौन हो, चुप हो, शान्त।

उ०—हुड़ सौ कायर रण हुवै, मह चौढां सह मूक। बाहे रावत ही

बधा, रग रग कटतां रूक ।—रेवतसिंह भाटी
३ अवाक्, स्तंभित ।
४ विवश, लाचार ।
५ दीन, अभागा ।
६ पागल, मूर्ख । (ह. नां. मा.)
७ मौनी ।
सं०पु० [सं०मूकः] १ दानव, दैत्य, राक्षस ।
२ गूंगा या मूक व्यक्ति ।
३ हिरण्य कशिपु के वंश का एक राक्षस, जो सुंद एव ताटका का पुत्र था ।
४ तक्षक वंश का एक नाग, जो जनमेजय के सर्प सत्र में दग्ध हुआ था ।
५ एक चाण्डाल, जो अत्यन्त मातृ एवं पितृ भक्त था ।
६ एक दानव जो इन्द्रकील पर्वत पर रहता था ।
७ मछली ।
रू०भे०—मुक्क, मुगउ,

मूकणो, मूकबो–क्रि०स० [सं०मुक्त. प्रा०मुक्कणो सं०मोक्तव्यं, मोच्यं] १ परित्याग करना, त्यागना, तज देना, छोड़ देना ।
उ०—१ कोड़ प्रकारां खून कर. मूकै नहीं मुकांम । घेरा सूं पौरस घणो, केहर केरा कांम ।—बां.दा.
उ०—२ भूपाळ भिडै भीमेण छळि,अछर मोह मूक्यौ सबळ अंतरह जोति अविणास यह, गयौ भेद सूरज-मंडळ ।–गु. रू. बं.
उ०—३ रंग भोप उतंग सुढ़ळै. रौदां मारुत मूकै मांण । मदमूक महाबळ प्रेम परघळ बारांमास बसांण ।—मा. वचनिका
उ०—४ आसै पासै लोक मिल्या तेह निसुणी कूक । कूड़ै चित्त सती पण रोवै प्रीय गयौ मुझ मूक ।—ध. व. ग्रं.
उ०—५ मन वसियौ वइराग हो राजेस्वरजी, मूकी हो माया ममता मोहनीजी ।—स.कु.
२ फेंकना, चलाना, छोड़ना ।
उ०—मूकै सर हैक ताडका मारी चंड सुबाहु हणे कर चाव । जिग किंयौ धनुख भंग जालम, रंग भुजां थारा रघुराव ।—र.रू.
३ घटाना, मिटाना, लोपना, छोड़ना ।
उ०—१ उरड़ै दळ समहर उदमादा । मूकी फिर सांमंदा मजादा । —सू. प्र.
उ०—२ कलियांणौत भाजतै कटकै, अरि अंत देखि वचत जो अंग । मेरू चलत मजा दधि मूकत पळटत तरण पंकत धर पंग । —महेस कल्यांणौत सांखला रौ गीत
उ०—३ ऊंधौ मुख दस मास गरभ में, असुचि तणौ पिंड बाधौ रे। नीसरियौ जब दुख विसरियौ मूक दीनी मरजादौ रे ।—जयवांणी
४ बंधन मुक्त करना, आजाद करना, छोड़ना, मुक्त करना ।
५ दूर करना, अलग करना, हटाना ।
उ०—अहिठी अमनि नवि भारि अपूरव अमनि जांणी । राजा तुहि मूकि नहीं ते सुणतां अम्रत वांणी । हंसि हरिनूं समरण कीधूं तूं छि दीनानाथ, कठिण थयु रा नयी मूक तु अही रहु छि हाथ । —नलाख्यांन
६ तय करना, निश्चित करना, निपटाना. सलटाना ।
७ भेजना, पठाना ।
उ०—१ तांम साह (ह) जिहंगीर, लिखे मूक्यो परमांणो पळ खूटो खुरसांण, सब्बळा अजुं खूमांणो ।—गु. रू. बं.
उ०—२ मूक्या लिखी दाराब उतांमळ । खांना सांमुहा कागळ । —गु. रू. बं.
उ०—३ कहीयो जी म्हारा घर सुं उठीया, म्हारी बाइर थांनुं मूकीया तै म्हारी वडाई ।—चौबोली
उ०—४ ताहरां ऊदो कहै–सिखरैजी री बेटी थांह–रै बेटै नूं दीनी छै । देव उठियां पछै बांभण मूकां छां पधारिज्यो ज्यूं परणावां । —ऊदै उगमणावत री वात
उ०—५ मया करीनै मूकज्यो. कुसळ खेमना लेख । लीला पति लख जो वळी, स्माचार सू विसेख । —ढो. मा.
८ प्रदान करना, देना ।
९ झोंकना, डालना, पटकना, छोड़ना ।
उ०—त्रिण मूकत झाळ उठै तरसै । रिण माझिझ पतंग पड़ै हरसै । —मा. वचनिका
१० तोड़ना ।
११ रखना, धरना, टिकाना ।
१२ (उच्छ्वास) निकालना, छोड़ना ।
उ०—खरौ हो अयांणउ उकिरई, आठमौ ठांव रवि वारमौ राहु । ग्रह गणतौ अतिहि वीरा, सिर धुणी मूका छइ धाह ।—बी. दे.
१३ अंकुरित करना, निकालना (पत्ते) ।
मूकण हार. हारौ (हारी), मूकणियौ—वि० ।
मूकिओड़ो, मूकियोड़ो, मूक्योड़ो—भू० का० कृ० ।
मूकीजणो, मूकीजबौ—कर्म वा० ।
पमूंकणो, पमूंकबो, पमूकणो, पमूकबो, पमूखणो, पमूखबो, पिमूकणो, पिमूकबो, प्रमुकणो, प्रमुकबो, प्रमुक्कणो, प्रमुक्कणो, प्रमूकणो, प्रमूकबो, मुंकणो, मुंकबो, मुक्कणो, मुक्कबो, मुहकणो, मुहकबो मूंकणो, मूंकबो, मोकणो, मोकबो,—रू०भे० ।

मूकता–सं०स्त्री०—१ मूक होने की दशा, अवस्था या भाव ।
२ गूंगापन ।

मूकपाहाड़–सं०पु०—देखो 'रिखीमूक' ।
उ०—दनां दखियौ मूकपाहाड़ देखो । प्रभू पंच जोधा महासूर पेखो । —सू०प्र०

मूकरड़ै—देखो 'मुकरड़ै' (रू. भे.)

मूकाणो, मूकाबो–क्रि०स० ['मूकणो' क्रिया का प्रे०रू०] १ परित्याग करवाना, त्याग करवाना, छुड़वाना ।

२ फेंकवाना, चलवाना, छुड़वाना।
३ घटवाना, मिटवाना, लोपाना, छुड़वाना।
४ बंधन-मुक्त कराना, आजाद कराना, छुड़ाना, मुक्त कराना।
५ दूर करवाना, अलग करवाना, हटवाना।
६ तय कराना, निश्चित कराना, निपटवाना, सलटवाना।
७ भिजवाना, पठवाना।
८ प्रदान करवाना, दिरवाना।
९ झोंकाना, डलवाना, पटकवाना, छुड़वाना।
१० तुड़वाना।
११ रखवाना, धरवाना, टिकवाना।
१२ अंकुरित कराना, निकलवाना (पत्ते)
मूकाण हार, हारौ(हारी), मूकाणियौ - वि०।
मूकायोड़ौ—भू० का० कृ०।
मूकाईजणौ, मूकाईजबौ—कर्म वा०।
मूंकाणौ, मूंकाबौ, मूंकावणौ, मूंकावबौ, मुकाणौ, मुकाबौ, मुकावणौ, मुकावबौ, मूंकाणौ, मूंकाबौ, मूंकावणौ, मूंकावबौ—रू०भे०।

मूकायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ परित्याग करवाया हुआ, त्याग करवाया हुआ, छुड़वाया हुआ. २ फेंकवाया हुआ, चलवाया हुआ, छुड़वाया हुआ. ३ घटवाया हुआ, मिटवाया हुआ, लोपाया हुआ, छुड़वाया हुआ. ४ बंधन-मुक्त कराया हुआ, आजाद कराया हुआ, छुड़ाया हुआ, मुक्त कराया हुआ. ५ दूर करवाया हुआ, अलग करवाया हुआ, हटवाया हुआ. ६ तय कराया हुआ निश्चत कराया हुआ, निपटवाया हुआ, सलटवाया हुआ. ७ भिजवाया हुआ, पठवाया हुआ. ८ प्रदान करवाया हुआ, दिरवाया हुआ. ९ झोंकवाया हुआ, डलवाया हुआ, पटकवाया हुआ, छुड़वाया हुआ. १० तुड़वाया हुआ. ११ रखवाया हुआ, धरवाया हुआ, टिकवाया हुआ. १२ अंकुरित कराया हुआ, निकलवाया हुआ।
(स्त्री०मूकायोड़ी)

मूकावणौ, मूकावबौ—देखो 'मूकाणौ, मूकाबौ' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—एक वार आगइ दैत्यधु रामइ रुद्र मूकाव्यउ। बीजी वार वळी वैरोचनि, भगति विसेख जणाव्यउ।—कां. दे. प्र.
मूकावणहार, हारौ (हारी), मूकावणियौ—वि०।
मूकाविग्रोड़ौ, मूकावियोड़ौ, मूकाव्योड़ौ—भू० का० कृ०
मूकावीजणौ, मूकावीजबौ—कर्म वा०।

मूकावियोड़ौ—देखो 'मूकायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मूकावियोड़ी)

मूकि—देखो 'मुक्की' (रू. भे.)

मूकियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ परित्याग किया हुआ, त्यक्त, छोड़ा हुआ. २ फेंका हुआ, छोड़ा हुआ, चलाया हुआ ३ घटाया हुआ, मिटाया हुआ, लोपा हुआ. ४ बंधन मुक्त किया हुआ आजाद किया हुआ, छोड़ा हुआ. ५ दूर किया हुआ, अलग किया हुआ, हटाया हुआ. ६ निश्चित व तय किया हुआ. निपटाया व सलटाया हुआ. ७ भेजा हुआ, पठाया हुआ ८ प्रदान किया हुआ, दिया हुआ. ९ झोंका हुआ, डाला हुआ, पटका हुआ, छोड़ा हुआ. १० तोड़ा हुआ. ११ रक्खा हुआ, धरा हुआ, टिकाया हुआ. १२ (उच्छवास) निकाला हुआ, छोड़ा हुआ. १३ अंकुरित किया हुआ, निकाला हुआ। (पत्ते)
(स्त्री० मूकियोड़ी)

मूकीं, मूकी—देखो 'मुक्की' (रू. भे.)
उ०—१ जोर प्रबळ तन सधरजौ, सबळ पकड़ले सींह। दुसमण खीची भांजदे महिख एक मूकींह। पा. प्र.
उ०—२ हे कंथ थे भागळ बण जुद्ध सूं जीवता आय कांही कीधौ। इयूं कह हाय हाय कर बळती थकी छाती में दोनूं हाथ हणिया छ ती में मूकीयां वाही।—वी. स. टी.

मूकौ—देखो 'मुक्की' (रू. भे.)

मूक्की—देखो 'मुक्की' (रू. भे.)

मूक्कौ—देखो 'मुक्कौ' (रू. भे.)

मूक्ता—देखो 'मुक्ता' (रू. भे.)

मूख—देखो 'मुख' (रू. भे.)
उ०—नमौ मोहणी कामळा मूख मूंनी। नमौ धोम धूतारणी संभ धूनी।—मा. वचनिका

मूखक—देखो 'मूसक' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—मन दुसह दुहूं विध माहरै, असह वार लगै इसी। मुख लियां कठण नागेंद्र मनु, जग सरीख मूखक जिसी।—रा. रू.

मूखमल, मूखमलू—देखो 'मखमल' (रू. भे.)
उ०—वरणू वरणू के विलास हेतु में कायम आरसी से मंजुल मूखमलू से मुलायम वरवाणू के सांचे पंबराउ री धाव...।
—र. रू.

मूखौ—देखो 'मुख' (रू. भे)
उ०—देखि जठांणी लागौ छइ जेठ। मूखौ कुंमलांणौ अरि सूकइ छइ होठ।—वी. दे.

मूगता—देखो 'मुक्ता' (रू. भे.)

मूगताफळ, मूगताहळ—देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

मूगनउ—सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र विशेष।
उ०—वीणउसीउं चीणउंसीउं मलउसीउं आउंचीयउं मूगनउं मयउं मगलिकं मेदियउं'''।—ब. स.

मूगळ—देखो 'मुगळ' (रू. भे.)
उ०—१ मुखै चख चौळ सरूप मजीठ। धमोड़त साबळ मूगळ धीठ।—सू. प्र.
उ०—२ सर्रा दळ मूगळ सैयद सेख। बणै ग्रह बाज कबूतर वेख।
—मे. म.

मूगळी—देखो 'मुगळी' (रू. भे.)
उ०—मूगळी घड़ा आवइ मजूस। जासूस फिरइ पसत जापूस।
—रा ज. सी.

मूगीश्रो, मूगीयौ—देखो 'मूंगियौ' (रू. भे.)

उ०—श्रमरीश्रां सूहवीश्रां मूगीश्रां चलवलीश्रां चारुलीश्रां''' ।
—व. स.

मूगेड़ौ, मूगोड़ौ—देखो 'मूंगोड़ौ' (रू. भे.)

मूघौ—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

उ०—श्राठ सिध थापणी थाळ आसाऊवां, श्रापणी माळ नवनिध श्रनूंधा। रिधव रूक दे मूघां न व्है रायहर, सकत सूंधा तणी राय सूंधा —दळपत बारैठ

मूचौ—देखो 'मूछौ' (रू. भे.)

उ०—चालू बात रै भच मूचौ देय बोली—पूंख खायां नै केई जुग बीत्या।—फुलवाड़ी

मूछ—देखो 'मूंछ' (रू. भे.)

मूछड़ी—१ देखो 'मूंछ' (श्रल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'मोछड़ी' (रू. भे.)

मूछण—सं०स्त्री०—१ छीलने या काटने की क्रिया या भाव।

२ भोजनोपरान्त मुंह साफ करने की क्रिया या भाव।

३ भोजनोपरान्त मुंह साफ करने निमित खाया जाने वाला पान सुपारी, इलायची श्रादि पदार्थ।

उ०—पछै रंगजलां सुं इलायची, कपूर वासता जल सुं मनुहारै मनुहार चळु किया। उपरा पांन कपूर, फाल, कसतूरी, लूंग सुं मूछण कराया।—राव रिणमलरी वात

४ शराब पीते समय व श्रफीम लेने के बाद मुंह का स्वाद बनाने के लिये खाया जाने वाला पदार्थ, चुर्बन।

रू० भे० मूंछण, मोछण,

श्रल्पा.,—मूंछणियो, मूंछणौ

मूछणौ, मूछबौ—क्रि० स०—१ लकड़ी श्रादि के छोर या सिरे को कारीगरी से काट कर बराबर करना छीलना।

२ काटना।

उ०—श्ररावां घड़ड़ झालै नगा 'फता'वत मेध भीना श्रतर समर विच मूछता। पमर घर डमर दुनियां पतौजा, वगर खागां पड़ै 'श्रगर' बीजा।—श्रज्ञात

मूछणहार, हारौ (हारी), मूछणियौ—वि०।

मूछिश्रोड़ौ मूछियोड़ौ, मूछयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मूछीजणौ, मूछीजबौ—कर्म वा०।

मूंछणौ मूंछबौ मूंछणौ, मूंछबौ—रू० भे०।

मूछरेल, मूछरैल—देखो 'मूंछाळ' (रू. भे.)

उ०—तैही लंक सांगा सौ जोजनां गिर्ण तूछरेळ। मूछरेल श्रढांगा श्रयारां मेल मीच —र. ज. प्र.

मूछाणौ, मूछाबौ—क्रि० स० ['मूछणौ' क्रिया का प्रे० रू०] १ लकड़ी श्रादि के छोर या सिरे को कारीगरी से कटवाकर बराबर करवाना, छीलवाना।

२ कटवाना।

मूछाणहार, हारौ (हारी), मूछाणियौ—वि०।

मूछायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मूछाईजणौ, मूछाईजबौ—कर्म वा०।

मुंछाणौ, मुंछाबौ, मूंछाणौ, मूंछाबौ—रू० भे०।

मूछायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ लकड़ी श्रादि के छोर या सिरे को कारीगरी से कटवा कर बराबर करवाया हुश्रा. २ कटवाया हुश्रा।

(स्त्री० मूछायोड़ी)

मूछाळ—देखो 'मूंछाळ' (रू. भे.)

उ०—तो काळा सरप रा घर में बिल में ऊंदरा ही बड़ै है। उठै इज चेजौ करै सौ मूंसा ही कहदे ही कै म्हेई मूछाळ मूछां वाळा हां।—बी. स. टी.

मूछाळी—देखो 'मूंछाळी' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

मूछाळौ—देखो 'मूंछाळ' (श्रल्पा, रू. भे.)

उ०—श्राव्या सुणी म्लेछ मूछाळा, रणि राउतवट कीधी। बलड भणइ पहिला घाउ लेसूं, श्रन्न प्रतन्या लीधी।—कां. दे. प्र.

मूछियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ लकड़ी श्रादि के छोर या सिरे को कारीगरी से काट कर बराबर किया हुश्रा, छीला हुश्रा. २ काटा हुश्रा।

(स्त्री० मूछियोड़ी)

मूछियौ, मूछौ—सं० पु०—१ लकड़ी के सिरे की कारीगरी से को जाने वाली कटाई।

२ तरास, कटाई।

३ काटने की क्रिया।

रू० भे०—मुच्छ, मूचौ,

मूज—देखो 'मूंज' (रू. भे.)

मूजणौ, मूजबौ—देखो 'श्रमूझणौ, श्रमूझबौ' (रू. भे.)

मूजाणौ, मूजाबौ—देखो 'श्रमूझाणौ, श्रमूझाबौ' (रू. भे.)

मूजाण हार, हारौ(हारी), मूजाणियौ—वि०।

मूजायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मूजाईजणौ, मूजाईजबौ—कर्म वा०।

मूझाणौ, मूझाबौ—रू० भे०।

मूजायोड़ौ—देखो 'श्रमूझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री०मूजायोड़ी)

मूजिब—देखो 'मुजब' (रू. भे.)

मूजियोड़ौ—देखो 'श्रमूझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मूजियोड़ी)

मूजी—वि०—कृपण, कंजूस, सूम।

मूझ—देखो 'मुझ' (रू. भे.)

उ०—१ म ठेल म ठेल पगां सुं मूझ। त्रिबिक्रम राय दीनानाथ तूझ। जटाधर बंछै दैत जळाय। बिमौहै रूप श्रसाध्य बणाय।
—ह. र.

उ०—२ मांगूं सुज दीजै चवि स्रीमुख। सरब राज सम तूळ मूझ सुख।—सू. प्र.

उ०—३ कायर थाकौ दौड़कर, ससि सूं करै पुकार। अग ज्यूं मूझ बसावजै, मंडळ तणौ मंझार।—बां' दा.

मूझणो, मूझबौ—देखो 'अमूझणो, अमूझबौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ मागन लाधै भांण रथ, रज डंबर घेरी। मांहे अग मूझै मरै, नह लभ्भै सेरी। —द. दा.

मूझणहार, हारौ(हारी), मूझणियौ—वि०।

मूझिग्रोड़ौ, मूझियोड़ौ, मूझ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मूझीजणो, मूझीजबौ—भाव वा०।

मूझाणो, मूझाबौ—१ देखो 'अमूझाणो, अमूझाबौ' (रू. भे.)

उ०—पूरण ग्यांन दसा मन आंणी, वेधक आंणी वखांणीजी। विबुध भणी अवबोध समांणी, मूरख मति मूझांणी जी।—वि. कु.

मूझाणहार. हारौ(हारी),मूझाणियौ—वि०।

मूझायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मूझाईजणो, मूझाईजबौ—कर्म वा०।

मूझायोड़ौ—देखो 'अमूझायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री०मूझायोड़ी)

मूझियोड़ौ—देखो 'अमूझियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री०मूझियोड़ी)

मूझे, मूझै—देखो 'मुझे' (रू. भे.)

मूटी—देखो 'मुट्ठी' (रू. भे.)

उ०—मूट्यां सूं मसळतां पिसळतां डाढां पीसै। पोसत छांण' र पियै दसत रा दोसत दीसै।—ऊ. का.

मूठ—सं०स्त्री० [सं०मुष्टि] १ किसी उपकरण, औजार या शस्त्र का वह भाग जो हाथ में पकड़ा जाता है। दस्ता, बैंट।

उ०—१ आए सिंध न डोलै अंगा। खग रख दोदो धनुख निखंगा। हेक बांण गज प्रांण प्रहारै, मूठ अपूठी 'केहर' मारै।—रा. रू.

उ०—२ पाधरौ मूठ माथै हाथ गियौ। सपाक करती वाढ़ाळी बारै काढी।—फुलवाड़ी

२ मुट्ठी।

उ०—१ जन हरीया मन मूठ गहि, सबद भळाका सांधि। काळ कुबिधि कुंमारियै, तन तरगस कुं सांधि।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ चंदन केसर छिरकत मोहन, अपने हात बिहारी, भरि, भरि मूठ गुलाल लाल चहुं, देत सबन पै डारी।—मीरां

उ०—३ राव रै हाथ लाहोरी कबांण री छै। बड़ी खपरीयां रा तीर च्यार तौ मूठ में छै और तरकस दोय होदां में छै।

—डाढाळा सूर री बात

३ मुट्ठी में आने लायक किसी पदार्थ की मात्रा।

४ जादू-टोना या तान्त्रिक षट कर्मों में से एक जिसके द्वारा किसी प्राणी को मारा जाता है, मारण।

उ०—१ पूजै कर कर पीर,घर घर नूते गांम में। वळे जगावै वीर, मूठ चलावै मोतियां।—रायसिंह सांदू

उ०—२ पूंगी नाळ गाजियौ परबत, पंदरै सहस गारड़ी पूठ। फणधर डसण ऊठियौ फौजां, मंत्र जड़ी लागै न मूठ।

—ऊकाजी बोगसो

क्रि० प्र० आंणी, चलांणी, मारणी,

५ चोरी का माल। (उ. र.)

रू० भे०—मुठ, मूंठ, मूंठि, मूंठी, मूठि,

मूठड़ी—सं० स्त्री० [सं० मुष्टि] १ मुट्ठी के आकार की बाटी, जिसे सेक कर चूरमा बनाया जाता है।

२ मुट्ठी की धीमी चोट।

३ देखो 'मुट्ठी' (अल्पा., रू. भे)

उ०—माल्ह चलंतै परठिया, आंगण वीखड़ियांह। सोमौ हियै लगाड़िया, भरि भरि मूठड़ियांह।—अग्यात

रू० भे०—मूंठड़ी,

मूठदार—सं० पु०—१ पगड़ी को शिर पर बांधने का एक ढंग।

२ कोई उपकरण या शस्त्र जिसके मूठ लगी हो।

मूठरंदौ—सं० पु०—बढई का एक उपकरण, जिसे हाथ में पकड़ कर लकड़ी साफ की जाती है।

मूठाणो, मूठाबौ—देखो 'मुठाणो, मुठाबौ' (रू. भे.)

मूठावणो, मूठावबौ—देखो 'मुठाणो, मुठाबौ' (रू. भे.)

उ०—मूठावै खग मूठ, चालै भारत सांम्ह हो। सुवेज खाधी सूंठ, मात भलाई मोतिया।—रायसिंह सांदू

मूठालो—सं० पु०—तलवार। (डि. को.)

मूठि—१ देखो 'मूठ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ जर कंथा फाटै जोगेसां, साचां पाव मांडिया सेस। सार मूठि बावै गाजी सुत, अमर नाथ हाडा आदेस।

—अमरसिंह हाडा री गीत

उ०—२ रुखमइयां का बांण काटिवा की तांई। सिस्ति बांधी। अणी मूठि व्रिधि एक सिस्ति की।—वेलिटी

२ देखो 'मुट्ठी' (रू. भे.)

मूठियौ—सं० पु०—१ कांच, लाख, हाथीदांत आदि की बनी चूड़ियों का समूह जिसे औरतें हाथ की कलाई पर धारण करती हैं।

२ घास या चारे की मुट्ठी में समाने लायक मात्रा।

३ पशु की टांग का नीचे का भाग।

उ०—किसा हेक घोडा छै? बेपख भला, ऊंचा भलला, कटोरा नखा, आरसी सारीखा, तिअंगळ गाळा मूठिया बील फळा।

—रा. सा. सं.

रू० भे०—मुठियौ, मुठीयौ, मूंठियौ।

मूठी—देखो 'मुट्ठी' (रू. भे.)

उ०—१ जग थित झूठी जांणणी, मूठी भीड़ म रक्ख। माया मेवौ माडुवां चंगा चाखव चक्ख।—बां. दा.

उ०—२ सबरी के बोर सुदांमा के तंदुल, भर भर मूठ्यां ढूकौ।

—मीरां

उ०—३ गुलाबी नख बंध्योड़ी मूठ्यां में जाणें आखी दुनियां ई भींच्योड़ी ।—फुलवाड़ी

मूठी'क—अव्यय—मुट्ठी के बराबर, मुट्ठी के अनुपात में । मुट्ठीभर ।
रू० भे०—मुठीक,

मूड—१ देखो 'मूंड' (रू. भे.)
२ देखो 'मुंड' (रू. भे.)

मूडणौ, मूडबौ—देखो 'मूंडणौ, मूंडबौ' (रू. भे.)
उ०—माया सब जग मूडीया, विनां पाछणै मुंड । जन हरीया विन मूंडीयां, रह्या रांम का रुंड ।—स्री हरिरांमदास जी महाराज
मूडणहार, हारौ (हारी), मूडणियौ—वि० ।
मूडिग्रोड़ौ, मूडियोड़ौ, मूड्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मूडीजणौ, मूडीजबौ—कर्म वा० ।

मूडवर—सं० पु०—रावण । (ग्र. मा.)

मूडाणौ, मूडाबौ—देखो 'मूंडाणौ, मूंडाबौ' (रू. भे.)

मूडायोड़ौ—देखो 'मूंडायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मूडायोड़ी)

मूडावणौ, मूडावबौ—देखो 'मूंडाणौ, मूंडाबौ' (रू. भे.)
उ०—निस्कंटक राज्य प्रतिपालतां संग्रांम विसय कदाचित् उपजइ, विपखा ग्रहटुरुखा सांचरिया, क्षेत्र मूडाविउं, बिहुं गंभी सन्नद्धबद्ध नीपना''' ।—व. स.

मूडावियोड़ौ—देखो 'मूंडायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मूडावियोड़ी)

मूडियोड़ौ—देखो 'मूंडियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मूडियोड़ी)

मूडीकट—१ घोड़े की एक किस्म विशेष । (१)
२ उक्त किस्म का एक घोड़ा ।
उ०—लिखियौ हंतौ, असल मूडीकट छै दोय पख सुध छै । ऐराकी छै ।—हाहुल हमीर री बात

मूडौ—सं० पु०—देखो 'मुड्डौ' (रू. भे.)
२ देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)
उ०—सेठां नै पाछौ खरायनै पूछ्यौ आज तौ किणी भला आदमी रो मूडो जोयौ, म्हनैं पूरो राजी कर दिरावोजा ? —फुलवाड़ी
३ देखो 'मोडौ' (रू. भे.)
उ०—धावणी ग्रोड़रा, मूडा म्रिघ ज्यों कूदता, नज ज्यों नाचता, कुळचता... ।—रा. सा. सं.

मूढ—वि० [सं०] जड़ बुद्धि, मति मन्द, मूर्ख, बुद्धि हीन, अनपढ । (ह. नां. मा.)
उ०—१ रांम नांम मत बीसरै आतम मूढ अयांण । काळ सकळ जग काटवा, कम ऊभौ केवांण ।—ह. र.
उ०२ पढ़ियां विनां मूढ पग फावै, पढ़ियां बिच्चै पुमाई नै । उण रै ढिग कोई रहै आदमी, तो क्योंहिक कसर कुमाई नैं ।—ऊ. का.
उ०—३ दरवाजा सूमां तणां, मूढां तणा हियाह । खुलिया । माथा पच कियां, सो नह सांभळियाह ।—बां. दा.
२ दुष्ट, दुर्बुद्धि, कुबुद्धि ।
उ०—१ समझ सठ आतम ज्ञान अयांनी माया बादी गूढ़ मसकरा मूढ़ महा अभिमांनी ।—ऊ. का.
उ०—२ मूढ जिकै गुरु मंत्र ज्यूं, चुगली स्रवण सुनंत । राग तांन रीझळ नहीं, ढोलो सीस धुनंत —बां. दा.
सं०स्त्री०—१ योग में, चित्त की एक वृत्ति
रू०भे०—मुड, मूडड, मुढ, मुढ्ढ, मुरड़, मूंढ.
२ देखो 'मुंड' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)
३ देखो मूंड' (रू. भे.)

मूढ़ गरभ—सं० पु०—१ वह गर्भ जो विकृत हो गया हो, ।

मूढ़ता—सं०स्त्री० [सं०] १ मूढ होने की दशा अवस्था या भाव ।
२ मतिमन्दता, मूर्खता, बुद्धिहीनता ।
उ०—१ भवाब्धिनाथ भावना, बिभू नहीं बिकारसी । मदीय में न मूढ़ता त्वदीय है न तारसी ।—ऊ. का.
उ०—२ राजा नै जितौ रांणी री समझ अर उण रै गुणां माथै भरोसौ हौ, रांणी नै उत्तौ ई राजा री नासमझी अर उण री मूढता माथै भरोसौ हौ ।—फुलवाड़ी
३ नासमझी, वेवकूफी ।
उ०—लीडौ राव विकट मूढता री बात करी ही अर वा ई उण री पार गी परी ,—फुलवाड़ी
४ असभ्यता ।
५ अज्ञानता ।
उ०—सुख री बातां माथै हरख मनावणौ अर दुख री बातां माथै रोवणौ—रींकणौ आ तो निपट मूढ़ता है ।—फुलवाड़ी
६ गंवारूपन ।
उ०—पढै गुणैं नहीं पेखवै, चारु हीं वरण निचिंत । मारवाड़ री मूढ़ता, मिटसी दोरी मित ।—ऊ. का.

मूढौ—देखो 'मूंडो' (रू. भे.)
उ०—१ सूरज उगाळी सुनार सांमी मिळै, लोग मूंढो फोरै, सांमै सिर सळ घालै ।—दसदोख
उ०—२ ग्यांन पथरणों धरियो गूढां । मेली विद्या रजाई मूढा । —ऊ. का.

मूण—देखो 'मूंण' (रू. भे.)

मूणपट्टौ—सं०पु०—मूण के आकर से मिलता जुलता ।
उ०—घरां मोकळी खेती वाड़ी हुवै, धीणै रौ धमरोळ रावै । मीठा मीठा मूण-पट्ठा मतीरा राजाजी तांई पुगावै अर मोयाब पावै । —दसदोख

मूणियड़—देखो 'मणियड़' (रू. भे.)

मूत—सं०पु० [सं०मूत्रम्] १ पेशाब, मूत्र ।
उ०—१ पाद तणौ परधांन, गादरौ सांप्रत गोटौ । अमुभ चले को अनुग, मूत रौ भाई मोटौ ।—ऊ. का.

उ०—२ बोली-श्रो होकतौ घण्यां ! घणी खमां ! अठै तो मूत देवता रौ मिंदर मांडूं हूं।—दसदोख

मुहा०—१ मूत उतरणौ = अत्यधिक डर या भय के कारण पेशाब कपड़ों में ही आजाना।

२ मूत काडणौ = इतना मारना या डराना कि पेशाब आजाये।

३ मूत निकलणौ = देखो 'मूत उतरणौ'

४ मूत निकालणौ = देखो 'मूत काडणौ'

५ मूत बंद होणौ = एक बिमारी है जिसके कारण पेशाब आना बंद होजाता है।

६ मूत री धार माथै राखणौ = तुच्छ व हेय समझना।

२ पेदाईश, वंशज।

उ०—गांवां सहरां गोलणां, रहै हुआ रजपूत। लखणां सूं लख लीजिए, मुकर घणां रा मूत।—बां. दा.

रू०भे०—मूंत, मूंत्र, मूंत्रि।

मूतणियौ—देखो 'मूतणौ' (अल्पा०, रू भे.)

मूतणी-सं०स्त्री—मूत्रेन्द्रिय।

मूतणौ—सं०पु०—मूत्रेन्द्रिय।

उ०—रंग रौ सफेद, कुंडळी सींगाड़ी, ओछी अर पतळी पूंछ, छोटौ मूतणौ।—फुलवाड़ी

रू०भे०—मूंतणौ, मूंतरणौ.

अल्पा०—मूंतणियौ, मूंतरियौ

मूतणौ, मूतबौ—क्रि०स०—पेशाब करना, मूतना, लघुशंका करना।

उ०—१ भळै थोड़ी देर हुई कै एक जणौ मूतण टुरियौ। डोकरी आंखियां फाड़ फाड़ जोयौ अर बोली—फरीदिया! श्रो बारै कुण गयौ है ? मजूर मूतण गयौ है।—वरसगांठ

उ०—२ ऐ बाबू लोग कदैई किणी रा गिंडया, बाढ़ी आंगळी माथै ई को मूतै नीं।—फुलवाड़ी

मूतणहार, हारौ(हारी), मूतणियौ—वि०।

मूतिओड़ौ, मूतियोड़ौ, मूत्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मूतीजणौ, मूतीजबौ—कर्म वा०।

मूंतणौ, मूंतबौ, मूंतणौ मूंतबौ—रू०भे०।

मूताणौ, मूताबौ–क्रि०स०['मूतणौ' क्रिया का प्रे०रू०] १ पेशाब करने के लिये प्रेरित करना पेशाब कराना, मूताना।

२ बच्चे या किसी असमर्थ प्राणी को पेशाब करने में मदद करना।

मूताणहार, हारौ(हारी), मूताणियौ—वि०।

मूतायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मूताईजणौ, मूताईजबौ—कर्म वा०।

मुताणौ, मुताबौ मुतावणौ, मुताववौ—रू०भे०।

मूतायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ पेशाब करने के लिये प्रेरित किया हुआ, पेशाब कराया हुआ, मूताया हुआ।

२ पेशाब करने में मदद किया हुआ।

(स्त्री०—मूतायोड़ी)

मूतायौ–वि० [स्त्री०मूताई] जिसे पेशाब की हाजत या शंका हो, लघु शंका ग्रस्त।

उ०—१ मा भाई! थयं कांन सुण चाहे बिये, मनै तौ थयां को पोसावै नी। तो माजी? तिसाया मूलाया तौ रयीजै ई कोनी।

—वरसगांठ

उ०—२ माड़ा छोड़ करणी री जी में आई, जद मारग रै बिचाळै ही बैठगी मूताई।—दसदोख

मूतियोड़ौ—भू० का० कृ०—पेशाब किया हुआ, मूता हुआ।

(स्त्री०मूतियोड़ी)

मूती–सं०स्त्री० [सं०मूत्र] पेशाब, मुती।

क्रि०प्र०—आणी, करणी, लागणी, होणी,

रू०भे०—मुत्ति, मुत्ती,

मूत्र–सं०पु० [सं०मूत्रम्] वह पानी जो शरीर के विषैले पदार्थों को लेकर उपस्थ मार्ग से निकलता है, पेशाब, मूत। (उ. र.)

पर्या०—बस्तिमळ, मूत, मेह, स्रव।

मूत्रकच्छ, मूत्रकृच्छ–सं०पु० [सं०मूत्र कृच्छ] पेशाब का एक रोग, जिसमें पेशाब थोड़ा, थोड़ा, एक-एक कर तथा कष्ट के साथ आता है।

उ०—१ जिण समय दिल्लीस साह जिहांन मूत्रकृच्छ नामक महातंक रौ प्रकोप थियौ।—वं. भा.

उ०—२ महोदर जलोदर कठोदर भगंदर अतिसार मूत्रकृच्छ उदरशूल हृदयसूल······व. स.

मूत्रग्रह–सं०पु० [सं०] घोड़ों का एक रोग जिसमें घोड़े के पेशाब थोड़ा थोड़ा व झाग लिये हुऐ आता है।

मूत्रदसक–सं०पु०—दश प्राणियों के मूत्र का मिश्रण।

वि०वि०—ये प्राणी इस प्रकार हैं—मनुष्य, स्त्री, गधा, भैंसा, घोड़ा, बकरा, गाय, ऊंट, मेंढा, हाथी।

मूत्रविग्यान–सं०पु०पु [सं०मूत्र विज्ञान] आयुर्वेदीय मूत्रपरीक्षण विद्या।

मूत्राघात–सं० पु० [सं०] पेशाब सम्बंधी एक बीमारी।

मूत्रासय–सं० पु० [सं० मूत्राशय] शरीर में नाभि के नीचे का वह स्थान जहां मूत्र संचित होकर बाहर निकलता है।

मू'था—देखो 'महता' (रू. भे.)

मूद–सं० पु०—कुल्हाड़ी, कस्सी, कुदाली, फावड़ा इत्यादि का पृष्ठ भाग।

रू० भे०—मूंड

मूवड़ी—देखो 'मूंदड़ी' (रू. भे.)

उ०—मरद पवसाख भूसण कड़ा मूवड़ी, कंठ डोरौ मुरति लवंग कांनां।—मे. म.

मूवड़ौ—देखो मूंदडौ (रू. भे.)

उ०—मोती का कडा मूवड़ा माळा, पेसां गांम पटाला। बेगागळ देवाळ वडाळा, साज बाज सिखराला।—अग्यात

मूवणौ, मूदबौ—देखो 'मूंदणौ, मूंदबौ' (रू. भे.)

उ०—छित कुळ ध्रम छांडै गुरु गम गाडै, माडै चख मूवंदा है।

चांमर कर चोळा झांमर झोळा, पांमर पद पूजंदा है।—ऊ. का.

मूदति, मूदती—१ देखो 'मुदित' (रू. भे.)

२ देखो 'मदद' (रू. भे.)

३ देखो 'मुद्रति' (रू. भे.)

मूदरा—देखो 'मुद्रा' (रू. भे.)

उ०—कांन न मूदरा मेखळा, भसम न अंग घसै।

—स्री हरिरांमदास जी महाराज

मूदौ—देखो 'मुदौ' (रू. भे.)

उ०—आवियै जेण संसार री व्है उदौ. मूदौ सब बात रौ मेह माथै।—ध. व. ग्रं.

मून-सं० स्त्री० [सं० मौन] १ चुप या शान्त रहने की क्रिया या भाव।

२ चुप्पी, खामोशी, शान्ति, मौन।

उ०—देख सरप व्है दादुरा, सब्द कलां कर सून। पुरख असेंदौ पेख व्है, मावड़ियां मुख मून।—बां. दा.

३ चुप रहने, न बोलने का संकल्प या प्रण, मौनव्रत।

उ०—१ बानां बिसतारै बणै. सठ आगै सरवज्ञ। मून ग्रहै छांडै मछर, तीखौ मिलियां तज्ञ।—बां. दा.

उ०—२ केइ कहै सावद्य दांन में पुन्य पाप मिस्र न कहिणौ तिण सूं सावद्य दांन में म्हैं मून राखां।—भि. द्र.

वि०—जो मौन रखता हो, जो बोलता न हो।

उ०—ऐसैं मैं आरंभ कियौ, पंग चढ़ै गिर कून। वाद करेवा सरसती, कैसौ पोहचै मून।—गज उद्धार

रू०भे०—मुण, मुन मून, मौन

मूनव्रत—देखो 'मौनव्रत' (रू. भे.)

उ०—पूरउ तप हुउ पतन्या पूगी, ईसर ताई मूनव्रत लीयइ। वारां जुगां हुंती बहुनांमी, ताळी छोडी दीह तीयइ।

—महादेव पारबती री वेलि

मूनाळ—देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)

मूनि मूनी—देखो 'मुनि' (रू. भे.)

उ०—१ ऐ बक मूनी ऊजळा, मीठा बोला मोर। पूछी सफरी पनग नूं, फ्रत ऊघड़ै कठोर।—बां. दा.

उ०—२ खूनी खळ खंचळ ऊनी अंचळ, मूनी मिळ मुळकंदा है।

—ऊ. का.

२ देखो 'मौनी' (रू. भे.)

मूनेस—देखो 'मुनीस' (रू. भे.)

उ०—करी ज्याग स्याहाय मूनेस कज्जं। दखे जै जया बोल अनेक दुज्जं।—र. ज. प्र.

मूफट—देखो 'मुंहफट' (रू. भे.)

मूफतियौ—देखो 'मुफतियौ' (रू. भे.)

मूफाड़—देखो 'मूंफाड़' (रू. भे.)

मूम—देखो 'मोम' (रू. भे.)

मूमल-सं० पु०—एक राजस्थानी लोक गीत।

मूमारखी—देखो 'ममारखी' (रू. भे.)

उ०—पाछै थटै भखर बादसाह नूं मूमारखी फतै पाई री मेल्ही।

—जलाल बूबना री बात

मूमावडी-सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—नेत्रपट्ट चोलपट्ट राजपट्ट गजवडि हंसवडि वोरि आवडी ऊमावडि मूमावडि पूमावडि···।—व. स.

मूर—१ देखो 'मूळ' (रू. भे.)

उ०—१ दीनानाथ दयाल सबनि का मूर है। हरि हां जन हरिदास तेज पुंज परकास अखंडित नूर है।—ह. पु. वां.

२ देखो 'मुर' (रू. भे.)

मूरख-वि०[सं० मूर्ख] १ जिसमें बुद्धि का अभाव होने के कारण ठीक ढंग से सोचने, विचारने एवं काम करने की योग्यता न हो, बुद्धि हीन मूढ, बेवकूफ। (अ. मा.)

उ०—जद समजू जांणै पोतै तौ देवै नहीं अनै दूजा नें पुण्य बतावै। पिण ए बात तो मूरख हुवै ते मांनै। पुण्य हुवै तौ पहिला पोतै कर दिखावै जद दूजा पिण मांनै।—भि. द्र.

२ समझाने पर भी जिसको कोई बात समझ में न आती हो, मंद बुद्धि।

उ०—१ अंग घणा आलंगियौ, अधर घणांरी ऐंठ। नर मूरख जांणै नहीं, पातरियां री पैठ।—बां. दा.

उ०—२ एता सुख संसार का, एता सुख न जांनि: जन हरीया सो सुख है, मूरख ताहि न मांनि।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ मूरख कथन न मांनियौ, लसियौ मूंछ लजाइ। तांनूं रब न दियौ तखत, दोनूं रखत दिखाइ।—वं. भा.

पर्या०—अंगलज, अगुभ अग्यांन, अजांण, अबुध, अबूझ, अमेध, असन, इतिबार, कंद कदबद कुंठ खळ, गिंवार, जड़ जथाजात, जालम, डींडौ, निखेद, निलज, नैड, बाळ, बळम, बंधअण, मंद, मंदमति, महाविकळ, मात्रोमुख, मुगध मूक, मूढ, रहिति, विकळ, विणबाट विवरण, विमुखगुण, वेधेम, वैतवार, सठ, सीमितमुख, स्यांनि-निमंठ, स्यांनमढ, हीण,

सं०पु०—मूर्ख व्यक्ति।

उ०—मुझ नाचंतां भरह रसाल, ए स्यूं जांणइ मूरख ताल। राखि मुझ हीयडइ एह जि चित राति दिवस ए मूरख कंत।

—हीराणंद सूरि

२ वन मूंग, उर्द।

रू० भे०—मुरख, मूरिख, मूरूख,

अल्पा०—मुरिखौ, मूरखौ,

मूरखता, मूरखताई-सं० पु० [सं० मूर्खता] १ मूर्ख होने की अवस्था या भाव।

२ मूढता, अज्ञानता, नादानी।

उ०—म्हनै तौ केई कँई बरसा सूं आं मोटा मिनखां री अकल माथै पूरी पूरौ अभरोसौ ई हौ, पण मूरखता री इण बानगी री तौ म्हैं सपना में ई आस नी करी ही।—फुलवाड़ी

उ०—२ करणी री मूरखता माथै चरचा चालै, गोमदै री काळजौ सूंक खावण वेगौ हालै है।—देखदोख

३ गंवारूपन।

रू०भे०—मुरखता,

मूरखाई-सं०स्त्री०—मुरखता पूर्ण कार्य, मूरखतापूर्ण बात।

रू०भे०—मुरखाई,

मूरखौ—देखो 'मूरख' (अल्पा', रू. भे.)

उ०—१ ताहरां राजा री कुंवरी संचींत हुई। जो पाछा जाईजे तौ ठौड़ नहीं। हिवै मूरखै गति। ताहरां मूरखौ बोलीयौ-जौ देवी सारदा मोनुं वर दीयौ हिवै हूं मूरिख नहीं।—चौबोली

मूरच्छना—देखो 'मूरछना' (रू. भे.)

मूरच्छा—देखो 'मुरछा' (रू. भे.)

उ०—जिसड़ै ही रांमसिंघजी कुंवरजी री कांनी मीठी विपरीती तिसड़ै ही मूरच्छा आइ पड़िया —द. वि.

मूरछत—देखो 'मुरछित' (रू. भे.)

उ०—पंडव राज प्रधान मूरछत राज अहंमंड। जीति राज तन जिता, चक्र सिव राज खंड चंड —सू प्र.

मूरछन, मूरछना-सं०पु० [सं०मूर्च्छना] १ मूर्छित करने की क्रिया या भाव।

२ उक्त कार्य के लिये प्रयोग में लाया जाने वाला मन्त्र विशेष।

३ पारे का तीसरा संस्कार जिसमें त्र्युषण, त्रिफलादि में सात दिन तक भावना दी जाती है।

४ संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह-अवरोह।

५ काम देव का एक बांण।

रू०भे०—मुरच्छना, मुरछना, मूरच्छना,मूरछा,

मूरछा—१ देखो 'मूरछना' (रू. भे.)

उ०—मेकवीस मूरछा, त्रिण(ह) ग्राम निसपति सुर। लहण भेउ खटराग काठ, अक्खै मोखंतर।—गु. रू. बं.

२ देखो 'मुरछा' (रू. भे.)

उ०—१ हणे ताड़िका बांण हूंता सुबाहां वचै मूरछा होय मारीच वाहां।—सू. प्र.

उ०—२ अर उठी उण खेजड़ी रै वासै मूरछा तूटचां भूत री आंख्यां खुली।—फुलवाड़ी

मूरछागत, मूरछागति—देखो 'मुरछागत' (रू. भे.)

उ०—१सो इसौ रूप देख लाडी मूरछागत हुई —पंचदंडी री वारता

उ०—२ भूत रा मन में ऐड़ी अळूभाड़ तौ कदेई नीं गूंथीजियौ। वेहल अदीठ व्हैतां ई वौ तौ मूरछागत व्हैगौ।—फुलवाड़ी

उ०—३ मूरछागति धरणी पडधोजी, चेतन पांमी जांम। बोलै करुण दयांमणीजी, नेम भणी सिर नांम।—जयवांणी

उ०—४ मूरछागति दूरी हुइ, हर उठीयौ सावचेत हुवौ। होता ही कंवर का राखबा को जुबा बसाल कियौ।—पना

मूरछाणौ, मूरछाबौ—देखो 'मुरछाणौ, मुरछाबौ' (रू. भे.)

मूरछाण हार, हारौ (हारी), मूरछाणियौ—वि०।

मूरछायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मूरछाईजणौ, मूरछाईजबौ—भाव वा०।

मूरछायोड़ौ—देखो 'मुरछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मूरछायोड़ी)

मूरछित—देखो 'मुरछित' (रू. भे.)

उ०—रुखमणीजी के देखतां ही सगळी सेना जि हुती तिसरां मन पंग हुआ। सहु सेना मूरछित हुई।—वेलिटी

मूरछी—देखो 'मुरछा' (रू. भे.)

उ०—मारवणीजी रौ रुप देख दोना नै मूरछी आई, मोनै तौ मसळ कुसळ उठायौ।—ढो. मा.

मूरट—देखो 'मरट' (रू. भे.)

मूरत—१ देखो 'मूरति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ सखी अमीणौ साहिबौ मदण मनोहर गात। महाकाळ मूरत वणै, करण गयंदा घात —बां. दा.

उ०—२ सोई खुड़द आज दिन सांप्रत, स्री दुरगा सकळाई। मूरत अब्दुल भेख मरदानूं, सूरत हृदय समाई।—मे. म.

उ०—३ पडया मुख मूरत सूरत पाक, पड्या चक सूरत कंध पिनाक। उभै गजगाह पड्या दहुं ओड़, पड्या खुरताळ जड्या चहुं पोड़ —मे. म.

उ०—४ मूंडा पर काळौ नकाब नांख्यां अर हाथ में छुरौ लियां एक मूरत उभी ही।—रातवासौ

उ०—५ दया री मूरत मोटोड़ी रांणी तौ सुरग सिधाई।

—फुलवाड़ी

उ०—६ छव फुट लांबौ डील, डिघाळ मूरत, तणियोड़ी मूंछां, किलायोड़ी दाड़ी रै सागै सभाव में तेज करतौ दीसै —दसदोख

२ देखो 'महूरत' (रू. भे.)

मूरतवंत, मूरतवत-वि० [सं०मूर्तिमत] १ शरीर धारी, मूर्तिमान, सशरीर, देहधारी।

उ०—क्रसणजी का जुदाजुदा रूप देखण लागा कांमिनी कहइ काम आयौ। सत्रु कहण लागा काळ आयौ और जिकेइ विरोधी न था त्यांह स्री नारायण को स्वरूप जांण्यौ, वेद का अरथी थां। त्यांह कह्यौ मूरतवंत वेद आयौ। योगीस्वरां जांण्यौ जोगतंत योही।—वेलि टी.

२ जिसका कोई आकार-प्रकार या रूप हो, साकार, सगुण।

३ जो किसी प्रतिमा की तरह अचल हो, निश्चेष्ट, स्थिर।

उ०—गंगेव नींबावत भीतर पधारै छै। खमा खमा हुय रही छै। आंण ढोलियै विराजमान हुवा छै। मूंहडै आगे पातरां पोसाख कर

साज वाज लियां खड़ी छै। हुकम हुवो छै। राग रंग हुवै छै। छह राग, तीस रागणी। मूरतवंत खड़ा हुवा छै। —रा. सा. सं.

४ साक्षात्, प्रत्यक्ष।

रू०भे०—मूरतिवत, मूरतिवंतउ,

अल्पा०—मूरतिवंतौ,

मूरति–सं०स्त्री० [सं०मूर्ति] १ कोई देव–प्रतिमा, मूर्ति।

उ०—१ मूरति सालिगरांम की, जल सूं धोवै आंनि। कर सूं मेलै उखर्णां, आतम रांम न जांनि।—स्री हरीरांमदासजी महाराज

उ०—२ देवळां मूरतां हुंत जो किणी दिन, खुरम री डीकरो कुवध खेलै।—नरहरदास बारहठ

२ कलात्मक ढंग से बनाई हुई कोई पत्थर, धातु आदि की प्रतिमा, पुतली।

उ०—१ धात पथर मूरति पधरावै, ठाकुर सेवा नांव धरावै। कर सुं खोळि करै चरणामत, यूं तौ जांनि नहीं परमांगत।

—स्री हरीरांम दासजी महाराज

३ चित्र, तस्वीर।

४ शक्ल, आकृति, सूरत।

उ०—१ वाहि पर तन मन हैं वारी। वह मूरति मोहिनी निहारत, लोक लाज डारी।—मीरां

उ०—२ तीलइं सुंदर मूरति देखी साथिइं लीउ उछाहि। जयमागर केते दीहाडे पहुतउ स्रीपुर माहि।—हीराणंद सूरि

५ स्वरूप, रूप।

उ०—१ सुमील सभ्य साच्छरं, स्रुति प्रमान सोहनें। अभंग पुत्ति ओज के मनोज मूरति मोहनें।—ऊ. का.

उ०—२ मोहनि मूरति सांवरि सूरति, नैंना बनै विसाल।—मीरां

६ शरीर, देह।

उ०—बाळ मुकंद नंद घरि बाळक, मात लडायौ जसोमती। भगतबछळ गोकळ मन भावन, पावन मूरति जगतपति।

—ह. नां. मा.

७ प्रतीक।

उ०—महा अजमति परम मूरति, पैंज रघुपति तेज पूरति। प्रभुति सुण अति धूज धरपति, सुणै छत्रपति साह।—रा. रू.

८ साधुओं के लिऐ एक सम्बोधन।

उ०—वै महंतजी नैं सिकायत करी तौ महंतजी उण नैं बुलायनै समझायौ–भाया, सगळी मूरतियां थारी घणी सिकायतां करै। थूं बिनां कांम मारग चालतौ ई वांरी जमायोड़ी चीजां नैं ठौड क्यूं छुडावै? रांम दुवारा री सगळी मूरतियां थारी इण हेरा–फेरी सूं नाराज है।—फुलवाड़ी

९ प्राचेतस दक्ष की सोलह कन्याओं में से एक जो धर्मऋषि की पत्नी एवं नर–नारायण की माता थी।

१० स्वारोचिष मन्वन्तर का एक प्रजापति, जो वसिष्ठ ऋषि के पुत्रों में से एक था।

११ ब्रह्मसावर्णि मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

१२ देव विशेष की आकृति का गले में धारण करने का सोने या चांदी का एक आभूषण।

रू० भे०—मुरति, मुरती, मुरत्ति, मुरिति, मुरिती, मूरत, मूरती, मूरत्त, मूरत्ति।

मूरतिकार–सं०पु० [सं०मूर्तिकार] १ मूर्तियें, प्रतिमाऐं बनाने वाला, शिल्पी।

२ चित्रकार, चितेरा।

मूरतिपूजक–सं०पु० [सं०मूर्तिपूजक] १ किसी मूर्ति या प्रतिमा की नियमित पूजा करने वाला।

२ सगुण भक्ति धारा का अनुगामी।

मूरतिपूजा–सं०स्त्री०—किसी मूर्ति या प्रतिमा का पूजन कार्य।

मूरतिमत–सं०पु०—मूर्तरय राजा का एक नामान्तर।

मूरतिमांन–वि० [सं०मूर्तिमान्] १ शरीर धारी, देह धारी, साकार।

२ प्रत्यक्ष, साक्षात्।

मूरतिवंत, मूरतिवंतउ—देखो 'मूरतवंत' (रू. भे.)

उ०—१ ऐसी भांति अनेक उछव सै गावते हैं। तारीफ की तांन आसमांन से लावते हैं। ऐसा मूरतिवंत राग का थाट रचि जरकस जंवहरूं के इनांम पाए।—सू. प्र.

उ०—२ श्रीजउ मूरतिवंतउ सागर सागर जिम गंभीर। चउथउ बंधव सुणि धन सागर, समरथ साहस धीर।—हीराणंद सूरि

उ०—३ ब्राह्मण विवाह करण नैं किसा आंणि बैठा छै जिसा साक्षात् मूरतिवंत वेद।—वेलि टी.

मूरतिवंतौ—देखो 'मूरतवंत' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मूरतिवंतौ नाद छै।—वेलि टी.

मूरतिविद्या, मूरतिविध्या–सं० स्त्री० [सं० मूर्तिविद्या] १ प्रतिमा बनाने की विद्या, शिल्पी कार्य।

२ चित्रकारी का कार्य।

मूरती—देखो 'मूरति' (रू. भे.)

उ०—१ कारीगर आया, नींव भरी अर च्यार महीणा में मकांन गिगनां चाढ दीनों। किंवाड़ चाढै, घंटा लागौ तथा देवांरी मूरती पधरावण वेगी वात चींत हुवै है।—दसदोख

उ०—२ थिरू मूरती सूर रै नूर थाई। तिका स्वप्न रै मांहि पिंडां बताई।—मे. म.

उ०—३ तुही पच्छ तारच्छ में शीघ्रताई। रती मूरती में तुही सुंदराई।—मे. म.

मूरत्त—देखो 'मुहरत' (रू. भे.)

२ देखो 'मूरति' (रू. भे.)

मूरत्ति—देखो 'मूरति' (रू. भे.)

उ०—सूझै कुण नाथ तुहाळा संग, सकत्ति न रुद्र मूरत्ति न लिंग।

—ह. र.

उ०—म्हनै तौ केई कंई बरसा सूं ग्रां मोटा मिनखां री ग्रकल माथै पूरौ पूरौ ग्रभरोसौ ई हौ, पण मूरखता री इण बांनगी री तौ म्हैं सपना में ई ग्रास नी करी ही ।—फुलवाड़ी

उ०—२ करणी री मूरखता माथै चरचा चालै, गोमदै रो काळजौ सूंक खावण वेगी हालै है ।—देखदोख

३ गंवारूपन ।

रू०भे०—मुरखता,

मूरखाई-सं०स्त्री०—मुरखता पूर्ण कार्य, मूरखतापूर्ण बात ।

रू०भे०—मुरखाई,

मूरखौ—देखो 'मूरख' (ग्रल्पा०, रू. भे)

उ०—१ ताहरां राजा री कुंवरी संचींत हुई । जो पाछा जाईजे तौ ठौड़ नहीं । हिवै मूरखै गति । ताहरां मूरखौ बोलीयौ-जौ देवी सारदा मोनुं वर दीयौ हिवै हूं मूरिख नहीं ।—चौबोली

मूरच्छना—देखो 'मूरछना' (रू. भे.)

मूरच्छा—देखो 'मुरछा' (रू. भे)

उ०—जिसड़ै ही रांमसिंघजी कुंवरजी री कांनी दीठी विपरीती तिसड़ै ही मूरच्छा ग्राइ पड़िया —द. वि.

मूरछत—देखो 'मुरछित' (रू. भे.)

उ०—पंडव राज प्रधांन मूरछत राज ब्रहंमंड । जीति राज तन जिता, चक्र सिव राज खंड चंड —सू प्र.

मूरछन, मूरछना-सं०पु० [सं०मूर्च्छना] १ मूर्छित करने की क्रिया या भाव ।

२ उक्त कार्य के लिये प्रयोग में लाया जाने वाला मन्त्र विशेष ।

३ पारे का तीसरा संस्कार जिसमें त्र्युषण, त्रिफलादि में सात दिन तक भावना दी जाती है ।

४ संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का ग्रारोह-ग्रवरोह ।

५ काम देव का एक बांण ।

रू०भे०—मुरच्छना, मुरछना, मूरच्छना,मूरछा,

मूरछा—१ देखो 'मूरछना' (रू. भे.)

उ०—मेकवीस मूरछा, त्रिण(ह) ग्रांम निसपति सुर । लहण भेउ खटराग कांठ, ग्रक्खै मोखंतर ।—गु. रू. बं.

२ देखो 'मुरछा' (रू. भे)

उ०—१ हणै ताड़िका बांण हूंता सुबाहां वचै मूरछा होय मारीच वाहां ।—सू. प्र.

उ०—२ ग्रर उठी उण खेजड़ी रै वासै मूरछा तूटचां भूत री ग्रांख्या खुली ।—फुलवाड़ी

मूरछागत, मूरछागति—देखो 'मुरछागत' (रू. भे.)

उ०—१सो इसौ रूप देख लाडी मूरछागत हुई —पंचदंडी री वारता

उ०—२ भूत रा मन में ऐड़ौ ग्रळूझाड़ तौ करदेई नीं गूंथीजियौ। वेहल ग्रदीठ व्हैतां ई वौ तौ मूरछागत व्हैगो ।—फुलवाड़ी

उ०—३ मूरछागति धरणी पडचोजी, चेतन पांमो जांम । बोलै क्रस्ण दयांमणोजी, नेम भणी सिर नांम ।—जयवांणी

उ०—४ मूरछागति दूरी हुइ, हूर उठीयौ सावचेत हुवौ । होतां ही कंवर का राखबा को जूबा वसाल कियौ ।—पना

मूरछाणौ, मूरछाबौ—देखो 'मुरछाणौ, मुरछाबौ' (रू. भे.)

मूरछाण हार, हारौ (हारी), मूरछाणियौ—वि० ।

मूरछायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मूरछाईजणौ, मूरछाईजबौ—भाव वा० ।

मूरछायोड़ौ—देखो 'मुरछायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मूरछायोड़ी)

मूरछित—देखो 'मुरछित' (रू. भे,)

उ०—रुखमणीजी के देखतां ही सगळी सेना जि हुती तितरां मन पंग हुग्रा । सहु सेना मूरछित हुई ।—वेलिटी

मूरछी—देखो 'मुरछा' (रू. भे.)

उ०—मारवणीजी रौ रूप देख दोना नै मूरछी ग्राई, मोनै तौ मसळ कुसळ उठायौ ।—ढो. मा.

मूरट—देखो 'मरट' (रू. भे)

मूरत—१ देखो 'मूरति' (रू. भे.) (ग्र. मा.)

उ०—१ सखी ग्रमीणौ साहिबौ मदन मनोहर गात । महाकाळ मूरत वणै, करण गयंदा घात —बां. दा.

उ०—२ सोई खुड़द ग्राज दिन सांप्रत, स्री दुरगा सकळाई । मूरत ग्रदुल भेख मरदानूं, सूरत हृदय समाई ।—मे. म.

उ०—३ पडया मुख मूरत सूरत पाक, पड़्या चक चूरत कंध पिनाक । उभै गजगाह पड़्या दहुं ग्रोड़, पड़्या खुरताळ जड़्या चहुं पोड़ —मे. म.

उ०—४ मूंडा पर काळौ नकाब नाख्यां ग्रर हाथ में छुरौ लियां एक मूरत उभी ही ।—रातवासौ

उ०—५ दया री मूरत मोटोड़ी रांणी तौ सुरग सिधाई ।
—फुलवाड़ी

उ०—६ छव फुट लांबौ डील, डिघाळ मूरत, तणियोडो मूंछां, किलायोड़ी दाड़ी रै सागै सभाव में तेज झरतौ दीसै —दसदोख

२ देखो 'महुरत' (रू. भे.)

मूरतवंत, मूरतवत-वि० [सं०मूर्तिमत] १ शरीर धारी, मूर्तिमान, सशरीर, देहधारी ।

उ०—क्रस्णजी का जुदाजुदा रूप देखण लागा कांमिनी कहइ काम ग्रायौ । सत्रु कहण लागा काळ ग्रायौ ग्रौर जिकेइ विरोधी न था त्यांह स्री नारायण को स्वरूप जांण्यौ , वेद कां ग्ररथी थां । त्यांह कह्यौ मूरतवंत वेद ग्रायौ । योगीस्वरां जांण्यौ जोगतंत योही । —वेलि टी.

२ जिसका कोई ग्राकार-प्रकार या रूप हो, साकार, सगुण ।

३ जो किसी प्रतिमा की तरह ग्रचल हो, निश्चेष्ट, स्थिर ।

उ०—गंगेव नींबावत भीतर पधारै छै । खमा खमा हुय रही छै । ग्रांण ढोलियै विराजमांन हुवा छै । मुंहडै ग्रागै पातरां पोसाख कर

साज वाज लियां खड़ी छै। हुकम हुवौ छै। राग रंग हुवै छै। छह राग, तीस रागणी। मूरतवंत खड़ा हुवा छै। —रा. सा. सं.

४ साक्षात्, प्रत्यक्ष।

रू०भे०—मूरतिवत, मूरतिवंतउ,

अल्पा०—मूरतिवंतौ,

मूरति—सं०स्त्री० [सं०मूर्ति] १ कोई देव-प्रतिमा, मूर्ति।

उ०—१ **मूरति** सालिगरांम की, जल सूं धोवै आंनि। कर सूं मेलै उखणौ, आतम रांम न जांनि।—स्री हरीरांमदासजी महाराज

उ०—२ देवळां **मूरतां** हुंत जौ किणी दिन, खुरम रौ डोकरौ कुवध खेलै।—नरहरदास बारहठ

२ कलात्मक ढंग से बनाई हुई कोई पत्थर, धातु आदि की प्रतिमा, पुतली।

उ०—१ धात पथर **मूरति** पधरावै, ठाकुर सेवा नांव धरावै। कर सूं खोळि करै चरणामत, यूं तौ जांनि नहीं परमांगत।

—स्री हरीरांम दासजी महाराज

३ चित्र, तस्वीर।

४ शक्ल, आकृति, सूरत।

उ०—१ वाहि पर तन मन हैं वारी। वह **मूरति** मोहिनी निहारत, लोक लाज डारी।—मीरां

उ०—२ तीणइं सुंदर **मूरति** देखी साथिइं लीउ उछाहि। जयसागर केते दीहाडै पहुतउ स्रीपुर माहि।—हीराणंद सूरि

५ स्वरूप, रूप।

उ०—१ सुमील सभ्य साच्छरं, स्रुति प्रमांन सोहनें। अभंग पुत्ति ओज के मनोज **मूरति** मोहनें।—ऊ. का.

उ०—२ मोहनि **मूरति** सांवरि सूरति, नैना बनै विसाल।—मीरां

६ शरीर, देह।

उ०—बाळ मुकंद नंद घरि बाळक, मात लडायौ जसोमती। भगतबछळ गोकळ मन भावन, पावन **मूरति** जगतपति।

—ह. नां. मा.

७ प्रतीक।

उ०—महा अजमति परम **मूरति**, पैज रघुपति तेज पूरति। प्रभुति सुण अति धूज धरपति, सुणै छत्रपति साह।—रा. रू.

८ साधुओं के लिऐ एक सम्बोधन।

उ०—वै महंतजी नै सिकायत करी तौ महंतजी उण नै बुलायनै समझायौ—भाया, सगळी **मूरतियां** थारी घणी सिकायतां करै। थूं बिनां कांम मारग चालतौ ई वांरी जमायोड़ी चीजां नै ठौड क्यूं छुडावै? रांम दुवारा री सगळी **मूरतियां** थारी इण हेरा-फेरी सूं नाराज है।—फुलवाड़ी

९ प्राचेतस दक्ष की सोलह कन्याओं में से एक जो धर्मऋषि की पत्नी एवं नर-नारायण की माता थी।

१० स्वारोचिष मन्वन्तर का एक प्रजापति, जो वसिष्ठ ऋषि के पुत्रों में से एक था।

११ ब्रह्मसावर्णि मन्वन्तर के सप्तर्षियों में से एक।

१२ देव विशेष की आकृति का गले में धारण करने का सोने या चांदी का एक आभूषण।

रू० भे०—मुरति, मुरती, मुरत्ति, मुरिति, मुरिती, मूरत, मूरती, मूरत्त, मूरत्ति।

मूरतिकार—सं०पु० [सं०मूर्त्तिकार] १ मूर्तियें, प्रतिमाऐं बनाने वाला, शिल्पी।

२ चित्रकार, चितेरा।

मूरतिपूजक—सं०पु० [सं०मूर्तिपूजक] १ किसी मूर्ति या प्रतिमा की नियमित पूजा करने वाला।

२ सगुण भक्ति धारा का अनुगामी।

मूरतिपूजा—सं०स्त्री०—किसी मूर्ति या प्रतिमा का पूजन कार्य।

मूरतिमत—सं०पु०—मूर्तरय राजा का एक नामान्तर।

मूरतिमांन—वि० [सं०मूर्त्तिमान्] १ शरीर धारी, देह धारी, साकार।

२ प्रत्यक्ष, साक्षात्।

मूरतिवंत, मूरतिवंतउ—देखो 'मूरतवंत' (रू. भे.)

उ०—१ ऐसी भांति अनेक उछव सै गावते हैं। तारीफ की तांन आसमांन से लावते हैं। ऐसा **मूरतिवंत** राग का थाट रचि जरकस जंवहरू के इनाम पाए।—सू. प्र.

उ०—२ त्रीजउ **मूरतिवंतउ** सागर सागर जिम गंभीर। चउथउ बंधव सुणि धन सागर, समरथ साहस धीर।—हीराणंद सूरि

उ०—३ ब्राह्मण विवाह करण नै किसा आंगि बैठा छै जिसा साक्षात् **मूरतिवंत** वेद।—बेलि टी.

मूरतिवंतौ—देखो 'मूरतवंत' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—**मूरतिवंतो** नाद छै।—वेलि टी.

मूरतिविद्या, मूरतिविध्या—सं० स्त्री० [सं० मूर्तिविद्या] १ प्रतिमा बनाने की विद्या, शिल्पी कार्य।

२ चित्रकारी का कार्य।

मूरती—देखो 'मूरति' (रू. भे.)

उ०—१ कारीगर आया, नींव भरी अर च्यार महीणा में मकांन गिगनां चाढ दीनों। किंवाड़ चाढै, घंटा लागै तथा देवांरी **मूरती** पधरावण वेगी वात चींत हुवै है।—दसदोख

उ०—२ थिरू **मूरती** सूर रै नूर थाई। तिका स्वप्न रै मांहि पिंडां बताई।—मे. म.

उ०—३ तुही पच्छ तारच्छ में शीघ्रताई। रती **मूरती** में तुही सुंदराई।—मे. म.

मूरत्त—देखो 'मुहरत' (रू. भे.)

२ देखो 'मूरति' (रू. भे.)

मूरत्ति—देखो 'मूरति' (रू. भे.)

उ०—बूझै कुण नाथ तुहाळा बंग, सकत्ति न रुद्र **मूरत्ति** न लिंग।

—ह. र.

मूरद्ध–सं॰पु॰ [सं॰मूर्द्धन्] शिर, मस्तक ।

मूरद्धज–वि॰ [सं॰मूर्द्धज] शिर से उत्पन्न होने वाला ।

सं॰पु॰ [सं॰मूर्द्धजः] केस, बाल ।

मूरद्धज्योती–सं॰स्त्री॰ [सं॰मूर्द्धज्योतिस्] योग में ब्रह्म रंध्र ।

मूरद्धन्य–वि॰ [सं॰मूर्द्धन्य] १ मूर्द्धा से सम्बन्ध रखने वाला ।

२ सिर या मस्तक में स्थित ।

मूरद्धन्यवरण–सं॰पु॰ [सं॰मूर्द्धन्य वर्ण] वह वर्ण जिसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है ।

मूरद्धा–सं॰स्त्री॰ [सं॰मूर्द्धा] १ मस्तक, शिर

२ व्याकरण में, मुंह के अन्दर का तालु और अलि जिव्हा के बीच का अंश जिसे जीभ का अग्रभाग ट. ठ. ड. ढ. र. ष. का उच्चारण करते समय उलटकर छूता है।

रू. भे.—मूरधा,

मूरद्धाभिसेक–सं॰पु॰—शिर पर किया जाने वाला अभिषके या जल सिंचन ।

मूरधन–सं॰पु॰ [सं॰मूर्धन, मूर्द्धन] १ शिर, मस्तक । (ह. नां. मा.)

२ भृकुटि, भौं ।

३ शिखर, शृंग, चोटी ।

४ प्रधान, मुख्य ।

५ नेता, नायक, अग्रणी ।

६ अगला, अग्र ।

७ एक देव, जो भृगु एवं पौलोमी के पुत्रों में से एक था ।

मूरधा—देखो 'मूरद्धा' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

मूरवा—दूखो 'मुरवा' (रू. भे.)

मूरिख—देखो 'मूरख' (रू. भे.) (ह. नां मा.)

उ॰—१ तरै बादशाह पण फरमाई कोई इणसूं अधिकौ मूरिख छै।
—नी. प्र.

उ॰—२ मूरिख तें मुझ नें गण्यौं वचन कह्यौ अविचार । जो पदमणि हाथे जीमस्यु, तो आवुं तुझ बार ।—प. च. चौ.

मूरियौ—देखो 'मोरियौ' (रू. भे.)

मूंरी—देखो 'मों'री' (रू. भेः)

उ॰—वांनै आ बात आछी तरै सूं मालम ही के इण अड़ियल आदमी रै ऊंठां री मूं'रियां इण रौ माथौ पड़्यां रै पछै ईज हाथ में आवैला ।—रातवासौ

मूरुख—देखो 'मूरख' (रू. भे.)

मूरौ—देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

मूळ, मूल–सं॰पु॰ [सं॰मूल] १ वृक्षों, पोधों, लताओं आदि की जड़ ।

उ॰–१ गाज इतै ऊखेड़ गज, माझळ वन तर मूळ । जागै नह थह में जितै, सझ हाथळ सादूळ ।—बां दा.

उ॰—२ तेल–विहूणउ दीवड़, मूल–विहूणी वेलि । पांणी-विहूणी दद्दुरी, तिम होई ति महेजि ।—मा.कां प्र.

उ॰—३ नहीं तू मूळ नहीं तू डाळ । नहीं तू पत्र नहीं जु पराळ ।
—ह. र.

२ पेड़ का तना ।

उ॰—१ धड कुंभ निरांण कि भींग दुड़ै, उर पाट कपाट सुं प्रौळ अड़ै । जुंग जंघ तरोवर मूळ जिसा, अण भंग उत्तंगई सिला इसा ।
—मा. बचनिका

३ बीज ।

उ॰—१ रांम नांम निज मूळ है और सकळ विसतार । जन हरीया फळ मुगतिकु, लीजै सार संभार ।—स्री हरिरांमदास जी महाराज

उ॰—२ अहूं जग मिटावण विघन तन तापरा । खपावण पाप रा मूळ खोटा । अनेकां प्रवाड़ा गिणै कुण आपरा, मात धणियाप रा बिड़द मोटा ।—खेतसी बारहठ

४ जमीकंद. कंद मूल ।

उ॰—फळ मूळ खाकै हरी मिळै तौ, बांदर बांदरा होई ।—मीरां

५ किसी वस्तु का नीचे का भाग ।

६ पिप्पली मूल, पींपरा मूल ।

७ प्रारम्भ. शुरूआत, आदि ।

उ॰—नहीं तो माय नहीं तो बाप, आपेज आपे ज उपन्नौ आप । मनच्छा बीज चलावै मूळ थयौ चर वे चर सुक्खम थूळ ।—ह. र.

८ उद्भव, उत्पत्ति ।

उ॰—विदर विदर जांणै नहीं, मादर विदरां मूळ । राखै आगुत रंग रा, दिलरी कुसी दुकूळ ।—बां. दा.

९ कारण. प्रयोजन ।

१० नींव, बुनियाद, आधार ।

उ॰—१ एकां मूळ ऊखेड़िया हेकां किया निहाल । असपत्ती नह ऊथपै, जै थप्पै 'अजमाल' ।—रा. रू.

उ॰—२ बांधळौ बिकट सादूळ बाहण बणै डांखियौ सीस समतूळ डालै । अरोहै मूळ दुस्टां तणां उखाड़ण, भाड़क्या रूखाळण सूळ भालै ।—मे. म

११ आदिमंत्र, बीजमंत्र ।

उ॰—देवी मंत्र मूळं देवी बीज बाळा, देवी बाणणी स्तब्ब लीला विसाला —देवि

१२ सत्ताईस नक्षत्रों में से उन्नीसवां नक्षत्र (अ. मा.)

उ॰—तू गहलौ तूं सानियौ, तू भोळौ भंवराळ । मूळ मघा में तूं हुऔ, तातैं सरस लबाळ ।—गजउद्धार

१३ असल पूंजी, मूल धन ।

उ॰—१ नैनहू बिन सूझै नहीं, मूला कत हूं जाइ । दादू धन पावै नहीं, आया मूळ गंवाई ।—दादूबाणी

उ॰—२ पिण साहूकार दीवाल्या री खबर तौ मांग्या पड़ै । साहुकार तौ व्याज सहित देवै अनें दिवाल्यौ मूल ही में तोटौ घालै ।—भि. द्र.

उ॰—३ या जुग मांहि करन कुं सौदा, आयै लोक लुगाई । एक

ले चालै लाभ चौगणौं,एकां मूळ ठगाई ।—

—स्री हरिरांमदास जी महाराज

१४ मुद्राविशेष ।

१५ दलाल ।

१६ तल ।

१७ छोर, शिरा ।

१८ वर्ग मूल ।

१९ चंदन । (अ. मा.)

२०—परम्परानुगत सेवक ।

२१ पड़ौस, सामीप्य ।

२२ मूल कृति या लेख जो पहले पहल किसी ने अपनी बुद्धि से तैयार किया हो ।

२३ प्राय: रात के समय, किसी जलाशय के किनारे खड्डा खोदकर या रास्ते के पास किसी पेड़ पर मचान बांध कर, शिकार की ताक में शिकारी के बैठने की क्रिया या भाव ।

उ०—दिन १ आडौ घाल नै कह्यौ-आपे सिकार सूअरां री मूळां री खेलसां । तरै सूरजमल कह्यौ—"भली बात ।"—नैणसी

२४ शिकार के लिये उक्त प्रकार से बैंठने का स्थान ।

उ०—पण एक दिन ईसड़ौ दईव संजोग हुवौ सो म्होकमसिंघ तौ हिरण री सिकार मूळ बैठौ थौ ।–प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

२५ पूर्व दिशा ।

उ०—कोस ४ मूळ मांहैं । सीरवी बांणीया वसै ।—नैणसी

वि०—१ मुख्य, खास, प्रधान ।

उ०—मऊ सूं कोस ७ गांव धूळकोट छै तठै नीसरै छै पांणी मूळ गूंडूवांण रौ आवै छै ।—नैणसी

२ असल,

उ०—रूडे तीरथराज रै नित जळ कीजै न्हांन । तो पिण न हुए पाक तन, मूल पुरीख मकांन ।—बां.दा.

३ खुद का, अपना, मौलिक, निजी ।

४ पहला, प्रथम ।

५ किंचित, तनिक, थोड़ा ।

उ०—नारायण रा नांम सूं, प्रांणी बांणी पोय । जम डांणी लागै नहीं, हांणी मूळ न होय ।—ह. र.

उ०—२ पुत्र त्रिया ने सज्जन घर थकी रे, मूल न आंण्यौ मन में मोहरे ।—जयवांणी

६ दृढ़ मजबूत ।

उ०—बय बीरां सह बोळिया, केसर कुंड दुकूळ । बळै तरुण भड़ बरजिया, मंडै साहस मूळ ।—वं. भा.

क्रि० वि०—१ कतई, बिलकुल ।

उ०—१ भैंसां मूळ न पावसै,सूकै पाडी साथ । हार दुहारा उट्ठिया, टाली बरतण हाथ । —लू

उ०—२ खुरम कटक्कै अग्गळौ साह वळै असमांन । मूळ न मावै मारका, दोय खंडा इक म्यांन ।—गु. रू. बं.

२ जडामूल से, जड़से

उ०—हूऔ हाहाकार, प्रिथी दमंगळ पेखीजै । जवनां जावण मूळ एह आगम जांणीजै ।—गु. रू. वं.

रू० भे०—मूंल, मूर, मूळी, मूळू,

मूल—देखो 'मूल्य' (रू. भे)

उ०—१ महा उचूल मूल के, दुकूल देह में नहीं । कहां सुगंध कंघ बीचि, गंध गेह में नहीं ।—ऊ. का.

उ०—२ तहां करन क्रीड़ा मुखड,बीड़ा चावती त्रिय जात । केसरी सारी मूल भारी, पहिरि कै हरख न मात ।—वि. कु.

मूळकरम–सं०पु० [सं०मूल कर्मन्] १ औषधियों की जड़ों द्वारा किया जाने वाला त्रासन, उच्चाटन, स्तंभन, वशीकरण आदि का प्रयोग ।

२ जादू टोना, मूठ । (मारण)

३ प्रधान कर्म ।

मूळकवळ–सं०पु० [सं०मूल–कमल] हठयोग के अनुसार नाभि के आस-पास का अवयव जिसको कमल के रूप में माना जाता है । नाभि-कमल ।

उ०—सोई निरभै निजनाथ सदा संगि (मेरे), जुरा मरण भै भागा । अनहद सबद गगन मैं गरजे, मूळ-कवळ मन लागा ।

—ह. पु. वां.

मूळकूण–सं० पु०—पूर्व दिशा ।

उ०—सोभत था कोस ३ मूळकूण मांहै । कुंभार बांमण बसै ।

—नैणसी

मूळकौ, मूलकौ–सं०पु०—१ जड़ सहित उखाड़ा हुआ छोटा वृक्ष ।

२ देखो 'मुळगौ' (रू. भे.)

उ०—जद ब्राह्मण बोल्या–एहतौ पठांण रा पेट रा मूलका इ असुद्ध छै सो सिद्ध किम हुवै ।—मि. द्र.

मूलगउं, मूलगउ मूलगु, मूलगू, मूळगौ, मूलगौ—देखो 'मुळगौ' (रू. भे.)

उ०—१ सार किसिउं जीवी तणुं प्रिय संगमि सिउं थाइ । फूल माहि सिउं मूलगउं स्त्री परणी किहां जाइ ।—हीराणंद सूरि

उ०—२ कुणइ नेमि राहाविउ कूडीय सघलडी जांन । छप्पन कोडि माहि मूलगउ कूडउ बल भद्र कांन्ह ।—समर

उ०—३ कूबर दुस्टमां मूलगु सेवइ व्यसन सात रे । अन्या मारगि ते हीडइ नवि जांणइ पुण्य वात रे ।—नळ दवदंती रास

उ०—४ नांन्हपणा नु नेहडउ, कांइ वीसारिउ नाह रे । कठिन कठोर मांहि मूलगू ताहरू प्रीछउ माह रे ।—नळदवदंतीरास

उ०—५ गिणइ नहीं सास्त्र वलि मूलगा देवगुरू । लाज विण लोक इण कुमति लागै ।—ध. व. ग्रं.

उ०—६ जद स्वांमीजी बोल्या ए पिण मूलगा मित्थात्वी है ।

—मि. द्र.

उ०—७ मिरचां री धूंई सूं भूत पूरौ निबळौ व्हैगौ। उणनैं सूझणौ मूळगौ ई बंद व्हैगौ।—फुलवाड़ी

उ०—८ जाइ सुरलोक मैं अमल कीधौ जसु, असुर सहु नासि म्रतलोक आया। कसर सहु आपणी मूलगी काढिवा, लागतै जोर जंजाळ लाया।—ध. व. ग्रं.

(स्त्री०मूलगी)

मूळचक्र—सं०पु०—एक प्रकार का हाथी।

उ०—अथ हस्ती—त्रिदडगलित त्रिपाट प्रमरित भद्रजाति दक्षिणदंडउ मांणिक दंडउ मूलचक्र वन चक्र तिसोता······—व. स,

मूळछेद—सं०पु० [सं०मूलच्छेद] १ किसी चीज को ऐसा काटना या नष्ट करना कि वापस न पनप सके।

२ समूल नाश, जड़ामूल से नाश।

मूळजग—सं०पु०—संसार का मूल कारण—विष्णु, शिव, ब्रह्मा, शक्ति—।

मूळजड़ी—सं०स्त्री० [सं०मूल—जड़ी] जीवन का मुख्य आधार।

उ०—कब की ठाडी पंथ निहारूं अपने भवन खड़ी। कैसे प्रांण पिया बिन राखूं जीवन मूळजड़ी।—मीरां

मूळजांवउ—सं०पु०—एक प्राचीन देश। (व. स.)

मूळजात—सं०पु०—आदि या आरम्भ की जाति, वंश, मूल जाति

मूळतांणि—देखो 'मुलतांन' (रू. भे.)

उ०—फूलभरि अंबर सेख, सेख अहिंदर नीसाउरि पुप्फदीन मूळतांणि सेख जक्खा भट्टाउरि।—व. स.

मूळत्रिकोण—सं०पु० [सं०मूल—त्रिकोण] सूर्य आदि ग्रहों की कुछ विशेष राशियों में स्थिति।

मूलथांण—देखो 'मुलतांन' (रू. भे)

उ०—वंगाल त्रिहुण भोट महाभोट चीण महाचीण सिवस्थांन पुरासन मूलथांण मद्र अंद्र अंतरवेध विराट······—व. स.

मूळदवार—देखो 'मूळद्वार' (रू. भे.)

मूळदेवी, मूलदेवी—सं०स्त्री०—एक लिपि विशेष।

उ०—मालविणी नडि नागरी लाडलिवी पारसी य बोधव्वा। तहय निमित्ती अ लिवी चांणक्की मूलदेवी अ।—व. स,

मूलद्रव—सं०पु० [सं०मूलद्रव्य] मूल धन, असल पूंजी।

मूळद्वार—सं०पु० [सं० मूल-द्वार] १ सदर या मुख्य दरवाजा, सिंहद्वार।

२ शरीर का वह छिद्र जहां से मल त्यागन होता है, गुदा द्वार।

३ योनी, भग।

रू०भे०—मूळदवार

मूळधन—सं०पु० [सं०मूल—धन] असल पूंजी, पूंजी।

मूळपुरख, मूळपुरस—सं०पु० [सं०मूल—पुरुष] १ वह आदि मानव, जिससे समस्त मानव जाति का विस्तार हुआ।

२ किसी वंश या परिवार का प्रथम पुरुष।

मूळप्रकृति—सं०स्त्री० [सं०मूल—प्रकृति] वह आदिम या मूल सत्ता जिसका परिणाम संसार है, आदि शक्ति।

मूळबंध—सं०पु० [सं०मूलबंध] १ हठ योग में वज्रासन या सिद्धासन द्वारा की जाने वाली एक योग क्रिया, जिसमें शिश्न और गुदाद्वार के मध्यवाले भाग को दबाकर अपान वायु को ऊपर चढाते हैं।

२ एक प्रकार का अंगुलि—न्यास।

मूळमंत्र—देखो 'बीजमंत्र'

उ०—हरिदास जन यूं कहै, रं रं कार मूळ निज नांम। मूलमंत्र सतगुरु दिया, दुःख सुख दोय दूर सराप।—ह. पु. वां.

मूळय—देखो 'मूल्य' (रू. भे.)

मूलवटणी—सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—पटउलउं सावपट्ट पट्टहीर सूहवी चोपाचळुउहुं सवाडी चंपावती स्वेत सिलाहट्टी सचोपकाची मूलवटणी सारी······ —व. स.

मूळस्थांन—सं०पु० [सं०मूलस्थान] १ ईश्वर।

२ किसी प्राणी, वस्तु या विषय आदि का उद्भव स्थल, आदिस्थान।

३ पूर्वजों का स्थान।

४ प्रधान स्थान।

मूळा—स० स्त्री० [सं० मूला] १ मूल नक्षत्र।

२ पृथ्वी, धरती। (डिं. नां. मा.)

३ सतावर।

४ पूना के पास बहने वाली एक नदी।

उ०—मूळा १, मोठा २—ऐ दोय नदी पूना हेटै बहै है।

—बां. दा. ख्यात

५ राठौड़ वंश की एक शाखा।

६ भाटी वंश की एक शाखा।

रू० भे०—मूळू।

मूलागौ—देखो 'मूळगौ' (रू. भे.)

उ०—भीखनजी स्वांमी कह्यौ-कोई साध नें दोख लागां प्रायस्चित लेइ सुद्ध हुवै। पिण एतौ मूलागा मिथ्यात्वी स्रद्धा ऊंधी गाजीखां मुल्लाखां रा साथी।—भि. द्र.

मूळाधार—सं० पु० [सं० मूलाधार] शिश्न व गुदा के बीच का स्थान, जो हठयोग के अनुसार मानव शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक है। इसका रंग लाल व देवता गणेश माना गया है।

मूळासी—वि० [सं० मूल+आश्रित] कंद, मूल, फल खाकर जीवित रहने वाला।

मूळिका, मूलिका—देखो 'मूळी' (रू. भे.)

उ०—ललित उवंग जस प्रवर पुप्फ चूलिका, मूलिका पाप आतंक केरी।—वि. कु.

मूलिकाप्रयोग—सं० पु०—बहत्तर कलाओं में से एक। (व. स.)

मूलिम—क्रि० वि०—बिल्कुल, कतई।

मूळी, मूली—सं० स्त्री [सं०मूलकं, उन्मूलिका, प्रा० उम्मूलिआ] १ बड़े-बड़े पत्ते एवं लम्बी-मोटी जड़ वाला एक प्रसिद्ध पौधा, जिसकी जड़ कच्ची भी खाई जाती है वा जड़ व पत्तों की सब्जी बनती है। इसका स्वाद चरपरा रुचिकर होता है। यह हृदयरोग, यकृत

व वायु रोगों में लाभ दायक मानी गई है। मूली, मूरी।

उ०—आखा राज में वांरा सेंतीर तिरै। मोटा मोटा धाड़नियां रा थरणां कांपै, पछै औ कुचमादी किण खेत री मूळी।

—फुलवाड़ी

मुहा०—१ गाजर मूळी=अत्यन्त तुच्छ।

२ किण खेत री मूळी है=क्या हस्तीहै, क्या ताकत है।

३ किसी वाग री मूळी=देखो 'किण खेत री मूळी'

४ मूळी पांना सूं आछी लागै=परिवार के कारण ही शोभायमान होता है।

२ जड़ी बूंटी।

उ०—हांकीयां सूं पादरौ न हालै, वांकम नीर वाहण त्रवळ। मंत्र जंत्र ओखद नह मूळी, खादां जिण दाटीक खळ।

—ठाकर जगरांमसिंघ नीमाज रौ गीत

३ खाने योग्य जड़, कंद-मूल-फल।

४ चौतीस प्रकार के स्थावर विषों में से एक।

[सं० मूली] ६ छिपकली।

रू० भे०—मूंळी मूळिका, मूलिका।

मह०—मूळौ।

७ देखो 'मूळ' (रू. भे.)

उ०—तरुणी री पोसाक त्रण, जीवन मूळी जांण। कळह समें राखै कनै, मावड़ियौ विण मांण।—बां. दा.

मूळू—१ देखो 'मूळा' (रू. भे.) (बां. दा. ख्यात)

२ देखो 'मूळ' (रू. भे.)

मूळौ, मूलौ—देखो 'मूळी' (मह., रू. भे.)

उ०—१ दूजोड़ौ भरपूर वार निछरावळ करण वाळा पर हुऔ सो बरोबर बैठ्यौ होतौ तौ माथौ मूळा री कापी रै ज्यूं आघौ आय पड़तौ।—रातवासौ

उ०—२ मांस भखै अर मद पीयै, भांगि धतूरां हेत। हरीया ऊखड़ि जावसैं, ज्यूं मूळे का खेत।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मूल्य—सं० पु० [सं० मूल्यम्] १ मुद्रा या द्रव्य के रूप में किसी वस्तु को खरीदने या प्राप्त करने के लिये दी जाने वाली धन राशि, किसी वस्तु की कीमत, दाम, दर।

२ वह गुण, जो किसी व्यक्ति या वस्तु को महत्व या मान दिलवाता है, विशेषता, महत्व।

रू० भे०—मूल, मूळय।

मूल्यवांन—वि० [सं० मूल्य-वान] १ जिसका मूल्य, कीमत या दर अत्यधिक हो, कीमती।

२ महत्व पूर्ण।

मूवौ—वि० [सं० मृत] मरा हुआ, मृत।

उ०—१ कहता है करता नहीं, ऐसा आदम खोर। मूवा चाहै मुगति कूं, जीवत हरि का चोर।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

मूस—सं० स्त्री० [सं० मूसिका] सुनार की सोना आदि गलाने की घरिया अर्थात एक पात्र विशेष।

मूसउ—देखो 'मूसक' (रू भे.) (उ. र.)

मूसक—सं० पु० [सं० मूषकः] १ चूहा। (ह. नां. मा.)

उ०—१ नाचै मोर निहारै अहिफण ऊपरै, मूसक सीस न धारै घात मंजारियां।—र. रू.

उ०—२ अंत पुरि उत्तम-तणइ, संभलि नीति-विचार। नर-नांमइ आवइ नहीं मूसक अथ मंजार।—मा. कां. प्र.

२ ठग, चोर

उ०—सुनत हुकम पुर सोधि संढ विट चेट विदूसक। पुर जुव तिन मग पिहित, लग्ग लावन मनु मूसक।—व. भा.

रू० भे०—मुखक, मूखक, मूसउ, मूसौ।

अल्पा०—मुखियौ।

मूसककरणी—सं० स्त्री० [सं० मूषककर्णी] मूसाकानी नामक एक लता।

मूसकवाहण—सं०पु० [सं०मूषक+वाहनम्] गणेश, गजानन।

मूसकौ, मूसखौ—सं० पु०—स्वर्ण पात्र।

उ०—वित्त रा च्यार हिस्सा कीया। एक हिस्सौ ले तेजसी नुं दीयौ तेजसी उरौ लीयौ, नै ऊठता थका एक सोना रौ मूसखौ नै एक पाणी रूपा रौ ढोलीया रौ इधकौ लेता ही ऊठीया।

—रावमालदे री बात

मूसणौ, मूसबौ—क्रि०स० [सं०मूषणं] १ चोरी करना, चुराना।

उ०—१ उत्तम मूसे एक झड़ मध्यम दूहा मूस। अवमगीत मूसे अडर, त्रिविध कुकवि विण तूस।—बां. दा.

२ लूटना, खसोटना।

उ०—रोजायतो तणौं नव रोजै, जेय मुसांणा जणौं जण। हींदू नाथ दिलीचे हाटे 'पत्तौ' न खरचै खत्रीपण।—प्रथ्वीराज

३ ठगना।

४ अपहरण करना, हरण करना, उड़ा लेजाना।

५ मोहित करना, लुब्ध करना।

६ मसोसना, दबोचना।

७ पकड़ना।

८ छीनना, झपटना।

९ ढकना, लपेटना, छिपाना।

१० ग्रसना।

मूसण हार, हारौ(हारी), मूसणियौ—वि०।

मूसिओड़ौ, मूसियोड़ौ, मूस्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मूसीजणौ, मूसीजबौ—कर्म वा०।

मुसणौ मुसबौ, मूंसणौ, मूंसबौ—रू. भे.।

मूसळ मूसल—सं०पु० [सं०मुसलः] १ ऊखली में अनाज आदि कूटने का मोटी लकड़ी का प्रसिद्ध उपकरण। इसके बीचमें हाथ में पकड़ने का खड्डा होता है

उ०—नीचौ आयनै गवा नै सावळ जंतरावण साड़ कीं जोवण लागौ के सांमी ऊंखळ कनै मूसळ पड़्यौ निगै आयौ।—फुलवाड़ी

२ श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम के हाथ में रहने वाला एक शस्त्र।

३ गदा का एक भेद।

४ लकड़ी का मोटा गोल डंडा जिससे स्वर्णकार आभूषणों की मोच निकालने का काम लेता है।

५ वार व नक्षत्रों सम्बन्धी २८ योगों में से बाईसवां योग।

वि०—१ मूसळ के समान, मूसल के अनुरूप।

उ०—१ इंद्र कोप घन बरखौ मूसळ जळधारा। बूड़त ब्रज को राखेऊ मोरे प्रांण अधारा।—मीरां

उ०—२ डीगौ खिजूर नै दांतळौ हाथी। कैत्तां ईं मूसळ ज्यूं हाथी रा दांत बारै निकळग्या।—फुलवाड़ी

२ मूर्ख, मूढ बेवकूफ।

रू०भे०—मुसळ मुसल, मुसळि, मुसलि, मुंमळ, मूसिल्ल, मूहळ।

अल्पा०—मुसलियौ, मुमळौ, मुसलौ, मुसल्लौ, मूसलियौ, मूसळौ, मूसल्यौ।

मूसळदंतौ–वि०—मूसल के समान मोटे दांतों वाला।

उ०—वेह कळायां वाघ री, घड़ी भयंकर घाट। **मूसळदंतां** मैंगळां, नित डर रहै निराट।—बां. दा-

मूसळधार, मूसळधारा–सं०स्त्री०—पानी या बरसात की मूसल के समान सीध व वेगसे चलने वाली धारा।

उ०—१ आज विरज पर इंदर कोप्यौ, बरसै **मूसळधारा**। बांवां नख पर गिरवर धार्‌यौ, डूबत बिरज उबारा।—मीरां

उ०—२ चौठी ले पांणी मांहै गाळी नै ऊपर आड़ंग तुरत मंडियौ। **मूसळधार** वरसण लागौ। तरै इणां घरां नूं चलाया।
— नैणसी

उ०—३ झिर मिर झिर मिर एक चनणा मेह पड़ेजी कोई, वरसै **मूसळधार** थारौ तौ आवण एक, चनणा क्यों हुयोजी।—लो. गी.

रू० भे०—मूसळाधार,

मूसळमांण, मूसळमांन—देखो 'मुसळमांन' (रू. भे.)

उ०—कीरत 'अजन' कमंध री, पसरी प्रथी प्रमांण। दहल खमै रहिया दिली, हिंदू **मूसळमांण**।—रा, रू.

मूसळाधार—देखो 'मूसळधार' (रू. भे.)

उ०—एक एक बोल कांनां रै मांय बड़नै काळजा में मंडतौ गियौ। जांणै बिना बीज बादळां रै **मूसळाधार** पांणी ओसरै अर बरसा री सूखी तिरसी धरती तिरपत व्है।—फुलवाड़ी

मूसळायुध, मूसळायुद्ध, मूसलायुध, मूसलायुद्ध–सं० पु०—मूसल नामक आयुध, एक शस्त्र।

रू० भे०—मुसलायुध, मुसलायुद्ध,

मूसळियौ—१ वह घोड़ा जिसका केवल दाहिना पैर सफेद हो शेष तीनों पांव काले हों। (अशुभ, शा० हो०)

२ देखो 'मूसळ' (अल्पा., रू. भे.)

मूसळी, मूसली–सं० स्त्री० [सं० मुशली] १ हल्दी की जातिका एक पौधा जिसकी जड़ प्रायः औषध में काम आती है। यह पुष्टिकारक मानी जाती है और सफेद व काली दो प्रकार की होती है।

सं०पु०—२ बलदेव, बलराम।

३ घोड़ों का एक रोग विशेष। इसके कारण घोड़े के पावों में सूजन आजाती है।

वि०—मूसल नामक शस्त्र को धारण करने वाला।

रू०भे०—मुसळि, मुसलि, मुसळी, मूंसळी, मूंसली, मूग्रळी।

मूसळौ, मूसल्यौ—१ एक प्रकार का घोड़ा।

२ देखो 'मूसल, (अल्पा., रू. भे.)

३ देखो 'मूसळियौ' (रू. भे.)

मूसायब—देखो 'मुसाहब' (रू. भे.)

मूसादै–सं०स्त्री०—मादा चूहा, चुहिया।

उ०—बांमणिया कण मांगणिया, पग दै पूळौ बांधणिया। **मूसादै** नै जाय' र कंजे, चिड़कल वेटा जाया है।—फुलवाड़ी

मूसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू. भे.)

उ०—१ भणवा कारण भरत नं, मेले नृप **मूसाळ**। मोह धार सत्रघण महा, लार गयौ लंकाळ।—र. रू.

उ०—२ मंडे दीठ नौ ही ग्रहां बंदि माहै। सकौ तार नौलाख **मूसाळ** साहै।—सू. प्र.

मूसावाहण—देखो 'मूसकवाहन' (रू. भे.)

मूसिक—देखो 'मूसक' (रू. भे.)

मूसिकांक–सं०पु० [सं०मूषिकांक] गजानन का एक नामान्तर, गणेश,।

मूसिल्ल—देखो 'मूसल' (रू. भे.)

मूसिल्लमांण, मूसिल्लमांन—देखो 'मुसलमांन' (रू. भे.)

उ०—**मूसिल्लमांण** खुरिसांण मग्गि। लाहउर राउ सुरितांण लग्गि। कळळियउ खुरासांणी कंधार, सज कीजइ रेवंत सिलह सार।
—रा. ज. सी.

मूसौ—देखो 'मूसक' (रू. भे.)

उ०—१ सूंडा-डंड प्रचडो मूसा आरूढ़ मेक मय दंतौ। ईस्वर उमया पुत्रोः तस्मै गुणेसाय नमो।—गु. रू, बं.

उ०—२ मावड़ियौ वन मांझळी, सो नहं जाय सिकार। डोळा मिनखी सूं डरै, मूसा ज्यूं मुरदार।—बां. दा.

पर्या०—आखू, ऊंदर, खणाक, भखमंजार, मुख्य, मूषक, मूसक, यतिदेवर, बजरदंत, सुचीमुख।

२ चोर।

३ ठग।

४ सिरस का पेड़।

५ अन्तः करण, मन। (योग)

६ एक देश का नाम।

७ सुनार के यहां काम आने वाली खड्डी या चूने की बनी एक कटोरी, जिसमें सोना, चांदी आदि गलाया जाता है

उ०—८ यहूदियों के धार्मिक व सामाजिक नेता, पेगम्बर, जिन्होंने

मिस्र के इसराइलियों को दासता से मुक्त कराया था ।

६ देखो 'मोसौ' (रू. भे.)

उ०—वीरा ऊभी ओरिया रै बार, देवरजी मूसा बोलिया । भावज करती वीरा रौ गुमेज, वीरौ बत्तीसी ले गयौ ।—लो. गी.

रू०भे०—मूंमौ, मूंसौ, मूसउ ।

मूह—देखो 'मुख' (रू. भे.)

उ०—मूहां सैवां तणा मार हिंदू मुगळ, मच्छर सैवां-मुहां आंण मिळियौ ।—गु रू. बं.

मूहड़—देखो 'मुख' (मह. रू. भे.)

मूहडौ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)

उ०—इण बाळक रौ मूहडौ वारै बरसतांई देखणौ जुगत नहीं छै।
—रीसाळु री बात

मूहमेज—देखो 'मुहमेज' (रू. भे.)

मूहमेळ—देखो 'मुहमेळ' (रू. भे.)

उ०—चवद मत तुक दोय चवंत, रटजै मूहमेळ रगणांत ।
—र. ज. प्र.

मूहरत—देखो 'महुरत' (रू. भे.)

उ०—ताहरां राजा ब्राह्मण बोलाया, मूहरत पूछाड़ीयौ ।
—जेतमाल पुमार री बात

मूहळ—१ देखो 'मूसळ' (रू. भे.)

२ देखो 'महळ' (रू. भे.)

मूहूघू—देखो 'मूंगौ' (रू. भे.)

उ०—जेणि आवइ मूहूघू थाइ, लोकै लायां नाम । ए विहूना सर लावये, माधव माहरि कामि ।—मा. कां. प्र.

मूहूरत, मूहूरत्त—देखो 'महूरत' (रू. भे.)

उ०—एक मूहूरत्त नी सामायक कीधी ।—भि. द्र.

में-अव्य०[सं० मध्य, प्रा० मज्झ] १ अन्दर, भीतर ।

उ०—स्वांमीजी कह्यौ-म्हारौ नाम भीखण । तब उवे बोल्या थाने देखवा री मन में थी ।—भि. द्र.

२ ऊपर, पर ।

उ०—राग द्वेस ओलखायवा स्वामीजी द्रस्टांत दियौ । किणहि डावरा रै माथा में दीधी । जद तो लोक उणनें ओलंभौ देवे ।
—भि. द्र.

३ किसी समय या अवधि के दरम्यान ।

उ०—बैसाखां में बिलखां बांमी, हुयगा सवळा जैन बिरांमी ।
—ऊ. का.

४ किसी क्षेत्र या परिधि के भीतर ।

५ किसी के साथ, किसी में संलग्न ।

६ कईयों में से ।

७ मध्य या बीच ।

८ का, के, की ।

उ०—लागौ जितरौ तो आ गयौ, खेती बापरी में तो चूक नहीं ।
—भि. द्र.

६ से ।

१०—देखो 'मैं' (रू. भे.)

उ०—जे परमेस्वर सुगुणां की निधि छै । जाकै गुण कौ पार कोई न पावै । में निगुण थकौ ते कौ गुण कहिवा को आरंभ कीयौ ।
—वेलि टी.

रू० भे०—मंइं, मंइ, मंद, मंहि, मंही, मइ, मह, महीं, मुंहि, मुंही, मुही, मेंइ ।

मेंइ—१ देखो में' (रू. भे.)

उ०—विण चैलै त्रसा मरतै काचौ पांणी पीधौ । मोटौ प्रायस्चित आयौ । नहि तर तौ थोड़ा मेंइ गुदरता ।—भि. द्र.

२ देखो मैं' (रू. भे.)

मेंगणी—देखो 'मींगणी' (रू. भे.)

मेंगळ—देखो 'मदकळ' (रू. भे.)

उ०—दळ अकबर तोपां दगै, चूकै वीर निवांण । गोळां लागै चीतगढ़, मेंगळ माछर जांण ।—वां. दा.

मेंगाई—देखो 'मूंगाई' (रू. भे.)

मेंगीवाड़ौ—देखो 'मूंगियाड़ौ' (रू. भे.)

मेंढक—देखो 'मींडकौ' (मह., रू. भे.)

उ०—पंखी पांखा सजै, मेंढका मीठा बोलै ।—दसदेव

मेंढकौ—देखो 'मींडकौ' (रू. भे.)

मेंढल-सं० पु०—मैनफल का वृक्ष । (अमरत)

रू० भे०—मैंढळ,

मेंढौ—देखो 'मींढौ' (रू. भे.)

मेंणा—देखो मीणा'(रू. भे.)

उ०—धन कारण लागै चोरटा, मेंणा मेतर ने थोरी रे ।
—जयवांणी

मेंणावती-सं० स्त्री०—राजा गोपीचंद गौड़ की माता का नाम ।

रू० भे०—मैंणावती, मैनावती ।

मेंहतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे.)

मेंदांन - देखो मैंदांन' (रू. भे.)

मेंदी—देखो 'मैंदी' (रू. भे.)

उ०—मेंदी देऊं मुळक मैत्र सूं करदे मोळी । दीवाळी रै दिवस हिया में ऊठै होळी ।—ऊ. का.

२ एक लोक गीत ।

मेंबर—देखो 'मैंबर' (रू. भे.)

मेंमत—देखो 'मैंमंत' (रू. भे.)

उ०—दोखियां तणी घणी घर दाबै, फाबै जुध जुध करण फतै । साह तूज कन सहै गज बंध सुत, मेंमत चालै आप मतै ।
—नाथौ सांदू

मेंमद—देखो 'मैंमंद' (रू. भे.)

उ०—माथै ने मेंमद लाव भवर, म्हारै माथै ने मेंमद लाव ।
—लो. गी.

मेंमाय - देखो 'महामाया' (रू. भे.)

मेंवासियौ—देखो 'मेवासी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ताखड़ा उलट मेंवासियां लटायत, छटायत नाहरां भड़ां छोगं ।—रावत हम्मीर चुंण्डावत री गीत

मेंहदी—देखो 'मैंदी' (रू. भे.)

उ०—१ एक उगीनी नणद कह्यौ-बाकी भोजाइयां रै हाथां मेंहदी राच्योड़ी, आगंणौ नीपणा सूं रंग मगसौ पड़ जावै ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ राजाजी रा छाला पड़चा हाथां रै मेंहदी लगाय नाई फूका देवण लागौ सौ देवतौ ई गियौ। मेंहदी अर फूंकां सूं थोड़ी घणी बळत मिटी तौ राजाजी रै जीव में जीव आयौ ।—फुलवाड़ी

मेंहमद—देखो 'मैंमद' (रू. भे.)

उ०—ए मां भाभीजी ने कहकै म्हांरै मेंहमद मंडवादै मैं खेलण जास्यूं लूरड़ी ।—लो. गी.

मे, मे'—देखो 'मेह' (रू. भे.)

उ०—डायमल डागै रै पैल-पोत री बेटी जांमी जद घर हाळां नै, कनलां पाड़ौस्यां वात बताई कै आंधी लारै मे' टीडी लारै कांवळां अर बेटी लारै बेठौ आया करै है ।"—दसदोख

मेआई—देखो 'मेहाई' (रू. भे.)

मेइण, मेइणी—देखो 'मेदिनी' (रू. भे.)

उ०—खोहड खांन खड़ै खर हुंडह, मेइण धुंधळियौ व्रहमंडह ।
—गु. रू. बं.

मेउड़ौ, मेऊड़ौ—देखो 'मेह' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आज धोराऊं धरमी धूंधळौ, काळी कांटण मेह ओ । आज ने वरखे धरमी मेऊड़ा भीजै तंबू री डोर ओ ।—लो. गी.

मेक—वि० [सं० एक] अकेला, एक मात्र ।

उ०—१ आदि अत आदेस, मेक आदेस नरेसर। अलख तूझ आदेस, अगह आदेस अनंतर । – ह. र.

उ०—२ उहव थयां नां कोई वह आवे,सुरियण मारग अन्य सह । मेक वहै अरसीह समोभ्रम, प्रिथी बिलग्गी तूझ पहं ।—ह. र.

सं० पु०—एक की संख्या, एक ।

उ०—१ सूंडा-डंड प्रचंडौ, मूसा आरूढ मेक मय दंतौ । ईस्वर उमया पुत्रौ: तस्मै गुणेसाय नमौ ।—गु. रू. बं.

उ०—२ मंत्रियां लिखौ पुरमांण मेक । असुरांण तरफ करि मंत्रि एक ।—सू. प्र.

[सं० मेकः] २ बकरा ।

३ देखो 'मेख' (रू. भे.)

रू० भे०—मेकि, मेकौ

मेकडसण—सं० पु० [रा. मेक+सं० दशनः] गणेश, गजानन ।

उ०—गवरी पुत्र गणेसं, मेकडसण आखु जसु वाहण । गज मुख सुर अग्रेसं, सिध बुध-पतिये नमः ।—मा. वचनिका

मेकदंत—सं० पु० [रा० मेक+सं० दन्तः] गणेश, गजानन ।

उ०—गजां ओरापती जेहिं तेज सुरांमुख गिणा, गणां मेकदंत राजै आपगां में सिंध ।—भगतरांम हाडा री गीत

मेकमौ—देखो 'महकमौ' (रू भे.)

मेकळ—सं० पु०—रीवां राज्यान्तर्गत विंध्य पर्वत का एक नामान्तर ।

मेकळकन्यका, मेकळसुता, मेकळाद्रिजा,—सं०स्त्री०—नर्बदा नदी का एक नामान्तर ।

मेकवीस—सं० स्त्री० [रा० मेक+सं० विशंति] एक और बीस, इक्कीस ।

उ०—अस्ट पात्र सब चंग, काइ तरुणि काइ बाळा । पिक हंसह आलाप, कंठ मोहित मुगत ळा । मेकवीस मूरछा त्रिण (ह) ग्रांम निसपति सुर, लहण भेउ खटराग काठ, अक्खै मोखंतर ।
—गु. रू. बं.

मेकि, मेकौ—देखो 'मेक' (रू. भे.)

उ०—१ मेकि बांण मारी मरम पड़ै धसंती प्रांणि ।—रांमरासौ

उ०—२ मेकौ हाथि मोकल्यौ, जोपै जोरावर, उठै न कोड़ उपाव सूं निम रह्या सकौ नर ।—ठा० भूंभारसिंह मेड़तिया

मेख—सं० स्त्री० [फा० मेख] काठ व धातु की कील ।

उ०—१ जेथ मळैतर मेखचा, गडै मळैतर मेख। जळै मळैतर ईंधणा, दळ चाळक रौ देख ।—बां. दा.

उ०—२ तद राजाजी सिंघासण माथै बिराजता स्री मुख सूं फरमायौ—पछै थें लोग बिरथा क्यूं डरौ। परवांना री बात रै तौ अठै ई मेख लागगी । फुलवाड़ी

उ०—३ सो चाकर आय इणरी भौपड़ी कन्है होकारौ कियो । क्यांरूं पग इसा रोपिया जांण जे मेखां गाडी ।
—सूरे खीवे कांधळोत री बात

मुहा०—मेख लागणी=किसी चालु क्रम का रुकना,महसा रुकना, स्थिर होना ।

२ मवेशी को बांधने या सामियाना तांनने आदि के लिये जमीन में रोपी जाने वाली लकड़ी या लोहे की मोटी कील, खूंटी, खूंटा ।

उ०—१ तरे समरथसंघ मने कीयौ अठै डेरौ मती करौ, ऊंट बंधै छै। तरै भाटी गाळ दीनी तिण ऊपर समरथसंघ उठ ने गयौ। तरै आगे भाटी मेख रोपै छे समरथ संघ झटकारी दीनी सौ माथौ तुट पडीयौ ।—रा. वं. वि.

उ०—२ जयजरी सिमांनां खंभ जड़ाव । तै रूप मेख रेसम तणांव ।
—सू. प्र.

३ किसी पुरुष या स्त्री के मुंह में सामने वाले दांतों में जड़ी जाने वाली सोने की कील, चूंप ।

उ०—दांता अम्रत मेख दया को बोलणौ । उबटन गुरु को ग्यांन ध्यांन को धोवणौ ।—मीरां

४ पलक झपने व खुलने की क्रिया या भाव, निमेष।

उ०—कपोळे मिळे रूप ओपै अलक्कां, प्रभू पेखतां मेख भूलै पलक्कां।—रा. रू.

५ असमंजस, संदेह।

उ०—महारौ महारौ करि धन मेलकूं, लोभ वसै लयलीन। नरक तणां घर चूं छूं नव नवा इण में मेख न मीन।—ध. व. ग्रं.

मुहा० मेख न मीन=जिसमें कोई सदेह न हो, निस्संदेह।

६ देखो 'मेष' (रू. भे.)

उ०—गरद्दन कट्टन केक मुगल्ल। छटै खग देखक मेख छगल्ल।
—मे. म.

मेखचौ—सं० पु०—१ हथौड़ा।

उ०—१ जेत मळैतर मेखचा, गडै मळैतर मेख। जळै मळैतर ईंधणा, दळ चालक रो देख।—बां. दा.

उ०—२ मेखां निहाव पड़ि मेखचा ताळी तजै तपेसरा। घर धूजि धमक विसहर धुकै, सहस धुकै फण सेस रा।—सू. प्र.

उ०—३ कुतक खिदर धव काठ रा, बिदर पचावण वेस। तो पिण हाजर राखणा, घण मेखचा हमेस।—बां. दा.

मेखमो—सं० स्त्री०—स्वर्णकारों के काम आने वाला एक उपकरण, जो आभूषणों पर खुदाई करने के काम आता है।

मेखळ—सं०पु०—१ हवन कुंड।

२ देखो 'मेखळा' (रू. भे.)

उ०—१ पांच माळ अहिरी गळ पहरी। अविसवि दहूं जनेऊ अहिरी। कट मेखळ अहि धरै सकाजै, रिधू पाव सांकळ अहि राजै।
—सू. प्र.

उ०—२ कर्णं कांन त्राटंक, वेण नासा मोतीहळ। हार उर चंदन विलेप, रची कांकण कटि मेखळ।—गु. रू. बं.

मेखलगन—देखो 'मेषलग्न' (रू. भे.)

उ०—संवत १७२३ रा माहावद ३ गुरुवार दिन घड़ी १३ चढीयां नै पल १ मेखलगन में जनम हुवौ।—नैणसी

मेखळा—सं० स्त्री० [सं० मेखला] १ करधनी नामक आभूषण जो कटि प्रदेश के चारों ओर लपेट कर पहना जाता है, तागड़ी, किंकणी, घंटिका।—(व. स) (अ. मा.)

२ कमर में बांधी जाने वाली सूत की डोरी, कटि सूत्र।

३ कमरबंद, कमरपेटी, इजारबंद।

४ वह वस्तु, जो किसी अन्य वस्तु के मध्य में चारों ओर लिपटी रहती है।

५ मंडलाकार घेरा।

उ०—१ कमठ भार कसमस्स, दाढ़ बाराह खडक्कै। मंडळ मेर मेखळा धमस, धूळी रिव ढक्कै।—गु. रू. बं.

उ०—२ अर तोपां री गाज हूं सेस रा सीसां समेत मकराकर मेखळा मही रै मचोळा लगाया।—वं. भा.

६ पहाड़ की उतराई, ढलान।

७ हवन कुण्ड के चारों ओर बनी पाज, घेरा।

८ पर्वत का मध्य भाग।

९ कमर, कूल्हा।

१० तलवार का परतला।

११ तलवार की मूंठ में बंधी डोरी की गांठ।

१२ घोड़े का जेरबंद।

१३ घोड़े की तोंद पर होने वाली भंवरी।

१४ नर्मदा नदी का नाम।

१५ देखो 'मेखळी' (रू. भे.)

उ०—१ माळा मुद्रा मेखळा रे बाला, खपरा लागी हाथ। जोगण हुइ जुग ढूंढसूं, म्हारा रावलिया री साथ।—मीरां

उ०—२ सेली सींगी मेखला, कांनि मुदरका घालि। हरीया जोगी जुगति बिन, पंच न सबै पालि।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—मेखळ, मेहल।

मेखलिक—सं० पु०—एक वर्ग विशेष।

उ०—मांत्रिक तंत्रिक गाडरिक मेखलिक लेखक कथक कविकर तालवर कविराज···।—व. स.

मेखळियौ—सं० पु०—पहनने का कुरता।

रू० भे०—मेखळौ, मेखल्यौ

मेखळी—सं० स्त्री०—१ योगियों व ब्रह्मचारियों का एक पहनावा, जिसमें पीठ व पेट ढके रहते हैं तथा दोनों हाथ खुले रहते हैं।

उ०—तरै जोगी देवराज नूं कह्यौ-थारा बळ रो विरद वधौ। नै मेखळि, नाद दियौ, पात्र दियौ, नै कह्यौ-ओ थे पाट बैसौ तद दीवाळी दसरावै धारिया करौ।—नैणसी

२ झोला, बड़ा थैला।

उ०—१ तद सिद्ध मेखळी मांहै हाथ घातनै गोटो १ बभूत रो, सोपारी ४ काढ़ दीवी।—नैणसी

उ०—२ वांनी अंग पलेट मेखळी भुजपर मेली। ले माछंदर नांम साहतन कंथा सेली।—पा. प्र.

रू० भे०—मेखळा, मैंखळी,

मेखळौ, मेखल्यौ—देखो 'मेखळियौ' (रू. भे.)

मेखसक्रांयत' मेखसक्रांति—सं०स्त्री० [सं०मेष-संक्रांति] मेष राशि में पड़ने वाली संक्रांति। (ज्योतिष)

उ०—जनमे मेखसक्रांति जांम।—रांमरासौ

रू०भे०—मेससंक्रांति, मेससकरांत

मेग—देखो 'मेघ' (रू. भे.)

उ०—ओप सिंदूर तेल अपल्ल, गडडे बाज ढळकै ढल्ल। वहता विडंग दाखै वेग, मारुत पेरियौ किरि मेग।—गु. रू. बं.

मेगजीन—सं०स्त्री० [अं०] १ राइफल में लगी वह छोटी पेटी जिसमें कारतूस भरे रहते हैं।

२ वह स्थान या कक्ष जहां सेना का गोला-बारूद रहता है। बारूदखाना।

३ वह पत्रिका जो किसी निर्धारित समय पर प्रकाशित होती

रहती है। सामयिक पत्र।

मेगळ, मेगल—देखो 'मदकळ' (रू. भे.)

उ०—भिडइं सहड रडवडइं सीस धड नड जिम नच्चइं। हसइं धुसइं ऊससइं वीर मेगळ जिम मच्चइं।—सालिभद्र सूरि

मेगवाळ–सं०पु० [स्त्री०मेगवाळण, मेगवाळी] एक अनुसूचित जाति व इस जाति का व्यक्ति।

रू०भे०—मेघवाळ।

मेघ–सं०पु० [सं०मेघः] १ बादल, घन। (अ. मा., ना. डिं. को. नां. मा., डिं.को)

उ०—१ उठै घण सायक मेघ 'विलंद'। अयौ किर गोकळ ऊपरि इंद।—सू. प्र.

उ०—२ मेघ जु वरसण लागा। तांह का पांणी परवतां कां कंदरा थें अर नाळां थे पांणी चाल्यौ छै :—वेलि टी.

पर्या०—अभ्र, आकासी, कांमुक, गंजणरोर, घणाघण, जगजीवण, जळद, जळधरण, जळमंडळ, जळमुक, जळवहण, जळहर, जीमूत, तड़ितवांन, तनयतूं, तोईद, धाराधर, धूमज, ध्रवण, नभधुज, नभराट, निवांणभर, नीरद, परजन्य, प्रथवीपाळ, बळाहक, भरणनिवांण, महीरंजण, मुदिर, वरसण, वसु, सघण, सुजळ, स्यांमघटा।

२ वर्षा, बरसात, बारिस,।

उ०—मेघ घणौ वूठौ। धरती अजैं नीली नहीं हुई छै। त्रिणि अंकुर नहीं हुआ छै।—वेलि टी.

३ रावण का पुत्र मेघनाद, इन्द्रजीत।

उ०—१ जळाबौळ लीधां दळां रांण जायौ। अखौ मारियौ सांभळै मेघ आयौ। उठै रांमरा जोध कूदै अमांयौ, सभै हाथ पच्छै अयौ मेघ आयौ।—सू. प्र.

उ०—२ रांवण कूंभ मेघ खर रहचै, कथ सौ वेद पुरांण कही। बगसी भूपां भूप बभीखण, सरणागत हित लंक सही।

—र. ज. प्र.

४ मेघवर्ण, श्वेत-कृष्ण। *(डिं. को.)

५ मेघ के समान।

उ०—उण वेळा बळ अग्गळा, दळ राठौड़ दुबाह। मेघ थया सीसोदियां, लगी लाय अण थाह।—रा. रू.

६ छप्पय छंद का ४६ वां भेद, जिसमें २२ गुरु, १०८ लघु से १३० वर्ण या १५२ मात्राएं होती हैं। (र. ज. प्र.)

७ तारकासुर के पक्ष का एक असुर।

८ स्वायंभु मनु के पुत्रों में से एक।

९ एक राज वंश, जो कोमल नामक नगरी में राज्य करता था।

वि०—मस्त, मत्त।

उ०—इतरे बीच हिरणांरी डार आय नीसरै छै तिकै किण भांत रा हिरणं छै? काळा बडा बेगड़ छै, मुहडां रै डार में मेघ हुय रहया छै।—रा. सां. सं.

रू० भे०—मेग, मेघु, मेह,

अल्पा०—मेघलौ,

मह०—मेघांण,

मेघग्ररि–सं० पु० [सं०] पवन, हवा। (डिं. को.)

मेघईस–सं० पु० [सं० मेघ+ईश्वर] इन्द्र।

उ०—रखी सेख वैनतीयै बक्रतुंड तुंडराज, मेघईस धांम सुर बेद भीम जाप। जती पाथसाह मांगी मेर दांणी नेक 'जसौ', अठारा बिमेक तसौ एक रूप आप।—हुकमीचंद खिड़ियौ

मेघकरण–स० स्त्री० [सं० मेघकर्णा] स्कंद की अनुचरी, एक मातृका।

मेघकाळ–सं० पु० [सं० मेघ+कालः] वर्षा ऋतु।

मेघजळ–सं० पु० [मेघजलम्] वर्षा का पानी।

मेघजाति–सं० पु० [सं०] एक राजा (प्राचीन)

मेघडंबर, मेघडमर—देखो 'मेघाडंबर' (रू. भे.)

उ०—१ रजि मेघाडंबर रूप सिर झिलत चमर सरूप। वपि ओप वसन वणाव, रवि तेज मुरधर राव।—रा. रू.

उ०—२ सिंधुरां मेघडंबर सकाज। सझि पाखर हौदा जंग साज।

—सू. प्र.

मेघदुंदुभी–सं० पु० [सं०] एक राक्षस।

मेघदेहा–सं०पु०[मेघ+देहिन्] बादल के समान जिसकी देह का रंग हो, राम या कृष्ण।

उ०—जिहां मांहि जोधा हणूंमांन जेहा। दई मुद्रका जेण नूं मेघदेहा।—सू. प्र.

मेघनाथ–स० पु० [सं० मेघनाथः] १ इन्द्र।

२ वरुण।

रू० भे०—मेघनाय,

मेघनांद, मेघनाद–सं० पु० [सं० मेघनाद] १ मेघों की गर्जना, घन-गर्जना।

उ०—१ सींगळी गज्ज गरजंत साद। नभ जांण दवादस मेघनाद।

—गु रू. बं.

उ०—२ मेदनी हैमरां खुरां धूजावै चलायमांन, ऊछजावै लोयणां झळायमांन आग। मेघनाद गजावै यूं सजावै बंदूकां मार, बांघला मयंदां हाडौ खिजावै अजाग।—रांमसिंघ हाडा री गीत

२ वरुण।

३ रावण का ज्येष्ठ पुत्र, इन्द्रजीत।

उ०—१ सर पहर अठ जुध सारियौ, मेघनाद लछमण मारियौ। सझि असंख दळबळ सबळ दससिर आवियौ अवनाड़।—सू. प्र.

उ०—२ आहंसी रांम रौ बंधु सेस रौ औतार ओपै, कळानिधी कोपै मेघनाद पै करूर। राकसां विणास करै अजादा मही री राखी,जकौ साखी सूरचंद खिती री जरूर।—बादरदांन दधवाड़ियौ

४ घटोत्कच के पुत्र मेघवर्ण का नामान्तर।

५ स्कन्द का एक सैनिक।

६ पलास।

रू० भे०—मेघनादि,

मेघनांदानळ, मेघनांदानुळ—सं० पु० [सं० मेघनादानुल] मयूर, मोर। (नां. मा.)

मेघनादि—देखो 'मेघनाद' (रू. भे.)

मेघनाय—सं०पु०—१ नागर मोथा। मुमता।

२ देखो 'मेघनाथ' (रू. भे.)

मेघपंथ—देखो 'मेघपथ' (रू. भे.) (अ. मा.)

मेघपति—सं०पु० [सं०] इन्द्र।

मेघपथ—सं०पु० [सं०] आकाश, व्योम। (अ. मा.)

रू०भे०—मेघपंथ,

मेघपुसप, मेघपुस्प, मेघपुहप—सं०पु० [सं०मेघपुष्प] १ इन्द्र का घोड़ा।

२ श्रीकृष्ण के रथ के चार घोड़ों में से एक।

३ जल, पानी। (अ. मा., ह. नां. मा.)

४ वर्षा में गिरने वाले ओले, हिमकण।

५ नदी का जळ।

६ बकरे का सींग।

७ मोथा।

८ कुसुम, फूल।

मेघमंडांण—सं०पु०—आकाश में बादलों के छा जाने की अवस्था, दशा या भाव

उ०—गडगडि नीसांण **मेघमंडांण** अंबर भांण रज छाया। हींसा रव घोड़ै दखणी दौड़ै, वागां जोड़ै दळ छाया।—गु. रू. बं.

मेघमलार, मेघमल्लार, मेघमल्हार—सं०पु०—वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला सम्पूर्ण जाति का एक राग, इसके सभी स्वर शुद्ध होते हैं। (संगीत)

उ०—१ चौरासी का सांसा मेटचा, कर दीना पेलै पार। दसूं दिसा रा आवे जातरी, करता **मेघमलार**।—श्री हरिरांमजी महाराज

उ०—२ गांन सुसर गणिका भणै, मुखि मुखि **मेघमल्हार**। संभू सक्ति नित पूजीइ, आंणी आक कल्हार।—मा. कां. प्र.

उ०—३ कुलवधू तणै पागि नूपर खलकइं, तडिइं कीरत्तिस्तंभ दीसइं लोक हियां विहसइं, **मेघमल्हार** राग गाइय, वीणावंस मनोहर वाइय, देही पूजा कीजइ, जन्मफल लीजीइ।—व. स.

२ एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी।

मेघमाळ—सं०पु० [सं०मेघमाल] १ रंभा के गर्भ से उत्पन्न कल्कि के एक पुत्र का नाम।

२ प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत।

३ देखो 'मेघमाळा' (रू. भे) (डि. को.)

उ०—१ गज थाट ध्रू सग्गडस गज दळ, क्रमे कोग्रण कंठळं। परवत माळ कि हेम हल्लै **मेघमाळ** कि वद्दळं।—गु. रू. बं.

उ०—२ मयाळ मंडपाळ **मेघमाळ** मोहनीं नहीं। हिलंब से प्रलंब थंभ बिंब सोहनी नहीं।—ऊ. का.

मेघमाळा—सं० स्त्री० [सं० मेघमाला] १ बादलों की घटा, बादलों की पंक्ति या श्रेणी, घनघटा।

उ०—१ बंबी वीण सैंतार सैंनाय बाजे। त्रमाळा घुरै **मेघमाळा** तराजै।—मे म.

उ०—२ कमाळा लदै स्व्व त्यां द्रब्ब कोड़ी, सकट्टां लठां भार ज्यों टांम जोड़ी। विभारंभ आचंभ राठौड़ वाळा, मही छेलिवा ऊमड़ै **मेघमाळा**।—रा. रू.

२ स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

उ०—नमौ मंत्रणी तंत्रणी **मेघमाळा**, नमौ संकरी सुंदरी प्रेम साळा।

—मा. वचनिका

रू० भे०—मेघमाळ,

मेघमाळी—सं० पु० [सं० मेघमालिन्] १ खर राक्षस का एक अमात्य।

२ स्कंद का एक पार्षद।

मेघराज—सं० पु०—इन्द्र।

मेघलौ—देखो 'मेघ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वीजळ-मीट उभोळ पळकतौ जुगनू जांणै। इतरौ खीण उजास **मेघला** मो घर आंणै।—मेघ.

मेघवत—सं० पु० [सं० मेघवत्] एक दानव, जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था।

मेघवनी—देखो 'मेघवरणी' (रू. भे.)

उ०—१ तेहनी उपम कहीइ किसी, जांणै स्वरग तणी अरवसी। **मेघवनी** पहिरइ कांचली, निरखइ नारि ते पाछी वली।—

—प्राचीन फागु-संग्रह

उ०२—कडिउ खगावि **मेघवनी** जि पटुली। लई कपूर करि पांन तणीं जिकुली।—प्राचीन फागु-संग्रह

मेघवरण, मेघवरणी—सं० पु० [सं० मेघवर्ण प्रा० मेघवण्ण] १ वरुण। (अ. मा.)

२ घटोत्कच के पुत्र मेघनाद का नामान्तर।

३ एक यक्ष।

४ बादल के रंग वाला वस्त्र।

वि०—बादल के रंग का।

रू० भे०—मेघवनी, मेघव्रन,

मेघवाळ—देखो 'मेगवाळ' (रू. भे.)

(स्त्री० मेघवाळण, मेघवाळी)

मेघवाह, मेघवाहण, मेघवाहन—सं० पु० [सं० मेघवाहन] १ इन्द्र।

(ना डिं. को.)

२ वरुण। (ह. नां. मा.)

३ जैगीषव्य नामक शिवावतार का एक शिष्य।

४ जरासंघ का अनुयायी एक नृप।

५ एक दैत्य, जो विष्णु के पद प्रहार से मरा था।

मेघविस्फूरणी—सं० पु० [सं० मेघविस्फूर्जिता] प्रथम एक यगण, तत्पश्चात मगण नगण सगण दो रगण और अंत गुरु सहित १९

वर्णों का वर्णवृत विशेष जिसमें ६, ६ और ७ पर यति होती है।

मेघवेग-सं० पु० [सं०] कौरव पक्ष का एक वीर।

मेघवन्न—देखो 'मेघवरण' (रू. भे.)

उ०—किता बोह हथ्थ किता बोह कन्न। किता बड़रूप किता **मेघवन्न**।—मा. वचनिका

मेघसंधि-सं० पु० [सं०] जरासंघ का पौत्र एवं सहदेव का पुत्र।

मेघसाद-सं० पु० [सं० मेघ+शब्द] घन-गर्जना।

उ०—नीमभे भुज्ज नव सहस नाद। सादूळ सुणे किरी **मेघ-साद**।
—गु. रू. बं.

मेघसार-सं० पु० [सं०] घन सार, चीनिया कपूर।

उ०—सुगंध गंधसार एण सार मेघसार ए। सवास अंबरे लुबान डंबरै निसार ए।—रा. रू.

मेघस्वना-सं० स्त्री०[सं०] स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

मेघस्वाति-सं० पु० [सं०] एक आंध्रवंशीय राजा।

मेघहंतरी-सं० पु० [सं० मेघहन्तृ] सुमेधस् देवों में से एक।

मेघहास-सं० पु० [सं०] राहु का एक पुत्र।

मेघांण—देखो 'मेघ' (मह, रू. भे.)

उ०—सुरतांण दळ **मेघांण** वट्टळं, सपत समद्र पांणियं सयळं।
—गु. रू. बं.

मेघा-सं० पु०—मघा नक्षत्र।

उ०—यां 'मघकर' हर वज्जिया, आद विखै अणरेह। ज्यां उलटै **मेघा** रवी, सिद्ध पलट्टै देह।—रा. रू.

मेघाजळ-सं० पु०—बरसात का पानी, वर्षा का पानी।

मेघाडंब, मेघाडंबर, मेघाडंबरि, मेघाडंमर-सं०पु०[सं० मेघ+आडम्बर]

१ मेघ गर्जना, घन-गर्जना।

२ बादलों का विस्तार, बादलों का समूह।

उ०—**मेघाडंबर** मंडि सूर सज्जें सन्नाहनि, फीलों फरकि निसांन, गरक ताजी गज गाहनि।—ला. रा.

३ कोई बड़ा सामियाना, तंबू, चंदोवा।

४ हाथी पर रक्खा जाने वाला हौदा, अंबाड़ी।

उ०—१ अंग झूलां ओछड़ि, दिया कसि **मेघाडंबर**। पावां लंगर पड़्या, ऊधड़्या झंडा अंबर।—मे म.

उ०—२ आया बाहिर एम, बैसि गजां **मेघाडंबर**। चगथा बे ढुळतै चमर, हीर जड़ित छत्र हेम।—वचनिका

उ०—३ जय कुंजर हाथीया तणइ कुंभस्थलि चडिउ, पाखती अंगरक्षक तणी ओलि, मंडलिक तणइ परिवारि, पताका फुरकती, **मेघाडंबर** तणइ आडंबरि'''।—व. स.

उ०—४ बहमंडे गजां **मेघाडंबर**. कठठे आराबा सकळ। तन ससभ कसे चढ़िया तुरां, दुगम सूर विमरीर दळ।—सू. प्र.

८ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—१ जादर **मेघाडंबर** नेत्रपट्ट धोतपट्ट राजपट्ट गजवडि''''''
—व. स.

उ०—२ सांनुबाफ, जरबाफ स्रीबाफ सुफ कमखा खरमु नरमु **मेघाडंबर** मंजीर दाडिमसोर''''''।—व. स.

रू०भे०—मेघडंबर, मेघडमर,

मेघावलि-सं०स्त्री०—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—बहुमूलं घूणोलियं मीणीयं कालं फूटउतं रातउ फूटउतं। सूपउति **मेघावलि** मेघडंबर पद्‌मावलि पद्मोत्तर इत्यादि वस्त्राणि।
—व. स.

२ मेघमाला, मेघपंक्ति।

मेघासुर-सं०पु० [सं०] १ ४९ क्षेत्र पालों में से ४१ वां क्षेत्रपाल।

मेघास्त्र-सं०पु० [सं०मेघ+अस्त्र] एक प्रकार का अस्त्र।

उ०—आग्नेयास्त्र वारुणास्त्र दांनवास्त्र माहेंद्रास्त्र तिमिरास्त्र डिमककरास्त्र नारायणास्त्र अस्वग्रीवास्त्र ब्रह्मास्त्र **मेघास्त्र** इति अस्त्रांणि।—व. स.

मेघु—देखो 'मेघ' (रू. भे.) (उ. र.)

मेड़-सं०स्त्री०—१ किसी खेत की सीमा।

२ सीमा, मर्यादा।

सं०पु०—३ स्वर्णकारों की एक शाखा। (मा' म.)

रू०भे०—मेढ़,

मेड़तिया-सं०स्त्री०—राठौड़ वंश की एक शाखा। राव दूदा के वंशज।

उ०—१ मिळ जोधा ऊदा कमंध, **मेड़तिया** ससमाथ। करनोतां चांपां कनै, भल कूंपा भाराथ।—रा. रू.

मेड़तियौ-सं०पु०—१ राठौड़ वंश की मेड़तिया शाखा का व्यक्ति।

उ०—इम बोलै **मेड़तिया** अडुर। धुर जोधार पुछ्छे पाटोधर।
—सू. प्र.

२ मेड़ता नगर का निवासी।

वि०—मेड़ता संबंधी, मेड़ता का।

रू०भे०—मैड़तियौ, मैड़त्यौ,

मेड़त्या—देखो 'मेड़तिया' (रू. भे.)

मेड़ी—देखो 'मेंड़ी' (रू. भे.)

उ०—१ चढ़ चढ़ दासी **मेड़ियां**, झांक झरोखां मांय। जे तने दीसै आवतौ म्हारौ मदछकियौ स्यांम।—लो. गी

उ०—२ साची बात है—मत मरज्यौ टाबर री माय, ना मरज्यौ बूढै री नार। पेमजी री **मेड़ी** रौ दीयौ बुझग्यौ। लेवड़ा झड़ग्या, देवळ जमगी अर सूनौ ढमढेर वणग्यौ —दसदोख

मेच-सं०पु०—१ मौका, अवसर।

उ०—पड़ै बक्र बीची कितां नाग पेचां। मिळै आथ सूं भी समै साथ **मेचां**।—वं. भा.

२ देखो मेछ' (रू. भे.)

रू०भे०—मेचु,

मेचक-सं०पु० [सं०मेचक:] १ कृष्ण पक्ष।

उ०—**मेचक** २ फागुण १२ पंचमी ५, चढै अडर चहुवांण। आयौ पट्टण आगरै, परदळ दट्टण पांण।—वं. भा.

२ श्यामलता, कालापन।

३ अंधकार, अंधेरा।

४ धूंआ, धूंम्र

५ बादल।

६ काला नमक।
७ सुरमा।
८ स्तन के ऊपर की घुंडी।
९ एक रत्न विशेष।
१० स्त्रियों द्वारा शृंगारार्थ चिबुक पर लगाई जाने वाली बिंदी। (अ. मा.)
वि०—कृष्ण, श्याम, काला। (अ. मा., नां. मा)
रू०भे०—मेछक।

मेचकता, मेचकताई–सं०स्त्री०—कालापन, श्यामलता।

मेचसिंगार–सं०पु०—पीतल।
उ०—**मेचसिंगार** हेम कम मींडां, तोलै ऊड उडीयंद तसा। सीसोदीया तुहाळी समवड़, कीजै जे भूपाळ कसा।—ओपो आढौ

मेचु–सं०पु० [सं०मिथ्या] १ असत्य, झूठ।
उ०—वयराट उत्तर पखइं कुरूराउ धायउ। अक्षोहणी दल तणी रज सूर छायउ। नीसांण ने सहसि अंबर घोर गाजइ, ए पांच पांडव तणउ किरि **मेचु** भांजइ।—सालिसूरि

मेच्छ—देखो 'मेछ' (रू. भे.)
उ०—मौलवी कराडै अरज काजी मुला, पाडजै देवहर दळां कर पेल। **मेच्छ** वांचै जिकौ हिंद इकळीम मज्झ, खडौ राजा जितै वणै नह खेल।—महाराजा जसवन्तसिंह रौ गीत

मेछंद—देखो 'मेछ' (मह., रू. भे.)
उ०—ते लरका मुख विख सुनै, बायक सायक सार। स्तुति संभर **मेछंद** के पंजर करत प्रहार।—ला. रा.

मेछ–सं०पु० [सं०म्लेच्छ] १ असुर, दैत्य, दानव। राक्षस। (ह नां. मा.)
उ०—१ जै जै भूपां भूप, सदा संतां साधारै, दीनां दाता देव, **मेछ** आंनेका मारै। सीता स्वांमी सूर, बीर बागां बांणासां, लंका जैहा ले'र, दांन देणौ तूं दासां।—र. ज. प्र.
उ०—२ इंद्र पूछीया तरइ ब्रह्मादिक, **मेछ** कीयइ रइ हाथ मरइ। देव अनई महांत दूहवइ, तिण कहर सुरांपति खेद करइ।
—महादेव पारवती री वेलि
२ यवन, मुसलमान। म्लेच्छ।
उ०—१ **मेछ** उलट्टा मेदनी, फट्टा जांण समंद। बळ छुट्टा भड़ कायरां, देख प्रगट्टा दुंद।—रा. रू.
उ०—२ **मेछां** आगळ माथ, निवै नहीं नरनाथ रौ। सो करतब समराथ, पाळै रांण प्रतापसी।—दुरसौ आढौ
उ०—३ निजोड़त **मेछ** धरै खत्रनेम। खगां 'सगतेस' समोभ्रम 'खेम'।—सू. प्र.
उ०—४ पांडवां जहीं किता पळ खंडिया, विहरै हाड विजू-जळ वाह। सहुआं सिर महुओ सूरजमल, मेल्यौ **मेछ** तणै दळ माह।
—गु. रू. बं.
३ नीच, दुष्ट, विधर्मी।
उ०—भांण ऊदोत रै समै पळ भोगणी, थोगणी मोत रै समंद थागै। असुर उर खोतरै **मेछ** आरोगणी, जोगणी जोत रै रूप जागै।
—खेतसी बारहठ
४ तांबा।
५ देखो 'मेच' (रू. भे.)
रू०भे०—मेचु, मेछंद, मेच्छ,
अल्पा—मेछौ,
मह०—मेछांग, मेछांण, मेछांन, मेछाड़, मेछायण, मेछाळ, मैछांण मैछायण।

मेछक—देखो 'मेचक' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

मेछमुख–सं०पु० [सं०म्लेच्छमुख] तांबा। (डि. को.)

मेछांइण, मेछांण—देखो 'मेछ' (मह., रू. भे.)
उ०—१ हिंदू धरम निवाह सरम गंजै **मेछांणां**। चक्रवती चालियौ प्रगट वैकुंठ पयांणां।—रा. रू.
उ०—२ पाड़ पतसाह घड़ सिवाडां पौढियौ, देव मंडळ सरी नकौ दूजौ। मार **मेछांण** घड़ जोत 'सूजौ' मिळे, पथर पाड़ौ तथा कोइ पूजौ।—सुजांणसिंह सेखावत रौ गीत
उ०—३ मलिकहेम डरै **मेछांइण**, देखै विसमां कमंध दळ।
—विक्रमादीत राठौड़ रौ गीत
(स्त्री०मेछांणी)

मेछांन, मेछांड़—देखो 'मेछ' (मह., रू. भे.)
उ०—१ चढ़ि चाल्लिय **मेछांन** भांन गरदावनि भिल्लिय। हल चल्लिय हिंदवांन, खखड जुग्गनि खिल खिल्लिय।—ला. रा.
उ०—२ दळ गहबर ऊलटा, खांन तहवर सारीखा। महा सोच मेवाड, ईख **मेछांड़** अणीखा।—रा. रू.

मेछाधिपति–सं०पु० [सं०म्लेच्छ-अधिपति] १ असुराधिपति, दानव राज, दैत्यराज।
उ०—**मेछाधिपति** संभ बोलियौ-गुमांन रा भार सूं भाजै। जांणै सघण बादळां मांहें, गैहरौ मेह गाजै।—मा. वचनिका
२ मुसलमान बादशाह, यवनाधिपति।

मेछायण—देखो 'मेछ' (मह., रू. भे.)

मेछाळ—देखो 'मेछ' (मह., रू. भे.)
उ०—**मेछाळां** सिर मार, देतौ पह आगै दळां। कैलपुरौ भारथि किसन, जाडगौ जिणिआर।—वचनिका

मेछौ—देखो मेछ' (अल्पा., रू. भे.)

मेज–सं०पु० [फा०] १ लकड़ी की वह बड़ी व ऊंची चौकी या पाट जिस पर प्रायः पढ़ने-लिखने या खाना खाने का कार्य किया जाता है। टेबिल।
२ दावत का सामान, भोजन-सामग्री।

मेजपोस–सं०पु० [फा०मेजपोश] मेज पर बिछाया जाने वाला वस्त्र, चादर।

मेजर-सं०पु० [अं०] सेना का एक अधिकारी ।
वि०—मुख्य, बड़ा ।
मेजरनांमौ-सं०पु० [अ०महजर नांमा] १ कई व्यक्तियों द्वारा सामूहिक रूप में दिया जाने वाला आवेदन-पत्र ।
२ वह पत्र जिसमें कई आदमियों की गवाही हो ।
३ प्रमाण-पत्र,साक्षी पत्र ।
४ लोगों के हाजिर होने का एक स्थान ।
५ हत्या या हत्यारे के सम्बन्ध में साक्षीपत्र ।
रू०भे०—महजरनांमौ
मेट-सं०स्त्री०—मुल्तानी मिट्टी ।
उ०—१ मुरड़ मेट लाल अर पीळी, खणिज खंधेड़ौ खलक रौ । पलक पलक री पूज जोगौ, मांनी मुरधर मुलक रौ ।—दसदेव
उ०—२ नायण मुळकती थकी बोली—म्हां गरीबां रै अऊक पड़ै जद मेट, कोयला, चेपौ, मुरड सुं हर पाललां ।—फुलवाड़ी
सं०पु० [अं०] २ मजदूरों के ऊपर कार्य करने वाला अधिकारी, जमादार ।
३ जहाज पर कार्य करने वाला एक कर्मचारी ।
४ मेटने की क्रिया या भाव ।
रू०भे०—मेटि ।
मेट, मेटण-वि०—मिटाने वाला ।
उ०—१ संगट गद मेटण हरि संक ।—ह. नां. मा,
उ०—२ नमौ नारायण जोग- निवास,नमौ दुख मेट उधारण-दास ।
—ह. र.
मेटणछपा-सं०पु०—रात्रि को मिटाने वाला सूर्य । (डिं. को.)
मेटणतम-सं०पु०—१ अंधकार को मिटाने वाला, दीपक । (नां. मा,)
२ सूर्य, रवि ।
मेटणौ, मेटबौ-क्रि०सं० [सं०मृष्ट] १ समाप्त करना, नष्ट करना, मिटाना ।
उ०—१ आतम ऊंचा देखीयै, नींच न देखौ कोय । ऊची नींची मेट करि, हरीया हरि का होय ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज
उ०–२ विलोक लोक लोक को प्रलोक लोक की बदै । त्रिलोक सोक मेट देत फेट दे जदै तदै ।—ऊ. का.
उ०—३ मेटे मुरलोक पैठौ जळ मांह तठै इक अंड निपायौ तांह ।
—ह. र.
२ दूर करना, हरण करना, अलग करना, हटाना ।
उ०—१ ओगण मेटण हार, अमोलख ओखद इणमें । गूंद घणौ गुणकार, अव्यय सक्ति है जिण में ।—दसदेव
उ०—२ महादेवजी रै सामी देखनै कैवण लागा—थें भळै भौळा-संकर बाजौ,दीन-दुखियां रा दुख मेटण रौ गुमांन करौ । थांरै बैठां आ रचना व्है तौ साव खूटगी ।—फुलवाड़ी
उ०—३ हिव तुं जड उपगार करि, मेटि सहुनी पीड़ । स्युं भाखै छै मो भणी, भांजि दुहेली भीड़ ।—वि. कु.
उ०—४ अधम-उधारन याद करि, तन मन राखि नचिंत । जन हरीया कुंण मेटसी, सांई बिना सचिंत ।—
—स्रीहरिरांमदासजी महाराज
३ निवारण करना, समाधान करना, मिटाना, हल करना ।
उ०—१ आ थारे संका है तो चरचा करांला । इम कहि उण बेला इज तावड़े में विहार कीधौ । उतमूण में सूत्र उत्तराध्येन थी संका मेट दीधी ।—भि. द्र.
४ छोड़ना, त्यागना ।
उ०—मांनांपमान सुख दुख समांन । मद मोह मेट भगवंत भेट ।
५ बंद करना, रोकना ।
उ०—सगळी बात चुपचाप सुणियां पछै अबकी चकवी मूंडै बोली-इण देंत नै मारनै ओ अन्याव मेटियां बिना म्हैं तौ टूंच में चुग्गौ-पांणी ई नी झेलूं ।—फुलवाड़ी
६ टालना ।
उ०—चिड़ा रै वाचा देतां ईं चिड़ी तो प्रांण मुगत व्हैगी । चिड़ौ घणौ ई रोयौ-रींकियौ पण होणी नै कुण मेट सकै ।—फुलवाड़ी
७ शान्त करना ।
८ कम करना, घटाना, क्षीण करना ।
९ मारना, समाप्त करना, विनाश करना ।
उ०—किरमर वीर पुहप कछवाहौ, मांन'गयौ महपतियां मेट । अरि हंस रह्या पेट आपांणां,परहंस रहै अरचा चै पेट ।
१० लोपना, उलंघन करना ।
उ०—१ मुख रांम रांम करज्यौ मती, म्हांरौ कह्यौ न मेटज्यौ । चारणां वरण साधां चरण, भूल कदै मत भेटज्यौ ।—ऊ. का.
उ०—२ मेट सकइ न को मरजादा, हालइ सकौ मरजादा माहि ।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—३ आग्या हूं मेटि अठइ ताइ आई, वात इयइ रउ अउहिज विचार ।—महादेव पारवती री वेलि
११ कोई लिखावट या चिन्ह मिटाना, साफ करना ।
मेटणहार, हारौ (हारी), **मेटणियौ**—वि० ।
मेटिओड़ौ, मेटियोड़ौ, मेट्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मेटीजणौ, मेटीजबौ—कर्म वा० ।
मिटणौ, मिटबौ—अक० रू० ।
मेटली-सं० स्त्री०—रहट द्वारा कुए से पानी निकालने का एक मिट्टी का उपकरण ।
मेटि—देखो 'मेट' (रू. भे.)
उ०—माथउ धोइ मेटि, उभू सूरिज सांमुही । तउ ऊपन्नी पेटि, मोहण बोली मारुई ।—ढो॰ मा.
मेटियौ-सं०पु०—मेट के रंग का घोड़ा ।
उ०—के लीला के कागड़ा करड़ा हरड़ा केक । मुसकी नुकरा मेटिया इसड़ा तुरंग अनेक ।—पे. रू.
वि०—मेट के रंग का ।

मेटियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ समाप्त किया हुआ, मिटाया हुआ, नष्ट किया हुआ. २ दूर किया हुआ, अलग किया हुआ, हरण किया हुआ, हटाया हुआ. ३ निवारण किया हुआ, समाधान किया हुआ, हल किया हुआ. ४ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ. ५ बंद किया हुआ, रोका हुआ. ६ टाला हुआ. ७ शान्त किया हुआ. ८ कम किया हुआ, घटाया हुआ, क्षीण किया हुआ. ९ मारा हुआ, समाप्त किया हुआ, विनाश किया हुआ. १० लोपा हुआ, उलंघन किया हुआ. ११ साफ किया हुआ, मिटाया हुआ।

(स्त्री०मेटियोड़ी)

मेड—सं०पु०—तीर, बांण। (डिं. नां. मा.)

रू०भे०—मेढ़, मेंड,,

मेडक—देखो 'मींडकौ' (मह., रू. भे.)

मेडल—सं०पु० [ग्रं०] पदक, तमगा।

मेडसुनार—सं०पु०—स्वर्णकारों की एक शाखा।

मेडिकल—वि० [ग्रं०] १ चिकित्सा सम्बंधी।

२ औषधियों सम्बन्धी, भैषेजिक।

मेडिसन—सं०पु० [ग्रं०] औषधि, दवा।

मेडी—देखो 'मेढी' (रू. भे.)

मेडौ—देखो 'मैड़ी' (मह., रू. भे.)

उ०—मिलिया सुरवए कोडि तेत्रीस, गयणें दुंदुहि ब्रह ब्रहीय। मेडे बइठला राय कूंयार आवए कूंयरि द्रूपदीय।—सालिभद्र सूरि

मेढ—१ पशुओं के बांधने के लिए जमीन मे गाड़ा जाने वाला खूंटा।

२ देखो 'मींढ' (रू. भे.)

उ०—महा उमराव रांणा तणे मेढ रा। वेढ रा डाव वप चड़ेवांनी साख रा भड़ां भिड़ज्जां चढ़ै साबता, मरद् मेवासियां हार मांनी।
—दल्लौ मोतीसर

वि०—२ दृढ, अटल।

उ०—सायर तणें सरस साई दळ, मरबा छळां मांडियौ मेढ़। मांभी मेर न गौ मेरवड़ै, बिढवा रहियौ कांटां वेढ़।—दूदौ आसियौ

३ देखो 'मेड' (रू. भे.)

४ देखो 'मेड' (रू. भे.)

५ देखो 'मींढ' (रू. भे.)

६ देखो 'मेढी' (रू. भे.)

मेढक—देखो 'मींडकौ' (रू. भे.)

मेढकौ—देखो 'मींडकौ' (रू. भे.)

मेढ़ासींगी—सं०स्त्री० [सं०मेढ़ शृंगी] १ प्रायः मध्य प्रदेश व दक्षिण के जंगलों में पाई जाने वाली एक झाड़ीदार लता जो औषधि के रूप में काम आती है व इससे सर्प का विष दूर होता है।

२ देखो 'मींढ़ासींगी' (रू. भे.)

रू०भे०—मींडासींगी।

मेढ़ि, मेढ़ी—सं०पु० [सं०मेधी] १ रहट या खलिहान में अनाज के पौधों को कुचलने के लिये जोते जाने वाले बैलों में से अन्दर की ओर चलने वाला बैल।

उ०—रिण गाहटतै रांम खळां रिण, थिर निज चरण से मेढ़ि थिया। फिरि चड़ियें संचार फैरता, केकांणां पाई सुगह किया।
—वेलि

(सं० स्त्री०) २ खलिहान के बीचों बीच रोपा जाने वाला लकड़ी का स्तम्भ, खूंटा जिसके चारों ओर बैल घूमते हैं। (उ. र.)

३ स्तम्भ,।

४ घोड़े के सिर पर होने वाली एक भंवरी।

५ स्त्रियों के सिर की कनपटी के ऊपर की गूंथी हुई लटें जो चोटी के साथ गूंथी जाती है।

वि०—मुखिया, प्रधान, पंच।

उ०—१ चोड़ै धाड़ै चोर ढंग बिन ढेढ़स ढेढ़ी। जिकै नहीं किण जोग, मिल्या घर घर रा मेढ़ी।—ऊ. का.

उ०—२ खस्या खेमलिया भावलिया खांधै, वेफड़ दांमोदर चांमोदर बांधै। मुखिया मन मोहण दोहस घर मेढ़ी, गोढै ढेरौ व्है खूंणी में गेढी।—ऊ. का.

उ०—३ हसम सिखगार मुजरौ कर हालियौ, तेज अजरौ करै नजर तेढ़ी। कूंपहर अडर सुघड़ भंवर अणी रौ, मिसल मुरधर समर अमर मेढ़ी।—ठाकुर महेसदास कूंपावत रौ गीत

रू० भे०—मेडी, मैढी

मेढ़ीमणौ—वि०—१ वीर बहादुर।

उ०—१ चालसी जुध गयण बोम चेढीमणौ, मुगळां गाळसी जोम मेढीमणौ। तग्ह लंकाळ सी थाट तेढीमणौं, जाळसी क्यां कसर दाट वेढेमणौं।—बद्रीदास खिड़ियौ

उ०—२ आरबी बंब मादळ उभै, धुवै नाद बादळ धजर। मोनूं बताय वेढीमणा, नाह कठी टेढी नजर।—मे. म.

मेढौ—देखो 'मींढौ' (रू. भे.)

मेण—सं० पु०—देखो 'मैंण' (रू. भे.)

उ०—१ दिक्षा छे पुत्र दोहिली तो ने कहुं छुं जताय। मेण दांत लोहना चणा, कुण सकेला चबाय।—जयवांणी

उ०—२ जकौ संत जीवत सिंघ नै कोप करै तौ भसम करदै, उण रै सांमो मेण रौ सिंघ बापड़ौ कित्तीक देर टिक सकै।—फुलवाड़ी

मेणका—देखो 'मेनका' (रू. भे.)

मेणबती, मेणबत्ती—सं० स्त्री० [फा० मोम+बत्ती] मोमबत्ती, शमा।

मेणमाखी—सं० स्त्री०—मधु मक्खी।

उ०—एक मेणमाखी नै तिरस लागी तौ बा पांणी पीवण नै गी।
—फुलवाड़ी

मेणा—१ देखो 'मैणा' (रू. भे.)

२ देखो 'मेना' (रू. भे.)

३ देखो 'मैंना' (रू. भे.)

मेणियौ—सं० पु०—जिस पर मोम का रोगन चढ़ा हुआ हो।

मेणी, मे'णी—१ देखो 'मैंणी, मै'णी' (रू. भे.)

२ मेणा जाती की स्त्री ।
३ गुण्डी ।
मेणौ, में'णौ—देखो 'मं'णौ' (रू. भे.)
मेतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे.)
मेतळणौ, मेतळबौ—क्रि० स०—भूनना, तलना ।
उ०—कूमाहरै लड़ै खळ कीधा, **मेतळबौ** नह तास मुणौ । पवन भर्णंके सब रस परसै, सत्रां सगहस नांम सुणौ ।
—महाराज प्रथ्वीराज रौ गीत
मेती—सं० स्त्री०—सीस फूल (आभूषण) का वह भाग जिसमें धागा पिरोया जाता है ।
२ देखो 'मेथी' (रू. भे.)
मेथी—सं०स्त्री०—१ भारत में प्राय: सर्वत्र होने वाला पौधा, जिसकी खेती की जाती है । (उ. र.)
२ उक्त पौधे का बीज ।
वि० वि०—इस पौधे की पत्तियों की सब्जी बनती है । इसकी फली के दाने औषधि में काम आते हैं और कई प्रकार से लाभ दायक होते हैं ।
उ०—उसडना लाडू, दूधना लाडू, दहीथरांना लाडू, रवाना लाडू करकरी लाडू, आसधिना लाडू, मेथी ना लाडू.''''''।—व. स.
मेथौ—सं०पु०—वन मेथी । (वैद्यक)
मेद—सं०स्त्री० [सं०मेद:] १ चर्बी, बसा ।
२ शरीर के किसी भाग में चरबी की बढ़ी हुई गांठ, एक रोग । (डिं. को.)
उ०—ऊपरला होठ रै पसवाड़ै मूंछ्यां रा मांमूली सेनांण । गळा रै सांमौ सांम लांठी मेद ।—फुलवाड़ी
३ एक वर्ण संकर जाति जिसकी उत्पत्ति वैदेहिक पुरुष तथा निषाद जाति की स्त्री से होना माना जाता है ।
४ एक नाग का नाम ।
५ एक औषधि विशेष जो अष्ट गण वर्ग में से एक है तथा क्षय रोग की दवा है । (अमृत)
६ कस्तूरी ।
७ देखो 'मेदनी' (रू. भे.)
८ देखो 'मेघ' (रू. भे.)
मेदक—सं०पु० [सं०मेदक] शराब खींचने के काम आने वाला द्रव्य ।
मेदकर—सं०पु० [सं०मेदकर:] मांस । (डिं. को.)
मेदज—सं०पु० [सं०मेदजम्] १ हड्डी, अस्थि ।
२ एक प्रकार का गूगल ।
मेदड़ेचा—सं०स्त्री०—चौहान वंश की एक शाखा ।
उ०—कांन्ह **मेदड़ेचा** चहुवांण नैंथण अमरावत री दोहितौ ।
—बां. दा. ख्यात
मेदड़ेचौ—सं०पु०—चौहान वंश की मेदड़ेचा शाखा का व्यक्ति ।
मेदणी—देखो 'मेदनी' (रू. भे.)
उ०—मंडळ धू सथिर, अहराव सिर **मेदणी**, राव गांगौ कहै, त्यां गीत रहसी ।—राव गांगौ
मेदधरा—सं०पु० [सं०]शरीर की वह झिल्ली जिसमें चरबी रहती है ।
मेदनी—सं०स्त्री० [सं०मेदिनी] १ पृथ्वी, धरती, भूमि । (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)
उ०—मेछ उलट्टा **मेदनी**, फट्टा जांण समंद । बळ छुट्टा भड़ कायरां, देख प्रगट्टा दुंद ।—रा. रू.
२ जगह, स्थान, स्थल ।
३ संस्कृत का एक कोश ।
रू०भे०—मेद, मेइणी, मेदणी, मेदिन, मेदिनी,
मेदनीतळ—सं०पु० [सं०मेदिनीतल] भूमितल, पृथ्वीतल ।
रू०भे०—मेइणीतळ ।
मेदपाट—सं०पु०—मेवाड़ का एक नामान्तर ।
उ०—१ अकबर कीना आद, हींदू न्रप हाजर हुआ । **मेदपाट** मरजाद पग लागौ न प्रतापसी ।—दुरसौ आढौ
उ०—२ **मेदपाट** नै लाट वलि भोट अनै करणाट । पोतै वसि करि चालीयौ, ले निज सेना थाट ।—वि. कु.
मेदा—सं० स्त्री०—१ अष्ट वर्ग के अन्तर्गत एक औषधि ।
२ देखो 'मेधा' (रू. भे.)
मेदालकड़ी—देखो 'मैंदालकड़ी' (रू. भे.)
मेदिन, मेदिनी—देखो 'मेदनी' (रू. भे.)
उ०—करणीगर रूड़ा करै, करतै बिलंब न काय । मार उपावै **मेदिनी**, मुहुरत हेकण मांय ।—ह. र.
मेदिय, मेदियौ—सं० पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।
उ०—चीणउसीउं मलउसीउ मूगनउं मयउं मंगलिकं **मेदियउं** सीलउरं इत्यादि वस्त्रांणि ।—व. स.
मेदौ—सं० पु० [अ० मेद:] १ पक्वाशय, कोठा ।
२ पेट ।
३ देखो 'मैंदौ' (रू. भे.)
मेध—सं० पु० [सं० मेध:] १ यज्ञ हवन, मख ।
२ हवि, बलि ।
३ बलि दिया जाने वाला पशु या पदार्थ ।
४ सीमा, हद ।
रू० भे०—मेद ।
मेधज—सं० पु० [सं० मेधज:] विष्णु का एक नामान्तर ।
मेधा—सं० स्त्री० [सं०] १ वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा सोचने-विचारने व औचित्य समझने का कार्य होता है । बुद्धि, प्रज्ञा, मति ।
उ०—देवी मालणी जोगणी मत्त **मेधा** । देवी वेधणी सूर असुरां उवेधा ।—देवी०
२ बुद्धि, प्रज्ञा, मति । (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१ बालकांड दाख्यौ विमल **मेधा** मुझ परमांण । अवधकांड वरणूं अबै, सुणजै चिरत सुजांण ।—र. रू.

उ०—२ मेधा महंत दीपत दिगंत, आदांन ओघ अक्षय अमोघ। —ऊ. का.

३ स्मरण शक्ति, याददाश्त।

उ०—वड जगद विसतारै, निधि मेधा तुम्यौ नम।—रांमरासौ

४ मान्यता, धारणा।

५ सरस्वती का एक रूप विशेष।

६ सोलह मातृकाओं में से एक।

७ दक्ष प्रजापति की एक कन्या।

८ सीमा, हद।

उ०—कांम तौ वडौ नहीं, पण भोळी जनता माथै रोव मेधा वायरौ खाटै।—दसदोख

९ चोर। (अ, मा.)

१०—यज्ञ।

११ छप्पय छंद का एक भेद।

रू० भे०—मेहा, मंधा।

मेधादध, मेधादधि—सं० पु० [सं० मेधा+उदधि] १ बुद्धि का सागर।

२ कवि। (अ. मा.)

मेधामांन—देखो 'मेधावांन' (रू. भे.)

मेधावर, मेधावांन, मेधावाळ—वि० [सं० मेधा+वत्,मेधा+वरः] जिसकी बुद्धि तीव्र हो, बुद्धिमान, मेधावी।

उ०—कनियां ग्रहे हालिया किंकर। वदै अरज प्रोहित मेधावर। —सू. प्र.

मेधावी—वि० [सं० मेधाविन्] १ जिसकी बुद्धि विलक्षण हो, तीव्र हो, तेज, तीव्र बुद्धि वाला।

२ चतुर, बुद्धिमान।

३ पंडित, ज्ञानी, विद्वान।

रू० भे०—मेधावी

मेधि, मेधी—सं० पु०—कवि। (अ. मा.)

वि०—बुद्धिमान, चतुर।

मेन—सं० पु०—१ अंधकार।

२ कामदेव।

वि०—१ श्यामल, काला।

२ देखो 'मेण' (रू. भे.)

मेनक—१ देखो 'मेनका' (रू. भे.) (डिं. नां. मा.)

२ देखो 'मैनाक' (रू. भे.)

मेनका—सं० स्त्री० [सं०]—१ पुराणानुसार स्वर्ग की एक अप्सरा, जिसने विश्वामित्र ऋषि के साथ संयोग करके शकुन्तला को जन्म दिया था।

२ हिमालय की पत्नी व पार्वती की माता का नाम।

रू०भे०—मेणका, मेनक, मेणांका, मेणका, मैनंका, मैना।

मेनकात्मजा—सं० स्त्री० [सं०] १ शकुन्तला।

२ पार्वती, उमा।

मेना—सं० स्त्री० [सं०] १ हिमालय की स्त्री व पार्वती की माता का नाम।

२ देखो 'मैना' (रू. भे.)

रू० भे०—मयणा, मयना, मेणा।

मेनाक—देखो 'मैनाक' (रू. भे.)

उ०—गिरि मेनाक यूं वीनवै रे स्वांमी, थोड़ौ तौ मेटोनी थकांण। —गी. रा.

मेनाद—सं० पु० [सं० मेनादः] १ मयूर, मोर।

२ बकरा।

मेनाधव—सं० पुं०—हिमालय।

मेनिक—सं० पु० मछुवा, मल्लाह।

उ०—तसु करमे काल निवास जो,तूं तो वसीयौ रे मछ ना पेट मां रे लो। रहीयौ वलि मेनिक आवास जो,आंन पड्यौ रे दुखनी फेट मां रे लो।—वि. कु.

मेमंत—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

मेमटा—देखो 'मैमट' (रू. भे.)

मेमती, मेमत्तिय—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

उ०—सरगै सुरा न बकरा, ना बाजंती बीण। नां कांमणि मेमत्तिआं, भूरा डळा अफीण।—रा. सा. सं.

(स्त्री० मेमंती, मेमत्ती)

मेमल—सं० पु०—एक प्रकार का बरसाती कीड़ा।

मेमार—सं० पु० [अ०] इमारत बनाने वाला कारीगर,शिल्पी, राजगीर।

मेमूदी—देखो 'महमूदी' (रू. भे.)

मेमोरियल—सं० पु० [अं०] वह वस्तु, भवन, चिन्ह या प्रतीक जो किसी की यादगार हो, स्मारक।

मेमोरेंडम—सं० पु० [अं०] १ स्मरण-पत्र

२ वक्तव्य।

मेय—सं० स्त्री० [सं०] नापने-तोलने या परिमाण निकालने की क्रिया।

वि०—नापने-तोलने या परिमाण निकालने योग्य।

अव्य०—समान, तुल्य।

उ०—दिपैं मेय राधेय सरबस्व दांनी। महाकस्ट भीमांगवै भूप मांनी।—वं. भा.

सर्व०—मुझे, मुझको।

मेर—सं० पु० [सं० मेरु] १ अस्ताचल।

उ०—सो दिन मेर पेसतां जोइयां री जमीं छोड खरळां री सींव बड़िया।—कुंवरसी सांखला री वारता

२ सीमा, सरहद।

उ०—इत उणियारौ टूंक उत, मेर मिळत दहुं राज। तदपि असुर को चित बध्यौ, फिर घर दब्बन काज।—ला. रा.

३ राजस्थान की एक पहाड़ी जाति या इस जाति का व्यक्ति।

उ०—१ मैणौ पेणु मेर बावरा बिलळा बैता। भाळौ थोरी भीळ, रात रा मांगे रैता —ऊ. का

उ०—३ भील न कूं भलावियौ, नहीं मेरां मीणांह । तोनूं रांण भळावियौ, सोहड़ा सुकलीणांह ।—बां. दा.

४ डिंगल के वेलिया सांणोर छंद का एक भेद विशेष, जिसके प्रथम द्वाले में ८ लघु, २८ गुरु कुल ६४ मात्राएं तथा इसी क्रम से शेष द्वालों में ८ लघु, २७ गुरु कुल ६२ मात्राएं होती हैं।

५ देखो मेरु' (रू. भे.)

उ०—१ छबीलौ घणौं खास आवास छाजै, लखै घाट स्वाराट रौ पाट लाजै। निराळौ फबै फूटरौ भूंठ नांहो, मनों मेर रौ कूट बैकूंट मांही ।—मे. म.

उ०—२ कांमी नर कै कांम कौ, हरीया रतीयेक सुख । यांतै अधिकौ ऊपजै, मेर प्रवांणै दुख ।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ दादू माया फोड़ै नैन दो, रांम न सूझै काळ । साधु पुकारै मेर चढ, देख अग्नि की भाळ ।—दादूबांणी

उ०—४ क्या फेरै कर काठ की, मन की माळा फेर । जनहरीया माळा फिरै, विनां विचेरण मेर ।—स्री हरीरांमदासजी महाराज

उ०—५ सबळ सिंघ 'प्राग' का सो मेर व्रत धारी । आसकरन भाई जंग काच की सी भारी ।—रा. रू.

मेरउ—देखो 'मेरौ' (रू. भे.)

उ०—चंद्र बाहु चरण कमल, मधुकर मन मेरउ हो । अवर देव तिके वणराइ, नावइ कदि नेरउ हो ।—स. कु.

मेरगरंद, मेरगर, मेरगिर, मेरगिरव्वर, मेरगिरि, मेरग्गिर, मेरग्गिरि—देखो 'मेरुगिरि' (रू. भे) (ह. नां. मा.)

उ०—१ विभाड़ गयंद मयंद विध महि सांमंद इधकै मच्छरि । 'सूरउत' प्रगट नवनंद सिर, गरूअति मेरगिरंद सिरि ।—गु. रू. बं.

उ०—२ 'माला' हरौ मनमोट मोटै पाट मेरगिर । भाटियां भवाड़ै भला भींवजी भोवाळ ।—नैणसी

उ०—३ आसण अचल मेरगिर ऊपरि मन हसति गई बांधा । उलटा चल्यास वोडि पहूंता, पंडे पार न लाधा ।—ह. पु बां.

उ०—४ प्रभ्रिति इंद्र प्रताप, पाक पिंड तेजा प्रभाकर । क्रोध जम्म वैभव कुमेर, दिढ मेरगिरव्वर ।—गु. रू. बं.

उ०—५ गज रूपां सीस फाबि फरहरियां, उण उणिहार इक्खए । आरुहि करि अच्छर मेरगिरि स्रिगी विभ्रम स्रिगक पेख ए ।

—गु. रू. बं.

उ०—६ नरनाह नटै पलटै नहीं, मेरग्गिरि मजबूत सा । करि जोम वोम ओधस करै, धोम नयण अवधूत सा । —सू. प्र.

मेरडंड—देखो 'मेरुदंड' (रू. भे.)

उ०—१ पच्छिम दिसा की पाई वाटी, वंकनाळि की खुल्ही घाटी । मेरडंड मैं वसीया वासा, आगै अंतर उपजी आसा ।

—स्री हरिरांमदास जी महाराज

उ०—२ मेरडंड मधि डोरी लहै, ब्रह्म अगनि काया वन दहै ।

—ह. पु. बां.

मेरणौ—देखो 'बारणौ' (रू. भे.)

मेरपब्बै, मेरपरबत, मेरपरवत, मेरपहाड़—देखो 'मेरुपरवत' (रू. भे.)

उ०—द्वीपमांहि जंबूद्वीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप, परवतमाहि मेरपरबत, भूचर जीवने हेतु जलधर····। | व. स.

उ०—२ असमांन थंभ उडु इसौ, पकडै मेरपहाड नूं । सुरतांण खुरम जुध सूत्रियौ, पातसाह अल्लाह नूं ।—गु. रू. बं.

उ०—३ पड़ै दीठ आसेर ज्यों मेरपब्बै । दुती देखियां स्वरग रौ दुरग दब्बै ।—मे. म.

मेरम—१ देखो 'मरम' (रू. भे.)

उ०—सत सब्द री ऐसी लगी, उतरे नहीं खुमार । ज्यांरा मेरम साधो सोई लखै, पावै दसवें द्वार ।—हरिरांमजी महाराज

२ देखो 'महरम' (रू. भे.)

मेरवाड़ौ—सं०पु०—अजमेर तथा उसके आस पास के प्रदेश का पुराना नाम ।

मेरी—सर्व०—मैं (खुद) से सम्बन्धित एक सार्वनामिक विशेषण रूप ।

उ०—कसर न काई हरखाई बुद्धि मेरी हेरि । उकत उपाई मनभाई जैसी मांनी में ।—ऊ. का.

सं०स्त्री०—१ अहंभाव, अहंकार ।

२ मेर जाति की कोई स्त्री ।

मेरु—सं०पु०[सं०] १ एक पुराणोक्त पर्वत जो स्वर्ण का माना गया है ।

उ०—१ अभ्र मांहि जिम ध्र अडिग, सेसनाग पाताल । म्रत्युलोक मां मेरु जिम तिम ए वरण विसाल ।—वि. कु.

उ०—२ हेला तउ महेस्वर तणी, स्रस्टि ब्रह्मातणी, प्रज्ञा ब्रहस्पति तणी, प्रतिज्ञा फरुसरांम तणी, मरयादा समुद्र तणी, दांन बलि तणउं, अवस्टंभ मेरु तणउ ।—व. स.

२ जप करने वाली माला के बीच का बड़ा मणिया ।

उ०—सैंकड़ां सूरां नूं साथी करि महा रुद्र री माळा मैं आारा मुंड रौ मेरु चढाइ रुंड थकौ भी धारा मैं तिलतिल पळचरां री पांती पुदगळन राखि इस्टलोक पूगियौ । —वं भा.

३ बीणा का एक अंग ।

४ छन्द शास्त्र में एक गणना-पद्दति, जिसके अनुसार किसी छंद के लघु-गुरु ज्ञात किये जाते हैं।

५ छप्पय छन्द का ४० वां भेद, जिसमें ३१ गुरु तथा ९० लघु के अनुसार १२१ वर्ण व १५२ मात्राएं होती हैं।

६ हुक्के का एक भाग ।

७ पर्वत, पहाड़ ।

८ पर्वत-शिखर

वि०—१ अटल, अडिग, दृढ

२ देखो 'मेरुदंड'

३ देखो 'मेर' (रू. भे.)

रू. भे.—मेरू, मेरौ,

मेरुगिर, मेरुगिरि, मेरुगिरी—सं०पु० [सं०मेरु-गिरि] सुमेरु पर्वत ।
उ०—समुद्र रहइं लवण मूंठि भेट, रोहणा चलनई रत्न भेट, गंगा रहइं कनकफल भेट, मलयाचलनइं चंदन भेट, **मेरुगिरि** नइ सुवरण्ण, भेट कल्पवृक्ष नइं कांइ फल भेट ? —व. स.
रू०भे०—मेरगरंद, मेरगर, मेरगिर, मेरगिरव्वर, मेरगिरि, मेरग्गिर, मेरग्गिरि ।

मेरुडंड, मेरुदंड—स०पु० [सं०मेरु दण्ड] १ शरीर की पीठ में, गर्दन से लेकर कमर तक की हड्डी, रीढ़ की हड्डी ।
२ दो ध्रुवों के मध्य की एक कल्पित रेखा ।
३ किसी बड़े तम्बू के बीच लगा बड़ा स्तम्भ ।
रू०भे०—मेरडंड,

मेरुदेवी—सं० स्त्री० [सं०] ऋषभदेव की माता ।

मेरुधाया—सं० पु० [सं० मेरु धामन्] महादेव, शिव ।

मेरुपरबत, मेरुपरवत—सं० पु० [सं० मेरु+पर्वत]—सुमेरू पर्वत ।
रू० भे०—परबतमेर, परबत्तमेर, मेरपरबत्त, मेरपरवत, मेरपव्वै, मेरपहाड़ ।

मेरुम—वि० [सं० मरहूम] स्वर्गीय, मृत, मराहुआ । (मा. म.)

मेरुसिखर—सं० पु० [सं०] १ मेरु पर्वत की चोटी ।
२ हठयोग के अनुसार, मस्तक के छः चक्रों में से सब से ऊपर का चक्र ।

मेरू—देखो 'मेरु' (रू. भे.)
उ०—फिरिया नहिं फेरू मारग **मेरू**, तेरू पार तिरंदा है ।
—ऊ. का.

मेरूवन—सं० पु०—मेरू पहाड़ के आस-पास का जंगल ।
उ०—नंदीसर विदिसें सोळस कुळगिरि तीस । **मेरूवन** असी दस कुरु गजदते वीस । मांनसोत्तर परबत च्यार च्यार इखु कार ।
—वृ. स्त

मेरे, मेरैं—सर्व०—१ 'मेरौ' का बहुवचन एक सर्वनाम ।
उ०—नेरे सुनौ जसवंत नरेस्वर, तेरे बिना हम **मेरे** न तेरे ।
—ऊ. का.
२ देखो 'म्हारै' (रू. भे.)
उ०—जद बौ मालो बोल्यौ—**मेरै** तौ भूत मुकी री दे नांखी ।
—दसदोख

मेरेय—सं० स्त्री० [सं० मैरेय] एक प्रकार की शराब, मदिरा ।

मेरौ—सर्व०—'मैं' का सम्बन्ध कारक एक सार्वनामिक रूप 'मेरा' ।
उ०—१ तूं सुत रायांसिघ रा, रासा **मेरौ** प्रांण । जो हूं चाहूं सो करै, तौ आपूं जोधांण ।—रा. रू.
उ०—२ मन **मेरा** सेवग भया लगा सबद गुर कांन । रोंम रोंम में भिद गया, हरीया किधू न जांन ।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज
सं० पु०—१ मेर जाति का व्यक्ति ।
२ देखो 'मेरु' (रू. भे.)
उ०—१ धारा धरस्य धारासंख्या, भूतले रेणुकण गणना, समुद्रे नीर बिंदु संख्या, रोहणे रत्न संख्या, दिवि तारासंख्या, **मेरौ** सुवरण्ण संख्या,—व. स.
उ०—२ जोधपुर तुल **मेरौ**, तेरह साखां कोडि तेतीसौ । तथौ 'गजसाह' इंद्रौ, चित चित विसेखांयु ।—गु. रू. बं.

मेळ, मेल—सं० पु० [सं०मेल:] १ दो या दो से अधिक प्राणियों का मिलाप, भेंट, समागम, संयोग ।
उ०—१ ईडरिया आचार री, वीर चढै तौ वेळ । हसत चढ़ै चारण हुवै, माया सरसत **मेळ** —बां. दा.
उ०—२ तिकण अवंती पुरी रै परै पंच कोस रै प्रमांण पूगि वीरां री बासठि हजार सेना रै साथ **मेळ** पायौ ।
—वं. भा.
२ मिलने या मिले हुए होने की अवस्था या भाव ।
३ परस्पर प्रेम, एकता, संगठन ।
उ०—१ हाडोती हिळ मिळ हुई, **मेळ** कियौ मेवाड़ । घर जसवंत रै घुमंड नै, ढूकी धर ढूंढाड़ ।—ऊ. का.
उ०—२ वरस तयांळौ दुंद धर दौड़े कमंध दुकाळ । जोस अछायौ **मेळ** कज, आयौ दुरजणसाळ ।—रा. रू.
४ स्नेह, प्रेम, मित्रता, दोस्ती । (अ. मा., ह. नां. मा.)
उ०—१ हद धरम १ सीम २ गणिया रहण बणिया **मेळ** सुवेळ बधि । खणियां १ न होड नाडां खटै, ऊफणियां हाडा उदधि ।—व. भा.
उ०—२ भारथ मत कर भांमणी, मौ भारथ नंह **मेळ** । वापी कूप बताव विस, कै कर म्हांसूं केळ ।—बां. दा.
उ०—३ साहूकार दोइ एकै सहर मांहै रहै । दोऊ द्रव्यवंत मोटा आदमी, वडा सुं सगायां । साहूकारे आपस में वडौ **मेळ** छै ।
—मत री बांधी लिखमी री वात
५ सुलह, समझौता, संधि ।
उ०—बीजै दिन आजमखांन नवौनगर लूंटियौ । पछै जांम बात कर **मेळ** कियौ —नैणसी
६ समता, बराबरी, जोड़ ।
७ ताल-मेल, सामंजस्य ।
उ०—मिनख री मरजादा सूं लुगाई री मरजादा **मेळ** नीं खावै ।
—फुलवाड़ी
८ अनुकूलता, उपयुक्तता ।
उ०—तिण समै चाचौ मेरौ आप रै साथ लै साजबाज सुं चढ़ीया। रांणाजी दिसा उनाळी ऊभी मांहै चालीया । तरै रांणै मोकळजी देख कह्यौ—आज खातण वाळा विपरीत दीसै **मेळ** में तो नहीं ।
—रावरिड़मल री बात
९ मिश्रण, मिलावट ।
१०—सम्बन्ध लगाव ।
उ०—१ रांणी राजा नै होळै सूं मूंडौ मस्कोर न कह्यौ—थांरै पगां

सांमी देखनैं आप ग्रांरै मन री बात नीं जांण सको ? कंवरां रै बोल अर मंत्रियां रै पगां में कित्तौ मेळ है ।—फुलवाड़ी

उ०—२ दुनियां में कोई अमरता रौ परवांनौ लिखायनैं नीं लायौ। जीवां नै मारतां एक दिन खुद नै ई मरजाणौ है । मरियां पछै किणी नै नीं मारणौ। जीवण अर मरण री तौ आपस में मेळ है। —फुलवाड़ी

११ यात्रा या किसी कार्य में होने वाली सहगमन की अवस्था या भाव, सहचार्य, साथ ।

१२ एकाकार होने की अवस्था, विलय ।

उ०—सही सुखजोत हि जोत समाय, रही नहिं अंतर में अंतराय। करै निज हंस दुहूं निज केल, मिल्यौ परमातम आतम मेळ। —ऊ. का.

१३ काल-चक्र या घटनाक्रम से किसी घटना विशेष का बनने वाला कारण, योग, संयोग ।

उ०—दुख, कळेस अर संताप बिना सुख अर आणंद रौ साचैलौ साव ई नीं आवै। दोनूं बातां रै मेळ सूं सगळी बातां सांतरी लागै। —फुलवाड़ी

१४ इंतजाम, व्यवस्था, सराजाम ।

उ०—पण जांनियां रै जीमण वास्तै चांदी रा बरतन कम पड़ैला। पच्चास थाळ बाटकियां रौ मेळ तौ अपांरै घराघरू है। —फुलवाड़ी

१५ वृद्धि ।

उ०—भांभरकै घड़ी रात थकां वा ई धूं घट धूं घट ! करतां करतां पांच सात दिनां पछै पींजांरौ कळदार रिपियौ नोळी में भेळ दियौ। पूरा सौ रिपियां रौ मेळ ! दोनूं लोग लुगायां रै हरख रौ पार नीं।—फुलवाड़ी

१६ टकराव ।

उ०—मैंगळ एथी आव मत, वाघां केरी वाट। सांप अंगूठा मेळ ज्यूं, कदियक हुसी कुघाट।—बां. दा.

१७ समूह ।

उ०—एक वरदत्त पुत्र अक्षोभ नौ, दोय से पांच यादव भेळ रे । स्रीनेम साथै सेजम लियौ, ओ सहस्र पुरुस रौ मेळ रे। —जयवांणी

१८ फौज, सेना ।

१९ मौका, अवसर ।

२० बरात के स्वागतार्थ कन्या-पक्ष व वर पक्ष के लोगों का मिलन ।

२१ विवाह के पहले दिन कन्या के पिता द्वारा अपने पक्ष को दिया जाने वाला भोज ।

२२ मृतक का ग्यारवां दिन ।

२३ द्वादसे के दिन आए हुए व्यक्तियों का समूह ।

उ०—सारा सुण उदास हुवा। पांणी दियौ । बारवें दिन सारौ मेळ भेळौ हुवौ । खरचकर पाघ बंधाई। —सूरे खींवै कांधळोत री बात

२४ गाय के स्थनों में दूध आने की स्थिति ।

२५ आय-व्यय का प्रतिदिन किया जाने वाला लेखा-जोखा ।

२६ प्रकार, वर्ग, जाति ।

ज्यूं०—अठै सब मेळ की चीजां मिळ सकै।

२७ वह गाड़ी, जिसमें डाक जाती-आती हो।

२८ डाक से भेजी जाने वाली चिट्ठी, पार्सल आदि ।

२९ छंद का तुकान्त चरण ।

३० योग, जोड़ ।

उ०—चवदै चाळ ढुंढाहड़ कहीजै तिण रौ मेळ गांव १४४० । —नैणसी

वि०—१ समान, तुल्य ।

उ०—लड़ंग लाख तुंग तुंग संग जुंग हल्लये। चढ़ै कि वेळ आकुळै समुद्र मेळ चल्लये।—रा रू.

रू०भे०—मेलइ

मे'ल—देखो 'महल' (रू. भे.)

मेलइ—देखो मेळ' (रू. भे.)

उ०—हूं जांणूं जइ नइ मिलूं रे लो। साहिब नइ इकवार रे सनेही। सयणा रइ मेलइ करी रे लो, सफळ हुवइ अवतार रे सनेही। —वि. कु.

मेळकी—स०स्त्री०—एक घास विशेष जिसमें से दाने निकाल कर खाने के काम में लिए जाते हैं।

मेळग—सं०पु०—१ संग्रह ।

२ देखो 'मेळू' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—जग मुगति भुगति दाता जगा, दांन मांन वंछत दियै। पारथै किसूं मेळग कुपह, प्रभूनाथ पारत्थियै।—जगौ खिड़ियौ

मेळगर—वि०—१ मिलाप या मेल करने वाला।

२ एकत्र करने वाला, इकट्ठा करने वाला ।

उ०—मरसी माया तणा मेळगर,कदे न पर उपगार करै। 'माधौ'अमर हुओ यळ माहै, 'माधौ' कमधज नांज मरै।—ओपौ आढ़ौ

सं०पु०—१ दर्शकगण ।

उ०—आगळि रितुराय मंडियौ अवसर, मंडप वन नीभरण म्रदंग। पंच बांण नायक गायक पिक, वसुह रंग मेळगर विहंग।—वेलि

२ एक वर्ग विशेष ।

उ०—खरड लाठा माठा रंगाचारय उचित बोला साहस बोला, मोट बोला मेलगर मांमगर कउतिगीया कुहटीया नट वट गांछा छीपा परियटा·······।—व. स.

मेलड़ियां—देखो 'मावलियां' (रू. भे.)

मेलड़ौ—देखो 'महल' (अल्पा; रू. भे.)

उ०— हाट हवेली मेलड़ा रे, कीना होडा होड। जमा पाप तूं संचने रे प्रांणी, जाय पलक में छोड।—जयवांणी

मेळची-सं०पु०—मित्र, दोस्त ।

मेलजोल-सं०पु०—१ मैत्री, दोस्ती, प्रेम ।
२ परिचय, मुलाकात ।
३ सम्बन्ध ।
४ सुलह, संधि ।

मेलट्रेन-सं०स्त्री० [ग्रं०] वह रेलगाड़ी जिसमें डाक रहती है और जो बड़े बड़े स्टेशनों पर ही रुकती है ।

मेळण, मेलण-सं० पु०—१ दूध को जमाने के लिये उसमें डाला जाने वाला दही, छाछ आदि कोई खट्टा पदार्थ । (जावण) ।
२ रोटी के लिये, आटे को गूंदने से पूर्व उसमें मिलाया जाने वाला घी । (मोवण)
३ गोबर में, ऊपले बनाते समय, मिलाया जाने वाला, घास-फूस, चारे आदि का चूरा । (घासण) ।
४ कतिपय खाद्य पदार्थ में पड़ने वाले मसाले ।
उ०—जदि मीसण लै सस जिकौ, आप गोळ द्रुत आइ । बणवायौ जिण पळ विविध, मेळण उचित मिळाइ ।—वं. भा.
५ मिश्रण, मिलावट ।
६ सम्बन्ध ।
उ०—केइ उपाय करी मेलण करूं,परिग्रह विविध प्रकार । विरति करूं पिण मन न रहै वाले, तौ किम हुवै भव पार निस्तार ।
—ध. व. ग्रं.
वि०—७ मेल करने वाला ।
रू० भे०—मळावण, मळेवण, मेळवणीं, मेळवणी, मेळण

मेळणौ, मेळबौ-क्रि० स० [सं० मेलनं] १ भेंट कराना, साक्षात्कार कराना, मिलाना ।
उ०—कह्यौ-राजा-सूं काहरां मेळिस्यौ ? कह्यौ जी ! वेगौ ही मेळिस्यां , थे ऊतरौ, जिकूं चाहीजै सू सरब थां नूं दिरावीस, थांहरा घणा वांना करीस,अर थे मांगिस्यौ सू राजा देसी ।
—सयणी री बात
२ सम्मिलित करना, एकत्र करना, इकट्ठा करना ।
उ०—१ पारबती पिता तणइ थळ पुहती, आयउ ईसर आपरै आवास । परणीजण नूं वळै नवी परि, दळ मेळवा पठावै दास ।
—महादेव पारवती री वेलि
उ०—२ अनंत कोट व्रह्मंड तणा इंद्र, तन खोहण म्रतलोक तणा । सात पायाळ तण इंद्र साखइ, घणूं सुं थक मेळिया घणा ।
—महादेव पारवती री वेलि
३ जोड़ना, भिड़ाना, मिलाना ।
उ०—पण बापजी, चुगलखोरां रौ कांई सेड़ौ । पांवडे पांवडे चुगलखोर भरचा । एक री इक्कीस मेळ राजाजी नै भिड़ावैला ।
—फुलवाड़ी
४ प्रेम करना, स्नेह करना ।
ज्यूं०—मन मेळणौ ।
उ०—कर दोड़ां दिस कमधजां, गौ मेड़ते सिताब । मोहकम रौ मन मेळवां, मिळ पूछियौ जबाब ।—रा. रू.
५ किसी को अपनी ओर करना, मिलाना ।
उ०—त्रय भीड़ दक्खिण तणा, वदिया पहलै बाद । धुर चोथौ पच्छिम धणी, मेळै अनुज मुराद ।—वं. भा.
६ जोड़ना, अड़ाना, सटाना, संलग्न करना ।
उ०—परम सिध म प्रांणी डारं उनमनि लागा प्रेम वंधारं । आतम परमातम सूं मेळौ, परमहंस सूं दिलि मिळि खेलौ ।—ह. पु. वां.
७ घाव या जख्म की चिकित्सा करना ।
८ मिश्रण करना, मिलाना ।
उ०—अब कंठीर सूंडाळ,निळियां प्राक्रम मेळिजै । क्यूं इयको अंग आदि सै, पोह असुरेस प्रौंचाळ ।—मा. वचनिका
९ आंख बंद करना, नींद लेना ।
उ०—राति सखी इण ताळ मइं, काइज कुरळी पंखि । उवै सरि, हूं घरि आपणइ, बिहूं न मेळी अंखि ।—ढो. मा.
१०—धारण करना, ग्रहण करना, अपने में रमाना ।
उ०—यूं कंमधज्ज धरै धू अंबर, ज्यूं गंगा मेळै जोगेसर । आदर जोध विरोध असंका, बंट रतन्नै ज्यां सुर बंका ।—रा. रू.
११ गाय भैंस आदि को उनका बच्चा मिला कर दूध देने की स्थिति में करना ।
उ०—मांवां टाबर मेळवै, लूआं अंग बचाय । छाती मिळतां छटपटै, बिलख बिलख रह जाय ।—लू
मेळणहार, हारौ (हारी), मेळणियौ—वि० ।
मेळिओड़ौ, मेळियोड़ौ, मेळ्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मेळीजणौ, मेळीजबौ – कर्म वा० ।
मिळणौ, मिळबौ - अक० रू० ।

मेलणौ, मेलबौ-वि०स० [सं०मेलनं] १ जाने के लिये प्रेरित करना, प्रस्थान कराना,भेजना, पठाना ।
उ०—१ आप अजैगढ़ आवियौ, माप जकै असमांन । वेग सिहाय विहारियां मेलै मुकरबखांन ।—रा. रू.
उ०—२ उदैपुरिया बाजार में एक मैंड़ी जाची । आप बैठा ने साथा नें मेल उपगरणा मंगाय लिया ।—भि. द्र.
उ०—३ साळा बतळावै अर साळी मनुवार करै तथा सैंग लोग हाथाजोड़ी कर रैया है । पण हां कोई नीं करा सकै । छेकड़ बाप'र घर हाळा पारा नै मेलणै रौ हंकारौ भरै, जद जुंवाई आपरौ जैक्योड़ौ ऊंट त्यार करै है ।—दसदोख
उ०—४ हालौ धांम दिवाडिहां, अथवा इण नूं ओर । पण अब मेलां साह पग, जांणै जय नय जोर ।—वं. भा.
२ किसी वस्तु,संदेश,समाचार आदि को किसी के द्वारा,एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाना ।
उ०—१ फोग केर काचर फळी, पापड़ बेघर पात । बड़ियां मेलै

बांगिया, सांगरियां सोगात ।—बां. दा.

उ०—२ जयमल 'पत्रै' जबाब जद, हजरत तणी हजूर । मंत्र करै लिख मेलिया, सांभळ हरखै सूर ।—बां. दा.

उ०—३ जद चतुरोजी स्रावक बोल्यौ-थें तौ थोड़ा कोस हालौ अनें हूं कासीद मेलनें ठांम ठांम खबर कराय देसूं सो थांनै मन करनें पिण कोइ बंछै नहीं ।—भि. द्र.

उ०—४ न्रप मेलै आया नगर, दोड बधाईदार । कही विगत विध विध करै, आनंद भरै अपार ।—र. रू.

उ०—५ राजा कागळ मेलियौ, लिक्खाड़े चड चोट । जिम जांणै तिम मारलै, कुंवर कणंगिर कोट ।—गु. रू. ब.

३ कोई वस्तु किसी स्थान पर रखना, धरना, टिकाना ।

उ०—१ अर महीप भी आप री माळा नूं मंच पर ही मेलि एक दिसा रौ मारग गहियौ ।—वं. भा.

उ०—२ केइ कहै पोथी आंगणै मेलणी नहीं । पूठ देणी नहीं । पोथी पांनां तो ग्यांन है । तिण री आसातना करणी नहीं ।
—भि. द्र.

उ०—३ आपरै पगां में पोत्यौ मेलूं म्हनै व्है जकी बात बतावौ ।
—फुलवाड़ी

उ०—४ पेमजी वैडो च्योड़ै राज री रकम रा आयोड़ा ढाई हजार रिपियां री थैली भरियोड़ी मेल दी, दलाल-देवता रै आगै बगा नांखी अर कैयौ–कीं बता ले जावौ सा ।—दसदोख

४ किसी को किसी के पास रहने के लिये छोड़ना ।

उ०—१ पछै बांमण चाल्यौ सो बेटा ने ठाकुर तीरै मेले गयौ ।
—गांमरा धणी री बात

उ०—२ मुवा बालक मुलसा जणेजी, ते मेले तुम पास ।
—जयवांणी

५ त्यागना, छोड़ना ।

उ०—१ नैमजी हो सउ मीनति करतां थकां हो राजि, मत जावउ मुझ मेलि ।—वि. कु.

उ०—२ वननाथ न मेलै वासना,टिकियौ मेरज टल टळै । सेवगां तणा मेहासदू साद न करनी संभळै ।—चौथ बीठू

६ धारण करना, मानना ।

उ०—हरीया हरि का अनंत गुण, लिख लिख हिरदै मेल । नीर न पीयु डरपती, मत औ देत उगेल ।—स्त्री हरिरांम दासजी महाराज

७ देखो 'मेळणौ, मेळबौ' (रू. भे.)

मेलणहार, हारौ(हारी), मेलणियौ—वि० ।

मेलिओड़ो, मेलियोड़ौ, मेल्योड़ो—भू० का कृ० ।

मेलीजणौ, मेलीजबौ—कर्म वा० ।

मेल्हणौ, मेल्हबौ, मेल्हवणौ, मेल्हवबौ, मेहलणौ, मेहलबौ मैलणौ, मैलबौ, मैल्हणौ, मैल्हबौ—रू० भे० ।

मेळप–सं०स्त्री०—१ मित्रता, दोस्ती ।

२ स्नेह व प्रेम होने की अवस्था या भाव ।

मेळवण, मेळवणी—देखो 'मेळण' (रू. भे.)

उ०—मांहे कपूर कसतूरी घातजै छै । केसर री रंग दीजै छै । सूंधै चमेली री मेलवणी दीजै छै —रा. सा. सं.

मेळसरुज, मेळसरोज–सं०पु०—मक्खन, नवनीत । (अ. मा.)

मेलांण–सं०पु०—१ यात्रा के बीच किया जाने वाला विश्राम, पड़ाव ।

उ०—साख अनंत लाख भड़ साथै । मग मेलांण दियौ सुण माथै ।
—रा रू.

२ स्थान, मुकाम ।

३ रहट की माल का एक अतिरिक्त भाग जो पानी के नीचा ऊंचा हो जाने पर माल को घटाने बढाने के लिये जोड़ा जाता है ।

४ महल, प्रासाद आदि ।

रू०भे०—मेलांण, मेल्हांण, मेहलांण, मैलांण, मैल्हांण, मैहलांण ।

मेळाऊ–सं०पु०—१ एकत्रित जन समूह, भीड़ ।

उ०—सगळे असुरे भार संभाया. अधपत सुहड़ ठिकांणै आया । बाजी निसबळ किताइ पुळांणा, मेळाउवां वदन मुरझांणा ।
—रा. रू.

२ शत्रु–पक्ष ।

उ०—सुणियौ 'अजन' महाबळी, खळ नाठौ पुर छोड । मेळाऊ साथे हुवा, खाटी हाथे खोड़ ।—रा. रू.

वि०—गद्दार, धोखे बाज, शत्रु पक्ष में मिलने वाला ।

उ०—'सांमंतसिंघ' जोगीदासोत नै भाटी 'रांमसिंघ' मुकनदासोत फौजबंधी कीवी नै नबाब रौ मेळाऊ मारियौ सौ विगत कही ।
—रा. रू.

२ मिले हुऐ, एक साथ, इकट्ठे, एकत्र, मिश्रित ।

उ०—रूकहथौ भाटी 'रैणायर' मांझी तीन साथ दळ मोगर । वांरा भड़ मेळाऊ आया, चंचळ थळवट दिसा चलाया ।—रा. रू.

मेळाणौ, मेळाबौ–क्रि०सं० [मेळणौ क्रि० का प्रे०रू०] १ भेंट करवाना, साक्षात्कार, करवाना मिलवाना ।

२ सम्मिलित करवाना, एकत्र करवाना, इकट्ठा कराना ।

३ जुड़वाना, भिड़वाना, मिलवाना ।

४ प्रेम कराना, स्नेह कराना ।

५ किसी को अपनी ओर करवाना, मिलवाना ।

६ अड़वाना, सटवाना, जुड़वाना ।

७ घाव या जख्म की चिकित्सा करवाना ।

८ मिश्रण कराना, मिलवाना ।

९ आंख बंद कराना, नींद लेने के लिये प्रेरित करना ।

१० धारण कराना, ग्रहण कराना, अपने में रमवाना ।

११ गाय, भैंस आदि को उनका बच्चा मिलवाना, दूध देने की अवस्था में करवाना ।

मेळाण हार, हारौ(हारी), मेळाणियौ—वि० ।

मेळायोड़ौ—भू० का० कृ०।
मेळाईजणौ, मेळाईजबौ—कर्म वा०।
मेळावणौ, मेळावबौ—रू० भे०।

मेलाणौ, मेलाबौ–क्रि०स [मेलणौ क्रि० का प्रे०रू०] १ प्रस्थान करवाना, भिजवाना, पठवाना।
२ किसी वस्तु, संदेश, समाचार आदि को किसी द्वारा, एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचवाना।
३ कोई वस्तु किसी स्थान पर रखवाना, धरवाना, टिकवाना।
४ किसी को किसी के पास रहने के लिये छुड़वाना।
५ त्याग करवाना, छुड़वाना।
६ धारण करवाना, मनवाना।
मेलाणहार, हारौ(हारी), मेलाणियौ—वि०।
मेलायोड़ौ—भू० का० कृ०।
मेलाईजणौ, मेजाईजबौ—कर्म वा०।
मेलावणौ, मेलावबौ, मेल्हाणौ, मेल्हाबौ, मेल्हावणौ, मेल्हावबौ, मेहलाणौ मेहलाबौ मेहलावणौ मेहलावबौ मैलाणौ, मलाबौ'
—रू० भे०

मेळाप, मेलाप—देखो 'मिळाप, मिलाप' (रू. भे.)
उ०—१ कब गिरनार गडइ चढूं जपतउ अहनिसि जाप, प्रापति बिण किम पांमिइं, मन मांन्या मेलाप।—स. कु.
उ०—२ उमड़ती जोबन कांठळ आज, रूप रै रिमझोळां री घात। मनां रो दो दिन रौ मेळाप, बणसी दो दिन बीती बात।—सांझ

मेळापौ, मेलापौ—देखो 'मिळाप' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—पसुय पुकार सुणी रथ फेरघउ, राजुल करत विलापा हो। सरज्यां बिन सखी क्युं कर पाइयउ, मन मांन्या मेलापा हो।
—स. कु.

मेळाबड़ौ—देखो 'मेळावौ' (रू. भे)
उ—कर जोड़ 'नरपति' कहै, धार थी आवज्यौ भोज नरेस। मात पिता मेळाबड़ौ, सांभरघा रास होई पुण्य प्रदेस।—बी' दे.

मेलामंतर—सं० पु०—वाम मार्गियों का मंत्र, छोटा मंत्र। (तांत्रिक)

मेलायत—देखौ 'महलायत' (रू. भे)
उ०—१ साथ्यां की मेलायत देख, नाटक त्रिया सुख विसेख।
—जयवांणी

मेळायोड़ौ–भू० का० कृ०—१ भेंट करवाया हुआ, साक्षात्कार करवाया हुआ, मिलवाया हुआ. २सम्मिलित करवाया हुआ, एकत्र करवाया हुआ, इकट्ठा करवाया हुआ. ३ जुडवाया हुआ, भिड़वाया हुआ, मिलवाया हुआ. ४ प्रेम कराया हुआ, स्नेह कराया हुआ. ५ अपनी ओर करवाया हुवा, मिलवाया हुआ. ६ अड़वाया हुआ, सटवाया हुआ. जुड़वाया हुआ. ७ चिकित्सा करवा कर मिलवाया हुआ, (घाव-जख्म). ८ मिश्रण करवाया हुआ, मिलवाया हुआ. ९ नींद लेने के लिये प्रेरित किया हुआ, आंख मिचवाया हुआ. १० धारण करवाया हुआ, ग्रहण कराया हुआ, अपने मे रमवाया हुआ. ११ बच्चा मिला कर दूध देने की स्थिति करवाया हुआ, (गाय भैंस आदि)
(स्त्री० मेळायोड़ी)

मेलायोड़ौ–भू०का०कृ०—१प्रस्थान करवाया हुआ,भिजवाया हुआ,पठवाया हुआ. २ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचवाया हुआ (संदेश) ३ रखवाया हुआ, धरवाया हुआ, टिकवाया हुआ. ४ रहने के लिये छुड़वाया हुआ. ५ त्याग करवाया हुआ, छुड़वाया हुआ. ६ धारण करवाया हुआ, मनवाया हुआ।
(स्त्री० मेलायोड़ी)

मेळावउ, मेलावउ—देखो 'मेळावौ' (रू. भे.)
उ०—१ घर धंधइ पंडिउ सह कोइ, कुटुंब मेलावउ खावा होइ। खत्र अखत्र कीधां सवि वार,डोकर नी कोइ न करइं सार।
—वस्तिग
उ०—२ पनहर वरस विछोहउ हुओ,घणइ कस्टि मेळावउ थयउ। वळे विछोही जउ करतारि, तउ इण भवि मुझ एहज नारि।
—ढो. मा.

मेलावड़ौ—देखो 'मेळावौ' (अल्पा; रू. भे.)
उ०—मन वल्लभ मेलावड़ौ रे पुण्यै लहीये एह।—स्रीपाजरास

मेळावण—देखो 'मेळावौ' (रू. भे.)
उ०—भूरै मुखड़ै पर स्वेदण कण भारी, पहुंची पोळछ में प्रीतम री प्यारी। नाचै खेलावण मेळावण नांही, जोवण जोगी वा बेळा जग मांही।—ऊ. का.

मेळावणौ, मेळावबौ—देखो 'मेळाणौ, मेळाबौ' (रू. भे.)
मेळावणहार, हारौ (हारी), मेळावणियौ—वि०।
मेळाविग्रोड़ौ, मेळावियोड़ौ, मेळाव्योडौ—भू० का० कृ०।
मेळावीजणौ, मेळावीजबौ—कर्म वा०।

मेलावणौ, मेलावबौ—देखो 'मेलाणौ, मेलाबौ' (रू. भे)
मेलावणहार हारौ (हारी), मेलावणियौ—वि०।
मेलाविग्रोड़ौ, मेलावियोड़ौ, मेलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मेलावीजणौ, मेलावोजबौ—कर्म वा०।

मेळावियोड़ौ—देखो 'मेळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मेळावियोड़ी)

मेलावियोड़ौ—देखो 'मेलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मेलावियोड़ी)

मेळावौ—सं० पु० [सं० मेलापकः] १ मिळने की क्रिया या भाव, साक्षात्कार, भेंट, मिलाप।
२ कई व्यक्तियों का एक साथ होने वाला मिलाप, भेंट, सम्मेलन।
३ बरात के स्वागतार्थ होने वाला वर पक्ष व कन्या पक्ष का मिलन।
४ एकत्रितएवं सम्मिलित हने की क्रिया।
उ०—पडसां रत वाहै रवदां पर,आवैं आर करीजो ऊपर। मिळियो

जायल सिर मेळावौ चढिया लै धूहड़ रौ छावौ ।—पा. प्र.
रू० भे०—मेळावउ, मेलावउ, मेळावरण,
अल्पा०—मेळावड़ौ ।

मेळियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ भेंट करवाया हुआ, साक्षात्कार कराया हुआ, मिलाया हुआ. २ सम्मिलित किया हुआ, एकत्र किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ. ३ जोड़ा हुआ, भिड़ाया हुआ, मिलाया हुआ ४ प्रेम किया हुआ, स्नेह किया हुआ. ५ अपनी ओर किया हुआ. मिलाया हुआ. ५ जोड़ा हुआ, अड़ाया हुआ, सटाया हुआ ७ चिकित्सा किया हुआ. ८ मिश्रण किया हुआ. मिलाया हुआ. ९ आंख बंद किया हुआ, निद्रित. १० धारण किया हुआ, ग्रहण किया हुआ, अपने में रमाया हुआ. ११ बच्चा मिलाकर दूध देने की स्थिति में किया हुआ ।
स्त्री० (मेळियोड़ी)

मेलियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, प्रस्थान कराया हुआ, भेजा हुआ, पठाया हुआ. २ किसी के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाया हुआ. ३ रक्खा हुआ, धरा हुआ, टिकाया हुआ. ४ किसी के पास रहने के लिये छोड़ा हुआ.
५ त्याग हुआ छोड़ा हुआ. ६ धारण किया हुआ, माना हुआ ।
७ देखो 'मेळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मेलियोड़ी)

मेळू, मेलू—वि०—१ परस्पर मिलाने वाला, मिलान कराने वाला ।
२ मेल करने वाला, प्रेमी, मित्र, स्नेही, हितैषी ।
उ०—१ भुज भरिबे भेळाह, मिळस्यूं जे दिन मेळुवां । वाल्ही सोइ वेळाह, जनम सफळ गिणसूं 'जसा' ।—जसराज
उ०—२ मेळू विण मिळियांह, मनड़ौ क्यूं मांनै नहीं । गहिला ज्यूं गळियांह, फिरै फिकर थयौ 'जसा' ।—जसराज
३ मिलने वाला, परिचित ।
४ पक्ष का, पक्षवाला ।
उ०—१ इण विध सांगै आखियौ, सुणतां सगळै साथ । हुसिआरा मेळू खळां, सौ मारौ भाराथ ।—रा. रू.
उ०—२ ताहरां नरै रा मेळू हजूर हंता, तिका नरै नूं कहीयो, नरा थारौ पटौ जैत साबूत राखीयौ ।—जैतमाल पुमार री वात
५ मिला हुआ, मिश्रित ।
रू०भे०—मेळग, मेळि, मेलि, मेळी, मेली, मेळूह, मेलू ।
६ देखो 'मेळूऔ' (रू. भे.)

मेळूऔ—सं०पु०—पहिये की नाभि पर मजबूती के लिये लगाया हुआ लोहे का कड़ा ।
रू०भे०—मेळू ।

मेलोण—देखो 'मेलांण' (रू. भे.)

मेळौ—सं०पु० [सं०मेला] १ मिलने की क्रिया या भाव ।
उ०—जीवत मेळौ सजनां, मूवां न दीजौ दोस । जनहरीया विरखा विनां, रहै किती लग ओस ।—स्री हरीरांम दासजी महाराज
२ किसी विशेष अवसर पर या पर्व के दिन, किसी स्थान विशेष पर बहुत से लोगों का होने वाला जमाव, मिलन ।
उ०—१ चित लालच वेळां चढ़ै, चेळां जिनस चढांहि । हेलां पर घर हांण दै, मेळां खेळां मांहि ।—बां. दा.
उ०—२ जठै साथण्यां कह्यौ । इतरी फिकर क्यूं करै छै । थारी कीसीक अबार, तो मोकळी फिरै छै । तूं तौ बाई जनम की ही लजाळु, ऐ तौ मेळा खेळा छै ।—पनां
उ०—३ एक जगां रैणौ सूं सैः एक वडबै रा अंग सा वण जावै है । अठै ना तौ कोई रेलगाडी री मुसाफरी है, अर न कोई धरमसाळ तथा तीजां रौ मेळौ है —दसदोख
उ०—४ नाई भोळौ बगनै पूछ्यौ-नौ बाप जी एकण सागै इत्ता सस्तर क्यूं सजाया मेळा में वेगण पधारौ कांई ? —फुलवाड़ी
वि० वि०—ऐसा जमाव या मिलन, किसी देव-दर्शन, तीर्थ स्थान, मनोरंजन आदि के उद्देश्य से होता है । इस अवसर पर खिलौने, मनिहारी, मिठाई, चाट आदि की अस्थाई दुकानें लगती हैं । झूले लगाये जाते हैं जिन से मनोरंजन किया जाता है, इत्यादि ।
३ बैल या चौपाए पशुओं को, विक्रयार्थ किसी स्थान विशेष पर एकत्र करने की क्रिया, अवस्था या भाव, पशु-मेला ।
उ०—मेळा में ऊंचे दांमां आपरी जोड़िया बेचनै दो सीरवी पाछा आपरै गांव वळता हा के एकाएक वांरा मन में जोधांणौ देखण री जची ।—फुलवाड़ी
४ मिलाप, भेंट, साक्षात्कार, समागम ।
उ०—१ द्युं परकमा देवरै, हरख'र जोड़ू हाथ । जो मेळौ हुवै सजणां, पूजूं पारसनाथ ।—पनां
उ०—२ जो माता ऊळखयौ तौ पांच दिन टिकस्यूं, नहीं तो दरसण कर मेळौ दे रमतौ रहिस्यूं ।—जखड़ामुखड़ा भाटी री बात
उ०—३ अर आज परतख मेड़ी में निजरां औ मेळौ व्हियौ । इत्ती वेगी मन जांणी व्है जावैळा, इण रौ तौ सपना में ई बे'रौ नीं हौ ।
—फुलवाड़ी
उ०—४ म्हारा अभाग के आज इण ठौड़ मां सूं मेळौ व्हियौ, वौ ई इण रूप में ।—फुलवाड़ी
५ एकत्रित जन समूह, भीड़ ।
उ०—१ कठै ही लुगांया, कठै ही मोटियार, कठै ही वांणिया, कठै ही गिवार, मेळौ सो लाग रैयौ है । मगतां री पांत अर कमीणी जात ल्यावौ, ल्यावौ कर रैयी है —दसदोख
उ०—२ मेळौ रौ मेळौ धकै वहीर कियौ । बादळ रा मन में नीं कीं संको हौ अर नीं डर ।—फुलवाड़ी
उ०—३ तीडौ सावळ मूंडौ साफ करनै कोट पें पूगौ तौ कांई देखै के उठै मिनखां रौ मेळौ मचियोड़ौ हौ ।—फुलवाड़ी
६ खेल, तमाशा ।
उ०—१ पचास बरसां पैला रा उण मेळा नै थोड़ौ पाछौ याद तौ करौ । हाल तौ उण तमासा नै याद दिरावण वाळी म्है जीवती

बैठी हूं —फुलवाड़ी

उ०—२ राजाजी सेठां नै सावचेत करता बोल्या-कालां अवै कदेई ऐड़ौ मेळौ मत करज्यौ :—फुलवाड़ी

७ हुल्लड़।

८ संयोग, योग।

उ०—बादळ री औ बिछोव ई तो अनाथ, अभ्यागत, अर निबळां नै सुख रौ मेळौ करावैला। राज री सै लुगायां रै जीव री बळण मिटै तद भटियांणी री कूख सारथक व्है —फुलवाड़ी

९ सभा, सम्मेलन।

१० देशी रियासतों में फसल पर लिया जाने वाला एक कर, लगान।

रू० भे०—मेलौ।

मेलौ—१ देखो 'मैलौ' (रू. भे.)

उ०—१ मेला लूगड़ा राखवा, करवी नहीं सिनांन। बाबीस परीसा जीतणा, रहणौ, रूड़ै ध्यांन।—जयवांणी

उ०—२ इण जनम और पर जनम प्रद, सब कळंक सब साथ में। मधिलोक बसै मेला मिनख,जांरै हुक्काहि रैला हाथ में।—ऊ. का.

उ०—३ इतरै सांमीदासजी रा दोय साध,मेला वस्त्र, खांधे पोथ्यां रा जोड़ा, विहार करता-भीखणजी कठै, भीखणजी कठै, इम करता आया।—भि. द्र.

(स्त्री० मेली)

२ देखो 'मेळौ' (रू. भे.)

उ०—वस्त्राभरण जिणै हरया, ते छूटइ मेलौ जी। आदिनाथ नी पूजा करइ, प्रहऊठी बिहुं वेलौ जी।—स. कु.

मेल्हणौ, मेल्हबौ—देखो 'मेलणौ, मेलबौ' (रू. भे.)

उ०—१ सात सात रै मेल्हिया ईसर गरुड प्रधांन जिकै अउगाढ। मांगण कुंवर लगन पिण मांगण चंचळ रथे आपणे चाढ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सरव रसायण में रसी, हर रस समी न काय। टुक तन अंतर मेल्हियां, सब तन कंचन थाय।—ह. र.

उ० ३ अभंग अथाह अप्रेह अरूप, छछोह बदन्न मदन्न सरूप। मुखां नहं मेल्है सेस महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।—ह. र.

उ०—४ आखतां नांम टळै दुख ओघ,उपज्जे आणंद सुख अमोघ। न मेल्हूं तूझ तणौ हरिनांम,बिसन्न भगत्ता-तणा-बिसरांम।—ह.र.

उ०—५ हूदा में लाधौ आतमरांम, कहौ जो देव करूं स कांम। लाधौ मुझ नेड़ौ मोरो नाथ, सांमी री हिव नहि मेल्हूं साथ।

—ह. र.

६ अर के ही दिन उठै ही रहि चंदांणी कुमरांणी नूं आधांन सहित पिउहर ही मेल्हि आयौ, पछै जिण प्रसव रै समय हम्मीर-नांम कुमार जणियौ।—वं. भा.

उ०—७ लाखो मोटौ हुवौ, बारह बरसां रौ हुवौ। ताहरां कागळ दे अर फूलजी आगै मेल्हीयौ।—लाखा फूलांणी री बात

उ०—८ तेह तेह पदि ते त्रप मेल्हइ आवतो लछि पाय कुण ठेलइ। एतलइं गइअ रूपि सुलिद्री, ते सुद्रस्सण तडि पारथ पुरंद्री।

—सालिसूरि

उ०—९ मेल्हि वात परही सवि भाई, स्त्री तणउं सवि हुउं जांणं माई। नारि नीरस न सांगि न राचइं, पुण्यहीन पति पद्मनि वंचइ —सालि सूरि

मेल्हणहार, हारौ (हारी), मेल्हणियौ—वि०।

मेल्हिग्रोड़ौ, मेल्हयोड़ौ, मेल्हयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मेल्हीजणौ, मेल्हीजबौ—कर्म वा०।

मेल्हवणौ मेल्हवबौ—देखो मेलणौ, मेलबौ' (रू. भे.)

उ०—१ इण भांत सात निस दिन अभंग, जुड़ि जीतौ जैचंद भूप जंग। सुरतांण आठ इक दिवस साहि, मेल्हविया काराग्रेह माहि।

—सू. प्र.

मेल्हांण—देखो 'मेलांण' (रू. भे.)

उ०—१ हाडा बुंदी का धणी, नग्र उजेणी जाई दियौ मेल्हांण। चउरास्या सहुं तिहा मिल्या, उडिय छे खेह न सूझै भांण।

—बी. दे.

उ०—२ कटक्क कांधार, समूह सेलार। पयांण करंत, मेल्हांण दियंत —गु. रू. बं.

उ०—३ गिरंकंदर पाहाड, गाहि पाए केकांणं। किया मट्ट मैवास, प्रज्ज पाळी मेल्हांणं।—गु. रू. बं

मेल्हाणौ,मेल्हाबौ—देखो 'मेलाणौ, मेलाबौ' (रू. भे)

उ०—तद ठाकुरसी सारा साथ सूं ऊपर चढियौ भीतर गयौ। लड़ाई हुई। पीरोज कांम आयौ। कोट लियौ। राव स्री कल्यांणमलजी री आंण फेरी। कूंची गढरी राव कल्यांणमल जी नूं मेल्हाई —नैणसी

मेल्हाण हार, हारौ(हारी), मेल्हाणियौ—वि०।

मेल्हायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मेल्हाईजणौ, मेल्हाईजबौ—कर्म वा०।

मेल्हायोड़ौ—देखो 'मेलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री०मेल्हायोडी)

मेल्हावणौ, मेल्हावबौ—देखो 'मेलाणौ, मेलाबौ' (रू. भे.)

उ०—१ धायनु अरजुनु धणुहधरु अवर न धाया केइ। मेल्हाविउ गुरचलणु तमु गुरु किम नवि तूसिइ।—सालि भद्र सूरि

उ०—२ चौथलई फेरइ डाईचौ, पल्यंग सावट्ट सोडि। कुंअरी कर मेल्हावणई दीया, भाव भूखण कोड़ि।—रुकमणि मंगळ

मेल्हावणहार, हारौ(हारी), मेल्हावणियौ—वि०।

मेल्हाविग्रोड़ौ,, मेल्हावियोड़ौ मेल्हाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मेल्हावीजणौ मेल्हावीजबौ—कर्म वा०।

मेल्हावयोड़ौ—देखो 'मेलायोड़ौ' (रू, भे.)

(स्त्री०मेल्हावियोड़ी)

मेल्हियोड़ौ—देखो 'मेलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री०मेल्हियोड़ी)

मेळ्हू—देखो 'मेळू' (रू. भे.)

उ०—तद इयै रै तीन्ह जणां मेळ्हू एक ब्राह्मण एक लौहार एक सुथार। इहां सूं कुंवर रै बडौ प्यार।—चौबोली

मेव-सं०पु० [देशज] १ राजस्थान की एक जाति।

२ उक्त जाति का व्यक्ति।

मेवड़लौ—१ देखो 'मेह' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'मेवौ' (अल्पा., रू. भे.)

मेवड़ौ-सं०पु०—१ दूत, चर, हलकारा।

उ०—बहु लोय प्रणमइ जासु पयतलि, जगत्रगुरु हइ ग्रो बडा तब साहि अकबर सुगरु तेड़ण, वेगि मुंकइ मेवड़ा।—ऐ. जै. का. सं.

२ देखो 'मेवौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—लुळी लुगायां भेळा करै, आखै साल कलेवड़ौ। बाळक बीजां साथ खोडी, खै मुरधर रौ मेवड़ौ।—दसदेव

३ देखो 'मेह' (अल्पा., रू. भे.)

मेवती-सं०पु०—एक प्रकार की अफीम।

उ०—१ गोठ री तयारी कीवी। अमलां री रह-छह मंडी छै। भूरौ, मेवती, काळी, किसनागर, आगराई, मरोडी मुहरतोळौ।
—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ कोटड़ी में भांत भांत रै अमलां री गळणियां झरती ही काळी, मेवती, भूरौ, मरोड़ी. आगराई नै किसनागर अर मेड़ी ऊभा बाईसा रै हीयै भांत भांत रै विचारां रा गोट ऊठता हा।
—फुलवाड़ी

मेवलौ—देखो 'मेह' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—नांन्ही सी'क एक बादळी ओसरगी। रेवड़ वाळै री अळगोजौ गूंज उठयौ। रिम-झिम-रिमझिम मेवलौ बरसै।—रा. सा. सं.

मेवसियौ—देखो 'मेवासी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ऐतौ मेणा थोरी ने भीली रे चोर मेर उघाड़े डीलौ। बावरी कोली भंगी मेवसिया रे, आहेड़ी मांस रा रसिया —जयवांणी

मेवागोद-सं०स्त्री०—विवाह से पूर्व दूल्हे को उसके ईष्ट मित्रों आदि की ओर से दिया जाने वाला रुपया भेंट आदि। (ओसवाल)

मेवाड़-सं०पु० [सं०मेदपाट] १ राजस्थान में चित्तौड़, उदयपुर तथा उसके आस पास का प्रदेश।

उ०—१ हाडोती हिळ मिळ हुई, मेळ कियौ मेवाड़। घर जसवंत रै घुमंड नै, ढूकी घर ढूंढाड़।—ऊ. का.

रू०भे०—मेवाड

अल्पा०—मेवाड़ौ, मेवाडौ।

मेवाड़ा कूमार-सं०पु०—कुम्हारों की एक शाखा।

मेवाड़ी-वि०—मेवाड़ का, मेवाड़ सम्बन्धी।

सं०पु०—१ मेवाड़ का निवासी।

२ मेवाड़ के राजपूत, सिसोदिया।

उ०—लिख रे पत्र मीरां भेजियौ, दीज्यौ मेवाड़्यां रे हात। सादूड़ां रौ संग रांणा ना छुटै, कांई करांला थांरौ राज।—मीरां

सं०स्त्री०—३ मेवाड की भाषा।

मह०—मेवाडौ,मेवाडौ

मेवाड़ौ—१ देखो 'मेवाड़' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'मेवाड़ी' (मह., रू. भे.)

उ०—मांनसिंघ धिन धिन मेवाड़ा, अत्त प्रब भीम तणौ अवसांण।
—दुरसौ आढौ

मेवाड—देखो मेवाड़' (रू. भे.)

उ०—१ सोळंकी सारे मछर मरै, ढंढोळे पहाड़, बाळीया बोए फौजां ढोए, मळवट्टै मेवाड।—गु. रू. बं.

उ०—२ कांनड मेवाड माळवौ।—धरम पत्र

मेवाडौ—१ देखो 'मेवाड़' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'मेवाड़ी' (मह., रू. भे.)

उ०—१ रांणौ भीम न रक्खियौ, दत बिन दीहाडोह। हय गयंद देतौ हथां, मुवौ न मेवाडोह।—महारांणा भीमसिंहजी रौ दूहौ

मेवात-सं०पु०—राजस्थान में, अलवर के आस पास का भू-भाग, जहां मेव-मुसलमांन बहुतायत से आबाद हैं। (सभा)

उ०—१ दूसरा मांन छळि लाडखां दूसरै, सार रै जोर दोइ धरा सांधी। बाहांतरि लेय आंबेरि गळ-बंधाणी, बांहांतरि गळै मेवात बांधी।—रावराजा फतैसिंघ नरूका रौ गीत

मेवाती-वि०—मेवात का, मेवात सम्बन्धी।

सं० पु०—१ मेवात का निवासी।

२ एक जाति विशेष या इस जाति का व्यक्ति, इसे मेव भी कहते है। (मा. म.)

मेवादी-सं० स्त्री०—एक प्रकार की तलवार।

मेवाफरोस-सं० पु० [फा० मेवाफरोश] मेवा व फल बेचने वाला व्यापारी।

मेवास-सं० पु० [सं० मेवा+वास, मेधृ-संगमे, मेघ-वास] १ लुटेरों या डाकुओं के रहने या छुपने का सुरक्षित स्थान।

उ०—१ नेस पड़ि त्रास मेवास बंका नगर, डारणा न लागै पांव पाछा डगर। आज रौ आंकड़ौ घाट दीसै अगर, बांकड़ौ बाहुड़ै नहीं बायां बिगर।—महादांन महडू

उ०—२ बाथ घलै असमांन ने भड़ कौन भुजाळा। कवण उठावै पालरा' मेवास वडाळा।—पा. प्र.

२ सुदृढ़ किला, कोट, गढ़।

३ स्थान, मुकाम, डेरा, निवास।

उ०—असमर भुज ग्रहियां 'अखौ' मांकळसर मेवास। सोबा आयौ तीन सिर, माह वहंतै मास।—रा. रू.

४ चोर, लुटेरा, डाकू।

उ०—१ धके सिसोद मेवास चढिया घटा। गोळियां गाज बड राग गवता। हांमळा घरां छळ कीया माहव हुवे, रांण रै मांमला जीत रखता।—दल्लौ मोतीसर

उ०—२ जाळंधर डेरां थकां, बीतौ भाद्रव मास। फुरमाया टळिया नहीं, मिळिया सही मेवास।—रा. रू.

५ पूर्व और आग्नेय कोण के मध्य की दिशा।

वि० वि०—इसे सूर्योदय के बाद ही मेवास कहते हैं, इसमे पहले इसे उडीक या परियांण दिशा कहते हैं।

रू० भे०—मेबास, मेवासी, मैंवास,

अल्पा०—मेवसियौ मेवासियौ, मेवासौ।

मेवासियौ—देखो मेवासी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ जाके नख चख (कर मुख) सिर नहीं, चरण, नासिका नांही। ऐसा मन मेवासिया, काया नगरी माही —ह. पु. वां

उ०—२ महा उमराव रांणा तणं मेढ़ रा, वेढ़ रा डाव वप चड़ेवांनी। साखरा भड़ां भिड़ज्जां चढ़ै साबता, मरद मेवासियां हार मांनी।—दल्लौ मोतीसर

उ०—३ मभ्र आथण मेवासियौ, पंचादी परभात। बाट निहारै वेगड़ो, जपण उडकियौ जात।—पा. प्र.

मेवासी—सं० पु०—१ चोर, लुटेरा, डाकू।

उ०—१ उिज करतूति कमांण करि, सुबुधि चिलाले चारि। ग्यांन ध्यांन का बांण करि, मन मेवासी मारी।—ह. पु. वां.

उ०—२ हेमै वास छोडियौ। हेमौ जाय घूघरोट रै पहाड़ां पैठौ। हिवै हेमौ मेवासी हुवौ। मेहवैरी धरती उजाड़ै।—नैणसी

उ०—३ मांणस जळ का बुदबुदा, पांनी का पोटा। दादू काया कोट में, मेवासी मोटा।—दादूबांणी

२ उद्दण्ड, बदमाश, नटखट।

उ०—हरीया यो मन हटकीयो, रहै नहीं छिन एक। मन मेवासी वस्य नहीं, इनका चिरत अनेक।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

३ रसिक।

उ०—पीछो उतर कर रही छै कलालण, यौ तो मेवासी बागां रो बहारु छै। साहब इनै रच्यौ तो बराबर, तूं औरां नै किण सारू दे। —रसीले राज रा गीत

४ मेवास (पूर्व व आग्नेय के बीच) की दिशा में बोलने वाला तीतर।

५ देखो मेवास' (रू. भे.)

रू० भे०—मैंवासी,

अल्पा०—मेंवसियौ, मेवासियौ, मैंवासियौ

मेवासौ—सं० पु० [सं० मेधा-वास] १ सुदृढ़ किला, कोट, गढ़।

उ०—लगी चोट सत सबद कीं, खूल्हा ब्रह्म कपाट। मेवासा सब जीत कै, वस्या नगर वैराट।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

२ लुटेरों का डेरा, रहने का स्थान, छुपने का स्थान।

उ०—ग्रहै भोम गिरंदां,अड़ै जंगा ललकारै गोरां। मेवासा कै तोड़ै कंपूं, हकारै सुमन्न। रूकां छड़ां मौड़ै छत्रौ, भूमि ले डकारै रूठा, चौड़े हहकारै जूटो, वकारै चिमन्न।

—चिमनसिंह चांपावत रौ गीत

रू० भे०—मैंवासौ मैंग्रासौ,

३ देखो 'मेवास' (अल्पा, रू. भे)

मेवौ—सं० पु० [अ० मेवः] १ सूखा फल, बादाम, पिस्ता, काजू, किशमिश आदि।

उ०—१ फळं कंदळी स्रीय स्वादे अफरा, छये स्रेय बादांम पिस्ता छुहारा। सुवा साव नारंगियां रंग सोहै,महादेव देवेस मेवै विमोहै।

—रा. रू.

उ०—२ मेवा वस्त्र आभरण मिस्री,बदजइ किसा किसा वाखांण। वरी घणइ (जाइ) उछाह ल्याया। जांनी ईसर तणा सुजांण।

—महादेव पारबति री वेलि

उ०—३ मीठी और न कोइ मिठाइ, मीठा और न मेवा। आतम रांम कली ज्यों उलसै, देखत दिनपति देवा।—घ. व. ग्रं.

उ०—४ मेट री हर आवै जद पिस्ता-बिदांम कांकरां री ई गरज नीं सरै। मुरड़ अर चेपो मेवा सूं ई इदक मीठो लागो।

—फुलवाड़ी

२ हलुवा, खीर आदि उत्तम भोजन मिष्ठान्न, मिठाई।

उ० १ मीठा मेवा जीमतै, बाहै भोजन बौह भांति। ता सूं तन छैती पड़ै, जनहरीया करि खांति।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ भाई तुझे बतांऊ भेमा, साचे तन मन करियो सेवा। मोज करोगे मिलहैं मेवा। दोसत देखि बोलता देवा।—ऊ. का.

उ०—३ दुरयोधन का मेवा त्याग, साग विदुर घर लूखो। करमा के घर खीच आरोग्यौ, लूखौ गण्यौ नहीं सूखौ।—मीरां

अल्पा०—मेवड़लौ, मेवड़ौ,

मेस—सं०पु० [सं०मेष] १ नर भेड़, मेष।

२ ज्योतिष की बारह राशियों में से एक।

रू०भे०—मेख,

४ देखो 'महेस' (रू. भे.)

उ०—सेस फुणधर सरकती, मेस करत रूंडमाळ। यण पुळजो होवत अठै, भाई मो मालाळ।—पा. प्र.

मेसलगन—पु० [सं०मेषलग्न] ज्योतिष में एक लग्न

वि०वि०—देखो लगन

मेसर—देखो 'महेस्वर' (रू. भे.)

उ०—रूंडमाळ छळू गळ मेसर ए। किम ऑपत भांपत केसरए।

—पा. प्र.

मेसरी—देखो 'माहेस्वरी' (रू. भे.)

(स्त्री० मेसरणी)

मेससंक्रांति, मेस सकरांत—देखो 'मेख-सक्रांति' (रू. भे.)

मेसी—सं०स्त्री० [सं०मेषी] मादा भेड़।

मेसूरण—सं०पु० [सं०] फलित ज्योतिष में दशम लग्न।

मेस्मराइजर—सं०पु०[अं०मेज्मराइजर] मेस्मेरिजम करने वाला, सम्मोहक।

मेस्री—देखो 'माहेस्वरी' (रू. भे.)

उ०—किण ही मेस्री नीं हाटे साधु उतरया। रात्रे चोर आया। हाट खोली।—भि. द्र.

मेहंदी—देखो 'मैंदी' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपरायंत माळा फूलां गी छाबां आंण हजार कीजे छै। सू फूल कुण भांत रा छै? हजारा, नौरंग, तुररौ मेहंदी किलंगो·······।—रा. सा. सं.

उ०—२ बंनौ बंनीं मेहंदी हाथ मिळायौ विख्यात।

—बादरदांन दधवाड़ियौ

मेह—सं०पु० [सं०मेघ प्रा० मेह] १ बादल, घन, मेघ।

उ०—१ मेह मथारे बरसियौ, नदी किराड़ां मार। घोड़ा हींसन भल्लिया, सीस किराड़ां भार।—बां. दा.

उ०—२ एतलइ सुसरमा दलि ढोल वाजइं। जांणे असाढू किरि मेह गाजइं।—सालिसूरि

२ वर्षा, बारिस।

उ०—१ कैं बासर थी आघा अर देवराज सर विचाळै तेथ एक धाराळौ मेह रौ आयौ।—द. वि.

उ०—२ घर जंगळ ऊपर फौज धिकी, जमरांण जमात समांण जिकी। असमांणक मेह घटा उनई, दधि जांणक छोड मजाद दई।

—मे. म.

उ०—३ बापूह वित अच्छेह में, आगह चित अच्छेह। 'गज्जण' मांणे साहिबी, ज्यूं महि मांणे मेह।—गु. रू. बं.

[सं०मेह] ३ मूत्र, पेशाब।

४ एक रोग विशेष। (प्रमेह)

रू०भे०—मे, मे', मेह,

अल्पां०—मेउड़ौ, मेऊड़ौ, मेवड़लौ, मेवड़ौ, मेवलौ, मेहड़लौ, मेहड़ौ, मेहलु, मेहलौ, मेहू, मेहौ, मेहूडौ।

मेहड़णौ, मेहड़बौ—क्रि०स०—भोगना, उप भोग करना, आनन्द लूटना।

उ०—मात पिता की छोडी मोबत, मोजां मेहड़ली। सात जात मोडां सूं सांधी, नाहक नेहड़ली।—ऊ. का.

मेहड़लौ-देखो 'मेह' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मेहड़लौ बूठौ हो म्हारा गाढां मारू हीरा मोतीयां रे।

—लो. गी.

मेहड़ौ—देखो 'मेह' (अल्पा., रू. भे)

उ०—१ स्त्री आणंद घण आविया, दरसण कियौ 'अजीत'। दूधे बूठा मेहडा हरि तूठौ धरि प्रीत।—रा. रू.

उ०—२ तूठा हे पास जिणंद. बूठा हे अम्रत मेहड़ा हे लौ।

—वि. कु.

मेहजाळ—देखो 'मेहझाळ' (रू. भे.)

मेहजुज—वि०—उन्मत्त।

उ०—अर कतराक दन जातां, कतरीएक धरती चुरतौ थकौ बांनैत अणी रौ भमर, एका बहादर, आपरा पोरस में मेहजुज हुओ थकौ आभ लागौ थकौ, उजाड़ वंन महा भयांणक जायगा आय नीसरिऔ।

—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

मेहझाळ—सं०स्त्री० [सं०मेघ-झार] वर्षा के लिये किया जाने वाला यज्ञ या किसी देवता का पूजन।

रू. भे.—मेहजाळ,

मेहणत—देखो 'मैं'नत' (रू. भे.)

उ०—कर मेहणत कांटां बळ काढ़े, अय पच पतळा किया यसा। सादत छांट पिछंटचा सत्रू. जाणे जंत्री तार जिसा।

—लालसिंह राठौड़ री गीत

मेहणी—देखो 'मैणी' (रू. भे.)

उ०—फूलां तौ अबोली रैवण सारू पैला ई माठ झाल राखी ही। पण अबै ऐ मोसा अर ऐ मेहणियां सुणणा में ई कीं सार नीं हौ।

—फुलवाड़ी

मेहणू, मेहणौ—देखो 'मैं'णौ,मैणौ' (रू. भे.)

उ०—१ राजा थांनु मेहणौ सांचौ दियौ सत्य छै।

—पंच दंडी री वारता

उ०—२ अवसर दांन ज अप्पही, रिण भज्जै मुंह मोड। राठौड़ां कुळ मेहणौ, ते खत्री पण खोड।—गु. रू. बं.

उ० —३ ताहरां ऐ आपस में बोल उठी। ताहरां बाघेली सोना नू मेहणौ दियौ। कह्यौ—थारौ भाई थोरियां सू भेळौ जीमै।

—नैणसी

उ०—४ ताहरां आ तौ मेहणै आई, साबास थांनै भली कीवी। कासूं कहां, थांनै आ चाहीजै नहीं। अर वळै जो आया तौ जाय नै माळी रै घरे ऊतरिया।—बूढी ठग राजा री बात

मेहतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे.)

उ०—गांव वाळा तौ आखरी बगत तांई काली मासी रै गपोड़ां माथै विस्वास नीं करियौ। पण जद वा घड़ी दिन चढ्यां आपरी भूरी झोटी मेहतरां रै घरे संभळाय, उण री घणी घणी भुळावण देय, आपरै छवूं चीतरां नै साथै लेय, साचांणी महारांणी जी रै घर सांम्ही वहीर व्ही तौ लोगां रै इचरज रौ पार नीं रह्यौ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ बेटौ जीवतो रह्यौ तौ सगळी बातां सावळ व्हैला, वा तौ भली सोची नीं कोई भूंडी। आपरा बेटा नै मेहतरांणी रै हवालै कर दियौ।—फुलवाड़ी

(स्त्री० मेहतरांणी)

मेहदेहजा—सं० स्त्री०—मेहा की पुत्री,श्री करणीदेवो का एक नामान्तर।

उ०—उन में मेह देहजा आई, किनियांणी जगदंबि कहाई। निज किंकरन करन उन्नत्ती, स्री करनी जय जयति सकत्ती।—मे. म.

मेहनत—देखो 'मैं'नत' (रू. भे.)

मेहनांम-सं०पु० [सं० मेहनाम] अभ्रक।

मेहपाठ-सं० पु०—मेड़ता का पुराना नाम।

उ०—पछै राजा जवनसत री देह छूटी तरै राजा मांनधाता टीकै बैठौ, मेहपाठ नगर बसायौ सो मेडतो कहीजै छै।—रा. वं. वि.

मेहपुर-सं० पु०—मारवाड़ के पश्चिमि भू भाग, मालानी रियासत की राजधानी।

मेहमंत—देखो 'मैं'मंत' (रू. भे)

मेहमांण,मेहमांन—देखो 'मैं'मांन' (रू. भे.)

उ०—१ पीढियां लग उणां रै घरै आयोड़ौ मेहमांण भूखौ को गयौ नीं। जिसी भी जव-ज्वार री घर में ऊकळी, मेहमांण रै आगै हाजर कीवी।—रातवासो

मेहमांणी मेहमांनी—देखो 'मैं'मांनी' (रू. भे.)

उ०—तठै जाय राजा स्री करणीजी रै पांवै लागा। रुपीया १०००) मेहमांनी गुदराया।—नैणसी

मेहमा—देखो 'महिमा' (रू. भे.)

उ०—उठे देवी सांगवीयां रौ वड़ौ थांन छै। बड़ी मेहमा छै।
—नैणसी

मेहर—देखो 'महर' (रू. भे.)

उ०—एक द्रस्टि कर आतम देखे, ब्रह्म दरसीया तांई। आवागमन आवै नहीं कबहूं, जिन मेहर गुरां री पाई।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ राज इत्ता दिनां सूं पधारचा, जे म्हने देख्यां राज रै मन में आणंद रा फूल खिल्या व्है तौ ढोल्या माथै ई चंपा रै फूलां री मेहर करावौ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मेर' (रू. भे.)

उ०—भोई मेहर अनइ ठाठीया, चालइ काहर कमांणी। च्यारि सहस साथइ सांचरिया, वहइ पखाळी पांणी।—कां. दे. प्र.

मेहरबांन—देखो 'मैं'रबांन' (रू. भे.)

मेहरबांनगी, मेहरबांनी, मेहरवांनगी, मेहरवांनी—देखो 'मैं'रबांनगी, 'मैं'रबांनी' (रू. भे.)

उ०—१ लोग सारौ सबळौ रहै अर बादसाह री घणी मेहरवांनगी।
—अमरसिंह राठौड़ री बात

उ०—२ राजा कह्यौ-सुंदर दास, ऐ बिचारा गहला होय गया छै। उवे री मेहरवांनगी रा चाकर था।—पलकदरियाव री बात

उ०—३ इयै-में कांई फरक है। साचैई आपांरी मेहरवांनगी सूं बापड़ै-री कमर टूट जावैला।—वरसगांठ

मेहरात-सं० पु०—एक वर्ग विशेष।

उ०—जैतारण था कोस ८ पूरब मांहै मेर मेहरात बसै। धरती हळबा ३० बाजरी मोठ, खेत कंवळा।—नैणसी

मेहराब-सं० पु० [अ० मिहराब] किसी द्वार के ऊपर, अर्द्ध मंडलाकार बना हुआ भाग।

रू०भे०—महराब, महराव, मेराब, मैं'राब।

अल्पा०—मिहरबौ।

मेहराबदार-वि०—जिनमें मेहराब लगा हुआ या बना हुआ हो, गोलाकार, अर्द्ध मंडलाकार।

रू० भे०—महराबदार, मैराबदार।

मेहरित, मेहरितु-सं० स्त्री० [सं० मेघ+ऋतु] वर्षा रितु।

उ०—मांडव आगम मेहरित महलां मञ्झ रहास। फुरमायौ 'गजसाह' नूं तुम आवौ हम पास।—गु. रू. वं.

मेहरू-सं० पु०—महतर। (उ. र.)

मेहरौमाग-सं० पु० [सं० मेघ+मार्गः] आकाश, गगन।

उ०—इकी नींद काकौदरां लोक हूंतै फतै चिन्ह आकास लागौ फर्कै मिणौ मेहरौमाग पाताळ मांनू,सकौ देहरौ मेहरौ रत्न सांनू।
—मे. म.

मेहळ,मेहल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ मुहकम रौ मुहमद अजी, सुण मत असत सराह। तुरत घणी हित तेड़ियौ, मिरजौ मेहलां मांह।—रा. रू.

उ०—२ अण समै बकटापुर माहै अचूकी घड़ी सूं ठीक करै तौ मेहल में नहीं।—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेळ री बात

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—खाटी अपणी खाय, आठ पहर समरै अनंत जिण री कदै न जाय, मेहळ उघारै मोतिया।—रायसिंह सांदू

३ देखो मेखळा'

उ०—कडि मणि मेहल नूंपर रूप रहावइं पाय। पहरणि सेत्र पण्डलीय, कूलीप्र मांन न माइ।—जय सेखर सूरि

मेहलणौ, मेहलबौ—देखो 'मेलणौ, मेलबौ' (रू. भे.)

उ०—तेल भरीनइं तावडउ, हेठलि मेहलि हुतास। तली तली तुम्हनइं दीउं, तन्न सुवामय मांस। ससिहर रहि रे सांमतु जल घट्ट भींतरि लेय। सिर ऊपरि मेहली सिला, डाटसि डारउ देय।
मा. कां. प्र.

मेहळांण मेहलांण—देखो मेलांण' (रू. भे.)

उ०—कोई नगरी कांमावती, कांमसेन राजा न। नीति निपुण गुण संभळी, तिहां सिधु मेहळांण।—मा. कां. प्र.

उ०—२ इणि परि सीख समप्प करि,राइं आयस दीध। सिर नांमी सेवक पलिउ मारगि मेहलांण ह कीध।—मा. कां. प्र.

मेहलाणौ, मेहलाबौ—देखो 'मेलाणौ, मेलाबौ' (रू. भे.)

मेहलायत—देखो 'महलायत' (रू. भे.)

उ०—१ पछै कांनड़देजी जाळोर ऊपर घर कराया, तिकै देखण नुं सीमाळ नूं मेलियौ नै सूरमाळणन नूं साथै मेलियौ, सु सीमाळ मेहलायत देख क्यूं वैंत में खोड़ काढी।—नैणसी

उ०—२ आय देखै तौ ठग वीरमदे री मेलायत पोळ तीरे आयौ।
—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री बात

मेहलायोड़ौ—देखो 'मेलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मेहलायोड़ी)

मेहलावणी, मेहलावबौ—देखो 'मेलाणी, मेलाबौ' (रू. भे.)

उ०—कीधा बंदि भूत मि तेरा, करी सजाई आवै। मांटी हुइ तउ घांटु बांधे, सोमनाथ **मेहलावै** —कां. दे. प्र.

मेहलावियोड़ौ—देखो 'मेलायोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मेहलावियोड़ी)

मेहलि, मेहली—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

मेहलियोड़ौ—देखो 'मेलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मेहलियोड़ी)

मेहलु, मेहलू, मेहलौ—देखो 'मेह' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—मेघ मनोहर देवता ए बीजु प्रधांन, पुस्करावरतक मेहलु जीवित दीइ दांन।—नळदवदंती रास

मेहवपुर-सं०पु०—राजस्थान में बाड़मेर व उसके आस पास के क्षेत्रका पुराना नाम।

मेहसड़लौ—देखो 'मेह'

उ०—झिरमिर-झिरमिर **मेहसड़लौ** (जी) बरसै, मेंड़ियां में चवण लागौ।—लो. गी.

मेहांणंद—श्री करणी देवी के पिता का नाम।

मेहांण—देखो 'महारणव' (रू. भे.)

मेहा—१ वर्षा।

उ०—जेहा मेहा जगत सूं, मत बिरचौ सुख मूळ। जीवाड़ै सारौ जगत, श्रै अबिरच अनुकूळ।—बां. दा.

२ देखो 'मेहाई' (रू. भे.)

मेहाई-सं०स्त्री०—श्री करणी देवी।

उ०—१ इह सरूप जंगळ धर आई। महा सकति दुरगा **मेहाई**।
—मे. म.

रू० भे०—मेआई, मेहा, मेहाही,

मेहागम-सं०पु० [सं० मेघ+आगमनः] वर्षा ऋतु का आगमन, वर्षा ऋतु की शुरुआत।

उ०—समरै निसिपति जेम चकोर, **मेहागम** जिम चाहै मोर।
—स्रीपाळरास

मेहावी—देखो 'मेधावी' (रू. भे)

मेहासदु, मेहासदू मेहासधु, मेहासधू, मेहासिधू,-सं० स्त्री०—मेहा की पुत्री श्री करणी देवी का एक नामान्तर।

उ०—१ करनी तूं केदार, करनी तूं बद्री कमळ। है देवी हरिद्वार, मथुरा तूं **मेहासदू**।—अज्ञात.

उ०—२ बांका **मेहासधू** म बीसरै, संकट हरै सांभळै साद गढवाड़ा गढ औलै गाजै, मढ रै औलै गढां मजाद।—बां. दा.

उ०—३ दरबारे दीवांण निसा-दिन, पाय पाय पूंगर रख पात। घात अघात टाळणी घट घट, **मेहासधू** सेवगां मात।
—कविराजा बांकीदास

रू०भे०—महियासधू महियासुधू,

मेहाही—देखो 'मेहाई' (रू. भे.)

उ०—पायौ रचण रूपगां पैंडो, **मेहाही** थारी महर।—बां. दा.

मेहिली—देखो 'महिळा' (रू. भे.)

मेहुण—देखो 'मैथुन' (रू. भे.) (जैन)

मेहू—देखो म्हैं' (रू. भे.)

उ०—**मेहू** तो छां ओगण का भरिया, थेई हो न सह्यो।—मीरां

२ देखो मेह' (अल्पा; रू भे)

मेहूड़ौ—देखो 'मेह' (अल्पा; रू. भे.)

उ०—झिरमिर झिरमिर **मेहूड़ौ** वरसै, बादळियौ घररावै ए।
—लो. गी.

मेहेरबांन—देखो 'मैं'रबांन' (रू भे.)

उ०—बीजौ साहिब **मेहेरबांन** कोई भुगत वतावै।—कैसौदास गाडण

मेहेरांण—देखो 'महारणव' (रू. भे.)

मैं-सर्व०—सर्वनाम के उत्तम पुरुष का कर्त्ता-रूप, स्वयं खुद।

उ०—१ नभै सोती जागी लगन धुन लागी जक नहीं। स्वयंभू ध्याऊं **मैं** परमपद पाऊं सक नहीं।—ऊ. का.

उ०—२ मेहाई-महिमा मुणी, **मैं** मूरख मति मंद। जिण अंदर चूकौ जिकौ, कीजै माफ कविंद।—मे. म.

सं०पु०—१ बकरी के बोलने का शब्द।

सं०स्त्री०—२ अहंभाव, अहमन्यता।

रू०भे०—मंइ, मंह, मय, में, मेंइ,

३ देखो 'में' (रू. भे.)

उ०—ज्यांरी रिच्छया देवता, सेवा पीर प्रधांन। त्यां अणचीती संपजै, मुसकळ **मैं** आसांन।—रा. रू.

मैंगळ—देखो 'मदकळ' (रू. भे)

उ०—१ मन **मैंगळ** मैमत भयौ, आंकस सहै न कोय। जन हरीया कुछी एक सहै,जौ ग्यांन गरीबी होय।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ जिण तोटा में ही पोत (तेवटा री चीड़ां) तौ गज मोतीयां री ने चूड़ौ ही उण हीज **मैंगळ** (मदगळ) मदोनमत हाथी रा दांत री है।—वी. स. टी.

मैंगाई—देखो 'मूंगाई' (रू. भे.)

मैंगौ—देखो मूं' गौ' (रू. भे)

(स्त्री० मैंगी)

मैंडा—मेरा, मेरे।

उ०—इसौ सुण पिउसंधी बोली, **मैंडा** बोल सच्चा जांणौं, तुसांडी पुत्री हूं तो घोड़ी ल्याऊं।—जखड़ा मुखड़ा भाटी री बात

मैंडोवर—देखो 'मंडोर' (रू. भे.)

मैंण-सं०पु०—मोम।

रू०भे०—मयण, मीयांण, मैंन, मेण, मैण, मोंण,

मैंणका—देखो मेनका' (रू. भे.)

उ०—तिलोसमा **मैंणका** सची, उरवसी सरोतरि।—रा. रू.

मैंणा—देखो 'मैणा' (रू. भे.)

उ०—कुंन दादू बखना बाजिंदा, **मैंणा** घाटम सेन। गिनका भील

भीलणी भिरीयां,फकर फरीद हुसेन ।—स्री हरीरांमदासजी महाराज
(स्त्री०मैंणी)

मैंणावती—देखो 'मंणावती' (रू. भे.)

उ०—हस्ती घोड़ा गांव गढ, सुत वनिता परिवार । कहै माता मैंणावती, तजि गोपीचंद यह खार ।—ह. पु वां.

मैंणौ—देखो 'मंणी' (रू. भे.)

उ०—मैंणौ पेंगु मेर बावरी,बिलळा बैता । भाळी थोरी भील, रात रा मांगै रैता ।—ऊ. का.

मैंत—देखो 'महंत' (रू. भे.)

मैंतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे.)

उ०—ठगी मांथै कमर बांधी, सोखीनाई नै धोखा-धड़ी सूं सांधी । सैंसी अर मैंतर तांई मांगै विना नहीं छोड्या ।—दसदोख

मैंदांन—देखो 'मैदांन' (रू. भे.)

उ०—तीन पौलि तकीया परै, मंडे वीच मैंदांन । जन हरीया घर सुन्य मैं, सहज घुरै नीसांन ।—स्रीहरीरांमदासजी महाराज

मैंदालकड़ी—देखो 'मंदालकड़ी' (रू. भे.)

मैंदी-सं०स्त्री० [सं० मेधी, मेधिका] (अ. मा.)

१ प्रायः समस्त भारत में होने वाली एक झाड़ी ।

२ उक्त झाड़ की सूखी पत्तियां व उनका पीसा हुआ चूर्ण ।

उ०—१ सूकी सेवण री हेला उर हाई, मैंदी देवण री वेळा मुरझाई ।—ऊ. का.

उ०—२ हाथां रै राच्योड़ी मैंदी हींगळू री टींकी, गज गज लांबा बांसवाळी सूं सरगल बाळ । झालर रै डंकै ही पायल री झीणी झणकार बाजती ।—दसदोख

३ एक राजस्थानी लोक गीत ।

वि०वि०—इसकी पत्तियां छोटी छोटी और फूल सफेद होते हैं जिन से भीनी भीनी सुगंध आती है । इसकी पत्तियों के पिसे हुए चूर्ण को स्त्रियां भिगो कर हाथों व पैरों पर लगाती हैं और विभिन्न प्रकार की चित्रकारी भी करती हैं ।

रू०भे०—महंदी, महदी, मांहंदी, मेंदी, मेंहंदी, मेहंदी,

मैंनत—देखो 'मैंनत' (रू. भे)

उ०—मैंनत मजदूरी मासक घण मोला, बिलखा बिगताळू आसक अणबोला ।—ऊ. का.

मैंपणौ-सं०पु०—अभिमान, गर्व, अहं भाव, ।

मैंबर-सं०पु० [अं०] सदस्य ।

रू०भे०—मयंबर, मेंबर,

मैंहघौ—देखो 'मूं'गौ' (रू. भे.)

उ०—मैंहघा मौल दियै 'मेघाउत', लियै अपार नफौ जस लाह । आडावळै मोतियां असड़ौ, सौदौ करै बळापति साह ।

—महाराज छत्तरसिंघ री गीत

मैंमंद-सं०पु०—स्त्रियों के शिर पर धारण करने का एक आभूषण ।

रू०भे०—महमंद, महमद, महिमद, मेंमद, मेंहमद, मैंमंद, मैंमद, मैमद, मैहमद,

मैंमंतक, मैंमट, मैंमत—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

उ०—१ खळ थोवण खोण अरोगण खप्पर छै रुति सोगण जोस छळै । मद भोगण मांस अरोगण मैंवत घावत मोगण दंत घलै ।

—मा. वचनिका

उ०—२ मन गंगा-जळ-निमळ, वदन किरि पूनम ससिहर । सुवप वन्न सोवन्न, गात मैंमंतक गैमर ।—गु. रू. बं.

मैंमद—देखो 'मैंमंद' (रू. भे.)

उ०—माथा नै मैंमद, अधक बराजै । तौ रखड़ी छब न्यारी जी ।

—लो. गी.

मैं—देखो 'मय' (रू. भे.)

उ०—विप्र मूरति वेद रतन मै वेदी, वंस आद्र अरजुन मैं वेह ।

—वेलि

मैं'क—देखो 'महक' (रू. भे.)

मैं'कणौ, मैं'कबौ—देखो 'महकणौ, महकबौ' (रू. भे.)

मैं'कमौ—देखो 'महकमौ' (रू. भे.)

मैं'कार-सं०स्त्री०—महक, सुगंध ।

उ०—भर हांडी म्हैं छूकण दीन्ही सीज्यौ म्हारौ साग । जद हांडी भर नीचै उतारचौ, मीठी आय मैं'कार ।—लो. गी.

मैं'कियोड़ौ—देखो महकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मैं'कियोड़ी)

मैंख—देखो 'महिस' (रू. भे.)

उ०—देवी मैंख रै रूप देवां डरावै । देवी देवता रूप तूं मैंख खावै ।

—देवि.

मैंखास—देखो 'महिसासुर' (रू. भे.)

उ०—देवी सहस्त्रं लख कोटिक साथै, देवी मंडणी जुद्ध मैंखास साथै ।

--देवि.

मैंगळ—देखो 'मदकळ' (रू. भे.) (ना. डिं. को.)

उ०—बळौ मैंगळां फौज दूजौ बखांणै । जटाजूट गौरंभ गज-खंभ जांणै —गु. रू. बं.

मैंड़ी-सं०स्त्री०—१ मकान का सब से ऊपरी कमरा, अटारी । (अ. मा.)

उ०—१ बावेली ए मैड़ियां मांहि दिवलौ उजाव । चारां नै दिसा में छेला चांनणौ ।—लो. गी.

उ०—२ सौ हूं तौ डोडी ऊपरै खेटक (ढाल) नै रूक (तरवार) लेने ऊभी हूं ने आप आयोड़ा पांमणा (सत्रू) आं रौ सनमांन करौ अरथात जुद्ध करौ मैड़ी मैं जाय बंदूक झालौ ।—वी. स. टी.

२ महल ।

३ देखो 'मेढी' (रू. भे.)

उ०—कवियण मैड़ी बैल ज्यूं,बांधै मूंह मरंत । जे'जोगो' न जनमतौ, कीर त किणरी करंत ।—अजात

रू०भे०—मयड़ो, मेड़ी ।

मैंछांण, मैंछायण—देखो 'मेछ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ मनै खीजीयौ साह होय हळां मैंछांण री, भोम अद उडै

न ळहै विगत भांण री । दैवरा पड़ै भ्रम घटै दुनीयांण री, 'अमरीया' राख मरजाद हिंदुवांण री ।—ठा. अमरसिंहजी नींबाज री गीत
उ०—२ साजै सोमईयाह, असुरां आभड़ीयौ नहीं । पड़ीयै कर पड़ीयाह, माथै मैछायण तणा ।—अरजन हमीर भीमोत री वात

मैंजर—सं० पु०—दबाव ।
उ०—जद फतूजी रै माथै दोख रौ **मैंजर** पड्यौ । जद पहली तौ आ चंदूजी यूं कहीती थी सूरच में खेह हुवै तौ म्हारी गुरुणी में खेह हुवै ।—भि. द्र.

मैंजळ—देखो 'मंजिल' (रू. भे.)

मैंजिक—सं०स्त्री० [अं०] जादू का खेल, जादू ।

मैंजिकलालटेन—सं०पु० [अं०] किसी परदे पर दर्शकों को चित्र दिखाने की एक प्रकार की लालटेन ।

मैंड—देखो 'मेड' (रू. भे.)
उ०—तद बखतसिंहजी हाथी रा होदा मांही चाढ़ लिया सो लोहां रो **मैंड** आवै जणां तौ बेचेत हुइ जावै ।
—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

मैंडल—सं०पु० [सं० मदनफल] मेनफल, । (अमृत)

मैंडी—१ देखो 'मेढी' (रू. भे.)
२ देखो 'मंड़ी' (रू. भे.)
उ०—मंड **मैंडी** चित्तर-साळा, गढ ढाहै गोख अटाळा ।—गु. रू. ब.

ळ—देखो 'मेढल' (रू. भे.)

मैंढी—देखो 'मेढी' (रू. भे.)

मैणंगना—सं० स्त्री० [सं० मदनांगना] कामदेव की स्त्री, रति ।
उ०—छहै तीस ही आभ्रणां धारी साजै । लखै रूप **मैणंगना** रूप लाजै ।—सू. प्र.

मैण—१ चूड़ामणि, सिर का आभूषण ।
उ०—दुवै पाव वंदै हणूं **मैण** दीधी । कपीसां हणूं पांव तारीफ कीधी ।—सू. प्र.
२ देखो 'मैंण' (रू. भे.) (अ. मा.)
उ०—१ मावड़ियां तन **मैण** रा, मिटै कदे नंह मांद । मावड़ियां ढूला मरद, चूला हंदा चांद ।—बां. दा.
उ०—२ **मैण** लगाड़ै पालड़ां, तोलां माहि कसूर । डर तज राखै डांडियां, पारद हूंता पूर ।—बां. दा.
३ देखो 'मदन' (रू. भे.)
उ०—वर्ण चारु आभास वदनारविंदं, उरै ऊपजै वेख रेखा अणंदं । सदा हेत संतां इसा नेत सोहै, महा **मैण** रूपी तिका नैंण मोहै ।—रा. रू.

मैणका—देखो 'मेनका' (रू. भे.)

मैणत—देखो 'मं'नत' (रू. भे.)

मैणधार—देखो 'मणिधर' (रू. भे.)
उ०—बिनै जड़ाव बाजुबंध, सम्म पार सोहिया । स्त्रीखंड साखि जांणि सप्प. **मैणधार** मोहिया ।—सू. प्र.

मैणधुज—सं. पु.—एक वाद्य विशेष, बाजा ।

मैणफळ—सं. पु.—मदन फल ।

मैणल—सं. पु.—हाथी ।
उ०—मारुवै रावतां गाजतां मैंगलां । वाधियो वाद सूं इन्द्ररौ वादळां ।—गु. रू. बं.

मैणसिल—देखो 'मैनसिल' (रू. भे.)

मैणा—सं. स्त्री. १—एक जाति विशेष ।
२ देखो 'मैना' (रू. भे.) (डि. को.)
रू. भे.—मैंण, मेणा ,मैंणा ।

मैणादे—देखो मैंणावती'

मैणी, मैं'णी—सं. स्त्री. १ कटुवचन, ताना, मौसा, व्यंग ।
उ०—सीधी सैंणीं सी **मैणी** सुण मालहै,बैसक पुरबसणौ हंसणौ तजि हालै ।—ऊ. का.
२ मैणा जाती की स्त्री ।
३ गुंडी, बदमाश ।
रू. भे.—महणि, महणी, मेणी, मेहणी, मैहणी ।
मह०—मैंणौ, मैं'णौ ।

मैणीयात—वि०—कलंकित, बदनाम ।
उ०—ओसियळां अमै, टोडाफल टळिया नहीं । **मैणीयात** राख्यां में, जांमोकांमी जेठवा ।—जेठवा

मैणौ, मैं'णौ—सं. पु. [स्त्री०मैणी] १ मैणा जाति का व्यक्ति ।
२ देखो 'मैंणी' (मह; रू. भे.)
उ०—तद वां रजपूतां कयौ, कांनाजी म्हांनूं इण बात रौ **मैणौ** दो तौ, दोरा तौ थांनूं ईं नहीं राखिया था । थेई इण सिरकार मैं हूता ।—द. दा.
रू. भे.—महणौ, मेहणु, मेहणौ, मैंणौ ।

मैतर—देखो 'महत्तर' (रू. भे.)

मैं'ता—देखो 'महता' (रू. भे.)

मैताब—देखो 'महताब' (रू. भे.)

मैताबी—देखो 'महताबी' (रू. भे.)

मैतारी—देखो 'महतारी' (रू, भे.)
उ०—त्रलोकी **मैतारी** घरि तन पधारी मरुधरा ।—मे. म.

मैत्रकार—सं०पु०—एक वर्ग विशेष ।
उ०—गीतकार वातकार त्रयकार पाडकार तुडिकार आरांमकार सास्त्रकार **मैत्रकार** सुद्धकार उद्दीसकार ध्रुतिकार रूपकार ।—व. स.

मैत्री—सं०स्त्री० [सं०] १ दो या दो से अधिक व्यक्तियों में परस्पर होने वाला प्रेम भाव, मित्रता, दोस्ती ।
२ मेल-जोल ।
३ समानता,
४ अनुराधा नक्षत्र ।

मैंथळी, मैथली—देखो 'मैथिळी' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

उ०—१ जुड़ै आय सव्वासण्यां रायजादी, दरस्सैं कई सेबकां माय दादी। हमल्लै बनी उंदरी सेन हुंदैं, मनौं मैथळी बंदरी सेन बंदैं।
—मे. म.

उ०—२ भवांनी नमौं ब्रह्मानी ब्रह्मवांमा। भवांनी नमौ मैथळी रांम रांमा।—मे. म.

मैथिल–वि०—मिथिला का, मिथिला सम्बन्धी।

सं०पु०—१ मिथिला देश का निवासी। (२) ब्राह्मणों की एक जाति या वर्ग।

रू०भे०—मइथळ, मइथल।

मैथिळी, मैथिली–सं०स्त्री० [सं० मैथिली] मिथिला देश के राजा जनक की पुत्री, सीता, जो राम की पत्नी थी।

रू०भे०—मइथळी. महथळी, महीथळि, महीथळी, मैथळी, मैथली

मैथुन–सं०पु० [सं०] १ किसी स्त्री के साथ किसी पुरुष का होने वाला समागम, संभोग, रति-क्रीड़ा।

उ०—इम हिंसा भूठ चोरी मैथुन परिग्रह सेव्यां सेवायां अव्रत सींची तो उण रै लेखै व्रत पिण वधतो कहिणी।—भि. द्र.

२ काम-वासना की दृष्टि से, किसी स्त्री के साथ किया जाने वाला व्यवहार।

उ०—१ हाथ ता ४ प्रकारै, धूजै-एक तो कंपणवाय सूं। के क्रोध रै बस हाथ धूजै। अथवा चरचा में हारयां हाथ धूजै। के मैथुन रै वसीभूत।—भि. द्र.

रू०भे०—मईथुन, मेहुण,

मैथुनी–वि०—१ मैथुन करने वाला।

२ मैथुन का, मैथुन सम्बंधी।

मैथुनीप्रजा–सं०स्त्री० [सं०] मैथुन द्वारा उत्पन्न होने वाली सन्तान।

रू०भे०—मइथुनीप्रजा, मयथुनीप्रजा।

मैदड़ो–सं०पु०—पटेला। (मेवात)

मैदांन–सं०पु० [फा०] १ वास्तु रचना से रहित, समतल एवं विस्तृत भूखण्ड, क्षेत्र।

२ खेल-कूद के लिये तैयार किया हुआ समतल भू भाग।

३ रण क्षेत्र, युद्ध भूमि।

उ०—१ सूर मंडै मैदांन मैं, वाय खळां सिर खाग। पड़ै भंगांणा भोमियां, सूर सघणै लाग।—श्रीहरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ दूजै दिन प्रीथीराज चहुवांण नै नाहड़राव मैदांन बुहार लड़ीया।—नैणसी

४ किसी पदार्थ का बिस्तार।

५ रत्नों की लम्बाई-चौड़ाई।

६ मल, टट्टी।

उ०—भांभरकै भाड़ लागौ सू मांचै माहे-ही-ज मेदांनां बैठो सांखौ फाड़ राखियौ।—राजा भोज अर खापरा चोर री बात

७ जंगल या मेदान में टट्टी जाने की क्रिया।

८ वह प्रान्त या प्रदेश जिसकी भूमि समतल हो अर्थात् उसमें पहाड़ आदि न हो।

९ स्त्रियों के ओढने के वस्त्र का मध्य का भाग।

रू० भे०—मेंदांन, मेदांन, मैंदांन।

मैदांनी–वि. [फा०] १ मैदान सम्बन्धी, मैदान का।

२ मैदान वाला (क्षेत्र, इलाका)

मैदालकड़ी–सं स्त्री.—एक प्रकार की काष्ठ-औषधि, जो सफेद एवं मुलायम होती है, इसका चोट पर लेपन किया जाता है।

उ०—कायफळ, मैदा-लकड़ी अर अमल मया बांटनै कपड़छांण करयां घी में रळाय लेपन करयौ।—फुलवाड़ी

रू० भे०—मेदालकड़ी, मैंदालकड़ी।

मैदौ–सं. पु. [फा०मेद:] १ अत्यन्त महीन पीसा हुआ आटा, जिसके हलवा, मिष्टान्न आदि पकवान बनाये जाते हैं।

उ०—ताहरां खापरै नीचे वासदेव जगायौ, खांड-रा कापा मांहै घात पांणी घातियौ। दूध चरू-में थो सू घात खांड निखारी, गळणी-में घाती नीचे चरू राख दियौ, कुणौ खोल घी कढावै में घातियौ, ऊपरा मैदौ घातियौ, खुरपै-सूं सैंतळ हलावण लागौ।
—राजा भोज अर खापरा चोर री बात

२ पक्वाशय, पेट, कोठा।

रू० भे०—मइदौ मेदौ।

मैध—देखो 'मेघ' (रू. भे.)

मैधा—देखो 'मेधा' (रू. भे.)

मैन—देखो 'मदन' (रू. भे.)

मैनका—देखो 'मेनका' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

मैं'नत–सं. स्त्री. [अ०महनत] १ किसी कार्य को पूरा करने के लिये किया जाने वाला शारीरिक या मानसिक श्रम, परिश्रम।

२ प्रयास, कोशीश।

उ०—मालक, हुं आपने बुलावण सारूं पचहारी, मैं'नत करनें थाक गई-हूलसी, वरणसारू वरमाळ ले केई वार हुलस चूकी पण आप भगड़ौ करता ढबौ नहीं।—बी. स. टी.

रू० भे०—महनत, महन्नत, मिहनत, मेहणत, मेहनत, मैं'नत।

मैनताई—देखो 'महंताई' (रू. भे')

मैं'नती–वि. १ मेहनत करने वाला, परिश्रमी।

२ जो आलसी न हो, प्रयत्नशील।

मैनफळ–सं पु.[सं.मदनफल]एक भाड़दार-कंटीला वृक्ष विशेष व उसका फल।

मैनमूरत–सं. पु. [सं० मदन मूर्ति] कामदेव का स्वरुप।

उ०—होय बदसूरत कहै है मैनमूरत सो, कहत पाप पूर ते डरै नहीं।—र. रू.

मैनसिल–सं. स्त्री. [सं. मन: शिला] पीली मिट्टी की तरह का एक धातु जो नैपाल के पहाड़ों में बहुतायत से पाया जाता है।

वि०—पीला, पीत। *

रू० भे०—मणसिल, मैणसिल।

मैना–सं. स्त्री. [सं. मदना] १ पीली चोंच वाला काले रंग का एक

प्रसिद्ध पक्षी, सारिका। (डि. को.)

रू० भे० मयणा, मयना, मेणा, मेना, मैणा।

२ देखो 'मेनका' (रू. भे.)

उ०—सूकेसी उरवसी, घ्रितेची मैना रंभा। इंद्रलोक अपछरा, इसी उणिहार असंभा।—गु. रू. बं

३ देखो 'मैणा' (रू. भे.)

मैनाक-सं. पु.[सं.] १ हिमालय के वीर्य से और मेना के गर्भ से उत्पन्न एक पौराणिक पर्वत।

२ हिमालय की एक चोटी।

रू० भे०—मयंनक, मयनक, मेनक मेनाक।

मैनाळ—देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)

मैनावती—देखो 'मैणावती' (रू. भे.)

मैणावळी-सं० स्त्री०—प्रत्येक चरण में चार तगण का एक वर्ण वृत्त जिसमें १२ वर्ण व २० मात्राएं होती हैं।

मैनी—देखो 'म्यांनी' (रू. भे.)

मैनेजर-सं०पु० [अं०] किसी कार्यालय,कारखाने या संस्था का प्रबन्ध-अधिकारी, प्रबन्धक, व्यवस्थापक।

मैं'पाळ—देखो 'महीपाळ' (रू. भे.)

मैं'फल. मैं'फिल-सं०स्त्री० [अ० महफिल] १ किसी शुभ अवसर पर की जाने वाली गोष्ठी, उत्सव, जलसा, मजलिस।

उ०—१ दरवाजे थारै नौबत बाजै उड़दी को बाजौ न्यारौ जी। मैं'फल में थारै रास रच्यौ है सोभा भारी जी।—लो. गी.

उ०—२ चांनणी तांण्योड़ी में विछायत विछ रैयी है। दमांमण्यां मैं'फल में दोड़ी बैं', बाजा वजावणियां नावड़्या नाकौ त्यै।

—दसदोख

२ विचार गोष्टी, सभा, बैठक।

३ सम्मेलन, समारोह।

४ उपासना या साधना का स्थान। (इस्लाम)

५ संसार, जगत। (सूफी)

मैं'बूब—देखो 'महबूब' (रू. भे.)

मैमंत-वि० [सं० मदमस्त] १ मदोन्मत्त, उन्मत्त, मस्त।

उ०—१ बासठि हजार फौजां रा भांजणहार। छखंड खुरसांण रा विधूंसणहार, मैमंत हाथिओं रा मारणहार।—वचनिका

उ०—२ सो छबि बाळ बकेळ, सह छळ सोहिग्रं। परहां चंद वदनी मैमंत महानर मोहिग्रं।—कल्यांणसिंह नगराजोत वाढेल री वात

सं०पु०—१ हाथी, गज।

उ०—सुज पूठि नेजा फररंत सही, गिर सीस तरोवर ऊगि गही। मिळ द्वारस माय मैमंत मदां, नित जांणि पहाड़ खळक्क नदां।

—मा. वचनिका

२ मस्त हाथी, मदमस्त हाथी।

रू०भे०—मइमंत, मइमत, मनमत, मयमंत, मयमत, मयमत्त महमंत, महमंद, महिमद, मिमंत, मेमंत, मेमती, मेमत्तिय, मेहमंत, मैंमट, मैंमंतक, मैंमत, मैंमंद, मैमट, मैमत, मैमत्त, मैमद, मैंहमंत।

अल्पा०—मयमंतौ, महमंतौ, महमतौ, महमत्तौ, मैमतौ, मैमत्तौ।

मैमंद—१ देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

उ०—सच्चा मैमंद मुसतफी, अलाह दा प्यारा।—कैसोदास गाडण

२ देखो 'मैंमंद' (रू. भे.)

३ देखो 'मैमंत' (रू. भे)

मैम-सं०स्त्री० [अं० मैडम] १ योरुपिन या अमेरिकन स्त्री।

उ०—रीझां देवण जुध करण, मैम सुणै जग मांय। 'ज्वार' 'डूंग' दोनूं जिसा, नर जनमै फिर नांय।—डूंगजी जवार जी री छावली

२ ताश का वह पत्ता जिस पर स्त्री का चित्र होता है।

३ देखो 'महिमा' (रू. भे.)

मैमट-सं०पु०—१ बादल, मेघ।

उ०—गुफा ध्यांन लवलीन गिरोवर। ताळी खुलि ऊठिया तपेसुर। जांणै निसा अमावस जळधर, भाद्रव मैमट घटा भयंकर।—सू. प्र.

२ देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

मैमत—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

उ०—मन मैंगळ मैमत भयौ, आंकस सहै न कोय। जनहरीया कुछीकए सहै,जौ ग्यांन गरीबी होय।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ दोखियां तणी घणी धर दाबै, फाबै जुध जुध करै फतै। साह तूझ संक वहै 'गजन' सुत, मैमत चित वहै आप मतै।

—नाथौ सांदू

मैमतौ—देखो 'मैमंत' (अल्पा; रू. भे.)

मैमत्त—देखो मैमंत' (रू. भे.)

उ०—हुवै घत्त लोहित्त मैमत्त हाला, नसा रा किसा पार सूळां निवाळा। मधू-मास आसोज में रास मंडै, तिहूं लोक री डोकरी तेथि तंडै।—मे. म.

मैमत्तौ—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

उ०—विकराळ काळ वदन, दारण दुजीह गरळ मैमत्तौ। विपरीत कुळह व्रती, इजगूरं या डिंभरू गिळ ए।—गु. रू. बं.

मैमद—१ देखो 'मैंमंद' (रू भे.)

२ देखो 'मैमंत' (रू भे.)

मैमदा—देखो 'म्रिगमदा' (रू. भे.)

मैं'मांन-सं०पु० [फा० मेहमान] १ अतिथि, मेहमान।

उ०—वडौ आदमी आयां रचां,दरवाजा मरुमांन रा। डोरै पौ पांन पै'रावां, गावां गुण मैं'मांन रा—दसदेव

२ दामाद, जंवाई। ३ सगा,सम्बन्धी।

रू०भे०—महमांण, महमांन, मेहमांण, मेहमांन।

मैं'मांनदारी-सं०स्त्री० [फा० मेहमानदारी] अतिथि सत्कार, स्वागत।

मैं'मांनी-सं०स्त्री० [फा० मेहमानी] १ मेहमान बनने की अवस्था या भाव।

२ अतिथि सत्कार, स्वागत।

रू०भे०—महमांनी, महिमांनी, मिहमांनी, मेहमांणी, मेहमांनी, मैंहमांनी।

मैं'मा—देखो 'महिमा' (रू. भे.)

उ०—अधिक वधावत आपतें, जन मैं'मा रघुवीर। सिवरी पद रज परसतां, सुध भौ सलिता नीर।—भगतमाळ

मैमावांन—देखो 'महिमावांन' (रू. भे.)

मैयण—देखो 'मदन' (रू. भे.)

मैया-सं०स्त्री० १ राठौड़वंश की एक उपशाखा। (बां. दा. ख्यात)

२ देखो 'माता' (रू. भे.)

मैयौ—देखो 'मयौ, (रू. भे.)

मैं'र-सं०पु०—१ हाथी, गज। (ना. डिं. को.)

२ देखो 'महर' (रू. भे.)

उ०—१ वंदण स्री गुरुदेव कूं, जिण काटै जंजाळ। मूझ सुणाया मैं'र कर, गुण थारा गोपाळ।—भगतमाळ

मैं'रबांन—देखो 'मैं'रवांन' (रू. भे.)

मैं'रबांनी—देखो 'मैं'रवांनी' (रू. भे.)

मैं'रवांन-वि० [अ० मेह्रबान] १ जो दया, कृपा, अनुग्रह करता हो, कृपालु, दयालु।

उ०—नहर सुधार रु नीर री, दाटी सैर दुमार। मैं'रवांन मुरधर महिप, हैर गया म्है हार।—ऊ. का.

२ दातार।

३ मित्र, दोस्त।

रू०भे०—महरबांन, महरवांन, महिरबांन, महिरवांन, मेहरबांन मैं'रबांन, मैंहरबांन, मैंहरवांन,

मैं'रवांनगी, मैं'रवांनी-सं०स्त्री० [फा० मेह्रबानी] १ कृपा, दया, अनुग्रह।

२ तरस।

उ०—थांनै कुंवरजी वणावणा चावै है। मैं'रवांनी करावौ। पेमजी री जाड़ चिपगी। दांती जुड़गी। उथलौ नी आयौ।—दसदोख

३ करुणा।

४ ममता, प्रेम।

रू०भे०—महरबांनगी, महरबांनी, महरवांनगी, महरवांनी, मिहरवांनी, मेहरबांनी, मैंहरबांनगी, मेहरवांनी, मेहरवांनगी, मैं'रबांनी, मैंहरबांनी।

मैं'राब—देखो 'मेहराब' (रू. भे.)

मैं'राबदार—देखो 'मेहराबदार' (रू. भे.)

मैरियाळ, मैरी-सं०पु०—रहट में जोते जाने वाले बैलों में से अन्दर की ओर चलने वाला बैल। (मि० मेढी)

मैरूम—देखो 'महरूम' (रू. भे.)

मैरौ-सं० पु०—ऊंची और पथरीली भूमि, मगरा।

मैल-सं० पु० [सं० मलिन प्रा०-मइल] १ शरीर या वस्त्र आदि पर लगने वाला वह गंदा तत्व जिसके चिपकने से शरीर की स्वच्छता व वस्त्रादि की चमक धुंधली पड़ जाती है, कीट, मैल, गंदगी। (डिं. को.)

उ०—१ मूंजी सूं मूंजी रौ कांम ले लेणौ सोनजी रै नख सूं मैल काढणौ हो।—दसदोख

उ०—२ नख बधियोड़ा निपट, सीत बधियोड़ौ साथै। दुख बधियोड़ौ डैल, मैल बधियोड़ौ माथै।—ऊ. का.

उ०—३ ऊंट री खाल री जांमौ। ठौड़ ठौड़ फाटोड़ौ। गधा री खाल रा फाटोड़ा लिग्तरा। डील माथै मैल री पड़पड़ियां जमियोड़ी। अमर बकरा री गळाई उण रौ डील भूंडै ढाळै बासतौ। —फुलवाड़ी

२ विकार, दोष, दूषण।

उ०—नांव परताप डर डाकणी ना लगै। नांव परताप मन मैल धोया।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

रू० भे०—मलि, मळी, मेल।

मैं'ल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ मोटा-मोटा मैं'ल दिखाळ्या अर भोळा ने भळै चकमौ दीनौ। ठगी माथै कमर बांधी, सोखीनाई नैं धोखा धड़ी सूं सांधी।—दसदोख

उ०—२ राजा नै सराप देयनै अबै सांयड पाछी वळी। गांव सांमी सोय करनै खोड़ावती, ढचूं ढचूं करती जावती, जावतां जावतां मारग में राजा रौ मैं'ल आयौ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—तद माळवणी बोली मैं यु सांभळियौ छौ, क्यूं हेक कंवरजी नुं ग्रह मौळा था तद राजाजी नुं पंडितां कह्यो-हीज एक नीच रै घरे परणावौ जिम भार टळै तद एकण नीच रै घरे परणाया छा, सु ऊ मैं'ल होय तौ जांणां।—ढो. मा.

मैलखोरौ-वि०—जिस पर जमा हुआ मैल दिखाई न देता हो, मैल को आत्मसात करने वाला। (रंग)

सं० पु०— एक वस्त्र को मैल से बचाने के लिए उसके नीचे धारण किया जाने वाला दूसरा वस्त्र। ज्यूं शरीर पर कुरते के नीचे बनियान, साफे के नीचे टोपी, पजामा या धोती के नीचे कच्छा इत्यादि।

मैलझलौ-सं. पु.—१ घोड़े की पीठ पर डाला जाने वाला एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—सांहणी विरदाय संवार सलौ। जिण पीठ प्रसीनेय मैलझलौ। पा. प्र.

२ देखो 'मैलखोरो'।

मैलणौ, मैलबौ—देखो 'मेलणौ, मेलबौ' (रू. भे.)

उ०—१ दुरघर बेळा कठण दुहेळी, उर घर म्है अकुळावां। मुरधर धणी मसांण मैलनै, पुरघर जांण न पावां।—ऊ. का.

उ०—२ म्हारै एक विस्वास री डावड़ी है। उणनै मरदांनौ भेख कराय नै कंवरां रै सागै मैलदां। साथै कटोरदांन में विस रै

लाडुवां री संभाळ घालदां ।—फुलवाड़ी

उ०—३ अेकला बैठा ई कड़मड़ कड़मड़ करण लागा। आ कोई बींनणी है के बजराक है। घर नैं हेमाळै मैल देवेला।—फुलवाड़ी

उ०—४ तारै रावळजी बोलीया-म्है तौ नाळेर पाछौ मैल देसां।
—वीरमदे सोनगरा री वात

मैलणहार, हारौ (हारी), मैलणियौ—वि०।

मैलिग्रोड़ौ, मैलियोड़ौ, मैल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मैलीजणौ, मैलीजबौ—कर्म वा०।

मैलमाळिया—सं० पु० [ब. व.] दीपावली पर बनने वाले शक्कर के खिलौने, जो महल की बनावट के होते हैं।

मैलरखौ—देखो 'मैलभलौ'।

उ०—पूरौ संज मांडियां बिना चढ़ण री खोड़ ही। लारैं दुमची। मोरां मैलरखौ। पछै पड़ची। डळी माथै खोगीर अर पछै काठी।
—फुलवाड़ी

मैलांण—देखो 'मेलांण' (रू. भे.)

उ०—रूपां मालाळी हुई नै वळै कोड कियौ। आगै नाहर उवेड़ी हूवौ। जरै मन बिवणी हूवौ। सारां सिरदारां सांवण बाद आधा चलाया। तिकौ कोस दस रै माथै मैलांण कीयौ।
—जैतसी ऊदावत री वात

मैलाकरम—सं० पु० यौ०—१ वह जो समाजिक व मानवता की दृष्टि से उचित न हो, अनुचित कार्य, कुकृत्य, कुकर्म।

२ वाम मार्गियों के कार्य।

३ दुर्भाग्य।

मैलाणौ, मैलाबौ—देखो 'मेलाणौ, मेलाबौ' (रू. भे.)

उ०—हमें कांई करूं? सीधौ झालूं का पाछौ लौटावूं? चट, चेळकै हुयगी। तुरत बुद्धि तुरकड़ाळी कैवत सारू संमळगी। हाजरियै अर गिलपिली सूं सीधाळा थाळ सांमली साळ में मैला लिया।
—दसदोख

मैलाणहार, हारौ (हारी), मैलाणियौ वि०।

मैलायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मैलाईजणौ, मैलाईजबौ—कर्म वा०।

मैलात, मैलायत—देखो 'महलायत' (रू. भे.)

उ०—१८३२ री साल मंयलौवाग नैं भालरौ करायौ नै वाग रौ कमठौ मैलायत कंवळ-चौकी बंगलौ आददे सारा पासवांनजी रै हाथ हुवौ, तिण रा रू० ५०००००) पांच लाख अंदाज लागा।
—मारवाड़ री ख्यात

मैलापण, मैलापणौ—सं० पु०—मलिनता, गंदगी, विकार।

मैलामंतर—सं० पु०—तांत्रिक क्रिया।

मैलायोड़ौ—देखो 'मेलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मैलायोड़ी)

मैलियोड़ौ—देखो 'मेलियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मैलियोड़ी)

मैळू—सं० पु०—गाड़ी के चक्र की नाभि के चारों ओर लगाया जाने वाला गोलाकार लोहे का टुकड़ा।

मैलौ—वि० [सं० मलिन, प्रा०—मईल] १ (स्त्री० मैली) जिस पर मैल या गंदगी लगी हो, अस्वच्छ, गंदा, मलिन।

उ०—१ आपरौ बेटौ दो टाबरां रौ बाप होय गांव री मैली उखरड़ी माथै लुटै तौ थांरा घर रौ कुरब नीं घटै।—फुलवाड़ी

उ०—२ हळदी भट धीमाई सूं बोल्नी-ले भाई, थूं कद कद कैसी, कादौ साफ करतां म्हारा किसा हाथ मैला व्है।—फुलवाड़ी

२ बदबूदार, गंदा।

३ विकारयुक्त, दूषित।

उ०—१ मैलौ अत अदतार मन, रुच जस तणीं रहै न। तन काळौ विसहर तणौ, कंचुक सेत सहै न।—बां. दा.

उ०—२ काटळ आवध मूझ कर, मन मंदाइण व्रन्न। आवध राखै ऊजळा, मैला ज्यांरा मन्न।—बां. दा.

उ०—३ मन मैला चख मांजरा, भालै जे चख भांज। गोला अवगुण नू ग्रहै, गुण भलपण रा गांज।—बां. दा.

४ पतित, हीन, नीच,।

उ०—१ मैला मिनख बचन रै माथै, बात बणाय करै विस्तार। बैठ सभा बिच मूंडा बारै, बचन काढणौ, बहुत विचार।—बां. दा.

उ०—२ ऊपर सूं जिता ऊजळा रैवै, दुनिया माय नै बिता ही मैला माड़ा कैवै।—दसदोख

सं०पु०—१ मल, विष्ठा।

उ०—१ मैले ऊपरै मांखियां, गणणाटा लै गैल। हैकड कठीनै हालिया, डबी खलींगण डैल।—ऊ. का

उ०—२ पण कुण परवा करै। हाल नखां रौ मैलौ ई को धुपियौ नीं। आं कांळिदर रा बिचियां नैं कित्ता दौरा पाळ पोस नै मोटा करिया, वांनै इण बात रौ कांई चेतौ।—फुलवाड़ी

२ कूड़ा, कचरा।

३ रैबारी जाति के ढाढियों का वह व्यक्ति, जो भील, सरगरा बांभी आदि निषिद्ध जातियों के यहां भोजन कर चुका हो।

रू० भे०—मइलौ, मयलू, मलि, मेलौ, मैलण।

मैलौमाथौ—सं० पु०—स्त्रियों की ऋतुमति (रजस्वला) होने की अवस्था, दशा।

उ०—सु वा वैर मैलौमाथौ हुती तिणरी छाया पड़ी।—नैणसी

मैल्हणौ, मैल्हबौ—देखो 'मेलणौ, मेलबौ' (रू. भे)

उ०—सूरौ आयै सांकड़ै, मना न मैल्है मांण। हरिया मरणौ आदरै, पेस न छाडै प्रांण।—स्रीहरिरांमदासजी महाराज

मैल्हांण—देखो 'मेलांण' (रू. भे.)

मैल्हियोड़ौ—देखो 'मेलियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मैल्हियोड़ी)

मैवट, मैवट्ट–वि० – महान, बड़ा। (ल. पि.)

उ०—१ अंग अंग अवल फट मिळ धाए **मैवट**, धार धजव्वट घोम धिखै। आहुडिया अविग्रट बध्धै रिणवट, वळिवंत बाथट बल्ळ बखै —गु. रू. वं.

उ०—२ है पलांण न ऊतरैं, रहै दळ चाकै चडिया। मिळै कोट **मैवट्ट**, घण घट धाए घडिया।—गु. रू. बं.

उ०—३ गढ़ लियण कोट **मैवट्ट** में, कमधज दिखण मथण कळी। महि तैहिज मार मनावि इम, खेडेचा राउ खगबळी।—गु. रू. वं.

रू० भे०—मेवट, मैवट्ट, मैमट्ट।

मैवास—देखो 'मेवास' (रू. भे.)

उ०—१ गिरकंदर पाहाड, गाहि पाए केकांण। किया मट्ट **मैवास** प्रज्ज पाळी मेल्हांण।—गु. रू. वं.

उ०—२ है पाई गिरि गाहिजै मारीजै **मैवास**। निस वासर नागाद्रहा, हियै न पूजै सास।—गु. रू. बं.

मैवासी—देखो 'मेवासी' (रू. भे.)

मैवासौ—देखो 'मेवासौ' (रू. भे.)

उ०—नर है मोरठ तणा नर नवै, रूकां मुह **मैवासा** राय। आया पाय तिके ऊबरिया, प्रळै किया सेनायां पाय।—द. दा.

मैं'सूल—देखो 'महसूल' (रू. भे.)

मैं'सूस—देखो 'महसूस' (रू. भे.)

मैहण—देखो 'महारणव' (रू. भे.)

उ०—**मैहण** तजै मरजाद, अरक पिछम दिस ऊगमै। सांभळ सावळ साद, पाबू नट बैसे परो।—पा. प्र.

मैहणी—देखो 'मे'णी' (रू. भे)

उ०—मा चांपाउत मेलिया, साम्हा निज भड़ सेर। 'उरजण' रा मत जांणजौ, **मैहणी** जैसलमेर।—वी. स. टी.

मैहणौ—देखो 'मैणौ, मैं'णौ' (रू. भे.)

मैहमंत, मैहमत—देखो 'मैमंत' (रू. भे.)

मैहमद—देखो 'मैंमंद' (रू. भे.)

उ०—माथै रौ रम **मैहमद** लीयौ तौ **मैहमद** रौ रस राजिद लियौ कहि रे गुमांन करूं रसिया।—लो. गी

मैहमांनी—देखो 'मैं'मांनी' (रू. भे.)

उ०—उठाथी सलूंबर आयौ, तरै सीसोदियां रै रावत खंगार रतनसीयोत **मैहमांनी** करी।—नैणसी

मैहर—देखो 'महर' (रू. भे.)

उ०—तिण रै पगै लागा। कह्यौ–म्हांनूं गरीब नाथ स्राप दियौ, राज गयौ हमैं राज री **मैहर** हुवै तौ म्हे अठै टिकां —नैणसी

मैहरबांन—देखो 'मैं'रवांन' (रू. भे.)

मैहरबांनी—देखो 'मैं'रवांनी' (रू. भे.)

मैहरवांन—देखो 'मैं'रवांन' (रू. भे.)

उ०—१ अर राजा पण **मैहरवांन** हुवौ।

—गांम रा धणी री बात

उ०—२ तद पातसाहजी बौहत **मैहरवांन** हुवा। अनूपसिंघजी नूं महाराज रौ खिताब वगसियौ।—द. दा.

मैहरवांनी—देखो 'मैं'रवांनी' (रू. भे.)

उ०—लालजी नै कैयौ–पिताजी थे मेरै माथै मोटी **मैहरवांनी** कर'र दायजौ दिखाळण हाळी जिदनै छोडदयौ।— दसदोख

मैहरांण—देखो 'महारणव' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

उ०—दांन के प्रमांण हुहूं राजा नूं के पांण। मेघ के मंडांण कहा सातूं **मैहरांण**।—रा. रू.

मैहरात—एक जाति।

उ०—जैतारण था कोस पूरब माहै। **मैहरात** बसै। धरती हळवा १० खेत कंवळा। ऊनाळी कोसेवटा हुवै।—नैणसी

मैहरू—देखो 'महर' (रू. भे.)

मैहल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—अठै हरख वधाई हुई। पाबूजी सोढी जाय **मैहल** माहै पोढ़िया छै।—नैणसी

२ देखो 'महिळा' (रू. भे)

मैहलांण—देखो 'मेलांण' (रू. भे)

मैहलाईत, मैहलायत—देखो 'महलायत' (रू. भे)

उ०—अबै गांम रा धणी री असतरी सोळै–सिणगार सजैनै कोटड़ी मांहै **मैहलाईत** है जंणी मांहै आय बैठी है।

—राजा रा गुर रा बेटा री बात

मैहेली—एक भोज्य–पदार्थ।

उ०—कुमाच **मैहेली** महरि ए मंडोवर के मूंग सुखदा सराय। भोग लंजहा के भात जाय के फूलां की सोभा दरसात।—सू. प्र.

मों—देखो 'मो' (रू. भे.)

मोंड़ौ—देखो 'मोड़ौ' (रू. भे.)

मोंच—देखो मोच' (रू. भे.)

मोंचकरोत–सं पु.—लकड़ी को लम्बाव की ओर से चीरने का एक प्रकार का बड़ा करोत।

मोंची–सं० स्त्री०—१ कूऐ से पानी निकालने के काम आने वाला, लकड़ी का एक उपकरण, जिसके चड़स बांधा जाता है।

२ काष्ठ का एक उपकरण जिससे मिट्टी डाली जाती है।

३ देखो मोची' (रू. भे.)

मोंडकौ–सं० पु०—कूऐ के अंदर की ओर, ईंट या पत्थरों का बना हुआ वह भाग जिस पर वह गोल लट्ठा (लाट) रखा जाता है जिसके सहारे पानी के पात्रों को ऊपर लाने वाला घेरा (डाबडौ) घूमता है।

मोंण—१ देखो 'मैंण' (रू. भे.) २ देखो 'मोण' (रू. भे.)

मोंसर—देखो 'मौसर' (रू. भे.)

मोंसी—देखो 'मासी' (रू. भे.)

मोंसीहाई—देखो 'मासियाई' (रू. भे.)

मोंहडौ—देखो 'मूंडो' (रू. भे.)

उ०—१ कुंवरसी ऊठ भीतर मां कन्है गइयौ। मां छाती सूं लगाय मिळी, मोंहडे ऊपर हाथ फेर राई लूण वारिया।
—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ हुकुम कियौ इस ही जायगा मोंहडा आगे इलाज करौ।
—दूलची जोइये री वारता

मो–सर्व०[सं० मम] १ मुझ, मैं।

उ०—१ करूं न दरस अंतर इण काया। मो तौ चरण सेव गढ़ माया।—सू. प्र.

उ०—२ तिण पणि त्रीकम जे परमेस्वर का जस को पार न पायौ तौ मो मीडका कौ किसौ वस छै।—वेलि टी.

उ०—३ हरीया मारग अगम की, मो सेती गम नांहि। कहि कैसी विध पाईयै, चित गयौ ता मांहि।—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—४ कथ पाबू कैहबा कनियांणी। करौ हुकम मो पर कनियांणी।—पा. प्र.

२ मुझे, मुझको।

उ०—१ त्रिभुवण मांहि न तोसूं तोलै। सरण राख मो ईसर बोलै। औ संसार असार अनांमी, साहिब सरणै राखौ सांमी।
—ह. र.

उ०—२ तूं मत भागै सायबा, तो भागां मो खोड़। साईनी हांसी करै, दे ताळी मुख मोड़।—अज्ञात

३ मुझपर, मुझसे।

उ०—छत्रपत 'गजबंध' गांजणौ छत्रपत, बिया 'मालदे' चमर-बंबाळ। मो चीत्रिया न जावै मारू, तूं तेवड़ा करै रणताळ।
—गु. रू. बं.

४ मेरा, मेरी, मेरे।

उ०—१ मो तेरा वंदै हिंदू तुरक, जेती उगै आथमैं। 'गजसाह' कहै पतिसाह दळ, मो उभै कुण आंगमै।—गु, रू. बं.

उ०—२ म्हारां मननी आसा पूरौ, राजि म्हांरा कठिन करम दल चुरउ। थांरा गुण सुं मो मन लागौ, राजि हियइ राखुं रे बांभण जिम तागउ।—वि. कु.

उ०—३ हरि जस रस साहस करे हालिया। मो पंडिता वीनती मोख। अम्हीणा तम्हीणै आया,स्रवण तीरथे वयण सदोख।
—वेलि

उ०—४ थळवट अळग थईह, कुळबट ब्रद भूली किनां। करनी कठै गईह, मो बिरियां मेहासद।—हिंगळाजदांन कवियौ

उ०—५ आखरी लाख मांनै न औ खाक करी मम खाल री। कुण सुणैं साल मोटी कथा, हाय व्यथा मो हाल री।—ऊ. का.

उ०—६ बैनांणी ढीलौ घड़ै, मो कंथ तणौ सनाह। विकसै पोइण फूल जिम परदळ दीठां नाह।—हा. झा.

रू०भे०—मों, मोइ, मौ।

मों'—देखो 'मोह' (रू. भे.)

उ०—मांनुखा जनम पाय कहा कीया, स्वरुप आपणा नहीं जांणा। मन सूता मो' माया माहीं, इनकूं वेग जगाय लैणा।
—स्री सुखरांमजी महाराज

मोइ—१ देखो 'मो' (रू. भे.)

उ०—कै तौ जोगी जग में नांहीं कै'र बिसारी मोइ। कांईं कित जाऊंरी सजनी, नैण गुमाया रोइ।—मीरां

२ देखो 'मोई' (रू. भे.)

मोइल–सं० पु०—देखो 'मोयल' (रू. भे.)

मोई–सं० स्त्री०—१ प्राय सारे राजस्थान में होने वाली एक झाड़ी विशेष।

२ बच्चों को खिलाने के लिये, मूंग के आटे को सेंक कर बनाया हुआ पौष्टिक खाद्य पदार्थ।

३ मसाले मिलाई हुई सूखी भांग।

४ देखो 'मो' (रू. भे.)

उ०—१ प्रीत कियां सुख नहिं मोरी सजनी जोगी मीत न कोई। रात दिवस कळ नाहिं परत है, तुम मिळियां बिन मोई।—मीरां

मो'इंडकौ–सं० पु०—बच्चों का एक खेल।

मोउ, मोऊ—देखो 'मऊ' (रू. भे.)

उ०—जाडा घन वाळा सिंधू तट जुड़िया, गाडा तन पाळा गुज्जर धर गुड़िया। घर घर छपनैं पै घर घर री घाली, मोऊ मुरधर री सनमुख सूखमाल्ही।—ऊ. का.

मोकड़ौ—देखो 'माकड़ौ' (अल्पा., रू. भे.)

मोकणौ, मोकबौ—देखो 'मूकणौ,मूकबौ' (रू. भे.)

उ०—थेट्ट छोड बवां थोक, मह अघ दीघ हांसल मोक। सातं ईतरौ नह सोक, लंगर सुखी सगळा लोक।—र. रू.

मोकणहार, हारौ (हारी), मोकणियौ—वि०।

मोकिओड़ौ, मोकियोड़ौ, मोक्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोकीजणौ, मोकीजबौ—कर्म वा०।

मोकदमौ—देखो 'मुकदमौ' (रू. भे.)

मोकळ–सं०स्त्री०—१ इजाजत, आज्ञा

२ छुट्टी, अवकाश।

सं० पु०—३ विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ खरगोस का मांस, जो बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

४ देखो 'मुकळायत' (रू. भे.)

उ०—जाता गैले जिम जुंळ जुळ हंसि जोता। रोटी मांगण सूं पैलांवस रोता। छिन छिन खाती बिच छडती नित छाती। मोकळ चाकळ में कोकळ नह माती।—ऊ. का.

५ देखो 'मोकळौ' (मह., रू. भे.)

उ०—१ चढ़ती कंठळि वीज चमक्कै, झड़ माचंते सुकवि भणक्कै। ऊनड़ हरा इंद्र ऊवक्कै,गुणियण मोकळ सिंहड़ गहक्कै।
—आसौ बारहट

उ०—२ ऐरापति जसतिलक अठी दळ, मतवाळौ छावौ मद मोकळ। दळ सिंगार गज घंट बहादर, मद मेदंनी विकट गज-

भम्मर।—रा. रू.

मोकळउ, मोकलउ—देखो 'मोकळौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—संभलि, पुत्र ! तूं सीखडी, ए सी ताहरी पइरि, मन नवि कीजइ मोकलउं,चारित्र विधि रे सूधी तूं करि कि।

—नळदवदंतीरास

मोकळणौ, मोकळबौ, मोकलणौ, मोकलबौ—क्रि० स० [सं० मोक्षणम्]
१ जाने के लिए प्रेरित करना, भेजना, पठाना।

उ०—१ ग्रहि पांन एम कहियौ अगंज, झट खग बौह बाहू झलूं। मोकळूं पकड़ि मदकर मिलक, मुदफर रौ सिर मोकळूं।—सू. प्र.

उ०—२ तुम्हारौ आगमन क्यां हुग्रौ। कह कहतां कहि। किल कहतां निश्चय। कस्मात् कहतां कुण थळ थे आयौ। किमरथ कहतां कुण कारच कैन कहतां कुणं मोकल्यौ।—वेलि. टी

उ०—३ रांणां सांड्या मोकल्या जी, पाछा ल्यावौ मोड़। कुळ की मांडण इस्तरी जी, मुरड़ चली राठौड़।—मीरां

उ०—४ जे. जे मालिक राइ झालीया, ते कुंअरी नइ पाछा आलीया। आगेवांण दाखवइ वाट, साथि मोकल्यउ बीजउ भाट —कां. दे. प्र.

२ मुक्त करना, आजाद करना।

उ०—बाइ मोकळि न मूं मदि मातउ, कूड कीचक पर स्त्री रातु। झूंबिसि किमइ मूरख मूं रहइं, उरतउ हुसि स्वांमिनि तूं रहइं।

—सालिसूरि

३ छोड़ना, त्यागना।

उ०—कूड़ कपट कलि विकलां केलवी, कीजइ छं केइ कांम। अखावाद पगोपग मोकलौ, सी गति थासी स्वांम।—ध. व. ग्रं.

४ देना।

उ०—हरख मिळै आदर करै, पोखै थाळ मंगाय। मीठौ उत्तर मोकळै, मीठौ सूंब कहाय।—बां दा

५ फैलना, बिखरना।

उ०—मारू ऊभी गोख तळ, सर मोकलांणा केस। जांणक राजा छत्रपति, मारण चढियौ देस।—ढो. मा.

मोकळणहार, हारौ (हारी), मोकळणियौ—वि०।

मोकळिग्रोड़ौ, मोकळियोड़ौ, मोकळ्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोकळीजणौ, मोकळीजबौ—कर्म वा०।

मोकळणौ मोकळबौ—रू० भे०।

मोकळमुख,मोकळमुह,मोकळमूंडी,मोकळमूंवौ-वि०-वाचाल,मुंहफट,लबार।

उ०—कळदार कळस अर चांदी-सोना री छतर चढावै है' मोकळमूंवां मूं' आया बोलै अर अबढा चालै है।—दसदोख

मोकळांण—देखो 'मुकळायत।

मोकळाणौ, मोकळाबौ—क्रि० स० ['मोकळणौ' क्रि० का० प्रे० रू०]
१ जाने के लिये प्रेरित करवाना, भिजवाना, पठवाना।
२ मुक्त कराना, आजाद कराना।
३ छुड़वाना, त्याग कराना।
४ दिलाना।
५ फैलाना, बखेरना।
६ तानना, फैलाना।

उ०—अर बीजौ सकळात ऊपरा मोकळी करि अर ऊभो रहियौ।

—द. वि.

मोकळाणहार, हारौ (हारी), मोकळाणियौ—वि०।

मोकळायोड़ौ—भू० का० कृ०।

मोकळाईजणौ, मोकळाईजबौ—कर्म वा०।

मोकळावणौ, मोकळावबो, मोकलावणौ, मोकलावबौ—रू० भे०।

मोकळायत—देखो 'मुकळायत' (रू. भे.)

मोकळायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ जाने के लिये प्रेरित करवाया हुआ, भिजवाया हुआ, पठवाया हुआ. २ मुक्त व आजाद कराया हुआ. ३ छुड़वाया हुआ, त्याग कराया हुआ. ४ दिलवाया हुआ. ५ फैलाया हुआ, बखेरा हुआ. ६ ताना हुआ।
(स्त्री० मोकळायोड़ी)

मोकळावणौ, मोकळावबौ. मोकलावणौ, मोकलावबौ—देखो 'मोकळाणौ, मोकळावौ' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ खांडइ हाथ घालइं, तेहै सूरे सुभटे संग्रांमि सांचरते सहोदर पुत्र मित्र कलत्र मोकलावी, सप्तांग लक्ष्मी तणा भोग छांड्या।—व. स.

उ०—२ मोकळावी छइ भोज कुंवार। दीधी दासी सहस दुई चारि।—बी. दे.

उ०—३ पिता प्रणांम करूं किस्यूं-मोकळावउं किहां मात। करसिइं ते कलपांत कलि, स्रवणि सुणांतां वात।—मा. कां. प्र.

मोकळावणहार, हारौ (हारी), मोकळावणियौ—वि०।

मोकळाविग्रोड़ौ, मोकळावियोड़ौ, मोकळाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोकळावीजणौ, मोकळावीजबौ—कर्म वा०।

मोकळावियोड़ौ—देखो 'मोकळायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मोकळावियोड़ी)

मोकळियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, भेजा हुआ, पठाया हुआ. २ मुक्त व आजाद किया हुआ. ३ छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ. ४ दिया हुआ. ५ फैला हुआ, बिखरा हुआ।
(स्त्री० मोकळियोड़ी)

मोकळू, मोकळौ, मोकलौ—वि० [स्त्री० मोकळी] १ बहुत, अधिक, ज्यादा, खूब।

उ०—१ मोटा-मोटा मै'ल दिखाळै तथा कूड़-कपट करता थका दोनां कांनी सूं मोकळा ही रिपिया ग्रैंठै, ठगै अर ठोक लेवै।

—दसदोख

उ०—२ मुलक में मोकळा ही फिरिया, लड़िया तिण सूं एक बार तो ईब जोधपुर हालौ।—मारवाड़ रा अमरावां री बारता

उ०—३ आप वसइ तिहां थी छ दिसइ, करइ कोस जाऊं निज मन मांन्या राखइ मोकला, ए छट्ठा व्रत नी अरगला।—स. कु.

उ०—४ पछै कोई ग्राडी-ग्रंवळी के खांगी-ग्रांकी बात नीं करी। करी जकी ई **मोकळी**। पण बेटा रै हीयै विछोव रै दाभ मिटावणी वांरै सारै री बात नीं ही।—फुलवाड़ी

उ०—५ माया मोरी **मोकळी**, वूदी कमी न जाय। जन हरिया सो बूदिसी, भगति भरोसौ थाय।—स्रीहरिरांमदास जी महाराज

२ जो गणना, संख्या या मात्रा की दृष्टि से अधिक हो, बहुत हो। कई, अनेक।

उ०—१ रांणीजी मोकळी वार सगळां नै सावळ घर में समझायौ-बुझायौ, तौ ई वांरो भूत नीं उतरियौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ या ही छै, ग्रोठी, राजाजी री सींव, तालर थोड़ा, ग्रो ग्रोठी, सरवर **मोकळा**—लो. गी.

३ पर्याप्त, प्रचुर, काफी।

उ०—१ रांणी नै चूंवाई, हीरणी रा जतन करनै ग्राछी जगा राखी। खांन-पांण रौ जतनै **मोकळौ** कीयौ हीवै दिन ग्रस्त हुवौ।
—रीसालू री बात

उ०—२ रात रा ग्रापरौ नांणौ भांज, ग्राटौ, घी सकर ग्रांण चूरमौ कर खावै ग्रर बाकी रौ परभात रै पगां ऊंचौ मेल्ह राखै। तंबाखू **मोकळी** डाबी भरी रहै। चाकर घोड़ां नूं पांणी पाय, न्हवाय ग्राय बैठा-बैठा तंबाखूडा पीवै, गल्हां करबौ करै, ग्रमल-तंबाखू खाणै नूं **मोकळौ** ग्रांण देवै सो महिना ग्रढाई उठै इण तरै रहियौ।—सूरे खींबे कांधलोत री बात

उ०—३ यूं तौ म्हारी इछा व्है तौ एक छदांम ई **मोकळी** ग्रर यूं म्हैं नीं मांनूं तौ दुनियां रौ ग्राखो धन ई साव थोड़ौ।—फुलवाड़ी

४ चौड़ा, विस्तृत, फैला हुग्रा।

उ०—१ तठा उपरायंत हिरण खुलै छै सू जांणै धोबी रै घर कपड़ा **मोकळा** किया छै।—रा. सा. सं.

उ०—२ तठा उपरायंत चरणां रा गिरदांना **मोकळा** कर जाजमां गिलमां ऊपर बैसजै छै।—रा. सा. सं.

५ तीव्र, तेज।

६ प्रभाव शाली, प्रभाव पूर्ण।

रू०भे०—मोकळउ, मोकलउ, मौकळौ,

मह०—मोकळ, मोकल।

मोकल्यौ—वि०—मुक्त, स्वतन्त्र, ग्राजाद।

उ०—जन हरीया मन **मोकल्यौ**, तीन लोक फिर खाय। जै कोई पकड़ै सूरवौ, सत का बांण संभाय।—स्री हरीरांमदासजी महाराज

मोकस—देखो 'मोक्ष' (रू. भे.)

मोकी—देखो 'मोखी' (रू. भे.)

मोकुब—देखो 'मौकूफ' (रू. भे.)

उ०—चित्र सेवा री हमार है जठै जनांनी दोढ़ी कराई, ने पछै उवा दोढी मांराज बखतसिंघजी **मोकुब** कर वाड़ी रा महलां कनै कराई।
—मारवाड़ री ख्यात

मोकूफ—देखो 'मौकूफ' (रू. भे.) (मा. म.)

मोकेबारदात—देखो 'मौकेवारदात' (रू. भे.)

मोकौ—सं०पु०—१ देखो 'मोखौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मौकौ' (रू. भे.)

उ०—१ खळ तिण री खोटी करै, पापी ग्रनजळ पाय। **मोकौ** लागां मोडिया, चेली सूं चिप जाय।—ऊ. का.

उ०—२ बोदा बतळावै खोदा खावै, सौदा पण सूजंदा है। जद **मोकौ** जोवै सेजां सोवै, ग्ररध निसा उचकंदा है।—ऊ. का.

मोक्ख—देखो 'मोक्ष' (रू. भे.) (जैन)

मोक्खमग्ग—देखो 'मोक्षमारग' (रू. भे.) (जैन)

मोक्कमणि—सं०पु०—एक रत्न विशेष।

मोक्ष, मोक्स—सं०स्त्री० [सं० मोक्ष] १ किसी प्रकार के बंधन से मुक्ति, छुटकारा, ग्राजादी, स्वतन्त्रता।

उ०—बंध नइ **मोक्ष** ना बेउं कारण ग्रछई। दुक्रत नइ सुक्रत जो ग्रउ विचारी।—वि. कु.

२ ग्राध्यात्मिक क्षेत्र में किसी जीव का, जन्म-मरण के ग्रावागमन से छुटकारा, मुक्ति, निर्वाण, कल्याण।

उ०—१ बंक तेज कारण बणैं, निह्चळ तप निरदोस। ग्यांन **मोक्ष** कारण गिणैं, सुख कारण संतोस।—बां. दा.

उ०—२ कठै हंस 'बाळेस' नूं **मोक्ष** कीधौ। दई राजके कंध सुग्रीव दीधौ।—सू. प्र.

उ०—३ जुग-जुग भीर हरी भक्तन की, दींनी **मोक्ष** समाज। मीरां सरण गही चरनन की, पैज रखौ महाराज।—मीरां

उ०—४ जोर सूं बोल्यौ-जैड़ी थारी इंछा मां! म्है थारै लारै जिग करूंला। देस रा सगळा बांमणां नै जीमाऊंला। थारौ **मोक्स** व्है मां। बेटा रौ डंडोत कबूल कर मां, ग्रौ छेलौ डंडौत है।
—फुलवाड़ी

३ स्वर्ग वैकुण्ठ।

उ०—१ जद स्वांमीजी कह्यौः **मोक्ष** देवलोक रौ जांणहार तो तूं ठहरचौ। थारे लेखे नरक जावण हार थांरा गुरु ठहरचा।
—भि. द्र.

उ०—२ जद स्वांमीजी कह्यौः म्हैं तौ यूं न कहां-मूंहड़ौ दीठा स्वरग नरक जाय पिण थांरी कहिणी रै लेखै थांरौ मूंहड़ौ तौ म्हैं दीठौ सो **मोक्ष** ने देवलोक तो म्है जास्यां। ग्रनै म्हांरौ मूंहड़ौ थें दीठौ सो थांरी कहिणी रै लेखै थांरे पांनें नरक ईज पडी।
—भि. द्र.

४ मृत्यु, मौत।

५ शास्त्रानुसार, कल्याण के चार पदार्थों (ग्रर्थ, धर्म, काम व मोक्ष) में से एक। (नां. मा.)

६ उऋण होने की क्रिया या भाव।

७ बचाव।

८ छूट, ढील।

९ बहाव। पात।

१० ग्रहण (सूर्य व चन्द्रमा) के छूटने की क्रिया।

रू०भे०—मोकस, मोक्ख, मोख, मोखि, मौख।
अल्पा०—मोखौ।

मोक्षक–वि० [सं०] १ मोक्ष देने वाला, मोक्षदाता।
२ छोड़ने वाला, छुटकारा दिलाने वाला।

मोक्षण–सं०पु० [सं०] १ मोक्ष देने की क्रिया या भाव।
२ मुक्त होने की क्रिया या भाव।
रू०भे०—मोखण।

मोक्षद–वि० [सं०] १ मोक्षदाता, मुक्तिदाता।
२ छोड़ने वाला, मुक्त करने वाला।
रू०भे०—मोखत्त, मोखद,

मोक्षदा–सं० पु० [सं०] सिक्ख धर्म के अनुसार पांच तत्व, कड़ा, कंघा, कच्छी, कटार व केश, का समूह। (मा. म.)
रू०भे०—मोखदा।

मोक्षदाएकादसी–सं०स्त्री० [सं० मोक्ष+दा+एकादशी] मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी की तिथि।

मोक्षदाता–वि०—मोक्ष या मुक्ति देने वाला।
उ०—देवी मथुरा माईया **मोक्षदाता**, देवी अवंती अजोध्या अघ्घ हाता।—देवि.

मोक्षपद–सं०पु० [सं० मोक्ष+पद] जीव का बैकुण्ठ या स्वर्ग में निवास पाने की अवस्था।
रू०भे०—मोखपद।

मोक्षपति–सं०पु० [सं०] संगीत का एक भेद विशेष (संगीत)

मोक्षमारग–सं०पु०यौ० [सं०मोक्ष+मार्ग] ऐसा कार्य या आचरण जिससे मोक्ष प्राप्ति का योग बनता हो।
रू०भे०—मोक्खमग्ग,

मोक्षविद्या–सं० स्त्री० [सं] १ आध्यात्मिक-विद्या।
२ वेदांत-शास्त्र।
रू०भे०—मोखविद्या।

मोखंत, मोखंतर—देखो 'मोक्ष'।
उ०—१ मेकवीस मूरछा त्रिण (ह) ग्रांम निसपति सुर। लहण भेउ खटराग कांठ अक्खं **मोखंतर**।—गु. रू. बं.
उ०—२ इतरै डूंगरसीजी बोल्या, काकाजी, रजपूतां री साथ घणौ अबखौ छै, पांणी री तिस आगै, तिण सूं राज अब **मोखंतर** पधारीस कोई साथ अनपांणी भेळौ हुवै —जैतसी ऊदावत री बात

मोख–सं० पु० [सं० मयूख] १ सूर्योदय या सूर्यास्त के समय, प्राय: वर्षा ऋतु में, बादल की ओट से, आकाश में दिखने वाला सूर्य की किरणों का समूह।
रू०भे०—मोघ, मौख।
२ एक प्रकार का वृक्ष।
उ०—एरंड अरणी अगथीउ, अखोड़ ताड़ असोख। खजूरि खारिक कुड़ौ सालर, सिबंन सइंबल **मोख**।—रूकमणी मंगळ
३ देखो 'मोक्ष' (रू. भे.)
उ०—१ अवसांण आए छत्री पौरस सरसावै। यह लोक जीप परलोक **मोख** पावै। रा. रू.
उ०—२ माता कर मक्र लहै चक्र **मोख**। तिलत्तिल अंग न जंग संतोख।—मे. म.
उ०—३ समर तजण सूं सौगुणौ, दुरंग तजण रौ दोख। मरद दुरंग जाता मरै, मिळै जिकां नूं **मोख**।—बां. दा.
उ०—४ जोड़ी तो जुगती मिळी, कुशळौ ने तिलोक। ऊ थापै, ऊ ऊथपै, किण विध जासी **मोख**।—भि. द्र.
४ देखो 'मोखौ' (मह., रू. भे.)
उ०—जद स्वांमीजी कह्यौ–कठै धोवसी? जद तिण **मोख** री जागा बताइ–अठै धोवसूं। जद स्वांमीजी कह्यौ–ओ पांणी कठै पड़सी? जद तिण कह्यौ। हेठै पड़सी।—भि. द्र,
५ देखो 'मोस' (रू. भे.)

मोखण—देखो 'मोक्षण' (रू. भे.)
उ०—१ खळ रा दळण दुरद रा **मोखण**, पत रा रखण सुमत रा पेस। कळमें दरस आप रा करतां, प्रगट पाप रा गया प्रवेस।
—र. रू.
उ०—२ गिरंद् गाहटण अभै–मण सजै रिण विसम गत। दोयण घण दाबटण 'जैत' दूजौ। जपै अन सहू जन सिंघ तण विजै जस, साह **मोखण**–ग्रहण भूप 'सूजौ'।—द. दा.
उ०—३ सांगा ग्रह **मोखण** सुरतांणा, कूंभाहरा जोड करतार। किय हरिदास रांण केहरियौ, ब्रविया छत्र चमर बड वार।
—हरिदास चारण 'केसरिया'
उ०—४ दिल्ली दावा–मुदी, तूं हिज आगळ है रांणा। तौ दादौ 'संग्राम', ग्रहण **मोखण** सुरतांणां।—गु. रू. बं.

मोखणौ, मोखबौ–क्रि० स० [सं० मोक्षणम्] १ मुक्त करना, मुक्ति देना।
२ बंधन से छुटकारा करना, छोड़ना, खोलना।
३ रिहा करना, आजाद करना।
४ फेंकना।
मोखणहार, हारौ (हारी), मोखणियौ—वि०।
मोखिओड़ौ, मोखियोड़ौ, मोख्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मोखीजणौ, मोखीजबौ—कर्म वा०।

मोखत्त—१ देखो 'मोक्षद' (रू. भे)

मोखद—देखो 'मोक्षद' (रू. भे.)

मोखदा—देखो 'मोक्षदा' (रू. भे.)

मोखन—देखो 'मोक्षण' (रू. भे.)
उ०—सुरतांन ग्रहन **मोखन** सुजांन, हिंदवांन भांन की करन हांन। गळ फेरि छुरी जैचंद गोत, अप्प नूं पोत करियें उदोत।—ऊ. का.

मोखपद—देखो 'मोक्षपद' (रू. भे.)
उ०—बो खग तोलै बोलियौ, अचळ तणौ कुळ भंम। जूटै खेटां **मोखपद**, माळ पलटां रंभ।—गु. रू. बं.

मोखम—अनिश्चित अवस्था ।
उ०—पेमजी री जाड़ चिपगी, दांती जुड़गी । उथळौ नीं आयौ । हां अर नां, दोनूं **मोखम** में राख र उंकारै सूं हुंकारो भरचौ अर मुण्डै सूं उठ'र रावळै कांनी मूंढौ मोड़चौ ।—दस दोख

मोखमल—देखो 'मखमल' (रू. भे.)
उ०—**मोखमल** मोटा मोलरा, पंच रंग पटकूल । जरी कथीपा जुगति सुं, सखर बिछावै सूल ।—प. च. चौ.

मोखविद्या—देखो 'मोक्षविद्या' (रू. भे.)

मोखांण—देखो 'मुकांण' (रू. भे.)

मोखांतर—देखो 'मुकातर' (रू. भे.)

मोखाणौ, मोखाबौ—क्रि० स० ["मोखणौ" क्रि० का० प्रे० रू०] १ मुक्त कराना, मुक्ति दिलाना ।
२ बंधन से छुटकारा कराना, छुड़वाना, खुलवाना ।
३ रिहा कराना, आजाद कराना ।
४ फिंकवाना ।

मोखाणहार, हारौ (हारी), मोखाणियौ—वि० ।

मोखायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मोखाईजणौ, मोखाईजबौ—कर्म वा० ।

मोखावणौ, मोखावबौ—रू० भे० ।

मोखायोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मुक्त कराया हुआ, मुक्ति दिराया हुआ. २ बंधन से छुटकारा कराया हुआ, छुड़वाया हुआ, खुलवाया हुआ. ३ रिहा कराया हुआ, आजाद कराया हुआ. ४ फिंकवाया हुआ । (स्त्री० मोखायोड़ी)

मोखावणौ, मोखावबौ—देखो 'मोखाणौ, मोखाबौ' (रू. भे.)
उ०—सेखउ राउ ग्रहियउ सीहराइ, ताइया कन्हा **मोखावि** ताइ । राठउड़ 'वीक' कुण करइ रीस, छेहड़ा छत्र मांडइ छत्रीस ।
—रा. ज. सी.

मोखावणहार, हारौ (हारी), मोखावणियौ—वि० ।

मोखाविग्रोड़ौ, मोखावियोड़ौ, मोखाव्योड़ौ – भू० का० कृ० ।

मोखावीजणौ, मोखावीजबौ—कर्म वा० ।

मोखावियोड़ौ—देखो 'मोखायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मोखावियोड़ी)

मोखि—१ देखो 'मोक्ष' (रू. भे.)
उ०—पुरौ स्राप मौ तांम बांणी प्रकासी । प्रभू रांम ओतारि, तूं **मोखि** पासी ।—सू. प्र.
२ देखो 'मोखौ' (रू. भे.)

मोखियोड़ौ—भू० का० कृ०—१ मुक्त किया हुआ, मुक्ति दिया हुआ. २ बंधन से छुटकारा किया हुआ, छोड़ा हुआ, खोला हुआ. ३ रिहा या आजाद किया हुआ. ४ फेंका हुआ ।
(स्त्री० मोखियोड़ी)

मोखी—सं० स्त्री०—१ मकान या मकान के किसी कक्ष में गंदे पानी के निकास के लिये बनी हुई छोटी नाली, मोरी ।
२ गुदा, मूलद्वार ।
उ०—पुटियौ कंवरण लागौ—लोग आ बात जांणण वास्तै भेळा व्हिया के दुनियां में मूंडा घणा है के **मोखियां** घणी हैं ।
—फुलवाड़ी
३ बारी, खिडकी ।
उ०—२ खूट्यां माथै पंरण रा गाभा बाळ में डोळा, तेजाब में पड़चा-घाट खोळा हा, आलां में राछ अर **मोखी**-झरोखा में भांत भांत रा न्हांना मोटा संचा मेल्या पड़चा है ।—दसदोख
रू०भे०—मोकी, मोखि ।
मह०—मोख ।

मोखौ—सं०पु० [सं० मुख] १ गंदे पानी के निकास के लिये बना हुआ बड़ा नाला, मोरा ।
उ०—बासै अति विकराळ महा मुख तारत **मोखौ** । है कूंडौ इक हाथ हाथ हेकरण में होकौ ।—ऊ. का.
२ रोशन दान ।
उ०—च्यारू मेर आभै नै नावड़ती मोटी-मोटी भींत, जकांरै विचाले न खूटी ना **मोखौ**, जाळी, जे'अर ना झरोखौ ।—दसदोख
३ दीवार के अन्दर बना हुआ छेद, विवर, ताख ।
रू०भे०—मोको ।
४ देखो 'मोक्ष' (मह., रू., भे.)
उ०—१ भक्ति ग्यांन वैराग योग यग्य, सील स्वधरम संतोखा । ये सबही सत्व गुण का पायक, जहां सत्व गुण तहां **मोखा** ।
—स्री सुखरांमजी महाराज
उ०—२ जोगाभ्यासी कीजै कीजे संग्रांम सांम छळ मरणौ । पांमीजै मित **मोखौ**, निस्चयं तत निरबांण ।—गु. रू. ब.
उ०—३ सूंस वरत पचखांण में, लागी जावै कोई दोखौ रे । सुगुरू पासै आलोय नै, सुद्ध हुवा मिलै **मोखौ** रे ।—जयवांणी
उ०—४ सुध मन संथारौ करी, करम खपाय गया **मोखौ** रे । राय केसी डुबोई आतमा, जांमा लगाया दोखौ रे ।—जयवांणी
५ देखो 'मोकौ' (रू. भे.)

मोग—१ देखो 'मोख' (रू. भे.)
उ०—ऊगंते रौ माछळौ, आथमते रौ **मोग** । डंक कहै सुण भड्डली, नदियां चढ़सी गोग ।—अग्यात
२ देखो 'मोगौ' (रू. भे.)
उ०—सब भांत कही हम सोगन की, मिजलै सिटळै महि **मोगन** की । अनभायन जोयन आड करें, पुन आय न कोय न खाड परें ।
—ऊ. का.

मोगम—देखो 'मोखम' (रू. भे.)

मोगर—सं०पु० [सं० मुद्गर, प्रा० मोग्गर] १ एक प्रकार का शस्त्र जो गदा के आकार का होता है, मुद्गर । (अ. मा.) (उ. र.)
उ०—१ केहर देखे कुंजरां वन घेर विहंडै, 'मट्टू' झोकी काळमी, कर **मोगर** जडुं ।—वी. मा.
उ०—२ **मोगर** हाथे सहिया रे, अन्याई करै चकचूर । सेवक स्री जिनराय ना प्रगट्यौ जांणै अंकूर ।—स्त्रीपाल रास

उ०—३ सर सींगणि छुरि कुंत सांग गेडीहल **मोगर**। गोळी गोफण संख गुरज मुमळ घण तोमर।—रा. सा. सं.

२ सेना, फौज। (ह. नां. मा., अ. मा.)

उ०—१ हरिणागळ आगळ हरिण हलि, वेगी रयज्ज वखयात वलि। सेंलहथ मेघ चड़ियउ सिहाइ, **मोगर** मुगुल्ल भेळिसी माहि।—रा. ज. सि.

उ०—२ तठा उपरांति राजांन सिलांमति पातिसाह रा दळ बादळ **मोगर** थाट ऊपड़िआ छै।—रा. सा. सं.

उ०—१ रूकहथौ भाटी रंणायर, मांभी तीन साय दळ **मोगर**। —रा. रू.

३ झुण्ड, समूह।

४ मूंग या मोठ की, छिलका उतारी हुई दाल।

उ०—१ इणी भांति रा सींधळी गजराज वेसासनै आंणी छै, तांह नूं मलीदा वेसवार **मोगर** दे दे नैं पाटि आंणि सभाया छै। —रा. सा. सं०

उ०—२ कमोद तुळछी स्यांमजीरा दधि **मोगर** चीनी एळची पूरब कपूर पोहप प्रसंग हरेवी सोरंभ कुसुमवां किय जगनाथ भोग ऐसी चौरासी भांति जिन्हुं के गंज दरसावै—सू. प्र.

५ उक्त दाल की बनी हुई सब्जी।

६ मुसलमान।

७ देखो 'मोगरी' (रू. भे.)

उ०—सिंह आगलि न रहइ गज घटा, अम्रत आगलि न रहइ विस छटा। सींचांणा आगलि न रहइ चिडउ, **मोगर** आगलि न रहई घडु।—नलदवदंती रास

८ देखो 'मोगरौ' (मह., रू. भे.)

रू॰भे॰—मोगळ मौगर।

मोगरवेलि—सं०स्त्री०—मोगरे की लता।

उ०—मांनि कहिउं ते मांनिनी तूं मद **मोगरवेलि**। अलगी हुंती अहि डसइ, क्षीर-व्रक्ष सउं खेलि।—मा. कां. प्र.

मोगरि, मोगरी—सं०स्त्री०—१ मूले की जाति के एक पौधे पर लगने वाली फली, जिसकी सब्जी बनती है।

२ एक कंद विशेष।

उ०—मरडा **मोगरि** मूंसली, तापसतेली कंद। पाजणक्षीर कपूरीआ, चंद चमारी चंद।—मा. कां. प्र.

३ काष्ठ का बना हथौड़ा जो स्वर्णकारों के काम आता है।

४ स्वर्णकारों के काम आने वाला मोटे काष्ठ का उपकरण, जो करीब 1½ फुट का गोल मोटा डंडा होता है तथा जिसका एक शिरा उत्तरोत्तर पतला होता है।

५ उक्त प्रकार का उपकरण जो छत कूटने के काम आता है। इसी प्रकार धोबियों के कपड़े धोने का उपकरण, इत्यादि।

उ०—१ मुरड़ मजेरी मिळै, गांवड़ां निकट घणेरी। त्याय **मोगरी** मार छांण छोडा घर ढेरी।—दसदेव

उ०—२ आ कैय वा बीजळी री गळाई सळावा भरती भच उठा सूं ताचकी सौ **मोगरी** हाथ में आवतां ई आवेस पूरा जोर सूं आगळ रै दोनूं कांनी भचीड़ मेल दिया।—फुलवाड़ी

६ छोटे मोगरे का फूल।

७ दुरमुस, दुरमच।

रू॰भे॰—मोगर,

मोगरेल—सं०पु० [सं० मुद्गर+तैल] मोगरे का तेल।

उ०—धूपेल चांपेल **मोगरेल** करणेल जइतेल एवं विघ तेलिइं चोला भीजाइ।—व स.

मोगरौ—सं०पु० [सं० मुद्गर] १ बढ़िया जाति के वेलै का पौधा।

उ०—१ फबै **मोगरौ** सेवती जाय फूली। अंगी पंति सेवंती भूली अभूली। लता माधुरी मालती फूल लेखै, दसा आप भूलै तपी रूप देखै।—रा. रू.

उ०—२ चंपौ, केवड़ी, केतकी, **मोगरौ**, जुई, कंवळ, गुलाब, रातरांणी, कणेर, गुलमौर, मरवौ, तुळसी, केसर, नागकेसर अर चमेली, सरब इत्याद सुरंगी बनस्पति रा अनोखा थाट हा। —फुलवाड़ी

२ उक्त पौधे का फूल। (अ. मा)

उ०—१ सोन जुह रियाबेल चंवेल चंत्रेली के फुलवाद। **मोगरै** की महक गुलाब फूलूं की सुगंध जवाद।—सू. प्र.

उ०—२ फूली हद फुलवाद चली अलवेलियां। वेहद क्यारयां बीचक राजगहेलीयां। चुणै चंपेली चाय, **मोगरौ** मालती, हरी लता मैं जांण, हेम लत हालती। वणी पना इम वागि क साथि सहेलियां, परिहां रंग भीनी अंनूप रूप रंगरेलीयां।—पनां

३ तलवार की मूठ का सब से ऊपरी गुम्बजदार भाग।

४ आभूषणों पर लगने वाली गुम्बजदार घुंडी, मणिका।

५ देखो 'मुगदर'

६ देखो 'मोगर' (अल्पा., रू. भे.)

मोगळ—१ देखो 'मोगर' (रू. भे.)

२ देखो 'मुगळ' (रू. भे.)

मोगिया—सं०स्त्री०—१ एक अनुसूचित जाति, जो पहले जुरायमपेशा कौमों में गिनी जाती थी। (मेवाड़)

मोगौ—वि० [स्त्री०मोगी] १ अशक्त, कमजोर, निर्बल।

उ०—सुरभी कासारी लारै सुख लेगी, देई बीलोई दोई दुख देगी। 'गोगो'**मोगो** हुय'गोरंधा' गिरियौ,'तेजौ'मोळो पड़ि नेजौ लै तिरियौ। —ऊ. का.

२ मंद बुद्धि।

उ०—पिंड रै आंण लागां पछै, पड़ै सीस पेजार री। मेट रे मेट **मोगा** मरद, बुरी फेट विभचार री।—ऊ. का.

३ मूढ, मूर्ख, अयोग्य।

उ०—लीकां कुळ लोपी जगत न जोपी, खोपी में खावंदा है। जरकावण जोगा मूंसळ **मोगा**, गोगा गुरु गावंदा है।—ऊ. का.

४ चिड़ चिड़े स्वभाव वाला।

५ सिंचाइ की नहर में से खेतों में लगने वाले पानी के खाले की मोरी। (गंगा नगर)

रू०भे०—मोघौ, मौगौ।

मोघ–वि० [सं०] १ अमोघ का विपर्याय, व्यर्थ, बेकार, निष्फल।

उ०—चंद्रहासां रा चौड़ा बाढ़ चखावण रै काज प्रथ्वीराज रा वीरां रै थोभ लगाय लड़ियौ जिकण रौ सीस महेस री मनोरथ मोघ करि अनेक धारांधरा री धारां मांही लागी लीन थियौ।

—वं. भा.

२ निरर्थक।

३ निरुद्देश्य।

४ त्यागा हुआ, त्यक्त।

५ सुस्त।

सं०पु०—१ घेरा, अहाता।

२ मेड़

३ देखो 'मोख' (रू. भे)

मोघौ—देखो 'मोगौ (रू. भे.)

मोड़–सं० पु०—१ मुड़ने की क्रिया या भाव।

२ मार्ग, रास्ता, सड़क या पगडंडी में आने वाला घुमाव व घुमाव का स्थान।

३ किसी वस्तु में पड़ने वाला बल।

४ गर्व, अभिमान।

५ बनावट।

६ किरण। (सूर्य)

रू० भे०—मउड़, मवड़, मावोड़, मोड़ि।

७ देखो मौड़' (रू. भे.)

उ०—१ जगामग मोड़ दहूं बळ जोत, हूरां गठजोड़ दहूं बळ होत। दहूं बळ वीर बिदोरण दंस, हलै परलोक दहूं बळ हंस।

—मे. म.

उ०—२ पण लीधौ 'जैमल' 'पतै' मरसा बांधै मोड़। सिर साजै सूंपां नहीं, चकता नूं त्रोतोड़।—बां. दा.

उ०—३ बरसौ दुलही दिवबधू मन जिण आंणि मरोड़। बर कंकण बर बंधियो, माथै धरियौ मोड़।—वं. भा.

उ०—४ बीन–बीनणी रै माथै सोनै री मोड़ बंध्यौ। बाळक-साल्यां गठजोड़ो जोड़्यौ।—दसदोख

मोड़गर–वि०—पराजित करने वाला।

उ०—मैं पतसाहां मोड़गर केई चतुरंग विरोळी। मौ बांणास त्रौण मैं कई वेळा झकबोळी।—अरजुनजी बारहठ

मोड़ण–वि०—१ मोड़ने वाला, घुमाने वाला।

२ झुकाने वाला, नमाने वाला।

३ मिटाने वाला।

उ०—महरांण मेछांण वंका मद मोड़ण छोड़ण देवां छंग।

—मा. वचनिका

मोड़णौ, मोड़बौ–क्रि० स० [सं० मुरणम्] १ किसी सीधी वस्तु में बल देना, सीधे खड़े को झुकाना, दूसरी ओर घुमाना।

२ धारदार वस्तु की धार टेढ़ी करना।

३ ऐंठन देना, मरोड़ना।

४ चलते हुए को किसी दूसरी ओर जाने के लिये प्रेरित करना, दिशा परिवर्तन करना।

उ०—१ के इत्ता में वांरै कांना रिमझोळां रै मीठा रणकारा री भणक पड़ी। कठै ई कोई भरम तौ नीं व्हैगौ। पण रणकारा तर तर नैड़ा सुणीजण लागा–ठम्मक–ठम्मक। दीवांणजी उठीनै ई घोड़ौ मोड़्यौ।—फुलवाड़ी

उ०—२ ऐकरियौ ओ मारूजी, करला पाछाजी मोड़। राजींदा ढोला, ओळूं घणी आवै म्हारै वीर री।—लो. गी.

५ लौटकर आने या जाने के लिये कहना, पलटाना।

६ वापस करना, लौटाना।

उ०—१ पूत घणौं मैं पालियौ, जूंझण तूं मति जाइ। हूं मोड़ै जाऊं हमैं, सुत दोंही समुझाइ।—वं. भा.

उ०—२ साह कहियौ म्हारा अनांमय रौ उद्देस करि आवै तिका नूं सांम्हैं जाइ हूंही समुझाय पाछा मोड़ि आऊं।—वं भा.

उ०—३ घड़नौ दियौ हो जकां रौ पांछौ घेरचौ नहीं मढ़णौ लियौ जकांरौ ओठौ मोड़्यौ नहीं। ईं हाथ लियौ, वीं हाथ डकारचौ।

—दसदोख

७ पराङ्मुख करना, पृष्ठ फिरवाना, विमुख करना।

८ शरीरांग घुमाना।

उ०—१ दे पटपोरा दोय नांक में दाबै नीकां। मूंछौ खांचौ मोड़ छड़ाछड़ खावै छींकां।—ऊ. का.

उ०—२ धन लोड़ै तोड़ै धरम, विध विध तोड़ै बात। जड़ सनेह खोड़ै जड़ण, गिनका, मोड़ै गात।—बां. दा.

९ लौट जाने के लिये मजबूर करना, पीछे हटाना, खिसकाना, भगाना।

उ०—किसनावत रण कुंभ करारौ, 'रांम' सुजाव 'सुजांण'अकारौ। मधकर तणौ मेघ खळ मोड़ै। जुड़तां भोज कुंवर पित जोड़ै।

—रा. रू.

१० नष्ट करना, मिटाना, तोड़ना।

उ०—१ अजबसिंध ऊदाहरौ, जोड़ै सूरजमाल। पड़ियौ घोड़ै मीरजां, आ मोड़ै गजढाल।—रा. रू.

उ०—२ केहरि छोटौ बहुत गुण, मोड़ै गयंदा मांण। लोहड़ बड़ाई की करै, नरां नखत परमांण।—हा. झा

उ०—३ रण आंमागळ रोड़ि, जोड़ि अछरां गठजोड़ां। सेल घमोड़ां सार, मार मुगळां दळ मोड़ां।—मे. म.

११ छिन्न, भिन्न करना, अस्त-व्यस्त करना ।
१२ लकीर की तरह सीधा न रखना, टेढा करना, टेढ़ी मेढ़ी स्थिति में करना ।
१३ विमुख करना, विरुद्ध करना ।
१४ गिराना, पटकाना ।
१५ कागज, वस्त्रादि में सलवट डालना, समेटना ।
उ०—ग्रंथां में जठै कठै ही रूढी-रिवाजां री वात आवै, पांनौ **मोड़** देवै अर आपरै लेखां में हवालौ देवै ।—दसदोख
१६ काटना ।
मोड़णहार, हारौ (हारी), मोड़णियौ—वि० ।
मोड़िग्रोड़ौ, मोड़ियोड़ौ, मोड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।
मोड़ीजणौ, मोड़ीजबौ—कर्म वा० ।
मुड़णौ, मुड़बौ—अक० रू० ।
मोडणौ, मोडबौ, मोरणौ, मोरबौ, मौड़णौ, मौड़बौ—रू० भे० ।

मोड़तोड़-सं०पु०—घुमाव-फिराव, चक्कर, ।

मोड़बंध, मोड़बंधौ—देखो 'मौड़बंध' (रू. भे.)

मोड़ाणौ, मोड़ाबौ-क्रि०स० ['मोड़णौ' क्रिया का प्रे० रू०] १ किसी सीधी वस्तु में बल दिराना, सीधे खड़े को झुकवाना, दूसरी ओर घुमवाना ।
२ धारदार वस्तु की धार टेढी कराना ।
३ ऐंठन दिराना, मरोड़ाना ।
४ चलते-चलते को किसी दूसरी ओर मुड़ने के लिये प्रेरित करना/कराना, दिशा परिवर्तन करना/कराना ।
५ लौटकर आने-जाने के लिये कहलाना, पलटवाना ।
६ वापस करना, लौटवाना ।
७ पराङ्मुख कराना, पृष्ठ फिरवाना, विमुख कराना ।
८ शरीरांग घुमवाना ।
९ लौट-जाने के लिये मजबूर कराना, पीछे हटवाना, खिसकवाना, भगवाना ।
१० नष्ट कराना, मिटवाना, तुड़ाना ।
११ छिन्न-भिन्न या अस्त-व्यस्त कराना ।
१२ लकीर की तरह सीधा न रखवाना, टेढा कराना, टेढ़ी-मेढ़ी स्थिति में कराना ।
१३ विमुख कराना, विरुद्ध कराना ।
१४ गिरवाना, पटकवाना ।
१५ कागज, वस्त्रादि में सलवट डलवाना, सिमटवाना ।
१६ कटवाना ।
मोड़ाणहार, हारौ (हारी), मोड़ाणियौ—वि० ।
मोड़ायोड़ौ—भू० का० कृ० ।
मोड़ाईजणौ, मोड़ाईजबौ—कर्म वा० ।

मोड़ायोड़ौ-भू० का० कृ०—१ बल दिराया हुआ, सीधे खड़े को झुकवाया हुआ, दूसरी ओर घुमवाया हुआ. २ धार टेढ़ी कराया हुआ. ३ ऐंठन दिराया हुआ. ४ दूसरी ओर मुड़ने के लिये प्रेरित कराया हुआ, दिशा परिवर्तन कराया हुआ. ५ लौटकर आने-जाने के लिये कहलवाया हुआ, पलटवाया हुआ. ६ वापस कराया हुआ, लौटाया हुआ. ७ पराङ्मुख कराया हुआ, पृष्ठ फिरवाया हुआ, विमुख कराया हुआ. ८ शरीरांग घुमवाया हुआ. ९ लौट-जाने के लिये मजबूर कराया हुआ, पीछे हटवाया हुआ, खिसकवाया हुआ, भगवाया हुआ, १० नष्ट कराया हुआ, मिटवाया हुआ, तुड़वाया हुआ. ११ छिन्न-भिन्न या अस्त-व्यस्त कराया हुआ. १२ लकीर की तरह सीधा न रखवाया हुआ, टेढ़ा कराया हुआ, टेढी-मेढी स्थिति में कराया हुआ. १३ विमुख कराया हुआ, विरुद्ध कराया हुआ. १४ गिरवाया हुआ, पटकवाया हुआ. १५ सलवट डलवाया हुआ, सिमटाया हुआ. १६ कटाया हुआ ।
(स्त्री० मोड़ायोड़ी)

मोड़ि—देखो 'मौड़' (रू. भे.)

मोड़ियोड़ौ-भू० का० कृ०—१ बल दिया हुआ, झुकाया हुआ, दूसरी ओर घुमाया हुआ. २ धार टेढी किया हुआ. ३ ऐंठन दिया हुआ, मरोड़ा हुआ. ४ दूसरी ओर जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, दिशा परिवर्तन किया हुआ. ५ लौटकर आने-जाने के लिये कहा हुआ, पलटाया हुआ. ६ वापस किया हुआ, लौटाया हुआ. ७ पराङ्मुख किया हुआ, पृष्ठ फिरवाया हुआ, विमुख किया हुआ. ८ शरीरांग घुमाया हुआ. ९ लौट जाने के लिये मजबूर किया हुआ, पीछे हटाया हुआ, खिसकाया हुआ, भगाया हुआ. १० नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ, तोड़ा हुआ. ११ छिन्न-भिन्न किया हुआ, अस्त-व्यस्त किया हुआ. १२ सीधा न रक्खा हुआ, टेढा किया हुआ, टेढ़ी-मेढ़ी स्थिति में किया हुआ. १३ विमुख किया हुआ, विरुद्ध किया हुआ. १४ गिराया हुआ, पटकाया हुआ. १५ सलवट डाला हुआ, समेटा हुआ. १६ काटा हुआ ।
(स्त्री० मोड़ियोड़ी)

मोड़ी-सं०पु०—खलिहान में अनाज की बालों को कुचलने के लिये गोल गोल घूमने वाले बैलों में से अन्दर की ओर चलने वाला बैल ।

मोड़ेरौ-क्रि० वि०—देरसे, विलंब से ।
उ०—ओर रांणौ पाछौ गढ़ दाखिल हुवौ जणां एक दिन नापौ दरबार सूं **मोड़ेरौ** आयौ ।—नापै सांखलै री वारता

मोड़ौ-सं०पु०—१ दरवाजा, द्वार ।
उ०—के इत्ता में **मोड़ा** रै बारै घोड़ा री हींस सुणीजी । कमसल बात करतां ई आयग्यौ । सेठांणी आडौ खोल बोली-वीरा, थारी ऊमर तौ लांठी ।—फुलवाड़ी
(स्त्री० मोड़ी)
२ विलंब, देरी ।
उ०—१ बेटौ काठी उतारतां उतारतां ई बोल्यौ-आज तौ सांम्ही वेगौ आयौ, थूं **मोड़ौ** बतावै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ राजाजी पाछा वेगा आवण सारू दीवांणजी नै अणूंती ताकीद करी। दीवांणजी थोड़ी ताळ उपरांत पाछा रा पछा आया, पण राजाजी नै खासौ मोड़ौ लखायौ।—फुलवाड़ी

वि०—१ विलंब से, देर से।

उ०—१ काळा में कोडाय चाहि खायौ कर चाळा मोड़ा उघड़चा मित चिरत थारा चिरताळा।—ऊ. का.

उ०—२ भांत-भांत रा छापा काढै कै विरखा सात दिनां में होसी, विरखा मोड़ी होसी, विरखा जरूर कर होसी।—वरसगांठ

उ०—३ अग कहिऔ—मत आव। पण सबळाई साथ आई। राजा रै रसौड़े गया। मोड़ा गया तकण सूं सुआंरा ओळूंभौ दिऔ।

—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री वात

२ बहुत प्रतीक्षा करने के बाद।

उ०—१ माठौ सूरज होळै होळै घणौ चढै। नीठ टुळकतौ टुळकतौ मथारै चढचौ। मथारै आय कठै ई रुप तौ नीं गियौ। सिरकै ई नीं। कित्ती मोड़ौ सिझ्या व्ही।—फुलवाड़ी

रू०भे०—मउड़ौ, मवड़ौ, मोड़ौ, मौड़उ, मौड़ौ।

मोचंग—देखो 'मुखचंग' (रू. भे.)

उ०—ग्यांन को ढोल बन्यौ अति भारी, मगन होय गुण गाऊं ए माय। तन करूं ताल मन करूं मोचंग, सोती सुरत जगाऊं ए माय।

—मीरां

मोच-सं०स्त्री० [सं० मुच्] १ झटका लगने से शरीर के संधी-स्थल की नस का स्थान छोड़ देना।

२ धातु के बर्तन आदि में, दबाव पड़ने या चोट लगने से, पड़ने वाला खड्डा।

३ हटने की क्रिया या भाव।

उ०—तूं माता निस्चिंत रह, मन मंह मत कर सोच। राव निचिंतौ ना करूं, कदै न खाऊं मोच।—डाढाळा सूर री बात

४ नष्ट।

उ०—१ सोच महंमदसाह नूं, मोच थयौ मन मद्द। प्रात ससोकित ज्यूं दिपह, राति अनंद रवद्द।

उ०—२ हुवौ सोच आसुरां हुवौ मद मोच दिलेसर। हुआ देस भैचक्क हुवा अवनेस भयंकर।—रा. रू.

५ शंका, संदेह।

६ निवारण, त्याग।

७ खड़ी लकड़ी को चीरने के लिये, करोत के चारों ओर लगने वाली लकड़ी की चौखट।

[सं० मोचं] ८ केले का फल।

[सं० मोचः] ९ केले का वृक्ष।

१० शोभाञ्जन वृक्ष।

११ देखो 'मौछ' (रू. भे.)

रू०भे०—माच, मोंच, मौच।

मोचक-सं०पु० [सं०] १ साधु, भक्त।

२ मोक्ष, मुक्ति।

३ केले का पेड़।

वि०—छुड़ाने वाला, मुक्त करने वाला।

मोचड़ि, मोचड़ी-सं०स्त्री०—१ पैर की जूती।

उ०—१ जरकस जरी रेसमी जांमौ, रतनां साज सजावै। मणियां जड़ी मोचड़ी चरणां, जोयां ही बण आवै रे रांमैयौ।—गी. रां.

उ०—२ मेह बिना धरती तरसै, मेहड़ौ हुड़ण दै। मोचड़ियां बणावूं मुखमल री मेहड़ौ हुवणदे।—लो. गी.

२ देखो 'मौछ' (अल्पा., रू. भे.)

रू०भे०—मोजड़ी, मौजड़ी।

मोचड़ौ-सं०पु०—१ जूता, बूंट। (अ. मा.)

उ०—घुड़ला सम्रियां दीसै य न ठांण, ना रे पगांणे भंवरजी रा मोचड़ा।—लो. गी.

२ घोड़े की आंख का एक रोग।

रू०भे०—मौजड़ीयौ

मोचण-सं०पु० [सं० मोचन] १ छोड़ने की क्रिया या भाव।

२ रिहाई, छुटकारा, मुक्ति।

३ दूर करने, हटाने या मिटाने की क्रिया।

४ उऋण होने की क्रिया या भाव।

५ बहने या झरने की क्रिया।

उ०—मौड़ै मुख मौड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरण नै सीतल सत वाळी। लुच्चा ललचावै लालच धन लागै। लोचण जळ मोचण सोचण खिणलागै।—ऊ. का.

६ खींचा-तानी, छीना झपटी।

सं०स्त्री०—७ मोची जाति की स्त्री।

उ०—हाथ ज लेस्यां मोचड़ी ए अंमा मोरी। मोचण होय होय जास्यां।—लो गी.

रू०भे०—मोचन।

मोचणअघ—देखो 'मोचन अघ' (रू. भे)

मोचणौ, मोचबौ-क्रि०स० [सं० मोचनम्] १ रिहाकरना, मुक्तकरना, छोड़ना।

२ त्यागना छोड़ना।

उ०—१ साह सुणै विध सोचियौ, गह मोचियौ सगाह। मन ठहराई मेळ री, साह 'अजीत' सलाह।—रा. रू.

३ मिटाना, समाप्त करना।

उ०—साह सुणै अत सोचियौ, मन मोचियौ गरब्भ। ईख प्रताप 'अजीत' रौ, रीत विचारी सब्भ।—रा. रू.

४ बहाना, प्रवाहित करना।

उ०—सुणि पदमणी सोचै रे नयणै जल मोचंरे, परधाने पौचे मन में खलभली रे।—प. च. चौ.

मोचणहार, हारौ (हारी), मोचणियौ—वि०।

मोचिओड़ौ, मोचियोड़ौ, मोच्योड़ौ—भू० का० कृ०।

मोचीजणौ, मोचीजबौ—कर्म वा० ।

मौचणौ, मौचबौ,—रू० भे० ।

मोचन—देखो 'मोचण' (रू. भे.)

मोचनग्रघ-सं०पु० [सं० ग्रघ+मोचन] पापों का नाश करने वाला, ईश्वर । (नां. मा.)

रू०भे०—मोचणग्रघ ।

मोचरस-सं०पु० [सं०] १ सेमल वृक्ष का गोंद ।

२ सेवरी का फूल । (ग्रमृत)

३ मोर पांख, मयूर पिच ।

४ घोड़े के पिछले पैर के घुटनों से ऊपर होने वाला एक रोग, जो ग्रन्दर व बाहर बोर जैसा होता है । (शा. हो.)

मोची-सं०स्त्री० [स्त्री० मोचण] १ चमड़े के जूते बनाने का कार्य करने वाली एक जाति ।

उ०—१ **मोची** डेढ चमार जान में डोली जांचै । चढै चिलमियां चाह नाच नींचां घर नाचै ।—ऊ. का.

२ उक्त जाति का व्यक्ति ।

उ०—हालतां हालतां मारग में **मोची** री हाट ग्राई ।—फुलवाड़ी

रू०भे०—मोंची ।

मोचौ-सं० पु०—१ झुकाव ।

उ०–साथणियां घणाई कळ झळ करिया पण कंवर तौ करड़ावण रै पांण **मोचौ** ई नीं खायो ।—फुलवाड़ी

२ जूता ।

मोच्छ—देखो 'मोक्ष' (रू. भे.)

उ०—जुग जुग भीर हरां भगतां री, दीस्यां **मोच्छ** नेवाज । मीरां सरण गहां चरणां री, लाज रखां महाराज ।—मीरां

मोच्छव—देखो 'महोत्सव' (रू. भे)

मोछण—देखो 'मूछण' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रंतर रै फोवां री लपट,सैंट रै छिडकां री सौरंभ, लूंग-एळची रा **मोछण**, बंध्या पांनांरा बीड़ा, सिगरेटां रा छल्योड़ा डिब्बा, काजू-किसमिस्यां रा गेड़, गांजै रा गोट ग्रर थेड़ लाग रैया है ।—दसदोख

उ०—२ **मोछण** नूं सूला ग्रव्वल तरह रा डाबा में सूं काढ काढ़ देवे छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

मोछव—देखो 'महोत्सव' (रू. भे.)

उ०—चउसठि मघवा मिली कीउ, निरव्वांण **मोछव** सार । ग्रासाढ सुदि चौदसि दिने, पछइ यात्र करी निज ठारि ।—कल्यांण

मोज—१ देखो 'मौज' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रहतै सत डोर 'जगा' छत्रियां गुर,बोह **मोजां** बिध ग्रतुळ बळ । ऊडी जग ऊपर ग्राहाडा, कीरत गूडी तणी कळ ।

—महारांणा जगतसिंहजी रौ गीत

उ०—२ दंडकाळ करंगा तरेस सी गणेसदंत, सूर प्रळैरसम्मा मणेस सुधासार । चंडी सूळ पारजात मराळां पंकतां चंगी,किरमाळां **मोज** पंगी कोसल्या कंवार ।—र. रू.

उ०—३ डूंम न जांणै देवजस,सूम न जांणै **मोज** । मुगळ न जांणै गौ दया, चुगल न जांणै चोज ।—बां. दा.

उ०—४ वीरत कीरत बंस वित, मत **मोजां** गुण मांन । संप सुलच्छण धरम सुख, व्हैयां ग्रघ सूं हांण ।—बां. दा.

२ देखो 'मोजौ' (मह., रू. भे.)

उ०—पहरै नरांमा पंचठांमां, ग्रंग जांमा ग्रोप ए । सोहै सकाजा सीस ताजां, सार **मोजां** जोप ए ।—गु. रू. बं.

मोजड़ी—देखो 'मोचडी' (रू. भे.)

उ०—१ तरे मोचीयां नै बुलाय वां सारी **मोजड़ीयां** कराय खीन-खाप में मंडाय सीवाय नै देवलीयाळी रा डेरां मेली । केयौ-वीन-णीयां तो है नहीं नै **मोजडीयां** हाजर है ।—नैणसी

उ०—२ पाय लाखीणी धरमी रे **मोजड़ी**, हलते राता छे पाव ग्रो ।—लो. गी.

२ देखो 'मोजौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—जरद भीड ज्यारका, सकौ सारोटकरारी, पगां भीड **मोजड़ी** झिलम मसत्तक ग्रधारी —ग्ररजुण जी बारहट

मोजड़ौ—देखो 'मोजौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—मेघवना फाडा बांधिवा, पाए **मोजड़ा** पोगर नवा । खांडां पटा तणा गजवेलि, ग्रलवि ग्रागिला हींडइ गोलि ।—कां. दे. प्र.

मोजांण—देखो 'मौज' (रू. भे.)

उ०—उर करवत वहि ग्रापरै, साठ भडां सप्रमांण । वीकम सिव मारग वहै, ले दीना मोजांण ।—नैणसी

मोजी—देखो 'मौजी' (रू. भे.)

उ०—हुर्रै भर्रै कर नेता हलकारा, लांबा सींगाळा देता लल-कारा । मुळकै बेली चख पोळछ लख **मोजी**, चेली दीठां ज्यूं साधू चित चोजी ।—ऊ. का.

मोजूद—देखो 'मौजूद' (रू. भे.)

उ०—तिण साळां ग्रागळी ऊखेलाय चौसाळै री तरै सुं प्रतापसिंघ जी सा कराई १९३७ में नै मांहें कुवौ १ करायौ तिकौ **मोजूद** है, पांणी भळभळौ है ।—मारवाड़ री ख्यात

मोजूदा—देखो 'मौजूदा' (रू. भे.)

मोजौ-सं०पु० [फा०मोजः] १ पैर में पहनने का, एक बुना हुग्रा वस्त्र, जुराब, पायताबा ।

२ जूता ।

उ०—ताहरां मांडणसी **मोजा** खोल नै तळाव मांहै वडीयौ, धोबौ सो पांणी नांखै छै ।—मांडणसी कूपावतरी बात

३ युद्ध समय पांवों में पहना जाने वाला कवच ।

उ०—१ बळवंत जडै हाथांळां बेय । पैहरिया सार **मोजा** पगेय ।

—गु. रू. बं.

उ०–२ तांहरा केळावै ठाकुर नूं मूळवांणी भीतर बोलायौ,सू वीरै सिलह दगलौ पैहरियां थकां भीतर ग्रायौ छै । सरसूथण पगां मोजा

हथियार सरब बांधा छै। माथै घूघी टोप छै।

—सातल जोधावत री वात

४ कुश्ती का एक पेच, दांव।

५ देखो 'मौजौ' (रू. भे.)

उ०—सु गांव भुणीयांणे जाळीवाड़े वांसे मोजा चरा घणा ही हरा खाई छै।—नैणसी

मोट—सं०स्त्री०—१ बड़प्पन, बड़ाई।

उ०—१ बोलां में ओछा विदर, मोलां में नह मोट। पोळां में 'परताप' रै, गोलां वाळौ गोट।—ऊ. का.

उ०—२ नान्हो कह्यां न नांनडौ, मोटौ कह्यां न मोट। हरिया हरि जांणे जिसौ, बाकी गहीयें ओट।

—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

२ गर्व, घमंड, अभिमान।

उ०—रैत रिछपाळ और दीनन दयाल देख्यौ। मोट महिपाळ-पन मन में मान्यौ नहीं।—ऊ. का.

३ राठोड़ों की एक उपशाखा। (बां. दा. ख्यात)

४ कूए से पानी निकालने का चड़स।

रू०भे०—मोटइ, मोठ।

५ देखो 'मोटौ' (मह., रू. भे.)

उ०—तीन लोक ता वीच मैं, अकल काळ की चोट। जनहरीया जोय मरिसी, छोटा गिनै न मोट।—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

मोटउ—देखो 'मोटौ' (रू. भे.)

उ०—१ अकळ सकळ अवगति अपरंपर, रांमेसर मोटउ राजांन। किसनउ कहइ क्रपा हिब कीजइ, वड दातार वधारण वांन।

—महादेवपारवती री वेलि

उ०—२ देस जिणइ ए देहरउ रे लाल, मोटउ देस मेंवाड़ मन मोहचउ रे।—स. कु.

मोटकौ—देखो 'मोटौ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ छोडाय दियौ मत खोटकौ ए, समझायौ राजा मोटकौ ए।—जयवांणी

उ०—२ मांगळियांणी मोटकौ, पायौ जोयां पी'र, दुभ्रळ 'मदू' 'देपाळदे' सातूं वीर सधीर —वी. मा.

मोटड़ौ—१ देखो 'मोठडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'मोटौ' (अल्पा., रू. भे.)

मोटनक—सं०पु० [सं०] एक वर्ण वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण, दो जगण, अंत में एक लघु एवं एक गुरु से ११ वर्ण होते हैं।

मोटम—सं०स्त्री०—१ बड़ाई, बड़प्पन।

उ०—मोटम सांम धरम्म री, करै होड सह कोय। 'पातल' ज्यूं खग पछटतां, हेल दुहेली होय।—किसोरदांन बारहट

२ महत्व, विशेषता।

३ गर्व, अभिमान।

रू०भे०—मोटिम, मोटिम्म, मौटिम,

४ देखो 'मोटौ' (रू. भे.)

मोटमति' मोटमती—वि०—बुद्धिमान, अकलमंद।

उ०—'मेघ' हरौ तेग खरौ, राज गति मोटमती। पाटपती देसपती, राड तणौ लखपती।—ल. पि.

मोटमन—वि०—१ दाता, दानी।

उ०—क्रीत खाटणा नमौ 'कला' सुत कळोधर सवाया प्रवाड़ा दीह साजा। 'माल' सुत ताक आयौ ज्यूंई मौटमन, रेण मुरधर तणौ कीध राजा —द. दा.

२ उदार चित्त, सहृदय।

उ०—रिमकोट हण जन ओट रक्खण, मोटमन महाराज। तो महाराज रे महराज, माहव मोटमन महाराज।—र. ज. प्र.

३ महत्वाकांक्षी।

रू०भे०—मौटमन।

मोटमरजाद, मोटम्रजाद—सं०स्त्री०—१ स्वाभिमान।

२ गर्व, अभिमान।

३ मर्यादा, प्रतिष्ठा।

मोटयार—देखो 'मोटियार' (रू. भे.)

मोटर—सं०स्त्री० [अं०] १ पेट्रोल, डीजल या कोयले से चलने वाली एक आधुनिक यान्त्रिक गाड़ी।

उ०—कोयलड़ी रौ गीत सरु हुयौ। डागै रै दरूजै मोटर रौ होरन वाज्यौ।—दसदोख

२ वैद्युतिक यन्त्र जिससे मशीनें चलाई जाती हैं।

अल्पा०, मोटरड़ी,

मोटरड़ी—देखो 'मोटर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—समदड़ी मोटौ गांव हौ अर उण दिनां रेल मोटरड़ियां ही कोयनी। इण वास्तै भाड़ा भत्ता री कमी नहीं ही।—रातवासौ

मोटसी—सं०पु०—पंवार वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति। (बां. दा. ख्यात)

मोटाई—सं०पु०—१ मोटा होने की अवस्था या भाव।

२ किसी वस्तु की लंबाई-चौड़ाई, नाप।

३ स्थूलता।

४ बड़प्पन, बड़ाई।

५ उदारता।

मोटापण, मोटापणौ—देखो 'मोटाई'

उ०—दळथंभ हरौ थयौ दूसासण, गहण अरिंदा सारगह। मोटापण वाळौ महाराजा, मोटौ साकौ कियौ मह।

—केसरीसिंघ सेखावत रौ गीत

मोटापौ—देखो 'मोटाई'

मोटायत—सं०पु० [सं० मोट्टायिते] साहित्य में एक हाव जिसमें नायिका अनुपस्थित प्रेमी के प्रति अपने आन्तरिक प्रेम को इच्छा न रहते हुए भी प्रकट कर देती है।

मोटिम—देखो 'मोटम' (रू. भे.)

उ०—१ हा सुंदर सुख सागरु, हा ! मोटिम भंडारउ रे । हा रीहड़ कुल सेहरउ, हा ! गिरुवा गण धारउ रे ।—कवि समय प्रमोद

उ०—२ माघ-प्रयोगि मांनीइ, भड भवदुख भाजंति । मोटिम बारह मास महि, महा-पदवी छाजंति ।—मां. कां. प्र.

मोटिममल, मोटिममल्ल–वि०—१ गर्व एवं गौरव वाला, महान ।

उ०—इह उदयउ अविनपाल, अतुलबळ विसाल, मोटिममल मूंछाल महिम धरौ । कवि कहइ सुजस, सद मलिक स्री अहिमद, दलइ दूजणमद सुहडवरौ ।—व. स.

२ वीर, बहादुर, योद्धा ।

मोटिम्म –देखो 'मोटम' (रू. भे,)

उ०—१ मोटिम्म मेरु मलिकह मुकुट स्री अहिमद उद्दम दमइ । अरिमुंड दडा उछालतउ, असि गेडी रांमति रमइ ।—व. स.

उ०—२ अगां मांत मोटिम्म, सुपन सुचित सुत सुंदर । आठ वरस अधिकार कला अभ्यास कुलोधर ।—कविधरम कीरति

मोटियार–सं०पु०—१ पुरुष, आदमी ।

उ०—कठै ही लुगायां, कठै ही मोटियार, कठै ही वांणिया, कठै ही गिवार, मेळौ सो लाग रैयो है । मंगतां री पांत अर कमीणां जात ल्यावौ, ल्यावौ कर रैयी है ।—दसदोख

२ युवा, जवान, तरुण व्यक्ति ।

उ०—१ दोय जणा अेक कईक ढळती ओस्था री अर एक मोटियार जिकै रै हाथ में लालटेण, बारणो खोल' र हड़बडांवता खाथाखाता दुर पड़्या ।—वरसगांठ

उ०—२ तूठै गोगोजी वूढा ठाढा डोकरां, तूठै भल मोटियारां ओ । गाय गवाड़ै सीखै सांभळै, जिण री गोगोजी पूरै छै आस ओ ।—लो. गी.

उ०—३ तिण सूं आ कहै म्हारो पती म्हारा वूढा पणा पहला मारीजसी इमो सूरमापणो दीसै छै ओर हूं लारै सत कर सुरग में पाछा तरुण मोटियार होय रहसां ।—वी. स. टी.

उ०—४ सु आसथांनजी रौ डेरो एके बांभण रै घरै । तिणरी बेटी मोटियार । तैनूं आसथांनजी देख अर कहण लागा–जु आ विधवा छै ? तद ब्राह्मण बोलियो 'राज' आ कूंवारी छै ।—नैणसी

३ पति, खाविंद ।

उ०—बखत री बात, मां मरै बींरी मौसी ही मरै । मोटियार मरग्यो अर बियेरै लारै लारै बेटौ भी आगीनै गैयो । बापड़ी सूधी भोळी विधवा दोरो सोरो आपरो गरीब गुजरांण करती गयी ।—दसदोख

४ पुत्र, लड़का ।

५ युवकों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला संबोधन सूचक शब्द ।

उ०—१ फेर इण कुंवर नै हीज पूछौ, आपै ठीक पड़सी । ताहरां कोटवाळ पूछियौ–क्योंकर मोटियार, कासूं कहै छै ?

उ०—२ तितरै साह कह्यौ–रै कपूत, कासूं कहै छै, कैरौ बेटो छै ? ताहरां फेर कह्यौ–थांहरौ बेटो छूं । ताहरां कोटवाळ कह्यौ रे मोटियार, यूं विचळियौ क्यूं बोलै छै ।—पलक दरियाव री बात

वि०—१ वीर, बहादुर ।

उ०—१ जैसिंहजी बालक मोटियार फौज आछी सो जाफरखां उज्जीण सूं कूंच करनै नरबदा कन्है जाय पहुंचो ।—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ केसवदास आदमी बडौ संचियार थौ जलाल थौ मरद मोटियार थौ ।—मारवाड़ रा अमरावां री वारता

२ युवक, युवा, जवान ।

उ०—१ इसा में आप नुं खरळ री बोल याद आयौ, जो म्हां कनां सांवण री तीजां रौ कवल लीयौ थौ । तद कुंवर मोटियारां नुं पूछियो, जो तीज कद छै ।—कुंवरसी सांखला री वारता

उ०—२ एक रजपूत रावतजी की हजूर रहै । जको आदमी तौ पाधरो सो । पण मोटियार पगछंटो सो ।—प्रतापसिंघ म्होंकमसिंघ री बात

रू०भे०—मोटयार, मोटीयार, मोट्यार, मोठियार ।

मोटियारपण, मोटियारपणौ–सं०पु०—१ पुरूसत्व, मर्दानगी ।

२ युवावस्था, जवानी, तरुणाई ।

३ इन्सानियत, आदमियत, मनुष्यता ।

रू०भे०—मोट्यारपणौ ।

मोटीनींद–सं०स्त्री०—महानिद्रा, मृत्यु, मौत ।

उ०—जग दातार जनारदन, गिरधारी गुण गेह । व्रजपत रोटी बांटणां, मोटीनींद म देह ।—बां. दा.

मोटीयार—देखो 'मोटियार' (रू. भे.)

उ०—१ म्हांकौ तौ परणीजणौ भव माथै पड़ीयो नै मोटीयारां नै घणा ही नाळेर आसी, मोटी-मोटी ठोड़ां परणसी ।—राव रिणमल री बात

उ०—२ रावळजी तौ पूखता छै नै निबौ मोटीयार छै ।—वीरमदे सोनगरा री वात

मोटीयारगाळौ–सं०पु०—युवावस्था, जवानी ।

मोटेरू, मोटेरौ–वि० (स्त्री० मोटेरी) १ वृद्ध ।

२ जवान, बड़ा ।

उ०—बांभण-उपरि बापड़ी ! एवड़ी भली न प्रीति । मोटेरू को मेलविसु, सुझ मनि मांनिउ मीत ।—मा. कां. प्र.

मोटोडौ–वि०—बड़े वाला ।

(स्त्री० मोटोड़ी)

उ०—१ परस्या परस्या ए मा, मोटोड़ा थाळ । परस्या नणदां रा वाटका —लो. गी.

उ०—२ ए तौ जीमै मांरा कोडिला साळाजी रा मोटोड़ा थाळ में ।—लो. गी.

उ०—३ राजी हुयां कांम में रगडै,नाराजियां करै नुकसांन । छोट-कियां मोटोड़ा छोड़ो, मिळौ सरीखा चाहो मांण ।—चंडी दांनसांदू

उ०—४ कठै बजै वडबोर, कठै झाड़ी मोटोड़ी। कठै बोरटी नांव, वणी देवारी छोड़ी।—दसदेव (स्त्री० मोटी)

मोटौ—वि० [सं० महत्, प्रा० मुह] १ बड़ा।

उ०—१ धर गंगाजळ धार, श्रांणी तपकर ऊजळी। श्रो मोटौ उपगार, भागीरथ कीधौ भुयण।—बां. दा.

उ०—२ मीरां एक बहै मन मांणं, थिर रहियौ चोखां रै थांणं। सौ असवार लियां नित साथै, मोटां त्रास न राखै माथै।—रा. रू.

उ०—३ धर चाढि मांझी मिळे थाट मोटै धड़ै, पिंडवां सताबी तुरां पाखर पड़ै।—जालमसिंघ मेड़तिया री गीत

२ विशाल।

उ०—१ एक मोटा बड़ला माथै दोनां री वासो हौ। बड़ला री साखां नाडी रा पांणी माथै लूमती।—फुलवाड़ी

उ०—२ थोड़ौ मोटौ मन राख! यूं आपौ कांई खोवै। म्हैं तौ हाथी सूं ई सवायौ गाढ जांणती।—फुलवाड़ी

उ०—३ म्हारी जांग में ऐ मोटा मोटा सास्तर थारै जेड़ी काली मासियां ई रचिया दीसै।—फुलवाड़ी

उ०—४ चेजौ करणियां चेजौ करै, पांणी भरणियां पांणी भरै। भण्यां-गुण्यां नै कळा-कारीगरी री किसत सूंपै। मोटा ताजा नै डील सारू खसाई रौ खोरसौ भोळावै।—दसदोख

३ जो मान, परिमांण आदि की दृष्टि से अधिक बड़ा हो।

उ०—डोकरी साळ रै मांय जाय कांसी रौ मोटौ वाटको लाई। गूजरी चरी खांगी करनै वाटकौ ढुळढुळतौ भर दियौ।—फुलवाड़ी

४ जो अपेक्षाकृत बड़ा हो।

उ०—१ मोटौ कांधौ, मोटौ गाल, लाल-राती आंख्यां अर लिलाड पर सळ।—दसदोख

उ०—२ दोलड़ै डील री रंगीलौ जुवांन, चौड़ी छाती अर मुळकतौ मोटौ मूंढौ।—दसदोख

५ जो भावनाओं और गुणों से बड़ा हो। विशेष प्रकार के व्यक्तित्व वाला, उच्च, श्रेष्ठ, महान।

उ०—१ मोटौ दाता मंगियौ, तोटौ भाजै तेण। कीजै सायर खेप किल, जुड़ै जवाहर जेण।—बां. दा.

उ०—२ मनै समझ मोटौ मिनख, जाचण आवै जीव। वौ इउं आवै दिवस, वौ दीजै मती दईव।—ऊ. का.

उ०—३ स्वांमीजी बोल्या—थे कहौ छौ साधू ने लाडू खाणा नहीं तो देवकी रा पुत्रां लाडू वहिरया इम सूत्रां में कह्यौ छै। जब ते बोल्या—ऊवै तो मोटा पुरुस छा। जब स्वांमीजी बोल्या—मोटा पुरुस व्है सो वली खावै इज है।—भि. द्र०

७ जिसकी लम्बाई-चौड़ाई अधिक विस्तृत हो, जो क्षेत्र-विस्तार आदि दृष्टि से बड़ा हो।

उ०—१ मोटै पड़गनै री धणी, नांव सुणतां ही ठाकरां री काळजौ खरणाट कर उठ्यौ।—दसदोख

उ०—२ पादू में एक भायै कह्यौ—हेमजी स्वांमी री पछैवड़ी मोटी दीसै। जद स्वांमीजी लंबपणै चोड़पणै माप दिखाई।

—भि. द्र.

८ जो पद या धन के कारण बड़ा कहा जाता हो।

उ०—१ मोटा मोटा धनवंती बोलवा बोलण लागा के आज दीवांणजी रै हाथां दुस्टी रौ खातमौ व्है जावै तौ मिंदर मिंदर सोना रा निगोट ईंडा चाढैला।—फुलवाड़ी

उ० २ सगाई री हांमळ भरी है, जद ब्याह नै भळै क्यूं लारै छोडौ हो। भळै कोई घाव में घोबौ तथा साख में घोचौ मार नाखसी। मोटा सिरदार है, म्हांसू ही कोई मोटौ घर दबासी।

—दसदोख

उ०—३ मोटां छोटां मुसदियां, बुलवातौ दरबार। जसवंत खातर जीव की, सारां लेतौ सार।—ऊ. का.

९ गौरवशाली, प्रतिष्ठित।

उ०—कुळ मोटै बहुवां कुळ धुवां, मांन महातम निरवहै। कण सूप जिहीं औगण तजै, गुण मोताहळ जिम ग्रहै।—गु. रू. बं.

१० जो आयु की दृष्टिसे बड़ा हो, वयस्क।

उ०—१ औ करतां सता रै बेटौ नरबद मोटौ हुवौ छै। सु नरबद काळ पूंछीयौ, उपाधौ। सु नरबद दिन दिन जोर चढतौ गयौ।

—नैणसी

उ०—२ 'खंगार' पण मोटौ हुवौ। वरस २० तथा २२ मांहै हुवौ। साहबी संभाही।—नैणसी

उ०—३ सु साह रौ बेटौ तौ सारा ही दीठौ। नांनै सूं मोटौ हुवौ।

—पलक दरियाव री बात

उ०—४ सोचौ के जका माईत म्हनै बीस बरसां तक आपरी गोदी में पाळ पोस नै मोटी करी, बेटौ गिणौ चाहै बेटी गिणौ, वांरै वास्तै तौ सेंग म्हैं इज हूं।—फुलवाड़ी

११ लम्बा, दीर्घ।

उ०—१ एक मिणियारा री हाट सूं रूदराछ रा मिणियां री मोटी माळा लाई।—फुलवाड़ी

उ०—२ हरजीमल सेठ रागी थयौ जद रुघनाथजी से उरजोजी साधु मोटौ ओळियौ लेइ वाचबा लागो।—भि. द्र.

१२ जिसका घनत्व बड़ा हो।

१३ जिसकी गोलाई बड़ी हो।

१४ जो महीन पीसा हुआ न हो, बुरबुरा, दरदरा।

१५ महत्वपूर्ण, विशेष।

उ०—१ ज्यांरा मोटा भाग जग, मोटा किरतब मन्न। वां हंदी आसा करै, खैरातौ खटन्नन। बां. दा.

उ०—२ कह्यौ के भाई रा ऐ समंचार सुणियां कीकर ढबणी आवै। चौनिजरियां एक दूजा रौ उणियारौ देख ले तौ मोटी बात।

—फुलवाड़ी

१६ अहंकारी, घमंडी।

उ०—अपणै आपनै **मोटौ** मिनख मांनतौ थकौ सासरै रौ पांणी नीं पीयै ।

१७ गंभीर, गहरा ।

१८ असाधारण, कठिन, भारी ।

उ०—१ नरनाथ जांण राखै निजर, बांण वखांणां विसतरै । व्रजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध **मोटा** करै ।—रा. रू.

उ०—२ खोटै टोटै नग कणियां बीखरगी । माहव **मोटै** दुख जाटणियां मरगी ।—ऊ. का.

१९ अखरने वाला, खटकने वाला ।

उ०—१ सासरियां पेट माथै लात मारनै कह्यौ–रांड, हाल भगवांन रौ नांव जीभ माथै लेवती डरै कोनी । **मोटौ** पाप करतां तौ डरी ई कोनी, अबै कुळ री लाज बचावण वास्तै इण नाकुछ कांम सूं डरै ।—फुलवाड़ी

२० खास, असल,

उ०—घर रा माईत जिणनै आप रौ वेटौ जांणै, उण हूबोहूब उणियारा वाळा मोट्यार नै आपरौ धणी मांनणा में कांई संकौ । उणियारौ अर रंग–रूप ई तौ सगळा नाता री **मोटी** पिछांण ।

—फुलवाड़ी

२१ अत्यधिक, बहुत ।

२२ प्रसंशनीय ।

उ०—राजभगीरथ रांम,जुजठल जस जण जण जपै । कीधां **मोटा** कांम, नांम रहै जेहल नरां ।—**बां. दा.**

२३ तुलनात्मक दृष्टि से जो किसी से बढ़कर हो ।

उ०—१ नसा में झूमतौ राजकंवर रंग–मैल में आयौ । बांमणी धीरप रै सागै सांत मुद्रा में ऊभी ही । मनांग्यांना विचार करियौ के आप सूं **मोटौ** जम बिरोबर । लाज बेचणा बिचै मरणौ वाजिब है ।—फुलवाड़ी

उ०—२ थांनै हजार वार समझाया के रिपिया सूं **मोटौ** तौ रांम ई नीं है, तौ ई हाल थांरै समझ में नीं आई ।—फुलवाड़ी

२४ ज्येष्ठ । (ह. नां. मा.)

उ०—पाद तणौ परधान, गादरौ सांप्रत गोटौ । असुभ चलै को अनुग, मूत रौ भाई **मोटौ** ।—ऊ. का.

२५ खतरनाक ।

उ०—आज अपांरी इण दुनियां में लुगाई रौ **मोटौ** दुस्मी मिनख रै सिवाय कोई दूजौ कोनीं, आ बात सूरज सूं ई वत्ती साची है, पण तौ ई आ दूजी बात ई इण सूं कम साची नीं है के मिनख बिना लुगाई रौ जमारौ साव अकारथ अर बिरथा है ।—फुलवाड़ी

२६ अधिक दिनों का, पुराना ।

ज्यूं०—मोटौ घी ।

२७—भारी, गरिष्ट ।

उ०—तळाव पांणी पीवै । खूटै ताहरां कोहर १ बांधीयौ छै तठै पीवै । पांणी **मोटौ** । जाट बांणीया वसै ।—नैणसी

२८ जबरदस्त, बलवान, शक्तिशाली ।

उ०—फौजां लगस नेजियां फरहर, थरहर अंबागळ दळ घेर । कोटां **मोटां** कळह केवियां, 'जोधा' हरौ करै जुध जैर ।

—सादूळजी खिड़ियौ

रू०भे०—मोटइ, मोटउ, मोठउ, ।

अल्पा०—मोटकौ, मोटड़ौ ।

मह०—मोट ।

मोटौ–ताजौ–सं०पु० यौ०—हृष्ट–पुष्ट ।

उ०—भींटियौ–बोल्यौ–नांनांणौ जावण दै, दूध मळाई पीवण दै, घी अर बटिया खावण दै, **मोटौ–ताजौ** होवण दै, पछै खाजै ।

—फुलवाड़ी

मोटौधणी–सं०पु०—ईश्वर ।

उ०—सारै काज सदीव, थारै ज्यूं **मोटाधणी** । जिती विचारै जीव, पार उतारै तूं 'पता' ।—जैतदांन बारहट

मोटौनृप–सं०पु०—राजाओं में बड़ा राजा, सम्राट ।

मोटौमालक—देखो 'मोटौधणी'

मोट्यार—देखो **'मोटियार'** (रू. भे.)

उ०—१ जाती तो आवै थारै दूर का सांवळिया **मोटयार** । बाबा बजरंगजी रौ बंगलौ हद वण्यौ ।—लो. गी.

उ०—२ **मोटयार** चंग ले'र गांव रै बारै गोरमें जाय पूग्या अर लुगायां चांवटौ माथै ले लियौ ।—रातवासौ

उ०—३ बा: आपरै **मोटयार** रौ राज में पग मांनती, गांव भर री टम जांणती । पण बैः सैः बातां सफा कूड़ी नीकळी ।—दसदोख

उ०—४ काटण नै किरसांण, बखत–बळ भाखां लागै । बांथा नाखै बाळ मिळै **मोटयांरां** सागै ।—दसदेव

मोट्यारपणौ—देखो 'मोटियारपणौ' (रू. भे.)

उ०—बींद मिनखां जेड़ौ मिनख हौ । नीं घणौ रूपाळौ अर नीं साव कोजौ । भर **मोट्यारपणै** ई ब्याव व्हियौ पण ब्याव रौ अणूंतौ कोड नीं हौ ।—फुलवाड़ी

मोठ–सं०पु० [सं० मकुष्ठ, प्रा० माउठ] १ मूंग की जाति का एक द्विदल-अन्न ।

उ०—१ जाट बांणिया रजपूत बांभण बसै । धरती हळवा २०० । बाजरी **मोठ** हुवै । खेत कंवळा ।—नैणसी

उ०—२ पळकती धवळ दूधिया बत्तीसी, जांणै ममोलियां रै बिचाळै मोती परळाट करै । थोडी रै मांय **मोठ** मावै जित्तौ ऊंडौ खाडौ ।—फुलवाड़ी

२ उक्त अनाज का पौधा ।

उ०—१ म्हैं अर थांरा महारांणीजी खेत री माठ माथै सूवर अर भाचरियां नै **मोठ** चरावता हा ।—फुलवाड़ी

उ०—२ देखतां देखतां खेत तौ **मोठां** री हरियाळी सूं लीलांणौ ।

—फुलवाड़ी

३ देखो 'मोट' (रू. भे.)

उ०—अणचींती आ अकाळ मौत सुणी तौ वौ दाग में ठेट मसांण लग हालियौ। उणरै बडापणा री मोठ मरजाद नैंड़ी ई नीं ही।
—फुलवाड़ी

रू०भे०—मउठ, मांठ, मोठउ, मोठ।

अल्पा०—मोठियौ।

मोठउ—१ देखो 'मोटौ' (रू. भे.)

उ०—तूठउ दिइ मोठउ पसाय, नहीं कुव्यसन सात। अन्हाय मारग नगर मांहि नवि जांणइ को वात।—नळदवदंती रास

२ देखो 'मोठ' (रू. भे.)

मोठड़ौ–सं०पु०—बिंदीदार रंगा हुआ एक साफा व ओढना विशेष।

रू०भे०—मोटड़ौ.

मोठफळी–सं०स्त्री०—मोठ नामक अनाज की फली।

मोठा–स०स्त्री०—पूना के पास बहने वाली एक नदी।(बां. दा. ख्यात)

मोठियार—देखो 'मोटियार' (रू. भे.)

मोठियौ—देखो 'मोठ' (अल्पा., रू. भे.)

मोठेड़ौ–सं०पु०—मोठ की फली।

मोड— १ देखो 'मोडो' (मह., रू. भे.)

उ०—रांमदुवारा रौ वौ मोड बांणिया रा सूप्योड़ौ धन सारू गुळाचां खाई तौ उण में कीं ऊंधी बात कोनीं।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मौड़' (रू. भे.)

मोडकी, मोडड़ी—देखो 'मोडी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मोडकी मगरी रौ पांणी ढाळौ ढाळ ढळियौ रे। आबू थारे पहाड़ां में अंग्रेज बड़ियौ रे, काळी टोपी रौ।—लो. गी.

मो ण—देखो 'चोटी बडियौ'।

उ०—तिण समे देवडौ डूंम बोलियौ, रावजी हुं पिण स्री माताजी री लार आयौ छूं। रावळी मोडणें लार छूं।—रा. वं. वि.

मोडणौ, मोडबौ—देखो 'मोड़णौ, मोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—१ मांझी मोगर थटां मोडौ,घातै लखां दळां विच घोड़ो। देसां देसां ऊपरै दौडौ, चढियौ कळि चालण चीतोडौ।—गु रू. बं.

उ०—२ विरह हार त्रोडती, वलय मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र गांजती, किंकणीकलाप छोडती, मस्तक फोडती, वक्ष:स्थल ताडती, कंचूऊ फाडती......।—व. स.

उ०—३ आकासि वैस्वांनर प्रज्वालइ, पाताल कन्या प्रत्यक्ष देखालइ, कडयडाट करतां वनखंड मोडइ, पाताल बलि तणा बंधन छोडइ......।—व. स.

उ०—४ फल पुण तरतर त्रोडइ, मोडइ ए तरूवर डालि। उज्ज्वल निरमल सरसीय सरसीय लेयइं बाल।—जयसेखर सूरि

मोडली—देखो 'मोडी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मूरधर व्हैगी मोडली, धर तौ पड़ता धींग। नर लेगौ नव कोट रा, सींग सवाई सींग।—म. मानसिंह

मोडासिया–सं०पु०—राठौड़ वंश की एक उप शाखा।

मोडियांण–सं०स्त्री०—वह हरिणी जिसके बच्चे कृष्ण हरिण होते हैं। इस हरिणी के सींग नहीं होते हैं।

मोडियोड़ौ—देखो 'मोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मोडियोड़ी)

मोडियौ—देखो 'मोडौ' (अल्पा., रू. भे)

मोडौ–वि०[सं० मुण्डित] (स्त्री० मोडण, मोडी) १ जिसका शिर मुंडा हुआ हो, कटे हुए बालों का।

उ०—खेदौ करै राजा घणौ बोलै वचन ज काथा रे। कुण बैठा इहां आय ने, करि करि मोडा माथा रे।—जयवांणी

२ उद्दण्ड, बदमाश।

३ जो तीक्ष्ण न हो, भौंटा।

४ जिसके शिखर या चोटी न हो।

सं०पु०—१ साधु, सन्यासी, योगी।

२ ढोंगी और पाखण्डी साधू।

उ०—राजा नफर बुलाय, जावौ थे बेगा धाय। सुकोमल साध. इण मोडा ने पकड़ौ जायने ए।—जयवांणी

३ भिखारी, भिक्षुक।

उ०—केई कहै पूज पधारिया, देवे आदर मांन। केई कहै मोडा क्यूं आवियौ, बोलै कड़वी बांण।—जयवांणी

४ बिना सींग का पशु।

५ स्त्रियों के शिर का एक आभूषण।

उ०—अरे सिरिया मोडा लहलहहि, कसतूरिय महिवटु। अरे न ......ट परि हुयउ देवगण भाउ।—प्राचीन फागु संग्रह

अल्पा०—मोडियौ।

मह०—मोड।

मोढी–सं०पु०—मुसलमान रंगरेज। (बीकानेर)

मोढौ–सं०पु०—१ कंधा।

उ०—१ मोटौ खांधौ, मोटौ गळ, लाल-राती आंख्यां अर लिलाड़ पर सळ। मोढां माथै तेल सूं सरगळ बाल छिब छिबै झरै, सिंदूर रा टीकां सूं ताळवौ तपै तिरै।—दसदोख

उ०—२ हरवखत हिमरा चढ़तौ फिरै। लूंठारै लोढ़ै पर गरीबारै मोढै लाग्यौ रैवै।—दसदोख

उ०—दलाल ऊभै हो परै र हाथ जोड़द्या। होड-होड किसनजी ही कैणै सूं मोढा मोड़द्या।—दसदोख

२ देखो 'मूंढौ' (रू. भे.)

उ०—तठा उपरांत करि नै राजांन सिलांमति मांखिरा उकासिया सूअर भाखरां रा मोढा फाड़ फाड़ नै नीकळिया है।—रा. सा सं.

मोण–सं०पु०—१ आटे या मेदे को भिगोने से पूर्व, उसमें डाला जाने वाला घी का मिश्रण।

२ वह परतदार रोटी जिसकी परतों में घी लगाया गया हो।

रू०भे०—मूण, मोंणं, मोयण, मोवण।

३ देखो 'मौन' (रू. भे.)

४ देखो 'मोम' (रू. भे.)

मो'णौ, मो'बौ—देखो 'मोहणौ, मोहबौ' (रू. भे.)

मोत—देखो 'मौत' (रू. भे.)

उ०—१ हातां ठाली हालणौ, जांभी संपत जोड़। मोत सरीखौ मनख रै; खलक मही नह खोड़।—बां. दा.

उ०—२ कळ चाळौ कळ अगळौ, 'रूपौ'रांमचंदोत। अमी उबारण आपणां, मेछ्रा कारण मोत।—रा. रू.

मोतदिल–वि०[अ०मुअ्‌तदिल] जो न बहुत गरम और न बहुत ठंडा हो।

मोतबर, मोतबिर—देखो 'मातवर' (रू. भे.)

उ०—१ खींवसर गांव रौ मोतबर अर इज्जतदार चौधरी इण तरै सू बुरी हालत में पड़चौ हौ के उणरै गांव रौ पूनमौ नाई जो काले ईज सहर आयौ हौ उठीनै सूं गुजरयौ, उणै चौधरी नै ओळख लियौ।—रातवासौ

उ०—२ नायक देस में मोतबिर सबळा मेलै जका भला आदमी भली चाल में होय अर साचो सीलवंत निरलोभी होय।—मी. प्र.

मो'ताज—देखो 'मुहताज' (रू. भे.)

उ०—सोनजी रौ कड़ूंबौ गांव में आंखै आयौ हुयग्यौ। मरतक भंडग्यौ। दांणै-दांणै रा मो'ताज हुय रैया है।—दसदोख

मो'ताजखांनौ–सं०पु०—गरीबों या याचकों को दान देने का स्थान।

मोताद–सं०स्त्री [अ. मुअ्‌ताद] १ निश्चित मात्रा।

उ०—सवा सेर घिरत, दोय सेर चीणी खांड, च्यार सेर गेहूं रौ आटौ परभात रा, आंथण री दससेर चांवलां री खीचड़ी, एक सेर घिरत इतरी मोताद नित री करदी।—सूरे खींवैकांधलोत री बात

रू०भे०—मौताद, मौहताद।

मोताहल–सं०पु०—१ तारा।

उ०—मोताहळ स तळ हुवा,रंण गळंती दीठ, प्रात विछोहौ सजनां, उठी विरह अंगीठ।—पनां

२ एक प्रकार का हाथी।

रू०भे०—मौताहळ।

३ देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.) (ह नां. मा.)

उ०—१ दुय गिरि चंदण अढार, वरै जळवंब मोताहळ। सेर एक सोव्रन पंच रूपक भाळाहळ।—नैणसी

उ०—२ मोताहळ उतारि माळ तुळछी गळ धारै। करै तिलक म्रतयका, तिलक कूंकम बीमारै।—रा. रू.

उ०—३ कमळ पत्र कर चरण कंठ मोताहळ माळा। प्रवित अंग-मन चंग, गंग जांणै जळधारा।—गु. रू. बं.

उ०—४ हंस सुखाळौ मांनसर, चुगि मोताहळ खाय। हरीया दूजा ना भखै, लांघणियौ रहि जाय।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मोतिड़ौ—देखो 'मोती' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ घोड़ौ तौ भींजै धरमी हांसलौ, मोतीड़ै जड़ी लगांम ओ। जांमौ बिराजै धरमी रै केसरिया, पांच मोहर गज पाग ओ।
—लो. गी.

उ०—२ आउवा ने आसोप वणियां मोतीड़ां री माळा रे। बारै' न्हाकौ कूंचियां तुड़ावौ ताळा रे झगड़ौ आदरियौ।—लो. गी.

मोतिणहार–सं०पु०—मोतियों का हार, माला।

उ०—अद्‌भुत रचि सोल स्रंगार उरि, मनोहर मोतिणहार। गीत गांन कंठि मधुर, आलापति चरणि लागइ —स. कु.

मोतियदांम–सं०पु० [सं० मौक्तिकदाम प्रा०-मोत्ति अदांम] एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार जगण होते हैं। (रा. रू.)

रू०भे०—मुत्तियदांम, मोतीदाम, मौक्तिकदांम।

मोतियमाळ–सं०स्त्री० [सं० मुक्ता-माल] मोतियों की माला। हार।

उ०—भणै पग सिद्ध सातूं मुनि भाळ, मेल्है पग मांणक मोतियमाळ।—ह. र.

मोतिया–वि०—१ मोती सम्बन्धी।

२ मोती जैसे रंग का।

३ मोती के आकार का

सं०पु०—१ मोती के समान रंग वाला वस्त्र।

२ हल्का गुलाबी रंग, जिसमें हल्की गुलाबी झांई के साथ कुछ पीली झांई दिखाई देती है।

३ एक प्रकार का दानेदार सलमा।

सं०स्त्री०—४ एक लता विशेष जिसकी कली का रंग मोती जैसा होता है। इसका इत्र बनता है।

मोतियाबंध—देखो 'मोतियाबिंद' (रू. भे.)

उ०—सो रूप गुणा कर निपट अवल पण आंख्यां संजम मोतिया-बंध सो कुंवांरी बेटी घर मांहे।—कुंवरसी सांखला री वारता

मोतियाबिंद–सं०पु०—नेत्र का एक प्रसिद्ध रोग।

वि० वि०—इसमें नेत्र के पर्दे पर मांसादि तत्वों की एक झिल्ली बन जाती है और रोशनी पर छा जाती है। इससे आंख से दीखना बंद हो जाता है। इस झिल्ली को शल्य चिकित्सा द्वारा हटाया जाता है।

रू०भे०—मोतियाबंध।

मोतियौ—१ देखो 'मोती' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'मोथियौ' (अल्पा., रू. भे.)

मोतींड, मोतींडौ–सं०पु० [सं० मुक्ता+अंड] गाय व भैंस के प्रसव के समय बच्चे से पूर्व निकलने वाला एक पानी का गोला। इसकी झिल्ली बहुत पतली होती है और यह बाहर आते ही फूट जाता है।

मोती–सं०पु० [सं० मौक्तिक प्रा० मोत्तिअ] १ छिछले समुद्र या रेतीले तटों के सीपों से निकलने वाला एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न।

(अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ मणियां रयण अमोल, रोप अणियां मोती रुख। सोहत वणियां सीप, मिळै असिवर फणियां मुख।—वं. भा.

उ०—२ नीर निरासा सीप मुख, निजकण मोती होय। पेम उदै भई आतमा, हरिया हरि सुख होय।

—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

पर्या०—आथिकुंभ, उदकज, गुलका, जळज, दधिज, धीरठसख,

प्रखत, मुक्तज, मुक्ता मुक्ताफळ, रखत, रेस, रसउद्भव, ससगोत, सारंग, सीपसुत, सुक्त, सुक्तज, स्वात, हंस-भख।

२ एक प्रकार का ग्राभूषण। (ग्र. मा.)

३ घोड़े का रंग विशेष या इस रंग का घोड़ा।

उ०—मोती सुरंग कमेत, लखी ग्रबलख फुलवारी। रंग जड़ाव हम रंग, हरी सुनहरी हजारी।—सू. प्र.

४ रहस्य सम्प्रदाय के ग्रनुसार मन।

५ कसेरों का एक उपकरण।

६ जागीरदारों ग्रथवा ग्रमीरों के लड़कों को सम्मान पूर्वक सम्बोंधन करने का एक शब्द।

७ सफेद, श्वेत। (डि. को)

रू०भे०—मुगति, मुगती, मुगतीक, मुत्ति, मुत्ती, मौती।

ग्रल्पा०—मोतिड़ो, मोतियौ, मोतीड़ौ मोतीयडौ।

मोतीग्रालाडू-सं०पु०—बूंदी के लड्डू, एक मिष्ठान्न।

उ०—महोज्वला ईसा सेवईग्रा लाडू, **मोतीग्रालाडू** दल लाडू, बीबा लाडू, भगर लाडू।—व० स०

मोतीकड़ौ-सं०पु०—१ हाथों मे पहनने का स्वर्ण कंगन जिसमें मोती लगे हों।

२ मोतियों का हार।

मोतीड़ौ—देखो 'मोती' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ जीहो-दीधा मेंगल **मोतीड़ा**, लाला, दीधा हयवर हार, जीहो-दीधा सोनो साबटू, लाला, दीधा ग्ररथ भंडार।—जयवांणी

उ०—२ सीस सुरंगी चूंनड़ी चमकै, **मोतीड़ां** री माळा दांवणी। —रसीलैराज रा गीत

मोतीचुर, मोतीचूर, मोतीचूरि-सं०पु०—१ मोती के ग्राकार की बूंदियों का बंधा हुग्रा लड्डू।

उ०—१ नवखंडिया बाजोट माथै सोना रा थाळ में **मोतीचूर** रा लाडू परूसिया।—फुलवाड़ी

उ०—२ दोनूं ई ग्रेकण सागै हूचटा देय ग्राप रा हाथ छुडाया। **मोतीचूर** रा लाडू चिगळतां जबाब दिया-मुरख म्हें के थे। —फुलवाड़ी

२ एक प्रकार का वस्त्र विशेष।

उ०—जरजरी मलबारी लाछरी ग्रधोतरी ग्रमरी गंगापारी **मोतीचूर** टमरू नसरू रत्न कंबल छाइल मकबल ग्रगल साउला उरसाला।—व. स.

मोतीचोकड़ौ, मोतीचौकड़ौ-सं० पु०—कान का एक ग्राभूषण विशेष।

मोतीज्वर-सं०पु०—एक प्रकार का ज्वर, मधुरज्वर।

रू०भे०—मोतीझरौ, मोतीझिरौ।

मोतीझरौ, मोतीझिरौ-स०पु०—१ देखो 'मोती ज्वर' (रू. भे.)

मोतीदांम—देखो 'मोतियदांम' (रू. भे.)

उ०—२ सहस बिनव सौ रूप सुभ वलि छावीस बताइ। दीसै **मोतीदांम** रै प्रघट जगण चत्र पाय।—ल. पिं.

मोतीनीलौ-सं०पु०—एक प्रकार का शुभ रंग का घोड़ा। (शा. हो.)

मोतीपाक-सं०पु०—एक प्रकार का पकवान्न जो बूंदी ग्रौर दूध के मावे से बनता है।

उ०—मिसरी **मोतीपाक** भुरटरी इतरी खोडी। रस गुलियां रै रूप मधुर है होड़ा होडी।—दसदेव

मोतीपुड़, मोतीपुड़ौ-सं०पु०—शुक्ति या सीप के ग्रन्दर का वह स्थान जहां पर लाल, पीली व हरी झाई पड़ती हो।

उ०—तठा उपरायंत पुरांणं ग्रगर री चिकायौ सूंधौ मंगायजै छै। सीसी खुलै छै। **मोतीपुड़ै** री सीप रा प्याला में घात हाजर कीजै छै सूंधौ बगलां लगायजै छै।—रा. सा. सं०

मोतीबेल-सं०स्त्री०—बेले का एक भेद, मोतिया बेला।

मोतीभात-सं०पु०—एक विशेष प्रकार का भात।

मोतीमाळ, मोतीमाळा, मोतीयमाळा-सं०स्त्री०—१ मोतियों की माला, हार।

उ०—वागा वेस सोहांमणां, भूखण **मोतीमाळ**। कनक कचोळा जड़ाव रा, सुंदर सोवन थाळ।—ढो. मा.

२ बत्तीस मात्रा व २४ वर्ण का एक छन्द विशेष, जिसमें ग्राठ जगण होते हैं।

उ०—करि ग्रठ जगण वत्रीस कळ, वरण वीस चत्र विद्धि। गति इणि **मोतीमाळ** गुण, पणि लखपत्ति प्रसिद्धि।—ल. पिं.

मोतीयडौ—देखो 'मोती' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—ग्राट करु करि कनक मइ, सखी **मोतीयडै** पुरू चूक कि। —कां. दे. प्र.

मोतीयौ—देखो 'मोती' (ग्रल्पा., रू. भे.)

उ०—१ गुळदारक मेतीयौ, हंस हरीगत **मोतीयै** तीतर मोर बसै। ग्रबलख कबूतर लखीयौ, ऊजळ बोद बीलावीयै बोर वसै। —किसनजी दधवाड़ियौ

उ०—२ हरि जळ बूठौ **मोतीया**, हरीया सिर सिख रांह। सुगणां मोती चुणि लिया, हाथि नहीं निगुणांह। —स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

३ देखो 'मोथियौ' (ग्रल्पा., रू. भे.)

मोतीसर-सं०पु०—एक जाति या वर्ग जो चारणों के याचक होते हैं। (मा. म.)

२ उक्त जाति का व्यक्ति।

मोतीसरी, मोतीसिरी, मोतीहरि-सं०स्त्री०—मोतियों की माला।

उ०—१ ललाटि तिलक, कने झलक, बांहै वलय, ग्रंगुलि ग्रंगुलियक, कंठि कंठिका, गलइ हार, माथि **मोतीसरी**, हृदय सोवरण्ण ऊतरि, हाथै कंकणरव झलत्कार।—व. स.

उ०—२ जउ सूकी तुहइ बुलसिरी, जउ वींधी तुहइ **मोतीसिरी**। जउ डुहलूं तुइइं गंगाजल जांणि, जउ थोडी तुहइ सपुरिस वांणि। —नळदवदंती रास

उ०—३ पिक कंठ सोभति चीठ परठे,सघरण वरण मोतीसरी। पर-बंध हीरां जड़ित पाखळ कुसम माळा संकरो।—मा. वचनिका

मोतीहार—सं०पु०—मोतियों का हार।

उ०—कुंडल कांनि सोभई, मोतीहार कंठ कंदलि विवेक हीइ अनइ धरम हनइ संयोगि।—व. स.

मोतौ—सं० स्त्री०—१ मृत्यु।

उ०—घर त्याग करण परघर बिघन, आठूं पहर ऊंघारिया। जीवनें देत मोता जिके, पोतादार पधारिया।—ऊ. का.

२ देखो 'मोथौ' (रू. भे.)

मोथ—सं०स्त्री०[सं० मुस्ता] १ एक प्रकार की घास विशेष। (उ. र)

२ देखो 'मोथौ' (मह., रू. भे.)

मोथाब—सं०पु०—१ इनाम, पुरस्कार।

उ०—मीठा-मीठा मूण-पठ्ठा मतीरा राजाजी तांई पुगावै अर मोथाब पावै।—दसदोख

२ धन्यवाद, वाहवाही। शाबासी।

उ०—१ गांव में पूरौ भेद भाव पाळै है। ऐरा गेरा नथू खैरा लोग वारणै बैठ्या चुगली करै चींचका मारै है। सरपंच सूं मोथाब पावै, नांमून कमावै है।—दसदोख

उ०—२ भोळा भोळा बाळ करै रोळा रुड़कावै। भोळा भर घर लाय, मुदित मोथाबां पावै।—दसदेव

मोथाबाळ—सं०स्त्री०—१ जैसलमेर राज्य का एक नामान्तर (व्यंग्य)।

२ मूर्ख-मण्डली।

मोथियौ—सं०पु०—१ एक प्रकार का बारीक घास, जिसकी जड़ मोती के समान व सफेद होती है। खाने में बड़ी मीठी होती है।

उ०—गूंदा, गूदियां, आंमलियां, गेगणियां, डांगियां, धीतोलां, मोथिया, केडूला, खोखा, मांमालूणी, काचरा, काकड़ियां खरबूजा, अर मतीरां वास्तै तड़फा तोड़ती—फुलवाड़ी

रू०भे०—मोतियौ, मोतीयौ।

२ देखो 'मोथौ' (अल्पा, रू. भे.)

मोथू—देखो 'मोथौ' (रू. भे.)

मोथौ—वि०—१ मूर्ख, नासमझ अनपढ, गंवार।

उ०—१ लोग सागड़ी नै कह्यौ-मोथा कना सूं नांमीं कांबळ ढायी। कीं तौ म्हांनै ई बंट दै। म्है थारी मिळती मारी ही।—फुलवाड़ी

उ०—२ तो मोथा रांमचंदरियै-री हाटरी लच्छाभांत क्यों लायौ नी? —वरसगांठ

२ ढीला सुस्त।

सं०पु० [सं० मुस्तक] १ नागर मोथा नामक घास व इस घास की जड़।

२ सूअर, वराह।

उ०—गिड़ गरुवौ आंगमण न आवै, सब हमारै माह सग्रांम। मोथौ माल चरै नर मोटा, गढ़ मूळै मूळै बह गांम।

—रावमलीनाथजी रौ गीत

रू० भे०—मोतौ, मोथूं।

अल्प०—मोथियौ।

मह०—मोथ।

मोद—सं० पु० [सं०] १ आनन्द, प्रसन्नता, खुशी, हर्ष।

(अ. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ अटे सोध अवरोध अचांणक, बोध मोद विसराए। प्रांण नाथ हा नाथ जोधपुर, गोख सोध गणणाए।—ऊ. का.

उ०—२ अर मातामह री सभा रै अंदर दोहित्र कुमार प्रथ्वीराज नूं देखि मोद पायौ।—वं. भा.

उ०—३ बरस चतुरदस है बन में बिचरण, म्हांनै पिता वचन-परवांण। आया आगै हे माता म्हारी मोद सूं।—गी. रां.

२ उत्साह, जोश।

उ०—१ वीरां काज वणावियौ, 'बांकै' वीर विनोद। वधसी सुणियां वाचियां,मन मै वीरां मोद—ऊ. का.

उ०—२ इक कहत मोद अथाह, जिण मच्छ कच्छप ग्राह। जळ गहर सागर जोर, तिण बीच थाह न तोर।—रा. रू.

उ०—३ जे नरक में ही उठ जावै तो देई-देवता अर डोरा-डांडा नै नीं भूलै। इसै कांमां मै घणै मोद सूं मालै।—दसदोख

३ गर्व, अभिमान।

उ०—१ ठकरांणी वेचेतै होय गुड़गी। ठाकर नै मोद व्हियौ के ठकरांणी कित्ती पतिव्रता अर सुलखणी। धणी रै जोखा री बात सुणतां ईं सुध बुध पांतरगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ धनरौ मोद आयग्यौ, मनड़ौ उघाड़ खायग्यौ। जाट, पूरतौ आदमी, लपोडौ'र जिद चेतै आयग्यौ। वंस बिना वंस नीं कटै। आः सोच बैठग्यौ।—दसदोख

४ मान, प्रतिष्ठा,गौरव।

५ सुगंध, महक।

[सं० मद] ६ शराब, मदिरा।

उ०—सो किण भांति रो दारू। उलटै रौ पलटै पलटै रौ ऐराक, ऐराक रौ वैराक, वैराक रौ संदळी, सदळी रौ कंदळी, कंदळी रौ कहर कहर रौ जहर, जहर रौ कटाव, कटाव रौ नेस, नेस रौ जेस, जेस रौ मोद, मोद रौ कमोद, कमोद रौ हूळ।—रा. सा. सं.

[सं० मधु] ७ शहद, मधु।

८ एक वर्ण-वृत्त जिसमें पांच भगण एक मगण एक सगण और एक गुरू होता है।

९ हिरण्याक्ष पक्ष का एक असुर, जिसका देवासुर संग्रांम के समय वायु ने वध किया।

१० ऐरावत कुलोत्पन्न एक सर्प जो जन्मेजय के सर्फ सत्र में दग्ध हुआ।

(सं०स्त्री०)अनाज की भरी गाड़ी।

मोदक—सं०पु० [सं०] १ लड्डू नामक मिष्ठान्न।

उ०—१ मधुकर भ्रमत सुबास मद, भाल सुधाकर भास। मोदक

कर मन मोदमय, नित जय ग्यांन निवास ।—बां. दा.

उ०—२ **मोदक** थाल भरी करी जी, मंदिर मांहे थी लाय । केसरींसिह जटा जिसा जी, वेहराया उलटे जी भाव ।—जयवांणी

उ०—३ **मोदकादि** बहु चक्र मझारां । पाक अनै अवलेह अपारां । —सू. प्र.

२ किसी औषधि का लड्डू ।

३ एक वर्ण-वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में चार भगण होते हैं ।

४ एक वर्ण संकर जाति विशेष ।

वि०—१ आनन्द-दायक, प्रसन्नता देने वाला ।

२ उत्साह वर्धक ।

रू०भे०—मोदिक, मोयग ।

मोदकर—सं०पु० [सं०] एक प्राचीन मुनि ।

वि०—आनन्द-दायक ।

मोदण—सं०पु०—१ ईश्वर । (नां. मा.)

२ अनाज ढोते समय गाड़ी पर लगाया जाने वाला बड़ा कपड़ा ।

मोदणौ, मोदबौ—क्रि०अ०—१ प्रसन्न होना, हर्षित होना ।

२ उत्साहित होना, उत्तेजित होना ।

३ गर्वित होना अभिमान करना ।

४ महकना, सुगंध देना ।

मोदणहार, हारौ(हारी), मोदणियौ—वि० ।

मोदिओड़ौ, मोदियोड़ौ, मोद्योड़ौ —भू० का० कृ० ।

मोदीजणौ, मोदीजबौ—भाव वा० ।

मोदिक—देखो 'मोदक' (रू. भे.)

उ०—१ न लहइ मसवाडउ न लहइं ग्रास । महियां **मोदिक** तीह ना दास ।—वस्तिग

उ०—२ तेत्रीस कोडि देवता तणु प्रतिहार, सींदूरइसार, सेवंत्रांभार, **मोदिक** आहार एहवा स्री गणेस वरणवीता सोभइ ।—व. स.

मोदिकवलभ—सं०पु०—गणेश, गजानन

उ०—प्रथम रंग भरै गणनायक, व्रखभ लांछण फलदायक, सकलमोदिक, **मोदिकवलभं** जयति विजयति गणनाइक ।—व. स.

मोदियउ—सं०पु० —एक वस्त्र विशेष ।

उ०—वीणउसीउं चीणउसीउं मलउसीउं आउंचीयउं मूगनउं मयउं मंगलिकं **मेदियउं** सीलउरं ·······।व. स.

मोदियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ प्रसन्न या हर्षित हुवा हुआ. २ उत्साहित या उत्तेजित हुवा हुआ. ३ गर्वित हुवा हुआ. ४ महका हुआ । (स्त्री० मोदियोड़ी)

मोदियौ—सं०पु०—१ गाड़ी पर लगाई जाने वाली घास फूस की वह पट्टी जिसके बीच में अनाज आदि कोई वस्तु भरी जाती है ।

२ उक्त गाड़ी में भरी हुई वस्तु ।

मोदी—सं०पु० [अ० मद्द्म] दाल, चावल आटा आदि खाद्य सामग्री एवं किराणे का सामान बेचने वाला व्यापारी

उ०—१ एक कुमारी उण सारू न्यारो ई पांणी भर देती । **मोदी** रै अठा सूं न्यारौ सांमांन लाय देती । बांमणी नीपचोप नै सुथराई सूं चौको लगाय नै आपरी रसोई बणाय लेती ।—फुलवाड़ी

उ०—२ तठा उपरांयत **मोदियां** नै हुकम हुवौ छै । भूंजाई सारू सारी बसत सीधौ मीठांण वेसवार सरब लेय राती—नाडी चालज्यौ । —रा. सा. सं.

मोदीखांनौ—सं०पु०—१ भोजन या खाद्य—सामग्री रखने का स्थान, रसोड़ा । भण्डार ।

उ०—घोड़ां रो रातब दांणौ, महीनदारां रौ महीनौ, **मोदीखांनै** री जिनस और ही सारा लोगां रौ सरंजाम सरतंत कर घोड़ां नूं खुद रै खेत भोळाय, हाथियां नूं गुळवाड़ री बाड़ भोळाय आय गैरमहलां रहियौ ।—डाढाळासूर री वात

२ मोदी की दुकान ।

उ०—१ बाजार रे अधबीच गया । व्योपारी नै **मोदीखांनै** सगळै मुकीमां री दुकांनां कन्है गया ।—गौड़ गोपाळदासरी वारता

उ०—२ बाजार रौ लोग **मोदीखांनौ** पेशखांनौ कारखांनौ सारा लेय बहिर हुआ ।—कुंवरसी सांखला री वारता

मोदीपगा—सं०पु०—एक प्रकार का बैल (अशुभ)

मोदीलौ—वि०—१ गर्विला, अभिमानी ।

२ प्रसन्न, खुश, हर्षित ।

मोदोख—सं०पु० [सं० मोदोष] एक आचार्य जो विष्णु के अनुसार वेददर्श नामक आचार्य का शिष्य था ।

मोनि, मोनी—देखो 'मून' (रू. भे.)

उ०—मैं लख चौरासी धारि जोनि । का बोलत का गहत **मोनि** । —स्री हरिरांमदासजी महाराज

२ देखो 'मौनी' (रू. भे.)

मोपा—सं०पु०—राठौड़ों की एक उप शाखा ।

मोफत—देखो 'मुफ्त' (रू. भे.)

उ०—कीं पर राज करै अर कींरै घरां **मोफत** रौ माल चरै । —दसदोख

मोफतियौ—देखो 'मुफ्तखोर' ।

उ०—**मोफतिया** इसां मौकां मौज—मजा ही किया करै है । —दसदोख

मोब—सं०पु०—प्रथम प्रसव ।

उ०—**मोब** री इण बेटी पछै दो भाया वळै व्हिया । वै उठै ई दादी रै पाखती रै'गा ।—फुलवाड़ी

रू०भे —मोभ ।

मोबण—सं०स्त्री०—१ प्रथम प्रसव की पुत्री, बड़ी लड़की ।

२ विवाह में लग्न के दिन कन्या के पिता के घर में रोपा जाने वाला काष्ट का छोटा स्तम्भ, जिसके ऊपर मिट्टी का कुल्हड़ रखकर पूजा की जाती है ।

रू०भे०—मोभण ।

मोबत—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे.)

उ०—१ मात पिता की छोडी मोबत, मोजां मेहड़ली। मात जात मोडां सूं सांधी, नाहक नेहड़ली —ऊ का.

उ०—२ खेतां अर पसुवां रा झगड़ा-झंटा निवेड़ती, गांव मोबत रा न्याव-तपास निमटांवती तथा आपरै सीलसंतोख सूं सगळां री सीरी-भीरी बणी रै'ती ही।—दमदोख

मोबद, मोबिद—सं०पु० [अ० मुअबिद] १ पारसियों का धर्मोपदेशक, धर्मज्ञ।

२ पुजारी, सेवा-पूजा या भजन करने वाला।

मोबियौ—सं०पु०—एक प्रकार की मोटी मजबूत और अधिक चौड़ी खपरैल जो छाजन में बंडेरे पर 'मगरा' बांधने में काम आती है।

मोबिलग्रायल—सं०पु० यौ. [अं.] मशीन से चलने वाली मोटर, गाड़ी आदि वाहनों के काम आने वाला तेल. मशीन का तेल।

उ०—बनाजी थारी मोटर ने मोबिलग्रायल, जांन्या ने सरबत प्यालौ, बनाजी थे आप पीवौ भांगड़ली चाबोना लूंग सुपारी।
—लो. गी.

मोबी, मोभी—सं०पु०—१ प्रथम प्रसव का पुत्र, बड़ा लड़का, ज्येष्ठ पुत्र।

उ०—१ हरसा मेरा बाला रै, आवैली सांवणियां री तीज। मेरा मोबी बेटा रै, जग में सिजारा रै बाई का कुण करेला।
—लो. गी

उ०—२ इत्ता में सब सूं मोबी राजकंवर मून तोड़ नै दोनूं छोटकिया राजकंवरां सांमी देखनै कह्यौ-थें दोनूं हाल नैना टाबर हौ।
—फुलवाड़ी

२ बड़ा भाई।

उ०—१ आंणां लेवणनैं अंधूला आया दरसण देवण नैं मोभी मुळकाया।—ऊ. का.

रू०भे०—मोहभी.

मोम—स०पु० [फा०] १ मिट्टी के तेल से रासायनिक क्रिया द्वारा निकाला जाने वाला चिकना एवं गाढा पदार्थ, जिसकी बत्तियें बना कर उजाले के लिये जलाई जाती है।

उ०—जिण सिर बाहै खग्ग बळ, देव सराहै जोय। सिलह अटक्का मोम सम, हुवै बटक्का दोय।—रा. रू.

२ शहद की मक्खियों द्वारा छत्ता बनाने का चिकना व नरम पदार्थ।

३ यश, कीर्ति।

४ भूमि, पृथ्वी।

५ युद्ध।

६ दयालु।

रू०भे०—मांम, मूंम, मूम।

मोमजांमौ—सं०पु०—वह कपड़ा जिस पर मोम का रोगन चढ़ा हुआ हो।

मोमदसाहिमोळियौ—सं०पु०—विशेष रंगों का एक साफा।

उ०—दूजा दूजै बेंस, निरमळ बागै काछबौ। मूंछां बळ सव सेस, मोमदसाहिमोळियौ।—अज्ञात

मोमदिल—वि०—जिसका दिल बहुत कोमल हो, सहृदय, भावुक।

मोमन—सं०पु० [अ० मोमिन] १ धर्म निष्ठ मुसलमान।

२ इस्लाम और खुदा पर ईमान लाने वाला।

३ जुलाहा मुसलमान।

रू०भे०—मोमिन।

मोमना—सं०पु०—घोड़ों की जाति।

उ०—अन्ने कम की तेजह अथाहि। मोमना चेचि कहि तुरंग माहि।—सू. प्र.

मोमनी—सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र।

उ०—सू किण भांत रा वागा छै? सिरीसाप भैरव चौतार कसबी महमूदी फूलगार अध-रस सेला बाफता डोरिया मोमनी तनजेब।
—रा. सा. सं.

मोमबत्ती—सं०स्त्री०—मोम नामक पदार्थ की बत्ती जो उजाले के लिये जलाई जाती है।

रू०भे०—मूंबती, मूंबत्ती।

मोमाखी—सं०स्त्री०—मधु मक्खी।

उ०—काळी चूंदड़ी री टिपकियां पळाक पळाक करती ही। चूंदड़ी ई साव नवो दीसै। आ सोचनै वौ चोर उण पोटळी नै सैंठी पकड़नै जोर सूं हचीड़ दियौ। हचीड़ देतां ईं अलेखूं मोमाखियां उण रै दोळी व्हैगी। इण भांत छिड़ियोड़ी माखियां उणनै ठौड़ ठौड़ सूं डंस न्याकियौ।—फुलवाड़ी

मोमाळ—सं०पु०—मामा का घर, ननिहाल।

मोमिन—देखो 'मोमन' (रू. भे.)

उ०—सो मोमिन मोम दिल होइ, सांई को पहचाने सोई। जार न करै हरांम न खाइ, सो मोमिन बहिस्त में जाइ।—दादू बांणी

मोयग—देखो 'मोदक' (रू. भे.)

मोयण—देखो 'मोण' (रू. भे.)

मोयरेदार—देखो 'मायरादार' (रू. भे.)

मोयल—सं०पु०—१ चौहान वंश की एक उप शाखा।

मोयला—सं०पु०—१ कुम्हारों की एक उपशाखा। (मा. म.)

२ मिट्टी के बर्तन बनाने व बेचने का व्यवसाय करने वाली एक मुसलमान जाति।

मोयलौ—सं०पु०—(स्त्री० मौयली) १ 'मोयला' जाति का मुसलमान।

२ मोयला जाति का कुम्हार।

३ देखो 'महोलौ' (रू. भे.)

मोरंचदोस—सं०पु०—दातार के गुण गाकर आहार लेने पर होने वाला एक दोष। (जैन)

मोर—सं०पु० [सं०मयूर, प्रा०मोर] (स्त्री०मोरनी) १ प्रायः चार फुट लंबा एक अत्यन्त सुन्दर पक्षी जिसकी गर्दन लम्बी तथा छाती का रंग बहुत गहरा व चमकीला होता है। सिर पर किलंगी बनी होती है, पंखों पर चंदोवा बना हुआ होता है। (अ. मा., नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—सुंदर सहस फणि करि सांमली, दीपै मूरति दोइ। मेघ घटा नै देखी मोर ज्यूं हरखित मुझ मन होइ।—घ. व. ग्रं.

पर्या०—अहिभख, कळापी, कळात्रतमंडी, कुंभ, केकी, खग, घणनादानुळ, घणमंड, नीरदनादानुळ, नीळकंठ, पनंगसंघार, भखपंनग, विखकर, प्रखत, प्रसणपनंग, बरही, रथकुमार, वरहण, विरही, व्याळखळ, सारंग, सिखी, सिखंडी, सिहंड, सिखावळी, सुकळापंग, सेनानीरथ।

रू०भे०—मवर, मोरू, मौर, म्होर।

अल्पा०—मुरलौ, मुरेलो, मोरड़ौ, मोरलियौ, मोरलौ, मोरियौ, मोरूलौ, मौरियौ, मौरीयौ, मौरचौ।

२ मुसलमानों की एक जाति।

३ रंग विशेष का घोड़ा।

उ०—म्रिघला चक्कवा मोर कूदणा झंपा किसोर। ऐराकी ऊन्हा अलल्ल, भाडजी आरबी भल्ल।—गु. रू. बं.

४ देखो 'मौर' (रू. भे.)

उ०—१ राजा रे मोरां रौ घाव साजौ हुवौ ने बाळक मोटौ हुवौ। —रा. वं. वि.

उ०—२ पुचकारतौ बोल्यौ—हौ, भाई हौ। बळदां रा मोर थापल नै नीचै उतरियौ, ।—फुलवाड़ी

उ०—३ जोधा जोध जूटतां अढार दीह भागा जोर, बूंदी थांन बागा जंगी जैत रा बिधांन। जंमी मोर लागा नीसा पथ लागा त्रहूं जेठी, जोरावर चोथौ जेठी जांणियौ जिहांन। —ऊमेदसिंघ हाडा रौ गीत

उ०—४ तिजारौ फूल रह्यौ छै। गूंदगरी, रांमगरी, गुळवाड़ री बाड़ां लाग रही छै। पग-पग नाळा-नीझरणा बह रह्या छै। घणा ही आंबा-महुवां रा मोर झुक रह्या छै। —डाढाळा सूर री बात

५ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

६ देखो 'मोरा' (रू. भे.)

उ०—चंद चकोर तणी परि, मांन्यउ तूं मन मोर रे।—स. कु.

मो'र—देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—रुपियौ-रुपियौ दियौ बांमणां, मो'रां चारण भाट। असी मो'र दी नानगसाही, साखौ दियौ जुड़ाय। —डूंगजी जवारजी री छावली

मोरउ—देखो 'मोरा' (रू. भे.)

उ०—१ चंद सूरिज साचुं कहु, मोरउ जीवन जांणउ रे। जांणउ नइ आंणउ वर वेगिइं करी ए।—नळ दवदती रास

उ०—२ चतुर अम्रत रस मोरउ तइं चाख्यउ, कीधी कोड़ि विलास। —स. कु.

मोरख—सं०स्त्री०—१ हल के नीचले भाग में लगने वाला लोहे का एक उपकरण जिसका आकार 'वी' (V) की तरह होता है।

२ देखो 'मूरख' (रू. भे.)

रू०भे०—मोरक, मोरख।

अल्पा०—मोरखा।

मोरखौ—देखो 'मूरख' (अल्पा., रू. भे.)

मोरड़ी—सं०स्त्री०—१ कच्चे मकान के छाजन के नीचे लगने वाली एक लकड़ी।

२ देखो 'मोर' (स्त्री०)(अल्पा., रू. भे.)

उ०—पण म्हारौ आज दिन पलटचोड़ौ है। सोने नैं हाथ घाल्यां लो हुवै। मोरड़ी हार गिटै, म्हारी साता खोटी है। जद सोनै री आस क्यूं राखूं! —दसदोख

३ देखो 'मोरी' (अल्पा., रू. भे.)

४ देखो 'मेरी, (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मोरा साहिब हो स्री सीतलनाथ कि, बीनति सुणि एक मोरड़ी —स. कु.

मोरड़ौ—१ गेहूं की बालों का गुच्छा जो भूनने के लिये बनाया जाता है।

रू०भे०—मोरलौ।

२ देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तुम दरसण हो मुझ मन उछरंग कि मेह आगम जिम मोरड़ा।—स. कु.

३ देखो 'मोरा' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—तुम नांमइ हो सुख संपति थाय कि, मन वंछित फलइ मोरड़ा।—स. कु.

मोरचंदरका, मोरचंद्रिका—सं०स्त्री० [मयूर चन्द्रिका] मोर की पंख पर होने वाली चंद्राकार बूंटी।

मोरचांब—सं०स्त्री०—हल चला कर पूरा खेत जोत लेने पर उसके सिरों पर हल मोडने से रही हुई खाली भूमि पर विपरीत अर्थात् आडी खींची हुई रेखा (सीता)।

वि०वि०—प्रान्त भेद से इसे जोतरा, जोता व सेवरा भी कहते हैं।

मोरचाबंदी—सं०स्त्री०—युद्ध में शत्रु पर आक्रमण करने या शत्रु के आक्रमण को रोकने के लिये, जमीन में खाई खोद कर या आड लेकर, सुरक्षा के लिये की जाने वाली व्यवस्था।

उ०—च्यारूं पासां मोरचाबंदी कर रह्या छै। इतरै जलाल जासूस मेल खबर मंगाई।—जलालबूबना री बात

मोरचौ—सं०पु० [फा० मोरचाल] १ वह खाई, आड या स्थान जो युद्ध करने वाले सैनिकों की सुरक्षा के लिये बनाया जाता है।

उ०—१ विदा किया जिण वार, जोधकरि वीर जगाया। किलां सिरै कमधजां लड़ण मोरचा लगाया।—सू. प्र.

उ०—२ तरै मुहणोत नैणसी बळरांमजी कनै गया। तरां बळरांम जी फिर नै मोरचौ दिखायौ। नै कहण लागौ आ जायगा छोडीयां वणै नहीं।—नैणसी

उ०—३ सहस उभै खुलियां खग साथै, मुड़िया मेछ दुरंग चै माथै। अनड़ तजै धरती अर आया, मिरजै फिर मोरचा मंडाया। —रा. रू.

२ किले या गढ़ के चारों ओर खोदी जाने वाली खाई, जिसमें लड़ने के लिये सैनिक छिपे रहते हैं।

उ०—१ कहायो-भाखरसी थे मोरचै दरवाजै एकै पळीतै रहीया तुरक आवै ताहरां समचै-एकण पळीतै लगाया।

—राजा नरसिंघ री वात

उ०—२ दुरवेसै मोरचौ दबायौ, इतरै 'अखो' मघावत आयौ। बळ धरतौ धीरपतौ वेली, हुई जवन दळ घड़ी दुहेली।—रा. रू.

३ वह गढ़ा जिसमें बैठकर शत्रु पर गोली चलाते हैं।

४ ऐसा स्थान जहां अपनी स्थिति को ठीक बनाये रखते हुए निर्भय होकर रहा जाता हो।

उ०—भागवत कथा भूतावळी, हिरण दरस हींडोरचा। परवीण होय जांणै पुरस, मालजादां रा मोरचा।—ऊ. का.

५ मुकाबिला, सामना।

उ०—आज कालै रा ब्याह-सावा, एक अयोग आफत रौ मोरचौ है।

—दसदोख

६ मुकाबले में खड़े होने का भाव।

७ लोहे का जंग, जो नमी के कारण रासायनिक विकार से उत्पन्न होता है।

८ दर्पण का मैल।

रू०भे०—मुरचौ, मोरछौ मौरचौ।

मोरछड़, मोरछल-सं०पु०—वह लंबा चंवर जो मोर पंख बांध कर बनाया जाता है। चंवर।

उ०—१ लारै खवासी मैं मुखनस बैठौ मोरछड़ करै है।—द. दा.

उ०—२ तद खटोली उडी जठें राज दरबार कियौ बैठौ छै। अर नायण रौ मांटी मोरछड़ करै छै।—चौबोली

रू०भे०—मुरछळ, मोरसल।

मोरछौ—देखो 'मोरचौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिण पछै गोळ रौ लोक भी मोरछा मांडि तुपक तीरां रौ वेभौ बणाइ पहर दोइ सूधौ लड़ियौ।—वं. भा.

उ०—२ पड़ै केई किबाड़ा केई नीसरी बाहर पड़ै, सूर जमहर करै पड़ै साथां। पड़ै रिण बेहरी मुकंद वाला सपोह, मोरछां, मोरछां पड़ै माथा।—उदैभांण हरभांण गौड रौ गीत

मोरट-सं०स्त्री० [सं०] १ गन्ने की जड़।

२ एक प्रकार की घास।

मोरण-सं०पु०—बाजरी के कच्चे या आग में सेके हुए सिट्टों को मसल कर चबाने के लिए निकाले हुए दाने। (बीकानेर)

मोरणा-सं०स्त्री०—सारंगी मे लगने वाली वे लम्बी खूंटिया जो दो दांयी ओर तथा दो बांयी ओर लगी रहती हैं।

मोरणी-सं०स्त्री०—१ सारंगी में लगने वाली खूंटी।

वि०वि०—सारंगी की नली की दाहिनी ओर १६ मोरणियां होती हैं, माथे पर दाहिनी ओर दो तथा बांई ओर केवल एक मोरणी होती है।

२ बाजरी के सेके हुए सिट्टे पर से दाने उतारने के लिए सिट्टे के डांडे की बनाई हुइ सूंतनी जिससे दबा कर उक्त दाने निकाले जाते हैं।

रू०भे०—मोरनी,

३ देखो 'मोर' (स्त्री०)

मोरणौ-सं०पु०—एक प्रकार सरकारी कर।

रू०भे०—मोरांणौ,

मोरणौ, मोरबौ—१ देखो 'मोरणौ, मोरबौ' (रू. भे.)

उ०—घणां जु आंब मोरचां छै। सु एही तोरण। कमळ की जु कळी नीकळी छै। सोई कळस हुआ।—वेलि टी.

२ देखो 'मोड़णौ, मोड़बौ' (रू. भे.)

उ०—बिनीत नीत वोन जे अनीत वावते नहीं। महा समूह मूंह देखि मूंह मोरते नहीं।—ऊ. का.

मोरणहार, हारौ (हारी), मोरणियौ—वि०।

मोरिओड़ौ, मोरियोड़ौ, मोरयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मोरीजणौ, मोरीजबौ—भाव वा०।

मोरत—देखो 'महुरत' (रू. भे.)

उ०—१ कर क्रपांण मोरत किसूं, आखै सूर अबीह। रण मर स्वरग सिधावणौ, सु तौ सुरंगौ दीह।—बां. दा.

मोरधज, मोरधुज, मोरधूज, मोरधूजी, मोरध्वज-सं०पु० [सं० मयूर-ध्वज] १ रत्न नगर का एक पौराणिक राजा, जिसने ब्राह्मण वेष में अपने द्वार पर आए श्री कृष्ण व अर्जुन को अपना, मतान्तर से अपने पुत्र का शरीर आरे से चिरवा कर दान किया।

उ०—१ घूं कंवार न्रप मोरधुज, अंबरीक हरिचंद। पद सेवा परि पंडवां, की नव कोट नरिंद।—रा. रू.

उ०—२ जिण भूखी आत्मा हित आपरे बेटा नूं चीर सिंह नूं खुवायौ सो मोरध्वज अक्षय पुण्य यश पायौ।

—साह रांमदत्त री वारता

उ०—३ मोरधूजी महाराज था जन सचा हरका, करवत्त हत्थां वहर के दिय सीस कंवरका।—दुरगादत्त बारहठ

२ जोधपुर के किले का नाम।

मोरनदेवी-सं०स्त्री०—नमक बनाने वाली खारवाल जाति की इष्ट देवी। (मा. म.)

मोरनाच-सं०पु०—नृत्य का एक भेद विशेष।

मोरनी—१ देखो 'मोरणी' (रू. भे.)

उ०—हरीया जंत्री जंत्र विन, वाजै तार अखंड। विन तूंबा विना मोरनी, घौर पड़ै ब्रहमंड।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

२ देखो 'मोर' (स्त्री०)

मोरपंखी-सं०स्त्री०—१ मोर के पंख की तरह बनी हुई व रंगी हुई नाव।

२ मलखंभ की एक कसरत।

वि०—१ मोर के पंख का बना हुआ।

२ मोर के पंख के समान।

मोरमींडली, मोरमींडो, मोरमींढी—१ स्त्रियों के सिर का एक आभूषण ।

उ०—अर जड़ाउ सुरलिया-पत्तां वाळी मोरमींढचा —वरसगांठ

२ स्त्रियों के सिर के बालों की गुंथी हुई लटिका ।

मोरमुकट, मोरमुकुट, मोरमुगट—सं०पु० [सं० मयूर+मुकुट] मोर की पंखों का बना मुकुट, ताज ।

उ०—१ **मोरमुकट** वन माळ माळ तुलसी नव मंजर । रुचि कुंडळ कळ रतन, तिलक मंजुल पीतांबर ।—रा. रू.

उ०—२ **मोरमुकट** पीतांबर सोहै ओढै लाल दुसाला रे । मीरां के प्रभु गिरधर नागर, भगतन के प्रति पाला रे ।—मीरां

उ०—३ **मोरमुकुट** पीतांबर सोहै गले बैजंती माळा । मीरां के प्रभु गिरधर नागर ठाकुर बंसीवाळा ।—मीरां

उ०—४ संख चक्र गदा पदम धारि । वैजयंती माळ **मोरमुगट** कुंडळ विसाळ मदन मोहन कमळ लोचन स्यामं सुंदर ठाकुर विराज मांन हुआ छै ।—वचनिका

उ०—५ **मोरमुगट** राजै कर मुरली । तरह भांमणी तास तणि ।—ह नां. मा.

मोररथ—सं०पु० [सं० मयूर रथ] स्वामी कार्त्तिकेय ।

(ह. नां. मा. , नां. मा.)

मोरलियौ—देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हां रै रुम झुम रुम झुम नूपुर बाजै, हां रै मारो मन मोह्यौ **मोरलियौ** रे ।—मीरां

मोरली—देखो 'मुरली' (रू. भे.)

मोरलौ—वि०—१ देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—**मोरला** गोरी घणा वरज्या ऐ न जाय वारी धण वारी औ हुंजा । आ रुत बोलै ऐ **मोरला** सुहावणा जी राज ।—लो. गी.

५ देखो 'मोरड़ौ' (रू. भे.)

मोरसल—देखो 'मोरछड़' (रू. भे.)

मोरसिका, मोरसिखा—सं०स्त्री० [सं० मयूर+शिखा] १ मोर की चोटी । (उ. र.)

२ एक जड़ी विशेष, जिसकी पत्तियां मोर की किलंगी के आकार की होती हैं । (उ. र.)

मोरसिरी—देखो 'बोलसरी' (रू. भे.)

मोरा—सर्व०—मेरा ।

उ०—आलम **मोरा** ओगुणां, साहिब तूझ गुणांह ।—ह. र.

रू०भे०—मोर, मोरउ, मोरड़ौ ।

मोराइ, मोराई—देखो 'मुराई' (रू. भे.)

मोराकीन—सं०पु०—एक प्रकार का वस्त्र ।

उ०—**मोराकीन** रौ लैंघौ, गुलाबी चीर अर कसूमल चोळी रौ सोणौ पैरांन ।—दसदोख

मोरादे, मोरादेवी—देखो 'मरुदेवी' (रू. भे.)

उ०—१ **मोरादे** भारया पुत्र रिखभदेव । रिखभ देव भारया-२ सुनंदा १ सुमंगळा २ ।—रा० बंसावली

उ०—२ एहवी स्त्री ऋखभ तणी माता । **मोरादेवी** सुखे सुखे सिवपुर पहुंती ।—जयवांणी

मोरार, मोरारी—देखो 'मुरारी' (रू. भे)

उ०—१ पांडव दूत **मोरार** —धरम पत्र

उ०—२ गायां ग्वाळौ कांनौ काळौ वंमी वाळौ वे हारी । भाभां भाभौ प्रिथी प्रांभौ मोटौ आंभौ **मोरारी** ।—पि. प्र.

मोरिय—१ देखो 'मौरय' (रू. भे.)

२ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

मोरियौ—सं०पु०—गाय या भैंस के बच्चे के मृत शरीर का खोल, जिसमें मसाला भर कर रक्खा जाता है ।

२ एक मारवाड़ी लोक गीत जो पुत्री की विदाई के समय गाया जाता है ।

रू०भे०—मूरियौ, मोरचौ ।

३ देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ **मोरिया** वागां-वागां जायनै, काची कुळियां लायी रै, धन **मोरिया** —लो गी.

उ०—२ सोनल रौ हेलौ सुणतां ईं नाडी रा सगळा **मोरिया** कुरळावण लागा ।—फुलवाड़ी

मोरींगौ—सं०पु०—दीवार में लगा हुआ या जमीन में रुपा हुआ वह छेददार पत्थर, जिसमें कपड़े सुखाने की रस्सी या पशुओं को बांधा जाता है ।

मोरी—सं०स्त्री०—१ गंदे पानी के निकास की छोटी नाली ।

२ तालाब या बांध के पानी के निकास का तंग द्वार, नहर, छोटा नाला ।

उ०—१ सहर मांहै पाखती पांणी घणौ, वडौ ताळाब सूरसागर जिण री मोरी छूटे छै, जिण सूं बाग बाडी घणा पीवै ।—नैणसी

उ०—२ मिनखां नूं खेती इमारत नूं खपावै कारज चलावै ने हर कारण में ताळाब बांध **मोरी** राखणै कुवा करणै में इतरी मदत धोरा बंधावण में करै । —नी. प्र.

३ छोटा द्वार, खिड़की ।

४ बंदूक का मुख ।

५ एक राजपूत वंश जिसे मोर्य भी कहते हैं ।

उ०—१ कोट विणायो **मोरियां**, साह हमाऊं नंद । तोड़ करै नहिं टूटही, वीर मदत जग वंद ।—बां. दा.

उ०—२ राजकुली ३६, सूरचवंस सोमवंस यादववंस कदंब परमार इक्ष्वाक चाहुमांन चालुक्य **मोरी** सेलार सैंधव बिंदक ।—व. स.

वि०—खाली, रिक्त ।

सर्व०—मेरी ।

उ०—१ जोगी कहइ सुणि **मोरी** माई । दिन तीसरई आवइ घरी राय ।—वी. दे.

उ०—२ पंडव कहइ अम्हे पापिया, किम छूटां **मोरी** मायोजी। कहइ कुंती सेत्रुंज तणी, जात्रा कियां पाप जायौ जी। - स. कु.

मो'री–सं०स्त्री०—ऊंट की नकेल के बांधी जाने वाली रस्सी।

उ०—१ बियं री सुसरौ घरसूं नीकल्यौ, ऊंटरी **मोरी** झाली अर कैयौ–अबार ही कांई जावौ ? त्यौहार रै दिन घर छोडणौ आछौ कोनी।—दसदोख

उ०—२ रांम नांव रो गेढौ करियौ,गेढौ मोटौ भारी। **मोरी** सार समझ री दीधी, यूं कर चलै बवारी।—फुलवाड़ी

रू०भे०—महुरी, मुरी, मुहरि, मुहरी, मूरी,मोरिय, मौरी, मोहरि, मोहरी, मौहरि, मौहरी, म्होरी, म्हौरी।

अल्पा०—मोरड़ी।

मोरीर—देखो 'मुहरिर' (रू. भे.)

मोरीसालौ–सं०पु० [अ० मूरिसे आ'ला] गोद लेने का एक नियम, जिसके अन्तर्गत कोई जागीरदार, जागीर पाने वाले के वंशज को ही गोद ले सकता था, अन्यथा जागीर जब्त हो जाती थी।

(भूत पूर्व जोधपुर राज्य)

मोरू, मोरू—देखो मोरौ' (रू. भे.)

उ०—१ बीछड़ियां मन माहरूं रे, दुख धरइ दिन दिन्न। के तूं जांणइ केवली रे, के वलि **मोरूं** मन्न।—स. कु.

उ०—२ तरू तरू त्रूठइ पंन्नडां, गिरि गिरि त्रूटइ वाहु। फागुण कागुण ताहरू, नींगमिउ **मोरू** नाह।—मा. कां. प्र.

२ देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

मोरूड़ौ–सं०पु०—एक लोक गीत जो लड़कियों द्वारा गाया जाता है।

मोरूलौ—देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आ रितु बोलै ऐ **मोरूला** सुहावणा जी राज।—लो. गी.

मोरूं—१ देखो 'मोर' (रू. भे.)

उ०—मुनमथ का इंदका मुनेस्वरूं का मन मोहै। फलफूलूं के भार भरी अढ़ार भार। ठांम ठांम के ऊपर **मोरूं** का तंडव भौंरूं का गुंजार।—सू प्र.

२ देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

उ०—**मोरूं** मन अस्टापद सुं मोहयुं, फटित रतन अभिरांम मेरे लाल।—स. कु.

मोरूसो–वि०—वंशानुगत, परम्परागत, बाप-दादों से प्राप्त। पैतृक

मोरेचा–सं०पु०—चौहानवंश की एक शाखा, सांचोरा चौहानों की शाखा।

मोरेल–सं०स्त्री०—बनास नदी की एक सहायक नदी जो जयपुर क्षेत्र में बहती है।

मोरेवौ–सं० पु०—गेहुंओं की फसल के साथ होने वाला एक घास विशेष।

मो'रौ–सं०पु० [सं० मुकराकृति] १ ऊंट, बैल, घोड़े आदि के मुंह पर, सुंदरता के लिये लगायी जाने वाली एक जाली विशेष।

उ०—राजा एक नांमी टाळका काछी ऊंट माथै सजाई कराई–पीतळियौ पिलांण, लूंबाळौ गोरबंद, रेसम री **मो'रौ**, सोना रा गिरबांण, रूपै रा पागड़ा।—फुलवाड़ी

२ हाथी के मुंह पर लगाया जाने वाला एक उपकरण।

३ बैल के मुंह पर शोभा बढाने के लिए लगाया जाने वाला एक सूत, जट या चमड़े का उपकरण।

४ आकृति या चेहरा।

५ घास–फूस या पतली लकडियों का एक पुवाल जिसको जलाकर किसी दूसरी चीज के आग लगाई जाती है।

क्रि०प्र०—देणौ, मेलणौ, लगाणौ।

६ अग्नि को शीघ्र प्रज्वल्लित करने के लिए उस पर डाली जाने वाली महीन कंटीली वस्तुएं।

७ आग, अग्नि।

उ०—चुगल सुरंदर चाव री टहल नारी घर घूंटी। **मोरौ** मायौ मेल फेर हिरदे री फूटी।—ऊ. का.

८ पशुओं की क्रोधावस्था।

उ०—राजा मांनसिंघजी रा उमराव रै हाथी सूंड सूं पकड़ घोड़ा सूं उतार **मोरौ** कर दांतां में पोयोड़ी कटारी वाही। हाथी रै कुंभा थल लागी, जोगणीदास मुवौ।—बां. दा. ख्यात

[फा० मुह्र] ९ एक प्रकार का पत्थर विशेष, जिससे सांप का विष उतारा जाता है।

१० एक प्रकार का मणिया, जिसको 'खोळ' (पानी में डुबो) कर पिलाने से बच्चों के गृह दोष मिटते हैं।

११ शतरंज की गोटी।

१२ सेना की अगली पंक्ति।

सर्व०—मेरा।

उ०—१ मन हूं पवित्र करिस हरि **मोरौ**। टीकम नांम घरे उर तोरौ।—ह. र.

उ०—२ **मोरौ** मन मगन थयउ। हां रे देखि देखि भाव।

—वि. कु.

रू०भे०—मुहरौ, मूं'रौ, मूरौ, मोरुं, मोरु, मोरूं, मोहरौ, मौरौ, मौहरू, मौहरौ, म्होरौ, म्हौरौ।

मोरचौ—१ देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—सगळा जणा थोड़ी ताळ तांई उण नाचता **मोरचा** सांम्ही एकटक देखता रह्या।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मोरियौ' (रू. भे.)

मोळ—देखो मौळ' (रू. भे.)

उ०—१ पुटियां टोळ पंचोळ, चोळ चंगे चित वाळा। झांमर झोळ तमोळ, **मोळ** मन मकड़ो जाळा।—दसदेव

उ०—२ ऊपर सूं हेजी–मोगर अर प्याज पापड़ां रा साग ल्हसण रै लाल झोल में फलकां री **मोळ** मेटण जीमैं हैं।—दसदोख

मोल–सं०पु० [सं० मूल्य, प्रा० मुल्ल] १ कीमत, मूल्य।

उ०—१ चंद बदन गुनखांन चतुर चित्त। पर हर अपनी प्यारी।

वेस्या संग मोल विन बालम, बिकगौ बड़ौ बिकारी ।—ऊ. का.

उ०—२ बरचि दीप बेवड़ा कळी केवड़ा कनोती । लंकी धजर ग्रलोल, बजरमणि मोल बिचोती ।—मे. म.

उ०—३ ताखौ ग्राखौ लावयौ, कांमण प्यारा कंत । मोल मुहगौ मनि समो, सोक्यूं रहै निरखंत ।—व. स.

उ०—४ चाहै मिनखां चूतियां नहं निरवाहै बोल । गुंजा सूं घटती घणौ, मावड़ियां रौ मोल ।—बां. दा.

उ०—५ लक्खू बिचाळै ई बोली–गिगन रा सूरज ग्रर उगारा उजास रौ कोई मोल व्है तौ म्हारी देह रौ मोल व्है ।—फुलवाड़ी

२ भाव, दर,

उ०—१ खड़णौ जार्भ भार खित, बापूकारै बोल । नहीं उचित करणौ नरां, धवळा हुंदो मोल ।—बां. दा.

उ०—२ पिडत कह्यौ–सेठां, किणी चीज रौ मोल तौ देवणिया री सरधा परवांण । म्हारै कूड़ नीं बोलण री ग्राखड़ी । रावळी इंछा व्है सो दे दिरावौ ।—फुलवाड़ी

उ०—३ या रस कौ नहीं तोल न मोल, पीयग उर ग्रंतर खोल ।

—स्त्री हरिरांमदासजी महाराज

३ क्रयण, खरीद ।

उ०—१ खबरदार नर जबर नूं, बसत मंगाड़े मोल । बिगड़ै उण दिन वांणियौ, तोलण हूंता तोल ।—बां. दा.

उ०—२ ग्रर जे पछै ई थनै पतौ नीं पड़ियौ तौ म्हनै किसौ मोल लावणौ है । म्हैं थनै जांणूं जकी बात बताय देवूंला ।—फुलवाड़ी

४ खरीद के बदले दी जाने वाली रकम, दाम, रुपये ।

उ०—पती जुद्ध में दुसमणां री फौजां रा हाथी मार नं तौ मोतियां रा ढिगला दिया है जिण रा प्रोत वा पोत चीडां ने हाथियां रै दांता रा चूड़ा मोल भांगण रो कांम नहीं ।—वी. स. टी.

५ महत्व, विशेषता, कद्र ।

उ०—१ हरीया मिलै ग्रयारखु, ताहि घटायौ मोल । हरि हीरां कौ क्या घट्यौ, घट्यौ स वाकौ बोल ।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ घन बधियां म्हारी जांण में मिनख रौ मोल घटै ।

—फुलवाड़ी

उ०—३ डोकरी लूखा सुर में बोली–पण म्हारी बेटी राजाजी सूं प्रीत नीं करणी चावै, पछे थारै ग्रंदाता री मरजी रौ कांई मोल ।

—फुलवाड़ी

मोगलत—देखो 'मोहलत' (रू. भे.)

उ०—इण रंग महल में ग्रायां म्हारा मन मैं एक नवौ ई ग्यांन सांचरघौ । फगत तीन दिन री मोलगत चावूं, थें बोला–बोला देखता रैजो ।—फुलवाड़ी

मोळणौ, मोळबौ—क्रि०स०—१ काटना, कतरना ।

उ०—१ मूळ मोळता मिनख, मिरड़िया घणां घुरावै । हळ बावतड़ी वेर, फोगड़ां बीज लुपावै ।—दसदेब

उ०—२ दायण सावळ सुथराई सूं ग्रांवळ कानी नाळौ सूंत्यौ । पाचणा सूं नाळौ मोळ डोरा सूं बांध दियौ ।—फुलवाड़ी

२ उतारना, हटाना ।

मोळणहार, हारौ (हारी), मोळणियौ—वि० ।

मोळिग्रोड़ौ, मोळियोड़ौ, मोळयोड़ौ भू० का० कृ० ।

मोळीजणौ, मोळीजबौ—कर्म वा० ।

मौळणौ, मौळबौ—रू० भे० ।

मोलणौ मोलबौ—देखो 'मोलाणौ, मोलाबौ'

मोलणहार, हारौ (हारी), मोलणियौ—वि० ।

मोलिग्रोड़ौ, मोलियोड़ौ, मोल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मोलीजणौ, मोलीजबौ—कर्म वा० ।

मोलत - देखो 'मोहलत' (रू भे.)

मोलबी मोलवी—देखो 'मौलवी' (रू. भे.)

मोलसरी, मोलसिरी, मोलस्री—देखो 'बोलसिरी' (रू. भे.)

मोळाई—देखो 'मोळ'

मोलाई–सं०स्त्री०—किसी वस्तु का मूल्य पूछने की क्रिया या भाव ।

मोलाकुमार–सं०पु०—मिट्टी के बर्तनों का कार्य करने वाले वे मुसलमान कुम्हार जिनके, पूर्वज हिन्दू थे ।

मोळाटौ–सं०पु०—१ चोर व डाकुओं द्वारा अपना मुंह छुपाने के लिये मुंह पर लगाया जाने वाला वस्त्र ।

२ सिर पर बोझा उठाते समय सिर पर रक्खी जाने वाली किसी वस्त्र की गोल गद्दी ।

रू०भे०—मोळावटौ,

मोळाणौ, मोळाबौ–क्रि०स० ['मोलणौ' क्रि० का प्रे० रू०] १ कटवाना, कतरवाना ।

२ 'मौळ' ग्राना या होना ।

मोळाणहार, हारौ (हारी), मोळाणियौ—वि० ।

मोळायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मोळाईजणौ, मोळाईजबौ—कर्म वा० ।

मोलाणौ, मोलाबौ—क्रि०स०—१ खरीदने योग्य वस्तु या पशु–धन का भाव, मूल्य या दर पूछना ।

२ खरीदना, मोल लेना । क्रय करना ।

उ०—१ बारठजी उणनै फटकारता कैवण लागा भैंस तौ मोलाई कोनीं, उण पैलाई थारी कंवूं जकी रौ मार मार नं पोखाळौ कर दियौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ पारकी बेटी नै जिनावर री जूण जांण'र लालच रै बजार में मोलाई करणी है ।—दसदोख

मोलाणहार, हारौ(हारी), मोलाणियौ—वि० ।

मोलायोड़ौ—भू० का० कृ० ।

मोलाईजणौ, मोलाईजबौ—कर्म वा० ।

मुलाणौ, मुलाबौ, मोलणौ, मोलबौ, मोलावणौ, मोलावबौ—रू.भे. ।

मोळायोड़ौ–भू०का०कृ०—१ कटवाया हुग्रा, कतरवाया हुग्रा ।

२ 'मौळ' आया हुआ, मौळ' हुवा हुआ ।
(स्त्री० मोळायोड़ी)

मोलायोड़ौ—भू०का०कृ०—१ भाव-ताव पूछा हुआ ।
२ खरीदा हुआ, क्रय किया हुआ ।
(स्त्री० मोलायोड़ी)

मोळावटौ—देखो 'मोळाटौ' (रू. भे.)
उ०—अर रांणी आदमी १०, ००० दस हजार लियां खडग दुधारौ पकडीयौ लोकां नूं दिलासा करै छै। आप धिरमा दो मोळावटौ मारीयौ छै।—राजा नरसिंघ री वात

मोलावणौ, मोलावबौ—देखो 'मोलाणौ, मोलाबौ' (रू. भे.)
उ०—गाडी मोलावती वगत बळद जुतियोड़ा हा के नीं। माथा में घोळा आया है, थोड़ो रांम नैं माथै राखनै साची बात केजै।
—फुलवाड़ी
उ०—२ भैंस्यां मोलावण री बात सुणी जद मांणजी मासी नै ढाब बिचाळै बोली-बाजण नै तौ म्हैं महारांणी बाजूं पण म्हारै गोडै राती छदांम ई कोनीं।—फुलवाड़ी
उ०—३ तठा उपरांति करि नै सराफ बजाज जोंहरी दलाल भांति भांति रा बाब भांति भांति रा पदारथ भांति भांति री अमोलक वसतां सूं मोलावीजै छै।—रा. सा. सं.
मोलावण हार, हारौ(हारी), मोलावणियौ—वि०।
मोलाविप्रोड़ौ, मोलावियोड़ौ, मोलाव्योड़ौ—भू० का० कृ०।
मोलावीजणौ, मोलावीजबौ—कर्म वा०।

मोलि—देखो 'मोल' (रू. भे.)
उ०—कौडी बदळै लाल कूं, देत न देख्या मोलि। हरीया पेलै भाग सूं, खालिक द्यै दिल खोलि।—श्री हरिरांमदासजी महाराज

मोळिया मंगळ—देखो 'मौळिया मंगळ' (रू. भे.)

मोळियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ काटा हुआ, कतरा हुआ. २ मौळ आया हुआ।
(स्त्री० मोळियोड़ी)

मोलियोड़ौ—देखो 'मोलायोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मोलियोड़ी)

मोळियौ-सं०पु०—देखो 'मौळियौ' (रू. भे.)
उ०—हवेली सूं कड़ाजूड़ होयनै आया ई हा। कड़प दियोड़ौ सतरंगी मोळियौ। लांबौ छिणगौ। माथै किलंगी ज्यूं छोगौ। एकोएक सत्तर पाती।—फुलवाड़ी

मोलियौ—१ पुरुषार्थ हींन ऐसा व्यक्ति जिसमें औरतों के लक्षण आगए हों। जनखा।
उ०—मावड़िया अंग मोलियां, नाजुक अंग निराट। गुपत रहै ऊमर गमै, खाय न निजबल खाट।—बां. दा.)
२ अशक्त, कमजोर, दुर्बल।
३ वह भागीदार व्यक्ति जो अपने भाग के कार्य में अपने बैल व हल लाकर खेती करता है।
४ किराये किया हुआ हल।
५ काले मुंह का बंदर।
६ जोरू का गुलाम।
रू०भे०—मोलीओ, मोलीयौ, मोल्यौ,मोल्हियौ, मोल्हीयौ।
७ देखो 'मौळियौ' (रू. भे.)
उ०—उत्तरा कूंयर वंचव बोलइ, वीर कोइ तुझ आज न तोलइ। आगिजे सुहड मौलि मोलियां, पउतीयां जिम हुइ पटउलीयां।
—सालिसूरि

मोळी—१ देखो 'मौली' (रू. भे.)
उ०—१ मिठाई मगदर माटा काठा दाटा दे दे' र बूसी मोळी सूं बांध्या।—दसदोख
उ०—२ माथा पर तौ मोळी और म्हनै तबू में आवण दौ।
—रेवतसिंह भाटी
२ देखो 'मोळौ, (स्त्री.)

मोली—वि०स्त्री०—१ दुर्बल, अशक्त।
२ जिसकी कीमत हो, मूल्य वाला।
३ मूल्यवान, कीमती।
उ०—घण मोला घोड़ाह, घण मोली केइ घोड़ियां। थुयकारिय थोडाह, जगमें तौ जोडा जसा।—ऊ. का.
सं०स्त्री० [सं०मौलि:] १ मादा ऊंट।
२ सिर की चोटी। बालों का जूड़ा।
३ जटाजूट।
४ मस्तक।
५ मुकुट।
६ पगड़ी।
७ प्रधान व्यक्ति।
रू०भे०—मौलि,मौली।

मोलिओ—सं०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र।
उ० हवइ राजा परिवार प्रतिबस्त्र आपइ, गुडीआ सणीआं कस्तूरीआं प्रतापीआं कुसंमीआं मोलीआं मांडवीआं मीणीआं वाटलीआं जलोदरीआं।—व. स.
२ देखो 'मौळियौ' (रू. भे.)
३ देखो 'मोलियौ' (रू. भे.)

मोलीमीयौ-सं०पु०—लकड़ी की बनी वस्तुओं की धार या किनारों को सुन्दर बनाने का एक औजार।
रू०भे०—मोळीयौ

मोळीयौ—१ देखो 'मोळियौ' (रू. भे.)
२ देखो 'मोलीमीयौ' (रू. भे.)

मोलीयौ—देखो 'मोलियौ' (रू भे.)

मोळू—देखो 'मेळूजौ'

मोळौ—देखो 'मौळौ' (रू. भे.)
उ०—१ गोगौ मोगौ हुय गोरधां गिरियौ, तेजौ मोळौ पड़ि तैजौ लै तिरियौ।—ऊ. का.

उ०—२ इणी भांत इण नगर गूजरी रै आयां पैली सगळी जूंनी ओपमावां पळापळ चिमकती, पण गुजरी रै परगट व्हैता ई सगळी ओपमावां **मोळी** पड़गी ।—फुलवाड़ी

उ०—३ मेंदी देऊं मुळक मेल सूं करदे **मोळी** । दीवाळी रै दिवस हिया में ऊठै होळी ।—ऊ. का.

उ०—४ रोजीना ऊगता सूरज रौ गुलाबी रंग, उणरी **मोळी** मीट में बींदणी रै गोरा उणियारा रौ भरम पैदा करतौ ।—फुलवाड़ी

उ०—५ कंवरांणी रै मून रैणा सूं कंवर री करड़ावण कीं मोळी पड़ी ।—फुलवाड़ी

उ०—६ सेठ मोळा पड़ग्या । कीं जबाब नीं दियौ । जांणता के राजाजी री मूंछ्यां रौ बाळ ओ नाईड़ौ कदै भिमरग्यौ तौ भूंडी बितावैला ।—फुलवाड़ी

उ०—७ ठाकरसा **मोळा** पड़नै कह्यौ—अबै तौ भावै ई मन में रैगी । थूं मोसा देबै जित्ता ई थनै छाजै ।—फुलवाड़ी

(स्त्री० मोळी)

मोलौ-वि०—१ कीमती, मूल्यवान ।

उ०—घणा घणा **मोला** घोड़ा, पाइगगहां पाटी होडा । आगला घडै अलंब, अंजूली पियै ज अंब ।—गु. रू. बं.

२ जिसकी कोई कीमत या मूल्य हो ।

उ०—तेरे कारन सब जग त्याग्यौ, अब मोहै कर सों लो रे । मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चेरी भई बिन **मोलौ** रे ।—मीरां

३ देखो 'मोलियौ' (रू. भे.)

उ०—भूसर भार न झल्लही, गोधां गावड़ियांह । इम जस भार न ऊपड़ै, **मोला** मावड़ियांह ।—बां. दा.

मोल्यौ—देखो 'मोलियौ' (रू. भे.)

उ०—१ क्यूं रे **मोल्या** उंठ्यावड़ा बूजबाळौ कुण छै रे तूं । मांकी खुसी होगी जेंडे जावांगा हमेस ।—ऊ. का.

उ०—२ तड़की देव बोल्या रे, चुपकौ रहै **मोल्या** रे । नर-भव ते पायौ रे, पिण आले गमायौ रे ।—जयवांणी

उ०—३ खांड अर घी मांगतां सरम को आवै नीं । घर में कमावू तौ थारै जेंड़ौ **मोल्यौ** भरतार है ।—फुलवाड़ी

उ०—४ आ एकली भवांनी सगळां नै भू पाय दियौ अर थें सगळा ई डाढी-मूछाळा मोट्यार उण **मोल्या** कंवर रै पगां रगड़ रगड़ नै टाकियां पाड़ली ।—फुलवाड़ी

मोल्हियौ, मोल्हीयौ—देखो 'मोलियौ' (रू. भे.)

उ०—हिवै मोरीयारां मैं बेठां मोटीयार मसकरी करै, रे तैं बैर गमाई **मोल्हीया** लांनत रे तोनुं ।

—कांवळौ जोईयौ नै तीडी खरळ री वात

मोवण—१ देखो 'मोण' (रू. भे.)

उ०—१ दूध में ओसणियोड़ौ अर घी रै **मोवण** री फरफरौ बाटियौ । माथै माखण अर निवात लागोड़ी । कागला री भाग जागियौ ।—फुलवाड़ी

उ०—२ परात में घी री **मोवण** देयनै आटौ गूंदियौ ।—फुलवाड़ी

२ देखो 'मोहन' (रू. भे.)

मोवणी—देखो 'मोहन' (रू. भे.)

उ०—१ आज पेमजी रै माथै सूं मुरळी दलाल री मांड्योड़ी मूली हाळी **मोवणी** सीबी साफ हुवै, नीकळै है ।—दसदोख

उ०—२ मधुर **मोवणी** राग, रीझवै आभौ राजा । झीणी छांटां झिलै, सीलवै साळू गाजा । —दसदेव

मोवणौ-वि०—मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला, लुभाने वाला, सुन्दर ।

उ०—पण औ माठौ साचेलौ भाठै-रै बदळै नरम, फूटरौ और देखणै वाळां-रौ मन **मोवणौ** हो । ओ भाठौ भाठौ नहीं, पण भाठै मांयली सुकुमार अहिल्या ही ।—वरसगांठ

मोवणौ, मौवबौ—देखो 'मोहणौ, मोहबौ' (रू. भे.)

उ०—जोबना छांक मैं डोढी निजर जोवै छै । चंद मुखी हीरां चकोर सखी **मोवै** छै । सुंदर अलबेली हीरां अति रूप छाजै छै ।

—बगसीरांम प्रोहित री बात

मोवणहार, हारौ (हारी), **मोवणियौ**—वि० ।

मोविओड़ौ, मोवियोड़ौ, मोव्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मोवीजणौ, मोवीजबौ—कर्म वा० ।

मोवन—देखो 'मोहन' (रू. भे.)

उ०—१ म्हारी बंनड़ली रा चमक्या छै चीर । भतीजां रा **मोवन** मोळिया जी ।—लो. गी.

उ०—२ राजा रौ कंवर नित-हमेस उण मारग ई सैर-सपाटां वास्तै घोड़ै चढ़ियौ निकळतौ । गूजरियां रौ **मोवन** भूलरौ उणरा मन माथै नित नवा चित्रांम कोरतौ ।—फुलवाड़ी

मोवनकंठी-सं०स्त्री०—स्त्रियों के गले का हार विशेष ।

मोवनी—देखो 'मोहनी' (रू. भे.)

उ०—रूप रौ असली देवता तौ प्रगट नीं व्हैगौ । पैली निजर रै समचै ई बादळ री **मोवनी** मूरत उणरा हिवड़ा में कुरगी ।

—फुलवाड़ी

मोवनीइग्यारस मोवनीएकादशी-सं०स्त्री०—वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी ।

मोवारणी – देखो 'मारणी' (रू० भे०)

मोवियोड़ौ—देखो मोहियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मोवियोड़ी)

मोस-सं० पु०[सं० मोष] १ चोर, तस्कर, उचक्का । (डि. को.)

२ चोरी का माल ।

३ चोरी, लूट-खसोट ।

४ वध, हत्या ।

५ झूठ मिथ्या ।

उ०—१ सुद्ध क्रिया मारग अभ्यासता, तजता माया रे **मोस** । रोस धरइ नही केहस्युं, मुनीवरू सुंदरु चित्तइं नहीं सोस —कवियण

उ०—२ आस्रव कसाय दुर्वंधना, वलि कलह अम्याख्यांनौजी। रति अरति पेसुन निंदा, माया **मोस** मिथ्या ग्यानौ जी।—स. कु.

६ दंड, सजा।

७ ताना, व्यंग।

उ०—सात खेत्रै वित्त वावरै जी, छावरै **मोस** नै मरम। सीतल चंद्रमा सारिखौ जी, निज प्रजा ऊपरि नरम।—वि. कु.

मोसड़—देखो 'मसोड़' (रू. भे.)

उ०—धूड़ छिलकरी घड़ी घरां ला ताती देवौ। **मोसड़** मांय बिछाय, सुवांती सूता सेवौ।—दसदेव

मोसणौ, मोसबौ—क्रि० स०—१ झूठा दोषारोपण करना, कलंक लगाना।

उ०—चाडी खाधी चउतरइ, कीधउ थांपण **मोसउ**। निंदा कीधी पारकी, रति अरति निसंक।—स. कु.

२ व्यंग करना, ताना मारना।

३ चोरी करना, लूटना।

उ०—थळ खोसै धापै नहिं थोड़, **मोसै** परजा वेगै मोड़ै।—ऊ. का.

४ देखो 'मसोसणौ, मसोसबौ' (रू. भे.)

उ०—१ कतल कर देवै, कंठ **मोस** नाखै, टापरा बिकाय देवै, रांध्योड़ी फुड़ाय देवै, छुरी फेरता वुरी कर देवै।—दसदोख

उ०—२ छळ बळ कर छांनै मतळब मांनै मूरख गळ **मोसंदा** है।
—ऊ. का.

उ०—३ एक दांनौ आदमी कह्यौ-भली आदमण ऐड़ा जंगी गिंडकां नै साव छुट्टा राखै किणी मिनख रा कंठ **मोस** न्हाकिया तौ कांई भाव पड़ैला।—फुलवाड़ी

उ०—४ पारका मरम ने **मोस** दोखै नहीं करि रोस। जूना छिद्र सही ए ते ऊघाड़ै नहीं ए।—जयवांणी

मोसणहार, **हारौ**(**हारी**), **मोसणियौ**—वि०।

मोसिओड़ौ, **मोसियोड़ौ**, **मोस्योड़ौ**—भू० का० कृ०।

मोसीजणौ, **मोसीजबौ**—कर्म वा०।

मोसर—सं०पु०—१ शुभ अवसर, अवसर, मोका।

उ०—१ पताहूंत पाघरै, अरज कीधी तिण ओसर। चित सदा चाहतौ, मिल्यौ तिसडौ हिज **मोसर**।
—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री वात

उ०—२ दरवेस भूखां री मंसा पूरण कियां नै न्याव कियां जिकौ मन में होय सोही **मोसर** छै।—नी. प्र.

उ०—३ तरै जसोघर सारां भाइयांनूं भेळा कर ने कयौ. पछेइ पुकारू जावौ तौ ओ तौ सरदार छे नै ओ **मोसर** छै।—रा. वं. वि.

उ०—४ पढन पढावन **मोसर** पायौ, चूक गयौ विभचारी।
—ऊ. का.

२ समय, वक्त।

उ०—रंग लखियौ अनुराग, मदन छकियौ उण **मोसर**। मधुकर छकि मुसताक, चुरस पोहपां गळि चोसर।—पनां

३ संयोग।

उ०—चार दफे मैं आता री, चीजां तरह तरह की ल्याता, किसके हाथा पकडाता मुफत लुटाता रोजीना, मिलगो का **मोसर** नहीं है चक्कर खाता रोजीना।—लो. गी.

४ मूंछे।

उ०—झालियां सार **मोसर** झलै, झूझ भार भुज झालियौ, भूपाळ जैत उणहीज भुज, हय कंध थापलि हालियौ—मे. म.

५ देखो 'मौसर' (रू. भे.)

उ०—सांपंड सनमुख सीत ऊंट नंह चुळै अनाड़ी। देखै **मोसर** डूम अटै नह पैंड अगाड़ी।—ऊ. का.

मोसार, **मोसाळ**, **मोसाल**—सं०पु०—१ ननिहाल, मामा का घर।

उ०—१ लाजै पीहर सासरौ, माजै मा **मोसार**। नितरा आवै वोलमा, थांनै वुरौ कहै संसार।—मीरां

उ०—२ मामी मीरां हौ लाजै माई **मोसाळ**, लाजै हौ पीहर थारौ सासरौ।—मीरां

२ पीहर, मैका, पिता का घर। (स्त्री.)

३ मामा।

रू०भे०—मुसाल, मुंहमाल, मुहुसाल, मूसाळ, मोसाली, मोसेल, मौसाळ।

अल्पा०—मौसालो।

मोसाळी—देखो 'मोसाळ' (रू. भे.)

उ०—तारचौ पीहर सासरौ तारयौ माय **मोसाळी** तारी।—मीरां

मोसियोड़ौ—भू०का०कृ०—१ झूठा दोषारोपण किया हुआ, कलंक लगाया हुआ।

२ व्यंग किया हुआ, ताना मारा हुआ।

३ चोरी किया हुआ, लूटा हुआ।

४ देखो 'मसोसियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मोसियोड़ी)

मोसी—देखो 'मासी'।

मोसीआई, **मोसीहाई**—देखो 'मासीयाई' (रू. भे.)

मोसेल—देखो 'मोसाळ' (रू. भे.)

मोसौ—सं०पु०—१ व्यंग, ताना।

उ०—१ राजा थांनूं मेहणौ सांचो दियौ सत्य छै। कुड़ौ **मोसौ** दियौ न छै।—पंच दंडी री वारता

उ०—२ उण म्हांनै चुड़लाळी **मोसौ** बोलियौ, **मोसौ** बोलियौ, जी म्हांरा राज।—लो. गी.

उ०—३ डोकरी मुळक नै **मोसौ** मारती जबाब दियौ-जे राजा रै आखै खजांनै सूं ई प्रीत रो भुगतांन व्हैतौ व्है तौ खजांनौ तौ थांरै पाखती है ई, पीछे प्रीत सारू भंवता क्यूं फिरौ।—फुलवाड़ी

२ कटुवचन, आक्षेप।

३ उगालंभ।

उ०—१ इण गौर बंधिया रे कारणे, म्हारी नणदल **मोसौ** देवै रे,

म्हारौ गौरबंध वळतौ कर ।—लो. गी.

उ०—२ कूड़ा कथन रखे करौ, सुंस कूड़ी साख । थांपण मोसौ मत करै, रिद्धि पारकी राख ।—ध. व. ग्रं.

क्रि०प्र०—दैणौ. बौलणौ, मारणौ, लगाणौ,

४ देखो 'मासौ' (रू. भे.)

रू०भे०—मूसौ, मौसौ, मोहौ ।

मोह–सं०पु० [सं०] १ आध्यात्मिक क्षेत्र में, संसार व सांसारिक पदार्थों को सत्य मानने तथा इन्द्रिय जनित सुखों को स्थायी मानने का भ्रम, अज्ञान ।

उ०—१ हरीया साचै सूरवै, मारचा पहली मोह । पकड़चा पांचूं भोमिया, दौड़ां करता दोह ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ ग्यांन विग्यांनीय जांनि सबै विध, रूप तणौ मन मोह धूतारौ । दास कहै हरिरांम बिनां हरि, होय नहीं नर को निसतारौ ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ इम करि बहु अचड़, मोह परहर वप माया । दिब धरि धरि सुर देह, अछर वर स्रुगि आया ।—सू. प्र.

उ०—४ कांम क्रोध मद लोभ मोह कूं, चित्त से बहाय दीजे । मीरां के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रंग में भीजे ।—मीरां

२ सांसारिक तत्वों के प्रति होने वाली आसक्ति, लगाव, आकर्षण, झुकाव । लोभ ।

उ०—१ रांम नांम रातौ नहीं, मातौ माया मोह । हरिया का तौ चेड़सी, तातौ करि करि लोह ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ रूपाळी चीजां रौ मोह बेजा बात कोनीं, पण रूप रौ पड़दौ अंतस रा दूजा गुणां नै आपरै मांय ढक्योड़ा राखै तौ आ अवस बेजा बात है ।—फुलवाड़ी

३ ममता, वात्सल्य ।

उ०—१ भला आदमियां थें मोटा भगत बाजौ अर थांनै इण माटी जित्तौ ई जायोड़ी बेटियां सूं मोह कोनीं ।—फुलवाड़ी

उ०—२ लाड, मोह अर प्रीत में अबूझ, नादांन, छोटौ टाबर जित्तौ समझै, उत्तौ स्यांणौ, समझणौ अर लांठौ मोट्यार ई नीं समझै ।—फुलवाड़ी

४ प्रेम, स्नेह, प्यार ।

उ०—१ मात पिता रौ मोह कुटंब छोड़ै जिण कारण । धरै पतीव्रत धरम, तेण समजै भवतारण ।—ऊ. का.

उ०—२ साईनी ऊमर रौ मोह माईतां रै गना सूं ई घणौ वत्तौ व्है ।—फुलवाड़ी

उ०—३ माया मोह न कीजियै, माया वडी हरांम । जन हरिया तिह लोक में, केता करै विरांम ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

५ प्रसन्नता, खुशी, मोद ।

६ गर्व, अभिमान, घमंड ।

उ०—हरि हौदै ऊपरै, रावत वाई रीठ । मारचौ राजा मोह कुं, पड्यौ तळफै पीठ ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

७ मोहित होने की अवस्था ।

उ०—टूंड चढै प्रथीमल भांजै टोडौ, लाला तणौं सर धारै लोह । बाये बाय नळी जिम बाजै, अघ मणधर जण आवै मोह ।

—महारांणा प्रथीराज रौ गीत

८ उद्विग्नता, आतुरता ।

९ साहित्य में ३३ संचारी भावों में से एक, जिसमें चित्त-वृत्ति अस्त-व्यस्त हो जाती है और उचित-अनुचित का कोई ध्यान नहीं रहता ।

१० एक प्रकार की तान्त्रिक क्रिया जिसे शत्रु के बल को कम करने के लिये प्रयोग में लाया जाता है ।

११ दया, कृपा ।

उ०—कुळ वंस वधारै, साथ सुधारै, तीन पख तारै । महाराज, सतियां पर मोह कीजै, आपणी कर लीजै ।—अ. वचनिका

१२ ब्रह्मा का एक पुत्र ।

वि०—काला, श्याम । (डिं. को)

रू०भे०—मो, मों', मोहि, मौह ।

अल्पा०—मोहौ ।

मोहक–वि० [सं०] १ जिसके कारण मन में मोह उत्पन्न हो ।

२ मोहित करने वाला, आकर्षित करने वाला, लुभावना ।

३ अत्यन्त सुन्दर ।

४ राजा सुरथ का पुत्र एक राजकुमार ।

मोहकम—देखो 'मुहकम' (रू. भे.)

उ०—मैं थांहरै विचार रे विरुद्ध नहीं कियौ, थां कही कैद करौ सो मैं चाही मोहकम खरी कैद करूं, सो सबळी कैद अहसांन री सौ न दीठी ।—नी. प्र.

मोहकार–सं०पु०—पीतल या तांबे के घड़े का ऊपरी भाग, मुख ।

मोहड़ौ, मोहडौ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)

उ०—१ उठै जाय धड़ धड़ी खाय तीर सारा नांखिया । केई मांही गरक था सो मोहड़ै सूं काढ़ परा किया ।

—डाढाळा सूर री बात

उ०—२ सू हूं तो रजपूत खांमीदार रौ मोहड़ौ देखूं नहीं । पण कासूं करूं, तू म्हारौ पुरांणौ चाकर छै ।

—जैतमाल पुमार री बात

उ०—३ तरै रावजी बात आ राखी, कह्यौ–माहारौ कोट आवसी तरै म्हे तोनुं छोड़सां । तरै डूंगरसी कोट रै मोहडै जाइ जगहथ' देपावत नुं कहीयौ–साबास तैं पांच मास गढ़ विग्रहीयौ ।—नैणसी

मोहण—१ देखो 'मोहन' (रू. भे.) (नां. मा., ह. नां. मा.)

उ०—१ जरै स्रोतांनुराग रै ही प्रभाव आकरसण, मोहण द्रावण, उन्मादण, बसीकरण पांचूं ही मनोज रा सायकां रौ बेझौ होय तत्काल ही आपरा प्रधान टीला नूं बुलाय प्रामारी रा पांणि ग्रहण रै काज अरबुदाचल जाय सलख रा चित में या बात स्वीकार करावण री पुणी ।—वं. भा.

उ०—२ मिय निय तेज सुरां तन नीसर, **मोहण** रूप तेज ईख मुनेसर ।—मा. वचनिका

उ०—३ रगण तगण मयगण करण, चवदह वरण अचूक । सात च्यारि पंच रूप सुजि, **मोहण** छंद मलूक ।—ल. पिं.

२ देखो 'मोहनी' (रू. भे.)

उ०—**मोहण** मूरत सांवळी सूरत नेणा बण्या विसाळ अधर सुधारस मुरळी राजत, उर बैजंती माळ ।—मीरां

मोहणगती-सं०पु०—काजल, । (अ. मा.)

मोहणवेलि, मोहणवेली-सं०स्त्री०—वह लता जो मन को आकृष्ट करती हो ।

उ०—१ अम्रत तणउ प्रवाह, **मोहणवेलि** तणउ कंदलउ, पूनिमनउ चंद्र, चालती चिंतामणि·····।—व. स.

उ०—२ तोरण बधाव्या मंदिर बारणै जो, चित्रत कीधौ घर **मोहणवेलि** हो ।—वि. कु.

उ०—३ पंचाइण नइं पाखरच ,महंगळ नइ मद कीध । **मोहणवेलो** मारुइ, कंत पेम रस पीध ।—ढो. मा.

उ०—४ चौड़ै चंड मडां चवी, संभ आगळि सकाज । मोहणवेली अध नयण, मूंध अजब महाराज ।—मा. वचनिका

मोहणिज्ज-सं०पु०—मोहनीय कर्म । (जैन)

मोहणिया-सं०पु०—राठौड़ों की एक उप शाखा ।

मोहणियौ-सं०पु०—उक्त शाखा का व्यक्ति ।

वि०—मोहित करने वाला ।

मोहणी-सं०स्त्री०—१ एक नदी का नाम । (बां. दा. ख्यात)

२ देखो 'मोहनी' (रू. भे.)

उ०—नमौ **मोहणी** कंमळा मूख मूंनी, नमौ धोम धूतारणी संभ धूनी ।—मा. वचनिका

मोहणीमंत्र—देखो 'मोहनीमंत्र' (रू. भे.)

मोहणीय-सं०पु०—मोहनीय कर्म, इसमें सम्यक्त्व और चरित्र को बिगाड़ दिया जाता है (जैन)

मोहणौ, मोहबौ-क्रि०सं० [सं० मोहनम्, प्रा० मोहइ] १ मोहित करना, लुब्ध करना, रीझाना, वश में करना ।

उ०—१ देवी रुक्मणी रूप तूं कांन सोहै, देवी कांन रे रूप तूं गोपि **मोहै** ।—देवि.

उ०—२ सोभत रंग सुगंध री, कैफ नरंग सुरंग । महल सुरंगां **मोहियौ**, राजेस्वर नवरंग ।—रा. रू.

उ०—३ पंखी बोलै मोर की, मीठा जग **मोहंत** । जन मीठा बोला जिकै, क्यूं जग बस न करंत ।—बां. दा.

२ आकर्षित करना, ललचाना ।

उ०—१ सत पाय उपाय डिगाय सती, पद गाय रिझाय छुडाय पती । अति लेखग राग चित्रांम अटा । छिब **मोहत** है जिन देख छटा ।—ऊ. का.

उ०—२ विलास अर सुख रा चंचळ रूप बिचै संयम री आ अतुल छिब उण नै घणौ **मोहचौ** ।—फुलवाड़ी

उ०—३ सपत कोस कनवजहूं सोहत । मदन विनोद बाग मन **मोहत**—सू. प्र. ।

३ प्रेमपाश में बांधना ।

उ०—१ नेम जी हो मुगति रमणि **मोहचा** तुमे हो राजि । पिण तिण मां नहिं स्वाद —वि. कु.

उ०—२ जुलम कियौ सोकण कुबज्या ने, ब्रजनंद **मोह** लियौ ।
—मीरां

४ भ्रमित करना, भ्रम में डालना, धोखे में डालना ।

उ०—विछायत समियांन वणिया, तई जरकसि हीर तणिया सिध आमण छत्र सोहै, महा जगमग हुंत **मोहै** ।—सू. प्र.

५ मूर्च्छित करना, बेहोश करना ।

६ परेशान करना, तंग करना ।

७ सांसारिक कार्यों में लगाना, माया में फंसाना ।

मोहणहार, हारौ(हारी),मोहणियौ—वि० ।

मोहिओड़ौ, मोहियोड़ौ, मोहचोड़ौ—भू०का०कृ० ।

मोहीजणौ, मोहीजबौ—कर्म वा० ।

मोहाणौ मोहाबौ—सक० रू० ।

मांहणौ, मांहबौ, मोणौ, मोबौ, मोवणौ, मोवबौ,—रू०भे० ।

मोहता—देखो 'महत्ता' (रू. भे.)

मोहताज, मोहताद-सं०पु०—१ भोजन सामग्री ।

उ०—१ तठा उपरायंत ओळगुआं वाजदारां नै इनांम दीजै छै । माळी नै **मोहताद** दीजै छै । सारां ही री आस-उमेद वर आंणजै छै ।—रा. सां. सं.

उ०—२ गावै वहती गायणी महराग मलारां । दांम हजारां दीजीयै, **मोहताद** मभारां ।—मयाराम दरजी री बात

२ मांस ।

३ देखो 'मुहताज' (रू. भे.)

मोहताजी-सं०स्त्री—मोहताज होने की अवस्था या भाव ।

मोहन-सं०पु० [सं०] १ ईश्वर, परमेश्वर ।

२ श्री कृष्ण का एक नामान्तर ।

उ०—माई म्हांनै **मोहन** मित्र मिळाय । रसियौ है उर अंतर बसियौ या बिनु कछु न सुहाय ।—मीरां

३ शिव, महादेव ।

४ माया, भ्रम ।

५ काम देव के पांच बाणों में से एक ।

६ किसी को बेहोश करने के लिये किया जाने वाला एक तान्त्रिक प्रयोग ।

उ०—कांमण, **मोहन**, मारण थंभन, जंगम, थावर ।
—पंच दंडी री वारता

७ उक्त प्रयोग में पढा जाने वाला मंत्र ।

८ धतूरा।
९ स्त्रीप्रसंग, मैथुन, संभोग।
१० परेशानी, व्याकुलता।
११ आंख। (ना. डि: को.)
१२ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, तगण, मगण यगण, और अंत में दो दीर्घ वर्ण—कुल १४ वर्ण होते हैं।
१३ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक सगण और एक जगण होता है।
१४ बारह मात्राओं की एक ताल। (संगीत)
१५ राठौड़ों की एक उप शाखा।
वि०—१ मन को मोहने वाला, मोहित करने वाला।
२ मोह उत्पन्न करने वाला, आकर्षित करने वाला।
३ परेशान करने वाला, व्याकुल करने वाला।
४ माया में डालने वाला, फंसाने वाला।
रू०भे०—मोवण, मोवन, मोहण, मोहिण।

मोहनकंठी-सं०स्त्री०—गले (कंठ) में धारण करने का, स्त्रियों का, एक स्वर्णाभूषण।

मोहनगारउ, मोहनगारौ-वि० [स्त्री० मोहनगारी] मोहित करने वाला, मोह उत्पन्न करने वाला।
उ०—१ त्रिभुवन नउ मोहनगारउ, राजि तिणि लागइ मुझ नइ प्यारौ।—वि. कु.
उ०—२ कृपा निधि विनती अवधारौ। प्रभु मूरति **मोहनगारी**। निरख्यां हरखे नर नारी, जाऊं वारी हुं वार हजारी।—वृ. स्त.
उ०—३ कांमण मोहन नवि करउ, सूधा दीसउ छौ साधु रे। **मोहनगारा** गुण तुम्ह तणा, ए परमारथ साध रे।—स. कु.

मोहणभोग-सं०पु०—१ एक प्रकार की मिठाई।
२ एक प्रकार का हलवा।
३ एक प्रकार का आम।
४ केला।

मोहनमाळा-सं०स्त्री० [सं० मोहन+माला] सोने की गुरियां या दानो की माला। गले का आभूषण।
उ०—मोर मुकुट पीतांबर सोहै, भाळ तिळक गले, **मोहेनमाळा**। —मीरां

मोहनाळ-सं०पु०—१ पशुओं के नाक से सिर तक का ऊपरी भाग।
उ०—लाहोरी ताजी लूच बांण गिलजा पहाड़ी। जिकांरी मूडहथ **मोहनाळ** हाथ भर नस.—रा. सा. सं.
२ देखो 'मूंहनाल' (रू. भे)

मोहनास्त्र-सं०पु० [सं० मोहन×अस्त्र] शत्रु को मूर्च्छित करने का एक प्राचीन अस्त्र।

मोहनि, मोहनी-सं०स्त्री० [सं० मोहिनी] १ विष्णु का एक अवतार, जो एक सुन्दर अप्सरा के रूप में हुआ। इससे दानवों को मोहजाल में डाल कर देवों को अम्रत पीने का यथेष्ट अवसर दिया। (पौराणिक)
२ एक वेश्या, जो मृत्यु के समय गंगाजल पीने के कारण अगले जन्म में द्रविड देश के वीर वर्मा राजा की पटरानी हुई। (पौराणिक)
३ वैशाख शुक्ला एकादशी की तिथि जो पर्व दिन मानी जाती है।
४ सुंदर स्त्री, सुंदरी।
उ०—मन भावनी माधुरी **मोहनि**, चंद बदन चित चंगी। अंतकाळ में अरथ न आवत, कांमनि नेन कुरंगी।—ऊ. का.
५ माया।
६ एक देवी विशेष।
७ प्रीति।
८ वशीकरण मन्त्र।
९ बेहोश या मूर्च्छित करने की क्रिया।
१० भ्रम में डालने की क्रिया।
११ एक वर्ण वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में सगण, भगण, तगण, यगण और सगण होते हैं।
१२ एक मात्रिक छंद जिसके सम चरणों में सात-सात मात्राएं और विषम चरणों में बारह-बारह मात्राएं तथा अंत में सगण होता है।
वि०—१ मोहित करने वाली, सुहावनी, लुभावनी।
उ०—मयाळ मंडपाळ मेघमाळ **मोहनी** नहीं। हिलंब से प्रलब थंभ, बिंब सोहनी नहीं।—ऊ. का.
२ भ्रमित करने वाली, भ्रम में डाल ने वाली।
उ०—ओ संसार **मोहनी** माया, देख रीझ मति भाया रे। अगजळ नीर निर्गं कर नाई, परतक मिथ्या थाया रे।
—स्री सुखरांमजी महाराज
रू०भे०—मोवणी, मोवनी, मोहणी, मौहणी, मौहिणी, मौहीणी।

मोहनीमंत्र-सं०पु०—वशीकरण मंत्र।

मोहनीय-वि०—१ मोहित करने योग्य, सुन्दर, आकर्षक।
२ मोह उत्पन्न करने वाला।

मोहनीरूप-सं०पु०—समुद्र मंथन के बाद अमृत बांटने के लिये विष्णु द्वारा धारण किया सुन्दर स्त्री का रूप।

मोहनौ-वि०—मोहित करने वाला, लुभाने वाला, अत्यन्त सुन्दर।
उ०—सुसील सभ्य साच्छरं, स्तुति प्रमांन सोहनें। अभंग पुष्ति ओज के मनोज मूरति **मोहनें**।—ऊ. का.

मोहपुर-सं०पु०—स्वर्ग, देवलोक।

मोहबत, मोहब्बत—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे.)
उ०—अब **मोहबत** कौन कांम की, गिरधर बिनाहु नगोड़ी।—मीरां

मोहमी—देखो 'मोबी' (रू. भे.)
उ०—लाल म्हारा रे, हां, रे **मोहमी** म्हारा रे। मोनैं तज जावै मती रे।—गी. रां.

रू०भे०—मोहणीमंत्र।

मोहमदीय–वि०—मुहम्मद का।

उ०—सह बोलिया सकाज मतौ करै बिहुंवै मिसल। मे न वंछित महाराज ए **मोहमदीय** असपती।—सू. प्र.

मोहम्मद—देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

मोहर–सं०स्त्री० [फा० मुह्र] १ स्वर्ण मुद्रा, अशरफी।

उ०—१ तद आलम्म 'दुरंग' सूं, बांधे संध विचार। धार दिलासा मोकळी, **मोहरां** आठ हजार।—रा. रू.

उ०—२ आरती होवे। आरती री **मोहर** सवासणी नुं दीजै। पछै सगळा मांणसा नुं पगां लगावै।—नैणसी

उ०—३ **मोहर** तांळै रौ रोगांन रग लागौ छै। तरवार कटारी वरछी रा दाव ही न लागै छै।—रा. सा. सं.

२ कोई चिन्ह या अक्षर आदि दबाकर अंकित करने का ठप्पा, जो किसी धातु या रब्बर का बना होता है।

३ उक्त ठप्पे द्वारा अंकित किया हुआ चिन्ह या अक्षर।

४ धातु की बनी सील जो किसी चीज को बंद करके मुंह या जोड़ों पर चप्पड़ी लगा कर, ऊपर से लगाई जाती है।

५ सेना का अग्र भाग, हरावल।

६ सिंधी मुसलमानों की एक शाखा।

७ पद्य की द्वितीय और चतुर्थ पंक्ति का परस्पर मेल।

उ०—धुर तुक मह अठार मत, चवद सोळ चवदेण। सोळ चवद लघु गुरू **मोहर**, जांण सोहणौ जेण।—र. ज. प्र.

वि०—१ प्रधान, मुखिया, अग्रणी।

२ प्रथम, पहिला।

क्रि०वि०—३ पूर्व, पहिले।

उ०—वीरा राईका नै कह्यौ। बोलाई सांढ ताती छै। तिण चढने जालोर जा। सवा पोहर दिन चढ़ियां **मोहर** जाए।

—वीरमदे सोनगरा री वात

४ आगे, अगाड़ी, अग्र भाग पर।

उ०—परठि जीण पाखरां, तुरंग सझिया अतुळीबळ। भार आराबां भरै, **मोहर** खड़किया अमंगळ।—सू. प्र.

५ सामने-सम्मुख।

उ०—भागळां हत 'रतन' सी भाखै,दाखै चलण न पीठ देऊ। थाटां तणी पीठ हूं थोभूं, थाट मुड़ै किम **मोहर** थऊं।

—रत्नसिंह सिसोदिया रौ गीत

रू०भे०—महर, महुंर, महुर, महुरउ, महूर, महोर, महौर, महोरि, मुहर, मुहरि, मुहरी, मुहुर, मोर, मौ'र, मोहरि, मोहरी, मोहेर, मौहर, मौर, मौहरि, मौहरी, मौहरू, म्होर।

मोहरत, मोहरत्त—देखो 'महुरत' (रू. भे.)

उ०—१ साह ज **मोहरत** सोधीयौ, मुगत हरख मना। जनमपुत्र मैं जोतसीयां, दीनौ नांम पना।—पनां

उ०—२ पछै भलौ **मोहरत** जोवाड़ कूंभे नूं प्रोहित नाळेर दियौ, ताहरां कूंभै ऊठ, सलांम कर नाळेर लियौ।—नैणसी

मोहरम–सं० पु० [अ० मुहर्रम] १ इस्लामी वर्ष का पहला महीना।

२ इस महिने में इमाम हुसेन का मनाया जाने वाला शोक।

रू०भे०—मौरम, मौहरम।

मोहरामेळ–सं०स्त्री०—तुक बंदी।

मोहरि—१ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

२ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—१ रुद्रसेण उण गज **मोहरि** ल्याऊं। वरियावर निज राज वणाऊं।—सू. प्र.

उ०—२ 'किसनेस' बंधव करणैठ अरि खग अौभड़ै। रघु **मोहरि** लंका राड़ि, लखमण फिर लड़ै। पित **मोहरि** 'गजण' प्रचंड जग चख जेहड़ौ। तपवंत लड़ै सतेज 'अरजिण' एहड़ौ।—सू. प्र.

मोहराज–सं०पु० [सं०] आध्यामिक क्षेत्र में, मनुष्य की पांच वृत्तियों में से प्रमुख वृत्ति। मोह।

उ०—संसार देस माहि असुख अपार, राज करइ छइ तीह **मोहराज**।—वस्तिग

मोहरियाळ–वि०—अग्रगामी, अग्रणी।

रू०भे०—मौहरियाळ,

मोहरि–सं०स्त्री०—१ किसी बरतन आदि का मुख या ऊपर का खुला भाग।

२ पाजामें या पेंट का वह भाग जिसमें टांगे रहती है।

३ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—१ माळी रै घरै सखरी जाइगा बागीचा माहे डेरौ लीयौ। माळिणा नुं **मोहरी** दीधी। जीमण करायौ। डेरै सरब जाबतौ कीधौ।—चौबोली

उ०—२ **मोहरी** दळ रगतासुर मांझी। सार भंवर सैंहम बळ साझी।—मा. वचनिका

४ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

उ०—इतरी मनुहार करि करवा री **मोहरी** झालि करवा नै झेकीयौ।—ढो. मा.

मोहरे, मोहरै–क्रि०वि०—१ अगाड़ी, आगै।

उ०—वध **मोहरै** बाजिया, 'कांन्ह' जजमांन सकज्जां। **सांम** काज कुळ लाज, राज लख आज गरज्जां।—रा. रू.

उ०—२ अन मुडतां जुडता आवहै। सिरदारां **मोहरे** समसेर। मरणं दीह गजग्राह मडांणं, मुड़ियौ न कहांणौ गिर-मेर।

—गोकुळदास सक्तावत

२ सामने, सम्मुख।

उ०—काका तणा कंठीर, सांभळिया भत्रीजै सबद। सकजां भड़ां सधीर, हुय **मोहरै** हलकारिया।—गो. रू.

रू०भे०—मुहरे,

मोहरौ-सं०पु०—१ देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिसपर चित्र कूंतूं का घाव । सीह गोसूं के दाव । ऊछट झपट सैं मिळते हैं । **मोहरा** चडाव करते हैं ।—सू. प्र.

उ०—२ विसय हळाहळ खाइ कर, सब जग मर मर जाइ । दादू **मोहरा** नांम ले, हृदय राखि ल्यौ लाइ ।—दादूबांणी

उ०—३ लगा पाखरां साज लूमां लड़ी सूं, प्रडीनां चलै ज्यूं नटी पट्टड़ी सूं । मिळै **मोहरां** चोहरां पंति मोती, कळा करत्तरी जीत पावै कनोती ।—वं. भा.

उ०—४ इसा ऊंठ भेकजै छै । हाथ फरजै छै । पीतळ रा गीरबांण रूपै रा कड़ा छै । ता मांहै **मोहरा** बोळचै **मोहरा** घातजै छै ।
—रा. सा. सं.

उ०—५ दै दै लगांम कसि तंग द्रढ़ जेरबंध **मोहरां** जड़्या । ऐराक घाट काठी उतन, घाट बेह ठाली घड़्या ।—मे म.

उ०—६ पिचरंगा सूत री नाथां अर पिचरंगा भळेवड़ा रेसमी फूंदियां, सूत री राहड़ियां, मूंडा रै **मोहरा** अर माथै चांदी रा घूघरा वाला छड़ा ।—फुलवाड़ी

उ०—७ कळ खट करै वीपसा, करणौ, बिच जिणगुर संबोधन वरणौ । तुक चवदै कळ बलै जितावै **मोहरा** तिण रा मेळ मिळावै । उण पर दुहौ अरटिया वाळौ, फिर तुक आदि तिका अंत फाळौ । धुरे तिका **मोहरा** सुध धारौ, चितविलास सौ गीत उचारौ ।
—र. रू.

रू०भे०—म्होरौ,

मोहल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ देहरौ १ वळै जैन रौ थौ । फूल **मोहल** री ठौड़ थौ । तद भलौ सहर बसतौ ।—नैणसी

उ०—२ राजा आपरै **मोहल** मां आयौ छै ।—पंच दंडी री वारता

उ०—३ तद अपछरा रौ **मोहल** एकायंत कीयौ । उठे अपछरा रहै । धांधळजी अपछरा री वारी रै दिन आप जावै ।—पाबूजी री वात

उ०—४ राजा रै **मोहल** मांहे सुदरांणी दहड़ तिका पदमणी ।
—राजा नरसिंघ री वात

उ०—५ अतलस अति सोभा दीइं, पहरी पीया के अग । सुंदर ऊभी **मोहल** में स्ये परि घणी सुचंग ।—व. स.

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—१ तद ए दोनूं उठे आया, कहियौ— मोहल काढौ, रावजी नं भांभरके दाग देवौ । सो कुंवर रा सोमा सुधौ मांन पूरे पहूंवाया ।—अमरसिंह गजसिंघ हतरी बात

उ०—२ **मोहल** निछरावळ कीवी बैठा हंसी खुसी री बातां कीवी ।—नापै सांखले री वारता

मोहलत-सं० स्त्री० [अ०] १ अवकाश, छुट्टी ।

२ समय, वक्त, फुर्सत ।

३ मयाद, अवधि ।

४ ढील, छूट, रियायत ।

५ विलंब, देर ।

रू० भे०—मोलत, मुहलत, मोळगत, मोळत, मोलत, मोलगत, मौलत ।

मोहलाइत, मोहलायत—देखो 'महलायत' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां स्यांम सुदंर सूं लोक कहै, 'स्यांम सुंदरजी, थांहरै मोहलाइत हुई छै ।''—स्याम सुंदर री वात

मोहलौ—१ देखो 'महोलौ' (रू. भे.)

उ०—१ तिण बेळा संभ नैं निसंभ रै कांनै, आ अमंगळ री वात कांनैं आई । बोहत संकोच सोच उर में हुवौ । दिवांण किया । वडा वडा उमरावां रा **मोहला** लिया ।—मा. वचनिका

उ०—२ तठा संमत १६७७ रा बैसाख माहै साहजादौ खुरम दिखण रै सूबै आयौ । पछै साहजादी नुं स्त्री माहाराजा जी **मोहलौ** दियौ ।—नैणसी

२ देखो 'महल्लौ' (रू. भे.)

उ०—१ जद ए कह्या! भीखण जी! थे वैरागी वाजौ नें इण **मोहला** में नुखतौ थयौ तिणरा घर सूं पकवांन लाया !—भि. द्र.

उ०—२ व्यास ऊदैचंद री हवेली मूलनायकजी रा देवरा आगै बांमण रा घर था सु पाड़ नै गूंदी रा **मोहला** रौ चौक करायौ नै उणां नैं जायगांवां दूजी दीवी ।—मारवाड़ री ख्यात

३ देखो 'महल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ऐ ठाकुर घोड़ा दौड़ांवण लागा । घोड़ा छोड़ि दीया छै । राजलोक **मोहलै** चढीया ऊंचा देखै छै ।—लाखा फूलांणी री वात

मोहल्ल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

३ देखो 'मूल्य' (रू. भे.)

उ०—कैवास सूर सारखि क्रियत जास मोहल्ल न पांमता । चौतीस लाख चतुरंग दळ, हय आय सह हालता ।—नैणसी

मोहल्लौ—१ देखो 'महल्लौ' (रू. भे.)

उ०—बोल्यौ-मितर **मोहल्लै** परखियै, धीणौ मदै घास ।
—दसदोख

मोहांमांही—देखो 'माहौमांह' (रू. भे.)

उ०—राजसिंह जसवंतोत नूं भाद्राजण पटै थौ, सु **मोहांमांही** छीतर नैं राजसिंघ जसवंतोत उपाव हुवौ, तठै रा. राजसिंघ जसवंतोत छीतरदास नूं भादाजण रै कोट मांहै मारियौ ।
—नैणसी

मोहाणौ, मोहाबौ—देखो 'मोहणौ, मोहबौ' (रू. भे.)

उ०—१ हमने कहा निरमोहित रहना, तुम तौ जात **मोहाय** रांम ।
—मीरां

उ०—२ संसार मगन माया, कांमौ क्रोध लोभ **मोहाणौ** । स्वारथ हित करणौ कौ, भ्राता तात पुत्राई ।—गु. रू. बं.

मोहा-सं०स्त्री०—भूमि, जमीन। (ग्र. मा.)
वि०—मोहित, भ्रमित।
उ०—साहब मन मोहा दुख सूं दोहा, लाहां लोह लड़ंदा है।
—ऊ. का.

मोहागनि मोहाग्नि-सं०स्त्री०—मोह रूपी अग्नि।
उ०—जरियैं ना मोहाग्नि धरियैं अब धीरज को, मरियैं नां रोय सब करियैं सबरजू।—ऊ. का.

मोहाजाळ-सं०पु०—१ सांसारिक प्रपंच, जिनमें फंसने के बाद मनुष्य छूट नहीं सकता।
२ शरीर और सांसारिक पदार्थों को अपना व सत्य समझने का का भ्रम-जाळ।
उ०—सतगुरू वचन बांण सत् लागा। मोहाजाळ नींद माहुं जागा।
—स्री सुखरांमजी महाराज

मोहायण-सं०पु०—मोह का स्थान।

मोंहि, मोहि-सर्व० [सं० मह्य, मय्ह] १ मुझे, मुझको।
उ०—१ दरसन बिन मोंहि जक न परत है, चित मेरौ डांवाडोल।
—मीरां
उ०—२ लंबोदर सारद हित लीजै। दास जांण मोहि वांणी दीजै।
—रा. रू.
२ मेरा, मेरी।
उ०—हिल मिळि सब करत है बाती, पीउ विणु मोहि फाटत छाती। हो लाल।—ध. वं. ग्रं.
३ मुझसे।
उ०—अकथ कथा मोहि लखी न जावै। तीन लोक तेरा जस गावै।
—स्री हरिरांमदासजी महाराज
रू०भे०—मोहीं, मोही, मोहे, मोहै।
४ देखो 'मोह' (रू. भे.)
उ०—बीये दिन चंपा नयर बुलाइ। ले आइ रिख सु मोहि लगाइ।
—रांमरासौ

मोहिण—देखो 'मोहन' (रू. भे.)

मोहित-वि० [सं०] १ मोह में पड़ा हुआ, भ्रमित।
२ लुब्ध, आसक्त, मुग्ध।
३ मूर्च्छित, बेहोश।

मोहिनि, मोहिनी—देखो 'मोहनी' (रू. भे.)
उ०—वाही पर तन मन हैं वारी। वह मूरति मोहिनी निहारत, लोक लाज डारी।—मीरां

मोहिम—देखो 'मुहिम' (रू. भे.) (मा. म.)

मोहिल, मोहिल्ल-सं०पु० (स्त्री० मोहिलणी) चौहान वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति।
उ०—१ राव चूंडौ बूढा हुआ। मोहिलां रै परणीयां, पछै आय मोहिलणी रै बस हुआ।—राव रिणमल री बात
उ०—२ छापरउ कियउ छांगां छयांह, बलिवंडि राइ फरि फेरि बांह। चउंड राउ चड़िय मोहिल्ल चीति, राहाचरक्क देखाळि रीति—रा. ज. सी.

मोहीं, मोही—देखो 'मोहि' (रू. भे.)
उ०—बास जग में त्रास जम की, अलप जीवनी मोही। जन हरिदास कूं विस्वास तेरा, मैं न छाडौ तोहि।—ह. पु. वां.

मोहीलौ-वि०—१ स्नेही, प्रेम, प्यारा।
२ देखो 'महल्लौ' (रू. भे.)
३ देखो 'महोलौ' (रू. भे.)

मोहूरत—देखो 'महुरत' (रू. भे.)
उ०—लगन लेई नै जोइयौ मोहूरत रूड़ौ न होयवै। अंगम तिगम सासौ लहौ, राजा नै कहै जोयवै।—रीसालू री बात

मोहे—देखो 'मोहि' (रू. भे.)
उ०—निरखण रौ मोहे चाव घणेरौ, कब मुख देखूं तेरा।—मीरां

मोहेर—देखो 'मोहर' (रू. भे.)
उ०—तद बलू कही—व्यासजी सांची कहै छै। आपां इसा नीसरौ सौ सागी हाथी जावां। ताहरां सवार मोहेर हुवा, पाळा पूठे किया, त्यांनूं कही—थे पाधरा तोपखांने ऊपर पड़ज्यौ।
—अमरसिंह गजहसिंह री बात

मोहोबत, मोहोब्बत—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे.)
उ०—१ मिळी निसांन बजाय क्रस्ण सूं ज्यो कछु कहौ सौ सांची। जन मीरां गिरधर की प्यारी, मोहोबत हैं नहिं काची।—मीरां
उ०—२ मेरी ज्यांन मोहोब्बत लगाई रे, गिरधर पीतम प्यारे सों।—मीरां

मोहोर—देखो 'मोहर' (रू. भे.)
उ०—१ हीरां बार बार मुजरौ कर हरख धरै छै मोती मोहोर मुंगिया सूं निछरावळ करै छै।—बगसीरांम प्रोहित री बात
उ०—२ भीमाजळ मोहोर झेलिया मारत, घणां पेसि गज बोह घणां।—चतरौ मोतीसर

मोहोल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)
२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

मोहोलौ—१ देखो 'महल्लौ' (रू. भे.)
उ०—लूंबा झूमां हुइ थकी फीरै छै, मोहोला, मोहोला मांसू नीसरी छै राग रंग करै छै।—पनां.
२ देखो 'महोलौ' (रू. भे)

मोहौ-सं०पु०—१ कूए की जगत।
२ कूए पर का वह स्थान जहां पर खड़े होकर पानी सींचते हैं।
३ देखो 'मोह' (अल्पा., रू. भे.)
उ०—१ कूरम कहै अमर नह काया, पुळवा कारण हुवा पोहौ। मोहौ बाधियां न जाये मरणि, सरम बाधियां मरै सोहौ।
—सुजांणसिंग जगन्नाथोत कछवाहा री गीत
उ०—२ मूरख जन मोहौ करवाने भालण करवै अभिमांनै।
—नलाख्यांन

मोहौल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)
२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)
मोहौलौ—१ देखो 'महल' (रू. भे.)
उ०—संवारै दिन पोहर चढतां ग्राप रै घरे पाटण माहै मूळराज सीहाजी नुं सारै साथ सुधा **मोहौलां** में ले गया।—नैणसी
उ०—२ पछै ग्रहमदांवाद पधारीया। वांसै दरगाई उकील मनोहरदास सुं डौळ कीयौ। वैसाख सुदि ४ पातसाही **मोहौलां** पधार डेरौ कीयौ।—नैणसी
२ देखो 'महोलौ' (रू. भे.)
मौं—देखो 'मो' (रू. भे.)
मौंग्रडौ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)
मौंज–सं०पु० [सं०] १ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
२ देखो 'मौज' (रू. भे.)
मौंजकेस–सं०पु० [मौंजकेश] अत्रिकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
मौंजवस्टि–सं०पु० [सं० मौजवृष्टि] अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
मौंजा—देखो 'मांजा' (रू. भे.)
मौंजायन–सं०पु०—युधिष्ठिर की सभा का एक ऋषि।
मौंजायनि–सं०पु०—विश्वामित्र कुलोत्पन्न एक गोत्रकार।
मौंजिबंधण, मौंजिबंधन–सं०पु०—यज्ञोपवीत संस्कार। जनेऊ।
मौंजी—देखो 'मौजी' (रू. भे.)
मौंठोड़ी–सं०स्त्री०—१ मोठ नामक द्विदल अन्न की फली।
२ मोठों की बनी हुई बड़ी।
मौंडौ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)
उ०—नै वीदावत उदैकरण रौ धरती मैं वडो ग्रपजस हुवौ। ग्ररू **मौंडो** काळो कराय ग्राय ऊभो।—द. दा.
मौंत—देखो 'मौत' (रू. भे.)
मौंनाळ—देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)
मौंसरां–सं०स्त्री० [सं० श्मश्रु] मूछें।
मौंहडौ, मौंहडौ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)
उ०—कोई जांण पायसी तौ राजा नूं कहि पकड़ायसी, काळौ **मौंहडौ** होसी।—सिंघासण बत्तीसी
मौ—देखो 'मो' (रू. भे.) (उ. र.)
उ०—१ गणपति गिरा निवासी सुरगण, मंगळ करण ग्रमंगळ मेटण। करौ दया **मौ** सीस दयाकर, ग्रापौ सार चार गुण ग्रर कर।—रा. रू.
उ०—२ जनक सुता मन रंजण गंजण, ग्रसुर ग्रगंजण ग्राहवं। मैं सरणागत कदम सदामद, **मौ** लजा रख माहवं। दीनांनाथ ग्रभै वरदाता, त्राता सेवग तारणं, तौ निज पायनि **मौ** दसरथ तण, घण पापां सिंघारणं।—र. ज. प्र.
उ०—३ किम भव नीगमीस कांमिनी। राति दिवस **मौ** थारीय चित।—बी. दे.
उ०—४ सुत्री ग्रनोप गिरराज सीस, राखै गुमांन **मौ** जंग रीस। किण हेक पांण बोलै करूर, ग्रातुर पलाद धावौ ग्रडूर।
—मा. वचनिका
मौकणौ, मौकबौ—देखो 'मूकणौ, मूकबौ' (रू. भे.)
उ०—जटी ग्राक ग्रोकबौ सधेस कौ भोकबौ जंगां, जती कौ **मौकबौ** नगां लंका सीस भाळ। कळेसां कोकबौ काळ लोकबौ तुरी को कनां, छौळां नाथ संबरी कौ भौकबौ छडाळ।—हुकमीचंद खिड़ियो
मौकणहार हारौ (हारी), **मौकणियौ**—वि०।
मौकिग्रोड़ौ, मौकियोड़ौ, मौक्योड़ौ—भू०का०कृ०।
मौकीजणौ, मौकीजबौ—कर्म वा०।
मौकळणौ, मौकळबौ—देखो 'मोकळणौ, मोकळबौ' (रू. भे.)
उ०—साह बळ वडौ विहबळ हुवै त्रिखावंत जळ **मौकळै**। कळि मूळ ग्राइ पैठौ 'कमौ' भुंइ कंठै भाखर वळै।—गु. रू. बं.
मौकळणहार, हारौ (हारी), **मौकळणियौ**—वि०।
मौकळिग्रोड़ौ, मौकळियोड़ौ, मौकल्योड़ौ—भू०का०कृ०।
मौकळीजणौ, मौकळीजबौ—कर्म वा०।
मौकळियोड़ौ—देखो 'मोकळियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मौकळियोड़ी)
मौकळौ—देखो 'मोकळौ' (रू. भे.)
मौकावारदात–सं०स्त्री०यौ० [ग्र० मौकः+वारदात] घटना स्थल।
मौकियोड़ौ—देखो 'मूकियोड़ौ' (रू. भे.)
(स्त्री० मौकियोड़ी)
मौकूफ–वि० [ग्र०] १ रोका या स्थगित किया हुग्रा।
२ नौकरी से निकाला हुग्रा, बरखास्त।
३ दूर किया हुग्रा, ग्रलग किया हुग्रा, हटाया हुग्रा।
४ मिटाया हुग्रा।
रू०भे०—मोकुब, मोकूब, मोकुफ, मौकूब।
मौकूफी–सं०स्त्री० [ग्र०] १ "मौकूफ" होने की ग्रवस्था या भाव।
२ बरखास्तगी।
रू०भे०—मौकूबी।
मौकूब—देखो 'मौकूफ' (रू. भे.)
मौकूबी—देखो 'मौकूफी' (रू. भे.)
मौको–सं०पु० [फा०] १ इच्छित या किसी ग्रच्छे कार्य के लिये संयोग से मिलने वाला शुभ ग्रवसर।
उ०—१ गरज हुवै जितै गधै नै ही बाप कैय'र वतळाणौ पड़ै। **मौको** है हाथ सूं नीं जावै। ग्रोसर चूकी डूमणी गावै ग्राळ-पताळ।
—दसदोख
उ०—२ सोचण लागौ के ऐड़ो काळ हाथै ग्रायां चूकग्यौ तौ वळै **मौको** हाथ नीं ग्रावैला।—फुलवाड़ी
उ०—३ चिड़ौ तौ लियां दियां बैठौ हौ। सांतरौ **मौको** देखनै वौ फुरती सूं फटाफट कटोरदांनां रा लाडू ग्रदळ-बदळ कर दिया।
—फुलवाड़ी
२ ग्रपने विचार प्रगट करने, बात कहने या कोई कार्य करने के

लिये मिलने वाला अवसर। (चांस)

उ०—१ बीनणी नैं तौ बोलण रौ मौकौ ई नीं मिळियौ।

—फुलवाड़ी

उ०—२ आप म्हांरै साथै पंयाळ-लोक चालौ अर म्हांनै आपरी सेवा-बंदगी रौ मौकौ दौ।

३ किसी कार्य का उचित समय, उचित अवसर।

उ०—१ म्हैं आं सरपणी रा बिचियां नैं छाती सूं चेप-चेप नैं लांठा इण वास्तै करिया के मौकौ लाग्यां ऐं म्हनैं ई डसै।

—फुलवाड़ी

उ०—२ जकै मौकै माथै फूल री जगां फांखड़ी तौ करणी ही पड़सी।—दसदोख

४ ऐसा समय, जब कोई विशेष कार्य हो रहा हो।

उ०—१ किसैक मौकै बदळी करवाई। सेठां री तौ जद ठा' पड़ती, थांरी बदळी नीं हुवण देंवता।—दसदोख

उ०—२ हजार री खातर पैंठ गमाय दी तौ सेठांणी मरियां ई पतियारौ नीं करैला। इण मौका माथै हजार रिपिया देवणा ठीक है।—फुलवाड़ी

५ कठिन समय।

उ०—१ साग री कुड़छी रौ ही सीर कोनी। ढेढां रौ सौ साख है। मौकौ पड़ियां करणी नैं चेतै: करौ हौ, नीं तौ करणी जाओ वाळ्योड़ा तिलां में।—दसदोख

उ०—२ कैंवण लागा-थूं तौ खुद समझदार है। वता मौका माथै म्हैं कित्ती जोखम ओढ़ी, पण नुगरी रैंया गुण थोड़ौ ई मांनैला।

—फुलवाड़ी

६ घटनास्थल, वारदात का समय।

उ०—१ जीव-निरजीव री मुलाकात! मौत-मैंणै री घात! फरारां री टोळी रा दबंग अर धाखड़-धाड़ेत चेत्या, चमक्या तथा चटदेणी मौकै जा पूग्या —दसदोख

उ०—२ राजा री आंख्यां सांमी अंधारी आयगी। कांनां रा पड़दा फूटण लागा। बेचेतै होयनैं पड़णवाळौ हो के मौका माथै रांणी झण नैं झाल लियौ।—फूलवाड़ी

उ०—३ आखा राज में खळवळी मचाय दी। मौका माथै खुदोखुद देखण नैं नीं जावता तौ वळै घोखौ व्है जातौ।—फुलवाड़ी

७ स्थान, जगह।

उ०—पांणी री असली कीमत तौ रोही में ई पिछांणीजै। उण चौरस्ते बीस गांवां री ढूक है। प्याऊ रौ ऐड़ौ मौकौ सौ सौ कोसां ई नीं लाधै।—फुलवाड़ी

८ अवधि, मोहलत, मयाद।

९ अवकाश, फुरसत।

मुहा०—१ मौकौ आणौ=उपयुक्त या इच्छित अवसर आना, समय आना।

२ मौकौ देणौ=अवसर देना, वक्त देना।

३ मौकौ मिळणौ=समय या अवसर प्राप्त होना।

४ मौकौ लागणौ=समय या अवसर पाना।

५ मौकौ सजणौ=समय पर उपयुक्त व्यवस्था होना।

६ मौकौ हाथ आंणौ = देखो 'मौकौ मिळणौ'।

रू०भे०—मऔ मौको,मौखौ।

अल्पा०—मकोड़ौ, मकोडउ।

मह०—मक्क।

मौक्तिक-सं०पु० [सं०] मोती।

उ०—कंठ कंदलि अलंकार विस्रब्धसम्यक्त्व संस्कार, वक्षः स्थलि मौक्तिक तणउ हार।—व. स.

मौक्तिकदांम—देखो 'मोतियदांम' (रू. भे.)

मौक्तिकभंग-सं०पु०—एक प्रकार का आभूषण (व. स.)

मौक्तिकमाळा-सं०स्त्री०—१ मोतियों की माला।

२ ग्यारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्त का नाम, इसमें पहला, चौथा, पांचवां, दसवां और ग्यारहवां वर्ण गुरु होता है।

मौक्तिकसर-सं०पु०—एक आभूषण विशेष। (व. स.)

मौक्तिकहार-सं०पु०—मोतियों का हार।

उ०—जिसिउ चंद्र मंडल, जिसिउ स्फटिकोपल, जिसिउ क्षीर समुद्र जल, जिसिउ हिमाचल, जिसउ विकसित केतकीदल, जिसिउ सरद अभ्रजल, जिसिउ मौक्तिकहार।—व. स.

मौख—१ देखो 'मोक्ष' (रू. भे.)

उ०—माया मोह भरम की भींतां मौख मुगती कै आडी।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

२ देखो 'मोख' (रू. भे.)

मौगर—देखो 'मोगर' (रू. भे)

मौगौ—देखो 'मोगौ' (रू. भे.)

मौड़-स०पु० [सं० मुकुट प्रा. मउड़] १ विवाह में वर के सिर पर बांधा जाने वाला सेहरा।

२ सेना में योद्धाओं के सिर पर बांधा जाने वाला सेहरा।

उ०—१ सझि तुरां साज जकड़ै सस्त्र, 'बळू' मौड़ सिर बांधियौ। 'अमर' रै वैर असपति हूं, कमधां जुध आरंभ कियौ।—सू. प्र.

उ०—२ सूर घसै घमसांण घण, कायर लहै न ठौड़। हरीया सूरै मरण का, माथै बिध्या मौड़।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ तौ औ वडौ अवसांण सिर मौड़ बांधौ।—मा. वचनिका

३ मुकुट।

उ०—थये सचेतन महूरत, बकै झकै विरहाकुळ। हा भवतव्य

अतीठ, असुर सिर मौड़ भड़ै तुळ ।—मा. वचनिका

४ स्त्रियों के शिर का एक आभूषण ।

वि०—१ श्रेष्ठ शिरोमणि ।

उ०—१ गजराज चढै कमधज गरूर । सूरिमा मौड़ महाराज सूर ।
—सू. प्र.

उ०—२ जटीधू बांणांपति गंधारी सुतन जोध, भणां जे कौंतेय घरां कुबेर भंडार । फावै एता कमधां मौड़ बिया 'फता' सार नै आचार उभै सराहै संसार ।—पदमौ खिड़ियौ

२ प्रधान, मुखिया ।

उ०—एम तांम उच्चरै सुमत पूरण गण सायर । मौड़ 'खेम' मंत्रियां जोड़ प्रोहत रैंणायर ।—रा. रू.

३ सर्व-मान्य ।

उ०—राठौड़ मौड़ हिंदुवांण सिरि, महा द्रुग गढ़ जोधपुर । गज-सिंध कुंवर त्रप सू'धिध, सहुवै वंदै सुर असुर ।—गु. रू. ब.

रू०भे०—मउड़, मउड, मउडि, मउर, मवड़, मवोड़, मोड, मोड़, मौड़उ, मौड ।

मौड़उ—१ देखो 'मौड़ौ' (रू. भे.)

उ०—बळतउ पूछइ वात विवेक, लगन विचइं थायइ दिन एक । पंथइ वहतां मांदउ पडयउ, तिणि कारणि मौडउ आपडयउ ।
—ढो. मा.

२ देखो 'मौड़' (रू. भे)

मौड़णौ, मौड़बौ—देखो 'मोड़णौ, मोड़बौ' (रू. भे.)

उ०-१ तन मौड़ वांकी निजर त्रिपुरा सलज चढियां सोहळी । सळ नाक चाढै विकट सोहै, अहर वेसर अळवळी ।—मा. वचनिका

उ०—२ मौड़ै मुख मौड़ै हीतळ हतवाळी, पीतळ पैरण नै सीतळ सतवाळी ।—ऊ. का.

उ०—३ उण रै बारै जांवतां धणी री आंख्यां ई खुली । वौ आळस मौड़ नै बैठौ व्हियौ —फुलवाड़ी

मौड़णहार, हारौ (हारी), मौड़णियौ—वि० ।

मौड़िओड़ौ, मौड़ियोड़ौ, मौड़्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मौड़ीजणौ, मौड़ीजबौ—कर्म वा० ।

मौड़बंध, मौड़बंधौ-सं० पु०—१ वर, दूल्हा ।

२ राजा ।

वि०—जिसके सेहरा बंधा हो ।

रू० भे०—मोड़बंध, मोड़बंधौ, मौडबंध, मौडबंधौ ।

मौड़बंधी-सं० स्त्री०—१ वधू, दुल्हिन ।

२ मौड़ बांधने की किया या भाव ।

३ वह स्त्री या लड़की जिसके मौड़ बंधा हो ।

मौड़ियोड़ौ—देखो 'मोड़ियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मौड़ियोड़ी)

मौड़ौ—देखो 'मोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—१ गिलम विछायत गरक, पसम मौड़ा तकिया पर । तठै विराजै तांम, सफै आणंद नरेसुर ।—सू. प्र.

उ०—२ जैसे प्रऊढ़ा नायिका को वस्त्र भरतार आकरसे कहतां खेंचै सु मौड़ौ छूटै, तैसै रात्रि आकास कौ मौड़ौ छांडै छै ।
—वेलिटी.

मौच—देखो 'मोच' (रू. भे.)

मौचणौ, मौचबौ—देखो 'मोचणौ, मोचबौ' (रू. भे.)

उ०—तनक भणक हरिरस तणी,कहत प्रांण सुण कांन । महापाप सह मौचवै, आवै जनम न आंन ।—ह. र.

मौचणहार, हारौ (हारी), मौचणियौ—वि० ।

मौचिओड़ौ, मौचियोड़ौ, मौच्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

मौचीजणौ, मौचीजबौ—कर्म वा० ।

मौचियोड़ौ—देखो 'मोचियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० मौचियोड़ी)

मौछ-सं० स्त्री०—बछड़े के मर जाने पर भी दूध देने वाली गाय ।

रू० भे०—मोच,मौंछ ।

अल्पा०—मूंछड़ी, मोचड़ि, मोचड़ी ।

मौज-सं० स्त्री [अ०] १ सुख, आनन्द, मस्ती ।

उ०—१ आछो खावै अर ओढै-पैरै, मौजां मांणै है ।
– दसदोख

उ०—२ रांमजी री किरपा सूं गिरस्ती रा सगळा ठाट हुण रांम-दुवारा में हा । चोर रै तौ मौज बणी पण बणी, सैकड़ूं चोरियां करनै ई वौ इत्तौ आरांम नीं पायौ ।—फुलवाड़ी

२ आराम, चैन, संतोष ।

उ०—अबै भाईजी बुढ़ापै क्यूं कळभळ करै कमावणियां म्हैं पांच पांडु हां । वांनै तौ चाहीजै के भगवांन री बैठा माळा फेरै अर मौज मनावै ।—फुलवाड़ी

३ लहर, तरंग ।

४ मन की उमंग, जोश, उत्साह ।

५ लगन, धुन ।

६ अवारागर्दी, निकम्मापन ।

उ०—मोफतिया इसां मौकां मौज मजा ही किया करैं हैं । कांम कर'र बैं कीनै ठारै ।—दसदोख

७ पुरस्कार, इनाम ।

उ०—१ सदा ही महिनै रा महिनै आवै छै, अटै मौ कनां ही मौज पावै छै ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ राग अणभै तणी नित ओळग करै । एक एकौ सिरै मौज पावै ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—३ मौज कड़ा मौतियां कनक नग जड़त कटारां । अणपारां सिरपाव, पमंग बगसिया अपारां ।—सू. प्र.

उ०—४ अदवां खै जाइस ज्यां अपजस, चक्रवत अवै न जांणै चौज । राजा अमर करै ले रूपग, मैंगळ बेगागळ दे मौज ।
—किसनौ आढौ

८ बान।

उ०—१ तीजौ लख तिण वार, 'अजा' भादा कर अप्पै। भण ताराचंद भाट, मौज लख चवय समप्पै। पात नाम भट 'गोप' करै जस प्रकट सकाजा। मौज लाख पांचमी, जेण बगसै महाराजा।

—सू. प्र.

उ०—२ मौज जवाहर मोतियां, सांसण तेण सवाय। खिड़ियौ बखतौ खेड़पति, महिपति लियौ मनाय।—रा. रू.

उ०—३ रावां सांभळे तुरतांणां रांणां, मुजस हुवौ जग सारै। किव पातां मौजां दे कूरम, रतनौ नांव ऊबारै।—दीपचंद मांडू

उ०—४ आपै लंका मौजां यूं ही, तौ जैहौ आखां दाता तूं ही। थूरै जगां के दैतां धौका, भौका भौका जी राघौ भौका।

—र. ज. प्र.

उ०—५ आठौं पौ'र अंगीठा ओपम, उर मीठा वच आंणै। मौजां देतां नैण मजीठा, जो दीठा सो जांणै।—ऊ. का.

सं० पु०—६ दातार।

उ०—मौजां संमद बीजाइ महौकम, चावां धिन खग चौ चरिया। कोलू करि कटक पीसण करि सांठौ, खेड़ आवुध खग खरिया।

—घासीराम हाडा रौ गीत

रू० भे०—मउज, मांज, मोज, मौंज।

मौंजड़ी देखो 'मोजड़ी' (रू. भे.)

मौंजड़ीयौ—देखो 'मोचड़ौ' (रू. भे.)

उ०—तद रांणी बीजी मोजडी पग सुं चलाय पहाड़ की गुफां मांहै राखी आप पांणी ले घरे आई अर मोजड़ीयौ बीजौ जोड़ौ करायौ।—चौबोली

मौजवत—सं०पु०—१ अक्ष नामक वैदिक सूक्तद्रष्टा का पैतृक नाम।

२ मूजवंत का नामान्तर।

मौजी—वि०—१ अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने वाला, स्वेच्छा से विचरण करने वाला।

उ०—लिया कनौजी दळ निज लारै, गुण फौजी बळ गाजा। एक-र सूं आजे चित-चौजी, मन मौजी महाराजा।—ऊ. का.

२ उन्मत्त, मद मस्त।

उ०—रियासत रा पागी नूं पूंर्छ रोवै, अरजन मौजी रा खोज कुण जोवै।—दसदोख

३ आनन्दित, प्रसन्न चित खुश।

४ दयालु, कृपालु, दातार। (अ. मा.)

उ०—मौजी राघव पलक मैं, जन सरणागत जोय।—र. ज. प्र.

५ अशक्त, कमजोर।

६ कायर, डरपोक।

रू०भे०—मोजी, मौंजी।

मौजीज—वि०—१ बुद्धिमान, समझदार।

२ प्रतिष्ठित।

३ वृद्ध, दाना।

मौजूद—वि० [अ०] १ उपस्थित, हाजर।

२ तैयार, प्रस्तुत।

३ विद्यमान, वर्त्तमान।

उ०—ठाकुरजी स्री महाप्रभूजी रौ मिंदर जो जोसीजी री हवेली कनै करायौ सो मौजूद है।—मारवाड़ री ख्यात

४ यथार्थ, वास्तविक।

उ०—हक हासिल नूर दीदम, करारै मकसूद। दीदार दरिया अर-वाहै, आंमद मौजूदे मौजूद।—दादूबांणी

रू०भे०—मवजूत, मोजूद।

मौजूदगी—सं०स्त्री० [अ०] १ मौजूद होने की दशा या भाव।

२ उपस्थिति, हाजरी।

३ तैयारी।

४ विद्यमानता

५ यथार्थता, वास्तविकता।

मौजूदा—क्रि० वि० [अ०] वर्त्तमान काल का।

रू०भे०—मोजूदा

मौजौ—सं०पु० [अ० मौजा] १ ग्राम, गांव।

२ जगह, स्थान।

३ देखो 'मोजौ' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ हेम मैं जड़ित हीर, जुग्रळै मौजा जंजीर। दूसरै 'गंगा' दवाड़, जड़ी कडी जमदाढ।—गु. रू. बं.

मौटमन—वि०—देखो 'मोटमन' (रू. भे.) (अ. मा.)

मौटवी—सं०स्त्री०—देवी।

उ०—विन ले जावै विमटियां, पांण चकारां पाड़। मारौ ज्यांनै मौटवी, सगत असूलां चाढ।—पा. प्र.

वि०स्त्री०—बड़ी, मोटी।

मौटिम—देखो 'मोटम' (रू. भे.)

उ०—किलंबां कजि काळिका, पलंब इक हाथ पसारै। खप्पर मौटिम करै, बिया अनं धरणी धारै।—मा. वचनिका

मौठ—देखो 'मोठ' (रू. भे.)

मौड—देखो 'मौड़' (रू. भे.)

उ०—दळांनाथ आगळ दिली वंस रौ दीपयण, रूप-राई तणा राउ राठोड़ 'अमर' वणियौ मधर धारियौ आत-पत्र, "माल" रौ तिलक "रिणमाल" हर मौड।—केसौदास गाडण

मौडबंध, मौडबंधौ—देखो 'मौड़बंध' (रू. भे.)

उ०—आवंत दरगह अन्न-मंध। मौडबंधा ठाकर मुगट-बंध। जोधपुर धणी आगळ जोधार, दीवांण बइट्ठा करि जुहार।

—गु. रू. बं.

मौत—स०स्त्री० [सं० मृत्यु] १ किसी प्राणी की आयु पूर्ण होने पर स्वाभाविक रूप से होने वाला मरण, अन्तकाल, निधन।

उ०—१ अमीखांन गढ रोहा मांहै मौत मुंवौ। अमीखांन रा बेटा नूं टीकौ हुवौ।—नैणसी

उ०—२ 'कूपा' किरमर झल्लियां, 'फतमल' विजपाळोत। हटै न जंगै सांमछळ, मिटै न मेछां **मौत**। —रा. रू.

उ०—३ पगां री आंगळियां रा कटका पाड़तौ पाड़तौ नाई बोल्यौ-बापजी, **मौत** नीं आवै जित्तै जीवणौ कुण नीं चावै।—फुलवाड़ी

उ०—४ मिनख री **मौत** आवै है, जकी घड़ी ऊमर भर री आछी-माड़ी लारली सारी बातां काच दांई साफ होय जाया करै है।
—दसदोख

२ किसी दुर्घटना के कारण, अकस्मात होने वाली मृत्यु।

उ०—एक पावंडो लारै सिरक ध्यांन सूं वार करचौ के गूंचली मारचां काळिदर रा चार टुकड़ा व्हैगा ठाकर रै माथै आयोड़ी **मौत** टळगी।—फुलवाड़ी

उ०—२ अबै म्हारी मार खावण री सरधा कोनीं ओयळ भूंडौ घणौ जंतरायौ वेद नै बुलाय ओखद करावौ। नींतर म्हारी तौ **मौत** है—फुलवाड़ी

उ०—३ भली आदमण जबाब दियौ-थां मिनखां रा ऐडा भाग कठै जकौ म्हारा बेटा थांरी परस करै। किणी री **मौत** रा आखर ई जे इण भांत घाल्योड़ा व्है जिण री तौ म्हैं ई कांई करूं।
—फुलवाड़ी

मुहा०—१ बिना मौत मरणौ=दुर्घटना से या किसी अन्य कारण से असमय मृत्यु को प्राप्त होना।

२ मौत आणी, मौत आवणी=अत्यन्त कष्ट होना, मरणान्तक कष्ट, मृत्यु की घड़ी आना।

३ **मौत** नै नैतणौ, मौत बुलावणौ=ऐसा काम करना जिसके कारण गहरे सकट में फंसना पड़े।

४ मौत मरणौ=अपनी मौत से आयु पूर्ण करके मरना।

५ मौत रै मूंडै=खतरे में, ऐसी स्थिति में, जहां जीवन का हर वक्त भय रहता हो।

६ मौत रौ नसौ=मरने मारने पर ऊतारू होने की दशा, किसी को मार डालने की दशा में होना।

७ मौत सूं खेलणौ=ऐसा काम करना जिसमें जान जाने की पूर्ण संभावना हो, जोखिम भरा कार्य।

सं० पु०—३ यमराज, काल।

उ०—१ बूढ़ी मां **मौत** नै अरदास करै। **मौत** टाळौ द्यै, परियां ही घेरा घालै। फोड़ा पड़ै, डोकरी दुख ही भुगतै।—दसदोख

उ०—२ म्हनै अबै जीवणौ ई कित्तौक है। म्हैं तौ खुद **मौत** रौ ई दूजो रूप हूं, पण बेटी थनै तो हाल केई वरसां लग जीवणौ है।
—फुलवाड़ी

४ ब्रह्मा।

५ विष्णु।

६ कामदेव।

७ अत्यन्त कष्ट, तकलीफ।

उ०—ऊंट कहचौ-भोक बुवारतां तौ **मौत** आई, अबै बैठण नै मूंडौ क्यूं धोवै।—फुलवाड़ी

रू०भे०—मांत, मोत।

मौतबिर—देखो 'मातबर' (रू. भे.)

उ०—परधै रा केई **मौतबिर** राजाजी नै राजी करण सारू हंसण री कोसिस करी पण हंसीजियौ कोनीं।—फुलवाड़ी

मौतल—देखो 'मुअत्तल' (रू. भे.)

मौताज—देखो 'मुहताज' (रू. भे.)

उ०—सोनजी री कड़ूबौ गांव में आंखै आयौ हुयग्यौ। मरनक भंडग्यौ। दांणै-दांणै रा **मौताज** हुय रैया है।—दसदोख

उ०—२ **मौताज** अम्हां हरवळ मिळण, सो कुळ वार नवी संख। 'गोरधन' कियौ 'गजबंध' अग्र, कळह आप अग्र मैं करूं।—सू. प्र.

मौताद—देखो 'मोताद' (रू. भे.)

मौताहळ—१ देखो 'मुक्ताफळ' (रू. भे.)

उ०—१ चढ़ि मौताहळ-चरियं, सेत वसन पुनि सित वदनी। वीणा पुस्तक धरियं वागवादनी तस्मै नमः।—मा. वचनिका

उ०—२ है कांनै **मौताहळ**, कर पूंची कंठमाळ पै संकळ। राघौ नांम विहूंण, अनखांणौ ढोर आदम्मी—र. ज. प्र.

२ देखो 'मोताहळ' (रू. भे.)

मौती—देखो 'मोती' (रू. भे.)

मौदिता—सं०स्त्री०—१ देवी का एक नाम।

उ०—नमौ पिंगळा मंगळा चक्रपांणी। नमौ **मौदिता**, जौत अम्बा मडांणी।—मा वचनिका

२ देखो मुदिता' (रू. भे.)

मौद्ग—सं०पु०—एक आचार्य जो व्यास की अथर्ववेद् शिष्य परंपरा में से देवदर्श नामक आचार्य का शिष्य था।

मौद्गळ—सं०पु०—एक आचार्य, जो वेदमित्र नामक आचार्य का शिष्य था।

मौद्गलायन—सं०पु०—भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार।

मौद्गल्य—सं०पु०—१ एक पैतृक नाम, जो नाक, शतबलाक्ष एवं लांगलायन आदि आचार्यों के लिये प्रयुक्त हुआ है।

२ एक ब्रह्मचारी पुरुष, जिसने ग्लाव मैत्रेय नामक आचार्य के साथ वाद-विवाद किया था।

३ एक ब्राह्मण, जो मुद्गल एवं भागीरथी का पुत्र था।

४ एक वृद्ध एवं कोढी ब्राह्मण जो द्रोपदी का पूर्व जन्म का पति था। उस जन्म में द्रोपदी का नाम नालायनीइन्द्रसेना था।

५ अंगिरा कुलोत्पन्न एक प्रवर।

६ राम की सभा का एक मन्त्री।

७ जनमेजय के सर्प सत्र का एक सदस्य।

८ एक आचार्य जो शतद्युम्न नामक राजा का गुरु था।

मौन—सं०पु० [सं०] १ अणीचिन् नामक आचार्य का पैतृक नाम।

२ देखो 'मून' (रू. भे.)

उ०—हम बोलत तुम बोलत नाहीं, काहे को मौन धरैयां।—मीरां

मौनव्रत-सं०पु०—न बोलने, चुप रहने के लिये सकंल्प ले कर किया जाने वाला व्रत ।
रू०भे०—मूनव्रत ।
मौनाळ—देखो 'मुंहनाळ' (रू. भे.)
मौनि, मौनी—सं०पु० [सं० मुनि] १ वह साधु जिसके मौनव्रत हो । (मा. म.)
२ मुनि, महात्मा ।
वि०—१ जिसके मौन हो, मौनव्रत धारी ।
२ जो वाणी से रहित हो, कुछ बोल या कहने में असमर्थ हो, मूक ।
उ०—भूख प्यास संकट सहै, सह विडाणां भार । जन हरिदास मौनी वळद, कासूं करै पुकार ।—ह. पु. वां.
३ देखो 'मून' (रू. भे.)
उ०—साध कुमारग परहरै, सुमति सुमारग लेह । **मौनि** गहै कुवचन सहै, हरीया कसनी एह ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज
रू०भे०—मूनि, मूनी, मोनि, मोनी ।
मौने, मौनै—देखो 'मोनै' (रू. भे.)
उ०—१ **मौने** आय अनाहक मारचौ, सांम खून विरण लेसा । जादव वंस देवकी जांमरण, घर अवतार धरेसा ।—र. रू.
उ०—२ जब तेह कहै-**मौने** ढांढौ कह्यौ । वैराजी थयौ ।—भि. द्र.
मौफाड़—देखो 'मूंफाड़' (रू. भे.)
मौबत—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे.)
उ०—दलाल कैयौ-हां जगती जांणसी कै साचेली **मौबत** अर हिरदै री हेत इसौ हुवै ।—दसदोख
मौर, मौ'र-सं०पु०—१ शरीर का पृष्ठ भाग, जो गर्दन से लेकर कमर तक होता है ।
उ०—१ तरै लाडक राव नूं पाछा सूं झटको वाह्यो । राव रे **मौरे** लागो । घणो वूहो ।—नैणसी
उ०—२ पग साथळ मां सुं भागो नै ढोलीया रा आठौं ई साल भागा नै बरड़ायनै उठीया । ढोलियौ **मौरां** पाछै लीयां इज ऊठीया ।
—राव रिणमल री बात
उ०—३ म्हारा **मौर** थापळ नै आप म्हनै हरख सूं जीमो तो म्हारां मरणा में ई सार है ।—फुलवाड़ी
मुहा०—१ मौर थापणौ, मौर थापलणौ=पीठ थपथपाना, शाबासी या साधुवाद देना । जोश दिलाना ।
२ मौर दाबणौ=पीठ को हाथों से धीरे धीरे दबाना, पीछा करना ।
३ मौर पाधरा करणा=सोना, आराम करना ।
४ मौर मांडणौ=पीठ पर बोझा उठाने के लिये तैयार करना, प्रस्तुत करना । चोट या आघात झेलने के लिये पीठ आगे करना ।
५ मौरां हाथ देणौ=पीठ पर हाथ फेर कर स्नान करना, उत्साहित करना, आश्वासन देना ।
२ पृष्ठ भाग, पिछला हिस्सा ।
उ०—अकबर रा जतनां रह्यो, 'सोनंग' साह 'दुरंग' । **मौर** न दव्वै साह दळ, ओर संभारी जंग ।—रा. रू.
३ वृक्षों पर आने वाली मंजरी, बौर ।
रू०भे०—मंवर, मउर, मवड़, मवर, महुर, मांर, मोर, मोहर, मौरी, मौरू ।
४ देखो 'मोहर' (रू. भे.)
उ०—१ सुण आवाज सूरमां, एम धजराज उठाया । **मौर** जीत सिरमौर, जांण पर जोर कि आया ।—रा. रू.
उ०—२ सांमंतां **मौ'र** चौधार धर साजतौ, समर वागो बिनै पातसाही ।—नाथो सांदू
५ देखो 'मोर' (रू. भे.)
मौरक—देखो 'मोरख' (रू. भे.)
मौरख—१ देखो 'मोरख' (रू. भे.)
२ देखो 'मूरख' (रू. भे.)
मौरखी-सं०स्त्री०—बंदूक की नाळ का मुख ।
मौरखौ-सं०पु०—१ ऊंट बैल, बच्छा आदि के मुख पर शोभा के लिए बांधी जाने वाली जाली ।
२ देखो 'मूरख' (अल्पा., रू. भे.)
३ देखो 'मोरख' (अल्पा., रू. भे.)
मौरचौ—देखो 'मोरचौ' (रू. भे.)
मौरणौ, मौरबौ-क्रि०अ०—१ वृक्षों पर मंजरी आना, बौर आना ।
उ०—१ मलयाचळ परवत सोई तौ रुखमणीजी को सरीर । ऊठै ज्यों मलयतरू **मौरजै** छै । त्यौं अठै मन **मौरचौ**, **मौरचां** पाछे कली हुवै ।—वेलि टी.
उ०—२ ढाढी हेक संदेसड़ौ, लग ढोला पूंहचाय । जोबन आंबौ **मौरियौ**, रस चूसौ नी आय ।—ढो. मा.
उ०—३ हरीया बौह वन **मौरीया**, पांनां फूल फलांह । हेक न **मौरचौ** बापडो, सूकौ मेह घणांह ।—स्री हरिरांम दासजी महाराज
२ बाजरी के कच्चे या सेंके हुए सिट्टे को दाने निकालने के लिए मसलना या मोरणी द्वारा सूंतना ।
मौरणहार, हारौ हारी), मौरणियौ—वि० ।
मौरिओड़ौ, मौरियोड़ौ, मौरयोड़ौ—भू० का० कृ० ।
मौरीजणौ, मौरीजबौ—भाव वा० ।
मउरणौ, मउरबौ, मवरणौ, मवरबौ, मोरणौ, मोरबौ—**रू० भे०** ।
मौरत—देखो 'महूरत' (रू. भे.)
उ०—जे ओ **मौरत** नीं साजता तौ धकलै सात बरसां में ऐड़ौ नांमी **मौरत** नीं सजतौ ।—फुलवाड़ी
मौरम—देखो 'मोहरम' (रू. भे.)
उ०—ईद, बकराईद मनावै, ताजियां रा तिवांर आवै जद धोकै । पण **मौरम** अर तिवांर आवै जद कायर मोर ज्यूं झूरै ।—दसदोख
मौरय—देखो 'मोरच' (रू. भे.)

मौरवी—देखो 'मुरवी' (रू. भे.)

मौरवीकांमकंटका-सं०स्त्री०—मुरू नामक यवन राजा की कन्या जो घटोत्कच की पत्नी थी।

मौरसली-सं० स्त्री०—एक प्रकार का पुष्प।

मौराटी-सं०स्त्री०—पीठ।

मौरामेळ-सं०पु०—अंत्यानुप्रास, पद्य के चरणों की तुक बंदी।

मौरित-वि०—जिसमें मंजरी, मौर, बौर आगई हो, मंजरि युक्त। (पेड़)

उ०—निगर भर तरुवर सघण छांह निसि, पुहुपित अति दीपगर पळास। मौरित अंब रीझ रोमंचित, हरखि विकास कमळ कृत हास।—वेलि

मौरियाळ-सं०पु०—जंगल में चरने के लिये जाने वाले पशुओं के झुण्ड में से सबसे आगे चलने वाला पशु।

वि०—अग्रगांमी, अग्रणी।

मौरियोडौ-भू०का०कृ०—१ मंजरी या बौर आया हुआ. (वृक्ष)

२ बाजरी के सिट्टे को मसला या सूंता हुआ।

(स्त्री० मौरियोड़ी)

मौरियौ—देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

मौरी-सं०स्त्री०—१ बैल के कुकुद स्थान से पिछले पैरों की पीठ तक होने वाली बालों की पंक्ति।

२ तलवार के म्यांन पर छोटी व पतली डोरी।

३ प्याले के ऊपर का भाग, प्याले का मुख।

उ०—सूनै रूपै के मौरियां नूं जड़ाऊ के प्याले फिरते हैं। जिस प्यालूं के बीच ही अनार दाळ चीनी परतकाळी अंगुरी गले कुलाब ऐसी भांति भांति के फूल भरते हैं।—सू. प्र.

३ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

४ देखो 'मौर' (रू. भे.)

मौरू—देखो 'मौर' (रू. भे.)

उ०—दूबासा मोरू पर कुबासा धेट, तुंबे के घाटा सा माटा सा पेट, बोरू के कांटा सा आंटा सा पाव। आछा सा चलणें में काछा सा भाव।—दुरगादत्त बारहठ

मौरूसी-वि०—जो बाप-दादा के समय से चला आरहा हो, पैतृक।

मौरौ—देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

मौर्य-सं०पु० [सं० मौर्य] एक प्रसिद्ध राजवंश, जिसका वर्षों तक मगध पर शासन रहा।

रू०भे०—मोरिय, मौरय।

मौर्यौ—देखो 'मोर' (अल्पा., रू. भे.)

मौळ-सं०स्त्री०—१ सस्तापन, मंदी।

उ०—अेकर एक कूंजड़ा रै अणूंती मौळ रै कारण आंमलियां अर कांदा अणूंता पोतै रैंगा।—फुलवाड़ी

२ अभाव, कमी।

उ०—तीर अोर रूकडा तरवारियां नै रुख रुख न्यारी न्यारी कर न्हाकदी है, कांनी कांनी वीरां री मौळ पड़ गई।—वी. स. टी.

३ उदासी, सुस्ती।

४ कान्तिहीनता, मंदता।

५ किसी कार्य में यथेष्ट चहल-पहल या उत्साह न होने की अवस्था या भाव, शान्ति।

६ हलकापन, न्यूनता।

७ फीकापन, रूखापन, स्वाद हीनता।

८ ज्यादा खट्टेपन का अभाव। (९) प्रभाव हीनता।

रू०भे०—मांळ, मोळ।

मौल—देखो 'मोल' (रू. भे.)

उ०—१ सतगुर तौ वीरा भया, सिख सौदागर होय। हरि सोदौ चित्त चौहटौ, तौल न मौल न कोय।

—स्री हरिरांमदासजी महाराज

उ०—२ मंडै पिलांण कोडियं केकांण मौल ऊंचरा। करै सनाह कंठळि घैसार सैन घूमरां।—मा. वचनिका

उ०—३ मैंहघा मौल दियै मेघाउत, लियै अपार नकौ जस लाह। आडाबळै मोतियां असड़ौ, सौदौ करै बळापति साह।

—महाराजा छत्तरसिंघ रौ गीत

उ०—४ माया सूं मिनख रौ मौल वत्तौ व्है। म्हैं बडेरां री ठोकरां खाई हूं। दीखती माया रै सांमी थैं आं ठोकरां री कीमत नीं आंक सकौ।—फुलवाड़ी

मौ'ल—देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—गांठ बांध बाहर निसरिया। देहरौ एक सूनौ थौ जठै जाय बूरियौ ऊपर भाठौ राख जंगळै पैस राजा नै मौ'ल पो'चाय कह्यौ—हमैं हूं घरां जाऊं छूं।—राजा भोज अर खापरा चोर री बात

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

मौलगत—देखो 'मोहलत' (रू. भे.)

उ०—सोळै बरस हांकरता लोप व्हैगा। एक छिण लागी। मौलगत रौ फगत छे'लौ दिन बाकी हौ।—फुलवाड़ी

मौळट-सं०पु०—खूंटे आदि गाड़ने का लकडी का हथोड़ा।

मौळणौ, मौळबौ—देखो 'मोळणौ, मोळबौ' (रू. भे.)

मौळणहार, हारौ (हारी), मौळणियौ—वि०।

मौळिओड़ौ, मौळियोड़ौ, मौळयोड़ौ—भू० का० कृ०।

मौळीजणौ, मौळीजबौ—कर्म वा०।

मौलत—देखो 'मोहलत' (रू. भे.)

उ०—१ औध तिहारी ये बांवनौ हो अब, आवणौ व्है नहिं बात अधूरी। वा विधि को विरमावनौ हो चित, चावनौ मौलत होति मंजूरी।—ऊ. का.

उ०—२ लक्खी कह्यौ-सोळै बरसां री मौलत कोई कम मौलत

नीं व्है ।—फुलवाड़ी

मौलवी—सं०पु० [अ.] १ इस्लाम धर्म का आचार्य । मुसलमानों का धर्म गुरू ।

उ०—मौलवी कराड़ै अरज काजी मुला । पाडजै देवहर दळां कर पेल । मेच्छ वांचै जिकौ हिंद इकळीम मज्झ । खड़ौ राजा जितै वर्णै नह खेल ।—गु. रू. बं.

२ अरबी भाषा का विद्वान ।

३ मुसलमानों के बच्चों को पढाने वाला गुरु ।

रू०भे०—मोलबी, मोलवी ।

मौलसरी, मौलसिरी, मौलस्री—देखो 'बोलसरी' (रू. भे.)

उ०—आसापाळौ खिजूर गूंदी लेसूड़ौ केसूला खिरणी मौलसिरी फरवास ।—रा. सा. सं.

मौळायौ—वि०—१ निरन्तर फीकापन होने के कारण स्वाद परिवर्तन के लिये हर प्रकार की वस्तु खाने का इच्छुक ।

२ कामेच्छा से व्याकुळ ।

मौळि—देखो 'मोळी' (रू. भे)

मौलि—सं०पु० [सं०] १ अंगिरा कुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

२ एक आचार्य, जो बाभ्रव्य नामक आचार्य का पिता था ।

३ देखो 'मोली' (रू. भे.)

मौलिक—वि०—मूल्यवान, कीमती ।

उ०—बहु मौलिक वागा दिया ।

मौळियामंगळ—सं०पु०[सं०मौलि मंगल] वह लड़का जिसकी जन्म कुंडली में पहले,चौथे, सातवें, आठवें और बारहवें घर में मंगल पड़ा हो।

रू०भे०—मोळियामंगळ ।

मौळियौ—विविध रंगों का साफा विशेष ।

रू०भे०—मोळियौ ।

मौळी—सं०स्त्री०—१ विभिन्न रंगों में रंगा कच्चे सूत का धागा, जो देव-पूजन व मांगलिक अवसरों पर काम आता है । सूत्र-बंधन ।

उ०— अलंकार बाजणा कदंमां कटि संघ आभा । जटी मौळी वांम अंगां पौसाकां जरीस ।—मा. वचनिका

२ ईंधन की लकड़ियों का गट्ठर ।

उ०—हरि जेम हलाड़ौ जिम हालीजै, कांय धणियां सूं जोर कृपाळा । मौळी दिवौ दिवौ छत्र माथै, देवौ सौ लेऊं स दयाळ ।
—प्रथ्वीराज राठौड़

३ मस्तक, शिर । (ह. नां. मा.)

रू०भे०—मउळी, मोळी, मौळि ।

४ देखो 'मौळौ' (स्त्री.)

मौळू—देखो मेळूजौ' ।

मौळौ—वि० [सं० मलिन, स्त्री० मौळी] १ मंद गति से काम करने वाला, सुस्त, आलसी ।

२ जो तीव्र न हो, तेज न हो, मंद, धीमा ।

उ०—१ मीट इत्ती मौळी व्हैगी कांई के खुद रै पगां री मोचड़ियां ई नीं दीखै ।—फुलवाड़ी

उ०—२ डोकरी कह्यौ—आप गिणाई जकी सगळी चीजां म्हनै साफ दीसै है, जाळी वाळी कीं कोनी ; म्हारी अकल कीं मौळी है, म्हनै आ समझ में नीं आवै के जे आं गाभां अर आं अमोलक चीजां सूं ई कांई राजा बंणतौ व्है तौ कांई एक बांदरौ ऐ सगळी चीजां पैर'लै तौ वौ राजा व्है जावैला ।—फुलवाड़ी

२ निष्तेज, कान्तिहीन, प्रभाहीन, मलिन, धुंधळा । फीका ।

३ उदास, खिन्न ।

४ शान्त, नर्म, धीमा ।

उ०—वौ कीं मौळौ पड़नै बोल्यौ—माजी, म्हारा सूं गोरी उणनै पीळिया री रोग ।—फुलवाड़ी

५ उत्साह रहित, ठंडा ।

६ निर्बल, कमजोर ।

उ०—मेवाड़ ढूंढाड़ जीऊं ही हाडौती माळवौ मौळौ ; दोळा काळ चक्र सौ किणी न आवै दाय ।—सूरजमल मीसण

७ प्रभावहीन, निष्फल ।

८ शर्मिंदा ।

९ नामर्द ।

१० अपेक्षाकृत न्यून स्तर का, हल्का ।

११ साधारण, ठीक-ठीक ।

ज्यूं—ऐम जमांनौ मौळौ है ।

१२ जो ज्यादा कीमती न हो, कम दामों का, सस्ता ।

१३ बहुत कम खटाई के कारण जो स्वादिष्ट हो, जो ज्यादा खट्टा न हो ।

ज्यूं—मौळौ दही, मौळी छाछ ।

रू००भे०—मउळु मउलु, मउलूं, मउळू, मउलू, मउळौ, मोळो ।

मौल्य—देखो 'मूल्य' (रू. भे.)

मौसम—सं०पु० [अ० मौसिम] १ ऋतु ।

उ०—वै बोल सुण्यां पछै दीवांणजी साफ तौ जांणै मौसम ई बदळगी । पौह री ठौड़ चैत री महीनौ आयग्यौ ।—फुलवाड़ी

२ जलवायु, आबोहवा, वातावरण ।

उ०—उठै नीं रितुवां बदळती, नीं हवा बदळती । एक सरीसा दिन, अर एक सरीसौ मौसम । फुलवाड़ी

३ किसी कार्य या बात-चीत के लिये उपयुक्त समय, वक्त ।

मौसमी—वि०—१ मौसम का, मौसम सम्बन्धी ।

२ किसी ऋतु विशेष में होने वाला ।

३ जो समय के अनुकूल हो ।

सं०स्त्री०—नारंगी की जाति का एक फल विशेष ।

मौसर—सं०पु०—१ मृतक के पीछे किया जाने वाला भोज । मृत्यु भोज ।

उ०—१ जाट आपरी मां रै लारै घणौ ई खरचौ-खातौ करियौ । गंगाजळी वरताय नै सगळी न्यात निंवती । नांमी मौसर करियौ ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ औसर उडाया, मौसर मिटाया । आखा खरचा-बरचा घटाया, अर कुरीतां में, सुभीतै रा कांम पौळाया ।—दसदोख

२ किसी अवसर विशेष पर होने वाला धार्मिक, सामाजिक या रीति रिवाज सम्बन्धी कार्य ।

३ देखो 'मोसर' (रू. भे.)

उ०—१ मांनवियों चूकौ मती, आयौ मौसर एहु देहु । देहु धन दीन नैं, लाभ जनम रौ लेहु ।—ऊ का

उ०—२ भूप 'अजीत' तणौ छळ भाटी, पण परवीर रीत ची पाटी । बोल 'किसोर' 'सूर' अतुळी बळ, मौसर तणौ सांपनौ मंगळ ।—रा. रू.

उ०—३ सभ भुजां निज धांनंख सरा, मभ अड़ै भूहां मौसरा । रिण रांम त्रप दसमाथ रा, खित वेध लगा खरा ।—र. ज. प्र.

उ०—४ अंग ऊंचास रा, खीजिया खास रा । मुळकती मौसरा, आविया आस रा ।—मा. वचनिका

रू०भे०—मवसर, मांसर, मावसर, मोंसर, मोसर ।

मौसाड़ौ—सं०पु०—पशुओं का एक रोग । इससे पशु के मुंह पर फफोले पड़ जाते हैं ।

मौसाळ—देखो 'मोसाळ' (रू. भे.)

मौसाळौ, मौसालौ—देखो 'मोसाळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हेमजी स्वांमी घर में था जद एक बहिन थी तिण नैं मांमौ आय मौसालै ले गयौ ।—भि. द्र.

मौसिकीपुत्र—सं०पु० [सं० मौषिकीपुत्र] एक आचार्य, जो हारिकर्णी पुत्र नामक आचार्य का शिष्य था ।

मौसी—देखो 'मासी' (रू. भे.)

उ०—बखत री बात, मां मरै बीरीं मौसी ही मरै । मोटियार मरचौ अर बियैरै लारै-लारै बेटौ भी आगीनै गयौ ।—दसदोख

मौसीहाई—देखो 'मासीआई' (रू. भे.)

उ०—अर राजूखां खोखर ढींगसर रहै, सोही पण मोहिलां रौ दोहितौ । सगौ ही मौसीहाई भाई लागै ।—सूरेखींवे कांधलोत री बात

मौसौ—देखो 'मोसौ' (रू. भे.)

उ०—जद भेरू बाबौ ठिरड़ीजतां ठिरड़ीजतां ईं इण मौसा रौ पड़ूत्तर देतौ बोल्यौ-थनै हाल इण भेद रौ ठा' को पड़ी नीं । सारी ऊमर मठ में बैठी ई मटरका करीया है, बांणियां नै टाबर को दिया नीं ।—फुलवाड़ी

मौह—देखो 'मोह' (रू. भे.)

मौहकांण—देखो 'मुकांण' (रू. भे.)

मौहत—सं० पु० [सं० महत्व] महत्ता, बड़ाई ।

उ०—घर घर मंगळचार, मौहत चढ़ियौ मंडोवर । नाद वेद वरतिया, सुकवि बोलै सुभ अक्खर ।—गु. रू. बं.

मौहताद—देखो 'मोताद' (रू. भे.)

उ०—कूंजरां तणी मौहताज करसी कवण । कवण कोड़ां तणी मौज करसी ।—द दा.

मौहतौ—देखो महता' (रू. भे.)

उ०—सरव मुखत्यारी करमचंद री है । अरू दूजौ ठाकुरसी वैद मौहतौ है । सू इण पर महाराज री वडी मरजी ।—द. दा.

मौहबत, मौहबति—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे.)

उ०—बांह छूटै अम्रत की धारा, पीपी संत भया मतवारा । औरन को संगति नही सोबति, लागी एक अलख सुं-मौहबति—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मौहमंद—देखो 'मुहम्मद' (रू. भे.)

उ०—मौहमंद पीर जिवै गउ कीन्ही, वा फिर मारि जीवाई ।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

मौहम—देखो 'मुहिम' (रू. भे.)

उ०—दळबळ द्रब्ब दांन खग दावै, अनि भूपाळ जोड़ नह आवै । कूंत साह नूं हुतौ सकाजा, मौहम जिणी लीघ महाराजा—सू प्र.

मौहर—देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—दूर कराई दाढियां, मौहरां दे दे हाथ । माळा कंठी मौलवी, समचै एकण साथ ।—रा. रू.

उ०—२ तोय भूप पग धोयन तखिणा । दम दम मौहर समापै दखिणा ।—सू. प्र.

उ०—३ 'गाजीसाह' तणौ गाढां गुर, साजै अणी वडौ सरदार । सारां मौहर वडा दत समपै, मारां मौहर वजावै सार ।—तेजसी खिड़ियौ

उ०—४ मौहरि गोठि वीमाह, मौहर दरबार मझारां । रहां मौहरि रावतां, सदा जिम वहतां सारां ।—सू. प्र.

उ०—५ रिम दौड़ियौ दिवस तिण रतियां । मौहर खबर पूगि मेड़तियां ।—रा. रू.

उ०—६ 'पतौ' परिग्गह आगळौ, मौहर गजां मरोड़ ।—रा. रू.

उ०—७ मौहर लुघू दीरघ जमल, पायै ए परि आंण । सकौ कविदां सांभळौ, ससि छंदा सिहनांण ।—पिं. प्र.

मौहरत—देखो 'महुरत' (रू. भे.)

उ०—अछर उछाह आवाज आरती, घड़ियौ मौहरत विकट घणौं ।—दूदा नगराजोत रौ गीत

मौहरलौ—वि० [राज०मोहर=आगे+प्रत्य-लौ] (स्त्री० मोहरली) आगे वाला, अग्रणी, प्रथम ।

उ०—सुतन अंद्रसींग केहर' अनै सुभु'सुत,चेबड़ां बीयां जम न कूच लीया । वांसली अणी सु घणी करड़ी वणी, मौहरली अणी रा लोह मळीया '—पहाड़खां आढौ

मौहरि,—१ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—मौहरि गोठि वीमाह, मोहर दरबार मझारां । रहां मौहरि रावतां, सदा जिम बहतां सारां ।—सू. प्र.

२ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

मौहरियाळ—देखो 'मोहरियाळ' (रू. भे.)

उ०—कळ छळि रायांसींग कलावत । मौहरियाळ 'सिवौ'माहावत ।—रा. रू.

मौहरी—१ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

उ०—१ **मौहरी** डोरी रेसमी, नौखी चंदणी नकेल । रूपाळक फण नाग रंग, बाळक जुंग बकेल ।—सू. प्र.

उ०—२ **मौहरी** चंपा सेली समंध, पचकल्यांण पहचांणिये । अन्नेक रंग पसमां अलल, जेहा मुखमल जांणिये ।—सू. प्र.

उ०—३ परठि असेणी पाव, उरस छिब क्रोध उभल्लै । वह बरसतां बंदूक, झाल **मौहरी** कर भल्लै ।—सू. प्र.

२ देखो 'मोहर' (रू भे.)

उ०—१ पातौ जोध घणी छळ पायां । भगवांनोत **मौहरी** भायां ।
—रा. रू.

उ०—२ मांनड़ौ 'वैण' फौजां तणा **मौहरी** । वाजि वैकुंठ गया डांण भरता ।—जगौ सांदू

मौहरू—१ देखो 'मोहर' (रू. भे.)

उ०—चोळ धजाबोळ **मौहरू** सं ऐसी अनेक चल्ली । सीसा सोरडे रू अटालूं के भार ।—सू प्र.

२ देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

मौहरे, मौहरै—क्रि॰ वि॰—१ अग्र भाग पर, आगे, अगाड़ी ।

उ०—जे लांबा हेला करै, ओछी व्रीख भरंत । बचै सही वै वाघ सूं, **मौहरै** गया मरंत ।—बां. दा.

२ सम्मुख, सामने ।

उ०—**मौहरै** चढियां मयंद रै, भैंचक जाय भड़ाक । गैंवर भूलै गाळबो, चीसै चढ़ चित चाक ।—बां. दा.

३ किनारे, तट पर ।

उ०—**मौहरै** महरांण रै दळां रा महाबळ, भुजाबळ बनपती कीध भैरी ।—नगराज रौ गीत

मौहरौ—देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

उ०—१ आसमांनी **मौहरा** किये पल्लैसं झिलते आए ।—सू. प्र.

उ०—२ कांबियां रंग **मौहरा** करै, रंग बां भैंसा रगति । जदि चाढ़ि मर्दा ज्वाळामुखी, सर्फ तांम तोपां सगति ।—सू. प्र.

मौहल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—जाई सहर के राजा की कुंवरी पंचकली नैं मिल्यौ, चंपे री कळी सुं तुलती । तेरौ नांम पंचकली कहावती । तैरै **मौहल** जाइ बैठौ ।—चौबोली

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—ताहरा आस्या राजलोक मैं गई । ताहरां राजा रा **मौहल** आस्या नूं देखि नै अचिरज हुवा ।—स्यांम संदर री बात

मौहळियौ—देखो 'मोळियौ' (रू. भे.)

उ०—ढोला थांरै बांधण पचरंग **मौहळियौ** । म्हांरै (नै) ओढण नै बालाचूंदड़ी ।—लो. गी.

मौहलौ—१ देखो 'महोलौ' (रू. भे.)

२ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—मंडिया महोछब सिधारथ **मौहले**, सुपन त्रिसला सुतण किया साचा ।—ध. व. ग्रं.

मौहणी, मौहिणी, मौहीणी—देखो 'मोहनी' (रू. भे.)

उ०—१ सरूप हेक सुंदरी, इला नका अगोचरी । प्रतख्ख चख्ख पीइणी, महा मदन **मौहिणी** ।—मा. वचनिका

उ०—२ माळिणी **मौहीणी** माहेसरी, चकरी कुंडळा बालिका । भखणी जमदूतां भजां, नांम संतां प्रति पाळिका ।—मा. वचनिका

मौहरत—देखो 'महुरत' (रू. भे.)

मौहरतिक—सं॰पु॰—एक देव, जो धर्म ऋषि एवं मुहूर्ता के पुत्रों में से एक था ।

मौहौ—देखो 'मोमौ' (रू भे.)

उ०—यूं करतां कतराक दन जाता वडा भायां री वहुआं अणी री वहू ने **मौहा** वोली, तको केहण लागी—थे मांटी वेर घरां रा सुख भुगती पण रजपूतां री कुपाई वरोळी छौ ।
—कल्यांणसिंघ नगराजोत वाढेल री बात

म्यंत—देखो 'मित्र' (रू. भे.)

उ०—मछराळ देवदयाळ श्रीवसु **म्यंत** रे ।—र. ज. प्र.

म्यांउ, म्यांऊ—सं॰पु॰—बिल्ली की बोली, बिल्ली के मुंह से निकलने वाली आवाज ।

उ०—इत्ता में एक मिनकी भंवरा में आय **म्यांऊं** २ करण लागी ।
—फुलवाड़ी

रू॰भे॰—म्यांव, म्यौं ।

म्यांन—सं॰स्त्री॰ [फा॰ मियान] १ तलवार, कटार आदि का कोष, खाना, कवर । (डि. को.)

उ०—खींया थूं खुरसांण, धण तेगौ तलवार रौ मुखमल हंदी **म्यांन**, खवे खिलूंबूं 'खींवजी' ।—अग्यात

पर्या॰—कोस, घरतरवार, चंद्रहासधर, तरवारपिधांन, परीवार, समसधर ।

रू॰भे॰—मयांन, मिआंन ।

२ अन्नमय कोश ।

३ शरीर ।

म्यांनभाई—सं॰पु॰—वे दो पुरुष जिनका एक ही स्त्री से मैथुन सम्बन्ध हो ।

म्यांनी—सं॰स्त्री॰ [फा॰] पाजामे में दोनों पल्लों के रानों के बीच में जोड़ा जाने वाला कपड़े का टुकड़ा ।

रू॰भे॰—मियांनी, मैनी ।

म्यांनौ—सं॰पु॰—१ अभिप्राय, तात्पर्य आशय, अर्थ ।

उ०—१ पूछ्यौ—थूं कुण है ? कीकर म्हारी चावना पूरैला, पैं'ला म्हनै इण रौ सावळ **म्यांनौ** दै, पछै म्हैं हुलायां लावतो ढबूंला ।
—फुलवाड़ी

उ०—२ वा तौ आवै ज्यूं, जका बोल उकळिया, वै ई बिना लाग-लपेट रै पाधरा खळकाय दिया । वांरौ की अरथ के **म्यांनौ** नीं हौ ।—फुलवाड़ी

२ कारण ।

उ०—पण थूं मौत आयां पैंली क्यूं मरणी चावै, इण री म्यांनौ बता।—फुलवाड़ी

३ भेद, रहस्य।

उ०—पूछ्यौ–म्हैं तौ थारा प्रांण लेवतौ नै थूं डग डग हंसियौ कीकर ? म्हनै इण रौ म्यांनौ बता।—फुलवाड़ी

४ खुलासा।

उ०—एक ई चीज सूं किणी नै सुख उपज सकै तौ किणी नै दुख। इण मरम रा म्यांना वास्तै ई आ बात है।—फुलवाड़ी

५ एक प्रकार की डोली, पालकी या पालना, जो चारों ओर से ढका हुआ होता था। इसके दोनों ओर मुंह होते थे। यह पर्दा न शीन स्त्रियों के आवागमन के काम आता था।

उ०—म्यांनै बिन मुगळांनियां, जरा न जा पातीह। भै खुमांण हुंत भरम खौ, छुडै उघड़ि छातीह।—रेवतसिंह भाटी

रू०भे०—मयांनौ।

म्यांव—देखो 'म्यांऊं' (रू भे.)

म्याई—१ देखो 'माई' (रू. भे)

२ देखो 'वांई]' (रू. भे.)

म्याबट—१ देखो 'मावठ' (रू. भे.)

२ देखो 'म्यावट' (रू. भे.)

म्याळ-सं०पु०—१ कच्चे मकान की छाजन के नीचे लगने वाला लकड़ी का लट्ठा।

२ कमरे में आमने-सामने की दीवार में लगने वाला वह पत्थर जिस पर सामान रखा जाता है। टांड।

३ कूए से पानी निकालने के चक्र के दोनों डंडे के नीचे की पटरी।

४ कच्चे मकान की छाजन में लगे 'बलींड' को सीधा रखने के लिये उसके नीचे लगने वाली धनुषाकार लकड़ी।

म्याळमिनौ, म्याळमिन्नौ-सं०पु०—जंगली बिलाव।

उ०—अर अठी नै चौधरी म्याळमिन्ना नै पकड़ण सारू उणी भांत सावचेत होयनै ऊभौ हो।—फुलवाड़ी

म्यावट-सं०स्त्री० [सं० मात्री-वृत्ति] १ तुरन्त ब्याई हुई गाय, भैंस या बकरी के दूध को गर्म करने पर बनने वाला गाढ़ा खाद्य पदार्थ।

रू०भे०—म्याबट।

२ देखो 'मावठ' (रू. भे.)

म्युनिसिपैल्टी-सं०स्त्री० [अं० म्युनिसिपेलिटी] नगर की सफाई आदि का उचित प्रबन्ध रखने वाला कस्बे या शहर में गठित एक निगम नगर पालिका।

म्युजियम-सं०पु० [अं] अद्‌भुत एवं विलक्षण वस्तुओं या पशु-पक्षियों को प्रदर्शनार्थ संग्रह करने का स्थान, अजायबघर।

म्यौं—देखो 'म्यांऊं' (रू. भे)

म्रकंडु-सं०पु० [सं०] मार्कंडेय ऋषि के पिता का नाम।

म्रखा—देखो 'म्रसा' (रू. भे.)

उ०—१ चित करणी म्रखा दिसी नह चाहै, आप विरद चा पखा उमाहै।—र. ज. प्र.

उ०—२ अनट्ट जे म्रखा अवाच्य, सूरमंस री नरा। परं सती अभेट पिंड, दास गाय दीन रा।—सू. प्र.

म्रखावाव—देखो 'म्रिसावाद' (रू. भे.)

उ०—तुच्छ धरम रंग, गुरूजन प्रसंसा भंग, सुक्रतकरण-प्रमाद, बहुल म्रखावाद, एवंविध कलि।—व. स.

म्रगंक—देखो 'म्रगांक' (रू. भे.)

म्रग—देखो 'म्रिग' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ मंडळ मांह वसाय म्रग, थयौ कलंकी चंद। पायौ सीह मयंद पद, हण हाथळ म्रग व्रंद।—बां. दा.

उ०—२ ठणै भद्र मंदां म्रगां बंस ठावां, छटा फैल हालै किना सैल छावा।—वं. भा.

उ०—३ म्रग जातै आयौ मनै, आयौ पोस अवन्न। पसरंतां उत्तर पवन, घर सीतळ रवि धन्न।—रा. रू.

म्रगअंक—देखो 'म्रगांक' (रू. भे.) (ह. नां. मा)

म्रगअंखी देखो 'म्रगाक्षी' (रू. भे)

म्रगइंद, म्रगइंद्र—देखो 'म्रगेंद्र' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

म्रगचरम-सं०पु० [सं० मृग चर्म] हरिन का चमड़ा जो बिछाने के काम आता है।

म्रगछाळ, म्रगछाळा-सं०स्त्री०—मृगचर्म।

उ०—१ इसौ रूप विक्रम कियौ, कांधे धर म्रगछाळ। द्वादस तिलक सरीर के, हाथ लियौ जयमाळ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ सकारां चुरसां थारां जांणियौ जहांन सारां। बाखांणीयौ छत्र धारां जोड़ रा विसेस। आडंबरां भड़ालां सांबरां साज ओछाड़ीयौ, म्रगांछाळां वागबरां पूजीया महेस।—महकरण मईयारीयौ

रू०भे०—मरगछाळा, म्रगछाळा, म्रिगछाळ, म्रिगछाळा, म्रिघछाळा।

म्रगछावड़—देखो 'म्रगसावक' (रू. भे.)

उ०—लड़ता जग लहरि तुरंगे लागा, सूरांतण जोवतां सधीर। म्रगछावड़ जिसा लोचन मुख, तीखा जिसा खुतंगी तीर।

—महादेव पारवती री वेलि

म्रगजळ—देखो 'म्रिगत्रसणा'

म्रगझंप-सं०पु०—डिंगल साहित्य का एक गीत छंद विशेष, जिसके प्रथम तीन चरण १४ मात्रा का, चौथा-चरण १० मात्र का तथा बाद में तीन चरण फिर १४-१४ मात्राओं के होते हैं।

म्रगडचण-सं०पु०—सियार।

म्रगडांणी-वि०—मृग के समान छलांग लगाने वाला।

म्रगणाळ-सं०पु० [सं० मार्गण] तीर, बांण। (डि. नां. मा.)

म्रगतरसणा, म्रगतिसणा, म्रगतिस्णा, म्रगत्रसना, म्रगत्रसिणका, म्रगत्रिसणा, म्रगत्रिसना—देखो 'म्रिगत्रसणा' (रू. भे.)

उ०—१ म्रग-तिसणा रै लारै भटकियौ, पण पांणी री छांट ई हाथै लागी नीं।—फुलवाड़ी

उ०—२ जाचक हिरण तिसाया जावै, पुन्न नीर सुपनें नहिं पावै। धर जिग्यासू दस दिस धावै, म्रगत्रिसणां गुरु लख मुरझावै।

—ऊ. का.

उ०—३ जिसिउं स्वप्नराज्य. जिसिउं गंधरवनगर, जिसिउ नदी पुलिनां तरालि लिखित प्रासाद, जिसिउं अलातचक्र, जिसी म्रग-त्रस्णिका, जिसा मायागोलक, जिसिउं इंद्र-जालवन तिसिउ मायामय संसार।—व. स.

म्रगदंस, म्रगदंसक-सं०पु० [सं० मृगदंशक] कुत्ता, श्वान।

(अ. मा., ह. नां. मा.)

म्रगधर-सं०पु० [सं० मृगधर] चन्द्रमा, चांद।

रू०भे०—मरगधर।

म्रगनयणी, म्रगनयनी—देखो 'म्रिगनयणी'

उ०—१ कुवळ नयण कुळ सुच्छ, म्रगनयणी मनांसभी। मुंहडै आगळ मुच्छ. जम क्यूं जासी जेठवा।—जेठवौ

उ०—२ म्रगनयणी. म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट। म्रगरिपु-कटि सुंदर वणी, मारू अइहइ घाट।—ढो. मा.

म्रगनाथ—देखो 'म्रिगनाथ' (रू. भे.)

म्रगनाभ, म्रगनाभि, म्रगनाभी—देखो 'म्रिगनाभि' (रू. भे.)

उ०—१ म्रगनाभ अतर सौंधा प्रमळ, वंटि अरगजा वळोवळां। जदि चढे अनुज अग्रज गजां, हूंतां हाल किलोहळां।—सू. प्र.

उ०—२ म्रगनाभि ई महमह तीय पहुतीय गउखि कुमारि। नयणि निरखू ते निरखिय हरिखिय,नेमि सा नारि।—जय सेखरसूरि

उ०—३ सुखांनंद राजा रौ पुत्र उग्रनाभि ५४, रौ धरम-ध्वज, ५५, रौ मकरध्वज ५६, रौ म्रगनाभि ५७।—रा. वंसावली

म्रगनिद्रा, म्रगनींद-सं० स्त्री०—निद्रा की वह अवस्था जब नींद लेते समय आखें खुली रहती हों।

उ०—म्रगनिद्रा मांहेह, सोवै जायलपत सदा।—पा. प्र.

म्रगनैणी—देखो 'म्रिगनयणी' (रू. भे.)

उ०—१ तरुणीं बरुणीं में नींझर झर ताकी, थिग थिग म्रगनैंणी पिक-बैंणी थाकी।—ऊ. का.

उ०—२ झूरै रे म्रग-नैणी झूलर, मेह तणी परि मोरां। जोगण-पीठ दियां सायजादी, धूमरि ऊपरि धोरां।—रूपौ मुहतौ

म्रगपत, म्रगपति, म्रगपती—देखो 'म्रिगपति' (रू. भे.

(ना. डिं. को., ह. नां. मा.)

उ०—१ कुण दूजे चालै कहौ, म्रगपत वाळै माग। जुध में काचा ताग जिम, तोड़ै ऊमर ताग।—बां. दा.

उ०—२ स्रीवत्स रू खगी लुळाय किरि, स्येन रू बज्र कुरग। छाग फिरि। नंद्यावरत घट रू कच्छप गति, बीलोतल रू संख ग्रहि म्रगपति।—वं. भा.

उ०—३ म्रगनयणी, म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट म्रगरिपु-कटी सुंदर वणी, मारु अइहइ घाट।—ढो. मा.

म्रगपाळ-सं०पु०—तीर। (डिं. नां.मा.)

म्रगमंदा-सं०स्त्री० [सं० मृगमंदा] क्रोधवशा नाम्नी से उत्पन्न कश्यप ऋषि की दस कन्याओं में से एक।

म्रगमद, म्रगमदा—देखो 'म्रिगमद' (रू. रू.)

उ०—१ विद्या गुण वारता भली, म्रगमद परिमळ माळ। तेळ विंदु जळ मांहि ज्यूं, पसरै जगति साळ।—पंचदंडी री वारता

उ०—२ तब मुख पूरण चांद सौ, पूरण सदा प्रकास। अंग अंग में खुल रही, म्रगमद के री वास।—कूंवरसी सांखलारी वारता

उ०—३ पंचवरण फूलां नी माल, प्रतिमा कंठि ठवुं सुविसाल। म्रगमद अगर धूप घनसार, जय जय सुमतिनाथ सुखकार।—स.कु.

उ०—४ तन असित प्रांण म्रगमद असींग। हठ अरिन अमल व्है जात हींग।—ऊ. का.

उ०—५ जिन चंद-सूरति सकलचंदन, म्रगमदा केसर करी। अह समइ-सूंदर पारस्व पूजइ, तेहनी धन्यासिरी।—स. कु.

उ०—६ म्रगनयणी, म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट। म्रगरिपु-कटि सुंदर वणी, मारू अइहइ घाट।—ढो. मा.

म्रगमरद, म्रगमारण-सं०पु०—सिंह, शेर। (अ. मा., ह. नां. मा.)

म्रगमास-सं०पु०—मार्गशीर्ष मास।

उ०—नव उच्छव नर नार, नवल संगार वसन्ने। गीता में म्रगमास, कहचौ मम रूप किसन्ने।—रा. रू.

म्रगमित्र—देखो 'म्रिगमित्र' (रू. भे.)

म्रगमिद्र—देखो 'म्रिगमद' (रू. भे.)

म्रगयंद—देखो 'म्रगेंद' (रू. भे.) (अ. मा.)

म्रगया—देखो 'म्रिगया' (रू. भे.)

उ०—म्रगया रमैं आवता मारग, देखत ऊभी दोटै। आज कुलंग भ्रमण तिण ऊपर, लाग जिनावर लोटै।—र. रू.

म्रगराज, म्रगराव—देखो 'म्रिगराज' (रू. भे.) (नां डिं. को.)

उ०—१ सुख हित स्याळ समाज,हींदू अकबर बस हुवा। रोसीलौ म्रगराज, पजै न रांण प्रतापसी।—दुरसौ आढौ

उ०—२ जिसै जादूराय घोड़ै चढियौ आयौ अर आदमियां कयौजी, ऐ राजा पदमसिंघ बैठा। सू देखं तौ घायल हुवा म्रगराज ज्यूं घूमै है —द. दा.

म्रगरिपु-सं०पु० [सं० मृग+रिपु] सिंह, शेर।

उ०—म्रगनयणी, म्रगपति-मुखी, म्रगमद तिलक निलाट। म्रगरिपु कटि सुंदर वणी, मारू अइहइ घाट।—ढो. मा.

म्रगलउ—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हुं त्रियंच किसुं बहरावुं, रथकार नइ सहु थोक जी। म्रगलउ भावना मन भावंतउ, गयौ पंचम देवलोक जी —स. कु.

म्रगलोअणी म्रगलोचणी,म्रगळोचना,म्रगलोचनी,म्रगलोयण,म्रगलोयणी, -सं०स्त्री० [सं० मृगलोचना, प्रा० मिअलोअणा] वह सुंदर स्त्री जिसके नेत्र मृग के नेत्र के समान हों।

उ०—१ नवजोवन नारी मिली, उरि लहकइं हे नवसर हार। हंसगमण **म्रगलोम्रणी**, मुहि बोलइ हे मंगलचार।—हीराणंद सूरि

उ०—२ ससि-वदन **म्रगलोचना** रे, हरिलंकीसु विसाल। राजा मांनै अति घणी रे, जीव सूं अधिक रसाल —जयवांणी

उ०—३ चढंती वय उपमा चढती, **म्रगलोचनी** कळाइर मोर। गति आसति मति गयंद तणी गति, जोवन तणउ दिखायउ जोर। —महादेव पारवती री वेलि

उ०—४ हा चंद्रवदनी हा **म्रगलोयण**, हा गोरी गजगेल।—वि.कु.

उ०—५ चंदवदण **म्रगलोयणी**, भीसुर ससदळ भाल। नासिका दीप-सिखा जिसी, केळ-गरभ सुकमाल।—ढो. मा.

म्रगलौ—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू.भे.)

म्रगवाह, म्रगवाहण, म्रगवाहन–सं०पु० [सं० मृग-वाहन] १ चंद्रमा। (अ. मा.)

२ पवन, हवा। (अ. मा.)

म्रगवीथी—देखो 'म्रिगवीथी' (रू. भे.)

म्रगस—देखो 'म्रिग'

उ०—देवी **म्रगसं** अख्ख हस्ती मयंखे, देवी पंख केकी गरुड घिरट पंखे।—देवि.

म्रगसर—देखो 'मिगसर' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—सुदि **म्रगसर** सप्तमी,वार मंगळ वरदाई। अंस परम 'अभसाह' विमळ ग्रहि वंस वडाई।—रा. रू.

म्रगसाखा—देखो 'म्रिगसाखा' (रू. भे.)

उ०—**म्रगसाखा** असि म्रगा, पवन उडांण डांण झापंदा। पाळी हरि विलिपिगा दादुरिया नैब कुदांही।—रांमरासौ

म्रगसावक–सं०पु० [सं० मृग+शावक:] हरिण का बच्चा।

रू०भे०—म्रगछावड़, म्रगस्नावक,

म्रगसिर—१ देखो मिगसर' (रू भे) (नां. मा)

उ०—खळ भळ खावण नैं **म्रगसिर** खळ खेचै। बावळ वरफां री तरफां सूं वेधै।—ऊ. का.

२ देखो 'म्रिगसिरा' (रू. भे.)

उ०—म्रगसिर नक्षत्र वाउ वाज्यौ सु म्रगां कौ वइरी हुग्रौ छै। त्रिखा करि व्याकुळ हुग्रौ छै।—वेलि टी.

म्रगस्नावक—देखो 'म्रगसावक' (रू. भे.)

म्रगांक–सं०पु० [सं० मृगाङ्क] १ चंद्रमा। (ना. डिं. को.)

उ०—मालती मेघ **म्रगांक** मनोहर। मधुकर मोर चकोर जिसी री। —स. कु.

२ एक प्रकार की रस औषध।

रू०भे०—म्रगंक, म्रगअंक।

म्रगांकलेखा–सं०स्त्री० [सं० मृगाङ्क लेखा] चंद्र लेखा नामक महासती।

उ०—इम **म्रगांकलेखा** म्रगावती, सतानीक नी नारजी।—स. कु.

म्रगांण—देखो म्रिग' (मह., रू. भे)

उ०-म्रग छेक **म्रगांण** उडांण नटी मनु। आंण पटी वछुटी अंवजै। दपटी कळ जांणक तोप थटी दग। डाळ फटी क पठांण वजै। —किसनजी दधवाड़ियौ

म्रगाक्ष, म्रगाक्षी, म्रगाखी–सं०स्त्री० [सं० मृग+अक्षि] मृगनयनी, मृग के समान सुन्दर नैत्रों वाली स्त्री।

उ०—गवाक्ष तैं **म्रगाक्ष** की कटाक्ष तैं निगैं नहीं। थिराभ चंद्रसाळ चंद्रसाळ पैं थिगैं नहीं —ऊ. का.

रू०भे०—म्रगअंखी।

म्रगाट–सं०पु०—१ हरिन।

उ०—थटै गयंदां 'थाट' क फोजां थांहणा। बणैं तुरंगा वाळ **म्रगाटां** बाहणा।—बगसीरांम प्रोहित री बात

२ देखो 'म्रगराट' (रू. भे.)

म्रगादण–सं०पु० [सं० मृग+अदनं] चीता।

म्रगाधिप, म्रगाधिपति, म्रगाधीस–सं०पु० [सं० मृग+अधिपं, मृग+अधीश] सिंह, शेर।

उ०—१ ऊभो ऊछजियां छरा, जेथ **म्रगाधिप** जेण। कुण उण वन खांडो करै, हेकी पान हटेण —बां. दा.

उ०—२ निज कुळ कमळ दिनेसं, चवि सुर गण नखत जांण तिण चंदं। मुनि बन रखण **म्रगाधिपं**, रघुबर अवतं (स) राजेसं। —र. ज. प्र.

उ०—३ पड़े गेठ दळां दोळां गोळां व्रज बांण पाथ। कांगरांन घात ओळां जंजाळां कड़क। धूता निसा अयुतां आवते 'मांन' **म्रगाधीस**, धारी जदी तदी तीसां अयुतां धड़क। —महाराजा मांनसिंह रौ गीत

म्रगानयनी, म्रगानेणी म्रगानैंणी—देखो 'म्रिगनैंणी' (रू. भे.)

उ०—१ ढोला, म्हांने तो प्यारा लागौ, प्यारा लागौ आप होंजी ढोला आप, अब घर आया, **म्रगानैंणी** रा वालमा होंजी। —लो. गी.

उ०—२ ऊभी ऊभी **म्रगानैंणी** थांनैं, झालौ देती घणा लाज मरै छै —रसीलै राज रौ गीत

म्रगराज—देखो 'म्रिगराज' (रू. भे.)

उ०—कुळ हाडां कूरमां, किया विण आडा कारण। ज्यां आगै **म्रगराज**, धरै गजराज न धारण।—रा रू.

म्रगाळ—देखो 'म्रिग' (मह., रू. भे.)

म्रगासण–स०पु० [सं० मृग+आसन्] १ मृगचर्म जो बिछाने के काम आता है।

उ०—बखत **म्रगासण** त्रिपत बिण, देखत रह पिय दीठ। तिम इंद्रासण बिण त्रिपत, पियकर परसत पीठ।—बां. दा.

[सं० मृग+अशनम्] २ सिंह, ३ चीता।

म्रगि, म्रगी—देखो 'म्रिगी' (रू. भे.)

उ०—१ सुणिये बसुधाधिप स.धन की,विधवा **म्रगि** मारण व्याधन की।—ऊ. का.

म्रगीली—देखो 'म्रिगी' (अल्पा., रू.)

उ०—ताहरां कह्यो-मैं थारी म्रगीली नहीं खाधी है। जुठो कळंक मनू मतां देई।—सांवतसी री बात

म्रगीस—देखो 'म्रगेस' (रू. भे.)

उ०—यम सुनिय बत्त अंगरेज कांन, मांनौ कि तीर मुक्यौ कमांन। मातंग हेरि मांनहु म्रगीस, मांनहु पनग्ग लखि खगाधीश।
—ला. रा.

म्रगु—देखो 'म्रिग' (रू. भे.) (उ. र.)

म्रगेंद, म्रगेंद्र-सं०पु० [सं० मृगेन्द्र] १ सिंह, शेर।

२ मध्य लघु की पांच मात्रा का नाम।

३ दो जगण का एक छन्द विशेष। (र. ज. प्र.)

रू०भे०—मिरगेंद्र' अगइंद, अगइंद्र, अगयंद, म्रिगेंद्र।

म्रगेस-सं०पु० [सं० मृगेस] सिंह, शेर।

उ०—तजि तजि हय सौ सुनि पकरि तेग, बिख्योही जाय थह वह सवेग। सूकर मति पत्तै ढिग अ्रसेस। मयमत्त गज्जि निकस्यौ म्रगेस।—वं. भा.

रू०भे०—मिरगेस, म्रगीस, म्रिगेस।

म्रगछाळा—देखो 'म्रगछाळा' (रू. भे.)

उ०—कपाळी चढ़चौ बैंळ पैं लैर लग्यौ, चढ़ी सिंघ काळी लखैं बैल भग्यौ। गिरि मादि के मेखळी रुंडमाळा, गिरै अंत तंतावळी म्रग्गछाळा।—ला. रा.

म्रघ—देखो 'म्रिग' (रू. भे.)

उ०—ठावी मूठां ठीक, मूकै बांण महाबळी। म्रिघ सांबर सूकर महिख, भेदंतां निरभीक।—मा. वचनिका

म्रघभखण-सं०पु० [सं० मृग + भक्षणम्] हवा, पवन। (ह. नां. मा.)

म्रघवाहण-सं०पु० [सं० मृग वाहन] हवा, पवन।

म्रघ्घ—देखो 'म्रिग' (रू. भे.)

म्रड़ांणी, म्रड़ा—देखो 'म्रडा' (रू. भे.)

उ०—चुणै कर मुंड म्रड़ा वर चाह, संपेख संपेख सराह सराह।
—रा. रू.

म्रजा—देखो 'मरजाद' (रू. भे.)

उ०—कलियांणोत भाजतै कटकै, अरि अंत देखि वचत जो अंग। मेरू चलत म्रजा दधि मूकत, पलटत तरण पंक्त धरपंग।
—महेसकल्यांणोत सांखला रो गीत

म्रजाद, म्रजादा, म्रजादि—देखो 'मरजाद' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ जांण पणउ कळा तियइ तन जोवण, विघ बिन्है ही लागा वाद। मथ काढी जांणी महामह प्यारंभ, मांडी तिण रूप री म्रजाद।—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सबदी लग कोड़ म्रजाद रायसिंघ। गहवंत रैणायर वडगात। ऊपर लहर सवाई अपतै, छिलतै छातरिया अन छात।
—द. दा.

उ०—३ मोटा घरां म्रजादा मिटगी, बंगळां रै सौ बारी रे। गोला जुगळी मांय गई जद, नसल बिगड़ गई न्यारी रे।—ऊ.का.

उ०—४ आ मिटण न दूं अनादि, मो थकां हिंदु म्रजादि।
—सू. प्र.

म्रजादालंगर-सं०पु०—श्री राम की एक उपाधि। (नां. मा)

म्रजादी-वि० [सं० मर्यादित] मर्यादा निभाने वाला।

म्रज्जाद—देखो 'मरजाद' (रू. भे.)

उ०—वडी लाज म्रज्जाद भूजें वणै, भळै पार संसार सारो भणै। महा जांण प्रमीण मोटी मती, करै कव्वि कोट गढ़े कीरती।
—ल. पिं.

म्रड—देखो म्रिड' (रू. भे.) (अ. मा)

उ०—जेत भूप 'जैतरी' हार 'कमरा' री होसी। म्रड पोसी मुंडमाळ, जगत चख कौतुक जोसी।—मे. म.

म्रडमाळ—देखो 'मुंडमाळ' (रू. भे.)

म्रडांणी, म्रडानी, म्रडा-सं०पु० [सं० मृडानी, मृडा] पार्वती, दुर्गा।
(अ. मा.)

उ०—१ तुही कांम ही नांम देवी कहांणी। महमांय दूगाय तूही म्रडांणी।—मे. म.

रू०भे०अड़ांणी, अ्रड़ा।

म्रण—देखो 'मरण' (रू. भे)

उ०—तद ठाकर आपरै भायां रजपूतां सं सला करी। अरु कयो, जन्म-म्रण तो देह री सम्बन्ध छै पण परब पर मरियां नांम रहै।
—द. दा.

म्रणाळ, म्रणालिनि-सं०स्त्री० [सं० मृणालं मृणालिनी] १ कमळ की नाल, कमल का डण्ठल

२ कमल की झड़।

रू०भे०—मिरणाळ, म्रिणाळ, म्रिणाळणि, म्रिणाळणी, म्रिनाळ।

म्रणाळी-सं०पु० [सं० मृणालिन्] कमल।

रू०भे०—म्रिणाळी।

म्रतंजय—देखो 'म्रित्युंजय' (रू. भे.)

उ०—तद ब्राह्मण कही अठै हूं एक विद्या सीखूं छूं। विद्या रो जाप म्रतंजय रो जाप छै।—चौबोली

म्रत-वि० [सं० मृत] १ मरा हुआ, निष्प्राण।

उ०—ईखे हय म्रत आपरो, दूदा कुमर दुबाह। बाजी खास नबाब रो, ले चढियौ जयलाह।—वं. भा.

२ व्यर्थ, निरर्थक।

रू०भे—म्रित म्रिति।

३ देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)

उ०-१ उदोत-तपौनिध त्रैगुण ईस। अजीत-जरा-म्रत जोग अधीस।—ह. र.

उ०—२ सूजा पाट सकाज, वाघ कमधज वरदाई। कर दन खगबह कंवर, पिता पहिला म्रत पाई।—सू. प्र.

उ०—३ मधुमास क्रसन पख द्वादसी, बुध प्रकास जग जाणियौ।

म्रत जीप गया हरि थांन मझ, व्रत जिहांन बाखांणियौ ।—रा.रू,
उ०—४ मन मूझ तणौं वीमाह जिसौ म्रत, मारु 'गौइंद, आप मरै । आम्रो भड साथी जिको मी आवें, काळ निमित्त सरीर करै ।
—गु रू. बं.

म्रतउ—देखो म्रित्यु' (रू. भे.)

म्रतक—देखो 'म्रितक' (रू. भे.)
उ०—१ जवन म्रतक तन क्रपण धन, अन कर कीडी आंण । धरती में ऊंडौ धरै, जांण भलौ निज जांण ।—बां. दा.
उ०—२ दाखियौ ऐम पड़दायतां करै नेम म्रतकां मरौ । पण एह अम्हां पाराथ परि साथ न छोड़ां सांम रौ ।—रा. रू.

म्रतककरम—संoपुo [संo मृतक+कर्म] किसी प्राणी की मृत्यु के पीछे किये जाने वाले वे संस्कार या कार्य जिससे मृतक की आत्मा को सद्गति मिले ।
oभेo—म्रितककरम ।

म्रतकर—संoपुo [संo मृत्यु+कर] यम । (अ. मा., नां. मा)

म्रतका—देखो 'म्रितिका' (रू. भे.)

म्रतकि—देखो 'म्रितक' (रू. भे.)
उ०—अति कंध सवंकित याळ अंग । सिव त्रिपुर म्रतकि धनु व्याळ संग ।—रा. रू.

म्रतग—देखो 'म्रितक' (रू. भे.)

म्रतगाळ—संoपुo [संo मृत्युकाल] मृत्युकाल, मौत का समय, मृत्यु ।
उ०—भूंडां दीनौ कोट माटियै, मरण विढण चौ छाडि मतौ । नवगढ तणौ नीर नीसरतै, पाळ हुम्रो म्रतगाळ 'पतौ' ।
—प्रतापसिंह सुरतांणोत भाटी रौ गीत

म्रतघात—संoपुo [संo मृत्यु+आघात] मौत का संदेश, मृत्यु का आघात ।
उ०—विसतरी वात सारी विसव, अणकारी उतपात सी । अजमेर कांन अवरंग नैं, सुण लग्गी म्रतघात सी ।—रा. रू.

म्रतजीवनी—संoस्त्रीo [संo मृत–जीवनी] मुर्दे को जिलाने वाली विद्या, संजीवन–विद्या ।
रूoभेo—म्रितजीवनी ।

म्रतदातिथि—संoस्त्रीo–[संoमृत+दा+तिथि]फलित ज्योतिष के अनुसार तिथि व वार सम्बन्धी बनने वाले पांच योगों में से तृतीय योग ।

म्रतबासर—संo पुo [संo मृत्यु+वासर] मृत्यु-दिवस । मरने का दिन ।

म्रतभवण, म्रतभूवण—संo पुo [संo मृत्यु+भवन] मृत्यु लोक,
उ०—मीठापण जांणिया मीठौ, कमधज धिनौ तुहारा क्रत । 'बीका' हरा बांण विस्तरियौ, म्रतभवणे मांही इम्रत ।—द. दा.

म्रतलोक—देखो म्रित्युलोक' (रू. भे.)
उ०—१ देवी अम्रलं रूप आकांस भम्मे,देवी मांनवां रूप म्रतलोक रम्मे ।—देवि.
उ०—२ भोळी कमेड़ी अपूठी फिरनै चालती चालती ई होळै सूं कह्यौ-राजकंवर नै हठ करनै म्हैं ईं तौ अठै लाई अर म्हैं ई आपनै पाछा म्रतलोक में पुगावूंला ।—फुलवाड़ी
उ०—३ तद दरबारी भीतर जायनै समुद्रजी नुं गुदरावी–जुं महाराज–श्री म्रतलोक सुं एक मांनवी आयौ छै ।
—बूढौ ठग राजा री बात
उ०—४ पाताळ अनइ (अ) म्रतलोक आदीपुरि, हेकां हेक मनइ सह हार ।—महादेव पारवती री वेलि

म्रतलोकी—संo पुo—मृत्यु लोक में रहने वाला, मनुष्य, पशुपक्षी आदि प्राणी । (अ. मा.)
रूo भेo—म्रतिलोकी,

म्रतलौक—देखो 'म्रित्युलोक' (रू. भे.)
उ०—ताहरां परमेसवरजी आगै पुकार हुई । जु म्रतलौक माहा बघहावत बुरी चाल चालै । ईयां नुं सझा दीजै ।
देवजी बगड़ावतां री बात

म्रतवांन—संo पुo [संo मरुत्वत्] इन्द्र । (अ. मा.. नां. मा)

म्रति—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)
उ०—निपट बिन्है दळ आया नैड़ा, नरां सुरां म्रति आया नैड़ा । नोबति सोर घड़ड़ि धुबि नैड़ा, नाळि निहाउ गाजिआ नैड़ा ।
—वचनिका

म्रतिका—देखो म्रितिका' (रू. भे.)

म्रतिलोकी—देखो 'म्रतलोकी' (रू. भे.) (ह नां. मा)

म्रतु—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.) (ह. नां. मा.)

म्रतुत—संoपुo [संo अमर्त्या ऽऽ त्तर] इन्द्र । (नां. मा.)

म्रत्तू, म्रत्य—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)
उ०—रवि ससी पवन ते साखिया म.जु कांई असत्य । कूडूं जु कांई करूं म. तु मुझ देज्यौ म्रत्य ।—नळाख्यांन

म्रत्यका—देखो 'म्रितिका' (रू. भे.)
उ०—मोताहळ ऊतारि माळ तुळछी गळ धारै । करै तिलक म्रत्यका तिलक कूंकम वीसारै ।—रा. रू.

म्रत्यलोक, म्रत्यलोकि—देखो 'म्रित्युलोक' (रू. भे.)
उ०—कउण तूं कवण तूं घरि नारी, स्वरगिग लोकि कइ तूं अवतारी । नारि कोइ नथी तुझ सिरखीं, म्रत्यलोकि कइ तूं अनिमेसी । सालि सूरि

म्रत्यंजय—देखो 'म्रित्युंजय' (रू. भे.) (अ. मा., नां. मा.)

म्रत्यु—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)
उ०—स्व बंस को सुधारने विजाति को बिगारनें । मनें सु म्रत्यु वारलों अने समांन मारने ।—ऊ. का.

म्रत्युलोक—देखो म्रित्युलोक' (रू. भे.)
उ०—पाव पयादे सब चल आये, सुन मुरळी का बाजा । म्रत्युलोक में टटियां छाई, जहां देवन का बासा ।—मीरां

म्रत्यू—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)

म्रदंग, म्रदंगी, म्रदंगौ—सं०पु० [सं० मृदंग] ढोलक के आकार का कुछ लम्बा एक वाद्य।

उ०—१ वजि म्रदंग चंग रंग उपंग वारंग। अनंग छबि चंग उमंग अंग अंग।—सू. प्र.

उ०—२ आगम वेदिनां, म्रदंगौ घन घातांन सहते सुखं स्रोत्रयो, युद्धंते सेवका जय: स्वांमिन:।—व. स.

रू०भे०—मरदंग, मिरदंग, मिरदंगी, म्रिदंग।

म्रद—सं०स्त्री० [सं० मृद] १ मिट्टी, रज।

२ मिट्टी का टीला।

३ मिट्टी का ढेला।

४ एक प्रकार की गंधदार मिट्टी।

५ देखो 'मरद' (रू. भे.)

६ देखो 'म्रदु' (रू. भे.)

म्रदु—वि० [सं० मृदु] १ प्रिय, सुहावना।

उ०—म्रदु रयण सुपन संपेख मंगळ। विमळ उर सुख बिसतरैं।
—रा. रू.

२ सुकुमार, नाजुक।

उ०—म्रदु रूप सिखर थळ दुम विमोह। स्रंगार चमर किर पूंछ सोह। निज तेज सरति चत्र जुवळ नाळि, भव कमळ जंत्रि सूची कि भळि।—रा. रू.

३ नरम, मुलायम, कोमल।

४ मधुर, मीठा।

५ मंद, धीमा, हल्का।

उ०—सुंदर भाल विलास, अलक सम माल अनोपम। हित प्रकास म्रदु हास, अरुण वारिज मुख ओपम।—रा. रू.

६ उग्र, प्रचंड, तीव्र आदि का विपर्याय।

७ निर्बल, कमजोर।

सं०स्त्री०—१ घृत-कुमारी।

२ जूही का पौधा और फूल।

३ कोयल।

४ शनिग्रह।

रू०भे०—मिउ, मुदु, म्रद, म्रिदु।

म्रदुका—सं०स्त्री० [सं० मृद्वीका] दाक्ष, दाख। (अ. मा.)

म्रदुगण—सं०पु० [सं० मृदुगण] चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा व रेवती इन चारों नक्षत्रों का समूह।

म्रदुता—सं०स्त्री० [सं० मृदुता] १ कोमलता।

२ मधुरता।

रू०भे०—म्रिदुता

म्रदुधुनि—सं०स्त्री० [सं मृदुध्वनि] कोयल। (अ. मा.)

म्रदुळ—वि० [सं० मृदुल] १ कोमल, मुलायम, नरम।

२ सुकुमार, नाजुक।

उ०—सोई खुद्द आज दिन सांप्रत, स्री दुरगा सकळाई। मूरत म्रदुळ भेख मरदांनू, सूरत हृदय समाई।—मे. म.

३ दयालु, कृपालु।

४ नरम।

सं०पु०—१ पानी, जल।

२ अगर काष्ठ विशेष।

३ अंजीर।

४ तकिया। (अ. मा.)

५ नारेल। (अ. मा.)

रू०भे०—म्रिदुल।

म्रद्दणौ, म्रद्दबौ—देखो 'मरदणौ, मरदबौ' (रू. भे.)

उ०—पारेवइ धावतइ अति पाइ, नीघसइ घरा पुड़ तिणि निहाइ। पंचाइण चडियउ ऊभि पांण, मूगळी घड़ा म्रद्दिवा मांण।
—रा. ज. सी.

म्रध—सं०पु०—[सं० मृध] युद्ध समर

उ०—टंड चढै प्रथीमल भांजै टोडौ, 'लला' तणौं सर वारै लोह। बाये बाये नली जिम बाजै, म्रध मणघर जण आवै मोह।
—प्रथीराज उडणा रौ गीत

म्रम्म—देखो 'मरम' (रू. भे.)

उ०—नमौ प्रहळाद ऊबारण प्रम्म। नमौ अग-कासब मारण म्रम्म।—ह. र.

म्रयाद, म्रयादा—देखो 'मरजाद' (रू. भे.)

म्रसा—सं०स्त्री० [सं० मृषा] असत्य, झूठ।

उ०—मौ आगै कह्यौ हुंतौ, अयवते ऋसि-रायौ रे तेतौ बात मिलती नहीं, स्यूं रिख वांणी म्रसा थायौ रे।—जयवांणी

रू०भे०—म्रखा, म्रिखा, म्रिसा,

म्रसावाद—देखो 'मिरसावाद' (रू. भे.)

उ०—कूड़ कपट कलि विकलां केलवी, कीजइ छै केइ कांम। म्रसावाद पगोपग मोकलौ, सी गति थासी स्वांम।—ध. व. ग्रं.

म्रहण—देखो मरहण' (रू. भे.)

म्रतलोक—देखो 'म्रित्युलोक,

उ०—विहांणै म्रतलोक थी सगलोक जाइस्यां-।—वचनिका

म्रिग—देखो 'म्रिग' (रू. भे.)

उ०—वनिता मुख पूंनिम चंद वणी, म्रिग भ्रूह चखां म्रिगरूप भणी।
—वचनिका

म्रिखा—देखो 'म्रसा' (रू. भे.)

उ०—पर त्रिय गमण म्रिखा परकासी, ज-दिन एह खग ऊपमि जासी।—सू. प्र.

म्रिखावाद—देखो 'मिरसावाद' (रू. भे.)

म्रिग—सं०पु० [सं० मृग] (स्त्री० म्रिगी) १ हरिन, मृग।

उ०—१ काजळ की रेख जकौ लंकसी लगावै छै। तीखी चख रीज

विधाता कीनी छै जको खंजन मीन म्रिग छलिनां छै।—पनां.
उ०—अहि खग म्रिग दम हंस अळूझै। सुणै न सबद गात नह सूझै।
—सू. प्र.
उ०—१ कसतूरी कमडळ बसै, म्रिग ढूंढै वन बंन। हरीया जुग जांणै नहीं, रांम वसै तन तंन।—स्री हरिरांमदास जी महाराज
२ जीव, प्राणी।
उ०—चत्र दिस जाइ न सकै चकति,निजर काळ देखै नयण। म्रिग जीव सरण मारीजतो, राख राख राधारमण।—जगौ खिड़ियौ
३ जंगली पशु।
४ हाथी की एक जाति।
५ घोड़ों की एक जाति।
६ मार्गशीर्ष मास।
७ मृगशिरा नक्षत्र।
८ डिंगल में 'वेलिया सांणोर' (छोटा सांणोर) छंद का एक भेद-जिसके प्रथम द्वाले में १४ लघु, २५ गुरू कुल ६४ मात्राएँ तथा इसी क्रम में शेष द्वालों में १४ लघु २४ गुरू कुल ६२ मात्राएं होती हैं। (पि. प्र.)
रू०भे०—मरग, मिरग, मिरिग्घ, म्रग, म्रगु म्रघ, म्रग्घ, म्रिग्ग, म्रिघ
अल्पा०—मरगलियौ, मरगलौ, मरघलियौ, मरघामौ, मिरघणौ मिरगौ, मिरलड़ौ, मिरगलौ, मिरछलौ म्रगलउ, म्रगलौ, म्रिगलौ, म्रिघलौ,
महा०—म्रगांण, म्रगाळ,

म्रिगछाळ,म्रिगछाळा—देखो 'म्रगछाळा' (रू. भे.)
उ०—मैं जपंती नांव मेरे सायब का, आंण मिळौ नंदलाला रे। हाथ सुमखी कांख कूबड़ी, ओढ़ रही म्रिगछाळा रे।—मीरां

म्रिगजळ—देखो 'म्रिगत्रिसणा'

म्रिगतरसणा, म्रिगतिरसणा, म्रिगतिसणा, म्रिगतिस्णा, म्रिगत्रसणा, म्रिगत्रस्णा—सं०स्त्री० [सं० मृग-तृष्णा] १ रेगिस्तान या ऊसर भूमि में दिखने वाला धूल कणों का प्रतिबिम्ब जो कड़ी धूप व हवा के विभिन्न ताप क्रमों की तहों में से आवर्तित होकर सूर्य किरणों के गुजरने से बनता है एवं जल की भ्रान्ति पैदा करता है।
२ भ्रम, भ्रांति, धोखा।
३ अवास्तविक पदार्थ।
रू०भे०—मिरगत्रसणा, म्रगतरसणा, म्रगतिसणा, म्रगतिस्णा, म्रगत्रसणा, म्रगत्रिसना,

म्रिगधर—सं०पु०—चन्द्रमा।
रू०भे०—मरगधर
रू०भे०—मिरगधर, मिरगधर, म्रगधर,

म्रिगनयणी—देखो 'म्रिगनैणी' (रू. भे.)
उ०—वाघ-लंक पिक-वांणि, हंस-गमणी म्रिग-नयणी—गु. रू.बं.

म्रिगनाथ—सं०पु० [सं० मृगनाथ] १ सिंह।
रू०भे०—मिरगनाथ, म्रगनाथ,

म्रिगनाभ, म्रिगनाभि—सं०स्त्री० [सं० मृग+नाभि] १ कस्तूरी।
उ०—काया केसरी किसनागरि, जबाधि मैं जळहरि। म्रिगनाभ मळैतरि, मयाचल।—गु. रू. बं.
२ मृग की नाभि।
सं०पु०—३ एक राठौड़ राजा। (प्राचीन)
उ०—मकरध्वज ५६ रो, म्रिगनाभि।—रा. वंसावळी
रू०भे०—मिरगनाभ, म्रगनाभ, म्रगनाभि, म्रगनाभी।

म्रिगनैणी—सं०स्त्री० [सं० मृगनयना]मृग के समान सुंदर नेत्र वाली, मृगाक्षी।
रू०भे०—मिरगनयन, मिरगनैणि, मिरगनैणी, मिरगानैणी, मिरघानैणी, म्रगनयणी, म्रगनयनी, म्रगानयणी, म्रगानेणी म्रिगानयणी, म्रिगानैणी।

म्रिगपत, म्रिगपति—सं०पु० [सं० मृग-पति] १ सिंह।
२ चन्द्रमा।
रू०भे० म्रगपत, म्रगपति, म्रगपती।

म्रिगमंद, म्रिगमंद्र, म्रिगमद—सं०पु० [सं० मृगमद] १ कस्तूरी।
उ०—१ सोरंभ म्रिगमद गंध, सार घण सार सनेवत। नित नव सार संकेत, अगर नीसार उखेवत।—रा. रू.
उ०—२ अति घण मोला अतर, तई म्रिगमद घण तन्नो। झोला सुगंध समीर, पड़ै झोला जोजन्नां।—सू. प्र.
२ एक आभूषण विशेष।
वि०—काला, श्याम। (डि. को.)
रू०भे०—मिरगमद, मैमदा, म्रगमद, म्रगमदा, म्रगमद्र।

म्रिगमित्र—सं०पु०—चन्द्रमा, शशि।
रू०भे०—मिरगमित्र म्रगमित्र।

म्रिगया—सं०स्त्री० [सं० मृगया] शिकार, आखेट।
उ०—विहरंत बाग विलास, किरि संभग्रह कयलास। दिन उदय सुख दरसाव, चित होत म्रिगया चाव।—रा. रू.
रू०भे०—मिरगया, म्रगया।

म्रिगराज, मिगराट—सं०पु० [सं० मृगराज] सिंह, शेर।
उ०—सदा मिळै बिल स्याळ रै, वच्छ पुच्छ खुर चांम। मिळै गया म्रगराज यह, गजरद मोती ग्रांम।—बां. दा.
रू०भे०—मरगराज, मिरगराज, म्रगराज, म्रगराय, म्रगराव म्रगाट।

म्रिगरिपु—सं०पु० [सं० मृगरिपु] सिंह।
उ०—म्रिगरिपु नर केई मुणै, मुणै केक म्रगराज। इण गज गंजण सीह उर, दुहूं प्रकारां लाज।—बां. दा.

म्रिगलोचणी, म्रिगळोचनी—देखो 'म्रिगलोग्रणी' (रू. भे.)

म्रिगलौ—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू. भे.)

म्रिगवीथी—सं०स्त्री०—शुक्र की नौ वीथियों में से एक।
रू०भे०—मिरगवीथी, म्रगवीथी।

म्रिगसर—देखो 'मिगसर' (रू. भे.)

उ०—१ जोधांणों जोधाहरो,सुख मांणों 'ग्रभसाह'। विच म्रिगसर फागण,विचै व्यार थया वीमाह।—रा. रू.

उ०—२ सुदि म्रिगसर सप्तमी, वार मंगळ वरदाई। ग्रंस परम ग्रभसाह, विमळ ग्रहि वंस वडाई।—रा. रू.

म्रिगसिरा–सं०पु० [सं० मृगशिरा] नक्षत्र विशेष का नाम।

रू०भे०—मरगसरा, मिरगसरा, म्रगसिर, म्रगसिरा।

म्रिगसाखा–सं०पु० [सं० शाखा–मृग] वानर, बंदर।

रू०भे०—म्रगशाखा।

म्रिगाक्षी, म्रिगाखी—देखो 'म्रगाक्षी' (रू. भे.)

म्रिगानयणी, म्रिगानैणी—देखो 'म्रिगनैणी' (रू. भे.)

उ०—१ कागद म्रिगानयणी बाच्या न जाय, छाती तौ फाटै हिवड़ौ ऊछळे जी म्हारा राज।—लो. गी.

उ०—२ आगै म्रिगानैणी, ग्रम्रित वैणी कांमणी सिणगार सभिया छै, इणियाळा काजळ ठांसिया छै। वणाव किया छै। राजांन रा मन राखै छै।—रा. सा. सं.

म्रिगि, म्रिगी–सं०पु० [सं० मृग+ई] १ मादा हरिन, मृगी।

२ एक प्रकार का रोग जिसके प्रभाव से प्राणी कुछ समय के लिये अचेत व अज्ञानावस्था में हो जाता है।

३ एक प्रकार की स्त्री।

रू०भे०—मिरगी, मिरघी, म्रगि, म्रगी।

अल्पा०—मिरगली, म्रगीलो।

म्रिगेंद्र—देखो 'म्रगेंद्र' (रू. भे.)

म्रिगेस—देखो 'म्रगेस' (रू. भे.)

म्रिगैमद—देखो 'म्रिगमद' (रू. भे.)

उ०—निज पौसाक सु केसरी नौखां, जवहर, अतर म्रिगैमद जौखां।—सू. प्र.

म्रिग्ग—देखो 'म्रिग' (रू. भे.)

उ०—१ संमूह सेन असख सफां, म्रिग्ग मुज्झै मंझली। मल्हपति फौजां मुहरि मैंगल, सूंड डोहे सिघली।—गु. रू. बं.

उ०—२ बेरका झुंडये, गिग्गने लोडयं। फोज हेमज्जयं, म्रिग्ग ग्रमूंजयं।—गु. रू. बं.

म्रिघ—देखो 'म्रिग' (रू. भे.)

उ०—१ झांफता म्रघ झेल, फुळता तीतर पाकड़ै। आवरीया नांह ऊबरै, ग्रणियां दियै ऊथैल।—मा. वचनिका

उ०—२ गरदां घर ग्रंबर गूंघाळियौ, घमळा–गिर डूंगर धुं–धु ळियौ। कटकां विच मीर सिकार करै, म्रिघ नाहर संबर रोझ मरै।—गु. रू. बं.

म्रिघछाळा—देखो 'म्रगछाळा' (रू. भे.)

उ०—अंग भभूत गळै म्रिघछाळा, यो तन भसम करूंरी।—मीरां

म्रिघलौ—देखो 'म्रिग' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ मंदहास मुळकै म्रिघा व्रंगी विछीया पै वज्जऐ। सिणगार असुरां छळण समहर, सगति ग्रदभुत सज्झऐ।—मा. वचनिका

उ०—२ म्रिघला चक्कवा मोर, कूदणा झंयां किसोर। ऐराकी ऊन्हा ग्रलल्ल, भाडजी ग्रारबी भल्ल।—गु रू. बं.

म्रिड़, म्रिड–सं०पु० [सं० मृड] शिव, महादेव। (नां. मा.)

उ०—चुणौं कर मुंड मृडा वर चाह। संपेख संपेख सराह सराह।—रा. रू.

रू०भे०—म्रड़, म्रड, म्रिड़।

म्रिढ़—देखो 'म्रिड' (रू. भे.)

उ०—माधव दस दन हेक म्रिड़, ऐ बारह ग्रादीत। एक एक तौ जिम ग्रवर, जेह कूंगा जग जीत।—बां. दा.

म्रिणाल, म्रिणालणि म्रिणालणी—देखो 'म्रणाल' (रू. भे.)

म्रिणाली—देखो 'म्रणाली' (रू. भे.)

म्रित—१ देखो 'म्रत' (रू. भे.)

उ०—जीवत म्रित हुइ माहिजहां, दिल्ली वै सुरितांण। राति दीह ग्रंदर रहै, नह मंडै दीवांण।—वचनिका

२ देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)

उ०—हाडा खीची हेक, मोळिकी सूरिज–वंसि। सुणिस्यइ म्रित माहरउ सदा, ग्रवरे राइ ग्रनेक।—ग्र. वचनिका

म्रितक–सं०पु० [सं० मृतक] १ मरा हुआ, मुर्दा।

२ शव, लाश।

३ पिशाच, प्रेत।

४ शैतान।

रू०भे०—मिरतक, म्रतक, म्रताकि, म्रतग, म्रितग, म्रितकि, म्रितकी।

उ०—ग्रति कंघ सवंकति याल ग्रंग, सिव त्रिपुर म्रितकि धनु व्याल सग।—रा. रू.

२ देखो म्रितक' (रू. भे.)

म्रितग—देखो 'म्रतक' (रू. भे.)

उ०—हरिया पखी पंख बिन, पड़ै रसातलि आय। ऊडण की सरधा नहीं, जीवत म्रितग थाय।—स्री हरिरांमदासजी महाराज

म्रितककरम—देखो 'म्रतककरम' (रू. भे.)

म्रितजीवनी—देखो 'म्रतजीवनी' (रू. भे.)

म्रितदिन–सं०पु० [सं० मृत्यु दिवस] मरने का दिन, मृत्यु दिवस।

म्रितमंदिर, म्रितमिंदरि–सं०पु० [सं० मृत्यु मंदिर] १ चिता।

उ०—म्रितमिंदरि पैठी मल्हपि, बैठी ग्रंदर जाइ। हरि हरि हरि तिणि वार हुइ, लै सुरमुक्ख लगाइ।—वचनिका

२ श्मशान, मरघट।

म्रितलोक—देखो 'म्रित्युलोक' (रू. भे.)

उ०—सति उमंगै स्रग दिसा, मोह तजै म्रितलोक। टगटग्गी लागी तई, लागा जोवण लोक।—वचनिका

म्रितस्थांन–सं०पु० [सं० मृत्यु+स्थान] मृत्यु की जगह।

म्रिति—१ देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)

उ०—ऊजळा बारह आदीत मुखकमळ ऊगा। मनोरथ पूगा। म्रिति लाज रा मोड़ बाधा।—वचनिका

२ देखो 'म्रत' (रू. भे.)

म्रितिका-सं०स्त्री० [सं० मृत्तिका] १ गोपीचंदन।

२ मिट्टी।

रू०भे०—म्रतक, म्रतिका।

म्रितुंजय—देखो 'म्रित्युंजय' (रू. भे.)

म्रितु—देखो 'म्रित्यु' (रू. भे.)

म्रितौ—देखो 'म्रित्यु' (मह., रू. भे.)

उ०—पलमेक प्रांण कस्टं, सूरा सहंत रण संग्रांमै। जांमणौ जरा म्रितौ, भव भाजै भाखितं भीम।—गु. रू. बं.

म्रित्युंजय-सं०पु० [सं मृत्युञ्जय] १ शिव का एक नामान्तर।

२ वह जिसने मौत को जीत लिया हो, अमर।

रू०भे०—मरतुंजय, मिरतुंजय, मिरत्युंजय, म्रनुंजय, म्रत्युंजय, म्रितुंजय।

म्रित्यु-सं० स्त्री० [सं० मृत्यु] १ वह समय, अवस्था या स्थिति जब किसी प्राणधारी का प्राण शरीर से निकल जाता हो, जीवन का अंत, मौत, मृत्यु।

२ अंतिम अवस्था, समाप्ति, अंत।

३ माया।

४ काली।

सं०पु०—५ यमराज।

६ काल।

७ ब्रह्मा।

८ विष्णु।

९ कामदेव।

१० कलियुग।

११ एक साम मंत्र।

१२ फलित ज्योतिष में जन्म-कुंडली का आठवां घर जिसमें मरण सम्बन्धी फलाफल का विचार होता है।

१३ फलित ज्योतिष में २८ योगों में से एक।

रू०भे०—मरत, मरतु, मिरतु, मिरत्यु, म्रत, म्रति, म्रतु, म्रतू, म्रत्यु, म्रत्यू, म्रित, म्रिति, म्रितु।

मह०—म्रितौ।

म्रित्युयोग-सं०पु० [सं०] एक प्रकार का अशुभ योग जो, रवि और मंगलवार को नंदातिथि, गुरु व चन्द्रवार को भद्रा तिथि, बुधवार को जया तिथि, शुक्रवार को रिक्ता तिथि और शनिवार को पूर्णा तिथि होने पर बनता है। (ज्योतिष)

म्रित्युलोक-सं०पु० [सं० मृत्यु लोक; मर्त्य लोक] १ वह लोक जहां समस्त प्राणियों का जन्म व मरण होता है, मनुष्यलोक, पृथ्वी लोक।

२ यमलोक।

रू०भे०—मरतलोक, मरत्यलोक, मिरतलोक, म्रतलोक, म्रतलोक, म्रत्यलोक, म्रत्यलोकि, म्रत्युलोक, म्रातलोक, म्रितलोक।

म्रिदंग—देखो 'म्रदंग' (रू. भे.)

सुंदरि सोभता सिणगार सझावै वीणा ताळ म्रिदंग बजावै। जिकै छत्रीस राग करि जांणै, वार वार लख घीर बखांणै।—ल. पिं.

म्रिदु—देखो 'म्रदु' (रू. भे.)

म्रिदुता—देखो 'म्रदुता' (रू. भे.)

म्रिदुळ—देखो 'म्रदुळ' (रू. भे.)

म्रिनाळ—देखो 'म्रणाळ' (रू. भे.)

म्रिसावाद—देखो 'मिरसावाद' (रू. भे.)

म्रिजाद, म्रिजादा—देखो 'मरजाद'(रू. भे.)

उ०—दमा ऊतराद पछमांण पुरब दखण, भोम येक धर रखण ऊसर भागै। म्रजादा प्रसोतम वेखीयौ जकण मग, लखण रघुबीर रा बरद लागै।—गुलजी आढौ

म्लांन-वि० [सं० म्लान:] १ कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ।

२ उदास, खिन्न।

३ थकाहुआ, दुर्बल।

४ मलिन, मैला।

रू०भे०—मलांण,

म्लेच्छ, म्लेछ-सं०पु० [सं० म्लेच्छ] १ वह जाति या वर्ग जिसमें वर्णाश्रम धर्म न हों।

२ जंगली या अनार्य जाति जो संस्कृत न बोलते हों और धर्म शास्त्र को न मानते हों।

३ विदेशी।

४ मुसलमान, यवन।

उ०—१ पढ़ै फारसी प्रथम, म्लेच्छ कुळ में मिळ जावै। अंगरेजी पढ़ अवल, होटलां में हिल जावै।—ऊ. का.

उ०—२ म्लेच्छनतें मिट्यौ नाह सूरनते सिट्यो नाह। खूटल पैखिट्यौ खास गंधली न गांधी तें।—ऊ. का.

५ अनार्यों की भाषा।

६ तांबा।

वि०—१ नीच, पापी, दुष्ट।

२ जाति बहिष्कृत।

रू०भे०—मलिच्छ, मलिमेच,

म्लेछराय-सं०पु० [सं० म्लेच्छ+राजा] म्लेच्छ जाति या वर्ग का राजा, इसका नाम अंग पाया जाता है। (व. स.)

म्ह-सर्व०—मेरा

उ०—अण रहे जीत समहर अपार, धजबंध स्यांम कारज सधार। थां भुजां लाज जोधांण थांन, म्ह और न को नर थां समांन।

—सि. रू.

म्हनै-सर्व०—मुझे, मुझको।

उ०—म्हनै तौ मिनख री विस्वास मोटौ अर सिरै बात लागै ।
—फुलवाड़ी

म्हल—देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—पायेल बाळी पातळी जी इतनौ गरब न बोल,तेरे म्हल चोरी करां तेरा पकड़ां पायल का पांव ।—लो. गी.

म्हां-सर्व०ब०व०—१ हम ।

उ०—१ रावळा आसापुरा जांणे, थां-थकां क्युं न जांणां । रावळ टीकै बैठै, तरै म्हां नै रावळ वात ।—नैणसी

उ०—२ आय राजूखां नूं मालम कीवी । कही-म्हां आज पहलां इसौ कजियौ कियौ न सुणियौ । सारा एक मनगरा था ।
—सूरै खींवै कांधलोत री बात

२ हमारा ।

उ०—हव लड़य कइक दिन हुय हरोळ, इळ पती फौज री बळ अतोळ । सभियौ न सांम सूं म्हां संग्रांम, गढ़ दियौ छोड अरू छोड गांम ।—पे. रू.

३ मेरे हमारे ।

उ०—उलिगाणउ घरि राखज्यौ जु म्हां प्रीयं पाछौ बाहुड़इ । सोवन कचोळी तोही पावस्युं दूध ।—बी. दे.

उ०—ठाकर नेड़ा बैठ परा'र पूछै है-हे महाराज ! मांग-जाग'र लेवौ । हुकम रा चाकर हां अबळा नै क्यूं पीड़ो ? म्हां लायक हीडौ ओढावौ ।—दसदोख

उ०—३ स्वांमीजी कह्यौ म्हां में अवधि आदि ग्यांन तौ छै नहीं । पिण थांरी नूरांणी देखने कह्यौ ।—भि. द्र.

रू०भे०—मांह, मांहां, मांहा, म्हा ।

म्हांकउ, म्हांकौ-सर्व—(स्त्री० म्हांकी) मेरा, हमारा ।

उ०—१ लाख मीलयां मांहि लख लहई । पाडचा म्हांकौ प्रीव छइ इण तौ सहिनांण ।—बी. दे.

उ०—२ कोइल करइ टहूकड़ा म्हांकी सहियर, सूंदर फल फूल पांन हे । राजा एक मांजरी ग्रही म्हांकी सहियर, तिम मंत्री परधांन हे ।
—स. कु.

उ०—३ पूगळ हुंता आविया, पूगळ म्हांकउ वास । पिंगळ राजा तास धू मेल्हा थांकइ पास ।—ढो. मा.

म्हांजळौ, म्हांजौ,म्हांभो-सर्व—(स्त्री० म्हांजी)हमारा, मेरा ।

उ०—१ ढोला, खीलयौरी कहइ, सुंणै कुढंगा वेण । मारू म्हांजी गोठणी, सै मांरूंदा सैण ।—ढो. मा.

म्हांणी-सर्व०—१ मेरी, हमारी ।

उ०—बाकी तीनूं जणा जांण्यौ म्हांणी तौ खैरियत है । जाट झिलतौ व्है तौ झिलण दौ ।—फुलवाड़ी

रू०भे०—मांहणी,

म्हांणै-सर्व०—हमारे, मेरे ।

उ०—थे बिण म्हांणै जग ना सुहावां, निरख्यां सब संसार । मीरां रे प्रभु दासी रावळी, लीज्यौ नेक निहार ।—मीरां

रू०भे०—मांहणै

म्हांणौ-सर्व०—हमारा, मेरा ।

रू०भे०—मांहणौ,

म्हांनु, म्हांनू, म्हांने, म्हांनै-सर्व०—हमें, हमको ।

उ०—१ ऐ जठा तांई जेसलमेर री धरती में छै तितरै म्हांनू धरती री आस काई नहीं ।—नैणसी

उ०—२ अजमेर थेई म्हांनु दौ, गढ़ कोट म्हांरै खटावण रा नहीं ।—नैणसी

उ०—३ एक दिन चरचा करतां सवाई रांम ने कह्यौ-थे म्हांने दोखीला कहौ, पिण थांरां गुरां नै पिण किवारिया रौ दोख लागै छै ।—भि. द्र.

उ०—४ जेठ के जिठांणी लाड़ली भंवरजी रात्यूं बरफी खाय । भंवर थोडी म्हांने ई मंगाद्यौ जी ।—लो. गी.

उ०—५ तद सूजै जी कयौ-पूजनीक चीजां म्हांनै ई चाईजै है, देवां क्यूं कर ।—द. दा.

रू०भे०—मांहनै ।

म्हांरी—देखो 'म्हारी' (रू. भे.)

उ०—पिता-बचन-पालण वन जावां, वचन पाळ आवां प्यारी । प्रांण-प्रियाजी थे तौ भवन विराजौ हे !आ आग्या मांनौ म्हांरी ।
—गी. रां.

म्हांरे, म्हांरै—देखो 'म्हारै' (रू. भे.)

उ०—१ जद स्वांमीजी कह्यौ-थांनै वावेचा पांच रुपइया देवै तौ पिण म्हांरै नां कहिवा रा त्याग है ।—भि. द्र.

उ०—२ म्हांरै तौ बारौ ही पुन-परताप है । बिंयां कनै ही पढ्या-लिख्या अर कांम करणौ सीख्या ।—दसदोख

म्हांरौ-सर्व० [स्त्री० म्हांरी] हमारा, मेरा ।

उ०—१ चारण सूरज देव रा, कै म्हांरा जस काज । कहिया तै जादव कथन, हुवा अमर हरराज ।—बां. दा.

उ०—२ जीवण मरण अजांण, नहिं गैला सैणा नहीं । अवम-रियां ऐनांण, जांणां म्हे म्हांरा जस ।—ऊ. का.

उ०—३ वीनती सुणौ रे म्हांरा वाल्हा, राजि मरुदेवा रांणी ना लाला ।—वि. कु.

उ०—४ सिकारां रम रह्यौ म्हांरौ राज । चंगा बाज राजे अस-वारां । संग अलबेलौ साज ।—रसीलै राज रौ गीत

म्हांसु, म्हांसूं, म्हांसौं-सर्व० —हमसे, मुझसे ।

उ०—१ बेटौ सगल्यां ही मिळि नै आजैपाळ री बहन नै गोद

दीयौ। सगल्यां ही कह्यौ तूं टाबर पाळि म्हे सत्यां हुस्यां थे टाबर पाळिज्यौ। म्हांसु न पळै। थे पाळिस्यो।चौबोली

उ०—२ जांण देस्यांजी नहिं थांनै आलीजाजी। पं'लौ विछोहौ वौ मारू म्हांसूं नहीं नीसरै।—रसीलै राज रौ गीत

रू०भे०—म्हासूं, म्हासू।

म्हांहरी—देखो 'म्हारी' (रू. भे.)

उ०—यळ सारी यम ऊचरै, कमसल ग्रोध कदीम। म्हां ऊभां इज म्हांहरी, सारंग दाबौ सीम।—पा. प्र.

म्हांहरे, म्हाहरै—देखो 'म्हारै' (रू. भे.)

उ०—क्यूं थे म्हांहरे कांम ग्रावौ।—सतरीबांधी लिखमो री वात

म्हांहरोड़ौ—देखो 'म्हारोड़ौ' (रू. भे.)

उ०—ग्रौरां रा पिवजी घर वसै ऐ,लंजा ग्रोठीड़ा ऐ लो। म्हांहरोड़ा वसै परदेस, वाला जी ग्रो।—लो. गी.

म्हांहरौ—देखो 'म्हारौ' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां राजा कहै म्हांहरौ कह्यौ मांनि ईयै नुं घरे ले जाह।—देवजी बगड़ावत री बात

उ०—२ तद ठग रै बेटै कही, तौ थे म्हांहरा बहनेई हुवौ।

—बूढौ ठग राजा री बात

म्हा—देखो 'म्हां' (रू. भे.)

उ०—ए बात स्वांमीजी सुण कह्यौ–म्हांनै हाट छुड़ाई त्यां ऊपर छद्मस्थ रा स्वभाव थी लहर ग्रावारौ ठिकांणौ, पिण म्हा सूं तो उपगार ईज कीधौ।—भि. द्र.

म्हाइ–सर्व०—मैं, हम।

रू०भे०—म्हाई।

म्हाइनुं, म्हाइनूं–सर्व०—मुझे, हमें।

उ०—म्हाइनुं थांहरै मिळण री बांछा हुती। उवां कहीया म्हांनुं ही मिळण री वांछ हुती ग्राइनै मिळीया।–चौबोली

म्हाई—देखो 'म्हाइ' (रू. भे.)

म्हाचीन्ह—सं०पु०—एक देश।

उ०—तिण री धाक ईरांण तूरांन रूम स्यांम फिरंग, रूस चीन्ह म्हाचीन्ह ईण देसा देसां रा पातसाह ईण रा हुकम रा ग्राधीन सारा डरै।—प्रतापसिंघ म्होकमसिंघ री बात

म्हाजण, म्हाजन—देखो 'महाजन' (रू. भे.)

उ०—मथुरा में कुबज्या कर राखी, म्हाजन की सी हाट। केसर चंदन लेपन कीन्हौ, मोहन तिलक लिलाट।—मीरां

म्हाटौ—देखो 'माटौ' (रू. भे)

उ०—सेठां री बात सुण नै भांबण गतागम में पड़गी। इण बात मार्थं कांई विचार करै। सेठ तौ म्हाटा जबरी ग्राडी पजाई।

—फुलवाड़ी

म्हार—१ देखो 'मार' (रू. भे.)

२ देखो 'हमार' (रू. भे.)

म्हारउ—देखो 'म्हारौ' (रू. भे.)

उ०—राज लीला सुख भोगियउ, म्हारउ रिखभ सुकुमाल रे। ग्राज सहइ ते परिसहा, भूख त्रसा नित काल रे।—स. कु.

म्हारयां–सर्व०—मेरी, हमारी।

उ०—ताहरा मोर कह्यौ म्हारयां परां माहे पैसि ज्यूं ले जाऊं।

—चौबोली

२ देखो 'म्हांरी' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरां बोली–हे बायां थें दोनूं म्हारयां सौक्यां छौ। थे स्यांमसुंदर री खबरि करण ग्रायां छौ।—स्यांम सुंदर री बात

उ०—२ ताहरां तीडी बोली–ग्रागै म्हारयां देवरांणयां जेठांण्यां छै।—कांवळी जोइयौ नै तीडी खरळ री वात

म्हारलौ–सर्व० (स्त्री० म्हारली) मेरेवाला, हमारे वाला।

उ०—कागज जुंवाई जी रौ ग्रायौ है ग्रर मोतरौ है। का तौ म्हारली छोरी कोनीं ग्रर का इयां रौ छोरौ कोनी।—दसदोख

म्हारा–सर्व०—मेरा, हमारा।

उ०—सुकवि कुकवि द्वेसी सुणैं, हरखै कहिया जाब। करसी नह म्हारा कवित, खाल उतार खराब।—बां. दा.

म्हाराज—देखो 'महाराज' (रू. भे.)

उ०—१ हाथी के सिर हाथ दे, मुळक मुळक म्हाराज। ग्रपणौ विरद संभार कै, कियो भगत कौ काज।—गज उद्धार

उ०—२ विड़द तमारौ रांमजी, ले वहीयौ म्हाराज। हरीयै गुण ग्रोगुण कीया, तौई तमां कुं लाज।—श्री हरीरांमदासजी महाराज

म्हाराजा—देखो 'महाराजा' (रू. भे.)

उ०—राजा रांणी नुं पूछीयौ। ताहरां रांणी कह्यौ महाराजा पांणी रौ प्यालौ म्हाराजा मोल्हीयौ हुतौ तिको पांणी हुतौ।

—चौबोली

म्हारालौ–सर्व०—मेरे वाला।

म्हारी–सर्व०—मेरी, हमारी।

उ०—१ नहीं तर म्हारी सींव मांहै नगारौ देरावै जै हूं वेढ न करूं।—नैणसी

उ०—२ इसौ जबाब करता समान तुरती वेग जांणियौ जु म्हारी ग्रदब पड़ै इसड़ै कांपियो।—द. वि.

रू०भे०—महारी, मांहरी, मांरी, मा'री, माहरि, माहरी, माहारी, म्हांरयां, म्हांरी, म्हाहरी, म्होरी, म्हौरी।

म्हारुड़ौ, म्हारूड़ौ—देखो 'म्हारौ' (ग्रल्पा., रू. भे)

उ०—दासी म्हारूड़ा मारुजी से कहना। मोय नींद न ग्रावे नैना।

—मीरां

म्हारे, म्हारै–सर्व०—मेरे, हमारे।

उ०—१ नगरी कुंवारा परणसी, म्हारै नवल वने को व्याव, चोखा सेवरड़ा गूंथ ल्याय।—लो. गी.

उ०—२ एक बांई कह्यौ स्वांमीजी म्हारै भैंस व्यावै जब पधारौ तौ लाहौ लेवूं।—भि. द्र.

उ०—३ ग्रेकर सासरै जावण दै। मुकलावौ लेय पाछौ वळती

वेळा । बतावै उणी ठायै हाजर व्है जावूंला । मरियां ई कौल नीं तोड़ू, म्हारै माथै विस्वास कर ।—फुलवाड़ी

उ०—४ राज श्रग्या म्हारै सिर राखिस । भूधर तूझ तणा गुण भाखिस ।—ह. र.

रू०भे०—मांहरइ, मांहरे, मांहरै, मांहांरै, मांहारै, माहरइ, माहरे माहरै, म्हारे, म्हांरै, म्हांहरे, म्हांहरै ।

म्हारंई–सर्व०—मेरेही ।

उ०—जिसै रायमाल दूदावत कयो–जी इसड़ा श्रड़ीला डावड़ा म्हारंई है ।—द. दा.

म्हारोड़ा, म्हारोड़ौ–सर्व०–(स्त्री० म्हारोड़ी)मेरा, हमारा ।

उ०—क्यांनै बाळौ, ए बाइ, म्हारोड़ो चांच, म्है थारौ वीर लडा वियौ ।—लो. गी.

उ०—२ मरज्यौ मरज्यौ ऐ, मिनड़ी, थारोड़ा पूत । म्हारोड़ौ बाटियौ तूं ले गयी । रातां री निरणी वीरां री बहनड़ी ।

—लो. गी.

रू०भे०—म्हांहरोड़ौ ।

म्हारौ–सर्व०—मेरा, हमारा ।

उ०—१ भागल कायर नें वीर स्त्री कहै छै, हे कंथा श्री तौ थारौ घड़ायोड़ौ गहणौ, श्रा थारी करायोड़ी पौसाख, श्रबे थे धारण करौ म्हारौ तौ सुहाग गयौ ।—वी. स. टी.

उ०—२ म्हे तौ वारघा, ए बहूजी, थांरा बोलने । लडायौ म्हारौ सौ परवार । सहेल्यां ए श्रांवौ मोरियौ ।—लो. गी.

रू०भे०—महांरौ, मांहरौ, मांहारौ, मा'रौ, माहरउ, माहरू, माहरू माहरौ, माहारौ, म्हांरौ, म्हांहरौ, म्हारउ, म्होरौ, म्होरौ ।

म्हालण–सं०पु०—चौहान वंश की एक शाखा ।

म्हालणौ, म्हालबौ—देखो 'माल्हणौ, माल्हबौ' (रू भे.)

उ०—१ जलौ म्हारी जोड़ रौ उदियापुर म्हालै रे ।

उ०—२ बंस विसुद्ध वरीयांम सांम्हौ विढ़ण । घणा दिसि दोइणां म्हालियौ विरद घण ।—हा. भा.

उ०—३ च्यार संप्रदा जिण हित चाली, प्रगट हुई ज्यूं भांभी पाली । महिळा नीर भरण ने म्हाली,खारौ जळ ऊंडौ तळ खाली ।

—ऊ. का.

म्हालणहार, हारौ (हारी), म्हालणियौ—वि० ।

म्हालिश्रोड़ौ, म्हालियोड़ौ, म्हाल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

म्हालीजणौ, म्हालीजबौ—कर्म वा० ।

म्हालियोड़ौ—देखो 'माल्हियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० म्हालियोड़ी)

म्हावत—देखो 'महावत' (रू. भे.)

उ०—रावत भाटक रजां, गजां म्हावत गरदाया । सपड़ाया जळ सींच, बळै चितरांम बणाया ।—मे. म.

म्हासती—देखो 'महासती' (रू. भे.)

उ०—सतियां म्हासतियां कहतां तन सोहैं, मधुरी बांणी मुख प्रांणी मन मोहै । रजपूतांणी रुच सींवांणी सिरखी, नैणां जळ भरती सैणां थळ निरखी ।—ऊ. का.

म्हासूं , म्हासू—देखो 'म्हांसूं' (रू. भे.)

म्हीणौ—देखो 'महीनौ' (रू. भे.)

म्हूं, म्हू—देखो 'म्हैं' (रू. भे.)

म्हें, म्हे—देखो 'म्हैं' (रू. भे.)

उ०—१ श्रवौ घड़ी एक तो श्रमल पांणी करनें भेळा वैसां । पछै थांरै मारग जाजौ नें म्हें म्हारै मारग जासां ।—डो. मा.

उ०—२ थे कहौ तौ डावड़ियां परणावां । डूंगर कह्यौ–भली वात छै । बेटियां परणावौ । म्हे होड़ा करस्यां । तद समरसी ब्याह थापिया ।—नैणसी

उ०—३ डुलाया किणरा नहिं डुलां, फुलायां नहिं फूलां । भूलाया थारा म्हे भूलां, भूलाया नहिं भूलां ।—ऊ. का.

उ०—४ नरेस कहियौ पहली मऊ रौ फरमांण श्रायौ जरै ही म्हे तौ जांणि लीधी श्रब साह रै म्हारा माथा सूं कांम पड़ियौ ।

—वं. भा.

म्हेमांन—देखो 'मे'मांन' (रू. भे.)

उ०—बरसिंघ मेड़ते दिन राव बीका दुदा नुं राख म्हेमांन करनै सीख दी ।—नैणसी

म्हेल—देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ श्रागरणी रौ म्हेल हमार दौलतखांना रौ चौक है तीं में थौ सो करायौ १७०३ ।—नैणसी

उ०—२ श्रांमी सांमी म्हेल देवरिया नित उठ पोढण श्रावोजी, इस पोढण के कारणै देवर प्यारा लागोजी ।—लो. गी.

म्हेलणौ, म्हेलबौ—देखो 'मेलणौ, मेलबौ' (रू. भे.)

उ०—१ रा. वीरमदे रा हेरायत म्हेलीया था सु श्राया, खबर दी, कह्यौ–सहै सो श्राप रा साथ सुं रेयां माहै बैठौ छै ।—नैणसी

उ०—२ पंच सहेली मिळी घन साथ । पीरी म्हैली घन श्रपइण हाथ ।—बी. दे.

म्हेलणहार, हारौ(हारी), म्हेलणियौ—वि० ।

म्हेलिश्रोड़ौ, म्हेलियोड़ौ, म्हेल्योड़ौ—भू० का० कृ० ।

म्हेलीजणौ, म्हेलीजबौ—कर्म वा० ।

म्हेलियोड़ौ—देखो 'म्हेल्हियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० म्हेलियोड़ी)

म्हेसुरी—देखो 'माहेस्वरी' (रू. भे)

उ०—जठै म्हेसुरी श्रगरवाळा नहीं हैं, बठै रा बांमण कीं माथै धरम री धाक जमावै श्रर कींरै पड़ पंचायती में जावै ।—दसदोख

म्हैं, म्है–सर्व०—हम, मैं ।

उ०—१ ताहरा श्ररजणजी डेरै श्राय नै कह्यौ–जु म्हैं म्होटौ (बोल) बोलियौ छै- रिणकताळ पळकेक में भलौ छै जकण रौ भलौ ।—नैणसी

उ०—२ तब स्वांमीजी पहिलां ही बोल्या-म्हैं तौ यांनै आगै देख्याइ नहीं, नहीं अनै म्हारै यांरै स्रद्धा आचार मिल जासी तौ आहार पांणी भेळौ कर लेवां तो अटकाव नहीं।—भि द्र.

उ०—३ इण वीर स्त्री रै वासतै म्है बाळण नें कढायौ आ तौ मुहगौ ही लेलेती।—वी. स. टी.

उ०—४ इळ दौहुं राह जीतौ अभंग,ग्रह लिया साह म्हां कीध जंग। खंधार, बळां खइरांण खेत, जुद्ध करै भुजबळ म्है अजेत।—सि. रू.

रू०भे०—मेहू, म्हूं, म्हू, म्हें, म्हें।

म्हेइ, म्हेई-सर्व०—हम भी, मैं भी।

उ०—जब ते बोल्या-भूख लागा आहार करै। जद स्वांमीजी कह्यौ म्हेइ सी लागां कपड़ौ ओढां।—भि. द्र.

म्हेमांनी—देखो 'मैंमांनी' (रू. भे.)

उ०—मूळराज सीहाजी नुं सारै साथ सुधा मोहौला में ले गया। बडी म्हेमांनी कीवी।—नैणसी

म्हेर—देखो 'महर' (रू. भे.)

उ०—थारै रूस्यां रांणां कुछ नहिं बिगड़े, अब हरि कीनी म्हेर। मीरां के प्रभु गिरधरनागर, हठ कर पी गई ज्हैर।—मीरां

म्हेरबांन—देखो 'मैंरबांन' (रू. भे.)

म्हेरबांनी—देखो 'मैंरबांनी' (रू. भे.)

उ०—मेजर साब बेलण म्हेरबांनी सैं बुलाया। पालट साब भादुर छांवणी सूं फेरि आया।—सि. वं.

म्हेल—१ देखो 'महल' (रू. भे.)

उ०—१ आवौ आवौ जी रंगभीना म्हारै म्हेल। प्यालौ तौ लियां हाजर खड़ी।—मीरां

उ०—२ कदे ये न सूता रळ मिळ सेज में जी ओ जी पियाजी अब घर आवौ थारी प्यारी उडीके म्हेल में जी—लो. गी.

उ०—३ कंवर वीरमदे मरजीदांन खवास नै ले। पनां कै म्हेल आयौ।—पनां

२ देखो 'महिळा' (रू. भे.)

उ०—म्हेलां बस बस मात रै, मंत्री बस मुरझाय। मंगण मिळियां रोयदे, चोदू सूंब कहाय।—बां दा

म्हेलणौ, म्हेलबौ—देखो 'मेलणौ, मेलबौ' (रू. भे.)

उ०—पछै असवारां रौ थंडौ वांसै राखियौ। सै असवार २० तथा २५ आगै म्हेल नै जेसळमेर सहर री खबर लिराई।—नैणसी

म्हेलणहार, हारौ (हारी), म्हेलणियौ—वि०।

म्हेलिओड़ौ, म्हेलियोड़ौ, म्हेल्योड़ौ—भू० का० कृ०।

म्हेलीजणौ, म्हेलीजबौ—कर्म वा०।

म्हेला—देखो 'महिळा' (रू. भे.)

म्हेलियोड़ौ—देखो 'मेलियोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० म्हेलियोड़ी)

म्होंडौ—देखो 'मूंडौ' (रू. भे.)

उ०—१ इण बेड़ी घाली कैद किया सौ इण रौ म्होंडौ न देखूं।—गौड़ गोपाळदास री वारता

उ०—२ उठै सूं झोळी में घात, बाहर मांणस था उहां रै म्होंडा आगै आंण नांखियौ।—अमरसिंह गजसिंहोत री बात

म्होड़ी-सं०पु०—१ एक प्रकार का वस्त्र।

२ देखो 'मोड़ौ' (रू. भे.)

म्होड़ौ—देखो 'मोड़ौ' (रू. भे.)

म्होटौ—देखो 'मोटौ' (रू. भे.)

उ०—१ पछै सुख कियौ, तरै बेटौ कान्हड़ देव जायौ। म्होटौ हुवौ। कुंवरपदौ कांन्हड़दे जी नूं दियौ।—नैणसी

उ०—२ ताहरां अरजणजी डेरै आयनै कह्यौ—जु म्हैं म्होटौ(बोल) बोलियौ छै।—नैणसी

उ०—३ स्त्री मल्लीनाथ जी ना छह मित्र, महाबल प्रमुख मुनिराय। सरबे मुक्ति सिधाव्या, म्होटी पदवी पाय।—जयवांणी

(स्त्री० म्होटी)

म्होबत—देखो 'मुहब्बत' (रू. भे.)

उ०—अदबिच में मत तोड़,रुतवारी के तार ज्यूं ज्यूं। ज्यूं टूटे त्यूं त्यूं जोड एजी प्यारी जी म्होबत ओड लगांनी चैये मेरी ज्यांन।—लो. गी.

म्होर—१ देखो मोहर' (रू. भे.)

उ०—१ कहणी प्रभु रीझे न कछु, रहणीरीझे रांम। सुपने री सौ म्होर सूं, कोड़ी सरे न कांम।—ऊ. का.

उ०—२ रोक रुपैयौ भंवरजी मैं बणूजी, हांजी ढोला बण ज्यांऊ पीळी पीळी म्होर।—लो. गी.

म्होरी—१ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

२ देखो 'म्हारी' (रू. भे.)

म्होरौ—१ देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

उ०—निज दळके किवाड जंगू के जैतवार अंगू के ओनाड आचू के उदार काछवाचू के अडोळ अनीके म्होरे, मेरगिर के तोलरिग····—र. रू.

२ देखो मौरौ' (रू. भे.)

३ देखो 'म्हारौ' (रू. भे.)

म्हौड़ौ—देखो 'मोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० म्हौड़ी)

म्हौडौ—देखो 'मोड़ौ' (रू. भे.)

(स्त्री० म्हौडी)

म्हौरी—१ देखो 'मोरी' (रू. भे.)

२ देखो 'म्हारी' (रू. भे.)

म्हौरौ—१ देखो 'मोरौ' (रू. भे.)

२ देखो 'म्हारौ' (रू. भे.)